क़ुरआन अपने लाने वाले को किस रंग में पेश करता है ?

नव जाति के पथ-प्रदर्शन के लिए सदैव ऐसे पुण्यात्मा पैदा होते रहे है
था अपने आचरण से उसे सत्य का मार्ग दिखाया है। परन्तु मनुष्य प्रायः
ा बदला अत्याचार ही के रूप में देता रहा है। उन पर अत्याचार केवल
ी नहीं किया कि उनके सन्देश से मुँह मोड़ा, उनकी सत्यता से इन्कार किया,
पेक्षा की और उनको कष्ट देकर सन्मार्ग से फेरने की चेष्टा की, अपितु
नके प्रति श्रद्धा करने वालों ने भी किया कि उनके पीछे उनकी शिक्षाओं को
तों को बदल डाला, उनके ग्रन्थों में काट-छाँट की और स्वयं उनके व्यक्तित्व
प्रियता का खिलौना बनाकर ईश्वरत्व का रूप दे दिया। पहले प्रकार का
यात्माओं के जीवन तक या अधिकाधिक कुछ वर्ष बाद तक ही सीमित रहा,
ा अत्याचार उनके पीछे शताब्दियों तक होता रहा और बहुत से महानुभावों
र जा रहा है।

ाज तक जितने सत्य का बुलावा देनेवाले आये हैं सबने अपना जीवन उन
का अन्त करने में व्यतीत किया है जिन्हें मनुष्य ने एक अल्लाह को छोड़-
लिया था। परन्तु सदैव यही होता रहा कि उनके बाद उनके अनुयायियों
अंध-विश्वास के कारण स्वयं इन्हीं को ईश्वर या ईश्वरत्व में ईश्वर का
वे भी उन्हीं उपास्यों में सम्मिलित कर लिए गये जिनके खण्डन में उन्होंने
दिया था।

पने-आपने कुछ ऐसा बदगुमान है कि उसे मानव-जाति में पुण्याचरण
[illegible] विश्वास होता है। वह अपने-आपको केवल त्रुटियों
[illegible] है। उसका मस्तिष्क इस महान तथ्य के ज्ञान एवं विश्वास से
इस मिट्टी की काया को गौरवान्वित ईश्वर ने वे शक्तियाँ एवं प्रवृत्तियाँ
[illegible] होने तथा मानवीय गुणों से युक्त रहने पर भी पवित्र स्रोत में
[illegible] पद तक पहुँचा सकती हैं। यही कारण है कि जब भी इस संसार
[illegible] ईश्वर के प्रतिनिधि के रूप में प्रस्तुत किया है तो उसके मह-
[illegible] हो जैसा शरीर रखने वाला मनुष्य है उसे
[illegible] इन्कार कर दिया और जब अन्ततः उसके व्यक्तित्व में असाधारण
श्रद्धा भाव प्रकट किया तो फिर कहा कि जो व्यक्ति ऐसे असाधारण गुण
[illegible] नहीं हो सकता। फिर किसी समुदाय ने उसे भगवान बनाया, किसी
[illegible] विश्वास कर लिया कि भगवान उसके रूप में प्रकट हुआ था,
गुणों और ईश्वरीय स्वरूप का अनुमान किया और किसी ने निश्चय किया कि

वह खुदा का बेटा है। "उसकी महिमा और सर्वोच्चता के प्रतिकूल है जो गुण-वर्णन ये करते हैं।"

संसार के किसी धर्म-प्रवर्त्तक के जीवन को ले लो, तुम देखोगे उस पर सबसे अधिक अत्याचार स्वयं उसके श्रद्धालुओं ने ही किया है। इन्होंने उसपर अपनी कल्पनाओं तथा अन्ध-विश्वासों के इतने आवरण डाल दिये कि उसका रंग-रूप देखना सर्वथा असम्भव हो गया है। केवल यही नहीं कि उनके परिवर्तित ग्रन्थों से यह पता लगाना कठिन हो गया है कि उसकी यथार्थ शिक्षा क्या थी अपितु हम उनसे यह भी मालूम नहीं कर सकते कि वह स्वयं वास्तव में क्या था? उसके जन्म में अस्वाभाविकता, उसके शैशव काल में विलक्षणता, उसके यौवन तथा वृद्धावस्था में विचित्रता, उसके जीवन की प्रत्येक बात में विलक्षणता और उसके देहान्त तक में अस्वाभाविकता, सारांश यह है कि आरम्भ से लेकर अन्त तक गल्प ही गल्प दीख पड़ता है और उसको इस रूप में प्रस्तुत किया जाता है कि या तो वह स्वयं भगवान था, या भगवान का बेटा था या भगवान का अवतार या कम-से-कम ईश्वरत्व में कुछ-न-कुछ साझी था।

उदाहरणार्थ गौतम बुद्ध को देखो। बौद्धमत के बहुत गहरे अध्ययन से केवल इतना अनुमान किया जा सकता है कि उस उच्च संकल्प मनुष्य ने ब्राह्मणत्व की बहुत-सी त्रुटियों का सुधार किया था और विशेष रूप से उन असंख्य सत्ताओं के ईश्वरत्व का खण्डन किया था जिनको उस काल के लोगों ने अपना उपास्य बना लिया था। परन्तु उसके देहान्त का पूरी एक शताब्दी भी नहीं बीती थी कि वैसाली की सभा में उसके अनुयायियों ने उसकी समस्त शिक्षाओं को परिवर्तित कर दिया। यथार्थ सूत्रों के स्थान पर नये सूत्र बना लिए और आधारभूत सिद्धांतों तथा उन पर निर्धारित व्यवस्थाओं में अपनी इच्छाओं तथा विचारों के अनुसार जिस प्रकार चाहा हस्तक्षेप किया। एक ओर उन्होंने बुद्ध के नाम से अपने मत के ऐसे विश्वास नियत किये जिनमें ईश्वर का सिरे से कोई अस्तित्व ही न था और दूसरी ओर बुद्ध को स्वार्थसिद्ध, सर्व-बुद्धि, जगताधार और एक ऐसी सत्ता मान लिया जो प्रत्येक युग में संसार के सुधार के लिए बुद्ध बनकर प्रगट हुआ करती है। उसके जन्म-जीवन और गत तथा भावी जन्मों के सम्बन्ध में ऐसी-ऐसी अद्भुत् गाथायें बना ली जिनको पढ़कर प्रोफेसर विल्सन जैसे अनुसन्धेय चकित होकर यह कह उठते हैं कि इतिहास में वस्तुतः बुद्ध का कोई अस्तित्व ही नहीं है। तीन-चार शताब्दी के भीतर इन गाथाओं ने बुद्ध में ईश्वरत्व का रंग उत्पन्न कर दिया और कनिष्क के काल में बौद्धमत के पंडितों तथा नेताओं की एक बहुत बड़ी सभा ने (जिसका अधिवेशन कश्मीर में हुआ था) निश्चय कर लिया कि बुद्ध वास्तव में ईश्वर का भौतिक रूप था या अन्य शब्दों में ईश्वर उसके रूप में प्रगट हुआ था।

यही व्यवहार रामचन्द्रजी के साथ हुआ। रामायण के अध्ययन से प्रत्यक्ष ज्ञात होता है कि राजा रामचन्द्रजी केवल एक मनुष्य थे। सुहृदयता, सदाचार, न्याय, वीरता, उदारता, सद्व्यवहार, दया एवं त्याग में पराकाष्ठा को वह अवश्य प्राप्त हुए थे परन्तु ईश्वरत्व उनमें लेशमात्र भी न था। परन्तु मनुष्यता और इन श्रेष्ठतम गुणों का एकत्र होना एक ऐसी समस्या सिद्ध हुई कि भारतवासियों के लिये उसका समाधान असम्भव हो गया। अतएव रामचन्द्रजी के देहान्त के बहुत दिन बाद यह विश्वास अंगीकृत कर लिया गया कि वह विष्णु[1] के अवतार थे, और वे उन व्यक्तियों में से एक थे जिनके रूप में विष्णुजी संसार के सुधार के लिए विभिन्न

---

१. विष्णुजी, हिन्दुओं के वर्तमान विश्वास के अनुसार ब्रह्माण्ड के प्रतिपालन करनेवाले ईश्वर या देवता का नाम है। संभवतः वास्तव में यह ईश्वर के प्रतिपालन-गुण की कल्पना थी जिसे बाद में एक स्थायी व्यक्तित्व नियत कर लिया गया।

ी में अवतार लेते रहे हैं।

श्री कृष्ण जी इस विषय में इन दोनों से अधिक अत्याचारग्रस्त हैं। भगवद्गीता परिवर्तन
कई सीढ़ियां पार करके जिस रूप में हम तक पहुँची है उसके गहरे अध्ययन से कम से कम
ना मालूम होता है कि कृष्णजी एक एकेश्वरवादी व्यक्ति थे और उन्होने ईश्वर की सत्ता
सम्बन्ध में सर्वशक्तिमान होने का उपदेश दिया था, परन्तु महाभारत, विष्णुपुराण, भागवत-
राण आदि पुस्तकें और स्वयं गीता उनको इस रूप में प्रस्तुत करती है कि एक ओर वह विष्णु
साक्षात अवतार, सृष्टि के रचयिता और ब्रह्माण्ड के नियन्ता दिखाई देते हैं और दूसरी ओर
ी श्रुटियां उनमें सम्बद्ध करते हैं कि उन्हें भगवान तो भगवान, पवित्राचारी मनुष्य भी मानना
ंभव हो जाता है। गीता में कृष्णजी की ये उक्तियाँ हमे मिलती है :—

पितामहस्य जगतोमाता धाता पितामह ।
वेद्यं पवित्रमोंकार ऋक्‌साम यजुरेव च ॥ १७ ॥
गतिर्भर्ता प्रभु साक्षी निवास शरण सुहृत् ।
प्रभवः प्रलयः स्थान निधान बीजमव्ययम् ॥ १८ ॥
तपाम्यहमहं वर्षं निगृह्णाम्युत्सृजामि च ।
अमृतं च मृत्युश्च सद सच्चाहमर्जुन ॥ १९ ॥
(अध्याय ९)

(१७) इस जगत का पिता, माता, धाता (आधार), पितामह (बाबा) मैं हूँ जो कुछ
वित्र या जो कुछ ज्ञेय है वह और ॐकार ऋग्वेद, सामवेद तथा यजुर्वेद भी मैं हूँ। (१८)
सबकी) गति, (सबका) पालक प्रभु, साक्षी, निवास, शरण, सखा, उत्पत्ति, प्रलय, स्थिति,
धान और अव्यय बीज भी मैं हूँ। (१९) हे अर्जुन ! मैं उष्णता देता हूँ, मैं पानी को रोकता
ौर बरसाता हूँ, अमृत और मृत्यु, सत् और असत् भी मैं हूँ। (गीता-तिलक, ९ : १७-१९)

न मे विदुः सुरगणाः प्रभव न महर्षय ।
अहमादिर्हि देवानां महर्षाणा च सर्वशः ॥ २ ॥
यो मामजमनादिं च वेत्ति लोक महेश्वरम् ।
असमूढः स मर्त्यषु सर्वपापै प्रमुच्यते ॥ ३ ॥ (अध्याय १०)

(२) देवताओ के गण और महर्षि भी मेरी उत्पत्ति को नही जानते, क्योंकि देवताओं
ौर महर्षि का सब प्रकार से मैं ही आदिकारण हूँ। (३) जो जानता है कि, मैं (पृथ्वी आदि
व) लोकों का बड़ा ईश्वर हूँ और मेरा जन्म तथा आदि नहीं है, मनुष्यों में वही मोह-विरहित
ोकर सब पापों से मुक्त होता है। (गीता-तिलक, १० : २, ३)

अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः ।
अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च ॥ २० ॥
आदित्यानामहं विष्णुर्ज्योतिषां रविरंशुमान् ।
मरीचिर्मरुतामस्मि नक्षत्राणामहं शशी ॥ २१ ॥ (अध्याय १०)

(२०) हे गुडाकेश[1] ! सब भूतो के भीतर रहनेवाला आत्मा मैं हूँ, और सब भूतों का
आदि और अन्त भी मैं ही हूँ। (२१) (बारह) आदित्यो में विष्णु मैं हूँ, तेजस्वियों में किरण-

१. अर्थात् अर्जुन।

धारी सूर्य, (सात अथवा उनचास) मरुतों[1] में मरीचि और इन्द्रियों में चन्द्रमा हूँ। (गीता-तिलक १० : २०, २१)

नतदस्ति विना यत्स्यान्मया भूतं चराचरम् ॥ ३९ ॥···
विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितोजगत् ॥ ४२ ॥ (अध्याय १०)

(३९) ऐसा कोई चर-अचर भूत नहीं है जो मुझे छोड़े हो।

(४२) (संक्षेप में बतलाये देता हूँ, कि) मैं अपने एक (ही) अंश से इस सारे जगत को व्याप्त कर रहा हूँ। (गीता-तिलक, १० : ३९, ४२)

मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः संग वर्जितः।
निर्वैरः सर्व भूतेषु यः स मामेति पाण्डव ॥ ५५ ॥ (अध्याय ११)

(५५) हे पाण्डव ! जो इस बुद्धि से कर्म करता है कि सब कर्म मेरे अर्थात् परमेश्वर के हैं, जो मत्परायण और संग विरहित है और जो सब प्राणियों के विषय में निर्वैर है, वह मेरा भक्त मुझ में मिल जाता है। (गीता-तिलक ११ : ५५)

अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन्।
प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय सम्भवाम्यात्ममायया ॥ ६ ॥
यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥ ७ ॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥ ८ ॥ (अध्याय ४)

(६) मैं (सब) प्राणियों का स्वामी और जन्म विरहित हूँ, यद्यपि मेरे आत्म स्वरूप में कभी भी व्यय अर्थात् विकार नहीं होता तथापि अपनी ही प्रकृति में अधिष्ठित होकर मैं अपनी माया से जन्म लिया करता हूँ। (७) हे भारत ! जब-जब धर्म की ग्लानि होती और अधर्म की प्रबलता फैल जाती है, तब (तब) मैं स्वयं ही जन्म (अवतार) लिया करता हूँ। (८) साधुओं की संरक्षा के निमित्त और दुष्टों का नाश करने के लिए युग-युग में धर्म की संस्थापना के अर्थ मैं जन्म लिया करता हूँ। (गीता-तिलक ४ : ६, ८)

इन उक्तियों में गीता के कृष्ण ने स्पष्ट रूप में ईश्वर होने का दावा किया है।[2] परन्तु दूसरी ओर भागवत पुराण इन्हीं कृष्णजी को इस रूप में प्रस्तुत करता है कि वे नहाने में गोपियों के कपड़े चुरा लिया करते थे, उनसे विहार के लिए उतने ही शरीर उत्पन्न कर लेते थे जितनी गोपियाँ थीं। और जब शुक ऋषि से राजा परीक्षित पूछता है : "भगवान तो अवतार इसलिए लेता है कि सच्चा धर्म फैलाये, फिर यह कैसा भगवान है कि धर्म के सारे सिद्धान्तों के विरुद्ध पराई स्त्री से अवैध सम्बन्ध रखता है तो ऋषि को इस आक्षेप के दूर करने के लिए इस हीले की

---

१. हिन्दुओं की परिकल्पना में मरुत उन ४९ देवताओं का नाम है जो वायु का प्रबन्ध करते हैं इसके सरदार का नाम मरीचि है।

२. यदि गीता स्वयं इस बात की व्याख्या होती कि यह ईश्वर का कथन है और कृष्णजी उसके प्रस्तुत करनेवाले मात्र हैं तो उपरोक्त उक्तियाँ बहुधा ईश्वर की बड़ाई का कथन और कृष्णजी के ईश्वरत्व का दावा समझ न होता, परन्तु कठिनाई यह है कि यह पुस्तक स्वयं आरंभ से अन्त तक कृष्णजी के अपने उपदेश के रूप में प्रस्तुत करती है। पूरी गीता में कहीं कोई संकेत तक भी इस बात की ओर नहीं कि यह ईश्वरीय वाणी है।

आड़ मे पनाह लेनी पड़ती है कि "स्वयं देवता भी कभी-कभी संमार्ग से हट जाते हैं। उनके पाप उनके व्यक्तित्व पर उसी तरह प्रभाव नहीं डालते जिस तरह अग्नि सारी वस्तुओं को जलाने पर भी अपराधी नहीं ठहरती।"

कोई सद्बुद्धि मनुष्य यह विश्वास नही कर सकता कि किसी उच्चकोटि के धर्म शिक्षक का जीवन ऐसा अपवित्र हो सकता है, और न वह यही कल्पना कर सकता है कि किसी सच्चे धर्म प्रवर्तक ने वास्तव में अपने आप को मानवमात्र के तथा सृष्टि के प्रतिपालक के रूप में प्रस्तुत किया होगा। परन्तु कुरआन और बाइबिल के तुलनात्मक अध्ययन से यह तथ्य खुलकर हमारे सामने आ जाता है कि जातियों ने अपनी मानसिक अवनति तथा नैतिक पतन के युग में किस प्रकार संसार के श्रेष्ठतम एवं पवित्रतम मनुष्यों की जीवनी को एक ओर गन्दे से गन्दे रूप में ढाला है, ताकि स्वय अपनी त्रुटियो के लिए औचित्य का प्रमाण मिल जाये और दूसरी ओर उनसे सम्बद्ध कैसे-कैसे भ्रम-मूलक गल्प गढ़ दिये हैं। इसलिए हम समझते हैं कि यही सब-कुछ श्रीकृष्ण जी के साथ भी हुआ होगा, और उनकी यथार्थ शिक्षा और वास्तविक व्यक्तित्व उससे सर्वथा भिन्न होगा जैसा हिन्दुओ की धार्मिक पुस्तकें उसे प्रस्तुत करती हैं।

जिन महापुरुषों का नबी होना ज्ञात तथा सिद्ध है, उनमें सबसे बढ़कर अत्याचार हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर किया गया है। हज़रत ईसा अ० वैसे ही एक मनुष्य थे जैसे सब मनुष्य हुआ करते हैं। मानव होने के समस्त गुण उनमें भी उसी प्रकार विद्यमान थे जिस प्रकार हर मनुष्य मे होते हैं। अन्तर केवल इतना था कि ईश्वर ने उनको ज्ञान विवेक तथा नुबूवत और चमत्कार की शक्ति प्रदान करके बिगड़ी हुई जाति के सुधार के लिए नियुक्त किया था। परन्तु एक तो उनकी जाति ने उनको झुठलाया और पूरे तीन वर्ष भी उनके शुभ अस्तित्व का सहन न कर सकी, यहाँ तक कि ठीक युवावस्था में उनकी हत्या करने का निर्णय कर लिया। फिर जब उसने उनके बाद उनकी महिमा को स्वीकार किया तो सीमा से इतना आगे बढ़ गई कि उनको ईश्वर का बेटा अपितु सर्वथा ईश्वर बना दिया और यह विश्वास उनसे सम्बद्ध किया कि ईश्वर मसीह के रूप में इसलिए प्रगट हुआ था कि सूली पर चढ़कर मनुष्यों के पापों का प्रायश्चित करे क्योंकि मनुष्य स्वभावतः पापी था और अपने कर्म से अपने लिए मोक्ष प्राप्त न कर सकता था। अल्लाह की पनाह! एक सच्चा ईशदूत अपने पालन-कर्ता पर इतना बड़ा लाञ्छन कैसे लगा सकता था। परन्तु उसके श्रद्धालुओं ने श्रद्धा के आवेश मे उस पर यह लाञ्छन लगाया और उसकी शिक्षाओं में अपनी इच्छा के अनुसार इतना परिवर्तन किया कि आज (कुरआन के अतिरिक्त) संसार के किसी ग्रन्थ में मसीह की यथार्थ शिक्षा और स्वयं उनकी वास्तविकता का चिह्न नहीं मिलता। बाइबिल के न्यू टेस्टामेन्ट में जो पुस्तकें चार इंजीलों के नाम से पाई जाती हैं उन्हे उठाकर देख जाओ, सब मसीह के ईश्वर का अवतार, ईश्वर का बेटा या स्वयं ईश्वर होने की अशुद्ध कल्पनाओं से भरी पड़ी हैं। कहीं हज़रत मरयम को शुभ-सूचना दी जाती है कि तेरा बच्चा ईश्वर का बेटा कहलायेगा (लूका १ : ३५) कहीं ईश्वर की आत्मा कबूतर के समान यसूअ पर उतरकर आती है और पुकारकर कहती है कि यह मेरा प्यारा बेटा है (मत्ता १६ : १६)। कहीं मसीह स्वयं कहता है कि मैं ईश्वर का बेटा हूँ और तुम मुझको सर्वशक्तिमान की दाहिनी ओर बैठे देखोगे (मुरक़ुस १४ : ६२) कहीं प्रलय के बाद प्रतिफल के दिन ईश्वर के स्थान पर मसीह सिंहासन पर बैठाया जाता है और वह कर्मों के फल का निर्णय करता है (मत्ता २५ : ३१-४६) कहीं मसीह के मुँह से कहलवाया जाता है कि बाप मुझ में है और मैं बाप में हूँ (यूहन्ना १० : ३८)। कहीं इस सत्यवादी मनुष्य के मुख से ये अशुद्ध शब्द निकलवाये जाते हैं

कि "मैं ख़ुदा में से निकल कर आया हूँ (यूहन्ना ८ : ४२) । कहीं इसको और ईश्वर को सर्वथ एक कर दिया जाता है और उससे यह कथन सम्बद्ध किया जाता है कि जिसने मुझे देखा उसने बाप को देखा, और बाप मुझ में रहकर अपने काम करता है, (यूहन्ना १४ : २०६) कहीं ईश्वर की समस्त वस्तुयें मसीह को हस्तांतरित करदी जाती हैं (यूहन्ना ३ : ३५) । और ईश्व अपने ईश्वरत्व का सारा कारोबार मसीह को समर्पित कर देता है (यूहन्ना ५ : २०-२२) ।

इन विभिन्न जातियों ने अपने धर्म प्रवर्तकों को तथा सन्मार्ग दर्शकों पर यह जित लाञ्छन लगाये है उनका वास्तविक कारण वही अतिक्रमण है जिसका उल्लेख हमने आरम्भ में किया है। फिर इस बिगाड़ को जिस चीज़ से सबसे अधिक सहायता मिली वह यह थी कि इन महापुरुषों के बाद प्राय: इनकी शिक्षाओं तथा आदेशों को लिखित रूप में अंकित ही न किय गया और कभी-कभी इसकी ओर ध्यान भी दिया गया तो उनके संरक्षण का कोई विशेष प्रबन्ध ही न किया गया। अत: थोड़ा समय बीतने पर उनमें इतना मिश्रण एवं परिवर्तन हो गया कि वास्तविक और कृत्रिम में अन्तर करना असंभव हो गया। इस भाँति किसी स्पष्ट आदेश के अभाव का फल यह हुआ कि जितना-जितना समय बीतता गया, वास्तविकता पर अंधविश्वास छाता चला गया और कतिपय शताब्दियों में सम्पूर्ण वास्तविकता लुप्त हो गई, केवल गाथायें ही शेष रह गईं।

संसार के सारे सन्मार्ग-दर्शकों में यह विशिष्टता केवल हज़रत मुहम्मद सल्ल० को प्राप्त है कि आपकी शिक्षा और आपका व्यक्तित्व १३ शताब्दियों से सर्वथा अपने यथार्थ रूप में सुरक्षित है और ईश्वर की कृपा से ऐसा प्रबन्ध हो गया है कि अब इसका बदलना असम्भव है। मनुष्य के अंधविश्वास तथा उसकी विलक्षण प्रियता से कुछ दूर न था कि वह इस महापुरुष को भी जो श्रेष्टता एवं पूर्णता की उच्चतम श्रेणी को प्राप्त हो चुका था गल्प बनाकर ईश्वरत्व से किसी-न-किसी तरह युक्त कर डालती और अनुवर्तन के स्थान पर केवल विस्मय एवं उपासना का विषय बना लेती, परन्तु ईश्वर को अपने सन्देष्टाओ (पैगम्बरों) के क्रम की अन्तिम श्रेणी पर एक ऐसा पथ-प्रदर्शक भेजना अभीष्ट था जिसका व्यक्तित्व मनुष्य के लिए शाश्वत आदर्श तथा विश्वव्यापी पथ-प्रदर्शन-स्रोत हो। अतएव उसने अब्दुल्लाह के सुपुत्र हज़रत मुहम्मद सल्ल० के व्यक्तित्व को उस अत्याचार से सुरक्षित रखा जो अज्ञानी श्रद्धालुओं के हाथों अन्य नबियों तथा सन्मार्ग दर्शकों के साथ होता रहा है। एक तो आपके साथियों (सहाबा) और उनके पश्चाद्वर्ती व्यक्तियों (ताबईन) और बाद के मुहद्दिसीन (हदीस के विद्वानों) ने गत समुदायों के विपरीत, अपने नबी के जीवन चरित्र को सुरक्षित करने का स्वयं ही असाधारण प्रबन्ध किया है जिसके कारण हम आपके व्यक्तित्व को साढ़े तेरह सौ वर्ष बीत जाने पर भी आज लगभग उतने ही निकट से देख सकते हैं जितने निकट से स्वयं आपके युग के लोग देख सकते थे। परन्तु यदि पुस्तकों का वह समस्त भण्डार संसार से लुप्त हो जाये जो इस्लाम के महाविद्वानों ने वर्षों के प्रयास से संचित किया है। हदीस और जीवन चरित्र का एक पन्ना भी संसार में न रहे जिससे हज़रत मुहम्मद सल्ल० के जीवन का कुछ हाल मालूम हो सकता हो और केवल कुरआन ही शेष रह जाये तब भी हम इस ग्रन्थ से उन सारे आधारभूत प्रश्नों का उत्तर प्राप्त कर सकते हैं जो इसके लाने वाले के सम्बन्ध में एक विचारी के मस्तिष्क में उत्पन्न हो सकते हैं।

आइए अब हम देखें कि क़ुरआन अपने लाने वाले को किस रंग में पेश करता है।

१—पवित्र क़ुरआन ने रिसालत (ईश-दौत्य) के सम्बन्ध में सबसे पहले जिस प्रश्न को अत्यन्त स्पष्ट रूप से बयान किया है वह रसूल का मनुष्य होना है। क़ुरआन के अवतरण से

पहले शताब्दियों के विश्वास ने यह एक निश्चित प्रसंग बना दिया था कि मनुष्य कभी भी अल्लाह का रसूल (सन्देष्टा) अथवा प्रतिनिधि नहीं बन सकता। और संसार के सुधार के लिए जब कभी आवश्यकता होती है, ईश्वर स्वयं ही मनुष्य का रूप धारण करके प्रगट हुआ करता है या किसी फ़िरिश्तः और देवता को भेज देता है और यह कि जितने महापुरुष संसार में सुधार के लिए आये है वे सब-के-सब मनुष्य से कुछ उच्च सत्ता थे। इस विश्वास ने मनुष्य में इतनी गहरी जड़ें पकड़ ली थी कि जब कभी ईश्वर का कोई पुण्यात्मा दास ईश्वर का सन्देश सुनाने आता तो सबसे पहले लोग आश्चर्य से पूछते थे कि यह कैसा नबी है जो हमारी तरह खाता पीता, सोता और चलता-फिरता है? यह कैसा पैग़म्बर है कि हमारी तरह बीमार होता है, दु ख-सुख में पड़ता है और शोक तथा आनन्द से प्रभावित हुआ करता है। यदि ईश्वर को हमारा पथ-प्रदर्शन अभीष्ट होता तो वह हम जैसा एक निर्बल मनुष्य क्यों भेजता? क्या ईश्वर स्वयं नहीं आ सकता था? यह प्रश्न प्रत्येक नबी के आने पर उठते थे और उन्हीं को युक्ति बनाकर ये लोग नबियों का इन्कार किया करते थे। हज़रत नूह अ० जब अपनी जाति वालों की ओर सन्देश लेकर आये तो कहा गया :

"यह व्यक्ति इसके अतिरिक्त कुछ नहीं है कि तुम ही जैसा एक मनुष्य है। जो तुम पर श्रेष्ठता प्राप्त करना चाहता है, अन्यथा यदि ईश्वर चाहता तो फ़िरिश्तों को उतारता। यह अनोखी बात तो हमने अपने बाप दादा से कभी सुनी ही न थी (कि मनुष्य ईश्वर का पैग़म्बर बनकर आये)" [कुरआन, सूर : २३, आयत २४]

जब हज़रत हूद अपनी जाति की ओर पथ प्रदर्शन के लिए भेजे गये तो उन पर भी सबसे पहले यही आक्षेप हुआ :

"यह व्यक्ति इसके अतिरिक्त कुछ नहीं कि एक मनुष्य है तुम ही जैसा वही खाता है, जो तुम खाते हो, वही कुछ पीता है जो तुम पीते हो। यदि तुमने अपने जैसे एक मनुष्य का आज्ञा-पालन किया तो बड़े टोटे में रहोगे।" (कु० २३:३३)

जब हज़रत मूसा अ० और हारून अ० फ़िरऔन के पास सत्य-सन्देश लेकर पहुँचे तो उनकी बात मानने से भी इसी आधार पर इन्कार किया गया :

"क्या हम अपने ही जैसे दो मनुष्यों पर ईमान ले आयें।" (कु० २३:४७)

अतएव ठीक यही प्रश्न उस समय भी उठा जब मक्का के एक निरक्षर मनुष्य ने चालीस वर्ष तक मौन जीवन व्यतीत करने के बाद सहसा घोषित किया कि मैं ईश्वर की ओर से रसूल नियुक्त किया गया हूँ। लोगों की समझ में यह बात न आती थी कि एक व्यक्ति जो हमारी तरह हाथ, पाँव, आँख, नाक और शरीर तथा प्राण रखता है, कैसे अल्लाह का रसूल हो सकता है। वे चकित होकर पूछते थे :

"यह कैसा रसूल है जो खाना खाता है, और बाज़ारों में चलता-फिरता है? क्यों न इस-पर कोई फ़िरिश्तः उतरा कि उसके साथ रहकर लोगों को डराता? या कम-से-कम उसके लिए कोई कोष ही उतारा जाता या उसके पास कोई बाग़ होता जिसके फल वह खाता।"

(कु० २५:६-७)

यह भ्रम चूंकि रिसालत (ईशदौत्य) के स्वीकार किये जाने में सबसे अधिक बाधक हो रहा था इसलिए कुरआन में पूर्ण रूप से इसका खण्डन किया गया और युक्तियों के साथ बताया गया कि मनुष्य के पथ-प्रदर्शन के लिए मनुष्य ही अधिक उपयुक्त हो सकता है क्योंकि सन्देष्टा भेजने का उद्देश्य केवल शिक्षा देना ही नहीं है अपितु स्वयं व्यवहार में लाकर दिखाना और अनु-

करण व अनुवर्तन के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करना भी है। और इस उद्देश्य के लिए यदि फ़िरिश्ता और कोई अलौकिक व्यक्ति भेजा जाये जिसमें मानुषिक विशेषतायें तथा त्रुटियां न हों तो मनुष्य कह सकता है कि हम उसके समान क्यों कर आचरण कर सकते हैं जब कि वह हमारी भांति आत्मा एवं वासना ही नहीं रखता और उसकी प्रकृति में वे प्रवृत्तियां ही नहीं हैं जो मनुष्य को पाप की ओर प्रवृत्त करती हैं।

"यदि भूतल पर फ़िरिश्ते चलते-फिरते और आबाद होते तो हम भी उनपर आकाश से किसी फ़िरिश्ते ही को रसूल बनाकर उतारते।"

(क़ु०, १७:६४)

फिर स्पष्ट रूप से बताया कि इससे पहले जितने नबी एवं संमार्ग-दर्शक विभिन्न जातियों में भेजे गये हैं वे सब ऐसे ही मनुष्य थे जैसे हज़रत मुहम्मद सल्ल० हैं और उसी प्रकार खाते पीते और चलते-फिरते थे, जिस प्रकार प्रत्येक मनुष्य खाता-पीता और चलता-फिरता है।

"हमने तुमसे पहले जिन लोगों को भेजा था वे भी मनुष्य ही थे जिनपर हम 'वह्य' (ईश्वरवाणी) भेजते थे, यदि तुम नहीं जानते तो ज्ञान रखनेवालों से पूछ लो। हमने उन (सन्देष्टाओं) को ऐसे शरीर नहीं दिये थे कि वे खाना न खाते हों और न वे सदैव रहने वाले थे।"

(क़ु०, २१:७-८)

"और हमने तुमसे पहले जितने पैग़म्बर भेजे वे सब खाना खाते थे और बाज़ारों में चलते फिरते थे।"

(क़ु०, २५:२०)

"हमने तुमसे पहले भी बहुत से रसूल भेजे थे और उनके लिए हमने पत्नियां भी पैदा की थीं और उनको सन्तान भी दी थी।"

(क़ु०, १३:३८)

इसके बाद हज़रत मुहम्मद सल्ल० को हुक्म दिया गया कि तुम अपने मनुष्य होने की स्पष्ट घोषणा करो ताकि आपके पीछे लोग आपको भी उसी तरह ईश्वरत्व से युक्त न करने लगें जिस तरह आप से पहले अन्य नबियों को कर चुके थे। अतएव क़ुरआन में अनेक स्थान पर यह आयत आई है:

"हे मुहम्मद! कह दो कि मैं तो केवल तुम ही जैसा एक मनुष्य हूं, मुझपर 'वह्य' की जाती है कि तुम्हारा इलाह (पूज्य) एक ही इलाह है।"

इन स्पष्टोक्तियों ने केवल हज़रत मुहम्मद सल्ल० ही के सम्बन्ध में समस्त अशुद्ध विश्वासों का द्वार बन्द नहीं किया अपितु पूर्ववर्ती नबियों तथा धर्मात्माओं के विषय में भी इस भ्रान्ति को दूर कर दिया।

(२) दूसरी बात जिसका वर्णन क़ुरआन मजीद में स्पष्ट रूप से किया गया है, नबी की शक्ति एवं सामर्थ्य का विषय है। अज्ञानता अथवा अनभिज्ञता ने जब ईश्वर-प्राप्ति को ईश्वरत्व का पर्यायवाची बना दिया तो स्वभावतः उसके साथ यह विश्वास भी उत्पन्न हो गया कि ईश्वर-सिद्ध लोगों में असाधारण शक्तियां होती हैं। ईश्वर के कारख़ाने में उन्हें कुछ विशेष अधिकार प्राप्त होते हैं, कर्मों के प्रतिफल में वे हस्तक्षेप कर सकते हैं, परोक्ष तथा प्रत्यक्ष सबका उन्हें ज्ञान होता है, भाग्य के निर्णय उनकी इच्छा एवं सम्मति से बदलते-बदलते हैं। हानि-लाभ पर उन्हें प्रभुत्व प्राप्त होता है, पाप-पुण्य के वे अधिकारी होते हैं। ब्रह्माण्ड की समस्त शक्तियां उनके बस में होती हैं और वे एक दृष्टि में लोगों के हृदयों को बदलकर उनकी पथ-भ्रष्टता एवं

अन्धकार को दूर कर सकते हैं। ऐसे ही विचार थे जिनके आधार पर लोग हज़रत मुहम्मद सल्ल० से भी बड़ी ही विचित्र मांगें किया करते थे अतएव कुरआन में है:

"उन्होंने कहा: 'हम तुम पर कदापि ईमान न लायेंगे जब तक तुम हमारे लिए पृथ्वी में से एक स्रोत न निकाल दो, या तुम्हारे लिए खजूरों और अंगूरों का एक बाग़ हो और उसमें तुम नहरें जारी कर दो या जैसा कि तुम कहा करते हो आकाश को टुकड़े-टुकड़े करके हम पर गिरा दो, या ईश्वर और फ़िरिश्तों को हमारे सम्मुख ला खड़ा करो, या तुम्हारे लिए एक स्वर्ण-गृह बन जाये, या तुम आकाश पर चढ़ जाओ और हम तुम्हारे चढ़ने पर भी उस समय तक विश्वास न करेंगे जब तक कि तुम हमारे ऊपर ऐसा एक लेख न उतारो जिसे हम पढ़ें।' हे मुहम्मद! इनसे कहो, महिमावान् है मेरा 'रब', मैं इसके अतिरिक्त क्या हूँ कि एक मनुष्य हूँ जो रसूल भी है।

(क़ु०, १७:९०-९३)

ईश्वर-प्राप्ति तथा माहात्म्यक विषय में जितनी अशुद्ध कल्पनायें लोगों में पाई जाती हैं, ईश्वर ने उन सबका खण्डन किया और साफ़ बता दिया कि रसूल का ईश्वरीय शक्तियों अथवा ईश्वरीय कृत्यों में लेशमात्र भी कोई भाग नहीं है। अतएव कहा कि नबी हमारी आज्ञा के बिना दूसरों को क्षति से बचाना तो अलग रहा स्वयं अपने-आपको क्षति से सुरक्षित रखने का सामर्थ्य नहीं रखता।

"हे सन्देष्टा! यदि ईश्वर तुम्हें कष्ट पहुँचाये तो उसके अतिरिक्त कोई उसे दूर करने वाला नहीं है और यदि वह तुम्हारे साथ कोई भलाई करना चाहे तो वह (सर्व-शक्तिमान) प्रत्येक वस्तु का सामर्थ्य रखता है।"

(सूरः अल-अनआम आयत १७)

"हे मुहम्मद! कहो मैं तो अपने के लिए भी भले या बुरे का सामर्थ्य नहीं रखता, सिवाय उसके जो अल्लाह चाहे।"

(क़ु०, १०:४९)

और कहा कि रसूल के पास अल्लाह के ख़ज़ानों की कुंजियाँ नहीं हैं और न वह परोक्ष का ज्ञान रखता है और न ही उसे अस्वाभाविक शक्तियाँ प्राप्त हैं।

"हे मुहम्मद! कहो, मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न मैं परोक्ष का ज्ञान रखता हूँ और न मैं तुमसे यही कहता हूँ कि मैं फ़िरिश्तः हूँ (अर्थात् मानुषिक अपूर्णताओं से रहित हूँ) मैं तो केवल उसका पालन करता हूँ जो मुझ पर 'वह्य' की जाती है।"

(क़ु०, ६:५०)

"और यदि मैं परोक्ष का ज्ञान रखने वाला होता तो अपने लिए बहुत सी भलाइयाँ समेट लेता और मुझको कोई बुराई न पहुँचती। मैं तो केवल एक सचेत करने वाला हूँ और जो मेरी बात मान लें उनको शुभ सूचना देने वाला हूँ।

(क़ु०, ७:१८८)

और कहा कि नबी को विपाक-दिवस में पूछताछ अथवा कर्म-फल में भी हस्तक्षेप का कुछ अधिकार नहीं। उसका काम केवल सन्देश पहुँचाना और सन्मार्ग दिखाना है, आगे पूछताछ तथा पकड़ करना और लोगों को प्रतिफल देना ईश्वर का काम है।

"हे मुहम्मद! उन लोगों से कहो, कि मैं अपने रब की ओर से खुली दलील पर हूँ और

तुमने उसे भुठला दिया है। अब यह बात मेरे अधिकार में नहीं है कि
तुम जल्दी मचा रहे हो वह मैं तुम्हारे ऊपर उतार दूँ। निर्णय तु
है, वही वास्तविक बात बयान करता है और वही उत्तम निर्णायक है।
यह चीज़ मेरे अधिकार में होती जिसके लिए तुम जल्दी मचा रहे हो तो
कभी का निर्णय हो चुका होता, परन्तु अल्लाह ही अत्याचारियों
जानता है।"

"हे नबी ! तुम्हारा काम केवल सन्देश पहुँचा देना है, हिसाब

"हे सन्देष्टा ! हमने लोगों (के पथ-प्रदर्शन) के लिए तुम पर यह
है, अब जो कोई सन्मार्ग ग्रहण करता है, अपने ही लिए अच्छा करता
में पड़ता है अपने ही हक़ में बुरा करता है और तुम उनपर कोई हवालेदा

और *यह कि लोगों के दिलों को फेर देना और जो लोग सत्य-*
न हों उनमे ईमान पैदा कर देना नबी के बस की बात नहीं है। वह
अर्थ में हैं कि उपदेश देने तथा चेताने का जो हक़ है उसको वह पूरा-पूरा
जो देखना चाहे उसे सन्मार्ग दिखा देता है।

"तुम मृतकों को नहीं सुना सकते न बहरों तक शब्द पहुँचा स
फेर कर लौट जायें। और न तुम अन्धों को गुमराही से निकाल कर सम
तुम तो केवल उन्हीं लोगों को सुना सकते हो जो हमारी निशानियों पर
आज्ञाकारी हो जाते हैं।"

"तुम समाधि के मृतकों को सुनाने वाले नहीं हो, तुम तो केवल स
और हम ने तुमको सत्य के साथ शुभसूचना देने वाला तथा डराने वाला ब

फिर यह भी साफ़ बता दिया कि नबी को जो कुछ आदर-सम्मान
है सब इस कारण है कि वह ईश्वर का आज्ञापालन करता है, उसके आदे
लम्बन करता है और जो-कुछ कलाम उस पर उतारा जाता है उसे जों-का
तक पहुँचा देता है। अन्यथा यदि वह आज्ञापालन से विमुख हो और ईश्वर
से *गढ़ कर बातें मिला दे तो उसकी कोई विशेषता शेष नहीं रहती।*

"और यदि तुमने उनकी इच्छाओं का अवलम्बन किया, उस ज्ञान
प्राप्त हो चुका है, तो अवश्य ऐसी अवस्था में तुम अन्यायी होगे।"

"और यदि तुमने उस ज्ञान के होते हुये भी जो तुम्हें प्राप्त है उन
लम्बन किया, तो तुम्हें अल्लाह के प्रकोप से बचाने वाला कोई संरक्षक-मि
मिलेगा।"

"हे मुहम्मद ! उनसे कहो : मुझको इस वाणी में अपनी ओर से कुछ
अधिकार नहीं है। मैं तो केवल उस बात का अनुसरण करता हूँ जो मुझपर

यदि मैं अपने पालनकर्ता की अवज्ञा करूँ तो मुझे एक महान दिवस के प्रकोप का भय है।"

(कु०, १०:१५)

ये बातें इसलिए नहीं कही गईं कि अल्लाह की पनाह! रसूल से किसी अवज्ञा, अपभ्रंश अथवा गोपन का लेशमात्र भी सन्देह था। वास्तव में इनसे अभीष्ट संसार पर इस तथ्य का स्पष्टीकरण था कि नबी को ईश्वर का जो सामीप्य प्राप्त है उसका कारण यह नहीं कि नबी से ईश्वर की कोई नातेदारी है अपितु उसके सामीप्य का कारण यह है कि वह अल्लाह का अत्यन्त आज्ञाकारी तथा हृदय से उसका सेवक है।

(३) तीसरी बात जिसका उल्लेख स्पष्ट रूप से कुरआन में बार-बार किया गया है यह है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० कोई नये नबी नहीं हैं, अपितु नबियों के गरोह के एक व्यक्ति और उस नबूवत (ईशदौत्य) की शृंखला की एक कड़ी है जो सृष्टि के आरम्भ से लेकर आप (सल्ल०) के नबी होने तक जारी रहा। और जिसमें प्रत्येक जाति और प्रत्येक युग के नबी और रसूल सम्मिलित है। कुरआन नबूवत और रिसालत (ईशदौत्य) को किसी एक व्यक्ति या एक जाति या एक देश से विशिष्ट नहीं करता, अपितु वह स्पष्ट घोषणा करता है कि अल्लाह ने प्रत्येक जाति तथा प्रत्येक देश एवं प्रत्येक युग में ऐसे पुण्यात्मा पैदा किये हैं जिन्होंने मनुष्य को सन्मार्ग की ओर आमन्त्रित किया है और पथ भ्रष्टता के कुपरिणाम से डराया है।

"कोई जाति ऐसी नहीं हुई है जिसमें कोई सचेत करने वाला न आया हो।"

(कु०, ३५:२४)

"और हमने प्रत्येक जाति में एक सन्देष्टा भेजा जिसने सन्देश दिया कि अल्लाह की बन्दगी करो और ताग़ूत की बन्दगी से बचो।'

(कु०, १६:३६)

इन्हीं पैगम्बरों तथा सचेत करने वालों में से एक हज़रत मुहम्मद सल्ल० भी हैं, अतएव अनेक स्थान पर आताहै:

"यह एक सचेत करने वाला है पूर्ववर्ती सचेत करने वालों में से।"

(कु०, ५३:५६)

"(हे मुहम्मद) निस्सन्देह तुम पैग़म्बरों में से हो।"

(कु० ३६:३)

"हे मुहम्मद! कहो मैं कोई निराला रसूल नहीं हूँ। मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या मामला किया जायेगा और तुम्हारे साथ क्या व्यवहार होगा। मैं उस वस्तु का अनुसरण करता हूँ जो मुझ पर 'वह्य' की जाती है और मैं केवल एक सचेत करने वाला हूँ खुल्लमखुल्ला।"

(कु० ४६:९)

"मुहम्मद केवल एक रसूल हैं और इस से पहले भी रसूल हो चुके हैं।"

(कु० ३:१४३)

यही नहीं अपितु यह भी कह दिया कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का सन्देश वही सन्देश है जिस की ओर सृष्टि के आरम्भ से प्रत्येक सत्य का बुलावा देने वाला बुलाता रहा है। और आप उसी प्राकृतिक धर्म का उपदेश देते रहे हैं जिसका उपदेश सदैव ही अल्लाह के प्रत्येक नबी और रसूल ने दिया है।

"कहो हम ईमान लाये अल्लाह पर और उस शिक्षा पर जो हमारी ओर उतारी गई है और उस शिक्षा पर जो इबराहीम, इसमाईल, इसहाक़, याकूब और उनकी सन्तान पर उतारी

"हे मुहम्मद ! हमने तुम पर सत्य के साथ यह किताब उतारी है ताकि तुम अल्लाह के बताये हुये नियमों के अनुसार निर्णय करो और न्यास भंग करने वालों के वकील न बनो।"

(क़ु० ४:१०५)

—अल्लाह के दीन को इस प्रकार क़ायम कर देना कि मानव जीवन की सम्पूर्ण व्यवस्था इसी की अधीन हो और दूसरे समस्त तरीके उसके मुक़ाबिले मे दब कर रह जायें।

"वह ईश्वर ही है जिसने अपने रसूल को मार्ग-दर्शन एवं सत्यधर्म के साथ भेजा ताकि उसे दीन की पूरी जिन्स पर प्रभुत्व प्राप्त करादे।"

(क़ु० ४८:२८)

इस प्रकार नबी के काम का यह विभाग राजनीति न्यायविधि, आचार-विचार एवं संस्कृति के सुधार तथा अच्छी सम्यता की स्थापना के सब पहलुओं पर हावी हो जाता है।

५—हज़रत मुहम्मद सल्ल० का यह कार्य किसी एक जाति, देश अथवा काल के लिए *विशिष्ट नहीं है अपितु समग्र मानवमात्र तथा प्रत्येक युग के लिए सर्वसामान्य है।*

"हे मुहम्मद ! हमने तुमको सारे मनुष्यों के लिए सचेत करने वाला तथा शुभ सूचना देने वाला बनाकर भेजा है। परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।"

(क़ु०, ३४:२८)

"हे मुहम्मद ! कहो कि हे लोगो ! मैं तुम सबकी ओर अल्लाह का रसूल हूँ, उस अल्लाह का जो आकाशों तथा पृथ्वी के राज्य का स्वामी है, जिसके अतिरिक्त कोई इलाह (पूज्य) नहीं, जो मारने और जिलाने वाला है। अतएव ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके रसूल 'उम्मी नबी' पर जो अल्लाह और उसकी बातों पर ईमान रखता है, और उसका अनुवर्तन करो, आशा है कि तुम सीधी राह पालोगे।"

(क़ु० ७:१५८)

"(हे मुहम्मद ! कहो) और मेरी ओर यह क़ुरआन वह्य किया गया है ताकि मैं इसके *द्वारा तुमको सचेत करूँ और जिस जिस को यह पहुँचे।"*

(क़ु०, ६:१९)

"यह (क़ुरआन) तो एक उपदेश है सारे संसार के लिए—प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए जो तुम में से सीधा चलना चाहे।"

(क़ु०, ८१:२७-२८)

६—हज़रत मुहम्मद सल्ल० की नुबूवत की एक और विशेषता क़ुरआन हमें यह बताता है कि उनपर नुबूवत और रिसालत का सिलसिला समाप्त कर दिया गया और उसके बाद *संसार को किसी अन्य नबी की आवश्यकता शेष न रही।*

"मुहम्मद तुम्हारे पुरुषों में से किसी के पिता नहीं हैं परन्तु वह अल्लाह के रसूल और नबियों के (सिलसिले को) समाप्त करने वाले हैं।"

(क़ु०,३३:४०)

यह वस्तुतः अनिवार्य फल है हज़रत मुहम्मद सल्ल० की नुबूवत की सर्वव्यापकता, सर्वकालिकता तथा धर्म की पूर्णता का। चूंकि क़ुरआन के उपरोक्त वर्णन की दृष्टि से हज़रत मुहम्मद सल्ल० की नुबूवत अखिल संसार के लिए है न कि एक जाति के लिए और सदैव के लिए है न कि एक विशेष युग के लिए और आपके द्वारा वह कार्य भी समाप्त हो गया जिसके लिए संसार में नबियों के आने की आवश्यकता थी, अतः यह सर्वथा यथोचित बात थी कि आप

पर नुबूवत के सिलसिले को समाप्त कर दिया गया। इस विषय को स्वयं हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने सत्यवित-शैली में एक 'हदीस' में स्पष्ट किया है। कहते है : "मेरी मिसाल नबियों में ऐसी है मानो किसी व्यक्ति ने एक अत्यन्त सुन्दर भवन बनाया और पूरा भवन बनाकर केवल एक ईंट की जगह छोड़ दी। अब जो लोगों ने उसके चारों ओर चक्कर लगाया तो वह रिक्त स्थान उन्हें खटकने लगा और वे कहने लगे कि यदि यह अन्तिम ईंट भी रख दी जाती तो भवन पूर्ण हो जाता। सो वह अन्तिम ईंट जिसका स्थान नुबूवत के भवन में रिक्त रह गया था, मैं ही हूँ और अब मेरे पीछे कोई 'नबी' आने वाला नहीं है।"

इस मिसाल से नुबूवत की समाप्ति का कारण साफ समझ में आ जाता है। जब धर्म पूर्ण हो चुका। अल्लाह की आयतें स्पष्ट रूप से बयान हो चुकी, आदेश एव निषेध, विश्वास तथा उपासनायें, संस्कृति एवं सामाजिकता, शासन एव राजनीति, सारांश यह कि मानव जीवन के प्रत्येक विभाग के विषय मे पूरे-पूरे आदेश दे दिये गये। और ससार के सम्मुख ईश्वरवाणी तथा अल्लाह के रसूल का शुभ आदर्श-जीवन इस भाँति प्रस्तुत कर दिया गया कि हर प्रकार के गोपन और परिवर्तन से विशुद्ध है और प्रत्येक युग मे इसके द्वारा सीधी राह पाई जा सकती है। तो नुबूवत की कोई आवश्यकता शेष नहीं रही, केवल नवजीवन तथा चेताने की आवश्यकता रह गई है, जिसके लिए सत्यवादी वेत्ताओं तथा सत्यनिष्ठ ईमान वालो का गरोह पर्याप्त है।

७—अन्तिम प्रश्न जिसका समाधान अभीष्ट है, यह है कि इस ग्रन्थ का लाने वाला व्यक्तिगत रूप मे किस आचार का व्यक्ति था ? इस प्रश्न के उत्तर मे कुरआन ने अन्य प्रचलित ग्रन्थों के समान अपने लाने वाले की प्रशसा मे अत्योक्ति से काम नहीं लिया है, न आपकी प्रशंसा को वार्तालाप का एक पृथक विषय बनाया है। अल बत्ता बात-बात मे केवल सकेततः हज़रत मुहम्मद सल्ल० की नैतिक विशेषतायें व्यक्त की है जिनसे अनुमान लगाया जा सकता है कि उस शुभ अस्तित्व मे मानव श्रेष्ठता की उत्तम विशेषतायें विद्यमान थी।

(१) वह बताता है कि उसका लाने वाला सुशीलता की पराकाष्ठा को प्राप्त हो चुका था :

"और हे मुहम्मद ! निस्सन्देह तुम शिष्टाचार की उत्तम श्रेणी पर हो।"

(कु०, ६८:४)

(२) वह बताता है कि उसका लाने वाला एक ऐसा दृढ़-सकल्प, और प्रत्येक अवस्था मे अल्लाह पर भरोसा रखने वाला मनुष्य था कि जिस समय उसकी सम्पूर्ण जाति उसे मिटा देने पर तुल गई थी और वह केवल एक समर्थक के साथ एक गुफा मे शरण लेने पर बाध्य हुआ था, उस कठिन विपत्ति के समय भी उसने साहस न छोड़ा और अपने सकल्प पर दृढ़ रहा।

"याद करो जब कि काफ़िरों ने उसको निकाल दिया था, जब कि वह गुफा मे केवल एक मनुष्य के साथ था, जब कि वह अपने साथी से कह रहा था "रज न करो, अल्लाह हमारे साथ है।"

(कु०, ९:४०)

(३) वह बताता है कि उसका लाने वाला एक अत्यन्त विशाल-हृदय, उदार एवं महात्मा व्यक्ति था जिसने अपने निकृष्टतम शत्रु के लिए भी मुक्ति की प्रार्थना की और अन्ततः अल्लाह को उसे अपना यह अटल फैसला सुना देना पड़ा कि वह उन लोगों को क्षमा न करेगा।

"चाहे तुम उनके लिए क्षमादान की याचना करो अथवा न करो, यदि तुम सत्तर बार भी उनके लिए क्षमा की प्रार्थना करोगे अल्लाह उन्हें क्षमा न करेगा।" (कु० ९:८०)

क़ुरआन क्या है ?

मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ

क़ुरआन क्या है ?

मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ

क़ुरआन का परिचय, क़ुरआन का अवतरण, क़ुरआन का संकलन, क़ुरआन एक प्रमाणिक सुरक्षित ग्रन्थ है, वर्णन-शैली और साहित्य, क़ुरआन का दार्शनिक सिद्धान्त, क़ुरआन अल्लाह है, सोचने की बातें।

क़ुरआन क्या है ?

(मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ)

क़ुरआन का परिचय

क़ुरआन साधारण किताबों की तरह कोई किताब नहीं है, बल्कि यह किताब अपने विषय, वर्णन-शैली, क्रम आदि की दृष्टि से संसार की दूसरी किताबों से बिलकुल भिन्न है। इस किताब को समझने के लिए जहाँ और बहुत-सी बातें ज़रूरी हैं, वहीं यह भी आवश्यक है कि आदमी इस किताब की वही हैसियत क़बूल करके इसका अध्ययन करे जो हैसियत इसके पेश करनेवाले ने बयान की है। अध्ययन के बाद हर एक व्यक्ति को यह हक़ हासिल है कि वह अपने अध्ययन से जिस नतीजे पर पहुँचा हो उसके अनुसार इस किताब के बारे में राय क़ायम करे। परन्तु यदि कोई व्यक्ति अध्ययन से पहले ही अपनी ओर से इस किताब के बारे में कोई राय क़ायम कर लेता है, तो वह इस किताब के समझने में असमर्थ रहेगा।

इस किताब के पेश करने वाले (अर्थात् हज़रत मुहम्मद सल्ल०) का बयान है कि यह किताब अल्लाह की ओर से उतरी है। यह ईश्वरीय ग्रन्थ है। इसका प्रत्येक शब्द अल्लाह की ओर से अवतरित हुआ है। यह किताब मनुष्य को सीधा और सच्चा मार्ग दिखाने के लिए उतारी गई है। ज़मीन में मनुष्य को उसके स्रष्टा ने एक विशेष उद्देश्य के अंतर्गत बसाया है। उसने मनुष्य को सोचने-समझने की शक्ति प्रदान की। संसार में जीवन-यापन के लिए जिन चीज़ों की आवश्यकता थी उसका उचित प्रबन्ध किया। मानव-जाति को सीधा मार्ग दिखाने, उसे उसके दायित्वों से परिचित कराने और उसे यथार्थ ज्ञान प्रदान करने के लिए आरम्भ से ही नबियों का सिलसिला जारी किया। नबियों पर अपनी किताबें उतारीं। मनुष्य को इस बात की स्वतन्त्रता दी कि वह संसार में जिस प्रकार चाहे रहे। परन्तु इस स्वतन्त्रता का अर्थ यह कदापि नहीं है कि मनुष्य वास्तव में स्वतन्त्र है। उसे यह स्वतन्त्रता केवल इसलिए दी गई है ताकि उसका रब उसकी परीक्षा ले कि वह अपनी स्वतन्त्रता का प्रयोग किस प्रकार करता है। अब यदि उसे अपने कर्तव्यों का ज्ञान है और वह अल्लाह के दिखाये हुए मार्ग पर चलता है, तो उसे सांसारिक जीवन में भी वास्तविक शान्ति मिलेगी और आख़िरत में भी जब वह अपने रब के पास हाज़िर होगा, उसे सुख का वह स्थान प्राप्त होगा जिसका नाम जन्नत है। परन्तु यदि वह अल्लाह के दिखाये हुए जीवन-पथ को नहीं अपनाता और उसके भेजे हुए आदेशों की अवहेलना करता है, तो ऐसे लोग संसार में भी अशान्ति और बिगाड़ का कारण बनेंगे और आख़िरत में भी वे दण्ड के भागी होंगे अल्लाह उन्हें अज़ाब और विपदा के आगार में फेंक देगा जिसका नाम जहन्नम है।

अल्लाह के पैग़म्बर प्रत्येक जाति में हुये हैं[1] समस्त नबियों की शिक्षा एक ही रही है।

---

१. दे० १०:४७(सूर: १० आयत ४७); १३:७; ३०:४७; ३५:२३-२४; १४:४।

उनकी मूल शिक्षाओं में कोई अन्तर न था, सब का दीन (धर्म) एक था। सब ने जिस मार्ग की ओर लोगों को बुलाया, वह अल्लाह की बन्दगी का मार्ग था। प्रत्येक नबी का यह कर्तव्य रहा है कि वह लोगों को सत्य की ओर बुलाये फिर जो लोग सत्य को अपनायें उन्हें संगठित करके एक ऐसा गरोह बनाये जो स्वयं अल्लाह के आदेशों का पालन करने वाला हो और उसकी कोशिश यह हो कि दुनिया में अल्लाह के आज्ञापालन की व्यवस्था स्थापित हो, लोगों को अवज्ञा से रोका जाये। पैग़म्बरों ने अपने-अपने समय में इस मिशन को पूरी तरह अदा किया। परन्तु होता यही रहा कि लोगों की एक बड़ी संख्या उनकी बात मानने के लिए तैयार न हुई। और जिन लोगों ने सत्य को अपनाया, वे भी धीरे-धीरे बिगड़ते ही गये यहाँ तक कि उनके कुछ समुदायों ने तो अल्लाह के भेजे हुए आदेशों को बिलकुल ही गुम कर दिया और कुछ ने अल्लाह के आदेशों में बहुत-कुछ परिवर्तन कर डाला। उनमें उन्होंने बहुत-कुछ अपनी ओर से बढ़ा-चढ़ा दिया। और आज प्रमाणित एवं शुद्ध रूप में उनके पास कुछ नहीं है।

अन्त में अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद सल्ल० को उसी काम के लिए रसूल बनाकर उठाया जिस काम के लिए पिछले नबी आये थे। हज़रत मुहम्मद सल्ल० सातवीं शताब्दी ईसवी में अरब देश में पैदा हुये। आपको अल्लाह ने संसार के सारे मनुष्यों के लिए रसूल बनाकर भेजा[1]। हज़रत मुहम्मद सल्ल० का कर्तव्य यह था कि लोगों को सत्य की ओर बुलायें और जो लोग सत्य को ग्रहण कर लें उन्हें संगठित करके एक ऐसा गरोह बनाएं जो न केवल यह कि अपने जीवन को अल्लाह के आदेशानुसार व्यवस्थित करे बल्कि दूसरे लोगों को भी सत्य का आमन्त्रण दे, उन्हें जीवन का सीधा और सच्चा मार्ग दिखाये। और दुनिया से बिगाड़ दूर करने की कोशिश करे। क़ुरआन वास्तव में इसी आमन्त्रण और मार्ग-दर्शन की किताब है जो अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर उतारी है।

क़ुरआन का अवतरण

क़ुरआन २३ वर्ष की अवधि में आवश्यकतानुसार थोड़ा-थोड़ा करके विभिन्न अवसरों पर उतरा है। हज़रत मुहम्मद सल्ल० को अल्लाह ने जब नुबूवत प्रदान की और आपको इस कार्य पर नियुक्त किया कि आप लोगों को सच्चे दीन (धर्म) की ओर बुलायें, और इस महान् कार्य का आरम्भ अपनी ही बस्ती से करें, तो इस आरम्भिक समय में जिस प्रकार के आदेशों की आवश्यकता थी उसी प्रकार के आदेशों का अवतरण हुआ। आरम्भिक आदेश और शिक्षायें छोटे-छोटे बोलों के रूप में अवतीर्ण हुये। उनकी भाषा में अत्यन्त माधुर्य, सरसता और प्रवाह था। उन्हें सुनने के लिए मानवीय आकांक्षा विह्वल हो उठती थी। उनमें यद्यपि व्यापक सत्यता और नैतिकता के मौलिक एवं व्यापक सिद्धान्तों का वर्णन होता था परन्तु जिस प्रकार अल्लाह की ओर से उतरने वाले इन बोलों की भाषा अरबी थी उसी प्रकार इनमें जो दृष्टान्त और प्रमाण प्रस्तुत किये जा रहे थे वे वही थे जिनसे अरब के लोग भली-भाँति परिचित थे। समस्त वार्त्ताओं का सम्बन्ध उन ही के वातावरण से था। उन ही के विचार एवं कल्पना सम्बन्धी खराबियों और उन ही के नैतिक एवं सामाजिक बिगाड़ पर प्रत्यक्षतः प्रकाश डाला जा रहा था।

फिर आगे चलकर सत्य और असत्य में संघर्ष हुआ। सत्य के विरोधियों ने क़ुरआन की को... चाहा। उन्होंने इसकी पूरी कोशिश की कि लोग हज़रत मुहम्मद सल्ल० की

[1] ३४ : २८; ७: १५८; २१ : १०७।

बात न सुनें। नबी सल्ल० जिस मिशन को अदा करने को उठे थे उसे असफल बनाने के लिए सारे हथकण्डे अपनाये गये। सत्य के अनुयायियों को हर प्रकार की तकलीफ़ें पहुंचाई गईं। उन्हें तरह-तरह से सताया गया। यहाँ तक कि उन्हें अपना घर-बार त्याग कर हबशः (Abyssinia) और मदीना की ओर हिजरत करनी पड़ी। इन आपदाओं और अत्याचारों के बावजूद सत्य का प्रकाश फैलता गया। और सत्य के अनुयायियों की संख्या बढ़ती ही गई। सत्य और असत्य के संघर्ष की लम्बी अवधि में अल्लाह की ओर से क़ुरआन के जो हिस्से उतरे हैं वे अत्यन्त प्रभावशाली थे। उनमें वह ओज, बल और प्रवाह था जिसकी मिसाल साहित्य-जगत में नहीं मिलती। एक दरिया था जो पूरे वेग से बह रहा था। एक निर्झर था जिसकी जल-धाराओं का नाद लोगों में नवीनतम जीवन का संचार कर रहा था।

क़ुरआन के जो हिस्से इस कालावधि में उतरे उनमें ईमान वालों को उनके कर्तव्यों का स्मरण कराया गया। उन्हें सफलता की शुभ-सूचनायें दी गईं। साहस और आत्म-बल प्रदान किया गया ताकि वे अल्लाह के मार्ग में हर प्रकार के संकटों और आपदाओं का डट कर मुक़ाबिला कर सकें। इसके साथ-साथ उन लोगों को जो सत्य के विरोधी बनकर खड़े हुये थे चेतावनियाँ दी गईं कि वे सत्य को अपनायें। और सत्य के मार्ग में रुकावटें खड़ी करने से बाज़ आ जायें। उन्हें उन प्राचीन जातियों के परिणामों से डराया गया जिनके इतिहास से वे अपरिचित न थे। फिर उन्हें उस बड़े अज़ाब की भी सूचना दी गई जो आख़िरत में अपराधियों के लिए तैयार किया गया है। उनके आक्षेपों का उत्तर देने और उनकी अपनाई हुई नीति को निन्दनीय ठहराने के साथ-साथ नैतिकता एवं नागरिकता के उन बड़े-बड़े नियमों को भी उनके समक्ष प्रस्तुत किया गया जिनके आधार पर एक आदर्श-समाज का निर्माण होता है।

नबी सल्ल० और आपके साथी हिजरत करके जब मदीना पहुंचे तो वहाँ आपको एक दूसरा वातावरण मिला। मदीना के बहुत से लोग आपके वहाँ पहुँचने से पहले ही मुसलमान हो गये थे। वहाँ इस्लामी राज्य की स्थापना हुई। बहुत-सी नई-नई समस्यायें भी उभर कर सामने आईं। यहूदियों और ईसाइयों से मामला पेश आया। विभिन्न प्रकार के मुनाफ़िक़ों (कपटाचारियों) से निमटना पड़ा। फिर अज्ञान के उपासकों और सत्य के विरोधियों से सशस्त्र मुक़ाबला करने की भी नौबत आई। यह सब-कुछ हुआ परन्तु अल्लाह का पैग़म्बर और उसके साथी सत्य पर डटे रहे। उन्हें कोई चीज़ सत्य से विचलित न कर सकी। फिर वह समय आया कि पूरे अरब पर सत्य को विजय प्राप्त हुई। और इसकी राहें पैदा हुईं कि अरब से बाहर दूसरे देशों तक क़ुरआन की आवाज़ पहुँच सके। आठ-नौ वर्ष की इस लम्बी अवधि में क़ुरआन के जो हिस्से उतरे हैं उनमें राजनीतिक एवं सामाजिक विषयों पर विशेष रूप से प्रकाश डाला गया। उनमें स्पष्ट रूप से यह बात बताई गई कि समाज का संगठन किस प्रकार हो और जीवन के विभिन्न विभागों की व्यवस्था किन नियमों के आधार पर होनी चाहिए। मुनाफ़िक़ों से किस प्रकार निमटा जाये। उन ग़ैर-मुस्लिमों से क्या व्यवहार किया जाये जिन्होंने सत्य को स्वीकार नहीं किया परन्तु जो इस्लामी स्टेट (राज्य) के अधीन हैं। यहूदियों और ईसाइयों से किस प्रकार का सम्बन्ध रखा जाये। और उन शत्रुओं के बारे में कौन-सी नीति अपनाई जानी चाहिए जिन से युद्ध हो। और उन धर्म-विरोधियों के प्रति क्या नीति अपनाई जायेगी जिनसे कोई सन्धि और समझौता हो चुका हो।

उपर्युक्त विवेचन से यह बात भली-भाँति स्पष्ट हो जाती है कि इस्लामी आन्दोलन (Islamic Movement) जो नबी सल्ल० के नेतृत्व में चलाया गया था, क़ुरआन के द्वारा

अल्लाह ने किस प्रकार उसका पथ-प्रदर्शन किया। जैसी समस्यायें सामने होतीं और जैसी-कुछ परिस्थिति होती उसी के अनुसार कुरआन के हिस्सों और उसकी सूरतों का अवतरण होता था जब तक परिस्थिति में परिवर्त्तन न होता क़ुरआन की वार्त्ताओं और उसके विषयों में भी कोई परिवर्त्तन न होता था। इसके साथ यह भी आवश्यक था कि इस्लामी आमन्त्रण जिन आधारभूत विचारों, विश्वासों और नियमों पर आधारित है उन्हें किसी हाल में भी निगाहों से ओझल न होने दिया जाये उन्हें हर मरहले में दोहराया जाता रहे। यही कारण है कि इस्लामी आन्दोलन के एक मरहले में जितनी सूरतों का अवतरण हुआ है उनमें साधारणतः एक ही प्रकार के विषयों और वार्त्ताओं की पुनरावृत्ति (Repetition) पाई जाती है, परन्तु तौहीद (एकेश्वरवाद), अल्लाह के गुण, आखिरत, रिसालत ईश-भय, धैर्य्य आदि विषयों की पुनरावृत्ति आप पूरे क़ुरआन में पायेंगे। वार्त्ताओं की पुनरावृत्ति (Repetition) के बावजूद क़ुरआन की प्रत्येक सूरः दूसरी सूरतों से भिन्न विशेषतायें रखती हैं। क़ुरआन की किसी दो-सूरः पर भी जिनके विषय और वर्णन-शैली में बड़ी समानता पाई जाती हो आप जब विचार करेंगे तो देखेंगे कि वे सूरतें एक-दूसरे का बदल कदापि नहीं हो सकतीं। दोनों की अपनी-अपनी विशेषतायें हैं और दोनों की अपनी अलग-अलग आन-बान है। दोनों ही अपने साहित्य,गुण और प्रभावशीलता की दृष्टि से हमारे लिए अमूल्य निधि हैं।

क़ुरआन का संकलन

कुरआन का अवतरण तो उस क्रम से होता रहा जिस क्रम से इस्लामी मिशन और इस्लामी आन्दोलन का आरम्भ और विकास हुआ है। परन्तु जिस क्रम से क़ुरआन की सूरतों का अवतरण हुआ है उन्हें उस क्रम से संकलित और संगृहीत नहीं किया गया। क़ुरआन की सूरतों और आयतों को हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने अल्लाह के आदेशानुसार उस व्यवस्थित क्रम से संकलित किया जिस क्रम के साथ उनका एक किताब के रूप संगृहीत होना उचित था। जब कोई सूरः उतरती तो अल्लाह का रसूल उसी समय उसे लिखा देता। और कहता कि इसे अमुक सूरः के बाद और अमुक सूरः से पहले रखा जाये। इसी प्रकार जब कुछ ऐसी आयतें उतरतीं जो अलग से कोई सूरः बनने वाली न होतीं तो आप बता देते कि ये आयतें किस सूरः में सम्मिलित होंगी और उन्हें किन आयतों के बाद रखा जायेगा। फिर लोग इस क्रम के अनुसार उन्हें याद करते और इसी क्रम से नमाज़ों में उन्हें पढ़ा जाता। इस प्रकार जिस दिन सम्पूर्ण क़ुरआन उतर चुका, वास्तव में उसी दिन वह क्रमबद्ध और संकलित भी हो गया।

क़ुरआन एक प्रामाणिक एवं सुरक्षित ग्रन्थ है[1]

क़ुरआन केवल खजूर के पत्तों, हड्डी या झिल्ली के टुकड़ों पर ही नहीं लिखा गया बल्कि साथ ही वह ईमान वालों के सीनों में भी उतरता गया। लोग इसे कण्ठस्थ करते गये। नबी

---

१. किसी भी धर्म के बारे में विचार करने के लिए सबसे पहले आवश्यक होता है कि यह जानने की कोशिश की जाये कि वह धर्म अपने वास्तविक रूप में आज शेष भी है या नहीं। यदि वह अपने वास्तविक रूप में शेष नहीं है और उसकी शिक्षाओं में बहुत कुछ परिवर्तन और कमी-बेशी हो गई है, तो फिर वह धर्म सुरक्षित ही कहाँ रहा कि उसपर विचार करने का कोई सवाल पैदा हो। किसी धर्म के बारे में यह जानने के लिए कि वह अपने वास्तविक रूप

सल्ल० के बाद हज़रत अबूबक्र रज़ि० के समय में एक युद्ध में ऐसे बहुत से लोग वीरगति को प्राप्त हुये जिन्हें पूरा क़ुरआन याद था। इस अवसर पर हज़रत उमर रज़ि० ने अपना यह विचार प्रकट किया कि विभिन्न चीज़ों पर लिखी हुई क़ुरआन की आयतों (Words of Allah) को एक जिल्द में सगृहीत करने का प्रबन्ध किया जाये। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने इस काम पर हज़रत ज़ैद बिन साबित अनसारी को नियुक्त किया। हज़रत ज़ैद नबी सल्ल० के विशेष 'कातिब' रह चुके थे। हज़रत ज़ैद कुछ बड़े 'सहाबः' के साथ इस शुभ कार्य में लग गये। इस बात का एलान कर दिया गया कि जिस किसी के पास भी क़ुरआन का थोड़ा या बहुत हिस्सा लिखित रूप में मौजूद हो ले आये। नबी सल्ल० के लिखाये हुये क़ुरआन के हिस्से भी इकट्ठा कर लिए गये। हज़रत ज़ैद और आपके जो साथी इस महान कार्य में तन्मयता के साथ लगे हुये थे वे सब-के-सब क़ुरआन के हाफ़िज़ थे। पूरा क़ुरआन उन्हें कण्ठस्थ था। फिर भी उन्होंने पूरी इहतियात से काम लिया। उनकी सतर्कता का हाल यह था कि जो-कुछ वे लिखित रूप में पाते उसपर कम-से-कम दो गवाह लेते कि जो-कुछ लिखा गया है वह नबी सल्ल० के सामने लिखा गया है या नहीं ? और अमुक व्यक्ति ने जो कुछ क़ुरआन सुनाया उसने इसी तरह अल्लाह के रसूल से सुना था या नहीं ? जब गवाह गुज़र जाते तो फिर उसे अपने लेख-पत्रों और अपने हाफ़िज़े से मिलाकर मुक़ाबला करते। जब हर प्रकार से इतमीनान हो जाता तब उसे लिपिबद्ध करते। इस तरह जब पूरे क़ुरआन की एक प्रमाणित प्रति तैयार हो गई, तो उसे हज़रत अबू बक्र रज़ि० के पास रख दिया गया इसलिए कि उस समय वही इस्लामी राज्य के सबसे बड़े पद पर थे। आप के बाद क़ुरआन की यह प्रति उनके उत्तराधिकारी हज़रत उमर रज़ि० के पास रही। हज़रत उमर रज़ि० के बाद क़ुरआन की यह प्रति आपकी बेटी हज़रत हफ़्सः रज़ि० के पास रखवा दी गई।

आगे चलकर जब इस्लाम अरब से निकलकर दूर-दूर तक फैल गया और अधिक संख्या मे ऐसे लोग इस्लाम ग्रहण करने लगे जो अरबी भाषा से अनभिज्ञ थे। उनसे क़ुरआन पढ़ने में ग़लतियाँ होने लगी, उस समय हज़रत उसमान रज़ि० ने निश्चय किया कि क़ुरआन की जो प्रति हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने तैयार कराई है उसकी नक़लें (प्रतिलिपियाँ) इस्लामी प्रदेशों में भेज दी जायें ताकि लोग उसीके अनुसार क़ुरआन का पाठ करें और क़ुरआन के उच्चारण में कोई विभेद न हो। ख़लीफ़ा हज़रत उसमान रज़ि० ने क़ुरआन की कई एक प्रतियाँ तैयार कराईं और फिर उसकी एक-एक प्रति मिस्र, बसरः, शाम (Syria), यमन और बहरैन के गौरनरों (राज्यपालों) के पास भेज दी। और उन्हें लिखा कि लोग इसीके अनुसार क़ुरआन का पाठ करें। क़ुरआन की एक प्रति आपने अपने पास रख ली। आपकी भेजी हुई प्रतियाँ मक्का, मदीना, दिमश्क और मराकश में अब भी मौजूद हैं। आज जो क़ुरआन हमारे हाथों में है वह उन ही प्रतियों की प्रतिलिपि (True Copy) है जिन्हें हज़रत उसमान रज़ि० ने विभिन्न इस्लामी प्रदेशों में भेजा था। यह तो हो सकता है कि किसी को क़ुरआन के ईश्वरीय ग्रन्थ होने में सन्देह हो परन्तु कोई यह नहीं कह सकता कि जो क़ुरआन इस समय हमारे हाथों में है वह वही क़ुरआन नहीं है जिसे हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने पेश किया था। यदि इस में किसीको सन्देह हो सकता है तो

में बाक़ी है या नहीं हमें उसके ग्रन्थों का अध्ययन करना पड़ता है। क्योंकि किसी धर्म के विषय में जानकारी प्राप्त करने का मूल साधन उसके ग्रन्थ ही हैं। यदि किसी धर्म के अनुयायी अपने धार्मिक ग्रन्थ को सुरक्षित न रख सके, तो इसका अर्थ यह है कि उनका धर्म ही सुरक्षित न रहा।

फिर उसे दिन के दिन होने और चमकते हुये सूर्य के प्रकाशमान होने में भी सन्देह हो सकता है।

वर्णन-शैली और साहित्य

क़ुरआन अपनी वणन-शैली और साहित्य आदि की दृष्टि से एक महान् एवं मनोरम ग्रंथ है। कुरआन की वर्णन-शैली पर विचार करने से पहले मौलिक रूप से यह बात हमारे सामने रहनी चाहिए कि कलाम की यों तो बहुत-सी क़िस्में होती हैं परन्तु शैली (Style), व्यवस्थित क्रम आदि की दृष्टि से हम 'कलाम' को दो किस्मों में विभक्त कर सकते हैं। इसकी एक किस्म तो वह है जिसमें बात को सीधे-सादे ढंग से रख दिया जाता है। किसी विषय पर प्रकाश डालना ही इस का मूल उद्देश्य होता है। मिसाल में इतिहास, गणित, विज्ञान, क़ानून आदि से सम्बन्ध रखने वाली किताबें पेश की जा सकती हैं। 'कलाम' की दूसरी किस्म वह है जिसमें केवल यही अभीष्ट नहीं होता कि लोगों को केवल अपेक्षित बातों का ज्ञान हो जाये बल्कि इसके साथ ही उस का मूल उद्देश्य होता है मनुष्य के मन और मस्तिष्क को प्रभावित करना, मन की वीणा को अपने आघातों से झंकृत करना, कोमल भावनाओं को जगाना, लोगों में उमंग और जोश पैदा करना, उन्हें हर्ष और आनन्द से विभोर करना, शोक, संवेदन आदि मनोभावों को जगा कर लोगों को भावुकता प्रदान करना, विचार, कल्पना और संकल्प के लोक में क्रान्ति की लहर दौड़ाना, प्राणों में कल्याण की भावनाओं का स्रोत प्रवाहित करना, हृदय-नेत्र के आवरण को दूर करना ताकि लोग अपने सच्चे, विशुद्ध एवं निर्मल स्वरूप के दर्शन कर सकें, आदि। इस प्रकार का 'कलाम' अपने क्रम, संविधान, भाषा आदि की दृष्टि से दूसरे कलामों से सर्वथा भिन्न होगा। क़ुरआन वास्तव में इसी दूसरी क़िस्म का 'कलाम' है।

क़ुरआन के बारे में यह विचार कि वह केवल एक कानून की किताब है सत्य के प्रतिकूल है। क़ुरआन में क़ानून और नियमों का उल्लेख अवश्य हुआ है परन्तु उनका उल्लेख जिस तरह से हुआ है वह विधिज्ञों के ढंग से सर्वथा भिन्न है, इसी प्रकार क़ुरआन में राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक विषयों पर भी प्रकाश डाला गया है परन्तु वर्णन-शैली नागरिक शास्त्र या अर्थशास्त्र जैसी कदापि नहीं है, क़ुरआन में ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख भी हुआ है किन्तु उनके लिए वह ढंग क़ुरआन ने नहीं अपनाया जो साधारणतः एक इतिहासकार अपनाता है।

क़ुरआन छोटे-बड़े ११४ भागों में विभक्त है। क़ुरआन के ये भाग 'सूरः' कहलाते हैं। क़ुरआन की प्रत्येक सूरः मानो क़ुरआन का एक अध्याय है। जिस प्रकार एक सुन्दर कविता में हम देखते हैं कि उसे अनुप्राणित करनेवाली एक केन्द्रीय कल्पना होती है। वही केन्द्रीय विचार कविता का मध्य-बिन्दु होता है जिसे कविता का प्रत्येक शब्द छू रहा होता है। इसी प्रकार क़ुरआन की प्रत्येक सूरः का भी एक केन्द्रीय विषय या मध्य-बिन्दु होता है। सूरः की समस्त बातें सूरः के केन्द्रीय विचार से गहरा सम्पर्क रखती हैं। सूरः एक ही केन्द्रीय कल्पना-बिन्दु के चारों ओर घूमती है। ऐसा कदापि नहीं है कि क़ुरआन की सूरतें केन्द्रीय कल्पना से रहित हों और वे केवल बिखरे हुये भावों को व्यक्त करती हों। यदि ऐसा होता तो चाहे वे बिखरे हुये भाव अपने स्थान पर कितने ही सुन्दर क्यों न होते क़ुरआन की सूरतें गहराई और अनुपम सुन्दरता से रहित होतीं। जिस प्रकार कविता का रसास्वादन करने और उसका पूरा आनन्द लेने के लिए आवश्यक है कि पाठक को उसके केन्द्रीय विचार या केन्द्रीय कल्पना का अनुभव हो उसी प्रकार पाठक को क़ुरआन की सूरतों की केन्द्रीय कल्पना का अनुभव हो जाता है तो फिर पूरी सूरः

एक अखण्ड रूप में दिखाई देती है सूरः का प्रत्येक भाग एक केन्द्रीय विचार की आभा से आलोकित हो उठता है।

अपने केन्द्रीय विषय की दृष्टि से प्रत्येक सूरः का उसकी अगली और पिछली सूरतों से गहरा सम्पर्क है। परन्तु इन बातों का अनुभव गहरे सोच-विचार और अनुशीलन से होता है। यदि कोई क़ुरआन की सूरतों से आनन्द माँगता है तो यह अनुचित नहीं परन्तु उसे यह न भूलना चाहिए कि क़ुरआन की प्रत्येक सूरः हम से साधना की माँग करती है। क़ुरआन के समझने और उसके निहित रहस्यों को पाने के लिए जिस विकसित हृदय और विकसित मस्तिष्क और शुद्ध आत्मा की आवश्यकता है उसके निर्माण में क़ुरआन की सूरतें स्वयं सहायक भी होती हैं।

क़ुरआन में जो साहित्य है उसमें जो संगीत, स्वर-प्रवाह और शब्दों का मधुर विन्यास है वह अनुपम है। क़ुरआन के साहित्य का आनन्द लेने के लिए अरबी भाषा का ज्ञान आवश्यक है। साहित्य के अतिरिक्त क़ुरआन में जो गहराई और ज्ञान की व्यापकता पाई जाती है वह अन्यत्र दुर्लभ है। यह क़ुरआन की अनुपम विशेषता ही थी जिसके कारण इस्लाम-विरोधी क़ुरआन सुनने से लोगों को रोकते थे। वे समझते थे कि जो क़ुरआन सुनेगा वह क़ुरआन की ओर आकर्षित हो कर रहेगा। इतिहास साक्षी है कि क़ुरआन की आवाज़ जिस किसी के कान तक पहुँची वह उससे प्रभावित हो कर रहा भले ही वह वैमनस्यता के कारण उस पर ईमान न ला सका हो परन्तु उसके दिल ने क़ुरआन की सच्चाई की ही गवाही दी। और कितने ही लोग क़ुरआन सुन कर कुफ़्र के अंधेरे से निकल आये और उन्होंने इस्लाम को स्वेच्छापूर्वक अपना लिया। वही उमर (रज़ि०) जो हज़रत मुहम्मद सल्ल० का सिर काटने के लिए तलवार लेकर घर से निकलते हैं अन्त में क़ुरआन के शब्दों से प्रभावित हो कर हज़रत मुहम्मद सल्ल० के सच्चे अनुयायियों में सम्मिलित हो जाते हैं। वही तुफ़ैल दौसी जिन्हें मक्के के लोगों ने यह ताकीद की थी कि मुहम्मद (सल्ल०) की बातें न सुनना, क़ुरआन सुन कर पुकार उठे: "ख़ुदा की क़सम इस से अच्छा कलाम मैंने कभी नहीं सुना है।" और फिर सच्चे दिल से क़ुरआन पर ईमान लाते हैं। उतबः बिन रबीअः जो नबी सल्ल० की सेवा में इस लिए गया था कि आप को समझा-बुझाकर राज़ी कर ले और आप धर्म-प्रचार के शुभ-कार्य को छोड़ दें, जब आप के मुख से क़ुरआन की कुछ आयतें सुनता है तो प्रभावित होने से अपने को बचा न सका। वह लौटकर आता है और कहता है: "ख़ुदा की क़सम आज मैंने ऐसा 'कलाम' सुना है कि इससे पहले कभी न सुना था। न यह काव्य है न जादू और न काहिनों की वाणी। मेरी बात मानो इस व्यक्ति (अर्थात् मुहम्मद सल्ल०) को इसके हाल पर छोड़ दो इसकी बातें जो मैंने सुनी हैं रंग लाकर रहने वाली हैं।" इसी प्रकार क़ुरैश का प्रसिद्ध सरदार वलीद बिन मुग़ीरः जब नबी सल्ल० से क़ुरआन का कुछ हिस्सा सुनकर लौटता है तो कहता है:

"ख़ुदा की क़सम मैं हर प्रकार की कविता से भली-भाँति परिचित हूँ। ख़ुदा की क़सम यह व्यक्ति जो 'कलाम' पेश कर रहा है वह उनमें से किसी के सदृश नहीं है। ख़ुदा की क़सम इसके 'कलाम' में एक अद्भुत माधुर्य, एक विशेष प्रकार का सौंदर्य है, उसकी शाखायें फलों से लदी हुई हैं और उसकी जड़ें हरी-भरी हैं। निस्सन्देह वह हर 'कलाम' से ऊँचा है कोई दूसरा 'कलाम उसे नीचा नहीं दिखा सकता।"

इस प्रकार की कितनी ही मिसालें पेश की जा सकती हैं जिनसे अन्दाज़ा होता है कि क़ुरआन अपने साहित्य और अपनी प्रभावशीलता की दृष्टि से एक महान् ग्रंथ है जिसके तेज, शक्ति और सौन्दर्य की प्रशंसा उसके विरोधियों तक ने की है।

क़ुरआन का दार्शनिक सिद्धान्त

क़ुरआन में जहाँ हमें साहित्य का चमत्कार दिखाई देता है और उसमें जहाँ मनुष्य
लिए नियम और क़ानून दिये गए हैं वहीं उसमें जीवन के रहस्यों और गूढ़ अर्थों पर भी प्रका
डाला गया है और विचारशील व्यक्तियों की बार-बार प्रशंसा की गई है। क़ुरआन लोगों
ऐसी दृष्टि प्रदान करना चाहता है कि वे सदैव जीवन के वास्तविक लक्ष्य को अपने सामने रखें
क़ुरआन लोगों को जीवन के पूर्ण और वास्तविक अर्थों का ज्ञान देता है। वह वास्तविकता त
पहुँचने की राह खोलता है। एक सामान्य व्यक्ति तो केवल वहीं तक सोच सकता है जहाँ तक उस
तात्कालिक हानि-लाभ का सम्बन्ध होता है, वह जीवन के प्रत्येक अनुभव और भाव को अलग
अलग करके देखता है। वह उन्हें एक साथ विचार में नहीं लाता। इसलिए सम्पूर्ण जीवन
वास्तविक लाभ-हानि का उसे ज्ञान नहीं होता। वह अपने व्यक्तिगत और सामयिक समस्याओं
आगे बढ़कर सोचने में असमर्थ रह जाता है।

जीवन-सम्बन्धी कुछ आधारभूत प्रश्न हैं जैसे मनुष्य का सच्चा रूप क्या है? सृष्टि की अन्तिम सत्ता क्या है? उसमें मनुष्य का वास्तविक स्थान क्या है? आदि इन प्रश्नों का उत्तर देना दर्शन का काम है। अनुभवों के आंतरिक अर्थों की खोज उसका परम लक्ष्य है। जो विचार सब सीमाओं को पार करता हुआ अन्तिम अर्थों तक पहुँचने का उद्देश्य लिए हुये न हो, वास्तव में उसे दार्शनिक विचार नहीं कह सकते। अनुभवों के पारस्परिक विरोधों को दूर करना और उनमें अनुरूपता एवं अनुकूलता स्थापित करना दर्शन का मुख्य कार्य है। विज्ञान, जगत और जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में एक विशेष सुसंगठित ज्ञान का प्रतिपादन करता है। विज्ञान केवल प्रस्तुत वस्तुओं तथा घटनाओं का वर्णन (Description) है, उनकी व्याख्या करना (Interpretation) यह दर्शन का काम है, दर्शन सम्पूर्ण संसार का एक सामूहिक संगठित ज्ञान प्रदान करता है जिससे मनुष्य को जीवन की वास्तविक सफलता व विफलता का अर्थ मालूम होता है।

क़ुरआन के दृष्टिकोण से वास्तविकता (Reality) के बारे में ज्ञान प्राप्त करने की दार्शनिक रीति यह नहीं है जिसे साधारणतः दार्शनिक (Philosophers) अपनाते हैं। क़ुरआन का अपना एक दार्शनिक सिद्धान्त है और उसकी अपनी एक दार्शनिक व्यवस्था है। क़ुरआन का कहना है कि लोगों के पथ-भ्रष्ट होने का मूल कारण यह है कि वे केवल अनुमान से काम लेते हैं। और अटकल और अनुमान ही को सत्य की खोज का एकमात्र साधन समझते हैं और फिर अटकल और अनुमान से वास्तविकता के प्रति जो कुछ विचार वे निर्धारित कर लेते हैं उसके आगे हठधर्मी और पक्षपात के कारण किसी की नहीं सुनते। हालाँ कि उनके पास काल्पनिक बातों और अनुमानों के अतिरिक्त और कुछ नहीं होता।[1]

क़ुरआन का कहना है कि वास्तविकता का ज्ञान प्राप्त करने का सही तरीक़ा यह है कि हम हर प्रकार के पक्षपात से रहित होकर स्वतन्त्रतापूर्वक उन पैग़म्बरों का बयान सुनें जिन का दावा है कि वे कोई बात अटकल और अनुमान से नहीं कहते। उनकी कोई बात काल्पनिक नहीं, बल्कि वे जो-कुछ कहते हैं वह उस 'ज्ञान' पर अवलम्बित होता है जो अल्लाह ने उन्हें प्रदान

---

१. दे० २२:८ (सूर २२ आयत ८); २२:३; २८:५०; ३०:२९; ५३:२८; ३६:९; १०:३६; १२:४०; ६:११६; ६:१४८; ४७:१४; २४:४०।

किया है।[1] पैग़म्बरों का बयान सुनने के बाद हम इस रहस्यमय जगत पर दृष्टि डालें और इसमें पाये जाने वाले सूक्ष्म सकेतों को व्यवस्थित क्रम में लायें उनसे नतीजा निकाल कर यह देखें कि इस प्रत्यक्ष के पीछे स्थित जिस वास्तविकता की सूचना पैग़म्बर देते हैं, इस प्रत्यक्ष मे उसके लक्षण और उसकी ओर संकेत करने वाले चिह्न पाये जाते हैं या नही। यदि उसकी ओर संकेत करने वाले चिह्न पाये जाते हो, और यह जगत उसके यथार्थ होने का साक्षी हो, और उससे उन समस्त समस्याओं का समाधान हो जाता हो जिनका इस मौलिक और वास्तविक समस्या से दूर या निकट का कोई सम्बन्ध है। और उसपर कोई आक्षेप न हो सकता हो और न उसके विरुद्ध कोई एक प्रमाण प्रस्तुत किया जा सकता हो, तो फिर पैग़म्बरों को झुठलाने की कोई वजह नही। बल्कि उनकी दी हुई सूचना को मानना ही तर्कयुक्त और न्याय-संगत बात होगी।

क़ुरआन मे विभिन्न स्थानों पर जगत में पाये जाने वाले सूक्ष्म सकेतों को व्यवस्थित क्रम मे रखकर उनसे नतीजा निकाल कर वास्तविकता को प्रकाश में लाया गया है।[2]

क़ुरआन अल्लाह् की किताब है

पिछले पृष्ठों मे क़ुरआन के विषय में जो-कुछ कहा गया है उससे क़ुरआन का एक संक्षिप्त परिचय आपको मिल चुका होगा। क़ुरआन वास्तव मे अल्लाह की किताब है ? यह प्रश्न सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण और गंभीर है, जिसपर विचार करना हमारा परम कर्तव्य है। इस प्रश्न पर जितना अधिक सोच-विचार कीजिए, यह विश्वास बढ़ता जाता है कि क़ुरआन किसी मनुष्य का 'कलाम' नहीं हो सकता। यह वास्तव में ईश्वरीय ग्रन्थ है जिसे अल्लाह ने मनुष्य के पथ-प्रदर्शन के लिए अपने एक विशेष बन्दे हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर उतारा है। क़ुरआन अल्लाह का 'कलाम' है इसका सबसे बड़ा प्रमाण हज़रत मुहम्मद सल्ल० का अपना बयान है। आप एक सच्चे व्यक्ति थे। जीवन-भर कभी कोई झूठी बात आपके मुख से नही निकली। सभी लोग आपको 'सादिक़' (सत्यवान) और 'अमीन' (विश्वसनीय) कहते थे। सोचने की बात है कि जिस व्यक्ति ने किसी भी मामले में कभी झूठी बात न कही हो जिसकी सच्चाई और सत्य-वादिता का हाल यह हो कि दुश्मन तक उसके सच्चे होने के गवाह हो क्या वह अपने अल्लाह से सम्बन्ध लगाकर झूठ बोल सकता है। और झूठ भी ऐसा जो निरन्तर २३ वर्षों तक बोला गया हो। जिस व्यक्ति ने मनुष्यों के मामले मे कभी असत्य बात नहीं कही वह अल्लाह के नाम पर झूठी बात कैसे गढ़ सकता है। क्या ऐसा व्यक्ति कभी कह सकता है कि अल्लाह ने मुझपर अपना 'कलाम' उतारा है जब कि अल्लाह का 'कलाम' उसपर उतरा न हो। फिर क्या अल्लाह इतने बड़े अत्याचार को कभी सफल होने देगा[3]। क्या जीवन में ऐसी सफलता जो हज़रत मुहम्मद सल्ल० को अपने महान् उद्देश्य मे प्राप्त हुई है कभी संसार में किसी झूठे और असत्यवादी व्यक्ति को प्राप्त हो सकी है। ज़ालिमों का ज़ुल्म और झूठों का झूठ कभी छुपा नही रहता।

---

१. दे० २८:१४; ११:६३; १६:७२; २१:७४; २१:७६; २:१२०; ४:११३; ५३: २–३; १२:१०८।

२. इस सिलसिले में उदाहरण के लिए दे० १०:५; ६४:३; १३:२–३; १०:२२; ७८:१-१७; ५१:१–६; ७४:३२–३६; ३६:८१; ७५:३६–४०; ६४:३; ८४:१६–१६; ५६:७५-८०; ५३:१–४; ६३:१–४; ६७:१–४; ५१:४७–५०; ५१:१–५।

३. दे० सूरः ६६ आयत ४४-४७।

हज़रत मुहम्मद सल्ल० का समय अत्यन्त पवित्र एवं शुभ कार्यों में व्यतीत होता था। आपकी रातें भी पवित्र थीं और आपका दिन भी पवित्र था। आप कभी बुराई के निकट नहीं गये। आप लोगों में होते या अकेले, प्रत्येक दशा में अल्लाह के आगे झुके रहते; उसे याद करते और उससे डरते रहते। विचार कीजिए एक ऐसा व्यक्ति जिसने जो-कुछ कहा सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण और हित के लिए कहा। जिसकी शिक्षाओं में न तो जातीयता एवं सांप्रदायिकता सम्बन्धी भेद-भाव और पक्षपात की कोई झलक पाई जाती है और न किसी विशेष व्यक्ति या वर्ग के स्वार्थ का उनमें कोई चिह्न मिलता है। जिसने सत्य के लिए जीवन की कठिन राह अपनाई और जीवन के अन्तिम समय तक असत्य से लड़ता रहा। जिसने अपने सम्पूर्ण जीवन को धर्म और जन-सेवा के कार्य में लगा दिया। अपने लिए और अपनी औलाद के लिए जिसने न तो कोई जायदाद बनाई और न किसी कोठी और महल का निर्माण कराया। दुनियाँ से रुख़सत हुआ तो इस हाल में कि घर में तेल तक न था कि चिराग़ जलाया जा सके। जिसकी कामना यह रही हो कि वह एक दिन तृप्त हो और एक दिन भूखा रहे ताकि जब वह भूखा हो तो अल्लाह के सामने गिड़गिड़ाये और उसे याद करे और जब तृप्त हो तो उसकी प्रशंसा करे और उसके आगे कृतज्ञता दिखलाये। जिसके हृदय की पवित्रता और निःस्वार्थपरता का यह हाल रहा हो कि उसने अपने शत्रुओं को भी क्षमा कर दिया। शत्रु भी ऐसे जिन्होंने केवल यही नहीं कि उसे सताया और तकलीफ़ें पहुँचाईं बल्कि जिन्होंने उसे क़त्ल तक करने की साज़िश की। यहाँ तक कि उसे अपना घर-बार सब छोड़ देना पड़ा, इसपर भी उन्होंने चैन न लेने दिया। क्या ऐसा व्यक्ति भी झूठा और मक्कार हो सकता है। यदि हम उसे झूठा नहीं कह सकते तो निश्चय ही वह अल्लाह का रसूल था और यह क़ुरआन अल्लाह की किताब है जैसा कि उसका अपना बयान है।

एक और पहलू से विचार कीजिए। हज़रत मुहम्मद सल्ल० एक निरक्षर व्यक्ति थे। आपको लोग लगभग ४० वर्ष तक एक सत्यनिष्ठ, सुशील, शान्तिप्रिय व्यक्ति के रूप में जानते-पहचानते थे। ४० वर्ष की आयु तक आपके जीवन में कोई ऐसी बात नहीं देखी गई जिससे कोई यह अनुमान कर सके कि यह व्यक्ति कोई बड़ा दावा करने की तैयारी कर रहा है। ४० वर्ष की आयु प्राप्त होने पर आपने सहसा संसार के समक्ष अपने-आपको एक रसूल के रूप में प्रस्तुत किया। और दुनियाँ ने उस समय आपके मुख से ऐसा 'कलाम' सुना कि वैसा 'कलाम' कोई पेश न कर सका। क्या यह सम्भव है कि कोई ऐसा व्यक्ति जो अशिक्षित हो उसने न इतिहास और राजनीति का अध्ययन किया हो और न वह दर्शन-शास्त्र और अर्थशास्त्र का ज्ञाता हो वह संसार को एक ऐसा ग्रन्थ प्रदान करे जो प्रत्येक दृष्टि से पूर्ण ही नहीं बल्कि संसार उसकी इस कृति के सदृश कृति प्रस्तुत करने में सर्वथा असमर्थ रहे।

फिर पूरा क़ुरआन २३ वर्ष की दीर्घ अवधि में उतरा है, फिर भी न तो उसकी शिक्षाओं में कहीं कोई विभेद पाया जाता है और न साहित्यिक दृष्टि से उसका स्तर कहीं गिर सका है। क़ुरआन की वार्त्ताओं में अत्यन्त अनुकूलता और तार्किक समन्वय पाया जाता है और साहित्यक दृष्टि से वह एक मनोरम ग्रन्थ है। किसी मानवीय रचना की यह विशेषता नहीं हो सकती। मनुष्य के विचार और उसकी धारणायें बदलती रहती हैं। उसकी रचना विभिन्न परिस्थितियों में एक कोटि की कभी नहीं हो सकती।

क़ुरआन में कितने ही नबियों और प्राचीन जातियों के वृत्तान्तों का उल्लेख हुआ है, क़ुरआन में नबियों और प्राचीन जातियों के जो क़िस्से बयान हुए हैं वे गल्प कथायें नहीं हैं बल्कि प्राचीन आसमानी किताबों से उनकी पुष्टि होती है। क़ुरआन में उल्लिखित वृत्तान्तों में कितनी

ही बातें ऐसी हैं कि जिनका उल्लेख सिरे से बाइबिल और तलमूद में नही मिलता। और कितनी ही घटनायें ऐसी हैं कि जिनका उल्लेख बाइबिल, तलमूद में मिलता है परन्तु कुरआन के बयान मे और बाइबिल और तलमूद के बयान में बड़ा अन्तर पाया जाता है। जो व्यक्ति क़ुरआन और बाइबिल व तलमूद के बयान पर विचार करेगा वह पायेगा कि जहाँ कहीं कुरआन और बाइबिल या कुरआन और तलमूद के बयान मे भिन्नता पाई जाती है वहाँ कुरआन का बयान ही तर्कसंगत और सत्य के अनुकूल है। बल्कि कुरआन ने तो यहूदियो और ईसाइयों पर उपकार किया है। बाइबिल में अधिकतर नबियों को जिस रंग मे पेश किया गया है वह अत्यन्त खेदजनक है। कुरआन उतरा तो उन नबियों का निर्मल चरित्र सामने आ सका। उदाहरणार्थ बाइबिल में हज़रत नूह अ० के धर्म-प्रचार का उल्लेख नही किया गया है और न बाइबिल से यह मालूम होता है कि जिन लोगों को उनके समय में डुबो दिया गया था उनका वास्तव में क्या अपराध था। परन्तु कुरआन में यह सारी बातें स्पष्ट रूप से बयान हुई हैं। कुरआन में नूह अ० और हज़रत लूत अ० हमें एक नबी और पवित्राचारी व्यक्ति के रूप मे दिखाई देते हैं परन्तु बाइबिल में उनके आचरण को कलंकित किया गया है। हज़रत मुहम्मद सल्ल० पढ़े-लिखे व्यक्ति न थे और न कोई यह सिद्ध कर सकता है कि आप (सल्ल०) ने किसी से प्राचीन इतिहास का ज्ञान प्राप्त किया है। वह्य अथवा ईश्वरीय-संकेत के अतिरिक्त आपके पास कोई साधन न था कि आप पिछली जातियों और पिछले नबियों का हाल मालूम कर सकते। अतः हमें मानना पड़ेगा कि आप वास्तव में अल्लाह के रसूल थे और कुरआन आप पर अल्लाह की ओर से उतरा है। हज़रत मुहम्मद सल्ल० की परीक्षा लेने के लिए आपके विरोधियो ने आप से सवाल भी किया था कि बनी इसराईल के मिस्र जाने का क्या कारण हुआ ?अरब के लोग इस किस्से से बिलकुल अनभिज्ञ थे। नबी सल्ल० से भी कभी यह क़िस्सा नही सुना गया था। विरोधी लोग यह समझते थे कि आप इस सवाल का उत्तर न दे सकेंगे परन्तु अल्लाह ने इसके जवाब में उसी समय पूरी 'सूरः यूसुफ़ उतार दी।

क़ुरआन और उसके लानेवाले रसूल के आगमन की शुभ-सूचना पिछली आसमानी किताबो तौरात, इन्जील आदि मे दी जा चुकी थी। कुरआन के जिन गुणो का उल्लेख पिछली किताबों में हुआ था वे पूर्ण रूप से उसमें पाये जाते हैं। तौरात, इन्जील आदि ग्रन्थ यद्यपि आज अपने वास्तविक रूप में नहीं हैं उनमें बहुत कुछ परिवर्तन हो चुका है। फिर भी इन किताबों में आज भी ऐसे वाक्य पाये जाते हैं जिनमें प्रत्यक्ष रूप से कुरआन के गुणो और हज़रत मुहम्मद सल्ल० के आगमन का उल्लेख हुआ है।[1]

कुरआन मे जिस प्रकार प्राचीन समय की कितनी ही बातो का उल्लेख हुआ है उसी प्रकार कुरआन ने अनेक ऐसी सूचनायें भी दी जिनका सम्बन्ध भविष्य से था ये सूचनायें ऐसे समय पर दी गई थीं जबकि इनके पूरी होने का कोई लक्षण दिखाई नही देता था। परन्तु इतिहास साक्षी है कि कुरआन की भविष्यवाणियाँ पूरी होकर रहीं[2]। कुरआन की दी हुई ऐसी सूचनाएँ भी हैं जिनके पूरे होने का समय अभी नही आया। वे भी अपने समय पर पूरी होकर रहेंगी। इस प्रकार की सूचनायें केवल अल्लाह ही दे सकता है जिसके ज्ञान ने आदि और अन्त सबको

---

१. उदाहरणार्थ दे० इस्तिस्ना (Deut.) ३३ : २; १८ : १८ : १६; यूहन्ना (John.) १ : २०-२१; मत्ता (mtt) ४ : १७; यसअयाह (Isaiah) ४२ : ६-१७।

२. उदाहरणार्थ देखिए वह भविष्यवाणी जिसका उल्लेख सूरः रूम के आरम्भ में हुआ है।

घेर रखा है। परोक्ष का वास्तविक ज्ञान अल्लाह के अतिरिक्त किसी को नहीं हो सकता अतः मानना पड़ेगा कि क़ुरआन अल्लाह का 'कलाम' है। वह किसी मनुष्य की रचना नहीं है।

कुरआन कोई साइंस की किताब नहीं है। फिर भी उसमें अल्लाह की निशानियों और चमत्कारों के अन्तर्गत वर्तमान जगत और विश्व के सम्बन्ध में बहुत-सी बातों का उल्लेख हुआ है। शताब्दियाँ बीत गई विज्ञान लोक में कितने अनुसन्धान हुये, कितने अन्वेषण सामने लाये गये; परन्तु क़ुरआन की कोई बात असत्य सिद्ध नहीं की जा सकी। बल्कि इससे क़ुरआन ही के चमत्कारों पर प्रकाश पड़ता गया है। क़ुरआन की यह विशेषता भी क़ुरआन के ईश्वरीय ग्रन्थ होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है। मनुष्य का ज्ञान अत्यन्त सीमित है। आज वह एक बात कहता है परन्तु बाद के नतीजों से वह ग़लत सिद्ध होती है। आज वह एक सिद्धान्त (Theory) निर्धारित करता है परन्तु कुछ ही समय बीतने पर मालूम होता है कि उसका सिद्धान्त वास्तविकता (Fact) के सर्वथा प्रतिकूल था। विज्ञान लोक में इस प्रकार के कितने ही उदाहरण मिलते हैं। एक समय था कि परमाणु या अणु (Atom) को अविभाजनीय समझा जाता था परन्तु आज परमाणु भी अविभाजनीय नहीं रहा। इसी प्रकार कभी पदार्थ (Matter) के बारे में यह समझा जाता था कि पदार्थ नष्ट नहीं होता पर यह विचार भी असत्य सिद्ध हुआ। आज यह सबको मालूम है कि पदार्थ भी नष्ट हो सकता है। वह नष्ट होकर शक्ति (Energy) में परिवर्तित हो जाता है। इस प्रकार कितने ही ऐसे उदाहरण प्रस्तुत किये जा सकते हैं जिनसे मालूम होता है कि मनुष्य का ज्ञान अत्यन्त सीमित है, अनुसन्धानों और अन्वेषणों के अन्तर्गत उसकी धारणाओं और विचारों में परिवर्तन होता रहता है। यदि क़ुरआन के बयान को आज तक कोई अनुसन्धान और वैज्ञानिक तथ्य (Scientific Fact) झुठला न सका, तो इसका अर्थ इसके सिवा और क्या हो सकता है कि क़ुरआन एक असाधारण ग्रन्थ है यह मानवीय रचना नहीं। मानवीय रचनाओं में कोई न कोई त्रुटि रह ही जाती है। विभिन्न प्रकार की दुर्बलतायें मनुष्य के साथ लगी रहती हैं जिसके कारण किसी सही नतीजे तक पहुँचना उसके लिए सरल नहीं होता।

एक और पहलू से देखिए! मनुष्य संसार में जब पहले-पहल आँखें खोलता है तो वह अपने को एक ऐसे लोक में पाता है जो अत्यन्त विशाल और मनोहर है। उसे अपने चारों ओर नाना प्रकार की वस्तुयें फैली हुई दिखाई देती हैं। हरी-भरी धरती उसे भली लगती है। तारकमय आकाश उसे अपनी ओर आकर्षित करता है। इस लोक में उसे माता-पिता का प्यार और भाई-बन्धुओं का प्रेम-भरा स्वागत मिलता है। यहाँ वह अपने को कोई अजनबी मुसाफ़िर नहीं समझता। उसे अपनी समस्त आवश्यकतायें पूरी होती दिखाई देती हैं। सूर्य-चन्द्र उसके लिए प्रकाश बनकर चमकते हैं। रात उसके लिए सुख और शान्ति बनकर आती है। धरती उसके लिए अनाज उगाती है। वृक्ष अपने फलों और मेवों से उसका सत्कार करते हैं। हवायें बादलों को उड़ाकर लाती हैं, वर्षा होती है। सूखी और निर्जीव भूमि देखते-देखते हरे-भरे मैदानों के रूप में लहलहाने लगती है। सारांश यह कि यहाँ पूर्णतः वह व्यवस्था पाई जाती है जो धरती पर मनुष्य के आबाद रहने के लिए अभीष्ट है। उसकी ज़रूरत की समस्त वस्तुयें यहाँ पर्याप्त मात्रा में पाई जाती हैं। फिर मनुष्य को बुद्धि और सूझ-बूझ भी दी गई है जिससे काम लेकर वह तरह-तरह के अनुसन्धान करता है और प्राकृतिक शक्तियों को अधिक-से-अधिक उपयोगी [illegible] है। परन्तु सवाल यह है कि क्या मनुष्य की शारीरिक एवं भौतिक आवश्यकतायें ही [illegible] सबसे बड़ी आवश्यकतायें हैं। ऐसा कदापि नहीं है। मनुष्य केवल शरीर ही नहीं [illegible] [illegible] दृष्टि की [illegible] है। उसे केवल भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति से सन्तोष नहीं

हो सकता। उसकी कुछ आवश्यकतायें और भी हैं, जब तक मनुष्य की वे आवश्यकतायें पूरी न हों उसे शान्ति नहीं मिल सकती और न उसका जीवन सफल हो सकता है।

मनुष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता यह है कि उसे बताया जाये कि वह क्या है ? संसार में वह कहाँ से आया है ? और उसे कहाँ जाना है ? उसके जीवन का उद्देश्य क्या है ? वह मार्ग कौन सा है जिस पर चलकर वह अपने जीवन को सफल बना सकता है ? वे नियम और सिद्धान्त कौन से हैं जिनका पालन करना उसका परम कर्तव्य है ? उसे अपने जीवन में किन कामों से बचना चाहिए और वे शुभ कर्म कौन से हैं जिनके बिना मनुष्य की साधना पूरी नहीं हो सकती ?

जीवन सम्बन्धी इन आधारभूत प्रश्नों का जब तक ठीक-ठीक उत्तर न मिल जाये, मनुष्य अज्ञान के अन्धकार में ही भटकता रहता है[1]। इन प्रश्नों का उत्तर हमें किसी पर्वत-शिखर पर अंकित दिखाई नहीं देता जिसे पढ़कर हम जान सकें कि सृष्टि की अन्तिम सत्ता क्या है ? उसमें मनुष्य का वास्तविक स्थान क्या है ? जिस सृष्टि-कर्ता ने मनुष्य को पैदा किया उसके लिए समस्त जीवन-सामग्री संचित की, जिसकी दयालुता ने उसके लिए जल, प्रकाश, वायु आदि का प्रबन्ध किया उस दयावन्त के बारे में यह कैसे सोचा जा सकता है कि वह मनुष्य को पैदा करके यों ही उसे अंधेरे में भटकने के लिए छोड़ देगा। उसके पथ-प्रकाश का कोई प्रबन्ध न करेगा। जब वह हमारी छोटी-छोटी ज़रूरतों को नहीं भूलता, तो हमारी सब से बड़ी ज़रूरत को वह कैसे भूल जायेगा। मानव-इतिहास साक्षी है कि अल्लाह ने आरम्भ से ही मानव-जाति को वास्तविकता का ज्ञान प्रदान करने के लिए नुबूवत और रिसालत का सिलसिला जारी किया। मानव-जगत में अपने नबी और रसूल भेजे। नबियों को यथार्थ ज्ञान प्रदान करके उन्हें इस महान् कार्य पर नियुक्त किया कि वे लोगों तक अल्लाह का सन्देश पहुँचायें और उन्हें बतायें कि उनका पैदा करने वाला उनसे क्या चाहता है। नबियों में सबसे अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल० हैं। आप पर अल्लाह की ओर से जो किताब उतारी गई वह क़ुरआन है। नुबूवत व रिसालत या क़ुरआन का इन्कार वास्तव में अल्लाह की उस दयालुता का इन्कार है जिसके चमत्कारों की आभा से पृथ्वी और आकाश सभी परिपूर्ण हो रहे हैं। यह कैसे सम्भव हो सकता है कि वह हमारी शारीरिक एवं भौतिक आवश्यकतायें तो पूरी करे परन्तु हमारी वास्तविक और सबसे बड़ी आवश्यकता की पूर्ति का वह कोई प्रबन्ध न करे। यह कैसे सम्भव है कि शारीरिक विकास के लिए तो उसके पास सामग्री हो परन्तु मनुष्य के आत्मिक विकास और उसके मार्ग-दर्शन के लिए उसके पास कुछ न हो। क़ुरआन का इन्कार करने के बाद मनुष्य के पास वास्तविकता (Reality) के बारे में अटकल और अनुमान के अतिरिक्त और क्या रह जाता है ? और

---

१. अज्ञान के अन्धकार में मानव-आत्मा की क्या दशा होती है इसका अन्दाज़ा डेविड ह्यूम (David Hume) की निम्नलिखित पंक्तियों से लगाया जा सकता है। वह अपनी प्रसिद्ध पुस्तक Treatise on Human Nature में लिखता है :

"मैं कहाँ हूँ और क्या हूँ ? किस स्रोत से मेरा जीवन प्रवाहित होता है और यह कहाँ जायेगा ? किसकी कृपा की मुझे लालसा होगी और किसके प्रकोप का मुझे भय है ? मेरे चारों ओर यह क्या है ? किस पर मैं प्रभाव रखता हूँ या कौन मुझ पर प्रभाव रखता है ? मेरे चारों ओर ये प्रश्न उठने लगते हैं और मैं अत्यन्त नैराश्यपूर्ण अवस्था में सोच में पड़ जाता हूँ। मेरे चारों ओर अन्धकार-ही अन्धकार छा जाता है और मेरी मानसिक शक्ति और सारे अंग शिथिल हो जाते हैं।"

अटकल और अनुमान कभी वास्तविक ज्ञान का काम नहीं दे सकते।

सोचने की बातें

कुरआन के बारे में जो कुछ कहा गया है उससे आपको अनुभव हुआ होगा कि कुरआन कोई साधारण किताब नहीं है जिसे मानना या न मानना और जिसकी शिक्षाओं पर विचार करना या न करना मानव-जीवन में कोई विशेष महत्व न रखता हो। कुरआन अल्लाह के आदेशों का नवीनतम (Latest) संग्रह के रूप में हमारे सामने आता है। कुरआन में क़ुरआन के अपने बयान के अनुसार ज्ञान एवं कर्म की वे समस्त बातें पाई जाती हैं जो पिछली आसमानी किताबों में पाई जाती थीं और जो मानव-कल्याण के लिए अब भी अभीष्ट हैं। जिसने कुरआन का अध्ययन कर लिया मानो उसने समस्त आसमानी किताबों का अध्ययन कर लिया चाहे उनकी भाषा कोई भी रही हो और चाहे वे किसी भी देश या जाति में उतरी हों। जो क़ुरआन को मानने से इन्कार करता हैं वह क़ुरआन ही का इन्कार नहीं करता बल्कि वास्तवमें वह सभी आसमानी किताबों का इन्कार करता है। कुरआन के अतिरिक्त संसार मे और भी बहुत-से धार्मिक ग्रंथ पाये जाते हैं परन्तु प्रमाणिक रूप में आज केवल-कुरआन ही मौजूद है। कितनी ही किताबें तो ऐसी हैं जो अल्लाह की ओर से उतरी थी परन्तु वे आज अपने असली रूप में नहीं हैं। उनमें बहुत कुछ परिवर्तन हो चुका है। और कितनी किताबें ऐसी हैं जिनके बारे में निश्चित रूप से यह नहीं कहा जा सकता कि वे अल्लाह की ओर से उतरी थी। बाइबिल की तरह इन किताबों में भी बहुत-सी परस्पर विरोधी बातें पाई जाती हैं। क़ुरआन समस्त धार्मिक ग्रंथो के लिए कसौटी है। कुरआन के द्वारा हम भली-भाँति इसका निर्णय कर सकते हैं कि उनमें कितना सत्य है और कितना असत्य है। कहाँ उनमें सत्य के स्थान को असत्य ने, न्याय के स्थान को पाप और अन्याय ने, पवित्रता और सदाचार के स्थान को अश्लीलता और दुर्व्यवहार ने ग्रहण कर लिया है। उनकी परस्पर विरोधी बातों में हम क़ुरआन के द्वारा निर्णय कर सकते हैं कि उनमें कौन-सी बात सत्य हो सकती है और कौन-सी बात सत्य के प्रतिकूल है।

क़ुरआन की शिक्षा अत्यन्त स्पष्ट और व्यापक है। कुरआन लोगों को एक अल्लाह की बन्दगी की ओर बुलाता है उसका सन्देश यही है कि लोगो ! उसी अल्लाह की बन्दगी और उपासना करो जिसने तुम्हें पैदा किया है और जो सारे संसार का मालिक और स्वामी है। जीवन के प्रत्येक मामले में उसी के दिये हुए आदेशों का पालन करो। ऐसा करोगे तो दोनों लोक में तुम्हारे लिए भलाई है। संसार से बिगाड़ दूर होगा और मरने के बाद आखिरत में तुम्हें ऐसी सदा बहार जन्नतों मे बसाया जायेगा, जहाँ न कोई दुःख होगा और न भय होगा। परन्तु यदि तुम अल्लाह से नाता तोड़ते हो या उसके साथ दूसरे देवी-देवताओं को ईश्वरत्व में साझी समझते हो; तौहीद (एकेश्वरवाद) को छोड़कर शिर्क एवं बहुवाद का मार्ग ग्रहण करते हो तो न तो संसार में तुम वास्तविक सुख और शान्ति पा सकते हो और न आखिरत में ही तुम्हारे लिए कोई सुख का स्थान है। बल्कि वहाँ तुम्हें जहन्नम की दहकती हुई अग्नि में डाल दिया जायेगा जिसमें सदैव तुम्हें जलते रहना होगा। अल्लाह के अज़ाब से बच निकलना सम्भव नहीं। कुरआन का कहना है कि यही समस्त पिछली आसमानी किताबों की शिक्षा रही है, समस्त ईश्वर-प्रेषित ग्रन्थों में एकेश्वरवाद की शिक्षा दी गई थी। और शिर्क से लोगों को रोका गया था। परन्तु आज जब हम पिछली किताबों का अध्ययन करते हैं तो उनमें हमें बहुत कुछ बिगाड़

का पता देता है कि तौहीद की शिक्षा कोई नवीन शिक्षा नहीं है बल्कि यही तौहीद समस्त नबियों की शिक्षाओं का सार और आधार-शिला रही है। शिर्क और अनेकेश्वरवाद की जो बातें प्राचीन ग्रन्थों में पाई जाती हैं, वे लोगों की अपनी गढ़ी हुई हैं। अल्लाह ने कदापि शिर्क का आदेश नहीं दिया था और न तौहीद की शिक्षा से शिर्क का कोई जोड़ है।

भारत के प्राचीन ग्रन्थों में भी तौहीद की झलक मिलती है, यह इस बात का खुला प्रमाण है कि कुरआन जिस चीज़ की ओर लोगों को आमन्त्रित कर रहा है वह भारतवासियों के लिए भी कोई पराई चीज़ नहीं है। कुरआन यदि अल्लाह की किताब है तो उससे फ़ायदा उठाने और उसे अपनी किताब कहने का अधिकार समान रूप से अल्लाह के सारे बन्दों को है। शिर्क तो विकृत मस्तिष्क की उपज है। शिर्क जब मन और मस्तिष्क पर अपनी जड़ें जमा लेता है तो फिर उसका प्रदर्शन विभिन्न रूपों में होने लगता है मनुष्य इतना गिर जाता है कि ख़ालिस तौहीद की बात उसके मन में बैठती ही नहीं। गौतम बुद्ध से पूर्व हिन्दू धर्म की ईश्वर-सम्बन्धी कल्पनाओं ने जो रूप धारण कर लिया था उसपर प्रकाश डालते हुए डॉ० राधाकृष्णन ने लिखा है :

"गौतम बुद्ध के समय मे जो धर्म देश पर छाया हुआ था, उसकी प्रत्यक्ष रूप-रेखा यह थी कि लेन-देन का एक सौदा था जो ईश्वर और मनुष्य के बीच ठहर गया था जबकि एक ओर उपनिषद का ब्रह्म था जो 'ईश्वरत्व' की एक उचित और उच्चतम कल्पना प्रस्तुत करता था, तो दूसरी ओर अगणित प्रभुओं का समूह था जिनके लिए कोई सीमा भी निर्धारित नहीं की जा सकती थी। आकाश के नक्षत्र, पदार्थ के तत्त्व, पृथ्वी के वृक्ष, वन के पशु, पर्वतों की चट्टानें, नदियों के बहाव, सारांश यह कि सृष्टि का कोई प्रकार ऐसा न था जो ईश्वर के राज्य में शरीक न ठहरा लिया गया हो, मानो एक स्वच्छन्द और अपने-आप उगी हुई भावना को आज्ञा-पत्र मिल गया था कि संसार मे जितनी वस्तुओं को ईश्वरीय सिंहासन पर बिठाया जा सकता है, बेरोक-टोक बिठाते रहें, फिर जैसे प्रभुओं की यह भीड़ भी इस ईश-गढ़न की अभिरुचि के लिए यथेष्ट न हुई हो, भाँति-भाँति के असुर और विचित्र देह की कल्पित आकृतियों का भी उनपर परिवर्द्धन होता रहा। इसमें सन्देह नहीं कि उपनिषद ने चिन्तन एवं विचार के लोक में इन वस्तुओं की प्रभुता छिन्न-भिन्न कर दी थी, परन्तु व्यवहार-क्षेत्र में इन्हें नहीं छोड़ा गया। ये बराबर अपनी प्रभुता के सिंहासन पर जमे रहे[2]।"

---

१. उदाहरणार्थ दे० बाइबिल, 'ख़ुरूज' (Ex.) २० ३-७; ३४:१४-१८; इस्तिसना (Deut.) ६:४-६; १० २०-२१; २ सलातीन (Sec. the Kings) २३:३; हज़क़ियाल (Ezekiel) ६·६; मत्ता (Matt.) २२:३५-४०।

वेद इतिहास काल से पहले (pre historical age) के ग्रंथ हैं। बहुत-से ब्रह्मवादी हिन्दुओं का विचार है कि वेद ईश्वरीय ग्रंथ हैं। वेदों में भी बहुत-से परिवर्तन हुए हैं। दे० (Hinduism page 90. by Govind Das)। समय के उलट-फेर और इन परिवर्तनों पर भी वेदों में एकेश्वरवाद के स्पष्ट चिह्न पाए जाते हैं। दे० ऋग्वेद १०-१२१-४; ८-१-१; ६-४५-१६; १-१२१-१०; १-१६४-२०; १-५२-१४; यजु० ३६-३।

२. Indian Philosophy भाग १ पृष्ठ ४५३।

आदि के रोगों में ग्रस्त हो जाता है तो फिर वह गिरता ही चला जाता है यहाँ तक कि बुद्धि से स्वतन्त्रतापूर्वक काम लेने की क्षमता उसमें शेष नहीं रहती। सत्य की सीधी और सहज बात समझने में वह असमर्थ रहता है। क़ुरआन सत्य को स्पष्ट और पूर्ण रूप में सम्पूर्ण मानव-जाति के समक्ष प्रस्तुत करता है। और लोगों को उस धर्म की ओर आमन्त्रित करता है जो वास्तव में सदैव से मानव का वास्तविक धर्म रहा है। और जिसके चिह्न आज भी प्राचीन ग्रन्थों, शिलालेखों और प्राचीन अवशेषों में पाये जाते हैं।

क़ुरआन से पहले बहुत-सी आसमानी किताबें उतर चुकी हैं परन्तु क़ुरआन के बाद अब कोई किताब उतरने वाली नहीं है और न हज़रत मुहम्मद सल्ल० के बाद अब कोई नया नबी आनेवाला हैं। क़ुरआन अल्लाह की किताब है या नहीं यह एक गंभीर प्रश्न है इस पर विचार करना हमारा परम कर्तव्य है। यदि क़ुरआन ईश्वरीय ग्रंथ है और हमने इसे स्वीकार न किया तो इसका परिणाम भयंकर रूप में हमारे सामने आयेगा। हम सांसारिक जीवन में उसके प्रकाश और मार्ग-दर्शन से वञ्चित रह जायेंगे और आख़िरत में, जिसके आने की सूचना क़ुरआन ने दी है, हम ऐसे दुःखदायी अज़ाब के भागी ठहरेंगे जिससे छुटकारा पाना हमारे लिए असंभव होगा।

यदि हम अपना हित चाहते हैं तो हम हर प्रकार के पक्षपात से हट कर यह निर्णय करें कि क़ुरआन ईश्वरीय वाणी है या नहीं। और यदि हम अध्ययन, विचार और अनुशीलन के पश्चात् इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि क़ुरआन किसी मनुष्य की रचना नहीं है बल्कि वास्तव में वह अल्लाह की किताब है जिसको अल्लाह ने मनुष्य की 'हिदायत' (Guidance) के लिए उतारा है तो फिर न्याय और बुद्धिमत्ता की बात यही है कि हम उसे अल्लाह की किताब मानें और उसके आदेशों और शिक्षाओं के अनुसार अपने जीवन का निर्माण करें। और अपने दूसरे भाइयों को भी भलाई और कल्याण के वास्तविक स्रोत से परिचित करायें ताकि उन्हें भी अपने कर्तव्यों का ज्ञान हो सके। इस मौक़ में वे उस काम के लिए खड़े हो सकें जो शुभ-काम उनसे उनका पालन-कर्ता (अल्लाह) लेना चाहता है। वे अपने वर्तमान जीवन को सफल बना सकें और भविष्य (आख़िरत) में उन्हें सुख और आनन्द प्राप्त हो सके और अल्लाह के अज़ाब से वे अपने-आप को बचा सकें।

क़ुरआन के

कुछ महत्वपूर्ण विषयों की एक झलक

मुहम्मद अबदुल हई

१—अल्लाह

सत्ता और गुण, सब कुछ जानने वाला, बड़ा उदार, क्षमा करने वाला, दयावान और कृपाशील, सर्वशक्तिमान और सागर, स्रष्टा, रब (पालनकर्ता), बन्दों पर उसके उपकार, अल्लाह के मौजूद और एक होने की दलीलें, अल्लाह के अलावा कोई इलाह (उपास्य) नहीं।

२—मुहम्मद (सल्ल०)

चरित्र व आचरण, वे भी एक मनुष्य थे, ज़िम्मेदारी, सत्य मार्ग की कठिनाइयाँ, आप पर ईमान, आपका आज्ञापालन, आप पर अल्लाह की विशेष कृपायें।

३—क़ुरआन

विशेषताएं, ईश ग्रन्थ होने की दलील, क़ुरआन पर ईमान।

४—आख़िरत

आदमी की मौत, मौत के बाद, उठाया जाना और क़ियामत का आना, मरने के बाद के जीवन की ज़रूरत और उसका प्रमाण, हिसाब-किताब, आख़िरत को न मानने के नतीजे, आख़िरत की विपदाना, दोज़ख़, जन्नत।

५—इबादतें

नमाज़, ज़कात, रोज़ा, हज्ज।

६—सदाचरण और समाज व्यवहार

नैतिक दोष जो क़ुरआन मिटाना चाहता है, नैतिक गुण जो क़ुरआन पैदा करना चाहता है, माता-पिता और नातेदारों के हक़, यतीमों, मुहताजों और पड़ोसियों के हक़, पति-पत्नी के हक़ और आदर्श रहन-सहन, उठने-बैठने के तरीक़े।

७—राजनीति

मौलिक दृष्टिकोण, सम्प्रभुत्व, क़ानून और आज्ञापालन, ख़िलाफ़त, मन्त्रण परिषद और राज्य के ज़िम्मेदार, संविधान के मूल सिद्धान्त, राज्य की धारणा, मूल अधिकार, विदेशी राजनीति।

८—जिहाद

अल्लाह की राह में किये गये जिहाद की वास्तविकता और आवश्यकता, जिहाद की महत्ता, अन्याय और अत्याचार का उत्तर, सत्य मार्ग की रक्षा, छल-कपट की सज़ा, भीतरी शत्रुओं का उन्मूलन, शान्ति की रक्षा, सताये हुए मुसलमानों की हिमायत, सामान्य मानुषिक कल्याण की स्थापना, फ़ितना व फ़साद का दमन।

९—नबियों के हालात

हज़रत आदम अ०, हज़रत नूह अ०, हज़रत इदरीस अ०, हज़रत हूद अ०, हज़रत सालेह अ०, हज़रत इबराहीम अ०, हज़रत इसमाईल अ०, हज़रत इसहाक़ अ०, हज़रत लूत अ०, हज़रत याक़ूब अ०, हज़रत यूसुफ़ अ०, हज़रत शुऐब अ०, हज़रत मूसा अ० हारून अ०, हज़रत दाउद अ०, हज़रत सुलैमान अ०, हज़रत अय्यूब अ०, हज़रत यूनुस अ०, हज़रत ज़करिया अ०, हज़रत ईसा अ०।

१०—दीन एक ही है

११—क़ुरआन में ईमान वालों का चित्र

१२—दुआएं

१. अल्लाह

१. सत्ता और गुण

१ : १-३[1] कृपाशील व दयावन्त (रहमान व रहीम), न्याय के दिन का मालिक।
२ : १०७ जमीन और आसमान का बादशाह।
२ : ११५, ११६ पूरब और पच्छिम का स्वामी, जमीन और आसमान का पैदा करने वाला।
२ : १३९ हमारा और तुम्हारा रब।
२ : १६३ अकेला इलाह (पूज्य), दयावन्त व कृपाशील।
२ : २५५ सजीव (Alive) और चिरस्थायी सारी सृष्टि को स्थापित रखने वाला। जमीन और आसमान का स्वामी।
३ : २-६ सजीव (Alive) और चिरस्थायी, सारी सृष्टि को स्थापित रखने वाला।
३ : २६, २७ सम्राट, सम्मानित व अपमानित करने वाला।
४ : ८७ अकेला इलाह (पूज्य) बात का सच्चा।
६ : १२-१८ दयालुता दर्शाने वाला, खिलाने-पिलाने वाला, संकट को दूर करने वाला, अपने बन्दों को वश में रखने वाला।
६ : ६२ वास्तविक उपास्य, तेज हिसाब लेने वाला।
६ : ९५, ९६ बीज और गुठली को फोड़ने वाला। प्रभात का फाड़ निकालने वाला।
७ : १५८ आसमान और जमीन का बादशाह, जीवन-मरण का स्वामी।
९ : १२९ उसके सिवा कोई इलाह (पूज्य) नहीं, बड़े राज-सिंहासन का स्वामी।
१० : ५५, ५६ आसमान और जमीन का मालिक, जिलाने और मारने वाला।
११ : १२३ आसमान और जमीन की छिपी हुई चीज़ों को जानने वाला, सारा मामला उसी की ओर पलटता है।
१३ : ६ क्षमा करने वाला और बड़ी सजा देने वाला।
१३ : ९ छिपी बातों को जानने वाला, महान और उच्च।
१३ : ४१ जैसा चाहे हुक्म दे, जल्द हिसाब लेने वाला।
१६ : ७७ जमीन और आसमान की छिपी बातों को जानने वाला। हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला (सर्वशक्तिमान)।
१७ : १११ उसके कोई बेटा नहीं, उसके राज में कोई शरीक नहीं।
१९ : ६४ सब कुछ जानता है, वह भूलता नहीं।
२० : ४-८ जमीन और आसमान का पैदा करने वाला और मालिक, छिपे और खुले

---

१. पहला अंक सूरः का नम्बर है। उसके बाद आयतों के नम्बर दिये गए हैं। सूरः का नम्बर हर पृष्ठ पर मिलेगा। आयतों के नम्बर किनारों पर देखिये।

२० : ५० हर चीज को रूप प्रदान करने वाला, राह दिखाने वाला।

२० : ११०, १११ मनुष्य की ज्ञान-सीमाओं से परे, जिन्दा और क़ायम।

२२ : ५८-६६ उत्तम रोज़ी देने वाला, जानने वाला, क्षमा करने वाला आदि।

२२ : ७८ सर्वोत्तम संरक्षक मित्र और सर्वोत्तम सहायक।

२३ : १७ उसने जो कुछ पैदा किया है वह उससे ग़ाफ़िल नहीं।

२३ ७८-८० कान-आँख और दिल देने वाला जिलाने और मारने वाला।

२३ : ८४-८६ ज़मीन और उसकी हर चीज का मालिक, सात आसमानों और 'अर्श' का रब, हर चीज का बादशाह।

२३ : ११६ बादशाह ऊँची शान वाला। अकेला इलाह (पूज्य) अर्श का रब।

२४ : ३५ ज़मीन और आकाश का प्रकाश।

२५ : २ ज़मीन और आसमान का मालिक कोई उसका शरीक नहीं।

२५ : ५६ ज़मीन और आसमान का पैदा करने वाला, कृपाशील।

२६ : २४-२८ आसमान और ज़मीन, तुम और तुम्हारे बाप-दादा पूर्व और पश्चिम, सबका रब।

२७ : २५, २६ ज़मीन और आसमान की छिपी चीज़ों को प्रकट करने वाला, सब कुछ जानने वाला अकेला इलाह, बड़े राजसिंहासन का रब।

२८ : ६८-७० जो चाहे पैदा करे, दिलों का भेद जानने वाला, प्रशंसा (हम्द) उसी के लिए है।

२८ : ८८ उसके सिवा हर चीज़ मिटने वाली है, हुक्म उसी का है।

२९ : १९ पहली बार और बार-बार पैदा करने वाला।

३० : ६ अपने वादे के खिलाफ़ नहीं करता।

३० : ११ पहली बार और बार-बार पैदा करने वाला।

३० : ४० पैदा करने वाला, रोज़ी देने वाला, जिलाने और मारने वाला।

३१ : १६ हर छोटी से छोटी चीज़ को जानने वाला और खबर रखने वाला।

३२ : ६-८ खुली और छिपी बातों को जानने वाला, जिसने हर चीज़ को बहुत अच्छी तरह बनाया।

३४ : १, २ प्रशंसा उसी के लिए है, सबकुछ जानता है, हिकमत वाला, दयावान और क्षमा करने वाला।

३४ : २१ हर चीज़ पर निगाह रखने वाला।

३४ : २३-२६ उच्च, भली प्रकार निर्णय करने वाला और ज्ञानवान।

३५ : १, २ आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला, हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला (सर्वशक्तिमान), अपार शक्ति का मालिक, हिकमत वाला।

३६ : ८३ पवित्र सत्ता, जिसके हाथ में हर चीज़ की बादशाहत है।

३७ : ४, ५ अकेला इलाह (पूज्य), आसमानों का, ज़मीन का और जो-कुछ उनके बीच में है, और पूर्वों का स्वामी, इज़्ज़त का मालिक।

३७ : १८० इज़्ज़त का मालिक।

३८ : ६६ आसमानों, ज़मीन और जो-कुछ इनके बीच में है सबका रब, अकेला और प्रभुत्वशाली।

३९ : ६	राज्य उसी का है, उसके सिवा कोई इलाह् (पूज्य) नहीं।
३९ : ६२, ६३	हर चीज़ का पैदा करनेवाला, हर एक का संरक्षक, ज़मीन और आसमान की कुंजियाँ उसी के पास हैं।
३९ : ६७	क़ियामत के दिन तमाम ज़मीन उसकी मुट्ठी में होगी।
४० : २, ३	अपार शक्ति का मालिक, सब-कुछ जाननेवाला, पापों (गुनाहों) का क्षमा करनेवाला।
४० : १५	ऊँचे दरजों का मालिक और अर्श वाला।
४० : १९, २०	आँखों की चोरी और सीने के भेद जानता है, (सबकुछ) सुनने वाला और देखने वाला।
४१ : ४३	क्षमा कर देने वाला और दु:खदायी अज़ाब देनेवाला।
४१ : ५३, ५४	हर चीज़ से सूचित, हर चीज़ को घेरे हुए।
४२ : ९	काम बनाने वाला, मरे हुओं को जिलानेवाला।
४२ : ११, १२	उस जैसी कोई चीज़ नहीं, आसमानों और ज़मीन की कुंजियाँ उसी के हाथ में हैं।
४२ : १९	अपने बन्दों पर मेहरबान, जिसे चाहता है रोज़ी देता है।
४२ : २४-३१	झूठ को मिटाता है, तौबः (प्रायश्चित्त) कबूल करता है, निराशा के बाद वर्षा करता है।
४२ : ४९-५१	जो चाहता है पैदा करता है, जिसे चाहता है बेटियाँ देता है और जिसे चाहता है बेटे।
४३ : ८४, ८५	आसमानों में भी इलाह् (पूज्य) और ज़मीन में भी, क़ियामत का ज्ञान उसी को है।
४४ : ६-८	उसके सिवा कोई इलाह् नहीं, तुम्हारा और तुम्हारे बाप-दादा का रब।
४५ : ३६, ३७	आसमानों और ज़मीन का रब, पूरे संसार का रब।
४८ : १४	आसमानों और ज़मीन का राज्य उसी का है, क्षमा करनेवाला, दयावन्त।
५१ : ५८	रोज़ी देने वाला, बलवान और दृढ़।
५३ : ४३-५३	वह हँसाता और रुलाता है, मारता और जिलाता है, धनी और धनहीन बनाता है।
५४ : ५५	हर प्रकार का सामर्थ्य रखनेवाला बादशाह।
५५ : ७८	प्रताप, प्रतिष्ठा और बरकत वाला।
५७ : १-६	अपार शक्ति का मालिक, हिकमत वाला, सबसे पहला (आदि), सबसे पिछला (अन्त), व्यक्त और अव्यक्त, दिलों के भेद जाननेवाला।
५९ : २२-२४	खुले और छिपे का जाननेवाला, कृपाशील, दयावान, बादशाह और हर त्रुटि से पाक, शान्ति प्रदान करनेवाला, संरक्षक, पैदा करनेवाला, आदि।
६२ : १	उच्च, हिकमत वाला।
६४ : १	राज्य उसी का है, और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है (सर्वशक्तिमान) है।
६५ : १२	सात आसमान पैदा किये और वैसे ही ज़मीनें, उसका ज्ञान हर चीज़ को घेरे हुए है।

७२ : ३ उसकी कीर्ति बहुत बड़ी है, वह न पत्नी रखता है, न बच्चे।

७३ : ९ पूरब और पश्चिम का मालिक।

८५ : १२-१६ उसकी पकड़ सख्त है, क्षमाशील और दया करने वाला, जो चाहे कर देता है।

८७ : १-५ बड़ी कीर्ति वाला, जिसने पैदा किया, संवारा और रास्ता दिखाया।

९५ : ८ सबसे बड़ा हाकिम।

११२ : १-४ वह एक है, अनपेक्ष, न किसी का बाप न किसी का बेटा।

११४ : १-३ इलाह (पूज्य), वास्तविक सम्राट और रब (पालन कर्ता)।

(२) सबकुछ जानने वाला

२ : २९ वह सब-कुछ जानता है।

२ : ३०-३३ अल्लाह का ज्ञान फ़िरिश्तों से ज़्यादा है।

२ : ७४-७७ अल्लाह तुम्हारे कामों से बेख़बर नहीं।

२ : ९६ जो तुम करो, अल्लाह देख रहा है।

२ : २३५ तुम्हारे दिलों का हाल अल्लाह को मालूम है।

३ : ५ अल्लाह से ज़मीन और आसमान की कोई चीज़ छिपी हुई नहीं।

३ : २९ तुम अपने मन की बात ज़ाहिर करो या छिपाओ, अल्लाह जानता है।

६ : ३ तुम्हारी छिपी और खुली सब बातें जानता है।

६ : ५९ उसके पास ग़ैब की कुंजियाँ हैं, जिन्हे उसके सिवा कोई नहीं जानता।

६ : ८० अल्लाह का ज्ञान हर चीज़ को घेरे हुए है।

१० : ६१ तुम जिस हाल में होते हो और जो कुछ करते हो, हम तुम्हारे सामने होते हैं, उससे छोटी-बड़ी कोई चीज़ छिपी हुई नहीं।

११ : ५ वह इनकी खुली और छिपी बातों को जानता है, दिलों के भेद तक उसे मालूम हैं।

११ : १२३ आसमानों और ज़मीन की छिपी चीज़ों का ज्ञान अल्लाह को है, वह तुम्हारे कामों से बेख़बर नहीं।

१३ : ८-१० गर्भ में क्या है, चुपके से बात हो या ज़ोर से, दिन में हो या रात में, सब अल्लाह को मालूम है।

१३ : ४२ प्रत्येक प्राणी जो कुछ कर रहा है, सब अल्लाह को मालूम है।

१५ : २४ जो लोग गुज़र चुके और जो आनेवाले हैं, अल्लाह उन सबके हालात जानता है।

१६ : १९ जो तुम छिपाते हो, और जो तुम ज़ाहिर करते हो, उसे अल्लाह जानता है।

१८ : २६ आसमान और ज़मीन की छिपी हुई बातें जानता है।

२० : ७ छिपे भेद उसे मालूम हैं।

२० : ११० जो आगे है और जो पीछे है, वह सब जानता है।

२२ : ७० ज़मीन और आसमान में जो-कुछ है, वह उसे जानता है, यह बात अल्लाह के लिए आसान है।

२७ : ७४, ७५ तेरा रब जानता है, जो ये सीनों में छिपाते हैं और जो ज़ाहिर करते हैं।
३१ : २३ वह दिलों की बातें जानता है।
३१ : ३४ क़ियामत का ज्ञान उसी को है, गर्भ में क्या है, कल तुम क्या करोगे और कहाँ मरोगे, अल्लाह को सब मालूम है।
३४ : २ ज़मीन में क्या दाख़िल होता है और क्या बाहर आता है, आसमान से क्या उतरता है और उसमें क्या चढ़ता है, अल्लाह को सब मालूम है।
३४ : ३ ज़मीन और आसमान का कोई कण भी उससे छिपा हुआ नहीं है।
३५ : ११ कोई मादा गर्भवती होती है या जनती है, अल्लाह को उसका ज्ञान है।
३५ : ३८ ज़मीन और आसमान की छिपी बातें और दिलों के भेद को जानता है।
४१ : ४७ क़ियामत का ज्ञान उसी को है।
४७ : १९ तुम्हारी चलत-फिरत सब उसे मालूम है।
५० : १६ वह मनुष्य की प्राण-नाड़ी से भी बहुत करीब है।
५८ : ७ हर तीन के साथ चौथा और हर चार के बाद पाँचवाँ अल्लाह होता है। वह सब-कुछ जानता है।
६४ : ४ आसमानों और ज़मीन में जो-कुछ है और तुम छिपाओ या ज़ाहिर करो। अल्लाह को सब मालूम है।
६५ : १२ अल्लाह का ज्ञान हर चीज़ को घेरे हुए है।
६७ : १३ तुम बात छिपाओ या ज़ाहिर करो, अल्लाह दिलों के भेद तक जानता है।
७२ : २६-२८ ग़ैब का जानने वाला है और हर चीज़ को उसने गिन रखा है।

(३) बड़ा उदार

२ : २३५ अल्लाह क्षमा करनेवाला और सहनशील है।
१० : ११ अगर अल्लाह लोगों की बुराई में जल्दी करता, तो उनका समय पूरा हो चुका होता।
१६ : ६१ अल्लाह लोगों के अत्याचार पर उन्हें एक निश्चित समय तक मुहलत देता है।
१८ : ५८ अल्लाह लोगों के करतूतों पर उन्हें तुरन्त पकड़ने लगे, तो उनपर झट अज़ाब भेज दे।
३५ : ४५ अगर लोगों के कर्मों पर उनकी पकड़ तुरन्त हो जाये, तो ज़मीन पर अल्लाह किसी चलनेवाले को न छोड़े।

(४) क्षमा करनेवाला

२ : ३१ वह तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा।
२ : ३७ वह क्षमा करनेवाला और दया करने वाला है।
२ : १६० बड़ा क्षमा करनेवाला और दया करने वाला है।
२ : १७३ अल्लाह क्षमा करनेवाला और दया करने वाला है।
२ : १८७ उसने क्षमा किया।
४ : ४३ वह नर्मी से काम लेने वाला और क्षमा करने वाला है।

४ : ११०	बुरा काम करने वालों को भी अल्लाह क्षमा कर देता है।
६ : ५४	अल्लाह ने दया को अपने ऊपर अनिवार्य ठहरा लिया, वह क्षमा करने वाला दयावन्त है।
१३ : ६	तेरा रब क्षमा करने वाला है।
१५ : ४९	मेरे बन्दों से कह दो कि मैं बड़ा क्षमाशील और दयावन्त हूँ।
२० : ८२	जो तौबः करे, ईमान लाये नेक काम करे, मैं उसे क्षमा कर देने वाला हूँ।
३३ : ७३	अल्लाह क्षमा करने वाला दयावान् है।
३९ : ३५	अल्लाह बुराइयों को दूर कर देता है।
३९ : ५३	मेरे बन्दो ! जिन्होंने अपने-आप पर ज़ुल्म किया है, अल्लाह की दयालुता से निराश मत हो।
४० : ३	वह गुनाहों का क्षमा करने वाला और तौबः क़बूल करने वाला है।
४२ : २५	वह बन्दों की तौबः स्वीकार करता है और उनकी ग़लतियों को क्षमा करता है।
४२ : ३०	वह बहुत-से गुनाहों को क्षमा कर देता है।
५३ : ३२	तेरा रब अत्यन्त क्षमाशील है।

(५) करुणामय और कृपाशील

१ : २	अत्यन्त कृपाशील और दयावन्त।
२ : १०५	अल्लाह बड़ी कृपा करने वाला है।
२ : १४३	अत्यन्त कृपाशील और दयावन्त है।
२ : १८६	पुकारने वाले की पुकार सुनता है।
२ : २०७	अल्लाह बन्दों पर बड़ी दया दर्शाता है।
२ : २५१	अल्लाह संसार वालों पर बड़े फ़ज़्ल वाला है।
२ : २८६	अल्लाह किसी पर उसकी समाई से बढ़ कर जिम्मेदारी (का बोझ) नहीं डालता।
४ : २९	अल्लाह तुम पर दयावान् है।
४ : १४७	अल्लाह बड़ा गुणग्राहक और जानने वाला है।
६ : ५४	तुम्हारे रब ने अपने ऊपर दयालुता को अनिवार्य कर लिया।
६ : १४७	तुम्हारा रब व्यापक दयालुता वाला है।
७ : १५६	उसकी दयालुता हर चीज़ पर छाई हुई है।
११ : ६१	मेरा रब क़रीब है और दुआओं का क़बूल करने वाला है।
११ : ९०	मेरा रब दयावन्त और प्रेम करने वाला है।
१२ : ५६	हम जिस पर चाहते हैं अपनी दया करते हैं।
१२ : ९२	वह अत्यन्त दयावन्त है।
१२ : ८७	अल्लाह की दयालुता से निराश होना काफ़िरों का काम है।
१५ : ५६	अल्लाह की दयालुता से निराश होना गुमराहों का काम है।
२३ : १०९	तू सबसे बढ़कर दयावन्त है।
३३ : ४३	अल्लाह ईमान वालों पर दया दर्शाता है।

३७ : ७५	हम दुआ के कैसे अच्छे क़बूल करने वाले हैं।
४० : ६०	तुम्हारे रब ने कहा, मुझसे दुआ करो, मैं क़बूल करूँगा।
४२ : १९	अल्लाह अपने बन्दों दर दयावन्त है।
४२ : २७, २८	वह अपनी कृपा फैला देता है।
५७ : ९	वह तुम पर स्नेह दर्शाने वाला दयालु है।

(६) सर्वशक्तिमान् और शासक

२ : २०	अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत रखता है, वह सर्वशक्तिमान् है।
२ : १०७	ज़मीन और आसमान का राज्य अल्लाह ही का है।
२ : ११५, ११६	पूर्व और पश्चिम सब अल्लाह का है, आसमानों और ज़मीन में सब-कुछ उसी का है, सब उसके आज्ञापालक है।
२ : १३८	तुम जहाँ होगे, अल्लाह तुम्हें इकट्ठा कर लेगा।
२ : १६५	हर तरह की शक्ति अल्लाह ही के लिए है।
२ : २४७	अल्लाह जिसे चाहे, बादशाही दे।
२ : २५३	अल्लाह जो चाहता है करता है।
३ : २६, २७	अल्लाह बादशाही का मालिक है, जिसे चाहे बादशाही दे, सम्मान और अपमान उसी के हाथ में है।
५ : १२०	आसमानों और ज़मीन, और जो-कुछ उनमें है, सब पर अल्लाह की बादशाही है।
६ : १३	रात और दिन में जो जीव बसते हैं, सब उसी के हैं।
११ : ५६	ज़मीन पर हर चलने-फिरने वाले की चोटी अल्लाह पकड़े हुए है।
११ : १०७	तेरा रब जो चाहता है, कर देता है।
१२ : २१	अल्लाह का अपने काम पर पूरा अधिकार है।
१२ : ४०	अल्लाह के अलावा किसी का शासन नहीं।
१३ : १३	वह बड़ी शक्ति वाला है।
१६ : ४०	जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है, तो कहता है, हो जा, वह हो जाती है।
२० : ६	आसमानों में और ज़मीन में, और इन दोनों के बीच, जो-कुछ है, अल्लाह का है।
२० : ११४	अल्लाह सच्चा बादशाह है उच्च व श्रेष्ठ।
२२ : ६१	रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में।
३२ : २६, २७	वह बंजर ज़मीन की ओर पानी बहाता है, फिर उससे खेती पैदा करता है।
३५ : १६, १७	अगर अल्लाह चाहे तो तुम्हें मिटा दे और नये जीव ला बसाए।
३५ : ४१	अल्लाह आसमानों और ज़मीन को थामे रखता है।
३६ : ८०, ८१	उसने हरे पेड़ से आग पैदा की, आसमानों और ज़मीन को बनाया, वह बड़ा पैदा करने वाला और जानने वाला है।
३९ : ६५, ६६	आसमानों और ज़मीन और जो-कुछ उनमें है, सब का मालिक।
४३ : ८४	आसमानों और ज़मीन में इलाह (पूज्य) वही है।

३८	७	आसमानों और ज़मीन के मालिक अल्लाह ही के हैं।
५०	३८	अल्लाह ने आसमान और ज़मीन छः दिन में बनाये और वह थका नहीं।
५४	५०	हमारा हुक्म तो आँख की झपकी जैसा है।
६४	१	वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।
६७	१	वह अल्लाह बड़ी बरकत वाला है, जिसके हाथ में बादशाही है।
७४	३१	तेरे रब के लश्करों को उसके सिवा और कोई नहीं जानता।
८५	१६	अल्लाह जो चाहता है करता है।
११४	२	तमाम मनुष्यों का बादशाह।

(७) स्रष्टा

२ : २८	तुम बेजान थे, उसने जान डाली, वही मारता है, वही ज़िन्दा करेगा।
२ : ११६, ११७	आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला, जब कहता है, हो जा, तो हो जाता है।
३ : ६	माँ के पेट में, जैसा चाहता है, तुम्हारा रूप बना देता है।
३ : ४७	जो चाहता है पैदा करता है, कहता है हो जा, तो हो जाता है।
४ : १	उसने तुमको एक व्यक्ति से पैदा किया।
६ : २	उसने तुमको मिट्टी से बनाया।
६ : ९५-१०२	ज़िन्दा को मुर्दे से निकालता है और मुर्दा को ज़िन्दा से, हर चीज़ का पैदा करने वाला।
१० : ३, ४	आसमान और ज़मीन छः दिन में बनाए, पूर्ण प्रबन्ध वह करता है।
१५ : १६-२३	हमने आसमान में बुर्ज बनाये, ज़मीन में पहाड़ खड़े किये, हम सबके मालिक हैं।
१५ : ८६	तेरा रब सब-कुछ पैदा करने वाला और जानने वाला है।
१६ : ३-८	आसमान और ज़मीन बनाये, मनुष्य को वीर्य्य से पैदा किया, चौपाए, घोड़े और खच्चर पैदा किये और बहुत-सी ऐसी चीज़ें, जिनकी तुम्हें ख़बर तक नहीं।
२३ : १२-२२	हमने मनुष्य को मिट्टी के सत से पैदा किया, पहले वीर्य्य, फिर मांस का लोथड़ा और हड्डियाँ, फिर एक नया रूप, अल्लाह सबसे बेहतर पैदा करने वाला और बरकत वाला है, सात आसमान बनाए, आसमान से पानी बरसाया, बहुत-से मेवे पैदा किए, चौपाए जिनमें तुम्हारे लिए बड़े फ़ायदे हैं।
२४ : ४५	हर जानदार को पानी से बनाया, अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है।
२५ : २	हर चीज़ को पैदा किया और उसका एक अन्दाज़ा ठहराया।
२९ : १९	पहली बार पैदा करता है, फिर बार-बार पैदा करता रहता है।
३० : ५४	उसने तुमको कमज़ोर हालत में पैदा किया, फिर ताक़त दी, फिर कमज़ोरी और बुढ़ापा।

३२ : ४-६	आसमान और ज़मीन छः दिन में बनाए, हर काम की व्यवस्था करता है, हर चीज़ को बहुत अच्छी तरह बनाया, तुम्हें कान, आँखें और दिल दिए।
३६ : ७६-८१	पहली बार पैदा किया, हर प्रकार का पैदा करना जानता है, हरे पेड़ से आग पैदा की।
३७ : ५-११	दुनिया के आसमान को तारों से सजाया, लोगों को चिपकते गारे से।
३७ : ९६	अल्लाह ने तुमको पैदा किया और जो कुछ तुम करते हो।
३९ : ५, ६	आसमान और ज़मीन पैदा किए, तुमको एक जान से पैदा किया, तुम्हारा जोड़ा बनाया, माताओं के पेट में तुम्हें वही बनाता है।
५१ : ४७-४९	आसमान को अपने हाथ से बनाया, ज़मीन को बिछाया, हर चीज़ के जोड़े पैदा किए।
६४ : ३	तुम्हारे रूप बनाए, अच्छे रूप।
६७ : २-५	मृत्यु और जीवन बनाया, ऊपर-तले सात आसमान बनाए, दुनिया के आसमान को तारों से सजाया।

(८) रब (पालनकर्ता)

१ : १	पूर्ण सृष्टि का रब (मालिक, स्वामी, पालनेवाला और शासक)।
२ : २१२	जिसे चाहता है, बेहिसाब रोज़ी देता है।
६ : १४	वह सबको खाना देता है, किसी से खाना लेता नहीं।
११ : ६	ज़मीन पर चलने-फिरने वाले प्रत्येक जीव की रोज़ी अल्लाह के ज़िम्मे है।
१३ : १६	आसमान व ज़मीन का रब।
१५ : १९-२२	हमने तुम्हारे लिए रोज़ी जुटाई और उनके लिए, जिनके खिलाने का प्रबन्ध तुम नहीं करते।
१७ : २०	तुम्हारे पालनहार की बख्शिश सबके लिए है।
१९ : ६५	आसमान, ज़मीन और जो-कुछ उनके बीच है, सबका रब।
२४ : ३८	अल्लाह जिसे चाहता है, बेहिसाब रोज़ी देता है।
२६ : ७९, ८०	वह खिलाता और पिलाता है।
२९ : ६०	बहुत-से जीव अपनी रोज़ी नहीं उठाये-फिरते, अल्लाह उन्हें और तुम्हें खिलाता है।
२९ : ६२	अल्लाह रोज़ी कुशादा कर देता है और तंग भी कर देता है।
३० : ४०	अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया, वही रोज़ी देता है।
३४ : २४	तुमको आसमान और ज़मीन से रोज़ी देता है।
४० : १३	आसमान से रोज़ी उतारता है।
४१ : २२	" " "
४२ : १९	वह अपने बन्दों पर मेहरबान है, जिसे चाहता है रोज़ी देता है।
५१ : ५८	अल्लाह ही रोज़ी देनेवाला और ताक़त वाला है।
६२ : ११	अल्लाह सबसे बेहतर रोज़ी देने वाला है।

	चन्द्र, सूर्य सभी उसके वश मे हैं।
७ : ५७, ५८	वर्षा से पहले खुशखबरी की हवाएं भेजता है, जो भारी-भारी बादलों को उठा लाती हैं।
७ : १८५	जमीन और आसमान की बादशाहत, और जो चीजें अल्लाह ने पैदा की है, उन पर नज़र करो।
१० : ३-६	आसमान और जमीन को छः दिन में बनाया और पूरा इन्तज़ाम चला रहा है।
१० : २२, २३	वह थल और समुद्र की सैर कराता है और जब तुम तूफान मे घिर जाते हो तो उसी का पुकारते हो।
१० : ३१, ३२	तुम्हे जमीन और आसमान से वही रोजी देता है और पूरा प्रबन्ध कर रहा है।
१२ : १०५, १०६	आसमान और जमीन मे कितना निशानियाँ हैं, जो तुम्हारे सामने आती हैं।
१३ : २	आसमान को बिना स्तम्भ के खड़ा किया, पूरा प्रबन्ध उसी के हाथ में है।
१३ : ३	जमीन को फैलाया, पहाड़ खड़े किए और नदियाँ बहाईं, मेवे पैदा किए।
१३ : ४	एक ही जलवायु में भिन्न-भिन्न प्रकार के फल उगाए,
१३ : १२, १३	वही बिजली चमकाता है जिससे तुम डरते हो और आशाएँ बांधते हो, वह बड़ी शक्तियों वाला है।
१४ : ३२-३४	जमीन और आसमन बनायें, पानी बरसाया, फल पैदा किये, जहाज़ों को तुम्हारे वश में कर दिया।
१६ : १०-१८	आसमान से पानी बरसाया, चोपायों के लिए चारा उगाया, खेती और फल, रात और दिन, सूर्य और चन्द्रमा और तारे तुम्हारे काम मे लगे हैं, दरियाओं मे ताजा मांस।
१६ : ४२-४५	जमीन और आसमान मे जो कुछ है, सब उसी का है, बन्दगी और इबादत उसी के लिए है।
१६ : ६६-७०	गोबर और खून से भरे पेट से शुद्ध दूध पिलाता है, हर तरह के मेवे, मक्खियो के पेट से शहद।
१६ : ७८	तुम जब पैदा हुए तो कुछ नही जानते थे, तुम्हे कान, आँखें, और दिल दिये।
१६ : ७६	चिड़ियाँ, देखो, हवा मे कैसे उड़ती हैं, उन्हे अल्लाह के अलावा कौन थामे रखता है।
१६ : ८०, ८१	तुम्हारे रहने को घर और खेमे, जानवरों के ऊन और बाल तुम्हारे इस्तेमाल के लिए।
१७ : १२	दिन और रात दो निशानियाँ हैं। तुम रोज़ी कमाते हो और हिसाब रखते हो।
१७ : ४३, ४४	अल्लाह के अलावा कोई और खुदा होता तो अल्लाह से लड़ पड़ता। उसकी महिमा के प्रतिकूल हैं, वे बातें जो ये बनाते हैं।
१७ : ६६, ६७	जब तुम समुद्र में घिर जाते हो, तो उसके अलावा सब को भूल जाते हो

	वही तुम्हें डूबने से बचाता है।
२० : ५३, ५४	ज़मीन को फ़र्श बनाया, पानी बरसाया, भाँति-भाँति के पेड़-पौधे उगाये, खाओ और चौपायों को खिलाओ।
२१ : २१, २२	अल्लाह के अलावा कोई और इलाह (पूज्य) होता तो पूरी व्यवस्था बिगड़ जाती।
२१ : ३०, ३१	आसमान और ज़मीन एक ही थे। अल्लाह ने उन्हें अलग-अलग किया और हर चीज़ को पानी से बनाया।
२१ : ३२, ३३	आसमान को सुरक्षित छत बनाया, सूर्य और चाँद अपने-अपने आसमान (Orbit) में तैर रहे हैं।
२३ : ७८-८१	अल्लाह ने तुम्हारे कान, आँखें और दिल बनाये। तुम्हें ज़मीन से पैदा किया, जिलाता और मारता है।
२३ : ८४, ८५	ज़मीन और जो कुछ उसमें है, वह किसका है।
२३ : ८६, ८७	सातों आसमानों का रब कौन है।
२३ : ८८-९२	हर चीज़ की बादशाही किसके हाथ में है। वह पनाह देता है, वह शिर्क से पाक है।
२४ : ४१, ४२	ज़मीन-आसमान की हर चीज़ अल्लाह का गुण-गान करती है, बादशाही उसी की है।
२४ : ४३, ४४	वह बादलों को चलाता है, फिर उनको मिला देता है, उससे पानी बरसता है, रात-दिन को बदलता है।
२४ : ४५, ४६	हर जानदार को पानी से बनाया, जो चाहता है पैदा करता है, जिसे चाहता है सीधा रास्ता दिखाता है।
२५ : ४५-४९	छाया को लम्बा करता है, फिर समेट लेता है। रात को पर्दा और नींद को आराम बनाया। पानी बरसाया, मुरदा भूमि को ज़िन्दा कर दिया।
२५ : ६१-६२	आसमानों में बुर्ज बनाये, रोशन सूर्य और चमकता चाँद।
२६ : ७, ८	ज़मीन से कैसी सुन्दर चीज़ें उगाईं।
२६ : २३-२८	आसमान और ज़मीन और जो कुछ इनके बीच है, उन सबका रब।
२७ : ६०-६२	आसमान और ज़मीन पैदा किये, पानी बरसाया, हरे-भरे बाग़ उगाये, ज़मीन को ठहरने की जगह बनाया, दरिया बहाये, विकल व्यक्तियों की दुआएँ सुनता है।
२७ : ६३-६५	वन और समुद्र की अँधियारियों में रास्ता दिखाता है।
२९ : ४४	ज़मीन और आसमान को हिकमत के साथ पैदा किया।
२९ : ६१-६३	आसमान और ज़मीन बनाये, सूर्य और चन्द्र को तुम्हारे काम पर लगाया।
३० : २०-२७	तुमको मिट्टी से बनाया, तुम्हारे जोड़े पैदा किये और आपसी प्रेम दिया, अलग-अलग बोलियाँ, अलग-अलग रंग, नींद का आराम, रोज़ी की खोज, बिजली की चमक भय और आशा के साथ, आसमान और ज़मीन क़ायम हैं, सब उसके आज्ञापालक हैं, पहली बार पैदा करता है और बार-बार पैदा करता है। उसकी शान बड़ी ऊँची है।

३० : ३७	रोज़ी बढ़ाता है और नपी-तुली करता है।
३० : ४६	हवाओं को शुभ-सूचनाओं के साथ भेजता है, अपनी कृपाओं के फल चखवाता है।
३० : ४८-५१	हवाएँ चलाता है जो बादलों को उठाती हैं, उसमें से पानी निकालता है, मुरदा ज़मीन को ज़िन्दा करता है।
३० : ५४	तुमको कमज़ोर पैदा किया, फिर शक्ति दी, फिर कमज़ोरी और बुढ़ापा। जो चाहता है पैदा करता है।
३१ : १०, ११	तुम आसमानों को बिना स्तम्भ के देखते हो। ज़मीन पर पहाड़ संतुलन बनाये रखने के लिये, हर तरह के प्राणी।
३१ : २५, ३०	उनसे पूछो कि आसमान और ज़मीन को किसने पैदा किया, तो वे बोल उठेंगे कि अल्लाह ने।
३१ : ३१, ३२	अल्लाह की कृपा से नवकायें समुद्र में चलती हैं ताकि वह तुमको अपनी कुछ निशानियाँ दिखाये।
३२ : २७	तुम देखते नहीं कि अल्लाह बन्जर ज़मीन की ओर पानी दौड़ाता है और खेती उगाता है।
३५ : ११-१३	तुमको मिट्टी से बनाया, तुम्हारा जोड़ा पैदा किया, सूर्य और चाँद को तुम्हारे काम में लगाया, बादशाही उसी की है।
३५ : २७, २८	आसमान से पानी बरसाया, भाँति-भाँति के मेवे पैदा किये, पहाड़ों में सफेद, लाल और काले।
३६ : ३३-३६	मुरदा ज़मीन एक निशानी है। अल्लाह उसे ज़िन्दा करता है। अनाज उगाता है, बाग-बगीचे, हर चीज़ का जोड़ा।
३६ : ३७-४०	रात एक निशानी है, वह उसमें से दिन खींच लेता है। सूर्य निर्धारित मार्ग पर चलता है और चाँद की मंज़िलें निश्चित हैं।
३६ : ४१-४४	दरिया में नवकाओं का चलना एक निशानी है और दूसरी सवारियाँ अल्लाह की कृपा एक निर्धारित समय तक।
३९ : ४-७	उसने आसमान और ज़मीन को हिक्मत के साथ पैदा किया, वही तुमको तुम्हारी माताओं के पेट में पैदा करता है।
३९ : २१	आसमान से पानी बरसाया, फिर उसे स्रोत बनाकर बहाया, भाँति-भाँति की खेतियाँ उगती हैं।
३९ : ४२	अल्लाह मरते समय प्राण निकाल लेता है और सोते में भी।
४० : ६१, ६२	रात बनाई कि आराम करो, दिन को चमकता बनाया।
४० : ६७, ६८	तुमको मिट्टी से बनाया, पहले वीर्य, फिर लोथड़ा, फिर बच्चा, फिर जवान, फिर बूढ़ा, वही जिलाता है, वही मारता है।
४० : ७९-८१	चौपाए बनाए, उनपर सवार होते हो और उनका मांस खाते हो और बहुत से लाभ हैं। अल्लाह की निशानियों का इन्कार कैसे करोगे?
४१ : ३७, ३८	रात-दिन, सूर्य-चन्द्र उसकी निशानियाँ हैं, सूर्य-चन्द्र को सजदा न करो। उसी अल्लाह को सजदा करो जिसने उन्हें पैदा किया।
४१ : ३९	उसकी निशानी देखो, पृथ्वी सूखी पड़ी थी, उसी ने पानी बरसाया और

वह हरी-भरी हो गई।

४२ : २९-३१ आसमान और जमीन का पैदा करना उसी की निशानी है।

४२ : ३२-३५ समुद्र में चलने वाले जहाज उसी की निशानी हैं।

४३ : ९-११ आसमान और जमीन उसी ने पैदा किए, जमीन को बिछौना बनाया, पानी बरसाया, मुर्दा बस्ती को जिन्दा किया।

४३ : ८७ तुमको अल्लाह ने पैदा किया, फिर तुम कहाँ बहके फिरते हो ?

४५ : ३-६ आसमान और जमीन में ईमान वालों के लिए अल्लाह की निशानियाँ हैं।

४५ : १२, १३ उसने समुद्र को तुम्हारे वश में कर दिया, उस पर जहाज चलते हैं। विचार करने वालों के लिए निशानियाँ हैं।

५० : ६-११ आसमान को देखो कैसा बनाया और कैसा सजाया, जमीन, वर्षा, खेतियाँ और बाग।

११ : २०-२३ जमीन में निशानियाँ हैं विश्वास करने वालों के लिए।

६ : ५७-६२ तुम्हें पैदा किया। क्या तुम पैदा करते हो या हम ?

६ : ६३-६७ खेती तुम उगाते हो या हम ?

६ : ६८-७० पानी तुम बरसाते हो या हम ? यदि वह खारी होता ?

६ : ७१-७४ आग को देखो, इसके लिए पेड़ तुम उगाते हो या हम ?

७ : १-५ उसने जीवन और मृत्यु को पैदा किया। सात आसमान ऊपर-तले बनाए, उसकी बनावट में कोई खराबी नहीं।

७ : १९-२१ हवा में चिड़ियों को वही रोके हुए है।

७ : २३, २४ तुम्हें पैदा किया, कान, आँख और दिल दिए जमीन में फैला दिए।

७ : २०-२८ तुमको तुच्छ पानी से पैदा किया, जमीन को समेटने वाली बनाया, तुम्हें मीठा पानी पिलाया।

६ : १७-२० ऊँट को देखो, आसमान को देखो, पहाड़ों को देखो, जमीन को देखो, देखो उन्हें कैसा बनाया है ?

(११) अल्लाह के अलावा कोई इलाह (उपास्य) नहीं

: ७५-७६ ऐसी चीज की पूजा क्यों करते हो जिसे तुम्हारे हानि-लाभ पर कोई अधिकार नहीं।

: ४०, ४१ संकट में तुम उसे ही पुकारते हो और उस समय तुम उन्हें भूल जाते हो, जिन्हें तुम उसका साझी बनाते हो।

: ४६, ४७ अल्लाह के अलावा कौन है जो तुम्हें आँखें और कान दे सके।

: ७१ क्या हम अल्लाह के अलावा उसे पुकारें जो न भला कर सके न बुरा।

: १०० उन लोगों ने जिन्नों को अल्लाह का साझी ठहराया, हालाँकि उनको उसीने पैदा किया है।

: १९१-१९४ क्या उन लोगों को अल्लाह का साझी बनाते हो जो कुछ भी पैदा न कर सकें, बल्कि स्वयं पैदा किये जायें।

: १९५ न उनके पैर, न हाथ, न आँखें, न कान,

: ३४ तुम्हारे बनाये हुए शरीकों में कोई ऐसा नहीं जो पैदा कर सके और बार-

	बार पैदा कर सके। वह अल्लाह ही है।
१० : ३५, ३६	तुम्हारे बनाये हुए साझीदारों में कोई ऐसा नहीं जो सीधा रास्ता दिखाए। अल्लाह ही सीधा रास्ता दिखाता है।
१० : ६६-६६	अल्लाह के अलावा जो लोग दूसरों को पुकारते हैं, वे अटकल के पीछे चलते हैं।
११ : १०१	वे जिन इलाहों (उपास्यों) को अल्लाह के अलावा पुकारते थे, वे उनके कुछ भी काम न आये।
१२ : ३६, ४०	भला अलग-अलग स्वामी अच्छे या एक अल्लाह।
१३ : १४-१६	अल्लाह के अलावा लोग जिन्हें पुकारते हैं, वे उनकी पुकार का जवाब नहीं दे सकते। उन्होंने कुछ भी पैदा नहीं किया। अल्लाह हर चीज़ का पैदा करने वाला है।
१३ : ३३	अल्लाह हर व्यक्ति के कामों की निगरानी करने वाला है, लोगों ने अल्लाह के ऐसे साझी बना लिए हैं जो अल्लाह जैसे गुण नही रखते।
१६ : १७	जो पैदा करे वह उस जैसा नहीं हो सकता जो पैदा न करे।
१६ : २०-२२	अल्लाह के अलावा ये जिन लोगो को पुकारते हैं, वे कुछ पैदा नही कर सकते, वे तो स्वयं बनाये जाते हैं।
१७ : ५६, ५७	अल्लाह के अलावा जिन्हें तुम खुदा समझते हो, उन्हें पुकार कर देखो, वे कुछ अधिकार नही रखते।
१८ : १५	उससे बड़ा अन्यायी कौन है जो अल्लाह के अलावा दूसरों को खुदा बना ले।
१६ : ४२	जो न सुने, न देखे, न कुछ काम आ सके, वह इबादत के योग्य नही कि उसकी इबादत की जाये।
२१ : २१	अल्लाह के अलावा जिनको पूजते हैं, क्या वे इन्हे दोबारा जिन्दा कर सकेंगे ?
२१ : ४३	जो संकटों से छुटकारा न दिला सकें, वे इस योग्य नही कि उनकी इबादत की जाये। वे तो आप अपने काम भी नही आ सकते।
२१ : ६६, ६७	जो न लाभ पहुँचा सके और न हानि, उसकी भक्ति करना बड़े अफ़सोस की बात है।
२२ : ११-१३	यह बड़े घाटे की बात है कि मनुष्य उन्हें इलाह (उपास्य) बनाये जो न हानि पहुँचा सकें और न लाभ।
२२ : ७३, ७४	अल्लाह के अलावा ये जिनको पुकारते हैं, वे एक मक्खी नहीं बना सकते।
२५ : ३	जो पैदा न कर सके, जो अपने लाभ-हानि पर अधिकार न रखे, न मृत्यु और जीवन उसके अधिकार में हो, वह इलाह (पूज्य) नही हो सकता।
२८ : ७०-७४	वही इलाह (उपास्य) है, उसके अलावा कोई इलाह नही। उसके अलावा कोई रात को दिन और दिन को रात नही बना सकता।
३० : ४०,	पैदा करे, रोज़ी दे, मौत दे और फिर दोबारा पैदा करे वही अल्लाह है, उसका कोई शरीक नही।
३१ : १०, ११	अल्लाह की पैदा की हुई चीज़ें हर ओर दिखाई देती हैं। जिन्हें तुम उसका शरीक बनाते हो, दिखाओ उन्होंने क्या पैदा किया।

३४ : २२	जिनको तुम अल्लाह का शरीक समझते हो, वे आसमान और ज़मीन में क्षण-भर भी किसी वस्तु के स्वामी नहीं।
३५ : ४०, ४१	आसमान और ज़मीन में अल्लाह के अलावा किसीने कोई एक चीज़ भी पैदा नहीं की। वही आसमान और ज़मीन को थामे हुए है।
३६ : २३	अल्लाह हानि पहुंचाना चाहे तो कौन ऐसा है, जो छुड़ा सके।
३६ : ७४, ७५	अल्लाह के अलावा जिन्हें इलाह (उपास्य) बनाते हैं, वे उनकी मदद की ताकत नही रखते।
३९ . ३८	अल्लाह हानि पहुंचाना चाहे या कृपा करे कोई रोक नही सकता।
४६ : ४, ५	जिनको तुमने इलाह (पूज्य) बना लिया है, दिखाओ उन्होंने क्या पैदा किया। उन्हें तो तुम्हारे पुकारने की खबर नहीं।
६७ : ३०	ज़मीन के सोते सूख जायें तो कोई है अल्लाह के अलावा जो उन्हें वहां लाये।

२. मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

(१) चरित्र व आचरण

३ : १५९-१६१	नम्र स्वभाव वाले, न कठोर न क्रूर, छल-कपट से दूर।
५ : १५	क्षमा कर देने वाले।
८ : ४०	अल्लाह पर भरोसा करने वाले।
९ : ६१	ईमान वालों के लिए 'रहमत'।
९ : १२८	लोगों के कष्टों पर कुढ़ने वाले, उनकी भलाई के इच्छुक, फ़ायदा पहुंचा वाले।
१८ : ६	ईमान न लाने वालों के ग़म मे घुलने वाले।
२१ : १०७	पूरी दुनिया के लिए रहमत।
२६ : ३	ईमान न लाने वालों के गम में घुलने वाले।
३३ : २१	पालन के लिए पूर्ण आदर्श।
३३ : ५३	लज्जा करने वाले।
३५ : ८	लोगों के गुमराह होने पर बहुत तक्लीफ़ महसूस करने वाले।
६८ : ४	बड़े ऊँचे चरित्र वाले।
७३ : २०	रातों को उठ-उठ कर उपासना करने वाले।

(२) वे भी एक मनुष्य थे

६ : ५०	अल्लाह के खज़ानों के मालिक नहीं, ग़ैब का ज्ञान नहीं रखते और न फ़रिश्ता हैं।
६ : ५७, ५८	लोगों पर अज़ाब ले आने का अधिकार नहीं रखते।
७ : १८८	अपने निजी हानि-लाभ पर भी कोई अधिकार नहीं, न ग़ैब जानने वाले हैं।
१० : ४९	अपने निज के लिए भी हानि या लाभ का अधिकार नहीं। हां, जो अल्लाह चाहे।
१३ : ३८	आपसे पहले भी रसूल आये, उनकी पत्नियां थीं और सन्तानें भी।

१७ : ९३	एक मनुष्य अल्लाह का सन्देश पहुँचाने वाले।
१७ : ९४, ९५	अगर ज़मीन पर फ़िरिश्ते बसते होते तो रसूल भी फ़िरिश्ते आते।
२१ : ७, ८	आपसे पहले भी जो रसूल आये वे मनुष्य ही थे। वे खाना खाते थे और अमर नहीं थे।
१८ : ११०	तुम्हारे जैसा ही एक मनुष्य।
२५ : २०	पहले भी रसूल आये, वे खाना खाते और बाज़ारों में चलते-फिरते थे।
३३ : ६३	उन्हें क़ियामत का समय मालूम नहीं।
४६ : ९	वे नहीं जानते कि उनके साथ क्या होगा और तुम्हारे साथ क्या होगा।

(३) ज़िम्मेदारी

२ : १५१	अल्लाह की आयतों को पढ़कर सुनना, किताब और हिकमत की शिक्षा देना।
२ : १२०	मुहम्मद सल्ल० लोगों की इच्छाओं का पालन नहीं कर सकते।
२ : १४५	अगर वे लोगों की इच्छाओं का पालन करें तो वे अन्यायी होंगे।
३ : १४४	मुहम्मद बस अल्लाह के रसूल हैं।
३ : १६४	लोगों को अल्लाह की आयतें सुनाना, उनकी आत्मा को शुद्ध करना और उन्हें किताब व हिकमत की शिक्षा देना।
४ : १०५	अल्लाह के क़ानून के अनुसार लोगों के मामलों को तै करना।
५ : १६, १९	लोगों को गुमराही की अँधियारियों से निकालकर सन्मार्ग के प्रकाश में लाना और सीधा रास्ता दिखाना।
५ : २१	शुभ-सूचना देने वाले और डराने वाले।
६ : १९	लोगों को बुराइयों के परिणाम से सचेत करना।
७ : १५७	भलाई का हुक्म देना, बुराई से रोकना, पाक चीज़ों को हलाल और नापाक को हराम ठहराना। उन बन्धनों को काटना जिनमें लोग जकड़े हुए थे।
७ : १५८	वे सबकी ओर रसूल बनाकर भेजे गए हैं।
१० : १५	अल्लाह की बातों को वे अपनी इच्छा से नहीं बदल सकते।
१३ : ६०	नबी का काम सन्देश पहुँचा देना है।
१६ : ३६	हर पैग़म्बर ने यही सन्देश दिया कि अल्लाह की बन्दगी कर और तागूत की बन्दगी करने से बचो।
२७ : ८०, ८१	जो लोग सुनना न चाहें और मुँह फेरकर भागें उन्हें सीधे रास्ते पर डालना आपके ज़िम्मे नहीं।
३३ : ४०	मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और नबियों के सिलसिले को ख़त्म करने वाले (आख़िरी नबी)।
३३ : ४६	शुभ-सूचना देनेवाले और सचेत करनेवाले, अल्लाह की ओर बुलानेवाले।
३४ : २८	वे तमाम मनुष्यों के लिए शुभ-सूचना देने वाले और डराने वाले बनाकर भेजे गए।
३५ : २२, २३	वे केवल सचेत करनेवाले हैं। अल्लाह ने उन्हें शुभ-सूचना देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा।

३६ : ३ वे पैग़म्बरों में से हैं।

३९ : ४१ लोगों को सीधे रास्ते पर लाने के ज़िम्मेदार नहीं हैं।

४८ : २८ उन्हें सत्य-धर्म के साथ भेजा गया है ताकि वे इस धर्म को तमाम धर्मों पर प्रभुत्व प्रदान कर दें।

५० : ४५ जबरदस्ती करना तुम्हारा काम नहीं।

५४ : ५६ अगले डराने वालों में से वे एक डराने वाले हैं।

(४) सत्य-मार्ग की कठिनाइयाँ

२ ६-१४ ईमान का झूठा दावा करके धोखा देना, बिगाड़ पैदा करना, मूर्ख कहना और खिल्ली उड़ाना।

२ : ११४ मस्जिदों में अल्लाह का नाम लेने से रोकना।

२ : २०५ झगड़ा करना और बिगाड़ पैदा करना, खेती और नस्ल को बरबाद करना।

२ : २१२ खिल्ली उड़ाना।

३ : ७२ लोगों को धोखे में डालने के लिए सुबह को ईमान लाना और शाम को झुठला देना।

३ : ९९ लोगों को सीधे रास्ते पर आने से रोकना और जानते-बूझते उलटी-सीधी बातें निकालना।

६ : १० तुमसे पहले भी रसूलों की खिल्ली उड़ाई गई।

६ : १२३ ख़ुफ़िया चालें चलना।

८ : ३० गिरफ़्तारी, क़त्ल या देश-परित्याग के लिए ख़ुफ़िया चालें।

८ : ५६ सन्धि का वचन दे-देकर बार-बार तोड़ना।

९ : ८-१० न नातेदारी का विचार न वचन का ध्यान। मुख पर कुछ मन में कुछ।

९ : १३ क़समें तोड़ीं और स्वदेश से निकाल देने की योजनाएँ बनाईं।

९ : ५०-५८ (आपके विरोधी) ख़ुशी पर दुःखी और संकट पर ख़ुश हुये, माल की तक़सीम पर ताने दिये।

१७ : ७३-७६ बहकाने की कोशिशें और स्वदेश से निकाल देने की योजनाएँ।

२१ : ३६ खिल्ली उड़ाते हैं।

२५ : ३१ बुरे लोगों की शत्रुता का सामना।

२५ : ४१ फबती कसना और खिल्ली उड़ाना।

२७ : ७० विरोधियों की चालें जिन से दिल कुढ़े।

३१ : ६ उपहास की बातें बना कर लोगों को गुमराह करना।

३३ : ४८ मुनाफ़िक़ों का कष्ट पहुँचाना,

३२ : २५ खुली दलीलों के बाद भी झुठलाना।

५७ : ३६ कवि और पागल कहना

३८ : ५० जादूगर और झूठा कहना।

४० : ३५ बिना किसी दलील वाद-विवाद करना।

४१ : २६ लोगों को कुरआन सुनने से रोकना और हुल्लड़ मचाना।

५८ : ८	मुनाफ़िक़ों का कानाफूसी करना और श्राप के शब्दों का मुँह से निकालना
६१ : ५१	कोप की दृष्टि से देखना और दीवाना कहना।
९६ : ९,१०	नमाज़ से रोकना।

(५) आप पर ईमान

२ : १७,१८	आप का इन्कार करनेवाले वास्तव में बहरे, गूँगे और अन्धे हैं।
२ : १०१	आप को न मान कर किताब वाले स्वयं किताब से विमुख हो गए।
३ : ८१	आप पर ईमान लाने का वचन पिछले नबियों के अनुयायियों से लिया गया।
३ : ८४	सच्चे ईमान वाले तमाम रसूलों पर ईमान लाते हैं।
३ : ८६	आप को अल्लाह का रसूल समझने वाले परन्तु आप पर ईमान न लाने वाले हिदायत नहीं पा सकते।
३ : ११०	किताब वालों के लिए यही बेहतर था कि आप पर ईमान ले आते।
४ : ४२	आपका इन्कार करने वाले क़ियामत के दिन बहुत पछताएँगे।
४ : ११५	रसूल का विरोध करनेवालों का ठिकाना दोज़ख़ है।
४ : १५०, १५१	जो किसी रसूल को मानें और किसी को न मानें, वे पक्के काफ़िर हैं।
४ : १५२	आख़िरत की सफलता के लिए अनिवार्य है कि ख़ुदा और उस के नबियों पर ईमान लाये और उनमें से किसी में अन्तर न करे।
४ : १७०	लोगो ! आप पर ईमान ले आओ। यही तुम्हारे लिए अच्छा है।
५ : १९	आपके आने के बाद किताब वालों के लिए बहाने का कोई मौक़ा नहीं रहा।
६ : २०	किताब वाले आपको ख़ूब पहचानते हैं। जो आप पर ईमान न लाये, वह बड़ी हानि उठाएँगे।
७ : १५७	आप वही नबी हैं जिन का वर्णन तौरात और इन्जील में आया है। आप पर ईमान लानेवाले ही सफल हैं।
९ : ८०	आपका इन्कार करनेवालों के लिए क्षमा नहीं।
४७ : ३२	रसूल का विरोध करने वालों का किया-धरा सब अकारथ जायेगा।
४८ : १३	जो आपपर ईमान न लाये, उसके लिए 'जहन्नम' है।
५७ : ७	आपपर ईमान लाओ
५७ : २८	आप पर ईमान लाने वालों के लिएँ दुहरा बदला है।
५८ : ५	आपका विरोध करनेवाले मुँह की खाएँगे।
६४ : ८	अल्लाह पर, रसूल पर और उस प्रकाश पर ईमान ले आओ जो अल्लाह ने उतारा है।

(६) आपका आज्ञापालन

३ : ३१	आपकी पैरवी अल्लाह से मुहब्बत की पहचान है।
३ : ३२	अल्लाह और रसूल का आज्ञापालन करो।
४ : १३, १४	अल्लाह और रसूल का आज्ञापालन करने वाले के लिए जन्नत है।

४ : ४२	आपकी अवज्ञा करने वाले क़ियामत के दिन बहुत पछताएंगे।
४ : ५६	मुसलमानो ! अल्लाह और रसूल का आज्ञापालन करो।
४ : ६४	रसूल इसी लिए भेजा जाता है कि उसका आज्ञापालन किया जाये।
४ : ६५	आप के फ़ैसलों को तमाम मामलों में बिना कुछ कहे-सुने मान लेना ईमान की शर्त है।
४ : ६६,७०	अल्लाह और रसूल का आज्ञापालन करनेवालों को उन लोगों का साथ नसीब होगा, जिन पर अल्लाह अपनी कृपा करेगा।
४ : ८०	जिसने रसूल का आज्ञापालन किया उसने अल्लाह का आज्ञापालन किया
५ : ९२	अल्लाह और रसूल का आज्ञापालन करो और अवज्ञा से बचो।
७ : १५८	हिदायत के लिए आपकी पैरवी ज़रूरी।
८ : १	अगर ईमान वाले हो तो अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करो।
८ : २०	मुसलमानो ! अल्लाह और रसूल का आज्ञापालन करो और सुनकर अनसुनी न करो।
८ : २४	मुसलमानों ! अल्लाह और रसूल की पुकार पर दौड़ो।
८ : ४६	अल्लाह और रसूल का आज्ञापालन करो और आपस में झगड़ा न करो।
९ : ६२	हर मूल्य पर अल्लाह और उसके रसूल को प्रसन्न रखो।
९ : ७१	ईमान वाले मर्द और ईमान वाली औरतें अल्लाह और रसूल का आज्ञापालन करते हैं।
२४ : ४७-५४	अल्लाह और रसूल का हुक्म सामने आने पर ईमान वाला पूर्ण आज्ञापालक बन जाता है।
२४ : ५६	आपके आज्ञापालन से अल्लाह की दयालुता प्राप्त होती है।
२४ : ६३	आपके हुक्म के खिलाफ़ चलना मुसीबत और अज़ाब को बुलाना है।
२५ : २७	रसूल के रास्ते से हटकर चलने वाले क़ियामत के दिन बहुत पछतायेंगे, अल्लाह और रसूल के फ़ैसले के बाद किसी ईमान वाले को कोई अधिकार बाक़ी नहीं रहता।
३३ : ६६	दोज़ख वाले बड़े ही हसरत से कहेंगे, काश ! हमने अल्लाह और रसूल का आज्ञापालन किया होता।
३३ : ७१	अल्लाह और रसूल के आज्ञापालन में पूर्ण सफलता है।
४७ : ३३	अल्लाह और रसूल की आज्ञा का पालन न करने से कर्म व्यर्थ जाते हैं।
४८ : १०	आपके हाथ में हाथ देना मानो अल्लाह के हाथ में हाथ देना है।
४९ : १४	अल्लाह और रसूल का आज्ञापालन करोगे तो तुम्हारा कोई कर्म बेकार न जाएगा।

(७) आप पर अल्लाह की विशेष कृपाएं

२ : १४४	आपको जो क़िबला पसन्द था, अल्लाह ने उसी को मुसलमानों का क़िबला बना दिया।

४ : ११३	आप पर अल्लाह की बहुत बड़ी कृपा रही है।
५ : ३	आपके हाथों दीन (धर्म) को पूर्ण कर दिया और आप पर अपनी नेमतें पूरी कर दीं।
५ : ६७	अल्लाह ने आपकी विशेष रक्षा की।
३ : १३	लड़ाई के मौक़े पर अल्लाह की सहायता की विशेष व्यवस्थाएँ।
८ : ६-१८	" " "
८ : ३०	शत्रुओं की दुष्टता से सुरक्षित रखना।
८ : ३३	आपकी उपस्थिति अल्लाह के अज़ाब से बचे रहने का कारण बनी।
६ : २६	अनदेखी सेना से सहायता की।
१७ : १	आपको रातों-रात मस्जिदे अक़सा की सैर कराई।
१७ : ७६	स्तुत्य स्थान प्रदान किया।
२१ : १०७	आपको पूरी दुनिया के लिए 'रहमत' बनाकर भेजा।
३३ : ६	आपकी पत्नियाँ मुसलमानों की माँ हैं।
३३ : ४०	आप पर नुबूवत का सिलसिला ख़त्म हुआ।
३३ : ५३	आपकी मृत्यु के बाद आपकी पत्नियों से किसी मुसलमान का विवाह नहीं हो सकता।
३४ : २८	तमाम मनुष्यों के लिए शुभ-सूचना देने वाला और डराने वाला बनाया।
५३ : ६-१८	इसी जीवन में आपको अपने अत्यन्त समीप बुलाया।
४६ : १-५	आपकी शान में मामूली गुस्ताख़ी से भी तमाम कर्म व्यर्थ हो सकते हैं।
६३ : ३-८	आपको अल्लाह ने दुनिया और आख़िरत की नेमतों से मालामाल कर दिया।
६४ : १-५	आपका नाम ऊँचा किया।
१०८ : १	आपको 'कौसर' दिया।
११० : २	आपको अनुयायियों की एक बड़ी संख्या दी।

३. क़ुरआन

(१) विशेषताएँ

२ : २-५	निश्चित रूप से अल्लाह की वाणी और मार्ग-दर्शन।
२ : ६७	पहली किताबों की पुष्टि करने वाला। मार्ग-दर्शन और शुभ-सूचना।
२ : १८५	रास्ता दिखाने वाला और सत्य-असत्य को अलग-अलग करने वाला।
३ : ३, ४	सत्य-ग्रन्थ, पहले ईश-ग्रन्थों की पुष्टि करने वाला।
३ : ७	इस ग्रन्थ को अल्लाह ने उतारा है।
३ : १३८	क़ुरआन लोगों के लिए एक सन्देश है, मार्ग-दर्शन और उपदेश।
५ : १५, १६	अल्लाह की ओर से प्रकाश और प्रकाशमान ग्रन्थ, जो लोगों को अँधेरे से निकालकर उजाले में ले आये।
५ : ४८	अल्लाह की उतारी हुई किताब, पहली किताबों की पुष्टि करने वाली और सब पर सम्मिलित।
६ : ६०	तमाम दुनिया के लोगों के लिए उपदेश।

६ . ९२	अल्लाह ने उतारा बरकतों वाला और पहली किताबों की पुष्टि करने वाला।
६ : १५५	अल्लाह की उतारी हुई और बरकत वाली किताब।
७ : २, ३	लोगों को कुपरिणामों से डराने वाला और ईमान वालों के लिए नसीहत। अल्लाह का उतारा हुआ ग्रन्थ।
० : ५७	अल्लाह की ओर से नसीहत और दिलों की बीमारियों का इलाज। मार्ग-दर्शन और दयालुता।
१ : १२०	मन को स्थिर रखने वाला। नसीहत और याददिहानी।
२ : २	अरबी भाषा में उतारा हुआ।
४ : १	लोगों को अँधेरे से निकालकर प्रकाश में लाता है।
४ : ५२	लोगों के नाम अल्लाह का सन्देश उन्हें कुपरिणामों से डराने के लिए और उपदेश।
६ : ६४	लोगों के मत-भेदों का निर्णय करने वाला। मार्ग-दर्शन और दयालुता।
६ : ८९	हर चीज को खोल-खोलकर बयान करने वाला, मार्ग-दर्शन, दयालुता और शुभ-सूचना।
७ : ९	यह ग्रन्थ सबसे ज्यादा सीधा रास्ता दिखाता है। अच्छे काम करने वालों के लिए शुभ-सूचना।
७ : ८२	इलाज और कृपा ईमान लाने वालों के लिए।
: २-४	यह विपत्ति में डालने के लिए नहीं है, बल्कि नसीहत है और ज़मीन-आसमान के स्वामी की ओर से उतरा हुआ है।
: ११३	अरबी में उतरा, तरह-तरह से कुपरिणामों से डराता है।
: ३४	खुली-खुली बातें, पहले बीते हुए लोगों की सूचनाएँ और संयमी लोगों के लिए नसीहत।
: १	सम्पूर्ण विश्व के लोगों को अल्लाह के अज़ाब से डराने वाला।
१९२-१९५	सम्पूर्ण विश्व के रब की ओर से उतारा हुआ जिसे अमानतदार फ़रिश्तः लेकर उतरा, अरबी भाषा में।
: १९६	इसकी खबर पहले ईश-ग्रन्थों में मौजूद है।
: २	प्रकाशमान ग्रन्थ की आयतें हैं, पथ-प्रदर्शन और शुभ-सूचना ईमान लाने वालों के लिए।
: २	निस्सन्देह यह ग्रन्थ सम्पूर्ण विश्व के स्वामी व मालिक की ओर से उतरा है।
: २,५	यह हिक्मतों से भरा है और सत्तारूढ़ व कृपाशील अल्लाह ने उतारा है।
: ६९, ७०	साफ़-साफ़ बात बयान करने वाला, पूरी तरह नसीहत उसके लिए जो ज़िन्दा हो।
: १	नसीहतों से भरा हुआ।
२९	बरकत वाली किताब, बुद्धिमानों के लिए नसीहत।
२३	अल्लाह ने ये बेहतरीन बातें उतारीं, जिसकी आयतें मिलती-जुलती हैं।
२७, २८	क़ुरआन में तरह-तरह के उदाहरण दिये गये हैं ताकि लोग नसीहत पकड़ें। इसमें कोई टेढ़ नहीं।

४१:२-४	'रहमान' और 'रहीम' अल्लाह् की ओर से उतरा। साफ आयतें अरबी भाषा में।
४१:४१, ४२	उच्च पद वाला ग्रन्थ, जिसमें किसी तरह भी झूठ का दखल नहीं हो सकता। अल्लाह की ओर से उतरा हुआ।
४३:३, ४	कुरआन अरबी में है ताकि तुम समझ सको और यह सुरक्षित तख्तियों में मौजूद है।
४४:३	अल्लाह् ने क़ुरआन एक मुबारक रात मे उतारा।
४५:२०	तमाम लोगों के लिए है बुद्धिमानी की बातें, मार्ग-दर्शन और दयालुता।
४६:१२	पहले के ग्रन्थों की पुष्टि करने वाला, अत्याचारियो को डराने वाला, और अच्छे कार्य करने वालो को शुभ-सूचना देने वाला।
५४:५	पूर्ण बुद्धिमानी की किताब।
५४:२२,३२,४०	नसीहत हासिल करने के लिए आसान।
५६:७७,७८	बड़े पद वाला, सुरक्षित तख्तियों में लिखा हुआ।
५६:७९	इसको वही हाथ लगाते है जो पाक है।
५६:८०	सम्पूर्ण विश्व के स्वामी की ओर से उतरा हुआ।
५९:२१	कुरआन अगर पहाड़ पर उतरता तो तुम देखते कि पहाड अल्लाह् के डर से दबा और फटा जा रहा है।
६५:१०	अल्लाह् की ओर से उतरी हुई नसीहत।
६९:४०,४३	कुरआन एक उच्च पद वाले फ़िरिश्ते का लाया हुआ सन्देश है। यह किसी कवि की कविता नही और न किसी 'काहिन' का कलाम है।
७५:१७-१९	कुरआन का जमा करना, उसका पढ़वाना और समझाना अल्लाह् ने अपने जिम्मे लिया।
७६:२३	अल्लाह् ने कुरआन मुहम्मद सल्स० पर थोड़ा-थोड़ा उतारा।
८०:११-१६	कुरआन एक नसीहत है, जो चाहे नसीहत हासिल करे। सम्मानित पन्नो में लिखा हुआ।
८१:१९-२१	कुरआन एक उच्च पदों वाले फ़िरिश्ते का लाया हुआ सन्देश है, जो अमानतदार है और फ़रिश्तो का सरदार।
८५:२१,२२	बड़ी शान वाला, सुरक्षित तख्ती में लिखा हुआ।
८६:१३,१४	झूठ और सच को अलग-अलग कर देने वाला, हँसी-मजाक नही।
९७:१	प्रतिष्ठा वाली रात मे उतरा।
९८:२,३	पवित्र पन्ने, जिन मे पक्की बातें लिखी हुई हैं।

(२) ईश-ग्रन्थ होने की दलीलें

२:२३,२४	अगर क़ुरआन के ईश-ग्रन्थ होने में सन्देह हो तो कोई उस जैसी एक सूर: ही बना लाओ।
४:८२	क़ुरआन पर विचार करो, अगर यह अल्लाह् के सिवा किसी और की वाणी होती तो इसमे बहुत कुछ विरोधाभास पाया जाता।
६:११४	तौरात का ज्ञान रखने वाले जानते थे कि क़ुरआन अल्लाह् की ओर से

४१ : २-४ 'रहमान' और 'रहीम' अल्लाह की ओर से उतरा। साफ़ आयतें अरबी भाषा में।

४१ : ४१, ४२ उच्च पद वाला ग्रन्थ, जिसमें किसी तरह भी झूठ का दखल नहीं हो सकता। अल्लाह की ओर से उतरा हुआ।

४३ : ३, ४ क़ुरआन अरबी में है ताकि तुम समझ सको और यह सुरक्षित तख़्तियों में मौजूद है।

४४ : ३ अल्लाह ने क़ुरआन एक मुबारक रात मे उतारा।

४५ : २० *तमाम लोगों के लिए है बुद्धिमानी की बातें, मार्ग-दर्शन और दयालुता।*

४६ : १२ पहले के ग्रन्थों की पुष्टि करने वाला, अत्याचारियों को डराने वाला, और अच्छे कार्य करने वालों को शुभ-सूचना देने वाला।

५४ : ५ पूर्ण बुद्धिमानी की किताब।

५४ : २२,३२,४० नसीहत हासिल करने के लिए आसान।

५६ : ७७,७८ *बड़े पद वाला, सुरक्षित तख़्तियों में लिखा हुआ।*

५६ : ७९ इसको वही हाथ लगाते हैं जो पाक हैं।

५६ : ८० सम्पूर्ण विश्व के स्वामी की ओर से उतरा हुआ।

५९ : २१ क़ुरआन अगर पहाड़ पर उतरता तो तुम देखते कि पहाड़ अल्लाह के डर से दबा और फटा जा रहा है।

६५ : १० अल्लाह की ओर से उतरी हुई नसीहत।

६९ : ४०,४३ क़ुरआन एक उच्च पद वाले फ़िरिश्ते का लाया हुआ सन्देश है। यह किसी कवि की कविता नहीं और न किसी 'काहिन' का कलाम है।

७५ : १७-१९ क़ुरआन का जमा करना, उसका पढ़वाना और समझाना अल्लाह ने अपने ज़िम्मे लिया।

७६ : २३ अल्लाह ने क़ुरआन मुहम्मद सल्ल० पर थोडा-थोडा उतारा।

८० : ११-१६ क़ुरआन एक नसीहत है, जो चाहे नसीहत हासिल करे। सम्मानित पन्नों में लिखा हुआ।

८१ : १९-२१ *क़ुरआन एक उच्च पद वाले फ़िरिश्ते का लाया हुआ सन्देश है, जो* अमानतदार है और फ़रिश्तों का सरदार।

८५ : २१,२२ बड़ी शान वाला, सुरक्षित तख़्ती में लिखा हुआ।

८६ : १३,१४ झूठ और सच को अलग-अलग कर देने वाला, हँसी-मज़ाक नहीं।

९७ : १ प्रतिष्ठा वाली रात में उतरा।

९८ : २,३ पवित्र पन्ने, जिन में पक्की बातें लिखी हुई हैं।

(२) ईश-ग्रन्थ होने की दलीलें

२ : २३,२४ अगर क़ुरआन के ईश-ग्रन्थ होने में सन्देह हो तो कोई उस जैसी एक सूरः ही बना लाओ।

४ : ८२ क़ुरआन पर विचार करो, अगर यह अल्लाह के सिवा किसी और की वाणी होती तो इसमें बहुत कुछ विरोधाभास पाया जाता।

६ : ११४ तौरात का ज्ञान रखने वाले जानते थे कि क़ुरआन अल्लाह की ओर से

उतरा है।

१० : ३७ कुरआन अपने से पहले आने वाले ईश-ग्रन्थों की सही शिक्षाओं की पुष्टि करता है।

११ : १३,१४ क़ुरआन जैसी दस सूरतें बना लाओ और इस काम के लिए जिसे चाहो बुला लो।

१७ : ८८,८९ तमाम मनुष्य और जिन्न मिल कर भी कोशिश करें तो कुरआन जैसा ग्रन्थ नहीं बना सकते।

२६ : १९२-१९९ इस ग्रन्थ की खबर पहले पैग़म्बरों की किताबों में दी गई। बनी इसराईल के विद्वान यह बात जानते थे।

२८ : ४९,५० जीवन का जो सही मार्ग यह ग्रन्थ दिखाता है, कोई दूसरा ग्रन्थ नहीं दिखाता।

२९ : ४६-४९ मुहम्मद सल्ल० ने न कभी कोई किताब पढ़ी, न लिखना-पढ़ना सीखा और यह क़ुरआन पेश किया।

३४ : ६ ईश-ग्रन्थों का ज्ञान रखने वाले जानते थे कि क़ुरआन अल्लाह का ग्रंथ है।

४६ : ८-१० बनी इसराईल के एक जानने वाले ने क़ुरआन के सत्य होने की गवाही दी।

५२ : ३३,३४ वे कहते हैं कि पैग़म्बर ने कुरआन खुद ही बना लिया है। अगर ऐसा है तो वह भी ऐसा ग्रन्थ बना लाएँ।

६९ : ४३-४८ मुहम्मद सल्ल० अगर कुरआन अपनी ओर से ले आते तो अल्लाह उनकी पकड़ करता।

(३) कुरआन पर ईमान

२ : ४ हिदायत प्राप्त करने के लिए इस किताब पर ईमान लाना भी ज़रूरी है।

२ : २४ इस किताब का इन्कार करने वालों के लिए दोज़ख़ तैयार है।

२ : ४१ पिछली किताबों का मानने वालों के लिए भी ज़रूरी है कि इस किताब पर ईमान लायें।

२ : ८५ किताब के एक हिस्से को मानना और एक को न मानना अपनी दुनिया और आख़िरत के जीवन को नष्ट करना है।

२ : ८९-९१ किताब वालों में से जिन लोगों ने इस किताब का इन्कार कर दिया वे अल्लाह के ग़ज़ब का निशाना बने।

२ : ९७-९९ अल्लाह से खुल्लम-खुल्ला विद्रोह करने वाले ही इस किताब का इन्कार करते हैं।

२ : १२१ इस किताब को न मानने वालों के लिए घाटा-ही-घाटा है।

२ : १३६, १३७ दूसरी आसमानी किताबों के साथ-साथ जो इस किताब पर ईमान लायेगा वही हिदायत पायेगा।

२ : १७६ इस किताब के सत्य होने का इन्कार हठधर्मी लोग ही करते हैं।

४ अल्लाह की आयतों का इन्कार करने वालों के लिए सख़्त अज़ाब है।

.९९ किताब वालों में से जिनके दिलों में ख़ुदा का भय है, वह इस किताब पर ईमान लाते हैं।

४:६१	अल्लाह की किताब के आदेश को न मानना मुनाफ़िक़ों का काम है।
४:१६२	ज्ञान में गहराई रखने वाले इस किताब पर ईमान लाते हैं।
५:८३,८४	पिछली किताबों पर सच्चा ईमान रखने वाले इस किताब को सुनकर इस पर ईमान लाये बिना नहीं रहते।
६:२७	इस किताब को झुठलाने वाले क़ियामत के दिन बहुत पछतायेंगे।
६:५०	इस किताब को मानने वाले वास्तव में आँख वाले और न मानने वाले अन्धे हैं।
६:६२	आख़िरत पर ईमान रखने वाले क़ुरआन पर ज़रूर ईमान लाते हैं।
६:६३	इस किताब का इन्कार करने वाले मौत के वक़्त सख़्त अज़ाब का शिकार होंगे।
६:१५५-१५७	अल्लाह की कृपाओं का अधिकारी होने के लिए इसका अपनाना आवश्यक है।
७:३	अल्लाह की उतारी हुई किताब पर चलो। उसके सिवा किसी दूसरे के पीछे न चलो।
१०:६४,६५	इस किताब में संदेह की कोई जगह नहीं और इसको झुठलाने में घाटा ही घाटा है।
११:१७	वे लोग क़ुरआन पर ज़रूर ईमान लाते हैं जो अल्लाह की दी हुई सूझ-बूझ से काम लेते हैं।
११:२४	क़ुरआन के न मानने वाले और मानने वाले दो गरोह हैं। एक अन्धा और बहरा दूसरा देखता और सुनता।
१३:१६	जिसे यह विश्वास हो कि क़ुरआन सत्य है, वह उन अन्धों जैसा कैसे हो सकता है, जो उसे न मानें।
१६:६४	ईमान लाने वालों के लिए यह किताब मार्ग-दर्शन और दयालुता है।
१७:४५,४६	जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उनके लिए इस किताब का समझना सम्भव नहीं।
१७:१०५-१०६	तुम इस किताब को मानो या न मानो लेकिन जिन लोगों के पास ज्ञान है वे तो इसे मानते ही हैं।
२८:५०	जो लोग तुच्छ इच्छाओं के दास हैं, वही इस किताब को नहीं मानते।
२८:५२-५४	पिछली किताबों का ज्ञान रखने वाले इस किताब को सुनते ही ईमान लाते हैं।
२६:४६-५१	ईमान लाने वालों के लिए यह किताब 'रहमत' है।
३१:७	अल्लाह की आयतों पर कान न धरने वालों के लिए दुखभरा अज़ाब है।
३२:२२	वह बड़ा ज़ालिम है जो अल्लाह की आयतें सुने और फिर मुँह मोड़ ले।
४०:५६	जिन लोगों के दिल में घमण्ड है वही अल्लाह की आयतों के साथ कठ-हुज्जती करते हैं।
४१:४४	जो लोग क़ुरआन पर ईमान नहीं लाते वे वास्तव में बहरे और अन्धे हैं।
४३:६६-७३	क़ुरआन पर ईमान लाने वालों के लिए नेमतों-भरी जन्नत है।
४७:२	जो कुछ मुहम्मद सल्ल० पर उतरा उस पर ईमान लाने वालों के लिए

शुभ-समाचार।

६७ : ८-११ — इस किताब को न मानने वाले क़ियामत में बहुत पछतायेंगे।

४. आख़िरत

१. आदमी की मौत

३ : १८५ — हर व्यक्ति को मौत का मज़ा चखना है। और तुमको तुम्हारे कामों का पूरा-पूरा बदला क़ियामत के दिन दिया जायेगा।

४ : ७८ — कहीं रहो मौत आकर रहेगी। भले ही बड़े-बड़े क़िलों में रहो।

४ : ९७-१०० — धर्म के लिए स्वदेश छोड़ना पड़े तो ऐसा न हो कि मौत के डर से तुम रुक जाओ।

६ : ६१ — मौत का समय आ जाता है तो जान निकालने वाले फ़िरिश्ते कोताही नहीं करते।

६ : ९३ — अल्लाह के मुक़ाबले में उद्दण्डता अपनाने वालों की जानें फ़िरिश्ते कठोरता और अपमान के साथ निकालते हैं।

७ : ३७ — अल्लाह का इन्कार करने वालों को मौत के समय अपने कुफ़्र का एहसास हो जाता है।

८ : ५०, ५१ — कुफ़्र करने वालों की जान निकालते समय फ़िरिश्ते उन्हें अज़ाब देते हैं।

१६ : २८ — अवज्ञाकारी और उद्दण्ड मौत के समय अपने निष्पाप होने का बहाना करते हैं।

१६ : ३२ — आज्ञाकारियों की जान निकालते समय फ़िरिश्ते उन पर सलामतियाँ भेजते हैं।

२१ : ३५ — हर एक को मौत का मज़ा चखना है। अच्छी और बुरी हालतों में मनुष्य की आज़माइश है।

२३ : ९९, १०० — अल्लाह से ग़ाफ़िल मौत के समय चाहेंगे कि उन्हें फिर संसार में भेज दिया जाये ताकि वे भला काम कर सकें।

२९ : ५७ — हर व्यक्ति को मौत का मज़ा चखना है और लौटकर अल्लाह की ओर जाना है।

३२ : ११ — तुम्हारी जान मौत का वह फ़िरिश्ता निकालता है जो तुम पर नियुक्त किया गया है।

४७ : २७, २८ — अल्लाह की नाराज़ी की राह पर चलने वालों को जान निकालते समय फ़िरिश्ते कष्ट पहुँचाते हैं।

५० : १९ — मौत की बेहोशी छाते ही वास्तविकता सामने आ जायेगी।

५७ : ८३-८७ — जब जान गले में आ अटकती है, उस समय मरने वाला तुम्हारे मुक़ाबले में अल्लाह से अधिक निकट होता है।

६३ : १०, ११ — मौत के समय मनुष्य की इच्छा होती है कि थोड़ी मुहलत और मिल जाती और मैं भला आदमी बन जाता।

७५ : २६-३० — जब जान गले तक आ पहुँचेगी तो कोई झाड़-फूंक काम न देगी।

१०२ : १, २ — बहुत-सी तलब ने तुम्हें ग़ाफ़िल कर दिया है, यहाँ तक कि तुम क़ब्रों तक

पहुँच जाते हो।

(२) मौत के बाद

२ : १५४	अल्लाह की राह में मरने वालों को मुरदा न कहो। वे ज़िन्दा हैं।
३ : १६९-१७१	जो अल्लाह की राह मे मारे गए वे तो ज़िन्दा हैं, उन्हे रोज़ी मिल रही है।
२३ : १००	आदमी मरने के बाद से लेकर क़ियामत तक, इच्छा के बावजूद वापस नही आ सकता।
४० : ४६	मरने के बाद से लेकर क़ियामत तक काफ़िरों को दोज़ख़ सुबह व शाम दिखाया जाता है।
५० : ४	मरने के बाद मानव-शरीर जिस तरह मिट्टी मे मिलता है, वह सब अल्लाह जानता है।

(३) उठाया जाना और क़ियामत का आना

२ : ११३	लोग जिन बातों में मतभेद कर रहे हैं, उनका फ़ैसला क़ियामत के दिन हो जाएगा।
२ : १४८	तुम जहाँ भी हो अल्लाह तुम्हे इकट्ठा कर लेगा।
३ : १०६, १०७	क़ियामत के दिन बहुत-से चेहरे उज्ज्वल होंगे और बहुत-से काले।
६ : ३६	क़ियामत के दिन अल्लाह मुरदों को उठाएगा, फिर उसी की ओर लौट कर जाएँगे।
६ : ७३	जिस दिन सूर फूंका जाएगा उस दिन बादशाही उसी की होगी।
७ : २९	जैसे तुम्हे पहले पैदा किया था, वैसे ही तुम फिर पैदा होगे।
१० : ४	तुम सबको लौटकर उसी के पास जाना है।
१० : ४५	जिस दिन अल्लाह लोगों को जमा करेगा, तो उन्हे ऐसा जान पड़ेगा जैसे ससार मे वे कोई घण्टा-भर रहे हो।
११ : १०३-१०८	क़ियामत के दिन सब लोग इकट्ठा किए जाएँगे और सब अल्लाह के सामने पेश होंगे।
१४ : ४८	क़ियामत के दिन यह ज़मीन और आसमान बदल दिए जाएँगे और सब अल्लाह के सामने खड़े होंगे।
१५ : २३-२५	अल्लाह क़ियामत के दिन सब को जमा करेगा।
१७ : ५२	जिस दिन लोग अल्लाह की पुकार पर जमा होंगे तो यही समझेंगे कि ससार में हम बहुत कम मुद्दत रहे।
१७ : ७१, ७२	क़ियामत के दिन सब लोग अपने-अपने लीडरों के साथ बुलाए जाएँगे।
१७ : ९७-९९	भटके हुए लोग क़ियामत के दिन अंधे, गूंगे और बहरे बनकर उठेंगे।
१८ : ४७,४८	क़ियामत के दिन पहाड़ हट जाएँगे, ज़मीन साफ़ मैदान होगी और एक-एक आदमी जमा कर लिया जाएगा।
१८ : ४९	क़ियामत में कर्म-पत्र सबके सामने होगा, जिसमें हर छोटी-बड़ी बात लिखी होगी।
१८ : ५२, ५३	क़ियामत के दिन उद्दण्ड लोग दोज़ख़ से बचने का कोई रास्ता न पाएँगे।

१९ : ६८-७२ सब लोग क़ियामत के दिन ज़रूर जमा होंगे और शैतान भी।

१९ : ८५, ८६ भले लोग अल्लाह के सामने मेहमान के रूप में जमा होंगे और पापियों को दोज़ख़ के घाट उतारा जाएगा।

२० : १०२-११२ क़ियामत के दिन सूर फूंका जाएगा और अपराधी जमा होंगे, उनकी आँखें पथराई होंगी।

२० : १२४-१२७ अल्लाह की नसीहत से मुँह मोड़ने वालों का जीवन तंग होगा और वे क़ियामत के दिन अंधे उठेंगे।

२१ : ४० क़ियामत अचानक आ जाएगी, लोगों के होश उड़ जाएँगे, उसे टाल न सकेंगे और न उन्हें छूट मिलेगी।

२३ : १०१ जब सूर फूंका जाएगा तो नातेदारियाँ कुछ काम न आ सकेंगी।

२७ : ८७ जब सूर फूंका जाएगा तो सब घबड़ा उठेंगे और अल्लाह के सामने हाज़िर हो जाएँगे।

३० : २५ क़ियामत के दिन जब तुम्हें पुकारा जाएगा तो तुम तुरन्त निकल पड़ोगे।

३६ : ४९, ५० जब क़ियामत की चिंघाड़ सुनेंगे तो न कुछ कह सकेंगे न कहीं जा सकेंगे।

३६ : ५१, ५२ सूर फूंका जाएगा तो सब अपनी क़बरों से निकल पड़ेंगे।

३७ : १९-२१ एक ज़ोर की आवाज़ होगी और लोग कहेंगे हाय हमारा दुर्भाग्य।

३९ : ६८-७० जब सूर फूंका जाएगा तो सब बेहोश हो जाएँगे और दुबारा सूर पर उठ खड़े होंगे।

४२ : ४७ क़ियामत का दिन टलेगा नहीं और उस दिन अपने करतूतों से इन्कार करते भी न बन पड़ेगा।

४३ : ६६, ६७ क़ियामत अचानक आएगी किसी को ख़बर न होगी।

५० : ९-११ ज़मीन पर हरियाली आ जाती है, मुरदा ज़मीन में जान आ जाती है इसी तरह क़ियामत के दिन सब लोग निकल पड़ेंगे।

५० : २० सूर फूंका जाएगा, वही अज़ाब का दिन है।

५० : ४१-४३ पुकारने वाला पुकारेगा, लोग एक चीख़ सुनेंगे, वही निकल पड़ने का दिन है।

५० : ४४ ज़मीन फट जाएगी, सब जमा हो जाएँगे।

५२ : ९, १० आसमान काँपने लगेगा, पहाड़ ऊन की तरह उड़ने लगेंगे।

५५ : ३७ आसमान फटकर गुलाबी हो जायेगा।

५६ : १-६ ज़मीन भूचाल से काँपने लगेगी। पहाड़ चूरा-चूरा हो जायेंगे।

६९ : १३-१८ जब सूर फूंका जायेगा तो सब टूट-फूटकर बराबर हो जायेगा।

७० : ६-९ आसमान पिघले हुए ताँबे की तरह हो जायेगा और पहाड़ धुने हुये ऊन की तरह।

७० : ४३, ४४ *उस दिन सब क़ब्र से निकलकर दौड़ेंगे, आँखें झुकी हुई होंगी।*

[illegible] : ८-१० जब सूर फूंका जायेगा तो वह बड़ी कठिनाई का दिन होगा।

[illegible] ६-१३ आँखें चुंधिया जायेंगी, चाँद को गहन लगेगा और चाँद-सूर्य मिल जायेंगे।

[illegible] : ७-१५ तारों की चमक जाती रहेगी। आसमान फट जायेगा। पहाड़ उड़े-उड़े फिरेंगे।

७८ : १८-२० जब सूर फूंका जायेगा तो सब जमा हो जायेंगे, आसमान खोल दिया जायेगा।

७९ : ६-६ भूचाल पर भूचाल आयेंगे, आँखें झुकी हुई होंगी।

८० : ३३-३७ जब कयामत का शोर मचेगा तो भाई-भाई से भागेगा और बेटा माँ से।

८१ : १-१४ सूर्य लपेट दिया जायेगा, तारे प्रकाश-हीन हो जायेंगे आदि। और हर व्यक्ति जान लेगा कि वह क्या लेकर आया है।

८२ : १-५ आसमान फट जायेगा, तारे झड़ जायेंगे, कब्रें उखेड़ दी जायेंगी।

८४ : १-५ आसमान फट जायेगा, ज़मीन समतल कर दी जायेगी और सब कुछ उगल देगी।

८९ : २१-२४ ज़मीन कूट-कूटकर पस्त कर दी जायेगी, फ़िरिश्ते पंक्ति-बद्ध होकर हाज़िर होंगे।

९९ : १-८ ज़मीन भूकम्प से हिला दी जायेगी वह सारे हाल सुना देगी। लोगों के कर्म उनके सामने होंगे।

१०० : ९, १० मुरदे कब्रों से उठाये जायेंगे और दिलों के भेद ज़ाहिर हो जायेंगे।

१०१ : १-११ उस दिन लोग ऐसे होंगे जैसे बिखरे हुए पतिंगे। पहाड़ धुने हुये ऊन की तरह।

(४) जीवन मृत्यु के पश्चात् की आवश्यकता और उसका प्रमाण

३ : १९१, १९२ अल्लाह ने संसार को बेकार नहीं बनाया है। उसकी हिकमत का तक़ाज़ा है कि आख़िरत ज़रूर हो।

७ : ४-६ कर्मों पर पकड़ करने के लिए आख़िरत की ज़रूरत है और कर्मों पर पकड़ न्याय का तक़ाज़ा है।

७ : २९ जिस तरह उसने तुम्हें अब पैदा किया है, वैसे ही तुम फिर पैदा किये जाओगे।

७ : ५७ मुरदा ज़मीन से वह सब कुछ उगाता है। इसी तरह वह मुरदों को मौत की हालत से निकालता है।

१० : ४ वही जन्म का आरम्भ करता है, वही दोबारा पैदा करेगा।

१० : ४ सांसारिक जीवन कर्मों के बदले के लिए काफ़ी नहीं, इसके लिए दोबारा जीवन ज़रूरी है।

१० : ७-१० आख़िरत के इन्कार के बाद पूरे जीवन का रुख़ ग़लत हो जाता है। जवाब-देही का विश्वास मनुष्य को सीधी राह चलाता है।

१० : ३४ अल्लाह ने ही पहले पैदा किया, वही दोबारा पैदा करेगा।

११ : ७ बुद्धि, चेतना और अधिकार पाने के बाद कौन अच्छे काम करता है और कौन बुरे, इसकी जाँच के लिए दोबारा जीवन ज़रूरी है।

११ : १०२-१०८ इतिहास गवाह है कि बुरे लोगों का परिणाम सदा बुरा हुआ है। इसका तक़ाज़ा है कि आख़िरत ज़रूर हो।

१३ : २ सृष्टि में फैली निशानियों को देखो, अल्लाह की शक्ति और उसकी हिकमत का तक़ाज़ा है कि यह संसार निरुद्देश्य न हो इसके लिए आख़िरत ज़रूरी है।

१३ : ५	आख़िरत का इन्कार सच पूछिये तो अल्लाह की शक्ति और उसकी हिकमत का इन्कार है।
१५ : २३-२५	जीना-मरना अल्लाह के हाथ में है। वही वारिस है। उसके ज्ञान व हिकमत की मांग है कि आख़िरत हो।
१६ : ३८-४०	धर्म के बारे में दृष्टिकोण भिन्न-भिन्न हैं। इस भिन्नता को दूर करने के लिए आख़िरत की दुनिया का होना ज़रूरी है।
१६ : ६५	अल्लाह मुरदा ज़मीन को बार-बार ज़िन्दा करता है। वही मनुष्य को दोबारा ज़िन्दा करने का सामर्थ्य रखता है।
१७ : ९८, ९९	ज़मीन और आसमान को पैदा करने वाला यह सामर्थ्य रखता है कि मनुष्य को दोबारा पैदा करे।
१९ : ६६, ६७	मनुष्य कुछ नहीं था, अल्लाह ने उसे पैदा किया। वही उसे दोबारा पैदा करेगा।
२१ : १०४	जिस तरह अल्लाह ने पहली बार पैदा किया, वैसे ही वह दोबारा पैदा करेगा।
२२ : ५-७	वीर्य से लेकर पैदा होने तक मनुष्य की बनावट, फिर जन्म से लेकर मौत तक विभिन्न दशाओं मे गुज़रना, मुरदा ज़मीन से हरे-भरे पेड़-पौधों का उगना, ये तमाम दृश्य मौत के बाद के जीवन का प्रमाण हैं।
२३ : ७९-९०	अल्लाह ने संसार को जिस हिकमत के साथ बनाया है, उसकी मांग है कि यह निरुद्देश्य न हो, इसका कोई परिणाम हो।
२७ : ६७-७३	इतिहास गवाह है कि आख़िरत का इन्कार करने वाली जातियाँ दुराचारी, ग़ैर ज़िम्मेदार और अत्याचारी बनकर रहीं,
२९ : १९, २०	अल्लाह ने पहली बार पैदा किया, वही दोबारा पैदा कर सकता है।
३० : ९-११	आख़िरत का इन्कार करने वालों के चरित्र व आचरण बिगड़े। यह इस बात का प्रमाण है कि आख़िरत यक़ीनी है।
३० : १९	ज़िन्दा से मुरदा और मुरदा से ज़िन्दा को निकालता है। वही तुम्हें दुबारा ज़िन्दा करेगा।
३० : २२-२७	ज़मीन और आसमान के पैदा करने वाले के लिए कोई कठिन काम नहीं कि तुम्हें फिर से ज़िन्दा उठा खड़ा करे।
३० : ५०	जो मुरदा ज़मीन को ज़िन्दा करता है, वह निश्चय ही मुरदों को ज़िन्दा करने में समर्थ है।
३४ : ३-५	अच्छा काम करने वालों को उनका बदला मिलना न्याय की मांग है और इसे पूरा करने के लिए आख़िरत ज़रूरी है।
३५ : ९	जिस तरह मुरदा ज़मीन जी उठती है, उसी तरह मुरदे जी उठेंगे।
३६ : ३३	मुरदा ज़मीन का जी उठना, आख़िरत होने की एक निशानी है।
३६ : ७७-८२	मनुष्य का जन्म, हरे पेड़ से आग निकलना ये सब आख़िरत की निशानियाँ हैं।
३७ : ११-१८	अल्लाह ने जितने प्राणी पैदा किए हैं, उनके लिए मनुष्य को दोबारा पैदा करना क्या कठिन है।

३८ : २७, २८	सृष्टि की रचना निरुद्देश्य नहीं और भले और बुरे मनुष्य बराबर नहीं हो सकते। इस वास्तविकता की माँग है कि आख़िरत होनी चाहिए।
४१ : ३९	अल्लाह सूखी ज़मीन को पानी से हरा-भरा कर देता है। इसी तरह वह मुरदों को जिलाने की शक्ति भी रखता है।
४४ : ३८-४२	ज़मीन-आसमान को खेल के तौर पर पैदा नहीं किया है, इसलिए आख़िरत होना ज़रूरी है।
४५ : २१, २२	अच्छे-बुरे बराबर नहीं हो सकते। न्याय का तक़ाज़ा है कि आख़िरत होनी चाहिए।
४६ : ३३	अल्लाह मुरदों को दोबारा ज़िन्दा करने की शक्ति रखता है।
४६ : १-१४	जातियों पर अज़ाब का आना क़ियामत के होने की दलील है।
७७ : १-७	" " "
५६ : ५७-६२	अल्लाह को सृष्टिकर्त्ता मानना और फिर आख़िरत का इन्कार करना सही नहीं।
७५ : ३६-४०	बुद्धि, चेतना और अधिकार देने के बाद मनुष्य को यों ही नहीं छोड़ दिया जाएगा, इसके लिए आख़िरत ज़रूरी है :
७८ : १-१८	नेमतों के मिलने के बाद पूछ-गाछ ज़रूरी है। इसके लिए आख़िरत होगी।
८६ : ५-८	मनुष्य की सृष्टि में उसके मरने के बाद के जीवन का प्रमाण है।
९५ : ७, ८	अल्लाह के सम्प्रभुत्व का तक़ाज़ा है कि आख़िरत हो।

(५) हिसाब-किताब

२ : २८४,	अल्लाह दिलों की बातों का भी हिसाब लेगा।
३ : ३०	क़ियामत के दिन मनुष्य की अच्छाई और बुराई सब सामने आएगी।
७ : ७-९	क़ियामत के दिन कर्म तौले जाएँगे।
१० : ४	न्याय के साथ बदला दिया जाएगा।
११ : १११	क़ियामत के दिन सबको कर्मों का पूरा-पूरा बदला मिलेगा।
१४ : ५१	अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।
१६ : ९३	तुम जो कुछ करते हो, उसके बारे में तुमसे ज़रूर पूछा जाएगा।
१६ : १११	उस दिन किसी पर ज़्यादती नहीं की जाएगी।
१७ : १३, १४	हर व्यक्ति अपना कर्म-पत्र पढ़कर ख़ुद ही अपना हिसाब समझ लेगा।
१७ : ७१, ७२	जिनके कर्म-पत्र दाँए हाथ में दिए जाएँगे, वे ख़ुशी-ख़ुशी इसे पढ़ेंगे।
१८ : ४९	कर्म पुस्तक खोलकर रख दी जाएगी। मनुष्य कहेगा कि इसमें तो कुछ भी नहीं छूटा।
१८ : १०४-१०६	काफ़िरों के कर्म अकारथ जाएँगे।
२१ : ४७	उस दिन न्याय की तराज़ू खड़ी होगी और किसी का कोई हक़ मारा नहीं जाएगा।
२३ : १०२	जिसकी नेकी के पलड़े भारी होंगे वही सफल होगा।
२३ : १०३, १०४	जिनके पलड़े हल्के होंगे वे दोज़ख़ में जाएँगे।
२७ : ८९, ९०	जो भले काम करके आएगा, उसके लिए अच्छा बदला तैयार है और जो

	बुरे काम करके आएगा उसके लिए आग है।
२९ : १२, १३	क़ियामत में कोई किसी के कर्मों की ज़िम्मेदारी नहीं उठा सकेगा।
३४ : २५, २६	कोई किसी दूसरे के कामों के बदले नहीं पकड़ा जाएगा।
३६ : ५३, ५४	किसी पर कोई अत्याचार नहीं किया जाएगा। हर एक को वैसा ही बदला मिलेगा, जैसे उसने काम किए होंगे।
३६ : ६५	उस दिन ज़ुबानों पर मुहर होगी और हाथ-पैर गवाही देंगे।
४० : १७	अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।
४१ : २०-२४	अपराधियों के ख़िलाफ़ उनके कान आँखें और त्वचा गवाही देंगे।
४५ : २८, २९	मनुष्य जो-कुछ करता है, अल्लाह के फ़िरिश्ते लिखते जाते हैं, यही क़ियामत में उसके सामने पेश होगा।
५० : २३	हर मनुष्य का फ़िरिश्ता उसके कर्म-पत्र पेश कर देगा।
६९ : १८-२९	मनुष्य जब अल्लाह के सामने लाया जाएगा तो उसकी कोई बात उससे छिपी न होगी।
८३ : ६	उस दिन तमाम लोग संसार के पालनहार के सामने खड़े होंगे।
८४ : ७-१४	जिसका कर्म-पत्र दाहिने हाथ में होगा, उससे आसान हिसाब लिया जाएगा।
८६ : ९	उस दिन दिल के भेदों की जाँच होगी।
८८ : २५, २६	उन सबको अल्लाह के पास लौट कर जाना है और वह उनका हिसाब लेगा।
९९ : ६	लोगों को उस दिन उन के कर्म दिखा दिए जाएँगे।
१०१ : ६-९	जिसके अच्छे कामों का पलड़ा भारी हुआ, वह आराम में होगा।
१०२ : ८	उस दिन नेमतों के बारे में पूछा जाएगा।

(६) आख़िरत को न मानने के नतीजे

७ : १४७	तमाम कर्म बेकार जाएँगे।
१० : ७, ८	आख़िरी ठिकाना जहन्नम होगा।
१० : ११	मनुष्य उद्दण्डता में बढ़ता ही चला जाता है।
१६ : २२	मनुष्य इन्कार और घमण्ड की रीति पर चल पड़ता है।
१७ : १८	आख़िरत को छोड़कर दुनिया को लक्ष्य बनाने वाले के लिए 'जहन्नम' है।
१८ : १०५	क़ियामत के दिन सारे कर्म बेकार जाएँगे।
२३ : ७४	आदमी सीधे रास्ते से हट जाता है।
२५ : ११	आख़िरत का इन्कार मनुष्य को दोज़ख तक ले जाता है।
२७ : ४, ५	मनुष्य को अपने करतूत बड़े अच्छे मालूम होते हैं। वह भटक जाता है और आख़िरत में हानि उठाता है।

(७) आख़िरत की विवशता

२ : ४८	कोई किसी के काम न आएगा और न किसी की सिफ़ारिश ही चलेगी।
२ : १६७	हसरत और परेशानी से हाथ मलेंगे, पर जहन्नम से छुटकारा न पा

सकेंगे।

२ : २५४	उस दिन न ख़र्च से काम चले, न दोस्ती से और न सिफ़ारिश से।
६ : ६४	संसार में मनुष्य अल्लाह् के अलावा जिन-जिन पर भरोसा करता है, उन सबसे सम्बन्ध टूट जाएँगे।
१० : २७	उस दिन अल्लाह् से बचानेवाला कोई न होगा।
१४ : २१, २२	अल्लाह् को भूलकर जिन-जिन शैतानों की पैरवी में मनुष्य ने अपनी आख़िरत बिगाड़ी होगी वे सब मदद से हाथ उठा लेंगे।
२० : १०६	उस दिन किसी की सिफ़ारिश काम न देगी अलावा इसके कि अल्लाह् ही किसी को सिफ़ारिश करने की इजाज़त दे दे।
२५ : १६	कोई अल्लाह् के अज़ाब को टाल न सकेगा और न कहीं से मदद ही मिलेगी।
२६ : ८८	उस दिन न माल काम आएगा न औलाद।
२८ : ६३, ६४	संसार में अल्लाह् के अलावा जिन-जिन की पूजा होती थी; वे सब अपने पुजारियों से उदासीनता का एलान कर देंगे।
३१ : ३३	उस दिन न बाप बेटे के काम आएगा और न बेटा बाप के।
३४ : ३१-३३	जिन "बड़े लोगों" के पीछे चलकर लोगों ने अपनी आख़िरत बिगाड़ी, वे क़ियामत के दिन उलटा उन्हीं पर आरोप लगाएँगे।
३५ : १८	कोई नातेदार तक ऐसा न होगा जो किसी का बोझ उठाए।
३७ : २४-३३	कोई एक दूसरे की सहायता न करेगा। हरएक दूसरे पर आरोपण करेगा।
४२ : ४६	कोई ऐसा दोस्त न होगा जो अल्लाह् के मुक़ाबले में मदद कर सके।
४३ : ६७	आज जो दोस्त हैं, एक-दूसरे के दुश्मन होंगे।
४४ : ४१, ४२	कोई दोस्त किसी दोस्त के काम न आएगा।
६० : ३	उस दिन न नातेदार काम आएँगे और न औलाद।
६९ : २८-३७	उस दिन न धन काम आएगा न हुकूमत और न कोई दोस्त।
७० : १०-१८	मनुष्य चाहेगा कि बेटे, स्त्री, भाई, परिवार बल्कि तमाम मनुष्यों को भेंट चढ़ाये और ख़ुद किसी तरह बच जाए।
८० : ३४-३७	हर व्यक्ति को अपनी-अपनी पड़ी होगी।
८२ : १९	कोई किसी के काम न आ सकेगा।

(८) जहन्नम

२ : २४	जहन्नम का ईंधन आदमी और पत्थर होंगे।
४ : ५६	एक खाल जल जायेगी तो दूसरी दे दी जायेगी ताकि बार-बार अज़ाब का मज़ा चखें।
७ : ३८	दोज़ख़ियों का एक गरोह दूसरे पर लानत भेजेगा।
७ : ४२	आग का बिछौना और आग ही का ओढ़ना।
१० : ४	बड़ा ही गर्म पानी पीने के लिए और दुःख देने वाला अज़ाब।
११ : १०६, १०७	चिल्लाना और दहाड़ना और सदा के लिए वहीं रहना।
१३ : ५	गरदनों में तौक़।

१४ : १६, १७	पीने के लिए पीप का पानी जो गले से न उतरे। हर ओर मौत का सामान लेकिन मर न सके।
१५ . ४४	दोज़ख़ के सात दरवाज़े हैं और हर दरवाज़े के लिए गिरोह बाँट दिये गये हैं।
१७ : ९७	दोज़ख़ की आग बुझने न पायेगी।
१८ : २९	आग चारों ओर से घेरे हुए। खौलता हुआ पानी पिघले हुए ताँबे की तरह।
२० : ७४	दोज़ख़ में न मनुष्य जियेगा, न मरेगा।
२२ : १९-२२	आग के कपड़े, सिरों पर खौलता हुआ पानी और लोहे के हथौड़े।
२३ : १०३, १०४	मुँह झुलसे हुए और त्यौरियाँ चढ़ी हुई।
२५ : १२, १३	दोज़ख़ का शोर दूर से सुनाई देगा और लोग वहाँ मौत को पुकारेंगे।
२५ . ६५, ६६	दोज़ख़ का अज़ाब बड़ा ही दुखदायी और बड़ी ही बुरी ठहरने की जगह।
३२ : २०	जब कोई निकलना चाहेगा तो उसी में लौटा दिया जायेगा।
३४ . ३३	गर्दनों में तौक़ पड़े हुए।
३५ . ३६, ३७	न मौत ही आये और न अज़ाब ही कम हो।
३७ : ६२-६७	थोहड़ के पेड़ का खाना, ऊपर से खौलता हुआ पानी।
३८ : ५५-५८	बहुत बुरा ठिकाना, गर्म पानी और पीप और ऐसे ही बहुत से अज़ाब।
३९ . १६	ऊपर भी आग का शामियाना और नीचे भी आग का फ़र्श।
४० : ७१, ७२	ज़ंजीरें और तौक़, खौलता हुआ पानी और आग।
४४ : ४४, ५०	थोहड़ का पेड़ पापियों का भोजन होगा।
४७ : १५	गर्म पानी जिससे अँतड़ियाँ कट जायें।
५६ . ४३-४५	आग की लपट, गर्म पानी और काले धुएँ की छाया।
५६ : ५२-५६	भूख ऐसी कि थोहड़ से पेट भर लें, प्यासे ऊँट की तरह खौलता पानी पी जायें।
६६ : ६	दोज़ख़ के निगराँ फ़िरिश्ते बड़े कड़वे स्वभाव वाले और कठोर हैं।
६७ : ७, ८	दोज़ख़ वाले दोज़ख़ को शोर मचाता और जोश मारता सुनेंगे।
६९ : ३०-३६	तौक़ और ७०-७० गज़ की ज़ंजीरें। पीप खाने के लिए।
७० : १५, १६	भड़कती हुई आग जो खाल उधेड़ कर रख दे।
७३ : १२, १३	बेड़ियाँ भड़कती हुई आग और हलक़ में फँसने वाला खाना।
७४ : २८-३०	दोज़ख़ शरीर को झुलसकर रख देगी उसपर १९ दारोग़ा तैनात हैं।
७६ : ४	ज़ंजीरें, तौक़ और भड़कती हुई आग।
७८ : २१-२५	दोज़ख़ सरकशों की घात में है। वहाँ उनके लिए गर्म पानी और बहती पीप।
८८ : ४-७	भड़कती आग, खौलते हुए सोते, कँटीली झाड़ी का खाना।

(ख) जन्नत

२ : २५	ऐसे बाग़ जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। फल और पाक बीवियाँ।
७ : ४३	वहाँ दिलों के [illegible] किसी की ओर से कोई कपट न होगा।

६ : २०-२२	अल्लाह की कृपा, उसकी प्रसन्नता और सदा रहने वाली नेमतें।
१० : ६, १०	नेमतों भरे बाग़, आपस में सलाम और अल्लाह का गुण-गान।
११ : १०८	सदा रहने वाली नेमतें।
१३ : २४	बेहतरीन घर जिसमें मनुष्य अपने सदाचारी बाप, पत्नियों और बच्चों के साथ रहे।
१३ : ३५	ऐसे बाग़, जिनमें नहरें जारी हों और उनके फल और साये सदा रहने वाले हों।
१५ : ४५-४८	बाग़ और सोते, पूर्ण शान्ति का घर, रहने वाले सब भाई-भाई, किसी के मन में कपट नहीं।
१६ : ३०, ३१	वहां जो चाहेंगे, वही पायेंगे, सदा रहने वाले बाग़।
१८ : ३१	सोने के कंगन, बेहतरीन रेशमी वस्त्र।
१८ : १०७, १०८	सदा रहने वाले बाग़, जहां से जाने को कभी मन न कहे।
१६ : ६०-६३	वहां कोई अपशब्द सुनने को न मिलेगा और सुबह-शाम खाने का प्रबन्ध।
२० : ७५, ७६	उच्च पद, रहने को बाग़, जिसमें नहरें बह रही हों।
२२ : २३, २४	सोने और मोती के कंगन, रेशमी कपड़े और पवित्र वाणी।
२५ : १५, १६	वहां जो चाहेंगे मिलेगा और सदा रहेंगे।
२५ : ७५, ७६	ऊँचे-ऊँचे महल, आपस की दुआ-सलाम, रहने की बहुत अच्छी जगह।
२६ : ५८	ऊँचे महल जिनके नीचे नहरें बह रही हैं और वहां सदा रहेंगे।
३० : १५	उस बाग़ में ख़ुशहाल रहेंगे।
३२ : १७,१६	कोई क्या जाने अल्लाह ने जन्नत में आँखों की ठण्डक का कैसा सामना किया है।
३३ : ४४	अल्लाह की ओर से शान्ति और बड़ा अच्छा बदला।
३४ : ३७	इतमीनान से कोठों पर बैठे हुए।
३५ : ३३-३४	सोने के कंगन और मोती, रेशमी कपड़े और ज़ुबान पर अल्लाह का शुक्र कि उसने दुःख दूर किया।
३६ : ५५-५८	जन्नत वालों के लिए सुख-वैभव की चीजें होंगी। वे और उनकी पत्नियाँ सायों में तख़्तों पर तकिए लगाये बैठे होंगे।
३७ : ४१-४६	भोजन में मेवे, आमने-सामने तख़्तों पर बैठे हुए, उजली-उजली बड़ी ही मज़ेदार पीने की चीज, जिससे न सिर में दर्द हो न नशा। नीची निगाहों वाली औरतें, बड़ी सुन्दर।
३८ : ४६-५२	अच्छी जगहें, बाग़ों में तकिया लगाये बैठे हुए, खाने को बहुत से मेवे और शराब, नीची निगाह वाली समआयु औरतें।
३६ : २०	ऊँचे-ऊँचे कोठे, नीचे नहरें बहती हुई।
४० : ४०	जन्नत में रोज़ी बे हिसाब मिलेगी।
४१ : ८	ऐसा बदला जो ख़त्म ही न हो।
४१ : ३१, ३२	जो जी चाहेगा मिलेगा, दयावान् क्षमा करने वाले, की ओर से मेहमानी।
४३ : ७०-७३	सोने के बरतन इसके अलावा जो जी चाहे और जो आँखों को अच्छा लगे।

४४ : ५१-५७	शान्ति का स्थान, रेशम के बारीक और मोटे कपड़े, बड़ी-बड़ी आँखों वाली हूरें और मौत से सदा के लिए छुटकारा।
४७ : १५	पानी की नहरें जिनमें गन्ध नहीं, दूध की नहरें जिनका मजा न बदले। शुद्ध शहद, हर तरह के मेवे और अल्लाह की क्षमा।
५० : ३४, ३५	जो चाहें वह सब कुछ और अल्लाह की तरफ से कुछ और ज्यादा।
५१ : १५, १६	बाग़ और सोते और अल्लाह की ओर से नेमतें।
५४ : ५५	बाग़ और नहरें और अल्लाह के दरबार में पवित्र स्थान।
५५ : ४६-७८	सब मेवे दो-दो प्रकार के, अतलस के बिछौने, बाग़ के मेवे झुके हुए, नीची निगाह वाली अछूती औरतें आदि।
५६ : ८९	सुगन्धित फूल और नेमत भरे बाग़।
७६ : ११-२२	वहाँ न धूप की तेज़ी और न कड़ी सर्दी, फलों से लदे हुए पेड़ चाँदी और शीशे के बरतन।
७७ : ४१, ४२	साए और सोते, मन चाहे मेवे।
७८ : ३१-३५	अंगूरों के बा, एक ही उम्र की नवयुवतियाँ छलकते हुए गिलास, कोई अपशब्द और झूठी बात कान में न पड़ेगी।
८३ : २२-२८	चेहरों के ताजा रहने से मालूम होगा कि हर प्रकार का सुख प्राप्त है।
८८ : ८-१६	चेहरों पर प्रसन्नता के चिह्न होंगे। कोई गन्दी बात सुनने में न आयेगी। स्रोत ऊँचे तख़्त और उम्दा मस्नदें।
९८ : ८	अल्लाह उनसे खुश और वे अल्लाह से खुश।

(५) इबादतें

(१) नमाज़

२ : ३	क़ुरआन से उनको हिदायत मिलती है जो नमाज़ क़ायम करते हैं।
२ : ४३	नमाज़ क़ायम करो, ज़कात दो और रुकूअ करने वालों के साथ रुकूअ करो।
२ : ४५	सब्र और नमाज़ से मदद लिया करो।
२ : ११०	नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो।
२ : १४९, १५०	मस्जिदे हराम (काबा) की ओर मुँह करके नमाज़ पढ़ा करो।
२ : १५३	सब्र और नमाज़ से मदद लिया करो।
२ : २३८	नमाज़ों की रक्षा करो।
४ : ४३	नशे की हालत में और नापाकी में नमाज़ न पढ़ो।
४ : १०१	यात्रा में नमाज़ कम करके पढ़ो।
४ : १४२	मुनाफ़िक़ (कपटाचारी) नमाज़ के लिए सुस्ती से खड़ा होता है। लोगों को दिखाने के लिए।
५ : ६	नमाज़ पढ़ने लगो तो वज़ू कर लो, नहाने की ज़रूरत हो तो नहा लो मजबूरी हो तो तयम्मुम कर लो।
७ : ३१	नमाज़ पूरे कपड़ों में पढ़ो।
११ : ११४	सुबह-शाम और रात में नमाज़ क़ायम करो।

१७ : ७८	सूर्य के ढलने से रात की अँधियारी तक नमाज़ क़ायम करो।
२० : १४	*अल्लाह की याद के लिए नमाज़ क़ायम करो।*
२० : १३२	अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दो और ख़ुद उस पर क़ायम रहो।
२२ : ७७	*रुकूअ करो, सजदः करो और अपने रब की इबादत करो।*
२३ : २	ईमान वाले नमाज़ों में विनम्रता अपनाते हैं।
२३ : ६	ईमान वाले नमाज़ों की रक्षा करते हैं।
२४ : ३७	अल्लाह के नेक बन्दे कारोबार में लग कर नमाज़ और ज़कात से ग़ाफ़िल नहीं होते।
२४ : ५६	नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो। तुम पर अल्लाह की कृपा होगी।
२६ : ४५	नमाज़ क़ायम करो। नमाज़ गन्दी और निर्लज्जता की बातों से रोक देती है।
३० : ३१	नमाज़ क़ायम करो और मुश्रिकों में न हो जाओ।
३१ : १७	नमाज़ क़ायम करो और लोगों को अच्छे काम करने के लिए कहो और बुरी बातों से रोको।
५० : ३६, ४०	*सूर्य निकलने और डूबने से पहले और रात में नमाज़ पढ़ो।*
५१ : १७	अल्लाह के नेक बन्दे रात के थोड़े हिस्से में सोते हैं।
५८ : १३	*नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो। तुम जो-कुछ करते हो अल्लाह को सब मालूम है।*
६२ : ६	जुमे की नमाज़ की अज़ान हो जाए तो क्रय-विक्रय बन्द कर दो और नमाज़ की ओर लपको।
७३ : २	नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो।
७६ : २५, २६	सुबह-शाम अल्लाह का नाम लेते रहो और रात में नमाज़ पढ़ो।
८७ : १४, १५	अल्लाह को याद रखने वाले और नमाज़ पढ़ने वाले के लिए सफलता है।
१०७ : ४, ५	नमाज़ की ओर से ग़ाफ़िल रहने वालों के लिए ख़राबी है।

(२) ज़कात

२ : ४	कुरआन से रहनुमाई पाने के लिए अल्लाह की राह में माल ख़र्च करना ज़रूरी है।
२ : १७७	अल्लाह की राह में माल ख़र्च करने के रास्ते।
२ : १९५	अल्लाह की राह में माल ख़र्च न करना अपने आपको तबाही में डालना है।
२ : २१५,२१९	क्या ख़र्च किया जाए और कहाँ ?
२ : २६१-२६८	अल्लाह की राह में ख़र्च किया हुआ माल फलता-फूलता है और अल्लाह की कृपाओं का कारण।
२ : २७१	अल्लाह की राह में माल ख़र्च करने से बुराइयाँ दूर होती हैं।
२ : २७२, २७३	इससे तुम्हारा अपना भला होगा।
३ : ९२	अल्लाह की राह में वे चीज़ें ख़र्च करो जो तुम्हें प्यारी हों।
३ : १८०	कंजूसी तुम्हारे लिए हानिप्रद है।

७ : १५६	ज़कात देना अल्लाह की दयालुता का कारण है।
९ : ११	ज़कात देने पर इस्लामी सोसाइटी में अधिकार प्राप्त होते हैं।
९ : ६०	ज़कात के ख़र्च करने की मदें।
९ : १०३	ज़कात मन के शुद्धीकरण का एक साधन है।
१४ : ३१	अल्लाह की नेमतों का शुक्र अदा करने के लिए ज़कात देना चाहिए।
१९ : ५५	ज़कात पिछली शरीअतों (धर्म विधानों) में फ़र्ज़ थी।
२१ : ७३	पहले नबियों ने भी ज़कात का हुक्म दिया।
२७ : ३	ज़कात देना ईमान लाने की अनिवार्य विशेषता है।
३० : ३९	ज़कात देने से माल बढ़ता है।
७६ : ८	ग़रीबों और मुहताजों की आवश्यकताओं का पूरी करना ईमान वालों की पहचान है।

(३) रोज़ा

२ : १८३	रोज़ा का फ़र्ज़ किया जाना और उसका मक़सद।
२ : १८४,१८५	यात्री और रोगी को रियायत।
२ : १८५	क़ुरआन जैसी नेमत का शुक्रिया रोज़ा है।
२ : १८७	रोज़े के कुछ हुक्म।

(४) हज्ज

२ : १२५	काबा को अल्लाह की इबादत का केन्द्र बनाया गया।
२ : १५८	सफ़ा और मरवा के बीच दौड़ना हज्ज का एक अंग है।
२ : १९१	काबा में लड़ना हराम है।
२ : १९६-२०३	हज्ज के हुक्म।
३ : ९६,९७	जो काबे की यात्रा कर सकता हो उस पर हज्ज फ़र्ज़ है।
५ : १,९५	एहराम की हालत में शिकार करना मना है।
२२ : २५-२९	हज्ज और क़ुरबानी का हुक्म।
२२ : ३६,३७	क़ुरबानी के कुछ और हुक्म और क़ुरबानी की रूह।
२७ : ९१	अल्लाह ने मक्का को प्रतिष्ठित स्थान बनाया है।
२८ : ५७	अल्लाह ने काबे को शान्ति का स्थान बनाया।

६. सदाचरण और समाज व्यवहार

(१) नैतिक दोष जो क़ुरआन मिटाना चाहता है

२ : २७	अल्लाह को दिया हुआ वचन भंग न करो। यह सब से बड़ा नुक़सान है।
२ : ८४	आपस में ख़ून न बहाओ और लोगों को घर से बेघर न करो।
२ : १८८	बेईमानी से एक दूसरे के माल न खाओ और न घूस दो।
२ : २६४	भलाई कर के एहसान न धरो और दिखावे से बचो।
४ : २९	बेईमानी से दूसरे के माल न खाओ और नाहक़ ख़ून न बहाओ।
४ : ३६,३७	घमण्ड करने वाले को अल्लाह पसन्द नहीं करता और न कंजूसी को

आड़ में पनाह लेनी पड़ती है कि "स्वयं देवता भी कभी-कभी संमार्ग से हट जाते हैं। उनके पाप उनके व्यक्तित्व पर उसी तरह प्रभाव नहीं डालते जिस तरह अग्नि सारी वस्तुओं को जलाने पर भी अपराधी नहीं ठहरती।"

कोई सद्बुद्धि मनुष्य यह विश्वास नहीं कर सकता कि किसी उच्चकोटि के धर्म शिक्षक का जीवन ऐसा अपवित्र हो सकता है, और न वह यही कल्पना कर सकता है कि किसी सच्चे धर्म प्रवर्तक ने वास्तव में अपने आप को मानवमात्र के तथा सृष्टि के प्रतिपालक के रूप में प्रस्तुत किया होगा। परन्तु क़ुरआन और बाइबिल के तुलनात्मक अध्ययन से यह तथ्य खुलकर हमारे सामने आ जाता है कि जातियों ने अपनी मानसिक अवनति तथा नैतिक पतन के युग में किस प्रकार संसार के श्रेष्ठतम एवं पवित्रतम मनुष्यों की जीवनी को एक ओर गन्दे से गन्दे रूप में ढाला है, ताकि स्वयं अपनी त्रुटियों के लिए औचित्य का प्रमाण मिल जाये और दूसरी ओर उनसे सम्बद्ध कैसे-कैसे भ्रम-मूलक गल्प गढ़ दिये हैं। इसलिए हम समझते हैं कि यही सब-कुछ श्रीकृष्ण जी के साथ भी हुआ होगा, और उनकी यथार्थ शिक्षा और वास्तविक व्यक्तित्व उससे सर्वथा भिन्न होगा जैसा हिन्दुओं की धार्मिक पुस्तकें उसे प्रस्तुत करती हैं।

जिन महापुरुषों का नबी होना ज्ञात तथा सिद्ध है, उनमें सबसे बढ़कर अत्याचार हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर किया गया है। हज़रत ईसा अ० वैसे ही एक मनुष्य थे जैसे सब मनुष्य हुआ करते हैं। मानव होने के समस्त गुण उनमें भी उसी प्रकार विद्यमान थे जिस प्रकार हर मनुष्य में होते हैं। अन्तर केवल इतना था कि ईश्वर ने उनको ज्ञान विवेक तथा नुबूवत और चमत्कार की शक्ति प्रदान करके बिगड़ी हुई जाति के सुधार के लिए नियुक्त किया था। परन्तु एक तो उनकी जाति ने उनको झुठलाया और पूरे तीन वर्ष भी उनके शुभ अस्तित्व का सहन न कर सकी, यहाँ तक कि ठीक युवावस्था में उनकी हत्या करने का निर्णय कर लिया। फिर जब उसने उनके बाद उनकी महिमा को स्वीकार किया तो सीमा से इतना आगे बढ़ गई कि उनको ईश्वर का बेटा अपितु सर्वथा ईश्वर बना दिया और यह विश्वास उनसे सम्बद्ध किया कि ईश्वर मसीह के रूप में इसलिए प्रगट हुआ था कि सूली पर चढ़कर मनुष्यों के पापों का प्रायश्चित करे क्योंकि मनुष्य स्वभावतः पापी था और अपने कर्म से अपने लिए मोक्ष प्राप्त न कर सकता था। अल्लाह की पनाह ! एक सच्चा ईशदूत अपने पालन-कर्ता पर इतना बड़ा लाञ्छन कैसे लगा सकता था। परन्तु उसके श्रद्धालुओं ने श्रद्धा के आवेश में उस पर यह लाञ्छन लगाया और उसकी शिक्षाओं में अपनी इच्छा के अनुसार इतना परिवर्तन किया कि आज (क़ुरआन के अतिरिक्त) संसार के किसी ग्रन्थ में मसीह की यथार्थ शिक्षा और स्वयं उनकी वास्तविकता का चिह्न नहीं मिलता। बाइबिल के न्यू टेस्टामेन्ट में जो पुस्तकें चार इंजीलों के नाम से पाई जाती हैं उन्हें उठाकर देख जाओ, सब मसीह के ईश्वर का अवतार, ईश्वर का बेटा या स्वयं ईश्वर होने की अशुद्ध कल्पनाओं से भरी पड़ी हैं। कहीं हज़रत मरयम को शुभ-सूचना दी जाती है कि तेरा बच्चा ईश्वर का बेटा कहलायेगा (लूका १ : ३५) कहीं ईश्वर की आत्मा कबूतर के समान यसूअ पर उतरकर आती है और पुकारकर कहती है कि यह मेरा प्यारा बेटा है (मत्ता १६ : १६)। कहीं मसीह स्वयं कहता है कि मैं ईश्वर का बेटा हूँ और तुम मुझको सर्वशक्तिमान की दाहिनी ओर बैठे देखोगे (मुरकुस १४ : ६२) कहीं प्रलय के बाद प्रतिफल के दिन ईश्वर के स्थान पर मसीह सिंहासन पर बैठाया जाता है और वह कर्मों के फल का निर्णय करता है (मत्ता २५ : ३१-४६) कहीं मसीह के मुँह से कहलवाया जाता है कि बाप मुझ में है और मैं बाप में हूँ (यूहन्ना १० : ३८)। कहीं इस सत्यवादी मनुष्य के मुख से ये अशुद्ध शब्द निकलवाये जाते हैं

	पसन्द है।
४:१२८	तंग दिली से बचो।
५:६०	शराब और जुआ सब गन्दे शैतानी काम हैं।
६:१०८	दूसरे के उपास्यों को बुरा न कहो।
६:१५२	गन्दी बातों के क़रीब न जाओ और नाहक किसी की जान न लो।
६:१५२	अपनी सन्तान को गरीबी के डर से क़त्ल न करो।
८:२७	किसी से ख़ियानत न करो।
१६:६०	बुराई और बेहयाई से बचो।
१६:६१	कोई वादा करके न तोड़ो।
१७:२७	फ़ुज़ूलख़र्ची न करो। फ़ुज़ूलख़र्ची करने वाले शैतान के भाई है।
१७:३१	निर्धनता के भय से औलाद को क़त्ल न करो।
१७:३२	ज़िना के करीब भी न फटको।
१७:३३	नाहक़ किसी को क़त्ल न करो।
१७:३४,३५	वादा कर के न तोड़ो और नाप-तौल में कमी न करो।
१७:३७	अकड़-अकड़ कर न चलो।
२२:३०	झूठी बातों से बचो।
२३:३,५	व्यर्थ की बातों से दूर रहो और बदकारी के करीब न जाओ।
२४:२३	किसी पर तोहमत (आरोप) न लगाओ।
२४:२७-२६	बिना आज्ञा दूसरो के घरों में न घुसो।
२४:३०, ३१	मर्द पराई औरतों से और औरतें पराये मर्दों से नज़र बचा कर रखें और अपनी शर्मगाहों की रक्षा करें।
२४:३३	लौंडियों से वेश्यावृत्ति न कराओ।
२५:६७	न फ़ज़ूलख़र्ची करो और न कंजूसी। बीच की चाल चलो।
२५:६८	ज़िना और नाहक़ क़त्ल से बचो।
२८:१७	अपराधियों का सहायक बनना कदापि सही नहीं।
२८:७६	अल्लाह की दी हुई नेमतों पर फूलो मत।
३१:१८	लोगों से गाल फुला कर बात न करो और न अकड़ कर चलो।
४२:३७	गन्दी और बेहयाई की बातों से बचो।
४६:११	किसी की खिल्ली मत उड़ाओ, ऐब न लगाओ और बुरे नाम न रखो।
४६:१२	बदगुमानी से बचो, यह पाप है, किसी की टोह में न लगो।
४६:१२	पीठ, पीछे किसी को बुरा न कहो। यह ऐसा है जैसे मुर्दा भाई का मांस खाना।
७४:६	बदले की उम्मीद पर एहसान न धरो।
८३:१-३	नाप-तौल में कमी करने वालों के लिए बड़ी ख़राबी है।
६३:६	यतीम पर क्रोध न करो।
६३:१०	माँगने वालों को झिड़को मत।
१०२:१	किसी को खाने देना और चुग़ली खाना बहुत बुरी बात है।
१०७:७	मामूली इस्तेमाल की चीज़ों को देने से इन्कार करना अच्छा नहीं।

७ : १५६	ज़कात देना अल्लाह की दयालुता का कारण है।
९ : ११	ज़कात देने पर इस्लामी सोसाइटी में अधिकार प्राप्त होते हैं।
९ : ६०	ज़कात के खर्च करने की मदें।
९ : १०३	ज़कात मन के शुद्धीकरण का एक साधन है।
१४ : ३१	अल्लाह की नेमतों का शुक्र अदा करने के लिए ज़कात देना चाहिए।
१९ . ५५	ज़कात पिछली शरीअतों (धर्म विधानों) में फ़र्ज़ थी।
२१ : ७३	पहले नबियों ने भी ज़कात का हुक्म दिया।
२७ : ३	ज़कात देना ईमान लाने की अनिवार्य विशेषता है।
३० : ३९	ज़कात देने से माल बढ़ता है।
७६ : ८	गरीबों और मुहताजों की आवश्यकताओं का पूरी करना ईमान वालों की पहचान है।

(३) रोज़ा

२ : १८३	रोज़ा का फ़र्ज़ किया जाना और उसका मक़सद।
२ : १८४,१८५	यात्री और रोगी को रियायत।
२ : १८५	क़ुरआन जैसी नेमत का शुक्रिया रोज़ा है।
२ : १८७	रोज़े के कुछ हुक्म।

(४) हज्ज

२ : १२५	काबा को अल्लाह की इबादत का केन्द्र बनाया गया।
२ : १५८	सफ़ा और मरवा के बीच दौड़ना हज्ज का एक अंग है।
२ : १९१	काबा में लड़ना हराम है।
२ : १९६-२०३	हज्ज के हुक्म।
३ : ९६,९७	जो काबे की यात्रा कर सकता हो उस पर हज्ज फ़र्ज़ है।
२ : १,९५	इहराम की हालत में शिकार करना मना है।
२२ : २५-२९	हज्ज और क़ुरबानी का हुक्म।
२२ : ३६, ३७	क़ुरबानी के कुछ और हुक्म और क़ुरबानी की रूह।
२७ : ९१	अल्लाह ने मक्का को प्रतिष्ठित स्थान बनाया है।
२८ : ५७	अल्लाह ने काबे को शान्ति का स्थान बनाया।

६. सदाचरण और समाज व्यवहार

(१) नैतिक दोष जो कुरआन मिटाना चाहता है

२ : २७	अल्लाह को दिया हुआ वचन भंग न करो। यह
२ : ८४	नाहक़ खून न बहाओ और लोगों को घर से
२ : १८८	धाँधली से एक दूसरे के माल न खाओ
२ : २६४	भलाई कर के एहसान न धरो औ
४ : २९	बेईमानी से दूसरे के माल
४ : ३६,३७	घमण्ड करने वाले को

४:१६ जहाँ तक बन पड़े अल्लाह से डरो और कंजूसी से बचो।

(३) माता-पिता और नातेदारों के हक़

२:८३ माता-पिता और नातेदारों के साथ अच्छा व्यवहार करो।

२:१७७ नातेदारों पर अपना माल ख़र्च करो।

२:२१५ अपना माल अपने माता-पिता और नातेदारों पर ख़र्च करो।

४:३६ किसी को अल्लाह का शरीक न बनाओ और माता-पिता के साथ उपकार करो और नातेदारों के साथ।

६:१५१ माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो।

९:९० अल्लाह हुक्म देता है कि नातेदारों के साथ अच्छा व्यवहार किया जाये।

७:२३, २४ माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो और उन्हें 'हूँ' तक न कहो।

७:२६ नातेदारों का हक़ अदा करो।

९:८ अल्लाह ने मनुष्य को हुक्म दिया है कि माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करे।

०:३८ नातेदारों का हक़ अदा करो।

१:१४ अल्लाह ने माँ-बाप के साथ अच्छे व्यवहार का हुक्म दिया है।

६:१५ अल्लाह ने मनुष्य को हुक्म दिया है कि माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करे।

(४) यतीमों, मुहताजों और पड़ोसियों के हक़

२:८३ यतीमों और मुहताजों के साथ अच्छा व्यवहार करो।

२:१७७ यतीमों, मुहताजों और मुसाफ़िरों पर अपना माल ख़र्च करो।

२:२१५ अपना माल यतीमों, मुहताजों और मुसाफ़िरों पर ख़र्च करो।

२:२२० यतीमों के साथ अच्छा व्यवहार करो।

४:२ यतीमों का माल उनको वापस कर दो।

४:३६ यतीमों, पड़ोसियों और मुसाफ़िरों के साथ अच्छा व्यवहार करो।

४:१२७ यतीमों के साथ न्याय करो।

६:१५२ यतीमों के धन की रक्षा करो।

९:६० ज़कात फ़क़ीरों और मुहताजों के लिए है।

१७:३४ यतीमों के धन की रक्षा करो।

३०:३८ मुहताज और मुसाफ़िर का हक़ अदा करो।

८९:१७, १८ यतीमों की आव-भगत करो और मुहताजों को खाना खिलाने पर लोगों को उभारो।

९०:१३-१८ भूखे को खाना खिलाना, वह नातेदार हो या फ़क़ीर, बड़ी नेकी का काम है।

०७:२, ३ यतीमों को धक्के देना और फ़क़ीरों को खाना खिलाने पर लोगों को न उभारना बड़ा दुर्भाग्य है।

(६) रहन-सहन के तरीके

४ : ८६	सलाम करो और सलाम का उत्तर अच्छे शब्दों में दो।
२४ : २७	दूसरों के घर में इजाज़त ले कर जाओ और सलाम करो।
२४ : ५८	फ़ज्र की नमाज़ से पहले, दोपहर के समय और इशा के बाद घर के नौकर और लड़के-लड़कियाँ भी इजाज़त ले कर आया करें।
२४ : ६१	घर में जाओ तो अपने घर वालों को सलाम कर के जाओ।
२४ : ६२	कोई सामूहिक काम हो रहा हो तो बिना इजाज़त न चले जाओ।
२६ : २६	सभाओं में बैठ कर गन्दे काम करना अच्छा नहीं।
३३ : ५३	खानों के बाद खामखाह बैठ कर गपें हांकने से बचो। इस में मेज़बान को कष्ट होता है।
४६ : २	अपने प्रमुख से ऊँची आवाज़ में चिल्ला-चिल्ला कर बातें न करो।
५८ : ११	कहा जाए तो सभा में खुल कर बैठो और जब उठ खड़े होने को कहा जाए तो उठ खड़े हो।

७. राजनीति

(१) मौलिक दृष्टिकोण

६ : ७३	आसमान और ज़मीन अल्लाह ने पैदा किये।
१३ : १६	हर चीज़ का पैदा करने वाला अल्लाह है, वह अकेला है और सब पर छाया हुआ।
४ : १	उस ने तुम सब को एक जीव से पैदा किया।
२ : २६	अल्लाह ने तुम्हारे लिए वह सब-कुछ पैदा किया जो ज़मीन में है।
३५ : ३	अल्लाह के अलावा कोई नहीं जो तुम्हें रोज़ी देता हो।
५६ : ५८-७२	वही वीर्य से बच्चा पैदा करता है, ज़मीन से खेती उगाता है, पानी बरसाता है।
२० : ६	आसमानों और ज़मीन में, उन दोनों के बीच और ज़मीन के भीतर जो कुछ है, अल्लाह का है।
३० : २६	आसमानों और ज़मीन में सब-कुछ अल्लाह का है और सभी उस के आज्ञापालक हैं।
७ : ५४	सूर्य, चाँद, तारे सब उस के आज्ञापालक हैं। उसी ने पैदा किया, वही मालिक है।
३२ : ५	आसमान से ज़मीन तक पूरी व्यवस्था अल्लाह के हाथ में है।
२ : १०७	आसमानों और ज़मीन में बादशाही अल्लाह ही की है।
२५ : २	बादशाही में कोई उस का शरीक नहीं।
२८ : ७०	आदेश देने का अधिकार अल्लाह ही को है।
६ : ५७	निर्णय का अधिकार अल्लाह के अलावा किसी को नहीं।
१८ : २६	वह अपने हुक्म में किसी को शरीक नहीं करता।
३ : १५४	पूर्ण अधिकार अल्लाह ही को है।

३० : ४	अधिकार अल्लाह ही के हाथ में है, पहले भी और बाद में भी।
५७ : ५	आसमानों और ज़मीन की बादशाही उसी की है।
६ : १८	वह अपने बन्दों पर प्रभावपूर्ण अधिकार रखने वाला है।
५९ : २३	उसे सब पर प्रभावपूर्ण अधिकार प्राप्त है। अपना आदेश बलपूर्वक लागू कर सकता है और बड़ाई का मालिक है।
४५ : ३७	आसमानों और ज़मीन में बड़ाई उसी की है।
६७ : १	उस के हाथ में बादशाही है।
३६ : ८३	हर चीज़ का अधिकार अल्लाह के हाथ में है।
३ : ८३	आसमानों और ज़मीन के सब रहने वाले चाहे-अनचाहे उसी के आज्ञाकारी हैं।
१० : ६५	ताक़त उसी के हाथ में है।
९५ : ८	अल्लाह सब हाकिमों से बढ़ कर हाकिम है।
३ : २६	सम्मान-अपमान देने का अधिकार उसी को है।
७ : १२८	ज़मीन अल्लाह की है। अल्लाह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है, उस का वारिस बनाता है।

(२) सम्प्रभुत्व

६ : १६४	जो हर चीज़ का रब (पालन-कर्त्ता) है, वही मनुष्यों का भी रब है।
७ : ५४	तुम्हारा रब वही अल्लाह है जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया।
११४ : १-३	अल्लाह मनुष्यों का रब है। मनुष्यों का बादशाह है और मनुष्यों का इलाह (पूज्य)।
१० : ३१,३२	तुम्हारा वास्तविक रब वही अल्लाह है। फिर तुम किधर फिराए जा रहे हो?
४२ : १०	तुम्हारे मतभेदों में फ़ैसला करना अल्लाह का काम है।
१२ : ४०	हुक्म अल्लाह के अलावा किसी के लिए नहीं। यही सही धर्म है।
३ : १५४	अधिकार पूरे का पूरा अल्लाह का है।
७ : ५४	उसी ने पैदा किया, वही हुक्म देने का अधिकार रखता है।
५ : ४०	तुम्हें यह मालूम नहीं आसमानों और ज़मीन में बादशाही उसी की है।

(३) क़ानून और आज्ञापालन

३९ : २	दीन (धर्म) को अल्लाह के लिए ख़ालिस कर के उस की दासता अपनाओ।
३९ : ११,१२	दीन (धर्म) अल्लाह के लिए ख़ालिस है। और आज्ञापालन उसी का किया जाए।
१६ : ३६	हर रसूल की शिक्षा यही थी कि इबादत अल्लाह की करो और तागूत से बचो।
९८ : ५	लोगों को यही हुक्म दिया गया कि एकाग्र हो कर अल्लाह की बन्दगी करें। धर्म को उसी के लिए ख़ालिस कर के।
७ : ३	पालन उस (क़ानून) का करो जो तुम्हारे रब की ओर से उतरा है।

२ : २२६	अल्लाह ने जो सीमाएं निश्चित कर दी है, उन से बाहर जाने वाले अत्याचारी हैं।
६५ : १	जिस ने अल्लाह की निर्धारित की हुई सीमाओं से कदम बाहर निकाला उसने स्वयं अपने साथ अन्याय किया।
५८ : ४	अल्लाह की सीमाओं का पालन करने से इन्कार करने वालों के लिए बड़ा दुखदायी दण्ड है।
५ : ४४-४६	अल्लाह के उतारे हुए क़ानून के अनुसार फ़ैसला न करने वाले काफ़िर, ज़ालिम और सीमोल्लघन करने वाले हैं।
४ : ६०	अल्लाह पर ईमान लाना और फिर तागूत से अपने मामलों के फ़ैसले कराना बडी गुमराही है।
३३ : ३६	अल्लाह और उसके रसूल के फ़ैसले के बाद ईमान वाले के लिए कोई अधिकार शेष नहीं रह जाता।
२४ : ४७,४८	जो कोई अल्लाह और उस के रसूल के फ़ैसलों से मुँह मोड़ता है वह कदापि ईमान वाला नहीं।
२४ : ५१	ईमान वाले व्यक्ति का काम यह है कि जब वह अल्लाह और उस के रसूल का फ़ैसला सुने तो कहे कि मैंने सुना और मान लिया।

(४) ख़िलाफ़त

२ : ३०	अल्लाह ने मनुष्य को ज़मीन में (अपना) ख़लीफ़ा बनाया है।
७ : १०	अल्लाह ने मनुष्य को ज़मीन में अधिकार दे कर बसाया।
२२ : ६५	अल्लाह ने ज़मीन की हर चीज़ मनुष्य के वश में कर दी है।
७ : ६६	आद को अल्लाह ने नूह की जाति के बाद ख़लीफ़ा बनाया।
७ : ७४	समूद को आद के बाद ख़लीफ़ा बनाया गया।
५ : ४८	नबी का काम यह है कि वह अल्लाह के उतारे हुए कानून के अनुसार लोगों के बीच फ़ैसले करे।
३८ : २६	हज़रत दाऊद को अल्लाह ने अपना ख़लीफ़ा बनाया और हुक्म दिया कि वह लोगों के मामलों को न्याय के साथ निबटाएँ।
७ : १२६	अल्लाह ने बनी इसराईल को ज़मीन में अपना ख़लीफ़ा बनाया कि देखे वे कैसा कर्म करते है।
१० : १४	अल्लाह ने तुम को ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाया कि देखे तुम कैसा कर्म करते हो।
२४ : ५५	ईमान लाने वालों और अच्छे कर्म करने वालों से अल्लाह का वादा है कि वह उन्हे ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाएगा।

(५) मन्त्रणा परिषद और राज्य के ज़िम्मेदार

३ : १५६	(हे नबी !) आप अपने कामों में मन्त्रणा कर लिया करें।
४२ : ३८	(मुसलमानों का) काम आपसी मिश्वरों से चलता है।
४ : २६	मुसलमानों को अपने शासकों का आज्ञापालन करना चाहिए।

१८ : २८ उसका आज्ञापालन न करो जिसका दिल अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल हो।

२६ : १५१, १५२ जो लोग सीमोल्लंघन करते हैं और बिगाड़ पैदा करते हैं, उनका आज्ञापालन न करो।

४९ : १३ सबसे अधिक इज़्ज़त वाला वही है जो अधिक संयमी है।

(६) संविधान के मूल सिद्धान्त

४ : ५९ अल्लाह और रसूल के आज्ञापालन को हर आज्ञापालन पर प्रमुखता है।

४ : ५९ शासकों का आज्ञापालन अल्लाह और रसूल के आज्ञापालन के अन्तर्गत होगा।

४ : ५९ अधिकारपूर्ण शासक को मुसलमान होना चाहिए।

४ : ५९ लोगों को शासकों और शासन से मत-भेद करने का अधिकार है।

४ : ५९ ऐसे मत-भेदों में अन्तिम निर्णय अल्लाह और रसूल के कानून से होगा।

५ : ४८ फ़ैसले अल्लाह के उतारे हुए कानून के अनुसार होने चाहिएँ।

४ : ५८ निर्णय करो तो न्याय के साथ करो।

(७) राज्य का उद्देश्य

५७ : २५ लोग इन्साफ़ पर क़ायम रहें और अन्याय व अत्याचार ख़त्म हो जाये।

२२ : ४१ सत्ता पाने पर नमाज़ और ज़कात की व्यवस्था स्थापित हो, नेकी का हुक्म दिया जाये और बुराई से रोका जाये।

४२ : १५ अल्लाह का हुक्म है कि लोगों में इन्साफ़ करूँ।

४ : ५८ लोगों के बीच न्याय के साथ फ़ैसला करो।

३ : ११० नेकी का हुक्म देना और बुराई से रोकना।

४२ : १३ दीन क़ायम करना और आपस की फूट रोकना।

८ : ३९ दीन पूरे का पूरा अल्लाह के लिए हो जाये।

९ : ११२ अल्लाह की निश्चित की हुई सीमाओं की रक्षा।

(८) मूल अधिकार

१७ : ३३ *किसी को हक़ के बिना क़त्ल न करो। (जान की रक्षा)*

२ : १८८ नाजायज़ तरीक़ों से एक-दूसरे के माल न खाओ। (व्यक्तिगत सम्पत्ति की रक्षा)

४ : २९ व्यापार या दूसरे जायज़ तरीक़ों के बिना एक-दूसरे के माल खाना ख़ुद अपने को हलाक (विनष्ट) करना है। (व्यक्तिगत सम्पत्ति की रक्षा)

४९ : ११, १२ कोई किसी की खिल्ली न उड़ाये, ऐब न लगाये, बुरे नाम न रखे और न पीठ पीछे बुरा कहे। (मान रक्षा)

२४ : २७ दूसरे के घरों में बिना आज्ञा न जाओ। (निजी जीवन की रक्षा)

४९ : १२ लोगों के भेद न टटोलो। (निजी जीवन की रक्षा)

२ : २५६ दीन में कोई ज़बरदस्ती नहीं। (विचार और विश्वास की स्वतंत्रता)

१० : ९९ किसी को मजबूर करके मुसलमान नहीं किया जा सकता। (विचार और

विश्वास की स्वतंत्रता)

६ : १०८ दूसरों के उपास्यों को बुरा न कहो।

४९ : ६ पता लगाये बिना किसी के ख़िलाफ़ कोई कार्रवाई नहीं की जा सकती।

४ : ५८ लोगों के बीच निर्णय न्याय के साथ करो।

(६) विदेशी राजनीति

१७ : ३४ वादा पूरा करो।

१६ : ९१, ९२ समझौता करने के बाद उससे न फिरो।

९ : ७ जब तक दूसरे समझौते पर डटे हों, तुम वादे से नहीं हट सकते।

९ : ४ दूसरे समझौते के विरुद्ध न जावें तो तुम अपने समझौते की मुद्दत तक अपने वादे पर जमे रहो।

८ : ७२ सन्धि का समझौता होते हुए तुम ग़ैर-मुस्लिमों के राज्य में रहने वाले मुसलमानों की सहायता नहीं कर सकते।

८ : ५८ समझौते के बाद कोई जाति धोखा दे तो पहले सन्धि समाप्त करो फिर कोई कार्रवाई करो।

५ : ८ किसी जाति की दुश्मनी में न्याय को हाथ से न जाने दो।

८ : ६१ दुश्मन समझौता करना चाहे तो तुम भी समझौते के लिए तैयार हो जाओ।

६० : ८ जो तुम से न लड़े और हानि न पहुँचाए, उसके साथ भलाई का व्यवहार करो।

६० : ९ जो तुम से लड़े और तुम्हारे दुश्मनों की मदद करे, उसके साथ दोस्ती नहीं हो सकती।

२ : १९४ जो तुम पर ज़्यादती करे तुम उस पर बस उतनी ही ज़्यादती कर सकते हो।

१६ : १२६ बदला लो तो उतना ही जितना तुम्हें सताया गया हो और अगर सब्र करो तो यह बेहतर है।

४२ : ४०-४२ तुम पर ज़्यादती की गई हो और तुम बदला लो तो इसमें कोई दोष नहीं।

८. जिहाद

(१) अल्लाह की राह में किए गए जिहाद की वास्तविकता और आवश्यकता

१७ : ३३ मानव-प्राण लेना हराम है, किसी को क़त्ल न करो पर उस समय जबकि न्याय की माँग हो।

५ : ३२ किसी का नाहक़ क़त्ल करना ऐसा है जैसे तमाम लोगों को क़त्ल कर दिया।

२ : १९१ दीन से गुमराह करने का जुर्म बिगाड़ व क़त्ल से बढ़कर है।

२२ : ४० अगर अल्लाह लोगों को एक दूसरे के द्वारा हटाता न रहता तो गिरजा,

मस्जिदें आदि सब ढा दिए जाते।

२ : २५१ अगर अल्लाह लोगों को एक दूसरे के द्वारा हटाया न करता तो ज़मीन बिगाड़ से भर जाती।

२२ : ३६, ४० जिन लोगों से लड़ाई लड़ी जाए और बिना अपराध के उन्हें घरों से निकाला जाए उन्हें लड़ने की इजाज़त है।

४ : ७५ अल्लाह के रास्ते में कमजोरों, औरतों और बच्चों के लिए क्यों युद्ध नहीं करते ?

४ : ७६ ईमान वाले अल्लाह की राह में लड़ते हैं और अवज्ञाकारी ताग़ूत की राह में।

(२) जिहाद की महत्ता

६१ : १०-१२ वह व्यापार जो पीणाजनक अज़ाब से बचाए, अल्लाह की राह में अपने माल और जान से जिहाद करना है।

६१ : ४ अल्लाह उन लोगों से प्रेम करता है, जो उस की राह में पंक्तिबद्ध होकर लड़ते हैं।

९ : २०-२२ जो लोग ईमान लाए अल्लाह के लिए घर-बार छोड़ा और अल्लाह की राह में जान व माल से लड़े, उनका पद सबसे ऊँचा है।

९ : २४ ईमान वालों को अल्लाह की राह में जिहाद करना संसार की हर चीज़ से ज्यादा प्यारा होता है।

(३) अन्याय और अत्याचार का उत्तर

२ : १९०-१९३ दीन की सुरक्षा और प्रतिरक्षा के लिए लड़ना अनिवार्य है।

२२ : ३९, ४० अल्लाह को अपना रब कहने पर जो लोग घरों से निकाले जाएँ और सताए जाएँ उन्हें लड़ने की इजाज़त है।

(४) सत्य-मार्ग की रक्षा

८ : ३६ जो लोग अपनी शक्ति अल्लाह के रास्ते से रोकने में लगाएँ उनको परास्त किया जाए।

८ : ४७ मुसलमान उन लोगों जैसे न हो जाएँ जो अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं।

९ : ९ अल्लाह के रास्ते से रोकने वालों के विरुद्ध लड़ाई की इजाज़त है।

४७ : १, ४ जो लोग अल्लाह की राह से रोकने लगें उनकी शक्ति को कुचल डालो और उनसे लड़ो।

(५) छल-कपट की सज़ा

८ : ५५-५८ जो लोग छल-कपट करें और समझौता भंग करने पर उतर आएँ, उनसे युद्ध किया जाये।

९ : १-५ समझौता भंग करने वालों को पहले मुहलत फिर उनसे लड़ाई का एलान।

९ : ७, ८ वादा पूरा न करने वाले जब तक लड़ें, तुम भी लड़ो।

९ : १०-१५ जो न नातेदारी का पास करे, न वचन व समझौते का और दीन पर वार करे, ऐसे लोगों से युद्ध किया जाए।

(६) भीतरी शत्रुओं का उन्मूलन

९ : ७३-७७	काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से लड़ो और उन पर सख़्ती करो।
३३ : ६०, ६१	अगर मुनाफ़िक़ अपनी हरकतों से न रुकें तो उनसे युद्ध करना पड़ेगा।
४ : ८९	मुनाफ़िक़ों में से किसी को अपना मित्र न बनाओ और उनकी पकड़-धकड़ करो।
४ : ९१	मुनाफ़िक़ जो दोरुख़ी की नीति पर चल रहे है, इसी योग्य हैं कि उनसे लड़ा जाए।
४ : ८१	तुम्हारे सामने आते है तो आज्ञापालन स्वीकार करते हैं और पीठ पीछे विरोध की योजनाएँ तैयार करते हैं।
९ : ४७, ४८	इन लोगों से बिगाड़ के सिवा और कोई आशा नहीं। ये झूठी ख़बरें फैलाने और इधर-उधर की लगाते हैं।
९ : ५६, ५७	ये क़समें खाते हैं कि हम तुम्हारे हैं, हालांकि ऐसा नहीं है।
९ : ६७	मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं। ये बुराई फैलाते हैं और भलाइयों से रोकते हैं।
६३ : १, २	मुनाफ़िक़ झूठी क़समें खा-खा कर अपने ईमान का यक़ीन दिलाते हैं, पर वास्तव में ये लोगों को अल्लाह के रास्ते मे रोकते हैं।

(७) शान्ति की रक्षा

५ : ३३	जो लोग अल्लाह और रसूल से लड़ते हैं और देश में बिगाड़ और द्रोह फैलाते हैं, उनकी सज़ा क़त्ल है।
८ : ६०	अल्लाह के दुश्मनों के मुक़ाबले के लिए तुम लड़ाई के सामानों से सजे रहो।

(८) सताये हुए मुसलमानों की हिमायत

४ : ७५	कमज़ोर मर्दों, औरतों और बच्चों के लिए अत्याचारियों से लड़ो।
८ : ७२	ग़ैर मुस्लिम क्षेत्रों में रहने वाले सताए जा रहे मुसलमान अगर दीन के बारे में सहायता माँगें तो उनकी सहायता करनी चाहिए, इस शर्त के साथ कि उस जाति के साथ तुम्हारा कोई समझौता न हुआ हो।

(९) जन साधारण के कल्याण की स्थापना

२ : १४३	तुम एक उत्तम गिरोह हो। तुम्हारा काम है दुनिया के सामने हक़ की गवाही देना।
२२ : ७८	अल्लाह के लिए जिहाद करो जैसा जिहाद करने का हक़ है। तुम दुनिया वालों पर गवाह हो।
२२ : ४१	शक्ति पाने के बाद तुम्हारा काम है कि नमाज़ और ज़कात की व्यवस्था की स्थापना करो। नेकी का हुक्म दो और बुराई से रोको।
११ : ११६	नेक काम करने वालों का कर्तव्य है कि वे बिगाड़ को रोकें।
५ : ७८	लोगों को बुरी बातों से न रोकने वाले अल्लाह की फिटकार के अधिकारी होते हैं।

(१०) फ़ितना व फ़साद का दमन

२ : १९३ उनसे लड़ो यहाँ तक कि फ़ितना (उपद्रव) बाक़ी न रहे।

८ : ७३ *आवश्यकतानुसार अगर तुम युद्ध न करोगे तो देश में फ़ितना व फ़साद मचेगा।*

२ : १९१ फ़ितना क़त्ल से ज़्यादा बुरी चीज़ है।

९. नबियों के हालात

(१) हज़रत आदम अ०

२ : २८-३४ ज़मीन पर मनुष्य के जीवन का आरम्भ तथा फ़िरिश्तों की बात-चीत।

२ : ३५-३९ हज़रत आदम और आपकी पत्नी का जन्नत में रहना, शैतान का धोखा *देना और ज़मीन पर आदम अ० का आना।*

७ : ११-१८ *शैतान ने आदम अ० को सजदा करने से इन्कार किया* और इस प्रकार वह रुसवा हुआ।

७ : १९-२५ हज़रत आदम और आपकी पत्नी का जन्नत में रहना शैतान का धोखा देना और ज़मीन पर आपका बसना।

४ : १ सब मनुष्य एक जीव हज़रत आदम अ० की सन्तान हैं।

७ : १८९ अल्लाह ने तुमको एक जीव (हज़रत आदम अ०) से पैदा किया।

१५ : २६-३० मनुष्य को अल्लाह ने सड़ी हुई मिट्टी के गारे से पैदा किया और फ़िरिश्तों *से सजदा करने को कहा।*

१५ : ३१-४२ शैतान ने आदम को सजदा करने से इन्कार किया और वह धुतकारा गया।

१७ : ६१-६५ शैतान के सिवा सब फ़िरिश्तों ने आदम को सजदा किया।

१८ : ५० शैतान के सिवा सब फ़िरिश्तों ने आदम को सजदा किया, शैतान जिन्नों में से था और उसने आज्ञा को ठुकराया।

२० : ११५ आदम ने जो वचन दिया था उसे भूल गये।

२० : ११६-१२३ फ़िरिश्तों ने आदम अ० को सजदा किया, शैतान ने इन्कार कर दिया *और आदम को बहकाया।*

३८ : ७१-८५ आदम मिट्टी से बनाये गए फ़िरिश्तों को सजदा करने की आज्ञा दी गई। इबलीस अकड़ गया और सजदा न किया।

(२) हज़रत नूह अ०

७ : ५९-६४ अपनी जाति वालों को अल्लाह की दासता अपनाने का बुलावा, जाति *की प्रतिक्रिया और फिर जातिवालों का परिणाम।*

१० : ७१-७४ आपके उपदेशों पर जाति का क्रोध, अल्लाह पर भरोसा और यह एलान कि लोगो! तुम्हें जो-कुछ करना है कर गुज़रो मुझे तो जो आज्ञा मिली है उसका मुझे पालन करना है। और अन्त में जाति वालों का परिणाम।

११ : २५-३५ जाति को अल्लाह की दासता की ओर बुलाना, जाति की कठहुज्जती *और हज़रत नूह अ० का बार-बार समझाना।*

११ : ३६, ३९	अल्लाह की ओर से तसल्ली देना और ढारस बंधाना और नाव बनाने का हुक्म।
११ : ४०, ४१	तूफ़ान का आरम्भ, नाव में हर प्राणी का एक-एक जोड़ा और तूफ़ान में नाव की दशा।
११ : ४२-४४	हज़रत नूह अ० का अपने बेटे को पुकारना, उसका जवाब और उसका परिणाम।
११ : ४५-४८	बेटे के बारे में हज़रत नूह अ० की प्रार्थना। अल्लाह का जवाब और आपका माफ़ी मांगना।
२१ : ७६, ७७	हज़रत नूह अ० की दुआ, अल्लाह ने स्वीकार की और बुरे लोगों को डुबो दिया।
२३ : २३-२६	आपकी जाति वालों ने अल्लाह की दासता की ओर बुलाने के जवाब में आप पर सत्ता हथियाने का आरोप लगाया और आपको पागल बताया।
२३ : २७-३०	आपको नाव बनाने की आज्ञा मिली और अल्लाह ने आपको इसी के द्वारा तूफ़ान से बचा लिया।
२५ : ३७	रसूलों को झुठलाने पर नूह अ० की जाति डुबो दी गई।
२६ : १०५-१२२	नूह अ० की जाति वालों ने रसूलों को झुठलाया, आप के सन्देश पर कान न धरा और आपको मार डालने पर उतारू हो गये। अल्लाह की सहायता आई, आप और आप के साथी बचा लिये गये और बाक़ी सब डुबो दिये गए।
२९ : १४, १५	हज़रत नूह ने अपनी जाति में ५० कम एक हज़ार वर्ष तक 'इस्लाम' का प्रचार किया।
३७ : ७५-८२	हज़रत नूह अ० ने अल्लाह को पुकारा आपकी दुआ स्वीकार हुई और आप और आप के साथी बड़े संकट से बच गए।
५४ : ९, १०	नूह की जाति ने आप को झुठलाया, दीवाना कहा और डाँटा आप ने अल्लाह को पुकारा।
५४ : ११-१६	आसमान से घोर वर्षा हुई, ज़मीन से सोते फूट निकले, आप नाव में सवार हो गए और न मानने वालों को सज़ा दी गई।
७१ : १-२०	हज़रत नूह ने अल्लाह के हुक्म से लोगों को हर तरीक़े से अल्लाह की दासता की ओर बुलाया पर जाति ने एक न सुनी।
७१ : २१-२४	जाति के लोगों ने बड़ी-बड़ी चालें चलीं और अपने देवताओं को छोड़ने के लिए तैयार न हुए।
७१ : २५-२८	आख़िर ये लोग अपने अपराधों के कारण डुबो दिए गये और हज़रत नूह की दुआ स्वीकृत हुई।

(३) हज़रत इदरीस अ०

१९ : ५६, ५७	हज़रत इदरीस सच्चे नबी थे और अल्लाह ने उनका पद ऊँचा किया।
२१ : ८५	इदरीस सब्र करने वाले थे।

(४) हज़रत हूद अ०

६ : ६५ — हूद ने अपनी जाति से कहा अल्लाह की दासता स्वीकार करो उसके सिवा तुम्हारा कोई इलाह (पूज्य) नहीं है।

७ : ६६-६९ — जाति ने उन्हें मूर्ख कहा और झूठा बताया।

७ : ७० — बोले क्या हम उनकी पूजा छोड़ दें जिन्हें हमारे बाप-दादा पूजते थे।

७ : ७१, ७२ — नबी ने उन्हें अल्लाह के अज़ाब की सूचना दी और वे अज़ाब का शिकार हो गए।

११ : ५०-५२ — हूद ने अपनी जाति में इस्लाम का प्रचार किया।

११ : ५३-५७ — उनकी जाति वालों ने अपने देवताओं को न त्यागा और ईमान न लाये।

११ : ५८ — अन्त में अल्लाह का अज़ाब आया और हूद और ईमान वालों के सिवा सब हलाक (विनष्ट) हो गए।

२६ : १२३-१२७ — आद जाति ने हूद को झुठलाया।

२६ : १२८-१३५ — हूद ने जाति वालों के अपराधों की सूची उनके सामने रखी उनको समझाया।

२६ : १३६-१४० — जाति ने एक बात न सुनी और अन्त में नष्ट होकर रही।

५४ : १८-२१ — आद जाति पर एक बड़ी मनहूस आँधी आई और वह नष्ट हो गई।

६९ : ६-८ — आद जाति पर सात रात और आठ दिन तक तूफ़ान आया और कोई बाक़ी न बचा।

(५) हज़रत सालेह अ०

७ : ७३, ७४ — हज़रत सालेह ने अपनी जाति समूद को निमंत्रण दिया।

७ : ७५-७७ — जाति के बड़े सरदारों ने उनकी बात मानने से इन्कार कर दिया।

७ : ७८, ७९ — एक भूकम्प आया और सब नष्ट हो गये।

११ : ६१ — समूद जाति को हज़रत सालेह अ० ने अल्लाह की दासता की ओर बुलाया।

११ : ६२, ६५ — जाति के लोगों ने कटूक्ति की और अल्लाह की ऊँटनी को मार डाला।

११ : ६६-६८ — अल्लाह का अज़ाब आया और सालेह और उनके साथियों के सिवा सब नष्ट हो गये।

२६ : १४१-१५२ — समूद जाति के सामने अल्लाह के रसूल हज़रत सालेह ने इस्लाम का सन्देश रखा।

२६ : १५३-१५७ — उन्होंने अल्लाह के नबी की बात न मानी और ऊँटनी को मार डाला।

२६ : १५८, १५९ — अल्लाह के अज़ाब ने उन्हें आ पकड़ा।

५४ : २३-३१ — समूद ने हिदायत करने वालों को झुठलाया और वे एक बड़ी आवाज़ के अज़ाब में नष्ट हुए।

(६) हज़रत इबराहीम अ०

२ : १२४ — हज़रत इबराहीम जाँच में पूरे उतरे।

२ : १२५ — काबा के पवित्र घर को लोगों के इकट्ठा होने की जगह बनाया गया और

	इसकी जिम्मेदारी हज़रत इबराहीम को सौंपी गई।
२:१२६-१२६	हज़रत इबराहीम और उनके सुपुत्र ने काबा का पवित्र घर बनाया और दुआ माँगी।
२:१३०-१३२	हज़रत इबराहीम अल्लाह के समक्ष नतमस्तक हो गये।
२:२५८	वक़्त के बादशाह को हज़रत इबराहीम ने तौहीद की ओर बुलाया।
२:२६०	अल्लाह ने हज़रत इबराहीम को दिखाया कि मुरदे कैसे जिन्दा होते हैं।
३:६७, ६८	इबराहीम न यहूदी थे न ईसाई।
४:५४	इबराहीम की औलाद को अल्लाह ने नुबूवत भी दी और बादशाही भी।
६:७४-७८	इबराहीम ने अपने बाप को तौहीद की ओर बुलाया और दलीलें पेश कीं।
६:७६-८३	इबराहीम अ० ने शिर्क से अपनी विरक्ति घोषित की और अल्लाह ने उनके पद को ऊँचा किया।
६:११४	जब उन्हें मालूम हो गया कि उनका बाप अल्लाह का दुश्मन है तो वे उससे रुष्ट हो गये।
११:६६, ७०	हज़रत इबराहीम के पास उन फ़िरिश्तों का आना जो लूत अ० की जाति पर अज़ाब लेकर आये थे।
११:७१-७५	बुढ़ापे में सन्तान के शुभ समाचार पर उनकी पत्नी का ताज्जुब।
१४:३५-४१	हज़रत इबराहीम की दुआ मक्के और अपनी औलाद के बारे में।
१५:५१-५६	मेहमानों के रूप में फ़िरिश्तों का आना और पुत्र का शुभ-समाचार देना।
१६:१२०-१२२	इबराहीम अल्लाह के आज्ञाकारी थे और मुशरिक नहीं थे।
१६:४१-४५	इबराहीम ने अपने बाप को इस्लाम की ओर बुलाया।
१६:४६-५०	बाप ने मार डालने की धमकी दी और इबराहीम को स्वदेश छोड़ना पड़ा।
२१:५१-६७	अपने बाप और जाति के सामने मूर्ति-पूजा के विरुद्ध दलीलें रखीं और तौहीद की ओर बुलाया।
२१:६८-७०	इबराहीम का आग में डाला जाना और उन का सुरक्षित रहना।
२२:२६-३३	इबराहीम को काबे को उपासना गृह बनाने और उन्हें लोगों को हज्ज करने का आमन्त्रण देने का हुक्म मिला।
२६:६६-८२	इबराहीम ने अपने बाप और जाति के सामने मूर्ति-पूजा का खण्डन किया और तौहीद का सन्देश पहुँचाया।
२६:१६-१८	इबराहीम ने अपनी जाति वालों को अल्लाह की दासता की ओर बुलाया।
३७:८३-६६	इबराहीम ने बुतों (मूर्तियों) को तोड़ा, जाति ने आग में डाला और वह स्वदेश छोड़ने पर मजबूर हुए।
३७:१०१-१११	इबराहीम अल्लाह के हुक्म पर अपने बेटे की क़ुरबानी लिए तैयार हो गये।
४३:२६-२८	इबराहीम ने अपने बाप और अपनी जाति वालों के अराध्यों से विरक्ति की घोषणा की।
५१:२४-३०	मेहमानों के रूप में आने वाले फ़िरिश्तों का वृत्तांत, जो पुत्र का शुभ-समाचार लेकर आये।
६०:४-६	इबराहीम और उनके साथियों का पथ तुम्हारे लिए एक आदर्श है।

(७) हज़रत इसमाईल अ०

२ : १२५	काबे के पवित्र घर की देख-रेख और उसे पाक रखने की जिम्मेदारी सौंपी गई।
२ : १२७	अपने पिता हज़रत इबराहीम के साथ मिल कर काबे का निर्माण किया।
६ : ८६	हज़रत इसमाईल को अल्लाह ने दुनिया वालों पर महानता दी।
९ : ५४, ५५	इसमाईल वादे के सच्चे और अल्लाह के रसूल थे।
१ ८५	इसमाईल सब्र करने वाले थे।
७ : १०२-१११	इसमाईल अल्लाह के हुक्म पर अपनी जान की कुरबानी के लिए तैयार हो गये।
८ : ४८	इसमाईल भले लोगों में से थे।

(८) हज़रत इसहाक़ अ०

१ : ७१-७३	आपके जन्म की शुभ-सूचना देने फ़िरिश्ते आये।
७ : ११२, ११३	हज़रत इसहाक़ अल्लाह के नबी और सदाचारी थे। इन पर अल्लाह ने अपनी बरकतें उतारीं।
८ : ४५-४८	इसहाक़ बहुत कार्य-क्षमता रखने वाले, प्रतिभाशाली और भले लोगों में से थे।

(९) हज़रत लूत अ०

६ : ८६	हज़रत लूत को अल्लाह ने दुनिया वालों पर महानता दी।
७ : ८०-८४	हज़रत लूत ने अपनी जाति वालों को एक अश्लील कर्म से रोका। जाति उन्हें बस्ती से निकालने पर उतारू हो गई।
११ : ७७-८३	जो फ़िरिश्ते लूत की जाति पर अज़ाब लेकर आये वह सुन्दर लड़कों के रूप में थे। उन्हें देख कर हज़रत लूत की घबराहट और इस मौक़े पर जाति का वर्ताव और फिर अज़ाब में पकड़ा जाना।
१५ : ६१-६७	फ़िरिश्ते लूत अल्लाह की जाति पर अज़ाब लेकर आये। जाति के लोग देख कर प्रसन्न हो गये।
१५ : ६८-७७	हज़रत लूत ने उन्हें बहुत समझाया। परन्तु अन्त में वह अज़ाब में पकड़े गये।
२१ : ७४,७५	हज़रत लूत को अल्लाह ने नुबूवत दी और उन्हें उन लोगों से बचा लिया जो गन्दे काम करते थे।
२६ : १६०-१६६	लूत अल्लाह की जाति वालों ने रसूलों को झुठलाया। हज़रत लूत ने उन्हें अल्लाह की दासता की ओर बुलाया और उन्हें उन के गन्दे कार्य पर टोका।
२६ : १६७-१७५	जाति वालों ने बस्ती से निकाल देने की धमकी दी। अल्लाह का अज़ाब आया और सब हलाक और नष्ट हुए।
२७ : ५४-५८	हज़रत लूत ने जाति को अश्लील कर्म पर टोका तो उन्होंने निकाल देने की धमकी दी और अल्लाह के अज़ाब का शिकार हुए।
२९ : २८, २९	लूत की जाति ने ऐसी बेहयाई का काम किया जो उन से पहले किसी ने न किया था।

२९:३०-३५ लूत अ० की जाति पर अल्लाह का अज़ाब आया। हज़रत लूत और आप के साथी बचा लिए गये।

३७:१३३-१३८ हज़रत लूत अल्लाह के पैग़म्बर थे। अल्लाह ने उन्हें और उन के घर वालों को अज़ाब से बचा लिया।

५४:३३-३९ लूत की जाति ने अल्लाह के नबी को झुठलाया। उनके मेहमानों पर झपटे परन्तु अल्लाह के अज़ाब का शिकार हुए।

(१०) हज़रत याकूब अ०

२:१३३ हज़रत याकूब की वसीयत अपने बेटों को।

२:१४० हज़रत याकूब न यहूदी थे, न ईसाई।

४:१६३ हज़रत याकूब पर अल्लाह ने वह्य की।

३८:४५-४८ हज़रत याकूब बड़ी कार्य-शक्ति रखने वाले, प्रतिभाशाली और भले लोगों में से थे।

(११) हज़रत यूसुफ़ अ०

१२:३-६ हज़तर यूसुफ का स्वप्न।

१२:७-१५ हज़रत यूसुफ के भाइयों ने उन्हें कुवें मे ले जाकर डाला।

१२:१६-१८ भाइयों ने पिता के सामने झूठी रिपोर्ट दी कि यूसुफ को भेड़िया खा गया।

१२:१९, २० काफिले वाले हज़रत यूसुफ को मिस्र ले गये।

१२:२१-२५ अज़ीज़े मिस्र (मिस्र के अधिकारी पुरुष) की पत्नी ने हज़रत यूसुफ को फुसलाना चाहा।

१२:२६-२९ हज़रत यूसुफ के निरपराध होने पर गवाही।

१२:३०-३४ अज़ीज़े मिस्र की पत्नी के विरुद्ध नगर मे चर्चा और इस का तोड़।

१२:३५ हज़रत यूसुफ जेल में।

१२:३६-४० हज़रत यूसुफ ने जेल के दो साथियो के सामने तौहीद का सन्देश रख दिया।

१२:४१, ४२ हज़रत यूसुफ ने जेल के साथियो के स्वप्न का अर्थ बताया।

१२:४३-४९ बादशाह ने स्वप्न देखा, और हज़रत यूसुफ ने उसका अर्थ बताया।

१२:५०-५३ बादशाह के सामने हज़रत यूसुफ का निरपराध होना साबित हो गया।

१२:५४-५७ हज़रत यूसुफ को बादशाह ने अपना खास आदमी बना लिया।

१२:५८-६२ हज़रत यूसुफ के भाई अनाज लेने मिस्र आये। उनके साथ हज़रत यूसुफ का व्यवहार।

१२:६३-६९ भाइयों की दुबारा मिस्र की यात्रा।

१२:७०-७७ एक भाई पर चोरी का आरोप और उसका पकड़ा जाना।

१२:७८-८३ भाइयो की निष्फल सिफ़ारिश, स्वदेश को लौटना और पिता के सामने सफ़ाई।

१२:८४-८८ हज़रत याकूब के हुक्म पर हज़रत यूसुफ की खोज में भाइयों की यात्रा।

१२:८९-९६ भाइयों से हज़रत यूसुफ का परिचय और स्वदेश से बाप को बुलाना।

१२:९७-१०० भाइयों के अपराध की माफ़ी और हज़रत यूसुफ के बचपन के स्वप्न का अर्थ।

१२ : १०१	हज़रत यूसुफ़ अ० की दुआ।

(१२) हज़रत शुऐब अ०

७ : ८५-८७	हज़रत शुऐब ने मदयन के लोगों को अल्लाह की दासता की ओर बुलाया और नाप-तोल में छल-कपट करने से रोका।
७ : ८८,८९	जाति के सरदारों ने बस्ती से निकाल देने की धमकी दी और इस्लाम धर्म को छोड़ने के लिए कहा।
७ : ९०-९३	शुऐब को झुठलाने वाले अल्लाह के अज़ाब का शिकार हुए।
११ : ८४-८६	हज़रत शुऐब ने मदयन वालों को अल्लाह की दासता की ओर बुलाया और नाप-तोल में बेईमानी करने से रोका।
११ : ८७-९०	जाति की हठधर्मी और इन्कार हज़रत शुऐब का समझाना।
११ : ९१-९५	जाति की ओर से मार डालने की धमकी और अन्त में अल्लाह का अज़ाब।
२६ : १७६-१८४	हज़रत शुऐब ने जाति से कहा कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ और उन्हें इसलाम की ओर बुलाया।
२६ : १८५-१८८	जाति ने झुठलाया और कहा, तुम पर जादू हो गया है।
२६ : १८९-१९१	अल्लाह के अज़ाब ने उन्हें आपकड़ा।

(१३) हज़रत मूसा व हारून अ०

२ : ४७-५४	बनी इसराईल पर अल्लाह की नेमतें, हज़रत मूसा को किताब का दिया जाना और जाति का बछड़ा के पूजने में लग जाना।
२ : ५५-६६	जाति ने हज़रत मूसा से अल्लाह को देखने की मांग की और बनी इसराईल के इतिहास की कुछ और महत्वपूर्ण घटनाएँ।
२ : ६७-७४	गाय ज़ब्ह करने का आदेश और इस विषय में बनी इसराईल की टाल-मटोल।
२ : ८३-१०१	बनी इसराईल से लिये गये कुछ और वचन और उनके अपराधों की सूची।
४ : १६४	मूसा से अल्लाह ने बातें की।
५ : २०-२६	बनी इसलाईल ने हज़रत मूसा के आदेश को टाला और सीरिया देश में दाख़िल नहीं हुए।
७ : १०३-१०५	मूसा को फ़िरऔन और उसकी जाति की ओर भेजा और उन्होंने बनी इसलाईल को छोड़ देने की मांग की।
७ : १०६-११०	मूसा ने फ़िरऔन को अल्लाह की निशानियाँ दिखाईं।
७ : १११-१२२	जादूगरों से मुक़ाबला हुआ और जादूगर ईमान ले आये।
७ : १२३-१२६	इन नव-मुस्लिम जादूगरों का ईमान पर जमना और इन की दुआ।
७ : १२७-१२९	बनी इसलाईल के विरुद्ध फ़िरऔन का षड्यन्त्र और हज़रत मूसा की ओर से उन्हें अटल रहने का आदेश।
७ : १३०-१३७	फ़िरऔनियों पर अकाल का आना, भाँति-भाँति के अज़ाब का आना और हज़रत मूसा से दुआ कराना।

७ : १३८-१४१	**बनी इसराईल** ने हज़रत मूसा से मूर्ति जुटाने की माँग की।
७ : १४२-१४५	हज़रत मूसा को **तौरात** प्रदान की गई। हज़रत मूसा अल्लाह के दर्शन के अभिलाषी।
७ : १४८-१५३	हज़रत मूसा की जाति ने गहनों से एक बछड़ा बना लिया और उसे पूजना शुरू कर दिया।
७ : १५४-१५५	चुने हुए सत्तर व्यक्तियों को लेकर हज़रत मूसा तूर (पर्वत) पर गये।
७ : १६०-१६२	बनी इसराईल बारह कबीलों में बाँट दिये गये उन्हें मन्न व सलवा भोजन करने को मिला।
१० : ७५-७८	मूसा और हारून को फ़िरऔन और उसकी जाति की ओर भेजा गया। उन्होंने अल्लाह की निशानियों को जादू बताया।
१० : ७९-८२	फ़िरऔन ने जादूगर इकट्ठा किये, मुकाबला हुआ और जादूगर असफल रहे।
१० : ८३-८६	मूसा पर ईमान लाने वाले कुछ नवजवानों का अल्लाह पर भरोसा और उनकी दुआ।
१० : ८७-९३	मिस्र में हज़रत मूसा ने मुसलमानों को ट्रेनिंग दी। अल्लाह ने उन्हें नजात दी और फ़िरऔन और उसकी सेना डूब गई।
११ : ९६-९९	मूसा अ० फ़िरऔन के पास निशानी लेकर गये। उसकी जाति वालों ने फ़िरऔन का आज्ञापालन किया और उन का बुरा अन्त हुआ।
१४ : ५-८	मूसा को **बनी इसराईल** की हिदायत का हुक्म दिया गया और उन्होंने जाति वालों को समझाया।
१७ : २	*मूसा को बनी इसराईल की हिदायत के लिए पवित्र ग्रन्थ दिया गया।*
१७ : १०१-१०४	मूसा को ९ निशानियाँ दी गईं, फ़िरऔन ने जादूगर कहा।
१८ : ६०-६५	हज़रत मूसा की एक अनोखी यात्रा की रिपोर्ट और एक विशेष व्यक्ति से उनकी भेंट।
१८ : ६६-८२	कुछ अद्भुत घटनाएँ और उनका कारण।
१९ : ५१-५३	मूसा अ० अल्लाह के **रसूल** थे। अल्लाह ने उन्हें तूर पर्वत पर बुलाया और हारून नबी जैसा भाई दिया।
२० : ९-२४	मूसा रास्ते में आग देखकर बढ़े और तूर की पवित्र घाटी में पहुँच गये। अल्लाह ने उन्हें पुकारा और उन्हें अपना नबी बनाया।
२० : २५-३६	हज़रत मूसा की दुआ पर हज़रत हारून को उनका साथी बनाया गया।
२० : ३७-४०	हज़रत मूसा पर अल्लाह की कृपाएँ जो जन्म से लेकर लड़कपन और जवानी में हुईं।
२० : ४१-४६	**नुबूवत** का काम करने के लिए कुछ अनिवार्य निर्देश।
२० : ४७-५५	फ़िरऔन के दरबार में धर्म-प्रचार और फ़िरऔन से बात-चीत।
२० : ५६-६९	फ़िरऔन निशानियाँ देखकर भी न माना और जादूगरों को मुकाबले के लिए ले आया।
२० : ७०-७६	जादूगर ईमान ले आये और फ़िरऔन की धमकियों की परवाह न की।
२० : ७७-७९	मूसा अ० *बनी इसराईल* को लेकर मिस्र से निकले।

दे दिया और फ़िरऔन अपनी सेना सहित डूब गया।

२० : ८०-८५ सामरी ने विश्वासघात किया और बनी इसराईल ने बछड़े को पूजना शुरू कर दिया।

२० : ९८-९९ हज़रत मूसा का क्रोध हज़रत हारून पर और सामरी के बुतों का विनाश।

२० : ९७, ९८ सामरी को दण्ड दिया गया और बछड़ा जलाकर राख कर दिया गया।

२१ : ४८, ४९ मूसा और हारून को अल्लाह ने प्रकाश और उपदेश की किताब दी।

२३ ४५-४९ मूसा और उनके भाई हारून को फ़िरऔन की ओर भेजा गया और उसने उन्हें मानने से इन्कार कर दिया।

२५ : ३५, ३६ मूसा को अल्लाह ने किताब दी और हारून को उनका सहायक बनाया।

२६ : १०-१७ मूसा को फ़िरऔन की अत्याचारी जाति की ओर भेजा गया और हारून को उनका साथी बनाया गया और उन्हें धर्म-प्रचार के विषय में अनिवार्य शिक्षा दी गई।

२६ : १८-२९ फ़िरऔन की बात-चीत हज़रत मूसा से, फ़िरऔन ने कैद की धमकी दी।

२६ : ३०-४२ हज़रत मूसा ने निशानियाँ दिखाईं। फ़िरऔन ने जादू कहा और जादू से मुक़ाबिला करने के लिए तैयार हो गया।

२६ : ४३-४९ जादूगरों से मुक़ाबला हुआ और वे सब ईमान ले आये। फ़िरऔन ने मार डालने की धमकी दी।

२६ : ५०, ५१ जादूगर ईमान पर जमे रहे और अल्लाह से क्षमा माँगी।

२६ : ५२-६१ मूसा बनी इसराईल को लेकर रातों-रात निकले। फ़िरऔन ने पीछा किया।

२६ : ६२, ६३ हज़रत मूसा ने अपने साथियों की ढारस बंधाई और अल्लाह के हुक्म से लाठी समुद्र पर मारी।

२६ : ६४-६७ समुद्र ने रास्ता दे दिया। फ़िरऔन और उसकी सेना डूब गई।

२७ : १३, १४ फ़िरऔन ने चमत्कारों को जादू बताया। इन्कार किया और वे हलाक (विनष्ट) हो गये।

२८ : ४ बनी इसराईल पर फ़िरऔन के अत्याचार।

२८ : ५-७ हज़रत मूसा की माँ ने अल्लाह के इशारे से आपको एक बक्स में रखकर दरिया में बहा दिया।

२८ : ८-१० फ़िरऔन के घर वालों ने आपको पाला।

२८ : ११-१३ हज़रत मूसा की बहिन के सुझाव से फ़िरऔन के घर वालों ने आपकी माँ को ही दूध पिलाने की सेवा सौंपी।

२८ : १४-२१ हज़रत मूसा के हाथ से एक फ़िरऔनी का संयोग से क़त्ल हो जाना। और आप का मिस्र देश छोड़ देना।

२८ : २२-२८ हज़रत मूसा मदयन पहुँच गये। मदयन का जीवन और विवाह।

२८ : २९-३२ मिस्र की ओर यात्रा। रास्ते में तूर पर नुबूवत मिली और चमत्कार भी।

२८ : ३३-३७ आपके भाई हारून को आप का साथी बनाया गया। फ़िरऔन ने जादूगर बताया।

२८ : ३८, ३९	फ़िरऔन ने कहा एक ऊँचा मीनार बनाओ ताकि मैं मूसा के अल्लाह को झांक कर देखूं।
२८ : ४०-४२	फ़िरऔन पकड़ लिया गया और समुद्र में सेना समेत डूब गया।
२८ : ४३-४८	हज़रत मूसा को अल्लाह ने किताब दी जो हिदायत और अल्लाह की कृपा है।
२९ : ३९, ४०	हज़रत मूसा, क़ारून, फ़िरऔन और हामान के पास खुली निशानियाँ लेकर आये परन्तु उन्होंने घमण्ड किया और सबकी पकड़ हुई।
३२ : २३, २४	मूसा को किताब दी और उसे बनी इसराईल के लिए हिदायत बनाया।
३३ : ६९	मूसा अल्लाह के नज़दीक बड़े रुतबे वाले थे।
३७ : ११४-१२२	मूसा और हारून पर अल्लाह ने उपकार किया, उन्हें और उनकी जाति को बड़ी मुसीबत से नजात दी।
४० : २३-२७	फ़िरऔन, हामान और क़ारून ने हज़रत मूसा को झूठा बताया और उनके क़त्ल के लिए तैयार हो गये।
४० : २८	फ़िरऔन के दरबार के एक नव-मुस्लिम ने हज़रत मूसा के क़त्ल की योजना पर कड़ी आलोचना की।
४० : २९-३५	इस नव-मुस्लिम ने अल्लाह के नबी के विरोध के तमाम परिणाम खोल-खोल कर बताये।
४० : ३७	फ़िरऔन ने कहा एक ऊँचे महल का निर्माण करो कि उस पर चढ़ कर मूसा के अल्लाह को झांक कर देखूं।
४० : ३८-४५	ईमान लाने वाले व्यक्ति ने अपनी जाति को फिर भी बड़ी विनम्रता से समझाया और बुरे परिणामों से डराया।
४३ : ४६-५३	हज़रत मूसा ने फ़िरऔन को इस्लाम की ओर बुलाया, उसने अपनी बादशाही के नशे में उन्हें जादूगर ठहराया और कहा मैं तुमसे बेहतर हूँ।
४३ : ५४-५६	फ़िरऔन ने अपनी जाति की बुद्धि मार दी लेकिन डूबने के बाद वह सबके लिए शिक्षा-सामग्री बन गया।
४४ : १७-१९	फ़िरऔन के पास एक उच्चकोटि का रसूल आया और उसे सरकशी से रोका।
४४ : २०-२२	फ़िरऔन ने उनके क़त्ल की तैयारियाँ की। हुक्म हुआ कि मेरे बन्दों को लेकर रातों-रात निकल जाओ।
४४ : २५-२९	हज़रत मूसा और उनके साथी समुद्र से पार हो गये और फ़िरऔन की सेना डुबो दी गई।
४४ : ३०-३३	बनी इसराईल को रुसवाई के अज़ाब से नजात मिली और उन्हें अल्लाह ने पसन्द कर लिया।
६१ : ५	हज़रत मूसा को उनकी जाति वालों ने सताया और टेढ़े रास्ते पर चले, अल्लाह ने उनके दिल टेढ़े कर दिए।
७९ : १५-१७	मूसा को उसके रब ने तुवा नामक घाटी में पुकारा और रसूल बना कर फ़िरऔन के पास भेजा।
७९ : १८-२०	मूसा ने फ़िरऔन के सामने इस्लाम का संदेश रखा और निशानियाँ

दिखाईं।

७९ : २१-२४ फ़िरऔन ने झुठलाया और एलान कर दिया कि मैं सबसे बड़ा रब हूँ।

७९ : २५, २६ अल्लाह ने उसे अज़ाब मे पकड़ लिया।

(१४) हज़रत दाऊद अ०

४ : १६३ हज़रत दाऊद को अल्लाह ने आसमानी किताब (ज़बूर) दी।

१७ : ५५ अल्लाह ने किसी नबी को किसी पर बड़ाई दी और हज़रत दाऊद को ज़बूर दिया।

२१ : ७८ खेती के एक मुकदमे मे हज़रत दाऊद का निर्णय।

२१ : ७९ हज़रत दाऊद के साथ पर्वत और चिड़ियाँ भी अल्लाह का गुण गाती थीं।

२१ : ८० हज़रत दाऊद को कवच बनाना आता था।

२७ : १४, १५ हज़रत दाऊद को अल्लाह ने नुबूवत दी और हज़रत सुलेमान को उनका उत्तराधिकारी बनाया।

३४ : १० पहाड़ हज़रत दाऊद के साथ अल्लाह का गुण-गान करते थे और लोहा उनके लिए नर्म था।

३८ : १७-१९ हज़रत दाऊद को अल्लाह ने शक्ति दी थी। पर्वत उनके साथ अल्लाह का गुणगान करते थे और चिड़ियाँ भी।

३८ : २० अल्लाह ने उसकी हुकूमत मज़बूत की और उसे हिकमत और दो-टूक बात कहने की क्षमता प्रदान की।

३८ : २१-२५ दुंबियों के बारे में झगड़ा करने वाले दो व्यक्तियों के मुक़दमे से हज़रत दाऊद ने सबक़ हासिल किया।

३८ : २६ हज़रत दाऊद को अल्लाह ने न्याय करने के लिए सत्ता दी।

(१५) हज़रत सुलैमान अ०

२ : १०२ सुलैमान के राज्य का नाम लेकर शैतान जादू की चीज़ें सिखाया करते थे।

२१ : ७८, ७९ *खेती के एक मुकदमे में अल्लाह ने हज़रत सुलैमान को फ़ैसला करने का तरीक़ा समझा दिया।*

२१ : ८१, ८२ वायु और बड़े-बड़े जिन्न आदि सुलैमान के आज्ञाकारी थे।

२७ : १६ सुलैमान को अल्लाह ने चिड़ियों की बोली का ज्ञान दिया।

२७ : १७-१९ सुलैमान की सेना के साथ जिसमे जिन्न मनुष्य और चिड़ियाँ सभी थे च्यूँटी की घाटी से गुज़रे।

२७ : २०-२९ हुद-हुद ने सुलैमान को सबा की सूचना दी और पत्र सबा की रानी के पास ले गया।

२७ : ३०-३५ हज़रत सुलैमान का पत्र और उसका प्रभाव सबा की रानी पर।

२७ : ३६-४० सबा की रानी का हज़रत सुलैमान के दरबार में आना और इस्लाम को अपना लेना।

३४ : १२ *वायु सुलैमान की आज्ञाकारी थी और वे एक महीने की यात्रा कुछ घण्टों मे तय कर लेते थे।*

२७ : १२-१४ जिन्न भी हज़रत सुलैमान के आज्ञाकारी थे लेकिन उन्हें ग़ैब का कोई ज्ञान न था।

३८ : ३०-३५ हज़रत सुलैमान के सामने जिहाद के घोड़ों का लाया जाना, उनकी एक जाँच और दुआ।

३८ : ३६-४० हवा और जिन्न हज़रत सुलैमान के आज्ञाकारी थे और उनके बड़े काम करते थे।

(१६) हज़रत अय्यूब अ०

२१ : ८३, ८४ हज़रत अय्यूब अ० ने अपनी बीमारी की हालत में अल्लाह को पुकारा और उनकी दुआ सुन ली गई।

३८ : ४१-४४ अल्लाह के हुक्म से हज़रत अय्यूब ने ज़मीन पर लात मारी, स्रोत बह पड़ा, नहाने से बीमारी दूर हुई।

(१७) हज़रत यूनुस अ०

१० : ६८ हज़रत यूनुस की जाति अज़ाब देख कर ईमान लाई और इस ईमान से उसे फ़ायदा हुआ।

२१ : ८७, ८८ हज़रत यूनुस ने मछली के पेट में अल्लाह को पुकारा और उसने उनकी पुकार सुन ली।

३७ : १३६-१४१ हज़रत यूनुस अल्लाह के पैग़म्बर थे नाव में टास उनके नाम निकला, वे नदी में फेंक दिये गये।

३७ : १४२-१४८ हज़रत यूनुस को मछली ने निगल लिया, उन्होंने अल्लाह को याद किया और नजात पाई।

६८ : ४८-५० अगर अल्लाह की कृपा न होती तो हज़रत यूनुस बहुत दु:ख पाते।

(१८) हज़रत ज़करिया अ०

३ : ३७-४१ हज़रत ज़करिया ने हज़रत मरयम को पाला-पोसा और अपने लिए एक नेक औलाद की दुआ की।

१६ : २-६ हज़रत ज़करिया ने अपने बाद दीन का काम करने के लिए अपने उत्तराधिकारी के लिए दुआ की।

१६ : ७-११ हज़रत ज़करिया को एक बेटे यह्या की शुभ-सूचना दी गई।

२१ : ८६, ६० हज़रत ज़करिया ने दुआ की कि अल्लाह मुझे अकेला न छोड़ और एक उत्तराधिकारी मुझे दे।

(१६) हज़रत ईसा अ०

२ : ८७, २५३ अल्लाह ने हज़रत ईसा को खुली निशानियाँ दीं और रूहुल्‌कुदुस (पवित्र-आत्मा) से उनको मदद दी।

३ : ४२-४७ अल्लाह ने हज़रत मरयम को तमाम दुनियाँ की औरतों में चुना और उन्हें हज़रत ईसा के जन्म की शुभ सूचना दी।

३ : ४८-५१	हज़रत ईसा के कुछ चमत्कार और आपकी दी हुई शिक्षाएँ।
३ : ५२-५७	हवारियों ने हज़रत ईसा का साथ दिया और अल्लाह ने हज़रत ईसा के दर्जे ऊँचे किये।
३ : ५६	अल्लाह के नजदीक ईसा अ० का जन्म ऐसा ही है जैसा हज़रत आदम का जन्म।
४ : १५६-१५६	बनी इसराईल का यह दावा कि उन्होंने हज़रत मसीह को क़त्ल कर दिया और इस दावे का खण्डन।
४ : १७१	ईसा मरयम के बेटे, अल्लाह के रसूल और उसी का 'कलमः' थे उन्हें तीन में से एक खुदा न कहो।
४ : १७२	ईसा के लिए अल्लाह का बन्दा होने में कोई लज्जा की बात नहीं।
५ : १७	मरयम के बेटे ईसा को खुदा मानने वाले काफ़िर हैं।
५ : ४६, ४७	हज़रत ईसा ने तौरात की पुष्टि की और इंजील में प्रकाश और मार्ग-दर्शन है।
५ : ७२-७४	जिन्होंने ईसा को खुदा कहा, उन्होंने कुफ़्र किया। ईसा ने तो केवल अल्लाह की बन्दगी की ओर बुलाया।
५ : ७५	ईसा अल्लाह के रसूल थे, उनकी माँ पुण्यवती थीं और दोनों मनुष्य थे।
५ : ११०	हज़रत ईसा ने पालने (झूले) में बात-चीत की। वह मुर्दे को जिन्दा कर देते थे। और अल्लाह ने उन्हें कितनी ही निशानियाँ दीं।
५ : ११२-११५	हज़रत ईसा के हवारियों ने माँग की कि आसमान से दस्तरख़ान उतरे।
५ : ११६-११८	क़ियामत के दिन हज़रत ईसा कहेंगे कि मैंने किसी से नहीं कहा कि मुझे या मेरी माँ को खुदा बनाओ।
६ : ३०, ३१	ईसाइयों ने ईसा को अल्लाह का बेटा कहा और अपने विद्वानों और महात्माओं को खुदा बना लिया।
१६ : १६-२६	हज़रत मरयम का अल्लाह के हुक्म से गर्भवती होना और हज़रत ईसा का जन्म।
१६ : २७-३३	हज़रत ईसा ने गोद का बच्चा होते हुए लोगों के आरोपों का खण्डन किया।
१६ : ३४, ३७	हज़रत ईसा का सन्देश।
२३ : ५०	अल्लाह ने हज़रत ईसा और उनकी माता को अपनी निशानी बताया।
५७ : २७	हज़रत ईसा को अल्लाह ने इन्जील दी और उनके मानने वालों के दिलों में नम्रता और स्नेह डाल दिया।
६१ : ६	हज़रत ईसा ने हज़रत मुहम्मद सल्ल० के आने की शुभ-सूचना दी।
६१ : १४	हवारियों ने हज़रत ईसा का साथ दिया।

(१०) दीन एक ही है

२ : १३१-१३३	इस्लाम अर्थात् अल्लाह की आज्ञा का पालन करना, यही अल्लाह का चाहा हुआ दीन है। इबराहीम और सब नबियों का दीन है।
३ : १६, २०	दीन तो अल्लाह के नज़दीक इस्लाम ही है। इसका जिसने भी विरोध किया उसने हठ के कारण ही विरोध किया।

३ : ६४	अल्लाह की दासता स्वीकार करना और उसके साथ किसीको साझी न ठहराना, यह वह बात है जिसे वे लोग भी स्वीकार करते हैं जो किताब (को मानने) वाले हैं।
३ : ८१-८३	अल्लाह ने तमाम पैग़म्बरों के अनुयायियों से यह वचन लिया कि जब भी उनके बाद कोई रसूल अल्लाह की दी हुई शिक्षा की पुष्टि करता हुआ आये तो वे उसपर ईमान लायें, और उसका साथ दें।
३ : ८४, ८५	मुसलमान सब नबियों पर ईमान लाता है और इस्लाम के सिवा किसी दीन को स्वीकार नही करता।
५ : ४६-४८	ईसा वही दीन लेकर आये जो पहले पैगम्बर लाये थे। उन्होंने पहली किताबों की पुष्टि की।
६ : ८३-९०	तमाम नबियों को अल्लाह ने हिदायत दी थी। तुम उन्ही की हिदायत को मानो।
१६ : ३६	हर गरोह के पास अल्लाह के रसूल यही सन्देश लाये कि अल्लाह की दासता अपनाओ और ताग़ूत से बचो।
२१ : २४	जो सन्देश हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने दिया वही पहले पैगम्बरों का भी सन्देश था।
२१ : ९२	तमाम नबियों का गरोह एक ही है और सब को अल्लाह की दासता स्वीकार करना है।
२३ : ५१-५३	तमाम रसूल एक ही गरोह से हैं और सब का रब अल्लाह है।
४२ : १३, १४	अल्लाह ने दीन का रास्ता वही नियुक्त किया है जो पहले नबियों के लिए था।
४२ : १५, १६	हे मुहम्मद सल्ल० आप उसी दीन की ओर लोगों को बुलायें। इसके बारे में झगड़ा करना बेकार है।
४३ : ४५	किसी रसूल ने यह नही कहा कि दासता अल्लाह के सिवा किसी और की स्वीकार करो।
५३ : ३६, ३७	मूसा और इबराहीम के सहीफ़ों मे एक ही शिक्षा दी गई है।
८७ : १८, १९	,, ,, ,,

(११) कुरआन में ईमान वाले का चित्र

२ : २-५	ग़ैब पर ईमान लाता है। नमाज़ कायम करता है। अल्लाह की किताबो और आख़िरत पर ईमान रखता है।
२ : ४६	इसका विश्वास रखता है कि एक दिन अल्लाह से मिलना है।
२ : १२१	अल्लाह की किताब को इस प्रकार पढता है जैसे पढ़ने का हक़ है।
२ : १२५	अल्लाह के घर का तवाफ़ करता है, वहाँ एतिकाफ़ करता है और रुकूअ व सजदे करता है।
२ : १३८	अल्लाह के रंग में रंगा हुआ उसकी उपासना करने वाला और केवल उसी का आज्ञापालन स्वीकार करने वाला।
२ : १५५-१५७	सब्र करने वाला और संकट के समय अल्लाह को याद करने वाला।

२ : १६५	सबसे अधिक अल्लाह से प्रेम करने वाला।
२ : ७७	अल्लाह पर आख़िरत पर फ़रिश्तों पर, किताबों और नबियों पर ईमान लाने वाला अल्लाह के प्रेम में माल खर्च करने वाला।
२ : १७७	नमाज़ क़ायम करने वाला ज़कात देने वाला, वादे का पूरा करने वाला।
२ : ७७	मुसीबतों में सब्र करने वाला।
२: २०७	अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए प्राण का सौदा करने वाला।
२ : २०८	अल्लाह के आज्ञापालन में पूरे का पूरा दाख़िल और शैतान के पीछे न चलने वाला।
३ : १७	सब्र करने वला, सच्चा, इबादत करने वाला, अल्लाह की राह में माल ख़र्च करने वाला और भोर में गुनाहों की माफ़ी चाहने वाला।
३ : १०२, १०३	अल्लाह से डरने वाला, परस्पर भाई-भाई।
३ : १०४	नेकी को ओर बुलाने वाला और बुराइयों से रोकेने वाला।
३ : ११०	तमाम इन्सानों की हिदायत के लिए अपने आप को ज़िम्मेदार समझने वाला।
३ : १३४	गरीबी हो या अमीरी, हर हाल में अल्लाह की राह में धन खर्च करने वाला।
३ : १३४	गुस्से को पी जाने वाला और माफ़ कर देने वाला।
३ : १३६	कोई काम बुरा हो जाता है तो उसकी माफ़ी चाहता है। उस पर अड़ा नही रहता।
३ : १९५	अल्लाह के दीन के लिए घर-बार छोड़ने वाला और कष्ट सहने वाला।
६ : ५२	सुबह-शाम अल्लाह को याद करने वाला और उसकी प्रसन्नता चाहने वाला।
६ : ८२	ईमान में शिर्क की गड-मड नहीं करता।
६ : ९२	नमाज़ों की पूरी रक्षा करता है।
७ : २०१	शैतान के पैदा किए हुए वसवास से होशियार और आँखें खोल कर जीवन बिताने वाला।
८ : २	अल्लाह की याद से दिल काँप जाता है और अल्लाह की आयतें सुन कर ईमान बढ़ जाता है।
८ : ३	अल्लाह पर भरोसा करता है, नमाज़ क़ायम करता है और अल्लाह की राह में माल ख़र्च करता है।
९ : १८	अल्लाह और आख़िरत पर ईमान रखता है।
९ : १९-२२	दीन के लिए घर छोड़ देता है और अल्लाह की राह में जान और माल से जिहाद करता है।
९ : ७१	नेकी फैलाने और बुराइयां मिटाने में दूसरे मुसलमानों का साथ देता है।
९ : ७१	नमाज़ क़ायम करता है, ज़कात देता है और अल्लाह और रसूल का आज्ञा-पालन करता है।
९ : १०८	वह पवित्रता को पसन्द करता है।
९ : १११	वह अपनी जान और माल को अल्लाह का माल समझता है और उसकी राह में युद्ध करता है।

६ : ११२	तौबः करने वाला, इबादत करने वाला और अल्लाह का गुणगान करने वाला।
६ : ११२	अल्लाह की राह में सफ़र करने वाला, रोज़ा रखने वाला।
६ : ११२	नेकी का हुक्म देने वाला और बुराइयों से रोकने वाला।
११ : २३	ईमान और सुकर्मों से आभूषित और अपने रब के सामने विनम्रता दर्शाने वाला।
१३ : २१	वह वादे को नहीं तोड़ता, नातेदारियों को ध्यान में रखता और अल्लाह से डरता है।
१३ : २२	अल्लाह की खुशी के लिए सब्र करता है। नमाज़ क़ायम करता है, ज़कात देता है और नेकी से बुराई को दूर करता है।
१३ : २८	उसके मन को अल्लाह की याद से शान्ति मिलती है।
१६ : ४२	वह सब्र करता है और अपने रब पर भरोसा।
१७ : १०७-१०९	वह अल्लाह के आगे सजदे में गिरता है, रोता है और विनम्रता दिखाता है।
२१ : ९०	नेक कामों की ओर लपकता है और अल्लाह को भय और आशा के साथ पुकारता है।
२२ : ३५	अल्लाह का नाम लिया जाये तो उसका दिल डर जाये। सब्र करता है नमाज़ क़ायम करता है और अल्लाह की राह में माल ख़र्च करता है।
२३ : २, ३	नमाज़ों में विनम्रता दर्शाने वाला और बेहूदा बातों से दूर।
२३ : ४-७	ज़कात देने वाला और अपनी शर्मगाहों की रक्षा करने वाला।
२३ : ८, ९	अमानतदार, वादे का पाबन्द और नमाज़ों की रक्षा करने वाला।
२३ : ५७-५९	अपने रब से डरनेवाला और उसके साथ किसी को शरीक न करनेवाला।
२३ : ६०, ६१	सुकर्मों में जल्दी करने वाला और आगे बढ़ने वाला।
२४ : ३७, ३८	कारोबार में पड़कर न अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल होता है और न नमाज़ से।
२४ : ५१, ५२	उसे जब अल्लाह और रसूल की ओर बुलाया जाये तो वह यही कहता है कि मैंने सुन लिया और मान लिया।
२४ : ६२	वह बिना अनुज्ञा के किसी सामूहिक कार्य को छोड़कर नहीं जाता।
२५ : ६३	उसकी चाल नर्म और ज़बान मीठी होती है।
२५ : ६४-६६	रातों को उठकर अल्लाह को याद करता है और माफ़ी चाहता है।
२५ : ६७-७१	ख़र्च में सन्तुलन रखता है। अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी नहीं करता है और न बिना हक़ के किसी की जान लेता है।
२५ : ७२, ७३	झूठी गवाही नहीं देता। बेहूदा चीज़ों की ओर ध्यान नहीं देता। अल्लाह की बात पर कान धरता है।
२५ : ७४-७६	अपने घर वालों की नेकी और ईमान के लिए दुआएँ माँगा करता है।
२८ : ५४	सब्र करने वाला, बुराई को भलाई से दूर करने वाला और अल्लाह की राह में माल ख़र्च करने वाला।
२८ : ५५	बेहूदा बातें सुनकर मुँह फेर लेने वाला और जाहिलों के मुँह न लगने वाला।

२ : १६५	सबसे अधिक अल्लाह से प्रेम करने वाला।
२ : ७७	अल्लाह पर आख़िरत पर फ़िरिश्तों पर, किताबों और नबियों पर ईमान लाने वाला अल्लाह के प्रेम में माल ख़र्च करने वाला।
२ : १७७	नमाज़ क़ायम करने वाला ज़कात देने वाला, वादे का पूरा करने वाला।
२ : ७७	मुसीबतों में सब्र करने वाला।
२: २०७	अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए प्राण का सौदा करने वाला।
२ : २०८	अल्लाह के आज्ञापालन में पूरे का पूरा दाख़िल और शैतान के पीछे न चलने वाला।
३ ' १७	सब्र करने वला, सच्चा, इबादत करने वाला, अल्लाह की राह में माल ख़र्च करने वाला और भोर में गुनाहों की माफ़ी चाहने वाला।
३ : १०२, १०३	अल्लाह मे डरने वाला, परस्पर भाई-भाई।
३ : १०४	नेकी को ओर बुलाने वाला और बुराइयों से रोकने वाला।
३ : ११०	तमाम इन्सानो की हिदायत के लिए अपने आप को ज़िम्मेदार समझने वाला।
३ : १३४	गरीबी हो या अमीरी, हर हाल में अल्लाह की राह में धन ख़र्च करने वाला।
३ : १३४	गुस्से को पी जाने वाला और माफ़ कर देने वाला।
३ : १३६	कोई काम बुरा हो जाता है तो उसकी माफ़ी चाहता है। उस पर अड़ा नही रहता।
३ १६५	अल्लाह के दीन के लिए घर-बार छोड़ने वाला और कष्ट सहने वाला।
६ : ५२	सुबह-शाम अल्लाह को याद करने वाला और उसकी प्रसन्नता चाहने वाला।
६ : ८२	ईमान में शिर्क की गड-मड नहीं करता।
६ ९२	नमाज़ों की पूरी रक्षा करता है।
७ : २०१	शैतान के पैदा किए हुए वसवास से होशियार और आँखें खोल कर जीवन बिताने वाला।
८ . २	अल्लाह की याद से दिल काँप जाता है और अल्लाह की आयतें सुन कर ईमान बढ़ जाता है।
८ ३	अल्लाह पर भरोसा करता है, नमाज़ क़ायम करता है और अल्लाह की राह मे माल ख़र्च करता है।
९ : १८	अल्लाह और आख़िरत पर ईमान रखता है।
९ : १९-२२	दीन के लिए घर छोड़ देता है और अल्लाह की राह में जान और माल से जिहाद करता है।
९ : ७१	नेकी फैलाने और बुराइयाँ मिटाने में दूसरे मुसलमानों का साथ देता है।
९ : ७१	नमाज़ क़ायम करता है, ज़कात देता है और अल्लाह और रसूल का आज्ञा-पालन करता है।
९ : १०८	वह पवित्रता को पसन्द करता है।
९ : १११	वह अपनी जान और माल को अल्लाह का माल समझता है और उसकी राह में युद्ध करता है।

	उसी के निकट अपनी नस्ल को बसाते समय।
२ : २०१	दुनिया और आख़िरत की भलाई की दुआ।
२ : २८५-२८६	अल्लाह की राह में आज़माइशों में फँस जाने पर ईमान वालों की दुआ।
३ : ८	हिदायत पर जमे रहने की दुआ।
३ : १६	गुनाहों से माफ़ी की दुआ।
३ : ५३	ईसा अ० के हवारियों की दुआ ईमान और इस्लाम के लिए।
३ : १४७	दीन की राह पर जमे रहने की दुआ।
३ : १९१-१९४	दोज़ख़ से नजात, गुनाहों की माफ़ी और आख़िरत में सफलता की दुआ।
७ : ८९	हज़रत शुऐब अ० की दुआ।
७ : १२६	फ़िरऔन के जादूगरों की दुआ, ईमान लाने के बाद।
७ : १५१	हज़रत मूसा की दुआ।
७ : १५५	हज़रत मूसा की एक और दुआ।
१० : ८५, ८६	मूसा अ० के नौजवान मुसलमानों की दुआ।
१२ : १०१	हज़रत यूसुफ़ अ० की दुआ, मिस्र में सत्ताधारी होने के बाद।
१४ : ३५-४१	हज़रत इबराहीम की दुआ, काबे के निकट अपनी औलाद को बसाते समय।
१७ : २४	माँ-बाप के लिए दुआ।
१७ : ८०	हिजरत से पहले हज़रत मुहम्मद सल्ल० को सिखाई हुई दुआ।
१८ : १०	गुफ़ा वालों की दुआ।
१९ ४-६	हज़रत ज़करिया अ० की दुआ दीन के कामों के लिए अपने उत्तराधिकारी के लिए।
२० : २५-३२	नुबूवत मिलने पर हज़रत मूसा की दुआ।
२१ : ८३	हज़रत अय्यूब अ० की दुआ।
२१ : ८७	हज़रत यूनुस की दुआ।
२१ : ८९	हज़रत ज़करिया की दुआ।
२३ : २९	तूफ़ान से नजात पाने पर हज़रत नूह की दुआ।
२३ : ९७, ९८	शैतान के धोखों से पनाह माँगने की दुआ।
२३ : १०९	माफ़ी माँगने और कृपा पाने की दुआ।
२३ : ११८	माफ़ी और दया की दुआ।
२५ : ६५, ६६	दोज़ख़ से नजात की दुआ।
२५ : ७४	अपने बाल-बच्चों के सुधार की दुआ।
२६ : ८३-८७	हज़रत इबराहीम की दुआ अपनी और अपने बाप की माफ़ी के लिए।
२६ : ११८	हज़रत नूह की दुआ अपनी जाति से नजात पाने के लिए।
२६ : १६९	हज़रत लूत की दुआ, जब उनकी जाति पर अज़ाब आया।
२७ : १९	हज़रत सुलैमान की दुआ अल्लाह की नेमतों पर शुक्र अदा करने के लिए।
२८ : १६, १७, २१	क़िब्ती का क़त्ल हो जाने के बाद हज़रत मूसा की दुआ।
२८ : २४	मदयन पहुँचने पर हज़रत मूसा की दुआ।
२९ : ३०	हज़रत लूत की दुआ जाति के मुक़ाबले में अल्लाह की सहायता के लिए।
३८ : ३५	हज़रत सुलैमान की दुआ राज्य मिलने के लिए।

२८ : ८३	*वह न बिगाड़ पैदा करता है और न बड़ा बनता है।*
२६ : ५८, ५६	हर मौक़े पर सब्र और (अल्लाह पर) भरोसे से काम लेने वाला।
३१ : २२	अल्लाह का आज्ञाकारी और बहुत नेक।
३२ : १५, १६	रातों को उसके पहलू बिस्तर से अलग रहते हैं।
३३ : ३५	आज्ञा पालन करने वाला, ईमान का पक्का, आज्ञाकारी, सच्चा, सब्र करने वाला अल्लाह से डरने वाला।
३३ : ३५	दान करने वाला, रोज़ेदार, शर्मगाहों की रक्षा करने वाला और अल्लाह को बहुत याद करने वाला।
३६ : ६	रातों को नमाज़ें पढ़ने वाला और आख़िरत से डरने वाला।
३६ : १७, १८	*तागूत की बन्दगी से बचने वाला और भली बातों को स्वीकार करने वाला।*
३६ : २२	उसका सीना इस्लाम के लिए खुला हुआ होता है।
४१ : ३३	अल्लाह के दीन की ओर बुलाने वाला, सुकार्य करने वाला और अल्लाह का आज्ञाकारी।
४१ : ३४, ३५	बुराइयों को भलाइयों से दूर करने वाला।
४२ : ३६, ३७	बड़े-बड़े गुनाहों और अश्लील कर्मों से बचने वाला और गुस्सा आने पर माफ़ कर देने वाला।
४२ : ३८, ३६	नमाज़ क़ायम करने वाला और सब काम मश्विरों से करने वाला।
५१ : १५-१६	रातों को कम सोने वाला और भोर में माफ़ी माँगने वाला।
५८ : २२	वह अल्लाह और रसूल के दुश्मनों से दोस्ती नहीं करता, भले ही वे उसके बाप हों या नातेदार।
५६ : ८	वह अल्लाह और रसूल का सहायक होता है और ईमानदार।
५६ : ६, १०	*वह त्यागी होता है लोभी नहीं होता, ईमान वालों की ओर से साफ़ दिल* होता है।
७० : २२-२८	नमाज़ कभी नहीं छोड़ता। गरीबों की सहायता करता है। *आख़िरत का* विश्वास रखता है।
७० : २६-३४	शर्मगाहों की रक्षा करता है और वादे का पूरा करने वाला होता है।
७६ : ७-१०	मिन्नत पूरी करने वाला, यतीमों, मुहताजों और क़ैदियों को खाना खिलाने वाला।
७६ : ४०	अल्लाह के आगे खड़े होने से डरने वाला और मनोवासनाओं को रोकने वाला।
६२ : १८-२१	जो-कुछ करता है अल्लाह को प्रसन्न करने के लिए करता है।
०३ : ३	ईमान और सुकर्मों के साथ दूसरों को सत्य पर डटे रहने और सब्र की राह अपनाने पर उकसाता रहता है।

(१२) दुआएँ

१ : १-७	हर नमाज़ में पढ़ी जाने वाली दुआ।
२ : १२६-१२६	हज़रत इबराहीम की दुआ पवित्र घर काबः के निर्माण के समय और

	उसी के निकट अपनी नस्ल को बसाते समय।
२ : २०१	दुनिया और आख़िरत की भलाई की दुआ।
२ : २८५-२८६	अल्लाह की राह मे आज़माइशों में फँस जाने पर ईमान वालों की दुआ।
३ : ८	हिदायत पर जमे रहने की दुआ।
३ : १६	गुनाहों से माफी की दुआ।
३ : ५३	ईसा अ० के हवारियों की दुआ ईमान और इस्लाम के लिए।
३ : १४७	दीन की राह पर जमे रहने की दुआ।
३ : १९१-१९४	दोज़ख़ से नजात, गुनाहों की माफी और आख़िरत में सफलता की दुआ।
७ : ८९	हज़रत शुऐब अ० की दुआ।
७ : १२६	फ़िरऔन के जादूगरों की दुआ, ईमान लाने के बाद।
७ : १५१	हज़रत मूसा की दुआ।
७ : १५५	हज़रत मूसा की एक और दुआ।
१० : ८५, ८६	मूसा अ० के नौजवान मुसलमानो की दुआ।
१२ : १०१	हज़रत यूसुफ अ० की दुआ, मिस्र में सत्ताधारी होने के बाद।
१४ : ३५-४१	हज़रत इबराहीम की दुआ, काबे के निकट अपनी औलाद को बसाते समय।
१७ : २४	माँ-बाप के लिए दुआ।
१७ : ८०	हिजरत से पहले हज़रत मुहम्मद सल्ल० को सिखाई हुई दुआ।
१८ : १०	गुफा वालो की दुआ।
१९ : ४-६	हज़रत ज़करिया अ० की दुआ दीन के कामों के लिए अपने उत्तराधिकारी के लिए।
२० : २५-३२	नुबूवत मिलने पर हज़रत मूसा की दुआ।
२१ : ८३	हज़रत अय्यूब अ० की दुआ।
२१ : ८७	हज़रत यूनुस की दुआ।
२१ : ८९	हज़रत ज़करिया की दुआ।
२३ : २९	तूफान से नजात पाने पर हज़रत नूह की दुआ।
२३ : ९७, ९८	शैतान के धोखो से पनाह माँगने की दुआ।
२३ : १०९	माफ़ी माँगने और कृपा पाने की दुआ।
२३ : ११८	माफी और दया की दुआ।
२५ : ६५, ६६	दोज़ख़ से नजात की दुआ।
२५ : ७४	अपने बाल-बच्चों के सुधार की दुआ।
२६ : ८३-८७	हज़रत इबराहीम की दुआ अपनी और अपने बाप की माफ़ी के लिए।
२६ : ११८	हज़रत नूह की दुआ अपनी जाति से नजात पाने के लिए।
२६ : १६९	हज़रत लूत की दुआ, जब उनकी जाति पर अज़ाब आया।
२७ : १९	हज़रत सुलैमान की दुआ अल्लाह की नेमतों पर शुक्र अदा करने के लिए।
२८ : १६, १७, २१	क़िब्ती का कत्ल हो जाने के बाद हज़रत मूसा की दुआ।
२८ : २४	मदयन पहुँचने पर हज़रत मूसा की दुआ।
२९ : ३०	हज़रत लूत की दुआ जाति के मुकाबले में अल्लाह की सहायता के लिए।
३८ : ३५	हज़रत सुलैमान की दुआ राज्य मिलने के लिए।

४० : ७-९	ईमान वालों के लिए फ़िरिश्तों की दुआ।
४६ : १	सुकार्य और औलाद की सुधार के लिए एक ईमान वाले की दुआ।
५९ : १०	दिलों को डाह और जलन से शुद्ध करने की दुआ।
६६ : ११	फ़िरऔन की पत्नी की दुआ।
११३ : १-५	रात के अँधेरे, और जलने वालों की जलन से बचने की दुआ।
११४ : १-६	शैतान के डाले हुए बकवास से बचने की दुआ।

संकेताक्षरों का विवरण

अ० = अलैहिस्सलाम अर्थात उन पर सलामती हो। (नबियों या फ़िरिश्तों का का नाम आता है तो आदर और प्रेम के लिए दुआ के ये शब्द बढ़ा देते हैं।)

दे० = देखिए।

रज़ि० = रज़िअल्लाहु अनहु अर्थात् उनसे अल्लाह राज़ी रहे। (हज़रत मुहम्मद सल्ल० के किसी साथी का नाम आता ह, तो आदर और प्रेम के लिए दुआ के ये शब्द बढ़ा देते हैं।)

सल्ल० = सल-लल-लाहु अलैहि व सल्लम अर्थात् उन पर अल्लाह की 'रहमत' और सलामती हो।
(हज़रत मुहम्मद सल्ल० का नाम लेते या सुनते हैं तो आदर और प्रेम के लिए दुआ के ये शब्द बढ़ा देते हैं।

35

हाँ से आप फ़लिस्तीन गये ।

ा ।

30 ा इबराहीम अ० ने बनाया था । आपने लूत सागर के पूर्व में अ

... का निर्माण किया उसकी सेवा अपने बेटे हजरत इसम

० : ७-९	ईमान वालों के लिए फ़रिश्तों की दुआ।
६ : १	सुकार्य और औलाद की सुधार के लिए एक ईमान वाले की दुआ।
९ : १०	दिलों को डाह और जलन से शुद्ध करने की दुआ।
६ : ११	फ़िरऔन की पत्नी की दुआ।
३ : १-५	रात के अँधेरे, और जलने वालों की जलन से बचने की दुआ।
४ : १-६	शैतान के डाले हुए बकवास से बचने की दुआ।

संकेताक्षरों का विवरण

अ० = अलैहिस्सलाम अर्थात उन पर सलामती हो। (नबियों या फ़रिश्तों का का नाम आता है तो आदर और प्रेम के लिए दुआ के ये शब्द बढ़ा देते हैं।)

दे० = देखिए।

रज़ि० = रज़िअल्लाहु अनहु अर्थात् उनसे अल्लाह राज़ी रहे। (हज़रत मुहम्मद सल्ल० के किसी साथी का नाम आता है, तो आदर और प्रेम के दुआ के ये शब्द बढ़ा देते हैं।)

सल्ल० = सल-लल-लाहु अलैहि व सल्लम अर्थात् उन पर अल्लाह की सलामती हो।
(हज़रत मुहम्मद सल्ल० का नाम लेते या सुनते हैं तो लिए दुआ के ये शब्द बढ़ा देते हैं।

ापने भतीजे हज़रत लूत अ० को नियुक्त
ाईल अ० को सौंपी। फिर आपने फ़लिस्तीन
इस केन्द्र में आपके उत्तराधिकारी हुये और

ा मिला था।

ाइदः में उद्धृत है।
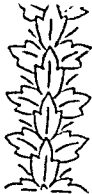
—अनुवाद—

मु० फ़ारूक़ ख़ाँ 'विशारद'

१--अल-फ़ातिहः

(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः* का नाम 'अल-फ़ातिहः' इसके विषय की अनुकूलता से है। जिस से किसी वस्तु, लेख, पुस्तक आदि का आरम्भ होता है उसे फ़ातिहः कहते हैं। सूरः अल-फ़ातिहः को पवित्र क़ुरआन* की भूमिका या प्राक्कथन (The Opening of the Book) का स्थान प्राप्त है।

उतरने का समय (*The date of Revelation*)

यह सूरः हज़रत मुहम्मद (उन पर अल्लाह की अपार कृपा हो) की नुबुवत* के बिलकुल आरम्भ काल में उतरी है।

विषय

इस सूरः का केन्द्रीय विषय हम्द* या ईश-प्रशंसा है। यह सूरः पूरे क़ुरआन* का संक्षेप और पूरा क़ुरआन इसी सूरः का विस्तार है।

सूरः अल-फ़ातिहः एक प्रार्थना के रूप में उतरी है। यही कारण है कि इसके शब्द यद्यपि कहे हुए तो अल्लाह के हैं परन्तु वे मनुष्य के मुख से कहलवाये गये हैं। मनुष्य प्रार्थना उसी चीज़ की करता है जिसकी माँग और इच्छा उसके मन में पाई जाती हो। अल्लाह* ने आरम्भ ही में इस प्रार्थना की शिक्षा देकर मनुष्य को यह सीख दी है कि वह इस ग्रन्थ को सत्य-मार्ग की खोज के लिए पढ़े, सत्यान्वेषी की भाँति पढ़े, और इस बात को शुरू ही में अच्छी तरह जान ले कि ज्ञान का स्रोत सर्वश्रेष्ठ अल्लाह है। उस की कृपा न हो तो मनुष्य केवल अंधकार में भटक सकता है, जीवन के सच्चे और सहज मार्ग का उसे ज्ञान कदापि नहीं हो सकता।

सूरः अल-फ़ातिहः में अल्लाह से प्रार्थना की गई है कि वह हमें जीवन के सीधे और सही रास्ते पर चलाये। यह मानव-हृदय की वह पुकार और उसके अन्तःकरण से निकली हुई वह प्रार्थना है जिस का जवाब अल्लाह ने वह्य* और रिसालत* के रूप में दिया है।

सूरः में बन्दा अल्लाह से प्रार्थना करता है:प्रभुवर!मुझे उस मार्ग पर चला सीधा और सरल मार्ग है। जवाब में उसका स्वामी पूरा क़ुरआन उस रख देता है कि जिस मार्ग-प्रदर्शन के लिए तुमने मुझसे प्रार्थना की है वह

इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अल-फ़ातिहः

(मक्का में उतरी — आयतें* ७)

अल्लाह* के नाम से जो अत्यन्त दयावान् और कृपाशील है।

सब प्रशंसा (हम्द*) अल्लाह के लिए है, जो सारे संसार का रब* है, ○ अत्यन्त दयावान् और कृपाशील है। ○ उस दिन का मालिक है जिस दिन बदला दिया जायेगा¹। ○

(हे प्रभु!) हम तेरी ही इबादत* करते हैं: और तुझी से मदद माँगते हैं। ○

५ हमें सीधा रास्ता दिखा, ○ उन लोगों का रास्ता जिन पर तू ने कृपा की; ○ न कि उन का (रास्ता) जिन पर तेरा ग़ज़ब (प्रकोप) हुआ और न उन का जो भटक गये। ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ الرَّحْمٰنِ ٣
الرَّحِيْمِ ۙ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۙ اِيَّاكَ
نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۙ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ
الْمُسْتَقِيْمَ ۙ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ
غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۙ ٤

---

¹ मौत के बाद फ़ैसले का दिन।

* इसका अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

१--अल-फ़ातिहः
(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः* का नाम 'अल-फ़ातिहः' इसके विषय की अनुकूलता से है। जिस से किसी वस्तु, लेख, पुस्तक आदि का आरम्भ होता है उसे फ़ातिहः कहते हैं। सूरः अल-फ़ातिहः को पवित्र क़ुरआन* की भूमिका या प्राक्कथन (The Opening of the Book) का स्थान प्राप्त है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह सूरः हज़रत मुहम्मद (उन पर अल्लाह की अपार कृपा हो) की नुबूवत* के बिलकुल आरम्भ काल में उतरी है।

विषय

इस सूरः का केन्द्रीय विषय हम्द* या ईश-प्रशंसा है। यह सूरः पूरे क़ुरआन* का संक्षेप और पूरा क़ुरआन इसी सूरः का विस्तार है।

सूरः अल-फ़ातिहः एक प्रार्थना के रूप में उतरी है। यही कारण है कि इसके शब्द यद्यपि कहे हुए तो अल्लाह के हैं परन्तु वे मनुष्य के मुख से कहलवाये गये हैं। मनुष्य प्रार्थना उसी चीज़ की करता है जिसकी माँग और इच्छा उसके मन में पाई जाती हो। अल्लाह* ने आरम्भ ही में इस प्रार्थना की शिक्षा देकर मनुष्य को यह सीख दी है कि वह इस ग्रन्थ को सत्य-मार्ग की खोज के लिए पढ़े, सत्यान्वेषी की भाँति पढ़े, और इस बात को शुरू ही में अच्छी तरह जान ले कि ज्ञान का स्रोत सर्वश्रेष्ठ अल्लाह है। उस की कृपा न हो तो मनुष्य केवल अंधकार में भटक सकता है, जीवन के सच्चे और सहज मार्ग का उसे ज्ञान कदापि नहीं हो सकता।

सूरः अल-फ़ातिहः में अल्लाह से प्रार्थना की गई है कि वह हमें जीवन के सीधे और सही रास्ते पर चलाये। यह मानव-हृदय की वह पुकार और उसके अन्तःकरण से निकली हुई वह प्रार्थना है जिस का जवाब अल्लाह ने वह्य* और रिसालत* के रूप में दिया है।

इस सूरः में बन्दा अल्लाह से प्रार्थना करता है:—प्रभुवर! मुझे उस मार्ग पर चला जो जीवन का सीधा और सरल मार्ग है। जवाब में उसका स्वामी पूरा क़ुरआन उस के सामने रख देता है कि जिस मार्ग-प्रदर्शन के लिए तुमने मुझसे प्रार्थना की है वह यही है।

* इन का अर्थ परिशिष्ट में आये हुए पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः[*] अल-फ़ातिहः

(मक्का में उतरी — आयतें[*] ७)

अल्लाह* के नाम से जो अत्यन्त दयावान् और कृपाशील है।

सब प्रशंसा (हम्द*) अल्लाह के लिए है, जो सारे संसार का रब* है,○ अत्यन्त दयावान् और कृपाशील है।○ उस दिन का मालिक है जिस दिन बदला दिया जायेगा[1]।○

(हे प्रभु!) हम तेरी ही इबादत* करते हैं: और तुझी से मदद माँगते हैं।○

हमें सीधा रास्ता दिखा,○ उन लोगों का रास्ता जिन पर तू ने कृपा की;○ न कि उन का (रास्ता) जिन पर तेरा ग़ज़ब (प्रकोप) हुआ और न उन का जो भटक गये।○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ الرَّحْمٰنِ
الرَّحِيْمِ ۝ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۝ اِيَّاكَ
نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ
الْمُسْتَقِيْمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ
غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۝

---

1 मौत के बाद फैसले का दिन।

* इसका अर्थ आखिर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

मदीने में मुसलमानों को एक और वर्ग से निपटना पड़ा। यह वर्ग मुनाफ़िक़ों* (कपटाचारियों) का था। मक्का में केवल एक ही प्रकार के मुनाफ़िक़ थे, जो इस्लाम को सच्चा धर्म जानते थे, पर उन में इतना साहस न था कि इस्लाम के लिए अपने स्वार्थ का त्याग कर सकें और उन विपत्तियों और कठिनाइयों का सहन कर सकें, जिन से इस्लाम लाने के साथ ही दो-चार होना पड़ता था। इस के विपरीत मदीने में भिन्न-भिन्न प्रकार के मुनाफ़िक़ पैदा हो गये थे। एक क़िस्म के मुनाफ़िक़ तो वे थे जो इस्लाम में बिलकुल विश्वास नहीं रखते थे केवल फ़ितनः, फ़साद और उपद्रव फैलाने के लिए मुसलमानों में दाख़िल हो गये थे। दूसरी क़िस्म उन मुनाफ़िक़ों की थी जो मुसलमानों के अधिकार-क्षेत्र में घिरे होने के कारण अपना हित इसी में समझते थे कि एक ओर वे मुसलमान बने रहें और दूसरी ओर इस्लाम के विरोधियों से भी अपना नाता जोड़े रखें। तीसरी क़िस्म उन मुनाफ़िक़ों की थी जिन्हें इस्लाम के सच्चा दीन होने का पूरा विश्वास न था, वे केवल इस लिए इस्लाम में दाख़िल हो गये थे कि उन के क़बीले और वंश के अधिक लोग इस्लाम को अपना चुके थे। चौथा गिरोह उन मुनाफ़िक़ों का था जो यह तो समझ चुके थे कि इस्लाम ही सच्चा दीन है, परन्तु नैतिक नियमों का पालन करने तथा अपनी ज़िम्मेदारियों और दायित्वों का बोझ उठाने से वे घबरा रहे थे। अज्ञान-काल के रीति-रिवाज और अन्ध-विश्वासों से भी अभी तक वे अपना दामन नहीं छुड़ा सके थे।

सूरः अल-बक़रः जिस समय उतर रही थी वह इन विभिन्न प्रकार के मुनाफ़िक़ों का आरम्भ-काल था। इसी लिए इन मुनाफ़िक़ों के सम्बन्ध में इस सूरः में केवल संक्षिप्त संकेत दिये गये हैं। बाद में जैसे-जैसे इन की गति-विधि स्पष्ट होती गई, विस्तारपूर्वक हर प्रकार के मुनाफ़िक़ों के बारे में अल्लाह ने आदेश भी दिये।

मक्का में इस्लाम के मूल-सिद्धान्त-मात्र का प्रचार किया जा रहा था। जो लोग इस्लाम को अपना लेते उन के नैतिक शिक्षण पर बल दिया जाता था। परन्तु हिजरत के बाद अरब के बहुत से क़बीले ईमान ले आये। अब बिखरे हुए मुसलमान मदीने में इकट्ठा हो रहे थे। यहाँ उन्हें एक स्वतन्त्र वातावरण मिल गया था। मदीने के मुसलमानों की सहायता से अब यहाँ एक छोटे-से राज्य की नींव पड़ गई। अब अल्लाह की ओर से नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षण के साथ-साथ नागरिकता, सामाजिकता, अर्थ और राजनीति के सम्बन्ध में भी मौलिक आदेश आने शुरू हो गये। इस सूरः में आयत १४८ से लेकर सूरः के अन्त तक अधिकतर भाग ऐसे ही आदेशों पर अवलम्बित हैं।

इस सूरः में जहाँ एक ओर नैतिकता और आध्यात्मिकता की दृष्टि से नमाज़* रोज़ा*, हज्ज*, उमरः*, क़ुरबानी*, सदक़ः*, ज़कात* आदि के सम्बन्ध में आदेश दिये गये हैं वहीं मानव-हित के लिए जीवन के दूसरे मामलों से सम्बन्ध रखने वाले आदेश भी दिये गये हैं। ब्याज का निषेध किया गया। जुआ और शराब के बारे में बताया गया कि इन में हानि अधिक और लाभ बहुत कम है। यतीमों (अनाथों)

* इस की अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

के पालन-पोषण और उन के माल की रक्षा के सम्बन्ध में उचित आदेश दिये गये। वसीयत, क़र्ज़, रेहन, दस्तावेज़, गवाही, लेन-देन, व्यापार आदि के सम्बन्ध में उन नियमों को खोल कर बयान किया गया जिन का पालन करना व्यावहारिक जीवन में अनिवार्य है। समाज में शान्ति बनाये रखने और लोगों के प्राणों की रक्षा के लिए क़िसास* (ख़ून का बदला) का हुक्म दिया गया और उसके नियम बताये गये।

खाने-पीने के सिलसिले में केवल अशुद्ध और ना-पाक चीज़ों को हराम ठहराया गया, पाक चीज़ों को खाने की इजाज़त दी गई। मुरदार, रक्त और सूअर के मांस को हराम ठहराया गया। और हर ऐसी चीज़ को खाने से रोक दिया गया जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो।

स्त्रियों के साथ न्याय करने पर ज़ोर दिया गया। इस सिलसिले में निकाह (विवाह), महर,* तलाक़,* इद्दत,* क़सम आदि के नियमों का उल्लेख किया गया।

समाप्ति

जिस प्रकार यह सूरः इस्लाम के मौलिक शिक्षाओं से आरम्भ हुई है उसी प्रकार इसे समाप्त करने से पहले इस्लाम की मौलिक शिक्षाओं को फिर दोहराया गया है[१]। इस सम्बन्ध में सब से बुनियादी बात यह बताई गई कि ज़मीन और आसमान की समस्त वस्तुओं का मालिक अल्लाह है। इस लिए मनुष्य को उसी के आगे अपना सिर झुकाना चाहिए और अपने जीवन में उसी के आदेशों का पालन करना चाहिए। दूसरी बुनियादी बात इस सिलसिले में यह बताई गई कि अल्लाह किसी व्यक्ति पर उसकी शक्ति से अधिक बोझ नहीं डालता। हर एक को अपने किये का फल पाना है। जो नेकी कमायगा उस का फल उसी के लिए है। और जो बुराई समेटेगा उस का बुरा नतीजा उसी को भुगतना होगा। जिन बातों पर ईमान लाना हमारे लिए ज़रूरी है उन्हें भी बयान किया गया। बताया गया कि अल्लाह का रसूल* सल्ल० और ईमान वाले लोग अल्लाह को, उस के फ़िरिश्तों* को और उस की किताबों को मानते हैं। और उस की ओर से आने वाले सभी रसूलों पर ईमान रखते हैं। रसूलों के बीच वे कोई भेद-भाव नहीं करते। और वे इस बात को भी मानते हैं कि अन्त में उन्हें अपने रब* के पास हाज़िर होना है।

यह सूरः दुआ (प्रार्थना) पर समाप्त होती है। इस दुआ पर विचार करने से मालूम होता है कि जिस समय यह आयतें उतरीं हैं उस समय मुसलमान बड़ी कठिनाइयों का सामना कर रहे थे। ऐसे समय में उन के रब ने उन्हें जो दुआ सिखाई है उस से उन्हें शान्ति मिली। इस दुआ ने उन की भावनाओं को उच्च और उन के संकल्पों को पवित्र बनाया।

---

१ दे० आयत २८४-२८६।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अल-बक़रः

(मदीने में उतरी — आयतें* २८६)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त दयावान् और कृपाशील है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓ ۚ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛ فِيْهِ ۛ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ۙ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۗ

अलिफ़० लाम० मीम०[१] । ○ यह (अल्ला की) किताब* है इस (के आसमानी किताब होने में कोई सन्देह नहीं; उन लोगों के लिए मार्ग-दर्शन है जो अल्लाह की अवज्ञा से बचने वाले और उस की ना-ख़ुशी से डरने वाले हैं[२] । ○ जो बिन देखे ईमान* लाते, नमाज़* क़ायम रखते और जो—कुछ हम ने उन्हें दिया है उस में से अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं; ○ (और हे पैग़म्बर* !) जो (किताब) तुम पर उतारी गई है और जो (किताबें) तुम से पहले (पैग़म्बरों पर) उतारी गई थीं[३], उन सब पर वे ईमान लाते हैं और आख़िरत* पर पूरा विश्वास रखते हैं । ○ यही वे लोग हैं जो

---

१ ये और इस तरह के दूसरे अक्षर और बहुत सी सूरतों* के आरम्भ में आये हैं, इन्हें हुरूफ़ मुक़त्तआत* कहते हैं ।

२ अल्लाह की अवज्ञा से बचने वालों और उसकी ना-ख़ुशी से डरने वालों के लिए क़ुरआन में यहाँ 'मुत्तक़ीन' (तक़वा* वाले) शब्द प्रयुक्त हुआ है ।

३ अर्थात् पिछली आसमानी किताबें तौरात*, इंजील* आदि ।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

أُولَٰئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا
سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ خَتَمَ اللَّهُ عَلَىٰ
قُلُوبِهِمْ وَعَلَىٰ سَمْعِهِمْ ۖ وَعَلَىٰ أَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝
وَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ وَبِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَا هُم بِمُؤْمِنِينَ ۝
يُخَادِعُونَ اللَّهَ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَمَا يَخْدَعُونَ إِلَّا أَنفُسَهُمْ وَمَا
يَشْعُرُونَ ۝ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ فَزَادَهُمُ اللَّهُ مَرَضًا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ
أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْذِبُونَ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ
قَالُوا إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ ۝ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُونَ وَلَٰكِن لَّا
يَشْعُرُونَ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ آمِنُوا كَمَا آمَنَ النَّاسُ قَالُوا أَنُؤْمِنُ كَمَا
آمَنَ السُّفَهَاءُ ۗ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَاءُ وَلَٰكِن لَّا يَعْلَمُونَ ۝ وَإِذَا لَقُوا
الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا خَلَوْا إِلَىٰ شَيَاطِينِهِمْ قَالُوا إِنَّا مَعَكُمْ إِنَّمَا نَحْنُ
مُسْتَهْزِئُونَ ۝ اللَّهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝
أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الضَّلَالَةَ بِالْهُدَىٰ فَمَا رَبِحَت تِّجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوا
مُهْتَدِينَ ۝ مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِي اسْتَوْقَدَ نَارًا فَلَمَّا أَضَاءَتْ مَا حَوْلَهُ
ذَهَبَ اللَّهُ بِنُورِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِي ظُلُمَاتٍ لَّا يُبْصِرُونَ ۝ صُمٌّ بُكْمٌ عُمْيٌ
فَهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ۝ أَوْ كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَاءِ فِيهِ ظُلُمَاتٌ وَرَعْدٌ وَبَرْقٌ
يَجْعَلُونَ أَصَابِعَهُمْ فِي آذَانِهِم مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ ۚ وَاللَّهُ مُحِيطٌ

अपने रब* के सीधे मार्ग पर हैं। और यही वे लोग हैं जो सफलता प्राप्त करने वाले हैं। ○

जिन लोगों ने कुफ़्र* का रास्ता अपनाया, तुम उन्हें (उस के बुरे नतीजों से) डराओ या न डराओ, वे मानने वाले नहीं हैं। ○ अल्लाह ने उनके दिलों और कानों पर ठप्पा लगा दिया है,[४] और उन की आँखों पर परदा पड़ गया है; और उनके लिए बड़ा सख़्त अज़ाब* है। ○ लोगों में कुछ ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि हम अल्लाह पर और अन्तिम दिन[५] पर ईमान* रखते हैं, हालाँकि (वास्तव में) वे ईमान रखने वाले नहीं हैं। ○ ये अपनी समझ में अल्लाह और ईमान लाने वालों को धोखा दे रहे हैं, परन्तु (वास्तव में) धोखा स्वयं अपने-आप को दे रहे हैं; और इन्हें इस का ज्ञान नहीं है। ○ उन के दिलों में एक रोग था, अल्लाह ने उन के रोग को और अधिक बढ़ा दिया। और जो झूठ वे बोलते हैं उस के बदले में उन्हें दुख देने वाला अज़ाब* होगा। ○ जब उन से कहा जाता है कि ज़मीन में फ़साद* न फैलाओ, तो कहते हैं: हम तो सुधार करने वाले लोग हैं। ○ जान लो! वास्तव में यही लोग फ़साद फैलाने वाले हैं, परन्तु इन्हें इस का ज्ञान नहीं है। ○ जब इन से कहा जाता है कि उस तरह ईमान लाओ जिस तरह लोग ईमान लाये हैं, तो कहते हैं: क्या हम उस तरह ईमान लायें जिस तरह मूर्ख लोग ईमान लाये हैं? जान लो! मूर्ख यही लोग हैं, परन्तु इन्हें मालूम नहीं है। ○ जब ये लोग ईमान लाने वालों से मिलते हैं, तो कहते हैं कि हम ईमान ले आये हैं; और जब एकान्त में अपने शैतानों (नेताओं) से मिलते हैं तो कहते कि हम तुम्हारे साथ हैं; और हम (इन मुसलमानों से) तो हँसी किया करते हैं। ○ अल्लाह ऐसे लोगों से हँसी करता है, और उन्हें उन की सरकशी में ढील दिये जाता है और वे अपनी सरकशी में अन्धों की तरह भटकते फिर रहे हैं। ○ यही वे लोग हैं जिन्हों ने हिदायत* छोड़ कर गुमराही ख़रीदी, न तो इन के व्यापार ने इन्हें कोई लाभ दिया, और न ये सीधा रास्ता ही पा सके। ○ इन की मिसाल उस व्यक्ति की-सी है जिसने (रात के अंधेरे में) आग जलाई, परन्तु जब आग ने उस के आस-पास को प्रकाशित कर दिया तो अल्लाह ने इन की रौशनी छीन ली और इन्हें ऐसे अन्धकार में छोड़ दिया, जिस में इन्हें कुछ सुझाई नहीं दे रहा है, ○ ये बहरे हैं, गूँगे हैं, अन्धे हैं; अब ये हिदायत* की ओर वापस नहीं आयेंगे। ○ या फिर इन की मिसाल ऐसी है जैसे आसमान से

---

४ हर आदमी को अल्लाह ने भले बुरे की पहचान दी है लेकिन कुछ लोग ऐसे होते हैं जो भली बात सुनना ही नहीं चाहते, ऐसे लोगों को ईमान* की दौलत नहीं मिलती। अल्लाह के दिखाये हुए मार्ग को छोड़ कर जो व्यक्ति अपने लिए दूसरा रास्ता पसन्द करता है, अल्लाह उसे सही रास्ते पर चलने के लिए मजबूर नहीं करता। ऐसे लोगों को वह सदा अंधेरे में भटकने के लिए छोड़ देता है।

५ अर्थात् हमेशा रहने वाला आख़िरत* का दिन।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

بِالْكٰفِرِيْنَ ۝ يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَفُ اَبْصَارَهُمْ ؕ كُلَّمَآ اَضَآءَ لَهُمْ مَّشَوْا فِيْهِ ۙ وَ
اِذَآ اَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوْا ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ
وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۝ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ فِرَاشًا
وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً ۪ وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا
لَّكُمْ ۚ فَلَا تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا وَّاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ وَاِنْ كُنْتُمْ فِيْ رَيْبٍ مِّمَّا
نَزَّلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ ۪ وَادْعُوْا شُهَدَآءَكُمْ مِّنْ
دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا وَلَنْ تَفْعَلُوْا فَاتَّقُوا
النَّارَ الَّتِيْ وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ۚۖ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ۝ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ كُلَّمَا
رُزِقُوْا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِّزْقًا ۙ قَالُوْا هٰذَا الَّذِيْ رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ ۙ وَاُتُوْا
بِهٖ مُتَشَابِهًا ؕ وَلَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۙ وَّهُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ
لَا يَسْتَحْيٖٓ اَنْ يَّضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوْضَةً فَمَا فَوْقَهَا ؕ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
فَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَيَقُوْلُوْنَ مَاذَآ اَرَادَ
اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ۘ يُضِلُّ بِهٖ كَثِيْرًا ۙ وَّيَهْدِيْ بِهٖ كَثِيْرًا ؕ وَمَا يُضِلُّ بِهٖٓ اِلَّا
الْفٰسِقِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ ۪ وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ
اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝

घोर वर्षा हो रही हो, जिस के साथ अंधियारियाँ (छा रही) हों, (बादल की) गरज और (बिजली की) चमक हो, ये बिजली के कड़ाके सुन-सुन कर मौत के भय से अपने कानों में उँगलियाँ ठूँसे ले रहे हों। अल्लाह काफ़िरों* को हर ओर से घेरे हुए है। (ये उस की पकड़ से बच कर कहीं जा नहीं सकते) ○ बिजली की चमक से इन की दशा यह हो रही हो कि मानो जल्द ही बिजली इन की आँखों की रौशनी उचक ले जायेगी। जब तनिक कुछ रौशनी इन्हें मालूम होती हो तो उस में कुछ दूर चल लेते हों, और जब उन पर अंधेरा छा जाता हो तो ठिठक कर खड़े हो जाते हों--अल्लाह चाहता, तो उन के सुनने और देखने की शक्ति छीन लेता। निस्सन्देह अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला (सर्वशक्तिमान) है। ○

लोगो! इबादत* करो, अपने उस रब* की जिस ने तुम्हें और तुम से पहले के लोगों को पैदा किया है, ताकि तुम (दुनियाँ में सीधी राह से भटकने और आख़िरत* में अल्लाह के अज़ाब में पड़ने से) बच सको। ○ वही तो है जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श और आसमान को छत बनाया; और आसमान की ओर से पानी बरसाया, और उस के द्वारा तुम्हारे खाने के लिए हर तरह के खाद्य-पदार्थ पैदा किये। सो जब तुम इन बातों को जानते हो तो किसी दूसरे को अल्लाह के बराबर न ठहराओ। ○

यदि तुम्हें इस (किताब) के बारे में जो हम ने अपने बन्दे (हज़रत मुहम्मद सल्ल०) पर उतारी है सन्देह हो, तो तुम इस जैसी एक ही सूरः* बना लाओ, और अल्लाह के सिवा जो तुम्हारी सहायता करने वाले हों उन को भी बुला लो यदि तुम सच्चे हो (तो ऐसा अवश्य कर दिखाओ)○ परन्तु यदि तुम यह न कर सको---और तुम ऐसा नहीं कर सकते---तो उस आग से डरो जिस का ईंधन मनुष्य और पत्थर होंगे, और जो काफ़िरों के लिए तैयार की गई है। ○

और (हे पैग़म्बर!) जो लोग इस किताब* पर ईमान* ले आये और उस के अनुसार अपने आचरण को ठीक कर लिया, उन्हें यह शुभ-सूचना दो; कि उन के लिए ऐसे बाग़ हैं जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी; जब इन बाग़ों में से कोई फल इन्हें खाने को दिया जायगा, तो वे कहेंगे कि यह तो वही फल है जो इस से पहले हमें मिला था; ये फल एक-दूसरे से मिलते-जुलते होंगे। उनके लिए वहाँ पाक-साफ़ जोड़े होंगे;[१] और वे वहाँ सदैव रहेंगे। ○

अल्लाह इस बात से नहीं झेंपता कि वह (किसी बड़ी बात को समझाने के लिए) मच्छर या उस से भी किसी तुच्छ चीज़ की मिसाल बयान करे। जो लोग ईमान लाने वाले हैं वे (इन्हीं मिसालों से) जान लेते हैं कि यह सच है और उनके रब* ही की ओर से है; और जो मानने वाले नहीं हैं वे इन्हें सुन कर कहने लगते हैं कि ऐसी मिसाल बयान करने से अल्लाह का अभिप्राय क्या होगा? (अल्लाह) एक ही चीज़ से कितनों को गुमराह करता है, और कितने

१ अर्थात् पुरुषों को वहाँ अच्छी पत्नियाँ और स्त्रियों को अच्छे पति प्राप्त होंगे।
* इन का अर्थ अन्त में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

लोगों को राह दिखाता है; गुमराह वह केवल उन्हीं लोगो को करता है जो सीमोल्लंघन करने वाले होते हैं; ○ ये वे लोग हैं जो अल्लाह से किये हुए इक़रार (प्रतिज्ञा) को मज़बूत करने के बाद उस से फिर जाते हैं, और जिन नातों को अल्लाह ने जोड़ने का हुक्म दिया है उन्हें तोड़ डालते हैं, और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं; यही लोग घाटे में हैं।○

तुम अल्लाह के साथ कुफ़्र की नीति कैसे अपनाते हो जब कि तुम बे-जान थे उसने तुम्हें जान दी! फिर वही मारता है, फिर वही तुम्हें (दोबारा) ज़िन्दा करेगा, फिर उसी के पास तुम पलटाये जाओगे। ○ वही तो है जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन की सारी वस्तुयें पैदा कीं। फिर आसमान की ओर रुख़ किया, और बिलकुल ठीक और सही तरीक़े पर सात आसमान[*] बनाये। और वह हर चीज़ का जानने वाला है।○

कيف تكفرون بالله وكنتم امواتا فاحياكم ثم يميتكم ثم يحييكم ثم اليه
ترجعون ۝ هو الذي خلق لكم ما في الارض جميعا ثم استوى الى السماء
فسوىهن سبع سموت وهو بكل شيء عليم ۝ واذ قال ربك للملئكة اني
جاعل في الارض خليفة قالوا اتجعل فيها من يفسد فيها ويسفك
الدماء ونحن نسبح بحمدك ونقدس لك قال اني اعلم ما لا تعلمون ۝
وعلم ادم الاسماء كلها ثم عرضهم على الملئكة فقال انبـٔوني باسماء
هؤلاء ان كنتم صدقين ۝ قالوا سبحنك لا علم لنا الا ما علمتنا انك
انت العليم الحكيم ۝ قال يادم انبئهم باسمائهم فلما انبأهم باسمائهم
قال الم اقل لكم اني اعلم غيب السموت والارض واعلم ما تبدون
وما كنتم تكتمون ۝ واذ قلنا للملئكة اسجدوا لادم فسجدوا الا ابليس
ابى واستكبر وكان من الكفرين ۝ وقلنا يادم اسكن انت وزوجك
الجنة وكلا منها رغدا حيث شئتما ولا تقربا هذه الشجرة فتكونا من الظلمين ۝
فازلهما الشيطن عنها فاخرجهما مما كانا فيه وقلنا اهبطوا بعضكم لبعض
عدو ولكم في الارض مستقر ومتاع الى حين ۝ فتلقى ادم من ربه كلمت
فتاب عليه انه هو التواب الرحيم ۝ قلنا اهبطوا منها جميعا فاما ياتينكم
مني هدى فمن تبع هداي فلا خوف عليهم ولا هم يحزنون ۝ والذين
كفروا وكذبوا بايتنا اولئك اصحب النار هم فيها خلدون ۝ يبني اسرءيل

और वह समय याद करो जब तुम्हारे रब[*] ने फ़िरिश्तों[*] से कहा: "मैं ज़मीन पर ख़लीफ़ः[*] बनाने वाला हूँ", उन्हों ने कहा, "क्या धरती पर तू उसे नियुक्त करना चाहता है जो वहाँ फ़साद फैलायगा और रक्त-पात करेगा? और हम तेरी तारीफ़ के साथ तेरी तसबीह[*] करते और तेरी पाकी बयान करते हैं"। अल्लाह ने कहा, "मैं वे बातें जानता हूँ जो तुम नहीं जानते"। ○ इस के बाद अल्लाह ने आदम को सारे नाम सिखाये, फिर उन सब को फ़िरिश्तों[*] के सामने पेश किया, और कहा: तुम मुझे इनके नाम बताओ यदि तुम सच्चे हो। ○ फ़िरिश्ते बाले तू महिमावान् है! हमें तो बस उतना ही ज्ञान है जितना ज्ञान तूने हमें दिया है। वास्तव में, तू ही, सब-कुछ जानने वाला और हिकमत[*] वाला है। ○ (तब) अल्लाह ने आदम से कहा: हे आदम! तुम इन (फ़िरिश्तों[*]) को इन के नाम बताओ, जब आदम ने उन को उन के नाम बताये, तो अल्लाह ने फ़िरिश्तों[*] से कहा: क्या मैंने तुम से यह नहीं कहा था कि मैं आसमानों और ज़मीन की सारी छिपी हुई बातें जानता हूँ? और मैं जानता हूँ जो-कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो-कुछ तुम छिपाते हो[८]। ○

---

७ सात आसमान की हक़ीक़त क्या है? यह निश्चित करना कठिन है। बस इतना मान लेना चाहिए कि इस का तात्पर्य या तो यह हो कि पृथ्वी के अलावा और उस से परे जितनी सृष्टि है, अल्लाह ने उसे सात स्थाई वर्गों में बाँट दिया है या फिर इस का तात्पर्य यह हो कि हमारी पृथ्वी सृष्टि के जिस क्षेत्र में स्थित है वह सात वर्गों में बँटा हो।

हर युग में आसमान के बारे में मनुष्य के अपने अनुमान और अवधारणों के मुताबिक भिन्न-भिन्न विचार पाये जाते रहे हैं, उन में से किसी के अनुसार क़ुरआन के इन शब्दों का अर्थ निकालना सही न होगा।

८ मनुष्य धरती पर किस तरह पैदा हुआ इस विषय में क़ुरआन बताता है कि अल्लाह ने सब से पहले एक मनुष्य को पैदा किया और उसे ज़मीन पर ख़लीफ़ः बनाकर भेजने का निश्चय किया। जब अल्लाह ने अपने इस फ़ैसले को फ़िरिश्तों[*] के सामने रखा तो उन्हों ने अपनी यह उलझन अल्लाह के सामने पेश की कि वह

[*] इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

तुम्हारे पैदा करने वाले के नज़दीक तुम्हारी भलाई है। फिर उस ने तुम्हें क्षमा कर दिया। वही बड़ा तौबः* क़बूल करने वाला और दयाशील है।○

याद करो जब तुम ने कहा था : हे मूसा ! हम तुम्हें मानने वाले नहीं हैं जब तक कि अल्लाह को अपनी आँखों से अपने सामने (तुम से बात-चीत करते) न देख लें; तो उस समय तुम्हारे देखते-देखते तुम्हें बिजली ने आ दबोचा।○ तुम बे-जान हो कर गिर चुके थे परन्तु हम ने तुम्हें जिला उठाया, कि शायद तुम कृतज्ञता दिखलाओ।○

हम ने तुम पर बदलियों की छाया की[15] तुम्हारे खाने के लिए मन्न* और सल्वा*[16] उतारा, और यह कह दिया कि जो पाक-साफ़ चीज़ें हम ने तुम्हें दी हैं उन्हें खाओ— परन्तु तुम्हारे पूर्वजों ने हमारा कुछ नहीं बिगाड़ा, बल्कि उन्हों ने आप अपने ही ऊपर ज़ुल्म किया।○

याद करो जब हम ने कहा था, कि इस बस्ती में (जो तुम्हारे सामने है) दाख़िल हो जाओ, फिर उस में से जहाँ से चाहो इच्छापूर्वक (मज़े से) खाओ और जब बस्ती के दरवाज़े में क़दम रखना तो तुम्हारे सिर(अल्लाह के सामने)झुके हों और यह कहते जाना, "मालिक ! हम क्षमा चाहते हैं"। हम तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देंगे और सत्कर्मी लोगों पर हम और अधिक कृपा करेंगे।○ परन्तु फिर (हुआ यह कि) जो बात उन से कही गई थी ज़ालिम लोगों ने उसे बदल कर कुछ और कर दिया, तो इन ज़ुल्म करने वालों पर हम ने आसमान से अज़ाब* उतारा, इस लिए कि वे सीमोल्लंघन करते थे।○

याद करो जब मूसा ने अपनी जाति के लिए पानी की प्रार्थना की, तो हम ने कहा कि अपनी लाठी चट्टान पर मारो। सो उस से बारह सोते फूट निकले[17] और हर गिरोह ने जान लिया कि उस के पानी लेने की जगह कौन-सी है। (उस समय यह समझा दिया गया था कि) अल्लाह की दी हुई रोज़ी खाओ-पियो, और ज़मीन में फ़साद* (अशान्ति) न फैलाते फिरो।○

याद करो जब तुम ने कहा था : हे मूसा ! हम एक ही तरह के खाने पर सन्तोष नहीं कर सकते;[18] अपने रब* से प्रार्थना करो कि हमारे लिए भूमि की उपज — साग, ककड़ी, गेहूँ, मसूर, प्याज़ आदि संचित करे। मूसा ने कहा : क्या तुम एक उत्तम वस्तु को तुच्छ वस्तु से बदलना चाहते हो ?[19] अच्छा किसी नगर में जा रहो, तुम जो-कुछ माँगते हो, वहाँ मिल जायगा। फलतः ज़िल्लत (अपमान एवं तिरस्कार) और मुहताजी उन पर डाल दी गई और उन्हों ने अपने सिर अल्लाह का ग़ज़ब (प्रकोप) ले लिया। ऐसा इस लिए हुआ कि वे अल्लाह की आयतों* का इन्कार करते थे और नबियों* को नाहक़ क़त्ल करते थे। ऐसा इस लिए हुआ कि उन्हों ने नाफ़रमानी की और सीमा से आगे बढ़ने लगे।○

---

१५ दे० बाइबिल 'ज़बूर' (Ps.) १०५ : ३९।

१६ दे० बाइबिल 'ख़ुरूज' (Ex.) १६ : १३-१५, ३५, 'गिन्ती' (Nubmbers) ११ : ६-९, ३१, इस्तिस्ना (Dut.) ८ : ३, १६, 'यशूअ' (Joshua) ५ : १२, 'नहमियाह' (Nehmiah) ९ : २०, 'ज़बूर' (Ps.) ७८ : २४, २७, २८ और १०५ : ४०, 'यूहन्ना' (John) ६ : ३१, ४९।

१७ दे० 'ज़बूर' Ps.) ७८ : १५-१६, २०।

१८ मन्न* और सल्वा* की ओर संकेत है जो बनी इसराईल* को अल्लाह की ओर से खाने को मिल रहा था।

१९ अर्थात् जिस महान-उद्देश्य के लिए तुम से जंगल की ख़ाक छनाई जा रही है उसे छोड़ कर तुम खाने-पीने पर रीझ रहे हो।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

निसन्देह ईमान* लाने वाले हों या यहूदी हों या साबई,* – जो भी सच्चे दिल से अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान* लाया[20] और अच्छे कर्म करता रहा—ऐसे लोगों का बदला (कर्म-फल) उन के रब* के पास है, उन्हें न तो कोई भय होगा और न वे दुःखी होंगे। ○

याद करो, जब हम ने तूर (की चोटियाँ) को तुम पर उठाते हुये, तुम से वचन लिया था (और कहा था) कि जो (किताब) हम ने तुम्हें दी है, उसे मज़बूती के साथ थामना, और जो कुछ (आदेश) उस में (लिखा) है उन्हें याद रखना, कदाचित् तुम (दुनियाँ में गुमराही से और आख़िरत* में अल्लाह के अज़ाब से) बच सको। ○ परन्तु इस के बाद फिर, तुम अपने वादे से फिर गये, तो यदि तुम पर अल्लाह की कृपा और दया न होती तो तुम कभी के तबाह हो चुके होते। ○

तुम्हें अपने उन लोगों का हाल मालूम ही है जो 'सब्त'[21] के मामले में सीमा से आगे बढ़ गये थे, हम ने उन से कह दिया : बन्दर हो ६५ जाओ धिक्कारे और फिटकारे हुये। ○ इस तरह हम ने इसे उस समय के लोगों के लिए भी और बाद में आने वालों के लिए भी शिक्षा-सामग्री (चेतावनी), और डर रखने वालों के लिए नसीहत बना दिया। ○

يٰمُوسٰى لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى نَرَى اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْكُمُ الصّٰعِقَةُ وَاَنْتُمْ
تَنْظُرُوْنَ ۝ ثُمَّ بَعَثْنٰكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝ وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ
الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ؕ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ وَمَا
ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝ وَاِذْ قُلْنَا ادْخُلُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوْا
مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُوْلُوْا حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطٰيٰكُمْ
وَسَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَنْزَلْنَا
عَلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ۝ وَاِذِ اسْتَسْقٰى
مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ فَقُلْنَا اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ؕ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ
عَيْنًا ؕ قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ؕ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا مِنْ رِّزْقِ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا
فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ۝ وَاِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نَّصْبِرَ عَلٰى طَعَامٍ وَّاحِدٍ
فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ مِنْۢ بَقْلِهَا وَقِثَّآئِهَا وَفُوْمِهَا
وَعَدَسِهَا وَبَصَلِهَا ؕ قَالَ اَتَسْتَبْدِلُوْنَ الَّذِيْ هُوَ اَدْنٰى بِالَّذِيْ هُوَ خَيْرٌ ؕ
اِهْبِطُوْا مِصْرًا فَاِنَّ لَكُمْ مَّا سَاَلْتُمْ ؕ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ
وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ
النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالنَّصٰرٰى وَالصّٰبِـِٕيْنَ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ
وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ

याद करो जब मूसा ने अपनी जाति वालों से कहा कि अल्लाह हुक्म देता है कि तुम एक गाय ज़ब्ह करो, कहने लगे : क्या तुम हम से हँसी करते हो? (मूसा ने) कहा : मैं इस से अल्लाह की पनाह माँगता हूँ कि मूर्खों सरीखी बातें करूँ। ○ बोले : अच्छा अपने रब* से निवेदन करो कि वह हमें साफ़-साफ़ बता दे कि वह (गाय) कैसी हो? (मूसा ने) कहा : वह कहता है कि वह गाय ऐसी होनी चाहिए जो न बूढ़ी हो न बछिया; बस इन दोनों के बीच पक्की उम्र की हो; अब तुम्हें उस आज्ञा का पालन करना चाहिए जो तुम्हें दी जा रही है। ○ कहने लगे : अपने रब* से निवेदन करो कि वह यह भी बता दे कि उस का रंग कैसा हो।

---

२० अन्तिम दिन (आख़िरत*) पर ईमान* लाने का अर्थ यह है कि मनुष्य अल्लाह से डरते हुये कोई काम ऐसा न करे जो अल्लाह की इच्छा के विरुद्ध हो। आगे सूरः अल-अनआम आयत ६२ में यह बात आ रही है कि आख़िरत पर सच्चा ईमान लाने वाले वही हैं जो क़ुरआन पर ईमान लाते हैं, इस तरह यह बात साफ़ हो जाती है कि अल्लाह के यहाँ नजात (मोक्ष) पाने के लिए अन्तिम रसूल* हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर ईमान लाना ज़रूरी है।

२१ 'सब्त' शनिवार को कहते हैं। बनी इसराईल* के लिए यह दिन आराम और इबादत* के लिए ख़ास कर दिया गया था। इस दिन सांसारिक कार्य विशेष रूप से शिकार बिल्कुल वर्जित था। (मुक़ाबिले (Comparison) के लिए दे० बाइबिल 'ख़ुरूज' (Exodus) २०:८-१०; 'अहबार' (Leviticus) १६:३, और 'लूक़ा' (Luka) ६:६)। जब बनी इसराईल* पर नैतिक एवं धार्मिक पतन के दिन आये तो वे खुले तौर पर इस दिन की मर्यादा भंग करने लगे। इस का कुछ विवरण सूरः अल-आराफ़ में आयगा।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُم
بِقُوَّةٍ وَاذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝ ثُمَّ تَوَلَّيْتُم مِّن بَعْدِ ذَٰلِكَ فَلَوْلَا
فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَكُنتُم مِّنَ الْخَاسِرِينَ ۝ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ
الَّذِينَ اعْتَدَوْا مِنكُمْ فِي السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً خَاسِئِينَ ۝
فَجَعَلْنَاهَا نَكَالًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهَا وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ۝
وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَن تَذْبَحُوا بَقَرَةً قَالُوا أَتَتَّخِذُنَا
هُزُوًا قَالَ أَعُوذُ بِاللَّهِ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ ۝ قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ
يُبَيِّن لَّنَا مَا هِيَ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا فَارِضٌ وَلَا بِكْرٌ عَوَانٌ
بَيْنَ ذَٰلِكَ فَافْعَلُوا مَا تُؤْمَرُونَ ۝ قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّن لَّنَا مَا لَوْنُهَا
قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ صَفْرَاءُ فَاقِعٌ لَّوْنُهَا تَسُرُّ النَّاظِرِينَ ۝ قَالُوا
ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّن لَّنَا مَا هِيَ إِنَّ الْبَقَرَ تَشَابَهَ عَلَيْنَا وَإِنَّا إِن شَاءَ
اللَّهُ لَمُهْتَدُونَ ۝ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا ذَلُولٌ تُثِيرُ الْأَرْضَ
وَلَا تَسْقِي الْحَرْثَ مُسَلَّمَةٌ لَّا شِيَةَ فِيهَا قَالُوا الْآنَ جِئْتَ بِالْحَقِّ
فَذَبَحُوهَا وَمَا كَادُوا يَفْعَلُونَ ۝ وَإِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادَّارَأْتُمْ فِيهَا
وَاللَّهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنتُمْ تَكْتُمُونَ ۝ فَقُلْنَا اضْرِبُوهُ بِبَعْضِهَا كَذَٰلِكَ
يُحْيِي اللَّهُ الْمَوْتَىٰ وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝ ثُمَّ قَسَتْ قُلُوبُكُم
مِّن بَعْدِ ذَٰلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ أَوْ أَشَدُّ قَسْوَةً وَإِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ

(मूसा ने) कहा : वह कहता है कि गाय पीले रँग की होनी चाहिए। गहरे तेज़ रँग की कि देखने वालों को भली लगे। ○ बोले : अपने रब* से निवेदन करो कि वह और ज़्यादा खोल कर बता दे कि वह कैसी हो। क्योंकि (बहुत-सी) गायें हमें एक-दूसरे से मिलती-जुलती मालूम होती हैं; अल्लाह ने चाहा, तो अब हम उस का पता पा लेंगे। ○ (मूसा ने) कहा : वह कहता है कि वह गाय ऐसी हो जिस से काम न लिया जाता हो; न वह ज़मीन जोतने का कार्य करती हो न खेत को पानी देती हो; बिलकुल बे-ऐब और दाग़-धब्बे से रहित हो। बोले : अब तुम ने ठीक-ठीक (और साफ़) बात बता दी है। फिर उन्हों ने उसे ज़ब्ह किया, जब कि वे ऐसा करने वाले दीख न पड़ते थे[22]। ○

याद करो जब तुम ने एक व्यक्ति को मार डाला था फिर उस के बारे में परस्पर झगड़ने लगे थे। जो बात तुम छिपानी चाहते थे अल्लाह उसे ज़ाहिर करने वाला था। ○ हम ने हुक्म दिया कि उसे इस के एक हिस्से से मारो। इस तरह अल्लाह मुर्दों को ज़िन्दा कर देता है और तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है ताकि तुम समझो। ○ फिर, तुम्हारे दिल कठोर हो गये, पत्थरों की तरह कठोर, या उन से भी अधिक कठोर — पत्थरों में तो कोई ऐसा भी होता है जिस में से सोते फूट निकलते हैं, और उन में कोई ऐसा होता है जो फट जाता है और उस में से पानी बह निकलता है। और उन में कोई ऐसा भी होता है जो अल्लाह के भय से गिर पड़ता है। — और अल्लाह तुम्हारे करतूतों से बे-ख़बर नहीं है। ○

(हे ईमान* लाने वालो!) अब क्या तुम यह आशा रखते हो कि ये तुम्हारी बात मानेंगे? हालाँकि इन में से एक गिरोह की नीति यह रही है कि अल्लाह का कलाम (वाणी) सुना, परन्तु फिर भी समझ-बूझ कर जानते हुये उसे कुछ-का-कुछ कर डाला। ○ जब ये लोग ७ ईमान* लाने वालों से मिलते हैं, तो कहते हैं : हम तो ईमान* ला चुके हैं। और जब एकान्त में एक-दूसरे से मिलते हैं तो कहते हैं : क्या तुम उन्हें वह-कुछ बता देते हो जो अल्लाह ने तुम पर खोला है ताकि (कल) तुम्हारे रब* के सामने वे उस के द्वारा तुम से हुज्जत करें (और तुम से कुछ कहते न बन पड़े)? क्या तुम (कुछ भी) बुद्धि से काम नहीं लेते। ○ क्या ये

२२ बनी इसराईल* जिस देश से निकल कर आये थे वहाँ (मिस्री) जाति का राज्य था जो गाय को अपना देवता समझती थी। बनी इसराईल* चूँकि इस जाति के साथ रहते थे इस लिए शासक जाति के आचार-विचार से वह भी प्रभावित हो चुके थे। गाय ज़ब्ह करने का हुक्म, बनी इसराईल के ईमान* की एक कठिन परीक्षा थी।

क़त्ल के सिलसिले में जब कि हत्यारे का पता न चल रहा हो बनी इसराईल में क़सम लेने का यह तरीक़ा रहा है कि इस अवसर पर गाय ज़ब्ह की जाती थी। और फिर इस (क़ुर्बानी*) के बाद विशेष रीति के साथ क़सम ली जाती थी। दे० बाइबिल 'इस्तिस्ना' (Deut.) २१ : १-८।

* इस का अर्थ आख़िर में लगे हुए पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

لما يتفجر منه الأنهر وإن منها لما يشقق فيخرج منه الماء و
إن منها لما يهبط من خشية الله وما الله بغافل عما تعملون ۝
أفتطمعون أن يؤمنوا لكم وقد كان فريق منهم يسمعون كلم
الله ثم يحرفونه من بعد ما عقلوه وهم يعلمون ۝ وإذا لقوا الذين
آمنوا قالوا آمنا وإذا خلا بعضهم إلى بعض قالوا أتحدثونهم بما
فتح الله عليكم ليحاجوكم به عند ربكم أفلا تعقلون ۝ أولا يعلمون
أن الله يعلم ما يسرون وما يعلنون ۝ ومنهم أميون لا يعلمون
الكتب إلا أماني وإن هم إلا يظنون ۝ فويل للذين يكتبون الكتب
بأيديهم ثم يقولون هذا من عند الله ليشتروا به ثمنا قليلا
فويل لهم مما كتبت أيديهم وويل لهم مما يكسبون ۝ وقالوا
لن تمسنا النار إلا أياما معدودة قل أتخذتم عند الله عهدا فلن
يخلف الله عهده أم تقولون على الله ما لا تعلمون ۝ بلى من كسب
سيئة وأحاطت به خطيئته فأولئك أصحب النار هم فيها
خلدون ۝ والذين آمنوا وعملوا الصلحت أولئك أصحب الجنة هم
فيها خلدون ۝ وإذ أخذنا ميثاق بني إسراءيل لا تعبدون إلا
الله وبالوالدين إحسانا وذي القربى واليتمى والمسكين وقولوا للناس
حسنا وأقيموا الصلوة وآتوا الزكوة ثم توليتم إلا قليلا منكم وأنتم

नहीं जानते कि जो-कुछ ये छिपाते हैं और जो-कुछ ज़ाहिर करते हैं, अल्लाह को सब बातों की ख़बर है। ○ और इन में बे-पढ़े लोग (भी) हैं जिन्हें (अल्लाह की) किताब का कुछ-भी ज्ञान नहीं बस कुछ कामनाओं को लिए बैठे हैं। और निरे भ्रम में पड़े हुए हैं। ○ सो तबाही है उन लोगों के लिए जो अपने हाथ से किताब* लिखते हैं फिर लोगों से कहते हैं, "यह अल्लाह की ओर से है" ताकि उस के द्वारा थोड़ा मूल्य (सांसारिक लाभ) प्राप्त कर लें। उन के हाथों का यह लिखा भी उन के लिए तबाही है और वह भी उन के लिए तबाही है जो वे कमाते हैं। ○ ये (यहूदी*) कहते हैं : (दोज़ख़* की) आग हमें गिन्ती के कुछ दिनों के सिवा छू ही नहीं सकती। उन से पूछो : क्या तुम अल्लाह से कोई वचन ले चुके हो जिस के विरुद्ध वह नहीं जा सकता? या अल्लाह के ज़िम्मे डाल कर ऐसी बात कहते हो जिसे तुम नहीं जानते? ○ क्यों नहीं, जो भी बुरे कर्म करे और अपने गुनाहों में घिर कर रह जाय; तो ऐसे लोग आग (में जाने) वाले (दोज़ख़ी) हैं; वे सदा उसी (दोज़ख़) में रहेंगे। ○ और जो लोग ईमान लाये* और अच्छे कर्म किये : वही जन्नत* (में जाने) वाले हैं। वे सदा उसी (जन्नत) में रहेंगे। ○

याद करो जब हम ने बनी इसराईल* से वचन लिया था कि अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी न करना, माँ-बाप के साथ, नातेदारों के साथ, यतीमों (अनाथों) और मुहताजों के साथ तुम्हारा व्यवहार अच्छा हो, लोगों से भली बात कहना, नमाज़* क़ायम रखना और ज़कात* देते रहना। परन्तु, थोड़े आदमियों को छोड़ कर, तुम-सब (अपने वादे से) फिर गये और तुम मुँह मोड़ने वाले ही लोग हो। ○ याद करो जब हम ने तुम से वचन लिया था कि अपनों का ख़ून न बहाओगे और न अपनों को अपने घरों से निकालोगे। तुम ने (इस का) इक़रार किया था और तुम (स्वयं) इस के गवाह हो। ○ फिर तुम ही लोग हो कि अपने भाई-बन्धु की हत्या करते हो, और अपने ही एक गरोह को उन के घरों से निकालते हो, गुनाह (पाप) और ज़्यादती के साथ उन के विरुद्ध जत्थे-बन्दियाँ करते हो और जब वे पकड़े हुये तुम्हारे पास आते हैं तो फ़िदयः* (अर्थ-दण्ड) दे कर तुम उन्हें छुड़ाते हो, जब कि उन्हें घरों से निकालना ही तुम्हारे लिए हराम था। तो क्या तुम किताब* के एक हिस्से पर ईमान रखते हो और दूसरे का इन्कार करते हो[२३]? फिर तुम में से जो लोग ऐसा करें उन की सज़ा इस के

---

२३ बात यह थी कि यहूदियों* के ख़ानदानों में बड़ी फूट पड़ गई थी। वे परस्पर एक-दूसरे को तंग करते और घरों तक से निकाल देते, परन्तु जब वे कहीं जा कर किसी दुश्मन के फन्दे में फँस जाते, तब उन्हें बे-कली होती और अर्थ-दण्ड दे कर अपने भाई-बन्धुओं को छुड़ाते; और कहते कि चूँकि अल्लाह की किताब में यह हुक्म मौजूद है कि क़ैदियों को अर्थ-दण्ड दे कर छुड़ा लेना चाहिए; इस लिए हम ऐसा करते हैं। इस अवसर पर उन्हें याद दिलाया जा रहा है कि तुम अल्लाह की किताब के अनुसार काम करने का तो यह ढोंग रचाते हो, परन्तु तुम्हें यह याद नहीं रहता कि अल्लाह की किताब में भाई-बन्धुओं को घरों से निकालना मना किया है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सिवा और क्या हो सकती है कि दुनिय
जिन्दगी में ज़लील (अपमानित) हों, और क़िय
के दिन उन्हें कड़े-से-कड़े अज़ाब* की ओ
दिया जाये ? जो-कुछ तुम्हारे करतूत हैं, अ
उन से बे-ख़बर नहीं है। ○ ये वे लोग हैं जि
आख़िरत* बेच कर दुनिया की ज़िन्दगी ख़री
सो न तो उन के अज़ाब में कोई कमी होगी अ
उन्हें कोई मदद पहुँच सकेगी। ○

(हे बनी इसराईल !* तुम्हें राह दिखा
लिए) हम ने मूसा को किताब दी, फिर उस के
लगातार रसूल* भेजे, और मरयम के बेटे ईस
खुली निशानियाँ प्रदान कीं, और 'रूहुल
(पवित्र-आत्मा) से उस की मदद की।
तुम्हारी क्या नीति है कि जब भी कोई रसूल
बातें ले कर तुम्हारे पास आया जो तुम्हारे जी
न भा सकीं, तो तुम अकड़ बैठे, किसी को झुठल
और किसी की हत्या करने लगे ? ○ कहते
हमारे दिल ढके हुए हैं (आप की बातें हमारे दिलों में नहीं बैठ सकतीं, बात यह नहीं
बल्कि उन के कुफ़्र* के कारण उन पर अल्लाह की फिटकार पड़ी है। इस लिए वे कम
ईमान* लाते हैं। ○ और जब कि उन के पास एक किताब अल्लाह की ओर से आई है,
उस (किताब) की तसदीक़ करती है जो उन के पास है। इस से पहले वे स्वयं काफ़िरों*
मुक़ाबिले में विजय की प्रार्थना किया करते थे[२४]। परन्तु जब वह चीज़ आ गई जिसे वे जा
पहचाने हुये हैं तो उन्हों ने उसे मानने से इन्कार कर दिया। सो (ऐसे) काफ़िरों* पर अल्लाह
फिटकार है। ○ क्या ही बुरी चीज़ है जिस के बदले उन्हों ने अपने प्राणों का सौदा किया
अल्लाह ने जो किताब उतारी है उसे ये ज़िद के कारण केवल इस लिए नहीं मानते कि अल्ल
अपना फ़ज़्ल (कृपा) अपने बन्दों में से जिस पर उस ने चाहा, उतार रहा है। सो इन्हों
प्रकोप-पर-प्रकोप अपने सिर ले लिया। और काफ़िरों* के लिए ज़लील व रुसवा करने वा
(अपमान-जनक) अज़ाब है। ○

जब इन से कहा जाता है कि जो-कुछ अल्लाह ने (मुहम्मद पर) उतारा है उस पर ईमान
लाओ, तो कहते हैं, "हम तो उस चीज़ पर ईमान रखते हैं जो हमारे यहाँ (बनी इसराईल मे
उतरी है"। इस के सिवा जो-कुछ है उस का ये इन्कार करते हैं, हालाँकि वह हक़ है और उ

इस तरह उन्हें अपराधी ठहराया गया है कि वे किताब के एक भाग को मानते हैं और एक भाग का इन्कार करते हैं।

२४ यहूदियों को उस नबी* के आने का इन्तज़ार था जिस के प्रकट होने की ख़बर उन्हें हज़रत मूसा अ और बनी इसराईल* के दूसरे नबियों* से मिली थी। वे दुआयें माँगा करते थे कि वह नबी जल्द आये ताकि काफ़िरों* का ज़ोर टूटे और उन्हें काफ़िरों* की ग़ुलामी से छुटकारा मिल जाये। परन्तु वही यहूदी उस नबी के आ जाने पर उस के सब से बड़े दुश्मन बन गये। यहूदी चाहते थे कि आने वाला नबी उन की से पैदा हो, परन्तु जब वह दूसरे घराने में पैदा हुआ, तो उन्हों ने उस का इन्कार कर दिया।*

** आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

قَبْلُ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۞ وَلَقَدْ جَاءَكُمْ مُوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ
مِنْ بَعْدِهِ وَأَنْتُمْ ظَالِمُونَ ۞ وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ خُذُوا
مَا آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ وَاسْمَعُوا ۖ قَالُوا سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَأُشْرِبُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْعِجْلَ
بِكُفْرِهِمْ ۚ قُلْ بِئْسَمَا يَأْمُرُكُمْ بِهِ إِيمَانُكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۞ قُلْ إِنْ
كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْآخِرَةُ عِنْدَ اللَّهِ خَالِصَةً مِنْ دُونِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ
إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۞ وَلَنْ يَتَمَنَّوْهُ أَبَدًا بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ
بِالظَّالِمِينَ ۞ وَلَتَجِدَنَّهُمْ أَحْرَصَ النَّاسِ عَلَىٰ حَيَاةٍ وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا ۚ
يَوَدُّ أَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ أَلْفَ سَنَةٍ وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهِ مِنَ الْعَذَابِ أَنْ يُعَمَّرَ ۗ
وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ۞ قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِجِبْرِيلَ فَإِنَّهُ نَزَّلَهُ عَلَىٰ
قَلْبِكَ بِإِذْنِ اللَّهِ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى وَبُشْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ ۞
مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِلَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَرُسُلِهِ وَجِبْرِيلَ وَمِيكَالَ فَإِنَّ اللَّهَ عَدُوٌّ
لِلْكَافِرِينَ ۞ وَلَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ ۖ وَمَا يَكْفُرُ بِهَا إِلَّا الْفَاسِقُونَ ۞
أَوَكُلَّمَا عَاهَدُوا عَهْدًا نَبَذَهُ فَرِيقٌ مِنْهُمْ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۞ وَ
لَمَّا جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ مُصَدِّقٌ لِمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيقٌ مِنَ الَّذِينَ
أُوتُوا الْكِتَابَ كِتَابَ اللَّهِ وَرَاءَ ظُهُورِهِمْ كَأَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۞ وَاتَّبَعُوا مَا تَتْلُو
الشَّيَاطِينُ عَلَىٰ مُلْكِ سُلَيْمَانَ ۖ وَمَا كَفَرَ سُلَيْمَانُ وَلَٰكِنَّ الشَّيَاطِينَ كَفَرُوا
يُعَلِّمُونَ النَّاسَ السِّحْرَ وَمَا أُنْزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هَارُوتَ وَمَارُوتَ ۚ

की तसदीक़ करता है जो उन के पास है। उन से कहो कि यदि तुम (अपनी ही किताब पर) ईमान रखने वाले हो तो इस से पहले अल्लाह के नबियों* की (जो तुम्हारी ही जाति में पैदा हुये थे) क्यों हत्या करते थे? ○ मूसा तुम्हारे पास (कैसी-कैसी) खुली निशानियाँ ले कर आया फिर भी तुम उस के (पीठ) पीछे ज़ालिम बन कर बछड़े को देवता बना बैठे। ○ याद करो जब हम ने तूर* (की चोटियों) को तुम पर उठाते हुये, तुम से वचन लिया था, (और कहा था) कि जो (किताब) हम ने तुम्हें दी है, मज़बूती के साथ थाम लो (और उस पर जम जाओ), और (कान लगा कर) सुनो (और मानो), तो उन्होंने कहा कि हम ने सुना और नाफ़रमानी की। उन के कुफ़्र* के कारण उन के दिलों में बछड़ा बसा हुआ था। कहो; यदि तुम (तौरात* पर) ईमान* रखने वाले हो तो यह कितनी बुरी बातें हैं जिस का हुक्म तुम्हारा ईमान तुम्हें देता है। ○

(उन से) कहो : अल्लाह के यहाँ यदि सच-मुच आख़िरत* का घर, सारे लोगों को छोड़ कर केवल तुम्हारे ही लिए है, तो तुम मृत्यु की कामना करो, यदि तुम (अपने विचार में) सच्चे हो। ○ परन्तु अपने हाथों इन्होंने जो-कुछ (कमा कर) भेजा है उस के कारण ये कभी उस की

९५ कामना न करेंगे। अल्लाह इन ज़ालिमों को भली-भाँति जानता है। ○ तुम पाओगे कि जीवित रहने के सब लोगों से अधिक लालची यही हैं, उन लोगों से भी अधिक जिन्हों ने शिर्क किया है। इन का प्रत्येक व्यक्ति यह चाहता है कि हज़ार वर्ष जीता रहे। हालाँकि यदि वे (लम्बी) आयु पायें भी तो भी यह चीज़ उन्हें अज़ाब से बचाने वाली नहीं है। ये जो-कुछ भी करते हैं अल्लाह उसे देखता है। ○

हे नबी!* कह दो: जो-कोई जिबरील* का दुश्मन है तो (उसे मालूम होना चाहिए कि) उस ने तो अल्लाह ही के हुक्म से इस (क़ुरआन) को तुम्हारे दिल पर उतारा है, जो उन (किताबों) की तसदीक़ करता है जो इस के पहले आई हैं, और ईमान वालों के लिए हिदायत* (मार्ग-दर्शन) और ख़ुश-ख़बरी (बन कर आया) है; ○ जो-कोई अल्लाह, और उस के फ़िरिश्तों* और उस के रसूलों*, और जिबरील* और मीकाईल* का दुश्मन हो तो ऐसे काफ़िरों का दुश्मन अल्लाह है। ○

हम ने तुम्हारी ओर खुली-खुली आयतें* उतारी हैं, और उन का इन्कार केवल वही लोग करते हैं जो मर्यादोल्लंघन करने वाले हैं। ○ क्या जब भी इन्हों ने कोई वचन दिया तो इन के किसी-न-किसी वर्ग ने उसे भंग कर दिया! बल्कि इन में ज़्यादा

१०० ऐसे ही निकलेंगे, जो ईमान* नहीं लाते। ○ जब भी इन के पास अल्लाह की ओर से कोई रसूल* आया जो उस (किताब) की तसदीक़ करने वाला था जो उन के पास थी तो इन

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

يُعَلِّمٰنِ مِنْ اَحَدٍ حَتّٰى يَقُوْلَآ اِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ فَيَتَعَلَّمُوْنَ مِنْهُمَا
مَا يُفَرِّقُوْنَ بِهٖ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهٖ وَمَا هُمْ بِضَآرِّيْنَ بِهٖ مِنْ اَحَدٍ اِلَّا بِاِذْنِ
اللّٰهِ وَيَتَعَلَّمُوْنَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَلَقَدْ عَلِمُوْا لَمَنِ اشْتَرٰىهُ مَا لَهٗ
فِى الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهٖۤ اَنْفُسَهُمْ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ○
وَلَوْ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَمَثُوْبَةٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ خَيْرٌ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ○
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا وَقُوْلُوا انْظُرْنَا وَاسْمَعُوْا وَلِلْكٰفِرِيْنَ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ○ مَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَلَا الْمُشْرِكِيْنَ اَنْ
يُّنَزَّلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ خَيْرٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَاللّٰهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ وَاللّٰهُ
ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ○ مَا نَنْسَخْ مِنْ اٰيَةٍ اَوْ نُنْسِهَا نَاْتِ بِخَيْرٍ مِّنْهَآ اَوْ
مِثْلِهَا اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ○ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِىٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ○ اَمْ
تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَسْئَلُوْا رَسُوْلَكُمْ كَمَا سُئِلَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ وَمَنْ يَّتَبَدَّلِ
الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ○ وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ
لَوْ يَرُدُّوْنَكُمْ مِّنْ بَعْدِ اِيْمَانِكُمْ كُفَّارًا حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ اَنْفُسِهِمْ مِّنْ
بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ فَاعْفُوْا وَاصْفَحُوْا حَتّٰى يَاْتِىَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ اِنَّ اللّٰهَ
عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ○ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَمَا تُقَدِّمُوْا
لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ○

में से एक गरोह ने *जिन्हें किताब दी गई थी* अल्लाह की किताब को इस तरह पीछे डाल दिया जैसे वे कुछ जानते ही नहीं, ○ और उस चीज़ के पीछे पड़ गये जिसे शैतान* सुलैमान की हुकूमत का नाम ले कर पेश करते थे। हालांकि सुलैमान ने *कोई कुफ़्र* नहीं किया; बल्कि कुफ़्र तो उन शैतानों** ने किया जो लोगों को जादू सिखाते थे — और (उस चीज़ में पड़े) जो बाबिल में दो फ़िरिश्तों* हारूत और मारूत पर उतारी गई थी। हालांकि वे (फ़िरिश्ते) जब भी किसी को सिखाते, तो यह साफ़ कह देते थे कि हम तो *(तुम्हारे लिए)* बस एक परीक्षा हैं, तो तुम (इसे सीख कर) कुफ़्र में* न पड़ना। फिर भी लोग उन से वह चीज़ सीखते जिस के द्वारा पति-पत्नी में फूट डाल सकें—हालांकि वे उस से अल्लाह के हुक्म के बिना किसी को कोई हानि नहीं पहुँचा सकते थे— और वे ऐसी चीज़ सीखते थे जो उन के लिए हानिकारक थी, लाभदायक न थी। और वे भली-भाँति जानते थे कि जो-कोई इस चीज़ का ग्राहक हुआ उस के लिए आख़िरत* में कोई हिस्सा नहीं। क्या ही बुरी चीज़ है जिसके बदले उन्हों ने अपने प्राणों का सौदा किया, क्या ही अच्छा होता कि वे इस को जानते। ○ यदि वे ईमान* लाते और अल्लाह की अवज्ञा से बचते और उस की ना-ख़ुशी से डरते, तो अल्लाह के यहाँ जो बदला मिलता वह (उन के लिए) कहीं अच्छा था, क्या ही अच्छा होता कि वे इस को जानते। ○

ऐ ईमान लाने वालो!* "राइना" न कहा करो इस की जगह "उनज़ुरना" कहो[२५]। और (ध्यान-पूर्वक बातों को) सुनो। काफ़िरों* के लिए तो दुःख देने वाला अज़ाब* है। ○ कुफ़्र* करने वाले चाहे किताब वाले* हों या मुशरिक* हों, कोई नहीं चाहता कि तुम्हारे रब* की ओर से तुम पर कोई भलाई उतरे। परन्तु अल्लाह जिसे चाहता है अपनी रहमत (दयालुता) के लिए *ख़ास कर लेता है, और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल* (कृपा) वाला है। ○

हम जो कोई आयत* मन्सूख़ (निरस्त) कर देते हैं या भुलवा देते हैं,[२६] तो (उस के बदले) उस से अच्छी या उस जैसी (आयत) लाते हैं। क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह हर

---

२५ 'राइना' और 'उन्ज़ुरना' का अर्थ एक ही होता है। नबी सल्ल० से बातचीत करते समय जब यह कहने की आवश्यकता होती कि तनिक ठहरिए, हमें बात समझ लेने दीजिए तो 'राइना' कहा जाता था अर्थात् हमारी रिआयत कीजिए, हमारी बात सुन लीजिए। यहूदी इस मौक़े पर इस का उच्चारण 'राईना' करते जिसका अर्थ होता है, "हमारे चरवाहे"। इस से मिलता-जुलता एक शब्द उन की धार्मिक भाषा इब्रानी (Hebrew) में भी था जिस का अर्थ होता था, "सुन तू बहरा हो जाये"। अल्लाह ने मुसलमानों को हुक्म दिया कि वे इस वाक्य को छोड़ कर 'उन्ज़ुरना' कहें, ताकि यहूदियों को शरारत का मौक़ा न मिले।*

२६ भुलवा देने का तात्पर्य यह है कि जिस व्यक्ति के पास अल्लाह की किताब थी उस ने पूरी किताब को या उसके किसी हिस्से को अपनी मूर्खता या शरारत से खो दिया।

• इन का अर्थ जानने के लिए पुस्तक के अन्त में दी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

وقالوا لن يدخل الجنة إلا من كان هودا أو نصارى تلك أمانيهم قل
هاتوا برهانكم إن كنتم صادقين ۝ بلى من أسلم وجهه لله وهو
محسن فله أجره عند ربه ولا خوف عليهم ولا هم يحزنون ۝ وقالت اليهود
ليست النصارى على شيء وقالت النصارى ليست اليهود على شيء وهم
يتلون الكتاب كذلك قال الذين لا يعلمون مثل قولهم فالله يحكم
بينهم يوم القيامة فيما كانوا فيه يختلفون ۝ ومن أظلم ممن منع
مساجد الله أن يذكر فيها اسمه وسعى في خرابها أولئك ما كان لهم أن
يدخلوها إلا خائفين لهم في الدنيا خزي ولهم في الآخرة عذاب عظيم ۝
ولله المشرق والمغرب فأينما تولوا فثم وجه الله إن الله واسع عليم ۝
وقالوا اتخذ الله ولدا سبحانه بل له ما في السماوات والأرض كل له
قانتون ۝ بديع السماوات والأرض وإذا قضى أمرا فإنما يقول له كن
فيكون ۝ وقال الذين لا يعلمون لولا يكلمنا الله أو تأتينا آية كذلك
قال الذين من قبلهم مثل قولهم تشابهت قلوبهم قد بينا الآيات
لقوم يوقنون ۝ إنا أرسلناك بالحق بشيرا ونذيرا ولا تسأل عن أصحاب
الجحيم ۝ ولن ترضى عنك اليهود ولا النصارى حتى تتبع ملتهم قل
إن هدى الله هو الهدى ولئن اتبعت أهواءهم بعد الذي جاءك من العلم ما لك
من الله من ولي ولا نصير ۝ الذين آتيناهم الكتاب يتلونه

चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला (सर्वशक्तिमान्) है ? ○ क्या तुम नहीं जानते कि आसमानों और ज़मीन का राज्य अल्लाह ही के लिए है; और अल्लाह के सिवा तुम्हारा न कोई संरक्षक-मित्र है और न सहायक। ○

फिर क्या तुम अपने रसूल* से (उसी प्रकार से) सवाल करना चाहते हो जैसे इस से पहले मूसा से सवाल किया जा चुका है ? हालांकि जिस किसी ने ईमान* के बदले कुफ़्र* (का रास्ता) अपनाया, वह सन्मार्ग से भटक गया। ○ किताब वालों* में से बहुतेरे अपने दिलों की जलन (ईर्ष्या) से यह चाहते हैं कि किसी तरह तुम्हारे ईमान* के बाद फ़िर तुम्हें काफ़िर* बना दें, जब कि सच्चाई खुल कर उन के सामने आ गई है। तुम क्षमा से काम लो और जाने दो (कुछ भी ध्यान में न लाओ); यहाँ तक कि अल्लाह का फ़ैसला आ जाये। निस्सन्देह अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला (सर्वशक्तिमान) है। ○ नमाज़ क़ायम* रखो, और ज़कात* देते रहो; तुम अपने लिए जो भलाई (कमा कर) आगे भेजोगे, उसे अल्लाह के यहाँ

११० पाओगे। जो-कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उसे देखता है। ○

इन (किताब वालों)* का कहना है कि कोई व्यक्ति जन्नत* में न जायेगा जब तक कि वह यहूदी* न हो या (ईसाइयों के विचार में) ईसाई* न हो। यह उन की (निरी) कामनायें हैं। (उन से) कहो : यदि तुम सच्चे हो तो अपनी दलील पेश करो। ○ क्यों नहीं, जो-कोई भी अपने-आप को पूरे भक्ति-भाव के साथ अल्लाह के आगे झुका दे, उस के लिए उस के रब* के पास उस का बदला है; ऐसे लोगों के लिए न कोई भय की बात है और न वे दुःखी होंगे। ○

यहूदी* कहते हैं, "ईसाई* किसी बुनियाद पर नहीं हैं"। ईसाई* कहते हैं, "यहूदी* किसी बुनियाद पर नहीं हैं"; हालांकि वे (दोनों ही) किताब* पढ़ते हैं। —इसी तरह की बात उन लोगों ने भी कही जिन के पास (किताब का) कोई ज्ञान नहीं है। ये लोग जिस बात में विभेद करते हैं उस का फ़ैसला अल्लाह क़ियामत* के दिन कर देगा। ○

उस से (बढ़ कर) ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह की मसजिदों में उस के नाम की याद से रोके, और उन्हें उजाड़ने का प्रयत्न करे ? इन लोगों को तो कभी निर्भय (ढीठ) हो कर उन (उपासना-घरों) में क़दम भी नहीं रखना चाहिए था (अतः जाते आदर के साथ डरते हुए जाते)। इन के लिए दुनियाँ में ज़िल्लत (अपमान) है और आख़िरत* में इन के लिए बड़ा अज़ाब* है। ○

पूर्व और पश्चिम (सब) अल्लाह (ही) के हैं, जिस ओर भी तुम मुँह करो; उसी ओर

११५ अल्लाह का रुख़ होगा। निस्सन्देह अल्लाह (बड़ी) समाई वाला और (सब-कुछ) जानने वाला है। ○

इन का कहना है कि अल्लाह ने अपना एक बेटा बनाया है। महिमावान है वह, बल्कि (वास्तव में) आसमानों और ज़मीन में जो-कुछ है सब उसी का है। सब उस के आगे पूरे अदब

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

حق تلاوته أولئك يؤمنون به ومن يكفر به فأولئك هم الخاسرون ۝
يا بني إسرائيل اذكروا نعمتي التي أنعمت عليكم وأني فضلتكم على
العالمين ۝ واتقوا يوما لا تجزي نفس عن نفس شيئا ولا يقبل منها
عدل ولا تنفعها شفاعة ولا هم ينصرون ۝ وإذ ابتلى إبراهيم ربه
بكلمات فأتمهن قال إني جاعلك للناس إماما قال ومن ذريتي قال
لا ينال عهدي الظالمين ۝ وإذ جعلنا البيت مثابة للناس وأمنا و
اتخذوا من مقام إبراهيم مصلى وعهدنا إلى إبراهيم وإسماعيل أن
طهرا بيتي للطائفين والعاكفين والركع السجود ۝ وإذ قال إبراهيم رب
اجعل هذا بلدا آمنا وارزق أهله من الثمرات من آمن منهم بالله
واليوم الآخر قال ومن كفر فأمتعه قليلا ثم أضطره إلى عذاب
النار وبئس المصير ۝ وإذ يرفع إبراهيم القواعد من البيت وإسماعيل
ربنا تقبل منا إنك أنت السميع العليم ۝ ربنا واجعلنا مسلمين لك و
من ذريتنا أمة مسلمة لك وأرنا مناسكنا وتب علينا إنك أنت
التواب الرحيم ۝ ربنا وابعث فيهم رسولا منهم يتلو عليهم آياتك ويعلمهم
الكتاب والحكمة ويزكيهم إنك أنت العزيز الحكيم ۝ ومن يرغب عن
ملة إبراهيم إلا من سفه نفسه ولقد اصطفيناه في الدنيا وإنه في الآخرة
لمن الصالحين ۝ إذ قال له ربه أسلم قال أسلمت لرب العالمين ۝ ووصى

से (झुके हुये) हैं। ○ वह आसमानों और ज़मीन जैसी अनोखी चीज़ों का बनाने वाला है। वह जब किसी बात का फ़ैसला करता है, तो बस उस के लिए कहता है : हो जा। तो वह हो जाती है। ○

जिन्हें ज्ञान नहीं वे कहते हैं : अल्लाह (स्वयं) हम से बात क्यों नहीं करता, या उस की ओर से कोई निशानी हमारे पास क्यों नहीं आती? इसी प्रकार इन से पहले के लोग भी इन ही की-सी बात कह चुके हैं। इन (सब) के दिल एक-से हैं। विश्वास करने वालों के लिए तो हम निशानियाँ खोल-खोल कर बयान कर चुके हैं। ○ (हे पैग़म्बर!)* हम ने तुम्हें हक़ (सच्चाई) के साथ, शुभ सूचना देने वाला और डराने वाला बना कर भेजा है। भड़कती हुई आग (दोज़ख़ में जाने) वालों के बारे में तुम से कुछ न पूछा जायगा। ◡

न यहूदी* तुम से राज़ी होने वाले हैं और न ईसाई*, जब तक तुम उन के तरीक़े (पन्थ) पर न चलने लगो। कह दो : हिदायत* (मार्ग-दर्शन) वही है जो अल्लाह की हिदायत है। और यदि तुम उस ज्ञान के बाद भी जो तुम्हारे पास आ चुका है उन लोगों की (तुच्छ) इच्छाओं पर चले तो अल्लाह के मुक़ाबिले में न तो तुम्हारा कोई संरक्षक-मित्र होगा और न सहायक। ○ जिन १२० लोगों को हम ने किताब दी है, उसे इस तरह पढ़ते हैं जैसा कि उसे पढ़ने का हक़ है, वही लोग उस पर ईमान* लाते हैं[२७]। और जो उस का इन्कार करते हैं, तो (वास्तव में) वही घाटे में हैं। ○

हे बनी इसराईल*! मेरी उस कृपा (नेमत) को याद करो जो मैं ने तुम पर की थी और यह कि मैं ने तुम्हें संसार वालों पर बड़ाई दी थी। ○ और उस दिन से डरो जब कोई किसी के कुछ काम न आयेगा, न उस से (जान-बख़्शी के लिए) कोई बदला क़ुबूल किया जायेगा, न कोई सिफ़ारिश ही किसी के काम आयेगी; और न उन (अपराधियों) की कोई सहायता की जायेगी। ○

और याद करो जब इबराहीम की, उस के रब* ने कुछ बातों में परीक्षा ली, तो उस ने उन्हें पूरा कर दिखाया, इस पर उस ने कहा, "मैं तुझे सब लोगों का नायक बनाने वाला हूँ।" उस ने निवेदन किया, "और मेरी सन्तान में से भी?" उस ने कहा, "(हाँ, परन्तु) मेरे वादे में ज़ालिम शामिल नहीं हैं। ○

और याद करो जब कि हम ने इस घर (काबः)* को लोगों के लिए खिंच-खिंच कर आने की जगह (तीर्थ) और शान्ति (का केन्द्र) ठहराया। और (हुक्म दिया कि) इबराहीम के खड़े होने के स्थान को (स्थाई रूप से) नमाज़* की एक जगह बना लो, और इबराहीम और इसमाईल को ताकीद की कि मेरे इस घर को तवाफ़* (परिक्रमा) और एतकाफ़* और रुकूअ*

---

२७ यह संकेत किताब वालों* में से उन सत्यनिष्ठ व्यक्तियों की ओर है जिन के लिए सच्चाई को स्वीकार करने में कोई चीज़ रुकावट नहीं बन सकी।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

يها ابرهيم بنيه ويعقوب يبني ان الله اصطفى لكم الدين فلا تموتن الا
وانتم مسلمون ۝ ام كنتم شهداء اذ حضر يعقوب الموت اذ قال لبنيه
ما تعبدون من بعدي قالوا نعبد الهك واله ابائك ابرهيم واسمعيل
واسحق الها واحدا ونحن له مسلمون ۝ تلك امة قد خلت لها ما
كسبت ولكم ما كسبتم ولا تسئلون عما كانوا يعملون ۝ وقالوا كونوا هودا
او نصرى تهتدوا قل بل ملة ابرهيم حنيفا وما كان من المشركين ۝
قولوا امنا بالله وما انزل الينا وما انزل الى ابرهيم واسمعيل واسحق
ويعقوب والاسباط وما اوتي موسى وعيسى وما اوتي النبيون من
ربهم لا نفرق بين احد منهم ونحن له مسلمون ۝ فان امنوا
بمثل ما امنتم به فقد اهتدوا وان تولوا فانما هم في شقاق
فسيكفيكهم الله وهو السميع العليم ۝ صبغة الله ومن
احسن من الله صبغة ونحن له عبدون ۝ قل اتحاجوننا في الله
وهو ربنا وربكم ولنا اعمالنا ولكم اعمالكم ونحن له مخلصون ۝ ام
تقولون ان ابرهيم واسمعيل واسحق ويعقوب والاسباط كانوا
هودا او نصرى قل ءانتم اعلم ام الله ومن اظلم ممن كتم شهادة
عنده من الله وما الله بغافل عما تعملون ۝ تلك امة قد خلت
لها ما كسبت ولكم ما كسبتم ولا تسئلون عما كانوا يعملون ۝

५ और सजदः* करने वालों के लिए पाक रखना[२८]।○

और याद करो जब इबराहीम ने कहा, "हे मेरे रब* ! इस नगर (मक्का) को शान्ति-नगर बना दे और इस के निवासियों को फलों की रोज़ी दे, उन को जो अल्लाह और अन्तिम दिन[२९] पर ईमान रखें"। (उस के रब* ने) कहा, "और जो-कोई कुफ़्र* करेगा थोड़ा सुखपूर्वक बरतने तो मैं उसे भी दूँगा,[३०] फिर उसे आग (दोज़ख*) के अज़ाब की ओर घसीट ले जाऊँगा, और वह पहुँचने की बहुत ही बुरी जगह है"।○

याद करो जब कि इबराहीम और इसमाईल इस घर की दीवारें उठा रहे थे (तो प्रार्थना करते जाते थे), "हे हमारे रब* ! इसे हमारी ओर से क़बूल कर ले। वास्तव में तू ही, (सब की) सुनने वाला और (सब-कुछ) जानने वाला है।○ हे हमारे रब* ! हम दोनों को अपना मुस्लिम* (आज्ञाकारी) बना और हमारी सन्तान से भी एक ऐसा गिरोह उठा जो तेरा मुस्लिम* हो, हमें इबादत* के तरीक़े बता, और हमारी तौबः* क़बूल कर। निस्सन्देह तू बड़ा तौबः* क़बूल करने वाला और दयाशील है।○ हे हमारे रब* ! इन लोगों के बीच उन्हीं में से एक ऐसा रसूल*[३१] उठाना जो उन्हें तेरी आयतें* पढ़ कर सुनाये, उन्हें किताब* और हिकमत* की शिक्षा दे और उन की आत्मा को शुद्ध (और उस के विकसित होने का अवसर प्रदान) करे। निस्सन्देह तू अपार शक्ति का मालिक और हिकमत* वाला है।○

अब इबराहीम के तरीक़े (पन्थ) से उस के सिवा कौन मुँह मोड़ सकता है जो बिल्कुल मूर्ख हो गया हो ? इबराहीम को तो हम ने दुनिया में (अपने काम के लिए) चुन लिया था, और

१३० आख़िरत* में वह अच्छे लोगों में से होगा।○ जब उस से उस के रब* ने कहा, "मुस्लिम* होजा।" वह पुकार उठा, "मैं सारे संसार के रब* का मुस्लिम हो गया।" ○ इसी (तरीक़े पर चलने) की वसीयत इबराहीम ने अपने बेटों को की, और (इसी की वसीयत) याक़ूब ने भी (अपनी सन्तान को की), कि मेरे बच्चो ! अल्लाह ने तुम्हारे लिए यही (सच्चा) दीन* पसन्द किया है; सो तुम मरते दम तक मुस्लिम* ही रहना।○ क्या तुम उस समय मौजूद थे जब याक़ूब की मृत्यु का समय आया ? जब उस ने अपने बेटों से पूछा, मेरे बाद तुम किस की इबादत* (बन्दगी) करोगे" ? वे बोले : हम आप के इलाह* (पूज्य) और आप के पूर्वज—

---

२८ अर्थात् इस घर को कूड़ा-करकट ही से नहीं बल्कि शिर्क* (अनेकेश्वर वाद) की गन्दगियों से भी पाक-साफ़ रखा जाये।

२९ देखिए, फ़ुट नोट ५।

३० अर्थात् थोड़े दिनों के लिए सांसारिक सुख और फ़ायदा तो काफ़िरों* को भी पहुँचेगा।

३१ हज़रत मुहम्मद सल्ल० का आगमन वास्तव में हज़रत इबराहीम अ० की इसी प्रार्थना का उत्तर है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

इबराहीम, इसमाईल और इसहाक़—के इलाह* की इबादत* करेंगे जो अकेला इलाह* (पूज्य) है, और हम सब उसी के मुस्लिम* हैं। ○

यह एक गरोह था जो गुज़र चुका। जो-कुछ उस ने कमाया वह उस के लिए है, और जो-कुछ तुम ने कमाया होगा वह तुम्हारे लिए है। तुम से यह न पूछा जायेगा कि वे क्या करते थे। ○

ये (यहूदी और ईसाई) कहते हैं : यहूदी* या ईसाई* हो जाओ, रास्ता पा लोगे। कह दो : नहीं, बल्कि इबराहीम का तरीक़ा (अपनाओ) जो एक (ख़ुदा) का हो रहा था, और वह मुशरिकों* में से न था। ○ कह दो : हम ईमान लाये* अल्लाह पर और उस चीज़ पर जो हमारी ओर उतारी गई और उस पर जो इबराहीम, इसमाईल, इसहाक़, याक़ूब, और (याक़ूब की) सन्तान की ओर उतारी गई, और जो मूसा और ईसा को दी गई, और जो दूसरे सभी नबियों* को उन के रब* की ओर से मिलती रही है। हम उन के बीच कोई अन्तर नहीं करते, और हम उसी के मुस्लिम* (आज्ञाकारी) हैं। ○ १३

फिर यदि ये वैसे ही उन ही चीज़ों पर ईमान* लायें जिन पर तुम ईमान लाये हो, तो उन्हों ने (सीधी) राह पा ली। और यदि मुँह मोड़ें, तो फिर वही विरोध में लीन हैं, तो अल्लाह उन के मुक़ाबिले में काफ़ी होगा। वह (सब-कुछ) सुनता और जानता है। ○

बस अल्लाह का रंग[32]। और अल्लाह से अच्छा किस का रंग होगा? और हम उसी की इबादत* (बन्दगी) करने वाले हैं। ○

(हे नबी*!) उन से कह दो : क्या तुम अल्लाह के बारे में हम से हुज्जत करते हो हालाँकि वही हमारा रब* भी है और तुम्हारा रब भी? हमारा किया हुआ हमारे लिए है और तुम्हारा किया हुआ तुम्हारे लिए। और हम तो बस उसी के हो चुके हैं। ○ या तुम यह कहते हो कि इबराहीम, इसमाईल, इसहाक़ और याक़ूब और उस की सन्तान के लोग यहूदी* थे या ईसाई* थे? कहो : तुम ज़्यादा जानते हो, या अल्लाह? और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जिस के पास अल्लाह की ओर से एक गवाही[33] हो और वह उसे छिपाये? जैसे-कुछ

---

३२ ईसाई-प्रथा के प्रकट होने से पूर्व यहूदियों के यहाँ यह रिवाज था कि जो उन के धर्म को अपनाता उसे स्नान कराते थे। इस स्नान का मतलब उन के यहाँ यह समझा जाता था कि मानो उस के गुनाह धुल गये, और उस ने जीवन का एक नवीन रंग धारण कर लिया। यह प्रथा बाद में ईसाइयों के यहाँ भी चल पड़ी। इस का नाम उन के यहाँ बपतिस्मः (Baptism) है। यह बपतिस्मः बड़ों के अतिरिक्त हर नवजात ईसाई बच्चे को भी दिया जाने लगा। इस बपतिस्मः का उन के यहाँ इतना अधिक महत्व था, मानो सारा दीन-धर्म बस यही है। क़ुरआन कहता है कि इस बपतिस्मः में क्या रखा है जो केवल एक रिवाज बन कर रह गया है। अल्लाह का रंग अपनाओ; अपना स्वाभाविक और यथार्थ धर्म, अर्थात् अल्लाह की बन्दगी और भक्ति का मार्ग ग्रहण करो। यही तुम्हारे कल्याण का एक-मात्र साधन है।

बाइबिल में विभिन्न स्थानों पर विभिन्न प्रकार के बपतिस्मः का उल्लेख किया गया है। मिसाल के लिए दे० 'मत्ता' ३ : ११ और २० : २२–२३ और २१ : २५, 'मरक़ुस' (Mk.) १ : ४ और ११ : ३०; 'लूक़ा' (Lk.) ७ : २६ और १२ : ५०; 'यूहन्ना' (John) १ : २६, ३१; 'आमाल' (Acts) २ : ३८, ४१ और ८ : १२ और १३ : २४; 'रोमियों' ६ : ३; 'कोलोसियों' (Col.) २ : १५; 'इफ़िसियों' (Ephes.) ४ : ५; 'गलतियों' (Gal.) ३ : २७।

३३ तौरात* और इंजील* में हज़रत इबराहीम अ० के तरीक़े को और उन के वास्तविक मैराज को

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

तुम्हारे करतूत हैं अल्लाह उस से बे-खबर नहीं है।○ यह एक गरोह था जो गुज़र चुका; जो-कुछ उस ने कमाया वह उस के लिए है और जो-कुछ तुम ने कमाया होगा वह तुम्हारे लिए है। तुम से यह न पूछा जायेगा कि वे क्या करते थे ?○

†अब मूर्ख लोग कहेंगे : ये (मुसलमान) अपने उस क़िबले* से जिस पर यह पहले थे,[३४] किस कारण फिर गये ? (हे नबी* ! तुम) कहना : पूर्व और पश्चिम सब अल्लाह के हैं। वह जिसे चाहता है सीधा रास्ता दिखाता है।○ और (हे ईमान वालो !) इसी तरह हम ने तुम्हें बीच का (एक उत्तम) गरोह बनाया है, ताकि तुम लोगों पर गवाह हो, और रसूल* तुम पर गवाह हो।

और (अब तक) तुम जिस (क़िबले)* पर थे उसे तो हम ने केवल इस लिए क़िबलः ठहराया था ताकि हम जान लें कि कौन रसूल* के पीछे चलता है, और कौन उलटे-पाँव फिर जाता है। निस्सन्देह यह बात भारी है सिवाय उन लोगों के जिन्हें अल्लाह ने राह दिखाई है। और अल्लाह ऐसा नहीं है कि वह तुम्हारे ईमान* को अकारथ कर दे वह तो मनुष्यों के लिए करुणामय और दयावान है।○

(हे नबी !)* यह तुम्हारे मुँह का बार-बार आसमान की ओर उठना हम देख रहे हैं। सो हम उसी क़िबले* की ओर तुम्हें फेरे देते हैं जिसे तुम पसन्द करते हो तो तुम अपना मुँह मसजिदे हराम* (काबः) की ओर फेर दो, और जहाँ-कहीं भी तुम हो (नमाज़* में) उसी की ओर मुँह किया करो।

जिन लोगों को किताब* दी गई थी वे इस बात को जानते हैं कि यह उन के रब* की ओर से हक़ है। जो-कुछ वे कर रहे हैं अल्लाह उस से बे-खबर नहीं है।○ तुम किताब वालों* के पास कोई भी निशानी ले आओ, तो भी वे तुम्हारे क़िबले* की पैरवी (अनुसरण) नहीं करेंगे और न तुम उन के क़िबले की पैरवी करने वाले हो; और न वे एक-दूसरे के क़िबले* की पैरवी करने करने वाले हैं। और यदि तुम उस ज्ञान के बाद भी जो तुम्हारे पास आ चुका है, उन की (तुच्छ) इच्छाओं पर चले तो, निस्सन्देह तुम ज़ालिमों में से हो जाओगे।○ जिन लोगों को हम ने किताब* दी है वे इस को पहचानते हैं जैसे अपने बेटों को पहचानते हैं। परन्तु उन में से एक गिरोह जानते-बूझते हक़ को छिपा रहा है।○ (यह) हक़ है तुम्हारे रब* की ओर से, सो तुम सन्देह करने वालों में से न होना।○

३५

खोल-खोल कर बयान कर दिया गया था। यहूदियों* और ईसाइयों* की यह जिम्मेदारी थी कि वे लोगों के सामने यथार्थ एव वास्तविक धर्म को पेश करते। हज़रत इबराहीम अ० के मक्का आने, काबः का निर्माण करने, उसे सत्य-धर्म का केन्द्र बनाने और एक नबी (सल्ल०) के आने की प्रार्थना करने आदि सभी बातों का उन्हें ज्ञान दिया था। हज़रत मुहम्मद सल्ल० के व्यक्तित्व और गुणों के बारे में भी उन्हें काफी जानकारी दे दी गई थी। पिछले नबियों* के द्वारा उन से वचन भी लिया गया था कि जब वह नबी आये तो उन का यह कर्तव्य होगा कि दुनिया के सामने उस के नबी होने की गवाही दें।

३४ हिजरत (मक्का के परित्याग) के बाद नबी सल्ल० लग-भग १६-१७ महीने तक बैतुल मक़दिस* की ओर मुँह कर के नमाज़ पढ़ते रहे। फिर काबः* की ओर मुँह कर के नमाज़ पढ़ने का हुक्म आया। बैतुल मक़दिस युरोशलम (Jerusalem) की वह इबादतगाह है जिस का आदर मुसलमान, ईसाई और यहूदी सभी करते हैं। इस पवित्र घर की बुनियाद पैग़म्बर हज़रत दाऊद अ० ने डाली थी।

† यहाँ से दूसरा पारः (*Part*) आरम्भ होता है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

سَيَقُولُ السُّفَهَاءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلَّاهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ الَّتِي
كَانُوا عَلَيْهَا ۚ قُلْ لِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَىٰ
صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝ وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ
عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا ۗ وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ
الَّتِي كُنْتَ عَلَيْهَا إِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَتَّبِعُ الرَّسُولَ مِمَّنْ يَنْقَلِبُ عَلَىٰ
عَقِبَيْهِ ۚ وَإِنْ كَانَتْ لَكَبِيرَةً إِلَّا عَلَى الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ ۗ وَمَا كَانَ اللَّهُ
لِيُضِيعَ إِيمَانَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ ۝ قَدْ نَرَىٰ
تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَاءِ ۖ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضَاهَا ۚ فَوَلِّ وَجْهَكَ
شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ ۗ وَ
إِنَّ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ لَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ
عَمَّا يَعْمَلُونَ ۝ وَلَئِنْ أَتَيْتَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ بِكُلِّ آيَةٍ مَا تَبِعُوا
قِبْلَتَكَ ۚ وَمَا أَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ ۚ
وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ إِنَّكَ إِذًا لَمِنَ
الظَّالِمِينَ ۝ الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمْ ۖ وَ
إِنَّ فَرِيقًا مِنْهُمْ لَيَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا
تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ۝ وَلِكُلٍّ وِجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيهَا ۖ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ ۚ
أَيْنَ مَا تَكُونُوا يَأْتِ بِكُمُ اللَّهُ جَمِيعًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

हर-एक के लिए एक दिशा है वह उसी की ओर मुड़ने वाला है; तो तुम नेकियों (की राह) में अग्रसरता प्राप्त करो। तुम जहाँ-कहीं भी होगे, अल्लाह तुम सब को इकट्ठा कर लेगा। निस्सन्देह अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला (सर्व-शक्तिमान्) है। ○

तुम जहाँ-कहीं से भी निकलो (नमाज़ में) अपना मुँह मसजिदे हराम* (काबः) की ओर फेरा करो, निस्सन्देह यह हक़ है तुम्हारे रब* की ओर से और तुम जो-कुछ भी करते हो अल्लाह उस से बे-ख़बर नहीं है। ○ और जहाँ-कहीं से भी निकलो अपना मुँह (नमाज़ में) मसजिदे-हराम (काबः) की ओर फेरा करो; और जहाँ-कहीं भी तुम हो उसी की ओर मुँह करो ताकि लोगों के लिए तुम्हारे विरुद्ध कोई हुज्जत (का मौक़ा) न रहे,— सिवाय उन लोगों के जो उन में ज़ालिम हैं, तो तुम उन से न डरो, मुझ से डरो! — और इस लिए कि तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दूँ, और इस लिए कि तुम (सीधी) राह पा लो। ○ (ये सारे उपकार हम ने उसी तरह किये) जिस तरह से कि हम ने तुम में तुम ही में से एक रसूल* भेजा, जो तुम्हें हमारी आयतें* सुनाता है, तुम्हारी आत्मा को शुद्ध (करता और उसे विकसित होने का अवसर प्रदान) करता है, और तुम्हें किताब* और हिकमत* की शिक्षा देता है, और तुम्हें वे बातें सिखाता है जो तुम नहीं जानते थे। ○ तो तुम मुझे याद रखो, मैं तुम्हें याद रखूँगा। और मेरा शुक्र अदा करो, अकृतज्ञता न दिखलाओ। ○

हे ईमान वालो!* सब्र* और नमाज़* से मदद लो। निस्सन्देह अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है। ○ और उन लोगों को जो अल्लाह की राह में मारे जायें मुर्दा न कहो, वे तो जीवित हैं, परन्तु तुम्हें इस का पता नहीं चलता। ○ और हम अवश्य तुम्हारी परीक्षा लेंगे कुछ भय से, कुछ भूख से, कुछ जान-माल और पैदावार की हानि से; तो (हे नबी!)* तुम सब्र* करने वालों को शुभ सूचना दे दो। ○ ये वे लोग हैं कि जब उन पर कोई मुसीबत आ पड़ती तो (उसे झेल लेते हैं और) कहते हैं : हम तो अल्लाह के हैं और हम उसी की ओर लौटने वाले हैं। ○ यही वे लोग हैं जिन के लिए उन के रब* के आशीर्वाद हैं और दयालुता। और यही वे लोग हैं जो राह पाये हुये हैं। ○

निस्सन्देह 'सफ़ा' और 'मरवा' (की पहाड़ियाँ) अल्लाह की निशानियों में से हैं। तो जो-कोई अल्लाह के घर (काबः) का हज* करे या उमरः* करे, उस के लिए इस में कोई दोष नहीं कि वह इन के बीच चक्कर लगाये**। जो स्वेच्छा-पूर्वक (ख़ुशी-ख़ुशी) कोई नेकी करे तो अल्लाह क़द्र करने वाला (गुण-ग्राहक) और सब-कुछ जानने वाला है। ○

** 'सफ़ा' और 'मरवा' के बीच चक्कर लगाना हज-सम्बन्धी रीतियों में से एक रीति है। इसे 'सई' कहते

* ये शब्द परिशिष्ट में दी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَإِنَّهُ لَلْحَقُّ
مِنْ رَبِّكَ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ۝ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ
وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ
شَطْرَهُ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ
فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِي وَلِأُتِمَّ نِعْمَتِي عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝
كَمَا أَرْسَلْنَا فِيكُمْ رَسُولًا مِنْكُمْ يَتْلُو عَلَيْكُمْ آيَاتِنَا وَيُزَكِّيكُمْ
وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُمْ مَا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ۝
فَاذْكُرُونِي أَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوا لِي وَلَا تَكْفُرُونِ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا اسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ۝ وَلَا
تَقُولُوا لِمَنْ يُقْتَلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتٌ بَلْ أَحْيَاءٌ وَلَٰكِنْ لَا
تَشْعُرُونَ ۝ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ مِنَ
الْأَمْوَالِ وَالْأَنْفُسِ وَالثَّمَرَاتِ وَبَشِّرِ الصَّابِرِينَ ۝ الَّذِينَ إِذَا
أَصَابَتْهُمْ مُصِيبَةٌ قَالُوا إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ۝ أُولَٰئِكَ
عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِنْ رَبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ ۝
إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ أَوِ
اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يَطَّوَّفَ بِهِمَا وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَإِنَّ
اللَّهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ

जो लोग हमारी उतारी हुई खुली-खुली निशानियों और (हमारी) हिदायत (मार्ग-दर्शन) को छिपाते हैं, जब कि हम उसे लोगों के लिए किताब में खोल कर बयान कर चुके हैं: उन पर अल्लाह की फिटकार पड़ती है और (दूसरे) फिटकारने वाले भी उन्हें फिटकारते हैं। ○ परन्तु जिन लोगों ने तौबः* कर ली और (अपने को) सुधार लिया और (जो कुछ छिपाते थे उसे) साफ़ तौर पर बयान कर दिया, तो मैं उन की तौबः* क़बूल करता हूँ। और मैं बड़ा तौबः क़बूल करने वाला और दया करने वाला हूँ। ○

निस्सन्देह जिन लोगों ने कुफ़्र* किया, और कुफ़्र की हालत ही में मर गये; उन पर अल्लाह की और फ़िरिश्तों* की और सारे मनुष्यों की फिटकार है। ○ इसी (हालत) में वे सदा रहेंगे। न उन का अज़ाब* हल्का किया जायेगा और न उन्हें मुहलत ही मिलेगी। ○

तुम्हारा इलाह* (पूज्य) अकेला इलाह* है; उस दयावान और कृपाशील के सिवा कोई भी इलाह* नहीं है। ○ निस्सन्देह आसमानों और ज़मीन की बनावट में, रात-दिन के बारी-बारी एक-दूसरे के बाद आने में, उन जहाज़ों में जो समुद्र में लोगों के काम आने वाली चीज़ें ले कर चलते हैं, (वर्षा के) उस पानी में जिसे अल्लाह ने आसमान से उतारा, फिर उस के द्वारा भूमि को उस के मुरदा हो जाने के पीछे जीवित किया, हर प्रकार के जीव-जन्तु में जिसे उस ने उस (ज़मीन) में फैलाया, हवाओं के फेरने में, और उन बादलों में जो आसमान और ज़मीन के बीच काम पर लगा रखे गये हैं: उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो बुद्धि से काम लेते हैं। ○ और लोगों में कितने ही ऐसे हैं जो दूसरों को अल्लाह के बराबर ठहराते हैं, वे उन से ऐसा प्रेम करते हैं जैसा प्रेम अल्लाह से करना चाहिए — और जो ईमान वाले* हैं उन्हें तो सब से बढ़ कर प्रेम अल्लाह ही से होता है। — क्या अच्छा होता कि इन ज़ालिम लोगों को सुझाई देता जो उस समय सुझाई देगा जब अज़ाब* उन के सामने होगा, कि सारी शक्ति (और अधिकार) अल्लाह ही के पास है, और यह कि अल्लाह कड़ा अज़ाब* देने वाला है। ○ जब (वह अज़ाब* देगा, उस दिन) वे लोग जिन के पीछे लोग चले थे अपने अनुयायियों से विरक्त हो जायेंगे, और वे (अपनी आँखों से) अज़ाब देख रहे होंगे; और उन के आपस के सारे नाते टूट चुके होंगे। ○ और वे लोग जो (दुनियाँ में) उन के पीछे चले थे कहेंगे: क्या अच्छा होता कि हमें एक बार (फिर दुनियाँ में) लौटना होता, तो जिस तरह (आज) ये हम से विरक्त हो रहे हैं हम भी इन से विरक्त हो जाते। इस तरह पश्चाताप के रूप में अल्लाह उन का किया-धरा उन्हें दिखायेगा, और वे आग (दोज़ख़)* से कदापि छुटकारा पाने वाले नहीं। ○

१६५

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

وَالْهُدٰى مِنْ بَعْدِ مَا بَيَّنّٰهُ لِلنَّاسِ فِى الْكِتٰبِ اُولٰٓئِكَ يَلْعَنُهُمُ
اللّٰهُ وَيَلْعَنُهُمُ اللّٰعِنُوْنَ ۙ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا وَبَيَّنُوْا فَاُولٰٓئِكَ اَ
تُوْبُ عَلَيْهِمْ وَاَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ○ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا
وَهُمْ كُفَّارٌ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ
اَجْمَعِيْنَ ○ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ
يُنْظَرُوْنَ ○ وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ
اِنَّ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَ
الْفُلْكِ الَّتِيْ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ
السَّمَآءِ مِنْ مَّآءٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ
دَآبَّةٍ وَّتَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ
لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ○ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّتَّخِذُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
اَنْدَادًا يُّحِبُّوْنَهُمْ كَحُبِّ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ وَلَوْ
يَرَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اِذْ يَرَوْنَ الْعَذَابَ اَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا وَّ
اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعَذَابِ ○ اِذْ تَبَرَّاَ الَّذِيْنَ اتُّبِعُوْا مِنَ الَّذِيْنَ
اتَّبَعُوْا وَرَاَوُا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْاَسْبَابُ ○ وَقَالَ الَّذِيْنَ
اتَّبَعُوْا لَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّاَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوْا مِنَّا كَذٰلِكَ
يُرِيْهِمُ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ حَسَرٰتٍ عَلَيْهِمْ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنَ

लोगो ! ज़मीन की चीज़ों में से जो हलाल* और पाक हैं उन्हें खाओ, और शैतान* के क़दमों का अनुसरण न करो। वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है।○ वह तो तुम्हें बुरी और अश्लील बातों का हुक्म देता है, और यह (सिखाता है) कि तुम अल्लाह के ज़िम्मे डाल कर ऐसी बातें कहो जिन के बारे में तुम कुछ नहीं जानते (कि ये अल्लाह की कही हुई हैं)।○

उन से जब कहा जाता है कि अल्लाह ने जो-कुछ उतारा है उस पर चलो, तो कहते हैं : नहीं, हम तो उस पर चलेंगे जिस पर हम ने अपने पूर्वजों को पाया है। क्या उस दशा में भी (वे उन्हीं के पीछे चलेंगे) जब कि न वे कुछ बुद्धि से काम लेते रहे हों और न (सीधी) राह पा सके हों ? ○ जिन लोगों ने कुफ़्र* किया उन की मिसाल ऐसी है जैसे कोई (चरवाहा) उन (चौपायों) को पुकार रहा हो जो पुकार और आवाज़ के सिवा कुछ भी नहीं सुनते। ये बहरे हैं, गूँगे हैं और अन्धे हैं, इस लिए कोई बात इन की समझ में नहीं आती।○

हे ईमान लाने* वालो ! जो पाक चीज़ें हम ने तुम्हें प्रदान की हैं उन्हें खाओ और अल्लाह का शुक्र अदा करो, यदि (वास्तव में) तुम उसी की बन्दगी कर रहे हो।○ उस ने तुम पर केवल मुरदार को, ख़ून को, सूअर के मांस को,[३६] और जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो, हराम ठहराया है। फिर जो-कोई मजबूर हो जाये (और जान बचाने के लिए इन चीज़ों को खाये और वह भी इस प्रकार कि) न तो (इस खाने की) उसे कोई इच्छा हो न वह (ज़रूरत की) हद से आगे बढ़ने वाला हो, तो (इस में) उस पर कोई गुनाह* नहीं। निस्सन्देह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील और दया करने वाला है।○

जो लोग उन (आदेशों) को छिपाते हैं जिन्हें अल्लाह ने अपनी किताब* में उतारा था, और उन के बदले थोड़ा मूल्य (सांसारिक लाभ) प्राप्त करते हैं, वे अपने पेट आग के सिवा किसी और चीज़ से नहीं भर रहे हैं। क़ियामत* के दिन न तो अल्लाह उन से बात करेगा, और न उन्हें (बुराइयों से) पाक करेगा। उन के लिए दुःख देने वाला अज़ाब* है।○ ये वे लोग हैं जिन्हों ने हिदायत* के बदले गुमराही और क्षमा के बदले अज़ाब का सौदा किया। तो आग (दोज़ख़* का अज़ाब झेल लेने) के लिए इन का साहस कितना बढ़ा हुआ है !○ यह इस लिए कि अल्लाह ने तो यह किताब* हक़ के साथ उतारी। परन्तु जिन लोगों ने किताब* (के आदेशों) में विभेद पैदा किया वे विरोध में बहुत दूर जा पड़े हैं।○

नेकी यह नहीं है कि (बस) तुम अपने चेहरे पूर्व या पश्चिम की ओर कर लो; बल्कि नेकी यह है

३६ यहाँ सारे ही जानवरों को सामने रख कर बात नहीं की जा रही है बल्कि बात केवल उन जानवरों के विषय में की जा रही है जिन के बारे में मुसलमानों, यहूदियों और ईसाइयों के बीच मत-भेद था।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ كُلُوْا مِمَّا فِى الْاَرْضِ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّلَا تَتَّبِعُوْا
خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝ اِنَّمَا يَاْمُرُكُمْ
بِالسُّوْٓءِ وَالْفَحْشَآءِ وَاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ وَاِذَا قِيْلَ
لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَآ اَلْفَيْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ۗ
اَوَلَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ۝ وَمَثَلُ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا كَمَثَلِ الَّذِيْ يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ اِلَّا دُعَآءً وَّنِدَآءً ۗ صُمٌّۢ
بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ
طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَاشْكُرُوْا لِلّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ۝
اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ بِهٖ
لِغَيْرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ الْكِتٰبِ
وَيَشْتَرُوْنَ بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۙ اُولٰٓئِكَ مَا يَاْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ اِلَّا
النَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ
اَلِيْمٌ ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى وَالْعَذَابَ
بِالْمَغْفِرَةِ ۚ فَمَآ اَصْبَرَهُمْ عَلَى النَّارِ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ نَزَّلَ
الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ ۗ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِى الْكِتٰبِ لَفِيْ شِقَاقٍۢ
بَعِيْدٍ ۝ لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ

कि कोई अल्लाह पर, अन्तिम दिन[३७] पर, फ़िरिश्तों* पर, (अल्लाह की) किताब पर और नबियों* पर ईमान* लाये; और (अपना) माल उस का (स्वाभाविक) मोह होने पर भी नातेदारों, यतीमों (अनाथों) और मुहताजों और मुसाफ़िरों और माँगने वालों को दे और गरदनें छुड़ाने (ग़ुलाम आज़ाद कराने) में (ख़र्च करे) । और नमाज़* क़ायम रखे और ज़कात* देता रहे । और जो (लोग ईमान और इन अच्छे कामों के साथ) जब कोई वचन दें तो अपने वचन को पूरा करने वाले हों और तंगी, मुसीबत और युद्ध के समय धैर्य से काम लेने वाले हों, यही लोग हैं जो सच्चे निकले और यही लोग हैं जो अल्लाह की अवज्ञा से बचने वाले और उस की ना-ख़ुशी से डरने वाले हैं । ○

हे ईमान लाने वालो ! मारे गये लोगों के बारे में (ख़ून का बदला लेने में) बराबरी (क़िसास)* तुम्हारे लिए ज़ुरूरी ठहरा दी गई; आज़ाद का (बदला) आज़ाद के बराबर, ग़ुलाम का ग़ुलाम के बराबर, स्त्री का स्त्री के बराबर है[३८] । सो यदि किसी को उस के भाई की ओर से कुछ माफ़ी (क्षमा) मिल जाय तो सामान्य नियम का पालन करना चाहिए और (ख़ून की क़ीमत या अर्थदण्ड की) अदायगी में उत्तम रीति अपनानी चाहिए । यह तुम्हारे रब* की ओर से एक नर्मी और दयालुता है । अब इस के बाद भी जिस किसी ने ज़्यादती की उस के लिए दुख देने वाला अज़ाब है । ○ हे बुद्धि रखने वालो ! तुम्हारे लिए क़िसास* में जीवन है,[३९] आशा है कि तुम (अल्लाह की सीमा का उल्लंघन करने से) बचते रहोगे । ○

तुम्हारे लिए ज़ुरूरी ठहराया गया कि जब तुम में से किसी की मृत्यु का समय आ जाय, और वह अपने पीछे धन छोड़ रहा हो, तो वह माँ-बाप और नातेदारों के लिए सामान्य नियम के अनुसार वसीयत कर जाय । जो लोग अल्लाह की अवज्ञा से बचने वाले और उस की १८० ना-ख़ुशी से डरने वाले हैं उन के लिए (इस हुक्म का पालन करना) ज़ुरूरी है[४०] । ○ फिर

३७ देखिए फुट नोट ५ ।

३८ आज़ाद और ग़ुलाम या स्त्री और पुरुष में से जिस किसी की हत्या की गई हो, ख़ून सब बराबर हैं । अन्तर ख़ून में नहीं बल्कि ख़ून की क़ीमत में है । यदि मारे गये व्यक्ति के वारिस ख़ून की क़ीमत लेने पर राज़ी न हों तो हत्या करने वाले को क़त्ल कर दिया जायेगा, चाहे वह कोई भी हो । इस मामले में आज़ाद और ग़ुलाम स्त्री और पुरुष में कोई भेद नहीं किया जायगा । बल्कि मुस्लिम और अमुस्लिम का भेद भी नहीं करेंगे । और यदि उस व्यक्ति के वारिस जिस की हत्या हुई है ख़ून की क़ीमत ले कर हत्यारे को छोड़ने पर राज़ी हो जायें, तो क़ातिल से ख़ून की क़ीमत दिला कर उसे छोड़ा जा सकता है । यह बात कि आज़ाद, ग़ुलाम, स्त्री और पुरुष में से हर-एक के ख़ून की क्या क़ीमत ली जायगी, तो इसे समाज के सामान्य नियम पर छोड़ दिया है । धर्म-विधान में इन की कोई स्थाई क़ीमत निश्चित नहीं की गई है ।

३९ अर्थात् इस क़ानून से तुम्हारे प्राणों की रक्षा हो सकेगी ।

४० यह आदेश उस समय दिया गया था जब कि मरने वाले की सम्पत्ति के बँटवारे के विषय में कोई

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।*

وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالْكِتٰبِ وَالنَّبِيّٖنَ ۚ وَاٰتَى الْمَالَ عَلٰى حُبِّهٖ ذَوِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ۙ وَالسَّآئِلِيْنَ وَفِي الرِّقَابِ ۚ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ ۚ وَالْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ اِذَا عٰهَدُوْا ۚ وَالصّٰبِرِيْنَ فِي الْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ وَحِيْنَ الْبَاْسِ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ○ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلٰى ؕ اَلْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْاُنْثٰى بِالْاُنْثٰى ؕ فَمَنْ عُفِيَ لَهٗ مِنْ اَخِيْهِ شَيْءٌ فَاتِّبَاعٌ ۢ بِالْمَعْرُوْفِ وَاَدَآءٌ اِلَيْهِ بِاِحْسَانٍ ؕ ذٰلِكَ تَخْفِيْفٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ ؕ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ○ وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيٰوةٌ يّٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ○ كُتِبَ عَلَيْكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ اِنْ تَرَكَ خَيْرًا ۖ ۚ الْوَصِيَّةُ لِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ○ فَمَنْۢ بَدَّلَهٗ بَعْدَ مَا سَمِعَهٗ فَاِنَّمَآ اِثْمُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يُبَدِّلُوْنَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ○ فَمَنْ خَافَ مِنْ مُّوْصٍ جَنَفًا اَوْ اِثْمًا فَاَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ○ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ

जो-कोई इस (वसीयत) को सुनने के बाद उसे बदल डाले, तो (जान लो !) उस का गुनाह उन ही लोगों पर होगा जो उसे बदल डालेंगे। निस्सन्देह अल्लाह (सब-कुछ) सुनने वाला और जानने वाला है। ○ हाँ जिसे किसी वसीयत करने वाले की ओर से किसी कजी या गुनाह का भय हो फिर वह उन (वारिसों) के बीच (वसीयत बदल कर) समझौता करा दे तो उस पर कोई गुनाह नहीं। निस्सन्देह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील और दया करने वाला है। ○

हे ईमान लाने वालो !* तुम पर रोज़ः* (रखना) ज़ुरूरी ठहराया गया, जिस तरह तुम से पहले के लोगों पर ज़ुरूरी ठहराया गया था, ताकि तुम अल्लाह की अवज्ञा से बचने और उस की ना-ख़ुशी से डरने वाले बन जाओ; ○ (रोज़ों* के) कुछ गिन्ती के दिन हैं; फिर जो-कोई तुम में बीमार हो, या सफ़र में हो, तो दूसरे दिनों में (रोज़ों की) गिन्ती पूरी कर ले; और जो लोग इस की (अर्थात् खाना खिलाने की) ताक़त रखते हों उन के ज़िम्मे फ़िद्यः* है — (एक रोज़े के बदले में) एक मुहताज का खाना[९१] — फिर जो-कोई स्वेच्छा पूर्वक कुछ (और) भलाई करे, तो यह उस के लिए अच्छा है : और यदि तुम समझो तो रोज़ः रखना ही तुम्हारे लिए अच्छा है— ○

'रमज़ान' का महीना वह (महीना) है जिस में क़ुरआन (पहले-पहल) उतारा गया। जो लोगों के लिए एक हिदायत* (मार्ग-दर्शन) है, और (जिस में) मार्ग-दर्शन की खुली निशानियाँ हैं और (जो हक़ और ना-हक़ को अलग कर देने वाली) कसौटी है। सो तुम में से जो-कोई इस महीने को पाये, उसे चाहिए कि उस के रोज़े* रखे,[९२] और जो-कोई बीमार हो या सफ़र में हो, तो वह दूसरे दिनों में (रोज़ों की) गिन्ती पूरी करे। अल्लाह तुम्हारे लिए आसानी चाहता है; वह तुम्हारे लिए सख़्ती नहीं चाहता; और (यह आसानी इस लिए है) ताकि तुम (रोज़ों की) गिन्ती पूरी कर लो, और ताकि तुम अल्लाह की बड़ाई करो इस बात पर कि उस ने तुम पर (हिदायत* की) राह खोली है, और शायद तुम कृतज्ञता दिखलाओ। ○ १८५

(हे नबी !)* जब मेरे बन्दे मेरे बारे में तुम से पूछें, तो (उन्हें बता दो कि) मैं निकट

क़ानून नहीं रखता था। बाद में अल्लाह ने इस के लिए एक क़ानून उतार दिया जो आगे सूरः अन्-निसा में आ रहा है।

९१ यह हुक्म बाद में बदल गया जैसा कि आगे आ रहा है। इस्लाम के अधिकतर आदेश क्रम-पूर्वक उतरे हैं। रोज़े के आदेश भी एक ही क्रम में नहीं उतरे हैं बल्कि धीरे-धीरे उतरे हैं।

९२ यह जो कहा कि, "रमज़ान का महीना वह महीना है जिस में क़ुरआन उतारा गया" इस में इस बात की ओर संकेत है कि क़ुरआन के उद्देश्यों और रोज़े के उद्देश्यों में गहरा सम्बन्ध है। क़ुरआन जिन उद्देश्यों को ले कर उतरा है, रोज़ः उन्हीं उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक सिद्ध होता है। इसी लिए रोज़े के लिए रमज़ान का महीना चुना गया।

* इस का अर्थ परिशिष्ट में दी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿﴾ أَيَّامًا مَعْدُودَاتٍ ۚ فَمَنْ كَانَ
مِنْكُمْ مَرِيضًا أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۚ وَعَلَى الَّذِينَ
يُطِيقُونَهُ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِينٍ ۖ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ
لَهُ ۚ وَأَنْ تَصُومُوا خَيْرٌ لَكُمْ ۖ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿﴾ شَهْرُ
رَمَضَانَ الَّذِي أُنْزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ هُدًى لِلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ
مِنَ الْهُدَىٰ وَالْفُرْقَانِ ۚ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ۖ
وَمَنْ كَانَ مَرِيضًا أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۗ
يُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ وَلِتُكْمِلُوا
الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَاكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿﴾
وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۖ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ
إِذَا دَعَانِ ۖ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ ﴿﴾
أُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ إِلَىٰ نِسَائِكُمْ ۚ هُنَّ لِبَاسٌ
لَكُمْ وَأَنْتُمْ لِبَاسٌ لَهُنَّ ۗ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَخْتَانُونَ
أَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ ۖ فَالْآنَ بَاشِرُوهُنَّ وَابْتَغُوا
مَا كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ ۚ وَكُلُوا وَاشْرَبُوا حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ
الْأَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْأَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ۖ ثُمَّ أَتِمُّوا الصِّيَامَ
إِلَى اللَّيْلِ ۚ وَلَا تُبَاشِرُوهُنَّ وَأَنْتُمْ عَاكِفُونَ فِي الْمَسَاجِدِ ۗ تِلْكَ

ही हूँ। मैं पुकारने वाले की पुकार का, जब वह मुझे पुकारता है, जवाब देता हूँ। सो उन्हें चाहिए कि मेरी पुकार का भी जवाब दें, मुझ पर ईमान[*] रखें, ताकि वे राह पा लें।○

तुम्हारे लिए रोज़े[*] की रातों में अपनी स्त्रियों के पास जाना जायज़ (अवर्जित) है। वे तुम्हारे लिए वस्त्र (-समान) हैं और तुम उन के लिए[४३] वस्त्र (-समान) हो। अल्लाह को मालूम हो गया कि तुम लोग अपने-आप से कपट करते थे[४४] सो उस ने तुम पर कृपा की और तुम्हें क्षमा किया। तो अब तुम (रमज़ान की रातों में) उन से (अपनी स्त्रियों से) मिलो और अल्लाह ने जो-कुछ तुम्हारे लिए ठहरा दिया है उस के चाहने वाले बनो, और खाओ-पियो यहाँ तक कि प्रभात की सफ़ेद धारी तुम्हें (रात की) काली धारी से स्पष्ट अलग दिखाई देने लगे[४५]। फिर (उस समय से ले कर) रात के आने तक (अपना) रोज़ः पूरा करो, और जब तुम मसजिदों में एतकाफ़[*] के लिए बैठे हुए हो तो उन से (अर्थात् अपनी स्त्रियों से) सम्भोग न करो। यह अल्लाह की (ठहराई हुई) सीमायें हैं, इन के निकट न जाना। इस प्रकार अल्लाह अपनी आयतें[*] लोगों के लिए खोल-खोल कर बयान करता है शायद वे अल्लाह की अवज्ञा से बचने और उस की ना-ख़ुशी से डरने वाले बन जायें।○

और तुम आपस में एक-दूसरे के धन को अवैध-रूप से न खाओ, और न उन्हें हाकिमों के सामने इस ध्येय से पेश करो कि तुम जानते-बूझते लोगों के धन का कुछ भाग गुनाह[*] के साथ खाओ।○

(हे नबी!)[*] लोग तुम से नये चाँदों के बारे में पूछते हैं। कहो: ये लोगों के (व्यवहारिक जीवन के) लिए और हज[*] के लिए नियत समय मालूम करने का साधन हैं। और (यह भी कहो कि) यह कोई नेकी नहीं है कि तुम घरों में पिछवाड़े से आओ,[४६] बल्कि नेकी तो यह है कि कोई अल्लाह की अवज्ञा से बचे और उसकी ना-ख़ुशी से डरता रहे। तुम घरों में

४३ अर्थात् तुम में और उन में चोली-दामन का साथ है। स्त्री-पुरुष एक दूसरे के लिए शान्ति एवं आश्वासन (A mutual comfort) का कारण बनते हैं।

४४ अर्थात् रमज़ान की रातों में स्त्रियों के पास जाना हराम नहीं था परन्तु तुम उसे हराम समझते हुए ऐसा कर बैठते थे, और अपने को अपराधी समझते थे। इस तरह तुम्हारा दिल गुनहगार होता था।

४५ इस्लाम इबादत के लिए क्षितिज में स्पष्ट रूप से दिखाई देने वाले चिह्नों के अनुसार समय नियत करता है। ध्रुवों के निकट जहाँ रात-और-दिन कई-कई महीनों के होते हैं वहाँ भी चाहे रात का चक्र हो या दिन का, प्रत्येक अवस्था में प्रात:काल और सन्ध्या के लक्षण नियमित रूप से क्षितिज पर प्रकट होते रहते हैं।

४६ अरब के अन्ध-विश्वास ने जिन रीतियों और रिवाजों को जन्म दिया था उन में से एक रिवाज यह भी था कि जब वे हज के लिए इहराम[*] बांध लेते, तो फिर अपने घरों में दरवाज़ों से दाख़िल न होते। यात्रा से लौट कर भी वे घरों में पिछवाड़े से ही आते थे। इस आयत[*] में इसी निरर्थक प्रथा का खण्डन करते हुये इस ओर ध्यान दिलाया गया है कि वास्तव में नेकी किस चीज़ का नाम है।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

حدود الله فلا تقربوها كذلك يبين الله آياته للناس
لعلهم يتقون ۝ ولا تأكلوا أموالكم بينكم بالباطل وتدلوا
بها إلى الحكام لتأكلوا فريقا من أموال الناس بالإثم وأنتم
تعلمون ۝ يسألونك عن الأهلة قل هي مواقيت للناس
والحج وليس البر بأن تأتوا البيوت من ظهورها ولكن
البر من اتقى وأتوا البيوت من أبوابها واتقوا الله لعلكم
تفلحون ۝ وقاتلوا في سبيل الله الذين يقاتلونكم ولا
تعتدوا إن الله لا يحب المعتدين ۝ واقتلوهم حيث
ثقفتموهم وأخرجوهم من حيث أخرجوكم والفتنة أشد
من القتل ولا تقاتلوهم عند المسجد الحرام حتى يقاتلوكم
فيه فإن قاتلوكم فاقتلوهم كذلك جزاء الكافرين ۝
فإن انتهوا فإن الله غفور رحيم ۝ وقاتلوهم حتى لا تكون
فتنة ويكون الدين لله فإن انتهوا فلا عدوان إلا على
الظالمين ۝ الشهر الحرام بالشهر الحرام والحرمات قصاص
فمن اعتدى عليكم فاعتدوا عليه بمثل ما اعتدى عليكم
واتقوا الله واعلموا أن الله مع المتقين ۝ وأنفقوا في سبيل
الله ولا تلقوا بأيديكم إلى التهلكة وأحسنوا إن الله يحب

दरवाज़ों से आओ, और अल्लाह की अव से बचने और उस की ना-ख़ुशी से डरो कदाचित् तुम्हें सफलता प्राप्त हो। ○

और अल्लाह की राह में उन लोगों से ल जो तुम से लड़ते हैं, परन्तु ज़्यादती न करना;[४७] क कि अल्लाह ज़्यादती करने वालों को पसन्द न करता। ○ और उन को जहाँ कहीं पाओ क़त करो, उन्हें निकालो जहाँ से उन्हों ने तुम्हें निका है, (क़त्ल बुरा है परन्तु) फ़ितनः[४८] (उपद्रव) क़त से भी अधिक बुरा है। और मसजिदे हराम (काबः) के पास तुम उन से न लड़ो जब तक कि वे तुम वहाँ न लड़ें, परन्तु यदि वे तुम से लड़ें, तो तुम भ उन्हें क़त्ल करो (ऐसे) काफ़िरों की ऐसी ही सज़ है। ○ फिर यदि वे बाज़ आ जायें, तो निस्सन्देह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील और दयावान है। ○

और उन से लड़ो यहाँ तक कि फ़ितनः बाक़ी न रहे और दीन* अल्लाह के लिए हो जाये। फिर यदि वे बाज़ आ जायें,[४९] तो ज़ालिमों के सिवा किसी पर ज़्यादती नहीं (करनी चाहिए)। ○

(एक) आदर वाला महीना (दूसरे) आदर वाले महीने के बराबर है और आदर के विषयों

---

४७ अर्थात् तुम्हारी लड़ाई केवल सत्य के लिए है; इस लिए तुम शक्ति का प्रयोग वहीं तक करो जहाँ तक इस की आवश्यकता हो। तुम्हारा हाथ केवल उन लोगों पर उठे जो सत्य की राह में रुकावटें खड़ी कर रहे हों।

४८ फ़ितने (Persecution) *का तात्पर्य है किसी व्यक्ति या गिरोह पर केवल इस लिए अत्याचार करना कि उस ने समाज में प्रचलित भावनाओं और धारणाओं के विपरीत कुछ दूसरी भावनाओं और धारणाओं को सत्य समझ कर अपना लिया है; और वह अपने विचारों का प्रचार और ग़लत विचारों और धारणाओं का खण्डन करता है; ताकि समाज का भला हो और लोग जीवन के वास्तविक उद्देश्य को पालें। आयत* का अर्थ यह है कि क़त्ल निस्सन्देह बुरा है परन्तु यह तो हत्या से भी बढ़ कर पाप है कि कोई गिरोह अपने आचार-विचार को लोगों से ज़बरदस्ती मनवाये और बलपूर्वक लोगों को सत्य के स्वीकार करने से रोके और सुधार एवं परिवर्तन की वैध एवं उचित कोशिशों का भी सहन न कर सके। ऐसे गिरोह को हटाने के लिए शक्ति का प्रयोग अनिवार्य हो जाता है। इस में सन्देह नहीं है कि लड़ाई से बहुत से प्राणों की हानि होती है परन्तु फ़ितनः एक ऐसी मुसीबत है जिस से आख़िरत की ज़िन्दगियाँ तबाह होती हैं। ईमान* के छिन जाने की हानि इतनी बड़ी हानि है कि शारीरिक हानि उस के आगे कुछ भी नहीं।*

४९ अर्थात् यदि वे कुफ़्र और शिर्क* से बाज़ आ जायें। दूसरे काफ़िरों* और मुशिरकों* को यह अधिकार प्राप्त है कि चाहे वे इस्लाम* के मार्ग को अपनायें या न अपनायें; परन्तु अरब के मुशिरकों* (बनी इसमाईल)* के लिए केवल दो रास्ते हैं या तो वे ईमान लायें या लड़ने के लिए तैयार हो जायें। बनी इसमाईल तक सत्य एक ऐसे नबी* के द्वारा पहुँचा है जो उन्हीं में पैदा हुआ, जो उन्हीं के बीच पला बढ़ा है, और जिस की हर बात से वे भली-भाँति परिचित हैं, और जिस की सत्यवादिता के वे ख़ुद गवाह हैं। उस नबी* ने उन्हें सत्य की ओर बुलाने में कोई कोताही नहीं की। इस पर भी यदि वे ईमान* नहीं लाते तो फिर उन्हें अल्लाह के अज़ाब से दुनियाँ और आख़िरत* में कौन बचा सकता है। पिछले नबियों* के समय में भी काफ़िरों* और मुशिरकों* पर अल्लाह का अज़ाब उतरता रहा है। अन्तिम नबी* के समय में वह अज़ाब उन्हें मुसलमानों के द्वारा (युद्ध में) दिये जाने का निश्चय हो चुका है। (देखिए सूरः अत-तौबः आयत १४)*

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

الْمُحْسِنِينَ ۝ وَأَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلَّهِ ۚ فَإِنْ أُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ
مِنَ الْهَدْيِ ۖ وَلَا تَحْلِقُوا رُءُوسَكُمْ حَتَّىٰ يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحِلَّهُ ۚ
فَمَن كَانَ مِنكُم مَّرِيضًا أَوْ بِهِ أَذًى مِّن رَّأْسِهِ فَفِدْيَةٌ مِّن صِيَامٍ
أَوْ صَدَقَةٍ أَوْ نُسُكٍ ۚ فَإِذَا أَمِنتُمْ فَمَن تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ إِلَى الْحَجِّ فَمَا
اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ فَمَن لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ فِي الْحَجِّ وَ
سَبْعَةٍ إِذَا رَجَعْتُمْ ۗ تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ۗ ذَٰلِكَ لِمَن لَّمْ يَكُنْ أَهْلُهُ
حَاضِرِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ
الْعِقَابِ ۝ الْحَجُّ أَشْهُرٌ مَّعْلُومَاتٌ ۚ فَمَن فَرَضَ فِيهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ
وَلَا فُسُوقَ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ ۗ وَمَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ يَعْلَمْهُ اللَّهُ ۗ وَ
تَزَوَّدُوا فَإِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوَىٰ ۚ وَاتَّقُونِ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ ۝ لَيْسَ
عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَن تَبْتَغُوا فَضْلًا مِّن رَّبِّكُمْ ۚ فَإِذَا أَفَضْتُم مِّنْ عَرَفَاتٍ فَ
اذْكُرُوا اللَّهَ عِندَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ ۖ وَاذْكُرُوهُ كَمَا هَدَاكُمْ وَإِن كُنتُم
مِّن قَبْلِهِ لَمِنَ الضَّالِّينَ ۝ ثُمَّ أَفِيضُوا مِنْ حَيْثُ أَفَاضَ النَّاسُ
وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ فَإِذَا قَضَيْتُم مَّنَاسِكَكُمْ
فَاذْكُرُوا اللَّهَ كَذِكْرِكُمْ آبَاءَكُمْ أَوْ أَشَدَّ ذِكْرًا ۗ فَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ
رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ۝ وَمِنْهُم مَّن
يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ

में बराबरी का बदला है[५०]। सो जो तुम पर ज़्यादती करे, तो तुम भी उस पर ज़्यादती करो जैसी उस ने तुम पर ज़्यादती की है। और अल्लाह की अवज्ञा से बचते और उस की ना-ख़ुशी से डरते रहो, और जान लो कि अल्लाह उन्हीं लोगों के साथ है जो उस की अवज्ञा से बचते और उस की ना-ख़ुशी से डरते रहते हैं। ○

अल्लाह की राह में ख़र्च करो, और अपने-आप को तबाही में न डालो; सत्कर्मी बनो। निस्सन्देह अल्लाह सत्कर्मी लोगों से प्रेम रखता है। ○ १४

अल्लाह (की ख़ुशी) के लिए हज* और उमरः* को पूरा करो। परन्तु यदि तुम कहीं घिर जाओ, तो जो क़ुरबानी* (बलिदान का जानवर) सुलभ हो (उसे भेंट करो), और अपने सिर का मुंडन न कराओ जब तक कि क़ुरबानी (भेंट का जानवर) अपने स्थान पर न पहुँच जाये। हाँ जो-कोई तुम में बीमार हो या जिस के सिर में कोई तकलीफ़ हो (जिस के कारण वह पहले सिर मुड़ा दे) तो (इस का) फ़िद्यः* (प्रतिदान) दे : रोज़ः (रखे) या सदक़ः (दे) या क़ुरबानी (करे)। और जब तुम्हें शान्ति प्राप्त हो (और हज* का समय आने से पहले मक्का पहुँच जाओ) तो जो-कोई हज* (का समय आने) तक उमरः* से फ़ायदा उठाये, तो जो क़ुरबानी सुलभ हो (करे), परन्तु यदि कोई (भेंट का जानवर) न पाये, तो तीन दिन के रोज़े* हज* के दिनों में ज़रूरी हैं, और सात जब तुम वापस हो; ये पूरे दस दिन (के रोज़े) हुए। यह (हुक्म) केवल उस के लिए है जिस का परिवार मसजिदे हराम* (काबः) के निकट (आबाद) न हो। और अल्लाह की अवज्ञा से बचते और उस की ना-ख़ुशी से डरते रहो, और जान लो कि अल्लाह कड़ी सज़ा देने वाला है। ○

हज (के) कुछ जाने-पहचाने महीने हैं, तो जिस-किसी ने इन (दिनों) में हज* का निश्चय कर लिया, तो (उसे यह ध्यान रहे कि) हज (के दिनों) में न तो विषय-भोग की कोई बात (जायज़) है न मर्यादाओं का उल्लंघन और न लड़ाई-झगड़ा। और जो-कुछ भला कार्य तुम करते हो अल्लाह उसे जानता है। और (हज को जाते हुए ख़र्च के लिए) सामग्री संचित कर लो; सब से अच्छी सामग्री तो परहेज़गारी (तक़्वा)* है। तो हे बुद्धि रखने वालो! तुम मेरी अवज्ञा से बचो और मेरी ना-ख़ुशी से डरते रहो। ○ और ... लिए कोई दोष नहीं कि (हज के सफ़र में) अपने रब* का फ़ज़्ल ... कुछ कमा

५० हज़रत इबराहीम अ० ने ... ...न के तीन
महीने हज* के लिए नि... ...का सभी
अरब निवासी ... ताकि लोग
आसानी से ... काफ़िर* इन
... का आदर नहीं

نَارِ ○ أُولَٰئِكَ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّمَّا كَسَبُوا ۚ وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ○
وَاذْكُرُوا اللَّهَ فِي أَيَّامٍ مَّعْدُودَاتٍ ۚ فَمَن تَعَجَّلَ فِي يَوْمَيْنِ فَلَا إِثْمَ
عَلَيْهِ وَمَن تَأَخَّرَ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۚ لِمَنِ اتَّقَىٰ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا
أَنَّكُمْ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ○ وَمِنَ النَّاسِ مَن يُعْجِبُكَ قَوْلُهُ فِي الْحَيَاةِ
الدُّنْيَا وَيُشْهِدُ اللَّهَ عَلَىٰ مَا فِي قَلْبِهِ وَهُوَ أَلَدُّ الْخِصَامِ ○ وَإِذَا
تَوَلَّىٰ سَعَىٰ فِي الْأَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ۗ
وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ ○ وَإِذَا قِيلَ لَهُ اتَّقِ اللَّهَ أَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ
بِالْإِثْمِ ۚ فَحَسْبُهُ جَهَنَّمُ ۚ وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ ○ وَمِنَ النَّاسِ مَن
يَشْرِي نَفْسَهُ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ رَءُوفٌ بِالْعِبَادِ ○ يَا أَيُّهَا
الَّذِينَ آمَنُوا ادْخُلُوا فِي السِّلْمِ كَافَّةً وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ
الشَّيْطَانِ ۚ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ○ فَإِن زَلَلْتُم مِّن بَعْدِ مَا جَاءَتْكُمُ
الْبَيِّنَاتُ فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ○ هَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا أَن
يَأْتِيَهُمُ اللَّهُ فِي ظُلَلٍ مِّنَ الْغَمَامِ وَالْمَلَائِكَةُ وَقُضِيَ الْأَمْرُ ۚ
وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ○ سَلْ بَنِي إِسْرَائِيلَ كَمْ آتَيْنَاهُم مِّنْ
آيَةٍ بَيِّنَةٍ ۗ وَمَن يُبَدِّلْ نِعْمَةَ اللَّهِ مِن بَعْدِ مَا جَاءَتْهُ فَإِنَّ
اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ○ زُيِّنَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَ
يَسْخَرُونَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا ۘ وَالَّذِينَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ

लो)। फिर जब अरफ़ात* से पलटो तो 'मशअ़रे हराम'[50] के पास (ठहर कर) अल्लाह को याद करो। (और उसे उस प्रकार याद करो) जैसा कि उस ने तुम्हें बताया है, इस से पहले तो तुम राह भटके हुए लोगों में से थे।○ फिर जहाँ से (और) लोग पलटते हैं तुम भी पलटा करो,[51] और अल्लाह से क्षमा चाहो। निस्सन्देह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील और दया करने वाला है।○ फिर जब तुम अपनी इबादतें* (हज* सम्बन्धित नियमित कार्य) पूरी कर चुको, तो जिस प्रकार पहले अपने पूर्वजों को याद करते थे (अब) अल्लाह का स्मरण किया करो या (यह) स्मरण उस से भी बढ़ कर हो। फिर लोगों में कोई तो (ऐसा) है जो कहता है, "हे हमारे रब,* हमें (जो-कुछ देना है) दुनियाँ ही में दे दे", और उस का आख़िरत* में कोई हिस्सा नहीं।○ और उन में (कोई) ऐसा है जो कहता है, "हे हमारे रब! हमें दुनियाँ में भी भलाई दे और आख़िरत* में भी भलाई दे, और हमें आग (दोज़ख़)* के अज़ाब* से बचा ले"।○ ये वे लोग हैं जिन का उस (कमाई) के अनुसार हिस्सा है जो इन्हों ने कमाया। और अल्लाह जल्द हिसाब लेता है (उसे हिसाब चुकाने देर नहीं लगती)।○ और गिन्ती के कुछ दिनों में अल्लाह को याद करो[52]। फिर जो-कोई दो ही दिन में जल्दी कर ले (और लौट आये), तो उस पर कोई गुनाह नहीं, और (यदि) कोई और ठहर जाये, तो उस पर भी कोई गुनाह नहीं; ये बातें उस के लिए हैं जो अल्लाह की अवज्ञा से बचता और उस की ना-ख़ुशी से डरता हो—और अल्लाह की अवज्ञा से बचते और उस की ना-ख़ुशी से डरते रहो, और जान लो कि निस्सन्देह तुम (सब) उस के पास इकट्ठा किये जाओगे।○

और लोगों में कोई (ऐसा) है जिस की बात सांसारिक जीवन में तुम्हें बहुत भाती है, और जो-कुछ उस के दिल में है उस (की सत्यता और पवित्रता) पर वह अल्लाह को गवाह ठहराता

५० यह एक स्थान है जहाँ 'अरफ़ात' से वापस होते हुए हज* करने वाले ठहरते हैं, इसे 'मुज़दलिफ़ा' भी कहते हैं।

५१ क़ुरआन उतरने से पूर्व दूसरे सभी लोग तो 'ज़िलहिज्जा' की ९वीं तिथि को 'अरफ़ात' तक जाते थे, परन्तु क़ुरैश वंश के लोग 'मुज़दलिफ़ा' नामी स्थान से ही पलट आते थे। 'मुज़दलिफ़ा' से आगे बढ़ने को वे [illegible] उच्च और श्रेष्ठ होने की निशानी समझते थे। इस आयत में उन की इस भावना का खण्डन करते हुए बताया जा रहा है कि 'इस्लाम' में इस प्रकार का कोई भेद-भाव नहीं है, सब की तरह तुम भी 'अरफ़ात' तक जा कर लौटो।

५२ गिन्ती के कुछ दिनों का तात्पर्य 'ज़िलहिज्जा' की ९वीं तारीख़ से १३वीं तिथि तक के दिन हैं। [illegible] का तात्पर्य 'मिना' के स्थान पर [illegible] है, जहाँ १०वीं तिथि को जा कर क़ुरबानी की जाती है, और फिर [illegible] हज* [illegible] दिया जाता है। 'मिना' से दूसरे दिन भी वापस हो सकते हैं, और वह [illegible] तीसरे दिन भी हो सकती है।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

; हालाँकि वह बड़ा झगड़ालू है। ○ और जब
ह (यह बातें करके) वापस होता है तो ज़मीन में
स की (सारी) दौड़-धूप इस लिए होती है कि
स में फ़साद* (अशान्ति) फैलाये, खेती और
स्ल को तबाह करे; और अल्लाह फ़साद को कभी
ी पसन्द नहीं करता। ○ और जब उस से कहा
ाता है: अल्लाह की अवज्ञा बच और उस
ी ना-ख़ुशी से डर, तो अहंकार उसे गुनाह पर जमा
ता है। तो उस के लिए बस दोज़ख़* ही काफ़ी है,
ौर वह बहुत ही (बुरी तैयारी और) बुरा विश्रामस्थल
। ○ और लोगों में कोई (ऐसा) है जो अल्लाह की
ुशियों की चाह में अपनी जान बेच देता है; और
ल्लाह अपने बन्दों के लिए करुणामय है। ○
ईमान लाने वालो!* तुम पूरे-के-पूरे, इस्लाम*
दाख़िल हो जाओ; और शैतान* के क़दमों का
ुसरण न करो। निस्सन्देह वह तुम्हारा खुला
ा दुश्मन है। ○ फिर यदि तुम इस के बाद भी
ब कि तुम्हारे पास खुली हुई (और साफ़) निशानियाँ आ चुकी हैं, विचलित हुये तो जान
ो कि अल्लाह अपार शक्ति का मालिक और हिकमत* वाला है। ○ क्या ये केवल इस
ा इन्तज़ार कर रहे हैं कि अल्लाह बादलों के छत्रों में (प्रकट हो कर) इन के सामने आ जाये
ौर फ़िरिश्ते* (उस के साथ हों) और मामला चुका दिया जाये? और सारे मामिले अल्लाह
की ओर लौटाये जाते हैं। ○

बनी इसराईल* से पूछो हम ने उन्हें कितनी खुली हुई निशानियाँ दी थीं! और जो-कोई
ल्लाह की नेमत को जब कि वह उसके पास आ चुकी हो बदल डाले, तो निस्सन्देह अल्लाह
ी सज़ा देने वाला है। ○

जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन के लिए दुनियाँ की ज़िन्दगी सुन्दर (और प्रिय) बना दी
है; और वे ईमान लाने वालों* पर हँसते हैं। परन्तु क़ियामत* के दिन वे लोग जो अल्लाह
अवज्ञा से बचते और उस की ना-ख़ुशी से डरते रहे, उन से ऊपर होंगे। अल्लाह
से चाहता है बे-हिसाब रोज़ी देता है। ○

सारे मनुष्य (सदैव से) एक ही गरोह हैं, (परन्तु जब उन में विभेद हुआ) तो अल्लाह
नबियों* को भेजा जो शुभ सूचना देने वाले और डराने वाले थे, और उन के साथ सत्यता-
क किताब* उतारी ताकि जिस बात में वे विभेद कर रहे थे वह उस का लोगों के बीच
सला कर दे। उस में विभेद उन्हीं लोगों ने किया जिन्हें वह (किताब)* दी गई थी, (और
समय किया) जब कि खुली निशानियाँ उन के पास आ चुकी थीं, परस्पर ज़्यादती करने
लिए (उन्हों ने ऐसा किया)। सो जो लोग ईमान ले आये* अल्लाह ने उन्हें अपने हुक्म से
सच्चाई का मार्ग दिखा दिया, जिस में लोगों ने मत-भेद किया था। अल्लाह जिसे चाहता
सीधा रास्ता दिखा देता है। ○

وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ كَانَ النَّاسُ اُمَّةً
وَّاحِدَةً فَبَعَثَ اللّٰهُ النَّبِيّٖنَ مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ وَاَنْزَلَ
مَعَهُمُ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيْمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ
وَمَا اخْتَلَفَ فِيْهِ اِلَّا الَّذِيْنَ اُوْتُوْهُ مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ
بَغْيًا بَيْنَهُمْ فَهَدَى اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ مِنَ
الْحَقِّ بِاِذْنِهٖ وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝
اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَاْتِكُمْ مَّثَلُ الَّذِيْنَ خَلَوْا
مِنْ قَبْلِكُمْ مَسَّتْهُمُ الْبَاْسَآءُ وَالضَّرَّآءُ وَزُلْزِلُوْا حَتّٰى يَقُوْلَ
الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ اَلَآ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ
قَرِيْبٌ ۝ يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ قُلْ مَا اَنْفَقْتُمْ مِّنْ خَيْرٍ
فَلِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ وَ
مَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ۝ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ
وَهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ وَعَسٰٓى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَ
عَسٰٓى اَنْ تُحِبُّوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا
تَعْلَمُوْنَ ۝ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيْهِ قُلْ قِتَالٌ
فِيْهِ كَبِيْرٌ وَصَدٌّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَكُفْرٌ بِهٖ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ
وَاِخْرَاجُ اَهْلِهٖ مِنْهُ اَكْبَرُ عِنْدَ اللّٰهِ وَالْفِتْنَةُ اَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

ولا يزالون يقاتلونكم حتى يردوكم عن دينكم إن استطاعوا
ومن يرتدد منكم عن دينه فيمت وهو كافر فأولئك حبطت
أعمالهم في الدنيا والآخرة وأولئك أصحاب النار هم فيها
خالدون ۝ إن الذين آمنوا والذين هاجروا وجاهدوا في
سبيل الله أولئك يرجون رحمت الله والله غفور رحيم ۝
يسألونك عن الخمر والميسر قل فيهما إثم كبير ومنافع
للناس وإثمهما أكبر من نفعهما ويسألونك ماذا ينفقون
قل العفو كذلك يبين الله لكم الآيات لعلكم تتفكرون ۝
في الدنيا والآخرة ويسألونك عن اليتامى قل إصلاح لهم
خير وإن تخالطوهم فإخوانكم والله يعلم المفسد من
المصلح ولو شاء الله لأعنتكم إن الله عزيز حكيم ۝
ولا تنكحوا المشركات حتى يؤمن ولأمة مؤمنة خير
من مشركة ولو أعجبتكم ولا تنكحوا المشركين حتى
يؤمنوا ولعبد مؤمن خير من مشرك ولو أعجبكم
أولئك يدعون إلى النار والله يدعو إلى الجنة والمغفرة
بإذنه ويبين آياته للناس لعلهم يتذكرون ۝ ويسألونك
عن المحيض قل هو أذى فاعتزلوا النساء في المحيض

क्या तुम लोगों ने यह समझ रखा है कि (ऐसे ही) जन्नत* में पहुँच जाओगे जब कि अभी तुम पर उन लोगों-जैसी बीती ही नहीं जो तुम से पहले गुज़रे हैं? उन पर तंगियाँ और मुसीबतें आईं और वे हिला मारे गये, यहाँ तक कि (उस समय का) रसूल* और वे लोग जो उस के साथ ईमान* लाये थे पुकार उठे: अल्लाह की मदद कब आयेगी! (उन को डारस बँधाई गई कि) जान लो! अल्लाह की मदद क़रीब है। ○

(हे नबी! लोग) तुम से पूछते हैं कि हम क्या ख़र्च करें? कह दो कि जो (माल) भी तुम ख़र्च करो उस में (तुम्हारे) माँ-बाप का हक़ है, अनाथों का है, मुहताजों का है और मुसाफ़िर का है। और जो भलाई भी तुम करते हो अल्लाह उसे जानता है (वह उस से छिपी नहीं रह सकती)। ○

तुम्हारे लिए (अल्लाह की राह में) लड़ना ज़रूरी ठहराया गया, और वह तुम्हें अप्रिय है,—हो सकता है एक चीज़ तुम्हें बुरी लगे और वह तुम्हारे लिए अच्छी हो, और हो सकता है कि एक चीज़ तुम्हें प्रिय हो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो। अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। ○

(लोग) तुम से आदर के महीने[५४] में लड़ने के बारे में पूछते हैं? कह दो, उस में लड़ना बहुत बुरा है, परन्तु अल्लाह की राह से (लोगों को) रोकना, अल्लाह के साथ कुफ़्र* करना, मसजिदे हराम* (काबः) से रोकना, और उस के लोगों को वहाँ से निकालना, अल्लाह के नज़दीक इस से भी बढ़ कर (बुरा) है; और फ़ितनः[५५] रक्त-पात से भी बढ़ कर (बुरा) है। वे तुम से लड़ते ही रहेंगे यहाँ तक कि यदि उन का वश चले, तो वे तुम्हें तुम्हारे दीन* से फेर दें। और तुम में से जो-कोई अपने दीन* से फिर जाये और काफ़िर* हो कर मरे; ऐसे लोगों का सब किया-धरा दुनियाँ और आख़िरत* में अकारथ गया। और ऐसे लोग आग (दोज़ख़* में पड़ने) वाले हैं: वे सदा उसी में रहेंगे। ○ रहे वे लोग जो ईमान लाये,* और जिन्हों ने अल्लाह की राह में अपना घर-बार छोड़ा और जिहाद* किया, यही लोग अल्लाह की रहमत (दयालुता) की आशा करते हैं। और अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील और दया करने वाला है। ○

तुम से (लोग) शराब (मदिरा) और जुए (द्यूत) के बारे में पूछते हैं। कह दो: इन दोनों चीज़ों में बड़ा गुनाह है, लोगों के लिए कुछ फ़ायदे भी हैं; परन्तु इन का गुनाह इन के फ़ायदे से कहीं बढ़ कर है[५६]।

---

५४ दे० फ़ुट नोट ३६।

५५ दे० फ़ुट नोट ४८ और आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची।

५६ यह जुए और शराब के बारे में पहला आदेश है। इस में केवल इतनी-सी बात बता कर छोड़ दिया गया है कि शराब और जुए में लाभ कम गुनाह अधिक है। बाद में शराब पी कर नमाज़ पढ़ने से रोका गया; फिर जुए और शराब और इस प्रकार की समस्त वस्तुओं का बिल्कुल निषेध किया गया। (दे० सूरः अन्-निसा ४३ और सूरः अल-माइदः ९०-९२)।*

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

ولا تقربوهن حتى يطهرن فإذا تطهرن فأتوهن من
حيث أمركم الله إن الله يحب التوابين ويحب المتطهرين ۝
نساؤكم حرث لكم فأتوا حرثكم أنى شئتم وقدموا
لأنفسكم واتقوا الله واعلموا أنكم ملاقوه وبشر المؤمنين ۝
ولا تجعلوا الله عرضة لأيمانكم أن تبروا وتتقوا وتصلحوا
بين الناس والله سميع عليم ۝ لا يؤاخذكم الله باللغو
في أيمانكم ولكن يؤاخذكم بما كسبت قلوبكم والله غفور
حليم ۝ للذين يؤلون من نسائهم تربص أربعة أشهر
فإن فاءو فإن الله غفور رحيم ۝ وإن عزموا الطلاق فإن
الله سميع عليم ۝ والمطلقات يتربصن بأنفسهن ثلاثة قروء
ولا يحل لهن أن يكتمن ما خلق الله في أرحامهن إن
كن يؤمن بالله واليوم الآخر وبعولتهن أحق بردهن في
ذلك إن أرادوا إصلاحا ولهن مثل الذي عليهن بالمعروف
وللرجال عليهن درجة والله عزيز حكيم ۝ الطلاق مرتان
فإمساك بمعروف أو تسريح بإحسان ولا يحل لكم أن
تأخذوا مما آتيتموهن شيئا إلا أن يخافا ألا يقيما حدود
الله فإن خفتم ألا يقيما حدود الله فلا جناح عليهما فيما

तुम से पूछते हैं कि (अल्लाह की राह में) क्या ख़र्च करें? कह दो : जो तुम्हारी ज़रूरत से अधिक हो। इस प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें* खोल-खोल कर बयान करता है ताकि तुम सोच-विचार से काम लो, ○ दुनियाँ और आख़िरत* (दोनों) के बारे में।

तुम से यतीमों (अनाथों) के बारे में पूछते हैं। कहो : उन के लिए (उन के मामलों का) सुधार उत्तम है। और यदि तुम उन्हें (अपने साथ) मिला लो (अर्थात् उन का और अपना ख़र्च और रहना-सहना मिला-जुला रखो) तो वे तुम्हारे भाई बन्धु ही तो हैं (इस में दोष ही क्या हो सकता है)। अल्लाह (बद-नीयत और) ख़राबी पैदा करने वाले को (नेक-नीयत और) सुधारने वाले से अलग पह-चानता है। अल्लाह चाहता तो तुम्हें कठिनाई में डाल देता। निस्सन्देह अल्लाह अपार शक्ति का मालिक और हिकमत* वाला है। ○

मुश्रिक* स्त्रियों से जब तक कि वे ईमान* न लायें विवाह न करना; ईमान वाली एक लौंडी,* मुश्रिक (स्वतन्त्र) स्त्री से अच्छी है, चाहे वह तुम्हें भाती ही क्यों न हो। और (इसी प्रकार अपनी औरतों का) मुश्रिक* पुरुषों से विवाह न करना जब तक कि वे ईमान* न लायें, ईमान वाला एक ग़ुलाम,* मुश्रिक (स्वतन्त्र) पुरुष से अच्छा है, चाहे वह तुम्हें भाता ही क्यों न हो। ये लोग आग (दोज़ख़)* की ओर बुलाते हैं, और अल्लाह अपने हुक्म से जन्नत* और क्षमा की ओर बुलाता है, और वह अपनी आयतों* को लोगों के लिए खोल-खोल कर बयान करता है कदाचित् वे चेतें। ○

तुम से स्त्रियों की माहवारी (मासिक-धर्म) के बारे में पूछते हैं। कहो : वह एक गन्दगी (की हालत) है, माहवारी के दिनों में स्त्रियों से अलग रहो और जब तक वे पाक-साफ़ न हो जायें (सम्भोग के लिए) उन के पास न जाओ। फिर जब वे अच्छी-तरह पाक हो जायें, तो जिस तरह अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है उन के पास जाओ। निस्सन्देह अल्लाह तौबः* करने वालों से प्रेम करता है और पाक-साफ़ रहने वालों से प्रेम करता है। ○ तुम्हारी स्त्रियाँ तुम्हारी खेती हैं सो अपनी खेती में जिस तरह से चाहो जाओ, और अपने लिए आगे का यत्न करो, और अल्लाह की अवज्ञा से बचते और उस की ना-ख़ुशी से डरते रहो, जान लो कि तुम्हें उस से मिलना है। और (हे नबी!) तुम ईमान* लाने वालों को शुभ सूचना दे दो। ○

अल्लाह (के नाम) को अपनी (ऐसी) क़समों के (खाने के) लिए इस्तेमाल न करो, जिन का ध्येय यह हो कि नेकी, अल्लाह की अवज्ञा से बचने और उस की ना-ख़ुशी से डरने और लोगों के बीच सुधार और बनाव का काम करने से बाज़ रहो। अल्लाह (सब-कुछ) सुनता और जानता है। ○ अल्लाह तुम्हारी निरर्थक (बे-सोचे-समझे खाई हुई) क़समों पर तुम्हें नहीं

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

افتدت به تلك حدود الله فلا تعتدوها ومن يتعد حدود
الله فأولئك هم الظلمون ۝ فإن طلقها فلا تحل له من بعد
حتى تنكح زوجا غيره فإن طلقها فلا جناح عليهما أن يتراجعا
إن ظنا أن يقيما حدود الله وتلك حدود الله يبينها لقوم
يعلمون ۝ وإذا طلقتم النساء فبلغن أجلهن فأمسكوهن
بمعروف أو سرحوهن بمعروف ولا تمسكوهن ضرارا لتعتدوا
ومن يفعل ذلك فقد ظلم نفسه ولا تتخذوا ءايت الله هزوا
واذكروا نعمت الله عليكم وما أنزل عليكم من الكتب والحكمة
يعظكم به واتقوا الله واعلموا أن الله بكل شيء عليم ۝ و
إذا طلقتم النساء فبلغن أجلهن فلا تعضلوهن أن ينكحن
أزواجهن إذا تراضوا بينهم بالمعروف ذلك يوعظ به من
كان منكم يؤمن بالله واليوم الآخر ذلكم أزكى لكم وأطهر و
الله يعلم وأنتم لا تعلمون ۝ والوالدت يرضعن أولادهن
حولين كاملين لمن أراد أن يتم الرضاعة وعلى المولود له
رزقهن وكسوتهن بالمعروف لا تكلف نفس إلا وسعها
لا تضار والدة بولدها ولا مولود له بولده وعلى الوارث
مثل ذلك فإن أرادا فصالا عن تراض منهما وتشاور فلا

पकड़ता वह तुम्हें उस पर पकड़ता है जो तुम्हारे दिलों ने कमाया है[५७]। अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और सहनशील है। ○

जो लोग अपनी स्त्रियों से (नाता न रखने की) क़सम खा बैठते हैं उन के लिए ज़्यादा से ज़्यादा चार महीने की मुहलत है; फिर यदि वे (इस समय के भीतर) मिल गये, तो अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और दया करने वाला है। ○ और यदि उन्हों ने तलाक़* की ठान ली तो अल्लाह (सब-कुछ) सुनने वाला और जानने वाला है। ○

तलाक़* पाने वाली स्त्रियाँ तीन बार माहवारी आने तक अपने-आप को इन्तज़ार में रखें[५८]। यदि वे अल्लाह और अन्तिम दिन[५९] पर ईमान* रखती हैं, तो उन के लिए यह सही न होगा कि अल्लाह ने उन के पेट में जो-कुछ पैदा किया हो उसे छिपा लें। और इस बीच में उन के पति (जिन्हों ने उन्हें तलाक़ दी है) उन्हें फिर (अपने दाम्पत्य-जीवन में) ले लेने के ज़्यादा हक़दार हैं यदि वे (सम्बन्ध को) ठीक रखने का निश्चय करें।

और उन (स्त्रियों) का भी सामान्य नियम के अनुसार (पुरुषों पर) वैसा ही हक़ है जैसा कि (पुरुषों का) उन पर है, और पुरुषों को उन पर एक दरजा(प्राप्त) है[६०]। अल्लाह अपार शक्ति का मालिक और हिकमत* वाला है। ○

तलाक़* दो बार है फिर या तो सामान्य नियम के अनुसार (स्त्री को) रोक लेना चाहिए या फिर भले तरीक़े से रुख़सत कर देना चाहिए।

तुम्हारे लिए यह जायज़ न होगा कि जो-कुछ तुम उन्हें दे चुके हो उस में से कुछ (वापस) ले लो; सिवाय इस के कि दोनों को डर हो कि वे अल्लाह की (निश्चित की हुई) हदों (सीमाओं) को क़ायम न रख सकेंगे, तो यदि तुम को[६१] यह डर हो कि वे अल्लाह की (निश्चित की हुई) हदों (सीमाओं) को क़ायम न रख सकेंगे, तो जो-कुछ दे कर स्त्री छुटकारा प्राप्त करना चाहे[६२]

---

५७ अर्थात् तुम्हारी पकड़ उन क़समों पर होगी जो तुम्हारे दिलों की कमाई का नतीजा होती हैं, जिन्हें तुम सोच-समझ कर खाते हो।

५८ अर्थात् अपने-आप को रोके रखें, दूसरा विवाह न करें।

५९ दे० फुट नोट ५।

६० पारिवारिक जीवन में पुरुष की हैसियत एक व्यवस्थापक और संरक्षक की है। वह पारिवारिक व्यवस्था को चलाने वाला और उस की देख-रेख करने वाला है। आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति का भार भी उसी पर डाला गया है। पुरुष को स्वभावतः ऐसी विशेषतायें और शक्ति प्रदान की गई है कि वह इन दायित्वों का भार उठा सके। यही बात यहाँ इन शब्दों में कही गई है: "पुरुषों को उन पर एक दर्जा (प्राप्त) है"। दे० सूरः अन-निसा: ३४।

६१ यह बात समाज के ज़िम्मेदार लोगों से कही जा रही है। समाज का कर्तव्य है कि वह अपने दैनिक दायित्वों को कभी न भूले।

६२ पारिभाषिक शब्दों में इसे 'खुलअ' का नियम कहते हैं। तलाक़ देने का अधिकार केवल पुरुष को है। परन्तु कभी ऐसा होता है कि पति तलाक़ नहीं देता, और स्त्री को किसी कारण उस के साथ रहना असह्य होता है। ऐसी

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

جناح عليهما وإن أردتم أن تسترضعوا أولادكم فلا جناح
عليكم إذا سلمتم ما آتيتم بالمعروف واتقوا الله واعلموا أن
الله بما تعملون بصير ۝ والذين يتوفون منكم ويذرون
أزواجا يتربصن بأنفسهن أربعة أشهر وعشرا فإذا بلغن
أجلهن فلا جناح عليكم فيما فعلن في أنفسهن بالمعروف
والله بما تعملون خبير ۝ ولا جناح عليكم فيما عرضتم به
من خطبة النساء أو أكننتم في أنفسكم علم الله أنكم
ستذكرونهن ولكن لا تواعدوهن سرا إلا أن تقولوا قولا
معروفا ولا تعزموا عقدة النكاح حتى يبلغ الكتاب أجله
واعلموا أن الله يعلم ما في أنفسكم فاحذروه واعلموا أن
الله غفور حليم ۝ لا جناح عليكم إن طلقتم النساء ما
لم تمسوهن أو تفرضوا لهن فريضة ومتعوهن على الموسع
قدره وعلى المقتر قدره متاعا بالمعروف حقا على المحسنين
وإن طلقتموهن من قبل أن تمسوهن وقد فرضتم لهن
فريضة فنصف ما فرضتم إلا أن يعفون أو يعفو الذي بيده
عقدة النكاح وأن تعفوا أقرب للتقوى ولا تنسوا الفضل
بينكم إن الله بما تعملون بصير ۝ حافظوا على الصلوات و

उस (को पति के लेने) में उन दोनों के लिए कोई दोष नहीं यह अल्लाह की (निश्चित की हुई) सीमायें हैं। इन से आगे न बढ़ना। और जो-कोई अल्लाह की सीमाओं से आगे बढ़े : तो ऐसे ही लोग ज़ालिम हैं। ○

फिर यदि (दो तलाक़ों के बाद पति तीसरी बार) उसे तलाक़* दे दे, तो फिर उस के लिए यह (स्त्री) जायज़ नहीं जब तक कि वह किसी दूसरे पति से विवाह न कर ले[६३]। फिर यदि वह (दूसरा पति) उसे तलाक़ दे दे, उस समय इन दोनों के लिए एक-दूसरे की ओर पलट आने में कोई दोष न होगा यदि उन्हें आशा हो कि वे अल्लाह की (निश्चित की हुई) हदों (सीमाओं) को क़ायम रख सकेंगे। यह अल्लाह की निश्चित की हुई सीमायें हैं। जिन्हें वह ज्ञान रखने वाले लोगों के लिए स्पष्ट करता है। ○

और जब तुम स्त्रियों को तलाक़* दे दो, और वह अपने नियत समय (इद्दत)* को पहुँचें, तो या तो उन्हें सामान्य नियम के अनुसार रोक लो या फिर उन्हें सामान्य नियम के अनुसार रुख़सत कर दो। उन्हें सताने के लिए न रोको कि उन पर ज़्यादती करो। जिस किसी ने ऐसा किया उस ने अपने ही ऊपर ज़ुल्म किया। अल्लाह की आयतों* को मज़ाक़ (हँसी) न बनाओ, और याद करो अल्लाह की जो कृपा (नेमत) तुम पर है और उस ने जो तुम पर किताब और हिकमत* उतारी है, जिस के द्वारा वह तुम्हें नसीहत करता है। अल्लाह की अवज्ञा से बचो और उस की ना-ख़ुशी से डरते रहो जान लो कि अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है। ○

और जब तुम स्त्रियों को तलाक़* दे दो और वे अपनी इद्दत* पूरी कर लें, तो फिर उन्हें अपने पतियों से विवाह करने में न रोको, जब कि वे सामान्य नियम के अनुसार आपस में (इस के लिए) राज़ी हों। यह तुम में से (हर) उस व्यक्ति को नसीहत की जाती है जो अल्लाह पर और अन्तिम दिन[६४] पर ईमान रखता हो। यह तुम्हारे लिए अधिक पाकी (पवित्रता एवं शिष्टता) और सुथराई की बात है। अल्लाह जानता है : तुम नहीं जानते। ○

जो-कोई चाहे कि बच्चा दूध पीने की पूरी अवधि तक दूध पिये, तो माँयें पूरे दो वर्ष अपने बच्चों को दूध पिलायें। और वह, जिसका बच्चा है, सामान्य नियम के अनुसार उन

हालत में इस्लाम ने स्त्री को 'ख़ुलअ' का हक़ दिया है कि पति को कुछ दे कर छुटकारा प्राप्त कर ले। इस सिलसिले में यह बात भी सामने रहनी चाहिए कि पति बदले के रूप में स्त्री से कुछ रकम उसी रूप में लेने का अधिकारी है जब कि इस 'ख़ुलअ' का कारण उस की अपनी कोई ज़्यादती या अन्याय न हो। बल्कि स्त्री केवल अपनी अप्रियता के कारण उस से अलग होना चाहती हो। 'ख़ुलअ' उसी समय हो सकता है जब पति इस के लिए तैयार हो या इस्लामी अदालत स्त्री के हक़ में इस का फ़ैसला कर दे।

६३ यह दूसरा पति यदि उसे छोड़ दे या उस की मृत्यु हो जाये तो यह स्त्री अपने पहले पति के साथ दुबारा से विवाह कर सकती है।

६४ दे० फ़ुट नोट ५।

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

(स्त्रियों) के खाने और उन के कपड़े का ज़िम्मेदार है। किसी पर उस की समाई से बढ़ कर ज़िम्मेदारी (का बोझ) नहीं। न तो किसी माँ को उस के बच्चे के कारण तकलीफ़ देनी चाहिए और न किसी बाप को उस के बच्चे के कारण—(बाप के बाद) उस के वारिस पर भी *(दूध पिलाने की) इसी तरह की ज़िम्मेदारी है।—और यदि दोनों अपनी ख़ुशी और सम्मति* से (दो वर्ष से पूर्व ही) दूध छुड़ाना चाहें, तो (इस में) उन के लिए कोई दोष नहीं; और यदि तुम अपने बच्चों को (किसी दूसरी स्त्री से) दूध पिलवाना चाहो, तो इस में भी कोई दोष नहीं, जब कि तुम्हें जो-कुछ देना है सामान्य नियम के अनुसार (उसे) चुका दो। और अल्लाह की अवज्ञा से बचो और उस की ना-ख़ुशी से डरते रहो, और जान लो कि जो-कुछ तुम करते हो अल्लाह (उसे) देखता है।○

और तुम में जिन लोगों का देहान्त हो जाये और (अपने पीछे) पत्नियाँ छोड़ जायें, तो वे (स्त्रियाँ) अपने-आप को चार महीने दस दिन इन्तिज़ार में रखें। फिर जब वे अपनी अवधि (इद्दत)* को पूरी कर लें तो वे जो-कुछ सामान्य नियम के अनुसार अपने बारे में करें उस में तुम्हारे लिए कोई दोष नहीं। और तुम जो-कुछ करते हो, अल्लाह उस की ख़बर रखता है।○ इस में तुम्हारे लिए कोई दोष नहीं कि इन (विधवा) स्त्रियों को विवाह का सन्देश इशारे (के शब्दों में) पहुँचा दो या अपने दिल में इसे छिपाये रखो। अल्लाह जानता है कि उन का ख़याल तो तुम्हें आयेगा ही। परन्तु छिप कर उन्हें (विवाह का) वचन न दो। सिवाय इस के कि सामान्य नियम के अनुसार कोई बात कहो। और जब तक यह (इद्दत* का) हुक्म अपने नियत समय को न पहुँच जाये[६५] (उन से) विवाह का नाता जोड़ने का निश्चय न करो। जान लो कि जो-कुछ तुम्हारे जी में है अल्लाह (सब) जानता है, सो उस से डरते रहो; और जान लो कि अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और सहन-शील है।○

यदि तुम स्त्रियों को तलाक़* दे दो जब कि न तो अभी उन्हें तुम ने हाथ लगाया हो, और न उन का कुछ हक़ (महर)* निश्चित किया हो, तो (इस में) तुम्हारे लिए कोई दोष नहीं। उन्हें सामान्य नियम के अनुसार कुछ (अवश्य) दो, समाई रखने वाले (खाते-पीते व्यक्ति) के ज़िम्मे उस की हैसियत के अनुसार (देना ज़रूरी) है, और तंगी वाले (निर्धन) के ज़िम्मे *उस की हैसियत के अनुसार (देना आवश्यक)* है। सत्कर्मी लोगों के लिए यह ज़रूरी है।○ और यदि इस से पहले कि तुम उन्हें हाथ लगाओ, तुम उन्हें तलाक़ दे चुके हो और उन का हक़ (महर)* ठहरा चुके हो तो (इस हालत में उन्हें) जो-कुछ तुम (महर)* ठहरा चुके हो उस का आधा मिलना चाहिए, यह और बात है कि वे छोड़ दें (उदारता से काम लें और अपना हक़ न लें) या वह (पुरुष) जिस के हाथ में *विवाह का नाता (जोड़े रखने या तोड़ देने* का अधिकार) है छोड़ दे (उदारता से काम ले और अपना हक़ न ले कर पूरा महर* दे दे), और तुम (उदारता से काम लो और) छोड़ दो, तो यह तक़वा* से ज़्यादा क़रीब है। आपस में *भलाई (दानशीलता)* और *एहसान करना न भूलो।* जो-कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है।○

नमाज़ों* का, विशेष रूप से उत्तम नमाज़ का ध्यान रखो,[६६] और अल्लाह के आगे पूरे

---

६५ अर्थात् जब तक इद्दत की मुद्दत पूरी न हो जाय।*

६६ अर्थात् तुम्हें इस बात का प्रयत्न करना चाहिए कि तुम्हारी नमाज़ उत्तम नमाज़ सिद्ध हो; तुम्हारी नमाज़ समस्त बाह्य एवं आन्तरिक सद्गुणों का सुन्दर योग हो।*

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

अदब (भक्ति और विनय-भाव) से खड़े हो। ○ और तुम्हें (लड़ाई या किसी और कारण) भय हो, तो पैदल या सवार (जिस तरह बन पड़े नमाज़ पढ़ लो) फिर जब तुम्हें शान्ति प्राप्त हो, तो अल्लाह को उस प्रकार से याद करो, जो उस ने तुम्हें सिखाया है, जिसे तुम नहीं जानते थे। ○

तुम में से जो लोग (अपने पीछे) पत्नियाँ छोड़ कर मृत्यु को प्राप्त हों, उन्हें अपनी पत्नियों के बारे में (मरते समय) वसीयत* कर जानी चाहिए कि उन्हें एक वर्ष तक गुज़र-बसर का सामान दिया जाये वे (घर से) निकाली न जायें, यदि वे (वर्ष पूरा होने से पहले स्वयं घर से) निकल जायें तो वे अपने मामले में सामान्य नियम के अन्तर्गत जो-कुछ भी करें उस में तुम्हारे लिए ४० कोई दोष नहीं। अल्लाह अपार शक्ति का मालिक और हिकमत* वाला है। ○ और तलाक़ (पाने) वाली स्त्रियों को (भी) सामान्य नियम के अनुसार (कुछ-न-कुछ) सामान मिलना चाहिए: उन लोगों के लिए (ऐसा करना) ज़रूरी है जो अल्लाह की अवज्ञा से बचने वाले और उस की ना-ख़ुशी से डरने वाले हों। ○

इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें* खोल-खोल कर बयान करता है ताकि तुम समझो। ○

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा[17] जो हज़ारों (की संख्या में) होने पर भी मृत्यु के भय से अपने घरों से निकल गये थे? तो अल्लाह ने उन से कहा: मर जाओ, फिर उस ने उन्हें जीवित किया। निस्सन्देह अल्लाह लोगों के लिए बड़ा ही फ़ज़्ल (कृपा) वाला है, परन्तु अधिकतर लोग कृतज्ञता नहीं दिखलाते। ○ और (हे ईमान* वालो!) तुम अल्लाह की राह में लड़ो, और जान लो कि अल्लाह (सब-कुछ) सुनने वाला और (सब-कुछ) जानने वाला है। ○ कौन है जो अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दे, कि अल्लाह उस को कई गुना (कर के उसे वापस) करे? अल्लाह ही (रोज़ी) घटाता और बढ़ाता है। और उसी की ओर तुम लौटाये २४५ जाओगे। ○

क्या तुम ने बनी इसराईल* के (उन) सरदारों को नहीं देखा[18] (जो) मूसा के बाद (गुज़रे हैं)? जब उन्हों ने अपने नबी* से कहा था कि हमारे लिए एक शासक नियुक्त कर दो ताकि हम अल्लाह की राह में लड़ें। (नबी* ने) कहा: कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे लिए लड़ना ज़रूरी ठहराया जाय और तुम न लड़ो? कहने लगे: यह कैसे हो सकता है कि हम अल्लाह की राह में न लड़ें जब कि हमें अपने घरों से निकाल दिया गया है और (हमें) अपने बाल-बच्चों से (अलग कर दिया गया है)? फिर जब लड़ना उन के लिए ज़रूरी ठहराया गया, तो उन में थोड़े लोगों के सिवा सब मुँह मोड़ बैठे। अल्लाह ज़ालिमों को (भली-भाँति) जानता है। ○

उन के नबी* ने उन से कहा: अल्लाह ने तुम्हारे लिए तालूत को शासक नियुक्त किया है। बोले: यह कैसे हो सकता है कि उसे हम पर शासनाधिकार मिल जाय जब कि हम उस के *मुक़ाबिले में इस शासन के ज़्यादा हक़दार हैं और जब कि उसे धन की अधिकता प्राप्त नहीं* है? (नबी* ने) कहा: अल्लाह ने तुम्हारे मुक़ाबिले में उसी को चुना है, और उसे ज्ञान और शरीर (की योग्यता) में अधिक बढ़ोतरी प्रदान की है। और अल्लाह जिसे चाहता है अपना

---

१७ अर्थात् उन के हाल पर विचार नहीं किया?

१८ अर्थात् क्या उन के वृत्तान्त पर विचार नहीं किया?

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

الصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى وَقُوْمُوْا لِلّٰهِ قٰنِتِيْنَ ○ فَاِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا
اَوْ رُكْبَانًا ۚ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَمَا عَلَّمَكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ
وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا ۚ وَّصِيَّةً لِّاَزْوَاجِهِمْ مَّتَاعًا
اِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ اِخْرَاجٍ ۚ فَاِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْ مَا فَعَلْنَ
فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَّعْرُوْفٍ ۗ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ○ وَلِلْمُطَلَّقٰتِ مَتَاعٌۢ
بِالْمَعْرُوْفِ ۗ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ○ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ
لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ○ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ اُلُوْفٌ
حَذَرَ الْمَوْتِ ۪ فَقَالَ لَهُمُ اللّٰهُ مُوْتُوْا ۟ ثُمَّ اَحْيَاهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ
عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ○ وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ○ مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ
قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗٓ اَضْعَافًا كَثِيْرَةً ۭ وَاللّٰهُ يَقْبِضُ وَيَبْصُۜطُ
وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ○ اَلَمْ تَرَ اِلَى الْمَلَاِ مِنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ مِنْۢ بَعْدِ
مُوْسٰى ۘ اِذْ قَالُوْا لِنَبِيٍّ لَّهُمُ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ
قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ اَلَّا تُقَاتِلُوْا ۭ قَالُوْا وَمَا
لَنَآ اَلَّا نُقَاتِلَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَدْ اُخْرِجْنَا مِنْ دِيَارِنَا وَاَبْنَاۗىِٕنَا ۭ
فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ
بِالظّٰلِمِيْنَ ○ وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوْتَ

राज्य प्रदान करता है। अल्लाह (बड़ी) समाई वाला और (सब-कुछ) जानने वाला है। ○ और उन के नबी ने उन से (यह भी) कहा कि (अल्लाह की ओर से) उस के शासक नियुक्त होने की निशानी यह है कि वह सन्दूक़ तुम्हारे पास वापस आ जायेगा जिस में तुम्हारे रब* की ओर से तुम्हारे लिए शान्ति (स्थिरता एवं ढारस की सामग्री है) और उस का कुछ बचा हुआ अंश है जिसे मूसा का समुदाय और हारून का समुदाय छोड़ गया है,[69] उसे फ़िरिश्ते* उठा कर लायेंगे। यदि तुम ईमान वाले* हो तो इस में तुम्हारे लिए बड़ी निशानी है।○

फिर जब तालूत सेनायें ले कर चला, तो उस ने कहा : अल्लाह एक नदी द्वारा तुम्हारी परीक्षा लेने वाला है। तो जिस किसी ने उस में से (पानी) पिया वह मेरा (साथी) नहीं, और जो-कोई उस का मज़ा न चखे सो वही मेरा (साथी) है, सिवाय इस के कि कोई अपने हाथ से चुल्लू-भर पानी ले-ले। परन्तु उन में से थोड़े लोगों को छोड़ कर, सभी ने उस में से (जी भर कर पानी) पी लिया।

फिर जब वह और ईमान* लाने वाले जो उस के साथ थे, (नदी) पार कर गये तो वे बोले : आज हम में जालूत और उस की सेनाओं के मुक़ाबिले की शक्ति नहीं। उन्हों ने जो समझते थे कि वे अल्लाह से मिलने वाले हैं कहा : कितने ही छोटे गरोह, अल्लाह के हुक्म से, बड़े गरोह पर विजय प्राप्त कर चुके हैं! और अल्लाह सब्र* करने वालों के साथ है।○ और जब वे जालूत और उस की सेनाओं के मुक़ाबिले में आये तो उन्हों ने कहा : हे हमारे रब! तू हमें अधिक-से-अधिक धैर्य प्रदान कर, और हमारे क़दमों को जमा दे, और काफ़िर* लोगों के मुक़ाबिले में हमारी सहायता कर।○ सो (ऐसा ही हुआ) उन्हों ने अल्लाह के हुक्म २५१ से उन्हें पराजित किया और दाऊद[70] ने जालूत को क़त्ल कर दिया; और उसे (आगे चल कर) अल्लाह ने राज्य और हिकमत* प्रदान की, और जो-कुछ चाहा उसे सिखाया।—और यदि अल्लाह (इस प्रकार) मनुष्यों के एक गिरोह को दूसरे गिरोह द्वारा हटाता न रहता तो धरती की व्यवस्था

६९ तौरात के बयान से मालूम होता है कि यह सन्दूक़ एक लड़ाई के अवसर पर फ़िलिस्तीन (Palestine) के मुश्रिकों* (अनेकेश्वरवादियों) ने बनी इसराईल* से छीना था। हज़रत मूसा अ० और हज़रत हारून अ० के समुदाय की छोड़ी हुई चीज़ों में एक तो पत्थर की वे तख़्तियाँ (पट्टियाँ) थीं जो तूर सीना पर अल्लाह ने हज़रत मूसा अ० को दी थीं। इस के अलावा इसी प्रकार की कुछ और चीज़ें भी थीं। बाइबिल के कथनानुसार बनी इसराईल* इस सन्दूक़ को विजय और सफलता का चिह्न समझते थे। इस सन्दूक़ के वापस मिलने का मतलब यह होता था कि अल्लाह की फिर उन पर दया होने वाली है। इसी को आयत में शान्ति सामग्री या तसल्ली का सामान कहा गया है।

७० यही वे दाऊद हैं जिन्हें आगे चल कर अल्लाह ने अपना रसूल* बनाया। इस समय आप नवयुवक थे, और एक सैनिक की हैसियत से सेना के साथ थे। दे० बाइबिल 'समोईल (प्रथम)' (First Book of Samuel) अध्याय १७ और १८।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

مَلِكًا قَالُوا أَنَّى يَكُونُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَنَحْنُ أَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ
يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ الْمَالِ قَالَ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَهُ بَسْطَةً
فِي الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ وَاللَّهُ يُؤْتِي مُلْكَهُ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ
وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ آيَةَ مُلْكِهِ أَن يَأْتِيَكُمُ التَّابُوتُ فِيهِ سَكِينَةٌ
مِّن رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ آلُ مُوسَىٰ وَآلُ هَارُونَ تَحْمِلُهُ الْمَلَائِكَةُ
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوتُ
بِالْجُنُودِ قَالَ إِنَّ اللَّهَ مُبْتَلِيكُم بِنَهَرٍ فَمَن شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّي
وَمَن لَّمْ يَطْعَمْهُ فَإِنَّهُ مِنِّي إِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةً بِيَدِهِ فَشَرِبُوا
مِنْهُ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ فَلَمَّا جَاوَزَهُ هُوَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ قَالُوا
لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ قَالَ الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُم مُّلَاقُو
اللَّهِ كَم مِّن فِئَةٍ قَلِيلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيرَةً بِإِذْنِ اللَّهِ وَاللَّهُ مَعَ
الصَّابِرِينَ وَلَمَّا بَرَزُوا لِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ قَالُوا رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا
صَبْرًا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ فَهَزَمُوهُم
بِإِذْنِ اللَّهِ وَقَتَلَ دَاوُودُ جَالُوتَ وَآتَاهُ اللَّهُ الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ وَ
عَلَّمَهُ مِمَّا يَشَاءُ وَلَوْلَا دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ بَعْضَهُم بِبَعْضٍ
لَّفَسَدَتِ الْأَرْضُ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْعَالَمِينَ
تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ

बिगड़ जाती (ज़मीन फ़साद से भर जाती)। परन्तु अल्लाह संसार वालों के लिए बड़े फ़ज़्ल (कृपा) वाला है। ○

ये अल्लाह की आयतें* हैं जो हम तुम्हें हक़ के साथ सुना रहे हैं, और (हे मुहम्मद !) निस्सन्देह तुम अल्लाह के रसूलों* में से हो; †इन रसूलों* में से किसी को हम ने किसी पर बड़ाई दी, इन में किसी से तो अल्लाह ने बात-चीत की, और किसी को उच्च-पद प्रदान किये;— और मरयम के बेटे ईसा को हम ने खुली हुई निशानियाँ दीं और रूहुल्-क़ुदुस* (पवित्र आत्मा) से उस की सहायता की। यदि अल्लाह चाहता, तो वे लोग जो उन (रसूलों)* के बाद हुये खुली निशानियाँ पा लेने के बाद आपस में न लड़ते। परन्तु (अल्लाह बलपूर्वक लोगों को वि-भेद से नहीं रोकता इस लिए) उन्हों ने वि-भेद किया, सो उन में से कुछ तो ईमान* लाये और कुछ लोगों ने कुफ़्र* (का रास्ता) अपनाया। यदि अल्लाह चाहता, तो वे आपस में न लड़ते; परन्तु अल्लाह जो चाहता है करता है। ○

हे ईमान* लाने वालो ! जो-कुछ हम ने तुम्हें दिया है उस में से (अल्लाह की राह में) ख़र्च करो इस से पहले कि वह दिन आ जाये जिस में न कोई सौदा होगा, न कोई दोस्ती, और न कोई सिफ़ारिश। और जो काफ़िर हैं वही (वास्तव में) ज़ालिम हैं। ○

अल्लाह— उस के सिवा कोई इलाह* (पूज्य) नहीं।— वह सजीव*[1] और चिर-स्थाई*[2] है। उसे न ऊँघ लगती है और न नींद आती है। जो-कुछ आसमानों में है और जो-कुछ ज़मीन में है सब उसी का है। कौन है जो उस के सामने बिना उस की इजाज़त के सिफ़ारिश कर सके ? जो-कुछ उन (लोगों) के सामने है और जो-कुछ उन के पीछे (ओझल) है, वह सब जानता है और उस के ज्ञान में से किसी चीज़ पर हावी नहीं हो सकते सिवाय उस के जितना वह (स्वयं) चाहे। उस की कुर्सी (राज-चौकी) आसमानों और ज़मीन पर छाई हुई है और उन की रक्षा उस के लिए कोई थका देने वाला काम नहीं। और वही (सब से) उच्च और महान् है। ○ २५५

दीन* (धर्म) के बारे में कोई ज़बरदस्ती नहीं। सही बात ना-समझी की बात से अलग हो कर बिलकुल सामने आ गई है। अब जो-कोई ताग़ूत* को ठुकरा दे और अल्लाह पर ईमान* लाये उस ने मज़बूत सहारा थाम लिया जो कभी टूटने का नहीं। और अल्लाह (सब-कुछ) सुनने और जानने वाला है। ○ अल्लाह उन लोगों का संरक्षक-मित्र है जो ईमान* लाये। वह उन्हें अँधेरों से निकाल कर प्रकाश की ओर लाता है। और जिन लोगों ने कुफ़्र* किया, उन के

---

† यहाँ से तीसरा पारः (Part) आरम्भ होता है।

*[1] अर्थात् वह सजीव (Alive) और अमर है। वही जीवन का मूल स्रोत है। जिस को भी जीवन मिलता है, उसी से मिलता है।

*[2] अर्थात् वह अपने अस्तित्व में किसी का मुहताज नहीं है। वह ख़ुद से क़ायम (Self-subsisting), सारी सृष्टि का स्थापित करने वाला, और स्थिर रखने वाला वही है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ مِّنْهُم مَّن كَلَّمَ
اللَّهُ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجَاتٍ وَآتَيْنَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ
الْبَيِّنَاتِ وَأَيَّدْنَاهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا اقْتَتَلَ
الَّذِينَ مِن بَعْدِهِم مِّن بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمُ الْبَيِّنَاتُ وَلَٰكِنِ
اخْتَلَفُوا فَمِنْهُم مَّنْ آمَنَ وَمِنْهُم مَّن كَفَرَ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ
مَا اقْتَتَلُوا وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا أَنفِقُوا مِمَّا رَزَقْنَاكُم مِّن قَبْلِ أَن يَأْتِيَ يَوْمٌ لَّا
بَيْعٌ فِيهِ وَلَا خُلَّةٌ وَلَا شَفَاعَةٌ وَالْكَافِرُونَ هُمُ الظَّالِمُونَ
اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ لَا تَأْخُذُهُ سِنَةٌ وَلَا
نَوْمٌ لَّهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَن ذَا الَّذِي
يَشْفَعُ عِندَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ
وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ
لَا إِكْرَاهَ فِي الدِّينِ قَد تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ فَمَن يَكْفُرْ
بِالطَّاغُوتِ وَيُؤْمِن بِاللَّهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ
لَا انفِصَامَ لَهَا وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ اللَّهُ وَلِيُّ الَّذِينَ آمَنُوا
يُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَوْلِيَاؤُهُمُ

सरकश-सिर ताग़ूत* हैं। वे उन्हें प्रकाश से निकाल कर अँधेरों की ओर ले जाते हैं। ये आग (दोज़ख़* में जाने) वाले हैं जहाँ ये सदा रहेंगे। ○

क्या तुम ने उस को नहीं देखा** जिस ने इबराहीम से उस के रब* के बारे में हुज्जत की? क्यों कि अल्लाह ने उसे राज्य दे रखा था। जब इबराहीम ने कहा : मेरा रब* वह है जो जिलाता और मारता है, उस ने कहा : मैं (भी तो) जिलाता और मारता हूँ। इबराहीम ने कहा : अच्छा, अल्लाह सूर्य को पूर्व से लाता (निकालता) है, तो तू उसे पश्चिम से ले आ (निकाल दे)। इस पर (वह) काफ़िर* हक्का-बक्का रह गया। अल्लाह ज़ालिमों को (सीधी) राह नहीं दिखाया करता। ○

(यह मिसाल**) या फिर उस व्यक्ति की मिसाल (लो) जो एक ऐसी बस्ती पर पहुँचा जो अपनी छतों के बल ढही पड़ी थी, उस ने कहा : अल्लाह कैसे इस बस्ती को इस के मर चुकने (विनष्ट हो जाने) के बाद (दो बारा) ज़िन्दा करेगा? इस पर अल्लाह ने सौ वर्ष के लिए उसे मौत दे दी, फिर उसे (जीवित) उठा खड़ा किया। कहा : तुम कितने समय तक (पड़े) रहे? उस ने कहा : एक दिन या एक दिन का कुछ हिस्सा। कहा : (नहीं), बल्कि तुम सौ वर्ष रहे हो। अब अपने खाने और अपने पीने की वस्तुओं को देखो कि उन पर सालों गुज़र जाने का कोई प्रभाव नहीं पड़ा (उन में कुछ भी विकार नहीं आ सका है)! और अपने गदहे को भी देखो! और (यह हम ने इस लिए किया ताकि तुम्हें विश्वास हो और) ताकि हम तुम्हें लोगों के लिए एक निशानी बना दें, और हड्डियों को देखो, कि हम किस प्रकार उन को (ढाँचा बना कर) उठाते हैं फिर उन पर मांस चढ़ाते हैं! (इस प्रकार) जब उस के सामने बात खुल कर आ गई, तो उस ने कहा : मैं जानता हूँ कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला (सर्व-शक्तिमान्) है। ○

और (इसी सिलसिले में) याद करो जब इबराहीम ने कहा था : मेरे रब!* मुझे दिखा दे तू मुरदों को कैसे ज़िन्दा करेगा, (उस के रब* ने) कहा : क्या तुझे विश्वास नहीं? उस ने कहा : क्यों नहीं, परन्तु (यह इस लिए चाहता हूँ) ताकि मेरे दिल को इतमीनान हो जाये। कहा : अच्छा, तो चार पक्षी ले कर उन्हें अपने साथ हिला (मिला) ले, फिर उन का एक-एक भाग एक-एक पहाड़ पर रख दे, फिर उन्हें बुला, वे तेरे पास भागे चले आयेंगे** । जान लो

७३ अर्थात् क्या तुम ने उस के वृत्तान्त पर विचार नहीं किया?

७४ जो ऊपर गुज़र चुकी। ‡ दे० Ezkiel नबी का परोक्ष निरीक्षण (Ezkiel 37 : 1-11)।

७५ मतलब यह है कि जिन पक्षियों को तुम हिला-मिला कर परचा लेते हो वे तुम्हारे बुलाने से भागे चले आते हैं, तो क्या अल्लाह और उस के पैदा किये हुये लोगों के बीच इतना सम्पर्क भी नहीं, क्या उसे अपने पैदा किये हुये लोगों पर इतना भी अधिकार प्राप्त नहीं हो सकता कि वह उन्हें मरने के बाद फिर मृत्यु से जीवन की ओर पलटा सके। 'जीवन मृत्यु के पश्चात्' के प्रति यह अत्यन्त सूक्ष्म तर्क है। ज़रूरत इस बात की है कि इसे समझने की कोशिश की जाये।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

कि अल्लाह अपार शक्ति का मालिक और हिकमत* वाला है। ○

जो लोग अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं उन (के ख़र्च) की मिसाल (ज़मीन में बोये हुये) उस दाने की-सी है जिस से सात बालें निकलें, और हर बाल में सौ दाने हों। और अल्लाह जिस के लिए चाहता है ऐसी ही बढ़ोतरी प्रदान करता है। और अल्लाह (बड़ी) समाई वाला और (सब-कुछ) जानने वाला है। ○ जो लोग अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं फिर जो-ख़र्च करते हैं उस के पीछे न तो (लेने वालों पर) एहसान धरते हैं और न सताते हैं; उन का बदला (प्रतिफल) उन के रब* के पास है, और उन के लिए न कोई भय की बात है और न वे दुःखी होंगे। ○ एक उचित (भली) बात कहनी और क्षमा से काम लेना उस सद्क़े* (दान) से कहीं उत्तम है जिस के पीछे सताना हो। और अल्लाह बे-परवाह (परम स्वतन्त्र) और सहनशील है। ○ हे ईमान* लाने वालो! अपने सद्क़े* (दान) को एहसान जता कर और सता कर, उस व्यक्ति की तरह बरबाद न करो जो लोगों को दिखाने के लिए अपना माल ख़र्च करता है और अल्लाह और अन्तिम दिन** पर ईमान नहीं रखता। उस (के ख़र्च) की मिसाल ऐसी है जैसे एक चट्टान हो उस पर मिट्टी (जम गई) हो; जब उस पर घोर वर्षा हुई, तो (मिट्टी बह गई) साफ़ चट्टान की चट्टान ही छोड़ गई। ऐसे लोग जो-कुछ कमायें उस से कुछ भी उन के हाथ *नहीं आता। अल्लाह काफ़िरों* को (सीधी राह) नहीं दिखाता।* ○ और उन लोगों (के ख़र्च) की मिसाल जो अल्लाह की ख़ुशी, और अपनी आत्मा की स्थिरता (एवं दृढ़ता) के लिए अपने माल ख़र्च करते हैं, ऐसी है, जैसे किसी (अच्छी) ऊँची भूमि पर एक बाग़ हो, जिस पर घोर वर्षा हुई तो दुगना फल लाये। और यदि घोर वर्षा न हुई तो, हल्की फुहार ही सही। तुम जो-कुछ भी करते हो, अल्लाह उसे देखता है। ○

क्या तुम में से कोई यह पसन्द करेगा कि उस के पास खजूरों और अंगूरों का एक बाग़ हो, जिस के नीचे नहरें बह रही हों, उस के लिए वहाँ हर तरह के फल हों; और उस का बुढ़ापा आ गया हो और उस के निर्बल बच्चे हों; (ऐसी हालत में) उस (बाग़) पर एक आग-भरा बगोला आये और वह जल कर रह जाये? इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए (अपनी) आयतें* खोल-खोल कर बयान करता है, शायद तुम सोच-विचार करो। ○

हे ईमान* लाने वालो! पाक चीज़ों में से जो तुम ने कमाया हो, और जो-कुछ तुम्हारे लिए हम ने ज़मीन से पैदा किया है उस में से (अल्लाह की राह में) ख़र्च करो, और ख़र्च करते हुये उस के ख़राब ही हिस्से (के छाँट कर देने) का इरादा न करो जब कि (वैसी ही चीज़ तुम्हें दी जाये तो) तुम उसे कभी न लोगे यह बात दूसरी है कि (जानने-बूझते) आँखें

الطاغوت يخرجونهم من النور إلى الظلمت أولئك أصحب
النار هم فيها خلدون ۝ ألم تر إلى الذي حاج إبرهم في
ربه أن اتاه الله الملك إذ قال إبرهم ربي الذي يحي و
يميت قال أنا أحي وأميت قال إبرهم فإن الله يأتي
بالشمس من المشرق فأت بها من المغرب فبهت الذي
كفر والله لا يهدي القوم الظلمين ۝ أو كالذي مر على
قرية وهي خاوية على عروشها قال أنى يحي هذه الله بعد
موتها فأماته الله مائة عام ثم بعثه قال كم لبثت قال
لبثت يوما أو بعض يوم قال بل لبثت مائة عام فانظر
إلى طعامك وشرابك لم يتسنه وانظر إلى حمارك و
لنجعلك آية للناس وانظر إلى العظام كيف ننشزها ثم نكسوها
لحما فلما تبين له قال أعلم أن الله على كل شيء قدير ۝
وإذ قال إبرهم رب أرني كيف تحي الموتى قال أولم تؤمن
قال بلى ولكن ليطمئن قلبي قال فخذ أربعة من الطير
فصرهن إليك ثم اجعل على كل جبل منهن جزءا ثم
ادعهن يأتينك سعيا واعلم أن الله عزيز حكيم ۝ مثل
الذين ينفقون أموالهم في سبيل الله كمثل حبة أنبتت سبع

७६ दे० फ़ुटनोट ५।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

سَنَابِلَ فِي كُلِّ سُنْبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ۗ وَاللَّهُ يُضَاعِفُ لِمَن يَشَاءُ ۗ
وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝ الَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
ثُمَّ لَا يُتْبِعُونَ مَا أَنفَقُوا مَنًّا وَلَا أَذًى ۙ لَّهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ
وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ قَوْلٌ مَّعْرُوفٌ وَمَغْفِرَةٌ
خَيْرٌ مِّن صَدَقَةٍ يَتْبَعُهَا أَذًى ۗ وَاللَّهُ غَنِيٌّ حَلِيمٌ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا لَا تُبْطِلُوا صَدَقَاتِكُم بِالْمَنِّ وَالْأَذَىٰ كَالَّذِي يُنفِقُ مَالَهُ
رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۖ فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ
صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَأَصَابَهُ وَابِلٌ فَتَرَكَهُ صَلْدًا ۖ لَّا يَقْدِرُونَ
عَلَىٰ شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوا ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ۝ وَمَثَلُ
الَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَالَهُمُ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ وَتَثْبِيتًا مِّنْ
أَنفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍ بِرَبْوَةٍ أَصَابَهَا وَابِلٌ فَآتَتْ أُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ
فَإِن لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ أَيَوَدُّ
أَحَدُكُمْ أَن تَكُونَ لَهُ جَنَّةٌ مِّن نَّخِيلٍ وَأَعْنَابٍ تَجْرِي مِن
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ لَهُ فِيهَا مِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَأَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهُ ذُرِّيَّةٌ
ضُعَفَاءُ فَأَصَابَهَا إِعْصَارٌ فِيهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ ۗ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ
اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنفِقُوا
مِن طَيِّبَاتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّا أَخْرَجْنَا لَكُم مِّنَ الْأَرْضِ ۖ وَلَا تَيَمَّمُوا

पसन्द कर लो; जान लो, अल्लाह बे-परवाह (परम स्वतन्त्र) और प्रशंसा का अधिकारी है। ○ शैतान* तुम्हें (अल्लाह की राह में ख़र्च करते समय) निर्धन होने से डराता है और अश्लील बातों का हुक्म देता है। और अल्लाह तुम्हें (ख़र्च करने का आदेश दे कर) अपनी क्षमा और फ़ज़्ल (कृपा) का वचन देता है। अल्लाह (बड़ी) समाई वाला और (सब-कुछ) जानने वाला है। ○ जिसे चाहता है हिक्मत* प्रदान करता है, और जिसे हिकमत* दी गई, उसे बड़ी दौलत दी गई। परन्तु चेतते तो वही हैं जो बुद्धि वाले हैं। ○

जो-कुछ भी तुम ख़र्च करते हो और जो नज़्र* (मन्नत) मानते (और अल्लाह की सेवा में पेश करते) हो, अल्लाह उसे जानता है। और ज़ालिमों का कोई सहायक नहीं है। ○ यदि तुम खुले तौर पर सदक़ः* (दान) दो, तो यह भी अच्छी बात है, और यदि उसे छिपा कर ग़रीबों को दो, तो यह तुम्हारे लिए ज़्यादा अच्छा है, यह तुम्हारी कितनी ही बुराइयों को दूर कर देगा। और तुम जो-कुछ करते हो अल्लाह को उस की ख़बर रहती है। ○— २७०

— (हे नबी*!) उन्हें राह पर लाना तुम्हारे ज़िम्मे नहीं है बल्कि अल्लाह जिसे चाहता है राह दिखाता है। ○ — जो माल भी तुम ख़र्च करते हो, वह तुम्हारे अपने ही लिए है। और तुम अल्लाह की ख़ुशी ही की चाह में ख़र्च करो; जो माल भी तुम ख़र्च करोगे तुम्हें उस का भर-पूर बदला दिया जायेगा, और तुम पर ज़ुल्म नहीं किया जायेगा। ○

(यह सदक़ः)* उन मुहताजों के लिए है जो अल्लाह की राह में ऐसा घिर गये हैं कि (जीविका के लिए) ज़मीन में दौड़-धूप नहीं कर सकते। उन के (सवाल से) बचने** के कारण अनजान आदमी उन्हें धनवान् समझता है। तुम उन के लक्षण (चेहरे, सूरत आदि) से उन (की हालत) को जान ले सकते हो: वे लोगों से चिमट-चिमट कर सवाल नहीं करते। तुम (उन की सहायता के लिए) जो माल भी ख़र्च करोगे निस्सन्देह अल्लाह उस का जानने वाला है। ○

जो लोग अपने मालों को रात-दिन छिपे और खुले ख़र्च करते रहते हैं, उन का अपना बदला उन के रब* के पास है, और न उन्हें कोई भय होगा और न वे दुःखी होंगे। ○ जो लोग (सदक़ः* नहीं देते बल्कि उल्टे) सूद (ब्याज) खाते हैं वे (क़ियामत* के दिन) उस तरह खड़े होंगे जैसे वह आदमी खड़ा होता है जिसे शैतान* ने छू कर बावला कर दिया हो**।

७७ अर्थात् उन के न माँगने के कारण।

७८ न केवल यह कि क़यामत में सूद खाने वाला बावला और पागल व्यक्ति के रूप में उठेगा बल्कि दुनिया में भी उस की दशा एक पागल की सी होती है; वह धन के पीछे अपनी मर्यादा और मानव-प्रकृति को भूल जाता है। इस्लाम मानव-जाति में परस्पर सहानुभूति और प्रेम-भाव पैदा करना चाहता है। ब्याज लेने की मनोवृत्ति इस के बिलकुल प्रतिकूल है। ब्याज लेने वाला लोगों की मजबूरियों और उन की दुरवस्था को अपनी कमाई का साधन समझता है; वह किसी के साथ सहानुभूति का व्यवहार नहीं कर सकता।

बाइबिल में भी ब्याज और सूद का निषेध किया गया है। देखिए 'हिज़क़ीएल' (Ezekiel) २२ : १२।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

الخبيث منه تنفقون ولستم بآخذيه إلا أن تغمضوا فيه
واعلموا أن الله غني حميد ۝ الشيطن يعدكم الفقر و
يأمركم بالفحشاء والله يعدكم مغفرة منه وفضلا والله
واسع عليم ۝ يؤتي الحكمة من يشاء ومن يؤت الحكمة فقد
أوتي خيرا كثيرا وما يذكر إلا أولوا الألباب ۝ وما أنفقتم من
نفقة أو نذرتم من نذر فإن الله يعلمه وما للظلمين من
أنصار ۝ إن تبدوا الصدقت فنعما هي وإن تخفوها وتؤتوها
الفقراء فهو خير لكم ويكفر عنكم من سيئاتكم والله بما تعملون
خبير ۝ ليس عليك هدىهم ولكن الله يهدي من يشاء وما
تنفقوا من خير فلأنفسكم وما تنفقون إلا ابتغاء وجه الله
وما تنفقوا من خير يوف إليكم وأنتم لا تظلمون ۝ للفقراء
الذين أحصروا في سبيل الله لا يستطيعون ضربا في الأرض
يحسبهم الجاهل أغنياء من التعفف تعرفهم بسيمهم لا
يسألون الناس إلحافا وما تنفقوا من خير فإن الله به عليم ۝
الذين ينفقون أموالهم بالليل والنهار سرا وعلانية فلهم
أجرهم عند ربهم ولا خوف عليهم ولا هم يحزنون ۝
الذين يأكلون الربوا لا يقومون إلا كما يقوم الذي يتخبطه

यह इस लिए होगा कि उन का कहना है : व्यापार भी तो ब्याज-ही जैसी चीज़ है; हालाँकि अल्लाह ने व्यापार को हलाल* (जायज़) ठहराया है और ब्याज को हराम*[७९]। सो जिस किसी के पास उस के रब* की ओर से यह नसीहत पहुँच गई, और वह (ब्याज लेने से) बाज़ आ जाये, तो जो-कुछ पहले (लेना) हो चुका वह उसी का रहा, और मामला उस का अल्लाह के हवाले है। और जिस किसी ने फिर वही काम किया तो ऐसे ही लोग आग (दोज़ख़* में जाने) वाले हैं जहाँ वे सदा रहेंगे।○ अल्लाह सूद (ब्याज) का मठ मार देता और सदक़ों* (की बरकत) को बढ़ाता है[८०]। अल्लाह किसी कुफ़्र* करने वाले (ना-शुक्रे अथवा अकृतज्ञ) और गुनाह करने वाले को पसन्द नहीं करता।○ जो लोग ईमान लाये* और अच्छे काम किये, नमाज़* क़ायम रखी और ज़कात* देते रहे, उन का बदला उन के रब* के पास है और उन के लिए न कोई भय की बात है और न वे दुःखी होंगे।○

हे ईमान* लाने वालो! अल्लाह की अवज्ञा से बचो और उस की ना-ख़ुशी से डरते रहो, और जो ब्याज (लोगों पर) बाक़ी रह गया है, उसे छोड़ दो, यदि तुम ईमान* वाले हो।○ यदि तुम ने ऐसा न किया, तो सावधान हो जाओ कि अल्लाह और उस के रसूल* की ओर से तुम्हारे विरुद्ध युद्ध (का एलान) है। और यदि तौबः* करते हो, तो अपना मूल-धन लेने का तुम्हें अधिकार है। न तुम ज़ुल्म करो और न तुम्हारे साथ ज़ुल्म किया जाये।○

---

७९. चाहे नैतिक दृष्टि से देखा जाय या आर्थिक दृष्टि से व्यापार और ब्याज में कोई सम्पर्क नहीं है। ब्याज पर रुपया देने वाले का लाभ सुरक्षित (Reserved) होता है, परन्तु दूसरे व्यक्ति को केवल अवसर मिलता है जिस का लाभदायक होना ज़रूरी नहीं। यदि वह रुपया व्यापार के लिए नहीं बल्कि आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ले रहा है, तो लाभ का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता। परन्तु यदि वह रुपया कृषि या व्यापार उद्योग आदि में लगाता है जब भी मुनाफ़ा यक़ीनी नहीं है। ब्याज का अर्थ केवल लोगों की विवशता और मजबूरी से अनुचित लाभ उठाना है, हालाँकि मजबूर और विवश आदमी हमारी दया और सहानुभूति का भूखा होता है। यदि हम रुपया व्यापार या उद्योग में लगाने के लिए किसी को देते हैं तो लाभ में शरीक होने का हक़ हमें पहुँचता है परन्तु उस समय जब कि लाभ के साथ हम घाटे में भी शरीक हों, और मामला समझौते के रूप में पहले से तै कर लें।

८०. क़ुरआन के निकट ब्याज प्रत्येक दशा में हानिकारक और अकल्याणकारी है; इस से किसी भलाई की आशा नहीं की जा सकती। ब्याज-व्यवस्था से समाज की नैतिक और आर्थिक प्रगति में बाधा ही नहीं पड़ती अपितु वह समाज के पतन एवं विनाश का कारण है। इस के विपरीत सदक़ः* (दान) से आख़िरत* (परलोक) में जो फ़ायदा पहुँचेगा वह तो पहुँचेगा ही सांसारिक जीवन में भी मनुष्य को उस से बहुत से फ़ायदे पहुँचते हैं। ऐसे समाज में जहाँ सदक़ः* और ज़कात* देने की प्रथा होगी, वहाँ लोगों में परस्पर स्वार्थपरता का व्यवहार नहीं होगा कि कोई बिना अपने किसी व्यक्तिगत फ़ायदे के किसी के काम ही न आ सके। ऐसे समाज में लोगों के बीच द्वेष, ईर्ष्या और निर्दयता के बदले प्रेम, सहानुभूति और त्याग की भावनाओं का विकास होगा। ऐसा समाज नैतिक और आर्थिक प्रत्येक दृष्टि से उन्नति कर सकेगा।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

الشَّيْطٰنُ مِنَ الْمَسِّ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْٓا اِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبٰوا
وَاَحَلَّ اللّٰهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبٰوا فَمَنْ جَآءَهٗ مَوْعِظَةٌ مِّنْ
رَّبِّهٖ فَانْتَهٰى فَلَهٗ مَا سَلَفَ وَاَمْرُهٗٓ اِلَى اللّٰهِ وَمَنْ عَادَ فَاُولٰٓئِكَ
اَصْحٰبُ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَيُرْبِي
الصَّدَقٰتِ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ اَثِيْمٍ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ
عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ
عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَذَرُوْا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبٰوٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝
فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاِنْ تُبْتُمْ
فَلَكُمْ رُءُوْسُ اَمْوَالِكُمْ لَا تَظْلِمُوْنَ وَلَا تُظْلَمُوْنَ ۝ وَاِنْ كَانَ
ذُوْ عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ اِلٰى مَيْسَرَةٍ وَاَنْ تَصَدَّقُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُوْنَ ۝ وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِيْهِ اِلَى اللّٰهِ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ
نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا
تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوْهُ وَلْيَكْتُبْ بَّيْنَكُمْ
كَاتِبٌ بِالْعَدْلِ وَلَا يَاْبَ كَاتِبٌ اَنْ يَّكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللّٰهُ
فَلْيَكْتُبْ وَلْيُمْلِلِ الَّذِيْ عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ وَلَا
يَبْخَسْ مِنْهُ شَيْـًٔا فَاِنْ كَانَ الَّذِيْ عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيْهًا اَوْ

और यदि (क़र्ज़ लेने वाला) तंगी में है, तो उस का हाथ खुलने तक उसे मुहलत देनी चाहिए; और जो (मूल-धन भी) सदक़ः* कर दो, तो यह तुम्हारे लिए ज़्यादा अच्छा है, यदि तुम जानो। ○ उस दिन से डरो, जब तुम अल्लाह की ओर लौटाये जाओगे। फिर ऐसा होगा कि हर व्यक्ति ने जो-कुछ कमाया है, उस का भर-पूर बदला उसे दे दिया जायेगा, और उन पर ज़ुल्म न होगा। ○

हे ईमान* लाने वालो! जब तुम किसी नियत समय के लिए आपस में उधार का लेन-देन करो, तो उसे लिख लिया करो। चाहिए कि कोई लिखने वाला तुम्हारे बीच इन्साफ़ के साथ लिख दे। किसी लिखने वाले के लिए यह सही नहीं है कि जैसा-कुछ अल्लाह ने उसे (लिखना) सिखाया है उस के अनुसार (दस्तावेज़) लिखने से किनारा खींचे, उसे लिख देना चाहिए, और (दस्तावेज़ का लेख) बोल कर वह लिखाये जिस पर हक़ आता है[1]। उसे अल्लाह, अपने रब* की अवज्ञा से बचना और उस की ना-ख़ुशी से डरते रहना चाहिए, और (जो मामला तै हुआ हो) उस में कोई कमी न करनी चाहिए। परन्तु यदि वह व्यक्ति जिस पर हक़ आता है (अर्थात् क़र्ज़ लेने वाला) कम-समझ या कमज़ोर हो, या (किसी कारण से स्वयं) बोल कर (दस्तावेज़) न लिखा सकता हो, तो चाहिए कि उस का सरपरस्त इन्साफ़ के साथ (उस की ओर से दस्तावेज़ का लेख) बोल कर लिखा दे। और अपने पुरुषों में से दो गवाहों की गवाही करा लो। और यदि (इस अवसर पर) दो पुरुष (मौजूद) न हों तो एक पुरुष और दो स्त्रियाँ, जिन्हें तुम गवाह होने के लिए पसन्द करो (गवाह हो जायें), ताकि यदि एक ग़लती करे, तो दूसरी उसे याद दिला दे। और जब गवाहों से गवाही के लिए कहा जाये तो उन्हें किनारा नहीं खींचना चाहिए। और मामला छोटा हो या बड़ा, समय की नियुक्ति के साथ उसे लिखने में आलस्य से काम न लो। यह अल्लाह के नज़दीक सब से ज़्यादा इन्साफ़ की बात और गवाही के लिए भी बहुत ही ठीक (तरीक़ा) है, और इस में तुम्हारे किसी सन्देह में न पड़ने की अधिक सम्भावना है; हाँ, यदि नक़द सौदा हो,[2] तो उस के न लिखने में तुम्हारे लिए कोई दोष नहीं। और जब सौदा करो तो गवाह कर लिया करो, किसी (दस्तावेज़) लिखने वाले को और किसी गवाह को सताया न जाये। यदि ऐसा करोगे तो यह तुम्हारा मर्यादोल्लंघन करना होगा। अल्लाह की अवज्ञा से बचो और उस की ना-ख़ुशी से डरते रहो। अल्लाह तुम्हें शिक्षा देता है। और अल्लाह हर चीज़ को जानता है। ○

और यदि तुम किसी सफ़र में हो और (दस्तावेज़ लिखने के लिए) कोई लिखने वाला न पा सको, तो गिरो हाथ में रख कर मामला कर लेना चाहिए।

---

1 अर्थात् क़र्ज़ लेने वाला।
2 अर्थात् यदि सौदा हाथ दर हाथ का हो।
* इन शब्दों के अर्थ के लिए देखें [illegible]

ضَعِيفًا أَوْ لَا يَسْتَطِيعُ أَن يُمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ وَلِيُّهُ بِالْعَدْلِ ۚ وَ
اسْتَشْهِدُوا شَهِيدَيْنِ مِن رِّجَالِكُمْ ۖ فَإِن لَّمْ يَكُونَا رَجُلَيْنِ
فَرَجُلٌ وَامْرَأَتَانِ مِمَّن تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَاءِ أَن تَضِلَّ
إِحْدَاهُمَا فَتُذَكِّرَ إِحْدَاهُمَا الْأُخْرَىٰ ۚ وَلَا يَأْبَ الشُّهَدَاءُ إِذَا مَا
دُعُوا ۚ وَلَا تَسْأَمُوا أَن تَكْتُبُوهُ صَغِيرًا أَوْ كَبِيرًا إِلَىٰ أَجَلِهِ ۚ ذَٰلِكُمْ
أَقْسَطُ عِندَ اللَّهِ وَأَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ وَأَدْنَىٰ أَلَّا تَرْتَابُوا ۖ إِلَّا أَن تَكُونَ
تِجَارَةً حَاضِرَةً تُدِيرُونَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَلَّا
تَكْتُبُوهَا ۗ وَأَشْهِدُوا إِذَا تَبَايَعْتُمْ ۚ وَلَا يُضَارَّ كَاتِبٌ وَلَا شَهِيدٌ ۚ
وَإِن تَفْعَلُوا فَإِنَّهُ فُسُوقٌ بِكُمْ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ وَيُعَلِّمُكُمُ اللَّهُ ۗ وَاللَّهُ
بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ وَإِن كُنتُمْ عَلَىٰ سَفَرٍ وَلَمْ تَجِدُوا كَاتِبًا فَرِهَانٌ
مَّقْبُوضَةٌ ۖ فَإِنْ أَمِنَ بَعْضُكُم بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِي اؤْتُمِنَ أَمَانَتَهُ
وَلْيَتَّقِ اللَّهَ رَبَّهُ ۗ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ۚ وَمَن يَكْتُمْهَا فَإِنَّهُ آثِمٌ
قَلْبُهُ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ۝ لِّلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ ۗ وَإِن تُبْدُوا مَا فِي أَنفُسِكُمْ أَوْ تُخْفُوهُ يُحَاسِبْكُم بِهِ اللَّهُ ۖ
فَيَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيرٌ ۝ آمَنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْهِ مِن رَّبِّهِ وَالْمُؤْمِنُونَ ۚ
كُلٌّ آمَنَ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ
أَحَدٍ مِّن رُّسُلِهِ ۚ وَقَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۖ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ
الْمَصِيرُ ۝ لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا
مَا اكْتَسَبَتْ ۗ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا إِن نَّسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا
تَحْمِلْ عَلَيْنَا إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا
تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ ۖ وَاعْفُ عَنَّا وَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا ۚ
أَنتَ مَوْلَانَا فَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝

फिर यदि ऐसा हो कि एक ने दूसरे पर इतमीनान कर लिया है, तो जिस पर इतमीनान किया गया उसे चाहिए कि अपनी (वह) अमानत (जो उस के पास रखी गई है समय पर उस के मालिक को) सौंप दे और अल्लाह, अपने रब* की अवज्ञा से बचे और उस की ना-ख़ुशी से डरता रहे।

और गवाही को न छिपाओ। जो उसे छिपाता है, तो निश्चय ही दिल उस का गुनहगार है। और जो-कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे जानता है। ○

आसमानों में जो-कुछ है और जो-कुछ ज़मीन में है, सब अल्लाह का है; तुम्हारे मन में जो-कुछ है तुम चाहे ज़ाहिर करो या उसे छिपाओ, अल्लाह तुम से उस का हिसाब लेगा। फिर जिसे चाहेगा क्षमा करेगा और जिसे चाहेगा अज़ाब देगा। अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला (सर्वशक्तिमान्) है।○

(अल्लाह का) रसूल* उस पर ईमान लाया* जो-कुछ उस के रब* की ओर से उस पर उतरा है और ईमान* वाले भी (उस पर ईमान लाये)। (इन में से) हर एक अल्लाह पर, उस के फ़िरिश्तों* पर, उस की किताबों पर और उस के रसूलों* पर ईमान लाया। — (इन का कहना है) कि हम अल्लाह के रसूलों में कोई अन्तर नहीं करते[82]। और उन्हों ने कहा, "हम ने सुना, और (स्वेच्छा-पूर्वक उस का) पालन किया। हे हमारे रब*! (हमें) तेरी क्षमा चाहिए। और तेरी ही ओर (हमें) पहुँचना है।" ○

अल्लाह किसी व्यक्ति पर उस की समाई से बढ़ कर ज़िम्मेदारी (का बोझ) नहीं डालता। जो-कुछ (नेकी) उस ने कमाया वह उसी का है, और जो-कुछ (बुराई) उस ने समेटी (उस का वबाल भी) उसी पर है।

(ईमान वालों* की प्रार्थना यही होती है कि) हमारे रब*! यदि हम से भूल हो जाये, या हम चूक जायें, तो उस पर हमें न पकड़ना, हमारे रब! हम पर भारी बोझ न डालना जैसे तू ने हम से पहले लोगों पर बोझ डाले थे! हमारे रब! हम पर ऐसे बोझ न डालना जिस के उठाने की हमें शक्ति नहीं! हमें छोड़ दे (हमें न पकड़), हमें क्षमा कर दे हम पर दया कर, तू, हमारा स्वामी है, काफ़िर* लोगों के मुक़ाबिले में हमारी सहायता कर। ○

---

८२ अर्थात् अल्लाह की ओर से जितने भी रसूल आये, चाहे वे किसी देश या जाति में पैदा हुये हों, हम सब पर ईमान लाते हैं। सत्य के विषय में जाति, देश, भाषा, रंग और वेश-भूषा सम्बन्धी विभेद कोई चीज़ नहीं है।*

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

३--आले इमरान
(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः का नाम "आलेइमरान" (इमरान के लोग) इस लिए रखा गया है कि इस में एक जगह 'आले इमरान' का वर्णन है। इसी को चिन्ह के रूप में इस सूरः का नाम दे दिया गया है। इस प्रकार चिह्न के रूप में नाम रखने का रिवाज अरबों में पहले से भी प्रचलित था। इमरान हज़रत मूसा अ० के पिता का नाम था। जिसे बाइबिल में अमरान (Amran) कहा गया है। इस सूरः में रिसालत* और उसकी बरकतों के हज़रत मूसा अ० के घराने (बनी इसराईल*) से दूसरे समुदाय में चले जाने का उल्लेख किया गया है (दे० आयत २१–२६)। इस दृष्टि से देखा जाये तो सूरः का यह नाम यहूदियों के बीते समय की याद दिलाता है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

इस सूरः में ४ तक़रीरें शामिल हैं। पहली तक़रीर सूरः के आरम्भ से आयत ३२ तक है, इस के अध्ययन से अनुमान होता है कि यह 'बद्र' की लड़ाई के पश्चात् *किसी क़रीबी ज़माने में उतरी है। 'बद्र' की लड़ाई स० २ हि० में हुई थी।* इस लड़ाई का विस्तार पूर्वक उल्लेख सूरः अल-अनफ़ाल में किया गया है। दूसरी तक़रीर आयत ३३ से शुरू हो कर आयत ६३ पर समाप्त होती है। यह तक़रीर स० ६ हि० में उस अवसर पर उतरी है जब नबी सल्ल० के पास 'नजरान' के ईसाई राज्य का प्रतिनिधि-मंडल आया हुआ था। इस अवसर पर अल्लाह ने यह तक़रीर इस लिए उतारी थी कि इस के द्वारा ईसाइयों को इस्लाम* की ओर बुलाया जाये। सूरः की तीसरी तक़रीर जो आयत ६४ से शुरू हो कर आयत १२० पर समाप्त होती है, 'बद्र' और 'उहद' की लड़ाइयों के बीच के ज़माने में उतरी है। चौथी तक़रीर जो आयत १२१ से आरम्भ हो कर सूरः के अन्त तक चली गई है, इसके उतरने का समय 'उहद' की लड़ाई के बाद है।

केन्द्रीय विषय तथा सम्पर्क

सूरः अल-बक़रः का केन्द्रीय विषय ईमान* था, इस सूरः का केन्द्रीय विषय इस्लाम* है। जो सम्बन्ध ज्ञान और व्यवहारिक जीवन में होता है वही सम्बन्ध ईमान* और इस्लाम* में पाया जाता है। इस्लाम की मौलिक शिक्षा रसूल* की आज्ञा पर चलना और उस का पालन करना है। रसूल* की नाफ़रमानी (अवज्ञा) वास्तव में अल्लाह की आयतों* का खुला इन्कार है। इस इन्कार पर दुनियाँ में भी अल्लाह का अज़ाब आता है और मनुष्य की आख़िरत* (परलोक) की ज़िन्दगी भी तबाह होती है।

सूरः आले इमरान और सूरः अल-बक़रः में गहरा सम्बन्ध पाया जाता है। सूरः अल-बक़रः से यदि जीवन के ज्ञान-सम्बन्धी पहलू की पूर्णता प्राप्त होती है, तो

---

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः आले इमरान से हमारे व्यवहारिक जीवन को पूर्णता मिलती है। ये दोनों सूरतें* परस्पर एक-दूसरे की पूर्ति करती हैं। सूरः अल-बक़रः में जिन बातों का उल्लेख संक्षिप्त रूप में किया गया है, उन्हें इस सूरः में विस्तार-पूर्वक बयान किया गया है। इसी प्रकार जो बातें वहाँ विस्तार-पूर्वक बयान हुई हैं उन का वर्णन इस सूरः में संक्षिप्त रूप में किया गया है, काबः* के निर्माण और रिब्बियों* के लड़ने का उल्लेख इस सूरः में संक्षिप्त रूप में किया गया है; परन्तु गत सूरः में सविस्तार इन का वर्णन किया गया है। इस सूरः में अल्लाह की राह में पेश आने वाली मुसीबतों और संकटों का उल्लेख विस्तारपूर्वक किया गया है;[१] परन्तु गत सूरः में इस के बारे में ईमान* वालों को केवल सावधान करके छोड़ दिया गया है[२]। इसी प्रकार गत सूरः में यदि यहूदियों* का वर्णन है; तो इस सूरः में ईसाइयों* का। यहूदी-वर्ग विशेष रूप से व्यवहारिक जीवन में सीधे मार्ग से भटक गया था जब कि ईसाइयों में विशेषतः ज्ञान और आस्था से सम्बन्ध रखने वाली गुमराहियाँ पैदा हो गई थीं। सूरः अल-बक़रः में मुनाफ़िक़ों* के बारे में संक्षेप में कुछ बातें बयान हुई हैं, इस सूरः में उस के मुक़ाबिले में अधिक विस्तार से काम लिया गया है। सूरः अल-बक़रः में इस्लामी समाज के लिए बहुत से नियम और क़ानून दिये गये हैं; इस सूरः में इस प्रकार के क़ानून नहीं दिये गये हैं; परन्तु इस के बाद आने वाली सूरः (अन्-निसा) से यह कमी पूरी हो जाती है।

किन परिस्थितियों में उतरी

सूरः अल-बक़रः में ईमान वालों* को समय आने से पूर्व ही जिन आक्रमणों, कठिनाइयों और आपत्तियों से सूचित किया गया था, वे पूरी तरह सामने आ चुकी थीं। जिस से मदीने की आर्थिक स्थिति भी बुरी तरह प्रभावित हो रही थी।

मदीने में आने के बाद नबी सल्ल० ने यहूदियों से जो समझौता (Agreement) और संधि की थी उन लोगों ने उसे तोड़ डाला था। मदीने वालों के साथ यहूदियों की बहुत पहले से दोस्ती चली आ रही थी, उन्हों ने उस का कुछ भी आदर नहीं किया। 'बद्र' की लड़ाई के बाद तो वे खुल कर क़ुरैश और अरब के दूसरे क़बीलों को मुसलमानों से बदला लेने को उभारने लगे थे।

'उहुद' की लड़ाई

एक वर्ष के बाद ही मक्का वालों ने तीन हज़ार की सेना ले कर मदीना पर आक्रमण कर दिया। सूचना मिलने पर एक हज़ार की सेना ले कर नबी सल्ल० भी मुक़ाबिले के लिए निकले। 'शौत' के स्थान पर पहुँच कर अब्दुल्लाह इब्न उबई जो मुनाफ़िक़ों* का नायक था, अपने ३०० व्यक्तियों को ले कर अलग हो गया; जिस के कारण मुसलमान घबरा गये यहाँ तक कि क़बीला बनू सल्मः और बनू हारिसः के लोगों ने हिम्मत हार कर पलटने का निश्चय कर लिया; परन्तु अल्लाह ने उन के दिलों को मज़बूत कर दिया और वे वापस नहीं हुये। नबी सल्ल० ने अपनी

---

१ दे० आयत ६६-६७ और आयत १४६-१४८।
२ दे० सू० अल-बक़रः आयत १५४-१५६ और २१४।
* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सेना 'उहुद' की पहाड़ी के दामन में खड़ी की। पीछे की ओर पहाड़ था सामने दुश्मन की सेना थी। पहलू में केवल एक ऐसा दर्रा था जिस से हो कर दुश्मन अचानक मुसलमानों पर हमला कर सकते थे। आप (सल्ल०) ने वहाँ अब्दुल्लाह इब्न ज़ुबैर को ५० तीर मारने वाले सैनिकों के साथ नियुक्त कर दिया; और उन्हें ताकीद कर दी कि यहाँ जमे रहना। किसी हाल में भी यहाँ से न टलना। लड़ाई हुई तो दुश्मनों के पाँव उखड़ गये। इस अवसर पर दस आदमियों के अतिरिक्त दर्रे के सभी सैनिक, दुश्मनों के छोड़े हुये माल को एकत्र करने में लग गये; और नबी सल्ल० के हुक्म को भुला दिया। दुश्मनों ने जब देखा कि दर्रा खाली है तो पलट कर अचानक पीछे से आक्रमण कर दिया; जिस से मुसलमानों को अधिक हानि पहुँची। यह लड़ाई इतिहास में 'उहुद' की लड़ाई के नाम से प्रसिद्ध है। सूरः आले इमरान में इस लड़ाई पर विस्तार पूर्वक विवेचना की गई है।

सम्बोधन और वार्तायें

इस सूरः में विशेष रूप से दो गिरोहों को सम्बोधित किया गया है : पहला गिरोह किताब वालों* (यहूदियों और ईसाइयों) का है। इस गरोह को उसी प्रकार सच्चाई की ओर बुलाया गया है जिस प्रकार सूरः अल-बक़रः में बुलाया गया था। उन के आचार-विचार और उन के नैतिक पतन का उल्लेख करते हुये उन्हें खुले तौर पर बताया गया है कि यह रसूल* उसी दीन* की ओर लोगों को बुला रहा है जिस की ओर सनातन से सारे नबी* लोगों को बुलाते रहे हैं।

दूसरा गरोह उन लोगों का है जो हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर ईमान* ला चुके थे; और उन्हें अल्लाह का रसूल मान चुके थे। इस गिरोह को इस का ज़िम्मेदार ठहराया गया है कि उसे संसार के सामने सच्चाई पेश करनी है और संसार वालों तक ईश्वर का सन्देश पहुँचाना है।

इस सूरः के शुरू का आधा भाग विशेष-रूप से किताब वालों* से सम्बन्ध रखता है; और शेष आधे भाग का सम्बन्ध ईमान* वालों से है। ईमान वालों को जो आदेश सूरः अल-बक़रः में दिये गये थे उसी सिलसिले में कुछ और आदेश दिये गये हैं। उन्हें परस्पर जुड़े रहने और सच्चाई की राह पर जमे रहने का आदेश दिया गया है। उन्हें खुले-तौर पर यह बता दिया गया है कि उन का उन किताब वालों* और मुनाफ़िक़ों* के साथ क्या व्यवहार होना चाहिए, जो इस्लाम* की राह में तरह-तरह की रुकावटें डाल रहे थे। मुसलमानों को अपनी उन कमज़ोरियों के दूर करने का भी हुक्म दिया गया है जो उन से 'उहुद' की लड़ाई के अवसर पर ज़ाहिर हुई थीं। उन्हें अल्लाह की राह में लड़ने पर उभरा गया है और उन्हें इस बात की खुशख़बरी भी दी गई है कि विजय उन्हीं को प्राप्त होगी। ईमान* वालों के दिलों में विरोधी दल की ओर से जो सन्देह पैदा किये जा रहे थे उस से उन्हें सावधान रहने का हुक्म दिया गया है। 'उहुद' की लड़ाई में मुसलमानों को हानि पहुँची थी, इस अवसर पर इस्लाम-विरोधी दल ने मुसलमानों के बीच विभेद पैदा करने की पूरी [illegible] की थी जैसे हज़रत मूसा अ० की जाति के लोगों ने की थी जिस के फ़ल- [illegible], उन्हें ४० वर्ष तक उजाड़ मैदानों की ख़ाक छाननी पड़ी थी।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

समाप्ति

आयत १६० से सूरः* के अन्त तक सूरः की समाप्ति का भाग है। सूरः के इस भाग का सम्पर्क पूरी सूरः से है। सूरः की समाप्ति को समझने के लिए विशेष रूप से सूरः की पहली तक़रीर—जिसे इस सूरः की भूमिका होने का पद प्राप्त है—हमारे सामने रहनी चाहिए।

सूरः की भूमिका (पहली तक़रीर) में यह बात बताई गई है कि अल्लाह ही हमारी हर प्रकार की ज़रूरतें पूरी करता है। उस ने हमें इस्लाम* की शिक्षा दी; और जीवन का सच्चा और सीधा मार्ग दिखाने के लिए अपनी किताब* उतारी; और हमें वह ज्ञान प्रदान किया जिस से हम सत्य और असत्य को परख सकें। जो लोग अल्लाह की किताब का इन्कार करते हैं, और उस की दी हुई बुद्धि से काम नहीं लेते, उन्हें वह सख़्त अज़ाब देगा। सूरः की भूमिका की तरह सूरः के अन्तिम भाग में भी तौहीद* (एकेश्वरवाद) का उल्लेख किया गया है। और बताया गया है कि वे लोग कौन हैं जो अल्लाह के यहाँ सफलता प्राप्त करने वाले हैं। सफलता प्राप्त करने वाले लोगों के बारे में बताया गया है कि वही बुद्धिमान लोग हैं। वे आसमानों और ज़मीन की बनावट (Creation) में सोच-विचार करते हैं। और खड़े, बैठे और लेटे, हर हाल में अल्लाह को याद करते हैं। जिस के फलस्वरूप वे पुकार उठते हैं : "हमारे रब! तू ने ये सब बे-कार और व्यर्थ नहीं बनाया है। तू सर्वश्रेष्ठ है! तो (हे रब*!) तू हमें आग (दोज़ख़*) के अज़ाब से बचा ले"। फिर उन की यह दुआ (प्रार्थना) पेश की गई है जिस का एक-एक लफ़्ज़ (शब्द) दर्द में डूबा हुआ है। इस दुआ से हम अच्छी तरह समझ सकते हैं कि वह व्यक्ति जो केवल एक दार्शनिक (Philosopher) हो, उस में और एक ईमान* वाले व्यक्ति में क्या अन्तर होता है। ईमान वालों की भावनायें और उन के विचार कितने उच्च और निर्मल होते हैं। उन का चिन्तन उन्हें ईश्वर से मिलाता है जो आत्मा की शान्ति और सुखमय जीवन का एक-मात्र साधन है। वास्तव में वे अपने ईश्वर से जुड़ जाते हैं और उन का जीवन पूर्ण हो जाता है।

अल्लाह की याद से दिल की ग़फ़लत दूर होती है; और चिन्तन करने से मनुष्य पर यथार्थ ज्ञान के द्वार खुलते हैं। मनुष्य का कर्तव्य है कि वह सदा ईश्वर का स्मरण करे और सम्पूर्ण विश्व की सृष्टि और उस की रचना में सोच-विचार से काम ले। सत्यता (Reality) की प्राप्ति के लिए ये दोनों बातें अत्यन्त आवश्यक हैं।

एक बार नबी* (सल्ल०) की सेवा में कुछ अमुस्लिम आये और उन्हों ने आप (सल्ल०) से कहा कि मूसा (अ०) लाठी और चमकते हाथ का चमत्कार ले कर आये थे। ईसा (मसीह अ०) अन्धों और कोढ़ियों को अच्छा करते थे। और दूसरे नबी* भी कुछ-न-कुछ चमत्कार ले कर आये थे। आप क्या ले कर आये हैं? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए आप (सल्ल०) ने इस सूरः का यही अन्तिम भाग पढ़ कर सुनाया और कहा : "मैं तो यह ले कर आया हूँ"। वास्तव में ज्ञान का चमत्कार सब चमत्कारों से बढ़ कर है।

सूरः के अन्तिम भाग में ईमान वालों की कई-एक विशेषताओं का वर्णन करते हुये उन्हें इस बात पर उभारा गया है कि वे सच्चाई पर जमे रहें और हर हाल में अल्लाह से डरते रहें। यही उन की सफलता का एक-मात्र साधन है।

---

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः आले इमरान

(मदीने में उतरी — आयतें* २००)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त दयावान् और कृपाशील है।

بسم الله الرحمن الرحيم
الم ۞ الله لا إله إلا هو الحي القيوم ۞ نزل عليك الكتب
بالحق مصدقا لما بين يديه وأنزل التورىة والإنجيل ۞ من
قبل هدى للناس وأنزل الفرقان إن الذين كفروا بايت
الله لهم عذاب شديد والله عزيز ذو انتقام ۞ إن الله لا
يخفى عليه شيء في الأرض ولا في السماء ۞ هو الذي
يصوركم في الأرحام كيف يشاء لا إله إلا هو العزيز الحكيم
هو الذي أنزل عليك الكتب منه ايت محكمت هن أم
الكتب وأخر متشبهت فأما الذين في قلوبهم زيغ فيتبعون
ما تشابه منه ابتغاء الفتنة وابتغاء تأويله وما يعلم تأويله

अलिफ़० लाम० मीम०[1]। ○ अल्लाह—जिस के सिवा कोई इलाह* (पूज्य) नहीं। — वह सजीव[2] (और) सिरम्याई[3] है। ○

उस ने तुम पर हक़ के साथ किताब* उतारी, जो उस की तसदीक़ कर रही है जो-कुछ कि इस से पहले (उतरा) था, और वह तौरात* और इंजील* उतार चुका है, ○ इस से पहले लोगों के मार्ग-दर्शन के लिए, और उस ने कसौटी उतारी है (जो हक़ और नाहक़ को अलग करने वाली है)। निस्सन्देह जो लोग अल्लाह की आयतों* का इन्कार करते हैं, उन के लिए कड़ा अज़ाब है। अल्लाह अपार शक्ति का मालिक और (बुराई का) बदला लेने वाला है।

अल्लाह से न ज़मीन में कोई चीज़ छिपी हुई है और न आसमान में। ○ वही है जो (तुम्हारी) माँओं के पेट में जैसी चाहता है तुम्हारी सूरतें (रूप) बनाता है। उस के सिवा कोई इलाह* (पूज्य) नहीं, वह अपार शक्ति का मालिक और हिकमत* वाला है। ○ वही है जिस ने तुम पर किताब* उतारी जिस में कुछ आयतें तो (अपने मतलब में स्पष्ट, पक्की और) अटल हैं यही किताब की बुनियाद हैं, और दूसरी (आयतें) अस्पष्ट और उपलक्षित हैं (जिन के अर्थों में कई पहलू निकलते हैं)[4], तो जिन लोगों के दिलों में टेढ़ है वे उसी के पीछे पड़ जाते हैं जो उन में से अस्पष्ट और उपलक्षित है, ताकि उस के वास्तविक अर्थ की खोज में पड़ कर फ़ितनः (और गुमराही) फैलायें। जब कि उन का वास्तविक अर्थ अल्लाह के सिवा और कोई नहीं जानता। और जो लोग ज्ञान में पक्के हैं वे यही कहते हैं : हम इस पर ईमान* लाये; (यह) सब हमारे रब* की ओर से है, परन्तु बुद्धि वालों

---

१ दे० सूरः अल-बक़रः फ़ुट नोट १।

२ दे० सूरः अल-बक़रः फ़ुट नोट ७१।

३ दे० सूरः अल-बक़रः फ़ुट नोट ७२।

४ क़ुरआन की उन आयतों* में जिन का मतलब साफ़ और खुला हुआ है, वह सब बातें खोल-खोल कर बता दी गई हैं जिन की ओर लोगों को बुलाने के लिए क़ुरआन उतरा है - जैसे ईमान* और अक़ीदे की बातें, भलाई-बुराई का ज्ञान, हक़ क्या है ?, और नाहक़ क्या है ?, इस के अतिरिक्त वे सभी बातें जिन का सम्बन्ध हमारे रहन-सहन और व्यवहारिक जीवन से है।

क़ुरआन की दूसरी आयतें* जो उपलक्षित (Allegorical) हैं, उन में वे बातें बयान हुई हैं जिन तक हमारी बुद्धि की पहुँच नहीं हो सकती; और जिन को हम पूरी तरह नहीं समझ सकते : जैसे अल्लाह की हस्ती (सत्ता), आख़िरत* में होने वाली बातें, मृत्यु के पश्चात् का जीवन आदि। मनुष्य के लिए ज़रूरी था कि किसी हद तक इन बातों का भी उसे ज्ञान करा दिया जावे, क्योंकि इन के बारे में जब तक उसे कुछ जानकारी न दे दी जावे, जीवन की कोई राह उसे दिखाई नहीं जा सकती थी; और न उसे कोई जीवन-दर्शन प्रदान किया जा सकता था।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

الا الله والراسخون في العلم يقولون آمنا به كل من عند ربنا
وما يذكر الا اولو الالباب ○ ربنا لا تزغ قلوبنا بعد اذ هديتنا
وهب لنا من لدنك رحمة انك انت الوهاب ○ ربنا انك جامع
الناس ليوم لا ريب فيه ان الله لا يخلف الميعاد ○ ان الذين
كفروا لن تغني عنهم اموالهم ولا اولادهم من الله شيئا و
اولئك هم وقود النار ○ كداب آل فرعون والذين من قبلهم
كذبوا بآياتنا فاخذهم الله بذنوبهم والله شديد العقاب ○
قل للذين كفروا ستغلبون وتحشرون الى جهنم وبئس
المهاد ○ قد كان لكم آية في فئتين التقتا فئة تقاتل في
سبيل الله واخرى كافرة يرونهم مثليهم راي العين والله يؤيد
بنصره من يشاء ان في ذلك لعبرة لاولي الابصار ○ زين للناس
حب الشهوات من النساء والبنين والقناطير المقنطرة من الذهب
والفضة والخيل المسومة والانعام والحرث ذلك متاع الحيوة
الدنيا والله عنده حسن الماب ○ قل اؤنبئكم بخير من ذلكم
للذين اتقوا عند ربهم جنت تجري من تحتها الانهر خلدين فيها
وازواج مطهرة ورضوان من الله والله بصير بالعباد ○ الذين
يقولون ربنا اننا آمنا فاغفر لنا ذنوبنا وقنا عذاب النار ○

के सिवा और कोई नहीं चेतता। ○ (वे तो यह प्रार्थना करते रहते हैं) हमारे रब* ! जब तू हमें सीधी राह पर लगा चुका है तो इस के बाद हमारे दिलों में टेढ़ न पैदा होने देना, हमें अपने पास से दया प्रदान कर। निस्सन्देह तू बड़ा देने वाला है। ○ हमारे रब* ! तू एक दिन (क़ियामत* के दिन) सब लोगों को इकट्ठा करने वाला है जिस में कोई सन्देह नहीं। निस्सन्देह अल्लाह (अपने) वादे से टलने वाला नहीं है। ○

जिन लोगों ने कुफ़्र* किया, अल्लाह के मुक़ाबिले में न तो उन का धन उन के कुछ काम आयेगा और न उन की औलाद। यही लोग आग (दोज़ख़*) का ईंधन हैं। ○ जैसे फ़िरऔन के लोगों और उन से पहले के (काफ़िर) लोगों का हाल हुआ कि उन्हों ने हमारी आयतों* को झुठलाया तो अल्लाह ने उन्हें उन के गुनाहों के कारण पकड़ लिया। और अल्लाह (ऐसे लोगों को) कड़ी सज़ा देने वाला है। ○ (हे पैग़म्बर !) जिन लोगों ने कुफ़्र* (का रास्ता) अपनाया है उन से कह दो कि जल्द ही तुम दबा दिये जाओगे और दोज़ख़* की ओर हाँके जाओगे, और वह क्या ही (बुरी तैयारी और) बुरा विश्रामस्थल है। ○ तुम्हारे लिए उन दोनों गिरोहों में (बद्र की लड़ाई में) जिन की एक-दूसरे से मुठ-भेड़ हुई एक बड़ी निशानी है: एक गिरोह अल्लाह की राह में लड़ रहा था, और दूसरा काफ़िर* था, ये उन्हें (मुसलमानों को) अपनी आँखों से देख रहे थे कि ये (हम से) दूने हैं। और अल्लाह अपनी मदद से जिसे चाहता है शक्ति दे देता है। निस्सन्देह इस में उन के लिए शिक्षा-सामग्री (चेतावनी) है जिन के पास आँखें हैं। ○

लोगों के लिए उन की चाह की चीज़ें, शोभायमान बना दी गई हैं, (जैसे) स्त्रियाँ, बेटे, सोने-चाँदी के बड़े-बड़े ढेर, निशान लगे हुये (चुने हुये) घोड़े, मवेशी और खेती; परन्तु ये सब सांसारिक जीवन ही में बरतने की चीज़ें हैं। और अच्छी लौटने की जगह तो अल्लाह ही के पास है। ○ (हे पैग़म्बर* !) उन से कहो: मैं तुम्हें बताऊँ कि इन से उत्तम क्या है? जो लोग अल्लाह की अवज्ञा से बचते और उस की ना-ख़ुशी से डरते हैं उन के लिए उन के रब* के पास बाग़ हैं जिन के नीचे नहरें बह रहीं होंगी, उन में वे सदैव रहेंगे, (वहाँ उन के लिए) पाक-साफ़ जोड़े होंगे और अल्लाह की ख़ुशी (उन्हें हासिल होगी)। अल्लाह अपने बन्दों (के हाल) पर पूरी-पूरी नज़र रखता है,[५] ○ ये वे लोग हैं जो कहते हैं: हमारे रब* ! हम ईमान* ला चुके हैं। तू हमारे गुनाहों को क्षमा कर दे और हमें आग (दोज़ख़*) के अज़ाब* से बचा ले; ○ ये सब्र* करने वाले हैं, सच्चे हैं, (अल्लाह के आगे) अदब (भक्ति और विनय भाव) से रहने वाले हैं, (अल्लाह की राह में) ख़र्च करने वाले हैं, और रात की आख़िरी घड़ियों में (अल्लाह से) अपने गुनाहों की क्षमा चाहने वाले हैं। ○

---

५ दे० सूरः अल-बक़रः फ़ुट नोट ६।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

الصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْمُنْفِقِيْنَ وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ بِالْأَسْحَارِ ۝ شَهِدَ اللّٰهُ أَنَّهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ وَالْمَلٰئِكَةُ وَأُولُوا الْعِلْمِ قَائِمًا بِالْقِسْطِ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ إِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْإِسْلَامُ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِيْنَ أُوتُوا الْكِتٰبَ إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَإِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝ فَإِنْ حَاجُّوْكَ فَقُلْ أَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلّٰهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ أُوتُوا الْكِتٰبَ وَالْأُمِّيّٖنَ ءَأَسْلَمْتُمْ فَإِنْ أَسْلَمُوْا فَقَدِ اهْتَدَوْا وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌ بِالْعِبَادِ ۝ إِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَّيَقْتُلُوْنَ الَّذِيْنَ يَأْمُرُوْنَ بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيْمٍ ۝ أُولٰئِكَ الَّذِيْنَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِيْنَ أُوتُوا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُدْعَوْنَ إِلٰى كِتٰبِ اللّٰهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ وَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝ ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّا أَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ وَّغَرَّهُمْ فِيْ دِيْنِهِمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝ فَكَيْفَ إِذَا جَمَعْنٰهُمْ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝ قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَاءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَاءُ وَتُعِزُّ

अल्लाह ख़ुद इस की गवाही देता है कि उस के सिवा कोई इलाह* (पूज्य) नहीं। और फ़रिश्ते* और ज्ञान वाले लोग भी (इस पर गवाह हैं)। वह इन्साफ़ के साथ क़ायम (और सारे संसार का प्रबन्ध कर रहा) है, उस के सिवा कोई इलाह* नहीं, वह अपार शक्ति का मालिक और हिकमत* वाला है। ○ दीन* तो अल्लाह के नज़दीक इस्लाम है[६]। जिन्हें किताब दी गई थी उन्होंने (इस में) विभेद उस समय किया जब कि उन के पास ज्ञान आ चुका था ऐसा उन्होंने (आपस में) एक-दूसरे पर ज़्यादती करने के लिए किया। जान लो जो कोई अल्लाह की आयतों* का इन्कार कर दे तो अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है (उसे हिसाब लेने देर नहीं लगती)। ○ अब यदि ये लोग तुम से झगड़ें, तो कह दो, "मैंने और मेरे अनुयायियों ने तो अपने-आप को अल्लाह के आगे झुका दिया है"। और फिर किताब वालों* से और उम्मियों* से (जिन के पास किताब नहीं है), पूछो : क्या तुम भी (उस के हुक्म के आगे) झुकते हो ? यदि वे (अल्लाह के हुक्म के आगे) झुक जायें, तो उन्होंने (सीधा) रास्ता पा लिया, और यदि वे इस से मुँह मोड़ें तो तुम पर केवल (अल्लाह का सन्देश) पहुँचा देने की ज़िम्मेदारी है। अल्लाह अपने बन्दों (के हाल) पर पूरी-पूरी नज़र रखता है। ○ २०

जो लोग अल्लाह की आयतों* का इन्कार करते हैं और नबियों* को नाहक़ क़त्ल करते हैं, और ऐसे लोगों को क़त्ल करते हैं जो इन्साफ़ और सच्चाई का (लोगों को) हुक्म देते हैं : उन्हें दुःख देने वाले अज़ाब* की शुभ-सूचना दे दो[७]। ○ ये वे लोग हैं जिन का सारा किया-धरा दुनियाँ और आख़िरत* में अकारथ गया; और इन का कोई सहायक नहीं। ○

तुम ने देखा नहीं कि जिन लोगों को किताब* (तौरात के ज्ञान में) से कुछ हिस्सा मिला है (उन का क्या हाल है) ? जब उन्हें अल्लाह की किताब की ओर बुलाया जाता है ताकि वह (किताब) उन के बीच फ़ैसला करे; तो उन में से कुछ लोग बे-रुख़ी करते हुये फिर जाते हैं। ○ यह इस लिए कि उन का कहना है : (दोज़ख़* की) आग हमें गिन्ती के कुछ दिनों के सिवा छू ही नहीं सकती। उन की मन-घड़त बातों ने उन्हें अपने दीन* के बारे में (बड़े) धोखे में डाल रखा है। ○ तो फिर उन का क्या हाल होगा जब हम उन्हें उस दिन इकट्ठा करेंगे जिस में कोई सन्देह नहीं ? (उस दिन) हर-एक को जो-कुछ उस ने कमाया होगा भर-पूर बदला दे दिया जायगा, और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जायेगा। ○ २१

६ मतलब यह है कि अल्लाह की ओर से संसार के जिस देश और जिस युग में भी कोई पैग़म्बर आया है उस का दीन* यही था कि मनुष्य अपने पूरे जीवन में केवल अल्लाह का दास, और उस का उपासक बन कर रहे। यही इस्लाम* है, और यही सदा से अल्लाह का दीन* रहा है।

७ यह व्यंग्यात्मक शैली है। मतलब यह है कि ये अपने जिन करतूतों पर ख़ुश हो रहे हैं, बता दो, इन्हें उन कामों का क्या फल मिलने वाला है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

कहो : हे अल्लाह ! राज–सत्ता के मालिक !
जिसे चाहे हुकूमत दे, और जिस से चाहे हुकूमत
न ले। जिसे चाहे इज़्ज़त दे, और जिसे चाहे
लील (अपमानित) करे। भलाई तेरे हाथ में है'।
सन्देह तू हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला (सर्व-
कमान्) है। ○ तू ही रात को दिन में पिरोता
ा ले आता है, और दिन को रात में पिरोता हुआ
ता है। जानदार को बे–जान में से निकालता है,
र बे–जान को जानदार में से निकालता है। और
से चाहता है बे-हिसाब रोज़ी देता है। ○

ईमान* लाने वालों को चाहिए कि वे ईमान
लों के सिवा काफ़िरों* को अपना संरक्षक–
त्र न बनायें। जो ऐसा करेगा उस का अल्लाह से
ई भी नाता नहीं। हाँ यदि तुम उन (की शत्रुता)
बचने के लिए अपना बचाव करना चाहो तो कर
कते हो। और अल्लाह तुम्हें अपने–आप से
राता है और (तुम्हें) अल्लाह ही तक पहुँचना

مَنْ تَشَاءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَاءُ بِيَدِكَ الْخَيْرُ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيرٌ ۝ تُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَتُخْرِجُ
الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَاءُ
بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُونَ الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ
دُونِ الْمُؤْمِنِينَ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَٰلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللَّهِ فِي
شَيْءٍ إِلَّا أَنْ تَتَّقُوا مِنْهُمْ تُقَاةً وَيُحَذِّرُكُمُ اللَّهُ نَفْسَهُ
وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ۝ قُلْ إِنْ تُخْفُوا مَا فِي صُدُورِكُمْ أَوْ تُبْدُوهُ
يَعْلَمْهُ اللَّهُ وَيَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَاللَّهُ عَلَىٰ
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ
مُحْضَرًا وَمَا عَمِلَتْ مِنْ سُوءٍ تَوَدُّ لَوْ أَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهُ
أَمَدًا بَعِيدًا وَيُحَذِّرُكُمُ اللَّهُ نَفْسَهُ وَاللَّهُ رَءُوفٌ بِالْعِبَادِ ۝ قُلْ
إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ
وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ
اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ ۝ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَىٰ آدَمَ وَنُوحًا وَآلَ
إِبْرَاهِيمَ وَآلَ عِمْرَانَ عَلَى الْعَالَمِينَ ۝ ذُرِّيَّةً بَعْضُهَا مِنْ بَعْضٍ
وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ إِذْ قَالَتِ امْرَأَتُ عِمْرَانَ رَبِّ إِنِّي نَذَرْتُ
لَكَ مَا فِي بَطْنِي مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّي إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

। ○ (हे पैग़म्बर* ! लोगों से) कह दो कि तुम्हारे दिलों में जो–कुछ है उसे चाहे तुम
पाओ या ज़ाहिर करो, अल्लाह तो उसे जानता ही है। आसमानों और ज़मीन में जो-कुछ
उसे सब मालूम है, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला (सर्व-शक्तिमान्)
। ○ (उस दिन को न भूलो) जिस दिन हर व्यक्ति अपने किये हुये भले कर्म (के फल) को
पने सामने मौजूद पायेगा और उस ने जो बुराई की होगी उस (के नतीजे) को भी। चाहेगा
कि अच्छा होता कि उस के अपने और उस (दिन) के बीच दूर का फ़ासिला होता। अल्लाह
म्हें अपने-आप से डराता है। और अल्लाह (अपने) बन्दों के लिए करुणामय है। ○
नबी* ! लोगों से) कह दो कि यदि (सच-मुच) तुम अल्लाह से प्रेम करते हो, तो मेरे पीछे
लो; अल्लाह तुम से प्रेम करने लगेगा और तुम्हारे गुनाहों* को क्षमा कर देगा। अल्लाह
ड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है। ○ (उन से) कहो : अल्लाह और रसूल* का हुक्म
ानो। फिर यदि वे मुँह मोड़ें तो अल्लाह भी ऐसे काफ़िरों* को पसन्द नहीं करता'। ○

निसन्देह अल्लाह ने आदम को और नूह को और इबराहीम को और इमरान की सन्तान
ो (पैग़म्बरी के लिए) सारे संसार के लोगों में चुन लिया था। ○ ये एक-दूसरे की सन्तान
थे। अल्लाह (सब-कुछ) सुनता और जानता है। ○ (वह सुन रहा था) जब इमरान की स्त्री
कहा : हे रब* ! मैं उस बच्चे को जो मेरे पेट में है तेरी नज़्र करती हूँ। वह (तेरे ही काम
के लिए) आज़ाद रहेगा, तो तू मेरी ओर से उसे क़बूल कर। तू सुनने और जानने वाला है। ○
फिर जब उस के यहाँ बच्ची पैदा हुई तो उस ने कहा : मेरे यहाँ तो लड़की पैदा हुई है—

---

८ यह यहूदियों की धारणाओं का खण्डन किया जा रहा है जो यह समझते रहे हैं कि नुबूवत* की सारी
बरकतों के हक़दार केवल वही हैं।

९ इस आयत पर सूरः की पहली तक़रीर समाप्त होती है। यह तक़रीर इस सूरः की भूमिका है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

مَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ إِنِّي وَضَعْتُهَا أُنْثَىٰ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا
وَضَعَتْ وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْأُنْثَىٰ وَإِنِّي سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَإِنِّي
أُعِيذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ۝ فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا
بِقَبُولٍ حَسَنٍ وَأَنْبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا وَكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا كُلَّمَا
دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا قَالَ يَا مَرْيَمُ أَنَّىٰ
لَكِ هَٰذَا قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ
حِسَابٍ ۝ هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهُ قَالَ رَبِّ هَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ ذُرِّيَّةً
طَيِّبَةً إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ ۝ فَنَادَتْهُ الْمَلَائِكَةُ وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّي فِي
الْمِحْرَابِ أَنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيَىٰ مُصَدِّقًا بِكَلِمَةٍ مِنَ اللَّهِ وَ
سَيِّدًا وَحَصُورًا وَنَبِيًّا مِنَ الصَّالِحِينَ ۝ قَالَ رَبِّ أَنَّىٰ يَكُونُ
لِي غُلَامٌ وَقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَأَتِي عَاقِرٌ قَالَ كَذَٰلِكَ اللَّهُ
يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ۝ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِي آيَةً قَالَ آيَتُكَ أَلَّا تُكَلِّمَ
النَّاسَ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ إِلَّا رَمْزًا وَاذْكُرْ رَبَّكَ كَثِيرًا وَسَبِّحْ بِالْعَشِيِّ
وَالْإِبْكَارِ ۝ وَإِذْ قَالَتِ الْمَلَائِكَةُ يَا مَرْيَمُ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاكِ وَطَهَّرَكِ
وَاصْطَفَاكِ عَلَىٰ نِسَاءِ الْعَالَمِينَ ۝ يَا مَرْيَمُ اقْنُتِي لِرَبِّكِ وَ
اسْجُدِي وَارْكَعِي مَعَ الرَّاكِعِينَ ۝ ذَٰلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهِ
إِلَيْكَ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يُلْقُونَ أَقْلَامَهُمْ أَيُّهُمْ يَكْفُلُ

जो-कुछ उस के यहाँ पैदा हुआ था अल्लाह को उस की ख़बर थी — और लड़का लड़की की तरह नहीं होता; मैं ने उस का नाम मरयम रख दिया है, और मैं उसे और उस की सन्तान को धिक्कारे हुये शैतान* से (बचने के लिए) तेरी पनाह में देती हूँ। ○ फिर उस के रब* ने उस (लड़की) को अच्छी क़ुबूलियत के साथ क़ुबूल कर लिया, और उसे ख़ूब अच्छा उठाया; और ज़करीया को उस का सरपरस्त बना दिया।

जब ज़करीया मरियम के हुजरे (एकान्त में रहने का स्थान) में आता, तो उस के पास कुछ रोज़ी पाता। उस ने (एक दिन) कहा : मरयम! यह तेरे पास कहाँ से आता है? उस ने कहा : यह अल्लाह के पास से (आता) है। निस्सन्देह अल्लाह जिसे चाहता है बे-हिसाब रोज़ी देता है। ○ इस मौक़े पर ज़करीया ने अपने रब* को पुकारा : रब*! तू मुझे अपने पास से (अपनी क़ुदरत से) अच्छी औलाद प्रदान कर। निस्सन्देह तू ही प्रार्थना का सुनने वाला है। ○ (इस प्रार्थना के जवाब में) फ़िरिश्तों* ने उसे आवाज़ दी जब कि वह हुजरे में खड़ा नमाज़* पढ़ रहा था : अल्लाह तुझे यहया की शुभ-सूचना देता है, जो अल्लाह के एक 'कलमे'[1] की तसदीक़ करने वाला, सरदार, महापुरुष, संयमी और नबी* होगा अच्छे लोगों में से। ○ (ज़करीया ने) कहा : रब*! मेरे यहाँ लड़का कैसे पैदा होगा जब कि मैं बहुत बूढ़ा हो चुका हूँ और मेरी स्त्री बाँझ है! कहा : इसी तरह अल्लाह जो चाहता है करता है। ○ (ज़करीया ने) कहा : रब*! फिर मेरे लिए कोई निशानी निश्चित कर दे। कहा : तुम्हारी निशानी यह है कि तुम तीन दिन तक लोगों से सिवाय इशारे के बात-चीत न कर सकोगे, अपने रब* को बहुत याद करो, और शाम-सवेरे उस की तसबीह* करते रहो। ○

और (फिर वह समय आया) जब फ़िरिश्तों* ने कहा : हे मरयम! अल्लाह ने तुझे चुन लिया और तुझे सुथराई दी, और तुझे संसार की स्त्रियों के मुक़ाबिले में चुन लिया। ○ हे मरयम! अपने रब* के आगे अदब (भक्ति और विनय-भाव) से रहना, उसे सजदः* करना और (उसके आगे) झुकने वालों के साथ तुम भी झुकती रहना। ○

(हे मुहम्मद!) ये ग़ैब* (परोक्ष) की ख़बरें हैं, जो हम तुम पर वह्य* कर रहे हैं। तुम उस समय उन के पास नहीं थे जब वे इस बात का फ़ैसला करने के लिए कि मरयम की सरपरस्ती कौन करे अपने क़लम (डाल कर चिट्ठी) डाल रहे थे, और न तुम उस समय उन के पास थे जब वे आपस में (इस के लिए) झगड़ रहे थे। ○

---

[1] 'कलमः' का अर्थ होता है हुक्म या फ़रमान। यहाँ अल्लाह का एक 'कलमः' हज़रत ईसा अ० को कहा गया है। उन का जन्म प्राकृतिक नियम के विपरीत अल्लाह के एक विशेष हुक्म से हुआ था इसी लिए उन्हें अल्लाह के 'कलमे' की उपाधि प्रदान की गई है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

مَرْيَمَ ۖ وَمَا كُنتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يَخْتَصِمُونَ ۝ إِذْ قَالَتِ الْمَلَائِكَةُ
يَا مَرْيَمُ إِنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ اسْمُهُ الْمَسِيحُ عِيسَى
ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيهًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ۝ وَيُكَلِّمُ
النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَمِنَ الصَّالِحِينَ ۝ قَالَتْ رَبِّ أَنَّىٰ
يَكُونُ لِي وَلَدٌ وَلَمْ يَمْسَسْنِي بَشَرٌ ۖ قَالَ كَذَٰلِكِ اللَّهُ يَخْلُقُ مَا
يَشَاءُ ۚ إِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُن فَيَكُونُ ۝ وَيُعَلِّمُهُ
الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرَاةَ وَالْإِنجِيلَ ۝ وَرَسُولًا إِلَىٰ بَنِي
إِسْرَائِيلَ أَنِّي قَدْ جِئْتُكُم بِآيَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ ۖ أَنِّي أَخْلُقُ لَكُم
مِّنَ الطِّينِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ فَأَنفُخُ فِيهِ فَيَكُونُ طَيْرًا بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ
وَأُبْرِئُ الْأَكْمَهَ وَالْأَبْرَصَ وَأُحْيِي الْمَوْتَىٰ بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ وَأُنَبِّئُكُم
بِمَا تَأْكُلُونَ وَمَا تَدَّخِرُونَ فِي بُيُوتِكُمْ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً
لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ۝ وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَاةِ
وَلِأُحِلَّ لَكُم بَعْضَ الَّذِي حُرِّمَ عَلَيْكُمْ ۚ وَجِئْتُكُم بِآيَةٍ مِّن
رَّبِّكُمْ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ۝ إِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۗ
هَٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ ۝ فَلَمَّا أَحَسَّ عِيسَىٰ مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ
مَنْ أَنصَارِي إِلَى اللَّهِ ۖ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنصَارُ اللَّهِ
آمَنَّا بِاللَّهِ وَاشْهَدْ بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ۝ رَبَّنَا آمَنَّا بِمَا أَنزَلْتَ

याद करो जब फ़िरिश्तों* ने कहा : हे मरयम ! अल्लाह तुझे अपने एक 'कलमे' की शुभ-सूचना देता है, जिस का नाम मरयम का बेटा ईसा मसीह होगा, वह दुनियाँ और आख़िरत* में प्रतिष्ठित होगा, और (अल्लाह के) क़रीबी लोगों में से होगा। ○ वह लोगों से (अपने) पालने में भी बात-चीत करेगा और बड़ी आयु को पहुँच कर भी, और वह अच्छे लोगों में से होगा। ○ (मरयम) बोली : हे रब* ! मेरे बच्चा कहाँ से पैदा होगा मुझे तो किसी आदमी ने छुआ तक नहीं ? कहा : इसी तरह अल्लाह जो चाहता है पैदा करता है। और जब वह किसी चीज़ (के पैदा करने) का फ़ैसला करता है तो बस कह देता है : होजा ! और वह हो जाती है। ○ (फ़िरिश्तों* ने अपनी बात पूरी करते हुये कहा:) और अल्लाह उसे किताब* और हिकमत* और तौरात* और इञ्जील* का ज्ञान देगा''। ○ और बनी इसराईल* की ओर रसूल* (नियुक्त करेगा)।

(जब वह बनी इसराईल* के पास रसूल* हो कर आया तो कहा) कि मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब* की ओर से निशानी ले कर आया हूँ। मैं तुम्हारे सामने मिट्टी से चिड़िया के रूप की आकृति बनाता हूँ, फिर उस में फूँक मारता हूँ तो वह अल्लाह के हुक्म से सच-मुच चिड़िया हो जाती है। मैं अल्लाह के हुक्म से पैदाइशी अन्धे और कोढ़ी को अच्छा करता हूँ, और मुरदे को ज़िन्दा कर देता हूँ। मैं तुम्हें बताता हूँ जो-कुछ तुम खा कर आते हो और जो-कुछ अपने घरों में इकट्ठा कर के रखते हो। यदि तुम ईमान* वाले हो, तो निस्सन्देह इस में तुम्हारे लिए बड़ी निशानी है। ○ और मैं तौरात* की जो मुझ से पहले की है तसदीक़ करता हूँ और इस लिए (आया हूँ) कि कुछ ऐसी चीज़ें जो तुम्हारे लिए हराम* कर दी गई थीं उन्हें तुम्हारे लिए हलाल* कर दूँ। मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब* की निशानी ले कर आया हूँ, तो तुम अल्लाह

१० की अवज्ञा से बचो और उस की ना-ख़ुशी से डरो और मेरा कहना मानो। ○ निस्सन्देह अल्लाह मेरा रब* भी है और तुम्हारा रब* भी, तो उसी की इबादत* करो। यही सीधा रास्ता है। ○

फिर जब ईसा को उन के कुफ़्र (और इन्कार) की अनुभूति हो गई, तो कहा, "कौन अल्लाह की ओर (बढ़ने में) मेरा मददगार होता है" ? हवारियों (मसीह के साथियों और शागिर्दों) ने कहा, "हम अल्लाह के मददगार हैं। हम अल्लाह पर ईमान* लाये, गवाह रहो कि हम मुस्लिम* (उस के हुक्म के आगे सिर झुकाने वाले) हैं। ○ हे रब* जो-कुछ तू ने उतारा है हम उस पर ईमान* लाये और रसूल के अनुयायी हुये। सो तू हमारा नाम गवाही देने वालों में लिख ले। ○

११ इस आयत से मालूम होता है कि तौरात किताब है जिस में विशेष रूप से क़ानून, नियम आदि की शिक्षा दी गई है; और इंजील सर्वथा हिकमत* है जिस में धर्म के वास्तविक भाव एवं तत्व का उल्लेख किया गया है, जिस में मनुष्य को अपने वास्तविक स्वरूप के दर्शन मिलते हैं। इस का अन्दाज़ा वर्तमान तौरात* (Torah) और इंजील (Gospel) से भी किया जा सकता है।*

* *इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

أَهْلِ الْكِتٰبِ مَنْ إِنْ تَأْمَنْهُ بِقِنْطَارٍ يُؤَدِّهٖٓ إِلَيْكَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ
إِنْ تَأْمَنْهُ بِدِينَارٍ لَّا يُؤَدِّهٖٓ إِلَيْكَ إِلَّا مَا دُمْتَ عَلَيْهِ قَآئِمًا ۗ ذٰلِكَ
بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَيْسَ عَلَيْنَا فِي الْأُمِّيّٖنَ سَبِيلٌ ۚ وَيَقُولُونَ عَلَى اللّٰهِ
الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝ بَلٰى مَنْ أَوْفٰى بِعَهْدِهٖ وَاتَّقٰى فَإِنَّ
اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَأَيْمَانِهِمْ
ثَمَنًا قَلِيلًا أُولٰٓئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ
وَلَا يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمْ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝
وَإِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيقًا يَلْوُونَ أَلْسِنَتَهُمْ بِالْكِتٰبِ لِتَحْسَبُوهُ مِنَ
الْكِتٰبِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتٰبِ ۚ وَيَقُولُونَ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَمَا
هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَيَقُولُونَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝
مَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُؤْتِيَهُ اللّٰهُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُولَ
لِلنَّاسِ كُونُوا عِبَادًا لِّي مِنْ دُونِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ كُونُوا رَبَّانِيّٖنَ بِمَا
كُنْتُمْ تُعَلِّمُونَ الْكِتٰبَ وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُونَ ۝ وَلَا يَأْمُرَكُمْ
أَنْ تَتَّخِذُوا الْمَلٰٓئِكَةَ وَالنَّبِيّٖنَ أَرْبَابًا ۗ أَيَأْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ بَعْدَ
إِذْ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ۝ وَإِذْ أَخَذَ اللّٰهُ مِيثَاقَ النَّبِيّٖنَ لَمَا آتَيْتُكُمْ
مِنْ كِتٰبٍ وَحِكْمَةٍ ثُمَّ جَآءَكُمْ رَسُولٌ مُصَدِّقٌ لِمَا مَعَكُمْ
لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ وَلَتَنْصُرُنَّهٗ ۚ قَالَ ءَأَقْرَرْتُمْ وَأَخَذْتُمْ عَلٰى ذٰلِكُمْ

अल्लाह के बारे में झूठ बोलते हैं जब कि वे जानते हैं (कि अल्लाह ने कोई ऐसी बात नहीं कही है)।○ क्यों नहीं, जो कोई अपनी प्रतिज्ञा पूरी करेगा और (बुराई से) बच कर रहेगा तो (वह अल्लाह का प्यारा बनेगा; क्यों कि) अल्लाह (बुराई से) बचने वालों से प्रेम रखता है।○ रहे वे लोग जो अल्लाह की प्रतिज्ञा[13] और अपनी क़समों का थोड़े मूल्य (सांसारिक लाभ) पर सौदा करते (और उन से फिर जाते) हैं, उन के लिए आख़िरत* में कोई हिस्सा नहीं। उन से न तो अल्लाह क़ियामत के दिन बात करेगा और न उन की ओर देखेगा, और न उन्हें पाक करेगा। उन के लिए दुःख देने वाला अज़ाब है।○

और उन (किताब वालों*) में कुछ ऐसे लोग हैं जो किताब पढ़ते हुये (कुछ इस तरह) अपनी ज़ुबानों का उलट-फेर करते हैं, कि तुम समझो कि (वे जो-कुछ पढ़ते हैं) वह किताब ही में से है, और वह किताब में से नहीं होता। वह कहते हैं: यह अल्लाह की ओर से है, और वह अल्लाह की ओर से नहीं होता; वे जान-बूझ कर अल्लाह के ज़िम्मे डाल कर झूठ बोलते हैं।○

किसी मनुष्य का यह काम नहीं हो सकता कि अल्लाह तो उसे किताब*, हुक्म* और नुबूवत* प्रदान करे और वह लोगों से कहे कि तुम अल्लाह के सिवा मेरे बन्दे (दास) हो जाओ; वह तो यही कहेगा कि तुम रब्बानी* (अल्लाह वाले-धर्माधिकारी) बनो; इस लिए कि तुम किताब पढ़ाते हो और इस लिए कि तुम (ख़ुद भी) पढ़ते हो।○ वह तुम्हें इस बात का हुक्म नहीं दे सकता कि तुम फ़िरिश्तों* को या नबियों* को (अपना) रब* बना लो। क्या वह तुम्हारे मुस्लिम* होने के बाद तुम्हें कुफ़्र का हुक्म देगा[14]।○

और याद करो जब नबियों* (द्वारा उन के अनुयायियों) से इक़रार (प्रतिज्ञा) लिया गया कि (आज) जो-कुछ मैं ने तुम्हें किताब* और हिकमत* प्रदान की है, तो फिर यदि (कल) कोई रसूल* तुम्हारे पास उस की तसदीक़ करता हुआ आये, जो तुम्हारे पास मौजूद है, तो तुम को उस पर ईमान* लाना होगा और उस की मदद करनी होगी। (यह कह कर अल्लाह ने) पूछा, "क्या तुम इक़रार करते हो, और इस मामले में मेरी तरफ़ से डाली हुई भारी ज़िम्मेदारी को उठाते हो?" तो उन्हों ने कहा, "हम इक़रार करते हैं"। (अल्लाह ने) कहा, "अच्छा तो गवाह रहो मैं भी तुम्हारे साथ गवाह हूँ"।○ अब इस के बाद जो फिर जाये; तो ऐसे ही लोग मर्यादोल्लंघन करने वाले हैं[15]।○

---

१३ अर्थात् अल्लाह से की हुई प्रतिज्ञा।

१४ इस से मालूम होता है कि जिन जातियों में अल्लाह की पूजा और भक्ति के अतिरिक्त देवी, देवताओं, पित्तरों, महापुरुषों और दूसरी चीज़ों की पूजा होती है, वह लोगों की अपनी गढ़ी हुई है। अल्लाह यह कैसे पसन्द कर सकता है कि उस के बन्दे उसे छोड़ कर किसी और को अपना मालिक और पूज्य बना लें।

१५ यह किताब वालों को चेतावनी दी जा रही है कि वे हज़रत मुहम्मद सल्ल० का इनकार कर के उस इक़रार (प्रतिज्ञा) को तोड़ रहे हैं जो उन से लिया गया है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

إصري قالوا أقررنا قال فاشهدوا وأنا معكم من الشاهدين ○
فمن تولى بعد ذلك فأولئك هم الفاسقون ○ أفغير دين الله
يبغون وله أسلم من في السماوات والأرض طوعا وكرها
وإليه يرجعون ○ قل آمنا بالله وما أنزل علينا وما أنزل
على إبراهيم وإسماعيل وإسحاق ويعقوب والأسباط وما
أوتي موسى وعيسى والنبيون من ربهم لا نفرق بين
أحد منهم ونحن له مسلمون ○ ومن يبتغ غير الإسلام دينا
فلن يقبل منه وهو في الآخرة من الخاسرين ○ كيف يهدي
الله قوما كفروا بعد إيمانهم وشهدوا أن الرسول حق و
جاءهم البينات والله لا يهدي القوم الظالمين ○ أولئك
جزاؤهم أن عليهم لعنة الله والملائكة والناس أجمعين ○
خالدين فيها لا يخفف عنهم العذاب ولا هم ينظرون ○
إلا الذين تابوا من بعد ذلك وأصلحوا فإن الله غفور
رحيم ○ إن الذين كفروا بعد إيمانهم ثم ازدادوا كفرا لن
تقبل توبتهم وأولئك هم الضالون ○ إن الذين كفروا وماتوا
وهم كفار فلن يقبل من أحدهم ملء الأرض ذهبا ولو
افتدى به أولئك لهم عذاب أليم وما لهم من ناصرين ○

क्या (ये लोग) अल्लाह के दीन*†† के सिवा कोई और (दीन) चाहते हैं, हालाँकि आसमानों और ज़मीन में जो कोई भी है, ख़ुशी से, या विवशतापूर्वक उसी के आगे झुका हुआ है, और उन्हें उसी की ओर लौटना है। ○ (हे पैग़म्बर!) कह दो: हम तो अल्लाह पर ईमान* लाये हैं और उस चीज़ पर जो हम पर उतारी गई है और जो इबराहीम, इसमाईल, इसहाक़ और याक़ूब और (उस की) सन्तान पर उतारी गई, और उस पर जो मूसा और ईसा और दूसरे नबियों* को उन के रब* की ओर से दिया गया। हम उन के बीच कोई अन्तर नहीं करते, और हम उस (अल्लाह) के मुस्लिम* हैं। ○ जो-कोई इस्लाम* के सिवा कोई और दीन* (अपनाना) चाहेगा तो वह कभी उस से क़बूल न किया जायेगा, और वह आख़िरत* में घाटा उठाने वालों ८५ में से होगा। ○

अल्लाह उन लोगों को (सीधी) राह कैसे दिखा सकता है जिन्हों ने अपने ईमान* (लाने) के बाद कुफ़्र* किया जब कि वे स्वयं इस बात की गवाही दे चुके हैं कि यह रसूल* सच्चा है और उन के पास खुली निशानियां भी आ चुकी हैं। अल्लाह ज़ालिम लोगों को (सीधी) राह नहीं दिखाता। ○ ऐसे लोगों की सज़ा यह है कि उन पर अल्लाह और फ़रिश्तों* और सारे मनुष्यों की लानत (फिटकार) है। ○ इसी हाल में वे सदा रहेंगे। न उन का अज़ाब हल्का होगा, और न कभी उन्हें मुहलत मिलेगी, ○ परन्तु जिन लोगों ने इस के बाद तौबः* की और अपने को सुधार लिया। तो निस्सन्देह अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है। ○ रहे वे लोग जिन्हों ने अपने ईमान* (लाने) के बाद कुफ़्र* किया, फिर कुफ़्र* में आगे ही बढ़ते रहे: उन की तौबः* कभी क़बूल न होगी। यही राह से ९० भटके हुये लोग हैं। ○ निस्सन्देह जिन लोगों ने कुफ़्र* किया, और कुफ़्र* ही की हालत में मर गये, तो उन में से किसी से ज़मीन भर भी सोना क़बूल न किया जायेगा चाहे वह (अज़ाब से बचने के लिए) बदले में इसे दे भी। ऐसे लोगों के लिए दुःख देने वाला अज़ाब है और उन का सहायक कोई न होगा। ○

† तुम नेकी (के दर्जे) को नहीं पहुँच सकते जब तक कि अपनी वे चीज़ें (अल्लाह की राह में) ख़र्च न करो जो तुम्हें प्यारी हैं। जो-कुछ भी तुम ख़र्च करोगे, निश्चय ही अल्लाह उस का जानने वाला है (वह अल्लाह से छिपा नहीं रह सकता)। ○

खाने की सारी चीज़ें बनी इसराईल* के लिए हलाल* थीं, उन चीज़ों के अतिरिक्त, जिन्हें इसराईल* ने ख़ुद तौरात* के उतारे जाने से पहले अपने ऊपर हराम* कर लिया था। उन से कहो: यदि तुम सच्चे हो तो तौरात* लाओ और उसे पढ़ो। ○ इस के बाद भी

†† अल्लाह के दीन* का तात्पर्य अल्लाह का आज्ञापालन है।

† यहाँ से चौथा पारः (Part IV) शुरू होता है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

لن تنالوا البر حتى تنفقوا مما تحبون وما تنفقوا من
شيء فإن الله به عليم ۝ كل الطعام كان حلا لبني
إسرائيل إلا ما حرم إسرائيل على نفسه من قبل أن
تنزل التوراة قل فأتوا بالتوراة فاتلوها إن كنتم
صادقين ۝ فمن افترى على الله الكذب من بعد ذلك
فأولئك هم الظالمون ۝ قل صدق الله فاتبعوا ملة إبراهيم
حنيفا وما كان من المشركين ۝ إن أول بيت وضع
للناس للذي ببكة مباركا وهدى للعالمين ۝ فيه آيات
بينات مقام إبراهيم ومن دخله كان آمنا ولله على
الناس حج البيت من استطاع إليه سبيلا ومن كفر
فإن الله غني عن العالمين ۝ قل يا أهل الكتاب لم تكفرون
بآيات الله والله شهيد على ما تعملون ۝ قل يا أهل الكتاب
لم تصدون عن سبيل الله من آمن تبغونها عوجا وأنتم
شهداء وما الله بغافل عما تعملون ۝ يا أيها الذين آمنوا
إن تطيعوا فريقا من الذين أوتوا الكتاب يردوكم بعد إيمانكم
كافرين ۝ وكيف تكفرون وأنتم تتلى عليكم آيات الله وفيكم
رسوله ومن يعتصم بالله فقد هدي إلى صراط مستقيم ۝

जो-कोई अल्लाह के ज़िम्मे जान कर झूठ गढ़े, तो ऐसे ही लोग (वास्तव में) ज़ालिम हैं।○ कहो। अल्लाह ने (जो-कुछ कहा है) सच कहा है। अब इबराहीम के तरीक़े पर चलो, जो हर ओर से कट कर बस (अल्लाह) का हो रहा था। और वह मुश्रिकों में से न था।○

निसन्देह सब से पहला (इबादत* का) घर जो लोगों के लिए बनाया गया वह वही है जो मक्का में है, बरकत वाला है, और दुनियाँ वालों के लिए मार्ग-दर्शन (का केन्द्र) है;○ उस में खुली निशानियाँ हैं, इबराहीम के (इबादत के लिए) खड़े होने का स्थान है; जो-कोई उस के भीतर आ गया वह निश्चिन्त हुआ[17] (उसे कोई डर नहीं रहा)। और लोगों पर अल्लाह का हक़ है कि जो-कोई उस (घर) तक पहुँच सकता हो, वह उस का हज* करे। और जिस किसी ने कुफ़्र* किया तो (उसे जान लेना चाहिए कि) अल्लाह दुनियाँ वालों से बे-परवाह है (वह किसी का मुहताज नहीं)।○ कहो : हे किताब वालो* ! तुम अल्लाह की आयतों* का क्यों इन्कार करते हो, तुम जो-कुछ करते हो, अल्लाह वह सब देख रहा है।○

कहो : हे किताब वालो* ! तुम क्यों ईमान* लाने वाले को अल्लाह के रास्ते से रोकते हो, तुम उसे कज (कुटिल) करना चाहते हो हालाँकि तुम गवाह हो (ख़बर रखते हो) जान लो तुम जो-कुछ भी कर रहे हो अल्लाह उस से बे-ख़बर नहीं है।○

हे ईमान लाने वालो* यदि तुम ने इन किताब वालों* में से किसी गिरोह की बात मान ली तो वे तुम्हारे ईमान* (लाने) के बाद फिर तुम्हें काफ़िर* बना देंगे।○ और अब तुम कुफ़्र* (का रास्ता) कैसे अपना सकते हो, जब कि तुम्हें अल्लाह की आयतें* पढ़ कर सुनाई जाती हैं, और तुम्हारे बीच उस का रसूल* मौजूद है? जिस ने अल्लाह को मज़बूती से पकड़ा समझ लो कि वह (सीधी) राह पर लग गया।○

हे ईमान* लाने वालो! तुम अल्लाह से डरते रहो[18] जैसा कि उस से डरना चाहिए, और तुम्हें मौत आये तो इसी हाल में कि तुम मुस्लिम* हो।○ सब मिल कर अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से पकड़े रहो और फूट में न पड़ो। अल्लाह की उस कृपा (नेमत) को याद करो जो उस ने तुम पर की है : तुम एक-दूसरे के दुश्मन थे, उस ने तुम्हारे दिलों को आपस में एक-दूसरे से जोड़ दिया और तुम उस की कृपा से भाई-भाई हो गये; तुम आग के एक गड्ढे के किनारे खड़े थे,[19] अल्लाह ने तुम्हें उस से बचा लिया। इस तरह अल्लाह अपनी आयतें* तुम्हारे लिए खोल-खोल कर बयान करता है, ताकि तुम (सीधा) रास्ता पा लो।○

---

१७ क़ुरआन उतरने से पहले भी इस घर का इतना आदर किया जाता था कि ख़ून के प्यासे दुश्मन एक-दूसरे को वहाँ देखते थे परन्तु कोई किसी पर हाथ नहीं उठा सकता था।

१८ अर्थात् तुम्हारे अन्दर उस का तक़वा* होना चाहिए।

१९ इस्लाम से पहले अरब के लोगों की जो दशा थी उस की ओर संकेत किया गया है।

*इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنتُم مُّسْلِمُونَ ۝ وَاعْتَصِمُوا بِحَبْلِ اللَّهِ جَمِيعًا وَلَا تَفَرَّقُوا ۚ وَاذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ كُنتُمْ أَعْدَاءً فَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِكُمْ فَأَصْبَحْتُم بِنِعْمَتِهِ إِخْوَانًا وَكُنتُمْ عَلَىٰ شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَأَنقَذَكُم مِّنْهَا ۗ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝ وَلْتَكُن مِّنكُمْ أُمَّةٌ يَدْعُونَ إِلَى الْخَيْرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنكَرِ ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ تَفَرَّقُوا وَاخْتَلَفُوا مِن بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ ۚ وَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَتَسْوَدُّ وُجُوهٌ ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ اسْوَدَّتْ وُجُوهُهُمْ أَكَفَرْتُم بَعْدَ إِيمَانِكُمْ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ ۝ وَأَمَّا الَّذِينَ ابْيَضَّتْ وُجُوهُهُمْ فَفِي رَحْمَةِ اللَّهِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۗ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظُلْمًا لِّلْعَالَمِينَ ۝ وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ۝ كُنتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنكَرِ وَتُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ ۗ وَلَوْ آمَنَ أَهْلُ الْكِتَابِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُم ۚ مِّنْهُمُ الْمُؤْمِنُونَ وَأَكْثَرُهُمُ الْفَاسِقُونَ ۝ لَن يَضُرُّوكُمْ إِلَّا أَذًى ۖ وَ

और चाहिए कि तुम वह गिरोह बनो जो लोगों को नेकी की ओर बुलाये, और भलाई का हुक्म दे और बुराई से रोके। यही हैं वे लोग जो सफलता प्राप्त करने वाले हैं। ○ तुम उन लोगों की तरह न हो जाना जिन में फूट पड़ गई और इस के बाद कि उन के पास खुली दलीलें आ चुकी थीं वे आपस में विभेद करने लगे। ऐसे लोगों के लिए बड़ा अज़ाब है। ○ उस दिन कितने चेहरे उज्ज्वल होंगे और कितने चेहरे काले पड़ जायेंगे; जिन के मुँह काले पड़ जायेंगे, (उन से कहा जायेगा): क्या अपने ईमान* (लाने) के बाद तुम ने कुफ़्र* किया? तो जो तुम कुफ़्र* करते थे उस के बदले में अज़ाब* का मज़ा चखो। ○ रहे वे लोग जिन के चेहरे उज्ज्वल होंगे, वे अल्लाह की दयालुता (के छाये) में हैं जहाँ वे सदैव रहने वाले हैं। ○ ये अल्लाह की आयतें* हैं, जिन्हें हम तुम्हें हक़ के साथ सुना रहे हैं। और अल्लाह दुनिया वालों पर ज़ुल्म का इरादा नहीं रखता। ○ जो-कुछ आसमानों में है और जो-कुछ ज़मीन में है सब अल्लाह का है; सारे मामिले अल्लाह ही की ओर पलटते हैं। ○

(हे ईमान* लाने वालो!) तुम उत्तम गिरोह हो, जो लोगों में पैदा हुआ, भलाई का हुक्म देते हो, और बुराई से रोकते हो;[20] और अल्लाह पर ईमान* रखते हो। और यदि किताब वाले* भी ईमान* लाते तो उन के लिए अच्छा होता। उन में ईमान* वाले भी हैं; परन्तु उन के अधिकतर लोग (अल्लाह की निश्चित की हुई) सीमा का उल्लंघन करने वाले हैं। ○ सिवाय कुछ सताने के वे तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। और यदि वे तुम से लड़ेंगे तो तुम्हें पीठ दिखा कर भाग जायेंगे। फिर उन्हें कहीं से सहायता भी न मिल सकेगी। ○ ये जहाँ कहीं पाये गये इन पर ज़िल्लत (अपमान एवं तिरस्कार) की मार पड़ी, कहीं अल्लाह के ज़िम्मे या मनुष्यों के ज़िम्मे में (इन्हें) पनाह मिल गई तो यह और बात है। ये अल्लाह के ग़ज़ब (प्रकोप) में घिर चुके हैं, मुहताजी और बदहाली इन पर थोप दी गई है। यह इस लिए कि ये अल्लाह की आयतों* का इन्कार करते रहे, और इन्हों ने नबियों* को नाहक़ क़त्ल किया। यह इस लिए कि इन्हों ने नाफ़रमानी की और हद से आगे बढ़ते रहे हैं। ○

परन्तु ये सब एक-जैसे नहीं हैं। इन किताब वालों* में कुछ लोग (सीधी राह पर) क़ायम हैं, रातों में अल्लाह की आयतें पढ़ते हैं और (उस के आगे) सजदे* करते हैं। ○ अल्लाह और अन्तिम[21] दिन पर ईमान* रखते हैं, भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं और भलाई के कामों की ओर लपकते हैं। और ये अच्छे लोगों में से हैं। ○ जो नेकी भी ये

२० हज़रत मुहम्मद सल्ल० के अनुयायियों को बताया जा रहा है कि तुम्हें इस पद पर नियुक्त किया गया है कि तुम लोगों को जीवन का सीधा और सच्चा मार्ग दिखाओ। तुम्हें अपनी ज़िम्मेदारी का पूरा एहसास होना चाहिए।

२१ दे० सूरः अल-बक़रः फुट नोट ५।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

وَإِن يُقَاتِلُوكُمْ يُوَلُّوكُمُ الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا يُنصَرُونَ ۝ ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ
الذِّلَّةُ أَيْنَ مَا ثُقِفُوا إِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ اللَّهِ وَحَبْلٍ مِّنَ النَّاسِ وَ
بَاءُوا بِغَضَبٍ مِّنَ اللَّهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ
كَانُوا يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ الْأَنبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ذَٰلِكَ
بِمَا عَصَوا وَّكَانُوا يَعْتَدُونَ ۝ لَيْسُوا سَوَاءً مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ أُمَّةٌ
قَائِمَةٌ يَتْلُونَ آيَاتِ اللَّهِ آنَاءَ اللَّيْلِ وَهُمْ يَسْجُدُونَ ۝ يُؤْمِنُونَ
بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنكَرِ
وَيُسَارِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ وَأُولَٰئِكَ مِنَ الصَّالِحِينَ ۝ وَمَا يَفْعَلُوا
مِنْ خَيْرٍ فَلَن يُكْفَرُوهُ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالْمُتَّقِينَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ
كَفَرُوا لَن تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُم مِّنَ اللَّهِ شَيْئًا
وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ مَثَلُ مَا يُنفِقُونَ
فِي هَٰذِهِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيحٍ فِيهَا صِرٌّ أَصَابَتْ حَرْثَ
قَوْمٍ ظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ فَأَهْلَكَتْهُ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَٰكِنْ أَنفُسَهُمْ
يَظْلِمُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا بِطَانَةً مِّن دُونِكُمْ لَا
يَأْلُونَكُمْ خَبَالًا وَدُّوا مَا عَنِتُّمْ قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَاءُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ
وَمَا تُخْفِي صُدُورُهُمْ أَكْبَرُ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَاتِ إِن كُنتُمْ
تَعْقِلُونَ ۝ هَا أَنتُمْ أُولَاءِ تُحِبُّونَهُمْ وَلَا يُحِبُّونَكُمْ وَتُؤْمِنُونَ بِالْكِتَابِ

करेंगे, उस की ना-क़दरी न की जायेगी। अल्लाह तक़वा* (की राह पर चलने) वालों को (अच्छी तरह) जानता है।○ रहे वे लोग जिन्हों ने कुफ़्र* किया तो अल्लाह के आगे न उन के माल उन के कुछ काम आ सकेंगे और न उन की औलाद; वे आग (दोज़ख़* में जाने) वाले हैं। जहाँ वे सदा रहेंगे।○ इस दुनियाँ की ज़िन्दगी में जो-कुछ भी ये ख़र्च करते हैं उस की मिसाल ऐसी है जैसे हवा हो जिस में पाला हो, और वह उन लोगों की खेती पर चले जिन्हों ने अपने-आप पर ज़ुल्म किया है, और उस (खेती) को बरबाद कर के रख दे। अल्लाह ने इन पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि यह स्वयं अपने ऊपर ज़ुल्म कर रहे हैं।○

हे ईमान* लाने वालो! अपनों के सिवा दूसरों को (अपना) भेदी न बनाओ, ये तुम्हारी ख़राबी (और तुम्हारे साथ फ़साद करने) में कुछ भी उठा नहीं रखते[२२] जिस बात से भी तुम ज़हमत (आपत्ति) में पड़ जाओ वही ये चाहते हैं। इन का द्वेष तो इन के मुँह से (निकले हुये शब्दों से) ज़ाहिर हो चुका है, और जो-कुछ ये अपने सीनों (दिलों) में छिपाये हुये हैं वह इस से भी बढ़ कर है। यदि तुम बुद्धि से काम लो तो हम ने तुम्हारे लिए निशानियाँ खोल कर बयान कर दी हैं।○ हाँ तुम ऐसे हो जो उन से प्रेम करते हो परन्तु वे तुम से प्रेम नहीं करते, जब कि तुम सारी (आसमानी) किताबों पर ईमान* रखते हो। जब ये तुम से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम भी (तुम्हारी किताब और तुम्हारे रसूल पर) ईमान* रखते हैं; परन्तु जब अलग होते हैं तो तुम पर क्रोध के मारे (अपनी) उँगलियाँ काट खाते हैं। उन से कह दो: तुम अपने क्रोध में मर रहो! निस्सन्देह अल्लाह सीनों (दिलों तक) की बातों को जानता है।○ तुम्हारा कोई भला होता है, तो उन्हें बुरा लगता है, और जब तुम पर कोई आपत्ति आ पड़ती है तो उस से ये प्रसन्न होते हैं। यदि तुम (कठिनाइयों का सहन करते हुये दीन* पर) जमे रहे और अल्लाह की अवज्ञा से बचते और उस की ना-ख़ुशी से डरते रहे, तो इन की चाल तुम्हें कुछ-भी हानि नहीं पहुँचा सकती। ये जो-कुछ कर रहे हैं निश्चय ही अल्लाह उस को घेरे हुये है (उस के ज्ञान और अधिकार से कोई चीज़ बाहर नहीं)।○ १२

(हे पैग़म्बर!) (वह समय) याद करो जब तुम सवेरे अपने घर से निकले थे और ईमान वालों को ('उहुद' के मैदान में) लड़ाई के लिए मोर्चों पर जमा रहे थे, अल्लाह (सब-कुछ) सुनता और जानता है।○

---

२२ यहूदियों की 'औस' और 'ख़ज़रज' के क़बीलों से बहुत पहले से दोस्ती चली आ रही थी, जब 'औस' और 'ख़ज़रज' के लोग मुसलमान हो गये, तो इस के बाद भी उन्हों ने यहूदियों के साथ अपने सम्बन्ध को बाक़ी रखा; परन्तु यहूदी देखने में तो उन के मित्र बने हुये थे लेकिन दिल से उन के साथ बड़ी दुश्मनी रखते थे।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

كُلِّهٖ ۚ وَاِذَا لَقُوْكُمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۚ وَاِذَا خَلَوْا عَضُّوْا عَلَيْكُمُ الْاَنَامِلَ
مِنَ الْغَيْظِ ۭ قُلْ مُوْتُوْا بِغَيْظِكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ
الصُّدُوْرِ ۝ اِنْ تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۡ وَاِنْ تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ
يَّفْرَحُوْا بِهَا ۭ وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْـًٔا ۭ
اِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ۝ وَاِذْ غَدَوْتَ مِنْ اَهْلِكَ تُبَوِّئُ
الْمُؤْمِنِيْنَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ۭ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ اِذْ هَمَّتْ
طَّاۗىِٕفَتٰنِ مِنْكُمْ اَنْ تَفْشَلَا ۙ وَاللّٰهُ وَلِيُّهُمَا ۭ وَعَلَي اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ
لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝ اِذْ تَقُوْلُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ اَلَنْ يَّكْفِيَكُمْ اَنْ
يُّمِدَّكُمْ رَبُّكُمْ بِثَلٰثَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰۗىِٕكَةِ مُنْزَلِيْنَ ۝ بَلٰٓى ۙ اِنْ
تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا وَيَاْتُوْكُمْ مِّنْ فَوْرِهِمْ هٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُمْ
بِخَمْسَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰۗىِٕكَةِ مُسَوِّمِيْنَ ۝ وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا
بُشْرٰى لَكُمْ وَلِتَطْمَىِٕنَّ قُلُوْبُكُمْ بِهٖ ۭ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ
اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝ لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْ
يَكْبِتَهُمْ فَيَنْقَلِبُوْا خَاۗىِٕبِيْنَ ۝ لَيْسَ لَكَ مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ اَوْ يَتُوْبَ
عَلَيْهِمْ اَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَاِنَّهُمْ ظٰلِمُوْنَ ۝ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ

याद करो जब तुम में से दो गिरोहों ने हिम्मत हार जाना चाहा,[२३] जब कि अल्लाह उन का संरक्षक-मित्र था। ईमान वालों* को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए। ○ उस से पहले 'बद्र' (की लड़ाई) में अल्लाह तुम्हारी मदद कर भी चुका था, जब कि तुम बहुत कमज़ोर थे। तो अल्लाह की अवज्ञा से बचते और उस की ना-ख़ुशी से डरते रहो (और उस की कृपा को याद करो) कदाचित् तुम कृतज्ञता दिखलाओ। ○

याद करो जब तुम ईमान* लाने वालों से कह रहे थे कि क्या तुम्हारे लिए यह काफ़ी नहीं है कि अल्लाह तीन हज़ार फ़िरिश्ते* उतार कर तुम्हारी सहायता करे? ○ क्यों नहीं, यदि जमे रहो और अल्लाह की नाफ़रमानी से बचते और उसकी ना-ख़ुशी से डरते रहो तो जिस समय अचानक दुश्मन तुम पर चढ़ आयें उसी क्षण तुम्हारा रब* (तीन हज़ार तो क्या) पाँच हज़ार निशान वाले फ़िरिश्तों*

१२५ से तुम्हारी मदद करेगा। ○ और ऐसा अल्लाह ने इस लिए किया कि तुम्हें ख़ुशी हो, और इस से तुम्हारे दिलों को इतमीनान हो जाये। और मदद तो अल्लाह की ओर से (होती) है, जो अपार शक्ति का मालिक और हिकमत* वाला है। ○ (यह वादा इस लिए है) ताकि कुफ़्र* करने वालों के एक हिस्से को (उन से) अलग कर दे, या उन्हें बुरी तरह परास्त करे कि वे असफल हो कर लौट जायें। ○—(हे नबी* इस मामले में) तुम्हें कोई अधिकार नहीं है— चाहे वह उन्हें क्षमा करे या उन्हें सज़ा दे; क्योंकि वे ज़ालिम हैं। ○ जो-कुछ आसमानों में है और जो-कुछ ज़मीन में है सब अल्लाह का है। वह जिसे चाहे क्षमा कर दे और जिसे चाहे अज़ाब* दे। अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला और दयाशील है। ○

हे ईमान* लाने वालो! यह बढ़ता और चढ़ता सूद (ब्याज) न खाओ[२४]। और अल्लाह की अवज्ञा से बचो और उस की ना-ख़ुशी से डरते रहो कदाचित् तुम्हें सफलता प्राप्त

१३० हो। ○ उस आग से बचो जो काफ़िरों* के लिए तैयार की गई है। ○ और अल्लाह और रसूल* का कहना मानो, कदाचित् तुम पर दया की जाये। ○ दौड़ो अपने रब* की क्षमा की ओर और उस जन्नत* की ओर जिसका विस्तार आसमानों और ज़मीन जैसा है, जो उन लोगों के लिए तैयार की गई है जो अल्लाह की अवज्ञा से बचते और उस की ना-ख़ुशी से डरते हैं। ○ ये वे लोग हैं जो सुखी हों या दुःखी हर हाल में (अपना माल अल्लाह की राह में) ख़र्च करते हैं, जो क्रोध को रोकते हैं और लोगों को क्षमा कर देते हैं; अल्लाह सत्कर्मी लोगों

२३ यह संकेत क़बीला 'बनू सल्मः' और 'बनू हारसः' की ओर है। देखिए सूरः का परिचय।

२४ जिन-जिन चीज़ों से मनुष्य के दिल में कमज़ोरी का रोग पैदा होता है, उन में से एक धन का मोह भी है। ब्याज को हराम ठहराने का एक कारण यह भी है। 'उहुद' की लड़ाई में मुसलमानों को जो हानि पहुँची थी उस की बड़ी वजह यही थी कि उस अवसर पर कुछ लोगों ने रसूल के हुक्म को भुला दिया और दुश्मनों के छोड़े हुये माल के एकत्र करने में लग गये। देखिए सूरः का परिचय।*

**इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَأْكُلُوا۟ ٱلرِّبَوٰٓا۟ أَضْعَٰفًا مُّضَٰعَفَةً
وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝ وَٱتَّقُوا۟ ٱلنَّارَ ٱلَّتِىٓ أُعِدَّتْ لِلْكَٰفِرِينَ ۝
وَأَطِيعُوا۟ ٱللَّهَ وَٱلرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝ وَسَارِعُوٓا۟ إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ
مِّن رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا ٱلسَّمَٰوَٰتُ وَٱلْأَرْضُ أُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِينَ ۝
ٱلَّذِينَ يُنفِقُونَ فِى ٱلسَّرَّآءِ وَٱلضَّرَّآءِ وَٱلْكَٰظِمِينَ ٱلْغَيْظَ وَٱلْعَافِينَ
عَنِ ٱلنَّاسِ ۗ وَٱللَّهُ يُحِبُّ ٱلْمُحْسِنِينَ ۝ وَٱلَّذِينَ إِذَا فَعَلُوا۟ فَٰحِشَةً
أَوْ ظَلَمُوٓا۟ أَنفُسَهُمْ ذَكَرُوا۟ ٱللَّهَ فَٱسْتَغْفَرُوا۟ لِذُنُوبِهِمْ وَمَن يَغْفِرُ
ٱلذُّنُوبَ إِلَّا ٱللَّهُ وَلَمْ يُصِرُّوا۟ عَلَىٰ مَا فَعَلُوا۟ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝
أُو۟لَٰٓئِكَ جَزَآؤُهُم مَّغْفِرَةٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَجَنَّٰتٌ تَجْرِى مِن تَحْتِهَا
ٱلْأَنْهَٰرُ خَٰلِدِينَ فِيهَا ۚ وَنِعْمَ أَجْرُ ٱلْعَٰمِلِينَ ۝ قَدْ خَلَتْ مِن
قَبْلِكُمْ سُنَنٌ فَسِيرُوا۟ فِى ٱلْأَرْضِ فَٱنظُرُوا۟ كَيْفَ كَانَ عَٰقِبَةُ
ٱلْمُكَذِّبِينَ ۝ هَٰذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِينَ ۝
وَلَا تَهِنُوا۟ وَلَا تَحْزَنُوا۟ وَأَنتُمُ ٱلْأَعْلَوْنَ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ۝
إِن يَمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ ٱلْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهُۥ ۚ وَتِلْكَ ٱلْأَيَّامُ
نُدَاوِلُهَا بَيْنَ ٱلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَيَتَّخِذَ مِنكُمْ
شُهَدَآءَ ۗ وَٱللَّهُ لَا يُحِبُّ ٱلظَّٰلِمِينَ ۝ وَلِيُمَحِّصَ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ
ءَامَنُوا۟ وَيَمْحَقَ ٱلْكَٰفِرِينَ ۝ أَمْ حَسِبْتُمْ أَن تَدْخُلُوا۟ ٱلْجَنَّةَ وَلَمَّا

से प्रेम करता है; ○ और जिन का हाल यह है कि जब वे कोई अश्लील काम कर गुज़रते हैं या अपने हक़ में कोई बुराई कर बैठते हैं, तो (जल्द ही) अल्लाह को याद करते हैं, वे (उस से) अपने गुनाहों की क्षमा चाहते हैं — और कौन है सिवाय अल्लाह के जो गुनाहों को क्षमा कर सके ? और जानते-बूझते वे अपने किये पर अड़े नहीं रहते। ○ ऐसे लोगों का बदला क्षमा है उन के रब* की ओर से और ऐसे बाग़ जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी, वहाँ वे सदैव रहेंगे — कैसा अच्छा बदला है काम करने वालों का। ○ तुम से पहले कितनी रीतियाँ[25] बीत चुकी हैं। ज़मीन में चल-फिर कर देखो (अल्लाह के हुक्मों को) झुठलाने वालों का क्या परिणाम हुआ। ○ यह लोगों के लिए (खुला हुआ) बयान (और चेतावनी) है, और डरने वालों[26] के लिए मार्ग-दर्शन और उपदेश है। ○

तुम सुस्त न पड़ो और दुःखी न हो, यदि तुम (सच-मुच) ईमान वाले* हो, तो तुम ऊँचे रहोगे। ○ यदि इस समय ('उहुद' की लड़ाई में) तुम्हें आघात पहुँचा है तो (इस से पहले) उन्हें भी ऐसा ही आघात पहुँच चुका है[27]। और ये दिन (के हेर-फेर) हैं जिन्हें हम लोगों के बीच बदलते रहते हैं; और (तुम पर यह दिन इस लिए लाया गया) ताकि अल्लाह (सच्चे) ईमान लाने वालों को जान ले और तुम में से (सच्चाई के) गवाह छाँट ले;[28] और अल्लाह ज़ालिमों को पसन्द नहीं करता। ○ और (यह इस लिए भी हुआ) ताकि इस तरह अल्लाह ईमान वालों* को निखार दे, और काफ़िरों* का ज़ोर तोड़ दे। ○ क्या तुम ने यह समझ रखा है कि जन्नत* में पहुँच जाओगे जब कि अल्लाह ने अभी उन्हें जाना ही नहीं जो तुम में (उस की राह में) जान लड़ाने वाले हैं, और न उन को जाना जो (सच्चे रास्ते पर) जमे रहने वाले हैं ? ○ तुम तो मृत्यु की,[29] उस के तुम्हारे अपने सामने आ जाने से पहले कामना कर रहे थे, तो अब वह तुम्हारे सामने आ गई और तुम ने उसे (खुली आँखों) देख लिया ! ○ और मुहम्मद तो बस एक रसूल* हैं, उन से पहले भी कितने रसूल* गुज़र चुके हैं। फिर यदि वे मर जायें या क़त्ल कर दिये जायें, तो क्या तुम लोग उलटे-पाँव फिर जाओगे ? जान लो ! जो उलटे-पाँव फिरेगा वह अल्लाह का कुछ नहीं बिगाड़ेगा, हाँ, अल्लाह कृतज्ञता दिखलाने वालों को जल्द बदला देगा। ○

कोई जीव अल्लाह की आज्ञा बिना मर नहीं सकता, (हर एक की मृत्यु का) नियत समय

२५ अर्थात् पिछली जातियों के साथ अल्लाह का जो नियम (Manner) रहा है उस की मिसालें।

२६ अर्थात् तक़्वा* वालों के लिए।

२७ 'बद्र' की लड़ाई में।

२८ या शहीद*।

२९ अर्थात् अल्लाह की राह में शहीद होने और वीर-गति को प्राप्त होने की।

* इस का अर्थ आख़िर में दी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ ۝ وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَلْقَوْهُ ۖ فَقَدْ رَاَيْتُمُوْهُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ۝ وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۗ اَفَاۡئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ ۗ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْـًٔا ۗ وَسَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ۝ وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا مُّؤَجَّلًا ۗ وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۚ وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۗ وَسَنَجْزِى الشّٰكِرِيْنَ ۝ وَكَاَيِّنْ مِّنْ نَّبِيٍّ قٰتَلَ ۙ مَعَهٗ رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ ۚ فَمَا وَهَنُوْا لِمَآ اَصَابَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَمَا ضَعُفُوْا وَمَا اسْتَكَانُوْا ۗ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ ۝ وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِيْٓ اَمْرِنَا وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝ فَاٰتٰىهُمُ اللّٰهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَحُسْنَ ثَوَابِ الْاٰخِرَةِ ۗ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تُطِيْعُوا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَرُدُّوْكُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ۝ بَلِ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ النّٰصِرِيْنَ ۝ سَنُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَآ اَشْرَكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ۗ وَبِئْسَ مَثْوَى الظّٰلِمِيْنَ ۝

तो लिखा हुआ है। जो-कोई दुनियाँ का बदला चाहेगा, उसे हम उस (दुनियाँ) का बदला देंगे; और जो-कोई आख़िरत* का बदला चाहेगा, उसे हम उस (आख़िरत) का बदला देंगे[३०] और अल्लाह कृतज्ञता दिखलाने वालों को जल्द बदला देगा। ○ (इस से (१४५) पहले) कितने ही नबी* ऐसे हुए हैं जिन के साथ हो कर बहुत से रिब्बियों* (अल्लाह वालों) ने युद्ध किया है। फिर अल्लाह की राह में जो मुसीबत उन्हें पहुँची उस से न तो उन्हों ने साहस छोड़ा, और न कमज़ोरी दिखाई, और न हथियार डाले। अल्लाह (ऐसे ही) धैर्य्यवान् लोगों से प्रेम करता है। ○ सिवाय इस के उन्हों ने और कुछ नहीं कहा कि, हे हमारे रब* ! हमारे गुनाहों को और अपने काम में हम से जो ज़्यादती हो गई हो उसे क्षमा कर दे, हमारे क़दम जमा दे, और काफ़िर* गिरोह के मुक़ाबिले में हमारी सहायता कर। ○ तो अल्लाह ने उन्हें दुनियाँ में भी बदला दिया और आख़िरत* का अच्छा बदला भी (उन के हिस्से में आया)। अल्लाह (ऐसे ही) सत्कर्मी लोगों से प्रेम करता है। ○

हे ईमान* लाने वालो ! यदि तुम उन लोगों के कहने पर चलोगे जिन्हों ने कुफ़्र* किया है, तो वे तुम्हें उल्टे-पाँव (कुफ़्र* की ओर) फेर ले जायेंगे, फिर तुम घाटे में पड़ जाओगे। ○ (उन की बातों में न आओ) तुम्हारा संरक्षक-मित्र तो अल्लाह है और वह सब से अच्छा (१५०) सहायक है। ○ हम काफ़िरों* के दिलों में जल्द ही धाक बिठा देंगे, इस लिए कि उन्हों ने अल्लाह का शरीक ठहराया है जिस की अल्लाह ने कोई दलील (प्रमाण) नहीं उतारी। उन का ठिकाना आग (दोज़ख़*) है और वह ज़ालिमों का क्या ही बुरा निवास-स्थान है। ○

अल्लाह ने तुम्हें अपना वादा (विजय के रूप में) सच्चा कर दिखाया जब कि तुम उस के हुक्म से उन्हें क़त्ल कर रहे थे, जब तक कि तुम ने (ख़ुद ही) कायरता दिखाई और (अपने) काम में परस्पर झगड़ा किया और (रसूल की) नाफ़रमानी (अवज्ञा) की, जब कि (अल्लाह ने) तुम्हें वह चीज़ (जीत के रूप में) दिखा दी थी जिस को तुम्हें चाह है। तुम में कोई तो दुनियाँ चाहता था, और कोई आख़िरत* चाहता था, फिर अल्लाह ने तुम्हें उन (काफ़िरों* के मुक़ाबिले) से फेर दिया (और तुम भाग खड़े हुये), ताकि तुम्हारी परीक्षा ले। और उस ने तुम्हें क्षमा कर दिया। अल्लाह ईमान वालों* के लिए (बड़ा) फ़ज़्ल वाला है। ○

याद करो जब तुम भागे चले जा रहे थे और किसी को पलट कर भी न देखते थे, और रसूल* तुम्हारे पीछे से तुम्हें पुकार रहा था, तो अल्लाह ने तुम्हें (रंज के) ग़म के बदले में ग़म दिया ताकि तुम्हारे हाथ से कोई चीज़ निकल जाये या तुम पर (कोई) मुसीबत आये, तो तुम

---

[३०] अर्थात् दुनियाँ ही में जो अपने कामों का बदला चाहेगा उसे अल्लाह दुनियाँ ही में जो चाहेगा दे देगा, आख़िरत* में उन का कोई हिस्सा न होगा। और जो लोग आख़िरत* के लिए काम करेंगे उन्हें अल्लाह आख़िरत* में अच्छा बदला देगा।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗٓ اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ بِاِذْنِهٖ ۚ حَتّٰىٓ اِذَا
فَشِلْتُمْ وَتَنَازَعْتُمْ فِي الْاَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَآ اَرٰىكُمْ مَّا
تُحِبُّوْنَ ۭ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ۚ ثُمَّ
صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۚ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ۭ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَلَي
الْمُؤْمِنِيْنَ ۞ اِذْ تُصْعِدُوْنَ وَلَا تَلْوٗنَ عَلٰٓي اَحَدٍ وَّالرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ
فِيْٓ اُخْرٰىكُمْ فَاَثَابَكُمْ غَمًّۢا بِغَمٍّ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوْا عَلٰي مَا فَاتَكُمْ وَلَا
مَآ اَصَابَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۞ ثُمَّ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْۢ
بَعْدِ الْغَمِّ اَمَنَةً نُّعَاسًا يَّغْشٰى طَاۗىِٕفَةً مِّنْكُمْ ۙ وَطَاۗىِٕفَةٌ قَدْ
اَهَمَّتْهُمْ اَنْفُسُهُمْ يَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ۭ يَقُوْلُوْنَ
هَلْ لَّنَا مِنَ الْاَمْرِ مِنْ شَيْءٍ ۭ قُلْ اِنَّ الْاَمْرَ كُلَّهٗ لِلّٰهِ ۭ يُخْفُوْنَ
فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ مَّا لَا يُبْدُوْنَ لَكَ ۭ يَقُوْلُوْنَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْاَمْرِ
شَيْءٌ مَّا قُتِلْنَا هٰهُنَا ۭ قُلْ لَّوْ كُنْتُمْ فِيْ بُيُوْتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِيْنَ
كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ اِلٰى مَضَاجِعِهِمْ ۚ وَلِيَبْتَلِيَ اللّٰهُ مَا فِيْ
صُدُوْرِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ
الصُّدُوْرِ ۞ اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ۙ اِنَّمَا
اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطٰنُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوْا ۚ وَلَقَدْ عَفَا اللّٰهُ عَنْهُمْ ۭ
اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ۞ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ

दुखी न हो। जो-कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उस की ख़बर रखता है।○

फिर, इस के बाद, उस ने तुम पर शान्ति उतारी। (जिस से) तुम में से कुछ लोगों को ऊँघ घेर रही थी और कुछ लोग ऐसे थे जिन्हें अपनी जानों की चिन्ता थी, अल्लाह के प्रति हक़ के सिवा (कुछ और) गुमान कर रहे थे, (अर्थात्) अज्ञान का गुमान। वे कहते हैं : क्या इस बारे में हमें भी कुछ अधिकार है। कह दो : अधिकार तो सब अल्लाह का है। ये लोग अपने जी में (एक बात) छिपाये हुये हैं जिसे तुम पर ज़ाहिर नहीं करते, इन का कहना यह है कि यदि हमें कुछ अधिकार मिला होता तो हम (ऐसा प्रबन्ध करते कि) यहाँ न मारे जाते। (उन से) कह दो : यदि तुम अपने घरों में भी होते, तो जिन लोगों की मृत्यु लिखी हुई थी वे निकल कर अपने गिरने के स्थान[1] पर आ जाते। और (यह जो-कुछ हुआ) इस लिए (हुआ) कि जो-कुछ तुम्हारे सीनों (मन) में है अल्लाह उस की जाँच कर ले। और जो-कुछ तुम्हारे दिल में है उसे निखार दे। अल्लाह को सीनों (दिलों) का सब हाल मालूम है।○

तुम में से जो लोग दोनों गिरोहों की मुठ-भेड़ के दिन पीठ दिखा गये, तो (इस का कारण इस के सिवा और कुछ नहीं कि) शैतान* ने उन की कुछ कमाइयों (कर्मों) की वजह से उन्हें विचलित कर के छोड़ा। अल्लाह ने उन्हें क्षमा कर दिया। निसन्देह अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला और सहन-शील है।○ १५१

हे ईमान* लाने वालो! तुम उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्हों ने कुफ़्र* किया जिन के भाई-बन्धु यदि सफ़र में गये हों या लड़ाई में हों (और वहाँ मारे जायें) तो कहते हैं : यदि वे हमारे पास होते तो न मारे जाते और न क़त्ल होते; ताकि अल्लाह इसे उन के दिलों में सन्ताप बना दे। और (वैसे तो वास्तव में) अल्लाह ही जिलाता और मारता है, और अल्लाह जो-कुछ तुम करते हो सब देखता है।○ यदि तुम अल्लाह की राह में मारे गये या मर गये, तो अल्लाह की क्षमा और दयालुता (जो तुम्हारे हिस्से में आयेगी वह) उन सब चीज़ों से उत्तम है जिन्हें ये लोग इकट्ठा करते हैं।○ और चाहे तुम मरे या मारे गये तुम सब अल्लाह ही के पास इकट्ठा होगे।○

(हे नबी*!) यह अल्लाह की दयालुता है कि तुम इन लोगों के लिए (स्वभावतः) बहुत ही नर्म हो, यदि तुम स्वभाव के क्रूर और कठोर-हृदय वाले होते, तो ये सब तुम्हारे पास से छट जाते। तुम इन्हें क्षमा कर दो और इन के लिए (अल्लाह से) क्षमा चाहो और (अपने) काम में इन्हें सलाह (परामर्श) में शरीक किया करो। फिर जब (ऐसा हो कि किसी बात का) तुम ने निश्चय कर लिया, तो अल्लाह पर भरोसा करो। अल्लाह ऐसे लोगों

१ अर्थात् जहाँ मारे गये हैं।
* का अर्थ जानने के लिये पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

كفروا وقالوا لإخوانهم إذا ضربوا في الأرض أو كانوا غزى لو
كانوا عندنا ما ماتوا وما قتلوا ليجعل الله ذلك حسرة في
قلوبهم والله يحيي ويميت والله بما تعملون بصير ۝ ولئن
قتلتم في سبيل الله أو متم لمغفرة من الله ورحمة خير
مما يجمعون ۝ ولئن متم أو قتلتم لإلى الله تحشرون ۝
فبما رحمة من الله لنت لهم ولو كنت فظا غليظ القلب
لانفضوا من حولك فاعف عنهم واستغفر لهم وشاورهم
في الأمر فإذا عزمت فتوكل على الله إن الله يحب المتوكلين ۝
إن ينصركم الله فلا غالب لكم وإن يخذلكم فمن ذا الذي
ينصركم من بعده وعلى الله فليتوكل المؤمنون ۝ وما
كان لنبي أن يغل ومن يغلل يأت بما غل يوم القيمة
ثم توفى كل نفس ما كسبت وهم لا يظلمون ۝ أفمن
اتبع رضوان الله كمن باء بسخط من الله ومأوىه جهنم
وبئس المصير ۝ هم درجت عند الله والله بصير بما
يعملون ۝ لقد من الله على المؤمنين إذ بعث فيهم رسولا
من أنفسهم يتلوا عليهم ءايته ويزكيهم ويعلمهم الكتب
والحكمة وإن كانوا من قبل لفي ضلل مبين ۝ أولما

से प्रेम करता है जो (उस पर) भरोसा करने वाले हैं। ○ यदि अल्लाह तुम्हारी सहायता करे, तो तुम पर कोई मनुष्य प्राप्त नहीं कर सकता, और यदि वह तुम्हें छोड़ दे, तो फिर कौन है जो उस के बाद तुम्हारी मदद कर सके ? ईमान* वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए। ○

नबी* का काम नहीं कि कुछ छिपा रखे। और जो कोई छिपायेगा वह क़ियामत* के दिन उस के साथ आयेगा जिसे उस ने छिपाया होगा। फिर हर-एक को उस की कमाई का भर-पूर बदला दे दिया जायेगा; और उन पर ज़ुल्म नहीं होगा। ○ क्या जो व्यक्ति अल्लाह की ख़ुशी पर चला वह उस (व्यक्ति) जैसा हो सकता है जिस ने अल्लाह की ना-ख़ुशी अपने सिर ले ली, और जिस का ठिकाना दोज़ख़* है, और यह पहुँचने की कितनी बुरी जगह है। ○ अल्लाह के यहाँ इन के (अर्थात् लोगों के) विभिन्न दरजे हैं, और वे जो-कुछ करते हैं, अल्लाह उसे देखता है। ○ अल्लाह ने ईमान* लाने वालों पर यह बहुत बड़ा एहसान किया है जब कि उन के बीच उन्हीं में से एक रसूल* उठाया जो उन्हें उस की आयतें* सुनाता है, उन की आत्मा को शुद्ध (और विकसित होने का अवसर प्रदान) करता है, और उन्हें किताब* और हिकमत* की शिक्षा देता है; जब कि वे इस से पहले खुली गुमराही में पड़े हुये थे। ○

(और यह तुम्हारा क्या हाल है कि) जब ('उहुद' की लड़ाई में) तुम पर मुसीबत आ पड़ी तो कहने लगे : यह कहाँ से आई? जब कि ('बद्र' की लड़ाई में) इस से दूनी मुसीबत तुम (अपने दुश्मनों पर) डाल चुके हो। (हे नबी*!) कह दो : यह तुम्हारी अपनी ओर से है, निस्सन्देह अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला (सर्व-शक्तिमान् है)। ○ दोनों गिरोहों की मुठ-भेड़ के दिन जो मुसीबत भी तुम्हें पहुँची वह अल्लाह के हुक्म से पहुँची; और (इस लिए पहुँची) ताकि अल्लाह जान ले कि ईमान वाले* कौन हैं; ○ और ताकि (यह भी) जान ले कि कौन लोग हैं जो मुनाफ़िक़* हुये, जब उन (मुनाफ़िक़ों) से कहा गया कि आओ, अल्लाह की राह में युद्ध करो, या (कम-से-कम दुश्मनों को अपने ऊपर से) हटा दो, तो कहने लगे : यदि हम जानते कि आज लड़ाई होगी तो अवश्य तुम्हारे साथ हो लेते"। उस दिन वे ईमान* की अपेक्षा कुफ़्र* से ज़्यादा क़रीब थे। वे अपने मुँह से ऐसी बात कहते हैं जो उन के दिलों में नहीं होती। और जो-कुछ वे छिपाते हैं अल्लाह भली-भाँति जानता है। ○ ये वही हैं कि ख़ुद तो बैठे रहे, और अपने भाइयों के बारे में कहते हैं : यदि वे हमारी बात मानते तो मारे न जाते। (उन से) कहो : यदि तुम सच्चे हो तो अपने ऊपर से मृत्यु को टाल देना। ○

जो लोग अल्लाह की राह में मारे गये, उन्हें मरा हुआ न समझो। वे जीवित हैं। अपने

२२ अर्थात् हमें लड़ाई की आशा नहीं है नहीं तो हम अवश्य लड़ने के लिए चलते।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

أَوَلَمَّا أَصَابَتْكُم مُّصِيبَةٌ قَدْ أَصَبْتُم مِّثْلَيْهَا قُلْتُمْ أَنَّىٰ هَٰذَا ۖ قُلْ هُوَ
مِنْ عِندِ أَنفُسِكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ وَمَا أَصَابَكُمْ
يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ فَبِإِذْنِ اللَّهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَلِيَعْلَمَ
الَّذِينَ نَافَقُوا ۚ وَقِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا قَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوِ ادْفَعُوا ۖ
قَالُوا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَّاتَّبَعْنَاكُمْ ۗ هُمْ لِلْكُفْرِ يَوْمَئِذٍ أَقْرَبُ مِنْهُمْ
لِلْإِيمَانِ ۚ يَقُولُونَ بِأَفْوَاهِهِم مَّا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ ۗ وَاللَّهُ أَعْلَمُ
بِمَا يَكْتُمُونَ ۝ الَّذِينَ قَالُوا لِإِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوا لَوْ أَطَاعُونَا
مَا قُتِلُوا ۗ قُلْ فَادْرَءُوا عَنْ أَنفُسِكُمُ الْمَوْتَ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝
وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا ۚ بَلْ أَحْيَاءٌ
عِندَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ ۝ فَرِحِينَ بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ
وَيَسْتَبْشِرُونَ بِالَّذِينَ لَمْ يَلْحَقُوا بِهِم مِّنْ خَلْفِهِمْ أَلَّا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ يَسْتَبْشِرُونَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللَّهِ وَ
فَضْلٍ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ الَّذِينَ اسْتَجَابُوا
لِلَّهِ وَالرَّسُولِ مِن بَعْدِ مَا أَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ۚ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا
مِنْهُمْ وَاتَّقَوْا أَجْرٌ عَظِيمٌ ۝ الَّذِينَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ إِنَّ النَّاسَ
قَدْ جَمَعُوا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ إِيمَانًا وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ
وَنِعْمَ الْوَكِيلُ ۝ فَانقَلَبُوا بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللَّهِ وَفَضْلٍ لَّمْ يَمْسَسْهُمْ

रब* के पास रोज़ी पा रहे हैं। ○ जो-कुछ अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से उन्हें दिया है उस पर ख़ुशियाँ मनाते हैं, और उन (ईमान* वालों) के बारे में भी वे ख़ुश हो रहे हैं जो उन के पीछे (दुनियाँ में) रह गये हैं अभी (आ कर) उन में शामिल नहीं हुये: (इस लिए) कि उन्हें भी न तो कोई भय होगा और न वे दुखी होंगे। ○ वे अल्लाह की नेमत और (उस के) फ़ज़्ल से ख़ुश हो रहे हैं, और इस से कि (उन्हों ने देख लिया कि) अल्लाह ईमान वालों* का बदला (कर्म-फल) अकारथ नहीं करता। ○

जिन लोगों ने अल्लाह और रसूल* की पुकार सुनी; (और लड़ने के लिए तैयार हो गये) जब कि वे (अभी-अभी लड़ाई का) ज़ख़्म खा चुके थे, इन लोगों के लिए जो सत्कर्मी हैं और अल्लाह की अवज्ञा से बचने और उस की ना-ख़ुशी से डरने वाले हैं, बड़ा बदला है[११]। ○ और ये जिन से लोगों ने कहा कि तुम्हारे (मुक़ाबिले के) लिए लोगों ने (दुश्मनों ने) दल साज रखा है, इस लिए उन से डरो, तो इस ने उन का ईमान* और बढ़ा दिया और उन्हों ने (उत्तर देते हुए) कहा: हमारे लिए अल्लाह बस है! और वह क्या ही अच्छा कार्य-साधक है! ○ सो वे अल्लाह की नेमत और (उस के) फ़ज़्ल के साथ लौटे और वे अल्लाह की ख़ुशी (की राह) पर चले भी और उन्हें कोई तकलीफ़ भी नहीं पहुँची। अल्लाह बड़ा फ़ज़्ल वाला है। ○ यह तो केवल शैतान* है जो अपने मित्रों से डराता है। तुम यदि ईमान वाले* हो, तो उन से न डरना, मुझ से डरना। ○ १०

(हे नबी*!) जो लोग जल्दी से कुफ़्र में जा पड़ते हैं उन के कारण तुम दुखी न होना, ये अल्लाह का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। अल्लाह इरादा रखता है कि उन के लिए आख़िरत* में कोई हिस्सा न रखे, उन के लिए बड़ा अज़ाब* है। ○ जिन लोगों ने ईमान* के बदले कुफ़्र* का सौदा किया है वे अल्लाह का कुछ नहीं बिगाड़ेंगे, उन के लिए दुःख देने वाला अज़ाब* है। ○ यह ढील जो हम उन्हें दिये जाते हैं उसे काफ़िर* लोग अपने लिए अच्छा न समझें। हम तो उन्हें इस लिए ढील दे रहे हैं ताकि गुनाहों में वे (और) अधिक बढ़ जायें। और उन के लिए ज़लील करने वाला (अपमान जनक) अज़ाब है। ○

यह नहीं होने का कि अल्लाह ईमान* वालों को उस तरह रहने दे जैसे कि तुम (वर्तमान

११ काफ़िर लोग जब 'उहुद' की लड़ाई से मक्का के लिए वापस हुये, तो रास्ते में उन्हों ने सोचा कि हमें मुहम्मद (सल्ल०) की ताक़त को तोड़ देने का अच्छा अवसर मिला था जिसे हम खो कर चले आ रहे हैं, परन्तु उन्हें दोबारा मदीना पर आक्रमण करने का साहस न हो सका। इधर नबी सल्ल० ने सोचा कि कहीं वे मदीना पर दूसरा हमला न कर दें इस लिए 'उहुद' की लड़ाई के दूसरे ही दिन आप (सल्ल०) ने मुसलमानों को इकट्ठा कर के कहा कि हमें काफ़िरों का पीछा करना चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि वे दोबारा हम पर हमला बोल दें। इस कठिन समय पर भी सच्चे ईमान वाले आप (सल्ल०) के साथी काफ़िरों का पीछा करने के लिए तैयार हो गये, और मदीने से ८ मील के फ़ासिले तक उन का पीछा किया। इस आयत में उन्हीं आप (सल्ल०) के सत्यनिष्ठ साथियों की प्रशंसा की गई है।

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

سُوْٓءٌ ۙ وَّاتَّبَعُوْا رِضْوَانَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَظِيْمٍ ۝ اِنَّمَا
ذٰلِكُمُ الشَّيْطٰنُ يُخَوِّفُ اَوْلِيَآءَهٗ ۪ فَلَا تَخَافُوْهُمْ وَخَافُوْنِ اِنْ
كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ وَلَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِى الْكُفْرِ ۚ
اِنَّهُمْ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ يُرِيْدُ اللّٰهُ اَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حَظًّا فِى الْاٰخِرَةِ ۚ
وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ لَنْ
يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا
اَنَّمَا نُمْلِىْ لَهُمْ خَيْرٌ لِّاَنْفُسِهِمْ ؕ اِنَّمَا نُمْلِىْ لَهُمْ لِيَزْدَادُوْٓا اِثْمًا ۚ
وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝ مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى
مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتّٰى يَمِيْزَ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ
لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِىْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۪
فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۚ وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَلَكُمْ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝
وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ
خَيْرًا لَّهُمْ ؕ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ؕ سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ ؕ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
خَبِيْرٌ ۝ لَقَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ فَقِيْرٌ وَّ
نَحْنُ اَغْنِيَآءُ ۘ سَنَكْتُبُ مَا قَالُوْا وَقَتْلَهُمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ
وَّنَقُوْلُ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۝ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ

अवस्था में) हो, जब तक कि वह नापाक (लोगों) को पाक (लोगों) से अलग न कर दे। और अल्लाह वह नहीं कि तुम्हें ग़ैब* (परोक्ष) की ख़बर दे, हाँ (इस काम के लिए) वह अपने रसूलों* में से जिसे चाहता है चुन लेता है। तुम अल्लाह और उस के रसूलों* पर ईमान* लाओ। यदि तुम ईमान* लाओगे और अल्लाह की नाफ़रमानी से बचोगे और उस की ना-ख़ुशी से डरोगे तो तुम्हारे लिए बड़ा बदला है। ○

जो लोग उस चीज़ में कंजूसी करते हैं जिसे अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल (कृपा) से उन्हें दी है वे यह न समझें कि यह उन के लिए अच्छा है। बल्कि यह उन के हक़ में बुरा है। जो-कुछ उन्हों ने कंजूसी की होगी आगे वही क़ियामत के दिन उन (के गले) का तौक़ बन जायेगी। आसमानों और ज़मीन की मीरास अल्लाह ही के लिए है, जो-कुछ भी तुम करते हो, अल्लाह (उसे) जानता है। ○ १८०

अल्लाह ने उन लोगों की बात सुनी जो कहते हैं कि अल्लाह निर्धन है और हम धनवान हैं। जो-कुछ उन्हों ने कहा हम (उसे) लिख रखेंगे और नबियों* को जो उन्हों ने नाहक़ क़त्ल किया है वह भी (लिख लेंगे), और (जब फ़ैसले का दिन आयेगा) हम उन से कहेंगे : (लो, अब) जलने के अज़ाब का मज़ा चखो! ○ यह उस का बदला है जो तुम ने अपने हाथों (कमा कर) भेजा है। और अल्लाह (अपने) बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं है। ○ वे ऐसे लोग हैं कि कहते हैं : अल्लाह ने हमें ताकीद की है कि हम किसी रसूल* पर ईमान* न लाये जब तक कि वह हमारे सामने ऐसी क़ुरबानी (भेंट) न करे जिसे (आकाश से आ कर) अग्नि खा ले[३४]। (उन से) कहो : तुम्हारे पास मुझ से पहले (बहुत से) रसूल* खुली निशानियाँ

---

३४ यहूदियों के धर्म में बलिदान (क़ुरबानी) के मांस को जलाने की रीति थी। दे० बाइबिल 'अहबार' (Leviticus) के शुरू के अध्याय जिन में दग्ध बलिदान (Burnt sacrifice) का उल्लेख किया गया है। इस के अलावा इस के लिए दे० 'अहबार' (Lev.) ८ : १८ और 'इस्तिस्ना' (Deut.) ३३ : १०। इस के अतिरिक्त बाइबिल में कई स्थानों पर इस का उल्लेख किया गया है कि अल्लाह के यहाँ किसी क़ुरबानी के क़ुबूल होने की पहचान यह है कि ग़ैब से एक आग ज़ाहिर हो कर उसे भस्म कर दे। दे० 'क़ुज़ात' (Judges) ६ : २०-२१, १३ : १९-२०। बाइबिल में यह भी लिखा है कि कभी ऐसा भी होता था कि कोई नबी* दग्ध क़ुरबानी करता और ग़ैबी आग आ कर उसे खा लेती थी। 'अहबार' (Lev.) ९ : २४, तवारीख़ द्वितीय (The Chronicles II) ७ : १-२।*

-परन्तु यह कहीं नहीं लिखा है कि नबी होने के लिए यह चमत्कार दिखाना आवश्यक है। फिर बनी इसराईल में कितने ही नबियों ने यह चमत्कार दिखाया फिर भी दुष्ट लोग उन पर ईमान* नहीं ला सके। मिसाल के लिए हज़रत इलियास अ० का वृतान्त पढ़िए जो बाइबिल में बयान हुआ है, उन्हों ने यह चमत्कार दिखाया परन्तु फिर भी उन्हें कितने कष्ट सहन करने पड़े। दे० 'सलातीन अव्वल' (Kings I) अध्याय १८, १९।*

**इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

إن الله ليس بظلام للعبيد ۝ الذين قالوا إن الله عهد إلينا
ألا نؤمن لرسول حتى يأتينا بقربان تأكله النار قل قد
جاءكم رسل من قبلي بالبينات وبالذي قلتم فلم قتلتموهم
إن كنتم صادقين ۝ فإن كذبوك فقد كذب رسل من قبلك
جاءو بالبينات والزبر والكتاب المنير ۝ كل نفس ذائقة الموت
وإنما توفون أجوركم يوم القيامة فمن زحزح عن النار و
أدخل الجنة فقد فاز وما الحياة الدنيا إلا متاع الغرور ۝
لتبلون في أموالكم وأنفسكم ولتسمعن من الذين أوتوا
الكتاب من قبلكم ومن الذين أشركوا أذى كثيرا وإن
تصبروا وتتقوا فإن ذلك من عزم الأمور ۝ وإذ أخذ الله
ميثاق الذين أوتوا الكتاب لتبيننه للناس ولا تكتمونه
فنبذوه وراء ظهورهم واشتروا به ثمنا قليلا فبئس ما
يشترون ۝ لا تحسبن الذين يفرحون بما أتوا ويحبون
أن يحمدوا بما لم يفعلوا فلا تحسبنهم بمفازة من
العذاب ولهم عذاب أليم ۝ ولله ملك السماوات و
الأرض والله على كل شيء قدير ۝ إن في خلق السماوات
والأرض واختلاف الليل والنهار لآيات لأولي الألباب ۝

ले कर तुम्हारे पास आ चुके हैं, और वह (निशानी) भी लाये थे जिस के लिए तुम कह रहे हो। फिर यदि (अपनी बात में) सच्चे हो तो उन (रसूलों*) को तुम ने क़त्ल क्यों किया? ○ (हे नबी*!) यदि ये लोग तुम्हें झुठला रहे हैं तो कितने ही रसूल* तुम से पहले भी झुठलाये जा चुके हैं, जो खुली निशानियाँ, ज़बूरें* और रौशन किताब लाये थे। ○ हर जीव को मौत का मज़ा चखना है। और तुम्हें तुम्हारा भर-पूर बदला, क़ियामत* के दिन चुका दिया जायेगा। तो (उस दिन) जिसे आग (दोज़ख़*) से हटा दिया गया और जन्नत* में दाख़िल कर दिया गया उस का काम बन गया। और दुनियाँ (सांसारिक जीवन) तो केवल एक धोखे की सुख सामग्री है। ○

(हे ईमान* वालो!) तुम्हारे माल और तुम्हारी जान दोनों में तुम्हारी परीक्षा हो कर रहेगी, और तुम्हें उन लोगों से जिन्हें तुम से पहले किताब दी जा चुकी है और उन लोगों से जिन्हों ने शिर्क* किया बहुत सी दुख देने वाली बातें सुननी पड़ेंगी। परन्तु यदि तुम सहनशीलता से काम लो और अल्लाह की नाफ़रमानी से बचते और उस की ना-ख़ुशी से डरते रहो, तो यह महान् (साहस के) कार्यों में से होगा। ○ याद करो जब अल्लाह ने उन लोगों से जिन्हें किताब* दी गई थी, यह दृढ़ वचन लिया था कि तुम इस (किताब* की बातों) को खोल-खोल कर लोगों को बताओगे और उसे छिपाओगे नहीं। परन्तु उन्हों ने उसे पीठ-पीछे डाल दिया और थोड़े मूल्य (सांसारिक लाभ) पर उसे बेच डाला। तो कितना बुरा सौदा है जो ये करते हैं। ○ तुम यह न समझना कि ऐसे लोग अज़ाब* से बच जायेंगे जो अपने किये पर बहुत ख़ुश हैं, और चाहते हैं कि उस (काम) पर उन की सराहना की जाये जो उन्हों ने नहीं किया, उन के लिए (तो) दुख देने वाला अज़ाब* है। ○ आसमानों और ज़मीन का राज्य अल्लाह का है। और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला (सर्वशक्तिमान्) है। ○

[१५]निसन्देह आसमानों और ज़मीन की बनावट में और रात-दिन के एक-दूसरे के बाद बारी-बारी से आने में बुद्धि रखने वालों के लिए (बड़ी) निशानियाँ हैं। ○ वे (बुद्धि रखने वाले) जो खड़े, बैठे और लेटे (हर हाल में) अल्लाह को याद करते हैं, और आसमानों और ज़मीन की बनावट में सोच-विचार करते हैं, (और कहते हैं): हमारे रब*! तू ने ये सब बे-कार (और व्यर्थ) नहीं बनाया है। महिमा हो तेरी! तो (हे रब*!) तू हमें आग (दोज़ख़*) के अज़ाब से बचा ले। ○ हमारे रब*! तू ने जिसे आग (दोज़ख़*) में डाला उसे रुसवा

१५ यह सूरः* की समाप्ति सम्बन्धी वार्ता है। इस का सम्पर्क क़रीबी आयतों से नहीं पूरी सूरः* से है। समझने के लिए विशेष रूप से सूरः की पहली तक़रीर — जिस की हैसियत सूरः की भूमिका की है — [illegible]

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

कर दिया। और ऐसे ज़ालिमों का कोई सहायक नहीं है।○ हमारे रब* ! हम ने एक पुकारने वाले को ईमान* की ओर बुलाते सुना (वह कहता था): अपने रब* पर ईमान* लाओ। तो हम ईमान* ले आये। हमारे रब* ! तू हमारे गुनाहों को क्षमा कर दे और हमारी बुराइयों को हम से दूर कर दे, और (दुनियाँ से) हमें नेक लोगों के साथ उठा।○ हमारे रब* ! जिन नेमतों का वादा तू ने अपने रसूलों* के द्वारा हम से किया है वे हमें प्रदान कर। और क़ियामत* में हमें रुसवा न करना। निस्सन्देह तू अपने वादे के विरुद्ध जाने वाला नहीं है।○

उन के रब* ने उन की (विनय) सुन ली और कहा: मैं तुम में से किसी काम करने वाले का किया-धरा अकारथ नहीं करता, (चाहे वह) पुरुष हो या स्त्री, तुम परस्पर सजाति हो। तो जिन लोगों ने (मेरे लिए) घर-बार छोड़ा, और अपने घरों से निकाले गये और मेरी राह में सताये गये, और (मेरी राह में) लड़े और मारे गये, मैं उन की बुराइयाँ उन से दूर कर दूँगा और उन्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करूँगा जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी— यह अल्लाह की ओर से उन का बदला है। और अल्लाह ही के पास अच्छा बदला है।○

الَّذِينَ يَذْكُرُونَ اللَّهَ قِيَامًا وَقُعُودًا وَعَلَىٰ جُنُوبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُونَ
فِي خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا سُبْحٰنَكَ
فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝ رَبَّنَا إِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ أَخْزَيْتَهُ
وَمَا لِلظّٰلِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ۝ رَبَّنَا إِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُنَادِي
لِلْإِيمَانِ أَنْ آمِنُوا بِرَبِّكُمْ فَآمَنَّا رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَ
كَفِّرْ عَنَّا سَيِّئَاتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْأَبْرَارِ ۝ رَبَّنَا وَآتِنَا مَا وَعَدْتَنَا
عَلَىٰ رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيعَادَ ۝
فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ أَنِّي لَا أُضِيعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِنْكُمْ مِنْ
ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ بَعْضُكُمْ مِنْ بَعْضٍ فَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَأُخْرِجُوا
مِنْ دِيَارِهِمْ وَأُوذُوا فِي سَبِيلِي وَقٰتَلُوا وَقُتِلُوا لَأُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ
سَيِّئَاتِهِمْ وَلَأُدْخِلَنَّهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ ثَوَابًا
مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَاللَّهُ عِنْدَهُ حُسْنُ الثَّوَابِ ۝ لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ
الَّذِينَ كَفَرُوا فِي الْبِلَادِ ۝ مَتٰعٌ قَلِيلٌ ثُمَّ مَأْوٰهُمْ جَهَنَّمُ
وَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝ لٰكِنِ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِي
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِينَ فِيهَا نُزُلًا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَمَا عِنْدَ
اللَّهِ خَيْرٌ لِلْأَبْرَارِ ۝ وَإِنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَ
مَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِمْ خٰشِعِينَ لِلَّهِ لَا يَشْتَرُونَ بِآيٰتِ
اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا أُولٰئِكَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ
الْحِسَابِ ۝ يٰأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اصْبِرُوا وَصَابِرُوا وَرَابِطُوا
وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝

(हे नबी* !) दुनिया के देशों में काफ़िरों* की चलत-फिरत तुम्हें किसी धोखे में न डाले।○ (यह तो) थोड़ी सुख-सामग्री (और थोड़े दिनों की बहार) है। फिर तो उन का ठिकाना दोज़ख़* है, और वह (कितनी बुरी तैयारी और) कितना बुरा विश्रामस्थल है।○ परन्तु जो लोग अपने रब* की अवज्ञा से बचते और उस की ना-ख़ुशी से डरते रहे, उन के लिए (ऐसे) बाग़ हैं जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी, जहाँ वे सदैव रहेंगे। यह अल्लाह की ओर से (उन की) आवभगत के लिए होगा। और जो-कुछ अल्लाह के पास है वह नेक लोगों के लिए कहीं अच्छा है।○ निस्सन्देह किताब वालों* में कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह पर ईमान* रखते हैं और उस पर जो तुम पर उतारा गया है और उस पर भी जो (इस से पहले) उन की ओर भेजा गया, अल्लाह के आगे विनयशील हैं। वे अल्लाह की आयतों* को थोड़े मूल्य (सांसारिक लाभ) पर बेचते नहीं। उन (के कामों) का बदला उन के रब* के पास है, निस्सन्देह अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है (उसे हिसाब चुकाने में देर नहीं लगती)।○

हे ईमान* वालो ! सब्र* करो और बढ़-चढ़ कर सब्र करो और डटे रहो और अल्लाह की अवज्ञा से बचते और उस की ना-ख़ुशी से डरते रहो कदाचित् तुम सफल हो जाओ।○

---

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

४--अन-निसा

(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः में स्त्रियों और उन के हक़ और अधिकार (Women's rights) से सम्बन्ध रखने वाले बहुत से आदेश दिये गये हैं, इसी कारण इस सूरः का नाम 'अन-निसा' (स्त्रियाँ) रखा गया है। क़ुरआन की और बहुत सी सूरतों के नामों की तरह यह नाम भी सूरः के केन्द्रीय विषय का सूचक नहीं है।

उतरने का समय (Date of Revelation)

इस सूरः में कई-एक तक़रीरें सम्मिलित हैं, जो विभिन्न अवसरों पर उतरी हैं। अनुमान है कि पूरी सूरः सन ३ हिज० के अन्त से ले कर सन ४ हिज० के अन्त या सन् ५ हिज० के आरम्भ-काल तक उतरी है। पहली तक़रीर जिस में वरासत की तक़सीम और यतीमों (अनाथों) से सम्बन्ध रखने वाले आदेश दिये गये हैं, अनुमान है कि 'उहुद' की लड़ाई के बाद उतरी है; जब कि इस लड़ाई में मुसलमानों के ७० व्यक्ति शहीद* हो गये थे; और लोगों के सामने यह समस्या खड़ी हो गई थी कि शहीद होने वालों की वरासत का बँटवारा कैसे हो? और जो यतीम बच्चे उन्हों ने छोड़े हैं, उन का पालन-पोषण और उन के हक़ की रक्षा किस प्रकार की जाये?

लड़ाई के अवसर पर नमाज़* कैसे पढ़ी जाये? इस का उल्लेख हमें इतिहास में 'ज़ातुर्रिक़ाअ' की लड़ाई में मिलता है; इस से अनुमान होता है कि इस सूरः की वह तक़रीर जिस में लड़ाई के अवसर पर नमाज़ पढ़ने की विधि सिखाई गई है, इसी समय के लग-भग उतरी होगी। यह लड़ाई सन् ४ हिज० में हुई थी।

सूरः की जिस तक़रीर में यहूदियों को यह चेतावनी दी गई है: "ईमान* लाओ, इस से पहले कि हम चेहरे बिगाड़ कर पीछे की ओर कर दें" (आयत ४७) — उस के बारे में अनुमान यही है कि वह उस समय के लग-भग उतरी होगी जब मदीने से यहूदियों के एक विशेष क़बीले बनी नज़ीर* को निकाला गया है। अर्थात् सन ४ हिज० के लग-भग।

जिस तक़रीर में पानी न मिलने पर यह हुक्म दिया गया है कि लोग पाक-साफ़ मिट्टी से ही काम चलायें अर्थात् 'तयम्मुम'* कर लें, वह सन ५ हिज० में उतरी होगी; इस लिए कि पानी न मिलने पर 'तयम्मुम' का आदेश 'बनी मुस्तलिक़' की लड़ाई के अवसर पर दिया गया है। और यह लड़ाई सन् ५ हिज० में हुई है।

केन्द्रीय विषय तथा सम्पर्क

पिछली सूरः के आख़िरी हिस्से में 'उहुद' की लड़ाई का उल्लेख किया गया है, वर्तमान सूरः उस वातावरण से सम्बन्ध रखने वाले आदेशों के साथ आरम्भ होती है जो 'उहुद' की लड़ाई के परिणाम-स्वरूप पैदा हो गया था। 'उहुद' की लड़ाई में मुसलमानों के ७० व्यक्ति शहीद हो गये थे, शहीद होने वालों की विधवा स्त्रियाँ और उन

*इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

के यतीम बच्चों की समस्या लोगों के सामने खड़ी हो गई थी। वर्तमान सूरः के प्रारम्भिक भाग में विशेष रूप से इसी समस्या का समाधान किया गया है।

इस सूरः का केन्द्रीय विषय हक़ अथवा स्वत्व और अधिकार (Rights) की रक्षा है। इस सूरः में विभिन्न प्रकार के हक़ और अधिकार के विषय में इस्लामी शिक्षा प्रस्तुत की गई है। इस सूरः में यतीमों और अनाथों के हक़ की रक्षा और कमज़ोरों के दीन* और ईमान* की रक्षा पर ज़ोर देते हुये यतीमों से सम्बन्ध रखने वाले आदेशों और जिहाद* के आदेशों को समान रूप से बयान किया गया है। जिस प्रकार यतीमों और अनाथों के सम्बन्ध में दिये गये आदेशों से उन के हक़ और अधिकार की रक्षा होती है उसी प्रकार जिहाद* से कमज़ोर और निर्बल व्यक्तियों के दीन* और ईमान* की रक्षा होती है। इस सूरः में नातेदारों और स्त्रियों के हक़ और अधिकार की रक्षा पर भी ज़ोर दिया गया है, और उन से सम्बन्ध रखने वाले आदेश दिये गये हैं।

वार्त्ता (Subject-matter)

मुसलमानों को बहुत-से सामाजिक आदेश सूरः अल-बक़रः में दिये जा चुके थे परन्तु अब इस्लामी समाज को उन के अतिरिक्त और बहुत-से आदेशों की आवश्यकता थी। सूरः अन-निसा में विस्तार-पूर्वक सामाजिक नियमों से सम्बन्ध रखने वाले आदेश दिये गये। मुसलमानों को बताया गया कि वे अपने समाज को इस्लाम* के आधार पर किस प्रकार संघटित करें। पारिवारिक जीवन से सम्बन्ध रखने वाले नियमों को खोल-खोल कर बयान किया गया। विवाह और समाज में स्त्रियों और पुरुषों के सम्पर्क सम्बन्धित सीमा को निर्धारित किया गया। विरासत (तरका) के बँटवारे के सम्बन्ध में बताया गया कि उस में किस का कितना हिस्सा होता है। यतीमों (अनाथों) के हक़ और अधिकार की रक्षा पर विशेष रूप से ज़ोर दिया गया। घरेलू झगड़ों के निपटारे के लिए सहज एवं न्याय-संगत नियमों की सीख दी गई। दण्ड-विधान की नींव डाली गई। शराब (मदिरा) पर पाबन्दी लगाई गई। शारीरिक शुद्धता एवं स्वच्छता के प्रति आदेश दिये गये। इसी के साथ इस बात पर भी ज़ोर दिया गया कि मुसलमान अपने जीवन सम्बन्धी दूसरे कामों में भी पवित्रता एवं सच्चरित्रता का पालन करें। और जो कमज़ोरी भी उन में दिखाई दी उस पर उन्हें टोका गया।

मुनाफ़िक़ों* की नीतियों और उन की कृतियों पर आलोचना करते हुये यह बताया गया कि ईमान* और निफ़ाक़* में कोई सम्पर्क नहीं है। मुनाफ़िक़ों* के विभिन्न गिरोह थे। मुसलमानों को बताया गया कि मुनाफ़िक़ों* के किस गिरोह के साथ उन का क्या व्यवहार होना चाहिए।

'उहुद' की लड़ाई में मुसलमानों को हानि पहुँची थी; उस से धर्म-विरोधियों का साहस बहुत बढ़ गया था। मुसलमान चारों ओर से ख़तरे में घिरे हुये थे। पास-पड़ोस के मुशरिक* क़बीलों और यहूदियों के अलावा घर के मुनाफ़िक़* भी मुसलमानों के लिए एक बड़ी मुसीबत बने हुये थे। ऐसी विकट परिस्थिति में अल्लाह ने

*इस का अर्थ व्याख्या में आये हुए पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

जोशीली तक़रीरों से मुसलमानों का साहस बढ़ाया और उन्हें मुक़ाबिले के लिए उभारा। मुसलमानों को ऐसे आदेश भी दिये गये जो लड़ाई की हालत में उन के काम आने वाले थे। मदीने में मुनाफ़िक़* और दूसरे कमज़ोर 'ईमान* वाले लोग प्रायः भय की ख़बरें उड़ाया करते थे। हुक्म दिया गया कि ऐसी ख़बरें पहले ज़िम्मेदारों तक पहुँचाई जायें। जब तक वे उन की जाँच-पड़ताल न कर लें उन्हें फैलने न दिया जाये।

अरब के विभिन्न भागों में मुसलमान काफ़िर*-क़बीलों के बीच बिखरे हुये थे। वे प्रायः लड़ाई की लपेट में भी आ जाते थे। उन के मामले में विस्तार-पूर्वक आदेश दिये गये और उन्हें हिजरत* करने पर उभारा गया।

निष्पक्ष एवं तटस्थ क़बीलों और उन क़बीलों के बारे में जिन से मुसलमानों का समझौता हो गया था, बताया गया कि उन के साथ कैसा व्यवहार होना चाहिए। मुसलमानों को लड़ाइयों में बार-बार जाना पड़ता था; इस के अलावा दूसरे कामों से भी वे सफ़र करते थे। प्रायः उन्हें ऐसे रास्तों से जाना पड़ता जहाँ पानी का अभाव होता। हुक्म दिया गया कि लड़ाई के अवसर पर या सफ़र में यदि पानी न मिले तो स्नान और वज़ू* के बदले तयम्मुम* कर लिया जाये। सफ़र में संक्षिप्त रूप से नमाज़* पढ़ने की इजाज़त भी उन्हें दी गई। और इस का तरीक़ा भी उन्हें सिखाया गया कि भय और ख़तरे के समय वे अपनी नमाज़* किस तरह अदा करें।

यहूदियों में 'बनी नज़ीर' के लोग विशेष रूप से मुसलमानों के विरुद्ध शत्रुता की नीति अपनाये हुये थे। वे खुले तौर पर इस्लाम-दुश्मनों का साथ दे रहे थे। मदीने में भी इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ जोड़-तोड़ करने में वे सब से आगे थे। हालाँकि यहूदियों और मुसलमानों के बीच यह समझौता हुआ था कि यदि किसी ने मदीने पर आक्रमण किया, तो वे मुसलमानों के साथ मिल कर उस का मुक़ाबिला करेंगे। उन की अनुचित नीति पर उन्हें टोका गया; और खुले शब्दों में उन्हें अन्तिम चेतावनी भी दी गई; और अन्त में मदीने से उन को निकाल दिया गया।

यहूदियों और ईसाइयों के नैतिक एवं धार्मिक पतन पर प्रकाश डाला गया। उन के आचार-विचार पर आलोचना की गई। और उन्हें सच्चे धर्म की ओर बुलाया गया। और यह बात खोल कर बयान कर दी गई कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के रसूल* हैं; आप (सल्ल०) के पास उसी तरह अल्लाह की ओर से वह्य* आती है जिस तरह आप (सल्ल०) से पहले बहुत से नबियों* के पास आती थी। अब यह लोगों का अपना कर्तव्य है कि वे आप (सल्ल०) की रिसालत* पर ईमान* लायें और आप (सल्ल०) के दिखाये हुये मार्ग पर चल कर अपना जीवन सफल बनायें।

समाप्ति

सूरः को समाप्त करते हुये कहा गया है:—"ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब* की ओर से खुली दलील आ चुकी है, और हम ने तुम्हारी ओर प्रत्यक्ष प्रकाश उतारा है; सो जो लोग अल्लाह पर ईमान* लाये, और उस से चिमटे रहे, उन्हें

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

अल्लाह अपनी रहमत (दयालुता) और फ़ज़्ल (कृपा) के दामन में ले लेगा, और उन्हें वह अपनी ओर का सीधा मार्ग दिखायेगा। (आयत १७४–१७५)"

यह वास्तव में सारे आदेशों का सारांश है जो सूरः के अन्त में प्रस्तुत किया गया है। इस से मालूम होता है कि क़ुरआन जिस मार्ग की ओर हमें बुलाता है वह बिल्कुल खुला हुआ और सरल मार्ग है। इस मार्ग को अपनाने के बाद मनुष्य पूर्ण-रूप से उजाले में आ जाता है। उसे एक ऐसा अन्धकार-रहित वातावरण प्राप्त हो जाता है जहाँ सत्यता उस पर अपना दिव्य प्रकाश डालती है। उस की बुद्धि और विवेक को बढ़ावा और प्रोत्साहन मिलता है; उस की समस्त शंकाओं का समाधान हो जाता है, उस की चेतना जाग उठती है। वह सत्य और असत्य, सुन्दर और असुन्दर का पारखी बन जाता है।

सूरः के आरम्भ में नातेदारों के हक़ और अधिकार से सम्बन्ध रखने वाले आदेश दिये गये थे; सूरः की अन्तिम आयत में भी इसी प्रकार के आदेश दे कर इस सूरः को समाप्त कर दिया गया है। सूरः की अन्तिम आयत इस सूरः में परिशिष्ट के रूप में सम्मिलित है।

---

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

فَرِيضَةً مِّنَ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝ وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ
أَزْوَاجُكُمْ إِن لَّمْ يَكُن لَّهُنَّ وَلَدٌ فَإِن كَانَ لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمُ الرُّبُعُ
مِمَّا تَرَكْنَ مِن بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصِينَ بِهَا أَوْ دَيْنٍ وَلَهُنَّ الرُّبُعُ
مِمَّا تَرَكْتُمْ إِن لَّمْ يَكُن لَّكُمْ وَلَدٌ فَإِن كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ
الثُّمُنُ مِمَّا تَرَكْتُم مِّن بَعْدِ وَصِيَّةٍ تُوصُونَ بِهَا أَوْ دَيْنٍ وَإِن
كَانَ رَجُلٌ يُورَثُ كَلَالَةً أَوِ امْرَأَةٌ وَلَهُ أَخٌ أَوْ أُخْتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ
مِّنْهُمَا السُّدُسُ فَإِن كَانُوا أَكْثَرَ مِن ذَٰلِكَ فَهُمْ شُرَكَاءُ فِي الثُّلُثِ
مِن بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصَىٰ بِهَا أَوْ دَيْنٍ غَيْرَ مُضَارٍّ وَصِيَّةً مِّنَ اللَّهِ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَلِيمٌ ۝ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ وَمَن يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَذَٰلِكَ
الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ وَمَن يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَتَعَدَّ حُدُودَهُ
يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيهَا وَلَهُ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۝ وَاللَّاتِي يَأْتِينَ
الْفَاحِشَةَ مِن نِّسَائِكُمْ فَاسْتَشْهِدُوا عَلَيْهِنَّ أَرْبَعَةً مِّنكُمْ فَإِن
شَهِدُوا فَأَمْسِكُوهُنَّ فِي الْبُيُوتِ حَتَّىٰ يَتَوَفَّاهُنَّ الْمَوْتُ أَوْ يَجْعَلَ
اللَّهُ لَهُنَّ سَبِيلًا ۝ وَاللَّذَانِ يَأْتِيَانِهَا مِنكُمْ فَآذُوهُمَا فَإِن تَابَا
وَأَصْلَحَا فَأَعْرِضُوا عَنْهُمَا إِنَّ اللَّهَ كَانَ تَوَّابًا رَّحِيمًا ۝ إِنَّمَا التَّوْبَةُ
عَلَى اللَّهِ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السُّوءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوبُونَ مِن قَرِيبٍ

के औलाद न हो; यदि उन के औलाद हो तो तुम्हारा चौथाई (हिस्सा) होगा, (परन्तु) वसीयत जो वे कर जायें पूरी करने, या क़र्ज़ (जो उन पर हो, चुका देने) के बाद। और जो-कुछ तुम छोड़ जाओ उस में उन का (हिस्सा) चौथाई होगा यदि तुम्हारे कोई औलाद नहीं है, परन्तु यदि तुम्हारे औलाद है तो उन का (हिस्सा) आठवाँ होगा,* (परन्तु) वसीयत जो तुम कर जाओ पूरी करने, या क़र्ज़ (जो तुम पर रह गया हो, उसे अदा करने) के बाद।

और यदि ऐसा हो कि किसी पुरुष या स्त्री के न तो औलाद हो और न उस के माता-पिता ही (जीवित) हों, और उस के एक भाई या एक बहन हो तो उन दोनों में से प्रत्येक का छटा (हिस्सा) होगा, और यदि वे (भाई-बहन) इस से अधिक हों, तो फिर एक तिहाई* में वे सब शरीक होंगे, (परन्तु) वसीयत जो की गई हो पूरी कर देने और क़र्ज़ (जो मरने वाले पर रह गया हो, चुका देने) के बाद जब कि वह हानि पहुँचाने वाला न हो*। यह वसीयत अल्लाह की ओर से है। और अल्लाह (सब-कुछ) जानने वाला और सहनशील है। ○

ये अल्लाह की (निश्चित की हुई) सीमायें हैं। और जो कोई अल्लाह और उस के रसूल* के हुक्म पर चलेगा, उसे अल्लाह ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी, उन में वह सदैव रहेगा। और यही (सब से) बड़ी सफलता है। ○ और जो कोई अल्लाह और उस के रसूल* का हुक्म न मानेगा और उस की सीमाओं से आगे बढ़ेगा, उसे अल्लाह आग (दोज़ख़*) में डालेगा, जहाँ उसे सदा रहना होगा; और उस के लिए ज़लील करने वाला (अपमान-जनक) अज़ाब है। ○

और तुम्हारी स्त्रियों में से जो बदकारी करें, उन पर अपने (लोगों) में से चार (आदमियों) की गवाही लो। फिर यदि वे गवाही दें तो उन्हें घरों में बन्द रखो यहाँ तक कि उन्हें मृत्यु ग्रस्त ले या अल्लाह उन के लिए कोई राह पैदा करे। ○ और तुम में से जो वह कर्म करें, [illegible]

---

७ चाहे एक पत्नी हो या कई पत्नियाँ हों यदि औलाद है, तो उन में बराबरी के साथ माल का आठवाँ हिस्सा बाँट दिया जायेगा। और यदि औलाद नहीं है, तो बराबरी के साथ उन में माल का चौथाई भाग बाँटा जायेगा।

८ यदि कोई और वारिस हो तो शेष [illegible] माल उसे मिलेगा और यदि कोई दूसरा वारिस न हो तो इस पूरे शेष माल के बारे में उस व्यक्ति को वसीयत करने का अधिकार होगा।

इस आयत में भाई-बहनों का तात्पर्य जो केवल माता की ओर से मरने वाले के भाई-बहन हों, जिन का बाप दूसरा हो। सगे भाई-बहन और ऐसे सौतेले भाई-बहन, बाप से सम्बन्ध है जिन का मरने वाले के साथ [illegible] हो, उन के बारे में सूरः के अन्त में आदेश दिया गया है।

९ अर्थात् यह कि मरने वाले ने न तो वसीयत में किसी तरह का अन्याय किया हो, और न [illegible] के वंचित करने के लिए क़र्ज़ का कोई झूठा इक़रार किया हो।

* इन का अर्थ परिशिष्ट में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

أُولَٰئِكَ يَتُوبُ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝ وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ
لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ حَتَّىٰ إِذَا حَضَرَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ إِنِّي
تُبْتُ الْآنَ وَلَا الَّذِينَ يَمُوتُونَ وَهُمْ كُفَّارٌ ۚ أُولَٰئِكَ أَعْتَدْنَا لَهُمْ
عَذَابًا أَلِيمًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَحِلُّ لَكُمْ أَنْ تَرِثُوا النِّسَاءَ
كَرْهًا ۖ وَلَا تَعْضُلُوهُنَّ لِتَذْهَبُوا بِبَعْضِ مَا آتَيْتُمُوهُنَّ إِلَّا أَنْ
يَأْتِينَ بِفَاحِشَةٍ مُبَيِّنَةٍ ۚ وَعَاشِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۚ فَإِنْ كَرِهْتُمُوهُنَّ
فَعَسَىٰ أَنْ تَكْرَهُوا شَيْئًا وَيَجْعَلَ اللَّهُ فِيهِ خَيْرًا كَثِيرًا ۝ وَإِنْ أَرَدْتُمُ
اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَكَانَ زَوْجٍ وَآتَيْتُمْ إِحْدَاهُنَّ قِنْطَارًا فَلَا تَأْخُذُوا
مِنْهُ شَيْئًا ۚ أَتَأْخُذُونَهُ بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُبِينًا ۝ وَكَيْفَ تَأْخُذُونَهُ وَ
قَدْ أَفْضَىٰ بَعْضُكُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ وَأَخَذْنَ مِنْكُمْ مِيثَاقًا غَلِيظًا ۝ وَ
لَا تَنْكِحُوا مَا نَكَحَ آبَاؤُكُمْ مِنَ النِّسَاءِ إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ۚ إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً
وَمَقْتًا وَسَاءَ سَبِيلًا ۝ حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ أُمَّهَاتُكُمْ وَبَنَاتُكُمْ وَأَخَوَاتُكُمْ وَ ع
عَمَّاتُكُمْ وَخَالَاتُكُمْ وَبَنَاتُ الْأَخِ وَبَنَاتُ الْأُخْتِ وَأُمَّهَاتُكُمُ اللَّاتِي أَرْضَعْنَكُمْ
وَأَخَوَاتُكُمْ مِنَ الرَّضَاعَةِ وَأُمَّهَاتُ نِسَائِكُمْ وَرَبَائِبُكُمُ اللَّاتِي فِي حُجُورِكُمْ
مِنْ نِسَائِكُمُ اللَّاتِي دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَإِنْ لَمْ تَكُونُوا دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا
جُنَاحَ عَلَيْكُمْ وَحَلَائِلُ أَبْنَائِكُمُ الَّذِينَ مِنْ أَصْلَابِكُمْ وَأَنْ
تَجْمَعُوا بَيْنَ الْأُخْتَيْنِ إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

उन दोनों को कष्ट दो। फिर यदि वे तौबः* करें और सुधर जायें, तो उन्हें छोड़ दो। निस्सन्देह अल्लाह तौबः* क़बूल करने वाला और दया करने वाला है''।○

उन्हीं लोगों की तौबः* क़बूल करना अल्लाह के ज़िम्मे है जो ना-समझी में कोई बुराई कर बैठते हैं फिर जल्द ही तौबः* करते हैं। ऐसे ही लोग हैं जिन्हें अल्लाह क्षमा कर देता है। और अल्लाह (सब-कुछ) जानने वाला और हिकमत* वाला है।○ और ऐसे लोगों की तौबः* (क़बूल) नहीं (होती है) जो बुरे काम किये जाते हैं यहाँ तक कि जब उन में से किसी की मृत्यु का समय आ जाता है, तो वह कहता है : अब मैं ने तौबः* की; और न उन की (तौबः* क़बूल होती है) जो मरते दम तक काफ़िर* रहें। ऐसे लोगों के लिए हम ने दुःख देने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है।○

हे ईमान* लाने वालो! तुम्हारे लिए हलाल* नहीं कि स्त्रियों के ज़बरदस्ती वारिस बन बैठो, और उन्हें इस लिए रोको कि जो-कुछ तुम ने उन्हें (मह्र* के रूप में) दिया है उस में से कुछ हिस्सा ले लो, हाँ यदि वे खुले रूप से अश्लील कर्म करें (तो तुम उन्हें सज़ा के लिए रोक सकते हो)। और उन के साथ भले तरीक़े से रहो-सहो, यदि वे तुम्हें नापसन्द हों तो हो सकता है कि एक चीज़ तुम नापसन्द करते हो और अल्लाह उस में बहुत कुछ भलाई पैदा कर दे।○ और यदि तुम एक पत्नी को छोड़ कर उस की जगह दूसरी पत्नी लाना चाहो तो चाहे तुम ने उन में से एक को ढेर सा माल दे दिया हो, उस में से कुछ न लेना। क्या तुम उस पर झूठा आरोप लगा कर और खुले गुनाह का भागी बन कर उसे लोगे?○ और तुम उस (माल) को किस तरह ले सकते हो जब कि तुम एक दूसरे तक पहुँच चुके हो, (अर्थात् संभोग कर चुके हो), और वे तुम से पक्का इक़रार भी ले चुकी हैं?○ २०

और उन (स्त्रियों) से विवाह न करो जिन से तुम्हारे पिता विवाह कर चुके हों, परन्तु जो हो चुका (सो हो चुका)। निस्सन्देह यह एक बेशर्मी का काम और ग़ज़ब की बात है, और बुरी राह है।○

तुम पर हराम की गईं तुम्हारी मातायें'', तुम्हारी बेटियाँ,'' तुम्हारी बहनें, तुम्हारी फूफियाँ, तुम्हारी खालायें, और भतीजियाँ, और भानजियाँ, और तुम्हारी वे मातायें जिन्हों ने तुम्हें दूध पिलाया हो, और तुम्हारी दूध शरीक बहनें'', और तुम्हारी स्त्रियों की मातायें,

---

१० आयत १५ और १६ में कुकर्म के बारे में प्रारम्भिक आदेश दिया गया है, बाद में इस की सज़ा निश्चित कर दी गई। देखिए सूरः अन-नूर, आयत २–१०।

११ इसी हुक्म में बाप की माता और माता की माता सब आ गईं।

१२ बेटी से पोती और नतिनी भी आ जाती है।

१३ जिस स्त्री का दूध पिया हो वह माता समान है, और उस का पति पिता-समान होता है। इस नाते से भी वे सभी रिश्ते हराम ठहरेंगे जो माता-पिता के नाते से हराम हैं।

**इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

وَّالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۚ كِتٰبَ اللّٰهِ
عَلَيْكُمْ ۚ وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ اَنْ تَبْتَغُوْا بِاَمْوَالِكُمْ مُّحْصِنِيْنَ
غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ ۗ فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهٖ مِنْهُنَّ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ
فَرِيْضَةً ۗ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا تَرٰضَيْتُمْ بِهٖ مِنْۢ بَعْدِ الْفَرِيْضَةِ ۗ
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝ وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا اَنْ
يَّنْكِحَ الْمُحْصَنٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ فَمِنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ فَتَيٰتِكُمُ
الْمُؤْمِنٰتِ ۗ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِكُمْ ۗ بَعْضُكُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ
فَانْكِحُوْهُنَّ بِاِذْنِ اَهْلِهِنَّ وَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ
مُحْصَنٰتٍ غَيْرَ مُسٰفِحٰتٍ وَّلَا مُتَّخِذٰتِ اَخْدَانٍ ۚ فَاِذَاۤ اُحْصِنَّ
فَاِنْ اَتَيْنَ بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنٰتِ مِنَ
الْعَذَابِ ۗ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ ۗ وَاَنْ تَصْبِرُوْا خَيْرٌ
لَّكُمْ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ
سُنَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَيَتُوْبَ عَلَيْكُمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝
وَاللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْكُمْ ۗ وَيُرِيْدُ الَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الشَّهَوٰتِ
اَنْ تَمِيْلُوْا مَيْلًا عَظِيْمًا ۝ يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّخَفِّفَ عَنْكُمْ ۚ وَخُلِقَ
الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَكُمْ
بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ ۚ وَ

और उन की (अर्थात् तुम्हारी स्त्रियों की) बेटियाँ जो तुम्हारी गोदों में पली हैं—तुम्हारी उन स्त्रियों की बेटियाँ जिन से तुम संभोग कर चुके हो परन्तु यदि संभोग नहीं किया है, तो तुम पर कोई गुनाह नहीं—और तुम्हारे उन बेटों की स्त्रियाँ जो तुम्हारे वीर्य से हों। और यह (भी तुम पर हराम ठहरा दिया गया है) कि एक समय में दो बहनों को इकट्ठा करो,[१४] परन्तु पहले जो हो चुका (सो हो चुका)। निस्सन्देह अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील और दया करने वाला है।○ †और विवाहित स्त्रियाँ भी तुम पर हराम हैं (जो किसी के निकाह में हों) सिवाय उन के जो (लौंडी* के रूप में) तुम्हारे क़ब्ज़े में हों। ये अल्लाह के आदेश हैं जो तुम्हें दिये गये हैं।

इन के अतिरिक्त और (स्त्रियाँ) तुम्हारे लिए हलाल* हैं, कि तुम अपने माल द्वारा उन्हें प्राप्त करो इस तरह कि तुम उन से विवाह कर लो, न कि बद-कारी करने लगो। फिर (दाम्पत्य-जीवन का) जो फ़ायदा तुम उन से उठाओ, उस के बदले उन का निश्चित किया हुआ हक़ (मह्र*) अदा करो। और यदि (हक़) निश्चित हो जाने के बाद तुम आपस में अपनी ख़ुशी से कोई समझौता कर लो, तो इस में तुम पर कोई गुनाह नहीं। निस्सन्देह अल्लाह (सब-कुछ) जानने वाला और हिकमत* वाला है।○ और तुम में से जिस किसी में इतना सामर्थ्य न हो कि ईमान* वाली महिलाओं से विवाह करे, तो तुम्हारी वे लौंडियाँ* ही सही जो तुम्हारे क़ब्ज़े में हों (अर्थात् जिन के तुम मालिक हो)। जो ईमान वाली* हों। अल्लाह तुम्हारे ईमानों* को अच्छी तरह जानता है। तुम सब आपस में एक जैसे हो; सो उन के मालिकों से इजाज़त ले कर तुम उन से विवाह कर लो, और सामान्य नियम के अनुसार उन्हें उन के मह्र* अदा करो, इस तरह से कि वे विवाहिता बनाई जायें, न वे बद-कारी करने वाली हों और न चोरी-छिपे आशनाई करने वाली हों। फिर जब वे विवाहिता बना ली जायें और उस के पीछे कोई बद-कारी कर बैठें तो जो सज़ा महिलाओं की है उस की आधी उन (लौंडियों) की होगी। यह (हुक्म) तुम में उस (व्यक्ति) के लिए है जिसे आपत्ति में पड़ जाने का भय हो। और यदि तुम सब्र करो तो यह तुम्हारे लिए अधिक उत्तम है। और अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।○ २१

अल्लाह चाहता है कि तुम पर (उन के तरीक़े) खोल दे और उन्हीं के तरीक़ों पर तुम्हें चलाये जो तुम से पहले थे, (अर्थात् नबियों और ईमान वालों के तरीक़े पर) और तुम पर मेहरबानी करे। अल्लाह (सब-कुछ) जानने वाला और हिकमत* वाला है।○ और अल्लाह चाहता है कि तुम पर मेहरबानी करे; और ये लोग जो (अपनी) तुच्छ इच्छाओं (वासनाओं)

१४ इसी प्रकार खाला (मौसी) और भानजी, फूफी और भतीजी से भी एक साथ विवाह नहीं किया जा सकता। ऐसी स्त्रियों से एक साथ विवाह करना हराम है जिन में से यदि कोई पुरुष होती, तो उस का दूसरी के साथ विवाह न हो सकता।

† यहीं से पाँचवाँ पारः (Part V) शुरू होता है।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

لا تقتلوا أنفسكم إن الله كان بكم رحيما ۝ ومن يفعل ذلك
عدوانا وظلما فسوف نصليه نارا ۚ وكان ذلك على الله
يسيرا ۝ إن تجتنبوا كبائر ما تنهون عنه نكفر عنكم سيئاتكم
وندخلكم مدخلا كريما ۝ ولا تتمنوا ما فضل الله به
بعضكم على بعض ۚ للرجال نصيب مما اكتسبوا ۖ وللنساء
نصيب مما اكتسبن ۚ واسألوا الله من فضله ۗ إن الله كان بكل
شيء عليما ۝ ولكل جعلنا موالي مما ترك الوالدان و
الأقربون ۚ والذين عقدت أيمانكم فآتوهم نصيبهم ۚ إن
الله كان على كل شيء شهيدا ۝ الرجال قوامون على النساء
بما فضل الله بعضهم على بعض وبما أنفقوا من أموالهم ۚ
فالصالحات قانتات حافظات للغيب بما حفظ الله ۚ واللاتي
تخافون نشوزهن فعظوهن واهجروهن في المضاجع
واضربوهن ۖ فإن أطعنكم فلا تبغوا عليهن سبيلا ۗ إن الله
كان عليا كبيرا ۝ وإن خفتم شقاق بينهما فابعثوا حكما
من أهله وحكما من أهلها إن يريدا إصلاحا يوفق الله
بينهما ۗ إن الله كان عليما خبيرا ۝ واعبدوا الله ولا تشركوا
به شيئا ۖ وبالوالدين إحسانا وبذي القربى واليتامى والمساكين

का पालन करते हैं चाहते हैं कि तुम भारी कजी में पड़ जाओ। ○ अल्लाह चाहता है कि तुम पर से बोझ हल्का करे, क्योंकि मनुष्य निर्बल पैदा किया गया है। ○

[15]हे ईमान लाने वालो![*] परस्पर एक दूसरे के माल अवैध रूप से न खाओ, सिवाय इस के कि तुम्हारी आपस की रज़ामन्दी से कोई सौदा हो (तो इस में कोई दोष नहीं), और अपनों की हत्या न करो। निस्सन्देह अल्लाह तुम पर दया करने वाला है। ○ और जो कोई ज़्यादती और ज़ुल्म से ऐसा करेगा, उसे हम जल्द ही आग में झोंक देंगे, और यह अल्लाह के लिए आसान (बात) ३० है। ○ यदि तुम उन बड़ी-बड़ी चीज़ों से बचते रहो जिन से तुम्हें रोका जा रहा है, तो हम तुम्हारी छोटी-मोटी बुराइयों को तुम से दूर कर देंगे और तुम्हें इज़्ज़त की जगह दाख़िल करेंगे। ○

जो-कुछ अल्लाह ने तुम में से किसी को दूसरों के मुक़ाबिले में ज़्यादा दिया है उस की कामना न करो। —पुरुषों ने जो कुछ कमाया है उस के अनुसार उन का हिस्सा है, और स्त्रियों ने जो-कुछ कमाया है उस के अनुसार उन का हिस्सा है। — और अल्लाह से उस का फ़ज़्ल (कृपा) माँगो। निस्सन्देह अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। ○ और हम ने हर ऐसे माल के जिसे माता-पिता और नातेदार छोड़ जायें हक़दार ठहरा दिये हैं; और जिन लोगों को तुम वचन दे चुके हो, उन्हें भी उन का हिस्सा दो। निस्सन्देह हर चीज़ अल्लाह के समक्ष है (उस से कोई चीज़ छिपी नहीं है)। ○

पुरुष स्त्रियों के सिरधरे हैं, इस लिए कि अल्लाह ने एक को दूसरे पर बड़ाई दी है,[16] और इस लिए भी कि उन्हों ने (अर्थात् पुरुषों ने) अपने माल (उन पर) ख़र्च किये हैं। सो जो नेक स्त्रियाँ होती हैं वे अदब से रहने वाली होती हैं, और (पुरुषों के) पीठ पीछे अल्लाह की हिफ़ाज़त में (उन के हक़ की) रक्षा करती हैं। और जो स्त्रियाँ ऐसी हों जिन की सरकशी का तुम्हें डर हो, उन्हें समझाओ सोने की जगहों में उन से अलग रहो, और उन्हें मारो। फिर यदि वे तुम्हारी बात मानने लगें, तो उन के विरुद्ध कोई राह (बहाना) न ढूँढो। निस्सन्देह अल्लाह (सब से) उच्च और महान् है। ○ और यदि तुम्हें उन (पति-पत्नी) के बीच बिगाड़ का डर हो, तो एक पंच पुरुष के लोगों में से और एक स्त्री के लोगों में से नियुक्त करो। यदि वे दोनों सुधार

---

[15] यहाँ से हक़ अथवा स्वत्व (Rights) की रक्षा का दूसरा बयान शुरू होता है जिस का सम्बन्ध विशेष रूप से समाज और सामाजिक मामलों से है।

[16] अर्थात् पुरुष को अल्लाह ने स्वभावतः कुछ ऐसी शक्तियाँ और गुण प्रदान किये हैं जिन के कारण पारिवारिक जीवन में सरपरस्त और सिरधरे का पद उसी को प्राप्त है। स्त्री को स्वभावतः पुरुष की हिफ़ाज़त में अपना जीवन व्यतीत करना चाहिए। इस में स्त्री का कोई अपमान नहीं है, बल्कि इसी में स्त्री के स्त्रीत्व का रहस्य निहित है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

चाहेंगे तो अल्लाह दोनों में बनाव और एक[illegible] कर देगा। निसन्देह अल्लाह (सब-कुछ) जानने [illegible] और ख़बर रखने वाला है। ○

और तुम अल्लाह की इबादत* करो। [illegible] उस के साथ किसी को साझी न ठहराओ। [illegible] पिता के साथ अच्छा बरताव करो, और नाते[illegible] अनाथों, मुहताजों, नातेदार पड़ोसियों के साथ [illegible] उन पड़ोसियों के साथ जिन से सम्बन्ध न हो, [illegible] पास के आदमी के साथ और राह चलने [illegible] साथ और उन (लौंडी*–ग़ुलामों) के साथ जो तु[illegible] क़ब्ज़े में हों (अच्छा व्यवहार करो)। निसन्देह अल्[illegible] किसी ऐसे व्यक्ति को पसन्द नहीं करता जो इ[illegible] वाला और डींग मारने वाला हो। ○ वे जो कंजू[illegible] करते हैं और लोगों को कंजूसी करने की सम्मति दे[illegible] हैं, और अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से जो-कुछ उन्हें [illegible] रखा है उसे छिपाते हैं। और हम ने काफ़िरों* [illegible] लिए ज़लील करने वाला (अपमान जनक) अज़ा[illegible] तैयार कर रखा है; ○ वे जो अपने माल केवल लोगों को दिखाने के लिए ख़र्च करते हैं, [illegible] अल्लाह पर ईमान* रखते हैं और न अन्तिम दिन (आख़िरत*) पर। जिस का साथी शैता[illegible] हुआ, तो क्या ही बुरा वह साथी है। ○ उन का क्या बिगड़ जाता यदि वे अल्लाह पर और अन्तिम दिन (आख़िरत*) पर ईमान* लाते और जो-कुछ अल्लाह ने उन्हें दिया है उस में से ख़र्च करते। और अल्लाह उन्हें (भली-भाँति) जानता है। ○ अल्लाह किसी के साथ रत्ती भर अन्याय नहीं करता; यदि एक नेकी हो, तो उसे दो-गुना कर देता है और अपनी ओर से बड़ा बदला प्रदान करता है। ○ फिर क्या हाल होगा जब हम हर गरोह में से एक गवाह लायेंगे, और तुम्हें (हे पैग़म्बर!) उन (लोगों) पर गवाह बना कर लायेंगे। ○ उस दिन वे लोग जिन्हों ने कुफ़्र* किया होगा और रसूल* की बात न मानी होगी यही इच्छा करेंगे कि क्या ही अच्छा होता कि उन्हें गाड़ कर ज़मीन बराबर कर दी जाती, और वे अल्लाह से कोई बात भी न छिपा सकेंगे। ○

हे ईमान* लाने वालो! जब तुम नशे में हो तो नमाज़* के क़रीब न जाओ,[17] जब तक कि तुम यह न जानने लगो कि क्या कह रहे हो, और न नापाकी[18] की हालत में नमाज़ के क़रीब जाओ, जब तक कि स्नान न कर लो, सिवाय इस के कि रास्ता चल रहे हो[19]। और यदि तुम बीमार हो, या सफ़र में हो, या तुम में से कोई शौच कर के आये, या तुम स्त्रियों [illegible]

وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْبِ وَابْنِ
السَّبِيلِ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا
فَخُورًا ۝ الَّذِينَ يَبْخَلُونَ وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَيَكْتُمُونَ
مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۗ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُهِينًا ۝
وَالَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ
وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ ۗ وَمَنْ يَكُنِ الشَّيْطَانُ لَهُ قَرِينًا فَسَاءَ قَرِينًا ۝
وَمَاذَا عَلَيْهِمْ لَوْ آمَنُوا بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَأَنْفَقُوا مِمَّا رَزَقَهُمُ
اللَّهُ ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِهِمْ عَلِيمًا ۝ إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۖ
وَإِنْ تَكُ حَسَنَةً يُضَاعِفْهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَدُنْهُ أَجْرًا عَظِيمًا ۝
فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيدٍ وَجِئْنَا بِكَ عَلَىٰ هَٰؤُلَاءِ
شَهِيدًا ۝ يَوْمَئِذٍ يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَعَصَوُا الرَّسُولَ لَوْ تُسَوَّىٰ
بِهِمُ الْأَرْضُ وَلَا يَكْتُمُونَ اللَّهَ حَدِيثًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا
لَا تَقْرَبُوا الصَّلَاةَ وَأَنْتُمْ سُكَارَىٰ حَتَّىٰ تَعْلَمُوا مَا تَقُولُونَ وَ
لَا جُنُبًا إِلَّا عَابِرِي سَبِيلٍ حَتَّىٰ تَغْتَسِلُوا ۚ وَإِنْ كُنْتُمْ مَرْضَىٰ
أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِنْكُمْ مِنَ الْغَائِطِ أَوْ لَامَسْتُمُ النِّسَاءَ
فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوا بِوُجُوهِكُمْ
وَأَيْدِيكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَفُوًّا غَفُورًا ۝ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا

[17] शराब (मदिरा) के बारे में यह दूसरा हुक्म है। सूर: अल-बक़र: आयत २१९ में केवल इतनी बात कही गई थी कि शराब बुरी चीज़ है। इस दूसरे हुक्म के कुछ समय बाद शराब बिल्कुल हराम कर दी गई। (देखिये सूर: अल-माइद:, आयत ९०)।

[18] यहाँ नापाकी का मतलब वह नापाकी है जब आदमी के लिए नहाना ज़रूरी हो जाता है।

[19] जब नहाने की ज़रूरत हो तो आदमी को मस्जिद में भी न जाना चाहिए परन्तु यदि किसी का रास्ता मस्जिद से हो के गुज़रता हो [illegible] इस आयत से इस की इजाज़त निकलती है।

* इन का अर्थ आरम्भ में दी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ يَشْتَرُونَ الضَّلَالَةَ وَيُرِيدُونَ أَن تَضِلُّوا
السَّبِيلَ ۞ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِأَعْدَائِكُمْ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَلِيًّا وَكَفَىٰ
بِاللَّهِ نَصِيرًا ۞ مِّنَ الَّذِينَ هَادُوا يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَن مَّوَاضِعِهِ
وَيَقُولُونَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَاسْمَعْ غَيْرَ مُسْمَعٍ وَرَاعِنَا لَيًّا
بِأَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنًا فِي الدِّينِ ۚ وَلَوْ أَنَّهُمْ قَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا وَ
اسْمَعْ وَانظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَأَقْوَمَ وَلَٰكِن لَّعَنَهُمُ اللَّهُ
بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا ۞ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ
آمِنُوا بِمَا نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُم مِّن قَبْلِ أَن نَّطْمِسَ وُجُوهًا
فَنَرُدَّهَا عَلَىٰ أَدْبَارِهَا أَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّا أَصْحَابَ السَّبْتِ ۚ وَكَانَ
أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا ۞ إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَن يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا
دُونَ ذَٰلِكَ لِمَن يَشَاءُ ۚ وَمَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدِ افْتَرَىٰ إِثْمًا
عَظِيمًا ۞ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يُزَكُّونَ أَنفُسَهُم ۚ بَلِ اللَّهُ يُزَكِّي مَن
يَشَاءُ وَلَا يُظْلَمُونَ فَتِيلًا ۞ انظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ
الْكَذِبَ ۖ وَكَفَىٰ بِهِ إِثْمًا مُّبِينًا ۞ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا
مِّنَ الْكِتَابِ يُؤْمِنُونَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوتِ وَيَقُولُونَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا
هَٰؤُلَاءِ أَهْدَىٰ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا سَبِيلًا ۞ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ
اللَّهُ ۖ وَمَن يَلْعَنِ اللَّهُ فَلَن تَجِدَ لَهُ نَصِيرًا ۞ أَمْ لَهُمْ نَصِيبٌ

ये हो, फिर तुम्हें पानी न मिले, तो शुद्ध ...से काम लो और अपने चेहरों और हाथों को ...।* निस्सन्देह अल्लाह नर्मी से काम लेने वाला अत्यन्त क्षमाशील है। ○

...क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें ...(के ज्ञान) का कुछ हिस्सा दिया गया है? ...राही मोल लेते हैं, और चाहते हैं कि तुम भी ...से भटक जाओ। ○ और अल्लाह तुम्हारे ...ों को भली-भांति जानता है। और अल्लाह एक ...-मित्र की हैसियत से काफ़ी है, और अल्लाह ...सहायक की हैसियत से काफ़ी है। ○ ये लोग ...हूदी* हैं शब्दों को उन की जगहों से फेर देते हैं ...त् उन का अर्थ कुछ-का-कुछ बना देते हैं) और ...हैं: 'समेअ्ना व असैना'[२१]; और 'इस्मअ् ग़ैर ...न'[२२] और 'राइना'[२३]! —अपनी ज़ुबानों ...ड़-मरोड़ कर, और (इस तरह) अल्लाह के ... पर चोट करते हैं। और (यदि इस के बदले) ...ते, 'समेअ्ना व अतअ्ना'[२४]; और 'इस्मअ'[२५] और 'उन्ज़ुरना'[२६] तो यह उन के लिए ...ा था, और बात भी यही ठीक थी। परन्तु उन पर तो उन के कुफ़्र* के कारण अल्लाह ...लानत की है, इस लिए वे कम ही ईमान* लाते हैं। ○

...हे वे लोगो जिन्हें किताब दी गई थी। तुम उस (किताब*) पर जिसे हम ने (अब) उतारा ...और जो उस (किताब) की तसदीक़ करती है जो तुम्हारे पास है, ईमान* लाओ इस से पहले ...हम चेहरों को बिगाड़ कर पीछे फेर दें, या उन पर लानत कर दें जिस तरह 'सब्त'[२७] वालों ...लानत की थी। और अल्लाह का तो हुक्म हो कर रहने वाला है। ○ निस्सन्देह अल्लाह

...* अर्थात् पाक मिट्टी पर दोनों हाथ मारे फिर सारे मुँह पर अच्छी तरह मले इसी तरह फिर दोबारा हाथ ...कर दोनों हाथों को कुहनियों तक मले। इस का पारिभाषिक नाम तयम्मुम है। यह नमाज़ का आदर पवित्रता की भावना बाक़ी रखने की एक उत्तम विधि है।

...२१ इस वाक्य का अर्थ है 'हम ने सुना और नहीं माना'। यहूदियों का हाल यह था कि जब उन्हें अल्लाह ...आदेश सुनाये जाते, तो वह तो कहते कि 'समेअ्ना' (हम ने सुना) परन्तु साथ ही यह भी कहते कि ...सैना' अर्थात् हम मानने वाले नहीं हैं।

...२२ जब ये यहूदी नबी सल्ल० से बात-चीत करते समय 'इस्मअ्' कहते अर्थात् आप हमारी बात सुनिए ...साथ ही 'ग़ैर मुस्मइन' भी कहते जिस के कई अर्थ होते हैं। इस का एक अर्थ तो यह है कि आप को ...बुरी और अनुचित बात नहीं सुनाई जा सकती। इस का दूसरा अर्थ यह होता है कि तुम इस योग्य ...ो कि तुम्हें कोई बात सुनाई जाये। इस का एक अर्थ यह भी होता है कि तुम बहरे हो जाओ।

२३ दे० सूरः अल-बक़रः फुट नोट न० २५।

२४ अर्थात् हम ने सुना और माना।

२५ अर्थात् आप हमारी बात सुन लीजिए।

२६ अर्थात् हमारी ओर ध्यान दीजिए या हमें समझ लेने दीजिए।

२७ दे० सूरः अल-बक़रः फुट नोट न० २१।

* इस का अर्थ आखिर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

مِنْكُمْ لَمَنْ لَيُبَطِّئَنَّ فَإِنْ أَصَابَتْكُمْ مُصِيبَةٌ قَالَ قَدْ أَنْعَمَ
اللَّهُ عَلَيَّ إِذْ لَمْ أَكُنْ مَعَهُمْ شَهِيدًا ۝ وَلَئِنْ أَصَابَكُمْ فَضْلٌ
مِنَ اللَّهِ لَيَقُولَنَّ كَأَنْ لَمْ تَكُنْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُ مَوَدَّةٌ يَا لَيْتَنِي كُنْتُ
مَعَهُمْ فَأَفُوزَ فَوْزًا عَظِيمًا ۝ فَلْيُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ
يَشْرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ وَمَنْ يُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
فَيُقْتَلْ أَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ۝ وَمَا لَكُمْ لَا
تُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ
وَالْوِلْدَانِ الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْ هَٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ
أَهْلُهَا وَاجْعَلْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ وَلِيًّا وَاجْعَلْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ
نَصِيرًا ۝ الَّذِينَ آمَنُوا يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا
يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ الطَّاغُوتِ فَقَاتِلُوا أَوْلِيَاءَ الشَّيْطَانِ إِنَّ
كَيْدَ الشَّيْطَانِ كَانَ ضَعِيفًا ۝ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ قِيلَ لَهُمْ كُفُّوا
أَيْدِيَكُمْ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ
إِذَا فَرِيقٌ مِنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللَّهِ أَوْ أَشَدَّ خَشْيَةً
وَقَالُوا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ عَلَيْنَا الْقِتَالَ لَوْلَا أَخَّرْتَنَا إِلَىٰ أَجَلٍ
قَرِيبٍ قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيلٌ وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ لِمَنِ اتَّقَىٰ وَ
لَا تُظْلَمُونَ فَتِيلًا ۝ أَيْنَ مَا تَكُونُوا يُدْرِكْكُمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ

शहीद* और नेक लोग हैं। और ये कैसे अच्छे साथी हैं। ○ यह अल्लाह का फ़ज़्ल (देन और कृपा) है, और जानने वाले की हैसियत से अल्लाह काफ़ी है। ○

हे ईमान* लाने वालो! अपने बचाव का सामान कर लो, फिर या तो अलग-अलग टोलियों में निकलो, या इकट्ठे हो कर निकलो। ○ और तुम में कोई-कोई ऐसा भी है[33] जो (लड़ाई से) जी चुरायेगा; फिर यदि तुम पर कोई मुसीबत आ पड़ेगी, तो कहेगा : अल्लाह ने मुझ पर कृपा की कि मैं इन लोगों के साथ हाज़िर न था। ○ और यदि तुम पर अल्लाह की ओर से फ़ज़्ल (कृपा) हो, तो जैसे तुम्हारे और उस के बीच दोस्ती (का कोई नाता) ही नहीं, कहेगा : क्या अच्छा होता कि मैं भी इन के साथ होता, तो बड़ी सफलता प्राप्त करता। ○ सो जो लोग दुनियाँ की ज़िन्दगी के बदले आख़िरत* का सौदा करें उन्हें चाहिए कि अल्लाह की राह में लड़ें। जो अल्लाह की राह में लड़ेगा, तो चाहे वह मारा जाये या विजयी हो, उसे ज़रूर हम बड़ा बदला देंगे। ○ और तुम अल्लाह की राह में उन कमज़ोर (और बेबस) पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों के लिए क्यों न लड़ो जो प्रार्थनायें कर रहे हैं कि हमारे रब*! तू हमें इस बस्ती[34] से निकाल जहाँ के लोग अत्याचारी हैं। और तू अपनी ओर से हमारे लिए कोई संरक्षक-मित्र पैदा कर दे! और अपनी ओर से किसी को हमारा सहायक बना। ○ जो लोग ईमान* लाये वे अल्लाह की राह में लड़ते हैं; और जिन लोगों ने कुफ़्र* किया वे ताग़ूत* की राह में लड़ते हैं। सो तुम शैतान* के साथियों से लड़ो। निस्सन्देह शैतान* की चाल बहुत कमज़ोर होती है। ○

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन से कहा गया था कि अपने हाथ (लड़ाई से) रोके रखो, और नमाज़* क़ायम रखो और ज़कात* देते रहो, फिर जब उन्हें लड़ाई का हुक्म दिया गया तो उन में से एक गिरोह का हाल यह है कि वे लोगों से ऐसा डरने लगे जैसे अल्लाह का डर हो या इस से भी बढ़ कर डर हो, कहने लगे : हमारे रब* तू ने हमें लड़ने का हुक्म क्यों दिया? क्यों न थोड़ी मुहलत तू ने हमें और दे दी! कह दो, दुनियाँ की पूँजी थोड़ी है; और आख़िरत* ऐसे व्यक्ति के लिए ज़्यादा अच्छी है जो अल्लाह की अवज्ञा से बचता और उस की ना-ख़ुशी से डरता हो; और तुम पर तनिक भी ज़ुल्म न किया जायेगा। ○ तुम जहाँ कहीं भी रहोगे, मृत्यु तो तुम्हें आ कर रहेगी, चाहे तुम मज़बूत बुर्जों के भीतर ही रहो।

यदि उन्हें कोई फ़ायदा पहुँचता है तो कहते हैं : यह अल्लाह की ओर से है; और यदि उन्हें कोई नुक़सान पहुँचता है तो (हे मुहम्मद! वे तुम से) कहते हैं : यह तुम्हारी ओर से है[35]।

३३ यह मुनाफ़िक़ों की अवज्ञा का हाल बताया जा रहा है।

३४ अर्थात् मक्का।

३५ अर्थात् तुम्हारे कारण है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

فِي بُرُوجٍ مُّشَيَّدَةٍ ۗ وَإِن تُصِبْهُمْ حَسَنَةٌ يَقُولُوا هَٰذِهِ مِنْ
عِندِ اللَّهِ ۖ وَإِن تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَقُولُوا هَٰذِهِ مِنْ عِندِكَ ۚ قُلْ
كُلٌّ مِّنْ عِندِ اللَّهِ ۖ فَمَالِ هَٰؤُلَاءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ
حَدِيثًا ۝ مَّا أَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللَّهِ ۖ وَمَا أَصَابَكَ مِن
سَيِّئَةٍ فَمِن نَّفْسِكَ ۚ وَأَرْسَلْنَاكَ لِلنَّاسِ رَسُولًا ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ
شَهِيدًا ۝ مَّن يُطِعِ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ ۖ وَمَن تَوَلَّىٰ فَمَا أَرْسَلْنَاكَ
عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ۝ وَيَقُولُونَ طَاعَةٌ فَإِذَا بَرَزُوا مِنْ عِندِكَ بَيَّتَ
طَائِفَةٌ مِّنْهُمْ غَيْرَ الَّذِي تَقُولُ ۖ وَاللَّهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُونَ ۖ فَأَعْرِضْ
عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ۝ أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ الْقُرْآنَ ۚ
وَلَوْ كَانَ مِنْ عِندِ غَيْرِ اللَّهِ لَوَجَدُوا فِيهِ اخْتِلَافًا كَثِيرًا ۝ وَإِذَا
جَاءَهُمْ أَمْرٌ مِّنَ الْأَمْنِ أَوِ الْخَوْفِ أَذَاعُوا بِهِ ۖ وَلَوْ رَدُّوهُ إِلَى الرَّسُولِ
وَإِلَىٰ أُولِي الْأَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِينَ يَسْتَنبِطُونَهُ مِنْهُمْ ۗ وَلَوْ
لَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَاتَّبَعْتُمُ الشَّيْطَانَ إِلَّا قَلِيلًا ۝
فَقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا تُكَلَّفُ إِلَّا نَفْسَكَ ۚ وَحَرِّضِ الْمُؤْمِنِينَ ۖ
عَسَى اللَّهُ أَن يَكُفَّ بَأْسَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَاللَّهُ أَشَدُّ بَأْسًا وَأَشَدُّ
تَنكِيلًا ۝ مَّن يَشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَكُن لَّهُ نَصِيبٌ مِّنْهَا ۖ وَ
مَن يَشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَكُن لَّهُ كِفْلٌ مِّنْهَا ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ

कह दो : सब-कुछ अल्लाह की ओर से है। तो इन लोगों को क्या हो गया है कि कोई बात हो, समझ-बूझ के क़रीब भी नहीं होते ? ○

जो भलाई भी तुझे हासिल हो (तो समझ कि) वह अल्लाह की ओर से है, और जो आपत्ति तुझ पर आये (तो समझ कि) वह तेरे ही (करतूतों के) कारण है।

(हे मुहम्मद !) हम ने तुम्हें लोगों के लिए रसूल* बना कर भेजा है और (इस पर) गवाह की हैसियत से अल्लाह काफ़ी है। ○ जिस ने रसूल* का हुक्म माना वास्तव में उस ने अल्लाह का हुक्म माना, और जिस ने मुँह मोड़ा, तो हम ने तुम्हें उन पर कोई रखवाला बना कर तो भेजा नहीं है। ○

और वे दावा तो हुक्म मानने का करते हैं; परन्तु जब तुम्हारे पास से चले जाते हैं तो उन में एक गिरोह अपने कहे के ख़िलाफ़ रातों को सलाह करता है। जो-कुछ वे रातों में सलाह करते हैं अल्लाह उसे लिख रहा है। सो तुम उन की ओर ध्यान न दो और अल्लाह पर भरोसा रखो। और कार्य-साधक की हैसियत से अल्लाह काफ़ी है। ○ क्या वे क़ुरआन पर सोच-विचार नहीं करते ? यदि यह अल्लाह के सिवा किसी और की ओर से होता तो निश्चय ही वे इस में बहुत विभेद पाते। ○

और जब उन के पास शान्ति या भय की कोई ख़बर पहुँचती है, तो वे उसे फैला देते हैं, यदि वे उसे रसूल* या ज़िम्मेदार लोगों तक पहुँचाते, तो उसे वे लोग जान लेते जो उन के बीच उस से सही नतीजा निकाल सकते हैं। और यदि तुम पर अल्लाह की कृपा और उस की दया न होती तो थोड़े लोगों के सिवा, तुम सब शैतान* के पीछे चलने लग जाते। ○

सो (हे नबी* !) तुम अल्लाह की राह में लड़ो — तुम पर अपने सिवा किसी और की ज़िम्मेदारी नहीं — और ईमान* वालों को भी लड़ने पर उभारो। हो सकता है अल्लाह काफ़िरों का ज़ोर तोड़ दे। अल्लाह का ज़ोर सब से ज़्यादा है और वह सब से कड़ी सज़ा देने वाला है। ○ जो कोई भली बात की सिफ़ारिश करेगा उस का उस में से हिस्सा होगा, और जो बुरी बात की सिफ़ारिश करेगा उस का उस में से हिस्सा होगा। और अल्लाह हर चीज़ पर निगाह रखने वाला है। ○ और जब कोई तुम्हें दुआ दे (सलाम करे), तो तुम उस से अच्छी दुआ दो या वही दोहरा दो। निस्सन्देह अल्लाह हर चीज़ का हिसाब लेने वाला है। ○ अल्लाह (वह सत्य है कि) उस के सिवा कोई इलाह* (पूज्य) नहीं। वह तुम्हें क़ियामत* के दिन जिस (के आने) में कोई सन्देह नहीं इकट्ठा कर के रहेगा। और अल्लाह से बढ़ कर अपनी बात में सच्चा कौन हो सकता है ? ○

८५

फिर तुम्हें क्या हो गया कि मुनाफ़िक़ों* के बारे में तुम दो गिरोह हो गये, हालाँकि अल्लाह ने उन के करतूतों के कारण उन्हें उल्टा (कुफ़्र* की ओर) फेर दिया है ? क्या तुम उसे राह

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

إِلَىٰ أَهْلِهِ إِلَّا أَن يَصَّدَّقُوا ۚ فَإِن كَانَ مِن قَوْمٍ عَدُوٍّ لَّكُمْ وَهُوَ
مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۖ وَإِن كَانَ مِن قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُم
مِّيثَاقٌ فَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ إِلَىٰ أَهْلِهِ وَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۖ فَمَن لَّمْ
يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ تَوْبَةً مِّنَ اللَّهِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا
حَكِيمًا ۝ وَمَن يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَاؤُهُ جَهَنَّمُ خَالِدًا فِيهَا
وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهُ وَأَعَدَّ لَهُ عَذَابًا عَظِيمًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا إِذَا ضَرَبْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَتَبَيَّنُوا وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ أَلْقَىٰ
إِلَيْكُمُ السَّلَامَ لَسْتَ مُؤْمِنًا تَبْتَغُونَ عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فَعِندَ اللَّهِ
مَغَانِمُ كَثِيرَةٌ ۚ كَذَٰلِكَ كُنتُم مِّن قَبْلُ فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوا ۚ
إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۝ لَّا يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ
غَيْرُ أُولِي الضَّرَرِ وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ ۚ
فَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ عَلَى الْقَاعِدِينَ دَرَجَةً ۚ
وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَفَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ عَلَى الْقَاعِدِينَ
أَجْرًا عَظِيمًا ۝ دَرَجَاتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَرَحْمَةً ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا
رَّحِيمًا ۝ ع إِنَّ الَّذِينَ تَوَفَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ ظَالِمِي أَنفُسِهِمْ قَالُوا فِيمَ
كُنتُمْ ۖ قَالُوا كُنَّا مُسْتَضْعَفِينَ فِي الْأَرْضِ ۚ قَالُوا أَلَمْ تَكُنْ أَرْضُ
اللَّهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوا فِيهَا ۚ فَأُولَٰئِكَ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَسَاءَتْ

वाले की हत्या करे, तो उस का बदला दोज़ख़* है जिस में वह सदा रहेगा। और उस पर अल्लाह का ग़ज़ब (प्रकोप) और उस की लानत (फिटकार) है और उस के लिए अल्लाह ने बड़ा अज़ाब तैयार कर रखा है।○

हे ईमान* लाने वालो! जब तुम अल्लाह की राह में (जिहाद* के लिए) निकलो, तो अच्छी तरह पता लगा लो (कि कौन दोस्त है और कौन दुश्मन), और जो तुम्हें सलाम करे उसे यह न कहो कि तू मोमिन* नहीं है, (और) इस से तुम्हारा ध्येय यह हो कि सांसारिक जीवन का माल प्राप्त करो (यदि यह चाहते हो), तो अल्लाह के पास बहुत सी ग़नीमतें हैं। पहले तुम भी ऐसे ही थे; फिर अल्लाह ने तुम पर एहसान किया। सो तुम अच्छी तरह पता लगा लिया करो, तुम जो-कुछ करते हो निस्सन्देह अल्लाह उस की ख़बर रखने वाला है।○

बिना किसी आपत्ति (उ़ज़्र) के बैठ रहने वाले मोमिन* और अपने माल और अपनी जान के साथ अल्लाह की राह में जिहाद* करने वाले बराबर नहीं हो सकते। अल्लाह ने बैठ रहने वालों के मुक़ाबिले अपने माल और अपनी जान से जिहाद* करने वालों का दर्जा बड़ा रखा है। और हर एक से अल्लाह ने भलाई का वादा किया है, परन्तु अल्लाह ने बैठ रहने वालों के मुक़ाबिले में ५ जिहाद* करने वालों का बदला बहुत बड़ा रखा है।○ (ऐसे लोगों के लिए) उस की ओर से दर्जे हैं, और क्षमा और दया है। और अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।○

जो लोग अपने-आप पर ज़ुल्म कर रहे थे जब फ़रिश्तों* ने उन (की जानों) को ग्रस्त लिया, तो पूछा: (यह) तुम किस हाल में थे? उन्हों ने कहा: हम ज़मीन में कमज़ोर (और बेबस) थे। (फ़रिश्तों* ने) कहा: क्या अल्लाह की ज़मीन विशाल न थी कि तुम उस में (कहीं) हिजरत* कर जाते? तो ऐसे लोगों का ठिकाना दोज़ख़* है और वह पहुँचने की बुरी जगह है।○ सिवाय कमज़ोर (और बेबस) पुरुष, स्त्रियों और बच्चों के, (हिजरत* के लिए निकलने का) जिन के बस में कोई उपाय नहीं और न कोई राह पाते हैं,○ तो क़रीब है कि अल्लाह ऐसे लोगों को क्षमा कर दे। और अल्लाह नर्मी से काम लेने वाला और बड़ा क्षमाशील है।○ और जो कोई अल्लाह की राह में हिजरत* करेगा वह ज़मीन में पनाह लेने की बहुत जगह और सुविधायें पायेगा; और जो कोई अपने घर से अल्लाह और उस के रसूल* की ओर हिजरत* कर के निकले, फिर उस की मृत्यु आ जाये, तो उस का बदला अल्लाह के १० ज़िम्मे हो गया। और अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।○

और जब तुम ज़मीन में सफ़र करो, तो इस में तुम पर कोई दोष नहीं यदि नमाज़* में 'क़स्र'³⁶ करो (ख़ास तौर पर) जब कि तुम्हें इस बात का भय हो कि कुफ़्र* करने वाले तुम्हें

३६. 'क़स्र' का मतलब यह है कि फ़र्ज़* नमाज़ यदि चार रकअत* हो, तो दो ही रकअत पढ़ी जावे। और युद्ध के अवसर पर जैसी परिस्थिति हो उस के अनुसार नमाज़ अदा की जावे। जमाअत के साथ (सामूहिक

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

مَصِيرًا ۝ إِلَّا الْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَانِ لَا
يَسْتَطِيعُونَ حِيلَةً وَلَا يَهْتَدُونَ سَبِيلًا ۝ فَأُولَٰئِكَ عَسَى اللَّهُ
أَن يَعْفُوَ عَنْهُمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَفُوًّا غَفُورًا ۝ وَمَن يُهَاجِرْ فِي
سَبِيلِ اللَّهِ يَجِدْ فِي الْأَرْضِ مُرَاغَمًا كَثِيرًا وَسَعَةً ۚ وَمَن يَخْرُجْ
مِن بَيْتِهِ مُهَاجِرًا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ
وَقَعَ أَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝ وَإِذَا ضَرَبْتُمْ
فِي الْأَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَن تَقْصُرُوا مِنَ الصَّلَاةِ إِنْ
خِفْتُمْ أَن يَفْتِنَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ إِنَّ الْكَافِرِينَ كَانُوا لَكُمْ عَدُوًّا
مُّبِينًا ۝ وَإِذَا كُنتَ فِيهِمْ فَأَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلَاةَ فَلْتَقُمْ طَائِفَةٌ مِّنْهُم
مَّعَكَ وَلْيَأْخُذُوا أَسْلِحَتَهُمْ فَإِذَا سَجَدُوا فَلْيَكُونُوا مِن وَرَائِكُمْ
وَلْتَأْتِ طَائِفَةٌ أُخْرَىٰ لَمْ يُصَلُّوا فَلْيُصَلُّوا مَعَكَ وَلْيَأْخُذُوا
حِذْرَهُمْ وَأَسْلِحَتَهُمْ ۗ وَدَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ تَغْفُلُونَ عَنْ أَسْلِحَتِكُمْ
وَأَمْتِعَتِكُمْ فَيَمِيلُونَ عَلَيْكُم مَّيْلَةً وَاحِدَةً ۚ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ
إِن كَانَ بِكُمْ أَذًى مِّن مَّطَرٍ أَوْ كُنتُم مَّرْضَىٰ أَن تَضَعُوا أَسْلِحَتَكُمْ
وَخُذُوا حِذْرَكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ أَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا ۝ فَإِذَا
قَضَيْتُمُ الصَّلَاةَ فَاذْكُرُوا اللَّهَ قِيَامًا وَقُعُودًا وَعَلَىٰ جُنُوبِكُمْ ۚ فَإِذَا
اطْمَأْنَنتُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ ۚ إِنَّ الصَّلَاةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتَابًا

समायेंगे। निस्सन्देह काफ़िर* तुम्हारे खुले दुश्मन हैं। ○

और (हे नबी* !) जब तुम उन (मुसलमानों*) के बीच हो और (लड़ाई की हालत में) उन्हें नमाज़* पढ़ाने के लिए खड़े हो, तो चाहिए कि उन में से एक गिरोह तुम्हारे साथ खड़ा हो जाये और अपने हथियार साथ लिये रहे। फिर जब वह सजदः* कर ले तो तुम्हारे पास से हट जाये और दूसरा गिरोह जिस ने अभी नमाज़* नहीं पढ़ी है आये वह तुम्हारे साथ नमाज़ पढ़े, और वह भी अपने बचाव के लिए चौकन्ना रहे और अपने हथियार लिये रहे। काफ़िर* लोग चाहते हैं कि तुम अपने हथियारों और अपने सामानों से ग़ाफ़िल हो जाओ तो वे तुम पर एक-बारगी धावा बोल दें। और यदि वर्षा के कारण तुम्हें तकलीफ़ हो या तुम बीमार हो, तो तुम पर इस में कोई दोष नहीं कि अपने हथियार उतार कर रख दो। परन्तु अपने बचाव के लिए चौकन्ने रहो। निस्सन्देह अल्लाह ने काफ़िरों* के लिए ज़लील करने वाला (अपमान-जनक) अज़ाब तैयार कर रखा है। ○ फिर जब तुम नमाज़* पूरी कर चुको, तो खड़े, बैठे और लेटे (प्रत्येक दशा में) अल्लाह को याद करो। फिर जब तुम्हें इतमीनान हो जाये तो (नियमानुसार) नमाज़ क़ायम* करो। निस्सन्देह ईमान* वालों पर वक़्त की पाबन्दी के साथ नमाज़* अदा करनी ज़रूरी ठहरा दी गई है। ○

और इस (विरोधी) गिरोह का पीछा करने में हिम्मत न हारो। यदि तुम्हें दुःख पहुँचता है, तो जिस तरह तुम्हें दुःख पहुँचता है उसी तरह उन्हें भी दुःख पहुँचता है और तुम अल्लाह से उस चीज़ की आशा करते हो जिस की वे आशा नहीं करते। और अल्लाह (सब-कुछ) जानने वाला और हिकमत* वाला है। ○

(हे नबी* !) हम ने यह किताब* हक़ के साथ तुम्हारी ओर उतारी है, ताकि अल्लाह ने जो कुछ तुम्हें दिखा दिया है उस के अनुसार तुम लोगों के बीच फ़ैसला करो। और तुम विश्वासघात करने वालों की ओर से झगड़ने वाले न बनो; ○ और अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना करो। निस्सन्देह अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है। ○ और तुम उन की ओर से न झगड़ो जो स्वयं अपने साथ विश्वासघात करते हैं[४०]। निस्सन्देह अल्लाह ऐसे व्यक्ति को

१०४

रूप से) यदि नमाज़ न पढ़ सकते हों, तो लोग अकेले-अकेले ही पढ़ लें। क़िबला* की ओर मुँह करना सम्भव न हो तो जिधर मुँह कर सकते हों, उधर ही मुँह करके नमाज़ अदा कर ली जाये। रुकूअ* और सजदा* यदि न कर सकते हों, तो इशारों ही से काम चलायें। इसी तरह ज़रूरत पड़ने पर सवारी पर बैठ कर भी नमाज़ पढ़ सकते हैं। यदि आवश्यकता हो तो नमाज़ की हालत में चला भी जा सकता है। और यदि किसी तरह भी नमाज़ अदा न की जा सकती हो तो फिर उसे बाद ही में अदा की जाये।

४० जो व्यक्ति किसी के साथ विश्वासघात करता है वह वास्तव में सब से पहले अपने साथ विश्वासघात करता है। वह अपनी नैतिक प्रकृति को दूषित करता और अपनी 'आख़िरत' की ज़िन्दगी को तबाह करता है।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

مَّوْقُوْتًا ○ وَلَا تَهِنُوْا فِي ابْتِغَاۗءِ الْقَوْمِ ۭ اِنْ تَكُوْنُوْا تَاْلَمُوْنَ فَاِنَّهُمْ
يَاْلَمُوْنَ كَمَا تَاْلَمُوْنَ ۚ وَتَرْجُوْنَ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا يَرْجُوْنَ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ
عَلِيْمًا حَكِيْمًا ○ اِنَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ
بِمَآ اَرٰىكَ اللّٰهُ ۭ وَلَا تَكُنْ لِّلْخَاۗىِٕنِيْنَ خَصِيْمًا ○ وَّاسْتَغْفِرِ اللّٰهَ ۭ اِنَّ
اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ○ وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِيْنَ يَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَھُمْ ۭ
اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ خَوَّانًا اَثِيْمًا ○ يَّسْتَخْفُوْنَ مِنَ النَّاسِ وَ
لَا يَسْتَخْفُوْنَ مِنَ اللّٰهِ وَھُوَ مَعَھُمْ اِذْ يُبَيِّتُوْنَ مَا لَا يَرْضٰى مِنَ
الْقَوْلِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطًا ○ ھٰٓاَنْتُمْ ھٰٓؤُلَاۗءِ جٰدَلْتُمْ
عَنْھُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۣ فَمَنْ يُّجَادِلُ اللّٰهَ عَنْھُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
اَمْ مَّنْ يَّكُوْنُ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ○ وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْۗءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ
ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ○ وَمَنْ يَّكْسِبْ اِثْمًا فَاِنَّمَا
يَكْسِبُهٗ عَلٰي نَفْسِهٖ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ○ وَمَنْ يَّكْسِبْ
خَطِيْۗئَةً اَوْ اِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهٖ بَرِيْۗـــًٔا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا
مُّبِيْنًا ○ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهٗ لَهَمَّتْ طَّاۗىِٕفَةٌ مِّنْهُمْ
اَنْ يُّضِلُّوْكَ ۭ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَھُمْ وَمَا يَضُرُّوْنَكَ مِنْ شَيْءٍ ۭ
وَاَنْزَلَ اللّٰهُ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ۭ
وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا ○ لَا خَيْرَ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنْ نَّجْوٰىھُمْ

पसन्द नहीं करता जो विश्वासघात करने वाला और पापी हो। ○ वे लोगों से तो छिपते हैं और अल्लाह से नहीं छिपते, हालांकि वह उन के साथ होता है जब वे रातों को ऐसी बात की सलाह करते हैं जिस से वह राज़ी नहीं। जो-कुछ वे करते हैं अल्लाह (अपने ज्ञान और अधिकार द्वारा) उस को घेरे हुये है। ○ सांसारिक जीवन में तो तुम लोगों ने इन (अपराधियों) की ओर से झगड़ा कर लिया। परन्तु क़ियामत* के दिन इन की ओर से अल्लाह से कौन झगड़ा करेगा, या कौन इन का कार्य-साधक होगा? ○ और जो कोई बुरा काम कर बैठे या अपने-आप पर ज़ुल्म करे, फिर अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना करे तो वह अल्लाह को बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला पायेगा। ○ और जो कोई गुनाह की कमाई करता है तो वह अपने ही हक़ में कमाता है। और अल्लाह सब-कुछ जानने वाला और हिकमत* वाला है। ○ और जो व्यक्ति कोई अपराध या गुनाह की कमाई करे, फिर उसे किसी निर्दोष व्यक्ति पर थोप दे, तो उस ने झूठा इल्ज़ाम और खुला गुनाह अपने सिर ले लिया। ○

और (हे नबी*!) यदि तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल (कृपा) और उस की दया न होती, तो उन में से एक गिरोह तो यह निश्चय कर ही चुका था कि तुम्हें राह से भटका दे, वास्तव में वे अपने ही को गुमराही में डाल रहे हैं और वे तुम्हें कोई हानि नहीं पहुँचा सकते। और अल्लाह ने तुम पर किताब* और हिकमत उतारी, और उस ने तुम्हें वह-कुछ बताया जो तुम नहीं जानते थे। और अल्लाह का तुम पर बहुत बड़ा फ़ज़्ल (कृपा) है। ○

इन की अधिकतर काना-गोसी (काना-फूसी) करने में कोई भलाई नहीं होती सिवाय इस के कि कोई दान करने के लिए या भले काम करने के लिए या लोगों के बीच सुधार करने के लिए सलाह दे (तो यह भली बात होगी)। और जो-कोई यह काम अल्लाह की ख़ुशी हासिल करने के लिए करेगा, तो हम उसे अवश्य बड़ा बदला देंगे। ○ और जो कोई इस के बाद भी कि मार्ग-दर्शन खुल कर उस के सामने आ गया है, रसूल* का विरोध करेगा और ईमान वालों* के रास्ते के सिवा किसी और रास्ते पर चलेगा, हम उसे उसी के हवाले करेंगे जिस को उस ने अपनाया, और उसे दोज़ख़* में झोंकेंगे। और वह पहुँचने की बहुत ही बुरी जगह है। ○

निस्सन्देह अल्लाह इस बात को क्षमा नहीं करेगा कि उस के साथ किसी को शरीक किया जाये। और इस के सिवा (और जितने गुनाह हैं) जिस के लिए चाहेगा क्षमा कर देगा। और जो अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराता है वह (सीधे रास्ते से) भटक कर बहुत दूर जा पड़ा। ○ वे अल्लाह के सिवा केवल देवियों को पुकारते हैं;[४१] और (वास्तव में वे) केवल

४१ जो मुश्रिक* विभिन्न शक्तियों, गुणों आदि की देवताओं का नाम दे कर अल्लाह का शरीक ठहराते हैं, वे 'शैतान' के बहकावे में आ कर ऐसा करते हैं। वास्तव में 'लात*', 'उज़्ज़ा*', 'लक्ष्मी', 'सरस्वती' आदि मन-गढ़न्त नामों के पीछे किसी का कोई वास्तविक अस्तित्व नहीं है। ये केवल कुछ कल्पित नाम हैं जो लोगों ने गढ़ लिये हैं।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

اِلَّا مَنْ اَمَرَ بِصَدَقَةٍ اَوْ مَعْرُوْفٍ اَوْ اِصْلَاحٍۢ بَيْنَ النَّاسِ ؕ وَمَنْ
يَّفْعَلْ ذٰلِكَ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝
وَمَنْ يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدٰى وَيَتَّبِعْ غَيْرَ
سَبِيْلِ الْمُؤْمِنِيْنَ نُوَلِّهٖ مَا تَوَلّٰى وَنُصْلِهٖ جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ۝
اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ
وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًاۢ بَعِيْدًا ۝ اِنْ يَّدْعُوْنَ مِنْ
دُوْنِهٖۤ اِلَّاۤ اِنٰثًا ۚ وَاِنْ يَّدْعُوْنَ اِلَّا شَيْطٰنًا مَّرِيْدًا ۝ لَّعَنَهُ اللّٰهُ ۘ
وَقَالَ لَاَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ۝ وَّلَاُضِلَّنَّهُمْ
وَلَاُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ اٰذَانَ الْاَنْعَامِ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ
فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يَّتَّخِذِ الشَّيْطٰنَ وَلِيًّا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ
فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِيْنًا ۝ يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيْهِمْ ؕ وَمَا يَعِدُهُمُ
الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ۝ اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۡ وَلَا يَجِدُوْنَ عَنْهَا
مَحِيْصًا ۝ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ وَ
مَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِيْلًا ۝ لَيْسَ بِاَمَانِيِّكُمْ وَلَاۤ اَمَانِيِّ اَهْلِ الْكِتٰبِ ؕ
مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا يُّجْزَ بِهٖ ۙ وَلَا يَجِدْ لَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا
نَصِيْرًا ۝ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ مِنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ

सरकश शैतान* को पुकारते हैं। ○ (वह शैतान*) जिस पर अल्लाह ने लानत की है, शैतान* ने अल्लाह से कहा था : मैं तेरे बन्दों में से एक निश्चित भाग ले कर रहूँगा, ○ मैं उन्हें बहकाऊँगा, उन्हें (झूठी) आशायें दिलाऊँगा, मैं उन्हें हुक्म दूँगा तो वे जानवरों के कान फाड़ेंगे (और उन्हें अपने देवताओं के नाम पर छोड़ेंगे), और मैं उन्हें हुक्म दूँगा तो वे अल्लाह की रचना में परिवर्तन करेंगे[४२]। जिस ने अल्लाह के सिवा शैतान* को अपना संरक्षक-मित्र बनाया वह खुले हुये घाटे में पड़ गया। ○ वह उन से वादे करता है और उन्हें कामना में उलझाता है, और शैतान* उन से जो-कुछ वादे करता है वह एक धोखे के सिवा और कुछ नहीं है। ○ ये वे लोग हैं, जिन का ठिकाना दोज़ख़* है, और ये उस से बचने की कहीं जगह न पायेंगे। ○ रहे वे लोग जो ईमान* लाये और अच्छे काम किये उन्हें शीघ्र हम ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जहाँ वे सदैव रहेंगे। यह अल्लाह का वादा है; और अल्लाह से बढ़ कर (अपनी) बात में सच्चा कौन हो सकता है ? ○

न तुम्हारी कामनाओं पर (निर्भर) है, और न किताब वालों* की कामनाओं पर। जो भी बुराई करेगा उसे उस का फल मिलेगा, और वह अल्लाह के सिवा अपना कोई संरक्षक-मित्र और सहायक न पा सकेगा। ○ और जो कोई नेक काम करेगा, चाहे वह पुरुष हो या स्त्री, यदि वह मोमिन* है, तो ऐसे लोग जन्नत* में दाख़िल होंगे और उन पर तनिक भी ज़ुल्म न किया जायेगा। ○ उस व्यक्ति (के दीन*) से अच्छा दीन* किस का हो सकता है जिस ने अपने-आप को पूरे भक्ति-भाव के साथ अल्लाह के आगे झुका दिया और वह इबराहीम के तरीक़े पर चला, जो सब से कट कर एक (अल्लाह) का हो रहा था? अल्लाह ने इबराहीम को अपना घनिष्ठ मित्र बनाया था। ○ आसमानों और ज़मीन में जो-कुछ है अल्लाह का है। और अल्लाह (अपने ज्ञान और अधिकार द्वारा) प्रत्येक वस्तु को घेरे हुये है। ○

(हे नबी*!) लोग तुम से स्त्रियों के बारे में हुक्म मालूम करना चाहते हैं। कहो : अल्लाह तुम्हें उन के बारे में हुक्म देता है,[४३] और वह (आदेश भी याद दिलाता है) जो तुम्हें किताब* में सुनाया जाता है,[४४] जो उन अनाथ स्त्रियों के बारे में है जिन के हक़ तुम अदा

४२ अर्थात् वे ऐसा काम करेंगे जो उन के अपने और दूसरी वस्तुओं के प्राकृतिक स्वभाव के प्रतिकूल होगा, जो प्रकृति के उद्देश्य को पूरा नहीं करेगा। इस में वे सभी काम आ जाते हैं जिन्हें मनुष्य ने प्राकृतिक नियमों को भंग कर के अपनाया है। जैसे, स्त्रियों को छोड़ कर अप्राकृतिक रीति से पुरुषों से ही कामेच्छा पूरी करना, सन्तान-निरोध (birth control) के उपाय, पुरुषों और स्त्रियों को बाँझ बनाना और आजीवन ब्रह्मचर्य आदि।

४३ जो आगे बयान हो रहा है।

४४ सूरः के आरम्भ में ही अनाथ लड़कों और विशेषतः अनाथ लड़कियों के बारे में ये हुक्म दिये जा चुके हैं। उन आदेशों के महत्त्व के कारण यहाँ उन के पालन करने पर पुनः ज़ोर दिया जा रहा है।

* इन का अर्थ आख़िर में अकारादि क्रम से दिये हुए पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

فَأُولَٰٓئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ نَقِيرًا ۝ وَمَنْ أَحْسَنُ
دِينًا مِّمَّنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَاتَّبَعَ مِلَّةَ إِبْرَٰهِيمَ
حَنِيفًا ۗ وَاتَّخَذَ اللَّهُ إِبْرَٰهِيمَ خَلِيلًا ۝ وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَٰوَٰتِ
وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيطًا ۝ وَيَسْتَفْتُونَكَ
فِي النِّسَآءِ ۖ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِيهِنَّ وَمَا يُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فِي
الْكِتَٰبِ فِي يَتَٰمَى النِّسَآءِ الَّٰتِي لَا تُؤْتُونَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ
وَتَرْغَبُونَ أَن تَنكِحُوهُنَّ وَالْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الْوِلْدَٰنِ وَ
أَن تَقُومُوا لِلْيَتَٰمَىٰ بِالْقِسْطِ ۚ وَمَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ
كَانَ بِهِۦ عَلِيمًا ۝ وَإِنِ امْرَأَةٌ خَافَتْ مِنۢ بَعْلِهَا نُشُوزًا أَوْ
إِعْرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ أَن يُصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا ۚ وَالصُّلْحُ
خَيْرٌ ۗ وَأُحْضِرَتِ الْأَنفُسُ الشُّحَّ ۚ وَإِن تُحْسِنُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ
اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۝ وَلَن تَسْتَطِيعُوٓا أَن تَعْدِلُوا
بَيْنَ النِّسَآءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ ۖ فَلَا تَمِيلُوا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوهَا
كَالْمُعَلَّقَةِ ۚ وَإِن تُصْلِحُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝
وَإِن يَتَفَرَّقَا يُغْنِ اللَّهُ كُلًّا مِّن سَعَتِهِۦ ۚ وَكَانَ اللَّهُ وَٰسِعًا
حَكِيمًا ۝ وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ وَلَقَدْ وَصَّيْنَا
الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَٰبَ مِن قَبْلِكُمْ وَإِيَّاكُمْ أَنِ اتَّقُوا اللَّهَ ۚ وَإِن

नहीं करते[45] और चाहते हो कि उन के साथ विवाह कर लो, और (वह आदेश भी याद दिलाया जाता है जो) कमज़ोर (और बेबस) बच्चों के बारे में (है), और यह कि तुम यतीमों* के बारे में इन्साफ़ पर क़ायम रहो। जो भलाई तुम करोगे, अल्लाह उस का जानने वाला है।○

और यदि किसी स्त्री को अपने पति की ओर से बुरे बरताव, या बेरुख़ी का भय हो, तो इस में उन के लिए कोई दोष नहीं कि ये दोनों आपस में कोई समझौता कर के मेल-मिलाप कर लें। मेल-मिलाप सब से अच्छा है। और लोभ जीवों के सामने रखा होता है, परन्तु यदि तुम अच्छा बरताव करो और अल्लाह से डरते रहो, तो निस्सन्देह अल्लाह जो-कुछ तुम करते हो उस की ख़बर रखने वाला है।○ चाहे तुम कितना ही चाहो, तुम स्त्रियों के बीच (पूर्ण रूप से) न्याय नहीं कर सकते। तो ऐसा भी न करना कि एक ही ओर बिलकुल झुक जाओ और दूसरी को इस तरह छोड़ दो जैसे कोई अधर में लटकी हो। और यदि तुम अपना व्यवहार ठीक रखो और अल्लाह से डरते रहो, तो निश्चय ही अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।○ और यदि दोनों अलग ही हो जायें, तो अल्लाह अपनी समाई से हर एक को (दूसरे से) बे-परवाह कर देगा। अल्लाह बड़ी समाई वाला और हिकमत* वाला

१० है।○ अल्लाह ही का है जो-कुछ आसमानों में है और जो-कुछ ज़मीन में है। जिन लोगों को तुम से पहले किताब* दी गई थी, उन्हें और तुम्हें, हम ने यही ताकीद की है कि अल्लाह की अवज्ञा से बचो और उस की ना-ख़ुशी से डरते रहो। परन्तु यदि तुम कुफ़्र* करते हो तो (जान लो कि) जो-कुछ आसमानों में है और जो-कुछ ज़मीन में है सब अल्लाह ही का है, और अल्लाह परम स्वतन्त्र और (हर) प्रशंसा का अधिकारी है।○ हाँ, अल्लाह ही का है जो-कुछ आसमानों में है और जो-कुछ ज़मीन में है। और कार्य-साधक की हैसियत से अल्लाह काफ़ी है।○ हे लोगो! यदि वह चाहे, तो तुम्हें हटा दे और दूसरों को (तुम्हारी जगह) ले आये। अल्लाह इस का सामर्थ्य रखता है।○ जो कोई केवल दुनियाँ का बदला चाहता है, तो (वह जान ले कि) अल्लाह के पास दुनियाँ का बदला भी है और आख़िरत* का (बदला) भी। और अल्लाह (सब-कुछ) सुनने और देखने वाला है।○

हे ईमान* लाने वालो! (अल्लाह के लिए) इन्साफ़ पर मज़बूती के साथ क़ायम रहने वाले (और) अल्लाह के लिए (इन्साफ़ की) गवाही देने वाले बनो, चाहे (वह गवाही) तुम्हारे अपने या माता-पिता और नातेदारों के विरुद्ध ही क्यों न हो। कोई धनवान् हो या निर्धन, अल्लाह (तुम्हारी अपेक्षा) उन दोनों से ज़्यादा क़रीब है। सो तुम न्याय करने में (अपनी तुच्छ) इच्छाओं का पालन न करो यदि तुम लगी-लिपटी बात कहोगे या (सच्ची बात कहने से) कतराओगे,

[45] आयत ३ की ओर संकेत है।

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें

تكفروا فإن لله ما في السموت وما في الأرض وكان الله
غنيا حميدا ۝ ولله ما في السموت وما في الأرض وكفى
بالله وكيلا ۝ إن يشأ يذهبكم أيها الناس ويأت بآخرين
وكان الله على ذلك قديرا ۝ من كان يريد ثواب الدنيا
فعند الله ثواب الدنيا والآخرة وكان الله سميعا بصيرا ۝
يأيها الذين آمنوا كونوا قومين بالقسط شهداء لله
ولو على أنفسكم أو الولدين والأقربين إن يكن غنيا
أو فقيرا فالله أولى بهما فلا تتبعوا الهوى أن تعدلوا
وإن تلوا أو تعرضوا فإن الله كان بما تعملون خبيرا ۝
يأيها الذين آمنوا آمنوا بالله ورسوله والكتب الذي
نزل على رسوله والكتب الذي أنزل من قبل ومن
يكفر بالله وملئكته وكتبه ورسله واليوم الآخر فقد
ضل ضللا بعيدا ۝ إن الذين آمنوا ثم كفروا ثم
آمنوا ثم كفروا ثم ازدادوا كفرا لم يكن الله ليغفر لهم
ولا ليهديهم سبيلا ۝ بشر المنفقين بأن لهم عذابا
أليما ۝ الذين يتخذون الكفرين أولياء من دون المؤمنين
أيبتغون عندهم العزة فإن العزة لله جميعا ۝ وقد نزل

तो (जान रखो कि) जो-कुछ तुम करते हो अल्लाह उस की ख़बर रखने वाला है। ○

हे ईमान* लाने वालो! ईमान लाओ अल्लाह पर और उस के रसूल* पर और उस किताब* पर जो उस ने अपने रसूल पर उतारी है, और उस किताब* पर जिसे वह इस से पहले उतार चुका है। जिस किसी ने अल्लाह और उस के फ़रिश्तों* और उस की किताबों* और उस के रसूलों* और अन्तिम दिन[46] का इन्कार किया, वह (सीधे रास्ते से) भटक कर बहुत दूर जा पड़ा। ○ जो लोग ईमान* लाये, फिर कुफ़्र* किया, फिर ईमान* लाये, फिर कुफ़्र* किया, फिर कुफ़्र में बढ़ते चले गये, अल्लाह उन को कभी क्षमा न करेगा और न उन को (सीधी) राह दिखायेगा। ○ मुनाफ़िक़ों* (कपटाचारियों) को शुभ-सूचना दे दो कि उन के लिए दुःख देने वाला अज़ाब (तैयार) है; ○ (उन मुनाफ़िक़ों* के लिए) जो ईमान* वालों के सिवा काफ़िरों* को अपना दोस्त (और साथी) बनाते हैं! क्या ये लोग उन के पास इज़्ज़त ढूँढते हैं? इज़्ज़त तो सब अल्लाह ही के लिए है। ○ अल्लाह (इस) किताब में तुम पर (यह हुक्म) उतार चुका है कि जब तुम सुनो कि अल्लाह की आयतों* के साथ कुफ़्र* किया जा रहा है और उन की हँसी उड़ाई जा रही है, तो जब तक वे (हँसी उड़ाने वाले) किसी दूसरी बात में न लग जायें, उन के साथ न बैठो। नहीं तो तुम भी उन्हीं-जैसे हो जाओगे[47]। निश्चय ही अल्लाह मुनाफ़िक़ों* और काफ़िरों* सब को दोज़ख़* में इकट्ठा करने वाला है। ○ ये (मुनाफ़िक़*) तुम्हारे मामले में इन्तज़ार करते रहते हैं (कि तुम्हारी जीत होगी या हार), यदि अल्लाह की ओर से तुम्हें विजय हुई, तो कह दिया कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे? और यदि काफ़िरों* का पल्ला कुछ भारी रहा तो (उन से) कह दिया: क्या हम ने तुम्हें घेर नहीं लिया था, और तुम्हें ईमान वालों से बचाया नहीं था? — तो अल्लाह तुम्हारे बीच क़ियामत* के दिन फ़ैसला कर देगा और अल्लाह कभी काफ़िरों* को ईमान* वालों के मुक़ाबिले में (सफलता की) कोई राह नहीं देगा। ○

मुनाफ़िक़* (अपनी चालों से) अल्लाह को धोखा देना चाहते हैं, हालांकि वही उन्हें धोखे में डाले रखने वाला है[48]। जब वे नमाज़* के लिए खड़े होते हैं तो कसमसाते हुए केवल लोगों को दिखाने के लिए खड़े होते हैं, और अल्लाह को कम ही याद करते हैं; ○ (कुफ़्र* और ईमान*) दोनों के बीच डाँवाँ-डोल हैं, न इधर के हैं और न उधर के। जिसे

४६ दे० सूरः अल-बक़र: फुट नोट ५ ।

४७ जिस हुक्म की ओर इस आयत में संकेत किया गया है वह सूरः अल-अनआम आयत ६८-७० में बयान हुआ है ।

४८ अर्थात् उन को मुहलत पर मुहलत दिये जा रहा है और वे इस मुहलत को धोखे में अपनी सफलता समझ रहे हैं ।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

अल्लाह ही (रास्ते से) भटका दे उस के लिए तुम राह नहीं पा सकते⁴⁹ : ○

हे ईमान* लाने वालो ! ईमान वालों के सिवा काफ़िरों* को दोस्त (और साथी) न बनाओ। क्या तुम अपने ही विरुद्ध अल्लाह के लिए एक खुली हुज्जत (तर्क) संचित करना चाहते हो ? ○ निश्चय ही मुनाफ़िक़* आग (दोज़ख़*) के सब से निचले दर्जे में होंगे, और तुम कदापि उन का कोई सहा-

१४५ यक न पाओगे; ○ सिवाए उन लोगों के जिन्हों ने तौबः* कर ली, और सुधर गये और अल्लाह (के दामन) को मज़बूती से पकड़ लिया और अपने दीन* में अल्लाह ही के हो रहे। ऐसे लोग ईमान* वालों के साथ हैं। और अल्लाह ईमान* वालों को जल्द ही बड़ा बदला देगा। ○ अल्लाह को तुम्हें अज़ाब दे कर क्या करना है यदि तुम कृतज्ञता दिखलाओ और ईमान* लाओ ? अल्लाह तो क़द्र करने वाला (गुणग्राहक) और (सब-कुछ) जानने वाला है। ○

عليكم في الكتب ان اذا سمعتم ايت الله يكفر بها ويستهزا
بها فلا تقعدوا معهم حتى يخوضوا في حديث غيره انكم
اذا مثلهم ان الله جامع المنفقين والكفرين في جهنم
جميعا الذين يتربصون بكم فان كان لكم فتح من الله
قالوا الم نكن معكم وان كان للكفرين نصيب قالوا الم
نستحوذ عليكم ونمنعكم من المؤمنين فالله يحكم بينكم
يوم القيمة ولن يجعل الله للكفرين على المؤمنين سبيلا
ان المنفقين يخدعون الله وهو خادعهم واذا قاموا
الى الصلوة قاموا كسالى يراءون الناس ولا يذكرون الله
الا قليلا مذبذبين بين ذلك لا الى هؤلاء ولا الى
هؤلاء ومن يضلل الله فلن تجد له سبيلا يايها الذين
امنوا لا تتخذوا الكفرين اولياء من دون المؤمنين
اتريدون ان تجعلوا لله عليكم سلطنا مبينا ان المنفقين
في الدرك الاسفل من النار ولن تجد لهم نصيرا الا الذين
تابوا واصلحوا واعتصموا بالله واخلصوا دينهم لله فاولئك
مع المؤمنين وسوف يؤت الله المؤمنين اجرا عظيما
ما يفعل الله بعذابكم ان شكرتم وامنتم وكان الله شاكرا عليما

¹अल्लाह पसन्द नहीं करता कि बदगोई पर ज़बान खोली जाये सिवाय इस के कि किसी पर ज़ुल्म किया गया हो। और अल्लाह (सब-कुछ) सुनने वाला और जानने वाला है। ○ यदि तुम खुले रूप से कोई भलाई करो या उसे छिपाओ, या किसी बुराई को क्षमा कर दो, तो अल्लाह भी क्षमा करने वाला और सामर्थ्य रखने वाला⁵⁰ है। ○

जो लोग अल्लाह और उस के रसूलों* के साथ कुफ़्र* करते हैं, और अल्लाह और उस के रसूलों के बीच भेद करना चाहते हैं, और कहते हैं : हम किसी को मानते हैं और किसी को नहीं मानते, और (इस प्रकार) वे (कुफ़्र* और ईमान*) दोनों के बीच में एक राह निका-

१५० लना चाहते हैं; ○ ऐसे लोग पक्के काफ़िर* हैं; और काफ़िरों के लिए हम ने ज़लील करने वाला (अपमान जनक) अज़ाब तैयार कर रखा है। ○ रहे वे लोग जो अल्लाह पर ईमान* लाये और उस के रसूलों* पर और उन के बीच कोई भेद नहीं किया ऐसे लोगों को अल्लाह अवश्य ही उन के कर्म-फल देगा; और अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है। ○

(हे नबी* !) किताब वालों*⁵¹ की तुम से माँग है कि तुम उन पर कोई (लिखी-लिखाई) किताब* आसमान से उतरवाओ। ये मूसा (पैग़म्बर) से इस से भी बड़ा सवाल कर चुके हैं, इन्हों ने कहा था : हमें अल्लाह को प्रत्यक्ष दिखा दो। इन के इस अपराध पर बिजली की कड़क

४९. अर्थात् जिस के अधर्म और अवज्ञा-विद्या के कारण अल्लाह ने उस पर मार्ग-दर्शन के द्वार बन्द कर दिये हों, उसे कौन राह पर ला सकता है ?

1 यहाँ से छठवाँ पारः (Part VI) शुरू होता है।

५०. अर्थात् जिस प्रकार अल्लाह बदला देने का क्षमिक होते हुये अत्यन्त धैर्यवान् और सहनशील है कि लोगों को क्षमा करता है और बड़े-बड़े अपराधियों तक को रोज़ी पहुँचाता रहता है, उसी प्रकार तुम्हें भी धैर्यवान् और सहनशील होना चाहिए।

५१. किताब वालों का तात्पर्य यहाँ यहूदियों से है।

*इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ ظُلِمَ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا عَلِيْمًا ۝ اِنْ تُبْدُوْا خَيْرًا اَوْ تُخْفُوْهُ اَوْ تَعْفُوْا عَنْ سُوْٓءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيْرًا ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّفَرِّقُوْا بَيْنَ اللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيَقُوْلُوْنَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَّنَكْفُرُ بِبَعْضٍ ۙ وَّيُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَّخِذُوْا بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ۝ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ حَقًّا ۚ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ۝ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَلَمْ يُفَرِّقُوْا بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ اُولٰۗىِٕكَ سَوْفَ يُؤْتِيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝ يَسْـَٔــلُكَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَنْ تُنَزِّلَ عَلَيْهِمْ كِتٰبًا مِّنَ السَّمَاۗءِ فَقَدْ سَاَلُوْا مُوْسٰٓى اَكْبَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَقَالُوْٓا اَرِنَا اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ بِظُلْمِهِمْ ۚ ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَاۗءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ فَعَفَوْنَا عَنْ ذٰلِكَ ۚ وَاٰتَيْنَا مُوْسٰى سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ۝ وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّوْرَ بِمِيْثَاقِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُلْنَا لَهُمْ لَا تَعْدُوْا فِي السَّبْتِ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ۝ فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ وَكُفْرِهِمْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَقَتْلِهِمُ الْاَنْۢبِيَاۗءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَّقَوْلِهِمْ قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ۭ بَلْ طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝ وَّبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلٰي مَرْيَمَ بُهْتَانًا

ने आ लिया[५२] । फिर इन्हों ने बछड़े को (अपना देवता) बना लिया जब कि इन के पास खुली-खुली निशानियाँ आ चुकी थीं। हम ने इसे भी क्षमा कर दिया ! और मूसा को खुला हुआ प्रभाव पूर्ण अधिकार दिया[५३] । ○ और इन लोगों से वचन लेने को हम ने तूर(पर्वत) को इन पर उठा दिया[५४]: और इन्हें हुक्म दिया कि दरवाज़े में[५५] सजदः* करते हुये दाखिल हो ! और इन से कहा कि 'सब्त' (के सम्बन्ध) में ज़्यादती न करना[५६] । और इन से (इस पर) पक्का वादा लिया। ○ तो इन के अपने वचन भंग करने, अल्लाह की आयतों* के साथ इन के कुफ़्र* के कारण, और इन के नाहक़ नबियों* की हत्या करने, और इन के इस कहने के कारण कि हमारे दिल ढके हुए हैं (आप की बातें हमारे दिलों में नहीं बैठ सकतीं) — हालांकि वास्तव में, इन के कुफ़्र* के कारण अल्लाह ने इन के दिलों पर ठप्पा लगा दिया है, सो ये बहुत कम ईमान* लाते हैं — ○ १५५ और इन के कुफ़्र* के कारण और मरयम के खिलाफ़ इन के ऐसी बात कहने पर जो बड़े ही कलंक की बात थी; ○ और इन के इस कहने पर कि हम ने मरयम के बेटे ईसा मसीह को जो अल्लाह के रसूल (होने का दावा करते) थे क़त्ल कर डाला — हालांकि न तो इन्हों ने उसे क़त्ल किया और न उसे सूली पर चढ़ाया, बल्कि ये भ्रम में पड़ गये;[५७] और जिन लोगों ने इस के बारे में विभेद किया है निश्चय ही ये इस बारे में सन्देह में पड़े हैं; अटकल पर चलने के सिवा उन के पास इस का कोई ज्ञान नहीं है;[५८] निस्सन्देह इन्हों ने मसीह को क़त्ल नहीं किया, ○ बल्कि उसे अल्लाह ने अपनी ओर उठा लिया। अल्लाह अपार शक्ति का मालिक और हिकमत* वाला है। ○ किताब वालों में ऐसा कोई न होगा जो उस की मृत्यु से पूर्व उस

५२ दे० सूरः अल-बक़रः आयत ४८-५४ ।

५३ दे० सूरः अल-बक़रः आयत ४८-५४ ।

५४ दे० सूरः अल-बक़रः आयत ६३ ।

५५ दे० सूरः अल-बक़रः आयत ५२ ।

५६ दे० सूरः अल-बक़रः आयत ६५ ।

५७ इस आयत से मालूम होता है कि हज़रत मसीह अ० सूली पर चढ़ाये जाने से पहले ही उठा लिये गये जैसा कि आगे आ रहा है। ईसाइयों और यहूदियों का यह कहना कि उन्हें सूली दी गई, सही नहीं है। इन्हें इस बारे में भ्रम हुआ है। यहूदियों ने जिस व्यक्ति को सूली पर चढ़ाया वह मसीह अ० न थे कोई और था जिसे इन्हों ने मसीह समझ लिया था।

५८ ईसाई लोग हज़रत मसीह अ० के सूली पर चढ़ाये जाने के बारे में विभिन्न बातें कहते हैं। कोई कहता है कि जिसे सूली पर चढ़ाया गया वह मसीह न थे कोई और था। कोई कहता है कि उन्हें सूली तो दी गई परन्तु तीसरे दिन वह जीवित हो कर आकाश पर चले गये। ये और इस प्रकार की और बहुत सी बातें केवल अटकल और अपने अनुमान से कहते हैं, उन के पास इस के बारे में कोई वास्तविक ज्ञान नहीं है।

* इन का अर्थ आखिर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

عَظِيمًا ۝ وَقَوْلِهِمْ إِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيحَ عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُولَ اللَّهِ
وَمَا قَتَلُوهُ وَمَا صَلَبُوهُ وَلَٰكِن شُبِّهَ لَهُمْ ۚ وَإِنَّ الَّذِينَ
اخْتَلَفُوا فِيهِ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ ۚ مَا لَهُم بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِلَّا اتِّبَاعَ
الظَّنِّ ۚ وَمَا قَتَلُوهُ يَقِينًا ۝ بَل رَّفَعَهُ اللَّهُ إِلَيْهِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ
عَزِيزًا حَكِيمًا ۝ وَإِن مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ إِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهِ قَبْلَ
مَوْتِهِ ۖ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكُونُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا ۝ فَبِظُلْمٍ مِّنَ
الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبَاتٍ أُحِلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ
عَن سَبِيلِ اللَّهِ كَثِيرًا ۝ وَأَخْذِهِمُ الرِّبَا وَقَدْ نُهُوا عَنْهُ وَ
أَكْلِهِمْ أَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ ۚ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ مِنْهُمْ
عَذَابًا أَلِيمًا ۝ لَّٰكِنِ الرَّاسِخُونَ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُونَ يُؤْمِنُونَ
بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنزِلَ مِن قَبْلِكَ ۚ وَالْمُقِيمِينَ الصَّلَاةَ ۚ وَ
الْمُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالْمُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أُولَٰئِكَ
سَنُؤْتِيهِمْ أَجْرًا عَظِيمًا ۝ إِنَّا أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ كَمَا أَوْحَيْنَا إِلَىٰ نُوحٍ ع
وَالنَّبِيِّينَ مِن بَعْدِهِ ۚ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ
وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَعِيسَىٰ وَأَيُّوبَ وَيُونُسَ وَهَارُونَ وَسُلَيْمَانَ
وَآتَيْنَا دَاوُودَ زَبُورًا ۝ وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنَاهُمْ عَلَيْكَ مِن قَبْلُ
وَرُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ ۚ وَكَلَّمَ اللَّهُ مُوسَىٰ تَكْلِيمًا ۝ وَرُسُلًا

पर ईमान* न लाये,⁵⁹ और क़ियामत* के दिन उन पर गवाह होगा⁶⁰। ○ सो यहूदी होने वालों के इन्हीं अपराधों के कारण हम ने बहुत सी पाक चीज़ें उन पर हराम* कर दीं जो उन के लिए हलाल* थीं, और उन के मायः अल्लाह के रास्ते से (लोगों १६० को) रोकने के कारण (भी ऐसा किया गया), ○ और उन के ब्याज लेने पर जब कि उन्हें इस से रोका गया था, और उन के अवैध रूप से लोगों के माल खाने पर (ऐसा किया गया)। और उन में से जो लोग काफ़िर* हैं हम ने उन के लिए दुःख देने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है। ○ परन्तु उन में जो लोग ज्ञान में पक्के और ईमान* वाले हैं वे उस पर ईमान लाते हैं जो तुम्हारी ओर उतारा गया है, और जो तुम से पहले उतारा गया, और (ये वे लोग हैं) जो नमाज़* क़ायम* रखने वाले और ज़कात* देने वाले हैं, और अल्लाह और अन्तिम* दिन⁶¹ पर ईमान* रखते हैं। ऐसे लोगों को हम जल्द ही(उन के नेक कामों का) बड़ा बदला प्रदान करेंगे। ○ (हे नबी*!) हम ने तुम्हारी ओर उसी तरह वह्य* की है जिस तरह नूह और उस के बाद के नबियों की ओर वह्य* कर चुके हैं, और हम ने इबराहीम और इसमाईल और इसहाक़ और याक़ूब और उस की सन्तान, और ईसा और अय्यूब और यूनुस और हारून और सुलैमान की ओर वह्य* भेजी, और हम ने दाऊद को ज़बूर* प्रदान किया; ○ कितने रसूल* हैं जिन का हाल हम पहले तुम से बयान कर चुके हैं और कितने रसूल* हैं जिन का हाल हम ने तुम से नहीं बयान किया; और मूसा से अल्लाह ने इस तरह बात-चीत की जिस तरह बात-चीत की जाती है; ○ (वे सारे) रसूल* शुभ-सूचना देने वाले और डराने वाले (बना कर भेजे गये), ताकि (इन) रसूलों* (के भेजने) के बाद लोगों के पास (अपने निर्दोष होने की) अल्लाह के मुक़ाबिले में कोई हुज्जत (तर्क) न १६५ रहे। अल्लाह अपार शक्ति का मालिक और हिकमत* वाला है। ○ (हे नबी*! लोग इन्कार करते हैं तो करें) किन्तु अल्लाह गवाही देता है उस ने जो-कुछ तुम पर उतारा है; अपने ज्ञान से उतारा है; फ़िरिश्ते* भी (इस की) गवाही देते हैं। यद्यपि अल्लाह का गवाह होना ही काफ़ी है। ○ जिन लोगों ने कुफ़्र* किया और (लोगों को) अल्लाह के रास्ते से रोका, वे भटक

---

५९. हज़रत मसीह अ० की जब मृत्यु होगी तो उस समय जितने किताब वाले मौजूद होंगे वे सभी उन के नबी* होने पर ईमान ला चुके होंगे। इस आयत का एक अर्थ यह भी होता है कि किताब वालों पर मरने से ठीक पहले यह बात खुल जाती है कि मसीह अ० अल्लाह के रसूल* थे। वे उन के नबी* होने पर ईमान लाते हैं; परन्तु उस समय का ईमान* उन के लिए कुछ भी लाभदायक नहीं।*

६० अर्थात् यहूदियों और ईसाइयों ने हज़रत मसीह अ० और आप के लाये हुये सन्देश के साथ जैसा-कुछ व्यवहार किया है, मसीह अ० अल्लाह के सामने उस की गवाही देंगे। इस गवाही का कुछ विवरण सूरः अल-माइदः आयत ११६-१२० में मिलता है।

६१ दे० सूरः अल-बक़रः फ़ुट नोट ५।

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

لا يحب الله الجهر بالسوء من القول الا من ظلم وكان
الله سميعا عليما ان تبدوا خيرا او تخفوه او تعفوا عن
سوء فان الله كان عفوا قديرا ان الذين يكفرون بالله
ورسله ويريدون ان يفرقوا بين الله ورسله ويقولون
نؤمن ببعض ونكفر ببعض ويريدون ان يتخذوا بين
ذلك سبيلا اولئك هم الكفرون حقا واعتدنا للكفرين
عذابا مهينا والذين امنوا بالله ورسله ولم يفرقوا بين
احد منهم اولئك سوف يؤتيهم اجورهم وكان الله غفورا
رحيما يسئلك اهل الكتب ان تنزل عليهم كتبا من السماء
فقد سالوا موسى اكبر من ذلك فقالوا ارنا الله جهرة فاخذتهم
الصعقة بظلمهم ثم اتخذوا العجل من بعد ما جاءتهم
البينت فعفونا عن ذلك واتينا موسى سلطنا مبينا و
رفعنا فوقهم الطور بميثاقهم وقلنا لهم ادخلوا الباب سجدا
وقلنا لهم لا تعدوا في السبت واخذنا منهم ميثاقا غليظا
فبما نقضهم ميثاقهم وكفرهم بايت الله وقتلهم الانبياء
بغير حق وقولهم قلوبنا غلف بل طبع الله عليها بكفرهم
فلا يؤمنون الا قليلا وبكفرهم وقولهم على مريم بهتنا

ने आ लिया[५२]। फिर इन्हों ने बछड़े को (अपना देवता) बना लिया जब कि इन के पास खुली-खुली निशानियाँ आ चुकी थीं। हम ने इसे भी क्षमा कर दिया! और मूसा को खुला हुआ प्रभाव पूर्ण अधिकार दिया[५३]। ○ और इन लोगों से वचन लेने को हम ने तूर (पर्वत) को इन पर उठा दिया[५४]; और इन्हें हुक्म दिया कि दरवाज़े में[५५] "सजदः*" करते हुये दाखिल हो! और इन से कहा कि 'सब्त' (के सम्बन्ध) में ज़्यादती न करना[५६]! और इन से (इस पर) पक्का वादा लिया। ○ तो इन के अपने वचन भंग करने, अल्लाह की आयतों* के साथ इन के कुफ़्र* के कारण, और इन के नाहक़ नबियों* की हत्या करने, और इन के इस कहने के कारण कि हमारे दिल ढके हुए हैं (आप की बातें हमारे दिलों में नहीं बैठ सकतीं) — हालांकि वास्तव में, इन के कुफ़्र* के कारण अल्लाह ने इन के दिलों पर ठप्पा लगा दिया है, सो ये बहुत कम ईमान* लाते हैं — ○ और इन के कुफ़्र* के कारण और मरयम के ख़िलाफ़ इन के ऐसी बात कहने पर जो बड़े ही कलंक की बात थी; ○ और इन के इस कहने पर कि हम ने मरयम के बेटे ईसा मसीह को जो अल्लाह के रसूल (होने का दावा करते) थे क़त्ल कर डाला — हालांकि न तो इन्हों ने उसे क़त्ल किया और न उसे सूली पर चढ़ाया, बल्कि ये भ्रम में पड़ गये;[५७] और जिन लोगों ने इस के बारे में विभेद किया है निश्चय ही वे इस बारे में सन्देह में पड़े हैं, अटकल पर चलने के सिवा इन के पास इस का कोई ज्ञान नहीं है;[५८] निस्सन्देह इन्हों ने मसीह को क़त्ल नहीं किया, बल्कि उसे अल्लाह ने अपनी ओर उठा लिया। अल्लाह अपार शक्ति का मालिक और हिकमत* वाला है। ○ किताब वालों में ऐसा कोई न होगा जो उस की मृत्यु से पूर्व इस

५२ दे० सूरः अल-बक़रः आयत ५१-५४।

५३ दे० सूरः अल-बक़रः आयत ५१-५४।

५४ दे० सूरः अल-बक़रः आयत ६३।

५५ दे० सूरः अल-बक़रः आयत ५८।

५६ दे० सूरः अल-बक़रः आयत ६५।

५७ इस आयत से मालूम होता है कि हज़रत मसीह अ० सूली पर चढ़ाये जाने से बच गए [illegible] जैसा कि आगे आ रहा है। ईसाइयों और यहूदियों का यह कहना कि उन्हें सूली दी गई, [illegible] इन्हें इस बारे में भ्रम हुआ है। यहूदियों ने जिस व्यक्ति को सूली पर चढ़ाया वह मसीह अ० न थे [illegible] था जिसे इन्हों ने मसीह समझ लिया था।

५८ ईसाई लोग हज़रत मसीह अ० के सूली पर चढ़ाये जाने के बारे में विभिन्न बातें कहते हैं। कोई कहता है कि जिसे सूली पर चढ़ाया गया वह मसीह न थे कोई और था। कोई कहता है कि [illegible] [illegible] अटकल पर चलते हैं। [illegible] इन के पास इस के बारे में कोई [illegible] नहीं है।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

عظيما ۝ وقولهم إنا قتلنا المسيح عيسى ابن مريم رسول الله
وما قتلوه وما صلبوه ولكن شبه لهم ۚ وإن الذين
اختلفوا فيه لفي شك منه ۚ ما لهم به من علم إلا اتباع
الظن ۚ وما قتلوه يقينا ۝ بل رفعه الله إليه ۚ وكان الله
عزيزا حكيما ۝ وإن من أهل الكتاب إلا ليؤمنن به قبل
موته ۖ ويوم القيامة يكون عليهم شهيدا ۝ فبظلم من
الذين هادوا حرمنا عليهم طيبات أحلت لهم وبصدهم
عن سبيل الله كثيرا ۝ وأخذهم الربا وقد نهوا عنه و
أكلهم أموال الناس بالباطل ۚ وأعتدنا للكافرين منهم
عذابا أليما ۝ لكن الراسخون في العلم منهم والمؤمنون يؤمنون
بما أنزل إليك وما أنزل من قبلك والمقيمين الصلاة و
المؤتون الزكاة والمؤمنون بالله واليوم الآخر أولئك
سنؤتيهم أجرا عظيما ۝ إنا أوحينا إليك كما أوحينا إلى نوح
والنبيين من بعده ۚ وأوحينا إلى إبراهيم وإسماعيل وإسحاق
ويعقوب والأسباط وعيسى وأيوب ويونس وهارون وسليمان ۚ
وآتينا داوود زبورا ۝ ورسلا قد قصصناهم عليك من قبل
ورسلا لم نقصصهم عليك ۚ وكلم الله موسى تكليما ۝ رسلا

पर ईमान* न लाये,[५९] और क़ियामत* के दिन उन पर गवाह होगा[६०] । ○ सो यहूदी होने वालों के इन्हीं अपराधों के कारण हम ने बहुत सी पाक चीज़ें उन पर हराम* कर दीं जो उन के लिए हलाल* थीं, और उन के प्रायः अल्लाह के रास्ते से (लोगों १६० को) रोकने के कारण (भी ऐसा किया गया), ○ और उन के ब्याज लेने पर जब कि उन्हें इस से रोका गया था, और उन के अवैध रूप से लोगों के माल खाने पर (ऐसा किया गया)। और उन में से जो लोग काफ़िर* हैं हम ने उन के लिए दुःख देने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है। ○ परन्तु उन में जो लोग ज्ञान में पक्के और ईमान* वाले हैं वे उस पर ईमान लाते हैं जो तुम्हारी ओर उतारा गया है, और जो तुम से पहले उतारा गया, और (ये वे लोग हैं) जो नमाज़* क़ायम* रखने वाले और ज़कात* देने वाले हैं, और अल्लाह और अन्तिम* दिन[६१] पर ईमान* रखते हैं। ऐसे लोगों को हम जल्द ही (उन के नेक कामों का) बड़ा बदला प्रदान करेंगे। ○ (हे नबी*!) हम ने तुम्हारी ओर उसी तरह वह्य* की है जिस तरह नूह और उस के बाद के नबियों की ओर वह्य* कर चुके हैं, और हम ने इबराहीम और इसमाईल और इसहाक़ और याक़ूब और उस की सन्तान, और ईसा और अय्यूब और यूनुस और हारून और सुलैमान की ओर वह्य* भेजी, और हम ने दाऊद को ज़बूर* प्रदान किया; ○ कितने रसूल* हैं जिन का हाल हम पहले तुम से बयान कर चुके हैं और कितने रसूल* हैं जिन का हाल हम ने तुम से नहीं बयान किया; और मूसा से अल्लाह ने इस तरह बात-चीत की जिस तरह बात-चीत की जाती है; ○ (ये सारे) रसूल* शुभ-सूचना देने वाले और डराने वाले (बना कर भेजे गये), ताकि (इन) रसूलों* (के भेजने) के बाद लोगों के पास (अपने निर्दोष होने की) अल्लाह के मुक़ाबिले में कोई हुज्जत (तर्क) न १६५ रहे। अल्लाह अपार शक्ति का मालिक और हिकमत* वाला है। ○ (हे नबी*! लोग इन्कार करते हैं तो करें) किन्तु अल्लाह गवाही देता है उस ने जो-कुछ तुम पर उतारा है; अपने ज्ञान से उतारा है; फ़िरिश्ते* भी (इस की) गवाही देते हैं। यद्यपि अल्लाह का गवाह होना ही काफ़ी है। ○ जिन लोगों ने कुफ़्र* किया और (लोगों को) अल्लाह के रास्ते से रोका, वे भटक

५९. हज़रत मसीह अ० की जब मृत्यु होगी तो उस समय जितने किताब वाले मौजूद होंगे वे सभी उन के नबी* होने पर ईमान ला चुके होंगे। इस आयत का एक अर्थ यह भी होता है कि किताब वालों पर मरने से ठीक पहले यह बात खुल जाती है कि मसीह अ० अल्लाह के रसूल* थे। वे उन के नबी* होने पर ईमान लाते हैं; परन्तु उस समय का ईमान* उन के लिए कुछ भी लाभदायक नहीं।*

६०. अर्थात् यहूदियों और ईसाइयों ने हज़रत मसीह अ० और आप के लाये हुये सन्देश के साथ जैसा-कुछ व्यवहार किया है, मसीह अ० अल्लाह के सामने उस की गवाही देंगे। इस गवाही का कुछ विवरण सूरः अल-माइदः आयत ११६-१२० में मिलता है।

६१. दे० सूरः अल-बक़रः फ़ुट नोट ५।

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَى اللَّهِ حُجَّةٌ بَعْدَ
الرُّسُلِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۝ لَّٰكِنِ اللَّهُ يَشْهَدُ بِمَا أَنزَلَ
إِلَيْكَ ۖ أَنزَلَهُ بِعِلْمِهِ ۖ وَالْمَلَائِكَةُ يَشْهَدُونَ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا ۝
إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ قَدْ ضَلُّوا ضَلَالًا
بَعِيدًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَظَلَمُوا لَمْ يَكُنِ اللَّهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ
وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيقًا ۝ إِلَّا طَرِيقَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ
وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۝ يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمُ الرَّسُولُ
بِالْحَقِّ مِن رَّبِّكُمْ فَآمِنُوا خَيْرًا لَّكُمْ ۚ وَإِن تَكْفُرُوا فَإِنَّ لِلَّهِ مَا
فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ
لَا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ وَلَا تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ ۚ إِنَّمَا الْمَسِيحُ
عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُولُ اللَّهِ وَكَلِمَتُهُ أَلْقَاهَا إِلَىٰ مَرْيَمَ وَ
رُوحٌ مِّنْهُ ۖ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ۖ وَلَا تَقُولُوا ثَلَاثَةٌ ۚ انتَهُوا خَيْرًا
لَّكُمْ ۚ إِنَّمَا اللَّهُ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۖ سُبْحَانَهُ أَن يَكُونَ لَهُ وَلَدٌ ۘ لَّهُ مَا
فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ۝ لَّن
يَسْتَنكِفَ الْمَسِيحُ أَن يَكُونَ عَبْدًا لِّلَّهِ وَلَا الْمَلَائِكَةُ الْمُقَرَّبُونَ ۚ
وَمَن يَسْتَنكِفْ عَنْ عِبَادَتِهِ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمْ إِلَيْهِ جَمِيعًا ۝
فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُوَفِّيهِمْ أُجُورَهُمْ وَ

कर (रास्ते से) बहुत दूर जा पड़े। ○ जिन लोगों ने कुफ़्र* किया और ज़ुल्म पर उतर आये, अल्लाह उन्हें क्षमा नहीं करेगा, और न उन्हें कोई राह दिखायेगा, ○ सिवाय दोज़ख़* की राह के, जिस में वे सदा पड़े रहेंगे। और यह अल्लाह के लिए (बिल्कुल) आसान है। ○

हे लोगो! रसूल* तुम्हारे पास तुम्हारे रब* की ओर से हक़ (सच्चाई) ले कर आ गया है। सो तुम ईमान* लाओ; यह तुम्हारे लिए ही अच्छा है। और यदि तुम कुफ़्र* करते हो, तो (जान लो कि) आसमानों और ज़मीन में जो-कुछ है (सब) अल्लाह का है। और अल्लाह (सब-कुछ) जानने वाला और हिकमत* वाला है। ○

हे किताब वालो! अपने दीन* में हद से न बढ़ो[६२] और अल्लाह के बारे में हक़ बात के सिवा और कुछ न कहो। मरियम का बेटा, मसीह इस के सिवा और कुछ नहीं कि अल्लाह का रसूल* है, और उस का एक 'कलमः'[६३] है जिसे उस ने मरयम की ओर भेजा था, और उस की ओर से एक आत्मा है। सो तुम अल्लाह पर और उस के रसूलों* पर ईमान* लाओ, और यह न कहो कि (अल्लाह) तीन हैं[६४] — (इस से) बाज़ आ जाओ! (यह) तुम्हारे ही लिए अच्छा है! — अल्लाह तो केवल अकेला इलाह* (पूज्य) है। यह उस की महिमा के प्रतिकूल बात है कि उस के कोई बेटा हो[६५]। आसमानों और ज़मीन में जो-कुछ है उसी का है। और अल्लाह का कार्य-साधक होना काफ़ी है। ○

---

६२ अर्थात् अत्युक्ति से काम न लो।

६३ दे० सूरः आले इमरान फुट नोट ९०।

६४ ईसाई अल्लाह को एक भी मानते हैं और उसे तीन भी कहते हैं।

६५ ईसाई हज़रत मसीह अ० को अल्लाह का इकलौता बेटा कहते हैं, उन की इसी धारणा का यहाँ खण्डन किया जा रहा है। आज ईसाइयों के पास जो इंजील पाई जाती है उस से भी केवल इतना मालूम होता है कि हज़रत मसीह अ० ने अल्लाह और बन्दों के सम्बन्ध को और विशेष रूप से अल्लाह और उस के नेक बन्दों के सम्बन्ध को बाप-बेटे के सम्बन्ध से उपमा दी है। अल्लाह के लिए बाप का शब्द केवल अलंकारिक रूप में प्रयोग किया गया है, परन्तु ईसाइयों ने इस से आगे बढ़ कर मसीह अ० को अल्लाह का इकलौता बेटा ठहरा कर उन्हें ईश्वर के पद पर ला खड़ा किया। देखिए बाइबिल 'इस्तिस्ना' (Deut.) १४ : १; 'लूका' (Luke) ६ : ३६; 'मत्ता' (Matthew) ५ : ६, ४३-४८; ७ : ७-११; १८ : ३५।

हम बाइबिल के कुछ वाक्य यहाँ दे रहे हैं। इन से आप समझ सकते हैं कि बाइबिल में अल्लाह को बाप की केवल उपमा दी गई थी न कि वास्तव में अल्लाह को मनुष्य का बाप ठहराया गया था। "तुम अपने ख़ुदावन्द (प्रभु) के बेटे हो"। ('इस्तिस्ना' १४ : १) "जैसा तुम्हारा बाप दयालु है तुम भी दयालु हो"। ('लूका' ६ : ३६) "जब कि तुम बुरे हो कर अपने बच्चों को अच्छी चीज़ें देना जानते हो, तो तुम्हारा बाप जो आसमान पर है अपने माँगने वालों को अच्छी चीज़ें क्यों न देगा"? (मत्ता ७ : ११)

वर्तमान इन्जीलों में अल्लाह को केवल हज़रत मसीह अ० ही का नहीं बल्कि सारे मनुष्यों का बाप कहा गया है। और उसे आसमानी बाप के नाम से याद किया गया है। इन्जील की मूल भाषा तो इबरानी

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

يزيدهم من فضله وأما الذين استنكفوا واستكبروا فيعذبهم
عذابا أليما ولا يجدون لهم من دون الله وليا ولا نصيرا ۝
يا أيها الناس قد جاءكم برهان من ربكم وأنزلنا إليكم نورا
مبينا ۝ فأما الذين آمنوا بالله واعتصموا به فسيدخلهم
في رحمة منه وفضل ويهديهم إليه صراطا مستقيما ۝
يستفتونك قل الله يفتيكم في الكلالة إن امرؤ هلك ليس
له ولد وله أخت فلها نصف ما ترك وهو يرثها إن لم يكن
لها ولد فإن كانتا اثنتين فلهما الثلثان مما ترك وإن كانوا
إخوة رجالا ونساء فللذكر مثل حظ الأنثيين يبين الله لكم
أن تضلوا والله بكل شيء عليم ۝

मसीह अल्लाह का बन्दा होने का तिरस्कार कभी नहीं करेगा, और न (अल्लाह के) क़रीबी फ़िरिश्ते* ही (इस का तिरस्कार करेंगे)। जो कोई उस की (अर्थात् अल्लाह की) बन्दगी का तिरस्कार करता और घमण्ड करता है, तो (जान ले कि) वह सब को अपने सामने इकट्ठा कर के रहेगा;○ तो, जो लोग ईमान* लाये और अच्छे काम किये, उन्हें अल्लाह उन का पूरा-पूरा बदला देगा, और अपने फ़ज़्ल से उन्हें और अधिक भी प्रदान करेगा; और जिन लोगों ने (बन्दगी का) तिरस्कार और घमण्ड किया, तो उन्हें वह दुःख देने वाला अज़ाब देगा। वे अल्लाह के सिवा अपना कोई संरक्षक-मित्र और सहायक न पायेंगे।○

हे लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब* की ओर से स्पष्ट दलील आ चुकी है, और हम ने तुम्हारी ओर प्रत्यक्ष प्रकाश उतारा है;○ सो जो लोग अल्लाह पर ईमान* लाये, और उस से चिमटे रहे, उन्हें वह अवश्य ही अपनी दयालुता और कृपा[66] (की छाया) में दाख़िल करेगा, और उन्हें वह अपने तक (पहुँचने) की सीधी राह दिखायेगा।○ १७५

[67](हे नबी*!) लोग तुम से (ऐसे व्यक्ति के बारे में जिस के न माता-पिता मौजूद हों और न कोई औलाद हो) हुक्म मालूम करना चाहते हैं। कह दो: अल्लाह तुम्हें ऐसे व्यक्ति के बारे में जिस के न औलाद हो और न माता-पिता, हुक्म देता है। यदि कोई मर जाये जिस के औलाद न हो (न माता-पिता ही हों) और उस के एक बहन हो, तो जो-कुछ उस ने छोड़ा है उस का आधा उस (बहन) का होगा और वह (अपनी) उस (बहन) का वारिस होगा यदि (वह बहन मर जाये और) उस के कोई औलाद न हो। यदि दो बहनें हों (या दो से अधिक), तो जो-कुछ उस ने छोड़ा है उस में से उन का दो तिहाई होगा और यदि भाई-बहन कई पुरुष और स्त्रियाँ हैं, तो एक पुरुष का हिस्सा दो स्त्रियों के बराबर होगा। अल्लाह तुम्हारे लिए (ये आदेश खोल कर) बयान करता है, ताकि तुम भटकते न फिरो। और अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है।○

(Hebrew) थी। इबरानी भाषा में 'अब' शब्द बाप और रब दोनों के लिए प्रयोग होता है और इसी तरह 'इब्न' शब्द बेटे और बन्दे दोनों के लिए आता है। ज़ाहिर है कि जब हज़रत मसीह अ० ने 'अब' और 'इब्न' के शब्द प्रयोग किये होंगे तो लोगों ने इन का अर्थ रब* और बन्दा ही समझा होगा।*

६६ अर्थात् फ़ज़्ल।

६७ यह आयत सूरः अन-निसा के बहुत बाद उतरी है। इस आयत को परिशिष्ट अथवा पूरक के रूप में अन्त में रखा गया है।

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

वचन भंग करना, हराम माल खाना आदि ऐसे कर्म हैं जिन से मनुष्य की आत्मा दूषित और विकृत हो जाती है। खाने की चीज़ों में जो चीज़ें शुद्ध और पवित्र हैं उन का उल्लेख किया गया, फिर जिन स्त्रियों से विवाह करना जायज़ है उन का और फिर वुज़ू का उल्लेख किया। इन तीनों चीज़ों में गहरा सम्पर्क है। ज़ब्ह से जानवर पाक होते हैं मद* और विवाह से स्त्रियाँ और वुज़ू नमाज़* की पाकी और शुद्धता के लिए अनिवार्य है। फिर अन्त में खोल कर बता दिया : अल्लाह तुम्हें तंगी में नहीं डालना चाहता, परन्तु वह चाहता है कि तुम्हें पाक (शुद्ध) करे; और अपनी नेमत तुम पर पूरी करे। (आयत ६)।

इस सूरः में खाने-पीने और विवाह के सिलसिले में जो चीज़ें हराम (अवैध) हैं उन्हें निश्चित कर दिया गया। मुसलमानों को किताब वालों* के साथ खाने-पीने और उन की स्त्रियों से विवाह करने की इजाज़त दी गई। हज* की यात्रा के नियमों पर प्रकाश डाला गया। अज्ञान काल के तथ्य-हीन आचार-विचार का तर्कयुक्त खण्डन किया गया। वुज़ू*, स्नान और तयम्मुम* के तरीक़े बताये गये। विद्रोह, फ़साद और चोरी की सज़ायें निर्धारित की गईं और क़सम खाने का कफ़्फ़ारः* निश्चित किया गया। शराब (मदिरा) और जुये का निषेध किया गया। गवाही से सम्बन्ध रखने वाले कुछ नियमों की शिक्षा पहले दी गई थी, इस सूरः में इस सिलसिले के कुछ और नियम दिये गये।

यहूदियों* और ईसाइयों* को सीधे और सच्चे धर्म का बुलावा दिया गया। उन के तथ्य-हीन आचार-विचार का खण्डन करते हुए उन्हें आमन्त्रित किया गया कि वे नबी सल्ल० पर ईमान* लायें।

मुसलमान अब एक शासक गिरोह बन चुके थे; उन के हाथ में शासन-शक्ति थी। उन्हें हुक्म दिया गया कि वे किसी हालत में भी न्याय और इन्साफ़ से न हटें। उन्हें प्रत्येक अवस्था में इन्साफ़ पर क़ायम रहने का निश्चय कर लेना चाहिए।

---

*इस का अर्थ आखिर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूर:* अल-माइद:

(मदीने में उतरी — आयतें* १२०)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بسم الله الرحمن الرحيم
يايها الذين امنوا اوفوا بالعقود احلت لكم بهيمة الانعام
الا ما يتلى عليكم غير محلي الصيد وانتم حرم ان الله يحكم
ما يريد ○ يايها الذين امنوا لا تحلوا شعائر الله ولا الشهر
الحرام ولا الهدي ولا القلائد ولا امين البيت الحرام يبتغون
فضلا من ربهم ورضوانا واذا حللتم فاصطادوا ولا يجرمنكم

हे ईमान* लाने वालो ! प्रतिबन्धनों का पूर्ण रूप से पालन करो। तुम्हारे लिए मवेशी[1] की क़िस्म के जानवर हलाल* किये गये सिवाय उन के जो आगे चल कर तुम्हें बताये जायँगे, परन्तु जब कि तुम इहराम* की हालत में हो, शिकार को हलाल न समझना। निस्सन्देह अल्लाह जो चाहता है हुक्म देता है।○

हे ईमान* लाने वालो ! अल्लाह की (बन्दगी की) निशानियों का अनादर न करो, न आदर के महीनों[2] का, न क़ुरबानी* के जानवरों का (जिन की क़ुरबानी* हरम* में होने वाली हो), न उन जानवरों का जिन की गरदनों में (चिन्ह के रूप में) पट्टे पड़े हों (कि ये क़ुरबानी के जानवर हैं), और न उन लोगों का जो अपने रब* के फ़ज़्ल और उस की ख़ुशी की चाह में प्रतिष्ठित घर (काब:) को जाते हों[3]। हाँ, जब इहराम* की हालत ख़त्म हो जाये, तो शिकार कर सकते हो। और (देखो) ऐसा न हो कि एक गिरोह की दुश्मनी कि उस ने तुम्हारे लिए प्रतिष्ठित घर (काब:) का रास्ता बन्द कर दिया था, तुम्हें इस बात पर उभार दे कि तुम ज़्यादती करने लग जाओ; नेकी और तक़्वा* (के काम) में एक-दूसरे को सहयोग दो। और गुनाह और ज़्यादती के काम में सहयोग न दो, अल्लाह की अवज्ञा से बचते और उस की ना-ख़ुशी से डरते रहो। निस्सन्देह अल्लाह कड़ी सज़ा देने वाला है।○

---

१ इस के लिए मूल ग्रन्थ (Text) में 'अनआम' शब्द आया है जो ऊँट, गाय, भेड़ और बकरी के लिए बोला जाता है। इस हुक्म से वे सभी जानवर हलाल ठहरते हैं जो मांसाहारी न हों बल्कि चरने-चुगने वाले जानवर हों, और अपनी दूसरी विशेषताओं में ऊँट, गाय, भेड़ और बकरी से मिलते-जुलते हों।

२ दे० सूर: अल-बक़र: फ़ुट नोट ५०।

३ अर्थात् न क़ुरबानी* के जानवरों पर हाथ डालो और न उन लोगों को छेड़ो जो काब:* के दर्शन को जा रहे हों।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

वचन भंग करना, हराम माल खाना आदि ऐसे कर्म हैं जिन से मनुष्य की आत्मा दूषित और विकृत हो जाती है। खाने की चीज़ों में जो चीज़ें शुद्ध और पवित्र हैं उन का उल्लेख किया गया, फिर जिन स्त्रियों से विवाह करना जायज़ है उन का और फिर वुज़ू का उल्लेख किया। इन तीनों चीज़ों में गहरा सम्पर्क है। ज़ब्ह से जानवर पाक होते हैं मह* और विवाह से स्त्रियां और वुज़ू नमाज़* की पाकी और शुद्धता के लिए अनिवार्य है। फिर अन्त में खोल कर बता दिया : अल्लाह तुम्हें तंगी में नहीं डालना चाहता, परन्तु वह चाहता है कि तुम्हें पाक (शुद्ध) करे; और अपनी नेमत तुम पर पूरी करे। (आयत ६)।

इस सूरः में खाने-पीने और विवाह के सिलसिले में जो चीज़ें हराम (अवैध) हैं उन्हें निश्चित कर दिया गया। मुसलमानों को किताब वालों* के साथ खाने-पीने और उन की स्त्रियों से विवाह करने की इजाज़त दी गई। हज* की यात्रा के नियमों पर प्रकाश डाला गया। अज्ञान काल के तथ्य-हीन आचार-विचार का तर्कयुक्त खण्डन किया गया। वुज़ू*, स्नान और तयम्मुम* के तरीक़े बताये गये। विद्रोह, फ़साद और चोरी की सज़ायें निर्धारित की गईं और क़सम खाने का कफ़्फ़ारः* निश्चित किया गया। शराब (मदिरा) और जुये का निषेध किया गया। गवाही से सम्बन्ध रखने वाले कुछ नियमों की शिक्षा पहले दी गई थी, इस सूरः में इस सिलसिले के कुछ और नियम दिये गये।

यहूदियों* और ईसाइयों* को सीधे और सच्चे धर्म का बुलावा दिया गया। उन के तथ्य-हीन आचार-विचार का खण्डन करते हुए उन्हें आमन्त्रित किया गया कि वे नबी सल्ल० पर ईमान* लायें।

मुसलमान अब एक शासक गिरोह बन चुके थे; उन के हाथ में शासन-शक्ति थी। उन्हें हुक्म दिया गया कि वे किसी हालत में भी न्याय और इन्साफ़ से न हटें। उन्हें प्रत्येक अवस्था में इन्साफ़ पर क़ायम रहने का निश्चय कर लेना चाहिए।

---

*इन का अर्थ अन्त में बनी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अल-माइदः

(मदीने में उतरी — आयतें* १२०)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

हे ईमान* लाने वालो ! प्रतिबन्धनों का पूर्ण रूप से पालन करो। तुम्हारे लिए मवेशी[1] की क़िस्म के जानवर हलाल* किये गये सिवाय उन के जो आगे चल कर तुम्हें बताये जायँगे, परन्तु जब कि तुम इहराम* की हालत में हो, शिकार को हलाल न समझना। निस्सन्देह अल्लाह जो चाहता है हुक्म देता है।○

بسم الله الرحمن الرحيم
يا أيها الذين آمنوا أوفوا بالعقود أحلت لكم بهيمة الأنعام
إلا ما يتلى عليكم غير محلي الصيد وأنتم حرم إن الله يحكم
ما يريد ۝ يا أيها الذين آمنوا لا تحلوا شعائر الله ولا الشهر
الحرام ولا الهدي ولا القلائد ولا آمين البيت الحرام يبتغون
فضلا من ربهم ورضوانا وإذا حللتم فاصطادوا ولا يجرمنكم

हे ईमान* लाने वालो ! अल्लाह की (बन्दगी की) निशानियों का अनादर न करो, न आदर के महीनों[2] का, न क़ुरबानी* के जानवरों का (जिन की क़ुरबानी* हरम* में होने वाली हो), न उन जानवरों का जिन की गरदनों में (चिन्ह के रूप में) पट्टे पड़े हों (कि ये क़ुरबानी के जानवर हैं), और न उन लोगों का जो अपने रब* के फ़ज़्ल और उस की ख़ुशी की चाह में प्रतिष्ठित घर (काबः) को जाते हों[3]। हाँ, जब इहराम* की हालत ख़त्म हो जाये, तो शिकार कर सकते हो। और (देखो) ऐसा न हो कि एक गिरोह की दुश्मनी कि उस ने तुम्हारे लिए प्रतिष्ठित घर (काबः) का रास्ता बन्द कर दिया था, तुम्हें इस बात पर उभार दे कि तुम ज़्यादती करने लग जाओ; नेकी और तक़्वा* (के काम) में एक-दूसरे को सहयोग दो। और गुनाह और ज़्यादती के काम में सहयोग न दो, अल्लाह की अवज्ञा से बचते और उस की ना-ख़ुशी से डरते रहो। निस्सन्देह अल्लाह कड़ी सज़ा देने वाला है।○

---

१ इस के लिए मूल ग्रन्थ (Text) में 'अनआम' शब्द आया है जो ऊँट, गाय, भेड़ और बकरी के लिए बोला जाता है। इस हुक्म से वे सभी जानवर हलाल ठहरते हैं जो मांसाहारी न हों बल्कि चरने-चुगने वाले जानवर हों, और अपनी दूसरी विशेषताओं में ऊँट, गाय, भेड़ और बकरी से मिलते-जुलते हों।

२ दे० सूरः अल-बक़रः फ़ुट नोट ५०।

३ अर्थात् न क़ुरबानी के जानवरों पर हाथ डालो और न उन लोगों को छेड़ो जो काबः* के दर्शन को जा रहे हों।*

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

شنآن قوم أن صدوكم عن المسجد الحرام أن تعتدوا وتعاونوا
على البر والتقوى ولا تعاونوا على الإثم والعدوان واتقوا الله
إن الله شديد العقاب ۝ حرمت عليكم الميتة والدم ولحم
الخنزير وما أهل لغير الله به والمنخنقة والموقوذة والمتردية
والنطيحة وما أكل السبع إلا ما ذكيتم وما ذبح على النصب
وأن تستقسموا بالأزلام ذلكم فسق اليوم يئس الذين
كفروا من دينكم فلا تخشوهم واخشون اليوم أكملت لكم
دينكم وأتممت عليكم نعمتي ورضيت لكم الإسلام دينا
فمن اضطر في مخمصة غير متجانف لإثم فإن الله غفور
رحيم ۝ يسألونك ماذا أحل لهم قل أحل لكم الطيبات و
ما علمتم من الجوارح مكلبين تعلمونهن مما علمكم الله فكلوا
مما أمسكن عليكم واذكروا اسم الله عليه واتقوا الله إن
الله سريع الحساب ۝ اليوم أحل لكم الطيبات وطعام الذين
أوتوا الكتاب حل لكم وطعامكم حل لهم والمحصنات من
المؤمنات والمحصنات من الذين أوتوا الكتاب من قبلكم إذا
آتيتموهن أجورهن محصنين غير مسافحين ولا متخذي
أخدان ومن يكفر بالإيمان فقد حبط عمله وهو في

तुम पर हराम* किया गया मुरदार, रक्त, सुअर का मांस, वह (जानवर) जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो, वह जो घुट कर या चोट खा कर या ऊँचाई से गिर कर या सींग लगने से मरा हो या जिसे किसी हिंसक पशु ने फाड़ खाया हो, सिवाय उस के जिसे तुम (ज़िन्दा पा कर) ज़िब्ह कर लो, और वह (जानवर भी हराम है) जो किसी (देवी-देवता के) थान पर (चढ़ा कर) ज़िब्ह किया गया हो। और यह (भी तुम्हारे लिए हराम* है) कि पाँसों के द्वारा क़िस्मत मालूम करो। यह मर्यादा का उल्लंघन करना है। आज कुफ़्र* करने वाले तुम्हारे दीन* की ओर से निराश हो गये; तो उन से न डरो, बल्कि मुझ से ही डरो! आज मैं ने तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन* को मुकम्मल (पूर्ण) कर दिया और तुम पर अपनी नेमत* पूरी कर दी, और मैं ने पसन्द किया कि तुम्हारा दीन* इस्लाम* हो। तो जो कोई भूख से विवश हो जाये, परन्तु गुनाह की ओर उस की रुचि न हो, तो निश्चय ही अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।○

लोग तुम से पूछते हैं कि उन के लिए क्या हलाल* रखा गया है। कह दो कि तुम्हारे लिए सब पाक चीज़ें हलाल* रखी गई हैं। और जिन शिकारी जानवरों को तुम ने सधे हुये शिकारी जानवर के रूप में सधा रखा हो जिन को (शिकार का तरीक़ा) जैसा-कुछ अल्लाह ने तुम्हें सिखाया है सिखाते हो; वे जिस (शिकार) को तुम्हारे लिए पकड़ रखें तुम उसे खाओ और उस पर अल्लाह का नाम लो, अल्लाह की अवज्ञा से बचने और उस की नाराज़ी से डरते रहो। निस्सन्देह अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।○

आज तुम्हारे लिए सब पाक चीज़ें हलाल* हुईं। जिन्हें किताब* दी गई उन का भोजन[4] तुम्हारे लिए हलाल* है, और तुम्हारा भोजन उन के लिए हलाल* है। और ईमान* वाली महिलायें भी (तुम्हारे लिए हलाल* हैं) और वे महिलायें भी जो उन लोगों में से हों जिन्हें तुम से पहले किताब* दी गई थी जब कि तुम उन्हें उन का महर* अदा कर के विवाहिता बना लो, न तो बदकारी करो और न चोरी-छिपे आशनाई करो। और जिस ने ईमान* का इन्कार किया, उस का सारा किया-धरा अकारथ गया और वह आख़िरत* में घाटा उठाने वालों में से होगा।○

हे ईमान* लाने वालो! जब तुम नमाज़* के लिए उठो, तो अपने मुँह और हाथ कुहनियों तक धो लिया करो, और अपने सिरों का मस्ह* कर लो[5] और अपने दोनों पाँव टख़नों तक

४ भोजन में किताब वालों* का ज़ब्ह किया हुआ जानवर भी शामिल है। उन के भोजन में यदि कोई हराम चीज़ मौजूद हो या वे जानवर को ज़ब्ह करते समय अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लें तो उसे खाना जायज़ न होगा। किताब वालों* के अतिरिक्त हमारे और दूसरे अमुस्लिमों के बीच भी कोई छूत-छात नहीं है, किन्तु किताब वालों* के सिवा दूसरे लोगों के ज़ब्ह किये हुये जानवरों का खाना हमारे लिए जायज़ न होगा।

५ अर्थात् अपने भीगे हुये हाथ अपने सिरों पर फेर लो।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

الآخرة من الخسرين ۞ يا أيها الذين آمنوا إذا قمتم إلى الصلوة
فاغسلوا وجوهكم وأيديكم إلى المرافق وامسحوا برءوسكم
وأرجلكم إلى الكعبين ۚ وإن كنتم جنبا فاطهروا ۚ وإن كنتم
مرضى أو على سفر أو جاء أحد منكم من الغائط أو لمستم
النساء فلم تجدوا ماء فتيمموا صعيدا طيبا فامسحوا بوجوهكم
وأيديكم منه ۚ ما يريد الله ليجعل عليكم من حرج ولكن
يريد ليطهركم وليتم نعمته عليكم لعلكم تشكرون ۝ و
اذكروا نعمة الله عليكم وميثاقه الذي واثقكم به ۙ إذ قلتم
سمعنا وأطعنا ۖ واتقوا الله ۚ إن الله عليم بذات الصدور ۝
يا أيها الذين آمنوا كونوا قوامين لله شهداء بالقسط ۖ ولا
يجرمنكم شنآن قوم على ألا تعدلوا ۚ اعدلوا هو أقرب للتقوى ۖ
واتقوا الله ۚ إن الله خبير بما تعملون ۝ وعد الله الذين آمنوا
وعملوا الصلحت ۙ لهم مغفرة وأجر عظيم ۝ والذين كفروا
وكذبوا بآياتنا أولئك أصحب الجحيم ۝ يا أيها الذين آمنوا
اذكروا نعمت الله عليكم إذ هم قوم أن يبسطوا إليكم
أيديهم فكف أيديهم عنكم ۖ واتقوا الله ۚ وعلى الله فليتوكل
المؤمنون ۝ ولقد أخذ الله ميثاق بني إسرائيل ۖ وبعثنا

(धो लो)। और यदि नापाक हो, तो (नहा कर) पाक हो लो। और यदि बीमार हो या सफ़र में हो, या तुम में से कोई शौच करके आया हो, या तुम ने स्त्रियों को हाथ लगाया हो, फिर पानी न पाओ, तो पाक मिट्टी से काम लो, उस से अपने मुँह और अपने हाथों पर मस्ह* कर लो[६]। अल्लाह तुम्हें तंगी में नहीं डालना चाहता, परन्तु वह चाहता है कि तुम्हें पाक करे और अपनी नेमत* तुम पर पूरी कर दे, ताकि तुम कृतज्ञता दिखलाओ।○

और अल्लाह की उस कृपा (नेमत) को याद रखो जो उस ने तुम पर की है और उस की उस प्रतिज्ञा को भी जिस (के पूरा करने) का वह तुम से पक्का वादा ले चुका है जब कि तुम ने कहा था : "हम ने सुना और माना"; और अल्लाह की अवज्ञा से बचने और उस की ना-ख़ुशी से डरते रहो। निस्सन्देह अल्लाह सीनों (दिलों) तक की बात जानने वाला (अंतर्यामी) है।○

हे ईमान* लाने वालो! अल्लाह के लिए (इन्साफ़ पर) मज़बूती के साथ क़ायम रहने वाले और इन्साफ़ की गवाही देने वाले बनो, और (देखो) ऐसा न हो कि किसी गिरोह की दुश्मनी तुम्हें इस बात पर उभार दे कि तुम इन्साफ़ करना छोड़ दो। इन्साफ़ करो, यही तक़्वा* से लगती हुई बात है। अल्लाह की अवज्ञा से बचते और उस की ना-ख़ुशी से डरते रहो। निस्सन्देह अल्लाह जो-कुछ तुम करते हो उस की ख़बर रखने वाला है।○ जो लोग ईमान* लाये और नेक काम किये उन से अल्लाह का वादा है : उन के लिए क्षमा और बड़ा बदला है।○ रहे वे लोग जिन्हों ने कुफ़्र* किया और हमारी आयतों* को झुठलाया, ऐसे लोग दोज़ख़* (में जाने) वाले हैं।

हे ईमान* लाने वालो! अल्लाह की जो कृपा (अभी जल्द ही) तुम पर हुई है उसे याद करो, जब कि एक गिरोह ने तुम्हारी ओर हाथ बढ़ाने का निश्चय कर लिया था परन्तु अल्लाह ने उन के हाथ तुम (पर उठने) से रोक दिये; अल्लाह की अवज्ञा से बचते और उस की ना-ख़ुशी से डरते रहो। और ईमान* वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए।○

अल्लाह ने बनी इसराईल* से पक्का वादा लिया था और उन में हम ने[७] बारह सरदार नियुक्त किये थे, और अल्लाह ने कहा था : मैं तुम्हारे साथ हूँ। यदि तुम ने नमाज़* क़ायम रखी और ज़कात* अदा करते रहे, और मेरे रसूलों* पर ईमान* लाये और उन की सहायता की, और अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दिया, तो मैं अवश्य तुम्हारी बुराइयाँ तुम से दूर कर दूँगा, और तुम्हें निश्चय ही ऐसे बाग़ों में दाख़िल करूँगा जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी। फिर इस के बाद जिस ने तुम में कुफ़्र* किया तो वास्तव में उस ने सीधा (और सुगम) मार्ग खो दिया।○

---

६ अर्थात् उस पर हाथ मार कर अपने मुँह और हाथों पर फेर लो। देखें सूरः अन-निसा फुट नोट ३०।
७ अर्थात् अल्लाह ने।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

मिन फ़िल् अर्ज़ि ...

مَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ۗ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا
بَيْنَهُمَا ۚ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ○ وَ
قَالَتِ الْيَهُودُ وَالنَّصٰرٰى نَحْنُ أَبْنٰؤُا اللّٰهِ وَأَحِبّٰؤُهُ ۚ قُلْ فَلِمَ
يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوبِكُمْ ۖ بَلْ أَنْتُمْ بَشَرٌ مِمَّنْ خَلَقَ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ
وَيُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا
وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ ○ يٰأَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ
عَلٰى فَتْرَةٍ مِنَ الرُّسُلِ أَنْ تَقُولُوا مَا جَاءَنَا مِنْ بَشِيرٍ وَلَا
نَذِيرٍ ۖ فَقَدْ جَاءَكُمْ بَشِيرٌ وَنَذِيرٌ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيرٌ ○ وَإِذْ قَالَ مُوسٰى لِقَوْمِهِ يٰقَوْمِ اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ع
إِذْ جَعَلَ فِيكُمْ أَنْبِيَاءَ وَجَعَلَكُمْ مُلُوكًا ۖ وَآتٰىكُمْ مَا لَمْ يُؤْتِ
أَحَدًا مِنَ الْعٰلَمِينَ ○ يٰقَوْمِ ادْخُلُوا الْأَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِي
كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوا عَلٰى أَدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوا خٰسِرِينَ ○
قَالُوا يٰمُوسٰى إِنَّ فِيهَا قَوْمًا جَبَّارِينَ ۖ وَإِنَّا لَنْ نَدْخُلَهَا حَتّٰى
يَخْرُجُوا مِنْهَا ۚ فَإِنْ يَخْرُجُوا مِنْهَا فَإِنَّا دٰخِلُونَ ○ قَالَ رَجُلَانِ مِنَ
الَّذِينَ يَخَافُونَ أَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمَا ادْخُلُوا عَلَيْهِمُ الْبَابَ ۚ فَإِذَا
دَخَلْتُمُوهُ فَإِنَّكُمْ غٰلِبُونَ ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوا إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ○
قَالُوا يٰمُوسٰى إِنَّا لَنْ نَدْخُلَهَا أَبَدًا مَا دَامُوا فِيهَا فَاذْهَبْ أَنْتَ وَرَبُّكَ

आ गया है। और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला (सर्व-शक्तिमान) है। ○

याद करो जब मूसा ने अपने लोगों से कहा था : हे (मेरी) जाति वालो ! अल्लाह की कृपा (नेमत) को याद करो जो उस ने तुम पर की है, उस ने तुम में नबी* पैदा किये, और तुम्हें शासक बनाया, और तुम्हें वह-कुछ दिया जो संसार में किसी

२० को नहीं दिया था। ○ हे जाति वालो ! तुम पवित्र भूमि^८ में दाख़िल हो जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दी है। और पीछे न हटो, नहीं तो तुम घाटे में पड़ जाओगे : ○ उन्हों ने कहा : हे मूसा ! वहाँ तो बड़े शक्तिशाली लोग (बसते) हैं, हम तो वहाँ जा नहीं सकते जब तक कि वे वहाँ से निकल नहीं जाते। हाँ, यदि वे वहाँ से निकल जायें, तो हम दाख़िल होने के लिए तैयार हैं। ○ उन डरने वालों में से दो आदमियों ने, जिन पर अल्लाह की कृपा थी, कहा : उन के मुक़ाबिले में दरवाज़े से घुस जाओ, जब तुम उस में घुस जाओगे, तो तुम्हीं विजयी होगे। यदि तुम ईमान* वाले हो तो अल्लाह पर भरोसा रखो। ○ उन्हों ने कहा : हे मूसा ! जब तक वे लोग वहाँ हैं, हम तो कदापि वहाँ नहीं जा सकते। तो जाओ तुम और तुम्हारा रब*, दोनों लड़ो ! हम यहाँ बैठे हैं। ○ मूसा ने कहा : मेरे रब* ! मेरा सिवाय अपने और अपने भाई के किसी पर अधिकार नहीं है, तो

२५ तू हमें इन सीमोल्लंघन करने वाले लोगों से अलग कर दे। ○ (अल्लाह ने) कहा : अच्छा तो अब यह भूमि चालीस वर्ष के लिए इन पर हराम है, ये ज़मीन में मारे-मारे फिरेंगे। तुम इन मर्यादा का उल्लंघन करने वाले लोगों पर अफ़सोस न करो। ○

और इन्हें आदम के दो बेटों का हाल हक़ के साथ सुना दो, जब (उन) दोनों ने एक क़ुरबानी* की, तो उन में से एक की (क़ुरबानी) क़बूल हुई और दूसरे की क़बूल न हुई। उस ने कहा : मैं तुझे क़त्ल कर डालूँगा। (दूसरे ने) कहा : अल्लाह तो उन्हीं की (क़ुरबानी*) क़बूल करता है जो उस की अवज्ञा से बचते और उस की ना-ख़ुशी से डरते हैं। ○ यदि तू मुझे क़त्ल करने को मेरी ओर अपना हाथ बढ़ायेगा, तो मैं तुझे क़त्ल करने को तेरी ओर अपना हाथ बढ़ाने वाला नहीं हूँ, मैं तो अल्लाह से, जो सारे संसार का रब* है, डरता हूँ। ○ मैं तो चाहता हूँ कि मेरा गुनाह और अपना गुनाह तू ही अपने सिर ले ले फिर आग (दोज़ख़*) वालों में शामिल हो जाये। और यही ज़ालिमों का बदला है। ○ उस के जी ने उसे अपने भाई की हत्या पर आमादा (तैयार) कर दिया, सो उस ने उस की हत्या कर डाली और घाटा

३० उठाने वालों में शामिल हो गया। ○ तब अल्लाह ने एक कौआ भेजा जो ज़मीन खोदता था, ताकि उसे दिखा दे कि वह अपने भाई की लाश (शव) कैसे छिपाये। कहने लगा : अफ़सोस (मुझ पर) ! क्या मैं इस काक जैसा भी न हो सका कि अपने भाई की लाश तो

८ यहाँ पवित्र भूमि का तात्पर्य फ़िलिस्तीन (Palestine) की पवित्र भूमि है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

يُقَتَّلُوٓا أَوْ يُصَلَّبُوٓا أَوْ تُقَطَّعَ أَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُم مِّنْ خِلَٰفٍ أَوْ يُنفَوْا
مِنَ ٱلْأَرْضِ ۚ ذَٰلِكَ لَهُمْ خِزْىٌ فِى ٱلدُّنْيَا ۖ وَلَهُمْ فِى ٱلْءَاخِرَةِ عَذَابٌ
عَظِيمٌ ۝ إِلَّا ٱلَّذِينَ تَابُوا مِن قَبْلِ أَن تَقْدِرُوا عَلَيْهِمْ ۖ فَٱعْلَمُوٓا أَنَّ
ٱللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا ٱتَّقُوا ٱللَّهَ وَٱبْتَغُوٓا إِلَيْهِ ٱلْوَسِيلَةَ وَ
جَٰهِدُوا فِى سَبِيلِهِۦ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝ إِنَّ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا
لَوْ أَنَّ لَهُم مَّا فِى ٱلْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُۥ مَعَهُۥ لِيَفْتَدُوا بِهِۦ
مِنْ عَذَابِ يَوْمِ ٱلْقِيَٰمَةِ مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝
يُرِيدُونَ أَن يَخْرُجُوا مِنَ ٱلنَّارِ وَمَا هُم بِخَٰرِجِينَ مِنْهَا ۖ وَلَهُمْ
عَذَابٌ مُّقِيمٌ ۝ وَٱلسَّارِقُ وَٱلسَّارِقَةُ فَٱقْطَعُوٓا أَيْدِيَهُمَا جَزَآءًۢ
بِمَا كَسَبَا نَكَٰلًا مِّنَ ٱللَّهِ ۗ وَٱللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝ فَمَن تَابَ مِنۢ
بَعْدِ ظُلْمِهِۦ وَأَصْلَحَ فَإِنَّ ٱللَّهَ يَتُوبُ عَلَيْهِ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝
أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ ٱللَّهَ لَهُۥ مُلْكُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ يُعَذِّبُ مَن
يَشَآءُ وَيَغْفِرُ لِمَن يَشَآءُ ۗ وَٱللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ ۝ يَٰٓأَيُّهَا
ٱلرَّسُولُ لَا يَحْزُنكَ ٱلَّذِينَ يُسَٰرِعُونَ فِى ٱلْكُفْرِ مِنَ ٱلَّذِينَ قَالُوٓا
ءَامَنَّا بِأَفْوَٰهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِن قُلُوبُهُمْ ۛ وَمِنَ ٱلَّذِينَ هَادُوا ۛ
سَمَّٰعُونَ لِلْكَذِبِ سَمَّٰعُونَ لِقَوْمٍ ءَاخَرِينَ لَمْ يَأْتُوكَ ۖ يُحَرِّفُونَ
ٱلْكَلِمَ مِنۢ بَعْدِ مَوَاضِعِهِۦ ۖ يَقُولُونَ إِنْ أُوتِيتُمْ هَٰذَا فَخُذُوهُ وَ

हे रसूल* ! जो लोग कुफ़्र* में दौड़-दौड़ कर गिरते हैं उन के कारण तुम दुखी न होना,[११] ये जिन्हों ने अपने मुँह से कहा कि हम ईमान* ले आये, हालाँकि उन के दिल ईमान* नहीं लाये, और वे जो यहूदी* हुये : ये झूठ के लिए कान लगाते हैं, और दूसरे लोगों की सुनते हैं जो तुम्हारे पास नहीं आये, (किताब* के) शब्दों को उन का स्थान निश्चित होने के बाद भी बदल डालते (और उन का अनर्थ करते) हैं, (लोगों से) कहते हैं : यदि तुम्हें यह (हुक्म) मिले, तो इसे (क़ुबूल कर) लेना, और यदि यह (हुक्म) न दिया जाये, तो बचना[१२] । जिसे अल्लाह ही (गुनाह के) फ़ितने (आपदा) में डालना चाहे, तो उस के लिए अल्लाह के यहाँ तुम्हारी कुछ भी नहीं चल सकती । ये वे लोग हैं जिन के दिलों को अल्लाह ने पाक करना नहीं चाहा[१३] । इन के लिए दुनिया में भी रुसवाई है, और आख़िरत* में इन के लिए बड़ा अज़ाब है; ○

ये झूठ के लिए कान लगाने वाले, और बड़े हराम का माल खाने वाले हैं, तो यदि ये तुम्हारे पास आयें (और अपना मामला पेश करें) तो (तुम्हें इस का अधिकार है कि) चाहे तुम इन के बीच फ़ैसला कर दो या इन्हें टाल दो । यदि तुम इन्हें टाल दो तो ये तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकते । परन्तु यदि फ़ैसला करो, तो (ठीक-ठीक) न्याय पूर्वक फ़ैसला करो । निस्सन्देह अल्लाह इन्साफ़ करने वालों को पसन्द करता है । ○ ये तुम से कैसे फ़ैसला कराते हैं जब कि (स्वयं) इन के पास तौरात* है, जिस में अल्लाह का हुक्म मौजूद है ! फिर इस के बाद भी ये (उस से) मुँह मोड़ते हैं । ये (कदापि) ईमान* वाले नहीं हैं । ○

निस्सन्देह हम ने तौरात* उतारी, जिस में मार्ग-दर्शन और प्रकाश है, नबी* जो (अल्लाह का) हुक्म मानने वाले थे इसी के अनुसार यहूदियों* (के मामलों) का फ़ैसला करते रहे, और रब्बानी* (धर्माधिकारी) और धर्म-ज्ञाता लोग भी (इसी के अनुसार फ़ैसला करते थे), इस लिए कि उन्हें अल्लाह की किताब का संरक्षक बनाया गया था, और वे उस पर गवाह थे । तो (हे यहूदी गिरोह के लोगो !) तुम लोगों से न डरो, मुझ से डरो । और मेरी आयतों* को थोड़े मूल्य (अर्थात् सांसारिक लाभ) पर न बेच डाला करो । जो लोग उस (हुक्म) के अनुसार फ़ैसला न करें जो अल्लाह ने उतारा है तो ऐसे ही लोग काफ़िर* हैं । ○

हम ने उस (तौरात*) में उन्हें हुक्म दिया था कि जान के बदले जान, आँख के बदले आँख, नाक के बदले नाक, कान के बदले कान, दाँत के बदले दाँत और सब आघातों का

११ अर्थात् तुम उन के लिए दुखी न होना ।

१२ यहूदी लोगों से कहते थे कि मुहम्मद सल्ल० यदि यही हुक्म दें जो हम तुम्हें बताते हैं, तो मान लेना और यदि वे कुछ और हुक्म दें, तो उन का हुक्म न मानना ।

१३ वे लोग गुनाह पर अड़े रहे, अल्लाह ज़बरदस्ती इन्हें पाक क्यों करता; और इन्हें फ़ितने से क्यों बचाता । अल्लाह ने इन के कानूनों से ही इन्हें फ़ितने में डालने का निश्चय किया है ।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

إن لم تؤتوه فاحذروا ۚ ومن يرد الله فتنته فلن تملك
له من الله شيئا ۚ أولئك الذين لم يرد الله أن يطهر قلوبهم ۚ
لهم في الدنيا خزي ۖ ولهم في الآخرة عذاب عظيم ○
سماعون للكذب أكالون للسحت ۚ فإن جاءوك فاحكم بينهم
أو أعرض عنهم ۖ وإن تعرض عنهم فلن يضروك شيئا ۖ و
إن حكمت فاحكم بينهم بالقسط ۚ إن الله يحب المقسطين ○
وكيف يحكمونك وعندهم التوراة فيها حكم الله ثم يتولون
من بعد ذلك ۚ وما أولئك بالمؤمنين ○ إنا أنزلنا التوراة
فيها هدى ونور ۚ يحكم بها النبيون الذين أسلموا
للذين هادوا والربانيون والأحبار بما استحفظوا من
كتاب الله وكانوا عليه شهداء ۚ فلا تخشوا الناس و
اخشون ولا تشتروا بآياتي ثمنا قليلا ۚ ومن لم يحكم
بما أنزل الله فأولئك هم الكافرون ○ وكتبنا عليهم
فيها أن النفس بالنفس والعين بالعين والأنف بالأنف
والأذن بالأذن والسن بالسن والجروح قصاص ۚ فمن
تصدق به فهو كفارة له ۚ ومن لم يحكم بما أنزل الله
فأولئك هم الظالمون ○ وقفينا على آثارهم بعيسى ابن

इसी तरह (बराबर का) बदला है[१४]। परन्तु जो उसे क्षमा कर दे तो यह उस के लिए कफ़्फ़ारा* (प्रायश्चित) होगा। और जो उस (हुक्म) के अनुसार फ़ैसला न करे जो अल्लाह ने उतारा है तो ऐसे ही लोग ज़ुल्म करने वाले हैं। ○ ४५

फिर इन (नबियों) के पीछे इन के पद-चिह्नों पर हम ने मरयम के बेटे, ईसा को भेजा जो अपने से अगली किताब तौरात* की तसदीक़ करने वाला था, और हम ने उसे इंजील* प्रदान की जिस में मार्ग-प्रदर्शन और प्रकाश है, और यह अपने से अगली किताब तौरात* की तसदीक़ करने वाली है—और यह अल्लाह का डर रखने वालों के लिए पथ-प्रदर्शन और उपदेश है। ○ इंजील वालों को चाहिए कि उस (हुक्म) के अनुसार फ़ैसला करें जो अल्लाह ने उतारा है। और जो उस (हुक्म) के अनुसार फ़ैसला न करे जो अल्लाह ने उतारा है, तो ऐसे ही लोग सीमोल्लंघन करने वाले हैं। ○

और (हे मुहम्मद !) हम ने तुम्हारी ओर यह किताब* हक़ के साथ उतारी है, उस की तसदीक़ करने वाली है, जो कोई किताब* कि इस से पहले थी, और उस की संरक्षक है[१५]। अतः तुम लोगों के बीच उस के अनुसार फ़ैसला करो जो अल्लाह ने उतारा है, और जो हक़ (सत्य) तुम्हारे पास आ चुका है उसे छोड़ कर उन की (तुच्छ) इच्छाओं का पालन न करना। हम ने तुम में से हर एक के लिए एक धर्म-विधान और एक कर्म-पथ निश्चित किया। और यदि अल्लाह चाहता तो तुम सब को एक गरोह बना देता। परन्तु उस ने ऐसा नहीं किया ताकि जो-कुछ उस ने तुम्हें दिया है उस में तुम्हारी परीक्षा ले। अतः भलाई के कामों में एक-दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करो। तुम सब को अल्लाह की ओर लौटना है, फिर वह तुम्हें बता देगा जिस में तुम विभेद करते रहे हो (कि उस की वास्तविकता क्या थी)। ○ (हे मुहम्मद !) तुम उन के बीच उस (हुक्म) के अनुसार फ़ैसला करो जो अल्लाह ने उतारा है, और उन की (तुच्छ) इच्छाओं का पालन न करो, और उन से बचते रहो कि कहीं ऐसा न हो कि जो-कुछ अल्लाह ने तुम्हारी ओर भेजा है उस के किसी हुक्म से वे तुम्हें बहका दें। फिर यदि वे मुँह मोड़ें, तो जान लो कि अल्लाह ही उन्हें उन के कुछ गुनाहों के कारण, संकट में डालना चाहता है। और बहुत से लोग तो सीमोल्लंघन करने वाले ही हैं। ○ क्या अज्ञान (कुफ़्र*) का फ़ैसला चाहते हैं ? (अल्लाह पर) विश्वास रखने वालों के लिए अल्लाह से अच्छा फ़ैसला

१४ दे० तौरात की किताब 'ख़ुरूज' (Exodus) २१ : २३-२५ और 'इस्तिस्ना' (Deuteronomy) १९ : २१।
१५ अर्थात् इस किताब के द्वारा पिछली समस्त किताबों की पुष्टि होती है। पिछली आसमानी किताबों (Heavenly Books) की मूल शिक्षाओं को इस किताब ने अपने अन्दर सुरक्षित कर लिया है। पिछली किताबें आज अपने वास्तविक रूप में नहीं पाई जातीं; उन में बड़ा परिवर्तन हो चुका है और बहुत सी किताबें काल के चक्र से खोई भी गई हैं। पिछली किताबों की मूल शिक्षाओं के मालूम करने का साधन अब यही अल्लाह की अन्तिम किताब 'क़ुरआन' रह जाता है।

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

मَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ
فِيْهِ هُدًى وَّنُوْرٌ ۙ وَّمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَ
هُدًى وَّمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ۞ وَلْيَحْكُمْ اَهْلُ الْاِنْجِيْلِ بِمَآ
اَنْزَلَ اللّٰهُ فِيْهِ ۗ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْفٰسِقُوْنَ ۞ وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ
يَدَيْهِ مِنَ الْكِتٰبِ وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ
اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ عَمَّا جَآءَكَ مِنَ الْحَقِّ ۗ لِكُلٍّ جَعَلْنَا
مِنْكُمْ شِرْعَةً وَّمِنْهَاجًا ۗ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّ
لٰكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ فِىْ مَآ اٰتٰىكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ۗ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ
جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ۞ وَاَنِ احْكُمْ بَيْنَهُمْ
بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ وَاحْذَرْهُمْ اَنْ يَّفْتِنُوْكَ عَنْ
بَعْضِ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكَ ۗ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ اَنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ
يُّصِيْبَهُمْ بِبَعْضِ ذُنُوْبِهِمْ ۗ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ لَفٰسِقُوْنَ ۞
اَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُوْنَ ۗ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ
يُّوْقِنُوْنَ ۞ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَالنَّصٰرٰٓى
اَوْلِيَآءَ ۘ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۗ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاِنَّهٗ مِنْهُمْ ۗ
اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۞ فَتَرَى الَّذِيْنَ فِىْ قُلُوْبِهِمْ

करने वाला कौन (हो सकता) है ? ○

हे ईमान* लाने वालो ! तुम यहूदियों* और ईसाइयों* को (अपना) मित्र न बनाओ । ये आपस में एक-दूसरे के मित्र हैं । और जो कोई तुम में उन को मित्र बनायेगा, वह उन्हीं में से होगा । निस्सन्देह अल्लाह ज़ुल्म करने वालों को (सीधा) रास्ता नहीं दिखाता । ○

तो तुम देखते हो कि जिन लोगों के दिलों में (निफ़ाक़* का) रोग है वे दौड़ कर उन में मिल जाते हैं, कहते हैं : हमें भय है कि कहीं हम पर कोई गर्दिश (विपत्ति) न आ पड़े । हो सकता है कि जल्द ही अल्लाह (तुम्हारी) जीत कर दे, या उस की ओर से कोई और बात ज़ाहिर हो[16] । और ये लोग जो-कुछ अपने जी में छिपाये हुये हैं उस पर (बहुत) पछताने लगें । ○ और (तब) ईमान* लाने वाले कहेंगे : क्या यही वे लोग हैं जिन्हों ने अल्लाह की कड़ी-कड़ी क़समें खाई थीं कि हम तुम्हारे साथ हैं ? — इन का किया-धरा सब अकारथ गया, और ये घाटे में पड़ कर रह गये । ○

हे ईमान* लाने वालो ! जो कोई तुम में से अपने दीन* से फिरेगा, तो (जान ले कि) आगे अल्लाह ऐसे लोग लायेगा कि उन से उसे प्रेम होगा और उन से उन्हें प्रेम होगा, ईमान* वालों पर नर्म, काफ़िरों* पर सख़्त होंगे,[17] अल्लाह की राह में जिहाद* करेंगे, और किसी मलामत करने वाले की मलामत से न डरेंगे । यह अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसे चाहता है देता है अल्लाह बड़ी समाई वाला और (सब-कुछ) जानने वाला है । ○

तुम्हारे मित्र तो केवल अल्लाह और उस के रसूल* और ईमान* वाले लोग हैं, जो ५५ नमाज़* क़ायम रखते और ज़कात* देते हैं, और वे (अल्लाह के आगे) झुकने वाले हैं । ○ और जो कोई अल्लाह और उस के रसूल* और ईमान* लाने वालों को अपना मित्र बनाये, तो (वह जान लेगा कि) अल्लाह ही का गरोह प्रभुत्व प्राप्त करने वाला है । ○

हे ईमान* लाने वालो ! तुम से पहले जिन को किताब* दी गई थी, जिन्हों ने तुम्हारे दीन* को हँसी और खेल बना लिया है उन्हें, और काफ़िरों* को अपना मित्र न बनाओ । और अल्लाह की अवज्ञा से बचो और उस की ना-ख़ुशी से डरते रहो यदि तुम (वास्तव में) ईमान* वाले हो । ○ जब तुम नमाज़* के लिए (लोगों को) पुकारते हो तो वे उसे हँसी और खेल बनाते हैं । यह इस लिए कि वे ऐसे लोग हैं जो बुद्धि से काम नहीं लेते । ○ कहो : हे किताब वालो* ! क्या इस के सिवा हमारी कोई और बात तुम को बुरी लगती है कि हम अल्लाह

---

१६ यह बात ज़ाहिर हो कर रही । इन मुनाफ़िक़ों* की मित्रता यहूदियों* और मक्का के मुश्रिकों* से थी । मुसलमानों को मक्का पर विजय प्राप्त हुई, और यहूदियों को देश-निकाला दिया गया ।

१७ अर्थात् धर्म-विरोधियों के मुक़ाबिले में वे कड़े हैं, उन्हें किसी तरह धर्म-पथ से विचलित नहीं किया जा सकता ।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

لم تؤتوه فاحذروا ۚ ومن يرد الله فتنته فلن تملك
له من الله شيئا ۚ أولئك الذين لم يرد الله أن يطهر قلوبهم ۚ
لهم في الدنيا خزي ۖ ولهم في الآخرة عذاب عظيم ۝
سماعون للكذب أكالون للسحت ۚ فإن جاءوك فاحكم بينهم
أو أعرض عنهم ۖ وإن تعرض عنهم فلن يضروك شيئا ۖ و
إن حكمت فاحكم بينهم بالقسط ۚ إن الله يحب المقسطين ۝
وكيف يحكمونك وعندهم التوراة فيها حكم الله ثم يتولون
من بعد ذلك ۚ وما أولئك بالمؤمنين ۝ إنا أنزلنا التوراة
فيها هدى ونور ۚ يحكم بها النبيون الذين أسلموا
للذين هادوا والربانيون والأحبار بما استحفظوا من
كتاب الله وكانوا عليه شهداء ۚ فلا تخشوا الناس و
اخشون ولا تشتروا بآياتي ثمنا قليلا ۚ ومن لم يحكم
بما أنزل الله فأولئك هم الكافرون ۝ وكتبنا عليهم
فيها أن النفس بالنفس والعين بالعين والأنف بالأنف
والأذن بالأذن والسن بالسن والجروح قصاص ۚ فمن
تصدق به فهو كفارة له ۚ ومن لم يحكم بما أنزل الله
فأولئك هم الظالمون ۝ وقفينا على آثارهم بعيسى ابن

इसी तरह (बराबर का) बदला है[२४]। परन्तु जो उसे क्षमा कर दे तो यह उस के लिए कफ़्फ़ारा* (प्रायश्चित) होगा। और जो उस (हुक्म) के अनुसार फ़ैसला न करें जो अल्लाह ने उतारा है तो ऐसे ही लोग ज़ुल्म करने वाले हैं। ○

फिर इन (नबियों) के पीछे इन के पद-चिह्नों पर हम ने मरयम के बेटे, ईसा को भेजा जो अपने से अगली किताब तौरात* की तसदीक़ करने वाला था, और हम ने उसे इंजील* प्रदान की जिस में मार्ग-दर्शन और प्रकाश है, और वह अपने से अगली किताब तौरात* की तसदीक़ करने वाली है — और वह अल्लाह का डर रखने वालों के लिए पथ-प्रदर्शन और उपदेश है। ○ इंजील वालों को चाहिए कि उस (हुक्म) के अनुसार फ़ैसला करें जो अल्लाह ने उतारा है। और जो उस (हुक्म) के अनुसार फ़ैसला न करें जो अल्लाह ने उतारा है; तो ऐसे ही लोग सीमोल्लंघन करने वाले हैं। ○

और (हे मुहम्मद!) हम ने तुम्हारी ओर यह किताब* हक़ के साथ उतारी है, उस की तसदीक़ करने वाली है, जो कोई किताब* कि इस से पहले थी, और उस की संरक्षक है[२५]। अतः तुम लोगों के बीच उस के अनुसार फ़ैसला करो जो अल्लाह ने उतारा है, और जो हक़ (सत्य) तुम्हारे पास आ चुका है उसे छोड़ कर उन की (तुच्छ) इच्छाओं का पालन न करना। हम ने तुम में से हर एक के लिए एक धर्म-विधान और एक कर्म-पथ निश्चित किया। और यदि अल्लाह चाहता तो तुम सब को एक गरोह बना देता। परन्तु उस ने ऐसा नहीं किया ताकि जो-कुछ उस ने तुम्हें दिया है उस में तुम्हारी परीक्षा ले। अतः भलाई के कामों में एक-दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करो। तुम सब को अल्लाह की ओर लौटना है, फिर वह तुम्हें बता देगा जिस में तुम विभेद करते रहे हो (कि उस की वास्तविकता क्या थी)। ○ (हे मुहम्मद!) तुम उन के बीच उस (हुक्म) के अनुसार फ़ैसला करो जो अल्लाह ने उतारा है, और उन की (तुच्छ) इच्छाओं का पालन न करो, और उन से बचते रहो कि कहीं ऐसा न हो कि जो-कुछ अल्लाह ने तुम्हारी ओर भेजा है उस के किसी हुक्म से वे तुम्हें बहका दें। फिर यदि वे मुँह मोड़ें, तो जान लो कि अल्लाह ही उन्हें उन के कुछ गुनाहों के कारण, संकट में डालना चाहता है। और बहुत से लोग तो सीमोल्लंघन करने वाले ही हैं। ○ क्या अज्ञान (कुफ़्र*) का फ़ैसला चाहते हैं? (अल्लाह पर) विश्वास रखने वालों के लि[illegible] ।फ़ैसला

२४ दे॰ तौरात की किताब 'ख़ुरूज' (Exodus) २१ : २३-२५ और [illegible]
२५ अर्थात् इस किताब के द्वारा पिछली समस्त किताबों की [illegible]
(Heavenly Books) की मूल शिक्षाओं को इस कि[illegible]
किताबें आज अपने वास्तविक रूप में नहीं पाई जातीं[illegible]
किताबें काल के चक्र से खोई भी गई हैं। पिछली [illegible]
यही अल्लाह की अन्तिम किताब 'क़ुरआन' [illegible]

* इस का अर्थ आख़िर में लगी [illegible]

مريم مصدقا لما بين يديه من التورىة واتينه الانجيل
فيه هدى ونور ومصدقا لما بين يديه من التورىة و
هدى وموعظة للمتقين ۝ وليحكم اهل الانجيل بما
انزل الله فيه ومن لم يحكم بما انزل الله فاولئك هم
الفسقون ۝ وانزلنا اليك الكتب بالحق مصدقا لما بين
يديه من الكتب ومهيمنا عليه فاحكم بينهم بما انزل
الله ولا تتبع اهواءهم عما جاءك من الحق لكل جعلنا
منكم شرعة ومنهاجا ولو شاء الله لجعلكم امة واحدة و
لكن ليبلوكم في ما اتىكم فاستبقوا الخيرت الى الله مرجعكم
جميعا فينبئكم بما كنتم فيه تختلفون ۝ وان احكم بينهم
بما انزل الله ولا تتبع اهواءهم واحذرهم ان يفتنوك عن
بعض ما انزل الله اليك فان تولوا فاعلم انما يريد الله ان
يصيبهم ببعض ذنوبهم وان كثيرا من الناس لفسقون ۝
افحكم الجاهلية يبغون ومن احسن من الله حكما لقوم
يوقنون ۝ يايها الذين امنوا لا تتخذوا اليهود والنصرى
اولياء بعضهم اولياء بعض ومن يتولهم منكم فانه منهم
ان الله لا يهدي القوم الظلمين ۝ فترى الذين في قلوبهم

करने वाला कौन (हो सकता) है ? ○

हे ईमान* लाने वालो ! तुम यहूदियों* और ईसाइयों* को (अपना) मित्र न बनाओ ! ये आपस में एक-दूसरे के मित्र हैं। और जो कोई तुम में उन को मित्र बनायेगा, वह उन्हीं में से होगा। निस्सन्देह अल्लाह ज़ुल्म करने वालों को (सीधा) रास्ता नहीं दिखाता। ○

तो तुम देखते हो कि जिन लोगों के दिलों में (निफ़ाक़* का) रोग है वे दौड़ कर उन में मिल जाते हैं, कहते हैं : हमें भय है कि कहीं हम पर कोई गर्दिश (विपत्ति) न आ पड़े। हो सकता है कि जल्द ही अल्लाह (तुम्हारी) जीत कर दे, या उस की ओर से कोई और बात ज़ाहिर हो[१६]। और ये लोग जो-कुछ अपने जी में छिपाये हुये हैं उस पर (बहुत) पछताने लगें। ○ और (तब) ईमान* लाने वाले कहेंगे : क्या यही वे लोग हैं जिन्हों ने अल्लाह की कड़ी-कड़ी क़समें खाई थीं कि हम तुम्हारे साथ हैं ? — इन का किया-धरा सब अकारथ गया, और ये घाटे में पड़ कर रह गये। ○

हे ईमान* लाने वालो ! जो कोई तुम में से अपने दीन* से फिरेगा, तो (जान ले कि) आगे अल्लाह ऐसे लोग लायेगा कि उन से उसे प्रेम होगा और उन से उन्हें प्रेम होगा, ईमान* वालों पर नर्म, काफ़िरों* पर सख़्त होंगे,[१७] अल्लाह की राह में जिहाद* करेंगे, और किसी मलामत करने वाले की मलामत से न डरेंगे। यह अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसे चाहता है देता है अल्लाह बड़ी समाई वाला और (सब-कुछ) जानने वाला है। ○

तुम्हारे मित्र तो केवल अल्लाह और उस के रसूल* और ईमान* वाले लोग हैं, जो नमाज़* क़ायम रखते और ज़कात* देते हैं, और वे (अल्लाह के आगे) झुकने वाले हैं। ○ और जो कोई अल्लाह और उस के रसूल* और ईमान* लाने वालों को अपना मित्र बनाये, तो (वह जान लेगा कि) अल्लाह ही का गरोह प्रभुत्व प्राप्त करने वाला है। ○

हे ईमान* लाने वालो ! तुम से पहले जिन को किताब* दी गई थी, जिन्हों ने तुम्हारे दीन* को हँसी और खेल बना लिया है उन्हें, और काफ़िरों* को अपना मित्र न बनाओ। और अल्लाह की अवज्ञा से बचो और उस की ना-ख़ुशी से डरते रहो यदि तुम (वास्तव में) ईमान* वाले हो। ○ जब तुम नमाज़* के लिए (लोगों को) पुकारते हो तो वे उसे हँसी और खेल बनाते हैं। यह इस लिए कि वे ऐसे लोग हैं जो बुद्धि से काम नहीं लेते। ○ कहो : हे किताब वालो* ! क्या इस के सिवा हमारी कोई और बात तुम को बुरी लगती है कि हम अल्लाह

---

१६ यह बात ज़ाहिर हो कर रही। इन मुनाफ़िक़ों* की मित्रता मदीने के यहूदियों* और मक्का के मुश्रिकों* से थी। मुसलमानों को मक्का पर विजय प्राप्त हुई, और यहूदियों को देश निकाला दिया गया।

१७ अर्थात् धर्म-विरोधियों के मुक़ाबिले में वे चट्टान हैं, उन्हें किसी तरह धर्म-पथ से विचलित नहीं किया जा सकता।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

مَرَضٌ يُسَارِعُونَ فِيهِمْ يَقُولُونَ نَخْشَىٰ أَن تُصِيبَنَا دَائِرَةٌ
فَعَسَى اللَّهُ أَن يَأْتِيَ بِالْفَتْحِ أَوْ أَمْرٍ مِّنْ عِندِهِ فَيُصْبِحُوا عَلَىٰ
مَا أَسَرُّوا فِي أَنفُسِهِمْ نَادِمِينَ ۝ وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا
أَهَٰؤُلَاءِ الَّذِينَ أَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ إِنَّهُمْ لَمَعَكُمْ
حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَأَصْبَحُوا خَاسِرِينَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَن
يَرْتَدَّ مِنكُمْ عَن دِينِهِ فَسَوْفَ يَأْتِي اللَّهُ بِقَوْمٍ يُحِبُّهُمْ وَ
يُحِبُّونَهُ أَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ أَعِزَّةٍ عَلَى الْكَافِرِينَ يُجَاهِدُونَ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَخَافُونَ لَوْمَةَ لَائِمٍ ذَٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ
يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝ إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ
وَالَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَ
هُمْ رَاكِعُونَ ۝ وَمَن يَتَوَلَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا فَإِنَّ
حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْغَالِبُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِينَ
اتَّخَذُوا دِينَكُمْ هُزُوًا وَلَعِبًا مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِن
قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ أَوْلِيَاءَ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ۝
وَإِذَا نَادَيْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ اتَّخَذُوهَا هُزُوًا وَلَعِبًا ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ
قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُونَ ۝ قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ هَلْ تَنقِمُونَ مِنَّا إِلَّا
أَنْ آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنزِلَ مِن قَبْلُ وَأَنَّ أَكْثَرَكُمْ

पर और उस (किताब*) पर ईमान* लाये जो हमारी ओर उतारी गई और जो (इस से) पहले उतारी जा चुकी है और यह कि तुम में से बहुतेरे मर्यादा का उल्लंघन करने वाले हैं। ○ कहो : क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि अल्लाह के यहाँ इस के मुक़ाबिले में बदतर (निकृष्टतर) बदला पाने वाले कौन हैं? वे जिन पर अल्लाह ने लानत की, और जिन पर (उस का) ग़ज़ब (प्रकोप) हुआ। और जिन में से बन्दर और सुअर बनाये गये, और जिन्हों ने ताग़ूत* की बन्दगी की। ऐसे लोगों का दर्जा भी बहुत बुरा है और सीधे (और सहज) मार्ग से भी वे बहुत अधिक भटक गये हैं। ○ ६०

जब ये तुम्हारे पास आते हैं, तो कहते हैं : हम ईमान* लाये; हालांकि कुफ़्र* ही लिये हुये आये थे और उसी को लिये हुये चले गये; जो-कुछ ये छिपाते हैं, अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है। ○ तुम देखते हो कि उन में बहुत से दौड़-दौड़ कर गुनाह और ज़्यादती के काम और हराम खाने पर गिरते हैं। क्या ही बुरा काम है जो ये कर रहे हैं। ○ इन के रब्बानी* (धर्माधिकारी) और धर्म-ज्ञाता इन्हें गुनाह की बात बकने और हराम खाने से क्यों नहीं रोकते? क्या ही बुरे काम ये कर रहे हैं। ○

यहूदी* लोग कहते हैं : अल्लाह का हाथ बँधा हुआ है। इन्हीं के हाथ बाँधे जायें, और लानत (फिटकार) है इन पर, उस के कारण जो बकवास ये करते हैं। उस के तो दोनों हाथ खुले हुये हैं। वह जिस तरह चाहता है ख़र्च करता है।

तुम्हारे रब* की ओर से जो-कुछ तुम्हारी ओर उतारा गया है वह इन में से बहुतों की सरकशी और कुफ़्र* को (उलटे) और बढ़ा देगा,[1] (इन के द्रोह के कारण) हम ने इन के बीच क़ियामत* तक के लिए वैमनस्य और द्वेष डाल दिया है। ये जब कभी युद्ध की आग भड़काते हैं, अल्लाह उसे बुझा देता है। ये ज़मीन में फ़साद फैलाने के लिए दौड़े फिरते हैं, और अल्लाह फ़साद फैलाने वालों को पसन्द नहीं करता। ○

यदि किताब वाले* ईमान* लाते और अल्लाह की अवज्ञा से बचते और उस की ना-ख़ुशी से डरते तो हम इन की बुराइयाँ इन से दूर कर देते और इन्हें नेमत* भरी जन्नतों* में पहुँचा देते। ○ यदि ये तौरात* और इञ्जील* को और जो-कुछ इन के रब* की ओर से इन पर उतारा गया है क़ायम रखते, तो (इन पर रोज़ी की वर्षा होती और) इन्हें खाने को मिलता ऊपर से भी और पाँव के नीचे से भी। इन में एक गरोह सीधे रास्ते पर चलने वाला है, परन्तु इन में बहुत से ऐसे हैं कि जो-कुछ करते हैं वह बहुत बुरा है। ○

हे रसूल* तुम्हारे रब* की ओर से तुम पर जो-कुछ उतारा गया है उसे (लोगों तक) पहुँचा दो, यदि ऐसा न किया तो तुम ने उस का सन्देश कुछ नहीं पहुँचाया। अल्लाह तुम्हें

[1]= इस का कारण इन की असत्य-प्रियता और सचाई के प्रति इन के द्वेष-भाव के अतिरिक्त और कुछ नहीं।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

फ़ासिक़ूनَ

فٰسِقُوْنَ ۝ قُلْ هَلْ اُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكَ مَثُوْبَةً عِنْدَ اللّٰهِ
مَنْ لَّعَنَهُ اللّٰهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيْرَ
وَعَبَدَ الطَّاغُوْتَ ۚ اُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ۝
وَاِذَا جَآءُوْكُمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا وَقَدْ دَّخَلُوْا بِالْكُفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوْا
بِهٖ ۚ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا كَانُوْا يَكْتُمُوْنَ ۝ وَتَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ
يُسَارِعُوْنَ فِى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ ۚ لَبِئْسَ مَا
كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ لَوْلَا يَنْهٰهُمُ الرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ عَنْ قَوْلِهِمُ
الْاِثْمَ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ ۚ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ۝ وَقَالَتِ
الْيَهُوْدُ يَدُ اللّٰهِ مَغْلُوْلَةٌ ۚ غُلَّتْ اَيْدِيْهِمْ وَلُعِنُوْا بِمَا قَالُوْا ۘ بَلْ
يَدٰهُ مَبْسُوْطَتٰنِ ۙ يُنْفِقُ كَيْفَ يَشَآءُ ۚ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ
مَّآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۚ وَاَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ
الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۚ كُلَّمَآ اَوْقَدُوْا نَارًا
لِّلْحَرْبِ اَطْفَاَهَا اللّٰهُ ۙ وَيَسْعَوْنَ فِى الْاَرْضِ فَسَادًا ۚ وَاللّٰهُ لَا
يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ۝ وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْكِتٰبِ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا
عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاَدْخَلْنٰهُمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝ وَلَوْ اَنَّهُمْ
اَقَامُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ مِّنْ رَّبِّهِمْ
لَاَكَلُوْا مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ ۚ مِنْهُمْ اُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ ۚ
وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ سَآءَ مَا يَعْمَلُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ
اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۚ وَاِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسٰلَتَهٗ ۚ وَاللّٰهُ
يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ۚ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ۝
قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لَسْتُمْ عَلٰى شَىْءٍ حَتّٰى تُقِيْمُوا التَّوْرٰىةَ وَ
الْاِنْجِيْلَ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۚ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ
مَّآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۚ فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ
الْكٰفِرِيْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِـُٔوْنَ وَ
النَّصٰرٰى مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا

लोगों (की शरारतों) से बचायगा। निस्सन्देह अल्लाह काफ़िर* लोगों को (सफलता की) राह नहीं दिखाता। ○ कह दो: "हे किताब वालो*! तुम किसी बुनियाद पर नहीं हो जब तक कि तौरात* और इञ्जील* को और जो-कुछ तुम्हारे रब* की ओर से तुम्हारी ओर उतारा गया है उसे क़ायम न रखो" और (हे नबी!) तुम्हारे रब* की ओर से तुम पर जो-कुछ उतारा गया है वह अवश्य ही इन में से बहुतों की सरकशी और कुफ़्र* को और अधिक बढ़ा देने वाला है[१९]। तो तुम इन काफ़िर* लोगों पर अफ़सोस न करना। ○ निस्सन्देह वे लोग जो ईमान* लाये हैं (अर्थात् मुस्लिम हैं), और वे जो यहूदी* हुये हैं, और साबई,* और ईसाई* जो कोई भी अल्लाह और अन्तिम दिन[२०] पर ईमान* लाया और अच्छे काम करता रहा तो ऐसे लोगों को न तो कोई भय होगा और न वे दुःखी होंगे[२१]। ○

हम ने बनी इसराईल* से दृढ़ वचन लिया और उन की ओर (बहुत से) रसूल* भेजे। जब भी उन के पास कोई रसूल* वह-कुछ ले कर आया जिस को उन के जी न चाहते थे, तो कितनों को तो उन्हों ७० ने झुठला दिया और कितनों की हत्या करने लगे। ○ और समझा कि (इस अपराध पर) कोई आपदा न आयेगी, इस लिए वे अन्धे और बहरे बन गये। फिर अल्लाह उन पर मेहरबान हुआ, फिर (इस के बाद भी) उन में बहुत से अन्धे और बहरे बन गये। और अल्लाह देखता है जो-कुछ वे करते हैं। ○

निश्चय ही उन लोगों ने कुफ़्र* किया जिन्हों ने कहा कि अल्लाह मरयम का बेटा मसीह ही है; हालांकि मसीह ने (ख़ुद) कहा था: हे बनी इसराईल*! अल्लाह की इबादत* करो, जो मेरा रब* भी है और तुम्हारा रब* भी। जो कोई अल्लाह के साथ (किसी को) शरीक करेगा, उस पर अल्लाह ने जन्नत* हराम कर दी है। और उस का ठिकाना आग (दोज़ख़*) है। और ज़ालिमों का कोई सहायक नहीं। ○

निश्चय ही उन लोगों ने कुफ़्र* किया जिन्हों ने कहा: "अल्लाह तो तीन में का एक है;"[२२] हालांकि अकेले इलाह*(पूज्य) के सिवा कोई इलाह* नहीं है। जो-कुछ ये कहते हैं यदि उस से बाज़ न आये, तो इन लोगों को जिन्हों ने कुफ़्र* किया है दुःख देने वाला अज़ाब घेर आयेगा। ○ क्या ये लोग अल्लाह के आगे तौबः* नहीं करेंगे और उस से क्षमा नहीं माँगेंगे जब कि अल्लाह

१६ दे० फुट नोट १६।
२० दे० सूरः अल बक़रः फुट नोट ५।
२१ दे० सूरः अल-बक़रः फुट नोट १०।
२२ दे० सूरः अन्-निसा फुट नोट ६४।

* इस का अर्थ आखिर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

[illegible]

बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है। ○

मरयम का बेटा मसीह कुछ नहीं बस एक रसूल* है, उस से पहले भी (उस-जैसे बहुत से) रसूल* गुज़र चुके हैं। उस की माता बहुत ही सच्ची (पुण्यवती महिला) थी। दोनों भोजन करते थे। देखो हम कैसे उन के लिए आयतें* (खोल-खोल कर) बयान करते हैं, फिर देखो ये कहाँ से उन्हें भटके चले जा रहे हैं। ○

कह दो : क्या तुम अल्लाह के सिवा उसे पूजते हो जो तुम्हारा न कुछ बिगाड़ सकता है और न बना सकता है? और अल्लाह ही है जो (सब कुछ) सुनने और जानने वाला है। ○ कह दो : हे किताब वालो*! अपने दीन* में नाहक़ हद से न बढ़ो,'' और उन लोगों की (तुच्छ) इच्छाओं का पालन न करो जो इस से पहले ख़ुद गुमराह (पथ भ्रष्ट) हुये और बहुतों को गुमराह किया, और सीधे (सर्व सुगम) मार्ग से भटक गये''। ○

बनी इसराईल* में से जिन लोगों ने कुफ़्र* किया उन पर दाऊद, और मरयम के बेटे ईसा की ज़बान से लानत (फिटकार) पड़ी। इस कारण कि उन्हों ने नाफ़रमानी की और वे हद से आगे बढ़ने लगे थे। ○ जो बुरा काम वे करते थे उस से वे एक-दूसरे को रोकते नहीं थे। क्या ही बुरा था जो वे कर रहे थे। ○ तुम उन में से बहुतों को देखते हो जो कुफ़्र* करने वालों को मित्र बनाते हैं। क्या ही बुरा है जो-कुछ उन्हों ने अपने लिए आगे भेजा है कि अल्लाह उन पर क्रोधित हुआ और अज़ाब में वे हमेशा पड़े रहेंगे। ○ यदि वे अल्लाह और नबी* पर और उस चीज़ पर ईमान* लाते जो उस (नबी*) की ओर उतारी गई है, तो वे उन (काफ़िरों*) को मित्र न बनाते। परन्तु उन में बहुतेरे सीमोल्लंघन करने वाले ही हैं। ○

तुम ईमान* वालों की दुश्मनी में सब लोगों से बढ़ कर यहूदियों* और शिर्क* करने वालों को पाओगे। और ईमान* लाने वालों के लिए मित्रता में सब से निकट उन लोगों को पाओगे जिन्हों ने कहा कि हम नसारा* हैं। यह इस कारण कि उन में बहुत से उपासक विद्वान और संसार त्यागी सन्त (संन्यासी) पाये जाते हैं, और इस कारण कि वे घमण्ड नहीं करते। ○ [1] जब वे उस (कलाम) को सुनते हैं जो रसूल* (मुहम्मद) की ओर भेजा गया है, तो

[illegible] अर्थात् अत्युक्ति से काम न लो।

[illegible] यह संकेत उन गुमराह व्यक्तियों की ओर है [illegible]

[1] यहाँ से सातवाँ पारा (Part VII) शुरू होता है।

* इन का अर्थ परिशिष्ट में दी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

وإذا سمعوا ما أنزل إلى الرسول ترى أعينهم تفيض من
الدمع مما عرفوا من الحق يقولون ربنا آمنا فاكتبنا مع
الشاهدين ۝ وما لنا لا نؤمن بالله وما جاءنا من الحق و
نطمع أن يدخلنا ربنا مع القوم الصالحين ۝ فأثابهم الله
بما قالوا جنات تجري من تحتها الأنهار خالدين فيها وذلك
جزاء المحسنين ۝ والذين كفروا وكذبوا بآياتنا أولئك
أصحاب الجحيم ۝ يا أيها الذين آمنوا لا تحرموا طيبات ما
أحل الله لكم ولا تعتدوا إن الله لا يحب المعتدين ۝ و
كلوا مما رزقكم الله حلالا طيبا واتقوا الله الذي أنتم به
مؤمنون ۝ لا يؤاخذكم الله باللغو في أيمانكم ولكن يؤاخذكم
بما عقدتم الأيمان فكفارته إطعام عشرة مساكين من
أوسط ما تطعمون أهليكم أو كسوتهم أو تحرير رقبة فمن
لم يجد فصيام ثلاثة أيام ذلك كفارة أيمانكم إذا حلفتم
واحفظوا أيمانكم كذلك يبين الله لكم آياته لعلكم تشكرون ۝
يا أيها الذين آمنوا إنما الخمر والميسر والأنصاب والأزلام
رجس من عمل الشيطان فاجتنبوه لعلكم تفلحون ۝ إنما
يريد الشيطان أن يوقع بينكم العداوة والبغضاء في الخمر

तुम देखते हो कि उन की आँखें आँसुओं से बह पड़ती हैं इस लिए कि उन्हों ने हक़ (सत्य) को पहचान लिया। वे पुकार उठते हैं: हमारे रब* ! हम ईमान* ले आये, तू हमारा नाम (सत्य की) गवाही देने वालों में लिख ले।○ और (वे कहते हैं :) हम अल्लाह पर और जो हक़* (सत्य) हमारे पास पहुँचा है उस पर क्यों न ईमान* लायें, और इस की आशा क्यों न रखें कि हमारा रब* हमें अच्छे लोगों में दाखिल कर ले ? ○ अल्लाह ने उन के ऐसा कहने के बदले में उन्हें ऐसी जन्नतें* प्रदान कीं जिन के नीचे नहरें बहती हैं, जिन में वे सदैव रहेंगे। और यही सत्कर्मी ८४ लोगों का बदला है।○ रहे वे लोग जिन्हों ने कुफ़्र* किया और हमारी आयतों* को झुठलाया, तो ऐसे लोग दोज़ख़* (में जाने) वाले हैं।○

हे ईमान* लाने वालो ! जो पाक चीज़ें अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल* की हैं उसे हराम* न कर लो, और हद से आगे न बढ़ो। निस्सन्देह अल्लाह हद से आगे बढ़ने वालों को पसन्द नहीं करता।○ जो-कुछ अल्लाह ने हलाल* और पाक रोज़ी तुम्हें दी है उसे खाओ, और उस अल्लाह की अवज्ञा से बचो और उस की नाखुशी से डरते रहो जिस पर तुम्हारा ईमान* है।○

तुम्हारी व्यर्थ (और बिना सोचे-समझे खाई हुई) क़समों पर अल्लाह तुम्हें नहीं पकड़ता, परन्तु जो पक्की क़समें तुम खाओ (और फिर उन्हें तोड़ दो तो) उन पर वह तुम्हें पकड़ेगा। तो इस का कफ़्फ़ारः* (प्रायश्चित) दस मुहताजों को औसत दर्जे का वह खाना खिला देना है जो तुम अपने घर वालों को खिलाते हो, या फिर उन्हें कपड़े पहनाना, या एक गरदन छुड़ानी[२५] होगी। और जो न पाये तो (उस के लिए, तीन दिन के रोज़े हैं[२६]। यह तुम्हारी क़समों का कफ़्फ़ारा* (प्रायश्चित) है जब कि तुम क़सम खा बैठो (और फिर उसे तोड़ दो[२७]); अपनी क़समों की हिफ़ाज़त करो। इस तरह अल्लाह अपनी आयतों* को तुम्हारे लिए (खोल-खोल कर) बयान करता है, ताकि तुम कृतज्ञता दिखलाओ।○

हे ईमान* लाने वालो ! यह शराब (मदिरा) और जुआ और ये (देवताओं और बुतों ९० आदि के) थान और पाँसे शैतान के गन्दे काम हैं। इन से बचो ताकि तुम सफल हो सको।○ शैतान* तो यही चाहता है कि शराब और जुए के द्वारा तुम्हारे बीच वैमनस्य और द्वेष पैदा कर दे, और तुम्हें अल्लाह की याद और नमाज़* से रोक दे। फिर क्या तुम (इन चीज़ों से) बाज़ आ जाओगे ?○ अल्लाह का हुक्म मानो और रसूल* का हुक्म मानो, और बचते रहो ! यदि तुम ने मुँह मोड़ा, तो जान लो कि हमारे रसूल* पर केवल स्पष्ट रूप से (सन्देश) पहुँचा

२५ अर्थात् एक ग़ुलाम को आज़ाद करना।

२६ अर्थात् वह तीन दिन के रोज़े रखे।

२७ यदि किसी ने जान-बूझ कर किसी गुनाह की क़सम खा ली हो या अपने ऊपर किसी हलाल* चीज़ को क़सम खा कर हराम* कर लिया हो, तो उसे क़सम तोड़ कर कफ़्फ़ारा* अदा करना चाहिए।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

ويصدكم عن ذكر الله وعن الصلوة فهل انتم منتهون ۝ واطيعوا
الله واطيعوا الرسول واحذروا فان توليتم فاعلموا انما على
رسولنا البلغ المبين ۝ ليس على الذين امنوا وعملوا الصلحت
جناح فيما طعموا اذا ما اتقوا وامنوا وعملوا الصلحت ثم اتقوا
وامنوا ثم اتقوا واحسنوا والله يحب المحسنين ۝ يايها الذين
امنوا ليبلونكم الله بشيء من الصيد تناله ايديكم ورماحكم
ليعلم الله من يخافه بالغيب فمن اعتدى بعد ذلك فله عذاب
اليم ۝ يايها الذين امنوا لا تقتلوا الصيد وانتم حرم ومن
قتله منكم متعمدا فجزاء مثل ما قتل من النعم يحكم به
ذوا عدل منكم هديا بلغ الكعبة او كفارة طعام مسكين او عدل
ذلك صياما ليذوق وبال امره عفا الله عما سلف ومن عاد
فينتقم الله منه والله عزيز ذو انتقام ۝ احل لكم صيد البحر
وطعامه متاعا لكم وللسيارة وحرم عليكم صيد البر ما
دمتم حرما واتقوا الله الذي اليه تحشرون ۝ جعل الله الكعبة
البيت الحرام قيما للناس والشهر الحرام والهدي والقلائد
ذلك لتعلموا ان الله يعلم ما في السموت وما في الارض وان الله
بكل شيء عليم ۝ اعلموا ان الله شديد العقاب وان الله غفور

देने की ज़िम्मेदारी है। ○

जो लोग ईमान* लाये और अच्छे काम किये थे जो-कुछ (इस से पहले) खा-पी चुके उस के लिए उन पर कोई गुनाह नहीं, जब कि वे (आगे के लिए) डरे, और ईमान* लाये, और अच्छे काम किये; फिर डरे, और ईमान* लाये; फिर : डरे, और सत्कर्मी बने। अल्लाह सत्कर्मी लोगों से प्रेम करता है। ○,

हे ईमान* लाने वालो! अल्लाह उस शिकार के द्वारा तुम्हारी अवश्य कुछ परीक्षा लेगा जिस तक तुम्हारे हाथ और नेज़े पहुँच सकेंगे, ताकि अल्लाह यह जान ले कि कौन बिना देखे उस से डरता है[२८]। फिर जो कोई इस के बाद (अल्लाह की निश्चित की हुई) हद से आगे बढ़ा, उस के लिए दुःख देने वाला अज़ाब है। ○

हे ईमान* लाने वालो! जब तुम इहराम* की हालत में हो तो शिकार न मारो। तुम में जो कोई जान–बूझ कर उसे मारे तो जो जानवर उस ने मारा हो मवेशियों में से उसी जैसा एक जानवर — जिस का फ़ैसला तुम में से दो न्यायशील व्यक्ति कर दें — काबः* पहुँचा कर .क़ुरबान किया जाये; या, (इस का) कफ़्फ़ारा* है मुहताजों का खाना (खिलाना), या उस के बराबर रोज़े (रखना), ताकि वह अपने किये का मज़ा चख ले। (पहले) जो हो चुका उसे अल्लाह ने क्षमा कर दिया, परन्तु जिस किसी ने फिर ऐसा किया, तो उस से अल्लाह बदला लेगा। अल्लाह अपार शक्ति का मालिक और (.ज़ुल्म का) बदला लेने वाला है। ○ ६१

तुम्हारे लिए समुद्र का शिकार और उस का खाना हलाल* है, कि वह तुम्हारे लिए उपभोग की सामग्री हो और काफ़िले के लिए भी; परन्तु .ख़ुश्की का शिकार, जब तक तुम इहराम* की हालत में हो तुम पर हराम* किया गया है। अल्लाह की अवज्ञा से बचते और उस की ना-.ख़ुशी से डरते रहो, जिस की ओर तुम (सब) को इकट्ठे हो कर जाना है। ○

अल्लाह ने आदर वाले घर, काबः* को लोगों के (अम्न और इतमीनान के) क़ायम रहने का साधन ठहराया और आदर के महीनों[२९] और .क़ुरबानी के जानवरों को भी जिन के गले में (चिन्ह के रूप में कि ये .क़ुरबानी के जानवर हैं) पट्टे बँधे हों (इस काम में सहायक बना दिया)। यह इस लिए ताकि तुम जान लो कि आसमानों और ज़मीन में जो-कुछ है अल्लाह को सब मालूम है, और यह कि अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। ○ जान रखो कि अल्लाह कड़ी सज़ा देने वाला है, और यह कि अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है। ○ रसूल* पर (सन्देश) पहुँचा देने के सिवा और कोई ज़िम्मेदारी नहीं। और अल्लाह सब जानता

---

२८ इहराम* की हालत में शिकार को वर्जित करके वह यह देखना चाहता है कि कौन अल्लाह से डर कर इस हालत में शिकार करने से अपना हाथ रोके रहता है।

२९ दे० सूरः अल-बक़रः .फ़ुट नोट ५०।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

رَّحِيمٌ ۝ مَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ۝
قُل لَّا يَسْتَوِي الْخَبِيثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ أَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيثِ ۚ فَاتَّقُوا
اللَّهَ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَسْأَلُوا
عَنْ أَشْيَاءَ إِن تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ وَإِن تَسْأَلُوا عَنْهَا حِينَ يُنَزَّلُ الْقُرْآنُ
تُبْدَ لَكُمْ عَفَا اللَّهُ عَنْهَا ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ۝ قَدْ سَأَلَهَا قَوْمٌ مِّن
قَبْلِكُمْ ثُمَّ أَصْبَحُوا بِهَا كَافِرِينَ ۝ مَا جَعَلَ اللَّهُ مِن بَحِيرَةٍ وَلَا سَائِبَةٍ
وَلَا وَصِيلَةٍ وَلَا حَامٍ ۙ وَلَٰكِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ ۖ
وَأَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَىٰ مَا أَنزَلَ اللَّهُ وَ
إِلَى الرَّسُولِ قَالُوا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا ۚ أَوَلَوْ كَانَ آبَاؤُهُمْ
لَا يَعْلَمُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنفُسَكُمْ ۖ
لَا يَضُرُّكُم مَّن ضَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ ۚ إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا
فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ
إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِينَ الْوَصِيَّةِ اثْنَانِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنكُمْ أَوْ
آخَرَانِ مِنْ غَيْرِكُمْ إِنْ أَنتُمْ ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَأَصَابَتْكُم مُّصِيبَةُ
الْمَوْتِ ۚ تَحْبِسُونَهُمَا مِن بَعْدِ الصَّلَاةِ فَيُقْسِمَانِ بِاللَّهِ إِنِ ارْتَبْتُمْ
لَا نَشْتَرِي بِهِ ثَمَنًا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۙ وَلَا نَكْتُمُ شَهَادَةَ اللَّهِ إِنَّا
إِذًا لَّمِنَ الْآثِمِينَ ۝ فَإِنْ عُثِرَ عَلَىٰ أَنَّهُمَا اسْتَحَقَّا إِثْمًا فَآخَرَانِ يَقُومَانِ

है जो-कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो-कुछ छिपाते हो। ○ कह दो : नापाक और पाक बराबर नहीं होते चाहे नापाक की बहुतायत तुम्हें कितनी ही क्यों न भाती हो। अतः हे बुद्धि रखने वालो! अल्लाह की अवज्ञा से बचो और उस की ना-ख़ुशी से डरते रहो, कदाचित् तुम सफलता प्राप्त कर सको। ○ १००

हे ईमान* लाने वालो! ऐसी बातें न पूछो कि यदि वे तुम पर खोल दी जायें, तो तुम्हें बुरी लगें; यदि तुम उन्हें ऐसे समय में पूछोगे जब कि क़ुरआन* उतर रहा है, तो वे तुम पर खोल दी जायेंगी[30]। अल्लाह ने ऐसी बातों को क्षमा कर दिया (आगे के लिए तुम्हें सावधान रहना चाहिए), अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला और सहनशील है। ○ तुम से पहले एक गिरोह ने ऐसी ही बातें पूछी थीं फिर वे उन का इन्कार करने वाले हो गये। ○

अल्लाह ने न कोई 'बहीरः' ठहराया है और न 'साइबः' और न 'वसीलः' और न 'हाम', परन्तु ये काफ़िर लोग अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं[31]। और उन में अधिकतर ऐसे ही हैं जो सोच-समझ से काम नहीं लेते। ○ जब उन से कहा जाता है कि उस चीज़ की ओर आओ जो अल्लाह ने उतारी है और रसूल* की ओर, तो वे कहते हैं : हमारे लिए वही काफ़ी है जिस पर हम ने अपने पूर्वजों को पाया है। क्या यदि उन के पूर्वज कुछ भी न जानते हों, और न (सीधे) रास्ते पर हों तो भी (ये उन्हीं के पीछे चलते रहेंगे)? ○

हे ईमान* लाने वालो! तुम्हें अपनी चिन्ता होनी चाहिए। यदि तुम (सीधे) रास्ते पर हो तो किसी के गुमराह हो जाने से तुम्हारा कुछ नहीं बिगड़ता[32]। अल्लाह की ओर तुम सब

---

३० मतलब यह है कि नबी से व्यर्थ सवाल करने से बचो। ऐसी बात न पूछो जिस से न दीन* का कोई काम रुकता हो और न दुनिया का। दीन* की ज़रूरी बातें तुम्हें बता ही दी गई हैं। जो-कुछ छोड़ दिया गया है, उस में तुम्हारे लिए आसानी रखी गई है। सवाल कर-कर के दीन* के दायरे को तंग करना स्वयं अपने-आप पर ज़ुल्म करना है।*

३१ अरब के मुश्रिक लोग अपने बुतों के नाम पर जानवर छोड़ते थे। फिर न वे उन से कोई काम लेते और न उन्हें ज़ब्ह करते। 'बहीरः' उस ऊँटनी को कहते थे जो पाँच बच्चे दे चुकी हो और उस का अन्तिम बच्चा नर पैदा हुआ हो। उस का कान फाड़ कर उसे बुतों के नाम पर छोड़ देते थे। फिर न तो कोई उस का दूध पी सकता था और न उसे सवारी आदि के कामों में ला सकता था।*

'साइबः'—उस ऊँट या ऊँटनी को कहते थे जिसे किसी मन्नत के पूरा होने पर या किसी ख़तरे से बच जाने या किसी बीमारी से अच्छे होने पर बुतों के नाम पर छोड़ते थे। इसी प्रकार उस ऊँटनी को भी वे छोड़ देते थे जिस ने दस बच्चे दिये हों और दसों मादा हों।

'वसीलः'—बकरी का पहला बच्चा यदि नर होता, तो उसे बुतों के नाम पर ज़ब्ह कर देते थे, और यदि पहली बार मादा बच्चा देती तो उसे अपने पास रहने देते थे। यदि नर और मादा एक साथ पैदा होते तो नर को ज़ब्ह नहीं करते थे बल्कि उसे बुतों के नाम पर छोड़ देते थे और उसे वसीलः कहा जाता था।

'हाम'—जिस ऊँट की नस्ल से दस बच्चे पैदा हो जाते उसे छोड़ देते थे। उसे हाम कहा जाता था। मुश्रिकों ने ये सब-कुछ स्वयं गढ़ लिया था, अल्लाह ने उन्हें इन बातों का कोई हुक्म नहीं दिया था।*

३२ अर्थात् किसी दूसरे की गुमराही से तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगड़ेगा।

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

مَقَامَهُمَا مِنَ الَّذِينَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْأَوْلَيٰنِ فَيُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ
لَشَهَادَتُنَا أَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا وَمَا اعْتَدَيْنَا ۖ إِنَّا إِذًا لَّمِنَ
الظّٰلِمِينَ ۞ ذٰلِكَ أَدْنٰى أَنْ يَأْتُوا بِالشَّهَادَةِ عَلٰى وَجْهِهَا أَوْ يَخَافُوا
أَنْ تُرَدَّ أَيْمَانٌ بَعْدَ أَيْمَانِهِمْ ۗ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاسْمَعُوا ۗ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي
الْقَوْمَ الْفٰسِقِينَ ۞ يَوْمَ يَجْمَعُ اللّٰهُ الرُّسُلَ فَيَقُولُ مَاذَا أُجِبْتُمْ ۖ
قَالُوا لَا عِلْمَ لَنَا ۖ إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ۞ إِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيسَى
ابْنَ مَرْيَمَ اذْكُرْ نِعْمَتِي عَلَيْكَ وَعَلٰى وَالِدَتِكَ إِذْ أَيَّدْتُكَ بِرُوحِ
الْقُدُسِ تُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا ۖ وَإِذْ عَلَّمْتُكَ الْكِتٰبَ وَ
الْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْإِنْجِيلَ ۖ وَإِذْ تَخْلُقُ مِنَ الطِّينِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ
بِإِذْنِي فَتَنْفُخُ فِيهَا فَتَكُونُ طَيْرًا بِإِذْنِي ۖ وَتُبْرِئُ الْأَكْمَهَ وَالْأَبْرَصَ
بِإِذْنِي ۖ وَإِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتٰى بِإِذْنِي ۖ وَإِذْ كَفَفْتُ بَنِي إِسْرَائِيلَ عَنْكَ
إِذْ جِئْتَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ إِنْ هٰذَا إِلَّا سِحْرٌ
مُبِينٌ ۞ وَإِذْ أَوْحَيْتُ إِلَى الْحَوَارِيِّينَ أَنْ آمِنُوا بِي وَبِرَسُولِي ۚ
قَالُوا آمَنَّا وَاشْهَدْ بِأَنَّنَا مُسْلِمُونَ ۞ إِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ
يٰعِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيعُ رَبُّكَ أَنْ يُنَزِّلَ عَلَيْنَا مَائِدَةً
مِنَ السَّمَاءِ ۖ قَالَ اتَّقُوا اللّٰهَ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۞ قَالُوا نُرِيدُ أَنْ
نَأْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ قُلُوبُنَا وَنَعْلَمَ أَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُونَ

को लौट कर जाना है; फिर वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम करते रहे हो।○

हे ईमान* लाने वालो! जब तुम में किसी की मृत्यु का समय आ जाये (और वह वसीयत करना चाहे) तो वसीयत के समय तुम में से दो न्यायप्रिय व्यक्ति गवाह हों, या तुम्हारे सिवा दो दूसरे (गवाह) हों, यदि तुम कहीं सफ़र में गये हो और मौत की मुसीबत तुम्हें आ पहुँचे। यदि तुम्हें कोई सन्देह हो तो नमाज़* के बाद उन दोनों (गवाहों) को रोक लो, वे अल्लाह की क़सम खायें कि हम किसी मूल्य पर भी (अपनी क़समों का) सौदा करने वाले नहीं हैं, चाहे कोई नातेदार ही क्यों न हो (हम उस के लिए झूठी गवाही देने वाले नहीं), हम अल्लाह की गवाही नहीं छिपाते, यदि ऐसा किया तो हम गुनाहगारों में शामिल होंगे।○ फिर यदि पता चल जाये कि उन दोनों ने (झूठ बोल कर) अपने-आप को गुनाहगार कर लिया, तो उन की जगह दूसरे दो (गवाह) उन में से खड़े हों जिन का हक़ पिछले दोनों (गवाहों) ने मारना चाहा था, फिर वे अल्लाह की क़सम खायें कि हम दोनों की गवाही उन दोनों (गवाहों) की गवाही से अधिक सच्ची है और हम ने (गवाही में) कोई ज़्यादती नहीं की है, यदि हम ऐसा करें तो ज़ालिमों में शामिल होंगे।○ इस तरीक़े से अधिक आशा की जा सकती है कि (लोग) ठीक-ठीक गवाही देंगे या डरेंगे कि उन की क़समों के बाद (दूसरों की) क़समें ली जायेंगी। अल्लाह की अवज्ञा से बचो और उस की ना-ख़ुशी से डरते रहो और सुनो। अल्लाह सीमोल्लंघन करने वालों को (सीधी) राह नहीं दिखाता।○

जिस दिन अल्लाह रसूलों* को इकट्ठा करेगा, फिर कहेगा: तुम्हें (लोगों की ओर से) क्या जवाब मिला था? वे कहेंगे: हमें कुछ मालूम नहीं[11]। तू ही छिपी बातों का जानने वाला है।○ जब अल्लाह कहेगा: हे मरयम के बेटे ईसा! मेरे उस एहसान को याद करो जो मैं ने तुम पर और तेरी माता पर किया है; जब कि मैं ने 'रूहुल्क़ुदुस'* (पवित्र-आत्मा) से तेरी सहायता की, तू पालने में भी लोगों से बात करता था और बड़ी आयु को प्राप्त हो कर भी; और जब कि मैं ने तुझे किताब* और हिकमत* और तौरात* और इंजील* की शिक्षा दी; और जब कि तू मेरे हुक्म से मिट्टी से चिड़िया जैसी आकृति बनाता था फिर उस में फूँक मारता था तो वह मेरे हुक्म से चिड़िया बन जाती थी, और तू मेरे हुक्म से जन्म-जात अन्धे और कोढ़ी को अच्छा करता था; और जब कि तू मेरे हुक्म से मुरदों को निकालता था,[12] और जब कि मैं ने तुझ से बनी इसराईल* को रोका जब कि तू उन के पास खुली निशानियाँ ले कर पहुँचा

---

११ अर्थात् तुम ने जो लोगों को सच्चे दीन* की ओर बुलाया था उस का लोगों ने क्या जवाब दिया! और तुम्हारे बाद उन्होंने क्या किया, यह हमें नहीं मालूम।

१२ अर्थात् मौत की हालत से निकाल कर उन्हें जीवित करता था।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

عَلَيْهَا مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ۝ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اَنْزِلْ
عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوْنُ لَنَا عِيْدًا لِّاَوَّلِنَا وَاٰخِرِنَا وَاٰيَةً مِّنْكَ
وَارْزُقْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝ قَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ فَمَنْ
يَّكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ فَاِنِّيْٓ اُعَذِّبُهٗ عَذَابًا لَّآ اُعَذِّبُهٗٓ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝
وَاِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِيْ وَاُمِّيَ
اِلٰهَيْنِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۗ قَالَ سُبْحٰنَكَ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ اَنْ اَقُوْلَ مَا لَيْسَ لِيْ
بِحَقٍّ ۗ اِنْ كُنْتُ قُلْتُهٗ فَقَدْ عَلِمْتَهٗ ۗ تَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ وَلَآ اَعْلَمُ مَا فِيْ
نَفْسِكَ ۗ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ۝ مَا قُلْتُ لَهُمْ اِلَّا مَآ اَمَرْتَنِيْ بِهٖٓ اَنِ
اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا مَّا دُمْتُ فِيْهِمْ ۚ فَلَمَّا
تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ ۗ وَاَنْتَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝
اِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۚ وَاِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَاِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝
قَالَ اللّٰهُ هٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصّٰدِقِيْنَ صِدْقُهُمْ ۗ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ
تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۗ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ۗ ذٰلِكَ الْفَوْزُ
الْعَظِيْمُ ۝ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا فِيْهِنَّ ۗ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝

था, तो उन में जो लोग काफ़िर* थे उन्हों ने कहा था : यह तो खुले जादू के सिवा कुछ भी नहीं है;○ (११०) और जब कि मैं ने हवारियों* के दिल में डाला कि मुझ पर और मेरे रसूल* पर ईमान* लाओ, उन्हों ने कहा : हम ईमान* लाये। गवाह रहो कि हम मुस्लिम* हैं।○ याद करो जब हवारियों* ने कहा : हे मरयम के बेटे, ईसा ! क्या तुम्हारा रब* हम पर आसमान से खाने से भरा दस्तरख़ान उतार सकता है ? उस ने कहा : अल्लाह से डरो यदि तुम ईमान* वाले हो।○ वे बोले : हम (तो बस यह) चाहते हैं कि उस में से खायें, और हमारे दिलों को इतमीनान हो जायें और हम जान लें कि तू ने हम से (जो-कुछ कहा है) सच कहा है, और हम उस पर गवाह हों।○ मरयम के बेटे, ईसा ने कहा : हे अल्लाह ! हमारे रब* ! हम पर आसमान से खाने से भरा दस्तरख़ान उतार, कि यह हमारे लिए, हमारे अगलों और पिछलों के लिए ईद (उत्सव), और तेरी ओर से एक निशानी हो। हमें रोज़ी दे और तू सब से अच्छा रोज़ी देने वाला है।○ अल्लाह ने कहा : निश्चय ही मैं उसे तुम पर उतारने वाला हूँ, परन्तु इस के बाद जो कोई तुम में कुफ़्र* करेगा, तो मैं अवश्य उसे ऐसा अज़ाब दूँगा जो संसार में किसी को न दिया होगा।○ (११५) जब अल्लाह (क़ियामत* के दिन) कहेगा : हे मरयम के बेटे, ईसा ! क्या तू ने लोगों से कहा था कि अल्लाह के सिवा दो इलाह* (पूज्य) मुझे और मेरी माता को बना लो³⁵ ? वह कहेगा : तू महिमावान् है ! मुझ से यह नहीं हो सकता कि ऐसी बात कहूँ जिस का मुझे कुछ भी हक़ नहीं। यदि मैं यह कहता, तो तुझे यह मालूम होता। तू जानता है जो-कुछ मेरे जी में है, और मैं नहीं जानता जो-कुछ तेरे जी में है। तू ही छिपी बातों का बहुत जानने वाला है।○ मैं ने उन से उस के सिवा और कुछ नहीं कहा जिस का तू ने मुझे हुक्म दिया था, यह कि अल्लाह की इबादत* करो, जो मेरा भी रब* है और तुम्हारा भी रब* है, मैं जब तक उन में रहा उन की ख़बर रखता रहा, जब तू ने मुझे वापस बुला लिया तो तू उन का निरीक्षक था। तू हर चीज़ की पूरी ख़बर रखने वाला है।○ यदि तू उन्हें अज़ाब दे, तो वे तो तेरे बन्दे ही हैं, और यदि तू उन्हें क्षमा कर दे तो तू अपार शक्ति का मालिक और हिकमत* वाला है।○ अल्लाह कहेगा : यह वह दिन है कि सच्चों को उन की सच्चाई काम आयेगी, उन के लिए बाग़ हैं जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, जहाँ वे सदैव रहेंगे, अल्लाह उन से राज़ी हुआ, और वे उस से राज़ी हुये। यही बड़ी सफलता है।○

आसमान और ज़मीन का राज्य और जो-कुछ उन के बीच है सब अल्लाह ही का है और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला (सर्व-शक्तिमान्) है।○ (१२०)

---

३५ ईसाइयों ने अल्लाह के साथ हज़रत मसीह अ० और 'रूहुल्क़ुदुस'* ही को ख़ुदा बनाने पर बस नहीं किया बल्कि हज़रत मसीह अ० की माता हज़रत मरयम को भी ख़ुदा बना लिया। हालाँकि बाइबिल (Bible) से इस के लिए कोई सुबूत भी नहीं पेश किया जा सकता। हज़रत मसीह अ० के तीन सौ वर्ष के बाद ईसाई-जगत् में इस कल्पना ने जन्म लिया कि मसीह के साथ उन की माता मरयम का स्थान भी मनुष्य के स्थान से उच्च है। अन्त में उन्हें भी ईसाइयों ने सब से बड़ी देवी बना लिया।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

६—अल-अनआम

(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः* में एक जगह (आयत १३६—१५०) कुछ मवेशियों (अनआम) के हराम* होने और कुछ के हलाल* होने के बारे में अरब मुशिरकों* के अन्ध-विश्वासों (Supertitions) का खण्डन किया गया है। इस सम्पर्क से इस सूरः* का नाम 'अल–अनआम' रखा गया है। इस्लाम* 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) का धर्म है; वह 'तौहीद' ही को मनुष्य के व्यवहारिक जीवन का मूल आधार ठहराता है। इस्लाम* में शिर्क* (सहवाद अथवा अनेकेश्वरवाद) की कोई गुञ्जाइश नहीं है। इसी लिए वह जीवन में पाये जाने वाले समस्त 'मुशिरकाना' अथवा सहवाद सम्बन्धी आचार-विचार तथा व्यवहार का उन्मूलन करता है। इस प्रकार सूरः का यह नाम 'तौहीद' (Divine Unity) और व्यवहारिक जीवन (Practical Life) से 'तौहीद' का जो सम्बन्ध है, दोनों को ज़ाहिर कर रहा है।

उतरने का समय (*The date of Revelation*)

यह सूरः पूरी-की-पूरी एक ही बार में उतरी है। जिस रात यह सूरः उतरी है। उसी रात को नबी सल्ल० ने इसे लिखवा दिया है। जिस समय यह सूरः उतर रही थी आप (सल्ल०) ऊँटनी पर सवार थे और बोझ के कारण ऐसा मालूम हो रहा था कि उस की हड्डियां टूट जायेंगी। सूरः के अध्ययन से मालूम होता है कि यह सूरः नबी सल्ल० के मक्की जीवन के अन्तिम समय में उतरी है।

किस परिस्थिति में उतरी

इस सूरः के उतरने के समय नबी सल्ल० को इस्लाम* का प्रचार करते हुये १२ वर्ष बीत चुके थे। 'क़ुरैश' का ज़ुल्म और उन का वैमनस्य हद से आगे बढ़ चुका था। मुसलमानों की एक बड़ी संख्या उन के अत्याचार से तंग आ कर देश छोड़ चुकी थी। *और 'हबशः' (Abyssinia) में जा कर निवास ग्रहण कर लिया था।* नबी सल्ल० की कोशिशों के फलस्वरूप मक्का और मक्का के पास-पड़ोस के क़बीलों में से अच्छे लोग निरन्तर इस्लाम* क़बूल करते जा रहे थे; परन्तु सामूहिक रूप से आप (सल्ल०) की जाति के लोग इस्लाम* का विरोध ही कर रहे थे। जो कोई व्यक्ति ईमान* लाता उसे शारीरिक कष्टों और जाति वालों की डाँट-फटकार के अतिरिक्त सामाजिक एवं आर्थिक बाईकाट के कष्ट भी सहन करने पड़ते थे। इसी अन्धकारमय परिस्थिति में 'यसरिब' (मदीना) के क़बीले 'औस' और 'ख़ज़रज' के कुछ प्रमुख व्यक्ति *न केवल यह कि मक्का आ कर नबी सल्ल० पर ईमान* ला चुके थे* बल्कि उन्हों ने आप (सल्ल०) को इस बात का दृढ़ वचन भी दिया था कि वे प्रत्येक अवस्था में आप (सल्ल०) का साथ देंगे। मदीना में इस्लाम* बिना किसी रोक-टोक के फैल रहा था परन्तु इस्लाम* के भविष्य के बारे में अभी निश्चय पूर्वक कोई बात नहीं कही जा सकती थी।

* *इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

केन्द्रीय विषय तथा सम्पर्क

इस सूरः का केन्द्रीय विषय 'तौहीद'* अथवा एकेश्वरवाद (Divine Unity) है। दूसरी समस्त वार्तायें सूरः के इसी केन्द्रीय विषय से सम्पर्क रखती हैं। इस सूरः से सूरतों का एक नया सिलसिला (व्यवस्थित क्रम) शुरू होता है। सूरतों का पहला क्रम जो सूरः अल-फ़ातिहः से शुरू हुआ था, सूरः अल-माइदः पर समाप्त हो जाता है। सूरः अल-अनआम का मूल सम्बन्ध अल-माइदः से नहीं बल्कि सूरः अल-फ़ातिहः से है। परन्तु इस का यह अर्थ नहीं होता कि इस सूरः का अपनी पिछली सूरः से कोई सम्पर्क नहीं है। गत सूरः ईसाइयों* के मुशरिकाना (बहुदेववाद युक्त) मतों का खण्डन करती हुई समाप्त हुई थी। प्रस्तुत सूरः 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) के साथ आरम्भ हो रही है।

वार्तायें

यह सूरः सूरः अन-नह्ल से मिलती-जुलती है। इस सूरः में शिर्क* का खण्डन किया गया और लोगों को एक ईश्वर की ओर बुलाया गया। लोगों के सामने यह बात रखी गई कि जीवन केवल यही सांसारिक जीवन ही नहीं है बल्कि आख़िरत* सत्य है। इस के अतिरिक्त अज्ञान-काल के अन्धविश्वासों (Superstition) का तर्कयुक्त खण्डन किया गया और नैतिकता के बड़े-बड़े नियमों की शिक्षा दी गई जिन के आधार पर इस्लामी समाज का निर्माण होता है। लोगों के आक्षेपों की समालोचना की गई।

इस सूरः में उन लोगों के सन्देहों का समाधान किया गया जो चाहते थे कि नबी सल्ल० उन्हें कोई ऐसा चमत्कार दिखायें जिस से उन्हें विश्वास हो जाये कि आप (सल्ल०) लोगों को जो सन्देश पहुँचा रहे हैं वह ईश्वरीय सन्देश ही है। बताया गया कि यह दुनियाँ केवल परीक्षा के लिए है; परोक्ष का पूर्ण ज्ञान तो आख़िरत* ही में प्राप्त हो सकता है। चमत्कार एक अन्तिम चीज़ है; चमत्कार देख लेने के बाद सोचने-समझने और सँभलने की मुहलत बाक़ी नहीं रहती। चमत्कार देख लेने के बाद यदि ये ईमान* नहीं लाते तो फिर उन पर अल्लाह का अज़ाब आ कर रहेगा। इतिहास इस का साक्षी है कि चमत्कार देखने के बाद भी बहुत सी जातियाँ ईमान* न ला सकीं; और अल्लाह के अज़ाब ने उन्हें दुनियाँ से मिटा दिया। यह अल्लाह की दया है कि वह उन्हें चमत्कार के बदले सोच-विचार से काम लेने और सँभलने की मुहलत दे रहा है। फिर अल्लाह का रसूल* 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) की ओर लोगों को बुलाता है जिस के सत्य और तर्क-संगत होने में किसी को सन्देह न होना चाहिए। इस के लिए किसी चमत्कार की आवश्यकता ही क्या है! रसूल* जो क़ुरआन पेश कर रहा है वह स्वयं इस का सब से बड़ा प्रमाण है कि वह किसी मनुष्य की रचना नहीं बल्कि ईश्वरीय-वाणी है। 'तौहीद'* और आख़िरत* की धारणाओं में गहरा सम्पर्क है; रिसालत* हमें इन्हीं दोनों की शिक्षा देती है। यदि आख़िरत* का निषेध कर दिया जाये तो इस से हमारी ईश-कल्पना भी प्रभावित हुये बिना नहीं रह सकती। आख़िरत के इन्कार का अर्थ यह है कि शारीरिक एवं भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के अतिरिक्त इस वर्तमान लोक का कोई वास्तविक उद्देश्य नहीं है; और यह बात अल्लाह की महानता के सर्वथा प्रतिकूल है।

---

* इन का अर्थ अन्त में लगे हुये पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

इस सूरः में नबी सल्ल० और आप (सल्ल०) के साथियों को आश्वासन दिया गया कि यद्यपि उन की कोशिशों का जो वे एक लम्बे समय से कर रहे हैं कोई उत्साह-जनक परिणाम सामने नहीं आ रहा है फिर भी उन्हें दुःखी न होना चाहिए। अल्लाह से कोई चीज़ और किसी व्यक्ति या गरोह का काम छिपा नहीं रह सकता। काफ़िरों* और विरोधी दल के लोगों को समझाने-बुझाने के साथ-साथ उन की अचेतना और कुनीति पर डराया गया।

[illegible]

सूरः* अल-अनआम

(मक्का में उतरी — आयतें* १६५)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
الحمد لله الذي خلق السموت والارض وجعل الظلمت والنور ۵
ثم الذين كفروا بربهم يعدلون ۝ هو الذي خلقكم من طين
ثم قضى اجلا واجل مسمى عنده ثم انتم تمترون ۝ وهو
الله في السموت وفي الارض يعلم سركم وجهركم ويعلم ما تكسبون
وما تاتيهم من اية من ايت ربهم الا كانوا عنها معرضين ۝
فقد كذبوا بالحق لما جاءهم فسوف ياتيهم انبؤا ما كانوا به
يستهزءون ۝ الم يروا كم اهلكنا من قبلهم من قرن مكنهم
في الارض ما لم نمكن لكم وارسلنا السماء عليهم مدرارا و
جعلنا الانهر تجري من تحتهم فاهلكنهم بذنوبهم وانشانا
من بعدهم قرنا اخرين ۝ ولو نزلنا عليك كتبا في قرطاس
فلمسوه بايديهم لقال الذين كفروا ان هذا الا سحر مبين ۝
وقالوا لولا انزل عليه ملك ولو انزلنا ملكا لقضي الامر ثم
لا ينظرون ۝ ولو جعلنه ملكا لجعلنه رجلا وللبسنا عليهم ما
يلبسون ۝ ولقد استهزئ برسل من قبلك فحاق بالذين
سخروا منهم ما كانوا به يستهزءون ۝ قل سيروا في الارض
ثم انظروا كيف كان عاقبة المكذبين ۝ قل لمن ما في السموت
والارض قل لله كتب على نفسه الرحمة ليجمعنكم الى يوم
القيمة لا ريب فيه الذين خسروا انفسهم فهم لا يؤمنون ۝

प्रशंसा (हम्द)* अल्लाह के लिए है, जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, अँधियारियाँ और उजाला¹ बनाया। फिर भी वे लोग जिन्हों ने कुफ़्र* किया है दूसरों को अपने रब* के बराबर ठहरा रहे हैं। ○ वही है जिस ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर (जीवन के लिए) एक समय निश्चित कर दिया। और उस के यहाँ एक मुद्दत और निश्चित है²। फिर भी तुम हो कि सन्देह करते हो! ○ वही अल्लाह है आसमानों में भी और ज़मीन में भी। वह तुम्हारी छिपी और तुम्हारी खुली सब बातें जानता है, और जो-कुछ तुम करते हो वह उसे जानता है। ○

उन के रब* की निशानियों में कोई निशानी भी ऐसी नहीं जो उन के पास आई हो और उन्हों ने उस से मुँह न मोड़ लिया हो। ○ उन्हों ने हक़ (सत्य) को झुठला दिया जब वह उन के पास पहुँचा। जिस चीज़ की वे हँसी उड़ाते रहे हैं जल्द ही उस के बारे ५ में उन्हें कुछ ख़बरें पहुँचेंगी³। ○ क्या उन्हों ने नहीं देखा कि उन से पहले हम कितने ही गरोह (जाति) को हलाक (विनष्ट) कर चुके हैं, उन्हें हम ने ज़मीन में ऐसा प्रभुत्व प्रदान किया था कि वह प्रभुत्व तुम्हें प्रदान नहीं किया, उन पर हम ने आसमान को ख़ूब बरसता छोड़ा, और उन के नीचे नहरें बहाईं। फिर हम ने उन्हें उन के गुनाहों के कारण हलाक (विनष्ट) कर दिया, और उन की जगह दूसरे गिरोह (जाति) को उठाया। ○

(हे नबी*!) यदि हम तुम्हारे ऊपर कोई काग़ज़ में लिखी-लिखाई किताब* भी उतारते, फिर उसे लोग अपने हाथों से छू भी लेते, तब भी जिन लोगों ने कुफ़्र* किया है वे यही कहते :

¹ अँधियारी वास्तव में उजाले के अभाव का दूसरा नाम है। उजाले के अभाव के बहुत से दर्जे हैं। इसी लिए यहाँ अँधियारी बहुवचन और उजाला एकवचन प्रयोग हुआ है। जिस तरह उजाले के मुक़ाबिले में अँधेरे के बहुत से दरजे होते हैं ठीक उसी तरह सत्य तो एक ही है परन्तु उस के मुक़ाबिले में असत्य और गुमराहियाँ बहुत हैं।

² अर्थात् क़ियामत* की घड़ी जब कि अगले-पिछले सब लोग जीवित किये जायेंगे; और उन्हें उन के कर्मों का बदला चुकाया जायेगा।

³ इस में उन सफलताओं की ओर संकेत किया गया है जो हिजरत* के पश्चात् इस्लाम* को प्राप्त हुई हैं; जिन की पहले से किसी को कोई ख़बर न थी।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

وَلَهُ مَا سَكَنَ فِي اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ قُلْ أَغَيْرَ
اللَّهِ أَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ قُلْ
إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَسْلَمَ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝
قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ مَنْ
يُصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهُ وَذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِينُ ۝ وَإِنْ
يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ وَإِنْ يَمْسَسْكَ بِخَيْرٍ
فَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ وَهُوَ الْحَكِيمُ
الْخَبِيرُ ۝ قُلْ أَيُّ شَيْءٍ أَكْبَرُ شَهَادَةً قُلِ اللَّهُ شَهِيدٌ بَيْنِي وَ
بَيْنَكُمْ وَأُوحِيَ إِلَيَّ هَٰذَا الْقُرْآنُ لِأُنْذِرَكُمْ بِهِ وَمَنْ بَلَغَ أَئِنَّكُمْ
لَتَشْهَدُونَ أَنَّ مَعَ اللَّهِ آلِهَةً أُخْرَىٰ قُلْ لَا أَشْهَدُ قُلْ إِنَّمَا
هُوَ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ وَإِنَّنِي بَرِيءٌ مِمَّا تُشْرِكُونَ ۝ الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ
يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمُ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ فَهُمْ
لَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ
بِآيَاتِهِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ۝ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ
نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا أَيْنَ شُرَكَاؤُكُمُ الَّذِينَ كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ۝
ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا وَاللَّهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِينَ ۝
انْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ

यह तो बस खुला हुआ जादू है। ○ कहते हैं: इस (नबी*) पर कोई फ़िरिश्तः* क्यों नहीं उतारा गया! यदि हम ने फ़िरिश्तः* उतारा होता, तब तो फ़ैसला ही हो जाता; फिर उन्हें कोई मुहलत न दी जाती। ○ और यदि उस (रसूल*) को भी फ़िरिश्तः* तजवीज़ करते तो आदमी ही बनाते;[१] और (इस तरह) उन्हें उसी भ्रम में डाल देते जिस भ्रम में वे इस समय पड़े हुये हैं। ○

(हे नबी*!) तुम से पहले भी बहुत से रसूलों* की हँसी उड़ाई गई है, परन्तु जिन लोगों ने हँसी उड़ाई थी उन्हें उसी चीज़ ने आ घेरा जिस की वे हँसी उड़ाते थे। ○ (काफ़िरों* से) कहो: ज़मीन (१) में चल-फिर कर देखो कि झुठलाने वालों का क्या परिणाम हुआ! ○

(उन से) कहो: आसमानों और ज़मीन में जो-कुछ है वह किस का है? कहो: अल्लाह ही का है। उस ने दयालुता को अपने ऊपर ज़रूरी ठहरा लिया है, वह तुम्हें क़ियामत* के दिन अवश्य इकट्ठा करेगा, जिस में कुछ भी सन्देह नहीं है। जिन लोगों ने अपने-आप को घाटे में डाला है वही ईमान* नहीं लायेंगे। ○

रात और दिन के बीच जो-कुछ ठहरा हुआ है सब उसी का है। वह (सब-कुछ) सुनने वाला और जानने वाला है। कहो: क्या मैं अल्लाह के सिवा जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है, किसी और को (अपना) संरक्षक-मित्र बना लूँ, वह खाने को देता है और खाने को लेता नहीं? कह दो: मुझे तो यही हुक्म हुआ है कि मैं सब से पहले अपने को अर्पित कर दूँ। और तुम कभी शिर्क* करने वालों में शामिल न होना। ○ कहो: यदि मैं अपने रब* का हुक्म न मानूँ, तो मैं एक बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ। ○ उस दिन जिस से (१) उस (अज़ाब) को हटा दिया जाये, उस पर (अल्लाह ने बड़ी) दया की। और यही खुली हुई सफलता है। ○ यदि अल्लाह तुम्हें कोई कष्ट पहुँचाये, तो उस के सिवा कोई उसे दूर करने वाला नहीं, और यदि वह तुम्हें कोई भलाई पहुँचाये तो (कोई उस का हाथ पकड़ने वाला नहीं) वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला (सर्वशक्तिमान) है। ○ वही अपने बन्दों पर पूर्ण सत्तावान है, वह हिक्मत* वाला और (हर चीज़ की) ख़बर रखने वाला है। ○

(उन से) कहो: सब से बढ़ कर गवाही किस की है? कहो: अल्लाह मेरे और तुम्हारे बीच गवाह है। और यह क़ुरआन मेरी ओर वह्य* किया गया है, ताकि मैं इस से तुम्हें और जिस किसी को यह पहुँचे सब को सचेत कर दूँ। क्या वास्तव में तुम गवाही देते हो कि अल्लाह

[illegible]

१ [illegible]

* [illegible] की सूची में देखें।

बात न सुनें। नबी सल्ल० जिस मिशन को अदा करने को उठे थे उसे असफल बनाने के लिए सारे हथकण्डे अपनाये गये। सत्य के अनुयायियों को हर प्रकार की तकलीफ़ें पहुंचाई गईं। उन्हें तरह-तरह से सताया गया। यहाँ तक कि उन्हें अपना घर-बार त्याग कर हब्श: (Abyssinia) और मदीना की ओर हिजरत करनी पड़ी। इन आपदाओं और अत्याचारों के बावजूद सत्य का प्रकाश फैलता गया। और सत्य के अनुयायियों की सख्या बढ़ती ही गई। सत्य और असत्य के संघर्ष की लम्बी अवधि में अल्लाह् की ओर से क़ुरआन के जो हिस्से उतरे हैं वे अत्यन्त प्रभावशाली थे। उनमे वह ओज, बल और प्रवाह था जिसकी मिसाल साहित्य-जगत में नहीं मिलती। एक दरिया था जो पूरे वेग से बह रहा था। एक निर्भर था जिसकी जल-धाराओं का नाद लोगों में नवीनतम जीवन का संचार कर रहा था।

क़ुरआन के जो हिस्से इस कालावधि में उतरे उनमें ईमान वालों को उनके कर्तव्यों का स्मरण कराया गया। उन्हे सफलता की शुभ-सूचनायें दी गईं। साहस और आत्म-बल प्रदान किया गया ताकि वे अल्लाह् के मार्ग में हर प्रकार के सङ्कटों और आपदाओं का डट कर मुक़ाबिला कर सकें। इसके साथ-साथ उन लोगों को जो सत्य के विरोधी बनकर खड़े हुये थे चेतावनियाँ दी गई कि वे सत्य को अपनायें। और सत्य के मार्ग में रुकावटें खड़ी करने से बाज़ आ जायें। उन्हें उन प्राचीन जातियो के परिणामो से डराया गया जिनके इतिहास से वे अपरिचित न थे। फिर उन्हें उस बड़े अज़ाब की भी सूचना दी गई जो आख़िरत में अपराधियों के लिए तैयार किया गया है। उनके आक्षेपो का उत्तर देने और उनकी अपनाई हुई नीति को निन्दनीय ठहराने के साथ-साथ नैतिकता एव नागरिकता के उन बड़े-बड़े नियमों को भी उनके समक्ष प्रस्तुत किया गया जिनके आधार पर एक आदर्श-समाज का निर्माण होता है।

नबी सल्ल० और आपके साथी हिजरत करके जब मदीना पहुचे तो वहाँ आपको एक दूसरा वातावरण मिला। मदीना के बहुत से लोग आपके वहाँ पहुँचने से पहले ही मुसलमान हो गये थे। वहाँ इस्लामी राज्य की स्थापना हुई। बहुत-सी नई-नई समस्यायें भी उभर कर सामने आईं। यहूदियों और ईसाइयों से मामला पेश आया। विभिन्न प्रकार के मुनाफ़िक़ों (कपटाचारियों) से निमटना पड़ा। फिर अज्ञान के उपासकों और सत्य के विरोधियो से सशस्त्र मुक़ाबला करने की भी नौबत आई। यह सब-कुछ हुआ परन्तु अल्लाह् का पैग़म्बर और उसके साथी सत्य पर डटे रहे। उन्हे कोई चीज़ सत्य से विचलित न कर सकी। फिर वह समय आया कि पूरे अरब पर सत्य को विजय प्राप्त हुई। और इसकी राहें पैदा हुईं कि अरब से बाहर दूसरे देशों तक क़ुरआन की आवाज़ पहुँच सके। आठ-नौ वर्ष की इस लम्बी अवधि में क़ुरआन के जो हिस्से उतरे हैं उनमे राजनीतिक एव सामाजिक विषयों पर विशेष रूप से प्रकाश डाला गया। उनमें स्पष्ट रूप से यह बात बताई गई कि समाज का संगठन किस प्रकार हो और जीवन के विभिन्न विभागो की व्यवस्था किन नियमों के आधार पर होनी चाहिए। मुनाफ़िक़ों से किस प्रकार निमटा जाये। उन ग़ैर-मुस्लिमो से क्या व्यवहार किया जाये जिन्होने सत्य को स्वीकार नहीं किया परन्तु जो इस्लामी स्टेट (राज्य) के अधीन हैं। यहूदियों और ईसाइयों से किस प्रकार का सम्बन्ध रखा जाये। और उन शत्रुओं के बारे में कौन-सी नीति अपनाई जानी चाहिए जिन से युद्ध हो। और उन धर्म-विरोधियों के प्रति क्या नीति अपनाई जायेगी जिनसे कोई सन्धि और समझौता हो चुका हो।

उपर्युक्त विवेचन से यह बात भली-भाँति स्पष्ट हो जाती है कि इस्लामी आन्दोलन (Islamic Movement) जो नबी सल्ल० के नेतृत्व में चलाया गया था, क़ुरआन के द्वारा

وَمِنْهُمْ مَنْ يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ وَجَعَلْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ
وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا وَإِنْ يَرَوْا كُلَّ آيَةٍ لَا يُؤْمِنُوا بِهَا حَتَّى إِذَا
جَاءُوكَ يُجَادِلُونَكَ يَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ
الْأَوَّلِينَ ۝ وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْأَوْنَ عَنْهُ وَإِنْ يُهْلِكُونَ إِلَّا
أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ۝ وَلَوْ تَرَى إِذْ وُقِفُوا عَلَى النَّارِ فَقَالُوا
يَا لَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِآيَاتِ رَبِّنَا وَنَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ بَلْ
بَدَا لَهُمْ مَا كَانُوا يُخْفُونَ مِنْ قَبْلُ وَلَوْ رُدُّوا لَعَادُوا لِمَا نُهُوا عَنْهُ
وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝ وَقَالُوا إِنْ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ
بِمَبْعُوثِينَ ۝ وَلَوْ تَرَى إِذْ وُقِفُوا عَلَى رَبِّهِمْ قَالَ أَلَيْسَ هَذَا
بِالْحَقِّ قَالُوا بَلَى وَرَبِّنَا قَالَ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ۝
قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِلِقَاءِ اللَّهِ حَتَّى إِذَا جَاءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً
قَالُوا يَا حَسْرَتَنَا عَلَى مَا فَرَّطْنَا فِيهَا وَهُمْ يَحْمِلُونَ أَوْزَارَهُمْ عَلَى
ظُهُورِهِمْ أَلَا سَاءَ مَا يَزِرُونَ ۝ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَعِبٌ وَ
لَهْوٌ وَلَلدَّارُ الْآخِرَةُ خَيْرٌ لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ قَدْ
نَعْلَمُ إِنَّهُ لَيَحْزُنُكَ الَّذِي يَقُولُونَ فَإِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُونَكَ وَلَكِنَّ
الظَّالِمِينَ بِآيَاتِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ ۝ وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِنْ قَبْلِكَ
فَصَبَرُوا عَلَى مَا كُذِّبُوا وَأُوذُوا حَتَّى أَتَاهُمْ نَصْرُنَا وَلَا مُبَدِّلَ

के साथ दूसरे इलाह* (पूज्य) भी हैं? कहो : मैं तो (इस की) गवाही नहीं देता। कहो : वह तो बस अकेला इलाह* (पूज्य) है। और तुम जो शिर्क* करते हो मैं तो उस से विरक्त हूँ (मेरा उस से कोई सम्बन्ध नहीं)। ○

जिन लोगों को हम ने किताब* दी है वे उसे इस तरह पहचानते हैं जैसे अपने बेटों को पहचानते हैं। परन्तु जिन लोगों ने अपने-आप को घाटे में डाला है वही ईमान नहीं लायेंगे। ○ और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ गढ़े[६] या उस की आयतों* को झुठलाये ? निश्चय ही (ऐसे) ज़ालिम लोग कभी सफल नहीं हो सकते। ○

जिस दिन हम उन सब को इकट्ठा करेंगे फिर उन लोगों से जिन्हों ने शिर्क* किया होगा कहेंगे : तुम्हारे ठहराये हुए शरीक (साझी) कहाँ हैं (ईश्वरत्व में) जिन (के शरीक होने) का तुम दावा करते थे? ○ फिर इस के सिवा वे कोई फ़ितनः (उपद्रव) न उठा सकेंगे कि कहेंगे : हमारे रब* ! अल्लाह की क़सम, हम मुश्रिक* न थे। ○ देखो कैसा वे अपने बारे में झूठ बोलने लगे, और जो-कुछ वे गढ़ा करते थे वह सब इन से गुम हो गया[७]। ○

कुछ उन में ऐसे हैं जो तुम्हारी ओर कान लगाते हैं परन्तु हम ने उन के दिलों पर परदे डाल रखे हैं कि वे उसे समझ नहीं सकते, और उन के कानों में डाट रख दी है[८]। चाहे सब निशानियाँ देख लें तब भी वे उन पर ईमान* लाने के नहीं हैं; यहाँ तक कि जब वे तुम्हारे पास आ कर तुम से झगड़ते हैं, तो ये लोग जिन्हों ने कुफ़्र* किया है कहते हैं : यह तो बस कुछ

१५ बे-सनद बातें हैं जो पिछले लोगों से चली आ रही हैं। ○ वे इस से (लोगों को) रोकते हैं और (ख़ुद भी) इस से दूर रहते हैं, वे केवल अपने-आप को तबाही में डाल रहे हैं, यद्यपि उन्हें इस का ज्ञान नहीं है। ○ यदि तुम देखते (तो उन्हें अजीब हाल में पाते) जब वे आग (दोज़ख़*) के पास खड़े किये जायेंगे और कहेंगे : हाय, क्या अच्छी बात हो कि हम फिर (दुनियाँ में) लौटा दिये जायें। और अपने रब* की आयतों* को न झुठलायें बल्कि

---

६ अर्थात् यह दावा करे कि अल्लाह के साथ कुछ दूसरे भी उस के प्रभुत्व में शरीक हैं। यह भी अल्लाह पर आरोप है कि कोई यह कहे कि अल्लाह ने यह हुक्म दिया है कि अमुक व्यक्तियों को ईश्वरीय गुणों से युक्त माना जाये, और उन से ऐसा सम्बन्ध माना जाये जो सम्बन्ध केवल ख़ुदा और बन्दों के बीच पाया जाता है।

७ जो दावा वे किया करते थे वह कुछ भी इन के काम न आया; इन के देवी-देवता सभी गुम हो कर रह गये।

८ स्वाभाविक रूप से प्राकृतिक नियमों के अन्तर्गत संसार में जो-कुछ होता है उसे अल्लाह अपना काम बताता है, क्योंकि प्राकृतिक नियमों का बनाने वाला और उन्हें चलाने वाला वास्तव में वही है। यह एक स्वाभाविक बात है कि जब आदमी हठधर्मी और पक्षपात से काम लेता है और असत्य पर अड़ा रहता है, तो सच्चाई के लिए उस के दिल के द्वार बन्द हो जाते हैं; वह ऐसी चीज़ के मानने से इन्कार कर देता है जो उस की इच्छा के प्रतिकूल हो, फिर तो उस की दशा यह हो जाती है कि वह सब-कुछ सुनने के बाद भी कुछ नहीं सुन पाता। उस के दिल में सच्चाई की कोई बात भी नहीं उतरती।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

رَحْمَةَ أَنَّهُ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوٓءًا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْ بَعْدِهِ وَ
أَصْلَحَ فَأَنَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ وَكَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ وَلِتَسْتَبِينَ
سَبِيلُ الْمُجْرِمِينَ ۝ قُلْ إِنِّي نُهِيتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ
دُونِ اللَّهِ قُلْ لَّآ أَتَّبِعُ أَهْوَآءَكُمْ قَدْ ضَلَلْتُ إِذًا وَّمَآ أَنَا۠ مِنَ
الْمُهْتَدِينَ ۝ قُلْ إِنِّي عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّي وَكَذَّبْتُمْ بِهِ مَا عِنْدِي
مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ يَقُصُّ الْحَقَّ وَهُوَ خَيْرُ الْفَاصِلِينَ ۝
قُلْ لَّوْ أَنَّ عِنْدِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ لَقُضِيَ الْأَمْرُ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَاللَّهُ
أَعْلَمُ بِالظَّالِمِينَ ۝ وَعِنْدَهُ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَآ إِلَّا هُوَ وَيَعْلَمُ مَا
فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَّرَقَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِي ظُلُمَاتِ
الْأَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَّلَا يَابِسٍ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ۝ وَهُوَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُمْ
بِالَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيهِ لِيُقْضَىٰٓ أَجَلٌ مُّسَمًّى
ثُمَّ إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ وَهُوَ الْقَاهِرُ
فَوْقَ عِبَادِهِ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً حَتَّىٰٓ إِذَا جَآءَ أَحَدَكُمُ
الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُونَ ۝ ثُمَّ رُدُّوٓا إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمُ
الْحَقِّ أَلَا لَهُ الْحُكْمُ وَهُوَ أَسْرَعُ الْحَاسِبِينَ ۝ قُلْ مَنْ يُنَجِّيكُمْ
مِّنْ ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُونَهُ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً لَّئِنْ أَنْجَانَا
مِنْ هَٰذِهِ لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ۝ قُلِ اللَّهُ يُنَجِّيكُمْ مِّنْهَا وَمِنْ

वाले और सचेत करने वाले के रूप में ही भेजते हैं। फिर जो कोई ईमान* लाये और सुधर जाये, तो ऐसे लोगों के लिए न तो कोई भय की बात है और न वे कभी दुःखी होंगे। ○ और जिन लोगों ने हमारी आयतों* को झुठलाया उन्हें अज़ाब पहुँच के रहेगा इस लिए कि वे सीमोल्लंघन करते हैं। ○

(हे नबी* !) कह दो : मैं तुम से यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं, और न मैं ग़ैब (परोक्ष की सारी बातें) जानता हूँ; और न मैं तुम से यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता* हूँ। मैं तो बस उसी पर चलता हूँ जो मेरी ओर वह्य* की जाती है। कहो : क्या अन्धा और आँखों वाला दोनों बराबर होते हैं ? क्या तुम सोच-विचार से काम नहीं लेते ? ○

और (हे नबी* !) तुम इस (किताब*) से उन लोगों को सचेत कर दो जिन्हें इस बात का भय है कि वे अपने रब* के पास इकट्ठा किये जायेंगे कि उस के सिवा न तो उन का कोई संरक्षक-मित्र होगा और न कोई सिफ़ारिश करने वाला, ताकि वे (इस चेतावनी से) अल्लाह की अवज्ञा से बचने और उस की ना-ख़ुशी से डरने लग जायें। ○ और जो लोग अपने रब* को प्रातःकाल और सन्ध्या समय पुकारते रहते हैं चाहते हैं कि उस की ख़ुशी हासिल हो ऐसे लोगों को न भगाओ,[14] उन के हिसाब की तुम पर कुछ भी ज़िम्मेदारी नहीं है और न तुम्हारे हिसाब की उन पर कोई ज़िम्मेदारी है, फिर भी यदि तुम उन्हें भगाओगे तो ज़ालिमों में शामिल हो जाओगे। ○ इसी तरह हम ने इन में कुछ (लोगों) को कुछ (लोगों) के द्वारा आज़माइश में डाला है,[15] ताकि वे कहें : क्या यही वे लोग हैं जिन पर हमारे बीच अल्लाह ने एहसान किया है ? क्या अल्लाह उन लोगों से भली-भाँति परिचित नहीं जो कृतज्ञता दिखलाने वाले हैं ? ○ जब तुम्हारे पास वे लोग आयें जो हमारी आयतों* पर ईमान* लाते हैं, तो कहो : तुम पर सलाम है ! तुम्हारे रब* ने दयालुता को अपने ऊपर ज़रूरी ठहरा लिया है, कि तुम में जो कोई नादानी से कोई बुराई कर बैठे फिर तौबः* कर ले और सुधर जाये तो निस्सन्देह अल्लाह बड़ा क्षमा-शील और दया करने वाला है। ○ इस तरह हम अपनी आयतें* खोल-खोल कर बयान करते हैं (ताकि लोग समझें) और ताकि अपराधियों की राह बिल्कुल ज़ाहिर हो जाये। ○

(हे नबी* !) कह दो : मुझे इस से रोका गया है कि मैं उन की इबादत* करूँ जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो। कह दो : मैं तुम्हारी (तुच्छ) इच्छाओं का पालन करने वाला नहीं, यदि मैं ने ऐसा किया तो राह से भटक गया और (सीधी) राह पाने वालों में न रहा। ○ कह दो : मैं अपने रब* की ओर से एक खुली दलील पर हूँ, जब कि तुम ने उसे

14 अर्थात् वे ग़रीब और निर्धन हैं।

15 अर्थात् ग़रीबों और निर्धनों को ईमान* की दौलत दे कर हम ने उन लोगों को आज़माइश में डाला है जिन्हें अपने धन और गौरव का गर्व है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

[illegible]

झुठला दिया है। जिस चीज़ के लिए तुम जल्दी मचा रहे हो वह कोई मेरे पास नहीं है। फ़ैसले का अधिकार तो अल्लाह ही को है। वह हक़ (सत्य) बात बयान करता है और वही सब से अच्छा फ़ैसला करने वाला है। ○ कह दो : जिस की तुम्हें जल्दी पड़ी हुई है कहीं वह चीज़ मेरे अधिकार में होती, तो मेरे और तुम्हारे बीच कब का फ़ैसला हो चुका होता। अल्लाह ज़ालिमों को भली-भाँति जानता है। उसी के पास ग़ैब* (परोक्ष) की कुञ्जियाँ हैं जिन्हें उस के सिवा और कोई नहीं जानता। वह जानता है जो-कुछ भूमि और समुद्र में है। कोई पत्ती नहीं जो गिरे और वह उसे न जानता हो, अँधियारियों में कोई दाना, और कोई भी आर्द्र और शुष्क वस्तु ऐसी नहीं जो एक खुली किताब में (अंकित) न हो। ○ वही है जो रात को तुम्हें (अर्थात् तुम्हारी आत्मा को एक हद तक) ग्रस्त लेता है[१] और दिन को जो-कुछ तुम ने किया उसे जानता है। फिर तुम्हें उस में (अर्थात् दिन में) उठाता है, ताकि (इस प्रकार) ठहराई हुई मुद्दत पूरी हो जाये। फिर उसी की ६० ओर तुम सब को पलट कर जाना है। वह तुम्हें बता देगा जो-कुछ तुम कर रहे हो। ○ उसे अपने बन्दों पर पूर्ण प्रभुत्व प्राप्त है, वह तुम पर रखवाली करने वाले (फ़रिश्ते*) भेजता है, यहाँ तक कि जब तुम में से किसी की मृत्यु (की घड़ी) आती है, तो हमारे भेजे हुये (फ़रिश्ते*) उस (की जान) को ग्रस्त लेते हैं और वे (इस में) कोई कोताही नहीं करते। ○ फिर सब अल्लाह की ओर, जो उन का वास्तविक स्वामी है, लाये जायेंगे। जान लो! फ़ैसले का अधिकार उसी को है और वह बहुत ही तेज़ हिसाब करने वाला है। ○

(उन से) कहो : कौन है जो भूमि और समुद्र की अँधियारियों (अर्थात् मुसीबतों) से तुम्हें छुटकारा देता है? जिसे तुम गिड़गिड़ा-गिड़गिड़ा कर और चुपके-चुपके पुकारते हो कि यदि तू ने इस (संकट) से हमें छुटकारा दिया तो हम अवश्य कृतज्ञ लोगों में से हो जायेंगे। ○ कहो : अल्लाह तुम्हें इस से और हर पीड़ा से छुटकारा देता है फिर तुम (औरों को उस का) शरीक ठहराते हो। ○ कहो : वह इस का सामर्थ्य रखता है कि तुम पर तुम्हारे ऊपर से या तुम्हारे पाँव के नीचे से कोई अज़ाब भेज दे, या तुम्हें टोलियों में बाँट कर परस्पर भिड़ा दे और एक को दूसरे की लड़ाई (एवं क्रूरता) का मज़ा चखाये। देखो हम अपनी आयतों* को किस ६५ प्रकार तरह-तरह से बयान करते हैं कदाचित् वे समझें। ○ तुम्हारी जाति (वालों) ने उसे झुठला दिया, हालाँकि वह सत्य है। कह दो : मैं तुम पर कोई दारोग़ा नहीं हूँ। ○ हर ख़बर (के पूरा होने) का एक निश्चित समय है, तुम जल्द ही जान लोगे। ○

अब ऐसे लोगों को देखो जो हमारी आयतों* पर नुक्ताचीनी करने में लगे हों, तो उन से

१. [illegible] कोई सबल मनुष्य अपने [illegible] कर लेता है [illegible] उस से उस का [illegible] हट जाती है।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

ويعقوب كلا هدينا ونوحا هدينا من قبل ومن ذريته داود و
سليمان وأيوب ويوسف وموسى وهارون وكذلك نجزي المحسنين
وزكريا ويحيى وعيسى وإلياس كل من الصالحين ۝ وإسماعيل
واليسع ويونس ولوطا وكلا فضلنا على العالمين ۝ ومن آبائهم
وذرياتهم وإخوانهم واجتبيناهم وهديناهم إلى صراط مستقيم ۝
ذلك هدى الله يهدي به من يشاء من عباده ولو أشركوا لحبط
عنهم ما كانوا يعملون ۝ أولئك الذين آتيناهم الكتاب والحكم
والنبوة فإن يكفر بها هؤلاء فقد وكلنا بها قوما ليسوا بها
بكافرين ۝ أولئك الذين هدى الله فبهداهم اقتده قل لا
أسألكم عليه أجرا إن هو إلا ذكرى للعالمين ۝ وما قدروا
الله حق قدره إذ قالوا ما أنزل الله على بشر من شيء قل من
أنزل الكتاب الذي جاء به موسى نورا وهدى للناس تجعلونه
قراطيس تبدونها وتخفون كثيرا وعلمتم ما لم تعلموا أنتم و
لا آباؤكم قل الله ثم ذرهم في خوضهم يلعبون ۝ وهذا كتاب
أنزلناه مبارك مصدق الذي بين يديه ولتنذر أم القرى و
من حولها والذين يؤمنون بالآخرة يؤمنون به وهم على
صلاتهم يحافظون ۝ ومن أظلم ممن افترى على الله كذبا

ع

और इसी तरह हम ने इबराहीम को आसमानों और ज़मीन के राज्य दिखाये[२०] ताकि वह विश्वास रखने वालों में से हो जाये : ○ जब रात उस पर छा गई तो उस ने एक तारा देखा । उस ने कहा : यह मेरा रब* है[२१] । परन्तु जब वह डूब गया, तो बोला : डूब जाने वालों से मुझे प्रेम नहीं । ○ फिर जब उस ने चाँद चमकता देखा तो कहा : यह मेरा रब है । परन्तु जब वह (भी) डूब गया तो कहा : यदि मेरा रब* मुझे (सीधा) मार्ग न दिखाये तो मैं भटके हुए लोगों में शामिल हो जाऊँ । ○ फिर जब सूरज को चमकते हुये देखा, तो कहने लगा : यह मेरा रब* है ! यह सब से बड़ा है । फिर जब वह डूब गया तो कहा : हे (मेरी) जाति ! मैं उन से विरक्त हूँ जिन्हें तुम (अल्लाह का) शरीक ठहराते हो । ○ मैं ने तो हर ओर से कट कर अपना रुख़ उस की ओर कर लिया है जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, और मैं शिर्क* करने वालों में से नहीं हूँ । ○ उस की जाति उस से झगड़ने लगी । उस ने कहा : क्या तुम मुझ से अल्लाह के बारे में झगड़ते हो हालांकि उस ने मुझे (सीधा) मार्ग दिखाया है ? मैं उन से नहीं डरता जिन्हें तुम उस का शरीक ठहराते हो, हाँ यदि मेरा रब* कुछ चाहे (तो वह अवश्य हो सकता है) । मेरा रब* हर चीज़ को (अपने) ज्ञान से घेरे हुये है । फिर क्या तुम चेतोगे नहीं ? ○ और मैं तुम्हारे ठहराये हुये शरीकों से कैसे डरूँ जब कि तुम इस बात से नहीं डरते कि तुम ने अल्लाह का शरीक ठहराया है जिस की उस ने तुम पर कोई सनद नहीं उतारी ? अब दोनों फ़रीक़ों में कौन निश्चिन्तता का अधिक अधिकारी है ? (बताओ) यदि तुम जानते हो । ○ जो लोग ईमान* लाये और अपने ईमान* को कुछ ज़ुल्म (शिर्क*) के साथ सम्मिश्रित नहीं किया, उन्हीं लोगों के लिए निश्चिन्तता है; और वही राह पाये हुये लोग हैं । ○

यह है हमारी दलील (तर्क) जो हम ने इबराहीम को उस की जाति (वालों) के मुक़ाबिले में दी थी । हम जिस किसी के चाहते हैं दर्जे ऊँचे कर देते हैं । निस्सन्देह तुम्हारा रब* हिकमत* वाला और सब-कुछ जानने वाला है । ○

और हम ने उसे इसहाक़ और याक़ूब दिये;[२२] हर एक को (सीधा) मार्ग दिखाया— और नूह को हम ने इस से पहले (सीधा) मार्ग दिखाया था; और उस की सन्तान में दाऊद, और सुलैमान, और अय्यूब, और यूसुफ़, और मूसा, और हारून को भी [सीधा मार्ग दिखाया] ।

२० अर्थात् उन्हों ने सूरज, चाँद, तारे आदि अल्लाह की निशानियों को उन लोगों की तरह नहीं देखा जो बुद्धिहीन और ज्ञान के अन्धे होते हैं । उन्हों ने खुली आँखों देख लिया कि सम्पूर्ण जगत अल्लाह का राज्य है । ज़मीन और आसमान की समस्त वस्तुयें उसी के क़ानून में जकड़ी हुई हैं ।

२१ हज़रत इबराहीम अ० ने अपनी जाति के लोगों को समझाने के लिए कहा कि तुम्हारे विश्वास के अनुसार वह मेरा और तुम्हारा रब* है ।

२२ हज़रत इसहाक़ अ० हज़रत इबराहीम अ० के बेटे और हज़रत याक़ूब अ० उन के पोते थे ।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

أَوْ قَالَ أُوحِيَ إِلَيَّ وَلَمْ يُوحَ إِلَيْهِ شَيْءٌ وَمَن قَالَ سَأُنزِلُ مِثْلَ
مَا أَنزَلَ اللَّهُ ۗ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ فِي غَمَرَاتِ الْمَوْتِ وَالْمَلَائِكَةُ
بَاسِطُو أَيْدِيهِمْ أَخْرِجُوا أَنفُسَكُمُ ۖ الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ
بِمَا كُنتُمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنتُمْ عَنْ آيَاتِهِ تَسْتَكْبِرُونَ
وَلَقَدْ جِئْتُمُونَا فُرَادَىٰ كَمَا خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَتَرَكْتُم مَّا خَوَّلْنَاكُمْ
وَرَاءَ ظُهُورِكُمْ ۖ وَمَا نَرَىٰ مَعَكُمْ شُفَعَاءَكُمُ الَّذِينَ زَعَمْتُمْ أَنَّهُمْ
فِيكُمْ شُرَكَاءُ ۚ لَقَد تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنكُم مَّا كُنتُمْ تَزْعُمُونَ
إِنَّ اللَّهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوَىٰ ۖ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ
مِنَ الْحَيِّ ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ ۖ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ فَالِقُ الْإِصْبَاحِ وَجَعَلَ اللَّيْلَ
سَكَنًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ۚ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ وَهُوَ
الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ النُّجُومَ لِتَهْتَدُوا بِهَا فِي ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۗ قَدْ
فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَكُم مِّن نَّفْسٍ
وَاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَمُسْتَوْدَعٌ ۗ قَدْ فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَفْقَهُونَ
وَهُوَ الَّذِي أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ
فَأَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا وَمِنَ النَّخْلِ مِن
طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَجَنَّاتٍ مِّنْ أَعْنَابٍ وَالزَّيْتُونَ وَالرُّمَّانَ
مُشْتَبِهًا وَغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۗ انظُرُوا إِلَىٰ ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ وَيَنْعِهِ ۚ إِنَّ فِي

हम इसी तरह सत्कर्मी लोगों को बदला देते हैं।○ और (उसी की सन्तान से) ज़करीया और यह्या और ईसा और इल्यास को भी (मार्ग दिखाया) वे सब-के-सब अच्छे लोगों में से थे।○ (उसी की सन्तान से) इसमाईल, और अल्यसअ, और यूनुस और लूत को भी (सीधा मार्ग दिखाया)। इन में से हर एक को हम ने (सारे) संसार के लोगों पर बड़ाई दी,○ और उन के पूर्वजों और उन की सन्तान और उन के भाई-बन्धुओं में भी कितनों को (हम ने सम्मानित किया); हम ने उन्हें चुन लिया और उन्हें सीधा मार्ग दिखाया।○ यह अल्लाह का मार्गदर्शन है जिस के साथ वह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है राह दिखाता है। परन्तु यदि उन्हों ने कहीं शिर्क° किया होता, तो उन का सब किया-धरा अकारथ जाता।○ ये वे लोग थे जिन्हें हम ने किताब,° हुक्म° और नुबूवत°[६३] दी थी। अब यदि ये लोग इसे मानने से इन्कार करें, तो (कुछ परवा नहीं) हम ने इस (नेमत) को कुछ ऐसे लोगों को सौंपा है जो इस का इन्कार करने वाले नहीं हैं।○ (हे मुहम्मद !) ये (अगले पैग़म्बर) वे लोग थे जिन्हें अल्लाह ने (सीधी) राह दिखाई, तुम इन्हीं के रास्ते पर चलो। कह दो : मैं तुम से इस (काम) का बदला नहीं माँगता। यह तो बस सारे संसार के लोगों के लिए एक यादिदहानी है।○

उन्हों ने अल्लाह की क़द्र नहीं जानी जैसी क़द्र जाननी चाहिए थी[६४] जब उन्हों ने कहा कि अल्लाह ने किसी मनुष्य पर कुछ नहीं उतारा है। (उन यहूदियों° से) कहो: फिर वह किताब° किस ने उतारी जिसे मूसा ले कर आया, प्रकाश और मार्ग-दर्शन लोगों के लिए, जिसे तुम अलग-अलग पन्नों के रूप में रखते हो जिन्हें दिखाते हो, परन्तु बहुत-कुछ छिपा जाते हो, तुम्हें वह-कुछ सिखाया गया जिसे न तुम जानते थे और न तुम्हारे पूर्वज (उस का कोई ज्ञान रखते थे) ! —कह दो: अल्लाह ने। फिर उन्हें छोड़ दो कि वे अपनी दलील बाज़ियों (कुतर्कों) से खेलते रहें।○ और यह[६५] एक किताब° है जिसे हम ने उतारा है, बरकत वाली (शुभ एवं उपकारी) है, उस की तसदीक़ करने वाली है जो-कुछ कि इस से पहले (उतारा) था। (और इस लिए उतारी गई है) ताकि तुम केन्द्रीय बस्ती[६६] और उस के आस-पास वालों को सचेत करो। जो लोग आख़िरत° पर ईमान° रखते हैं वे इस (किताब°) पर ईमान° लाते हैं, और वे अपनी नमाज़° की (पूरी) ख़बर रखते हैं।○ उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ गढ़े, या कहे कि मुझ पर वह्य° की गई है, हालाँकि उस पर कोई वह्य° न की

६३ हुक्म (हिकमत) देने का अर्थ यह है कि अल्लाह ने उन्हें इस पद पर नियुक्त किया था कि वे इस किताब° के अनुसार जो उन पर उतारी गई थी, लोगों को [illegible] फ़ैसला करें।
६४ अर्थात् इस [illegible]
६५ अर्थात् कुरआन।
६६ उम्मुल क़ुरा अर्थात् मक्का नगर।
* इस का अर्थ परिशिष्ट में आये हुए पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

ذٰلِكُمْ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ
وَخَرَقُوْا لَهٗ بَنِيْنَ وَبَنٰتٍۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۭ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَصِفُوْنَ ۝
بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ اَنّٰى يَكُوْنُ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ لَّهٗ صَاحِبَةٌ ۭ وَ
خَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ ۚ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوْهُ ۚ وَهُوَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ۝
لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ ۡ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ۝
قَدْ جَاۗءَكُمْ بَصَاۗىِٕرُ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنْ اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا ۭ
وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ۝ وَكَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ وَلِيَقُوْلُوْا دَرَسْتَ
وَلِنُبَيِّنَهٗ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ اِتَّبِعْ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۚ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ ۚ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ وَلَوْ شَاۗءَ اللّٰهُ مَآ اَشْرَكُوْا ۭ وَمَا
جَعَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۚ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝ وَلَا تَسُبُّوا
الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَسُبُّوا اللّٰهَ عَدْوًۢا بِغَيْرِ عِلْمٍ ۭ كَذٰلِكَ
زَيَّنَّا لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ۠ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ۝ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَىِٕنْ جَاۗءَتْهُمْ اٰيَةٌ
لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا ۭ قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ ۙ اَنَّهَآ اِذَا
جَاۗءَتْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَنُقَلِّبُ اَفْـِٕدَتَهُمْ وَاَبْصَارَهُمْ كَمَا
لَمْ يُؤْمِنُوْا بِهٖٓ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّنَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝

गई हो; या जो यह कहे कि मैं भी ऐसी चीज़ उतार दूँगा जैसी अल्लाह ने उतारी है ? यदि तुम उन्हें देखते, (तो उन्हें अजीब हाल में पाते), जब ज़ालिम मृत्यु-यातनाओं में होते हैं और फ़िरिश्ते* अपने हाथ बढ़ा रहे होते हैं कि अपनी जानें निकालो। आज तुम्हें ज़िल्लत का (अपमान-जनक) अज़ाब दिया जायेगा इस के बदले में कि तुम अल्लाह से सम्बन्ध लगा कर असत्य बात बकते थे, और उस की आयतों* के मुक़ाबिले में अकड़ते थे। ○ (अल्लाह कहेगा) अब तुम वैसे ही अकेले हमारे पास आ गये जैसा हम ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था, जो कुछ हम ने तुम्हें दिया था वह अपने पीछे छोड़ आये, हम तुम्हारे साथ तुम्हारे उन सिफ़ारिशियों को भी नहीं देख रहे हैं, जिन के बारे में तुम्हारा कहना था कि तुम्हारे मामले में वे भी (अल्लाह के) शरीक हैं। तुम्हारे आपस के सारे नाते टूट चुके, और जिन का तुम दावा करते थे वे सब तुम से गुम हो गये। ○

निस्सन्देह अल्लाह दाने और गुठली को फाड़ने वाला[२७] है। जानदार को बे-जान से निकालता है, और बे-जान को जानदार से निकालने वाला[२८] है। यह है अल्लाह, फिर तुम कहाँ से उलटे भटके चले जा रहे हो ? ○ अरुणोदय (प्रभात) का फाड़ निकालने वाला है, रात को आराम के लिए, और सूर्य और चन्द्रमा को हिसाब से बनाया है। यह अपार शक्ति वाले, और (सब-कुछ) जानने वाले (अल्लाह) का ठहराया हुआ अन्दाज़ा है। ○

वही है जिस ने तुम्हारे लिए तारे बनाये ताकि तुम उन के द्वारा भूमि और समुद्र की अँधियारियों में रास्ता पा सको। जानने वालों के लिए हम ने आयतें* खोल-खोल कर बयान कर दी हैं। ○ वही है जिस ने तुम्हें एक जीव से पैदा किया, फिर (तुम्हारे लिए) एक ठहरने का स्थान है और एक सौंपे जाने की जगह। समझ-बूझ रखने वालों के लिए हम ने आयतें* खोल-खोल कर बयान कर दी हैं। ○ वही है जिस ने आसमान से पानी बरसाया, फिर हम ने उस से हर प्रकार की वनस्पति उगाई; फिर हम ने उस से हरे-हरे खेत और पेड़-पौधे पैदा किये जिन से हम तले-ऊपर चढ़े हुए दाने निकालते हैं; —खजूर के गाभों से गुच्छे लटकते होते हैं; — और अंगूर, ज़ैतून और अनार के बाग़ (लगाये), जो एक-दूसरे से मिलते-जुलते भी हैं, और एक-दूसरे से नहीं भी मिलते-जुलते[२९]। उन के फल को देखो, जब वह फलता है, और उस के पकने को भी (देखो)। निस्सन्देह इन चीज़ों में उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो ईमान* लाते हैं। ○ और लोगों ने अल्लाह के शरीक ठहराये जिन्नों* को, —जब कि उन्हें उसी ने पैदा किया है, —और बे-जाने-बूझे उस के लिए बेटे और बेटियाँ गढ़ लीं। महिमा-

---

२७ अर्थात् वही गुठलियों और दानों को फाड़ कर उन से पेड़-पौधों की कोंपलें निकालता है।

२८ अर्थात् वही बे-जान चीज़ों से विभिन्न जीवों को पैदा करता है; और वही है जो सजीव शरीर से निर्जीव पदार्थों को निकालता है।

२९ अर्थात् वे एक दूसरे से मिलते-जुलते हैं परन्तु फिर भी हर फल की विशेषताएँ अलग-अलग हैं।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

وَلَوْ أَنَّنَا نَزَّلْنَا إِلَيْهِمُ الْمَلَٰئِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتَىٰ وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ
كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا إِلَّا أَن يَشَاءَ اللَّهُ وَلَٰكِنَّ
أَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُونَ ۝ وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيَاطِينَ
الْإِنسِ وَالْجِنِّ يُوحِي بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُورًا
وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ ۝ وَلِتَصْغَىٰ
إِلَيْهِ أَفْئِدَةُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوا
مَا هُم مُّقْتَرِفُونَ ۝ أَفَغَيْرَ اللَّهِ أَبْتَغِي حَكَمًا وَهُوَ الَّذِي أَنزَلَ
إِلَيْكُمُ الْكِتَابَ مُفَصَّلًا وَالَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْلَمُونَ أَنَّهُ
مُنَزَّلٌ مِّن رَّبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ۝ وَتَمَّتْ
كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَعَدْلًا لَّا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِهِ وَهُوَ
السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ وَإِن تُطِعْ أَكْثَرَ مَن فِي الْأَرْضِ يُضِلُّوكَ
عَن سَبِيلِ اللَّهِ إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ۝
إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ مَن يَضِلُّ عَن سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۝
فَكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ إِن كُنتُم بِآيَاتِهِ مُؤْمِنِينَ ۝ وَ
مَا لَكُمْ أَلَّا تَأْكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُم
مَّا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ إِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ إِلَيْهِ وَإِنَّ كَثِيرًا لَّيُضِلُّونَ
بِأَهْوَائِهِم بِغَيْرِ عِلْمٍ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِينَ ۝

महान है वह। और उस से उच्च है जो गुण ये बयान करते हैं। ○ वह आसमानों और ज़मीन जैसी अनोखी चीज़ों का बनाने वाला है। उस का कोई बेटा कैसे हो सकता है, जब कि उस की कोई (जीवन) संगिनी (पत्नी) ही नहीं है, और उस ने हर चीज़ पैदा की है और वह हर चीज़ का जानने वाला है। ○ यह है अल्लाह, तुम्हारा रब*। उस के सिवा कोई इलाह* (पूज्य) नहीं, वह हर चीज़ का पैदा करने वाला है, अतः तुम उसी की इबादत* करो। और वह हर चीज़ का भार-धारक है। ○ (लौकिक) निगाहें उसे नहीं पातीं, परन्तु वह निगाहों को पा लेता है। वह अति सूक्ष्म (-दर्शी) और (हर चीज़ की) ख़बर रखने वाला है। ○

तुम्हारे पास तुम्हारे रब* की ओर से रौशन दलीलें (अथवा सूझ-बूझ की बातें) आ चुकी हैं, सो जिस किसी ने सूझ से काम लिया, तो इस में उस का अपना ही भला है, और जो कोई अन्धा बना रहा तो उस ने अपना ही बुरा किया। और मैं तुम पर कोई नियुक्त-रखवाला नहीं हूँ (कि बलपूर्वक तुम्हें सीधे रास्ते से भटकने ही न दूँ)। ○

इसी प्रकार हम अपनी आयतों* को तरह-तरह से बयान करते हैं ताकि ये लोग कहें कि तुम ने (ये सब) किसी से पढ़ लिया है; और ताकि ज्ञान वाले लोगों पर हम इसे खोल दें[३०]। ○ तुम पर जो वह्य* तुम्हारे रब* की ओर से की गई है तुम उसी पर चलो; उस के सिवा कोई इलाह* (पूज्य) नहीं; और मुश्रिकों* के पीछे न पड़ो। ○ यदि अल्लाह चाहता, तो (बलपूर्वक रोक देता और) ये शिर्क* न करते। हम ने तुम्हें इन का कोई रखवाला नहीं बनाया है, और न तुम इन के कोई हवालेदार हो (कि तुम पर इन की कोई ज़िम्मेदारी हो)। ○ (हे ईमान* लाने वालो!) अल्लाह के सिवा ये जिन्हें पुकारते हैं तुम लोग उन्हें गाली न दो, कहीं ऐसा न हो कि ये लोग हद से आगे बढ़ कर अज्ञान के कारण अल्लाह को गाली देने लगें। इसी तरह तो हम ने हर गिरोह के लिए उस के कर्म को शोभायमान बना दिया है। फिर उन्हें अपने रब* की ओर लौट कर जाना है, फिर वह उन्हें जता देगा जो-कुछ वे करते थे। ○

ये लोग अल्लाह की कड़ी-कड़ी क़समें खाते हैं कि यदि उन के पास कोई निशानी आये तो वे उस पर अवश्य ईमान* लायेंगे। कह दो : निशानियाँ तो अल्लाह के पास हैं और (हे ईमान वालो!) तुम्हें क्या पता कि यदि वह[३१] आ भी जाये जब भी ये ईमान* लाने वाले नहीं हैं। ○ हम (उसी प्रकार) इन के दिलों और इन की निगाहों को फेर देंगे जिस तरह ये पहली बार इस पर ईमान* नहीं लाये थे, और हम इन्हें छोड़ देंगे कि ये अपनी सरकशी ही में भटकते रहें[३२]। ○ †यदि हम इन की ओर फ़रिश्ते* भी उतार देते, और मुर्दे इन से बातें करते, और सारी चीज़ें इन के सामने ला कर मौजूद कर देते, तो भी ये ईमान* न लाते सिवाय

३० अर्थात् जो समझ-बूझ से काम लेने वाले हैं वे तो सच्चाई को पा लेंगे, परन्तु वे लोग जिन्हें सच्चाई

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें। † आठवाँ पारा आरम्भ हुआ।

وذروا ظاهر الإثم وباطنه إن الذين يكسبون الإثم
سيجزون بما كانوا يقترفون ۝ ولا تأكلوا مما لم يذكر اسم
الله عليه وإنه لفسق وإن الشياطين ليوحون إلى أوليائهم
ليجادلوكم وإن أطعتموهم إنكم لمشركون ۝ أومن كان ميتا
فأحييناه وجعلنا له نورا يمشي به في الناس كمن مثله في
الظلمات ليس بخارج منها كذلك زين للكافرين ما كانوا
يعملون ۝ وكذلك جعلنا في كل قرية أكابر مجرميها ليمكروا
فيها وما يمكرون إلا بأنفسهم وما يشعرون ۝ وإذا جاءتهم
آية قالوا لن نؤمن حتى نؤتى مثل ما أوتي رسل الله الله
أعلم حيث يجعل رسالته سيصيب الذين أجرموا صغار عند الله
وعذاب شديد بما كانوا يمكرون ۝ فمن يرد الله أن يهديه
يشرح صدره للإسلام ومن يرد أن يضله يجعل صدره
ضيقا حرجا كأنما يصعد في السماء كذلك يجعل الله الرجس
على الذين لا يؤمنون ۝ وهذا صراط ربك مستقيما قد فصلنا
الآيات لقوم يذكرون ۝ لهم دار السلام عند ربهم وهو
وليهم بما كانوا يعملون ۝ ويوم يحشرهم جميعا يا معشر الجن
قد استكثرتم من الإنس وقال أولياؤهم من الإنس ربنا استمتع

इस के कि अल्लाह ही (ऐसा) चाहे। फिर भी इन में अधिकतर लोग नादानी करते हैं। ○ इसी तरह हम ने हर नबी* के दुश्मन बनाये, मनुष्यों में के शैतानों* को और जिन्नों* में के (शैतानों को) भी जो चिकनी-चुपड़ी बात एक दूसरे के जी में डाल कर धोखे में डालते थे यदि तुम्हारा रब* चाहता तो वे ऐसा न करते; तो तुम उन्हें और जो-कुछ वे झूठ गढ़ रहे हैं उसे छोड़ो; ○ ताकि जो लोग आख़िरत* पर ईमान* नहीं रखते उन के दिल इस (धोखे) की ओर झुकें, और वे उस पर राज़ी हो जायें, और जो-कुछ कि वे बुरे काम करने वाले हैं कर लें। ○ (हे नबी*! उन से पूछो :) क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और फ़ैसला करने वाला ढूँढूँ, जब कि उस ने तुम्हारी ओर ऐसी किताब* उतार दी है जिस में बात खोल-खोल कर बता दी गई है? और जिन लोगों को हम ने (तुम से पहले) किताब* दी थी वे जानते हैं कि यह (किताब) तुम्हारे रब* ही की ओर से हक़ के साथ उतरी है। सो तुम सन्देह करने वालों में (शामिल) न होना। ○ तुम्हारे रब* की बात सच्चाई और इन्साफ़ में पूरी है। कोई उस की बातों को बदलने वाला नहीं। वह (सब-कुछ) ११५ सुनने और जानने वाला है। ○

(हे नबी*!) ज़मीन में अधिकतर लोग ऐसे हैं कि यदि तुम उन के कहने पर चलो तो वे तुम्हें अल्लाह के रास्ते से भटका देंगे। वे तो केवल गुमान पर चलते हैं और निरे अटकल दौड़ाते हैं। ○ निस्सन्देह तुम्हारा रब* उसे भली-भाँति जानता है जो उस के रास्ते से भटकता है; और वह उसे भी भली-भाँति जानता है जो (सीधी) राह पर है। ○

यदि तुम उस की आयतों* पर ईमान* रखने वाले हो तो फिर जिस (जानवर) पर अल्लाह का नाम लिया गया हो उसे (बे-झिझक) खाओ। ○ क्या वजह है कि तुम उसे न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो, जब कि जो-कुछ उस ने तुम पर हराम* किया है उसे खोल-खोल कर वह तुम्हें बता चुका है,[३३] यह और बात है कि कभी तुम्हें उस के (खाने के) लिए मजबूर होना पड़े। परन्तु बहुतेरे (लोग) ज्ञान के बिना केवल अपनी (तुच्छ) इच्छाओं से (लोगों को) बहकाते रहते हैं। निश्चय ही तुम्हारा रब* हद से आगे बढ़ने वालों को भली-भाँति जानता है। ○ और तुम खुले गुनाह को भी छोड़ दो और छुपे को भी। निश्चय ही जो लोग जो

से कोई लगाव ही नहीं है, जो अन्धकार ही में भटकना चाहते हैं, वे यही कहेंगे कि यह व्यक्ति जो अपने को अल्लाह का नबी* कहता है, इस तरह की बातें ख़ुद तो पेश नहीं कर सकता था क्योंकि यह कोई पढ़ा-लिखा व्यक्ति नहीं है, अतः अवश्य यह किसी से सीख-पढ़ कर ही क़ुरआन जैसा ग्रन्थ हमारे सामने पेश कर रहा है।

३१ अर्थात् कोई निशानी।

३२ इन की मनोवृत्ति अब भी वही है जो पहले थी। जिस प्रकार इन्हों ने पहली बार मुहम्मद सल्ल० के लाये हुए सन्देश को मानने से इन्कार किया था उसी तरह ये अब भी गुमराही ही में भटकते रहेंगे। अल्लाह का तरीक़ा यह नहीं है कि वह ज़बरदस्ती किसी को राह पर लगा दे।

३३ दे० सू. अन-नह्ल आयत ११५।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

بِبَعْضٍ وَبَلَغْنَا أَجَلَنَا الَّذِي أَجَّلْتَ لَنَا قَالَ النَّارُ مَثْوَاكُمْ
خَالِدِينَ فِيهَا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ۝ وَكَذَٰلِكَ
نُوَلِّي بَعْضَ الظَّالِمِينَ بَعْضًا بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝ يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ
وَالْإِنسِ أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنكُمْ يَقُصُّونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِي وَ
يُنذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا قَالُوا شَهِدْنَا عَلَىٰ أَنفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ
الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَشَهِدُوا عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا كَافِرِينَ ۝ ذَٰلِكَ
أَن لَّمْ يَكُن رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ بِظُلْمٍ وَأَهْلُهَا غَافِلُونَ ۝ وَ
لِكُلٍّ دَرَجَاتٌ مِّمَّا عَمِلُوا وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُونَ ۝ وَ
رَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ إِن يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِن بَعْدِكُم
مَّا يَشَاءُ كَمَا أَنشَأَكُم مِّن ذُرِّيَّةِ قَوْمٍ آخَرِينَ ۝ إِنَّ مَا تُوعَدُونَ
لَآتٍ وَمَا أَنتُم بِمُعْجِزِينَ ۝ قُلْ يَا قَوْمِ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنِّي
عَامِلٌ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ مَن تَكُونُ لَهُ عَاقِبَةُ الدَّارِ إِنَّهُ لَا
يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ۝ وَجَعَلُوا لِلَّهِ مِمَّا ذَرَأَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْأَنْعَامِ
نَصِيبًا فَقَالُوا هَٰذَا لِلَّهِ بِزَعْمِهِمْ وَهَٰذَا لِشُرَكَائِنَا فَمَا كَانَ
لِشُرَكَائِهِمْ فَلَا يَصِلُ إِلَى اللَّهِ وَمَا كَانَ لِلَّهِ فَهُوَ يَصِلُ إِلَىٰ
شُرَكَائِهِمْ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ۝ وَكَذَٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيرٍ مِّنَ
الْمُشْرِكِينَ قَتْلَ أَوْلَادِهِمْ شُرَكَاؤُهُمْ لِيُرْدُوهُمْ وَلِيَلْبِسُوا

गुनाह कमाते हैं अपने किये का जल्द फल पायेंगे।○ और जिस (जानवर) पर अल्लाह का नाम न लिया जाय-उसे न खाओ, यह सीमोल्लंघन होगा। निश्चय ही शैतान* अपने साथियों के दिलों में यह बात डालते हैं कि वे तुम से झगड़ें। परन्तु यदि तुम उन के कहने पर चले, तो निश्चय ही तुम मुशरिक* हुये।○

क्या वह व्यक्ति जो मुरदा था फिर हम ने उसे जीवित किया, और उस के लिए प्रकाश कर दिया जिस को लिये हुये वह लोगों के बीच चलता-फिरता है, उस व्यक्ति की तरह हो सकता है जो अँधेरों में पड़ा हुआ हो उन से निकलने वाला ही न हो? इसी तरह काफ़िरों* के लिए वही-कुछ शोभायमान बना दिया गया जो वे कर रहे हैं।○ और इसी तरह हम ने हर बस्ती में उस के बड़े-बड़े अपराधियों को लगा दिया है कि वे वहाँ चाल चलें[३४] और वे अपने ही साथ चाल चलते हैं, परन्तु उन्हें इस का ज्ञान नहीं।○

जब उन के पास कोई आयत* आती है, तो कहते हैं, "हम कभी ईमान* नहीं लायेंगे जब तक कि वैसी ही चीज़ हमें न दी जाय जो अल्लाह के रसूलों* को दी गई है"। उसे अल्लाह खूब जानता है जहाँ अपना सन्देश भेजता है। जिन्हों ने अपराध किया उन्हें जल्द ही अल्लाह के यहाँ ज़िल्लत पेश आयेगी और सख़्त अज़ाब, इस लिए कि वे चाल चलते थे।○

जिसे अल्लाह सीधे रास्ते पर लाना चाहता है, उस का सीना इस्लाम* के लिए खोल देता है, और जिसे गुमराही में डालना चाहता है,[३५] उस के सीने को तंग (संकुचित) और भिंचा हुआ कर देता है मानो वह आसमान में चढ़ रहा है (और उस का दम घुटा जा रहा है)। इस तरह अल्लाह उन लोगों पर नापाकी डाल देता है जो ईमान* नहीं लाते।○ और यह तुम्हारे रब* का रास्ता है बिलकुल सीधा। हम ने अपनी आयतें* ध्यान देने वाले लोगों के लिए खोल-खोल कर बयान कर दी हैं।○ उन के लिए उन के रब के यहाँ सलामती का घर[३६] है। और वह उन का संरक्षक-मित्र है उस (काम) की वजह से जो वे करते थे।○

जिस दिन वह इन सब को घेर कर इकट्ठा करेगा, (वह कहेगा): हे जिन्नों* के गिरोह*! तुम ने तो मनुष्यों पर खूब हाथ साफ़ किया। मनुष्यों में से जो उन के साथी रहे होंगे कहेंगे: हमारे रब*! हम में एक दूसरे से (अनुचित) लाभ उठाया है, हम अपने उस निश्चित

---

३४ अर्थात् उन्हें हम का मौका दिया है कि वे छल-कपट के जाल फैला सकें, और यह मुहलत उन्हें केवल उन की परीक्षा के लिए दी गई है।

३५ गुमराही में वह उसी को डालता है जिसे सत्य से बैर होता है। जो सच्ची बात सुनने के लिए तैयार ही नहीं होता। ऐसे व्यक्तियों को अल्लाह भटकने के लिए छोड़ देता है। वह ज़बरदस्ती किसी को राह पर लाना नहीं चाहता। देखो इसी सूरः का फुट नोट ८।

३६ अर्थात् जन्नत*, जहाँ मनुष्य को किसी प्रकार का संकट नहीं पहुँचेगा।

* जिन्नों का तात्पर्य यहाँ प्रत्यक्ष जिन नहीं, केवल शैतान जिन है।

* इन का अर्थ अन्त में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

عليهم دينهم ولو شاء الله ما فعلوه فذرهم وما يفترون ○
وقالوا هذه أنعام وحرث حجر لا يطعمها إلا من نشاء
بزعمهم وأنعام حرمت ظهورها وأنعام لا يذكرون اسم
الله عليها افتراء عليه سيجزيهم بما كانوا يفترون ○ وقالوا
ما في بطون هذه الأنعام خالصة لذكورنا ومحرم على
أزواجنا وإن يكن ميتة فهم فيه شركاء سيجزيهم وصفهم
إنه حكيم عليم ○ قد خسر الذين قتلوا أولادهم سفها بغير
علم وحرموا ما رزقهم الله افتراء على الله قد ضلوا وما كانوا
مهتدين ○ وهو الذي أنشأ جنات معروشات وغير معروشات
والنخل والزرع مختلفا أكله والزيتون والرمان متشابها وغير
متشابه كلوا من ثمره إذا أثمر وآتوا حقه يوم حصاده ولا
تسرفوا إنه لا يحب المسرفين ○ ومن الأنعام حمولة وفرشا
كلوا مما رزقكم الله ولا تتبعوا خطوات الشيطان إنه لكم عدو
مبين ○ ثمانية أزواج من الضأن اثنين ومن المعز اثنين
قل آلذكرين حرم أم الأنثيين أما اشتملت عليه أرحام
الأنثيين نبئوني بعلم إن كنتم صادقين ○ ومن الإبل
اثنين ومن البقر اثنين قل آلذكرين حرم أم الأنثيين

समय को पहुँच गये जो तू ने हमारे लिए ठहराया था। वह कहेगा: आग (दोज़ख़*) तुम्हारा निवास-स्थान है। जिस में तुम्हें सदा रहना है, हाँ यदि अल्लाह ही चाहे तो दूसरी बात है। निस्सन्देह तुम्हारा रब* हिक्मत* वाला और (सब-कुछ) जानने वाला है। ○ इस तरह हम ज़ालिमों को एक-दूसरे का साथी बना देंगे उस कमाई के कारण जो वे करते थे। ○ (अल्लाह उन से पूछेगा:) हे जिन्नों* और मनुष्यों के गिरोह! क्या तुम्हारे पास स्वयं तुम्हीं में से रसूल* नहीं आये थे जो तुम्हें मेरी आयतें* सुनाते और इस दिन के पेश आने से तुम्हें डराते थे? वे कहेंगे: हम स्वयं अपने विरुद्ध गवाही देते हैं[३८]। सांसारिक जीवन ने उन्हें बहकाये रखा। और वे स्वयं अपने विरुद्ध गवाही १३० देंगे कि वे काफ़िर* थे। ○ यह इस कारण कि तुम्हारा रब* बस्तियों को ज़ुल्म के साथ हलाक (विनष्ट) करने वाला न था जब कि उन के निवासी बिल्कुल बे-ख़बर हों। ○

हर एक के दर्जे हैं जो-कुछ कि उस ने किया है उस के अनुसार। जो-कुछ वे करते हैं उस से तुम्हारा रब* ग़ाफ़िल नहीं है। ○ तुम्हारा रब* परम-स्वतन्त्र (अपेक्षा रहित), और दयालुता वाला है। यदि वह चाहे, तो तुम्हें ले जाये और (तुम्हारे बाद) तुम्हारी जगह जिस (गिरोह) को चाहे ले आये, जिस तरह उस ने तुम्हें कुछ और लोगों की सन्तति से उठाया है। ○ तुम से जिस का वादा किया जाता है वह निश्चय ही आने वाला है,[३९] और तुम बच निकलने वाले नहीं हो। ○ (हे नबी*!) कह दो: लोगो! तुम अपनी जगह काम करते रहो। मैं भी (अपनी जगह) काम कर रहा हूँ। जल्द ही तुम्हें मालूम हो जायेगा कि उस घर का (अच्छा) १३५ परिणाम किस के लिए होगा। निस्सन्देह ज़ालिम कभी सफल नहीं हो सकते। ○

इन लोगों ने अल्लाह के लिए, उसी की पैदा की हुई खेती और मवेशियों में से, एक भाग निश्चित किया, और ये अपने ख़याल से कहते हैं: यह अल्लाह का है और यह हमारे ठहराये हुए शरीकों का है। फिर जो (हिस्सा) उन के ठहराये हुये शरीकों का है वह तो अल्लाह को नहीं पहुँचता परन्तु जो (हिस्सा) अल्लाह का है वह उन के शरीकों को पहुँच जाता है। कैसा बुरा फ़ैसला है जो ये लोग करते हैं[४०]। ○

और इसी तरह बहुतेरे मुशरिकों* के लिए उन के शरीकों ने अपनी औलाद की हत्या को शोभायमान बना दिया है, ताकि उन्हें तबाही में डाल दें और उन के लिए उन के दीन* को भ्रामक बना कर छोड़ें। यदि अल्लाह चाहता तो वे ऐसा न करते। तुम उन्हें और जो-कुछ वे

३८ अर्थात् हम अपने अपराधों को स्वीकार करते हैं। आप की ओर से रसूल* अवश्य आये, परन्तु हम ने ही उन की बातों को मानने से इन्कार कर दिया।

३९ अर्थात् क़ियामत* का दिन और अल्लाह का अज़ाब।

४० वे जो-कुछ अपने ठहराये हुए शरीकों के नाम से निकालते थे वह अल्लाह के यहाँ क्या पहुँचता, वे जो

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

أما اشتملت عليه أرحام الأنثيين أم كنتم شهداء إذ وصاكم
الله بهذا فمن أظلم ممن افترى على الله كذبا ليضل الناس
بغير علم إن الله لا يهدي القوم الظالمين ۝ قل لا أجد في
ما أوحي إلي محرما على طاعم يطعمه إلا أن يكون ميتة أو
دما مسفوحا أو لحم خنزير فإنه رجس أو فسقا أهل لغير
الله به فمن اضطر غير باغ ولا عاد فإن ربك غفور رحيم ۝ و
على الذين هادوا حرمنا كل ذي ظفر ومن البقر والغنم حرمنا
عليهم شحومهما إلا ما حملت ظهورهما أو الحوايا أو ما اختلط بعظم
ذلك جزيناهم ببغيهم وإنا لصادقون ۝ فإن كذبوك فقل
ربكم ذو رحمة واسعة ولا يرد بأسه عن القوم المجرمين ۝
سيقول الذين أشركوا لو شاء الله ما أشركنا ولا آباؤنا ولا حرمنا
من شيء كذلك كذب الذين من قبلهم حتى ذاقوا بأسنا
قل هل عندكم من علم فتخرجوه لنا إن تتبعون إلا الظن و
إن أنتم إلا تخرصون ۝ قل فلله الحجة البالغة فلو شاء لهداكم
أجمعين ۝ قل هلم شهداءكم الذين يشهدون أن الله حرم
هذا فإن شهدوا فلا تشهد معهم ولا تتبع أهواء الذين كذبوا
بآياتنا والذين لا يؤمنون بالآخرة وهم بربهم يعدلون ۝ قل

दलील तो (उसकी ओर) पहुँची हुई अल्लाह की रही। सो यदि वह चाहता तो तुम सब को सीधी राह पर लगा देता[४५]। ○

(हे नबी*!) कह दो: अपने उन गवाहों को लाओ जो इस की गवाही दें कि अल्लाह ने इसे हराम किया है। फिर यदि वे गवाही दे दें तो तुम उन के साथ गवाही न देना। और उन लोगों की (तुच्छ) इच्छाओं का पालन न करना जिन्हों ने हमारी आयतों* को झुठलाया, और जो आख़िरत* पर ईमान* नहीं रखते और दूसरों को अपने रब* के बराबर ठहराते हैं। ○

कह दो: आओ, मैं तुम्हें सुनाऊँ कि तुम्हारे रब* ने तुम पर क्या चीज़ें हराम की हैं[४६]: यह कि उस के साथ किसी चीज़ को शरीक न ठहराओ, और माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो, और ग़रीबी के कारण अपनी औलाद की हत्या न करो, हम ही तुम्हें भी रोज़ी देते हैं और उन्हें भी। अश्लील बातों के पास भी न फटको चाहे वे खुली हों या छिपी, और किसी जीव को जिस (की हत्या) को अल्लाह ने हराम कर दिया है, क़त्ल न करो, सिवाय इस के कि हक़ के कारण ऐसा करना पड़े[४७]। ये बातें हैं जिन की उस ने तुम्हें ताकीद की है, कदाचित् बुद्धि से काम लो। ○

और यह कि यतीम* (अनाथ) के माल के क़रीब भी न जाओ परन्तु उस तरह जो उत्तम हो,[४८] यहाँ तक कि वह युवावस्था को पहुँच जाये। और तुम इन्साफ़ के साथ पूरा-पूरा नापो और तोलो। हम किसी व्यक्ति पर उस की समाई से बढ़ कर बोझ नहीं डालते। और जब बात कहो तो न्याय से काम लो, चाहे मामला अपने नातेदार ही का क्यों न हो; और अल्लाह के (साथ किये हुये) वादे को पूरा करो। ये बातें हैं जिन की उस ने तुम्हें ताकीद की है, कदाचित् तुम ध्यान रखो। ○

और (उस ने) यह (ताकीद की है) कि यह मेरा मार्ग है बिलकुल सीधा, अतः तुम इसी पर चलो। और दूसरे मार्गों पर न चलो कि वे तुम्हें उस के मार्ग से हटा कर बिखेर देंगे। यह बात है जिस की उस ने तुम्हें ताकीद की है, कदाचित् तुम उस की अवज्ञा से बचने और उस की ना-ख़ुशी से डरते रहो। ○

---

४५ परन्तु अल्लाह का फ़ैसला तो यही है कि जिस गुमराही को तुम अपने लिए पसन्द कर रहे हो वह तुम्हें उसी में पड़ा रहने दे। वह बलपूर्वक किसी को सीधे रास्ते पर नहीं चलाता।

४६ अर्थात् वे कौन सी बातें हैं जिन का करना तुम्हारे लिए हराम है; और वे कौन से काम हैं जिन का करना तुम्हारे लिए आवश्यक है; जिन्हें छोड़ना या जिन की उपेक्षा करना तुम्हारे लिए हराम है।

४७ अर्थात् बिना किसी ऐसे अपराध के जिस की सज़ा इस्लाम* में क़त्ल है, किसी को क़त्ल नहीं किया जा सकता।

४८ उत्तम रीति से—जिस से उन्हें कोई हानि न पहुँचे—उन के धन, सम्पत्ति की देखरेख, प्रबन्ध आदि में कोई दोष नहीं।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

तَعَالَوْا أَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ أَلَّا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَبِالْوَالِدَيْنِ
إِحْسَانًا وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ مِنْ إِمْلَاقٍ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَإِيَّاهُمْ
وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ
الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ذَٰلِكُمْ وَصَّاكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝
وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُ
وَأَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا
وَإِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ وَبِعَهْدِ اللَّهِ أَوْفُوا ذَٰلِكُمْ
وَصَّاكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝ وَأَنَّ هَٰذَا صِرَاطِي مُسْتَقِيمًا
فَاتَّبِعُوهُ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيلِهِ ذَٰلِكُمْ
وَصَّاكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝ ثُمَّ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ تَمَامًا
عَلَى الَّذِي أَحْسَنَ وَتَفْصِيلًا لِكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً
لَعَلَّهُمْ بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ۝ وَهَٰذَا كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ مُبَارَكٌ
فَاتَّبِعُوهُ وَاتَّقُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝ أَنْ تَقُولُوا إِنَّمَا أُنْزِلَ
الْكِتَابُ عَلَىٰ طَائِفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا وَإِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ
لَغَافِلِينَ ۝ أَوْ تَقُولُوا لَوْ أَنَّا أُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتَابُ لَكُنَّا أَهْدَىٰ
مِنْهُمْ فَقَدْ جَاءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ فَمَنْ
أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَصَدَفَ عَنْهَا سَنَجْزِي الَّذِينَ

फिर, हम ने मूसा को किताब* दी थी जो सत्कर्मी व्यक्ति के लिए पूर्ण (नेमत) और हर एक (ज़रूरी) चीज़ का सविस्तार वर्णन थी और (सर्वथा) मार्ग-दर्शन और दयालुता, कदाचित् वे (अर्थात् बनी इसराईल*) अपने रब* से मिलने पर ईमान* लायें। ○ और (इसी तरह) यह किताब* (अर्थात् क़ुरआन) भी हम ने उतारी है जो बरकत वाली है। अतः तुम इस (के हुक्म) पर चलो और अल्लाह की अवज्ञा से बचते और उस की ना-ख़ुशी से डरते रहो, कदाचित् तुम पर दया की जाये। ○ (किताब उतारी कि ऐसा न हो) कि कहीं कह बैठो कि किताब* तो हम से पहले के दो गिरोहों[49] पर ही उतारी गई थी, और हम तो उन के पढ़ने-पढ़ाने से बिलकुल ही ग़ाफ़िल थे; ○ या यह कहने लगो कि यदि हम पर किताब उतारी गई होती, तो हम उन से कहीं अधिक सीधे मार्ग पर होते। तो अब आ गई है तुम्हारे पास तुम्हारे रब* की ओर से एक खुली दलील और मार्ग-दर्शन और दयालुता; तो उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन हो सकता है जो अल्लाह की आयतों को झुठला दे, और उन से अपना मुँह मोड़ ले! जो लोग हमारी आयतों से मुँह मोड़ते हैं उन के मुँह मोड़ने के कारण हम उन्हें जल्द बुरे अज़ाब का बदला देंगे। ○ क्या ये लोग बस इसी बात का इन्तज़ार कर रहे हैं कि इन के सामने फ़रिश्ते* आ जायें, या स्वयं तुम्हारा रब* ही आ जाये, या तुम्हारे रब* की कोई निशानी (चमत्कार) आ जाए! जिस दिन तुम्हारे रब* की कुछ (विशेष) निशानियाँ[50] आ जायेंगी फिर किसी ऐसे व्यक्ति का ईमान* उस के काम न आयेगा जो पहले से ईमान* न लाया हो, या जिस ने अपने ईमान* में कोई भलाई न कमाई हो। (हे नबी*! उन से) कह दो: तुम भी इन्तज़ार करो! हम भी इन्तज़ार करते हैं। ○

जिन लोगों ने अपने दीन के टुकड़े-टुकड़े कर दिये और गरोहों में बँट गये, तुम को उन से कुछ काम नहीं। उन का मामला तो बस अल्लाह के हवाले है, वही उन्हें बतायेगा कि वे क्या कुछ करते थे। ○ जो कोई (अल्लाह के यहाँ) नेकी ले कर आयेगा उस के लिए उस का दस गुना बदला है, और जो कोई बुराई ले कर आयेगा उसे उस का उतना ही बदला दिया
६० जायेगा;[51] और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जायेगा।

(हे नबी*!) कह दो: निश्चय ही मेरे रब* ने मुझे सीधा मार्ग दिखाया है, बिल्कुल

---

४९. अर्थात् यहूदी* और ईसाई* समुदाय।

५०. अर्थात् वे चमत्कार जिन के ज़ाहिर होने के बाद मनुष्य की परीक्षा का अवसर ही शेष नहीं रहता, जैसे किसी मुर्दे जानवर का बोलना या पश्चिम की दिशा से सूरज का प्रकट हो कर सामने आ जाना आदि।

५१. अर्थात् जितनी बुराई या बदी उन से की होगी उतनी ही उसे सज़ा मिलेगी, उस से अधिक सज़ा किसी को नहीं दी जायेगी।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

يَصْدِفُونَ عَنْ آيَاتِنَا سُوءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يَصْدِفُونَ ○
هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ رَبُّكَ أَوْ يَأْتِيَ
بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ يَوْمَ يَأْتِي بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا
إِيمَانُهَا لَمْ تَكُنْ آمَنَتْ مِنْ قَبْلُ أَوْ كَسَبَتْ فِي إِيمَانِهَا خَيْرًا
قُلِ انْتَظِرُوا إِنَّا مُنْتَظِرُونَ ○ إِنَّ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا
شِيَعًا لَسْتَ مِنْهُمْ فِي شَيْءٍ إِنَّمَا أَمْرُهُمْ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ
بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ○ مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرُ أَمْثَالِهَا
وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَىٰ إِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ○
قُلْ إِنَّنِي هَدَانِي رَبِّي إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ دِينًا قِيَمًا مِلَّةَ
إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ○ قُلْ إِنَّ صَلَاتِي
وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ○ لَا شَرِيكَ لَهُ
وَبِذَٰلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ ○ قُلْ أَغَيْرَ اللَّهِ أَبْغِي
رَبًّا وَهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ إِلَّا عَلَيْهَا
وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ مَرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ
بِمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ○ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَائِفَ
الْأَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ لِيَبْلُوَكُمْ فِي مَا
آتَاكُمْ إِنَّ رَبَّكَ سَرِيعُ الْعِقَابِ وَإِنَّهُ لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ○

ठीक दीन* (जिस में कोई टेढ़ और त्रुटि नहीं
इबराहीम का पंथ, जो सब से कट कर एक ही
हो रहा था, और वह मुशरिकों* में से न था।O
कह दो: मेरी नमाज़* और मेरी क़ुरबानी* मेरा
जीना और मेरा मरना (सब-कुछ) अल्लाह के लिए
जो सारे संसार का रब* है।O उस का कोई साझी
नहीं। इसी का मुझे हुक्म हुआ है, और सब से
पहले आत्मार्पण करने वाला[52] मैं हूँ।O कहो:
क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और रब* तलाश
करूं, हालांकि वही हर चीज़ का रब* है। प्रत्येक
व्यक्ति जो-कुछ कमाई करता है उस का वह स्वयं
उत्तरदायी है, कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे
का बोझ नहीं उठाता। फिर तुम्हें अपने रब* की
ओर पलट कर जाना है फिर वह तुम्हें जता देगा
जिस में तुम विभेद करते थे।O वही है जिस ने
ज़मीन में तुम्हें ख़लीफ़ा* बनाया और तुम में एक
के दूसरे पर दर्जे बढ़ाये, ताकि जो-कुछ उस ने तुम्हें
दिया है उस में तुम्हारी परीक्षा ले। निस्सन्देह तुम्हारा रब* सज़ा देने में बहुत तेज़ है, और
निस्सन्देह वह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।O

---

५२ अर्थात् मुस्लिम*। दे० फुट नोट ५।
* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

७--अल-आराफ़

(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः में एक जगह 'अल-आराफ़' (Heights) वालों का हाल बयान हुआ है,[1] इसी सम्पर्क से इस सूरः का नाम अल-आराफ़ रखा गया है। अल-आराफ़ वास्तव में वे उच्च स्थान (Elevated places) हैं जहाँ क़ियामत* के दिन उन लोगों की जगह मिलेगी जो अल्लाह के सब से ज़्यादा क़रीबी बन्दे होंगे।

उतरने का समय (The date of Revelation)

सूरः के अध्ययन से मालूम होता है कि इस सूरः के अवतीर्ण होने का समय लग-भग वही है जो सूरः अल-अनआम का है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्तायें

पिछली सूरः के अन्तिम भाग में क़ुरआन के अवतीर्ण होने का उल्लेख किया गया है, इस सूरः का आरम्भ उस मूल उद्देश्य के वर्णन से हुआ है जिस के अन्तर्गत किताब* का अवतरण हुआ है।

यह सूरः वास्तव में डरावा और चेतावनी की सूरः है। और यही इस का केन्द्रीय विषय है। इस सूरः में लोगों को इस बात की चेतावनी दी गई कि वे अल्लाह के उस अज़ाब से डरें जो दुनियाँ में अल्लाह के रसूलों* की पुकार पर कान न धरने वाली जातियों पर आता रहा है और उस अज़ाब से भी डरें जो क़ियामत* में ऐसी जातियों को दिया जायेगा।

इस सूरः में बताया गया कि क़ियामत* में हर एक से पूछा जायेगा कि उस ने अपनी ज़िम्मेदारियों का हक़ कहाँ तक अदा किया और रसूलों* का जो सन्देश उस तक पहुँचा था उस पर उस ने कितना ध्यान दिया। रसूलों* से भी पूछा जायेगा कि जिन लोगों के पास अल्लाह ने उन्हें भेजा था उन की ओर से उन्हें क्या जवाब मिला[2]।

प्रस्तुत सूरः में साफ़ तौर पर यह बात बताई गई कि जो व्यक्ति अल्लाह की नाफ़रमानी से बचेगा और उस की ना-ख़ुशी से डरता रहेगा उस के लिए आख़िरत* में न तो कोई भय की बात है और न उसे कोई दुःख पहुँचेगा। रहे वे लोग जो अल्लाह की आयतों* को झुठलायेंगे और उन के मुक़ाबिले में अकड़ेंगे वही दोज़ख़* की अग्नि में जलेंगे,[3] और दोज़ख़* से कभी छुटकारा न पा सकेंगे।

इस सूरः में विशेष रूप से इस का उल्लेख किया गया कि अल्लाह ही इस का अधिकारी है कि मनुष्य उसे अपना संरक्षक-मित्र बनाये। उसे छोड़ कर शैतानों* को अपना मित्र बनाना घोर अन्याय है। कुफ़्र* और शिर्क* के मार्ग पर चल कर

---

१ दे० आयत ४६-४९।

२ दे० सूरः की शुरू की आयतें (२-९)।

३ दे० आयत ३५-३६।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

मनुष्य किसी और का कुछ नहीं बिगाड़ता बल्कि वह स्वयं अपने साथ और अपनी उस प्रकृति के साथ अन्याय करता है जिसे ले कर वह इस लोक में आया है।

अल्लाह के इस उपकार का भी इस सूरः में उल्लेख किया गया कि उस ने हमारे लिए वस्त्र उतारा है जो हमारे लिए शोभनीय वस्तु भी है और हम उस से अपने शरीर के ढकने का काम भी लेते हैं। यदि वह हमारे लिए वस्त्र न उतारता तो हम बिल्कुल नग्न अवस्था में रहते। इस उपयोगी वस्त्र के सम्पर्क से हमें एक और प्रकार के वस्त्र का परिचय दिया गया। वह है तक़्वा* (ईश-भय और पुण्यता) का वस्त्र। जिस प्रकार हमारे कपड़े हमारे शरीर की शोभा हैं और उन से हमारे शरीर की रक्षा होती है, ठीक उसी प्रकार तक़्वा* और संयम हमारे नैतिक और आध्यात्मिक जीवन की शोभा हैं और उन से हमारे आध्यात्मिक जीवन की रक्षा होती है। इस्लाम* की दृष्टि में आध्यात्मिकता का मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन से अटूट सम्बन्ध है। सच्ची आध्यात्मिकता वास्तव में मनुष्य की आन्तरिक और बाह्य शक्तियों के सन्तुलित सम्बन्ध में ही है। सच्चाई को हिस्सों में नहीं बाँटा जा सकता। मनुष्य का जीवन न तो निरुद्देश्य है और न हम उसे अनेक असंगतियों का मिश्रण कह सकते हैं। आन्तरिक जगत हो या बाह्य जगत मनुष्य को दोनों जगह सत्य ही का पालन करना चाहिए। मनुष्य आध्यात्मिक और नैतिक दृष्टि से जैसा-कुछ होता है उसी का वह अपने व्यवहारिक जीवन में परिचय देता है। प्रस्तुत सूरः में लोगों को सचेत किया गया कि उन का रब* हर मामले में इन्साफ़ का हुक्म देता है; और इस बात का कि लोग केवल उसी एक के आगे झुकें। अल्लाह ने अच्छी और स्वच्छ चीज़ें अपने बन्दों के लिए पैदा की हैं उस ने केवल खुली और छिपी अश्लील बातों को हराम किया है न कि स्वच्छ और शुद्ध चीज़ों को।

इस सूरः में जहाँ मक्का के लोगों को डराया दिया गया है वहीं यहूदियों* को भी सम्बोधित किया गया है। और उन के सामने यह बात खोल कर रख दी गई है कि पैग़म्बर* पर ईमान* लाने के पश्चात कपट-नीति अपनाने और उस के आदेशों को सुनने और उन के अनुसार आचरण करने का वचन देने के पश्चात् उस से फिर जाने का क्या परिणाम हुआ करता है। इस सूरः में एक जगह संसार के सभी लोगों को सम्बोधित किया गया है यह इस बात की ओर संकेत है कि अब क़ियामत* का समय बिल्कुल निकट आ गया है।

सूरः के अन्तिम भाग में नबी* सल्ल० और आप (सल्ल०) के साथियों को इस बारे में कुछ आदेश दिये गये हैं कि वे धर्म प्रचार का महान कार्य करते समय किन बातों का ध्यान रखें। इस बात पर विशेष ज़ोर दिया गया है कि वे विरोधियों के अत्याचार और उन की हद से बढ़ी हुई दुश्मनी के बावजूद धैर्य और सहनशीलता से काम लें; और अपने कर्तव्य को एक क्षण के लिये भी न भूलें।

---

* इन का अर्थ परिशिष्ट में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अल-आराफ़

(मक्का में उतरी — आयतें २०६)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

अलिफ़० लाम० मीम० साद०[1]। ○ (हे नबी* !) यह एक किताब* है जो तुम्हारी ओर उतारी गई है—सो इस से तुम्हारे सीने (अथवा दिल) में कोई सकोच न हो—ताकि तुम इस के द्वारा (लोगों को) सचेत करो, और ईमान* वालों के लिए याद-दिहानी हो। ○

(लोगो !) जो-कुछ तुम्हारे रब* की ओर से तुम्हारी ओर उतारा गया है उस पर चलो, और उस[2] के सिवा दूसरे संरक्षक-मित्रों के पीछे न चलो—तुम लोग कम ही ध्यान देते हो ! ○

कितनी ही बस्तियाँ हैं जिन्हें हम ने हलाक (विनष्ट) कर दिया ! उन पर हमारा अज़ाब रात को सोते समय आ पहुँचा, या जब कि वे दोपहर को आराम कर रहे थे। ○ जब उन पर हमारा अज़ाब आ गया, तो उन से कुछ भी करते न बन पड़ा, सिवाय इस के कि वे बोल उठे : वास्तव में
५ हम ज़ालिम (पापी) थे। ○

بسم الله الرحمن الرحيم
المص ۚ كتب انزل اليك فلا يكن في صدرك حرج منه
لتنذر به وذكرى للمؤمنين ۞ اتبعوا ما انزل اليكم
من ربكم ولا تتبعوا من دونه اولياء ۗ قليلا ما تذكرون
وكم من قرية اهلكنها فجاءها باسنا بياتا او هم قائلون
فما كان دعوىهم اذ جاءهم باسنا الا ان قالوا انا كنا
ظلمين ۞ فلنسئلن الذين ارسل اليهم ولنسئلن المرسلين
فلنقصن عليهم بعلم وما كنا غائبين ۞ والوزن يومئذ
الحق ۚ فمن ثقلت موازينه فاولئك هم المفلحون ۞ ومن
خفت موازينه فاولئك الذين خسروا انفسهم بما كانوا
بايتنا يظلمون ۞ ولقد مكنكم في الارض وجعلنا لكم فيها
معايش ۗ قليلا ما تشكرون ۞ ولقد خلقنكم ثم صورنكم
ثم قلنا للملئكة اسجدوا لادم فسجدوا الا ابليس ۗ لم يكن
من السجدين ۞ قال ما منعك الا تسجد اذ امرتك ۗ قال انا
خير منه ۚ خلقتني من نار وخلقته من طين ۞ قال
فاهبط منها فما يكون لك ان تتكبر فيها فاخرج انك من

तो हम उन लोगों से अवश्य पूछेंगे जिन की ओर रसूल* भेजे गये थे (कि उन्हों ने रसूलों* की बात मानी कि नहीं), और रसूलों* से भी हम अवश्य पूछेंगे[3]। ○ फिर हम पूरे ज्ञान के साथ सब हाल उन्हें सुना कर रहेंगे, क्योंकि हम कहीं ग़ायब नहीं थे। ○ तौल उस दिन ठीक होगी। फिर जिन के पलड़े भारी होंगे, वही सफलता प्राप्त करने वाले होंगे। ○ और जिन के पलड़े हल्के होंगे तो वही वे लोग होंगे जिन्हों ने अपने-आप को घाटे में डाला इस लिए कि वे हमारी आयतों* के साथ ज़ुल्म करते थे। ○

हम ने तुम्हें ज़मीन में जगह दी, और हम ने तुम्हारे लिए उस में जीवन-निर्वाह की सामग्री
१० संचित की। तुम कम ही कृतज्ञता दिखलाते हो ! ○

हम ने तुम्हें पैदा किया, फिर तुम्हारी सूरत बनाई, फिर फ़िरिश्तों* से कहा : आदम के आगे झुक जाओ ! तो इबलीस* के सिवा सब झुक गये, वह झुकने वालों में शामिल नहीं हुआ। ○

(अल्लाह ने) कहा : तुझे किस चीज़ ने झुकने से रोका जब कि मैं ने तुझे हुक्म दिया था !

---

१ दे० सूरः अल-बक़रः फ़ुट नोट १।

२ अर्थात् अपने रब* को छोड़ कर।

३ अर्थात् रसूलों* से भी यह पूछा जायेगा कि उन्हों ने अल्लाह का सन्देश लोगों को ठीक-ठीक पहुँचाया या नहीं; यदि पहुँचाया तो लोगों की ओर से उन्हें क्या उत्तर मिला ?

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

मनुष्य किसी और का कुछ नहीं बिगाड़ता बल्कि वह स्वयं अपने साथ और अपनी उस प्रकृति के साथ अन्याय करता है जिसे ले कर वह इस लोक में आता है।

अल्लाह के इस उपकार का भी इस सूरः में उल्लेख किया गया कि उस ने हमारे लिए वस्त्र उतारा है जो हमारे लिए शोभनीय वस्तु भी है और हम उस से अपने शरीर के ढकने का काम भी लेते हैं। यदि वह हमारे लिए वस्त्र न उतारता तो हम बिल्कुल नग्न अवस्था में रहते। इस उपयोगी वस्त्र के सम्बन्ध से हमें एक और प्रकार के वस्त्र का परिचय दिया गया। वह है तक़्वा* (डर-भय और पूज्यता) का वस्त्र। जिस प्रकार हमारे कपड़े हमारे शरीर की शोभा हैं और उन से हमारे शरीर की रक्षा होती है, ठीक उसी प्रकार तक़्वा* और संयम हमारे नैतिक और आध्यात्मिक जीवन की शोभा हैं और उन से हमारे आध्यात्मिक जीवन की रक्षा होती है। इस्लाम* की दृष्टि में आध्यात्मिकता का मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन से अटूट सम्बन्ध है। सच्ची आध्यात्मिकता वास्तव में मनुष्य की आन्तरिक और बाह्य शक्तियों के सन्तुलित सम्बन्ध में ही है। सच्चाई को हिस्सों में नहीं बाँटा जा सकता। मनुष्य का जीवन न तो निरुद्देश्य है और न हम उसे अनेक असंगतियों का मिश्रण कह सकते हैं। आन्तरिक जगत हो या बाह्य जगत मनुष्य को दोनों जगह सत्य ही का पालन करना चाहिए। मनुष्य आध्यात्मिक और नैतिक दृष्टि से जैसा-कुछ होता है उसी का वह अपने व्यवहारिक जीवन में परिचय देता है। प्रस्तुत सूरः में लोगों को सचेत किया गया कि उन का रब* हर मामले में इन्साफ़ का हुक्म देता है; और इस बात का कि लोग केवल उसी एक के आगे झुकें। अल्लाह ने अच्छी और स्वच्छ चीज़ें अपने बन्दों के लिए पैदा की हैं उस ने केवल खुली और छिपी अश्लील बातों को हराम किया है न कि स्वच्छ और शुद्ध चीज़ों को।

इस सूरः में जहाँ मक्का के लोगों को डराया दिया गया है वहीं यहूदियों* को भी सम्बोधित किया गया है। और उन के सामने यह बात खोल कर रख दी गई है कि पैग़म्बर* पर ईमान* लाने के पश्चात कपट-नीति अपनाने और उस के आदेशों को सुनने और उन के अनुसार आचरण करने का वचन देने के पश्चात् उस से फिर जाने का क्या परिणाम हुआ करता है। इस सूरः में एक जगह संसार के सभी लोगों को सम्बोधित किया गया है यह इस बात की ओर संकेत है कि अब क़ियामत* का समय बिल्कुल निकट आ गया है।

सूरः के अन्तिम भाग में नबी* सल्ल० और आप (सल्ल०) के साथियों को इस बारे में कुछ आदेश दिये गये हैं कि वे धर्म-प्रचार का महान् कार्य करते समय किन बातों का ध्यान रखें। इस बात पर विशेष ज़ोर दिया गया है कि वे विरोधियों के अत्याचार और उन की हद से बढ़ी हुई दुश्मनी के बावजूद धैर्य और सहनशीलता से काम लें; और अपने कर्तव्य को एक क्षण के लिये भी न भूलें।

---

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः अल-आराफ़

(मक्का में उतरी — आयतें २०६)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

अलिफ़० लाम० मीम० साद०[1] । ○ (हे नबी*!) यह एक किताब* है जो तुम्हारी ओर उतारी गई है — सो इस से तुम्हारे सीने (अथवा दिल) में कोई संकोच न हो — ताकि तुम इस के द्वारा (लोगों को) सचेत करो, और ईमान* वालों के लिए याद-दिहानी हो। ○

(लोगो!) जो-कुछ तुम्हारे रब* की ओर से तुम्हारी ओर उतारा गया है उस पर चलो, और उस[2] के सिवा दूसरे संरक्षक-मित्रों के पीछे न चलो — तुम लोग कम ही ध्यान देते हो! ○

कितनी ही बस्तियाँ हैं जिन्हें हम ने हलाक (विनष्ट) कर दिया। उन पर हमारा अज़ाब रात को सोते समय आ पहुँचा, या जब कि वे दोपहर को आराम कर रहे थे। ○ जब उन पर हमारा अज़ाब आ गया, तो उन से कुछ भी करते न बन पड़ा, सिवाय इस के कि वे बोल उठे : वास्तव में हम ज़ालिम (पापी) थे। ○ ५

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
الٓمّٓصٓ ۚ كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِيْ صَدْرِكَ حَرَجٌ مِّنْهُ
لِتُنْذِرَ بِهٖ وَذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۝ اِتَّبِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ
مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ۝
وَكَمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا فَجَآءَهَا بَاْسُنَا بَيَاتًا اَوْ هُمْ قَآئِلُوْنَ ۝
فَمَا كَانَ دَعْوٰىهُمْ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَآ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا
ظٰلِمِيْنَ ۝ فَلَنَسْـَٔلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ وَلَنَسْـَٔلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ ۝
فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ وَّمَا كُنَّا غَآئِبِيْنَ ۝ وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذِ
الْحَقُّ ۚ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ وَمَنْ
خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا
بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ ۝ وَلَقَدْ مَكَّنّٰكُمْ فِي الْاَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا
مَعَايِشَ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝ وَلَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنٰكُمْ
ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۭ لَمْ يَكُنْ
مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ۝ قَالَ مَا مَنَعَكَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ اَمَرْتُكَ ۭ قَالَ
اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۚ خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ۝ قَالَ
فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُوْنُ لَكَ اَنْ تَتَكَبَّرَ فِيْهَا فَاخْرُجْ اِنَّكَ مِنَ

तो हम उन लोगों से अवश्य पूछेंगे जिन की ओर रसूल* भेजे गये थे (कि उन्हों ने रसूलों* की बात मानी कि नहीं), और रसूलों* से भी हम अवश्य पूछेंगे[3] । ○ फिर हम पूरे ज्ञान के साथ सब हाल उन्हें सुना कर रहेंगे, क्योंकि हम कहीं ग़ायब नहीं थे। ○ तोल उस दिन ठीक होगी। फिर जिन के पलड़े भारी होंगे, वही सफलता प्राप्त करने वाले होंगे। ○ और जिन के पलड़े हल्के होंगे तो वही वे लोग होंगे जिन्हों ने अपने-आप को घाटे में डाला इस लिए कि वे हमारी आयतों* के साथ ज़ुल्म करते थे। ○

हम ने तुम्हें ज़मीन में जगह दी, और हम ने तुम्हारे लिए उस में जीवन-निर्वाह की सामग्री संचित की। तुम कम ही कृतज्ञता दिखलाते हो! ○ १०

हम ने तुम्हें पैदा किया, फिर तुम्हारी सूरत बनाई, फिर फ़रिश्तों* से कहा : आदम के आगे झुक जाओ! तो इबलीस* के सिवा सब झुक गये, वह झुकने वालों में शामिल नहीं हुआ। ○

(अल्लाह ने) कहा : तुझे किस चीज़ ने झुकने से रोका जब कि मैं ने तुझे हुक्म दिया था?

---

१ दे० सूरः अल-बक़रः फुट नोट १ ।

२ अर्थात् अपने रब* को छोड़ कर ।

३ अर्थात् रसूलों* से भी यह पूछा जायेगा कि उन्हों ने अल्लाह का सन्देश लोगों को ठीक-ठीक पहुँचाया या नहीं; यदि पहुँचाया तो लोगों की ओर से उन्हें क्या उत्तर मिला ?

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

الصّٰغِرِيْنَ ۝ قَالَ اَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ۝ قَالَ اِنَّكَ مِنَ
الْمُنْظَرِيْنَ ۝ قَالَ فَبِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝
ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ وَعَنْ
شَمَآئِلِهِمْ ۗ وَلَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ ۝ قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُوْمًا
مَّدْحُوْرًا ۗ لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ وَ
يٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا
هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِيَ
لَهُمَا مَا وٗرِيَ عَنْهُمَا مِنْ سَوْاٰتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهٰىكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ
هٰذِهِ الشَّجَرَةِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَا مَلَكَيْنِ اَوْ تَكُوْنَا مِنَ الْخٰلِدِيْنَ ۝
وَقَاسَمَهُمَآ اِنِّيْ لَكُمَا لَمِنَ النّٰصِحِيْنَ ۝ فَدَلّٰىهُمَا بِغُرُوْرٍ ۚ فَلَمَّا ذَاقَا
الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ
الْجَنَّةِ ۗ وَنَادٰىهُمَا رَبُّهُمَآ اَلَمْ اَنْهَكُمَا عَنْ تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَاَقُلْ
لَّكُمَآ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝ قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا
وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝ قَالَ اهْبِطُوْا
بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى
حِيْنٍ ۝ قَالَ فِيْهَا تَحْيَوْنَ وَفِيْهَا تَمُوْتُوْنَ وَمِنْهَا تُخْرَجُوْنَ ۝
يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُّوَارِيْ سَوْاٰتِكُمْ وَرِيْشًا ۗ وَلِبَاسُ

बोला : मैं उस से उत्तम हूँ। तू ने मुझे अग्नि से उत्पन्न किया है और उसे मिट्टी से पैदा किया है। ○

कहा : तू यहाँ से नीचे उतर जा। तुझे हक़ नहीं कि यहाँ घमण्ड करे, निकल दूर हो! निश्चय ही तू अपमानित लोगों में से है। ○

बोला : मुझे उस दिन तक मुहलत दे जब कि लोग (मरने के बाद) दोबारा उठाये जायेंगे। ○

(अल्लाह ने) कहा : तुझे मुहलत है। ○

बोला : जैसा तू ने मुझे बदराह किया है, मैं भी तेरे सीधे मार्ग पर इन की घात में बैठूंगा[1]। ○ फिर इन के आगे और पीछे, दायें और बायें, हर ओर से इन पर आक्रमण करूँगा और तू इन में से बहुतों को कृतज्ञ न पायेगा। ○

(अल्लाह ने) कहा : निकल जा यहाँ से, धिक्कारा और ठुकराया हुआ। इन में से जो कोई तेरा कहना मानेगा, मैं अवश्य तुम सब से[2] दोज़ख* को भर कर रहूँगा। ○ और हे आदम! तू और तेरी पत्नी दोनों जन्नत* में रहो, जहाँ से चाहो खाओ, परन्तु इस पेड़ के निकट न जाना नहीं तो ज़ालिमों में से हो जाओगे। ○

फिर शैतान* ने दोनों को बहकाया ताकि उन की शर्मगाहें (गुप्त इन्द्रियाँ) जो इन दोनों से छिपाई गई थीं उन के सामने खोल दे, उस ने कहा : तुम्हारे रब* ने तुम दोनों को जो इस पेड़ से रोका है तो केवल इस लिए कि कहीं तुम फ़रिश्ते* न बन जाओ या तुम अमर न हो जाओ। ○ और उस ने उन दोनों के आगे क़सम खाई कि मैं तो तुम्हारा हित चाहने वाला हूँ। ○

इस तरह धोखा दे कर वह उन दोनों को नीचे ले आया। जब उन्हों ने उस पेड़ का मज़ा चखा तो उन की शर्मगाहें एक-दूसरे के सामने खुल गईं और वे दोनों अपने (शरीर के) ऊपर जन्नत* के पत्ते जोड़-जोड़ कर रखने लगे।

तब उन के रब* ने उन्हें पुकारा : क्या मैं ने तुम दोनों को इस पेड़ से रोका नहीं था और तुम दोनों से कह नहीं दिया था कि शैतान* तुम्हारा खुला दुश्मन है? ○

दोनों बोले : हमारे रब*! हम ने अपने-आप पर ज़ुल्म किया। यदि तू ने हमें क्षमा न किया और हम पर दया न की, तो निश्चय ही हम घाटा उठाने वालों में से हो जायेंगे। ○

(अल्लाह ने) कहा : (यहाँ से) उतर जाओ, तुम एक-दूसरे के दुश्मन हो। तुम्हारे लिए एक नियत समय तक ज़मीन में ठिकाना और जीवन-निर्वाह की सामग्री है। ○ (अल्लाह ने) कहा :

---

१ अर्थात् जिस तरह तू ने आदम के आगे झुकने का आदेश दे कर मुझे आज्ञापालन से हटा दिया, जिस से मैं पूरा नहीं उतर सका और बदराह हो गया उसी तरह मैं भी आदम की सन्तान को बदराह करूँगा और इस के लिए सारे यत्न कर डालूँगा।

२ अर्थात् मुझ से और तेरा कहना मानने वाले मनुष्यों से।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सल्ल० के बाद हज़रत अबूबक्र रज़ि० के समय में एक युद्ध में ऐसे बहुत से लोग वीरगति को प्राप्त हुये जिन्हें पूरा क़ुरआन याद था। इस अवसर पर हज़रत उमर रज़ि० ने अपना यह विचार प्रकट किया कि विभिन्न चीज़ों पर लिखी हुई क़ुरआन की आयतों (Words of Allah) को एक जिल्द में सगृहीत करने का प्रबन्ध किया जाये। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने इस काम पर हज़रत ज़ैद बिन साबित अनसारी को नियुक्त किया। हज़रत ज़ैद नबी सल्ल० के विशेष 'कातिब' रह चुके थे। हज़रत ज़ैद कुछ बड़े 'सहाबः' के साथ इस शुभ कार्य में लग गये। इस बात का एलान कर दिया गया कि जिस किसी के पास भी क़ुरआन का थोड़ा या बहुत हिस्सा लिखित रूप में मौजूद हो ले आये। नबी सल्ल० के लिखाये हुये क़ुरआन के हिस्से भी इकट्ठा कर लिए गये। हज़रत ज़ैद और आपके जो साथी इस महान कार्य में तन्मयता के साथ लगे हुये थे वे सब-के-सब क़ुरआन के हाफ़िज़ थे। पूरा क़ुरआन उन्हें कण्ठस्थ था। फिर भी उन्होंने पूरी इहतियात से काम लिया। उनकी सतर्कता का हाल यह था कि जो-कुछ वे लिखित रूप में पाते उसपर कम-से-कम दो गवाह लेते कि जो-कुछ लिखा गया है वह नबी सल्ल०के सामने लिखा गया है या नहीं ? और अमुक व्यक्ति ने जो कुछ क़ुरआन सुनाया उसने इसी तरह अल्लाह के रसूल से सुना था या नहीं ? जब गवाह गुज़र जाते तो फिर उसे अपने लेख-पत्रों और अपने हाफ़िज़े से मिलाकर मुक़ाबला करते। जब हर प्रकार से इतमीनान हो जाता तब उसे लिपिबद्ध करते। इस तरह जब पूरे क़ुरआन की एक प्रमाणित प्रति तैयार हो गई, तो उसे हज़रत अबू बक्र रज़ि० के पास रख दिया गया इसलिए कि उस समय वही इस्लामी राज्य के सबसे बड़े पद पर थे। आप के बाद क़ुरआन की यह प्रति उनके उत्तराधिकारी हज़रत उमर रज़ि० के पास रही। हज़रत उमर रज़ि० के बाद क़ुरआन की यह प्रति आपकी बेटी हज़रत हफ़्सः रज़ि० के पास रखवा दी गई।

आगे चलकर जब इस्लाम अरब से निकलकर दूर-दूर तक फैल गया और अधिक संख्या मे ऐसे लोग इस्लाम ग्रहण करने लगे जो अरबी भाषा से अनभिज्ञ थे। उनसे क़ुरआन पढ़ने में ग़लतियाँ होने लगी, उस समय हज़रत उसमान रज़ि० ने निश्चय किया कि क़ुरआन की जो प्रति हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने तैयार कराई है उसकी नक़लें (प्रतिलिपियाँ) इस्लामी प्रदेशों में भेज दी जायें ताकि लोग उसीके अनुसार क़ुरआन का पाठ करें और क़ुरआन के उच्चारण में कोई विभेद न हो। ख़लीफ़ा हज़रत उसमान रज़ि० ने क़ुरआन की कई एक प्रतियाँ तैयार कराईं और फिर उसकी एक-एक प्रति मिस्र, बसरः, शाम (Syria), यमन और बहरैन के गौरनरों (राज्यपालों) के पास भेज दी। और उन्हें लिखा कि लोग इसीके अनुसार क़ुरआन का पाठ करें। क़ुरआन की एक प्रति आपने अपने पास रख ली। आपकी भेजी हुई प्रतियाँ मक्का, मदीना, दिमश्क़ और मराकश में अब भी मौजूद हैं। आज जो क़ुरआन हमारे हाथों में है वह उन ही प्रतियों की प्रतिलिपि (True Copy) है जिन्हें हज़रत उसमान रज़ि० ने विभिन्न इस्लामी प्रदेशों में भेजा था। यह तो हो सकता है कि किसी को क़ुरआन के ईश्वरीय ग्रन्थ होने में सन्देह हो परन्तु कोई यह नहीं कह सकता कि जो क़ुरआन इस समय हमारे हाथों में है वह वही क़ुरआन नहीं है जिसे हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने पेश किया था। यदि इस में किसीको सन्देह हो सकता है तो

में बाक़ी है या नहीं हमें उसके ग्रन्थों का अध्ययन करना पड़ता है। क्योंकि किसी धर्म के विषय में जानकारी प्राप्त करने का मूल साधन उसके ग्रन्थ ही हैं। यदि किसी धर्म के अनुयायी अपने धार्मिक ग्रन्थ को सुरक्षित न रख सके, तो इसका अर्थ यह है कि उनका धर्म ही सुरक्षित न रहा।

التَّقْوٰى ذٰلِكَ خَيْرٌ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ○ يٰبَنِيْٓ
اٰدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ كَمَآ اَخْرَجَ اَبَوَيْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ
عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوْاٰتِهِمَا اِنَّهٗ يَرٰىكُمْ هُوَ وَقَبِيْلُهٗ مِنْ
حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ اِنَّا جَعَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ○
وَاِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً قَالُوْا وَجَدْنَا عَلَيْهَآ اٰبَآءَنَا وَاللّٰهُ اَمَرَنَا بِهَا
قُلْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ○
قُلْ اَمَرَ رَبِّيْ بِالْقِسْطِ وَاَقِيْمُوْا وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ
وَّادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ كَمَا بَدَاَكُمْ تَعُوْدُوْنَ ○ فَرِيْقًا
هَدٰى وَفَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ اِنَّهُمُ اتَّخَذُوا الشَّيٰطِيْنَ
اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ○ يٰبَنِيْٓ
اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا
اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ○ قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ الَّتِيْٓ
اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَالطَّيِّبٰتِ مِنَ الرِّزْقِ قُلْ هِيَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ
لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ○ قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَ
مَا بَطَنَ وَالْاِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَاَنْ تُشْرِكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ
يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ○ وَلِكُلِّ

वहीं तुम्हें जीना, और वहीं तुम्हें मरना है, और उसी में से अन्त में तुम (जीवित कर के) निकाले जाओगे। ○ २५

हे आदम की औलाद ! हम ने तुम्हारे लिए वस्त्र उतारा है कि तुम्हारी शर्मगाहों को ढके और (तुम्हारे लिए शरीर की) रक्षा और शोभा का साधन हो, और तक़्वा* (ईश-भय एवं पुण्यता) का वस्त्र सब से उत्तम है। यह अल्लाह की निशानियों में से है, कदाचित् लोग चेतें। ○ हे आदम की औलाद ! कहीं शैतान* तुम्हें फ़ितने में न डाल दे[६] जिस तरह उस ने तुम्हारे (प्रथम) माता-पिता को (बहका कर) जन्नत* से निकलवा दिया था और उन के वस्त्र उन से उतरवा दिये थे ताकि उन की शर्मगाहें एक-दूसरे के सामने खोले। वह और उस का गरोह तो तुम्हें वहाँ से देखता है जहाँ से तुम उन्हें नहीं देखते। निश्चय ही हम ने शैतानों* को उन लोगों का संरक्षक-मित्र बना दिया है जो ईमान* नहीं लाते। ○

जब ये लोग कोई अश्लील कर्म करते हैं तो कहते हैं: हम ने अपने पूर्वजों को इसी तरीक़े पर पाया है और अल्लाह ने हमें इस का हुक्म दिया है। कह दो : अल्लाह कभी अश्लील बातों का हुक्म नहीं देता। क्या तुम अल्लाह से सम्बन्ध लगा कर ऐसी बात कहते हो जिस का तुम्हें ज्ञान नहीं (कि वह उस की ओर से है) ? ○ (हे नबी* !) कह दो : मेरे रब* ने तो इन्साफ़ का हुक्म दिया है और यह कि इबादत* के हर अवसर पर अपना रुख़ ठीक रखो और उसी को पुकारो, दीन* को उस के लिए ख़ालिस कर के। जिस तरह उस ने तुम्हें पहली बार पैदा किया उसी तरह तुम फिर पैदा होगे। ○ एक गिरोह को उस ने (सीधा) मार्ग दिखा दिया, परन्तु दूसरे गिरोह पर गुमराही साबित हो चुकी, क्योंकि उन्हों ने (अर्थात् दूसरे गिरोह वालों ने) अल्लाह के सिवा शैतानों* को अपना संरक्षक-मित्र बनाया और समझते हैं कि हम सीधे मार्ग पर हैं। ○ ३०

हे आदम की औलाद ! इबादत* के हर अवसर पर अपनी शोभा को धारण कर लो[७] और खाओ पियो, परन्तु हद से आगे न बढ़ो। निस्सन्देह अल्लाह मर्यादा-हीन लोगों को पसन्द नहीं करता। ○

(हे नबी* ! उन से) कहो : अल्लाह की उस शोभा[८] को जो उस ने अपने बन्दों के लिए निकाली है, और रोज़ी की अच्छी चीज़ों को किस ने हराम* कर दिया है ? कह दो : ये (चीज़ें) सांसारिक जीवन में भी ईमान* लाने वाले लोगों के लिए हैं और क़ियामत* के दिन तो केवल उन्हीं के लिए होंगी। इसी तरह हम आयतों* को उन लोगों के लिए खोल-खोल कर बयान करते हैं जो ज्ञान रखने वाले हैं। ○

६ तुम्हें गुमराह न कर दे।

७ अर्थात् अपने पूरे वस्त्र पहन लिया करो। उपयुक्त और उचित वस्त्र तुम्हारे लिए शोभा और सभ्यता की निशानी है।

८ अर्थात् कपड़े और वस्त्र आदि को।

* इस का अर्थ आखिर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

قُلْ إِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَالْإِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَأَنْ تُشْرِكُوا بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ سُلْطَانًا وَأَنْ تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝ وَلِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ لَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ۝ يَا بَنِي آدَمَ إِمَّا يَأْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِنْكُمْ يَقُصُّونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِي فَمَنِ اتَّقَى وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ أُولَٰئِكَ يَنَالُهُمْ نَصِيبُهُمْ مِنَ الْكِتَابِ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَتْهُمْ رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ قَالُوا أَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا وَشَهِدُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا كَافِرِينَ ۝ قَالَ ادْخُلُوا فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ فِي النَّارِ كُلَّمَا دَخَلَتْ أُمَّةٌ لَعَنَتْ أُخْتَهَا حَتَّىٰ إِذَا ادَّارَكُوا فِيهَا جَمِيعًا قَالَتْ أُخْرَاهُمْ لِأُولَاهُمْ رَبَّنَا هَٰؤُلَاءِ أَضَلُّونَا فَآتِهِمْ عَذَابًا ضِعْفًا مِنَ النَّارِ قَالَ لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَلَٰكِنْ لَا تَعْلَمُونَ ۝

कह दो : मेरे रब* ने जो चीज़ें हराम* की हैं वे तो ये हैं : अश्लील कर्म — जो उन में खुले हुये हों वे भी, और जो छुपे हों वे भी — और गुनाह, नाहक़ की ज़्यादती, और यह बात कि तुम अल्लाह के साथ किसी को शरीक करो जिस के लिए उस ने कोई सनद (प्रमाण दलील) नहीं उतारी, और यह कि अल्लाह से सम्बन्ध लगा कर ऐसी बात कहो जिस के बारे में तुम्हें कोई ज्ञान न हो।○

हर जाति के लिए एक नियत समय है, फिर जब उन का नियत समय आ गया, तो उस से न एक घड़ी पीछे हट सकते हैं और न आगे बढ़ सकते हैं।९ ○ (अल्लाह ने यह पहले ही कहा था कि) ऐ आदम की औलाद ! यदि तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल* आयें जो तुम्हें मेरी आयतें* सुनायें, तो जो कोई मेरी अवज्ञा से बचे और मेरी ना-ख़ुशी से डरे और अपना सुधार कर ले तो ऐसे लोगों को न कोई भय होगा और न वे दुःखी होंगे।○ परन्तु जिन लोगों ने हमारी आयतों* को झुठलाया और उन के मुक़ाबिले में अकड़ गये वही लोग आग (दोज़ख़* में पड़ने) वाले हैं; जहाँ वे सदा रहेंगे।○ उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन हो सकता है जो अल्लाह पर झूठ घड़े या उस की आयतों* को झुठलाये। ऐसे लोगों को उन का हिस्सा जो (भाग्य में) लिखा हुआ है मिलेगा यहाँ तक कि (वह समय आ जायेगा कि) जब हमारे भेजे हुये (फ़िरिश्ते*) उन (की जान) को ग्रस्त लेने के लिए उन के पास आयेंगे, कहेंगे : (अब) वे कहाँ हैं जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते थे? कहेंगे : वे सब हम से गुम हो गये। और वे स्वयं अपने विरुद्ध गवाही देंगे कि वास्तव में हम कुफ़्र* करने वाले थे।○ अल्लाह कहेगा : जिन्नों* और मनुष्यों के जो गिरोह तुम से पहले गुज़रे हैं उन्हीं के साथ तुम भी (दोज़ख़* की) आग में चले जाओ। हर जमात जब (दोज़ख़ में) दाख़िल होगी, तो अपनी बहन (अर्थात् अपनी जैसी दूसरी जमात) पर लानत करेगी, यहाँ तक कि जब उस में सब इकट्ठा हो जायेंगे, तो उन में से बाद में आने वाला गिरोह पहले गिरोह के बारे में कहेगा : हमारे रब*! इन्हीं (लोगों) ने हमें गुमराह किया, अतः इन्हें आग (दोज़ख़*) का दोगुना अज़ाब दे। वह कहेगा : हर एक के लिए दोगुना अज़ाब है, परन्तु तुम जानते नहीं हो''।१० ○ और उन में से

---

९. संसार में हर जाति के काम करने के लिए नैतिक नियम के अन्तर्गत एक अवधि नियत होती है। किसी भी जाति या वर्ग के लिए संसार में उसी समय तक काम करने की मुहलत बाक़ी रहती है जब तक कि वह बुराई की उस सीमा को न पहुँच जाय जो अल्लाह की ओर से जातियों और गिरोहों के विनाश के लिए ठहराई गई है। जब कोई भी जाति बुराई की इस निश्चित सीमा को पहुँच जाती है, तो इस के बाद उसे कुछ मुहलत नहीं दी जाती।

१०. हर गुमराह जमात ने अपने बाद आने वालों के लिए गुमराही के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं छोड़ा है। अतः हर एक को दोहरा अज़ाब चखना होगा : एक अज़ाब स्वयं अपनी गुमराही का, और दूसरा अज़ाब दूसरे लोगों को गुमराह करने का।

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا
خَالِدُونَ ۝ وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِنْ غِلٍّ تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا لِهَٰذَا وَمَا كُنَّا
لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا أَنْ هَدَانَا اللَّهُ لَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ
وَنُودُوا أَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝
وَنَادَىٰ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابَ النَّارِ أَنْ قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا
رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُمْ مَا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا قَالُوا نَعَمْ فَأَذَّنَ
مُؤَذِّنٌ بَيْنَهُمْ أَنْ لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ۝ الَّذِينَ يَصُدُّونَ
عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا وَهُمْ بِالْآخِرَةِ كَافِرُونَ ۝ وَ
بَيْنَهُمَا حِجَابٌ وَعَلَى الْأَعْرَافِ رِجَالٌ يَعْرِفُونَ كُلًّا بِسِيمَاهُمْ وَ
نَادَوْا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَنْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ لَمْ يَدْخُلُوهَا وَهُمْ يَطْمَعُونَ
وَإِذَا صُرِفَتْ أَبْصَارُهُمْ تِلْقَاءَ أَصْحَابِ النَّارِ قَالُوا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا
مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ وَنَادَىٰ أَصْحَابُ الْأَعْرَافِ رِجَالًا يَعْرِفُونَهُمْ
بِسِيمَاهُمْ قَالُوا مَا أَغْنَىٰ عَنْكُمْ جَمْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ ۝
أَهَٰؤُلَاءِ الَّذِينَ أَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللَّهُ بِرَحْمَةٍ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا
خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَا أَنْتُمْ تَحْزَنُونَ ۝ وَنَادَىٰ أَصْحَابُ النَّارِ أَصْحَابَ
الْجَنَّةِ أَنْ أَفِيضُوا عَلَيْنَا مِنَ الْمَاءِ أَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ قَالُوا إِنَّ

द में आने वाला गिरोह कहेगा : अब तो तुम्हें हम कोई बड़ाई प्राप्त नहीं है, सो जैसी कुछ कमाई करते हो उस के बदले में अब अज़ाब का मज़ा चखो। ○

निस्सन्देह जिन लोगों ने हमारी आयतों* को झुठलाया और उन के मुक़ाबिले में अकड़ गये, उन के लिए आसमान (स्वर्ग) के द्वार नहीं खोले जायेंगे और न वे जन्नत* में प्रवेश करेंगे जब तक कि ऊँट सुई के नाके में से न गुज़रे[११]। ऐसे ही हम अपराधियों को (उन के करतूतों का) बदला देते हैं। ○ उन के लिए बिछौना भी दोज़ख़* का होगा, और उन के ऊपर से ओढ़ना भी (उसी का होगा)। इसी तरह हम ज़ालिमों को (उन के ज़ुल्म का) बदला देते हैं। ○ परन्तु जो लोग ईमान* लाये और अच्छे काम किये — हम किसी पर उस की समाई से बढ़ कर बोझ नहीं डालते — ऐसे ही लोग जन्नत* (में रहने) वाले हैं। वे उस में सदैव रहेंगे। ○ उन के सीने (अथवा दिल) में एक दूसरे के प्रति जो-कुछ मनमुटाव होगा उसे हम दूर कर देंगे। उन के नीचे नहरें बह रही होंगी। और वे कहेंगे : प्रशंसा (हम्द*) अल्लाह के लिए है, जिस ने हमें इस का मार्ग दिखाया। यदि अल्लाह हमें राह न दिखाता, तो हम राह नहीं पा सकते थे। हमारे रब* के रसूल* वास्तव में हक़ (सच्चाई) ले कर आये थे। उन्हें आवाज़ दी जायेगी : यह जन्नत* है जिस के तुम उन कामों के बदले में वारिस बनाये गये जो तुम करते थे। ○

जन्नत* वाले आग (दोज़ख़* में जाने) वालों को पुकारेंगे कि हम से हमारे रब* ने जो-कुछ वादा किया था हम ने उसे ठीक पाया। तुम से तुम्हारे रब* ने जो-कुछ वादा किया था क्या तुम ने भी उसे ठीक पाया? वे कहेंगे : हाँ, इतने में एक पुकारने वाला उन के बीच पुकार उठेगा कि ज़ालिमों पर अल्लाह की लानत (धिक्कार) है, ○ (उन लोगों पर) जो अल्लाह के रास्ते से रोकते और उसे कज (कुटिल) करना चाहते हैं, और जो आख़िरत* का इन्कार करने वाले हैं। ○

इन दोनों (गिरोहों) के बीच एक ओट होगी। और ऊँचाइयों (अल-आराफ़*) पर कुछ लोग होंगे जो हर एक को उस के लक्षण से पहचान रहे होंगे, और वे जन्नत* वालों को पुकारेंगे कि तुम पर सलाम (सलामती) हो! वे अभी उस में दाख़िल तो नहीं हुये फिर भी (इस की) आशा करते हैं[१२]। ○ और जब उन की निगाहें दोज़ख़* वालों की ओर फिरेंगी, तो कहेंगे : हमारे रब*! हमें ज़ालिम लोगों में शामिल न करना। ○ फिर ये आराफ़* वाले कुछ लोगों को जिन्हें उन के लक्षण से पहचानते होंगे पुकार कर कहेंगे : तुम्हारे जत्थे (आज) तुम्हारे कुछ

---

११ अर्थात् जिस तरह ऊँट का सुई के नाके से निकलना असम्भव है उसी तरह उन का जन्नत में दाख़िल होना भी असम्भव है।*

१२ कुछ लोगों को अल्लाह के यहाँ बड़ा ऊँचा पद प्राप्त होगा वे अल्लाह के बहुत ही क़रीबी बन्दे होंगे। जन्नती लोगों को देख कर पहचान लेंगे कि ये जन्नत में जाने वाले लोग हैं; हालांकि अभी वे जन्नत* में दाख़िल नहीं हुये होंगे; हाँ जन्नत* में पहुँचने की आशा वे अवश्य कर रहे होंगे।*

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

اللهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۙ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَهْوًا وَّلَعِبًا
وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ نَنْسٰىهُمْ كَمَا نَسُوْا لِقَآءَ يَوْمِهِمْ
هٰذَا ۙ وَمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ۝ وَلَقَدْ جِئْنٰهُمْ بِكِتٰبٍ فَصَّلْنٰهُ
عَلٰى عِلْمٍ هُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا
تَاْوِيْلَهٗ ۭ يَوْمَ يَاْتِيْ تَاْوِيْلُهٗ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ نَسُوْهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ
جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ فَهَلْ لَّنَا مِنْ شُفَعَآءَ فَيَشْفَعُوْا لَنَآ
اَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ۭ قَدْ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَ
ضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝ اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۣ يُغْشِي الَّيْلَ
النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا ۙ وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍ بِاَمْرِهٖ ۭ
اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ ۭ تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اُدْعُوْا رَبَّكُمْ
تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ۭ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ۝ وَلَا تُفْسِدُوْا فِي
الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا ۭ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ
قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًا ۢ بَيْنَ
يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ۭ حَتّٰٓي اِذَآ اَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنٰهُ لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ
فَاَنْزَلْنَا بِهِ الْمَاۗءَ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۭ كَذٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتٰى
لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۝ وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهٗ بِاِذْنِ رَبِّهٖ ۚ

काम न आ सके और न वह (काम आ सका) जो तुम अपने को बड़ा समझते थे। ○ और क्या ये (जन्नत* वाले) वही लोग नहीं हैं जिन के बारे में तुम क़समें खाते थे कि अल्लाह इन को अपनी रहमत (दयालुता) में से कुछ भी न देगा ? (जन्नती* लोगों को हुक्म होगा) : जन्नत* में दाख़िल हो जाओ । तुम्हें न तो कोई भय होगा और न तुम दुःखी होगे । ○

दोज़ख़* वाले जन्नत* वालों को पुकारेंगे कि थोड़ा पानी हम पर डाल दो या जो-कुछ अल्लाह ने तुम्हें रोज़ी दी है उस में से कुछ (दे दो)। वे (जवाब में) कहेंगे : ये दोनों चीज़ें काफ़िरों* पर हराम कर दी हैं, ○ जिन्हों ने अपने दीन* को खेल-तमाशा बना लिया था, और जिन्हें सांसारिक जीवन ने धोखे में डाले रखा । सो आज हम भी इन्हें भुला देंगे जिस तरह ये इस दिन की मुलाक़ात को भूले रहे और हमारी आयतों* का इन्कार करते रहे। ○

हम इन (लोगों) के पास एक किताब* ले आये हैं जिसे हम ने ज्ञानपूर्वक खोल-खोल कर बयान कर दिया है,[१३] वह ईमान* वालों के लिए (सर्वथा) मार्ग-दर्शन और दयालुता है। ○ क्या ये लोग इस का इन्तज़ार कर रहे हैं कि उस की हक़ीक़त[१४] (वास्तविकता) ज़ाहिर हो जाये ! जिस दिन उस की हक़ीक़त सामने आ जायेगी, तो वे लोग जो इस से पहले उसे भूले हुए थे कहेंगे : वास्तव में हमारे रब* के रसूल* हक़* (सत्य) ले कर आये थे ! तो क्या हमारे कुछ सिफ़ारिशी हैं, जो हमारी सिफ़ारिश कर दें ? या हमें फिर (सांसारिक जीवन की ओर) वापस भेज दिया जाये कि जो-कुछ हम करते थे उस के बदले दूसरे काम करें। उन्हों ने अपने-आप को घाटे में डाल दिया, और जो झूठ वे गढ़ते थे वह सब उन से गुम गया। ○

वास्तव में तुम्हारा रब* अल्लाह है जिस ने आसमानों और ज़मीन को छः दिनों में[१५] पैदा किया, और फिर राज-सिंहासन पर विराजमान हुआ[१६]। वह रात को दिन के साथ ढकता

---

१३ अर्थात् उस में विस्तारपूर्वक बता दिया गया है कि सच्चाई क्या है, संसार में मनुष्य किस प्रकार अपना जीवन व्यतीत करे, जीवन का वास्तविक मार्ग कौन-सा है । फिर ये सब बातें अटकल और अनुमान पर नहीं, पूर्ण ज्ञान पर आधारित हैं ।

१४ अर्थात् आख़िरत* की हक़ीक़त ।

१५ छः दिन का तात्पर्य छः युग (Six Period) है ।

१६ हम ने यहाँ 'अर्श' शब्द का अनुवाद राज-सिंहासन किया है । अर्श या सिंहासन पर विराजमान होने की वास्तविकता को विस्तारपूर्वक समझना हमारे लिए अत्यन्त कठिन है । यह भी सम्भव है कि अल्लाह ने किसी विशेष स्थान को अपने विशाल राज्य का केन्द्र ठहराया हो, और वहीं से अल्लाह की ओर से सम्पूर्ण विश्व में शक्ति और सत्ता की व्याप्ति होती हो, और सारे विश्व के प्रबन्ध का सम्बन्ध भी वहीं से हो । और यह भी हो सकता है कि 'अर्श' से अभिप्रेत राज-सत्ता एवं शासन हो । और उस पर विराजमान होने का तात्पर्य यह हो कि अल्लाह केवल विश्व का निर्माता ही नहीं है बल्कि वास्तव में वही इस सम्पूर्ण जगत के कारख़ाने को चलाने वाला है ।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

والذي خبث لا يخرج إلا نكدا كذلك نصرف الآيات لقوم
يشكرون ۝ لقد أرسلنا نوحا إلى قومه فقال يقوم اعبدوا الله
ما لكم من إله غيره إني أخاف عليكم عذاب يوم عظيم ۝
قال الملأ من قومه إنا لنراك في ضلل مبين ۝ قال يقوم
ليس بي ضللة ولكني رسول من رب العلمين ۝ أبلغكم
رسلت ربي وأنصح لكم وأعلم من الله ما لا تعلمون ۝ أوعجبتم
أن جاءكم ذكر من ربكم على رجل منكم لينذركم ولتتقوا و
لعلكم ترحمون ۝ فكذبوه فأنجينه والذين معه في الفلك
وأغرقنا الذين كذبوا بآيتنا إنهم كانوا قوما عمين ۝ و
إلى عاد أخاهم هودا قال يقوم اعبدوا الله ما لكم من إله
غيره أفلا تتقون ۝ قال الملأ الذين كفروا من قومه إنا لنراك
في سفاهة وإنا لنظنك من الكذبين ۝ قال يقوم ليس بي
سفاهة ولكني رسول من رب العلمين ۝ أبلغكم رسلت ربي
وأنا لكم ناصح أمين ۝ أوعجبتم أن جاءكم ذكر من ربكم
على رجل منكم لينذركم واذكروا إذ جعلكم خلفاء من بعد
قوم نوح وزادكم في الخلق بصطة فاذكروا آلاء الله
لعلكم تفلحون ۝ قالوا أجئتنا لنعبد الله وحده ونذر

है, जो उस का पीछा करने को तेज़ी में है और सूरज और चाँद और तारों को ऐसे तौर पर पैदा किया कि वे उस के हुक्म से काम में लगे हुए हैं। जान लो! उसी की सृष्टि है और हुक्म भी (उसी का है)। अल्लाह, सारे संसार का रब* बड़ी बरकत वाला है। ○ अपने रब* को गिड़गिड़ा कर और चुपके-चुपके पुकारो। निस्सन्देह वह हद से आगे बढ़ने वालों से प्रेम नहीं करता। ○ ज़मीन में उस के सुधार के बाद फ़साद न मचाओ, और भय और लालसा से उसे पुकारो। निस्सन्देह अल्लाह की दयालुता सत्कर्मी लोगों से समीप है। ○

और वही है जो अपनी दयालुता (वर्षा) के आगे-आगे हवाओं को ख़ुशख़बरी के रूप में भेजता है, यहाँ तक कि जब वे (पानी से) बोझल बादलों को उठा लेती हैं, तो उन्हें हम किसी मुरदा (निर्जीव) भूमि की ओर चला देते हैं, फिर वहाँ पानी बरसाते हैं, फिर उस से तरह-तरह के फल निकालते हैं। इसी तरह हम (क़ियामत* के दिन) मुर्दों को निकाल खड़ा करेंगे। (ये आयतें* इस लिए बयान की जाती हैं) कदाचित् तुम चेतो। ○ और जो भूमि अच्छी है उस के पेड़-पौधे अपने रब* के हुक्म से निकलते हैं; और जो भूमि ख़राब होती है, उस से निकम्मी पैदावार के सिवा कुछ नहीं निकलता[17]। इसी तरह हम आयतों* को उन लोगों के लिए तरह-तरह से बयान करते हैं जो कृतज्ञता दिखलाने वाले हैं। ○

"[18]हम ने नूह को उस की जाति वालों की ओर (रसूल* बना कर) भेजा, उस ने कहा : हे मेरी जाति वालो! अल्लाह की इबादत* करो उस के सिवा तुम्हारा कोई इलाह* (पूज्य) नहीं। मैं तुम्हारे लिए एक भारी दिन के अज़ाब से डरता हूँ। ○ उस की जाति के सरदारों ने कहा : हम तो देख रहे हैं कि तुम खुली गुमराही में पड़े हुये हो। ○ (नूह ने) कहा : हे मेरी जाति वालो! मैं किसी गुमराही में नहीं हूँ, बल्कि मैं सारे संसार के रब* को एक रसूल* हूँ। ○ तुम्हें अपने रब* के सन्देश पहुँचाता हूँ और तुम्हारा हित चाहता हूँ, और मैं अल्लाह की ओर से वह कुछ जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। ○ क्या तुम्हें इस बात पर आश्चर्य हुआ कि तुम्हारे

१७ यहाँ उपमा के रूप में यह बात समझाई गई है कि जिस तरह वर्षा से निर्जीव भूमि में जान आ जाती है उसी तरह नुबूवत* की बरकतों से लोगों को नवीन जीवन मिलता है। लोग अल्लाह से डरने वाले बन जाते हैं। परन्तु जिस तरह वर्षा केवल उपजाऊ भूमि के लिए ही लाभदायक सिद्ध होती है, कंकरीली पथरीली भूमि को उस से विशेष लाभ नहीं होता उसी तरह नुबूवत* की बरकतों से भी केवल वही लोग फ़ायदा उठाते हैं जो नेक और शुद्ध प्रकृति वाले हों।

१८ यहाँ से ऐतिहासिक दृष्टान्त प्रस्तुत किये जा रहे हैं कि किस तरह प्रत्येक युग में नबियों* के आने पर लोग दो गरोहों में बँटते रहे हैं : जिन में से एक गरोह उन लोगों का था जिन्हों ने नुबूवत* की बरकतों से पूरा लाभ उठाया, और दूसरा गरोह उन दुराचारियों का था जिन्हों ने नबियों* की बात नहीं मानी, और अल्लाह के मार्ग-दर्शन और उस की शिक्षा को अमृत-धार से सर्वथा वंचित रहे।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

مَا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُنَا فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِن كُنتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝
قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُم مِّن رَّبِّكُمْ رِجْسٌ وَغَضَبٌ أَتُجَادِلُونَنِي
فِي أَسْمَاءٍ سَمَّيْتُمُوهَا أَنتُمْ وَآبَاؤُكُم مَّا نَزَّلَ اللَّهُ بِهَا مِن
سُلْطَانٍ فَانتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُم مِّنَ الْمُنتَظِرِينَ ۝ فَأَنجَيْنَاهُ
وَالَّذِينَ مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَقَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَ
مَا كَانُوا مُؤْمِنِينَ ۝ وَإِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا
اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ قَدْ جَاءَتْكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ هَٰذِهِ
نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ آيَةً فَذَرُوهَا تَأْكُلْ فِي أَرْضِ اللَّهِ وَلَا تَمَسُّوهَا
بِسُوءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ وَاذْكُرُوا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ
مِن بَعْدِ عَادٍ وَبَوَّأَكُمْ فِي الْأَرْضِ تَتَّخِذُونَ مِن سُهُولِهَا قُصُورًا
وَتَنْحِتُونَ الْجِبَالَ بُيُوتًا فَاذْكُرُوا آلَاءَ اللَّهِ وَلَا تَعْثَوْا
فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝ قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا
مِن قَوْمِهِ لِلَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِمَنْ آمَنَ مِنْهُمْ أَتَعْلَمُونَ
أَنَّ صَالِحًا مُّرْسَلٌ مِّن رَّبِّهِ قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلَ بِهِ مُؤْمِنُونَ ۝
قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا بِالَّذِي آمَنتُم بِهِ كَافِرُونَ ۝
فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوا يَا صَالِحُ ائْتِنَا
بِمَا تَعِدُنَا إِن كُنتَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ

पास तुम्हीं में से एक आदमी के द्वारा तुम्हारे रब की याद-दिहानी आई, ताकि तुम्हें सचेत कर और ताकि तुम अल्लाह की अवज्ञा से बच और उस की ना-ख़ुशी से डरने लगो, और कदाचित् तुम पर दया की जाये ? ○ परन्तु उन्हों उसे झुठलाया, तो हम ने उसे और जो लोग उस साथ नौका में थे बचा लिया, और जिन लोगों हमारी आयतों* को झुठलाया था उन्हें हम ने डु दिया । निश्चय ही वे अन्धे लोग थे ।○

और आद* की ओर (हम ने) उन के भाई हू को (रसूल* बना कर) भेजा । उस ने कहा : हे मेरी जाति वालो ! अल्लाह की इबादत* (बन्दगी) करो । उस के सिवा तुम्हारा कोई इलाह* (पूज्य) नहीं । तो क्या तुम डरते नहीं ? ○ उस की जाति के सरदारों ने, जिन्हों ने कुफ़्र* का मार्ग अपनाया था, (जवाब में) कहा : हम तो तुम्हें देखते हैं कि मूर्खता में ग्रस्त हो, और निश्चयपूर्वक हम तुम्हें झूठा समझते हैं । ○ उस ने कहा : हे मेरी जाति वालो ! मुझ में कुछ भी मूर्खता नहीं, बल्कि मैं सारे संसार के रब* का एक रसूल* हूँ । ○ तुम्हें अपने रब* के सन्देश पहुँचाता हूँ और तुम्हारा हितैषी (और) विश्वसनीय हूँ । ○ क्या तुम्हें इस बात पर आश्चर्य हुआ कि तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक आदमी के द्वारा तुम्हारे रब* की याद-दिहानी आई ताकि तुम्हें सचेत कर दे ? याद करो जब अल्लाह ने नूह की जाति के बाद तुम्हें (उस का) उत्तराधिकारी बनाया, और डील डौल में तुम्हें अधिक विशालता दी,[१९] तो अल्लाह के चमत्कारों को याद रखो, कदाचित् तुम सफल हो जाओ । ○ वे बोले : क्या तुम हमारे पास इस लिए आये हो कि हम अकेले अल्लाह ही की इबादत* करने लगें, और उन्हें छोड़ दें जिन्हें हमारे पूर्वज पूजते रहे हैं ? यदि तुम सच्चे हो तो जिस (अज़ाब) की हमें धमकी देते हो उसे हम पर ले आओ । ○ उस ने कहा : तुम पर तुम्हारे रब* की फिटकार पड़ गई और ग़ज़ब (टूट पड़ा) । क्या तुम मुझ से उन नामों के लिए झगड़ते हो जो तुम ने और तुम्हारे पूर्वजों ने रख लिये हैं, जिन के लिए अल्लाह ने कोई सनद (दलील) नहीं उतारी ? अच्छा तो (आने वाले समय की) तुम भी प्रतीक्षा करो, मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करता हूँ । ○ फिर हम ने अपनी दया से हूद को और उन लोगों को जो उस के साथ थे बचा लिया, और उन लोगों की जड़ काट कर रख दी जिन्हों ने हमारी आयतों* को झुठलाया था और ईमान* लाने न थे । ○

और समूद* की ओर (हम ने) उन के भाई सालेह को (रसूल* बना कर) भेजा । उस ने कहा : हे मेरी जाति वालो ! अल्लाह की इबादत* करो । उस के सिवा तुम्हारा कोई इलाह* (पूज्य) नहीं । तुम्हारे पास तुम्हारे रब* की ओर से एक खुली दलील आ चुकी है । यह अल्लाह की (भेजी हुई) ऊँटनी, तुम्हारे लिए एक निशानी है; तो इसे छोड़ दो कि अल्लाह

१९. अर्थात् तुम्हें अधिक हृष्ट-पुष्ट किया ।

* इस का अर्थ अन्त में बने हुए पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جٰثِمِينَ ۝ فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ
أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُحِبُّونَ النّٰصِحِينَ ۝
وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ
أَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِينَ ۝ إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُونِ النِّسَآءِ
بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ۝ وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ إِلَّآ أَنْ قَالُوٓا
أَخْرِجُوهُمْ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ إِنَّهُمْ أُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُونَ ۝ فَأَنْجَيْنٰهُ
وَأَهْلَهٗٓ إِلَّا امْرَأَتَهٗ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِينَ ۝ وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ
مَّطَرًا فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عٰقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ۝ وَإِلٰى
مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ
إِلٰهٍ غَيْرُهٗ قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَأَوْفُوا الْكَيْلَ
وَالْمِيزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَآءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوا فِي
الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ ۝
وَلَا تَقْعُدُوا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوعِدُونَ وَتَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ
اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِهٖ وَتَبْغُونَهَا عِوَجًا وَاذْكُرُوٓا إِذْ كُنْتُمْ قَلِيلًا
فَكَثَّرَكُمْ وَانْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عٰقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ۝ وَإِنْ
كَانَ طَآئِفَةٌ مِّنْكُمْ اٰمَنُوا بِالَّذِيٓ أُرْسِلْتُ بِهٖ وَطَآئِفَةٌ لَّمْ
يُؤْمِنُوا فَاصْبِرُوا حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ بَيْنَنَا وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِينَ ۝

की ज़मीन में खाये, और तकलीफ़ देने के लिए इसे हाथ न लगाना नहीं तो एक दुख देने वाला अज़ाब तुम्हें आ लेगा। ○ और वह समय याद करो जब अल्लाह ने आद* के बाद तुम्हें (उस का) उत्तराधिकारी बनाया और तुम्हें ज़मीन में ठिकाना दिया। तुम उस के समतल मैदानों में महल खड़े करते हो और पहाड़ों को काट-छाँट कर उन से घर बनाते हो। तो अल्लाह के चमत्कारों को याद रखो और ज़मीन में फ़साद मचाते न फिरो। ○ उस को जाति के सरदार, जो बड़े बने हुये थे, कमज़ोर (और ग़रीब) लोगों से जो उन में से ईमान* ला चुके थे, कहने लगे : क्या तुम जानते हो कि सालेह अपने रब* का रसूल* है ? उन्हों ने कहा : निश्चय ही जिस चीज़[१०] के साथ वह भेजा गया है हम उस पर ईमान* ७५ रखते हैं। ○ उन लोगों ने कहा जो अपने को बड़ा समझते थे : जिस पर तुम ईमान* लाये हो हम तो उसे नहीं मानते। ○

फिर उन्हों ने उस ऊँटनी की कूँचें काट कर मार डाला और पूरी ढिठाई के साथ अपने रब* के हुक्म की अवहेलना की, और कहने लगे : हे सालेह ! तू हमें जिस (अज़ाब) की धमकी देता है, यदि तू रसूलों* में से है, तो उसे हम पर ले आ। ○ तो ऐसा हुआ कि एक दहला देने वाली आपत्ति ने उन्हें आ लिया, और वे अपने घर में औंधे पड़े रह गये। ○ और सालेह उन के यहाँ से यह कहता हुआ फिरा : हे मेरी जाति वालो ! मैं ने तुम्हें अपने रब* का सन्देश पहुँचा दिया और मैं ने तुम्हारा हित चाहा, परन्तु तुम हित चाहने वालों को पसन्द नहीं करते। ○

और लूत को (हम ने रसूल* बना कर) भेजा जब कि उस ने अपनी जाति वालों से कहा : क्या तुम वह अश्लील कर्म करते हो जिसे दुनिया (वालों) में तुम से पहले किसी ने नहीं ८० किया ? ○ तुम काम-इच्छा के साथ स्त्रियों के सिवा पुरुषों के पास आते हो ? बल्कि तुम मर्यादा-हीन लोग हो। ○ परन्तु उस की जाति वालों का जवाब इस के सिवा और कुछ न था कि निकाल बाहर करो इन लोगों को अपनी बस्ती से, ये बड़े पाक-साफ़ (पवित्राचारी) बनते हैं। ○ तो हम ने लूत को और उस के लोगों को बचा लिया, सिवाय उस की स्त्री के कि वह पीछे रह जाने वालों में थी। ○ और हम ने उन पर (पत्थरों की) एक वर्षा की, तो देखो कि उन अपराधियों का क्या परिणाम हुआ। ○

और मदयन* (वालों) की ओर हम ने उन के भाई शुऐब को (रसूल* बना कर) भेजा। उस ने कहा : हे मेरी जाति वालो ! अल्लाह की इबादत* करो उस के सिवा तुम्हारा कोई इलाह* (पूज्य) नहीं। तुम्हारे पास तुम्हारे रब* की खुली दलील आ चुकी है; तो तुम पूरा-पूरा नापो और तौलो और लोगों को उन की चीज़ों में घाटा न दो, और ज़मीन में फ़साद न

१० अर्थात् जो सच्चाई और सन्देश दे कर उसे उस के रब* ने भेजा है हम उसे मानते हैं।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

قال الملأ الذين استكبروا من قومه لنخرجنك يا شعيب
والذين آمنوا معك من قريتنا أو لتعودن في ملتنا قال أولو
كنا كارهين ۝ قد افترينا على الله كذبا إن عدنا في ملتكم
بعد إذ نجانا الله منها وما يكون لنا أن نعود فيها إلا أن
يشاء الله ربنا وسع ربنا كل شيء علما على الله توكلنا
ربنا افتح بيننا وبين قومنا بالحق وأنت خير الفاتحين ۝ و
قال الملأ الذين كفروا من قومه لئن اتبعتم شعيبا إنكم
إذا لخاسرون ۝ فأخذتهم الرجفة فأصبحوا في دارهم جاثمين ۝
الذين كذبوا شعيبا كأن لم يغنوا فيها الذين كذبوا شعيبا
كانوا هم الخاسرين ۝ فتولى عنهم وقال يا قوم لقد أبلغتكم
رسالات ربي ونصحت لكم فكيف آسى على قوم كافرين ۝ و
ما أرسلنا في قرية من نبي إلا أخذنا أهلها بالبأساء والضراء
لعلهم يضرعون ۝ ثم بدلنا مكان السيئة الحسنة حتى عفوا
وقالوا قد مس آباءنا الضراء والسراء فأخذناهم بغتة وهم
لا يشعرون ۝ ولو أن أهل القرى آمنوا واتقوا لفتحنا عليهم
بركات من السماء والأرض ولكن كذبوا فأخذناهم بما كانوا
يكسبون ۝ أفأمن أهل القرى أن يأتيهم بأسنا بياتا

मचाओ जब कि उस का सुधार हो चुका हो
तुम ईमान* वाले हो, तो यही तुम्हारे लिए
होगा। ○ और हर मार्ग पर (बट-मार ब
न बैठो कि जो कोई अल्लाह पर ईमान* ल
उसे धमकियाँ दो और अल्लाह के रास्ते मे
लगो, और उसे टेढ़ा (कुटिल) करने में लग
याद करो जब कि तुम थोड़े थे फिर अल्लाह
ज़्यादा कर दिया। और देखो कि फ़साद
वालों का (दुनियाँ में) क्या परिणाम हुआ
यदि तुम में एक गरोह उस चीज़ पर जिस
में भेजा गया हूँ ईमान* लाया है, और दूसरा
ईमान* नहीं लाया, तो धैर्य से काम लो य
कि अल्लाह हमारे बीच फ़ैसला कर दे। और
सब से अच्छा फ़ैसला करने वाला है। ○

†उस की जाति के सरदारों ने, जो अपने
बड़ा समझते थे, कहा: हे शुऐब! हम तुझे
उन लोगों को जो तेरे साथ ईमान* लाये हैं,
बस्ती से निकाल कर रहेंगे या तो तुम्हें हमारे पन्थ में लौट आना होगा। उस ने कहा:
हम (उसे) अनिष्ट समझते हों तो भी? ○ हम अल्लाह पर झूठ गढ़ने वाले होंगे यदि तुम
पन्थ में पलट आयें जब कि अल्लाह हमें उस से छुटकारा दे चुका है। हमारे लिए यह सम
नहीं कि उस में पलट कर आवें यह और बात है कि अल्लाह जो हमारा रब* है वही
चाहे। हमारा रब* हर चीज़ को (अपने) ज्ञान से आच्छादित है। हम ने अल्लाह ही
भरोसा किया है। हमारे रब*! हमारे और हमारी जाति वालों के बीच हक़ (सच्चाई) के
फ़ैसला कर दे, और तू सब से अच्छा फ़ैसला करने वाला है। ○

उस की जाति के सरदार, जिन्हों ने कुफ़्र* (का मार्ग) अपनाया था, कहने लगे
(लोगो!) यदि तुम शुऐब के अनुयायी हुये, तो निश्चय ही तुम घाटे में पड़ जाओगे"।
तो ऐसा हुआ कि एक दहला देने वाली आपत्ति ने उन्हें आ लिया और वे अपने घर में औंधे
पड़े रह गये। ○ जिन लोगों ने शुऐब को झुठलाया था उन की दशा यह हुई मानो वे कभी
यहाँ बसे ही नहीं थे। जिन लोगों ने शुऐब को झुठलाया था, वही घाटे में रहे। ○ तब
(शुऐब) उन के यहाँ से यह कहता हुआ फिरा कि हे मेरी जाति वालो! मैं ने अपने रब*
के सन्देश तुम्हें पहुँचा दिये और मैं ने तुम्हारा हित चाहा। फिर मैं काफ़िर* लोगों पर कैसे
अफ़सोस करूँ। ○

ऐसा कभी नहीं हुआ कि हम ने किसी बस्ती में कोई नबी* भेजा हो और वहाँ के लोगों
को तंगी और मुसीबत में न डाला हो इस ध्येय से कि कदाचित् वे (हमारे आगे) गिड़गिड़ाएँ।
फिर हम ने उन की बदहाली (दुरावस्था) को ख़ुशहाली से बदल दिया यहाँ तक कि

† यहाँ से नवाँ पारा (Part IX) शुरू होता है।

وهم نائمون ﴿٩٧﴾ أو أمن أهل القرى أن يأتيهم بأسنا ضحى
وهم يلعبون ﴿٩٨﴾ أفأمنوا مكر الله فلا يأمن مكر الله إلا القوم
الخاسرون ﴿٩٩﴾ أولم يهد للذين يرثون الأرض من بعد أهلها
أن لو نشاء أصبناهم بذنوبهم ونطبع على قلوبهم فهم لا
يسمعون ﴿١٠٠﴾ تلك القرى نقص عليك من أنبائها ولقد
جاءتهم رسلهم بالبينات فما كانوا ليؤمنوا بما كذبوا من قبل
كذلك يطبع الله على قلوب الكافرين ﴿١٠١﴾ وما وجدنا لأكثرهم من عهد
وإن وجدنا أكثرهم لفاسقين ﴿١٠٢﴾ ثم بعثنا من بعدهم موسى بآياتنا
إلى فرعون وملئه فظلموا بها فانظر كيف كان عاقبة المفسدين ﴿١٠٣﴾
وقال موسى يا فرعون إني رسول من رب العالمين ﴿١٠٤﴾ حقيق على أن
لا أقول على الله إلا الحق قد جئتكم ببينة من ربكم
فأرسل معي بني إسرائيل ﴿١٠٥﴾ قال إن كنت جئت بآية فأت
بها إن كنت من الصادقين ﴿١٠٦﴾ فألقى عصاه فإذا هي ثعبان
مبين ﴿١٠٧﴾ ونزع يده فإذا هي بيضاء للناظرين ﴿١٠٨﴾ قال الملأ من
قوم فرعون إن هذا لساحر عليم ﴿١٠٩﴾ يريد أن يخرجكم من
أرضكم فماذا تأمرون ﴿١١٠﴾ قالوا أرجه وأخاه وأرسل في المدائن
حاشرين ﴿١١١﴾ يأتوك بكل ساحر عليم ﴿١١٢﴾ وجاء السحرة فرعون

फले-फूले और कहने लगे कि इस तरह के दुःख और सुख तो हमारे पूर्वजों को भी, पहुँच चुके हैं। तो अचानक हम ने उन्हें धर-पकड़ा, जब कि वे (इस से) ९५ बे-ख़बर थे। ○ यदि बस्तियों के लोग ईमान* लाते और अल्लाह की अवज्ञा से बचते और उस की ना-ख़ुशी से डरते तो हम उन पर आसमान और ज़मीन की बरकतों (के दरवाज़ों) को खोल देते। परन्तु उन्हों ने तो झुठलाया, तो जो-कुछ कमाई वे करते थे उस के बदले में मैं ने उन्हें पकड़ लिया। ○ तो क्या बस्तियों के लोग इस से निश्चिन्त हैं कि हमारा अज़ाब रात में उन पर आ जाये जब कि वे पड़े सो रहे हों? ○ या बस्तियों के लोग इस से निश्चिन्त हैं कि हमारा अज़ाब दिन चढ़े उन पर आ जाये जब कि वे खेल रहे हों[22]। ○ तो क्या ये लोग अल्लाह की चाल (छिपी तदबीर) से निश्चिन्त हो गये हैं? सो अल्लाह की चाल से तो केवल घाटे में पड़ने वाले लोग ही निश्चिन्त होते हैं। ○

क्या उन लोगों को जो ज़मीन के—उस के (पूर्व-) अधिकारियों के बाद—वारिस होते हैं यह सूझ नहीं आई कि यदि हम चाहें तो उन्हें उन के गुनाहों पर धर लें? और हम उन के १०० दिलों पर ठप्पा लगा देते हैं फिर वे कुछ नहीं सुनते। ○ ये हैं (पहले की) बस्तियाँ जिन के क़िस्से हम तुम्हें सुनाते हैं! उन में उन के रसूल* खुली निशानियाँ ले कर आये, परन्तु वे ऐसे न थे कि जिस चीज़ को पहले झुठला चुके हों उस पर ईमान* ले आयें। इसी तरह अल्लाह काफ़िरों* के दिलों पर ठप्पा लगा देता है[23]। ○ हम ने उन के बहुतों में कोई वचन का निबाह नहीं पाया बल्कि उन के बहुतों को तो हम ने सीमोल्लंघन करने वाला ही पाया। ○

फिर उन के बाद हम ने मूसा को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन और उस के सरदारों के पास भेजा, परन्तु उन्हों ने उन (निशानियों) के साथ ज़ुल्म किया, तो देखो उन फ़सादियों का क्या परिणाम हुआ! ○

मूसा ने कहा: हे फ़िरऔन! निश्चय ही मैं सारे संसार के रब* का रसूल* हूँ, ○ इस पर क़ायम हूँ कि अल्लाह से सम्बन्ध लगा कर सत्य के अतिरिक्त कोई बात न कहूँ। मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब* की ओर से खुली दलील ले कर आया हूँ, तो (हे फ़िरऔन!) तू बनी इस-१०५ राईल* को हमारे साथ भेज दे[24]। ○

२२ अर्थात् दुनियाँ के कामों तथा दूसरे निरर्थक कार्यों में लगे हों। वास्तव में काफ़िरों* के सारे कामों को खेल-तमाशे से कुछ अधिक महत्व प्राप्त नहीं। उन के कामों का कोई वास्तविक अर्थ नहीं होता। वे संसार के क्षणिक आनन्द को ही जीवन का अन्तिम ध्येय समझते हैं।

२३ दे० सूरः अल-बक़रः फ़ुट नोट ४।

२४ हज़रत मूसा अ० ने फ़िरऔन को जहाँ अल्लाह की बन्दगी की ओर बुलाया वहीं उस से यह भी कहा कि वह बनी इसराईल* को — जिसे उस ने अपना ग़ुलाम बना रखा था — रिहा कर दे।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

قَالُوْٓا اِنَّ لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ۝ قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ لَمِنَ
الْمُقَرَّبِيْنَ ۝ قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِيَ وَاِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ نَحْنُ
الْمُلْقِيْنَ ۝ قَالَ اَلْقُوْا ۚ فَلَمَّآ اَلْقَوْا سَحَرُوْٓا اَعْيُنَ النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوْهُمْ
وَجَاۗءُوْ بِسِحْرٍ عَظِيْمٍ ۝ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ۚ فَاِذَا
هِىَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ۝ فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝
فَغُلِبُوْا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوْا صٰغِرِيْنَ ۝ وَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ۝
قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ۝ قَالَ فِرْعَوْنُ
اٰمَنْتُمْ بِهٖ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّ هٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوْهُ فِى
الْمَدِيْنَةِ لِتُخْرِجُوْا مِنْهَآ اَهْلَهَا ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝ لَاُقَطِّعَنَّ
اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝
قَالُوْٓا اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ۝ وَمَا تَنْقِمُ مِنَّآ اِلَّآ اَنْ اٰمَنَّا بِاٰيٰتِ رَبِّنَا
لَمَّا جَاۗءَتْنَا ۭ رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ۝ وَقَالَ
الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اَتَذَرُ مُوْسٰى وَقَوْمَهٗ لِيُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ
وَيَذَرَكَ وَاٰلِهَتَكَ ۭ قَالَ سَنُقَتِّلُ اَبْنَاۗءَهُمْ وَنَسْتَحْيٖ نِسَاۗءَهُمْ ۚ وَ
اِنَّا فَوْقَهُمْ قٰهِرُوْنَ ۝ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ وَاصْبِرُوْا ۚ
اِنَّ الْاَرْضَ لِلّٰهِ ۣ يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَاۗءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۭ وَالْعَاقِبَةُ
لِلْمُتَّقِيْنَ ۝ قَالُوْٓا اُوْذِيْنَا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَاْتِيَنَا وَمِنْۢ بَعْدِ مَا

(फ़िरऔन ने) कहा : यदि तू कोई निशानी ले कर आया है, तो उसे पेश कर, यदि तू सच्चे लोगों में से है। ○

तब उस ने अपनी लाठी (ज़मीन पर) डाल दी, क्या देखते हैं कि वह एक प्रत्यक्ष अजगर था; ○ और उस ने अपना हाथ बाहर निकाला, तो देखने वालों ने क्या देखा कि वह चमक रहा है। ○

फ़िरऔन की जाति के सरदार कहने लगे : निश्चय ही यह बड़ा जानकार (विज्ञ) जादूगर है, ○ तुम्हें तुम्हारी ज़मीन से निकाल देना चाहता है, तो अब तुम क्या कहते हो ? ○ उन्हों ने (फ़िरऔन से) कहा : इसे और इस के भाई (हारून) को इन्तज़ार में रख और इकट्ठा करने वालों को नगरों में भेज दे, ○ कि वे हर जानकार जादूगर को तेरे पास ले आयें[२५]। ○ और (ऐसा ही हुआ) जादूगर फ़िरऔन के पास आ गये।

उन्हों ने कहा : यदि हम जीत गये तो हमें अवश्य इस का बदला मिलेगा। ○

(फ़िरऔन ने) कहा : हाँ, और निश्चय ही तुम (मेरे) क़रीबी लोगों में से हो जाओगे। ○

उन्हों ने (मूसा से) कहा : हे मूसा ! या तो तुम (अपना अंछर) फेंको या हम फेंकें। ○

उस ने कहा : तुम ही फेंको।

उन्हों ने फेंका तो लोगों की आँखों पर जादू कर दिया, और उन्हें डरा दिया, और उन्हों ने बहुत बड़ा जादू दिखाया। ○

और हम ने मूसा की ओर वह्य* की कि अपनी लाठी (ज़मीन पर) डाल दो ! फिर क्या था वह उन के रचे हुये स्वाँग को निगलने लगी। ○

इस तरह सच्चाई साबित हो गई और जो-कुछ वे करते थे मिथ्या हो कर रहा। ○

इस तरह वे वहाँ परास्त हुये और उल्टे ज़लील (अपमानित) हो गये। ○ और जादूगर सजदे में गिर पड़े, ○ कहने लगे : हम सारे संसार के रब* पर ईमान* लाये, ○ जो मूसा और हारून का रब* है। ○

फ़िरऔन ने कहा : इस के पहले कि मैं तुम्हें इजाज़त दूँ तुम उस पर ईमान* लाये ! निश्चय ही यह चाल है जो तुम लोग इस नगर में चले हो ताकि इस (नगर) के लोगों को यहाँ से निकाल दो, तो अब तुम्हें जल्द ही (इस का नतीजा) मालूम हो जायेगा ! ○ मैं तुम्हारे हाथ पाँव विपरीत दिशाओं से कटवा दूँगा। फिर तुम सब को सूली पर चढ़ा दूँगा। ○

बोले : हम तो अपने रब* की ओर पलटने वाले ही हैं। ○ तुम हम से केवल इस लिए वैर रखते हो कि हमारे रब* की निशानियाँ जब हमारे पास आ गईं तो हम उन पर ईमान* ले आये। हमारे रब* ! हम पर सब्र* के दहाने खोल दे और हमें (इस लोक से)

२५ ताकि वह मूसा को अपने जादू के ज़ोर से हरा दे और जनता मूसा के किसी चक्कर में न पड़ने पाये।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

مِنۢ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ۚ قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ أَنْ يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِى الْأَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ۝ وَلَقَدْ أَخَذْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِيْنَ وَنَقْصٍ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ۝ فَإِذَا جَآءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوْا لَنَا هٰذِهٖ ۚ وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّطَّيَّرُوْا بِمُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗ ۗ أَلَآ إِنَّمَا طٰٓئِرُهُمْ عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَقَالُوْا مَهْمَا تَأْتِنَا بِهٖ مِنْ اٰيَةٍ لِّتَسْحَرَنَا بِهَا فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوْفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ وَالدَّمَ اٰيٰتٍ مُّفَصَّلٰتٍ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ۝ وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوْا يٰمُوْسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ لَئِنْ كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِيْٓ إِسْرَآءِيْلَ ۝ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ إِلٰٓى أَجَلٍ هُمْ بٰلِغُوْهُ إِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ۝ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنٰهُمْ فِى الْيَمِّ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ۝ وَأَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِيْنَ كَانُوْا يُسْتَضْعَفُوْنَ مَشَارِقَ الْأَرْضِ وَمَغَارِبَهَا الَّتِىْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ۗ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنٰى عَلٰى بَنِيْٓ إِسْرَآءِيْلَ بِمَا صَبَرُوْا ۗ وَدَمَّرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمُهٗ وَمَا كَانُوْا يَعْرِشُوْنَ ۝ وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ إِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَأَتَوْا عَلٰى قَوْمٍ

इस हाल में उठा, कि हम मुस्लिम* हों। ○

फ़िरऔन की जाति के सरदारों ने (फ़िरऔन से) कहा : क्या तू मूसा और उस की जाति वालों को ऐसे ही छोड़ देगा कि वे ज़मीन में फ़साद फैलायें और वह तुझे और तेरे इलाहों* (देवताओं) को छोड़ बैठे ? उस ने कहा : हम उन के बेटों को बुरी तरह क़त्ल करेंगे और उन की स्त्रियों को जीवित रहने देंगे, हमें उन पर पूर्ण-अधिपत्य प्राप्त है। ○

मूसा ने अपनी जाति वालों से कहा : अल्लाह से मदद माँगो और सब्र* करो। ज़मीन तो अल्लाह की है। वह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है उस का वारिस बना देता है। और अन्तिम परिणाम तो उन्हीं लोगों के हक़ में है जो अल्लाह की अवज्ञा से बचने वाले और उस की ना-ख़ुशी से डरने वाले हैं। ○ उन्हों ने कहा : (हे मूसा!) तेरे अपने पास आने से पहले भी हम सताये गये हैं और तेरे अपने पास आने के बाद भी। उस ने कहा : क़रीब है कि तुम्हारा रब* तुम्हारे दुश्मन को हलाक (विनष्ट) कर दे और तुम्हें ज़मीन में ख़लीफ़ः* बनाये और देखे कि तुम कैसा कर्म करते हो। ○

हम ने फ़िरऔन के लोगों को कई वर्ष तक अकाल और पैदावार की कमी में ग्रस्त लिया, कदाचित् वे ध्यान दें। ○ परन्तु जब उन्हें अच्छी हालत पेश आती, तो कहते : हम इसी के हक़दार हैं; और जब उन्हें कोई बुरी हालत पेश आती तो वे इसे मूसा और उस के साथियों की नहूसत (अपशकुन) ठहराते। हालाँकि वास्तव में उन की नहूसत तो अल्लाह के पास है[२६]। परन्तु उन में बहुतों को (यह बात) मालूम नहीं। ○ उन्हों ने कहा : (हे मूसा!) तू कोई भी निशानी ला कर उस के द्वारा हम पर (अपना) जादू चला, हम तुझ पर ईमान* लाने वाले नहीं हैं। ○ फिर हम ने उन पर तूफ़ान और टिड्डियाँ और (अहितकारी) कृमि[२७] और मेंढक और

१३०

२६ अर्थात् वह शकुन और अपशकुन या असफलता अल्लाह के ठहराये हुये नियमों के अनुसार ही सामने आती है।

२७ क़ुरआन में इस के लिए 'क़ुम्मल' शब्द आया है। अरबी में यह शब्द जूँ, छोटी मक्खी, छोटी टिड्डी, मच्छर आदि सभी के लिए प्रयोग होता है। आयत में तूफ़ान, टिड्डियों, मेंढक, रक्त आदि अल्लाह की जिन निशानियों और उस के जिन अज़ाबों का उल्लेख किया गया है उन का उल्लेख बाइबिल में भी मिलता है। ज़बूर (Psalm) में इन अज़ाबों का उल्लेख इस प्रकार किया गया है : "उस ने मिस्र में अपने निशान (Signs) दिखाये और ज़ोन (Zoan) के क्षेत्र में अपने चमत्कार। और उन की नदियों को रक्त बना दिया और वे अपनी नदियों से पी न सके। उस ने उन पर मच्छरों के झुण्ड भेजे जो उन को खा गये। और मेंढक जिन्हों ने उन्हें तबाह कर दिया। उस ने उन की पैदावार कीड़ों को और उन की मेहनत का फल टिड्डियों को दे दिया। (७८ : ४३-४६)।

इस के अतिरिक्त इन अज़ाबों का उल्लेख बाइबिल में और दूसरे स्थानों पर भी किया गया है। मिसाल के लिए देखिए : ख़ुरूज (Ex.) ७ : १९-२४ और ८ : २-४; १६-२४ और १० : ४, ५; १२-१५; अहबार (Leviticus) ११ : २२ ज़बूर (Ps.) १०५ : २८-३१, ३४; अमसाल (Prov.) ३० : २७; मुकाशफ़ः (Revel.) १६ : ३।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

يعكفون على أصنام لهم قالوا يموسى اجعل لنا إلها كما لهم
ءالهة قال إنكم قوم تجهلون ۝ إن هؤلاء متبر ما هم فيه وبطل
ما كانوا يعملون ۝ قال أغير الله أبغيكم إلها وهو فضلكم
على العلمين ۝ وإذ أنجينكم من ءال فرعون يسومونكم سوء
العذاب يقتلون أبناءكم ويستحيون نساءكم وفي ذلكم بلاء
من ربكم عظيم ۝ وواعدنا موسى ثلثين ليلة وأتممنها
بعشر فتم ميقت ربه أربعين ليلة وقال موسى لأخيه
هرون اخلفني في قومي وأصلح ولا تتبع سبيل المفسدين ۝
ولما جاء موسى لميقتنا وكلمه ربه قال رب أرني أنظر
إليك قال لن ترىني ولكن انظر إلى الجبل فإن استقر
مكانه فسوف ترىني فلما تجلى ربه للجبل جعله دكا وخر
موسى صعقا فلما أفاق قال سبحنك تبت إليك وأنا أول
المؤمنين ۝ قال يموسى إني اصطفيتك على الناس برسلتي
وبكلمي فخذ ما ءاتيتك وكن من الشكرين ۝ وكتبنا له
في الألواح من كل شيء موعظة وتفصيلا لكل شيء
فخذها بقوة وأمر قومك يأخذوا بأحسنها سأوريكم دار
الفسقين ۝ سأصرف عن ءايتي الذين يتكبرون في الأرض

रक्त, कितनी ही निशानियाँ अलग-अ
परन्तु उन्हों ने सरकशी ही की और
रापी लोग। ○ और जब उन पर
तो कहने लगे : हे मूसा ! अपने रब*
प्रार्थना कर, इस लिए कि उस ने
कर रखी है। यदि तू ने हम पर से
दिया तो हम अवश्य तेरी बात मान
इसराईल* को तेरे साथ भेज देंगे।○
ने एक नियत समय के लिए जिस तक
ही था, उन पर से उस अज़ाब
उसी समय उन्हों ने प्रतिज्ञा भंग कर दी
उन से बदला लिया और उन्हें दरिया
क्योंकि उन्हों ने हमारी निशानियों
और उन से ग़ाफ़िल हो गये थे। ○
कमज़ोर समझे जाते थे हम ने उन्हें
पूर्व और पश्चिम का वारिस (अधिकार
जिसे हम ने बरकत दी थी। और तुम्ह
शुभ-वचन बनी इसराईल* के हक़ में पूरा हुआ इस लिए कि उन्हों ने सब्र* कि
फ़िरऔन और उस की जाति वालों का वह सब-कुछ हम ने नष्ट कर दिया जो वे
चढ़ाते थे।○

बनी इसराईल* को हम ने समुद्र से पार उतार दिया, फिर वे ऐसे लोगों के पा
अपनी मूर्तियों से लगे बैठे रहते थे। कहने लगे : हे मूसा ! हमारे लिए भी कोई ऐसा
(पूज्य) बना दे जैसे इन के इलाह* हैं। उस ने कहा : निश्चय ही तुम लोग अज्ञ
करते हो। ○ ये लोग जिस में लगे हुये हैं वह तो बरबाद हो कर रहने वाला है
ये कर रहे हैं (सर्वथा) मिथ्या है। ○ उस ने कहा : क्या मैं अल्लाह के सिवा
इलाह* (पूज्य) तुम्हारे लिए ढूँढूँ हालाँकि वही है जिस ने तुम्हें सारे संसार (के लोगों
दी ? ○ और वह समय याद करो जब हम ने तुम्हें फ़िरऔन के लोगों से छुटका
तुम्हें बुरा अज़ाब देते थे, तुम्हारे बेटों को क़त्ल कर डालते और तुम्हारी स्त्रियों को
देते थे। इस में तुम्हारे रब* की ओर से तुम्हारी बड़ी आज़माइश थी। ○

और हम ने मूसा से तीस रात का वादा ठहराया, और हम ने दस (रातें) औ
उसे पूरा किया इस तरह उस के रब* की ठहराई हुई मुद्दत चालीस रात हो गई।[२८]
ने अपने भाई हारून से कहा : मेरे पीछे तुम मेरी जाति वालों में मेरी जगह रहना

२८ मिस्र से निकलने के बाद जब बनी इसराईल* को स्वतन्त्रता मिली तो अल्लाह ने हज़रत मू
सीना-पर्वत पर बुलाया ताकि बनी इसराईल* के लिए 'शरीअत' (धर्म-विधान) प्रदान की जाये।
जिस में हज़रत मूसा अ० को पहली बार चालीस रातों के लिए बुलाया गया था ताकि चालीस

काम करते रहना, बिगाड़ पैदा करने वालों की राह पर न चलना। ○ जब मूसा हमारे निश्चित किये हुए समय पर पहुँचा और उस के रब* ने उस से बात-चीत की तो वह कहने लगा : हे रब* ! मुझे दिखा, मैं तुझे देखूँ। उस ने कहा : तू मुझे नहीं देख सकता, हाँ, पर्वत की ओर देख ! यदि वह अपनी जगह स्थिर रहा, तो तू मुझे देख लेगा। फिर जब उस का रब* पहाड़ पर आलोकित हुआ तो उसे चकनाचूर कर दिया। और मूसा मूर्छित हो कर गिर पड़ा[१६]। जब होश में आया तो कहा : महिमा हो तेरी! मैं तेरे आगे तौबः* करता हूँ, और सब से पहला ईमान* लाने वाला मैं हूँ। ○ उस ने कहा : हे मूसा ! मैं ने समस्त लोगों के मुक़ाबिले में तुझे चुन लिया कि मेरी पैग़म्बरी करे और मुझ से बात-चीत करे। तो जो-कुछ मैं तुझे दूँ उसे ले और शुक्रगुज़ार (कृतज्ञ) हो। ○

हम ने उस के लिए तख़्तियों पर हर (ज़रूरी) चीज़ लिख दी, उपदेश और हर (ज़रूरी) चीज़ का विस्तृत वर्णन. फिर (कहा) : इसे
के ... र पकड़; और अपनी जाति वालों को हुक्म दे कि उस की उत्तम बातों को अप
१४५ मैं जल्द ही तुम्हें सीमोल्लंघन करने वालों का घर दिखाऊँगा। ○ जो लोग ज़
नाहक़ बड़े बनते हैं मैं अपनी निशानियों से उन (की निगाहों) को फेर दूँगा, वे चाहे
निशानी देख लें (कभी) उस पर ईमान* नहीं लायेंगे, और यदि (चेतनता का) सीधा मार्ग
तो भी उसे (अपनी) राह नहीं बनायेंगे, और यदि गुमराही का रास्ता देख लें तो उसे (
राह बना लेंगे। यह इस लिए कि उन्हों ने हमारी निशानियों को झुठलाया और उन से
रहे। ○ और जिन लोगों ने हमारी निशानियों को और आख़िरत* की मुलाक़ात को
लाया, उन का सारा किया-धरा अकारथ गया। जो-कुछ कि वे करते रहे हैं क्या
सिवा वे किसी और चीज़ का बदला पायेंगे ? ○

और मूसा के पीछे उस की जाति वालों ने (पूजने के लिए) अपने ज़ेवरों से एक ब
पुतला बनाया, जिस में से बछड़े की सी आवाज़ निकलती थी। क्या उन्हों ने देखा न
न तो वह उन से बोलता है और न उन्हें कोई राह दिखाता है ? उन्हों ने उसे (देवता
लिया, और वे ज़ुल्म करने वाले थे। ○ और जब उन्हें पछतावा हुआ और उन्हों
लिया कि वे वास्तव में राह से भटक गये हैं, तो कहने लगे : यदि हमारे रब* ने हम प
न की और उस ने हमें क्षमा न कर दिया तो हम घाटे में पड़ जाने वालों में से हो जायें
और जब मूसा अत्यन्त क्रुद्ध और दुःखी हो कर अपनी जाति वालों की ओर पलटा,
ने कहा : तुम लोगों ने मेरे पीछे बहुत बुरा किया। क्या तुम अपने रब* के हुक्म (अ

---

१६. हज़रत मूसा अ० पर्वत की दशा देखने, और अल्लाह के आलोकित होने के स्थान से किसी ह
सम्पर्क रखने के कारण मूर्छित हो कर गिरे हैं।

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

رَحِيمٌ ۝ وَلَمَّا سَكَتَ عَن مُّوسَى الْغَضَبُ أَخَذَ الْأَلْوَاحَ ۖ وَفِي نُسْخَتِهَا هُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِينَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُونَ ۝ وَاخْتَارَ مُوسَىٰ قَوْمَهُ سَبْعِينَ رَجُلًا لِّمِيقَاتِنَا ۖ فَلَمَّا أَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ أَهْلَكْتَهُم مِّن قَبْلُ وَإِيَّايَ ۖ أَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ السُّفَهَاءُ مِنَّا ۖ إِنْ هِيَ إِلَّا فِتْنَتُكَ تُضِلُّ بِهَا مَن تَشَاءُ وَتَهْدِي مَن تَشَاءُ ۖ أَنتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا ۖ وَأَنتَ خَيْرُ الْغَافِرِينَ ۝ وَاكْتُبْ لَنَا فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ إِنَّا هُدْنَا إِلَيْكَ ۚ قَالَ عَذَابِي أُصِيبُ بِهِ مَنْ أَشَاءُ ۖ وَرَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ۚ فَسَأَكْتُبُهَا لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالَّذِينَ هُم بِآيَاتِنَا يُؤْمِنُونَ ۝ الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الرَّسُولَ النَّبِيَّ الْأُمِّيَّ الَّذِي يَجِدُونَهُ مَكْتُوبًا عِندَهُمْ فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنجِيلِ يَأْمُرُهُم بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَاهُمْ عَنِ الْمُنكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبَاتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبَائِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ إِصْرَهُمْ وَالْأَغْلَالَ الَّتِي كَانَتْ عَلَيْهِمْ ۚ فَالَّذِينَ آمَنُوا بِهِ وَعَزَّرُوهُ وَنَصَرُوهُ وَاتَّبَعُوا النُّورَ الَّذِي أُنزِلَ مَعَهُ ۙ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝ قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۖ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ الَّذِي يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَكَلِمَاتِهِ

पहले ही जल्दी कर बैठे ? उस ने तख़्तियाँ (एक ओर) डाल दीं, और अपने भाई (हारून) के सिर (के बाल) को पकड़ कर उसे अपनी ओर खींचने लगा। (हारून ने) कहा : हे मेरी माता के बेटे ! इन लोगों ने मुझे कमज़ोर समझा और क़रीब था कि मुझे क़त्ल कर डालते। तो दुश्मनों को मुझ पर न हँसा और ज़ालिम लोगों में मुझे न मिला[३०] ।○ मूसा ने कहा : रब ! मुझे और मेरे भाई को क्षमा कर; और हमें अपनी रहमत (दयालुता) में दाख़िल कर ले, तू सब से बढ़ कर दया करने वाला है। ○ (अल्लाह ने कहा :) जिन लोगों ने बछड़े को देवता बनाया है उन पर जल्द उन के रब* की ओर से ग़ज़ब (प्रकोप) और ज़िल्लत इस सांसारिक जीवन में पड़ेगी। झूठ गढ़ने वालों को हम ऐसा ही बदला देते हैं। ○ परन्तु जिन लोगों ने बुरे कर्म किये फिर उस के बाद तौबः* कर ली और ईमान* ले आये— तो निश्चय ही इस के बाद, तेरा रब* बड़ा ही क्षमाशील और दया करने वाला है। ○ १५०

फिर जब मूसा का क्रोध शान्त हुआ, तो उस ने उन तख़्तियों को उठाया, उन के लेख में उन लोगों के लिए मार्ग-दर्शन और (सर्वथा) दयालुता थी जो अपने रब* से डरते हैं। ○ और मूसा ने अपनी जाति के सत्तर आदमियों को हमारे नियत किये हुये समय पर लाने के लिए चुना,[३१] तो जब इन लोगों को एक भूकम्प ने आ लिया, तो मूसा ने कहा : हे रब* ! यदि तू चाहता तो पहले ही इन को और मुझे हलाक (विनष्ट) कर देता। जो-कुछ हमारे नादानों ने किया क्या उस के लिए तू हमें हलाक कर देगा ? यह तो तेरी ओर से एक आज़माइश है इस के द्वारा जिसे चाहे तू भटका दे और जिसे चाहे राह दिखा दे। तू हमारा संरक्षक-मित्र है, सो हमें क्षमा कर दे और हम पर दया कर, तू सब से बढ़ कर क्षमा करने वाला है। ○ १५१ और हमारे लिए इस दुनियाँ में भी भलाई लिख दे, और आख़िरत* में भी, हम तेरी ओर पलटे। (अल्लाह ने) कहा : अपना अज़ाब तो मैं उसी को पहुँचाता हूँ, जिसे चाहता हूँ परन्तु मेरी दयालुता हर चीज़ पर छाई हुई है,[३२] तो उसे मैं उन लोगों के हक़ में लिखूँगा जो अल्लाह की अवज्ञा से बचते और उस की ना-ख़ुशी से डरते हैं और ज़कात* देते हैं, और हमारी आयतों* पर ईमान* लाते हैं; ○

---

३० क़ुरआन की दूसरी जगहों पर यह बात स्पष्ट शब्दों में बताई गई है कि हज़रत हारून अ० इस बड़े अपराध से दूर रहे हैं। उन्हों ने न तो बछड़े को अपना देवता बनाया था, और न उन लोगों को उसे पूजने का हुक्म दिया था।

३१ ये सत्तर व्यक्ति इस लिए बुलाये गये थे कि वे सीना पर्वत पर पहुँच कर सब की ओर से अल्लाह से प्रार्थना करें कि जो अपराध उन्हों ने बछड़ा पूज कर किया था उसे क्षमा कर दिया जाये।

३२ अल्लाह जिस प्रकार अपना राज्य-शासन चला रहा है उस में मौलिक स्थान उस के प्रकोप को नहीं बल्कि उस की दयालुता को ही प्राप्त है। यह सृष्टि उस की दयालुता के ही बल पर स्थिर है। उस का ग़ज़ब तो केवल उस समय उतरता है जब लोगों की सरकशी और उन का अत्याचार हद से आगे बढ़ जाता है।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

जो उस रसूल,* उम्मी* नबी* के पीछे चलते हैं जिसे वे अपने यहाँ तौरात* और इञ्जील* में लिखा हुआ पाते हैं[13] । जो उन्हें नेक बातों का हुक्म देता और बुरी बातों से रोकता है । उन के लिए उत्तम चीज़ें हलाल और निकृष्ट चीज़ें हराम ठहराता है, और दूर करता है उन से उन का बोझ और फन्दे जो उन पर थे । तो जो लोग उस (नबी*) पर ईमान* लाये और उस की हिमायत की, और उस की मदद की, और उस प्रकाश का अनुसरण किया जो उस के साथ उतारा गया है : ऐसे ही लोग सफलता प्राप्त करने वाले हैं । ○ (हे मुहम्मद !) कहो : हे लोगो ! निश्चय ही मैं तुम सब की ओर उस अल्लाह का रसूल* हूँ जो आसमानों और ज़मीन के राज्य का मालिक है । उस के सिवा कोई इलाह* (पूज्य) नहीं है । वही जिलाता और मारता है, तो अल्लाह और उस के रसूल,* उम्मी* नबी* पर ईमान* लाओ, जो अल्लाह और उस की बातों पर ईमान* रखता है, और उस के अनुयायी बनो कदाचित् तुम (सीधी) राह पा लो । ○

وَاتَّبِعُوهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۞ وَمِنْ قَوْمِ مُوسَىٰ أُمَّةٌ يَهْدُونَ بِالْحَقِّ
وَبِهِ يَعْدِلُونَ ۞ وَقَطَّعْنَاهُمُ اثْنَتَيْ عَشْرَةَ أَسْبَاطًا أُمَمًا ۚ وَأَوْحَيْنَا
إِلَىٰ مُوسَىٰ إِذِ اسْتَسْقَاهُ قَوْمُهُ أَنِ اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْحَجَرَ ۖ فَانْبَجَسَتْ
مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۖ قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَشْرَبَهُمْ ۚ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ
الْغَمَامَ وَأَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوَىٰ ۖ كُلُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ ۚ
وَمَا ظَلَمُونَا وَلَٰكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۞ وَإِذْ قِيلَ لَهُمُ اسْكُنُوا
هَٰذِهِ الْقَرْيَةَ وَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُولُوا حِطَّةٌ وَادْخُلُوا
الْبَابَ سُجَّدًا نَغْفِرْ لَكُمْ خَطِيئَاتِكُمْ ۚ سَنَزِيدُ الْمُحْسِنِينَ ۞ فَبَدَّلَ
الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ
رِجْزًا مِنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَظْلِمُونَ ۞ وَاسْأَلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِي
كَانَتْ حَاضِرَةَ الْبَحْرِ إِذْ يَعْدُونَ فِي السَّبْتِ إِذْ تَأْتِيهِمْ حِيتَانُهُمْ
يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَيَوْمَ لَا يَسْبِتُونَ ۙ لَا تَأْتِيهِمْ ۚ كَذَٰلِكَ نَبْلُوهُمْ
بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ۞ وَإِذْ قَالَتْ أُمَّةٌ مِنْهُمْ لِمَ تَعِظُونَ قَوْمًا ۙ
اللَّهُ مُهْلِكُهُمْ أَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ قَالُوا مَعْذِرَةً إِلَىٰ رَبِّكُمْ
وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ۞ فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ أَنْجَيْنَا الَّذِينَ يَنْهَوْنَ
عَنِ السُّوءِ وَأَخَذْنَا الَّذِينَ ظَلَمُوا بِعَذَابٍ بَئِيسٍ بِمَا كَانُوا
يَفْسُقُونَ ۞ فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَا نُهُوا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً

मूसा की जाति में एक गिरोह ऐसा भी है जो हक़ (सत्य) के अनुसार राह दिखाता और उसी के अनुसार इन्साफ़ करता है[14] । ○ और हम ने उन्हें[15] बारह घरानों में बाँट कर (स्थाई रूप से) कई गरोह बना दिये थे; और हम ने मूसा की ओर वह्य* की, जब उस से उस की जाति वालों ने पानी माँगा, कि अपनी लाठी अमुक चट्टान पर मारो ! तो उस चट्टान से बारह सोते फूट निकले, हर गिरोह ने अपने पानी लेने की जगह मालूम कर ली । हम ने उन पर बादल की छाया की और उन पर मन्न* और सलवा* उतारा[16] (यह कहते हुये कि) : हम ने तुम्हें जो उत्तम चीज़ें प्रदान की हैं उन्हें खाओ । उन्हों ने हम पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि १६० वे आप अपने ही पर ज़ुल्म करते रहे । ○

और याद करो जब उन से कहा गया था : इस बस्ती में रहो और इस (की पैदावार)

१३ उदाहरण के लिए तौरात* और इञ्जील* के निम्न लिखित स्थानों को देखिए जहाँ हज़रत मुहम्मद सल्ल० के आगमन के बारे में स्पष्ट संकेत किये गये हैं :—

'इस्तिस्ना' (Deuteronomy) १८ : १५-१६, 'मत्ती' (Matthew) २१ : ३३-४६, 'योहन्ना' (John) १ : १६-२१ और १४ : १५-१६, २६-३० और १५ : २६-२६ और १६ : ७, 'ज़बूर' (Psalms) ४५ : १ ।

१४ क़ुरआन के उतरने के समय यहूदियों में कुछ लोग ऐसे भी थे जो हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर ईमान* लाये और सच्चाई को अपनाया । इस आयत* का एक अर्थ यह भी हो सकता है कि हज़रत मूसा अ० के समय से, जब कि यहूदियों ने बछड़े को अपना देवता बनाया था और वे सीधे रास्ते से बहक गये थे, उन में एक गरोह सदाचारी लोगों का भी था जो सच्चाई को अपनाये हुये था ।

१५ अर्थात् बनी इस्राईल* को ।

१६ दे० सूरः अल-बक़रः फुट नोट १५ और १६ ।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें

خاسئين ۝ وإذ تأذن ربك ليبعثن عليهم إلى يوم القيامة من
يسومهم سوء العذاب إن ربك لسريع العقاب وإنه لغفور
رحيم ۝ وقطعناهم في الأرض أمما منهم الصالحون ومنهم
دون ذلك وبلوناهم بالحسنات والسيئات لعلهم يرجعون ۝
فخلف من بعدهم خلف ورثوا الكتاب يأخذون عرض هذا
الأدنى ويقولون سيغفر لنا وإن يأتهم عرض مثله
يأخذوه ألم يؤخذ عليهم ميثاق الكتاب أن لا يقولوا على الله إلا
الحق ودرسوا ما فيه والدار الآخرة خير للذين يتقون أفلا
تعقلون ۝ والذين يمسكون بالكتاب وأقاموا الصلاة إنا لا
نضيع أجر المصلحين ۝ وإذ نتقنا الجبل فوقهم كأنه ظلة
وظنوا أنه واقع بهم خذوا ما آتيناكم بقوة واذكروا ما فيه
لعلكم تتقون ۝ وإذ أخذ ربك من بني آدم من ظهورهم
ذريتهم وأشهدهم على أنفسهم ألست بربكم قالوا بلى
شهدنا أن تقولوا يوم القيامة إنا كنا عن هذا غافلين ۝ أو
تقولوا إنما أشرك آباؤنا من قبل وكنا ذرية من بعدهم أ
فتهلكنا بما فعل المبطلون ۝ وكذلك نفصل الآيات و
لعلهم يرجعون ۝ واتل عليهم نبأ الذي آتيناه آياتنا

में से जहाँ से चाहो खाओ, और कहते जाना : (मालिक !) हम क्षमा की प्रार्थना करते हैं, और (बस्ती के) दरवाज़े में सजदः* करते हुए दाखिल होना; हम तुम्हारी ख़ताओं को क्षमा कर देंगे; सत्कर्मी लोगों को हम और अधिक (बदला) देंगे।○ परन्तु फिर (ऐसा हुआ कि) जो बात उन से कही गई थी ज़ालिम लोगों ने उसे बदल कर कुछ और कर दिया, तो हम ने उन पर उस ज़ुल्म के कारण जो वे कर रहे थे आसमान से अज़ाब भेज दिया।○

इन से उस बस्ती (वालों) के बारे में पूछो जो समुद्र के तट पर थी, जब कि वे 'सब्त'[३७] की मर्यादा भंग करते थे, जब उन के 'सब्त' का दिन होता उन की मछलियाँ पानी के ऊपर उभर कर उन के सामने आ जाती थीं और जब उन के 'सब्त' का दिन न होता तो वे उन के पास न आती थीं। इस तरह हम उन्हें उन के मर्यादा का उल्लंघन करने के कारण आज़माइश में डाल रहे थे।○ और जब उन के एक गरोह ने कहा : तुम ऐसे लोगों को क्यों नसीहत करते हो जिन्हें अल्लाह हलाक (विनष्ट) करने वाला या सख़्त अज़ाब देने वाला है, उन्हों ने कहा : तुम्हारे रब* के सामने उज़्र पेश करने को, और कदाचित् वे उस की अवज्ञा से बचने और उस की ना-ख़ुशी से डरने लग जायें।○ फिर जब ऐसा हुआ कि जो याद-दिहानी उन्हें कराई गई थी उन्हों ने उसे भुला दिया, तो हम ने उन लोगों को बचा लिया जो बुराई से (लोगों को) रोकते थे, और ज़ुल्म करने वालों को हम ने उन के सीमोल्लंघन करने के कारण सख़्त अज़ाब में पकड़ लिया।○ १६५ फिर जब वे पूरी ढिठाई के साथ वही काम किये चले गये जिस से उन्हें रोका गया था, तो हम ने उन से कह दिया : बन्दर हो जाओ धिक्कारे हुये[३८]।○

और याद करो कि जब तेरे रब* ने जता दिया था कि वह उन के विरुद्ध[३९] क़ियामत* के दिन तक ऐसे लोगों को उठाता रहेगा जो उन्हें बुरा अज़ाब देंगे[४०]। निश्चय ही तेरा रब* सज़ा भी जल्द देता है और निश्चय ही वह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला भी है।○

हम ने उन्हें ज़मीन में टुकड़े-टुकड़े करके कितने ही गिरोहों में बाँट दिया। कुछ लोग उन में नेक थे, और कुछ लोग उन में इस से भिन्न थे। हम ने उन्हें अच्छी और बुरी हालतों में डाल कर आज़माया कदाचित् वे पलट आयें।○ फिर उन के पीछे ऐसे लोगों ने उन की

३७ 'सब्त' का अर्थ क्या है, इस के लिए देखिए सूरः अल-बक़रः फ़ुट नोट २१।

३८ दे० सूरः अल-बक़रः आयत ६५।

३९ अर्थात् बनी इसराईल* के विरुद्ध।

४० यह चेतावनी बनी इसराईल* को बहुत पहले से, लगभग आठवीं शताब्दी पूर्व मसीह से दी जाती रही है। इसइयाह (Isiah) और यरमियाह (Jeremiah) और उन के बाद आने वाले नबियों* की सभी किताबों में यह चेतावनी मौजूद है। इञ्जील से मालूम होता है कि हज़रत ईसा मसीह अ० ने भी उन्हें यह चेतावनी दी है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

जगह ली जो किताब* के वारिस हो कर इसी तुच्छ जीवन का सामान समेटते हैं और कहते हैं: हमें अवश्य क्षमा कर दिया जायेगा। और यदि वैसा ही और सामान उन के पास आ जाता है तो उसे भी ले लेते हैं[४१] क्या इन से किताब का वचन नहीं लिया गया था कि अल्लाह से सम्बन्ध लगा कर हक़* (सत्य) के सिवा और कोई बात न कहें? और ये स्वयं उसे पढ़ चुके हैं जो उस (किताब) में है। आख़िरत* का घर उन लोगों के लिए कहीं ज़्यादा अच्छा है, जो अल्लाह की अवज्ञा से बचते और उस की ना-ख़ुशी से डरते हैं। क्या तुम समझते नहीं हो? ○ और जो लोग किताब* को मज़बूती से पकड़े हुए हैं,[४२] और नमाज़* क़ायम रखी है १७० —निश्चय ही हम ऐसे सुधार करने वालों के कर्म-फल को नष्ट नहीं करेंगे। ○ और (वह समय भी याद करने योग्य है) जब हम ने पर्वत को (हिला कर) छत की तरह उन के ऊपर कर दिया, और उन्हों ने समझा कि बस वह उन के ऊपर आ गिरा। (और हम ने कहा): जो-कुछ हम ने तुम्हें दिया है[४३] उसे मज़बूती के साथ थामो, और जो-कुछ उस में (लिखा) है उसे याद रखो, कदाचित् तुम अल्लाह की अवज्ञा से बचने और उस की ना-ख़ुशी से डरने लग जाओ। ○

और (याद करो) जब तुम्हारे रब* ने आदम के बेटों से, (अर्थात्) उन की पीठों से, उन की सन्तान को निकाला, और उन्हें ख़ुद उन के ऊपर गवाह बनाया (पूछा): क्या मैं तुम्हारा रब* नहीं हूँ? उन्हों ने कहा: (क्यों नहीं,) अवश्य है। हम (इस की) गवाही देते हैं[४४]। यह (हम ने) इस लिए (किया) कि कहीं तुम क़ियामत* के दिन यह कहने लगो कि हम तो इस से बे-ख़बर थे; ○ या यह कहने लगो कि शिर्क* तो पहले ही हमारे पूर्वजों ने किया हम तो उन के बाद उन की सन्तान में हुये हैं। तो क्या तू हमें उस के बदले हलाक (विनष्ट) करता है जो-कुछ कि मिथ्यावादियों ने किया था? ○ इस तरह हम अपनी आयतों* को खोल-खोल कर पेश करते हैं, और इस से आशा है कि शायद ये लोग पलट आयें। ○

और (हे नबी*!) इन्हें उस व्यक्ति का हाल पढ़ कर सुनाओ जिसे हम ने अपनी आयतें* दी थीं, परन्तु वह उन्हें छोड़ निकला, फिर शैतान* उस के पीछे पड़ गया तो वह १७५ गुमराहों में शामिल हो गया। ○ यदि हम चाहते तो उन (आयतों*) के द्वारा उसे उच्चता प्रदान कर देते, परन्तु वह तो ज़मीन की ओर झुक गया और अपनी (तुच्छ-)इच्छा पर चलता रहा। तो उस की मिसाल एक कुत्ते जैसी है; यदि तुम उस पर बोझ लादो जब भी वह हांपे,

४१ इन का हाल यह है कि ये सांसारिक लाभ के लिए लोगों को धर्म के विरुद्ध बातें बताते हैं; और अल्लाह की किताब का कुछ भी आदर नहीं करते। ये केवल दुनियाँ के पुजारी बन कर रह गये हैं।

४२ अर्थात् उस के आदेशों का पालन करते हैं।

४३ अर्थात् जो किताब (तौरात) हम ने तुम्हें दी है।

४४ यह मामला हज़रत आदम अ० के पैदा किये जाने के समय पेश आया था। अल्लाह ने उन सब मनुष्यों को जो क़ियामत तक पैदा होने वाले थे, एक साथ अपने सामने हाज़िर कर के, इस का ज्ञान प्रदान किया था कि उन का रब* केवल एक अल्लाह है, और उन से इस का इक़रार भी कराया था कि वास्तव में एक अल्लाह के सिवा उन का कोई दूसरा रब* नहीं है। यद्यपि वह इक़रार आज हमें याद नहीं है फिर भी ज्ञान और इस इक़रार की छाप आज भी हमारी अन्तरात्मा और अन्तर्ज्ञान (Intuition) में वर्तमान है। अल्लाह के रब* होने का इक़रार मानव-प्रकृति में समोया हुआ है। यह तो उस के अन्तरात्मा की पुकार है। अल्लाह के नबी* वास्तव में इसी इक़रार को याद दिलाते रहे हैं। क़ियामत* में अल्लाह उन अपराधियों को पकड़ेगा जिन्हों ने अपने हृदय की पुकार को सुनने की चेष्टा नहीं की और नबियों* की बात का इन्कार कर के कुफ़्र* और शिर्क* को अपने लिए पसन्द किया।*

वर्तमान जीवन में यदि हमारे मस्तिष्क में अल्लाह के सामने किये हुये इक़रार की याद को बाक़ी नहीं रखा गया तो केवल इस लिए कि इस दुनियाँ में हमारी परीक्षा ली जा सके।

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

مِنْهَا فَأَتْبَعَهُ الشَّيْطٰنُ فَكَانَ مِنَ الْغٰوِينَ ۝ وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ
بِهَا وَلٰكِنَّهُ أَخْلَدَ إِلَى الْأَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ ۚ فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ
الْكَلْبِ ۚ إِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ أَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَثْ ۚ ذٰلِكَ مَثَلُ
الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيٰتِنَا ۚ فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ
يَتَفَكَّرُونَ ۝ سَاءَ مَثَلًا الْقَوْمُ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيٰتِنَا وَأَنْفُسَهُمْ
كَانُوا يَظْلِمُونَ ۝ مَنْ يَهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِي ۖ وَمَنْ يُضْلِلْ
فَأُولٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ۝ وَلَقَدْ ذَرَأْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيرًا مِنَ الْجِنِّ
وَالْإِنْسِ ۖ لَهُمْ قُلُوبٌ لَا يَفْقَهُونَ بِهَا وَلَهُمْ أَعْيُنٌ لَا يُبْصِرُونَ
بِهَا وَلَهُمْ آذَانٌ لَا يَسْمَعُونَ بِهَا ۚ أُولٰئِكَ كَالْأَنْعٰمِ بَلْ هُمْ
أَضَلُّ ۚ أُولٰئِكَ هُمُ الْغٰفِلُونَ ۝ وَلِلّٰهِ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوهُ
بِهَا ۖ وَذَرُوا الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي أَسْمٰئِهِ ۚ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ۝ وَمِمَّنْ خَلَقْنَا أُمَّةٌ يَهْدُونَ بِالْحَقِّ وَبِهِ
يَعْدِلُونَ ۝ وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيٰتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِنْ حَيْثُ
لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَأُمْلِي لَهُمْ ۚ إِنَّ كَيْدِي مَتِينٌ ۝ أَوَلَمْ
يَتَفَكَّرُوا ۗ مَا بِصَاحِبِهِمْ مِنْ جِنَّةٍ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ مُبِينٌ ۝
أَوَلَمْ يَنْظُرُوا فِي مَلَكُوتِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ
مِنْ شَيْءٍ وَأَنْ عَسٰى أَنْ يَكُونَ قَدِ اقْتَرَبَ أَجَلُهُمْ ۖ فَبِأَيِّ

और उसे छोड़ दो तब भी हाँपे। यही मिसाल उन लोगों की है जिन्हों ने हमारी आयतों* को झुठलाया।

सो ये क़िस्से इन्हें सुनाते रहो, कदाचित् ये सोच-विचार से काम लें। ○ बुरी मिसाल है उन लोगों की जिन्हों ने हमारी आयतों* को झुठलाया, और वे आप अपने ही ऊपर ज़ुल्म करते रहे। ○ जिसे अल्लाह राह दिखाये, वही राह पाने वाला है, और जिसे वह राह से भटका दे[४५]—तो ऐसे ही लोग घाटा उठाने वाले हैं। ○ और निश्चय ही हम ने बहुत से जिन्नों* और मनुष्यों को दोज़ख़ ही के लिए फैला रखा है, उन के पास दिल हैं (परन्तु) वे उन से समझते नहीं, उन के पास आँखें हैं वे उन से देखते नहीं, उन के पास कान हैं वे उन से सुनते नहीं। ये पशुओं की तरह हैं—बल्कि ये उन से भी ज़्यादा बे-राह हैं। यही लोग हैं जो ग़फ़लत में पड़े हुये हैं। ○

अच्छे नाम (गुण) अल्लाह ही के लिए हैं। तो तुम उन्हीं (नामों) के द्वारा उसे पुकारो और उन लोगों को छोड़ दो जो उस के नामों के विषय में कुटिलता ग्रहण करते हैं[४६]। जो-कुछ वे करते हैं उस का फल वे जल्द पायेंगे। ○ और जिन लोगों को हम ने पैदा किया है उन में एक गरोह ऐसे लोगों का भी है जो हक़* (सत्य) के साथ राह दिखाते और उसी के साथ इन्साफ़ करते हैं। ○ रहे वे लोग जिन्हों ने हमारी आयतों* को झुठलाया हम उन्हें धीरे-धीरे (विनाश की ओर) ले जायेंगे इस तरह कि उन्हें ख़बर तक न होगी। ○ मैं उन्हें ढील देता हूँ निस्सन्देह मेरी चाल दृढ़ है (उस का कोई तोड़ नहीं)। ○ १८०

क्या इन लोगों ने विचार नहीं किया? इन के साथी[४७] को कोई उन्माद नहीं हो गया है। वह तो बस एक साफ़-साफ़ सचेत करने वाला है। ○ क्या इन्हों ने आसमानों और ज़मीन के राज्य को, और जो-कुछ अल्लाह ने पैदा किया है उस पर निगाह नहीं डाली और न इस बात पर कि कदाचित् इन (की मृत्यु) का नियत समय क़रीब आ गया हो? तो इस के बाद कौन-सी बात ऐसी हो सकती है जिस पर ये ईमान* लायेंगे? ○ जिसे अल्लाह राह से भटका दे,[४८] उसे कोई राह पर लाने वाला नहीं। वह इन्हें इन की सरकशी में भटका हुआ छोड़ देता है। ○ १८

४५ अर्थात् जिन पर वह सच्चाई की राह न खोले। सच्चाई की राह वह उन्हीं लोगों पर नहीं खोलता जो उस की पुकार पर ध्यान नहीं देते, और उस के सन्देश की उपेक्षा करते हैं।

४६ अर्थात् वे अल्लाह के ऐसे नाम रखते हैं, और उसे ऐसे गुणों से युक्त समझते हैं जो उस की महानता और मान-मर्यादा के प्रतिकूल हैं। या वे सृष्टि के लोग आदि में किसी का ऐसा नाम रखते हैं जो केवल अल्लाह ही के लिए उचित है।

४७ अर्थात् हज़रत मुहम्मद सल्ल०, इस लिए कि आप (सल्ल०) इन्हीं लोगों में पैदा हुये और इन्हीं लोगों के साथ आप (सल्ल०) का रहना-सहना सब-कुछ रहा है।

४८ दे० इसी सूरः का फ़ुट नोट ४५।

* इन का अर्थ आरम्भ में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ۝ مَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَلَا هَادِيَ لَهُ
وَيَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝ يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ
مُرْسَاهَا قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّي لَا يُجَلِّيهَا لِوَقْتِهَا إِلَّا هُوَ
ثَقُلَتْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ لَا تَأْتِيكُمْ إِلَّا بَغْتَةً يَسْأَلُونَكَ كَأَنَّكَ
حَفِيٌّ عَنْهَا قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللَّهِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا
يَعْلَمُونَ ۝ قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي نَفْعًا وَلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ
وَلَوْ كُنْتُ أَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ وَمَا مَسَّنِيَ
السُّوءُ إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝ هُوَ الَّذِي
خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ
إِلَيْهَا فَلَمَّا تَغَشَّاهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيفًا فَمَرَّتْ بِهِ فَلَمَّا
أَثْقَلَتْ دَعَوَا اللَّهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ آتَيْتَنَا صَالِحًا لَنَكُونَنَّ مِنَ
الشَّاكِرِينَ ۝ فَلَمَّا آتَاهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهُ شُرَكَاءَ فِيمَا آتَاهُمَا
فَتَعَالَى اللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ أَيُشْرِكُونَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْئًا وَهُمْ
يُخْلَقُونَ ۝ وَلَا يَسْتَطِيعُونَ لَهُمْ نَصْرًا وَلَا أَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُونَ ۝
وَإِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ لَا يَتَّبِعُوكُمْ سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ
أَدَعَوْتُمُوهُمْ أَمْ أَنْتُمْ صَامِتُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ
دُونِ اللَّهِ عِبَادٌ أَمْثَالُكُمْ فَادْعُوهُمْ فَلْيَسْتَجِيبُوا لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ

वे तुम से उस घड़ी (अर्थात् क़ियामत*) के बारे में पूछते हैं कि उस का ठहराव[४९] कब है। कहो: उस का ज्ञान तो मेरे रब* ही को है। उसे उस के समय पर सिवाय उस के (अर्थात् सिवाय अल्लाह के) कोई ज़ाहिर नहीं करेगा। वह (घड़ी) आसमानों और ज़मीन में भारी है। वह तुम पर अचानक आ जायेगी। लोग तुम से इस तरह पूछते हैं मानो तुम उस की खोज में लगे हुये हो। कह दो: इस का ज्ञान तो बस अल्लाह को है, परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।○ (हे नबी*!) कहो: मैं न तो अपने भले का मालिक हूँ, और न बुरे का, बस अल्लाह ही जो चाहता है होता है। यदि मैं ग़ैब (परोक्ष) की बात जानता, तो बहुत से फ़ायदे समेट लेता, और मुझे कोई हानि न पहुँचती। मैं तो ईमान* लाने वालों के लिए बस एक सचेत करने वाला और शुभ-सूचना देने वाला हूँ।○

वही (सर्व-शक्तिमान्) है जिस ने तुम्हें एक जीव से पैदा किया, और उसी से[५०] उस का जोड़ा बनाया ताकि वह उस के पास चैन पाये। फिर जब उस ने (पुरुष ने) उसे (स्त्री को) ढाँक लिया, तो उसे हलका सा हमल (गर्भ) रह गया, जिसे लिये हुये वह चलती-फिरती रही, फिर जब वह बोझल हो गई तो दोनों (स्त्री-पुरुष) ने अल्लाह, अपने रब* से प्रार्थना की कि यदि तू ने हमें भला-चंगा बच्चा दिया तो हम शुक्रगुज़ार (कृतज्ञ) होंगे।○ परन्तु जब अल्लाह ने उन्हें भला-चंगा बच्चा दे दिया, तो जो-कुछ उस ने उन्हें दिया था उस में वे दूसरों को उस का शरीक ठहराने लगे[५१]। जैसा-कुछ शिर्क* वे करते हैं अल्लाह १६० उस से बहुत उच्च है।○ क्या वे उन को शरीक ठहराते हैं जो कोई चीज़ भी पैदा नहीं करते, बल्कि स्वयं वे पैदा किये जाते हैं,○ और उन्हें न उन की मदद करने का सामर्थ्य प्राप्त है, और न वे अपनी ही मदद कर सकते हैं।○ और यदि तुम उन्हें (सीधी) राह की ओर बुलाओ, तो वे तुम्हारे पीछे न आयें। तुम्हारे लिए बराबर है कि तुम उन्हें बुलाओ या चुप रहो।○ तुम लोग अल्लाह के सिवा जिन्हें पुकारते हो वे तो तुम्हारे ही जैसे बन्दे हैं। तो तुम उन्हें पुकार कर देखो, यदि तुम सच्चे हो, तो उन्हें (तुम्हारी पुकार का) जवाब देना चाहिए[५२]।○ क्या उन के पाँव हैं जिन से वे चलें, या उन के हाथ हैं जिन से वे पकड़ें, या उन के आँखें हैं जिन से वे देखें, या उन के कान हैं जिन से वे सुनें? (हे नबी!) कहो: तुम अपने ठहराये हुये शरीकों को बुला लो, फिर मेरे विरुद्ध चालें चलो, और मुझे (तनिक भी) १६१ मुहलत न दो।○ मेरा संरक्षक-मित्र अल्लाह है जिस ने यह किताब* उतारी है। और वह नेक लोगों की सरपरस्ती (संरक्षण) करता है।

४९ अर्थात् वह कब आयेगी।
५० दे० सूर: [illegible] नोट २।
५१ यह अरब के मुश्रिकों* का हाल था।
५२ अर्थात् उन्हें कोई जवाबी कार्रवाई करनी चाहिए।
* इन का अर्थ आखिर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

صٰدِقِيْنَ ۞ اَلَهُمْ اَرْجُلٌ يَّمْشُوْنَ بِهَآ اَمْ لَهُمْ اَيْدٍ يَّبْطِشُوْنَ
بِهَآ اَمْ لَهُمْ اَعْيُنٌ يُّبْصِرُوْنَ بِهَآ اَمْ لَهُمْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا
قُلِ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ كِيْدُوْنِ فَلَا تُنْظِرُوْنِ ۞ اِنَّ وَلِيِّۦَ اللّٰهُ
الَّذِيْ نَزَّلَ الْكِتٰبَ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصّٰلِحِيْنَ ۞ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ
مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَكُمْ وَلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ۞
وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَسْمَعُوْا وَتَرٰىهُمْ يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ
وَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ۞ خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ
الْجٰهِلِيْنَ ۞ وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ
اِنَّهٗ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۞ اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّهُمْ طٰٓئِفٌ مِّنَ
الشَّيْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَاِذَا هُمْ مُّبْصِرُوْنَ ۞ وَاِخْوَانُهُمْ يَمُدُّوْنَهُمْ
فِي الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُوْنَ ۞ وَاِذَا لَمْ تَاْتِهِمْ بِاٰيَةٍ قَالُوْا لَوْلَا
اجْتَبَيْتَهَا قُلْ اِنَّمَآ اَتَّبِعُ مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ مِنْ رَّبِّيْ هٰذَا بَصَآئِرُ
مِنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۞ وَاِذَا قُرِئَ
الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَاَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۞ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ
فِيْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّخِيْفَةً وَّدُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَ
الْاٰصَالِ وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ ۞ اِنَّ الَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا
يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيُسَبِّحُوْنَهٗ وَلَهٗ يَسْجُدُوْنَ ۩

और जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़ कर पुकारते हो उन्हें न तुम्हारी सहायता करने का सामर्थ्य प्राप्त है, और न वे अपनी ही सहायता कर सकते हैं। ○ और यदि तुम उन्हें (सीधी) राह की ओर बुलाओ तो वे सुनते नहीं; तुम उन्हें देखते हो कि वे तुम्हारी ओर ताक रहे हैं परन्तु उन्हें कुछ सूझता नहीं। ○

(हे नबी* !) नर्मी और क्षमा से काम लो, भले काम का हुक्म दो, और अज्ञानी लोगों से न उलझो। ○ और यदि शैतान* की कोई उकसाहट तुम्हें उकसाये, तो अल्लाह की पनाह माँगो। निस्सन्देह वह (सब-कुछ) सुनने वाला और जानने वाला है। ○ वास्तव में जो लोग अल्लाह की अवज्ञा से बचने और उस की ना-ख़ुशी से डरने वाले हैं, उन्हें जब शैतान* की ओर से कोई (बुरा) ख़्याल छू जाता है, तो वे सचेत हो जाते हैं और उन्हें सूझ आ जाती है[53]। ○ रहे उन (शैतानों*) के भाई-बन्धु तो वे उन्हें गुमराही में खींचे लिये जाते हैं और फिर इस में कोई कमी नहीं करते। ○

(हे नबी* !) जब तुम इन लोगों के सामने कोई आयत* पेश नहीं करते तो ये कहते हैं कि क्यों नहीं तुम उसे छाँट लाये ? कह दो : मैं तो केवल उस पर चलता हूँ जो मेरे रब* की ओर से मुझ पर वह्य* की जाती है। ये सूझ की बातें हैं तुम्हारे रब* की ओर से, और मार्ग-दर्शन और (सर्वथा) दयालुता है उन लोगों के लिए जो ईमान* लाते हैं। ○ जब क़ुर-आन* पढ़ा जाये तो उसे ध्यान-पूर्वक सुनो, और चुप रहो कदाचित् तुम पर दया हो जाये। ○

(हे नबी* !) अपने रब* को प्रातःकाल और सन्ध्या समय याद किया करो, अपने जी में गिड़गिड़ाते और डरते हुये, और धीमी आवाज़ के साथ। और उन लोगों में से न हो जाओ जो ग़ाफ़िल हैं। ○ निस्सन्देह जो तुम्हारे रब* के क़रीब (फ़रिश्ते*) हैं वे कभी अपनी बड़ाई के घमण्ड में आ कर उस की इबादत* से मुँह नहीं मोड़ते, और उस की तसबीह* करते हैं और उसे सजदः* करते हैं। ○

---

५३ अर्थात् उन पर यह बात खुल जाती है कि सत्य क्या है।
* इन का अर्थ परिशिष्ट में दिये हुए पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

एक अखण्ड रूप में दिखाई देती है सूरः का प्रत्येक भाग एक केन्द्रीय विचार की आभा से आलोकित हो उठता है।

अपने केन्द्रीय विषय की दृष्टि से प्रत्येक सूरः का उसकी अगली और पिछली सूरतों से गहरा सम्पर्क है। परन्तु इन बातों का अनुभव गहरे सोच-विचार और अनुशीलन से होता है। यदि कोई क़ुरआन की सूरतों से आनन्द माँगता है तो यह अनुचित नहीं परन्तु उसे यह न भूलना चाहिए कि क़ुरआन की प्रत्येक सूरः हम से साधना की माँग करती है। कुरआन के समझने और उसके निहित रहस्यों को पाने के लिए जिस विकसित हृदय और विकसित मस्तिष्क और शुद्ध आत्मा की आवश्यकता है उसके निर्माण में कुरआन की सूरतें स्वयं सहायक भी होती हैं।

क़ुरआन में जो साहित्य है उसमें जो संगीत, स्वर-प्रवाह और शब्दों का मधुर विन्यास है वह अनुपम है। कुरआन के साहित्य का आनन्द लेने के लिए अरबी भाषा का ज्ञान आवश्यक है। साहित्य के अतिरिक्त कुरआन में जो गहराई और ज्ञान की व्यापकता पाई जाती है वह अन्यत्र दुर्लभ है। यह क़ुरआन की अनुपम विशेषता ही थी जिसके कारण इस्लाम-विरोधी कुरआन सुनने से लोगों को रोकते थे। वे समझते थे कि जो क़ुरआन सुनेगा वह कुरआन की ओर आकर्षित हो कर रहेगा। इतिहास साक्षी है कि कुरआन की आवाज़ जिस किसी के कान तक पहुँची वह उससे प्रभावित हो कर रहा भले ही वह वैमनस्यता के कारण उस पर ईमान न ला सका हो परन्तु उसके दिल ने कुरआन की सच्चाई की ही गवाही दी। और कितने ही लोग कुरआन सुन कर कुफ़्र के अंधेरे से निकल आये और उन्होंने इस्लाम को स्वेच्छापूर्वक अपना लिया। वही उमर (रज़ि०) जो हज़रत मुहम्मद सल्ल० का सिर काटने के लिए तलवार लेकर घर से निकलते हैं अन्त में कुरआन के शब्दों से प्रभावित हो कर हज़रत मुहम्मद सल्ल० के सच्चे अनुयायियों में सम्मिलित हो जाते हैं। वही तुफ़ैल दौसी जिन्हें मक्के के लोगों ने यह ताकीद की थी कि मुहम्मद (सल्ल०) की बातें न सुनना, कुरआन सुन कर पुकार उठे : "ख़ुदा की क़सम इस से अच्छा कलाम मैंने कभी नहीं सुना है।" और फिर सच्चे दिल से कुरआन पर ईमान लाते हैं। उत्तबः बिन रबीअः जो नबी सल्ल० की सेवा में इस लिए गया था कि आप को समझा-बुझाकर राज़ी कर ले और आप धर्म-प्रचार के शुभ-कार्य को छोड़ दें, जब आप के मुख से कुरआन की कुछ आयतें सुनता है तो प्रभावित होने से अपने को बचा न सका। वह लौटकर आता है और कहता है : "ख़ुदा की क़सम आज मैंने ऐसा 'कलाम' सुना है कि इससे पहले कभी न सुना था। न यह काव्य है न जादू और न काहिनों की वाणी। मेरी बात मानो इस व्यक्ति (अर्थात् मुहम्मद सल्ल०) को इसके हाल पर छोड़ दो इसकी बातें जो मैंने सुनी हैं रंग लाकर रहने वाली हैं।" इसी प्रकार क़ुरैश का प्रसिद्ध सरदार वलीद बिन मुग़ीरः जब नबी सल्ल० से कुरआन का कुछ हिस्सा सुनकर लौटता है तो कहता है :

"ख़ुदा की क़सम मैं हर प्रकार की कविता से भली-भाँति परिचित हूँ। ख़ुदा की क़सम यह व्यक्ति जो 'कलाम' पेश कर रहा है वह उनमें से किसी के सदृश नहीं है। ख़ुदा की क़सम इसके 'कलाम' में एक अद्भुत माधुर्य, एक विशेष प्रकार का सौंदर्य है, उसकी शाखायें फलों से लदी हुई हैं और उसकी जड़ें हरी-भरी हैं। निस्सन्देह वह हर 'कलाम' से ऊँचा है कोई दूसरा 'कलाम उसे नीचा नहीं दिखा सकता।"

इस प्रकार की कितनी ही मिसालें पेश की जा सकती हैं जिनसे अन्दाज़ा होता है कि कुरआन अपने साहित्य और अपनी प्रभावशीलता की दृष्टि से एक महान् ग्रंथ है जिसके तेज, शक्ति और सौन्दर्य की प्रशंसा उसके विरोधियों तक ने की है।

८--अल-अनफ़ाल

(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः का आरम्भ 'अनफ़ाल' की समस्या से हुआ है। चिह्न के रूप में यही 'अल-अनफ़ाल' (The Accessions) इस सूरः का नाम रखा गया है। 'अनफ़ाल' का तात्पर्य यहाँ लड़ाई में दुश्मनों का छोड़ा हुआ धन है, जिसे 'ग़नीमत' भी कहते हैं। 'ग़नीमत' के बारे में किये गये प्रश्नों का जो उत्तर इस सूरः में दिया गया है; और इस सिलसिले में मुसलमानों को जो शिक्षा दी गई है, उस का इस्लामी जीवन में बड़ा महत्व है। इस तरह सूरः के इस नाम में बड़ी सार्थकता पाई जाती है। इस नाम के सामने आते ही स्वभावतः उन समस्त शिक्षाओं और आदेशों की ओर हमारा ध्यान जाता है जो इस सम्बन्ध में मुस्लिम* गरोह को दिये गये हैं।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह सूरः सन् २ हि० में 'बद्र' की लड़ाई के पश्चात् उतरी है।

'बद्र' की लड़ाई वह पहली लड़ाई है जो हज़रत मुहम्मद सल्ल० के जीवन-काल में कुफ़्र* और इस्लाम* के बीच लड़ी गई है। नबी सल्ल० और आप (सल्ल०) के साथियों के मक्का छोड़ कर मदीना चले जाने के बाद भी मक्का वालों ने आप (सल्ल०) को चैन से रहने न दिया। वे मुसलमानों का उन्मूलन करने का निश्चय किये हुये थे। 'क़ुरैश'* इस बात को कभी भी पसन्द नहीं कर सकते थे कि मुसलमानों की शक्ति बढ़े और वे आराम और चैन से रह सकें। इस के अलावा यमन से शाम (Syria) की ओर जो व्यापारिक मार्ग लाल-सागर के किनारे-किनारे हो कर जाता था वह मदीना के रास्ते में पड़ता था। 'क़ुरैश' के तिजारती क़ाफ़िले इस मार्ग से हो कर गुज़रते थे। उन्हें मदीना के लोगों से सदा डर लगा रहता था कि कहीं वह उन के किसी काफ़िले पर हमला न कर दें। 'क़ुरैश' ने यह निश्चय किया कि जिस तरह भी हो इस ख़तरे को सदैव के लिए दूर कर देना चाहिए। 'क़ुरैश' पर दबाव डालने के लिए इस के सिवा और कोई उपाय न था कि मुसलमान उस रास्ते पर कब्ज़ा कर लें जिस से हो कर 'क़ुरैश' के तिजारती क़ाफ़िले शाम (Syria) को आया करते थे। नबी सल्ल० ने इस रास्ते के निकट बसने वाले विभिन्न क़बीलों से कई प्रकार के समझौते किये। और फिर 'क़ुरैश' के क़ाफ़िलों को धमकी देने के लिए छोटे-छोटे दस्ते भी भेजे, कुछ दस्तों के साथ आप (सल्ल०) स्वयं भी गये।

'बद्र' की लड़ाई

'शाबान' सन् २ हि० में 'क़ुरैश' का एक बहुत बड़ा क़ाफ़िला जिस के पास लगभग ५० हज़ार अशरफ़ियों का माल था, शाम (Syria) से लौट रहा था। क़ाफ़िले वालों को डर हुआ कि कहीं मुसलमान उन पर हमला न कर दें। क़ाफ़िले के सरदार अबूसुफ़यान ने एक आदमी को मक्का दौड़ाया कि वह वहाँ से मदद ले कर आये। उस ने मक्के में जा कर यह शोर मचाया कि क़ाफ़िले को मुसलमान लूट लेना

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

चाहते हैं। इस प्रकार सब 'क़ुरैश' के बड़े-बड़े सरदार मुसलमानों से लड़ने के लिए निकल आये। लग-भग एक हज़ार की सेना तैयार हो गई। जिस में 'क़ुरैश' के सभी सरदार भी शरीक थे।

इधर नबी सल्ल० ने यह निश्चय किया कि जो शक्ति भी उन्हें प्राप्त है उसे ले कर वे मैदान में क़ुरैश के हमले का मुक़ाबिला करेंगे। आप (सल्ल०) ने अनसार* और मुहाजिरों* को इकट्ठा कर के उन के सामने यह बात रखी कि एक ओर उत्तर में तिजारती क़ाफ़िला है और दूसरी ओर दक्षिण से क़ुरैश की सेना आ रही है। अल्लाह का वादा है कि तुम्हें इन दोनों में से एक मिल कर रहेगा। फ़ैसला करो कि तुम किस के मुक़ाबिले पर चलने का निश्चय करते हो। एक बड़े गरोह ने अपनी यह इच्छा प्रकट की कि हमें आक्रमण क़ाफ़िले पर करना चाहिए। नबी सल्ल० ने अपना सवाल फिर दोहराया। इस पर मुहाजिरों* में से मिक़दाद इब्न अम्र रज़ि० उठे और कहा: "ऐ अल्लाह के रसूल*! जिधर आप (सल्ल०) के रब* की आज्ञा हो उधर और चलिए। हम आप (सल्ल०) के साथ हैं। हम बनी इसराईल* की तरह यह कहने वाले नहीं हैं कि जाओ तुम और तुम्हारा ख़ुदा दोनों लड़ें हम तो यहाँ बैठे हैं"। परन्तु अभी अनसार* की राय नहीं मालूम हो सकी थी। नबी सल्ल० ने अनसार* को सम्बोधित करते हुये अपना सवाल फिर दोहराया। इस पर सअद इब्न मुआज़ रज़ि० उठे और कहा: "हम आप (सल्ल०) पर ईमान* ला चुके हैं। आप (सल्ल०) की तसदीक़ कर चुके हैं। और हम इस की गवाही दे चुके हैं कि आप (सल्ल०) जो-कुछ लाये हैं वह हक़ (सत्य) है। और आप (सल्ल०) का हुक्म मानने का वचन दे चुके हैं। ऐ अल्लाह के रसूल*! आप (सल्ल०) ने जो निश्चय किया है उसे कीजिए। क़सम है उस हस्ती की जिस ने आप (सल्ल०) को हक़ के साथ भेजा है कि यदि आप (सल्ल०) हमें ले कर समुद्र पर आ पहुँचें और उस में उतर जायें तो हम आप (सल्ल०) के साथ कूदेंगे और हम में से कोई एक व्यक्ति भी पीछे न रहेगा। हम लड़ाई में डटे रहेंगे और मुक़ाबिले में हम प्राणों की बाज़ी लगा देने में अपने-आप को सच्चा सिद्ध करेंगे। और यह असम्भव नहीं कि अल्लाह आप (सल्ल०) को हम से वह-कुछ दिखाये जिसे देख कर आप (सल्ल०) की आँखें ठण्डी हो जायें अतः आप (सल्ल०) अल्लाह की बरकत के भरोसे हमें ले चलें"।

इस के बाद फ़ैसला हो गया कि मुक़ाबिला 'क़ुरैश' की सेना ही का करना है। नबी सल्ल० अल्लाह के भरोसे पर ३०० से कुछ अधिक मुसलमानों को ले कर मदीना से निकल खड़े हुये। मुसलमानों के पास न तो अधिक लड़ाई का सामान था और न उन की सेना में अधिक सैनिक ही थे। थोड़े लोगों को छोड़ कर बाक़ी लोग डरे हुये थे। उन्हें ऐसा लग रहा था, मानो जानते-बूझते अपने-आप को मौत के मुँह में झोंक रहे हैं।

१६ 'रमज़ान' को आप (सल्ल०) 'बद्र' नामक गाँव के निकट पहुँचे। यह बस्ती मदीना से दक्षिण-पश्चिम की ओर लग-भग ८० मील की दूरी पर है। जिस समय दोनों सेनाओं का मुक़ाबिला हुआ तो नबी सल्ल० ने देखा कि मुसलमान बहुत थोड़े हैं और उन के पास लड़ाई का सामान भी ठीक से नहीं है। आप (सल्ल०) ने अल्लाह

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

से प्रार्थना की : "हे अल्लाह! ये 'क़ुरैश' हैं, अपनी गर्व-सामग्री के साथ आये हैं ताकि तेरे रसूल* को झूठा सिद्ध करें। हे अल्लाह! तेरी वह मदद आ जाये जिस का तू ने वादा किया है। हे अल्लाह! यदि यह मुट्ठी भर गिरोह हलाक हो गया तो ज़मीन पर फिर तेरी इबादत* न होगी"।

उस लड़ाई में सब से कड़ी परीक्षा मक्का के मुहाजिर* मुसलमानों की थी। उन्हें अपने ही भाई-बन्धुओं और नातेदारों का मुक़ाबिला करना था। किसी का बाप, किसी का बेटा, किसी का भाई, किसी का मामूँ उस की तलवार के सामने आ रहा था। इस कड़ी परीक्षा में वही लोग पूरे उतर सकते थे जिन्हों ने वास्तव में समझ-बूझ कर सत्य को ग्रहण किया हो और असत्य से अपने सारे नाते तोड़ चुके हों। अन्सार* के लिए भी यह कोई साधारण परीक्षा न थी। वे इस्लाम* की ओर से लड़ कर सारे अरब को अपना दुश्मन बना रहे थे। यह साहस वे उसी समय कर सकते थे जब कि अल्लाह और रसूल* उन्हें सारे संसार से बढ़ कर प्रिय हो गये हों।

इस लड़ाई में अल्लाह ने मुसलमानों की मदद की। उन के मुक़ाबिले में एक हज़ार से अधिक की सेना परास्त हो कर रह गई। 'क़ुरैश' के ७० व्यक्ति मारे गये और इतने ही क़ैद हुये। 'क़ुरैश' के जितने बड़े-बड़े सरदार थे क़रीब-क़रीब वे सभी ख़त्म हो गये। सूरः अल-अनफ़ाल में इस लड़ाई पर विस्तारपूर्वक विवेचना की गई है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्तायें

इस सूरः का केन्द्रीय विषय है पूर्ण रूप से अल्लाह का हुक्म मानना और अपने रब* पर पूरा भरोसा रखना। इस सूरः की समस्त वार्तायें इसी केन्द्रीय विषय से सम्पर्क रखती हैं।

जैसा कि ऊपर यह बात कही जा चुकी है कि इस सूरः में 'बद्र' की लड़ाई पर पूर्ण रूप से विवेचना की गई है। 'बद्र' की लड़ाई को क़ुरआन* ने 'फ़ुरक़ान' अथवा फ़ैसला (Distinction) की उपाधि दी है। इस लड़ाई ने रसूल* के मिशन (Mission) की सत्यता को पूर्ण रूप से सिद्ध कर दिया। पिछली सूरः में यह दिखाया गया है कि किस प्रकार पिछले नबियों* के शत्रुओं को अन्त में अल्लाह ने उन के किये का मज़ा चखाया है। प्रस्तुत सूरः में इस का उल्लेख किया गया है कि पिछले नबियों* के दुश्मनों की तरह हज़रत मुहम्मद सल्ल० के विरोधियों को भी मुँह की खानी पड़ी।

इस सूरः में 'बद्र' की लड़ाई पर विवेचना करते हुये मुसलमानों को विशेष आदेश दिये गये हैं। उन्हें बताया गया है कि अब वह इस्लाम* को अपना चुके हैं तो उन्हें अल्लाह की आज्ञा का पूर्ण रूप से पालन करना चाहिए। और उन्हें अपने रब* पर पूरा भरोसा रखना चाहिए। ईमान* और इस्लाम* की पूर्णता का अर्थ ही यह होता है कि मनुष्य आत्मार्पण द्वारा यह सिद्ध कर दे कि वह अपने ईश्वर का हर हुक्म मानने के लिए तैयार है और उसे उस पर पूरा भरोसा तथा विश्वास है।

इस सूरः में सब से पहले उन कमज़ोरियों को दूर करने पर ज़ोर दिया गया है जो नैतिक दृष्टि से मुसलमानों में पाई जाती थीं। मुसलमानों को बताया गया कि मुसलमान तलवार उठाता है तो केवल अल्लाह और उस के दीन* के लिए। उस की लड़ाई लौकिक लाभों के लिए नहीं होती।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें

मुसलमानों को बताया गया कि इस लड़ाई में उन्हें जो भी सफलता प्राप्त हुई है वह अल्लाह की कृपा और दया का नतीजा है। इस लिए उन्हें अपनी शक्ति और अपने साधनों पर नहीं बल्कि अपने अल्लाह पर भरोसा करना चाहिए, उसी का उन्हें कृतज्ञ होना चाहिए और प्रत्येक अवस्था में उन्हें अल्लाह और उस के रसूल* का हुक्म मानना चाहिए। 'बद्र' की लड़ाई का दिन इस्लाम* के इतिहास में एक ऐसा दिन था जो सदैव याद रहेगा। मुसलमानों को सचेत किया गया कि यह लड़ाई वास्तव में इस्लाम* के विरुद्ध किये जाने वाले संघर्षों की पहली कड़ी है। इस लिए उन्हें आगे के लिए तैयार रहना चाहिए[1]।

मुसलमानों को बताया गया कि वह वास्तविक ध्येय क्या था जिस के लिए यह लड़ाई लड़नी पड़ी है। और उन नैतिक विशेषताओं को भी खोल कर बयान किया गया जिन के कारण मुसलमानों को इस लड़ाई में सफलता प्राप्त हुई है।

फिर उन मुश्रिकों* और मुनाफ़िक़ों* को जो इस लड़ाई में क़ैद हुये थे अत्यन्त अच्छे ढंग से सम्बोधित किया गया ताकि वे शिक्षा ग्रहण कर सकें।

मुसलमानों को बताया गया कि इस लड़ाई में जो-कुछ उन के हाथ आया है उसे अपना धन न समझें बल्कि उसे अल्लाह का माल और उस का दिया हुआ एक पुरस्कार समझें। उस में जो हिस्सा अल्लाह ने उन के लिए निश्चित किया है उसे अल्लाह का उपकार समझते हुये लें और उस का जो भाग अल्लाह ने अपने दीन* के लिए या ग़रीबों और मुहताजों की सहायता के लिए निश्चित किया है उसे ख़ुशी से मान लें।

उन्हें लड़ाई और संधि के बारे में नैतिक आदेश दिये गये। उन्हें हुक्म दिया गया कि वे लड़ाई और सन्धि में अज्ञान-काल की रीति से बचें और संसार को इस्लाम* की नैतिक महानता का परिचय दें।

उन्हें कुछ राजनीतिक क़ानूनों अथवा नियमों की भी शिक्षा दी गई और यह बताया गया कि 'दारुलइस्लाम' (इस्लामी राज्य) के मुसलमानों की क़ानूनी हैसियत उन मुसलमानों से भिन्न है जो 'दारुलइस्लाम' की सीमा से बाहर रहते हों और हिजरत* कर के 'दारुलइस्लाम' में न आ गये हों।

इस सूरः में एक ओर मुस्लिम* गिरोह को विजय की शुभ-सूचना दी गई है और साफ़ तौर पर बता दिया गया है कि विरोधी दल का जत्था चाहे जितना ही बड़ा हुआ क्यों न हो वह उस के काम नहीं आयेगा (दे० आयत १६)। दूसरी ओर मुसलमानों को जिहाद* पर उकसाया गया है और बताया गया है कि अल्लाह उन्हीं लोगों के साथ है जो सब्र करने वाले अथवा धैर्यवान् हैं[2]।

जिहाद* के अतिरिक्त हिजरत* पर भी इस सूरः में विशेष ज़ोर दिया गया है[3]।

---

१ इस लड़ाई के दूसरे ही वर्ष काफ़िरों* ने तीन हज़ार की सेना ले कर मुसलमानों पर आक्रमण कर दिया (दे० सूरः ३)। सन् ५ हि० में तो उन्हों ने १०,००० की सेना ले कर मदीना पर धावा बोल दिया। यह लड़ाई इतिहास में 'ख़न्दक़ की लड़ाई' के नाम से प्रसिद्ध है। (दे० सूरः अल-अहज़ाब)।

२ दे० आयत ६५।

३ दे० आयत ७२-७४।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

जिहाद* और हिजरत* को ईमान* वालों की पहचान बताई गई है। सूरः को समाप्त करते हुये कहा गया है कि जो लोग ईमान* लाये परन्तु हिजरत* नहीं की उन से तुम्हारा संरक्षण और मैत्री आदि का कोई सम्बन्ध नहीं है जब तक कि वे हिजरत* न करें। इस प्रकार इस सूरः की अन्तिम आयतों* में भारमुक्ति (Immunity) अथवा पार्थक्य का उल्लेख किया गया है[1] जो इस सूरः के बाद आने वाली सूरः का केन्द्रीय विषय है जिस में मुश्रिकों* और उन काफ़िरों* के प्रति भारमुक्ति और सम्बन्ध-विच्छेद की घोषणा की गई है जो किताब वालों* में से थे।

---

१ दे० आयत ७२-७५।

* इस का अर्थ आखिर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

وأنتم تسمعون ۝ ولا تكونوا كالذين قالوا سمعنا وهم
لا يسمعون ۝ إن شر الدواب عند الله الصم البكم الذين
لا يعقلون ۝ ولو علم الله فيهم خيرا لأسمعهم ولو أسمعهم
لتولوا وهم معرضون ۝ يا أيها الذين آمنوا استجيبوا لله
وللرسول إذا دعاكم لما يحييكم واعلموا أن الله يحول
بين المرء وقلبه وأنه إليه تحشرون ۝ واتقوا فتنة لا
تصيبن الذين ظلموا منكم خاصة واعلموا أن الله شديد
العقاب ۝ واذكروا إذ أنتم قليل مستضعفون في الأرض
تخافون أن يتخطفكم الناس فآواكم وأيدكم بنصره
ورزقكم من الطيبات لعلكم تشكرون ۝ يا أيها الذين آمنوا
لا تخونوا الله والرسول وتخونوا أماناتكم وأنتم تعلمون ۝
واعلموا أنما أموالكم وأولادكم فتنة وأن الله عنده
أجر عظيم ۝ يا أيها الذين آمنوا إن تتقوا الله يجعل لكم
فرقانا ويكفر عنكم سيئاتكم ويغفر لكم والله ذو الفضل
العظيم ۝ وإذ يمكر بك الذين كفروا ليثبتوك أو يقتلوك
أو يخرجوك ويمكرون ويمكر الله والله خير الماكرين ۝
وإذا تتلى عليهم آياتنا قالوا قد سمعنا لو نشاء لقلنا مثل

यह ईमान* वालों को अपनी ओर से एक अच्छी आज़माइश में (सफलतापूर्वक) गुज़ारे। निस्सन्देह अल्लाह (सब-कुछ) सुनने और जानने वाला है। ○ यह है (मामला), और यह (जान लो) कि अल्लाह काफ़िरों* की चालों को कमज़ोर करने वाला है। ○ (काफ़िरों* से कह दो): यदि तुम फ़ैसला चाहते थे, तो फ़ैसला तुम्हारे सामने आ गया[५]। यदि तुम बाज़ आ जाओ तो यह तुम्हारे ही लिए अच्छा है, और यदि फिर वही चाल चलोगे तो हम भी चलेंगे। और तुम्हारा जत्था चाहे वह कितना ही अधिक हो तुम्हारे कुछ काम न आयेगा, और यह (जान लो) कि अल्लाह तो ईमान* वालों के साथ है। ○

हे ईमान* लाने वालो! अल्लाह और उस के रसूल* के हुक्म पर चलो, और (हुक्म) सुन लेने के बाद उस से मुँह न मोड़ो। ○ और उन लोगों की तरह न हो जाओ जिन्हों ने कहा कि हम ने सुना, हालांकि वे नहीं सुनते। ○ निस्सन्देह अल्लाह के नज़दीक सब से बुरे क़िस्म के जानवर वे बहरे-गूँगे लोग हैं, जो कुछ समझते नहीं। ○ यदि अल्लाह जानता कि उन में कुछ भी भलाई है तो वह अवश्य उन्हें सुनाता,[६] और यदि वह (वर्तमान दशा में) उन्हें सुनवाता तो वे मुँह फेर कर भागते। ○

हे ईमान* लाने वालो! अल्लाह और रसूल* की पुकार का जवाब दो जब कि वह तुम्हें उस चीज़ की ओर बुलाये जो तुम्हें जीवन प्रदान करने वाली है, और जान लो कि अल्लाह आदमी और उस के दिल के बीच आड़े आ जाता है, और यह कि वही है जिस की ओर तुम समेटे जाओगे। ○ और बचो उस फ़ितने (उपद्रव) से जो अपनी लपेट में ख़ास उन्हीं लोगों को नहीं लेगा जिन्हों ने तुम में से ज़ुल्म किया हो, (बल्कि उस की लपेट में सभी आ जायेंगे)। और जान रखो कि अल्लाह कड़ी सज़ा देने वाला है। ○ और याद करो, जब तुम थोड़े थे, ज़मीन में तुम्हें बे-ज़ोर समझा जाता था, तुम डरते रहते थे कि लोग तुम्हें उचक न ले जायें, फिर उस ने (अर्थात् अल्लाह ने) तुम्हें ठिकाना दिया, और अपनी सहायता से तुम्हें शक्ति प्रदान की, और तुम्हें पाक (और अच्छी) चीज़ों की रोज़ी दी, कदाचित् तुम शुक्रगुज़ार (कृतज्ञ) बनो। ○ हे ईमान* लाने वालो! तुम अल्लाह और रसूल* के साथ विश्वास-घात न करो, और न अपनी अमानतों (और ज़िम्मेदारियों) के सिलसिले में कपट से काम लो, जब कि तुम जानते हो। ○ जान लो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद (तुम्हारे लिए) आज़माइश (परीक्षा) हैं, और यह कि अल्लाह के पास (अच्छे कर्मों का) बड़ा बदला है। ○ हे ईमान* लाने वालो! यदि तुम

---

५. मक्का से चलते समय काफ़िरों* ने काबः* के पर्दे को पकड़ कर विनती की थी कि हे अल्लाह! दोनों गरोहों में जो हक़ पर हो उसे विजय प्राप्त हो। अबू जह्ल ने ख़ास तौर पर कहा था कि हे अल्लाह! हम में जो सत्य पर हो उसे विजय प्रदान कर और जो ज़ालिम हो उसे अपमानित और तबाह कर दे।

६. अर्थात् उन्हें सुनने का सौभाग्य प्रदान करता।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

هٰذَآ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَاِذْ قَالُوا اللّٰهُمَّ اِنْ
كَانَ هٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَاۗءِ
اَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ
وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ۝ وَمَا لَهُمْ اَلَّا
يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ وَهُمْ يَصُدُّوْنَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوْٓا
اَوْلِيَاۗءَهٗ اِنْ اَوْلِيَاۗؤُهٗٓ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝
وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ اِلَّا مُكَاۗءً وَّتَصْدِيَةً فَذُوْقُوا
الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنْفِقُوْنَ
اَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَسَيُنْفِقُوْنَهَا ثُمَّ تَكُوْنُ
عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُوْنَ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى جَهَنَّمَ
يُحْشَرُوْنَ ۝ لِيَمِيْزَ اللّٰهُ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيْثَ
بَعْضَهٗ عَلٰى بَعْضٍ فَيَرْكُمَهٗ جَمِيْعًا فَيَجْعَلَهٗ فِيْ جَهَنَّمَ اُولٰۗىِٕكَ
هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝ قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ يَّنْتَهُوْا يُغْفَرْ لَهُمْ
مَّا قَدْ سَلَفَ وَاِنْ يَّعُوْدُوْا فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْاَوَّلِيْنَ ۝
وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ كُلُّهٗ
لِلّٰهِ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ وَاِنْ
تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَوْلٰىكُمْ نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ۝

अल्लाह की अवज्ञा से बचोगे और उस की ना-ख़ुशी से डरते रहोगे, तो वह तुम्हारे लिए कसौटी* मुहैया कर देगा और तुम से तुम्हारी बुराइयों को दूर करेगा, और तुम्हें क्षमा करेगा। और अल्लाह बड़ा फ़ज़्ल वाला है। ○

और (वह समय याद करो) जब काफ़िर* लोग तेरे बारे में चालें चल रहे थे कि तुझे क़ैद कर दें, या तुझे क़त्ल कर डालें या तुझे (देश से) निकाल दें; वे अपनी चालें चल रहे थे और अल्लाह अपनी चाल चल रहा था; और अल्लाह सब से उत्तम चाल चलने वाला है[8]। ○ जब उन्हें हमारी आयतें* पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो वे कहते हैं: हम ने सुन लिया। यदि हम चाहें तो ऐसी बातें हम भी कह लें। यह तो केवल पहले लोगों की कहानियाँ (बे-सनद बातें) हैं। ○ और (याद करो) जब उन्हों ने कहा था: हे अल्लाह! यदि यही (दीन*) तेरे यहाँ से हक़* (सत्य) है, तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा दे या हम पर कोई दुःख देने वाला अज़ाब ले आ! ○ परन्तु यह नहीं होने का कि तुम उन के बीच हो और अल्लाह उन्हें अज़ाब देने लग जाये, और न यह होने का है कि लोग क्षमा की प्रार्थना कर रहे हों और अल्लाह उन्हें अज़ाब दे दे। ○ परन्तु अब वह उन्हें क्यों न अज़ाब दे, जब कि वे मस्जिदे हराम* (काबः) का रास्ता रोकते हैं, हालाँकि वे उस (मस्जिद) के कोई अधिकारी (और संरक्षक) नहीं हैं। उस के अधिकारी तो केवल अल्लाह की अवज्ञा से बचने और उस की ना-ख़ुशी से डरने वाले लोग हैं। परन्तु उन में से अधिकतर लोग (इस बात को) नहीं जानते। ○ उन की नमाज़* काबः* के पास सीटियाँ बजाने और तालियाँ पीटने के अतिरिक्त और कुछ नहीं होती। तो (उन से कहा गया): अब अज़ाब का मज़ा चखो उस कुफ़्र* के बदले में जो तुम करते रहे हो। ○ निश्चय ही जिन लोगों ने कुफ़्र* किया है वे अपने माल अल्लाह के मार्ग से (लोगों को) रोकने के लिए ख़र्च कर रहे हैं। तो (अभी) वे और ख़र्च करते रहेंगे, फिर यही चीज़ उन के लिए पछतावा (सन्ताप) बनेगी, और फिर वे पराजित हो कर रहेंगे। और जिन लोगों ने कुफ़्र* किया है वे दोज़ख़* की ओर घेर लाये जायेंगे। ○ ताकि अल्लाह नापाक को पाक से छाँट कर अलग करे और नापाक को एक-दूसरे पर रख कर एक ढेर बनाये, फिर उसे दोज़ख़* में झोंक दे। यही लोग हैं जो घाटा उठाने वाले हैं। ○

(हे नबी*!) जिन लोगों ने कुफ़्र किया है उन से कह दो कि यदि वे बाज़ आ जायें तो

---

७ देखें सूरः बक़रः फ़ुट नोट १४।

८ अर्थात् उस की छिपी तदबीरें सब से बढ़ कर होती हैं।

९ [illegible]

* इन का अर्थ क़ुरआन के अन्त में दी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

وَاعْلَمُوا أَنَّمَا غَنِمْتُم مِّن شَيْءٍ فَأَنَّ لِلَّهِ خُمُسَهُ وَلِلرَّسُولِ
وَلِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ إِن كُنتُمْ
آمَنتُم بِاللَّهِ وَمَا أَنزَلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا يَوْمَ الْفُرْقَانِ يَوْمَ الْتَقَى
الْجَمْعَانِ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ إِذْ أَنتُم بِالْعُدْوَةِ الدُّنْيَا
وَهُم بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوَىٰ وَالرَّكْبُ أَسْفَلَ مِنكُمْ وَلَوْ تَوَاعَدتُّمْ
لَاخْتَلَفْتُمْ فِي الْمِيعَادِ وَلَٰكِن لِّيَقْضِيَ اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا
لِّيَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَن بَيِّنَةٍ وَيَحْيَىٰ مَنْ حَيَّ عَن بَيِّنَةٍ وَإِنَّ
اللَّهَ لَسَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ إِذْ يُرِيكَهُمُ اللَّهُ فِي مَنَامِكَ قَلِيلًا وَلَوْ
أَرَاكَهُمْ كَثِيرًا لَّفَشِلْتُمْ وَلَتَنَازَعْتُمْ فِي الْأَمْرِ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ
سَلَّمَ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ وَإِذْ يُرِيكُمُوهُمْ إِذِ الْتَقَيْتُمْ
فِي أَعْيُنِكُمْ قَلِيلًا وَيُقَلِّلُكُمْ فِي أَعْيُنِهِمْ لِيَقْضِيَ اللَّهُ أَمْرًا
كَانَ مَفْعُولًا وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا
إِذَا لَقِيتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوا وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝
وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَنَازَعُوا فَتَفْشَلُوا وَتَذْهَبَ رِيحُكُمْ
وَاصْبِرُوا إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ۝ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ
خَرَجُوا مِن دِيَارِهِم بَطَرًا وَرِئَاءَ النَّاسِ وَيَصُدُّونَ عَن
سَبِيلِ اللَّهِ وَاللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ۝ وَإِذْ زَيَّنَ لَهُمُ

जो-कुछ पहले हो चुका है उस के लिए उन्हें
कर दिया जायेगा; परन्तु यदि वे फिर वही कर्म
लगें तो पिछले लोगों की रीतियाँ बीत चुकी
(जो चेतावनी के लिए काफ़ी हैं)। ○

और (जिन लोगों ने कुफ़्र* किया है) तुम
से लड़ो यहाँ तक कि फ़ितनः (उपद्रव) बाक़ी न
और दीन* पूरा-का-पूरा अल्लाह के लिए हो ज
फिर यदि वे बाज़ आ जायें'' तो जो-कुछ वे
हैं अल्लाह उस का देखने वाला है। ○ और
वे मुँह मोड़ें, तो जान लो कि अल्लाह तुम्हारा
और संरक्षक-मित्र है, क्या ही अच्छा संरक्षक है
कैसा अच्छा सहायक ! ○

†और जान लो कि जो चीज़ ग़नीमत* के
में तुम ने हासिल की है, उस का पाँचवाँ
अल्लाह का, और रसूल* का, और (रसूल*
नातेदारों का, और अनाथों (यतीमों) और मुहता
और मुसाफ़िर का है, यदि तुम ईमान* लाये
अल्लाह पर और उस चीज़ पर जो फ़ैसले के दिन''— जिस दिन दोनों सेनाओं में मुठ-
हुई थी — हम ने अपने बन्दे पर उतारी थी। अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला (स
शक्तिमान) है। ○

(याद करो) जब तुम (घाटी के) इस ओर थे और वे दूसरी ओर थे, और क़ाफ़िला तु
से नीचे (तट) की ओर था। यदि कहीं (पहले से) तुम ने आपस में (मुक़ाबिले का) कोई वा
ठहराया होता तो तुम में अवश्य इस वादे के बारे में मत-भेद हो जाता (जो-कुछ हुआ वह इ
लिए हुआ) ताकि जिस बात का होना निश्चय हो चुका था अल्लाह उसे पूरा कर दे; ताकि जि
हलाक होना है खुली दलील के साथ (जान-बूझ कर) हलाक हो और जिसे जीना है वह खु
दलील के साथ जीवित रहे। निस्सन्देह अल्लाह सुनने और जानने वाला है। ○

(याद करो) जब (हे नबी* !) अल्लाह तुझे स्वप्न में उन्हें थोड़ा दिखा रहा था, औ
यदि कहीं वह उन्हें ज़्यादा दिखा देता, तो अवश्य (हे ईमान* वालो !) तुम साहस छोड़ बैठ
और इस (लड़ाई के) मामले में परस्पर झगड़ने लग जाते। परन्तु अल्लाह ने (तुम्हें) इस से बच
लिया। निश्चय ही वह सीनों (दिलों) तक का हाल जानता है। ○

(याद करो) जब तुम एक-दूसरे के मुक़ाबिल हुये, तो अल्लाह उन्हें तुम्हारी निगाहों में
थोड़ा दिखा रहा था, और उन की निगाहों में तुम्हें कम करके दिखा रहा था, ताकि जो बा
होनी थी अल्लाह उसे पूरा कर दे। सारे मामले अल्लाह ही की ओर पलटते हैं। ○

१० दे० सूरः आले इमरान फुट नोट ३१ ।
११ दे० सूरः अल-बक़रः फुट नोट १८८ और १८९ ।
† यहीं से दसवाँ पारः (Part X) शुरू होता है
१२ अर्थात् 'बद्र' की लड़ाई के दिन, जिस दिन कि अल्लाह ने युद्ध क्षेत्र में हक़ और बातिल का फ़ैसला
कर दिया था।
* [illegible]

الشيطن اعمالهم وقال لا غالب لكم اليوم من الناس و
اني جار لكم فلما تراءت الفئتن نكص على عقبيه وقال
اني بريء منكم اني ارى ما لا ترون اني اخاف الله والله
شديد العقاب ۝ اذ يقول المنفقون والذين في قلوبهم
مرض غر هؤلاء دينهم ومن يتوكل على الله فان الله
عزيز حكيم ۝ ولو ترى اذ يتوفى الذين كفروا الملئكة
يضربون وجوههم وادبارهم وذوقوا عذاب الحريق ۝ ذلك
بما قدمت ايديكم وان الله ليس بظلام للعبيد ۝ كداب
ال فرعون والذين من قبلهم كفروا بايت الله فاخذهم
الله بذنوبهم ان الله قوي شديد العقاب ۝ ذلك بان
الله لم يك مغيرا نعمة انعمها على قوم حتى يغيروا ما
بانفسهم وان الله سميع عليم ۝ كداب ال فرعون و
الذين من قبلهم كذبوا بايت ربهم فاهلكنهم بذنوبهم
واغرقنا ال فرعون وكل كانوا ظلمين ۝ ان شر الدواب
عند الله الذين كفروا فهم لا يؤمنون ۝ الذين عهدت
منهم ثم ينقضون عهدهم في كل مرة وهم لا يتقون ۝
فاما تثقفنهم في الحرب فشرد بهم من خلفهم لعلهم

हे ईमान* लाने वालो ! जब किसी गरोह से तुम्हारी मुठ-भेड़ हो, तो (लड़ाई में) जमे रहो और अल्लाह को अधिक याद करो, कदाचित् तुम्हें सफलता प्राप्त हो। ○ ४५ और अल्लाह और उस के रसूल* के हुक्म पर चलो, और आपस में न झगड़ो नहीं तो तुम में कमज़ोरी आ जायेगी और तुम्हारी हवा उखड़ जायेगी; और सब्र* से काम लो ! निश्चय ही अल्लाह सब्र* करने वालों के साथ है। ○ और उन लोगों की तरह न हो जाओ जो अपने घरों से इतराते और लोगों को दिखाते हुए निकले, और जो (लोगों को) अल्लाह की राह से रोकते हैं, जो-कुछ वे कर रहे हैं अल्लाह उस को घेरे हुये है। ○

और (याद करो) जब शैतान* ने उन के करतूतों को उन के लिए शोभायमान बना दिया था और कहा था कि आज लोगों में से कोई भी तुम पर प्रभुत्व प्राप्त नहीं कर सकता, और यह कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। परन्तु जब दोनों गरोहों का आमना-सामना हुआ, तो वह उलटे पाँव फिर गया, और कहने लगा : मेरा तुम से कोई नाता नहीं। मैं वह-कुछ देख रहा हूँ जो तुम लोग नहीं देखते। मैं तो अल्लाह से डरता हूँ। और अल्लाह कड़ी सज़ा देने वाला है। ○ याद करो जब मुनाफ़िक़* और वे लोग जिन के दिलों में रोग था कह रहे थे : इन लोगों को तो इन के दीन* ने भुलावे में डाल रखा है। हालांकि जो कोई अल्लाह पर भरोसा करता है तो (वह पायेगा कि) निश्चय ही अल्लाह अपार शक्ति का मालिक और हिकमत* वाला है। ○ यदि तुम देखते (कि उन का क्या हाल होता है) जब फ़िरिश्ते* काफ़िरों* (की जानों) को ग्रस्त लेते हैं ! वे उन के चेहरों और उन की पीठों पर मारते ५० जाते हैं कि लो अब जलने के अज़ाब का मज़ा चखो। ○ यह उसी का बदला है जो तुम ने अपने हाथों पहले से भेजा है, और यह कि अल्लाह अपने बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं है। ○ (यह सब-कुछ इन के साथ उसी तरह पेश आया) जैसे फ़िरऔन के लोगों और उन से पहले के लोगों का हाल हुआ; उन्हों ने अपने रब* की आयतों* का इन्कार किया, तो अल्लाह ने उन्हें उन के गुनाहों के कारण पकड़ लिया। निस्सन्देह अल्लाह शक्तिशाली और कड़ी सज़ा देने वाला है। ○ यह इस लिए कि अल्लाह उस नेमत को जो उस ने किसी जाति को प्रदान की हो बदलने वाला नहीं है जब तक कि लोग स्वयं अपनी हालत न बदलें, और इस लिए भी कि अल्लाह (सब-कुछ) सुनने वाला और जानने वाला है। ○ जैसे फ़िरऔन के लोगों और उन से पहले के लोगों का हाल हुआ कि उन्हों ने अपने रब* की आयतों* को झुठलाया, तो हम ने उन्हें उन के गुनाहों के कारण हलाक (विनष्ट) कर दिया और फ़िरऔन के लोगों को डुबो दिया। वे सभी ज़ालिम थे। ○

निश्चय ही (भूमि पर) चलने वाले सब से बुरे जीव अल्लाह की दृष्टि में वे लोग हैं जिन्हों ५५ ने कुफ़्र* किया फिर वे ईमान* नहीं लाते; ○ वे लोग कि जिन से तू ने सन्धि की, फिर वे

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

يَذَّكَّرُونَ ۝ وَإِمَّا تَخَافَنَّ مِن قَوْمٍ خِيَانَةً فَانبِذْ إِلَيْهِمْ عَلَىٰ
سَوَاءٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْخَائِنِينَ ۝ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ
كَفَرُوا سَبَقُوا ۚ إِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُونَ ۝ وَأَعِدُّوا لَهُم مَّا اسْتَطَعْتُم
مِّن قُوَّةٍ وَمِن رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُونَ بِهِ عَدُوَّ اللَّهِ وَعَدُوَّكُمْ وَ
آخَرِينَ مِن دُونِهِمْ لَا تَعْلَمُونَهُمُ اللَّهُ يَعْلَمُهُمْ ۚ وَمَا تُنفِقُوا
مِن شَيْءٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يُوَفَّ إِلَيْكُمْ وَأَنتُمْ لَا تُظْلَمُونَ ۝ وَ
إِن جَنَحُوا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ
الْعَلِيمُ ۝ وَإِن يُرِيدُوا أَن يَخْدَعُوكَ فَإِنَّ حَسْبَكَ اللَّهُ ۚ هُوَ
الَّذِي أَيَّدَكَ بِنَصْرِهِ وَبِالْمُؤْمِنِينَ ۝ وَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ ۚ
لَوْ أَنفَقْتَ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مَّا أَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ وَلَٰكِنَّ
اللَّهَ أَلَّفَ بَيْنَهُمْ ۚ إِنَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللَّهُ
وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِينَ
عَلَى الْقِتَالِ ۚ إِن يَكُن مِّنكُمْ عِشْرُونَ صَابِرُونَ يَغْلِبُوا مِائَتَيْنِ ۚ
وَإِن يَكُن مِّنكُم مِّائَةٌ يَغْلِبُوا أَلْفًا مِّنَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ
لَّا يَفْقَهُونَ ۝ الْآنَ خَفَّفَ اللَّهُ عَنكُمْ وَعَلِمَ أَنَّ فِيكُمْ ضَعْفًا ۚ
فَإِن يَكُن مِّنكُم مِّائَةٌ صَابِرَةٌ يَغْلِبُوا مِائَتَيْنِ ۚ وَإِن يَكُن
مِّنكُمْ أَلْفٌ يَغْلِبُوا أَلْفَيْنِ بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ

हर बार अपने वचन भंग कर देते हैं, और अल्लाह से डरते नहीं[13]। ○ तो यदि ये लोग तुम्हें लड़ाई में मिल जायें तो (इन की ख़बर ले कर) इन के द्वारा उन लोगों को भगा दो जो इन के पीछे हैं,[14] कदाचित् वे चेतें। ○ और यदि तुम्हें किसी गरोह से विश्वासघात का भय हो, तो उन के वचन को बराबरी का ध्यान रखते हुये उन के आगे फेंक दो[15]। निस्सन्देह अल्लाह विश्वासघात करने वालों को पसन्द नहीं करता। ○ जिन लोगों ने कुफ़्र* किया वे यह न समझें कि वे बाज़ी ले गये। वे कभी हरा नहीं सकते। ○ जहाँ तक हो सके तुम लोग (सैना-) शक्ति और तैयार बँधे हुये घोड़े उन के (मुक़ाबिले के) लिए तैयार रखो, ताकि इस के द्वारा अल्लाह के दुश्मनों और अपने दुश्मनों और इन के सिवा औरों को भयभीत कर दो जिन्हें तुम नहीं जानते। अल्लाह उन्हें जानता है। अल्लाह की राह में जो चीज़ भी तुम ख़र्च करोगे उस का पूरा-पूरा बदला तुम्हें दिया जायेगा, और तुम्हारे साथ कोई अन्याय नहीं किया जायेगा। ○ ६०

और (हे नबी*!) यदि वे लोग सन्धि और सलामती की ओर झुकें, तो तुम भी इस के लिए झुक जाओ, और अल्लाह पर भरोसा रखो। निस्सन्देह वह (सब-कुछ) सुनने वाला और जानने वाला है। ○ और यदि वे यह चाहें कि तुम्हें धोखा दें, तो अल्लाह तुम्हारे लिए काफ़ी है। वही तो है जिस ने तुम्हें अपनी सहायता से और ईमान* वालों के द्वारा शक्ति प्रदान की, ○ और उन (ईमान* वालों) के दिल एक-दूसरे के साथ जोड़ दिये। यदि तुम ज़मीन में जो-कुछ है सब ख़र्च कर डालते तो भी उन के दिलों को एक-दूसरे के साथ जोड़ न सकते, परन्तु अल्लाह ने उन्हें परस्पर जोड़ दिया। निश्चय ही अल्लाह अपार शक्ति का मालिक और हिकमत* वाला है। ○ हे नबी*! तुम्हारे लिए और जिस किसी ईमान* वाले ने तुम्हारा अनुसरण किया उस के लिए तो बस अल्लाह काफ़ी है। ○

हे नबी*! ईमान* वालों को लड़ाई पर उभारो। यदि तुम में बीस (लड़ाई में) जमे रहने वाले (धैर्यवान) होंगे तो वे दो सौ पर प्रभुत्व प्राप्त करेंगे, और यदि तुम में सौ हों तो वे एक

---

१३ यहाँ संकेत विशेष रूप से यहूदियों* की ओर है। मदीना पहुँचने के साथ ही नबी सल्ल० ने यहूदियों से समझौता किया था। परन्तु यहूदी हमेशा यही कोशिश करते रहे कि जिस तरह भी सम्भव हो मुसलमानों का उन्मूलन कर दिया जाये।

१४ मतलब यह है कि इन्हें ऐसा मज़ा चखाओ कि इन के पिछले लोग इन की दशा देख कर इधर-उधर भाग खड़े हों।

१५ बराबरी का ध्यान रखने का अर्थ यह है कि उन्हें पहले से बता दिया जाये कि हमारे-तुम्हारे बीच जो सन्धि हुई थी अब वह सन्धि बाक़ी नहीं रही, ताकि दोनों गिरोह समान रूप से लड़ाई की तैयारी कर सकें। बिना सूचना दिये उन के विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं की जा सकती। क़ुरआन ने हर मामले में यहाँ तक कि युद्ध और लड़ाई में भी सच्चाई और न्याय-प्रियता का जो आदर्श प्रस्तुत किया है वह कितना उच्च और महान् है।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَكُونَ لَهُ أَسْرَىٰ حَتَّىٰ يُثْخِنَ فِي الْأَرْضِ
تُرِيدُونَ عَرَضَ الدُّنْيَا وَاللَّهُ يُرِيدُ الْآخِرَةَ وَاللَّهُ عَزِيزٌ
حَكِيمٌ ۝ لَوْلَا كِتَابٌ مِنَ اللَّهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيمَا أَخَذْتُمْ
عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ فَكُلُوا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلَالًا طَيِّبًا وَاتَّقُوا
اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِمَنْ فِي
أَيْدِيكُمْ مِنَ الْأَسْرَىٰ إِنْ يَعْلَمِ اللَّهُ فِي قُلُوبِكُمْ خَيْرًا يُؤْتِكُمْ
خَيْرًا مِمَّا أُخِذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ وَ
إِنْ يُرِيدُوا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللَّهَ مِنْ قَبْلُ فَأَمْكَنَ مِنْهُمْ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا
بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوْا وَنَصَرُوا
أُولَٰئِكَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يُهَاجِرُوا
مَا لَكُمْ مِنْ وَلَايَتِهِمْ مِنْ شَيْءٍ حَتَّىٰ يُهَاجِرُوا وَإِنِ اسْتَنْصَرُوكُمْ
فِي الدِّينِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ إِلَّا عَلَىٰ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ
مِيثَاقٌ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بَعْضُهُمْ
أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ إِلَّا تَفْعَلُوهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي الْأَرْضِ وَفَسَادٌ
كَبِيرٌ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ
وَالَّذِينَ آوَوْا وَنَصَرُوا أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا لَهُمْ مَغْفِرَةٌ

हज़ार काफ़िरों* पर भारी रहेंगे, क्यों कि वे ऐसे
५ लोग हैं जो समझ-बूझ नहीं रखते। ○ अब अल्लाह
ने तुम्हारा बोझ हल्का कर दिया, और उस ने जाना
कि (अभी) तुम में कमज़ोरी है। तो यदि तुम में सौ
जमे रहने वाले (धैर्यवान्) होंगे तो वे दो सौ पर प्रभुत्व
प्राप्त कर लेंगे, और यदि तुम में हज़ार होंगे तो दो
हज़ार पर अल्लाह के हुक्म से भारी रहेंगे[१६]। और
अल्लाह उन लोगों के साथ है जो जमे रहते हैं। ○

किसी नबी* के लिए यह सम्भव नहीं कि उस
के पास क़ैदी हों जब तक कि वह ज़मीन में (विरोधी
दल को) कुचल कर न रख दे। तुम लोग दुनियाँ
की सुख-सामग्री चाहते हो और अल्लाह (तुम्हारे
लिए) आख़िरत* चाहता है, और अल्लाह अपार
शक्ति का मालिक और हिकमत* वाला है। ○
यदि (इस के बारे में) अल्लाह पहले से (अपना
फ़ैसला) न लिख चुका होता, तो जो-कुछ तुम ने
लिया है उस पर तुम्हें कोई बड़ा अज़ाब पहुँचता। ○
तो जो-कुछ ग़नीमत* तुम ने हासिल की है उसे हलाल* और पाक समझ कर खाओ, और
अल्लाह की अवज्ञा से बचो और उस की ना-ख़ुशी से डरते रहो। निस्सन्देह अल्लाह बड़ा
क्षमाशील और दया करने वाला है। ○

हे नबी*! जो क़ैदी तुम्हारे क़ब्ज़े में हैं उन से कह दो कि यदि अल्लाह ने जाना कि
तुम्हारे दिलों में कुछ भलाई है तो वह तुम्हें उस से बढ़-चढ़ कर देगा जो तुम से लिया गया है,
७० और तुम्हें क्षमा कर देगा। अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है। ○ और यदि
वे तेरे साथ विश्वास-घात करना चाहते हैं, तो इस से पहले वे अल्लाह के साथ विश्वास-घात

१६ यह आदेश सन् २ हि० का है जब कि इस्लाम* में बहुत से लोग अभी नये-नये दाख़िल हुये थे। अभी पूर्ण रूप से इस्लामी शिक्षा-दीक्षा का अवसर उन्हें प्राप्त नहीं हुआ था; इस लिए उन्हें छूट दी गई और कहा गया कि कम-से-कम अपने से दो गुनी ताक़त से टकरा जाने में तुम्हें कोई संकोच न होना चाहिए। ईमान वालों* और काफ़िरों* के बीच वास्तविक अनुपात एक और दस का होना है। बीस ईमान वाले* सौ काफ़िरों* पर भारी होते हैं। आगे चल कर जब कि मुसलमानों को अपने नबी (सल्ल०) की शिक्षा-दीक्षा से पूरा फ़ायदा उठाने का अवसर प्राप्त हुआ, तो उन के और काफ़िरों* के बीच यही एक और दस का अनुपात स्थापित हो गया।

१७ यहाँ वास्तव में विरोधियों के आक्षेपों का उत्तर दिया गया है। यहूदी, मुश्रिक*, और मुनाफ़िक़* लोग 'बद्र' की लड़ाई के पश्चात् नबी सल्ल० पर चोटें करने लगे थे कि यह कैसा नबी* है कि अपनी जाति और बिरादरी के लोगों तक से लड़ता और उन्हें क़त्ल करता है। फिर उन्हें बन्दी बनाता और उन से फ़िदयः* लेता है। और ग़नीमत के माल को हलाल ठहराता है। जवाब में कहा गया कि नबी का यही कर्तव्य है कि वह धर्म-विरोधियों को भली-भाँति कुचल दे। वह और उस के साथी यदि युद्ध-क्षेत्र में उतरे हैं तो केवल सत्य के लिए उतरे हैं। उन की लड़ाई दुनियाँ के लिए कदापि नहीं है। वे जो कुछ करते हैं 'आख़िरत'* के लिए करते हैं। फिर मुश्रिकों* से कहा गया कि यदि अल्लाह का फ़ैसला यह न होता कि लड़ाई के द्वारा मुश्रिकों* को उन के करतूत का मज़ा चखाया जाये, तो तुम ने जो नीति अपनाई है उस पर उस तरह का बड़ा अज़ाब आ जाता जो पिछली जातियों पर आता रहा है। फिर तो तुम्हारा बिलकुल ही उन्मूलन हो जाता।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا مِن بَعْدُ وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا مَعَكُمْ فَأُولَٰئِكَ مِنكُمْ ۚ وَأُولُو الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝

कर चुके हैं, तो उस ने (तुम्हें) उन पर अधिकार दे दिया। अल्लाह (सब-कुछ) जानने वाला और हिकमत* वाला है। ○

निश्चय ही जो लोग ईमान* लाये और हिजरत* की और अल्लाह की राह में अपनी जान और अपने माल से जिहाद* किया, और जिन लोगों ने (हिजरत* करने वालों को) जगह दी और (उन की) सहायता की; वे एक-दूसरे के संरक्षक-मित्र हैं। और जो लोग ईमान* ले आये परन्तु हिजरत* नहीं की, तो उन से तुम्हारा संरक्षण (और मैत्री आदि) का कोई सम्बन्ध नहीं है जब तक कि वे हिजरत* न करें; परन्तु यदि वे दीन* के मामले में तुम से मदद चाहें तो (उन की) मदद करनी तुम्हारे लिए आवश्यक है परन्तु किसी ऐसे गिरोह के मुक़ाबिले में नहीं जिस से तुम्हारी सन्धि हो। तुम जो-कुछ करते हो अल्लाह उसे देखता है ○। जिन लोगों ने कुफ़्र* किया वे एक-दूसरे के संरक्षक-मित्र हैं — यदि तुम ऐसा नहीं करते, तो ज़मीन में फ़ितनः (उपद्रव) और बड़ा फ़साद (बिगाड़) फैलेगा। ○

जो लोग ईमान* लाये और हिजरत* की और अल्लाह की राह में जिहाद* किया, और जिन लोगों ने (उन्हें) जगह दी और (उन की) सहायता की—ऐसे ही लोग सच्चे ईमान* वाले हैं। उन के लिए क्षमा, और सम्मानित आजीविका है। ○ और जो लोग बाद में ईमान* लाये और हिजरत* की और तुम्हारे साथ हो कर जिहाद* किया, तो वे भी तुम में शामिल हैं; और नातेदार अल्लाह की किताब* में एक-दूसरे के ज़्यादा हक़दार हैं[१६]। निश्चय ही अल्लाह हर चीज़ को जानता है।○ ७

---

१६. हिजरत* के बाद नबी सल्ल० ने मुहाजिरों* और अन्सार* के बीच भाई-चारा क़ायम किया था जिस के कारण कुछ लोग यह समझने लगे थे कि वे दोनों भाई एक-दूसरे के वारिस भी होंगे। इस आयत* में यह बात बताई गई कि जो नातेदार हैं और जिन से ख़ानदानी ख़ून का रिश्ता है, उन का हक़ सब से ज़्यादा है, उन का हक़ मारा नहीं जा सकता।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

९—अत-तौबः

(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः* का नाम 'अत-तौबः' (Repentance) सूरः की आयत* १०४ से लिया गया है। 'तबूक' की घटना के अवसर पर कुछ मुसलमानों से चूक हो गई थी;' फिर अल्लाह ने उन की तौबः* क़बूल कर ली और उन्हें क्षमा कर दिया। इस सूरः में अल्लाह ने उन की तौबः* के क़बूल करने का एलान किया है।

इस सूरः का एक दूसरा नाम 'अल—बरअत' (The Immunity) है। यह नाम सूरः के आरम्भिक बयान (The Opening Statement) से लिया गया है। नाम रखने का यह भी एक नियम है कि इस के लिए आरम्भिक शब्दों को प्रयोग में लाया जाये। क़ुरआन की और बहुत सी सूरतों* के नाम इस नियम के अनुसार रखे गये हैं। इस नियम के अनुसार यहूदियों के यहाँ भी सहीफ़ों* के नाम रखे गये हैं।

'बरअत' अथवा भारमुक्ति इस सूरः का केन्द्रीय विषय भी है फिर इस से बढ़कर उपयुक्त नाम और क्या हो सकता है। सूरः के आरम्भ में जिस बात की घोषणा की गई है इस्लाम* के इतिहास में उस का बड़ा महत्व है। इस घोषणा के द्वारा इस्लामी राज्य की आन्तरिक नीति को खोल कर लोगों के सामने रख दिया गया। इस सिलसिले में यह आदेश दिया गया कि मुश्रिकों* से कोई नाता और सम्बन्ध न रखा जाये; उन के प्रति अब मुसलमानों पर कोई भी जिम्मेदारी नहीं है। हाँ, जिन लोगों ने अपनी उस सन्धि और समझौते का पालन किया है जो उन्हों ने अल्लाह के रसूल* से किया था, उन के साथ समझौते के नियत समय तक वही मामला किया जाना चाहिए जो उन के साथ तै पाया हो।

उतरने का समय (The date of Revelation)

इस सूरः में तीन तक़रीरें शामिल हैं। पहली तक़रीर जो सूरः के आरम्भ से आयत ३७ तक चली जाती है, उस के उतरने का समय 'ज़िलक़ादः' सन् ९ हिज० या इस के लग-भग है। नबी सल्ल० इस साल हज़रत अबू बक्र रज़ि० को हज* के लिए जाने वालों का अमीर (नायक) बना कर मक्का भेज चुके थे। जब यह तक़रीर उतरी तो आप (सल्ल०) ने हज़रत अली रज़ि० को भेजा ताकि हज के अवसर पर वे इसे लोगों को सुना दें।

दूसरी तक़रीर आयत ३८ से ले कर आयत ७२ तक चली गई है। यह तक़रीर 'रजब' सन् ९ हिज० या इस से कुछ पहले उतरी है। यह वह समय है जब नबी सल्ल० 'तबूक' की लड़ाई की तैयारी में लगे हुये थे। इस तक़रीर में ईमान* वालों को लड़ाई पर उभारा गया है और उन लोगों की निन्दा की गई है, जो ईमान* की कमज़ोरी के कारण अपने धन और प्राणों के साथ अल्लाह की राह में निकलने से जी चुरा रहे थे।

---

† 'तबूक' की घटना का विस्तार-पूर्वक वर्णन आगे आ रहा है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

तीसरी तक़रीर आयत ७३ से ले कर सूरः के अन्त तक मानी गई है। यह तक़रीर 'तबूक' से लौटने पर उतरी है; इस में कुछ ऐसी आयतें भी शामिल हैं जो उन ही दिनों में विभिन्न अवसरों पर उतरी हैं, परन्तु विषय की अनुकूलता के कारण से भी अल्लाह की आज्ञा से इस में मिला दी गई हैं। इस तक़रीर में मुनाफ़िक़ों को उन की कपट नीति पर चेतावनी दी गई है। और जो लोग 'तबूक' की मुहिम के अवसर पर पीछे रह गये थे उन्हें मलामत की गई है; और उन लोगों को जो ईमान में सच्चे थे परन्तु इस मुहिम में पीछे रहे उन पर मलामत के साथ इस का भी एलान कर दिया गया कि अल्लाह ने उन की तौबः* क़बूल कर ली और उन्हें क्षमा कर दिया।

किन परिस्थितियों में उतरी:—

हुदैबियः के स्थान पर नबी सल्ल० ने 'क़ुरैश'* से जो सन्धि की थी, इस्लाम* के प्रचार पर उस का अच्छा प्रभाव पड़ा। लोगों को मुसलमानों से स्वतन्त्रता पूर्वक मिलने-जुलने का अवसर मिला। कितनों का वह सन्देह जो उन्हें इस्लाम* और मुसलमानों के बारे में था, मिलने-जुलने से ही दूर हो गया। इस समझौते के बाद केवल डेढ़-दो वर्ष में ही इतने लोगों ने इस्लाम*-धर्म को स्वीकार किया कि इस से पहले कभी इतने लोग इस्लाम नहीं लाये थे। इसी बीच 'क़ुरैश' के कुछ प्रसिद्ध सरदार भी मुसलमान हो गये हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० और हज़रत अमर इब्नुल्आस रज़ि० इसी ज़माने में मुसलमान हुये थे। 'क़ुरैश' ने जब यह हाल देखा तो वे इस का सहन न कर सके। उन्हों ने 'हुदैबियः' की सन्धि को तोड़ डाला और अपने दिये हुये वचन से फिर गये। इस के बाद नबी सल्ल० ने अचानक दस हज़ार की सेना ले कर मक्का पर आक्रमण कर दिया और 'रमज़ान' सन् ८ हिज० में मक्का पर विजय प्राप्त कर ली। मक्का की विजय के बाद बहुत से क़बीले आ-आ कर इस्लाम* क़बूल करने लगे।

'हुनैन' की लड़ाई

इस्लाम* की उन्नति का हाल देख कर, मक्का की विजय के बाद ही 'हवाज़िन' 'सक़ीफ़' 'बनी नज़्र' और कुछ दूसरे क़बीलों ने मिल कर मुसलमानों पर धावा बोल दिया। नबी सल्ल० मक्का से मुक़ाबिले के लिए निकले। 'हुनैन' की घाटी में मुक़ाबिला हुआ। इस लड़ाई में मुसलमानों की संख्या शत्रुओं से तीन गुनी थी। इस लड़ाई में १२ हज़ार मुसलमान शामिल थे। उन्हें पूरा विश्वास था कि दुश्मन उन का कुछ भी मुक़ाबिला नहीं कर सकते। बल्कि कुछ लोगों ने तो यहाँ तक कह दिया, "आज हम पर कौन विजय प्राप्त कर सकता है!" अल्लाह को यह चीज़ पसन्द नहीं आई। इस लिए कि मुसलमान का भरोसा तो अपनी ताक़त पर नहीं होता, वह तो हमेशा अपने ख़ुदा पर भरोसा रखता है। नतीजा यह निकला कि उन की अपनी ताक़त कुछ काम न आई। इस्लामी सेना जब सामने आई तो दुश्मनों ने क़रीब की पहाड़ियों से तीर बरसाने शुरू कर दिये। अचानक तीरों की वर्षा से मुसलमानों के क़दम उखड़ गये। इस विकट अवसर पर भी नबी सल्ल० और अपनी

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची से देखें।

जान से खेल जाने वाले थोड़े से आप (सल्ल०) के साथी मैदान में जमे रहे और डट कर काफ़िरों* का मुक़ाबिला करते रहे। ४ हज़ार की सेना आप (सल्ल०) पर टूटी पड़ रही थी। परन्तु अल्लाह जो सब से बड़ा सहायक है वह आप (सल्ल०) के साथ था। अल्लाह ने आप (सल्ल०) पर और आप (सल्ल०) के उन गिने-चुने साथियों पर जिन्हों ने इस अवसर पर भी आप (सल्ल०) का साथ नहीं छोड़ा था, शान्ति और धैर्य की दिव्य वर्षा की। आप (सल्ल०) की सवारी का रुख दुश्मनों ही की तरफ़ था। उसी ओर और आगे बढ़ने के लिए आप (सल्ल०) अपनी सवारी को बढ़ाये जा रहे थे। आप (सल्ल०) के शुभ मुख से ये शब्द निकल रहे थे, "निस्सन्देह मैं सच्चा नबी* हूं; और अब्दुल मुत्तलिब की औलाद हूं"। इसी हाल में आप (सल्ल०) ने सहाबः* (अपने साथियों) को पुकारा, "अल्लाह के बन्दो! इधर आओ। यहां आओ कि मैं अल्लाह का रसूल* हूं।" फिर आप (सल्ल०) के हुक्म से हज़रत अब्बास रज़ि० ने उन लोगों को आवाज़ दी जिन्हों ने पेड़ के नीचे नबी सल्ल० के हाथ पर लड़ने की 'बैअ़त' (प्रतिज्ञा) की थी¹। आवाज़ के कानों में पड़ते ही लोग फिर मैदान की ओर बढ़े। नबी सल्ल० और आप (सल्ल०) के साथ वालों के धैर्य और उन की वीरता और साहस को देख कर मुसलमानों के क़दम जमने लगे; थोड़ी ही देर में लड़ाई का पांसा पलट गया और मुसलमानों ने मैदान जीत लिया।

इस लड़ाई में मुसलमानों को जिस संकट का सामना करना पड़ा वह वास्तव में अल्लाह की ओर से एक चेतावनी थी कि मुसलमानों को अपनी शक्ति और बल पर नहीं, भरोसा अल्लाह पर रखना चाहिए।

'तबूक' की मुहिम

'हुदैबियः' की सन्धि के बाद नबी सल्ल० ने जहां बहुत से सम्राटों के नाम पत्र भेजे थे और उन्हें इस्लाम* की ओर बुलाया था वहीं आप (सल्ल०) ने अपने बहुत से प्रतिनिधि-मंडल अरब के विभिन्न भागों में इस्लाम के प्रचार के लिए भेजे। आप (सल्ल०) का भेजा हुआ एक प्रतिनिधि-मंडल उत्तर की ओर उन क़बीलों के पास भी गया जो शाम (Syria) की सीमा के निकट आबाद थे। इन के अधिकतर लोग ईसाई थे; और रोम-राज्य के अधीन थे। इन लोगों ने प्रतिनिधि-मंडल के १५ व्यक्तियों को क़त्ल कर दिया। केवल मंडल के अध्यक्ष हज़रत कअ़ब बिन उमैर ग़िफ़ारी रज़ि० ही बच कर वापस आ सके। नबी सल्ल० ने बुसरा के हाकिम शुरहबील बिन अम्र के पास भी एक निमन्त्रण-पत्र भेजा था जिस में उसे 'इस्लाम' का बुलावा दिया था। उस ने आप (सल्ल०) के पत्रवाही (दूत) हज़रत हारिस बिन उमैर को क़त्ल कर दिया। बुसरा का यह हाकिम भी रोम-राज्य के आदेशों के अधीन था। नबी सल्ल० ने 'जुमादलऊला' सन् ८ हिज० में तीन हज़ार मुसलमानों की एक सेना शाम (Syria) की सीमा की ओर भेजी ताकि इस क्षेत्र के लोग मुसलमानों को कमज़ोर समझ कर उन पर अत्याचार न करें। शुरहबील को जब इस की सूचना मिली तो वह लग-भग एक लाख की सेना ले कर मुक़ाबिले के लिए चल पड़ा। मुसलमानों को उस के आने की सूचना मिल गई परन्तु वे आगे ही बढ़ते गये।

¹ यह 'हुदैबिय' की सन्धि से पहले की बात है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

क़ैसरे-रोम' उस समय 'हिम्स' के स्थान पर मौजूद था। उस ने भी शुरहबील की सहायता के लिए अपने भाई की अध्यक्षता में एक लाख की सेना भेज दी। परन्तु इस्लामी सेना आगे ही बढ़ती गई। 'मूतः' नामक स्थान पर शुरहबील की सेना से मुसलमानों की टक्कर हुई। दोनों सेनाओं में १ और ३३ का अनुपात था; परन्तु विजय इस्लामी सेना ही को प्राप्त हुई। यह एक ऐसी घटना थी जिस ने आस-पास के समस्त क़बीलों को चौंका दिया। हज़ारों की संख्या में लोगों ने इस्लाम* क़बूल किया। उसी ज़माने में रोम की सेना का एक कमान्डर फ़रवः बिन अमर मुसलमान हो गया। क़ैसर ने उसे पकड़वा कर अपने दरबार में बुलवाया। जब उन्हें दरबार में लाया गया तो क़ैसर ने कहा: तुम दो में से अपने लिए एक चीज़ चुन लो। यदि तुम इस्लाम* को त्याग देते हो तो तुम अपने पद पर फिर पहुँच जाओगे नहीं तो मृत्यु-दण्ड के लिए तैयार हो जाओ। उन्हों ने अपने लिए इस्लाम को चुन लिया और सत्य के लिए अपने प्राण दे दिये। इस घटना से बहुतों को इस्लाम* की नैतिक शक्ति और उस की महानता का अनुभव हुआ। उन्हों ने समझ लिया कि इस्लाम* का मुक़ाबिला कोई साधारण बात नहीं है।

दूसरे ही वर्ष क़ैसर ने 'मूतः' की लड़ाई का बदला लेने के लिए शाम (Syria) की सीमा पर सेना इकट्ठी करनी शुरू कर दी। उस की मातहती में ग़स्सानी और दूसरे अरब सरदार भी सेनायें इकट्ठी करने लगे। नबी सल्ल० को जब उन की तैयारियों का हाल मालूम हुआ तो आप (सल्ल०) ने बिना किसी संकोच के 'क़ैसर' की ताक़त से टकराने का निश्चय कर लिया। आप (सल्ल०) ने मुसलमानों को लड़ाई की तैयारी का हुक्म दे दिया। और उन्हें साफ़-तौर पर बता दिया कि शाम (Syria) की ओर चलना है, और मुक़ाबिला रोम-राज्य से है। मुसलमानों के लिए यह बड़ी परीक्षा का समय था। देश में अकाल था। गर्मी ज़ोरों की थी। फ़स्ल पकने के बिल्कुल क़रीब थी। सफ़र लम्बा था। सवारियों और दूसरे सामानों की बहुत कमी थी। मुक़ाबिला एक शक्तिशाली राज्य से था। परन्तु अल्लाह के रसूल* सल्ल० का हुक्म मिलना था कि मुसलमानों ने युद्ध की तैयारी शुरू कर दी। हर एक ने अपनी हैसियत के अनुसार सामानों के संचित करने में हिस्सा लिया। इस अवसर पर हज़रत उमर रज़ि० ने अपनी सारी कमाई का आधा हिस्सा ला कर पेश कर दिया। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अपनी समस्त पूँजी ला कर हाज़िर कर दी। जब उन से नबी सल्ल० ने पूछा कि बच्चों के लिए क्या छोड़ आये हो तो उन्हों ने जवाब दिया, "अल्लाह और उस के रसूल* (सल्ल०) को" मतलब यह था कि मैं ने वह सब-कुछ हाज़िर कर दिया है, जो मेरे पास था। हज़रत उस्मान रज़ि० और हज़रत अब्दुर्रहमान इब्न औफ़ रज़ि० ने बड़ी-बड़ी रक़में दीं। ग़रीब सहाबः* ने मेहनत-मज़दूरी कर के जो कुछ मिला ला कर नबी सल्ल० के सामने रख दिया। स्त्रियों ने अपने ज़ेवर तक उतार कर दे डाले। सरोद के सरोद लोग आते थे और अपने आप को लड़ने के लिए पेश करते थे। मुसलमानों के पास सवारियों की बड़ी ही कमी थी जिस के कारण बहुत से लोग इस सफ़र में न जा सके। जिन

१ रोम-राज्य के बादशाह की उपाधि।
* इन का अर्थ परिशिष्ट में बताई हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

लोगों के लिए सवारी का प्रबन्ध न हो सका वे वापस हुये तो उन की आँखों से आँसू बह रहे थे। उन का यह हाल देख कर स्वयं नबी सल्ल० का दिल भर आया। इस कठिन अवसर पर मुनाफ़िक़ों* का सारा भ्रम खुल गया। वे नबी सल्ल० के पास आ-आ कर हीले-बहाने करने लगे ताकि उन्हें लड़ाई पर न जाना पड़े। नबी सल्ल० ने ऐसे सभी लोगों को छुट्टी दे दी।

'रजब' सन् ९ हिज० में नबी सल्ल० ३० हज़ार की सेना ले कर शाम (Syria) की ओर चल पड़े। यह बड़े ही संकट का सफ़र था। गर्मी तेज़ थी; पानी की अलग कमी थी। सवारी के ऊँट संख्या में बहुत ही थोड़े थे, जिस के कारण एक-एक ऊँट पर बारी-बारी कई-कई आदमियों को सवार होना पड़ता था। मुसलमानों ने इस अवसर पर अपनी जिस वीरता, धैर्य और ईमान* का परिचय दिया अल्लाह ने उसे क़ुबूल कर लिया। और बिना लड़े ही वे अपने ध्येय में सफल हो गये। जब आप (सल्ल०) मदीना से चल कर 'तबूक'[1] पहुँचे तो मालूम हुआ कि क़ैसर और उस की मातहती में दूसरे जिन लोगों ने अपनी सेनायें सीमा पर इकट्ठी की थीं सब ने अपनी सेनायें वहाँ से हटा लीं। नबी सल्ल० ने दुश्मन के पीछे हट जाने को ही इस अवसर पर काफ़ी समझा। आप (सल्ल०) १० दिन तक वहाँ रुके रहे और बहुत से छोटे-छोटे राज्यों को जो अब तक रोम के आधीन थे, इस्लामी राज्य के आधीन कर लिया। 'तबूक' में मुसलमानों को बिना लड़े ही जो विजय प्राप्त हुई उस ने इस्लाम के विरोधी दल की रही-सही आशा पर पानी फेर दिया; अब क़रीब-क़रीब समस्त अरब देश पर मुसलमानों का अधिकार था।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

पिछली सूरः की अन्तिम आयतों* में भारमुक्ति (Immunity) अथवा पार्थक्य का उल्लेख किया गया है प्रस्तुत सूरः का केन्द्रीय विषय ही विरक्ति अथवा भारमुक्ति है। प्रस्तुत सूरः के आरम्भिक भाग में मुशिरकों* और उन काफ़िरों* के प्रति भारमुक्ति और सम्बन्ध-विच्छेद की घोषणा की गई है जो किताब वालों* (यहूदियों और ईसाइयों) में से थे[2]। इस घोषणा का अर्थ यह है कि अब उन के साथ अल्लाह और उस के रसूल* का कोई नाता नहीं रहा। अब उन के विरुद्ध स्वतन्त्रतापूर्वक उचित कार्रवाई की जा सकती है। क़रीब-क़रीब पूरे अरब पर इस्लाम* को अधिकार प्राप्त हो चुका था इस लिए अब वह समय आ गया था कि इस्लामी राज्य (दारुस्सलाम) की आन्तरिक नीति लोगों के सामने खोल कर रख दी जाये। इस सिलसिले में जो आदेश दिये गये हैं वे ये हैं :—

अरब से शिर्क* को बिलकुल मिटा दिया जाये। और इस का एलान कर दिया जाए कि मुशिरकों* के प्रति हम पर अब कोई ज़िम्मेदारी नहीं है। उन के साथ जो समझौते हुये हों उन्हें ख़त्म कर देने की घोषणा कर दी जाये। इसी लिए हज़रत अली रज़ि० ने आप (सल्ल०) की आज्ञा से क़ुरआन के आदेशानुसार हज* के अवसर पर वहाँ इस का एलान किया कि इस साल के बाद कोई मुशिरक* काबः* के हज* के लिए

[1] मदीना और दमिश्क़ के बीच एक स्थान है। मदीना से इस की दूरी ६१० किलोमीटर है।
[2] ९० आयत १-३७।
* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

न आये वहीं इस बात का एलान भी किया कि जिन लोगों के साथ अल्लाह के रसूल* (सल्ल०) ने कोई समझौता किया है और वे उस समझौते पर क़ायम रहे हैं उन के साथ निश्चित अवधि तक वही मामला किया जायेगा जिस के बारे में उन से समझौता हुआ है। परन्तु जिन लोगों ने समझौते के विरुद्ध इस्लाम* के ख़िलाफ़ किसी जोड़-तोड़ में हिस्सा लिया है उन के लिए ४ महीने की मुहलत है इस मुद्दत में चाहे तो वे सोच-समझ कर इस्लाम* क़बूल कर लें या देश छोड़ कर बाहर चले जायें या फिर इस्लाम* के अनुयायियों से लड़ कर अपना फ़ैसला कर लें।

हुक्म दिया गया कि अब काबः* का प्रबन्ध केवल मुसलमानों के हाथ में होगा। काबः* को शिर्क* की गन्दगियों से पाक रखा जाये। कोई मुश्रिक* इस घर के क़रीब न फटकने पाये। अरब-समाज में अज्ञान काल के जो रीति-रिवाज या प्रथा चली आ रही थी उस के उन्मूलन का आदेश दिया गया। अरब में सब से बढ़ कर एक कुरीति 'नसी' की चली आ रही थी उस का निषेध किया गया[1]। ईमान* वालों की शिक्षा-दीक्षा पर विशेष रूप से ज़ोर दिया गया। ताकि ईमान* वालों का यह गिरोह उस ज़िम्मेदारी के बोझ को उठा सके जो जल्द ही उस के ऊपर डाली जाने वाली थी। ईमान* वालों को आगे चल कर अरब देश से बाहर अमुस्लिम-जगत तक अल्लाह के सन्देश को पहुँचाना और ज़मीन को ज़ुल्म और फ़साद से पाक कर के न्याय स्थापित करना था।

मुनाफ़िक़ों* के बारे में अब तक नर्मी बरती जा रही थी। हुक्म दिया गया कि अब उन के साथ कोई नर्मी न बरती जाये। इसी नीति के अन्तर्गत 'तबूक' से लौटने के बाद ही नबी सल्ल० ने मुनाफ़िक़ों* की बनाई हुई मसजिद 'मसजिद ज़रार' को ढाने और जलाने का हुक्म दे दिया। मुनाफ़िक़ों* ने यह मसजिद नमाज़* के लिए नहीं बल्कि इस लिए बनाई थी कि उस में बैठ कर मुसलमानों के ख़िलाफ़ विचार-विमर्श करें। इस मसजिद का ढाया जाना वास्तव में इस बात का एलान था कि मुनाफ़िक़ों के साथ अब किसी प्रकार की नर्मी नहीं बरती जायेगी[2]।

'तबूक' की मुहिम के अवसर पर मुनाफ़िक़ों* के अतिरिक्त कुछ ऐसे लोग भी पीछे रह गये थे जो मुनाफ़िक़* न थे केवल अपनी सुस्ती और कमज़ोरी के कारण उन से यह चूक हुई थी। ऐसे लोगों के साथ सख़्ती की गई ताकि इस तरह की कमज़ोरी दूर हो फिर अल्लाह ने उन की तौबः* क़बूल कर ली और उन्हें क्षमा कर दिया[3]।

समाप्ति

आयत ११९ से ले कर १२९ तक सूरः की समाप्ति का भाग है। सूरः के इस भाग में समस्त सूरः का सारांश आ गया है। इस में ईमान* वालों को आदेश दिया गया है कि वे अल्लाह से डरें और सच्चे लोगों के साथ रहें। मदीना के आस-पास रहने वाले बद्दुओं के बारे में कहा गया है कि उन्हें नबी सल्ल० का साथ देना चाहिए उन के लिए यह कदापि उचित नहीं कि वे अल्लाह के रसूल*

---

१ दे० आयत ३७ ।
२ मुनाफ़िक़ों* के बारे में विस्तारपूर्वक बातों के लिए देखिए आयत ३८-११० ।
३ तौबः* के सिलसिले में देखिए आयत १११-११८ ।
* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

को छोड़ कर घर बैठ रहें और केवल अपनी ही चिन्ता में लगे रहें। यदि वे नबी* सल्ल० का साथ देते हैं और अपने प्राणों और अपने मालों के साथ अल्लाह की राह में निकलते हैं तो अल्लाह उन्हें अवश्य इस का बदला प्रदान करेगा उन की कोई भी नेकी अकारथ नहीं जायेगी।

दीन* में समझ (Sound knowledge) प्राप्त करने पर विशेष ज़ोर दिया गया है। इस्लामी समाज में इस का उचित प्रबन्ध होना चाहिए। जब तक लोगों में दीन* की समझ और दीन* का वास्तविक ज्ञान न होगा वे असत्य मार्ग की ओर जाने से न बच सकेंगे। मुनाफ़िक़ों* की नीतियों का उल्लेख करते हुए बताया गया है कि उन का वास्तविक रोग यह है वे समझ नहीं रखते।

सूरः को समाप्त करने से पहले समस्त लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा गया है कि तुम्हारे पास एक रसूल* आया है जो अत्यन्त कोमल-हृदय वाला है उसे तुम्हारे हित की लालसा है। फिर नबी* सल्ल० को सम्बोधित करते हुए इस सूरः को समाप्त किया गया है। आप (सल्ल०) से कहा गया है कि यदि लोग तुम से मुँह मोड़ लें तो कह दो : मुझे अल्लाह काफ़ी है उस के सिवा कोई इलाह* (पूज्य) नहीं उसी पर मैं ने भरोसा किया, और वही बड़े राज्य-सिंहासन का रब* (मालिक) है। इस तरह आप (सल्ल०) को तसल्ली दी गई है कि अल्लाह के अवज्ञाकारी लोगों से अलग हो जाने का जो आदेश आप (सल्ल०) को मिला है (जिस का विस्तारपूर्वक वर्णन इस सूरः में हुआ है) उस से आप (सल्ल०) को कोई चिन्ता नहीं होनी चाहिए; आप (सल्ल०) के लिए अल्लाह काफ़ी है।

इस सूरः* पर सूरतों* का वह सिलसिला (व्यवस्थित क्रम) जो सूरः अल-अनआम से चला था समाप्त हो जाता है। इस के बाद वाली सूरः* (सूरः यूनुस) से सूरतों* का एक नया सिलसिला आरम्भ होता है।

---

* इन का अर्थ आख़िर में बनी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلَا رَسُوْلِهٖ وَلَا
الْمُؤْمِنِيْنَ وَلِيْجَةً وَاللّٰهُ خَبِيْرٌ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝ مَا كَانَ لِ
لْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يَّعْمُرُوْا مَسٰجِدَ اللّٰهِ شٰهِدِيْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ
اُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ وَفِي النَّارِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ۝ اِنَّمَا يَعْمُرُ
مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى
الزَّكٰوةَ وَلَمْ يَخْشَ اِلَّا اللّٰهَ فَعَسٰٓى اُولٰٓئِكَ اَنْ يَّكُوْنُوْا مِنَ
الْمُهْتَدِيْنَ ۝ اَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَآجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ
كَمَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَجٰهَدَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَا
يَسْتَوٗنَ عِنْدَ اللّٰهِ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝
اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ
وَاَنْفُسِهِمْ اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللّٰهِ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ۝
يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ فِيْهَا
نَعِيْمٌ مُّقِيْمٌ ۝ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ
عَظِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْٓا اٰبَآءَكُمْ وَاِخْوَانَكُمْ اَوْلِيَآءَ
اِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَى الْاِيْمَانِ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاُولٰٓئِكَ
هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ وَاِخْوَانُكُمْ
وَاَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيْرَتُكُمْ وَاَمْوَالُ اقْتَرَفْتُمُوْهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ

जाना ही नहीं जिन्हों ने तुम में से (उस की राह में) जान लड़ाई, और अल्लाह और उस के रसूल* और ईमान* वालों के सिवा किसी को भेदी (दिली दोस्त) नहीं बनाया ? जो-कुछ तुम करते हो अल्लाह उस की ख़बर रखता है। ○

मुश्रिकों* का यह काम नहीं है कि वे अल्लाह की मसजिदों* को आबाद करें, जब कि वे अपने विरुद्ध स्वयं कुफ़्र* की गवाही दे रहे हैं। ये वे लोग हैं जिन का किया-धरा सब अकारथ हुआ और आग (दोज़ख़*) में वे सदा रहेंगे। ○ अल्लाह की मसजिदों* को आबाद करना तो उस का काम है जो अल्लाह पर और अन्तिम दिन'' पर ईमान* लाये और नमाज़* क़ायम रखे और ज़कात* दे और अल्लाह के सिवा किसी से न डरे। तो ऐसे ही लोग, आशा है कि राह पाने वालों में से होंगे। ○ क्या तुम लोगों ने हाजियों* को पानी पिलाने और मसजिदे-हराम* (काबः) के आबाद करने को उस व्यक्ति (के काम) जैसा ठहरा लिया है जो अल्लाह पर और अन्तिम दिन'' पर ईमान* लाया, और जिस ने अल्लाह की राह में जान लड़ाई ? अल्लाह के नज़दीक तो ये (एक-दूसरे के) बराबर नहीं हैं। और अल्लाह ज़ालिम लोगों को सीधा मार्ग नहीं दिखाता। ○ जो लोग ईमान* लाये, और हिजरत* की और अल्लाह की राह में अपने माल और अपनी जानों से जिहाद* किया अल्लाह के यहाँ (उन के लिए) बड़ा दर्जा है। और वही हैं जो सफलता प्राप्त करने वाले हैं। ○ उन्हें उन का रब* शुभ-सूचना देता है अपनी दयालुता और रज़ामन्दी की, और ऐसे बाग़ों की जिन में उन के लिए स्थाई सुख है; ○ उन में वे सदैव रहेंगे। निस्सन्देह अल्लाह के पास (अच्छे कामों का) बड़ा बदला है। ○

हे ईमान* लाने वालो ! अपने बापों और अपने भाइयों को अपना मित्र न बनाओ यदि वे ईमान* की अपेक्षा कुफ़्र* को पसन्द करें। तुम में से जो कोई उन से मित्रता का नाता जोड़ेगा, तो ऐसे ही लोग ज़ालिम होंगे। ○ (हे नबी* !) कह दो : यदि तुम्हारे बाप, और तुम्हारे बेटे, और तुम्हारे भाई, और तुम्हारी पत्नियाँ, और तुम्हारे घराने के लोग, और माल जो तुम ने कमाये हैं, और कार-बार जिस के मंद पड़ जाने का तुम्हें भय है, और घर जिन्हें तुम पसन्द करते हो तुम्हें अल्लाह और उस के रसूल* और उस की राह में जिहाद* करने से अधिक प्रिय हैं : तो इन्तज़ार करो यहाँ तक कि अल्लाह अपना फ़ैसला तुम्हारे सामने ले आये। और अल्लाह उन लोगों को राह नहीं दिखाता जो मर्यादा का उल्लंघन करने वाले हैं। ○

अल्लाह बहुत से मौक़ों पर तुम्हारी सहायता कर चुका है और हुनैन'' (की लड़ाई) के

'' [illegible]: फुट नोट ३ ।
'' [illegible]: फुट नोट ५ ।

*आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

किया है।[1] पैग़म्बरों का बयान सुनने के बाद हम इस रहस्यमय जगत पर दृष्टि डालें और इसमें पाये जाने वाले सूक्ष्म सकेतों को व्यवस्थित क्रम में लायें उनसे नतीजा निकाल कर यह देखें कि इस प्रत्यक्ष के पीछे स्थित जिस वास्तविकता की सूचना पैग़म्बर देते हैं, इस प्रत्यक्ष मे उसके लक्षण और उसकी ओर संकेत करने वाले चिह्न पाये जाते हैं या नहीं। यदि उसकी ओर संकेत करने वाले चिह्न पाये जाते हों, और यह जगत उसके यथार्थ होने का साक्षी हो, और उससे उन समस्त समस्याओं का समाधान हो जाता हो जिनका इस मौलिक और वास्तविक समस्या से दूर या निकट का कोई सम्बन्ध है। और उसपर कोई आक्षेप न हो सकता हो और न उसके विरुद्ध कोई एक प्रमाण प्रस्तुत किया जा सकता हो, तो फिर पैग़म्बरों को झुठलाने की कोई वजह नहीं। बल्कि उनकी दी हुई सूचना को मानना ही तर्कयुक्त और न्याय-संगत बात होगी।

क़ुरआन मे विभिन्न स्थानों पर जगत में पाये जाने वाले सूक्ष्म सकेतों को व्यवस्थित क्रम मे रखकर उनसे नतीजा निकाल कर वास्तविकता को प्रकाश में लाया गया है।[2]

क़ुरआन अल्लाह् की किताब है

पिछले पृष्ठों मे क़ुरआन के विषय में जो-कुछ कहा गया है उसमे क़ुरआन का एक संक्षिप्त परिचय आपको मिल चुका होगा। क़ुरआन वास्तव मे अल्लाह् की किताब है ? यह प्रश्न सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण और गंभीर है, जिसपर विचार करना हमारा परम कर्तव्य है। इस प्रश्न पर जितना अधिक सोच-विचार कीजिए, यह विश्वास बढ़ता जाता है कि क़ुरआन किसी मनुष्य का 'कलाम' नहीं हो सकता। यह वास्तव में ईश्वरीय ग्रन्थ है जिसे अल्लाह् ने मनुष्य के पथ-प्रदर्शन के लिए अपने एक विशेष बन्दे हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर उतारा है। क़ुरआन अल्लाह् का 'कलाम' है इसका सबसे बड़ा प्रमाण हज़रत मुहम्मद सल्ल० का अपना बयान है। आप एक सच्चे व्यक्ति थे। जीवन-भर कभी कोई झूठी बात आपके मुख से नहीं निकली। सभी लोग आपको 'सादिक़' (सत्यवान) और 'अमीन' (विश्वसनीय) कहते थे। सोचने की बात है कि जिस व्यक्ति ने किसी भी मामले में कभी झूठी बात न कही हो जिसकी सच्चाई और सत्य-वादिता का हाल यह हो कि दुश्मन तक उसके सच्चे होने के गवाह हों क्या वह अपने अल्लाह् से सम्बन्ध लगाकर झूठ बोल सकता है। और झूठ भी ऐसा जो निरन्तर २३ वर्षों तक बोला गया हो। जिस व्यक्ति ने मनुष्यों के मामले मे कभी असत्य बात नहीं कही वह अल्लाह् के नाम पर झूठी बात कैसे गढ़ सकता है। क्या ऐसा व्यक्ति कभी कह सकता है कि अल्लाह् ने मुझपर अपना 'कलाम' उतारा है जब कि अल्लाह् का 'कलाम' उसपर उतरा न हो। फिर क्या अल्लाह् इतने बड़े अत्याचार को कभी सफल होने देगा[3]। क्या जीवन में ऐसी सफलता जो हज़रत मुहम्मद सल्ल० को अपने महान् उद्देश्य मे प्राप्त हुई है कभी संसार में किसी झूठे और असत्यवादी व्यक्ति को प्राप्त हो सकी है। ज़ालिमों का ज़ुल्म और झूठों का झूठ कभी छुपा नहीं रहता।

---

१. दे० २८:१४; ११:६३; १६:७२; २१:७४; २१:७६; २:१२०; ४:११३; ५३: २–३; १२:१०८।

२. इस सिलसिले में उदाहरण के लिए दे० १०:५; ६४:३; १३:२–३; १०:२२; ७८:१-१७; ५१:१–६; ७४:३२–३६; ३६:८१; ७५:३६–४०; ६४:३; ८४:१६–१९; ५६:७५-८०; ५३:१–४; ९३:१–४; ६७:१–४; ५१:४७–५०; ५१:१–५।

३. दे० सूर: ६९ आयत ४४-४७।

देन भी (उस ने तुम्हारी सहायता की), जब कि तुम अपनी अधिकता पर फूल गये थे तो वह तुम्हारे कुछ काम न आई, और धरती विशाल होते हुये भी तुम पर तंग हो गई; और तुम पीठ फेर कर भाग निकले; ○ फिर अल्लाह ने अपने रसूल* पर और ईमान* वालों पर शान्ति उतारी, और सेनायें उतारीं जिन्हें तुम देख नहीं सके, और उन लोगों को अज़ाब दिया जिन्हों ने कुफ़्र* किया था। और यही काफ़िरों* का बदला है। ○ फिर इस के बाद अल्लाह जिस पर चाहे मेहरबान हो; और अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है। ○

हे ईमान* लाने वालो ! मुश्रिक* तो नापाक हैं[12]। तो इस वर्ष के पश्चात् ये मस्जिदे हराम* (काबः*) के पास न फटकने पायें। और यदि तुम्हें मुहताजी का भय हो तो अल्लाह ने चाहा तो जल्द ही वह अपने फ़ज़्ल से तुम्हें धनवान कर देगा। (कि तुम मुहताज न रहोगे)। निस्सन्देह अल्लाह (सब-कुछ) जानने वाला और हिकमत* वाला है। ○

كَسَادَهَا وَمَسَاكِنُ تَرْضَوْنَهَا أَحَبَّ إِلَيْكُمْ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَجِهَادٍ
فِي سَبِيلِهِ فَتَرَبَّصُوا حَتَّى يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرِهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي
الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۝ لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ فِي مَوَاطِنَ كَثِيرَةٍ وَيَوْمَ
حُنَيْنٍ إِذْ أَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْئًا وَضَاقَتْ
عَلَيْكُمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُدْبِرِينَ ۝ ثُمَّ أَنْزَلَ
اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَى رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَنْزَلَ جُنُودًا
لَمْ تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَذَلِكَ جَزَاءُ الْكَافِرِينَ ۝
ثُمَّ يَتُوبُ اللَّهُ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ عَلَى مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْمُشْرِكُونَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ
الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هَذَا وَإِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيكُمُ
اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ إِنْ شَاءَ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ قَاتِلُوا الَّذِينَ
لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَلَا يُحَرِّمُونَ مَا حَرَّمَ
اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَلَا يَدِينُونَ دِينَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ
حَتَّى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَدٍ وَهُمْ صَاغِرُونَ ۝ وَقَالَتِ الْيَهُودُ
عُزَيْرٌ ابْنُ اللَّهِ وَقَالَتِ النَّصَارَى الْمَسِيحُ ابْنُ اللَّهِ ذَلِكَ قَوْلُهُمْ
بِأَفْوَاهِهِمْ يُضَاهِئُونَ قَوْلَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَبْلُ قَاتَلَهُمُ
اللَّهُ أَنَّى يُؤْفَكُونَ ۝ اتَّخَذُوا أَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ

किताब वाले* जो न अल्लाह पर ईमान* लाते हैं और न अन्तिम दिन[13] पर, और न उसे हराम* करते हैं जिसे अल्लाह और उस के रसूल* ने हराम ठहराया है, और न सच्चे दीन* को अपना दीन* बनाते हैं, उन से लड़ो यहाँ तक कि वे अपमानित हो कर अपने हाथ से जिज़्यः* देने लगें। ○ यहूदियों* ने कहा : उज़ैर[14] अल्लाह का बेटा है, और ईसाइयों* ने कहा : मसीह अल्लाह का बेटा है। ये उन की (तथ्य-हीन) बातें हैं जो वे अपनी ज़बानों से निकालते हैं। ये उन लोगों की सी बातें करते हैं जो (इन से) पहले कुफ़्र* में पड़ चुके हैं। अल्लाह की मार इन पर ये कहाँ से उल्टे भटके चले जा रहे हैं। ○ इन्हों ने अल्लाह को छोड़ कर अपने धर्म-ज्ञाताओं और संसार त्यागी सन्तों (संन्यासियों) को (अपना) रब* बना लिया[15]

१२ अर्थात् शिर्क* की नापाकी उन के साथ लगी हुई है।

१३ दे० सूरः अल-बक़रः फुट नोट ५।

१४ उज़ैर (Ezra) वही हैं जिन्हें यहूदी* अपने धर्म का नवीन संस्थापक मानते हैं। यहूदियों के कथनानुसार हज़रत सुलैमान अ० के बाद जब बनी इस्राईल* पर संकट और विपत्ति के दिन आये तो केवल यही नहीं कि तौरात* संसार से लुप्त हो गई बल्कि बाबिल (Babel) में क़ैद होने के बाद बनी इस्राईल* की नई नस्ल अपना धर्म-शास्त्र और अपनी भाषा इब्रानी (Hebrew) तक भूल गई। अन्त में उज़ैर ने तौरात को संकलित किया, और धर्म-विधान की फिर से स्थापना की। इसी कारण बनी इस्राईल* उन का बड़ा आदर करते हैं। बल्कि उनमें कुछ गिरोह ऐसे भी पैदा हुए जिन्हों ने उन्हें अल्लाह का बेटा तक बना डाला।

१५ अर्थात् जिस चीज़ को ये लोग हराम* कह दें, उसे हराम मान लेते हैं; और जिसे ये लोग हलाल* ठहरा दें उसे हलाल समझने लगते हैं, चाहे अल्लाह की किताब से इस के लिए कोई एक भी दलील न पेश की जा सकती हो। किसी चीज़ को हलाल* या हराम* ठहराना केवल अल्लाह का काम है। किसी दूसरे व्यक्ति को यह अधिकार प्राप्त नहीं हो सकता कि अल्लाह ने जिस चीज़ को हलाल ठहराया हो उसे वह हराम करने लग जाय या जिसे अल्लाह ने हराम कर दिया हो उसे वह लोगों के लिए हलाल ठहराने लगे।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

مِّن دُونِ اللَّهِ وَالْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا
إِلَٰهًا وَاحِدًا لَّا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ سُبْحَانَهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ يُرِيدُونَ
أَن يُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَيَأْبَى اللَّهُ إِلَّا أَن يُتِمَّ نُورَهُ
وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ۝ هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَ
دِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ۝ {४}
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ كَثِيرًا مِّنَ الْأَحْبَارِ وَالرُّهْبَانِ لَيَأْكُلُونَ أَمْوَالَ
النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ يَكْنِزُونَ
الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنفِقُونَهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَبَشِّرْهُم بِعَذَابٍ
أَلِيمٍ ۝ يَوْمَ يُحْمَىٰ عَلَيْهَا فِي نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوَىٰ بِهَا جِبَاهُهُمْ
وَجُنُوبُهُمْ وَظُهُورُهُمْ هَٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِأَنفُسِكُمْ فَذُوقُوا مَا كُنتُمْ
تَكْنِزُونَ ۝ إِنَّ عِدَّةَ الشُّهُورِ عِندَ اللَّهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِي كِتَابِ
اللَّهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ مِنْهَا أَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ذَٰلِكَ
الدِّينُ الْقَيِّمُ فَلَا تَظْلِمُوا فِيهِنَّ أَنفُسَكُمْ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِينَ
كَافَّةً كَمَا يُقَاتِلُونَكُمْ كَافَّةً وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ
الْمُتَّقِينَ ۝ إِنَّمَا النَّسِيءُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ يُضَلُّ بِهِ الَّذِينَ
كَفَرُوا يُحِلُّونَهُ عَامًا وَيُحَرِّمُونَهُ عَامًا لِّيُوَاطِئُوا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ
اللَّهُ فَيُحِلُّوا مَا حَرَّمَ اللَّهُ [illegible]

और मरयम के बेटे मसीह को भी, हालाँकि इन
के सिवा और कोई आदेश नहीं दिया गया थ
अकेले इलाह(पूज्य) के सिवा और किसी की इबा
(बन्दगी) न करें। उस के सिवा और कोई इल
(पूज्य) नहीं। उस की महिमा के प्रतिकूल है
शिर्क* जो ये लोग करते हैं। ○ ये लोग चाह
कि अल्लाह के प्रकाश को अपने मुँह से (फूँक मार
बुझा दें, परन्तु अल्लाह अपने प्रकाश को पूरा
बिना नहीं रहेगा, चाहे काफ़िरों* को ना-पसन्द
क्यों न हो। ○ वही है जिस ने अपने रसूल*
मार्ग-दर्शन और सच्चे दीन* (सत्य-धर्म) के
भेजा, ताकि उसे समस्त दीन* पर प्रभुत्व प्रदान
चाहे मुशरिकों* को ना-पसन्द ही क्यों न हो''।
हे ईमान* लाने वालो! किताब वालों* के अधिक
धर्मज्ञाता और संसार त्यागी सन्त (ऐसे हैं कि
लोगों का माल अवैध रूप से खाते हैं और (उन
अल्लाह की राह से रोकते हैं। जो लोग सोना अ
चाँदी एकत्र कर के रखते हैं और उन्हें अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते, उन्हें दुःख दे
वाले अज़ाब की शुभ-सूचना दे दो,'' ○ जिस दिन इस (सोने-चाँदी के ढेर) पर दोज़ख़* क
आग दहकाई जायेगी, फिर उस से इन के ललाट और इन के पहलू और इन की पीठें दाग़
जायेंगी (और कहा जायेगा) : यह वही है जिसे तुम ने अपने लिए एकत्र किया था। तो अ
जो-कुछ तुम एकत्र कर के रखते थे उस का मज़ा चखो। ○

निस्सन्देह महीनों की गिन्ती — अल्लाह की किताब में उस दिन (से) कि उस ने आस
मानों और ज़मीन को पैदा किया — अल्लाह के नज़दीक बारह महीनों की है''। इन में चा
(महीने) आदर के हैं'' यही सीधा (ठीक) दीन* है। तो तुम इन (महीनों) में (युद्ध और
रक्तपात कर के) अपने-आप पर ज़ुल्म न करो। और तुम सब मिल कर मुशरिकों* से
लड़ो जिस तरह वे सब मिल कर तुम से लड़ते हैं। और जान लो कि अल्लाह उन लोगों
के साथ है जो अल्लाह की अवज्ञा से बचने वाले और उस की ना-ख़ुशी से डरने वाले

१६ अल्लाह का यह इरादा पूरा हो कर रहा। अल्लाह ने इस्लाम* को [illegible] प्रदान किया।
काफ़िरों* की [illegible]

१७ यह बात [illegible] है।

१८ [illegible]

१९ [illegible]

* [illegible]

है।○ (आदर के) महीने का हटाना केवल कुफ़्र* में एक वृद्धि है[२०] जिस से काफ़िर* लोग गुमराह किये जाते हैं,[२१] किसी वर्ष वे उसे[२२] हलाल* ठहरा लेते हैं और किसी वर्ष उस को हराम* कर देते हैं, ताकि अल्लाह ने जो (महीने) हराम* किये हैं उन की गिन्ती पूरी कर लें, और इस तरह अल्लाह ने जो हराम* किया है उसे वे हलाल* कर लें। उन के बुरे कर्म उन के लिए शोभायमान बना दिये गये हैं। अल्लाह काफ़िर* लोगों को राह नहीं दिखाता।○

[२३]हे ईमान* लाने वालो! तुम्हें क्या हो गया कि जब तुम से कहा गया कि अल्लाह की राह में निकलो, तो तुम ज़मीन पर ढह गये। क्या तुम आख़िरत* को छोड़ कर सांसारिक जीवन पर राज़ी हो गये? सांसारिक जीवन की सुख सामग्री आख़िरत* की अपेक्षा बहुत थोड़ी है।○ यदि तुम न निकलोगे तो अल्लाह तुम्हें दुखदायी अज़ाब देगा, और तुम्हारे सिवा किसी और गरोह को लायेगा। और तुम अल्लाह का कुछ भी न बिगाड़ सकोगे। अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला (सर्व-शक्तिमान्) है।○ यदि तुम उस की (अर्थात् रसूल की) सहायता न भी करो तो (क्या हो जायेगा), अल्लाह उस की सहायता उस समय कर चुका है जब कि कुफ़्र* करने वालों ने उसे (मक्का से) निकाल दिया था, वह (केवल) दो में का दूसरा था; जब वे दोनों गुफा में थे, जब वह अपने साथी से कह रहा था, "ग़म न करो अल्लाह हमारे साथ है"[२४]। तो अल्लाह ने उस पर अपनी ओर से शान्ति उतारी और

يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ۞ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَا لَكُمْ اِذَا قِيْلَ لَكُمُ انْفِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اثَّاقَلْتُمْ اِلَى الْاَرْضِ ۭ اَرَضِيْتُمْ بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا مِنَ الْاٰخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا قَلِيْلٌ ۞ اِلَّا تَنْفِرُوْا يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ڏ وَّيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوْهُ شَـيْـــًٔا ۭ وَاللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۞ اِلَّا تَنْصُرُوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللّٰهُ اِذْ اَخْرَجَهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثَانِيَ اثْنَيْنِ اِذْ هُمَا فِي الْغَارِ اِذْ يَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ۚ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلَيْهِ وَاَيَّدَهٗ بِجُنُوْدٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا السُّفْلٰى ۭ وَكَلِمَةُ اللّٰهِ هِىَ الْعُلْيَا ۭ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۞ اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالًا وَّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۞ لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيْبًا وَّسَفَرًا قَاصِدًا لَّاتَّبَعُوْكَ وَلٰكِنْۢ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ۭ وَسَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ۚ يُهْلِكُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۞ عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ ۚ لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَتَعْلَمَ الْكٰذِبِيْنَ ۞ لَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ۞

---

२० अरबों की 'नसी' नामक प्रथा का निषेध किया जा रहा है। 'नसी' (Postponement) का तात्पर्य महीने को उस की जगह से पीछे हटाना है। अरब के लोग लड़ने, लूटने-मारने और ख़ून का बदला लेने के लिए हराम* महीने (Sacred month) को भी जिन में लड़ना-झगड़ना वर्जित था, हलाल कर लेते थे, और उस के बदले में किसी हलाल* महीने को हराम* कर लेते थे ताकि हराम महीनों की गिन्ती पूरी हो जाये। इस के अलावा वे यह भी चाहते थे कि हज* सदा एक ही मौसिम में आता रहे ताकि विभिन्न ऋतुओं में हज* के चक्कर लगाते रहने से जो कठिनाइयाँ पेश आती हैं उन से छुटकारा मिल जाये। इस के लिए वे चाँद के हिसाब से जो वर्ष होता है उस में एक महीना कबीसा का बढ़ा देते थे। इस तरह केवल तैंतीसवें वर्ष आ कर हज* अपने असली समय पर अदा किया जाता था। शेष ३२ साल तक हज* अपने वास्तविक समय पर नहीं बल्कि दूसरी तिथियों में होता रहता था।

२१ अर्थात् इस तरह वे गुमराही में पड़ते हैं।

२२ अर्थात् हराम या आदर के महीने को।

२३ यहाँ से वह तक़रीर शुरू होती है जो 'तबूक' की लड़ाई की तैयारी के समय उतरी थी। दे० सूरः की भूमिका।

२४ जब नबी सल्ल० हिजरत* करने के लिए मक्का से निकले तो आप (सल्ल०) के साथ केवल हज़रत अबू बक्र रज़ि० थे आप (सल्ल०) जानते थे कि दुश्मन आप (सल्ल०) का पीछा अवश्य करेंगे। इस लिए उधर का रास्ता छोड़ कर जो मदीना जाता था आप दक्षिण के रास्ते से निकले और एक गुफा में जा कर पनाह ली। तीन दिन तक उसी गुफा में छिपे रहे। दुश्मन आप (सल्ल०) के क़त्ल का निश्चय कर चुके थे। वे

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

وَلَا يَأْتُونَ الصَّلٰوةَ اِلَّا وَهُمْ كُسَالٰى وَلَا يُنْفِقُوْنَ اِلَّا وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ۝
فَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ
بِهَا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ۝
وَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ اِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ وَمَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلٰكِنَّهُمْ قَوْمٌ
يَّفْرَقُوْنَ ۝ لَوْ يَجِدُوْنَ مَلْجَاً اَوْ مَغٰرٰتٍ اَوْ مُدَّخَلًا لَّوَلَّوْا
اِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُوْنَ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّلْمِزُكَ فِي الصَّدَقٰتِ فَاِنْ
اُعْطُوْا مِنْهَا رَضُوْا وَاِنْ لَّمْ يُعْطَوْا مِنْهَآ اِذَا هُمْ يَسْخَطُوْنَ ۝ وَ
لَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ
سَيُؤْتِيْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ وَرَسُوْلُهٗٓ اِنَّآ اِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوْنَ ۝
اِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ
قُلُوْبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ وَالْغٰرِمِيْنَ وَفِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَابْنِ السَّبِيْلِ
فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ
النَّبِيَّ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ اُذُنٌ قُلْ اُذُنُ خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ
وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَالَّذِيْنَ
يُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ
لِيُرْضُوْكُمْ وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ اَحَقُّ اَنْ يُّرْضُوْهُ اِنْ كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝
اَلَمْ يَعْلَمُوْا اَنَّهٗ مَنْ يُّحَادِدِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاَنَّ لَهٗ نَارَ

और तुम्हारे विरुद्ध कार्रवाइयों का उलट-फेर कर चुके हैं यहाँ तक कि हक़* (सत्य) आ गया और अल्लाह का काम हो कर रहा, और वे बुरा ही मानते रहे। ○

इन में से कोई ऐसा है जो कहता है: मुझे (घर में पड़े रहने की) इजाज़त दे दो और मुझे फ़ितनः (गुमराही के ख़तरे) में न डालो¹⁰। जान लो! फ़ितनः में तो ये लोग पड़ चुके हैं¹¹। निस्सन्देह दोज़ख़* इन काफ़िरों* को घेरे हुये है। ○

यदि तुम्हारा भला हो तो इन्हें दुःख होगा, और यदि तुम पर कोई मुसीबत आये, तो कहेंगे: हम ने अपना काम पहले ही सँभाल लिया था, और ये

१० ख़ुश हो कर पलटेंगे। ○ कह दो: हमें कुछ पेश नहीं आता सिवाय उस के जो अल्लाह ने हमारे लिए लिख दिया है। वह हमारा प्रभु और संरक्षक-मित्र है। और ईमान* वालों को उसी पर भरोसा करना चाहिए। ○

(उन से) कहो: तुम हमारे लिए जिस बात का इन्तज़ार करते हो वह इस के सिवा क्या है कि दो भलाइयों (अल्लाह की राह में मृत्यु अथवा विजय) में से एक है? जब कि हमें तुम्हारे हक़ में जिस चीज़ का इन्तज़ार है वह यह है कि अल्लाह अपनी ओर से तुम्हें कोई अज़ाब देता है या हमारे हाथों दिलवाता है। अच्छा तो तुम भी इन्तज़ार करो हम भी तुम्हारे साथ इन्तज़ार करते हैं। ○

कह दो: तुम चाहे स्वेच्छापूर्वक (अपने माल) ख़र्च करो या अनिच्छापूर्वक, वह तुम से कभी क़ुबूल नहीं किया जायेगा। निस्सन्देह तुम सीमोल्लंघन करने वाले लोग हो। ○ इन के ख़र्च क़ुबूल न होने का कोई कारण इस के सिवा नहीं है कि इन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल* के साथ कुफ़्र* किया, और नमाज़* को आते हैं तो कम हारे जी, और (अल्लाह की राह में) ख़र्च करते हैं तो अनिच्छापूर्वक। ○ इन के माल तुम्हारे लिए अचम्भे का कारण न बनें और न इन की औलाद (तुम्हारे लिए अचम्भे का कारण हो)। अल्लाह तो चाहता है कि इन चीज़ों के द्वारा इन्हें सांसारिक जीवन में अज़ाब दे और इन के प्राण इस दशा

११ में निकलें कि ये काफ़िर* हों।

वे अल्लाह की क़समें खाते हैं कि हम तुम्हीं में से हैं, हालाँकि वे तुम में से नहीं हैं, बल्कि वे लोग डर रहे हैं। ○ यदि वे कोई शरण पा लें या कोई गुफा, या घुस बैठने की जगह,

¹⁰ तबूक की राह में पीछे रहने के लिए मुनाफ़िक़* लोग बहाने कर रहे थे [illegible] वहीं उन में एक व्यक्ति ने नबी* से यह भी कहा था कि मुझे लड़ाई में न ले चलिए [illegible] बहुत सुन्दर होती हैं। मुझ में बड़ी कमज़ोरी है। सम्भव है कि उन्हें देख कर मैं फ़ितने में पड़ जाऊँ। [illegible] उचित होगा कि आप मुझे यहीं न ले चलें।

¹¹ [illegible] कुफ़्र*, निफ़ाक़*, झूठ आदि की आपदा में तो तुम पहले ही ग्रस्त हो चुके हो। इस से बढ़ कर आपदा और क्या हो सकती है।

* इन का अर्थ जानने के लिए [illegible] पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيهَا ذٰلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيمُ ۝ يَحْذَرُ الْمُنٰفِقُونَ
أَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ سُورَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِي قُلُوبِهِمْ قُلِ
اسْتَهْزِءُوا إِنَّ اللّٰهَ مُخْرِجٌ مَا تَحْذَرُونَ ۝ وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ
لَيَقُولُنَّ إِنَّمَا كُنَّا نَخُوضُ وَنَلْعَبُ قُلْ أَبِاللّٰهِ وَآيٰتِهِ وَرَسُولِهِ
كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُونَ ۝ لَا تَعْتَذِرُوا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمٰنِكُمْ
إِنْ نَعْفُ عَنْ طَائِفَةٍ مِنْكُمْ نُعَذِّبْ طَائِفَةً بِأَنَّهُمْ كَانُوا
مُجْرِمِينَ ۝ الْمُنٰفِقُونَ وَالْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ مِنْ بَعْضٍ
يَأْمُرُونَ بِالْمُنْكَرِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوفِ وَيَقْبِضُونَ
أَيْدِيَهُمْ نَسُوا اللّٰهَ فَنَسِيَهُمْ إِنَّ الْمُنٰفِقِينَ هُمُ الْفٰسِقُونَ ۝
وَعَدَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِينَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِينَ
فِيهَا هِيَ حَسْبُهُمْ وَلَعَنَهُمُ اللّٰهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُقِيمٌ ۝
كَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوا أَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَأَكْثَرَ أَمْوٰلًا
وَأَوْلٰدًا فَاسْتَمْتَعُوا بِخَلٰقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلٰقِكُمْ كَمَا
اسْتَمْتَعَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلٰقِهِمْ وَخُضْتُمْ كَالَّذِي
خَاضُوا أُولٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمٰلُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَ
أُولٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ۝ أَلَمْ يَأْتِهِمْ نَبَأُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ
قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ وَقَوْمِ إِبْرٰهِيمَ وَأَصْحٰبِ مَدْيَنَ

तो अवश्य उस की ओर बगटुट भाग जायें। ○

(हे नबी* !) उन में से कुछ ऐसे हैं सदक़ों* (के बाँटने) के बारे में तुम पर चोट क हैं (कि तुम ने बे-इनसाफ़ी की)। यदि उन्हें (माल) में से दे दिया जाये तो ख़ुश हो जायें, यदि न दिया जाये, तो ना-ख़ुश होने लगते हैं। क्या अच्छा होता कि जो-कुछ अल्लाह और उस रसूल* ने उन्हें दिया था उसी पर राज़ी रहते कहते कि हमारे लिए अल्लाह काफ़ी है। अल्लाह जल्द अपने फ़ज़्ल से (और भी) देगा, और उस रसूल* भी। हम तो अल्लाह की ओर मग्न हैं। सदक़े* (ज़कात*) तो वास्तव में ग़रीबों और मु तार्जों के लिए हैं, और उन कर्मचारियों के लिए इस (सदक़े के काम) पर लगे हों,[60] और उन लिए जिन के दिलों को परचाना (अभीष्ट) हो,[61] और गरदनों को छुड़ाने में,[62] और क़र्ज़दारों सहायता करने में, और अल्लाह की राह में, औ मुसाफ़िर की सहायता में लगाने के लिए हैं; यह अल्लाह का ठहराया हुआ (हुक्म) है। अल्ला (सब-कुछ) जानने वाला और हिकमत* वाला है। ○

इन में कुछ लोग ऐसे हैं जो नबी* को दुःख देते हैं और कहते हैं : वह तो निरा का है[63]। कह दो : वह निरा कान तुम्हारे भले के लिए है, अल्लाह पर ईमान* रखता है औ ईमान* वालों पर विश्वास करता है, और उन लोगों के लिए (सर्वथा) रहमत (दयालुता) जो तुम में ईमान* लाये हैं। और जो लोग अल्लाह के रसूल* को दुःख देते हैं, उन के लि दुःख देने वाला अज़ाब है। ○

(ईमान* वालो !) ये लोग तुम्हारे सामने अल्लाह की क़समें खाते हैं ताकि तुम्हें राज़ी कर लें, हालाँकि अल्लाह और उस के रसूल इस का ज़्यादा हक़ रखते हैं कि यदि ये ईमान* वाले हैं तो उसे राज़ी करें। ○ क्या ये जानते नहीं कि जो कोई अल्लाह और उस के रसूल* का विरोध करता है, उस के लिए दोज़ख़* की आग है, उस में उसे सदा रहना होगा। यह

६० अर्थात् वे लोग जो इस काम पर लगाये गये हों कि सदक़े* वसूल करें, और उन का हिसाब-किताब रखें, और राज्य की ओर से उन का वितरण करें।

६१ इस्लाम* के विरोधियों के विरोध और उन की शत्रुता को यदि माल दे कर कम किया जा सकता हो, तो इस के लिए ज़कात* का माल भी ख़र्च किया जा सकता है। इसी तरह जो लोग नये-नये मुसलमान हुए हों या जिन का ईमान* कमज़ोर हो और कुफ़्र* की ओर उन के पलट जाने का भय हो, ऐसे लोगों पर माल ख़र्च कर के उन की भावना को बदला जा सकता है। इस के लिए दूसरे मालों के अलावा ज़कात* का माल भी ख़र्च कर सकते हैं।

६२ अर्थात् ग़ुलामों को आज़ाद कराने में।

६३ मुनाफ़िक़* लोग नबी* और बहुत-सी बातें कहते थे [illegible] कान ही [illegible] कि हर एक की बात सुन लेते हैं। जो बात भी [illegible] की जाती है आप उस को मान लेते हैं, जो [illegible] है कान से सुन मानता है।

* इन का अर्थ आख़िर में बनाई हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

وَالْمُؤْتَفِكٰتِ اَتَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا كَانَ اللّٰهُ
لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ○ وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَ
الْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ
يَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَ
يُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ اُولٰٓئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ
حَكِيْمٌ ○ وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ
عَدْنٍ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ○
يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ وَ
مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ○ يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوْا
وَلَقَدْ قَالُوْا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوْا بَعْدَ اِسْلَامِهِمْ وَهَمُّوْا
بِمَا لَمْ يَنَالُوْا وَمَا نَقَمُوْٓا اِلَّآ اَنْ اَغْنٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ مِنْ
فَضْلِهٖ فَاِنْ يَّتُوْبُوْا يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ وَاِنْ يَّتَوَلَّوْا يُعَذِّبْهُمُ
اللّٰهُ عَذَابًا اَلِيْمًا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَمَا لَهُمْ فِي الْاَرْضِ
مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ○ وَمِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَئِنْ اٰتٰىنَا
مِنْ فَضْلِهٖ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ○ فَلَمَّآ
اٰتٰىهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ وَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ○

यह बहुत बड़ी रुस्वाई है। ○

मुनाफ़िक़* डर रहे हैं कि कहीं उन के बारे में कोई ऐसी सूरः* न उतार दी जाये, कि जो-कुछ उन के दिलों में है उन (मुसलमानों) पर खोल दे। (हे नबी*!) कह दो : हँसी उड़ाओ निश्चय ही अल्लाह उस चीज़ को खोल देने वाला है जिस का तुम्हें डर है। ○ और यदि इन से पूछो तो कह देंगे : हम तो बस बातों में लगे हुये थे और हँसी दिल्लगी कर रहे थे। कहो : क्या तुम अल्लाह और उस की आयतों* और उस के रसूल* के साथ हँसी कर रहे थे? ○ बहाने न बनाओ। तुम ने अपने ईमान* (लाने) के बाद कुफ़्र* किया है। यदि हम तुम में से एक गिरोह को क्षमा भी कर दें, तो भी एक गिरोह को अज़ाब (सज़ा) देके ही रहेंगे। इस लिए कि वे अपराधी हैं। ○

मुनाफ़िक़* पुरुष और मुनाफ़िक़ स्त्रियाँ सब परस्पर सजाति हैं। बुराई का हुक्म देते हैं, और भलाई से रोकते हैं, और अपने हाथों को बन्द रखते हैं[३४]। वे अल्लाह को भूल गये, तो उस ने भी उन्हें भुला दिया। निस्सन्देह ये मुनाफ़िक़* ही हैं जो सीमोल्लंघन करने वाले हैं। ○ अल्लाह ने इन मुनाफ़िक़* पुरुषों और मुनाफ़िक़ स्त्रियों और काफ़िरों* से दोज़ख़* की आग का वादा किया है जिस में वे सदा रहेंगे। यही उन्हें बस है। अल्लाह ने उन्हें लानत की और उन के लिए स्थाई अज़ाब है। ○ —उन लोगों की तरह जो (हे मुनाफ़िक़ो*!) तुम से पहले थे, वे तुम से शक्ति में बढ़ कर थे, और ज़्यादा माल और औलाद वाले थे। फिर उन्हों ने अपने हिस्से के मज़े लूट लिये, और तुम ने भी अपने हिस्से के मज़े उसी तरह लूटे जिस तरह तुम से पहले के लोगों ने लूटा था। और उसी प्रकार बहसों में पड़े जिस प्रकार वहसों में वे पड़े थे। ये वे लोग हैं जिन का किया-धरा दुनियाँ और आख़िरत* में अकारथ गया। और यही घाटा उठाने वाले हैं। ○ —क्या इन्हें उन लोगों की ख़बर नहीं पहुँची जो इन से पहले थे— नूह की जाति* वाले, और आद,* और समूद,* और इबराहीम की जाति वाले, और मदयन वाले* और वे बस्तियाँ जो उलट दी गईं? उन के रसूल* उन के पास खुली निशानियाँ ले कर आये। फिर यह नहीं होने का कि अल्लाह उन पर ज़ुल्म करता, परन्तु वे आप ही अपने पर ज़ुल्म करते थे। ○

ईमान* वाले पुरुष और ईमान वाली स्त्रियाँ ये सब एक-दूसरे के संरक्षक-मित्र हैं; भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं, और नमाज़* क़ायम रखते हैं, और ज़कात* देते हैं, और अल्लाह और उस के रसूल* का कहना मानते हैं। ये वे लोग हैं जिन पर अल्लाह दया करेगा। निस्सन्देह अल्लाह अपार शक्ति का मालिक और हिकमत* वाला है। ○ इन

---

[३४] अर्थात् भलाई से वे अपने हाथ रोके रखते हैं। न वे नेक कामों की ओर लपकते हैं और न नेकी और भलाई के कामों में कुछ ख़र्च करना जानते हैं।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

فأعقبهم نفاقا في قلوبهم إلى يوم يلقونه بما أخلفوا الله
ما وعدوه وبما كانوا يكذبون ۝ ألم يعلموا أن الله يعلم
سرهم ونجواهم وأن الله علام الغيوب ۝ الذين
يلمزون المطوعين من المؤمنين في الصدقات والذين
لا يجدون إلا جهدهم فيسخرون منهم سخر الله منهم
ولهم عذاب أليم ۝ استغفر لهم أو لا تستغفر لهم إن
تستغفر لهم سبعين مرة فلن يغفر الله لهم ذلك
بأنهم كفروا بالله ورسوله والله لا يهدي القوم الفاسقين ۝
فرح المخلفون بمقعدهم خلاف رسول الله وكرهوا أن
يجاهدوا بأموالهم وأنفسهم في سبيل الله وقالوا لا
تنفروا في الحر قل نار جهنم أشد حرا لو كانوا
يفقهون ۝ فليضحكوا قليلا وليبكوا كثيرا جزاء بما كانوا
يكسبون ۝ فإن رجعك الله إلى طائفة منهم فاستأذنوك
للخروج فقل لن تخرجوا معي أبدا ولن تقاتلوا معي
عدوا إنكم رضيتم بالقعود أول مرة فاقعدوا مع الخالفين ۝
ولا تصل على أحد منهم مات أبدا ولا تقم على قبره
إنهم كفروا بالله ورسوله وماتوا وهم فاسقون ۝ ولا

ईमान* वाले पुरुषों और ईमान* वाली स्त्रियों से अल्लाह ने ऐसे बाग़ों का वादा किया है जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी, जिन में वे सदैव रहेंगे— सदा-बहार बाग़ों में (उन के लिए) रहने के पाक घर होंगे।— और अल्लाह की ख़ुशी और रज़ा-मन्दी तो सब से बड़ी चीज़ है! यही बड़ी सफलता है। ○

हे नबी*! काफ़िरों* और मुनाफ़िक़ों* से जिहाद* करो! और उन के साथ सख़्ती से पेश आओ। उन का ठिकाना दोज़ख़* है और वह क्या ही बुरी पहुँचने की जगह है। ○ ये लोग अल्लाह की क़समें खाते हैं कि हम ने नहीं कहा, हालांकि इन्हों ने निश्चय ही कुफ़्र* की बात कही है, और अपने इस्लाम* (धारण करने) के बाद कुफ़्र* किया है। और उस की फ़िक्र की जिसे प्राप्त न कर सके,[35] और इन्हों ने केवल इस का बदला दिया है कि अल्लाह और उस के रसूल* ने अपने फ़ज़्ल (कृपा) से इन्हें धनी कर दिया[36]। तो यदि ये तौबः* कर लें तो इन्हीं के लिए अच्छा होगा; और यदि इन्हों ने मुँह मोड़ा, तो अल्लाह इन्हें दुनियाँ और आख़िरत* में दुःख देने वाला अज़ाब देगा, और ज़मीन में इन का कोई संरक्षक-मित्र और सहायक न होगा। ○

इन में कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्हों ने अल्लाह को वचन दिया था कि यदि उस ने हमें अपने फ़ज़्ल (कृपा) से दिया तो हम अवश्य सदक़ः* करेंगे और निश्चय ही नेक लोगों में से हो जायेंगे। ○ परन्तु जब अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल (कृपा) से दिया, तो वे उस में कंजूसी करने लगे और बे-परवाह हो कर (अपने किये हुये वादे से) फिर गये; ○ तो इस का परिणाम यह हुआ कि उस ने उन के दिलों में निफ़ाक़* डाल दिया उस दिन तक के लिए जब कि वे उस से मिलेंगे, इस लिए कि उन्हों ने प्रणोल्लंघन किया अल्लाह से उस प्रण में जो उन्हों ने उस से किया था, और इस लिए कि वे झूठ बोलते थे। ○ क्या उन्हों ने नहीं जाना कि अल्लाह उन का भेद और उन की काना-फूसी को अच्छी तरह जानता है, और यह कि अल्लाह ग़ैबों (परोक्ष की बातों) का बड़ा जानने वाला है? ○ जो लोग, स्वेच्छा पूर्वक सदक़ः* करने वाले ईमान* वालों पर चोटें करते हैं और उन लोगों की हँसी उड़ाते हैं जिन के पास (अल्लाह की राह में ख़र्च करने को) उस के सिवा और कुछ नहीं जो वे अपने ऊपर मशक़्क़त बरदाश्त कर लें — अल्लाह ने उन (हँसी उड़ाने

---

३५ अर्थात् इन की सारी चालें और योजनायें असफल हो कर रह गईं।

३६ धनी करने का अर्थ यह है कि ... पहले की-सी दशा इन की नहीं रही। अब मदीना अरब देश की राज-धानी बन गया, 'औस' और 'ख़ज़रज' के लोगों को जो केवल किसान थे राज-काज में भाग लेने का अवसर मिल रहा है। और इस नगर पर ईश कृपा की वर्षा होने लगी है; इन के हाथ ग़नीमत* आ रही है। व्यापार की सुविधायें अलग प्राप्त होने लगी हैं।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

वालों) की हँसी उड़ाई है[३७]। और उन के लिए दुःख देने वाला अज़ाब है। ○ (हे नबी* !) तुम उन के लिए क्षमा की प्रार्थना करो, या क्षमा की प्रार्थना न करो; यदि तुम सत्तर बार भी उन के लिए क्षमा की प्रार्थना करोगे तो भी अल्लाह उन्हें कदापि क्षमा नहीं करेगा। यह इस लिए कि उन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल* से कुफ़्र* किया है, और अल्लाह सीमोल्लंघन करने वालों को (सीधी) राह नहीं ८० दिखाता। ○ पीछे रह जाने वाले अल्लाह के रसूल* का साथ छोड़ कर अपने बैठे रहने पर ख़ुश हुये, उन्हें यह नापसन्द हुआ कि अल्लाह की राह में अपने मालों और अपने प्राणों से जिहाद* करें। और उन्हों ने कहा : इस गर्मी में न निकलो ! कह दो : दोज़ख़* की आग बहुत अधिक गर्म है, क्या ही अच्छा होता यदि वे समझते। ○ अब चाहिए कि ये हँसें कम और रोयें ज़्यादा, उस के बदले में जिसे ये कमाते रहे हैं। ○ तो यदि अल्लाह तुम्हें इन के किसी गरोह की ओर वापस ले जाये फिर ये लोग तुम से (जिहाद* के लिए) निकलने की इजाज़त चाहें, तो कह देना : तुम मेरे साथ कभी नहीं निकल सकते और न मेरे साथ हो कर किसी दुश्मन से लड़ सकते हो। तुम ने तो पहली बार बैठ रहने को पसन्द किया तो अब पीछे रहने वालों के साथ बैठे रहो। ○

तُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَأَوْلَادُهُمْ ۚ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُعَذِّبَهُمْ بِهَا
فِي الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ ۝ وَإِذَا أُنْزِلَتْ
سُورَةٌ أَنْ آمِنُوا بِاللَّهِ وَجَاهِدُوا مَعَ رَسُولِهِ اسْتَأْذَنَكَ أُولُو
الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوا ذَرْنَا نَكُنْ مَعَ الْقَاعِدِينَ ۝ رَضُوا بِأَنْ يَكُونُوا
مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ۝ لَٰكِنِ
الرَّسُولُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ جَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ ۚ
وَأُولَٰئِكَ لَهُمُ الْخَيْرَاتُ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ
جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ
الْعَظِيمُ ۝ وَجَاءَ الْمُعَذِّرُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ
الَّذِينَ كَذَبُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ سَيُصِيبُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَاءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضَىٰ وَلَا
عَلَى الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ مَا يُنْفِقُونَ حَرَجٌ إِذَا نَصَحُوا لِلَّهِ وَ
رَسُولِهِ ۚ مَا عَلَى الْمُحْسِنِينَ مِنْ سَبِيلٍ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ وَلَا
عَلَى الَّذِينَ إِذَا مَا أَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَا أَجِدُ مَا أَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ
تَوَلَّوْا وَأَعْيُنُهُمْ تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا أَلَّا يَجِدُوا مَا يُنْفِقُونَ ۝
إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ وَهُمْ أَغْنِيَاءُ ۚ رَضُوا بِأَنْ
يَكُونُوا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝

और (हे नबी* !) इन में से जो कोई मरे तुम कभी उस पर (जनाज़े की) नमाज़ न पढ़ना, और न उस की क़ब्र पर खड़े होना। निस्सन्देह इन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल* के साथ कुफ़्र* किया, और मरे तो इस दशा में कि (अल्लाह की निश्चित की हुई) सीमा का उल्लंघन करने वाले थे। ○ उन के माल और उन की औलाद तुम्हारे लिए अचम्भे का कारण न बनें ! अल्लाह तो यही चाहता है कि इन चीज़ों के द्वारा उन्हें दुनियाँ में अज़ाब दे, और ८५ उन के प्राण इस दशा में निकलें कि वे काफ़िर* हों। ○

जब कभी कोई सूरः* (इस विषय में) उतरती है कि अल्लाह पर ईमान* लाओ और उस के रसूल* के साथ हो कर जिहाद* करो, तो जो लोग उन में सामर्थ्यवान् हैं वही तुम से इजाज़त चाहने लगते हैं और कहते हैं : हमें छोड़ दो कि हम बैठने वालों के साथ (घर ही पर) रहें। ○ उन्हों ने पसन्द किया कि घर बैठने वालियों के साथ रह जायें और उन के दिलों पर ठप्पा लगा दिया गया, इस लिए वे कुछ भी नहीं समझते। ○ परन्तु रसूल* ने और उन लोगों

---

[३७] 'तबूक' की लड़ाई की तैयारी के समय ईमान* वालों में जो लोग बढ़-चढ़ कर चन्दा (सामूहिक अनुदान) देने का सामर्थ्य रखते थे वे बढ़-चढ़ कर चन्दा देने लगे। मुनाफ़िक़* उन पर चोटें करने लग गये कि ये केवल लोगों को दिखाने के लिए अपना माल ख़र्च कर रहे हैं। और यदि कोई ग़रीब मुसलमान मेहनत-मज़दूरी कर के कुछ खजूरें लाता और नबी सल्ल०* की सेवा में हाज़िर करता या अपना और अपने बाल-बच्चों का पेट काट कर एक छोटी-सी रक़म पेश करता तो मुनाफ़िक़* उस की हँसी उड़ाते।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

يَعْتَذِرُونَ إِلَيْكُمْ إِذَا رَجَعْتُمْ إِلَيْهِمْ ۚ قُل لَّا تَعْتَذِرُوا لَن
نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّأَنَا اللَّهُ مِنْ أَخْبَارِكُمْ ۚ وَسَيَرَى اللَّهُ عَمَلَكُمْ
وَرَسُولُهُ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عَالِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا
كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ سَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَكُمْ إِذَا انقَلَبْتُمْ إِلَيْهِمْ
لِتُعْرِضُوا عَنْهُمْ ۖ فَأَعْرِضُوا عَنْهُمْ ۖ إِنَّهُمْ رِجْسٌ ۖ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ
جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝ يَحْلِفُونَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ۖ فَإِن
تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَرْضَىٰ عَنِ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ۝ الْأَعْرَابُ
أَشَدُّ كُفْرًا وَنِفَاقًا وَأَجْدَرُ أَلَّا يَعْلَمُوا حُدُودَ مَا أَنزَلَ اللَّهُ عَلَىٰ
رَسُولِهِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَن يَتَّخِذُ مَا يُنفِقُ
مَغْرَمًا وَيَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَائِرَ ۚ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْءِ ۗ وَاللَّهُ
سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَن يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ
وَيَتَّخِذُ مَا يُنفِقُ قُرُبَاتٍ عِندَ اللَّهِ وَصَلَوَاتِ الرَّسُولِ ۚ أَلَا إِنَّهَا
قُرْبَةٌ لَّهُمْ ۚ سَيُدْخِلُهُمُ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝
وَالسَّابِقُونَ الْأَوَّلُونَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنصَارِ وَالَّذِينَ اتَّبَعُوهُم
بِإِحْسَانٍ رَّضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي
تَحْتَهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ وَمِمَّنْ
حَوْلَكُم مِّنَ الْأَعْرَابِ مُنَافِقُونَ ۖ وَمِنْ أَهْلِ الْمَدِينَةِ ۖ مَرَدُوا

ने जो उस के साथ ईमान* लाये थे अपने मालों और अपने प्राणों से जिहाद* किया। यही लोग हैं जिन के लिए (सारी) भलाइयाँ हैं। और यही सफ़लता प्राप्त करने वाले हैं। ○ अल्लाह ने उन के लिए बाग़ तैयार कर रखे हैं जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, उन में वे सदैव रहेंगे। यही सब से बड़ी सफ़लता है। ○

बद्दू अरबों में से भी उज़्र करने वाले आये ताकि उन्हें (घर रहने की) इजाज़त दे दी जाये। और जो लोग अल्लाह और उस के रसूल* से झूठ बोले थे वे (घर) बैठ रहे। इन लोगों को जिन्हों ने कुफ़्र* किया है जल्द ही दुःख देने वाला अज़ाब* पहुँचेगा। ○ ९०

न तो कमज़ोरों के लिए (घर पर ठहरे रहने में) कोई दोष है और न बीमारों के लिए और न उन लोगों के लिए जिन के पास (जिहाद* के सफ़र के लिए) ख़र्च करने को कुछ नहीं है। जब कि वे अल्लाह और उस के रसूल* के प्रति निष्ठा रखने वाले हों। ऐसे सत्कर्मी लोगों के विरुद्ध (इलज़ाम की) कोई राह नहीं। और अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है। ○ और न उन लोगों के विरुद्ध (इलज़ाम की कोई राह है) कि जब तुम्हारे पास आये कि तुम उन के लिए सवारी का प्रबन्ध कर दो, तुम ने कहा: मेरे पास तो कोई चीज़ नहीं कि तुम्हें उस पर सवार करूँ। वे लौट गये, इस ग़म में उन की आँखों से आँसू बह रहे थे कि उन्हें कुछ प्राप्त नहीं जिसे (अल्लाह की राह में) ख़र्च कर सकें। ○ (इलज़ाम की) राह तो केवल उन के विरुद्ध है जो धनवान होते हुए तुम से (घर रहने की) इजाज़त चाहते हैं। उन्हों ने पसन्द किया कि पीछे रह जाने वालों के साथ रह जायें। और अल्लाह ने उन के दिलों पर ठप्पा लगा दिया सो वे कुछ नहीं जानते। ○

†जब तुम पलट कर उन के पास पहुँचोगे तो वे तुम्हारे सामने उज़्र पेश करेंगे। तुम कह देना: बहाने न करो, हम तुम्हारा विश्वास नहीं करेंगे। हमें अल्लाह ने तुम्हारे वृत्तान्त बता दिये हैं। अभी अल्लाह और उस का रसूल* तुम्हारे काम देखेगा, फिर तुम उस की ओर लौटाये जाओगे जो छिपे और खुले सब का जानने वाला है, फिर जो-कुछ तुम करते रहे हो वह सब तुम्हें बतायेगा। ○ जब तुम पलट कर उन के पास जाओगे, तो वे तुम्हारे सामने अल्लाह की क़समें खायेंगे ताकि तुम उन्हें छोड़ दो। सो तुम उन्हें छोड़ ही दो। वे नापाक (अशुद्ध) हैं, और जो-कुछ वे कमाते रहे हैं उस के बदले में उन का ठिकाना दोज़ख़* है। ○ वे तुम्हारे सामने ९६ क़समें खायेंगे ताकि तुम उन से राज़ी हो जाओ। सो यदि तुम उन से राज़ी हो भी गये, तो अल्लाह कभी भी ऐसे लोगों से राज़ी न होगा जो (उस की निश्चित की हुई) सीमा का उल्लंघन करने वाले हैं। ○

ये अरब बद्दू कुफ़्र* और निफ़ाक़* (कपट नीति) में बहुत ही सख़्त हैं, और ये इसी बात

† ग्यारहवाँ पारः (Part XI) शुरू होता है।

* अर्थ परिशिष्ट में आयी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

عَلَى النِّفَاقِ لَا تَعْلَمُهُمْ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ سَنُعَذِّبُهُمْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ
يُرَدُّونَ إِلَىٰ عَذَابٍ عَظِيمٍ ۝ وَآخَرُونَ اعْتَرَفُوا بِذُنُوبِهِمْ خَلَطُوا
عَمَلًا صَالِحًا وَآخَرَ سَيِّئًا عَسَى اللَّهُ أَنْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ إِنَّ اللَّهَ
غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ خُذْ مِنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيهِمْ بِهَا
وَصَلِّ عَلَيْهِمْ إِنَّ صَلَاتَكَ سَكَنٌ لَهُمْ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ أَلَمْ
يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَأْخُذُ الصَّدَقَاتِ وَأَنَّ
اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۝ وَقُلِ اعْمَلُوا فَسَيَرَى اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَ
رَسُولُهُ وَالْمُؤْمِنُونَ وَسَتُرَدُّونَ إِلَىٰ عَالِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ
بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ وَآخَرُونَ مُرْجَوْنَ لِأَمْرِ اللَّهِ إِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَ
إِمَّا يَتُوبُ عَلَيْهِمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مَسْجِدًا
ضِرَارًا وَكُفْرًا وَتَفْرِيقًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِينَ وَإِرْصَادًا لِمَنْ حَارَبَ اللَّهَ
وَرَسُولَهُ مِنْ قَبْلُ وَلَيَحْلِفُنَّ إِنْ أَرَدْنَا إِلَّا الْحُسْنَىٰ وَاللَّهُ يَشْهَدُ
إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝ لَا تَقُمْ فِيهِ أَبَدًا لَمَسْجِدٌ أُسِّسَ عَلَى التَّقْوَىٰ
مِنْ أَوَّلِ يَوْمٍ أَحَقُّ أَنْ تَقُومَ فِيهِ فِيهِ رِجَالٌ يُحِبُّونَ أَنْ يَتَطَهَّرُوا
وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِينَ ۝ أَفَمَنْ أَسَّسَ بُنْيَانَهُ عَلَىٰ تَقْوَىٰ مِنَ
اللَّهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ أَمْ مَنْ أَسَّسَ بُنْيَانَهُ عَلَىٰ شَفَا جُرُفٍ هَارٍ
فَانْهَارَ بِهِ فِي نَارِ جَهَنَّمَ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝ لَا

के अधिक योग्य हैं कि उस की सीमाओं को न जान सकें जिसे अल्लाह ने अपने रसूल* पर उतारा है। अल्लाह (सब-कुछ) जानने वाला और हिकमत* वाला है। ○ और अरब बद्दुओं में कुछ लोग ऐसे भी हैं कि वे जो-कुछ (अल्लाह की राह में) खर्च करते हैं उसे तावान समझते हैं, और तुम्हारे हक़ में गर्दिशों (आपत्तियों) का इन्तज़ार कर रहे हैं। (हालांकि) बुरे चक्कर में तो वही फँसने वाले हैं। और अल्लाह (सब-कुछ) सुनता और जानता है। ○ और अरब बद्दुओं में वे लोग भी हैं जो अल्लाह और अन्तिम दिन[३८] पर ईमान* रखते हैं, और जो-कुछ खर्च करते हैं उसे अल्लाह से क़रीब होने और रसूल* की दुआयें (आशीर्वाद) लेने का साधन बनाते हैं। हां! अवश्य यह उन के लिए (अल्लाह से) निकटता (का साधन) है। अल्लाह उन्हें अवश्य अपनी दयालुता (के छाये) में दाखिल करेगा। निस्सन्देह अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है। ○

(ईमान* की पुकार पर) आगे बढ़ने वाले मुहाजिर*[३९] और अनसार*[४०] अग्रसर रहे और वे लोग जिन्हों ने अच्छी तरह उन का अनुवर्तन किया—अल्लाह उन से राज़ी हुआ और वे उस से राज़ी हुये, और उस ने (अल्लाह ने) उन के लिए बाग़ तैयार कर रखे हैं जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, वे उन में सदैव रहेंगे। यही बड़ी सफलता है। ○

तुम्हारे आस-पास के बहुत से बद्दू मुनाफ़िक़* (कपटाचारी) हैं, और मदीना के लोगों में भी कुछ ऐसे हैं जो निफ़ाक़* (कपट-नीति) में पक्के हो गये हैं तुम उन्हें नहीं जानते। हम उन्हें जानते हैं, जल्द ही हम उन्हें दोहरी सज़ा देंगे; फिर वे बड़े अज़ाब की ओर लौटाये जायेंगे। ○

कुछ और लोग हैं जिन्हों ने अपने गुनाहों का इक़रार कर लिया। उन्हों ने मिले-जुले काम किये कुछ अच्छे और कुछ बुरे। हो सकता है कि अल्लाह उन पर मेहरबान हो जाये। निस्सन्देह अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है। ○ (हे नबी*!) तुम उन के मालों में से सदक़:* ले कर उन्हें पाक करो और उन (की आत्मा) को विकसित करो, और उन के लिए दुआ करो। निस्सन्देह तुम्हारी दुआ उन के लिए सन्तोष-निधि है। और अल्लाह (सब-कुछ) सुनने और जानने वाला है। ○ क्या वे जानते नहीं कि अल्लाह ही है जो अपने बन्दों की तौब:* क़ुबूल करता है और वही (उन के) सदक़ों* को क़ुबूल करता है, और यह कि अल्लाह बहुत तौब:* क़ुबूल करने वाला और दयावान् है। ○ और (हे नबी*! उन से) कह दो कि तुम (अपना) काम करो! अभी अल्लाह और उस का रसूल* और ईमान* वाले तुम्हारे काम

३८ देखो सूरः अल-बक़र: फुट नोट ५।
३९ हिजरत* करने वाले।
४० मदीना के वे मुसलमान जिन्हों ने नबी सल्ल० और अपने मुहाजिर* भाइयों का स्वागत किया, और नबी (सल्ल०) के लाये हुये दीन* की सेवा में तन-मन-धन से लग गये।
* इन का अर्थ अन्त में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِي بَنَوْا رِيبَةً فِي قُلُوبِهِمْ إِلَّا أَنْ تَقَطَّعَ قُلُوبُهُمْ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَى مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ
وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ
وَيُقْتَلُونَ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرٰىةِ وَالْإِنْجِيلِ وَالْقُرْآنِ وَ
مَنْ أَوْفَى بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ فَاسْتَبْشِرُوا بِبَيْعِكُمُ الَّذِي بَايَعْتُمْ بِهِ
وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ التَّائِبُونَ الْعٰبِدُونَ الْحٰمِدُونَ السَّائِحُونَ
الرّٰكِعُونَ السّٰجِدُونَ الْآمِرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّاهُونَ عَنِ الْمُنْكَرِ
وَالْحٰفِظُونَ لِحُدُودِ اللَّهِ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ۝ مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ
وَالَّذِينَ آمَنُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا أُولِي قُرْبٰى
مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحٰبُ الْجَحِيمِ ۝ وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ
إِبْرٰهِيمَ لِأَبِيهِ إِلَّا عَنْ مَوْعِدَةٍ وَعَدَهَا إِيَّاهُ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ أَنَّهُ
عَدُوٌّ لِلَّهِ تَبَرَّأَ مِنْهُ إِنَّ إِبْرٰهِيمَ لَأَوَّاهٌ حَلِيمٌ ۝ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِلَّ
قَوْمًا بَعْدَ إِذْ هَدٰىهُمْ حَتّٰى يُبَيِّنَ لَهُمْ مَا يَتَّقُونَ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ
شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ إِنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ يُحْيِي وَيُمِيتُ
وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝ لَقَدْ تَابَ اللَّهُ عَلَى
النَّبِيِّ وَالْمُهٰجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ فِي سَاعَةِ الْعُسْرَةِ
مِنْ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيغُ قُلُوبُ فَرِيقٍ مِنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ إِنَّهُ بِهِمْ

देखेंगे (कि वह अब कैसा रहता है), फिर तुम छिपे और खुले सब के जानने वाले (अल्लाह) की ओर पलटाये जाओगे, फिर जो-कुछ तुम करते रहे हो वह सब तुम्हें बता देगा। ○

और कुछ दूसरे लोग हैं जिन का मामला अल्लाह के हुक्म पर ठहरा हुआ है, वह चाहे उन्हें सज़ा दे या चाहे उन पर फिर से मेहरबान हो जाये। अल्लाह (सब-कुछ) जानने वाला और हिकमत* वाला है। ○

और कुछ लोग ऐसे हैं जिन्हों ने इस लिए एक मसजिद बनाई कि हानि पहुँचायें और कुफ़्र* करें, और ईमान* वालों के बीच फूट डालें,[41] और उस व्यक्ति के लिए घाँग (घातस्थल) बनायें जो इस से पहले अल्लाह और उस के रसूल* से लड़ चुका है,[42] वे अवश्य क़समें खायेंगे कि भलाई के सिवा हम ने कोई दूसरा इरादा नहीं किया था। परन्तु अल्लाह गवाही देता है कि वे झूठे हैं। ○ तुम कदापि उस (मसजिद) में (नमाज़* के लिए) न खड़े होना। हाँ वह मसजिद जिस की बुनियाद पहले दिन से तक़्वा* (संयम) पर रखी गई है वही इस का ज़्यादा हक़ रखती है कि तुम उस में (नमाज़* के लिए) खड़े हो, उस में ऐसे पुरुष हैं जो पाक (शुद्ध) रहना पसन्द करते हैं। और अल्लाह पाक रहने वालों ही को पसन्द करता है। ○ क्या वह मनुष्य अच्छा है जिस ने अपनी इमारत (भवन) की बुनियाद अल्लाह के तक़्वा* और (उस की) ख़ुशी और रज़ामन्दी (की इच्छा) पर रखी; या वह जिस ने अपनी इमारत की बुनियाद किसी खाई के खोखले कगर पर उठाई जो गिरने ही को है फिर वह उसे ले कर दोज़ख़* की आग में जा गिरा ? ऐसे ज़ालिमों को अल्लाह (सीधी) राह नहीं दिखाता। ○ उन की यह इमारत जो उन्हों ने बनाई है निरन्तर उन के दिलों में सन्देह (की जड़) बनी रहेगी (जिस के निकलने की अब कोई राह नहीं) सिवाय इस के कि उन के दिल ही टुकड़े-टुकड़े हो जायें। अल्लाह (सब-कुछ) जानने वाला और हिकमत* वाला है। ○

४१ मुनाफ़िक़ों* ने मदीने में अपनी एक अलग मसजिद बनाई थी ताकि मुसलमानों से बच कर अपना अलग जत्था बना सकें। और वहाँ मुसलमानों के विरुद्ध विचार-विमर्श के लिए एकत्र हो सकें। उस समय मदीने में दो मसजिदें और थीं। किसी तीसरी मसजिद की ज़रूरत नहीं थी। मुनाफ़िक़ों ने इस बहाने से कि बीमारों और बूढ़ों को उन दोनों मसजिदों तक पहुँचने में तकलीफ़ होती है यह मसजिद बनाई और नबी सल्ल० से कहा कि आप (सल्ल०) उस में एक बार नमाज़ पढ़ दें। नबी सल्ल० ने कहा कि इस समय तो हम लड़ाई की तैयारी में लगे हुये हैं वापसी पर देखा जायगा। जब आप (सल्ल०) वापस हुये तो रास्ते ही में ये आयतें* उतरीं। आप (सल्ल०) ने उसी समय कुछ आदमियों को भेजा कि वे आप (सल्ल०) के मदीना पहुँचने से पहले ही उस मसजिद को ढा दें।

४२ 'उस व्यक्ति' से यहाँ अबू आमिर नामक एक ईसाई संन्यासी की ओर संकेत किया गया है। इस्लाम* के विरोध में इस व्यक्ति ने वह सब-कुछ किया जो कर सकता था। इस ने "क़ुरैश*" और अरब के दूसरे क़बीलों को इस्लाम का दुश्मन बनाने में अपना पूरा ज़ोर लगा दिया। जब इस ने देखा कि मक्का वाले इस्लाम

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

निस्सन्देह अल्लाह ने ईमान* वालों से उन के प्राणों और उन के मालों को इस के बदले में ख़रीद लिया है कि उन के लिए जन्नत* है : वे अल्लाह की राह में लड़ते हैं सो वे मारते भी हैं और मारे भी जाते हैं। यह अल्लाह के ज़िम्मे (जन्नत* का) एक पक्का वादा है तौरात* और इंजील और क़ुरआन में[43]। और अल्लाह से बढ़ कर अपने वादे का पूरा करने वाला कौन हो सकता है? सो अपने उस सौदे पर ख़ुशी मनाओ जो सौदा तुम ने उस से किया है, और यही बड़ी सफलता है। ○ तौबः* करने वाले, इबादत* करने वाले, हम्द* (गुण-गान) करने वाले, (अल्लाह की राह में) भ्रमण करने वाले, (अल्लाह के आगे) झुकने वाले, सजदः* करने वाले, भलाई का हुक्म देने वाले और बुराई से रोकने वाले और अल्लाह की (निश्चित की हुई) सीमाओं की रक्षा करने वाले (ऐसे होते हैं वे ईमान वाले जो अल्लाह के हाथ सौदा का मामला करते हैं)।—और (हे नबी* !) इन ईमान* वालों को शुभ-सूचना दे दो। ○

नबी* के लिए, और ईमान* वालों के लिए, उचित नहीं कि वे मुश्रिकों* के लिए क्षमा की प्रार्थना करें चाहे वे उन के नातेदार ही क्यों न हों जब कि उन पर यह बात खुल गई कि वे दोज़ख़* (में जाने) वाले हैं। ○ और इबराहीम ने अपने बाप के लिए जो क्षमा की प्रार्थना की थी वह तो केवल एक वादे के कारण की थी जो वादा उस ने उस से कर लिया था,[44] पर जब उस पर यह बात खुल गई कि वह अल्लाह का दुश्मन है तो वह उस से विरक्त हो गया। निस्सन्देह इबराहीम बहुत ही कोमल-हृदय वाला और सहनशील (व्यक्ति) था। ○

यह नहीं होने का कि अल्लाह लोगों को राह दिखाने के बाद फिर गुमराह कर दे जब तक कि उन्हें साफ़-साफ़ वे बातें बता न दे जिन से उन्हें बचना है। निस्सन्देह अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। ○ निस्सन्देह आसमानों और ज़मीन का राज्य अल्लाह ही का है। वही जिलाता और मारता है। अल्लाह के सिवा न तो तुम्हारा कोई संरक्षक-मित्र है और न कोई सहायक। ○ ११

अल्लाह नबी* पर मेहरबान हो गया, और मुहाजिरों* और अनसार*[45] पर जिन्हों ने कठिन समय में नबी* का साथ दिया। यद्यपि उन में से एक गिरोह के दिल कजी (कुटिलता) की ओर झुक जाने के क़रीब थे, फिर वह (अर्थात् अल्लाह) उन पर मेहरबान हुआ। निस्सन्देह वह इन लोगों के लिए करुणामय और दयाशील है। ○ और उन तीनों पर भी (वह मेहरबान हो गया) जो पीछे छोड़ दिये गये थे,[46] जब ज़मीन, विशाल होते हुए भी, उन पर तंग हो गई,

---

इस्लाम को नहीं दबा सके, तो इस ने रोम देश की यात्रा की ताकि क़ैसर को इस्लाम के मुक़ाबिले के लिए खड़ा कर सके। इसी मौक़े पर नबी सल्ल० को यह ख़बर मिली थी कि क़ैसर अरब पर आक्रमण करने की तैयारियाँ कर रहा है। इसी की रोक-थाम के लिए नबी सल्ल० को तबूक की मुहिम पर जाने की ज़रूरत पेश आई थी।

४३ दे० इंजील (Gospel) 'मत्ती' (Matthew) ५ : १० और १० : ३९ और १९ : २९, ३९। वर्तमान तौरात* (Torah) में इस वादे का उल्लेख नहीं है। परन्तु इस का मतलब यह कदापि नहीं कि तौरात इस बयान से ख़ाली थी। इस का कारण केवल यह है कि क़ुरआन के सिवा दूसरी आसमानी किताबें आज अपने वास्तविक रूप में पाई नहीं जातीं; उन में लोगों ने बहुत-कुछ अपनी ओर से घटा-बढ़ा दिया है।

४४ यह संकेत उस बात की ओर है जो हज़रत इबराहीम अ० ने अपने मुश्रिक* बाप से अलग होते समय कही थी। दे० सूरः मरयम आयत ४७। हज़रत इबराहीम अ० ने अपने बाप के लिए जो प्रार्थना की थी उस का वर्णन सूरः अश-शुअरा आयत ८६-८९ में मिलता है।

४५ दे० फ़ुट नोट ३९ व ४०।

४६ अर्थात् जिन के मामले को मुलतवी (स्थगित) कर दिया गया था।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

और उन की जानें उन पर दूभर हो गईं और उन्हों ने समझा कि अल्लाह (की पकड़) से कहीं और पनाह नहीं मिल सकती मिल सकती है तो उसी के यहाँ। तो वह (अल्लाह) अपनी मेहरबानी से उन की ओर पलटा ताकि वे (भी उस की ओर) पलट आयें[१०७]। निसन्देह अल्लाह तो बड़ा तौबः* क़बूल करने वाला और दया करने वाला है। ○

हे ईमान* लाने वालो! अल्लाह की अवज्ञा से बचो और उस की ना-ख़ुशी से डरते रहो, और सच्चे लोगों के साथ रहो। मदीने के निवासियों और उन के आस-पास के अरब बद्दुओं को ऐसा नहीं चाहिए था कि अल्लाह के रसूल* को छोड़ कर पीछे रह जायें और न यह कि उन्हें उस की जान के मुक़ाबिले में अपनी जानें प्रिय हों। यह इस लिए कि वे अल्लाह की राह में प्यास या थकान या भूख की कोई भी तकलीफ़ झेलें या कोई ऐसा क़दम उठायें जो काफ़िरों* के क्रोध का कारण बने या दुश्मन को कोई क्षति पहुँचायें इस पर उन के हक़ में एक सुकर्म लिख लिया जाता है। निसन्देह अल्लाह सत्कर्मी लोगों का बदला (कर्मफल) अकारथ नहीं करता। ○ और वे थोड़ा या ज़्यादा जो भी ख़र्च करें, या (अल्लाह की राह में) कोई घाटी पार करें उन के हक़ में लिख लिया जाता है, ताकि अल्लाह उन्हें उन के अच्छे कामों का बदला प्रदान करे। ○

यह तो नहीं हो सकता था कि ईमान* वाले सब-के-सब निकल खड़े होते। तो ऐसा क्यों न हुआ कि उन के हर गरोह में से, एक टोली निकलती, ताकि वे (लोग) दीन में समझ पैदा करते, और ताकि वे लोग अपने लोगों को सचेत करते जब कि वे उन की ओर पलटते, ताकि वे (बुरे कर्मों से) बचते[१०८]। ○

हे ईमान* लाने वालो! उन काफ़िरों* से लड़ो जो तुम्हारे आस-पास हैं,[१०९] और चाहिए

---

१०७ नबी सल्ल० जब 'तबूक' से मदीना लौट कर आये तो पीछे रह जाने वाले आप (सल्ल०) की सेवा में हाज़िर हुये ताकि मुहिम पर न जाने का उ़ज्र पेश करें। उ़ज्र पेश करने वालों में अधिकतर ८० से कुछ अधिक मुनाफ़िक़* थे वहीं तीन ऐसे व्यक्ति भी थे जो अल्लाह और रसूल* पर सच्चे दिल से ईमान* रखते थे, परन्तु अपनी ग़फ़लत और सुस्ती के कारण मुहिम पर नहीं जा सके थे। इन तीनों व्यक्तियों के नाम हैं : कअब-बिन मालिक, हिलाल-बिन-उमय्या और मुरारा बिन रबीअ। मुनाफ़िक़ों ने झूठे उज़्र पेश किये जिसे नबी सल्ल० ने क़बूल कर लिया। परन्तु जब इन तीनों आदमियों की बारी आई तो इन लोगों ने अपनी ग़लती मान ली। नबी सल्ल० ने इन तीनों आदमियों के मामले को अल्लाह पर छोड़ दिया। और मुसलमानों को हुक्म दे दिया कि जब तक अल्लाह का कोई आदेश न आये इन से किसी प्रकार का सामाजिक सम्बन्ध न रखा जाये। कोई इन से सलाम-कलाम न करे। ४० दिन बीतने के बाद इन की पत्नियों को भी इन से अलग रहने का हुक्म दे दिया गया। नतीजा यह हुआ कि वे जीने से तंग आ गये। दुनियाँ में इन के लिए ख़ुशी की कोई चीज़ बाक़ी न रही। अन्त में जब ५० दिन इसी दशा में गुज़र गये तब जा कर यह आदेश उतरा।

१०८ आयत ९७ में यह बात आ चुकी है : "ये अरब बद्दू कुफ़्र* और निफ़ाक़* (कपट) में बहुत ही सख़्त हैं और ये इसी बात के अधिक योग्य हैं कि उन की सीमाओं को न जान सकें जिन्हें अल्लाह ने अपने रसूल* पर उतारा है।" यहाँ कहा जा रहा है कि देहाती आबादी (बद्दुओं) को अज्ञान की दशा में न रहने देना चाहिए। बल्कि उन के अज्ञान को दूर करने और उन में इस्लामी चेतना उत्पन्न करने का प्रबन्ध होना चाहिए। इस के लिए यह युक्ति रखी कि देहात के प्रत्येक क्षेत्र और क़बीले [illegible] से कुछ आदमी निकल कर मदीना या किसी इस्लामी केन्द्र पर आ जायें और वहाँ दीन* [illegible] (Educational [illegible]) करें और फिर दीन* सीख कर अपनी-अपनी बस्तियों में जायें, और लोगों को [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

कि वे (अब) तुम में सख़्ती पायें, और जान रखो कि अल्लाह उन लोगों के साथ है जो उस की अवज्ञा से बचते और उस की ना-ख़ुशी से डरते रहते हैं। ○ जब कोई सूरः उतरती है तो उन (मुनाफ़िक़ों*) में से कुछ लोग (हंसी उड़ाते हुये मुसलमानों से) कहते हैं: तुम में से किस का ईमान* इस (सूरः*) ने बढ़ाया? सो जो लोग ईमान* लाये हैं उन का ईमान* तो इस ने (अवश्य) बढ़ाया है और वे ख़ुश हो रहे हैं। ○ और जिन लोगों के दिलों में (निफ़ाक़* का) रोग है, उन की ना-पाकी (गन्दगी) पर इस ने एक और ना-पाकी बढ़ा दी, और वे मरते समय तक काफ़िर* ही रहे। ○ क्या ये लोग देखते नहीं कि प्रत्येक वर्ष ये एक या दो बार आज़माये जाते हैं? परन्तु फिर भी ये तौबः* नहीं करते, और न चेतते हैं। ○ और जब कोई सूरः* उतरती है, तो ये एक-दूसरे को देखने लगते हैं कि तुम्हें कोई देख तो नहीं रहा है? फिर मुँह फेर कर निकल खड़े होते हैं। अल्लाह ने इन के दिलों को फेर दिया है क्योंकि ये ऐसे लोग हैं जो समझ नहीं रखते। ○

१२१

तुम्हारे पास तुम ही में से एक रसूल* आया हुआ है, तुम्हारा कष्ट (आपत्ति) में पड़ना उस के लिए असह्य है, वह तुम्हारा लालसी है,[५०] ईमान* वालों के लिए करुणामय और दयाशील है। ○ अब यदि ये लोग मुँह मोड़ लें तो (हे नबी*!) कह दो: मुझे अल्लाह काफ़ी है। उस के सिवा कोई इलाह* (पूज्य) नहीं। उसी पर मैंने भरोसा किया, और वही बड़े राज-सिंहासन का रब* (मालिक) है। ○

رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ۝ وَعَلَى الثَّلَٰثَةِ الَّذِينَ خُلِّفُوا حَتَّىٰ إِذَا ضَاقَتْ
عَلَيْهِمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ أَنفُسُهُمْ وَظَنُّوا أَن
لَّا مَلْجَأَ مِنَ اللَّهِ إِلَّا إِلَيْهِ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوبُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ هُوَ
التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَكُونُوا مَعَ
الصَّادِقِينَ ۝ مَا كَانَ لِأَهْلِ الْمَدِينَةِ وَمَنْ حَوْلَهُم مِّنَ
الْأَعْرَابِ أَن يَتَخَلَّفُوا عَن رَّسُولِ اللَّهِ وَلَا يَرْغَبُوا بِأَنفُسِهِمْ عَن
نَّفْسِهِ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ لَا يُصِيبُهُمْ ظَمَأٌ وَلَا نَصَبٌ وَلَا مَخْمَصَةٌ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَطَئُونَ مَوْطِئًا يَغِيظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُونَ مِنْ
عَدُوٍّ نَّيْلًا إِلَّا كُتِبَ لَهُم بِهِ عَمَلٌ صَالِحٌ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ
الْمُحْسِنِينَ ۝ وَلَا يُنفِقُونَ نَفَقَةً صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً وَلَا
يَقْطَعُونَ وَادِيًا إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ۝ وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَنفِرُوا كَافَّةً ۚ فَلَوْلَا نَفَرَ
مِن كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَائِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّينِ وَلِيُنذِرُوا
قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قَاتِلُوا
الَّذِينَ يَلُونَكُم مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوا فِيكُمْ غِلْظَةً ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّ
اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ۝ وَإِذَا مَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ فَمِنْهُم مَّن يَقُولُ
أَيُّكُمْ زَادَتْهُ هَٰذِهِ إِيمَانًا ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا فَزَادَتْهُمْ إِيمَانًا
وَهُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ۝ وَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ
رِجْسًا إِلَىٰ رِجْسِهِمْ وَمَاتُوا وَهُمْ كَافِرُونَ ۝ أَوَلَا يَرَوْنَ أَنَّهُمْ
يُفْتَنُونَ فِي كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوبُونَ وَلَا هُمْ
يَذَّكَّرُونَ ۝ وَإِذَا مَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ
هَلْ يَرَاكُم مِّنْ أَحَدٍ ثُمَّ انصَرَفُوا ۚ صَرَفَ اللَّهُ قُلُوبَهُم بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ
لَّا يَفْقَهُونَ ۝ لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا
عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُم بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ۝ فَإِن تَوَلَّوْا
فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۖ وَهُوَ رَبُّ
الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ۝

---

५० अर्थात् तुम्हारे ईमान* लाने का।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

१०--यूनुस

नाम (The Title)

इस सूरः* का नाम 'यूनुस' चिह्न के रूप में आयत ९८ से लिया गया है। इस सूरः में हज़रत मूसा अ० और हज़रत नूह अ० का क़िस्सा विस्तार पूर्वक बयान हुआ है, परन्तु सूरः की वार्त्ताओं का विशेष सम्पर्क ईश्वर के प्रकोप की अपेक्षा उस की कृपा और दया से है, ईश-कृपा का हज़रत यूनुस अ० के वृत्तान्त से प्रत्यक्ष सम्बन्ध है; इस लिए इस सूरः का नाम 'यूनुस' अत्यन्त उचित है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

सूरः के अध्ययन से अनुमान होता है कि यह सूरः नबी* सल्ल० के मक्की जीवन के अन्तिम समय में उतरी होगी जब कि इस्लाम*-विरोधियों का विरोध अपनी चरम सीमा को पहुँच चुका था। उन के बीच नबी सल्ल० और आप (सल्ल०) के साथियों का रहना उन के लिए असह्य हो गया था। अब उन से इस की आशा नहीं की जा सकती थी कि वे नबी सल्ल० की पुकार पर कान धरेंगे। अब वह समय आ गया था कि उन्हें उस परिणाम से सूचित कर दिया जाये जिस से वे दो-चार होने वाले थे। ऐतिहासिक पृष्ठ-भूमि के लिए सूरः अल-अनआम की भूमिका देखें।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

सूरः यूनुस और आगे आने वाली सूरः सूरः हूद में बड़ी समानता और एकात्मता पाई जाती है। इस सूरः में ईमान वालों के लिए शुभ-सूचना[1] और काफ़िरों के लिए डरावा[2] है। यही इस सूरः का मूल विषय भी है। सूरः का केन्द्रीय विषय क्या है इस के लिए सूरः की आयत २ पर विचार करना चाहिए।

इस सूरः में सत्य को अपनाने की प्रेरणा दी गई है; और सत्य की उपेक्षा करने के बुरे परिणामों से लोगों को डराया गया है। इस सिलसिले में तौहीद* (एकेश्वर वाद) और आख़िरत* (पारलौकिक जीवन) के प्रति ऐसी तर्क-संगत वार्त्ता प्रस्तुत की गई है जिस से मनुष्य के मस्तिष्क और हृदय दोनों को शान्ति मिल सकती है, साथ ही उन भ्रामक विचारों का तर्क-युक्त खण्डन किया गया है जो तौहीद* और आख़िरत* को मानने में बाधक थे। इस के अतिरिक्त हज़रत मुहम्मद सल्ल० की नुबूवत* और आप (सल्ल०) के लाये हुये सन्देश से सम्बन्धित शंकाओं और आक्षेपों का उत्तर दिया गया है।

आने वाले जीवन में जो-कुछ पेश आने वाला है उस से सूचित कर दिया गया ताकि लोग उस की तैयारी कर के अपने-आप को अल्लाह के अज़ाब से बचा सकें। बताया गया कि वर्तमान जीवन केवल परीक्षा के लिए है। जिस ने इस अवसर को खो दिया वह सदा पछताता ही रहेगा। सफलता का एक-मात्र साधन यह है कि इस

---

1 दे० आयत २, ९, ३६, ६२, ६४ और ६५।

2 दे० आयत ८ और १३।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

नबी* और उस की लाई हुई किताब* के द्वारा यथार्थ-ज्ञान प्राप्त करने का जो सुअवसर मिल रहा है उस से पूरा-पूरा लाभ उठाया जाये।

लोगों में पाई जाने वाली अज्ञानपूर्ण बातों और गुमराहियों की ओर भी संकेत किया गया। इन गुमराहियों का कारण यही था कि लोग अल्लाह के दिखाये हुये मार्ग से बहुत दूर जा पड़े थे।

हज़रत नूह अ० और हज़रत मूसा अ० का क़िस्सा सुनाया गया ताकि ईमान* वालों के लिए खुश खबरी हो। फ़िरऔन और हज़रत नूह अ० की जाति के विनाश का हाल भी सुनाया गया ताकि कुफ़्र* करने वालों के लिए डरावा हो। हज़रत मूसा अ० और नूह अ० के क़िस्सों में इस बात की ओर भी संकेत है कि काफ़िरों* को ईमान* वालों की वर्तमान अवस्था को देख कर धोखा न खाना चाहिए; जिस तरह हज़रत मूसा अ० और नूह अ० के साथ उन का अल्लाह था, उसी तरह हज़रत मुहम्मद सल्ल० और आप (सल्ल०) के अनुयायियों के साथ भी अल्लाह की शक्ति है; ईमान* वालों की यह दयनीय दशा सदा नहीं रहेगी। यह मुहलत जो काफ़िरों* को प्राप्त है इस में यदि वे सँभल न सके तो उन्हें अल्लाह की पकड़ से बचाने वाला कोई न होगा। उस समय यदि वे तौबः* भी करेंगे तो उस से उन्हें कुछ भी लाभ न होगा जिस प्रकार कि फ़िरऔन को ऐसी तौबः* से कोई लाभ नहीं पहुँच सका। फिर इस में ईमान* वालों के लिए भी बड़ी शिक्षा है कि उन्हें भी हज़रत नूह अ० और हज़रत मूसा अ० की तरह धैर्य्य और साहस से काम लेना चाहिए; शत्रुओं के मुक़ाबिले में अपनी विवशता देख कर उन्हें कदापि हताश नहीं होना चाहिए। उन्हें अपने कर्त्तव्यों का पूरा-पूरा ज्ञान होना चाहिए। और जब अल्लाह की कृपा से उन के दिन फिरें तो वे वह नीति न अपनायें जो बनी इसराईल* ने मिस्र से निकलने के बाद अपनाई थी।

अन्त में तौहीद* (एकेश्वरवाद) की ओर लोगों को आमन्त्रित किया गया है; और स्पष्ट रूप से यह बात बता दी गई है कि इस दीन* में कोई परिवर्तन नहीं किया जा सकता; जो इसे ग्रहण करेगा वह अपना ही भला करेगा और जो कोई दूसरी नीति अपनायेगा वह दूसरे का कुछ नहीं बिगाड़ेगा अपना ही बुरा करेगा।

---

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* यूनुस

(मक्का में उतरी — आयतें* १०९)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

بسم الله الرحمن الرحيم
الر تلك ايت الكتب الحكيم ۝ اكان للناس عجبا ان اوحينا
الى رجل منهم ان انذر الناس وبشر الذين امنوا ان
لهم قدم صدق عند ربهم قال الكفرون ان هذا لسحر
مبين ۝ ان ربكم الله الذي خلق السموت والارض في
ستة ايام ثم استوى على العرش يدبر الامر ما من شفيع
الا من بعد اذنه ذلكم الله ربكم فاعبدوه افلا تذكرون ۝

अलिफ़० लाम० रा०[1] — ये हिकमत* वाली किताब* की आयतें हैं। ○
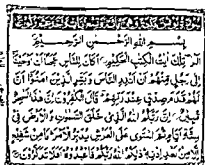
क्या लोगों के लिए यह एक अचम्भे की बात होगई कि हम ने उन्हीं में से एक आदमी पर वह्य* की, कि लोगों को सचेत कर दे और जो लोग ईमान ले आये उन्हें शुभ-सूचना दे दे कि उन के लिए उन के रब* के पास ऊँचा दर्जा है? काफ़िर* कहने लगे : निस्सन्देह यह व्यक्ति तो खुला जादूगर है। ○

निस्सन्देह तुम्हारा रब* वही अल्लाह है जिस ने आसमानों और ज़मीन को छः दिनों में पैदा किया,[2] फिर राज-सिंहासन[3] पर विराजमान हो कर इन्तज़ाम चला रहा है।[4] बिना उस की इजाज़त के कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं। यह अल्लाह, तुम्हारा रब* है, अतः तुम उसी की इबादत* करो। क्या, तुम चेतते नहीं? ○

---

१ दे० सूरः अल-बक़रः फुट नोट १।
२ दे० सूरः अल-बक़रः फुट नोट १५।
३ दे० सूरः अल-बक़रः फुट नोट १३।
४ दे० ज़बूर (Ps.) ९ : ४।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا وَعْدَ اللَّهِ حَقًّا إِنَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ
لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ بِالْقِسْطِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
شَرَابٌ مِنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ۝ هُوَ الَّذِي
جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَاءً وَالْقَمَرَ نُورًا وَقَدَّرَهُ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوا عَدَدَ
السِّنِينَ وَالْحِسَابَ مَا خَلَقَ اللَّهُ ذَٰلِكَ إِلَّا بِالْحَقِّ يُفَصِّلُ الْآيَاتِ
لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝ إِنَّ فِي اخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ
فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَتَّقُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ لَا
يَرْجُونَ لِقَاءَنَا وَرَضُوا بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَاطْمَأَنُّوا بِهَا وَالَّذِينَ هُمْ
عَنْ آيَاتِنَا غَافِلُونَ ۝ أُولَٰئِكَ مَأْوَاهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝
إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ يَهْدِيهِمْ رَبُّهُمْ بِإِيمَانِهِمْ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ۝ دَعْوَاهُمْ فِيهَا
سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ وَآخِرُ دَعْوَاهُمْ أَنِ الْحَمْدُ لِلَّهِ
رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ وَلَوْ يُعَجِّلُ اللَّهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ
لَقُضِيَ إِلَيْهِمْ أَجَلُهُمْ فَنَذَرُ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا فِي طُغْيَانِهِمْ
يَعْمَهُونَ ۝ وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْبِهِ أَوْ قَاعِدًا أَوْ
قَائِمًا فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهُ مَرَّ كَأَنْ لَمْ يَدْعُنَا إِلَىٰ ضُرٍّ مَسَّهُ
كَذَٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ

उसी की ओर तुम सब को लौटना है, (यह) अल्लाह का वादा सच्चा है। निस्सन्देह वह पहली बार पैदा करता है, फिर वही दोबारा पैदा करेगा, ताकि जो लोग ईमान* लाये और अच्छे काम किये उन्हें न्यायपूर्वक बदला दे; और, जिन लोगों ने कुफ़्र* किया, उन के लिए पीने को खौलता हुआ पानी मिलेगा और (उन्हें) दुख देने वाला अज़ाब होगा उस कुफ़्र* के बदले में जो वे करते थे। ○

वही है जिस ने सूर्य को प्रकाशमान किया और चन्द्रमा को उजियाला (चमकता हुआ) बनाया, और चन्द्रमा (के घटने-बढ़ने) की मंज़िलें ठहराईं, ताकि तुम वर्षों की गिन्ती, और हिसाब मालूम कर लिया करो। अल्लाह ने ये सब-कुछ हक़ (उद्देश्य) के साथ ही पैदा किया है। वह अपनी आयतें* खोल-खोल कर बयान करता है उन लोगों के लिए जो

५ जानने वाले हैं। ○ निश्चय ही रात और दिन के उलट-फेर में और हर उस चीज़ में जो अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन में पैदा की है, (गुमराही और कुपरिणाम से) डरने वालों के लिए निशानियाँ हैं। ○

जो लोग हम से मिलने की आशा नहीं रखते और वे दुनियाँ की ज़िन्दगी पर राज़ी हो गये हैं और उसी से उन्हें सन्तोष हो गया है, और जो लोग हमारी निशानियों से ग़ाफ़िल हैं, ○ ये वे लोग हैं जिन का ठिकाना आग (दोज़ख़*) है, उस के बदले में जो ये कमाते रहे। ○

जो लोग ईमान* लाये और अच्छे काम किये, उन का रब* उन्हें उन के ईमान* की वजह से राह दिखा देगा। उन के नीचे नेमत भरी जन्नतों*[1] में नहरें बह रही होंगी। ○ वहाँ उन की पुकार यह होगी : महिमा हो तेरी!, हे हमारे अल्लाह! और वहाँ उन का अभिवादन 'सलाम' होगा। और उन की अन्तिम पुकार होगी : सारी प्रशंसा (हम्द*) अल्लाह ही के लिए

१० है, जो सारे संसार का रब* है। ○

यदि अल्लाह लोगों के साथ बुरा मामला करने में जल्दी करता जिस तरह वे (उस बुराई की) जल्दी मचाते हैं (वे उस की ऐसी जल्दी मचाते हैं) जैसे भलाई की जल्दी मचाते हों, तो उन (के कर्म) की मुहलत कभी समाप्त कर दी गई होती। हम तो उन लोगों को जो हम से मिलने की आशा नहीं रखते उन की सरकशी में बहकने के लिए छोड़ देते हैं। ○ मनुष्य को जब कोई तकलीफ़ पहुँचती है, तो लेटे, या बैठे या खड़े (हर हाल में), हमें पुकारता है, परन्तु जब हम उस की आपत्ति उस से दूर कर देते हैं तो इस तरह चल देता है मानो कभी अपने ऊपर आपत्ति आने पर उस ने हमें पुकारा ही नहीं था। इसी प्रकार मर्यादा हीन लोगों के लिए उन के करतूत शोभायमान बना दिये गये हैं। ○ (लोगो!) तुम से पहले कितनी ही जातियों को हम ने विनष्ट कर दिया जब उन्होंने ज़ुल्म किया; और उन के रसूल* उन के पास खुली-

[1] अर्थात् स्वर्गीय और आनन्ददायक बागों में।
* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

مِنْ قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوا ۙ وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ وَمَا كَانُوا
لِيُؤْمِنُوا ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ﴿١٣﴾ ثُمَّ جَعَلْنَاكُمْ خَلَائِفَ
فِي الْأَرْضِ مِنْ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ ﴿١٤﴾ وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ
آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ ۙ قَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا ائْتِ بِقُرْآنٍ غَيْرِ هَٰذَا
أَوْ بَدِّلْهُ ۚ قُلْ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أُبَدِّلَهُ مِنْ تِلْقَاءِ نَفْسِي ۖ إِنْ
أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ ۖ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ
عَظِيمٍ ﴿١٥﴾ قُلْ لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا تَلَوْتُهُ عَلَيْكُمْ وَلَا أَدْرَاكُمْ بِهِ ۖ فَقَدْ
لَبِثْتُ فِيكُمْ عُمُرًا مِنْ قَبْلِهِ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٦﴾ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ
افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۚ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُونَ ﴿١٧﴾ وَ
يَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَٰؤُلَاءِ
شُفَعَاؤُنَا عِنْدَ اللَّهِ ۚ قُلْ أَتُنَبِّئُونَ اللَّهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمَاوَاتِ وَ
لَا فِي الْأَرْضِ ۚ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿١٨﴾ وَمَا كَانَ النَّاسُ إِلَّا
أُمَّةً وَاحِدَةً فَاخْتَلَفُوا ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَقُضِيَ
بَيْنَهُمْ فِيمَا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٩﴾ وَيَقُولُونَ لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ
مِنْ رَبِّهِ ۖ فَقُلْ إِنَّمَا الْغَيْبُ لِلَّهِ فَانْتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ ﴿٢٠﴾ ع
وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِنْ بَعْدِ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُمْ إِذَا لَهُمْ مَكْرٌ فِي
آيَاتِنَا ۚ قُلِ اللَّهُ أَسْرَعُ مَكْرًا ۚ إِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُونَ مَا تَمْكُرُونَ ﴿٢١﴾ هُوَ

खुली निशानियाँ ले कर आये परन्तु वे ऐसे न थे कि ईमान* लाते। इसी तरह हम अपराधी लोगों को बदला दिया करते हैं। ○ अब उन के बाद हम ने तुम्हें ज़मीन में उन की जगह दी है, ताकि देखें तुम कैसे कर्म करते हो। ○

जब उन के सामने हमारी खुली हुई आयतें* पढ़ी जाती हैं, तो ये लोग जो हम से मिलने की आशा नहीं रखते कहते हैं : इस के सिवा कोई और क़ुरआन* लाओ, या इस में परिवर्तन कर दो। कह दो : मुझ से यह नहीं हो सकता कि अपनी ओर से इस में कोई परिवर्तन करूँ। मैं तो बस उस का पालन करता हूँ जो मेरी ओर वह्य* की जाती है। यदि मैं अपने रब* का हुक्म न मानूँ तो मुझे एक बड़े दिन के अज़ाब का डर है। ○ कह दो : यदि अल्लाह (यही) चाहता (कि तुम्हें किताब* का ज्ञान न हो) तो मैं यह (क़ुरआन) पढ़ कर तुम्हें सुनाता ही नहीं और न तुम्हें इस की ख़बर ही देता। आख़िर इस से पहले मैं तुम्हारे बीच एक उम्र गुज़ार चुका हूँ (और इस तरह का कोई कलाम नहीं पेश किया)। क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ? ○ फिर उस व्यक्ति से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ गढ़े या उस की आयतों* को झुठलाये। निश्चय ही अपराधी लोग सफल नहीं हो सकते। ○ १५

ये लोग अल्लाह के सिवा ऐसी चीज़ों को पूजते हैं जो न इन्हें हानि पहुँचा सकती हैं और न कुछ फ़ायदा ही पहुँचा सकती हैं, और कहते हैं : ये अल्लाह के यहाँ हमारे सिफ़ारिशी हैं। कह दो : क्या तुम अल्लाह को उस बात की ख़बर दे रहे हो जिसे न वह आसमानों में जानता है और न ज़मीन में[६]। महिमावान है वह और उच्च है उस शिर्क* से जो ये लोग कर रहे हैं ! ○

सब मनुष्य एक ही गिरोह थे; फिर उन्हों ने विभेद किया; और यदि तेरे रब* की ओर से एक बात पहले से न निश्चय पा गई होती तो जिस चीज़ में वे विभेद कर रहे हैं उस का उन के बीच फ़ैसला कर दिया जाता[७]।

और ये लोग कहते हैं : क्यों न इस (नबी*) पर इस के रब* की ओर से कोई निशानी उतारी गई ! तो (उन से) कह दो : ग़ैब (परोक्ष) का मालिक तो अल्लाह ही है। अच्छा इन्तज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ इन्तज़ार करता हूँ। ○ २०

---

६ अर्थात् न वह आसमान में मौजूद है और न ज़मीन में कहीं पाई जाती है।

७ अर्थात् यदि अल्लाह पहले से ही यह निश्चय न कर चुका होता कि दुनियाँ में सत्य (Reality) को लोगों की अनुभव शक्ति से छिपा कर उन की बुद्धि, विवेक और अन्तरात्मा की परीक्षा ली जायेगी; और जो लोग इस परीक्षा में असफल हो कर ग़लत दिशाओं में जाना चाहेंगे उन्हें ग़लत दिशाओं में जाने दिया जायेगा, तो आज ही लोगों के बीच उन के मत-भेदों का निर्णय कर दिया जाता।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

ही बातें ऐसी हैं कि जिनका उल्लेख सिरे से बाइबिल और तलमूद में नहीं मिलता। और कितनी ही घटनायें ऐसी हैं कि जिनका उल्लेख बाइबिल, तलमूद में मिलता है परन्तु क़ुरआन के बयान में और बाइबिल और तलमूद के बयान में बड़ा अन्तर पाया जाता है। जो व्यक्ति क़ुरआन और बाइबिल व तलमूद के बयान पर विचार करेगा वह पायेगा कि जहाँ कहीं क़ुरआन और बाइबिल या क़ुरआन और तलमूद के बयान में भिन्नता पाई जाती है वहाँ क़ुरआन का बयान ही तर्कसंगत और सत्य के अनुकूल है। बल्कि क़ुरआन ने तो यहूदियों और ईसाइयों पर उपकार किया है। बाइबिल में अधिकतर नबियों को जिस रंग में पेश किया गया है वह अत्यन्त खेदजनक है। क़ुरआन उतरा तो उन नबियों का निर्मल चरित्र सामने आ सका। उदाहरणार्थ बाइबिल में हज़रत नूह अ० के धर्म-प्रचार का उल्लेख नहीं किया गया है और न बाइबिल से यह मालूम होता है कि जिन लोगों को उनके समय में डुबो दिया गया था उनका वास्तव में क्या अपराध था। परन्तु क़ुरआन में यह सारी बातें स्पष्ट रूप से बयान हुई हैं। क़ुरआन में नूह अ० और हज़रत लूत अ० हमें एक नबी और पवित्राचारी व्यक्ति के रूप में दिखाई देते हैं परन्तु बाइबिल में उनके आचरण को कलंकित किया गया है। हज़रत मुहम्मद सल्ल० पढ़े-लिखे व्यक्ति न थे और न कोई यह सिद्ध कर सकता है कि आप (सल्ल०) ने किसी से प्राचीन इतिहास का ज्ञान प्राप्त किया है। वह्य अथवा ईश्वरीय-संकेत के अतिरिक्त आपके पास कोई साधन न था कि आप पिछली जातियों और पिछले नबियों का हाल मालूम कर सकते। अतः हमें मानना पड़ेगा कि आप वास्तव में अल्लाह के रसूल थे और क़ुरआन आप पर अल्लाह की ओर से उतरा है। हज़रत मुहम्मद सल्ल० की परीक्षा लेने के लिए आपके विरोधियों ने आप से सवाल भी किया था कि बनी इसराईल के मिस्र जाने का क्या कारण हुआ ? अरब के लोग इस क़िस्से से बिलकुल अनभिज्ञ थे। नबी सल्ल० से भी कभी यह क़िस्सा नहीं सुना गया था। विरोधी लोग यह समझते थे कि आप इस सवाल का उत्तर न दे सकेंगे परन्तु अल्लाह ने इसके जवाब में उसी समय पूरी 'सूरः यूसुफ़ उतार दी।

क़ुरआन और उसके लानेवाले रसूल के आगमन की शुभ-सूचना पिछली आसमानी किताबों तौरात, इन्जील आदि में दी जा चुकी थी। क़ुरआन के जिन गुणों का उल्लेख पिछली किताबों में हुआ था वे पूर्ण रूप से उसमें पाये जाते हैं। तौरात, इन्जील आदि ग्रन्थ यद्यपि आज अपने वास्तविक रूप में नहीं हैं उनमें बहुत कुछ परिवर्तन हो चुका है। फिर भी इन किताबों में आज भी ऐसे वाक्य पाये जाते हैं जिनमें प्रत्यक्ष रूप से क़ुरआन के गुणों और हज़रत मुहम्मद सल्ल० के आगमन का उल्लेख हुआ है।[1]

क़ुरआन में जिस प्रकार प्राचीन समय की कितनी ही बातों का उल्लेख हुआ है उसी प्रकार क़ुरआन ने अनेक ऐसी सूचनायें भी दी जिनका सम्बन्ध भविष्य से था ये सूचनायें ऐसे समय पर दी गई थीं जबकि इनके पूरी होने का कोई लक्षण दिखाई नहीं देता था। परन्तु इतिहास साक्षी है कि क़ुरआन की भविष्यवाणियाँ पूरी होकर रहीं[2]। क़ुरआन की दी हुई ऐसी सूचनाएँ भी हैं जिनके पूरे होने का समय अभी नहीं आया। वे भी अपने समय पर पूरी होकर रहेंगी। इस प्रकार की सूचनायें केवल अल्लाह ही दे सकता है जिसके ज्ञान ने आदि और अन्त सबको

---

१. उदाहरणार्थ दे० इस्तिसना (Deut.) ३३ : २; १८ : १८ : १९; यूहन्ना (John.) १ : २०-२१; मत्ता (mtt) ४ : १७; यसअयाह (Isaiah) ४२ : ९-१७।

२. उदाहरणार्थ देखिए वह भविष्यवाणी जिसका उल्लेख सूरः रूम के आरम्भ में हुआ है।

الذي يسيركم في البر والبحر حتى إذا كنتم في الفلك وجرين بهم
بريح طيبة وفرحوا بها جاءتها ريح عاصف وجاءهم الموج من
كل مكان وظنوا أنهم أحيط بهم دعوا الله مخلصين له الدين
لئن أنجيتنا من هذه لنكونن من الشاكرين ۝ فلما أنجاهم إذا هم
يبغون في الأرض بغير الحق يا أيها الناس إنما بغيكم على أنفسكم
متاع الحياة الدنيا ثم إلينا مرجعكم فننبئكم بما كنتم تعملون ۝
إنما مثل الحياة الدنيا كماء أنزلناه من السماء فاختلط به نبات
الأرض مما يأكل الناس والأنعام حتى إذا أخذت الأرض زخرفها
وازينت وظن أهلها أنهم قادرون عليها أتاها أمرنا ليلا أو
نهارا فجعلناها حصيدا كأن لم تغن بالأمس كذلك نفصل الآيات
لقوم يتفكرون ۝ والله يدعو إلى دار السلام ويهدي من يشاء
إلى صراط مستقيم ۝ للذين أحسنوا الحسنى وزيادة ولا يرهق
وجوههم قتر ولا ذلة أولئك أصحاب الجنة هم فيها خالدون ۝
والذين كسبوا السيئات جزاء سيئة بمثلها وترهقهم ذلة
ما لهم من الله من عاصم كأنما أغشيت وجوههم قطعا من
الليل مظلما أولئك أصحاب النار هم فيها خالدون ۝ ويوم نحشرهم
جميعا ثم نقول للذين أشركوا مكانكم أنتم وشركاؤكم فزيلنا

जब (ऐसा होता है कि) हम लोगों को उन के संकट में पड़ने के बाद (अपनी) दयालुता का रसास्वादन कराते हैं, तो वे हमारी आयतों* के बारे में चालें चलने लगते हैं। कहो : अल्लाह (अपनी) चाल में (तुम से) ज़्यादा तेज़ है। जो मक्कारियाँ तुम कर रहे हो हमारे भेजे हुये (फ़िरिश्ते*) *उन को लिखते जा रहे हैं*। ○ वही है जो तुम्हें, भूमि और समुद्र में चलाता है यहाँ तक, कि जब तुम नौका में होते हो और वे (नौकायें) लोगों को ले कर अनुकूल वायु के द्वारा चलती हैं और लोग उन से ख़ुश होते हैं, अचानक उन पर प्रचण्ड वायु का झोंका आता है और हर ओर से (पानी की) लहरें उन पर (उठी) चली आती हैं और वे समझ लेते हैं कि अब हम (तूफ़ान में) घिर गये; उस समय वे अल्लाह ही को पुकारने लगते हैं, दीन* को उसी के लिए ख़ालिस करके कि यदि तू ने इस (संकट) से हमें बचा लिया, तो हम अवश्य कृतज्ञता दिखलायेंगे। ○ फिर जब उन्हें बचा लेते हैं, तो वे हक़ से हट कर ज़मीन में सरकशी करने लग जाते हैं। हे लोगो ! तुम्हारी सरकशी तुम्हारे ही विरुद्ध पड़ रही है। सांसारिक जीवन का सुख है (भोग लो); फिर (तो) हमारी ओर तुम्हें लौट कर आना है उस समय हम तुम्हें बता देंगे जो-कुछ तुम करते रहे हो। ○ सांसारिक जीवन की मिसाल तो ऐसी है जैसे हम ने आसमान से पानी बरसाया, तो ज़मीन की वनस्पति जिसे मनुष्य और चौपाये सब खाते हैं, ख़ूब घनी उगी यहाँ तक कि जब *ज़मीन ने अपना शृंगार कर लिया और सँवर गई, और उस के मालिक समझने लगे कि हमें* उस पर पूरा अधिकार प्राप्त है कि अचानक रात में या दिन में हमारा हुक्म आ पहुँचा और हम ने उसे कटी हुई खेती की तरह कर दिया मानो कल वहाँ आबादी ही न थी। इसी तरह हम उन लोगों के लिए निशानियाँ खोल-खोल कर बयान करते हैं जो सोच-विचार से काम लेते हैं। ○ (तुम इस नष्ट होने वाले जीवन पर रीझते हो) और अल्लाह तुम्हें सलामती के घर की ओर बुलाता है,[८] और जिसे चाहता है सीधे रास्ते पर लगा देता है। ○ जिन लोगों ने भलाई की उन के लिए भलाई है और इस के सिवा और भी। उन के चेहरों पर न तो कालिख छायेगी और न ज़िल्लत (रुसवाई)। ऐसे ही लोग जन्नत* वाले हैं; जहाँ वे सदैव रहेंगे। ○ रहे वे लोग जिन्हों ने बुराइयाँ कमाईं, तो बुराई का बदला भी वैसा ही होगा; ज़िल्लत (रुसवाई) उन पर छाई होगी — कोई उन्हें अल्लाह से बचाने वाला न होगा — उन के चेहरों पर मानो अँधेरी रात (कृष्ण रात्रि रूपी चादर) का कोई टुकड़ा उढ़ा दिया गया है। यही लोग हैं जो आग (दोज़ख़* में जाने) वाले हैं, जहाँ वे सदा रहेंगे। ○ जिस दिन हम उन सब को इकट्ठा करेंगे, फिर उन लोगों से जिन्हों ने शिर्क* किया है कहेंगे : अपनी जगह ठहरो, तुम भी और

२५

८ अर्थात् जन्नत की ओर बुलाता है जहाँ हर तरह की सलामती है; जहाँ न किसी को कोई कष्ट पहुँचेगा, और न किसी पर कोई आपत्ति आ सकती है।*

** इस पर चर्चा आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

بينهم وقال شركاؤهم ما كنتم إيانا تعبدون ۝ فكفى بالله
شهيدا بيننا وبينكم إن كنا عن عبادتكم لغافلين ۝ هنالك
تبلوا كل نفس ما أسلفت وردوا إلى الله مولاهم الحق وضل عنهم
ما كانوا يفترون ۝ قل من يرزقكم من السماء والأرض أمن
يملك السمع والأبصار ومن يخرج الحي من الميت ويخرج
الميت من الحي ومن يدبر الأمر فسيقولون الله فقل أفلا
تتقون ۝ فذلكم الله ربكم الحق فماذا بعد الحق إلا الضلال
فأنى تصرفون ۝ كذلك حقت كلمت ربك على الذين فسقوا
أنهم لا يؤمنون ۝ قل هل من شركائكم من يبدؤا الخلق
ثم يعيده قل الله يبدؤا الخلق ثم يعيده فأنى تؤفكون ۝
قل هل من شركائكم من يهدي إلى الحق قل الله يهدي
للحق أفمن يهدي إلى الحق أحق أن يتبع أمن لا يهدي
إلا أن يهدى فما لكم كيف تحكمون ۝ وما يتبع أكثرهم إلا
ظنا إن الظن لا يغني من الحق شيئا إن الله عليم بما يفعلون
وما كان هذا القرآن أن يفترى من دون الله ولكن تصديق
الذي بين يديه وتفصيل الكتب لا ريب فيه من رب
العلمين ۝ أم يقولون افتراه قل فأتوا بسورة مثله وادعوا

तुम्हारे (ठहराये हुये) शरीक भी। फिर हम उन के बीच अलगाव पैदा कर देंगे, और उन के ठहराये हुए शरीक कहेंगे : तुम हमारी इबादत नहीं करते थे।○ हमारे और तुम्हारे बीच अल्लाह ही एक गवाह (की हैसियत से) काफ़ी है कि हमें तो तुम्हारी इबादत* की ख़बर ही न थी।○ वहाँ (उस दिन) हर व्यक्ति अपने अगले किये हुए कामों को स्वयं जाँच-परख लेगा, और सब अल्लाह, अपने वास्तविक स्वामी की ओर फेरे जायेंगे और जो-कुछ झूठ वे गढ़ा करते थे सब उन से जाता रहेगा।○

(उन से) कहो : तुम्हें कौन आसमानों और ज़मीन से रोज़ी देता है, या कान और आँखों पर किस का अधिकार है; कौन है जो बे-जान में से जानदार को निकालता है और जानदार में से बे-जान को निकालता है; कौन है जो यह सारा इन्तज़ाम चला रहा है ? वे बोल उठेंगे : अल्लाह। कहो : फिर तुम (उस की ना-ख़ुशी से क्यों नहीं डरते हो और उस की अवज्ञा से) क्यों नहीं बचते हो ?○ वही अल्लाह, तो तुम्हारा वास्तविक रब* है। फिर हक़ के बाद गुमराही के सिवा और क्या रह गया ? फिर तुम कहाँ फिरे जा रहे हो ?○ (हे नबी* !) इसी तरह सीमोल्लंघन करने वालों पर तुम्हारे रब* की बात साबित हो कर रही कि वे ईमान* लाने के नहीं हैं।○

(उन से) कहो : क्या तुम्हारे (ठहराये हुये) शरीकों में कोई है जो पहली बार पैदा करता हो फिर उसे दोबारा भी पैदा करे ? कहो : अल्लाह ही पहली बार पैदा करता है, फिर वही उस की पुनरावृत्ति करेगा¹ फिर तुम कहाँ से उलटे भटके चले जा रहे हो !○

(उन से) कहो : क्या तुम्हारे (ठहराये हुये) शरीकों में कोई है जो हक़* की राह (सत्य-मार्ग) दिखा सकता हो ? कहो : अल्लाह ही हक़ की राह दिखाता है। फिर जो हक़ की राह दिखाता हो वह इस बात का ज़्यादा हक़दार है कि उस की पैरवी की जाये, या वह जो ख़ुद ही राह न पाये जब तक कि उसे राह न दिखाई जाये। तो तुम्हें क्या हो गया है ? तुम कैसे फ़ैसले करते हो ?○

उन में से अधिकतर लोग तो बस अटकल पर चलते हैं। इस में कोई सन्देह नहीं कि अटकल हक़ (की आवश्यकता की पूर्ति) में कुछ काम नहीं आती। जो-कुछ ये कर रहे हैं अल्लाह उस से भली-भाँति परिचित है।

और यह क़ुरआन ऐसा नहीं है कि अल्लाह के सिवा कोई अपनी ओर से गढ़ लाये; बल्कि यह तो जो कुछ इस से पहले (आ चुका) है उस की तसदीक़ और (अल्लाह की) किताब* का विस्तार है² — इस में कोई सन्देह नहीं — (यह) सारे संसार के रब* की ओर से है।○

१. अर्थात् दोबारा पैदा करेगा।
२. अर्थात् क़ुरआन किसी नवीन धर्म की ओर नहीं बुलाता। वह तो पहली ईश्वरीय किताबों की पुष्टि [illegible]
* [illegible] ये शब्द पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ بَلْ كَذَّبُوا
بِمَا لَمْ يُحِيطُوا بِعِلْمِهِ وَلَمَّا يَأْتِهِمْ تَأْوِيلُهُ ۚ كَذَٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ
مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ۝ وَمِنْهُمْ مَنْ
يُؤْمِنُ بِهِ وَمِنْهُمْ مَنْ لَا يُؤْمِنُ بِهِ ۚ وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِينَ ۝
وَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ لِي عَمَلِي وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ ۖ أَنْتُمْ بَرِيئُونَ مِمَّا أَعْمَلُ
وَأَنَا بَرِيءٌ مِمَّا تَعْمَلُونَ ۝ وَمِنْهُمْ مَنْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ ۚ أَفَأَنْتَ
تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوا لَا يَعْقِلُونَ ۝ وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْظُرُ إِلَيْكَ ۚ أَفَأَنْتَ
تَهْدِي الْعُمْيَ وَلَوْ كَانُوا لَا يُبْصِرُونَ ۝ إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ
شَيْئًا وَلَٰكِنَّ النَّاسَ أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۝ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَأَنْ لَمْ
يَلْبَثُوا إِلَّا سَاعَةً مِنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُونَ بَيْنَهُمْ ۚ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ
كَذَّبُوا بِلِقَاءِ اللَّهِ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ۝ وَإِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي
نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللَّهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا
يَفْعَلُونَ ۝ وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَسُولٌ ۖ فَإِذَا جَاءَ رَسُولُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ
بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِنْ
كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي ضَرًّا وَلَا نَفْعًا إِلَّا مَا شَاءَ
اللَّهُ ۗ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ ۚ إِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً ۖ وَ
لَا يَسْتَقْدِمُونَ ۝ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُهُ بَيَاتًا أَوْ نَهَارًا

क्या ये लोग कहते हैं कि इस (नबी*) ने इसे स्वयं गढ़ लिया है ? कहो : यदि तुम सच्चे हो तो एक ही सूरः* उस की तरह बना लाओ, और अल्लाह के सिवा जिस को बुला सको बुला लो।○ बात यह है कि जिस चीज़ के ज्ञान पर वे हावी न हो सके, और जिस की हक़ीक़त (वास्तविकता) अभी उन के सामने नहीं आ सकी है उसे इन्हों ने झुठला दिया। इसी तरह वे लोग भी (सच्चाई को) झुठला चुके हैं जो इन से पहले गुज़रे हैं। तो देख लो उन ज़ालिमों का कैसा (बुरा) परिणाम हुआ।○ इन में से कुछ तो इस (क़ुरआन*) पर ईमान* लायेंगे, और कुछ इन में से ईमान* नहीं लायेंगे, और तेरा रब* बिगाड़ पैदा करने वालों को ४० भली-भाँति जानता है।○ यदि ये तुझे झुठलाते हैं, तो कह दे : मेरा काम मेरे लिए है, और तुम्हारा काम तुम्हारे लिए है। मैं जो-कुछ करता हूँ उस से तुम्हारा कोई सम्पर्क नहीं,[1] और न उस से मेरा कोई सम्पर्क है जो-कुछ तुम कर रहे हो।○

उन में बहुतेरे ऐसे हैं जो तेरी ओर कान लगाते हैं। परन्तु क्या तू सुनायेगा बहरों को चाहे वे कुछ भी न समझ सकते हों ?○ उन में से बहुतेरे ऐसे (भी) हैं जो तेरी ओर देखते हैं। परन्तु क्या तू राह दिखायेगा अन्धों को चाहे उन्हें कुछ भी सुझाई न देता हो ?○ बात यह है अल्लाह लोगों पर कुछ ज़ुल्म नहीं करता; परन्तु लोग स्वयं अपने-आप पर ज़ुल्म करते हैं।○ जिस दिन अल्लाह उन्हें इकट्ठा करेगा, तो ऐसा जान पड़ेगा मानो (दुनिया में) वे केवल दिन की एक घड़ी भर ठहरे थे, वे आपस में (एक-दूसरे को) पहचान रहे होंगे, निश्चय ही वे ४५ लोग घाटे में रहे जिन्हों ने अल्लाह से मिलने को झुठलाया और वे राह पाने वाले न थे।○ जिस (बुरे परिणाम) की हम इन्हें धमकी दे रहे हैं उस में से कुछ हम तुझे दिखा दें या (इस से पहले) हम तुझे उठा लें, इन्हें तो (हर हाल में) हमारी ओर लौट कर आना है,[11] फिर जो कुछ ये कर रहे हैं, उस पर अल्लाह गवाह है।○

हर समुदाय के लिए एक रसूल* है। तो जब उन के पास उन का रसूल* आ जाता है, तो उन का फ़ैसला न्यायपूर्वक कर दिया जाता है, और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाता।○

कहते हैं : यदि तुम सच्चे हो, तो यह (अज़ाब की) धमकी कब पूरी होगी ?○ कह दो : मुझे न तो अपने बुरे का अधिकार है और न भले का, बस जो अल्लाह चाहे वही होता है। हर जाति के लिए एक नियत समय है। जब उन का नियत समय आ गया, तो उस से न एक

बना है जो किताबें मार्ग-दर्शन के लिए सदैव से अल्लाह के नबियों* देते आये हैं। और यह क़ुरआन तो उन आसमानी किताबों (Heavenly Books) की मौलिक शिक्षाओं को विस्तारपूर्वक बयान करता है।

१ अर्थात् उस की मुझ पर कोई ज़िम्मेदारी नहीं।

११ दे० सूरः बनी-इस्राईल आयत ८८, अल-बक़र: आयत २३।

*इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

مَاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُونَ ۝ أَثُمَّ إِذَا مَا وَقَعَ آمَنْتُمْ بِهِ ۚ آلْآنَ
وَقَدْ كُنْتُمْ بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ ۝ ثُمَّ قِيلَ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ
الْخُلْدِ هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ۝ وَيَسْتَنْبِئُونَكَ أَحَقٌّ هُوَ ۖ
قُلْ إِي وَرَبِّي إِنَّهُ لَحَقٌّ ۖ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ ۝ وَلَوْ أَنَّ لِكُلِّ
نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْأَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهِ ۗ وَأَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا
الْعَذَابَ ۖ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ۚ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝ أَلَا إِنَّ لِلَّهِ
مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ أَلَا إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا
يَعْلَمُونَ ۝ هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝ يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ
جَاءَتْكُمْ مَوْعِظَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَشِفَاءٌ لِمَا فِي الصُّدُورِ وَهُدًى
وَرَحْمَةٌ لِلْمُؤْمِنِينَ ۝ قُلْ بِفَضْلِ اللَّهِ وَبِرَحْمَتِهِ فَبِذَٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوا
هُوَ خَيْرٌ مِمَّا يَجْمَعُونَ ۝ قُلْ أَرَأَيْتُمْ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ لَكُمْ مِنْ
رِزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِنْهُ حَرَامًا وَحَلَالًا قُلْ آللَّهُ أَذِنَ لَكُمْ ۖ أَمْ عَلَى
اللَّهِ تَفْتَرُونَ ۝ وَمَا ظَنُّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ۝
وَمَا تَكُونُ فِي شَأْنٍ وَمَا تَتْلُو مِنْهُ مِنْ قُرْآنٍ وَلَا تَعْمَلُونَ مِنْ
عَمَلٍ إِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُودًا إِذْ تُفِيضُونَ فِيهِ ۚ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ
رَبِّكَ مِنْ مِثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَلَا أَصْغَرَ مِنْ

घड़ी पीछे रह सकते हैं और न आगे बढ़ सकते हैं[११]। ○ (इन से) कहो : सोचो तो सही, यदि तुम पर अल्लाह का अज़ाब रात को, या दिन को आ जाये; तो उस में कौन चीज़ ऐसी है जिस के लिए अपराधी लोग जल्दी मचा रहे हैं ? ○ क्या जब वह आ जायेगा, तब तुम उसे मानोगे ? — क्या अब (ईमान* लाते हो) ! तुम तो इस के लिए जल्दी मचा रहे थे ? ○ फिर उन लोगों से जिन्हों ने ज़ुल्म किया होगा कहा जायेगा : सदा रहने वाले अज़ाब का मज़ा चखो। तुम्हें बदला उसी का तो मिलेगा जो-कुछ तुम कमाते रहे हो। ○

तुम से पूछते हैं : क्या यह सच है ? कह दो : हाँ, मेरे रब* की क़सम, यह बिल्कुल सच है, और तुम बच निकलने वाले नहीं हो। ○ यदि हर जीव के पास जिस में ज़ुल्म किया है वह सब-कुछ हो जो ज़मीन में है तो अपनी जान बचाने के लिए वह उसे दे डालेगा; जब वे अज़ाब को देखेंगे, तो मन-ही-मन में पछतायेंगे। और उन के बीच न्यायपूर्वक फ़ैसला किया जायेगा और उन के साथ कुछ भी ज़ुल्म नहीं किया जायेगा। ○ जान लो ! आसमानों और ज़मीन में जो-कुछ है अल्लाह ही का है। सुन रखो ! अल्लाह का वादा सच्चा है। परन्तु उन में अधिकतर लोग नहीं जानते। ○ ५५ वही जिलाता है और मारता है, उसी की ओर तुम फेरे जाओगे। ○

हे लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे रब* की ओर से उपदेश आ गया है, सीनों (दिलों) में जो-कुछ (बीमारी) है उस के लिए आरोग्यता और ईमान* वालों के लिए मार्ग-दर्शन और दयालुता। ○ (हे नबी* !) कह दो : यह अल्लाह के फ़ज़्ल (कृपा) और उस की दया से है तो (लोगों को) इस पर ख़ुश होना चाहिए। यह उन सब चीज़ों से उत्तम है जिसे (लोग) समेटने में लगे हुए हैं। ○ (हे नबी* !) कह दो : तुम लोगों ने कभी इस पर भी विचार किया कि जो रोज़ी अल्लाह ने तुम्हारे लिए उतारी, उस में तुम ने स्वयं (किसी को) हराम* और (किसी को) हलाल* ठहरा लिया। (उन से) कहो : क्या अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है, या अल्लाह पर झूठ-मूठ दोष लगा रहे हो ? ○ जो लोग अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं क़ियामत* के दिन को वे क्या समझते हैं ? अल्लाह तो लोगों के लिए (बड़े) फ़ज़्ल वाला है, परन्तु अधिकतर लोग कृतज्ञता नहीं दिखलाते। ○ ६०

(हे नबी* !) तुम जिस हाल में भी होते हो और क़ुरआन* से जो-कुछ भी पढ़ कर

११ लोगों तक जब अल्लाह का सन्देश पहुँच जाता है तो अल्लाह हर व्यक्ति को उस की व्यक्तिगत हैसियत से और हर गरोह को समुदायगत हैसियत से सोचने-समझने और सँभलने के लिए काफ़ी मुहलत देता है। जातियों और समुदायों के लिए तो यह मुहलत की अवधि शताब्दियों तक चली जाती है। परन्तु जब फ़ैसले का समय आ जाता है तो फिर उसे कोई टाल नहीं सकता; और न यही सम्भव है कि निश्चित अवधि से पहले किसी का फ़ैसला कर दिया जाये। दे० सूरः अल-आराफ़ फ़ुट नोट ६।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

ذٰلِكَ وَلَآ أَكْبَرَ إِلَّا فِي كِتٰبٍ مُّبِينٍ ۝ أَلَآ إِنَّ أَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ
وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ الَّذِينَ اٰمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ۝ لَهُمُ الْبُشْرٰى
فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ۚ لَا تَبْدِيلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۚ ذٰلِكَ هُوَ
الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ وَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ إِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيعًا ۚ هُوَ
السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ أَلَآ إِنَّ لِلّٰهِ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ ۗ
وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللّٰهِ شُرَكَآءَ ۚ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا
الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ۝ هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ
لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ۝
قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهُ ۖ هُوَ الْغَنِيُّ ۖ لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا
فِي الْأَرْضِ ۚ إِنْ عِنْدَكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ بِهٰذَا ۚ أَتَقُولُونَ عَلَى اللّٰهِ مَا
لَا تَعْلَمُونَ ۝ قُلْ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا
يُفْلِحُونَ ۝ مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نُذِيقُهُمُ
الْعَذَابَ الشَّدِيدَ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ۝ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ نُوحٍ ۘ
إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ يٰقَوْمِ إِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَّقَامِي وَتَذْكِيرِي بِاٰيٰتِ
اللّٰهِ فَعَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ فَأَجْمِعُوا أَمْرَكُمْ وَشُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ
أَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوا إِلَيَّ وَلَا تُنْظِرُونِ ۝ فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ
فَمَا سَأَلْتُكُمْ مِّنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۙ وَأُمِرْتُ أَنْ

सुनाते हो, और (हे लोगो !) तुम कोई-सा काम भी करते हो, हम तुम्हें देख रहे होते हैं जब तुम उस में लगे होते हो। कण भर भी कोई चीज़, या उस से भी छोटी या बड़ी ज़मीन और आसमान में ऐसी नहीं है जो तेरे रब* से छिपी हुई हो, सब-कुछ एक स्पष्ट किताब* में (लिखित मौजूद) है। ○ सुनो! अल्लाह के मित्रों को न तो कोई भय होगा, और न वे दुःखी होंगे। ○ ये वे लोग हैं जो ईमान* लाये और अल्लाह की अवज्ञा से बचते और उस की ना-ख़ुशी से डरते रहे, ○ उन के लिए सांसारिक जीवन में शुभ-सूचना है और आख़िरत* में भी। — अल्लाह की बातें बदल नहीं सकतीं— यही बड़ी सफलता है। ○ (हे नबी*!) इन (लोगों) की बात तुझे ग़म में न डाल दे। प्रभुत्व (और अधिकार) अल्लाह ही के लिए है। वह (सब-कुछ)
६५ सुनने वाला और जानने वाला है। ○

जान रखो! आसमानों के रहने वाले हों या ज़मीन के रहने वाले हों सब अल्लाह के (बन्दे) हैं। जो लोग अल्लाह के सिवा (अपने ठहराये हुये) शरीकों को पुकारते हैं, वे किस चीज़ के पीछे चल रहे हैं? वे केवल गुमान के पीछे चलते हैं, और केवल अटकल से काम लेते हैं। ○ वही है जिस ने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम उस में चैन पाओ और दिन को प्रकाशमान् किया। निस्सन्देह इस में उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सुनते हैं। ○

लोगों का कहना है: अल्लाह ने अपना एक बेटा बनाया है — महिमावान् है वह! वह अपेक्षा-रहित (परम-स्वतन्त्र) है! आसमानों और ज़मीन में जो-कुछ है उसी का है। तुम्हारे पास इस (दावे) का कोई प्रमाण नहीं। क्या तुम अल्लाह के बारे में ऐसी बात कहते हो जो तुम नहीं जानते? ○ (हे नबी*!) कह दो: जो लोग अल्लाह पर झूठा आरोप लगाते हैं वे सफल नहीं होते। ○ दुनियाँ का सुख है (भोग लें) फिर हमारी ओर उन्हें पलट कर आना है।
७० फिर जो कुफ़्र* वे करते हैं उस के बदले में हम उन्हें अज़ाब का मज़ा चखायेंगे। ○

उन्हें नूह (पैग़म्बर) का हाल पढ़ कर सुनाओ, जब उस ने अपनी जाति वालों से कहा: हे मेरी जाति के लोगो! यदि मेरा (सत्य का बुलावा देने के लिए) खड़ा होना और मेरा अल्लाह की आयतों* के द्वारा चेताना तुम्हारे लिए भारी (असह्य) हो, तो मेरा भरोसा अल्लाह पर है, तुम (एक-मत हो कर) अपनी (एक) बात ठहरा लो, और अपने साथ अपने (ठहराये हुये) शरीकों को भी ले लो। फिर तुम्हारी (वह) बात तुम (में से किसी) पर छिपी न रहे। फिर (तुम्हें जो-कुछ करना है) मेरे साथ कर गुज़रो, और मुझे (तनिक भी) मुहलत न दो। ○ यदि तुम ने मुँह फेर लिया तो मैं ने तुम से कुछ बदला तो माँगा नहीं था। मेरा बदला (कर्म-फल) तो अल्लाह के ज़िम्मे है, और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं मुस्लिमों* में शामिल रहूँ। ○ फिर (इस पर भी) उन्हों ने उसे झुठलाया, तो हम ने उसे और उन लोगों को जो उस

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۞ فَكَذَّبُوهُ فَنَجَّيْنَاهُ وَمَن مَّعَهُ فِي الْفُلْكِ
وَجَعَلْنَاهُمْ خَلَائِفَ وَأَغْرَقْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا ۖ فَانظُرْ كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنذَرِينَ ۞ ثُمَّ بَعَثْنَا مِن بَعْدِهِ رُسُلًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ
فَجَاءُوهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا كَذَّبُوا بِهِ مِن قَبْلُ
كَذَٰلِكَ نَطْبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِ الْمُعْتَدِينَ ۞ ثُمَّ بَعَثْنَا مِن بَعْدِهِم
مُّوسَىٰ وَهَارُونَ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ بِآيَاتِنَا فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا
قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ۞ فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِندِنَا قَالُوا إِنَّ هَٰذَا
لَسِحْرٌ مُّبِينٌ ۞ قَالَ مُوسَىٰ أَتَقُولُونَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَكُمْ ۖ أَسِحْرٌ
هَٰذَا وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُونَ ۞ قَالُوا أَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا
عَلَيْهِ آبَاءَنَا وَتَكُونَ لَكُمَا الْكِبْرِيَاءُ فِي الْأَرْضِ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا
بِمُؤْمِنِينَ ۞ وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُونِي بِكُلِّ سَاحِرٍ عَلِيمٍ ۞ فَلَمَّا
جَاءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُم مُّوسَىٰ أَلْقُوا مَا أَنتُم مُّلْقُونَ ۞ فَلَمَّا أَلْقَوْا
قَالَ مُوسَىٰ مَا جِئْتُم بِهِ السِّحْرُ ۖ إِنَّ اللَّهَ سَيُبْطِلُهُ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا
يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِينَ ۞ وَيُحِقُّ اللَّهُ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ وَلَوْ كَرِهَ
الْمُجْرِمُونَ ۞ فَمَا آمَنَ لِمُوسَىٰ إِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّن قَوْمِهِ عَلَىٰ خَوْفٍ
مِّن فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِمْ أَن يَفْتِنَهُمْ ۚ وَإِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِي
الْأَرْضِ وَإِنَّهُ لَمِنَ الْمُسْرِفِينَ ۞ وَقَالَ مُوسَىٰ يَا قَوْمِ إِن كُنتُمْ

के साथ नौका में थे बचा लिया, और उन्हीं को हम ने ख़लीफ़ा* बनाया, और उन सब को डुबो दिया जिन्हों ने हमारी आयतों* को झुठलाया था[७४]। तो जिन्हें चेतावनी दी जा चुकी थी (फिर भी राह पर न आये) उन का कैसा (बुरा) परिणाम हुआ। ○

फिर, उस के बाद, कितने ही रसूल* हम ने उन की जातियों की ओर भेजे, वे (रसूल*) उन के पास खुली-खुली निशानियाँ ले कर आये। परन्तु वे ऐसे न थे कि जिस चीज़ को पहले झुठला चुके थे उस पर ईमान* लाते। इसी तरह हम सीमा से आगे बढ़ जाने वालों के दिलों पर ठप्पा लगा देते हैं[७५]। ○

फिर, उन के बाद, हम ने मूसा और हारून को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन और उस के सरदारों की ओर भेजा, परन्तु वे अकड़ बैठे और वे अपराधी लोग थे। ○ जब हमारी ओर से हक़* (सत्य) उन के सामने आया, तो कहने लगे : यह तो खुला जादू है। ○ मूसा ने कहा : क्या तुम हक़* (सत्य) के बारे में ऐसी बात कहते हो जब कि वह तुम्हारे सामने आ गया है? क्या यह कोई जादू है? हालांकि जादूगर (कभी) सफल नहीं होते। ○ उन्हों ने कहा : क्या तू हमारे पास इस लिए आया है कि हमें उस (पन्थ) से फेर दे जिस पर हम ने अपने पूर्वजों को पाया है, और ज़मीन में तुम दोनों (भाइयों) की बड़ाई हो? हम तो तुम दोनों पर ईमान* लाने वाले नहीं हैं। ○ फ़िरऔन ने (अपने लोगों से) कहा : हर जानकार जादूगर को हमारे पास ला हाज़िर करो। ○ जब जादूगर आ गये, तो मूसा ने उन से कहा : तुम जो-कुछ फेंकने वाले हो फेंको। ○ फिर जब उन्हों ने (अपने मन्तर) फेंके, तो मूसा ने कहा : ये जो-कुछ तुम बना लाये हो जादू है। अल्लाह अभी इसे मलिया-मेट किये दे रहा है। निस्सन्देह अल्लाह बिगाड़ फैलाने वालों का काम बनने नहीं देता। ○ अल्लाह अपने वचन द्वारा हक़ (सत्य) को हक़ कर दिखाता है, चाहे यह बात अपराधी लोगों को बुरी ही क्यों न लगे। ○

फिर मूसा पर उस की जाति की कुछ सन्तति ही ईमान* लाई फ़िरऔन और उन के सरदारों के इस भय के होते हुये कि कहीं वह (अर्थात् फ़िरऔन) उन्हें किसी आज़माइश (संकट) में न डाल दे। और निश्चय ही फ़िरऔन ज़मीन में बहुत सिर उठाये हुये था, और निश्चय ही वह मर्यादा-हीन लोगों में से था। ○

७४ हज़रत नूह अ० की जाति पर तूफ़ान अथवा जल की बाढ़ का अज़ाब आया था। अज़ाब आने से पहले-पहले हज़रत नूह अ० ने अल्लाह के हुक्म से एक नौका बना कर तैयार कर लिया था; अज़ाब आ जाने पर आप अपने अनुयायियों को ले कर नाव में सवार हो गये थे। अल्लाह ने आप को और आप के साथियों को बचा लिया। और दूसरे सारे लोग जल-मग्न हो कर रह गये।

७५ अर्थात् जो लोग हठधर्मी और पक्षपात के कारण अपनी ग़लती पर अड़े रहते हैं अल्लाह भी उन्हें उन के हाल पर छोड़ देता है, यहाँ तक कि उन के दिल सख़्त हो जाते हैं और सच्ची बात से वे कुछ भी प्रभावित नहीं होते।

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

آمَنْتُمْ بِاللَّهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوا إِنْ كُنْتُمْ مُسْلِمِينَ ۝ فَقَالُوا عَلَى
اللَّهِ تَوَكَّلْنَا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ وَنَجِّنَا
بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ وَأَخِيهِ أَنْ
تَبَوَّآ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوتًا وَاجْعَلُوا بُيُوتَكُمْ قِبْلَةً وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ
وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَقَالَ مُوسَىٰ رَبَّنَا إِنَّكَ آتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَ
مَلَأَهُ زِينَةً وَأَمْوَالًا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا رَبَّنَا لِيُضِلُّوا عَنْ سَبِيلِكَ
رَبَّنَا اطْمِسْ عَلَىٰ أَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوا حَتَّىٰ
يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۝ قَالَ قَدْ أُجِيبَتْ دَعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيمَا وَ
لَا تَتَّبِعَانِّ سَبِيلَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَجَاوَزْنَا بِبَنِي إِسْرَائِيلَ
الْبَحْرَ فَأَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُنُودُهُ بَغْيًا وَعَدْوًا حَتَّىٰ إِذَا أَدْرَكَهُ
الْغَرَقُ قَالَ آمَنْتُ أَنَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا الَّذِي آمَنَتْ بِهِ بَنُو إِسْرَائِيلَ
وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝ آلْآنَ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ
الْمُفْسِدِينَ ۝ فَالْيَوْمَ نُنَجِّيكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُونَ لِمَنْ خَلْفَكَ
آيَةً وَإِنَّ كَثِيرًا مِنَ النَّاسِ عَنْ آيَاتِنَا لَغَافِلُونَ ۝ وَلَقَدْ بَوَّأْنَا
بَنِي إِسْرَائِيلَ مُبَوَّأَ صِدْقٍ وَرَزَقْنَاهُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ فَمَا
اخْتَلَفُوا حَتَّىٰ جَاءَهُمُ الْعِلْمُ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝ فَإِنْ كُنْتَ فِي شَكٍّ مِمَّا

मूसा ने कहा : हे मेरी जाति के लोगो ! यदि तुम अल्लाह पर ईमान* रखते हो तो उस पर भरोसा करो, यदि तुम मुस्लिम* हो। ○ उन्हों ने (जवाब में) कहा : हम ने अल्लाह पर भरोसा किया, हे रब* ! हमें ज़ालिम लोगों के लिए आज़माइश का कारण न बना।[१६] ○ और (हे रब* !) अपनी दया से, हमें काफ़िर* लोगों से छुटकारा दिला। ○

और हम ने मूसा और उस के भाई की ओर वह्य* की कि अपने लोगों के लिए मिस्र (देश) में कुछ मकान ठहरा लो और अपने मकानों को क़िबला (मस्जिदें) बना लो, और नमाज़* क़ायम रखो[१७]। और ईमान* वालों को शुभ-सूचना दे दो। ○

(आगे चल कर) मूसा ने कहा : हमारे रब* ! तू ने फ़िरऔन और उस के सरदारों को सांसारिक जीवन में (बड़ी) शोभा (-सामग्री) और माल दिये हैं, हमारे रब* ! यह इस लिए है कि वे तेरी राह से भटकायें ! हमारे रब* ! उन के मालों को नष्ट कर दे और उन के दिलों को सख़्त कर दे कि ईमान* न लायें[१८] यहाँ तक कि वे दुःख देने वाले अज़ाब को (अपनी आँखों से) देख लें। ○ (अल्लाह ने) कहा : तुम दोनों की दुआ क़ुबूल कर ली गई। तो तुम (सच्चाई पर) जमे रहो, और उन लोगों की राह न चलना जो जानते नहीं। ○

और हम ने बनी इस्राईल* को समुद्र पार करा दिया, फिर फ़िरऔन और उस की सेना ने ज़ुल्म और ज़्यादती के इरादे से उन का पीछा किया, यहाँ तक कि वह (फ़िरऔन) डूबने लगा, तो पुकार उठा : मैं ईमान* लाया कि उस के सिवा कोई इलाह* (पूज्य) नहीं जिस पर बनी इस्राईल* ईमान* लाये हैं, और अब मैं मुस्लिमों* में से हूँ। ○ (जवाब दिया गया) क्या! अब! (ईमान* लाता है) हालाँकि इस से पहले तू ने नाफ़रमानी की और बिगाड़ फैलाने वालों में से था ! ○ आज हम तेरे (मृत-) शरीर को बचायेंगे ताकि तू अपने बाद वालों के लिए एक निशानी हो[१९]। और निस्सन्देह अधिकतर लोग तो हमारी निशानियों से ग़ाफ़िल हैं। ○

---

१६ अर्थात् हमें ग़लतियों और कमज़ोरियों से बचा ले। और हमें सफलता प्रदान कर। कहीं ऐसा न हो कि हमारी कोई ग़लती और कमज़ोरी या सच्चाई की राह में पेश आने वाली मुसीबत लोगों को आज़माइश में डाल दे: और उन की गुमराही और अधिक बढ़ जाये। और वे यह कहने लगें कि ये लोग सत्य पर होते तो संकट में क्यों पड़ते।

१७ अर्थात् उन मकानों को तुम्हारे बीच केन्द्र का स्थान प्राप्त हो, तुम वहाँ सामूहिक रूप से नमाज़* पढ़ो।

१८ अर्थात् जब उन्हें ईमान से बैर है, तो तू उन्हें ऐसा ही कर दे कि उन्हें ईमान* लाने का अवसर प्राप्त न हो।

१९ प्रायद्वीप सीना के पश्चिमी तट पर वह जगह आज भी मौजूद है जहाँ फ़िरऔन की लाश समुद्र में तैरती हुई पाई गई थी। प्राचीन मिस्री लोग अपने सम्राटों और सरदारों की लाशों को एक विशेष प्रकार का मसाला लगा कर सुरक्षित अवस्था में रख देते थे। १८वीं शताब्दी से ले कर आज तक बहुत सी लाशें मिस्र से निकल चुकी हैं। और दुनिया के लग भग सभी अजायब-घरों (Museum) में दो-चार लाशें रखी गई हैं।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ فَسْئَلِ الَّذِينَ يَقْرَءُونَ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكَ لَقَدْ جَاءَكَ
الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ۝ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ
الَّذِينَ كَذَّبُوا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَتَكُونَ مِنَ الْخٰسِرِينَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ
حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَلَوْ جَاءَتْهُمْ كُلُّ
اٰيَةٍ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۝ فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ اٰمَنَتْ
فَنَفَعَهَا إِيمَانُهَا إِلَّا قَوْمَ يُونُسَ لَمَّا اٰمَنُوا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ
الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنٰهُمْ إِلٰى حِينٍ ۝ وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ
لَاٰمَنَ مَنْ فِي الْأَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيعًا أَفَأَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى
يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ۝ وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تُؤْمِنَ إِلَّا بِإِذْنِ
اللّٰهِ وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ۝ قُلِ انْظُرُوا
مَاذَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا تُغْنِي الْاٰيٰتُ وَالنُّذُرُ عَنْ
قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ فَهَلْ يَنْتَظِرُونَ إِلَّا مِثْلَ أَيَّامِ الَّذِينَ
خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ قُلْ فَانْتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ ۝
ثُمَّ نُنَجِّي رُسُلَنَا وَالَّذِينَ اٰمَنُوا كَذٰلِكَ حَقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِينَ ۝
قُلْ يٰأَيُّهَا النَّاسُ إِنْ كُنْتُمْ فِي شَكٍّ مِنْ دِينِي فَلَا أَعْبُدُ الَّذِينَ
تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ أَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِي يَتَوَفّٰىكُمْ وَ
أُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَأَنْ أَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ

हम ने बनी इसराईल* को बहुत अच्छा ठिकाना दिया, और उन्हें (जीवन की) उत्तम सामग्री दी; फिर उन्हों ने (दीन* के विषय में) उस समय विभेद किया जब कि उन के पास ज्ञान आ चुका था[२०]। निश्चय ही तेरा रब* क़ियामत* के दिन उन के बीच उस चीज़ का फ़ैसला कर देगा जिस में वे विभेद करते थे। C

यदि तुझे उस चीज़ के बारे में कोई सन्देह हो जो हम ने तुझ पर उतारी है, तो उन लोगों से पूछ ले जो तुझ से पहले से किताब* पढ़ रहे हैं। वास्तव में तेरे पास तेरे रब* की ओर से हक़ (सत्य) आया है। अतः तू सन्देह करने वालों में न हो। ○ और न उन लोगों में शामिल हो जिन्हों ने अल्लाह की आयतों* को झुठलाया, नहीं तो तू घाटा उठाने वालों में से हो जायेगा। ○

(हे नबी*!) जिन लोगों पर तेरे रब* की बात[२१] साबित हो चुकी है वे ईमान* नहीं लायेंगे, ○ चाहे उन के सामने हर एक निशानी क्यों न आ जाये, जब तक कि दुःख देने वाले अज़ाब को वे (अपनी आँखों से) न देख लें। ○ फिर ऐसी कोई बस्ती क्यों न हुई कि (अज़ाब देख कर) ईमान* लाई हो और उस का ईमान* लाना उस के लिए लाभदायक हुआ हो सिवाय यूनुस की जाति वालों के! जब वे ईमान* लाये तो हम ने सांसारिक जीवन में उन पर से अपमान-जनक अज़ाब टाल दिया था[२२] और हम ने उन्हें एक मुद्दत तक जीवन-सुख प्रदान किया। ○

यदि तेरा रब* चाहता, तो ज़मीन में जितने लोग हैं सब-के-सब ईमान* ले आते, फिर क्या तू लोगों को मजबूर करेगा कि वे ईमान* वाले हो जायें? ○ कोई जीव बिना अल्लाह के हुक्म के ईमान* नहीं ला सकता। और वह उन लोगों पर (कुफ़्र* और शिर्क* की) गन्दगी

यदि वर्तमान समय की खोज सही है तो फ़िरऔन की लाश आज तक नष्ट नहीं हुई है बल्कि मिस्र के अजायब घर में आज भी उसे देख कर हम शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं।

२० अर्थात् उन्हों ने विभेद अज्ञान के कारण नहीं किया बल्कि विभेद उन्हों ने अपनी दुष्टता के कारण ज्ञान के पश्चात् किया।

२१ अर्थात् उस की यह बात कि जो व्यक्ति हर प्रकार के पक्षपात, हठधर्मी और दुराग्रह से रहित हो कर सत्य का प्रेमी न बनेगा उस के हिस्से में ईमान* की दौलत कभी नहीं आ सकती।

२२ हज़रत यूनुस अ० का नाम बाइबिल में योनाह (Jonah) है। आप बनी इसराईल* के नबियों* में से हैं। आप को असीरिया (Assyria) वालों को सच्चाई का बुलावा देने के लिए इराक़ भेजा गया था। इस जाति का केन्द्र उस समय नैनुवा नगर था। दजला नदी के पूर्वी तट पर आज भी इस नगर के खँडहर पाये जाते हैं। यह प्रश्न कि हज़रत यूनुस अ० की जाति वालों पर से अज़ाब क्यों टाल दिया गया, तो विचार करने से इतना मालूम होता है कि हज़रत यूनुस अ० से कुछ भूल हो गई थी, उन्हों ने समय आने से पहले ही बस्ती छोड़ दी थी। इस लिए अल्लाह ने भी उन की जाति के लोगों को अज़ाब से बचा लिया। अज़ाब के लक्षण दिखाई पड़े थे जिसे देख कर लोग तौबा* करने लग गये, अल्लाह ने उन्हें क्षमा कर दिया।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

حَنِيفًا وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝ وَلَا تَدْعُ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۖ فَإِن فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذًا مِّنَ الظَّالِمِينَ ۝ وَإِن يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ ۖ وَإِن يُرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَادَّ لِفَضْلِهِ ۚ يُصِيبُ بِهِ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۚ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝ قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمُ الْحَقُّ مِن رَّبِّكُمْ ۖ فَمَنِ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ ۖ وَمَن ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۖ وَمَا أَنَا عَلَيْكُم بِوَكِيلٍ ۝ وَاتَّبِعْ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتَّىٰ يَحْكُمَ اللَّهُ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ۝

डाल देता है जो बुद्धि से काम नहीं लेते[२३] । ○

(उन से) कहो : देखो तो आसमानों और ज़मीन में क्या-कुछ है ! परन्तु निशानियाँ और डरावे उन लोगों के कुछ काम नहीं आते जो ईमान* नहीं लाते । ○ फिर ये लोग सिवाय उन लोगों के-से (बुरे) दिनों के और किस चीज़ का इन्तज़ार कर रहे हैं जो इन से पहले गुज़र चुके हैं ? कह दो : अच्छा इन्तज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ इन्तज़ार करता हूँ । ○ फिर (अज़ाब के समय) हम अपने रसूलों* को और उन लोगों को बचा लेते हैं जो ईमान* लाये हुये हों, ऐसा ही होता है[२४] । हम पर यह हक़ है कि हम ईमान* वालों को बचा लें । ○

(हे नबी* !) कह दो : हे लोगो ! यदि तुम्हें मेरे दीन* के बारे में कोई सन्देह हो, तो (जान लो कि) मैं उन की इबादत* नहीं करता जिन की तुम अल्लाह के सिवा इबादत* करते हो, बल्कि उस अल्लाह की इबादत* करता हूँ जो तुम (सब के प्राणों) को पूर्णतः ग्रस्त लेता है,[२५] मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं ईमान* वालों में से हूँ । ○ और यह कि हर ओर से कट कर अपना रुख़ (अल्लाह के) दीन* की ओर कर ले, और कदापि मुश्रिकों* में शामिल न हो । ○ और अल्लाह के सिवा किसी ऐसे को न पुकार, जो न तुझे फ़ायदा पहुँचा सके और न नुक़सान, यदि तू ने ऐसा किया तो तू ज़ालिमों में से होगा । ○ यदि अल्लाह तुझे किसी तकलीफ़ में डाल दे तो उस के सिवा कोई उस (संकट) को टालने वाला नहीं है; और यदि वह तेरे लिए किसी भलाई का इरादा करे, तो कोई उस के फ़ज़्ल (कृपा) को फेरने वाला नहीं । वह इस (फ़ज़्ल) को अपने बन्दों में से जिस तक चाहता है पहुँचाता है । और वह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है । ○

कह दो : लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे रब* की ओर से हक़ (सत्य) आ चुका है । तो जो कोई सीधी राह अपनाये, वह अपने ही लिए सीधी राह अपनायेगा, और जो कोई भटके उस के भटकने का वबाल भी उसी पर पड़ेगा, और मैं तुम्हारे ऊपर कोई हवालेदार नहीं हूँ[२६] । ○ (हे नबी* !) जो-कुछ तुम पर वह्य* की जा रही है, तुम उस पर चलो और सब्र* करो यहाँ तक कि अल्लाह फ़ैसला कर दे । और वही फ़ैसला करने वालों में सब से उत्तम है । ○

---

२३ मतलब यह है कि अल्लाह का तरीक़ा यह नहीं है कि किसी नियम और हिकमत* के बिना जिस के बारे में चाहा ईमान* का हुक्म दे दिया और उसे ईमान* की दौलत मिल गई; और जिसे चाहा ईमान* से वंचित कर दिया । उस का एक नियम और क़ानून है जो हिकमत* और बुद्धिमत्ता के सर्वथा अनुकूल है, और वह नियम यह है कि आदमी अपने को हर पक्षपात से बचा कर अल्लाह की दी हुई बुद्धि से काम ले । ऐसे व्यक्ति के लिए ईमान की राह आसान कर दी जाती है; और वह सत्य को पा लेता है । परन्तु जो लोग बुद्धि और अपनी सूझ-बूझ को पक्षपात और हठधर्मी आदि से स्वतन्त्र नहीं रख सकते, या जो सत्य की खोज में बुद्धि से काम ही नहीं लेते, उन के हिस्से में गुमराही, अज्ञान और अधर्म की गंदगियों के अतिरिक्त और क्या आ सकता है ।

२४ अर्थात् हम ऐसा ही करते हैं ।

२५ अर्थात् जिस के क़ब्ज़े में तुम्हारा जीवन है कि जब तक चाहता है तुम्हें जीवित रखता है । जब चाहता है तुम्हारी मृत्यु आ जाती है ।

२६ दे० आयत ६६ ।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

११--हूद

(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः* का नाम आयत* ५० से लिया गया है जिस में अल्लाह के एक विशेष पैग़म्बर हज़रत हूद अ० का हाल बयान हुआ है। हज़रत हूद अ० अरब के पैग़म्बरों में से थे; आप का हाल इबरानी धार्मिक ग्रन्थों में नहीं मिलता। आप वह पहले पैग़म्बर मालूम होते हैं जिन्हें प्रायद्वीप अरब के निवासियों की ओर अल्लाह ने भेजा था। इस सूरः में अरब के दो और पैग़म्बरों (हज़रत सालेह अ० और हज़रत शुऐब अ०) का हाल भी बयान हुआ है; परन्तु वे हज़रत हूद अ० के बाद हुये हैं।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह सूरः मक्का की अन्तिम सूरतों में से है। अनुमान है कि इस के उतरने का समय लगभग वही है जो सूरः यूनुस के उतरने का समय है।

केन्द्रीय विषय तथा सम्पर्क

यह सूरः नागरिकों के लिए डरावा है जब कि वे शिर्क* करें और ज़मीन में बिगाड़ पैदा करें। इस सूरः में मक्का वालों को चेतावनी दी गई है कि वे शिर्क* को छोड़ कर एक अल्लाह के आगे झुकने वाले बनें; और उन सारी बातों से दूर रहें जिन से ज़मीन में बिगाड़ पैदा होता है।

नबी सल्ल० और ईमान* वालों को सब्र और धैर्य्य से काम लेने और प्रत्येक अवस्था में सत्य-मार्ग पर डटे रहने का प्रोत्साहन दिया गया है। यह सूरः उन लोगों के लिए शुभ-सूचना है जो अल्लाह से डरें और उस की अवज्ञा से बचने की कोशिश करें।

प्रस्तुत सूरः का पिछली सूरः (सूरः यूनुस) से गहरा सम्पर्क है। पिछली सूरः में कुछ बस्तियों का हाल बयान किया गया है। यह सूरः कई बस्तियों के वृत्तान्त हमारे सामने प्रस्तुत करती है। पिछली सूरः में ईमान* वालों को तसल्ली दी गई थी; उन्हें उन के अच्छे परिणामों के द्वारा शुभ-सूचना दी गई थी; और काफ़िरों* को उन के बुरे परिणाम से डराया गया था। प्रस्तुत सूरः पिछली सूरः की पूरक है। इस में चेतावनी और डरावा पिछली सूरः से बढ़ कर है।

वार्त्ता (Subject-matter)

इस सूरः में लोगों को आमन्त्रित किया गया है कि वे रसूल* की बात पर ईमान* लाएँ; शिर्क* को छोड़ दें और एक अल्लाह के बन्दे बन कर रहें। उन्हें एक दिन अल्लाह के सामने हाज़िर होना है, जहाँ उन्हें अपने एक-एक काम का हिसाब देना होगा।

१ देखें आयत १०० ।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

फिर लोगों के सामने यह बात भी रखी गई है कि संसार की जो जातियाँ इसी वर्तमान जीवन को सब-कुछ समझ कर भोग-विलास में पड़ी रहीं और नबियों* की पुकार को ठुकरा दिया उन का क्या परिणाम हुआ।

इस्लाम-विरोधियों को चेतावनी दी गई है कि तुम्हारी अधर्म-नीतियों पर यदि अभी अज़ाब नहीं आ रहा है, तो इस का कारण यह नहीं है तुम सत्य-मार्ग पर हो; बल्कि यह तो अल्लाह की कृपा और दया है कि वह तुम्हें सोचने और सँभलने की पूरी मुहलत दिये जा रहा है। इस से लाभ उठा कर यदि तुम सँभलते नहीं हो, तो अल्लाह का अज़ाब तुम पर आ कर रहेगा; फिर कोई न होगा जो अल्लाह के अज़ाब को टाल सके। इन सारी बातों को समझाने के लिए हज़रत नूह अ० की जाति का क़िस्सा, आद,* समूद* और हज़रत लूत अ० की जाति वालों का हाल, मदयन वालों और फ़िरऔन की जाति के वृत्तान्त खोल कर बयान किये गये हैं।

सूरः अल-आराफ़ की तरह यह सूरः भी लोगों के लिए विशेष उपदेश और शिक्षा प्रस्तुत करती है। इस में विभिन्न जातियों के जो क़िस्से बयान हुए हैं उन पर विचार करने से ध्यान देने योग्य कई बातें सामने आती हैं। इन क़िस्सों के अध्ययन से मालूम होता है कि उन समस्त जातियों की दशा क़रीब-क़रीब एक-सी रही है जिन्हें नबियों* ने सत्य-सन्देश सुनाते हुये अल्लाह की अवज्ञा के बुरे परिणामों से डराया था। फिर हम यह भी देखते हैं कि समस्त नबियों* की मूल शिक्षा सदा एक ही रही है। सभी ने अल्लाह की भक्ति और बन्दगी का निमन्त्रण दिया और शिर्क* और कुफ़्र* से लोगों को रोका है। विभिन्न जातियों का व्यवहार भी अपने अपने नबियों* के साथ एक-सा रहा है। समस्त नबियों* और रसूलों* को अपनी जाति वालों के हाथ यातनाओं और कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है। जिन लोगों ने नबियों* की बात मानी और उन पर ईमान* लाये उन की धारणा भी सदा एक-सी रही है। सत्य और असत्य के संघर्षों का परिणाम भी सदा एक ही सामने आता रहा है। काफ़िर* और सरकश जातियों को अन्त में बुरे दिन देखने ही पड़े हैं।

दुनियाँ में बहुत सी जातियाँ गुज़री हैं, नबी* भी अल्लाह की ओर से बहुत से आये हैं; परन्तु क़ुरआन* में न तो समस्त नबियों* का हाल बयान हुआ है[1] और न संसार की समस्त जातियों के वृत्तान्त ही प्रस्तुत किये गये हैं। इस की आवश्यकता भी नहीं थी कि संसार की समस्त जातियों और नबियों* के क़िस्से क़ुरआन* में बयान किये जायें। जो क़िस्से क़ुरआन* में बयान हुये हैं शिक्षा ग्रहण करने वालों के लिए वही बहुत हैं। क़ुरआन* में जिन ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन किया गया है वे घटनायें और वृत्तान्त वही हैं जिन से किसी-न-किसी हद तक क़ुरआन* के सर्वप्रथम श्रोता[2] परिचित थे। सत्य की पुष्टि के लिए ऐतिहासिक प्रमाण संचित करने और प्राचीन उदाहरणों के द्वारा लोगों को चेतावनी देने के लिए यह ज़रूरी भी था कि उन के सामने इतिहास की उन्हीं जातियों और उन्हीं नबियों* के

१ दे० सूरः अल-मोमिन आयत ७८, सूरः इब्राहीम आयत ६।

२ अर्थात् अरब के मुश्रिक* तथा यहूदी* और ईसाई* लोग।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

क़िस्से बयान किये जायें जिन से वे बिल्कुल ही अनभिज्ञ न हों। कम से कम उन की भनक कानों में अवश्य पड़ चुकी हो या न पड़ी हो तो पास के लोगों से उन के बारे में पूछ सकते हों। कितनी ही उजड़ी हुई बस्तियों से जिन का उल्लेख क़ुरआन में किया गया है, अरब वालों का गुज़र होता था। अरब में यहूदी* और ईसाई* भी बसते थे क़ुरआन* ने उन्हें भी सम्बोधित किया है। ये यहूदी* और ईसाई* अपने धर्म-ग्रन्थों में उन नबियों* और जातियों के विषय में बहुत-कुछ पढ़ चुके थे जिन का उल्लेख क़ुरआन ने उदाहरण के रूप में किया है। हाँ यह बात ज़रूर है कि जिन प्राचीन घटनाओं और वृत्तान्तों का *उल्लेख तौरात** में मिलता था उन में से कितनों की वास्तविकता पर परदे पड़ चुके थे। तौरात* के अपने वास्तविक रूप में सुरक्षित न रहने के कारण किसी घटना के बारे में सही और ठीक-ठीक जानकारी प्राप्त करनी अत्यन्त कठिन बल्कि असम्भव थी। यह क़ुरआन* का बहुत बड़ा उपकार है कि उस ने सत्य को असत्य से अलग कर के दिखा दिया। जिस से मामला अपने असली रूप में सामने आ गया। आधुनिक खोजों और प्राचीन अवशेषों से भी क़ुरआन के बयान की पूर्ण रूप से पुष्टि होती है।

इस सूरः* में मुसलमानों के लिए भी डरावा है जब कि वे बिगाड़ फैलाने और परस्पर विभेद करने लग जायें। इस सूरः में उन ख़राबियों की ओर भी इशारा मिलता है मुस्लिम गिरोह में जिन के पैदा होने की सम्भावना थी। उन से छुटकारा पाने का उपाय *जो इस सूरः से मालूम होता है वह यह है कि रात के समय अल्लाह* के सामने नमाज़* में खड़ा हुआ जाये और सख़्ती और संकट में धैर्य से काम लिया जाये। इस सिलसिले में पूर्वकालीन जातियों के वृत्तान्त भी प्रस्तुत किये गये हैं। यही वह विकट समस्या है जिस के कारण नबी सल्ल० ने कहा था कि सूरः हूद और इस जैसी सूरतों* ने मुझे बूढ़ा कर दिया।

---

* इस अर्थ वाले शब्द आख़िर में बनी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* हूद

(मक्का में उतरी — आयतें* १२३)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
الٓرٰ كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ ۙ اَلَّا
تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنَّنِيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ ۙ وَّاَنِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ
ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّيُؤْتِ
كُلَّ ذِيْ فَضْلٍ فَضْلَهٗ ؕ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ
يَوْمٍ كَبِيْرٍ ۞ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۞
اَلَآ اِنَّهُمْ يَثْنُوْنَ صُدُوْرَهُمْ لِيَسْتَخْفُوْا مِنْهُ ؕ اَلَا حِيْنَ يَسْتَغْشُوْنَ
ثِيَابَهُمْ ۙ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۚ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۞

अलिफ़० लाम० रा०[1]। (यह) एक किताब* है जिस की आयतें* पक्की (जँची हुई) हैं फिर विस्तारपूर्वक बयान हुई हैं[2] एक हिकमत* वाले और ख़बर रखने वाले (अल्लाह) की ओर से, ○ कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत* न करो। मैं तो उसी की ओर से तुम्हें सचेत करने वाला और शुभ-सूचना देने वाला हूँ। ○ और यह कि तुम अपने रब* से क्षमा माँगो और उस की ओर पलट आओ। वह तुम्हें, एक नियत समय तक अच्छा जीवन-सुख प्रदान करेगा[3]। और हर फ़ज़्ल वाले को अपना फ़ज़्ल प्रदान करेगा[4]। परन्तु यदि तुम मुँह फेरते हो तो निस्सन्देह मुझे तुम्हारे बारे में एक बड़े दिन के अज़ाब का भय है। ○ तुम्हें उसी की ओर पलट कर जाना है, और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है (सर्वशक्तिमान है)। ○

देखो ये (लोग) अपने सीनों को मोड़ते हैं ताकि उस से छिप जायें[5]। जान रखो जब ये अपने कपड़ों से अपने-आप को ढाँपते हैं, अल्लाह जानता है जो-कुछ ये छिपाते हैं और जो-कुछ ज़ाहिर करते हैं। वह तो सीनों (में छिपे) तक के भेदों का जानने वाला है। ○ [†]ज़मीन में चलने

---

१ दे० सूरः अल-बक़रः फ़ुट नोट १।

२ अर्थात् इस किताब* या फ़रमान की जो बातें बयान हुई हैं वे पक्की, अटल और जँची-तुली हैं। इस के बयान में कोई उलझाव नहीं है। इस की एक-एक बात खोल कर बयान की गई है।

३ अर्थात् उसे सच्ची ख़ुशी और शान्ति प्राप्त होगी। दुनिया में जो-कुछ उसे प्राप्त होगा उस से वह धोखे में नहीं पड़ेगा, उसे वह आख़िरत* की सफलता का साधन बनायेगा।

४ अर्थात् जो अपने स्वभाव और चरित्र में जितना आगे होगा उसे उसी के अनुसार उच्च पद प्रदान किया करेगा।

५ मक्के में बहुत से इस्लाम-विरोधी लोग नबी सल्ल० की बात सुनने से कतराते थे, आप (सल्ल०) को देखते तो मुँह मोड़ कर चल देते, या कपड़े में अपने को छिपा लेते ताकि आप (सल्ल०) को कुछ कहने सुनने का अवसर न मिल सके।

[†] यहाँ से बारहवाँ पारः (Part XII) शुरू होता है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

وما من دابة في الأرض إلا على الله رزقها ويعلم مستقرها
ومستودعها كل في كتب مبين ○ وهو الذي خلق السموت
والأرض في ستة أيام وكان عرشه على الماء ليبلوكم أيكم
أحسن عملا ولئن قلت إنكم مبعوثون من بعد الموت ليقولن
الذين كفروا إن هذا إلا سحر مبين ○ ولئن أخرنا عنهم
العذاب إلى أمة معدودة ليقولن ما يحبسه ألا يوم يأتيهم
ليس مصروفا عنهم وحاق بهم ما كانوا به يستهزءون ○ و
لئن أذقنا الإنسان منا رحمة ثم نزعناها منه إنه ليئوس كفور ○
ولئن أذقنه نعماء بعد ضراء مسته ليقولن ذهب السيات
عني إنه لفرح فخور ○ إلا الذين صبروا وعملوا الصلحت أولئك
لهم مغفرة وأجر كبير ○ فلعلك تارك بعض ما يوحى إليك
وضائق به صدرك أن يقولوا لولا أنزل عليه كنز أو جاء معه
ملك إنما أنت نذير والله على كل شيء وكيل ○ أم يقولون
افتريه قل فأتوا بعشر سور مثله مفتريت وادعوا من استطعتم
من دون الله إن كنتم صدقين ○ فإلم يستجيبوا لكم فاعلموا
أنما أنزل بعلم الله وأن لا إله إلا هو فهل أنتم مسلمون ○
من كان يريد الحيوة الدنيا وزينتها نوف إليهم أعملهم فيها

वाला कोई ऐसा जीवधारी नहीं है जिस की रोज़ी अल्लाह के ज़िम्मे न हो और जिस के रहने की जगह और जिस के सौंपे जाने की जगह वह न जानता हो। सब-कुछ एक स्पष्ट किताब* में (अंकित) है।○

और वही है जिस ने आसमानों और ज़मीन को छः दिनों[6] में पैदा किया — और (इस से पूर्व) उस का सिंहासन पानी पर था[7] — ताकि वह तुम्हारी परीक्षा ले कि तुम में कौन अच्छा काम करता है। और (हे नबी* !) यदि तुम (उन लोगों से) कहते हो : निश्चय ही तुम मरने के बाद (जीवित कर के) उठाये जाओगे ! तो काफ़िर* लोग कहते हैं : यह तो बस खुला जादू है।○ और यदि हम एक निश्चित समय तक उन से अज़ाब को टाले रखें तो वे कहने लगेंगे : आख़िर किस चीज़ ने उसे रोक रखा है ? सुन लो ! जिस दिन वह (अज़ाब) उन पर आ जायेगा, तो वह उन पर से टाला न जायेगा, और वही चीज़ उन्हें घेर लेगी जिस की वे हँसी उड़ाया करते थे।○

और यदि कभी हम मनुष्य को अपनी दयालुता का रसास्वादन कराने के बाद फिर उस (नेमत) को उस से छीन लेते हैं, तो वह निराश, और अकृतज्ञ हो जाता है[8]।○ और यदि कभी उसे हम नेमत का मज़ा चखाते हैं, इस के बाद कि उसे तकलीफ़ पहुँची हो तो कहने लगता है : अब तो मेरा सब क्लेश दूर हो गया वह फूला नहीं समाता और डींगें मारने लगता है;○ सिवाय उन लोगों के जो सब्र* करने वाले हैं और अच्छे काम करते हैं। यही (लोग) हैं जिन के लिए क्षमा और बड़ा बदला है[9]।○

तो (हे नबी* !) कहीं ऐसा न हो कि तुम उस में से कोई चीज़ छोड़ दो जो तुम्हारी ओर वह्य* की जा रही है, और इस बात पर तंग-दिल हो, कि वे कहेंगे : इस पर कोई ख़ज़ाना क्यों नहीं उतारा गया, या इस के साथ कोई फ़िरिश्तः* क्यों न आया ? (हे नबी* !) तुम तो केवल सचेत करने वाले हो, और हर चीज़ का हवालेदार तो अल्लाह है।○

क्या ये कहते हैं : उस ने इसे स्वयं गढ़ लिया है। कह दो : अच्छा तो तुम इस-जैसी, गढ़ी हुई, दस सूरतें* ले आओ[10] और अल्लाह के सिवा जिस किसी को (अपनी सहायता के लिए

---

६ अर्थात् छः युग (Period) में।

७ यहाँ पानी का तात्पर्य क्या है, निश्चयपूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता; सम्भव है यह शब्द पदार्थ की उस द्रव्य-अवस्था के लिए प्रयुक्त हुआ हो, जो अवस्था उस को वर्तमान रूप देने से पहले थी। दे० बाइबि "पैदाइश" (Gen) १ : २।

८ दे० सूरः यूनुस आयत ११-१३।

९ दे० सूरः अल मआरिज आयत १६-२५।

१० सूरः यूनुस आयत ३८ में कहा गया है कि एक ही सूरः इस-जैसी बना लाओ; इस से मालूम होता है कि यह सूरः, सूरः यूनुस के बाद उतरी है। जब काफ़िर* लोग १० सूरतें बना कर लाने में असमर्थ रहे तो उन से कहा गया कि अच्छा इस-जैसी एक ही सूरः गढ़ कर दिखा दो।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

بُلا सकते हो बुला लो, यदि तुम (अपनी बात में) सच्चे हो"।○ फिर यदि वे तुम्हारा कहना न कर सकें तो जान लो कि यह (.कुरआन*) अल्लाह के ज्ञान के साथ उतरा है; और यह कि उस के सिवा कोई इलाह* (पूज्य) नहीं है। तो क्या अब तुम मुस्लिम* होते हो !○

जो लोग इसी सांसारिक जीवन और इस की शोभा के इच्छुक होते हैं, उन लोगों को उन के कर्मों का बदला हम यहीं दे देते हैं, और इस में उन के साथ कोई कमी नहीं की जाती।○ यही वे लोग हैं, जिन के लिए आख़िरत* में (दोज़ख़* की) आग के सिवा और कुछ नहीं। और उन्हों ने यहाँ जो-कुछ बनाया सब अकारथ गया और उन का किया-धरा सब मिथ्या ही होता है।○

भला वह व्यक्ति जो अपने रब* की खुली दलील पर हो, और उस के बाद एक गवाह भी उस की ओर से आ गया हो,[12] और इस से पहले मूसा की किताब* भी नायक और दयालुता के रूप में (आ चुकी) हो (क्या वह दुनियाँदारों की तरह इस का इन्कार कर सकता है) ? ऐसे लोग तो इस पर ईमान* लाते हैं, और दूसरे गरोहों में से जो कोई इस का इन्कार करे, तो उस के लिए जिस जगह का वादा है, वह (दोज़ख़* की) आग है तो तुझे इस के बारे में कोई सन्देह न हो। यह तेरे रब* की ओर से हक़* (सत्य) है; परन्तु अधिकतर लोग ईमान* नहीं लाते।○

और उस व्यक्ति से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ गढ़े ? ऐसे लोग अपने रब* के सामने पेश होंगे, और गवाह कहेंगे : यही वे लोग हैं जिन्हों ने अपने रब* पर झूठ गढ़ा था। सुन लो ! ज़ालिमों पर अल्लाह की लानत (धिक्कार) है,[13]○ जो अल्लाह के रास्ते से (लोगों को) रोकते हैं और उसे कज (कुटिल) करना चाहते हैं, और निश्चय ही ये आख़िरत* का इन्कार करने वाले हैं।○ ऐसे लोग ज़मीन में (अल्लाह की पकड़ से) बच निकलने वाले नहीं हैं, और न अल्लाह के सिवा उन का कोई संरक्षक-मित्र है। उन्हें दोहरा अज़ाब दिया जायेगा। वे न तो सुन सकते थे, और न देख सकते थे।○ यही वे लोग हैं जिन्हों ने अपने आप को घाटे में डाला, और वह सब-कुछ इन से जाता रहा जो ये गढ़ा करते थे।○ निश्चय ही यही आख़िरत* में सब से बढ़ कर घाटे में रहेंगे।○ निस्सन्देह वे लोग जो ईमान* लाये और अच्छे काम किये और अपने रब* की ओर क़रार पकड़ा। ऐसे ही लोग जन्नत* वाले हैं; वे उस में सदैव रहेंगे।○ (इन) दोनों फ़रीक़ों की मिसाल ऐसी है जैसे एक अन्धा

وَهُمْ فِيهَا لَا يُبْخَسُونَ ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ
إِلَّا النَّارُ ۖ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوا فِيهَا وَبَاطِلٌ مَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ أَفَمَن
كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّهِ وَيَتْلُوهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِن قَبْلِهِ كِتَابُ
مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً ۚ أُولَٰئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۚ وَمَن يَكْفُرْ بِهِ مِنَ
الْأَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهُ ۚ فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِّنْهُ ۚ إِنَّهُ الْحَقُّ مِن
رَّبِّكَ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ
عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۚ أُولَٰئِكَ يُعْرَضُونَ عَلَىٰ رَبِّهِمْ وَيَقُولُ الْأَشْهَادُ هَٰؤُلَاءِ
الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ ۚ أَلَا لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ۝ الَّذِينَ
يَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا وَهُم بِالْآخِرَةِ هُمْ
كَافِرُونَ ۝ أُولَٰئِكَ لَمْ يَكُونُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُم
مِّن دُونِ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَاءَ ۘ يُضَاعَفُ لَهُمُ الْعَذَابُ ۚ مَا كَانُوا يَسْتَطِيعُونَ
السَّمْعَ وَمَا كَانُوا يُبْصِرُونَ ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ وَ
ضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝ لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ
الْأَخْسَرُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَأَخْبَتُوا إِلَىٰ
رَبِّهِمْ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ
كَالْأَعْمَىٰ وَالْأَصَمِّ وَالْبَصِيرِ وَالسَّمِيعِ ۚ هَلْ يَسْتَوِيَانِ مَثَلًا ۚ أَفَلَا
تَذَكَّرُونَ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ

११ दे० सूरः यूनुस आयत १५—१७।

१२ यहाँ गवाह से अभिप्रेत क्या है इस के लिए सूरः की इन आयतों पर विचार कीजिए : आयत ३८, ५८, ६३, ६६, ८८, ६४, ६६।

१३ दे० सूरः यूनुस आयत १७।

* इन का अर्थ आख़िर में दी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

به إليكم ويستخلف ربي قوما غيركم ولا تضرونه شيئا إن ربي على كل شيء حفيظ ○ ولما جاء أمرنا نجينا هودا والذين آمنوا معه برحمة منا ونجيناهم من عذاب غليظ ○ وتلك عاد جحدوا بآيات ربهم وعصوا رسله واتبعوا أمر كل جبار عنيد ○ وأتبعوا في هذه الدنيا لعنة ويوم القيامة ألا إن عادا كفروا ربهم ألا بعدا لعاد قوم هود ○ وإلى ثمود أخاهم صالحا قال يا قوم اعبدوا الله ما لكم من إله غيره هو أنشأكم من الأرض واستعمركم فيها فاستغفروه ثم توبوا إليه إن ربي قريب مجيب ○ قالوا يا صالح قد كنت فينا مرجوا قبل هذا أتنهانا أن نعبد ما يعبد آباؤنا وإننا لفي شك مما تدعونا إليه مريب ○ قال يا قوم أرأيتم إن كنت على بينة من ربي وآتاني منه رحمة فمن ينصرني من الله إن عصيته فما تزيدونني غير تخسير ○ ويا قوم هذه ناقة الله لكم آية فذروها تأكل في أرض الله ولا تمسوها بسوء فيأخذكم عذاب قريب ○ فعقروها فقال تمتعوا في داركم ثلاثة أيام ذلك وعد غير مكذوب ○ فلما جاء أمرنا نجينا صالحا والذين آمنوا معه برحمة منا ومن خزي يومئذ إن ربك هو القوي العزيز ○ وأخذ الذين ظلموا

मेरा बदला (कर्म-फल) तो बस उस के ज़िम्मे है जिस ने मुझे पैदा किया। फिर क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ? ○ और हे मेरी जाति वालो ! अपने रब* से क्षमा की प्रार्थना करो, फिर उसी की ओर पलट चलो; वह तुम पर आसमान को ख़ूब बरसता छोड़ देगा और तुम्हारी ताक़त पर ताक़त बढ़ायेगा। अपराधी बन कर (उस से) मुँह न फेरो। ○

उन्हों ने कहा : हे हूद ! तू हमारे पास कोई खुली दलील ले कर नहीं आया है और हम तेरे कहने से अपने इलाहों* (पूज्य देवताओं) को छोड़ने वाले नहीं हैं और हम तेरी बात मानने वाले नहीं। ○ हमारा कहना यही है कि हमारे इलाहों* (देवताओं) में से किसी की तुझ पर मार पड़ गई है (कि तू ऐसी बहकी बातें करता है)।

(हूद ने) कहा : मैं तो अल्लाह को गवाह बनाता हूँ, और तुम भी गवाह रहो, कि मैं उस से विरक्त हूँ जिस किसी को तुम (प्रभुत्व में) शरीक ठहराते हो। ○ सिवाय उस (एक अल्लाह) के[२५]। सो तुम सब मिल कर मेरे साथ दाँव-घात कर देखो, फिर मुझे (तनिक भी) मुहलत न दो। ○ मैं ने तो अल्लाह पर भरोसा किया, जो मेरा रब* भी है और तुम्हारा रब* भी। कोई भी जीवधारी ऐसा नहीं है जिस की चोटी उस ने पकड़ न रखी हो ! निस्सन्देह मेरा रब* सीधे मार्ग पर है[२६]। ○ यदि तुम मुँह फेरते हो तो जो-कुछ दे कर मुझे तुम्हारी ओर भेजा गया था, वह मैं तुम्हें पहुँचा चुका हूँ, और मेरा रब* तुम्हारी जगह दूसरे किसी गिरोह को लायेगा। और तुम उस का कुछ न बिगाड़ सकोगे। निस्सन्देह मेरा रब* हर चीज़ का निगहबान है। ○

और जब हमारा हुक्म आ गया तो हम ने हूद को और उन लोगों को जो उस के साथ ईमान* लाये थे[२७] अपनी दयालुता से बचा लिया; और उन्हें सख़्त अज़ाब से बचाया। ○

यह हैं आद। इन्हों ने अपने रब* की आयतों* का इन्कार किया और उस के रसूलों* की नाफ़रमानी की और हर जब्र करने वाले हठी के पीछे चले। ○ इस दुनियाँ में भी लानत इन के साथ लग गई और क़ियामत* के दिन भी। सुनो ! आद* ने अपने रब* से कुफ़्र* किया। सुन लो ! दूर कर दिये गये आद, हूद की जाति वाले ! ○

और समूद* की ओर उन के भाई सालेह (को भेजा)। उस ने कहा : हे मेरी जाति वालो ! अल्लाह की इबादत* करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई इलाह* (पूज्य) नहीं है। उस ने तुम्हें

२५. अर्थात् सिवाय अल्लाह के मैं और किसी की इबादत* नहीं करता।

२६. अर्थात् उस का हर काम सीधा और सही होता है। वह कोई अन्यायी राजा नहीं है कि उचित और अनुचित का उस के यहाँ कोई अन्तर न हो। यह किसी तरह सम्भव नहीं कि कोई व्यक्ति अल्लाह पर भरोसा करे और जीवन में सीधे और सही मार्ग को अपनाये फिर भी वह घाटे ही में रहे।

२७. दे० फुट नोट २०।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

الصَّيْحَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ۝ كَأَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ۗ أَلَآ
إِنَّ ثَمُوْدَا۟ كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ۗ أَلَا بُعْدًا لِّثَمُوْدَ ۝ وَلَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُنَآ
إِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى قَالُوْا سَلٰمًا ۗ قَالَ سَلٰمٌ فَمَا لَبِثَ أَنْ جَآءَ بِعِجْلٍ
حَنِيْذٍ ۝ فَلَمَّا رَآٰ أَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ إِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَأَوْجَسَ مِنْهُمْ
خِيْفَةً ۗ قَالُوْا لَا تَخَفْ إِنَّآ أُرْسِلْنَآ إِلٰى قَوْمِ لُوْطٍ ۝ وَامْرَأَتُهٗ قَآئِمَةٌ
فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنٰهَا بِإِسْحٰقَ ۙ وَمِنْ وَّرَآءِ إِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ ۝ قَالَتْ
يٰوَيْلَتٰٓى ءَأَلِدُ وَأَنَا عَجُوْزٌ وَّهٰذَا بَعْلِيْ شَيْخًا ۗ إِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ عَجِيْبٌ ۝
قَالُوْٓا أَتَعْجَبِيْنَ مِنْ أَمْرِ اللّٰهِ رَحْمَتُ اللّٰهِ وَبَرَكٰتُهٗ عَلَيْكُمْ أَهْلَ
الْبَيْتِ ۗ إِنَّهٗ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ۝ فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ إِبْرٰهِيْمَ الرَّوْعُ وَ
جَآءَتْهُ الْبُشْرٰى يُجَادِلُنَا فِيْ قَوْمِ لُوْطٍ ۝ إِنَّ إِبْرٰهِيْمَ لَحَلِيْمٌ
أَوَّاهٌ مُّنِيْبٌ ۝ يٰٓإِبْرٰهِيْمُ أَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۚ إِنَّهٗ قَدْ جَآءَ
أَمْرُ رَبِّكَ ۚ وَإِنَّهُمْ اٰتِيْهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُوْدٍ ۝ وَلَمَّا جَآءَتْ
رُسُلُنَا لُوْطًا سِيْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالَ هٰذَا يَوْمٌ عَصِيْبٌ ۝
وَجَآءَهٗ قَوْمُهٗ يُهْرَعُوْنَ إِلَيْهِ ۗ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ۗ
قَالَ يٰقَوْمِ هٰٓؤُلَآءِ بَنَاتِيْ هُنَّ أَطْهَرُ لَكُمْ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ
فِيْ ضَيْفِيْ ۗ أَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ رَّشِيْدٌ ۝ قَالُوْا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا
لَنَا فِيْ بَنٰتِكَ مِنْ حَقٍّ ۚ وَإِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيْدُ ۝ قَالَ لَوْ أَنَّ لِيْ

भूमि से पैदा किया और तुम्हें उस में आबाद किया। सो उस से क्षमा की प्रार्थना करो और उस की ओर पलट आओ। निस्सन्देह मेरा रब* क़रीब है, दुआओं का क़बूल करने वाला है। ○

उन्हों ने कहा : हे सालेह ! इस से पहले तू हम में ऐसा था कि तुझ से बड़ी आशायें थीं। क्या तू हमें उस चीज़ के पूजने से रोकता है जिसे हमारे पूर्वज पूजते रहे हैं ? जिस की ओर तू हमें बुलाता है उस के बारे में तो हम बड़े दुविधा एवं विकलता-जनक सन्देह में पड़ गये हैं। -

(सालेह ने) कहा : हे मेरी जाति वालो ! सोचो तो सही, यदि मैं अपने रब* की एक खुली दलील पर हूँ और उस ने मुझे अपनी दयालुता[२८] प्रदान की है, तो (इस के बाद) अल्लाह के मुक़ाबिले में कौन मेरी सहायता करेगा यदि मैं उस की नाफ़रमानी (अवज्ञा) करूँ ? अतः तुम घाटे में डालने के सिवा और मुझे कुछ नहीं दे सकते। ○ और हे मेरी जाति वालो ! यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिए एक निशानी है, इसे छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में (जहाँ चाहे) खाये, और तकलीफ़ देने के लिए इसे हाथ न लगाना नहीं तो तात्कालिक अज़ाब तुम्हें आ लेगा। ○

परन्तु उन्हों ने उस (ऊँटनी) को उस की कूँचें काट कर मार डाला, तो (सालेह ने) कहा : बस तीन दिन और (जीवन का) आनन्द ले लो ! यह ऐसा वादा है जिस में कुछ भी झूठ नहीं। ○

फिर जब हमारा हुक्म आ गया, तो हम ने अपनी दयालुता से सालेह को, और उन लोगों को जो उस के साथ ईमान* लाये थे,[२९] बचा लिया और उस दिन की रुसवाई से उन्हें बचाये रखा। निस्सन्देह तेरा रब* ही बलवान् और अपार शक्ति का मालिक है। ○ और उन लोगों को जिन्हों ने ज़ुल्म किया था एक (भयङ्कर) चीत्कार ने आ लिया, और वे अपने निवास-स्थानों में औंधे पड़े रह गये, ○ (और ऐसे मिटे) मानो वे वहाँ कभी बसे ही न थे। सुन लो ! समूद* ने अपने रब* से कुफ़्र* किया। सुन लो ! दूर कर दिये गये समूद ! ○

और देखो हमारे भेजे हुये (फ़िरिश्ते*) इबराहीम के पास शुभ-सूचना ले कर पहुँचे। कहा : तुम पर सलाम हो ! (इबराहीम ने) कहा : (तुम पर भी) सलाम हो ! फिर कुछ देर न की एक भुना हुआ बछड़ा (उन के लिए) ले आया। ○ परन्तु जब देखा कि उन के हाथ उस (खाने) की ओर नहीं बढ़ते, तो उसे उन से अजनबीपन का आभास हुआ और दिल में उन से डरा[३०]। वे बोले : डरो नहीं ! हम तो लूत

---

२८ अर्थात् नबूवत*।

२९ दे० फ़ुट नोट २०।

३० हज़रत इबराहीम अ० ने पहचाना नहीं कि वे फ़िरिश्ते* हैं, जो खाते-पीते नहीं। वे फ़िरिश्ते मानव रूप में उन के पास पहुँचे थे। इसी लिए उन के लिए आप ने तुरन्त ही भोजन का प्रबन्ध किया।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

بكم قوة او اوي الى ركن شديد ۝ قالوا يلوط انا رسل ربك
لن يصلوا اليك فاسر باهلك بقطع من اليل ولا يلتفت منكم
احد الا امراتك انه مصيبها ما اصابهم ان موعدهم الصبح
اليس الصبح بقريب ۝ فلما جاء امرنا جعلنا عاليها سافلها
وامطرنا عليها حجارة من سجيل منضود ۝ مسومة
عند ربك وما هي من الظلمين ببعيد ۝ والى مدين اخاهم
شعيبا قال يقوم اعبدوا الله ما لكم من اله غيره ولا تنقصوا
المكيال والميزان اني اركم بخير واني اخاف عليكم عذاب
يوم محيط ۝ ويقوم اوفوا المكيال والميزان بالقسط ولا تبخسوا
الناس اشياءهم ولا تعثوا في الارض مفسدين ۝ بقيت الله
خير لكم ان كنتم مؤمنين وما انا عليكم بحفيظ ۝ قالوا
يشعيب اصلوتك تامرك ان نترك ما يعبد اباؤنا او ان نفعل
في اموالنا ما نشؤا انك لانت الحليم الرشيد ۝ قال يقوم
ارءيتم ان كنت على بينة من ربي ورزقني منه رزقا حسنا
وما اريد ان اخالفكم الى ما انهكم عنه ان اريد الا الاصلاح
ما استطعت وما توفيقي الا بالله عليه توكلت واليه انيب ۝
ويقوم لا يجرمنكم شقاقي ان يصيبكم مثل ما اصاب قوم نوح

७० की जाति वालों की ओर भेजे गये हैं। ○ और उस की (इबराहीम की) स्त्री भी खड़ी हुई थी सो वह हँस पड़ी फिर हम ने उसे इसहाक़, और इसहाक़ के पीछे, याक़ूब की शुभ-सूचना दी। ○ वह बोली : हाय मेरा अभाग्य[३१]! क्या मेरे औलाद होगी जब कि मैं बूढ़ी हूँ, और यह मेरे पति हैं बूढ़े! यह तो बड़े आश्चर्य की बात है। ○ वे बोले : क्या अल्लाह के हुक्म पर आश्चर्य करती हो? घर वालो! तुम पर अल्लाह की दयालुता और उस की बरकतें हैं, निःसन्देह वह (अल्लाह) प्रशंसा का अधिकारी, और गौरव वाला है। ○

फिर जब इबराहीम का भय दूर हो गया और उसे (औलाद की) शुभ-सूचना भी मिली, तो वह लूत की जाति वालों के बारे में हम से झगड़ने लगा[३२]। ○ निश्चय ही इबराहीम बड़ा ही सहनशील, हृदय का कोमल, और (हर हाल में) हमारी ओर रुजू (प्रवृत्त) ७५ होने वाला था। ○ (कहा गया) हे इबराहीम! इसे छोड़ो! तुम्हारे रब* का हुक्म आ चुका, और निश्चय ही इन पर वह अज़ाब आने वाला है जो टलने का नहीं। ○

और जब हमारे भेजे हुये (फ़िरिश्ते*) लूत के पास पहुँचे, तो वह उनके कारण मलीन हुआ और उन के बारे में अपने को असमर्थ पाया; और कहा : यह बड़ा कठिन दिन है[३३]। ○ उस की जाति वाले भागे हुये उस (के घर) की ओर आये — ये लोग पहले से ही दुष्कर्म करते ही रहते थे। — (लूत ने) कहा : हे मेरी जाति वालो! ये मेरी बेटियाँ (मौजूद) हैं[३४]। ये तुम्हारे लिए ज़्यादा पाक हैं। तो अल्लाह की नाफ़रमानी से बचो और उस की ना-ख़ुशी से डरो और मुझे मेरे मेहमानों के मामले में रुसवा न करो। क्या तुम में कोई भला आदमी नहीं? ○ उन्हों ने कहा : तुझे तो मालूम है कि तेरी बेटियों में हमारा कोई हिस्सा नहीं है,[३५] और तू तो भली भाँति जानता है कि हम क्या चाहते हैं। ○ लूत ने कहा : क्या अच्छा होता ८० कि मुझ में तुम से निमटने की शक्ति होती या मैं किसी मज़बूत सहारे का आश्रय ले सकता! ○

३१ अपना आश्चर्य प्रकट करने के लिए ऐसा कहा।

३२ अर्थात् अल्लाह से आग्रह करने लगे कि लूत (अ०) की जाति वालों को अभी तबाह न कर; उन्हें अभी कुछ मुहलत और दे कदाचित् वे राह पर आ जायें। 'झगड़ने' के शब्द से प्रतीत होता है कि हज़रत इबराहीम (अ०) को अपने रब* से अति अधिक प्रेम था। बाइबिल में भी इस आग्रह का उल्लेख किया गया है। दे० 'पैदाइश' (Genesis) १८ : २३-३२।

३३ फ़िरिश्ते* लूत अ० के यहाँ सुन्दर लड़कों के रूप में पहुँचे थे। हज़रत लूत अ० को इस की ख़बर न थी कि वे फ़िरिश्ते* हैं। उन्हें बड़ी चिन्ता हुई। उन की जाति वाले बहुत ही बदचलन और आचरण-हीन थे। हज़रत लूत अ० जानते थे कि लोग हमारे मेहमानों के साथ कभी अच्छा व्यवहार नहीं करेंगे।

३४ अर्थात् तुम अपनी कामेच्छा की तृप्ति के लिए कुमार्ग और अधर्म को न अपनाओ। इस के लिए मेरे घर, अथवा समाज की स्त्रियाँ मौजूद हैं उन से विवाह कर के अपने को दुराचरण से बचाओ।

३५ अर्थात् तू अपनी सवच्छ से हमें जिस पवित्रता की ओर बुलाता है वह राह तो हमारे लिए बनी ही नहीं है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

أَوْ قَوْمَ هُودٍ أَوْ قَوْمَ صٰلِحٍ وَمَا قَوْمُ لُوطٍ مِّنكُم بِبَعِيدٍ ۝ وَاسْتَغْفِرُوا
رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ إِنَّ رَبِّي رَحِيمٌ وَدُودٌ ۝ قَالُوا يٰشُعَيْبُ مَا
نَفْقَهُ كَثِيرًا مِّمَّا تَقُولُ وَإِنَّا لَنَرٰىكَ فِينَا ضَعِيفًا وَلَوْلَا رَهْطُكَ
لَرَجَمْنٰكَ وَمَا أَنتَ عَلَيْنَا بِعَزِيزٍ ۝ قَالَ يٰقَوْمِ أَرَهْطِي أَعَزُّ عَلَيْكُم
مِّنَ اللّٰهِ وَاتَّخَذْتُمُوهُ وَرَاءَكُمْ ظِهْرِيًّا إِنَّ رَبِّي بِمَا تَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ۝
وَيٰقَوْمِ اعْمَلُوا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عٰمِلٌ سَوْفَ تَعْلَمُونَ مَن يَأْتِيهِ
عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَمَنْ هُوَ كٰذِبٌ وَارْتَقِبُوا إِنِّي مَعَكُمْ رَقِيبٌ ۝ وَلَمَّا
جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَأَخَذَتِ
الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دِيٰرِهِمْ جٰثِمِينَ ۝ كَأَن لَّمْ
يَغْنَوْا فِيهَا أَلَا بُعْدًا لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُودُ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا
مُوسٰى بِآيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِينٍ ۝ إِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَإِيْهِ فَاتَّبَعُوا
أَمْرَ فِرْعَوْنَ وَمَا أَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيدٍ ۝ يَقْدُمُ قَوْمَهُ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ فَأَوْرَدَهُمُ النَّارَ وَبِئْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُودُ ۝ وَأُتْبِعُوا فِي
هٰذِهِ لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ بِئْسَ الرِّفْدُ الْمَرْفُودُ ۝ ذٰلِكَ مِنْ
أَنبَاءِ الْقُرٰى نَقُصُّهُ عَلَيْكَ مِنْهَا قَائِمٌ وَحَصِيدٌ ۝ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ
وَلٰكِن ظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ فَمَا أَغْنَتْ عَنْهُمْ آلِهَتُهُمُ الَّتِي يَدْعُونَ
مِن دُونِ اللّٰهِ مِن شَيْءٍ لَّمَّا جَاءَ أَمْرُ رَبِّكَ وَمَا زَادُوهُمْ غَيْرَ تَتْبِيبٍ ۝

(फ़िरिश्तों* ने) कहा : हे लूत ! हम तो तेरे रब* के भेजे हुये (फ़िरिश्ते*) हैं; ये तुझ तक कदापि नहीं पहुँच सकते । सो तू रात के किसी हिस्से में अपनी स्त्री के सिवा अपने लोगों को ले कर निकल जा, और तुम में कोई पीछे पलट कर न देखे । उस पर भी[36] वही कुछ बीतने वाला है जो इन (लोगों) पर बीतेगा । इन (के अज़ाब) का निश्चित समय प्रातःकाल है । क्या प्रातःकाल निकट नहीं है ? ○

फिर जब हमारा हुक्म आ पहुँचा तो हम ने उस (बस्ती) को तल-पट कर दिया उस पर पकी मिट्टी के पत्थर ताबड़-तोड़ बरसाये । ○ जिन पर तेरे रब* के यहाँ से निशान किया हुआ था । और यह ज़ालिमों[37] से कुछ दूर नहीं है[38] । ○

और मदयन* (वालों) की ओर उन के भाई शुऐब (को भेजा) । उस ने कहा : हे मेरी जाति वालो ! अल्लाह की इबादत* करो । उस के सिवा तुम्हारा कोई इलाह* (पूज्य) नहीं । और तुम नाप और तौल में कमी न किया करो । मैं तो तुम्हें अच्छे हाल में देख रहा हूँ, और मुझे तुम्हारे बारे में एक घेर लेने वाले दिन के अज़ाब का भय है । ○ और हे मेरी जाति वालो ! नाप और तौल न्यायपूर्वक पूरी-पूरी किया करो, और लोगों को उन की चीज़ों में घाटा न दो । और ज़मीन में फ़साद (बिगाड़) फैलाते न फिरो । ○ यदि तुम ईमान* वाले हो (व्यापार में) अल्लाह की दी हुई बचत ही तुम्हारे लिए उत्तम है; और मैं तुम पर कोई नियुक्त-रखवाला नहीं हूँ । ○ ८४

वे बोले : हे शुऐब ! क्या तेरी नमाज़ तुझे यही हुक्म देती है कि हम उसे छोड़ दें जिसे हमारे पूर्वज पूजते रहे हैं, या हम यह छोड़ दें कि अपने माल के साथ जो चाहें करें ? एक तू ही तो सहिष्णु और भला पुरुष रह गया है । ○

(शुऐब ने) कहा : हे मेरी जाति वालो ! देखो तो, यदि मैं अपने रब* की खुली दलील पर हूँ और उस ने मुझे अपनी ओर से अच्छी रोज़ी[39] प्रदान की है (तो मैं कैसे तुम्हारी तुच्छ इच्छाओं का पालन कर सकता हूँ) ? और मैं नहीं चाहता कि जिस से मैं तुम्हें रोकता हूँ उस से तुम्हें तो रोकूँ और स्वयं इस के विरुद्ध चलूँ । मैं तो अपने बस भर सुधार चाहता हूँ । और मेरा काम बनना तो बस अल्लाह ही के सहारे सम्भव है । उसी पर मेरा भरोसा है और उसी की ओर मैं रुजू (प्रवृत्त) हूँ । ○ और हे मेरी जाति वालो ! मेरे साथ तुम्हारा विरोध कहीं यह नौबत न पहुँचा दे कि तुम पर वही कुछ बीते जो नूह की जाति* वालों पर बीत चुका है, या हूद की जाति वालों पर, या सालेह की जाति वालों पर (बीता है); और लूत की जाति वाले तो तुम

३६ अर्थात् तेरी स्त्री पर ।
३७ अर्थात् जाप को ज़ुल्म की राह अपनाये हुये हैं उन से ।
३८ अर्थात् यह अज़ाब इन पर भी आ सकता है ।
३९ अर्थात् मुझे जीवन-निर्वाह के लिए हलाल* रोज़ी दी और हराम* खाने से बचाया, और इसे नबाई दिया को उस की तरफ़ से बड़ी और उपज देन है ।

* का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

हो सकता। उसकी कुछ आवश्यकतायें और भी हैं, जब तक मनुष्य की वे आवश्यकतायें पूरी न हों उसे शान्ति नहीं मिल सकती और न उसका जीवन सफल हो सकता है।

मनुष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता यह है कि उसे बताया जाये कि वह क्या है ? संसार में वह कहाँ से आया है ? और उसे कहाँ जाना है ? उसके जीवन का उद्देश्य क्या है ? वह मार्ग कौन सा है जिस पर चलकर वह अपने जीवन को सफल बना सकता है ? वे नियम और सिद्धान्त कौन से हैं जिनका पालन करना उसका परम कर्त्तव्य है ? उसे अपने जीवन में किन कामों से बचना चाहिए और वे शुभ कर्म कौन से हैं जिनके बिना मनुष्य की साधना पूरी नहीं हो सकती ?

जीवन सम्बन्धी इन आधारभूत प्रश्नों का जब तक ठीक-ठीक उत्तर न मिल जाये, मनुष्य अज्ञान के अन्धकार में ही भटकता रहता है[1]। इन प्रश्नों का उत्तर हमें किसी पर्वत-शिखर पर अंकित दिखाई नहीं देता जिसे पढ़कर हम जान सकें कि सृष्टि की अन्तिम सत्ता क्या है ? उसमें मनुष्य का वास्तविक स्थान क्या है ? जिस सृष्टि-कर्त्ता ने मनुष्य को पैदा किया उसके लिए समस्त जीवन-सामग्री संचित की, जिसकी दयालुता ने उसके लिए जल, प्रकाश, वायु आदि का प्रबन्ध किया उस दयावन्त के बारे में यह कैसे सोचा जा सकता है कि वह मनुष्य को पैदा करके यों ही उसे अंधेरे में भटकने के लिए छोड़ देगा। उसके पथ-प्रकाश का कोई प्रबन्ध न करेगा। जब वह हमारी छोटी-छोटी ज़रूरतों को नहीं भूलता, तो हमारी सब से बड़ी ज़रूरत को वह कैसे भूल जायेगा। मानव-इतिहास साक्षी है कि अल्लाह ने आरम्भ से ही मानव-जाति को वास्तविकता का ज्ञान प्रदान करने के लिए नुबूवत और रिसालत का सिलसिला जारी किया। मानव-जगत में अपने नबी और रसूल भेजे। नबियों को यथार्थ ज्ञान प्रदान करके उन्हें इस महान् कार्य पर नियुक्त किया कि वे लोगों तक अल्लाह का सन्देश पहुँचायें और उन्हें बतायें कि उनका पैदा करने वाला उनसे क्या चाहता है। नबियों में सबसे अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल० हैं। आप पर अल्लाह की ओर से जो किताब उतारी गई वह क़ुरआन है। नुबूवत व रिसालत या क़ुरआन का इन्कार वास्तव में अल्लाह की उस दयालुता का इन्कार है जिसके चमत्कारों की आभा से पृथ्वी और आकाश सभी परिपूर्ण हो रहे हैं। यह कैसे सम्भव हो सकता है कि वह हमारी शारीरिक एवं भौतिक आवश्यकतायें तो पूरी करे परन्तु हमारी वास्तविक और सबसे बड़ी आवश्यकता की पूर्ति का वह कोई प्रबन्ध न करे। यह कैसे सम्भव है कि शारीरिक विकास के लिए तो उसके पास सामग्री हो परन्तु मनुष्य के आत्मिक विकास और उसके मार्ग-दर्शन के लिए उसके पास कुछ न हो। क़ुरआन का इन्कार करने के बाद मनुष्य के पास वास्तविकता (Reality) के बारे में अटकल और अनुमान के अतिरिक्त और क्या रह जाता है ? और

---

१. अज्ञान के अन्धकार में मानव-आत्मा की क्या दशा होती है इसका अन्दाज़ा डेविड ह्यूम (David Hume) की निम्नलिखित पंक्तियों से लगाया जा सकता है। वह अपनी प्रसिद्ध पुस्तक Treatise on Human Nature में लिखता है :

"मैं कहाँ हूँ और क्या हूँ ? किस स्रोत से मेरा जीवन प्रवाहित होता है और यह कहाँ जायेगा ? किसकी कृपा की मुझे लालसा होगी और किसके प्रकोप का मुझे भय है ? मेरे चारों ओर यह क्या है ? किस पर मैं प्रभाव रखता हूँ या कौन मुझ पर प्रभाव रखता है ? मेरे चारों ओर ये प्रश्न उठने लगते हैं और मैं अत्यन्त नैराश्यपूर्ण अवस्था में सोच में पड़ जाता हूँ। मेरे चारों ओर अन्धकार-ही अन्धकार छा जाता है और मेरी मानसिक शक्ति और सारे अंग शिथिल हो जाते हैं।"

से कुछ दूर भी नहीं है[४०]। ○ अपने रब* से क्षमा की प्रार्थना करो फिर उसी की ओर पलट आओ। निस्सन्देह मेरा रब* दया करने वाला और बहुत ९० प्रेम करने वाला है। ○

(उन्हों ने) कहा : हे शुऐब ! तेरी बहुत सी बातें तो हमारी समझ ही में नहीं आतीं, और हम तो देखते हैं कि तू हम में कमज़ोर है।. और यदि तेरे भाई-बन्धु न होते, तो हम तो तुझ पर पथराव कर देते, तू इतने बल-बूते वाला नहीं है कि हम पर भारी हो। ○

(शुऐब ने) कहा : हे मेरी जाति वालो ! क्या मेरे भाई-बन्धु तुम पर अल्लाह से भी ज़्यादा भारी हैं कि तुम ने उस को (अल्लाह को) अपने पीछे डाल दिया ! तुम जो-कुछ करते हो निश्चय ही मेरा रब* उस को घेरे हुये है (उस के ज्ञान और अधिकार से कोई भी चीज़ बाहर नहीं)। ○ हे मेरी जाति वालो ! तुम अपनी जगह काम करते रहो मैं भी (अपनी जगह) काम करता रहूँगा। जल्द ही तुम जान लोगे कि किस पर अज़ाब आता है जो उसे रुसवा कर देगा, और कौन झूठा है। इन्तज़ार करो ! मैं भी तुम्हारे साथ इन्तज़ार कर रहा हूँ। ○

और जब हमारा हुक्म आ पहुँचा तो हम ने अपनी दयालुता से शुऐब को और उन लोगों को जो उस के साथ ईमान* लाये थे बचा लिया; और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया था उन्हें एक (भयङ्कर) चीख़ ने आ लिया, और वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गये, ○ (ऐसे मिटे) मानो वे वहाँ ९५ कभी बसे ही न थे। सुन लो ! मदयन वाले* दूर कर दिये गये, जैसे समूद* दूर किये गये थे ! ○

और मूसा को हम ने अपनी निशानियों और खुले प्रमाण के साथ भेजा, ○ फ़िरऔन और उस के सरदारों के पास, परन्तु वे[४१] फ़िरऔन के कहने पर चले, हालाँकि फ़िरऔन की बात कोई सही बात न थी। ○ क़ियामत* के दिन वह अपनी जाति वालों के आगे-आगे होगा और उन्हें आग (दोज़ख़*) में जा उतारेगा और क्या ही बुरा घाट है जहाँ वे उतारे गये। ○ और यहाँ भी लानत उन के साथ लग गई और क़ियामत* के दिन भी। क्या ही बुरा पुरस्कार है जो (उन्हें) मिला ! ○

ये कुछ बस्तियों के वृत्तान्त हैं जो हम तुम से बयान करते हैं। इन में कोई तो खड़ी है और १०० किसी की फ़स्ल कट चुकी है[४२]। ○ हम ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि उन्हों ने स्वयं अपने ऊपर ज़ुल्म किया; जब तेरे रब* का हुक्म आ गया तो उन के इलाह* (देवी-देवता आदि) जिन्हें वे अल्लाह के सिवा पुकारा करते थे उन के कुछ काम न आये; और उन्हों ने विनाश के अतिरिक्त और कुछ न दिया। ○

और तेरे रब* की पकड़ ऐसी ही होती है जब वह किसी ज़ालिम बस्ती को पकड़ता है। नि-

وَكَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ اِذَآ اَخَذَ الْقُرٰى وَهِىَ ظَالِمَةٌ ۭ اِنَّ اَخْذَهٗٓ
اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ ۝ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ الْاٰخِرَةِ ۭ ذٰلِكَ
يَوْمٌ مَّجْمُوْعٌ ۙ لَّهُ النَّاسُ وَذٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ ۝ وَمَا نُؤَخِّرُهٗٓ اِلَّا
لِاَجَلٍ مَّعْدُوْدٍ ۝ يَوْمَ يَاْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ
شَقِيٌّ وَّسَعِيْدٌ ۝ فَاَمَّا الَّذِيْنَ شَقُوْا فَفِى النَّارِ لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّ
شَهِيْقٌ ۝ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَاۗءَ
رَبُّكَ ۭ اِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ۝ وَاَمَّا الَّذِيْنَ سُعِدُوْا فَفِى الْجَنَّةِ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَاۗءَ رَبُّكَ ۭ عَطَاۗءً
غَيْرَ مَجْذُوْذٍ ۝ فَلَا تَكُ فِىْ مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هٰٓؤُلَاۗءِ ۭ مَا يَعْبُدُوْنَ
اِلَّا كَمَا يَعْبُدُ اٰبَاۗؤُهُمْ مِّنْ قَبْلُ ۭ وَاِنَّا لَمُوَفُّوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ غَيْرَ
مَنْقُوْصٍ ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ۭ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ
سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِىَ بَيْنَهُمْ ۭ وَاِنَّهُمْ لَفِىْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ۝
وَاِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ اَعْمَالَهُمْ ۭ اِنَّهٗ بِمَا يَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝
فَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا ۭ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
بَصِيْرٌ ۝ وَلَا تَرْكَنُوْٓا اِلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ ۙ وَمَا لَكُمْ
مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَاۗءَ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ۝ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ
طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ الَّيْلِ ۭ اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ

---

४० अर्थात् उन्हें दुनियाँ से मिटे अभी कोई अधिक समय नहीं बीता है; और वह स्थान भी तुम्हारे यहाँ से कुछ अधिक दूर नहीं है जहाँ उन पर अल्लाह का अज़ाब आया है।
४१ फ़िरऔन के सरदार।
४२ अर्थात् कोई बिल्कुल ही तहस-नहस हो चुकी है।
* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ ۞ وَاصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ۞ فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ قَبْلِكُمْ اُولُوْا بَقِيَّةٍ يَّنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِى الْاَرْضِ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّنْ اَنْجَيْنَا مِنْهُمْ وَاتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَآ اُتْرِفُوْا فِيْهِ وَكَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ۞ وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ ۞ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلَا يَزَالُوْنَ مُخْتَلِفِيْنَ ۞ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ رَبُّكَ ۚ وَلِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ ۚ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ۞ وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ۚ وَجَآءَكَ فِىْ هٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَّذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۞ وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ ۚ اِنَّا عٰمِلُوْنَ ۞ وَانْتَظِرُوْا ۚ اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ۞ وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ كُلُّهٗ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ۚ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۞

निस्सन्देह उस की पकड़ दुःख देने वाली, और सख़्त है। निश्चय ही इस में बड़ी निशानी है उस व्यक्ति के लिए जो आख़िरत* के अज़ाब से डरे। यह एक दिन होगा जब सारे लोग इकट्ठा होंगे, और यह ऐसा दिन होगा जिसे सब देखेंगे[93]। ○ और हम उसे केवल थोड़े नियत समय के लिए टाल रहे हैं। ○ जिस दिन वह आयेगा तो बिना उस की (अल्लाह की) इजाज़त के कोई बात न करेगा; फिर कोई उन में अभागा होगा, और कोई भाग्यवान। ○ तो जो अभागे होंगे (उस दिन) वे आग (दोज़ख़*) में होंगे; जहाँ उन के लिए साँस खींचना और फिर फुंकार मारना होगा, ○ वे सदैव उसी में रहेंगे जब तक आसमान और ज़मीन क़ायम हैं[94] हाँ यदि तेरा रब* ही चाहे[95] तो दूसरी बात है। निस्सन्देह तेरा रब* जो चाहे कर डाले। ○ और रहे वे लोग जो भाग्यवान होंगे तो वे (उस दिन) जन्नत* में होंगे, जहाँ वे सदैव रहेंगे जब तक कि आसमान और ज़मीन क़ायम हैं हाँ यदि तेरा रब* ही चाहे तो दूसरी बात है : (यह) एक देन है जिस का सिलसिला कभी न टूटेगा। **१०१**

सो जिस चीज़ को ये पूजते रहे हैं उस की ओर से तुझे कोई सन्देह न हो। ये तो बस उसी तरह पूजा किये जा रहे हैं जिस तरह पहले इन के पूर्वज पूजते रहे हैं। और निश्चय ही हम इन्हें इन का हिस्सा बिना किसी कमी के पूरा-पूरा देने वाले हैं। ○

हम ने मूसा को भी किताब* दी थी, तो उस में भी विभेद किया गया था; यदि तेरे रब* की ओर से एक बात पहले ही से निश्चय न हो चुकी होती, तो इन के बीच फ़ैसला कर दिया गया होता, निश्चय ही ये लोग उस की ओर से दुविधा एवं विकलता-जनक सन्देह में पड़े हुये हैं[[illegible]]। ○ और निश्चय ही उन सब को तेरा रब* उन के कर्मों का भर-पूर बदला दे कर **११०**

---

93 मानव-जाति का इतिहास केवल विभिन्न घटनाओं का वृत्तान्त नहीं है, बल्कि [illegible] के इतिहास में जातियों और नस्लों की उत्पत्ति और उन के पतन में जो नियम और क्रम दिखाई देता है, और इस उत्पत्ति और पतन में जिस प्रकार स्पष्ट रूप से कुछ नैतिक कारणों का पता चलता है, और इस के अतिरिक्त [illegible] में पिछली पापी जातियों का जो भरपूर परिणाम होता रहा है, इस से भली-भाँति यह बात समझी जा सकती है कि यह दुनिया केवल प्राकृतिक नियमों के बल पर नहीं चल रही है, बल्कि इस के पीछे कोई नैतिक नियम और कोई महान् उद्देश्य काम कर रहा है। [illegible] और निश्चय ही एक दिन दुनिया का कोई अन्तिम और वास्तविक परिणाम सामने आने वाला है।

94 "जब तक आसमान और ज़मीन क़ायम हैं" यह मुहावरा है, मतलब यह है कि उन्हें सदा के लिए दोज़ख़ में झोंक दिया जायेगा। और यदि आसमान और ज़मीन से आसमान और ज़मीन ही अभिप्राय हो तो कहना पड़ेगा कि यहाँ "आसमानों और ज़मीन" से अभिप्रेत परलोक के आसमान और ज़मीन हैं जो सदैव क़ायम (स्थिर) रहेंगे, क्योंकि क़ुरआन से मालूम होता है कि वर्तमान ज़मीन और आसमान क़ियामत के दिन बदल डाले जाएँगे। देखें सूरः इब्राहीम आयत 48।

95 [illegible]

96 [illegible]

[illegible]

ذلك ذكرى للذاكرين ۚ واصبر فان الله لا يضيع اجر
المحسنين ○ فلولا كان من القرون من قبلكم اولوا بقية
ينهون عن الفساد في الارض الا قليلا ممن انجينا منهم
واتبع الذين ظلموا ما اترفوا فيه وكانوا مجرمين ○ وما كان
ربك ليهلك القرى بظلم واهلها مصلحون ○ ولو شاء ربك
لجعل الناس امة واحدة ولا يزالون مختلفين ۙ الا من رحم
ربك ۚ ولذلك خلقهم ۚ وتمت كلمة ربك لاملئن جهنم من
الجنة والناس اجمعين ○ وكلا نقص عليك من انباء الرسل
ما نثبت به فؤادك ۚ وجاءك في هذه الحق وموعظة وذكرى
للمؤمنين ○ وقل للذين لا يؤمنون اعملوا على مكانتكم
انا عاملون ۙ وانتظروا ۚ انا منتظرون ○ ولله غيب السماوات
والارض واليه يرجع الامر كله فاعبده وتوكل عليه ۚ
وما ربك بغافل عما تعملون ○

सन्देह उस की पकड़ दुःख देने वाली, और सख़्त है। निश्चय ही इस में बड़ी निशानी है उस व्यक्ति के लिए जो आख़िरत* के अज़ाब से डरे। वह एक दिन होगा जब सारे लोग इकट्ठा होंगे, और वह ऐसा दिन होगा जिसे सब देखेंगे। ○ और हम उसे केवल थोड़े नियत समय के लिए टाल रहे हैं। ○ जिस दिन वह आयेगा तो बिना उस की (अल्लाह की) इजाज़त के कोई बात न करेगा; फिर कोई उन में अभागा होगा, और कोई भाग्यवान। ○ तो जो अभागे होंगे (उस दिन) वे आग (दोज़ख़*) में होंगे: जहाँ उन के लिए साँस खींचना और फिर फुङ्कार मारना होगा, ○ वे सदैव उसी में रहेंगे जब तक आसमान और ज़मीन क़ायम हैं हाँ यदि तेरा रब* ही चाहे तो दूसरी बात है। निस्सन्देह तेरा रब* जो चाहे कर डाले। ○ और रहे वे लोग जो भाग्यवान होंगे तो वे (उस दिन) जन्नत* में होंगे, जहाँ वे सदैव रहेंगे जब तक कि आसमान और ज़मीन क़ायम हैं हाँ यदि तेरा रब* ही चाहे तो दूसरी बात है: (यह) एक देन है जिस का सिलसिला कभी न टूटेगा।

देगा। जो-कुछ भी ये करते हैं निस्सन्देह वह उस की ख़बर रखता है। ○ अतः (हे मुहम्मद !) सीधे मार्ग पर जमे रहो जैसा कि तुम्हें हुक्म हुआ है, और वे लोग भी जो तौबः* कर के तेरे साथ हो गये हैं (सीधे मार्ग पर डटे रहें), और हद से आगे न बढ़ना। जो-कुछ तुम करते हो निश्चय ही वह उस पर निगाह रखता है। ○ और उन लोगों की ओर न झुकना जिन्हों ने ज़ुल्म किया है नहीं तो (दोज़ख़* की) आग तुम्हें आ लगेगी, और अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई संरक्षक-मित्र न होगा, फिर तुम्हें कोई सहायता न मिलेगी। ○ और नमाज़* क़ायम रखो, दिन के दोनों हिस्सों में और रात के कुछ हिस्से में[47]। वास्तव में नेकियाँ बुराइयों को दूर करती हैं। यह याद रखने वालों के लिए एक याद-दिहानी है। ○ और सब्र* करो, कि

११५ निस्सन्देह अल्लाह सत्कर्मी लोगों का बदला (कर्म-फल) अकारथ नहीं करता। ○

फिर तुम से पहले की जातियों में ऐसे भले लोग क्यों न हुये जो लोगों को ज़मीन में बिगाड़ फैलाने से रोकते उन थोड़े से व्यक्तियों के सिवा जिन को उन में से हम ने बचा लिया ! ज़ालिम लोग उस सुख-सामग्री के पीछे लगे जो उन्हें दी गई थी और वे अपराधी ही रहे। ○ यह नहीं होने का कि तेरा रब* बस्तियों को नाहक़ विनष्ट कर दे जब कि वहाँ के लोग सुधारने वाले हों। ○ और यदि तेरा रब* चाहता, तो निश्चय ही सारे लोगों को एक गरोह बना देता, परन्तु अब तो वे सदैव विभेद करते रहेंगे,[48] ○ सिवाय उस के जिस पर तेरा रब* दया करे; और इसी के लिए उस ने उन्हें पैदा किया है[49]। और तेरे रब* की बात पूरी हो कर रही (उस ने कहा था) कि मैं दोज़ख़* को जिन्नों* और मनुष्यों सब से भर दूँगा[50]। ○

(हे मुहम्मद !) रसूलों* के क़िस्सों (वृत्तान्तों) में हर वह क़िस्सा जो हम तुम्हें सुनाते हैं उस के द्वारा तुम्हारे दिल को मज़बूत करते हैं। और उस में तुम्हारे पास हक़ (सत्य) पहुँचा

१२० और उपदेश और याद-दिहानी ईमान* वालों के लिए। ○ और उन लोगों से जो ईमान* नहीं लाते कह दो : तुम अपनी जगह काम करते रहो। हम भी (अपनी जगह) काम कर रहे हैं। ○ और इन्तज़ार करो ! हम भी इन्तज़ार कर रहे हैं। ○ आसमानों और ज़मीन की छिपी हुई चीज़ें अल्लाह ही के लिए हैं,[51] और सारा मामला उसी की ओर पलटता है। अतः (हे नबी* !) तू उसी की इबादत* (बन्दगी) कर और उसी पर भरोसा रख। जो-कुछ तुम लोग करते हो तेरा रब* उस से ग़ाफ़िल (और बे-ख़बर) नहीं है। ○

---

४७ इस में पाँचों नमाज़ें आ गईं। दे० सूरः ता० हा० आयत १३०।

४८ अर्थात् वे सब विभिन्न मार्गों पर ही चलते रहेंगे।

४९ उन्हें इसी लिए पैदा किया गया है कि वे स्वतन्त्र रखे जायें। यह लोगों की अपनी इच्छा पर है कि चाहें तो परस्पर विभेद करके विभिन्न मार्गों में भटकते फिरें; और चाहें तो सत्य-धर्म को —जो सनातन से एक ही रहा है— ग्रहण कर के लोक-परलोक दोनों में अपने को सफल बनायें।

५० यह बात अल्लाह ने हज़रत आदम अ० की सृष्टि के अवसर पर इबलीस* को सम्बोधित करते हुये कही थी। दे० सूरः साद० आयत ७१–८५। यहाँ जिन्नों* और मनुष्यों से अभिप्रेत केवल शैतान* और शैतानों के अनुयायी लोग हैं।

५१ अर्थात् आसमानों और ज़मीन में जो-कुछ छिपा हुआ (Invisible) है वह सब अल्लाह के अधिकार क्षेत्र में है, और उसे सब का ज्ञान है।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

रहेगा। जो-कुछ भी ये करते हैं निस्सन्देह वह उस की खबर रखता है। ○ अतः (हे मुहम्मद !) सीधे मार्ग पर जमे रहो जैसा कि तुम्हें हुक्म हुआ है, और वे लोग भी जो तौबः* कर के तेरे साथ हो गये हैं (सीधे मार्ग पर डटे रहें), और हद से आगे न बढ़ना। जो-कुछ तुम करते हो निश्चय ही वह उस पर निगाह रखता है। ○ और उन लोगों की ओर न झुकना जिन्हों ने ज़ुल्म किया है नहीं तो (दोज़ख़* की) आग तुम्हें आ लगेगी, और अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई संरक्षक-मित्र न होगा, फिर तुम्हें कोई सहायता न मिलेगी। ○ और नमाज़* क़ायम रखो, दिन के दोनों हिस्सों में और रात के कुछ हिस्से में[८७]। वास्तव में नेकियाँ बुराइयों को दूर करती हैं। यह याद रखने वालों के लिए एक याद-दिहानी है। ○ और सब्र* करो, कि निस्सन्देह अल्लाह सत्कर्मी लोगों का बदला (कर्म-फल) अकारथ नहीं करता। ○

फिर तुम से पहले की जातियों में ऐसे भले लोग क्यों न हुये जो लोगों को ज़मीन में बिगाड़ फैलाने से रोकते उन थोड़े से व्यक्तियों के सिवा जिन को उन में से हम ने बचा लिया! ज़ालिम लोग उस सुख-सामग्री के पीछे लगे जो उन्हें दी गई थी और ये अपराधी ही रहे। ○ यह नहीं होने का कि तेरा रब* बस्तियों को नाहक़ विनष्ट कर दे जब कि वहाँ के लोग सुधारने वाले हों। ○ और यदि तेरा रब* चाहता, तो निश्चय ही सारे लोगों को एक गरोह बना देता, परन्तु अब तो वे सदैव विभेद करते रहेंगे,[८८] ○ सिवाय उस के जिस पर तेरा रब* दया करे; और इसी के लिए उस ने उन्हें पैदा किया है[८९]। और तेरे रब* की बात पूरी हो कर रही (उस ने कहा था) कि मैं दोज़ख़* को जिन्नों* और मनुष्यों सब से भर दूँगा[९०]। ○

(हे मुहम्मद !) रसूलों* के क़िस्सों (वृत्तान्तों) में हर वह क़िस्सा जो हम तुम्हें सुनाते हैं उस के द्वारा तुम्हारे दिल को मज़बूत करते हैं। और उस में तुम्हारे पास हक़ (सत्य) पहुँचा और उपदेश और याद-दिहानी ईमान* वालों के लिए। ○ और उन लोगों से जो ईमान* नहीं लाते कह दो : तुम अपनी जगह काम करते रहो। हम भी (अपनी जगह) काम कर रहे हैं। ○ और इन्तज़ार करो! हम भी इन्तज़ार कर रहे हैं। ○ आसमानों और ज़मीन की छिपी हुई चीज़ें अल्लाह ही के लिए हैं,[९१] और सारा मामला उसी की ओर पलटता है। अतः (हे नबी* !) तू उसी की इबादत* (बन्दगी) कर और उसी पर भरोसा रख। जो-कुछ तुम लोग करते हो तेरा रब* उस से ग़ाफ़िल (और बे-ख़बर) नहीं है। ○

---

८७ इस में पाँचों नमाज़ें आ गईं। दे० सूरः ता० हा० आयत १३०।

८८ अर्थात् वे सब विभिन्न मार्गों पर ही चलते रहेंगे।

८९ उन्हें इसी लिए पैदा किया गया है कि वे स्वतन्त्र रखे जायें। यह लोगों की अपनी इच्छा पर है कि चाहें तो परस्पर विभेद करके विभिन्न मार्गों में भटकते फिरें; और चाहें तो सत्य-धर्म को —जो सनातन [illegible] हो रहा है—ग्रहण कर के लोक-परलोक दोनों में अपने को सफल बनायें।

९० यह बात अल्लाह ने हज़रत आदम अ० की सृष्टि के अवसर पर [illegible] कही थी। दे० सूरः [illegible] आयत [illegible]। वहीं [illegible] शैतानों के अनुयायी कौन हैं।

९१ अर्थात् आसमानों और [illegible] का ढेर में है, और उसे सब [illegible]

* इस का अर्थ [illegible]

१२--यूसुफ़
(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः* में हज़रत यूसुफ़ अ०[1] का जीवन-वृत्तान्त (life story) बयान हुआ है; इसी लिए इस का नाम यूसुफ़ रखा गया है। सूरः के प्रारम्भिक भाग विशेष रूप से आरम्भ की तीन आयतों से पता चलता है कि हज़रत यूसुफ़ अ० के जीवन-वृत्तान्त के वर्णन करने का वास्तविक उद्देश्य क्या है। वास्तव में यह केवल एक क़िस्सा-कहानी नहीं है बल्कि हज़रत यूसुफ़ अ० के क़िस्से के रूप में नबी सल्ल० के भविष्य के बारे में एक भविष्यवाणी है। और इस के साथ ही उन लोगों के लिए एक बड़ी चेतावनी भी है जो आप (सल्ल०) के विरुद्ध जोड़-तोड़ और साज़िशें कर रहे थे।

उतरने का समय (The date of Revelation)

सूरः* हूद की तरह इस सूरः के बारे में भी यही अनुमान है कि यह मक्का में उतरने वाली अन्तिम सूरतों* में से है। अनुमान है कि यह सूरः हिजरत (मक्का छोड़ने) से दो-डेढ़ वर्ष पहले उतरी होगी। यह सूरः उस समय की होगी जब 'क़ुरैश' का विरोध हद से आगे बढ़ चुका था। उसी ज़माने में मक्का के कुछ काफ़िरों* ने नबी सल्ल० से यह सवाल किया कि बनी इसराईल* मिस्र क्यों गये ? यह प्रश्न उन्हों ने आप (सल्ल०) की परीक्षा लेने के लिए, यहूदियों* के इशारे से ही किया होगा। अरब के लोगों को इस क़िस्से का कोई ज्ञान न था। वे समझते थे कि आप (सल्ल०) इस प्रश्न का उत्तर देने में असमर्थ रहेंगे; और हम, लोगों से यह कह सकेंगे कि आप (सल्ल०) अपने नबी* होने का झूठा दावा करते हैं। यदि आप (सल्ल०) नबी होते, तो आप (सल्ल०) हमारे प्रश्न का अवश्य उत्तर दे सकते। परन्तु नतीजा बिल्कुल इस के ख़िलाफ़ निकला; अल्लाह ने सूरः यूसुफ़ उतार कर आप (सल्ल०) को इस क़िस्से का पूरा-पूरा ज्ञान करा दिया[2]।

केन्द्रीय विषय तथा सम्पर्क

सूरः हूद में मक्का वालों के लिए डरावा है; और सूरः यूसुफ़ नबी सल्ल० के लिए विजय की शुभ-सूचना है। दोनों सूरतों में जो सम्पर्क है वह बिल्कुल स्पष्ट है।

---

१ हज़रत यूसुफ़ अ० हज़रत याक़ूब अ० के बेटे थे। हज़रत याक़ूब अ० हज़रत इसहाक़ के बेटे और हज़रत इबराहीम अ० के पोते थे। हज़रत याक़ूब अ० का निवास-स्थान फ़िलस्तीन (Palestine) में हिबरून नामक घाटी में था, यही वह स्थान है जहाँ हज़रत इसहाक़ अ० और उन से पहले हज़रत इबराहीम अ० रहा करते थे। इस के अतिरिक्त कुछ ज़मीन हज़रत याक़ूब की 'सिक्किम' में भी थी।

२ हज़रत यूसुफ़ अ० का क़िस्सा 'बाइबिल' और 'तलमूद' (Talmud) में भी सविस्तार बयान हुआ है परन्तु क़ुरआन का बयान उन से बहुत हद तक भिन्न और एक नबी के जीवन-चरित्र के अनुकूल है। क़िस्से की महत्वपूर्ण बातों में इन तीनों किताबों के बयान में कोई विभेद नहीं पाया जाता।*

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

'सब्र* और तक़वा* से काम लेने वालों के लिए विजय की शुभ-सूचना' यही इस सूरः का केन्द्रीय विषय है'[1] ।

वार्तायें (Subject-matter)

कहने को तो इस सूरः में हज़रत यूसुफ़ अ० का क़िस्सा बयान हुआ है; परन्तु क़ुरआन* ने इस क़िस्से को केवल एक कहानी या ऐतिहासिक घटना के रूप में नहीं प्रस्तुत किया है; बल्कि क़ुरआन इस क़िस्से के द्वारा लोगों को सच्चाई का आमन्त्रण देता है। इस सूरः से यह बात खुल कर सामने आती है कि आज हज़रत मुहम्मद सल्ल० जिस दीन* की ओर लोगों को बुला रहे हैं वही वास्तव में हज़रत इबराहीम अ०, हज़रत इसहाक़ अ०, हज़रत याक़ूब अ० और हज़रत यूसुफ़ अ० का दीन* भी रहा है।

इस सूरः से हमें इस का भी ज्ञान होता है कि साधारण लोगों की अपेक्षा ईश-भक्तों और विशेष रूप से अल्लाह के नबियों* का चरित्र कितना महान् और पवित्र होता है। स्वार्थपरता और अहंकार नाम-मात्र को भी उन में नहीं पाया जाता।

इस सूरः से इस वास्तविक तथ्य का भी परिचय प्राप्त होता है कि अल्लाह जो-कुछ करना चाहता है वह हो कर ही रहता है; कोई भी उसे रोक नहीं सकता। ऐसा होता है कि आदमी अल्लाह के फ़ैसले के विरुद्ध अपनी सोची-समझी स्कीम के अन्तर्गत एक काम करता है और समझता है कि हम अपने उद्देश्य में सफल हो जायेंगे; परन्तु जब परिणाम सामने आता है तो मालूम होता है कि उस ने जो-कुछ किया वास्तव में वह अपनी स्कीम के प्रतिकूल और अल्लाह की स्कीम के अनुकूल था। और उस के अपने हिस्से में सिवाय रुसवाई, पछतावा और अफ़सोस के और कुछ भी न आ सका। यदि मनुष्य इस बात को भली-भाँति समझ ले कि सफलता और विफलता दोनों अल्लाह के हाथ में हैं, तो वह कभी भी अल्लाह के आदेशों का उल्लंघन नहीं कर सकता।

प्रस्तुत सूरः के अध्ययन से यह बात भी खुल कर हमारे सामने आ जाती है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० सुनी-सुनाई बातें नहीं बयान करते; बल्कि आप (सल्ल०) जो-कुछ पेश करते हैं, अल्लाह की ओर से पेश करते हैं, और जो-कुछ बयान करते हैं वह्य* के द्वारा बयान करते हैं।

इस सूरः में हज़रत यूसुफ़ अ० और उन के भाइयों का जो क़िस्सा बयान हुआ है वह पूर्ण रूप से हज़रत मुहम्मद सल्ल० और 'क़ुरैश' के मामले पर चस्पाँ होता है। यह सूरः उतार कर अल्लाह ने 'क़ुरैश' के लोगों को सचेत किया है कि तुम अपने भाई (हज़रत मुहम्मद सल्ल०) के साथ जो व्यवहार कर रहे हो वह वही है जो यूसुफ़ (अ०) के साथ उन के भाइयों ने किया था। जिस प्रकार यूसुफ़ (अ०) के भाइयों को अन्त में यूसुफ़ (अ०) के क़दमों में आना पड़ा; उसी तरह तुम भी एक दिन अपने उसी भाई से दया की भिक्षा माँगोगे जिस की दुश्मनी आज तुम्हें अन्धा किये दे रही है। हज़रत यूसुफ़ (अ०) के वृत्तान्त में 'क़ुरैश' के लिए यही शिक्षा-

---

1 दे० आयत ९०-९१ ।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ ۝ وَاصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ
الْمُحْسِنِيْنَ ۝ فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ قَبْلِكُمْ اُولُوْا بَقِيَّةٍ
يَّنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْاَرْضِ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّنْ اَنْجَيْنَا مِنْهُمْ
وَاتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَآ اُتْرِفُوْا فِيْهِ وَكَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ۝ وَمَا كَانَ
رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ ۝ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ
لَجَعَلَ النَّاسَ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلَا يَزَالُوْنَ مُخْتَلِفِيْنَ ۝ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ
رَبُّكَ وَلِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ
الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ۝ وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الرُّسُلِ
مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ وَجَآءَكَ فِيْ هٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَّذِكْرٰى
لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ
اِنَّا عٰمِلُوْنَ ۝ وَانْتَظِرُوْا اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ۝ وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ وَاِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ كُلُّهٗ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ
وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝

निस्सन्देह उस की पकड़ दुःख देने वाली, और सख़्त है। निश्चय ही इस में बड़ी निशानी है उस व्यक्ति के लिए जो आख़िरत* के अज़ाब से डरे। यह एक दिन होगा जब सारे लोग इकट्ठा होंगे, और यह ऐसा दिन होगा जिसे सब देखेंगे''। ○ और हम उसे केवल थोड़े नियत समय के लिए टाल रहे हैं। ○ जिस दिन वह आयेगा तो बिना उस की (अल्लाह की) इजाज़त के कोई बात न करेगा; फिर कोई उन में अभागा होगा, और कोई भाग्यवान। ○ तो जो अभागे होंगे (उस दिन) वे आग (दोज़ख़*) में होंगे: जहाँ उन के लिए साँस खींचना और फिर फुंकार मारना होगा, ○ वे सदैव उसी में रहेंगे जब तक आसमान और ज़मीन क़ायम हैं'' हाँ यदि तेरा रब* ही चाहे'' तो दूसरी बात है। निस्सन्देह तेरा रब* जो चाहे कर डाले। ○ और रहे वे लोग जो भाग्यवान होंगे तो वे (उस दिन) जन्नत* में होंगे, जहाँ वे सदैव रहेंगे जब तक कि आसमान और ज़मीन क़ायम हैं हाँ यदि तेरा रब* ही चाहे तो दूसरी बात है: (यह) एक देन है जिस का सिलसिला कभी न टूटेगा। ○

सो जिस चीज़ को ये पूजते रहे हैं उस की ओर से तुझे कोई सन्देह न हो। ये तो बस उसी तरह पूजा किये जा रहे हैं जिस तरह पहले इन के पूर्वज पूजते रहे हैं। और निश्चय ही हम इन्हें इन का हिस्सा बिना किसी कमी के पूरा-पूरा देने वाले हैं। ○

हम ने मूसा को भी किताब* दी थी, तो उस में भी विभेद किया गया था; यदि तेरे रब*

'सब्र* और तक़्वा* से काम लेने वालों के लिए विजय की शुभ-सूचना' यही इस सूरः का केन्द्रीय विषय है¹ ।

वार्तायें (Subject-matter)

कहने को तो इस सूरः में हज़रत यूसुफ़ अ० का क़िस्सा बयान हुआ है; परन्तु क़ुरआन* ने इस क़िस्से को केवल एक कहानी या ऐतिहासिक घटना के रूप में नहीं प्रस्तुत किया है; बल्कि क़ुरआन इस क़िस्से के द्वारा लोगों को सच्चाई का आमन्त्रण देता है। इस सूरः से यह बात खुल कर सामने आती है कि आज हज़रत मुहम्मद सल्ल० जिस दीन* की ओर लोगों को बुला रहे हैं वही वास्तव में हज़रत इबराहीम अ०, हज़रत इसहाक़ अ०, हज़रत याक़ूब अ० और हज़रत यूसुफ़ अ० का दीन* भी रहा है।

इस सूरः से हमें इस का भी ज्ञान होता है कि साधारण लोगों की अपेक्षा ईश-भक्तों और विशेष रूप से अल्लाह के नबियों* का चरित्र कितना महान और पवित्र होता है। स्वार्थपरता और अहंकार नाम-मात्र को भी उन में नहीं पाया जाता।

इस सूरः से इस वास्तविक तथ्य का भी परिचय प्राप्त होता है कि अल्लाह जो-कुछ करना चाहता है वह हो कर ही रहता है; कोई भी उसे रोक नहीं सकता। ऐसा होता है कि आदमी अल्लाह के फ़ैसले के विरुद्ध अपनी सोची-समझी स्कीम के अन्तर्गत एक काम करता है और समझता है कि हम अपने उद्देश्य में सफल हो जायेंगे; परन्तु जब परिणाम सामने आता है तो मालूम होता है कि उस ने जो-कुछ किया वास्तव में वह अपनी स्कीम के प्रतिकूल और अल्लाह की स्कीम के अनुकूल था। और उस के अपने हिस्से में सिवाय रुसवाई, पछतावा और अफ़सोस के और कुछ भी न आ सका। यदि मनुष्य इस बात को भली-भांति समझ ले कि सफलता और विफलता दोनों अल्लाह के हाथ में हैं, तो वह कभी भी अल्लाह के आदेशों का उल्लंघन नहीं कर सकता।

प्रस्तुत सूरः के अध्ययन से यह बात भी खुल कर हमारे सामने आ जाती है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० सुनी-सुनाई बातें नहीं बयान करते; बल्कि आप (सल्ल०) जो-कुछ पेश करते हैं, अल्लाह की ओर से पेश करते हैं, और जो-कुछ बयान करते हैं वह्य* के द्वारा बयान करते हैं।

इस सूरः में हज़रत यूसुफ़ अ० और उन के भाइयों का जो क़िस्सा बयान हुआ है वह पूर्ण रूप से हज़रत मुहम्मद सल्ल० और 'क़ुरैश' के मामले पर चस्पाँ होता है। यह सूरः उतार कर अल्लाह ने 'क़ुरैश' के लोगों को सचेत किया है कि तुम अपने भाई (हज़रत मुहम्मद सल्ल०) के साथ जो व्यवहार कर रहे हो वह वही है जो यूसुफ़ (अ०) के साथ उन के भाइयों ने किया था। जिस प्रकार यूसुफ़ (अ०) के भाइयों को अन्त में यूसुफ़ (अ०) के क़दमों में आना पड़ा; उसी तरह तुम भी एक दिन अपने उसी भाई से दया की भिक्षा मांगोगे जिस की दुश्मनी आज तुम्हें अन्धा किये दे रही है। हज़रत यूसुफ़ (अ०) के वृत्तान्त में 'क़ुरैश' के लिए बड़ी शिक्षा-

---

¹ दे० आयत ९०-९१।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

१२--यूसुफ़
(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः* में हज़रत यूसुफ़ अ०[1] का जीवन-वृत्तान्त (life story) बयान हुआ है; इसी लिए इस का नाम यूसुफ़ रखा गया है। सूरः के प्रारम्भिक भाग विशेष रूप से आरम्भ की तीन आयतों से पता चलता है कि हज़रत यूसुफ़ अ० के जीवन-वृत्तान्त के वर्णन करने का वास्तविक उद्देश्य क्या है। वास्तव में यह केवल एक क़िस्सा-कहानी नहीं है बल्कि हज़रत यूसुफ़ अ० के क़िस्से के रूप में नबी सल्ल० के भविष्य के बारे में एक भविष्यवाणी है। और इस के साथ ही उन लोगों के लिए एक बड़ी चेतावनी भी है जो आप (सल्ल०) के विरुद्ध जोड़-तोड़ और साज़िशें कर रहे थे।

उतरने का समय (The date of Revelation)

सूरः* हूद की तरह इस सूरः के बारे में भी यही अनुमान है कि यह मक्का में उतरने वाली अन्तिम सूरतों* में से है। अनुमान है कि यह सूरः हिजरत (मक्का छोड़ने) से दो-डेढ़ वर्ष पहले उतरी होगी। यह सूरः उस समय की होगी जब 'क़ुरैश' का विरोध हद से आगे बढ़ चुका था। उसी ज़माने में मक्का के कुछ काफ़िरों* ने नबी सल्ल० से यह सवाल किया कि बनी इसराईल* मिस्र क्यों गये ? यह प्रश्न उन्हों ने आप (सल्ल०) की परीक्षा लेने के लिए यहूदियों* के इशारे से ही किया होगा। अरब के लोगों को इस क़िस्से का कोई ज्ञान न था। वे समझते थे कि आप (सल्ल०) इस प्रश्न का उत्तर देने में असमर्थ रहेंगे; और हम, लोगों से यह कह सकेंगे कि आप (सल्ल०) अपने नबी* होने का झूठा दावा करते हैं। यदि आप (सल्ल०) नबी होते, तो आप (सल्ल०) हमारे प्रश्न का अवश्य उत्तर दे सकते। परन्तु नतीजा बिल्कुल इस के ख़िलाफ़ निकला; अल्लाह ने सूरः यूसुफ़ उतार कर आप (सल्ल०) को इस क़िस्से का पूरा-पूरा ज्ञान करा दिया[2]।

केन्द्रीय विषय तथा सम्पर्क

सूरः हूद में मक्का वालों के लिए डरावा है; और सूरः यूसुफ़, नबी सल्ल० के लिए विजय की शुभ-सूचना है। दोनों सूरतों में जो सम्पर्क है वह बिल्कुल स्पष्ट है।

---

१ हज़रत यूसुफ़ अ० हज़रत याक़ूब अ० के बेटे थे। हज़रत याक़ूब अ० हज़रत इसहाक़ के बेटे और हज़रत इबराहीम अ० के पोते थे। हज़रत याक़ूब अ० का निवास-स्थान फ़लस्तीन (Palestine) में हिबरून नामक घाटी में था, यही वह स्थान है जहाँ हज़रत इसहाक़ अ० और उन से पहले हज़रत इबराहीम अ० रहा करते थे। इस के अतिरिक्त कुछ ज़मीन हज़रत याक़ूब की 'सिक़िम' में भी थी।

२ हज़रत यूसुफ़ अ० का क़िस्सा 'बाइबिल' और 'तलमूद' (Talmud) में भी सविस्तार बयान हुआ है परन्तु क़ुरआन का बयान उन से बहुत हद तक भिन्न और एक नबी* के जीवन-चरित्र के अनुकूल है। क़िस्से की महत्वपूर्ण बातों में इन तीनों किताबों के बयान में कोई विभेद नहीं पाया जाता।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

'सब्र* और तक़्वा* से काम लेने वालों के लिए विजय की शुभ-सूचना' यही इस सूरः का केन्द्रीय विषय है[१]।

वार्तायें (Subject-matter)

कहने को तो इस सूरः में हज़रत यूसुफ़ अ० का क़िस्सा बयान हुआ है; परन्तु क़ुरआन* ने इस क़िस्से को केवल एक कहानी या ऐतिहासिक घटना के रूप में नहीं प्रस्तुत किया है; बल्कि क़ुरआन इस क़िस्से के द्वारा लोगों को सच्चाई का आमन्त्रण देता है। इस सूरः से यह बात खुल कर सामने आती है कि आज हज़रत मुहम्मद सल्ल० जिस दीन* की ओर लोगों को बुला रहे हैं वही वास्तव में हज़रत इबराहीम अ०, हज़रत इसहाक़ अ०, हज़रत याक़ूब अ० और हज़रत यूसुफ़ अ० का दीन* भी रहा है।

इस सूरः से हमें इस का भी ज्ञान होता है कि साधारण लोगों की अपेक्षा ईश-भक्तों और विशेष रूप से अल्लाह के नबियों* का चरित्र कितना महान् और पवित्र होता है। स्वार्थपरता और अहंकार नाम-मात्र को भी उन में नहीं पाया जाता।

इस सूरः से इस वास्तविक तथ्य का भी परिचय प्राप्त होता है कि अल्लाह जो-कुछ करना चाहता है वह हो कर ही रहता है; कोई भी उसे रोक नहीं सकता। ऐसा होता है कि आदमी अल्लाह के फ़ैसले के विरुद्ध अपनी सोची–समझी स्कीम के अन्तर्गत एक काम करता है और समझता है कि हम अपने उद्देश्य में सफल हो जाएँगे; परन्तु जब परिणाम सामने आता है तो मालूम होता है कि उस ने जो-कुछ किया वास्तव में वह अपनी स्कीम के प्रतिकूल और अल्लाह की स्कीम के अनुकूल था। और उस के अपने हिस्से में सिवाय रुसवाई, पछतावा और अफ़सोस के और कुछ भी न आ सका। यदि मनुष्य इस बात को भली-भाँति समझ ले कि सफलता और विफलता दोनों अल्लाह के हाथ में हैं, तो वह कभी भी अल्लाह के आदेशों का उल्लंघन नहीं कर सकता।

प्रस्तुत सूरः के अध्ययन से यह बात भी खुल कर हमारे सामने आ जाती है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० सुनी-सुनाई बातें नहीं बयान करते; बल्कि आप (सल्ल०) जो-कुछ पेश करते हैं, अल्लाह की ओर से पेश करते हैं, और जो-कुछ बयान करते हैं वह्य* के द्वारा बयान करते हैं।

इस सूरः में हज़रत यूसुफ़ अ० और उन के भाइयों का जो क़िस्सा बयान हुआ है वह पूर्ण रूप से हज़रत मुहम्मद सल्ल० और 'क़ुरैश' के मामले पर चस्पाँ होता है। यह सूरः उतार कर अल्लाह ने 'क़ुरैश' के लोगों को सचेत किया है कि तुम अपने भाई (हज़रत मुहम्मद सल्ल०) के साथ जो व्यवहार कर रहे हो वह वही है जो यूसुफ़ (अ०) के साथ उन के भाइयों ने किया था। जिस प्रकार यूसुफ़ (अ०) के भाइयों को अन्त में यूसुफ़ (अ०) के क़दमों में आना पड़ा; उसी तरह तुम भी एक दिन अपने उसी भाई से दया की भिक्षा माँगोगे जिस की दुश्मनी आज तुम्हें अन्धा किये दे रही है। हज़रत यूसुफ़ (अ०) के वृत्तान्त में 'क़ुरैश' के लिए बड़ी शिक्षा-

---

१ दे० आयत ९०-९१।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सामग्री थी; परन्तु उन्हों ने उस से कोई शिक्षा प्राप्त नहीं की; इस का परिणाम यह हुआ कि हज़रत यूसुफ़ (अ०) का वृत्तान्त आरम्भ से अन्त तक पूर्ण रूप से उन पर पर्दा हो कर रहा। हज़रत यूसुफ़ (अ०) को उन के भाइयों ने बड़ी निर्दयता के साथ कुँएँ में फेंका था परन्तु अल्लाह ने उन्हें मिस्र में अधिकारी पुरुष बना दिया। और वह समय आया कि उन के भाई बे-बसी की अवस्था में उन के सामने खड़े थे और कह रहे थे, "हम पर सदक़: कीजिए, अल्लाह सदक़: करने वालों को अच्छा बदला देता है।" ठीक इसी तरह 'क़ुरैश' वालों ने हज़रत मुहम्मद सल्ल० को मक्का छोड़ने पर मजबूर किया और आप (सल्ल०) मदीना की ओर हिजरत* कर गये, तो अल्लाह ने आप (सल्ल०) को वह राज-सत्ता और अधिकार प्रदान किया कि मक्का विजय होने के अवसर पर हम देखते हैं कि 'क़ुरैश' बे-बसी की हालत में आप (सल्ल०) के सामने खड़े हैं। शर्म और लज्जा से आँखें भूमि की ओर झुकी हुई हैं; और वे अपने अपराधों की क्षमा की आशा किये हुये हैं। जिस प्रकार हज़रत यूसुफ़ (अ०) ने अपने भाइयों को क्षमा कर दिया था उसी तरह आप (सल्ल०) ने भी अपने भाइयों को क्षमा कर दिया। इस अवसर पर हज़रत यूसुफ़ (अ०) की तरह आप (सल्ल०) ने यही कहा : आज तुम्हारी कोई पकड़ नहीं (तुम्हें हम ने क्षमा किया)।

---

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* यूसुफ़

(मक्का में उतरी— आयतें* १११)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

بسم الله الرحمن الرحيم

الر تلك آيات الكتاب المبين ۝ إنا أنزلناه قرآنا عربيا لعلكم تعقلون ۝ نحن نقص عليك أحسن القصص بما أوحينا إليك هذا القرآن وإن كنت من قبله لمن الغافلين ۝ إذ قال يوسف لأبيه يا أبت إني رأيت أحد عشر كوكبا والشمس والقمر رأيتهم لي ساجدين ۝ قال يا بني لا تقصص رؤياك على إخوتك فيكيدوا لك كيدا إن الشيطان للإنسان عدو مبين ۝ وكذلك يجتبيك ربك ويعلمك من تأويل الأحاديث ويتم نعمته عليك وعلى آل يعقوب كما أتمها على أبويك من قبل إبراهيم وإسحاق إن ربك عليم حكيم ۝ لقد كان في يوسف وإخوته آيات للسائلين ۝ إذ قالوا ليوسف وأخوه أحب إلى أبينا منا ونحن عصبة إن أبانا لفي ضلال مبين ۝ اقتلوا يوسف أو اطرحوه أرضا يخل لكم وجه أبيكم وتكونوا من بعده قوما صالحين ۝ قال قائل منهم لا تقتلوا يوسف وألقوه في غيابت الجب يلتقطه بعض السيارة إن كنتم فاعلين ۝ قالوا يا أبانا ما لك لا تأمنا على يوسف وإنا له لناصحون ۝ أرسله معنا غدا يرتع ويلعب وإنا له لحافظون ۝ قال إني ليحزنني أن تذهبوا به وأخاف أن يأكله الذئب وأنتم عنه غافلون ۝ قالوا لئن أكله الذئب ونحن عصبة إنا إذا لخاسرون ۝ فلما ذهبوا به وأجمعوا أن يجعلوه في غيابت الجب

अलिफ़० लाम० रा०[1]। ये खुली हुई[2] किताब* की आयतें* हैं।○ हम ने इसे अरबी (भाषा) में, क़ुरआन* के रूप में, उतारा है ताकि तुम समझ सको (और फिर तुम्हारे द्वारा दूसरे लोग समझ सकें)।○ (हे नबी*!) इस क़ुरआन को तुम्हारी ओर वह्य* कर के हम तुम्हारे सामने उत्तम ढंग से बयान करते हैं, इस से पहले तो तुम बिल्कुल बे-ख़बर थे।○

जब ऐसा हुआ कि यूसुफ़ ने अपने बाप से कहा : हे पिता! मैंने ग्यारह तारे और सूरज और चाँद स्वप्न में देखे हैं, उन सब को देखता हूँ कि वे मुझे सजदः* कर रहे हैं।○ उस ने कहा : मेरे छोटे (प्यारे) बेटे! अपने स्वप्न को अपने भाइयों से न बयान करना, नहीं तो वे तेरे हक़ में कोई चाल चलेंगे और (और इस प्रकार तुझे दुःख पहुँचायेंगे)[3]। निश्चय ही शैतान* मनुष्य का खुला हुआ दुश्मन है।○ और ऐसा ही होगा (जैसा तू ने स्वप्न में देखा है) तेरा रब* तुझे चुन लेगा और तुझे बातों की तह तक पहुँचने की सीख देगा, और तुझ पर और याक़ूब के घराने पर अपनी नेमत पूरी करेगा जिस तरह वह इस से पहले इस (नेमत) को तेरे पूर्वज इबराहीम और इसहाक़ पर पूरी कर चुका है। निस्सन्देह तेरा रब* (सब-कुछ) जानने वाला और हिकमत* वाला है।○

वास्तव में यूसुफ़ और उस के भाइयों के क़िस्से में इन पूछने वालों[4] के लिए (बड़ी) निशानियाँ हैं।○ जब ऐसा हुआ कि उन्हों ने (यूसुफ़ के भाइयों ने) कहा : यूसुफ़ और उस का

[1] दे० सूरः अल-बक़रः फ़ुट नोट १।

[2] अर्थात् ऐसी किताब जो अपना अभिप्राय स्पष्ट रूप से व्यक्त करती है।

[3] यहाँ भाई से संकेत हज़रत यूसुफ़ अ० के उन दस भाइयों की ओर है जो दूसरी माताओं से थे। हज़रत यूसुफ़ अ० के पिता (हज़रत याक़ूब अ०) जानते थे कि सौतेले भाई यूसुफ़ (अ०) के प्रति अपने मन में ईर्ष्या की भावना रखते हैं, इसी लिए उन्हों ने रोका कि भाइयों से अपना स्वप्न न बयान करना।

[4] अर्थात् 'क़ुरैश' वालों के लिए जिन्हों ने यहूदियों के इशारे से नबी सल्ल० से यह सवाल किया था कि इसराईल अ० का वतन तो शाम (Syria) था उन की सन्तान (बनी इसराईल) मिस्र कैसे पहुँची कि मूसा (अ०) को बनी इसराईल* की स्वतन्त्रता के लिए कोशिश करनी पड़ी।

* इन का अर्थ आख़िर में बनी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

بِأَمْرِهِمْ هَٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝ وَجَاءُوا أَبَاهُمْ عِشَاءً يَبْكُونَ ۝
قَالُوا يَا أَبَانَا إِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا يُوسُفَ عِندَ مَتَاعِنَا فَأَكَلَهُ
الذِّئْبُ ۖ وَمَا أَنتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صَادِقِينَ ۝ وَجَاءُوا عَلَىٰ
قَمِيصِهِ بِدَمٍ كَذِبٍ ۚ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنفُسُكُمْ أَمْرًا ۖ فَصَبْرٌ
جَمِيلٌ ۖ وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ۝ وَجَاءَتْ سَيَّارَةٌ فَأَرْسَلُوا
وَارِدَهُمْ فَأَدْلَىٰ دَلْوَهُ ۖ قَالَ يَا بُشْرَىٰ هَٰذَا غُلَامٌ ۚ وَأَسَرُّوهُ بِضَاعَةً ۚ وَ
اللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ۝ وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُودَةٍ
وَكَانُوا فِيهِ مِنَ الزَّاهِدِينَ ۝ وَقَالَ الَّذِي اشْتَرَاهُ مِن مِّصْرَ
لِامْرَأَتِهِ أَكْرِمِي مَثْوَاهُ عَسَىٰ أَن يَنفَعَنَا أَوْ نَتَّخِذَهُ وَلَدًا ۚ وَكَذَٰلِكَ
مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ وَلِنُعَلِّمَهُ مِن تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ ۚ
وَاللَّهُ غَالِبٌ عَلَىٰ أَمْرِهِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَلَمَّا
بَلَغَ أَشُدَّهُ آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝
وَرَاوَدَتْهُ الَّتِي هُوَ فِي بَيْتِهَا عَن نَّفْسِهِ وَغَلَّقَتِ الْأَبْوَابَ وَقَالَتْ
هَيْتَ لَكَ ۚ قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ ۖ إِنَّهُ رَبِّي أَحْسَنَ مَثْوَايَ ۖ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ
الظَّالِمُونَ ۝ وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهِ ۖ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَا أَن رَّأَىٰ بُرْهَانَ رَبِّهِ ۚ
كَذَٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوءَ وَالْفَحْشَاءَ ۚ إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِينَ ۝
وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيصَهُ مِن دُبُرٍ وَأَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَى الْبَابِ

भाई[५] हमारे बाप को हम सभी से अधिक प्रिय है,[६] हालाँकि हम एक पूरा जत्था हैं। निश्चय ही हमारे पिता खुली ग़लती में पड़े हुये हैं।○ मार डालो यूसुफ़ को या फेंक दो उसे किसी भू-भाग में, कि तुम्हारे बाप का रुख़ केवल तुम्हारी ही तरफ़ रहे, और हो रहना इस के बाद भले लोग'।○ उन में एक बोलने वाला बोल पड़ा : यूसुफ़ को क़त्ल न करो, और यदि तुम कुछ करने वाले ही हो तो उसे किसी गहरे कूप की तह में डाल दो; क़ाफ़िले का कोई व्यक्ति उसे उठा ले जायेगा।○ (फिर वे बाप के पास आये और) बोले : हे हमारे पिता! क्या बात है कि यूसुफ़ के बारे में हम पर आप भरोसा नहीं करते, हालाँकि हम तो उस का हित चाहने वाले हैं!○ कल उसे हमारे साथ भेज दीजिए कि कुछ चर-चुग और खेल-कूद ले। निश्चय ही हम उस की हिफ़ाज़त के लिए मौजूद हैं।○ उस ने कहा : इस बात से तो मुझे दुःख हो रहा है कि तुम उसे ले जाओ, और मैं डरता हूँ कि कहीं तुम उस से ग़ाफ़िल हो जाओ और उसे कोई भेड़िया खा जाये।○ वे बोले : यदि हमारे एक जत्था के होते हुये उसे भेड़िये ने खा लिया तब तो हम ने सब-कुछ गँवा दिया।○ फिर, जब वे लोग उसे ले गये, और इस बात पर सहमत हो गये कि उसे एक गहरे कूप की तह में डाल दें,[७] तो हम ने उस की ओर वह्य* की : (घबराओ नहीं एक समय में) तू इन्हें इन की यह बात जतायेगा और इन्हें कुछ भी ख़बर न होगी।○ अँधेरा हो जाने पर वे रोते हुये अपने बाप के पास पहुँचे।○ कहने लगे : हे हमारे पिता! हम दौड़ का मुक़ाबला करने में लग गये, और यूसुफ़ को अपने सामान के पास छोड़ दिया, कि इतने में भेड़िये ने उसे खा लिया, आप तो हमारा विश्वास करेंगे नहीं चाहे हम सच्चे ही क्यों न हों।○ और वे उस के कुरते पर झूठ-मूठ का ख़ून लगा लाये थे। उस ने कहा : (बात यह नहीं है) बल्कि तुम्हारे मन ने पट्टी पढ़ा कर तुम्हारे लिए एक बात बना दी है अब धीरज सन्तोष है! जो बात तुम कह रहे हो उस में अल्लाह ही सहायक है।○

और (उधर) एक क़ाफ़िला आया और उन्हों ने (क़ाफ़िले वालों ने) अपने पानी भरने वाले को भेजा। उस ने अपना डोल (कुएँ में) डाला। वह पुकार उठा : क्या ही ख़ुशी की बात है!

---

५ अर्थात् बिन यामीन जो हज़रत यूसुफ़ अ० के सगे भाई थे। दोनों की माँ एक थी।

६ हज़रत यूसुफ़ अ० के छोटे भाई बिन यामीन की पैदाइश के समय उन की माता का देहान्त हो गया था। इसी कारण हज़रत याकूब अ० इन दोनों बे माँ के बच्चों का ज़्यादा ख़्याल रखते थे। इस के अलावा हज़रत यूसुफ़ अ० उन्हें अधिक सुशील और होनहार मालूम होते थे, इस लिए यूसुफ़ अ० से उन का हार्दिक लगाव एक स्वाभाविक बात थी।

७ बाइबिल से मालूम होता है कि जब हज़रत यूसुफ़ अ० को कुएँ में डाला गया, उस समय उन की आयु केवल १७ वर्ष की थी। बाइबिल के ज्ञाताओं के अनुसन्धान के अनुसार हज़रत यूसुफ़ अ० के जन्म लेने और उन के कुएँ में डाले जाने की घटना हज़रत ईसा मसीह अ० के जन्म से [illegible] वर्ष पूर्व की है।

* इस का अर्थ परिशिष्ट में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

قَالَتْ مَا جَزَآءُ مَنْ اَرَادَ بِاَهْلِكَ سُوْٓءًا اِلَّآ اَنْ يُّسْجَنَ اَوْ عَذَابٌ
اَلِيْمٌ ○ قَالَ هِيَ رَاوَدَتْنِيْ عَنْ نَّفْسِيْ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ اَهْلِهَا ۚ
اِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ○
وَاِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ○
فَلَمَّا رَاٰ قَمِيْصَهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ اِنَّهٗ مِنْ كَيْدِكُنَّ ۭ اِنَّ كَيْدَكُنَّ
عَظِيْمٌ ○ يُوْسُفُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ٚ وَاسْتَغْفِرِيْ لِذَنْۢبِكِ ښ
اِنَّكِ كُنْتِ مِنَ الْخٰطِـِٕيْنَ ○ وَقَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدِيْنَةِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ
تُرَاوِدُ فَتٰىهَا عَنْ نَّفْسِهٖ ۚ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ۭ اِنَّا لَنَرٰىهَا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ○
فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ اَرْسَلَتْ اِلَيْهِنَّ وَاَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَاً وَّاٰتَتْ
كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّيْنًا وَّقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۚ فَلَمَّا رَاَيْنَهٗٓ اَكْبَرْنَهٗ
وَقَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ ۡ وَقُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا هٰذَا بَشَرًا ۭ اِنْ هٰذَآ اِلَّا مَلَكٌ
كَرِيْمٌ ○ قَالَتْ فَذٰلِكُنَّ الَّذِيْ لُمْتُنَّنِيْ فِيْهِ ۭ وَلَقَدْ رَاوَدْتُّهٗ عَنْ
نَّفْسِهٖ فَاسْتَعْصَمَ ۭ وَلَىِٕنْ لَّمْ يَفْعَلْ مَآ اٰمُرُهٗ لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُوْنًا
مِّنَ الصّٰغِرِيْنَ ○ قَالَ رَبِّ السِّجْنُ اَحَبُّ اِلَيَّ مِمَّا يَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَيْهِ ۚ
وَاِلَّا تَصْرِفْ عَنِّيْ كَيْدَهُنَّ اَصْبُ اِلَيْهِنَّ وَاَكُنْ مِّنَ الْجٰهِلِيْنَ ○
فَاسْتَجَابَ لَهٗ رَبُّهٗ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ○
ثُمَّ بَدَا لَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا رَاَوُا الْاٰيٰتِ لَيَسْجُنُنَّهٗ حَتّٰى حِيْنٍ ○

ह तो एक लड़का है। और उन्हों ने उसे (तिजारत
त) माल समझ कर छुपा लिया, अल्लाह (सब-कुछ)
ानता था जो वे कर रहे थे। ○ उन्हों ने उसे कम
ाम पर, कुछ दिरहमों के बदले बेंच दिया; और
म से उन्हें कोई विशेष लगाव न था[८] । ○

मिस्र के जिस व्यक्ति ने उसे ख़रीदा उस ने
पनी स्त्री से कहा : इसे अच्छी तरह आदर-सत्कार
साथ रखना। बहुत सम्भव है कि यह हमारे काम
ाये या हम इसे बेटा ही बना लें। इस तरह हम ने
मिस्र की) ज़मीन में यूसुफ़ को जगह दी और उसे
तों (अथवा मामलों) की तह तक पहुँचने की सीख
ने का प्रबन्ध किया। अल्लाह को अपने काम पर
रा अधिकार है, परन्तु अधिकतर लोग जानते
हीं। ○ और जब वह अपनी प्रौढ़ता (युवावस्था)
ो प्राप्त हुआ तो हम ने उसे हुक्म* (निर्णय-शक्ति)
ौर ज्ञान प्रदान किया[९] । और सत्कर्मी लोगों को
ही तरह हम बदला दिया करते हैं। ○

जिस स्त्री के घर में वह रहता था, वह उस पर डोरे डालने लगी। और (घर के) द्वार बन्द
र के कहने लगी : लो आ जाओ ! उस ने कहा : अल्लाह की पनाह ! मेरे रब* ने मुझे
च्छा ठिकाना प्रदान किया है (मैं ऐसा कर्म नहीं कर सकता)। निश्चय ही ऐसे ज़ालिम कभी
फल नहीं होते। ○ उस (स्त्री) ने उस का इरादा कर लिया, और यदि उस के रब* की एक
लील[१०] उस के सामने न आ गई होती तो वह भी उस की ओर बढ़ता। ऐसा हुआ, ताकि
म बुराई और अश्लीलता को उस से दूर रखें। निस्सन्देह वह हमारे चुने हुये बन्दों में से
ा। ○ वे दोनों आगे-पीछे दरवाज़े की ओर भागे, और उस ने यूसुफ़ का कुरता पीछे से फाड़
ला, दोनों ने दरवाज़े पर उस के पति को मौजूद पाया। वह बोली : जो कोई तेरी घर वाली
साथ बुरा इरादा करे, उस की सज़ा इस के सिवा और क्या हो सकती है कि उसे क़ैद किया
ाये या कोई दुःखदायी दण्ड दिया जाये ? ○ (यूसुफ़ ने) कहा : यही मुझ पर डोरे डाल रही थी।
ौर उस (स्त्री) के घर वालों में से एक गवाह ने यह गवाही दी कि यदि उस का (यूसुफ़ का) कुरता
ागे से फटा है तो यह (स्त्री) सच्ची है और वह झूठा है[११] । ○ और यदि उस का कुरता
ीछे से फटा है, तो यह (स्त्री) झूठी है और वह सच्चा है। ○ फिर जब (उस के पति ने)
खा कि उस का कुरता पीछे से फटा है, तो उस ने कहा : ये तुम स्त्रियों की चाल है। वास्तव

८ अर्थात् उस से वे बिल्कुल बेपरवा थे।

९ क़ुरआन में ये शब्द साधारणतः नुबूवत* के लिए प्रयुक्त हुये हैं।

१० वह दलील यही है जिसे हज़रत यूसुफ़ अ० ने उस स्त्री के सामने इन शब्दों में पेश किया था : मेरे रब* ने मुझे अच्छा स्थान दिया है (मैं ऐसा बुरा कर्म नहीं कर सकता)। निश्चय ही ऐसे ज़ालिम कभी सफल नहीं होते (दे० आयत २३)।

११ इस गवाही का उल्लेख बाइबिल में नहीं मिलता।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

[illegible]

मैं तुम्हारी चाल ग़ज़ब की होती है"।○ यूसुफ़! इस बात को जाने दे, और (हे स्त्री!) तू अपने गुनाह की माफ़ी माँग। निश्चय ही तू ही ग़ुनाहगारों में से है।○

नगर में स्त्रियाँ कहने लगीं कि 'अज़ीज़' की स्त्री अपने नवयुवक दास पर डोरे डालना चाहती है। उस का प्रेम उस के मन में घर कर चुका है। हम तो उसे देखते हैं कि खुली गुमराही में पड़ गई है।○ उस ने जब उन की मक्कारी की बात सुनी, तो उन्हें बुला भेजा और उन के लिए तकिया-दार मजलिस सजाई और हर एक को (फल काट कर खाने के लिए) एक-एक छुरी दी और (यूसुफ़ से) कहा: तू उन के सामने निकल आ! जब स्त्रियों ने उसे देखा तो उसे बड़ा पाया और अपने हाथ काट डाले। और बोल उठीं: धन्य है अल्लाह! यह मनुष्य नहीं है। यह तो कोई भला फ़िरिश्ता* है।○ (अज़ीज़ की स्त्री ने) कहा: यह वही है जिस के मामले में तुम ने मेरी निन्दा की थी। वास्तव में मैं ने इसे रिझाने की कोशिश की थी, परन्तु यह बच निकला, मैं इस से जो बात कहती हूँ यदि इस ने न मानी तो क़ैद किया जायेगा, और अपमानित होगा।○ (यूसुफ़ ने) कहा: मेरे रब*! जिस बात की ओर ये लोग मुझे बुला रहे हैं उस से अधिक तो मुझे क़ैद ही पसन्द है, यदि तू ने उन के दाँव-घात से मुझे न बचाया तो उन की ओर झुक जाऊँगा और जाहिलों में[१३] शामिल हो रहूँगा।○ तो उस के रब* ने उस की दुआ क़बूल कर ली और उस से उन (स्त्रियों) के दाँव-घात को दूर रखा[१४]। निस्सन्देह वह सुनने वाला और (सब-कुछ) जानने वाला है।○ फिर उन लोगों को यही सूझा कि उसे एक मुद्दत के लिए क़ैद कर दें यद्यपि वे खुली निशानियाँ देख चुके थे।○ बन्दीगृह में दो युवक उस के साथ और भी दाख़िल हुये। उन में से एक ने (एक दिन) कहा: मैं ने स्वप्न देखा है कि मैं शराब निचोड़ रहा हूँ। दूसरे ने कहा: मैं ने देखा कि अपने सिर पर रोटियाँ लिये हूँ चिड़ियाँ उसे खा रही हैं। हमें इस का अर्थ बता दीजिए। हमें तो आप सत्कर्मी लोगों में से जान पड़ते हैं[१५]।○ (यूसुफ़ ने) कहा: जो भोजन तुम्हें मिला करता है वह तुम्हारे पास नहीं आ पायेगा,

---

१२ स्त्री जाति के स्वभाव और चरित्र के बारे में क़ुरआन का यह कोई फ़ैसला नहीं है। यह तो मिस्र के अज़ीज़ का कथन है। उस ने यह बात अपने नगर की स्त्रियों के बारे में कही थी। क़ुरआन ने तो स्त्री और पुरुष दोनों का उल्लेख जहाँ किया है समान रूप से किया है। नैतिकता एवं मान्यता की दृष्टि से क़ुरआन इन दोनों में कोई भेद नहीं करता, नैतिक और आध्यात्मिक विकास के द्वार दोनों ही के लिए समान रूप से खुले हुये हैं।

१३ अर्थात् उन लोगों में जो जानते-बूझते अपनी तुच्छ इच्छाओं के वशीभूत हो कर अपने-आप को तबाही के गड्ढे में गिरा लेते हैं।

१४ अर्थात् उन स्त्रियों के दाँव-घात से उसे बचा लिया।

१५ वे इस से पहले देख चुके थे कि यूसुफ़ अ० का चरित्र अत्यन्त पवित्र है, दोष यदि है तो स्त्रियों का है।

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

का पता देता है कि तौहीद की शिक्षा कोई नवीन शिक्षा नहीं है बल्कि यही तौहीद समस्त नबियों की शिक्षाओं का सार और आधार-शिला रही है। शिर्क और अनेकेश्वरवाद की जो बातें प्राचीन ग्रन्थों में पाई जाती हैं, वे लोगों की अपनी गढ़ी हुई हैं। अल्लाह ने कदापि शिर्क का आदेश नहीं दिया था और न तौहीद की शिक्षा से शिर्क का कोई जोड़ है।

भारत के प्राचीन ग्रन्थों में भी तौहीद की झलक मिलती है, यह इस बात का खुला प्रमाण है कि क़ुरआन जिस चीज़ की ओर लोगों को आमन्त्रित कर रहा है वह भारतवासियों के लिए भी कोई पराई चीज़ नहीं है। क़ुरआन यदि अल्लाह की किताब है तो उससे फ़ायदा उठाने और उसे अपनी किताब कहने का अधिकार समान रूप से अल्लाह के सारे बन्दों को है। शिर्क तो विकृत मस्तिष्क की उपज है। शिर्क जब मन और मस्तिष्क पर अपनी जड़ें जमा लेता है तो फिर उसका प्रदर्शन विभिन्न रूपों में होने लगता है मनुष्य इतना गिर जाता है कि ख़ालिस तौहीद की बात उसके मन में बैठती ही नहीं। गौतम बुद्ध से पूर्व हिन्दू धर्म की ईश्वर-सम्बन्धी कल्पनाओं ने जो रूप धारण कर लिया था उसपर प्रकाश डालते हुए डॉ० राधाकृष्णन ने लिखा है :

"गौतम बुद्ध के समय में जो धर्म देश पर छाया हुआ था, उसकी प्रत्यक्ष रूप-रेखा यह थी कि लेन-देन का एक सौदा था जो ईश्वर और मनुष्य के बीच ठहर गया था जबकि एक ओर उपनिषद का ब्रह्म था जो 'ईश्वरत्व' की एक उचित और उच्चतम कल्पना प्रस्तुत करता था, तो दूसरी ओर अगणित प्रभुओं का समूह था जिनके लिए कोई सीमा भी निर्धारित नहीं की जा सकती थी। आकाश के नक्षत्र, पदार्थ के तत्त्व, पृथ्वी के वृक्ष, वन के पशु, पर्वतों की चट्टानें, नदियों के बहाव, सारांश यह कि सृष्टि का कोई प्रकार ऐसा न था जो ईश्वर के राज्य में शरीक न ठहरा लिया गया हो, मानो एक स्वच्छन्द और अपने-आप उगी हुई भावना को आज्ञा-पत्र मिल गया था कि संसार में जितनी वस्तुओं को ईश्वरीय सिंहासन पर बिठाया जा सकता है, बेरोक-टोक बिठाते रहें, फिर जैसे प्रभुओं की यह भीड़ भी इस ईश-गढ़न की अभिरुचि के लिए यथेष्ट न हुई हो, भाँति-भाँति के असुर और विचित्र देह की कल्पित आकृतियों का भी उनपर परिवर्द्धन होता रहा। इसमें सन्देह नहीं कि उपनिषद ने चिन्तन एवं विचार के लोक में इन वस्तुओं की प्रभुता छिन्न-भिन्न कर दी थी, परन्तु व्यवहार-क्षेत्र में इन्हें नहीं छोड़ा गया। ये बराबर अपनी प्रभुता के सिंहासन पर जमे रहे[2]।"

---

१. उदाहरणार्थ दे० बाइबिल, 'ख़ुरूज' (Ex.) २० ३-७; ३४:१४-१८; इस्तिसना (Deut.) ६:४-६; १० २०-२१; २ सलातीन (Sec. the Kings) २३:३; हज़क़ियाल (Ezekiel) ६:६; मत्ता (Matt.) २२:३५-४०।

वेद इतिहास काल से पहले (pre historical age) के ग्रंथ हैं। बहुत-से ब्रह्मवादी हिन्दुओं का विचार है कि वेद ईश्वरीय ग्रंथ हैं। वेदों में भी बहुत-से परिवर्तन हुए हैं। दे० (Hinduism page 90. by Govind Das)। समय के उलट-फेर और इन परिवर्तनों पर भी वेदों में एकेश्वरवाद के स्पष्ट चिह्न पाए जाते हैं। दे० ऋग्वेद १०-१२१-४; ८-१-१; ६-४५-१६; १-१२१-१०; १-१६४-२०; १-५२-१४; यजु० ३६-३।

२. Indian Philosophy भाग १ पृष्ठ ४५३।

وَسَبْعَ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ؕ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَاُ اَفْتُوْنِىْ فِىْ
رُءْيَاىَ اِنْ كُنْتُمْ لِلرُّءْيَا تَعْبُرُوْنَ ۞ قَالُوْۤا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ ۚ وَ
مَا نَحْنُ بِتَاْوِيْلِ الْاَحْلَامِ بِعٰلِمِيْنَ ۞ وَقَالَ الَّذِىْ نَجَا مِنْهُمَا
وَادَّكَرَ بَعْدَ اُمَّةٍ اَنَا اُنَبِّئُكُمْ بِتَاْوِيْلِهٖ فَاَرْسِلُوْنِ ۞ يُوْسُفُ اَيُّهَا
الصِّدِّيْقُ اَفْتِنَا فِىْ سَبْعِ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ
وَّسَبْعِ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ۙ لَّعَلِّىْۤ اَرْجِعُ اِلَى النَّاسِ
لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۞ قَالَ تَزْرَعُوْنَ سَبْعَ سِنِيْنَ دَاَبًا ۚ فَمَا حَصَدْتُّمْ
فَذَرُوْهُ فِىْ سُنْۢبُلِهٖۤ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تَاْكُلُوْنَ ۞ ثُمَّ يَاْتِىْ مِنْۢ بَعْدِ
ذٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ يَّاْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا
تُحْصِنُوْنَ ۞ ثُمَّ يَاْتِىْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَامٌ فِيْهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَ
فِيْهِ يَعْصِرُوْنَ ۞ وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِىْ بِهٖ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُ
الرَّسُوْلُ قَالَ ارْجِعْ اِلٰى رَبِّكَ فَسْـَٔلْهُ مَا بَالُ النِّسْوَةِ الّٰتِىْ
قَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ ؕ اِنَّ رَبِّىْ بِكَيْدِهِنَّ عَلِيْمٌ ۞ قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ
اِذْ رَاوَدْتُّنَّ يُوْسُفَ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ قُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا عَلِمْنَا
عَلَيْهِ مِنْ سُوْٓءٍ ؕ قَالَتِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ الْـٰٔنَ حَصْحَصَ الْحَقُّ
اَنَا رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۞ ذٰلِكَ
لِيَعْلَمَ اَنِّىْ لَمْ اَخُنْهُ بِالْغَيْبِ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِىْ كَيْدَ الْخَآئِنِيْنَ ۞

मैं उस के आने से पहले ही तुम्हें इस का अर्थ बता दूँगा। यह उन बातों में से है जिन की शिक्षा मुझे मेरे रब* ने दी है। मैं ने तो उन लोगों का पन्थ छोड़ दिया जो अल्लाह पर ईमान* नहीं रखते और आख़िरत* का वे (बिल्कुल) इन्कार करते हैं। ○ मैं ने अपने पूर्वज, इबराहीम और इसहाक़ और याक़ूब का पन्थ अपनाया है। हमारे लिए उचित नहीं कि किसी चीज़ को अल्लाह का शरीक ठहरायें यह हम पर और (सभी) लोगों पर अल्लाह का फ़ज़्ल है (कि उस ने एकेश्वरवाद की हमें शिक्षा दी); परन्तु अधिकतर लोग कृतज्ञता नहीं दिखलाते। ○ हे क़ैद-ख़ाने के मेरे दोनों साथियो! क्या अनेक रब* अच्छे हैं, या अकेला अल्लाह, जो प्रभुत्वशाली है? ○ तुम उस के सिवा जिस की इबादत* करते हो वे इस के अतिरिक्त और कुछ नहीं कि निरे नाम हैं, जो तुम ने और तुम्हारे पूर्वजों ने रख लिए हैं। अल्लाह ने उन के लिए कोई सनद नहीं उतारी। हुक्म (शासनाधिकार) तो बस अल्लाह का है, उस ने हुक्म दिया है कि उस के सिवा किसी की इबादत* न करो। यही सही और सीधा (स्वाभाविक) दीन* है, परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते''। ○ हे क़ैद-ख़ाने के मेरे दोनों साथियो! (तुम्हारे स्वप्न का अर्थ यह है कि) तुम में से एक तो अपने स्वामी को शराब पिलायेगा; रहा दूसरा, तो उसे सूली पर चढ़ा दिया जायेगा और चिड़ियाँ उस का सिर (नोच-नोच कर) खायेंगी। उस का फ़ैसला हो चुका जिस के बारे में तुम दोनों मुझ से पूछ रहे थे। ○

फिर उन दोनों में से जिस के बारे में समझा था कि वह रिहा हो जायेगा उस से कहा: अपने स्वामी से मेरी चर्चा करना। परन्तु शैतान* ने यह बात भुला दी कि वह अपने स्वामी से (उस की) चर्चा करता, सो वह[११] कई वर्ष तक क़ैद-ख़ाने ही में रहा। ○

(एक दिन) बादशाह ने कहा: मैं ने स्वप्न देखा है कि सात मोटी गायों को सात दुर्बल गायें खा रही हैं, और अनाज की सात बालें हरी हैं और दूसरी सात सूखी हैं। हे सरदारो! यदि तुम स्वप्न का अर्थ बताते हो तो मेरे स्वप्न का अर्थ मुझे बताओ। ○ बोले: यह तो उड़ते स्वप्न हैं! और हम ऐसे उड़ते स्वप्नों का अर्थ नहीं जानते। ○

उन दोनों (क़ैदियों) में से जो रिहा हो गया था, और एक मुद्दत के बाद उसे याद पड़ा, वह[१२] बोल उठा: मैं इस का अर्थ आप लोगों को बताता हूँ, मुझे (यूसुफ़ के पास) भेज दीजिए। ○

उस ने (जा कर) कहा: यूसुफ़! हे परम-सत्यनिष्ठ! हमें इस का अर्थ बताइए कि सात मोटी गायों को सात दुर्बल गायें खा रही हैं और (अनाज की) सात बालें हरी हैं और सात सूखी हैं, ताकि मैं उन लोगों के पास लौट कर जाऊँ, कदाचित् वे जान लें''[१३]। ○ उस ने कहा:

११ इस उद्देश्य का उल्लेख बाइबिल और तलमूद में नहीं मिलता।
१२ अर्थात् यूसुफ़।
१३ अर्थात् इस तरह कदाचित् वे आप का महत्व जान सकें।
* इन का अर्थ आख़िर में दी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

وما أبرئ نفسي إن النفس لأمارة بالسوء إلا ما رحم ربي
إن ربي غفور رحيم ۝ وقال الملك ائتوني به أستخلصه لنفسي
فلما كلمه قال إنك اليوم لدينا مكين أمين ۝ قال اجعلني
على خزائن الأرض إني حفيظ عليم ۝ وكذلك مكنا ليوسف
في الأرض يتبوأ منها حيث يشاء نصيب برحمتنا من نشاء
ولا نضيع أجر المحسنين ۝ ولأجر الآخرة خير للذين آمنوا
وكانوا يتقون ۝ وجاء إخوة يوسف فدخلوا عليه فعرفهم
وهم له منكرون ۝ ولما جهزهم بجهازهم قال ائتوني بأخ
لكم من أبيكم ألا ترون أني أوفي الكيل وأنا خير المنزلين ۝
فإن لم تأتوني به فلا كيل لكم عندي ولا تقربون ۝ قالوا
سنراود عنه أباه وإنا لفاعلون ۝ وقال لفتيانه اجعلوا
بضاعتهم في رحالهم لعلهم يعرفونها إذا انقلبوا إلى أهلهم
لعلهم يرجعون ۝ فلما رجعوا إلى أبيهم قالوا يا أبانا منع
منا الكيل فأرسل معنا أخانا نكتل وإنا له لحافظون ۝ قال
هل آمنكم عليه إلا كما أمنتكم على أخيه من قبل فالله
خير حافظا وهو أرحم الراحمين

सात वर्ष तक तुम लगातार खेती-बाड़ी करते रहोगे, तो जो कुछ काटो, उसे उस की बालियों ही में रहने देना, सिवाय थोड़े हिस्से के जिसे तुम खाओ। फिर इस के बाद सात (वर्ष) बड़े कठिन आयेंगे जो वह सब खा जायेंगे जो पहले से तुम ने उन (वर्षों) के लिए इकट्ठा कर रखा होगा, बस यही थोड़ा रह जायेगा जो तुम रख छोड़ोगे। ○ फिर, उस के बाद एक साल ऐसा आयेगा जिस में लोगों की फ़रियाद सुन ली जायेगी (ईश्वर की दया से उन पर घोर वर्षा होगी) और वे उस में रस निचोड़ेंगे[19]। ○

(स्वप्न का मतलब सुन कर) बादशाह ने कहा : उसे मेरे पास लाओ। जब दूत उस के पास पहुँचा तो उस ने कहा : अपने स्वामी के पास लौट जा और उस से पूछ कि उन स्त्रियों का क्या मामला है जिन्हों ने अपने हाथ काट डाले थे। निस्सन्देह मेरा रब* उन की मक्कारी को भली-भाँति जानता है। ○ उस ने (बादशाह ने स्त्रियों से) पूछा : तुम्हें क्या मामला पेश आया जब तुम ने यूसुफ़ को फिसलाना चाहा? वे बोल उठीं : धन्य है अल्लाह! हम ने तो उस में कोई बुराई नहीं पाई। 'अज़ीज़'[20] की स्त्री ने कहा : अब सच्ची बात खुल गई है। वह मैं ही थी जिस ने उसे फुसलाना चाहा था, और निस्सन्देह वह सच्चों में से है। ○

(यूसुफ़ ने) कहा : इस से (मेरा) उद्देश्य (केवल) यह था कि वह (अज़ीज़) जान ले कि मैं ने उस के पीठ-पीछे उस के साथ कोई विश्वासघात नहीं किया है, और यह कि अल्लाह विश्वासघात करने वालों की चाल को चलने नहीं देता। ○ † मैं यह तो नहीं कहता कि मैं (इस से) बरी हूँ। (आदमी का) जी तो बुराई पर उभरता ही है, यह और बात है कि मेरा रब* ही दया करे। निस्सन्देह मेरा रब* बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है। ○

बादशाह ने कहा : उसे मेरे पास ले आओ मैं उसे अपने (कामों) लिए ख़ास कर लूँगा। ○ जब उस से बात-चीत की तो उस ने (यूसुफ़ से) कहा : अब तू हमारे यहाँ बड़ा ही मरतबे वाला और अमानत-दार है। ○ (यूसुफ़ ने) कहा : ज़मीन[21] के ख़ज़ाने मुझे सौंप दीजिए[22]। निश्चय ही मैं रक्षक और ज्ञान रखने वाला हूँ। ○

इस तरह हम ने उसे (मिस्र की) ज़मीन में अधिकार प्रदान किया। स्वतन्त्रता-पूर्वक उस में जहाँ चाहे रहे-सहे। हम जिस पर चाहते हैं अपनी दया करते हैं। और हम सत्कर्मी लोगों का

१६ अकाल दूर हो जायेगा। हर ओर हरियाली छा जायेगी। रस-दार फल और तेल वाले बीज ख़ूब पैदा होंगे। अच्छा चारा मिलने से मवेशियों के थन भी दूध से भर जायेंगे।

२० 'अज़ीज़' का अर्थ होता है प्रमुख अधिकारी व्यक्ति। यह बादशाह की पदवी थी।

† यहाँ से तेरहवाँ पारः (Part XIII) शुरू होता है।

२१ अर्थात् मिस्र देश।

२२ अर्थात् हुकूमत की बागडोर मेरे हाथ में दे दीजिए।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

بدला कभी अकारथ नहीं करते । ○ जो लोग ईमान* लाये और अल्लाह की अवज्ञा से बचते और उस की ना-ख़ुशी से डरते रहे, उन के लिए आख़िरत* का बदला ज़्यादा अच्छा है । ○

(अकाल का समय आया तो) यूसुफ़ के भाई (अनाज के लिए मिस्र) आये फिर उस के पास हाज़िर हुये, तो वह उन्हें पहचान गया परन्तु वे उसे पहचान नहीं रहे थे । ○ जब उस ने उन का सामान तैयार करा दिया तो उन से कहा : बाप की ओर से तुम्हारा जो एक भाई है[२३] उसे मेरे पास लाना । देखते नहीं हो कि मैं पूरी नाप से देता हूँ और मैं एक अच्छा अतिथि-सत्कार करने वाला भी हूँ : ○ यदि तुम उसे मेरे पास न लाये, तो तुम्हारे लिए मेरे पास न तो कोई माप होगी और न तुम मेरे क़रीब फटकने ६० पाओगे । ○ उन्हों ने कहा : हम उस के लिए उस के बाप को बहला-फुसला कर तैयार करेंगे और हम को तो यह काम करना ही है । ○ उस ने अपने नवयुवक सेवकों से कहा : इन का माल (जिस के बदले में इन्हों ने अनाज लिया है) इन के सामान ही में रख दो, जब ये अपने घर की ओर लौटेंगे तो कदाचित् ये उसे पहचान जायें, कदाचित् ये फिर पलटें । ○

إلينا ونمير أهلنا ونحفظ أخانا ونزداد كيل بعير ذلك كيل
يسير ۝ قال لن أرسله معكم حتى تؤتون موثقا من الله
لتأتنني به إلا أن يحاط بكم فلما آتوه موثقهم قال الله على
ما نقول وكيل ۝ وقال يا بني لا تدخلوا من باب واحد وادخلوا
من أبواب متفرقة وما أغني عنكم من الله من شيء إن الحكم إلا
لله عليه توكلت وعليه فليتوكل المتوكلون ۝ ولما دخلوا من
حيث أمرهم أبوهم ما كان يغني عنهم من الله من شيء إلا
حاجة في نفس يعقوب قضاها وإنه لذو علم لما علمناه ولكن
أكثر الناس لا يعلمون ۝ ولما دخلوا على يوسف آوى إليه
أخاه قال إني أنا أخوك فلا تبتئس بما كانوا يعملون ۝ فلما
جهزهم بجهازهم جعل السقاية في رحل أخيه ثم أذن مؤذن
أيتها العير إنكم لسارقون ۝ قالوا وأقبلوا عليهم ماذا تفقدون ۝
قالوا نفقد صواع الملك ولمن جاء به حمل بعير وأنا به
زعيم ۝ قالوا تالله لقد علمتم ما جئنا لنفسد في الأرض وما
كنا سارقين ۝ قالوا فما جزاؤه إن كنتم كاذبين ۝ قالوا جزاؤه
من وجد في رحله فهو جزاؤه كذلك نجزي الظالمين ۝ فبدأ
بأوعيتهم قبل وعاء أخيه ثم استخرجها من وعاء أخيه

अब वे अपने बाप के पास लौट कर गये तो कहा : हे हमारे पिता ! अब तो अनाज की माप हमारे लिए बन्द कर दी गई है (अब अनाज हम नहीं पा सकते), इस लिए आप हमारे भाई को हमारे साथ भेज दीजिए ताकि हम (अनाज) तौलवा लायें; निश्चय ही हम उस की हिफ़ाज़त के लिए मौजूद हैं । ○ (बाप ने) कहा : क्या मैं इस के मामले में तुम पर वैसा ही भरोसा करूँ जैसा इस से पहले इस के भाई के मामले में तुम पर भरोसा कर चुका हूँ ? अल्लाह ही अच्छा रक्षक है, और वह सब मेहरबानों से बढ़ कर मेहरबान है । ○ जब उन्हों ने अपना सामान खोला तो देखा कि उन का माल उन्हें लौटा दिया गया है । बोले : हे हमारे पिता ! हमें और क्या चाहिए ? यह हमारा माल भी हमें लौटा दिया गया है । अब हम अपने घर वालों के लिए रसद लायेंगे, और अपने भाई की रक्षा करेंगे, और एक ऊँट का बोझ और ६१ अधिक लेंगे । यह माप सहज है । ○ (बाप ने) कहा : मैं उसे तुम्हारे साथ कदापि नहीं भेज सकता जब तक कि तुम अल्लाह के नाम से मुझे पक्का वचन न दे दो कि उसे मेरे पास अवश्य ले आओगे, हाँ यदि कहीं तुम घेर लिये जाओ तो दूसरी बात है । जब उसे उन्हों ने अपना वचन दे दिया तो उस ने कहा : हम जो-कुछ कह रहे हैं इस पर अल्लाह निगहबान है ।○ उस ने कहा : मेरे बच्चो ! (मिस्र पहुँच कर) एक ही दरवाज़े से दाख़िल न होना;[२४] बल्कि विभिन्न

---

२३ यह संकेत बिन यामीन की ओर है जो दूसरी माँ से थे ।

२४ शायद उन्हों ने यह बात इस लिए कही कि एक ही फाटक से नगर में दाख़िल होने पर लोगों को यह भय होता कि यह जत्था अकाल के समय लूट-मार के लिए आया है ।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

قالوا إن يسرق فقد سرق أخ له من قبل فأسرها يوسف في نفسه ولم يبدها لهم قال أنتم شر مكانا والله أعلم بما تصفون قالوا يا أيها العزيز إن له أبا شيخا كبيرا فخذ أحدنا مكانه إنا نراك من المحسنين قال معاذ الله أن نأخذ إلا من وجدنا متاعنا عنده إنا إذا لظالمون فلما استيأسوا منه خلصوا نجيا قال كبيرهم ألم تعلموا أن أباكم قد أخذ عليكم موثقا من الله ومن قبل ما فرطتم في يوسف فلن أبرح الأرض حتى يأذن لي أبي أو يحكم الله لي وهو خير الحاكمين ارجعوا إلى أبيكم فقولوا يا أبانا إن ابنك سرق وما شهدنا إلا بما علمنا وما كنا للغيب حافظين واسأل القرية التي كنا فيها والعير التي أقبلنا فيها وإنا لصادقون قال بل سولت لكم أنفسكم أمرا فصبر جميل عسى الله أن يأتيني بهم جميعا إنه هو العليم الحكيم وتولى عنهم وقال يا أسفى على يوسف وابيضت عيناه من الحزن فهو كظيم قالوا تالله تفتؤا تذكر يوسف حتى تكون حرضا أو تكون من الهالكين

दरवाज़ों से दाख़िल होना। किन्तु मैं तुम्हें अल्लाह के मुक़ाबिले में किसी चीज़ से बचा नहीं सकता। हुक्म तो अल्लाह ही का चलता है। उसी पर मेरा भरोसा है, और भरोसा करने वालों को उसी पर भरोसा करना चाहिए।○ जब वे (नगर में) दाख़िल हुये जैसे उन के पिता ने उन्हें हुक्म दिया था, तो यह चीज़ अल्लाह के मुक़ाबिले में कुछ भी उन के काम आने वाली न थी; बस याकूब के जी की एक इच्छा थी जिसे उस ने पूरी कर ली; निश्चय ही वह ज्ञान वाला था। इस लिए कि हम ने उसे ज्ञान दिया था; परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।○

ये लोग यूसुफ़ के पास हाज़िर हुये, तो उस ने अपने भाई (बिन यामीन) को अपने पास ठहराया, और कहा : निश्चय ही मैं तेरा भाई (यूसुफ़) हूँ, तो जो-कुछ ये लोग करते रहे हैं उस से जी न तोड़।○

और जब उन का सामान तैयार करा दिया, तो अपने भाई की खुरजी में पानी पीने का बरतन रख दिया, और फिर पुकारने वाले ने पुकार कर कहा : हे क़ाफ़िले वालो ! तुम लोग निश्चय ही चोर हो !○ वे उन की ओर पलटते हुए बोले : तुम्हारी क्या चीज़ खो गई है?○ बोले : बादशाह का पैमाना हमें नहीं मिल रहा है, जो व्यक्ति उसे ला दे उसे एक ऊँट का बोझ (अनाज इनाम) मिलेगा, और मैं इस का ज़िम्मेदार हूँ।○ वे बोले : अल्लाह की क़सम, तुम्हें मालूम है कि हम इस लिए नहीं आये हैं कि देश में बिगाड़ पैदा करें, और न हम चोर हैं।○ उन्हों ने कहा : यदि तुम झूठे निकले, तो उस (चोर) की सज़ा क्या है?○ वे बोले : उस की सज़ा ! जिस की खुरजी में वह निकले वही उस का बदला ! हम ज़ालिमों को इसी तरह दण्ड देते हैं।○ फिर उस के (यूसुफ़ के) भाई की खुरजी से पहले उन (दूसरे भाइयों) की खुरजियों से (तलाश करना) शुरू किया, फिर उस के भाई (बिन यामीन) की खुरजी से उसे निकाल लिया। इस तरह हम ने यूसुफ़ के लिए उपाय किया। वह बादशाह के क़ानून से अपने भाई को हासिल नहीं कर सकता था यह और बात है कि अल्लाह ऐसा चाहता। हम जिस के चाहते हैं दरजे ऊँचे कर देते हैं, और एक जानने वाला ऐसा भी है जो हर जानने वाले से उच्च है।○

(भाइयों ने) कहा : यदि यह चोरी करता है, तो (आश्चर्य की बात नहीं) इस से पहले इस का एक भाई[25] भी चोरी कर चुका है[26]। यूसुफ़ ने इसे अपने जी ही में रखा और इसे उन पर ज़ाहिर नहीं किया, (मन में इतना) कहा : तुम लोग बड़े ही बुरे हो। जो-कुछ तुम बयान करते हो अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है।○

उन्हों ने (यूसुफ़ से) कहा : हे अज़ीज़ (अधिकारी पुरुष) ! इस का बाप बहुत बूढ़ा है, इस की जगह हम में से किसी को रख लीजिए। हम तो देखते हैं कि आप सत्कर्मी लोगों में से

२५ यूसुफ़ (अ०) की ओर संकेत है।

२६ यह बात उन्हों ने अपनी लज्जा दूर करने के लिए गढ़ कर कही।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

قَالَ إِنَّمَا أَشْكُو بَثِّي وَحُزْنِي إِلَى اللَّهِ وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٨٦﴾ يَا بَنِيَّ اذْهَبُوا فَتَحَسَّسُوا مِن يُوسُفَ وَأَخِيهِ وَلَا تَيْأَسُوا مِن رَّوْحِ اللَّهِ ۖ إِنَّهُ لَا يَيْأَسُ مِن رَّوْحِ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْكَافِرُونَ ﴿٨٧﴾ فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَيْهِ قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ مَسَّنَا وَأَهْلَنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجَاةٍ فَأَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا ۖ إِنَّ اللَّهَ يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِينَ ﴿٨٨﴾ قَالَ هَلْ عَلِمْتُم مَّا فَعَلْتُم بِيُوسُفَ وَأَخِيهِ إِذْ أَنتُمْ جَاهِلُونَ ﴿٨٩﴾ قَالُوا أَإِنَّكَ لَأَنتَ يُوسُفُ ۖ قَالَ أَنَا يُوسُفُ وَهَٰذَا أَخِي ۖ قَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا ۖ إِنَّهُ مَن يَتَّقِ وَيَصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٩٠﴾ قَالُوا تَاللَّهِ لَقَدْ آثَرَكَ اللَّهُ عَلَيْنَا وَإِن كُنَّا لَخَاطِئِينَ ﴿٩١﴾ قَالَ لَا تَثْرِيبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ۖ يَغْفِرُ اللَّهُ لَكُمْ ۖ وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ﴿٩٢﴾ اذْهَبُوا بِقَمِيصِي هَٰذَا فَأَلْقُوهُ عَلَىٰ وَجْهِ أَبِي يَأْتِ بَصِيرًا وَأْتُونِي بِأَهْلِكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٩٣﴾ وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيرُ قَالَ أَبُوهُمْ إِنِّي لَأَجِدُ رِيحَ يُوسُفَ ۖ لَوْلَا أَن تُفَنِّدُونِ ﴿٩٤﴾ قَالُوا تَاللَّهِ إِنَّكَ لَفِي ضَلَالِكَ الْقَدِيمِ ﴿٩٥﴾ فَلَمَّا أَن جَاءَ الْبَشِيرُ أَلْقَاهُ عَلَىٰ وَجْهِهِ فَارْتَدَّ بَصِيرًا ۖ قَالَ أَلَمْ أَقُل لَّكُمْ إِنِّي أَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٩٦﴾ قَالُوا يَا أَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا إِنَّا كُنَّا خَاطِئِينَ ﴿٩٧﴾ قَالَ سَوْفَ أَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّي ۖ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٩٨﴾

है। ○ उस ने कहा : इस बात से अल्लाह बचाये कि जिस के पास हम ने अपना माल पाया उसे छोड़ कर किसी और को हम पकड़ लें; यदि हम ऐसा करें तो निश्चय ही हम ज़ालिम होंगे। ○

फिर जब वे उस से (यूसुफ़ से) निराश हो गये, तो विचार-विमर्श के लिए अलग हो बैठे। उन में जो बड़ा था उस ने कहा : क्या तुम नहीं जानते कि किस तरह तुम्हारा बाप तुम से अल्लाह का वचन ले चुका है[९७]* और इस से पहले तुम यूसुफ़ के मामले में कोताही कर चुके हो ? सो मैं तो इस जगह से कदापि नहीं जा सकता जब तक कि मेरे पिता मुझे इजाज़त न दें या अल्लाह ही मेरे हक़ में कोई फ़ैसला न करे। और वह सब से अच्छा फ़ैसला करने वाला

८० है। ○ तुम अपने बाप के पास पलट आओ और कहो : हे हमारे पिता ! आप के बेटे ने चोरी की है। हम ने तो वही बयान किया जो हमें मालूम हो सका है; हम कोई ग़ैब (परोक्ष) की निगहबानी करने वाले तो हैं नहीं। ○ उस बस्ती (के लोगों) से पूछ लीजिए जहाँ हम थे, और उस क़ाफ़िले से भी जिस के साथ हो कर हम आये हैं। निश्चय ही हम सच्चे हैं। ○

(जब वे बाप के पास आये और ये बातें कहीं तो) उस ने कहा : नहीं, बल्कि तुम्हारे जी ने तुम्हें यहीं पढ़ा कर एक बात बना दी है अब श्रीमान सन्तोष है! बहुत सम्भव है कि अल्लाह उन सब को मुझ से मिला दे। वह तो, (सब-कुछ) जानने वाला और हिकमत* वाला है। ○ और वह उन लोगों की ओर से मुँह फेर कर बैठ गया और कहने लगा : हाय, यूसुफ़ ! ग़म (शोक) के मारे (रोते-रोते) उस की दोनों आँखें सफ़ेद पड़ गईं और वह (मन-ही-मन में) घुला जा रहा था। ○ (बेटे) कहने लगे : अल्लाह की क़सम, आप तो यूसुफ़ ही की याद में

८५ लगे रहेंगे यहाँ तक कि अपने-आप को घुला देंगे या जान ही दे देंगे। ○ उस ने कहा : मैं तो अपनी परेशानी (व्याकुलता) और अपने ग़म की शिकायत अल्लाह ही से करता हूँ, और अल्लाह की ओर से मैं वह-कुछ जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। ○ मेरे बेटो ! जाओ, यूसुफ़ और उस के भाई की टोह लगाओ, और अल्लाह की दयालुता से निराश न हो। अल्लाह की दयालुता से तो काफ़िर* लोग ही निराश होते हैं। ○

फिर जब ये लोग उस के (यूसुफ़ के) पास हाज़िर हुये, तो कहा : हे अज़ीज़ (अधिकारी पुरुष) ! हम पर और हमारे घर वालों पर बड़ी तक्लीफ़ पहुँची है, और हम कुछ साधारण पूँजी ले कर आये हैं, सो, आप हमें पूरी नाप से (अनाज) दे दीजिए। और हम पर सदक़ः* कीजिए। निस्सन्देह अल्लाह सदक़ः* करने वालों को बदला देता है। ○ उस ने कहा : तुम्हें यह भी मालूम है कि तुम ने यूसुफ़ और उस के भाई के साथ क्या किया था जब तुम नादान थे। ○

९७ अर्थात् अल्लाह को गवाह ठहरा कर तुम प्रतिज्ञापूर्वक कह चुके हो कि हम बिन यामीन की हिफ़ाज़त करेंगे।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

كَذٰلِكَ كِدْنَا لِيُوْسُفَ مَا كَانَ لِيَأْخُذَ أَخَاهُ فِيْ دِيْنِ الْمَلِكِ إِلَّا أَنْ
يَّشَاءَ اللّٰهُ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَاءُ وَفَوْقَ كُلِّ ذِيْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ ۝
قَالُوْا إِنْ يَّسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ أَخٌ لَّهُ مِنْ قَبْلُ فَأَسَرَّهَا يُوْسُفُ فِيْ
نَفْسِهِ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ قَالَ أَنْتُمْ شَرٌّ مَّكَانًا وَاللّٰهُ أَعْلَمُ بِمَا
تَصِفُوْنَ ۝ قَالُوْا يٰأَيُّهَا الْعَزِيْزُ إِنَّ لَهُ أَبًا شَيْخًا كَبِيْرًا فَخُذْ أَحَدَنَا
مَكَانَهُ إِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ أَنْ نَّأْخُذَ إِلَّا
مَنْ وَّجَدْنَا مَتَاعَنَا عِنْدَهُ إِنَّا إِذًا لَّظٰلِمُوْنَ ۝ فَلَمَّا اسْتَيْئَسُوْا مِنْهُ
خَلَصُوْا نَجِيًّا قَالَ كَبِيْرُهُمْ أَلَمْ تَعْلَمُوْا أَنَّ أَبَاكُمْ قَدْ أَخَذَ عَلَيْكُمْ
مَّوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ وَمِنْ قَبْلُ مَا فَرَّطْتُّمْ فِيْ يُوْسُفَ فَلَنْ أَبْرَحَ الْأَرْضَ
حَتّٰى يَأْذَنَ لِيْ أَبِيْ أَوْ يَحْكُمَ اللّٰهُ لِيْ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ۝ اِرْجِعُوْا
إِلٰى أَبِيْكُمْ فَقُوْلُوْا يٰأَبَانَا إِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ وَمَا شَهِدْنَا إِلَّا بِمَا عَلِمْنَا
وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حٰفِظِيْنَ ۝ وَسْئَلِ الْقَرْيَةَ الَّتِيْ كُنَّا فِيْهَا وَالْعِيْرَ
الَّتِيْ أَقْبَلْنَا فِيْهَا وَإِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ۝ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ
أَمْرًا فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ عَسَى اللّٰهُ أَنْ يَّأْتِيَنِيْ بِهِمْ جَمِيْعًا إِنَّهُ
هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝ وَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰأَسَفٰى عَلٰى يُوْسُفَ
وَابْيَضَّتْ عَيْنٰهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيْمٌ ۝ قَالُوْا تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا
تَذْكُرُ يُوْسُفَ حَتّٰى تَكُوْنَ حَرَضًا أَوْ تَكُوْنَ مِنَ الْهٰلِكِيْنَ ۝

दरवाज़ों से दाख़िल होना। किन्तु मैं तुम्हें अल्लाह के मुक़ाबिले में किसी चीज़ से बचा नहीं सकता। हुक्म तो अल्लाह ही का चलता है। उसी पर मेरा भरोसा है, और भरोसा करने वालों को उसी पर भरोसा करना चाहिए।○ जब वे (नगर में) दाख़िल हुये जैसे उन के पिता ने उन्हें हुक्म दिया था, तो यह चीज़ अल्लाह के मुक़ाबिले में कुछ भी उन के काम आने वाली न थी; बस याक़ूब के जी की एक इच्छा थी जिसे उस ने पूरी कर ली; निश्चय ही वह ज्ञान वाला था। इस लिए कि हम ने उसे ज्ञान दिया था; परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।○

ये लोग यूसुफ़ के पास हाज़िर हुये, तो उस ने अपने भाई (बिन यामीन) को अपने पास ठहराया, और कहा : निश्चय ही मैं तेरा भाई (यूसुफ़) हूँ, तो जो-कुछ ये लोग करते रहे हैं उस से जी न तोड़।○

और जब उन का सामान तैयार करा दिया, तो अपने भाई की खुरजी में पानी पीने का बरतन रख दिया, और फिर पुकारने वाले ने पुकार कर कहा : हे क़ाफ़िले वालो! तुम लोग निश्चय ही चोर हो।○ वे उन की ओर पलटते हुए बोले : तुम्हारी क्या चीज़ खो गई है?○ बोले : बादशाह का पैमाना हमें नहीं मिल रहा है, जो व्यक्ति उसे ला दे उसे एक ऊँट का बोझ (अनाज इनाम) मिलेगा, और मैं इस का ज़िम्मेदार हूँ।○ वे बोले : अल्लाह की क़सम, तुम्हें मालूम है कि हम इस लिए नहीं आये हैं कि देश में बिगाड़ पैदा करें, और न हम चोर हैं।○ उन्हों ने कहा : यदि तुम झूठे निकले, तो उस (चोर) की सज़ा क्या है?○ वे बोले : उस की सज़ा! जिस की खुरजी में वह निकले वही उस का बदला! हम ज़ालिमों को इसी तरह दण्ड देते हैं।○ फिर उस के (यूसुफ़ के) भाई की खुरजी से पहले उन (दूसरे भाइयों) की खुरजियों से (तलाश करना) शुरू किया, फिर उस के भाई (बिन यामीन) की खुरजी से उसे निकाल लिया। इस तरह हम ने यूसुफ़ के लिए उपाय किया। वह बादशाह के क़ानून से अपने भाई को हासिल नहीं कर सकता था यह और बात है कि अल्लाह ऐसा चाहता। हम जिस के चाहते हैं दर्जे ऊँचे कर देते हैं, और एक जानने वाला ऐसा भी है जो हर जानने वाले से ऊपर है।○

(भाइयों ने) कहा : यदि यह चोरी करता है, तो (आश्चर्य की बात नहीं) इस से पहले इस का एक भाई[20] भी चोरी कर चुका है[21]। यूसुफ़ ने इसे अपने जी ही में रखा
पर ज़ाहिर नहीं किया, (मन में इतना) कहा : तुम लोग बड़े ही बुरे हो।
करते हो अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है।○

उन्हों ने (यूसुफ़ से) कहा : हे अज़ीज़ (
इस की जगह हम में से किसी को रख लीजिए।

२० यूसुफ़ (अ०) की ओर संकेत है।
२१ यह बात उन्हों ने अपनी लज्जा दूर करने के [illegible]
[illegible]

نُوحِيٓ إِلَيْهِم مِّنْ أَهْلِ ٱلْقُرَىٰٓ ۗ أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِى ٱلْأَرْضِ فَيَنظُرُوا
كَيْفَ كَانَ عَٰقِبَةُ ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۗ وَلَدَارُ ٱلْءَاخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ
ٱتَّقَوْا ۗ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ حَتَّىٰٓ إِذَا ٱسْتَيْـَٔسَ ٱلرُّسُلُ وَظَنُّوٓا
أَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوا جَآءَهُمْ نَصْرُنَا فَنُجِّىَ مَن نَّشَآءُ ۖ وَلَا
يُرَدُّ بَأْسُنَا عَنِ ٱلْقَوْمِ ٱلْمُجْرِمِينَ ۝ لَقَدْ كَانَ فِى قَصَصِهِمْ
عِبْرَةٌ لِّأُولِى ٱلْأَلْبَٰبِ ۗ مَا كَانَ حَدِيثًا يُفْتَرَىٰ وَلَٰكِن
تَصْدِيقَ ٱلَّذِى بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ كُلِّ شَىْءٍ وَهُدًى
وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝

१०० हिकमत वाला है। ○ रब ! तू ने मुझे राज्य प्रदान किया और मुझे बातों (मामलों) की तह तक पहुँचने की सीख दी — आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले ! तू ही दुनियाँ और आख़िरत* में मेरा संरक्षक-मित्र है। मुझे इस अवस्था में (दुनियाँ से) उठा कि मैं मुस्लिम* हूँ, और मुझे अच्छे लोगों के साथ मिला। ○

(हे मुहम्मद !) यह (यह यूसुफ़ का वृत्तान्त) ग़ैब (परोक्ष) की ख़बरों में से है जिसे हम तुम्हारी ओर वह्य* कर रहे हैं। तुम उन के पास तो नहीं थे जब उन्हों ने[30] छिपी तदबीरें करते हुये एक-मत हो कर अपना फ़ैसला किया[31]। ○ चाहे तुम कितनी ही क्यों न लालसा करो अधिकतर लोग ऐसे ही हैं कि वे ईमान* नहीं ला सकते। ○ तुम उन से इस का कोई बदला भी तो नहीं माँगते। यह तो सारे संसार के लिए एक याद-दिहानी है। ○

आसमानों और ज़मीन में कितनी ही निशानियाँ हैं जिन पर से इन का गुज़र होता है
१०५ और ये इन पर कुछ ध्यान नहीं देते। ○ इन में से अधिकतर लोग अल्लाह पर ईमान* भी रखते हैं तो इस तरह कि शिर्क* भी करते हैं। ○ क्या ये निश्चिन्त हैं कि अल्लाह की ओर से कोई अज़ाब इन्हें ढक नहीं सकता, या अचानक इन पर वह (क़ियामत* की) घड़ी नहीं आ सकती जब कि ये बिल्कुल बे-ख़बरी की दशा में पड़े हों ? ○ कह दो : मेरी राह तो यह है कि मैं पूरी सूझ बूझ के साथ अल्लाह की ओर बुलाता हूँ और जो मेरे अनुयायी हैं वे भी — और अल्लाह महिमावान् है — और मैं शिर्क* करने वालों में से नहीं हूँ। ○

(हे मुहम्मद !) तुम से पहले भी हम ने जिन लोगों को (पैग़म्बर बना कर) भेजा वे सब (तुम्हारी तरह) बस्तियों ही के रहने वाले पुरुष थे हम उन की ओर वह्य* भेजते रहे हैं — फिर क्या ये लोग ज़मीन में चले-फिरे नहीं कि देखते कि उन लोगों का कैसा परिणाम हुआ जो इन से पहले थे ? जो लोग अल्लाह की अवज्ञा से बचते और उस की ना-ख़ुशी से डरते रहे, उन के लिए आख़िरत* का घर ज़्यादा अच्छा है। क्या तुम लोग बुद्धि से काम नहीं लेते। ○ — यहाँ तक कि जब वे रसूल* निराश हो गये और (लोगों ने) समझा कि उन से झूठ बोला गया था, तो अचानक उन्हें हमारी मदद पहुँच गई, फिर जिसे चाहा हम ने बचा लिया। और
११० अपराधी लोगों पर से तो हमारा अज़ाब टाला ही नहीं जा सकता। ○

इस में सन्देह नहीं कि इन के (वृत्तान्त के) बयान में बुद्धि वालों के लिए शिक्षा-सामग्री है। यह (क़ुरआन*) कोई मन-गढ़न्त बात नहीं है बल्कि उस (कलाम) की तसदीक़ है जो इस से पहले (उतरा) है[32] और हर चीज़ का विस्तार[33] (-पूर्वक वर्णन) और ईमान* लाने वाले लोगों के लिए मार्ग-दर्शन और (सर्वथा) दयालुता है। ○

३० अर्थात् हज़रत यूसुफ़ अ० के भाई।

३१ मतलब यह है कि यदि आप (सल्ल०) नबी* न होते तो ये ग़ैब की बातें आप (सल्ल०) को कैसे मालूम हो सकतीं। आप (सल्ल०) के इन बातों के जानने का एक वह्य* के अलावा और कोई भी साधन न था।

३२ क़ुरआन से पिछली सभी ईश्वरीय ग्रन्थों की तसदीक़ और पुष्टि होती है। यह किताब पिछली किताबों की दी हुई सूचना के सर्वथा अनुकूल है।

३३ अर्थात् क़ुरआन में वे सभी बातें खोल-खोल कर बयान कर दी गई हैं जो मनुष्यों के मार्ग दर्शन के लिए आवश्यक थीं।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

१३--अर-रअ़्द

(परिचय)

नाम (The Title)

सूरः* का नाम 'अर-रअ़्द' (The thunder) आयत* १३ से लिया गया है। 'अर-रअ़्द' बादल की गरज को कहते हैं। सूरः का यह नाम केवल चिह्न के रूप में रखा गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

सूरः* के अध्ययन से मालूम होता है कि यह सूरः भी सूरः यूनुस, हूद और अल-आराफ़ की तरह मक्का में उतरने वाली अन्तिम सूरतों में से है। यह वह समय है जब कि लोगों को इस्लाम* की ओर बुलाते एक लम्बी अवधि बीत चुकी थी; परन्तु काफ़िर* लोग नबी सल्ल० के विरुद्ध तरह-तरह की चालें ही चले जा रहे थे।

वार्तायें

सूरः* का अभिप्राय पहिली ही आयत* में यह बताया गया है कि मुहम्मद सल्ल० पर जो-कुछ उन के रब* की ओर से उतारा गया है वह सत्य है। इस सिलसिले में विभिन्न रूप से तौहीद* (एकेश्वरवाद), आख़िरत,* और रिसालत* की सत्यता सिद्ध की गई है। प्रस्तुत सूरः में सत्य और असत्य की वास्तविकता और उन के पारस्परिक संघर्ष के उस क़ानून और नियम का उल्लेख किया गया है जिस से दैवी (Divine) न्याय का प्रदर्शन और उस का प्रमाणीकरण होता है।

इस सूरः में आयत ४ तक की वार्ताओं का सम्बन्ध आख़िरत* से है। हम देखते हैं कि विश्व में हर वस्तु का एक विशेष प्रयोजन और एक मुख्य उद्देश्य है। जब विश्व की प्रत्येक वस्तु और उस के प्रत्येक अंश का कोई-न-कोई प्रयोजन अवश्य होता है तो अखिल विश्व का भी कोई लक्ष्य व उद्देश्य अवश्य होना चाहिए। आख़िरत* को माने बिना हम इस जगत और वर्तमान जीवन की कोई वास्तविक व्याख्या नहीं कर सकते। सत्य को संकीर्ण वर्तमान में सीमित समझना घोर अन्याय है।

इस सूरः में काफ़िरों* के आक्षेपों का उत्तर दिया गया है और ईमान* वालों को जो तरह-तरह के संकटों और यन्त्रणाओं को सहते आ रहे थे तसल्ली दी गई है। उन्हें यह भी समझाया गया है कि यदि काफ़िर* लोग सत्य का तिरस्कार कर रहे हैं तो इस से घबराना नहीं चाहिए; अल्लाह का सदैव से यह नियम रहा है कि पहले वह काफ़िरों* को ढील देता है फिर जब वे अल्लाह की दी हुई मुहलत से *फ़ायदा नहीं उठाते और अपने कुफ़्र* में आगे ही बढ़ते जाते हैं, तो फिर वह समय* आ जाता है जब अल्लाह उन्हें पकड़ लेता है फिर कोई उन का सहायक नहीं होता जो उन्हें तबाही से बचा सके।

---

* *इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*
‡ *इस सूरः से सूरतों का एक नया सिलसिला शुरू होता है।*

सूरः* अर-रअूद

(मक्का में उतरी — आयतें* ४३)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
الٓمّٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ وَالَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ وَ
لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ اَللّٰهُ الَّذِيْ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ
عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ
يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى يُدَبِّرُ الْاَمْرَ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ بِلِقَاۗءِ رَبِّكُمْ
تُوْقِنُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ مَدَّ الْاَرْضَ وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْهٰرًا
وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ جَعَلَ فِيْهَا زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ يُغْشِي الَّيْلَ النَّهَارَ
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝ وَفِي الْاَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجٰوِرٰتٌ

अलिफ़० लाम० मीम० रा०[1] । ये किताब* की आयतें* हैं । और जो-कुछ तुम्हारे रब* की ओर से तुम पर उतारा गया है वह सत्य है, परन्तु अधिकतर लोग ईमान* नहीं लाते । ○

अल्लाह ही है जिस ने आसमानों को बिना सहारे के ऊँचा किया जैसा कि तुम उन्हें देखते हो, फिर वह राज-सिंहासन पर विराजमान हुआ,[2] और उस ने सूरज और चांद को काम पर लगाया, हर चीज़ एक नियत समय के लिए चल रही है; वही इस (सारे) काम का इन्तज़ाम चला रहा है; वह निशानियाँ खोल-खोल कर बयान करता है, कदाचित् तुम अपने रब* से मिलने का विश्वास करो[3] । ○

और वही है जिस ने ज़मीन को फैलाया और उस में जमे हुए पहाड़ और नहरें (नदियाँ) पैदा कीं, और हर प्रकार की पैदावार की दो-दो क़िस्में (नर और मादा) बनाईं । वही रात से दिन को छिपा देता है । निस्सन्देह इस में उन लोगों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं जो सोच-विचार करते हैं । ○

---

१ दे० सूर अल बक़रः फ़ुट नोट १ ।

२ दे० सूरः अल-आराफ़ फ़ुट नोट १६ ।

३ अर्थात् शायद तुम्हें इस का विश्वास हो जाये कि तुम्हें एक दिन अपने रब* के सामने हाज़िर होना है । जिस अल्लाह ने इतने विशाल विश्व की रचना कर के अपने ज्ञान, दया, शक्ति आदि का परिचय कराया है, उस के बारे में यह समझना कदापि सही न होगा कि उस ने मनुष्य को केवल इस लिए पैदा किया है कि वह ज़मीन पर कुछ दिनों रह बस ले और फिर सदा के लिए उस का अन्त हो जाये, जीवन का कोई वास्तविक परिणाम उस के सामने न आये ।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

وَّجَنّٰتٌ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّزَرْعٌ وَّنَخِيْلٌ صِنْوَانٌ وَّغَيْرُ صِنْوَانٍ يُّسْقٰى
بِمَآءٍ وَّاحِدٍ وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلٰى بَعْضٍ فِى الْاُكُلِ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ
لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝ وَاِنْ تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا
ءَاِنَّا لَفِىْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ وَاُولٰٓئِكَ الْاَغْلٰلُ
فِىْ اَعْنَاقِهِمْ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ وَ
يَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثُلٰتُ
وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰى ظُلْمِهِمْ وَاِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيْدُ
الْعِقَابِ ۝ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ
اِنَّمَآ اَنْتَ مُنْذِرٌ وَّلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ۝ اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى
وَمَا تَغِيْضُ الْاَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ وَكُلُّ شَىْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ ۝ عٰلِمُ
الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ ۝ سَوَآءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ اَسَرَّ الْقَوْلَ
وَمَنْ جَهَرَ بِهٖ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍ بِالَّيْلِ وَسَارِبٌۢ بِالنَّهَارِ ۝ لَهٗ
مُعَقِّبٰتٌ مِّنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ يَحْفَظُوْنَهٗ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ
اِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ وَاِذَآ اَرَادَ اللّٰهُ
بِقَوْمٍ سُوْٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ وَمَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّالٍ ۝ هُوَ
الَّذِىْ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ۝
وَيُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ مِنْ خِيْفَتِهٖ وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ

(देखो) ज़मीन में कई तरह के भू-भाग पाये जाते हैं जो परस्पर मिले हुये हैं, अंगूरों के बाग़ हैं और खेतियाँ हैं और खजूरों के पेड़ हैं, इकहरे[४] भी और दोहरे[४] भी, सब को एक ही पानी दिया जाता है। फिर भी हम पैदावार में किसी को किसी की अपेक्षा बढ़ा देते हैं। निश्चय ही इस में उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो बुद्धि से काम लेते हैं। ○

अब यदि तुम आश्चर्य करना चाहो, तो आश्चर्य की बात तो उन का यह कहना है: "जब हम (मर कर) मिट्टी हो गये, तो क्या हम नये सिरे से पैदा होंगे ?" ये वही लोग हैं जिन्हों ने अपने रब* के साथ कुफ़्र किया; ये वही लोग हैं जिन की गरदनों में तौक़ पड़े हुये हैं[५] यही आग (दोज़ख़*) में जाने वाले हैं, जहाँ ये सदा रहेंगे। ○

ये लोग भलाई से पहले तुम से बुराई के लिए जल्दी मचा रहे हैं,[६] हालाँकि इन से पहले कितने अज़ाब गुज़र चुके हैं। परन्तु तेरा रब* लोगों को उन के ज़ुल्म के होते हुये क्षमा कर देता है, और निस्सन्देह तेरा रब* कड़ी सज़ा देने वाला भी है। ○

कुफ़्र करने वाले कहते हैं: इस (नबी*) पर इस के रब* की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई[७] ! — तुम तो केवल एक सचेत करने वाले हो, और हर जाति के लिए एक राह बताने वाला हुआ है। ○

किसी भी स्त्री-जाति को जो गर्भ रहता है अल्लाह उसे जानता है और उसे भी जो गर्भाशयों में कमी और बेशी होती है। और उस के यहाँ हर चीज़ एक अन्दाज़े पर है। ○ वह जानने वाला है परोक्ष का भी और प्रत्यक्ष का भी, वह महान् और उच्च है। ○ तुम में से कोई चुपके से बात करे या ज़ोर से, कोई रात (के अँधेरे) में छिपा हो या दिन की रास्ते में चल रहा हो उस के लिए सब एक समान है। ○ उस के (अर्थात् मानव के) आगे और उस के पीछे उस के निरीक्षक (फ़रिश्ते*) लगे हुये हैं, जो अल्लाह के हुक्म से उस की रक्षा करते

४ अर्थात् कुछ पेड़ एक तने वाले होते हैं और कुछ ऐसे होते हैं जिन की जड़ों से दो या दो से अधिक तने निकलते हैं।

५ अर्थात् वे अपराधियों और क़ैदियों के समान हैं। गुमराही की बेड़ियों में जकड़े हुये हैं। अज्ञान और हठधर्मी के कारण इन्हें इस का अवसर ही नहीं मिलता कि वे धर्म और जीवन की वास्तविक समस्या पर सोच-विचार कर सकें। इस वर्तमान जीवन में यदि ये अज्ञान और वासनाओं के बन्दी बन कर रह गये हैं, तो क़ियामत* के दिन इन की गरदनों में आग का तौक़ होगा।

६ अर्थात् इन्हें सँभलने के लिए जो मुहलत दी जा रही है उस से फ़ायदा नहीं उठाते बल्कि इस की जल्दी मचा रहे हैं कि जिस अज़ाब की धमकी इन्हें दी जा रही है वह आ क्यों नहीं जाता !

७ अर्थात् वह अल्लाह की ओर से कोई चमत्कार क्यों नहीं दिखाता कि हमें विश्वास हो जाये कि यह वास्तव में अल्लाह का भेजा हुआ रसूल* है।

* इस का अर्थ परिशिष्ट में लगी हुई व्याख्यात्मक शब्दों की सूची में देखें।

فَيُصِيبُ بِهَا مَن يَشَاءُ وَهُمْ يُجَادِلُونَ فِي اللَّهِ وَهُوَ شَدِيدُ الْمِحَالِ ۝
لَهُ دَعْوَةُ الْحَقِّ ۖ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِهِ لَا يَسْتَجِيبُونَ لَهُم
بِشَيْءٍ إِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ إِلَى الْمَاءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهِ ۚ وَمَا
دُعَاءُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ۝ وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
طَوْعًا وَكَرْهًا وَظِلَالُهُم بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ ۩ قُلْ مَن رَّبُّ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ قُلِ اللَّهُ ۚ قُلْ أَفَاتَّخَذْتُم مِّن دُونِهِ أَوْلِيَاءَ لَا يَمْلِكُونَ
لِأَنفُسِهِمْ نَفْعًا وَلَا ضَرًّا ۚ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ أَمْ
هَلْ تَسْتَوِي الظُّلُمَاتُ وَالنُّورُ ۗ أَمْ جَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ خَلَقُوا كَخَلْقِهِ
فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ ۚ قُلِ اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝
أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَالَتْ أَوْدِيَةٌ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ
زَبَدًا رَّابِيًا ۚ وَمِمَّا يُوقِدُونَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَاءَ حِلْيَةٍ أَوْ مَتَاعٍ
زَبَدٌ مِّثْلُهُ ۚ كَذَٰلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ۚ فَأَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ
جُفَاءً ۖ وَأَمَّا مَا يَنفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْأَرْضِ ۚ كَذَٰلِكَ يَضْرِبُ
اللَّهُ الْأَمْثَالَ ۝ لِلَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَالَّذِينَ لَمْ
يَسْتَجِيبُوا لَهُ لَوْ أَنَّ لَهُم مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا
بِهِ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ سُوءُ الْحِسَابِ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝
أَفَمَن يَعْلَمُ أَنَّمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَىٰ

है। निस्सन्देह अल्लाह किसी जाति की दशा नहीं बदलता जब तक कि (पहले) वह स्वयं अपने-आप को नहीं बदलती; और जब अल्लाह किसी जाति पर बुराई (अज़ाब) का फ़ैसला कर ले, तो फिर वह टल नहीं सकती, और न उस के सिवा ऐसे लोगों का कोई सहायक ही हो सकता है। ○

वही है जो तुम्हें (बिजली की) चमक दिखाता है, जिस से भय होता है, और आशा भी होती है,[८] वही है जो (पानी से) लदे हुये बादलों को उठाता है। ○ (बादलों की) गरज और फ़िरिश्ते* उस के भय के कारण उस की प्रशंसा (हम्द*) के साथ तसबीह* करते हैं[९]। वह कड़कती बिजलियाँ भेजता है फिर उन्हें जिस पर चाहता है गिरा देता है और लोग हैं कि अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं, और वह प्रबल शक्ति वाला है। ○

उसी को पुकारना सत्यानुकूल है। जिन्हें ये लोग उस के सिवा पुकारते हैं वे इन की पुकार का कुछ भी उत्तर नहीं देते, (उन्हें पुकारना) बस ऐसा ही है जैसे कोई अपने दोनों हाथ पानी की ओर इस लिए फैलाये कि वह उस के मुँह में पहुँच जाये, हालाँकि वह उस तक पहुँचने वाला नहीं। काफ़िरों* की पुकार तो बस ऐसे ही बे-ठिकाने होती है। ○ आसमानों और ज़मीन में जो कोई भी है स्वेच्छापूर्वक अथवा अनिच्छापूर्वक उसी को सजदः* कर रहा है, और उन के साये भी प्रातःकाल और सन्ध्या के समयों में (उसी के आगे झुकते रहते हैं)[१०]। ○

इन से कहो : आसमानों और ज़मीन का रब* कौन है ? — कहो : अल्लाह ! कहो : तो क्या तुम लोगों ने उस के सिवा दूसरों को अपना संरक्षक बना रखा है, जिन्हें स्वयं अपने लिए भी किसी लाभ और हानि का अधिकार प्राप्त नहीं है ? कहो : क्या अन्धा और आँखों वाला बराबर हुआ करता है, या बराबर होते हैं अँधेरे और उजाला ? या इन्हों ने जिन को अल्लाह का शरीक ठहराया है उन्हों ने भी अल्लाह की तरह कुछ पैदा किया है जिस के कारण पैदाइश

८. अर्थात् उस से तुम्हें वर्षा की आशा होने लगती है।

९. दूसरी जगह आया है : "कोई चीज़ ऐसी नहीं जो उस की प्रशंसा (हम्द*) के साथ (उस की) तसबीह* न करती हो, परन्तु तुम उस की तसबीह* को समझते नहीं हो"। (सूरः बनी इसराईल आयत ४४)। संसार की प्रत्येक वस्तु से अल्लाह के गुणों और उस की महिमा की अभिव्यक्ति होती है। यहाँ की एक एक चीज़ बता रही है कि उस का बनाने वाला समस्त गुणों और विशेषताओं का मालिक है वह महान् और सर्वश्रेष्ठ है वही समस्त प्रशंसाओं का अधिकारी है। बादलों की गरज इस बात की घोषणा करती है कि जो हवाओं को चलाता, बादलों को उठाता और बिजलियाँ चमकाता है और जो वर्षा कर के भूमि में हरियाली लाता है, वह अपने गुणों में पूर्ण है, उस का ज्ञान और उस की शक्ति अपार है। ईश्वरत्व में कोई भी उस का शरीक नहीं। वही है जिस की वन्दना की जाये और वही है जिस के गुण गाये जायें।

१०. हर चीज़ के साये का प्रातः समय और सायंकाल भूमि की ओर गिरना इस वास्तविकता को व्यक्त करता है कि सारी चीज़ें किसी के विधान बन्धन में जकड़ी हुई हैं, सब पर उस का पूर्ण अधिकार है। सब उसी के आगे झुक रहा है।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُوا الْأَلْبَابِ ۝ الَّذِينَ يُوفُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَلَا
يَنقُضُونَ الْمِيثَاقَ ۝ وَالَّذِينَ يَصِلُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَن يُوصَلَ
وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُونَ سُوءَ الْحِسَابِ ۝ وَالَّذِينَ صَبَرُوا ابْتِغَاءَ
وَجْهِ رَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً
وَيَدْرَءُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ۝ جَنَّاتُ
عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا وَمَن صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ
وَالْمَلَائِكَةُ يَدْخُلُونَ عَلَيْهِم مِّن كُلِّ بَابٍ ۝ سَلَامٌ عَلَيْكُم بِمَا
صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ۝ وَالَّذِينَ يَنقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِن
بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَن يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ
فِي الْأَرْضِ أُولَٰئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ۝ اللَّهُ يَبْسُطُ
الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ وَفَرِحُوا بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَا الْحَيَاةُ
الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا مَتَاعٌ ۝ وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا أُنزِلَ
عَلَيْهِ آيَةٌ مِّن رَّبِّهِ قُلْ إِنَّ اللَّهَ يُضِلُّ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي
إِلَيْهِ مَنْ أَنَابَ ۝ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوبُهُم بِذِكْرِ اللَّهِ
أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ ۝ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
طُوبَىٰ لَهُمْ وَحُسْنُ مَآبٍ ۝ كَذَٰلِكَ أَرْسَلْنَاكَ فِي أُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ
مِن قَبْلِهَا أُمَمٌ لِّتَتْلُوَ عَلَيْهِمُ الَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُونَ

का मामला इन के लिए गड्ड-मड्ड हो गया है?—कहो : हर चीज़ का पैदा करने वाला अल्लाह है, और वह अकेला और प्रभुत्वशाली है। ○

उस ने आसमान से पानी बरसाया, फिर नदी-नाले अपनी समाई के अनुसार उसे ले कर बह निकले, फिर बहता हुआ पानी फूले हुये झाग (और मैल-कुचैल) को ऊपर उठा लाया — और उन चीज़ों में भी जिन्हें लोग ज़ेवर या दूसरे सामान बनाने के लिए आग में तपाते हैं, ऐसा ही (मैल-कुचैल का) झाग होता है — इस तरह अल्लाह सत्य और असत्य की मिसाल बयान करता है। फिर जो झाग है वह तो सूख कर विनष्ट हो जाता है, और जो चीज़ लोगों को लाभ पहुँचाने वाली होती है, वह ज़मीन पर ठहर जाती है। इस तरह अल्लाह (लोगों को समझाने के लिए) मिसालें बयान करता है। ○

जिन लोगों ने अपने रब° का कहना मान लिया उन के लिए भलाई है; और जिन लोगों ने उस का कहना नहीं माना, यदि उन के पास वह सब-कुछ हो जो ज़मीन में है बल्कि उस के साथ इतना ही और भी हो, तो वह (अपनी रिहाई के लिए) फ़िद्यः° (मुक्ति प्रतिदान) के रूप में दे डालें। यह वे लोग हैं जिन का बुरा हिसाब होगा,[11] उन का ठिकाना दोज़ख़ है, और वह (कितनी बुरी तैयारी और कितना बुरा विश्राम-स्थल है। ○

क्या वह व्यक्ति जो जानता है कि जो-कुछ तुम्हारे रब° की ओर से तुम पर उतरा है सत्य है कभी उस जैसा हो सकता है जो (वास्तविक ज्ञान की ओर से बिलकुल) अन्धा है? ध्यान तो वही देते हैं जो बुद्धि रखने वाले हैं; ○ (ये ऐसे हैं) जो अल्लाह की प्रतिज्ञा को[12] पूरा करते हैं; और (किये हुये) इक़रार को तोड़ नहीं डालते; ○ और जो ऐसे हैं कि अल्लाह ने जिन नातों को जोड़ने का हुक्म दिया है उन्हें जोड़ते हैं,[13] अपने रब° से डरते हैं, और बुरे हिसाब का उन्हें भय लगा रहता है; ○ और जो अपने रब° की ख़ुशी की चाह में (संकट के समय) सब्र° से काम लेते हैं और नमाज़° क़ायम रखते हैं और जो-कुछ हम ने उन्हें दिया है उस में से छिपा कर भी, और खुले रूप में भी ख़र्च करते हैं और बुराई को भलाई से दूर करते हैं। यही लोग हैं जिन के लिए घर (अर्थात् लोक) का (अच्छा) परिणाम है,[14] ○ सदैव रहने के बाग़ हैं जिन में वे प्रवेश करेंगे, और उन के पूर्वजों और उन की पत्नियों और उन की सन्तानों में से जो नेक होंगे वे भी (उन के साथ प्रवेश करेंगे)। फ़रिश्ते° हर दरवाज़े से उन के पास

२०

११ अर्थात् उन की सख्त पकड़ होगी, वे छुटकारा नहीं पा सकेंगे, उन से पूरी तरह हिसाब [illegible]।

१२ अर्थात् अल्लाह के साथ की हुई अपनी प्रतिज्ञा को।

[illegible] अर्थात् वे [illegible] और मानव नागरिकता सम्बन्धी नातों और सम्बन्धों का पूरा आदर करते हैं।

[illegible]

° इस चिह्न वाले शब्दों के अर्थ पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

بالرحمن قل هو ربي لا إله إلا هو عليه توكلت وإليه متاب ۝ ولو أن قرآنا سيرت به الجبال أو قطعت به الأرض أو كلم به الموتى بل لله الأمر جميعا أفلم ييأس الذين آمنوا أن لو يشاء الله لهدى الناس جميعا ولا يزال الذين كفروا تصيبهم بما صنعوا قارعة أو تحل قريبا من دارهم حتى يأتي وعد الله إن الله لا يخلف الميعاد ۝ ولقد استهزئ برسل من قبلك فأمليت للذين كفروا ثم أخذتهم فكيف كان عقاب ۝ أفمن هو قائم على كل نفس بما كسبت وجعلوا لله شركاء قل سموهم أم تنبئونه بما لا يعلم في الأرض أم بظاهر من القول بل زين للذين كفروا مكرهم وصدوا عن السبيل ومن يضلل الله فما له من هاد ۝ لهم عذاب في الحياة الدنيا ولعذاب الآخرة أشق وما لهم من الله من واق ۝ مثل الجنة التي وعد المتقون تجري من تحتها الأنهار أكلها دائم وظلها تلك عقبى الذين اتقوا وعقبى الكافرين النار ۝ والذين آتيناهم الكتاب يفرحون بما أنزل إليك ومن الأحزاب من ينكر بعضه قل إنما أمرت أن أعبد الله ولا أشرك به إليه أدعو وإليه مآب ۝ وكذلك أنزلناه

(मुबारक बाद देने) आयेंगे, ○ (वे कह रहे होंगे) : तुम पर सलाम है यह तुम्हारे सब्र* का बदला है। —तो क्या ही अच्छा है घर (अर्थात् लोक) का परिणाम ! ○ रहे वे लोग जो अल्लाह की प्रतिज्ञा को[15] उसे दृढ़ करने के पश्चात् भङ्ग कर देते हैं, और उन नातों को तोड़ डालते हैं जिन्हें जोड़े रखने का अल्लाह ने हुक्म दिया है, और ज़मीन में बिगाड़ पैदा करते हैं : ऐसे लोगों पर लानत (फिटकार) है २५ और उन के लिए बुरा घर है। ○

अल्लाह जिस की रोज़ी चाहता है कुशादा कर देता है, और (जिस के लिए चाहता है) नपी-तुली कर देता है; और ये लोग सांसारिक जीवन पर फूल रहे हैं, हालांकि सांसारिक जीवन आख़िरत* की अपेक्षा थोड़ी सुख-सामग्री[16] के सिवा कुछ भी नहीं। ○

कुफ़्र करने वाले कहते हैं : इस (पैग़म्बर) पर इस के रब* की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई ! कहो : अल्लाह जिसे चाहता है गुमराह कर देता है,[17] और वह अपनी ओर का मार्ग उसी को दिखाता है जो उस की ओर रुजू (प्रवृत्त) होता है, ○ ऐसे ही लोग हैं वे, जो ईमान* लाये और जिन के दिलों को अल्लाह की याद से सन्तोष होता है। सुन लो ! अल्लाह की याद से दिलों को सन्तोष होता है'[18] ! ○ वे जो ईमान* लाये और अच्छे काम किये : उन के लिए परम आनन्द है, और उन के लौटने की जगह भी उत्तम है। ○ (हे मुहम्मद !) इसी तरह हम ने तुम्हें एक ऐसे समुदाय में (रसूल* बना कर) भेजा है, जिस से पहले कितने ही समुदाय गुज़र चुके हैं, ताकि हम ने तुम्हारी ओर जो वह्य* की है उसे इन (लोगों) को सुना दो, जब कि ये 'रहमान'[19] के साथ कुफ़्र* कर रहे हैं। कह दो : वही मेरा रब* है; कोई इलाह* (पूज्य) उस के सिवा नहीं। उसी पर मेरा भरोसा है और उसी ३० की ओर मुझे पलट कर जाना है। ○

और यदि कोई ऐसा क़ुरआन* होता जिस के द्वारा पहाड़ चला दिये जाते, या ज़मीन फट

१५ अर्थात् अल्लाह के साथ की हुई अपनी प्रतिज्ञा को।

१६ अर्थात् अनित्य लाभ (Passing goods)।

१७ गुमराह वह उन लोगों को करता है—जैसा कि आगे आ रहा है—जो उस की ओर रुजू नहीं करते: उस से मुँह मोड़ते हैं। ऐसे लोगों को ज़बरदस्ती राह पर लाने का उस के यहाँ कोई नियम नहीं है। जो स्वयं भटकना चाहता है उसे वह छोड़ देता है कि जहाँ तक वह भटकना चाहे भटक ले।

१८ हमारे आत्मनिहित प्रयोजन अल्लाह से ही पूरे हो सकते हैं। वास्तव में हमारा आत्मनिहित प्रयोजन वह स्वयं है। इस लिए आत्म सन्तोष उसी के स्मरण से मिलता है। ज्ञानी इसे ब्रह्म-विहार कहते हैं। भौतिक आनन्दों की परिधि छोटी और सीमित होती है; मनुष्य की परम सम्पत्ति केवल अल्लाह है। उस के बिना जीवन की परिभाषा अनिश्चित ही रहती है, जीवन और अमृत उसी की छाया में है। (यस्य छायाऽमृतं)।

१९ अर्थात् अल्लाह ने तो — जो रहमान (अत्यन्त कृपाशील) है — अपना रसूल* भेजा और किताब* उतारी; परन्तु ये लोग हैं कि कुफ़्र* पर अड़े हुये हैं। दयावान् ईश्वर का हक़ अदा करना तो अलग रहा इन्हें तो 'रहमान' के नाम ही से चिढ़ है। (दे० सूरः अल-फ़ुरक़ान आयत ६०)।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

حكما عربيا ولئن اتبعت أهواءهم بعد ما جاءك من العلم
ما لك من الله من ولي ولا واق ۝ ولقد أرسلنا رسلا من
قبلك وجعلنا لهم أزواجا وذرية وما كان لرسول أن
يأتي بآية إلا بإذن الله لكل أجل كتاب ۝ يمحو الله ما يشاء
ويثبت وعنده أم الكتاب ۝ وإن ما نرينك بعض الذي
نعدهم أو نتوفينك فإنما عليك البلاغ وعلينا الحساب ۝ أو
لم يروا أنا نأتي الأرض ننقصها من أطرافها والله يحكم لا
معقب لحكمه وهو سريع الحساب ۝ وقد مكر الذين من
قبلهم فلله المكر جميعا يعلم ما تكسب كل نفس وسيعلم
الكفار لمن عقبى الدار ۝ ويقول الذين كفروا لست مرسلا
قل كفى بالله شهيدا بيني وبينكم ومن عنده علم الكتاب ۝

जाती, या उस के द्वारा मुर्दे बोलने लगते (तो क्या हो जाता, तब भी ये लोग ईमान* न लाते) बल्कि बात यह है कि हर काम का अधिकार अल्लाह को प्राप्त है। फिर क्या ईमान* लाने वाले (अब तक इस आशा में हैं कि कोई निशानी उतरेगी और ये काफ़िर* लोग ईमान* लायेंगे क्या वे यह जान कर) निराश नहीं हो गये कि यदि अल्लाह चाहता तो सारे ही मनुष्यों को सीधे रास्ते पर लगा देता[20] कुफ़्र* करने वालों पर तो उन के करतूतों के बदले में, कोई-न-कोई आपत्ति आती ही रहती है या उन के घर के निकट कहीं उतरती है ऐसा ही होता रहेगा यहाँ तक कि अल्लाह का वादा आ पूरा हो। निश्चय ही अल्लाह (अपने) वादे के विरुद्ध नहीं जाता। ○ तुम से पहले भी कितने रसूलों* की हँसी उड़ाई जा चुकी है, परन्तु मैं ने काफ़िरों* को (पहले तो) ढील दी। फिर उन्हें पकड़ लिया, तो मेरी सज़ा कैसी सख़्त थी। ○

भला वह जो प्रत्येक जीव की कमाई पर निगाह रखता है[21] (क्या उस जैसा वह हो सकता है जो ऐसा नहीं)? फिर भी लोगों ने अल्लाह के शरीक ठहराये हैं। (हे नबी!) उन से कहो: तनिक उन के नाम तो लो (कि हम जानें कि वे कौन हैं)। या फिर तुम अल्लाह को उस चीज़ की ख़बर दे रहे हो जिसे वह ज़मीन में नहीं जानता? या यों ही एक ऊपरी बात है? नहीं, बल्कि कुफ़्र* करने वालों के लिए उन की मक्कारी शोभायमान बना दी गई है और वे राह से रोक दिये गये हैं[22]। फिर जिसे अल्लाह गुमराही में रखे, उसे कोई राह दिखाने वाला नहीं[23]। ○ उन के लिए सांसारिक जीवन ही में अज़ाब है, और आख़िरत* का अज़ाब तो बहुत ही सख़्त है, और कोई नहीं जो उन्हें अल्लाह (की पकड़) से बचाने वाला हो। ○ अल्लाह की अवज्ञा से बचने और उस की ना-ख़ुशी से डरने वालों के लिए जिस जन्नत* का वादा है उस का हाल यह है कि उस के नीचे नहरें बह रही हैं, उस के फल सदैव बाक़ी रहने वाले हैं, और उस की छाया भी (सदा बहार है); यह उन लोगों का परिणाम है जो तक़्वा* वाले (संयमी) हैं, जब कि काफ़िरों* का परिणाम आग (दोज़ख़*) है। ○

(हे नबी*!) जिन लोगों को हम ने किताब* दी है[24] वे उस (किताब*) से प्रसन्न हैं जो हम ने तुम पर उतारी है। और कुछ गिरोह ऐसे भी हैं जो उस की कुछ बातों का इन्कार करते हैं। कह दो: मुझे तो बस यह हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह की इबादत* करूँ और उस के साथ किसी को शरीक न ठहराऊँ। मैं उसी की ओर बुलाता हूँ, और उसी की

२० अर्थात् यदि अल्लाह को लोगों से कोई ऐसा चेतना रहित ईमान* और इस्लाम* अभीष्ट होता जिस में किसी सूझ-बूझ की आवश्यकता नहीं होती, तो अल्लाह सारे मनुष्यों को ईमान वाला* बना कर ही पैदा कर देता; इस के लिए तो किसी निशानी और चमत्कार की भी कोई आवश्यकता नहीं थी।

२१ दे० सूरः इब्राहीम आयत ४२।

२२ अर्थात् उन्हें अपनी मक्कारियाँ ही अच्छी मालूम होती हैं; सीधे रास्ते पर चलने की कामना और सत्य की चाह उन में लेश-मात्र भी नहीं रही, और यह सब कुछ उन के कुफ़्र* के कारण स्वाभाविक नियम के अनुसार हुआ है। यह अल्लाह की ओर से उन के साथ कोई अन्याय नहीं है।

२३ दे० सूरः इब्राहीम आयत ४२, ४३।

२४ अर्थात् वे किताब वाले (यहूदी या ईसाई) जो हज़रत मुहम्मद सल्ल० की नुबूवत* पर ईमान* ले आये।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

और मुझे लौटना है।○ इसी तरह हम ने इस (क़ुरआन*) को अरबी (भाषा) में फ़रमान बना कर, तुम पर उतारा है; और यदि तुम उस ज्ञान के बाद भी जो तुम तक पहुँच चुका है उन (लोगों) की (तुच्छ) इच्छाओं के पीछे चले, तो अल्लाह के सिवा न तो तुम्हारा कोई संरक्षक-मित्र होगा और न कोई (उस की पकड़ से) बचाने वाला।○

तुम से पहले भी हम कितने रसूलों* को भेज चुके हैं, उन्हें हम ने पत्नियाँ और बच्चे भी दिये थे,[२५] और किसी भी रसूल* को यह अधिकार प्राप्त न था कि वह अल्लाह के हुक्म के बिना कोई निशानी ला देता। हर वादा लिखा हुआ है।○ अल्लाह जो-कुछ चाहता है मिटा देता है, और (जो-कुछ चाहता है) क़ायम रखता है,[२६] और उसी के पास मूल-किताब है[२७]।○

(हे नबी* !) हम (अज़ाब लाने का) जो वादा इन (लोगों) से कर रहे हैं हो सकता है कि उस में से कुछ हम तुम्हें दिखा दें, या (पहले ही) तुम्हें उठा लें, तुम्हारे ज़िम्मे तो बस (मेरा सन्देश) पहुँचा देना है, और हमारे ज़िम्मे हिसाब (लेना) है[२८]।○ क्या ये (लोग) देखते नहीं कि हम इस ज़मीन (भू-भाग) को उस के किनारों से घटाते चले आ रहे हैं[२९]? और अल्लाह फ़ैसला करता है कोई नहीं जो उस के फ़ैसले को टाल सके, और वह जल्द हिसाब लेने वाला है (उसे हिसाब लेने कुछ देर नहीं लगती[३०])।○ इन से पहले जो लोग गुज़रे हैं वे भी (सत्य के विरोध में) चाल चल चुके हैं; परन्तु (वास्तव में) सब चाल (छिपी तदबीर) तो अल्लाह ही के हाथ में है। प्रत्येक जीव जो कमाई कर रहा है उसे वह जानता है। जल्द ही काफ़िरों* को ज्ञात हो जायेगा कि घर (अर्थात् लोक) का (अच्छा) परिणाम किस के लिए है[३१]।○

ये कुफ़्र* करने वाले कहते हैं : तुम (अल्लाह के) भेजे हुये (रसूल*) नहीं हो। कह दो : मेरे और तुम्हारे बीच गवाह की हैसियत से अल्लाह काफ़ी है और वह (व्यक्ति काफ़ी है) जिस के पास किताब* का ज्ञान है।○

---

२५ काफ़िर* लोग कहते थे कि यह कैसा नबी* है कि नबी* भी है और स्त्री और बच्चे भी रखता है; नबियों* को भला स्त्री और बच्चों से क्या मतलब ! यहाँ काफ़िरों* की इसी बात का उत्तर दिया गया है।

२६ आप (सल्ल०) के विरोधी लोग कहते थे कि पहले की आई हुई आसमानी किताबों के होते हुये किसी नवीन ग्रन्थ के उतरने की क्या आवश्यकता थी ? यदि पहले की किताबें अपने वास्तविक रूप में शेष नहीं हैं या उन के कुछ आदेश अब मन्सूख़ (निरस्त) हो गये हैं, तो यह बात भी हमारी समझ में आने की नहीं है। अल्लाह अपनी भेजी हुई किताबों की रक्षा क्यों नहीं कर सका ? क्या कोई ईश्वरीय किताब भी मन्सूख़ हो सकती है ? काफ़िरों* की इन्हीं बातों का यहाँ संक्षेप में उत्तर दिया गया है।

२७ अर्थात् वह स्रोत और उद्गम जिस से समस्त ईश्वरीय ग्रन्थों का आविर्भाव हुआ है।

२८ दे० सूरः यूनुस आयत ४६, सूरः अल-मोमिन आयत ७७।

२९ अर्थात् क्या इन्हें दिखाई नहीं देता कि इस्लाम* का प्रभाव हर ओर बढ़ता जा रहा है; और इस्लाम के शत्रुओं का प्रभाव क्षेत्र चारों ओर से सिमटता ही जा रहा है; इन्हें क्या हो गया है कि ये इस से कुछ भी शिक्षा ग्रहण नहीं करते।

३० दे० सूरः अल-अंबिया आयत ४४।

३१ दे० फुटनोट २४।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

१४--इबराहीम

(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः* में हज़रत इबराहीम अ० की एक विशेष प्रार्थना का उल्लेख किया गया है[1]। सूरः का नाम इसी प्रार्थना से लिया गया है। हज़रत इबराहीम अ० ने यह प्रार्थना उस समय की थी जब उन्हों ने अपने बेटे हज़रत इसमाईल अ० को मक्का की कृषि के अयोग्य घाटी (Uncultivable Valley) में बसाया था। इस महत्वपूर्ण प्रार्थना से इस वर्ग की दूसरी सूरतों* की अपेक्षा इस सूरः में एक प्रकार की विशेषता आ गई है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

इस सूरः* के अध्ययन से मालूम होता है कि यह सूरः मक्का में उतरने वाली अन्तिम सूरतों* में से है[2]। अनुमान है कि इस के उतरने का समय लग-भग वही होगा जो सूरः अर्-रअ्द के उतरने का समय है।

केन्द्रीय विषय तथा सम्पर्क

सूरः* का केन्द्रीय विषय 'तौहीद'* (एकेश्वर वाद) है[3]। 'तौहीद' को एक प्रकार के आन्तरिक त्याग और हिजरत* की हैसियत से इस सूरः में पेश किया गया है। 'तौहीद'* ही वह दिव्य प्रकाश है जिस की ओर बुलाने के लिए अल्लाह ने अपने रसूलों* को भेजा। 'तौहीद' का मार्ग ही उस महान् ईश्वर का मार्ग है जो अपार शक्ति का मालिक और समस्त प्रशंसाओं का अधिकारी है।

इस से पहले की सूरतों में काफ़िरों* को समझाने-बुझाने का हक़ अदा कर दिया गया था परन्तु फिर भी 'क़ुरैश' अपनी चाल से बाज़ नहीं आये। इस सूरः में उन्हें कुफ़्र* और इन्कार के बुरे परिणाम से डराते हुए एक अल्लाह की बन्दगी और भक्ति की ओर बुलाया गया है। वस्तुतः सूरः अपने बयान की दृष्टि से पिछली सूरः से कहीं ज़्यादा सख़्त है।

वार्तायें (Subject-matter)

इस सूरः* में लोगों को एकेश्वर वाद (Divin Unity) की ओर बुलाया गया है। और उन लोगों को सख़्त धमकी दी गई है जो नबी सल्ल० की दुश्मनी पर तुले हुये थे।

वस्तुतः सूरः में नबियों* की हिजरत* का उल्लेख किया गया है। हज़रत मुहम्मद सल्ल० की हिजरत* की ओर भी इस सूरः में इशारा मिलता है। नबी* की हिजरत* वास्तव में इस बात का पता देती है कि विरोधी लोगों को बहुत जल्द विफलता के दिन देखने पड़ेंगे। रसूलों* की हिजरत काफ़िरों* के लिए इस बात की धमकी होती है कि यदि वे नबी* की पुकार पर ध्यान नहीं धरेंगे, तो बुरे परिणाम से उन्हें कोई नहीं बचा सकता।

---

1 दे० आयत ३५-४१।

2 सूरः* की आयत १३-१४ और ४६ से विशेष रूप से इस तरह इशारा मिलता है।

3 दे० सूरः* की अन्तिम आयत जो पूरी सूरः का सारांश है।

* इस का अर्थ अन्त में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* इबराहीम

(मक्का में उतरी — आयतें* ५२)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

अलिफ़० लाम० रा०[1] । (हे मुहम्मद !) यह
क किताब* है जिसे हम ने तुम्हारी ओर उतारा
ताकि तुम लोगों को उन के रब* के दैव-योग से
धेरों से निकाल कर उजाले की ओर ले आओ,
र्थात् अपार शक्ति के मालिक और प्रशंसा के
धिकारी (अल्लाह) के मार्ग की ओर, ○ अल्लाह,
जेस की सम्पत्ति है जो-कुछ आसमानों में है और
ो-कुछ ज़मीन में है। और काफ़िरों* के लिए सख़्त
अज़ाब की ख़राबी है;○ उन (काफ़िरों*) के लिए
जन्हें आख़िरत* के मुक़ाबिले में सांसारिक जीवन
प्रिय है, जो अल्लाह की राह से (लोगों को) रोकते
और उसे कज (कुटिल) करना चाहते हैं : ये लोग
रले दरजे की गुमराही में पड़े हुये हैं[2] । ○

हम ने जो भी कोई रसूल* भेजा तो उस की
अपनी जाति की भाषा के साथ (भेजा), ताकि वह
न से खोल खोल कर (हमारे आदेश) बयान करे।
फिर अल्लाह जिसे चाहता है भटका देता है,[3] और
जिसे चाहता है (सीधी) राह पर लगा देता है।
और वह अपार शक्ति का मालिक और हिकमत*
ाना है। ○

और हम ने (इस से पहले) मूसा को अपनी
निशानियों के साथ भेजा था, (और हुक्म दिया था)
क अपनी जाति को अँधेरों से निकाल कर उजाले

بسم الله الرحمن الرحيم
الر كتب انزلنه اليك لتخرج الناس من الظلمت الى النور
باذن ربهم الى صراط العزيز الحميد ۝ الله الذي له ما في
السموت وما في الارض وويل للكفرين من عذاب شديد ۝
الذين يستحبون الحيوة الدنيا على الاخرة ويصدون عن
سبيل الله ويبغونها عوجا اولئك في ضلل بعيد ۝ وما
ارسلنا من رسول الا بلسان قومه ليبين لهم فيضل الله
من يشاء ويهدي من يشاء وهو العزيز الحكيم ۝ ولقد
ارسلنا موسى بايتنا ان اخرج قومك من الظلمت الى النور
وذكرهم بايىم الله ان في ذلك لايت لكل صبار شكور ۝
واذ قال موسى لقومه اذكروا نعمة الله عليكم اذ انجىكم
من ال فرعون يسومونكم سوء العذاب ويذبحون ابناءكم
ويستحيون نساءكم وفي ذلكم بلاء من ربكم عظيم ۝ واذ
تاذن ربكم لئن شكرتم لازيدنكم ولئن كفرتم ان عذابي
لشديد ۝ وقال موسى ان تكفروا انتم ومن في الارض
جميعا فان الله لغني حميد ۝ الم ياتكم نبؤا الذين من
قبلكم قوم نوح وعاد وثمود والذين من بعدهم لا يعلمهم
الا الله جاءتهم رسلهم بالبينت فردوا ايديهم في افواههم
وقالوا انا كفرنا بما ارسلتم به وانا لفي شك مما تدعوننا
اليه مريب ۝ قالت رسلهم افي الله شك فاطر السموت و
الارض يدعوكم ليغفر لكم من ذنوبكم ويؤخركم الى
اجل مسمى قالوا ان انتم الا بشر مثلنا تريدون ان

[1] दे० सूरः* अल-बक़रः फ़ुट नोट १।
[2] दे० आयत १८, २१, २७, २८।
[3] दे० आयत २७ और सूरः अल-अनआम फ़ुट नोट २५।
* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

تَصُدُّونَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُنَا فَأْتُونَا بِسُلْطَانٍ مُبِينٍ ۝ قَالَتْ
لَهُمْ رُسُلُهُمْ إِنْ نَحْنُ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَمُنُّ عَلَىٰ مَنْ
يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۖ وَمَا كَانَ لَنَا أَنْ نَأْتِيَكُمْ بِسُلْطَانٍ إِلَّا بِإِذْنِ
اللَّهِ ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝ وَمَا لَنَا أَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى
اللَّهِ وَقَدْ هَدَانَا سُبُلَنَا ۚ وَلَنَصْبِرَنَّ عَلَىٰ مَا آذَيْتُمُونَا ۚ وَعَلَى اللَّهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ
مِنْ أَرْضِنَا أَوْ لَتَعُودُنَّ فِي مِلَّتِنَا ۖ فَأَوْحَىٰ إِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ
الظَّالِمِينَ ۝ وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِهِمْ ۚ ذَٰلِكَ
لِمَنْ خَافَ مَقَامِي وَخَافَ وَعِيدِ ۝ وَاسْتَفْتَحُوا وَخَابَ كُلُّ
جَبَّارٍ عَنِيدٍ ۝ مِنْ وَرَائِهِ جَهَنَّمُ وَيُسْقَىٰ مِنْ مَاءٍ صَدِيدٍ ۝
يَتَجَرَّعُهُ وَلَا يَكَادُ يُسِيغُهُ وَيَأْتِيهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَ
مَا هُوَ بِمَيِّتٍ ۖ وَمِنْ وَرَائِهِ عَذَابٌ غَلِيظٌ ۝ مَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا
بِرَبِّهِمْ ۖ أَعْمَالُهُمْ كَرَمَادٍ اشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيحُ فِي يَوْمٍ عَاصِفٍ ۖ
لَا يَقْدِرُونَ مِمَّا كَسَبُوا عَلَىٰ شَيْءٍ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الضَّلَالُ الْبَعِيدُ ۝
أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ إِنْ يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ
وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ۝ وَمَا ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ۝ وَبَرَزُوا
لِلَّهِ جَمِيعًا فَقَالَ الضُّعَفَاءُ لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ

की ओर ला। और उन्हें अल्लाह के दिवस[४] याद दिला। निश्चय ही इस में हर सब्र* से काम लेने वाले और कृतज्ञता दिखलाने वाले के लिए बड़ी निशानियाँ हैं। ○

याद करो जब मूसा ने अपनी जाति से कहा: अल्लाह के उस एहसान को याद करो जो उस ने तुम पर किया है[५] जब उस ने तुम्हें फ़िरऔन के लोगों से छुटकारा दिलाया, वे तुम्हें बुरा अज़ाब दे रहे थे, तुम्हारे लड़कों को ज़ब्ह कर डालते थे और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित रहने देते थे; इस में तुम्हारे रब* की ओर से बड़ी आज़माइश थी। ○ और याद करो जब तुम्हारे रब* ने तुम्हें सूचित कर दिया था कि तुम ने कृतज्ञता दिखलाई तो मैं तुम्हें और अधिक दूँगा; और यदि अकृतज्ञ बने, तो (जान लो कि) मेरा अज़ाब बहुत सख़्त है। ○ और मूसा ने कहा: यदि तुम और वे लोग जो ज़मीन में बसते हैं सब मिल कर कुफ़्र* करने लगो, तो अल्लाह (का क्या बिगड़ता है वह) तो परम स्वतन्त्र (अपेक्षा-रहित) और आप-से-आप प्रशंसा (हम्द*) का अधिकारी है। ○

क्या तुम तक उन लोगों की ख़बर नहीं पहुँची जो तुम से पहले गुज़रे हैं: नूह की जाति,* और आद,* और समूद,* और उन के बाद आने वाले? जिन्हें अल्लाह के सिवा और कोई नहीं जानता। उन के रसूल* उन के पास खुली निशानियाँ ले कर आये, तो उन्हों ने अपने हाथ अपने मुँह में दे लिए, और कहने लगे: जो-कुछ (सन्देश) दे कर तुम्हें भेजा गया है हम तो उसे नहीं मानते, और जिस बात की ओर तुम हमें बुला रहे हो उस के बारे में तो हम बड़े दुविधा एवं विकलता-जनक सन्देह में पड़ गये हैं। ○ उन के रसूलों* ने कहा: क्या अल्लाह के बारे में सन्देह है जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है? वह तुम्हें बुला रहा है ताकि तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर दे और तुम्हें एक नियत समय तक मुहलत दे। उन्हों ने कहा: तुम तो बस हमारे जैसे मनुष्य हो, तुम हमें उस (की उपासना) से रोकना चाहते हो जिसे हमारे पूर्वज पूजते आये हैं। अच्छा तो कोई खुली हुई सनद पेश करो। ○ उन के रसूलों* ने उन से कहा: हम तो वास्तव में बस तुम्हारे जैसे मनुष्य हैं, परन्तु अल्लाह अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है एहसान करता है। और हमारे बस में नहीं कि अल्लाह के हुक्म के बिना तुम्हें कोई सनद ला सकें। और ईमान वालों* को तो अल्लाह पर भरोसा करना चाहिए। ○ और हम क्यों न अल्लाह पर भरोसा करें जब कि उस ने हम पर हमारी राहें खोलीं? जो तकलीफ़ तुम हमें पहुँचा रहे हो उस पर हम सब्र* करेंगे। और भरोसा करने वालों को तो अल्लाह

४ 'अल्लाह के दिवस' से अभिप्रेत वे ऐतिहासिक दिन हैं जिन में अल्लाह ने विगत युग की जातियों या व्यक्तियों को उन के कर्मों के अनुसार अच्छा बदला या दण्ड दिया है।

५ दे० सूरः अल-बक़रः फ़ुट नोट ११।

* इन का अर्थ व्याख्या में आनी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

تبعا فهل انتم مغنون عنا من عذاب الله من شيء قالوا لو
هدىنا الله لهدينكم سواء علينا اجزعنا ام صبرنا ما لنا من
محيص ۝ وقال الشيطن لما قضي الامر ان الله وعدكم وعد
الحق ووعدتكم فاخلفتكم وما كان لي عليكم من سلطن الا
ان دعوتكم فاستجبتم لي فلا تلوموني ولوموا انفسكم ما انا
بمصرخكم وما انتم بمصرخي اني كفرت بما اشركتمون من قبل
ان الظلمين لهم عذاب اليم ۝ وادخل الذين امنوا وعملوا
الصلحت جنت تجري من تحتها الانهر خلدين فيها باذن
ربهم تحيتهم فيها سلم ۝ الم تر كيف ضرب الله مثلا كلمة
طيبة كشجرة طيبة اصلها ثابت وفرعها في السماء ۝ تؤتي
اكلها كل حين باذن ربها ويضرب الله الامثال للناس
لعلهم يتذكرون ۝ ومثل كلمة خبيثة كشجرة خبيثة اجتثت
من فوق الارض ما لها من قرار ۝ يثبت الله الذين امنوا
بالقول الثابت في الحيوة الدنيا وفي الاخرة ويضل الله
الظلمين ويفعل الله ما يشاء ۝ الم تر الى الذين بدلوا نعمت الله
كفرا واحلوا قومهم دار البوار ۝ جهنم يصلونها وبئس القرار ۝
وجعلوا لله اندادا ليضلوا عن سبيله قل تمتعوا فان مصيركم

पर भरोसा करना चाहिए। ○

और कुफ़्र* करने वालों ने अपने रसूलों* से कहा : हम तुम्हें अपनी ज़मीन से निकाल कर रहेंगे, या तो फिर तुम हमारे पन्थ में लौट आओ। तो उन के रब* ने उन की ओर वह्य* की कि हम इन ज़ालिमों का विनष्ट कर के रहेंगे, ○ और इन के बाद तुम्हें इस ज़मीन में बसायेंगे। यह (वादा) उस के लिए है जो मेरे सामने (जवाब-देही के लिए) खड़े होने से डरे और मेरी चेतावनी से डरे। ○ और उन्हों ने फ़ैसला चाहा और हर जब्र करने वाला २१ हठी (अपने मनोरथ में) असफल हो कर रहा; ○ उस के आगे दोज़ख़* है, और उसे कच-लहू का पानी पिलाया जायेगा, ○ जिसे वह घूँट-घूँट कर के पियेगा और सरलतापूर्वक उसे नहीं उतार सकेगा, और मृत्यु उस पर हर ओर से आती (दिखाई देती) होगी परन्तु वह मरेगा नहीं, और उस के आगे एक कठिन अज़ाब होगा। ○

जिन्हों ने अपने रब* के साथ कुफ़्र* किया उन की मिसाल ऐसी है मानो उन के कर्म राख (के समान) हैं जिस पर आँधी के दिन ज़ोरों से हवा चले (और उसे उड़ा ले जाये)। जो-कुछ उन्हों ने कमाया उस में से कुछ भी उन के हाथ न आ सकेगा। यही परले दरजे की गुमराही है[६]। ○ क्या तुम देखते नहीं हो कि अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को हक़* के साथ[७] पैदा किया ? यदि वह चाहे, तो तुम सब को ले जाये और (तुम्हारी जगह) एक नया जन-समूह २० ले आये; ○ और यह अल्लाह के लिए कुछ भी मुश्किल नहीं[८]। ○ और ये सब जब अल्लाह के सामने खुल कर आ गये तो कमज़ोर लोग[९] उन लोगों से जो (दुनियाँ में) बड़े बने हुये थे कहेंगे : हम तो तुम्हारे पीछे चलने वाले थे, तो क्या तुम अल्लाह का कुछ अज़ाब हम से दूर कर सकते हो ? वे कहेंगे : यदि अल्लाह हमें राह दिखाता, तो हम तुम्हें भी दिखाते। हम अधीर और व्याकुल हों या सन्तोष से काम लें हमारे लिए दोनों बराबर हैं; हमारे लिए बचने की कोई जगह नहीं। ○

अब फ़ैसला हो चुकेगा तब शैतान* कहेगा : निस्सन्देह अल्लाह ने तुम से वादा किया था सच्चा वादा और मैं ने भी तुम से वादा किया था, फिर मैं ने तुम से वचनोल्लंघन किया। और मेरा तुम पर कोई अधिकार न था केवल इतनी बात थी कि मैं ने तुम्हें बुलाया और तुम ने मेरा कहना मान लिया। सो मुझे मलामत न करो, बल्कि अपने आप को मलामत करो

---

६ दे० आयत ३ और सूरः अन-नूर आयत ३९।

७ अर्थात् उन्हें किसी विशेष उद्देश्य और वास्तविक प्रयोजन के अन्तर्गत पैदा किया गया है; इस संसार का निर्माण सत्यानुकूल हुआ है निरर्थक और उद्देश्य-रहित इस का निर्माण नहीं हुआ है।

८ दे० सूरः फ़ातिर आयत १५-१६।

९ अर्थात् उन में जो दुनिया में कमज़ोर और निर्बल थे।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

إِلَى النَّارِ ۝ قُل لِّعِبَادِيَ الَّذِينَ آمَنُوا يُقِيمُوا الصَّلَاةَ وَيُنفِقُوا مِمَّا
رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً مِّن قَبْلِ أَن يَأْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيهِ وَلَا
خِلَالٌ ۝ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَأَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً
فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۖ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي
الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ ۖ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْأَنْهَارَ ۝ وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَائِبَيْنِ
وَسَخَّرَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۝ وَآتَاكُم مِّن كُلِّ مَا سَأَلْتُمُوهُ ۚ وَإِن
تَعُدُّوا نِعْمَتَ اللَّهِ لَا تُحْصُوهَا ۗ إِنَّ الْإِنسَانَ لَظَلُومٌ كَفَّارٌ ۝ وَإِذْ
قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ هَٰذَا الْبَلَدَ آمِنًا وَاجْنُبْنِي وَبَنِيَّ أَن نَّعْبُدَ
الْأَصْنَامَ ۝ رَبِّ إِنَّهُنَّ أَضْلَلْنَ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ ۖ فَمَن تَبِعَنِي
فَإِنَّهُ مِنِّي ۖ وَمَنْ عَصَانِي فَإِنَّكَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ رَّبَّنَا إِنِّي أَسْكَنتُ
مِن ذُرِّيَّتِي بِوَادٍ غَيْرِ ذِي زَرْعٍ عِندَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ رَبَّنَا لِيُقِيمُوا
الصَّلَاةَ فَاجْعَلْ أَفْئِدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِي إِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُم
مِّنَ الثَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُونَ ۝ رَبَّنَا إِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِي وَمَا
نُعْلِنُ ۗ وَمَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ مِن شَيْءٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ۝
الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي وَهَبَ لِي عَلَى الْكِبَرِ إِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ ۚ إِنَّ رَبِّي
لَسَمِيعُ الدُّعَاءِ ۝ رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلَاةِ وَمِن ذُرِّيَّتِي ۚ رَبَّنَا وَ
تَقَبَّلْ دُعَاءِ ۝ رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ

न मैं तुम्हारी फ़रियाद सुन सकता हूँ, और न तुम मेरी फ़रियाद सुन सकते हो। इस से पहले तुम ने जो मुझे (अल्लाह का) शरीक ठहराया[10] मैं उस से विरक्त हूँ। निःसन्देह ऐसे ज़ालिमों के लिए दुःख देने वाला अज़ाब है। ○

रहे वे लोग जो ईमान* लाये और अच्छे काम किये वे ऐसे बाग़ों में दाख़िल किये जायेंगे जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी, उन में वे अपने रब* के हुक्म (अनुमति) से सदैव रहेंगे, वहाँ उन का अभिवादन 'सलाम' होगा। ○ क्या तुम देखते नहीं हो कि अल्लाह ने शुभ बात[11] की कैसी उपमा दी है, वह एक शुभ वृक्ष के सदृश है, जिस की जड़ गहरी जमी हुई हो, उस की शाखायें आकाश तक पहुँची हुई हों,[12] ○ अपने रब* की आज्ञा से वह हर समय अपना फल दे रहा हो[13]? अल्लाह ये मिसालें इस लिए बयान करता है ताकि वे ध्यान दें। ○ और अशुभ (और अशुद्ध) बात[14] की मिसाल, एक अशुभ वृक्ष की है, (जिस की न जड़ मज़बूत हो न शाखायें ऊँचाई तक फैली हों) जिसे भूमि के ऊपर ही से उखाड़ फेंका जाये, उस के लिए कुछ भी स्थिरता नहीं। ○ ईमान* लाने वालों को अल्लाह एक पक्की बात के द्वारा सांसारिक जीवन और आख़िरत* (दोनों) में दृढ़ता प्रदान करता है, और ज़ालिमों को अल्लाह भटका देता है[14]। और अल्लाह जो चाहता है करता है[14]। ○

२१

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हों ने अल्लाह की नेमत को कुफ़्र* (अकृतज्ञता) से बदल डाला और अपनी जाति (वालों) को तबाही के घर में झोंक दिया, ○ जो दोज़ख़* है उस में वे प्रवेश करेंगे। और वह कितना बुरा ठिकाना है! ○ और उन्हों ने अल्लाह के प्रतिद्वन्दी ठहराये ताकि (लोगों को) उस के रास्ते से भटका दें। कह दो : (जीवन का) थोड़ा आनन्द ले लो फिर पहुँचना तो तुम्हें आग (दोज़ख़*) ही की ओर है। ○

३०

(हे नबी* !) मेरे जो बन्दे ईमान* लाये हैं उन से कह दो कि वे नमाज़* क़ायम रखें और हम ने तुम्हें जो-कुछ दिया है उस में से, छिपा कर और खुले रूप में (हमारी राह में) ख़र्च

१० अर्थात् तुम अल्लाह की आज्ञा का पालन करने के बदले मेरी बात मानते रहे।

११ ऐसी बात जिस में मौलिक वास्तविकताओं को मान्यता दी गई हो। ऐसी बात क़ुरआन के दृष्टिकोण से वही हो सकती है जिस में 'तौहीद' (एकेश्वरवाद), रिसालत* और आख़िरत* आदि सच्चाइयों को माना गया हो।

१२ अर्थात् धरती से आकाश तक पूरा विश्व उस के सत्य होने का साक्षी हो।

१३ अर्थात् यदि मनुष्य उसी सच्ची और शुभ बात के अन्तर्गत अपना जीवन व्यतीत करे तो उस से अच्छे ही परिणाम निकलते रहेंगे। उस से न केवल यह कि विचार में सुलझाव, स्वभाव में सरलता और चरित्र में पवित्रता आ जायेगी बल्कि मनुष्य के पूरे व्यक्तिगत और व्यावहारिक जीवन में सन्तुलन और सत्यवादिता आ ...ने लगेगा।

१४ अगले पृष्ठ पर देखें।

* अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

क़ुरआन के

कुछ महत्वपूर्ण विषयों की एक झलक

मुहम्मद अबदुल हई

करें, इस से पहले कि वह दिन आ जाये जिस में न कोई सौदा होगा और न कोई दोस्ती होगी। ○

वह अल्लाह ही है जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, और आसमान से पानी बरसाया, फिर उस के द्वारा तुम्हारी रोज़ी के रूप में फल निकाले, और नौका (या जहाज़) को तुम्हारे सेवा-कार्य में लगाया कि दरिया में उस के हुक्म से चले, और नदियों को तुम्हारे सेवा-कार्य में लगाया; ○ और सूरज और चाँद को तुम्हारे सेवा-कार्य में लगाया कि निरन्तर चक्कर लगा रहे हैं, और रात और दिन को तुम्हारे सेवा-कार्य में लगाया। ○ और तुम्हें वह-कुछ दिया जो तुम ने उस से माँगा,[17] यदि तुम अल्लाह की नेमतों को गिनना चाहो तो उन्हें पूरा गिन नहीं सकते। वास्तव में मनुष्य बड़ा अन्यायी और अकृतज्ञ है। ○

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ۥ اِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ ۝ مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِيْ رُءُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ۚ وَاَفْـِٕدَتُهُمْ هَوَآءٌ ۝ وَاَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَاْتِيْهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رَبَّنَآ اَخِّرْنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ نُّجِبْ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرُّسُلَ ؕ اَوَلَمْ تَكُوْنُوْٓا اَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِّنْ زَوَالٍ ۝ وَّسَكَنْتُمْ فِيْ مَسٰكِنِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْاَمْثَالَ ۝ وَقَدْ مَكَرُوْا مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللّٰهِ مَكْرُهُمْ ۭ وَاِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُوْلَ مِنْهُ الْجِبَالُ ۝ فَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ مُخْلِفَ وَعْدِهٖ رُسُلَهٗ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ۝ يَوْمَ تُبَدَّلُ الْاَرْضُ غَيْرَ الْاَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۝ وَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ مُّقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ ۝ سَرَابِيْلُهُمْ مِّنْ قَطِرَانٍ وَّتَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ النَّارُ ۝ لِيَجْزِيَ اللّٰهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝ هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوْا بِهٖ وَلِيَعْلَمُوْٓا اَنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّلِيَذَّكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝

याद करो जब इबराहीम ने कहा: रब*! इस नगर को शान्ति वाला (नगर) बना दे, और मुझे और मेरी औलाद को इस से बचा कि मूर्तियों को पूजने लग जायें। ○ रब*! इन्हों ने (अर्थात् इन मूर्तियों ने) बहुतेरे लोगों को गुमराह किया है[18]। तो जो कोई मेरे पीछे चले, वह मेरा है ही। और जो मेरा कहना न माने तो अब भी तू बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है[19]। ○ हमारे रब*! मैं ने एक ऐसी घाटी में जो खेती के योग्य नहीं[20] अपनी सन्तान का एक हिस्सा तेरे प्रतिष्ठित घर के पास बसा दिया है,[21] हमारे रब*! ताकि वे नमाज़* क़ायम* रखें; तो तू लोगों के दिलों को उन की ओर झुका दे, और उन्हें (ज़मीन की) पैदावार की रोज़ी प्रदान कर कदाचित् वे कृतज्ञता दिखलायें[22]। ○ हमारे रब*! तू जानता है जो-कुछ हम छिपाते हैं और जो-कुछ ज़ाहिर करते हैं। और अल्लाह से कोई चीज़ न ज़मीन में छिपी है और न आसमान में। ○ प्रशंसा (हम्द*) अल्लाह ही के लिए है जिस ने मुझे, इस बुढ़ापे में, इसमाईल और इसहाक़ (जैसे बेटे) दिये। निस्सन्देह मेरा रब* दुआ का सुनने वाला है। ○ रब! मुझे नमाज़* क़ायम रखने वाला बना, और मेरी औलाद को भी; हमारे रब*! और (मेरी) दुआ क़बूल कर ले। ○ हमारे रब*! मुझे और मेरे माता-पिता को और ईमान* वालों को उस दिन क्षमा कर देना जब कि हिसाब क़ायम होगा। ○

ये ज़ालिम[23] जो-कुछ कर रहे हैं अल्लाह को उस से ग़ाफ़िल न समझो। वह तो इन्हें बस उस दिन के लिए टाल रहा है जब कि आँखें फटी-की-फटी रह जायेंगी। ○ अपने सिर उठाये

१४ अर्थात् ऐसी बात जो मौलिक वास्तविकताओं के इन्कार पर आधारित हो, हर वह विचारधारा जो नबियों* की शिक्षाओं से टकराती हो चाहे वह नास्तिकता हो या शिर्क* हो या और कोई तथ्य हीन कल्पना।

१५ यह वास्तव में उन के जुर्म की सज़ा होती है अल्लाह उन्हें भटकने के लिए छोड़ देता है कि जितना चाहें भटक लें। उन पर सच्चाई की राह नहीं खोली जाती।

१६ परन्तु उस का कोई भी काम वास्तविक प्रयोजन और उद्देश्य से वंचित नहीं होता।

१७ अर्थात् तुम्हारी स्वाभाविक और प्राकृतिक हर माँग को उस ने पूरा किया। तुम्हारे जीवन के लिए जिन चीज़ों की भी आवश्यकता थी, उस ने वे सब चीज़ें संचित कीं।

१८, १९, २०, २१, २२, २३ अगले पृष्ठ पर देखिए।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

दौड़ते होंगे, उन की निगाहें (ऊपर ही लगी होंगी) उन की ओर लौट न सकेंगी, और उन के दिल उड़े जाते होंगे।○ और लोगों को उस दिन से सचेत कर दो जब कि अज़ाब उन्हें आ लेगा, तब वे ज़ुल्म करने वाले कहेंगे: हमारे रब*! हमें थोड़ी सी मुहलत दे दे। हम तेरे बुलावे (आमन्त्रण) को क़बूल करेंगे और रसूलों* के पीछे चलेंगे। (कहा जायेगा): क्या तुम पहले क़समें नहीं खाया करते थे कि तुम्हारा पतन न होगा।○ और तुम उन लोगों की बस्तियों में रह-बस चुके थे जिन्हों ने अपने आप पर ज़ुल्म किया था और तुम पर अच्छी तरह खुल चुका था कि उन के साथ हम ने कैसा मामला किया, और हम ने तुम्हारे (समझने के) लिए बहुत सी मिसालें बयान की थीं[24]।○ वे अपनी चाल चल चुके हैं, और उन की चाल अल्लाह के पास है,[25] यद्यपि उन की चाल ऐसी थी कि उस से पहाड़ भी टल जायें।○

तो यह न समझना कि अल्लाह अपने रसूलों* से किये हुये वादे के विरुद्ध जायेगा। निस्सन्देह अल्लाह अपार शक्ति का मालिक और (ज़ालिमों के करतूतों का पूरा) बदला लेने वाला है[26]।○ जिस दिन यह ज़मीन दूसरी ज़मीन से बदल दी जायेगी, और (इसी तरह) आसमान भी (बदल दिये जायेंगे) और सब-के-सब उस अल्लाह के सामने खुल कर आ जायेंगे जो अकेला और प्रभुत्वशाली है।○ (उस दिन) तुम अपराधियों को देखोगे कि ज़ंजीरों में जकड़े हुये हैं।○ उन के वस्त्र तारकोल के होंगे, और आग (की लपट) उन के चेहरों पर छा रही होगी,○ (यह इस लिए होगा) ताकि अल्लाह हर जीव को उस की कमाई का बदला दे। निस्सन्देह अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। (उसे हिसाब लेने कुछ देर नहीं लगती)।○

यह मानव के लिए यथेष्ट सन्देश है और इस लिए भेजा गया है ताकि उन्हें इस के द्वारा सचेत कर दिया जाये और ताकि वे जान लें कि वह (अल्लाह) केवल अकेला इलाह* (पूज्य) है और ताकि बुद्धि रखने वाले ध्यान दें।○

---

१८ अर्थात् बहुत से लोगों की गुमराही का कारण बनीं कि वे अल्लाह को छोड़ कर उन्हीं के मोहित हो कर रह गये।

१९ हज़रत इबराहीम अ० का हृदय कितना कोमल था, इस का अनुमान उन की इस प्रार्थना से किया जा सकता है।

२० अर्थात् मक्का की घाटी में।

२१ दे० सूरः अल अनकबूत आयत २६।

२२ इस प्रार्थना का चमत्कार आज भी हम खुली आँखों देख रहे हैं। यह इसी प्रार्थना का नतीजा है कि समस्त अरब और सम्पूर्ण जगत के लोग खिंच कर मक्का पहुँचते हैं; और हर समय हर प्रकार के फल और अनाज और दूसरे खाद्य पदार्थ वहाँ पहुँचते रहते हैं।

२३ दे० आयत २७, ३४।

२४ अर्थात् पिछली जातियों अथवा ज़ालिमों की मिसालें दे दे कर भी हम तुम्हें समझा चुके थे कि अल्लाह की अवज्ञा का परिणाम कितना बुरा होता है। दे० आयत २७, ४२।

२५ अर्थात् उसे उन की चाल का पूरा ज्ञान है, और उस का हिसाब वही लेगा। हर चीज़ पर उसी का अधिकार (control) है।

२६ दे० आयत १३, १४, ४२।

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

१५-अल-हिज्र

(परिचय)

नाम (The Title)

'अल-हिज्र' समूद* जाति का केन्द्रीय नगर था। इस सूरः* में आयत ८० से ८४ तक इस नगर के निवासियों के अपराधों और उन के विनाश का उल्लेख किया गया है; इसी सम्पर्क से इस सूरः का नाम 'अल-हिज्र' रखा गया है। 'अल-हिज्र' वालों का परिणाम उन लोगों के लिए एक चेतावनी और डरावा था जो नबी सल्ल० की हत्या करने के यत्न में लगे हुये थे।

उतरने का समय (The date of Revelation)

सूरः* की वार्ताओं और उस की वर्णन-शैली से ऐसा लगता है कि इस के उतरने का समय सूरः इब्राहीम के अवतीर्ण होने के समय से मिला हुआ है। यह वह समय है जब कि नबी सल्ल० को अल्लाह के दीन* की ओर बुलाते हुये एक लम्बी अवधि बीत चुकी थी परन्तु लोग थे कि उन की ओर से इस का उत्तर निरन्तर कुफ़्र* इन्कार, हठ-धर्मी और उपहास ही के रूप में मिल रहा था।

वार्तायें

इस सूरः* में उन लोगों के लिए डरावा है जो रिसालत* को न मानें। यह सूरः अपने बयान में सूरः इब्राहीम से कहीं ज़्यादा सख़्त है। सूरः* इब्राहीम की अपेक्षा इस के बयान में सार्विकता (Generality) भी अधिक पाई जाती है। इस सूरः का सम्पर्क मुश्रिक*- गरोह और किताब वालों,* दोनों से है।

वस्तुत सूरः* में एक ओर उन काफ़िरों* को सख़्त धमकी दी गई है जो नबी सल्ल० की दुश्मनी में हद से आगे बढ़े हुये थे। और आप (सल्ल०) के लाये हुये सन्देश का इन्कार ही नहीं कर रहे थे बल्कि आप (सल्ल०) का उपहास करने से भी बाज़ नहीं आते थे। दूसरी ओर इस सूरः* में नबी सल्ल० और आप (सल्ल०) के साथियों को तसल्ली दी गई है। धमकियों और समझानों के साथ-साथ विरोधी दल को समझाने-बुझाने में भी कोई कमी नहीं की गई है। और यह वह विशेषता है जो हमें पूरे क़ुरआन* में दिखाई देती है। वह अवज्ञाकारी लोगों को केवल अज़ाब की धमकी नहीं देता बल्कि उन्हें हर प्रकार से समझाने-बुझाने की कोशिश करता है। फिर भी यदि लोग राह पर न आयें तो इस के ज़िम्मेदार वे स्वयं हैं, दूसरा कोई इस का उत्तरदायी नहीं हो सकता।

---

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः° अल-हिज्र

(मक्का में उतरी – आयतें* ९९)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

अलिफ़० लाम० रा०¹ । यह किताब* अर्थात् स्पष्ट क़ुरआन* की आयतें हैं। ○
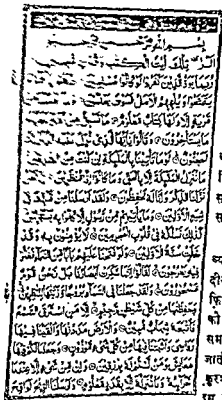
† किसी-न-किसी समय कुफ़्र* करने वाले कामना करेंगे कि क्या ही अच्छा होता कि मुस्लिम* होते। ○ छोड़ो इन्हें कि ये खायें (-पियें) और मज़े उड़ायें, और (झूठी) आशा इन्हें भुलावे में डाले रहे। इन्हें जल्द ही मालूम हो जायेगा। ○ हम ने जिस बस्ती को भी विनष्ट किया है उस के लिए एक निश्चित फ़ैसला था²। ○ कोई गरोह न अपने निश्चित समय से आगे बढ़ सकता है और न पीछे रह सकता है³। ○ १

और ये (काफ़िर* लोग) कहते हैं : हे वह व्यक्ति जिस पर याद-दिहानी⁴ उतरी है, तू अवश्य दीवाना है। ○ यदि तू सच्चा है, तो हमारे सामने फ़रिश्तों* को क्यों नहीं ले आता ? ○ फ़रिश्तों* को तो हम केवल हक़* के साथ उतारते हैं,⁵ उस समय उन्हें (अर्थात् लोगों को) मुहलत नहीं दी जाती⁶। ○ निस्सन्देह यह याद-दिहानी (अर्थात् क़ुरआन) हम ने उतारी है, और निस्सन्देह हम ही इस के रक्षक हैं। ○

(हे मुहम्मद !) हम तुम से पहले कितने ही पिछले गरोहों में रसूल* भेज चुके हैं। ○ १' और कभी ऐसा नहीं हुआ कि उन के पास कोई रसूल* आया हो और उन्हों ने उस की हँसी न उड़ाई हो। ○ इसी तरह हम अपराधियों के दिलों में से उसे (अर्थात् हक़ बात को) गुज़ार देते हैं⁷। ○ ये उस पर⁸ ईमान* नहीं लायेंगे, और पहले लोगों की रीति बीत चुकी है। ○

---

१ दे० सूरः अल-बक़रः फ़ुट नोट १।

† यहाँ से चौदहवाँ पारः (Part XIV) शुरू होता है।

२ अर्थात् उन के संभलने और काम करने की मुहलत पहले से निश्चित थी।

३ अर्थात् न तो कोई गिरोह समय आने से पहले विनष्ट हो सकता है और न उन के विनाश का समय आ जाने के बाद उसे छूट मिल सकती है। दे० सूरः अल-आराफ़ फ़ुट नोट ६।

४ अर्थात् क़ुरआन।

५ अर्थात् फ़रिश्तों* को तो अल्लाह केवल उस समय भेजता है जब कि वह किसी गरोह का फ़ैसला चुका देने का निश्चय कर लेता है। इस से पहले परोक्ष की कोई चीज़ प्रत्यक्ष रूप से सामने नहीं लाई जाती।

६ [illegible] २१-२२।

७ उन के दिलों में नहीं बसती। यह उन के अपराधी होने का स्वाभाविक परिणाम है।

८ अर्थात् क़ुरआन पर।

* [illegible] में लगे हुए पारिभाषिक शब्दों को पृष्ठ [illegible] में देखें।

यदि हम इन पर आसमान का कोई दरवाज़ा खोल दें और ये दिन-दहाड़े उस में चढ़ने लगें, ○ फिर भी ये यही कहेंगे : हमारी आँखें धोखा खा रही हैं —बल्कि हम लोगों पर जादू कर दिया गया है। ○

और हम ने ही आसमान में बहुत से बुर्ज[9] बनाये, और हम ने उसे देखने वालों के लिए सुसज्जित किया[10]। ○ और हर फिटकारे हुये शैतान* से उस की रक्षा की है,[11] ○ यह और बात है कि कोई (शैतान) चोरी-छिपे कुछ सुन-गुन ले ले,[12] (जब वह ऐसा करता है) तो फिर एक प्रत्यक्ष अग्नि-शिखा[13] उस का पीछा करती है। ○

और हम ने ज़मीन को फैलाया, और उस में अटल पहाड़ डाल दिये, और उस में हर प्रकार की चीज़ एक अन्दाज़े के साथ उगाई। ○ और उस में तुम्हारी जीविका के सामान संचित किये, (तुम्हारे लिए भी) और उन के लिए भी जिन के रोज़ी देने वाले तुम नहीं हो। ○

فَأَنزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَسْقَيْنَاكُمُوهُ وَمَا أَنتُمْ لَهُ بِخَازِنِينَ۝
وَإِنَّا لَنَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَنَحْنُ الْوَارِثُونَ۝ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِينَ
مِنكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَأْخِرِينَ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ إِنَّهُ
حَكِيمٌ عَلِيمٌ۝ وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِن صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ
مَّسْنُونٍ۝ وَالْجَانَّ خَلَقْنَاهُ مِن قَبْلُ مِن نَّارِ السَّمُومِ۝ وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ
لِلْمَلَائِكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِّن صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ۝
فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِن رُّوحِي فَقَعُوا لَهُ سَاجِدِينَ۝ فَسَجَدَ
الْمَلَائِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ۝ إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ أَن يَكُونَ مَعَ
السَّاجِدِينَ۝ قَالَ يَا إِبْلِيسُ مَا لَكَ أَلَّا تَكُونَ مَعَ السَّاجِدِينَ۝
قَالَ لَمْ أَكُن لِّأَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهُ مِن صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ۝
قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ۝ وَإِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ إِلَىٰ يَوْمِ
الدِّينِ۝ قَالَ رَبِّ فَأَنظِرْنِي إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ۝ قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ
الْمُنظَرِينَ۝ إِلَىٰ يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ۝ قَالَ رَبِّ بِمَا أَغْوَيْتَنِي
لَأُزَيِّنَنَّ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَلَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ۝ إِلَّا عِبَادَكَ
مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ۝ قَالَ هَٰذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ۝ إِنَّ
عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ إِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغَاوِينَ۝
وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ أَجْمَعِينَ۝ لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ لِّكُلِّ

और कोई भी चीज़ ऐसी नहीं जिस के ख़ज़ाने हमारे पास न हों। और हम उस (चीज़) को एक निश्चित अन्दाज़े के साथ ही उतारते हैं[14]। ○

और हम वर्षा लाने वाली हवायें (समीर) भेजते हैं, फिर आसमान से पानी बरसाते हैं, और उस से तुम्हें सिंचित करते हैं। और तुम्हारे पास उस का ख़ज़ाना नहीं है। ○

९. 'बुर्ज' का मूल अर्थ है प्रदर्शन और प्रकट होना। फिर क़िला, अथवा गढ़, अट्टालिका और मज़बूत भवन आदि के लिए भी यह शब्द प्रयुक्त होने लगा; क्योंकि ये चीज़ें प्रत्यक्ष एवं प्रकट ही होती हैं। प्राचीन नक्षत्र विज्ञान में यह शब्द उन बारह राशियों के लिए प्रयोग हुआ है जिन पर सूर्य के चक्कर काटने के मार्ग का विभाजन किया गया है। अरब के लोग सूर्य की बारह राशियों से भली-भाँति परिचित थे। (दे० किताब-अल-अनवाऽ, अल-अज़मनः वल-अमकनः आदि। कुछ लोग समझते हैं कि यहाँ बड़े-बड़े प्रकाशमान तारों को 'बुर्ज' कहा गया है; इस विषय में यह विचार भी प्रकट किया गया है कि 'बुर्ज' आकाश के उन क्षेत्रों को कहा गया है जिन्हें अप्रत्यक्ष और मज़बूत सरहदों ने एक दूसरे से अलग कर रखा है उन क्षेत्रों को पार कर के किसी चीज़ का दूसरे क्षेत्र में जाना अत्यन्त कठिन है।

१० अर्थात् हर क्षेत्र में कोई न कोई ऐसा चमकता तारा या ग्रह अवश्य पाया जाता है जो आकाश की शोभा है। यह विश्व कोई भयानक और डरावना लोक नहीं है, अल्लाह ने इसे तुम्हारे लिए अत्यन्त शोभायमान बनाया है।

११ ऊपरी लोक तक शैतानों* की कदापि पहुँच नहीं होती; वे बस केवल एक निश्चित सीमा तक ही पहुँच सकते हैं।

१२ ये शैतान* जो ग़ैब या परोक्ष की ख़बरें हासिल करने का प्रयत्न करते हैं, मनुष्यों की अपेक्षा उन की सृष्टि फ़रिश्तों* से अधिक मिलती-जुलती है इस लिए सुन-गुन लेने की कोशिश वे अवश्य करते हैं; परन्तु वास्तव में उन के पल्ले कुछ भी नहीं पड़ता। इन शैतानों* की दी हुई ख़बरों के आधार पर यदि कोई योगी या तांत्रिक इस का दावा करता है कि उसे परोक्ष का ज्ञान प्राप्त है तो वह झूठा है। उस के पास ऐसा कोई साधन नहीं है जिस के द्वारा वास्तव में उसे ग़ैब की बातें मालूम हो सकें।

१३ यहाँ मूल ग्रन्थ (Text) में 'शिहाब-मुबीन' शब्द प्रयुक्त हुआ है। (शेष अगले पृष्ठ पर)

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

निस्सन्देह हम ही जीवित करते और मारते हैं और हम ही (सब के) वारिस हैं"। ○ और हम तुम्हारे अगलों को भी जानते हैं और तुम्हारे पिछलों को भी जानते हैं। ○ निस्सन्देह तुम्हारा रब* उन्हें इकट्ठा करेगा। निस्सन्देह वह हिक्मत* वाला और (सब-कुछ) जानने वाला है। ○

और हम ने मनुष्य को सड़ी सियाह मिट्टी के सूखे गारे से—जो बजने लगता है—बनाया," ○ और जिन्नों* को हम ने पहले लू की लपट से पैदा किया। ○ याद करो जब तुम्हारे रब* ने फ़रिश्तों* से कहा : निश्चय ही मैं सड़ी सियाह मिट्टी के सूखे बजने वाले गारे से एक मनुष्य पैदा करने वाला हूँ। ○ तो जब मैं उसे नख-शिख से दुरुस्त कर चुकूँ और उस में अपनी रूह (आत्मा) फूँक दूँ" तो तुम (सब) उस के आगे सजदे में गिर जाना। ○ सो उन सभी फ़रिश्तों* ने सजदः किया ○ सिवाय इब्लीस* के। उस ने सजदः करने वालों में शामिल होने से इन्कार कर दिया। ○ (अल्लाह ने) कहा : हे इब्लीस*! तू क्यों सजदः करने वालों में शामिल नहीं हुआ? ○ उस ने कहा : मुझ से यह नहीं हो सकता कि मैं उस मनुष्य को सजदः करूँ जिसे तू ने सड़ी काली मिट्टी के सूखे गारे से बनाया? ○ (अल्लाह ने) कहा : निकल जा यहाँ से, निश्चय ही तू फिटकारा हुआ है। ○ और निश्चय ही तुझ पर बदला दिये जाने के दिन" तक फिटकार है। ○ उस ने कहा : रब*! मुझे उस दिन तक मुहलत दे जब कि वे (दोबारा जीवित कर के) उठाये जायेंगे। ○ (अल्लाह ने) कहा : जा तुझे मुहलत है ○ उस दिन तक के लिए जिस का समय निश्चित है"। ○ उस ने कहा : रब*! जैसा तू ने मुझे बहकाया, उसी तरह मैं उन के लिए ज़मीन में मनोहरता का आयोजन कर के उन सब को बहकाऊँगा, ○ सिवाय उस के जो उन में तेरे चुने हुए बन्दे (सेवक) होंगे (वे मेरे बहकावे में न आवेंगे)। ○ (अल्लाह ने) कहा : यही एक सीधा रास्ता है जो मुझ तक पहुँचता है : ○ निस्सन्देह मेरे बन्दों पर तेरा कोई बस न चल सकेगा सिवाय उस व्यक्ति के जो बहके हुये लोगों में से तेरे पीछे हो ले, ○ और निश्चय ही दोज़ख़* उन सब के वादे की जगह है। ○ उस के सात दरवाज़े हैं, हर दरवाज़े के लिए उन (लोगों) में से एक निश्चित हिस्सा है। ○

सूरः अस-साफ़्फ़ात (आयत : १०) में इस के लिए 'शिहाब-साक़िब' शब्द प्रयुक्त हुआ है जिस का अर्थ है 'अँधेरों को छेदने वाली अग्नि-शिखा'। हो सकता है इस का तात्पर्य यही तारों का टूटना या उल्कापात हो जिस का निरीक्षण हम रात्रि के समय करते रहते हैं। दूरदर्शक यन्त्र से देखे जाने वाले टूटते तारे जो विस्तृत गगन से पृथ्वी की ओर गिरते हुये दिखाई देते हैं उन की संख्या का औसत १० लाख प्रति दिन है। ऊपरी वायुमण्डल में इन की गति लग-भग २६ मील प्रति सेकण्ड है, कभी-कभी यह गति ५० मील प्रति सेकण्ड तक भी देखी गई है। टूटने वाले तारे जल कर भस्म हो जाते हैं, मुश्किल ही से कोई ज़मीन तक पहुँच पाता है। यह भी सम्भव है कि 'शिहाब' से अभिप्रेत किसी और ही प्रकार की अग्नि शिखायें या किरणें हों जिन का हमें अभी ज्ञान न हो सका हो।

(शेष अगले पृष्ठ पर

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

تَفْضَحُونِ ۝ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تُخْزُونِ ۝ قَالُوا أَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ
الْعَالَمِينَ ۝ قَالَ هَٰؤُلَاءِ بَنَاتِي إِن كُنتُمْ فَاعِلِينَ ۝ لَعَمْرُكَ إِنَّهُمْ
لَفِي سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝ فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِينَ ۝ فَجَعَلْنَا
عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّن سِجِّيلٍ ۝ إِنَّ فِي
ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّلْمُتَوَسِّمِينَ ۝ وَإِنَّهَا لَبِسَبِيلٍ مُّقِيمٍ ۝ إِنَّ فِي
ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝ وَإِن كَانَ أَصْحَابُ الْأَيْكَةِ لَظَالِمِينَ ۝
فَانتَقَمْنَا مِنْهُمْ وَإِنَّهُمَا لَبِإِمَامٍ مُّبِينٍ ۝ وَلَقَدْ كَذَّبَ أَصْحَابُ
الْحِجْرِ الْمُرْسَلِينَ ۝ وَآتَيْنَاهُمْ آيَاتِنَا فَكَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ۝ وَ
كَانُوا يَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا آمِنِينَ ۝ فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ
مُصْبِحِينَ ۝ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝ وَمَا خَلَقْنَا
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ ۗ وَإِنَّ السَّاعَةَ لَآتِيَةٌ
فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَمِيلَ ۝ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلَّاقُ الْعَلِيمُ ۝ وَلَقَدْ
آتَيْنَاكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِي وَالْقُرْآنَ الْعَظِيمَ ۝ لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ
إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِّنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَاخْفِضْ
جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِينَ ۝ وَقُلْ إِنِّي أَنَا النَّذِيرُ الْمُبِينُ ۝ كَمَا
أَنزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِينَ ۝ الَّذِينَ جَعَلُوا الْقُرْآنَ عِضِينَ ۝
فَوَرَبِّكَ لَنَسْأَلَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ۝ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ فَاصْدَعْ بِمَا

निस्सन्देह तक़्वा* वाले बाग़ों और (जल-) स्रोतों के बीच होंगे। ○ (बाग़ों में आते समय उन से कहा जायेगा): दाख़िल हो जाओ इन में सलामती के साथ, निश्चिन्त हो कर। ○ उन के सीनों (दिलों) में जो मलिनता होगी उसे हम दूर कर देंगे। वे भाइयों की तरह, आमने-सामने, तख़्तों पर होंगे। ○ वहाँ न उन्हें किसी तकलीफ़ का सामना करना पड़ेगा, और न वे वहाँ से कभी निकाले जायेंगे। ○

(हे नबी*!) मेरे बन्दों (सेवकों) को सूचना दे दो कि मैं बड़ा ही क्षमाशील और दया करने वाला हूँ, ○ और यह कि मेरा अज़ाब दुःख देने वाला अज़ाब है। ○

और उन्हें इबराहीम के मेहमानों का हाल सुनाओ, ○ जब वे उस के यहाँ आये, और कहा: सलाम हो (तुम पर)। उस ने कहा: हम तो तुम से डरते हैं[१५]। ○ वे बोले: डरो नहीं! हम तुम्हें एक बड़े ज्ञानी लड़के की शुभ-सूचना देते हैं[१६]। ○ उस ने कहा: क्या तुम मुझे (लड़के की) शुभ-सूचना दे रहे हो जब कि मेरा बुढ़ापा आ गया है? तो अब किस पर शुभ-सूचना दे रहे हो[१७]? ○ उन्हों ने कहा: हम तुम्हें

५५ सच्चाई के साथ शुभ-सूचना दे रहे हैं। तो तुम निराश होने वालों में से न हो। ○ उस ने कहा: और अपने रब* की दयालुता से गुमराहों के सिवा और कौन निराश हो सकता है? ○ उस ने कहा: हे (अल्लाह के) भेजे हुये (दूत)! तुम किस मुहिम पर आये हो? ○ बोले: हम एक अपराधी गरोह[१८] की ओर भेजे गये हैं, ○ सिवाय लूत के घर वालों के। हम उन सब को बचा लेंगे, ○ सिवाय उस की स्त्री के, (उस के लिए अल्लाह कहता है कि)

६० हमारा फ़ैसला हो चुका है कि वह पीछे रह जाने वालों में से होगी। ○

फिर जब ये (अल्लाह के) भेजे हुये (दूत) लूत के परिवार में पहुँचे, ○ उस ने कहा: तुम तो अपरिचित लोग हो। ○ उन्होंने कहा: नहीं, बल्कि हम तुम्हारे पास वही चीज़ ले कर आये हैं जिस में ये (लोग) सन्देह किया करते थे, ○ हम तुम्हारे पास हक़* के साथ आये हैं और निस्सन्देह हम सच्चे हैं। ○ तो अब तुम अपने घर वालों को ले कर रात के किसी हिस्से में निकल जाओ, और स्वयं उन के पीछे-पीछे चलो। तुम में से कोई पीछे मुड़ कर न देखे, बस

६५ चले जाओ जहाँ का तुम्हें हुक्म दिया गया है। ○ और उसे हम ने अपना यह फ़ैसला पहुँचा दिया, *कि प्रातःकाल होते उन (लोगों) की जड़ कट गई होगी।* ○

इतने में नगर के लोग हर्षित हो कर आ पहुँचे। ○ (लूत ने) कहा: ये मेरे मेहमान हैं। सो मेरी फ़ज़ीहत न करो। ○ अल्लाह से डरो, और मुझे बे-आबरू न करो[१९]। ○ वे कहने

---

१४ यहाँ हर चीज़ और हर शक्ति के लिए एक नियत परिमाण और एक निश्चित सीमा है जिस से न तो वह आगे बढ़ सकती है और न घट सकती है यही कारण है कि विश्व में सन्तुलन तथा और सम्पुलन पाया जाता है।
१५, १६, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४ अगले पृष्ठ पर।

** इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

تُؤْمَرُ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ ۝ إِنَّا كَفَيْنَاكَ الْمُسْتَهْزِئِينَ ۝ الَّذِينَ يَجْعَلُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝ وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّكَ يَضِيقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُولُونَ ۝ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُن مِّنَ السَّاجِدِينَ ۝ وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتَّىٰ يَأْتِيَكَ الْيَقِينُ ۝

लगे : क्या हम ने तुम्हें दुनियाँ भर के लोगों से रोका नहीं था (कि उन का ठीका न लो)। ○ (लूत ने) कहा : यदि तुम कुछ करने ही वाले हो, तो ये मेरी बेटियाँ मौजूद हैं[२५]। ○ तेरे जीवन की क़सम (हे मुहम्मद!) वे अपनी मस्ती में खोये हुये थे। ○

फिर पौ फटते ही एक (भयङ्कर) चीख़ ने उन्हें आ लिया। ○ तो हम ने उस (बस्ती) को तल-पट कर के छोड़ा, और उन पर पकी मिट्टी के पत्थर बरसाये[२६]। ○

निश्चय ही इस में उन लोगों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं जो तथ्य को लक्षणों से समझ लेते हैं। ○ और वह (स्थान जहाँ की यह घटना है) सीधे रास्ते पर है (जो अब भी चालू है[२७])। ○ निस्सन्देह इस में ईमान* वालों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं। ○

और अल-ऐकः[२८] के निवासी ज़ालिम थे। ○ सो हम ने उन से बदला ले लिया; और निश्चय ही ये दोनों (भू-भाग) खुले रास्ते में पड़ते हैं[२९]। ○

और अल-हिज्र[३०] के लोग भी रसूलों* को झुठला चुके हैं। ○ हम ने उन्हें अपनी आयतें* प्रदान कीं, परन्तु वे उन से किनारा खींचते रहे। ○ वे पहाड़ों को काट-काट कर घर बनाते थे और अपनी जगह निश्चिन्त थे। ○ फिर उन्हें प्रातःकाल होते एक प्रचण्ड (भयङ्कर) चीख़ ने आ लिया, ○ और वह-कुछ उन के काम न आया जो वे कमाते रहे हैं। ○

हम ने आसमानों और ज़मीन को और जो-कुछ उन के बीच है केवल हक़* के साथ पैदा किया है,[३१] और निस्सन्देह वह घड़ी (क़ियामत*) आने वाली है। तो तुम (हे मुहम्मद!) श्रीवान् क्षमा से काम लो (और उन की शरारतों से चिन्तित न हो[३२])। ○ निस्सन्देह तुम्हारा रब* ही बड़ा रचयिता और (सब-कुछ) जानने वाला है। ○ और हम ने तुम्हें सात दोहराई जाने वाली[३३] प्रदान कीं और तुम्हें महान् क़ुरआन प्रदान किया है। ○ जो-कुछ[३४] सुख-सामग्री हम ने इन में से विभिन्न प्रकार के लोगों को दी है तुम उस की ओर आँख उठा कर न देखो, और न उन की दशा पर ग्लानि करो, और अपना बाज़ू (भुजायें) ईमान* वालों के लिए झुका दो। ○ और कह दो : मैं तो साफ़-साफ़ सचेत करने वाला हूँ, ○ (हम ने उसी तरह यह किताब* तुम पर उतारी है) जिस तरह हम ने विभाजन करने वालों पर[३५] उतारा था,[३६] ○ जिन्हों ने क़ुरआन के टुकड़े-टुकड़े कर दिये[३७]। ○ तो तुम्हारे रब* की क़सम, हमें अवश्य उन लोगों से, पूछना है, ○ उस के बारे में जो-कुछ कि वे करते थे। ○

सो (हे नबी!) तुम्हें जिस बात का हुक्म मिला है उसे खोल कर सुना दो और शिर्क* करने वालों की ओर ध्यान न दो[३८]। ○ हँसी उड़ाने वालों के लिए तुम्हारी ओर से हम बस

---

१५ अर्थात् तुम्हारे पास कोई चीज़ सदा बाक़ी रहने वाली नहीं है, तुम हमारी दी हुई चीज़ें छोड़ कर दुनियाँ से कूच करते हो, तुम्हारे पीछे हम ही हैं जो बाक़ी रहने वाले हैं।

१६ अर्थात् हज़रत आदम अ० को जो सारे मनुष्य के बाप हैं अल्लाह ने एक तुच्छ मिट्टी से पैदा किया, जो हमेशा पद-दलित होती रहती है। फिर उन्हें वह स्थान प्रदान किया कि फ़िरिश्तों* तक को उन के आगे झुकना पड़ा।

१७ इस से मालूम होता है कि मनुष्य के भीतर जो रूह (आत्मा) फूँकी गई है वह वास्तव में अल्लाह के गुणों की एक अभिव्यक्ति है। इस से जो ज्ञान, संकल्प और सामर्थ्य आदि गुण पाये जाते हैं वे वास्तव में अल्लाह ही के गुणों की छाया मात्र हैं।

१८ दे० सूरः अल-फ़ातिहः फ़ुट नोट १।

१९ अर्थात् क़ियामत* तक के लिए।

(शेष अगले पृष्ठ पर)

* इन का अर्थ आख़िर में बनी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

है,'' ○ जो अल्लाह के साथ दूसरे इलाह* (पूज्य) गढ़ते हैं। तो उन्हें जल्द ही (इस का परिणाम) मालूम हो जायेगा। ○

हम जानते हैं कि जो-कुछ ये लोग कहते हैं उस से तुम दिल-तंग होते हो,'' ○ तो तुम अपने रब* की प्रशंसा (हम्द*) के साथ तस्बीह* करते रहो, और सज्दः* करने वालों में शामिल रहो। ○ और अपने रब की इबादत* में लगे रहो यहाँ तक कि यक़ीनी चीज़'' तुम्हारे सामने आ जाये। ○

---

२० दे० सूरः हूद आयत ७० ।

२१ अर्थात् हम हज़रत इसहाक़ अ० के पैदा होने की शुभ-सूचना तुम्हें दे रहे हैं ।

२२ दे० बाइबिल 'पैदाइश' (Gen.) १७ : १७ ।

२३ अर्थात् लूत अ० की जाति वालों की ओर ।

२४ दे० सूरः हूद फुट नोट ३३ ।

२५ दे० सूरः हूद फुट नोट ३४ ।

२६ यह पाषाण-वर्षा आँधी के द्वारा हुई है। फिर वह आँधी इतनी तेज हो गई कि उन के घर भी उलट गये। तौरात* से मालूम होता है कि प्रचण्ड वायु के साथ-साथ बिजली और कड़क का अज़ाब भी आया।

२७ हिजाज से शाम (Syria) जाते हुये और मिस्र से इराक़ जाते हुये रास्ते ही में यह भू-भाग पड़ता है। यह भू-भाग अत्यन्त उजाड़ और भयानक मालूम होता है।

२८ अल-ऐकः का अर्थ होता है घना जंगल। अल ऐकः वालों से संकेत हज़रत शुअ़ैब अ० की जाति वालों की ओर है। उन के पूरे अधिक्षेत्र को मदयन कहते थे। उन के केन्द्रीय नगर का नाम भी मदयन था; और अल ऐकः 'तबूक' का प्राचीन नाम है।

२९ हज़रत लूत अ० की जाति वालों की उजड़ी हुई बस्ती की तरह मदयन का भू भाग भी हिजाज से फ़िलिस्तीन (Palestine) और शाम (Syria) जाते हुये रास्ते ही में पड़ता है।

३० यह समूद* जाति का केन्द्रीय नगर था। मदीना से 'तबूक' जाते हुये यह स्थान मार्ग ही में पड़ता है।

३१ अर्थात् वास्तविक उद्देश्य के साथ पैदा किया है। (दे० सूरः अल-अंबिया आयत १६-१८)

आयत ८५ से ले कर सूरः के अन्त तक सूरः की समाप्ति सम्बन्धी वार्ता अथवा सूरः का सारांश है।

३२ इस आयत में नबी सल्ल० को तसल्ली दी गई है।

३३ इस से अभिप्रेत सूरः अल फ़ातिहः की आयतें हैं। सूरः अल-फ़ातिहः पूरे क़ुरआन का संक्षेप है। कुछ दूसरे लोगों के विचार में इस से अभिप्रेत क़ुरआन की ७ सूरतें हैं। और यह विचार भी प्रकट किया गया है कि इस से अभिप्रेत पूरा क़ुरआन है।

३४ दे० फुट नोट ३२।

३५ अर्थात् यहूद समुदाय पर। यहूदियों ने धर्म का मन-मानी विभाजन कर डाला था; और तरह-तरह के पन्थ और फ़िर्क़े बना लिये थे।

३६ दे० सूरः अल-अनआम आयत ९१ ।

३७ अर्थात् क़ुरआन की कुछ बातों को मानते हैं; और कुछ का इन्कार करते हैं।

३८ दे० आयत ८५ ।

३९ दे० अन-नहल आयत ३४ ।

४० दे० सूरः अन-नहल आयत १२७ ।

४१ अर्थात् अल्लाह का वादा जिस का आना अवश्यम्भावी है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

१६–अन-नह्ल

(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः* की आयत ६८–६९ में 'अन-नह्ल' अर्थात् मधु-मक्खी और उस के कार्मों को एक निशानी के रूप में पेश किया गया है; इसी सम्पर्क से इस सूरः का नाम अन-नह्ल रखा गया है। यह नाम केवल एक चिह्न के रूप में रखा गया है। मधु मक्खी और उस के कार्यों से पता चलता है कि अल्लाह अपनी सृष्टि का प्रबन्ध कितनी तत्परता और मुस्तैदी के साथ कर रहा है इस लिए यह सम्भव नहीं कि वह मानव जाति को जीवन का सीधा मार्ग न दिखाये। और उसे वास्तविक ज्ञान से वंचित रखे। अल्लाह की इस निशानी में काफ़िरों* के लिए भी यह चेतावनी है कि अल्लाह के दिखाये हुये मार्ग को छोड़ना मनुष्य के लिए बिलकुल ऐसा ही है जैसे कोई खाना-पीना छोड़ दे बल्कि इस से भी बढ़ कर घातक है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

सूरः* की वार्त्ताओं और वर्णन-शैली से पता चलता है कि यह सूरः मक्का के अन्तिम समय की सूरतों* में से है। इस सूरः के अवतीर्ण होने के समय काफ़िरों* का अत्याचार उग्र रूप धारण कर चुका था[1] जिस के कारण बहुत से मुसलमान स्वदेश त्याग कर हब्श: (Abyssinia) जा चुके थे[2]। नबी सल्ल० की नुबूवत* के समय में जो सप्त-वर्षीय अकाल पड़ा था वह गुज़र चुका था[3]।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

इस सूरः* का केन्द्रीय विषय अथवा मध्यबिन्दु एकेश्वरवाद–धर्म का प्रमाणीकरण है। इसी सम्पर्क से इस सूरः* में पूर्ण रूप से शिर्क* अर्थात् अनेकेश्वरवाद का तर्कयुक्त खण्डन किया गया है। और 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) के प्राकृतिक (Natural) प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं। बाह्य जगत और मनुष्य के अन्तःकरण की खुली-खुली निशानियों को पेश कर के एकेश्वरवाद की पुष्टि की गई है। काफ़िरों,* मुशरिकों* और किताब वालों* के आक्षेपों का उत्तर दे कर उन के सन्देहों का समाधान किया गया है। असत्य पर अड़े रहने और सत्य के मुक़ाबिले में सरकशी करने के बुरे परिणामों से लोगों को डराया गया है। इस बात पर विशेष रूप से ज़ोर दिया गया है कि लोग अल्लाह से डरें और जीवन में अपने सत्कर्मी होने का परिचय दें। नबी* सल्ल० और आप (सल्ल०) के साथियों को ढारस बंधाई गई है; और उन्हें बताया गया है कि ऐसी विकट परिस्थिति में जब कि धर्म-द्रोहियों का अत्याचार हद से आगे बढ़ चुका है उन्हें क्या नीति अपनानी चाहिए।

---

१ दे० आयत १०६।

२ दे० आयत ४१, ११०।

३ दे० आयत ११२।

* इस का अर्थ अन्त में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें

सूरः* अन-नह्ल

(मक्का में उतरी — आयतें* १२८)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَتٰۤى اَمْرُ اللّٰهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْهُ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ يُنَزِّلُ
الْمَلٰٓئِكَةَ بِالرُّوْحِ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖۤ اَنْ اَنْذِرُوْۤا
اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاتَّقُوْنِ ۝ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ
تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ
مُّبِيْنٌ ۝ وَالْاَنْعَامَ خَلَقَهَا ۚ لَكُمْ فِيْهَا دِفْءٌ وَّمَنَافِعُ وَمِنْهَا
تَاْكُلُوْنَ ۝ وَلَكُمْ فِيْهَا جَمَالٌ حِيْنَ تُرِيْحُوْنَ وَحِيْنَ تَسْرَحُوْنَ ۝
وَتَحْمِلُ اَثْقَالَكُمْ اِلٰى بَلَدٍ لَّمْ تَكُوْنُوْا بٰلِغِيْهِ اِلَّا بِشِقِّ الْاَنْفُسِ ؕ
اِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَّالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيْرَ لِتَرْكَبُوْهَا
وَزِيْنَةً ؕ وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ وَعَلَى اللّٰهِ قَصْدُ السَّبِيْلِ وَمِنْهَا
جَآئِرٌ ؕ وَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ هُوَ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ
مَآءً لَّكُمْ مِّنْهُ شَرَابٌ وَّمِنْهُ شَجَرٌ فِيْهِ تُسِيْمُوْنَ ۝ يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ
الزَّرْعَ وَالزَّيْتُوْنَ وَالنَّخِيْلَ وَالْاَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ اِنَّ فِيْ
ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝ وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۙ وَالشَّمْسَ
وَالْقَمَرَ ؕ وَالنُّجُوْمُ مُسَخَّرٰتٌۢ بِاَمْرِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ
يَّعْقِلُوْنَ ۝ وَمَا ذَرَاَ لَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَاْكُلُوْا مِنْهُ لَحْمًا
طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْا مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاخِرَ
فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝ وَاَلْقٰى فِي الْاَرْضِ
رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَاَنْهٰرًا وَّسُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝ وَعَلٰمٰتٍ

अल्लाह का हुक्म आ गया,[1] तो अब उस की जल्दी न मचाओ। वह महिमावान् और उच्च है उस शिर्क* से जो ये कर रहे हैं।○ वह फ़रिश्तों* को रूह[2] के साथ अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है उतारता है,[3] कि (लोगों को) सचेत कर दो कि मेरे सिवा कोई इलाह* (पूज्य) नहीं, अतः मुझ से डरो।○ उस ने आसमानों और ज़मीन को हक़* के साथ पैदा किया[4]। वह उच्च है उस शिर्क* से जो ये कर रहे हैं।○

उस ने मनुष्य को एक बूँद (वीर्य्य) से पैदा किया, फिर क्या देखते हैं कि वह प्रत्यक्ष झगड़ालू (अनुचित वाद-विवाद करने वाला) बन गया।○ और उस ने पशु पैदा किये, जिन (की खाल और ऊन) में तुम्हारे लिए गर्मी प्राप्त करने का सामान है और दूसरे फ़ायदे भी हैं, और उन में से तुम खाते भी हो;○ और उन में तुम्हारे लिए शोभा भी है, जब कि (सन्ध्या समय) तुम उन्हें घर लाते हो, और जब कि (सवेरे) तुम उन्हें चराने के लिए बाहर ले जाते हो।○ वे तुम्हारे बोझ ढो कर ऐसी-ऐसी जगहों तक ले जाते हैं जहाँ तुम बिना जान-तोड़ मशक़्क़त (कठिन परिश्रम) के नहीं पहुँच सकते थे। निस्सन्देह तुम्हारा रब* करुणामय और दया करने वाला है।○ और घोड़े और खच्चर और गदहे (पैदा किये) कि तुम उन पर सवार हो, और शोभा के लिए भी (उन्हें पैदा किया)। और वह बहु-कुछ

---

[1] अर्थात् अब जल्द ही नबी सल्ल॰ को हिजरत* का आदेश मिलने वाला है। हिजरत का आदेश विरोधी-दल के भाग्य का फ़ैसला कर देगा। इस लिए कि हिजरत* के बाद नबी* के दुश्मनों पर अल्लाह का अज़ाब आ कर रहता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि हिजरत* के बाद ज़ालिमों को अपने किये की सज़ा मिल कर रही। 'बद्र' की लड़ाई में काफ़िरों* के बड़े-बड़े सरदार मारे गये। और हिजरत के आठ वर्ष के भीतर ही पूरे अरब देश से कुफ़्र* और शिर्क* की जड़ें उखाड़ फेंकी गईं। दे॰ आयत ३३, सूरः हूद आयत ४०, ५८, ६६, ८२, ६४, १०१, सूरः अल-अहक़ाफ़ आयत २५।

[2] अर्थात् वह्य*।

[3] अर्थात् अपने बन्दों में से जिस के पास चाहता है भेजता है।

[4] अर्थात् ठीक-ठीक उच्च उद्देश्य के अन्तर्गत पैदा किया।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

१६–अन-नह्ल

(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः* की आयत ६८–६६ में 'अन-नह्ल' अर्थात् मधु-मक्खी और उस के कामों को एक निशानी के रूप में पेश किया गया है; इसी सम्पर्क में इस सूरः का नाम अन-नह्ल रखा गया है। यह नाम केवल एक चिह्न के रूप में रखा गया है। मधु मक्खी और उस के कार्यों से पता चलता है कि अल्लाह अपनी सृष्टि का प्रबन्ध कितनी तत्परता और मुस्तैदी के साथ कर रहा है इस लिए यह सम्भव नहीं कि वह मानव जाति को जीवन का सीधा मार्ग न दिखाये। और उसे वास्तविक ज्ञान से वंचित रखे। अल्लाह की इस निशानी में काफ़िरों* के लिए भी यह चेतावनी है कि अल्लाह के दिखाये हुये मार्ग को छोड़ना मनुष्य के लिए बिलकुल ऐसा ही है जैसे कोई खाना-पीना छोड़ दे बल्कि इस से भी यह घातक है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

सूरः* की वार्ताओं और वर्णन-शैली से पता चलता है कि यह सूरः मक्का के अन्तिम समय की सूरतों* में से है। इस सूरः के अवतीर्ण होने के समय काफ़िरों* का अत्याचार उग्र रूप धारण कर चुका था[1] जिस के कारण बहुत से मुसलमान स्वदेश त्याग कर हब्शः (Abyssinia) जा चुके थे[2]। नबी सल्ल० की नुबूवत* के समय में जो सप्त-वर्षीय अकाल पड़ा था वह गुज़र चुका था[3]।

केन्द्रीय विषय तथा वार्तायें

इस सूरः* का केन्द्रीय विषय अथवा मध्यबिन्दु एकेश्वरवाद–धर्म का प्रमाणीकरण है। इसी सम्पर्क से इस सूरः* में पूर्ण रूप से शिर्क* अर्थात् अनेकेश्वरवाद का तर्कयुक्त खण्डन किया गया है। और 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) के प्राकृतिक (Natural) प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं। बाह्य जगत और मनुष्य के अन्तःकरण की खुली-खुली निशानियों को पेश कर के एकेश्वरवाद की पुष्टि की गई है। काफ़िरों,* मुश्रिकों* और किताब वालों* के आक्षेपों का उत्तर दे कर उन के सन्देहों का समाधान किया गया है। असत्य पर अड़े रहने और सत्य के मुक़ाबिले में सरकशी करने के बुरे परिणामों से लोगों को डराया गया है। इस बात पर विशेष रूप से ज़ोर दिया गया है कि लोग अल्लाह से डरें और जीवन में अपने सत्कर्मी होने का परिचय दें। नबी* सल्ल० और आप (सल्ल०) के साथियों को ढारस बँधाई गई है; और उन्हें बताया गया है कि ऐसी विकट परिस्थिति में जब कि धर्म-द्रोहियों का अत्याचार हद से आगे बढ़ चुका है उन्हें क्या नीति अपनानी चाहिए।

---

१ दे० आयत १०६।

२ दे० आयत ४१, ११०।

३ दे० आयत ११२।

* इस का अर्थ आखिर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अन-नह्ल

(मक्का में उतरी — आयतें* १२८)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

अल्लाह का हुक्म आ गया,[1] तो अब उस की जल्दी न मचाओ। वह महिमावान् और उच्च है उस शिर्क* से जो ये कर रहे हैं।○ वह फ़रिश्तों* को रूह[2] के साथ अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है उतारता है,[3] कि (लोगों को) सचेत कर दो कि मेरे सिवा कोई इलाह* (पूज्य) नहीं, अतः मुझ से डरो।○ उस ने आसमानों और ज़मीन को हक़* के साथ पैदा किया[4]। वह उच्च है उस शिर्क* से जो ये कर रहे हैं।○

उस ने मनुष्य को एक बूँद (वीर्य) से पैदा किया, फिर क्या देखते हैं कि वह प्रत्यक्ष झगड़ालू (अनुचित वाद-विवाद करने वाला) बन गया।○ और उस ने पशु पैदा किये, जिन (की खाल और ऊन) में तुम्हारे लिए गर्मी प्राप्त करने का सामान है और दूसरे फ़ायदे भी हैं, और उन में से तुम खाते भी हो;○ और उन में तुम्हारे लिए शोभा भी है जब कि (सन्ध्या समय) तुम उन्हें घर लाते हो, और जब कि (सवेरे) तुम उन्हें चराने के लिए बाहर ले जाते हो।○ वे तुम्हारे बोझ ढो कर ऐसी-ऐसी जगहों तक ले जाते हैं जहाँ तुम बिना जान-तोड़ मशक़्क़त (कठिन परिश्रम) के नहीं पहुँच सकते थे। निस्सन्देह तुम्हारा रब* करुणामय और दया करने वाला है।○ और घोड़े और खच्चर और गदहे (पैदा किये) कि तुम उन पर सवार हो, और शोभा के लिए भी (उन्हें पैदा किया)। और वह बहुत-कुछ

५

[illegible]

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
أَتَىٰ أَمْرُ اللهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوهُ ۚ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ يُنَزِّلُ
الْمَلَائِكَةَ بِالرُّوحِ مِنْ أَمْرِهِ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ أَنْ أَنْذِرُوا
أَنَّهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنَا فَاتَّقُونِ ۝ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ
تَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ نُطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ
مُبِينٌ ۝ وَالْأَنْعَامَ خَلَقَهَا ۗ لَكُمْ فِيهَا دِفْءٌ وَمَنَافِعُ وَمِنْهَا
تَأْكُلُونَ ۝ وَلَكُمْ فِيهَا جَمَالٌ حِينَ تُرِيحُونَ وَحِينَ تَسْرَحُونَ ۝
وَتَحْمِلُ أَثْقَالَكُمْ إِلَىٰ بَلَدٍ لَمْ تَكُونُوا بَالِغِيهِ إِلَّا بِشِقِّ الْأَنْفُسِ ۚ
إِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ ۝ وَالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيرَ لِتَرْكَبُوهَا
وَزِينَةً ۚ وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝ وَعَلَى اللهِ قَصْدُ السَّبِيلِ وَمِنْهَا
جَائِرٌ ۚ وَلَوْ شَاءَ لَهَدَاكُمْ أَجْمَعِينَ ۝ هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ
مَاءً ۖ لَكُمْ مِنْهُ شَرَابٌ وَمِنْهُ شَجَرٌ فِيهِ تُسِيمُونَ ۝ يُنْبِتُ لَكُمْ بِهِ
الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ ۗ إِنَّ فِي
ذَٰلِكَ لَآيَةً لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝ وَسَخَّرَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ
وَالْقَمَرَ ۖ وَالنُّجُومُ مُسَخَّرَاتٌ بِأَمْرِهِ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ
يَعْقِلُونَ ۝ وَمَا ذَرَأَ لَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ
لَآيَةً لِقَوْمٍ يَذَّكَّرُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَأْكُلُوا مِنْهُ لَحْمًا
طَرِيًّا وَتَسْتَخْرِجُوا مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُونَهَا ۖ وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاخِرَ
فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ وَأَلْقَىٰ فِي الْأَرْضِ
رَوَاسِيَ أَنْ تَمِيدَ بِكُمْ وَأَنْهَارًا وَسُبُلًا لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝ وَعَلَامَاتٍ

---

१ अर्थात् अब जल्द ही नबी सल्ल० को हिजरत* का आदेश मिलने वाला है। हिजरत का आदेश विरोधी-दल के भाग्य का फ़ैसला कर देता। इस लिए कि हिजरत* के बाद नबी* के दुश्मनों पर अल्लाह का अज़ाब आ कर रहता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि हिजरत* के बाद ज़ालिमों को अपने किये की सज़ा मिल कर रही। 'बद्र' की लड़ाई में काफ़िरों* के बड़े-बड़े सरदार मारे गये। और हिजरत के आठ वर्ष के भीतर ही पूरे अरब देश से कुफ़्र* और शिर्क* की जड़ें उखाड़ फेंकी गई। दे० आयत ३३, सूरः हूद आयत ४०, ५८, ६६, ८२, ९४, १०१, सूरः अल-अहक़ाफ़ आयत २६।

२ अर्थात् वह्य*।

३ अर्थात् अपने बन्दों में से जिस के पास चाहता है भेजता है।

४ अर्थात् ठीक-ठीक उच्च उद्देश्य के अन्तर्गत पैदा किया।

* इन का अर्थ आखिर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُونَ ۝ أَفَمَنْ يَخْلُقُ كَمَنْ لَا يَخْلُقُ أَفَلَا
تَذَكَّرُونَ ۝ وَإِنْ تَعُدُّوا نِعْمَةَ اللَّهِ لَا تُحْصُوهَا إِنَّ اللَّهَ لَغَفُورٌ
رَحِيمٌ ۝ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ۝ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ
مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَخْلُقُونَ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ ۝ أَمْوَاتٌ غَيْرُ
أَحْيَاءٍ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ۝ إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ
فَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ قُلُوبُهُمْ مُنْكِرَةٌ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ ۝
لَا جَرَمَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ
الْمُسْتَكْبِرِينَ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ مَاذَا أَنْزَلَ رَبُّكُمْ قَالُوا أَسَاطِيرُ
الْأَوَّلِينَ ۝ لِيَحْمِلُوا أَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَمِنْ أَوْزَارِ
الَّذِينَ يُضِلُّونَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ أَلَا سَاءَ مَا يَزِرُونَ ۝ قَدْ مَكَرَ الَّذِينَ
مِنْ قَبْلِهِمْ فَأَتَى اللَّهُ بُنْيَانَهُمْ مِنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ
مِنْ فَوْقِهِمْ وَأَتَاهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ۝ ثُمَّ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ يُخْزِيهِمْ وَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ كُنْتُمْ تُشَاقُّونَ
فِيهِمْ قَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ إِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوءَ عَلَى الْكَافِرِينَ ۝
الَّذِينَ تَتَوَفَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ ظَالِمِي أَنْفُسِهِمْ فَأَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ
مِنْ سُوءٍ بَلَىٰ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ فَادْخُلُوا أَبْوَابَ
جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا فَلَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِينَ ۝ وَقِيلَ لِلَّذِينَ
اتَّقَوْا مَاذَا أَنْزَلَ رَبُّكُمْ قَالُوا خَيْرًا لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَٰذِهِ
الدُّنْيَا حَسَنَةٌ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِينَ ۝ جَنَّاتُ
عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ
كَذَٰلِكَ يَجْزِي اللَّهُ الْمُتَّقِينَ ۝ الَّذِينَ تَتَوَفَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ طَيِّبِينَ
يَقُولُونَ سَلَامٌ عَلَيْكُمُ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ هَلْ
يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ أَمْرُ رَبِّكَ كَذَٰلِكَ فَعَلَ
الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَٰكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ
يَظْلِمُونَ ۝ فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ
يَسْتَهْزِئُونَ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا عَبَدْنَا مِنْ

पैदा करता है जिसे तुम नहीं जानते। ○ और अल्लाह तक सीधा मार्ग जाता है, और कुछ (मार्ग) टेढ़े भी हैं। और यदि वह चाहता तो तुम सब को सीधा मार्ग दिखा देता[5]। ○

वही है जिस ने आसमान से पानी बरसाया, जिस से तुम्हें पीने को मिलता है और उसी से पेड़-पौधे (उगते) हैं जहाँ तुम जानवरों को चराते हो। ○ उसी (पानी) से वह तुम्हारे लिए खेती उगाता है, और ज़ैतून और खजूरों और अंगूरों को और हर प्रकार के फल (पैदा करता है)। निश्चय ही इस में सोच-विचार करने वालों के लिए एक बड़ी निशानी है। ○

और उस ने तुम्हारे लिए रात और दिन को और सूरज और चाँद को काम में लगा रखा है, और उसी के हुक्म से सितारे (नक्षत्र) भी काम में लगे हुये हैं। निश्चय ही इस में बुद्धि से काम लेने वालों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं। ○ और जो तुम्हारे लिए ज़मीन में रंग-बिरंग की चीज़ें पैदा की हैं, निश्चय ही इस में भी ध्यान देने वाले लोगों के लिए एक बड़ी निशानी है। ○

और वही तो है जिस ने समुद्र को सेवा-कार्य में लगा रखा है ताकि तुम उस से ताज़ा माँस (मछलियाँ) ले कर खाओ, और उस से आभूषण (मोती, मूँगा आदि) निकालो जिसे तुम पहनते हो। तुम देखते हो नौका उस (समुद्र) का सीना चीरती हुई चलती है (ताकि तुम अपने अभीष्ट स्थान तक पहुँचो) और ताकि उस का[6] फ़ज़्ल (रोज़ी) तलाश करो, और कदाचित् कृतज्ञता दिखलाओ। ○

और उस ने ज़मीन में अटल पहाड़ डाल दिये कि वह[7] तुम्हें ले कर झुक न जाये,[8] और नदियाँ और (प्राकृतिक) मार्ग बनाये ताकि तुम राह पा सको। ○ और (बहुत से राह बताने वाले) चिह्न (भी बनाये), और तारों के द्वारा भी लोग रास्ता पा लेते हैं। ○ तो क्या जो पैदा करता है वह उस-जैसा है जो कुछ भी पैदा नहीं करता? क्या तुम सोचते नहीं हो? ○ और

५ अर्थात् अल्लाह तो ऐसा कर सकता था कि मनुष्य की स्वतन्त्रता को छीन लेता और सब लोगों को सीधे मार्ग पर चलने के लिए मजबूर कर देता, परन्तु उस ने ऐसा नहीं किया क्योंकि इस तरह उन ऊँचे-से-ऊँचे दर्जों तक पहुँचना मनुष्य के लिए सम्भव न होता जिन तक मनुष्य केवल अपनी स्वतन्त्रता के उपयोग के फलस्वरूप पहुँच सकता है।

६ अर्थात् आयतें [illegible]।

७ अर्थात् ज़मीन।

८ पहाड़ों को धरती के बनाने का विशेष काम यही है कि उन के द्वारा पृथ्वी की गति और उस की चाल को व्यवस्थित (Regulate), और उन के भार को सन्तुलित रखने का प्रबन्ध किया गया है।

यदि तुम अल्लाह की नेमतों को गिनना चाहो तो नहीं गिन सकते। निस्सन्देह अल्लाह बड़ा ही क्षमाशील और दया करने वाला है। ○ और अल्लाह जानता है जो-कुछ तुम छिपाते हो और जो-कुछ ज़ाहिर करते हो। ○

और जिन्हें वे अल्लाह के सिवा पुकारते हैं वे किसी चीज़ को भी पैदा नहीं करते, बल्कि वे स्वयं पैदा किये जाते हैं। ○ मुरदे हैं, न कि ज़िन्दा। उन्हें कुछ मालूम नहीं कि कब वे (दोबारा) उठाये जायेंगे[१] ○

तुम्हारा इलाह* (पूज्य) अकेला इलाह* है। परन्तु जो लोग आख़िरत* पर ईमान* नहीं रखते उन के दिल इन्कार करते हैं, और वे अपने को बड़ा समझते हैं। ○ निश्चय ही अल्लाह जानता है जो कुछ वे छिपाते हैं और जो-कुछ ज़ाहिर करते हैं। निस्सन्देह वह ऐसे लोगों को पसन्द नहीं करता जो अपने को बड़ा समझते हैं। ○

और जब उन से कहा जाता है: तुम्हारे रब* ने क्या उतारा है? वे कहते हैं: (ये तो) पहलों की कहानियाँ (बे-सनद बातें) हैं। ○ (ऐसा वे इस लिए कह रहे हैं) ताकि क़ियामत* के दिन अपने बोझ भी पूरे उठायें, और उन के बोझ भी जिन्हें वे बिना ज्ञान के गुमराह कर रहे हैं। कितना बुरा है वह बोझ जो वे उठा रहे हैं। ○ जो (लोग) इन से पहले थे वे भी मक्कारी कर चुके हैं, तो अल्लाह ने उन की इमारत जड़ से ढा दी, और उन के ऊपर से छत उन पर आ गिरी, और ऐसे रुख़ से उन पर अज़ाब आया जिस की उन्हें ख़बर तक न थी; ○ फिर क़ियामत* के दिन अल्लाह उन्हें रुसवा करेगा और कहेगा: (तुम्हारे ठहराये हुये) मेरे वे शरीक कहाँ हैं, जिन के लिए तुम झगड़ते थे? जिन्हें ज्ञान दिया गया था वे कहेंगे: निश्चय ही आज रुसवाई और ख़राबी है काफ़िरों* की, ○ (उन काफ़िरों* की) जिन (के प्राणों) को फ़रिश्ते* इस अवस्था में ग्रस्त लेते हैं कि वे अपने-आप पर ज़ुल्म कर रहे होते हैं। तब वे हथे डाल देते हैं (और कहते हैं) कि हम तो कोई बुराई नहीं करते थे। (फ़रिश्ते* कहते हैं): क्यों नहीं, निस्सन्देह अल्लाह भली-भाँति जानता है जो-कुछ तुम करते थे[१०]। ○ तो अब दोज़ख़* के दरवाज़ों में घुस जाओ, वहाँ तुम को सदा रहना है। कितना बुरा निवास-स्थान है उन लोगों का जो अपने को बड़ा समझते हैं। ○

और परहेज़गारों (धर्मनिष्ठों) से कहा जाता है: तुम्हारे रब* ने क्या उतारा है? वे कहते हैं: उत्तम चीज़। जिन्हों ने भलाई की उन के लिए इस दुनियाँ में भी भलाई है और आख़िरत* का घर तो बहुत अच्छा है। और क्या ही अच्छा है घर परहेज़गारों का। ○ हमेशा रहने के बाग़ जिन में वे प्रवेश करेंगे, उन के नीचे नहरें बह रही होंगी, उन के लिए वहाँ वह सब-कुछ होगा जो वे चाहेंगे। अल्लाह ऐसा ही बदला परहेज़गारों को देता है, ○ (उन परहेज़गारों को) जिन

---

९ अर्थात् अपने जिन महान् पुरुषों की मूर्तियाँ बना कर ये लोग पूजते हैं; और उन्हें अपनी सहायता के लिए पुकारते हैं वे तो मर चुके हैं, वे जीवित नहीं हैं कि तुम्हारी पुकार को पहुँच सकें।

क़ुरआन के उतरने के समय ईसाई और यहूदी* तो अपने नबियों* और महापुरुषों की पूजा में बुरी तरह लगे हुये थे ही अरब के मुशरिकों* (Idolaters) ने भी बहुत से ऐसे देवता गढ़ लिये थे जो वास्तव में गुज़रे हुये मनुष्य थे जिन्हें बाद की पीढ़ियों ने अपना आराध्य बना लिया था।*

१० यह आयत क़ुरआन* की उन आयतों* में से है जिन से यह ज्ञात होता है कि मृत्यु के बाद ऐसा नहीं होता कि मनुष्य का कोई अस्तित्व ही शेष न रहे बल्कि मृत्यु वास्तव में शरीर से आत्मा के वियुक्त हो जाने का नाम है। शरीर से अलग हो जाने के बाद भी आत्मा अपने व्यक्तित्व के साथ जीवित रहती है। 'देही नित्यमवध्योऽयं देहे सर्वस्य' (यह आत्मा सब के शरीर में सदा ही अवध्य है)।*

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

(के प्राणों) को फ़िरिश्ते* इस अवस्था में ग्रस्त लेते हैं कि वे पाक होते हैं। कहते हैं: तुम पर सलाम हो ! जो-कुछ तुम कर रहे हो उस के बदले जन्नत* में दाख़िल हो जाओ। ○

(हे नबी* !) क्या ये लोग अब इसी का इन्तज़ार कर रहे हैं कि फ़िरिश्ते* इन के पास आ पहुँचें या तेरे रब* का हुक्म (अर्थात् अज़ाब) आ जाये ? ऐसी ही हरकत उन्हों ने भी की थी जो इन से पहले थे। अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वे स्वयं अपने-आप पर ज़ुल्म करते रहे, ○ उन के करतूतों की बुराइयाँ उन के ही सिर आ लगीं, और जिस (अज़ाब) की वे हँसी उड़ाया करते थे उसी ने उन्हें आ घेरा। ○

शिर्क* करने वाले कहते हैं: यदि अल्लाह चाहता, तो उस के सिवा किसी और की इबादत* न हम करते, और न हमारे पूर्वज ही, और न हम उस के (हुक्म के) बिना किसी चीज़ को हराम ठहराते[11]। ऐसी ही हरकत उन्हों ने भी की थी जो इन से पहले थे। तो क्या साफ़-साफ़ (बात) पहुँचा देने के सिवा रसूलों* पर कोई ज़िम्मेदारी और भी होती है ? ○ हम ने हर गिरोह में कोई-न-कोई रसूल* (इस सन्देश के साथ) भेजा कि अल्लाह की इबादत* करो और तागूत* से बचो। तो उन में से किसी को अल्लाह ने (सीधा) मार्ग दिखा दिया, और उन में से किसी पर गुमराही ही साबित हो कर रही। सो ज़मीन में चल-फिर कर देखो कि झुठलाने वालों का कैसा परिणाम हुआ ! ○ (हे नबी* !) यदि तुम्हें उन के राह पर आने की लालसा हो, तो (क्या होता है) अल्लाह जिस को भटका देता है उसे राह नहीं दिखाया करता[12]। और ऐसे लोगों का कोई भी सहायक नहीं। ○ ३५

और वे अल्लाह की कड़ी-कड़ी क़समें खाते हैं कि जो कोई मर जाता है उसे अल्लाह फिर से (जीवित कर के) न उठायेगा। क्यों नहीं (उठायेगा), यह तो एक वादा है जिसे पूरा करना उस के लिए ज़रूरी है, परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते, ○ (मुर्दों को फिर से जीवित करके उठाना इस लिए ज़रूरी है) ताकि अल्लाह उन पर उस (की वास्तविकता) को खोल दे जिस के बारे में वे विभेद करते हैं और ताकि जिन लोगों ने कुफ़्र* किया है वे जान लें कि वे झूठे थे। ○ (हमारे लिए यह कोई कठिन काम नहीं है) किसी चीज़ के लिए हमारी उक्ति जब हम उस का इरादा करें यही है कि उस से कहते हैं: हो जा ! बस वह हो जाती है। ○ ४०

जिन लोगों ने ज़ुल्म का सहन करने के पश्चात् अल्लाह के लिए हिजरत* की है, उन्हें हम दुनिया में अच्छा ठिकाना देंगे, और आख़िरत* का बदला तो बहुत ही बड़ा है, क्या अच्छा होता कि उन्हें मालूम होता; ○ ये ऐसे हैं जिन्हों ने सब्र* किया और अपने रब* पर भरोसा करते हैं। ○

(हे मुहम्मद !) हम ने तुम से पहले भी पुरुष ही को रसूल* बना कर भेजा है उन की ओर हम वह्य* करते रहे हैं — यदि तुम नहीं जानते तो ज़िक्र वालों (अर्थात् किताब वालों*) से पूछ लो ! ○ — (उन्हें) खुली निशानियों और ज़बूरों* के साथ (भेजा है); और (हे मुहम्मद !) हम ने तुम पर याद-दिहानी[13] उतारी है ताकि तुम लोगों के सामने खोल-खोल कर बयान कर दो जो-कुछ उन की ओर उतारा गया है, और कदाचित् वे सोच-विचार करें। ○

११ दे० आयत ११६ ।

१२ अल्लाह उन्हीं लोगों को भटकाता है जो नाफ़रमान और नादान होते हैं, और वास्तव में यह उन की नाफ़रमानी, कुफ़्र और ज़ुल्म की सज़ा होती है। दे सूरः अल-अनआम फ़ुट नोट ११ ।

१३ अर्थात् क़ुरआन* ।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

دُونِهِ مِن شَيْءٍ نَّحْنُ وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِن دُونِهِ مِن
شَيْءٍ ۚ كَذَٰلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ إِلَّا
الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ۝ وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ
وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ ۖ فَمِنْهُم مَّنْ هَدَى اللَّهُ وَمِنْهُم مَّنْ حَقَّتْ
عَلَيْهِ الضَّلَالَةُ ۚ فَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُكَذِّبِينَ ۝ إِن تَحْرِصْ عَلَىٰ هُدَاهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَن
يُضِلُّ ۖ وَمَا لَهُم مِّن نَّاصِرِينَ ۝ وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ ۙ
لَا يَبْعَثُ اللَّهُ مَن يَمُوتُ ۚ بَلَىٰ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُونَ ۝ لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي يَخْتَلِفُونَ فِيهِ وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ
كَفَرُوا أَنَّهُمْ كَانُوا كَاذِبِينَ ۝ إِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ إِذَا أَرَدْنَاهُ أَن
نَّقُولَ لَهُ كُن فَيَكُونُ ۝ وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي اللَّهِ مِن بَعْدِ مَا
ظُلِمُوا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۖ وَلَأَجْرُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ ۚ لَوْ
كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝ الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۝ وَمَا
أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُّوحِي إِلَيْهِمْ ۚ فَاسْأَلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِن
كُنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۝ بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ ۗ وَأَنزَلْنَا إِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ
لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ إِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ۝ أَفَأَمِنَ الَّذِينَ مَكَرُوا
السَّيِّئَاتِ أَن يَخْسِفَ اللَّهُ بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِن

फिर क्या वे लोग जो बुरी-बुरी चालें चल रहे हैं इस से निश्चिन्त हो गये हैं कि अल्लाह् उन्हें ज़मीन में धँसा दे, या ऐसे रुख़ से उन पर अज़ाब लाये जिस की उन्हें ख़बर न हो[१४] ? ○ या चलते-फिरते उन्हें पकड़ ले, वे बच निकलने वाले नहीं हैं ? ○ या उन्हें ऐसी अवस्था में पकड़े जब कि उन्हें (आने वाले संकट का) खटका लगा हो ? निःसन्देह तुम्हारा रब* बड़ा ही करुणामय और दया करने वाला है । ○

५

क्या जो-कुछ अल्लाह् ने पैदा किया है उसे उन्होंने नहीं देखा, (किस तरह) उस के साये अल्लाह को सजदः* करते हुये दायें और बायें ढलते हैं, इस अवस्था में कि (वे सब-के-सब) नम्रता प्रकट करते हैं[१५] ? ○ और जानदार जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं[१६] सब अल्लाह को सजदः* करते हैं, और फ़िरिश्ते* भी, और वे अपने को बड़ा नहीं समझते । ○ अपने रब* से जो उन के ऊपर है डरते रहते हैं, और उन्हें जो हुक्म दिया जाता है करते हैं । ○

१०

और अल्लाह् ने कहा है : दो-दो इलाह* (पूज्य) न बनाओ । वह तो बस अकेला इलाह* (पूज्य) है । अतः मुझ से ही डरो । ○ जो-कुछ आसमानों और ज़मीन में है सब उसी का है, और उसी का दीन* स्थायी है । ○ फिर क्या अल्लाह के सिवा किसी और से डरोगे ? ○

तुम्हारे पास जो नेमत भी है अल्लाह ही की ओर से है । फिर, जब कोई संकट तुम पर आता है, तो तुम उसी की ओर फ़रियाद लिये दौड़ते हो[१७] । ○ परन्तु जब वह उस आपत्ति को तुम से टाल देता है, तो क्या देखते हैं कि तुम में एक गिरोह अपने रब* के साथ दूसरों को शरीक ठहराने लगता है, ○ ताकि जो-कुछ हम ने उन्हें दिया है उसके साथ कुफ़्र* करें । अच्छा जीवन का थोड़ा आनन्द ले लो तुम्हें जल्द ही मालूम हो जायेगा । ○ और हम ने इन्हें

११

---

१४ 'बद्र' की लड़ाई में यही हुआ । सामान और असबाब से खाली मुसलमानों के द्वारा उन्हें सज़ा दी जिस की वे कल्पना भी नहीं कर सकते थे ।

१५ यहाँ एक बड़े तथ्य का उल्लेख किया गया है; वह यह कि संसार की कोई वस्तु अल्लाह की बन्दगी से आज़ाद नहीं है । संसार की प्रत्येक वस्तु अपने अस्तित्व और अपने गुणों की दृष्टि से अल्लाह के आगे झुकी हुई है । यहाँ प्रत्येक वस्तु स्वयं अपने स्वभाव से ही अपनी विवशता, नम्रता और अपनी अपूर्णता का परिचय कराती है । किसी चीज़ की छाया का होना उस के भौतिक होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है । भौतिक वस्तुयें स्वयं अपनी सृष्टिकर्ता नहीं हो सकती; उन का कोई ईश्वर अवश्य होगा जिस के नियमों के पालन से ही वे स्थिर और स्थापित रह सकती हैं ।

१६ इस से मालूम होता है कि जानदार केवल ज़मीन में ही नहीं हैं बल्कि गगन में भी जीव पाये जाते हैं चाहे वे किसी नक्षत्र और तारे में हों या कहीं और ।

१७ मुसीबत के समय तुम्हारा वास्तविक स्वभाव और तुम्हारी चेतना थोड़ी देर के लिए जाग उठती है यह वास्तव में 'तौहीद' (Devine Unity) की एक दलील है जो स्वयं तुम्हारे अन्दर मौजूद है ।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ۝ أَوْ يَأْخُذَهُمْ فِي تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُمْ بِمُعْجِزِينَ
أَوْ يَأْخُذَهُمْ عَلَىٰ تَخَوُّفٍ فَإِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ۝ أَوَلَمْ يَرَوْا
إِلَىٰ مَا خَلَقَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ يَتَفَيَّأُ ظِلَالُهُ عَنِ الْيَمِينِ وَالشَّمَائِلِ
سُجَّدًا لِّلَّهِ وَهُمْ دَاخِرُونَ ۝ وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ مِن دَابَّةٍ وَالْمَلَائِكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ۝ يَخَافُونَ
رَبَّهُم مِّن فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ۝ وَقَالَ اللَّهُ لَا تَتَّخِذُوا
إِلَٰهَيْنِ اثْنَيْنِ إِنَّمَا هُوَ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ فَإِيَّايَ فَارْهَبُونِ ۝ وَلَهُ مَا
فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَهُ الدِّينُ وَاصِبًا أَفَغَيْرَ اللَّهِ تَتَّقُونَ ۝
وَمَا بِكُم مِّن نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللَّهِ ثُمَّ إِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَإِلَيْهِ تَجْأَرُونَ ۝
ثُمَّ إِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنكُمْ إِذَا فَرِيقٌ مِّنكُم بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ۝
لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ فَتَمَتَّعُوا فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝ وَيَجْعَلُونَ
لِمَا لَا يَعْلَمُونَ نَصِيبًا مِّمَّا رَزَقْنَاهُمْ تَاللَّهِ لَتُسْأَلُنَّ عَمَّا كُنتُمْ
تَفْتَرُونَ ۝ وَيَجْعَلُونَ لِلَّهِ الْبَنَاتِ سُبْحَانَهُ وَلَهُم مَّا يَشْتَهُونَ ۝
وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُم بِالْأُنثَىٰ ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ۝
يَتَوَارَىٰ مِنَ الْقَوْمِ مِن سُوءِ مَا بُشِّرَ بِهِ أَيُمْسِكُهُ عَلَىٰ هُونٍ
أَمْ يَدُسُّهُ فِي التُّرَابِ أَلَا سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ۝ لِلَّذِينَ لَا
يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ وَلِلَّهِ الْمَثَلُ الْأَعْلَىٰ وَهُوَ الْعَزِيزُ

जो रोज़ी दी है ये उस में उस का हिस्सा लगाते हैं[18] जिस के बारे में नहीं जानते[19]। अल्लाह की क़सम! जो झूठ तुम गढ़ते हो उस के बारे में तुम से अवश्य पूछा जायेगा। ○

ये अल्लाह के लिए बेटियाँ ठहराते हैं[20]—महिमावान् है वह!—और इनके (अपने) लिए वह जो ये चाहें;[21] ○ और (इन का हाल यह है कि) जब इन में किसी को बेटी होने की शुभ-सूचना मिलती है, तो उस के चेहरे पर कलौंस छा जाती है, और वह जी-ही-जी में कुढ़ कर रह जाता है। ○ जो शुभ-सूचना उसे दी गई वह (उस के लिए) ऐसी बुराई की बात हुई कि लोगों से छिपता फिरता है, (सोचता है): अपमान स्वीकार कर के उसे रहने दे, या उसे मिट्टी में दबा दे। क्या ही बुरा फ़ैसला है जो ये करते हैं[22]। ○ जो लोग आख़िरत* पर ईमान* नहीं रखते उन की बुरी मिसाल है, और अल्लाह की सब से ऊँची मिसाल है। और वह अपार शक्ति का मालिक और हिकमत* वाला है। ○ ६०

यदि अल्लाह लोगों को उन के ज़ुल्म पर पकड़ने लग जाये (और उन्हें मुहलत न दे), तो ज़मीन पर एक जानदार को भी न छोड़े, परन्तु वह उन्हें एक नियत समय तक ढील देता है, फिर जब उन का नियत समय आ जाता है तो वे न एक घड़ी पीछे हट सकते हैं और न आगे[23]। ○ ये अल्लाह के लिए वह-कुछ ठहराते हैं जिसे (स्वयं अपने लिए) ना-पसन्द करते हैं, और इन की ज़बानें झूठ कहती हैं कि इन के लिए (हर तरह की) अच्छाई है। निश्चय ही इन के लिए (दोज़ख़* की भड़कती) आग है, और ये आगे बढ़ाये जायेंगे। ○

अल्लाह की क़सम (हे मुहम्मद!), हम तुम से पहले भी कितनी ही जातियों के पास रसूल* भेज चुके हैं, परन्तु (यही हुआ कि) शैतान* ने उन के करतूतों को उन के लिए

---

१८ अर्थात् अपनी पैदावार और अपनी आय का एक हिस्सा उन की नज़्र, भेंट और चढ़ावे के रूप में निकालते रहते हैं।

१९ अर्थात् जिन के बारे में प्रमाणित रूप से उन्हें इस का कोई ज्ञान नहीं कि वास्तव में वे अल्लाह के शरीक हैं।

२० अरब के मुश्रिक* लोग जिन की पूजा करते थे उन में अधिकतर देवियाँ ही थीं जिन्हें वे अल्लाह की बेटियाँ समझते थे।

२१ अर्थात् बेटे।

२२ अल्लाह के बारे में इन की कल्पना कितनी गिर चुकी है कि जिन बेटियों को ये स्वयं अपने लिए लज्जा और अपमान का लक्षण समझते हैं उन का नाता अल्लाह से जोड़ने में इन्हें कुछ भी संकोच नहीं होता। यदि ये बुद्धि से कुछ भी काम लेते तो यह बात आसानी से इन की समझ में आ सकती थी कि अल्लाह के लिए औलाद ठहराना स्वयं एक नीचता और अज्ञान की बात है चाहे बेटे के रूप में कोई अल्लाह के लिए बेटा ही क्यों न ठहराये।

२३ दे० सूरः यूनुस फ़ुट नोट १३।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

الْحَكِيمُ ۞ وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِم مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِن
دَابَّةٍ وَلَٰكِن يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ لَا
يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ۝ وَيَجْعَلُونَ لِلَّهِ مَا يَكْرَهُونَ
وَتَصِفُ أَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ أَنَّ لَهُمُ الْحُسْنَىٰ لَا جَرَمَ أَنَّ لَهُمُ
النَّارَ وَأَنَّهُم مُّفْرَطُونَ ۝ تَاللَّهِ لَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ مِّن قَبْلِكَ
فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ
أَلِيمٌ ۝ وَمَا أَنزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ إِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي اخْتَلَفُوا
فِيهِ وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝ وَاللَّهُ أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ
مَاءً فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ
يَسْمَعُونَ ۝ وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً نُّسْقِيكُم مِّمَّا فِي بُطُونِهِ
مِن بَيْنِ فَرْثٍ وَدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَائِغًا لِّلشَّارِبِينَ ۝ وَمِن
ثَمَرَاتِ النَّخِيلِ وَالْأَعْنَابِ تَتَّخِذُونَ مِنْهُ سَكَرًا وَرِزْقًا حَسَنًا
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝ وَأَوْحَىٰ رَبُّكَ إِلَى النَّحْلِ أَنِ
اتَّخِذِي مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا وَمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُونَ ۝ ثُمَّ كُلِي
مِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ فَاسْلُكِي سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا يَخْرُجُ مِن بُطُونِهَا
شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ فِيهِ شِفَاءٌ لِّلنَّاسِ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ
يَتَفَكَّرُونَ ۝ وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفَّاكُمْ وَمِنكُم مَّن يُرَدُّ إِلَىٰ

शोभायमान बना दिया। सो वही (शैतान*) आज इन का संगी-साथी है, और इन के लिए दुःख देने वाला अज़ाब है। ○ और हम ने तुम पर यह किताब* इसी लिए उतारी है कि जिस विषय में ये विभेद कर रहे हैं तुम उस (की वास्तविकता) को इन पर खोल दो, और (यह किताब) ईमान* लाने वाले लोगों के लिए मार्ग-दर्शन और दयालुता है। ○

और अल्लाह ने आसमान से पानी बरसाया फिर उस के द्वारा भूमि में उसके मुरदा हो जाने के पश्चात् जान डाल दी। निस्सन्देह इस में सुनने वाले लोगों के लिए एक बड़ी निशानी है। ○

और निस्सन्देह तुम्हारे लिए पशुओं में भी एक शिक्षा-सामग्री है। जो-कुछ उन के पेट में है उस में से, गोबर और रक्त के बीच में से हम तुम्हें शुद्ध दूध पिलाते हैं,[२४] जो पीने वालों के लिए अत्यन्त सुख-कर है। ○

और खजूरों, और अंगूरों के फलों से भी, (हम तुम्हें एक चीज़ पिलाते हैं) जिस से तुम नशा (की चीज़) भी तैयार करते हो और अच्छी रोज़ी भी[२५]। निस्सन्देह इस में बुद्धि से काम लेने वालों के लिए एक बड़ी निशानी है। ○ और देखो तुम्हारे रब* ने मधु-मक्खी पर (यह बात) वह्य* कर दी[२६] कि पहाड़ों में और पेड़ों में और उन टट्टियों में जिन्हें बाँधते हैं घर (छत्ते) बना; ○ फिर हर प्रकार के फल-फूलों का रस चूस, और अपने रब* के (ठहराये हुये) रास्तों पर आज्ञापालन करते हुए चल। उस के पेट से एक पेय निकलता है जिस के रंग भिन्न होते हैं, जिस में लोगों के लिए आरोग्यता है[२७]। निस्सन्देह इस में सोच-विचार करने वाले लोगों के लिए एक बड़ी निशानी है। ○ और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया, फिर वह तुम्हें (अर्थात् तुम्हारे प्राणों को) ग्रस्त लेता है,[२८] और तुम में से किसी को (बुढ़ापे की) निकृष्टतम आयु को पहुंचा दिया जाता है, ताकि वह ज्ञान के बाद फिर कुछ न जाने। निस्सन्देह अल्लाह (सब-कुछ) जानने वाला और बड़ी क़ुदरत वाला है। ○ और अल्लाह ने तुम में किसी को किसी पर रोज़ी में बड़ाई दी है। फिर जिन को बड़ाई दी गई है वे ऐसे नहीं हैं कि अपनी रोज़ी उन (ग़ुलामों) की ओर फेर

---

२४ पशु जो-कुछ खाते हैं उस से एक ओर तो रक्त बनता है दूसरी ओर मल और गोबर; परन्तु अल्लाह इन के अतिरिक्त एक तीसरी चीज भी उन की मादा के पेट में तैयार करता है; और वह है शुद्ध दूध जो रंग, गन्ध और उपयोगिता में इन दोनों से भिन्न होता है।

२५ इस आयत में शराब (मदिरा) के हराम होने की ओर भी सूक्ष्म संकेत पाया जाता है।

२६ अर्थात् उस के मन में यह भावना उत्पन्न कर दी।

२७ मधु कुछ रोगों में औषध का काम करता है। मधु सड़ता नहीं दूसरी चीजों को सड़ने से बचाता भी है। इसी लिए मधु को पहले अलकोहल (Alcohol) की जगह प्रयोग में लाते थे। यदि किसी भू-भाग में कोई विशेष जड़ी-बूटी पाई जाती है तो वहां के मधु को उस जड़ी-बूटी का सत समझना चाहिए।

२८ अर्थात् तुम्हें मौत देता है।

* इस का अर्थ आखिर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

أرذل العمر لكي لا يعلم بعد علم شيئا إن الله عليم قدير ۝
والله فضل بعضكم على بعض في الرزق فما الذين فضلوا
برادي رزقهم على ما ملكت أيمانهم فهم فيه سواء أفبنعمة
الله يجحدون ۝ والله جعل لكم من أنفسكم أزواجا وجعل لكم
من أزواجكم بنين وحفدة ورزقكم من الطيبات أفبالباطل
يؤمنون وبنعمت الله هم يكفرون ۝ ويعبدون من دون
الله ما لا يملك لهم رزقا من السماوات والأرض شيئا ولا
يستطيعون ۝ فلا تضربوا لله الأمثال إن الله يعلم و
أنتم لا تعلمون ۝ ضرب الله مثلا عبدا مملوكا لا يقدر
على شيء ومن رزقناه منا رزقا حسنا فهو ينفق منه سرا
وجهرا هل يستوون الحمد لله بل أكثرهم لا يعلمون ۝
وضرب الله مثلا رجلين أحدهما أبكم لا يقدر على شيء
وهو كل على مولاه أينما يوجهه لا يأت بخير هل
يستوي هو ومن يأمر بالعدل وهو على صراط مستقيم ۝
ولله غيب السماوات والأرض وما أمر الساعة إلا كلمح
البصر أو هو أقرب إن الله على كل شيء قدير ۝ والله
أخرجكم من بطون أمهاتكم لا تعلمون شيئا وجعل لكم

दिया करते हों जो उन के क़ब्ज़े में हैं कि वे इस में बराबर हो जायें। तो क्या ये लोग अल्लाह की नेमत का इन्कार करते हैं[२९]? ○

और अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम में से जोड़े बनाये, और तुम्हारी पत्नियों से तुम्हारे लिए बेटे और पोते पैदा किये, और तुम्हें अच्छी चीज़ों की रोज़ी दी। तो क्या ये निःमूल पर ईमान* लाते हैं और अल्लाह की नेमत (कृपा) का इन्कार करते हैं? ○ और अल्लाह के सिवा उन की पूजा करते हैं जो उन्हें आसमानों और ज़मीन से रोज़ी देने का कुछ भी अधिकार नहीं रखते, और न उन्हें कोई सामर्थ्य ही प्राप्त है। ○ तो अल्लाह के लिए मिसालें न गढ़ो[३०]। निस्सन्देह अल्लाह जानता है; और तुम नहीं जानते। ○

अल्लाह एक मिसाल बयान करता है: एक है ग़ुलाम (दास) जो दूसरे के अधिकार में है, किसी चीज़ पर उसे अधिकार प्राप्त नहीं, और एक वह है जिसे हम ने अपनी ओर से अच्छी रोज़ी दी है, और वह उस में से छिपे और खुले ख़र्च करता है। तो क्या ये बराबर हैं? प्रशंसा (हम्द*) अल्लाह के लिए है। परन्तु इन में अधिकतर लोग नहीं जानते। ○

और अल्लाह एक और मिसाल बयान करता है: दो आदमी हैं उन में एक गूँगा है, किसी चीज़ पर उसे अधिकार प्राप्त नहीं, वह अपने मालिक पर एक बोझ है; उसे वह जहाँ भेजता है, कुछ भला कर के नहीं लाता। क्या वह उस (व्यक्ति) के बराबर (हो सकता) है जो इन्साफ़ का हुक्म देता है और स्वयं सीधे मार्ग पर है। ○

आसमानों और ज़मीन की छिपी बात अल्लाह ही के लिए ख़ास है, और उस (आने वाली) घड़ी का मामला तो बस ऐसा है जैसे आँख का झपकना[३१], या वह और ज़्यादा क़रीब है। निस्सन्देह अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला (सर्व-शक्तिमान्) है। ○

और अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी माँओं के पेट से निकाला तुम कुछ नहीं जानते थे, उस ने तुम्हें कान और आँखें और दिल दिये कदाचित् तुम कृतज्ञता दिखलाओ। ○

---

२९ अर्थात् जब तुम अपने ग़ुलामों और सेवकों को अपनी सम्पत्ति में बराबर का दर्जा देने के लिए तैयार नहीं हो, तो फिर वह कैसे उचित हो सकता है कि अल्लाह ने जो कुछ उपकार तुम पर किया है उस के प्रति अल्लाह के सिवा उस के बे-बस ग़ुलामों के आगे कृतज्ञता-प्रकाशन करने लग जाओ। एक और अभिप्राय में अल्लाह के बन्दे उस के बराबर कैसे हो सकते हैं। ठीक यही बात सूरः रूम आयत २८ में भी बयान हुई है। अल्लाह की नेमत के बारे में अल्लाह के सिवा किसी और का आभारी होना वास्तव में अल्लाह की नेमत का इन्कार करना है। दे० आयत ८३, सूरः रूम आयत २८।

३० अर्थात् अल्लाह को दुनिया के सम्राटों और हाकिमों जैसा न समझो, वह सब की बिना किसी वसीले के सुनता है और हर एक की आवश्यकताओं को पूरा करता है।

३१ अर्थात् क़ियामत* तो बस अचानक आँख झपकते आ जायेगी, फिर तुम्हें सँभलने का कोई अवसर न मिल सकेगा।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

१. अल्लाह

१. सत्ता और गुण

१ : १-३[१]	कृपाशील व दयावन्त (रहमान व रहीम), न्याय के दिन का मालिक।
२ : १०७	जमीन और आसमान का बादशाह।
२ : ११५, ११६	पूरब और पच्छिम का स्वामी, जमीन और आसमान का पैदा करने वाला।
२ : १३९	हमारा और तुम्हारा रब।
२ : १६३	अकेला इलाह (पूज्य), दयावन्त व कृपाशील।
२ : २५५	सजीव (Alive) और चिरस्थायी सारी सृष्टि को स्थापित रखने वाला। जमीन और आसमान का स्वामी।
३ : २-६	सजीव (Alive) और चिरस्थायी, सारी सृष्टि को स्थापित रखने वाला।
३ : २६, २७	सम्राट, सम्मानित व अपमानित करने वाला।
४ : ८७	अकेला इलाह (पूज्य) बात का सच्चा।
६ : १२-१८	दयालुता दर्शाने वाला, खिलाने-पिलाने वाला, संकट को दूर करने वाला, अपने बन्दों को वश में रखने वाला।
६ : ६२	वास्तविक उपास्य, तेज हिसाब लेने वाला।
६ : ९५, ९६	बीज और गुठली को फोड़ने वाला। प्रभात का फाड़ निकालने वाला।
७ : १५८	आसमान और जमीन का बादशाह, जीवन-मरण का स्वामी।
९ : १२९	उसके सिवा कोई इलाह (पूज्य) नहीं, बड़े राज-सिंहासन का स्वामी।
१० : ५५, ५६	आसमान और जमीन का मालिक, जिलाने और मारने वाला।
११ : १२३	आसमान और जमीन की छिपी हुई चीजों को जानने वाला, सारा मामला उसी की ओर पलटता है।
१३ : ६	क्षमा करने वाला और बड़ी सजा देने वाला।
१३ : ९	छिपी बातों को जानने वाला, महान और उच्च।
१३ : ४१	जैसा चाहे हुक्म दे, जल्द हिसाब लेने वाला।
१६ : ७७	जमीन और आसमान की छिपी बातों को जानने वाला। हर चीज पर कुदरत रखने वाला (सर्वशक्तिमान)।
१७ : १११	उसके कोई बेटा नहीं, उसके राज में कोई शरीक नहीं।
१९ : ६४	सब कुछ जानता है, वह भूलता नहीं।
२० : ४-८	जमीन और आसमान का पैदा करने वाला और मालिक, छिपे और खुले

---

१. पहला अंक सूरः का नम्बर है। उसके बाद आयतों के नम्बर दिये गए हैं। सूरः का नम्बर हर पृष्ठ पर मिलेगा। आयतों के नम्बर किनारों पर देखिये।

क्या इन्हों ने पक्षियों को नभमण्डल में हुक्म के अधीन नहीं देखा ? अल्लाह के सिवा कोई दूसरा उन्हें नहीं थामे रखता है[32] । निस्सन्देह इस में ईमान* लाने वाले लोगों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं। ○

और अल्लाह ने तुम्हारे घरों को तुम्हारे लिए ठहरने की जगह बनाया, और उस ने जानवरों की खालों से, तुम्हारे लिए घर (खेमे) बनाये जिन को तुम अपने प्रस्थान करने के दिन और अपने ठहरने के दिन हलका पाते हो;[33] और उन (जानवरों) के ऊन और उन के रोओं और उन के बालों से कितने ही सामान और बरतने की चीज़ें एक अवधि तक के लिए[34] (बना दीं) । ○ और अल्लाह ने अपनी पैदा की हुई चीज़ों से तुम्हारे लिए छायों का प्रबन्ध किया; और पहाड़ों में तुम्हारे लिए छिपने की जगह बनाई, और तुम्हें ऐसे वस्त्र दिये जो तुम्हें गर्मी से बचाते हैं, और कुछ दूसरे वस्त्र जो तुम्हारी अपनी लड़ाई में तुम्हारी रक्षा करते हैं[35] । इस तरह वह तुम पर अपनी नेमत पूरी करता है, कदाचित् तुम मुस्लिम* बनो । ○ फिर भी, यदि ये मुँह मोड़ते हैं, तो (हे नबी* !) तुम्हारी ज़िम्मेदारी केवल साफ़-साफ़ (सन्देश) पहुँचा देना है । ○ ये अल्लाह की नेमत को पहचानते हैं फिर उस का इन्कार करते हैं[36] । और इन में अधिकतर लोग काफ़िर* (अकृतज्ञ) हैं । ○

السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۙ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ أَلَمْ يَرَوْا
إِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرَاتٍ فِي جَوِّ السَّمَاءِ مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا اللَّهُ ۗ إِنَّ
فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝ وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ مِنْ
بُيُوتِكُمْ سَكَنًا وَجَعَلَ لَكُمْ مِنْ جُلُودِ الْأَنْعَامِ بُيُوتًا تَسْتَخِفُّونَهَا
يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ إِقَامَتِكُمْ ۙ وَمِنْ أَصْوَافِهَا وَأَوْبَارِهَا
وَأَشْعَارِهَا أَثَاثًا وَمَتَاعًا إِلَىٰ حِينٍ ۝ وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ مِمَّا
خَلَقَ ظِلَالًا وَجَعَلَ لَكُمْ مِنَ الْجِبَالِ أَكْنَانًا وَجَعَلَ لَكُمْ
سَرَابِيلَ تَقِيكُمُ الْحَرَّ وَسَرَابِيلَ تَقِيكُمْ بَأْسَكُمْ ۚ كَذَٰلِكَ يُتِمُّ
نِعْمَتَهُ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُونَ ۝ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكَ
الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ۝ يَعْرِفُونَ نِعْمَتَ اللَّهِ ثُمَّ يُنْكِرُونَهَا وَأَكْثَرُهُمُ
الْكَافِرُونَ ۝ وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ
لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ۝ وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ ظَلَمُوا
الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ۝ وَإِذَا رَأَى
الَّذِينَ أَشْرَكُوا شُرَكَاءَهُمْ قَالُوا رَبَّنَا هَٰؤُلَاءِ شُرَكَاؤُنَا الَّذِينَ
كُنَّا نَدْعُو مِنْ دُونِكَ ۖ فَأَلْقَوْا إِلَيْهِمُ الْقَوْلَ إِنَّكُمْ لَكَاذِبُونَ ۝
وَأَلْقَوْا إِلَى اللَّهِ يَوْمَئِذٍ السَّلَمَ ۖ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا
يَفْتَرُونَ ۝ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ زِدْنَاهُمْ

और (उस दिन इन का क्या हाल होगा) जिस दिन हम हर गरोह में से एक गवाह खड़ा करेंगे,[37] फिर जिन्हों ने कुफ्र* किया उन को इजाज़त नहीं दी जायगी (कि ज़बान खोल सकें), और न उन्हें इस का अवसर दिया जायगा कि वह ख़ुदा करने की प्रार्थना करें । ○ और जब ज़ुल्म करने वाले लोग अज़ाब को देखेंगे, तो न उन के अज़ाब में कोई कमी की जायगी, और न उन्हें मुहलत दी जायगी । ○ और जब शिर्क* करने वाले लोग अपने (ठहराये हुये) शरीकों को देखेंगे तो कहेंगे : हमारे रब* ! ये हमारे (ठहराये हुये) शरीक हैं

[32] अर्थात् अल्लाह के सिवा और कोई नहीं जिस ने उन समस्त साधनों को संचित किया हो जिन के कारण वायुमण्डल में पक्षियों का ठहरना सम्भव हो सका है ।

[33] अर्थात् हलका होने के कारण उन्हें सफ़र में अपने साथ रखते हो; और कहीं जब ठहरना चाहते हो तो आसानी से उन्हें खड़ा कर देते हो ।

[34] अर्थात् ये एक निश्चित समय तक तुम्हारे काम आती हैं ।

[35] अर्थात् कवच और बख़्तर आदि ।

[36] अर्थात् अल्लाह ने इन पर जो एहसान किया है उस के लिए ये अल्लाह के साथ अपने दूसरे देवी-देवताओं के आगे कृतज्ञता प्रकाशन करते हैं ।

[37] हर गिरोह का नबी* या कोई ऐसा व्यक्ति जिस ने नबी* के बाद उस गरोह को सत्य धर्म की ओर बुलाया होगा गवाही के लिए खड़ा किया जायेगा कि उस ने लोगों तक सत्य-सन्देश पहुँचा दिया था । लोगों ने सत्य के विरुद्ध जो काम भी किया जानते-बूझते किया, इस लिए उन के अपराधी होने में कोई सन्देह नहीं ।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يُفْسِدُونَ ۝ وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِي
كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا عَلَيْهِم مِّنْ أَنفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيدًا
عَلَىٰ هَٰؤُلَاءِ ۚ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى
وَرَحْمَةً وَبُشْرَىٰ لِلْمُسْلِمِينَ ۝ إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَ
الْإِحْسَانِ وَإِيتَاءِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَيَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنكَرِ
وَالْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝ وَأَوْفُوا بِعَهْدِ اللَّهِ إِذَا
عَاهَدتُّمْ وَلَا تَنقُضُوا الْأَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللَّهَ
عَلَيْكُمْ كَفِيلًا ۚ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ۝ وَلَا تَكُونُوا كَالَّتِي
نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِن بَعْدِ قُوَّةٍ أَنكَاثًا تَتَّخِذُونَ أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا
بَيْنَكُمْ أَن تَكُونَ أُمَّةٌ هِيَ أَرْبَىٰ مِنْ أُمَّةٍ ۚ إِنَّمَا يَبْلُوكُمُ اللَّهُ بِهِ
وَلَيُبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ۝ وَلَوْ
شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَٰكِن يُضِلُّ مَن يَشَاءُ وَ
يَهْدِي مَن يَشَاءُ ۚ وَلَتُسْأَلُنَّ عَمَّا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ وَلَا
تَتَّخِذُوا أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌ بَعْدَ ثُبُوتِهَا وَتَذُوقُوا
السُّوءَ بِمَا صَدَدتُّمْ عَن سَبِيلِ اللَّهِ ۖ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝
وَلَا تَشْتَرُوا بِعَهْدِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۚ إِنَّمَا عِندَ اللَّهِ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ
إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ مَا عِندَكُمْ يَنفَدُ ۖ وَمَا عِندَ اللَّهِ بَاقٍ ۗ وَلَنَجْزِيَنَّ

जिन को हम तेरे सिवा पुकारते थे। परन्तु वे[38] बात उन की ओर फेंक मारेंगे कि तुम बिल्कुल झूठे हो। ○ और उस दिन वे (सब) अल्लाह के आगे आ पड़ेंगे, और जो झूठ वे गढ़ा करते थे सब उन से गुम हो कर रह जायेगा। ○ जिन्हों ने कुफ़्र* किया और लोगों को अल्लाह के मार्ग से रोका, उन को हम अज़ाब-पर-अज़ाब देंगे इस लिए कि वे बिगाड़ पैदा करते थे। ○

(हे मुहम्मद!) जिस दिन हम हर गिरोह में स्वयं उन्हीं में से एक गवाह उन के मुक़ाबिले में खड़ा करेंगे। और इन (लोगों) के मुक़ाबिले में गवाह के रूप में तुम्हें लायेंगे। और हम ने तुम पर ऐसी किताब* उतारी है जो हर चीज़ को खोल-खोल कर बयान करने वाली है, और मुस्लिमों* के लिए मार्ग-दर्शन और दयालुता और शुभ-सूचना है[39]। ○

निस्सन्देह अल्लाह न्याय और भलाई करने, और नातेदारों को (उन का हक़) देने का हुक्म देता है, और अश्लील-कर्म और बुराई और सरकशी से रोकता है[40]। वह तुम्हें सदोपदेश देता है कदाचित् तुम ध्यान दो। ○ अल्लाह के इक़रार को पूरा करो जब कि तुम ने कोई इक़रार किया हो, और अपनी क़समों को उन्हें पक्का करने के बाद तोड़ न डालो जब कि तुम अल्लाह को अपना ज़ामिन ठहरा चुके हो[41]। निस्सन्देह अल्लाह जानता है जो-कुछ तुम करते हो। ○ और तुम उस स्त्री की तरह न हो जाओ जिस ने अपना सूत परिश्रम से कातने के बाद, टुकड़े-टुकड़े कर डाला, कि तुम अपनी क़समों को आपस में छल-कपट का साधन बनाने लगो ताकि एक गिरोह दूसरे गिरोह से बढ़ जाये। बात केवल यह है कि अल्लाह इस (इक़रार) के द्वारा तुम्हें आज़माता है और जिस बात में तुम विभेद करते हो क़ियामत* के दिन उस (की वास्तविकता) को वह तुम पर अवश्य खोल देगा। ○ और यदि अल्लाह चाहता तो तुम सब को एक गिरोह बना देता परन्तु वह जिसे चाहता है गुमराही में डालता है और जिसे चाहता है सीधा रास्ता दिखा देता है[42] और तुम जो-कुछ भी करते हो उस के बारे में तुम

३८ अर्थात् उन के ठहराये हुये शरीक।

३९ दे० आयत १०२।

४० यह 'क़ुरआन*' का एक विशेष वाक्य है; किसी समाज के सुधार और जीवन में सरलता, माधुर्य और सौन्दर्य पैदा करने का इस से बढ़ कर दूसरा और कोई उपाय नहीं हो सकता।

४१ दे० सूरः आले इमरान आयत ७६, ७७।

४२ संसार में मनुष्य को स्वतन्त्रता प्राप्त है कि वह जिस रास्ते को भी पसन्द करे, अपना ले। यह स्वतन्त्रता मनुष्य को अल्लाह ही की ओर से मिली है, यही कारण है कि मनुष्य संसार में विभिन्न मार्गों पर चलता रहा है। जब कोई गुमराही की ओर जाना चाहता है तो अल्लाह उस के लिए गुमराही का मार्ग सुगम कर देता है; और जब कोई सीधे मार्ग पर चलना चाहता है, तो उसे सीधा मार्ग दिखा देता है। मनुष्य को वर्तमान जगत में जो स्वतन्त्रता प्राप्त है इस में उस की इस बात की परीक्षा है कि वह अपने लिए कौन सा मार्ग पसन्द करता है। वह मार्ग जिस पर चलने से अल्लाह ख़ुश होता है और जन्नत* का वरदान देता है या मार्ग जिस पर चल कर मनुष्य सीधा नरक में जा पड़ता है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

ٱلَّذِينَ صَبَرُوٓا۟ أَجْرَهُم بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ۝ مَنْ عَمِلَ صَٰلِحًا مِّن ذَكَرٍ أَوْ أُنثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهُۥ حَيَوٰةً طَيِّبَةً ۖ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُم بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ۝ فَإِذَا قَرَأْتَ ٱلْقُرْءَانَ فَٱسْتَعِذْ بِٱللَّهِ مِنَ ٱلشَّيْطَٰنِ ٱلرَّجِيمِ ۝ إِنَّهُۥ لَيْسَ لَهُۥ سُلْطَٰنٌ عَلَى ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۝ إِنَّمَا سُلْطَٰنُهُۥ عَلَى ٱلَّذِينَ يَتَوَلَّوْنَهُۥ وَٱلَّذِينَ هُم بِهِۦ مُشْرِكُونَ ۝ وَإِذَا بَدَّلْنَآ ءَايَةً مَّكَانَ ءَايَةٍ ۙ وَٱللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوٓا۟ إِنَّمَآ أَنتَ مُفْتَرٍۭ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ قُلْ نَزَّلَهُۥ رُوحُ ٱلْقُدُسِ مِن رَّبِّكَ بِٱلْحَقِّ لِيُثَبِّتَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَهُدًى وَبُشْرَىٰ لِلْمُسْلِمِينَ ۝ وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّهُمْ يَقُولُونَ إِنَّمَا يُعَلِّمُهُۥ بَشَرٌ ۗ لِّسَانُ ٱلَّذِى يُلْحِدُونَ إِلَيْهِ أَعْجَمِىٌّ وَهَٰذَا لِسَانٌ عَرَبِىٌّ مُّبِينٌ ۝ إِنَّ ٱلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِـَٔايَٰتِ ٱللَّهِ لَا يَهْدِيهِمُ ٱللَّهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ إِنَّمَا يَفْتَرِى ٱلْكَذِبَ ٱلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِـَٔايَٰتِ ٱللَّهِ ۖ وَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْكَٰذِبُونَ ۝ مَن كَفَرَ بِٱللَّهِ مِنۢ بَعْدِ إِيمَٰنِهِۦٓ إِلَّا مَنْ أُكْرِهَ وَقَلْبُهُۥ مُطْمَئِنٌّۢ بِٱلْإِيمَٰنِ وَلَٰكِن مَّن شَرَحَ بِٱلْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِّنَ ٱللَّهِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمُ ٱسْتَحَبُّوا۟ ٱلْحَيَوٰةَ ٱلدُّنْيَا عَلَى

से अवश्य पूछा जायेगा[43]। ○

तुम अपनी क़समों को आपस में छल-कपट का साधन न बना लेना कहीं ऐसा न हो कि कोई क़दम जमने के बाद उखड़ जाये और फिर तुम्हें अल्लाह के रास्ते से रोकने के अपराध में तकलीफ़ भोगनी पड़े और तुम एक बड़े अज़ाब के भागी ठहरो। ○ और अल्लाह के इक़रार[44] को थोड़े से मूल्य के बदले न बेच डालो[45]। निस्सन्देह जो-कुछ अल्लाह के पास है वह तुम्हारे लिए अधिक अच्छा है, यदि तुम जानो। ○ जो-कुछ तुम्हारे पास है वह समाप्त हो जायेगा, और जो-कुछ अल्लाह के पास है वह बाक़ी रहने वाला है। और जिन लोगों ने धैर्य से काम लिया हम उन्हें उन का बदला अवश्य देंगे जो-कुछ अच्छे काम वे करते थे उस के बदले में। ○ जिस किसी ने अच्छा काम किया, पुरुष हो या स्त्री, यदि वह ईमान* पर है, तो हम उसे अवश्य अच्छा जीवन प्रदान करेंगे, और हम उन्हें उनका बदला अवश्य देंगे जो-कुछ अच्छे काम वे करते थे उस के बदले में। ○ तो जब तुम क़ुरआन* पढ़ने लगो, तो फिटकारे हुए शैतान* से बचने के लिए अल्लाह की पनाह माँग लिया करो[46]। ○ निस्सन्देह उसका उन (लोगों) पर कुछ भी ज़ोर नहीं चलता जो ईमान* ले आये और अपने रब* पर भरोसा करते हैं। ○ उस का ज़ोर तो केवल उन लोगों पर चलता है जो उस से (शैतान* से) मित्रता का नाता जोड़ते, और जो उस के साथ (अर्थात् अल्लाह के साथ) शिर्क* करते हैं। ○

जब हम एक आयत* की जगह, दूसरी आयत* बदल कर लाते हैं,—और अल्लाह भली-भाँति जानता है जो-कुछ वह उतारता है—तो ये कहते हैं : तुम तो बस स्वयं गढ़ लेने वाले हो। नहीं, बल्कि (बात यह है कि) उन में अधिकतर लोग नहीं जानते। ○ (हे नबी*!) कह दो : उसे तो 'रूहुल्क़ुदुस'* (पवित्र-आत्मा) ने तेरे रब* की ओर से हक़* के साथ उतारा है, ताकि ईमान* वालों को (ईमान* पर) दृढ़ रखे, और मुस्लिमों* के लिए मार्ग-दर्शन और शुभ-सूचना हो। ○

(हे नबी*!) हम जानते हैं कि ये (तुम्हारे बारे में) कहते हैं : इस को तो बस एक आदमी सिखाता-पढ़ाता है[47]। हालांकि जिस की ओर ये (ग़लत तौर पर) इशारा करते हैं उस की भाषा विदेशी है, और यह भाषा[48] साफ़ अरबी है। ○ सच्ची बात यह है कि जो

---

४३ दे० सूरः अल-माइदः आयत ८९।

४४ अर्थात् उस इक़रार (प्रतिज्ञा) को जो तुम ने अल्लाह के नाम पर किया हो।

४५ दे० सूरः आले-इमरान आयत ७६, ७७, सूरः अत-तौबः आयत ८।

४६ दे० सूरः हा० मीम० अस सज्दः आयत ३६।

४७ ऐतिहासिक ग्रन्थों में कई एक नाम आते हैं जिन में से किसी एक के बारे में मक्का वाले यह कहते थे कि वह हज़रत मुहम्मद सल्ल० को सिखाता-पढ़ाता है।

४८ अर्थात् क़ुरआन* की भाषा। दे० सूरः हा० मीम० अस-सज्दः आयत ४४।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

الْاٰخِرَةِ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ۝ اُولٰۗىِٕكَ
الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰي قُلُوْبِهِمْ وَسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ ۚ وَاُولٰۗىِٕكَ
هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ۝ لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝
ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ هَاجَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا فُتِنُوْا ثُمَّ جٰهَدُوْا
وَصَبَرُوْٓا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ يَوْمَ تَاْتِيْ
كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ نَّفْسِهَا وَتُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ
وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝ وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ اٰمِنَةً
مُّطْمَىِٕنَّةً يَّاْتِيْهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِّنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ
بِاَنْعُمِ اللّٰهِ فَاَذَاقَهَا اللّٰهُ لِبَاسَ الْجُوْعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوْا
يَصْنَعُوْنَ ۝ وَلَقَدْ جَاۗءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَهُمُ
الْعَذَابُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ۝ فَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۠
وَّاشْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ۝ اِنَّمَا حَرَّمَ
عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ
فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَ
لَا تَقُوْلُوْا لِمَا تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا حَلٰلٌ وَّهٰذَا
حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَي اللّٰهِ الْكَذِبَ ۭ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَي
اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ۝ مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۡ وَّلَهُمْ عَذَابٌ

ع

लोग अल्लाह की आयतों* पर ईमान* नहीं लाते, अल्लाह उन्हें (सीधी) राह नहीं दिखाता और उन के लिए दुःख देने वाला अज़ाब है। ○ झूठ तो बस वही गढ़ते हैं जो अल्लाह की आयतों* पर ईमान* नहीं लाते, और वही (वास्तव में) झूठे हैं। ○ १०६

जिस किसी ने अपने ईमान* (लाने) के बाद अल्लाह के साथ कुफ़्र* किया—सिवाय उस के जो (इस के लिए) मजबूर कर दिया गया हो और दिल उस का ईमान पर सन्तुष्ट हो — बल्कि वह जिस ने (अपना) सीना कुफ़्र* के लिए खोल दिया,[४९] तो ऐसे लोगों पर अल्लाह का ग़ज़ब (प्रकोप) है। और उन के लिए बड़ा अज़ाब है[५०]। ○ यह इस लिए कि उन्हों ने आख़िरत* के मुक़ाबिले में सांसारिक जीवन को पसन्द किया, और इस लिए कि अल्लाह काफ़िर* लोगों को (सीधा) मार्ग नहीं दिखाता। ○ ये वे लोग हैं जिन के दिलों और जिन के कान और जिन की आँखों पर अल्लाह ने ठप्पा लगा दिया है[५१]। और ये वे लोग हैं जो बिल्कुल ग़ाफ़िल हैं। ○ निश्चय ही यही आख़िरत* में घाटा उठाने वाले हैं। ○ फिर निश्चय ही तेरा रब — उन के लिए जिन्हों ने इस के बाद कि आज़माइश में पड़ चुके थे हिजरत* की, फिर (अल्लाह की राह की) कठिनाइयाँ झेलीं और धैर्य से काम लिया[५२]— निश्चय ही तेरा रब* इन बातों के बाद (उन के लिए) बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है,[५३] ○ जिस दिन प्रत्येक जीव अपने ही लिए झगड़ रहा होगा,[५४] और प्रत्येक ११० जीव को जो-कुछ उस ने किया होगा उस का पूरा-पूरा बदला चुका दिया जायगा, और उन पर कुछ-भी ज़ुल्म न होगा। ○

४९ अर्थात् स्वेच्छापूर्वक कुफ़्र* के मार्ग को अपना लिया।

५० यह आयत* उन मुसलमानों के बारे में उतरी है जिन्हें मक्का में तरह-तरह से सताया जा रहा था। उन्हें अत्यन्त कष्ट पहुँचा कर कुफ़्र ग्रहण करने पर मजबूर किया जा रहा था। इस आयत* में बताया जा रहा है कि यदि कोई व्यक्ति जान बचाने के लिए ज़ुबान पर कुफ़्र* की बात ला दे और दिल उस कुफ़्र* से पाक हो, तो अल्लाह उसे क्षमा कर देगा; परन्तु यदि उस ने दिल से कुफ़्र* को अपना लिया, तो फिर अल्लाह के अज़ाब से उसे कोई नहीं बचा सकता। इस आयत* में मुसलमानों को छूट दी गई है कि दिल में ईमान* रखते हुये यदि आदमी विवशतापूर्वक कोई ऐसी बात कह दे जो ईमान* के प्रतिकूल हो, तो उस की पकड़ न होगी; परन्तु साहस और दृढ़ संकल्प की बात यह है कि आदमी के शरीर के टुकड़े टुकड़े कर डाले जायें फिर भी सत्य वचन के सिवा उस के मुँह से कोई और बात न निकले; वह अन्तिम समय तक सत्य ही की घोषणा करता रहे और मुँह से कोई ऐसी बात न निकाले जो ईमान* के विरुद्ध हो। इतिहास में हमें साहस और दृढ़ संकल्प की बहुत सी मिसालें मिलती हैं।

५१ दे० सूर: अल-बक़र: फ़ुट नोट ४।

५२ हबश: को और मुसलमानों ने हिजरत* की थी यह संकेत उसी की ओर है।

५३ ईमान* और अच्छे कामों के कारण उन के गुनाह और जो कुछ उन्हों ने पहले कुफ़्र* और शिर्क* किया होगा सब क्षमा कर दिया जायगा।

५४ अर्थात् हर एक को अपनी ही चिन्ता होगी।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

الْيَمٍ ۝ وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝ ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْٓا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ كَانَ اُمَّةً قَانِتًا لِّلّٰهِ حَنِيْفًا ۭ وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ شَاكِرًا لِّاَنْعُمِهٖ ۭ اِجْتَبٰىهُ وَهَدٰىهُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ وَاٰتَيْنٰهُ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۭ وَاِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ ثُمَّ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ اَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ۭ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ اِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۭ وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝ اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ۭ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ۝ وَاِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ ۭ وَلَىِٕنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ ۝ وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ اِلَّا بِاللّٰهِ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ ۝

अल्लाह एक मिसाल देता है : एक बस्ती थी जो निश्चिन्त और सन्तुष्ट (चली आ रही) थी, हर जगह से उस की रोज़ी बहुतायत के साथ चली आ रही थी, फिर उस ने अल्लाह की नेमतों के साथ कुफ़्र* किया, तो अल्लाह ने उस (के निवासियों) को उन के करतूतों के बदले में भूख (के भोजन) का मज़ा चखाया और भय का वस्त्र पहनाया[५५]। ○ और उन के पास उन में से ही एक रसूल* आया, परन्तु उन्हों ने उसे झुठला दिया, फिर अज़ाब ने उन्हें आ लिया इस अवस्था में कि वे ज़ालिम थे। ○

तो (हे लोगो!) जो-कुछ अल्लाह ने तुम्हें हलाल और पाक रोज़ी दी है उसे खाओ, और अल्लाह की नेमत का शुक्र अदा करो यदि तुम उसी की इबादत* करते हो। ○ उस ने तुम पर केवल मुरदार को, रक्त को, और सुअर के मांस को, और जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो, हराम ठहराया है; फिर जो कोई मजबूर हो जाये, (और जान बचाने के लिए इन चीज़ों को खाये और वह भी इस तरह कि) न तो (इस खाने की) उसे कोई इच्छा हो न वह (ज़रूरत की) हद से आगे बढ़ने वाला हो, तो निश्चय ही अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है[५६]। ○ और तुम अपनी ज़बानों के बयान किये हुये झूठ के आधार पर यह न कहो कि : "यह हलाल* है और यह हराम* है," कि (इस तरह) अल्लाह से सम्बन्ध लगा कर झूठ गढ़ने लगो। निस्सन्देह जो लोग अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं वे सफल नहीं होते।○(जीवन का) आनन्द थोड़ा है और उन के लिए दुःख देने वाला अज़ाब है।○

[५७]और जो लोग यहूदी हैं उन पर हम ने वह-कुछ हराम* किया था जो इस से पहले हम तुम से बयान कर चुके हैं[५८]। हम ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वह स्वयं अपने-आप

५५ यहाँ जिस बस्ती की उपमा दी गई ऐसा लगता है कि उस से अभिप्रेत मक्का नगर ही है। यदि मक्का को यहाँ मिसाल में पेश किया गया है तो आयत* में जिस भूख और भय के छा जाने का उल्लेख किया गया है उस से उस अकाल की ओर संकेत होगा जिस से कई वर्षों तक मक्का वाले पीड़ित रहे हैं।

५६ यह आदेश सूरः अल बक़र: आयत १७३ सूरः अल-माइद: आयत ३ और सूरः अल-अनआम आयत १४५ में बयान हो चुका है।

५७ यहाँ मक्का के काफ़िरों* के आक्षेपों का उत्तर दिया गया है। मक्का के काफ़िर यह आक्षेप करते थे कि बनी इसराईल* के धर्म-विधान में तो बहुत सी ऐसी चीज़ें हराम* थीं जिन्हें तुम हलाल* ठहरा रहे हो। अब उन का धर्म शास्त्र भी अल्लाह ही की ओर से था तो फिर यह कैसा विभेद पाया जाता है ? बनी इसराईल* के यहाँ सब्त (शनिवार) के दिन का जो आदर किया जाता था तुम ने उसे भी बाक़ी नहीं रखा; अल्लाह के नियमों में यह अन्तर कैसे हो सकता है ?

५८ यह संकेत सूरः अल अनआम की आयत १४६ की ओर है। जिस में यह बताया गया है कि यहूदियों की नाफ़रमानी और अवज्ञा के कारण विशेष रूप से उन पर कौन-कौन सी चीज़ें हराम* ठहरा दी गई थीं। परन्तु इस का अर्थ यह नहीं होता कि सूरः अल-अनआम इस सूरः से पहले उतरी है, वास्तव में सूर

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

यह सूरः* अपने से पहली सूरः की तरह चेतावनी तथा शुभ-सूचना की सूरः है। प्रस्तुत सूरः में यहूद* के लिए चेतावनी है और आगे आने वाली सूरः में नसारा* (ईसाइयों) के लिए

वार्तायें (Subject-matter)

इस सूरः* में काफ़िरों को सचेत किया गया है कि वे बनी इसराईल* के इतिहास से शिक्षा ग्रहण करें। और उन्हें जो थोड़ी मुहलत मिल रही है उस में सँभल जायें; और उस सत्य-मार्ग को अपना लें जिस की ओर उन्हें बुलाया जा रहा है। यदि वे सँभलते नहीं तो वह समय दूर नहीं कि अल्लाह उन की जगह दूसरे लोगों को आबाद करेगा।

प्रस्तुत सूरः* में बनी इसराईल* को भी चेतावनी दी गई है कि उन्हें अल्लाह की अवज्ञा के कारण जो सज़ायें पहले मिल चुकी हैं उन से उन्हें शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। जिस सत्य-धर्म की ओर उन्हें बुलाया जा रहा है स्वेच्छा पूर्वक उसे स्वीकार करना चाहिए। परन्तु यदि उन्हों ने इस अवसर को भी खो दिया; और सत्य के विरोधी ही बने रहे, तो फिर उन्हें उन के बुरे परिणामों से कोई नहीं बचा सकता।

इस सूरः* में इस पर पूर्ण रूप से प्रकाश डाला गया है कि किस बात में मनुष्य की सफलता और उस का कल्याण है, और कौन सी बातें हैं जो मनुष्य के विनाश का कारण हैं। 'तौहीद'* (एकेश्वरवाद), आख़िरत*, रिसालत* और क़ुरआन* की यथार्थता के प्रमाण दिये गये हैं; और काफ़िरों* के सन्देहों का पूर्णतः समाधान किया गया है। और उन्हें उन की कुचेष्टाओं पर डराया गया है।

इस सूरः* में नैतिकता एवं नागरिकता के बड़े-बड़े नियमों का उल्लेख कर के बता दिया गया है कि वास्तव में वे कौन से मौलिक सिद्धान्त हैं जिन के आधार पर इस्लामी समाज का निर्माण होता है।

नबी (सल्ल०) को हुक्म दिया गया है कि वह संकटों और कठिनाइयों का सहन करते हुये सत्य पर डटे रहें। कुफ़्र* के मुक़ाबिले में किसी प्रकार की नर्मी अथवा कदापि न अपनायें। आप (सल्ल०) के अनुयायियों को भी यही आदेश दिया गया कि वे हर प्रकार के संकटों और यातनाओं का मुक़ाबिला करने में अपनी उदारता और सहनशीलता का परिचय दें। प्रत्येक अवस्था में अल्लाह पर भरोसा रखें। धर्म-प्रचार के कामों में धैर्य से काम लें। उन की ज़बान से जो बात भी निकले वह ऊँची-तुली हो; और उन का सम्पूर्ण जीवन सद्गुणों से परिपूर्ण हो।

---

* इस का अर्थ अन्त में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* बनी इसराईल

(मक्का में उतरी — आयतें* १११)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

†महिमावान् है वह (अल्लाह) जो एक रात अपने बन्दे (मुहम्मद) को मसजिदे हराम* से अक़सा की मसजिद तक[1] ले गया जिस के वातावरण को हम ने बरकत दी है, ताकि हम उसे अपनी कुछ निशानियाँ दिखायें[2]! निस्सन्देह वह (सब-कुछ) सुनने और देखने वाला है। ○
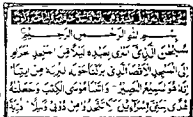
हम ने[3] मूसा को किताब* दी और उसे बनी इसराईल* के लिए मार्ग-दर्शन ठहराया कि मेरे सिवा किसी को (अपना) कार्य-साधक न बनाना। ○

(ये थे) उन की सन्तति जिन्हें हम ने नूह के साथ (नौका में) सवार किया था। निश्चय ही वह एक कृतज्ञ बन्दा था[4]। ○

हम ने किताब* में[5] बनी इसराईल को साफ़ कह सुनाया था कि तुम ज़मीन में दो बार फ़साद मचाओगे, और बड़ी सरकशी दिखाओगे[6]। ○

फिर जब इन दोनों में से पहला मौक़ा आया, तो हम ने तुम्हारे मुक़ाबिले में अपने ऐसे

---

† यहाँ से पन्द्रहवाँ पारः (Part XV) शुरू होता है।

१ इस का शब्द-अर्थ है 'दूर की मसजिद तक' अक़सा की मसजिद से अभिप्रेत 'बैतुलमक़दिस' (Sacred Place of Jerusalem) है।

२ यह घटना 'मेअ्राज' और 'असरा' के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ केवल मसजिदे हराम* (काबः) से 'बैतुलमक़दिस'* तक नबी सल्ल० के जाने का उल्लेख कर के इस सफ़र का उद्देश्य यह बताया गया है कि अल्लाह अपने बन्दे (हज़रत मुहम्मद सल्ल०) को अपनी कुछ निशानियाँ और चमत्कार दिखाना चाहता था। सूरः अन-नज्म आयत १८ में कहा गया है : "उस ने (अर्थात् हज़रत मुहम्मद सल्ल०) ने अपने रब* की बड़ी-बड़ी निशानियाँ देखीं।" आप (सल्ल०) को आप के रब* ने क्या-कुछ निशानियाँ दिखाईं इस का उल्लेख पवित्र क़ुरआन में नहीं किया गया है। नबी सल्ल० ने स्वयं इस यात्रा के बारे में जो कुछ बयान किया है उस के लिए सूरः के परिचय का फ़ुट नोट १ देखिए।

३ यहाँ से बनी इसराईल* के इतिहास से शिक्षा ग्रहण करने की ओर संकेत किया जा रहा है। आरम्भ में 'मेअ्राज' के वृत्तान्त का उल्लेख कर के सचेत कर दिया गया है कि ये बातें जो तुम से कर रहा है कोई साधारण व्यक्ति नहीं है कि उस की बातों पर तुम ध्यान ही न दो; बल्कि वह कभी-कभी अपने रब* की बड़ी-बड़ी निशानियाँ और चमत्कार देख कर आया है।

४ इस लिए तुम्हें भी अपने रब* का कृतज्ञ होना चाहिए, और उसी को अपना कार्य-साधक और संरक्षक समझना चाहिए।

५ अपनी आसमानी किताबों (Heavenly Books) में।

६ बाइबिल में यह चेतावनी विभिन्न स्थानों पर मिलती है। पहले फ़साद और उस के बुरे परिणामों से बाइबिल में जिस प्रकार सचेत किया गया है उस के लिए देखिए : 'ज़बूर' (Ps.) १०६ : ३४-४१, 'यसइयाह' (Isaiah) १ : ४-५, २१-२४; २ : ६-८; ३ : १६-२६; ८ : ७ और १० : ६-१४; 'यरमियाह' (Jeremiah) २ : ५-२८; ३ : ६-६; ५ : १-६, १५-२७; ७ : २३-२४ और १५ : २-३; 'हिज़क़ियाल' (Ezekiel) २२ : ३१६।

दूसरे फ़साद और उस के कठोर दण्ड की चेतावनी हज़रत मसीह अ० ने दी है। इस के लिए दे० 'मत्ती' (Matthew) २३ : ३०-३८ और २४ : २; 'लूका' (Luke) २३ : २८ और २३ : २८-३०।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ إِنَّهُ كَانَ عَبْدًا شَكُورًا ○ وَقَضَيْنَا إِلَى
بَنِي إِسْرَائِيلَ فِي الْكِتَابِ لَتُفْسِدُنَّ فِي الْأَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ
عُلُوًّا كَبِيرًا ○ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ أُولَاهُمَا بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ عِبَادًا
أُولِي بَأْسٍ شَدِيدٍ فَجَاسُوا خِلَالَ الدِّيَارِ وَكَانَ وَعْدًا مَفْعُولًا
ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ وَأَمْدَدْنَاكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ
وَجَعَلْنَاكُمْ أَكْثَرَ نَفِيرًا ○ إِنْ أَحْسَنْتُمْ أَحْسَنْتُمْ لِأَنْفُسِكُمْ
وَإِنْ أَسَأْتُمْ فَلَهَا فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ لِيَسُوءُوا وُجُوهَكُمْ
وَلِيَدْخُلُوا الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوهُ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَلِيُتَبِّرُوا مَا
تَتْبِيرًا ○ عَسَى رَبُّكُمْ أَنْ يَرْحَمَكُمْ وَإِنْ عُدْتُمْ عُدْنَا وَجَعَلْنَا
جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ حَصِيرًا ○ إِنَّ هَٰذَا الْقُرْآنَ يَهْدِي لِلَّتِي
هِيَ أَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ

बन्दे उठाये जो बड़े ही सबल थे, वे (तुम्हारी) बस्तियों में घुस कर हर ओर फैल गये, और यह वादा पूरा ही होना था[7] ।○

फिर हम ने उन पर तुम्हारी बारी लौटाई, और माल और बेटों से तुम्हारी सहायता की और तुम्हें बड़ा जत्था वाला बनाया,[8] ○ यदि तुम ने भलाई की, तो अपने ही जानों के लिए भलाई की, और यदि बुराई की, तो भी उन्हीं (अपनी जानों) के लिए ही।

फिर, जब दूसरे वादे का मौक़ा आया (तो हम ने तुम्हारे मुक़ाबिले में अपने दूसरे बन्दे उठाये) ताकि वे तुम्हारे चेहरे बिगाड़ दें, और मसजिद (अर्थात् बैतुलमक़दिस*) में घुस जायें जिस तरह पहली बार घुसे थे, और जिस चीज़ पर क़ाबू पायें उसे तबाह कर के रख दें[9] ।○—

सम्भव है कि तुम्हारा रब* तुम पर दया करे, परन्तु यदि तुम फिर उसी पहली नीति की ओर पलटे, तो हम भी (तुम्हारे साथ) वही पहला-सा व्यवहार करेंगे, और हम ने दोज़ख़* को काफ़िरों* के लिए बन्दी-घर बना रखा है।○

वास्तव में क़ुरआन* वह मार्ग दिखाता है जो सब से ज़्यादा सीधा है, और ईमान* वालों को जो अच्छे काम करते हैं शुभ-सूचना देता है कि उन के लिए बड़ा बदला है।○ और

---

७ यह संकेत उस भयंकर तबाही और बरबादी की ओर है जो आशोरियों (Assyrians) और बाबिल वालों (Babylonians) के हाथों बनी इसराईल* को पहुँची थी। अशोरियों का आक्रमण ७२१ ई० पू० में हुआ था जिस ने इसराईली राज्य को तहस-नहस कर के रख दिया था। बाबिल वालों का आक्रमण ५९८ ई० पू० में हुआ था। इस आक्रमण के बाद इसराईली राज्य यहूदियों के हाथ से बिलकुल निकल ही गया। यह वास्तव में बनी इसराईल* के उन अपराधों (अर्थात् शिर्क*, पारस्परिक वैमनस्य, सांसारिक लोभ और उन के दुराचरण आदि) की सज़ा थी जिन से दूर रहने का उपदेश निरन्तर उन के नबी* उन्हें देते रहे थे। परन्तु नैतिक दृष्टि से वे इतने गिर चुके थे कि सँभल न सके और उन पर अल्लाह का अज़ाब आ कर रहा। बाबिल के सम्राट बख़्तनस्सर (Nebuchadnezzar) के युरुशलम (Jerusalem) पर आक्रमण करने, और नगर को तबाह करने, और लोगों को बहुत बड़ी संख्या में बन्दी बना कर बाबिल ले जाने आदि का उल्लेख इतिहास के अतिरिक्त बाइबिल में भी किया गया है। दे० 'सलातीन' द्वितीय (King II) २४ : ६ २०; २५ : ७-२२।

८ यहूदियों को बाबिल की क़ैद से रिहाई पाने के बाद जो मुहलत मिली थी जिस में उन्हें उन्नति करने का पुनः अवसर प्राप्त हुआ, यह संकेत उसी की ओर है। यहूदियों को बाबिल की क़ैद से छुटकारा ५४० ई० पू० बाबिल-राज्य के पतन के बाद मिला है। जब कि ईरानी विजयता ख़ुसरू अर्थात् साइरस (cyrus) ने बाबिल को विजय कर के बनी इसराईल* को अपने देश वापस जाने और वहाँ पुनः आबाद होने की इजाज़त दे दी थी।

९ यह संकेत उस भयंकर तबाही और बरबादी की ओर है जो रूमियों (Romans) के आक्रमण से फ़लिस्तीन (Palestine) नगर और यहूदियों को पहुँची थी। यह आक्रमण टीटुस (Titus) की अध्यक्षता में हुआ था। यह तबाही और बरबादी वास्तव में यहूदियों की अपनी ही सरकशी और नैतिक एवं धार्मिक गिरावट की सज़ा थी। यहूदियों की तबाही और बरबादी और उन के नगर के उजड़ जाने के भयकर और शिक्षा-जनक वृत्तान्त का विस्तार-पूर्वक उल्लेख ऐतिहासिक ग्रन्थों और पुरातन सहीफ़ों* (The Old Testament) में किया गया है। इस सिलसिले में दे० Ferrar Early Days of Christianity PP488-89.

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

لَهُمْ اَجْرًا كَبِيْرًا ۝ وَّاَنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ اَعْتَدْنَا
لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝ وَيَدْعُ الْاِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَآءَهٗ بِالْخَيْرِ ؕ
وَكَانَ الْاِنْسَانُ عَجُوْلًا ۝ وَجَعَلْنَا الَّيْلَ وَالنَّهَارَ اٰيَتَيْنِ
فَمَحَوْنَآ اٰيَةَ الَّيْلِ وَجَعَلْنَآ اٰيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوْا فَضْلًا
مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ ؕ وَكُلَّ شَيْءٍ
فَصَّلْنٰهُ تَفْصِيْلًا ۝ وَكُلَّ اِنْسَانٍ اَلْزَمْنٰهُ طٰٓئِرَهٗ فِيْ عُنُقِهٖ ؕ
وَنُخْرِجُ لَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ كِتٰبًا يَّلْقٰىهُ مَنْشُوْرًا ۝ اِقْرَاْ كِتٰبَكَ ؕ
كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيْبًا ۝ مَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا
يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ؕ وَلَا تَزِرُ
وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا ۝
وَاِذَآ اَرَدْنَآ اَنْ نُّهْلِكَ قَرْيَةً اَمَرْنَا مُتْرَفِيْهَا فَفَسَقُوْا فِيْهَا
فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ فَدَمَّرْنٰهَا تَدْمِيْرًا ۝ وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنَ
الْقُرُوْنِ مِنْۢ بَعْدِ نُوْحٍ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًا
بَصِيْرًا ۝ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ فِيْهَا مَا نَشَآءُ
لِمَنْ نُّرِيْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلٰىهَا مَذْمُوْمًا
مَّدْحُوْرًا ۝ وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ
مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَّشْكُوْرًا ۝ كُلًّا نُّمِدُّ هٰٓؤُلَآءِ

यह (भी बताता है) कि जो आख़िरत* पर ईमान* नहीं लाते, हम ने उन के लिए दुःखदायी अज़ाब तैयार कर रखा है। ○

मनुष्य बुराई माँगता है जैसा कि वह भलाई माँगता है; मनुष्य बड़ा ही उतावला है[10]। ○

हम ने रात और दिन को दो निशानियाँ बनाया है। फिर रात की निशानी को तो हम ने अन्धकार-मय किया, और दिन की निशानी को प्रकाशमान बनाया, ताकि तुम अपने रब* का फ़ज़्ल (रोज़ी) ढूँढो, और ताकि तुम वर्षों की गिन्ती और हिसाब जान सको, और हम ने हर चीज़ को खोल-खोल कर अलग-अलग स्पष्ट कर दिया है। ○

प्रत्येक मनुष्य का शकुन (अपशगुन) हम ने उस की अपनी गरदन से बाँध दिया है,[11] और क़ियामत* के दिन हम उस के लिए एक किताब निकालेंगे जिसे वह खुला पायेगा। ○ (कहा जायेगा): अपनी किताब पढ़। आज अपना हिसाब लेने के लिए तू स्वयं काफ़ी है। ○

जो कोई (सीधी) राह पर चला, तो वह अपने ही लिए चला, और जो भटक गया उस के भटकने का वबाल भी उसी के सिर आयेगा। कोई बोझ उठाने वाला, किसी दूसरे का बोझ न उठायेगा।

और हम (लोगों को) अज़ाब नहीं देते जब तक कि (उन्हें सचेत करने के लिए) कोई रसूल* न भेज दें। ○

और जब हम किसी बस्ती को विनष्ट करने का इरादा कर लेते हैं तो हम वहाँ के सुख-भोगी लोगों को (सत्य पर चलने का) हुक्म देते हैं, फिर (सत्य पर चलने के बदले) वे उस (बस्ती) में सीमा-उल्लंघन करने लग जाते हैं, तब उस बस्ती पर वह (अज़ाब की) बात साबित हो जाती है, फिर हम उसे बिलकुल जड़ से उखाड़ फेंकते हैं। ○

नूह के बाद हम ने कितनी ही नस्लों को विनष्ट कर दिया! तुम्हारा रब* अपने बन्दों के गुनाहों की ख़बर रखने और देखने को काफ़ी है। ○

जो कोई शीघ्र मिलने वाली चीज़ (अर्थात् दुनियाँ) का इच्छुक हो, उसे हम इसी में शीघ्र दे देते हैं जो-कुछ जिसे देना चाहते हैं। फिर उस के लिए हम ने दोज़ख़* तैयार कर रखा है; जिस में वह धिक्कारा और ठुकराया हुआ प्रवेश करेगा। ○

और जो कोई आख़िरत* का इच्छुक हुआ और उस के लिए कोशिश की जैसी कि उस के लिए कोशिश करनी चाहिए, और वह ईमान* वाला भी है; तो ऐसे लोगों की कोशिश की (उन के रब* की ओर से) क़द्र की जायेगी। ○

---

[10] दे० सूरः अल-अंबिया आयत ३७।
[11] अर्थात् प्रत्येक मनुष्य अपने परिणाम की भलाई अथवा बुराई का स्वयं ज़िम्मेदार है।
* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

وَهٰٓؤُلَآءِ مِنْ عَطَآءِ رَبِّكَ ۭ وَمَا كَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ مَحْظُوْرًا ۝
اُنْظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰي بَعْضٍ ۭ وَلَلْاٰخِرَةُ اَكْبَرُ دَرَجٰتٍ
وَّاَكْبَرُ تَفْضِيْلًا ۝ لَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰـهًا اٰخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُوْمًا
مَّخْذُوْلًا ۝ وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ۭ
اِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَآ اَوْ كِلٰـهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ
وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا ۝ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ
الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ۝
رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا فِيْ نُفُوْسِكُمْ ۭ اِنْ تَكُوْنُوْا صٰلِحِيْنَ فَاِنَّهٗ كَانَ
لِلْاَوَّابِيْنَ غَفُوْرًا ۝ وَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ
السَّبِيْلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا ۝ اِنَّ الْمُبَذِّرِيْنَ كَانُوْٓا اِخْوَانَ
الشَّيٰطِيْنِ ۭ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوْرًا ۝ وَاِمَّا تُعْرِضَنَّ
عَنْهُمُ ابْتِغَاۗءَ رَحْمَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ تَرْجُوْهَا فَقُلْ لَّهُمْ قَوْلًا مَّيْسُوْرًا ۝
وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُوْلَةً اِلٰى عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ
فَتَقْعُدَ مَلُوْمًا مَّحْسُوْرًا ۝ اِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَ
يَقْدِرُ ۭ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا ۝ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ
خَشْيَةَ اِمْلَاقٍ ۭ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَاِيَّاكُمْ ۭ اِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْاً
كَبِيْرًا ۝ وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰٓى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ۭ وَسَاۗءَ سَبِيْلًا ۝

इन्हें भी और इन को भी, हर एक को रब* की देन में से दिये जा रहे हैं। और तेरे रब की देन (किसी पर) बन्द नहीं है। ○

देखो कैसा हम ने किसी को किसी पर बड़ाई दी है, और आख़िरत* के दरजे तो सब से बढ़ कर हैं और प्रतिष्ठा में भी सब से बढ़-चढ़ कर हैं¹²। ○

अल्लाह के साथ कोई और इलाह* (पूज्य) न बना नहीं तो धिक्कारा हुआ और असहाय हो कर बैठ रहेगा। ○

तेरे रब* ने फ़ैसला कर दिया है कि उस के सिवा किसी की इबादत* न करो, माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो। यदि उन में से कोई एक या दोनों तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुँच जायें, तो उन्हें 'हूँ' तक न कहो और न उन्हें झिड़को बल्कि उन से भली बात करो। ○ दयालुता के साथ उन के लिए विनम्रता की भुजा झुका दो, और कहो: रब* जिस तरह इन्हों ने बचपन में मेरा पालन-पोषण किया है, तू भी इन पर दया कर। ○ जो-कुछ तुम्हारे जी में है तुम्हारा रब* उसे भली-भांति जानता है। यदि तुम नेक हुये, तो निस्सन्देह वह रुजू करने वालों के लिए बड़ा क्षमाशील है। ○ २१

नातेदार को उस का हक़ दो, और मुहताज और राह चलने वाले (मुसाफ़िर) को भी, और फ़ुज़ूल ख़र्ची न करो। ○ निस्सन्देह फ़ुज़ूल ख़र्ची करने वाले शैतानों* के भाई हैं, और शैतान अपने रब* का कृतघ्न है। ○

यदि तुम्हें अपने रब* की दयालुता की खोज में,¹³ जिस की तुम आशा रखते हो उन (नातेदारों,* मुहताजों और मुसाफ़िरों) से कतराना पड़े तो उन से नर्म बात कहो¹⁴। ○

अपना हाथ न तो अपनी गरदन से बाँध रखो (कि किसी को कुछ भी न दो) और न उसे बिलकुल खुला छोड़ दो कि निन्दित और निःसहाय हो कर बैठ रहो। ○ तेरा रब* जिस के लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है, और जिस के लिए चाहता है नपी-तुली कर देता है, निस्सन्देह वह अपने बन्दों की ख़बर रखने वाला और उन्हें देखने वाला है। ○ ३०

और दरिद्रता के भय से अपनी औलाद की हत्या न करो, हम उन्हें भी रोज़ी देते हैं और तुम्हें भी। वास्तव में उन की हत्या एक बड़ी ख़ता है¹⁵। ○

---

१२ दुनिया में भी उन लोगों को जो आख़िरत के इच्छुक होते हैं दूसरों के मुक़ाबिले बड़ाई प्राप्त होती है। उन का जीवन वास्तविक सुख-शान्ति, सौजन्य, सदाचरण आदि गुणों से परिपूर्ण होता है।*

१३ अर्थात् रोज़ी की तलाश में।

१४ अर्थात् यदि तुम स्वयं तंगी में हो और रोज़ी तलाश कर रहे हो; और उन की सहायता नहीं कर सकते, तो उन्हें नर्म जवाब दो।

१५ दरिद्रता का भय पहले बच्चों की हत्या और गर्भपात का कारण बनता था और आज सन्तान-निरोध की ओर बड़े लोगों को परिवार-नियोजन (Family planning) के सुन्दर नाम से ले जा रहा है। आर्थिक संकट के भय से नस्ल के बढ़ने से रोकना हत्या के अपराध से कम नहीं है। सन्तान-निरोध की दुर्भावना नास्तिकता और अल्लाह से निर्भय हो जाने के कारण ही उभरी है।

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

ज़िना (व्यभिचार) के क़रीब न फटको। वह एक अश्लील कर्म और बुरी राह है। ○

किसी जान को क़त्ल न करो जिस (के क़त्ल) को अल्लाह ने हराम किया है[१७] सिवाय हक़ के[१८]। और जो ज़ुल्म से क़त्ल किया गया हो, उस के वारिस को हम ने अधिकार दिया है (वह हत्यारे से बदला ले सकता है), परन्तु उसे क़त्ल में हद से आगे नहीं बढ़ना चाहिए[१९]। निश्चय ही उस की सहायता की जायेगी[२०]। ○

यतीम (अनाथ) के माल के क़रीब न फटको सिवाय ऐसी रीति के जो उत्तम हो यहाँ तक कि वह अपनी युवावस्था को पहुँच जाये (उस समय तुम उस का माल उसे सौंप दो); और प्रतिज्ञा पूरी करो। निश्चय ही प्रतिज्ञा के विषय में पूछा जायगा। ○

जब नाप कर दो तो नाप को पूरा भरा करो, और (जब तोल कर दो तो) ठीक तराज़ू से तोलो; यही १५ उत्तम है, और इस का परिणाम भी अच्छा है। ○

وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ۗ وَمَن قُتِلَ مَظْلُومًا
فَقَدْ جَعَلْنَا لِوَلِيِّهِ سُلْطَانًا فَلَا يُسْرِف فِّي الْقَتْلِ ۖ إِنَّهُ كَانَ
مَنصُورًا ۝ وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ
يَبْلُغَ أَشُدَّهُ ۚ وَأَوْفُوا بِالْعَهْدِ ۖ إِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْئُولًا ۝ وَأَوْفُوا
الْكَيْلَ إِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيمِ ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ وَ
أَحْسَنُ تَأْوِيلًا ۝ وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ ۚ إِنَّ السَّمْعَ
وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُولَٰئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا ۝ وَلَا تَمْشِ فِي
الْأَرْضِ مَرَحًا ۖ إِنَّكَ لَن تَخْرِقَ الْأَرْضَ وَلَن تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُولًا ۝
كُلُّ ذَٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهُ عِندَ رَبِّكَ مَكْرُوهًا ۝ ذَٰلِكَ مِمَّا أَوْحَىٰ
إِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ۗ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَتُلْقَىٰ فِي
جَهَنَّمَ مَلُومًا مَّدْحُورًا ۝ أَفَأَصْفَاكُمْ رَبُّكُم بِالْبَنِينَ وَاتَّخَذَ مِنَ
الْمَلَائِكَةِ إِنَاثًا ۚ إِنَّكُمْ لَتَقُولُونَ قَوْلًا عَظِيمًا ۝ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَٰذَا
الْقُرْآنِ لِيَذَّكَّرُوا وَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا نُفُورًا ۝ قُل لَّوْ كَانَ مَعَهُ آلِهَةٌ
كَمَا يَقُولُونَ إِذًا لَّابْتَغَوْا إِلَىٰ ذِي الْعَرْشِ سَبِيلًا ۝ سُبْحَانَهُ وَ
تَعَالَىٰ عَمَّا يَقُولُونَ عُلُوًّا كَبِيرًا ۝ تُسَبِّحُ لَهُ السَّمَاوَاتُ السَّبْعُ وَالْأَرْضُ
وَمَن فِيهِنَّ ۚ وَإِن مِّن شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهِ وَلَٰكِن لَّا تَفْقَهُونَ
تَسْبِيحَهُمْ ۗ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ۝ وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ جَعَلْنَا

और जिस चीज़ की तुम्हें ख़बर न हो उस के पीछे न पड़ो। निस्सन्देह कान और आंख और दिल—इन सब के बारे में हर व्यक्ति से पूछा जायगा[२१]।

और ज़मीन पर अकड़ते हुए न चलो। न तो तुम ज़मीन को फाड़ सकते हो, और न (तन कर) पहाड़ों की ऊँचाई को पहुँच सकते हो। ○

ये सारे बुरे कर्म तुम्हारे रब* की दृष्टि में अप्रिय हैं। ○ ये हिकमत* की वे बातें हैं जो तेरे रब* ने तेरी ओर वह्य* की हैं। और अल्लाह के साथ कोई दूसरा इलाह* (पूज्य) न गढ़ना,[२२]

---

१७ इस आयत से मालूम* होता है कि आत्म-हत्या भी हराम है। मनुष्य अपने प्राण का स्वयं मालिक नहीं है।

१८ केवल पाँच मौक़े ऐसे हैं जिन में मनुष्य को क़त्ल करना अवैध नहीं रहता— (१) यदि किसी ने जान-बूझ कर किसी की हत्या की हो तो ख़ून का बदला लेने के लिए। (२) धर्म के मार्ग में रुकावट डालने वाले को युद्ध में। (३) इस्लामी हुकूमत का तख़्ता उलटने वाले को सज़ा के रूप में। (४) विवाहित पुरुष या स्त्री को ज़िना (व्यभिचार) की सज़ा में। (५) इस्लाम धर्म ग्रहण कर के फिर उस से फिर जाने की सज़ा में।

१९ अर्थात् ऐसा न करे कि क्रोध में अपराधी के अतिरिक्त दूसरों को क़त्ल करने लग जाये या अपराधी को तरह-तरह के कष्ट पहुँचा कर मारे। या अर्थ-दण्ड लेने के बाद फिर उसे क़त्ल कर दे; ये और इस तरह के दूसरे काम ज़ुल्म और ज़्यादती के काम हैं।

२० उस समय यह बात नहीं बताई गई कि सहायता कौन करेगा परन्तु जब इस्लामी राज्य स्थापित हो गया, तो बता दिया गया कि किसी व्यक्ति या गिरोह को यह अधिकार प्राप्त नहीं है कि वह स्वयं हत्या करने वाले से ख़ून का बदला लेने लग जाये; बल्कि यह अधिकार केवल राज्य को प्राप्त है कि न्याय के लिए उस की ओर मामला ले जाया जाये; और उस से मदद चाही जाय।

२१ अल्लाह ने मनुष्य को देखने, सुनने और सोचने-समझने की योग्यता इस लिए प्रदान की है कि वह उस से काम ले कर जीवन के वास्तविक मार्ग का ज्ञान प्राप्त करे; अल्लाह के रसूल* सनातन से लोगों को ज्ञान ही की ओर बुलाते आ रहे हैं। रसूल* के झुठलाने का अर्थ इस के सिवा और कुछ नहीं कि मनुष्य अपने कान, आँख और हृदय सब को झुठला रहा है।

२२ दे० आयत २२। यह बात 'तौहीद'* की महानता के कारण दोहराई गई है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

بينك وبين الذين لا يؤمنون بالآخرة حجابا مستورا ۝ و
جعلنا على قلوبهم أكنة أن يفقهوه وفي آذانهم وقرا ۚ وإذا ذكرت
ربك في القرآن وحده ولوا على أدبارهم نفورا ۝ نحن أعلم بما
يستمعون به إذ يستمعون إليك وإذ هم نجوى إذ يقول
الظالمون إن تتبعون إلا رجلا مسحورا ۝ انظر كيف ضربوا لك
الأمثال فضلوا فلا يستطيعون سبيلا ۝ وقالوا أإذا كنا عظاما
ورفاتا أإنا لمبعوثون خلقا جديدا ۝ قل كونوا حجارة أو
حديدا ۝ أو خلقا مما يكبر في صدوركم ۚ فسيقولون من
يعيدنا ۖ قل الذي فطركم أول مرة ۚ فسينغضون إليك رءوسهم
ويقولون متى هو ۖ قل عسى أن يكون قريبا ۝ يوم يدعوكم
فتستجيبون بحمده وتظنون إن لبثتم إلا قليلا ۝ وقل لعبادي
يقولوا التي هي أحسن ۚ إن الشيطان ينزغ بينهم ۚ إن الشيطان
كان للإنسان عدوا مبينا ۝ ربكم أعلم بكم ۖ إن يشأ يرحمكم أو
إن يشأ يعذبكم ۚ وما أرسلناك عليهم وكيلا ۝ وربك أعلم
بمن في السماوات والأرض ۗ ولقد فضلنا بعض النبيين على بعض
وآتينا داوود زبورا ۝ قل ادعوا الذين زعمتم من دونه فلا يملكون
كشف الضر عنكم ولا تحويلا ۝ أولئك الذين يدعون يبتغون

नहीं तो निन्दित और ठुकराया हुआ दोज़ख़* में झोंक दिया जायगा ।○ (हे शिर्क* करने वालो!) क्या तुम्हारे रब* ने तुम्हें तो बेटों के लिए ख़ास किया,[23] और स्वयं अपने लिए फ़रिश्तों* को बेटियाँ बना लिया[24]? निश्चय ही तुम बड़ी (सख़्त) बात कहते हो ।○ ४०

हम ने इस .क़ुरआन* में तरह-तरह से समझाया ताकि ये चेतें, परन्तु इस से उन की नफ़रत ही बढ़ती है[25] ।○

(हे नबी !) कह दो : यदि उस के साथ दूसरे इलाह* (पूज्य) भी होते, जैसा कि यह कहते हैं, तो अर्श* (सिंहासन) वाले तक पहुँचने की राह तलाश करते[26] ।○

महिमावान् है वह, और अत्यन्त उच्च है उस से जो-कुछ ये कहते हैं ।○

सातों आसमान और ज़मीन और जो कोई उन के बीच हैं सब उस की तसबीह* करते हैं, और कोई चीज़ नहीं जो उस की प्रशंसा (हम्द*) के साथ तसबीह* न करती हो; परन्तु तुम उन की तसबीह* को समझते नहीं हो । निस्सन्देह वह बड़ा ही सहनशील और क्षमा करने वाला है ।○

जब तुम .क़ुरआन* पढ़ते हो तो हम तुम्हारे और उन के बीच एक ढका हुआ परदा (कठिन रोक) डाल देते हैं; ○ और उन के दिलों पर परदे डाल दिये हैं कि उसे न समझ सकें, ४१ और उन के कानों में डाट हैं;[27] और जब तुम .क़ुरआन* में केवल अकेले अपने रब* ही का ज़िक्र करते हो, तो वे बिदक कर अपनी पीठ फेर कर भाग खड़े होते हैं ।○

जब वे तुम्हारी ओर कान लगाते हैं तो हम भली-भाँति जानते हैं जो-कुछ वे सुनना चाहते हैं (हम उस से भी बे-ख़बर नहीं होते) जब वे परस्पर काना-फूसी करते हैं, जब वे ज़ालिम कहते हैं : तुम तो बस जादू मारे हुये आदमी के पीछे चल रहे हो[28] ।○

देखो ये कैसी मिसालें तुम पर चस्पाँ करते हैं, तो ये भटक गये कोई राह नहीं पा सकते ।○

वे कहते हैं : जब हम (मर कर) हड्डियाँ और चूर्ण-विचूर्ण हो जायेंगे, तो क्या हम नये

---

२३ अर्थात् तुम्हें तो बेटे दिये ।

२४ दे० सूरः अन-नह्ल फ़ुट नोट १७ ।

२५ दे० आयत ४६ ।

२६ अर्थात् वे स्वयं अर्श* अथवा सिंहासन पर अधिकार प्राप्त करने की कोशिश करते ।

२७ यह आख़िरत* पर ईमान* न लाने का एक स्वाभाविक परिणाम है कि आदमी के हृदय-पट सत्य के लिए बन्द हो जाते हैं, और उस के कान बहरे हो जाते हैं । क़ुरआन* का आमन्त्रण आख़िरत* ही पर आधारित है, जो व्यक्ति आख़िरत* को मानने के लिए तैयार न हो उस के दिल तक क़ुरआन* की आवाज़ कैसे पहुँच सकती है ।

२८ मक्का के सरदार छिप कर क़ुरआन* सुनते और आपस में सोचते कि इस का तोड़ क्या हो । उन्हें जब अपने किसी व्यक्ति के बारे में सन्देह होता कि वह क़ुरआन* से कुछ प्रभावित हो गया है, तो उसे समझाते कि कहाँ बहके जा रहे हो वह तो एक जादू मारा हुआ आदमी है । उस की बातों में क्यों आते हो ।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

: से पैदा कर के उठाये जायेंगे ? ○ कह दो : पत्थर हो जाओ या लोहा ○ या और कोई चीज़ तुम्हारे जी (विचार) में बड़ी (सख़्त) हो (जिस में न संचार तुम्हारे विचार में असम्भव हो)! तब कहेंगे : कौन हमें (फिर जीवन की ओर) पलटा लायगा? कह दो : वही जिस ने तुम्हें पहली बार किया। तब वे तुम्हारे आगे सिर हिला-हिला कहेंगे : अच्छा तो यह कब होगा? कह दो : चित् वह (समय) क़रीब ही हो। ○

जिस दिन वह तुम्हें पुकारेगा और तुम पुकार ते ही उस की प्रशंसा (हम्द*) के साथ चले आ-गे,[19] और समझोगे कि तुम इस अवस्था में थोड़ी ही देर रहे हो[20]। ○

(हे नबी*!) मेरे बन्दों से कह दो : बात वही जो उत्तम हो। शैतान* तो उन के बीच टकसाहट र देता है। निस्सन्देह शैतान* मनुष्य का खुला मन है। ○

الى ربهم الوسيلة ايهم اقرب ويرجون رحمته ويخافون عذابه ان
عذاب ربك كان محذورا ۝ وان من قرية الا نحن مهلكوها قبل
يوم القيمة او معذبوها عذابا شديدا كان ذلك في الكتب
مسطورا ۝ وما منعنا ان نرسل بالايت الا ان كذب بها الاولون
واتينا ثمود الناقة مبصرة فظلموا بها وما نرسل بالايت الا
تخويفا ۝ واذ قلنا لك ان ربك احاط بالناس وما جعلنا الرءيا
التي اريناك الا فتنة للناس والشجرة الملعونة في القران و
نخوفهم فما يزيدهم الا طغيانا كبيرا ۝ واذ قلنا للملئكة اسجدوا
لادم فسجدوا الا ابليس قال ءاسجد لمن خلقت طينا ۝ قال
ارءيتك هذا الذي كرمت علي لئن اخرتن الى يوم القيمة
لاحتنكن ذريته الا قليلا ۝ قال اذهب فمن تبعك منهم فان
جهنم جزاؤكم جزاء موفورا ۝ واستفزز من استطعت منهم
بصوتك واجلب عليهم بخيلك ورجلك وشاركهم في الاموال
والاولاد وعدهم وما يعدهم الشيطن الا غرورا ۝ ان عبادي
ليس لك عليهم سلطن وكفى بربك وكيلا ۝ ربكم الذي
يزجي لكم الفلك في البحر لتبتغوا من فضله انه كان بكم
رحيما ۝ واذا مسكم الضر في البحر ضل من تدعون الا اياه

ع

तुम्हारा रब* तुम्हें भली-भाँति जानता है। वह चाहे, तो तुम पर दया करे, और चाहे, तो तुम्हें अज़ाब दे। और (हे नबी*!) हम ने तुझे उन पर कोई हवालेदार बना कर नहीं भेजा है[21]। ○

तेरा रब* उसे भली-भाँति जानता है जो कोई आसमानों और ज़मीन में है। हम ने कुछ नबियों* को दूसरों पर बड़ाई दी और हम ने दाऊद को ज़बूर* प्रदान की। ○

(उन से) कहो : तुम उन के सिवा जिन को भी (अपना कार्य-साधक) समझ बैठे हो उन्हें पुकार देखो उन्हें न तो तुम से किसी तकलीफ़ के दूर करने का अधिकार प्राप्त है और न (उस के) बदलने का[22]। ○

जिन को ये पुकारते हैं वे तो स्वयं अपने रब* तक पहुँचने का साधन ढूँढ़ते हैं कि कौन उन में ज़्यादा-से-ज़्यादा क़रीब हो जाय; और वे उस की दयालुता की आशा रखते हैं और उस के अज़ाब से डरते हैं[23]। वास्तव में तेरे रब* का अज़ाब डरने ही की चीज़ है। ○

और कोई बस्ती ऐसी नहीं जिसे हम क़ियामत* से पहले विनष्ट न कर दें,[24] या उसे अज़ाब

---

१९ अर्थात् उस की प्रशंसा करते हुए हाज़िर हो जाओगे।

२० अर्थात् मरने के बाद से ले कर क़ियामत* में उठाये जाने तक की अवधि कुछ घंटों से अधिक प्रतीत न होगी।

२१ अर्थात् नबी* का काम लोगों को केवल सत्य की ओर बुलाना है; लोगों के राह पर आने न आने का वह ज़िम्मेदार नहीं होता।

२२ इस से मालूम हुआ कि अल्लाह के सिवा किसी और से प्रार्थना करना और उसे दुःखों और कष्टों का वास्तविक निवारक समझना उसी तरह शिर्क* है जिस तरह अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की उपासना करना शिर्क* है।

२३ यहाँ मुश्रिकों* के जिन उपास्यों की ओर संकेत किया गया है उन से अभिप्रेत या तो फ़रिश्ते* और नबी हैं या बीते हुये समय के महा पुरुष हैं, जिन्हें ये अज्ञानता के कारण अपना कष्ट-निवारक और दाता समझ बैठे थे; और मूर्तियाँ बना कर उन की उपासना करने लग गये थे।

२४ अर्थात् सदैव बाक़ी रहने वाली बस्ती कोई नहीं है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

مَلَمَّا نَجّٰىكُمْ اِلَى الْبَرِّ اَعْرَضْتُمْ ۗ وَكَانَ الْاِنْسَانُ كَفُوْرًا ۝ اَفَاَمِنْتُمْ
اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ اَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ
وَكِيْلًا ۝ اَمْ اَمِنْتُمْ اَنْ يُّعِيْدَكُمْ فِيْهِ تَارَةً اُخْرٰى فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ
قَاصِفًا مِّنَ الرِّيْحِ فَيُغْرِقَكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ۙ ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهٖ
تَبِيْعًا ۝ وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِيْٓ اٰدَمَ وَحَمَلْنٰهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنٰهُمْ
مِّنَ الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلٰى كَثِيْرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيْلًا ۝ يَوْمَ
نَدْعُوْا كُلَّ اُنَاسٍ بِاِمَامِهِمْ ۚ فَمَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَاُولٰٓئِكَ
يَقْرَءُوْنَ كِتٰبَهُمْ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ۝ وَمَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ
فِي الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى وَاَضَلُّ سَبِيْلًا ۝ وَاِنْ كَادُوْا لَيَفْتِنُوْنَكَ عَنِ الَّذِيْٓ
اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَهٗ ۖ وَاِذًا لَّاتَّخَذُوْكَ خَلِيْلًا ۝ وَلَوْ
لَآ اَنْ ثَبَّتْنٰكَ لَقَدْ كِدْتَّ تَرْكَنُ اِلَيْهِمْ شَيْـًٔا قَلِيْلًا ۝ اِذًا لَّاَذَقْنٰكَ
ضِعْفَ الْحَيٰوةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيْنَا نَصِيْرًا ۝ وَاِنْ
كَادُوْا لَيَسْتَفِزُّوْنَكَ مِنَ الْاَرْضِ لِيُخْرِجُوْكَ مِنْهَا وَاِذًا لَّا يَلْبَثُوْنَ
خِلٰفَكَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝ سُنَّةَ مَنْ قَدْ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُّسُلِنَا وَلَا تَجِدُ
لِسُنَّتِنَا تَحْوِيْلًا ۝ اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ الشَّمْسِ اِلٰى غَسَقِ الَّيْلِ وَ
قُرْاٰنَ الْفَجْرِ ۭ اِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُوْدًا ۝ وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ
نَافِلَةً لَّكَ ۖ عَسٰٓى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ۝ وَقُلْ رَّبِّ اَدْخِلْنِيْ

न दें। यह बात किताब* में लिखी जा चुकी है।○

हमें निशानियाँ भेजने से इस के सिवा और किसी चीज़ ने नहीं रोका कि पहलों ने उन्हें झुठलाया है[३५]। समूद* को हम ने ऊँटनी दी—एक खुली निशानी[३६]—परन्तु उन्हों ने उस पर ज़ुल्म किया। और हम निशानियाँ लोगों को डराने ही के लिए भेजते हैं।○

(हे मुहम्मद!) याद करो हम ने तुम से कहा था कि तेरे रब* ने इन लोगों को घेर रखा है, और जो दृश्य हम ने तुझे दिखाया है[३७] उसे तो बस हम ने इन लोगों के लिए आज़माइश बना दिया है, और उस वृक्ष को भी जिस पर क़ुरआन* में लानत की गई है[३८]। हम इन्हें डराते हैं, परन्तु इस से इन की बड़ी सरकशी ही बढ़ती है।○

याद करो जब हम ने फ़िरिश्तों* से कहा: आदम को सजदः* करो तो उन सब ने सजदः* किया सिवाय इबलीस* के, उस ने कहा: क्या मैं उसे सजदः* करूँ जिस को तू ने मिट्टी से बनाया है[३९]?○

कहने लगा: उसे देखता भी है जिसे तू ने मेरे मुक़ाबिले में श्रेष्ठता प्रदान की है? यदि तू मुझे क़ियामत* के दिन तक मुहलत दे दे तो मैं उस की सन्तति को अपने वश में कर लूँगा, सिवाय थोड़े (लोगों) के।○ (अल्लाह ने) कहा: जा, उन में से जो भी तेरे पीछे चलेंगे—तो तुम सब का बदला दोज़ख़* है, भरपूर बदला।○ उन में से जिस किसी को बन पड़े अपनी आवाज़ से घबरा ले, उन पर अपने सवार और प्यादे चढ़ा ला, माल और औलाद में उन के साथ साझा लगा,[४०] उन से (झूठे-झूठे) वादे कर—और शैतान* उन से जो वादे

३५ झुठलाने के बाद उन पर हमारा अज़ाब आ कर रहा है। काफ़िरों* के चाहने पर भी हम जो इस प्रकार की निशानी (चमत्कार) नहीं भेज रहे हैं, तो वास्तव में हम उन्हें समझने और सँभलने की मुहलत दे रहे हैं।

३६ दे० सूरः अल-आराफ़ आयत ७३ से ७८ तक।

३७ दृश्य (Vision) से संकेत 'मेअ्राज' की ओर है (दे० फुट नोट २) जिस से काफ़िर* लोग बड़ी आज़माइश में पड़ गये; और जिस की उन्हों ने हँसी उड़ाई।

३८ अर्थात् 'ज़क्कूम' (थूहर) इसे दोज़ख़* में फिटकारे हुये लोग खायेंगे। यह वृक्ष अल्लाह की दयालुता का नहीं बल्कि उस की लानत का निशान होगा। और यह दोज़ख़ी लोगों के पेट में आग लगायेगा जैसे उन के पेट में पानी खौल रहा हो। दे० सूरः अद-दुख़ान आयत ४३-४६, सूरः अस-साफ़्फ़ात आयत ६२-६६, सूरः अल-वाक़िअः आयत ५२।

'ज़क्कूम' भी काफ़िरों* की गुमराही का कारण बना, वे उपहास करने लगे कि दोज़ख़* तो वह जगह है जहाँ अग्नि की लपटों के बीच पेड़ उगेंगे। यदि उन्हें सत्य की खोज होती तो वे कभी गुमराही में न पड़ते।

३९ दे० सूरः अल-बक़रः आयत ३०-३९, अन-निसा आयत ११६-१२६, अल-आराफ़ आयत १०-२५, अल-हिज्र आयत २६-४४ और इबराहीम आयत २२-२७।

४० अर्थात् माल और औलाद तो उन की हो परन्तु तू उन्हें ऐसा बहका दे कि माल वे तेरे रास्तों में ख़र्च करने लगें, और औलाद को तेरी सरपरस्ती में दे दें।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखो।

ता है वह एक धोखे के सिवा और कुछ भी नहीं — ○ निश्चय ही जो मेरे (ख़ास) बन्दे हैं न पर तेरा कुछ भी ज़ोर नहीं चल सकता, और तेरा रब* काफ़ी है इस के लिए कि उसे पना मामला सौंप दिया जाय। ○

तुम्हारा रब* वह है जो तुम्हारे लिए समुद्र में नौका (जहाज़ आदि) चलाता है ताकि तुम स का फ़ज़्ल (रोज़ी) तलाश करो। निस्सन्देह वह तुम पर दयावान् है। ○ और जब समुद्र तुम पर कोई तकलीफ़ पहुँचती है, तो उस (एक अल्लाह) के सिवा वे सब जिन्हें तुम कारते हो गुम हो जाते हैं,[४१] परन्तु जब वह तुम्हें बचा कर स्थल पर पहुँचा देता है, तो तुम नारा खींच लेते हो, मनुष्य बड़ा ही कृतघ्न है। ○

क्या तुम इस से निश्चिन्त हो कि वह कभी शुष्क-भूमि ही के किसी हिस्से में तुम्हें धँसा दे, ा तुम पर पथराव करने वाली आँधी भेज दे, और तुम अपने लिए कोई ज़िम्मा लेने वाला संरक्षक) न पाओ? ○ या तुम इस से निश्चिन्त हो कि वह फिर (कभी) तुम्हें उस में दोबारा ले ाये, और तुम पर सख़्त तूफ़ानी हवा भेज दे और तुम्हें तुम्हारे कुफ़्र* (अ-कृतज्ञता) के कारण ो दे, फिर तुम को ऐसा कोई न मिले जो इस के बारे में हमारे पीछे पड़ने वाला हो[४२]? ○

हम ने आदम की औलाद को श्रेष्ठता प्रदान की। और उसे भूमि और समुद्र में सवारी ी, और उसे पाक चीज़ों की रोज़ी दी, और उसे ऐसे बहुतों की अपेक्षा जिन्हें हम ने पैदा किया है बड़ाई दी। ○

जिस दिन हम समस्त लोगों को उन के नेताओं के साथ बुलायेंगे, तो जिस की किताब* उस दिन) उस के दाहिने हाथ में दी गई तो ऐसे लोग अपनी किताब* पढ़ेंगे[४३] और उन पर बाल बराबर भी ज़ुल्म न होगा। ○ और जो यहाँ अन्धा (बना) रहा आख़िरत* में भी वह अन्धा ही रहेगा, और राह से बहुत ज़्यादा भटका हुआ होगा। ○

(हे मुहम्मद!) ये (लोग) तो इसी में लगे थे कि हम ने जो वह्य* तुम्हारी ओर की है उस से तुम्हें फेर दें, ताकि तुम हम से सम्बन्ध लगा कर उस के सिवा कुछ और ही गढ़ो; और तब तो वे तुम्हें (अपना) घनिष्ठ मित्र बना लेते[४४]। ○ यदि हम तुम्हें सँभाले न रखते[४५] तो तुम उन की ओर कुछ-न-कुछ झुकने के क़रीब जा पहुँचते। ○ तब हम तुम्हें जीवन में भी दोहरा (अज़ाब का) मज़ा चखाते और मृत्यु के बाद भी दोहरा मज़ा चखाते, फिर तुम हमारे मुक़ाबिले में अपना कोई सहायक न पाते। ○

और ये (लोग) तो इस भू-भाग से तुम्हें घबरा देने ही पर लगे रहे हैं ताकि तुम्हें यहाँ से निकाल दें, (यदि इन्हों ने ऐसा किया) तब तुम्हारे बाद ये भी (यहाँ) बहुत ही कम ठहर सकते हैं[४६]। ○

---

४१ उस समय केवल एक अल्लाह ही याद आता है दूसरे सभी देवी-देवता गुम हो कर रह जाते हैं।

४२ अर्थात् जो हम पर दावा कर सके; हम से पूछ-गछ कर सके।

४३ दे० सूरः अल-हाक़्क़ः आयत १९-२८ और सूरः अल-इनशिक़ाक़ आयत ७-१३।

४४ मुश्रिकों* ने एक से अधिक बार इस बात की कोशिश की कि पैग़म्बर (सल्ल०) उन से समझौता कर लें और विशुद्ध एकेश्वरवाद की ओर लोगों को बुलाना छोड़ दें।

४५ दे० सूरः अन-नह्ल आयत १०२।

४६ यह भविष्य वाणी पूरी हो कर रही। मक्के के काफ़िरों* ने जब नबी (सल्ल०) को हिजरत* करने पर विवश किया, तो आप (सल्ल०) के मक्का छोड़ देने के बाद वे भी चैन से न रह सके। लगभग डेढ़ वर्ष के बाद ही मक्का के बड़े-बड़े सरदार घरों से निकल कर 'बद्र' के रण-क्षेत्र में हलाक हुये। अभी हिजरत* को आठ वर्ष से अधिक नहीं हुये थे कि मक्का पर इस्लाम को विजय प्राप्त हुई; और दो वर्ष के भीतर ही समस्त अरब देश मुश्रिकों* से पाक हो गया। कोई मुश्रिक* भी बाक़ी न रहा; जो रहा भी वह मुस्लिम* हो कर रहा।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

(यही) रीति रही है उन हमारे रसूलों* की[47] जिन्हें हम ने तुम से पहले भेजा था, और तुम हमारी रीति (और नियम) में कोई परिवर्तन न पाओगे। ○

नमाज़* क़ायम रखो जब सूर्य ढले रात के अँधेरे तक,[48] और प्रातःकाल के .क़ुरआन[49] को भी (ज़रूरी ठहरा लो) निस्सन्देह प्रातःकाल का .क़ुरआन (पढ़ना) साक्षात् होता है। ○

और कुछ रात इस (.क़ुरआन) के साथ जागते रहो,[50] यह तुम्हारे लिए तद्-अधिक (नफ़्ल*) है क़रीब है कि तुम्हारा रब* तुम्हें प्रशंसा-पूर्ण स्थान पर खड़ा करे[51]। ○

और कहो : रब* ! तू मुझे जहाँ कहीं ले जा सचाई के साथ ले जा और जहाँ कहीं से निकाल सचाई के साथ निकाल[52]। और अपनी ओर से मुझे सहायक सत्ता (अधिकार) प्रदान कर। ○

और कह दो : सत्य आ गया और असत्य (एवं अनृत) मिट गया। वास्तव में असत्य तो मिटने वाला ही होता है[53]। ○

हम उतारते हैं वह .क़ुरआन* जो ईमान* वालों के लिए आरोग्यता और दयालुता है परन्तु ज़ालिमों का उस से (उलटे) घाटा ही बढ़ता है। ○

जब हम मनुष्य को नेमत देते हैं, तो वह (हम से) कतराता और अपना पहलू बचाता है और जब उसे तकलीफ़ पहुँचती है तो निराश हो जाता है। ○ (हे नबी* !) कह दो : हर एक अपने ढंग पर काम कर रहा है, तुम्हारा रब* भली-भाँति जानता है कि कौन अधिक सीधे मार्ग पर है। ○

---

४७ अर्थात् रसूलों के मामले में हमारी यही रीति (Manner of acting) रही है।

४८ इस आदेश में चार वक़्त की नमाज़ें आ जाती हैं। सूर्य पहली बार दुपहर के बाद ढलता है यह 'ज़ुह्र' की नमाज़* का समय होता है। सूर्य का दूसरा ढलना पहाड़ों और ऊँचे टीलों आदि से होता है और 'अस्र' की नमाज़* का समय आरम्भ हो जाता है। फिर उस के पश्चात् सूर्य पृथ्वी के धरातल से ढलता हुआ छुप जाता है जो 'मग़रिब' का समय है। सूर्य का एक ढलना इस के बाद भी होता है जब कि क्षितिज पर उस की लालिमा तक शेष नहीं रहती, और बिलकुल अँधेरा छा जाता है और 'इशा' की नमाज़* का समय आरम्भ हो जाता है। पाँचवीं नमाज़* 'फ़ज्र' की है जिस का समय पौ फटने से ले कर सूर्य उदय होने तक है। इस का उल्लेख आगे आ रहा है।*

सूर्य और तारों के उपासकों की पूजा का जो समय होता है उस से हट कर नमाज़ का समय नियत किया गया है। यह बात इस आयत* से भी ज़ाहिर है और क़ुरआन* की दूसरी आयतों से भी। उदाहरण के लिए देखिए सूरः अन-नूर आयत ५८।*

४९ प्रातःकाल के क़ुरआन (Qur'an at dawn) से अभिप्रेत 'फ़ज्र' (प्रातःकाल) की नमाज़ है। क़ुरआन में विभिन्न स्थानों पर नमाज़* के अङ्गों ('तसबीह', 'हम्द', 'ज़िक्र', 'क़ियाम', 'रुकूअ' और 'सजदा' आदि) में से किसी एक का नाम ले कर पूरी नमाज़* की ओर संकेत किया गया है।*

५० 'तहज्जुद' की नमाज़* में क़ुरआन पढ़ कर।*

५१ अर्थात् दोनों लोकों में तुम्हारा सम्मान हो, समस्त लोग तुम्हारी प्रशंसा करें।

क़ियामत के दिन नबी (सल्ल०) अल्लाह के हुक्म से गुनहगार लोगों के लिए अल्लाह से सिफ़ारिश करेंगे तो इस में भी आप (सल्ल०) के गौरव का प्रदर्शन होगा।*

५२ इस प्रार्थना से मालूम होता है कि 'हिजरत' का समय बिलकुल क़रीब आ गया था। यह प्रार्थना हिजरत करने वालों की है।*

५३ सत्य के मुक़ाबिले में असत्य कभी ठहरने वाला नहीं होता। इस भविष्य वाणी के ६ वर्ष के बाद ही नबी सल्ल० को मक्का पर विजय प्राप्त हुई और आप (सल्ल०) ने काबः को मूर्तियों से पाक किया। दे० हा० मीम० अस-सजदः आयत ४१।*

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

ये तुझ से रूह (वह्य*) के विषय में पूछते हैं। कह दो : यह रूह मेरे रब* के हुक्म से है, और तुम्हें बस थोड़ा ही ज्ञान दिया गया है[५४]। ○

और (हे मुहम्मद!) यदि हम चाहें तो वह सब छीन लें जो हम ने तुम्हारी ओर वह्य* की है, फिर इस के लिए हमारे मुक़ाबिले में अपना कोई ज़िम्मा लेने वाला (संरक्षक) नहीं पाओगे। ○ (यह तो) बस तुम्हारे रब* की दयालुता है। वास्तव में उस का फ़ज़्ल तुम पर बहुत बड़ा है। ○

कह दो : यदि मनुष्य और जिन्न* (सब-के-सब) इस के लिए इकट्ठा हो जायें कि इस क़ुरआन*-जैसी कोई चीज़ लायें, तो वे इस-जैसी कोई चीज़ न ला सकेंगे चाहे वे परस्पर एक-दूसरे के सहायक ही क्यों न बन जायें। ○

हम ने इस क़ुरआन* में लोगों के (समझने के) लिए हर एक मिसाल तरह-तरह से बयान की, परन्तु अधिकतर लोगों के लिए कुफ़्र* के सिवा हर चीज़ अमान्य ही रही (वे कुफ़्र* पर ही अड़े रहे)। ○

مدخل صدق واخرجني مخرج صدق واجعل لي من لدنك
سلطنا نصيرا ۝ وقل جاء الحق وزهق الباطل ان الباطل كان
زهوقا ۝ وننزل من القران ما هو شفاء ورحمة للمؤمنين ولا
يزيد الظلمين الا خسارا ۝ واذا انعمنا على الانسان اعرض و
نا بجانبه واذا مسه الشر كان يؤسا ۝ قل كل يعمل على شاكلته
فربكم اعلم بمن هو اهدى سبيلا ۝ ويسئلونك عن الروح قل
الروح من امر ربي وما اوتيتم من العلم الا قليلا ۝ ولئن
شئنا لنذهبن بالذي اوحينا اليك ثم لا تجد لك به علينا وكيلا
الا رحمة من ربك ان فضله كان عليك كبيرا ۝ قل لئن اجتمعت
الانس والجن على ان ياتوا بمثل هذا القران لا ياتون بمثله و
لو كان بعضهم لبعض ظهيرا ۝ ولقد صرفنا للناس في هذا
القران من كل مثل فابى اكثر الناس الا كفورا ۝ وقالوا لن
نؤمن لك حتى تفجر لنا من الارض ينبوعا ۝ او تكون لك جنة
من نخيل وعنب فتفجر الانهر خللها تفجيرا ۝ او تسقط السماء
كما زعمت علينا كسفا او تاتي بالله والملئكة قبيلا ۝ او يكون
لك بيت من زخرف او ترقى في السماء ولن نؤمن لرقيك
حتى تنزل علينا كتبا نقرؤه قل سبحان ربي هل كنت الا بشرا

और उन्हों ने कहा : हम तुझ पर ईमान* नहीं ला सकते जब तक कि तू हमारे लिए ज़मीन से एक स्रोत न प्रवाहित कर दे; ○ या तेरे लिए खजूरों और अंगूरों का एक बाग़ हो; और तू उस के बीच नहरें निकाल दे; ○ या आसमान के टुकड़े-टुकड़े कर के हम पर गिरा दे, जैसा कि तेरा दावा है, या अल्लाह और फ़िरिश्तों* को (हमारे) सामने ले आये; ○ या तेरे लिए स्वर्ण का एक घर हो जाये; या तू आसमान पर चढ़ जाये, और हम तेरे चढ़ने को भी नहीं मानेंगे जब तक कि तू हम पर एक किताब* न उतार लाये जिसे हम पढ़ सकें।—

(हे मुहम्मद!) कह दो: महिमावान् है मेरा रब*! क्या मैं इस के सिवा और भी कुछ हूँ कि एक मनुष्य हूँ जो रसूल* भी है? ○

लोगों को जब कभी उन के पास मार्ग-दर्शन आया तो इस बात से कि वे ईमान* लायें सिवाय इस के किसी चीज़ ने नहीं रोका कि वे कहने लगे : क्या अल्लाह ने आदमी को रसूल* बना कर भेज दिया है? ○

कह दो : यदि ज़मीन में फ़िरिश्ते* चलते-फिरते और आबाद होते, तो हम उन के लिए आसमान से किसी फ़िरिश्ते* ही को रसूल* बना कर भेजते[५५]। ○

---

५४ यहाँ 'रूह' से अभिप्रेत या तो वह्य* है या फिर इस से अभिप्रेत वह्य* लाने वाला फ़िरिश्ता* हज़रत जिबरील अ० है। 'रूह' शब्द के प्रयोग के दृष्टान्त के लिए देखिए सूरः अल-बक़रः आयत ८७, अन-नह्ल आयत २, १०२, अल-मोमिन आयत १५, अश-शूरा आयत ५२।

५५ अर्थात् ज़मीन में यदि मनुष्य की जगह फ़िरिश्ते* बसाये गये होते, तो हम उन्हें सीधा मार्ग दिखाने के लिए किसी फ़िरिश्ते* को ही रसूल* बना कर भेजते। जो उन्हें सत्य-सन्देश भी सुनाता और धर्म का पालन कर के उन्हें दिखाता भी। इस के अतिरिक्त मनुष्य की परीक्षा इसी में है कि वह परोक्ष पर ईमान* ला कर धर्म पर चले, फ़िरिश्तों* को देख लेने के बाद परोक्ष पर ईमान* लाने का प्रश्न ही नहीं उठता।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

لفيفا ﴿﴾ وبالحق انزلناه وبالحق نزل وما ارسلناك الا مبشرا
ونذيرا ﴿﴾ وقرانا فرقناه لتقراه على الناس على مكث ونزلناه تنزيلا ﴿﴾
قل امنوا به او لا تؤمنوا ان الذين اوتوا العلم من قبله اذا يتلى
عليهم يخرون للاذقان سجدا ﴿﴾ ويقولون سبحان ربنا ان كان
وعد ربنا لمفعولا ﴿﴾ ويخرون للاذقان يبكون ويزيدهم
خشوعا ﴿﴾ قل ادعوا الله او ادعوا الرحمن اياما تدعوا فله الاسماء
الحسنى ولا تجهر بصلاتك ولا تخافت بها وابتغ بين ذلك سبيلا ﴿﴾
وقل الحمد لله الذي لم يتخذ ولدا ولم يكن له شريك في
الملك ولم يكن له ولي من الذل وكبره تكبيرا ﴿﴾

कि तेरे लिए विनाश है। ○

फिर उस ने चाहा कि उन्हें[59] उस ज़मीन से पधरा दे, परन्तु हम ने उसे और उस के साथ वालों को, इकट्ठा डुबो दिया। ○

और उस के बाद बनी इसराईल* से कहा : तुम ज़मीन में बसो; फिर जब आख़िरत* का वादा[60] आ जायेगा तो हम तुम सब को एक साथ ला हाज़िर करेंगे। ○

इस (क़ुरआन*) को हम ने सत्य के साथ उतारा है, और सत्य ही के साथ यह उतरा है। और (हे मुहम्मद!) तुम्हें हम ने केवल शुभ-सूचना देने वाला और सचेत करने वाला बना कर भेजा है। ○ ५

और क़ुरआन* को हम ने हिस्से-हिस्से किया, ताकि तुम ठहर-ठहर कर इसे लोगों के सामने पढ़ो, और इसे हम ने अत्यन्त उत्तम रीति से उतारा है। ○ (हे नबी*!) कह दो : तुम इस पर ईमान* लाओ या ईमान* न लाओ, जिन्हें इस से पहले ज्ञान दिया गया है,[61] उन्हें जब यह सुनाया जाता है, तो वे ठोड़ियों के बल सजदे* में गिर जाते हैं, ○ और पुकार उठते हैं : महिमावान् है हमारा रब*! निस्सन्देह हमारे रब* का वादा तो पूरा हो कर रहने वाला है[62]। ○ और वे रोते हुए ठोड़ियों के बल गिर जाते हैं, और यह (क़ुरआन) उन की विनम्रता को और बढ़ा देता है[63]। ○

(हे नबी*!) कह दो : तुम अल्लाह कह कर पुकारो, या रहमान* कह कर पुकारो, जो भी कह कर पुकारो उस के लिए अच्छे नाम हैं। ○

और (हे मुहम्मद!) अपनी नमाज़* न तो बहुत पुकार कर पढ़ो और न बहुत चुपके-चुपके से, बल्कि इस के बीच की राह अपनाओ[64]। ○ १०

और कहो : प्रशंसा (हम्द*) अल्लाह के लिए है, जिस ने न तो किसी को अपना बेटा बनाया और न कोई राज्य में उस का शरीक है, और न इस कारण कि कमज़ोर और विवश है कोई उस का संरक्षक-मित्र है[65]। उस की अच्छी तरह बड़ाई करो। ○

---

५९ अर्थात् मूसा (अ०) और बनी इसराईल* को।

६० अर्थात् आख़िरत* के वादे का समय।

६१ यह संकेत किताब वालों* में से उन लोगों की ओर है जो सत्य-प्रिय थे। और क़ुरआन* पर ईमान* ले आये।

६२ अर्थात् जब वे क़ुरआन* सुनते हैं, तो समझ जाते हैं कि जिस नबी* के आने की सूचना पिछले नबियों* की किताबों* में दी गई थी, वह आ गया।

६३ ऐसे सत्यवादी महापुरुषों की सराहना क़ुरआन में विभिन्न स्थानों पर की गई है। उदाहरणतः दे० सूरः आले इमरान आयत ११३-११५, १९९, सूरः अल-माइदः आयत ८२-८४ और अल-क़सस आयत ५२-५३।

६४ मक्का में जब नमाज़* अदा करते समय क़ुरआन* उच्च स्वर से पढ़ते तो काफ़िर* गालियाँ बकने और शोर मचाने लगते थे, इस पर हुक्म हुआ कि नमाज़* में क़ुरआन* बहुत उच्च स्वर से न पढ़ो ताकि काफ़िरों* को हँसी उड़ाने का अवसर न मिल सके; परन्तु इतनी धीमी आवाज़ से भी न पढ़ो कि तुम्हारे अपने साथ के लोग सुन न सकें।

६५ अर्थात् वह कमज़ोर और विवश नहीं है कि किसी सहायक का मुहताज हो।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

رسولا ۝ وما منع الناس ان يؤمنوا اذ جاءهم الهدى الا ان قالوا
ابعث الله بشرا رسولا ۝ قل لو كان في الارض ملئكة يمشون
مطمئنين لنزلنا عليهم من السماء ملكا رسولا ۝ قل كفى
بالله شهيدا بيني وبينكم انه كان بعباده خبيرا بصيرا ۝ ومن
يهد الله فهو المهتد ومن يضلل فلن تجد لهم اولياء من
دونه ونحشرهم يوم القيمة على وجوههم عميا وبكما وصما ماوىهم
جهنم كلما خبت زدنهم سعيرا ۝ ذلك جزاؤهم بانهم كفروا بايتنا
وقالوا ءاذا كنا عظاما ورفاتا ءانا لمبعوثون خلقا جديدا ۝ اولم
يروا ان الله الذي خلق السموت والارض قادر على ان يخلق
مثلهم وجعل لهم اجلا لا ريب فيه فابى الظلمون الا كفورا ۝
قل لو انتم تملكون خزائن رحمة ربي اذا لامسكتم خشية الانفاق
وكان الانسان قتورا ۝ ولقد اتينا موسى تسع ايت بينت فسئل
بني اسراءيل اذ جاءهم فقال له فرعون اني لاظنك يموسى
مسحورا ۝ قال لقد علمت ما انزل هؤلاء الا رب السموت والارض
بصائر واني لاظنك يفرعون مثبورا ۝ فاراد ان يستفزهم
من الارض فاغرقنه ومن معه جميعا ۝ وقلنا من بعده
لبني اسراءيل اسكنوا الارض فاذا جاء وعد الاخرة جئنا بكم

(हे नबी* !) कह दो : मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह ही एक गवाह (की हैसियत से) काफ़ी है। निस्सन्देह वह अपने बन्दों की ख़बर रखने वाला और (सब-कुछ) देखने वाला है। ○

जिसे अल्लाह राह दिखाये, वही राह पाने वाला है; और जिसे वह भटका दे,[५६] ऐसे लोगों के लिए उस के सिवा तू किसी को संरक्षक–मित्र नहीं पा सकता, क़ियामत* के दिन हम उन्हें औंधे मुँह इस दशा में घसीट लायेंगे कि वे अन्धे, और गूँगे और बहरे होंगे: उन का (अन्तिम) ठिकाना दोज़ख़* है; जब कभी (उस की आँच) धीमी होने लगेगी, हम उसे उन के लिए और अधिक दहका देंगे। ○

यह उन का बदला है इस लिए कि उन्हों ने हमारी आयतों* के साथ कुफ़्र* किया और कहा : क्या हम जब (मर कर) हड्डियाँ और चूर्ण-विचूर्ण हो जायेंगे, तो क्या नये सिरे से पैदा कर के हमें उठाया जायगा। ○

क्या उन्हें यह नहीं सूझा कि जिस अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है वह उन जैसों को भी पैदा करने का सामर्थ्य रखता है, और उस ने उन के लिए एक मुद्दत नियत कर रखी है जिस (के आने) में कोई सन्देह नहीं है ? परन्तु ज़ालिमों के लिए तो कुफ़्र* के सिवा हर चीज़ अमान्य ही रही। ○

(हे नबी* ! उन से) कहो : यदि कहीं मेरे रब* की दयालुता के ख़ज़ानों पर तुम्हारा अधिकार होता, तो तुम व्यय हो जाने के भय से उन को रोके ही रहते.[५७] मनुष्य बड़ा ही दिल का तंग है। ○

हम ने मूसा को नौ खुली निशानियाँ प्रदान की थीं[५८]। तो तुम बनी इसराईल* से पूछ लो कि जब वह उन के पास आया, तो फ़िरऔन ने उस से (यही) कहा : हे मूसा ! मैं तो तुम्हें जादू का मारा हुआ समझता हूँ। ○

(मूसा ने) कहा : तू जान चुका है कि आसमानों और ज़मीन के रब* के सिवा किसी और ने इन (निशानियों) को दलील बना कर नहीं उतारा है, और हे फ़िरऔन ! मैं तो समझता हूँ

---

५६ दे० सूरः अल-अनआम फुट नोट ८, १३, २५।

५७ मुश्रिक* लोग अपनी विशेष मनोवृत्ति के कारण नबी* सल्ल० की रिसालत* का इन्कार करते थे। किसी की प्रतिष्ठा और मान-मर्यादा को स्वीकार करते हुये उन का दिल दुखता था; वे कहते थे कि अल्लाह ने उन को पैग़म्बरी के लिए क्यों चुना।

५८ सूरः अल-आराफ़ में इन निशानियों का उल्लेख हुआ है : (१) हज़रत मूसा अ० का 'असा' (लाठी) जो अजगर बन जाता था, (२) 'यदे बैज़ा' हज़रत मूसा का हाथ जो बग़ल से निकालते ही सूर्य के समान चमकने लगता था, (३) जादूगरों के जादू को असफल कर देना, (४) एक घोषणा के अनुसार समस्त देश का अकाल से पीड़ित होना और फिर क्रमशः (५) तूफ़ान, (टिड्डी-दल), (६) छोटे कीड़े-मकोड़ों, (८) मेंढक और (९) रक्त की आपत्ति का आना।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

३६ : ६	राज्य उसी का है, उसके सिवा कोई इलाह् (पूज्य) नहीं।
३६ : ६२, ६३	हर चीज़ का पैदा करनेवाला, हर एक का संरक्षक, ज़मीन और आसमान की कुंजियाँ उसी के पास हैं।
३६ : ६७	क़ियामत के दिन तमाम ज़मीन उसकी मुट्ठी में होगी।
४० : २, ३	अपार शक्ति का मालिक, सब-कुछ जाननेवाला, पापों (गुनाहों) का क्षमा करनेवाला।
४० : १५	ऊँचे दरजों का मालिक और अर्श वाला।
४० : १६, २०	आँखों की चोरी और सीने के भेद जानता है, (सबकुछ) सुनने वाला और देखने वाला।
४१ : ४३	क्षमा कर देने वाला और दु:खदायी अज़ाब देनेवाला।
४१ : ५३, ५४	हर चीज़ से सूचित, हर चीज़ को घेरे हुए।
४२ : ६	काम बनाने वाला, मरे हुओं को जिलानेवाला।
४२ : ११, १२	उस जैसी कोई चीज़ नहीं, आसमानों और ज़मीन की कुंजियाँ उसी के हाथ में हैं।
४२ : १६	अपने बन्दों पर मेहरबान, जिसे चाहता है रोज़ी देता है।
४२ : २४-३१	झूठ को मिटाता है, तौबः (प्रायश्चित्त) कबूल करता है, निराशा के बाद वर्षा करता है।
४२ : ४६-५१	जो चाहता है पैदा करता है, जिसे चाहता है बेटियाँ देता है और जिसे चाहता है बेटे।
४३ : ८४, ८५	आसमानों में भी इलाह् (पूज्य) और ज़मीन में भी, क़ियामत का ज्ञान उसी को है।
४४ : ६-८	उसके सिवा कोई इलाह् नहीं, तुम्हारा और तुम्हारे बाप-दादा का रब।
४५ : ३६, ३७	आसमानों और ज़मीन का रब, पूरे ससार का रब।
४८ : १४	आसमानों और ज़मीन का राज्य उसी का है, क्षमा करनेवाला, दयावन्त।
५१ : ५८	रोज़ी देने वाला, बलवान और दृढ़।
५३ : ४३-५३	वह हँसाता और रुलाता है, मारता और जिलाता है, धनी और धनहीन बनाता है।
५४ : ५५	हर प्रकार का सामर्थ्य रखनेवाला बादशाह।
५५ : ७८	प्रताप, प्रतिष्ठा और बरकत वाला।
५७ : १-६	अपार शक्ति का मालिक, हिकमत वाला, सबसे पहला (आदि), सबसे पिछला (अन्त), व्यक्त और अव्यक्त, दिलों के भेद जाननेवाला।
५६ : २२-२४	खुले और छिपे का जाननेवाला, कृपाशील, दयावान, बादशाह और हर त्रुटि से पाक, शान्ति प्रदान करनेवाला, संरक्षक, पैदा करनेवाला, आदि।
६२ : १	उच्च, हिकमत वाला।
६४ : १	राज्य उसी का है, और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है (सर्वशक्तिमान) है।
६५ : १२	सात आसमान पैदा किये और वैसे ही ज़मीनें, उसका ज्ञान हर चीज़ को घेरे हुए है।

وَبِالْحَقِّ أَنزَلْنَاهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ۗ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا
وَنَذِيرًا ۝ وَقُرْآنًا فَرَقْنَاهُ لِتَقْرَأَهُ عَلَى النَّاسِ عَلَىٰ مُكْثٍ وَنَزَّلْنَاهُ تَنزِيلًا ۝
قُلْ آمِنُوا بِهِ أَوْ لَا تُؤْمِنُوا ۚ إِنَّ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ مِن قَبْلِهِ إِذَا يُتْلَىٰ
عَلَيْهِمْ يَخِرُّونَ لِلْأَذْقَانِ سُجَّدًا ۝ وَيَقُولُونَ سُبْحَانَ رَبِّنَا إِن كَانَ
وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُولًا ۝ وَيَخِرُّونَ لِلْأَذْقَانِ يَبْكُونَ وَيَزِيدُهُمْ
خُشُوعًا ۝ قُلِ ادْعُوا اللَّهَ أَوِ ادْعُوا الرَّحْمَٰنَ ۖ أَيًّا مَّا تَدْعُوا فَلَهُ الْأَسْمَاءُ
الْحُسْنَىٰ ۚ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذَٰلِكَ سَبِيلًا ۝
وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُن لَّهُ شَرِيكٌ فِي
الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُن لَّهُ وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ ۖ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيرًا ۝

कि तेरे लिए विनाश है। ○

फिर उस ने चाहा कि उन्हें[५९] उस ज़मीन से परास्त कर दे, परन्तु हम ने उसे और उस के साथ वालों को, इकट्ठा डुबो दिया। ○

और उस के बाद बनी इसराईल* से कहा : तुम ज़मीन में बसो; फिर जब आख़िरत* का वादा[६०] आ जायेगा तो हम तुम सब को एक साथ ला हाज़िर करेंगे। ○

इस (क़ुरआन*) को हम ने सत्य के साथ उतारा है, और सत्य ही के साथ यह उतरा है। और (हे मुहम्मद!) तुम्हें हम ने केवल शुभ-सूचना देने वाला और सचेत करने वाला बना कर भेजा है। ○

और क़ुरआन* को हम ने हिस्से-हिस्से किया, ताकि तुम ठहर-ठहर कर इसे लोगों के सामने पढ़ो, और इसे हम ने अत्यन्त उत्तम रीति से उतारा है। ○ (हे नबी*!) कह दो : तुम इस पर ईमान* लाओ या ईमान* न लाओ, जिन्हें इस से पहले ज्ञान दिया गया है,[६१] उन्हें जब यह सुनाया जाता है, तो वे ठोड़ियों के बल सजदे* में गिर जाते हैं, ○ और पुकार उठते हैं : महिमावान् है हमारा रब*! निस्सन्देह हमारे रब* का वादा तो पूरा हो कर रहने वाला है[६२]। ○ और वे रोते हुए ठोड़ियों के बल गिर जाते हैं, और यह (क़ुरआन) उन की विनम्रता को और बढ़ा देता है[६३]। ○

(हे नबी*!) कह दो : तुम अल्लाह कह कर पुकारो, या रहमान* कह कर पुकारो, जो भी कह कर पुकारो उस के लिए अच्छे नाम हैं। ○

और (हे मुहम्मद!) अपनी नमाज़* न तो बहुत पुकार कर पढ़ो और न बहुत चुपके-चुपके से, बल्कि इस के बीच की राह अपनाओ[६४]। ○

और कहो : प्रशंसा (हम्द*) अल्लाह के लिए है, जिस ने न तो किसी को अपना बेटा बनाया और न कोई राज्य में उस का शरीक है, और न इस कारण कि कमज़ोर और विवश है कोई उस का संरक्षक-मित्र है[६५]। उस की अच्छी तरह बड़ाई करो। ○

---

५९ अर्थात् मूसा (अ०) और बनी इसराईल* को।

६० अर्थात् क़ियामत* के आने का समय।

६१ यह संकेत किताब वालों* में से उन लोगों की ओर है जो सत्य-प्रिय थे। और क़ुरआन* पर ईमान* ले आये।

६२ अर्थात् जब वे क़ुरआन* सुनते हैं, तो समझ जाते हैं कि जिस नबी* के आने की सूचना पिछले नबियों* की किताबों* में दी गई थी, वह आ गया।

६३ ऐसे सत्यवादी महापुरुषों की सराहना क़ुरआन में विभिन्न स्थानों पर की गई है। उदाहरणतः दे० सूरः आले इमरान आयत ११३–११५, १९९, सूरः अल-माइदा आयत ८२–८४ और अल-क़सस आयत ५२–५४।

६४ मक्का में जब नमाज़* अदा करते समय क़ुरआन* उच्च स्वर में पढ़ते तो काफ़िर* गालियाँ बकने और शोर करने लगते थे, इस पर हुक्म हुआ कि नमाज़* में क़ुरआन* बहुत उच्च स्वर में न पढ़ो ताकि काफ़िरों* को हँसी उड़ाने का अवसर न मिल सके, परन्तु इतने धीमे आवाज़ में भी न पढ़ो कि तुम्हारे अपने साथ के लोग सुन न सकें।

६५ अर्थात् वह कमज़ोर और विवश नहीं है कि किसी सहायक का मुहताज हो।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

१८--अल-कह्फ़

(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः का नाम 'अल-कह्फ़' अर्थात् गुफा (The Cave) उन नवयुवकों की कहानी से लिया गया है जिन्हों ने अपने धर्म की रक्षा के लिए एक गुफा में पनाह ली थी। गुफा में पनाह लेने वाले नवयुवक हज़रत मसीह अ० के अनुयायियों में से थे। उन के वृत्तान्त में सब के लिए और विशेषतः ईसाइयों के लिए बड़ी शिक्षा है। ये नवयुवक हज़रत मसीह अ० के सच्चे अनुयायियों में से थे; उन का धर्म वह नहीं था जिसे आज हम बिगड़ी हुई ईसाइयत (Christianity) के रूप में देख रहे हैं।

उतरने का समय (The date of Revelation)

सूरः के अध्ययन से मालूम होता है कि यह सूरः मक्का में उस समय उतरी है जब काफ़िरों* का ज़ुल्म और अत्याचार बहुत बढ़ चुका था। इस्लाम* के अनुयायियों को तरह-तरह की यातनाओं और कष्टों का सामना करना पड़ रहा था। गुफा वालों की कहानी सुना कर ईमान* वालों की ढारस बँधाई गई। और उन्हें बताया गया कि पहले के ईमान* वालों को अपने ईमान* की रक्षा के लिए क्या-कुछ करना पड़ा है। अनुमान है कि यह सूरः हब्श: (Abyssinia) की हिजरत* से कुछ ही पहले उतरी होगी।

केन्द्रीय विषय तथा सम्पर्क

यह डरावा और शुभ-सूचना की सूरः है। इस का केन्द्रीय विषय क़ियामत* है और यह सब्र* और नमाज़* पर आधारित है। इस सूरः में विशेष रूप से सब्र* का दिग्दर्शन कराया गया है और आगे आने वाली सूरः में नमाज़* पर ज़ोर दिया गया है। पिछली सूरः में यहूदियों के लिए डरावा था, प्रस्तुत सूरः में ईसाइयों के लिए चेतावनी है।

वार्त्ताएँ (Subject-matter)

यह सूरः मुशरिकों* के कुछ प्रश्नों के जवाब में उतरी है। मक्का के मुशरिकों* ने ये प्रश्न नबी* सल्ल० की परीक्षा लेने के लिए किये थे। और ये प्रश्न किताब वालों* के सिखाये हुए थे। उन का पहला प्रश्न गुफा वालों के विषय में था। उन के बारे में उन्हें बताया गया कि वे उस तौहीद* (एकेश्वरवाद) के मानने वाले थे, जिस का आमन्त्रण आज तुम्हें मुहम्मद का यह रसूल दे रहा है। उन की जाति वालों ने उन के साथ वही-कुछ व्यवहार किया था जो व्यवहार आज मुस्लिम* गरोह के साथ तुम कर रहे हो। ईमान* वालों के लिए भी इस में शिक्षा है कि उन्हें प्रत्येक दशा में सत्य पर जमे रहना चाहिए, चाहे इस के लिए उन्हें घर-बार सब छोड़ देना पड़े। इस

---

* [illegible]

* इस तरह चिह्नित किये गये शब्दों को परिशिष्ट की सूची में देखें।

क़िस्से से आख़िरत* की भी पुष्टि होती है। अल्लाह यदि गुफ़ा वालों को मौत की नींद सुला कर एक लम्बी अवधि के बाद फिर जगा सकता है, तो वह मरने के बाद दोबारा लोगों को जीवित भी कर सकता है।

ऐतिहासिक दृष्टि से गुफ़ा वालों के क़िस्से का सब से पुरातन प्रमाण वे लेख हैं जो सीरिया के एक पादरी ने सुरयानी भाषा में लिखे थे। यह व्यक्ति गुफ़ा वालों के देहान्त के कुछ ही वर्षों के बाद पैदा हुआ था। इस के लेखों में गुफ़ा वालों के वृत्तान्त का विस्तार-पूर्वक उल्लेख मिलता है। इन लेखों के आधार पर पश्चिम के लेखकों ने भी अपने यहाँ गुफ़ा वालों का क़िस्सा नक़ल किया है। प्रसिद्ध इतिहासकार गिबन (Gibbon) भी सात सोने वालों (Seven Sleepers) के नाम से इस क़िस्से का उल्लेख करता है[१]। क़िस्से का संक्षेप यह है: रूम राज्य के शासक डीसियस (Decius) के समय में हज़रत मसीह अ० के अनुयायियों पर ज़ुल्म और अत्याचार हो रहा था। उन्हें तरह-तरह के कष्ट पहुँचाये जा रहे थे। उस समय सात युवक अपने ईमान* की रक्षा के लिए एक गुफ़ा में जा बैठे थे। वे उस गुफ़ा में एक लम्बी अवधि तक पड़े रहे यहाँ तक कि अल्लाह ने उस समय उन्हें जिला उठाया जब कि रूम राज्य मसीही धर्म को स्वीकार कर चुका था। जिस रूमी शासक के समय में वे जगे हैं उस का नाम थ्यवडोसियस (Theodosius) था।

मक्का के मुशिरकों* ने दूसरा प्रश्न जो नबी* सल्ल० की परीक्षा लेने के लिए किया था वह हज़रत मूसा अ० की एक विशेष यात्रा के सम्बन्ध में था जिस में वे एक विशेष व्यक्ति से मिले थे[२]। इस क़िस्से से जो मूल शिक्षा हमें मिलती है वह यही कि यह वर्तमान संसार जिन हिकमतों और उद्देश्यों के अन्तर्गत चल रहा है वह लोगों की दृष्टि से ओझल हैं। यही कारण है यहाँ क़दम-क़दम पर लोगों को आश्चर्य होने लगता है कि अमुक बात इस तरह क्यों हुई? और यह तो बड़ा ही बुरा हुआ। हालांकि यदि परोक्ष का परदा हटा दिया जाये, तो लोगों का भ्रम दूर हो जाये; और उन की समझ में यह बात आ जाये कि यहाँ जो-कुछ हो रहा है वह न्याय और हिकमत* के सर्वथा अनुकूल है।

मुशिरकों* का तीसरा प्रश्न 'ज़ुल-क़रनैन' के बारे में था। इस क़िस्से के द्वारा भी लोगों को और विशेष रूप से मक्का के काफ़िरों* को समझाया गया है कि 'ज़ुल-क़रनैन' की तरह उन्हें भी अपने वास्तविक स्वामी को न भूलना चाहिए, बल्कि उन्हें उस के आदेशों का पालन करना चाहिए।

ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाये तो क़ुरआन* के अवतरित होने से पूर्व जितने प्रसिद्ध विजेता हुये हैं उन में सब से अधिक जिस व्यक्ति में 'ज़ुल-क़रनैन' की वे विशेषतायें पाई जाती हैं, जिन का उल्लेख क़ुरआन* में हुआ है वह ईरान के राज्याधिकारी ख़ोरस अथवा ख़ुसरू (Darius) या साइरस (Syrus) है। इस लिए सम्भव है कि क़ुरआन में जिस 'ज़ुल-क़रनैन' का हाल बयान हुआ है वह यही ईरानी राज्याधिकारी साइरस ही हो। 'ज़ुल-क़रनैन' का अर्थ होता है

१ दे० Gibbon's Decline and Fall, chxxxiii।

२ यह क़िस्सा बाइबिल में नहीं है। तलमूद (Talmud) में इस का उल्लेख है किन्तु बिगड़े हुये रूप में।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

१८--अल-कह्फ़

(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः का नाम 'अल-कह्फ़' अर्थात् गुफ़ा (The Cave) उन नवयुवकों की कहानी से लिया गया है जिन्हों ने अपने धर्म की रक्षा के लिए एक गुफ़ा में पनाह ली थी¹ । गुफ़ा में पनाह लेने वाले नवयुवक हज़रत मसीह अ० के अनुयायियों में से थे । उन के वृत्तान्त में सब के लिए और विशेषतः ईसाइयों के लिए बड़ी शिक्षा है । ये नवयुवक हज़रत मसीह अ० के सच्चे अनुयायियों में से थे; उन का धर्म वह नहीं था जिसे आज हम बिगड़ी हुई ईसाइयत (Christianity) के रूप में देख रहे हैं ।

उतरने का समय (The date of Revelation)

सूरः के अध्ययन से मालूम होता है कि यह सूरः मक्का में उस समय उतरी है जब काफ़िरों* का ज़ुल्म और अत्याचार बहुत बढ़ चुका था । इस्लाम* के अनुयायियों को तरह-तरह की यातनाओं और कष्टों का सामना करना पड़ रहा था । गुफ़ा वालों की कहानी सुना कर ईमान* वालों को ढारस बँधाई गई । और उन्हें बताया गया कि पहले के ईमान* वालों को अपने ईमान* की रक्षा के लिए क्या-कुछ करना पड़ा है । अनुमान है कि यह सूरः हबशः (Abyssinia) की हिजरत* से कुछ ही पहले उतरी होगी ।

केन्द्रीय विषय तथा सम्पर्क

यह डरावा और शुभ-सूचना की सूरः है । इस का केन्द्रीय विषय क़ियामत* है और वह सब्र* और नमाज़* पर आधारित है । इस सूरः में विशेष रूप से सब्र* का दिग्दर्शन कराया गया है और आगे आने वाली सूरः में नमाज़* पर ज़ोर दिया गया है । पिछली सूरः में यहूदियों के लिए डरावा था, प्रस्तुत सूरः में ईसाइयों के लिए चेतावनी है ।

वार्तायें (Subject-matter)

यह सूरः मुश्रिकों* के कुछ प्रश्नों के जवाब में उतरी है । मक्का के मुश्रिकों* ने ये प्रश्न नबी* सल्ल० की परीक्षा लेने के लिए किये थे । और ये प्रश्न किताब वालों* के सिखाये हुये थे । उन का पहला प्रश्न गुफ़ा वालों के विषय में था । उन के बारे में उन्हें बताया गया कि वे उस तौहीद* (एकेश्वरवाद) के मानने वाले थे, जिस का आमन्त्रण आज तुम्हें अल्लाह का यह रसूल दे रहा है । उन की जाति वालों ने उन के साथ वही-कुछ व्यवहार किया था जो व्यवहार आज मुस्लिम* गरोह के साथ तुम कर रहे हो । ईमान* वालों के लिए भी इस में शिक्षा है [illegible] में सत्य पर जमे रहना चाहिए, चाहे इस के लिए

१ दे० आयत १०-२७ ।

* इस का अर्थ आख़िर में

क़िस्से से आख़िरत* की भी पुष्टि होती है। अल्लाह यदि गुफा वालों को मौत की नींद सुला कर एक लम्बी अवधि के बाद फिर जगा सकता है, तो वह मरने के बाद दोबारा लोगों को जीवित भी कर सकता है।

ऐतिहासिक दृष्टि से गुफा वालों के क़िस्से का सब से पुरातन प्रमाण वे लेख हैं जो सीरिया के एक पादरी ने सुरयानी भाषा में लिखे थे। यह व्यक्ति गुफा वालों के देहान्त के कुछ ही वर्षों के बाद पैदा हुआ था। इस के लेखों में गुफा वालों के वृत्तान्त का विस्तार-पूर्वक उल्लेख मिलता है। इन लेखों के आधार पर पश्चिम के लेखकों ने भी अपने यहाँ गुफा वालों का क़िस्सा नक़्ल किया है। प्रसिद्ध इतिहासकार गिबन (Gibbon) भी सात सोने वालों (Seven Sleepers) के नाम से इस क़िस्से का उल्लेख करता है[1]। क़िस्से का संक्षेप यह है: रूम राज्य के शासक डीसियस (Decius) के समय में हज़रत मसीह अ० के अनुयायियों पर ज़ुल्म और अत्याचार हो रहा था। उन्हें तरह-तरह के कष्ट पहुँचाये जा रहे थे। उस समय सात युवक अपने ईमान* की रक्षा के लिए एक गुफा में जा बैठे थे। वे उस गुफा में एक लम्बी अवधि तक पड़े रहे यहाँ तक कि अल्लाह ने उस समय उन्हें जिला उठाया जब कि रूम राज्य मसीही धर्म को स्वीकार कर चुका था। जिस रूमी शासक के समय में वे जगे हैं उस का नाम थ्यवडोसियस (Theodosius) था।

मक्का के मुशिरकों* ने दूसरा प्रश्न जो नबी* सल्ल० की परीक्षा लेने के लिए किया था वह हज़रत मूसा अ० की एक विशेष यात्रा के सम्बन्ध में था जिस में वे एक विशेष व्यक्ति से मिले थे[2]। इस क़िस्से से जो मूल शिक्षा हमें मिलती है वह यही कि यह वर्तमान संसार जिन हिकमतों और उद्देश्यों के अन्तर्गत चल रहा है वह लोगों की दृष्टि से ओझल हैं। यही कारण है यहाँ क़दम-क़दम पर लोगों को आश्चर्य होने लगता है कि अमुक बात इस तरह क्यों हुई? और यह तो बड़ा ही बुरा हुआ। हालांकि यदि परोक्ष का परदा हटा दिया जाये, तो लोगों का भ्रम दूर हो जाये; और उन की समझ में यह बात आ जाये कि यहाँ जो-कुछ हो रहा है वह न्याय और हिकमत* के सर्वथा अनुकूल है।

मुशिरकों* का तीसरा प्रश्न 'ज़ुल-क़रनैन' के बारे में था। इस क़िस्से के द्वारा भी लोगों को और विशेष रूप से मक्का के काफ़िरों* को समझाया गया है कि 'ज़ुल-क़रनैन' की तरह उन्हें भी अपने वास्तविक स्वामी को न भूलना चाहिए, बल्कि उन्हें उस के आदेशों का पालन करना चाहिए।

ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाये तो क़ुरआन* के अवतरित होने से पूर्व जितने प्रसिद्ध विजेता हुये हैं उन में सब से अधिक जिस व्यक्ति में 'ज़ुल-क़रनैन' की वे विशेषतायें पाई जाती हैं, जिन का उल्लेख क़ुरआन* में हुआ है वह ईरान के राज्याधिकारी ख़ोरस अथवा ग़ुसरू (Darius) या साइरस (Syrus) है। इस लिए सम्भव है कि क़ुरआन में जिस 'ज़ुल-क़रनैन' का हाल बयान हुआ है वह यही ईरानी राज्याधिकारी साइरस ही हो। 'ज़ुल-क़रनैन' का अर्थ होता है

---

[1] दे० Gibbon's Decline and Fall, ch xxxiii।

[2] यह क़िस्सा बाइबिल में नहीं है। तलमूद (Talmud) में इस का उल्लेख है किन्तु बिगड़े हुये रूप में।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

"दो सींगों वाला" (The Two Horned One) यह पदवी सरलता-पूर्वक साइरस पर चस्पाँ होती है; क्योंकि बाइबिल में दानियाल (Daniel) नबी* के जिस स्वप्न का उल्लेख किया गया है उस स्वप्न में उन्हें यूनानियों की उन्नति से पूर्व मेडिया और फ़ारस (Media & Persia) के संयुक्त राज्य को एक मेंढे के रूप में दिखाया गया है जिस के दो सींग थे† । साइरस ने मेडिया और फ़ारस के राज्यों को मिला कर एक बड़े राज्य की स्थापना की । यहूदियों* में इस 'दो सींग वाले' की बड़ी चर्चा थी । क्योंकि इसी व्यक्ति ने बाबिल जैसे राज्य को परास्त कर के बनी इस्राईल* को उस की क़ैद से छुटकारा दिलाया था ।

साइरस एक महान् विजेता था; और बाइबिल से यह भी मालूम होता है कि वह ईशभक्त और अल्लाह से डरने वाला भी था‡ । क़ुरआन में 'ज़ुल-क़रनैन' की तीसरी मुहिम का उल्लेख किया गया है; परन्तु अभी तक उत्तर या दक्षिण में साइरस की किसी बड़ी मुहिम का पता नहीं चल सका है । फिर भी यह कोई असम्भव बात नहीं है कि कोई इस तरह की बड़ी मुहिम भी पेश आई हो जब कि इतिहास से पता चलता है कि *साइरस का राज्य उत्तर में काकेशिया (Caucasia) तक फैला हुआ था* । 'ज़ुल-क़रनैन' के बारे में क़ुरआन* में यह भी बताया गया है कि 'याजूज' और 'माजूज' से बचाव के लिए उस ने मज़बूत दीवार का निर्माण कराया था । यह बात क़रीब-क़रीब साबित हो चुकी है कि 'याजूज' और 'माजूज' से अभिप्रेत तातारी, मंगोल आदि क़बीले हैं जो प्राचीन समय से सभ्य देशों पर आक्रमण करके लूट-मार मचाते रहे हैं; और यह भी मालूम है कि उन्हीं से बचने के लिए काकेशिया (Caucasia) के दक्षिणी क्षेत्र में दर-बन्द (Wall at Derbent or Darband) *और दारयाल की दीवारों का निर्माण हुआ था । परन्तु अभी तक यह बात सिद्ध नहीं हो सकी है कि ये दीवारें साइरस ही की निर्माण कराई हुई थीं । सारांश यह कि सम्भव है 'ज़ुल-क़रनैन' क़ुरआन* में साइरस ही को कहा गया हो परन्तु निश्चित रूप से अभी यह नहीं कहा जा सकता कि साइरस ही 'ज़ुल-क़रनैन' था; इस के लिए जैसा कि ऊपर संकेत किया गया अभी कुछ और प्रमाण अभीष्ट हैं ।*

प्रस्तुत सूरः के तीनों क़िस्सों से पता चलता है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० वास्तव में अल्लाह के रसूल* हैं । यदि आप (सल्ल०) रसूल* न होते तो इन पुरातन कथाओं का ज्ञान आप (सल्ल०) को कैसे हो सकता । न आप (सल्ल०) स्वयं पढ़े-लिखे थे और न ऐसे लोगों के साथ रहने का आप (सल्ल०) को अवसर मिल सका था, जो शिक्षित या इतिहासकार हों ।

प्रस्तुत सूरः में मक्का के सरदारों और काफ़िरों को समझाया गया है कि उन्हें वर्तमान जीवन पर कदापि गर्व नहीं करना चाहिए । उन्हें जीवन के उस भाग की प्राप्ति की चेष्टा करनी चाहिए जो मानव-जीवन का वह भाग वास्तविक और महान् [illegible] है । और उन्हें उन सत्कर्मों की इच्छा होनी चाहिए जो स्थायी और [illegible] हैं ।*

---

† [illegible] Daniel) [illegible] । [illegible] Tr. Tanith, fol 32 [illegible] F[illegible], Orient. 109 [illegible] ।

‡ [illegible] ([illegible]) ।

** [illegible] ।*

सूरः* अल-कहफ़

(मक्का में उतरी — आयतें* ११०)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

प्रशंसा (हम्द*) अल्लाह के लिए है जिस ने अपने बन्दे (मुहम्मद) पर यह किताब* उतारी, और उस में कोई टेढ़ नहीं रखी, ठीक और सीधी है,[1] ताकि एक सख़्त अज़ाब से (लोगों को) सचेत कर दे जो उस की ओर से[2] होगा, और ईमान* वालों को जो अच्छे काम करते हैं शुभ-सूचना दे दे कि उन के लिए अच्छा बदला है। ○ जिस में वे सदैव रहेंगे; ○ और उन को सचेत कर दे जो कहते हैं: अल्लाह ने (किसी को) बेटा बनाया है,[3] ○
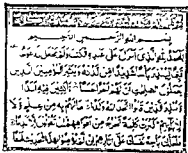
इस का ज्ञान न उन को है, और न उन के पूर्वजों को था। बड़ी (सख़्त) बात है जो उन के मुँह से निकलती है। वे बस झूठ बोलते हैं। ○ ५

अच्छा, तो (हे नबी* !) शायद तुम उन के पीछे अफ़सोस के मारे अपनी जान ही हलाक कर देने वाले हो, यदि वे इस कथन पर ईमान* न लाये। ○ निश्चय ही ज़मीन पर जो-कुछ है

---

१ और लोगों को सीधे मार्ग पर चलाने वाली है।

२ अर्थात् अल्लाह की ओर से।

३ अल्लाह के लिए औलाद गढ़ने के अपराध में ईसाई,* यहूदी,* और अरब के मुशिरक* सभी लोग सम्मिलित हैं।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِينَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ أَيُّهُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۝
وَإِنَّا لَجَاعِلُونَ مَا عَلَيْهَا صَعِيدًا جُرُزًا ۝ أَمْ حَسِبْتَ أَنَّ أَصْحَابَ الْكَهْفِ
وَالرَّقِيمِ كَانُوا مِنْ آيَاتِنَا عَجَبًا ۝ إِذْ أَوَى الْفِتْيَةُ إِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوا
رَبَّنَا آتِنَا مِن لَّدُنكَ رَحْمَةً وَهَيِّئْ لَنَا مِنْ أَمْرِنَا رَشَدًا ۝ فَضَرَبْنَا
عَلَىٰ آذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ سِنِينَ عَدَدًا ۝ ثُمَّ بَعَثْنَاهُمْ لِنَعْلَمَ أَيُّ
الْحِزْبَيْنِ أَحْصَىٰ لِمَا لَبِثُوا أَمَدًا ۝ نَّحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَأَهُم
بِالْحَقِّ إِنَّهُمْ فِتْيَةٌ آمَنُوا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنَاهُمْ هُدًى ۝ وَرَبَطْنَا عَلَىٰ
قُلُوبِهِمْ إِذْ قَامُوا فَقَالُوا رَبُّنَا رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ لَن نَّدْعُوَ مِن
دُونِهِ إِلَٰهًا لَّقَدْ قُلْنَا إِذًا شَطَطًا ۝ هَٰؤُلَاءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوا مِن دُونِهِ
آلِهَةً لَّوْلَا يَأْتُونَ عَلَيْهِم بِسُلْطَانٍ بَيِّنٍ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ
عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۝ وَإِذِ اعْتَزَلْتُمُوهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ فَأْوُوا إِلَى
الْكَهْفِ يَنشُرْ لَكُمْ رَبُّكُم مِّن رَّحْمَتِهِ وَيُهَيِّئْ لَكُم مِّنْ أَمْرِكُم
مِّرْفَقًا ۝ وَتَرَى الشَّمْسَ إِذَا طَلَعَت تَّزَاوَرُ عَن كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِينِ
وَإِذَا غَرَبَت تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِي فَجْوَةٍ مِّنْهُ ذَٰلِكَ مِنْ
آيَاتِ اللَّهِ مَن يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ وَمَن يُضْلِلْ فَلَن تَجِدَ لَهُ وَلِيًّا
مُّرْشِدًا ۝ وَتَحْسَبُهُمْ أَيْقَاظًا وَهُمْ رُقُودٌ وَنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِينِ
وَذَاتَ الشِّمَالِ وَكَلْبُهُم بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيدِ لَوِ اطَّلَعْتَ

उसे हम ने उस की[४] शोभा बनाई है ताकि हम उन की परीक्षा लें कि कौन उन में कर्म की दृष्टि से सब से अच्छा है। ○ और जो-कुछ उस पर है हम उसे चटियल भूमि बना देने वाले हैं। ○

क्या तुम समझते हो कि गुफा और 'अर-रक़ीम' वाले[५] हमारी अद्भुत निशानियों में से हैं? ○

जब उन नवयुवकों ने गुफा में जा कर पनाह ली और कहा : हमारे रब* ! हमें अपने यहाँ से दयालुता प्रदान कर, और हमारे लिए हमारे मामले को ठीक कर दे। ○ १०

तब हम ने उसी गुफा में उन के कान कई वर्षों के लिए थपक दिये[६]। ○ फिर उन्हें उठाया कि मालूम करें कि दोनों गरोहों में से किस ने उस (कालावधि) को सही तरीक़े से याद रखा, जिस कालावधि तक वे (वहाँ) ठहरे रहे। ○

हम उन का क़िस्सा तुझे हक़ के साथ सुनाते हैं। ये कुछ नवयुवक थे जो अपने रब* पर ईमान* लाये थे, और हम ने उन्हें मार्ग-दर्शन की दृष्टि से और बढ़ा दिया। ○ और हम ने उन के दिलों को मज़बूत कर दिया जब वे उठे तो उन्हों ने कहा : हमारा रब* आसमानों और ज़मीन का रब* है। हम उस के सिवा किसी इलाह* (पूज्य) को न पुकारेंगे, (क्योंकि) तब तो हम बहुत ही ज़्यादती की बात करेंगे। ○ (उन्हों ने आपस में एक दूसरे से कहा) : ये, हमारी जाति वालों ने तो उस (एक रब*) के सिवा दूसरे इलाह* (पूज्य) बना लिये हैं, ये उन (झूठे उपास्यों) के हक़ में खुली सनद क्यों नहीं लाते? फिर उस से बढ़ कर ज़ालिम और कौन होगा जो अल्लाह से सम्बन्ध लगा कर झूठ गढ़े? ○ ११

और जब कि तुम ने इन से और उस से जिस की ये अल्लाह के सिवा इबादत* करते हैं किनारा कर लिया है, तो अमुक गुफा में चल कर पनाह लो; तुम्हारा रब* अपनी दयालुता को तुम्हारे लिए विस्तीर्ण कर देगा और तुम्हारे लिए काम की आसानी संचित कर देगा[७]। ○

तुम सूर्य को देखते हो कि जब वह उदय होता है तो उन की गुफा से दाहिनी ओर को हट जाता है, और जब वह अस्त होता है तो उन से बाईं ओर कतरा कर निकल जाता है,[८]

४ अर्थात् ज़मीन की।

५ वह घाटी या पहाड़ी जहाँ वह गुफा थी। इस सिलसिले में दे० Fundgreiben des Orients, iii 347-381, Gibbon's Decline and Fall, ch. xxxiii.

६ अर्थात् उन्हें कई वर्षों के लिए गहरी नींद सुला दिया।

७ इस के बाद ये लोग नगर से निकल कर पहाड़ों के बीच एक गुफा में जा कर छुप गये ताकि उन्हें लोग सच्चे धर्म से ज़बरदस्ती फेर न सकें और इस प्रकार अपने प्राणों की भी रक्षा कर सकें। उन्हों ने दुनिया छोड़ दी परन्तु सत्य से विचलित न हुये।

८ अर्थात् गुफा की स्थिति (Situation) ही कुछ ऐसी थी कि सूर्य की किरणें उन तक नहीं पहुँच सकती थीं। यहाँ भूत को वर्तमान का रूप दे कर वास्तविक स्थिति का चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ۝ وَكَذَٰلِكَ بَعَثْنَاهُمْ
لِيَتَسَاءَلُوا بَيْنَهُمْ ۚ قَالَ قَائِلٌ مِنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ ۖ قَالُوا لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ
بَعْضَ يَوْمٍ ۚ قَالُوا رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ فَابْعَثُوا أَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ
هَٰذِهِ إِلَى الْمَدِينَةِ فَلْيَنْظُرْ أَيُّهَا أَزْكَىٰ طَعَامًا فَلْيَأْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِنْهُ
وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ أَحَدًا ۝ إِنَّهُمْ إِنْ يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوكُمْ
أَوْ يُعِيدُوكُمْ فِي مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوا إِذًا أَبَدًا ۝ وَكَذَٰلِكَ أَعْثَرْنَا عَلَيْهِمْ
لِيَعْلَمُوا أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَأَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيهَا إِذْ يَتَنَازَعُونَ
بَيْنَهُمْ أَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوا عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا ۖ رَبُّهُمْ أَعْلَمُ بِهِمْ ۚ قَالَ
الَّذِينَ غَلَبُوا عَلَىٰ أَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَسْجِدًا ۝ سَيَقُولُونَ ثَلَاثَةٌ
رَابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ وَيَقُولُونَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًا بِالْغَيْبِ ۖ
وَيَقُولُونَ سَبْعَةٌ وَثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ ۚ قُلْ رَبِّي أَعْلَمُ بِعِدَّتِهِمْ مَا يَعْلَمُهُمْ
إِلَّا قَلِيلٌ ۗ فَلَا تُمَارِ فِيهِمْ إِلَّا مِرَاءً ظَاهِرًا وَلَا تَسْتَفْتِ فِيهِمْ
مِنْهُمْ أَحَدًا ۝ وَلَا تَقُولَنَّ لِشَيْءٍ إِنِّي فَاعِلٌ ذَٰلِكَ غَدًا ۝ إِلَّا
أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۚ وَاذْكُرْ رَبَّكَ إِذَا نَسِيتَ وَقُلْ عَسَىٰ أَنْ يَهْدِيَنِ رَبِّي
لِأَقْرَبَ مِنْ هَٰذَا رَشَدًا ۝ وَلَبِثُوا فِي كَهْفِهِمْ ثَلَاثَ مِائَةٍ سِنِينَ
وَازْدَادُوا تِسْعًا ۝ قُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوا ۖ لَهُ غَيْبُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ
أَبْصِرْ بِهِ وَأَسْمِعْ ۚ مَا لَهُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا يُشْرِكُ فِي حُكْمِهِ

और वे हैं कि उस (गुफा) के (भीतर) एक कुशादा जगह में पड़े हैं। यह अल्लाह की निशानियों में से है। जिसे अल्लाह (सीधी) राह दिखाये, वही (सीधी) राह पाने वाला है, और जिसे वह भटका दे,[९] तुम उस का कोई मार्गदर्शक-मित्र नहीं पा सकते। ○ तुम (उन्हें देख कर) समझते कि वे जाग रहे हैं हालांकि वे सो रहे थे, हम उन्हें दायें और बायें करवट दिलवाते रहते थे, और उन का कुत्ता ड्योढ़ी (प्रवेश-मार्ग) पर अपने दोनों हाथ फैलाये हुये था। यदि तुम उन्हें झांक कर देखते तो उन के पास से उलटे पाँव भाग खड़े होते और तुम में उन का भय समा जाता। ○

और इसी तरह हम ने उन्हें उठाया ताकि वे आपस में पूछ-ताछ करें। उन में एक कहने वाले ने कहा : तुम कितनी देर रहे? वे बोले : हम रहे होंगे एक दिन या एक दिन का कुछ हिस्सा, उन्हों ने कहा : जितनी देर तुम यहाँ रहे हो तुम्हारा रब* ही उसे भली-भाँति जानता है। अब अपने में से किसी को यह चाँदी का सिक्का दे कर नगर भेजो, वह देखे कि कौन-सा भोजन शुद्ध है तो उस में से वह तुम्हारे पास कुछ भोजन-सामग्री ले आये। और चाहिए कि वह नर्मी और होशियारी से काम ले और किसी को तुम्हारी खबर न होने दे। ○ वे लोग यदि तुम्हारी खबर पा लें, तो वे तुम्हें पथराव कर के मार डालेंगे या फिर तुम्हें अपने पन्थ की ओर (ज़बरदस्ती) फेर ले जायेंगे और (ऐसा हुआ तो) तुम कभी सफल न हो सकोगे। ○

२०

और इस तरह हम ने (नगर वालों को) उन की ख़बर कर दी[१०] ताकि वे जान लें कि अल्लाह का वादा सच्चा है, और यह कि उस (आने वाली) घड़ी (क़ियामत*) में कोई सन्देह नहीं है। जब वे परस्पर अपने मामले में झगड़ रहे थे, उन्हों ने कहा : उन पर एक इमारत बना दो; उन का रब* उन के बारे में भली-भाँति जानता है। जिन की बात सब पर भारी रही[११] उन्हों ने कहा : हम तो उन पर एक मसजिद (उपासना-गृह) बनायेंगे। ○

९ दे० सूरः अल-बक़रः फुट नोट ४, सूरः अन-निसा फुट नोट ३८, ४८, सूरः हूद फुट नोट १०७।

१० जब वह खाना लेने के लिए नगर पहुँचा तो वहाँ दुनियाँ ही दूसरी थी। रूम राज्य को ईसाई हुये एक लम्बी अवधि बीत चुकी थी। पुराने युग का यह आदमी अपने को छुपा नहीं सका। मुखानी कथन से मालूम होता है कि जिस दुकानदार को इस व्यक्ति ने अपना चाँदी का सिक्का भोजन लेने के लिए दिया उस ने यह समझा कि शायद इस को पुराने युग का कोई दबा हुआ खज़ाना मिल गया है। जब इस व्यक्ति को अधिकारी लोगों के सामने लाया गया तो मालूम हुआ कि यह हज़रत मसीह अ० के उन अनुयायियों में से है जो आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व अपने प्राण और अपने ईमान* की रक्षा के लिए नगर छोड़ कर भाग गये थे। यह ख़बर सारे नगर में फैल गई। लोगों की एक भीड़ थी जो गुफा के पास जा पहुँची। गुफा में पनाह लेने वालों को जब मालूम हुआ कि वे सैकड़ों वर्ष के बाद सो कर उठे हैं, तो उन्हों ने नये युग के लोगों को सलाम किया और फिर सदैव के लिए सो गये; उन का देहान्त हो गया।

११ अर्थात् जिन लोगों को उन पर प्रभाव-पूर्ण अधिकार प्राप्त था।

* इस का अर्थ आखिर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

احدا ۝ واتل ما اوحي اليك من كتاب ربك لا مبدل لكلمته
ولن تجد من دونه ملتحدا ۝ واصبر نفسك مع الذين يدعون ربهم
بالغدوة والعشي يريدون وجهه ولا تعد عيناك عنهم تريد زينة
الحيوة الدنيا ولا تطع من اغفلنا قلبه عن ذكرنا واتبع هوىه وكان
امره فرطا ۝ وقل الحق من ربكم فمن شاء فليؤمن ومن
شاء فليكفر انا اعتدنا للظلمين نارا احاط بهم سرادقها وان
يستغيثوا يغاثوا بماء كالمهل يشوي الوجوه بئس الشراب و
ساءت مرتفقا ۝ ان الذين امنوا وعملوا الصلحت انا لا نضيع
اجر من احسن عملا ۝ اولئك لهم جنت عدن تجري من تحتهم
الانهر يحلون فيها من اساور من ذهب ويلبسون ثيابا خضرا
من سندس واستبرق متكـين فيها على الارائك نعم الثواب
وحسنت مرتفقا ۝ واضرب لهم مثلا رجلين جعلنا لاحدهما
جنتين من اعناب وحففنهما بنخل وجعلنا بينهما زرعا ۝ كلتا
الجنتين اتت اكلها ولم تظلم منه شيئا وفجرنا خللهما نهرا
وكان له ثمر فقال لصاحبه وهو يحاوره انا اكثر منك مالا
واعز نفرا ۝ ودخل جنته وهو ظالم لنفسه قال ما اظن ان تبيد هذه
ابدا ۝ وما اظن الساعة قائمة ولئن رددت الى ربي لاجدن خيرا

(कुछ लोग) कहेंगे : वे तीन थे, चौथा उन का कुत्ता था। और (कुछ) यह भी कहेंगे : वे पाँच थे, छठा उन का कुत्ता था; यह बिना (निशाना) देखे पत्थर चलाना है,'' और (कुछ) यह भी कहेंगे : वे सात थे, और आठवाँ उन का कुत्ता था। कहो : मेरा रब* भली-भाँति उन की गिन्ती जानता है। थोड़े ही लोग उन्हें जानते हैं। तो तुम सिवाय ऊपरी बात के उन के बारे में न झगड़ो, और उन में किसी से उन के बारे में कुछ न पूछो'' । ○ —

और किसी चीज़ के बारे में कभी यह न कहा करो कि मैं कल इसे कर दूँगा। ○ परन्तु यह कि अल्लाह ही ऐसा चाहे। जब भूल जाओ तो अपने रब* को याद कर लो, और कहो : बहुत सम्भव है मेरा रब* इस से ज़्यादा सुपथ से निकटतम बात मुझे सुझा दे'' । ○ —

और वे गुफ़ा में तीन सौ वर्ष रहे और नौ (वर्ष) और बढ़ाये। ○ कह दो : अल्लाह भली-भाँति इसे जानता है जितनी मुद्दत वे रहे। आसमानों और ज़मीन का अन्तर्ज्ञान उसी का है। क्या ख़ूब है वह देखने वाला और सुनने वाला!

उस के सिवा उन का कोई संरक्षक-मित्र नहीं, और न वह अपने हुक्म में किसी को शरीक करता है। ○ (हे नबी*!) अपने रब* की किताब* को जो तुम्हारी ओर वह्य* की गई है सुना दो। कोई उस की बातों को बदलने वाला नहीं, और तुम उस के सिवा कोई पनाह की जगह नहीं पाओगे। ○ अपने जी को उन लोगों के साथ थाम रखो जो प्रातःकाल और सन्ध्या समय अपने रब* को पुकारते हैं उस की ख़ुशी'' चाहते हुए; और सांसारिक जीवन की शोभा की चाह में उन को छोड़ कर तुम्हारी निगाहें आगे न बढ़ें,'' और ऐसे व्यक्ति का कहना न मानना जिस के दिल को हम ने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर दिया है, और जो अपनी (तुच्छ) इच्छा के पालन में लगा है और जिस का मामला हद से निकला हुआ है। ○ —

---

१२ अर्थात् वह अटकलपच्चू [illegible] है।

१३ अर्थात् [illegible] की गिनती [illegible] यह उन की गणना नहीं है बल्कि वह [illegible] है जो हमें इस विषय से मिली है।

१४ यह एक प्रासंगिक वाक्य है। [illegible] से पहले [illegible] कि उन्हें [illegible] कहना चाहिए कि मैं अमुक काम कल कर दूँगा। [illegible] किसी को न [illegible] है और न उसे यह [illegible] है कि वह जो चाहे कर सके। [illegible] अल्लाह का [illegible] करते हुए यह कहना चाहिए कि यदि अल्लाह ने चाहा तो यह काम हो जायेगा, और यो कहना चाहिए कि हो सकता है मेरा रब* मुझे इस से अधिक उचित और [illegible] की राह सुझा दे। [illegible]

१५ यहाँ वास्तव में "वज्ह" शब्द प्रयुक्त हुआ है जिस का शब्दार्थ 'मुख' (Face or Countenance) है। अल्लाह के मुख से अभिप्रेत उस की ख़ुशी और प्रसन्नता है।

१६ [illegible]

* इस का अर्थ परिशिष्ट में दिये हुए पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

مِّنْهَا مُنقَلَبًا ۝ قَالَ لَهُ صَاحِبُهُ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَكَفَرْتَ بِالَّذِي خَلَقَكَ
مِن تُرَابٍ ثُمَّ مِن نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوَّاكَ رَجُلًا ۝ لَّٰكِنَّا هُوَ اللَّهُ رَبِّي وَلَا
أُشْرِكُ بِرَبِّي أَحَدًا ۝ وَلَوْلَا إِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَاءَ اللَّهُ لَا قُوَّةَ
إِلَّا بِاللَّهِ ۚ إِن تَرَنِ أَنَا أَقَلَّ مِنكَ مَالًا وَوَلَدًا ۝ فَعَسَىٰ رَبِّي أَن
يُؤْتِيَنِ خَيْرًا مِّن جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَاءِ فَتُصْبِحَ
صَعِيدًا زَلَقًا ۝ أَوْ يُصْبِحَ مَاؤُهَا غَوْرًا فَلَن تَسْتَطِيعَ لَهُ طَلَبًا ۝ وَأُحِيطَ
بِثَمَرِهِ فَأَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلَىٰ مَا أَنفَقَ فِيهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا
وَيَقُولُ يَا لَيْتَنِي لَمْ أُشْرِكْ بِرَبِّي أَحَدًا ۝ وَلَمْ تَكُن لَّهُ فِئَةٌ يَنصُرُونَهُ
مِن دُونِ اللَّهِ وَمَا كَانَ مُنتَصِرًا ۝ هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلَّهِ الْحَقِّ ۚ هُوَ خَيْرٌ
ثَوَابًا وَخَيْرٌ عُقْبًا ۝ وَاضْرِبْ لَهُم مَّثَلَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَاءٍ أَنزَلْنَاهُ
مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ فَأَصْبَحَ هَشِيمًا تَذْرُوهُ الرِّيَاحُ ۗ
وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ۝ الْمَالُ وَالْبَنُونَ زِينَةُ الْحَيَاةِ
الدُّنْيَا ۖ وَالْبَاقِيَاتُ الصَّالِحَاتُ خَيْرٌ عِندَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ أَمَلًا ۝ وَ
يَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْأَرْضَ بَارِزَةً وَحَشَرْنَاهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ
مِنْهُمْ أَحَدًا ۝ وَعُرِضُوا عَلَىٰ رَبِّكَ صَفًّا لَّقَدْ جِئْتُمُونَا كَمَا خَلَقْنَاكُمْ
أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ بَلْ زَعَمْتُمْ أَلَّن نَّجْعَلَ لَكُم مَّوْعِدًا ۝ وَوُضِعَ الْكِتَابُ
فَتَرَى الْمُجْرِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا فِيهِ وَيَقُولُونَ يَا وَيْلَتَنَا مَالِ هَٰذَا

कह दो : यह सत्य है तुम्हारे रब* की ओर से। अब जो कोई चाहे, मान ले, और जो चाहे, इन्कार कर दे। हम ने ज़ालिमों के लिए आग तैयार कर रखी है। उस की क़नातों[१७] ने उन्हें घेर लिया है। यदि वे (प्यास के मारे) फ़रियाद करेंगे, तो ऐसे पानी से उन की फ़रियाद-रसी की जायेगी[१८] जो पिघले हुये ताँबे[१९] जैसा होगा जो (उन के) मुखों को भून डालेगा। क्या ही बुरा है यह पेय और (वह दोज़ख़*) क्या ही बुरा विश्रामस्थल है। ○

रहे वे लोग जो ईमान* लाये और अच्छे काम किये तो निस्सन्देह हम ऐसे व्यक्ति का बदला जिस ने अच्छा काम किया हो अकारथ नहीं करते। ○

ऐसे लोगों के लिए सदा-बहार जन्नतें* हैं, उन लोगों के नीचे नहरें बह रही होंगी; वहाँ वे स्वर्ण के कङ्गनों से आभूषित किये जायेंगे[२०] और वे हरे (रंग के) बारीक और दबीज़ रेशमी कपड़े पहनेंगे, ऊँची मसनदों पर तकिया लगाये (बैठेंगे) होंगे। क्या ही अच्छा बदला है और क्या ख़ूब विश्रामस्थल है! ○

उन से ऐसे दो आदमियों की मिसाल बयान करो जिन में से एक को हम ने अंगूरों के दो बाग़ दिये, और उन के चारों ओर हम ने खजूरों की बाढ़ लगाई और उन के बीच हम ने खेती रखी थी। ○ दोनों बाग़ अपने ख़ूब फल लाये और इस (पैदावार) में कोई कमी नहीं की। और हम ने उन दोनों (बाग़ों) के बीच नहर जारी कर दी थी। ○ और उस के लिए काफ़ी फल आये थे। वह अपने साथी से (अपनी बड़ाई में) बात करते हुये बोला : मैं तुझ से माल में बढ़ कर हूँ, और जन-समूह में भी (तुझ से) अधिक बलिष्ठ हूँ। ○

और अपने हक़ में ज़ुल्म करता हुआ वह अपने बाग़ में दाख़िल हुआ। कहने लगा : मैं ऐसा नहीं समझता कि यह कभी तबाह हो। ○ और मैं नहीं समझता कि वह (क़ियामत* की) घड़ी आयेगी, और यदि वास्तव में मुझे मेरे रब* के पास लौटाया गया तो मैं अवश्य इस से अच्छी पलटने की जगह (ठिकाना) पाऊँगा। ○

उस के साथी ने उस से बात करते हुये कहा : क्या तू उस के साथ कुफ़्र* करता है जिस ने तुझे मिट्टी से, फिर वीर्य्य से पैदा किया, फिर तुझे नख-शिख दुरुस्त कर के एक आदमी बनाया? ○ रहा मैं तो मेरा रब* तो वही अल्लाह है, और मैं अपने रब* के साथ किसी को शरीक नहीं

१७ क़नातों से अभिप्रेत यहाँ वे बाह्य सीमायें हैं जहाँ तक अग्नि की लपटें पहुँच रही होंगी।

१८ अर्थात् उन की फ़रियाद सुनी जायेगी तो इस तरह कि ठण्डे पानी के बदले उन्हें जैसा कि आगे आ रहा है पीने को पिघले हुये ताँबे-जैसा पानी दिया जायेगा।

१९ मूल ग्रन्थ (Text) में यहाँ 'मुह्ल' शब्द प्रयुक्त हुआ है, कोश में इस के कई अर्थ—तेल की तलछट, पिघली धातु, ताँबा, लावा, पीप, रक्त आदि बताये गये हैं।

२० प्राचीन समय के सम्राट स्वर्ण के कङ्गन पहनते थे। आशय यह है कि जन्नत* में लोगों का वस्त्र आदि सब राजसी होगा।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّآ اَحْصٰىهَا ۚ وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا ۭ
وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ اَحَدًا ۝ وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ
اِبْلِيْسَ ۭ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ ۭ اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗٓ
اَوْلِيَاۗءَ مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ۭ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ۝ مَآ
اَشْهَدْتُّهُمْ خَلْقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَا خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ ۠ وَمَا كُنْتُ
مُتَّخِذَ الْمُضِلِّيْنَ عَضُدًا ۝ وَيَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَاۗءِيَ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ
فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَّوْبِقًا ۝ وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ
النَّارَ فَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا وَلَمْ يَجِدُوْا عَنْهَا مَصْرِفًا ۝ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا
فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۭ وَكَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَيْءٍ
جَدَلًا ۝ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَاۗءَهُمُ الْهُدٰى وَيَسْتَغْفِرُوْا رَبَّهُمْ
اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ۝ وَمَا
نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَمَآ اُنْذِرُوْا هُزُوًا ۝ وَ
مَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ فَاَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ
يَدٰهُ ۭ اِنَّا جَعَلْنَا عَلٰي قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۭ وَ
اِنْ تَدْعُهُمْ اِلَى الْهُدٰى فَلَنْ يَّهْتَدُوْٓا اِذًا اَبَدًا ۝ وَرَبُّكَ الْغَفُوْرُ ذُو
الرَّحْمَةِ ۭ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ بِمَا كَسَبُوْا لَعَجَّلَ لَهُمُ الْعَذَابَ ۭ بَلْ لَّهُمْ مَّوْعِدٌ

करता। ○ और जब तू अपने बाग़ में दाख़िल हुआ तो तू ने यह क्यों न कहा कि जो अल्लाह चाहे (वही होता है)। बिना अल्लाह के कोई शक्ति नहीं। यदि तू मुझे माल और औलाद में अपने से कम पा रहा है,[21] ○ तो हो सकता है कि मेरा रब* मुझे तेरे बाग़ से अच्छा (बाग़) प्रदान करे, और उस (तेरे बाग़) पर आसमान से कोई आपत्ति भेज दे, फिर वह साफ़ मैदान हो कर रह जाये, ○ या उस का पानी बिलकुल नीचे (भूमि में) उतर जाये फिर तू उसे किसी तरह ढूँढ़ कर न ला सके। ○ ४०

और (ऐसा ही हुआ) उस का सारा फल बरबाद कर दिया गया। तो जो-कुछ उस ने उस में लागत लगाई थी उस पर हाथ मलता रह गया, जब कि (अब) वह (अंगूरों का बाग़) अपनी टट्टियों पर ढहा पड़ा था, और कहने लगा: क्या अच्छा होता यदि मैं अपने रब* के साथ किसी को शरीक न ठहराता। ○ और अल्लाह के सिवा उस का कोई जत्था न हुआ जो उस की सहायता करता, और न वह स्वयं बदला ले सकेगा। ○ यहाँ संरक्षण का अधिकार सत्य-रूप, अल्लाह ही के लिए है, वही सब से अच्छा है पारितोषिक की दृष्टि से, और सब से अच्छा है परिणाम की दृष्टि से[22]। ○

और उन से सांसारिक जीवन की मिसाल बयान करो कि जैसे पानी हो जिसे हम ने आसमान से बरसाया, तो उस से ज़मीन की वनस्पति अत्यन्त घनी हो गई फिर वह भुस हो कर रह गई जिसे हवायें उड़ाये लिये फिरती हैं[23]। अल्लाह को हर चीज़ पर पूरा प्रभुत्व प्राप्त है। ○ ४५

ये माल और बेटे सांसारिक जीवन की एक शोभा हैं और बाक़ी रहने वाली नेकियाँ ही तेरे रब* के नज़दीक फल की दृष्टि से उत्तम हैं और आशा की दृष्टि से भी उत्तम हैं। ○

और (चिन्ता करो उस दिन की) जिस दिन हम पहाड़ों को चलायेंगे[24] और तुम ज़मीन को खुली हुई (नग्न) देखोगे, और हम उन्हें (अर्थात् लोगों को) घेर कर इकट्ठा करेंगे तो उन में किसी एक को न छोड़ेंगे। ○ और वे (सब-के-सब) तुम्हारे रब* के सामने पंक्ति में लाये जायेंगे (और उन से कहा जायेगा): तुम हमारे पास आ पहुँचे जैसा हम ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था। परन्तु तुम ने तो यह समझ लिया था कि हम तुम्हारे लिए कोई वादा न ठहरायेंगे। ○

और किताब* (अर्थात् कर्म-पत्र) रखी जायेगी, और तुम देखोगे कि जो-कुछ उस में (अंकित)

२१ दे० आयत ३३, ३४।

२२ दे० आयत ५०।

२३ पुराने ग्रन्थ (Old Testament) में भी इस प्रकार की उपमा मिलती है। 'होशेअ' (Hosea) में है: "इस लिए वे प्रात के बादल की भाँति होंगे, और उस ओस की भाँति जो सवेरे जाती रहती है और भूसी की भाँति जो बवण्डर के साथ खलिहान पर से उड़ाई जाती है और उस धुएँ की भाँति जो चिमनी से निकला चला जाता है"। (दे० १३ : ३)

२४ दे० सूरः अन-नम्ल आयत ८८।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखो।

(लोगों) को देखोगे उस से अपराधी (लोग) भयभीत हैं, और कह रहे हैं : हाय हमारा दुर्भाग्य ! यह कैसी किताब है कि न कोई छोटी बात छोड़ती है और न बड़ी बल्कि इसे गिन लिया है ! और जो-कुछ उन्हों ने किया था सब को (सामने) हाज़िर पायेंगे और तेरा रब* किसी पर ज़ुल्म न करेगा । ○

याद करो जब हम ने फ़िरिश्तों* से कहा : आदम के आगे झुक जाओ, तो इब्लीस* के सिवा सब झुक गये । वह जिन्नों* में से था,[२५] सो उस ने अपने रब* के हुक्म की मर्यादा का उल्लंघन किया । तो अब क्या तुम मेरे सिवा उसे और उस की सन्तति को (अपना) संरक्षक-मित्र बनाते हो, जब कि वे तुम्हारे शत्रु हैं ? क्या ही बुरा बदला है ज़ालिमों के लिए ! ○

मैं ने न तो उन्हें आसमानों और ज़मीन के पैदा करते समय बुलाया, और न स्वयं उन्हें पैदा करते समय ही; और मैं ऐसा नहीं कि गुमराह करने वालों को बाज़ू (सहायक) बनाऊँ । ○

और याद करो जिस दिन (अल्लाह) कहेगा : बुलाओ मेरे शरीकों को जिन के बारे में तुम ने गुमान किया था (कि वे मेरे शरीक हैं) । तो ये उन को पुकारेंगे परन्तु वे इन्हें कोई जवाब न देंगे, और हम उन के बीच ध्वंसपात[२६] रख देंगे । ○ और अपराधी (जन) आग (दोज़ख़*) देखेंगे तो समझ लेंगे कि वे उस में पड़ने वाले हैं, और उस से बच निकलने की कोई जगह न पायेंगे । ○ हम ने इस क़ुरआन* में लोगों के लिए हर एक मिसाल तरह-तरह से बयान की, परन्तु मनुष्य सब से बढ़ कर झगड़ालू है । ○

लोगों को जब कि उन के पास मार्ग-दर्शन आ गया, तो इस बात से कि वे ईमान* लायें और अपने रब* से क्षमा की प्रार्थना करें किसी चीज़ ने नहीं रोका सिवाय इस के कि (उन्हें इस का इन्तज़ार हो कि) अगलों की रीति (क्रिया-विधि) इन पर भी लागू हो[२७] या वह अज़ाब इन के सामने आ जाये[२८] । ○

रसूलों* को हम ने केवल शुभ-सूचना देने वाले और सचेत-कर्त्ता बना कर भेजा है । परन्तु जिन्हों ने कुफ़्र* किया वे असत्य बात के द्वारा झगड़ते हैं ताकि उस से सत्य को उस की जगह से हटायें । और उन्हों ने मेरी आयतों* का और जो डरावा उन्हें दिया गया था उस का मज़ाक़ (हँसी-ठट्ठा) बना लिया है । ○

उस व्यक्ति से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जिसे उस के रब* की आयतों* से चेताया गया, तो उस ने उन से मुँह फेर लिया और उसे भूल गया जो उस के हाथों ने (कमा कर) आगे भेजा है ? निस्सन्देह हम ने उन के दिलों पर परदे डाल रखे हैं कि उसे न समझें,[२९] और

---

२५ यदि वह फ़िरिश्तों में से होता तो कभी भी अल्लाह के आदेश का उल्लंघन न करता इस लिए कि गुनाह करना फ़िरिश्तों* की प्रकृति के सर्वथा प्रतिकूल है । (दे० सूरः अत-तहरीम आयत ६ और सूरः अन-नह्ल आयत ४९-५०) । रहे जिन्न* तो मनुष्य की तरह वे भी इस के लिए स्वतन्त्र हैं कि स्वेच्छापूर्वक अपने लिए जो मार्ग चाहे ग्रहण करें ।

२६ या उन के बीच हम एक आड़ कर देंगे ।

२७ अर्थात् अल्लाह के नियम और (क्रिया-विधि) (Manner of acting) के अन्तर्गत जो-कुछ उन के साथ हुआ वही इन के साथ भी हो ।

२८ अर्थात् सत्य को तो उत्तम रीति से खोल कर इन के सामने ला दिया गया है अब इस के सिवा और क्या रह गया है कि वही व्यवहार इन के साथ भी किया जाये जो पिछली जातियों के साथ किया गया या इन्हें वह अज़ाब दिखा दिया जाये जिस से बचने की चेतावनी इन्हें दी जा रही है ।

२९ ऐसा अल्लाह ने उन के करतूतों के कारण ही किया इस लिए कि अल्लाह ज़बरदस्ती किसी को राह पर लाना नहीं चाहता; वह तो हम से उस भक्ति और प्रेम का इच्छुक है जिसे हम ने स्वतन्त्र अवस्था में स्वेच्छा-पूर्वक अपनाया हो ।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

لن يجدوا من دونه موئلا ۝ وتلك القرى أهلكناهم لما ظلموا
وجعلنا لمهلكهم موعدا ۝ وإذ قال موسى لفتاه لا أبرح حتى
أبلغ مجمع البحرين أو أمضي حقبا ۝ فلما بلغا مجمع بينهما نسيا
حوتهما فاتخذ سبيله في البحر سربا ۝ فلما جاوزا قال لفتاه آتنا
غداءنا لقد لقينا من سفرنا هذا نصبا ۝ قال أرأيت إذ أوينا إلى
الصخرة فإني نسيت الحوت وما أنسانيه إلا الشيطان أن أذكره و
اتخذ سبيله في البحر عجبا ۝ قال ذلك ما كنا نبغ فارتدا على
آثارهما قصصا ۝ فوجدا عبدا من عبادنا آتيناه رحمة من عندنا
وعلمناه من لدنا علما ۝ قال له موسى هل أتبعك على أن
تعلمن مما علمت رشدا ۝ قال إنك لن تستطيع معي صبرا ۝ و
كيف تصبر على ما لم تحط به خبرا ۝ قال ستجدني إن شاء الله صابرا
ولا أعصي لك أمرا ۝ قال فإن اتبعتني فلا تسألني عن شيء حتى
أحدث لك منه ذكرا ۝ فانطلقا حتى إذا ركبا في السفينة
خرقها قال أخرقتها لتغرق أهلها لقد جئت شيئا إمرا ۝ قال ألم
أقل إنك لن تستطيع معي صبرا ۝ قال لا تؤاخذني بما نسيت ولا
ترهقني من أمري عسرا ۝ فانطلقا حتى إذا لقيا غلاما فقتله
قال أقتلت نفسا زكية بغير نفس لقد جئت شيئا نكرا

अब दोनों चले, यहाँ तक कि जब नौका में सवार हुये, तो उस ने उस में शिगाफ़ (दर्ज) डाल दिया।

(मूसा ने) कहा : क्या आप ने शिगाफ़ डाल दिया ताकि उस (नौका) के लोगों को डुबो दें ? आप ने तो आश्चर्यपूर्ण और अवैध काम कर डाला।○

उस ने कहा : क्या मैं ने कहा नहीं था कि आप मेरे साथ सब्र* न कर सकेंगे ? ○

(मूसा ने) कहा : जो भूल-चूक मुझ से हुई उस पर मुझे न पकड़िए, मेरे मामले में आप मुझ पर सख़्ती न कीजिए।○ फिर वे दोनों चले, यहाँ तक कि वे एक लड़के से मिले, तो उस ने उसे क़त्ल कर दिया। (मूसा ने) कहा : क्या आप ने एक निर्दोष जीव को बिना किसी जीव (की हत्या) के बदले क़त्ल कर दिया ? आप ने बहुत ही बुरा काम किया।○

[1] उस ने कहा : क्या मैं ने आप से कहा नहीं था कि आप मेरे साथ सब्र न कर सकेंगे ? ○

(मूसा ने) कहा : इस के बाद यदि मैं आप से कुछ पूछूँ, तो आप मुझे साथ न रखें। अब तो मेरी ओर से आप पूरी तरह उज़्र को पहुँच चुके हैं[2]।○ फिर वे दोनों (आगे) चले, यहाँ तक कि एक बस्ती के लोगों तक पहुँचे, तो वहाँ के लोगों से खाना माँगा, परन्तु उन्हों ने इन्हें मेहमान बनाने से इन्कार कर दिया। फिर वहाँ उन्हों ने एक दीवार पाई जो गिरा चाहती थी, तो उस ने उस दीवार को सीधा खड़ा कर दिया। (मूसा ने) कहा : यदि आप चाहते, तो इस की उजरत ले सकते थे।○

उस ने कहा : यह मेरे और आप के बीच जुदाई है ! मैं आप को उस की वास्तविकता बता दे रहा हूँ जिस पर आप सब्र न कर सके।○ वह जो नौका थी, वह मुहताजों की थी जो दरिया में काम-धन्धा करते थे, तो मैं ने चाहा कि उसे ऐब-दार कर दूँ, क्योंकि उन के परे एक सम्राट था जो प्रत्येक नौका को छीन लेता था।○ और रहा वह लड़का, तो उस के माता-पिता ईमान* वाले थे हम डरे कि वह (अपनी) सरकशी और कुफ़्र* से उन्हें तंग करेगा।○ सो हम ने चाहा कि उन का रब* उन्हें इस के बदले और (बच्चा) प्रदान करे जो शुद्धता में इस से अच्छा हो और दयाशीलता से ज़्यादा क़रीब हो।○ और रही यह दीवार, तो यह दो अनाथ लड़कों की है जो इस नगर में रहते हैं, और इस (दीवार) के नीचे उन (बच्चों) का एक ख़ज़ाना (गड़ा हुआ) है, और उन का बाप नेक था, सो आप के रब* ने चाहा कि वे (लड़के) अपनी युवावस्था को प्राप्त हो जावें और अपना ख़ज़ाना निकाल लें यह तुम्हारे रब* की दयालुता के कारण हुआ; और मैं ने कुछ अपने अधिकार से नहीं किया। यह है वास्तविकता

[1] यहाँ से सोलहवाँ पारः (Part XVI) शुरू होता है।
[2] अर्थात् अब मेरी ओर से आप को उज़्र मिल गया। अब आप मुझे अपने साथ से जुदा कर सकते हैं।
* इस का अर्थ अन्तिम में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ۝ قَالَ اِنْ
سَاَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍۢ بَعْدَهَا فَلَا تُصٰحِبْنِيْ ۚ قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَّدُنِّيْ
عُذْرًا ۝ فَانْطَلَقَا ۫ حَتّٰٓى اِذَآ اَتَيَآ اَهْلَ قَرْيَةِ ِۨاسْتَطْعَمَآ اَهْلَهَا فَاَبَوْا
اَنْ يُّضَيِّفُوْهُمَا فَوَجَدَا فِيْهَا جِدَارًا يُّرِيْدُ اَنْ يَّنْقَضَّ فَاَقَامَهٗ ۭ قَالَ
لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ اَجْرًا ۝ قَالَ هٰذَا فِرَاقُ بَيْنِيْ وَبَيْنِكَ ۚ
سَاُنَبِّئُكَ بِتَاْوِيْلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ۝ اَمَّا السَّفِيْنَةُ فَكَانَتْ
لِمَسٰكِيْنَ يَعْمَلُوْنَ فِي الْبَحْرِ فَاَرَدْتُّ اَنْ اَعِيْبَهَا وَكَانَ وَرَاۗءَهُمْ مَّلِكٌ
يَّاْخُذُ كُلَّ سَفِيْنَةٍ غَصْبًا ۝ وَاَمَّا الْغُلٰمُ فَكَانَ اَبَوٰهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِيْنَآ
اَنْ يُّرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۝ فَاَرَدْنَآ اَنْ يُّبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا
مِّنْهُ زَكٰوةً وَّاَقْرَبَ رُحْمًا ۝ وَاَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلٰمَيْنِ
يَتِيْمَيْنِ فِي الْمَدِيْنَةِ وَكَانَ تَحْتَهٗ كَنْزٌ لَّهُمَا وَكَانَ اَبُوْهُمَا صَالِحًا ۚ
فَاَرَادَ رَبُّكَ اَنْ يَّبْلُغَآ اَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا ڰ رَحْمَةً مِّنْ
رَّبِّكَ ۚ وَمَا فَعَلْتُهٗ عَنْ اَمْرِيْ ۭ ذٰلِكَ تَاْوِيْلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَّلَيْهِ
صَبْرًا ۝ وَيَسْــَٔلُوْنَكَ عَنْ ذِي الْقَرْنَيْنِ ۭ قُلْ سَاَتْلُوْا عَلَيْكُمْ مِّنْهُ
ذِكْرًا ۝ اِنَّا مَكَّنَّا لَهٗ فِي الْاَرْضِ وَاٰتَيْنٰهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ۝
فَاَتْبَعَ سَبَبًا ۝ حَتّٰٓي اِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِيْ
عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَّوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ڛ قُلْنَا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِمَّآ اَنْ

उस चीज़ की जिस पर आप सब्र न कर सके[35] ।○

और (हे मुहम्मद !) वे तुम से 'ज़ुल-क़रनैन'[36] के बारे में पूछते हैं। कह दो : मैं उस का कुछ ज़िक्र तुम से बयान करता हूँ। ○ हम ने उसे ज़मीन में मक़बूल प्रदान किया था और उसे हर प्रकार का सामान दे रखा था। ○ सो उस ने पश्चिम की ओर (एक मुहिम का) आयोजन किया। ○ यहाँ तक कि वह सूर्यास्त की जगह पहुँचा, उस ने उसे एक काले सागर में अस्त होते पाया,[37] और उस के निकट उसे एक जाति मिली :

हम ने कहा : हे ज़ुल क़रनैन ! (तुम्हें इस की शक्ति प्राप्त है कि) चाहे तुम इन्हें तकलीफ़ दो और चाहे इन के साथ अच्छा व्यवहार करो[38] । ○ उस ने कहा : (इन लोगों में से) जो कोई ज़ुल्म करेगा, उसे हम सज़ा देंगे, फिर वह अपने रब* की ओर पलटाया जायेगा, तो वह उसे सख़्त अज़ाब देगा। ○ और जो कोई ईमान* लाया और अच्छा काम किया, उस के लिए अच्छा बदला है, और हम उसे अपना नर्म आदेश देंगे। ○

फिर उस ने एक (दूसरी मुहिम का) आयोजन किया। ○ यहाँ तक कि सूर्योदय की जगह जा पहुँचा, (वहाँ) उस ने उसे एक ऐसी जाति पर उदय होते पाया जिन के लिए हम ने उस के (अर्थात् सूर्य के) वरे कोई आड़ नहीं रखी[39] । ○

ऐसा ही (हम ने किया) । उस के पास जो-कुछ था उस को हम (अपने) ज्ञान द्वारा घेरे हुये थे। ○

फिर उस ने एक (और मुहिम का) आयोजन किया। ○ यहाँ तक कि जब दो पहाड़ों के बीच पहुँचा,[40] तो उसे उन के पास एक जाति मिली जो कोई बात समझ ही नहीं पाती थी। ○ उन्हों ने कहा : हे ज़ुल क़रनैन ! याजूज और माजूज[41] इस भूमि में फ़साद (उत्पात)

---

३५ इस वृत्तान्त से मालूम होता है कि हज़रत मूसा अ० को जिस बन्दे से मुलाक़ात कराई गई थी वह या तो फ़िरिश्ता रहा हो या उसी तरह का कोई और परोक्षीय व्यक्ति। इस लिए कि इस तरह के नैतिक कार्य करने का आदेश केवल फ़िरिश्तों* ही को दिया जा सकता है। मनुष्य को तो प्रत्येक अवस्था में नियम और अनुशासन (Law & Order) के अन्तर्गत रहने का आदेश दिया गया है।

३६ 'ज़ुल-क़रनैन' के बारे में देखिए सूरः की भूमिका।

३७ अर्थात् उसे ऐसा दिखाई दे रहा था कि सूर्य काले गँदले पानी में डूब रहा है।

३८ यह ज़रूरी नहीं कि अल्लाह ने यह बात वह्य* के द्वारा 'ज़ुल क़रनैन' से कही हो। इस का यह अर्थ भी हो सकता है कि अल्लाह ने 'ज़ुल क़रनैन' के दिल में यह बात डाल दी हो।

३९ अर्थात् वह जाति बिल्कुल जंगली थी, उसे घर, खेमा आदि बनाना नहीं आता था।

४० इन दोनों पहाड़ों के उस पार याजूज-माजूज का देश था जैसा कि आगे के बयान से विदित है। इस से अनुमान है कि इन पहाड़ों से अभिप्राय काकेशस (Caucasus) की पर्वत-मालाएँ हैं जो कैस्पियन सागर और कृष्ण सागर के मध्य में स्थित हैं।

४१ याजूज और माजूज (Gog and Magog) से अभिप्राय एशिया के उत्तरी और पूर्वोत्तर की बर्बर जातियाँ हैं।

* इस का अर्थ जानने के लिये पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

تعذب وإما أن تتخذ فيهم حسنا ۝ قال أما من ظلم فسوف
نعذبه ثم يرد إلى ربه فيعذبه عذابا نكرا ۝ وأما من آمن و
عمل صالحا فله جزاء الحسنى وسنقول له من أمرنا يسرا ۝ ثم
أتبع سببا ۝ حتى إذا بلغ مطلع الشمس وجدها تطلع على قوم
لم نجعل لهم من دونها سترا ۝ كذلك وقد أحطنا بما لديه
خبرا ۝ ثم أتبع سببا ۝ حتى إذا بلغ بين السدين وجد من
دونهما قوما لا يكادون يفقهون قولا ۝ قالوا يا ذا القرنين إن
يأجوج ومأجوج مفسدون في الأرض فهل نجعل لك خرجا على
أن تجعل بيننا وبينهم سدا ۝ قال ما مكني فيه ربي خير فأعينوني
بقوة أجعل بينكم وبينهم ردما ۝ آتوني زبر الحديد حتى إذا ساوى
بين الصدفين قال انفخوا حتى إذا جعله نارا قال آتوني أفرغ عليه
قطرا ۝ فما اسطاعوا أن يظهروه وما استطاعوا له نقبا ۝ قال هذا
رحمة من ربي فإذا جاء وعد ربي جعله دكاء وكان وعد ربي
حقا ۝ وتركنا بعضهم يومئذ يموج في بعض ونفخ في الصور فجمعناهم
جمعا ۝ وعرضنا جهنم يومئذ للكافرين عرضا ۝ الذين كانت أعينهم
في غطاء عن ذكري وكانوا لا يستطيعون سمعا ۝ أفحسب الذين
كفروا أن يتخذوا عبادي من دوني أولياء إنا أعتدنا جهنم للكافرين

मचाते हैं। तो क्या हम तुझे कोई कर इस काम के लिए दें कि तू हमारे और उन के बीच एक रोक बना दे? ○ उस ने कहा : मेरे रब* ने जो-कुछ मुझे सामर्थ्य प्रदान किया है वह उत्तम है। तुम बस (आदमियों के) बल से मेरी सहायता करो, मैं तुम्हारे और उन के बीच एक मज़बूत दीवार बना दूँगा। ○

मुझे लोहे के टुकड़े ला दो—यहाँ तक, कि जब दोनों पहाड़ों के बीच (के ख़ाली स्थान) को पाट दिया, तो कहा : फूँको! — यहाँ तक कि जब उसे (धौंक कर) आग कर दिया, तो कहा : मुझे पिघला हुआ ताँबा ला दो कि उस पर उँडेल दूँ। ○

सो वे (अर्थात् याजूज और माजूज) न तो उस पर चढ़ आ सकते थे, और न वे उस में नक़ब लगा सकते थे[४२]। ○

(ज़ुल क़रनैन) ने कहा : यह मेरे रब* की दयालुता है, परन्तु जब मेरे रब* का वादा आ पूरा होगा, तो वह उसे ढा कर बराबर कर देगा, और मेरे रब* का वादा सच्चा है। ○

और छोड़ दिया हम ने कि उस दिन वे एक-दूसरे के बीच मौजों की तरह घुसे जाते होंगे[४३]। और सूर* में फूँक मारी जायेगी। फिर हम सब को एक साथ इकट्ठा कर लेंगे। ○

और उस दिन हम दोज़ख़* को काफ़िरों* के सामने ला देंगे, ○ जिन के नेत्र हमारी याददिहानी की ओर से परदे में थे,[४४] और जो कुछ सुन नहीं सकते थे। ○ तो क्या इन लोगों ने जिन्हों ने कुफ़्र* किया है यह समझ रखा है कि मेरे सिवा मेरे बन्दों को हिमायती बना लें? हम ने काफ़िरों* की आव-भगत के लिए दोज़ख़* तैयार कर रखा है। ○

जातियाँ हैं जो तातारी, मगोल, होए, सेथीन (Scythians) आदि नामों से प्रसिद्ध हैं। यह जातियाँ प्राचीन काल से सभ्य देशों पर आक्रमण कर के लूट-मार मचाती रही हैं। ये लूट-मार के लिए एशिया और योरोप दोनों ओर धावा करती रही हैं। बाइबिल में रूस, तूबल (Tubal) और मेसेक (Meshech) को याजूज और माजूज का अधिक्षेत्र बताया गया है। दे० हज़क़ीएल (Ezekiel) अध्याय ३८ और ३६। तूबल और मेसेक को वर्तमान समय में मास्को और तोबाल्क (Moscow and Tobalsk) कहते हैं। यूसिफ़स (Josephus) ने जो एक इबरानी इतिहासकार है सेथीन (Scythians) जाति को याजूज-माजूज कहा है। जिस का अधिक्षेत्र कृष्ण सागर (Black sea) के उत्तर और पूर्व में था। जिरोम (Jerome) का कहना है कि याजूज की आबादी काकेशिया (Caucasus) के उत्तर, कैस्पियन सागर (Caspian sea) के निकट पड़ती थी। इब्न बतूता के विचार में याजूज और माजूज से अभिप्रेत पूर्वी एशिया की असभ्य जातियाँ हैं (दे० Ibn Batoutah's Travels, iv. P. 274 Par. ed.)।

४२ इतिहास से पता चलता है कि असभ्य जातियों से रक्षा के लिए क़फ़क़ाज़ के दक्षिणी क्षेत्र में दरबन्द (Derbent or Darband) और दर्रा दारयाल (Darial Pass) की दीवारें उठाई गई थीं। बहुत सम्भव है दर्रा दारयाल की दीवार ही वह दीवार हो जिस का निर्माण ज़ुल क़रनैन के हाथों हुआ था। यह दो पहाड़ी चोटियों के बीच पड़ती है। इस दीवार के बनाने में लोहे को भी उपयोग में लाया गया था।

४३ अर्थात् समुद्र की लहरों की भाँति परस्पर गुत्थम-गुत्था।

४४ अर्थात् जो हमारी याददिहानी और चेतावनी की ओर से बिलकुल अन्धे बने रहे।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

قَالَ أَلَمْ أَقُل لَّكَ إِنَّكَ لَن تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ۝ قَالَ إِن
سَأَلْتُكَ عَن شَيْءٍ بَعْدَهَا فَلَا تُصَاحِبْنِي ۖ قَدْ بَلَغْتَ مِن لَّدُنِّي
عُذْرًا ۝ فَانطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا أَتَيَا أَهْلَ قَرْيَةٍ اسْتَطْعَمَا أَهْلَهَا فَأَبَوْا
أَن يُضَيِّفُوهُمَا فَوَجَدَا فِيهَا جِدَارًا يُرِيدُ أَن يَنقَضَّ فَأَقَامَهُ ۖ قَالَ
لَوْ شِئْتَ لَاتَّخَذْتَ عَلَيْهِ أَجْرًا ۝ قَالَ هَٰذَا فِرَاقُ بَيْنِي وَبَيْنِكَ ۚ
سَأُنَبِّئُكَ بِتَأْوِيلِ مَا لَمْ تَسْتَطِع عَّلَيْهِ صَبْرًا ۝ أَمَّا السَّفِينَةُ فَكَانَتْ
لِمَسَاكِينَ يَعْمَلُونَ فِي الْبَحْرِ فَأَرَدتُّ أَنْ أَعِيبَهَا وَكَانَ وَرَاءَهُم مَّلِكٌ
يَأْخُذُ كُلَّ سَفِينَةٍ غَصْبًا ۝ وَأَمَّا الْغُلَامُ فَكَانَ أَبَوَاهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِينَا
أَن يُرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا وَكُفْرًا ۝ فَأَرَدْنَا أَن يُبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا
مِّنْهُ زَكَاةً وَأَقْرَبَ رُحْمًا ۝ وَأَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلَامَيْنِ
يَتِيمَيْنِ فِي الْمَدِينَةِ وَكَانَ تَحْتَهُ كَنزٌ لَّهُمَا وَكَانَ أَبُوهُمَا صَالِحًا
فَأَرَادَ رَبُّكَ أَن يَبْلُغَا أَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنزَهُمَا رَحْمَةً مِّن
رَّبِّكَ ۚ وَمَا فَعَلْتُهُ عَنْ أَمْرِي ۚ ذَٰلِكَ تَأْوِيلُ مَا لَمْ تَسْطِع عَّلَيْهِ
صَبْرًا ۝ وَيَسْأَلُونَكَ عَن ذِي الْقَرْنَيْنِ ۖ قُلْ سَأَتْلُو عَلَيْكُم مِّنْهُ
ذِكْرًا ۝ إِنَّا مَكَّنَّا لَهُ فِي الْأَرْضِ وَآتَيْنَاهُ مِن كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ۝
فَأَتْبَعَ سَبَبًا ۝ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِي
عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَوَجَدَ عِندَهَا قَوْمًا ۗ قُلْنَا يَا ذَا الْقَرْنَيْنِ إِمَّا أَن

उस चीज़ की जिस पर आप सब्र न कर सके"[35] ।○

और (हे मुहम्मद !) वे तुम से 'ज़ुल-क़रनैन'[36] के बारे में पूछते हैं। कह दो : मैं उस का कुछ ज़िक्र तुम से बयान करता हूँ।○ हम ने उसे ज़मीन में मज़बूत मक़ाम प्रदान किया था और उसे हर प्रकार का सामान दे रखा था।○ सो उस ने पश्चिम की ओर (एक मुहिम का) आयोजन किया।○ यहाँ तक कि जब वह सूर्यास्त की जगह पहुँचा, उस ने उसे एक काले सागर में अस्त होते पाया,[37] और उस के निकट उसे एक जाति मिली :

हम ने कहा : हे ज़ुल क़रनैन ! (तुम्हें इस की शक्ति प्राप्त है कि) चाहे तुम इन्हें तकलीफ़ दो और चाहे इन के साथ अच्छा व्यवहार करो"[38] ।○ उस ने कहा : (इन लोगों में से) जो कोई ज़ुल्म करेगा, उसे हम सज़ा देंगे, फिर वह अपने रब* की ओर पलटाया जायेगा, तो वह उसे सख़्त अज़ाब देगा।○ और जो कोई ईमान* लाया और अच्छा काम किया, उस के लिए अच्छा बदला है, और हम उसे अपना नर्म आदेश देंगे।○

फिर उस ने एक (दूसरी मुहिम का) आयोजन किया।○ यहाँ तक कि सूर्योदय की जगह जा पहुँचा, (वहाँ) उस ने उसे एक ऐसी जाति पर उदय होते पाया जिन के लिए हम ने उस के (अर्थात् सूर्य के) वरे कोई आड़ नहीं रखी"[39] ।○

ऐसा ही (हम ने किया)। उस के पास जो-कुछ था उस को हम (अपने) ज्ञान द्वारा घेरे हुये थे।○

फिर उस ने एक (और मुहिम का) आयोजन किया।○ यहाँ तक कि जब दो पहाड़ों के बीच पहुँचा,[40] तो उसे उन के पास एक जाति मिली जो कोई बात समझ ही नहीं पाती थी।○ उन्हों ने कहा : हे ज़ुल क़रनैन ! याजूज और माजूज[41] इस भूमि में फ़साद (उत्पात)

३५ इस वृत्तान्त से मालूम होता है कि हज़रत मूसा अ० की जिस बन्दे से मुलाक़ात कराई गई थी वह या तो फ़िरिश्तः रहा हो या उसी तरह का कोई और परोक्षीय व्यक्ति। इस लिए कि इस तरह के नैसर्गिक कार्य करने का आदेश केवल फ़िरिश्तों* ही को दिया जा सकता है। मनुष्य को तो प्रत्येक अवस्था में नियम और अनुशासन (Law & Order) के अन्तर्गत रहने का आदेश दिया गया है।

३६ 'ज़ुल-क़रनैन' के बारे में देखिए सूरः की भूमिका।

३७ अर्थात् उसे ऐसा दिखाई दे रहा था कि सूर्य काले गँदले पानी में डूब रहा है।

३८ यह ज़रूरी नहीं कि अल्लाह ने यह बात वह्य* के द्वारा 'ज़ुल क़रनैन' से कही हो। इस का भी हो सकता है कि अल्लाह ने 'ज़ुल क़रनैन' के दिल में यह बात डाल दी हो।

३९ अर्थात् वह जाति बिलकुल असभ्य थी, उसे घर, ख़ेमा आदि बनाना नहीं आता था

४० इन दोनों पहाड़ों के उस पार याजूज-माजूज का देश था जैसा कि आगे के बयान से पता चलता है कि इन पहाड़ों से अभिप्रेत काकेशिया (C... सागर और कृष्ण सागर के मध्य में पड़ती है।

४१ याजूज और माजूज (C...

* इस का अर्थ

१९--मरयम

(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः* में एक जगह हज़रत मसीह अ० की माता हज़रत मरयम का हाल बयान हुआ है इसी सम्पर्क से इस सूरः का नाम मरयम रखा गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह सूरः 'हबशः' (Abyssinia) की हिजरत* से पहले उतरी है। हबशः के सम्राट निजाशी (The Negus) के दरबार में जब मुसलमान बुलाये गये थे उस समय हज़रत जअ्फ़र रज़ि० ने जो हज़रत अली रज़ि० के भाई थे, भरे दरबार में इस सूरः का पाठ किया था।

यह वह समय था जब कि मुसलमानों को तरह-तरह से सताया जा रहा था। यहाँ तक कि मक्का में उन के लिए रहना दूभर हो गया था। वे मुसलमान जो ग़रीब और ग़ुलाम थे और जो 'क़ुरैश' के अधीन हो कर रह रहे थे विशेष रूप से सताये गये। किसी को तपती हुई रेत पर लेटाया गया; किसी के सीने पर भारी पत्थर रखे गये; किसी को भूखा-प्यासा तड़पाया गया। कार-बारी लोगों के कार-बार को हानि पहुँचाने की कोशिश की गई। भले और सज्जन लोगों का निरादर किया गया। जब काफ़िरों* की शरारत हद से आगे बढ़ गई तो नबी* सल्ल० ने अपने साथियों से कहा कि अच्छा हो कि तुम हबशः चले जाओ वहाँ एक ऐसा सम्राट है जिस के यहाँ किसी व्यक्ति पर ज़ुल्म नहीं होता वह भलाई की ज़मीन है, तुम लोग वहाँ ठहरे रहो यहाँ तक कि अल्लाह तुम्हारे लिए कोई राह पैदा करे।

केन्द्रीय विषय तथा वार्तायें

पिछली सूरः में विशेष रूप से सब्र* (सहनशीलता और धैर्य) पर उभारा गया है। प्रस्तुत सूरः में जिस बात पर विशेष ज़ोर दिया गया है वह है नमाज़* की पाबन्दी। सब्र* और नमाज़* में गहरा सम्पर्क पाया जाता है। आख़िरत* पर ईमान* रखने वालों का जीवन सब्र और नमाज़* पर ही निर्भर करता है। सब्र के बिना नमाज़* नहीं और नमाज़* के बिना मनुष्य को वास्तविक रूप से भय की दौलत नहीं हासिल हो सकती। प्रस्तुत सूरः में नमाज़* की ताकीद करते हुये उस पर जमने और क़ायम रहने पर विशेष ज़ोर दिया गया है' यही इस सूरः का केन्द्रीय विषय है। इस सूरः की एक विशेषता यह भी है कि इस में अल्लाह का एक गुणवाचक नाम 'रहमान' बार-बार आया है।

इस सूरः के प्रथम भाग में' हज़रत ज़करीया अ० और हज़रत यह्या अ० के बाद विशेष रूप से हज़रत ईसा मसीह अ० और उन की माता हज़रत मरयम का

१ दे० आयत ३१, ५८, ५९। ‡ इस सूरः से सूरतों का एक नया सिलसिला शुरू होता है।
२ दे० आयत १-४०।

* इस प्रकार अक्षरों में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

نُزُلًا ۝ قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْأَخْسَرِينَ أَعْمَالًا ۝ الَّذِينَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ
فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ
كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَلِقَائِهِ فَحَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
وَزْنًا ۝ ذَٰلِكَ جَزَاؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوا وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَرُسُلِي هُزُوًا ۝
إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنَّاتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ۝
خَالِدِينَ فِيهَا لَا يَبْغُونَ عَنْهَا حِوَلًا ۝ قُلْ لَوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِكَلِمَاتِ
رَبِّي لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ أَنْ تَنْفَدَ كَلِمَاتُ رَبِّي وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهِ مَدَدًا ۝ قُلْ
إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ فَمَنْ كَانَ يَرْجُو
لِقَاءَ رَبِّهِ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدًا ۝

कह दो : क्या हम तुम्हें ऐसे लोगों की ख़बर दें जो (अपने) किये-धरे में सब से बढ़ कर घाटा उठाने वाले हैं? ○ वे कि सांसारिक जीवन में जिन की कोशिश गुम हो कर रह गई, और वे समझते हैं कि अच्छा काम कर रहे हैं। ○

ये वे लोग हैं जिन्हों ने अपने रब* की आयतों* का और उस के मिलने का इन्कार किया। सो उन का किया-धरा अकारथ गया, तो हम क़ियामत* के दिन उन के लिए कोई वज़्न क़ायम न करेंगे। ○ यह है उन का बदला : दोज़ख़,* इस कारण कि उन्हों ने कुफ़्र* किया, और मेरी आयतों* और मेरे रसूलों* की हँसी उड़ाई। ○

निस्सन्देह जो लोग ईमान* लाये और अच्छे काम किये, उन की आव-भगत के लिए फ़िरदौस[६१] के बाग़ होंगे, ○ जिन में वे सदैव रहेंगे, वहाँ से कहीं और जाना न चाहेंगे। ○

(हे नबी*!) कहो : यदि समुद्र मेरे रब* की बातों[६२] के (लिखने के) लिए रोशनाई हो जाये, तो इस से पहले कि मेरे रब* की बातें समाप्त हों समुद्र ख़त्म हो जायेगा, यद्यपि उस की तरह हम और मदद को लायें। ○

(हे मुहम्मद!) कहो : मैं तो केवल एक मनुष्य हूँ तुम्हारी तरह। मेरी ओर वह्य* की जाती है कि तुम्हारा इलाह* (पूज्य) बस अकेला इलाह* है। तो जो कोई अपने रब* से मिलने की आशा रखता हो, उसे चाहिए कि अच्छा काम करे, और अपने रब* की इबादत* में किसी को शरीक न ठहराये। ○

---

६१. जन्नत* के लिए लगभग समस्त प्राचीन भाषाओं में 'फ़िरदौस' (Paradise) से मिलते-जुलते शब्द पाये जाते हैं।

६२. रब* की बातों (Words of Lord) से अभिप्रेत रब* के गुण, [illegible] और [illegible] हैं। [illegible] (Words of Lord) [illegible]

*इस तरह चिह्नित शब्दों की व्याख्या पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

२७ : ७४, ७५ तेरा रब जानता है, जो ये सीनों में छिपाते हैं और जो ज़ाहिर करते हैं।
३१ : २३ वह दिलों की बातें जानता है।
३१ : ३४ क़ियामत का ज्ञान उसी को है, गर्भ में क्या है, कल तुम क्या करोगे और कहाँ मरोगे, अल्लाह को सब मालूम है।
३४ : २ ज़मीन में क्या दाखिल होता है और क्या बाहर आता है, आसमान से क्या उतरता है और उसमें क्या चढ़ता है, अल्लाह को सब मालूम है।
३४ : ३ ज़मीन और आसमान का कोई कण भी उससे छिपा हुआ नहीं है।
३५ : ११ कोई मादा गर्भवती होती है या जनती है, अल्लाह को उसका ज्ञान है।
३५ : ३८ ज़मीन और आसमान की छिपी बातें और दिलों के भेद को जानता है।
४१ : ४७ क़ियामत का ज्ञान उसी को है।
४७ : १९ तुम्हारी चलत-फिरत सब उसे मालूम है।
५० : १६ वह मनुष्य की प्राण-नाड़ी से भी बहुत क़रीब है।
५८ : ७ हर तीन के साथ चौथा और हर चार के बाद पाँचवाँ अल्लाह होता है। वह सब-कुछ जानता है।
६४ : ४ आसमानों और ज़मीन में जो-कुछ है और तुम छिपाओ या ज़ाहिर करो। अल्लाह को सब मालूम है।
६५ : १२ अल्लाह का ज्ञान हर चीज़ को घेरे हुए है।
६७ : १३ तुम बात छिपाओ या ज़ाहिर करो, अल्लाह दिलों के भेद तक जानता है।
७२ : २६-२८ ग़ैब का जानने वाला है और हर चीज़ को उसने गिन रखा है।

(३) बड़ा उदार

२ : २३५ अल्लाह क्षमा करनेवाला और सहनशील है।
१० : ११ अगर अल्लाह लोगों की बुराई में जल्दी करता, तो उनका समय पूरा हो चुका होता।
१६ : ६१ अल्लाह लोगों के अत्याचार पर उन्हें एक निश्चित समय तक मुहलत देता है।
१८ : ५८ अल्लाह लोगों के करतूतों पर उन्हें तुरन्त पकड़ने लगे, तो उनपर झट अज़ाब भेज दे।
३५ : ४५ अगर लोगों के कर्मों पर उनकी पकड़ तुरन्त हो जाये, तो ज़मीन पर अल्लाह किसी चलनेवाले को न छोड़े।

(४) क्षमा करनेवाला

२ : ३१ वह तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा।
२ : ३७ वह क्षमा करनेवाला और दया करने वाला है।
२ : १६० बड़ा क्षमा करनेवाला और दया करने वाला है।
२ : १७३ अल्लाह क्षमा करनेवाला और दया करने वाला है।
२ : १८७ उसने क्षमा किया।
४ : ४३ वह नर्मी से काम लेने वाला और क्षमा करने वाला है।

सूरः* मरयम

(मक्का में उतरी – आयतें* ९८)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है

سورة مريم مكية وهي ثمان وتسعون اية وست ركوعات

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

كٓهٰيٰعٓصٓ ۝ ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا ۝ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ نِدَآءً
خَفِيًّا ۝ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّيْ وَاشْتَعَلَ الرَّاْسُ شَيْبًا
وَّلَمْ اَكُنْ بِدُعَآئِكَ رَبِّ شَقِيًّا ۝ وَاِنِّيْ خِفْتُ الْمَوَالِيَ مِنْ وَّرَآءِيْ
وَكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا فَهَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ۝ يَّرِثُنِيْ وَيَرِثُ
مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ ۖ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا ۝ يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ
اسْمُهٗ يَحْيٰى لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ۝ قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ
لِيْ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا ۝ قَالَ
كَذٰلِكَ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ وَّقَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ
شَيْئًا ۝ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ۗ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَ
لَيَالٍ سَوِيًّا ۝ فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ مِنَ الْمِحْرَابِ فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا
بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ۝ يٰيَحْيٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ۗ وَاٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ۝
وَّحَنَانًا مِّنْ لَّدُنَّا وَزَكٰوةً ۗ وَكَانَ تَقِيًّا ۝ وَّبَرًّا بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ
جَبَّارًا عَصِيًّا ۝ وَسَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوْتُ وَيَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا ۝
وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ اِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ اَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا ۝ فَاتَّخَذَتْ
مِنْ دُوْنِهِمْ حِجَابًا ۫ فَاَرْسَلْنَآ اِلَيْهَا رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا

काफ़० हा० या० ऐम्न० साद०[1] ○ ज़िक्र (वर्णन) है तेरे रब* की दयालुता का जो उस ने अपने बन्दे ज़करीया पर दरसाया। ○ जब कि उस ने अपने रब* को चुपके-चुपके पुकारा, ○

उस ने कहा : रब* ! मेरी हड्डियाँ निर्बल हो गईं और सिर बुढ़ापे से भड़क उठा, रब* ! तुझे पुकार कर मैं कभी बे-नसीब नहीं रहा। ○ मैं अपने पीछे अपने भाई-बन्धुओं (की अवज्ञा) से डरता हूँ, और मेरी पत्नी बाँझ है। सो तू मुझे अपने पास से एक वारिस (उत्तराधिकारी) प्रदान कर[2] ○ जो मेरा वारिस हो और याक़ूब के कुल का भी वारिस हो। और उसे रब ! मन चाहता बना। ○

(कहा गया) : हे ज़करीया ! हम तुझे एक लड़के की शुभ-सूचना देते हैं जिस का नाम यह्या होगा; हम ने किसी को पूर्वकाल में उस का नाम-राशि नहीं बनाया[3]। ○

उस ने कहा : रब मेरे यहाँ कैसे लड़का होगा जब कि मेरी स्त्री बाँझ है और मैं बुढ़ापे की अन्तिम अवस्था को पहुँच चुका हूँ ? ○

कहा : ऐसे ही होगा। तेरे रब* ने कहा है कि यह तो मेरे लिए सहज है, इस से पहले मैं तुझे पैदा कर चुका हूँ, जब कि तू कोई चीज़ न था। ○

(ज़करीया ने) कहा : रब* ! मेरे लिए कोई निशानी ठहरा दे। कहा : तेरे लिए निशानी यह है कि भला-चंगा रह कर भी तीन रात (-दिन) तू लोगों से बात न कर सकेगा। ○

तब वह हुजरे (एकान्त में रहने के घर) से निकल कर अपनी जाति वालों के पास आया, और उन से इशारों में कहा : प्रातःकाल और सन्ध्या समय (अपने रब* की) तसबीह करो। ○

(उस के बेटे से कहा गया) : हे यह्या ! किताब* को मज़बूत थाम ले।

और हम ने उसे बचपन में ही हुक्म* प्रदान किया। ○ और अपनी ओर से अनुकम्पा और पवित्रता भी, और वह अल्लाह की अवज्ञा से बचने वाला और उस की ना-ख़ुशी से डरने वाला था, ○ और अपने माता-पिता के साथ नेकी करने वाला। और वह ज़ब्र करने वाला, अवज्ञाकारी न था। ○

---

1 दे० सूरः अल-बक़रः फुट नोट १।

2 दे० सूरः आले इमरान आयत ३८-४१।

3 अर्थात् कोई उस जैसा अर्थात् उस का सहगुणी और समकक्षी पैदा नहीं किया। दे० आयत ६५। बाइबिल में है : "तेरे घराने में किसी का यह नाम नहीं" दे० लूका (Luke) १ : ६१।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

हाल बयान किया गया है। हज़रत मसीह अ० के बारे में ईसाइयों की धारणाओं का पूर्णतः खण्डन किया गया है। बताया गया है कि हज़रत मसीह अ० अल्लाह के बेटे नहीं बल्कि उस के बन्दे, और नबी* थे। अल्लाह ने उन्हें अपनी क़ुदरत से बिना बाप ही के पैदा किया था। अल्लाह सर्वशक्तिमान् है। वह जो चाहे कर सकता है। हज़रत मसीह अ० लोगों को अल्लाह की इबादत* और बन्दगी की ओर बुलाने आये थे न कि लोग उन्हीं को अपना पूज्य और प्रभु बना लें। वे स्वयं इस बात के पाबन्द थे कि अल्लाह की बन्दगी में लगे रहें, नमाज़* और ज़कात* की पाबन्दी करें। परन्तु लोगों ने उन के दिखाये हुये मार्ग को छोड़ कर परस्पर विभेद किया और कुफ़्र* की राह पर चल पड़े।

इस के बाद[३] हज़रत इबराहीम अ० और उन की सन्तान का क़िस्सा सुनाया गया है। बताया गया है कि हज़रत इबराहीम अ० जिस दीन* के अनुयायी थे वह तौहीद* (एकेश्वरवाद) का दीन* था। हज़रत इबराहीम अ० को सचाई के लिए घर-बार और अपने देश तक को छोड़ना पड़ा परन्तु अल्लाह की उन पर कृपा हुई; अल्लाह ने उन की सन्तान में नबी* पैदा किये जो एक अल्लाह को मानने वाले और उसी के आगे सजदः करने वाले थे। परन्तु तद् पश्चात् ऐसे लोग आये जो अपनी तुच्छ इच्छाओं के दास बने और अपनी नमाज़ों* को बरबाद किया और गुमराही में बहुत दूर जा पड़े।

सूरः के अन्तिम भाग[४] में क़ियामत* का उल्लेख किया गया है। मक्का के काफ़िरों* की गुमराहियों पर उन्हें डरावा दिया गया है। और ईमान* वालों को शुभ-सूचना दी गई है कि काफ़िर* लोग देर तक तुम्हारा रास्ता नहीं रोक सकते; वह समय बहुत जल्द आने वाला है कि लोगों के दिल तुम्हारी ओर खिंच कर रहेंगे।

---

३ दे० आयत ४१–६३।
४ दे० आयत ६४–७३।
* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* मरयम

(मक्का में उतरी – आयतें* ९८)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
كٰهٰيٰعٰصٰ ۞ ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا ۞ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ نِدَآءً
خَفِيًّا ۞ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّيْ وَاشْتَعَلَ الرَّاْسُ شَيْبًا
وَّلَمْ اَكُنْۢ بِدُعَآئِكَ رَبِّ شَقِيًّا ۞ وَاِنِّيْ خِفْتُ الْمَوَالِيَ مِنْ وَّرَآءِيْ
وَكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا فَهَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ۞ يَّرِثُنِيْ وَيَرِثُ
مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ ۖ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا ۞ يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ
اِۨسْمُهٗ يَحْيٰى ۙ لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ۞ قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ
لِيْ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا ۞ قَالَ
كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ وَّقَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ
شَيْـًٔا ۞ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ۚ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَ
لَيَالٍ سَوِيًّا ۞ فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ مِنَ الْمِحْرَابِ فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا
بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ۞ يٰيَحْيٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ۚ وَاٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ۞
وَّحَنَانًا مِّنْ لَّدُنَّا وَزَكٰوةً ۚ وَكَانَ تَقِيًّا ۞ وَّبَرًّا ۢبِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ
جَبَّارًا عَصِيًّا ۞ وَسَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوْتُ وَيَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا ۞
وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ اِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ اَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا ۞ فَاتَّخَذَتْ
مِنْ دُوْنِهِمْ حِجَابًا ۫ فَاَرْسَلْنَآ اِلَيْهَا رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا

क़ाफ़० हा० या० ऐम्न० साद०[1] ○ ज़िक्र (वर्णन) है तेरे रब* की दयालुता का जो उस ने अपने बन्दे ज़करीया पर दरसाया। ○ जब कि उस ने अपने रब* को चुपके-चुपके पुकारा, ○

उस ने कहा : रब* ! मेरी हड्डियाँ निर्बल हो गईं और सिर बुढ़ापे से भड़क उठा, रब* ! तुझे पुकार कर मैं कभी बे-नसीब नहीं रहा। ○ मैं अपने पीछे अपने भाई-बन्धुओं (की अवज्ञा) से डरता हूँ, और मेरी पत्नी बाँझ है। सो तू मुझे अपने पास से एक वारिस (उत्तराधिकारी) प्रदान कर[2] ○ जो मेरा वारिस हो और याक़ूब के कुल का भी वारिस हो। और उसे रब ! मन चाहता बना। ○

(कहा गया) : हे ज़करीया ! हम तुझे एक लड़के की शुभ-सूचना देते हैं जिस का नाम यहया होगा; हम ने किसी को पूर्वकाल में उस का नाम-राशि नहीं बनाया[3]। ○

उस ने कहा : रब मेरे यहाँ कैसे लड़का होगा जब कि मेरी स्त्री बाँझ है और मैं बुढ़ापे की अन्तिम अवस्था को पहुँच चुका हूँ ? ○

कहा : ऐसे ही होगा। तेरे रब* ने कहा है कि यह तो मेरे लिए सहज है, इस से पहले मैं तुझे पैदा कर चुका हूँ, जब कि तू कोई चीज़ न था। ○

(ज़करीया ने) कहा : रब* ! मेरे लिए कोई निशानी ठहरा दे। कहा : तेरे लिए निशानी यह है कि भला-चंगा रह कर भी तीन रात (–दिन) तू लोगों से बात न कर सकेगा। ○

तब वह हुजरे (एकान्त में रहने के घर) से निकल कर अपनी जाति वालों के पास आया, और उन से इशारों में कहा : प्रातःकाल और सन्ध्या समय (अपने रब* की) तसबीह करो। ○

(उस के बेटे से कहा गया) : हे यहया ! किताब* को मज़बूत थाम ले।

और हम ने उसे बचपन में ही हुक्म* प्रदान किया। ○ और अपनी ओर से अनुकम्पा और पवित्रता भी, और वह अल्लाह की अवज्ञा से बचने वाला और उस की ना-ख़ुशी से डरने वाला था, ○ और अपने माता-पिता के साथ नेकी करने वाला। और वह जब्र करने वाला, अवज्ञाकारी न था। ○

---

1 दे० सूरः अल-बक़रः फ़ुट नोट 1।

2 दे० सूरः आले इमरान आयत ३८-४१।

3 अर्थात् कोई उस जैसा अर्थात् उस का सहगुणी और समवर्ती पैदा नहीं किया। दे० आयत ६५। बाइबिल में है : "तेरे घराने में किसी का यह नाम नहीं" दे० लूक़ा (Luke) 1 : 61।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

أمرا فإنما يقول له كن فيكون ۝ وإن الله ربي وربكم فاعبدوه
هذا صراط مستقيم ۝ فاختلف الأحزاب من بينهم فويل
للذين كفروا من مشهد يوم عظيم ۝ أسمع بهم وأبصر يوم
يأتوننا لكن الظالمون اليوم في ضلال مبين ۝ وأنذرهم يوم
الحسرة إذ قضي الأمر وهم في غفلة وهم لا يؤمنون ۝ إنا
نحن نرث الأرض ومن عليها وإلينا يرجعون ۝ واذكر في
الكتاب إبراهيم إنه كان صديقا نبيا ۝ إذ قال لأبيه يا أبت لم
تعبد ما لا يسمع ولا يبصر ولا يغني عنك شيئا ۝ يا أبت إني قد
جاءني من العلم ما لم يأتك فاتبعني أهدك صراطا سويا ۝ يا أبت
لا تعبد الشيطان إن الشيطان كان للرحمن عصيا ۝ يا أبت
إني أخاف أن يمسك عذاب من الرحمن فتكون للشيطان
وليا ۝ قال أراغب أنت عن آلهتي يا إبراهيم لئن لم تنته لأرجمنك
واهجرني مليا ۝ قال سلام عليك سأستغفر لك ربي إنه كان
بي حفيا ۝ وأعتزلكم وما تدعون من دون الله وأدعو ربي
عسى ألا أكون بدعاء ربي شقيا ۝ فلما اعتزلهم وما يعبدون
من دون الله وهبنا له إسحاق ويعقوب وكلا جعلنا نبيا ۝ و
وهبنا لهم من رحمتنا وجعلنا لهم لسان صدق عليا ۝ واذكر

तब उस ने उस (बच्चे) की ओर इशारा कर दिया। वे कहने लगे : हम उस से कैसे बात करें जो (अभी) पालने में पड़ा हुआ, एक बच्चा है? ○ वह (बच्चा) बोल उठा[8] : मैं अल्लाह का बन्दा हूँ। उस ने मुझे किताब* प्रदान की और मुझे नबी* बनाया, ○ और मुझे बरकत वाला किया जहाँ भी मैं रहूँ, और मुझे नमाज़* और ज़कात* की ताकीद की जब तक कि मैं जीवित रहूँ, ○ और (मुझे) अपनी माता के साथ नेक व्यवहार करने वाला (बनाया), और मुझे जब्र करने वाला, बद-नसीब नहीं बनाया। ○ और सलाम है मुझ पर जिस दिन कि मैं पैदा हुआ, और जिस दिन कि मैं मरूँ, और जिस दिन कि जीवित कर के उठाया जाऊँ! ○ —

यह[9] है ईसा, मरयम का बेटा : (यह है) सच्ची बात जिस में वे झगड़ते (और सन्देह करते) हैं[10]। ○

अल्लाह ऐसा नहीं कि वह किसी को (अपना) बेटा बनाये। महिमावान है वह! वह जब किसी चीज़ का निश्चय करता है, तो बस कह देता है : होजा! वह हो जाती है। ○ —और (मसीह ने कहा था) : निस्सन्देह अल्लाह मेरा रब* भी है और तुम्हारा रब* भी। सो तुम उसी की इबादत* करो। यही सीधा मार्ग है। ○

परन्तु फिर उन में कितने ही गरोहों ने परस्पर विभेद किया[11] : तो जिन लोगों ने कुफ़्र* किया तबाही होगी उन के लिए एक बड़े दिन की हाज़िरी से[12]। ○ कितने बड़े सुनने वाले और कितने बड़े देखने वाले होंगे जिस दिन वे हमारे सामने आयेंगे! परन्तु ये ज़ालिम आज खुली गुमराही में पड़े हुये हैं। ○

(हे नबी*!) उन्हें पश्चाताप के दिन से डराओ जब कि मामले का फ़ैसला कर दिया जायेगा। और उन का हाल यह है कि वे ग़फ़लत में पड़े हुये हैं, और ईमान* नहीं लाते हैं। ○

हम ज़मीन और जो कोई उस पर (बसता) है उस के वारिस होंगे, और हमारी ओर वे अवश्य पलटाये जायेंगे। ○

और इस किताब* में इबराहीम का ज़िक्र (शुभ-चर्चा) करो। निस्सन्देह वह बड़ा सच्चा और एक नबी* था। ○ जब उस ने अपने बाप से कहा : हे बाप! आप क्यों उस चीज़ को पूजते हैं जो न सुने और न देखे, और न आप के किसी काम आये? ○ हे बाप! मेरे पास ऐसा

८ अल्लाह ने उस बच्चे को बोलने की शक्ति प्रदान कर दी और वह बोल पड़ा।

९ यहाँ से ले कर आयत ४० के अन्त तक की आयतें अवतरित हैं इसी लिए मूल ग्रन्थ में इन की लय (क़ाफ़िया अथवा अन्त्यानुप्रास) बदल गई है।

१० हज़रत मसीह ने अपने बारे में जो कुछ कहा वही सत्य है परन्तु ईसाइयों को उन के अल्लाह का बन्दा होने में सन्देह हो रहा।

११ कुछ लोगों ने उन्हें अल्लाह का बेटा बना लिया; कुछ ने उन्हें [illegible] बताया और कुछ इन दोनों के बीच दुविधा में पड़ गये।

१२ क़ियामत का वह बड़ा दिन आयेगा तो वह इन के लिए तबाही और विनाश का दिन होगा।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

فِي الْكِتٰبِ مُوْسٰى اِنَّهٗ كَانَ مُخْلَصًا وَّكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ۝ وَنَادَيْنٰهُ
مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ الْاَيْمَنِ وَقَرَّبْنٰهُ نَجِيًّا ۝ وَوَهَبْنَا لَهٗ مِنْ رَّحْمَتِنَآ
اَخَاهُ هٰرُوْنَ نَبِيًّا ۝ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِسْمٰعِيْلَ اِنَّهٗ كَانَ صَادِقَ
الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ۝ وَكَانَ يَاْمُرُ اَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ
وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ مَرْضِيًّا ۝ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ اِنَّهٗ كَانَ
صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ۝ وَّرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ
عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ مِنْ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ وَّمِنْ
ذُرِّيَّةِ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْرَآءِيْلَ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ
اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّبُكِيًّا ۩ ۝ فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ
اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ۝ اِلَّا مَنْ
تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ
شَيْئًا ۝ جَنّٰتِ عَدْنِ الَّتِيْ وَعَدَ الرَّحْمٰنُ عِبَادَهٗ بِالْغَيْبِ اِنَّهٗ كَانَ
وَعْدُهٗ مَاْتِيًّا ۝ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا اِلَّا سَلٰمًا وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيْهَا بُكْرَةً
وَّعَشِيًّا ۝ تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْ نُوْرِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ۝ وَمَا
نَتَنَزَّلُ اِلَّا بِاَمْرِ رَبِّكَ لَهٗ مَا بَيْنَ اَيْدِيْنَا وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذٰلِكَ وَ
مَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ۝ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَ
اصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهٖ هَلْ تَعْلَمُ لَهٗ سَمِيًّا ۝ وَيَقُوْلُ الْاِنْسَانُ ءَاِذَا مَا

ज्ञान आया है जो आप के पास नहीं आया अतः आप मेरे पीछे चलिए मैं आप को सीधा मार्ग दिखाऊँगा।○ हे बाप! शैतान* की बन्दगी न कीजिए। शैतान* तो रहमान* (कृपाशील ईश्वर) का अवज्ञाकारी है।○ हे बाप! मैं डरता हूँ कि कहीं आप को रहमान* का अज़ाब न आ पकड़े और आप शैतान* के साथी हो कर रहें।○

४१

उस ने कहा: हे इबराहीम! क्या तू मेरे इलाहों* (परम पूज्य देवताओं) से फिर गया है! यदि तू बाज़ न आया, तो मैं तुझ पर पथराव कर दूँगा। तू मुझ से दीर्घ काल के लिए अलग हो जा।○

(इबराहीम ने) कहा: सलाम है आप को! मैं अपने रब* से आप के लिए क्षमा की प्रार्थना करूँगा। निस्सन्देह वह मुझ पर बहुत मेहरबान है।○ मैं आप लोगों को छोड़ता हूँ और उन्हें भी जिन्हें आप लोग अल्लाह के सिवा पुकारते हैं, और मैं अपने रब* को पुकारूँगा। आशा है कि मैं अपने रब* को पुकार कर बे-नसीब नहीं रहूँगा।○

तो, जब वह उन लोगों से और जिन्हें वे अल्लाह के सिवा पूजते थे उन से अलग हो गया, तो हम ने उसे इसहाक़ और याक़ूब (जैसे बेटे) प्रदान किये। और हर एक को हम ने नबी* बनाया।○ और उन्हें अपनी दयालुता से (हिस्सा) दिया और उन्हें एक सच्ची उच्च ख्याति प्रदान की।○

५०

और इस किताब* में मूसा का ज़िक्र (शुभ-चर्चा) करो। निस्सन्देह वह (अल्लाह का) चुना हुआ था, और वह एक रसूल* और नबी* था।○ हम ने उसे तूर (पर्वत) की दाहिनी ओर से आवाज़ दी, और उसे हम ने वार्तालाप की दशा में अपने से क़रीब किया।○ और अपनी दयालुता से उस के भाई हारून को नबी* बना कर उसे (सहायक के रूप में) दिया।○

और इस किताब* में इसमाईल का ज़िक्र (शुभ-चर्चा) करो। निस्सन्देह वह वादे का सच्चा था, और एक रसूल* और नबी* था।○ और वह अपने लोगों को नमाज़* और ज़कात* का हुक्म देता था, और वह अपने रब* के यहाँ पसन्द किया हुआ व्यक्ति था।○

और इस किताब* में इदरीस[१३] का ज़िक्र करो। निस्सन्देह वह बड़ा सच्चा और एक नबी* था।○ और उसे हम ने एक उच्च स्थान पर उठाया था।○

ये वे नबी* हैं जिन पर अल्लाह ने कृपा की, आदम की सन्तान में से और उन लोगों में

१३ हज़रत इदरीस अ० के बारे में कुछ लोगों का कहना है कि ये बनी इसराईल में से कोई नबी* हुए हैं। परन्तु अधिकतर लोगों का मत उन के बारे में यही है कि उन का समय हज़रत नूह अ० से पहले का है। बाइबिल में हनोक (Enoch) नामक जिन महा पुरुष का ज़िक्र किया गया है साधारणतः यही समझा जाता है कि वही हज़रत इदरीस अ० हैं। हनोक के बारे में बाइबिल का बयान है कि अल्लाह ने उन्हें उठा लिया दे० 'पैदाइश' (Gen.) ५ : २१-२४। तलमूद (Talmud) में विस्तारपूर्वक उन का हाल बयान हुआ है। बाइबिल और तलमूद दोनों से मालूम होता है कि उन का समय हज़रत नूह अ० से पहले ही का है।*

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

مِتُّ لَسَوْفَ أُخْرَجُ حَيًّا ۝ أَوَلَا يَذْكُرُ الْإِنسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِن قَبْلُ
وَلَمْ يَكُ شَيْئًا ۝ فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيَاطِينَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ
جَهَنَّمَ جِثِيًّا ۝ ثُمَّ لَنَنزِعَنَّ مِن كُلِّ شِيعَةٍ أَيُّهُمْ أَشَدُّ عَلَى الرَّحْمَٰنِ
عِتِيًّا ۝ ثُمَّ لَنَحْنُ أَعْلَمُ بِالَّذِينَ هُمْ أَوْلَىٰ بِهَا صِلِيًّا ۝ وَإِن مِّنكُمْ إِلَّا
وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ۝ ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِينَ اتَّقَوا وَّ
نَذَرُ الظَّالِمِينَ فِيهَا جِثِيًّا ۝ وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ
الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا أَيُّ الْفَرِيقَيْنِ خَيْرٌ مَّقَامًا وَأَحْسَنُ
نَدِيًّا ۝ وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّن قَرْنٍ هُمْ أَحْسَنُ أَثَاثًا وَرِئْيًا ۝
قُلْ مَن كَانَ فِي الضَّلَالَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمَٰنُ مَدًّا ۚ حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا
مَا يُوعَدُونَ إِمَّا الْعَذَابَ وَإِمَّا السَّاعَةَ فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ شَرٌّ
مَّكَانًا وَأَضْعَفُ جُندًا ۝ وَيَزِيدُ اللَّهُ الَّذِينَ اهْتَدَوْا هُدًى ۗ وَالْبَاقِيَاتُ
الصَّالِحَاتُ خَيْرٌ عِندَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ مَّرَدًّا ۝ أَفَرَأَيْتَ الَّذِي كَفَرَ
بِآيَاتِنَا وَقَالَ لَأُوتَيَنَّ مَالًا وَوَلَدًا ۝ أَطَّلَعَ الْغَيْبَ أَمِ اتَّخَذَ عِندَ
الرَّحْمَٰنِ عَهْدًا ۝ كَلَّا ۚ سَنَكْتُبُ مَا يَقُولُ وَنَمُدُّ لَهُ مِنَ الْعَذَابِ
مَدًّا ۝ وَنَرِثُهُ مَا يَقُولُ وَيَأْتِينَا فَرْدًا ۝ وَاتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ آلِهَةً
لِّيَكُونُوا لَهُمْ عِزًّا ۝ كَلَّا ۚ سَيَكْفُرُونَ بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُونُونَ عَلَيْهِمْ
ضِدًّا ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّا أَرْسَلْنَا الشَّيَاطِينَ عَلَى الْكَافِرِينَ تَؤُزُّهُمْ أَزًّا ۝

से जिन्हें हम ने नूह के साथ (नौका में) सवार किया, और इबराहीम की सन्तान में से और इसराईल* की (सन्तान में से), और उन में से जिन को हम ने (सीधी) राह दिखाई और चुन लिया। जब उन्हें हमारी आयतें* सुनाई जातीं, तो रोते हुये सजदे* में गिर जाते थे[१४]। ○

फिर उन के बाद बुरे लोग उन के उत्तराधिकारी हुये कि उन्हों ने नमाज़* गँवाई और (तुच्छ) इच्छाओं के पीछे चले। सो जल्द ही (उन की) गुमराही उन के सामने आयेगी[१५]। सिवाय उस के जिस ने तौबः* कर ली और ईमान* ले आया और अच्छा काम किया। तो ऐसे लोग जन्नत* में प्रवेश करेंगे, ६० और उन पर कुछ भी ज़ुल्म न किया जायेगा[१६]। ○ — सदैव रहने वाली (सदा-बहार) जन्नतें,* जिन का रहमान* ने अपने बन्दों से परोक्षतः वादा कर रखा है। निश्चय ही उस का वादा पूरा हो कर रहना है। ○ —

वहाँ वे सलाम के सिवा कोई बकवाद न सुनेंगे,[१७] और वहाँ प्रातः समय और सायंकाल उन की रोज़ी उन के लिए संचित रहेगी। ○ यह है वह जन्नत* जिस का वारिस हम अपने बन्दों में से उसे बनायेंगे जो अल्लाह की अवज्ञा से बचने वाला और उस की ना-ख़ुशी से डरने वाला हो। ○

(हे मुहम्मद!) हम (फ़िरिश्ते*) तुम्हारे रब* के हुक्म के बिना नहीं उतरते[१८]। और जो-कुछ हमारे आगे है और जो-कुछ हमारे पीछे है और जो-कुछ इस के बीच है सब उसी का है, और तुम्हारा रब* भूलने वाला नहीं है ○ — आसमानों और ज़मीन का रब* है और उस का, जो-कुछ कि इन दोनों के बीच है! अतः तुम उसी की इबादत* करो और उस की इबादत* ६५ पर जमे रहो। क्या तुम उस के किसी नामराशि को जानते हो[१९]? ○

और मनुष्य (आश्चर्य से) कहता है : क्या जब मैं मर गया, तो फिर जीवित कर के निकाल लाया जाऊँगा? ○ क्या मनुष्य याद नहीं करता कि हम उसे पहले पैदा कर चुके हैं, जब कि

---

१४ ऐसे अवसर पर काफ़िरों का क्या हाल होता है इस के लिए दे० आयत ७३।*

१५ अर्थात् वे अपनी गुमराही का बुरा परिणाम देख लेंगे।

१६ अर्थात् उन का कुछ भी हक़ मारा न जायेगा।

१७ अर्थात् वहाँ का समाज अत्यन्त पवित्र और सुखमय होगा। न तो वहाँ कोई अनुचित, व्यर्थ और अश्लील बात सुनने को मिलेगी, और न वहाँ के समाज में कोई गन्दगी और बुराई पाई जायेगी।

१८ यह सूरः उस समय उतरी है जब कि नबी सल्ल० और आप (सल्ल०) के साथी वह्य* की प्रतीक्षा कर रहे थे। ये कुछ शब्द अल्लाह ने जिबरील* अ० के मुख से कहलवाये हैं, ताकि ईमान* वालों को ढारस हो और उन्हें धैर्य से काम करने की प्रेरणा भी मिले।*

१९ अर्थात् उस-जैसा, उस के जैसे गुणों का स्वामी। यदि उस-जैसा कोई और नहीं है तो उसे छोड़ कर दूसरों को क्यों पूज्य बनाने लग जाते हो।

**इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

वह कुछ भी नहीं था'' ? ○

और तेरे रब* की क़सम, हम अवश्य उन्हें और शैतानों* को भी घेर लायेंगे, फिर हम उन्हें घुटनों के बल गिरे हुये, दोज़ख़* के चारों ओर, हाज़िर करेंगे'' । ○

फिर हर गरोह में से हम उसे खींच निकालेंगे जो उन में रहमान* के मुक़ाबिले में सरकशी में बढ़ा था । ○

फिर हम उन को भली-भाँति जानते हैं जो उस (दोज़ख़*) में झोंके जाने के अधिक योग्य हैं । ○ ७०

तुम में कोई नहीं जिसे उस (दोज़ख़*) पर पहुँचना न हो'' । यह एक निश्चित बात है जो तेरे रब* पर लाज़िम है'' । ○

फिर हम उन्हें बचा लेंगे जो अल्लाह की अवज्ञा से बचे और उस की ना-ख़ुशी से डरते रहे, और ज़ालिमों को उस में घुटनों के बल गिरा हुआ छोड़ देंगे । ○

जब उन्हें हमारी खुली हुई आयतें* सुनाई जाती हैं, तो वे लोग जिन्हों ने कुफ़्र* किया ईमान* लाने वालों से कहते हैं : (हमारे-तुम्हारे) दोनों फ़रीक़ों में कौन जगह की दृष्टि से उत्तम और मजलिस की दृष्टि से'' अच्छा है ? ○

हालाँकि इस से पहले कितनी ही नस्लों (जातियों) को हम हलाक (विनष्ट) कर चुके हैं, जो (अपनी) सामग्री और सम्पन्नता में (इन से) कहीं अच्छी थीं ! ○

कह दो : जो कोई गुमराही में पड़ा हुआ है उसे रहमान* ढील दिये जाता है, यहाँ तक कि जब ऐसे लोग वह चीज़ देख लेंगे जिस का उन से वादा किया जाता है — चाहे वह (अल्लाह का) अज़ाब हो या वह (क़ियामत* की) घड़ी हो — तो जान लेंगे कि कौन स्थिति में बुरा है और एक जत्थे की हैसियत से अधिक कमज़ोर । ○ ७५

और जिन लोगों ने (सीधी) राह पा ली है, अल्लाह उन पर और अधिक राह खोल देता है,

और बाक़ी रहने वाली नेकियाँ ही तेरे रब* के यहाँ कर्म-फल की दृष्टि से उत्तम हैं, और परिणाम की दृष्टि से भी उत्तम हैं । ○

तो क्या तू ने उस को देखा जिस ने हमारी आयतों* के साथ कुफ़्र* किया और कहा : मुझे तो अवश्य ही दिया जायेगा माल और औलाद ? ○

क्या उस ने परोक्ष को झाँक कर देख लिया है, या उस ने रहमान* से कोई वादा ले लिया है ? ○ — कदापि नहीं, जो-कुछ यह कहता है हम उसे लिख लेते हैं, और इस के लिए अज़ाब बढ़ाते चले जायेंगे । ○ और जो यह बताता है उस के वारिस हम होंगे, और यह अकेला हमारे सामने आयेगा'' । ○ इन्हों ने अल्लाह के सिवा और (दूसरे) इलाह* (पूज्य) ८० बना रखे हैं ताकि वे इन की शक्ति (का कारण) हों'' । ○ कदापि नहीं, वे इन की इबादत* का इन्कार करेंगे, और (उलटे) इन के विरोधी हो जायेंगे । ○

---

२० फिर आख़िर वह आश्चर्य क्यों करता है ।

२१ दे० सूरः अल-क़मस आयत ६२-७५ ।

२२ अर्थात् दोज़ख़* पर से सभी को गुज़रना होगा परन्तु ईमान* वाले उस में डाले नहीं जायेंगे । अल्लाह उन्हें दोज़ख़* के अज़ाब से बचा लेगा ।

२३ अर्थात् यह एक ऐसी बात है जो निश्चय पा चुकी है, इस का पूरा करना अल्लाह के ज़िम्मे है ।

२४ अर्थात् किस के मददगार और सहायक अच्छे हैं ।

२५ माल, औलाद और सारे सामान पर केवल हमारा ही अधिकार रह जायेगा ।

अर्थात् ये इन के सहायक और पृष्ठ-पोषक हो जायें ।

* का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ ۖ إِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ۝ يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِينَ إِلَى الرَّحْمَٰنِ
وَفْدًا ۝ وَنَسُوقُ الْمُجْرِمِينَ إِلَىٰ جَهَنَّمَ وِرْدًا ۝ لَا يَمْلِكُونَ الشَّفَاعَةَ
إِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِندَ الرَّحْمَٰنِ عَهْدًا ۝ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَٰنُ وَلَدًا ۝
لَّقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا إِدًّا ۝ تَكَادُ السَّمَاوَاتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنشَقُّ الْأَرْضُ
وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ۝ أَن دَعَوْا لِلرَّحْمَٰنِ وَلَدًا ۝ وَمَا يَنبَغِي لِلرَّحْمَٰنِ
أَن يَتَّخِذَ وَلَدًا ۝ إِن كُلُّ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ إِلَّا آتِي الرَّحْمَٰنِ
عَبْدًا ۝ لَّقَدْ أَحْصَاهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ۝ وَكُلُّهُمْ آتِيهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
فَرْدًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمَٰنُ
وُدًّا ۝ فَإِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِينَ وَتُنذِرَ بِهِ
قَوْمًا لُّدًّا ۝ وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّن قَرْنٍ هَلْ تُحِسُّ مِنْهُم
مِّنْ أَحَدٍ أَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ۝

क्या तुम ने नहीं देखा कि हम ने इन काफ़िरों* पर शैतानों* को छोड़ रखा है जो इन्हें उकसाते रहते हैं ? ○ तो तू इन के बारे में जल्दी न कर। हम तो इन के लिए (बुराइयाँ) गिन-गिन रख रहे हैं। ○ जिस दिन कि हम अल्लाह का डर रखने वालों को बुलाये मेहमान के रूप में रहमान* के पास इकट्ठा करेंगे। ○ और अपराधियों को दोज़ख़* की आग की ओर हाँक कर उस के घाट पहुँचा देंगे। ○ उन्हें सिफ़ारिश का अधिकार प्राप्त न होगा, सिवाय उस के जिस ने रहमान* से वचन ले लिया हो[२७]। ○

और उन्हों ने (अर्थात् ईसाइयों* ने) कहा : रहमान* ने किसी को बेटा बनाया है। ○ —भारी चीज़ है जो तुम (गढ़) लाये हो, ○ क़रीब है कि इस से आसमान फट पड़ें और ज़मीन टुकड़े-टुकड़े हो जाये और पहाड़ टुकड़े-टुकड़े होकर ढह पड़ें, ○ कि उन्हों ने रहमान* के लिए औलाद होने का दावा किया, ○ जब कि यह रहमान* की प्रतिष्ठा के प्रतिकूल बात है कि वह किसी को बेटा बनाये। ○ आसमानों और ज़मीन में कोई नहीं कि वह बन्दा हो कर उस के पास न आये। ○ उस ने उन्हें घेर रखा है और उस ने उन्हें गिन रखा है[२८]। ○ और उन में का हर एक क़ियामत* के दिन उस के सामने अकेला आने वाला है। ○

निश्चय ही जो लोग ईमान* लाये और अच्छे काम किये, जल्द ही रहमान* उन के लिए प्रेम पैदा कर देगा। ○

सो (हे मुहम्मद !) हम ने इस (कलाम) को तुम्हारी भाषा में केवल इस लिए आसान कर दिया है,[२९] ताकि तुम इस से अल्लाह की अवज्ञा से बचने और उस की ना-ख़ुशी से डरने वालों को शुभ-सूचना दो, और इस से हठी-झगड़ालू लोगों को सचेत कर दो। ○

और इन से पहले हम कितनी ही नस्लों (जातियों) को विनष्ट कर चुके हैं ! क्या तुम उन में से किसी की आहट पाते हो, या उन की कोई भनक तुम सुनते हो ? ○

---

२७ ये नबी* और शहीद* हैं जिन्हें सिफ़ारिश की इजाज़त प्राप्त होगी।

२८ ये उस से बच कर कहाँ जा सकते हैं !

२९ आसान करने का अर्थ यह कदापि नहीं है कि क़ुरआन में गहराइयाँ और चिन्तन करने योग्य उच्च विषयों का उल्लेख नहीं है क़ुरआन में ये सब-कुछ है। आसान करने का अर्थ यह है कि जिस उद्देश्य के अन्तर्गत यह क़ुरआन उतारा गया है उस उद्देश्य के लिए यह सर्वथा अनुकूल है। वह अपने उद्देश्य भली-भाँति पूरा करता है।

सूरः* अल-क़मर में कहा गया है कि हम ने क़ुरआन* को नसीहत के लिए आसान कर दिया है तो इस का अर्थ भी यही है कि यदि कोई क़ुरआन से नसीहत हासिल करनी चाहे तो वह क़ुरआन को इस के लिए हर पहलू से अनुकूल पायेगा। क़ुरआन नसीहत और शिक्षा ग्रहण करने के मार्ग को बिलकुल समतल कर देता है। वह बिलकुल सहज और स्वाभाविक रूप से हमें सत्य की प्रेरणा देता और हमें ऊँचा उठाता है। और इस के लिए वह समस्त मनोवैज्ञानिक और बौद्धिक उपाय करता है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

२०—ता हा०

(परिचय)

नाम (The Title)

सूरः* के आरम्भ में 'मुक़त्तआत अक्षर' (Arabic letters) आये हैं, उन्हीं [illegible] इस सूरः का नाम दे दिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह सूरः सूरः मरयम के अवतीर्ण होने के निकट ही उतरी है। हो सकता [illegible] यह सूरः उस समय उतरी हो जब हबशः (Abyssinia) की हिजरत* पेश आई है। यह भी सम्भव है कि यह सूरः इस हिजरत* के बाद उतरी हो। परन्तु यह निश्चय है कि यह सूरः हज़रत उमर रज़ि० के इस्लाम* धर्म स्वीकार करने से पहले उतर चुकी थी। ऐतिहासिक कथनों से मालूम होता है कि यह सूरः हज़रत उमर रज़ि० के इस्लाम* ग्रहण करने का कारण बनी है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्तायें

पिछली सूरः में विशेष रूप से हज़रत ईसा मसीह अ० का क़िस्सा बयान हुआ है, इस सूरः में विस्तार पूर्वक हज़रत मूसा अ० का क़िस्सा सुनाया गया है।

पिछली सूरः की तरह प्रस्तुत सूरः में भी नमाज़* की ताकीद की गई है और उस पर क़ायम रहने पर विशेष ज़ोर दिया गया है। यही इस सूरः का केन्द्रीय विषय है।

इस सूरः में पहले अल्लाह का ज़िक्र किया गया है और उस की नेमतों, उस की आयतों* और निशानियों का उल्लेख किया गया है। फिर आगे क़ियामत* का उल्लेख हुआ है। दीन* (धर्म) में इन सब का मौलिक महत्व है। अल्लाह के ज़िक्र और उस के स्मरण में तौहीद* (एकेश्वरवाद) भी शामिल है। मनुष्यों पर अल्लाह के उपकार अत्यधिक हैं। उस ने हमें पैदा किया; हमारे पालन-पोषण का प्रबन्ध किया। हमें जीवन का सच्चा और सीधा मार्ग दिखाया। मरने के पश्चात् वह हमें दोबारा जीवित करेगा और हमें हमारे कर्मों का बदला देगा।

इन बातों का अच्छी तरह ज्ञान प्राप्त करने और इन्हें पूर्ण रूप से मानने का अर्थ यह होता है कि इन मौलिक सच्चाइयों की ओर दूसरे लोगों को भी बुलाया जाये। क़ुरआन वास्तव में इसी लिए उतरा है कि मनुष्य इन मान्यताओं का स्वयं आदर करे और दूसरों के सामने भी इन्हें प्रस्तुत करे और लोगों को उन के कर्तव्यों का स्मरण कराये।

इस सूरः* में नबी* सल्ल० को इस बात की शिक्षा दी गई है कि आप (सल्ल०) सब्र और सन्तोष से काम लें और अल्लाह के फ़ैसले का इन्तज़ार करें यद्यपि आप [illegible]) को तरह-तरह की भावनाओं और कष्टों का सहन करना पड़ रहा है।

. . १४, ११, १४, ४२, १११।

. . में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

मुसलमानों के लिए इस सूरः में इस बात की ख़ुशख़बरी है कि विजय और सफलता अन्त में उन्हीं को प्राप्त होगी। फिर विस्तार पूर्वक हज़रत मूसा अ० का क़िस्सा सुना कर एक ऐतिहासिक प्रमाण भी संचित कर दिया है कि जो-कुछ आज हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पेश कर रहे हैं हज़रत मूसा अ० का जीवन भी उस के सत्य होने पर साक्षी है। हज़रत मूसा अ० के क़िस्से में शुभ-सूचनायें भी हैं और डरावा भी। इस में उन लोगों के लिए बड़ी चेतावनी है जो नबी सल्ल० की दुश्मनी पर उतर आये हैं मुस्लिम गरोह के लिए इस क़िस्से में ढारस और तसल्ली है।

फिर हज़रत आदम अ० का क़िस्सा बयान हुआ है इस क़िस्से में अल्लाह से की हुई प्रतिज्ञा पर सब्र न करने पर लोगों के लिए डरावा है। नमाज़* भी जिस की ताकीद इस सूरः में जगह-जगह की गई है एक पहलू से प्रतिज्ञा है और अल्लाह से की हुई प्रतिज्ञा की याददिहानी भी। इस के अतिरिक्त नमाज़* में वे समस्त विशेषतायें पाई जाती हैं जिन के महत्व पर इस सूरः में प्रकाश डाला गया है और जिन के लिए वास्तव में क़ुरआन अवतरित हुआ है। अर्थात् अल्लाह का स्मरण, उस की नेमतों को याद करना और उस की आयतों* पर सोच-विचार करना आदि। सूरः को समाप्त करते हुये भी नमाज़* पर विशेष ज़ोर दिया गया है ताकि ईमान* वालों में धैर्य, सहनशीलता आदि गुण पैदा हों और वे धर्म-प्रचार का महान् कार्य करने के योग्य बन सकें।

---

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः ता हा

(मक्के में उतरी — आयतें १३५)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

ता हा.[1] ।○ (हे नबी* !) हम ने तुम पर यह .क़ुरआन* इस लिए नहीं उतारा है कि तुम मुसीबत (मशक़्क़त) में पड़ जाओ,[2] ○ बस यह तो एक याददिहानी है उस के लिए जो डरे,○ अवतरण है उस की ओर से जिस ने पैदा किया है ज़मीन को और ऊँचे आसमान को,○ वह रहमान* (कृपाशील ईश्वर), जो सिंहासन पर विराजमान हुआ[3] ।○ उसी का है जो-कुछ आसमानों में है और जो-कुछ ज़मीन में है, और जो-कुछ इन दोनों (अर्थात् आसमान और ज़मीन) के बीच है, और जो-कुछ मिट्टी के नीचे (पाताल में) है।○ और चाहे तुम (अपनी) बात पुकार कर कहो (या धीमी आवाज़ से), वह तो छिपी हुई बात और अत्यन्त निहित बात को भी जानता है।○

अल्लाह ! उस के सिवा कोई इलाह* (पूज्य) नहीं। उस के लिए अच्छे नाम हैं[4] ।○ और क्या तुम्हें मूसा की बात (अर्थात् ख़बर) पहुँची ? ○ जब कि उस ने एक आग देखी[5] और अपने घर वालों से कहा : तनिक ठहरो ! मैं ने एक आग देखी है। कदाचित् तुम्हारे लिए उस में से कोई अङ्गारा ले आऊँ या उस आग पर मैं मार्ग का पता पा लूँ।○ १० फिर जब वहाँ पहुँचा, तो पुकारा गया : हे मूसा ! ○ मैं ही तेरा रब* हूँ। अपने जूते उतार दे, तू पवित्र घाटी 'तुवा' में है।○ और मैं ने तुझे चुन लिया है, सो सुन जो-कुछ वह्य* किया जाता है।○ निस्सन्देह मैं अल्लाह हूँ। मेरे सिवा कोई इलाह* (पूज्य) नहीं। अतः तू मेरी इबादत* कर और मेरी याद (स्मरण) के लिए नमाज़* क़ायम रख।○

निश्चय ही वह (क़ियामत* की) घड़ी आने वाली है। मैं उस (के समय) को छिपाये रहूँगा, ताकि प्रत्येक जीव को उस कोशिश का जो वह करता है[6] बदला दिया जाये।○ १५

---

१ दे० सूरः अल-बक़रः फुट नोट १।

२ अर्थात् तुम्हारा काम केवल यह है कि तुम इस .क़ुरआन* के द्वारा लोगों को सचेत कर दो; क़ुरआन* उतार कर अल्लाह तुम से कोई ऐसा काम नहीं लेना चाहता जो तुम्हारे लिए असम्भव हो।

३ दे० सूरः अल-आराफ़ फुट नोट १६।

४ अर्थात् वह अच्छे गुणों का मालिक है; वह अमृतमय और कल्याण रूप है।

५ यह क़िस्सा उस समय का है जब हज़रत मूसा अ० मदयन से अपनी पत्नी को ले कर आ रहे थे। हज़रत मूसा अ० के हाथों एक मिस्री व्यक्ति की मृत्यु हो गई थी, पकड़े जाने के भय से आप मिस्र से मदयन चले गये थे। वहीं आप का विवाह हुआ। वहाँ कुछ वर्ष रह कर आप वापस हुये हैं। (दे० सूरः अल क़सस १४-२६)।

६ ... को छिपाने का उद्देश्य यही है कि इस प्रकार इस बात की परीक्षा ली जा सके कि कौन दुनियाँ में ... चिन्ता करता है जब कि वह ग़ैब के परदे में छिपी हुई है।

* अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

على غنمي ولي فيها مآرب أخرى ۝ قال ألقها يموسى ۝ فألقاها فإذا
هي حية تسعى ۝ قال خذها ولا تخف سنعيدها سيرتها الأولى ۝
واضمم يدك إلى جناحك تخرج بيضاء من غير سوء آية أخرى ۝
لنريك من آياتنا الكبرى ۝ اذهب إلى فرعون إنه طغى ۝ قال رب
اشرح لي صدري ۝ ويسر لي أمري ۝ واحلل عقدة من لساني ۝
يفقهوا قولي ۝ واجعل لي وزيرا من أهلي ۝ هارون أخي ۝
اشدد به أزري ۝ وأشركه في أمري ۝ كي نسبحك كثيرا ۝
ونذكرك كثيرا ۝ إنك كنت بنا بصيرا ۝ قال قد أوتيت سؤلك
يموسى ۝ ولقد مننا عليك مرة أخرى ۝ إذ أوحينا إلى أمك
ما يوحى ۝ أن اقذفيه في التابوت فاقذفيه في اليم فليلقه اليم
بالساحل يأخذه عدو لي وعدو له وألقيت عليك محبة مني
ولتصنع على عيني ۝ إذ تمشي أختك فتقول هل أدلكم على من
يكفله فرجعناك إلى أمك كي تقر عينها ولا تحزن وقتلت نفسا
فنجيناك من الغم وفتناك فتونا فلبثت سنين في أهل مدين
ثم جئت على قدر يموسى ۝ واصطنعتك لنفسي ۝ اذهب
أنت وأخوك بآياتي ولا تنيا في ذكري ۝ اذهبا إلى فرعون إنه
طغى ۝ فقولا له قولا لينا لعله يتذكر أو يخشى ۝ قالا ربنا

तो जो कोई उस पर ईमान* नहीं लाता और अपनी (तुच्छ) इच्छा के पीछे पड़ा है, तुझे (अर्थात् तेरी जाति वालों को) उस से (नमाज़ से) रोक न दे, नहीं तो तू तबाह हो जायेगा। ○ —

और हे मूसा! यह तेरे दाहिने हाथ में क्या है? ○

उस ने कहा: यह मेरी लाठी है, मैं इस पर टेक लगाता हूँ, और इस से अपनी बकरियों के लिए पत्ते झाड़ता हूँ, और इस से मेरे और दूसरे काम भी निकलते हैं। ○

कहा: फेंक दे उसे, हे मूसा! ○ सो उस ने उसे डाल दिया, तो क्या देखते हैं कि वह एक साँप है, दौड़ता। ○

कहा: पकड़ ले उसे और भय न कर। हम उसे अभी उस की पहली हालत पर कर देंगे। ○

और अपना हाथ अपने बाज़ू में दबा ले, वह उज्ज्वल हो कर निकलेगा बिना किसी ऐब के। यह दूसरी निशानी है[7]। ○ ताकि तुझे हम अपनी बड़ी निशानियाँ दिखायें, ○

तू फ़िरऔन के पास जा[8]! वह सरकश हो गया है। ○

(मूसा ने) कहा: रब*! मेरा सीना खोल दे[9] ○ और मेरे काम को मेरे लिए सहज कर दे; ○ और मेरी ज़बान की गिरह खोल दे,[10] ○ ताकि वे मेरी बात समझ सकें। ○ और मेरे लिए मेरे घर वालों में से एक वज़ीर (सहयोगी) नियुक्त कर दे, ○ हारून, जो मेरा भाई है[11]। ○ उस के द्वारा मुझे शक्ति दे। ○ और उसे मेरे काम में शरीक कर दे। ○ ताकि हम ख़ूब तेरी तसबीह करें[12]। ○ और ख़ूब तुझे याद करें[13]। ○

निस्सन्देह तू हमारी निगरानी करता है। ○

कहा: दिया गया तुझे जो तू ने माँगा, हे मूसा! ○ और निस्सन्देह हम तुझ पर (इस से पूर्व) एक बार और एहसान कर चुके हैं, ○ याद करो जब हम ने तेरी माता को इशारा किया जो-कुछ कि इशारा किया, ○ कि इस (बच्चे) को सन्दूक़ में डाल दे, फिर उसे दरिया में छोड़ दे, दरिया उसे तट पर डाल देगा, इसे मेरा दुश्मन और इस (बच्चे) का दुश्मन

७ पहली निशानी (चमत्कार) तो यह थी कि तेरी लाठी को हम ने जीता-जागता सर्प बना दिया।
८ दे० आयत ४३।
९ अर्थात् मेरे लिए कोई मानसिक रुकावट न रहे; मुझे चित्त और हृदय की शान्ति, धैर्य और सन्तोष प्रदान कर।
१० अर्थात् सुभाषण की क्षमता तू मुझे प्रदान कर कि तेरे सन्देश को लोगों तक पहुँचा सकूँ।
११ बाइबिल से मालूम होता है कि हज़रत हारून अ० हज़रत मूसा अ० से आयु में तीन वर्ष बड़े थे। दे० ख़ुरूज (Ex.) ७:७।
१२ दे० आयत १४।
१३ दे० आयत ४२।
* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

نَخَافُ أَن يَفْرُطَ عَلَيْنَا أَوْ أَن يَطْغَىٰ ۝ قَالَ لَا تَخَافَا إِنَّنِي مَعَكُمَا
أَسْمَعُ وَأَرَىٰ ۝ فَأْتِيَاهُ فَقُولَا إِنَّا رَسُولَا رَبِّكَ فَأَرْسِلْ مَعَنَا بَنِي
إِسْرَائِيلَ وَلَا تُعَذِّبْهُمْ قَدْ جِئْنَاكَ بِآيَةٍ مِّن رَّبِّكَ وَالسَّلَامُ عَلَىٰ
مَنِ اتَّبَعَ الْهُدَىٰ ۝ إِنَّا قَدْ أُوحِيَ إِلَيْنَا أَنَّ الْعَذَابَ عَلَىٰ مَن كَذَّبَ
وَتَوَلَّىٰ ۝ قَالَ فَمَن رَّبُّكُمَا يَا مُوسَىٰ ۝ قَالَ رَبُّنَا الَّذِي أَعْطَىٰ كُلَّ شَيْءٍ
خَلْقَهُ ثُمَّ هَدَىٰ ۝ قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُونِ الْأُولَىٰ ۝ قَالَ عِلْمُهَا عِندَ
رَبِّي فِي كِتَابٍ لَّا يَضِلُّ رَبِّي وَلَا يَنسَى ۝ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ
الْأَرْضَ مَهْدًا وَسَلَكَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا وَأَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا
بِهِ أَزْوَاجًا مِّن نَّبَاتٍ شَتَّىٰ ۝ كُلُوا وَارْعَوْا أَنْعَامَكُمْ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ
لِّأُولِي النُّهَىٰ ۝ مِنْهَا خَلَقْنَاكُمْ وَفِيهَا نُعِيدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً
أُخْرَىٰ ۝ وَلَقَدْ أَرَيْنَاهُ آيَاتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَأَبَىٰ ۝ قَالَ أَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا
مِنْ أَرْضِنَا بِسِحْرِكَ يَا مُوسَىٰ ۝ فَلَنَأْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهِ فَاجْعَلْ بَيْنَنَا
وَبَيْنَكَ مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهُ نَحْنُ وَلَا أَنتَ مَكَانًا سُوًى ۝ قَالَ مَوْعِدُكُمْ
يَوْمُ الزِّينَةِ وَأَن يُحْشَرَ النَّاسُ ضُحًى ۝ فَتَوَلَّىٰ فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهُ
ثُمَّ أَتَىٰ ۝ قَالَ لَهُم مُّوسَىٰ وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا فَيُسْحِتَكُم
بِعَذَابٍ وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرَىٰ ۝ فَتَنَازَعُوا أَمْرَهُم بَيْنَهُمْ وَأَسَرُّوا
النَّجْوَىٰ ۝ قَالُوا إِنْ هَٰذَانِ لَسَاحِرَانِ يُرِيدَانِ

उठा ले[14]। मैं ने अपनी ओर से तुझ पर मुह(ब्बत) (प्रेम) डाल दी (और अच्छा प्रबन्ध किया) ताकि (तू) मेरी आँखों के सामने[15] पाला जाये,○ याद कर (जब) तेरी बहिन चल रही थी फिर (जा कर) कहती (थी) : क्या मैं तुम्हें उस का पता दूँ जो इस (बच्चे) (का) भली-भाँति पालन-पोषण करे? तो (इस तरह) हम ने तुझे फिर तेरी माता के पास पहुँचा दिया[16] ताकि उस की आँखें ठण्डी हों और वह दुःखी न हो। और (याद कर) तू ने एक व्यक्ति को मार डा(ला) था फिर हम ने तुझे इस ग़म से छुटकारा दिया, और कितनी आज़माइशों से तुझे गुज़ारा। फिर तू मदय(न) वालों में कई वर्ष ठहरा रहा। फिर हे मूसा, तू निय(त) अन्दाज़े पर आ गया है, ○ और हम ने तुझे अप(ने) (काम के) लिए चुन लिया है।○ जा, तू और तेर(ा) भाई, मेरी निशानियों के साथ, और मेरे स्मरण में सुस्ती न दिखाना[17]।○ जाओ, दोनों, फ़िर(औन) औन के पास। निश्चय ही वह सरकश हो गया है।○ उस से नर्म बात कहना, कदाचित् वह चेते या डरे।○

दोनों ने कहा : हमारे रब*! हमें भय है कि वह हम पर ज़्यादती न करे या सरकशी न करने लगे।○

कहा : डरो नहीं। मैं तुम दोनों के साथ हूँ, (सब-कुछ) सुनता और देखता हूँ।○

सो जाओ उस के पास और कहो : हम दोनों तेरे रब* के रसूल* हैं। सो बनी इसराईल* को हमारे साथ भेज दे, और उन्हें तकलीफ़ न दे। हम तेरे पास तेरे रब* की निशानी ले कर आये हैं। और सलामती है उस के लिए जो (सीधी) राह पर चले।○

हमारी ओर वह्य* की गई है कि अज़ाब है उस के लिए जो झुठलाये और मुँह मोड़े।○

(फ़िरऔन ने) कहा : अच्छा, तो फिर तुम दोनों का रब* कौन है, हे मूसा[18]?○

(मूसा ने) कहा : हमारा रब* वह है जिस ने हर चीज़ को उस की गढ़न (बनावट) प्रदान की, फिर उसे (नैसर्गिक) राह दिखाई[19]।○

---

१४ हज़रत मूसा अ० को उन के पैदा होने और उन के पालन-पोषण का हाल सुना कर अल्लाह ने उन्हें यह याद दिलाया है कि किस प्रकार आरम्भ ही से उन पर अल्लाह की कृपादृष्टि रही है।

१५ अर्थात् हमारी निगरानी और रक्षा में।

१६ हज़रत मूसा अ० की बहिन ने जा कर कहा कि मेरी माँ इस बच्चे का पालन पोषण अच्छी तरह कर सकती है। उस की बात मान ली गई, इस प्रकार हज़रत मूसा अ० फिर अपनी माता की गोद में आ गये।

१७ दे० आयत ३४।

१८ दे० सूरः अल-आराफ़ आयत १०३-१०५, सूरः अश-शुअरा आयत १०-११, सूरः अल-क़सस आयत २६-४० और अन नाज़िआत आयत १५-२६।

१९ संसार में हर चीज़ की जो बनावट, गठन, ढंग-ढब, गुण (Nature), विशेषता आदि गुण है वह उसी की देन है। और वही सब चीज़ों को उन की राह पर भी लगाता है। [illegible] है। [illegible] [illegible] के अर्थ [illegible] में देखें।

(फ़िरऔन ने) कहा : तो फिर उन की अगली नस्लों की क्या हालत है[२०] ? ○

(मूसा ने) कहा : इस का ज्ञान मेरे रब* के पास एक किताब* में (सुरक्षित) है, ○ "वही है जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को बिछौना बनाया और उस में तुम्हारे लिए रास्ते जारी किये और आसमान से पानी बरसाया फिर उस के द्वारा विभिन्न प्रकार की वनस्पति निकाली, ○ खाओ और अपने मवेशियों को भी चराओ निस्सन्देह इस में कितनी ही निशानियाँ हैं बुद्धि रखने वालों के लिए। ○ इसी (ज़मीन) से हम ने तुम्हें पैदा किया है, और इसी में तुम्हें लौटायेंगे, और इसी से तुम्हें दोबारा निकालेंगे। ○

हम ने उसे (अर्थात् फ़िरऔन को) अपनी सब निशानियाँ दिखाईं, परन्तु उस ने झुठलाया और इन्कार किया। ○

उस ने कहा : हे मूसा ! क्या तू हमारे पास इस लिए आया है कि अपने जादू से हम को हमारी भूमि से निकाल दे ? ○ अच्छा, हम भी तेरे मुक़ाबिले में वैसा ही जादू लाते हैं; सो हमारे और अपने बीच एक वादा ठहरा ले, न हम उस के विरुद्ध जायें और न तू, एक साफ़-खुले मैदान में (आ जा) ○

मूसा ने कहा : तुम्हारे (मुक़ाबिले के) वादे का समय जश्न (उत्सव) का दिन है, और यह कि लोग दिन चढ़े इकट्ठा हो जायें। ○

तब फ़िरऔन पलटा और उस ने अपने सारे हथ-कण्डे जुटाये और (मुक़ाबिले के लिए) आ गया। ○

मूसा ने उन (लोगों) से कहा : तबाही है तुम्हारी ! अल्लाह पर झूठी तोहमत न बाँधो, नहीं तो वह अज़ाब से तुम्हारा विध्वंस कर देगा। झूठ जिस किसी ने गढ़ा वह (अपने मनोरथ में) विफल हुआ। ○

इस पर वे परस्पर अपने मामले में झगड़ने और चुपके-चुपके काना-फूसी करने लगे। ○

कहने लगे : ये दोनों जादूगर ही हैं चाहते हैं कि अपने जादू से तुम्हें तुम्हारी भूमि से निकाल दें, और तुम्हारी उत्तम रीति (आदर्श परम्परा) को उठा डालें (अर्थात् नष्ट कर दें); ○

की भावना उसी ने रखी है। यदि वह राह न दिखाये तो कोई भी चीज़ अपनी सृष्टि के उद्देश्य को पूरा नहीं कर सकती। फिर न तो वन-उपवन में फूल खिल सकेंगे और न भूमि में कहीं हरियाली दिखाई देगी। फूलों से महक जाती रहेगी; कोयल अपनी सुन्दर बोली भूल जायेगी। हमारे शरीर में रुधिर प्रचार उसी के संकेत से हो रहा है। हमारे मस्तिष्क, पाचन-यन्त्र तथा अन्य अवयवों को अविश्राम कार्य करना उसी ने सिखाया है। फिर यह कैसे सही हो सकता है कि आदमी अल्लाह को छोड़ कर दूसरों को अपना रब और स्वामी बनाने लग जाये। फिर यह भी सोचने की बात है कि जो अल्लाह हर चीज़ को उस की स्थिति के अनुसार राह पर लगा रहा है उस से हम यह कैसे आशा कर सकते हैं कि वह मनुष्य के लिए मार्ग-दर्शन का प्रबन्ध न करेगा।*

[२०] हज़रत मूसा अ० ने अत्यन्त उचित उत्तर दिया कि पिछले लोग जैसे-कुछ भी थे और उन्हों ने जो-कुछ भी किया है, अल्लाह को सब मालूम है। हमारे पास ऐसा कोई साधन नहीं है जिस से हम उन के कामों और उन की जीवनों का ठीक-ठीक हाल मालूम कर सकें। हमें इस झगड़े में नहीं पड़ना चाहिए कि उन का क्या होगा, हमें तो अपनी चिन्ता होनी चाहिए। वे जैसे-कुछ भी थे अल्लाह के पास जा चुके।

फ़िरऔन यह सुवाल कर के हज़रत मूसा अ० को उलझाना चाहता था और साथ ही वह लोगों को इस बात पर भड़काना चाहता था कि मूसा (अ०) उन के पूर्वजों को गुमराह और नारकी समझते हैं। परन्तु हज़रत मूसा अ० ने उसे ऐसा जवाब दिया कि उस की यह चाल चल न सकी।

[२१] आयत ५३ से ५६ तक की आयतें व्यवहित जान पड़ती हैं। आयत ५६ के बाद फिर मूसा अ० और फ़िरऔन का सम्वाद आरम्भ होता है।

**इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

نَخَافُ أَن يَفْرُطَ عَلَيْنَا أَوْ أَن يَطْغَىٰ ۝ قَالَ لَا تَخَافَا إِنَّنِي مَعَكُمَا
أَسْمَعُ وَأَرَىٰ ۝ فَأْتِيَاهُ فَقُولَا إِنَّا رَسُولَا رَبِّكَ فَأَرْسِلْ مَعَنَا بَنِي
إِسْرَائِيلَ وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ۖ قَدْ جِئْنَاكَ بِآيَةٍ مِّن رَّبِّكَ ۖ وَالسَّلَامُ عَلَىٰ
مَنِ اتَّبَعَ الْهُدَىٰ ۝ إِنَّا قَدْ أُوحِيَ إِلَيْنَا أَنَّ الْعَذَابَ عَلَىٰ مَن كَذَّبَ
وَتَوَلَّىٰ ۝ قَالَ فَمَن رَّبُّكُمَا يَا مُوسَىٰ ۝ قَالَ رَبُّنَا الَّذِي أَعْطَىٰ كُلَّ شَيْءٍ
خَلْقَهُ ثُمَّ هَدَىٰ ۝ قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُونِ الْأُولَىٰ ۝ قَالَ عِلْمُهَا عِندَ
رَبِّي فِي كِتَابٍ ۖ لَّا يَضِلُّ رَبِّي وَلَا يَنسَى ۝ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ
الْأَرْضَ مَهْدًا وَسَلَكَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا وَأَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا
بِهِ أَزْوَاجًا مِّن نَّبَاتٍ شَتَّىٰ ۝ كُلُوا وَارْعَوْا أَنْعَامَكُمْ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ
لِّأُولِي النُّهَىٰ ۝ مِنْهَا خَلَقْنَاكُمْ وَفِيهَا نُعِيدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً
أُخْرَىٰ ۝ وَلَقَدْ أَرَيْنَاهُ آيَاتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَأَبَىٰ ۝ قَالَ أَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا
مِنْ أَرْضِنَا بِسِحْرِكَ يَا مُوسَىٰ ۝ فَلَنَأْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهِ فَاجْعَلْ بَيْنَنَا
وَبَيْنَكَ مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهُ نَحْنُ وَلَا أَنتَ مَكَانًا سُوًى ۝ قَالَ مَوْعِدُكُمْ
يَوْمُ الزِّينَةِ وَأَن يُحْشَرَ النَّاسُ ضُحًى ۝ فَتَوَلَّىٰ فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهُ
ثُمَّ أَتَىٰ ۝ قَالَ لَهُم مُّوسَىٰ وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا فَيُسْحِتَكُم
بِعَذَابٍ ۖ وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرَىٰ ۝ فَتَنَازَعُوا أَمْرَهُم بَيْنَهُمْ وَأَسَرُّوا
النَّجْوَىٰ ۝ قَالُوا إِنْ هَٰذَانِ لَسَاحِرَانِ يُرِيدَانِ أَن يُخْرِجَاكُم مِّنْ

उठा ले[14]। मैं ने अपनी ओर से तुझ पर मुहब्बत (प्रेम) डाल दी (और अच्छा प्रबन्ध किया) ताकि तू मेरी आँखों के सामने[15] पाला जाये,○ याद कर जब तेरी बहिन चल रही थी फिर (जा कर) कहती है: क्या मैं तुम्हें उस का पता दूँ जो इस (बच्चे) का भली-भाँति पालन-पोषण करे? तो (इस तरह) हम ने तुझे फिर तेरी माता के पास पहुँचा दिया[16] ताकि उस की आँखें ठण्डी हों और वह दुखी न हो। और (याद कर) तू ने एक व्यक्ति को मार डाला था फिर हम ने तुझे इस ग़म से छुटकारा दिया, और कितनी आज़माइशों से तुझे गुज़ारा। फिर तू मदयन वालों में कई वर्ष ठहरा रहा। फिर हे मूसा, तू नियत अन्दाज़े पर आ गया है, ○ और हम ने तुझे अपने (काम के) लिए चुन लिया है।○ जा, तू और तेरा भाई, मेरी निशानियों के साथ, और मेरे स्मरण में सुस्ती न दिखाना[17]।○ जाओ, दोनों, फ़िरऔन के पास। निश्चय ही वह सरकश हो गया है।○ उस से नर्म बात कहना, कदाचित् वह चेते या डरे।○ ४०

दोनों ने कहा : हमारे रब* ! हमें भय है कि वह हम पर ज़्यादती न करे या सरकशी न करने लगे।○ ४५

कहा : डरो नहीं। मैं तुम दोनों के साथ हूँ, (सब-कुछ) सुनता और देखता हूँ।○

सो जाओ उस के पास और कहो : हम दोनों तेरे रब* के रसूल* हैं। सो बनी इसराईल* को हमारे साथ भेज दे, और उन्हें तकलीफ़ न दे। हम तेरे पास तेरे रब* की निशानी ले कर आये हैं। और सलामती है उस के लिए जो (सीधी) राह पर चले।○

हमारी ओर वह्य* की गई है कि अज़ाब है उस के लिए जो झुठलाये और मुँह मोड़े।○

(फ़िरऔन ने) कहा : अच्छा, तो फिर तुम दोनों का रब* कौन है, हे मूसा[18]?○

(मूसा ने) कहा : हमारा रब* वह है जिस ने हर चीज़ को उस की गढ़न (बनावट) प्रदान की, फिर उसे (नैसर्गिक) राह दिखाई[19]।○ ५०

---

१४ हज़रत मूसा अ० को उन के पैदा होने और उन के पालन-पोषण का हाल सुना कर अल्लाह ने उन्हें यह याद दिलाया है कि किस प्रकार आरम्भ ही से उन पर अल्लाह की कृपादृष्टि रही है।

१५ अर्थात् हमारी निगरानी और रक्षा में।

१६ हज़रत मूसा अ० की बहिन ने जा कर कहा कि मेरी माँ इस बच्चे का पालन-पोषण अच्छी तरह कर सकती है। उस की बात मान ली गई; इस प्रकार हज़रत मूसा अ० फिर अपनी माता की गोद में आ गये।

१७ दे० आयत ३४।

१८ दे० सूरः अल-आराफ़ आयत १०४-१०५, सूरः अश-शुअ़रा आयत १०-२२, सूरः अल-क़सस आयत २९-४० और अन-नाज़िआत आयत १५-२५।

१९ संसार में हर चीज़ को जो बनावट, गठन, रंग-रूप, गुण (Nature), विशेषता आदि प्राप्त है वह अल्लाह ही की देन है। और वही सब चीज़ों को उन की राह पर भी लगाता है। चिड़ियों ने हवा में उड़ना उसी से सीखा है। मछलियाँ नदियों और झीलों में उसी के सिखाये से तैरती हैं। मनुष्यों ने भलाई-बुराई

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

رْضِكُم بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطَرِيقَتِكُمُ الْمُثْلَىٰ ۝ فَأَجْمِعُوا كَيْدَكُمْ
ثُمَّ ائْتُوا صَفًّا ۚ وَقَدْ أَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلَىٰ ۝ قَالُوا يَا مُوسَىٰ إِمَّا
أَن تُلْقِيَ وَإِمَّا أَن نَّكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَلْقَىٰ ۝ قَالَ بَلْ أَلْقُوا ۖ فَإِذَا
حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ إِلَيْهِ مِن سِحْرِهِمْ أَنَّهَا تَسْعَىٰ ۝
فَأَوْجَسَ فِي نَفْسِهِ خِيفَةً مُّوسَىٰ ۝ قُلْنَا لَا تَخَفْ إِنَّكَ أَنتَ الْأَعْلَىٰ ۝
وَأَلْقِ مَا فِي يَمِينِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوا ۖ إِنَّمَا صَنَعُوا كَيْدُ سَاحِرٍ ۖ وَلَا يُفْلِحُ
السَّاحِرُ حَيْثُ أَتَىٰ ۝ فَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ هَارُونَ وَ
مُوسَىٰ ۝ قَالَ آمَنتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ آذَنَ لَكُمْ ۖ إِنَّهُ لَكَبِيرُكُمُ الَّذِي
عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۖ فَلَأُقَطِّعَنَّ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُم مِّنْ خِلَافٍ وَلَأُصَلِّبَنَّكُمْ
فِي جُذُوعِ النَّخْلِ وَلَتَعْلَمُنَّ أَيُّنَا أَشَدُّ عَذَابًا وَأَبْقَىٰ ۝ قَالُوا لَن
نُّؤْثِرَكَ عَلَىٰ مَا جَاءَنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالَّذِي فَطَرَنَا ۖ فَاقْضِ مَا أَنتَ
قَاضٍ ۖ إِنَّمَا تَقْضِي هَٰذِهِ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۝ إِنَّا آمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا
خَطَايَانَا وَمَا أَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ ۗ وَاللَّهُ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ۝ إِنَّهُ
مَن يَأْتِ رَبَّهُ مُجْرِمًا فَإِنَّ لَهُ جَهَنَّمَ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ ۝
وَمَن يَأْتِهِ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصَّالِحَاتِ فَأُولَٰئِكَ لَهُمُ الدَّرَجَاتُ
الْعُلَىٰ ۝ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَ
ذَٰلِكَ جَزَاءُ مَن تَزَكَّىٰ ۝ وَلَقَدْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِي

हे बनी इसराईल*! हम ने तुम्हें तुम्हारे दुश्मन से छुटकारा दिया, और (तौरात* देने को) वादा किया था[८६] तूर (पर्वत) की दाहिनी ओर, और तुम पर मन्न* और सलवा* उतारा,[८७] ○ — खाओ जो-कुछ हम ने तुम्हें अच्छी चीज़ें प्रदान की हैं, और उस के बारे में सरकशी न करना कि टूट पड़े तुम पर मेरा ग़ज़ब (प्रकोप); और जिस किसी पर मेरा ग़ज़ब टूटा, फिर वह विनष्ट हुआ। ○

और जिस किसी ने तौबः* की और ईमान* लाया और अच्छा काम किया, फिर (सीधी) राह पर रहा, उस के लिए निश्चय ही मैं अत्यन्त क्षमाशील हूँ। ○ —

और क्या चीज़ तुम्हें अपनी जाति वालों से पहले ले आई, हे मूसा[८८]? ○

उस ने कहा: वे मेरे पीछे ही (आ रहे) हैं और मैं जल्दी बढ़ आया तेरी ओर मेरे रब*! ताकि तू राज़ी हो जाये। ○

(अल्लाह ने) कहा: अच्छा तो हम ने तुम्हारे पीछे तुम्हारी जाति वालों को आज़माइश में डाल दिया, और सामिरी ने उन्हें पथ-भ्रष्ट कर डाला। ○

फिर मूसा सख़्त ग़ुस्से और रंज की हालत में अपनी जाति वालों की ओर लौटा।

कहा: हे मेरी जाति वालो! क्या तुम्हारे रब* ने तुम से अच्छा वादा नहीं किया था? क्या तुम पर बड़ी मुद्दत गुज़र गई, या तुम ने यह चाहा कि तुम पर तुम्हारे रब* का ग़ज़ब (प्रकोप) ही उतरे, कि तुम ने मेरे वादे के विरुद्ध आचरण किया। ○

उन्हों ने कहा: हम ने आप के वादे के विरुद्ध आचरण कुछ अपने इख़्तियार से नहीं किया है, बल्कि लोगों के ज़ेवरों के बोझ से हम लद गये थे, तो हम ने उन्हें (आग में) फेंक दिया, — फिर इस तरह सामिरी ने डाला, ○ और उस ने बना निकाली उन के लिए एक बछड़े की मूर्ति,[८९]

न वे एक जन-समूह के रूप में निकल पड़े। यह क़ाफ़िला अभी समुद्र के तट पर ही था कि फ़िरऔन अपनी सेना ले कर पीछे से आ पहुँचा। हज़रत मूसा अ० को हुक्म हुआ कि अपनी लाठी समुद्र पर मार। लाठी मारते ही समुद्र फट गया और उस ने अपने बीच से क़ाफ़िले के गुज़रने का रास्ता दे दिया। फ़िरऔन भी क़ाफ़िले के पीछे अपनी सेना सहित समुद्र के इस बीच वाले रास्ते में उतर आया। हज़रत मूसा अपने साथियों को ले कर पार हो गये परन्तु समुद्र ने फ़िरऔन और उस की सेना को अपनी लपेट में ले लिया और वे उसी समुद्र में डूब कर रह गये।

८६ दे० आयत ८६।

८७ दे० सूरः अल-बक़रः फुट नोट १६।

८८ बनी इसराईल* से अल्लाह ने यह वादा किया था कि वे तूर (पर्वत) की दाहिनी ओर ठहरें (आयत ८०) चालीस दिन की मुद्दत बीतने पर किताब* प्रदान की जायेगी। हज़रत मूसा अ० अपनी जाति वालों से पहले ही वहाँ पहुँच गये। इस अवसर पर हज़रत मूसा अ० ने अपने रब* से जो बात-चीत की है: और जो-कुछ मामला उन्हें वहाँ पेश आया है उस का उल्लेख सूरः अल-आराफ़ आयत १४३-१४५ में किया गया है।

८९ अर्थात् हमारा अपराध इस के अतिरिक्त और कुछ नहीं कि हम ने ज़ेवरों को फेंक दिया था हमारा इरादा बछड़ा बना कर पूजने का नहीं था। बाद में जो-कुछ हुआ है हमें पहले से उस का कोई ज्ञान न था। शिर्क* हम से अनायास बे-जाने में हुआ है। हम ने उस के लिए कदापि कोई आयोजन नहीं किया था।

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

तो तुम अपनी तदबीर जुटाओ, फिर पंक्तिबद्ध हो कर (मैदान में) आओ। आज जो ऊपर रहा वही जीत गया। ○

(जादूगर) बोले : हे मूसा ! या तो तुम (अपना अंजर) फेंको, या फिर हम पहले फेंकें। ○

(मूसा ने) कहा : नहीं, तुम ही फेंको ! तो सहसा उन की रस्सियाँ और उन की लाठियाँ, उन के जादू से, उसे (अर्थात् मूसा को) ऐसी प्रतीत हुईं कि (मानो) वे दौड़ रही हैं। ○ तो मूसा अपने जी में डरा। ○

हम ने कहा : मत डर ! तू ही ऊपर होगा। ○ फेंक जो तेरे दाहिने हाथ में है जो-कुछ इन्हों ने बनाया है उसे निगल जायेगा। इन्हों ने जो-कुछ बनाया है वह तो बस जादूगर का स्वाँग है, और जादूगर सफल नहीं होता चाहे वह जिधर से भी आये। ○

तब जादूगर सजदे में गिर पड़े, बोले : हम हारून और मूसा के रब* पर ईमान* ले आये। ○

(फ़िरऔन ने) कहा : क्या तुम ईमान* ले आये इस से पहले कि मैं तुम्हें इजाज़त देता। निश्चय ही यह तुम्हारा बड़ा (प्रधान पुरुष) है जिस ने तुम्हें जादू सिखाया है। अब निश्चय ही मैं तुम्हारे हाथ और तुम्हारे पाँव विपरीत दिशाओं से कटवा दूँगा, और निश्चय ही खजूर के तनों पर तुम्हें सूली दे दूँगा, और तब तुम जान लोगे कि हम दोनों में किस का अज़ाब ज़्यादा सख़्त और अधिक स्थायी है"। ○

(जादूगर) बोले : जो खुली दलीलें हमारे सामने आ चुकी हैं उस के मुक़ाबिले में, और उस के मुक़ाबिले में जिस ने कि हमें पैदा किया है, हम कदापि तुझे प्रधानता नहीं दे सकते। तो जो-कुछ तू करने वाला है कर ले। तू बस इसी सांसारिक जीवन का फ़ैसला कर सकता है। ○ निश्चय ही हम अपने रब* पर ईमान* ले आये, ताकि वह हमारी ख़ताओं को क्षमा कर दे और उस जादू को भी जिस पर तू ने हमें मजबूर किया था। अल्लाह उत्तम और अधिक स्थायी (चिरस्थायी) है। ○

वास्तव में जो अपने रब* के पास अपराधी बन कर आया, उस के लिए तो दोज़ख़* है। जिस में न वह मरेगा और न जियेगा"। ○

और जो-कोई उस के पास ईमान* वाला हो कर आयेगा, जिस ने अच्छे काम किये होंगे तो ऐसे लोगों के लिए ऊँचे दरजे हैं; ○ शाश्वत (सदा-बहार) जन्नतें* हैं जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी, उन में वे सदैव रहेंगे। यह बदला है उस का जिस ने अपनी आत्मा को शुद्ध (कर के उसे विकसित होने का अवसर संचित) किया। ○

"और हम ने मूसा की ओर वह्य* की कि रातों-रात मेरे बन्दों को ले कर चल पड़ फिर उन के लिए दरिया में सूखा रास्ता बना ले, न तो तुझे किसी के आ लेने का भय हो, और न (समुद्र के बीच से पार होते हुये) तुझे डर लगे। ○ तब फ़िरऔन अपनी सेना ले कर उन के पीछे चला फिर दरिया में से वह चीज़ उन पर छा गई जो छा गई। ○ फ़िरऔन ने अपनी जाति वालों को गुमराह किया, (सीधा) मार्ग न दिखाया"। ○

---

२२ इस के साथ आयत १२७ भी सामने रहे।

२३ अर्थात् न तो उस की मृत्यु होगी कि उस की तकलीफ़ें और मुसीबतों का अन्त हो जाये और न उसे जीवन का कोई आनन्द ही प्राप्त होगा; वह मृत्यु और जीवन दोनों के बीच लटकता रहेगा।

२४ जादूगरों के ईमान* लाने वाली घटना के पश्चात् हज़रत मूसा अ० [illegible] । देखिए सूरः अअ्‍राफ़, आयत ११३ [illegible], सूरः यूनुस आयत ८०-८२, [illegible] और सूरः अश-शुअरा आयत ४६-५१।

२५ हज़रत मूसा अ० [illegible]

* इस पर [illegible]

जिस किसी ने उस से मुँह मोड़ा, वह निश्चय ही क़ियामत* के दिन एक बोझ उठायेगा, ○ ऐसे लोग सदा इसी (दशा) में रहेंगे — और क़ियामत* के दिन उन के लिए यह बोझ बुरा होगा, ○

जिस दिन सूर* में फूँक मारी जायेगी। और उस दिन हम अपराधियों को इस दशा में इकट्ठा करेंगे कि उन की आँखें पथराई होंगी, ○

वे परस्पर चुपके-चुपके कहेंगे : तुम बस दस ही दिन ठहरे रहे हो। ○ — हम भली-भाँति जानते हैं जो-कुछ वे बातें करेंगे जब कि उन का सब से अच्छी राह वाला कहेगा : तुम बस एक ही दिन ठहरे हो। ○ —

तुम से पहाड़ों के बारे में पूछते हैं (कि उस दिन वे कहाँ चले जायेंगे)। तो कह दो : मेरा रब* उन्हें चूरा-चूरा कर के उड़ा देगा। ○ और इस (ज़मीन) को परपट मैदान कर के छोड़ेगा, ○ तुम उस में न तो कोई बल देखोगे और न सलवट। ○ —

أمري ۝ قالوا لن نبرح عليه عاكفين حتى يرجع إلينا موسى ۝
قال يا هارون ما منعك إذ رأيتهم ضلوا ۝ ألا تتبعن أفعصيت
أمري ۝ قال يبنؤم لا تأخذ بلحيتي ولا برأسي إني خشيت
أن تقول فرقت بين بني إسراءيل ولم ترقب قولي ۝ قال
فما خطبك يسامري ۝ قال بصرت بما لم يبصروا به فقبضت
قبضة من أثر الرسول فنبذتها وكذلك سولت لي نفسي ۝
قال فاذهب فإن لك في الحيوة أن تقول لا مساس وإن لك
موعدا لن تخلفه وانظر إلى إلهك الذي ظلت عليه عاكفا
لنحرقنه ثم لننسفنه في اليم نسفا ۝ إنما إلهكم الله الذي لا إله
إلا هو وسع كل شيء علما ۝ كذلك نقص عليك من أنباء ما قد
سبق وقد ءاتينك من لدنا ذكرا ۝ من أعرض عنه فإنه يحمل
يوم القيمة وزرا ۝ خلدين فيه وساء لهم يوم القيمة حملا ۝
يوم ينفخ في الصور ونحشر المجرمين يومئذ زرقا ۝ يتخافتون
بينهم إن لبثتم إلا عشرا ۝ نحن أعلم بما يقولون إذ يقول
أمثلهم طريقة إن لبثتم إلا يوما ۝ ويسئلونك عن الجبال
فقل ينسفها ربي نسفا ۝ فيذرها قاعا صفصفا ۝ لا
ترى فيها عوجا ولا أمتا ۝ يومئذ يتبعون الداعي لا

उस दिन लोग पुकारने वाले की पुकार पर चले आवेंगे कोई कुछ भी अकड़ न दिखा सकेगा, और आवाज़ें रहमान* के आगे दब जायेंगी, एक हल्की आवाज़ के सिवा तुम कुछ न सुनोगे[३६]। ○

उस दिन सिफ़ारिश काम न आयेगी सिवाय इस के कि किसी को रहमान* इजाज़त दे और उस की बात को पसन्द करे। ○

वह जानता है जो-कुछ उन के आगे है और जो-कुछ उन के पीछे है, और वे (अपने) ज्ञान द्वारा उस को घेर नहीं सकते[३७]। ○

और चेहरे उस सजीव[३८] और चिरस्थायी[३९] के आगे झुके होंगे। और वह विफल हुआ जिस ने ज़ुल्म (का बोझ) उठाया। ○

और जो कोई अच्छे काम करे, और इस के साथ वह ईमान* वाला भी हो, उसे न तो किसी ज़ुल्म का भय होगा और न किसी हक़ के मारे जाने का। ○

और (हे मुहम्मद!) इसी तरह हम ने इसे अरबी क़ुरआन* के रूप में उतारा है, और इस में तरह-तरह से चेतावनी दी है, कदाचित् वे डरें या यह उन के लिए ध्यान देने का कारण बने। ○

सो सर्वोच्च है अल्लाह, वास्तविक सम्राट्!

---

३६ वहाँ पैरों की चाप और चुपके-चुपके बात करने वालों की फुसफुसाहट के अतिरिक्त और तुम्हें कुछ सुनाई न देगा। उस दिन सब लोग डरे-सहमे होंगे।

३७ अल्लाह को लोगों का अगला-पिछला सब हाल मालूम है इस लिए वहाँ जिस के हक़ में उचित समझेगा सिफ़ारिश की इजाज़त देगा।

३८ दे० सूरः अल-बक़रः फुट नोट ७१।

३९ दे० सूरः अल-बक़रः फुट नोट ७२।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

فاضرب لهم طريقا في البحر يبسا لا تخف دركا ولا تخشى
فأتبعهم فرعون بجنوده فغشيهم من اليم ما غشيهم و
أضل فرعون قومه وما هدى ۝ يا بني إسرائيل قد أنجينكم
من عدوكم وواعدنكم جانب الطور الأيمن ونزلنا عليكم
المن والسلوى ۝ كلوا من طيبت ما رزقنكم ولا تطغوا فيه فيحل
عليكم غضبي ومن يحلل عليه غضبي فقد هوى ۝ وإ
ني لغفار لمن تاب وءامن وعمل صلحا ثم اهتدى ۝ وما أعجلك
عن قومك يموسى ۝ قال هم أولاء على أثري وعجلت إليك رب
لترضى ۝ قال فإنا قد فتنا قومك من بعدك وأضلهم السامري ۝ ف
رجع موسى إلى قومه غضبن أسفا قال يقوم ألم يعدكم ربكم
وعدا حسنا أفطال عليكم العهد أم أردتم أن يحل عليكم
غضب من ربكم فأخلفتم موعدي ۝ قالوا ما أخلفنا موعدك
بملكنا ولكنا حملنا أوزارا من زينة القوم فقذفنها فكذلك
ألقى السامري ۝ فأخرج لهم عجلا جسدا له خوار فقالوا هذا
إلهكم وإله موسى فنسي ۝ أفلا يرون ألا يرجع إليهم قولا
ولا يملك لهم ضرا ولا نفعا ۝ ولقد قال لهم هرون من قبل
يقوم إنما فتنتم به وإن ربكم الرحمن فاتبعوني وأطيعوا

जिस में से बछड़े की-सी आवाज़ निकलती थी[30]। लोग कहने लगे : यही है इलाह* (पूज्य) तुम्हारा और इलाह* मूसा का, परन्तु वह भूल गया। ○ क्या वे देखते न थे, कि न वह उन की किसी बात का उत्तर देता है और न उन के बुरे का उसे कुछ अधिकार प्राप्त है और न भले का। ○ और हारून पहले ही उन से कह चुका था कि लोगो! तुम इस के कारण फ़ितने* (आज़माइश) में पड़ गये हो, तुम्हारा रब* तो रहमान* (कृपाशील ईश्वर) है, अतः तुम मेरे पीछे चलो और मेरा हुक्म मानो। ○

वे बोले : जब तक कि मूसा हमारे पास पलट कर न आ जाये हम तो इस से लगे बैठे ही रहेंगे[31]। ○

(मूसा ने) कहा : हे हारून जब तुम ने देखा कि ये पथ-भ्रष्ट हो गये हैं तो किस चीज़ ने तुम्हें रोका, ○ कि तुम मेरा अनुसरण न करो? क्या तुम ने मेरे हुक्म को टाल दिया? ○

(हारून ने) कहा : हे मेरी माँ के बेटे! मेरी दाढ़ी न पकड़ और न मेरा सिर (पकड़)। मुझे यह डर हुआ कि कहीं तू (मुझ से) यह न कहे कि तुम ने बनी इसराईल* में फूट डाल दी, और मेरी बात का ध्यान नहीं रखा[32]। ○

(मूसा ने) कहा : और हे सामिरी! तेरा क्या मामला है? ○

उस ने कहा : मैं ने वह-कुछ देखा जिसे औरों ने नहीं देखा, फिर मैं ने रसूल* के पद-चिह्नों से एक मुट्ठी उठा ली, फिर उस को (उस में) डाल दिया। मेरे जी ने मुझे ऐसी ही पट्टी पढ़ाई[33]। ○

(मूसा ने) कहा : अच्छा तो जा! अब इस जीवन में तेरे लिए यही है कि कहता रहे : मुझे कोई छूना नहीं! और निश्चय ही तेरे लिए (आख़िरत* में अज़ाब का) एक ठहराया हुआ वादा है जो तुझ से कदापि नहीं टलेगा। और देख अपने इलाह* (इष्टदेव) को जिस से तू लगा बैठा हुआ था। निश्चय ही हम उसे जला डालेंगे फिर उसे चूरा-चूरा कर के दरिया में बहा देंगे। ○

(लोगो!) तुम्हारा इलाह* (पूज्य) तो बस वही अल्लाह है, जिस के सिवा कोई इलाह* (पूज्य) नहीं। अपने ज्ञान से वह हर चीज़ को व्याप्त है। ○

[34](हे मुहम्मद!) इस तरह हम जो-कुछ पहले बीत चुका है उस के वृत्तान्त तुम्हें सुनाते हैं, और हम ने अपने यहाँ से तुम्हें 'ज़िक्र'*[35] (याद-दिहानी) प्रदान किया है। ○

---

३० दे० सूरः अल-आराफ़ आयत १४८।
३१ अर्थात् हम तो इसी बछड़े की उपासना में लगे रहेंगे, हम इस से हटने के नहीं हैं।
३२ दे० सूरः अल-आराफ़ आयत १५०-१५१।
३३ अधिक संभव है कि सामिरी ने यह बात यों ही मक्कारी से गढ़ कर कह दी हो जिस तरह उस ने मूर्ति में किसी विधि से बछड़े की सी आवाज़ पैदा कर के लोगों को धोखे में डाला था।
३४ यहाँ से तात्पर्य फिर उसी विषय की ओर मुड़ती है जिस से इस सूरः का आरम्भ हुआ था।
[illegible] आयत ११३।
[illegible] में देखें।

३७ : ७५	हम दुआ के कैसे अच्छे क़बूल करने वाले हैं।
४० : ६०	तुम्हारे रब ने कहा, मुझसे दुआ करो, मैं क़बूल करूँगा।
४२ : १९	अल्लाह अपने बन्दों पर दयावन्त है।
४२ : २७, २८	वह अपनी कृपा फैला देता है।
५७ : ९	वह तुम पर स्नेह दर्शाने वाला दयालु है।

(६) सर्वशक्तिमान् और शासक

२ : २०	अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है, वह सर्वशक्तिमान् है।
२ : १०७	ज़मीन और आसमान का राज्य अल्लाह ही का है।
२ : ११५, ११६	पूर्व और पश्चिम सब अल्लाह का है, आसमानों और ज़मीन में सब-कुछ उसी का है, सब उसके आज्ञापालक है।
२ : १३८	तुम जहाँ होगे, अल्लाह तुम्हें इकट्ठा कर लेगा।
२ : १६५	हर तरह की शक्ति अल्लाह ही के लिए है।
२ : २४७	अल्लाह जिसे चाहे, बादशाही दे।
२ : २५३	अल्लाह जो चाहता है करता है।
३ : २६, २७	अल्लाह बादशाही का मालिक है, जिसे चाहे बादशाही दे, सम्मान और अपमान उसी के हाथ में है।
५ : १२०	आसमानों और ज़मीन, और जो-कुछ उनमें है, सब पर अल्लाह की बादशाही है।
६ : १३	रात और दिन में जो जीव बसते हैं, सब उसी के हैं।
११ : ५६	ज़मीन पर हर चलने-फिरने वाले की चोटी अल्लाह पकड़े हुए है।
११ : १०७	तेरा रब जो चाहता है, कर देता है।
१२ : २१	अल्लाह का अपने काम पर पूरा अधिकार है।
१२ : ४०	अल्लाह के अलावा किसी का शासन नहीं।
१३ : १३	वह बड़ी शक्ति वाला है।
१६ : ४०	जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है, तो कहता है, हो जा, वह हो जाती है।
२० : ६	आसमानों में और ज़मीन में, और इन दोनों के बीच, जो-कुछ है, अल्लाह का है।
२० : ११४	अल्लाह सच्चा बादशाह है उच्च व श्रेष्ठ।
२२ : ६१	रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में।
३२ : २६, २७	वह बंजर ज़मीन की ओर पानी बहाता है, फिर उससे खेती पैदा करता है।
३५ : १६, १७	अगर अल्लाह चाहे तो तुम्हें मिटा दे और नये जीव ला बसाए।
३५ : ४१	अल्लाह आसमानों और ज़मीन को थामे रखता है।
३६ : ८०, ८१	उसने हरे पेड़ से आग पैदा की, आसमानों और ज़मीन को बनाया, वह बड़ा पैदा करने वाला और जानने वाला है।
३८ : ६५, ६६	आसमानों और ज़मीन और जो-कुछ उनमें है, सब का मालिक।
४३ : ८४	आसमानों और ज़मीन में इलाह (पूज्य) वही है।

أَمْرِي ۝ قَالُوا لَن نَّبْرَحَ عَلَيْهِ عَاكِفِينَ حَتَّىٰ يَرْجِعَ إِلَيْنَا مُوسَىٰ ۝
قَالَ يَا هَارُونُ مَا مَنَعَكَ إِذْ رَأَيْتَهُمْ ضَلُّوا ۝ أَلَّا تَتَّبِعَنِ ۖ أَفَعَصَيْتَ
أَمْرِي ۝ قَالَ يَا ابْنَ أُمَّ لَا تَأْخُذْ بِلِحْيَتِي وَلَا بِرَأْسِي ۖ إِنِّي خَشِيتُ
أَن تَقُولَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِي ۝ قَالَ
فَمَا خَطْبُكَ يَا سَامِرِيُّ ۝ قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوا بِهِ فَقَبَضْتُ
قَبْضَةً مِّنْ أَثَرِ الرَّسُولِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذَٰلِكَ سَوَّلَتْ لِي نَفْسِي ۝
قَالَ فَاذْهَبْ فَإِنَّ لَكَ فِي الْحَيَاةِ أَن تَقُولَ لَا مِسَاسَ ۖ وَإِنَّ لَكَ
مَوْعِدًا لَّن تُخْلَفَهُ ۖ وَانظُرْ إِلَىٰ إِلَٰهِكَ الَّذِي ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا ۖ
لَّنُحَرِّقَنَّهُ ثُمَّ لَنَنسِفَنَّهُ فِي الْيَمِّ نَسْفًا ۝ إِنَّمَا إِلَٰهُكُمُ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَٰهَ
إِلَّا هُوَ ۚ وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۝ كَذَٰلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنبَاءِ مَا قَدْ
سَبَقَ ۚ وَقَدْ آتَيْنَاكَ مِن لَّدُنَّا ذِكْرًا ۝ مَّنْ أَعْرَضَ عَنْهُ فَإِنَّهُ يَحْمِلُ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ وِزْرًا ۝ خَالِدِينَ فِيهِ ۖ وَسَاءَ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ حِمْلًا ۝
يَوْمَ يُنفَخُ فِي الصُّورِ ۚ وَنَحْشُرُ الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ۝ يَتَخَافَتُونَ
بَيْنَهُمْ إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا عَشْرًا ۝ نَّحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ إِذْ يَقُولُ
أَمْثَلُهُمْ طَرِيقَةً إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا يَوْمًا ۝ وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْجِبَالِ
فَقُلْ يَنسِفُهَا رَبِّي نَسْفًا ۝ فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ۝ لَّا
تَرَىٰ فِيهَا عِوَجًا وَلَا أَمْتًا ۝ يَوْمَئِذٍ يَتَّبِعُونَ الدَّاعِيَ لَا

जिस किसी ने उस से मुँह मोड़ा, वह निश्चय क़ियामत* के दिन एक बोझ उठायेगा, ○ ऐसे ग सदा इसी (दशा) में रहेंगे — और क़ियामत* दिन उन के लिए यह बोझ बुरा होगा, ○

जिस दिन सूर* में फूँक मारी जायेगी। और स दिन हम अपराधियों को इस दशा में इकट्ठा रेंगे कि उन की आँखें पथराई होंगी, ○

वे परस्पर चुपके-चुपके कहेंगे : तुम बस दस दिन ठहरे रहे हो। ○ — हम भली-भाँति जानते जो-कुछ वे बातें करेंगे जब कि उन का सब अच्छी राह वाला कहेगा : तुम बस एक ही दिन हरे हो। ○ —

तुम से पहाड़ों के बारे में पूछते हैं (कि उस देन वे कहाँ चले जायेंगे)। तो कह दो : मेरा रब* उन्हें चूरा-चूरा कर के उड़ा देगा। ○ और इस (ज़मीन) को परपट मैदान कर के छोड़ेगा, ○ तुम उस में न तो कोई बल देखोगे और न सलवट। ○ —

उस दिन लोग पुकारने वाले की पुकार पर चले आवेंगे कोई कुछ भी अकड़ न दिखा सकेगा, और आवाज़ें रहमान* के आगे दब जायेंगी, एक हल्की आवाज़ के सिवा तुम कुछ न सुनोगे[२६]। ○

उस दिन सिफ़ारिश काम न आयेगी सिवाय इस के कि किसी को रहमान* इजाज़त दे और उस की बात को पसन्द करे। ○

वह जानता है जो-कुछ उन के आगे है और जो-कुछ उन के पीछे है, और वे (अपने) ज्ञान द्वारा उस को घेर नहीं सकते[२७]। ○

और चेहरे उस सजीव[२८] और चिरस्थायी[२९] के आगे झुके होंगे। और वह विफल हुआ जिस ने ज़ुल्म (का बोझ) उठाया। ○

और जो कोई अच्छे काम करे, और इस के साथ वह ईमान* वाला भी हो, उसे न तो किसी ज़ुल्म का भय होगा और न किसी हक़ के मारे जाने का। ○

और (हे मुहम्मद!) इसी तरह हम ने इसे अरबी क़ुरआन* के रूप में उतारा है, और इस में तरह-तरह से चेतावनी दी है, कदाचित् वे डरें या यह उन के लिए ध्यान देने का कारण बने। ○

सो सर्वोच्च है अल्लाह, वास्तविक सम्राट्!

---

२६ वहाँ पैरों की चाप और चुपके-चुपके बात करने वालों की फुसफुसाहट के अतिरिक्त और तुम्हें कुछ सुनाई न देगा। उस दिन सब लोग डरे-सहमे होंगे।

२७ अल्लाह को लोगों का अगला-पिछला सब हाल मालूम है इस लिए वही जिस के हक़ में उचित समझेगा सिफ़ारिश की इजाज़त देगा।

२८ दे० सूरः अल-बक़रः फुट नोट ७१।

२९ दे० सूरः अल-बक़रः फुट नोट ७२।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची से देखें।

जिस किसी ने उस से मुँह मोड़ा, वह निश्चय क़ियामत* के दिन एक बोझ उठायेगा, ○ ऐसे सदा इसी (दशा) में रहेंगे — और क़ियामत* दिन उन के लिए यह बोझ बुरा होगा, ○

जिस दिन सूर* में फूँक मारी जायेगी। और दिन हम अपराधियों को इस दशा में इकट्ठा गे कि उन की आँखें पथराई होंगी, ○

वे परस्पर चुपके-चुपके कहेंगे : तुम बस दस दिन ठहरे रहे हो। ○ — हम भली-भाँति जानते जो-कुछ वे बातें करेंगे जब कि उन का सब अच्छी राह वाला कहेगा : तुम बस एक ही दिन रे हो। ○ —

तुम से पहाड़ों के बारे में पूछते हैं (कि उस न वे कहाँ चले जायेंगे)। तो कह दो : मेरा रब* हें चूरा-चूरा कर के उड़ा देगा। ○ और इस मीन) को चटपट मैदान कर के छोड़ेगा, ○ तुम में न तो कोई बल देखोगे और न सलवट। ○ —

اَمْرِي ۝ قَالُوا لَنْ نَبْرَحَ عَلَيْهِ عٰكِفِينَ حَتّٰى يَرْجِعَ إِلَيْنَا مُوسٰى ۝
قَالَ يٰهٰرُونُ مَا مَنَعَكَ إِذْ رَأَيْتَهُمْ ضَلُّوا ۝ أَلَّا تَتَّبِعَنِ ۚ أَفَعَصَيْتَ
أَمْرِي ۝ قَالَ يَبْنَؤُمَّ لَا تَأْخُذْ بِلِحْيَتِي وَلَا بِرَأْسِي ۚ إِنِّي خَشِيتُ
أَنْ تَقُولَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِي إِسْرَاءِيلَ وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِي ۝ قَالَ
فَمَا خَطْبُكَ يٰسَامِرِيُّ ۝ قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوا بِهِ فَقَبَضْتُ
قَبْضَةً مِنْ أَثَرِ الرَّسُولِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذٰلِكَ سَوَّلَتْ لِي نَفْسِي ۝
قَالَ فَاذْهَبْ فَإِنَّ لَكَ فِي الْحَيٰوةِ أَنْ تَقُولَ لَا مِسَاسَ ۖ وَإِنَّ لَكَ
مَوْعِدًا لَنْ تُخْلَفَهُ ۖ وَانْظُرْ إِلٰى إِلٰهِكَ الَّذِي ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا ۖ
لَنُحَرِّقَنَّهُ ثُمَّ لَنَنْسِفَنَّهُ فِي الْيَمِّ نَسْفًا ۝ إِنَّمَا إِلٰهُكُمُ اللّٰهُ الَّذِي لَا إِلٰهَ
إِلَّا هُوَ ۚ وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۝ كَذٰلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ مَا قَدْ
سَبَقَ ۚ وَقَدْ آتَيْنٰكَ مِنْ لَدُنَّا ذِكْرًا ۝ مَنْ أَعْرَضَ عَنْهُ فَإِنَّهُ يَحْمِلُ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وِزْرًا ۝ خٰلِدِينَ فِيهِ ۖ وَسَاءَ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ حِمْلًا ۝
يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ وَنَحْشُرُ الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ۝ يَتَخَافَتُونَ
بَيْنَهُمْ إِنْ لَبِثْتُمْ إِلَّا عَشْرًا ۝ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ إِذْ يَقُولُ
أَمْثَلُهُمْ طَرِيقَةً إِنْ لَبِثْتُمْ إِلَّا يَوْمًا ۝ وَيَسْـَٔلُونَكَ عَنِ الْجِبَالِ ع
فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّي نَسْفًا ۝ فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ۝ لَا
تَرٰى فِيهَا عِوَجًا وَلَا أَمْتًا ۝ يَوْمَئِذٍ يَتَّبِعُونَ الدَّاعِيَ لَا

उस दिन लोग पुकारने वाले की पुकार पर चले आयेंगे कोई कुछ भी अकड़ न दिखा गा, और आवाज़ें रहमान* के आगे दब जायेंगी, एक हल्की आवाज़ के सिवा तुम कुछ सुनोगे[३६]। ○

उस दिन सिफ़ारिश काम न आयेगी सिवाय इस के कि किसी को रहमान* इजाज़त दे र उस की बात को पसन्द करे। ○

वह जानता है जो-कुछ उन के आगे है और जो-कुछ उन के पीछे है, और वे (अपने) ज्ञान रा उस को घेर नहीं सकते[३७]। ○

और चेहरे उस सजीव[३८] और चिरस्थायी[३९] के आगे झुके होंगे। और वह विफल हुआ स ने ज़ुल्म (का बोझ) उठाया। ○

और जो कोई अच्छे काम करे, और इस के साथ वह ईमान* वाला भी हो, उसे न तो सी ज़ुल्म का भय होगा और न किसी हक़ के मारे जाने का। ○

और (हे मुहम्मद!) इसी तरह हम ने इसे अरबी क़ुरआन* के रूप में उतारा है, और में तरह-तरह से चेतावनी दी है, कदाचित् वे डरें या यह उन के लिए ध्यान देने का रण बने। ○

सो सर्वोच्च है अल्लाह, वास्तविक सम्राट्!

३६ यहाँ पैरों की चाप और चुपके-चुपके बात करने वालों की फुसफुसाहट के अतिरिक्त और कुछ सुनाई न देगा। उस दिन सब लोग डरे-सहमे होंगे।

३७ अल्लाह को लोगों का अगला-पिछला सब हाल मालूम है इस लिए वही जिस के हक़ में उचित समझेगा सिफ़ारिश की इजाज़त देगा।

३८ दे० सूरः अल-बक़रः फुट नोट ७१।

३९ दे० सूरः अल-बक़रः फुट नोट ७२।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई

عِوَجَ لَهُ ۚ وَخَشَعَتِ الْأَصْوَاتُ لِلرَّحْمَٰنِ فَلَا تَسْمَعُ إِلَّا هَمْسًا ۝
يَوْمَئِذٍ لَّا تَنفَعُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَٰنُ وَرَضِيَ لَهُ
قَوْلًا ۝ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِهِ
عِلْمًا ۝ وَعَنَتِ الْوُجُوهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّومِ ۖ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ
ظُلْمًا ۝ وَمَن يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخَافُ ظُلْمًا
وَلَا هَضْمًا ۝ وَكَذَٰلِكَ أَنزَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا وَصَرَّفْنَا فِيهِ مِنَ
الْوَعِيدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ أَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ۝ فَتَعَالَى اللَّهُ الْمَلِكُ
الْحَقُّ ۗ وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْآنِ مِن قَبْلِ أَن يُقْضَىٰ إِلَيْكَ وَحْيُهُ ۖ وَ
قُل رَّبِّ زِدْنِي عِلْمًا ۝ وَلَقَدْ عَهِدْنَا إِلَىٰ آدَمَ مِن قَبْلُ فَنَسِيَ وَ
لَمْ نَجِدْ لَهُ عَزْمًا ۝ وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا
إِبْلِيسَ أَبَىٰ ۝ فَقُلْنَا يَا آدَمُ إِنَّ هَٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا
يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقَىٰ ۝ إِنَّ لَكَ أَلَّا تَجُوعَ فِيهَا وَلَا
تَعْرَىٰ ۝ وَأَنَّكَ لَا تَظْمَأُ فِيهَا وَلَا تَضْحَىٰ ۝ فَوَسْوَسَ إِلَيْهِ الشَّيْطَانُ
قَالَ يَا آدَمُ هَلْ أَدُلُّكَ عَلَىٰ شَجَرَةِ الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلَىٰ ۝ فَأَكَلَا
مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَوْآتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفَانِ عَلَيْهِمَا مِن وَرَقِ
الْجَنَّةِ ۚ وَعَصَىٰ آدَمُ رَبَّهُ فَغَوَىٰ ۝ ثُمَّ اجْتَبَاهُ رَبُّهُ فَتَابَ
عَلَيْهِ وَهَدَىٰ ۝ قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَمِيعًا ۖ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ

और (ऐ मुहम्मद !) क़ुरआन* पढ़ने में—इस से पहले कि तुम्हारी ओर उस की वह्य* पूरी हो — जल्दी न किया करो,[40] और कहो : रब* ! मुझे ज्ञान और बढ़ा दे।○

[41]और हम ने इस से पहले आदम से एक वचन लिया था, परन्तु वह भूल गया, और हम ने उस में इरादे की मज़बूती न पाई।○

याद करो जब हम ने फ़िरिश्तों* से कहा : आदम के आगे सजद:* करो तो उन्हों ने सजद:* किया सिवाय इब्लीस* के; वह इन्कार कर बैठा।○ इस पर हम ने कहा : हे आदम ! निश्चय ही यह तुम्हारा और तुम्हारी पत्नी का शत्रु है, तो यह कहीं तुम दोनों को जन्नत* से न निकलवा दे, फिर तुम दुर्भाग्य (मुसीबत) में ग्रस्त हो जाओ।○ तुम्हारे लिए तो ऐसा है कि न तुम यहाँ भूखे रहो और न नंगे रहो,○ और यह कि न यहाँ प्यासे रहो और न धूप की तकलीफ़ उठाओ।○

परन्तु शैतान* ने उसे बहकाया, कहने लगा : हे आदम ! क्या मैं तुम्हें अमरता के वृक्ष का पता बता दूँ और उस राज्य का जो क्षीण न हो ?○

तब उन दोनों (पति-पत्नी) ने उस (वृक्ष) में से खा लिया, फिर उन की शर्मगाहें (गुप्त इन्द्रियाँ) उन के आगे खुल गईं,[42] और वे दोनों अपने (शरीर के) ऊपर जन्नत* के पत्ते जोड़-जोड़ कर रखने लगे। और आदम ने अपने रब* की अवज्ञा की, और (राह से) भटक गया।○

फिर उस के रब* ने उसे चुन लिया, और उस पर मेहरबान हुआ, और उसे (सीधा) मार्ग दिखाया।○ कहा : तुम दोनों-के-दोनों यहाँ से उतर जाओ, तुम एक-दूसरे के दुश्मन हो। अब यदि मेरी ओर से तुम्हें मार्ग-दर्शन पहुँचे, तो जो कोई मेरे मार्ग-दर्शन का पालन करेगा, वह न भटकेगा और न वह दुर्भाग्य (मुसीबत) में ग्रस्त होगा।○ और जिस ने मेरी याद[43] से मुँह मोड़ा तो उस का जीवन संकीर्ण होगा,[44] और क़ियामत* के दिन हम उसे

४० अर्थात् जब वह्य* उतर रही हो, तो उसे याद करने की चिन्ता में न पड़ो। अल्लाह तुम्हें सब स्वयं याद करा देगा। वह्य उतरने के आरम्भिक काल में नबी सल्ल० को कई बार टोका गया है कि वह्य* को याद करने की जल्दी में न पड़ो। सूरः क़ियामः के अवतीर्ण होने के समय भी ऐसा ही हुआ था। (दे० सूरः क़ियामः आयत १६-१९) सूरः अल-आला में आप (सल्ल०) को इतमीनान दिलाया गया है कि हम इसे आप को पढ़वा देंगे, आप भूलेंगे नहीं। (दे० आयत ६)।

४१ यहाँ से एक दूसरी तक़रीर शुरू होती है।

४२ अर्थात् वे दोनों एक-दूसरे के आगे नग्नावस्था हो गये।

४३ दे० आयत १०० और १२६।

४४ अर्थात् ऐसे व्यक्ति को संसार में कभी भी वास्तविक सुख और शान्ति प्राप्त न होगी। चाहे वह कितना ही धनी-मानी व्यक्ति क्यों न हो। उस का जीवन कष्ट और असमंजस का जीवन होगा, उसे कभी चैन और आराम नहीं मिल सकता। सुखमय जीवन तो उन्हीं लोगों का होता है जो अपने वास्तविक स्वामी को पहचानते और उस की आज्ञा का पालन करते हैं। चाहे वे निर्धन और ग़रीब ही क्यों न हों।

... पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

...न्धा उठायेंगे । ○

वह कहेगा : रब* ! तू ने मुझे क्यों अन्धा ...ठाया, जब कि मैं आँखों वाला था ? ○ वह कहेगा : ...से ही पहुँची थीं तुझ को आयतें* हमारी तो तू ... उन्हें भुला दिया था। इसी तरह आज तू भुलाया ...ा रहा है। ○—

इस तरह हम उसे बदला देते हैं[४५] जो हद से निकल गया और अपने रब* की आयतों* पर ...मान* न लाया; और आख़िरत* का अज़ाब अत्यन्त कठोर और अधिक स्थायी है। ○

फिर क्या यह चीज़ भी इन्हें[४६] (सीधी) राह न दिखा सकी कि इन से पहले कितनी ही नस्लों (जातियों) को हम विनष्ट कर चुके हैं, जिन के निवास-स्थानों में ये गुज़रते रहते हैं ? निस्सन्देह इस में बुद्धि वालों के लिए (बहुत सी) निशानियाँ हैं। ○

और यदि तेरे रब* की ओर से पहले एक बात निश्चय न पा गई होती, और एक ठहराई मुद्दत न होती, तो अवश्य ही (इन्हें अज़ाब) आ घेरता। ○

فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُم مِّنِّي هُدًى فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقَىٰ ۝
وَمَنْ أَعْرَضَ عَن ذِكْرِي فَإِنَّ لَهُ مَعِيشَةً ضَنكًا وَنَحْشُرُهُ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ أَعْمَىٰ ۝ قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِي أَعْمَىٰ وَقَدْ كُنتُ بَصِيرًا ۝
قَالَ كَذَٰلِكَ أَتَتْكَ آيَاتُنَا فَنَسِيتَهَا ۖ وَكَذَٰلِكَ الْيَوْمَ تُنسَىٰ ۝ وَكَذَٰلِكَ
نَجْزِي مَنْ أَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِن بِآيَاتِ رَبِّهِ ۚ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَشَدُّ
وَأَبْقَىٰ ۝ أَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّنَ الْقُرُونِ يَمْشُونَ فِي
مَسَاكِنِهِمْ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّأُولِي النُّهَىٰ ۝ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ
سَبَقَتْ مِن رَّبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَأَجَلٌ مُّسَمًّى ۝ فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا
يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا ۖ
وَمِنْ آنَاءِ اللَّيْلِ فَسَبِّحْ وَأَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضَىٰ ۝ وَلَا تَمُدَّنَّ
عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا لِنَفْتِنَهُمْ
فِيهِ ۚ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ۝ وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِالصَّلَاةِ وَاصْطَبِرْ
عَلَيْهَا ۖ لَا نَسْأَلُكَ رِزْقًا ۖ نَّحْنُ نَرْزُقُكَ ۗ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوَىٰ ۝ وَقَالُوا
لَوْلَا يَأْتِينَا بِآيَةٍ مِّن رَّبِّهِ ۚ أَوَلَمْ تَأْتِهِم بَيِّنَةُ مَا فِي الصُّحُفِ الْأُولَىٰ ۝
وَلَوْ أَنَّا أَهْلَكْنَاهُم بِعَذَابٍ مِّن قَبْلِهِ لَقَالُوا رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا
رَسُولًا فَنَتَّبِعَ آيَاتِكَ مِن قَبْلِ أَن نَّذِلَّ وَنَخْزَىٰ ۝ قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ
فَتَرَبَّصُوا ۖ فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ أَصْحَابُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدَىٰ ۝

अतः (हे मुहम्मद !), जो-कुछ ये बकते हैं उस पर सब्र करो, और अपने रब* की प्रशंसा (हम्द*) के साथ तसबीह* करो सूर्य उदय होने से पहले और उस के अस्त होने से पहले। और रात की कुछ घड़ियों में भी (उस की) तसबीह करो[४७] और दिन के किनारों पर भी, कदाचित् तुम राज़ी हो जाओ[४८]। ○

जो-कुछ कि हम ने सांसारिक जीवन की चमक-दमक, इन नाना प्रकार के लोगों को बरतने को दे रखी है, ताकि उस के द्वारा इन को आज़माइश में डालें, कदापि उस की ओर आँख उठा कर न देखो[४९]। और तेरे रब* की (दी हुई पाक) रोज़ी ही उत्तम और अधिक स्थायी है। ○

और अपने लोगों को नमाज़* का हुक्म दो, और उस पर जमे रहो। हम तुम से कोई रोज़ी नहीं माँगते : रोज़ी तुम्हें हम देते हैं[५०]। और (अच्छा) परिणाम तक़्वा* (धर्म-परायणता) के लिए है। ○

---

४५ यह संकेत है उस "संकीर्ण जीवन" की ओर जिस का उल्लेख आयत १२४ में हुआ है।

४६ अर्थात् मक्का वालों को।

४७ यहाँ हम्द* (प्रशंसा) के साथ तसबीह* करने से अभिप्रेत नमाज़* पढ़ना है। नमाज़* के वक़्तों की ओर भी यहाँ संकेत कर दिया गया है। सूर्य उदय होने से पूर्व 'फ़ज्र'* की नमाज़ पढ़ी जाती है। रात की घड़ियों में जो नमाज़ें पढ़ते हैं वह 'इशा'* और 'तहज्जुद'* की नमाज़ें हैं।

४८ दे० सूरः अज़्-ज़ुहा आयत ५।

४९ दे० सूरः अल-हिज्र आयत ८८। आशय यह है कि यदि धनवान लोग ईमान* नहीं लाते हैं तो इस की चिन्ता न करो।

५० "अन्नभक्ष्यो अभिचाकशीति"। (ऋ० १-१६४-२०) अर्थात् वह खाता नहीं औरों के लिए खाने की व्यवस्था करता है।

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

और वे कहते हैं : यह (रसूल) अपने रब* की ओर से कोई निशानी (चमत्कार) क्यों नहीं लाता ! क्या उन के पास उस की खुली दलील नहीं आ गई जो-कुछ कि अगले सहीफ़ों* (आसमानी किताबों) में है"[४१] ! ○

और यदि हम उस के (आने से) पहले इन्हें किसी अज़ाब से विनष्ट कर देते, तो ये कहते : हमारे रब* ! तू ने हमारे पास कोई रसूल* क्यों न भेजा कि हम इस से पहले कि अपमानित और रुसवा हों तेरी आयतों* का पालन करते ! ○

(हे मुहम्मद !) कह दो : हर एक इन्तज़ार में है; सो तुम भी इन्तज़ार करो ! जल्द ही तुम जान लोगे कि कौन सीधी राह (पर चलने) वाला है, और किस ने मार्ग पा लिया है।○ !

---

४१ अर्थात् क्या यह किसी चमत्कार से कम है कि उन्हीं में से एक ऐसे व्यक्ति ने जिसे पढ़ने-लिखने और शिक्षा प्राप्त करने का जीवन में कभी अवसर नहीं मिल सका, एक ऐसा ग्रन्थ प्रस्तुत कर दिया है जिस ने अपने में अगली समस्त किताबों* को समो लिया है। जिस में वे सभी मूल शिक्षाएँ आ गई हैं जो अगली किताबों* में दी गई थीं। मनुष्य को सीधा मार्ग दिखाने के लिए उन किताबों* में जो-कुछ भी था वह इस किताब* में न केवल यह कि वर्णित कर दिया गया है बल्कि उसे स्पष्ट रूप से इस प्रकार वर्णन किया गया है कि उसे एक अनपढ़ और बिना पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी समझ कर अपने जीवन को सफल बना सकता है।

* [illegible] शब्दों को सूची में देखें।

२१–अल-अंबिया
(परिचय)

नाम (The Title)

'अंबिया' नबी* का बहुवचन है। इस सूर:* में बहुत से नबियों का ज़िक्र आया है, इसी सम्पर्क से इस सूर:* का नाम अल-अंबिया रखा गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

सूर:* की वार्ताओं और उस की वर्णन-शैली से अनुमान होता है कि यह सूर:* मक्का के मध्य-काल की सूरतों में से है।

वार्तायें

इस से पहले की दो सूरतों में क्रमशः हज़रत मसीह अ० और हज़रत मूसा अ० के क़िस्से बयान हुये हैं, मस्तुत सूर:* में विशेष रूप से हज़रत इबराहीम अ० का क़िस्सा विस्तारपूर्वक बयान हुआ है। पिछली सूरतों में विशेषतः अवज्ञाकारी लोगों के अज़ाब का उल्लेख हुआ है, मस्तुत सूर:* में विशेष रूप से अल्लाह के नेक बन्दों के मुक्ति पाने का उल्लेख किया गया है।

इस सूर:* में लोगों को सावधान करते हुये कहा गया है कि अल्लाह के नज़दीक हिसाब का समय बहुत क़रीब आ गया है; परन्तु रसूल* का इन्कार करने वाले हैं कि खेल-तमाशे में पड़े हुये हैं। नबी* सल्ल० के विरुद्ध परस्पर कानाफूसी करते हैं। कहते हैं कि यदि वह अल्लाह का रसूल* है तो कोई निशानी ला कर दिखाये जिस तरह पिछले रसूलों* ने निशानियाँ पेश की थीं। उन्हें इस का भी इन्कार है कि एक दिन अल्लाह अपने बन्दों के बीच फ़ैसला करने वाला है। वे समझते हैं कि अल्लाह ने केवल खेल-तमाशे, और मनोरञ्जन लीला के तौर पर इस संसार की रचना की है। हानि-लाभ देवताओं के हाथ में है। मस्तुत सूर:* में मक्का वालों की इस तरह की धारणाओं का तर्क-सिद्ध खण्डन किया गया है। उन्हें नबियों के जीवन-वृत्तान्त सुना कर समझाया गया है कि इस लोक में जितने भी नबी* आये हैं सब-के-सब मनुष्य और अल्लाह के बन्दे थे। उन पर मुसीबतें आईं, उन के दुश्मनों ने उन का उन्मूलन करना चाहा परन्तु अल्लाह ने असाधारण रीति से उन की सहायता की; और उन्हें और उन के अनुयायियों को कष्टों और मुसीबतों से छुटकारा दिया।

यह बात भी उन के सामने रखी गई कि समस्त नबियों* का दीन* (धर्म) एक ही था। उसी दीन* का निमन्त्रण आज मुहम्मद सल्ल० दे रहे हैं। मानव-जाति का वास्तविक दीन* यही है।

सूर: के अन्त में बताया गया है कि मनुष्य के लिए मुक्ति की राह यही है कि वह उस दीन* (धर्म) का पालन करे जिसे अल्लाह का रसूल* लोगों के सामने पेश कर रहा है। जो लोग इस दीन* को अपनायेंगे वही अल्लाह के यहाँ सफल हो सकेंगे और वही ज़मीन के वारिस होंगे। इस सूर:* में यह संकेत किया गया है कि मक्का वालों के करतूतों का परिणाम जल्द ही उन के सामने आयेगा। वह समय दूर नहीं कि इस्लाम* को विजय प्राप्त होगी।

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

وَمَسٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْـَٔلُونَ ۝ قَالُوا يٰوَيْلَنَآ إِنَّا كُنَّا ظٰلِمِينَ ۝
فَمَا زَالَتْ تِّلْكَ دَعْوٰىهُمْ حَتّٰى جَعَلْنٰهُمْ حَصِيدًا خٰمِدِينَ ۝
وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِينَ ۝ لَوْ أَرَدْنَآ أَنْ
نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّآ إِنْ كُنَّا فٰعِلِينَ ۝ بَلْ نَقْذِفُ
بِالْحَقِّ عَلَى الْبٰطِلِ فَيَدْمَغُهُۥ فَإِذَا هُوَ زَاهِقٌ ۚ وَلَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا
تَصِفُونَ ۝ وَلَهُۥ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَمَنْ عِنْدَهُۥ لَا
يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِۦ وَلَا يَسْتَحْسِرُونَ ۝ يُسَبِّحُونَ الَّيْلَ
وَالنَّهَارَ لَا يَفْتُرُونَ ۝ أَمِ اتَّخَذُوٓا ءَالِهَةً مِّنَ الْأَرْضِ هُمْ
يُنْشِرُونَ ۝ لَوْ كَانَ فِيهِمَآ ءَالِهَةٌ إِلَّا اللَّهُ لَفَسَدَتَا ۚ فَسُبْحٰنَ
اللَّهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ۝ لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ
يُسْـَٔلُونَ ۝ أَمِ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِۦٓ ءَالِهَةً ۖ قُلْ هَاتُوا بُرْهٰنَكُمْ ۖ
هٰذَا ذِكْرُ مَنْ مَّعِىَ وَذِكْرُ مَنْ قَبْلِى ۗ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۙ
الْحَقَّ فَهُمْ مُّعْرِضُونَ ۝ وَمَآ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُولٍ
إِلَّا نُوحِىٓ إِلَيْهِ أَنَّهُۥ لَآ إِلٰهَ إِلَّآ أَنَا۠ فَاعْبُدُونِ ۝ وَقَالُوا اتَّخَذَ
الرَّحْمٰنُ وَلَدًا ۗ سُبْحٰنَهُۥ ۚ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُونَ ۝ لَا يَسْبِقُونَهُۥ
بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِأَمْرِهِۦ يَعْمَلُونَ ۝ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَ
مَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنِ ارْتَضٰى وَهُمْ مِّنْ خَشْيَتِهِۦ

उन के साथ (अपना) वादा सच्चा कर दिया[५] तो उन्हें और जिस किसी को हम ने चाहा बचा लिया, और मर्यादाहीन लोगों को हम ने हलाक (विनष्ट) कर दिया ○

लो, हम ने तुम्हारी ओर एक किताब* उतार दी है जिस में तुम्हारे लिए ज़िक्र* है[६]। तो क्या तुम समझते नहीं हो ? ○

कितनी ही बस्तियों को जो ज़ालिम थीं हम ने पीस कर रख दिया, और उन के बाद दूसरी किसी जाति को उठाया। ○ फिर, जब उन्हें हमारे अज़ाब की अनुभूति हुई, तो लगे वहाँ से भागने। ○ (कहा गया) : भागो नहीं, लौट चलो जहाँ तुम्हें आनन्द मिला था और अपने घरों को, कदाचित् तुम से पूछा जाये[७]। ○ कहने लगे : अफ़सोस हम पर ! वास्तव में हम ज़ालिम (पापी) थे। ○

फिर उन की निरन्तर यही पुकार रही यहाँ तक हम ने उन्हें ऐसा कर दिया जैसे कटी खेती और बुझा हुआ अंगारा हो[८]। ○

हम ने इस आसमान और ज़मीन को और जो-कुछ इन दोनों के बीच है इस तौर पर नहीं बनाया है कि हम कोई खेल (निरर्थक कार्य) करने वाले थे। ○ यदि हम कोई खेलवाड़ बनाना चाहते, तो उसे अपने पास से बना लेते[९] — यदि हम ऐसा करने वाले होते। ○ परन्तु हम तो असत्य पर सत्य की चोट लगाते हैं, तो वह उस का सिर तोड़ देता है फिर देखते-देखते वह मिट जाता है। और जो गुण तुम बयान करते हो उस के कारण तबाही है तुम्हारे लिए[१०]। ○

आसमानों और ज़मीन में जो-कोई है उसी का है। और जो (फ़िरिश्ते*) उस के पास हैं

५ अर्थात् उन की सहायता और उन के शत्रुओं को विनष्ट करने का जो वादा हम ने उन से किया था उसे हम ने पूरा किया।

६ अर्थात् तुम्हारे लिए सत्य की याददिहानी है यदि तुम ईमान* नहीं लाये तो अल्लाह का वादा तुम पर पूरा हो कर रहेगा। तुम अल्लाह के अज़ाब से नहीं बच सकते। दे० आयत ९ और २४।

७ यह व्यंग्यात्मक शैली है। मतलब यह है कि उधर चलो जहाँ तुम सुख और भोग-विलास में पड़े रहे हो। कदाचित् तुम से पूछा जाये कि तुम्हारा वह वैभव कहाँ गया जिस पर तुम्हें बड़ा गर्व था। सम्भव है तुम्हारे सेवक अब भी तुम्हारे सामने हाथ बाँधे खड़े हों और पूछें कि सरकार का क्या हुक्म है। हो सकता है लोगों को अब भी तुम्हारी सलाह और सम्मति की आवश्यकता हो और वे इस के लिए तुम्हारे पास आयें।

८ जिस 'हिसाब' का उल्लेख सूरः की पहली आयत में किया गया है उसे आयत १ से ले कर आयत १५ तक इतिहास द्वारा प्रमाणित किया गया है; आगे आयत १६ से १८ तक अल्लाह के गुणों से उसे प्रमाणित किया गया है।

९ अर्थात् यदि हमें खेल ही अभीष्ट होता तो इस का हम अपने तौर पर प्रबन्ध कर लेते; दूसरों को इस के लिए संसार के नाना प्रकार के संघर्षों के अन्तर्गत तकलीफ़ में क्यों डालते।

१० अर्थात् यह दुनिया खेल-तमाशे और आमोद-प्रमोद के लिए कदापि नहीं बनाई गई है। यहाँ असत्य ज़्यादा दिनों तक नहीं फल-फूल सकता सत्य से उस का टकराव हो कर ही रहता है जिस के फलस्वरूप उसे मुँह की खानी पड़ती है। और वह मलियामेट हो कर रह जाता है।

* इन का अर्थ आखिर में दी गई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

مُشْفِقُوْنَ ۝ وَمَنْ يَّقُلْ مِنْهُمْ اِنِّيْۤ اِلٰهٌ مِّنْ دُوْنِهٖ فَذٰلِكَ
نَجْزِيْهِ جَهَنَّمَ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ۝ اَوَلَمْ يَرَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْۤا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا ؕ وَجَعَلْنَا
مِنَ الْمَآءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ؕ اَفَلَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَجَعَلْنَا فِي الْاَرْضِ
رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِهِمْ ۪ وَجَعَلْنَا فِيْهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُمْ
يَهْتَدُوْنَ ۝ وَجَعَلْنَا السَّمَآءَ سَقْفًا مَّحْفُوْظًا ۚۖ وَّهُمْ عَنْ اٰيٰتِهَا
مُعْرِضُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ
كُلٌّ فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ۝ وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ ؕ
اَفَا۟ئِنْ مِّتَّ فَهُمُ الْخٰلِدُوْنَ ۝ كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ؕ وَنَبْلُوْكُمْ
بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ؕ وَاِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ۝ وَاِذَا رَاٰكَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْۤا اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ؕ اَهٰذَا الَّذِيْ يَذْكُرُ اٰلِهَتَكُمْ ۚ
وَهُمْ بِذِكْرِ الرَّحْمٰنِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ۝ خُلِقَ الْاِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ ؕ
سَاُورِيْكُمْ اٰيٰتِيْ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْنِ ۝ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ
اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ لَوْ يَعْلَمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا حِيْنَ لَا يَكُفُّوْنَ
عَنْ وُّجُوْهِهِمُ النَّارَ وَلَا عَنْ ظُهُوْرِهِمْ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ۝
بَلْ تَاْتِيْهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ
يُنْظَرُوْنَ ۝ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ

वे न तो अपने को बड़ा समझ कर उस की इबादत* से मुँह फेरते हैं, और न थकते हैं। ○ रात और दिन (उस की) तसबीह* करते रहते हैं; ठहरते नहीं। ○ क्या इन्हों ने ज़मीन (की चीज़ों में) से २ इलाह* (इष्टदेव) बनाये हैं कि वे (बे-जान में जान डाल कर) उठा खड़ा करेंगे ? ○

यदि इन दोनों (आसमान और ज़मीन) में में अल्लाह के सिवा और दूसरे इलाह* (पूज्य) भी होते, तो दोनों की व्यवस्था बिगड़ जाती। तो अल्लाह की महिमा के, जो राजसिंहासन का रब*[११] है, प्रतिकूल है जो गुण ये बयान करते हैं। ○

वह जो-कुछ करता है उस की पूछ-ताछ उस से नहीं की जा सकती, और उन से (उन के कर्मों के बारे में) पूछा जायेगा। ○

क्या उसे छोड़ कर इन्हों ने दूसरे इलाह* (पूज्य) बना लिये हैं ? (हे नबी*!) कह दो : लाओ अपनी दलील। यह है याददिहानी उन की जो मेरे साथ हैं और उन की जो मुझ से पहले थे,[१२] परन्तु इन में अधिकतर लोग सत्य को नहीं जानते अतः वह मुँह मोड़े हुये हैं। ○

और हम ने तुम से पहले जो रसूल* भी भेजा उसे हम ने यही वह्य* की कि मेरे सिवा कोई इलाह* (पूज्य) नहीं, तो तुम मेरी ही इबादत* करो। ○

और ये कहते हैं : रहमान* औलाद रखता है। महिमावान् है वह ! बल्कि (जिन्हें ये बेटे समझ रहे हैं) वे तो सम्मानित बन्दे (अर्थात् फ़िरिश्ते*) हैं; ○ उस के आगे बढ़ कर नहीं बोलते, और वे उस के हुक्म पर काम करते हैं। ○ वह जानता है जो-कुछ उन के आगे है और जो-कुछ उन के पीछे है, और वे किसी की सिफ़ारिश नहीं करते सिवाय उस के जिस से वह (अर्थात् अल्लाह) राज़ी हो, और वे उस के भय से डरते रहते हैं। ○

और जो कोई उन में से कह दे कि अल्लाह के सिवा मैं एक इलाह* (पूज्य) हूँ, तो यही है वह व्यक्ति जिसे हम दोज़ख़* का बदला देंगे। ज़ालिमों को हम ऐसा ही बदला देते हैं। ○

क्या उन लोगों ने जिन्हों ने कुफ़्र* किया देखा नहीं[१३] कि ये आसमान और ज़मीन पहले (सब-के-सब) परस्पर मिले हुये थे, फिर हम ने उन्हें अलग-अलग किया,[१४] और पानी

११ अर्थात् संसार के राज-सिंहासन का स्वामी।

१२ क़ुरआन और पिछली किताबें तौरात और इंजील आदि किसी से भी यह मालूम नहीं होता कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई और भी है जिसे ईश्वर और पूज्य होने का कुछ भी हक़ हासिल हो।

१३ अर्थात् क्या उन्हों ने विचार नहीं किया।

१४ अर्थात् यह विश्व वर्तमान रूप में आने से पूर्व पूरा-का-पूरा एक ही पदार्थ के रूप में था। एक ही प्रकार की एक विशेष चीज़ जो परस्पर मिली हुई थी अल्लाह ने उसे विभिन्न भागों में बाँट दिया। और उस से विभिन्न ग्रह-नक्षत्र आदि पैदा किये। वह पदार्थ कैसा था ? वह एक प्रकार का धुआँ अर्थात् गैस (Gas) था। दे० सूरः हा० मी० अस-सज्दः आयत ११।

* ... पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सख़रू मिन्हुम मा कानू बिही यस्तहज़िऊन ۝ क़ुल मन यक्लऊकुम

سخروا منهم ما كانوا به يستهزءون ۝ قل من يكلؤكم
بالليل والنهار من الرحمن بل هم عن ذكر ربهم معرضون ۝
ام لهم آلهة تمنعهم من دوننا لا يستطيعون نصر
انفسهم ولا هم منا يصحبون ۝ بل متعنا هؤلاء وآباءهم
حتى طال عليهم العمر افلا يرون انا نأتي الارض ننقصها
من اطرافها افهم الغالبون ۝ قل انما انذركم بالوحي ولا
يسمع الصم الدعاء اذا ما ينذرون ۝ ولئن مستهم
نفحة من عذاب ربك ليقولن يا ويلنا انا كنا ظالمين ۝
ونضع الموازين القسط ليوم القيامة فلا تظلم نفس شيئا
وان كان مثقال حبة من خردل اتينا بها وكفى بنا
حاسبين ۝ ولقد آتينا موسى وهارون الفرقان وضياء و
ذكرا للمتقين ۝ الذين يخشون ربهم بالغيب وهم من
الساعة مشفقون ۝ وهذا ذكر مبارك انزلناه افانتم له
منكرون ۝ ولقد آتينا ابراهيم رشده من قبل وكنا به
عالمين ۝ اذ قال لابيه وقومه ما هذه التماثيل التي
انتم لها عاكفون ۝ قالوا وجدنا آباءنا لها عابدين ۝ قال
لقد كنتم انتم وآباؤكم في ضلال مبين ۝ قالوا اجئتنا

र जानदार चीज़ बनाई ? तो क्या वे मानते ? ○

और हम ने ज़मीन में अटल पहाड़ रख दिये कि वह लोगों को ले कर (एक ओर) ढलक न ये,[16] और हम ने उन में ऐसे दर्रे बनाये कि लों का काम देते हैं ताकि लोग राह पायें[17] । ○ र हम ने आसमान को एक सुरक्षित छत बनाया[18]। न्तु वे हैं कि उस (आसमान के बीच) की निशा- यों की ओर से मुँह मोड़े हुये हैं। ○

और वही है जिस ने रात और दिन बनाये, र सूरज और चाँद। सब (तारागण), एक-एक ण्डल में तैर रहे हैं[19] । ○

और (हे मुहम्मद!) हम ने तुम से पहले भी सी मनुष्य के लिए (दुनियाँ में) अमरता नहीं रखी। र क्या! यदि तुम्हें मौत आई, तो ये सदैव ने वाले हैं? ○

हर जीव को मौत का मज़ा चखना है, और हम रखी, और बुरी हालतों में डाल कर तुम सब की आज़माइश करते हैं। और तुम्हें हमारी ौट कर आना है। ○

और जिन लोगों ने कुफ़्र* किया जब वे तुम्हें देखते हैं, तो बस तुम्हारी हँसी उड़ाते हैं, करते हैं): क्या यही वह व्यक्ति है जो तुम्हारे इलाहों* (पूज्यों) का (बुराई के साथ) ज़िक्र करता है? और उन का हाल यह है कि वे रहमान* के ज़िक्र से इन्कार करते हैं। ○

मनुष्य उतावला पैदा किया गया है। मैं जल्द ही तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता हूँ, सो तुम जल्दी न मचाओ। ○

और वे कहते हैं: यह (अज़ाब का) वादा कब पूरा होगा, यदि तुम सच्चे हो? ○

क्या ही अच्छा होता कि इन लोगों को जिन्हों ने कुफ़्र* किया है उस समय का ज्ञान होता जब कि वे न तो अपने चेहरों पर से आग को रोक सकेंगे और न अपनी पीठों पर से, और न न्हें सहायता मिल सकेगी! ○ बल्कि वह (क़ियामत*) अचानक इन पर आयेगी और इन के होश उड़ा देगी, फिर न तो ये उसे हटा सकेंगे, और न इन्हें मुहलत मिलेगी। ○

तुम से पहले भी कितने ही रसूलों* की हँसी उड़ाई जा चुकी है, परन्तु जिन लोगों ने उन की हँसी उड़ाई उन्हें उसी चीज़ ने आ घेरा जिस का वे मज़ाक़ उड़ा रहे थे[20] । ○

---

१६ देखो सूरः अन-नह्ल फुट नोट ८।

१७ पहाड़ों के बीच दर्रे रख दिये जिन के कारण पहाड़ों को पार करने के लिए रास्ते निकल आते। इसी तरह ज़मीन की बनावट भी ऐसी रखी कि एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचने के लिए रास्ते निकल आते हैं।

१८ देखो सूरः अल-हिज्र फुट नोट ६, १०, ११ और १२।

१९ प्रत्येक नक्षत्र अपने-अपने मण्डल में परिक्रमा कर रहा है। ऐसा नहीं है कि वे तारे किसी ठोस आकाश में जड़े हों और वह उन्हें लिये हुए घूमता हो, जैसा कि प्राचीन काल के ज्योतिषियों (Astronomers) का मत रहा है।

२० अर्थात् अल्लाह के प्रकोप ने उन्हें अपनी लपेट में ले लिया।

* इन का अर्थ परिशिष्ट में लिखी गई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

…ने कहा : नहीं, बल्कि, वास्तव में तुम्हारा रब* आसमानों और ज़मीन का रब* है
…उन्हें पैदा किया है; और मैं इस पर तुम्हारे आगे गवाह हूँ। ○ और, अल्लाह की
…इस के बाद कि तुम पीठ फेर कर लौटोगे मैं तुम्हारी मूर्तियों के साथ एक चाल चलूँगा। ○
…तएव उस ने उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर दिया, सिवाय उन के एक बड़े (बुत) के,[२४] कदा-
…उन की ओर पलटें। ○

…उन्हों ने आ कर जब मूर्तियों की यह दशा देखी तो) कहने लगे : यह हमारे देवताओं
…किस ने किया है ? निश्चय ही वह कोई (बड़ा ही) ज़ालिम है। ○ (कुछ लोग) बोले :
…एक नवयुवक को इन की चर्चा करते सुना है, जिसे इबराहीम कहा जाता है। ○
…उन्हों ने कहा : तो उसे ले आओ लोगों के सामने ताकि वे देखें। ○
…(इबराहीम के आ जाने पर) उन्हों ने कहा : क्या तू ने हमारे देवताओं के साथ यह कर्म
…है, हे इबराहीम ? ○ उस ने कहा : बल्कि, इन में के इस बड़े ने किया है। इन्हीं से पूछ
…दि ये बोलते हों[२५]। ○

…वे अपने अन्तरात्मा की ओर पलटे और (अपने जी में) कहने लगे : वास्तव में तुम स्वयं
…म हो। ○ फिर वे औंधा दिये गये अपने सिरों के बल,[२६] (बोले) : यह तो तू जानता है
…बोलते नहीं। ○

…(इबराहीम ने) कहा : फिर क्या तुम अल्लाह के सिवा उस चीज़ को पूजते हो जो न तुम्हारा
…बना सके, और न तुम्हारा कुछ बिगाड़ सके ? ○ धिक्कार है तुम पर और उन पर जिन
…तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो ! तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ? ○
…उन्हों ने कहा : जला डालो इसे और सहायक हो अपने देवताओं के, यदि तुम्हें कुछ
…ना है। ○

…हम ने कहा : हे आग ठण्डी हो जा और सलामती बन जा इबराहीम पर। ○
…उन्हों ने उस के साथ साज़िश करनी चाही, परन्तु हम ने उन्हें अत्यन्त घाटे में डाल
…ा। ○ और हम उसे और लूत को उस भूमि की ओर निकाल ले गये जिस में हम ने
…यों वालों के लिए बरकत रखी है[२७]। ○ और हम ने उसे इसहाक़ (जैसा बेटा) दिया,
…र तद्-अधिक याक़ूब। और प्रत्येक को हम ने नेक बनाया। ○ और हम ने उन्हें नायक
…या, जो हमारे हुक्म से (लोगों को सीधा) मार्ग दिखाते थे और हम ने उन की ओर नेक
…मों के करने और नमाज़* क़ायम रखने और ज़कात* देने की वह्य* की, और वे हमारे
…ादत-गुज़ार (उपासक) थे। ○

और लूत को हम ने हुक्म* और ज्ञान प्रदान किया, और उसे उस बस्ती से छुटकारा

---

[२४] …सब लोग चले गये तो अवसर पा कर हज़रत इबराहीम अ० ने समस्त मूर्तियों को तोड़ डाला केवल …बड़ी मूर्ति को रहने दिया। ताकि लोग देख लें कि उन के देवता कितने बेबस हैं वे कुछ भी अधिकार नहीं …ते; वे स्वयं अपनी रक्षा भी नहीं कर सकते।

[२५] यह बात हज़रत इबराहीम अ० ने कोई झूठ बोलने के ध्येय से नहीं कही बल्कि यह बात उन्हों ने …तर्क और उपहास के रूप में कही ताकि वे यह सोचने पर मजबूर हों कि उन के ये देवता बिलकुल बेबस हैं।

[२६] अर्थात् वे लज्जित हुये उन के सिर लज्जावश झुक गये।

[२७] शाम (Syria) और फ़िलिस्तीन के भू-भाग की ओर संकेत है। यह भू-भाग संसार के उपजाऊ भूमि …में से है। आध्यात्मिक दृष्टि से भी इस भू-भाग पर अल्लाह की बड़ी कृपा रही है। जितने अधिक नबी* यहाँ …हुये हैं दुनिया में कहीं और नहीं हुये। यहाँ दो हज़ार वर्ष तक नबियों* के आने का सिलसिला रहा है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

الصَّلٰوةِ وَإِيتَاءَ الزَّكٰوةِ ۚ وَكَانُوا لَنَا عٰبِدِينَ ۝ وَلُوطًا اٰتَيْنٰهُ
حُكْمًا وَّعِلْمًا وَّنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِي كَانَتْ تَّعْمَلُ الْخَبٰٓئِثَ ۗ
إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمَ سَوْءٍ فٰسِقِينَ ۝ وَأَدْخَلْنٰهُ فِي رَحْمَتِنَا ۗ إِنَّهُ
مِنَ الصّٰلِحِينَ ۝ وَنُوحًا إِذْ نَادٰى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ
فَنَجَّيْنٰهُ وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ۝ وَنَصَرْنٰهُ مِنَ الْقَوْمِ
الَّذِينَ كَذَّبُوا بِاٰيٰتِنَا ۗ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمَ سَوْءٍ فَأَغْرَقْنٰهُمْ أَجْمَعِينَ ۝
وَدَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ إِذْ يَحْكُمٰنِ فِي الْحَرْثِ إِذْ نَفَشَتْ فِيهِ غَنَمُ
الْقَوْمِ ۚ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِينَ ۝ فَفَهَّمْنٰهَا سُلَيْمٰنَ ۚ وَكُلًّا
اٰتَيْنَا حُكْمًا وَّعِلْمًا ۖ وَّسَخَّرْنَا مَعَ دَاوٗدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ ۚ
وَكُنَّا فٰعِلِينَ ۝ وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْ
بَأْسِكُمْ ۚ فَهَلْ أَنْتُمْ شٰكِرُونَ ۝ وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيحَ عَاصِفَةً
تَجْرِي بِأَمْرِهٖ إِلَى الْأَرْضِ الَّتِي بٰرَكْنَا فِيهَا ۚ وَكُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ
عٰلِمِينَ ۝ وَمِنَ الشَّيٰطِينِ مَنْ يَّغُوصُونَ لَهٗ وَيَعْمَلُونَ عَمَلًا
دُونَ ذٰلِكَ ۚ وَكُنَّا لَهُمْ حٰفِظِينَ ۝ وَأَيُّوبَ إِذْ نَادٰى رَبَّهٗ أَنِّي
مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرّٰحِمِينَ ۝ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا
بِهٖ مِنْ ضُرٍّ وَّاٰتَيْنٰهُ أَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا
وَذِكْرٰى لِلْعٰبِدِينَ ۝ وَإِسْمٰعِيلَ وَإِدْرِيسَ وَذَا الْكِفْلِ ۖ كُلٌّ مِّنَ

दिया जो गन्दे कर्म करती थी।—वास्तव में वे बड़े ही बुरे, सीमोल्लंघन करने वाले लोग थे।○— और उसे (अर्थात् लूत को) हम ने अपनी दयालुता (की छाया) में दाख़िल किया। निसन्देह वह अच्छे लोगों में से था।○

और नूह (पर भी हमारी कृपा हुई है), याद करो जब कि उस ने पूर्वकाल में पुकारा था,[28] तो हम ने उस की (पुकार) सुन ली और उसे और उस के लोगों को महा पीड़ा[29] से छुटकारा दिया।○ और उस जाति के मुक़ाबिले में उस की सहायता की जिस ने हमारी आयतों* को झुठलाया था। वास्तव में वे बड़े ही बुरे लोग थे, सो हम ने उन सब को डुबो दिया।○

और दाऊद और सुलैमान (पर भी हम ने कृपा की थी), याद करो जब वे दोनों खेती के बारे में फ़ैसला कर रहे थे, जब कि उस (खेती) में (रात के समय) कुछ लोगों की बकरियाँ फैल पड़ी थीं; और हम उन का फ़ैसला देख रहे थे।○ तो हम ने उस (मामले) की समझ सुलैमान को दी;[30] और यों तो हर एक को हम ने हुक्म* और ज्ञान प्रदान किया था और दाऊद के साथ हम ने पहाड़ों को अधीन कर दिया था कि वे तसबीह* करते (दाऊद के साथ) और पक्षियों को भी। और (ऐसा) करने वाले हम ही थे।○

और हम ने उसे तुम्हारे लिए एक पहनावा (अर्थात् कवच) बनाना सिखा दिया था ताकि तुम को तुम्हारी मार-काट से बचाये[31]। फिर क्या तुम कृतज्ञता दिखलाते हो ?○ ८०

और सुलैमान के लिए हम ने वायु अधीन कर दी, प्रचण्ड वायु जो उस के हुक्म से उस भू-भाग की ओर चलती थी जिस में हम ने बरकत रखी है[32]। और हम हर चीज़ के जानने

---

२८ यह उस प्रार्थना की ओर संकेत है जो हज़रत नूह अ० ने निरन्तर एक लम्बे समय तक अपनी जाति वालों को अल्लाह के दीन* की ओर बुलाने के पश्चात् की थी जब कि उन की जाति के लोग उन्हें झुठलाते ही जा रहे थे। दे० सूरः अल-क़मर आयत ६-१५ और सूरः नूह आयत २१-२८।

२६ महापीड़ा का तात्पर्य या तो वह अज़ाब है जो तूफ़ान के रूप में हज़रत नूह अ० की जाति वालों पर आया था या फिर इस से अभिप्रेत वह कष्ट है जो एक मर्यादा-हीन और दुश्चरित्र जाति के बीच जीवन व्यतीत करने से एक शिष्ट और भले व्यक्ति को पहुँचता है।

३० नबियों* को जो विशेषता भी प्राप्त होती है वह अल्लाह की कृपा से ही प्राप्त होती है। नबी मनुष्य ही थे उन में कोई ईश्वरीय गुण कदापि न था। हज़रत दाऊद अ० को वह्य* के द्वारा सुझाव नहीं दिया गया तो फ़ैसले में उन से चूक हो गई। यदि वे दैवी शक्ति के मालिक होते तो उन से इस तरह की चूक न होती।

३१ दे० सूरः अस-सबा। ऐतिहासिक और पुरातत्व खोजों के द्वारा यह अनुमान लगाया गया है कि मनुष्य ने १२०० और १००० ई० पू० से लोहे को प्रयोग में लाना शुरू किया है और हज़रत दाऊद अ० का समय भी यही है। खुदाइयों से लोहा पिघलाने की जो भट्टियाँ मिली हैं उन से अनुमान किया जाता है कि उस युग में लोहा पिघलाने आदि का उद्योग बहुत उन्नति पर था।

३२ दे० सूरः अस-सबा आयत १२ और सूरः साद० आयत ३६। (शेष अगले पृष्ठ पर)

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

वाले हैं। ○ और कितने ही शैतानों* को (अधीन किया था) जो उस के लिए डुबकी लगाते थे और इस के अतिरिक्त वे दूसरा काम भी करते थे, और उन की रखवाली करने वाले हम ही थे³³। ○

और अय्यूब (पर भी मैं ने कृपा की है), याद करो जब कि उस ने अपने रब* को पुकारा : मुझे बीमारी लग गई है, और तू सब से बढ़ कर दया करने वाला है। ○ तो हम ने उस की (पुकार) सुन ली और जो तकलीफ़ उसे थी उस को दूर कर दिया, और उसे उस का परिवार दिया और उन के साथ वैसे ही और भी (दिये) दयालुता के रूप में अपने यहाँ से, और इबादत-गुज़ारों (उपासकों) के लिए याददिहानी के ध्येय से। ○

और इसमाईल, और इदरीस,³⁴ और ज़ुल-किफ़्ल³⁵ (पर भी हमारी कृपा रही है)। ये सब सब्र* ८१ करने वाले थे। ○ और इन्हें हम ने अपनी दयालुता (की छाया) में दाख़िल किया। निस्सन्देह ये अच्छे लोगों में से थे। ○

الصّٰبِرِيْنَ ۝ وَاَدْخَلْنٰهُمْ فِيْ رَحْمَتِنَا ؕ اِنَّهُمْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَ
ذَا النُّوْنِ اِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ اَنْ لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادٰى فِي
الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝
فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۙ وَنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ؕ وَكَذٰلِكَ نُـْۨجِي الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَ
زَكَرِيَّآ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ رَبِّ لَا تَذَرْنِيْ فَرْدًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ ۝
فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۫ وَوَهَبْنَا لَهٗ يَحْيٰى وَاَصْلَحْنَا لَهٗ زَوْجَهٗ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا
يُسٰرِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ وَيَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّرَهَبًا ؕ وَكَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ ۝
وَالَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهَا مِنْ رُّوْحِنَا وَجَعَلْنٰهَا وَابْنَهَآ
اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝ اِنَّ هٰذِهٖٓ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۖ وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْنِ ۝
وَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ ؕ كُلٌّ اِلَيْنَا رٰجِعُوْنَ ۝ فَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ
الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهٖ ۚ وَاِنَّا لَهٗ كٰتِبُوْنَ ۝ وَ
حَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَآ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ۝ حَتّٰٓى اِذَا فُتِحَتْ
يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ ۝ وَاقْتَرَبَ
الْوَعْدُ الْحَقُّ فَاِذَا هِيَ شَاخِصَةٌ اَبْصَارُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ يٰوَيْلَنَا قَدْ
كُنَّا فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا بَلْ كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝ اِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ ؕ اَنْتُمْ لَهَا وٰرِدُوْنَ ۝ لَوْ كَانَ
هٰٓؤُلَآءِ اٰلِهَةً مَّا وَرَدُوْهَا ؕ وَكُلٌّ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ

और ज़ुन-नून³⁶ (पर भी हमारी कृपा हुई), याद करो जब वह क्रुद्ध हो कर चला गया और समझा कि हम उसे न पकड़ेंगे,³⁷ फिर उस ने अँधियारियों³⁸ में से पुकारा : नहीं है कोई इलाह* (पूज्य) सिवाय तेरे। महिमा हो तेरी। निस्सन्देह मैं ही अन्यायियों में से हूँ। ○ तो हम ने उस की (पुकार) सुन ली और उसे ग़म से छुटकारा दिया। और इसी तरह हम

ऐतिहासिक खोजों और बाइबिल के अध्ययन से मालूम होता है कि हज़रत सुलैमान अ० ने अपने युग में बड़े पैमाने पर समुद्री व्यापार का सिलसिला शुरू किया था। उन के जहाज़ लाल सागर से यमन और दूसरे दक्षिणी और पूर्वी देशों की ओर जाते थे। और दूसरी ओर रूम सागर के द्वारा पश्चिमी देशों की ओर भी उन के जहाज़ जाते रहते थे। उस समय में जहाज़ों का समुद्र में चलना अनुकूल वायु पर ही निर्भर था। यह अल्लाह की कृपा थी कि हज़रत सुलैमान अ० को अपने दोनों ही समुद्री बेड़े के लिए अनुकूल वायु मिल जाती थी। यह भी सम्भव है कि अल्लाह ने हज़रत सुलैमान अ० को वायु पर कोई विशेष अधिकार दिया हो और वे उस से इच्छानुसार काम लेते रहे हों।

३३ दे० सूरः अस-सबा आयत १२-१४।

३४ दे० सूरः मरयम फुट नोट ३३।

३५ 'ज़ुलकिफ़्ल' उपनाम या उपाधि है। इस का अर्थ होता है 'भाग्यवान'। मतलब यह है कि आख़िरत* में उन्हें जो दरजा प्राप्त होगा उस की दृष्टि से और अपनी नैतिक महानता की दृष्टि से वे बड़े ही सौभाग्यशाली थे। कुछ लोगों के मतानुसार ये वही महान् व्यक्ति हैं जिन्हें बाइबिल में हिज़क़ीएल (Ezekiel) कहा गया है।

३६ अर्थात् 'मछली वाले' इस से अभिप्रेत हज़रत यूनुस अ० हैं। इन्हें 'मछली वाले' इस लिए कहा गया है कि इन्हें एक मछली ने अल्लाह के हुक्म से निगल लिया था। (दे० सूरः अस-साफ़्फ़ात आयत १३९-१४४)।

३७ उन्हों ने समझ लिया कि हमारी जाति वालों पर अल्लाह का अज़ाब आ कर रहेगा उन के पास से हट जाऊँ ताकि मैं अज़ाब की लपेट में न आ जाऊँ।

३८ मछली के पेट में तो अँधेरा था ही समुद्र की अँधियारियाँ अलग ऊपर से छाई हुई थीं।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

وَهُمْ فِيهَا لَا يَسْمَعُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ سَبَقَتْ لَهُم مِّنَّا الْحُسْنَىٰ
أُولَٰئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ ۝ لَا يَسْمَعُونَ حَسِيسَهَا ۖ وَهُمْ فِي مَا
اشْتَهَتْ أَنفُسُهُمْ خَالِدُونَ ۝ لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْأَكْبَرُ وَتَتَلَقَّاهُمُ
الْمَلَائِكَةُ هَٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ ۝ يَوْمَ نَطْوِي
السَّمَاءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ۚ كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيدُهُ ۚ وَعْدًا
عَلَيْنَا ۚ إِنَّا كُنَّا فَاعِلِينَ ۝ وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُورِ مِن بَعْدِ الذِّكْرِ
أَنَّ الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ ۝ إِنَّ فِي هَٰذَا لَبَلَاغًا لِّقَوْمٍ
عَابِدِينَ ۝ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ ۝ قُلْ إِنَّمَا يُوحَىٰ
إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۖ فَهَلْ أَنتُم مُّسْلِمُونَ ۝ فَإِن تَوَلَّوْا
فَقُلْ آذَنتُكُمْ عَلَىٰ سَوَاءٍ ۖ وَإِنْ أَدْرِي أَقَرِيبٌ أَم بَعِيدٌ مَّا
تُوعَدُونَ ۝ إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُونَ ۝
وَإِنْ أَدْرِي لَعَلَّهُ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ۝ قَالَ رَبِّ احْكُم
بِالْحَقِّ ۗ وَرَبُّنَا الرَّحْمَٰنُ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ۝

ईमान* वालों को छुटकारा देते हैं।○

और ज़करिया (पर भी हमारी कृपा हुई), याद करो जब कि उस ने अपने रब* को पुकारा: रब*! मुझे अकेला न छोड़,[39] और सब से अच्छा वारिस तो तू ही है।○ तो हम ने उस की (पुकार) सुन ली, और उसे यहया (जैसा बेटा) दिया, और उस के लिए उस की पत्नी को दुरुस्त कर दिया[40]। निश्चय ही वे नेक कामों में दौड़ते थे, और हमें चाह और भय के साथ पुकारते थे, और हमारे आगे दबे रहते थे।○

और वह महिला जिस ने अपने सतीत्व की रक्षा की,[41] हम ने उस के अन्दर अपनी रूह फूंकी[42] और उसे और उस के बेटे को सारे संसार के लिए एक निशानी बनाया।○

निश्चय ही, यह है तुम्हारा गरोह, एक ही गरोह, और मैं तुम्हारा रब* हूँ, अतः तुम मेरी इबादत* करो।○

और लोग अपने बीच अपने कृत्य में अलग-अलग हो गये[43] — सब को हमारी ओर पलटना है।○ फिर जो अच्छे काम करेगा इस हालत में कि वह ईमान* वाला हो, तो उस की कोशिश की कोई नाक़दरी न होगी। और उसे हम लिख कर रखने वाले हैं।○

और हराम (असम्भव) था हर उस बस्ती के लिए (पलटना) जिस को हम ने हलाक (विनष्ट) कर दिया था निश्चय ही वे पलटने वाले न थे[44]।○ यहाँ तक कि जब याजूज और माजूज[45] खोल दिये जायेंगे, और वे हर ऊँची जगह से निकल पड़ेंगे।○

और सच्चा वादा क़रीब आ लगेगा;[46] तो तत्काल उन की आँखें फटी-की-फटी रह जायेंगी जिन्हों ने कुफ़्र* किया था। (कहेंगे): अफ़सोस हम पर! हम इस की ओर से ग़फ़लत में रहे। बल्कि, हम ही ज़ालिम (पापी) थे।○

---

३९ अर्थात् मुझे औलाद दे।

४० अर्थात् उन की पत्नी का बाँझपन दूर कर दिया।

४१ यह संकेत हज़रत मरयम की ओर है जिन्हों ने अपने को बुराई से दूर रखा। और वे सभी रास्ते बन्द कर दिये जिन से उन के अन्दर बुराई के घुसने की सम्भावना हो सकती थी।

४२ दे० सूरः अन-निसा आयत १७१।

४३ अर्थात् वे विभिन्न टोलियों में बँट गये।

४४ इस आयत में पलटने से अभिप्रेत कुफ़्र* से अल्लाह की ओर पलटना है। अल्लाह ने जिन बस्ती को भी तबाह किया उस समय तबाह किया जब कि उस बस्ती के लोग कुफ़्र* पर इस प्रकार आरूढ़ हो गये कि उन का ईमान* लाना असम्भव हो गया। दे० सूरः यूनुस आयत १३ और सूरः अल-अअ्राफ़ आयत १०१।

४५ दे० सूरः अल-कह्फ़ फ़ुट नोट ४१।

४६ याजूज व माजूज के निकल पड़ने के बाद क़ियामत* बिल्कुल क़रीब आ जायेगी। इस के अतिरिक्त नबी सल्ल० की बताई हुई क़ियामत* क़रीब आ जाने की कुछ और बड़ी-बड़ी निशानियाँ ये हैं: धुआं, दज्जाल, 'दाब्बतुल अर्ज़', पश्चिम से सूर्य का निकलना, ईसा मसीह अ० का उतरना, पूर्व, पश्चिम में और अरब में भूमि का धँसाया जाना। यमन से आग का उठना जो सब को हश्र-क्षेत्र की ओर हाँकेगी।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

(कहा जायेगा) : निश्चय ही तुम और वह जिसे तुम अल्लाह के सिवा पूजते थे दोज़ख़* का ईंधन हो[४७] । तुम अवश्य उस के घाट उतरोगे । ○

यदि ये इलाह* (ख़ुदा) होते तो वहाँ न जाते, और वे सब उस में हमेशा रहेंगे । ○ उन्हें वहाँ (कष्ट और जलन आदि के कारण) साँस खींचना है, और हालत यह होगी कि उन्हें
१०० वहाँ कान पड़ी आवाज़ सुनाई न देगी । ○

रहे वे लोग जिन के लिए पहले ही हमारी ओर से भलाई का निश्चय हो चुका है, वे उस (दोज़ख़*) से दूर रखे जायेंगे । ○ उस की हल्की आवाज़ (सनसनाहट) भी नहीं सुनेंगे । वे अपनी मन-चाही चीज़ों के बीच सदैव रहेंगे । ○ (क़ियामत* के दिन की) वह सब से बड़ी दहशत उन्हें ग़म में न डालेगी, और फ़रिश्ते* उन्हें लेने आयेंगे, (कहेंगे) : यह तुम्हारा वही दिन है जिस का (दुनियाँ में) तुम से वादा किया जाता था; ○

यह दिन जब कि हम आसमान को लपेट लेंगे जैसे 'सिजिल्ल' (पंजी) में पत्रों को लपेट दिया जाता है । जिस तरह हम ने (सृष्टि की) प्रथम रचना का आरम्भ किया था, उसी तरह हम फिर उस की पुनरावृत्ति करेंगे । यह हमारे ज़िम्मे एक वादा है । निश्चय ही हमें यह करना है । ○ और ज़बूर* में हम याददिहानी के बाद लिख चुके हैं कि ज़मीन के वारिस मेरे नेक
१०५ बन्दे होंगे[४८] : ○

निस्सन्देह इस में इबादत-गुज़ार (उपासक) लोगों के लिए एक दिल में उतर जाने वाला सन्देश है । ○

और (हे मुहम्मद !) हम ने तुम्हें सारे संसार के लिए रहमत (दयालुता) ही बना कर भेजा है । ○

(हे नबी* !) कहो : मेरे पास तो बस यह वह्य* आती है कि तुम्हारा इलाह* (पूज्य) अकेला इलाह* है । तो क्या तुम मुस्लिम* होते हो ? ○ यदि वे मुँह फेरें, तो कह दो : मैं ने तुम्हें खुल्लम-खुल्ला सूचित कर दिया है, और मैं यह नहीं जानता कि जिस की तुम्हें धमकी दी जा रही है वह क़रीब है या दूर । ○

निश्चय ही वह पुकार कर कही हुई बात को जानता है, और उसे भी वह जानता है जो
११० (बात) तुम छिपाते हो । ○

और क्या मालूम शायद यह तुम्हारे लिए एक आज़माइश हो, और एक नियत समय के लिए जीवन-सुख । ○

(रसूल* ने) कहा : रब* ! हक़ के साथ फ़ैसला कर दे । और (लोगो !) हमारा रब* रहमान* है, जिस से उन बातों के विरुद्ध जो तुम बनाते हो सहायता माँगी जाती है । ○

---

४७ अर्थात् जिस किसी ने चाहा होगा कि अल्लाह के सिवा उस की बन्दगी की जाये वह भी उन्हीं लोगों के साथ दोज़ख़* में जायेगा जिन्हों ने उस की बन्दगी की होगी । पत्थर, पीतल आदि की मूर्तियों और दूसरी पूजा-सामग्री को दोज़ख़* में झोंक देंगे ताकि वे भी उन पर दोज़ख़* की अग्नि के भड़कने का कारण बनें और उन्हें देख कर मानसिक कष्ट भी हो कि इन्हीं की वजह से आज हमें यह दिन देखना पड़ रहा है ।

४८ दे० बाइबिल, ज़बूर (Ps.) ३७ : ६-११, १८, २९ ।

दे० सूरः अल-मोमिनून आयत ११, सूरः अज़-ज़ुमर आयत ७४ ।

इस आयत में ज़मीन के वारिस होने का तात्पर्य जन्नत* का वारिस होना है । वर्तमान जीवन तो परीक्षा के लिए है इस जीवन में तो काफ़िरों* और अल्लाह के नाफ़रमान लोगों को भी ज़मीन पर अधिकार प्राप्त होता है, परन्तु आने वाले शाश्वत जीवन में जन्नत* के वारिस केवल वही लोग होंगे जो नेक और अल्लाह के दिखाये हुये मार्ग पर चलने वाले होंगे ;

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

२२-अल-हज्ज

(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः° का नाम 'अल-हज्ज' सूरः की आयत २६-३८ से लिया गया है जो 'हज' से सम्बन्ध रखती हैं।

उतरने का समय (The date of Revelation)

प्रस्तुत सूरः° में मक्की और मदनी दोनों प्रकार की सूरतों की विशेषतायें पाई जाती हैं। अनुमान है कि सूरः° का प्रारम्भिक भाग[१] मक्का में हिजरत° से कुछ पहले उतरा है और शेष भाग मदीना में अवतरित हुआ है। सूरः° के दूसरे भाग के अध्ययन से ऐसा लगता है कि वह हिजरत° के कुछ ही समय पश्चात् उतरा होगा[२]।

केन्द्रीय विषय तथा वार्तायें

इस सूरः° में उन लोगों के लिए डरावा और चेतावनी है जो अल्लाह के बारे में झगड़ते थे। झगड़ने और वादाविवाद करने वालों से अभिप्रेत 'कुरैश' के लोग भी हैं और किताब° वालों का गरोह भी। सूरः° की अन्तिम दो आयतें सूरः° के केन्द्रीय विषय पर प्रकाश डालती हैं।

पिछली सूरः° में सामान्य रूप से इस का उल्लेख हुआ है कि विजय अन्त में सत्य ही को प्राप्त होती है, प्रस्तुत सूरः° में विशेष रूप से उस विजय का उल्लेख किया गया जिस की सूचना नबी सल्ल० ने मक्का में दी थी, जहाँ से आप (सल्ल०) को निकलने पर विवश किया गया था।

इस सूरः° में हज की घोषणा की गई जिस में इस्लाम° के स्थापन की ओर खुला संकेत है।

मक्का के मुशरिकों° को सचेत किया गया कि तुम ने नबी सल्ल० और आप (सल्ल०) के साथियों के विरुद्ध जो नीति ग्रहण की है उस का परिणाम तुम्हारे सामने आ कर रहेगा। तुम्हारे देवी-देवता तुम्हारी कदापि रक्षा न कर सकेंगे।

मक्का के मुशरिकों° की इस पर भी पकड़ की गई कि उन्हों ने मुसलमानों के लिए मसजिदे हराम° का रास्ता बन्द कर दिया है हालांकि उन्हें इस का कोई अधिकार प्राप्त नहा कि वे किसी को हज° से रोकें। मसजिदे हराम° (काबः) का इतिहास प्रस्तुत करते हुये बताया गया कि हज़रत इबराहीम अ० ने अल्लाह के हुक्म से इस घर का निर्माण किया था तो शिर्क° और मूर्तिपूजा के लिए नहीं। एक अल्लाह की इबादत° के लिए ही इस पवित्र घर का निर्माण हुआ था। यह घर बनाने के बाद सब लोगों को सामान्य रूप से हज° का हुक्म दिया गया था। आरम्भ ही से स्थानीय निवासियों और बाहर से आने वालों को समान रूप से यहाँ अधिकार प्रदान हुये थे।

---

१ अर्थात् आरम्भ से आयत २४ तक।

२ इस सिलसिले में विचार के लिए सूरः की आयत २५-३०, ३९-४१ और ५८-६० विशेष रूप से सामने रहनी चाहियें।

°इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

ऐसे मुसलमान जो सत्य-मार्ग में पेश आने वाली मुसीबतों और संकटों का सहन करने के लिये तैयार न थे, और जो अभी संकोच में पड़े हुये थे उन पर सख़्ती की गई कि उन्हें अपनी नीति बदलनी होगी क्योंकि उन के इस आचार का ईमान* और इस्लाम* से कोई जोड़ नहीं है।

मुसलमानों को इजाज़त दी गई कि वे क़ुरैश के अत्याचार का उत्तर शक्ति से दे सकते हैं[1]। इस इजाज़त के कुछ ही समय के पश्चात् मुसलमानों को उन से लड़ने का हुक्म भी दिया गया। और यह हुक्म 'बद्र' की लड़ाई से कुछ ही पहले उतरा है[2]।

इस सूरः* में यह भी बताया गया कि अल्लाह जब ईमान* वालों को ज़मीन में शक्ति और राज्याधिकार प्रदान करता है तो वे अपनी शक्ति और अधिकार से क्या काम लेते हैं[3]। बताया गया कि राज्य-सत्ता स्वयं ध्येय नहीं बल्कि ध्येय की प्राप्ति का साधन-मात्र है।

ईमान* वालों के विशेष नाम 'मुस्लिम'* की घोषणा करते हुये बताया गया कि यह गरोह संसार वालों पर गवाह बना कर उठाया गया है। आख़िरत* में इसे इस की गवाही देनी होगी कि अल्लाह का सन्देश लोगों तक पहुँचा दिया गया था। फिर भी यदि काफ़िर* लोग राह पर न आ सके, तो इस के उत्तरदायी वे स्वयं हैं। लोगों तक सत्य-सन्देश पहुँचाना महत्वपूर्ण और बड़े उत्तरदायित्व का कार्य है, यदि इस में मुस्लिम* गरोह से कोताही हुई, तो इस के लिए अल्लाह के यहाँ उस की सख़्त पकड़ होगी।

---

१ दे० आयत ३८-४०।
२ दे० सूरः अल-बक़रः आयत १९०-१९३, २१६, २४४।
३ दे० आयत ४१।
* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अल-हज्ज

(मदीना में उतरी — आयतें* ७८)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

سُوْرَةُ الْحَجِّ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۚ اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيْمٌ ۝ يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّاۤ اَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى وَمَا هُمْ بِسُكٰرٰى وَلٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ شَدِيْدٌ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِى اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطٰنٍ مَّرِيْدٍ ۝ كُتِبَ عَلَيْهِ اَنَّهٗ مَنْ تَوَلَّاهُ فَاَنَّهٗ يُضِلُّهٗ وَيَهْدِيْهِ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ۝ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِىْ رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَّغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ۚ وَنُقِرُّ فِى الْاَرْحَامِ مَا نَشَاۤءُ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْۤا اَشُدَّكُمْ ۚ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰۤى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْۢ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْـًٔا ۗ وَتَرَى الْاَرْضَ هَامِدَةً فَاِذَاۤ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَاۤءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ وَاَنْۢبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ بَهِيْجٍ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّهٗ يُحْىِ الْمَوْتٰى وَاَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَّاَنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ مَنْ فِى الْقُبُوْرِ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِى اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ۝ ثَانِىَ عِطْفِهٖ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۗ لَهٗ فِى الدُّنْيَا خِزْىٌ وَّنُذِيْقُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۝ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ

हे लोगो! अपने रब* का डर रखो। निश्चय ही उस घड़ी[1] का भूकंप बड़ी (भयानक) चीज़ है। ○ जिस दिन तुम उसे देखोगे, (हाल यह होगा कि) हर दूध पिलाने वाली (भय से) उस से ग़ाफ़िल हो जायेगी जिसे दूध पिलाया था, और हर गर्भवती अपना गर्भ गिरा देगी, और लोगों को तुम देखोगे कि मतवाले हैं, यद्यपि वे मतवाले न होंगे, बल्कि अल्लाह का अज़ाब ही सख़्त है। ○

लोगों में कोई ऐसा है जो ज्ञान के बिना अल्लाह के बारे में झगड़ता है, और हर शैतान* सरकश के पीछे हो लेता है; ○ जब कि उस के लिए लिख दिया गया है कि जो कोई उस से मित्रता का नाता जोड़ेगा, तो वह उसे गुमराह कर के रहेगा और उसे दहकती आग (दोज़ख़*) के अज़ाब की ओर राह दिखायेगा। ○

हे लोगो! यदि तुम्हें (मृत्यु के पश्चात् पुनः) जी उठने (के बारे) में कोई सन्देह है, तो (देखो) हम ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य से, फिर रक्त के लोथड़े से, फिर मांस की बोटी से जो बनावट में पूर्ण भी होती है और अपूर्ण भी,[2] ताकि हम (उसे) तुम्हारे लिए स्पष्ट कर दें। और हम जिस (वीर्य) को चाहते हैं एक नियत समय तक गर्भाशयों में ठहराये रखते हैं, फिर तुम्हें एक बच्चे के रूप में निकालते हैं, फिर (तुम्हारा पालन-पोषण करते हैं) ताकि तुम अपनी युवावस्था को पहुँचो। और तुम में से किसी (के प्राण) को पहले ही ले लिया जाता है, और तुम में से किसी को (बुढ़ापे की) निकृष्टतम आयु की ओर फेर दिया जाता है,[3] ताकि, ज्ञान के बाद कुछ न जाने[4]। और तुम ज़मीन को देखते हो कि सूखी पड़ी

---

१ दे० आयत ५ और ७।

२ यह संकेत उन विभिन्न स्थितियों की ओर किया गया है जिन से बच्चे को माँ के पेट में गुज़रना पड़ता है। गर्भाधान के बाद आरम्भ में जमे हुये रक्त का एक लोथड़ा-सा होता है। फिर वह मांस की एक बोटी के रूप में परिवर्तित हो जाता है जो पहले रूप-हीन और अपूर्ण होता है आगे चल कर उस में मानवी रूप और आकार स्पष्ट होता चला जाता है। यहाँ केवल उन बड़े-बड़े परिवर्तनों का उल्लेख किया गया है जिन से सब लोग परिचित हैं। यहाँ उन बातों का उल्लेख नहीं किया गया जो सूक्ष्मदर्शक यन्त्रों के द्वारा ही जानी जा सकती हैं।

३ दे० सूरः अल-मोमिन आयत ६७।

४ वृद्धावस्था में मनुष्य के होश व हवास ठीक नहीं रहते यहाँ इसी बात की ओर संकेत है।

* इस पद का अर्थ परिशिष्ट में दिये हुए पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

३२ : ४-९	आसमान और ज़मीन छः दिन में बनाए, हर काम की व्यवस्था करता है, हर चीज़ को बहुत अच्छी तरह बनाया, तुम्हें कान, आँखें और दिल दिए।
३६ : ७९-८१	पहली बार पैदा किया, हर प्रकार का पैदा करना जानता है, हरे पेड़ से आग पैदा की।
३७ : ५-११	दुनिया के आसमान को तारों से सजाया, लोगों को चिपकते गारे से।
३७ : ९६	अल्लाह ने तुमको पैदा किया और जो कुछ तुम करते हो।
३९ : ५, ६	आसमान और ज़मीन पैदा किए, तुमको एक जान से पैदा किया, तुम्हारा जोड़ा बनाया, माताओं के पेट में तुम्हें वही बनाता है।
५१ : ४७-४९	आसमान को अपने हाथ से बनाया, ज़मीन को बिछाया, हर चीज़ के जोड़े पैदा किए।
६४ : ३	तुम्हारे रूप बनाए, अच्छे रूप।
६७ : २-५	मृत्यु और जीवन बनाया, ऊपर-तले सात आसमान बनाए, दुनिया के आसमान को तारों से सजाया।

(८) रब (पालनकर्ता)

१ : १	पूर्ण सृष्टि का रब (मालिक, स्वामी, पालनेवाला और शासक)।
२ : २१२	जिसे चाहता है, बेहिसाब रोज़ी देता है।
६ : १४	वह सबको खाना देता है, किसी से खाना लेता नहीं।
११ : ६	ज़मीन पर चलने-फिरने वाले प्रत्येक जीव की रोज़ी अल्लाह के ज़िम्मे है।
१३ : १६	आसमान व ज़मीन का रब।
१५ : १९-२२	हमने तुम्हारे लिए रोज़ी जुटाई और उनके लिए, जिनके खिलाने का प्रबन्ध तुम नहीं करते।
१७ : २०	तुम्हारे पालनहार की बख़्शिश सबके लिए है।
१९ : ६५	आसमान, ज़मीन और जो-कुछ उनके बीच है, सबका रब।
२४ : ३८	अल्लाह जिसे चाहता है, बेहिसाब रोज़ी देता है।
२६ : ७९, ८०	वह खिलाता और पिलाता है।
२९ : ६०	बहुत-से जीव अपनी रोज़ी नहीं उठाये-फिरते, अल्लाह उन्हें और तुम्हें खिलाता है।
२९ : ६२	अल्लाह रोज़ी कुशादा कर देता है और तंग भी कर देता है।
३० : ४०	अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया, वही रोज़ी देता है।
३४ : २४	तुमको आसमान और ज़मीन से रोज़ी देता है।
४० : १३	आसमान से रोज़ी उतारता है।
४१ : २२	" " "
४२ : १९	वह अपने बन्दों पर मेहरबान है, जिसे चाहता है रोज़ी देता है।
५१ : ५८	अल्लाह ही रोज़ी देनेवाला और ताक़त वाला है।
६२ : ११	अल्लाह सबसे बेहतर रोज़ी देने वाला है।

فَإِنْ أَصَابَهُ خَيْرٌ اطْمَأَنَّ بِهِ وَإِنْ أَصَابَتْهُ فِتْنَةٌ انْقَلَبَ عَلَىٰ
وَجْهِهِ خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةَ ذَٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِينُ ۝
يَدْعُو مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُ وَمَا لَا يَنْفَعُهُ ذَٰلِكَ هُوَ الضَّلَالُ
الْبَعِيدُ ۝ يَدْعُو لَمَنْ ضَرُّهُ أَقْرَبُ مِنْ نَفْعِهِ لَبِئْسَ الْمَوْلَىٰ
وَلَبِئْسَ الْعَشِيرُ ۝ إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا
يُرِيدُ ۝ مَنْ كَانَ يَظُنُّ أَنْ لَنْ يَنْصُرَهُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ
فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ إِلَى السَّمَاءِ ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ
كَيْدُهُ مَا يَغِيظُ ۝ وَكَذَٰلِكَ أَنْزَلْنَاهُ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ وَأَنَّ اللَّهَ
يَهْدِي مَنْ يُرِيدُ ۝ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِئِينَ
وَالنَّصَارَىٰ وَالْمَجُوسَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا إِنَّ اللَّهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ
يَسْجُدُ لَهُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ
وَالنُّجُومُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَابُّ وَكَثِيرٌ مِنَ النَّاسِ وَكَثِيرٌ
حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ وَمَنْ يُهِنِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ مُكْرِمٍ إِنَّ اللَّهَ
يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ۩ هَٰذَانِ خَصْمَانِ اخْتَصَمُوا فِي رَبِّهِمْ فَالَّذِينَ
كَفَرُوا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِنْ نَارٍ يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوسِهِمُ

है, फिर जहाँ हम ने उस पर पानी बरसाया कि उस में ताज़गी आ गई और वह उभर आई और उस ने हर प्रकार की शोभायमान वस्तुयें उगाईं। ○

यह इस लिए कि अल्लाह ही सत्य है। और वही मुरदों को जीवित करता है, और वही हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला (सर्वशक्तिमान्) है; ○ और यह कि वह घड़ी (क़ियामत*) आने वाली है, इस में कोई सन्देह नहीं है; और अल्लाह उन्हें उठायेगा जो क़बरों में (पड़े हुये) हैं। ○

और लोगों में कोई ऐसा है जो किसी ज्ञान और मार्ग-दर्शन और प्रकाशमान किताब* के बिना अल्लाह के बारे में झगड़ता है,[५] ○ (गर्व से) अपने पहलू को मोड़ते हुये ताकि (लोगों को) अल्लाह के मार्ग से भटका दे। उस के लिए दुनियाँ में रुसवाई है, और क़ियामत* के दिन हम उसे जलने के अज़ाब का मज़ा चखायेंगे। ○

(उस से कहा जायेगा) : यह उस का बदला है जो तुम्हारे दोनों हाथों ने आगे भेजा था, और अल्लाह (अपने) बन्दों पर कुछ भी ज़ुल्म करने वाला नहीं। ○

और लोगों में कोई ऐसा है जो किनारे पर रह कर अल्लाह की बन्दगी करता है[६] (इस प्रकार कि) यदि उसे फ़ायदा पहुँचा तो उस से सन्तुष्ट हो गया, और यदि उसे कोई आज़माइश पेश आ गई, तो उलटा फिर गया। दुनियाँ भी गई और आख़िरत* भी। यही है खुला हुआ घाटा। ○ वह अल्लाह को छोड़ कर उसे पुकारता है, जो उस का न तो कुछ बिगाड़ सके और न उस का कुछ बना सके[७]। यही है परले दरजे की गुमराही। ○

वह उसे पुकारता है जिस की हानि उस के लाभ से अधिक समीप है;[८] क्या ही बुरा (उस का) संरक्षक-मित्र है और क्या ही बुरा (उस का) साथी है! ○

निश्चय ही अल्लाह उन लोगों को जो ईमान* लाये और अच्छे काम किये ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी। निस्सन्देह अल्लाह जो-कुछ चाहता है करता है। ○

५ दे० सूर: अल-मोमिन आयत ५६, ६६, सूर: लुक़्मान आयत २०।

६ अर्थात् इस्लाम में पूरे तौर पर दाख़िल नहीं होता बल्कि कुफ़्र* और इस्लाम* की सीमा पर खड़ा रहता है।

७ दे० आयत ७३।

८ अर्थात् अल्लाह को छोड़ कर वह जिन्हें पुकारता और जिन के आगे अपने हाथ फैलाता है वे कदापि किसी हानि-लाभ के मालिक नहीं हैं। उन्हें पुकार कर आदमी अपने ईमान* और धर्म को तो निश्चय ही नष्ट कर देता है, रहा वह फ़ायदा और लाभ जिस के लिए उस ने उन्हें पुकारा है तो ज़ाहिर है कि वह ज़रूरी नहीं कि उस की इच्छा पूरी ही हो जाये। हो सकता है उसे परखने के लिए अल्लाह ऐसे अवसर पर उस की कामना पूरी कर दे; और यह भी सम्भव है कि धर्म और ईमान* को नष्ट करने के बाद भी वह अपने उद्देश्य में सफल न हो सके। दे० सूर: अल-अनआम आयत १२५।

*इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

रहने वाला और बाहर से आने वाला:[12] जो कोई भी उस में (सत्य से कतरा कर) ज़ुल्म से
२५ टेढ़ी राह चाहेगा, उसे हम दुःख देने वाले अज़ाब का मज़ा चखायेंगे[13] । ○

याद करो जब हम ने इबराहीम के लिए इस घर (काब:*) की जगह ठहराई, (यह कहते हुये) कि मेरे साथ किसी को शरीक न करो, और मेरे घर को तवाफ़* (परिक्रमा) करने वालों और (इबादत* में) खड़े होने वालों और झुकने और सजद:* करने वालों के लिए पाक-साफ़ रखो[14] ।○

और लोगों में हज* के लिए पुकार दो कि वे प्रत्येक गहरे रास्तों से, पैदल और हल्के शरीर की (छरहरी) ऊँटनियों पर तेरे पास आयें[15] । ताकि वे अपने फ़ायदों को देखें, (जो यहाँ उन के लिए रखे गये हैं) और कुछ मालूम (अर्थात् निश्चित) दिनों[16] में उन मवेशी चौपायों[17] पर अल्लाह का नाम लें[18] जो उस ने उन्हें दिये है। फिर उस में से स्वयं खाओ और तंग-हाल मुहताज को भी खिलाओ। ○

फिर अपना मैल-कुचैल दूर करें[19] और अपनी मन्नतों[20] को पूरा करें और इस पुरातन घर[21] (काब:) का तवाफ़* (परिक्रमा) करें। ○

यह बात हुई। और जो कोई अल्लाह की (निश्चित की हुई) मर्यादाओं का आदर करेगा, तो यह उस के रब* के यहाँ उसी के लिए अच्छा होगा।

और तुम्हारे लिए मवेशी हलाल (अवर्जित) हैं सिवाय उस के जो तुम्हें बता दिया गया
१० है। तो बचो मूर्तियों की (पूजा की) गन्दगी से, और बचो झूठी बात से, ○ अल्लाह ही के हो कर, उस के साथ शरीक न ठहरा कर; और जो कोई अल्लाह के साथ शिर्क* करे तो मानो वह आसमान से गिर पड़ा फिर चाहे उसे पक्षी उचक ले जायें या हवा उसे दूरवर्ती स्थान पर (ले जा कर) फेंक दे। ○

बात यह है। और जो कोई अल्लाह की (भक्ति सम्बन्धित) निशानियों का आदर करे,

---

१२ मस्जिदे-हराम से अभिप्रेत केवल मस्जिद ही नहीं बल्कि पूरा हरमे मक्का है जहाँ सब का हक़ बराबर है। उस की भूमि किसी की मिल्क नहीं है; प्रत्येक तीर्थयात्री को यह समान रूप से हक़ प्राप्त है कि उसे जहाँ कहीं जगह मिले ठहर जाये।

१३ हर वह कर्म जो सत्यता के विरुद्ध हो 'हरम' की सीमा में उस से बचना अनिवार्य है। यों तो ज़ुल्म और ज़्यादती हर हाल में गुनाह ही है परन्तु हरम* में ऐसे कामों का करने वाला और अधिक गुनाह का भागी होगा।*

१४ दे० सूर: अल-बक़र: फुट नोट २८।

१५ इस से अभिप्रेत वास्तव में उन तीर्थयात्रियों का चित्र खींचना है जो दूरवर्ती स्थानों से हज के लिए चले आते हों और उन की सवारी के ऊँट सधाये हुये हल्के शरीर वाले हों। और मक्का में हर ओर से दाख़िल हों। यहाँ तक कि उन के अधिक आने-जाने के कारण रास्ते गहरे हो जायें।

यहाँ वह आदेश समाप्त होता है जो हज़रत इबराहीम अ० को दिया गया था।

१६ 'मालूम दिनों' से अभिप्रेत कुछ लोगों के नज़दीक 'ज़िलहिज्जः' के पहले दस दिन हैं कुछ लोगों के नज़दीक इस से अभिप्रेत ज़िलहिज्जः की दसवीं तिथि और उस के बाद के तीन दिन हैं और कुछ लोगों का कहना है कि इस से अभिप्रेत तीन दिन हैं ज़िलहिज्जः की दसवीं तिथि और उस के बाद के दो दिन।

१७ अर्थात् ऊँट, गाय, भेड़-बकरी आदि।

१८ अर्थात् अल्लाह का नाम ले कर उन्हें ज़िब्ह करें।

१९ अर्थात् इहराम खोल दें, बाल बनवायें, नाख़ुन कटवायें और स्नान करें अब उन पर वह पाबन्दियाँ नहीं रहीं जो पाबन्दियाँ इहराम की हालत में उन पर थीं।*

२० जो उन्हों ने मानी हों।

२१ क़ुरआन में 'अतीक़' शब्द प्रयोग हुआ है जिस के तीन अर्थ होते हैं : एक पुरातन, दूसरे स्वाधीन और स्वतन्त्र जिस पर किसी की मिल्कियत न हो, तीसरे सम्मानित और प्रतिष्ठित।

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्द-सूची में देखें।*

तो यह दिलों के तक़्वा* (धर्मपरायणता) की बात है। ○
उन (क़ुरबानी* के जानवरों) में एक नियत समय तक तुम्हारे लिए फ़ायदे हैं;[२२] फिर उन्हें 'बैत अ़तीक़' (पुरातन घर 'काब:') तक पहुँचना है। ○
और प्रत्येक गरोह के लिए हम ने क़ुरबानी* का एक तरीक़ा ठहरा दिया है, ताकि वे उन मवेशी जानवरों पर अल्लाह का नाम लें जो उस ने उन्हें प्रदान किये हैं; सो तुम्हारा इलाह* (पूज्य) अकेला इलाह* है, तो अपने को उस के अर्पण कर दो[२३]। और (हे नबी!) विनयशील लोगों[२४] को शुभ-सूचना दे दो। ○ जिन के दिल उस समय काँप उठते हैं जब (उन के सामने) अल्लाह को याद किया जाता है,[२५] और जो मुसीबत भी उन पर आती है उस पर सब्र* करते हैं, और नमाज़* क़ायम रखते हैं और जो-कुछ रोज़ी हम ने उन्हें दी है उस में से (हमारी राह में) ख़र्च करते हैं। ○
और (क़ुरबानी के) ऊँटों को हम ने तुम्हारे लिए अल्लाह की (भक्ति की) निशानियाँ ठहराया है। तुम्हारे लिए उन में भलाई है। सो उन पर अल्लाह का नाम लो[२६] एक पंक्ति में खड़ा कर के[२७]। तो जब (क़ुरबानी* के बाद) उन के पहलू (ज़मीन से) आ लगें, तो उन में से स्वयं भी खाओ और सन्तोष से बैठे हुये को भी खिलाओ (जो माँगने से बचता हो) और माँगने वाले को भी।
इस तरह हम ने उन (जानवरों) को तुम्हारे लिए काम पर लगा दिया है, कदाचित् तुम कृतज्ञता दिखाओ। ○
न उन के मांस अल्लाह को पहुँचते हैं और न उन के रक्त, परन्तु उसे तुम्हारा तक़्वा* पहुँचता है[२८]।
इस तरह उस ने उन्हें तुम्हारे काम में लगा रखा है ताकि तुम अल्लाह की बड़ाई करो इस

२२ अल्लाह की निशानियों में क़ुरबानी के जानवर भी हैं। क़ुरबानी (बलिदान) की जगह पहुँचने तक उन से फ़ायदा उठाया जा सकता है। उन से सवारी का काम भी लिया जा सकता है और उन पर सामान आदि भी लादा जा सकता है। और उन का दूध पीने में भी कोई दोष नहीं है।

२३ अर्थात् हर समुदाय के लिए हम ने क़ुरबानी का एक ख़ास तरीक़ा ठहराया परन्तु तुम सब का पूज्य और इलाह* एक ही है इस लिए तुम और पिछले समुदाय वास्तव में एक ही गरोह हो। दे० सूर: अल-अम्बिया आयत ९२।

२४ अर्थात् ऐसे लोगों को जो गर्व नहीं करते, अल्लाह के सामने विनयशीलता के साथ झुके रहते हैं, उस की भक्ति और बन्दगी पर राज़ी होते हैं और अल्लाह की ओर से जो फ़ैसला भी होता है सहर्षतापूर्वक उसे मान लेते हैं। यही हैं जो अल्लाह के नबी सल्ल० पर ईमान रखते हैं। दे० आयत ३८।

२५ एसे अवसर पर काफ़िरों की क्या दशा होती है! दे० आयत ७२।

२६ अर्थात् अल्लाह का नाम ले कर उन की क़ुरबानी* करो।

२७ ऊँट को क़िब्ल:* रुख़ खड़ा कर के उस की क़ुरबानी की जाती है।

२८ अज्ञान काल में अरब के लोग यदि मूर्तियों की क़ुरबानी का मांस मूर्तियों पर चढ़ाया करते थे, तो वह क़ुरबानी जो अल्लाह के नाम की होती थी उस का मांस काब:* के सामने ला कर रखते थे और उस का रक्त काब:* की दीवारों पर लुथेड़ते थे। यहाँ बताया जा रहा है कि अल्लाह के यहाँ जो चीज़ पहुँचती है वह तुम्हारे दिल का तक़्वा* है न कि तुम्हारी क़ुरबानियों का रक्त और मांस। यही बात नबी* सल्ल० ने इस तरह बयान की है कि अल्लाह तुम्हारे रूप और तुम्हारे रंगों को नहीं देखता बल्कि वह तुम्हारे दिलों और तुम्हारे कामों को देखता है। यहाँ यह बात भी जान लेनी चाहिए कि क़ुरबानी का जो हुक्म यहाँ दिया गया है वह केवल मक्का में हज ही के अवसर पर अदा करने के लिए नहीं बल्कि क़ुरबानी करने का सामर्थ्य रखने वाले मुस्लिम* जहाँ भी हों इस अवसर पर उन्हें क़ुरबानी करनी चाहिए। नबी सल्ल० जब तक मदीना में क़ुरबानी* करते रहे।

* अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

(हे नबी* !) सत्कर्मी लोगों को शुभ-सूचना दे दो। ○

निस्सन्देह अल्लाह उन लोगों का निवारण करता है जो ईमान* लाये हैं। निस्सन्देह अल्लाह किसी विश्वासघाती, कृतघ्न को पसन्द नहीं करता। ○

इजाज़त दी गई उन लोगों को जिन से लड़ाई की जाती है इस लिए कि उन पर .ज़ुल्म किया गया;[६९] और निस्सन्देह अल्लाह उन की सहायता का पूरा सामर्थ्य रखता है; ○ वे लोग कि नाहक़ अपने घरों से निकाल दिये गये केवल इस लिए कि वे कहते हैं, "हमारा रब* अल्लाह है"। और यदि अल्लाह लोगों को एक दूसरे से हटाता न रहता, तो (मन्तों, संन्यासियों आदि के) आश्रम और गिरजा और (यहूदियों के) उपासनागृह और मसजिदें, जिन में अल्लाह का अधिक नाम लिया जाता है, सब ढा दी जातीं[७०]। निश्चय ही अल्लाह उस की सहायता करेगा जो उस की सहायता करेगा[७१]। निस्सन्देह अल्लाह बलवान् और अपार शक्ति का मालिक है। ○ ४०

وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَكَاَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ اَوْ
تَهْوِيْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ مَكَانٍ سَحِيْقٍ ۞ ذٰلِكَ وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ
اللّٰهِ فَاِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوْبِ ۞ لَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ اِلٰٓى اَجَلٍ
مُّسَمًّى ثُمَّ مَحِلُّهَآ اِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ۞ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا
مَنْسَكًا لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ
فَاِلٰـهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَلَهٗٓ اَسْلِمُوْا وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ۞ الَّذِيْنَ اِذَا
ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ عَلٰى مَآ اَصَابَهُمْ وَالْمُقِيْمِي
الصَّلٰوةِ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۞ وَالْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ
مِّنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ لَكُمْ فِيْهَا خَيْرٌ فَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا صَوَآفَّ
فَاِذَا وَجَبَتْ جُنُوْبُهَا فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ
كَذٰلِكَ سَخَّرْنٰهَا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۞ لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا
وَلَا دِمَآؤُهَا وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ كَذٰلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ
لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِيْنَ ۞ اِنَّ اللّٰهَ
يُدٰفِعُ عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ كَفُوْرٍ ۞
اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا وَاِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ
لَقَدِيْرُ ۞ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ اِلَّآ اَنْ يَّقُوْلُوْا

वे लोग कि यदि हम ज़मीन में उन्हें अधिकार (राज-सत्ता) प्रदान करें, तो वे नमाज़* क़ायम करें और ज़कात* दें और भलाई का हुक्म दें और बुराई से रोकें। और सब मामलों का परिणाम अल्लाह ही के अधिकार में है। ○

"(हे नबी* !) यदि उन्हों ने तुम्हें झुठलाया है, तो उन से पहले नूह की जाति* वाले, और आद* और समूद,* भी (अपने नबियों* को) झुठला चुके हैं; ○ और इबराहीम की जाति वाले और लूत की जाति वाले भी; ○ और मद्यन वाले* भी (झुठला चुके हैं)। और मूसा भी झुठलाया जा चुका है; तो मैं ने काफ़िरों* को (पहले) ढील दी,[७२] फिर उन्हें पकड़ लिया, तो (देखो) कैसी रही मेरी नागवारी ! (कि उन की दशा बिगाड़ कर रख दी) ○

तो कितनी ही बस्तियां हैं जिन्हें हम ने विनष्ट कर दिया इस अवस्था में कि वे ज़ालिम

---

६९. अल्लाह की राह में लड़ने के बारे में यह सब से पहली आयत है, इस आयत में लड़ने की केवल इजाज़त दी गई है। इस के बाद सूरः अल-बक़रः की वे आयतें उतरीं हैं जिन में ईमान* वालों को लड़ाई का हुक्म दिया गया है।

७०. यह अल्लाह की बहुत बड़ी कृपा है कि वह एक गरोह को दूसरे गरोह के द्वारा हटाता रहता है यदि उस की ओर से ऐसा प्रबन्ध न होता तो संसार में अराजकता ही का राज्य होता और उपासना-गृह तक सुरक्षित न रह सकते। अल्लाह की इस कृपा का उल्लेख सूरः अल-बक़रः आयत २५१ में भी किया गया है।

७१. अर्थात् उस के दीन* के कामों में सहायक बनेगा।

७२. आयत ४२ से आयत ५७ तक सत्य को झुठलाने वालों, मुनाफ़िक़ों* और उन लोगों का उल्लेख किया गया है जो ईर्ष्या और सन्देह में पड़े हुये थे। देखो आयत ११।

७३. अर्थात् उन्हें इस का अवसर प्रदान किया गया कि चाहे वे सूझ-बूझ से काम लें और ईमान लायें, चाहे कुफ़्र* और अत्याचार में और आगे बढ़ जायें।

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

[illegible]

क्या ये ज़मीन में चले-फिरे नहीं हैं, कि
दिल होते जिन से समझते या कान होते
सुनते ? बात यह है कि आँखें अन्धी
जातीं, बल्कि वे दिल अन्धे हो जाते हैं, जो
में हैं। ○

ये तुम से अज़ाब के लिए जल्दी मचा
और अल्लाह कदापि अपने वादे के ख़िलाफ़
करेगा, परन्तु तेरे रब* के यहाँ एक दिन
गणना के हज़ार वर्ष जैसा है।" ○

कितनी ही बस्तियाँ हैं मैं ने उन्हें (पहले) मुह-
लत दी इस हाल में कि वे ज़ालिम थीं ! फिर उन्हें
पकड़ लिया। और मेरी ही ओर (सब को) पहुँ-
चना है। ○

(हे नबी* !) कह दो : हे लोगो ! मैं तो बस
तुम्हारे लिए एक प्रत्यक्ष सचेत करने वाला हूँ। तो जो लोग ईमान* लाये और अच्छे
काम किये, उन के लिए क्षमा और सम्मानित आजीविका है ; ○ और जिन लोगों ने हमारी
आयतों* के बारे में हमें हराने के लिए विरोध-भाव से दौड़-धूप की, वही भड़कती आग
(दोज़ख़* में रहने) वाले हैं। ○

और (हे मुहम्मद* !) तुम से पहले जो रसूल* और नबी* भी हम ने भेजा शैतान* ने
उस की कामना (अर्थात् सत्य) में (असत्य) मिला दिया। तो (इस प्रकार) शैतान* जो-कुछ
मिलाता है अल्लाह उसे मन्सूख़ (निरस्त) कर देता है। फिर अल्लाह अपनी आयतों* को
पुख़्ता (दृढ़) कर देता है। अल्लाह (सब-कुछ) जानने वाला और हिकमत* वाला है ;" ○
ताकि उस (मिथ्या) को जो शैतान* (सत्य में) मिला देता है उन लोगों के लिए आज़माइश

---

२४ मतलब यह है कि अल्लाह् का फ़ैसला तुम्हारी घड़ियों और दिन-पत्रों (Calendar) के अन्तर्गत नहीं होता। कभी-कभी जातियों को एक-दो दिन तो क्या वह शताब्दियों तक मुहलत देता है। दे० सूः अल-मआरिज आयत १-७, अस्सजदः आयत ५।

२५ अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद सल्ल० से पहले जितने भी नबी* भेजे जब उन्हों ने लोगों को सत्य की ओर बुलाया दिया तो शैतानों अर्थात् उन की जाति के काफ़िर* सरदारों ने उस सत्य में असत्य बातें मिलानी शुरू कर दीं ऐसा उन्हों ने नबियों* के जीवन-काल में भी किया और उन के बाद भी। अपनी इस चाल से वे जन-साधारण को सत्य से फेरना चाहते थे। यहूदियों* के धर्माधिकारियों और मुशरिकों* के नेताओं की यही नीति रही है। क़ुरआन में विभिन्न स्थलों पर किताब वालों* (यहूदियों और ईसाइयों) और मुशरिकों की बहुत सी मनमानी और धर्म-विरुद्ध बातों का उल्लेख किया गया है जो उन्हों ने अपनी ओर से गढ़ ली थीं। जब जब क़ुरआन उतरा तो उस ने उन की गढ़ी हुई बातों को मन्सूख़ कर दिया और उन शिक्षाओं को लोगों के सामने प्रस्तुत किया जो वास्तव में अगले नबियों* की शिक्षायें थीं। इस आयत* में विशेष रूप से उन मन-गढ़न्त बातों और उन परिवर्तनों की ओर संकेत है जिन का सम्पर्क काबः* और हज* सम्बन्धी रीति-रिवाज से है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

السماء ماء فتصبح الأرض مخضرة إن الله لطيف
خبير ۝ له ما في السموت وما في الأرض وإن
الله لهو الغني الحميد ۝ ألم تر أن الله سخر لكم ما
في الأرض والفلك تجري في البحر بأمره ويمسك السماء
أن تقع على الأرض إلا بإذنه إن الله بالناس لرءوف
رحيم ۝ وهو الذي أحياكم ثم يميتكم ثم يحييكم إن
الإنسان لكفور ۝ لكل أمة جعلنا منسكا هم ناسكوه
فلا ينازعنك في الأمر وادع إلى ربك إنك لعلى هدى
مستقيم ۝ وإن جادلوك فقل الله أعلم بما تعملون ۝
الله يحكم بينكم يوم القيمة فيما كنتم فيه تختلفون ۝
ألم تعلم أن الله يعلم ما في السماء والأرض إن ذلك
في كتب إن ذلك على الله يسير ۝ ويعبدون من
دون الله ما لم ينزل به سلطنا وما ليس لهم به
علم وما للظلمين من نصير ۝ وإذا تتلى عليهم

यह इस लिए कि अल्लाह ही सत्य है, जिसे वे उस के सिवा पुकारते हैं, वही असत्य है, और यह कि अल्लाह ही उच्च, और महान् है। ○

क्या तुम ने नहीं देखा कि अल्लाह आसमान से पानी उतारता है तो ज़मीन हरी (-भरी) हो जाती है? निस्सन्देह अल्लाह सूक्ष्म (-दर्शी) और (हर चीज़ की) ख़बर रखने वाला है। ○

उसी का है जो-कुछ आसमानों में है और जो-कुछ ज़मीन में है। निस्सन्देह अल्लाह ही परम-स्वतन्त्र (अपेक्षा रहित) और अपने-आप प्रशंसा का अधिकारी है। ○

क्या तुम ने देखा नहीं कि ज़मीन में जो-कुछ है अल्लाह ने उसे तुम्हारे काम में लगा रखा है! और नौका को भी जो उस के हुक्म से दरिया में चलती है, और उस ने आसमान[४३] को ज़मीन पर गिरने से रोक रखा है यह और बात है कि उसी का हुक्म हो जाये। निस्सन्देह अल्लाह लोगों के लिए अत्यन्त करुणामय और दयावन्त है। ○

वही है जिस ने तुम्हें जीवन प्रदान किया, फिर तुम्हें मौत देता है, फिर तुम्हें (पुनः) जीवित करेगा। निश्चय ही मनुष्य बड़ा ही अकृतज्ञ है। ○

प्रत्येक गरोह[४४] के लिए हम ने इबादत* की एक रीति ठहरा दी है जिस पर वे चलते हैं; तो (हे मुहम्मद!) वे इस मामले में तुम से न झगड़ें, तुम अपने रब* की ओर बुलाता दो। निस्सन्देह तुम सीधे मार्ग पर हो। ○

और यदि वे तुम से झगड़ा करें तो कह दो: जो-कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे अच्छी तरह जानता है। ○

अल्लाह क़ियामत* के दिन तुम्हारे बीच उस का फ़ैसला कर देगा जिस में तुम विभेद करते हो। ○

क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह जानता है जो-कुछ आसमान और ज़मीन में है! निश्चय ही यह (सब-कुछ) एक किताब* में (अंकित) है। निस्सन्देह अल्लाह के लिए यह आसान है (उस के लिए यह कोई मुश्किल काम नहीं)। ○

वे अल्लाह के सिवा उस की इबादत* करते हैं जिस के लिए न तो उस ने कोई दलील (सनद) उतारी, और न उन्हें उस के बारे में कोई ज्ञान है। ज़ालिमों का कोई सहायक नहीं है। ○

---

४३ आसमान से अभिप्रेत यहाँ ऊपरी लोक है जिस की हर एक चीज़ को अल्लाह सँभाले और थामे हुवे है चाहे वे सूर्य और चन्द्रमा हों या दूसरे नक्षत्र और तारे हों या उस लोक की और दूसरी चीज़ें।

४४ यहाँ विशेष रूप से संकेत ईसाइयों और यहूदियों की ओर है।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

और जब उन्हें हमारी स्पष्ट आयतें* सुनाई जाती हैं, तो तुम कुफ़्र* करने वालों के चेहरों पर ना-गवारी देखते हो; ऐसा जान पड़ता है कि अभी वे उन लोगों पर टूट पड़ेंगे जो उन्हें हमारी आयतें* सुनाते हैं। कह दो : क्या मैं तुम्हें इस से भी बुरी चीज़ बताऊँ ? वह आग (दोज़ख़*) है ! अल्लाह ने कुफ़्र* करने वालों के लिए उस का वादा कर रखा है। और वह पहुँचने की क्या ही बुरी जगह है ! ○

हे लोगों ! एक मिसाल दी जाती है, सो उसे ध्यान-पूर्वक सुनो : अल्लाह के सिवा तुम जिन्हें पुकारते हो वे एक मक्खी नहीं पैदा कर सकते यद्यपि इस के लिए वे सब इकट्ठा हो जायें। और यदि मक्खी उन से कोई चीज़ छीन ले जाये, तो वे उस से उस को वापस नहीं ले सकते। चाहने वाला भी कमज़ोर और जिसे चाहे वह भी ! ○

उन्हों ने अल्लाह का मान (माहात्म्य) नहीं समझा जैसा कि उस का मान है। निःसन्देह अल्लाह अत्यन्त बलवान् और अपार शक्ति का मालिक है। ○

अल्लाह (अपने सन्देश भेजने के लिए) फ़िरिश्तों* में से सन्देश पहुँचाने वाला चुन लेता है,[४५] और मनुष्यों में से भी। निस्सन्देह वह (सब-कुछ) सुनने वाला और देखने वाला है। ○ वह जानता है जो-कुछ उन के आगे है और जो-कुछ उन के पीछे है, और सारे मामले अल्लाह ही की ओर पलटते हैं। ○

हे ईमान* लाने वालो ! (अल्लाह के आगे) झुको और सजदः* करो, और अपने रब* की इबादत* करो, और नेक काम करो कदाचित् तुम्हें सफलता प्राप्त हो। ○ और जिहाद* (जान-तोड़ कोशिश) करो अल्लाह (के मार्ग) में ठीक-ठीक जिहाद। उस ने तुम्हें चुन लिया है— और दीन* में तुम पर कोई तंगी नहीं रखी; तुम्हारे बाप इबराहीम का पन्थ (तुम्हारा पन्थ है) उस ने तुम्हारा नाम मुस्लिम* रखा था पहले भी[४६] और इस में भी,— ताकि रसूल* तुम पर गवाह हो, और तुम लोगों पर गवाह हो[४७]।

सो नमाज़* क़ायम रखो, और ज़कात* दो, और अल्लाह (के दामन) को मज़बूती से पकड़े रहो[४८]। वही तुम्हारा स्वामी और संरक्षक-मित्र है। तो क्या ही अच्छा संरक्षक है और क्या ही अच्छा सहायक ! ○

آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ تَعْرِفُ فِي وُجُوهِ الَّذِينَ كَفَرُوا الْمُنكَرَ ۖ يَكَادُونَ يَسْطُونَ بِالَّذِينَ يَتْلُونَ عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا ۗ قُلْ أَفَأُنَبِّئُكُم بِشَرٍّ مِّن ذَٰلِكُمُ ۗ النَّارُ وَعَدَهَا اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿٧٢﴾ يَا أَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوا لَهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ لَن يَخْلُقُوا ذُبَابًا وَلَوِ اجْتَمَعُوا لَهُ ۖ وَإِن يَسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْئًا لَّا يَسْتَنقِذُوهُ مِنْهُ ۚ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوبُ ﴿٧٣﴾ مَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٧٤﴾ اللَّهُ يَصْطَفِي مِنَ الْمَلَائِكَةِ رُسُلًا وَمِنَ النَّاسِ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ﴿٧٥﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۗ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٧٦﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ارْكَعُوا وَاسْجُدُوا وَاعْبُدُوا رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۩ ﴿٧٧﴾ وَجَاهِدُوا فِي اللَّهِ حَقَّ جِهَادِهِ ۚ هُوَ اجْتَبَاكُمْ وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّينِ مِنْ حَرَجٍ ۚ مِّلَّةَ أَبِيكُمْ إِبْرَاهِيمَ ۚ هُوَ سَمَّاكُمُ الْمُسْلِمِينَ مِن قَبْلُ وَفِي هَٰذَا لِيَكُونَ الرَّسُولُ شَهِيدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ ۚ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَاعْتَصِمُوا بِاللَّهِ هُوَ مَوْلَاكُمْ ۖ فَنِعْمَ الْمَوْلَىٰ وَنِعْمَ النَّصِيرُ ﴿٧٨﴾

---

४५ जैसे अल्लाह के विशेष फ़िरिश्तः* हज़रत जिबरील* अ० जो अल्लाह की ओर से नबी सल्ल० के पास वह्य* लाया करते थे।

४६ यह हज़रत इबराहीम अ० की उस दुआ की ओर संकेत है जिस का उल्लेख सूरः अल-बक़रः आयत १२८ में मिलता है।

४७ दे० सूरः अल-बक़रः आयत १४३।

४८ अर्थात् उस पर भरोसा करो, उस की राह में धैर्य से काम लो।

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० जिन बातों की ओर लोगों को आमन्त्रित करते हैं उन्हीं बातों की ओर पिछले सभी नबी* लोगों को बुलाते रहे हैं। दीन* और धर्म समस्त नबियों* का सनातन से एक ही रहा है। जिन जातियों ने नबियों* का विरोध किया वे विनष्ट हो कर रहीं।

बताया गया कि सुख-सामग्री, धन-सम्पत्ति, और राज्य-वैभव आदि ऐसी चीज़ें नहीं हैं कि इन्हें किसी व्यक्ति या गरोह के सत्य पर होने का प्रमाण कहा जा सके। जिस चीज़ के कारण मनुष्य अल्लाह के यहाँ प्रिय बनता है वह मनुष्य के अपने ईमान* और उस की सत्यवादिता के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

मक्का वालों को विभिन्न रूप से समझाया गया कि वे हज़रत मुहम्मद सल्ल० की नुबूवत* पर ईमान* लायें।

विरोधियों को आख़िरत के अज़ाब से डराया गया और उन्हें* सचेत किया गया कि सत्य के विरुद्ध तुम ने जो नीति अपनाई है उस के लिए अल्लाह के यहाँ तुम्हरी पकड़ हो कर रहने वाली है।

नबी* सल्ल० को हुक्म दिया गया कि आप (सल्ल०) बुराई का जवाब भलाई से दें। शत्रु बुरी नीति अपनाते हैं परन्तु आप (सल्ल०) का तरीक़ा वही होना चाहिए जो उत्तम है।

---

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

२३-अल-मोमिनून

(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः* का नाम 'अल-मोमिनून' (ईमान* वाले) सूरः की पहली आयत* से लिया गया है। इस सूरः में इस का उल्लेख हुआ है कि काफ़िर असफल और अज़ाब के भागी होंगे; सफलता तो ईमान* वालों के लिए है[1]।

उतरने का समय (The date of Revelation)

सूरः* की वार्त्ताओं से मालूम होता है कि यह सूरः मक्का के मध्य-काल में उतरी है। यह वही समय है जब कि काफ़िरों और ईमान वालों* के बीच संघर्ष आरम्भ हो चुका था। परन्तु काफ़िरों* का विरोध अभी अपनी चरम सीमा को नहीं पहुँच सका था। सूरः की आयत ७५–७६ से मालूम होता है कि यह उस समय की सूरः है जब कि वह अकाल उग्र रूप धारण कर चुका था जो ऐतिहासिक कथनों के अनुसार इसी मध्य-काल में पड़ा था।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

इस सूरः* में काफ़िरों* और सत्य का इन्कार करने वालों को क़ियामत* के अज़ाब और दुनियाँ के विनाश को प्राप्त होने की धमकी दी गई है। सूरः की आयत ११५ से सूरः के केन्द्रीय विषय पर प्रकाश पड़ता है। काफ़िरों* और सत्य के न मानने वालों के लिए अज़ाब की धमकी ही इस सूरः का केन्द्रीय विषय है। प्रस्तुत सूरः और पिछली सूरः में गहरा सम्पर्क पाया जाता है। पिछली सूरः (अल-हज) की अन्तिम आयत में एकेश्वरवादियों की सफलता का उल्लेख हुआ है और स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि अल्लाह मुस्लिम* गिरोह का सहायक और संरक्षक है। प्रस्तुत सूरः ईमान* वालों को शुभ-सूचना देती हुई आरम्भ होती है।

इस के अतिरिक्त पिछली सूरः में एक गरोह के उठाये जाने का और उस के कर्तव्यों का उल्लेख हुआ है। और उस प्रतिज्ञा का उल्लेख भी किया गया है जिस पर उस गरोह को खड़ा किया गया है। प्रस्तुत सूरः में उल्लिखित प्रतिज्ञा और कर्तव्यों का विस्तार पाया जाता है।

इस सूरः* में इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि मनुष्य विचार करे कि वह किस तरह पैदा हुआ है। इस के अतिरिक्त ज़मीन और आसमान में फैली हुई निशानियों पर भी उसे सोच-विचार करना चाहिए ताकि अल्लाह के एक होने और आख़िरत* के सत्य होने का उसे पूर्ण विश्वास हो। वह भली-भाँति जान ले कि अल्लाह का रसूल* जिन बातों के मानने की शिक्षा देता है उन के सत्य होने पर न केवल यह कि मनुष्य का अपना अस्तित्व बल्कि अखिल विश्व साक्षी है।

इस सूरः* में नबियों* के क़िस्से भी बयान किये गये हैं जिन से पता चलता

---

[1] दे० आयत १ और ११७।

* इन का अर्थ अन्त में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

वाला है अल्लाह, सब से उत्तम सृष्टि-कर्ता ! ○

फिर इस के बाद तुम अवश्य ही मरने वाले १५ हो। ○ फिर क़ियामत* के दिन तुम निश्चय ही उठाये जाओगे। ○

और तुम्हारे ऊपर हम ने सात गुज़र-गाहें बनाईं, और हम सृष्टि के काम से ग़ाफ़िल नहीं। ○

—ौर आसमान से हम ने एक अन्दाज़े के साथ ारा, फिर उसे ज़मीन में ठहरा दिया, और लुप्त करने का सामर्थ्य रखते हैं। ○ फिर नी) के द्वारा तुम्हारे लिए खजूरों और अंगूरों पैदा किये, तुम्हारे लिये उन (बाग़ों) में स्वादिष्ट फल हैं' और उन (बाग़ों) से तुम I; ○

ार वह वृक्ष भी (हम ने पैदा किया) जो तूर निकलता है' तेल लिये हुये उगता है और ालों के लिए सालन' । ○

ार निस्सन्देह तुम्हारे लिए मवेशियों (चौपायों) शिक्षा-सामग्री है। उन के पेटों में जो-कुछ है उस में से हम तुम्हें एक चीज़ पिलाते हैं,'' ुम्हारे लिए उन में बहुत से फ़ायदे हैं, और उन्हें तुम खाते हो; ○ और उन पर और ों पर सवार भी किये जाते हो। ○

ौर हम ने नूह को उस की जाति (वालों) की ओर भेजा, तो उस ने कहा : हे मेरी जाति । अल्लाह की इबादत* करो। उस के सिवा तुम्हारा और कोई इलाह* (पूज्य) नहीं है। म (उस का) डर नहीं रखते ? ○

स पर उस की जाति के सरदार, जिन्हों ने कुफ़्र* किया था, कहने लगे : यह तो म्हीं जैसा एक आदमी है'' चाहता है कि तुम पर श्रेष्ठता प्राप्त करे। और यदि अल्लाह ।, तो फ़िरिश्ते* भेजता। यह तो हम ने अपने अगले पूर्वजों में नहीं सुना (कि कोई मनुष्य ' बन कर आये)। ○ कुछ नहीं यह तो बस एक आदमी है जिसे उन्माद हो गया है, क समय तक इस की प्रतीक्षा कर लो। ○

مِنْ طُورِ سَيْنَاءَ تَنْبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ لِلْآكِلِينَ ۝ وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً نُسْقِيكُمْ مِمَّا فِي بُطُونِهَا وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ۝ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝ فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ مَا هَٰذَا إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ يُرِيدُ أَنْ يَتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَنْزَلَ مَلَائِكَةً مَا سَمِعْنَا بِهَٰذَا فِي آبَائِنَا الْأَوَّلِينَ ۝ إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ بِهِ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوا بِهِ حَتَّىٰ حِينٍ ۝ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِي بِمَا كَذَّبُونِ ۝ فَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ أَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا فَإِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّورُ فَاسْلُكْ فِيهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ وَلَا تُخَاطِبْنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا إِنَّهُمْ مُغْرَقُونَ ۝ فَإِذَا اسْتَوَيْتَ أَنْتَ وَمَنْ مَعَكَ عَلَى الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي نَجَّانَا مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ وَقُلْ رَبِّ أَنْزِلْنِي مُنْزَلًا مُبَارَكًا وَأَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِينَ ۝ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ وَإِنْ كُنَّا لَمُبْتَلِينَ ۝ ثُمَّ أَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا آخَرِينَ ۝ فَأَرْسَلْنَا فِيهِمْ رَسُولًا مِنْهُمْ أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝ وَقَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِلِقَاءِ الْآخِرَةِ وَأَتْرَفْنَاهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا

अर्थात् खजूरों और अंगूरों के अतिरिक्त और भी विभिन्न प्रकार के फल और मेवे।

अर्थात् ज़ैतून का वृक्ष जो रूम सागर के निकटवर्ती क्षेत्रों की विशेष उपज है। ज़ैतून के वृक्ष दीर्घ काल लते हैं। इस की आयु डेढ़-दो हज़ार वर्ष तक पहुँचती है। 'फ़लिस्तीन' के कुछ पेड़ों के बारे में अनुमान े हज़रत मसीह के समय से चले आ रहे हैं। ज़ैतून जिस भू-भाग की विशेष उपज है उस का प्रसिद्ध 'तूर सैना'* ही है।

' अर्थात् वह तेल सालन का काम देता है।

' अर्थात् दूध। दे० सूरः अन-नह्ल फुट नोट २४।

े यह विचार समस्त गुमराह जातियों का रहा है कि किसी मनुष्य को नबी* का पद नहीं प्राप्त हो ा। क़ुरआन ने जगह-जगह उन के इस विचार का खण्डन करते हुये बताया है कि मनुष्य को सीधा मार्ग ने के लिए मनुष्य ही को नबी* बना कर भेजना उचित है।

इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अल-मोमिनून

(मक्का में उतरी — आयतें* ११८)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُونَ ۝ الَّذِينَ هُمْ فِي صَلَاتِهِمْ خَاشِعُونَ ۝ وَ
الَّذِينَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُونَ ۝ وَالَّذِينَ هُمْ لِلزَّكَاةِ فَاعِلُونَ ۝
وَالَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ حَافِظُونَ ۝ إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ
أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ۝ فَمَنِ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ
الْعَادُونَ ۝ وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمَانَاتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُونَ ۝ وَالَّذِينَ هُمْ
عَلَىٰ صَلَوَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ۝ أُولَٰئِكَ هُمُ الْوَارِثُونَ ۝ الَّذِينَ يَرِثُونَ
الْفِرْدَوْسَ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ سُلَالَةٍ
مِنْ طِينٍ ۝ ثُمَّ جَعَلْنَاهُ نُطْفَةً فِي قَرَارٍ مَكِينٍ ۝ ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ
عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظَامًا فَكَسَوْنَا
الْعِظَامَ لَحْمًا ثُمَّ أَنْشَأْنَاهُ خَلْقًا آخَرَ فَتَبَارَكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ ۝
ثُمَّ إِنَّكُمْ بَعْدَ ذَٰلِكَ لَمَيِّتُونَ ۝ ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ تُبْعَثُونَ ۝ وَ
لَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَائِقَ وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غَافِلِينَ ۝
وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ فَأَسْكَنَّاهُ فِي الْأَرْضِ وَإِنَّا عَلَىٰ
ذَهَابٍ بِهِ لَقَادِرُونَ ۝ فَأَنْشَأْنَا لَكُمْ بِهِ جَنَّاتٍ مِنْ نَخِيلٍ وَ
أَعْنَابٍ لَكُمْ فِيهَا فَوَاكِهُ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ۝ وَشَجَرَةً تَخْرُجُ

†निश्चय ही सफलता प्राप्त की ईमान* वालों ने[1] ○ जो अपनी नमाज़* में नम्रता ग्रहण करते हैं, ○ और जो व्यर्थ बातों से बचने वाले हैं, ○ और जो ज़कात* के नियम का पालन करते हैं। ○ और जो अपनी शर्मगाहों (गुप्त इन्द्रियों) की हिफ़ाज़त करते हैं ○ — सिवाय अपनी पत्नियों के और उन (लौंडियों) के जो उन की मिल्क में हों, कि वे (इस पर) निन्दनीय नहीं हैं, ○ परन्तु जो कोई इस के अतिरिक्त कुछ और चाहे, तो ऐसे ही लोग सीमा से आगे बढ़ने वाले हैं[2] ○ — और जो अपनी अमानतों और अपनी प्रतिज्ञा का ध्यान रखते हैं,[3] ○ और जो अपनी नमाज़ों* की रक्षा करते हैं[4]। ○ यही लोग वारिस (उत्तराधिकारी) हैं ○ जो विरासत में फ़िरदौस* (स्वर्ग) पायेंगे। वे उस में सदैव रहेंगे[5]। ○

निश्चय ही हम ने मनुष्य को मिट्टी के सत से बनाया; ○ फिर उसे एक सुरक्षित जगह टपकी हुई बूँद (वीर्य) के रूप में रखा; ○ फिर उस बूँद (वीर्य) को लोथड़े का रूप दिया, फिर उस लोथड़े को एक (मांस की) बोटी का रूप दिया, फिर बोटी की हड्डियाँ बनाईं, फिर उन हड्डियों पर मांस चढ़ाया,[6] फिर उसे एक दूसरा ही सृजन-रूप दे कर खड़ा किया[7]। सो बहुत बरकत

---

† यहाँ से अठारहवाँ पारः (Part XVIII) आरम्भ होता है।

१ दे० आयत ११७, सूरः अल-हज्ज आयत ७७।

२ काम-वासना अथवा सहवास की इच्छा कोई बुरी चीज़ नहीं जैसा कि बहुत से लोगों का विचार है; हाँ इस इच्छा की पूर्ति अवैध रूप से नहीं होनी चाहिए।

३ नबी* सल्ल० कहा करते थे : वह व्यक्ति ईमान* नहीं रखता जो अमानतदार नहीं और वह कोई दीन* नहीं रखता जो प्रतिज्ञा का पालन नहीं करता।

४ अर्थात् ठीक तौर पर जैसा कि चाहिए अदा करते हैं। नमाज़* का उल्लेख आरम्भ में भी किया गया था; अन्त में फिर उसे लाया गया है। इस से मालूम होता है कि दीन* में नमाज़* का बड़ा महत्व है। एक मुस्लिम* के जीवन का आरम्भ और अन्त नमाज़* ही है। यदि उस की नमाज़ ठीक है तो फिर उस का पूरा जीवन ठीक होगा; वास्तव में नमाज़* समस्त भलाइयों का स्रोत है।

५ १ से ११ तक की आयतों के अध्ययन के समय सूरः अल-मआरिज की २२ से ३५ तक की आयतें भी सामने रहनी चाहिएँ।

६ दे० सूरः अल-हज्ज फुट नोट २।

७ अर्थात् उसे एक जीता-जागता मनुष्य बना दिया जो पहले की अपेक्षा बिलकुल एक और ही चीज़ प्रतीत होता है। फिर उस की इस अवस्था में भी परिवर्तन होता है; वह बच्चे से युवा और युवावस्था से फिर बुढ़ापे को पहुँचता है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

[illegible]

(रसूल ने) कहा : रब* ! इन्हों ने मुझे झुठलाया है इस पर तू मेरा सहायक हो, ○ (उस के रब* ने) कहा : जल्द ही ये (अपने किये पर) लज्जित होंगे। ○

सो सत्य के अनुसार उन्हें'' एक (भयंकर) चीख़ ने आ लिया, और हम ने उन्हें कचरा'' बना कर रख दिया। तो दूरी ज़ालिम लोगों के लिए ! ○

फिर हम ने उन के बाद दूसरी नस्ल को उठाया। ○

कोई गरोह न तो अपने निश्चित समय से आगे बढ़ सकता है, और न पीछे रह सकता है'' । ○

फिर हम ने लगातार अपने रसूल* भेजे। जब कभी भी किसी समुदाय के पास उस का रसूल* आया (लोगों ने) उसे झुठला दिया, तो हम एक को दूसरे के पीछे (विनाश के लिए) चलाते गये और उन्हें कहानियाँ बना डाला। तो दूरी उन लोगों के लिए जो ईमान* नहीं लाते ! ○

फिर हम ने मूसा और उस के भाई हारून को अपनी निशानियों और खुली दलील [illegible] के साथ भेजा ○ फ़िरऔन और उस के सरदारों की ओर, परन्तु उन्हों ने अपने को [illegible] समझा और वे थे ही बड़े सरकश लोग। ○

कहने लगे : क्या हम अपने ही जैसे दो आदमियों पर ईमान* लायें, (और यह भी) इस [illegible] में कि उन की जाति वाले हमारे दास हैं ! ○

सो उन्हों ने उन दोनों को झुठला दिया, और विनष्ट होने वालों में से हो गये। ○

और हम ने मूसा को किताब* प्रदान की थी, कदाचित् वे लोग (सीधा) मार्ग पा लें। ○

और मरयम के बेटे (ईसा) और उस की माता को हम ने एक निशानी बनाया, और उन [illegible] को एक ऊँची जगह पर रखा, जहाँ ठहराव था और बहता हुआ स्रोत'' । ○

हे रसूलो* ! पाक चीज़ें खाओ, और अच्छे काम करो। निस्सन्देह जो-कुछ तुम करते हो [illegible] मैं जानता हूँ'' । ○

और निश्चय ही यह तुम्हारा समुदाय एक ही समुदाय है और मैं तुम्हारा रब* हूँ, सो तुम [illegible] ही डर रखो। ○

[illegible] यह [illegible] और समूद* की ओर है।

[illegible] में 'ग़ुसा' शब्द प्रयुक्त हुआ है। 'ग़ुसा' उस कूड़ा-करकट को कहते हैं जो बाढ़ के [illegible] बहता हुआ आता है और फिर किनारों से लग कर पड़ा सड़ा करता है।

[illegible] कुर्आन [illegible] फुट नोट [illegible]।

[illegible] जहाँ हर तरह की सुविधायें थीं। इस आयत में जिस स्थान का और संकेत है उस के बारे में [illegible] कोई [illegible] नहीं कही जा सकती। ईसाइयों के कथनों से मालूम होता है कि हज़रत मसीह [illegible] के बाद उन की नस्ल के प्रदेश में हज़रत मरयम दो बार [illegible] पर [illegible] हुई हैं। [illegible] (शेष अगले पृष्ठ पर देखो)

[illegible] के [illegible] हैं [illegible] को [illegible] देखो।

مَا هٰذَا إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يَأْكُلُ مِمَّا تَأْكُلُونَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُونَ ۝
وَلَئِنْ أَطَعْتُم بَشَرًا مِّثْلَكُمْ إِنَّكُمْ إِذًا لَّخٰسِرُونَ ۝ أَيَعِدُكُمْ أَنَّكُمْ إِذَا
مِتُّمْ وَكُنتُمْ تُرَابًا وَعِظٰمًا أَنَّكُم مُّخْرَجُونَ ۝ هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا
تُوعَدُونَ ۝ إِنْ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ
بِمَبْعُوثِينَ ۝ إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا وَمَا نَحْنُ لَهُ
بِمُؤْمِنِينَ ۝ قَالَ رَبِّ انصُرْنِي بِمَا كَذَّبُونِ ۝ قَالَ عَمَّا قَلِيلٍ لَّيُصْبِحُنَّ
نٰدِمِينَ ۝ فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنٰهُمْ غُثَآءً فَبُعْدًا لِّلْقَوْمِ
الظّٰلِمِينَ ۝ ثُمَّ أَنشَأْنَا مِنۢ بَعْدِهِمْ قُرُونًا ءَاخَرِينَ ۝ مَا تَسْبِقُ مِنْ
أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ۝ ثُمَّ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرَا ۖ كُلَّ مَا جَآءَ
أُمَّةً رَّسُولُهَا كَذَّبُوهُ فَأَتْبَعْنَا بَعْضَهُم بَعْضًا وَجَعَلْنٰهُمْ أَحَادِيثَ
فَبُعْدًا لِّقَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُونَ ۝ ثُمَّ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ وَأَخَاهُ هٰرُونَ
بِـَٔايٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِينٍ ۝ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَإِيْهِ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا
قَوْمًا عَالِينَ ۝ فَقَالُوا أَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا لَنَا عٰبِدُونَ ۝
فَكَذَّبُوهُمَا فَكَانُوا مِنَ الْمُهْلَكِينَ ۝ وَلَقَدْ ءَاتَيْنَا مُوسَى الْكِتٰبَ
لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ۝ وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهُ ءَايَةً وَءَاوَيْنٰهُمَا
إِلَىٰ رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَمَعِينٍ ۝ يٰأَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوا مِنَ الطَّيِّبٰتِ
وَاعْمَلُوا صٰلِحًا إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ۝ وَإِنَّ هٰذِهِ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً

ع

(नूह ने) कहा : रब*! इन्हों ने मुझे झुठलाया है इस पर तू मेरा सहायक हो'[33]। ○

तब हम ने उस की ओर वह्य* की कि हमारी आँखों के सामने और हमारी वह्य* के अनुसार नौका बनाओ। फिर जब हमारा हुक्म आ जाये और वह तनूर उबल पड़े,[34] तो हर क़िस्म (के जानवरों) में से एक-एक जोड़ा, उस में ले ले, और अपने घर वालों को भी सिवाय उस के जिस के विरुद्ध पहले ही बात निश्चय हो चुकी है। और ज़ुल्म करने वालों के प्रति मुझ से बात न करना। वे अवश्य डूब कर रहने वाले हैं। ○

फिर जब तू अपने साथियों के साथ नौका पर सवार हो जाये, तो कह : प्रशंसा (हम्द*) अल्लाह के लिए जिस ने हमें ज़ालिम लोगों से छुटकारा दिया। ○

और कह : रब! मुझे बरकत वाली जगह उतार, और तू अच्छा उतारने वाला[35] (अर्थात् उत्तम जगह प्रदान करने वाला) है। ○ निस्सन्देह इस (क़िस्से) में बड़ी निशानियाँ हैं, और हम निश्चय ही आज़माने वाले हैं। ○

१०

फिर, उन के बाद, हम ने एक दूसरी नस्ल को[36] उठाया; ○ फिर उन में हम ने उन्हीं में का एक रसूल* भेजा (जिस ने उन से कहा) कि अल्लाह की इबादत* करो उस के सिवा तुम्हारा और कोई इलाह* (पूज्य) नहीं है। क्या तुम डरते नहीं? ○

उस की जाति के सरदार, जिन्हों ने कुफ़्र* किया और आख़िरत* की मुलाक़ात को झुठलाया, और जिन्हें हम ने सांसारिक जीवन में सुखानन्द दिया था, कहने लगे : यह तो बस तुम्हीं जैसा एक आदमी है, जो-कुछ तुम खाते हो वही कुछ यह भी खाता है और जो-कुछ तुम पीते हो वही यह भी पीता है। ○ यदि तुम ने अपने ही जैसे एक मनुष्य की आज्ञा का पालन किया, तो निश्चय ही तुम घाटे में रहे। ○ क्या यह तुम्हें डराता है, कि जब तुम मर कर मिट्टी और हड्डियाँ हो कर रह जाओगे, तो तुम (क़ब्रों से) निकाले जाओगे? ○

११

दूर है, बहुत दूर, जिस का तुम से वादा किया जा रहा है! ○ जीवन तो बस यही सांसारिक जीवन है; (यहीं) हम मरते और जीते हैं, और हम (मर कर) पुनः उठाये जाने वाले नहीं हैं। यह तो बस ऐसा आदमी है जिस ने अल्लाह से सम्बन्ध लगा कर झूट गढ़ा है। और हम इसे मानने वाले नहीं हैं। ○

---

३३ अर्थात् वे जो मुझे झुठला रहे हैं तू इन का बदला इन से ले ले। ३४ देखें सूरः [illegible] आयत ४०,
सूरः नूह आयत ३९-४८।

३४ देखें सूरः हूद फुट नोट ३६।

३५ अरबी मुहावरे के अनुसार [illegible] के [illegible] का अर्थ भी [illegible] जाता है।

३६ अर्थात् एक दूसरी क़ौम को [illegible]। यह संकेत 'आद' की ओर है।

* इस का अर्थ [illegible] के अन्त में दिये गए पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

…स से बिदकते हैं²⁷ ? ○ या ये कहते हैं कि उसे उन्माद हो गया है²⁸ ? नहीं, बल्कि वह इन के पास सत्य लाया है; और इन में के अधिकतर सत्य को ना-पसन्द करते हैं ○

और यदि कहीं सत्य इन की तुच्छ इच्छाओं के पीछे चलता, तो आसमानों और ज़मीन और जो कोई उन में है सब की व्यवस्था बिगड़ जाती। नहीं, बल्कि हम उन के पास उन की याद-दिहानी लाये हैं, परन्तु ये अपनी याद-दिहानी से किनारा खींच रहे हैं।○

क्या तू इन से कुछ शुल्क माँग रहा है ? तेरे रब* का दिया ही उत्तम है, और वह सब से उत्तम रोज़ी देने वाला है²⁹।○

और तू तो उन्हें सीधे मार्ग की ओर बुलाता है।○ परन्तु जो लोग आख़िरत* पर ईमान* नहीं रखते वे इस (सीधे) मार्ग से पूरी तरह कतराये हुये हैं।○

और यदि हम इन पर दया करें और जो तकलीफ़ इन पर है उसे दूर कर दें, तो ये अपनी सरकशी में बराबर बहकते रहें³⁰।○

यद्यपि हम ने इन्हें अज़ाब में पकड़ा, फिर भी ये अपने रब* के आगे न दबे, और न गिड़गिड़ाये, ○ यहाँ तक कि जब हम इन पर सख़्त अज़ाब का दरवाज़ा खोल दें, तो तत्काल ये उस में निराश हो कर रह जायेंगे।○

वही है जिस ने तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाये। तुम कम ही कृतज्ञता दिखलाते हो।○ और वही है जिस ने तुम्हें ज़मीन में फैलाया, और उसी की ओर तुम समेटे जाओगे।○ और वही है जो जीवित करता और मौत देता है, और रात और दिन का उलट-फेर उसी का (काम) है। क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ?○

नहीं, बल्कि इन्हों ने वही-कुछ कहा जो इन के अगले (काफ़िर*) कह चुके हैं; ○

कहते हैं : क्या जब हम मर कर मिट्टी और हड्डियाँ हो कर रह जायँगे, तो हमें पुनः (जीवित कर के) उठाया जायेगा ? ○ यह वादा तो हम से और हम से पहले हमारे पूर्वजों से होता आ रहा है। यह तो बस पिछले लोगों की कहानियाँ (अर्थात् बे-सनद बातें) हैं।○

---

२७ अर्थात् जिस रसूल* के द्वारा इन लोगों को हमारा सन्देश पहुँच रहा है वह इन के लिए कोई ऐसा आदमी तो नहीं है जिस से यह अपरिचित थे। वह इन्हीं के बीच पैदा हुआ है। उस की कोई चीज़ इन से छिपी हुई नहीं है। उस का चरित्र दोष-रहित है उस की सचाई के सभी लोग साक्षी हैं। उस ने अपने नबी* होने की घोषणा करने से एक दिन पहले तक भी कोई ऐसी बात नहीं कही जिस के आधार पर कोई यह कह सकता कि वह पहले से इस की तैयारी कर रहा था। जिस दिन से उस ने अपने नबी* होने का एलान किया उस के बाद से आज तक वह एक ही बात कहता आ रहा है; उस में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। फिर जिस बात की वह दूसरों को शिक्षा देता है पहले वह स्वयं उस का पालन करता है। उस के कथन और उस के व्यावहारिक जीवन में कोई अन्तर नहीं पाया जाता।

२८ कदापि नहीं; ये भली-भाँति जानते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० कोई उन्मत्त और पागल व्यक्ति नहीं है। यह केवल इन की हठ-धर्मी है जो ये इस तरह की बातें बक रहे हैं।

२९ हज़रत मुहम्मद सल्ल० जो-कुछ भी कर रहे हैं निःस्वार्थ हो कर कर रहे हैं। आप (सल्ल०) केवल सत्य के लिए अपने-आप को सङ्कटों में डाल रहे हैं। यह आप के सच्चे नबी* होने का एक प्रत्यक्ष प्रमाण है।

३० यह संकेत है उस सङ्कट की ओर जिस में वे अकाल के कारण ग्रस्त हुये थे। जब मक्का के लोग नबी* सल्ल० का निरन्तर इन्कार ही करते गये और आप (सल्ल०) की राह में रुकावटें ही डालते रहे, तो आप (सल्ल०) ने प्रार्थना की : हे अल्लाह ! इन के मुक़ाबिले में यूसुफ़ (अ०) के सात वर्षीय अकाल जैसे सात वर्षों से मेरी सहायता कर। अल्लाह ने आप (सल्ल०) की विनती सुन ली। ऐसा अकाल पड़ा कि मुरदार जानवर तक खाने की नौबत आ गई। यह अकाल हिजरत* से पूर्व नुबूवत* के आरम्भ काल के कुछ ही मुद्दत के बाद पड़ा था। इस अकाल की ओर मक्का में उतरने वाली अधिकतर सूरतों में सङ्केत किये गये हैं मिसाल के लिए देखें : सूरः अल-अनआम आयत ४२-४३, अल-आराफ़ आयत ९४-९६, यूनुस आयत २१, अन-नह्ल आदि।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

परन्तु लोग अपने बीच अपने काम में टुकड़े-टुकड़े हो गये,[२२] हर गरोह उसी मे[ं]
जो-कुछ कि उन के पास है[२३]। ○ अच्छा, तो छोड़ो उन्हें उन की ग़फ़लत की हालत [में]
समय तक। ○

क्या ये समझते हैं कि हम जो इन्हें माल और औलाद से मदद दिये जाते हैं ○ [क्या]
इन की भलाइयों में जल्दी करते हैं ? नहीं, बल्कि ये ज्ञान ही नहीं रखते। ○

निश्चय ही, जो लोग अपने रब* के भय से डरते हैं, ○ और जो अपने रब* की आ[यतों]
पर ईमान रखते हैं, ○ और जो अपने रब* के साथ (किसी को) शरीक नहीं करते, ○
जो देते हैं जो-कुछ कर के देते हैं इस हाल में कि दिल उन के काँप रहे होते हैं[२४] कि वे
रब* की ओर पलटने वाले हैं, ○ यही लोग हैं जो भलाइयों में जल्दी करते हैं, और
(भलाइयों) के लिए अग्रसर रहने वाले हैं। ○ और हम किसी व्यक्ति पर उस की सम[र्थ्य से]
बढ़ कर ज़िम्मेदारी (का बोझ) नहीं डालते, और हमारे पास एक किताब* है जो बोल[ती है]
ठीक-ठीक, और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जायेगा। ○

परन्तु, इन के दिल इस की ओर से ग़फ़लत में हैं, और इन के कर्म उस से भिन्न हैं [जिन]
का ऊपर उल्लेख हुआ है), वे उन्हीं (कामों) को करते रहेंगे; ○ यहाँ तक कि जब हम
के सुख-भोगियों को अज़ाब में पकड़ेंगे, तो फिर वे चिल्लाने और फ़रियाद करने लगेंगे। ○

(कहा जायगा): मत चिल्लाओ और फ़रियाद करो आज! तुम्हें हमारी ओर से
सहायता मिलने की नहीं। ○ मेरी आयतें* तुम्हें सुनाई जाती थीं, तो तुम उलटे पाँव
जाते थे, ○ अकड़ते हुये, उसे बकवास करता हुआ छोड़ते थे[२५]। ○

क्या इन्हों ने इस कलाम पर चिन्तन नहीं किया, या इन के पास कोई ऐसी चीज़ आ[ई है]
जो इन के अगले पूर्वजों के पास न आई थी[२६] ? ○ या ये अपने रसूल* से परिचित न थे

बार वह मिस्र गई; यह हीरोदीस (Herod) सम्राट का समय था। दूसरी बार अरख़िलाउस (Archelau[s])
के राज्य-काल में गलील (Galilee) के नगर नासिरः (Nazareth) में उन्हों ने शरण ली। दे० म[त्ती]
(Matt.) २ : १३-२३।

२१ दे० सूरः अल-अहज़ाब आयत ७,७२। 'हे रसूलो!' का सम्बोधन कर के वास्तव में यह बताना अभी[ष्ट]
है कि समस्त रसूलों को यही आदेश दिया गया था, चाहे वे कहीं भी रसूल* बना कर भेजे गये हों; [और]
चाहे उन का समय कोई भी रहा हो। रसूलों की मौलिक शिक्षाओं में कोई भिन्नता नहीं पाई जाती। समस्[त]
नबियों के अनुयायी वास्तविक रूप से एक ही समुदाय के लोग हैं।

२२ अर्थात् वे विभिन्न टोलियों में बँट गये।

२३ इस से मालूम होता है कि मानव जाति का वास्तविक धर्म यही इस्लाम* ही है जिस की ओर य[ह]
क़ुरआन बुला रहा है। संसार के दूसरे धर्म जो आज पाये जाते हैं वे इसी वास्तविक धर्म के बिगड़े हुये रूप हैं।

२४ यहाँ "देना" से अभिप्रेत केवल भौतिक वस्तुओं का देना नहीं है अरबी भाषा में "देना" (ईता) शब्[द]
आन्तरिक अथवा अभौतिक वस्तुओं के देने के लिए भी प्रयोग होता है। आयत का मतलब यह हुआ कि [वे]
जो-कुछ भी ख़र्च करते हैं और जो नेकी और इबादत* भी वे करते हैं उस पर उन्हें गर्व नहीं होता वे नेकी
और अल्लाह की इबादत* और भक्ति करने के बाद भी डरते रहते हैं कि मालूम नहीं हमारी नेकियाँ अल्लाह
के यहाँ क़बूल भी होती हैं या नहीं, पता नहीं आख़िरत* में हमारी नेकियों का पलड़ा भारी होता है या
हमारे गुनाहों का बोझ भारी रहता है।

२५ अर्थात् वे रसूल* को ऐसा छोड़ देते हैं जैसे वह कोई बकवास करने वाला व्यक्ति हो। ऐसा लगता है
जैसे क़ुरआन की हैसियत उन की दृष्टि में बकवास के अतिरिक्त और कुछ नहीं।

२६ अर्थात् क्या यह कोई ऐसी अद्भुत और निराली बात है जिस से ये बिलकुल ही अनभिज्ञ हों।
नबियों* का आना, लोगों को अल्लाह का कलाम सुनाना और उन्हें एकेश्वरवाद की ओर बुलाना आदि
मानव-इतिहास में कोई ऐसी बात नहीं है जो लोगों के लिए बिलकुल नई और अनोखी हो।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

(हे नबी* !) बुराई को उस तरह से दूर करो जो अत्यन्त उत्तम हो। हम भली भाँति जानते हैं जो-कुछ गुण ये बताते हैं। ○ और कहो : रब* ! मैं शैतानों* की उकसाहटों से तेरी पनाह माँगता हूँ, ○ और मैं इस से भी तेरी पनाह माँगता हूँ, रब ! कि वे मेरे पास आयें, ○

(ये लोग मानने वाले नहीं हैं) यहाँ तक कि जब इन में से किसी को मौत आ जायेगी, तो वह कहेगा : रब* ! मुझे (दुनियाँ में) लौटा दो, ताकि जिस (दुनियाँ) को मैं छोड़ आया हूँ उस में अच्छा काम करूँ !

कदापि नहीं,[२४] यह तो बस एक बात है जो वह बक रहा है; और उन सब (मरने वालों) के पीछे एक बरज़ख़ (परदा) है उन के पुनः जीवित कर के उठाये जाने वाले दिन तक[२५]। ○

फिर जैसे ही सूर* में फूँक मार दी जायेगी उन के बीच उस दिन कोई नाता न रहेगा,[२६] और न वे एक-दूसरे को पूछेंगे। ○

وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يَصِفُونَ ۝ عَالِمِ
الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ قُل رَّبِّ إِمَّا تُرِيَنِّي مَا
يُوعَدُونَ ۝ رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِي فِي الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ وَإِنَّا عَلَىٰ أَن
نُّرِيَكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقَادِرُونَ ۝ ادْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ السَّيِّئَةَ
نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَصِفُونَ ۝ وَقُل رَّبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِينِ
وَأَعُوذُ بِكَ رَبِّ أَن يَحْضُرُونِ ۝ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ
قَالَ رَبِّ ارْجِعُونِ ۝ لَعَلِّي أَعْمَلُ صَالِحًا فِيمَا تَرَكْتُ ۚ كَلَّا ۚ إِنَّهَا كَلِمَةٌ
هُوَ قَائِلُهَا ۖ وَمِن وَرَائِهِم بَرْزَخٌ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۝ فَإِذَا نُفِخَ فِي
الصُّورِ فَلَا أَنسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَلَا يَتَسَاءَلُونَ ۝ فَمَن
ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ
فَأُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ فِي جَهَنَّمَ خَالِدُونَ ۝ تَلْفَحُ
وُجُوهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيهَا كَالِحُونَ ۝ أَلَمْ تَكُنْ آيَاتِي تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَكُنتُم
بِهَا تُكَذِّبُونَ ۝ قَالُوا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَالِّينَ ۝
رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظَالِمُونَ ۝ قَالَ اخْسَئُوا فِيهَا وَلَا
تُكَلِّمُونِ ۝ إِنَّهُ كَانَ فَرِيقٌ مِّنْ عِبَادِي يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا
فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ۝ فَاتَّخَذْتُمُوهُمْ سِخْرِيًّا
حَتَّىٰ أَنسَوْكُمْ ذِكْرِي وَكُنتُم مِّنْهُمْ تَضْحَكُونَ ۝ إِنِّي جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ

फिर जिस किसी के पलड़े भारी हुये[२७] तो ऐसे ही लोग सफलता प्राप्त करने वाले होंगे ○ और जिस किसी के पलड़े हल्के हुये तो यही लोग होंगे जिन्हों ने अपने-आप को घाटे में डाल लिया, वे दोज़ख़* में सदा रहेंगे। ○ आग उन के चेहरों को झुलस देगी, और वे उस में कुरूप हो रहे होंगे। ○ (कहा जायेगा) : क्या मेरी आयतें* तुम्हें सुनाई नहीं जाती थीं, और तब तुम उन्हें झुठलाते थे ? ○ वे कहेंगे : हमारे रब* ! हमारा अभाग्य हम पर छा गया था, और हम भटके हुये लोग थे ○ हमारे रब* ! हमें यहाँ से निकाल दे ! यदि फिर हम ऐसा करें, तो निश्चय ही हम ज़ालिम होंगे। ○

---

२४ इसे वापस नहीं भेजा जा सकता। इसे फिर से काम करने का अवसर नहीं मिल सकता। इस लिए कि सांसारिक जीवन के पश्चात् ग़ैब* (परोक्ष) का परदा उठा दिये जाने के बाद किसी परीक्षा का अवसर ही शेष नहीं रहता कि उस के लिए इस को फिर दुनियाँ में भेजा जाये। और यदि उन समस्त अनुभवों को जो इसे मरने से पूर्व और मरने के पश्चात् प्राप्त हुये हैं इस की अज्ञात-चेतना और मस्तिष्क से बिलकुल मिटा भी दिया जाये तब भी इस को दुनियाँ में भेजना व्यर्थ है। यह वहाँ जा कर फिर वही-कुछ करेगा जो पहले कर चुका है। आज़माये हुये को आज़माना व्यर्थ है।

२५ इस से मालूम हुआ कि अब ये दुनियाँ में नहीं आ सकते आगे आख़िरत* ही की मंज़िल है। इस से यह बात भी मालूम हुई कि यह विचार असत्य है कि मरने के बाद आदमी फिर दुनियाँ में दूसरा जन्म लेता है। नबियों* की शिक्षाओं और उपदेशों और उन की लाई हुई किताब में पुनर्जन्म और आवागमन का उल्लेख नहीं मिलता। वेदों में भी इस का उल्लेख नहीं हुआ है। वास्तव में यह धारणा कि मनुष्य दुख-सुख भोगने को बार-बार इस दुनियाँ में जन्म लेता है, लोगों की अपनी एक काल्पनिक धारणा है।

२६ अर्थात् कोई किसी के काम न आयेगा। दे० सूरः अल-मआरिज आयत १०-१४ और सूरः अबस आयत ३४-३७।

२७ अर्थात् जिन की नेकियों के पलड़े भारी होंगे। दे० सूरः अल-अंबिया आयत ४७, अल-आराफ़ आयत ७-८, अल-क़ारिअः आयत ६।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

خَيْرٌ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ۝ وَإِنَّكَ لَتَدْعُوهُمْ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ
وَإِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنَاكِبُونَ ۝ وَلَوْ
رَحِمْنَاهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِنْ ضُرٍّ لَلَجُّوا فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝ وَ
لَقَدْ أَخَذْنَاهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوا لِرَبِّهِمْ وَمَا يَتَضَرَّعُونَ ۝
حَتَّىٰ إِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيدٍ إِذَا هُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ۝
وَهُوَ الَّذِي أَنْشَأَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ قَلِيلًا مَا تَشْكُرُونَ ۝
وَهُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي يُحْيِي
وَيُمِيتُ وَلَهُ اخْتِلَافُ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ بَلْ قَالُوا
مِثْلَ مَا قَالَ الْأَوَّلُونَ ۝ قَالُوا أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا أَإِنَّا
لَمَبْعُوثُونَ ۝ لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَآبَاؤُنَا هَٰذَا مِنْ قَبْلُ إِنْ هَٰذَا
إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝ قُلْ لِمَنِ الْأَرْضُ وَمَنْ فِيهَا إِنْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُونَ ۝ سَيَقُولُونَ لِلَّهِ قُلْ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۝ قُلْ مَنْ رَبُّ
السَّمَاوَاتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ۝ سَيَقُولُونَ لِلَّهِ قُلْ
أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝ قُلْ مَنْ بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ يُجِيرُ
وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ سَيَقُولُونَ لِلَّهِ قُلْ فَأَنَّىٰ
تُسْحَرُونَ ۝ بَلْ أَتَيْنَاهُمْ بِالْحَقِّ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝ مَا اتَّخَذَ اللَّهُ
مِنْ وَلَدٍ وَمَا كَانَ مَعَهُ مِنْ إِلَٰهٍ إِذًا لَذَهَبَ كُلُّ إِلَٰهٍ بِمَا خَلَقَ

कहो : यह ज़मीन और जो कोई इस में है वह किस का है, बताओ यदि तुम जानते हो। ○

वे बोल उठेंगे : अल्लाह का। कहो : फिर तुम क्यों नहीं चेतते ? ○

कहो : सातों आसमानों का रब,* और महान् (राज्य-) सिंहासन का रब* (स्वामी) कौन है ? ○

कहेंगे : अल्लाह ही का (सब है)। कहो : फिर तुम डरते क्यों नहीं ? ○

(इन से) कहो : हर चीज़ की बादशाही किस के हाथ में है जो (सब को) पनाह देता है, जिस के मुक़ाबिले में पनाह नहीं दी जा सकती, बताओ यदि तुम जानते हो ? ○

कहेंगे : (यह बात तो) अल्लाह ही के लिए है। कहो : फिर कहाँ से तुम पर जादू कर दिया जाता है[31] (कि तुम भ्रम में पड़ जाते हो) ? ○

नहीं, बल्कि हम उन के पास हक़ (सत्य) लाये हैं, और निश्चय ही ये झूठे हैं। ○

अल्लाह ने अपना कोई बेटा नहीं बनाया,[32] और न उस के साथ कोई दूसरा इलाह* (पूज्य) है; ऐसा होता तो हर इलाह* अपनी सृष्टि को ले कर अलग हो जाता, और फ़िर वे एक-दूसरे पर चढ़ दौड़ते[33]। अल्लाह की महिमा के प्रतिकूल है जो-कुछ ये (उस के) गुण बताते हैं ! ○

खुले और छुपे का जानने वाला है ! वह उस से उच्च है जो शिर्क* ये (लोग) कर रहे हैं ! ○

(हे नबी* !) कहो : रब ! जो (अज़ाब का) वादा इन से किया जा रहा है यदि तू मुझे दिखाये, ○ तो रब* ! मुझे इन ज़ालिम लोगों में सम्मिलित न करना। ○

और निश्चय ही हमें इस का सामर्थ्य प्राप्त है कि हम जिस (अज़ाब) का इन से वादा कर रहे हैं उस को तुम्हें दिखा दें। ○

---

३१ अर्थात् इन की यह बात बिलकुल असत्य है कि अल्लाह के सिवा किसी और को भी ईश्वरत्व का पद प्राप्त है। ये अपनी इस बात में भी झूठे हैं कि मृत्यु के पश्चात् कोई जीवन नहीं। जब ये स्वयं इस बात को मानते हैं कि आसमान और ज़मीन का मालिक अल्लाह है और उस के अधिकार में ब्रह्माण्ड की समस्त वस्तुयें हैं, तो दूसरे ईश्वर ये कहाँ से घड़ लेते हैं। जब इस बात के मानने से इन्कार नहीं है कि अल्लाह इस महान् विश्व का सृष्टिकर्ता है, तो दूसरी तरफ़ इन का यह कहना कि अल्लाह अपने पैदा किये हुये जन-समूह को दोबारा पैदा नहीं कर सकता सर्वथा बुद्धि के प्रतिकूल बात है, अतः इन के विचारों के असत्य होने में कोई सन्देह नहीं है।

३२ अरब के मुशिरक* लोग भी ईसाइयों की तरह अपने देवी-देवताओं को अल्लाह की औलाद ठहराते थे।

३३ यही बात क़ुरआन के और दूसरे स्थानों पर भी कही गई है। देखिए सूरः अल-अंबिया आयत २२, सूरः बनी इसराईल आयत ४२। यदि विश्व के कई ईश्वर होते तो उन में परस्पर किसी-न-किसी बात में मत-भेद भी हो सकता था। उन में लड़ाई और युद्ध भी होता। जिस के कारण यह दुनियाँ तबाह हो कर रह जाती। यह जगत-रूपी कारख़ाना सुचारु रूप से कभी न चल सकता।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

	चन्द्र, सूर्य सभी उसके वश मे हैं।
७ : ५७, ५८	वर्षा से पहले खुशखबरी की हवाएं भेजता है, जो भारी-भारी बादलों को उठा लाती हैं।
७ : १८५	जमीन और आसमान की बादशाहत, और जो चीजें अल्लाह ने पैदा की है, उन पर नजर करो।
१० : ३-६	आसमान और जमीन को छ: दिन में बनाया और पूरा इन्तज़ाम चला रहा है।
१० : २२, २३	वह बन और समुद्र की सैर कराता है और जब तुम तूफान मे घिर जाते हो तो उसी का पुकारते हो।
१० : ३१, ३२	तुम्हे जमीन और आसमान से वही रोजी देता है और पूरा प्रबन्ध कर रहा है।
१२ : १०५, १०६	आसमान और जमीन मे कितना निशानियाँ हैं, जो तुम्हारे सामने आती हैं।
१३ : २	आसमान को बिना स्तम्भ के खड़ा किया, पूरा प्रबन्ध उसी के हाथ में है।
१३ : ३	जमीन को फैलाया, पहाड़ खड़े किए और नदियाँ बहाईं, मेवे पैदा किए।
१३ : ४	एक ही जलवायु में भिन्न-भिन्न प्रकार के फल उगाए,
१३ : १२, १३	वही बिजली चमकाता है जिससे तुम डरते हो और आशाएँ बाँधते हो, वह बड़ी शक्तियों वाला है।
१४ : ३२-३४	जमीन और आसमन बनाये, पानी बरसाया, फल पैदा किये, जहाजों को तुम्हारे वश में कर दिया।
१६ : १०-१८	आसमान से पानी बरसाया, चोपायों के लिए चारा उगाया, खेती और फल, रात और दिन, सूर्य और चन्द्रमा और तारे तुम्हारे काम मे लगे है, दरियाओं मे ताजा मांस।
१६ : ५२-५५	जमीन और आसमान मे जो कुछ है, सब उसी का है, बन्दगी और इबादत उसी के लिए है।
१६ : ६६-७०	गोबर और खून से भरे पेट से शुद्ध दूध पिलाता है, हर तरह के मेवे, मक्खियों के पेट से शहद।
१६ : ७८	तुम जब पैदा हुए तो कुछ नही जानते थे, तुम्हे कान, आँखें, और दिल दिये।
१६ : ७९	चिड़ियाँ, देखो, हवा मे कैसे उड़ती हैं, उन्हे अल्लाह के अलावा कौन थामे रखता है।
१६ : ८०, ८१	तुम्हारे रहने को घर और खेमे, जानवरों के ऊन और बाल तुम्हारे इस्तेमाल के लिए।
१७ : १२	दिन और रात दो निशानियाँ हैं। तुम रोज़ी कमाते हो और हिसाब रखते हो।
१७ : ४३, ४४	अल्लाह के अलावा कोई और खुदा होता तो अल्लाह से लड़ पड़ता। उसकी महिमा के प्रतिकूल हैं, वे बातें जो ये बनाते हैं।
१७ : ६६, ६७	जब तुम समुद्र में घिर जाते हो, तो उसके अलावा सब को भूल जाते हो

२४--अन-नूर

(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः* का नाम 'अन-नूर' (प्रकाश) सूरः की आयत ३५–४० से लिया गया है। आयत ३५–४० में अल्लाह के प्रकाश (Divine light) का वर्णन हुआ है जिस से ईमान* वालों के घर प्रकाशित होते हैं[1]। इस सूरः में ऐसी मुख्यवस्था और ऐसे नियमों का उल्लेख किया गया है जो गृहस्थ जीवन (Home-life) और समाज को पवित्र और उज्ज्वल बनाते हैं।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह सूरः* सन् ६ हिज० के पूर्वार्द्ध में सूरः अल-अहज़ाब के अवतीर्ण होने के कई महीनों के पश्चात् उतरी है। सूरः के अध्ययन से मालूम होता है कि यह सूरः उस अपयश के सिलसिले में अवतीर्ण हुई है जो नबी सल्ल० की धर्मपत्नी हज़रत आइशः रज़ि० के प्रति मुनाफ़िक़ों* ने फैलाया था[2]। यह खेदजनक अपयश उस समय फैलाया गया था जब कि नबी सल्ल० बनी मुस्तलिक़ की लड़ाई से लौट रहे थे; यह लड़ाई 'शाबान' सन् ६ हिज० में हुई थी।

किस परिस्थिति में उतरी

'बद्र' की लड़ाई के बाद से इस्लाम* की उन्नति ही होती गई यहाँ तक कि ख़न्दक़ की लड़ाई के अवसर पर भी विरोधी दल के लोग असफल ही रहे और उन्हें निराशापूर्वक लौट जाना पड़ा हालाँकि उन्हों ने १० हज़ार की सेना के साथ मदीना पर चढ़ाई की थी। इस के बाद भी इस्लाम-विरोधी अपनी कुनीतियों से बाज़ न आ सके। वे नबी सल्ल० और मुसलमानों के विरुद्ध अत्यन्त नीचता पर उतर आये। वे मुसलमानों के बीच ऐसी बातें फैलाते जिन से इस्लाम* को हानि पहुँच सके। वे नबी सल्ल० की धर्मपत्नी तक पर तोहमत लगाने से न चूक सके। यह कलंक उन्हों ने बनी मुस्तलिक़ की लड़ाई की वापसी के अवसर पर लगाया। बनी मुस्तलिक़, क़बीला बनी ख़ुज़ाअः की एक शाखा थी जो लाल सागर के तट पर क़ुदैद के क्षेत्र में रहती थी।

'शाबान' सन् ६ हिज० में नबी सल्ल० को यह सूचना मिली कि बनी मुस्तलिक़ के लोग मुसलमानों के विरुद्ध युद्ध की तैयारियाँ कर रहे हैं और दूसरे क़बीलों को भी इस के लिए एकत्र कर रहे हैं। सूचना मिलते ही नबी सल्ल० सेना के साथ उन की ओर चल पड़े। इस मुहिम में अब्दुल्लाह इब्न उबई (मुनाफ़िक़ों का नायक) भी मुनाफ़िक़ों की एक बड़ी संख्या के साथ शामिल हो गया। नबी सल्ल० ने मामूली लड़ाई के बाद बनी मुस्तलिक़ के पूरे क़बीले को क़ैद कर लिया। इस लड़ाई से वापस

---

१ दे० आयत ३५–४०।
२ दे० आयत ११–२१।
* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

بِمَا صَبَرُوٓا أَنَّهُمْ هُمُ الْفَآئِزُونَ ۝ قٰلَ كَمْ لَبِثْتُمْ فِي الْأَرْضِ عَدَدَ
سِنِيْنَ ۝ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسْئَلِ الْعَآدِّيْنَ ۝ قٰلَ إِنْ
لَّبِثْتُمْ إِلَّا قَلِيْلًا لَّوْ أَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ
عَبَثًا وَّأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ۝ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ لَآ إِلٰهَ
إِلَّا هُوَ ۚ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ۝ وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ إِلٰهًا اٰخَرَ ۙ لَا
بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ ۙ فَإِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۚ إِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ۝
وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ۝

(अल्लाह) कहेगा : धिक्कारे हुये पड़े रहो इसी में और मुझ से बात न करो।○

हमारे बन्दों में कुछ लोग थे जो कहते थे हमारे रब* ! हम ईमान* लाये, तो तू हमें क्षमा कर दे और हम पर दया कर तू सब से उत्तम दयावन्त है; ○

तो तुम ने उन की हँसी उड़ाई यहाँ तक कि उन के पीछे तुम मेरी याद को भुला बैठे, और तुम उन पर हँसते रहे।○ आज मैं ने उन के सब्र* करने का यह बदला प्रदान किया कि वही सफल हुये।○ १११

(अल्लाह) कहेगा : तुम वर्षों की गिन्ती (हिसाब) से ज़मीन में कितना रहे?○ वे कहेंगे : एक दिन या एक दिन का कुछ हिस्सा[38]। गणना करने वालों से पूछ लीजिए।○

वह कहेगा : तुम बस थोड़ी ही देर रहे क्या अच्छा होता कि तुम जानते होते[39]।○ क्या तुम ने यह समझा था कि हम ने तुम्हें व्यर्थ पैदा किया है, और यह कि तुम्हें हमारी ओर पलटना नहीं है[40]?○ सो सर्वोच्च है अल्लाह,[41] वास्तविक शासक ! उस के सिवा कोई इलाह* ११६ (पूज्य) नहीं, रब* (स्वामी) है महिमाशाली सिंहासन का[42]।○ और जो कोई अल्लाह के साथ किसी और इलाह* (पूज्य) को पुकारे उस के लिए अपने इस काम के हक़ में कोई दलील (सनद) नहीं। तो बस उस का हिसाब उस के रब* के यहाँ है[43]। निश्चय ही ऐसे काफ़िर* कभी सफल नहीं हो सकते[44]।○ (हे नबी* !) कहो : रब* ! क्षमा कर और दया कर, और तू सब से उत्तम दयावन्त है[45]।○

---

३८ दे० सूरः ता० हा० आयत १०२-१०४।

३९ अर्थात् यदि तुम ने नबियों* की यह बात मानी होती कि लौकिक जीवन अस्थायी है वास्तविक जीवन तो आख़िरत* ही है और आख़िरत* बाक़ी रहेगी, तो तुम आज के दिन की तैयारी करते; परन्तु अब क्या होता है अब तो तुम्हें अपने कुफ़्र* और इन्कार का मज़ा चखना होगा।

४० यह आयत सूरः के केन्द्रीय विषय पर प्रकाश डालती है।

४१ वह व्यर्थ काम कदापि नहीं कर सकता।

४२ दे० सूरः अल-आराफ़ फुट नोट १६।

४३ अल्लाह की पकड़ से बच कर वह कहीं नहीं जा सकता।

४४ सफलता तो ईमान* वालों के लिए है। दे० आयत १।

४५ अर्थात् जिस 'दुआ' और पुकार की ख़ातिर* लोग हँसी उड़ाते हैं (दे० आयत १०६-११०) तुम वही 'दुआ' और प्रार्थना मुख से करो।

* इस का अर्थ अन्तिम में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

आप ऊँट पर सवार हो गईं और वे ऊँट की नकेल पकड़ कर चल पड़े। यहाँ तक कि दोपहर के क़रीब क़ाफ़िले का साथ पकड़ लिया जब कि वह एक जगह पहुँच कर अभी ठहरा ही था। इसी पर तोहमत लगाने वालों ने आप पर तोहमत लगाई और इस में सब से बढ़ कर जिस ने हिस्सा लिया वह अब्दुल्लाह् इब्न उबई था। परन्तु *हज़रत आइशः रज़ि० को इस की कुछ भी ख़बर न हो सकी कि लोग आप के बारे* में क्या कह रहे हैं।

मदीना पहुँचने के बाद आप बीमार हो गईं और लग-भग एक महीने तक बीमार रहीं। नगर में आप के बारे में ख़बरें उड़ रही थीं; नबी सल्ल० के कानों तक बात पहुँच चुकी थी परन्तु हज़रत आइशः रज़ि० इस से बिलकुल बे-ख़बर रहीं। *यह आप अवश्य सोचती थीं कि नबी सल्ल० की वह कृपादृष्टि मुझ पर क्यों न रही* जो पहले बीमारी के समय में रहा करती थी। फिर आप नबी सल्ल० से इजाज़त ले कर अपनी माता के घर चली गईं।

एक रात ज़रूरत से बाहर गईं। आप के साथ मिसतह बिन उसासः की माँ भी थीं। रास्ते में उन्हें ठोकर लगी तो उन के मुँह से निकला : बरबाद हो मिसतह्! आप ने कहा : आप ऐसे व्यक्ति को कोसती हैं जो 'बद्र' की लड़ाई में शरीक हुआ है। उन्हों ने कहा : क्या सुना नहीं कि उस ने क्या कहा है। फिर उन्हों ने सारा क़िस्सा सुनाया[1]। आप को सुन कर बहुत दुःख हुआ; रात भर रोती रहीं।

नबी सल्ल० ने हज़रत अली रज़ि० और उसामः बिन ज़ैद को बुलाया और उन से इस बारे में राय ली। उसामः बिन ज़ैद रज़ि० ने कहा ; हे अल्लाह के रसूल*! भलाई के सिवा हम ने और कोई चीज़ आप (सल्ल०) की पत्नी में नहीं पाई। *हज़रत अली रज़ि० ने कहा : हे अल्लाह के रसूल* (सल्ल०) अल्लाह ने आप* पर तंगी नहीं की है स्त्रियाँ और बहुत हैं। और जाँच करनी चाहें तो आप (सल्ल०) अपनी लौंडी को बुला कर पूछें वह सच-सच बयान कर देगी। नबी सल्ल० ने लौंडी से पूछा तो उस ने कहा : क़सम है उस की जिस ने आप (सल्ल०) को सत्य के साथ भेजा है मैं ने उन में कोई ऐसी बात नहीं देखी कि उस पर दोष लगाऊँ। बस इतना अवगुण है कि मैं आटा गूँध कर किसी काम को जाती हूँ और कह जाती हूँ कि आटे को देखियेगा परन्तु वह सो जाती हैं और बकरी आ कर आटा खा जाती है। *उसी दिन नबी सल्ल० ने भाषण दिया और मुसलमानों के सामने अपना दुःख* प्रकट किया।

इस तोहमत की अफ़वाहें लग-भग एक महीने तक नगर में उड़ती रहीं। नबी सल्ल० अत्यन्त दुःखी रहे। हज़रत आइशः रज़ि० रोती रहीं। उन के माता-पिता अलग दुःखी थे। एक दिन नबी सल्ल० आप के पास आये और सलाम कर के बैठ गये। और कहा : आइशः मुझे तुम्हारे बारे में ऐसी ख़बरें पहुँची हैं यदि तुम निर्दोष हो तो आशा है कि अल्लाह तुम्हारे निर्दोष होने को ज़ाहिर कर देगा और यदि तुम से गुनाह हुआ हो तो अल्लाह से तौबः* करो और क्षमा माँगो बन्दा

[1] *मुनाफ़िक़ों* के सिवा मुसलमानों में से भी कुछ लोग इस अपयश के फैलाने में शरीक हो गये थे। उन मुसलमानों में एक मिसतह बिन उसासः भी थे।*

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

हुये तो रास्ते में एक पड़ाव पर हज़रत उमर रज़ि० के एक सेवक और ख़ज़रज क़बीले के एक शपथधारी व्यक्ति के बीच पानी पर झगड़ा हो गया। एक ने अनसार* को पुकारा दूसरे ने मुहाजिरों* को आवाज़ दी। दोनों तरफ़ के लोग आ गये और बीच-बचाव कर दिया। परन्तु अब्दुल्लाह इब्न उबई ने बात को बतंगड़ बना कर अनसार* को भड़काना शुरू कर दिया और उस ने क़सम खा कर यहाँ तक कहा कि मदीना पहुँचने के बाद जो हम में इज़्ज़त वाला है वह तुच्छ लोगों को निकाल बाहर कर देगा[1]। हज़रत उमर रज़ि० ने नबी सल्ल० से कहा कि इसे क़त्ल करा देना चाहिए। परन्तु नबी सल्ल० ने कहा : उमर लोग क्या कहेंगे कि मुहम्मद (सल्ल०) अपने ही साथियों को क़त्ल कर रहा है। फिर आप (सल्ल०) ने तुरन्त ही वहाँ से प्रस्थान करने का आदेश दे दिया और दूसरे दिन दोपहर तक कहीं पड़ाव नहीं लिया ताकि लोग थक कर सो जायें और उन्हें इधर-उधर की बातें करने का अवसर न मिल सके।

इस सफ़र में अब्दुल्लाह इब्न उबई ने नबी सल्ल० की पत्नी हज़रत आइशः रज़ि० पर झूठी तोहमत लगाई। नबी सल्ल० और आप (सल्ल०) के साथी यदि धैर्य और बुद्धिमानी से काम न लेते तो बहुत सम्भव था कि मुसलमानों में अचानक गृह-युद्ध छिड़ जाता।

हज़रत आइशः रज़ि० पर जो आरोप लगाया गया था उस का क़िस्सा हज़रत आइशः ने स्वयं बयान किया है। नबी सल्ल० जब कहीं सफ़र पर जाते तो चिट्ठी डाल कर यह फ़ैसला करते कि अपनी पत्नियों में से किसे साथ ले जायें। बनी मुस्तलिक़ की मुहिम के अवसर पर चिट्ठी हज़रत आइशः रज़ि० के नाम निकली। आप इस सफ़र में नबी सल्ल० के साथ गईं। यह सफ़र उस समय पेश आया था जब कि परदे का हुक्म उतर चुका था। इस लड़ाई से लौटते समय जब नबी सल्ल० और आप (सल्ल०) के साथी मदीना के निकट पहुँचे तो आप (सल्ल०) ने रात में एक जगह पड़ाव किया, अभी कुछ रात बाक़ी थी कि कूच की तैयारियाँ होने लगीं। हज़रत आइशः रज़ि० उठ कर ज़रूरत से बाहर गईं जब लौट कर पड़ाव के निकट पहुँचीं तो मालूम हुआ कि गले का हार कहीं रास्ते में टूट कर गिर गया है। हार की तलाश में आप को देर हो गई। इतने में क़ाफ़िले ने कूच कर दिया। कूच के समय आप ऊँट के कजावे में बैठ जाती थीं और चार आदमी उसे उठा कर ऊँट पर रख दिया करते थे। लोगों ने समझा कि आप कजावे में बैठ चुकी हैं उन्हों ने उसे उठा कर ऊँट पर रख दिया। जब आप वापस हुईं और देखा कि लोग जा चुके हैं, तो चादर ओढ़ कर वहीं लेट गईं और सोचा कि आगे चल कर जब मालूम हो जायेगा कि मैं पीछे रह गई हूँ तो लोग स्वयं ढूँढ़ने के लिए आयेंगे। इतने में आप को नींद आ गई। सवेरे के समय सफ़वान बिन मुअत्तल सलमी उस जगह से गुज़रे जहाँ आप सो रही थीं उन्हों ने आप को पहचान लिया इस लिए कि परदे का हुक्म आने से पूर्व वे आप को देख चुके थे। आप ने उन्हें देख कर तुरन्त अपने मुँह पर चादर डाल ली। उन्हों ने अपना ऊँट आप के निकट बिठा दिया और स्वयं अलग हट कर खड़े हो गये।

---

1 दे० सूरः अल-मुनाफ़िक़ून आयत 8।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

इस सूरः के तीन भाग हैं जिन में परस्पर गहरा सम्पर्क है। पहली आयत से ३३ वीं आयत तक सूरः का पहला भाग है। दूसरा भाग आयत ३४ से चलता है और आयत ४५ पर समाप्त होता है। सूरः का तीसरा भाग आयत ४६ से सूरः के अन्त तक चला गया है।

वार्तायें

इस सूरः की आयत ३५ जिस में अल्लाह के दिव्य प्रकाश का वर्णन है सब से अधिक उभरी हुई है। इस के अतिरिक्त इस सूरः की एक विशेषता यह है कि इस में अल्लाह के एक विशेष गुण 'मुबीन' (प्रकट, प्रकट करने वाला) का उल्लेख हुआ है। किसी और सूरः में इस गुण का उल्लेख नहीं किया गया है। हम कह सकते हैं कि यह सूरः दिव्य प्रकाश (Divine light) के वर्णन पर आधारित है। इस लोक में दिव्य प्रकाश की ज्योति जहाँ और बहुत से रूप में प्रतिबिम्बित दिखाई देती है वहाँ इस ज्योति का दिग्दर्शन विशेषतः न्याय के रूप में होता है। यदि न्याय का अस्तित्व न होता तो यह सृष्टि वास्तविक उद्देश्य से वंचित रह जाती। फिर संसार में हम किसी ज्ञान और हिकमत (Wisdom) की कल्पना नहीं कर सकते थे[१]। और न अल्लाह के अस्तित्व के लिए कोई प्रमाण ही हमें मिल सकता। और न इस अवस्था में आख़िरत* की कोई आशा ही की जा सकती थी। हर ओर भयानक अन्धकार होता। सदैव के लिए विनाश के मुख में चले जाने की भावना से बढ़ कर अन्धकार और क्या हो सकता है।

अल्लाह के प्रकाश से आसमान और ज़मीन परिपूर्ण हैं यदि इस प्रकाश से वंचित हैं तो वे लोग जो ईमान* नहीं रखते। अल्लाह उन्हीं लोगों को अपने प्रकाश की ओर ले जाता है जो ईमान* लाते हैं; *अल्लाह को याद करते और उस की अवज्ञा* से बचते हैं। ईमान* वालों के लिए तो प्रकाश-ही-प्रकाश है। उन के घर अल्लाह की अन्धकार-हीन आभा से चमक रहे होते हैं। उन के हृदय में स्वभावतः जो दिव्य ज्योति पाई जाती है वह वह्य* के प्रकाश से आलोकित हो उठती है। परन्तु जिन के दिल में ईमान* नहीं उन के लिए कोई प्रकाश नहीं। उन के लिए जीवन में अन्धकार-ही-अन्धकार है। उन की दृष्टि में यह भूमि एक अपरिचित ग्रह के अतिरिक्त और कुछ नहीं।

*इस सूरः में अल्लाह ने ऐसे नियमों की शिक्षा दी है जिन से हमारा गृहस्थ-*जीवन दीप्तिमान् हो सकता है। हमारे घर और व्यवहार में पूर्ण रूप से न्याय की स्थापना हो सकती है। हमारा जीवन सुखी हो सकता है। कलह-विग्रह और असन्तोष से हमें मुक्ति मिल सकती है।

यह सूरः जिस परिस्थिति में उतरी है उसे सामने रखते हुये उन आदेशों का अध्ययन कीजिए जो इस सूरः में दिये गये हैं। मुस्लिम* समाज और मुस्लिम घरों को बुराइयों से पाक रखने के लिए ज़रूरी है कि इस सूरः में दिये गये आदेशों और नियमों का पूर्णरूप से पालन किया जाये। इस सूरः में दिये गये आदेशों और नियमों का सारांश यह है:—

---

१ बल्कि न्याय के बिना तो संसार की सृष्टि ही सम्भव न थी।

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

जब अपने गुनाह को स्वीकार कर के तौबः* कर लेता है तो अल्लाह उसे क्षमा कर देता है। यह सुन कर हज़रत आइशः के आँसू शुष्क हो गये। उन्हों ने अपने पिता से कहा कि वे नबी सल्ल० की बात का उत्तर दें। उन्हों ने कहा कि मेरी समझ में कुछ नहीं आता कि अल्लाह के रसूल* सल्ल० से क्या कहूँ। फिर आप ने अपनी माता से कहा कि वे उत्तर दें। उन्हों ने भी यही कहा कि समझ में कुछ नहीं आता क्या कहूँ। फिर हज़रत आइशः रज़ि० ने कहा कि आप लोगों के कानों में एक बात पड़ गई है और वह दिलों में बैठ चुकी है यदि मैं कहूँ कि मैं बे-गुनाह हूँ तो आप लोग नहीं मानेंगे और यदि मैं एक ऐसी बात का इक़रार कर लूँ जो मैं ने नहीं की तो आप लोग मान लेंगे। सो अल्लाह की क़सम ऐसी हालत में मैं वही बात कहती हूँ जो हज़रत यूसुफ़ अ० के पिता ने कही थी कि 'फ़, सबरुन जमील' (अब तो श्रीमान सन्तोष है।)[1] यह कह कर हज़रत आइशः रज़ि० लेट गईं और दूसरी ओर करवट ले ली। हज़रत आइशः उस समय अपने दिल में कह रही थीं कि अल्लाह जानता है कि मैं निर्दोष हूँ वह अवश्य हक़ बात को खोल देगा। हज़रत आइशः रज़ि० का बयान है कि मैं इस की तो कल्पना नहीं कर सकती थी कि मेरे हक़ में क़ुरआन की आयतें उतरेंगी जो क़ियामत तक पढ़ी जायेंगी। मैं समझती थी कि नबी सल्ल० कोई स्वप्न देखेंगे जिस में अल्लाह मेरे निर्दोष होने को ज़ाहिर कर देगा।

नबी सल्ल० अभी यहीं थे कि आप (सल्ल०) पर वह्य* उतरनी शुरू हो गई। ऐसे अवसर पर शरद ऋतु में भी आप (सल्ल०) के चेहरे से पसीने की बूँदें टपकने लगती थीं। सब चुप हो गये कि देखिए अल्लाह क्या भेद खोलता है। हज़रत आइशः रज़ि० निश्चिन्त थीं। वह्य* उतरने के समय नबी सल्ल० की जो हालत हो जाती थी जब वह हालत दूर हुई तो आप (सल्ल०) अत्यन्त प्रसन्न थे। आप (सल्ल०) ने कहा : हे आइशः प्रसन्न हो जाओ अल्लाह ने तुम्हारे बे-गुनाह होने को ज़ाहिर कर दिया। फिर आप (सल्ल०) ने सूरः अन-नूर की १० आयतें सुनाईं जो उस समय आप (सल्ल०) पर उतरी थीं[2]। हज़रत आइशः रज़ि० की माता ने हज़रत आइशः रज़ि० से कहा : उठो और अल्लाह के रसूल* (सल्ल०) को धन्यवाद दो। हज़रत आइशः रज़ि० ने कहा : मैं न उन्हें धन्यवाद दूँगी और न आप दोनों को बल्कि अल्लाह को धन्यवाद देती हूँ कि उस ने वह्य* के द्वारा मेरा निर्दोष होना ज़ाहिर कर दिया।

केन्द्रीय विषय तथा सम्पर्क

इस सूरः का केन्द्रीय विषय स्त्रियों से सम्बन्धित शिष्ट एवं सभ्य आचरण तथा उत्तम व्यवहार की शिक्षा है। इसी लिए नबी सल्ल० ने हुक्म दिया है कि यह सूरः स्त्रियों को पढ़ाई जाये ताकि उन्हें अपने उत्तरदायित्वों के बारे में भली-भाँति ज्ञान हो सके। यह सूरः वास्तव में अपनी पिछली सूरः (अल-मोमिनून) की प्रारम्भिक आयतों की व्याख्या एवं विस्तार है।

---

१ जब हज़रत यूसुफ़ अ० के पिता हज़रत याक़ूब अ० के सामने उन के बेटे बिन यमीन पर चोरी का आरोप लगाया गया, तो आप ने यही कहा था (दे० सूरः यूसुफ़ आयत ८०–८३)।

२ अर्थात् आयत ११ से ले कर २१ तक।

**इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

इस सूरः के तीन भाग हैं जिन में परस्पर गहरा सम्पर्क है। पहली आयत से ३३ वीं आयत तक सूरः का पहला भाग है। दूसरा भाग आयत ३४ से चलता है और आयत ४५ पर समाप्त होता है। सूरः का तीसरा भाग आयत ४६ से सूरः के अन्त तक चला गया है।

वार्त्तायें

इस सूरः की आयत ३५ जिस में अल्लाह के दिव्य प्रकाश का वर्णन है सब से अधिक उभरी हुई है। इस के अतिरिक्त इस सूरः की एक विशेषता यह है कि इस में अल्लाह के एक विशेष गुण 'मुबीन' (प्रकट, प्रकट करने वाला) का उल्लेख हुआ है। किसी और सूरः में इस गुण का उल्लेख नहीं किया गया है। हम कह सकते हैं कि यह सूरः दिव्य प्रकाश (Divine light) के वर्णन पर आधारित है। इस लोक में दिव्य प्रकाश की ज्योति जहाँ और बहुत से रूप में प्रतिबिम्बित दिखाई देती है वहीं इस ज्योति का दिग्दर्शन विशेषतः न्याय के रूप में होता है। यदि न्याय का अस्तित्व न होता तो यह सृष्टि वास्तविक उद्देश्य से वंचित रह जाती। फिर संसार में हम किसी ज्ञान और हिकमत (Wisdom) की कल्पना नहीं कर सकते थे[1]। और न अल्लाह के अस्तित्व के लिए कोई प्रमाण ही हमें मिल सकता। और न इस अवस्था में आख़िरत* की कोई आशा ही की जा सकती थी। हर ओर भयानक अन्धकार होता। सदैव के लिए विनाश के मुख में चले जाने की भावना से बढ़ कर अन्धकार और क्या हो सकता है।

अल्लाह के प्रकाश से आसमान और ज़मीन परिपूर्ण हैं यदि इस प्रकाश से वंचित हैं तो वे लोग जो ईमान* नहीं रखते। अल्लाह उन्हीं लोगों को अपने प्रकाश की ओर ले जाता है जो ईमान* लाते हैं; अल्लाह को याद करते और उस की अवज्ञा से बचते हैं। ईमान* वालों के लिए तो प्रकाश-ही-प्रकाश है। उन के घर अल्लाह की अन्धकार-हीन आभा से चमक रहे होते हैं। उन के हृदय में स्वभावतः जो दिव्य ज्योति पाई जाती है वह वह्य* के प्रकाश से आलोकित हो उठती है। परन्तु जिन के दिल में ईमान* नहीं उन के लिए कोई प्रकाश नहीं। उन के लिए जीवन में अन्धकार-ही-अन्धकार है। उन की दृष्टि में यह भूमि एक अपरिचित गृह के अतिरिक्त और कुछ नहीं।

इस सूरः में अल्लाह ने ऐसे नियमों की शिक्षा दी है जिन से हमारा गृहस्थ-जीवन दीप्तिमान् हो सकता है। हमारे घर और व्यवहार में पूर्ण रूप से न्याय की स्थापना हो सकती है। हमारा जीवन सुखी हो सकता है। कलह-विग्रह और असन्तोष से हमें मुक्ति मिल सकती है।

यह सूरः जिस परिस्थिति में उतरी है उसे सामने रखते हुये उन आदेशों का अध्ययन कीजिए जो इस सूरः में दिये गये हैं। मुस्लिम* समाज और मुस्लिम घरों को बुराइयों से पाक रखने के लिए ज़रूरी है कि इस सूरः में दिये गये आदेशों और नियमों का पूर्णरूप से पालन किया जाये। इस सूरः में दिये गये आदेशों और नियमों का सारांश यह है:—

---

[1] *बल्कि न्याय के बिना तो संसार की सृष्टि ही सम्भव न थी।*

* *इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

हज़रत आइशाः रज़ि० पर लगाये गये आरोप के झूठे होने का एलान करते हुये कहा गया कि जिस समय तुम लोगों ने उसे सुना था, तो क्यों न ईमान* वाले पुरुषों और ईमान* वाली स्त्रियों ने अपने-आप से नेक गुमान कर के कह दिया : "यह तो एक खुली हुई झूठी तोहमत है" ।" इस तरह आँखें बन्द कर के किसी की लगाई हुई तोहमत को मान लेना उचित नहीं । तुम्हें देखना चाहिए कि तोहमत लगाने वाला कौन है और यह किस पर तोहमत लगा रहा है । जो लोग बुरी अफ़वाहें और उड़ती खबरें फैलाते और अश्लीलता का प्रचार करते हैं वे दण्ड के भागी हैं । मुसलमानों के लिए जो बात उचित है वह यही कि वे सदाशा और सद्भाव को अपने पारस्परिक सम्बन्धों का आधार बनायें; बिना प्रमाण के किसी व्यक्ति को कदापि अपराधी न ठहरायें ।

बताया गया कि वे खुले हुये लक्षण क्या हैं जिन से यह पहचाना जा सके कि सच्चे मुस्लिम* कौन लोग हैं और समाज के वे लोग कौन हैं जो वास्तव में मुनाफ़िक़* अथवा कपटाचारी हैं । अनुशासन पर विशेष ज़ोर दिया गया और इस सिलसिले में कुछ नियम भी निश्चित किये गये जिन का पालन करना मुसलमानों का कर्तव्य बताया गया ।

ज़िना (व्यभिचार) के बारे में आदेश दिया गया कि अपराधी को १०० कोड़ों की सज़ा दी जाये चाहे वह पुरुष हो या स्त्री । ईमान* वालों को रोका गया कि वे ऐसे पुरुषों या स्त्रियों से विवाह का नाता कदापि न जोड़ें जो बदकार हों । ऐसे व्यक्ति के लिए ८० कोड़ों की सज़ा निश्चित की गई जो दूसरे पर व्यभिचार का आरोप लगाये परन्तु अपने लगाये हुये आरोप के सिलसिले में ४ गवाह न ला सके । पति यदि अपनी पत्नी पर व्यभिचार का आरोप लगाये तो इस के लिए 'लिआन' का नियम निर्धारित किया गया । बताया गया कि समाज में स्त्रियों और पुरुषों का अविवाहित अवस्था में रहना उचित नहीं है । लौंडी* और गुलामों को भी अविवाहित अवस्था में बैठाये रखना ठीक नहीं उन का विवाह कर देना चाहिए ।

स्त्रियों और पुरुषों दोनों ही को यह हुक्म दिया गया कि वे अपनी निगाहों को नीची रखें । एक-दूसरे को घूरने और ताक-झाँक करने से बचें । स्त्रियों को हुक्म दिया गया कि वे अपने घरों में अपने सिर और सीने को ढांके रहें । बाप, पति, बेटे और अपने भाई आदि क़रीबी नातेदारों और घर के सेवकों के अतिरिक्त किसी के सामने बन-ठन कर कदापि न आयें । बाहर निकलें तो इस तरह कि उन का बनाव और शृंगार छिपा रहे । और भूमि पर इस तरह पाँव न रखें कि उन के ज़ेवरों की झंकार दूसरों के कानों तक पहुँचे । बूढ़ी स्त्रियाँ यदि अपने घरों में सिर से ओढ़नी उतार कर रख दें तो इस में कोई दोष नहीं है परन्तु उन्हें बन-ठन कर अपने-आप को दिखाने से बचना चाहिए । और यदि वे इस अवस्था में भी अपने पूरे वस्त्र के साथ रहें और अपने सिर पर ओढ़नी डाले रहें तो यह ज़्यादा अच्छा होगा ।

---

१ दे० आयत १२ ।

* का अर्थ आखिर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

घरेलू जीवन में घर के सेवकों और उन बच्चों के लिए भी जो अभी युवावस्था को न पहुँचे हों यह नियम ठहराया गया कि वे प्रातःकाल, दोपहर को और रात्रि के समय घर के किसी स्त्री या पुरुष के कमरे में अचानक प्रवेश न करें बल्कि प्रवेश करने से पहले उन्हें इजाज़त लेनी चाहिए इस लिए कि मालूम नहीं कौन किस हालत में है।

इस बात का एलान किया गया कि क़रीबी नातेदार या घनिष्ट मित्र यदि एक-दूसरे के यहाँ बिना इजाज़त लिये कुछ खा-पी लें जिस तरह वे अपने घर खाते-पीते हैं तो इस में कोई दोष नहीं। अन्धे, लूले, लंगडे और बीमार आदि विवश और असहाय लोग हर घर और हर जगह से खा सकते हैं विवशता के कारण उन का हक़ पूरे ही समाज पर है।

लौंडी* और ग़ुलामों के बारे में यह आदेश दिया गया कि यदि वे नेक हों तो उन्हें अविवाहित अवस्था में न रहने दो बल्कि उन का विवाह कर दो। और यदि वे अपनी स्वाधीनता के लिए लिखा-पढ़ी करनी चाहें तो लिखा-पढ़ी कर लेनी चाहिए[1]। उन के मालिकों के अतिरिक्त दूसरों को भी उन लौंडियों* और ग़ुलामों की माली सहायता करनी चाहिए।

सूरः* को समाप्त करते हुये इस बात पर विशेष ज़ोर दिया गया है कि ईमान* वालों को अल्लाह के रसूल* (सल्ल०) की बात दिल से माननी चाहिए। जब वे किसी सामूहिक काम के अवसर पर रसूल* के साथ हों तो रसूल* से इजाज़त लिये बिना कदापि न जायें। उन्हें अपने बीच रसूल* के बुलाने को आपस में एक-दूसरे का सा बुलाना नहीं समझना चाहिए। आसमानों और ज़मीन में जो-कुछ है अल्लाह का है। तुम्हारी जो नीति भी हो अल्लाह उसे जानता है। फिर तुम्हारे अच्छे-बुरे कर्मों का सम्बन्ध केवल इसी वर्तमान लोक से नहीं है बल्कि जब तुम अल्लाह के पास लौटोगे तो वह तुम्हें बता देगा कि तुम क्या कुछ करते रहे हो। वहां तुम्हें तुम्हारे कर्मों के अनुसार बदला दिया जायेगा।

---

[1] दे० आयत ३३।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अन-नूर

(मदीना में उतरी — आयतें* ६४)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
سُوْرَةٌ اَنْزَلْنٰهَا وَفَرَضْنٰهَا وَاَنْزَلْنَا فِيْهَآ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ لَّعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۝ اَلزَّانِيَةُ وَالزَّانِيْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ ۖ وَّلَا تَاْخُذْكُمْ بِهِمَا رَاْفَةٌ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَآئِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ اَلزَّانِيْ لَا يَنْكِحُ اِلَّا زَانِيَةً اَوْ مُشْرِكَةً ۖ وَّالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَآ اِلَّا زَانٍ اَوْ مُشْرِكٌ ۚ وَحُرِّمَ ذٰلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ۝

यह एक सूरः* है जिसे हम ने उतारा है और इसे हम ने अनिवार्य ठहराया है, और इस में हम ने साफ़-साफ़ आयतें* उतारी हैं, कदाचित् तुम चेतो। ○ ज़िना (व्यभिचार) करने वाली स्त्री और ज़िना करने वाला पुरुष, दोनों में से प्रत्येक को सौ कोड़े मारो[1]। और अल्लाह के दीन* के मामले में तुम्हें उन पर तरस न आये, यदि तुम अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान* रखते हो। और उन्हें सज़ा देते समय ईमान* वालों का एक गरोह मौजूद रहे। ○ ज़िना (व्यभिचार) करने वाला विवाह नहीं करता है परन्तु ज़िना करने वाली के साथ या शिर्क* करने वाली के साथ, और ज़िना करने वाली के साथ विवाह नहीं करता है परन्तु ज़िना करने वाला या शिर्क* करने वाला। और यह ईमान* वालों पर हराम हुआ है[2]। ○

---

१ यह सज़ा उन स्त्रियों और पुरुषों के लिए है जिन का विवाह न हुआ हो। यदि यह कर्म करने वाली स्त्री या पुरुष स्वतन्त्र न हो बल्कि किसी की दासता में जीवन व्यतीत करता हो, तो उस को सज़ा इस सज़ा की आधी होगी; उसे केवल पचास कोड़े मारेंगे (दे० सूरः अन-निसा आयत २५)। जो व्यक्ति बुद्धि-हीन हो या अभी उस ने बाल्यावस्था को पार न किया हो उसे दण्ड नहीं देंगे।

यह बात कि उन स्त्रियों और पुरुषों की सज़ा क्या है जिन का विवाह हो चुका हो। जो लोग बाल्यावस्था को पार कर चुके हैं; बुद्धि-हीन भी नहीं हैं। स्वतन्त्र हैं, किसी की दासता में जीवन व्यतीत नहीं करते। उन का विवाह भी हो गया है और सम्भोग भी कर चुके हैं। ऐसे स्त्री या पुरुष को नबी* सल्ल० ने और आप (सल्ल०) के बाद आप (सल्ल०) के चारों खलीफ़ा (रज़ि०) ने अपने-अपने समय में 'रज्म' की सज़ा दी है। ऐसे अपराधियों को 'रज्म' की सज़ा में अपराधी पर पथराव करते हैं यहाँ तक कि उस की मृत्यु हो जाती है। [illegible] 'रज्म' की सज़ा इस लिए दी जाती है कि उन का अपराध हद दर्जा बढ़ा हुआ है। उन्हों ने [illegible] की पूर्ति कर सकते थे परन्तु उन्हों ने अपनी इस इच्छा की पूर्ति के लिए मर्यादा का उल्लंघन किया। [illegible] वह मार्ग अपनाया जो बिगाड़ और विनाश का मार्ग है। जिस से मानव-समाज और सभ्यता की [illegible] जाती है। ऐसे [illegible] और बिगाड़ पैदा करने वालों को कठोर दण्ड मिलना ही चाहिए ताकि दूसरे लोग इस से शिक्षा ग्रहण करें और समाज इस तरह की बुराइयों से पाक रह सके। सूरः अल-माइदः आयत ३३ में कहा गया है : जो लोग अल्लाह और उस के रसूल* से लड़ते हैं और ज़मीन में फ़साद फैलाने के लिए दौड़-धूप करते हैं उन की सज़ा यही है कि बुरी तरह क़त्ल किये जायें या सूली पर चढ़ाये जायें, या उन के हाथ और उन के पाँव विपरीत दिशाओं से काट डाले जायें, या उन्हें देश-निकाला दे दिया जाये। [illegible] फ़ितने, बिगाड़ और फ़साद से कम नहीं हैं।

२ अर्थात् ज़िना करने वाला जब तक तौबा* न कर ले उस के लिए [illegible] ही उचित है [illegible] वह स्त्री जो शिर्क* की गन्दगी में लिप्त हुई हो। इस आयत में ज़िना (व्यभिचार) करने वाले पुरुष या स्त्री और शिर्क* करने वाले पुरुष या स्त्री का उल्लेख एक साथ किया गया है। ज़िना और शिर्क* में [illegible] बड़ी अनुकूलता पाई जाती है। यही कारण है कि बाइबल में [illegible] शिर्क* की उपमा ज़िना (व्यभिचार) से दी गई है। उदाहरण के लिए देखें : 'ख़ुरूज' (Ex.) ३४ : १४-१७, [illegible] (Lev.) २० : ५-६, 'इस्तिस्ना' (Deut.) ३१ : १६-१७, [illegible] (Isaiah) [illegible] को सूची में देखें।

* इन का अर्थ अन्त में आये हुए पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

और जो लोग सतवन्ती स्त्रियों पर तोहमत लगायें फिर चार गवाह न लायें, उन्हें अस्सी कोड़े मारो और कभी भी उन की गवाही क़बूल न करो —और वही सीमोल्लंघन करने वाले हैं[३] —। ○ सिवाय उन लोगों के जिन्हों ने इस के बाद तौबः* कर ली और सुधर गये। तो निश्चय ही अल्लाह बड़ा ४ क्षमाशील और दयावन्त है। ○

और जो लोग अपनी पत्नियों पर आरोप लगायें और उन के पास स्वयं उन के अपने सिवा गवाह न हों; तो उन में से हर एक की गवाही चार गवाही देना है अल्लाह की क़सम खा कर कि वह (आरोप लगाने में) सच्चा है; ○ और पाँचवीं बार, यह (कहे) कि उस पर अल्लाह की फिटकार हो यदि वह (आरोप लगाने में) झूठा हो। ○ और उस स्त्री से सज़ा[४] इस तरह टल सकती है कि वह चार बार अल्लाह की क़सम खा कर गवाही दे कि निश्चय ही यह झूठा है, ○ और पाँचवीं बार कहे कि उस पर अल्लाह का ग़ज़ब (प्रकोप) हो यदि वह (अपने आरोप में) सच्चा हो[५]। ○

مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۚ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ
اَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ شُهَدَآءُ اِلَّآ اَنْفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ اَحَدِهِمْ
اَرْبَعُ شَهٰدٰتٍ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝ وَالْخَامِسَةُ اَنَّ لَعْنَتَ
اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ كَانَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝ وَيَدْرَؤُا عَنْهَا الْعَذَابَ اَنْ
تَشْهَدَ اَرْبَعَ شَهٰدٰتٍ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝ وَالْخَامِسَةَ
اَنَّ غَضَبَ اللّٰهِ عَلَيْهَآ اِنْ كَانَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝ وَلَوْلَا فَضْلُ
اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ حَكِيْمٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ جَآءُوْ
بِالْاِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنْكُمْ ۗ لَا تَحْسَبُوْهُ شَرًّا لَّكُمْ ۗ بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۗ
لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ مَّا اكْتَسَبَ مِنَ الْاِثْمِ ۚ وَالَّذِيْ تَوَلّٰى كِبْرَهٗ
مِنْهُمْ لَهٗ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝ لَوْلَآ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُوْنَ وَ
الْمُؤْمِنٰتُ بِاَنْفُسِهِمْ خَيْرًا ۙ وَّقَالُوْا هٰذَآ اِفْكٌ مُّبِيْنٌ ۝ لَوْلَا
جَآءُوْ عَلَيْهِ بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ ۚ فَاِذْ لَمْ يَاْتُوْا بِالشُّهَدَآءِ فَاُولٰٓئِكَ
عِنْدَ اللّٰهِ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ۝ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ فِى
الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِيْ مَآ اَفَضْتُمْ فِيْهِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝ اِذْ
تَلَقَّوْنَهٗ بِاَلْسِنَتِكُمْ وَتَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِكُمْ مَّا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ وَّتَحْسَبُوْنَهٗ
هَيِّنًا ۖ وَّهُوَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمٌ ۝ وَلَوْلَآ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ قُلْتُمْ مَّا يَكُوْنُ
لَنَآ اَنْ نَّتَكَلَّمَ بِهٰذَا ۖ سُبْحٰنَكَ هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيْمٌ ۝ يَعِظُكُمُ

५७ : ३-६, 'यरमियाह' (Jermiah) २ : ५-२८, ३ : १६।

शिर्क* को क़ुरआन में "बहुत बड़ा ज़ुल्म" कहा गया है (दे० सूरः लुक़मान आयत १३)। ज़ुल्म का अर्थ होता है अन्याय, हक़ मारना या हक़तलफ़ी करना। मनुष्य पर सब से बड़ा हक़ अल्लाह का है उस के हक़ में किसी को शरीक करना सब से बड़ा ज़ुल्म है। 'ज़िना' (व्यभिचार) भी हक़ मारने और स्वत्व हरण ही का दूसरा नाम है; चाहे यह बे-वफ़ाई और विश्वासघात स्त्री की ओर से हो या पुरुष की ओर से। स्वत्व हरण और हक़तलफ़ी अत्यन्त नीच-कर्म और नैतिकता के विरुद्ध है। जिस प्रकार पुरुष अपनी पत्नी के दूसरे अपराधों को तो क्षमा कर सकता है परन्तु वह उस की बदचलनी और बे-वफ़ाई को क्षमा नहीं कर सकता ठीक इसी प्रकार अल्लाह भी लोगों के और गुनाहों को तो क्षमा कर सकता है परन्तु शिर्क* को वह कभी भी क्षमा नहीं करेगा शिर्क* करने वाले सदा दोज़ख़* की अग्नि में जलते रहेंगे (दे० सूरः अन-निसा आयत ४८)। शिर्क* उस के गौरव और आत्मप्रतिष्ठा के सर्वथा प्रतिकूल है। ज़िना और शिर्क* की इसी पारस्परिक अनुरूपता के कारण क़ुरआन में विभिन्न स्थानों पर शिर्क* को 'रिज्स' अर्थात् नापाकी (गन्दगी) और शिर्क करने वालों को 'नज्स' अर्थात् नापाक कहा गया है।

३ इसी तरह सच्चरित्र पुरुषों पर यदि कोई झूठा कलंक लगाये तो उस का भी यही हुक्म है कि कलंक लगाने वाला या तो चार गवाह पेश करे नहीं तो उस पर अस्सी कोड़े मारे जायेंगे। यदि कोई व्यक्ति किसी पर ज़िना (व्यभिचार) का आरोप लगाता है तो उसे चाहिए चार गवाह पेश कर के पूर्ण रूप से अपने लगाये हुवे आरोप को सिद्ध करे यदि वह चार गवाह पेश नहीं करता तो उस पर अस्सी कोड़े बरसाओ ताकि बिना गवाही के किसी को इस तरह की बात कहने का साहस न हो सके। यदि किसी व्यक्ति ने किसी को बदकारी करते हुवे देखा भी हो तब भी उसे चुप रहना चाहिए। हाँ यदि उसके साथ चार और आदमियों ने देखा हो और वे गवाही देने के लिए तैयार हों तो वह इस मामले को हाकिम के सामने ला सकता है। ज़िना के आरोप के लिए पारिभाषिक शब्द 'क़ज़्फ़' प्रयोग होता है।

४ इस से अभिप्रेत वही १०० कोड़ों की सज़ा है जिस का उल्लेख ऊपर हो चुका है।

५ ऊपर आयत ४ में ज़िना की तोहमत लगाने के बारे में जो हुक्म बयान हुआ है उस हुक्म के उतरने के बाद लोगों में यह सवाल पैदा हुआ कि किसी दूसरे पुरुष और स्त्री की बदचलनी को (शेष अगले पृष्ठ पर)

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

الله أن تعودوا لمثله أبدا إن كنتم مؤمنين ويبين الله لكم
الآيات والله عليم حكيم إن الذين يحبون أن تشيع الفاحشة
في الذين آمنوا لهم عذاب أليم في الدنيا والآخرة والله يعلم وأنتم
لا تعلمون ولولا فضل الله عليكم ورحمته وأن الله رءوف
رحيم يا أيها الذين آمنوا لا تتبعوا خطوات الشيطان ومن
يتبع خطوات الشيطان فإنه يأمر بالفحشاء والمنكر ولولا فضل
الله عليكم ورحمته ما زكى منكم من أحد أبدا ولكن الله يزكي
من يشاء والله سميع عليم ولا يأتل أولو الفضل منكم و
السعة أن يؤتوا أولي القربى والمساكين والمهاجرين في سبيل
الله وليعفوا وليصفحوا ألا تحبون أن يغفر الله لكم والله غفور
رحيم إن الذين يرمون المحصنات الغافلات المؤمنات لعنوا في
الدنيا والآخرة ولهم عذاب عظيم يوم تشهد عليهم ألسنتهم
وأيديهم وأرجلهم بما كانوا يعملون يومئذ يوفيهم الله دينهم
الحق ويعلمون أن الله هو الحق المبين الخبيثات للخبيثين
والخبيثون للخبيثات والطيبات للطيبين والطيبون للطيبات
أولئك مبرءون مما يقولون لهم مغفرة ورزق كريم يا أيها
الذين آمنوا لا تدخلوا بيوتا غير بيوتكم حتى تستأنسوا وتسلموا

यदि तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की दया न होती, (तो आपत्ति में पड़ जाते) निस्सन्देह अल्लाह बड़ा मेहरबान और हिकमत* वाला है।○ १०

जो लोग यह झूठा कलंक (तोहमत) गढ़ लाये हैं[६] वह तुम में से ही एक टोली है[७]। इसे अपने हक़ में बुरा न समझो; बल्कि, यह तुम्हारे हक़ में अच्छा ही है। उन में से प्रत्येक व्यक्ति के लिए वही है जो-कुछ उस ने गुनाह कमाया; और उन में से जिस व्यक्ति ने इस (झूठे कलंक) के बड़े हिस्से का ज़िम्मा अपने सिर लिया,[८] उस के लिए बड़ा अज़ाब है।○

जिस समय तुम लोगों ने उसे सुना था, तो क्यों न ईमान* वाले पुरुषों, और ईमान* वाली स्त्रियों ने अपने बारे में अच्छा गुमान कर के कह दिया : यह तो एक खुली हुई झूठी तोहमत है!○ वे इस (इल्ज़ाम) पर चार गवाह क्यों नहीं लाये? तो जब वे गवाह नहीं लाये, तो अल्लाह के नज़दीक[९] वही झूठे हैं।○ और यदि तुम लोगों पर दुनिया और आख़िरत* में अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की दयालुता न होती तो जिस चर्चा में तुम पड़ गये उस के बदले में तुम्हें एक बड़ा अज़ाब आ लेता[१०]।○ (सोचो तो) जब तुम उस (झूठ) को अपनी ज़बानों पर लेते जा रहे थे, और तुम अपने मुँह से वह-कुछ कहे जा रहे थे जिस के बारे में तुम्हें कोई ज्ञान न था, तुम उसे एक साधारण बात समझ रहे थे, हालांकि अल्लाह के नज़दीक वह बहुत भारी बात थी।○ १५ जब तुम ने उसे सुना था, क्यों न कह दिया : हमें उचित नहीं कि ऐसी बात ज़बान से निकालें। तू महिमावान है (हे अल्लाह), यह तो एक बहुत बड़ा झूठा कलंक है।○ अल्लाह तुम्हें नसीहत करता है कि फिर कभी ऐसा काम न करना, यदि तुम ईमान* वाले

देख कर तो आदमी चुप रह सकता है परन्तु यदि किसी ने अपनी स्त्री को कुकर्म करते हुये देख लिया तो वह कैसे चुप रह सकता है? फिर यह आयत* उतरी जिस में अल्लाह ने बताया है कि ऐसे किसी मामले का निपटारा कैसे किया जायेगा। निर्णय का जो नियम इस आयत में निर्धारित किया गया है उस के लिए पारिभाषिक शब्द 'लिआन' प्रयोग होता है। 'लिआन' के बाद पति-पत्नी को एक-दूसरे से अलग कर दिया जायेगा। जब पति और पत्नी दोनों ने 'लिआन' कर दिया, तो दोनों में से किसी को सज़ा नहीं दी जायेगी। पति यदि कहता है कि बच्चा उस का नहीं है तो वह बच्चा माँ का समझा जायेगा। वह माँ का वारिस होगा और माँ उस की वारिस होगी बाप से वह मीरास नहीं पायेगा। उसे हरामी या वर्ण-संकर कहने का हक़ किसी को नहीं होगा। पति को स्त्री का महर* अदा करना होगा, स्त्री को महर* से वंचित नहीं किया जायेगा।

६ यह संकेत उस झूठे कलंक की ओर है जो नबी सल्ल० की धर्मपत्नी हज़रत आइशः रज़ि० पर लगाया गया था (दे० सूरः की भूमिका)।

७ इस बात के फैलाने वाले कुछ तो मुनाफ़िक़* लोग थे और कुछ वे मुसलमान थे जो अपनी कमज़ोरी और भूल के कारण इस फ़ितने में न बच सके।

८ यह संकेत मुनाफ़िक़ों के सरदार अब्दुल्लाह इब्न उबई की ओर है जो इस तुहमत का गढ़ने वाला और इस फ़ितने का उठाने वाला था।

९ अर्थात् अल्लाह के उतारे हुये क़ानून की दृष्टि से।

१० दुनिया और आख़िरत* में ईमान* वालों पर अल्लाह की बड़ी दयालुता और (शेष अगले पृष्ठ पर)

* इस का अर्थ आख़िर में दिए हुए पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

हो। ○ और अल्लाह (अपनी) आयतों* को तुम्हारे लिए स्पष्ट रूप से बयान करता है। और अल्लाह सब-कुछ जानने वाला और हिकमत* वाला है। ○

जो लोग चाहते हैं कि ईमान* लाने वालों में अश्लीलता फैले,[11] उन के लिए दुनियाँ और आख़िरत* में दुःखदायी अज़ाब है। अल्लाह जानता है। और तुम नहीं जानते। ○

और यदि अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की दयालुता तुम पर न होती, (तो क्या कुछ न २० होता) और यह कि अल्लाह करुणामय और दया करने वाला है। ○

हे लोगो जो ईमान* लाये हो! शैतान* के क़दमों का अनुसरण न करो। जो कोई शैतान* के क़दमों का अनुसरण करेगा, तो वह तो उसे अश्लीलता और बुराई ही का हुक्म देगा। और यदि अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की दयालुता तुम पर न होती, तो तुम में से कोई एक भी कभी पाक न होता। परन्तु अल्लाह जिसे चाहता है पाक करता है। और अल्लाह सुनने और जानने वाला है। तुम में जो फ़ज़्ल (बड़ाई) वाले और सामर्थ्यवान हैं वे इस बात की क़सम न खा बैठें कि अपने नातेदारों, मुहताजों, और अल्लाह की राह में हिजरत* करने वालों को कुछ न देंगे। उन्हें चाहिए कि क्षमा कर दें और छोड़ दें। क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें क्षमा करे? अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है[12]। ○

जो लोग सतवन्ती, बे-ख़बर[13] ईमान* वाली स्त्रियों पर झूठा कलंक लगाते हैं, उन पर दुनियाँ और आख़िरत में लानत (धिक्कार) की गई। और उन के लिए बड़ा अज़ाब है। ○ (वे उस दिन को न भूल जायें) जिस दिन कि उन की ज़ुबानें और उन के हाथ और उन के पाँव उन के विरुद्ध उस चीज़ की गवाही देंगे जो-कुछ वे करते थे, ○ उस दिन अल्लाह उन्हें २५ उन का ठीक बदला पूरा-पूरा दे देगा, और वे जान लेंगे कि अल्लाह ही प्रकट सत्य है। ○

नापाक स्त्रियाँ नापाक पुरुषों के लिए हैं, और नापाक पुरुष नापाक स्त्रियों के लिए। पाक स्त्रियाँ पाक पुरुषों के लिए हैं, और पाक पुरुष पाक स्त्रियों के लिए; ये उस से पाक हैं जो वे कहते हैं; इन के लिए क्षमा है और सम्मानित आजीविका। ○

हे लोगो जो ईमान* लाये हो! अपने घरों के सिवा दूसरे घरों में न प्रवेश किया करो जब तक कि रज़ामन्दी न ले लो और उन (घरों) के रहने वालों पर सलाम न भेज लो, यह तुम्हारे लिए अच्छा है। कदाचित् तुम याद रखो। ○ फिर यदि उन में किसी को न पाओ,

---

हुआ है। इन के विपरीत मुनाफ़िक़ों* के लिए दुनियाँ और आख़िरत* में दुःखदायी अज़ाब है। ये वही मुनाफ़िक़* हैं जो अश्लीलता का प्रचार करते और फ़साद फैलाते फिरते हैं (दे० आयत ११ और १६)।

११ ऐसा वही लोग करते हैं जिन में एक-दूसरे के प्रति दुर्भावना होती है जो सदाशा और सद्भावना से काम नहीं लेते।

१२ जब ऊपर की आयतें* उतरीं और यह बात खुल गई कि हज़रत आइशः रज़ि० पर कलंक लगाने वाले झूठे हैं, तो हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने जो हज़रत आइशः के पिता होते थे यह क़सम खा ली कि अब हम आगे मिस्तः बिन उसासः की सहायता नहीं करेंगे। मिस्तः हज़रत अबू बक्र रज़ि० के नातेदारों में से थे, वे निर्धन थे हज़रत अबू बक्र रज़ि० उन की माली सहायता किया करते थे। संयोग से तोहमत की चर्चा में यह भी शरीक हो गये थे। जब हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने क़सम खा ली कि उन की सहायता नहीं करेंगे, तो इस पर यह आयत उतरी। इसे सुनते ही हज़रत अबू बक्र रज़ि० बोल उठे: अल्लाह की क़सम हम अवश्य चाहते हैं हे हमारे रब* कि तू हमें क्षमा कर दे। फिर आप उन की सहायता करने लग गये। हज़रत अबू बक्र के मानेरिक कुछ और सहाबः* ने भी क़सम खाई थी कि जो लोग तोहमत लगाने में शरीक रहे हैं उन की सहायता न करेंगे। इस आयत के उतरने के बाद सब के दिल साफ़ हो गये।

१३ अर्थात् वे सीधी-सादी स्त्रियाँ जिन के दिल पाक होते हैं; जो बदचलनी की बातों से बे-ख़बर होती हैं।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

तो उन में प्रवेश न करो जब तक कि तुम्हें इजाज़त न दी जावे[१४]। और यदि तुम से कहा जाये कि लौट जाओ, तो लौट जाया करो, यह तुम्हारे लिए अधिक शुद्धता की बात है। अल्लाह जानता है जो-कुछ तुम करते हो। ○ इस में तुम पर कोई दोष नहीं है कि तुम ऐसे घरों में प्रवेश करो जिन में कोई रहता न हो जिन में तुम्हारे फ़ायदे की कोई चीज़ हो[१५]। अल्लाह जानता है जो-कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो-कुछ छिपाते हो। ○

(हे नबी* !) ईमान* वालों से कहो : वे अपनी निगाहें नीची रखें[१६] और अपनी शर्मगाहों (गुह्य अंगों) की रक्षा करें। यह उन के लिए अधिक शुद्धता की बात है। निस्सन्देह अल्लाह उस की ख़बर रखता है जो-कुछ वे करते हैं। ○ ३०

और (हे नबी* !) ईमान* वाली स्त्रियों से कहो कि वे अपनी निगाहें नीची रखें[१७] और अपनी शर्मगाहों (गुह्य इन्द्रियों) की रक्षा करें, और अपना शृंगार न दिखायें सिवाय उस के जो उस में से ज़ाहिर रहे, और अपने सीनों (वक्ष-स्थल) पर अपनी ओढ़नियों के अञ्चल डाले रहें,[१८] और वे अपना शृंगार किसी पर ज़ाहिर न करें सिवाय अपने पति के या अपने पिता[१९] के या अपने पति के पिता के, या अपने बेटों[२०] के या अपने पति के बेटों के, या अपने भाई के या अपने भाइयों[२१] के बेटों के या अपनी बहिनों के बेटों[२२] के, या अपनी स्त्रियों[२३] के, या जिन पर उन्हें स्वामित्व का अधिकार प्राप्त हो[२४] उन के या उन अधीन पुरुषों (नौकर-चाकर) के जो कोई (और) प्रयोजन न रखते हों,[२५] या उन बच्चों के जो स्त्रियों की छिपी बातों से परिचित न हों। और वे अपने पाँव भूमि पर मारती हुई न चलें कि अपना जो शृंगार छिपा रखा हो लोगों को उस की ख़बर हो जाये।[२६] हे ईमान वालो ! तुम सब मिल कर अल्लाह

---

१४ अर्थात् किसी ख़ाली घर में प्रवेश करना भी ठीक नहीं है जब तक कि उस घर के मालिक ने तुम्हें इस की इजाज़त न दे रखी हो।

१५ जैसे दुकानें; सराय, धर्मशाला आदि।

१६ अर्थात् पराई स्त्रियों को न देखें, दूसरों की शर्मगाहों पर निगाह न डालें और बे-शर्मी की चीज़ों पर निगाह न जमायें। नबी सल्ल० के कथन से मालूम होता है कि आदमी अपनी समस्त इन्द्रियों से व्यभिचार करता है। देखना आँखों का व्यभिचार है, लगावट की बात-चीत जिह्वा का व्यभिचार है, आवाज़ से आनन्द लेना कानों का व्यभिचार है, हाथ लगाना और अनुचित और अवैध उद्देश्य से चलना हाथ-पाँव का व्यभिचार है। बदकारी की ये समस्त आरम्भिक बातें जब पूरी हो चुकती हैं तब शर्मगाहें या तो इस की पूर्ति कर देती हैं या पूर्ति करने से रह जाती हैं।

हिन्दू शास्त्र विधि के अनुसार भी अपनी स्त्री या अपने पति के अतिरिक्त दूसरे का चिन्तन करना स्त्री-पुरुष दोनों के लिए व्यभिचार है। यही कारण है कि आठ प्रकार के मैथुन बतला कर उन का निषेध किया गया है:

श्रवण कीर्तनं केलिः प्रेक्षणं गुह्यभाषणम्।
सङ्कल्पोऽध्यवसायश्च कार्यनिष्पत्तिरेव च ॥

अर्थात्, पर-तिरिया सम्बन्धित चर्चा सुनना, कहना, पर-स्त्री के संग खेलना, उन्हें देखना, गुप्त बात करना, संकल्प करना, प्रयत्न करना और अंग-संग करना — ये आठ प्रकार के मैथुन हैं।

नबी सल्ल० ने कहा है कि अल्लाह कहता है : निगाह इबलीस* (शैतान) के ज़हरीले तीरों में से एक तीर है जो व्यक्ति मुझ से डर कर उसे छोड़ देगा मैं उस के बदले उसे ऐसा ईमान* प्रदान करूँगा जिस की मिठास वह अपने दिल में पायेगा (तबरानी)। आप (सल्ल०) ने कहा है : जिस मुसलमान की निगाह किसी स्त्री की सुन्दरता पर पड़े और वह अपनी निगाह नीची कर ले तो अल्लाह उस की इबादत* में मिठास पैदा कर देता है (मुसनद अहमद)।

अल्लाह के भय से जब मनुष्य क्षणिक आनन्द के वशीभूत न हो कर अपनी निगाहें बचा लेता है तो अल्लाह उसे इस लोक में भी ईमान* का स्थायी और यथार्थ आनन्द प्रदान करता है।

(१७ से २५ तक अगले पृष्ठ पर देखें)

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

عَلٰٓى اَهۡلِهَا ذٰلِكُمۡ خَيۡرٌ لَّكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَذَكَّرُوۡنَ ۝ فَاِنۡ لَّمۡ تَجِدُوۡا فِيۡهَاۤ
اَحَدًا فَلَا تَدۡخُلُوۡهَا حَتّٰى يُؤۡذَنَ لَكُمۡ ۚ وَاِنۡ قِيۡلَ لَكُمُ ارۡجِعُوۡا فَارۡجِعُوۡا
هُوَ اَزۡكٰى لَكُمۡ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ عَلِيۡمٌ ۝ لَيۡسَ عَلَيۡكُمۡ جُنَاحٌ اَنۡ
تَدۡخُلُوۡا بُيُوۡتًا غَيۡرَ مَسۡكُوۡنَةٍ فِيۡهَا مَتَاعٌ لَّكُمۡ ؕ وَاللّٰهُ يَعۡلَمُ مَا تُبۡدُوۡنَ
وَمَا تَكۡتُمُوۡنَ ۝ قُلْ لِّلۡمُؤۡمِنِيۡنَ يَغُضُّوۡا مِنۡ اَبۡصَارِهِمۡ وَيَحۡفَظُوۡا
فُرُوۡجَهُمۡ ؕ ذٰلِكَ اَزۡكٰى لَهُمۡ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيۡرٌ ۢ بِمَا يَصۡنَعُوۡنَ ۝ وَقُلْ
لِّلۡمُؤۡمِنٰتِ يَغۡضُضۡنَ مِنۡ اَبۡصَارِهِنَّ وَيَحۡفَظۡنَ فُرُوۡجَهُنَّ وَلَا
يُبۡدِيۡنَ زِيۡنَتَهُنَّ اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنۡهَا وَلۡيَـضۡرِبۡنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلٰى
جُيُوۡبِهِنَّ ۖ وَلَا يُبۡدِيۡنَ زِيۡنَتَهُنَّ اِلَّا لِبُعُوۡلَتِهِنَّ اَوۡ اٰبَآئِهِنَّ اَوۡ اٰبَآءِ
بُعُوۡلَتِهِنَّ اَوۡ اَبۡنَآئِهِنَّ اَوۡ اَبۡنَآءِ بُعُوۡلَتِهِنَّ اَوۡ اِخۡوَانِهِنَّ اَوۡ بَنِىۡۤ اِخۡوَانِهِنَّ
اَوۡ بَنِىۡۤ اَخَوٰتِهِنَّ اَوۡ نِسَآئِهِنَّ اَوۡ مَا مَلَكَتۡ اَيۡمَانُهُنَّ اَوِ التّٰبِعِيۡنَ غَيۡرِ
اُولِى الۡاِرۡبَةِ مِنَ الرِّجَالِ اَوِ الطِّفۡلِ الَّذِيۡنَ لَمۡ يَظۡهَرُوۡا عَلٰى عَوۡرٰتِ
النِّسَآءِ ۖ وَلَا يَضۡرِبۡنَ بِاَرۡجُلِهِنَّ لِيُـعۡلَمَ مَا يُخۡفِيۡنَ مِنۡ زِيۡنَتِهِنَّ ؕ وَ
تُوۡبُوۡۤا اِلَى اللّٰهِ جَمِيۡعًا اَيُّهَ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ لَعَلَّكُمۡ تُفۡلِحُوۡنَ ۝ وَاَنۡكِحُوا
الۡاَيَامٰى مِنۡكُمۡ وَالصّٰلِحِيۡنَ مِنۡ عِبَادِكُمۡ وَاِمَآئِكُمۡ ؕ اِنۡ يَّكُوۡنُوۡا
فُقَرَآءَ يُغۡنِهِمُ اللّٰهُ مِنۡ فَضۡلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيۡمٌ ۝ وَلۡيَسۡتَعۡفِفِ
الَّذِيۡنَ لَا يَجِدُوۡنَ نِكَاحًا حَتّٰى يُغۡنِيَهُمُ اللّٰهُ مِنۡ فَضۡلِهٖ ؕ وَالَّذِيۡنَ

से तौबः* करो, कदाचित् तुम्हें सफलता प्राप्त हो।○

तुम में जो एकाकी (अर्थात् बे-जोड़े के अविवाहित अवस्था में) हों और तुम्हारे ग़ुलामों* और तुम्हारी लौंडियों में जो नेक हों उन का विवाह कर दो। यदि वे ग़रीब होंगे तो अल्लाह अपने फ़ज़्ल (कृपा) से उन्हें सम्पन्न कर देगा। अल्लाह (बड़ी) समाई वाला और (सब-कुछ) जानने वाला है।○ और जिन्हें विवाह का अवसर प्राप्त न हो उन्हें चाहिए कि अपने-आप को बचाये रखें (संयम पूर्वक रहें) यहां तक कि अल्लाह अपने फ़ज़्ल (कृपा) से उन्हें सम्पन्न कर दे।

और उन लोगों में जिन पर तुम्हें स्वामित्व का अधिकार प्राप्त हो जो (अपनी स्वाधीनता के लिए) लिखा-पढ़ी करनी[२३] चाहें, उन से लिखा-पढ़ी कर लो यदि तुम्हें मालूम हो कि उन में भलाई है, और उन्हें उस माल में से दो जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है[२४]। और अपनी लौंडियों को सांसारिक जीवन का लाभ प्राप्त करने के लिए दुश्चरित्रता[२५] पर विवश न करो, जब कि वे सतवन्ती (और विवाहिता हो कर) रहना चाहती हों। और जो कोई उन्हें विवश करेगा, तो निश्चय ही

१७ जिस प्रकार पुरुष को पराई स्त्री को देखना न चाहिए उसी प्रकार स्त्रियों को भी पराये पुरुष को नहीं देखना चाहिए। और यदि निगाह पड़ जाये तो तुरन्त ही हटा लेनी चाहिए। पुरुषों की तरह उन्हें भी दूसरों के छुपे अंगों के देखने से बचना चाहिए। वेद की भी शिक्षा है :—

अधः पश्यस्व मोपरि सन्तरां पादकौ हर ।
मा ते कशप्लकौ दृश्यन्स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ ॥

अर्थात् साध्वी नारी ! तुम नीचे देखा करो; ऊपर न देखो। पैरों को परस्पर मिलाये रखो। वस्त्र इस प्रकार पहनो जिस से तुम्हारे ओष्ट तथा कटि के नीचे के भाग पर किसी की दृष्टि न पड़े।

१८ अज्ञान काल में अरब स्त्रियाँ अपने सिरों पर एक प्रकार का रूमाल बाँधे रहती थीं जिस की गिरह जूड़े की भाँति पीछे की ओर चोटी पर लगती थी। पीछे दो-दो, तीन तीन चोटियाँ लहराती रहती थीं; गला और सीने का ऊपरी भाग खुला रहता था। छातियों पर क़मीस के अतिरिक्त और कुछ नहीं होता था।

१९ 'पिता' में दादा, पर-दादा और नाना, पर-नाना भी सम्मिलित हैं।

२० 'बेटों' में पोते, पर-पोते और नाती, पर-नाती भी सम्मिलित हैं। इस मामले में सगे और सौतेले में कोई भेद नहीं करेंगे।

२१ भाई में सगे और सौतेले और माँ-जाये भाई सब आ जाते हैं।

२२ भाई-बहिनों के बेटों में उन के पोते, पर-पोते और नाती, पर-नाती सब आ जाते हैं। भाई बहिनों में तीनों प्रकार के भाई-बहिन सम्मिलित हैं।

जिन नातेदारों से विवाह करना हराम है उन से परदा नहीं जैसे चचा, मामूँ और दामाद आदि। रहे वे नातेदार जिन से विवाह हो सकता है उन से न तो उस प्रकार का परदा किया जायेगा जिस प्रकार पराये लोगों से किया जाता है और न स्त्रियाँ बे-झिझक उन के सामने अपने शृङ्गार के साथ आ सकती हैं जिस प्रकार कि वे अपने पिता, और बेटों आदि के सामने आती हैं। इस की सीमायें विभिन्न नातेदारों के मामले में उन के नाते-रिश्ते, उन की आयु, स्त्री की आयु, उन के पारस्परिक सम्पर्क और सामयिक स्थिति आदि का विचार करते हुये भिन्न होंगी। इस सिलसिले में परदे की आवश्यकता भी हो सकती है (शेष अगले पृष्ठ पर)

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

يبتغون الكتب مما ملكت ايمانكم فكاتبوهم ان علمتم فيهم
خيرا واتوهم من مال الله الذي اتىكم ولا تكرهوا فتيتكم على
البغاء ان اردن تحصنا لتبتغوا عرض الحيوة الدنيا ومن يكرههن
فان الله من بعد اكراههن غفور رحيم ۝ ولقد انزلنا اليكم ايت
مبينت ومثلا من الذين خلوا من قبلكم وموعظة للمتقين ۝
الله نور السموت والارض مثل نوره كمشكوة فيها مصباح المصباح
في زجاجة الزجاجة كانها كوكب دري يوقد من شجرة مبركة
زيتونة لا شرقية ولا غربية يكاد زيتها يضيء ولو لم تمسسه
نار نور على نور يهدي الله لنوره من يشاء ويضرب الله
الامثال للناس والله بكل شيء عليم ۝ في بيوت اذن الله ان
ترفع ويذكر فيها اسمه يسبح له فيها بالغدو والاصال ۝ رجال
لا تلهيهم تجارة ولا بيع عن ذكر الله واقام الصلوة وايتاء
الزكوة يخافون يوما تتقلب فيه القلوب والابصار ۝ ليجزيهم
الله احسن ما عملوا ويزيدهم من فضله والله يرزق من يشاء
بغير حساب ۝ والذين كفروا اعمالهم كسراب بقيعة يحسبه
الظمان ماء حتى اذا جاءه لم يجده شيئا ووجد الله عنده فوفىه
حسابه والله سريع الحساب ۝ او كظلمت في بحر لجي يغشىه

अल्लाह उन के विवश किये जाने के बाद बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है''। ○

हम ने तुम्हारी ओर खुली हुई आयतें* उतार दी हैं, और उन लोगों की (शिक्षाप्रद) मिसालें भी जो तुम से पहले गुज़रे हैं। और एक उपदेश डर रखने वालों के लिए। ○

अल्लाह आसमानों और ज़मीन का प्रकाश है''। उस के प्रकाश की मिसाल'' ऐसी है जैसे एक ताक़ हो जिस में एक चिराग़ हो। वह चिराग़ एक फ़ानूस में हो। वह फ़ानूस ऐसा हो मानो वह चमकता हुआ तारा है। वह (चिराग़) ज़ैतून के एक बरकत वाले वृक्ष (के तेल) से प्रदीप्त किया जाता हो, जो न पूर्वी हो और न पश्चिमी,'' जिस का तेल भड़का चाहता हो यद्यपि आग उसे न लगी हो। (इस प्रकार) प्रकाश-पर-प्रकाश (बढ़ने के सभी साधन संचित हो गये हों), अल्लाह अपने प्रकाश की ओर जिसे चाहता है राह दिखाता है''। और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान करता है, और अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। ○

और सामने भी हुआ जा सकता है परन्तु स्त्री मुँह और हाथ के अतिरिक्त अपने पूरे शरीर और गहनों को छिपाये रखे। और रिश्ते और नाते में जहाँ किसी प्रकार का सन्देह हो जाये वहाँ परदा ही करना चाहिए।

२३ अर्थात् अपनी जानी-बूझी और मेल-जोल की स्त्रियाँ।

२४ अर्थात् लौंडी। एक गरोह के नज़दीक ग़ुलाम (दास) भी इस हुक्म में दाख़िल है।

२५ अर्थात् अधीनता, बुद्धि-हीनता, अयोग्यता, आदि के कारण जिन में यह साहस न हो कि पर की स्त्रियों के प्रति कोई बुरी भावना मन में ला सके।

२६ इस हुक्म को नबी सल्ल० ने ज़ेवरों की झंकार ही तक सीमित नहीं रखा बल्कि आप (सल्ल०) ने इन्द्रियों को उत्तेजित करने वाली दूसरी चीज़ों से भी रोका है। आप (सल्ल०) ने इसे पसन्द नहीं किया कि बिना किसी विशेष आवश्यकता के परायी स्त्रियों की आवाज़ पुरुषों के कानों तक पहुँचे। आप (सल्ल०) ने हुक्म दिया है कि स्त्रियाँ ख़ुशबू लगा कर बाहर न निकलें।

२७ अर्थात् कोई ग़ुलाम* या लौंडी* यदि स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए अपने स्वामी को बदले में कुछ देना चाहे और स्वामी उसे मान ले तो दोनों के बीच जो शर्तें ठहरी हों उन की लिखा पढ़ी हो जानी चाहिए। यह कोई ज़रूरी नहीं है कि बदले में माल ही दिया जाये। अपनी स्वाधीनता के लिए वह कोई विशेष सेवा आदि का काम भी कर सकता है यदि उस का स्वामी इस पर राज़ी हो जाये।

२८ अर्थात् उस के स्वामी को भी चाहिए कि बदले में मिलने वाले निश्चित धन में से कुछ-न-कुछ अदा कर दे। दूसरे मुसलमानों को भी चाहिए कि लौंडी* ग़ुलामों* को स्वतन्त्र कराने में अपना माल ख़र्च करें। मुसलमान अपनी ज़कात* से भी दास-दासियों की सहायता कर सकते हैं (दे० सूरः अत-तौबः आयत ६०)। लौंडी, ग़ुलामों को आज़ाद करने को बड़ी नेकी कहा गया है (दे० सूरः अल-बलद आयत १०-१३)। ज़कात के अतिरिक्त राज्य का भी यह कर्तव्य है कि वह 'बैतुल माल' अथवा राजकोष में जो ख़ुम्स* इत्यादि हो उस में से एक हिस्सा ग़ुलामों की रिहाई के लिए भी ख़र्च करे।

२९ क़ुरआन में 'बिग़ा' शब्द प्रयुक्त हुआ है। साधारणतः इस का अर्थ बदकारी और व्यभिचार लिया जाता है। शाह अब्दुल क़ादिर और क़ुरआन के विशेष टीकाकार मौलाना हमीदुद्दीन फ़राही के मतानुसार 'बिग़ा' से अभिप्रेत 'क़ुहबा' की पेशा और निवृत्ति है। अरब अपनी लौंडियों को 'क़ुहबा' के (पेशे में लगाते थे)।

* इन का अर्थ आगे दी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

مِّنْ فَوْقِهِ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهِ سَحَابٌ ظُلُمٰتٌ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ إِذَا أَخْرَجَ
يَدَهُ لَمْ يَكَدْ يَرٰىهَا وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللّٰهُ لَهُ نُوْرًا فَمَا لَهُ مِنْ نُّوْرٍ ۞ أَلَمْ
تَرَ أَنَّ اللّٰهَ يُسَبِّحُ لَهُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَالطَّيْرُ صٰٓفّٰتٍ كُلٌّ
قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهُ وَتَسْبِيْحَهُ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ۞ وَلِلّٰهِ مُلْكُ
السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَإِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ۞ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللّٰهَ يُزْجِيْ سَحَابًا
ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهُ ثُمَّ يَجْعَلُهُ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهِ
وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ جِبَالٍ فِيْهَا مِنْ بَرَدٍ فَيُصِيْبُ بِهِ مَنْ يَّشَآءُ
وَيَصْرِفُهُ عَنْ مَّنْ يَّشَآءُ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهِ يَذْهَبُ بِالْأَبْصَارِ ۞ يُقَلِّبُ
اللّٰهُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ۞ وَاللّٰهُ خَلَقَ
كُلَّ دَآبَّةٍ مِّنْ مَّآءٍ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰى بَطْنِهِ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ
عَلٰى رِجْلَيْنِ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰٓى أَرْبَعٍ يَخْلُقُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ إِنَّ
اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۞ لَقَدْ أَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ وَاللّٰهُ يَهْدِيْ
مَنْ يَّشَآءُ إِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۞ وَيَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالرَّسُوْلِ وَ
أَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مِّنْ بَعْدِ ذٰلِكَ وَمَآ أُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ۞
وَإِذَا دُعُوْٓا إِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ إِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۞
وَإِنْ يَّكُنْ لَّهُمُ الْحَقُّ يَأْتُوْٓا إِلَيْهِ مُذْعِنِيْنَ ۞ أَفِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ
أَمِ ارْتَابُوْٓا أَمْ يَخَافُوْنَ أَنْ يَّحِيْفَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُوْلُهُ بَلْ أُولٰٓئِكَ

(उस के प्रकाश से प्रकाशित लोग) उन घरों में प्रातःकाल और सन्ध्या समय उस की तसबीह* करते हैं जिन्हें ऊँचा करने का और जिन में अपने नाम के याद करने का अल्लाह ने हुक्म दिया है। ○

ऐसे लोग जिन्हें अल्लाह के स्मरण और नमाज़* क़ायम रखने और ज़कात* देने से न व्यापार ग़ाफ़िल करता है; और न सौदा करना; जो उस दिन से डरते हैं जिस में उलट जायेंगे दिल और आँखें; ○ ताकि अल्लाह उन्हें उन के उत्तम कामों का बदला प्रदान करे, और उन्हें और अधिक अपने फ़ज़्ल (कृपा) से दे। अल्लाह जिसे चाहता है बे-हिसाब रोज़ी देता है। ○

रहे वे लोग जिन्हों ने कुफ़्र* किया, उन के कामों की मिसाल ऐसी है जैसे चटियल मैदान में मरीचिका[३०]। प्यासा उसे पानी समझता है परन्तु जब उस के पास पहुँचा तो उसे कुछ भी न पाया, और अल्लाह को (क़ियामत* में), अपने पास पाया, जिस ने उस का हिसाब पूरा-पूरा चुका दिया;[३१] और अल्लाह जल्द हिसाब करता है। ○

या फिर जैसे अँधियारियाँ हैं, एक गहरे समुद्र में। जिस पर एक मौज (लहर) छाई हुई है, उस के ऊपर एक और मौज, उस के ऊपर बादल। तह-पर-तह अँधियारियाँ जमी हैं। जब अपना हाथ निकाले तो उसे देख न पाये। जिसे अल्लाह ने प्रकाश न दिया, उस के लिए ४० कोई प्रकाश नहीं। ○

लिए देते थे और उन के 'मह्र' ले लिया करते थे। यह उन की आमदनी का एक साधन था। इस्लाम* ने शराब की तरह इसे भी हराम कर दिया। (दे० सूरः अन-निसा आयत २५)। 'मुतअ्' के हराम होने से वेश्यावृत्ति आदि सब का निषेध हो जाता है।

२० इस का अर्थ यह कदापि नहीं होता कि यदि लौंडियाँ सतवन्ती और विवाहिता हो कर रहना न चाहती हों तो उन्हें दुश्चरित्रता पर विवश किया जा सकता है। अनुचित और बुरी चीज़ प्रत्येक अवस्था में बुरी है; लौंडियों की इच्छा के विरुद्ध उन से यह काम लेना और अधिक बुरा है। यदि उन्हें अनुचित काम पर विवश किया जायेगा तो अल्लाह उन्हें तो क्षमा कर देगा परन्तु जो उन्हें बुराई के लिए विवश करेगा उस की बड़ी पकड़ होगी।

२१ अर्थात् अल्लाह ही वह महान् ज्योति है जिस की अन्धकार-हीन आभा से सम्पूर्ण विश्व प्रकाशित है। जगत में जो-कुछ है उसी से आच्छादित है। सम्पूर्ण जगत में उसी की छवि व्याप्त हो रही है। जगत में सब-कुछ उसी से व्याप्त है। वह सर्वव्यापी है। वही है जो सब प्राणियों में कल्याण रूप हो कर बसता है। वही विश्व-चेतना का स्रोत है।

२२ अर्थात् अल्लाह के प्रकाश से प्रकाशित ईमान* वालों की मिसाल जिन्हें देख कर वास्तव में अल्लाह याद आता है।

२३ अर्थात् जो ऐसी खुली जगह या उच्च स्थान पर हो जहाँ वह सवेरे से सन्ध्या समय तक सूर्य के साफ़ प्रकाश में रहे। ज़ैतून के ऐसे वृक्ष का तेल अत्यन्त साफ़ और उत्तम होता है, उस का प्रकाश भी तेज़ होता है।

२४ अल्लाह अपने प्रकाश की सूझ उन्हीं लोगों को प्रदान करता है जो ग़ाफ़िल नहीं होते बल्कि अल्लाह को हर समय याद रखते हैं। दे० आयत ४६। (२५, २६ अगले पृष्ठ पर)

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

هُمُ الظّٰلِمُونَ ۝ اِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذَا دُعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اَنْ يَّقُوْلُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَخْشَ اللّٰهَ وَيَتَّقْهِ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْفَاۗىِٕزُوْنَ ۝ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَىِٕنْ اَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ ۭ قُلْ لَّا تُقْسِمُوْا ۚ طَاعَةٌ مَّعْرُوْفَةٌ ۭ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝ قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ مَّا حُمِّلْتُمْ ۭ وَاِنْ تُطِيْعُوْهُ تَهْتَدُوْا ۭ وَمَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۠ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ۭ يَعْبُدُوْنَنِيْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَـيْــــًٔا ۭ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مُعْجِزِيْنَ فِي الْاَرْضِ ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ۭ وَلَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِيَسْتَاْذِنْكُمُ الَّذِيْنَ مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلٰثَ مَرّٰتٍ ۭ مِنْ قَبْلِ صَلٰوةِ الْفَجْرِ وَحِيْنَ تَضَعُوْنَ ثِيَابَكُمْ مِّنَ الظَّهِيْرَةِ وَمِنْۢ بَعْدِ صَلٰوةِ الْعِشَاۗءِ ڜ ثَلٰثُ عَوْرٰتٍ لَّكُمْ ۭ لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌۢ

क्या तुम ने नहीं देखा कि जो कोई आसमानों और ज़मीन में है,[३०] अल्लाह की तसबीह* करता है, और पंख फैलाये हुये पक्षी भी (उसी की तसबीह करते हैं) ?[३१] हर एक अपनी नमाज़* और अपनी तसबीह* से परिचित है; और अल्लाह जानता है जो-कुछ वे करते हैं। ○ और आसमानों और ज़मीन का राज्य अल्लाह ही के लिए है, और अल्लाह ही की ओर जाना है। ○

क्या तुम ने नहीं देखा कि अल्लाह बादलों को हँकाता है, फिर उन (के टुकड़ों) को परस्पर मिलाता है, फिर उसे तह-पर-तह करता है, फिर तुम देखते हो कि उस के बीच में मेंह बरसता है; और आसमान से उस में जो (ओलों के) पहाड़ हैं उन से ओले उतारता है,[३२] फिर जिस पर चाहता है उस को बरसा देता है, और जिस से चाहता है उसे हटा देता है। उस की बिजली की चमक निगाहों (की ज्योति) को उचके लिये जाती है। ○

अल्लाह ही रात और दिन का उलट-फेर कर रहा है। निश्चय ही इस में एक शिक्षा-सामग्री है आँखों वालों के लिए। ○

और अल्लाह ने प्रत्येक जीवधारी को (एक प्रकार के) पानी से पैदा किया। तो कोई उन में अपने पेट के बल चलता है और उन में कोई दो टाँगों पर चलता है और उन में कोई चार (टाँगों) पर। अल्लाह जो चाहता है पैदा करता है। निस्सन्देह अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला (सर्वशक्तिमान) है। ○ ४५

हम ने खुली हुई आयतें* उतार दी हैं। अल्लाह जिसे चाहता है सीधे मार्ग की ओर राह दिखाता है। ○

कहते हैं : हम अल्लाह और रसूल* पर ईमान* लाये, और हम ने (उन का) हुक्म माना; फिर इस के बाद उन में से एक गरोह मुँह मोड़ जाता है। ऐसे लोग ईमान* वाले नहीं। ○

जब उन्हें अल्लाह और उस के रसूल* की ओर बुलाया जाता है ताकि वह उन के बीच (उन के मामलों का) फ़ैसला करे, तो क्या देखते हैं कि उन में से एक गरोह कतरा जाता है; ○ और यदि हक़ उन का हो तो वे हुक्म मानते और क़ुबूल करते हुये चले आयेंगे। ○

क्या उन के दिलों में (निफ़ाक़* का) रोग है, या वे सन्देह में पड़े हैं, या वे डरते हैं कि अल्लाह और उस का रसूल* उन पर ज़्यादती करेगा? नहीं, बल्कि वही लोग ज़ालिम हैं। ○ ५०

ईमान* वालों की बात तो यह है कि जब अल्लाह और उस के रसूल* की ओर बुलाये जायें ताकि वह उन के बीच (उन के मामलों) का फ़ैसला करे, तो वे कहें : हम ने सुना और माना। यही सफलता प्राप्त करने वाले हैं। ○ और जो कोई अल्लाह और उस के रसूल* का हुक्म

३५. मृगतृष्णा (Mirage), अर्थात् जल की लहरों की वह भ्रान्ति जो रेगिस्तानों और मरुस्थलों में कड़ी धूप पड़ने पर किरणवक्रता (Refraction of light) के कारण होती है। (शेष अगले पृष्ठ पर)

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

بَعْدَهُنَّ طَوَّافُونَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ
لَكُمُ الْآيَاتِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ وَإِذَا بَلَغَ الْأَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ
فَلْيَسْتَأْذِنُوا كَمَا اسْتَأْذَنَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ
آيَاتِهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَاءِ اللَّاتِي لَا يَرْجُونَ
نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ أَنْ يَضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجَاتٍ
بِزِينَةٍ وَأَنْ يَسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَهُنَّ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ لَيْسَ
عَلَى الْأَعْمَىٰ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرَجٌ
وَلَا عَلَىٰ أَنْفُسِكُمْ أَنْ تَأْكُلُوا مِنْ بُيُوتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ آبَائِكُمْ أَوْ بُيُوتِ
أُمَّهَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ إِخْوَانِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَخَوَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَعْمَامِكُمْ أَوْ
بُيُوتِ عَمَّاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَخْوَالِكُمْ أَوْ بُيُوتِ خَالَاتِكُمْ أَوْ مَا مَلَكْتُمْ مَفَاتِحَهُ
أَوْ صَدِيقِكُمْ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَأْكُلُوا جَمِيعًا أَوْ أَشْتَاتًا فَإِذَا
دَخَلْتُمْ بُيُوتًا فَسَلِّمُوا عَلَىٰ أَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِنْ عِنْدِ اللَّهِ مُبَارَكَةً
طَيِّبَةً كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝ إِنَّمَا
الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَإِذَا كَانُوا مَعَهُ عَلَىٰ أَمْرٍ
جَامِعٍ لَمْ يَذْهَبُوا حَتَّىٰ يَسْتَأْذِنُوهُ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ أُولَٰئِكَ
الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ فَإِذَا اسْتَأْذَنُوكَ لِبَعْضِ شَأْنِهِمْ
فَأْذَنْ لِمَنْ شِئْتَ مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ

माने, और अल्लाह से डरे, और उस की अवज्ञा से बचे, तो ऐसे ही लोग मनोरथ को प्राप्त होने वाले हैं। ○

वे (मुनाफ़िक़*) अल्लाह की कड़ी क़समें खाते हैं, कि यदि आप उन्हें हुक्म दें, तो वे निकल खड़े हों। कह दो : क़समें न खाओ, जाना-पहचाना आज्ञापालन (अभीष्ट है)। निस्सन्देह तुम जो-कुछ करते हो अल्लाह उस की ख़बर रखता है। ○

कहो : अल्लाह का हुक्म मानो और रसूल* का हुक्म मानो और यदि तुम मुँह मोड़ते हो, तो वह बस उसी का ज़िम्मेदार है जो बोझ उस पर डाला गया है, और तुम उस के ज़िम्मेदार हो जो बोझ तुम पर डाला गया है। और यदि तुम उस का हुक्म मानते हो, तो (सीधा) मार्ग पा लोगे। रसूल* पर तो बस साफ़-साफ़, (सन्देश) पहुँचा देने की ज़िम्मेदारी है। ○

अल्लाह ने उन लोगों से जो तुम में से ईमान* लाये और अच्छे काम किये वादा किया है[३९] कि वह उन्हें ज़मीन में ख़लीफ़ः* (राज्याधिकारी) बनायेगा[४०] जैसे वह उन से पहले के लोगों को ख़लीफ़ः* (राज्याधिकारी) बना चुका है; और उन के लिए अवश्य उन के उस दीन* को स्थायित्व प्रदान करेगा जिसे उस ने उन के लिए पसन्द किया है, और उन के (वर्तमान) भय के पश्चात् उन्हें निश्चिन्तता की हालत में बदल देगा। वे मेरी इबादत करेंगे। और मेरे साथ किसी को शरीक न करेंगे। और जो कोई इस के बाद कुफ़्र* करे, तो ऐसे ही लोग सीमो-
२१ ल्लंघन करने वाले हैं। ○

नमाज़* क़ायम रखो और ज़कात* दो और रसूल* का हुक्म मानो, कदाचित् तुम पर दया की जाये। ○

यह न समझो कि जिन लोगों ने कुफ़्र* किया है वे ज़मीन में हरा देने वाले हैं। उन का ठिकाना दोज़ख़* है — और वह क्या ही बुरी जगह है पहुँचने की। ○

हे ईमान* लाने वालो! जिन पर तुम्हें स्वामित्व का अधिकार प्राप्त है उन्हें, और तुम में

---

३६ अर्थात् जैसे एक प्यासा मैदान में मरीचिका को देख कर प्रसन्न हो जाता है; समझता है पानी लहरें ले रहा है, कोशिश कर के वहाँ पहुँचता है ताकि ठण्डे जल से अपनी प्यास बुझाये। परन्तु वहाँ उसे पानी के बदले साफ़ मैदान दिखाई देता है। ठीक इसी तरह काफ़िर* लोग समझते हैं कि हम अच्छे कर्म कर रहे हैं परन्तु वे क़ियामत* के दिन देखेंगे कि उन की समस्त कामनायें और आशायें सुहाने स्वप्न के अतिरिक्त और कुछ न थीं। वहाँ वे अल्लाह को अपने पास पायेंगे जो उन का हिसाब चुका देगा। उन्हें अपने करतूतों का पूरा बदला मिल जायेगा।

३७ दे० आयत ३६।

३८ सरदी से आसमान में बादल जमने लगते हैं उन्हें पहाड़ कहा; फिर ओलों के रूप में भूमि पर वर्षा होने लगती है।

३९ दे० सूरः अल-हज्ज आयत ५८-५९।

४० अर्थात् तुम्हें वह हुकूमत प्रदान की जायेगी जिस के सब काम अल्लाह के दिये हुये धर्मविधान के अनुसार होंगे।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

لا تجعلوا دعاء الرسول بينكم كدعاء بعضكم بعضا قد يعلم الله الذين يتسللون منكم لواذا فليحذر الذين يخالفون عن أمره أن تصيبهم فتنة أو يصيبهم عذاب أليم ألا إن لله ما في السماوات والأرض قد يعلم ما أنتم عليه ويوم يرجعون إليه فينبئهم بما عملوا والله بكل شيء عليم

जो मौढ़ता को नहीं पहुँचे हैं उन को, चाहिए कि (तुम्हारे पास आने के लिए) तीन बार तुम से इजाज़त लिया करें : फ़ज्र* (प्रातःकाल) की नमाज़* से पहले, और जब दोपहर को तुम अपने कपड़े उतार कर रख देते हो, और इशा* की नमाज़* के बाद। ये तीन समय तुम्हारे लिए परदे के हैं[41]। इन के बाद (अर्थात् इन समयों के अतिरिक्त दूसरे वक़्तों में उन के बिना इजाज़त आने में) न तो तुम पर कोई गुनाह है और न उन पर, तुम्हें एक-दूसरे के पास बार-बार आना-जाना होता है। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें बयान करता है। और अल्लाह (सब-कुछ) जानने वाला और हिकमत* वाला है। ○

और जब तुम में बच्चे मौढ़ता को पहुँच जायें तो उन्हें चाहिए कि (तुम्हारे पास आने के लिए) इजाज़त लिया करें जैसे उन से अगले लोग इजाज़त लेते रहे हैं। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें* बयान करता है। और अल्लाह (सब-कुछ) जानने वाला और हिकमत* वाला है। ○

और जो स्त्रियाँ (जवानी से गुज़र कर) बैठ चुकी हों, जिन्हें विवाह की आशा न हो, तो उन पर इस में कोई गुनाह नहीं कि वे अपने कपड़े उतार कर रख दें जब कि वे बनाव-शृंगार दिखाने वाली न हों। और इस से भी बचें तो उन के लिए उत्तम है[42]। और अल्लाह (सब-कुछ) सुनने वाला और जानने वाला है। ○

६०

न अन्धे पर कोई दोष है और न लंगड़े पर कोई दोष है और न बीमार पर कोई दोष है और न तुम्हारे अपने ऊपर, इस में (कोई दोष है) कि अपने घरों से खाओ, या अपने बापों के घरों से, या अपनी माँओं के घरों से, या अपने भाइयों के घरों से, या अपनी बहिनों के घरों से, या अपने चचाओं के घरों से, या अपनी फूफियों के घरों से, या अपने मामूओं के घरों से, या अपनी ख़ालाओं (मौसियों) के घरों से, या (उस घर से) जिस की कुञ्जियों के तुम मालिक हुये हो, या अपने मित्र के (घरों से)[43]। इस में तुम पर कोई गुनाह नहीं है कि मिल कर खाओ या अलग-अलग।

हाँ, जब घरों में जाया करो, तो अपनों पर सलाम भेजा करो अभिवादन अल्लाह की ओर से (नश्चित किया हुआ), बरकत वाला और उत्तम। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें* बयान करता है, कदाचित् तुम समझ-बूझ से काम लो। ○

ईमान* वाले तो वही हैं जो अल्लाह और उस के रसूल* पर ईमान* लाये, और जब किसी सामूहिक काम के अवसर पर उस के साथ हों, तो चले न जायें जब तक उस से इजाज़त न ले लें। जो लोग तुम से इजाज़त माँगते हैं, वही वे लोग हैं जो अल्लाह और उस के रसूल* पर ईमान* रखते हैं।

४१ अर्थात् इन वक़्तों में तुम लोग अकेले या अपनी पत्नियों के साथ ऐसी हालतों में रहते हो जिन में बच्चों या सेवकों का अचानक तुम्हारे पास आ जाना कदापि उचित नहीं हो सकता।

४२ अर्थात् बूढ़ी स्त्रियाँ यदि थोड़े ही वस्त्र में रहें तो रह सकती हैं; परन्तु यदि वे अपने पूरे वस्त्र में रहें तो यह उन के लिए ज़्यादा अच्छा होगा। बूढ़ी स्त्रियाँ अपने किस कपड़े को उतार सकती हैं इस के बारे में सभी एक-मत हैं कि जिस कपड़े को वे उतार सकती हैं वह उन की चादर है जिस से अपने को छिपाने का हुक्म सूरः अल-अहज़ाब आयत ५६ में दिया गया है। इस सिलसिले में सूरः अल-अहज़ाब की ५३ से ... भी सामने रहनी चाहिएँ।

(शेष अगले पृष्ठ पर)

* का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

३० : ३७ रोज़ी बढ़ाता है और नपी-तुली करता है।

३० : ४६ हवाओं को शुभ-सूचनाओं के साथ भेजता है, अपनी कृपाओं के फल चखवाता है।

३० : ४८-५१ हवाएँ चलाता है जो बादलों को उठाती हैं, उसमें से पानी निकालता है, मुरदा ज़मीन को ज़िन्दा करता है।

३० : ५४ तुमको कमज़ोर पैदा किया, फिर शक्ति दी, फिर कमज़ोरी और बुढ़ापा। जो चाहता है पैदा करता है।

३१ : १०, ११ तुम आसमानों को बिना स्तम्भ के देखते हो। ज़मीन पर पहाड़ सतुलन बनाये रखने के लिये, हर तरह के प्राणी।

३१ : २५, ३० उनसे पूछो कि आसमान और ज़मीन को किसने पैदा किया, तो वे बोल उठेंगे कि अल्लाह ने।

३१ : ३१, ३२ अल्लाह की कृपा से नवकायें समुद्र में चलती हैं ताकि वह तुमको अपनी कुछ निशानियाँ दिखाये।

३२ : २७ तुम देखते नही कि अल्लाह बञ्जर ज़मीन की ओर पानी दौड़ाता है और खेती उगाता है।

३५ : ११-१३ तुमको मिट्टी से बनाया, तुम्हारा जोड़ा पैदा किया, सूर्य और चाँद को तुम्हारे काम में लगाया, बादशाही उसी की है।

३५ : २७, २८ आसमान से पानी बरसाया, भाँति-भाँति के मेवे पैदा किये, पहाड़ों में सफेद, लाल और काले।

३६ : ३३-३६ मुरदा ज़मीन एक निशानी है। अल्लाह उसे ज़िन्दा करता है। अनाज उगाता है, बाग-बगीचे, हर चीज़ का जोड़ा।

३६ : ३७-४० रात एक निशानी है, वह उसमे से दिन खींच लेता है। सूर्य निर्धारित मार्ग पर चलता है और चाँद की मज़िलें निश्चित हैं।

३६ : ४१-४४ दरिया में नवकाओं का चलना एक निशानी है और दूसरी सवारियाँ अल्लाह की कृपा एक निर्धारित समय तक।

३९ : ४-७ उसने आसमान और ज़मीन को हिक्मत के साथ पैदा किया, वही तुमको तुम्हारी माताओं के पेट मे पैदा करता है।

३९ : २१ आसमान से पानी बरसाया, फिर उसे स्रोत बनाकर बहाया, भाँति-भाँति की खेतियाँ उगती हैं।

३९ : ४२ अल्लाह मरते समय प्राण निकाल लेता है और सोते में भी।

४० : ६१, ६२ रात बनाई कि आराम करो, दिन को चमकता बनाया।

४० : ६७, ६८ तुमको मिट्टी से बनाया, पहले वीर्य, फिर लोथड़ा, फिर बच्चा, फिर जवान, फिर बूढ़ा, वही जिलाता है, वही मारता है।

४० : ७९-८१ चौपाए बनाए, उनपर सवार होते हो और उनका मांस खाते हो और बहुत से लाभ हैं। अल्लाह की निशानियों का इन्कार कैसे करोगे ?

४१ : ३७, ३८ रात-दिन, सूर्य-चन्द्र उसकी निशानियाँ हैं, सूर्य-चन्द्र को सजदा न करो। उसी अल्लाह को सजदा करो जिसने उन्हें पैदा किया।

४१ : ३९ उसकी निशानी देखो, पृथ्वी सूखी पड़ी थी, उसी ने पानी बरसाया और

सो, जब वे अपने किसी काम के लिए तुम से इजाज़त माँगें, तो तुम उन में से जिसे चाहो इजाज़त दे दिया करो, और उन के लिए अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना किया करो। निस्सन्देह अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है। ○

(हे ईमान* लाने वालो!) अपने बीच रसूल* के बुलाने को तुम परस्पर एक-दूसरे का सा बुलाना न समझो[४४]। अल्लाह उन लोगों को जानता है जो तुम में से चुपके खिसक जाते हैं। उन लोगों को जो उस के हुक्म की अवहेलना करते है डरना चाहिए कि उन पर कोई आज़माइश न आ पड़े या उन पर दुःख देने वाला अज़ाब न आ जाये। ○ जान रखो आसमानों और ज़मीन में जो-कुछ है अल्लाह का है। वह जानता है तुम जिस (नीति) पर हो। और जिस दिन वे उस की ओर लौटाये जायेंगे तो वह उन्हें बता देगा जो-कुछ कि उन्हों ने किया होगा। अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। ○

---

४३ जब यह आयत उतरी कि एक-दूसरे के माल अवैध रूप से न खाओ तो लोग अपने दोस्तों और नातेदारों के यहाँ भी खाने-पीने से बचने लगे। जब तक कि नियमानुसार घर के मालिक की इजाजत न मिल जाये, वे समझते थे कि मित्रों और नातेदारों के यहाँ भी खाना जायज़ न होगा। इस आयत में बताया गया है कि अन्धे, लँगड़े आदि विवश और असहाय लोग हर घर और हर जगह से खा सकते हैं। विवशता के कारण उन का हक़ पूरे समाज पर है। रहे दूसरे लोग तो वे जिस तरह अपने घर खा सकते है उसी तरह उन लोगों के घर भी खा सकते हैं जिन का उल्लेख इस आयत में किया गया है। यदि कोई उन में से किसी के यहाँ जाय और घर का मालिक मौजूद न हो जब भी उस के यहाँ निःसंकोच खाया-पिया जा सकता है।

४४ दे० आयत ४८-५१।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

२५--अल-फ़ुरक़ान

(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः* का नाम 'अल-फ़ुरक़ान' (Distinction) सूरः की पहली आयत* से लिया गया है। क़ुरआन की और बहुत सी सूरतों की तरह यह नाम केवल एक चिह्न के रूप में रखा गया है फिर भी सूरः की वार्त्ताओं से इस का सम्बन्ध है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

सूरः* के अध्ययन से अनुमान होता है कि यह सूरः नबी सल्ल० के मक्की जीवन के मध्य काल में उतरी है। यह वह समय है जब कि मुसलमान अत्यन्त कमज़ोर थे और उन के शत्रुओं का गर्व और अहंकार बहुत बढ़ चुका था।

वार्त्तायें

इस सूरः* का मूल विषय है : सत्य, अल्लाह पर भरोसा रखना, अल्लाह का आश्रय ले कर शक्ति और आत्म-बल प्राप्त करना, दुनियाँ ही को अपना जीवन-उद्देश्य बनाने वालों के धन-सम्पत्ति की उपेक्षा आदि।

सूरः* के आरम्भिक भाग में उन लोगों के अवगुणों का उल्लेख किया गया है जो ईमान* नहीं लाये और कुफ़्र* और अहंकार ही की नीति पर जमे रहे। ये वही लोग हैं जो स्वयं पथ-भ्रष्ट थे और दूसरों को भी पथ-भ्रष्ट करने में लगे रहे। अल्लाह ने इन के अज्ञानी होने की घोषणा की और बताया कि ये पशुओं से भी अधिक राह से भटके हुये हैं। ये अपनी तुच्छ इच्छाओं ही के उपासक हैं। ये क़ियामत* को नहीं मानते और नबी सल्ल० से वैर-भाव रखते हैं। प्रस्तुत सूरः में संक्षिप्त रूप से ये सभी बातें आ गई हैं जिन का सविस्तार वर्णन हमें आगे आने वाली सूरः में मिलता है।

प्रस्तुत सूरः में ईमान* वालों से वादा किया गया है कि सफलता उन्हीं को प्राप्त होगी; उन का रब* उन के नबी का सहायक है। अल्लाह काफ़िरों* और नबी* के दुश्मनों को इस बात की मुहलत दे रहा है कि वे संभल जायें और अल्लाह की ओर पलटें। यह अल्लाह की कृपा और उस की दयालुता है। काफ़िरों* को सज़ा देने का सामर्थ्य तो उसे हर समय प्राप्त है; परन्तु वह उन्हें अपनी कृपा से ढील दिये जा रहा है। इस सूरः में काफ़िरों के उन आक्षेपों का उत्तर भी दिया गया है जो वे क़ुरआन और हज़रत मुहम्मद सल्ल० की नुबूवत* पर करते थे इस के साथ-साथ सत्य से मुँह मोड़ने के बुरे परिणामों से उन्हें डराया भी गया है।

इस सूरः में आयत* १ से ले कर ६२ तक की आयतों के क़ाफ़ियों (अन्त्यानुप्रास) में बड़ी समानता है परन्तु इस के बाद आयतों का क़ाफ़िया बदल गया है। सूरः का यह अन्तिम भाग एक प्रकार से पूरक की हैसियत रखता है। सूरः के पहले भाग में अहंकारी व्यक्तियों का उल्लेख किया गया है जो कहते थे कि 'रहमान'

* इन का अर्थ परिशिष्ट में आये हुए पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

(कृपाशील ईश्वर) क्या होता है[1]। सूरः के इस दूसरे भाग[2] में अहंकारी लोगों के मुक़ाबिले में उन लोगों की विशेषताओं का उल्लेख किया गया है जो अहंकारी नहीं बल्कि रहमान* (कृपाशील ईश्वर) के विनम्र बन्दे हैं।

---

१ दे० आयत ६०।
२ दे० आयत ६३-७७।
* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अल-.फ़ुरक़ान

(मक्का में उतरी — आयतें* ७७)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अत्यन्त बरकत[1] वाला है वह जिस ने यह .फ़ुरक़ान[2] अपने बन्दे पर उतारा,[3] ताकि वह सारे संसार के लिए सचेत करने वाला[4] हो। ○ — वह जो आसमानों और ज़मीन के राज्य का मालिक है, उस ने किसी को (अपना) बेटा नहीं बनाया है और न कोई उस का राज्य में शरीक है। और जिस ने हर चीज़ को पैदा किया फिर उस का ठीक-ठीक अन्दाज़ा ठहराया[5]। ○ लोगों ने उसे छोड़ कर ऐसे इलाह* (पूज्य) बना लिये जो किसी चीज़ को पैदा नहीं करते बल्कि वे स्वयं पैदा किये जाते हैं, और न उन्हें अपने बुरे का अधिकार प्राप्त और न भले का, और न उन्हें मृत्यु का अधिकार प्राप्त है, और न जीवन का और न (मरने के पश्चात् पुनः) जी उठने का। ○

जिन लोगों ने कुफ़्र* किया वे कहते हैं : यह तो बस एक मन-गढ़न्त चीज़ है, जिसे इस (व्यक्ति) ने स्वयं गढ़ लिया है, और कुछ दूसरे लोगों ने इस काम में इस की सहायता की है, तो ये .ज़ुल्म और झूठ पर उतर आये हैं। ○

और कहते हैं : ये पहले लोगों की कहानियाँ (बे-सनद बातें) हैं जिन्हें इस ने लिखा लिया है और वे इसे प्रातःकाल और सन्ध्या समय सुनाई जाती हैं। ○

(हे मुहम्मद !) कहो : इसे उतारा है उस ने जो आसमानों और ज़मीन का भेद जानता है। निस्सन्देह वह अत्यन्त क्षमाशील और दया करने वाला है। ○

और वे कहते हैं : यह कैसा रसूल* है जो खाना खाता है और बाज़ारों में चलता-फिरता है[6] ? क्यों न इस के पास कोई .फ़िरिश्तः* उतारा गया कि इस के साथ रह कर (न मानने

---

१ अर्थात् अत्यन्त उच्च, महान, सामर्थ्य रखने वाला, परोपकारी, शुभ और पवित्र है।

२ अर्थात् .क़ुरआन। '.फ़ुरक़ान' का अर्थ होता है अलग-अलग करना या एक ही वस्तु के भागों का अलग-अलग होना। .क़ुरआन को '.फ़ुरक़ान' (Distinction) कहने का कारण यह है कि वह सत्य और असत्य को अलग करने की कसौटी और निर्णायक और निश्चयात्मक आदर्श है। फिर उस के विभिन्न भाग भी हैं और उस के विभिन्न टुकड़े विभिन्न अवसर पर अवतरित हुये हैं।

३ इस के लिए 'नज़्ज़ला' शब्द प्रयुक्त हुआ है जिस का अर्थ होता है थोड़ा-थोड़ा कर के उतारना। इस आरम्भिक वार्ता के साथ दे० आयत ३२-३३।

४ दे० आयत ५६।

५ अल्लाह ने हर चीज़ को केवल पैदा ही नहीं किया बल्कि उस ने हर चीज़ के लिए रंग, रूप, शक्ति, गुण, विशेषतायें और विकास की सीमा आदि सभी चीज़ें निश्चित कीं। और संसार में वे समस्त साधन और कारण-समूह संचित कर दिये जिन से प्रत्येक वस्तु अपने क्षेत्र में कार्यरत है।

६ इन की इस बात का उत्तर आयत २० में दिया गया है।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

فَيَكُونَ مَعَهُ نَذِيرًا ۝ أَوْ يُلْقَىٰ إِلَيْهِ كَنزٌ أَوْ تَكُونُ لَهُ جَنَّةٌ يَأْكُلُ مِنْهَا ۚ وَ
قَالَ الظَّالِمُونَ إِن تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَّسْحُورًا ۝ انظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ
الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ۝ تَبَارَكَ الَّذِي إِن شَاءَ
جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّن ذَٰلِكَ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَيَجْعَل
لَّكَ قُصُورًا ۝ بَلْ كَذَّبُوا بِالسَّاعَةِ ۖ وَأَعْتَدْنَا لِمَن كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيرًا ۝
إِذَا رَأَتْهُم مِّن مَّكَانٍ بَعِيدٍ سَمِعُوا لَهَا تَغَيُّظًا وَزَفِيرًا ۝ وَإِذَا أُلْقُوا مِنْهَا
مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِينَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُورًا ۝ لَّا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُورًا
وَاحِدًا وَادْعُوا ثُبُورًا كَثِيرًا ۝ قُلْ أَذَٰلِكَ خَيْرٌ أَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِي
وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ۚ كَانَتْ لَهُمْ جَزَاءً وَمَصِيرًا ۝ لَّهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ
خَالِدِينَ ۚ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ وَعْدًا مَّسْئُولًا ۝ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ
مِن دُونِ اللَّهِ فَيَقُولُ أَأَنتُمْ أَضْلَلْتُمْ عِبَادِي هَٰؤُلَاءِ أَمْ هُمْ ضَلُّوا
السَّبِيلَ ۝ قَالُوا سُبْحَانَكَ مَا كَانَ يَنبَغِي لَنَا أَن نَّتَّخِذَ مِن دُونِكَ
مِنْ أَوْلِيَاءَ وَلَٰكِن مَّتَّعْتَهُمْ وَآبَاءَهُمْ حَتَّىٰ نَسُوا الذِّكْرَ وَكَانُوا
قَوْمًا بُورًا ۝ فَقَدْ كَذَّبُوكُم بِمَا تَقُولُونَ فَمَا تَسْتَطِيعُونَ صَرْفًا
وَلَا نَصْرًا ۚ وَمَن يَظْلِم مِّنكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيرًا ۝ وَمَا أَرْسَلْنَا
قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا إِنَّهُمْ لَيَأْكُلُونَ الطَّعَامَ وَيَمْشُونَ فِي الْأَسْوَاقِ ۗ
وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً أَتَصْبِرُونَ ۗ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيرًا ۝

वालों को) धमकाता। ○ या (ऐसा क्यों न हुआ कि) इस के पास कोई ख़ज़ाना उतार दिया जाता, या इस के पास कोई बाग़ होता[७] जिस से यह खाता? और ज़ालिम कहते हैं: तुम लोग तो बस एक ऐसे पुरुष का अनुवर्तन करने लगे हो जो जादू का मारा हुआ है। ○

देखो वे तुम्हारे लिए कैसी-कैसी मिसालें बयान करते हैं, सो वे बहक गये हैं और राह नहीं पा सकते। ○

बरकत वाला है वह, जो यदि चाहे, तो तुम्हें इस से भी उत्तम प्रदान करे — बहुत से बाग़ जिन के नीचे नहरें बह रही हों — और तुम्हें प्रदान करे बहुत से महल। ○

नहीं, बल्कि (बात यह है कि) वे उस घड़ी[८] (अर्थात् क़ियामत*) को झुठला चुके हैं और जो उस घड़ी को झुठला दे उस के लिए हम ने (दोज़ख़* की) दहकती आग तैयार कर रखी है। ○ वह जब उन्हें दूर से देखेगी तो वे उस के प्रकोप और साँस खींचने की आवाज़ें सुनेंगे। ○ और जब वे उस (दोज़ख़*) की किसी तंग जगह जकड़े हुये डाले जायेंगे, तो वहाँ (अपने) विनाश को पुकारेंगे। ○

(उन से कहा जायेगा): आज एक विनाश को नहीं, बहुत से विनाश को पुकारो! ○

कहो: यह (परिणाम) अच्छा है या वह शाश्वत जन्नत* जिस का वादा डरने वालों से किया गया है? यह उन (के अच्छे कामों) का बदला और पहुँचने की जगह होगी। ○ उन के लिए उस में वह सब-कुछ होगा, जो वे चाहेंगे, वे (वहाँ) सदैव रहेंगे। यह तुम्हारे रब* के ज़िम्मे ऐसा वादा है जिस के पूरा करने की माँग की जा सकती है[९]। ○

और जिस दिन वह उन्हें घेर लायेगा और उन्हें भी जिन्हें वे अल्लाह को छोड़ कर पूजते हैं[१०] फिर वह कहेगा: क्या मेरे इन बन्दों को गुमराह तुम ने किया था या वही (सीधे) मार्ग से भटक गये थे[११]? ○

वे कहेंगे: तू महिमावान् है! यह हम से नहीं हो सकता था कि तेरे सिवा दूसरे संरक्षक-मित्र बनाते; परन्तु तू ने उन्हें और उन के पूर्वजों को सुख-सामग्री दी यहाँ तक कि वे याददिहानी को भुला बैठे और वे विनष्ट होने वाले लोग थे। ○

---

७ इस के उत्तर के लिए दे० आयत २०।

८ अर्थात् क़ियामत* की घड़ी।

९ अर्थात् तुम्हारा रब* जिसे अवश्य पूरा करेगा।

१० अर्थात् वे अल्लाह को छोड़ कर जिन फ़रिश्तों,* महापुरुषों आदि को देवता मान कर उन की पूजा करते हैं।

११ क़ुरआन में यह वार्ता विभिन्न स्थानों पर प्रस्तुत की गई है। उदाहरण के लिए दे० सूरः अल-माइदः आयत ११६-११७ और सूरः सबा आयत ४०-४१।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

وقال الذين لا يرجون لقاءنا لولا أنزل علينا الملائكة أو
نرى ربنا لقد استكبروا في أنفسهم وعتو عتوا كبيرا ۝ يوم
يرون الملائكة لا بشرى يومئذ للمجرمين ويقولون حجرا
محجورا ۝ وقدمنا إلى ما عملوا من عمل فجعلناه هباء منثورا ۝
أصحاب الجنة يومئذ خير مستقرا وأحسن مقيلا ۝ ويوم
تشقق السماء بالغمام ونزل الملائكة تنزيلا ۝ الملك يومئذ الحق
للرحمن وكان يوما على الكافرين عسيرا ۝ ويوم يعض الظالم
على يديه يقول يا ليتني اتخذت مع الرسول سبيلا ۝ يا ويلتى
ليتني لم أتخذ فلانا خليلا ۝ لقد أضلني عن الذكر بعد إذ
جاءني وكان الشيطان للإنسان خذولا ۝ وقال الرسول يا رب
إن قومي اتخذوا هذا القرآن مهجورا ۝ وكذلك جعلنا لكل
نبي عدوا من المجرمين وكفى بربك هاديا ونصيرا ۝ وقال
الذين كفروا لولا نزل عليه القرآن جملة واحدة كذلك لنثبت
به فؤادك ورتلناه ترتيلا ۝ ولا يأتونك بمثل إلا جئناك بالحق
وأحسن تفسيرا ۝ الذين يحشرون على وجوههم إلى جهنم
أولئك شر مكانا وأضل سبيلا ۝ ولقد آتينا موسى الكتاب و
جعلنا معه أخاه هارون وزيرا ۝ فقلنا اذهبا إلى القوم الذين

तो उन्हों ने तो तुम्हें तुम्हारी बात में झुठला दिया, फिर तुम न तो (अज़ाब को) टाल सकते हो और न (कहीं से) सहायता पा सकते हो। और जो कोई भी तुम में से ज़ुल्म[12] करने वाला हो, उसे हम बड़े अज़ाब का मज़ा चखायेंगे।○

(हे मुहम्मद!) तुम से पहले हम ने जितने रसूल* भेजे हैं निस्सन्देह वे सब खाना खाते और बाज़ारों में चलते-फिरते थे[13]। हम ने तुम्हें एक-दूसरे के लिए आज़माइश बना दिया है[14]: क्या तुम सब्र* करते हो[15]? तुम्हारा रब* (सब-कुछ) देखता है[16]।○ २०

†जो लोग हम से मिलने की आशा नहीं रखते वे कहते है: क्यों न फ़िरिश्ते* हम पर उतारे गये या फिर हम अपने रब* को देखते? इन्हों ने अपने जी में अपने को बहुत बड़ा समझा ये सरकशी में हद से बहुत दूर निकल गये।○

जिस दिन ये फ़िरिश्तों* को देखेंगे, उस दिन अपराधियों के लिए कोई शुभ-सूचना न होगी;[17] वे कहेंगे: कोई आड़ कर दी जाये।○

हम बढ़े उन के किये-धरे की ओर फिर उसे बिखरी धूल कर डाला○ उस दिन जन्नत* वालों के ठहरने की जगह भी उत्तम होगी और दोपहर में आराम करने का स्थान भी बहुत अच्छा होगा;[18] ○ २१

उस दिन आसमान बदली के साथ फटेगा[19] और फ़िरिश्ते* उतारे जायेंगे।○

उस दिन वास्तविक राज्य रहमान* (कृपाशील ईश्वर) का होगा, और वह दिन काफ़िरों* के लिए कठिन होगा।○

उस दिन ज़ालिम अपने हाथ चबायेगा, कहेगा: क्या ही अच्छा होता कि मैंने रसूल* के साथ (सीधा) मार्ग ग्रहण किया होता!○ हाय मेरा अभाग्य! क्या ही अच्छा होता कि मैं ने अमुक व्यक्ति को घनिष्ट मित्र न बनाया होता।○ उस ने मुझे याददिहानी से[20] भटका दिया जब कि वह मेरे पास आ चुकी थी। शैतान* तो आड़े वक्त में मनुष्य का साथ छोड़ ही देता है।○

---

१२ ज़ुल्म से अभिप्रेत यहाँ सचाई और वास्तविकता पर ज़ुल्म है अर्थात् कुफ़्र* और शिर्क*।
१३ दे० आयत ७।
१४ अर्थात् तुम्हारे ईमान* वाले व्यक्तियों को तुम्हारे काफ़िरों* के लिए आज़माइश बना दिया है।
१५ सम्बोधन नबी सल्ल० से है परन्तु सुनाना औरों को अभीष्ट है।
† यहाँ से उन्नीसवाँ पारः (Part XIX) शुरू होता है।
१६ दे० आयत ५८।
१७ दे० सूरः अल-अनआम आयत ७-९, सूरः अल-हिज्र आयत ६-८, सूरः बनी इसराईल आयत ९०-९५।
१८ इस के मुक़ाबिले में काफ़िरों* की जो जगह होगी उस का उल्लेख आयत ३४ में किया गया।
१९ अर्थात् आसमान फटेगा और बदली ज़ाहिर होगी।
२० अर्थात् अल्लाह की किताब से।
* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

كذبوا بآياتنا فدمرناهم تدميرا ۝ وقوم نوح لما كذبوا الرسل
أغرقناهم وجعلناهم للناس آية وأعتدنا للظالمين عذابا أليما ۝ و
عادا وثمود وأصحاب الرس وقرونا بين ذلك كثيرا ۝ وكلا ضربنا
له الأمثال وكلا تبرنا تتبيرا ۝ ولقد أتوا على القرية التي أمطرت
مطر السوء أفلم يكونوا يرونها بل كانوا لا يرجون نشورا ۝ وإذا
رأوك إن يتخذونك إلا هزوا أهذا الذي بعث الله رسولا ۝ إن
كاد ليضلنا عن آلهتنا لولا أن صبرنا عليها وسوف يعلمون
حين يرون العذاب من أضل سبيلا ۝ أرأيت من اتخذ إلهه
هواه أفأنت تكون عليه وكيلا ۝ أم تحسب أن أكثرهم يسمعون
أو يعقلون إن هم إلا كالأنعام بل هم أضل سبيلا ۝ ألم تر إلى
ربك كيف مد الظل ولو شاء لجعله ساكنا ثم جعلنا الشمس عليه
دليلا ۝ ثم قبضناه إلينا قبضا يسيرا ۝ وهو الذي جعل لكم
الليل لباسا والنوم سباتا وجعل النهار نشورا ۝ وهو الذي
أرسل الرياح بشرا بين يدي رحمته وأنزلنا من السماء ماء
طهورا ۝ لنحيي به بلدة ميتا ونسقيه مما خلقنا أنعاما وأناسي
كثيرا ۝ ولقد صرفناه بينهم ليذكروا فأبى أكثر الناس إلا
كفورا ۝ ولو شئنا لبعثنا في كل قرية نذيرا ۝ فلا تطع الكافرين و

और रसूल* कहेगा : हे रब* ! निश्चय ही मेरी जाति वालों ने इस क़ुरआन* को उपहास का विषय ठहरा लिया था । ○

(हे मुहम्मद !) हम ने इसी तरह अपराधियों को हर नबी* का शत्रु बनाया है[२१]; और तुम्हारा रब* पथ-प्रदर्शन और सहायता के लिए काफ़ी है।○

जिन लोगों ने कुफ़्र* किया वे कहते हैं : इस पर पूरा क़ुरआन* एक ही बार में क्यों न उतार दिया गया ? ऐसा इस लिए किया गया ताकि इस के द्वारा तुम्हारे दिल को जमाव प्रदान करें; और हम ने इसे एक उचित क्रम में रखा । ○ और (इस में यह फ़ायदा भी है कि) जब भी वे तुम्हारे पास कोई निराली बात (अथवा अद्भुत प्रश्न) ले कर आते हैं हम ठीक बात तुम्हें पहुँचा देते हैं, और भली-भाँति बात खोल देते हैं[२२] ।○

जो अपने मुँह के बल दोज़ख़* की ओर घेर लाये जायेंगे : वही बुरे स्थान वाले हैं और (सीधे) मार्ग से भी बहुत भटक गये हैं । ○

हम ने मूसा को किताब* प्रदान की और उस के भाई हारून को सहायक के रूप में उस के साथ कर दिया । ○ फिर कहा : तुम दोनों उन लोगों के पास जाओ जिन्होंने हमारी आयतों* को झुठलाया है[२३] । फिर हम ने उन्हें तबाह कर के रख दिया । ○

और नूह की जाति* को भी, जब उन्हों ने रसूलों* को झुठलाया,[२४] हम ने उन्हें डुबो दिया और लोगों (की शिक्षा) के लिए उन्हें एक निशानी बना दिया । और ज़ालिमों के लिए हम ने एक दुःखदायी अज़ाब तैयार कर रखा है । ○

और आद* और समूद* और 'अर-रस्स' वालों* और इस बीच की बहुत सी नस्लों को (विनष्ट कर के रख दिया) । ○

(इन में से) हर एक (को सचेत करने) के लिए हमने (विनाशता को प्राप्त होने वालों की)

---

२१ दे० सूरः अल-अनआम आयत ११२ ।

२२ आयत ३२-३३ में इस का उल्लेख किया गया है कि क़ुरआन को एक ही बार में क्यों नहीं उतारा गया । क़ुरआन साधारण किताबों की तरह कोई किताब नहीं है बल्कि इसे अल्लाह ने आवश्यकता के अनुसार थोड़ा-थोड़ा कर के उतारा है । नबी सल्ल० की नुबुवत* के आरम्भ से अल्लाह ने क़ुरआन के द्वारा जहाँ ईमान* वालों को समय-समय पर आवश्यकतानुसार उचित शिक्षायें दी हैं और उन्हें जीवन-पथ का सच्चा और सीधा मार्ग दिखाया है वहीं दूसरी ओर वह उन आक्षेपों, उलझनों और प्रश्नों का उत्तर भी देता रहा है जो इस्लाम-विरोधी गरोह की ओर से पेश किये जाते रहे हैं । ये और इस तरह के दूसरे फ़ायदे इसी तरह हासिल हो सकते थे कि पूरे क़ुरआन का अवतरण एक साथ न हो कर थोड़ा-थोड़ा कर के हो ।

२३ अर्थात् उन आयतों* को जो हज़रत याक़ूब अ० और हज़रत यूसुफ़ अ० के द्वारा उन तक पहुँची थीं; जिन का प्रचार एक मुद्दत तक बनी इसराईल* के धर्मात्मा लोग भी करते रहे हैं ।

२४ हज़रत नूह अ० को झुठला कर उन्हों ने समस्त नबियों* का इन्कार किया इस लिए कि किसी एक नबी* का झुठलाना भी वास्तव में समस्त नबियों को झूठा ठहराना है ।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

और (हे नबी* !) तुम उस पर भरोसा रखो जो सजीव[40] है और कभी मरने वाला नहीं, और उस की हम्द* (प्रशंसा) के साथ तसबीह* करो वह अपने बन्दों के गुनाहों से काफ़ी ख़बरदार है, ○ जिस ने आसमानों और ज़मीन को और जो-कुछ उन के बीच है छः दिनों में[41] पैदा किया, फिर राज्यसिंहासन पर विराजमान हुआ[42]। रहमान*! तो उस के प्रति सवाल करो उस से जो ख़बर रखता है! ○

इन लोगों से जब कहा जाता है कि उस रहमान* (कृपाशील ईश्वर) को सजदः* करो। तो कहते हैं : और रहमान* क्या होता है? क्या जिसे तू हम से कह दे उसे हम सजदः* करें? इस चीज़ ने उन की नफ़रत और बढ़ा दी। ○ ६०

बड़ा बरकत वाला है वह जिस ने आसमान में बुर्ज[43] बनाये, और उस में एक चिराग़[44] और एक चमकता चाँद रखा! ○

और वही है जिस ने रात और दिन को एक-दूसरे के पीछे आने वाला बनाया, उस व्यक्ति के लिए जो चेतना चाहे, या कृतज्ञ होना चाहे। ○

रहमान* के (वास्तविक) बन्दे वही लोग हैं जो ज़मीन पर नम्रतापूर्वक चलते हैं, और जब अज्ञानी उन से (अज्ञानता की) बातें करते हैं तो कहते हैं : सलाम (है तुम पर);[45] ○ और जो अपने रब के आगे, सजदे* में और खड़े, रातें काटते हैं,[46] ○ जो कहते हैं : हमारे रब*! दोज़ख़* के अज़ाब को हम से दूर रख; निश्चय ही उस का अज़ाब चिमट जाने वाला है; ○ निश्चय ही वह ठहरने की जगह और स्थान दोनों ही दृष्टि से बुरा है ○ ६५

जो ख़र्च करते हैं, तो न अपव्यय करते हैं और न कृपणता से काम लेते हैं, बल्कि दोनों के बीच माध्यमिकता पर स्थिर रहते हैं; ○ जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे इलाह* (पूज्य) को नहीं पुकारते, और उस जीव को जिस (के क़त्ल) को अल्लाह ने हराम किया है क़त्ल नहीं करते परन्तु हक़ के साथ,[47] और न ज़िना (व्यभिचार) करते हैं[48]— जो कोई यह काम करे वह गुनाह की सज़ा पायेगा; ○ क़ियामत* के दिन उसे बढ़ा-चढ़ा अज़ाब दिया जायेगा, और

४० दे० सूरः अल-बक़रः फुटनोट ७१।

४१ अर्थात् छः युग (Period) में। दे० सूरः अल-हज्ज आयत ४७, अल-मआरिज आयत ४।

४२ दे० सूरः अल-आराफ़ फुट नोट १६।

४३ दे० सूरः अल-हिज्र फुट नोट ६।

४४ अर्थात् सूर्य। दे० सूरः नूह आयत १६।

४५ वे गाली और झूठ का जवाब गाली और झूठ से नहीं देते बल्कि सलाम कर के अलग हो जाते हैं। अज्ञानी और दुर्जन लोगों से उलझना उन्हें पसन्द नहीं। दे० सूरः अल-क़सस आयत ५५, सूरः अल-मोमिनून आयत ३।

४६ अर्थात् दिन की तरह उन की रातें भी पवित्र होती हैं। वे अपनी रातें भोग विलास, नाच-रंग और बेहूदा कामों में नहीं गुज़ारते और न रातों में वे चोरी करने और डाके मारने के लिए निकलते हैं। उन की रातों का अधिक भाग अल्लाह की इबादत* और उसी को लेटे, बैठे प्रत्येक अवस्था में पुकारने और याद करने में व्यतीत होता है। दे० सूरः अस-सजदः आयत १५-१६, सूरः अज़-ज़ुमर आयत ९ और सूरः अज़-ज़ारियात आयत १७।

४७ अर्थात् यदि क़त्ल किया जाता है तो विधान के अन्तर्गत उन्हीं लोगों को जो इसी सज़ा के भागी होते हैं।

४८ 'रहमान' के बन्दे और दूसरे गुनाहों से भी बचते हैं यहाँ उदाहरण के रूप में तीन बड़े गुनाहों का उल्लेख किया गया है।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

और (हे नबी* !) तुम उस पर भरोसा रखो जो सजीव[४०] है और कभी मरने वाला नहीं, और उस की हम्द* (भरोसा) के साथ तसबीह* करो वह अपने बन्दों के गुनाहों से काफ़ी खबरदार है, ○ जिस ने आसमानों और ज़मीन को और जो-कुछ उन के बीच है छः दिनों में[४१] पैदा किया, फिर राज्यसिंहासन पर विराजमान हुआ[४२] । रहमान* ! तो उस के प्रति सवाल करो उस से जो खबर रखता है । ○

इन लोगों से जब कहा जाता है कि उस रहमान* (कृपाशील ईश्वर) को सजदः* करो ! तो कहते हैं : और रहमान* क्या होता है ? क्या जिसे तू हम से कह दे उसे हम सजदः* करें ? इस चीज़ ने उन की नफ़रत और बढ़ा दी । ○ ६०

बड़ा बरकत वाला है वह जिस ने आसमान में बुर्ज[४३] बनाये, और उस में एक चिराग़[४४] और एक चमकता चाँद रखा । ○

और वही है जिस ने रात और दिन को एक-दूसरे के पीछे आने वाला बनाया, उस व्यक्ति के लिए जो चेतना चाहे, या कृतज्ञ होना चाहे । ○

रहमान* के (वास्तविक) बन्दे वही लोग हैं जो ज़मीन पर नम्रतापूर्वक चलते हैं, और जब अज्ञानी उन से (अज्ञानता की) बातें करते हैं तो कहते हैं : सलाम (है तुम पर);[४५] ○ और जो अपने रब के आगे, सजदे* में और खड़े, रातें काटते हैं,[४६] ○ जो कहते हैं : हमारे रब* ! दोज़ख़* के अज़ाब को हम से दूर रख; निश्चय ही उस का अज़ाब चिमट जाने वाला है; ○ निश्चय ही वह ठहरने की जगह और स्थान दोनों ही दृष्टि से बुरा है ○ ६६

जो ख़र्च करते हैं, तो न अपव्यय करते हैं और न कृपणता से काम लेते हैं, बल्कि दोनों के बीच माध्यमिकता पर स्थिर रहते हैं; ○ जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे इलाह* (पूज्य) को नहीं पुकारते, और उस जीव को जिस (के क़त्ल) को अल्लाह ने हराम किया है क़त्ल नहीं करते परन्तु हक़ के साथ,[४७] और न ज़िना (व्यभिचार) करते हैं[४८]— जो कोई यह काम करे वह गुनाह की सज़ा पायेगा; ○ क़ियामत* के दिन उसे बढ़ा-चढ़ा अज़ाब दिया जायेगा, और

---

४० दे० सूरः अल-बक़रः फुटनोट ७१ ।

४१ अर्थात् छः युग (Period) में । दे० सूरः अल-हज्ज आयत ४७, अल-मआरिज आयत ४ ।

४२ दे० सूरः अल-आराफ़ फुट नोट १६ ।

४३ दे० सूरः अल-हिज्र फुट नोट ६ ।

४४ अर्थात् सूर्य । दे० सूरः नूह आयत १६ ।

४५ वे गाली और झूठ का जवाब गाली और झूठ से नहीं देते बल्कि सलाम कर के अलग हो जाते हैं; अज्ञानी और दुर्जन लोगों से उलझना उन्हें पसन्द नहीं । दे० सूरः अल-क़सस आयत ५५, सूरः अल-मोमिनून आयत ३ ।

४६ अर्थात् दिन की तरह उन की रातें भी पवित्र होती हैं । वे अपनी रातें भोग विलास, नाच-रंग और बेहूदा कामों में नहीं गुज़ारते और न रातों में वे चोरी करने और डाके मारने के लिए निकलते हैं । उन की रातों का अधिक भाग अल्लाह की इबादत* और उसी को लेटे, बैठे प्रत्येक अवस्था में पुकारने और याद करने में व्यतीत होता है । दे० सूरः अस-सजदः आयत १५-१६, सूरः अज़-ज़ुमर आयत ९ और सूरः अज़-ज़ारियात आयत १७ ।

४७ अर्थात् यदि क़त्ल किया जाता है तो विधान के अन्तर्गत उन्हीं लोगों को जो इसी सज़ा के भागी होते हैं ।

४८ 'रहमान' के बन्दे और दूसरे गुनाहों से भी बचते हैं यहाँ उदाहरण के रूप में तीन बड़े गुनाहों का उल्लेख किया गया है ।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

उसी में वह सदा अपमानित हो कर पड़ा रहेगा; ○ सिवाय उस के जो (अल्लाह की ओर) पलटा और ईमान* लाया और अच्छा काम किया, तो ऐसे लोगों की बुराइयों को अल्लाह
७० भलाइयों से बदल देगा। अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील और दया करने वाला है। ○

जो कोई तौबः* कर के अच्छा काम करता है, वही वास्तव में अल्लाह की ओर पलटता है। ○— और (रहमान के बन्दे वे हैं) जो झूठ के साक्षी नहीं बनते, और जब कभी बेहूदा काम के पास से गुज़रते हैं, तो सज्जन व्यक्ति की तरह गुज़र जाते हैं। ○ वे लोग कि जब उन्हें उन के रब* की आयतों* के द्वारा चेताया जाता है, तो उन (आयतों*) पर वे अन्धे और बहरे बन कर नहीं गिरते[69]। ○ जो कहते हैं : हमारे रब* ! हमें अपनी पत्नियों और अपनी सन्तति से आँखों की ठण्डक दे,[70] और हमें डर रखने वालों और अवज्ञा से बचने वालों का नायक बना[71]। ○

यही लोग हैं जो बदले में ऊँचे भवन पायेंगे इस लिए कि इन्हों ने सब्र[72] किया, और वहाँ
७१ इन का अभिवादन होगा और इन्हें सलाम पहुँचाया जायगा, ○ वहाँ वे सदैव रहेंगे। क्या ही अच्छी है ठहरने की जगह और (रहने का) स्थान (जो इन्हें मिलेगा)। ○

(हे नबी* !) कह दो : मेरे रब* को तुम्हारी क्या परवा यदि तुम उसे न पुकारो। अब जब कि तुम ने झुठला दिया है, तो जल्द ही इस की सज़ा (तुम्हें) चिमट जाने वाली होगी। ○

---

६९. अर्थात् वे ऐसे नहीं हैं कि उन्हें अल्लाह की आयतें* सुनाई न दें और वे अन्धे और बहरे बन कर रह जाएँ और अल्लाह की आयतों* का उन पर कोई प्रभाव न पड़े और वे उन से कोई फ़ायदा न उठाएँ।

७०. अर्थात् उन्हें ईमान* लाने और अच्छे काम करने का सौभाग्य प्राप्त कर। वे अल्लाह से डरने वाले और उन का जीवन उच्च चरित्र और सदाचार का जीवन हो। उन्हें देख कर हृदय और [illegible] सुख और हर्षित प्राप्त हो। वे चाहते [illegible] वह [illegible] कि [illegible] कोई [illegible] न [illegible] कुफ़्र* और शिर्क* में [illegible] रहे हों। [illegible] [illegible] जब [illegible] हो [illegible] है। [illegible] [illegible] [illegible] हुए [illegible] हो [illegible] है। [illegible] [illegible] यदि [illegible] [illegible] है तो [illegible] [illegible] हो [illegible] है। [illegible] यदि [illegible] [illegible] है तो उस का [illegible] [illegible] हो है।

७१. अर्थात् परहेज़गारों और अल्लाह और नेकी के कामों में हम सब से आगे हों। हम स्वयं नेक हों और हमारे द्वारा समाज में नेकी और भलाई का प्रसार हो। हम नेक लोगों के अगुवा और पेशवा हों।

७२. मालूम हुआ कि जन्नत एक ऐसा पुरस्कार है जिस के जीवन में [illegible] [illegible] और [illegible] का [illegible] होना है। 'रहमान' के बन्दों की जिन विशेषताओं का उल्लेख ऊपर की आयतों* में किया गया है उन का वास्तविक मूल [illegible] ही है।

* इस का अर्थ परिशिष्ट में आयी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

२६—अश–शु,अरा
(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः का नाम 'अश–शु, अरा' (Poets) सूरः की आयत २२४ से लिया गया है। विरोधियों की ओर से नबी* सल्ल० के बारे में जहाँ और बहुत सी बातें कही जाती थीं वहीं वे आप (सल्ल०) के बारे में यह भी कहते थे कि आप एक कवि हैं और जो किताब आप लोगों के सामने पेश कर रहे हैं वह अल्लाह की उतारी हुई किताब नहीं है बल्कि वह आप की अपनी रचना है। उन के इस आरोप का खण्डन करते हुए संक्षेप में बताया गया है कि एक नबी* और कवि में क्या अन्तर होता है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

सूरः* के अध्ययन और ऐतिहासिक कथनों से मालूम होता है कि यह सूरः* मक्का के मध्य-काल में अवतीर्ण हुई है।

वार्त्तायें

सूरः २५ से ले कर सूरः २८ तक के विषयों में बड़ी समानता पाई जाती है। पिछली सूरः में जो-कुछ बयान हुआ है उस का विस्तार पूर्वक वर्णन प्रस्तुत सूरः में किया गया है। यह सूरः और इस के बाद वाली सूरः दोनों पिछली सूरः के अधीन प्रतीत होती हैं।

प्रस्तुत सूरः* अल्लाह के दो नामों 'अज़ीज़' और 'रहीम' पर आधारित है[1]। अल्लाह के इन दोनों गुणवाचक नामों से विभिन्न बातों पर प्रकाश पड़ता है उदाहरणार्थ वह 'रहीम' (दयावान्) है इस लिए वह अज़ाब में जल्दी नहीं करता बल्कि लोगों को सोचने-समझने और सँभलने की पूरी मुहलत देता है। वह 'अज़ीज़' अर्थात् अपार शक्ति वाला है इस लिए कोई उस के हाथ से निकल नहीं सकता। मुहलत की घड़ी पूरी होने पर उस के अज़ाब को रोका नहीं जा सकता। वह अपार शक्ति का मालिक है इस लिए ईमान* वालों का भरोसा उसी पर होना चाहिए।

इस सूरः* की एक विशेषता यह है कि इस में कुछ वाक्य टेका (Refrain) के रूप में कई बार आये हैं। जिस के कारण सूरः का प्रभाव अत्यन्त बढ़ गया है।

इस सूरः* में नबी* सल्ल० को तसल्ली देते हुए कहा गया है कि आप उन लोगों के पीछे अपनी जान क्यों घुलाते हैं जो आप पर ईमान* नहीं ला रहे हैं। उन के ईमान* न लाने का कारण यह नहीं है कि उन्हें कोई निशानी नहीं दिखाई गई है। उन के इन्कार का मूल कारण उन की हठधर्मी और दुराग्रह के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। सत्यप्रिय लोगों के लिए तो इस संसार में चारों ओर पृथ्वी

१ 'अज़ीज़' अर्थात् अपार शक्ति का मालिक (Mighty), 'रहीम' अर्थात् दयावान्।

२. आयत ९, ६८, १०४, १२२, १४०, १५९, १७५, १९१ ।

* इस का अर्थ आखिर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

से ले कर नक्षत्र-लोक तक निशानियाँ-ही-निशानियाँ फैली हुई हैं जिन्हें देख कर वे सत्य को पा लेते हैं। परन्तु जो लोग बुद्धिहीन और हठ-धर्म हैं उन के लिए कोई भी चीज़ ऐसी नहीं हो सकती जिसे देख कर वे ईमान* ला सकें। न वे पृथ्वी और आकाश में फैली हुई निशानियों को देख कर ईमान* ला सकते हैं और न नबियों* के चमत्कार को देख कर ही वे ईमान* ला सकते हैं। ऐसे लोग कुफ़्र*, शिर्क* और गुमराही में ही पड़े रहते हैं यहाँ तक कि अल्लाह का अज़ाब आ कर उन्हें अपनी लपेट में ले लेता है।

लोगों को नबियों* के क़िस्सों और प्राचीन जातियों* के वृत्तान्त द्वारा चेतावनी दी गई है। लोगों को इस बात पर उभारा गया है कि वे इन क़िस्सों के द्वारा शिक्षा ग्रहण करें। नबियों* और प्राचीन जातियों के जो क़िस्से इस सूरः* में बयान किये गये हैं वे एक विशेष ऐतिहासिक क्रम के साथ बयान किये गये हैं। नबियों* के वृत्तान्त के आरम्भ में भी हज़रत मुहम्मद सल्ल० की नुबूवत* का उल्लेख किया गया है और अन्त में भी आप (सल्ल०) की नुबूवत का उल्लेख किया गया है। यह इस बात की ओर संकेत है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० अल्लाह की ओर से वही शिक्षा ले कर आये हैं जो दूसरे सभी नबियों* की शिक्षा रही है। आप (सल्ल०) को जिन संकटों और बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है इन संकटों और बाधाओं का सामना पिछले नबियों* को भी करना पड़ा है। उन की जातियों ने उन्हें भी सुख और चैन से रहने नहीं दिया। उन की राह में तरह-तरह की रुकावटें खड़ी की गईं। आप (सल्ल०) की तरह उन्हें भी अनेक प्रकार की मानसिक और शारीरिक यन्त्रणायें सहन करनी पड़ी हैं।

सूरः* के अन्त में काफ़िरों* को समझाते हुये कहा गया है कि वे क़ुरआन को देखें *जो इन की अपनी ही भाषा में है। हज़रत मुहम्मद सल्ल० और आप (सल्ल०) के* साथियों को देखें; और विचार करें कि क्या यह 'कलाम' किसी शैतान* या जिन्न* आदि का कलाम हो सकता है? क्या ऐसा 'कलाम' पेश करने वाला कोई 'काहिन' हो सकता है? क्या मुहम्मद (सल्ल०) और उन के साथियों का जीवन और उन का आचरण वैसा ही है जैसा कवियों और कवियों के सहगामियों का होता है?

---

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अश-शु़अरा

(मक्का में उतरी — आयतें* २२७)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

بسم الله الرحمن الرحيم
طسم ۝ تلك آيات الكتاب المبين ۝ لعلك باخع نفسك ألا يكونوا
مؤمنين ۝ إن نشأ ننزل عليهم من السماء آية فظلت أعناقهم
لها خاضعين ۝ وما يأتيهم من ذكر من الرحمن محدث إلا كانوا
عنه معرضين ۝ فقد كذبوا فسيأتيهم أنباء ما كانوا به
يستهزئون ۝ أولم يروا إلى الأرض كم أنبتنا فيها من كل
زوج كريم ۝ إن في ذلك لآية وما كان أكثرهم مؤمنين ۝ و
إن ربك لهو العزيز الرحيم ۝ وإذ نادى ربك موسى أن ائت
القوم الظالمين ۝ قوم فرعون ألا يتقون ۝ قال رب إني أخاف
أن يكذبون ۝ ويضيق صدري ولا ينطلق لساني فأرسل
إلى هارون ۝ ولهم علي ذنب فأخاف أن يقتلون ۝ قال
كلا فاذهبا بآياتنا إنا معكم مستمعون ۝ فأتيا فرعون
فقولا إنا رسول رب العالمين ۝ أن أرسل معنا بني إسرائيل ۝
قال ألم نربك فينا وليدا ولبثت فينا من عمرك سنين ۝ و
فعلت فعلتك التي فعلت وأنت من الكافرين ۝ قال فعلتها
إذا وأنا من الضالين ۝ ففررت منكم لما خفتكم فوهب لي
ربي حكما وجعلني من المرسلين ۝ وتلك نعمة تمنها علي
أن عبدت بني إسرائيل ۝ قال فرعون وما رب العالمين ۝ قال
رب السماوات والأرض وما بينهما إن كنتم موقنين ۝
قال لمن حوله ألا تستمعون ۝ قال ربكم ورب آبائكم

ता०सीन०मीम०[1] ○ । ये खुली हुई किताब* की आयतें हैं। (हे मुहम्मद !) शायद तुम (ग़म के मारे) अपने-आप को हलाक कर दोगे इस लिए कि ये लोग ईमान नहीं लाते[2] । ○

यदि हम चाहें, तो उन पर आसमान से एक निशानी उतार दें कि उन की गरदनें उस के आगे झुक जायें[3] । ○ इन लोगों के पास रहमान* (कृपाशील ईश्वर) की ओर से जो नई याददिहानी भी आती है, ये उस से मुँह मोड़ लेते हैं। ○ अब कि ये झुठला चुके हैं; सो जल्द ही इन्हें उस की वास्तविकता प्रतीत हो जायेगी जिस की ये हँसी उड़ाते रहे। ○

क्या इन्हों ने ज़मीन को नहीं देखा कि हम ने कितनी उस में हर प्रकार की वनस्पति उगाई है[1] ! ○ निश्चय ही इस में एक निशानी है[7] परन्तु इन में अधिकतर मानने वाले नहीं। ○ और निसन्देह तेरा रब* ही अपार शक्ति का मालिक और दयावन्त है[8] । ○

और याद करो जब कि तुम्हारे रब* ने मूसा को पुकारा[4] : ज़ालिम लोगों के पास जा, ○ — फ़िरऔन की जाति वालों के पास। — क्या वे डरते नहीं[5] ? ○ उस ने कहा : रब* ! मुझे भय है कि वे मुझे झुठला देंगे, ○ और मेरा सीना घुटता है, और मेरी ज़बान नहीं चलती, इस लिए हारून के पास रिसालत* भेज दीजिए। ○

---

१ दे० सूरः अल-बक़रः फुट नोट १।

२ क़ुरआन की और दूसरी सूरतों* में भी नबी सल्ल० की इस हालत का उल्लेख मिलता है। उदाहरण के लिए देखिए सूरः अल-कह्फ़ आयत ६ और सूरः फ़ातिर आयत ८।

३ अर्थात् अल्लाह चाहे तो सब को ईमान* लाने पर विवश होना पड़े परन्तु ऐसा ईमान* अल्लाह को अभीष्ट नहीं। वह तो चाहता है कि लोग अपनी बुद्धि से काम ले कर अल्लाह की निशानियों के द्वारा सत्य से परिचित हों और स्वेच्छापूर्वक सत्य मार्ग को ग्रहण करें। इसी में मनुष्य की परीक्षा भी है और यही मनुष्य के नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास का एक-मात्र साधन भी है। मनुष्य को ईमान* लाने पर बाध्य करना मानव जाति की सृष्टि के वास्तविक उद्देश्य के सर्वथा प्रतिकूल है। क़ुरआन में इस तथ्य की ओर अनेक-अनेक संकेत किया गया है। उदाहरण के लिए दे० सूरः यूनुस आयत ९९ और सूरः हूद आयत ११८-११९।

४ दे० सूरः दुख़ान आयत १०।

५ दे० सूरः अन-नाज़िआत आयत १७।

(६, ७ व ८ अगले पृष्ठ पर)

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

الْأَوَّلِينَ ۝ قَالَ إِنَّ رَسُولَكُمُ الَّذِي أُرْسِلَ إِلَيْكُمْ لَمَجْنُونٌ ۝
قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا إِن كُنتُمْ تَعْقِلُونَ ۝
قَالَ لَئِنِ اتَّخَذْتَ إِلَٰهًا غَيْرِي لَأَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُونِينَ ۝
قَالَ أَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ مُّبِينٍ ۝ قَالَ فَأْتِ بِهِ إِن كُنتَ مِنَ
الصَّادِقِينَ ۝ فَأَلْقَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ۝ وَنَزَعَ
يَدَهُ فَإِذَا هِيَ بَيْضَاءُ لِلنَّاظِرِينَ ۝ قَالَ لِلْمَلَإِ حَوْلَهُ إِنَّ هَٰذَا
لَسَاحِرٌ عَلِيمٌ ۝ يُرِيدُ أَن يُخْرِجَكُم مِّنْ أَرْضِكُم بِسِحْرِهِ فَمَاذَا
تَأْمُرُونَ ۝ قَالُوا أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَابْعَثْ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ۝
يَأْتُوكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيمٍ ۝ فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِيقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ۝
وَقِيلَ لِلنَّاسِ هَلْ أَنتُم مُّجْتَمِعُونَ ۝ لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ إِن
كَانُوا هُمُ الْغَالِبِينَ ۝ فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالُوا لِفِرْعَوْنَ أَئِنَّ
لَنَا لَأَجْرًا إِن كُنَّا نَحْنُ الْغَالِبِينَ ۝ قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ
إِذًا لَّمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ۝ قَالَ لَهُم مُّوسَىٰ أَلْقُوا مَا أَنتُم مُّلْقُونَ ۝
فَأَلْقَوْا حِبَالَهُمْ وَعِصِيَّهُمْ وَقَالُوا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ إِنَّا لَنَحْنُ الْغَالِبُونَ ۝
فَأَلْقَىٰ مُوسَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ۝ فَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ
سَاجِدِينَ ۝ قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ رَبِّ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ۝
قَالَ آمَنتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ آذَنَ لَكُمْ إِنَّهُ لَكَبِيرُكُمُ الَّذِي عَلَّمَكُمُ
السِّحْرَ فَلَسَوْفَ تَعْلَمُونَ لَأُقَطِّعَنَّ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُم مِّنْ خِلَافٍ
وَلَأُصَلِّبَنَّكُمْ أَجْمَعِينَ ۝ قَالُوا لَا ضَيْرَ إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا

और मुझ पर उन का एक गुनाह (अपराध) है,[९] तो मैं डरता हूँ कि वे मुझे क़त्ल कर डालेंगे। ○ (अल्लाह ने) कहा : कदापि नहीं, तुम दोनों हमारी निशानियाँ ले कर[१०] जाओ। हम तुम्हारे साथ हैं सुनते रहेंगे। ○ १५

तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ और कहो : हम सारे संसार के रब* के भेजे हुए हैं, ○ (और इस लिए आये हैं) कि तू बनी इसराईल* को हमारे साथ जाने दे[११]। ○

(फ़िरऔन ने) कहा : क्या हम ने तुझे अपने यहाँ बचा सा नहीं पाला था ? और तू अपनी आयु के कितने वर्षों तक हम में रहा, ○ और तू कर गया अपना वह काम जो कर गया, और तू अकृतज्ञता दिखलाने वालों में से है, ○

(मूसा ने) कहा : वह काम मैं ने उस समय (बहुत पहले) किया था, और (उस समय) मुझ से ग़लती हुई थी[१२]। ○ २०

फिर जब मुझे तुम्हारा भय हुआ तो मैं तुम्हारे यहाँ से भाग गया, फिर मेरे रब* ने मुझे हुक्म* प्रदान किया और मुझे रसूलों* में शामिल कर लिया। ○ और यही (तेरा) एहसान है जो तू मुझ पर जताता है कि तू ने बनी इसराईल* को दास बना रखा है। ○

फ़िरऔन ने कहा : और यह सारे संसार का रब*[१३] क्या होता है[१४] ? ○ (मूसा ने)

---

६ उस की शक्ति तो ऐसी है कि यदि वह किसी को उस के अपराध पर सज़ा देने का निश्चय कर ले तो क्षण भर में उसे मिटा कर रख दे। यह उस की दया है कि लोगों को उन के अपराधों पर तुरन्त ही नहीं पकड़ता बल्कि उन को सोचने-समझने और सँभलने की पूरी मुहलत देता है।

७ तुलनात्मक (Comparative) अध्ययन के लिए दे० सूरः अल-आराफ़ आयत १०३-१३७, सूरः यूनुस आयत ७५-६२, सूरः बनी इसराईल आयत १०१-१०४ और सूरः ता० हा० आयत ६-७८।

८ दे० आयत १०८, १२६, १४४, १५०, १६३।

९ हज़रत मूसा अ० ने फ़िरऔन के एक आदमी को बनी इसराईल* के एक व्यक्ति से लड़ते देख कर एक घूँसा मार दिया था जिस से उस की मृत्यु हो गई। जब हज़रत मूसा को यह सूचना मिली कि फ़िरऔन के लोगों को इस घटना की सूचना मिल चुकी है और वे उन के बदले में क़त्ल की तैयारी में हैं तो वे देश छोड़ कर मदयन की ओर चले गये थे अब कई वर्षों के पश्चात् उन्हें हुक्म दिया जा रहा है कि तुम फ़िरऔन के पास हमारा सन्देश ले कर जाओ (दे० सूरः अल-क़सस आयत १५-२२)।

१० दे० सूरः ता०हा० आयत १७-२४, सूरः अन-नम्ल आयत ८-१२, और सूरः अल-क़सस आयत ३०-३२।

११ हज़रत मूसा अ० को फ़िरऔन के पास दो उद्देश्यों से भेजा था। फ़िरऔन को अल्लाह की बन्दगी की ओर बुलाने के लिए (दे० सूरः अन-नाज़ियात) और बनी इसराईल* को उस की ग़ुलामी से छुटकारा दिलाने के लिए।

१२ अर्थात् मैं ने उसे जान बूझ कर क़त्ल नहीं किया। उसे जान से मारने के लिए घूँसा नहीं मारा था, यह तो संयोग की बात है कि इस से उस की मृत्यु हो गई।

१३ दे० आयत १६।

(१४ अगले पृष्ठ पर)

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

कहा : आसमानों और ज़मीन का रब*, और जो-कुछ इन दोनों के बीच है उस का, यदि तुम विश्वास करने वाले हो[14] । ○

(फ़िरऔन ने) उन लोगों से जो उस के चतुर्दिक थे कहा : क्या तुम सुनते नहीं ? ○ २५

(मूसा ने) कहा : तुम्हारा रब* भी और तुम्हारे अगले पूर्वजों का रब* भी । ○

(फ़िरऔन ने लोगों से) कहा : निश्चय ही यह तुम्हारा रसूल* जो तुम्हारी ओर भेजा गया है बिलकुल ही पागल है ! ○

(मूसा ने) कहा : पूर्व और पश्चिम और जो-कुछ इन के बीच है सब का रब,* यदि तुम बुद्धि से काम लो । ○

(फ़िरऔन ने) कहा : यदि तू ने मेरे सिवा किसी और को इलाह* बनाया, तो मैं तुझे क़ैदियों में शामिल कर दूँगा[15] । ○

(मूसा ने) कहा : चाहे मैं तेरे सामने ले आऊँ एक खुली चीज़ (जब भी) ? ○ ३

(फ़िरऔन ने) कहा : अच्छा तो वह ले आ,, यदि तू सच्चे लोगों में से है ! ○

फिर (मूसा ने) अपनी लाठी फेंकी क्या देखते हैं कि वह एक प्रत्यक्ष बड़ा सर्प है,[16] ○ और उस ने अपना हाथ बाहर निकाला तो देखने वालों ने क्या देखा कि वह चमक रहा है। ○

(फ़िरऔन ने) सरदारों से जो उस के चतुर्दिक थे कहा : निश्चय ही यह बड़ा भिज्ञ जादूगर है, ○-चाहता है कि अपने जादू से तुम्हें तुम्हारे देश से निकाल दे अब तुम्हारी क्या सम्मति है। ○ ३

उन्हों ने कहा : इसे और इस के भाई को इन्तज़ार में रखिए, और एकत्र करने वालों को नगरों में भेजिए-○-वे हर भिज्ञ जादूगर को आप के पास ले आयें । ○

सो एक निश्चित दिन नियत समय पर[18] जादूगर इकट्ठे कर लिये गये । ○ और लोगों से कहा गया : तुम भी इकट्ठे होते हो ? ○ कदाचित् हम जादूगरों के ही अनुवर्ती रहें यदि वही विजयी हों । ○ ४

जब जादूगर आये तो उन्हों ने फ़िरऔन से कहा : हमें तो बदला (पुरस्कार) मिलेगा ही यदि हम विजयी रहे ? ○ उस ने कहा : हाँ, और निश्चय ही तुम उस समय (मेरे) क़रीबी लोगों में से हो जाओगे । ○ मूसा ने उन से कहा : फेंको जो-कुछ तुम्हें फेंकना है । ○ तब उन्हों ने अपनी रस्सियाँ और लाठियाँ फेंक दीं[19] और बोले : फ़िरऔन के प्रताप की क़सम हम ही विजयी रहेंगे । ○

---

१४ अर्थात् हे मूसा ! तू अपने को जिस का रसूल कह रहा है और जिस का सन्देश ले कर तू मेरे पास आया है वह 'सारे संसार का रब*' आख़िर कौन है ? ।*

१५ दे० सूरः अद-दुख़ान आयत ७ ।

१६ दे० सूरः अल-आराफ़ आयत १०५-१२४ ।

१७ यहाँ और सूरः अल-आराफ़ में सर्प के लिए 'सुअ्बान' शब्द प्रयुक्त हुआ है जो बड़े सर्प अजगर के लिए बोला जाता है । सूरः अन-नम्ल में इस के लिए 'जान' शब्द लाया गया है जो साधारण अथवा छोटे साँपों के लिए प्रयोग होता है । इस का कारण शायद यह हो कि सर्प आकार में अजगर जैसा था परन्तु तेज़ी और फुर्ती में वह छोटे साँपों की तरह था । सूरः ता० हा० में 'दौड़ते हुए साँप' कहा भी गया है ।

१८ मुक़ाबिले के लिए क़िब्तियों के त्योहार का दिन निश्चित हुआ था ताकि अधिक-से-अधिक संख्या में लोग इस मुक़ाबिले को देख सकें । दे० सूरः ता० हा० आयत ५६ ।

१९ वे रस्सियाँ और लाठियाँ साँपों के रूप में दीख पड़ने लगीं यहाँ तक कि हज़रत मूसा अ० को ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उन की रस्सियाँ और लाठियाँ दौड़ी चली आ रही हैं । दे० सूरः अल-आराफ़ आयत ११६ और सूरः ता० हा० आयत ६६-६७ ।

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।*

फिर मूसा ने अपनी लाठी फेंकी तो क्या देखते हैं कि जो-कुछ उन्हों ने स्वाँग बनाया था
४५ वह सब को निगलती जा रही है। ○

इस पर जादूगर सजदे* में गिर पड़े, ○ और बोल उठे : हम सारे संसार के रब*[१९] पर ईमान* ले आये, ○ — मूसा और हारून के रब* पर। ○

(फ़िरऔन ने) कहा : तुम उस पर ईमान* ले आये इस से पहले कि मैं तुम्हें इजाज़त देता। निश्चय ही वह तुम्हारा बड़ा है जिस ने तुम्हें जादू सिखाया है। अच्छा जल्द ही तुम्हें मालूम हुआ जाता है। मैं तुम्हारे हाथ और तुम्हारे पाँव विपरीत दिशाओं से कटवा दूँगा, और तुम सब को सूली पर चढ़ा दूँगा। ○

उन्हों ने कहा : कुछ परवा नहीं, निश्चय ही हम अपने रब* की ओर लौट कर जाने वाले
५० हैं। ○ *हम आशा रखते हैं कि हमारा रब* हमारी भूलों को क्षमा कर देगा इस लिए कि* हम सब से पहले ईमान* ले आये हैं। ○

हम ने मूसा को वह्य* की कि रातों-रात मेरे बन्दों को ले कर निकल जाओ, निश्चय ही तुम्हारा पीछा किया जायेगा। ○

तब फ़िरऔन ने इकट्ठा करने वाले लोगों को नगरों में भेजा, ○ (और कहला दिया कि)
५५ *ये (इन की) एक टोली है थोड़े से लोगों की, ○ और ये हमें ग़ुस्सा दिला रहे हैं। ○ और* हम एक गरोह हैं बचाव कर सकने वाले। ○

इस तरह हम उन्हें[२१] बाग़ों और स्रोतों में से निकाल लाये, ○ और ख़ज़ानों और अच्छे स्थानों से। ○ इस तरह (किया उन के साथ) और बनी इसराईल* को हम ने इन (सब चीज़ों) का उत्तराधिकारी बना दिया[२२]। ○

६० सवेरा होते उन के पीछे जा पहुँचे। ○ फिर जब दोनों गरोहों ने एक-दूसरे को देख लिया, तो मूसा के साथियों ने कहा : हम तो पकड़े गये। ○ (मूसा ने) कहा : कदापि नहीं, निस्सन्देह मेरे साथ मेरा रब* है। वह मुझे राह दिखायेगा[२३]। ○

* तब हम ने मूसा की ओर वह्य* की कि अपनी लाठी समुद्र पर मारो। सो वह फट गया, और (उस का) हर टुकड़ा एक महान् पर्वत जैसा हो गया। ○ और हम ने दूसरों को वहीं क़रीब कर दिया[२४]। ○ और मूसा को और उन सब लोगों को जो उस के साथ थे हम ने
६५ बचा लिया। ○ और दूसरों को डुबो दिया। ○ निश्चय ही इस में एक निशानी है परन्तु उन में अधिकतर लोग मानने वाले नहीं हैं। ○ और निस्सन्देह तेरा रब* अपार शक्ति का मालिक और दया करने वाला है। ○

---

२० दे० आयत ३६, ३७।

२१ अर्थात् फ़िरऔन के लोगों को।

२२ फ़िरऔन ने तो दूर-दूर से सेनायें एकत्र की थीं बनी इसराईल* को दुनियाँ से मिटाने के लिए परन्तु जब उन्हों ने बनी इसराईल का पीछा किया तो अल्लाह ने जैसा कि आगे आ रहा है उन्हें दरिया में डुबो दिया। फिर उन्हें इस का अवसर न मिल सका कि वे अपने बाग़ों, स्रोतों और अपने निवास-स्थानों आदि में सुख भोगने के लिए लौट सकें। अल्लाह ने बनी इसराईल* को फ़लिस्तीन (Palestine) में वह सब-कुछ प्रदान किया जो कभी फ़िरऔन के लोगों को प्राप्त था। वे फ़लिस्तीन में बाग़ों, स्रोतों आदि सभी चीज़ों के मालिक हुये। मुक़ाबिले के लिए दे० सूरः अद-दुख़ान आयत २५-२८।

२३ अर्थात् मुझे इस संकट से बचने की राह दिखायेगा।

२४ अर्थात् फ़िरऔन और उस की सेना को।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

مُنقَلِبُونَ ۝ إِنَّا نَطْمَعُ أَن يَغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطَٰيَٰنَآ أَن كُنَّآ أَوَّلَ ٱلْمُؤْمِنِينَ ۝ وَأَوْحَيْنَآ إِلَىٰ مُوسَىٰٓ أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِىٓ إِنَّكُم مُّتَّبَعُونَ ۝ فَأَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِى ٱلْمَدَآئِنِ حَٰشِرِينَ ۝ إِنَّ هَٰٓؤُلَآءِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيلُونَ ۝ وَإِنَّهُمْ لَنَا لَغَآئِظُونَ ۝ وَإِنَّا لَجَمِيعٌ حَٰذِرُونَ ۝ فَأَخْرَجْنَٰهُم مِّن جَنَّٰتٍ وَعُيُونٍ ۝ وَكُنُوزٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ۝ كَذَٰلِكَ وَأَوْرَثْنَٰهَا بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ۝ فَأَتْبَعُوهُم مُّشْرِقِينَ ۝ فَلَمَّا تَرَٰٓءَا ٱلْجَمْعَانِ قَالَ أَصْحَٰبُ مُوسَىٰٓ إِنَّا لَمُدْرَكُونَ ۝ قَالَ كَلَّآ إِنَّ مَعِىَ رَبِّى سَيَهْدِينِ ۝ فَأَوْحَيْنَآ إِلَىٰ مُوسَىٰٓ أَنِ ٱضْرِب بِّعَصَاكَ ٱلْبَحْرَ فَٱنفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَٱلطَّوْدِ ٱلْعَظِيمِ ۝ وَأَزْلَفْنَا ثَمَّ ٱلْءَاخَرِينَ ۝ وَأَنجَيْنَا مُوسَىٰ وَمَن مَّعَهُۥٓ أَجْمَعِينَ ۝ ثُمَّ أَغْرَقْنَا ٱلْءَاخَرِينَ ۝ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَءَايَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلرَّحِيمُ ۝ وَٱتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ إِبْرَٰهِيمَ ۝ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِۦ مَا تَعْبُدُونَ ۝ قَالُوا۟ نَعْبُدُ أَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عَٰكِفِينَ ۝ قَالَ هَلْ يَسْمَعُونَكُمْ إِذْ تَدْعُونَ ۝ أَوْ يَنفَعُونَكُمْ أَوْ يَضُرُّونَ ۝ قَالُوا۟ بَلْ وَجَدْنَآ ءَابَآءَنَا كَذَٰلِكَ يَفْعَلُونَ ۝ قَالَ أَفَرَءَيْتُم مَّا كُنتُمْ تَعْبُدُونَ ۝ أَنتُمْ وَءَابَآؤُكُمُ ٱلْأَقْدَمُونَ ۝ فَإِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّىٓ إِلَّا رَبَّ ٱلْعَٰلَمِينَ ۝ ٱلَّذِى خَلَقَنِى فَهُوَ يَهْدِينِ ۝ وَٱلَّذِى هُوَ يُطْعِمُنِى وَيَسْقِينِ ۝ وَإِذَا مَرِضْتُ

और इन्हें इबराहीम का वृत्तान्त सुनाओ[25] :○ जब कि उस ने अपने बाप और अपनी जाति वालों से कहा : तुम क्या पूजते हो ? ○ उन्हों ने कहा : हम मूर्तियों की पूजा करते हैं, और हम उन्हीं से लगे बैठे रहते हैं। ○ (इबराहीम ने) कहा : क्या वे तुम्हारी सुनते हैं जब तुम इन्हें पुकारते हो ? ○ या ये तुम्हारा कुछ बनाते या बिगाड़ते हैं ? ○

उन्हों ने कहा नहीं, बल्कि हम ने अपने पूर्वजों को ऐसा ही करते पाया है। ○ (इबराहीम ने) कहा : क्या तुम ने (आँखें खोल कर) इन्हें देखा भी[26] जिन की पूजा तुम करते हो, ○ तुम और तुम्हारे अगले पूर्वज ! ○ ये तो मेरे शत्रु हैं,[27] सिवाय 'सारे संसार के रब'* के,[28] ○ जिस ने मुझे पैदा किया, फिर वही मुझे राह दिखाता है, ○ और जो मुझे खिलाता और पिलाता है। ○ और जब बीमार होता हूँ, तो मुझे अच्छा करता है, ○ और जो मुझे मारेगा, फिर जिलायेगा, ○ और जिस से मैं आशा रखता हूँ कि वह बदला दिये जाने के दिन[29] मेरी भूल को क्षमा कर देगा। ○ रब* ! मुझे हुक्म*[30] प्रदान कर और मुझे अच्छे लोगों के साथ मिला। ○ और बाद के आने वालों में मुझे एक सच्ची उच्च ख्याति प्रदान कर। ○ और मुझे नेमतों भरी जन्नत* के उत्तराधिकारियों में सम्मिलित कर, ○ और मेरे बाप को क्षमा कर दे। निस्सन्देह वह गुमराहों में से है[31] ○ और मुझे उस दिन रुसवा न कर जब कि लोग जीवित कर के उठाये जायेंगे, ○ जिस दिन न माल काम आयेगा और न औलाद ○ सिवाय इस के कि कोई भला-चङ्गा[32] दिल लिये हुये अल्लाह के पास आये। ○ और (उस दिन) जन्नत* डर रखने वालों के क़रीब ले आई

२५ तुलनात्मक (Comparative) अध्ययन के लिए दे० सूरः अल-बक़रः आयत २५८, सूरः अल-अन्आम आयत ७४-८४, सूरः मरयम आयत ४१-५०, सूरः अल-अंबिया आयत ५१-७२, सूरः अस-साफ़्फ़ात आयत ८३-११३ और सूरः अल-मुमतहनः आयत ४।

२६ या यों ही आँखें बन्द कर के बिना सोचे-समझे उन की पूजा किये जा रहे हो।

२७ यदि हम इन की पूजा करें तो दोज़ख़* में डाल दिये जायें। और इस जीवन में सत्य से अनभिज्ञ रह जायें। तुम में यदि कुछ भी बुद्धि है तो अपने भले-बुरे के बारे में सोच-विचार से काम लो।

२८ एक अल्लाह ही ऐसा है जिस की पूजा और बन्दगी में मुझे भलाई दीख पड़ती है।

२९ दे० सूरः अल-फ़ातिहः फ़ुट नोट १।

३० अर्थात् हिकमत (Wisdom), ज्ञान, निर्णय-शक्ति आदि।

३१ हज़रत इबराहीम अ० जब बाप के अत्याचार से विवश हो कर घर से निकलने लगे थे तो उन्हों ने अपने बाप से कहा था कि मैं अपने रब* से आप के लिए क्षमा की प्रार्थना करूँगा (दे० सूरः मरयम आयत ४७)। इस वादे को आप ने पूरा किया और बाप के लिए अल्लाह से उन्हों ने क्षमा की प्रार्थना की परन्तु बाद में उन्हें स्वयं इस का एहसास हुआ कि वह सत्य का विरोधी है यद्यपि वह अपना बाप है। वह इस का हक़ नहीं रखता कि उस के लिए अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना की जा सके (दे० सूरः अत-तौबः आयत ११४)।

३२ अर्थात् ऐसा दिल जो कुफ़्र*, शिर्क* और बुराइयों से पाक हो।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

فهو يشفين ۝ والذي يميتني ثم يحيين ۝ والذي أطمع أن يغفر لي
خطيئتي يوم الدين ۝ رب هب لي حكما وألحقني بالصالحين ۝
واجعل لي لسان صدق في الآخرين ۝ واجعلني من ورثة جنة
النعيم ۝ واغفر لأبي إنه كان من الضالين ۝ ولا تخزني يوم
يبعثون ۝ يوم لا ينفع مال ولا بنون ۝ إلا من أتى الله بقلب
سليم ۝ وأزلفت الجنة للمتقين ۝ وبرزت الجحيم للغاوين ۝
وقيل لهم أين ما كنتم تعبدون ۝ من دون الله هل ينصرونكم أو
ينتصرون ۝ فكبكبوا فيها هم والغاوون ۝ وجنود إبليس أجمعون ۝
قالوا وهم فيها يختصمون ۝ تالله إن كنا لفي ضلال مبين ۝ إذ
نسويكم برب العالمين ۝ وما أضلنا إلا المجرمون ۝ فما لنا من
شافعين ۝ ولا صديق حميم ۝ فلو أن لنا كرة فنكون من
المؤمنين ۝ إن في ذلك لآية وما كان أكثرهم مؤمنين ۝ و
إن ربك لهو العزيز الرحيم ۝ كذبت قوم نوح المرسلين ۝
إذ قال لهم أخوهم نوح ألا تتقون ۝ إني لكم رسول أمين ۝
فاتقوا الله وأطيعون ۝ وما أسألكم عليه من أجر إن أجري
إلا على رب العالمين ۝ فاتقوا الله وأطيعون ۝ قالوا أنؤمن لك
واتبعك الأرذلون ۝ قال وما علمي بما كانوا يعملون ۝ إن

९० जायेगी। ○ और भड़कती हुई (दोज़ख़* की) आग बहके हुये लोगों के सामने खोल दी जायेगी। ○ और उन से कहा जायेगा : कहाँ हैं वे जिन्हें तुम पूजते थे ○ अल्लाह को छोड़ कर, क्या वे तुम्हारी सहायता करते हैं या वे अपना ही बचाव कर सकते हैं? ○ फिर भर दिये गये ऊपर-तले उस में वे और बहके हुये लोग ○ और इबलीस* की सेनायें,
९५ सब-के-सब। ○

कहेंगे, जब कि वे वहाँ झगड़ रहे होंगे : ○ अल्लाह की क़सम, निश्चय ही हम खुली गुमराही में थे ○ जब कि हम तुम्हें 'सारे संसार के रब'*[33] के बराबर ठहरा रहे थे। ○ और हमें तो बस इन अपराधियों ने गुमराह किया[34]। ○ अब न हमारा
१०० कोई सिफ़ारिशी है ○ और न कोई घनिष्ठ मित्र[35]। ○ क्या ही अच्छा होता कि हमें एक बार फिर (दुनियाँ में) पलटना होता, तो हम ईमान* वालों में शामिल होते[36]। ○ निश्चय ही इस में एक बड़ी निशानी है, परन्तु उन में अधिकतर ईमान* वाले नहीं हैं। ○ और निस्सन्देह तेरा रब* अपार शक्ति का मालिक और दया करने वाला है। ○

१०५ नूह[37] की जाति* वालों ने रसूलों को झुठलाया,[38] ○ याद करो जब उन से उन के भाई नूह ने कहा : क्या तुम डरते नहीं हो? ○ निश्चय ही मैं तुम्हारे लिए एक विश्वसनीय रसूल* हूँ, ○ सो अल्लाह से डरो, और मेरा हुक्म मानो[39]। ○ मैं इस काम पर तुम से कोई बदला नहीं माँगता, मेरा बदला तो बस 'सारे संसार के रब'* के ज़िम्मे है। ○ सो तुम अल्लाह
११० से डरो और मेरा हुक्म मानो। ○ उन्हों ने कहा : क्या हम तुझ पर ईमान* लायें, जब कि नीच लोग तेरे अनुयायी हुये हैं? ○ (नूह ने) कहा : जो-कुछ वे करते हैं मैं उसे क्या जानूँ? ○

---

३३ दे० आयत १६, २३, ४७, ७७।

३४ तुलनात्मक (Comparative) अध्ययन के लिए दे० सूरः अल-आराफ़ आयत ३८, सूरः हा०मीम० अस-सजदः आयत २९, और सूरः अल-अहज़ाब आयत ६७-६८।

३५ आख़िरत* में केवल उन लोगों की मित्रता बाक़ी रहेगी जो ईमान* वाले होंगे। गुमराहों की मित्रता उस दिन बाक़ी नहीं रहेगी वे एक-दूसरे के दुश्मन बन जायेंगे और एक-दूसरे को अपराधी ठहराने लगेंगे (दे० सूरः अज़-ज़ुख़रुफ़ आयत ६७)।

३६ परन्तु इन्हें इस का अवसर प्राप्त नहीं हो सकेगा।

३७ तुलनात्मक (Comparative) अध्ययन के लिए दे० सूरः अल-आराफ़ आयत ५९-६४, सूरः यूनुस आयत ७१-७३, सूरः हूद आयत २५-४८, सूरः अल-अंबिया आयत ७६-७७, सूरः अल-मोमिनून आयत २३-३०, सूरः अल-फ़ुरक़ान आयत ३७, सूरः अस-साफ़्फ़ात आयत ७५-८२, सूरः अल-क़मर आयत ९-१६ और सूरः नूह।

३८ अल्लाह के भेजे हुये नबी हज़रत नूह अ० को झुठला कर मानो उन्हों ने सभी नबियों* को झुठला दिया इस लिए कि सभी नबियों* की शिक्षा और सन्देश एक ही है।

३९ इस लिए कि मैं तुम्हें जो हुक्म भी दे रहा हूँ वह अल्लाह ही की ओर से दे रहा हूँ।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

[illegible]

उन का हिसाब तो बस मेरे रब* के ज़िम्मे है, क्या अच्छा होता कि तुम्हें (इस का) ज्ञान होता;○ और मैं ईमान* वालों को धुतकारने वाला नहीं हूँ।○ मैं तो बस एक साफ़-साफ़ सचेत करने वाला हूँ।○

उन्हों ने कहा : हे नूह ! यदि तू बाज़ न आया, तो तू फिटकारे हुए लोगों में शरीक हो कर रहेगा।○ (नूह ने) कहा : रब* ! मेरी जाति वालों ने मुझे झुठला दिया।○ अब मेरे और उन के बीच फ़ैसला कर दे, और मुझे और जो ईमान* वाले मेरे साथ हैं उन्हें बचा ले।○

तो हम ने उसे और जो उस के साथ भरी हुई नौका[40] में थे बचा दिया।○ फिर इस के बाद बाक़ी रहने वालों को डुबो दिया।○ निश्चय ही इस में एक निशानी है, परन्तु उन में अधिकतर ईमान* वाले नहीं हैं।○ और निस्सन्देह तेरा रब* ! अपार शक्ति का मालिक और दया करने वाला है।○

आद* ने रसूलों* को झुठलाया,[41] ○ याद करो जब कि उन के भाई हूद ने उन से कहा : क्या तुम डरते नहीं हो ?○ निश्चय ही मैं तुम्हारे लिए एक विश्वसनीय रसूल* हूँ,○ सो तुम अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो।○ और मैं इस काम पर तुम से कोई बदला नहीं माँगता; मेरा बदला तो बस 'सारे संसार के रब'* के ज़िम्मे है।○ क्या तुम हर ऊँची जगह व्यर्थ एक स्मारक बनाते हो[42] ?○ और बड़े-बड़े भवनों का निर्माण करते हो, शायद तुम सदा (यहीं) रहोगे ?○

और जब किसी पर हाथ डालते हो, तो अत्यन्त जाबिर बन कर हाथ डालते हो ?○ सो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो।○ डरो उस से जिस ने वह-कुछ तुम्हें दिया जो तुम जानते हो,○ उस ने दिये तुम्हें चौपाये और बेटे,○ और बाग़ और स्रोत।○ मुझे तो तुम्हारे बारे में एक बड़े दिन के अज़ाब का भय है।○

उन्हों ने कहा : तू उपदेश दे या उपदेश देने वालों में न हो हमारे लिए सब बराबर है;○ यह तो बस अगले लोगों की आदत है,○ और हम अज़ाब में ग्रस्त होने वाले नहीं हैं।○

---

४० नौका ईमान लाने वाले लोगों और सारे जानवरों से भरी हुई थी जिन का एक-एक जोड़ा साथ रख लेने का आदेश अल्लाह की ओर से हुआ था। दे० सूरः हूद आयत ४०।*

४१ मुक़ाबिले के लिए दे० सूरः अल-आराफ़ आयत ६५-७२, सूरः हूद आयत ५०-६०, सूरः हा०मीम० अस-सजदः आयत १३-१६, सूरः अल-अहक़ाफ़ आयत २१-२५, सूरः अज़-ज़ारियात आयत ४१-४५, सूरः अल-क़मर आयत १८-२१, सूरः अल-हाक्क़ः आयत ६-८ और सूरः अल-फ़ज्र आयत ६-८।

४२ अर्थात केवल अपने वैभव और धन-सम्पत्ति के प्रदर्शन के लिए ऊँचे-ऊँचे भवनों के निर्माण में अपनी शक्ति लगाते हो; यह अपनी योग्यता और धन-सम्पत्ति का कोई उचित उपयोग नहीं है।

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

	बार पैदा कर सके। वह अल्लाह ही है।
१० : ३५, ३६	तुम्हारे बनाये हुए साझीदारों में कोई ऐसा नहीं जो सीधा रास्ता दिखाए। अल्लाह ही सीधा रास्ता दिखाता है।
१० : ६६-६९	अल्लाह के अलावा जो लोग दूसरों को पुकारते हैं, वे अटकल के पीछे चलते हैं।
११ : १०१	वे जिन इलाहों (उपास्यों) को अल्लाह के अलावा पुकारते थे, वे उनके कुछ भी काम न आये।
१२ : ३९, ४०	भला अलग-अलग स्वामी अच्छे या एक अल्लाह।
१३ : १४-१६	अल्लाह के अलावा लोग जिन्हें पुकारते हैं, वे उनकी पुकार का जवाब नहीं दे सकते। उन्होंने कुछ भी पैदा नहीं किया। अल्लाह हर चीज़ का पैदा करने वाला है।
१३ : ३३	अल्लाह हर व्यक्ति के कामों की निगरानी करने वाला है, लोगों ने अल्लाह के ऐसे साझी बना लिए हैं जो अल्लाह जैसे गुण नहीं रखते।
१६ : १७	जो पैदा करे वह उस जैसा नहीं हो सकता जो पैदा न करे।
१६ : २०-२२	अल्लाह के अलावा ये जिन लोगों को पुकारते हैं, वे कुछ पैदा नहीं कर सकते, वे तो स्वयं बनाये जाते हैं।
१७ : ५६, ५७	अल्लाह के अलावा जिन्हें तुम ख़ुदा समझते हो, उन्हें पुकार कर देखो, वे कुछ अधिकार नहीं रखते।
१८ : १५	उससे बड़ा अन्यायी कौन है जो अल्लाह के अलावा दूसरों को ख़ुदा बना ले।
१९ : ४२	जो न सुने, न देखे, न कुछ काम आ सके, वह इबादत के योग्य नहीं कि उसकी इबादत की जाये।
२१ : २१	अल्लाह के अलावा जिनको पूजते हैं, क्या वे इन्हें दोबारा जिन्दा कर सकेंगे ?
२१ : ४३	जो संकटों से छुटकारा न दिला सकें, वे इस योग्य नहीं कि उनकी इबादत की जाये। वे तो आप अपने काम भी नहीं आ सकते।
२१ : ६६, ६७	जो न लाभ पहुँचा सके और न हानि, उसकी भक्ति करना बड़े अफ़सोस की बात है।
२२ : ११-१३	यह बड़े घाटे की बात है कि मनुष्य उन्हें इलाह (उपास्य) बनाये जो न हानि पहुँचा सकें और न लाभ।
२२ : ७३, ७४	अल्लाह के अलावा ये जिनको पुकारते हैं, वे एक मक्खी नहीं बना सकते।
२५ : ३	जो पैदा न कर सके, जो अपने लाभ-हानि पर अधिकार न रखे, न मृत्यु और जीवन उसके अधिकार में हो, वह इलाह (पूज्य) नहीं हो सकता।
२८ : ७०-७४	वही इलाह (उपास्य) है, उसके अलावा कोई इलाह नहीं। उसके अलावा कोई रात को दिन और दिन को रात नहीं बना सकता।
३० : ४०,	पैदा करे, रोज़ी दे, मौत दे और फिर दोबारा पैदा करे वही अल्लाह है, उसका कोई शरीक नहीं।
३१ : १०, ११	अल्लाह की पैदा की हुई चीज़ें हर ओर दिखाई देती हैं। जिन्हें तुम उसका शरीक बनाते हो, दिखाओ उन्होंने क्या पैदा किया।

رسول أمين ﴿﴾ فاتقوا الله وأطيعون ﴿﴾ وما أسألكم عليه من أجر
إن أجري إلا على رب العالمين ﴿﴾ أتتركون في ما هاهنا آمنين ﴿﴾ في
جنات وعيون ﴿﴾ وزروع ونخل طلعها هضيم ﴿﴾ وتنحتون من
الجبال بيوتا فارهين ﴿﴾ فاتقوا الله وأطيعون ﴿﴾ ولا تطيعوا أمر
المسرفين ﴿﴾ الذين يفسدون في الأرض ولا يصلحون ﴿﴾ قالوا
إنما أنت من المسحرين ﴿﴾ ما أنت إلا بشر مثلنا فأت بآية إن كنت
من الصادقين ﴿﴾ قال هذه ناقة لها شرب ولكم شرب يوم معلوم ﴿﴾
ولا تمسوها بسوء فيأخذكم عذاب يوم عظيم ﴿﴾ فعقروها فأصبحوا
نادمين ﴿﴾ فأخذهم العذاب إن في ذلك لآية وما كان أكثرهم
مؤمنين ﴿﴾ وإن ربك لهو العزيز الرحيم ﴿﴾ كذبت قوم لوط المرسلين ﴿﴾
إذ قال لهم أخوهم لوط ألا تتقون ﴿﴾ إني لكم رسول أمين ﴿﴾
فاتقوا الله وأطيعون ﴿﴾ وما أسألكم عليه من أجر إن أجري
إلا على رب العالمين ﴿﴾ أتأتون الذكران من العالمين ﴿﴾ وتذرون
ما خلق لكم ربكم من أزواجكم بل أنتم قوم عادون ﴿﴾ قالوا لئن
لم تنته يا لوط لتكونن من المخرجين ﴿﴾ قال إني لعملكم من
القالين ﴿﴾ رب نجني وأهلي مما يعملون ﴿﴾ فنجيناه وأهله أجمعين ﴿﴾
إلا عجوزا في الغابرين ﴿﴾ ثم دمرنا الآخرين ﴿﴾ وأمطرنا عليهم مطرا

सो उन्हों ने उसे झुठलाया; तो हम ने उन्हें विनष्ट कर के रख दिया।

निश्चय ही इस में एक निशानी है, परन्तु उन में अधिकतर ईमान* वाले नहीं हैं। ○ और निस्सन्देह तेरा रब* अपार शक्ति का मालिक और दया करने वाला है। ○

समूद* ने रसूलों* को झुठलाया,[५३] ○ याद करो जब कि उन के भाई सालेह ने उन से कहा : क्या तुम डरते नहीं? ○ निश्चय ही मैं तुम्हारे लिए एक विश्वसनीय रसूल* हूँ, ○ सो तुम अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो। ○ मैं इस काम पर तुम से कोई बदला नहीं माँगता; मेरा बदला तो बस 'सारे संसार के रब'* के ज़िम्मे है। ○ क्या तुम उन चीज़ों के बीच जो यहाँ हैं निश्चिन्ततापूर्वक रहने दिये जाओगे ○ बाग़ों और स्रोतों में ○ और खेतों और खजूरों में जिन का गाभा गुँथा हुआ है, ○ और तुम पर्वतों को काट-काट कर[५४] कुशलतापूर्वक घर बनाते हो[५५]? ○ तो अल्लाह से डरो, और मेरा हुक्म मानो, ○ और उन मर्यादा-हीन लोगों का हुक्म न मानो, ○ जो ज़मीन में बिगाड़ पैदा करते हैं, और सुधार नहीं करते। ○

उन्हों ने कहा : तू तो बस उन लोगों में से है जो जादू के मारे हुये हों;[५६] ○ तू बस हमारे ही जैसा एक आदमी है। तो ला कोई निशानी[५७] यदि तू सच्चे लोगों में से है। ○

(सालेह ने) कहा : यह एक ऊँटनी है[५८]। पानी पीने की एक बारी इस की है, और एक निश्चित दिन की बारी पानी लेने की तुम्हारे लिए है[५९]। ○ तकलीफ़ देने के लिए इसे हाथ न लगाना नहीं तो एक बड़े दिन का अज़ाब तुम्हें आ लेगा। ○

परन्तु उन्हों ने उसे उस की कूँचें काट कर मार डाला, फिर पछताते रह गये। ○ सो

---

५३ तुलनात्मक (Comparative) अध्ययन के लिए दे० सूरः अल-आराफ़ आयत ७३-७९, सूरः हूद आयत ६१-६८, सूरः अल-हिज्र आयत ८०-८४, सूरः बनी इसराईल आयत ५९, सूरः अन-नम्ल आयत ४५-५३, सूरः अज़-ज़ारियात आयत ४३-४५, सूरः अल-क़मर आयत २३-३१, सूरः अल-हाक़्क़ः आयत ५, सूरः अश-शम्स और सूरः अल-बुरूज।
आद* के बाद अल्लाह ने जिस जाति को उन्नति दी थी वह यही समूद जाति के लोग थे।

५४ दे० सूरः अल-हिज्र आयत ८२।

५५ समूद के निर्माण किये हुए भवनों में से कुछ अब भी शेष रह गये हैं। समूद के क्षेत्र में ऐसे पहाड़ दिखाई पड़ते हैं जो बिलकुल चकनाचूर हो गये हैं साफ़ जान पड़ता है कि किसी भीषण भूकम्प ने उन्हें झँझोड़ कर रख दिया है।

५६ जिन के कारण तेरी अक्ल मारी गई कि जिससे की कोई बात नहीं कहता।

५७ अर्थात् कोई चमत्कार दिखा कि हमें विश्वास हो कि तू वास्तव में अल्लाह का रसूल* है।

५८ चमत्कार के रूप में अल्लाह ने एक ऊँटनी पैदा कर दी (दे० सूरः हूद आयत ६३-६४ और सूरः बनी इसराईल आयत ५९)।

५९ इस तरह अल्लाह ने उन्हें आज़माइश में डाल दिया।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

فَسَآءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِينَ ۝ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۚ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ
مُّؤْمِنِينَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝ كَذَّبَ أَصْحٰبُ لْـَٔيْكَةِ
الْمُرْسَلِينَ ۝ إِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ أَلَا تَتَّقُونَ ۝ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ
أَمِينٌ ۝ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَأَطِيعُونِ ۝ وَمَا أَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ
أَجْرِيَ إِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِينَ ۝ أَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُخْسِرِينَ ۝
وَزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيمِ ۝ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَآءَهُمْ وَلَا
تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝ وَاتَّقُوا الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالْجِبِلَّةَ الْأَوَّلِينَ ۝
قَالُوٓا إِنَّمَآ أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ۝ وَمَآ أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَإِنْ نَّظُنُّكَ
لَمِنَ الْكٰذِبِينَ ۝ فَأَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ إِنْ كُنْتَ مِنَ
الصّٰدِقِينَ ۝ قَالَ رَبِّيٓ أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝ فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمْ
عَذَابُ يَوْمِ الظُّلَّةِ ۚ إِنَّهُ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۖ
وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِينَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝
وَإِنَّهُ لَتَنْزِيلُ رَبِّ الْعٰلَمِينَ ۝ نَزَلَ بِهِ الرُّوحُ الْأَمِينُ ۝ عَلٰى قَلْبِكَ
لِتَكُونَ مِنَ الْمُنْذِرِينَ ۝ بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ مُّبِينٍ ۝ وَإِنَّهُ لَفِي زُبُرِ
الْأَوَّلِينَ ۝ أَوَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ اٰيَةً أَنْ يَّعْلَمَهُ عُلَمٰٓؤُا بَنِيٓ إِسْرَآءِيلَ ۝
وَلَوْ نَزَّلْنٰهُ عَلٰى بَعْضِ الْأَعْجَمِينَ ۝ فَقَرَأَهُ عَلَيْهِمْ مَّا كَانُوا بِهِ مُؤْمِنِينَ ۝
كَذٰلِكَ سَلَكْنٰهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ۝ لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ حَتّٰى يَرَوُا

अज़ाब ने उन्हें आ लिया। निश्चय ही इस में एक निशानी है, परन्तु उन में अधिकतर ईमान* वाले नहीं हैं। ○ और निस्सन्देह तेरा रब* अपार शक्ति का मालिक और दया करने वाला है। ○

लूत की जाति वालों ने रसूलों* को झुठलाया,[५०] ○ याद करो जब कि उन के भाई लूत ने १६० उन से कहा : क्या तुम डरते नहीं? ○ निश्चय ही मैं एक विश्वसनीय रसूल* हूँ, ○ सो तुम अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो। ○ मैं इस काम पर तुम से कोई बदला नहीं माँगता; मेरा बदला तो बस 'सारे संसार के रब'* के ज़िम्मे है। ○ क्या तुम संसार के लोगों में से पुरुषों के पास आते हो,[५१] ○ और तुम अपनी पत्नियों को जिन्हें तुम्हारे १६५ रब* ने तुम्हारे लिए पैदा किया छोड़ देते हो! बल्कि तुम सीमा से आगे बढ़ जाने वाले लोग हो। ○

उन्हों ने कहा : हे लूत, यदि तू बाज़ न आया तो तू निकाले हुए लोगों में शामिल हो कर रहेगा। ○

(लूत ने) कहा : मैं तो उन लोगों में शामिल हूँ जो तुम्हारे करतूत से बेज़ार हैं। ○ रब*! मुझे और मेरे लोगों को उस से बचा जो-कुछ कि ये करते हैं। ○

सो हम ने उसे और उस के सब लोगों को बचा लिया, ○ सिवाय एक बुढ़िया के जो १७० पीछे रह जाने वालों में थी[५२]। ○ फिर हम ने और दूसरे लोगों को तबाह कर दिया[५३]। ○ और उन पर एक वर्षा की। तो क्या ही बुरी वर्षा थी[५४] उन डराये जाने वालों की[५५]। ○ और निश्चय ही इस में एक निशानी है, परन्तु उन में अधिकतर ईमान* वाले नहीं हैं। ○ और १७५ निस्सन्देह तेरा रब* अपार शक्ति का मालिक और दया करने वाला है। ○

अल-ऐक:* वालों ने रसूलों* को झुठलाया,[५६] ○ याद करो जब कि शुऐब ने उन से

---

५० मुक़ाबिले के लिए दे० सूरः अल-आराफ़ आयत ८०-८४, सूरः हूद आयत ७७-८३, सूरः अल-हिज्र आयत ६१-७७, सूरः अल-अंबिया आयत ७४-७५, सूरः अन-नम्ल आयत ५४-५८, सूरः अल-अनकबूत आयत २८-३५, सूरः अस-साफ़्फ़ात आयत १३३-१३६ और सूरः अल-क़मर आयत ३३-३९।

५१ अर्थात् प्रकृति के विरुद्ध आचरण करते हो, अप्राकृतिक रूप से पुरुषों के साथ व्यभिचार करते हो।

५२ यह संकेत हज़रत लूत अ० की पत्नी की ओर है। हज़रत नूह अ० और हज़रत लूत अ० की पत्नियों के बारे में आता है इन दोनों स्त्रियों ने अल्लाह के रसूल* का साथ नहीं दिया (दे० सूरः अत-तहरीम आयत १०) बल्कि अपनी जाति वालों का साथ दिया जिस के फलस्वरूप उन का भी वही परिणाम हुआ जो उन की जाति वालों का हुआ।

५३ दे० सूरः अस-साफ़्फ़ात आयत १३५-१३६।

५४ दे० सूरः अल-हिज्र आयत ७४, फ़ुट नोट २६। एक भीषण भूकम्प ने उन की बस्तियों को तल पट कर के रख दिया। और उन पर पकी हुई मिट्टी के पत्थरों की वर्षा की गई।

५५ अर्थात् वह कितनी बुरी वर्षा थी जो उन लोगों पर हुई जिन्हें अल्लाह के अज़ाब से पहले ही सचेत कर दिया गया था।

५६ तुलनात्मक (comparative) अध्ययन के लिए दे० सूरः अल-आराफ़ आयत ८५-९३, सूरः हूद [illegible] ...५, सूरः अल-हिज्र आयत ७८-७९ और सूरः अल-अनकबूत आयत ३६-३७।

[illegible] शब्द क़ुर्आन में आये हुए पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

فَقَرَأَهُ عَلَيْهِم مَّا كَانُوا بِهِ مُؤْمِنِينَ ۝ كَذَٰلِكَ سَلَكْنَاهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ۝ لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ حَتَّىٰ يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۝ فَيَأْتِيَهُم بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝ فَيَقُولُوا هَلْ نَحْنُ مُنظَرُونَ ۝ أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ ۝ أَفَرَأَيْتَ إِن مَّتَّعْنَاهُمْ سِنِينَ ۝ ثُمَّ جَاءَهُم مَّا كَانُوا يُوعَدُونَ ۝ مَا أَغْنَىٰ عَنْهُم مَّا كَانُوا يُمَتَّعُونَ ۝ وَمَا أَهْلَكْنَا مِن قَرْيَةٍ إِلَّا لَهَا مُنذِرُونَ ۝ ذِكْرَىٰ وَمَا كُنَّا ظَالِمِينَ ۝ وَمَا تَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّيَاطِينُ ۝ وَمَا يَنبَغِي لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيعُونَ ۝ إِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ لَمَعْزُولُونَ ۝ فَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَتَكُونَ مِنَ الْمُعَذَّبِينَ ۝ وَأَنذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ ۝ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ فَإِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ إِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تَعْمَلُونَ ۝ وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ۝ الَّذِي يَرَاكَ حِينَ تَقُومُ ۝ وَتَقَلُّبَكَ فِي السَّاجِدِينَ ۝ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ هَلْ أُنَبِّئُكُمْ عَلَىٰ مَن تَنَزَّلُ الشَّيَاطِينُ ۝ تَنَزَّلُ عَلَىٰ كُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ۝ يُلْقُونَ السَّمْعَ وَأَكْثَرُهُمْ كَاذِبُونَ ۝ وَالشُّعَرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوُونَ ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّهُمْ فِي كُلِّ وَادٍ يَهِيمُونَ ۝ وَأَنَّهُمْ يَقُولُونَ مَا لَا يَفْعَلُونَ ۝ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَذَكَرُوا اللَّهَ كَثِيرًا وَانتَصَرُوا مِن بَعْدِ مَا ظُلِمُوا ۗ وَسَيَعْلَمُ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَيَّ مُنقَلَبٍ يَنقَلِبُونَ ۝

कहा : क्या तुम डरते नहीं[५७] ? ○ निश्चय ही मैं तुम्हारे लिए एक विश्वसनीय रसूल* हूँ, ○ सो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो । ○ मैं इस काम पर तुम से कोई बदला नहीं माँगता; मेरा बदला तो 'सारे संसार के रब*' के ज़िम्मे है । ○ सो तुम नाप पूरा-पूरा दो, और घाटा देने वालों में शामिल न हो । ○ और सीधी तराज़ू से तोलो । ○ और लोगों को उन की चीज़ों में घाटा न दो, और ज़मीन में फ़साद न फैलाते फिरो । ○ डरो उस से जिस ने तुम्हें और अगली नस्लों को पैदा किया । ○ उन्हों ने कहा : तू तो बस उन लोगों में से है जो जादू के मारे हुये हों; ○ तू बस हमारे ही जैसा एक आदमी है, और हम तो तुझे झूठे लोगों में से समझते हैं । ○ यदि तू सच्चे लोगों में से है, तो हम पर कोई आसमान का टुकड़ा गिरा दे[५८] । ○

(शुऐब ने) कहा : मेरा रब* भली-भाँति जानता है जो-कुछ तुम कर रहे हो । ○ उन्हों ने उसे झुठला दिया, सो छतरी वाले दिन के अज़ाब[५९] ने उन्हें आ लिया । निश्चय ही वह बड़े (सख़्त) दिन का अज़ाब था । ○ निश्चय ही इस में एक निशानी है, परन्तु उन में अधिकतर ईमान* वाले नहीं हैं । ○ और निस्सन्देह तेरा रब* अपार शक्ति का मालिक और दया करने वाला है । ○

और निस्सन्देह यह (क़ुरआन) 'सारे संसार के रब'* का उतारा हुआ है,[६०] । ○ जिसे ले कर एक विश्वसनीय आत्मा[६१] उतरी है ○ (उतरी है) तेरे दिल पर, ताकि तू सचेत करने वालों में शामिल हो, ○ — साफ़-साफ़ अरबी भाषा में । ○ और यह अगले लोगों की किताबों में भी है[६२] । ○ क्या इन (मक्का वालों) के लिए यह कोई निशानी नहीं है । कि बनी-इसराईल* के विद्वान् इसे जानते हैं[६३] ? ○ और (इन के दुराग्रह का तो यह हाल है कि) यदि हम इसे अरब* के अतिरिक्त किसी दूसरी जाति के व्यक्ति पर उतारते, ○ और वह इस

५७ मुअयिले के लिए दे० सूरः अल-अनकबूत आयत ३६-३७ ।

५८ मक्का के काफ़िरों* ने भी हज़रत मुहम्मद सल्ल० से यही कहा था कि हम पर आसमान का कोई टुकड़ा गिरा दो (दे० सूरः बनी इसराईल आयत ९२) ।

५९ हो सकता है उन पर कोई बादल भेजा गया हो जो उन पर छतरी की तरह छा गया हो; और उस समय तक छाया रहा हो जब तक कि अल्लाह के अज़ाब ने उन्हें विनष्ट कर के रख नहीं दिया ।

६० ऊपर ऐतिहासिक वृत्तान्त समाप्त हुआ । यहाँ से फिर उसी विषय पर प्रकाश डाला जा रहा है जिस से सूरः का आरम्भ हुआ था ।

६१ अर्थात् हज़रत जिबरील* अ० (दे० सूरः अल-बक़रः आयत ९७) ।

६२ क़ुरआन कोई नई चीज़ नहीं पेश कर रहा है; क़ुरआन की शिक्षा वही है जो पिछली आसमानी किताबों की शिक्षा रही है । क़ुरआन के द्वारा आज उसी बात की याद-दिहानी कराई जा रही है जिस की याद-दिहानी पहले लोगों को कराई जा चुकी है ।

६३ अर्थात् बनी इसराईल के विद्वान् जानते हैं कि क़ुरआन की शिक्षा वही है जो इस से पूर्व आसमानी किताबों (Heavenly Books) में दी गई है ।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

(उत्तम वाणी) को इन्हें सुनाता, तब भी ये लोग इस के मानने वाले न होते'' ।○ इसी तरह हम अपराधियों के दिलों में से उसे (अर्थात् हक़ बात को) गुज़ार देते हैं'' ।○ ये इस पर २०० ईमान* नहीं लाते जब तक कि दुःख देने वाला अज़ाब न देख लें, ○ फिर जब वह अचानक आ जायेगा, जब कि उन्हें ख़बर न होगी।○ तब वे कहेंगे : क्या हमें कुछ मुहलत मिल सकती है'' ? ○ तो क्या ये लोग हमारे अज़ाब के लिए जल्दी मचा रहे हैं ? ○

क्या तू ने देखा, यदि हम इन्हें वर्षों सुख भोगने दें, ○ और फिर इन पर वह चीज़ आये २०१ जिस से इन्हें डराया जाता है, ○ तो जो-कुछ सुख इन्हों ने भोगा वह इन के कुछ काम नहीं आ सकता। ○ और हम ने कोई बस्ती भी विनष्ट नहीं की जिस के सचेत करने वाले न रहे हों'' ○ चेताने को, और हम ज़ालिम नहीं। ○

इस (क़ुरआन) को शैतान* ले कर नहीं उतरे हैं'' ।○ न यह उन्हें फबता है, और न २१० वे (इस का) सामर्थ्य रखते हैं,'' ○ वे तो इस के सुनने से भी दूर रखे गये हैं।○ अतः (हे मुहम्मद!) अल्लाह के साथ दूसरे इलाह* (पूज्य) को न पुकारना, नहीं तो तुम अज़ाब पाने वालों में शामिल हो जाओगे'' ।○ और अपने निकटतम नातेदारों को सचेत करो, ○ और जो ईमान* वाले तुम्हारे अनुयायी हो गये हैं उन के लिए अपना बाज़ू (भुजा) झुका दो'' ।○ २१ फिर यदि ये तुम्हारी अवज्ञा करें, तो कह दो : जो-कुछ तुम करते हो उस से मैं विरक्त हूँ।○ और भरोसा करो अपार शक्ति के मालिक और दया करने वाले (अल्लाह) पर ।○ जो तुम्हें देख रहा होता है जब तुम उठते हो ○ और सजदः* करने वालों में तुम्हारी गतिविधि को भी (वह देख रहा होता है) ।○ निस्सन्देह वह (सब-कुछ) सुनने और जानने वाला है।○ २२

(लोगो !) क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि शैतान* किस पर उतरते हैं ? ○ वे हर जाल रचने वाले अधर्मी पर उतरा करते हैं।○ वे कान लगाते हैं और उन में से अधिकतर झूठे होते हैं।○

रहे कवि, तो उन के पीछे बहके हुये लोग चला करते हैं ।○ — क्या तुम ने देखा नहीं कि वे हर घाटी में चक्कर लगाते फिरते हैं,'' ○ और ऐसी बातें कहते हैं जो करते नहीं ?○ २

६४ दे० सूरः हा० मीम० अस-सजदः आयत ४४

६५ अर्थात् ईमान* वालों के दिलों की तरह इन के दिलों में यह 'कलाम' और हक़ बात, शान्ति, परितोष और शीतलता बन कर नहीं उतरती और जमती। यह इन के अपराधी होने का स्वाभाविक परिणाम है।

६६ हालाँकि मुहलत का समय समाप्त हो चुका होगा।

६७ अर्थात् यों ही हम ने किसी बस्ती को हलाक नहीं कर दिया; पहले उसे राह पर लाने की पूरी कोशिश की गई जब उस ने अपने समझाने और सचेत करने वालों को झुठला दिया और उन की बात मानने से इन्कार कर दिया तब हम ने उस पर अज़ाब उतारा।

६८ जैसा कि काफ़िर* लोगों ने समझ रखा है कि यह नबी ''काहिन' (दैवज्ञ) है साधारण 'काहिनों' की तरह शैतान* इस पर यह 'कलाम' ले कर आता है। मुक़ाबिले के लिए दे० आयत १६२।

६९ यदि ये तनिक भी विचार करते तो समझ लेते कि क़ुरआन में जो ज्ञान और धर्म की बातें बयान की जा रही हैं वे शैतान* के मुँह पर फबने की नहीं हैं। 'काहिनों' (Sooth sayers) को व्यापक सत्यता और उच्च जीवन-लक्ष्य से क्या सम्पर्क हो सकता है ? नबी को 'काहिन' समझना घोर अन्याय है। नबी तो मानव-उपवन के पुष्प होते हैं उन की शिक्षा और उपदेश से मानव आत्मा अपने चरम लक्ष्य को पाती है।

७० यहाँ वास्तव में काफ़िरों* को सचेत किया गया है।

७१ अर्थात् उन के साथ तुम्हारा व्यवहार नम्रता का होना चाहिए।

७२ इस लिए क़ुरआन के लाने वाले पर काव्य का आरोप लगाने को घोर अन्याय के अतिरिक्त और क्या कहा जा सकता है। नबी सल्ल० और आप के साथियों के जीवन में जिस पवित्रता, नैतिक आदर्श, शान्ति, कल्याण, भक्ति और प्रेम की भावनाओं की अभिव्यक्ति होती है वह नैतिकता और पवित्रता कवियों

* का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

—न कि वे लोग जो ईमान* लाये और अच्छे काम किये, और अल्लाह को अधिक याद किया, और इस के बाद कि उन पर ज़ुल्म किया गया उन्हों ने मुक़ाबिला किया** और ज़ुल्म करने वालों को जल्द ही मालूम हो जायेगा कि वे किस करवट उलटते हैं। ○

— —

और कवियों के पीछे चलने वालों के जीवन में नहीं पाई जाती है। कवियों का हाल तो यह होता है कि कभी कुछ कहते हैं और कभी कुछ। उन की बातों और उन के विचारों में समता और दृढ़ता नहीं पाई जाती है। फिर जो-कुछ वे कहते हैं उस में और उन के व्यवहारिक जीवन में बड़ा अन्तर होता है। इस के विपरीत एक नबी* और उस के सच्चे अनुयायियों का हाल यह होता है कि वे जो-कुछ कहेंगे उन का सम्पूर्ण जीवन उसी का साक्षी होगा।

क़ुरआन अवतीर्ण होने के समय अरब कवियों की जो दशा थी वह इस से कुछ भी भिन्न न थी जिस का उल्लेख इस आयत में किया गया है। यों तो यह कमज़ोरियाँ किसी-न-किसी दरजे में सभी कवियों में पाई जाती हैं परन्तु अरब के कवियों का हाल उस समय अत्यन्त खेद-जनक था। उन की कविता साधारणतः, मद्यपान, पार्थिव प्रेम, वैर, गोत्रीय गर्व, युद्ध आदि विषयों से सम्बन्ध रखती थी, उन की कविताओं में नेकी और भलाई की बातें कम ही पाई जाती थीं।

**२ यह ईमान* वालों का चरित्र होता है जो उन बहके हुये लोगों की तरह नहीं होते जिन के जीवन का कोई उच्च और महान् लक्ष्य नहीं होता। ईमान* वाले उन की तरह राग-रंग में अपना समय नष्ट नहीं करते। वे अल्लाह को सदा याद करते हैं। अल्लाह का स्मरण ही उन के लिए परम सम्पत्ति है; अल्लाह ही में विराम पा कर उन की समस्त गतियों और विविध प्रवृत्तियों का प्रयोजन पूरा होता है। उन के पास चरित्र-बल होता है; वे ज़ुल्म और अत्याचार से तंग आ कर सत्य को त्याग नहीं देते बल्कि ज़ुल्म का डट कर मुक़ाबिला करते हैं।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

२७--अन-नम्ल

(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः* की आयत १८ में 'नम्ल' (च्यूँटियों) की घाटी का उल्लेख हुआ है इसी सम्पर्क से इस सूरः का नाम 'अन-नम्ल' रखा गया है। सूरः का यह नाम केवल चिह्न के रूप में रखा गया है। यह सूरः का केन्द्रीय विषय नहीं है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

सूरः* के अध्ययन से मालूम होता है कि यह सूरः मक्का के मध्य-काल में अवतीर्ण होने वाली सूरतों से मिलती-जुलती है। इब्न अब्बास रज़ि० और जाबिर बिन ज़ैद के बयान से पता चलता है कि यह सूरः अश-शुअरा के बाद उतरी है और इस के बाद सूरः अल-क़सस का अवतरण हुआ है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

यह ईमान* वालों को विजय की शुभ-सूचना देने वाली सूरः है। यह सूरः अल्लाह के एक विशेष गुणवाचक नाम 'अलीम' (सर्वज्ञ, सब-कुछ जानने वाला) पर उसी तरह आधारित है जिस प्रकार पिछली सूरः अल्लाह के गुणवाचक नाम 'अज़ीज़'[1] और 'रहीम'[2] पर अवलम्बित है। पिछली दो सूरतों की तरह प्रस्तुत सूरः में भी इस पर विशेष ज़ोर दिया गया है कि ईमान* वाले सब्र* और धैर्य से काम लें, अल्लाह पर भरोसा रखें। उसी का सहारा ले कर आत्म-बल और शक्ति प्राप्त करें। जो लोग इसी वर्तमान लोक के पुजारी बने हुये हैं उन के धन-वैभव को केवल उपेक्षा की दृष्टि से देखें।

प्रस्तुत सूरः में दो तक़रीरें शामिल हैं। पहली तक़रीर सूरः के आरम्भ से ले कर आयत ५८ तक चली गई है। दूसरी तक़रीर आयत ५९ से ले कर सूरः के अन्त तक है।

पहली तक़रीर में बताया गया है कि क़ुरआन के दिखाये हुये मार्ग पर चलने में जो चीज़ सब से बढ़ कर रुकावट बनती है वह आख़िरत* का इन्कार है। आख़िरत* का इन्कार कर के आदमी अपने को अनुत्तरदायी ठहरा लेता है फिर ऐसे व्यक्ति से इस की आशा नहीं की जा सकती कि वह जीवन-सम्बन्धी गम्भीर विषयों पर सोच-विचार करेगा और अपने को नैतिक नियंत्रणों का पाबन्द बनायेगा।

फ़िरऔन, समूद-जाति और हज़रत लूत की जाति वालों के विनाश का यही मूल कारण हुआ कि वे आख़िरत* की ओर से निश्चिन्त हो गये थे और अपनी तुच्छ-इच्छाओं की दासता पर ही जमे रहे। जिन लोगों ने उन्हें सन्मार्ग से निकालना चाहा उन के शत्रु बन गये।

---

१ अर्थात् सब शक्तिशाली।
२ अर्थात् दयावान।
* इन पर अर्थ चिह्न से अंकित हुए पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः की पहली तक़रीर में फ़िरऔन, समूद-जाति और हज़रत लूत अ० की जाति वालों के अतिरिक्त हज़रत मूसा अ०, हज़रत दाऊद अ० और हज़रत सुलैमान अ० के क़िस्से भी बयान हुये हैं। इन क़िस्सों में अल्लाह के प्रभुत्व और उस की हिकमत* (Wisdom) का प्रदर्शन हुआ है। अल्लाह ने हज़रत दाऊद अ० और हज़रत सुलैमान अ० को हिकमत* प्रदान की थी। यह हिकमत* ही का चमत्कार था कि हज़रत सुलैमान अ० को अल्लाह ने जब सुख-सामग्री और राज्य प्रदान किया तो वे अल्लाह के कृतज्ञ बने;[1] स्वच्छन्द और अवज्ञाकारी नहीं बने। हज़रत दाऊद अ० और हज़रत सुलैमान अ० के क़िस्से से यह भी ज्ञात होता है कि समस्त उत्तमता का मूल आधार ज्ञान ही है। और ज्ञान की विशेष देन 'शुक्र' (कृतज्ञता-प्रकाशन) है। 'शुक्र' का एक विशेष गुण यह भी है कि जिस प्रकार मनुष्य पर अल्लाह की कृपा होती है उसी प्रकार वह भी कमज़ोरों पर दया करता है और अच्छे कर्मों के द्वारा अपने जीवन को पवित्र बनाता है। इस के विपरीत कुफ़्र* और शिर्क* की विशेषता है बिगाड़, फ़साद, छल-कपट और अन्यायपन आदि। इस का भली-भाँति अन्दाज़ा हमें उन जातियों के क़िस्सों में होता है जो अपने कुफ़्र* और शिर्क* के कारण तबाह हो चुकी हैं।

इस तक़रीर में 'सबा' (Sheba) की शासिका का क़िस्सा भी बयान हुआ है जो अरब-इतिहास की एक प्रसिद्ध जाति पर शासन करती थी। 'सबा' की शासिका एक मुश्रिक* स्त्री थी परन्तु उस के शिर्क* का कारण केवल यह था कि उस ने एक मुश्रिक* वातावरण में होश सँभाला था। पक्षपात और अपनी तुच्छ-इच्छाओं की दासता का रोग उसे नहीं लगा था। आख़िरत* की ओर से वह निश्चिन्त नहीं थी। यही कारण है कि जब सत्य उस के सामने स्पष्ट रूप में आ गया तो उसे स्वीकार करने में कोई चीज़ भी बाधक न बन सकी। बाइबिल के अध्ययन से मालूम होता है कि हज़रत सुलैमान अ० हिकमत* (तत्त्व-ज्ञान) में प्रसिद्ध थे। 'सबा' की शासिका उन के पास हिकमत की बातें सुनने के लिए आई थी। वह हज़रत सुलैमान अ० के ज्ञान और प्रताप से बहुत प्रभावित हुई और कहा : भाग्यवान हैं तेरे लोग और भाग्यवान हैं तेरे सेवक जो बराबर तेरे सामने खड़े रहते हैं और तेरी हिकमत (Wisdom) सुनते हैं'[2]।

सूरः की दूसरी तक़रीर में प्राकृतिक प्रमाणों द्वारा 'तौहीद'* अथवा एकेश्वर-वाद की उसी प्रकार पुष्टि की गई है जिस प्रकार सूरः की पहली तक़रीर में पिछली जातियों के वृत्तान्त और नबियों* के क़िस्सों से उसे प्रमाणित किया गया है। दूसरी तक़रीर आयत ५९ से आरम्भ होती है। आयत ५९ पहली तक़रीर का सारांश और दूसरी तक़रीर की आरम्भिका है और आयत ६४ तौहीद* और आख़िरत* के बीच सम्पर्क स्थापित करती है।

इस तक़रीर में काफ़िरों* का मूल रोग यह बताया गया है कि वे आख़िरत*

---

१ दे० आयत १९ और ४०।

२ दे० बाइबल '१ सलातीन' (1 Kings) १० : ८ और '२ तवारीख़' (2 Chronicles) ९ : ७।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अन-नम्ल

(मक्का में उतरी — आयतें ९३)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

سورة النمل مكية وهي ثلاث وتسعون آية وسبع ركوعات

بسم الله الرحمن الرحيم

طس تلك آيات القرآن وكتاب مبين ۝ هدى وبشرى للمؤمنين ۝ الذين يقيمون الصلوة ويؤتون الزكوة وهم بالآخرة هم يوقنون ۝ إن الذين لا يؤمنون بالآخرة زينا لهم أعمالهم فهم يعمهون ۝ أولئك الذين لهم سوء العذاب وهم في الآخرة هم الأخسرون ۝ وإنك لتلقى القرآن من لدن حكيم عليم ۝ إذ قال موسى لأهله إني آنست نارا سآتيكم منها بخبر أو آتيكم بشهاب قبس لعلكم تصطلون ۝ فلما جاءها نودي أن بورك من في النار ومن حولها وسبحن

ता० सीन०[1]। ये आयतें* हैं .कुरआन* की और एक खुली (स्पष्ट) किताब* की; ○ पथ-प्रदर्शन और शुभ-सूचना[2] ईमान* वालों के लिए ○ जो नमाज़* क़ायम रखते और ज़कात* देते हैं और वे ऐसे हैं कि जो आखिरत* पर विश्वास रखते हैं। ○ निश्चय ही जो लोग आखिरत* पर ईमान* नहीं रखते, उन के लिए हम ने उन के कर्मों को शोभायमान बना दिया है[3] अतः वे भटकते फिरते हैं। ○ ये वे लोग हैं जिन के लिए बुरा अज़ाब है, और यही हैं जो आखिरत* में अत्यन्त घाटा उठाने वाले ५ हैं। ○ और (हे मुहम्मद !), निस्सन्देह तुम यह .कुरआन* एक हिकमत* वाले और (सब-कुछ) जानने वाले की ओर से पा रहे हो। ○

(याद करो)) जब मूसा ने अपने घर वालों से कहा : मैं ने एक आग देखी है;[4] मैं अभी वहाँ से तुम्हारे पास कोई खबर ले कर आता हूँ, या तुम्हारे पास कोई दहकता अंगारा लाता हूँ ताकि तुम तापो[5] । ○ जब वह उस के पास पहुँचा, तो उसे आवाज़ दी गई कि बरकत वाला है वह जो इस आग में है और जो उस के वातावरण में है! और महिमावान है अल्लाह, सारे संसार का रब*[6] ! ○ हे मूसा ! यह तो मैं हूँ अल्लाह,[7] अपार शक्ति का मालिक और हिकमत* वाला। ○ और तू अपनी लाठी फेंक ! तो जब मूसा ने देखा कि वह (लाठी) बल खा रही है जैसे कोई सर्प हो, तो पीठ फेर कर भागा और पीछे मुड़ कर भी न देखा; (कहा गया) : १० हे मूसा ! डरो नहीं ! मेरे पास रसूल डरा नहीं करते, ○ परन्तु (इतना ही नहीं) जिस ने कोई

---

१ दे० सूरः अल-बक़रः फुट नोट १।

२ दे० आयत ७७।

३ आखिरत* के न मानने का स्वाभाविक परिणाम यही होता है कि आदमी को जीवन का यही रंग-ढंग भला मालूम होने लगता है।

४ यह उस समय की बात है जब हज़रत मूसा अ० मदयन में कई वर्ष रहने के पश्चात् अपने घर वालों को साथ ले कर प्रायद्वीप सीना के दक्षिणी भाग में उस स्थान पर पहुँचे थे जिस का नाम .कुरआन के अवतीर्ण होने के समय 'तूर' था। अब यह सीना-पर्वत और मूसा-पर्वत कहलाता है। तुलनात्मक अध्ययन के लिए दे० सूरः ता० हा० आयत १० और सूरः अल-क़सस आयत २६।

५ जिस स्थान पर हज़रत मूसा अ० को आग दिखाई दी थी वह स्थान समुद्र-तल से लगभग ५,००० फ़ीट की ऊँचाई पर है।

६ यह आवाज़ एक वृक्ष से आ रही थी। (दे० सूरः अल-क़सस आयत ३०)। ऐसा मालूम होता है कि वहाँ एक आग सी लगी हुई थी परन्तु न धुआँ था और न कोई चीज़ वहाँ जल रही थी। आग के बीच खड़े हुए एक हरे-भरे वृक्ष से सहसा हज़रत मूसा अ० को पुकारा गया।

७ दे० सूरः ता० हा० आयत ११-१४।

* इस का अर्थ आखिर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

हुदहुद को नहीं देख रहा हूँ, क्या वह ग़ायब हो गया है। ○ मैं उसे कठोर दण्ड दूँगा या उसे ज़ब्ह कर दूँगा, या उसे मेरे पास खुली दलील (उज़्र) लानी होगी। ○ कुछ ज़्यादा देर नहीं की कि उस ने (आ कर) कहा : मैं ने वह बात मालूम की है जो आप को मालूम नहीं, मैं सबा[15] से आप के पास एक सच्ची ख़बर ले कर आया हूँ। ○ मैं ने (वहाँ) एक स्त्री देखी जो उन पर[16] शासन करती है, और उसे हर चीज़ प्राप्त है, और उस का एक बड़ा सिंहासन है। ○ मैं ने उसे और उस की जाति वालों को देखा कि वे अल्लाह को छोड़ कर सूर्य को सजदः करते हैं; और[17] शैतान* ने उन के कर्मों को उन के लिए शोभायमान बना दिया है, और उन्हें (सीधे) मार्ग से रोक दिया है, सो वे (सीधी) राह नहीं पाते : ○ (रोक दिया) कि अल्लाह को सजदः* न करें, जो आसमानों और ज़मीन में छिपी चीज़	منطق الطير وأوتينا من كل شيء إن هذا لهو الفضل المبين ○ وحشر لسليمان جنوده من الجن والإنس والطير فهم يوزعون ○ حتى إذا أتوا على واد النمل قالت نملة يا أيها النمل ادخلوا مساكنكم لا يحطمنكم سليمان وجنوده وهم لا يشعرون ○ فتبسم ضاحكا من قولها وقال رب أوزعني أن أشكر نعمتك التي أنعمت علي وعلى والدي وأن أعمل صالحا ترضاه وأدخلني برحمتك في عبادك الصالحين ○ وتفقد الطير فقال ما لي لا أرى الهدهد أم كان من الغائبين ○ لأعذبنه عذابا شديدا أو لأذبحنه أو ليأتيني بسلطان مبين ○ فمكث غير بعيد فقال أحطت بما لم تحط به و جئتك من سبإ بنبإ يقين ○ إني وجدت امرأة تملكهم وأوتيت من كل شيء ولها عرش عظيم ○ وجدتها وقومها يسجدون للشمس من دون الله وزين لهم الشيطان أعمالهم فصدهم عن السبيل فهم لا يهتدون ○ ألا يسجدوا لله الذي يخرج الخبء في السموت والأرض ويعلم ما تخفون وما تعلنون ○ الله لا إله إلا هو رب العرش العظيم ○ قال سننظر أصدقت أم كنت من الكاذبين ○ اذهب بكتابي هذا فألقه إليهم ثم تول عنهم فانظر ماذا يرجعون ○ قالت يا أيها الملؤا إني ألقي إلي كتاب كريم ○ إنه من سليمن وإنه بسم

२५ निकालता है, और जानता है जो-कुछ तुम छिपाते और जो-कुछ ज़ाहिर करते हो, ○ अल्लाह कि जिस के सिवा कोई इलाह* (पूज्य) नहीं, जो महान् सिंहासन का रब* (स्वामी) है[18]। ○

उस ने[19] कहा : अभी हम देख लेते हैं कि तू ने सच कहा है या तू झूठों में से है। ○ मेरा यह पत्र ले कर जा और उसे उन की ओर डाल दे; फिर उन के पास से पलट आ देख कि वे क्या जवाब देते हैं, ○

वह (शासिका) बोली : हे सरदारो! मेरी ओर एक माननीय पत्र फेंका गया है; ○ वह सुलैमान की ओर से है और वह है : अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान्
१० है; ○ यह कि मेरे मुक़ाबिले में सरकशी न करो, और मुस्लिम* हो कर मेरे पास हाज़िर हो जाओ। ○ उस (शासिका) ने कहा : हे सरदारो! मेरे मामले में मुझे राय दो। मैं किसी

---

१५ 'सबा' (Sheba) दक्षिणी अरब की एक प्रसिद्ध जाति थी। इस की राजधानी 'सनआ' से उत्तर-पूर्व की ओर ५५ मील की दूरी पर थी यमन, हज़्रमूत और अफ़रीक़ा में हब्श (Abyssinia) क्षेत्र पर इस का अधिकार था। यह एक व्यापार करने वाली जाति थी। पूर्वी अफ़रीक़ा, भारत, सुदूरपूर्व, मिस्र, सीरिया, यूनान और रूम के साथ यह व्यापार करती थी। यह जाति अत्यन्त सभ्य थी। सिंचाई का प्रबन्ध कर के सबाइयों ने अपने देश को हरा-भरा बना रखा था। लगभग ११०० ईसा पूर्व से ले कर ११५ ईसा पूर्व तक अरब देश में इस जाति का डंका बजता रहा है।

१६ सबा वालों पर।

१७ ऐसा लगता है कि यहाँ से ले कर आयत २६ के अन्त तक हुदहुद की बात नहीं है; उस की बात "सूर्य को सजदः करते हैं" पर पूरी हो जाती है। इस के बाद अल्लाह ने मक्का वालों को सम्बोधित करते हुये ये बातें अपनी ओर से बढ़ा दी हैं। यह क़िस्सा भी मक्का के मुशरिकों* ही को सुनाया जा रहा है ताकि वे इस से शिक्षा ग्रहण करें।

१८ दे० सूरः अल-आराफ़ फ़ुट नोट १६।

१९ अर्थात् हज़रत सुलैमान अ० ने।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

الله رب العلمين ۝ يموسى انه انا الله العزيز الحكيم ۝
والق عصاك فلما راها تهتز كانها جان ولى مدبرا ولم يعقب
يموسى لا تخف انى لا يخاف لدى المرسلون ۝ الا من ظلم
ثم بدل حسنا بعد سوء فانى غفور رحيم ۝ وادخل يدك
فى جيبك تخرج بيضاء من غير سوء فى تسع ايت الى فرعون
وقومه انهم كانوا قوما فسقين ۝ فلما جاءتهم ايتنا مبصرة
قالوا هذا سحر مبين ۝ وجحدوا بها واستيقنتها انفسهم ظلما
وعلوا فانظر كيف كان عاقبة المفسدين ۝ ولقد اتينا داود
وسليمن علما وقالا الحمد لله الذى فضلنا على كثير من
عباده المؤمنين ۝ وورث سليمن داود وقال يايها الناس علمنا

ज़्यादती कर दी हो फिर बुराई के बाद उसे भलाई से बदल लिया तो निस्सन्देह मैं बड़ा क्षमाशील और दयावन्त हूँ। ○ और (हे मूसा!) अपना हाथ अपने गरेबान में डाल, उज्ज्वल (हो कर) निकलेगा बिना किसी ख़राबी के। ये (दो निशानियाँ) नौ निशानियों में से हैं फ़िरऔन और उस की जाति वालों की ओर (जाने के लिए)[8]। निश्चय ही वे मर्यादा का उल्लंघन करने वाले लोग हैं। ○

फिर जब हमारी खुली-खुली निशानियाँ उन के पास आईं, तो उन्हों ने कहा : यह तो खुला जादू है, ○ उन्हों ने ज़ुल्म और सरकशी से उस का इन्कार किया, यद्यपि उन के जी को उन का विश्वास हो चुका था। तो देखो उन बिगाड़ पैदा करने वालों का कैसा परिणाम हुआ! ○

और हम ने दाऊद और सुलैमान को ज्ञान प्रदान किया, और उन्हों ने (कृतज्ञता प्रकट करते हुये) कहा : प्रशंसा (हम्द*) अल्लाह के लिए है, जिस ने हमें अपने बहुत से ईमान* वाले बन्दों पर बड़ाई दी। ○

और सुलैमान दाऊद का वारिस हुआ[9]। और उस ने कहा : हे लोगो! हमें पक्षियों की बोली (भाषा) सिखाई गई है,[10] और हमें हर (आवश्यक) वस्तु प्रदान की गई है। निश्चय ही यह खुला फ़ज़्ल है। ○

सुलैमान के लिए उस की सेनायें एकत्र की गईं जिन में जिन्न*[11] भी थे और मानव भी, और पक्षी भी, और उन्हें नियन्त्रित रखा जाता था; ○ यहाँ तक कि जब ये सब च्यूँटियों की घाटी में पहुँचे, तो एक च्यूँटी ने कहा : हे च्यूँटियो! अपने घरों (बिलों) में घुस जाओ ऐसा न हो कि सुलैमान और उस की सेनायें तुम्हें कुचल डालें, और उन्हें ख़बर भी न हो। ○

सो वह[12] उस की बात पर मुस्कराते हुये हँस पड़ा[13] और कहा : रब*! मुझे इस में लगाये रख कि मैं तेरी उस कृपा पर जो तू ने मुझ पर और मेरे माता-पिता पर की है कृतज्ञता दिखलाऊँ, और यह कि अच्छा काम करूँ जो तुझे पसन्द आये, और अपनी दयालुता से मुझे अपने अच्छे बन्दों में दाख़िल कर। ○

और उस ने[14] पक्षियों की जाँच-पड़ताल की और कहा : क्या बात है कि मैं अमुक

---

८ हज़रत मूसा अ० को अल्लाह की ओर से नौ खुली निशानियाँ दी गई थीं (दे० सूरः बनी इसराईल आयत १०१)। इन निशानियों का सविस्तार उल्लेख सूरः अल-आराफ़ में हुआ है।

९ अर्थात् हज़रत दाऊद अ० के बाद अल्लाह ने हज़रत सुलैमान अ० को नुबूवत* के पद पर खड़ा किया।

१० इस का उल्लेख बाइबिल में नहीं किया गया है कि हज़रत सुलैमान अ० को अल्लाह ने पशुओं और पक्षियों की बोली सिखाई थी। परन्तु यहूदियों* के पुरातन कथाओं में इस का उल्लेख मिलता है।

११ जिन्न* हज़रत सुलैमान अ० की सेना में थे और हज़रत सुलैमान अ० उन से काम लेते थे। इस का उल्लेख बाइबिल में नहीं है। परन्तु बनी इसराईल के पुरातन कथाओं में इस का विस्तारपूर्वक उल्लेख किया गया है।

१२ अर्थात् सुलैमान अ०।

१३ च्यूँटियों की बात कोई सुन नहीं पाता, परन्तु अल्लाह ने हज़रत सुलैमान अ० को च्यूँटियों की आवाज़ सुनने की शक्ति प्रदान की थी।

१४ अर्थात् हज़रत सुलैमान अ० ने।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

مَنْطِقَ الطَّيْرِ وَأُوتِينَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ ۖ إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْمُبِينُ
وَحُشِرَ لِسُلَيْمَانَ جُنُودُهُ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوزَعُونَ
حَتَّىٰ إِذَا أَتَوْا عَلَىٰ وَادِ النَّمْلِ قَالَتْ نَمْلَةٌ يَا أَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوا مَسَاكِنَكُمْ
لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمَانُ وَجُنُودُهُ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا
مِنْ قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ
وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَدْخِلْنِي بِرَحْمَتِكَ فِي
عِبَادِكَ الصَّالِحِينَ وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَا أَرَى الْهُدْهُدَ أَمْ
كَانَ مِنَ الْغَائِبِينَ لَأُعَذِّبَنَّهُ عَذَابًا شَدِيدًا أَوْ لَأَذْبَحَنَّهُ أَوْ لَيَأْتِيَنِّي
بِسُلْطَانٍ مُبِينٍ فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيدٍ فَقَالَ أَحَطْتُ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهِ وَ
جِئْتُكَ مِنْ سَبَإٍ بِنَبَإٍ يَقِينٍ إِنِّي وَجَدْتُ امْرَأَةً تَمْلِكُهُمْ وَأُوتِيَتْ
مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَلَهَا عَرْشٌ عَظِيمٌ وَجَدْتُهَا وَقَوْمَهَا يَسْجُدُونَ لِلشَّمْسِ
مِنْ دُونِ اللَّهِ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ
فَهُمْ لَا يَهْتَدُونَ أَلَّا يَسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُونَ وَمَا تُعْلِنُونَ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ
الْعَظِيمِ قَالَ سَنَنْظُرُ أَصَدَقْتَ أَمْ كُنْتَ مِنَ الْكَاذِبِينَ اذْهَبْ بِكِتَابِي
هَٰذَا فَأَلْقِهْ إِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظُرْ مَاذَا يَرْجِعُونَ قَالَتْ يَا أَيُّهَا
الْمَلَأُ إِنِّي أُلْقِيَ إِلَيَّ كِتَابٌ كَرِيمٌ إِنَّهُ مِنْ سُلَيْمَانَ وَإِنَّهُ

हुदहुद को नहीं देख रहा हूँ, क्या वह ग़ायब हो गया है ? O मैं उसे कठोर दण्ड दूँगा या उसे ज़ब्ह कर दूँगा, या उसे मेरे पास खुली दलील (उज्र) लानी होगी। O

कुछ ज़्यादा देर नहीं की कि उस ने (आ कर) कहा : मैं ने वह बात मालूम की है जो आप को मालूम नहीं, मैं सबा[15] से आप के पास एक सच्ची ख़बर ले कर आया हूँ। O मैं ने (वहाँ) एक स्त्री देखी जो उन पर[16] शासन करती है, और उसे हर चीज़ प्राप्त है, और उस का एक बड़ा सिंहासन है। O मैं ने उसे और उस की जाति वालों को देखा कि वे अल्लाह को छोड़ कर सूर्य को सजदः करते हैं; और[17] शैतान* ने उन के कर्मों को उन के लिए शोभायमान बना दिया है, और उन्हें (सीधे) मार्ग से रोक दिया है, सो वे (सीधी) राह नहीं पाते : O (रोक दिया) कि अल्लाह को सजदः* न करें, जो आसमानों और ज़मीन में छिपी चीज़ निकालता है, और जानता है जो-कुछ तुम छिपाते और जो-कुछ ज़ाहिर करते हो, O अल्लाह कि जिस के सिवा कोई इलाह* (पूज्य) नहीं, जो महान् सिंहासन का रब* (स्वामी) है[18]। O

उस ने[19] कहा : अभी हम देख लेते हैं कि तू ने सच कहा है या तू झूठों में से है। O मेरा यह पत्र ले कर जा और उसे उन की ओर डाल दे; फिर उन के पास से पलट आ देख कि वे क्या जवाब देते हैं, O

वह (शासिका) बोली : हे सरदारो ! मेरी ओर एक माननीय पत्र फेंका गया है; O वह सुलैमान की ओर से है और वह है : अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है; O यह कि मेरे मुक़ाबिले में सरकशी न करो, और मुस्लिम* हो कर मेरे पास हाज़िर हो जाओ। O उस (शासिका) ने कहा : हे सरदारो ! मेरे मामले में मुझे राय दो। मैं किसी

---

१५ 'सबा' (Sheba) दक्षिणी अरब की एक प्रसिद्ध जाति थी। इस की राजधानी 'सनआ' से उत्तर-पूर्व की ओर ५५ मील की दूरी पर थी यमन, हज्रमूत और अफ़रीका में हब्श (Abyssinia) क्षेत्र पर इस का अधिकार था। यह एक व्यापार करने वाली जाति थी। पूर्वी अफ़्रीका, भारत, सुदूरपूर्व, मिस्र, सीरिया, यूनान और रूम के साथ यह व्यापार करती थी। यह जाति अत्यन्त सभ्य थी। सिंचाई का प्रबन्ध कर के सबाइयों ने अपने देश को हरा-भरा बना रखा था। लग-भग ११०० ईसा पूर्व से ले कर ११५ ईसा पूर्व तक अरब देश में इस जाति का डंका बजता रहा है।

१६ सबा वालों पर।

१७ ऐसा लगता है कि यहाँ से ले कर आयत २६ के अन्त तक हुदहुद की बात नहीं है; उस की बात "सूर्य को सजदः करते हैं" पर पूरी हो जाती है। इस के बाद अल्लाह ने मक्का वालों को सम्बोधित करते हुये ये बातें अपनी ओर से बढ़ा दी हैं। यह क़िस्सा भी मक्का के मुश्रिकों* ही को सुनाया जा रहा है ताकि वे इस से शिक्षा ग्रहण करें।

१८ दे० सूरः अल-आराफ़ फ़ुट नोट १६।

१६ अर्थात् हज़रत सुलैमान अ० ने।

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

रह सकती है या उन लोगों में से होती है जो राह नहीं पाते। ○ जब वह आई, तो (उस से) कहा गया : क्या तेरा सिंहासन ऐसा ही है? उस ने कहा यह तो जैसे वही है। और हमें तो इस से पहले ही ज्ञान प्राप्त हो चुका था और हम मुस्लिम* हो गये थे। ○

अल्लाह के सिवा वह जो-कुछ पूजती थी उसी ने उसे (ईमान* लाने से) रोक रखा था, निश्चय ही वह काफ़िर* लोगों में से थी। ○

उस से कहा गया : महल में दाख़िल हो। जब उस ने उसे देखा तो उसे जल-सरोवर समझी और (उस में उतरने के लिए) अपनी पिंडलियाँ खोल दीं। (सुलैमान ने) कहा : यह तो महल है, जिस में शीशे जड़े हुए हैं। बोली : रब* ! मैं ने अपने-आप पर ज़ुल्म किया था और अब मैं ने सुलैमान के साथ अपने-आप को अल्लाह के समर्पण किया जो 'सारे संसार का रब'* है''[२६]। ○

حسبته لجة وكشفت عن ساقيها قال انه صرح ممرد من قواريـ
ـر قالت رب اني ظلمت نفسي واسلمت مع سليمن لله رب العلمين ○
ولقد ارسلنا الى ثمود اخاهم صلحا ان اعبدوا الله فاذا هم فريقن
يختصمون ○ قال يقوم لم تستعجلون بالسيئة قبل الحسنة لولا
تستغفرون الله لعلكم ترحمون ○ قالوا اطيرنا بك وبمن معك قال
طئركم عند الله بل انتم قوم تفتنون ○ وكان في المدينة تسعة
رهط يفسدون في الارض ولا يصلحون ○ قالوا تقاسموا بالله لنبيتنه
واهله ثم لنقولن لوليه ما شهدنا مهلك اهله وانا لصدقون ○
ومكروا مكرا ومكرنا مكرا وهم لا يشعرون ○ فانظر كيف كان
عقبة مكرهم انا دمرنهم وقومهم اجمعين ○ فتلك بيوتهم خاوية بما
ظلموا ان في ذلك لاية لقوم يعلمون ○ وانجينا الذين امنوا و
كانوا يتقون ○ ولوطا اذ قال لقومه اتاتون الفحشة وانتم تبصرون ○
ائنكم لتاتون الرجال شهوة من دون النساء بل انتم قوم تجهلون ○
فما كان جواب قومه الا ان قالوا اخرجوا ال لوط من قريتكم
انهم اناس يتطهرون ○ فانجينه واهله الا امراته قدرنها من
الغبرين ○ وامطرنا عليهم مطرا فساء مطر المنذرين ○ قل
الحمد لله وسلم على عباده الذين اصطفى ءالله خير اما يشركون ○

और समूद[२७] की ओर हम ने उन के भाई सालेह को (यह सन्देश देकर) भेजा कि अल्लाह २१ की इबादत* करो। तो वे दो जत्थे हो कर झगड़ने लगे। ○

(सालेह ने) कहा : हे मेरी जाति के लोगो ! भलाई से पहले बुराई के लिए क्यों जल्दी मचाते हो? क्यों नहीं अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना करते, कदाचित् तुम पर दया की जाये। ○ उन्हों ने कहा : हम ने तुझे और जो कोई तेरे साथ है उसे अपशकुन का प्रतीक पाया है। उस ने कहा : तुम्हारा शकुन-अपशकुन तो अल्लाह के पास है। बल्कि तुम वे लोग हो जो आज़माइश में डाल दिये गये हो। ○

उस नगर में नौ आदमियों का जत्था था[२८] जो देश में बिगाड़ पैदा करते थे और सुधार

---

२६ अर्थात् मैं मुस्लिम* हो गई। हज़रत सुलैमान अ० और सबा की शासिका का क़िस्सा बाइबिल और बनी इसराईल के पुरातन कथाओं में मिलता है, परन्तु क़ुरआन का बयान इन सब के बयान से भिन्न है। तुलनात्मक (Comparative) अध्ययन के लिए दे० बाइबिल १ सलातीन (1 Kings) १० : १–१३; २ तवारीख़ (2 Chronicles) ९ : १–१२।

मत्ती और लूका की इंजीलों में केवल हज़रत मसीह अ० के भाषण का यह वाक्य नक़ल किया गया है : "दक्षिण की रानी इस युग के लोगों के साथ उठ कर इन्हें अपराधी ठहरायेगी क्योंकि वह दुनिया के किनारे से सुलैमान की हिकमत (Wisdom) सुनने को आई और देखो यहाँ वह है जो सुलैमान से भी बड़ा है"। दे० मत्ती (Mtt.) १२ : ४२ और लूका (Luke) ११ : ३१। यहूदी पुरातन कथाओं में हज़रत सुलैमान अ० और सबा की शासिका का जो क़िस्सा बयान हुआ है उस का अधिकांश क़ुरआन से मिलता-जुलता है परन्तु शासिका का उपहार मिलने पर हज़रत सुलैमान अ० ने जो उत्तर दिया है उस का और रानी के सिंहासन के मँगवाने का उल्लेख सिरे से उस में किया ही नहीं गया है। इस के अलावा हज़रत सुलैमान अ० की भक्ति और प्रत्येक अवसर पर अल्लाह के आगे उन का झुकते रहना और सबा की शासिका का ईमान* लाना, ये सब बातें उस में नहीं मिलतीं।

२७ दे० सूरः अअराफ़, अरा फुट नोट ४२।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

أَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً فَأَنْۢبَتْنَا بِهٖ حَدَآئِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ مَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُنْۢبِتُوْا شَجَرَهَا ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَّعْدِلُوْنَ ۝ أَمَّنْ جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا وَّجَعَلَ خِلٰلَهَآ أَنْهٰرًا وَّجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ أَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ الْأَرْضِ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ۝ أَمَّنْ يَّهْدِيْكُمْ فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُّرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ تَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ أَمَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَمَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ إِلَّا اللّٰهُ وَمَا يَشْعُرُوْنَ أَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ۝ بَلِ ادّٰرَكَ عِلْمُهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْهَا بَلْ هُمْ مِّنْهَا عَمُوْنَ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا وَّاٰبَآؤُنَآ أَئِنَّا لَمُخْرَجُوْنَ ۝ لَقَدْ وُعِدْنَا هٰذَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ إِنْ هٰذَآ إِلَّآ أَسٰطِيْرُ الْأَوَّلِيْنَ ۝ قُلْ سِيْرُوْا فِي الْأَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ۝ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ

का काम न करते थे। ○उन्हों ने कहा : परस्पर अल्लाह की क़सम खाओ कि हम अवश्य उस पर और उस के घर वालों पर रात को छापा मारेंगे, फिर उस के वली से कह देंगे कि हम उस के घर वालों के विनाश के अवसर पर न थे[29]। और निश्चय ही हम सच्चे हैं। ○ वे एक चाल चले : और हम भी एक चाल चले, और उन्हें ख़बर न हुई[30]। ○ अब देख लो कि उन की चाल का कैसा परिणाम हुआ, हम ने उन को और उन की जाति को नष्ट कर के रख दिया। ○

ये उन के घर उन के ज़ुल्म के कारण उजड़े पड़े हैं। निस्सन्देह इस में एक निशानी है उन लोगों के लिए जो जानते हैं[31]। ○

और हम ने उन लोगों को बचा लिया जो ईमान* लाये थे और अल्लाह की अवज्ञा से बचते और उस की ना-ख़ुशी से डरते थे। ○

और लूत[32] को (हम ने भेजा) जब कि उस ने अपनी जाति के लोगों से कहा : क्या तुम आँखों देखते अश्लील कर्म करते हो! ○ क्या तुम स्त्रियों को छोड़ कर पुरुषों के पास कामेच्छा से जाते हो? बल्कि तुम अज्ञानता का कार्य करने वाले लोग हो। ○ परन्तु उस की जाति का उत्तर इस के अतिरिक्त कुछ न था कि उन्हों ने कहा : निकाल बाहर करो लूत के घर वालों को अपनी बस्ती से, ये बड़े पाक-साफ़ (पवित्राचारी) बनते हैं! ○

फिर हम ने उसे और उस के घर वालों को बचा लिया सिवाय उस की स्त्री के जिस के बारे में हम ने ठहरा दिया था कि वह पीछे रह जाने वालों में होगी। ○ और हम ने उन लोगों पर बुरी वर्षा की तो वह क्या ही बुरी वर्षा थी उन लोगों के हक़ में जिन्हें सचेत किया जा चुका था। ○

[33](हे नबी* !) कहो : प्रशंसा (हम्द*) है अल्लाह के लिए, और सलाम उस के उन बन्दों पर जिन्हें उस ने चुन लिया! (उन से पूछो) क्या अल्लाह अच्छा है, या जिसे वे (अल्लाह का)

---

२८ अर्थात् क़बीलों के ६ सरदार थे जिन में से प्रत्येक एक बड़े जत्थे का मालिक था।
२९ वली से अभिप्रेत हज़रत सालेह अ० के क़बीले के सरदार थे जिन्हें क़बीलों की रीति के अनुसार यह अधिकार प्राप्त था कि वे उन के ख़ून का दावा करें। बिलकुल ऐसी ही साज़िश मक्का के काफ़िरों* ने नबी* सल्ल० को क़त्ल करने के लिए की थी। उन्हों ने यह निश्चय किया था कि सब क़बीले आप के क़त्ल में सम्मिलित हों ताकि आप का क़बीला 'बनू हाशिम' किसी एक क़बीले को अपराधी न ठहरा सके और एक साथ सब क़बीलों से वे लड़ नहीं सकते।
३० अर्थात् अल्लाह ने उन पर अपना अज़ाब उतार दिया व सब-के-सब तबाह हो कर रह गये।
३१ अर्थात् जिन के पास ज्ञान है।
३२ दे० सूरः अश्-शु'अरा फुट नोट ५०।
३३ यहाँ से दूसरी तक़रीर शुरू होती है। आयत ५६ वास्तव में इस तक़रीर की आरम्भिका है। इस तक़रीर में 'तौहीद*' (एकेश्वरवाद) के प्राकृतिक प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं।

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

शरीक ठहराते हैं ? ○ भला वह कौन है जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, और तुम्हारे लिए आसमान से पानी बरसाया फिर उस के द्वारा हम ने शोभायमान बाग़ उगाये तुम्हारा काम तो न था कि तुम उन के वृक्षों को उगाते। क्या अल्लाह के साथ कोई और इलाह* (पूज्य) है ? नहीं, बल्कि यही लोग (सीधी) राह से अलग हो रहे हैं! ○ वह कौन है जिस ने ज़मीन को ठहराव[34] बनाया, और उस के बीच-बीच में नहरें[35] जारी कीं, और उस के लिए अचल पर्वत बनाये, और दो दरियाओं के बीच आड़ रखी[36] ? क्या अल्लाह के साथ कोई और इलाह* (पूज्य) है ? नहीं, बल्कि उन में अधिकतर जानते नहीं ! ○ कौन है जो व्याकुल की विनय सुनता है जब कि वह उसे पुकारे और (उस की) तकलीफ़ को दूर करता है, और (कौन है जो) तुम्हें ज़मीन में अधिकार देता है ? क्या अल्लाह के साथ कोई और इलाह* (पूज्य) है ? तुम लोग कम ही ध्यान देते हो ! ○ कौन है जो भूमि और समुद्र की अँधियारियों में तुम्हें राह दिखाता है, और कौन अपनी दयालुता (अर्थात् वर्षा) के आगे-आगे हवाओं को शुभ-सूचना के रूप में भेजता है[37] ? क्या अल्लाह के साथ कोई और इलाह* (पूज्य) है ? अल्लाह उस शिर्क* से उच्च है जो ये लोग करते हैं ! ○ कौन है जो पहली बार पैदा करता हो, फिर उसे दोबारा भी पैदा करे, और कौन तुम्हें आसमानों और ज़मीन से रोज़ी (जीविका) देता है[38] ? क्या अल्लाह के साथ कोई और इलाह* (पूज्य) है ? कहो : लाओ अपनी दलील (प्रमाण), यदि तुम सच्चे हो ! ○

(उन से) कहो : आसमानों और ज़मीन में कोई अल्लाह के सिवा (ग़ैब*) परोक्ष की बात १ नहीं जानता; और न उन्हें इस का ज्ञान है कि वे कब उठाये जायेंगे[39] । ○

बल्कि आख़िरत* के प्रति इन का ज्ञान गड-मड हो गया। बल्कि ये उस की ओर से सन्देह में हैं। बल्कि ये उस से अन्धे हैं[40] । ○

जिन लोगों ने कुफ़्र* किया वे कहते हैं : क्या जब हम और हमारे पूर्वज (मर कर) मिट्टी हो चुके होंगे, तो क्या वास्तव में हम (फिर) निकाले जायेंगे ? ○ इस का वादा तो हम से इस

---

३४ अर्थात् उसे ऐसा बनाया कि उस में मनुष्य रह-बस सके। इस भूमण्डल को जिस तरह अन्तरिक्ष में रखा गया है; और पृथ्वी और सूर्य-चन्द्र तथा विश्व के प्राकृतिक नियमों के बीच जो एकीकरण (Co-ordination) और अनुकूलता पाई जाती है उसे देख कर कोई बुद्धि रखने वाला व्यक्ति यह नहीं कह सकता कि यह सब-कुछ एक सर्वशक्तिमान अल्लाह के बिना सम्भव हो सका है। जिस अनुकूलता और एकीकरण का नियम हमें इस विश्व में दिखाई देता है उस के बिना यह सम्भव ही न था कि यह पृथ्वी प्राणियों का निवास-स्थान बन सके।

३५ अर्थात् नदियाँ।

३६ दे० सूरः अल-फ़ुरक़ान आयत ५३ ।

३७ हवायें वर्षा आने के पहले ही उस के आगमन की हर्ष-जनक सूचना देने लगती हैं।

३८ अल्लाह ही ने मनुष्य के लिए रोज़ी की सामग्री संचित की है। रोज़ी का प्रबन्ध उस के अतिरिक्त कोई दूसरा कर नहीं सकता। ज़मीन और आसमान की कितनी ही शक्तियाँ क्रियाशील हैं जिस के फल-स्वरूप मनुष्य को रोज़ी प्राप्त होती है। ताप, प्रकाश और वायु आदि का मालिक अल्लाह ही है ज़मीन और आसमान की समस्त शक्तियों को मिल-जुल कर काम करना उसी ने सिखाया है।

३९ दे० सूरः अन-नह्ल आयत २० ।

४० आख़िरत* पर ईमान* न रखने के कारण ही ये जीवन की महत्वपूर्ण समस्याओं पर गम्भीरतापूर्वक विचार नहीं करते। यदि ये अपनी ज़िम्मेदारी को समझते तो सच्चाई कोई दबी-छिपी चीज़ न थी, ये सच्चाई को अवश्य पा लेते।

† यहाँ से बीसवाँ पारः (Part XX) शुरू होता है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

से पहले भी किया जा चुका है, हम से भी और हमारे पूर्वजों से भी, यह तो क
की कहानियाँ (बेसनद बातें) है। ○

कहो : ज़मीन में चलो-फिरो और देखो कि अपराधियों का कैसा परिणाम हु
(हे नबी° !) उन पर दुःखी न हो, और न उस चाल से तंग दिल हो जो वे
और वे कहते हैं : यह धमकी कब (पूरी होगी) यदि तुम सच्चे हो ? ○
(अज़ाब) की तुम जल्दी मचा रहे हो कदाचित उस का एक हिस्सा तुम्हारे क़री
हो'' । ○ निस्सन्देह तेरा रब° तो लोगों के लिए फ़ज़्ल वाला है, परन्तु उन
कृतज्ञता नहीं दिखाते'' । ○ और निस्सन्देह तेरा रब° जानता है जो-कुछ कि
छिपाये हुये हैं और जो-कुछ कि वे लोग ज़ाहिर करते हैं । ○ आसमान और ज़
छिपी चीज़ ऐसी नहीं है जो एक खुली हुई (स्पष्ट) किताब° में (अंकित) न हो'' ।

निस्सन्देह यह .क़ुरआन° बनी इस्राईल° को अधिकांश ऐसी बातें सुनाता
विभेद करते हैं'' । ○ और निस्सन्देह यह पथ-प्रदर्शन और दयालुता है ईमान
लिए । ○ निश्चय ही तेरा रब° उन (लोगों) के बीच अपने हुक्म से फ़ैसला कर दे
वह अपार शक्ति का मालिक और (सब-कुछ) जानने वाला है'' । ○ अतः (हे
अल्लाह पर भरोसा रखो निश्चय ही तुम खुली हुई सच्चाई पर हो । ○ तुम मुर्दों को
सकते, और न बहरों को अपनी पुकार सुना सकते हो'' जब कि वे पीठ फेर कर भा
और न तुम अन्धों को उन की गुमराही से (सीधी) राह पर ला सकते हो । तुम तो
को सुना सकते हो, जो हमारी आयतों° पर ईमान° लाते हैं सो वे मुस्लिम° हैं ।

और जब हमारी बात उन पर पूरी (होने को) होगी,'' तो हम उन के लिए
ज़मीन से निकालेंगे जो उन से बात करेगा'' कि लोग हमारी आयतों° पर विश्वास नहीं कर

---

४१ अपराधी जातियों का जो परिणाम हुआ है; उन्हें जिस तरह अल्लाह ने तबाह और बरबाद
उस से साफ़ मालूम होता है कि इस संसार में केवल भौतिक नियम ही नहीं काम कर रहा है बल्कि
साथ ही नैतिक नियम भी काम कर रहा है । जिस के अन्तर्गत अपराधी जातियों को कठोर-क
दिया जाता है । यह नैतिक नियम इस बात का खुला प्रमाण है कि आख़िरत° अवश्य आयेगी
को अपने अच्छे बुरे कर्मों का बदला मिल कर रहेगा । अपराधी जातियों की तबाही से इन के ज़ुल्म
अत्याचार का सिलसिला टूट जाता है परन्तु न्याय और इन्साफ़ के सारे तक़ाज़े तो आख़िरत
पूरे होंगे ।

४२ अर्थात् यदि तुम अपनी चालों से बाज़ न आये तो जिस के लिए जल्दी मचा रहे हो उसे
देख लोगे ।

४३ यह उस का फ़ज़्ल और उस की कृपा ही है कि वह तुम्हें संभलने की पूरी मुहलत देता है ।

४४ अर्थात् वह अल्लाह के रिकार्ड में मौजूद है । अल्लाह के रिकार्ड से कोई एक चीज़ भी बा
हो सकती ।

४५ और यह .क़ुरआन के आसमानी किताब होने का खुला हुआ प्रमाण है ।

४६ अर्थात् ईमान वालों° और काफ़िरों° के बीच ।

४७ अतः उस के फ़ैसले को कोई रोक नहीं सकता ।

४८ अर्थात् ये लोग मुर्दों, बहरों और अन्धों के समान हैं अतः इन से कोई आशा रखनी व्यर्थ है

४९ अर्थात् जब क़ियामत° का दिन क़रीब आ जायेगा । जिस का हम ने वादा कर रखा है ।

५० देo सूरः अर-रूम आयत ३५ ।

५१ इस जानवर का निकलना क़ियामत° की बड़ी निशानियों में से है । नबी सल्ल० ने इस जान
अलावा क़ियामत° के क़रीब में प्रकट होने वाली और बहुत सी निशानियों की ख़बर दी है जैसे "दज्जाल
निकलना, धुआँ, और सूर्य का पश्चिम दिशा से उदय होना आदि ।

° [illegible] पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

فِي ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ ۝ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ
صَادِقِينَ ۝ قُلْ عَسَىٰ أَن يَكُونَ رَدِفَ لَكُم بَعْضُ الَّذِي
تَسْتَعْجِلُونَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ
لَا يَشْكُرُونَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا
يُعْلِنُونَ ۝ وَمَا مِنْ غَائِبَةٍ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِلَّا فِي كِتَابٍ
مُّبِينٍ ۝ إِنَّ هَٰذَا الْقُرْآنَ يَقُصُّ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَكْثَرَ
الَّذِي هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝ وَإِنَّهُ لَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝
إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُم بِحُكْمِهِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ۝ فَتَوَكَّلْ
عَلَى اللَّهِ ۖ إِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِينِ ۝ إِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تُسْمِعُ
الصُّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ۝ وَمَا أَنتَ بِهَادِي الْعُمْيِ عَن
ضَلَالَتِهِمْ ۖ إِن تُسْمِعُ إِلَّا مَن يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُم مُّسْلِمُونَ ۝ وَإِذَا
وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ أَخْرَجْنَا لَهُمْ دَابَّةً مِّنَ الْأَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ
أَنَّ النَّاسَ كَانُوا بِآيَاتِنَا لَا يُوقِنُونَ ۝ وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِن كُلِّ أُمَّةٍ
فَوْجًا مِّمَّن يُكَذِّبُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ يُوزَعُونَ ۝ حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوا قَالَ
أَكَذَّبْتُم بِآيَاتِي وَلَمْ تُحِيطُوا بِهَا عِلْمًا أَمَّاذَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝
وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِم بِمَا ظَلَمُوا فَهُمْ لَا يَنطِقُونَ ۝ أَلَمْ يَرَوْا
أَنَّا جَعَلْنَا اللَّيْلَ لِيَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ

और जिस दिन हम हर समुदाय में से उन लोगों का एक गरोह एकत्र करेंगे जो हमारी आयतों* को झुठलाते थे फिर उन को (श्रेणियों के अनुसार) क्रम में रखा जायगा। ○ यहाँ तक कि जब वे आ जायेंगे, तो (उन का रब*) कहेगा : क्या तुम ने मेरी आयतों* को झुठलाया जब कि ज्ञान की दृष्टि से तुम उन पर हावी नहीं हुये थे, यह नहीं तो और तुम क्या कर रहे थे ? ○ और हमारी बात उन पर पूरी हो कर रहेगी इस लिए कि उन्हों ने ज़ुल्म

८५ किया फिर वे बोल न सकेंगे। ○

क्या तुम्हें सुझाई नहीं दिया कि हम ने रात बनाई कि वे उस में चैन पायें, और दिन को प्रकाशमान किया ! निश्चय ही इस में निशानियाँ हैं[५२] उन लोगों के लिए जो ईमान* लाते हैं। ○

और जिस दिन सूर* में फूँक मारी जायेगी, तो जो कोई आसमानों में है और जो कोई ज़मीन में है हौल खायेगा — सिवाय उस के जिसे अल्लाह ने (इस हौल से बचाना) चाहा। और सब उस के समक्ष दबे और झुके हुये उपस्थित हो जायेंगे। ○ और तू पहाड़ों को देखता है उन्हें समझता है कि जमे हुये हैं हालांकि ये गुज़र रहे होंगे जैसे बादल गुज़रते हैं : अल्लाह की कारीगरी है जिस ने हर चीज़ साधी है। निस्सन्देह वह उस की खबर रखता है जो-कुछ कि तुम करते हो। ○

जो कोई भलाई ले कर आया उस के लिए उस से अच्छा बदला होगा; और ऐसे लोग हौल से उस दिन निश्चिन्त होंगे। ○ और जो कोई बुराई ले कर आयेगा, ऐसे लोग औंधे मुँह (दोज़ख़* की) आग में डाल दिये जायँगे। जो-कुछ कि तुम करते रहे हो क्या उस के सिवा

९० तुम किसी और चीज़ का बदला पाओगे ? ○

(हे मुहम्मद ! कहो) : मुझे तो बस यही हुक्म दिया गया है कि इस नगर के रब* की इबादत* करूँ जिस ने इसे हरम* बनाया,[५३] और हर चीज़ उसी की है[५४]। और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं उन लोगों में शामिल हूँ जो अपने को (उस के) अर्पण करने वाले हैं, ○ और यह क़ुरआन* पढ़ कर सुनाऊँ। अब जो कोई (सीधी) राह पर आया, वह अपने ही (भले के) लिए राह पर आयेगा; और जो कोई गुमराह हुआ तो कह दो : मैं तो बस सचेत करने वालों में से हूँ। ○

---

५२ दे० सूरः अल-फ़ुरक़ान आयत ४७, सूरः अल-क़सस आयत ७३।

५३ अर्थात् यह अल्लाह की कृपा ही है कि इस नगर का समस्त अरब के लोग आदर करते हैं। जबकि पूरे अरब में अशान्ति का राज्य है। अल्लाह ने इस नगर को शान्ति-निकेतन बना दिया है।

यह सूरः मक्का नगर में उतरी है; उस समय आप (सल्ल०) मक्का वालों को ही अल्लाह की ओर बुला रहे थे।

५४ दे० सूरः अल-क़सस आयत ५७।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

२८-अल-क़सस
(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः* का नाम 'अल-क़सस' सूरः की आयत २५ से लिया गया है। क्रमानुसार घटनाओं और वृत्तान्तों के वर्णन को 'क़सस' कहते हैं। इस सूरः में हज़रत मूसा अ० का क़िस्सा विस्तारपूर्वक बयान हुआ है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

सूरः अल-क़सस सूरः अन-नम्ल के बाद अवतीर्ण हुई है और सूरः अन-नम्ल से पहले सूरः अश-शु,अरा का अवतरण हुआ है। इस का पता हज़रत इब्न अब्बास रज़ि० और जाबिर बिन ज़ैद के बयान से भी चलता है और इन सूरतों की भाषा, *वर्णन-शैली और वार्त्ताओं से भी इसी की पुष्टि होती है।*

वार्त्तायें

सूरः अश-शु,अरा की भूमिका में यह बात बताई जा चुकी है कि सूरः २६ से सूरः २८ तक के विषयों में बड़ी समानता पाई जाती है। इस सूरः की आयत ८३ सूरः के केन्द्रीय विषय की सूचक है।

यह सूरः इस का स्मरण कराती है कि अल्लाह अपने बन्दों के लिए 'रहमान' (अत्यन्त कृपाशील) और 'रऊफ़' (करुणामय) है। वह चाहता है कि उन लोगों को अपने उपकार से अधिकार प्रदान करे जो ज़मीन में कमज़ोर हैं और उन लोगों को उन के करतूतों का मज़ा चखाये और उन से बदला ले जिन्हों ने ज़मीन में सरकशी की और उस के बन्दों पर अत्याचार किया। सूरः के अन्त में भी यह बात खोल कर बयान कर दी गई है कि अन्त में ज़ालिम लोग घाटा उठायेंगे।

प्रस्तुत सूरः से मालूम होता है कि धन-वैभव और राज-सत्ता पर गर्व करने का परिणाम कितना भयंकर और प्रलयकारी होता है। अहंकारी लोग धरती को अशान्ति से भर देते हैं। और लोगों पर अत्याचार करना उन का स्वभाव बन जाता है। इस सिलसिले में दो मिसालें प्रस्तुत सूरः में हमारे सामने आती हैं। एक मिसाल तो फ़िरऔन, उस के सरदारों और उस की सेना की है। और दूसरी मिसाल क़ारून की है जो एक धनाढ्य व्यक्ति था। क़ारून और फ़िरऔन का उस की सेना सहित जो परिणाम हुआ उस से पता चलता है कि परिणाम की दृष्टि से केवल वही लोग सफल और कृतार्थ होते हैं जो अल्लाह की अवज्ञा से बचते और उस की ना-ख़ुशी से डरते हैं। इस में ईमान* वालों के लिए दिलासा भी है और उन के विजयी होने की शुभ-सूचना भी। और वास्तव में यही इस सूरः का मूल-विषय है।

इस सूरः से नबी* सल्ल० की नुबूवत* भी भली-भाँति सिद्ध हो जाती है। हज़रत मूसा अ० के क़िस्से से साफ़ मालूम होता है कि नबी* सल्ल० को जो-कुछ

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

१७ : ९३	एक मनुष्य अल्लाह का सन्देश पहुँचाने वाले।
१७ : ९४, ९५	अगर ज़मीन पर फ़िरिश्ते बसते होते तो रसूल भी फ़िरिश्ते आते।
२१ : ७, ८	आपसे पहले भी जो रसूल आये वे मनुष्य ही थे। वे खाना खाते थे और अमर नहीं थे।
१८ : ११०	तुम्हारे जैसा ही एक मनुष्य।
२५ : २०	पहले भी रसूल आये, वे खाना खाते और बाज़ारों में चलते-फिरते थे।
३३ : ६३	उन्हें क़ियामत का समय मालूम नहीं।
४६ : ९	वे नहीं जानते कि उनके साथ क्या होगा और तुम्हारे साथ क्या होगा।

(३) ज़िम्मेदारी

२ : १५१	अल्लाह की आयतों को पढ़कर सुनना, किताब और हिकमत की शिक्षा देना।
२ : १२०	मुहम्मद सल्ल० लोगों की इच्छाओं का पालन नहीं कर सकते।
२ : १४५	अगर वे लोगों की इच्छाओं का पालन करें तो वे अन्यायी होंगे।
३ : १४४	मुहम्मद बस अल्लाह के रसूल हैं।
३ : १६४	लोगों को अल्लाह की आयतें सुनाना, उनकी आत्मा को शुद्ध करना और उन्हें किताब व हिकमत की शिक्षा देना।
४ : १०५	अल्लाह के क़ानून के अनुसार लोगों के मामलों को तै करना।
५ : १६, १९	लोगों को गुमराही की अँधियारियों से निकालकर सन्मार्ग के प्रकाश में लाना और सीधा रास्ता दिखाना।
५ : २१	शुभ-सूचना देने वाले और डराने वाले।
६ : १९	लोगों को बुराइयों के परिणाम से सचेत करना।
७ : १५७	भलाई का हुक्म देना, बुराई से रोकना, पाक चीज़ों को हलाल और ना-पाक को हराम ठहराना। उन बन्धनों को काटना जिनमे लोग जकड़े हुए थे।
७ : १५८	वे सबकी ओर रसूल बनाकर भेजे गए हैं।
१० : १५	अल्लाह की बातों को वे अपनी इच्छा से नहीं बदल सकते।
१३ : ६०	नबी का काम सन्देश पहुँचा देना है।
१६ : ३६	हर पैग़म्बर ने यही सन्देश दिया कि अल्लाह की बन्दगी कर और ताग़ूत की बन्दगी करने से बचो।
२७ : ८०, ८१	जो लोग सुनना न चाहें और मुँह फेरकर भागें उन्हें सीधे रास्ते पर डालना आपके ज़िम्मे नहीं।
३३ : ४०	मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और नबियों के सिलसिले को ख़त्म करने वाले (आख़िरी नबी)।
३३ : ४६	शुभ-सूचना देनेवाले और सचेत करनेवाले, अल्लाह की ओर बुलानेवाले।
३४ : २८	वे तमाम मनुष्यों के लिए शुभ-सूचना देने वाले और डराने वाले बनाकर भेजे गए।
३५ : २२, २३	वे केवल सचेत करनेवाले हैं। अल्लाह ने उन्हें शुभ-सूचना देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा।

सूरः अल-क़सस

(मक्का में उतरी—आयतें ८८)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

ता० सीन० मीम०[1] ।○ ये खुली किताब* की आयतें* हैं[2] ।○ हम तुम्हें मूसा और फ़िरऔन का कुछ वृत्तान्त ठीक-ठीक सुनाते हैं, उन लोगों के लिए जो ईमान* लायें[3] ।○

निश्चय ही फ़िरऔन ने ज़मीन में सिर उठाया और उस के निवासियों के कई जत्थे कर दिये[4] । उन में से एक गरोह को[5] कमज़ोर करता था, उन के बेटों को ज़बह करता और उन की स्त्रियों को जीवित रहने देता[6] । निश्चय ही वह बिगाड़ पैदा करने वालों में से था ।○

और हम यह इरादा रखते थे कि उन लोगों पर एहसान करें जो ज़मीन में कमज़ोर कर के रखे गये थे, और उन्हें नायक बनायें और उन्हें (ज़मीन का) वारिस बनायें । ○ और उन्हें ज़मीन में आधिपत्य प्रदान करें, और उन से फ़िरऔन और हामान और उन की सेनाओं को वह कुछ दिखायें जिस से वे डरते थे ।○

हम ने मूसा की माँ को वह्य* की[7] कि उसे दूध पिला, फिर जब तुझे उस के प्रति भय हो, तो उसे दरिया में डाल दे[8] और न तो तुझे कोई भय हो और न तू दुःखी हो । निश्चय ही हम उसे तेरे पास पलटा लायेंगे और उसे रसूलों* में शामिल करेंगे।○

سورة القصص مكية وهي ثمان وثمانون آية وتسع ركوعات

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

طٰسٓمّٓ ۝ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝ نَتْلُوْا عَلَيْكَ مِنْ نَّبَاِ
مُوْسٰى وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ اِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا
فِي الْاَرْضِ وَجَعَلَ اَهْلَهَا شِيَعًا يَّسْتَضْعِفُ طَآئِفَةً مِّنْهُمْ
يُذَبِّحُ اَبْنَآءَهُمْ وَيَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝
وَنُرِيْدُ اَنْ نَّمُنَّ عَلَى الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا فِي الْاَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ
اَئِمَّةً وَّنَجْعَلَهُمُ الْوٰرِثِيْنَ ۝ وَنُمَكِّنَ لَهُمْ فِي الْاَرْضِ وَنُرِيَ
فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَحْذَرُوْنَ ۝ وَ
اَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّ مُوْسٰٓى اَنْ اَرْضِعِيْهِ ۚ فَاِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ فَاَلْقِيْهِ
فِي الْيَمِّ وَلَا تَخَافِيْ وَلَا تَحْزَنِيْ ۚ اِنَّا رَآدُّوْهُ اِلَيْكِ وَجَاعِلُوْهُ
مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ فَالْتَقَطَهٗٓ اٰلُ فِرْعَوْنَ لِيَكُوْنَ لَهُمْ عَدُوًّا وَّ
حَزَنًا ؕ اِنَّ فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا كَانُوْا خٰطِـِٕيْنَ ۝ وَقَالَتِ
امْرَاَتُ فِرْعَوْنَ قُرَّتُ عَيْنٍ لِّيْ وَلَكَ ؕ لَا تَقْتُلُوْهُ ۖ عَسٰٓى اَنْ يَّنْفَعَنَآ
اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝ وَاَصْبَحَ فُؤَادُ اُمِّ مُوْسٰى
فٰرِغًا ؕ اِنْ كَادَتْ لَتُبْدِيْ بِهٖ لَوْلَآ اَنْ رَّبَطْنَا عَلٰى قَلْبِهَا لِتَكُوْنَ
مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَقَالَتْ لِاُخْتِهٖ قُصِّيْهِ ۫ فَبَصُرَتْ بِهٖ عَنْ
جُنُبٍ وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝ وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ
فَقَالَتْ هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰٓى اَهْلِ بَيْتٍ يَّكْفُلُوْنَهٗ لَكُمْ وَهُمْ لَهٗ
نٰصِحُوْنَ ۝ فَرَدَدْنٰهُ اِلٰٓى اُمِّهٖ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ
اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَلَمَّا
بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَاسْتَوٰٓى اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي
الْمُحْسِنِيْنَ ۝ وَدَخَلَ الْمَدِيْنَةَ عَلٰى حِيْنِ غَفْلَةٍ مِّنْ

अन्त में फ़िरऔन के घर वालों ने उसे (दरिया से) निकाल लिया, ताकि वह उन का शत्रु और (उन के लिए) दुःख (का कारण) हो[9] । निश्चय ही फ़िरऔन और हामान और उन के दल[10] से बड़ी चूक हुई ।○

---

१. दे० सूरः अल-बक़रः फुटनोट १ ।
२ दे० सूरः अश-शु'अरा आयत १-२ ।
३ दे० सूरः अश-शु'अरा फुट नोट ७ ।
४ सब के साथ समान रूप से न्याय नहीं करता था ।
५ अर्थात् बनी इसराईल को ।
६ दे० बाइबिल, 'ख़ुरूज' (Deut.) १ : ८-१६ ।
७ अर्थात् दैवी भावना उत्पन्न की; संकेत किया ।

(८-६-१० अगले पृष्ठ पर)

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

اهلها فوجد فيها رجلين يقتتلن هذا من شيعته وهذا من
عدوه فاستغاثه الذي من شيعته على الذي من عدوه
فوكزه موسى فقضى عليه قال هذا من عمل الشيطن انه
عدو مضل مبين ۝ قال رب اني ظلمت نفسي فاغفر لي
فغفر له انه هو الغفور الرحيم ۝ قال رب بما انعمت علي
فلن اكون ظهيرا للمجرمين ۝ فاصبح في المدينة خائفا
يترقب فاذا الذي استنصره بالامس يستصرخه قال له
موسى انك لغوي مبين ۝ فلما ان اراد ان يبطش بالذي
هو عدو لهما قال يموسى اتريد ان تقتلني كما قتلت
نفسا بالامس ان تريد الا ان تكون جبارا في الارض و
ما تريد ان تكون من المصلحين ۝ وجاء رجل من اقصا
المدينة يسعى قال يموسى ان الملا ياتمرون بك ليقتلوك
فاخرج اني لك من النصحين ۝ فخرج منها خائفا يترقب
قال رب نجني من القوم الظلمين ۝ ولما توجه تلقاء مدين
قال عسى ربي ان يهديني سواء السبيل ۝ ولما ورد ماء
مدين وجد عليه امة من الناس يسقون ۝ ووجد من
دونهم امراتين تذودن قال ما خطبكما قالتا لا نسقي

फ़िरऔन की स्त्री ने (उस से)
और तेरे लिए आँखों की ठण्डक है
करो। कदाचित् हमारे काम आवे,
बेटा बना लें। और उन्हें (परिणाम
थी।○

और मूसा की माँ का हृदय
वह उस का भेद खोल देती यदि ह
को मज़बूत न कर देते, ताकि वह
वालों में से हो।○

उस ने उस की बहिन से कहा
पीछे जा। तो वह उसे दूर-ही-दूर
और उन्हें ख़बर न हो सकी।○
(बच्चे) पर पहले ही से दूध पिलाने
को हराम कर रखा था", तो
कहा: क्या मैं तुम्हें ऐसे घर वाले
जो तुम्हारे लिए इस के पालन-पो
लें और जो इस के हितैषी हों?○

इस प्रकार हम उस (बच्चे) को उस की माता के पास पलटा लाये ताकि
ठण्डी हों और वह दुःखी न हो, और ताकि वह जान ले कि अल्लाह का
परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।○

और जब वह अपनी युवावस्था को पहुँचा और भर-पूर हो गया, तो हम ने
ज्ञान प्रदान किया। और इस तरह हम सत्कर्मी लोगों को बदला देते हैं।○ औ
नगर में दाख़िल हुआ जब कि उस (नगर) के लोग बे-ख़बर थे", वहाँ उस
को लड़ते पाया, एक उस की अपनी जाति का था, और दूसरा उस के शत्रुओं में
ने जो उस के जत्थे में से था उस से उस व्यक्ति (की ज़ुल्म) की फ़रियाद की जो
से था। मूसा ने उसे एक घूँसा मारा और उस का काम तमाम कर दिया"
कहा: यह शैतान* की कृति है। निश्चय ही वह दुश्मन, और खुला हुआ गुमराह

८ अर्थात् यदि तुझे इस का भय हो कि अब दुश्मनों को बच्चे के जन्म लेने की ख़बर
उसे मार डालेंगे, तो निर्भय हो कर उसे एक सन्दूक़ में रख कर दरिया में तैरा देना। उस की
९ अर्थात् उन के इस काम का यही परिणाम होने वाला था यद्यपि वे इस बात को
१० अर्थात् सेनायें।
११ अर्थात् स्तन-पान के लिए जिस स्त्री को भी बुलाया जाता बच्चा उस के स्तन को
१२ अर्थात् जब कि लोग ग़ाफ़िल पड़े सो रहे थे; चाहे रात का समय रहा हो या
१३ अर्थात् संयोग से उस की मृत्यु हो गई। बाइबिल और तलमूद (Talmud) के
मूसा अ० ने जान-बूझ कर उस व्यक्ति को मार डाला था। परन्तु यह बात किसी तरह
एक ऐसा ज्ञानी व्यक्ति जिसे आगे चल कर अल्लाह का रसूल* होना था कभी भी ऐसा अ
था। बनी इस्राईल* ने अपने महापुरुषों के चरित्र को कलंकित करने में कोई कमी न
उन समस्त कलंकों को दूर करता है जो बनी इस्राईल* ने अपने नबियों* पर लगाये थे।
उपकार तो क्या मानते उलटे क़ुरआन के दुश्मन बन गये। उन के कुछ ही लोग थे जो क़ुरआ

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

حتى يصدر الرعاء وابونا شيخ كبير ۝ فسقى لهما ثم تولى
الى الظل فقال رب انى لما انزلت الى من خير فقير ۝ فجاءته
احدىهما تمشى على استحياء قالت ان ابى يدعوك ليجزيك
اجر ما سقيت لنا فلما جاءه وقص عليه القصص قال
لا تخف نجوت من القوم الظلمين ۝ قالت احدىهما يابت
استاجره ان خير من استاجرت القوى الامين ۝ قال انى
اريد ان انكحك احدى ابنتى هتين على ان تاجرنى ثمنى
حجج فان اتممت عشرا فمن عندك وما اريد ان اشق
عليك ستجدنى ان شاء الله من الصلحين ۝ قال ذلك بينى
وبينك ايما الاجلين قضيت فلا عدوان على والله على
ما نقول وكيل ۝ فلما قضى موسى الاجل وسار باهله انس
من جانب الطور نارا قال لاهله امكثوا انى انست نارا
لعلى اتيكم منها بخبر او جذوة من النار لعلكم تصطلون ۝
فلما اتىها نودى من شاطئ الواد الايمن فى البقعة المبركة
من الشجرة ان يموسى انى انا الله رب العلمين ۝ وان الق
عصاك فلما راها تهتز كانها جان ولى مدبرا ولم يعقب
يموسى اقبل ولا تخف انك من الامنين ۝ اسلك يدك

उस ने कहा : रब* ! निश्चय ही मैं ने अपने-आप पर ज़ुल्म किया, सो मुझे क्षमा कर दे। फिर उस ने उसे क्षमा कर दिया। निस्सन्देह वह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है। ○

उस ने कहा : रब* ! जैसे तू ने मुझ पर कृपा की है, मैं भी कभी अपराधियों का सहायक नहीं बनूँगा। ○

प्रातः काल डरता खतरा भाँपता हुआ, नगर में गया इतने में क्या देखता है कि वही व्यक्ति जिस ने कल उस से मदद *माँगी थी (आज फिर)* उसे पुकार रहा है। मूसा ने उस से कहा : तू तो प्रत्यक्ष बहका हुआ आदमी है[१४]। ○ फिर जब (मूसा ने) निश्चय किया कि उस पर जो उन दोनों का[१५] शत्रु था हाथ डाले, तो उस ने[१६] कहा : हे मूसा ! क्या तू चाहता है कि मुझे क़त्ल करे जिस तरह कल एक जीव की हत्या कर चुका है। बस तू देश में जाबिर बन कर रहना चाहता है, और यह नहीं चाहता कि सुधार करने वालों में से हो। ○ एक आदमी नगर के परले सिरे से दौड़ता हुआ आया, कहा सरदार तेरे बारे में विचार-विमर्श कर रहे हैं कि तुझे क़त्ल कर डालें; अतः तू (यहाँ से निकल जा। मैं तेरा हित चाहने वाला हूँ। ○

फिर वह वहाँ से, डरता और खतरा भाँपता हुआ निकल खड़ा हुआ। उस ने कहा रब* ! मुझे ज़ालिम लोगों से छुटकारा दे। ○

और (मिस्र से निकल कर) जब उस ने मदयन की ओर रुख किया, तो उस ने कहा आशा है कि मेरा रब* मुझे ठीक रास्ते पर डाल देगा। ○ जब वह मदयन के पानी पर पहुँचा तो उस पर लोगों के एक गरोह को पाया, जो (अपने जानवरों को) पानी पिला रहे थे

और उन से अलग एक ओर दो स्त्रियों को पाया जो अपने जानवरों को रोके हुये थीं (मूसा ने) कहा : तुम्हारा क्या हाल है ? उन दोनों ने कहा : हम (अपने जानवरों को) पानी नहीं पिला सकते जब तक ये चरवाहे (अपने जानवरों को) वापस न ले जावें; और हमारे पिता एक बहुत बूढ़े आदमी हैं। ○ *सो उस ने उन के जानवरों को पानी पिला दिया। फिर एक* छाया की ओर हट आया, और कहा : रब* ! जो अच्छी चीज़ भी तू मेरी ओर उतार दे मैं उस का मुहताज हूँ। ○

फिर उन दोनों (स्त्रियों) में से एक लज्जा के साथ चलती हुई उस के पास आई। उस ने कहा : मेरे पिता आप को बुला रहे हैं, ताकि आप ने जो हमारे जानवरों को पानी पिलाया है उस का बदला आप को दें। जब, वह उस के पास पहुँचा और उसे सारा क़िस्सा सुनाया

१४ अर्थात् तू बड़ा ही झगड़ालू आदमी मालूम होता है जब देखिए किसी-न-किसी से तेरा झगड़ा रहता है।
१५ अर्थात् हज़रत मूसा अ० और उस व्यक्ति का जिस ने हज़रत मूसा अ० को सहायता के लिए पुकारा था।
१६ जिस की सहायता के लिए हज़रत मूसा अ० बढ़े थे।

इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

فِي جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوءٍ وَاضْمُمْ إِلَيْكَ جَنَاحَكَ
مِنَ الرَّهْبِ فَذَانِكَ بُرْهَانَانِ مِنْ رَبِّكَ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ
إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ۝ قَالَ رَبِّ إِنِّي قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا
فَأَخَافُ أَنْ يَقْتُلُونِ ۝ وَأَخِي هَارُونُ هُوَ أَفْصَحُ مِنِّي لِسَانًا
فَأَرْسِلْهُ مَعِيَ رِدْءًا يُصَدِّقُنِي إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُكَذِّبُونِ ۝
قَالَ سَنَشُدُّ عَضُدَكَ بِأَخِيكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطَانًا فَلَا يَصِلُونَ
إِلَيْكُمَا بِآيَاتِنَا أَنْتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَكُمَا الْغَالِبُونَ ۝ فَلَمَّا جَاءَهُمْ
مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا بَيِّنَاتٍ قَالُوا مَا هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُفْتَرًى وَمَا
سَمِعْنَا بِهَٰذَا فِي آبَائِنَا الْأَوَّلِينَ ۝ وَقَالَ مُوسَىٰ رَبِّي أَعْلَمُ
بِمَنْ جَاءَ بِالْهُدَىٰ مِنْ عِنْدِهِ وَمَنْ تَكُونُ لَهُ عَاقِبَةُ الدَّارِ
إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ۝ وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ مَا عَلِمْتُ
لَكُمْ مِنْ إِلَٰهٍ غَيْرِي فَأَوْقِدْ لِي يَا هَامَانُ عَلَى الطِّينِ فَاجْعَلْ
لِي صَرْحًا لَعَلِّي أَطَّلِعُ إِلَىٰ إِلَٰهِ مُوسَىٰ وَإِنِّي لَأَظُنُّهُ مِنَ
الْكَاذِبِينَ ۝ وَاسْتَكْبَرَ هُوَ وَجُنُودُهُ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ
وَظَنُّوا أَنَّهُمْ إِلَيْنَا لَا يُرْجَعُونَ ۝ فَأَخَذْنَاهُ وَجُنُودَهُ فَنَبَذْنَاهُمْ
فِي الْيَمِّ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ۝ وَجَعَلْنَاهُمْ أَئِمَّةً
يَدْعُونَ إِلَى النَّارِ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ لَا يُنْصَرُونَ ۝ وَأَتْبَعْنَاهُمْ

उस ने कहा : डरो नहीं ! तुम ज़ालिम
छुटकारा पा गये हो । ○ उन दोनों (स्त्रि
एक ने कहा : हे पिता जी ! इस व्यक्ति
रख लीजिए ! अच्छा व्यक्ति जिसे आप
वही है जो बलिष्ठ और विश्वसनीय हो

(उस के बाप ने मूसा से) कहा : मैं
कि अपनी इन दो लड़कियों में से एक
साथ विवाह कर दूँ इस (शर्त) पर कि
वर्ष मेरे यहाँ नौकरी करो । और यदि
कर दो तो यह तुम्हारी ओर से है,
सख़्ती नहीं करना चाहता । यदि अल्लाह
तो तुम मुझे अच्छे लोगों में से पाओगे"[17]

(मूसा ने) कहा : यह मेरे और आ
(निश्चय) हो चुका । इन दोनों अवधि में
में पूरी कर दूँ, तो फिर कोई ज़्यादती
हो, और अल्लाह उस पर निगहबान है जो
कह रहे हैं । ○

फिर जब मूसा ने अवधि पूरी कर दी, और अपने घर वालों को ले कर चला
तूर* की ओर से एक आग दिखाई दी । उस ने अपने घर वालों से कहा : ठहरो ।
आग देखी है; शायद मैं वहाँ से तुम्हारे पास कोई ख़बर ले आऊँ, या आग का अंग
तुम ताप सको । ○

फिर जब वह वहाँ पहुँचा, तो मैदान के दाहिने किनारे से[18] बरकत वाले क्षेत्र
से उसे पुकारा गया कि हे मूसा ! मैं ही अल्लाह हूँ, सारे संसार का रब*; ○ और
फेंक दे अपनी लाठी । फिर जब (मूसा ने) उसे देखा कि वह (लाठी) बल खा रही है
सर्प हो, तो वह पीठ फेर कर भागा और उस ने पीछे (मुड़ कर भी) न देखा, (कहा गया)
आगे आ और डर मत । निश्चय ही तू सुरक्षित लोगों में से है । ○ अपना हाथ अपने
में डाल, बिना किसी ख़राबी के उज्ज्वल (दीप्तिमान) हो कर निकलेगा । और डर
भुजा को भींच ले । ये दो निशानियाँ हैं तेरे रब* की ओर से फ़िरऔन और उस
दारों के सामने पेश करने के लिए । निश्चय ही वे सीमोल्लंघन करने वाले लोग हैं । ○

(मूसा ने) कहा : रब* ! मैं ने उन के एक व्यक्ति को क़त्ल किया है डरता हूँ कि
मार डालेंगे । ○ और मेरा भाई हारून मुझ से बढ़ कर व्याख्यान देने वाला है । अ
मेरे साथ सहायक के रूप में भेज कि वह मेरा समर्थन करे । मुझे भय है कि वे मु
लायेंगे । ○

(अल्लाह ने) कहा : हम तेरे भाई के द्वारा तेरी भुजा को बल प्रदान करेंगे,

---

१७ अर्थात् तुम मुझे नेक आदमी पाओगे ।
१८ अर्थात् उस किनारे से जो हज़रत मूसा अ० की दाहिनी ओर था ।
१९ उस क्षेत्र में जो ईश-दीप्ति की आभा से प्रज्वलित हो रहा था ।
* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

في هذه الدنيا لعنة ويوم القيمة هم من المقبوحين ۝ و
لقد اتينا موسى الكتب من بعد ما اهلكنا القرون الاولى
بصائر للناس وهدى ورحمة لعلهم يتذكرون ۝ وما
كنت بجانب الغربي اذ قضينا الى موسى الامر وما كنت
من الشهدين ۝ ولكنا انشانا قرونا فتطاول عليهم العمر
وما كنت ثاويا في اهل مدين تتلوا عليهم ايتنا ولكنا
كنا مرسلين ۝ وما كنت بجانب الطور اذ نادينا ولكن
رحمة من ربك لتنذر قوما ما اتهم من نذير من قبلك
لعلهم يتذكرون ۝ ولولا ان تصيبهم مصيبة بما قدمت
ايديهم فيقولوا ربنا لولا ارسلت الينا رسولا فنتبع ايتك
ونكون من المؤمنين ۝ فلما جاءهم الحق من عندنا
قالوا لولا اوتي مثل ما اوتي موسى اولم يكفروا بما اوتي
موسى من قبل قالوا سحرن تظهرا وقالوا انا بكل
كفرون ۝ قل فاتوا بكتب من عند الله هو اهدى منهما
اتبعه ان كنتم صدقين ۝ فان لم يستجيبوا لك فاعلم
انما يتبعون اهواءهم ومن اضل ممن اتبع هوىه بغير
هدى من الله ان الله لا يهدي القوم الظلمين ۝ ولقد

दोनों को ऐसा प्रताप प्रदान करेंगे कि वे तुम तक न पहुँच सकेंगे हमारी निशानियों के कारण, तुम दोनों और जो तुम दोनों के अनुयायी होंगे ऊपर रहेंगे[२०]। ○

फिर जब मूसा उन के पास हमारी खुली-खुली निशानियाँ ले कर पहुँचा, तो उन्हों ने कहा : यह[२१] तो बस बनावटी जादू है। और यह (बात)[२२] तो हम ने अपने अगले पूर्वजों में कभी सुनी नहीं। ○

और मूसा ने कहा : मेरा रब* उस व्यक्ति को भली-भाँति जानता है जो उस की ओर से मार्ग-दर्शन ले कर आया है, और उस व्यक्ति को भी (वह जानता है) जिस के लिए घर (अर्थात् लोक) का (अच्छा) परिणाम है[२३]। निस्सन्देह ज़ालिम सफल नहीं होते। ○

और फ़िरऔन ने कहा : हे सरदारो ! मैं तो अपने अतिरिक्त तुम्हारे किसी इलाह* को नहीं जानता, अच्छा तो हे हामान ! तू हमारे लिए मिट्टी (की ईंटों) को आग में पका; फिर मेरे लिए एक ऊँचा भवन बनवा कदाचित् मैं मूसा के इलाह* को झाँक कर देखूँ[२४]; और मैं तो इसे झूठों में से समझता हूँ। ○

उस ने और उस की सेनाओं ने ज़मीन में बिना किसी हक़ के घमण्ड किया, और समझा कि उन्हें हमारी ओर पलटना न होगा। ○ तो हम ने उसे और उस की सेनाओं को पकड़ा, और उन्हें दरिया में फेंक दिया। अब देख लो उन ज़ालिमों का कैसा परिणाम हुआ। ○

और हम ने उन्हें नायक बनाया जिन का काम (दोज़ख़* की) आग की ओर बुलाना है[२५], और क़ियामत* के दिन वे कोई मदद न पा सकेंगे। ○ और हम ने इस दुनिया में उन के पीछे लानत (फिटकार) लगा दी, और क़ियामत* के दिन वे बद-हाल लोगों में से होंगे। ○

अगली नस्लों को विनष्ट कर देने के बाद हम ने मूसा को किताब* दी: लोगों के लिए अन्तर्दृष्टियों की सामग्री, और मार्ग-दर्शन और दयालुता बना कर, कदाचित् वे चेतें। ○

और (हे मुहम्मद !) तुम (उस समय) पश्चिमी किनारे पर[२६] नहीं थे जब हम ने कर डाला मूसा के सम्बन्ध में वह काम (जो करना था), और न तुम साक्षी लोगों में शामिल

२० अर्थात् तुम्हारी और तुम्हारे अनुयायियों ही की विजय होगी।

२१ अर्थात् वे निशानियाँ और चमत्कार जिन्हें हज़रत मूसा (अ०) उन के सामने पेश कर रहे थे।

२२ यह संकेत है उन बातों की ओर जिन्हें हज़रत मूसा अ० ने ईश-सन्देश के रूप में फ़िरऔन के सामने पेश की थीं।

२३ दे० सूरः अर-रअ्द फ़ुटनोट १४।

२४ दे० सूरः अल्-मुस्सिन आयत ३७।

२५ उन्हों ने अपने कर्म और कुनीतियों से जो राह दिखाई है वह आदमी को दोज़ख़* की ओर ले जाने वाली है। उन्हों ने सत्य का विरोध किया और असत्य के लिए लड़े। अब जो कोई उन का अनुसरण करेगा उस का ठिकाना दोज़ख़ ही होगा। (२६ अगले पृष्ठ पर)

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝ الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ
مِن قَبْلِهِ هُم بِهِ يُؤْمِنُونَ ۝ وَإِذَا يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ قَالُوا آمَنَّا بِهِ
إِنَّهُ الْحَقُّ مِن رَّبِّنَا إِنَّا كُنَّا مِن قَبْلِهِ مُسْلِمِينَ ۝ أُولَٰئِكَ يُؤْتَوْنَ
أَجْرَهُم مَّرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوا وَيَدْرَءُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَ
مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ۝ وَإِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ أَعْرَضُوا عَنْهُ وَ
قَالُوا لَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ لَا نَبْتَغِي
الْجَاهِلِينَ ۝ إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي
مَن يَشَاءُ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۝ وَقَالُوا إِن نَّتَّبِعِ الْهُدَىٰ
مَعَكَ نُتَخَطَّفْ مِنْ أَرْضِنَا أَوَلَمْ نُمَكِّن لَّهُمْ حَرَمًا آمِنًا يُجْبَىٰ
إِلَيْهِ ثَمَرَاتُ كُلِّ شَيْءٍ رِّزْقًا مِّن لَّدُنَّا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝
وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِن قَرْيَةٍ بَطِرَتْ مَعِيشَتَهَا فَتِلْكَ مَسَاكِنُهُمْ
لَمْ تُسْكَن مِّن بَعْدِهِمْ إِلَّا قَلِيلًا وَكُنَّا نَحْنُ الْوَارِثِينَ ۝
وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ حَتَّىٰ يَبْعَثَ فِي أُمِّهَا رَسُولًا يَتْلُو
عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي الْقُرَىٰ إِلَّا وَأَهْلُهَا ظَالِمُونَ ۝ وَ
مَا أُوتِيتُم مِّن شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَزِينَتُهَا وَمَا عِندَ
اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ أَفَمَن وَعَدْنَاهُ وَعْدًا حَسَنًا
فَهُوَ لَاقِيهِ كَمَن مَّتَّعْنَاهُ مَتَاعَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

थे"; ○ बल्कि (उस के पश्चात्) हम ने
नस्लें उठाईं, फिर उन पर बहुत समय
है। और न तुम मदयन वालों में रहते
हमारी आयतें* सुना रहे होते", परन्तु
भेजने वाले थे।○

और तुम तूर* के किनारे (मौजूद)
हम ने (मूसा को पहली बार) पुकारा
यह तुम्हारे रब* की दयालुता है (कि
कारी प्रदान की जा रही है) ताकि तुम
को सचेत करो जिन के पास तुम से
सचेत करने वाला नहीं आया", कदाचित्
और (यह हम ने इस लिए किया कि)
हो कि जो-कुछ उन के हाथ आगे भेज
उस के कारण जब उन पर कोई मुसीब
ने कहें : हमारे रब* ! तू ने क्यों न
कोई रसूल* भेजा कि हम तेरी आयतों
सरण करते और ईमान* वालों में से

फिर जब हमारे यहाँ से हक़ उन के पास आ गया, तो वे कहने लगे : मूसा
दिया गया था क्यों न उसी के समान इसे दिया गया"? क्या उस का इन्कार न
है जो-कुछ इस से पहले मूसा को दिया गया था"? कहने लगे : दोनों जादू हैं जो
मदद करते हैं : और कहने लगे : हम हर एक का इन्कार करते हैं।○

(हे मुहम्मद !) कहो : अच्छा तो लाओ अल्लाह के यहाँ से कोई किताब*
से बढ़ कर राह दिखाने वाली हो कि मैं उस पर चलूँ, यदि तुम सच्चे हो।○

अब यदि वे तुम्हारी माँग पूरी नहीं करते, तो जान लो कि वे केवल
इच्छाओं पर चलते हैं। और उस व्यक्ति से बढ़ कर भटका हुआ कौन होगा
मार्ग-दर्शन के बिना अपनी (तुच्छ) इच्छा पर चले। निस्सन्देह अल्लाह ऐसे ज़ालि
(सीधी) राह नहीं दिखाता।○

और हम उन तक लगातार बात पहुँचाते रहे हैं, कदाचित् वे ध्यान दें।○

---

२६ अर्थात् सीना (Sinai) प्रायद्वीप का वह पर्वत जिस पर अल्लाह ने हज़रत मूसा को
सम्बन्धी आदेश प्रदान किये थे। यह स्थान हिजाज़ के पश्चिम ओर पड़ता है।

२७ अर्थात् तुम उन लोगों के साथ वहाँ मौजूद नहीं थे जिन्हें हज़रत मूसा के साथ इस लिए
था ताकि वे वहाँ इस बात की प्रतिज्ञा करें कि वे अल्लाह के आदेशों का पालन करेंगे। वे सब ७० व्य
[illegible] आयत [illegible])। तुलनात्मक अध्ययन (Comparison) के लिए दे० बाइबिल '
अध्याय २४।

२८ अर्थात् तुम उस समय मदयन में नहीं थे जब मूसा (अ०) मदयन पहुँचे थे और
वृत्तान्त हुए हैं। तुम उस समय मदयन में यह बयान नहीं कर रहे थे* जो आज मक्का में कर
जो कुछ बयान कर रहे हो उस का ज्ञान तुम्हें वह्य* के द्वारा ही हो सकता है। और दूसरा को
ज्ञान नहीं कि जिस के द्वारा तुम बीते हुए समय की बातें बता सको।

२९ हज़रत इस्माईल अ० और हज़रत शुऐब के बाद लगभग दो हज़ार वर्षों से अरब में को
था। हाँ इस लम्बी अवधि में बाहर के नबियों जैसे हज़रत मूसा अ०, (१०,११,१२

इन का अर्थ आख़िर में लगाए हुए पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

जिन लोगों को इस से पहले हम ने किताब* दी थी, वे इस पर ईमान* लाते हैं, ○ और जब यह (क़ुरआन) उन्हें सुनाया जाता है, तो वे कहते हैं: हम इस पर ईमान* लाये। यह निश्चय ही सत्य है हमारे रब* की ओर से। हम तो इस के पहले से मुस्लिम* हैं[३३]। ○ ये वे लोग हैं जिन्हें उन का बदला दो बार दिया जायेगा, इस लिए कि उन्हों ने सब्र* किया और वे भलाई से बुराई को दूर करते हैं और जो-कुछ हम ने उन्हें दिया है उस में से (हमारी राह में) ख़र्च करते हैं। ○

और जब उन्हों ने (उन की) बकवाद सुनी तो यह कहते हुये उस से किनारा खींच लिया कि हमारे लिए हमारे कर्म हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे कर्म। तुम को सलाम है! हम अज्ञानियों के ग्राहक नहीं[३४]। ○

५५

(हे नबी*!) तुम जिसे चाहो राह पर नहीं ला सकते, परन्तु अल्लाह जिसे चाहता है राह पर लाता है। और वह राह पाने वालों को भली-भाँति जानता है। ○

और वे कहते हैं: यदि हम तुम्हारे साथ इस मार्ग-दर्शन (हिदायत*) का अनुसरण करें तो अपनी ज़मीन से उचक लिये जायें[३५]। क्या[३६] हम ने इन्हें जगह नहीं दी एक शान्ति-पूर्ण हरम* की जिस की ओर हर एक चीज़ की पैदावार खिंची चली आती है, हमारी ओर से रोज़ी? परन्तु उन में से अधिकतर लोग जानते नहीं। ○

और कितनी ही बस्तियाँ हम विनष्ट कर चुके हैं जो अपने जीवन-व्यापार पर इतरा गई थीं। सो (देखो) ये उन के घर (उजाड़ पड़े हुये) हैं, जिन में उन के पीछे कम ही कोई बसा है। और हम ही वारिस हो कर रहे। ○

और तेरा रब* बस्तियों को विनष्ट करने वाला नहीं, जब तक कि उन के केन्द्र में

हज़रत-सुलैमान अ० और हज़रत ईसा अ० की शिक्षायें यहाँ अवश्य पहुँची थीं।

३० अर्थात् जो-कुछ वे दुनियाँ में आगे के लिए कमाई कर चुके हैं।

३१ अर्थात् हज़रत मूसा अ० को जो चमत्कार अल्लाह की ओर से प्रदान हुये थे उसी तरह के चमत्कार हज़रत मुहम्मद सल्ल० को क्यों नहीं दिये गये।

३२ यह उन के आक्षेप का उत्तर दिया जा रहा है कि जब तुम मानते हो कि हज़रत मूसा अ० को चमत्कार मिले थे, तो उन पर ईमान* ला कर क्यों न तुम ने उन के दिखाये हुये मार्ग को अपना लिया, शिर्क* की गन्दगी में क्यों पड़े रहे।

३३ हब्श: (Abyssinia) की हिजरत* के बाद लग-भग २० ईसाइयों के एक प्रतिनिधि-मण्डल ने वहाँ से मक्का आ कर नबी सल्ल० पर ईमान* लाया, यह संकेत इसी घटना की ओर है।

यह मण्डल आप (सल्ल०) से 'मसजिदे हराम*' में मिला और आप (सल्ल०) से कुछ प्रश्न किये। आप ने मण्डल के लोगों को इस्लाम* की ओर आमन्त्रित किया और उन्हें क़ुरआन की कुछ आयतें* भी पढ़ कर सुनाईं। क़ुरआन सुन कर उन के नेत्रों से आँसू बहने लगे। वे नबी सल्ल० पर ईमान* लाये और क़ुरआन के ईश-वाणी होने का समर्थन किया। बाद में अबू जह्ल और उस के कुछ साथियों ने मण्डल के लोगों को रास्ते में जा लिया और उन्हें धिक्कारने लगे कि "ऐसे मूर्खों का गरोह कभी नहीं देखा। तुम्हारे धर्म वालों ने तो तुम्हें इस लिए भेजा था कि इस व्यक्ति के बारे में सही बात मालूम करो; और उन्हें ठीक-ठीक सूचना दो, और तुम हो कि अभी इस के पास बैठे ही थे कि अपना धर्म त्याग कर उस पर ईमान* ले आये।" इस पर मण्डल के लोगों ने कहा: तुम पर सलाम है। हमें क्षमा करो हम तुम्हारे साथ जिहालत नहीं कर सकते हमारे लिए हमारी राह है तुम्हारे लिए तुम्हारी राह है। हम अपने को भलाई से वंचित नहीं रख सकते।

दे० सूरः अल-अनआम आयत २०।

३४ यह संकेत उस बकवाद और बे-हूदा बात की ओर है जो अबू जह्ल और उस के साथियों ने हब्श: से आये हुये ईसाई प्रतिनिधि मण्डल के लोगों से की थी। दे० फ़ुटनोट ३३। (३५,३६ अगले पृष्ठ पर)

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

एक रसूल* न भेज ले, जो उन्हें हमारी आयतें* सुनाये। और हम बस्तियों को विनष्ट करने वाले नहीं परन्तु उसी दशा में जब कि वहाँ के लोग ज़ालिम हों। ○ जो चीज़ भी तुम्हें दी गई है वह सांसारिक जीवन की सुख-सामग्री और उस की शोभा है; और जो-कुछ अल्लाह के पास है वह उत्तम और अधिक स्थायी है। क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ? ○

भला वह व्यक्ति जिस से हम ने अच्छा वादा किया है और वह उसे पाने वाला है, उस व्यक्ति जैसा हो सकता जिसे हम ने इसी सांसारिक जीवन की सुख-सामग्री दी हो, फिर वह क़ियामत* के दिन उन लोगों में से होने वाला है जो (सज़ा के लिए) उपस्थित किये जायेंगे ? ○

और जिस दिन वह इन्हें पुकारेगा और कहेगा[३७]: कहाँ हैं मेरे वे शरीक[३८] जिन का तुम गुमान रखते थे ? ○ बात जिन पर साबित हो चुकी थी[३९] कहेंगे : हमारे रब* ! यहीं वे लोग हैं जिन्हें हम ने बहकाया था। इन्हें हम ने बहकाया जैसे हम स्वयं बहके थे। हम आप के आगे (अपने) बरी होने की घोषणा करते हैं[४०]। ये हमारी बन्दगी नहीं करते थे[४१]। ○

और कहा जायेगा : पुकारो अपने (ठहराये हुये) शरीकों को। ये उन्हें पुकारेंगे, तो वे इन्हें कोई उत्तर न देंगे, और ये अज़ाब देख लेंगे। क्या ही अच्छा होता कि ये (सीधी) राह पाये होते। ○

और जिस दिन वह इन्हें पुकारेगा और कहेगा : जो रसूल* भेजे गये थे उन्हें तुम ने क्या उत्तर दिया था[४२]? ○ तो उस दिन उन्हें बातें न सूझेंगी वे फिर परस्पर एक-दूसरे से न पूछेंगे। ○

हाँ जिस किसी ने (आज) तौबः* कर ली और ईमान* लाया और अच्छा काम किया, तो आशा है कि वह सफलता प्राप्त करने वालों में से होगा। ○ और तेरा रब* पैदा करता है जो-कुछ चाहता है और (और अपने काम के लिए जिसे चाहता है) चुन लेता है। यह निर्वाचन इन लोगों के हाथ में नहीं है[४३]। महिमावान है अल्लाह और उच्च है उस शिर्क* से जो ये लोग करते हैं। ○

---

३५ अर्थात् हमें तो इस्लाम* धर्म के अपनाने में बड़ा घाटा दीख पड़ता है। यदि हम तुम्हारी बात मानते हैं तो सारे अरब के लोग हमारे वैरी हो जायेंगे। काबः* का प्रबन्ध जो हमारे हाथों में है वह हम से छिन जायेगा। विभिन्न क़बीलों से हमारा जो समझौता है वह बाक़ी नहीं रहेगा फिर तो हमारे व्यापार को बड़ा धक्का लगेगा। पितृ-धर्म के नाते हमारा जो आदर-सत्कार होता है उसे जो हानि पहुँचेगी वह अलग है।

यहाँ यह बात सामने रहनी चाहिए कि उस समय क़बीला 'क़ुरैश' को अरब में ऊँचा स्थान प्राप्त था; अरब के समस्त क़बीले 'क़ुरैश' का आदर करते थे। व्यापार में भी इस क़बीले ने बड़ी उन्नति कर ली थी। रूम और ईरान के राजनीतिक संघर्ष के कारण इन्हें अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में महत्व-पूर्ण स्थान मिल गया था। दे० सूरः अल-अनकबूत आयत ६७।

३६ यहाँ से उस आक्षेप का उत्तर दिया जा रहा है जो उन के ईमान* लाने की राह में सब से बड़ी रुकावट बना हुआ था।

३७ दे० आयत ७४।

३८ दे० हा० मीम अस-सजदः आयत ४७।

३९ इस से अभिप्रेत वे शैतान* हैं जिन्हें दुनियाँ में अल्लाह का शरीक ठहराया गया होगा; जिन की बात के मुक़ाबिले अल्लाह और रसूल की बात का तिरस्कार किया गया होगा। ये शैतान* चाहे जिन्नों* में से रहे हों चाहे मनुष्यों में से हों।

४० अर्थात् हम इन के ज़िम्मेदार नहीं हैं; गुमराह तो ये लोग स्वयं हुये हैं हम ने तो केवल इन्हें गुमराही की ओर बुलाया था असत्य-मार्ग को तो इन्हों ने स्वेच्छा पूर्वक स्वयं अपनाया। हमें इस का अधिकार ही कहाँ प्राप्त था कि बलपूर्वक हम ने इन्हें पथ-भ्रष्ट किया हो।

४१ ये स्वयं अपनी तुच्छ इच्छाओं के दास बने थे, ये हमारी दासता नहीं करते थे।

४२ दे० सूरः अल-माइदः आयत १०६।

४३ दे० आयत ७०, ८८।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

مِنَ الْمُحْضَرِينَ ۝ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ
كُنتُمْ تَزْعُمُونَ ۝ قَالَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا هَٰؤُلَاءِ
الَّذِينَ أَغْوَيْنَا أَغْوَيْنَاهُمْ كَمَا غَوَيْنَا تَبَرَّأْنَا إِلَيْكَ مَا كَانُوا إِيَّانَا
يَعْبُدُونَ ۝ وَقِيلَ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا
لَهُمْ وَرَأَوُا الْعَذَابَ لَوْ أَنَّهُمْ كَانُوا يَهْتَدُونَ ۝ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ
فَيَقُولُ مَاذَا أَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِينَ ۝ فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْأَنبَاءُ يَوْمَئِذٍ
فَهُمْ لَا يَتَسَاءَلُونَ ۝ فَأَمَّا مَن تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسَىٰ
أَن يَكُونَ مِنَ الْمُفْلِحِينَ ۝ وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَارُ مَا
كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ سُبْحَانَ اللَّهِ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ وَرَبُّكَ
يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ۝ وَهُوَ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا
هُوَ لَهُ الْحَمْدُ فِي الْأُولَىٰ وَالْآخِرَةِ وَلَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝
قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِن جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ اللَّيْلَ سَرْمَدًا إِلَىٰ يَوْمِ
الْقِيَامَةِ مَنْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُم بِضِيَاءٍ أَفَلَا تَسْمَعُونَ ۝
قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِن جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا إِلَىٰ يَوْمِ
الْقِيَامَةِ مَنْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُم بِلَيْلٍ تَسْكُنُونَ فِيهِ أَفَلَا
تُبْصِرُونَ ۝ وَمِن رَّحْمَتِهِ جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوا
فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِن فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ وَيَوْمَ

और तेरा रब* जानता है जो-कुछ इन के सीने छिपाते हैं, और जो-कुछ ये ज़ाहिर करते हैं।○

और वही अल्लाह है; उस के सिवा कोई इलाह* (पूज्य) नहीं। इस लोक और आख़िरत* में उसी के लिए प्रशंसा (हम्द*) है, और उसी के लिए शासन है, और उसी की ओर तुम्हें पलटना होगा।○ ७०

(हे नबी*!) कहो: क्या तुम ने सोचा, यदि अल्लाह क़ियामत* के दिन तक तुम पर सदैव के लिए रात कर दे, तो अल्लाह के सिवा कौन इलाह* (पूज्य) है जो तुम्हें प्रकाश ला दे? क्या तुम सुनते नहीं हो?○

कहो: क्या तुम ने सोचा यदि अल्लाह क़ियामत* के दिन तक तुम पर सदैव के लिए दिन कर दे, तो अल्लाह के सिवा कौन इलाह* (पूज्य) है जो तुम्हें रात ला दे जिस में तुम चैन पाओ? तो क्या तुम्हें सूझता नहीं?○ और उसी ने अपनी दयालुता से तुम्हारे लिए रात और दिन बनाये, ताकि तुम उस में चैन पाओ, और (दिन को) अपने रब* का फ़ज़्ल (रोज़ी) तलाश करो, और कदाचित् तुम कृतज्ञता दिखलाओ।○

और जिस दिन वह इन्हें पुकारेगा और कहेगा: कहाँ हैं वे मेरे शरीक जिन का तुम गुमान रखते थे?○ और हम हर समुदाय में से एक गवाह[४४] निकाल लायेंगे फिर कहेंगे: लाओ अपनी दलील। तब वे जान लेंगे कि सत्य अल्लाह ही की ओर है, और जो झूठ वे गढ़ते थे। वह सब उन से गुम हो जायेगा।○ ७५

निस्सन्देह क़ारून मूसा की जाति में से था[४५], फिर उस ने उन पर[४६] अत्याचार किया और हम ने उसे इतने ख़ज़ाने दिये थे कि उन की कुंजियों से एक पूरा जत्था शक्तिशालियों का थक जाता था। जब उस से उस की जाति वालों ने कहा: फूल न जा, निश्चय ही अल्लाह फूलने वालों को पसन्द नहीं करता।○ जो-कुछ अल्लाह ने तुझे दिया है उस के द्वारा आख़िरत* का घर बनाने का उपाय कर और दुनियाँ में से अपना हिस्सा मत भूल, एहसान कर जिस प्रकार अल्लाह ने तेरे साथ एहसान किया है, और ज़मीन में बिगाड़ का इच्छुक न हो; निस्सन्देह अल्लाह बिगाड़ पैदा करने वालों को पसन्द नहीं करता।○

उस ने कहा: यह तो मुझे केवल उस ज्ञान के कारण दिया गया है जो मुझे प्राप्त है।— क्या उस ने नहीं जाना कि अल्लाह उस से पहले कितनी ही नस्लों को विनष्ट कर चुका है उन लोगों को जो शक्ति में उस से बहुत अधिक प्रबल थे और जत्थे में बढ़ कर थे? और अपराधियों से तो उन के गुनाह पूछे नहीं जाते।○

४४ दे० सूर: मरयम आयत ६६।
४५ दे० बाइबिल 'ख़ुरूज' (Ex.) ६: १८-२१।
४६ अर्थात् अपनी जाति के लोगों पर।
* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَاءِيَ الَّذِينَ كُنتُمْ تَزْعُمُونَ ۝ وَنَزَعْنَا
مِن كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا فَقُلْنَا هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوا أَنَّ الْحَقَّ
لِلَّهِ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝ إِنَّ قَارُونَ كَانَ مِن قَوْمِ
مُوسَىٰ فَبَغَىٰ عَلَيْهِمْ وَآتَيْنَاهُ مِنَ الْكُنُوزِ مَا إِنَّ مَفَاتِحَهُ لَتَنُوأُ
بِالْعُصْبَةِ أُولِي الْقُوَّةِ إِذْ قَالَ لَهُ قَوْمُهُ لَا تَفْرَحْ إِنَّ اللَّهَ لَا
يُحِبُّ الْفَرِحِينَ ۝ وَابْتَغِ فِيمَا آتَاكَ اللَّهُ الدَّارَ الْآخِرَةَ وَلَا
تَنسَ نَصِيبَكَ مِنَ الدُّنْيَا وَأَحْسِن كَمَا أَحْسَنَ اللَّهُ إِلَيْكَ وَ
لَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِي الْأَرْضِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ۝
قَالَ إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ عِندِي أَوَلَمْ يَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ قَدْ
أَهْلَكَ مِن قَبْلِهِ مِنَ الْقُرُونِ مَنْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَأَكْثَرُ
جَمْعًا وَلَا يُسْأَلُ عَن ذُنُوبِهِمُ الْمُجْرِمُونَ ۝ فَخَرَجَ عَلَىٰ
قَوْمِهِ فِي زِينَتِهِ قَالَ الَّذِينَ يُرِيدُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا يَا لَيْتَ
لَنَا مِثْلَ مَا أُوتِيَ قَارُونُ إِنَّهُ لَذُو حَظٍّ عَظِيمٍ ۝ وَقَالَ
الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ ثَوَابُ اللَّهِ خَيْرٌ لِّمَنْ آمَنَ وَعَمِلَ
صَالِحًا وَلَا يُلَقَّاهَا إِلَّا الصَّابِرُونَ ۝ فَخَسَفْنَا بِهِ وَبِدَارِهِ الْأَرْضَ
فَمَا كَانَ لَهُ مِن فِئَةٍ يَنصُرُونَهُ مِن دُونِ اللَّهِ وَمَا كَانَ مِنَ
الْمُنتَصِرِينَ ۝ وَأَصْبَحَ الَّذِينَ تَمَنَّوْا مَكَانَهُ بِالْأَمْسِ يَقُولُونَ
وَيْكَأَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَوْلَا
أَن مَّنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا وَيْكَأَنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ۝
تِلْكَ الدَّارُ الْآخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِينَ لَا يُرِيدُونَ عُلُوًّا فِي الْأَرْضِ
وَلَا فَسَادًا وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ۝ مَن جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ

फिर वह (एक दिन) अपनी जाति वालों के सामने अपने पूरे ठाठ-बाट में निकला। जो लोग सांसारिक जीवन के चाहने वाले थे कहने लगे: क्या ही अच्छा होता कि जैसा कुछ क़ारून को दिया गया है हमारे पास भी होता! वह तो बड़ा भाग्यवान है।○

परन्तु जिन्हें ज्ञान दिया गया था उन लोगों ने कहा: अफ़सोस तुम पर! अल्लाह का प्रतिदान उत्तम है उस व्यक्ति के लिए जो ईमान* लाये और अच्छा काम करे—और यह बात सब्र* करने वालों को ही प्राप्त होती है।○

फिर हम ने उसे और उस के घर को ज़मीन में धँसा दिया। फिर उस का कोई गरोह न हुआ जो अल्लाह के मुक़ाबिले में उस की मदद करता, और न वह आप ही अपनी मदद कर सका।○

और अब वे लोग जो कल उस जैसा होने की कामना कर रहे थे कहने लगे: अरे बात तो यह है! अल्लाह अपने बन्दों में से जिस के लिए चाहता है रोज़ी कुशादा करता है और (जिस के लिए चाहता है) नपी-तुली कर देता है। यदि अल्लाह ने हम पर एहसान न किया होता तो हमें भी धँसा देता। अरे बात तो यह है! काफ़िर* सफल नहीं हुआ करते।○

वह आख़िरत का घर[77] हम उन लोगों के लिए ठहरा देंगे जो न तो ज़मीन में अपनी बड़ाई चाहते हैं, और न बिगाड़[78]। और अन्तिम परिणाम तो उन ही लोगों के हक़ में है जो अल्लाह की अवज्ञा से बचने वाले और उस की ना-ख़ुशी से डरने वाले हैं।○

जो कोई भलाई ले कर आयेगा, उस के लिए उस से उत्तम (बदला) है। और जो कोई बुराई ले कर आया, तो उन लोगों को जिन्हों ने बुराइयाँ की होंगी वही बदला दिया जायेगा जो-कुछ वे करते थे।○ (हे नबी* !) जिस (अल्लाह) ने इस क़ुरआन* को तुम्हारे ज़िम्मे किया है[79] वह तुम्हें एक बहुत ही उत्तम परिणाम की ओर पलटाने वाला है। (इन लोगों से) कहो: मेरा रब* ! उसे भली-भाँति जानता है जो मार्ग-दर्शन ले कर आया है और (उसे भी) जो खुली गुमराही में पड़ा है।○ (हे नबी* !) तुम इस की आशा नहीं रखते थे कि तुम्हारी ओर किताब* उतारी जायेगी; यह तो बस तुम्हारे रब* की दयालुता है, अतः तुम काफ़िरों* के पृष्ठ-पोषक न होना।○ और ऐसा न होने पाये कि वे तुम्हें अल्लाह की आयतों* से बाज़

---

७७ अर्थात् जन्नत* ।

७८ अर्थात् जो न तो दुनिया में गर्वशील और अभिमानी बन कर रहना चाहते हैं और न धरती में बिगाड़ और अशान्ति फैलाना चाहते हैं। जो शान्तिप्रिय और सार्वहित के इच्छुक होते हैं।

७९ अर्थात् तुम्हें क़ुरआन की ज़िम्मेदारी सौंपी है।

* वाले चिह्न से अंकित हुए पारिभाषिक शब्दों को सूची में देखें।

مِّنْهَا ۚ وَمَن جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّـَٔاتِ
إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ إِنَّ الَّذِي فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْءَانَ
لَرَآدُّكَ إِلَىٰ مَعَادٍ ۚ قُل رَّبِّي أَعْلَمُ مَن جَآءَ بِالْهُدَىٰ وَمَنْ هُوَ
فِي ضَلَٰلٍ مُّبِينٍ ۝ وَمَا كُنتَ تَرْجُوٓا أَن يُلْقَىٰٓ إِلَيْكَ الْكِتَٰبُ إِلَّا
رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ ۖ فَلَا تَكُونَنَّ ظَهِيرًا لِّلْكَٰفِرِينَ ۝ وَلَا يَصُدُّنَّكَ
عَنْ ءَايَٰتِ اللَّهِ بَعْدَ إِذْ أُنزِلَتْ إِلَيْكَ ۖ وَادْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ ۖ وَلَا تَكُونَنَّ
مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝ وَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا ءَاخَرَ ۘ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ
كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُۥ ۚ لَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝

रखें जब कि ये तुम्हारी ओर उतारी जा चुकी हों; अपने रब* की ओर (लोगों को) बुलावा दो, और कदापि मुश्रिकों* में शामिल न हो। ○ और अल्लाह के साथ किसी दूसरे इलाह* (पूज्य) को न पुकारो। उस के सिवा कोई इलाह* नहीं। हर चीज़ नश्वर है सिवाय उस के स्वरूप के उसी का शासन है, और तुम्हें उसी की ओर पलट कर जाना है। ○

* इस का अर्थ आखिर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

२९-अल-अनकबूत

(परिचय)

नाम (The Title)

'अनकबूत' मकड़ी (Spider) को कहते हैं। इस सूरः में एक जगह उन लोगों की मिसाल मकड़ी और उस के घर से दी गई है जो अल्लाह को छोड़ कर दूसरों का आश्रय लेते और उन्हें अपना संरक्षक समझते हैं। इस सम्बन्ध में इस सूरः का नाम 'अल-अनकबूत' रखा गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

सूरः* के अध्ययन से मालूम होता है कि यह सूरः उस समय उतरी है जब कि धर्म-विरोधी लोग ईमान वालों* को तरह-तरह से सता रहे थे। मुसलमानों को शारीरिक एवं मानसिक हर प्रकार की यन्त्रणाओं और कष्टों का सामना करना पड़ रहा था। सूरः की कुछ आयतों*¹ से साफ़ पता चलता है कि यह सूरः हबशः (Abyssinia) की हिजरत* से कुछ पहले अवतरित हुई है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

यह सूरः 'जिहाद'*, हिजरत*, आज़माइश और विजय की सूचना आदि विषयों पर आधारित है। जैसा कि ऊपर यह बात आ चुकी है कि यह सूरः उस समय उतरी है जब कि ईमान* वालों को मुशरिक* लोग तरह-तरह की तकलीफ़ें पहुँचा रहे थे। विरोधी गरोह के लोग ईमान* वालों पर जो अत्याचार कर रहे थे उस का मूल कारण वह शिर्क* था जिस में वे पड़े हुये थे। यही शिर्क* उन्हें परस्पर जोड़े हुये था। उन का पारस्परिक सम्बन्ध और मित्रता शिर्क* पर अवलम्बित थी। शिर्क* के रोग में वे बुरी तरह इस लिए ग्रस्त थे कि उन का आख़िरत* पर ईमान* न था। वे इस बात को नहीं मानते थे कि उन्हें एक दिन अपने रब* के सामने हाज़िर होना है। उन का वास्तविक रोग यही था। जब किसी का इस पर ईमान* ही न हो कि उसे एक दिन अपने रब* से मिलना है तो स्वभावतः वह निरंकुश और स्वेच्छाचारी बन कर रहेगा फिर कोई चीज़ न होगी जो तुच्छ-इच्छाओं के पीछे चलने और बुरे कर्मों से अपने चरित्र को दूषित करने से उस को रोक सके। समाज और समाज के नियमों और मर्यादाओं का आदर भी मनुष्य उसी समय करता है जब वास्तव में वह अल्लाह से डरता हो और उसे विश्वास हो कि एक दिन उसे अल्लाह के सामने खड़ा होना होगा जो सब-कुछ जानने वाला और हिकमत* वाला है। मुशरिकों* ने अपने अन्तिम परिणाम की ओर से आँखें बन्द कर ली थीं अपने-आप को तुच्छ-इच्छाओं और वासनाओं के समर्पित कर दिया था। उन की जीवन-चर्या इस के अतिरिक्त और कुछ न थी कि वे बिगड़े हुये समाज और अपने पूर्वजों का अन्धानुकरण किये चले जा रहे थे। वे व्यर्थ कामों में अपना समय नष्ट कर रहे थे, उन्हें केवल इस संसार के बाह्य रूप का ज्ञान था; परिणाम से वे बिलकुल बे-ख़बर थे।

---

¹ दे० आयत ५६ से ६० तक।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

प्रस्तुत सूरः में विभिन्न जातियों के क़िस्से बयान हुये हैं। उन क़िस्सों से
ूम होता है कि शिर्क* एक ऐसी बुराई है जो आदमी को नाना प्रकार की
ाइयों की ओर ले जाती है। इन क़िस्सों से पता चलता है शिर्क* और आख़िरत*
इन्कार में गहरा सम्बन्ध है। जिन जातियों के क़िस्से इस सूरः में बयान हुये हैं
मुशरिक* थीं और आख़िरत का भी इन्कार करती थीं। इन क़िस्सों में ईमान
लों* के लिए बड़ी ढारस है। इन में इस की ओर संकेत किया गया है कि अल्लाह
ान* वालों का सहायक है वह उन की अवश्य सहायता करेगा। यदि काफ़िरों*
पकड़ नहीं हो रही है तो इस से यह नहीं समझना चाहिए कि उन की पकड़
ी होगी ही नहीं। उन जातियों के अवशेषों को देखो जिन्हें अल्लाह के अज़ाब
ने आ घेरा और वे विनष्ट हो कर रह गई। इन क़िस्सों से यह बात भी मालूम
ी है कि लोगों को छोड़ कर अल्लाह की ओर हिजरत* करना यह नतीजा होता
सब्र* का और अल्लाह पर विश्वास रखने और उस पर भरोसा करने का।
र हिजरत* करने का अर्थ यह है कि लोगों तक अल्लाह का सन्देश पहुँचाने की
ा ज़िम्मेदारी थी वह पूरी हो चुकी; अब सत्य से मुँह मोड़ने वाले अल्लाह के यहाँ
ह नहीं कह सकते कि हमें सत्य की ओर बुलाने वाला कोई आया ही नहीं यदि
ा सत्य पर नहीं चले तो इस में हमारा कोई दोष नहीं है।

प्रस्तुत सूरः* में यह आदेश दिया गया है कि माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार
ो परन्तु यदि वे तुम पर दबाव डालें कि अल्लाह के साथ शिर्क* करो तो इस
उन की बात न मानो¹। यह बात सूरः लुक़मान की आयत १५ में भी दोहराई
ई है। ऐतिहासिक उल्लेखों से मालूम होता है कि जब हज़रत सअ्द बिन वक़्क़ास
ज़ि० ईमान* ले आये तो उस समय आप की आयु १८-१९ वर्ष से अधिक
थी। उन की माता को जब मालूम हुआ कि बेटा मुसलमान हो गया, तो उस ने
ाप से कहा कि जब तक तू मुहम्मद (सल्ल०) का इन्कार नहीं करता न तो मैं कुछ
ाऊँगी और न पीऊँगी और न छाया में बैठूँगी। माता की आज्ञा मानने का
ादेश तो अल्लाह ने दिया है यदि मेरी बात नहीं मानेगा तो तू अल्लाह का भी
वज्ञाकारी होगा। हज़रत सअ्द नबी सल्ल० की सेवा में पहुँचे और सारा क़िस्सा
ाप से बयान किया। इस पर इस सूरः की आयत* ८ अवतीर्ण हुई। माँ-बाप का यह
क़ तो अवश्य है औलाद उन की सेवा और आदर करे; परन्तु उन्हें इस का हक़ कदापि
ाप्त नहीं कि वे इस पर विवश करने लगें कि आदमी अपनी आँखें बन्द कर के अपने
ान के विरुद्ध उन के पीछे चलता रहे। औलाद को यदि ज्ञात हो जाये कि उस के
ाता-पिता का धर्म सत्य के प्रतिकूल है तो उस का कर्तव्य है कि वह अपने माता-
पता के धर्म को त्याग कर सत्य को ग्रहण करे। माता-पिता का हक़ अपनी जगह
र है परन्तु सच्चाई का हक़ सब से बढ़ कर है।

जो लोग नये-नये मुस्लिम* हुये थे उन से सत्य के विरोधी काफ़िर* कहते
े कि तुम मुहम्मद (सल्ल०) का साथ छोड़ दो, हमारी बात मानो जो-कुछ
अज़ाब होगा उसे हम अपने ऊपर ले लेंगे। यदि अल्लाह पकड़ेगा तो हम कह देंगे

¹ दे० आयत ८।

* इसका अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अल-अनकबूत

(मक्का में उतरी — आयतें* ६९)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

بسم الله الرحمن الرحيم
الم ۝ أحسب الناس أن يتركوا أن يقولوا آمنا وهم لا
يفتنون ۝ ولقد فتنا الذين من قبلهم فليعلمن الله
الذين صدقوا وليعلمن الكاذبين ۝ أم حسب الذين
يعملون السيئات أن يسبقونا ساء ما يحكمون ۝ من كان
يرجو لقاء الله فإن أجل الله لآت وهو السميع العليم ۝
ومن جاهد فإنما يجاهد لنفسه إن الله لغني عن العالمين ۝
والذين آمنوا وعملوا الصالحات لنكفرن عنهم سيئاتهم و
لنجزينهم أحسن الذي كانوا يعملون ۝ ووصينا الإنسان
بوالديه حسنا وإن جاهداك لتشرك بي ما ليس لك به علم

अलिफ़० लाम० मीम०[1] ○ क्या लोगों ने समझ रखा है कि वे बस इतना कहने से छोड़ दिये जायेंगे कि "हम ईमान* लाये", और उन्हें आज़माया न जायेगा ? ○ हालांकि हम उन लोगों को आज़मा चुके हैं जो इन से पहले थे। अल्लाह तो उन लोगों को जान कर रहेगा[2] जो सच्चे हैं, और वह झूठों को भी जान कर के रहेगा। ○ क्या वे लोग जो बुरे कर्म करते हैं यह समझ बैठे हैं कि वे हम से बाज़ी ले जायेंगे ? बुरा है जो हुक्म ये लगा रहे हैं। ○

जो कोई अल्लाह से मिलने की आशा रखता हो तो (उसे जानना चाहिए कि) अल्लाह का नियत (किया हुआ) समय आने ही वाला है, और वह (सब-कुछ) सुनने वाला और जानने वाला है। ○ और जिस ने कष्ट किया वह अपने ही लिए कष्ट करेगा, निस्सन्देह अल्लाह सारे संसार (वालों) से अपेक्षा-रहित है। ○

और जो लोग ईमान* लाये और अच्छे काम किये, हम उन की बुराइयों को उन से दूर कर देंगे और उन्हें उन के अच्छे कामों का बदला देंगे। ○

और हम ने मनुष्य को अपने माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करने की ताकीद की है; परन्तु यदि वे तुझ पर दबाव डालें कि तू किसी ऐसी चीज़ को मेरा शरीक ठहराये जिस के बारे में तुझे कोई ज्ञान नहीं है, तो उन का कहना न मानना। मेरी ही ओर तुम्हें पलट कर आना है फिर मैं तुम्हें जता दूँगा जो-कुछ तुम करते थे[3]। ○

और जो लोग ईमान* लाये और अच्छे काम किये, हम उन्हें अच्छे लोगों में दाख़िल करेंगे। ○

और लोगों में कोई तो ऐसा है जो कहता है कि हम ईमान* लाये अल्लाह पर, परन्तु, जब वह अल्लाह के बारे में सताया गया, तो उस ने लोगों की (डाली हुई) आज़माइश को अल्लाह के अज़ाब जैसा ठहरा लिया; और यदि तेरे रब* की ओर से मदद आ गई, तो कहेगा : "हम तो तुम्हारे साथ थे"। क्या जो-कुछ दुनियाँ वालों के सीनों में[4] है उसे अल्लाह

---

1 दे० सूरः अल-बक़रः फुट नोट १।

2 दे० आयत १०-११।

3 इसी प्रकार यदि हम को यह बात मालूम हो जाये कि हमारे पूर्वजों ने जो धर्म अपनाया था वह सत्य-धर्म न था तो हमें उसे छोड़ कर सत्य-धर्म का ही पालन करना चाहिए।

4 अर्थात् दिलों में।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

فَلَا تُطِعْهُمَا ۚ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصَّالِحِينَ ۝ وَ
مِنَ النَّاسِ مَنْ يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ فَإِذَا أُوذِيَ فِي اللَّهِ جَعَلَ فِتْنَةَ
النَّاسِ كَعَذَابِ اللَّهِ ۖ وَلَئِنْ جَاءَ نَصْرٌ مِنْ رَبِّكَ لَيَقُولُنَّ إِنَّا
كُنَّا مَعَكُمْ ۚ أَوَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِمَا فِي صُدُورِ الْعَالَمِينَ ۝ وَ
لَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْمُنَافِقِينَ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ
كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا اتَّبِعُوا سَبِيلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطَايَاكُمْ وَمَا
هُمْ بِحَامِلِينَ مِنْ خَطَايَاهُمْ مِنْ شَيْءٍ ۖ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝ وَ
لَيَحْمِلُنَّ أَثْقَالَهُمْ وَأَثْقَالًا مَعَ أَثْقَالِهِمْ ۖ وَلَيُسْأَلُنَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
عَمَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝ ع وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَلَبِثَ
فِيهِمْ أَلْفَ سَنَةٍ إِلَّا خَمْسِينَ عَامًا فَأَخَذَهُمُ الطُّوفَانُ وَ

भली-भाँति जानता नहीं ? ○ और अल्लाह
लोगों को जान कर के रहेगा जो ईमान* ला
वह मुनाफ़िक़ों* को भी जान कर के रहेगा

जिन लोगों ने कुफ़्र* किया उन्हों ने ई
लाने वालों से कहा : तुम हमारे मार्ग पर चल
तुम्हारी ख़ताओं (पापों) को हम अपने ऊपर ले
हालांकि वे उन की ख़ताओं में से कुछ भी
ऊपर लेने वाले नहीं हैं। निश्चय ही वे झूठे
हां अवश्य वे अपने बोझ भी उठायेंगे और
बोझों के साथ दूसरे बोझ भी;[7] और क़िया
के दिन अवश्य उन से उस के बारे में पूछा ज
जो-कुछ कि झूठ वे गढ़ते रहे हैं। ○

और हम ने नूह को[8] उस की जाति वालों की ओर भेजा, और वह पचास साल
एक हज़ार वर्ष उन में रहा[9] फिर उन लोगों को तूफ़ान ने आ लिया, इस दशा में
ज़ालिम थे। ○ फिर हम ने उसे और नौका वालों को बचा लिया, और उस को[10] दु
वालों के लिए एक निशानी बना दिया[11]। ○

और इबराहीम को (भेजा)[12] जब कि उस ने अपनी जाति वालों से कहा : अल्ला
इबादत* करो, और उस से डरो; यह तुम्हारे लिए अधिक अच्छा है यदि तुम्हें ज्ञान हो
तुम लोग अल्लाह को छोड़ कर केवल मूर्तियों को पूज रहे हो, और तुम एक झूठ रचते
वास्तव में अल्लाह को छोड़ कर तुम जिन्हें पूजते हो वे तुम्हारी रोज़ी के मालिक नहीं।
अल्लाह ही के यहां रोज़ी चाहो, और उसी की इबादत* करो, और उस के कृतज्ञ बनो।
की ओर तुम्हें लौटना होगा। ○ और यदि तुम झुठलाते हो, तो तुम से पहले बहुत से
दाय झुठला चुके हैं। और रसूल* पर साफ़-साफ़ (सन्देश) पहुँचा देने के अतिरिक्त
ज़िम्मेदारी नहीं है। ○—

''क्या इन लोगों ने देखा नहीं कि अल्लाह कैसे पहली बार पैदा करता है, फिर उस

५ अर्थात् अल्लाह से कुछ भी छुप नहीं सकता। अच्छे-बुरे सभी लोग उस के सामने होते हैं।

६ उन के इस कथन का अर्थ यह है कि ये क़ियामत*, दोज़ख़* और जन्नत* की बातें सब ढकोसला
न तो हमें मर कर पुनः जीवित होना है और न हमें अल्लाह के सामने अपने कर्मों का कोई हिसाब देना
वे ईमान* वालों से कहते थे कि यदि कोई और जीवन है भी तो हम तुम्हारे गुनाहों को अपनी गरदन पर
लेंगे; तुम पितृ-धर्म की ओर पलट आओ। अपने बाप-दादा के धर्म को न छोड़ो।

७ अर्थात् वे दूसरों का बोझ तो हल्का न कर सकेंगे परन्तु दोहरा बोझ उठाने से वे बच भी नहीं सक
उन पर अपनी गुमराही का बोझ तो होगा ही दूसरे लोगों को गुमराह करने का बोझ भी उन की गरदन
लादा जायेगा (दे० सूरः अन-नह्ल आयत २५)।

८ दे० सूरः अअ्-राफ़, आयत फुट नोट ३७।

९ हज़रत नूह अ० को अल्लाह ने दीर्घ आयु प्रदान की थी। अल्लाह सर्वशक्तिमान है जो चाहे
सकता है।

१० अर्थात् उस नौका को या उस घटना को।

११ दे० सूरः अल-क़मर आयत १३-१५।

१२ दे० सूरः अअ्-राफ़, आयत फुटनोट ३५।

१३ यहां से ज़िक्र को छोड़ कर अल्लाह ने मक्का के काफ़िरों को चेतावनी दी है कि यदि वे अपना भ
चाहते हैं तो अपनी बुरी नीति को त्याग कर सच्चाई को ग्रहण करें।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

پس ہُمْ ظٰلِمُوْنَ ۝ فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَصْحٰبَ السَّفِيْنَةِ وَجَعَلْنٰهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝
وَاِبْرٰهِيْمَ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ ۭ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ
اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ اِنَّمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا وَّ
تَخْلُقُوْنَ اِفْكًا ۭ اِنَّ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَمْلِكُوْنَ
لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوْا عِنْدَ اللّٰهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوْهُ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ۭ
اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝ وَاِنْ تُكَذِّبُوْا فَقَدْ كَذَّبَ اُمَمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ۭ وَمَا
عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝ اَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللّٰهُ
الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ۭ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝ قُلْ سِيْرُوْا فِي
الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ بَدَاَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللّٰهُ يُنْشِئُ النَّشْاَةَ
الْاٰخِرَةَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَاۗءُ
وَيَرْحَمُ مَنْ يَّشَاۗءُ ۚ وَاِلَيْهِ تُقْلَبُوْنَ ۝ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ
فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاۗءِ ۡ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ
وَّلَا نَصِيْرٍ ۝ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَلِقَاۗىِٕهٖٓ اُولٰۗىِٕكَ يَىِٕسُوْا
مِنْ رَّحْمَتِيْ وَاُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ
اِلَّآ اَنْ قَالُوا اقْتُلُوْهُ اَوْ حَرِّقُوْهُ فَاَنْجٰىهُ اللّٰهُ مِنَ النَّارِ ۭ اِنَّ فِيْ
ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ وَقَالَ اِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِ
اللّٰهِ اَوْثَانًا ۙ مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

पुनरावृत्ति करता है ? निश्चय ही यह (पुनरावृत्ति) अल्लाह के लिए (अत्यन्त) सरल है[14] । ○

कहो : ज़मीन में चलो-फिरो और देखो कि उस ने कैसे पहली बार पैदा किया है, फिर अल्लाह ही दूसरी बार उठायेगा। निस्सन्देह अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला (सर्वशक्तिमान्) है। ○ २०

वह जिसे चाहे अज़ाब दे और जिस पर चाहे दया करे, और उसी की ओर तुम्हें पलटना होगा। ○

तुम न तो ज़मीन में (उस से) बच निकलने वाले हो और न आसमान में,[15] और अल्लाह के सिवा न तो तुम्हारा कोई संरक्षक-मित्र है और न कोई सहायक[16] । ○

जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों* का और उस से मिलने का इन्कार किया, वे मेरी दयालुता से निराश हो चुके हैं। और उन के लिए दुखदायी अज़ाब है। ○ —

[17]फिर उस की जाति वालों का उत्तर इस के सिवा और कुछ न था कि उन्हों ने कहा : "क़त्ल कर दो इसे" या "जला दो इसे"। फिर अल्लाह ने उसे आग से बचा लिया। निश्चय ही इस में निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ईमान* लाते हैं। ○

और उस ने कहा : तुम ने अल्लाह को छोड़ कर बस कुछ मूर्तियों को ग्रहण कर लिया है, सांसारिक जीवन में परस्पर मित्रता के कारण। परन्तु क़ियामत* के दिन तुम एक दूसरे से विरक्त हो जाओगे, और तुम एक दूसरे पर लानत करोगे, और तुम्हारा ठिकाना (दोज़ख़* की) आग है, और तुम्हारा कोई सहायक नहीं है। ○ २५

तो लूत ने उसे माना, और उस ने[18] कहा : मैं अपने रब* की ओर हिजरत* करता हूँ। निस्सन्देह वह अपार शक्ति का मालिक और हिकमत* वाला है। ○ और हम ने उसे इसहाक़ और याक़ूब दिये,[19] और उस की सन्तति में नुबूवत* और किताब* रख दी,[20] और

---

१४ अर्थात् जब तुम पहली बार पैदा होने का निरीक्षण कर रहे हो, तो फिर दोबारा पैदा होने को असम्भव कैसे समझते हो ? जिस तरह उस ने पहली बार पैदा किया है उसी तरह दोबारा पैदा करने का सामर्थ्य भी उसे प्राप्त है। दोबारा पैदा करने का अर्थ पुनरावृत्ति के सिवा आख़िर और क्या है जो तुम्हें असम्भव प्रतीत हो रहा है।

१५ अर्थात् तुम ज़मीन और आसमान में किसी ऐसी जगह भाग कर नहीं जा सकते जहाँ तुम अपने-आप को अल्लाह की पकड़ से बचा सको।

१६ दे० सूरः अश-शूरा आयत ३१।

१७ यहाँ से फिर हज़रत इबराहीम अ० का क़िस्सा शुरू होता है।

१८ अर्थात् हज़रत इबराहीम अ० ने।

१९ हज़रत इसहाक़ अ० हज़रत इबराहीम अ० के बेटे और हज़रत याक़ूब अ० उन के पोते थे। हज़रत इबराहीम अ० की सन्तान की मदयानी शाखा में केवल हज़रत शुऐब अ० नबी हुये हैं। और इसमाईली शाखा में हज़रत मुहम्मद सल्ल० तक लग-भग ढाई हज़ार वर्ष की अवधि में कोई* (शेष अगले पृष्ठ पर)

**इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ وَّيَلْعَنُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا وَّمَاْوٰىكُمُ النَّارُ
وَمَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۚ فَاٰمَنَ لَهٗ لُوْطٌ ۘ وَقَالَ اِنِّيْ مُهَاجِرٌ
اِلٰى رَبِّيْ ۗ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَ
يَعْقُوْبَ وَجَعَلْنَا فِيْ ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ وَاٰتَيْنٰهُ اَجْرَهٗ
فِي الدُّنْيَا ۚ وَاِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَلُوْطًا اِذْ
قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ ۖ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ
اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اَىِٕنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُوْنَ
السَّبِيْلَ ۙ وَتَاْتُوْنَ فِيْ نَادِيْكُمُ الْمُنْكَرَ ۗ فَمَا كَانَ جَوَابَ
قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوا ائْتِنَا بِعَذَابِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتَ مِنَ
الصّٰدِقِيْنَ ۝ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِيْنَ ۝
وَلَمَّا جَاۤءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى ۙ قَالُوْٓا اِنَّا مُهْلِكُوْٓا
اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ ۚ اِنَّ اَهْلَهَا كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ۝ قَالَ اِنَّ
فِيْهَا لُوْطًا ۗ قَالُوْا نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَنْ فِيْهَا ۖ لَنُنَجِّيَنَّهٗ وَاَهْلَهٗٓ
اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۖ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ۝ وَلَمَّآ اَنْ جَاۤءَتْ رُسُلُنَا
لُوْطًا سِيْۤءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالُوْا لَا تَخَفْ وَلَا
تَحْزَنْ ۗ اِنَّا مُنَجُّوْكَ وَاَهْلَكَ اِلَّا امْرَاَتَكَ كَانَتْ مِنَ
الْغٰبِرِيْنَ ۝ اِنَّا مُنْزِلُوْنَ عَلٰٓى اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ

उसे दुनियाँ में उस का बदला प्रदान किय
निश्चय ही वह आख़िरत* में अच्छे लो
होगा। ○

[२०]और लूत को (हम ने भेजा) जब
अपनी जाति वालों से कहा : तुम तो
करते हो जिसे तुम से पहले दुनियाँ
किसी ने नहीं किया। ○ क्या तुम (संभो
पुरुषों के पास जाते हो! और बट-मारी
अपनी बैठकों (और चौपालों) में बुरा कर्म
फिर कोई उत्तर उस की जाति वालों
सिवा न था कि उन्हों ने कहा : ले
अल्लाह का अज़ाब यदि तू सच्चा है!

(लूत ने) कहा : हे रब*! इन
करने वाले लोगों के मुक़ाबिले में तू मे
हो। ○

और जब हमारे भेजे हुये (फ़िरिश्ते
हीम के पास शुभ-सूचना ले कर पहुँचे,
ने कहा : हम इस बस्ती[२४] के लोगों को विनष्ट करने वाले हैं, निश्चय ही उस के लोग ज़ा

(इबराहीम ने) कहा : वहाँ तो लूत (मौजूद) है[२५]। उन्हों ने कहा : जो कोई
भली-भाँति जानते हैं। हम उसे और उस के घर वालों को बचा लेंगे, सिवाय उस
वह पीछे रह जाने वालों में से थी। ○ और जब हमारे भेजे हुये (फ़िरिश्ते*)
पहुँचे, तो वह उन के कारण मलीन हुआ और उन के बारे में अपने को असमर्थ

नबी नहीं हुआ। नुबूवत* और किताब* हज़रत मसीह अ० तक निरन्तर जिस शाखा को मि*
वह वही शाखा है जो हज़रत इसहाक़ अ० से चली थी। इसी लिए इस आयत में केवल एक*
हज़रत इसहाक़ से चली थी उल्लेख किया गया।

२० इस में वे सभी नबी आ गये जो हज़रत इबराहीम अ० की सन्तति में हुये हैं चाहे उ*
हज़रत इबराहीम अ० की सन्तति की किसी भी शाखा से रहा हो।

२१ आप के शत्रुओं ने तो चाहा था कि आप को जला कर राख कर दें परन्तु अल्लाह ने
सम्मान प्रदान किया कि ४००० वर्ष से आप का नाम उज्ज्वल है और क़ियामत तक रहेगा।*
भी अपना नायक मानते हैं और ईसाई और मुसलमान भी आप को अपना नायक समझते हैं

२२ दे० सूरः अश-शु,अरा फुट नोट ५०।

२३ जो फ़रिश्ते हज़रत लूत अ० की जाति वालों को विनष्ट करने के लिए भेजे गये थे वे*
इबराहीम अ० के पास पहुँचे और उन्हें हज़रत इसहाक़ अ० और हज़रत याक़ूब अ० के पैदा
सूचना दी फिर बताया कि उन्हें हज़रत लूत अ० की जाति वालों को विनष्ट करने के लिए भे
(दे० सूरः हूद आयत ६९-७६; सूरः अल-हिज्र आयत ५१-६०)।

२४ यह संकेत हज़रत लूत अ० की जाति वालों की बस्ती की ओर है। हज़रत इबराह
फ़िलिस्तीन के नगर हिबरून में रहते थे। इस नगर के दक्षिण-पूर्व में कुछ ही मील की दूरी पर
का यह भाग स्थित है जहाँ पहले हज़रत लूत अ० की जाति वाले बसते थे। अब इस पर पा
है। हिबरून की ऊँची पहाड़ियों से यह भाग प्रत्यक्ष दिखाई देता है।

२५ पहले हज़रत इबराहीम अ० ने पूरी जाति के लिए दया-याचना की परन्तु जब यह दिख
अज़ाब टलने वाला नहीं तब आप को लूत अ० की चिन्ता हुई (दे० सूरः हूद आयत ६९-७

** इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

ने कहा : न डरो, और न दुःखी हो। हम तुम्हें और तुम्हारे घर वालों को बचा लेंगे, सिवाय तुम्हारी स्त्री के, वह पीछे रह जाने वालों में से थी। ○ हम बस्ती के लोगों पर आसमान से अज़ाब उतारने वाले हैं क्योंकि वे सीमोल्लंघन करते रहे हैं। ○ और हम ने उस (बस्ती) की खुली निशानी छोड़ दी है[26] उन लोगों के लिए जो बुद्धि से काम लेते हैं। ○

और मद्यन की ओर उन के भाई शुऐब को (भेजा),[27] उस ने कहा : मेरी जाति वालो ! अल्लाह की इबादत* करो और अन्तिम दिन*[28] की आशा रखो, और ज़मीन में बिगाड़ पैदा करते न फिरो[29]। ○

परन्तु उन्हों ने उसे झुठला दिया, तो एक प्रचण्ड भू-कम्प ने उन्हें आ लिया, और वे अपने घर में औंधे मुँह पड़े रह गये। ○

और आद* और समूद* को[30] (हम ने विनष्ट किया)। और यह उन के (उजड़े) घरों से तुम्हारे सामने खुल कर आ गया है। शैतान* ने उन के कर्मों को उन के लिए शोभायमान बना दिया और उन्हें (सीधे) मार्ग से रोक दिया, यद्यपि वे सूझ-बूझ रखने वाले थे[31]। ○

और क़ारून और हामान को (हम ने विनष्ट किया)। मूसा उन के पास प्रत्यक्ष प्रमाण लेकर आया, परन्तु उन्हों ने ज़मीन में घमण्ड किया यद्यपि वे बाज़ी ले जाने वाले न थे[32]। ○

तो हर एक को हम ने उस के गुनाह में पकड़ा; फिर उन में से किसी पर हम ने पथराव करने वाली हवा भेजी,[33] और उन में से किसी को एक प्रचण्ड धमाके ने आ लिया,[34] और उन में से किसी को हम ने ज़मीन में धँसा दिया,[35] और उन में से किसी को डुबो

السَّمَآءِ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ۝ وَلَقَد تَّرَكْنَا مِنْهَآ ءَايَةًۢ بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝ وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا فَقَالَ يَٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْءَاخِرَ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝ فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِى دَارِهِمْ جَٰثِمِينَ ۝ وَعَادًا وَثَمُودَا۟ وَقَد تَّبَيَّنَ لَكُم مِّن مَّسَٰكِنِهِمْ ۖ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَٰنُ أَعْمَٰلَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ وَكَانُوا مُسْتَبْصِرِينَ ۝ وَقَٰرُونَ وَفِرْعَوْنَ وَهَٰمَٰنَ ۖ وَلَقَدْ جَآءَهُم مُّوسَىٰ بِالْبَيِّنَٰتِ فَاسْتَكْبَرُوا فِى الْأَرْضِ وَمَا كَانُوا سَٰبِقِينَ ۝ فَكُلًّا أَخَذْنَا بِذَنۢبِهِۦ ۖ فَمِنْهُم مَّنْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا وَمِنْهُم مَّنْ أَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ وَمِنْهُم مَّنْ خَسَفْنَا بِهِ الْأَرْضَ وَمِنْهُم مَّنْ أَغْرَقْنَا ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَٰكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۝ مَثَلُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَآءَ كَمَثَلِ الْعَنكَبُوتِ اتَّخَذَتْ بَيْتًا ۖ وَإِنَّ أَوْهَنَ الْبُيُوتِ لَبَيْتُ الْعَنكَبُوتِ ۖ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُونَ مِن دُونِهِۦ مِن شَىْءٍ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ وَتِلْكَ الْأَمْثَٰلُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۖ وَمَا يَعْقِلُهَآ إِلَّا الْعَٰلِمُونَ ۝ خَلَقَ اللَّهُ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَءَايَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝

२६ इस खुली निशानी से अभिप्रेत हज़रत लूत अ० की जाति वालों का वह निवास-स्थान है जिसे अल्लाह के अज़ाब ने तहस-नहस कर दिया। Dead Sea का दक्षिणी भाग पहले एक हरा-भरा भू-भाग था इसी भू-भाग में हज़रत लूत अ० की जाति वालों का केन्द्रीय नगर सुदूम (Sodom) स्थित था। परन्तु अब शताब्दियों से यह भू-भाग मानव के लिए एक शिक्षाप्रद निशानी बना हुआ है। अरब के लोग सीरिया की ओर व्यापार के लिए जाते समय इस के पास से गुज़रा करते थे।

२७ दे० सूरः अश-शु,अरा फुट नोट ५६।

२८ दे० सूरः अल-बक़रः फुट नोट ५।

२९ दे० सूरः हूद आयत ८५।

३० दे० सूरः अश-शु,अरा फुट नोट ४१; ४३।

३१ अर्थात् वे अनभिज्ञ और मूर्ख न थे परन्तु अपनी तुच्छ इच्छाओं के वशीभूत हो कर वे स्वयं अन्धे और ना-समझ बन गये।

३२ अर्थात् न वे अल्लाह से बच कर निकल सकते थे और न अल्लाह की तदबीरों का उन के पास कोई तोड़ था।

३३ यह संकेत आद-जाति की ओर है। दे० सूरः अल-हाक्क़ः आयत ७।

३४ यह संकेत समूद-जाति की ओर है।

३५ क़ारून की ओर संकेत है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

५८ : ८ मुनाफ़िक़ों का कानाफूसी करना और श्राप के शब्दों का मुँह से निकालना
६१ : ५१ कोप की दृष्टि से देखना और दीवाना कहना।
९६ : ९,१० नमाज़ से रोकना।

(५) आप पर ईमान

२ : १७,१८ आप का इन्कार करनेवाले वास्तव में बहरे, गूंगे और अन्धे हैं।
२ : १०१ आप को न मान कर किताब वाले स्वयं किताब से विमुख हो गए।
३ : ८१ आप पर ईमान लाने का वचन पिछले नबियों के अनुयायियों से लिया गया।
३ : ८४ सच्चे ईमान वाले तमाम रसूलों पर ईमान लाते हैं।
३ : ८६ आप को अल्लाह् का रसूल समझने वाले परन्तु आप पर ईमान न लाने वाले हिदायत नहीं पा सकते।
३ : ११० किताब वालों के लिए यही बेहतर था कि आप पर ईमान ले आते।
४ : ४२ आपका इन्कार करने वाले क़ियामत के दिन बहुत पछताएँगे।
४ : ११५ रसूल का विरोध करनेवालों का ठिकाना दोज़ख़ है।
४ : १५०, १५१ जो किसी रसूल को मानें और किसी को न मानें, वे पक्के काफ़िर हैं।
४ : १५२ आख़िरत की सफलता के लिए अनिवार्य है कि ख़ुदा और उस के नबियों पर ईमान लाये और उनमें से किसी में अन्तर न करे।
४ : १७० लोगो ! आप पर ईमान ले आओ। यही तुम्हारे लिए अच्छा है।
५ : १९ आपके आने के बाद किताब वालों के लिए बहाने का कोई मौका नहीं रहा।
६ : २० किताब वाले आपको ख़ूब पहचानते हैं। जो आप पर ईमान न लाये, वह बड़ी हानि उठाएँगे।
७ : १५७ आप वही नबी हैं जिन का वर्णन तौरात और इञ्जील में आया है। आप पर ईमान लानेवाले ही सफल हैं।
९ : ८० आपका इन्कार करनेवालों के लिए क्षमा नहीं।
४७ : ३२ रसूल का विरोध करने वालों का किया-धरा सब अकारथ जायेगा।
४८ : १३ जो आप पर ईमान न लाये, उसके लिए 'जहन्नम' है।
५७ : ७ आपपर ईमान लाओ
५७ : २८ आप पर ईमान लाने वालों के लिएँ दुहरा बदला है।
५८ : ५ आपका विरोध करनेवाले मुँह की खाएँगे।
६४ : ८ अल्लाह पर, रसूल पर और उस प्रकाश पर ईमान ले आओ जो अल्लाह् ने उतारा है।

(६) आपका आज्ञापालन

३ : ३१ आपकी पैरवी अल्लाह् से मुहब्बत की पहचान है।
३ : ३२ अल्लाह और रसूल का आज्ञापालन करो।
४ : १३, १४ अल्लाह और रसूल का आज्ञापालन करने वाले के लिए जन्नत है।

(हे नबी* !) हम ने इसी तरह तुम्हारी ओर किताब* उतारी है, तो वे लोग जिन्हें हम ने किताब* दी थी इस पर ईमान* लाते हैं;[४२] और इन (लोगों) में भी ऐसे हैं जो इस पर ईमान* लाते हैं[४३]। और हमारी आयतों* का इन्कार केवल काफ़िर* ही करते हैं। ○

और (हे नबी* !) तुम इस से पहले कोई किताब* नहीं पढ़ते थे, और न उसे हाथ से लिखते थे, (यदि ऐसा होता) जब तो मिथ्यावादी लोग सन्देह में पड़ सकते थे[४४]। ○ वे तो निशानियाँ हैं बिलकुल खुली हुई उन लोगों के सीनों में जिन्हें ज्ञान दिया गया है, और हमारी आयतों* का इन्कार केवल ज़ालिम करते हैं। ○

और इन का कहना है : क्यों न उतारी गई इस (व्यक्ति) पर निशानियाँ[४५] इस के रब* की ओर से ? कहो : निशानियाँ तो अल्लाह के पास हैं, और मैं तो बस एक खुला सचेत

१० करने वाला हूँ। ○

क्या इन लोगों के लिए यह काफ़ी नहीं कि हम ने तुम पर किताब उतारी जो इन्हें पढ़ कर सुनाई जाती है[४६] ? निश्चय ही इस में दयालुता है, और याददिहानी उन लोगों के लिए जो

पर बात-चीत का आरम्भ उन चीज़ों से नहीं करना चाहिए जिन में दोनों पक्षों के बीच मत-भेद पाया जाता है बल्कि वार्ता का आरम्भ सदा ऐसी चीज़ों से करना चाहिए जिन में दोनों पक्ष के लोग सहमत हों। फिर उन बातों के आधार पर जिन को दोनों पक्ष के लोग मानते हैं बात-चीत आगे बढ़ानी चाहिए और विधिपूर्वक यह समझाने की कोशिश करनी चाहिए जिन बातों में मत-भेद पाया जाता है उन में किस का मत सर्वमान्य आधार के अनुकूल है और किस पक्ष के विचार उस के प्रतिकूल हैं।

किताब* वाले और मुसलमान दोनों ही पक्ष के लोग 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) और नुबूवत* को मानते थे। यदि मत-भेद था तो हज़रत मुहम्मद सल्ल० की नुबूवत* और क़ुरआन* के ईश-वाणी होने के विषय में। आयत में किताब* वालों (ईसाइयों और यहूदियों) के सामने यह बात रखने की शिक्षा दी गई है कि हमारा और तुम्हारा अल्लाह एक ही है। जो किताबें तुम्हारी ओर भेजी गई थीं और जो रसूल* भी तुम्हारे यहाँ आये हैं हम उन्हें भी मानते हैं और जो-कुछ हमारी ओर भेजा जा रहा है हम उस पर भी ईमान* लाते हैं। हम तो अल्लाह के आज्ञाकारी हैं उस का हुक्म और उस की शिक्षा जहाँ-कहीं भी उतरी है हम उसे मानते हैं। आख़िर एक मुस्लिम* अथवा ईश-भक्त के लिए यह बात कैसे उचित हो सकती है कि अल्लाह का सन्देश एक जगह आये तो उस पर ईमान* लाये और उसी का सन्देश दूसरी जगह आये तो वह उस का इन्कार करने लग जाये।

४२ यहाँ किताब* वालों से अभिप्रेत सभी किताब वाले नहीं हैं बल्कि केवल वे किताब वाले* हैं जो वास्तव में अल्लाह की किताब का ज्ञान रखने वाले और उस का आदर करने वाले थे। जब क़ुरआन — जो अल्लाह की अन्तिम किताब है — आया तो उन्हों ने किसी हठ-धर्मी और पक्षपात से काम नहीं लिया बल्कि स्वेच्छा-पूर्वक उस पर ईमान* लाये और उन्हों ने इस का उसी प्रकार समर्थन किया जिस प्रकार वे पिछली आसमानी किताबों का समर्थन करते थे।

४३ यह संकेत अरब वालों की ओर है। सत्य-प्रिय लोग वहाँ भी थे क़ुरआन* की सच्चाई पर ईमान* ला रहे थे।

४४ मतलब यह है कि जब इस बात को सभी मानते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० कोई पढ़े-लिखे व्यक्ति नहीं हैं। और न किताब* वालों के साथ आप को रहने-सहने का अवसर प्राप्त हुआ है तो क्या यह इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं है कि आप (सल्ल०) अल्लाह के सच्चे रसूल* हैं। पिछले नबियों* के वृत्तान्त, आसमानी किताबों की शिक्षाओं का सविस्तार वर्णन, पिछली जातियों का इतिहास और जीवन के मौलिक विषयों पर आख़िर एक अशिक्षित व्यक्ति वह्य* (ईश-प्रेरणा) के बिना कैसे प्रकाश डाल सकता है। अब यदि आप (सल्ल०) को नबी* मानने से कोई इन्कार करता है, तो वह अपने ज्ञान का नहीं बल्कि वह अपने अज्ञान और पक्षपात का परिचय दे रहा है।

४५ अर्थात् चमत्कार जिन्हें देख कर हमें यह विश्वास हो कि मुहम्मद (सल्ल०) वास्तव में अल्लाह के रसूल* हैं।

४६ अर्थात् इस से बड़ा चमत्कार और क्या होगा कि एक अशिक्षित व्यक्ति उन के (शेष अगले पृष्ठ पर)

*इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

ईमान* लाते हैं। ○

(हे नबी*!) कहो : मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह का गवाह होना काफ़ी है। वह जानता है जो-कुछ आसमानों और ज़मीन में है। ये लोग जो मिथ्यात्व पर ईमान* लाये हैं और अल्लाह से कुफ़्र* किया, वही घाटे में हैं। ○ ये लोग तुम से अज़ाब के लिए जल्दी मचा रहे हैं। यदि एक नियत समय (अज़ाब के लिए) न होता, तो इन पर अज़ाब आ जाता। और वह अचानक इन पर आ कर रहेगा और उन्हें ख़बर भी न होगी। ○

ये तुम से अज़ाब के लिए जल्दी मचा रहे हैं, हालांकि दोज़ख़* काफ़िरों* को (अपने) घेरे में लिये हुये है। ○

जिस दिन अज़ाब उन्हें इन के ऊपर से ढांक लेगा और इन के पाँव के नीचे से भी, और कहेगा : चखो मज़ा उस का जो-कुछ तुम करते थे! ○

हे मेरे बन्दो जो ईमान* लाये हो! मेरी ज़मीन विशाल है। अतः तुम मेरी ही इबादत* करो[४७]। ○

हर एक जीव को मौत का मज़ा चखना है। फिर तुम्हें हमारी ओर पलट कर आना होगा। ○ जो लोग ईमान* लाये और अच्छे काम किये, उन्हें हम जन्नत* के भवनों में बसायेंगे जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी। वहाँ वे सदैव रहेंगे। क्या ही अच्छा बदला है कर्म करने वालों के लिए! ○—जिन्हों ने सब्र* किया और अपने रब* पर भरोसा रखते हैं! ○

कितने ही जानवर हैं जो अपनी रोज़ी उठाये नहीं फिरते! अल्लाह ही उन्हें रोज़ी देता है और तुम्हें भी। और वह (सब-कुछ) सुनने वाला और जानने वाला है[४८]। ○

सामने कुरआन जैसा महान् ग्रन्थ प्रस्तुत कर रहा है। क्या यह चमत्कार उस अशिक्षित व्यक्ति के नबी होने का खुला प्रमाण नहीं है।*

४७ यह हिजरत की ओर संकेत है। मतलब यह है कि यदि काफ़िरों* की शत्रुता के कारण मक्के में अल्लाह की इबादत* और बन्दगी करनी मुश्किल हो गई है तो अल्लाह की ज़मीन कोई तंग नहीं है तुम स्वदेश त्याग कर कहीं दूसरी जगह चले जाओ जहाँ स्वतन्त्रता पूर्वक अल्लाह की बन्दगी और इबादत* कर सको। अल्लाह की बन्दगी और भक्ति के मुक़ाबिले में देश, जाति आदि कोई चीज़ नहीं। अपनी जाति और देश की माया में पड़ कर ईमान* को छोड़ना बड़े ही घाटे का सौदा होगा।*

४८ अर्थात् हिजरत करने में तुम्हें इस की चिन्ता नहीं करनी चाहिए कि स्वदेश से निकल कर हम क्या खायेंगे। तुम देखते ही हो कितने ही जीव-जन्तु और पशु-पक्षी को अल्लाह पाल रहा है। वे जहाँ-कहीं जाते हैं किसी-न-किसी तरह इन की जीविका का प्रबन्ध होता ही है। क्या इन में से हर एक अपनी रोज़ी उठाये फिरता है? नबी सल्ल० ने भी कहा है : "यदि तुम अल्लाह पर सच-मुच भरोसा रखते तो वह तुम्हें रोज़ी देता जिस तरह चिड़ियों को देता है ये प्रातःकाल भूखी निकलती हैं तो पेट ख़ाली होते हैं और सन्ध्या को लौटती हैं तो पेट भरे होते हैं"।*

यही बात एक ऐसे ही वातावरण में हज़रत मसीह ने भी कही थी जैसी परिस्थिति में अल्लाह ने ये आयतें उतारी हैं। हज़रत मसीह अ० ने कहा था :

कोई व्यक्ति दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता। क्योंकि या तो एक से बैर रखेगा और दूसरे से प्रेम, या एक से मिला रहेगा और दूसरे को ना-चीज़ जानेगा। तुम अल्लाह और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते। इस लिए मैं कहता हूँ कि अपने प्राण की चिन्ता न करना कि हम क्या खायेंगे, और न अपने शरीर की क्या पहनेंगे। क्या प्राण भोजन से और शरीर वस्त्र से बढ़ कर नहीं? हवा के पक्षियों को देखो कि न बोते हैं न काटते हैं, न कोठियों में इकट्ठा करते हैं। फिर भी तुम्हारा आसमानी बाप उन को खिलाता है। क्या तुम उन से अधिक मूल्य नहीं रखते? तुम में से कौन है जो चिन्ता कर के अपनी आयु में एक घड़ी भी बढ़ा सके? और [illegible] क्यों चिन्ता करते हो? जंगली सोसन के पुष्पों (Lilies) को ध्यान से देखो कि वे किस [illegible] परिश्रम करते हैं और न कातते हैं, फिर भी मैं तुम से कहता (शेष अगले पृष्ठ पर)

* आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

يَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ بِالْكٰفِرِينَ ۝
يَوْمَ يَغْشٰهُمُ الْعَذَابُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ أَرْجُلِهِمْ وَيَقُولُ
ذُوقُوا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ يٰعِبَادِيَ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ أَرْضِي
وَاسِعَةٌ فَإِيَّايَ فَاعْبُدُونِ ۝ كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ثُمَّ
إِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ
مِنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِينَ فِيهَا نِعْمَ
أَجْرُ الْعٰمِلِينَ ۝ الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۝ وَ
كَأَيِّنْ مِنْ دَابَّةٍ لَا تَحْمِلُ رِزْقَهَا اللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَإِيَّاكُمْ وَ
هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ
الْأَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَيَقُولُنَّ اللّٰهُ فَأَنّٰى يُؤْفَكُونَ ۝
اللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ إِنَّ اللّٰهَ
بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً
فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِ مَوْتِهَا لَيَقُولُنَّ اللّٰهُ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ
بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ۝ وَمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَهْوٌ
وَلَعِبٌ وَإِنَّ الدَّارَ الْآخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝
فَإِذَا رَكِبُوا فِي الْفُلْكِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ فَلَمَّا نَجّٰهُمْ
إِلَى الْبَرِّ إِذَا هُمْ يُشْرِكُونَ ۝ لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنٰهُمْ وَلِيَتَمَتَّعُوا

[४९]और तुम इन लोगों से पूछो कि आसमानों और ज़मीन को किस ने पैदा किया, और सूर्य और चन्द्रमा को (किस ने तुम्हारे) काम में लगा रखा है ? तो अवश्य कहेंगे : अल्लाह ने। फिर कहाँ से उलटे भटके चले जा रहे हैं ? ○

अल्लाह जिस की चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है, और जिस की चाहता है नपी-तुली कर देता है। निस्सन्देह अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। ○

और यदि तुम इन से पूछो[५०] : किस ने आसमान से पानी बरसाया, फिर उस के द्वारा भूमि को उस के मुरदा हो जाने के पीछे जीवित किया ? तो वे अवश्य कहेंगे : अल्लाह ने। कहो : प्रशंसा (हम्द*) अल्लाह के लिए है ! परन्तु अधिकतर लोग समझते नहीं। ○

और यह सांसारिक जीवन तो केवल एक मन-बहलाव और खेल है[५१]। और आख़िरत* का घर ही वास्तव में जीवन-मय है, क्या ही अच्छा होता यदि ये लोग जानते[५२]। ○

जब ये लोग नौका में सवार होते हैं तो अल्लाह को पुकारते हैं, दीन* को उस के लिए ख़ालिस कर के, फिर जब वह उन्हें बचा कर थल की ओर ले आता है, तो तत्काल शिर्क*
६१ करने लगते हैं, ○ ताकि (इस तरह) जो-कुछ हम ने इन्हें दिया है उस के साथ कुफ़्र* करें,[५३] और ताकि (इस तरह) सुख भोगें। अच्छा, जल्द ही ये जान लेंगे। ○

हूँ कि सुलैमान भी अपनी सारी भव्यता के होते हुये भी इन में से किसी के समान वस्त्र धारण किये हुये न था। तो जब अल्लाह मैदान की घास को जो आज है और कल तनूर में झोंकी जायेगी ऐसा वस्त्र पहनाता है, तो हे अल्प-विश्वासी लोगों ! तुम को क्यों न पहनायेगा। इस लिए चिन्तित न हो कि हम क्या खायेंगे या क्या पहनेंगे। इन सब चीज़ों की खोज में तो पराई जातियाँ रहती हैं। तुम्हारा आसमानी बाप (Heavenly Father) जानता है कि तुम इन सब चीज़ों के मुहताज हो। तुम पहले उस के राज्य (Kingdom) और उस की सत्य-परायणता की खोज करो। ये सब चीज़ें तुम्हें मिल जायेंगी। कल के लिए चिन्ता न करो कल का दिन आप अपनी चिन्ता कर लेगा। आज के लिए आज ही का दुःख काफ़ी है।"

दे० बाइबिल मत्ती (Mtt.) ६ : २४-३४। हज़रत मसीह का इसी प्रकार का एक भाषण 'लूक़ा' (Luke) की इञ्जील में भी मिलता है (दे० १२ : २२-३४)।

४९ यहाँ से सम्बोधन मक्का वालों से है।

५० दे० सूरः लुक़मान आयत २५, सूरः अज़्-ज़ुख़रुफ़ आयत ९।

५१ इस सांसारिक जीवन का हाल कुछ उस खेल से भिन्न नहीं जो बच्चे अपने मन-बहलाव के लिए खेलते हैं। जिस तरह बच्चे थोड़ी देर तक खेल-कूद कर अपने घर को सिधार जाते हैं उसी प्रकार एक समय आता है कि हमारे जीवन का खेल भी समाप्त हो जाता है और हम एक दूसरी दुनियाँ की ओर चले जाते हैं। हम वास्तव में दूसरी ही दुनियाँ की आत्मायें हैं।

५२ यदि ये लोग इस बात को समझ लेते, तो अपने समय को व्यर्थ कामों में नष्ट न करते बल्कि उसे आख़िरत* की तैयारी में लगाते।

५३ अर्थात् उस पर हमारा एहसान न मानें और अकृतज्ञ हो कर रहें। दे० सूरः अर-रूम आयत ३४।

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

३०--अर-रूम
(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः* का नाम "अर-रूम" सूरः की पहली आयत* में लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

सूरः* के आरम्भ में कहा गया है : "रूमी पराजित हो गये हैं निकटस्थ प्रदेश में"। उस समय अरब से निकट रूमियों को जहां अधिकार प्राप्त था वे, उरदुन, शाम (Syria) और फ़लिस्तीन (Palestine) के क्षेत्र थे। इन पर ईरानियों को पूर्ण-रूप से विजय सन् ६१४ ई० (हिजरत से ६ वर्ष पूर्व) प्राप्त हुई है। इस लिए हम निश्चय-पूर्वक कह सकते हैं कि इसी वर्ष यह सूरः अवतीर्ण हुई है। इसी वर्ष काफ़िरों* के अत्याचार से तंग आ कर एक बड़ी सख्या में मुसलमानों ने हब्श: (Abyssinia) को हिजरत* की थी।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

ईरानियों और रूमियों में युद्ध का आरम्भ एक विशेष घटना से हुआ था परन्तु इस युद्ध ने आगे चल कर धर्म-युद्ध का रंग धारण कर लिया। नबी सल्ल० की नुबूवत* से ८ वर्ष पहले की बात है कि रूम के क़ैसर (Caesor of Rome) मारीस (Maurice) के विरुद्ध विद्रोह हुआ। फ़ोकास (Phocas) नामक एक व्यक्ति ने न केवल यह कि क़ैसर से उस का राज्य छीन लिया बल्कि उस की आँखों के सामने उस के पाँच बेटों को मरवा डाला। और फिर क़ैसर को भी मरवा दिया। इस के थोड़े ही दिनों के बाद क़ैसर की पत्नी और उस की तीन लड़कियों को क़त्ल करा दिया। ईरान के सम्राट ख़ुसरू परवेज़ (Khosrou Parviz) को जब इस घटना की सूचना मिली तो उस ने निश्चय कर लिया कि वह फ़ोकास से उस के ज़ुल्म का बदला ले कर रहेगा। मारीस का उस पर एहसान था उसी की सहायता से उसे ईरान की राज-गद्दी मिली थी। सन् ६०३ ई० में उस ने फ़ोकास के विरुद्ध लड़ाई आरम्भ कर दी और फ़ोकास की सेना को निरन्तर पराजित करता हुआ आगे ही बढ़ता गया। जब रूम राज्य के उच्च अधिकारियों ने यह हाल देखा तो उन्हों ने अफ़रीक़ा के गवर्नर से मदद माँगी। उस ने अपने बेटे हिरक़्ल (Heraclius) को एक ताक़तवर बेड़े के साथ भेज दिया। उस के क़ुस्तुनतुनिया पहुँचते ही फ़ोकास को राज-सिंहासन से उतार दिया गया और उस की जगह हिरक़्ल को रूम राज्य सौंप दिया गया। हिरक़्ल ने फ़ोकास के साथ वही व्यवहार किया जो वह मारीस के साथ कर चुका था। यह सन् ६१० ई० की बात है।

परवेज़ ने अब भी युद्ध से अपना हाथ नहीं रोका बल्कि उस ने इस लड़ाई को ईसाइयत और मजूसियत के धार्मिक युद्ध का रंग दे दिया इस लड़ाई में यहूदियों के अतिरिक्त उन ईसाई सम्प्रदायों ने भी ईरानियों का साथ दिया जिन्हें रूम राज्य के

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

बड़े पादरी (the Head of the Roman Church) ने विधर्मी ठहराया था और जिन पर वर्षों से अत्याचार हो रहा था। हरक़ल ईरानियों को पराजित करने में असफल रहा। ईरानियों का साहस बहुत बढ़ चुका था वे आगे ही बढ़ते जा रहे थे। सन् ६१३ ई० में ईरानियों ने दमिश्क पर विजय प्राप्त कर ली सन् ६१४ ई० में 'बैतुल मक़दिस' भी रूमियों के हाथ से निकल गया। ईरानियों ने इस नगर को तहस-नहस कर दिया। नगर के समस्त बड़े-बड़े गिरजाघर ढा दिये गये। जिन ईसाइयों की हत्या इस नगर में की गई उन की संख्या ९० हज़ार तक पहुँचती है। परवेज़ पर गर्व और अहंकार का भूत सवार था। उस ने हरक़ल को 'बैतुल-मक़दिस' से लिखा : "तू कहता है कि तुझे अपने रब* पर भरोसा है। तेरे रब* ने मेरे हाथ से यूरुशलम को क्यों नहीं बचाया"। इस के एक वर्ष के बाद ही उरदुन, फ़लिस्तीन और प्रायद्वीप सीना के सम्पूर्ण भाग रूमियों के हाथ से निकल गये। और रूमी सेना मिस्र की सीमा में घुस गई।

अरब के मुश्रिक* रूमियों के पराजित होने से बहुत ख़ुश थे। कहते थे कि जिस तरह ईरानी वह्य* और रिसालत* को मानने वाले ईसाइयों को परास्त करते जा रहे हैं उसी तरह हम भी मुहम्मद (सल्ल०) और उन के अनुयायियों के धर्म का सत्यानाश कर के रहेंगे। इसी परिस्थिति में सूरः अर-रूम अवतीर्ण होती है और भविष्य के प्रति यह सूचना देती है कि कुछ ही वर्षों में रूमियों को विजय प्राप्त होगी। और वह ऐसा दिन होगा कि ईमान* वालों को अल्लाह की मदद से ख़ुशी होगी। हालांकि जैसी कुछ परिस्थिति थी उस में इस की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी कि रूमी ईरानियों को कभी पराजित कर सकेंगे। रूमी सेना निरन्तर परास्त होती जा रही थी यहाँ तक कि क़ैसर ने विवश हो कर ईरान से सन्धि कर लेने का निश्चय कर लिया और ईरान के सम्राट के पास अपना दूत भी भेज दिया। परन्तु परवेज़ ने कहा कि मेरी ओर से क़ैसर को उस समय तक सुरक्षा नहीं मिल सकती जब तक वह ज़ंजीर में बँधा हुआ मेरे सामने हाज़िर न हो और अपने ख़ुदा को छोड़ कर अग्नि की पूजा न करने लग जाये।

क़ुरआन ने जब इस बात की घोषणा की कि रूमी विजयी होंगे तो मक्का के काफ़िरों* ने इस की हँसी उड़ाई यहाँ तक कि उबई बिन ख़ल्फ़ ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० से यह शर्त बदी कि यदि तीन वर्ष के भीतर रूमियों ने विजय प्राप्त कर ली तो मैं दस ऊँट हार जाऊँगा नहीं तो दस ऊँट तुम्हें देने पड़ेंगे। जब नबी सल्ल० को यह बात मालूम हुई तो आप ने कहा कि क़ुरआन में 'बिज़्अ सिनीन' के शब्द आये हैं, 'बिज़्अ' शब्द अरबी भाषा में दस से कम के लिए आता है। इस लिए इस के भीतर शर्त कर लो और ऊँट की संख्या बढ़ा कर १०० कर दो। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फिर से बात की और शर्त यह ठहरी कि १० वर्ष के भीतर दोनों में से जिस की बात असत्य सिद्ध होगी वह १०० ऊँट देगा। क़ुरआन की इस भविष्य- ... ७—८ वर्ष के बाद भी इस की कोई कल्पना नहीं कर सकता था कि रूम प्राप्त हो सकती है।

इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सन् ६२२ ई० में नबी सल्ल० मक्का से हिजरत* कर के मदीना जाते हैं। उधर हरक्ल चुपके से क़ुस्तुनतुनिया से कृष्ण सागर (Black Sea) के मार्ग से तराबज़ुन की ओर चल पड़ा। जहाँ उस ने ईरान पर पीछे की ओर से आक्रमण करने की तैयारी की। हरक्ल ने सन् ६२३ ई० में अरमीनिया (Armenia) से आक्रमण का आरम्भ किया। सन् ६२४ ई० में उस ने आज़रबीजान (Azerbeidian) में पहुँच कर अरमियाह को जो ज़रतुश्त का जन्म-स्थान था तहस-नहस किया और ईरानियों के सब से बड़े अग्नि-कुण्ड को तबाह कर दिया। इसी वर्ष मुसलमानों ने 'बद्र' की लड़ाई में मुशिरकों* को परास्त किया। इस तरह क़ुरआन की भविष्यवाणी १० वर्ष की अवधि समाप्त होने से पहले पूर्णतः पूर्ण हुई।

रूमी सेना ईरानियों को परास्त करती गई। उधर परवेज़ के विरुद्ध घर में विद्रोह हुआ। वह क़ैद हुआ और उस की आँखों के सामने उस के १८ बेटों का वध किया गया कुछ ही दिन के भीतर वह भी क़ैद के कष्टों से मृत्यु के घाट उतरा।

केन्द्रीय विषय तथा वार्तायें

सूरः* का आरम्भ करते हुये बताया गया है कि रूमी पराजित हो गये हैं परन्तु वह दिन दूर नहीं कि उन्हें विजय प्राप्त होगी। साधारणतः मनुष्य वही देखता है जो उसे अपनी आँखों से दिखाई देता है वह नहीं जानता कि भविष्य में क्या होने वाला है और आज की अपेक्षा उस का "कल" कैसा रहेगा। रूम और ईरान की समस्या से स्वभावतः तक़रीर का रुख़ आख़िरत* की ओर फिर गया है और फिर आगे चल कर आख़िरत* से तौहीद* के विषय की ओर तक़रीर का रुख़ फिर जाता है।

इस सूरः* और पिछली सूरः में गहरा सम्पर्क पाया जाता है। पिछली सूरः को समाप्त करते हुये जिस चीज़ का वादा किया गया है[1] प्रस्तुत सूरः में उस का स्पष्ट रूप से उल्लेख हुआ है। सत्य की विजय होती है यह अल्लाह का वादा है। *अन्याय और अत्याचार की आयु अधिक नहीं होती। बुराई और बिगाड़ का कारण लोगों के अपने ही करतूत होते हैं*[2]। यह संसार न्याय ही के आधार पर चल रहा है। एक गरोह का दूसरे गरोह के बाद आना और एक का दूसरे पर विजय प्राप्त करना विशेषतः उस समय जब कि उस के विजयी होने की कोई आशा न हो यह विचार-शील व्यक्तियों के लिए इस बात का खुला प्रमाण है कि यह संसार कोई अन्धेर नगरी नहीं है कि यहां अराजकता का ही राज्य हो। बल्कि इस लोक का एक स्वामी और शासक है जो सब-कुछ सुनने और देखने वाला है। जो एक को दूसरे से हटाता रहता है। यदि ऐसा न होता तो संसार में मनुष्य का जीना असम्भव होता। इसी तरह अल्लाह यदि ईमान* वालों की सहायता करता और मुशिरकों को हलाक करता है तो यह इस बात की निशानी है कि इस "आज" का अवश्य एक "कल" है। अल्लाह का वादा अवश्य पूरा हो कर रहेगा। क़ियामत* आयेगी। मुशिरकों* के देवी-देवता उन के कुछ काम न आ सकेंगे। वे न उन की सिफ़ारिश कर सकेंगे

[1] दे० पिछली सूरः की अन्तिम आयत।
[2] दे० आयत ६।

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अर-रूम

(मक्का में उतरी — आयतें* ६०)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

सورة الروم مكية وهي ستون آية وست ركوعات

بسم الله الرحمن الرحيم

الم ۝ غلبت الروم ۝ في أدنى الأرض وهم من بعد غلبهم
سيغلبون ۝ في بضع سنين لله الأمر من قبل ومن بعد
ويومئذ يفرح المؤمنون ۝ بنصر الله ينصر من يشاء وهو
العزيز الرحيم ۝ وعد الله لا يخلف الله وعده ولكن أكثر
الناس لا يعلمون ۝ يعلمون ظاهرا من الحياة الدنيا وهم
عن الآخرة هم غافلون ۝ أولم يتفكروا في أنفسهم ما
خلق الله السماوات والأرض وما بينهما إلا بالحق وأجل
مسمى وإن كثيرا من الناس بلقاء ربهم لكافرون ۝ أولم
يسيروا في الأرض فينظروا كيف كان عاقبة الذين من قبلهم
كانوا أشد منهم قوة وأثاروا الأرض وعمروها أكثر مما
عمروها وجاءتهم رسلهم بالبينات فما كان الله ليظلمهم ولكن
كانوا أنفسهم يظلمون ۝ ثم كان عاقبة الذين أساءوا السوأى
أن كذبوا بآيات الله وكانوا بها يستهزئون ۝ الله يبدأ الخلق ثم
يعيده ثم إليه ترجعون ۝ ويوم تقوم الساعة يبلس المجرمون ۝
ولم يكن لهم من شركائهم شفعاء وكانوا بشركائهم كافرين ۝
ويوم تقوم الساعة يومئذ يتفرقون ۝ فأما الذين آمنوا وعملوا
الصالحات فهم في روضة يحبرون ۝ وأما الذين كفروا وكذبوا
بآياتنا ولقاء الآخرة فأولئك في العذاب محضرون ۝ فسبحان
الله حين تمسون وحين تصبحون ۝ وله الحمد في السماوات و
الأرض وعشيا وحين تظهرون ۝ يخرج الحي من الميت و
يخرج الميت من الحي ويحيي الأرض بعد موتها وكذلك

ع

'अलिफ़० लाम० मीम०'[1] । ○ रूमी पराजित हुये ○ निकटस्थ प्रदेश में, और अपनी पराजय के पश्चात्, वे विजयी हो जायेंगे। ○ कुछ वर्षों के भीतर[2] — अल्लाह ही का अधिकार है पहले भी और बाद में भी[3] — और उस दिन ईमान वाले* ख़ुश हो जायेंगे[4] ○ अल्लाह की मदद से। वह मदद देता है जिसे चाहता है। और वह अपार शक्ति का ५ मालिक और दया करने वाला है। ○ यह वादा अल्लाह का है[5]। अल्लाह अपने वादे के विरुद्ध नहीं जाता, परन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं। ○

वे सांसारिक जीवन के केवल ज़ाहिर को जानते हैं, और वे आख़िरत* से तो ग़ाफ़िल ही हैं। ○ क्या उन्हों ने अपने-आप में सोच-विचार नहीं किया? अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को, और जो-कुछ उन के बीच है केवल हक़* के साथ और नियत समय के लिए पैदा किया है। परन्तु अधिकतर लोग अपने रब* से मिलने को नहीं मानते। ○

क्या ये लोग ज़मीन में चले-फिरे नहीं हैं कि देखते कि उन लोगों का कैसा परिणाम हुआ जो इन से पहले थे? वे शक्ति में इन से बढ़े हुए थे, और उन्हों ने ज़मीन को उथल-पुथल किया[1] और उसे उस से अधिक आबाद किया जितना इन्हों ने उसे आबाद किया है। उन के पास उन के रसूल* खुली दलीलें ले कर आये। फिर यह नहीं होने का कि अल्लाह उन पर ज़ुल्म करे, परन्तु वे स्वयं अपने-आप पर ज़ुल्म करते थे। ○

फिर जिन लोगों ने बुराई की थी उन का परिणाम बुरा हुआ, इस लिए कि उन्हों ने १० अल्लाह की आयतों* को झुठलाया और वे उन की हँसी उड़ाते थे। ○

---

१ दे० सूरः अल-बक़रः फुट नोट १।

२ दे० सूरः का परिचय।

३ अर्थात् हुक्म और अधिकार अल्लाह ही के हाथ में है वह जिसे चाहता है उठाता है और जिसे चाहता गिराता है।

४ रूम (the Romans) को सन् ६२४ ई० में ईरानियों पर विजय प्राप्त हुई है यह समय वही है जब मुसलमानों ने 'बद्र' की लड़ाई में मुश्रिकों* को परास्त किया। इस लिए मुसलमानों को (शेष अगले पृष्ठ पर)

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

تخرجون ۝ ومن ءايته ان خلقكم من تراب ثم اذا انتم بشر
تنتشرون ۝ ومن ءايته ان خلق لكم من انفسكم ازواجا لتسكنوا
اليها وجعل بينكم مودة ورحمة ان في ذلك لايت لقوم
يتفكرون ۝ ومن ءايته خلق السموت والارض واختلاف
السنتكم والوانكم ان في ذلك لايت للعلمين ۝ ومن ءايته
منامكم باليل والنهار وابتغاؤكم من فضله ان في ذلك
لايت لقوم يسمعون ۝ ومن ءايته يريكم البرق خوفا وطمعا
وينزل من السماء ماء فيحي به الارض بعد موتها ان في ذلك
لايت لقوم يعقلون ۝ ومن ءايته ان تقوم السماء والارض
بامره ثم اذا دعاكم دعوة من الارض اذا انتم تخرجون ۝
وله من في السموت والارض كل له قنتون ۝ وهو الذي
يبدؤا الخلق ثم يعيده وهو اهون عليه وله المثل الاعلى
في السموت والارض وهو العزيز الحكيم ۝ ضرب لكم مثلا
من انفسكم هل لكم من ما ملكت ايمانكم من شركاء في
ما رزقنكم فانتم فيه سواء تخافونهم كخيفتكم انفسكم كذلك
نفصل الايت لقوم يعقلون ۝ بل اتبع الذين ظلموا اهواءهم
بغير علم فمن يهدي من اضل الله وما لهم من نصرين ۝
فاقم وجهك للدين حنيفا فطرت الله التي فطر الناس عليها
لا تبديل لخلق الله ذلك الدين القيم ولكن اكثر الناس لا
يعلمون ۝ منيبين اليه واتقوه واقيموا الصلوة ولا تكونوا من
المشركين ۝ من الذين فرقوا دينهم وكانوا شيعا كل حزب
بما لديهم فرحون ۝ واذا مس الناس ضر دعوا ربهم
منيبين اليه ثم اذا اذاقهم منه رحمة اذا فريق منهم بربهم

अल्लाह पहली बार पैदा करता है, फिर वह इस की पुनरावृत्ति करेगा,* फिर उसी की ओर तुम्हें पलटना होगा। O

और जिस दिन वह घड़ी[ॅ] क़ायम होगी अपराधी लोग नैराश्य से अवाक् हो कर रह जायेंगे'। O उन के (ठहराये हुये) शरीकों में कोई उन का सिफ़ारिशी न होगा। और वे अपने (ठहराये हुये) शरीकों का इन्कार करने वाले हो जायेंगे। O

और जिस दिन वह घड़ी'' क़ायम होगी, उस दिन लोग अलग-अलग हो जायेंगे''। O तो जो लोग ईमान* लाये और अच्छे काम किये, वे एक बाग़ में रखे जायेंगे प्रफुल्ल। O और जिन लोगों ने कुफ़्र* किया और हमारी आयतों* को, और आख़िरत* की मुलाक़ात को झुठलाया, वे अज़ाब में हाज़िर रखे जायेंगे। O ११

तो अब अल्लाह की तसबीह* करना है'' जब कि तुम शाम करो और जब सुबह करो O — उसी के लिए प्रशंसा (हम्द*) है आसमानों में और ज़मीन में। — और तीसरे पहर और जब तुम 'ज़ुहर' करो''। O वह सजीव को निर्जीव में से निकालता है, और निर्जीव को सजीव में से, और ज़मीन को उस की मौत के बाद जीवन प्रदान करता है। इसी तरह तुम भी (मृत्यु की दशा से) निकाले जाओगे। O

२० उस की निशानियों में से यह है कि उस ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर क्या देखते हैं कि तुम मनुष्य हो चलते-फिरते हो ! O

और उस की निशानियों में से यह है कि उस ने तुम्हारे लिए स्वयं तुम ही में से जोड़े पैदा किये'' ताकि तुम उन के पास आराम और चैन पाओ, और तुम्हारे बीच प्रेम और दयालुता रख दी। निस्सन्देह इस में बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सोच-विचार करते हैं। O

और उस की निशानियों में से आसमानों और ज़मीन का पैदा करना, और तुम्हारी भाषाओं और रंगों की भिन्नता है। निस्सन्देह इस में बहुत सी निशानियाँ हैं ज्ञान वालों के लिए। O

और उस की निशानियों में से है तुम्हारा रात और दिन को सोना, और उस के फ़ज़्ल'' को तलाश करना। निस्सन्देह इस में बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सुनते हैं''। O

दोहरी ख़ुशी हासिल हुई एक अपने विजयी होने की दूसरे रूमियों के विजय प्राप्त करने की। रूम और ईरान के युद्ध में स्वभावतः मुसलमानों को रूमी लोगों के साथ सहानुभूति थी। (दे० सूरः का परिचय)।

५ दे० आयत ५७, ६०।

६ अर्थात् ज़मीन पर धूम मचा दी। कहीं खेतियाँ की जा रही हैं, तो कहीं से खनिज पदार्थ निकाले जा रहे हैं, तो कहीं नहरों के निकालने की योजना है और कहीं किसी पर चढ़ाई की जा रही है।

(७ से १६ तक अगले पृष्ठ पर)

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

और उस की निशानियों में से यह है कि वह तुम्हें बिजली की चमक दिखाता है डर के साथ भी और आशा के साथ भी,[17] और आसमान से पानी बरसाता है, फिर उस के द्वारा ज़मीन को उस की मृत्यु के पश्चात् जीवन प्रदान करता है। निस्सन्देह इस में बहुत-सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो बुद्धि से काम लेते हैं। ○

और उस की निशानियों में से यह है कि आसमान और ज़मीन उस के हुक्म से क़ायम २५ हैं, फिर ज्यों ही, उस ने तुम्हें एक आवाज़ दी ज़मीन से तुम निकल पड़ोगे। ○— [18]आसमानों और ज़मीन में जो कोई भी है उसी का है। सभी उस की आज्ञा का पालन करने वाले हैं। ○ और वही है जो पहली बार पैदा करता है, फिर उस की पुनरावृत्ति करेगा,[19] और यह उस के लिए अधिक सरल है। आसमानों और ज़मीन में उस की मिसाल सर्वोच्च है। और वह अपार शक्ति का मालिक और हिकमत* वाला है। ○

वह तुम्हारे लिए स्वयं तुम में से एक मिसाल देता है। क्या ऐसा है कि जिन (ग़ुलामों) के तुम मालिक हो, उन में से कुछ लोग उस (धन-सम्पत्ति) में जिसे हम ने तुम्हें प्रदान किया है, तुम्हारे साथ बराबर के शरीक हों तुम्हें उन का डर रहता हो जैसा कि तुम्हें अपनों का डर रहता है[20] ? इस तरह आयतों* को हम खोल कर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो बुद्धि से काम लेते हैं। ○

नहीं, बल्कि जो ज़ालिम हैं वे बिना ज्ञान के अपनी (तुच्छ) इच्छाओं पर चलते हैं। तो कौन उसे राह दिखा सकता है जिसे अल्लाह ने भटका दिया हो ? ऐसे लोगों का कोई सहायक नहीं[21]। ○

---

७ अर्थात् वह फिर दोबारा पैदा करेगा। और एक किये हुये काम को दोहराना कुछ भी मुश्किल नहीं।

८ अर्थात् क़ियामत* की घड़ी।

९ अर्थात् वे निराश और भयभीत होकर रह जायेंगे और सारी चौकड़ी भूल जायेंगे।

१० दे० फुट नोट ८।

११ अर्थात् अच्छे और बुरे लोग अलग-अलग कर दिये जायेंगे। जैसा कि अगली आयत* में आ रहा है।

१२ अर्थात् नमाज़* पढ़ो और अपनी नमाज़ों के द्वारा अल्लाह की बड़ाई करो।

१३ इस आयत* में नमाज़* के चार वक़्तों, फ़ज्र*, मग़रिब*, अस्र* और ज़ुह्र*— की ओर संकेत है। क़ुरआन की दूसरी आयतों में इशा* की नमाज़* की ओर भी संकेत किया गया है। (दे० सूरः हूद आयत ११४, बनी इसराईल आयत ११८ और ता० हा० आयत १३०)। इस प्रकार क़ुरआन ने पाँचों वक़्तों की नमाज़ की ओर संकेत किया है।

१४ अर्थात् तुम्हारे ही वर्ग और जाति से (of the same kind) तुम्हारे लिए जोड़े बनाये, स्त्री के लिए पुरुष और पुरुष के लिए स्त्री। जिन में परस्पर गहरा सम्पर्क, अनुकूलता और एकात्मता पाई जाती है। दोनों एक-दूसरे की मनोवस्था और प्राकृतिकप्रेरणाओं का पूर्ण उत्तर हैं। दोनों एक दूसरे से मिल कर ही चैन और आराम पाते हैं। स्त्री-पुरुष के योग के बिना न तो मानव-समाज का निर्माण सम्भव है और न इस के बिना किसी सभ्यता और संस्कृति की स्थापना की कल्पना की जा सकती है।

१५ अर्थात् आजीविका।

१६ अर्थात् ध्यान देते हैं।

१७ अर्थात् गरज-चमक से यह आशा होती है कि वर्षा होगी, खेतियाँ हरी-भरी हो जायेंगी और यह भय भी होता है कि कहीं बिजली न गिर पड़े, ओले न पड़ने लगें।

१८ यहाँ से आयत-४५ तक व्यवहित वर्णन है। आयत ४६ आयत २५ से सम्बद्ध है।

१९ दे० आयत ११।

२० सारांश यह है कि अल्लाह के दिये हुये धन-सम्पत्ति में जब तुम अपने दासों को शरीक नहीं समझते, तो फिर यह कौन सा न्याय है कि अल्लाह ही की सृष्टि के जीव आदि को उस का शरीक बनाते हुये तुम्हें कुछ भी संकोच नहीं होता। (२१ अगले पृष्ठ पर)

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

अतः हर ओर से कट कर अपना रुख़ इस दीन* की ओर जमा दो[११]— यही अल्लाह की (बनाई हुई) प्रकृति जिस पर उस ने मनुष्य की सृष्टि की है[१२]। अल्लाह की सृष्टि में कोई परिवर्तन नहीं होने का। यही ठीक दीन* है, परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते ○— १०

उस की ओर[१३] रुजू (प्रवृत्त) होते हुये और डरो उस से और नमाज़* क़ायम रखो, और मुश्रिकों* में से न हो; ○

जिन्हों ने अपना दीन* अलग-अलग कर लिया, और जत्थों में बँटे हुये हैं, हर एक गरोह के पास जो-कुछ है उसी में वह मग्न है। ○

लोगों को जब कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो वे अपने रब* को उस की ओर रुजू (प्रवृत्त) होकर पुकारते हैं; फिर जब, वह उन्हें अपनी दयालुता का रसास्वादन कराता है, तो झट उन में से कुछ लोग अपने रब* के साथ शिर्क* करने लग जाते हैं ○ ताकि हम ने जो-कुछ उन्हें दिया है उस के साथ कुफ़्र* करें। अच्छा, सुख भोग लो, जल्द ही तुम जान लोगे।○

क्या हम ने उन पर कोई सनद उतारी है कि वह उस शिर्क* के हक़ में बोलती हो जो वे उस के[१४] साथ करते हैं ? ○ ११

जब हम लोगों को दयालुता का रसास्वादन कराते हैं तो वे उस पर फूल जाते हैं और जो-कुछ उन के हाथों ने आगे भेजा है यदि उस के कारण उन पर कोई मुसीबत आती है, तो वे निराश होने लगते हैं। ○

क्या इन लोगों ने देखा नहीं कि अल्लाह जिस के लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है, और (जिस के लिए चाहता है) नपी-तुली कर देता है। निस्सन्देह इस में बहुत-सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ईमान* लाते हैं। ○

तो नातेदार को उस का हक़ दो, और मुहताज, और मुसाफ़िर को (उस का हक़)। यह उत्तम है उन के लिए जो अल्लाह की ख़ुशी चाहते हैं। और वही सफल हैं।○

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

يُشْرِكُونَ ۝ لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ ۚ فَتَمَتَّعُوا فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝ أَمْ
أَنْزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوا بِهِ يُشْرِكُونَ ۝ وَإِذَا
أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوا بِهَا ۖ وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ
أَيْدِيهِمْ إِذَا هُمْ يَقْنَطُونَ ۝ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ
يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝ فَآتِ ذَا
الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْمِسْكِينَ وَابْنَ السَّبِيلِ ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ لِلَّذِينَ
يُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝ وَمَا آتَيْتُمْ مِنْ
رِبًا لِيَرْبُوَ فِي أَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرْبُو عِنْدَ اللَّهِ ۖ وَمَا آتَيْتُمْ مِنْ
زَكَاةٍ تُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُونَ ۝ اللَّهُ الَّذِي
خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ۖ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ
مَنْ يَفْعَلُ مِنْ ذَٰلِكُمْ مِنْ شَيْءٍ ۚ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ ظَهَرَ
الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ أَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيقَهُمْ بَعْضَ
الَّذِي عَمِلُوا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝ قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانْظُرُوا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلُ ۚ كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُشْرِكِينَ ۝
فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ الْقَيِّمِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا مَرَدَّ لَهُ مِنَ
اللَّهِ ۖ يَوْمَئِذٍ يَصَّدَّعُونَ ۝ مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ ۖ وَمَنْ عَمِلَ
صَالِحًا فَلِأَنْفُسِهِمْ يَمْهَدُونَ ۝ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا

जो ब्याज तुम देते हो ताकि लोगों के मालों में सम्मिलित होकर बढ़ जाये तो अल्लाह की दृष्टि में वह बढ़ता नहीं;[२६] और जो ज़कात* तुम अल्लाह की ख़ुशी चाहने के लिए, देते हो, तो ऐसे ही लोग कई गुना पाने वाले हैं[२७]। ○

अल्लाह ही है जिस ने तुम्हें पैदा किया फिर उस ने तुम्हें रोज़ी दी, फिर तुम्हें मौत देता है, फिर तुम्हें जीवित करेगा। क्या तुम्हारे (ठहराये हुये) शरीकों में भी कोई है जो इन कामों में से कुछ कर सके? महिमावान् है वह! और उच्च है उस शिर्क* से जो ये लोग करते हैं। ○ ४०

जल और थल में बिगाड़ फैल गया[२८] स्वयं लोगों ही के हाथों की कमाई से,[२९] ताकि उन्हें उन के कुछ करतूतों का मज़ा चखाये, कदाचित् वे बाज़ आ जायें। ○

[३०]कहो : ज़मीन में चल-फिर कर देखो कि उन लोगों का कैसा परिणाम हुआ जो (तुम से) पहले गुज़रे हैं! उन में अधिकतर मुश्रिक* ही थे। ○

तो अपना रुख़ इस सीधे दीन* की ओर रखो, इस से पहले कि वह दिन आये जो टलने का नहीं अल्लाह की ओर से होगा। उस दिन लोग फटकर एक-दूसरे से अलग हो जायेंगे। ○—

जिस ने कुफ़्र* किया तो उस का कुफ़्र* उसी पर पड़ेगा, और जिन लोगों ने अच्छा काम किया तो वे अपने ही भले के लिए सामान कर रहे हैं। ○ —

ताकि अल्लाह उन लोगों को जो ईमान* लाये और अच्छे काम किये अपने फ़ज़्ल (कृपा) से बदला प्रदान करे। निस्सन्देह वह काफ़िरों* को पसन्द नहीं करता। ○ — ४५

"उस की निशानियों में से यह है कि वह शुभ-सूचना देने वाली हवायें भेजता है[३१] ताकि तुम्हें अपनी दयालुता का रसास्वादन कराये, और ताकि उस के हुक्म से नौकायें चलें,[३२]

---

२६ यह क़ुरआन में पहली आयत है जिस में ब्याज की निन्दा की गई है। फिर आगे चल कर मदीना में साफ़-साफ़ ब्याज के हराम* होने का आदेश दिया गया। और बताया गया कि अल्लाह सूद (ब्याज) का मठ मार देता और सदक़ों* (की बरकत) को बढ़ाता है। (दे० सूरः अल-बक़रः फ़ुट नोट ८०)।

२७ जितनी ही अधिक मन की पवित्रता और सद्‌भावना के साथ मनुष्य अपने धन को अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करेगा अल्लाह उतना ही अधिक बदला उसे प्रदान करेगा।

२८ यह संकेत उस युद्ध की ओर है जो रूम और ईरान के बीच हो रहा था।

२९ हाथों की कमाई स अभिप्रेत है कुफ़्र*, शिर्क*, नास्तिकता, अन्याय, दुराचरण, परलोक का इन्कार आदि और मनुष्य का वह आचरण और व्यवहार जिसे वह ईश्वर को भुला कर अपनाता है।

३० यह आयत सूरः की आयत २५ से सम्बद्ध है बीच में व्यवहित वर्णन आ गया है।

३१ अर्थात् वह ऐसी हवायें भेजता है जो वर्षा की शुभ सूचना देती हैं।

३२ प्राचीन काल में पाल से चलने वाली नौकायें और जहाज़ होते थे जो हवाओं के सहारे चलते थे। यदि अनुकूल वायु न चलती तो समुद्रीय यात्रा असम्भव होती।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

الصلحت من فضله انه لا يحب الكفرين ۝ ومن ايته ان يرسل الرياح
مبشرت وليذيقكم من رحمته ولتجري الفلك بامره و
لتبتغوا من فضله ولعلكم تشكرون ۝ ولقد ارسلنا من قبلك
رسلا الى قومهم فجاءوهم بالبينت فانتقمنا من الذين اجرموا
وكان حقا علينا نصر المؤمنين ۝ الله الذي يرسل الريح فتثير
سحابا فيبسطه في السماء كيف يشاء ويجعله كسفا فترى الودق
يخرج من خلله فاذا اصاب به من يشاء من عباده اذا هم
يستبشرون ۝ وان كانوا من قبل ان ينزل عليهم من قبله
لمبلسين ۝ فانظر الى اثر رحمت الله كيف يحي الارض بعد
موتها ان ذلك لمحي الموتى وهو على كل شيء قدير ۝ ولئن
ارسلنا ريحا فراوه مصفرا لظلوا من بعده يكفرون ۝ فانك لا
تسمع الموتى ولا تسمع الصم الدعاء اذا ولوا مدبرين ۝ وما انت
بهد العمي عن ضللتهم ان تسمع الا من يؤمن بايتنا فهم
مسلمون ۝ الله الذي خلقكم من ضعف ثم جعل من بعد
ضعف قوة ثم جعل من بعد قوة ضعفا وشيبة يخلق ما يشاء
وهو العليم القدير ۝ ويوم تقوم الساعة يقسم المجرمون ما لبثوا
غير ساعة كذلك كانوا يؤفكون ۝ وقال الذين اوتوا العلم و

और ताकि तुम उस का फ़ज़्ल (रोज़ी) तलाश करो,[33] और कदाचित् तुम कृतज्ञता दिखलाओ[34]।○

और हम तुम से पहले कितने ही रसूलों* को उन की जाति की ओर भेज चुके हैं। और वे उन के पास खुली दलीलें ले कर आये। फिर जिन्हों ने अपराध किया[35] उन से हम ने बदला लिया। और ईमान* वालों की मदद करना हम पर हक़ है।○

अल्लाह ही है जो हवाओं को भेजता है फिर वे बादलों को उठाती हैं, फिर वह इन्हें आसमान में फैलाता है जिस तरह चाहता है, और उन्हें टुकड़ियों में बाँट देता है फिर तू देखता है कि उन के बीच से मेंह निकला चला आता है। तो जब वह इसे अपने बन्दों में से जिन पर चाहता है बरसाता है, तो वे प्रसन्न हो जाते हैं; ○ यद्यपि वे अभी-अभी इस के उन पर उतरने के पहले तक निराश थे।○

देखो, अल्लाह की दयालुता के निशान: वह कैसे ज़मीन को उस की मृत्यु के पश्चात् जीवन प्रदान करता है। निस्सन्देह वह मुरदों को जीवन प्रदान करने वाला है। और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला (सर्वशक्तिमान) है।○ ४०

और यदि हम एक हवा भेज दें और वे इसे[36] देखें कि पीली पड़ गई, तो वे इस के बाद कुफ़्र* करने लग जायें[37] ○

(हे नबी*!) तुम मुरदों को[38] नहीं सुना सकते हो, और न बहरों को[39] आवाज़ सुना सकते हो जब कि वे पीठ फेरे भागें।○ और न तुम अन्धों को उन की गुमराही से (सीधी) राह पर ला सकते हो। तुम तो केवल उन ही को सुना सकते हो जो हमारी आयतों* पर ईमान* लाते हैं सो वे मुस्लिम* होते हैं।○

अल्लाह ही है जिस ने तुम्हें बनाया इस तरह कि निर्बलता रखी, फिर निर्बलता के बाद शक्ति रखी, फिर शक्ति के पश्चात्, निर्बलता और बुढ़ापा रखा। वह जो-कुछ चाहता है पैदा करता है। और वह (सब-कुछ) जानने वाला और क़ुदरत रखने वाला (सर्वशक्तिमान) है।○

और जिस दिन वह घड़ी[40] क़ायम होगी अपराधी क़समें खायेंगे कि एक घड़ी से अधिक

---

३३ अर्थात् रोज़ी प्राप्त करने के लिए व्यापार आदि के ध्येय से यात्रा करो।
३४ यह जीवन का सब से उच्च लक्ष्य है जो हमारे व्यक्तित्व को महानता एवं पवित्रता प्रदान करता है।
३५ अर्थात् इन निशानियों से कुछ भी शिक्षा ग्रहण न की तौहीद* (एकेश्वरवाद) का इन्कार ही करते रहे।
३६ अर्थात् खेती को।
३७ अर्थात् अकृतज्ञ बन जायें।
३८ अर्थात् जिन के दिल मुरदा हो चुके हैं। जो बातों से कुछ भी प्रभावित नहीं होते। सब-कुछ सुनने के बाद भी जिन में कुछ भी परिवर्तन नहीं होता।
३९ अर्थात् जो दिल के बहरे हैं। ऐसा लगता है जैसे उन्हों ने कुछ भी नहीं सुना।
४० अर्थात् क़ियामत* की आने वाली घड़ी जिस के आने की तुम्हें सूचना दी जा रही है।
* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

५५ नहीं ठहरे[४१] इसी तरह वे उलटे भटके चले जाते थे। ○

परन्तु जिन लोगों को ज्ञान और ईमान* दिया गया था वे कहेंगे : अल्लाह के लिखे में, तो तुम जी ने के दिन तक ठहरे रहे हो। तो यह वही जी ने का दिन है, परन्तु तुम जानते न थे। ○

तो उस दिन उन लोगों को जिन्हों ने ज़ुल्म ा उ.ज करना काम न देगा और न उन्हें इस का अवसर मिलेगा कि मना लें। ○

हम इस क़ुरआन* में लोगों के (समझाने के) लिए हर एक मिसाल बयान कर चुके हैं; ; तुम कोई भी निशानी इन के पास ले आओ, जिन लोगों ने कुफ़्र* किया है वे यही कहेंगे : ा तो निरे मिथ्यावादी हो। ○ इस तरह अल्लाह ठप्पा लगा देता है[४२] उन लोगों के दिलों जो जानते नहीं। ○

अतः (हे नबी*!) सब्र* करो! निस्सन्देह अल्लाह का वादा सच्चा है,[४३] और कदापि ं हल्का न पायें वे लोग जो विश्वास नहीं करते। ○

الْإِيمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِلَىٰ يَوْمِ الْبَعْثِ فَهَٰذَا يَوْمُ الْبَعْثِ
وَلَٰكِنَّكُمْ كُنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٥٦﴾ فَيَوْمَئِذٍ لَّا يَنفَعُ الَّذِينَ ظَلَمُوا
مَعْذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ﴿٥٧﴾ وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ
مِن كُلِّ مَثَلٍ وَلَئِن جِئْتَهُم بِآيَةٍ لَّيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ أَنتُمْ
إِلَّا مُبْطِلُونَ ﴿٥٨﴾ كَذَٰلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٩﴾
فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَا يَسْتَخِفَّنَّكَ الَّذِينَ لَا يُوقِنُونَ ﴿٦٠﴾

---

४१ मृत्यु से क़ियामत* के समय तक चाहे जितना समय बीत चुका हो परन्तु उन्हें ऐसा ही लगेगा जैसे हम थोड़ी ही देर पहले सोये थे और हमें अचानक उठना पड़ा है।

४२ दे० सूरः अल-बक़रः फुट नोट ४।

४३ दे० आयत ४७।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

३१--लुक़मान

(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः* में हकीम लुक़मान के उन उपदेशों का उल्लेख हुआ है जो उन्हों ने अपने बेटे को दिये थे इस सम्पर्क से इस का नाम लुक़मान रक्खा गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

सूरः* के अध्ययन से अनुमान होता है कि यह सूरः उस समय उतरी है जब इस्लाम* के विरुद्ध विरोधी दल की ओर से ज़ुल्म और अत्याचार शुरू हो गया था। अनुमान है कि यह सूरः और सूरः अल-अनकबूत एक ही ज़माने की सूरतें हैं; परन्तु सूरः लुक़मान पहले उतरी है। दोनों सूरतों में नवयुवकों से कहा गया है कि माता-पिता का हक़ बहुत ज़्यादा है परन्तु यदि वे इस बात पर ज़ोर डालें कि अल्लाह के साथ दूसरों को शरीक ठहराओ तो कदापि उनकी बात न मानो। सूरः लुक़मान के अध्ययन से पता चलता है कि जिस समय यह सूरः* उतरी है विरोधियों की शत्रुता और उन का विरोध अभी उग्र रूप धारण नहीं कर सका था; परन्तु सूरः अल-अन कबूत के अवतीर्ण होने के समय उन का वैमनस्य बहुत बढ़ चुका था।

वार्तायें

यह सूरः* अल्लाह की निशानियों और उस की उक्तियों के बारे में है जिन पर कोई हावी नहीं हो सकता। इस सूरः में अल्लाह की पालनक्रिया के द्वारा 'क़ियामत'* और 'तौहीद,* (एकेश्वरवाद) की पुष्टि की गई है। और बताया गया है कि शिर्क* सर्वथा सत्य के प्रतिकूल है। लोगों का यह कर्तव्य है कि वे आँखें बन्द कर के अपने माता-पिता के पीछे न चलें बल्कि उस शिक्षा पर पक्षपात से रहित हो कर विचार करें जो शिक्षा अल्लाह के रसूल* की ओर से उन्हें दी जा रही है। उन्हें खुली आँखों से देखना चाहिए कि वर्तमान लोक की समस्त वस्तुयें और स्वयं मानव की अन्तरात्मा किस प्रकार उस सच्चाई की गवाह है जिस की ओर अल्लाह का रसूल* लोगों को आमन्त्रित कर रहा है।

फिर बताया गया है कि जिस बात की ओर रसूल* लोगों को बुला रहा है वह कोई अद्भुत और अनोखी बात नहीं है बल्कि यह तो जानी-पहचानी सच्चाई है जिसे पहले भी लोगों ने अपनाया था। ज्ञानी लोगों ने पहले भी यह बातें कही हैं जो आज मुहम्मद सल्ल॰ तुम्हारे सामने बयान कर रहे हैं। लुक़मान जैसे ज्ञानी और सिद्ध पुरुष से तुम भली-भाँति परिचित हो जिस के ज्ञान और बुद्धिमत्ता को तुम भी मानते हो जिस के प्रवचनों का तुम आदर करते हो उस की शिक्षा भी वही थी जिस का विरोध करने के लिए आज तुम खड़े हो रहे हो।

हकीम लुक़मान जिन के सिद्ध पुरुष होने पर क़ुरआन साक्षी है कौन थे? इस के बारे में बड़ा मत-भेद है। कुछ पुरातन उल्लेखों से पता चलता है कि लुक़मान नोबः

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

के रहने वाले थे; नोबः उस क्षेत्र का नाम है जो मिस्र के दक्षिण और सूडान के उत्तर पड़ता है। रहा यह प्रश्न कि एक सूडानी व्यक्ति की बातें अरब में कैसे फैलीं तो कुछ पुरातन उल्लेखों से इस बात का पता चलता है कि लुक़मान वास्तव में तो नोबी थे परन्तु निवासी वे मदयन और ऐला क्षेत्र[1] के थे। यही कारण है कि उन की भाषा अरबी थी और उन की हिकमत* की बातों का अरब में प्रचार हुआ। हज़रत इब्न अब्बास और हज़रत अबू हुरैरः और कुछ दूसरे लोगों का कहना है कि लुक़मान हबशी ग़ुलाम थे। परन्तु इस से यह ज़रूरी नहीं कि लुक़मान हबशः के रहने वाले रहे हों; उस समय अरब लोग काले रंग वालों को साधारणतः हबशी कहते थे। सईद बिन मुसय्यिब के कथन से पता चलता है कि लुक़मान काले रंग वालों में से थे।

यूनान वाले जिस व्यक्ति को Aesop (Aethiops) कहते हैं साधारणतः लोगों का विचार है कि इस से अभिप्रेत लुक़मान ही हैं।

---

[1] वर्तमान अक़बः।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* लुक़मान

(मक्का में उतरी — आयतें* ३४)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

[illegible]

بسم الله الرحمن الرحيم
الم ﴿١﴾ تلك آيات الكتاب الحكيم ﴿٢﴾ هدى ورحمة للمحسنين ﴿٣﴾
الذين يقيمون الصلوة ويؤتون الزكوة وهم بالآخرة هم
يوقنون ﴿٤﴾ أولئك على هدى من ربهم وأولئك هم المفلحون ﴿٥﴾
ومن الناس من يشتري لهو الحديث ليضل عن سبيل الله
بغير علم ويتخذها هزوا أولئك لهم عذاب مهين ﴿٦﴾ وإذا
تتلى عليه آياتنا ولى مستكبرا كأن لم يسمعها كأن في أذنيه
وقرا فبشره بعذاب أليم ﴿٧﴾ إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات
لهم جنات النعيم ﴿٨﴾ خالدين فيها وعد الله حقا وهو العزيز
الحكيم ﴿٩﴾ خلق السموات بغير عمد ترونها وألقى في الأرض
رواسي أن تميد بكم وبث فيها من كل دابة وأنزلنا من السماء
ماء فأنبتنا فيها من كل زوج كريم ﴿١٠﴾ هذا خلق الله فأروني ما
ذا خلق الذين من دونه بل الظالمون في ضلال مبين ﴿١١﴾ ول
قد آتينا لقمان الحكمة أن اشكر لله ومن يشكر فإنما يشكر لنفسه
ومن كفر فإن الله غني حميد ﴿١٢﴾ وإذ قال لقمان لابنه وهو يعظه
يا بني لا تشرك بالله إن الشرك لظلم عظيم ﴿١٣﴾ ووصينا الإنسان
بوالديه حملته أمه وهنا على وهن وفصاله في عامين أن
اشكر لي ولوالديك إلي المصير ﴿١٤﴾ وإن جاهداك على أن تشرك
بي ما ليس لك به علم فلا تطعهما وصاحبهما في الدنيا معروفا
واتبع سبيل من أناب إلي ثم إلي مرجعكم فأنبئكم بما كنتم
تعملون ﴿١٥﴾ يا بني إنها إن تك مثقال حبة من خردل فتكن في

अलिफ़० लाम० मीम०[1] ।○ ये हिकमत* वाली किताब* की आयतें* हैं, ○ मार्ग-दर्शन और दयालुता सत्कर्मी लोगों के लिए, ○ जो नमाज़* क़ायम रखते हैं और ज़कात* देते हैं और आख़िरत* पर विश्वास रखते हैं[2] ।○ ये लोग अपने रब* की ओर से (सीधे) मार्ग पर हैं। और यही सफलता प्राप्त करने वाले हैं।○

और लोगों में से कोई तो ऐसा भी है जो सौदा करता है बहलाने की बातों का,[3] ताकि अल्लाह के मार्ग से भटका दे, बिना ज्ञान के और इन (आयतों*) की हँसी उड़ाये। ऐसे लोगों के लिए अपमानित करने वाला अज़ाब है।○ जब उसे हमारी आयतें* सुनाई जाती हैं तो वह बड़े गर्व के साथ मुँह मोड़ लेता है मानो उस ने इन्हें सुना हो नहीं, मानो उस के कानों में डाट है। अच्छा उसे एक दुःखदायी अज़ाब की सूचना दे दो।○

जो लोग ईमान* लाये और अच्छे काम किये, उन के लिए नेमतों भरी जन्नतें* हैं, ○ जिन में वे सदैव रहेंगे। यह अल्लाह का सच्चा वादा है। और वह अपार शक्ति का मालिक और हिकमत* वाला है।○

उस ने आसमानों को बिना सहारे के पैदा किया जैसा कि तुम देखते हो, और ज़मीन में पहाड़ डाल रखे हैं, कि वह तुम्हें ले कर ढलक न जावे;[4] और उस में हर तरह के जानवर फैला दिये। और आसमान से पानी बरसाया और उस में हर प्रकार की उत्तम चीज़ें उगाईं।○

यह अल्लाह का बनाया है। अब मुझे दिखाओ जो-कुछ बनाया है औरों ने जो उस के सिवा हैं[5] । नहीं, बल्कि ये ज़ालिम खुली गुमराही में पड़े हुये हैं।○

१ दे० सूरः अल-बक़रः फुट नोट १।
२ दे० सूरः अन-नम्ल आयत ३।
३ अर्थात् ऐसी बात का ख़रीदार बनता है जो आदमी को अपने में व्यस्त कर के उसे हर दूसरी चीज़ की ओर से बेसुध कर दे।
ऐतिहासिक उल्लेखों से मालूम होता है कि नज़्र बिन हारिस नामक एक काफ़िर ने यह देखा कि नबी सल्ल० की बातें लोगों के दिलों में घर करती जा रही हैं और 'क़ुरैश' के लिए ख़तरा (... पर)
* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

صخرة او في السموت او في الارض يات بها الله ان الله لطيف
خبير ۞ يبني اقم الصلوة وامر بالمعروف وانه عن المنكر
واصبر على ما اصابك ان ذلك من عزم الامور ۞ ولا تصعر
خدك للناس ولا تمش في الارض مرحا ان الله لا يحب كل
مختال فخور ۞ واقصد في مشيك واغضض من صوتك
ان انكر الاصوات لصوت الحمير ۞ الم تروا ان الله سخر لكم
ما في السموت وما في الارض واسبغ عليكم نعمه ظاهرة و
باطنة ومن الناس من يجادل في الله بغير علم ولا هدى ولا كتب
منير ۞ واذا قيل لهم اتبعوا ما انزل الله قالوا بل نتبع ما وجدنا
عليه اباءنا اولو كان الشيطن يدعوهم الى عذاب السعير ۞
ومن يسلم وجهه الى الله وهو محسن فقد استمسك بالعروة
الوثقى والى الله عاقبة الامور ۞ ومن كفر فلا يحزنك كفره
الينا مرجعهم فننبئهم بما عملوا ان الله عليم بذات الصدور ۞
نمتعهم قليلا ثم نضطرهم الى عذاب غليظ ۞ ولئن سالتهم من
خلق السموت والارض ليقولن الله قل الحمد لله بل اكثرهم لا
يعلمون ۞ لله ما في السموت والارض ان الله هو الغني الحميد ۞
ولو ان ما في الارض من شجرة اقلام والبحر يمده من بعده
سبعة ابحر ما نفدت كلمت الله ان الله عزيز حكيم ۞ ما خلقكم و
لا بعثكم الا كنفس واحدة ان الله سميع بصير ۞ الم تر ان الله
يولج اليل في النهار ويولج النهار في اليل وسخر الشمس والقمر
كل يجري الى اجل مسمى وان الله بما تعملون خبير ۞ ذلك
بان الله هو الحق وان ما يدعون من دونه الباطل وان الله هو
العلي الكبير ۞ الم تر ان الفلك تجري في البحر بنعمت الله ليريكم

और हम ने लुक़मान को हिकमत* प्रदान की[1] कि अल्लाह के आगे कृतज्ञता दिखला;[2] जो कोई कृतज्ञता दिखलायेगा, तो वह अपने ही (भले के) लिए कृतज्ञता दिखलायेगा। और जिस किसी ने कुफ़्र* किया तो निस्सन्देह अल्लाह अपेक्षा-रहित (परम-स्वतन्त्र) और आप-से-आप प्रशंसा का अधिकारी है[3]। ○

याद करो जब लुक़मान ने अपने बेटे से कहा, जब कि वह उसे[4] सदुपदेश दे रहा था : हे मेरे छोटे (प्यारे) बेटे ! अल्लाह के साथ शिर्क* न करना। निश्चय ही शिर्क बहुत बड़ा ज़ुल्म है। ○—

"हम ने मनुष्य को अपने माता-पिता के बारे में ताकीद की है — उस की माता उसे (पेट में) लिये-लिये निढाल होती रही, और उस का दूध छूटता है दो वर्ष में[5] — मेरा और अपने माता-पिता का कृतज्ञ हो। मेरी ही ओर आना है। ○ परन्तु यदि वे तुझ पर दबाव डालें कि मेरे साथ तू किसी चीज़ को शरीक ठहराये जिस का तुझे कुछ भी ज्ञान नहीं," तो उन का कहना न मानना" और दुनियाँ में उन के संग भले तरीक़े से रहना, और चल उस व्यक्ति के मार्ग पर जिस ने मुझ से लौ लगाई। फिर तुम (सब) को मेरी ओर पलटना है। फिर मैं तुम्हें बता दूँगा जो-कुछ कि तुम करते थे। ○—

(लुक़मान ने कहा) : हे मेरे छोटे बेटे ! यदि कोई चीज़ राई के दाने के बराबर भी हो, और वह किसी चट्टान में हो, या आसमानों में, या ज़मीन में (छिपी हुई) हो, अल्लाह उसे निकाल लायेगा। निस्सन्देह अल्लाह सूक्ष्म (-दर्शी) और ख़बर रखने वाला है। ○

बावजूद इस्लाम" फैलता ही जा रहा है, तो वह मक्का से इराक़ गया और वहाँ से वह रुस्तुम और इसफ़न्दि-यार आदि की कथायें ले आया। ताकि इन कहानियों के द्वारा लोगों के ध्यान को क़ुरआन की ओर से फेर दे। उस ने अपने ध्येय की सिद्धि के लिए गाने वाली लौंडियाँ भी ख़रीदी थीं। जिस किसी के बारे में सुनता कि वह नबी सल्ल० की बातों से प्रभावित हो रहा है, उस के पीछे अपनी एक लौंडी लगा देता और कहता उसे ख़ूब खिला-पिला और संगीत सुना ताकि वह तेरी ओर आकृष्ट हो जाये और उस का मन मुहम्मद (सल्ल०) की बातों की ओर से हट जाये।

४ दे० सूरः अन-नह्ल फ़ुट नोट ८।

५ जिन्हें तुम अल्लाह का शरीक समझते हो।

६ अरब के लोग लुक़मान से भली-भाँति परिचित थे। अरब कवियों के काव्यों में उन का उल्लेख मिलता है। अरब के लोग उन्हें एक ज्ञानी और तत्वदर्शी पुरुष समझते थे। बल्कि कुछ शिक्षित व्यक्तियों के पास उन के कथनों का एक संग्रह भी था।

यहाँ मक्का वालों को समझाया जा रहा है कि अल्लाह का रसूल" (सल्ल०) तुम्हें जिस बात की ओर बुला रहा है वह कोई नई बात नहीं है पहले के ज्ञानी और दार्शनिक लोग भी यही (शेष अगले पृष्ठ पर)

" इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

४ : ११३	आप पर अल्लाह की बहुत बड़ी कृपा रही है।
५ : ३	आपके हाथों दीन (धर्म) को पूर्ण कर दिया और आप पर अपनी नेमतें पूरी कर दी।
५ : ६७	अल्लाह ने आपकी विशेष रक्षा की।
३ : १३	लड़ाई के मौक़े पर अल्लाह की सहायता की विशेष व्यवस्थाएँ।
८ : ६-१८	,, ,, ,,
८ : ३०	शत्रुओं की दुष्टता से सुरक्षित रखना।
८ : ३३	आपकी उपस्थिति अल्लाह के अज़ाब से बचे रहने का कारण बनी।
६ : २६	अनदेखी सेना से सहायता की।
१७ : १	आपको रातों-रात मस्जिदे अक़सा की सैर कराई।
१७ : ७६	स्तुत्य स्थान प्रदान किया।
२१ : १०७	आपको पूरी दुनिया के लिए 'रहमत' बनाकर भेजा।
३३ : ६	आपकी पत्नियाँ मुसलमानों की माँ हैं।
३३ : ४०	आप पर नुबूवत का सिलसिला ख़त्म हुआ।
३३ : ५३	आपकी मृत्यु के बाद आपकी पत्नियों से किसी मुसलमान का विवाह नहीं हो सकता।
३४ : २८	तमाम मनुष्यों के लिए शुभ-सूचना देने वाला और डराने वाला बनाया।
५३ : ६-१८	इसी जीवन में आपको अपने अत्यन्त समीप बुलाया।
४६ : १-५	आपकी शान में मामूली गुस्ताख़ी से भी तमाम कर्म व्यर्थ हो सकते हैं।
६३ : ३-८	आपको अल्लाह ने दुनिया और आख़िरत की नेमतों से मालमाल कर दिया।
६४ : १-५	आपका नाम ऊँचा किया।
१०८ : १	आपको 'कौसर' दिया।
११० : २	आपको अनुयायियों की एक बड़ी संख्या दी।

३. क़ुरआन

(१) विशेषताएँ

२ : २-५	निश्चित रूप से अल्लाह की वाणी और मार्ग-दर्शन।
२ : ६७	पहली किताबों की पुष्टि करने वाला। मार्ग-दर्शन और शुभ-सूचना।
२ : १८५	रास्ता दिखाने वाला और सत्य-असत्य को अलग-अलग करने वाला।
३ : ३, ४	सत्य-ग्रन्थ, पहले ईश-ग्रन्थों की पुष्टि करने वाला।
३ : ७	इस ग्रन्थ को अल्लाह ने उतारा है।
३ : १३८	क़ुरआन लोगों के लिए एक सन्देश है, मार्ग-दर्शन और उपदेश।
५ : १५, १६	अल्लाह की ओर से प्रकाश और प्रकाशमान ग्रन्थ, जो लोगों को अँधेरे से निकालकर उजाले में ले आये।
५ : ४८	अल्लाह की उतारी हुई किताब, पहली किताबों की पुष्टि करने वाली और सब पर सम्मिलित।
६ : ६०	तमाम दुनिया के लोगों के लिए उपदेश।

ऐ मेरे छोटे बेटे! नमाज़* क़ायम रख और भलाई का हुक्म दे और बुराई से रोक,
और जो मुसीबत भी तुझ पर पड़े उस पर सब्र* कर। निश्चय ही ये बड़े साहस के काम हैं।○
और लोगों के सामने अपना मुंह टेढ़ा न कर, और न ज़मीन में अकड़ कर चल। नि-
स्सन्देह अल्लाह किसी आत्मश्लाघी और डींगें मारने वाले को पसन्द नहीं करता।○, सीधी-
सीधी चाल चल और अपनी आवाज़ को नीची रख। निश्चय ही सब आवाज़ों से बुरी आवाज़
गदहों की आवाज़ होती है।○

क्या तुम ने देखा नहीं[14] कि अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन में जो-कुछ है सब को तुम्हारे
काम में लगा दिया है और अपनी खुली और छिपी नेमतें तुम पर पूरी कर दी हैं? फिर भी
लोगों में से कोई तो ऐसा है जो अल्लाह के बारे में झगड़ता है, बिना इस के कि (उस के पास) २०
कोई ज्ञान हो या मार्ग-दर्शन या प्रकाशमान किताब*।○

और जब उन से कहा जाता है कि उस पर चलो जो अल्लाह ने उतारा है, तो कहते हैं:
नहीं, बल्कि हम तो उस पर चलेंगे जिस पर हम ने अपने पूर्वजों को पाया है। क्या! यद्यपि
शैतान* उन्हें दहकती हुई आग (दोज़ख़*) की ओर बुलाता रहा हो तो भी?○
और जो कोई अपने-आप को अल्लाह के अर्पण कर दे और वह सत्कर्मी हो, उस ने
निश्चय ही भरोसे के योग्य सहारा थाम लिया। और सब मामले अल्लाह ही की ओर पलटते
हैं।○ और जो कोई कुफ़्र* करे, तो उस का कुफ़्र* तुम्हें ग़म में न डाले। हमारी ही ओर
तो उन्हें पलट कर आना है, फिर हम उन्हें बता देंगे जो-कुछ उन्हों ने किया। निस्सन्देह
अल्लाह सीनों तक की बात[15] को जानता है।○
हम उन्हें थोड़ा सुख देंगे फिर उन्हें विवश करके एक सख़्त अज़ाब की ओर खींच
ले जायेंगे।○

यदि तुम उन से पूछो कि आसमानों और ज़मीन को किस ने पैदा किया है? वे अवश्य
कहेंगे: अल्लाह ने। कहो: प्रशंसा (हम्द*) अल्लाह के लिए है! परन्तु उन में से अधिकतर २१
लोग जानते नहीं[16]।○

बात कहते आये हैं। तुम्हारे प्रसिद्ध हकीम और तत्त्व-ज्ञानी लुक़मान ने भी यही कुछ कहा है।
७ जो व्यक्ति अल्लाह का कृतज्ञ भक्त न बन सका, यदि वह कहता है कि उसे ज्ञान मिल गया है तो वह
झूठा है। सब से बढ़ कर तत्त्व-ज्ञान की बात (Wisdom) यह है कि मनुष्य अपने सृष्टि-कर्ता का आभार
स्वीकार करे।

८ कुफ़्र* करने वाला अपना ही बुरा करता है, उस के कुफ़्र* से अल्लाह का कुछ नहीं बिगड़ता।

९ अर्थात् अपने बेटे को।

१० यहाँ से आयत १५ के अन्त तक व्यवहित वर्णन है जिसे अल्लाह ने लुक़मान की बात को और अधिक
स्पष्ट करने के लिए अपनी ओर से बढ़ा दिया है।

११ सूरः अल-अहक़ाफ़ आयत १५ में कहा गया है कि "उस का पेट में रहना और उस का दूध छूटना
३० महीनों में हुआ"। इस से इब्न अब्बास ने यह नतीजा निकाला है कि गर्भावस्था की कम-से-कम मुद्दत
६ मास है। दूसरे विद्वानों ने भी इस से अपनी सहमति प्रकट की है।

१२ अर्थात् जिस के बारे में तुझे यह नहीं मालूम कि वह मेरा शरीक और साझी है।

१३ दे० सूरः अल-अनकबूत आयत ८।

१४ अर्थात् तुम ने इस पर विचार नहीं किया।

१५ अर्थात् दिलों तक की बात।

१६ अर्थात् अधिकतर लोग नहीं जानते कि अल्लाह को विश्व का सृष्टि-कर्ता (शेष अगले पृष्ठ पर)

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

आसमानों और ज़मीन में जो-कुछ है अल्लाह का है। निस्सन्देह अल्लाह अपेक्षा रहित (परम-स्वतन्त्र) और आप-से-आप प्रशंसा का अधिकारी है। ○

ज़मीन में जितने वृक्ष हैं यदि वे सब लेखनी हो जायें, और यह समुद्र हो जिसे सात और समुद्र रोशनाई पहुँचायें, तब भी अल्लाह की बातें (लिखने से) समाप्त न हों। निस्सन्देह अल्लाह अपार शक्ति का मालिक और हिकमत* वाला है। ○

तुम सब को पैदा करना और पुनः जिला उठाना तो (उस के लिए) बस ऐसा है जैसे एक जीव को (पैदा करना और जिला उठाना)। निस्सन्देह अल्लाह (सब-कुछ) सुनने वाला और देखने वाला है[१७]। ○

क्या तुम देखते नहीं हो कि अल्लाह रात को दिन में पिरोता हुआ ले आता है, उस ने सूर्य और चन्द्रमा को काम में लगा रखा है, हर एक एक नियत समय तक चल रहा है; और यह कि तुम जो-कुछ करते हो अल्लाह उस की ख़बर रखता है। ○

यह इस कारण से कि अल्लाह ही सत्य है, और उसे छोड़ कर जिसे ये लोग पुकारते हैं
१० मिथ्या है, और अल्लाह ही (सब से) उच्च और महान् है। ○

क्या तुम ने देखा नहीं कि नौका दरिया में अल्लाह के फ़ज़्ल (कृपा) से चलती है, ताकि वह तुम्हें अपनी कुछ निशानियाँ दिखाये? निश्चय ही इस में हर सब्र* करने वाले और कृतज्ञ व्यक्ति के लिए निशानियाँ हैं। ○

और जब (दरिया में) इन लोगों पर मौज (लहरें) छत्र की तरह छा जाती है, तो ये अल्लाह को पुकारते हैं, अपने दीन* को उसी के लिए ख़ालिस कर के। फिर जब वह इन्हें बचा कर स्थल तक पहुँचा देता है, तो इन में से कोई तो सन्मार्ग पर होता है। और हमारी निशानियों का इन्कार तो बस वह व्यक्ति ही करता है जो वचन भंग करने वाला और अकृतज्ञ है। ○

हे लोगो! अपने रब* का डर रखो और उस दिन से डरो जब कि कोई बाप अपने बेटे की ओर से बदला न देगा, और न कोई बेटा अपने बाप की ओर से कुछ बदला देने वाला होगा[१८]।

निश्चय ही अल्लाह का वादा[१९] सच्चा है। अतः यह सांसारिक जीवन तुम्हें धोखे में न डाले, और न धोखे में डालने वाला[२०] तुम्हें अल्लाह के बारे में धोखा देने पाये। ○

मानने का तक़ाज़ा क्या होता है? जब आसमानों और ज़मीन का सृष्टि-कर्ता अल्लाह ही है तो फिर केवल वही इलाह* (पूज्य) और रब* भी है; उस के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं जिस की बन्दगी और उपासना की जाये।

१७ वह एक साथ सब की आवाज़ें अलग-अलग सुन रहा है कोई आवाज़ उस के लिए बाधक नहीं बन सकती कि उसे सुनते हुये वह कोई दूसरी आवाज़ न सुन सके। इसी प्रकार वह क्षण-भर में समस्त मनुष्यों को एक साथ पुनः पैदा कर देने का सामर्थ्य रखता है।

१८ दूसरे लोग तो अलग रहे बाप-बेटे भी वहाँ एक दूसरे के काम न आवेंगे।

१९ अर्थात् अल्लाह का यह वादा कि क़ियामत* आने वाली है, हर एक को अपने कर्मों का हिसाब देना होगा।

२० छली और धोखेबाज़ चाहे शैतान* हो या कोई और।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

من آياته إن في ذلك لآيات لكل صبار شكور ۝ وإذا غشيهم موج
كالظلل دعوا الله مخلصين له الدين فلما نجاهم إلى البر فمنهم
مقتصد وما يجحد بآياتنا إلا كل ختار كفور ۝ يا أيها الناس اتقوا
ربكم واخشوا يوما لا يجزي والد عن ولده ولا مولود هو جاز
عن والده شيئا إن وعد الله حق فلا تغرنكم الحياة الدنيا ولا
يغرنكم بالله الغرور ۝ إن الله عنده علم الساعة وينزل الغيث
ويعلم ما في الأرحام وما تدري نفس ماذا تكسب غدا وما
تدري نفس بأي أرض تموت إن الله عليم خبير ۝

निस्सन्देह उस घड़ी का ज्ञान अल्लाह ही के पास है। वही मेंह बरसाता है, और वही जानता है जो-कुछ गर्भाशयों में है। कोई जीव नहीं जानता कि कल वह क्या कमायेगा, और न कोई जीव यह जानता है कि किस भू-भाग में वह मरेगा। निस्सन्देह अल्लाह (सब-कुछ) जानने वाला और ख़बर रखने वाला है''। ○

---

२१ मनुष्य तो उन बातों को भी नहीं जानता जिन से उस के जीवन का गहरा सम्पर्क होता है। वह नहीं जानता कि वर्षा कब और कितनी होगी। वह इस के बारे में बे-ख़बर होता है कि उस की पत्नियों के गर्भाशय में क्या है। उसे यह तक पता नहीं कि कल उस के साथ क्या पेश आने वाला है और उस के जीवन का अन्त कहाँ और किस तरह होगा। ठीक इसी तरह उसे क़ियामत* की घड़ी के बारे में भी अल्लाह के फ़ैसले पर भरोसा रखना चाहिए।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

३२—अस-सजदः

(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः* का नाम 'अस-सजदः' (The Prostration) आयत* १५ से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

सूरः* के अध्ययन से अनुमान होता है कि यह सूरः उस समय उतरी है जब कि इस्लाम* के विरुद्ध विरोधियों की वैमनस्यता और अत्याचार अभी उग्र रूप धारण नहीं कर सका था; परन्तु उन की शत्रुता और वैमनस्यता का आरम्भ हो चुका था।

वार्तायें

प्रस्तुत सूरः और पिछली सूरः में गहरा सम्पर्क है। पिछली सूरः में तौहीद,* रिसालत* और आख़िरत* आदि जिन मौलिक बातों का उल्लेख हुआ है प्रस्तुत सूरः में भी उन ही की पुष्टि की गई है। इस सूरः में एक ओर ऐतिहासिक घटनाओं और वृत्तान्तों के द्वारा आख़िरत* को साबित किया गया है, दूसरी ओर इस के लिए प्राकृतिक (Natural) प्रमाण भी सचित किये गये हैं।

प्रस्तुत सूरः* में इस्लाम* के भविष्य की झलक देखी जा सकती है। इस सूरः में लोगों को सावधान किया गया है। ईमान* वालों और काफ़िरों* के परिणामों का मुक़ाबिला करके दिखाया गया है कि ईमान* वालों का जीवन ही सफल है। और फिर फ़ैसले का वादा किया गया है।

---

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

مِنْ آيَاتِهِ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۝ وَإِذَا غَشِيَهُمْ مَوْجٌ
كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ
مُقْتَصِدٌ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُورٍ ۝ يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا
رَبَّكُمْ وَاخْشَوْا يَوْمًا لَا يَجْزِي وَالِدٌ عَنْ وَلَدِهِ وَلَا مَوْلُودٌ هُوَ جَازٍ
عَنْ وَالِدِهِ شَيْئًا إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَلَا
يَغُرَّنَّكُمْ بِاللَّهِ الْغَرُورُ ۝ إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ
وَيَعْلَمُ مَا فِي الْأَرْحَامِ وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ مَاذَا تَكْسِبُ غَدًا وَمَا
تَدْرِي نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ تَمُوتُ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ۝

निस्सन्देह उस घड़ी का ज्ञान अल्लाह ही के पास है। वही मेंह बरसाता है, और वही जानता है जो-कुछ गर्भाशयों में है। कोई जीव नहीं जानता कि कल वह क्या कमायेगा, और न कोई जीव यह जानता है कि किस भू-भाग में वह मरेगा। निस्सन्देह अल्लाह (सब-कुछ) जानने वाला और खबर रखने वाला है''।○

---

२१ मनुष्य तो उन बातों को भी नहीं जानता जिन से उस के जीवन का गहरा सम्पर्क होता है। वह नहीं जानता कि वर्षा कब और कितनी होगी। वह इस के बारे में बे-खबर होता है कि उस की पत्नियों के गर्भाशय में क्या है। उसे यह तक पता नहीं कि कल उस के साथ क्या पेश आने वाला है और उस के जीवन का अन्त कहाँ और किस तरह होगा। ठीक इसी तरह उसे क़ियामत* की घड़ी के बारे में भी अल्लाह के फ़ैसले पर भरोसा रखना चाहिए।

* इस का अर्थ आखिर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

३२--अस-सजदः

(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः* का नाम 'अस-सजदः' (The Prostration) आयत* १५ से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

सूरः* के अध्ययन से अनुमान होता है कि यह सूरः उस समय उतरी है जब कि इस्लाम* के विरुद्ध विरोधियों की वैमनस्यता और अत्याचार अभी उग्र रूप धारण नहीं कर सका था; परन्तु उन की शत्रुता और वैमनस्यता का आरम्भ हो चुका था।

वार्तायें

प्रस्तुत सूरः और पिछली सूरः में गहरा सम्पर्क है। पिछली सूरः में तौहीद,* रिसालत* और आख़िरत* आदि जिन मौलिक बातों का उल्लेख हुआ है प्रस्तुत सूरः में भी उन ही की पुष्टि की गई है। इस सूरः में एक ओर ऐतिहासिक घटनाओं और दृष्टान्तों के द्वारा आख़िरत* को साबित किया गया है, दूसरी ओर इस के लिए प्राकृतिक (Natural) प्रमाण भी संचित किये गये हैं।

प्रस्तुत सूरः* में इस्लाम* के भविष्य की झलक देखी जा सकती है। इस सूरः में लोगों को सावधान किया गया है। ईमान* वालों और काफ़िरों* के परिणामों का मुक़ाबिला करके दिखाया गया है कि ईमान* वालों का जीवन ही सफल है। और फिर फ़ैसले का वादा किया गया है।

---

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अस-सजदः

(मक्का में उतरी — आयतें* ३०)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

بسم الله الرحمن الرحيم
الم ﴿١﴾ تنزيل الكتب لا ريب فيه من رب العلمين ﴿٢﴾ ام يقولون
افترىه بل هو الحق من ربك لتنذر قوما ما اتىهم من نذير
من قبلك لعلهم يهتدون ﴿٣﴾ الله الذي خلق السموت و
الارض وما بينهما في ستة ايام ثم استوى على العرش ما لكم
من دونه من ولي ولا شفيع افلا تتذكرون ﴿٤﴾ يدبر الامر من
السماء الى الارض ثم يعرج اليه في يوم كان مقداره الف
سنة مما تعدون ﴿٥﴾ ذلك علم الغيب والشهادة العزيز الرحيم ﴿٦﴾

अलिफ़० लाम० मीम०[1] । ० इस किताब* का अवतरण — इस में कोई सन्देह नहीं — सारे संसार के रब* की ओर से है।०

क्या ये लोग कहते हैं कि इस व्यक्ति ने इसे स्वयं गढ़ लिया ? नहीं, बल्कि यह हक़* (सत्य) है तेरे रब* की ओर से, ताकि तू सचेत करे एक ऐसी जाति को जिस के पास तुझ से पहले कोई सचेत करने वाला नहीं आया[2] कदाचित् वे (सीधी) राह पा जायें। ०

वह अल्लाह ही है जिस ने आसमानों और ज़मीन को, और जो-कुछ इन दोनों के बीच है छः दिनों में पैदा किया[3] । फिर सिंहासन पर विराजमान हुआ[4] । उस के सिवा न तुम्हारा कोई संरक्षक-मित्र है और न सिफ़ारिश करने वाला। फिर क्या तुम चेतोगे नहीं ? ०

वह आसमान से ज़मीन तक हर कार्य की व्यवस्था करता है; फिर यह ऊपर उस के पास जाता है एक दिन में, जिस की मिक़दार (मुद्दत) तुम्हारी गणना से एक हज़ार वर्ष है[5] । ० १

---

१ दे० सूरः अल-बक़रः फुट नोट १।

२ अर्थात् एक दीर्घ काल से इस जाति में कोई रसूल* नहीं आया। अज्ञान-काल में भले ही न रहे हों परन्तु अरब के लोगों को धर्म के विषय में विस्तार-पूर्वक जानकारी 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) ही है और उस समय भी लोगों से यह बात ढकी-छुपी न थी कि वास्तविक धर्म निकटस्थ देश में आये नबियों* ने कभी भी शिर्क* और मूर्ति-पूजा की शिक्षा नहीं दी थी। यह बात वे अपने हुये नबियों* (हज़रत मूसा अ०, हज़रत दाऊद अ०, हज़रत सुलैमान अ० और हज़रत ईसा अ०) की शिक्षाओं के द्वारा भी जानते थे। वे जानते थे कि अरब वालों का अपना धर्म वही था जो हज़रत इब्राहीम अ० ले कर आये थे; मूर्ति-पूजा की प्रथा का आरम्भ तो उन के यहाँ अमर इब्न लुह्य्य नामक एक व्यक्ति ने किया था। अरब में विभिन्न स्थानों पर ऐसे लोग पाये जाते थे जो खुले रूप में शिर्क* का इन्कार करते थे। नबी सल्ल० के युग के बिलकुल निकट समय में भी ऐसे कितने ही व्यक्ति एकेश्वरवादी थे। इतिहास में हमें ऐसे बहुत से लोगों के नाम मिलते हैं जो मुशरिकों* के धर्म से कोई सम्पर्क नहीं रखते थे। प्राचीन अवशेषों से भी इसकी पुष्टि होती है कि पिछले नबियों* की शिक्षाओं के स्मारक चिह्न बिलकुल मिट नहीं गये थे।

३ दे० सूरः अल-आराफ़ फुट नोट १५।

४ दे० सूरः अल-आराफ़ फुट नोट १६।

५ अर्थात् जिसे तुम हज़ार वर्ष का इतिहास समझते हो वह अल्लाह के यहाँ मानो एक दिन का काम है जिस की योजना आज फ़रिश्तों* के सामने रखी जाती है और कल वे अल्लाह के सामने उस से सम्बन्धित विवरण पेश करते हैं ताकि दूसरे दिन का काम—जो तुम्हारी गणना के अनुसार एक हज़ार वर्ष का काम है—उन्हें सौंपा जाये।

इस्लाम-विरोधी लोग कहते थे कि वह अज़ाब हम पर क्यों नहीं आ जाता जिस की धमकी हमें दी जाती है। उन्हें समझाया जा रहा है कि अल्लाह के फ़ैसले को कोई रोक नहीं सकता। परन्तु अल्लाह का फ़ैसला मनुष्यों की गणना और कलेण्डर का पाबन्द नहीं। दिन और वर्ष तो क्या कभी-कभी शताब्दियों तक अल्लाह जातियों को सँभलने की मुहलत देता है। दे० सूरः अल-हज्ज आयत ४७ और सूरः अल-मआरिज १-७।

* का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

الَّذِىٓ أَحْسَنَ كُلَّ شَىْءٍ خَلَقَهُۥ وَبَدَأَ خَلْقَ الْإِنسَٰنِ مِن طِينٍ
ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهُۥ مِن سُلَٰلَةٍ مِّن مَّآءٍ مَّهِينٍ ۝ ثُمَّ سَوَّىٰهُ وَنَفَخَ فِيهِ
مِن رُّوحِهِۦ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَٰرَ وَالْأَفْـِٔدَةَ قَلِيلًا مَّا
تَشْكُرُونَ ۝ وَقَالُوٓا أَءِذَا ضَلَلْنَا فِى الْأَرْضِ أَءِنَّا لَفِى خَلْقٍ جَدِيدٍ
بَلْ هُم بِلِقَآءِ رَبِّهِمْ كَٰفِرُونَ ۝ قُلْ يَتَوَفَّىٰكُم مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِى
وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ۝ وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذِ الْمُجْرِمُونَ نَاكِسُوا
رُءُوسِهِمْ عِندَ رَبِّهِمْ رَبَّنَآ أَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَٰلِحًا
إِنَّا مُوقِنُونَ ۝ وَلَوْ شِئْنَا لَءَاتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدَىٰهَا وَلَٰكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ
مِنِّى لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ۝ فَذُوقُوا بِمَا
نَسِيتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَآ إِنَّا نَسِينَٰكُمْ وَذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنتُمْ
تَعْمَلُونَ ۝ إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِـَٔايَٰتِنَا الَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِهَا خَرُّوا سُجَّدًا وَ
سَبَّحُوا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ۝ تَتَجَافَىٰ جُنُوبُهُمْ عَنِ
الْمَضَاجِعِ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَطَمَعًا وَمِمَّا رَزَقْنَٰهُمْ يُنفِقُونَ ۝
فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ أُخْفِىَ لَهُم مِّن قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ۝ أَفَمَن كَانَ مُؤْمِنًا كَمَن كَانَ فَاسِقًا لَّا يَسْتَوُۥنَ ۝ أَمَّا
الَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا الصَّٰلِحَٰتِ فَلَهُمْ جَنَّٰتُ الْمَأْوَىٰ نُزُلًۢا بِمَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ۝ وَأَمَّا الَّذِينَ فَسَقُوا فَمَأْوَىٰهُمُ النَّارُ كُلَّمَآ أَرَادُوٓا أَن

वही है छुपे (परोक्ष) और खुले (साक्ष्य) का जानने वाला, अपार शक्ति का मालिक और दया करने वाला, ○ जिस ने जो चीज़ बनाई खूब ही बनाई, और मनुष्य की सृष्टि का आरम्भ गारे से किया;[६] ○ फिर उस का वंशज एक निचुड़े हुए तुच्छ पानी से बनाया; ○ फिर उसे नख-शिख से दुरुस्त किया और उस में अपनी रूह (आत्मा) फूंकी;[७] और तुम्हें कान और आँखें और दिल दिये। तुम लोग कम ही कृतज्ञता दिखलाते हो। ○

और ये लोग कहते हैं: जब हम भूमि में रल-मिल जायेंगे, तो क्या हम फिर नये सिरे से पैदा किये जायेंगे? नहीं, बल्कि ये अपने रब* से मिलने १० को नहीं मानते[८]। ○

कहो: मौत का फ़िरिश्तः* जो तुम पर लगा दिया गया है, तुम्हें ग्रस्त लेता है,[९] फिर तुम अपने रब* की ओर पलटाये जाते हो। ○

यदि कहीं तुम देख लेते जब कि ये अपराधी अपने रब* के सामने सिर झुकाये होंगे: हमारे रब*! हम ने देख लिया और सुन लिया, अब हमें वापस भेज दे; हम अच्छा कर्म करेंगे, हमें अब विश्वास हो गया है। ○

(कहा जायेगा): यदि हम चाहते, तो हर जीव को उस का मार्ग-दर्शन प्रदान कर देते,[१०]

६ इस आयत से डार्विन (Darwin) के विकास-सिद्धान्त (Theory of evolution) का खण्डन होता है। मनुष्य की रचना ईश्वर ने की है न यह कि वह किसी विकास की उत्पत्ति है। फिर मानवीय शरीर में ऐसी शक्ति रख दी कि वह अपने वंशज को चला सके। यह कहना कि जगत में जीवन का आरम्भ एक आकस्मिक घटना के रूप में हुआ है एक अवैज्ञानिक (Un-scientific) बात है। एक कोशाणु (Cell) वाले जीव में भी जीवन का सरलतम रूप भी इतना अधिक जटिल और सूक्ष्म युक्तियों से परिपूर्ण है कि उसे किसी आकस्मिक घटना का परिणाम समझना स्वयं विज्ञान के प्रतिकूल बात होगी।

७ अर्थात् उसे चेतना प्रदान की। मनुष्य में जो चेतना-शक्ति पाई जाती है वह पदार्थों के भौतिक अथवा रसायनिक मिश्रण या प्रक्रिया की देन नहीं है बल्कि उस का मूल स्रोत अल्लाह की सत्ता है; मानवीय चेतना वास्तव में अल्लाह के गुणों की एक हल्की सी प्रतिच्छाया है। उपनिषद् में एक वाक्य अत्यन्त सुन्दर आया है: यदिद किंच प्राण एजति निःसृतम्। अर्थात् जो-कुछ भी है उसी अमर व्यापक जीवन से प्राणित हुआ है और हो रहा है।

८ अर्थात् मनुष्य का दोबारा जिला उठाया जाना कोई असम्भव और अद्भुत बात नहीं है कि इन की समझ में न आ सके बल्कि जो चीज़ इन के लिए यह बात समझने में बाधक बन रही है वह इन का अल्लाह से मिलने का इन्कार है।

९ इस से मालूम हुआ कि मृत्यु का अर्थ केवल यह है कि प्राण शरीर से अलग हो जाता है और फ़िरिश्तः* उसे अपने क़ब्ज़े में ले लेता है। अपराधी आत्मा के साथ फ़िरिश्तों* का व्यवहार कुछ और होता है, और ईमान* रखने वाली शुद्ध आत्मा के साथ उन का व्यवहार कुछ और होता है। दे० सूरा अन-निसा आयत ६७; अल-अनआम आयत ९३; अन-नह्ल आयत २८; अल-वाक़िअः आयत ८३-९४।

१० परन्तु हमें तो तुम्हारी परीक्षा लेनी थी जिस में तुम असफल हो चुके हो। यदि यथार्थ का निरीक्षण करा कर राह पर लाना अभीष्ट होता, तो तुम्हें इतनी बड़ी परीक्षा में डाला ही क्यों जाता; हम तुम्हें पहले ही सीधा मार्ग दिखा सकते थे।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

परन्तु मेरी (बुरे कर्म करने वालों के बारे में) वह बात पूरी हो कर रही कि मैं दोज़ख़* को जिन्नों* और मनुष्य, सब से भर दूँगा''। ○ अब चखो मज़ा — इस कारण कि तुम ने अपने इस दिन के मिलने को भुला दिया था— और चखो मज़ा सदा रहने वाले अज़ाब का जो-कुछ तुम करते रहे हो उस के बदले में। ○

हमारी आयतों* पर तो बस वे लोग ईमान* लाते हैं, जिन्हें इन (आयतों*) के द्वारा जब चेताया जाता है, तो सजदे* में गिर पड़ते हैं और अपने रब* की प्रशंसा (हम्द*) के साथ (उस की) तसबीह* करते हैं, और बड़े नहीं बनते, ○ उन के पहलू बिस्तरों से अलग रहते हैं[12] कि वे अपने रब* को भय और लालसा के साथ पुकारते हैं, और जो-कुछ हम ने उन्हें दिया है उस में से ख़र्च करते हैं। ○ फिर जैसी-कुछ आँखों की ठण्डक (की सामग्री) उन के कर्मों के बदले में उन के लिए छुपा रखी गई है[13] उस की किसी जीव को ख़बर नहीं। ○ भला जो व्यक्ति कि ईमान* वाला हो वह उस व्यक्ति जैसा हो सकता है जो सीमोल्लंघन करने वाला हो ? ये दोनों बराबर नहीं हो सकते। ○

जो लोग ईमान* लाये और अच्छे काम किये, उन के लिए जन्नतों* का ठिकाना है, अतिथि-सत्कार के रूप में उस के बदले में जो-कुछ कि वे करते थे। ○

और वे लोग जिन्हों ने सीमोल्लंघन किया, उन का ठिकाना आग (दोज़ख़*) है। जब कभी वे चाहेंगे कि उस से निकल जायें, उसी में लौटा दिये जायेंगे। और उन से कहा जायेगा: चखो उस आग (दोज़ख़*) के अज़ाब का मज़ा जिसे तुम झुठलाते थे। ○ २०

उस बड़े अज़ाब[14] से पहले कम दरजे के अज़ाब[15] का मज़ा इन्हें चखा देंगे, कदाचित् ये पलट आयें। ○

और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जिसे उस के रब* की आयतों* के द्वारा चेताया जाये, और फिर वह उन से मुँह फेर ले। निश्चय ही हमें ऐसे अपराधियों से बदला लेना है। ○

और हम ने मूसा को किताब* दी है — अतः उस से मिलने में[16] तुम किसी सन्देह में न रहना — और हम ने उसे बनी इसराईल* के लिए मार्ग-दर्शन बनाया। ○

और जब उन्हों ने सब्र* किया और हमारी आयतों* पर विश्वास करते रहे, तो हम ने उन में नायक बनाये जो हमारे हुक्म से (सीधा) मार्ग दिखाते थे। ○

निश्चय ही तेरा रब* क़ियामत* के दिन उन के बीच उस चीज़ का फ़ैसला कर देगा जिस में ये विभेद करते रहे हैं। ○ २५

---

११ दे० सूरा हूद फुट नोट ५०।

१२ अर्थात् रातों का एक हिस्सा वे अल्लाह की याद और उस की इबादत* में गुज़ारते हैं।

१३ नबी सल्ल० ने कहा है कि अल्लाह कहता है। मैं ने अपने अच्छे बन्दों के लिए वह-कुछ उपलब्ध कर रखा है जिसे न कभी किसी आँख ने देखा और न कभी किसी कान ने सुना और न कोई मनुष्य कभी उस की कल्पना कर सकता है।

१४ अर्थात् आख़िरत* का अज़ाब।

१५ अर्थात् दुनिया में पहुँचने वाली तकलीफ़ें और आपत्तियाँ जैसे अकाल, युद्ध, महामारि, तूफ़ान, और बाढ़ भयानक रोग आदि।

१६ आख़िरत के आने में जब कि हर एक व्यक्ति को उस के कर्मों का बदला दिया जायेगा। कुरआन के टीकाकारों ने इस के विरुद्ध अर्थ लिए हैं परन्तु विचार करने से मालूम होता है कि यहाँ 'उस से मिलने' से आशय आख़िरत* का पेश आना ही है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

يَخْرُجُوا مِنْهَا أُعِيدُوا فِيهَا وَقِيلَ لَهُمْ ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّذِي كُنْتُمْ
بِهِ تُكَذِّبُونَ ۝ وَلَنُذِيقَنَّهُمْ مِنَ الْعَذَابِ الْأَدْنَىٰ دُونَ الْعَذَابِ
الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ ثُمَّ أَعْرَضَ
عَنْهَا ۚ إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ مُنْتَقِمُونَ ۝ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ
فَلَا تَكُنْ فِي مِرْيَةٍ مِنْ لِقَائِهِ ۖ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِبَنِي إِسْرَائِيلَ ۝
وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ أَئِمَّةً يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوا ۖ وَكَانُوا بِآيَاتِنَا
يُوقِنُونَ ۝ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا
فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝ أَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ
الْقُرُونِ يَمْشُونَ فِي مَسَاكِنِهِمْ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ ۖ أَفَلَا يَسْمَعُونَ ۝
أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَسُوقُ الْمَاءَ إِلَى الْأَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا تَأْكُلُ
مِنْهُ أَنْعَامُهُمْ وَأَنْفُسُهُمْ ۖ أَفَلَا يُبْصِرُونَ ۝ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا
الْفَتْحُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ الَّذِينَ كَفَرُوا إِيمَانُهُمْ
وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ۝ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَانْتَظِرْ إِنَّهُمْ مُنْتَظِرُونَ ۝

क्या इन्हें इस चीज़ ने भी राह न सुझाई कि इन से पहले कितनी जातियों को हम विनष्ट कर चुके हैं, जिन के निवास-स्थानों में ये चलते-फिरते हैं[17] ? निश्चय ही इस में बड़ी निशानियाँ हैं ! क्या ये सुनते नहीं ? ○

क्या इन्हों ने नहीं देखा कि हम चटियल ज़मीन की ओर पानी पहुँचाते हैं फिर उस से खेती पैदा करते हैं जिस में से उन के चौपाये भी खाते हैं और वे भी ? तो क्या इन्हें कुछ सूझता नहीं ? ○

और ये लोग कहते हैं : यह फ़ैसला कब होगा यदि तुम सच्चे हो ? ○ कह दो : फ़ैसले के दिन उन का ईमान* (लाना) उन के कुछ काम न आयेगा जिन्हों ने कुफ़्र* किया है, और न उन्हें मुहलत ही मिलेगी। ○ अच्छा, इन्हें छोड़ दे, और इन्तज़ार कर। यह भी इन्तज़ार करते हैं। ○

---

१७ अर्थात् क्या ये लोग इतिहास से शिक्षा ग्रहण नहीं करते। क्या इन्हें मालूम नहीं कि रसूलों* को झुठलाने वाली जातियों को अल्लाह ने विनष्ट कर के रख दिया। अल्लाह के अज़ाब से केवल वही लोग बच सके हैं जो रसूलों* को मानने वाले और अल्लाह की बन्दगी करने वाले थे।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

३३--अल-अहज़ाब

(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः* का नाम 'अल-अहज़ाब' (The Clans) आयत* २० से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

इस सूरः* में तीन महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं[1] का उल्लेख किया गया है निश्चित रूप से जिन से मालूम होता है कि यह सूरः सन् ५ हिज० में अवतीर्ण हुई है।

ऐतिहासिक पृष्ठ-भूमि

'उहुद' की लड़ाई[2] (सन् ३ हिज०) में मुसलमानों को जो हानि पहुँची थी उस से अरब के मुश्रिकों*, यहूदियों* और मुनाफ़िक़ों* का साहस बहुत बढ़ गया था। यही कारण है कि 'उहुद' के एक वर्ष के बाद ही नज्द का 'बनी असद' क़बीला मदीना पर छापा मारने की तैयारियों में लग गया। नबी सल्ल० को इस की सूचना मिल गई। आप (सल्ल०) ने हज़रत अबू सलमः रज़ि० की अध्यक्षता में डेढ़ सौ आदमियों की एक सेना उन के दमन के लिए भेज दी। अचानक इस्लामी सेना के पहुँच जाने के कारण वे अपना सब-कुछ छोड़ कर भाग खड़े हुये।

'सफ़र' सन् ४ हि० में 'अज़ल' और 'क़ारः' के क़बीलों ने नबी सल्ल० से कुछ आदमी माँगे ताकि वे उन के यहाँ जा कर लोगों को इस्लाम* की शिक्षा दें; परन्तु उन्हों ने विश्वासघात किया, नबी सल्ल० के भेजे हुये छः आदमियों में से चार को क़त्ल कर दिया। बचे हुये दो आदमियों[3] को ले जा कर मक्का में शत्रुओं के हाथ बेच दिया जिन्हें दुश्मनों ने शहीद कर डाला। फिर इस महीने में क़बीला बनी आमिर के सरदार की इच्छा पर नबी सल्ल० ने ४० या ७० नवयुवकों को नज्द की ओर भेजा था कि वे वहाँ जा कर लोगों को इस्लाम* की शिक्षा दें; परन्तु उन के साथ भी विश्वासघात किया गया और वे सब-के-सब शहीद कर दिये गये।

यहूदियों* के एक विशेष क़बीला 'बनी नज़ीर' का साहस बहुत बढ़ गया था वह निरन्तर अपने किये हुये समझौतों के विरुद्ध चालें चलता आ रहा था। 'रबी-उल अव्वल' सन् ४ हिज० में उस ने नबी सल्ल० को शहीद कर देने तक की साज़िश की परन्तु अल्लाह ने उस की साज़िश को विफल कर दिया। और उन्हें मदीना छोड़ कर निकल जाना पड़ा।

'जुमादल ऊला' सन् ४ हि० में 'बनी ग़तफ़ान' के दो क़बीलों (बनू सअलबः और बनू मुहारिब) ने भी मदीने पर चढ़ाई करने की तैयारियाँ कीं। उन की रोक-

---

१ अर्थात् अहज़ाब की घटना, बनी क़ुरैज़ः की मुहिम और हज़रत ज़ैनब रज़ि० का नबी सल्ल० से विवाह।

२ 'उहुद' की लड़ाई के लिए देखिए सूरः आले इमरान की भूमिका।

३ अर्थात् हज़रत ख़ुबैब बिन अदी और हज़रत ज़ैद बिन दसिनः।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

थाम के लिए आप (सल्ल०) स्वयं ४०० आदमियों की सेना ले कर निकले और ज़ातुर्रिकाअ् के स्थान पर उन्हें जा लिया। वे भय से बिना लड़े-भिड़े ही अपना सब-कुछ छोड़ कर पहाड़ों में तितर-बितर हो गये।

'उहुद' की लड़ाई से पलटते हुये अबू सुफ़यान ने मुसलमानों को चैलेंज दिया था कि अगले साल 'बद्र' के स्थान पर फिर मुक़ाबिला होगा। 'शाबान' सन् ४ हि० में १५०० की सेना ले कर नबी सल्ल० इस चैलेंज का जवाब देने के लिए 'बद्र' की ओर बढ़े। अबू सुफ़यान भी २००० की सेना ले कर चला परन्तु 'बद्र' तक पहुँचने का साहस न हो सका। नबी सल्ल० ने 'बद्र' पहुँच कर आठ दिन तक उस का इन्तज़ार किया फिर लौटे। इस के बाद इस्लाम* की धाक बैठ गई।

अहज़ाब की लड़ाई

यही परिस्थिति थी कि अहज़ाब की घटना पेश आई है। बनी नज़ीर मदीने से निकल कर भी अपनी चालों से बाज़ न आ सके। उन के सरदारों ने .कुरैश, ग़तफ़ान और हुज़ैल आदि क़बीलों को तैयार किया कि वे सब मिल कर मदीने पर आक्रमण कर दें। 'शव्वाल' सन् ५ हि० में अरब के विभिन्न क़बीलों ने बहुत बड़ी संख्या में इकट्ठा हो कर मदीना की छोटी सी बस्ती पर धावा बोल दिया। इन सब की संख्या दस-बारह हज़ार तक पहुँच रही थी। नबी सल्ल० को इस की सूचना मिल गई। हज़रत सलमान रज़ि० ने खन्दक़ (Trench) खोदने की राय दी और कहा कि फ़ारस (Persia) के लोग लड़ाई के अवसर पर बचाव के लिए खन्दक़ खोदते हैं। नबी सल्ल० ने खन्दक़ खोदने का हुक्म दे दिया। स्वयं नबी सल्ल० भी खन्दक़ खोदने वालों के साथ काम में लगे रहे। मदीना के दक्षिण में इतने अधिक बाग़ थे कि उधर से शत्रु आक्रमण नहीं कर सकते थे। और दूसरी दिशाओं में लावे की चट्टानें थीं हमला केवल उहुद पर्वत के पूर्वी और पश्चिमी कोनों से ही हो सकता था। इस लिए आप (सल्ल०) ने इस रुख़ पर खन्दक़ खोदने का आदेश दिया। खन्दक़ तैयार हो गई। काफ़िरों*को यह नहीं मालूम था कि मदीना के बाहर उन्हें खन्दक़ का सामना करना होगा। अरब के लोग बचाव की इस विधि से परिचित न थे। काफ़िरों* के लिए बस एक ही उपाय बाक़ी था कि वे यहूदी क़बीला बनी .कुरैज़ः को तोड़ कर अपनी ओर मिला लें। बनी .कुरैज़ः के लोग नबी सल्ल० से समझौता कर चुके थे। उन का कर्तव्य था कि इस अवसर पर वे मुसलमानों के साथ मिल कर दुश्मन का मुक़ाबिला करते। मुसलमान बनी .कुरैज़ः की ओर से निश्चिन्त थे। बल्कि रक्षा के उद्देश्य से अपने बाल-बच्चों को उन गढ़ियों में भेज दिया था जो बनी .कुरैज़ः ही की ओर थीं। बनी .कुरैज़ः को विद्रोह पर आमादा करने के लिए काफ़िरों* ने बनी नज़ीर के एक यहूदी सरदार को भेजा। बनी .कुरैज़ः ने पहले तो इन्कार किया और कहा कि हमारा मुहम्मद (सल्ल०) से समझौता है और आज तक उन से कोई शिकायत पैदा नहीं हुई है। परन्तु यहूदी सरदार ने उन्हें समझा-बूझा कर अपनी ओर कर लिया।

नबी सल्ल० को जब इस की सूचना मिली तो आप (सल्ल०) ने अपने आदमियों

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

को भेजा। नबी सल्ल० के भेजे हुये आदमी जब उन के पास पहुँचे तो उन्हों ने साफ़-साफ़ कह दिया कि हमारे और मुहम्मद (सल्ल०) के बीच कोई समझौता नहीं है। नबी सल्ल० ने ताकीद की थी कि यदि बनी .क़ुरैज़ः अपने दिये हुए वचन पर रहें, तो आ कर स्पष्टतः सब के सामने इस की ख़बर कर देना। और यदि वे विश्वासघात ही करना चाहते हों तो केवल मुझे ही इशारे में सूचित कर देना ताकि इस बात से लोगों में घबराहट न फैलने पाये। नबी सल्ल० के आदमियों ने लौट कर इशारे में नबी सल्ल० को उन के इरादे की ख़बर दे दी। परन्तु यह बात बहुत जल्द सारे नगर में फैल गई, लोग घबरा उठे। मुनाफ़िक़ अलग ऐसी बातें कहने लगे जिस से लोग हताश हो कर साहस छोड़ बैठें। इस कठिन परीक्षा के अवसर पर मालूम हो गया कि कौन वास्तव में दिल से अल्लाह और उस के रसूल* पर ईमान* रखता है और कौन मुनाफ़िक़* है। यह युद्ध इतिहास में अहज़ाब की लड़ाई के अतिरिक्त ख़नदक़ की लड़ाई के नाम से भी प्रसिद्ध है। इस लड़ाई में कोई ख़ास मुक़ाबिला नहीं हुआ। कभी-कभी आपस में कुछ झड़पें हो जाती थीं। कभी पथराव हो जाता। कभी-कभी तीर चलते। कोई बड़ी लड़ाई नहीं हुई।

इस कठिन अवसर पर जब कि सारा अरब मदीना की छोटी सी बस्ती पर पिल पड़ा था अल्लाह ने मुसलमानों की मदद की। ग़तफ़ान के एक व्यक्ति नईम बिन मसऊद मुसलमान हो कर नबी सल्ल० की सेवा में पहुँचे और कहा कि मेरे ईमान* लाने की ख़बर किसी को नहीं है। यदि आप (सल्ल०) मुझ से कोई काम लेना चाहते हों तो ले सकते हैं। फिर नईम बिन मसऊद ने नबी सल्ल० की अनुमति से कुछ ऐसे उपाय से काम लिया कि शत्रुओं में फूट पड़ गई। दुश्मनों को घेरा डाले लग-भग एक मास हो रहा था। सर्दियों के दिन थे। इतनी बड़ी सेना के खाने-पीने का प्रबन्ध कोई आसान बात न थी। फूट पड़ जाने के कारण अब उन में वह साहस न रहा जिस साहस के साथ उन्हों ने मदीना पर हमला किया था। फिर अचानक एक रात बड़ी ही तेज़ आँधी आई जिस में सर्दी, कड़क और चमक थी ऐसा अन्धकार छा गया कि कुछ भी सुझाई न देता था। इस आँधी ने दुश्मनों के ख़ेमे उलट दिये। चूल्हों पर जो हाँडियाँ चढ़ी थीं वे भी उलट गईं। काफ़िर* तितर-बितर हो गये। रातों-रात सब भाग खड़े हुये। सवेरे मैदान दुश्मनों से बिलकुल ख़ाली था। नबी सल्ल० ने कहा : .क़ुरैश के लोग इस साल के बाद तुम पर चढ़ाई न कर सकेंगे बल्कि अब तुम उन पर चढ़ाई करोगे।

ख़न्दक़ से पलट कर नबी सल्ल० घर आये तो हज़रत जिबरील*-अ० ने आ कर यह हुक्म सुनाया कि इस समय बनी .क़ुरैज़ः से निमट लेना चाहिए। नबी सल्ल० ने इस बात की घोषणा कर दी कि जब तक बनी .क़ुरैज़ः के क्षेत्र तक न पहुँच जाओ 'अस्र' की नमाज़ न पढ़ी जाये। इस के साथ हज़रत अली रज़ि० को एक दस्ते के साथ बनी .क़ुरैज़ः की ओर भेज दिया। जब वे बनी .क़ुरैज़ः के यहाँ पहुँचे तो यहूदी* नबी सल्ल० और मुसलमानों को गालियाँ देने लग गये। फिर जब नबी सल्ल० की अध्यक्षता में पूरी इस्लामी सेना आ पहुँची और उस ने उन को

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

बस्ती को अपने घेरे में ले लिया। आख़िर तंग आकर उन्हों ने इस शर्त पर अपने-आप को नबी सल्ल० के हवाले कर दिया कि औस क़बीले के सरदार सअ्द बिन मुआज़ रज़ि० उन के बारे में जो फ़ैसला कर देंगे उसे दोनों फ़रीक़ मान लेंगे। हज़रत सअ्द उन की चालों से भली-भाँति परिचित हो चुके थे; उन्हों ने देखा था किस तरह इन लोगों ने उस कठिन समय पर विश्वासघात किया जब कि सारा अरब मदीना पर पिल पड़ा था। हज़रत सअ्द रज़ि० ने फ़ैसला किया कि इन के पुरुषों को क़त्ल कर दिया जाये और इन की स्त्रियों और बच्चों को ग़ुलाम बना लिया जाय। और इन की सम्पत्ति मुसलमानों में बाँट दी जाये[1]। इसी फ़ैसले को कार्य-रूप में लाया गया[2]। इस तरह बनी क़ुरैज़ः को अल्लाह ने उन के करतूतों की सज़ा दे दी। उन की गढ़ियों में जब मुसलमानों ने जा कर देखा तो पता चला कि उन्हों ने लड़ाई की पूरी तैयारी कर रखी थी। लड़ने के लिए उन्हों ने १५०० तलवारें, ३०० कवचें, २००० भाले और १५०० ढालें संचित कर ली थीं।

'उहुद' की लड़ाई से ले कर अहज़ाब की लड़ाई तक का समय अत्यन्त अशान्ति का समय था। परन्तु इस ज़माने में भी इस्लामी समाज के निर्माण का काम बराबर होता रहा। बहुत से सामाजिक और आर्थिक सुधार हुये।

वार्तायें

नुबूवत*, आज्ञापालन का मार्ग और सत्य का प्रचार यही इस सूरः* के मूल विषय हैं। आयत ७२ और उस के बाद का हिस्सा इस सूरः का केन्द्रीय विषय है।

इस सूरः* के अध्ययन से ऐसा प्रतीत होता है कि मानो अल्लाह अपने नबी और ईमान* वालों को एक साथ सम्बोधित कर रहा है। एक बार वह नबी (सल्ल०) की ओर रुख़ करता है, एक बार मुसलमानों की ओर। इस सूरः* में नबी सल्ल० को पाँच बार सम्बोधित किया गया है और पाँच बार मुसलमानों को भी।

प्रस्तुत सूरः* में अहज़ाब और बनी क़ुरैज़ः की लड़ाई पर विवेचना की गई[3]।

अरब में एक बुरी प्रथा मुँह-बोले बेटे के सिलसिले में चली आ रही थी उस प्रथा का इस सूरः में निषेध किया गया। अरब लोग मुँह-बोले बेटे (दत्तक) अर्थात् मुतबन्ना (Adopted son) को बिलकुल सगे बेटे की तरह समझते थे। मुँह-बोली मायें और मुँह-बोली बहिनें उस से उसी तरह मिलती-जुलती थीं जैसे सगे बेटे या भाई से मिलना-जुलना होता है। मुँह-बोले बेटे को विरासत में हिस्सा मिलता था। मुँह-बोले बेटे के साथ मुँह-बोले बाप की बेटियों के विवाह को उसी प्रकार हराम समझते थे जैसे सगी बहिन के साथ विवाह हराम होता है। इसी तरह मुँह-बोले बाप की पत्नी भी उस के लिए माता की तरह हराम समझी जाती थी। यदि मुतबन्ना मर जाये या अपनी पत्नी को तलाक़ दे दे तो मुँह-बोला बाप उस स्त्री से विवाह नहीं कर सकता था। इस्लाम के दिये हुये क़ानून और नियमों से यह प्रथा टकराती थी।

---

१ दे० आयत २६ और २७।

२ हज़रत सअ्द रज़ि० का यह फ़ैसला तौरात* के आदेश के अनुसार था। दे० इस्तिसना (Deut.) २० : १०-१४।

३ दे० आयत ६-२७।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

इस बुरी प्रथा के उन्मूलन के लिए ज़रूरी था कि अल्लाह का रसूल* स्वयं बढ़ कर इस प्रथा को तोड़े। और किसी को इस के बारे में किसी तरह का संकोच न हो। नबी सल्ल० ने अपने मुँह-बोले बेटे हज़रत ज़ैद रज़ि० की पत्नी हज़रत ज़ैनब रज़ि० से जिन्हें हज़रत ज़ैद रज़ि० ने तलाक़ दे दिया था विवाह कर लिया। इस तरह इस बुरी प्रथा को आप सल्ल० ने सदैव के लिए तोड़ दिया। हज़रत ज़ैद रज़ि० क़बीला कल्ब के एक व्यक्ति हारसः बिन शराहील के बेटे थे। हज़रत ज़ैद रज़ि० ८ वर्ष के थे। उन की माता उन्हें ले कर अपने मैके गईं। वहाँ उन के पड़ाव पर बनी क़ैन बिन जस्र के लोगों ने छापा मारा और लूट-मार के साथ जिन आदमियों को वे पकड़ ले गये उन में हज़रत ज़ैद रज़ि० भी थे। हज़रत ज़ैद को उन्हों ने उकाज़ के मेले में बेच डाला। उन्हें हज़रत ख़दीजः रज़ि० के भतीजे ने ख़रीद लिया और मक्का ला कर उन्हें हज़रत ख़दीजः रज़ि० को दे दिया। फिर जब हज़रत ख़दीजः रज़ि० का नबी सल्ल० से विवाह हुआ, तो हज़रत ज़ैद नबी सल्ल० की सेवा में पहुँच गये। इस समय हज़रत ज़ैद रज़ि० की आयु केवल १५ वर्ष की थी। कुछ समय के बाद जब उन के पिता और चचा अपने बच्चे को खोजते हुये नबी सल्ल० के पास पहुँचे और कहा कि आप (सल्ल०) जो फ़िदयः* कहें हम देने को तैयार हैं। हमारा बच्चा हमें दे दीजिए। नबी सल्ल० ने कहा कि लड़का यदि तुम्हारे साथ जाना चाहेगा तो मैं उसे यों ही छोड़ दूँगा। मैं कोई फ़िदयः* न लूँगा। हज़रत ज़ैद को बुला कर नबी सल्ल० ने पूछा कि इन दोनों आदमियों को जानते हो? हज़रत ज़ैद ने कहा कि हाँ, ये मेरे पिता हैं और ये मेरे चचा होते हैं। आप (सल्ल०) ने कहा : चाहो तो इन के साथ चले जाओ और चाहो तो मेरे साथ रहो। हज़रत ज़ैद ने आप (सल्ल०) के साथ रहना पसन्द किया। उन के पिता और चचा ने कहा, ज़ैद! तू स्वतन्त्रता के मुक़ाबिले में दासता को पसन्द करता है और अपने माता-पिता और घराने के लोगों को छोड़ कर तू दूसरों के पास रहना चाहता है? हज़रत ज़ैद ने उत्तर दिया, मैं इस व्यक्ति में ऐसे गुण और विशेषतायें देख चुका हूँ कि उन का अनुभव करने के बाद इस व्यक्ति के मुक़ाबिले में अब संसार के किसी भी व्यक्ति को पसन्द नहीं कर सकता। नबी सल्ल० ने उसी समय ज़ैद रज़ि० को आज़ाद कर के अपना मुँह-बोला बेटा बना लिया। हज़रत ज़ैद रज़ि० उन लोगों में से हैं जिन्हें नबी सल्ल० की नुबूवत* पर ईमान* लाने में क्षण भर के लिए भी संकोच और किसी प्रकार का सन्देह नहीं हुआ। नबी सल्ल० को जब अल्लाह ने नुबूवत* प्रदान की, तो उस समय हज़रत ज़ैद ३० वर्ष के थे उन्हें आप (सल्ल०) की सेवा में रहते हुये १५ वर्ष बीत चुके थे। हज़रत ज़ैद रज़ि० पर अल्लाह और उस के रसूल* (सल्ल०) ने बड़ा उपकार किया[१]। अल्लाह ने उन्हें अपने नबी (सल्ल०) की सेवा में रहने का मौक़ा प्रदान किया। उन्हें इस्लाम* की दौलत दी। अल्लाह के नबी (सल्ल०) ने उन्हें स्वतन्त्र कर के अपना बेटा बना लिया और सन् ४ हिज० में हज़रत ज़ैनब रज़ि० से जो आप सल्ल० की फूफी की बेटी थीं विवाह कर दिया। उन का महर* स्वयं अदा किया और घर के लिए आवश्यक सामग्री भी उन्हें दी। जब हज़रत ज़ैद ने अपनी

१ दे० फ़ायदा ३७।
* इन के अर्थ पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

पत्नी हज़रत ज़ैनब रज़ि० को तलाक़ दे दिया तो अल्लाह के हुक्म से आप (सल्ल०) ने हज़रत ज़ैनब रज़ि० से विवाह कर लिया। इस तरह शताब्दियों से जो एक अनुचित प्रथा चली आ रही थी उसे आप (सल्ल०) ने तोड़ दिया।

मुनाफ़िक़ों,* और शत्रुओं को मौक़ा हाथ आया वे अल्लाह के रसूल* (सल्ल०) पर चोटें करने लगे। बल्कि झूठ-मूठ का यह क़िस्सा भी गढ़ा गया कि (अल्लाह की पनाह!) मुहम्मद (सल्ल०) बहू को देख कर आसक्त हो गये। बेटे को जब इस का पता चला तो उस ने अपनी पत्नी को तलाक़ दे दी। और इस के बाद आप ने बहू से विवाह रचा लिया। सूरः की आयत ३६ से ४८ तक इस विवाह के बारे में लोगों के सन्देहों को दूर किया गया है। और लोगों के आक्षेपों का उत्तर दिया गया है।

सामाजिक सुधार के सिलसिले में कई-एक आदेश दिये गये। तलाक़ के सिलसिले में एक विशेष नियम दिया गया¹। नबी सल्ल० की पत्नियों को यह आदेश दिया गया कि अपने घरों में टिकी रहें; सज-धज कर कदापि बाहर न निकलें। दूसरे पुरुषों से बात-चीत करने में सावधानी से काम लें; दबी ज़बान से बात न करें कि कोई व्यक्ति जिस के दिल में रोग हो किसी लालच में पड़ जाये। हुक्म दिया गया कि कोई व्यक्ति बिना इजाज़त लिये नबी सल्ल० के घरों में प्रवेश न करे। किसी को यदि नबी सल्ल० की पत्नियों से कोई चीज़ माँगनी हो, तो वह परदे के पीछे से माँगे। हुक्म दिया गया कि आज़ादी के साथ नबी सल्ल० के घरों में केवल वही लोग आ जा सकते हैं जो नबी सल्ल० की पत्नियों के बहुत ही क़रीबी नातेदार हैं जिन से उन का परदा नहीं है। फिर समस्त मुसलमान स्त्रियों को हुक्म दिया गया कि जब वे बाहर निकलें तो चादरों से अपने-आप को ढाँक कर घूँघट डाल कर निकलें। परदे के आरम्भिक आदेश जो इस सूरः में दिये गये हैं इन की पूर्ति सूरः अन-नूर उतरने के बाद हुई। सूरः अन-नूर इस सूरः के एक वर्ष के बाद अवतीर्ण हुई है।

नबी सल्ल० की पत्नियों को सचेत किया गया कि एक ओर दुनिया और उस की शोभा है और दूसरी ओर अल्लाह और रसूल* और आख़िरत*; वे अपने लिए किसी एक को पसन्द कर लें यदि वे दुनिया को पसन्द करती हैं, तो उन्हें तंगी में नहीं रखा जायेगा बल्कि रुख़सत कर दिया जायेगा और यदि वे अल्लाह और रसूल* और आख़िरत को चाहती हैं, तो उन्हें धैर्य से काम लेना चाहिए और अल्लाह और रसूल* का साथ देना चाहिए।

ईमान* वालों को बताया गया कि नबी सल्ल० की पत्नियाँ तुम्हारी मायें हैं और वे तुम पर उसी प्रकार हराम हैं जिस तरह सगी मायें हराम होती हैं। फिर ईमान* वालों को यह आदेश भी दिया गया कि उन का कर्त्तव्य है कि नबी* पर रहमत² और सलाम भेजें। उन से नबी सल्ल० को कोई तकलीफ़ न पहुँचे। शत्रु जो नबी सल्ल० पर, नबी सल्ल० के घरेलू जीवन पर आक्षेप कर रहे हैं उन से उन्हें दूर रहना चाहिए। ईमान* वालों का कर्त्तव्य है कि वे मुसलमानों का आदर करें। उन्हें किसी प्रकार की तुहमत न लगायें।

१ दे० आयत ४९।
२ Blessing।
* इन का अर्थ आखिर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

उपाय यह भी था कि आप (सल्ल०) विभिन्न घरानों में विवाह करें। अरबों में यह बात चली आ रही थी कि जिस किसी व्यक्ति से क़बीले की बेटी का विवाह होता उसे पूरे क़बीले का दामाद समझा जाता। और दामाद से लड़ने को वे लज्जा की बात समझते थे। आप की पत्नियों में हज़रत आइशः रज़ि० आप के मित्र हज़रत अबू बक्र रज़ि० की बेटी थीं और हज़रत हफ़सः रज़ि० हज़रत उमर रज़ि० की बेटी थीं। कई-एक पत्नियाँ आप के दुश्मन घरानों की थीं। हज़रत उम्म सलमः उस घराने की बेटी थीं जिस से अबू जह्ल और ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि०) का सम्बन्ध था। हज़रत उम्म हबीबः रज़ि० अबू सुफ़यान की बेटी थीं। हज़रत सुफ़ीयः रज़ि०, जोयरियः रज़ि० और रैहानः रज़ि० यहूदी कुल से थीं। आप ने इन्हें स्वतन्त्र कर के इन के साथ विवाह कर लिया। इस से यहूदी बड़ी हद तक ठण्डे पड़ गये। यहाँ यह बात भी सामने रहनी चाहिए कि यदि नबी सल्ल० के लिए ४ से अधिक पत्नियाँ हलाल थीं और दूसरे मुसलमान यदि एक ४ से अधिक पत्नियाँ नहीं रख सकते तो उन के लिए यह आसानी है कि उन्हें यदि अपनी किसी पत्नी को तलाक़ देनी पड़ जाये तो वे तलाक़ दे सकते हैं; और उस के बदले किसी दूसरी स्त्री से विवाह कर सकते हैं। परन्तु नबी सल्ल० के लिए अपनी पत्नियों को तलाक़ देना हराम था।

इस सूरः में तक़्वा* पर विशेष रूप से ज़ोर दिया गया है।

---

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अल-अहज़ाब

(मदीना में उतरी — आयतें* ७३)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللّٰهَ وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۙ وَّاتَّبِعْ مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ
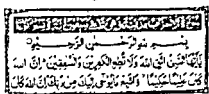
हे नबी* ! अल्लाह का डर रखो और काफ़िरों* और मुनाफ़िक़ों* का कहना न मानो। निस्सन्देह अल्लाह (सब-कुछ) जानने वाला और हिकमत* वाला है।○

और चलो उस पर जिस की वह्य* तुम्हारे रब* की ओर से तुम्हें की जा रही है। निस्सन्देह अल्लाह उस की खबर रखता है जो तुम लोग करते हो।○ और अल्लाह पर भरोसा करो, अल्लाह वकील होने के लिए काफ़ी है[२]।○

अल्लाह ने किसी आदमी के धड़ में दो दिल नहीं रखे हैं,[३] और न उस ने तुम लोगों की पत्नियों को जिन से तुम 'ज़िहार' करते हो[४] तुम्हारी माँ बना दिया है, और न उस ने तुम्हारे मुँह-बोले बेटों को सच-मुच तुम्हारा बेटा बनाया है। यह तो बस तुम्हारे मुँह में आया और तुम ने कह दिया। परन्तु अल्लाह सच्ची बात कहता है और वही (सीधा) मार्ग दिखाता है।○

उन (मुँह-बोले बेटों) को उन के बापों के नाम से पुकारो। यही अल्लाह के नज़दीक अधिक न्यायोचित बात है। और यदि तुम उन के बापों को न जानते हो, तो वे तुम्हारे भाई हैं दीन* के नाते और तुम्हारे सम्बन्धी हैं। और तुम से जो चूक हो जाये उस में तुम पर कोई दोष नहीं, परन्तु जिस का निश्चय तुम्हारे दिल ने किया (उस में तुम्हारी पकड़ है)। अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दयावान् है।○ ५

नबी* का सम्बन्ध ईमान* वालों के साथ उस से अधिक है जितना उन लोगों का अपने आप से है,[५] और उस की पत्नियाँ उन की मातायें हैं[६]। और अल्लाह की किताब* के

---

१ दे० आयत ४८।

२ सूरः की प्रारम्भिक तीन आयतें प्राक्कथन के रूप में हैं।

३ अर्थात् आदमी एक समय में ईमान* वाला और मुनाफ़िक़*, सत्कर्मी और दुराचारी, झूठा और सच्चा दोनों नहीं हो सकता।

४ 'ज़िहार' अरब का एक विशेष पारिभाषिक शब्द है। प्राचीन समय में अरब के लोग अपनी पत्नी से झगड़ते हुये कभी यह कह दिया करते थे कि तेरी पीठ मेरे लिए मेरी माता की पीठ जैसी है। जब यह बात किसी के मुँह से निकल जाती तो यह समझा जाता था कि उस की पत्नी अब उस की पत्नी नहीं रही क्योंकि उस ने उसे माता की उपमा दे दी। 'ज़िहार' के सम्बन्ध में इस्लामी आदेश सूरः अल-मुजादलः आयत २-४ में देखिए। मुँह-बोले बेटे के बारे में हुक्म आगे आ रहा है।

५ अर्थात् नबी सल्ल० का मुसलमानों से गहरा सम्बन्ध है। कोई दूसरा सम्बन्ध या सम्पर्क इस के तुल्य नहीं हो सकता। अल्लाह का रसूल* माता-पिता से भी बढ़ कर मुसलमानों का हित चाहने वाला है। आदमी अपने को गुमराही में डाल कर अपने-आप को तबाह कर सकता है; परन्तु अल्लाह का नबी* उसे उसी राह पर लगाना चाहेगा जिस पर चल कर वह अपने जीवन को सफल बना सकता है। मुसलमानों का भी कर्तव्य होता है कि वे अल्लाह के नबी* को अपने माता-पिता, अपनी औलाद और अपने प्राणों से बढ़ कर प्रिय समझें, संसार की हर चीज़ से अधिक आप (सल्ल०) से प्रेम करें। आप (सल्ल०) के हर हुक्म के आगे अपना सिर झुका दें। नबी सल्ल० ने कहा है : तुम में से कोई व्यक्ति ईमान* वाला नहीं हो सकता जब तक कि मैं उस के लिए उस के पिता और उस की औलाद से बढ़ कर प्रिय न हो जाऊँ। (६ अगले पृष्ठ पर)

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

بما تعملون خبيرا ○ وتوكل على الله وكفى بالله وكيلا ○ ما
جعل الله لرجل من قلبين في جوفه وما جعل أزواجكم الائي
تظهرون منهن أمهاتكم وما جعل أدعياءكم أبناءكم ذلكم قولكم
بأفواهكم والله يقول الحق وهو يهدي السبيل ○ ادعوهم لآبائهم
هو أقسط عند الله فإن لم تعلموا آباءهم فإخوانكم في الدين و
مواليكم وليس عليكم جناح فيما أخطأتم به ولكن ما تعمدت
قلوبكم وكان الله غفورا رحيما ○ النبي أولى بالمؤمنين من
أنفسهم وأزواجه أمهاتهم وأولوا الأرحام بعضهم أولى ببعض
في كتب الله من المؤمنين والمهجرين إلا أن تفعلوا إلى
أوليائكم معروفا كان ذلك في الكتب مسطورا ○ وإذ أخذنا
من النبيين ميثاقهم ومنك ومن نوح وإبراهيم وموسى وعيسى
ابن مريم وأخذنا منهم ميثاقا غليظا ○ ليسئل الصدقين عن
صدقهم وأعد للكفرين عذابا أليما ○ يأيها الذين آمنوا اذكروا
نعمة الله عليكم إذ جاءتكم جنود فأرسلنا عليهم ريحا وجنودا
لم تروها وكان الله بما تعملون بصيرا ○ إذ جاءوكم من فوقكم
ومن أسفل منكم وإذ زاغت الأبصار وبلغت القلوب الحناجر
وتظنون بالله الظنونا ○ هنالك ابتلي المؤمنون وزلزلوا

अनुसार दूसरे ईमान* वालों और मुहाजिरों* की अपेक्षा नातेदारों का आपस में एक-दूसरे से सम्बन्ध अधिक है," यह और बात है कि तुम अपने साथियों के साथ कोई भलाई करो। यह (हुक्म) किताब* में लिखा हुआ है। ○

और (हे नबी*!) याद करो जब हम ने नबियों* से उन का इक़रार[८] लिया, तुम से भी और नूह और इबराहीम और मूसा और मरयम के बेटे ईसा से भी। इन सब से हम ने कड़ा वचन लिया है; ○ ताकि सच्चे लोगों से (उन का रब*) उन की सचाई के बारे में सवाल करे। और काफ़िरों* के लिए उस ने दुःखदायी अज़ाब तैयार कर रखा है[९]। ○

"हे लोगो जो ईमान* लाये हो! अल्लाह के एहसान को याद करो जो उस ने तुम पर किया है जब सेनायें तुम पर चढ़ आईं, तो हम ने उन पर एक आँधी भेज दी और ऐसी सेनायें जिन को तुम ने नहीं देखा"। और अल्लाह वह सब-कुछ देख ही रहा है जो-कुछ तुम करते हो। ○

जब वे तुम्हारे ऊपर की ओर और तुम्हारे नीचे की ओर से तुम पर चढ़ आये," और

---

६ अर्थात् माता के समान उन का आदर करना मुसलमानों का कर्तव्य है। नबी सल्ल० की पत्नियाँ उन के लिए उसी तरह हराम है जिस तरह उन की मातायें उन पर हराम हैं। उन के साथ किसी मुसलमान का विवाह नहीं हो सकता (दे० आयत ५३)। और दूसरे मामलों में वे माता की तरह नहीं हैं। उदाहरणतः उन के लिए यह ज़रूरी है कि अपने क़रीबी नातेदारों के अतिरिक्त दूसरे मुसलमानों से परदा करें। उन की बेटियाँ मुसलमानों के लिए माँ-जाई बहिनें नहीं हैं कि उन से भी मुसलमानों का विवाह न हो सके।

७ बताया यह जा रहा है कि नबी* सल्ल० के साथ मुसलमानों का एक विशेष प्रकार का सम्बन्ध है। परन्तु मुसलमानों के आपस के सम्बन्धों में नातेदारों का हक़ सब से बढ़ कर है। इस लिए यह सही न होगा कि आदमी बाहर तो अपना माल लुटाता फिरे और अपने क़रीबी लोगों की आवश्यकताओं की उसे कुछ भी चिन्ता न हो। इसी प्रकार विरासत में उन ही लोगों को हिस्सा मिलेगा जो क़रीबी नातेदार होंगे। हिजरत* के बाद मदीना पहुँच कर नबी* सल्ल० ने मुसलमानों और उन लोगों के बीच जो मक्का से हिजरत* कर के मदीना पहुँचे थे भाई-चारा करा दिया था। इस भाई-चारे के सम्पर्क के आधार पर मुहाजिर* और अनसार* आपस में एक-दूसरे के वारिस समझे जाते थे। अल्लाह ने बता दिया कि विरासत नातेदारों ही में तक़सीम होगी। हाँ, यदि कोई भेंट-उपहार और वसीयत, हिब्बा और वक़्फ़ आदि के द्वारा दूसरे लोगों की मदद करनी चाहे तो कर सकता है; परन्तु इस रूप में कि वारिस अपने हक़ से वंचित न रह जायें।

८ दे० आयत ७२।

९ दे० आयत ७३।

१० यहाँ से ले कर आयत २७ तक का हिस्सा उस समय उतरा है जब कि नबी* सल्ल० 'ख़न्दक़' और 'बनी क़ुरैज़ः' की मुहिम से निवृत्त हो चुके थे। (दे० सूरः की भूमिका) सूरः के इस हिस्से में इन दोनों मुहिमों पर विवेचना की गई है।

११ दे० सूरः की भूमिका।

१२ अर्थात् हर ओर से चढ़ आये या यह कि मदीना के पूर्व ओर से आने वाले ऊपर से आये, और पश्चिम ओर से आने वाले नीचे की ओर से आये।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

४१ : २-४	'रहमान' और 'रहीम' अल्लाह की ओर से उतरा। साफ आयतें अरबी भाषा में।
४१ : ४१, ४२	उच्च पद वाला ग्रन्थ, जिसमें किसी तरह भी झूठ का दखल नहीं हो सकता। अल्लाह की ओर से उतरा हुआ।
४३ : ३, ४	कुरआन अरबी में है ताकि तुम समझ सको और यह सुरक्षित तख्तियों में मौजूद है।
४४ : ३	अल्लाह ने क़ुरआन एक मुबारक रात मे उतारा।
४५ : २०	तमाम लोगों के लिए है बुद्धिमानी की बातें, मार्ग-दर्शन और दयालुता।
४६ : १२	पहले के ग्रन्थों की पुष्टि करने वाला, अत्याचारियो को डराने वाला, और अच्छे कार्य करने वालो को शुभ-सूचना देने वाला।
५४ : ५	पूर्ण बुद्धिमानी की किताब।
५४ : २२,३२,४०	नसीहत हासिल करने के लिए आसान।
५६ : ७७,७८	बड़े पद वाला, सुरक्षित तख्तियों में लिखा हुआ।
५६ : ७९	इसको वही हाथ लगाते है जो पाक है।
५६ : ८०	सम्पूर्ण विश्व के स्वामी की ओर से उतरा हुआ।
५९ : २१	कुरआन अगर पहाड़ पर उतरता तो तुम देखते कि पहाड अल्लाह के डर से दबा और फटा जा रहा है।
६५ : १०	अल्लाह की ओर से उतरी हुई नसीहत।
६९ : ४०,४३	कुरआन एक उच्च पद वाले फ़िरिश्ते का लाया हुआ सन्देश है। यह किसी कवि की कविता नही और न किसी 'काहिन' का कलाम है।
७५ : १७-१९	कुरआन का जमा करना, उसका पढ़वाना और समझाना अल्लाह ने अपने जिम्मे लिया।
७६ : २३	अल्लाह ने कुरआन मुहम्मद सल्ल० पर थोड़ा-थोड़ा उतारा।
८० : ११-१६	कुरआन एक नसीहत है, जो चाहे नसीहत हासिल करे। सम्मानित पन्नो मे लिखा हुआ।
८१ : १९-२१	कुरआन एक उच्च पदों वाले फ़िरिश्ते का लाया हुआ सन्देश है, जो अमानतदार है और फ़रिश्तो का सरदार।
८५ : २१,२२	बड़ी शान वाला, सुरक्षित तख्ती में लिखा हुआ।
८६ : १३,१४	झूठ और सच को अलग-अलग कर देने वाला, हँसी-मजाक नही।
९७ : १	प्रतिष्ठा वाली रात मे उतरा।
९८ : २,३	पवित्र पन्ने, जिन मे पक्की बातें लिखी हुई हैं।

(२) ईश-ग्रन्थ होने की दलीलें

२ : २३,२४	अगर क़ुरआन के ईश-ग्रन्थ होने में सन्देह हो तो कोई उस जैसी एक सूरः ही बना लाओ।
४ : ८२	क़ुरआन पर विचार करो, अगर यह अल्लाह के सिवा किसी और की वाणी होती तो इसमे बहुत कुछ विरोधाभास पाया जाता।
६ : ११४	तौरात का ज्ञान रखने वाले जानते थे कि क़ुरआन अल्लाह की ओर से

زِلْزَالًا شَدِيدًا ۝ وَإِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ إِلَّا غُرُورًا ۝ وَإِذْ قَالَت طَّائِفَةٌ مِّنْهُمْ يَا أَهْلَ يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوا ۚ وَيَسْتَأْذِنُ فَرِيقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ يَقُولُونَ إِنَّ بُيُوتَنَا عَوْرَةٌ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ ۖ إِن يُرِيدُونَ إِلَّا فِرَارًا ۝ وَلَوْ دُخِلَتْ عَلَيْهِم مِّنْ أَقْطَارِهَا ثُمَّ سُئِلُوا الْفِتْنَةَ لَآتَوْهَا وَمَا تَلَبَّثُوا بِهَا إِلَّا يَسِيرًا ۝ وَلَقَدْ كَانُوا عَاهَدُوا اللَّهَ مِن قَبْلُ لَا يُوَلُّونَ الْأَدْبَارَ ۚ وَكَانَ عَهْدُ اللَّهِ مَسْئُولًا ۝ قُل لَّن يَنفَعَكُمُ الْفِرَارُ إِن فَرَرْتُم مِّنَ الْمَوْتِ أَوِ الْقَتْلِ وَإِذًا لَّا تُمَتَّعُونَ إِلَّا قَلِيلًا ۝ قُلْ مَن ذَا الَّذِي يَعْصِمُكُم مِّنَ اللَّهِ إِنْ أَرَادَ بِكُمْ سُوءًا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ۚ وَلَا يَجِدُونَ لَهُم مِّن دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الْمُعَوِّقِينَ مِنكُمْ وَالْقَائِلِينَ لِإِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ إِلَيْنَا ۖ وَلَا يَأْتُونَ الْبَأْسَ إِلَّا قَلِيلًا ۝ أَشِحَّةً عَلَيْكُمْ ۖ فَإِذَا جَاءَ الْخَوْفُ رَأَيْتَهُمْ يَنظُرُونَ إِلَيْكَ تَدُورُ أَعْيُنُهُمْ كَالَّذِي يُغْشَىٰ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۖ فَإِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوكُم بِأَلْسِنَةٍ حِدَادٍ أَشِحَّةً عَلَى الْخَيْرِ ۚ أُولَٰئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوا فَأَحْبَطَ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ ۚ وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۝ يَحْسَبُونَ الْأَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوا ۖ وَإِن يَأْتِ الْأَحْزَابُ يَوَدُّوا لَوْ أَنَّهُم بَادُونَ فِي الْأَعْرَابِ يَسْأَلُونَ عَنْ أَنبَائِكُمْ

जब आँखें डगने लगीं और हृदय घांटी तक आ गये, और तुम लोग अल्लाह के बारे में तरह-तरह के गुमान करने लगे''। ○

उस समय ईमान* वाले आज़माये गये, और बुरी तरह हिला मारे गये। ○

याद करो जब मुनाफ़िक़*, और वे लोग जिन के दिलों में रोग था, कहने लगे: अल्लाह और उस के रसूल* ने हम से वादा नहीं किया था धोखा दिया था''। ○ और जब उन में से एक गरोह ने कहा: हे यसरिब के लोगो! तुम्हारे लिए ठहरने का कोई मौक़ा नहीं, बस पलट चलो। और उन में से कुछ लोग नबी* से यह कह कर (घर रहने की) इजाज़त माँगने लगे: हमारे घर ख़तरे में हैं''। हालांकि वे खुले नहीं पड़े थे। वे तो बस (रणक्षेत्र से) भागना चाहते थे। ○

यदि उस के किनारों से दुश्मन घुस आते फिर इन से उपद्रव (फ़ितनः) मचाने के लिए कहा जाता,'' तो ये ऐसा कर डालते, और इस में देर थोड़ा ही लगाते। ○

और निश्चय ही ये लोग इस से पहले अल्लाह से इक़रार (प्रतिज्ञा) कर चुके हैं कि ये पीठ न फेरेंगे। और अल्लाह से किये हुये इक़रार के बारे में पूछ होनी ही है''। ○

(हे नबी*!) कहो: यदि तुम मौत या क़त्ल से भागो तो यह भागना तुम्हारे कुछ भी काम न आयेगा, और फिर भी जीवन का सुख थोड़ा ही भोगने पाओगे। ○

कहो: कौन है जो तुम्हें अल्लाह से बचा सकता हो यदि वह तुम्हें हानि पहुँचानी चाहे, या वह तुम्हारे साथ दयालुता का इरादा करे (तो कौन उसे रोक सकता है)। ये लोग अल्लाह के सिवा अपना कोई संरक्षक-मित्र और सहायक नहीं पा सकते। ○

अल्लाह तुम में से उन लोगों को अच्छी तरह जानता है जो (युद्ध के काम में) रुकावट डालने

---

१३ यहां ईमान* वालों से अभिप्रेत वे सभी लोग हैं जो मुहम्मद सल्ल० को रसूल* मान कर आप (सल्ल०) के अनुयायियों में सम्मिलित थे। इस में वे लोग भी थे जो आप (सल्ल०) के सच्चे अनुयायी थे और वे लोग भी जो वास्तव में मुनाफ़िक़* थे।

१४ यह वादा कि अल्लाह ईमान* वालों की सहायता करेगा और अन्त में विजय उन ही को प्राप्त होगी।

१५ अर्थात् हमें भय है कि बनी क़ुरैज़ः के लोग जिन्हों ने विश्वासघात किया है और शत्रुओं से मिल गये हैं कहीं हमारे बाल-बच्चों पर हाथ न डालें। यह वास्तव में एक बहाना था जिस की आड़ ले कर मुनाफ़िक़* लोग लड़ाई के मैदान से भागना चाहते थे। नगर के निवासियों की रक्षा के बारे में उचित प्रबन्ध करना नबी* सल्ल० की ज़िम्मेदारी थी न कि किसी सैनिक की।

१६ अर्थात् यदि वे दुश्मन इन्हें फ़ितनः और फ़साद करने के लिए बुलाते।

१७ उहुद की लड़ाई के बाद इन्हों ने यह इक़रार किया था कि अब लड़ाई के अवसर पर हम कभी पीठ न दिखायेंगे बल्कि वीरता के साथ डट कर दुश्मन का मुक़ाबिला करेंगे। परन्तु दो ही वर्षों के पश्चात् जब परीक्षा का समय आया तो इन का झूठ खुल गया, ये अपनी प्रतिज्ञा में सच्चे न निकले।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

لو كانوا فيكم ما قاتلوا إلا قليلا ۝ لقد كان لكم في رسول الله
أسوة حسنة لمن كان يرجوا الله واليوم الآخر وذكر الله كثيرا ۝
ولما رأ المؤمنون الأحزاب قالوا هذا ما وعدنا الله ورسوله وصدق
الله ورسوله وما زادهم إلا إيمانا وتسليما ۝ من المؤمنين
رجال صدقوا ما عاهدوا الله عليه فمنهم من قضى نحبه ومنهم
من ينتظر وما بدلوا تبديلا ۝ ليجزي الله الصادقين بصدقهم
ويعذب المنافقين إن شاء أو يتوب عليهم إن الله كان غفورا
رحيما ۝ ورد الله الذين كفروا بغيظهم لم ينالوا خيرا وكفى
الله المؤمنين القتال وكان الله قويا عزيزا ۝ وأنزل الذين
ظاهروهم من أهل الكتاب من صياصيهم وقذف في قلوبهم الرعب
فريقا تقتلون وتأسرون فريقا ۝ وأورثكم أرضهم وديارهم
وأموالهم وأرضا لم تطئوها وكان الله على كل شيء قديرا ۝
يا أيها النبي قل لأزواجك إن كنتن تردن الحياة الدنيا و
زينتها فتعالين أمتعكن وأسرحكن سراحا جميلا ۝ وإن كنتن
تردن الله ورسوله والدار الآخرة فإن الله أعد للمحسنات منكن
أجرا عظيما ۝ يا نساء النبي من يأت منكن بفاحشة مبينة
يضاعف لها العذاب ضعفين وكان ذلك على الله يسيرا ۝

वाले हैं, और अपने भाइयों से कहते हैं : "आओ हमारी ओर[१८] !" और वे लड़ाई में थोड़ा ही आते हैं, ○ तुम्हारे साथ कृपणता से काम लेते हैं[१९]। फिर जब भय का समय आ जाये, तो तुम उन्हें देखते हो कि वे इस तरह आँखें फिरा-फिरा कर तुम्हारी ओर देखते हैं जैसे किसी पर मौत की बेहोशी छा रही हो। परन्तु, जब भय जाता रहता है, तो यही लोग माल के लोभी हो कर तेज़ ज़बानों के साथ तुम्हारे स्वागत को आ पहुँचते हैं। ये लोग कदापि ईमान* नहीं लाये। अतः अल्लाह ने इन के कामों को अकारथ कर दिया। और यह काम अल्लाह के लिए (बहुत) आसान है। ○

ये समझ रहे हैं कि (आक्रमणकारी) दल अभी गये नहीं हैं; और यदि वे दल फिर आ जायें, तो ये चाहें कि क्या ही अच्छा होता कि वे कहीं बाहर बद्दुओं में होते, और (वहीं से) तुम्हारे समाचार पूछते रहते, और यदि ये तुम्हारे बीच होते भी, तो लड़ाई में हिस्सा थोड़ा ही लेते। ○

निश्चय ही तुम लोगों के लिए अल्लाह के रसूल* में एक उत्तम आदर्श था[२०] उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और अन्तिम दिन* की आशा रखता हो, और अल्लाह को अधिक याद करे। ○

और जब ईमान* वालों ने (सेना-) दलों को देखा, तो पुकार उठे : यह वही चीज़ है जिस का अल्लाह और उस के रसूल* ने हम से वादा किया था। और अल्लाह और उस के रसूल* ने सच कहा था[२१]। इस (घटना) ने उन के ईमान* और आत्म-समर्पण ही को और अधिक बढ़ाया। ○

ईमान* वालों में कितने ही ऐसे लोग हैं कि जो वादा उन्हों ने अल्लाह से किया था उसे सच्चा कर दिखाया। उन में से कुछ ने तो अपना अरमान पूरा कर लिया,[२२] और कुछ राह देख रहे हैं; और उन्हों ने कुछ भी परिवर्तित नहीं किया। ○

(यह सब-कुछ इस लिए हुआ) ताकि अल्लाह सच्चों को उन की सच्चाई का बदला दे, और मुनाफ़िक़ों* को यदि चाहे तो अज़ाब दे, या उन पर दया करे। निस्सन्देह अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है। ○

१८ और इस नबी* का साथ छोड़ दो, लड़ाई में जा कर क्यों अपनी जान गँवाओगे।

१९ तुम्हारा साथ खुले दिल से नहीं देते।

२० अर्थात् मुसलमानों का परम कर्तव्य है कि वे आप (सल्ल०) के जीवन को एक आदर्श-जीवन समझें और उसी के अनुसार अपने चरित्र का निर्माण करें। जिस प्रकार अल्लाह का रसूल* सत्य-मार्ग पर डटा रहा और कष्टों और कठिनाइयों का मुक़ाबिला करता रहा उसी प्रकार तुम्हें भी हर संकट को झेलते हुये सत्य पर जमे रहना चाहिए।

२१ देखो सूरः अल-बक़रः आयत २१४, सूरः अल-अनकबूत आयत २-३।

२२ अर्थात् अल्लाह की राह में अपनी जान दे चुके।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

وَمَنْ يَّقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتَعْمَلْ صَالِحًا نُّؤْتِهَآ اَجْرَهَا
مَرَّتَيْنِ وَاَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيْمًا ۝ يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ
مِّنَ النِّسَآءِ اِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِيْ فِيْ
قَلْبِهٖ مَرَضٌ وَّقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۝ وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ وَلَا
تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى وَاَقِمْنَ الصَّلٰوةَ وَاٰتِيْنَ
الزَّكٰوةَ وَاَطِعْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۭ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ
الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا ۝ وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى
فِيْ بُيُوْتِكُنَّ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ وَالْحِكْمَةِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ لَطِيْفًا
خَبِيْرًا ۝ اِنَّ الْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمٰتِ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ
وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْقٰنِتٰتِ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالصّٰدِقٰتِ وَالصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰبِرٰتِ
وَالْخٰشِعِيْنَ وَالْخٰشِعٰتِ وَالْمُتَصَدِّقِيْنَ وَالْمُتَصَدِّقٰتِ وَالصَّآئِمِيْنَ
وَالصّٰئِمٰتِ وَالْحٰفِظِيْنَ فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ
كَثِيْرًا وَّالذّٰكِرٰتِ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ۝ وَمَا
كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ اَمْرًا اَنْ
يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ ۭ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ
ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا ۝ وَاِذْ تَقُوْلُ لِلَّذِيْٓ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاَنْعَمْتَ
عَلَيْهِ اَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللّٰهَ وَتُخْفِيْ فِيْ نَفْسِكَ مَا اللّٰهُ

अल्लाह ने कुफ़्र* करने वालों का उन की क्रोधित दशा में मुँह फेर दिया; वे कोई भलाई हासिल न कर सके। और लड़ाई में ईमान* वालों की ओर से अल्लाह ही काफ़ी हो गया। अल्लाह बलवान् और अपार शक्ति का मालिक है।○

किताब वालों* में से जिन लोगों ने उन (आक्रमण करने वालों) का साथ दिया था[२३] (अल्लाह) उन्हें उन की गढ़ियों से उतार लाया, और उन के दिलों में रोब डाल दिया — एक गरोह को तुम क़त्ल कर रहे हो, और एक गरोह को क़ैद कर रहे हो।○—और उस ने तुम्हें उन की ज़मीन और उन के घरों और उन के मालों का वारिस बना दिया, और उस भूमि का भी जिस पर तुम ने (अभी) पग नहीं रखा[२४]। अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला (सर्वशक्तिमान) है।○

हे नबी*! अपनी पत्नियों से कहो: यदि तुम सांसारिक जीवन और उस की शोभा चाहती हो, तो आओ! मैं तुम्हें कुछ दे दिला कर भली रीति से तुम्हें रुख़सत कर दूँ[२५]।○ और यदि तुम अल्लाह और उस के रसूल* और आख़िरत* का घर चाहती हो तो निस्सन्देह अल्लाह ने तुम में से सत्कर्मी स्त्रियों के लिए बड़ा बदला तैयार कर रखा है[२६]।○

हे नबी* की स्त्रियो! तुम में से जो कोई प्रत्यक्ष अश्लील कर्म करेगी, उसे दोहरा अज़ाब दिया जायेगा,[२७] और अल्लाह के लिए यह बहुत आसान है।○

†और जो तुम में से अल्लाह और उस के रसूल* का सादर आज्ञापालन करेगी और अच्छा काम करेगी, उसे हम दोहरा बदला देंगे, और हम ने उस के लिए इज़्ज़त की रोज़ी तैयार कर रखी है।○

---

२३ यह संकेत यहूदी क़बीला 'बनी क़ुरैज़ः' की ओर है।

२४ यह भविष्यवाणी है जिस में यह शुभ-सूचना ईमान वालों* को दी जा रही है कि आगे और बहुत सी ज़मीनें उन के क़ब्ज़े में आ जायेंगी। विशेष रूप से इस में संकेत ख़ैबर की विजय की ओर है जो इस से कुछ ही समय के बाद हुई है।

२५ जिस समय ये आयतें उतरी हैं नबी सल्ल० माली हैसियत से बहुत तंग-हाल थे। हिजरत* के बाद ४ वर्ष तक तो आप (सल्ल०) की आमदनी का कोई साधन न था। सन् ४ हि० में जब यहूदी क़बीला बनी नज़ीर को देश-निकाला दिया गया तो उन की छोड़ी हुई ज़मीनों का एक भाग अल्लाह ने आप (सल्ल०) की आवश्यकताओं के लिए निश्चित कर दिया परन्तु यह आप (सल्ल०) के घर वालों के लिए काफ़ी न था। नबी सल्ल० की पत्नियों ने जब बे-सब्र और अधीर हो कर आप (सल्ल०) से ख़र्च माँगा तो अल्लाह ने उन्हें यह नोटिस दी कि तुम्हें यदि सांसारिक जीवन और उस की शोभा प्रिय है तो तुम्हें रुख़सत कर दिया जायेगा, तुम्हें तंगी में नहीं रखा जायेगा और यदि तुम अल्लाह और रसूल* को चाहती हो और तुम्हें दुनिया की अपेक्षा आख़िरत* प्रिय है, तो धैर्य से काम लो और तंगी और संकट में अल्लाह के रसूल* का साथ दो। (शेष अगले पृष्ठ पर)

२६ जिस समय यह आयत* उतरी आप (सल्ल०) ने सब से पहले हज़रत

† यहीं से बाईसवाँ पारः (Part XXII) शुरू होता है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

"हे नबी* की स्त्रियो ! तुम दूसरी स्त्रियों में से किसी की तरह नहीं हो। यदि तुम परहेज़गार रहना चाहती हो, तो दबी ज़बान से बात न किया करो कि वह व्यक्ति जिस के दिल में रोग है लालच में पड़ जाये, बल्कि साफ़-सीधी बात करो" । ○

और अपने घरों के अन्दर रहो[२९] । और भूत-पूर्व अज्ञान काल की सज-धज न दिखाती फिरो । नमाज़* क़ायम रखो, ज़कात* अदा करती रहो, और अल्लाह और उस के रसूल* का हुक्म मानती रहो। अल्लाह तो चाहता है कि तुम (रसूल* के) घर वालों से गन्दगी को दूर करे, और तुम्हें पूरी तरह पाक-साफ़ कर दे। ○

याद रखो ये अल्लाह की आयतें* और हिकमत* की बातें, जो तुम्हारे घरों में सुनाई जाती हैं। निस्सन्देह अल्लाह सूक्ष्म (-दर्शी) और ख़बर रखने वाला है। ○

मुस्लिम* पुरुष और मुस्लिम* स्त्रियाँ, ईमान* वाले पुरुष और ईमान* वाली स्त्रियाँ, आज्ञाकारी पुरुष और आज्ञाकारिणी स्त्रियाँ, सत्यवादी पुरुष और सत्यवादिनी स्त्रियाँ, सब्र* करने वाले पुरुष और सब्र* करने वाली स्त्रियाँ, (अल्लाह के आगे) विनम्रता प्रकट करने वाली

आइशः रज़ि० से इस के बारे में बात-चीत की। आप (सल्ल०) ने कहा : "मैं तुम से एक बात कहता हूँ, उत्तर देने में जल्दी न करना अपने माँ-बाप से राय ले लो फिर फ़ैसला करो"। फिर आप (सल्ल०) ने उन्हें बताया कि अल्लाह का यह आदेश आया है और यह आयत* सुनाई। हज़रत आइशः रज़ि० ने कहा : क्या इस मामले में मैं अपने माता-पिता से पूछूँ मैं तो अल्लाह, उस के रसूल* और आख़िरत* को चाहती हूँ। आप (सल्ल०) की दूसरी पत्नियों ने भी वही जवाब दिया जो हज़रत आइशः रज़ि० ने दिया।

पत्नी को इस बात का अधिकार देना कि वह पति के साथ रहने या न रहने का निर्णय स्वयं करे इस के लिए 'तख़ईर' का पारिभाषिक शब्द प्रयोग होता है।

२७ यह वास्तव में नबी सल्ल० की धर्मपत्नियों को बताया जा रहा है कि समाज में उन का स्थान बहुत ऊँचा है। इस का अर्थ यह कदापि नहीं होता कि उन से किसी अश्लील कर्म का भय था।

२८ यहाँ से ले कर आयत ३४ तक वे आयतें हैं जिन से इस्लाम* में परदे के आदेशों का आरम्भ हुआ है। यद्यपि सम्बोधन इन आयतों में नबी सल्ल० की पत्नियों से है परन्तु वास्तव में अभीष्ट यह है कि समस्त मुस्लिम घरानों में इन आदेशों का पालन किया जाये।

२९ अर्थात् आवश्यकता पड़ने पर स्त्री किसी पुरुष से बात तो कर सकती है परन्तु इस का ध्यान रहे कि बोलने में कोई लोच और बातों में कोई लगावट न होनी चाहिए और न जानते-बूझते स्वर में कोमलता और माधुर्य आने पावे कि सुनने वाले पुरुष के मन में यह भावना उत्पन्न हो कि इस स्त्री से कोई दूसरी आशा भी की जा सकती है। और जिस से उस पुरुष को जिस के मन में कोई विकार हो इस से आगे क़दम बढ़ाने का साहस हो सके। इसी प्रकार का एक आदेश सूरः अन-नूर (आयत ३१) में भी दिया गया है जिस में कहा गया है : "वे अपने पाँव (भूमि पर) मारती हुई न चलें कि अपना जो शृंगार उन्हों ने छिपा रखा हो लोगों को उस की ख़बर हो"। जिस तरह औरत के लिए परदा आवश्यक है उसी प्रकार औरत की आवाज़ भी औरत है इस लिए स्त्रियों को बिना ज़रूरत अपनी आवाज़ दूसरों को नहीं सुनानी चाहिए और न अपने ज़ेवरों की आवाज़ दूसरों के कानों तक पहुँचने देना चाहिए। ज़रूरत पड़ने पर यदि वे किसी से बात करें भी तो बहुत सावधान होकर बात करें। इसी लिए इस की इजाज़त नहीं है कि कोई स्त्री मसजिद में 'अज़ान' दे और न उसे इस की इजाज़त है कि नमाज़* में जिस प्रकार इमाम की किसी भूल पर पुरुष 'सुबहानल्लाह' कहते हैं वह भी कहे। वह इमाम को उस की भूल पर सचेत करने के लिए केवल हाथ पर हाथ मार कर आवाज़ पैदा कर सकती है।

अब आप स्वयं समझ सकते हैं कि रंगमंच पर स्त्रियों का नाचना-गाना, अपने नृत्य और अपनी छवि और सौन्दर्य से लोगों को रिझाना, रेडियो पर अपने मधुर स्वरों से गाना, फ़िल्म-जगत में अभिनेत्री बन कर हिस्सा लेना। क्लबों या सिनेमा-घरों में पुरुषों के साथ बन-ठन कर जाना, स्कूलों और कालेजों में पुरुष छात्रों के साथ एक ही क्लास में शिक्षा प्राप्त करना—ये सब कैसे जायज़ हो सकता है। जिस कलचर में ये सब बातें जायज़ हों नहीं बल्कि उन्नति का चिह्न समझी जायें उसे इस्लामी कलचर कहने का साहस वही व्यक्ति कर सकता है जो अत्यन्त निर्लज्ज और दुस्साहसी हो चुका हो। (शेष अगले पृष्ठ पर)

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

وَمَن يَقْنُتْ مِنكُنَّ لِلَّهِ وَرَسُولِهِ وَتَعْمَلْ صَالِحًا نُّؤْتِهَا أَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ وَأَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيمًا ○ يَا نِسَاءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَأَحَدٍ مِّنَ النِّسَاءِ إِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِي فِي قَلْبِهِ مَرَضٌ وَقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوفًا ○ وَقَرْنَ فِي بُيُوتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْأُولَىٰ وَأَقِمْنَ الصَّلَاةَ وَآتِينَ الزَّكَاةَ وَأَطِعْنَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا ○ وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلَىٰ فِي بُيُوتِكُنَّ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ وَالْحِكْمَةِ إِنَّ اللَّهَ كَانَ لَطِيفًا خَبِيرًا ○ إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْقَانِتِينَ وَالْقَانِتَاتِ وَالصَّادِقِينَ وَالصَّادِقَاتِ وَالصَّابِرِينَ وَالصَّابِرَاتِ وَالْخَاشِعِينَ وَالْخَاشِعَاتِ وَالْمُتَصَدِّقِينَ وَالْمُتَصَدِّقَاتِ وَالصَّائِمِينَ وَالصَّائِمَاتِ وَالْحَافِظِينَ فُرُوجَهُمْ وَالْحَافِظَاتِ وَالذَّاكِرِينَ اللَّهَ كَثِيرًا وَالذَّاكِرَاتِ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُم مَّغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا ○ وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَلَا مُؤْمِنَةٍ إِذَا قَضَى اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَمْرًا أَن يَكُونَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ أَمْرِهِمْ وَمَن يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا مُّبِينًا ○ وَإِذْ تَقُولُ لِلَّذِي أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَأَنْعَمْتَ عَلَيْهِ أَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللَّهَ وَتُخْفِي فِي نَفْسِكَ مَا اللَّهُ

अल्लाह ने कुफ़्र* करने वालों का उन की क्रोधित दशा में मुँह फेर दिया; वे कोई भलाई हासिल न कर सके। और लड़ाई में ईमान* वालों की ओर से अल्लाह ही काफ़ी हो गया। अल्लाह बलवान् और अपार शक्ति का मालिक है।○

किताब वालों* में से जिन लोगों ने उन (आक्रमण करने वालों) का साथ दिया था[२३] (अल्लाह) उन्हें उन की गढ़ियों से उतार लाया, और उन के दिलों में रौब डाल दिया — एक गरोह को तुम क़त्ल कर रहे हो, और एक गरोह को क़ैद कर रहे हो।○— और उस ने तुम्हें उन की ज़मीन और उन के घरों और उन के मालों का वारिस बना दिया, और उस भूमि का भी जिस पर तुम ने (अभी) पग नहीं रखा[२४]। अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला (सर्वशक्तिमान) है।○

हे नबी*! अपनी पत्नियों से कहो: यदि तुम सांसारिक जीवन और उस की शोभा चाहती हो, तो आओ! मैं तुम्हें कुछ दे दिला कर भली रीति से तुम्हें रुख़सत कर दूँ[२५]।○ और यदि तुम अल्लाह और उस के रसूल* और आख़िरत* का घर चाहती हो तो निस्सन्देह अल्लाह ने तुम में से सत्कर्मी स्त्रियों के लिए बड़ा बदला तैयार कर रखा है[२६]।○

हे नबी* की स्त्रियो! तुम में से जो कोई प्रत्यक्ष अश्लील कर्म करेगी, उसे दोहरा अज़ाब दिया जायेगा,[२७] और अल्लाह के लिए यह बहुत आसान है।○

†और जो तुम में से अल्लाह और उस के रसूल* का सादर आज्ञापालन करेगी और अच्छा काम करेगी, उसे हम दोहरा बदला देंगे, और हम ने उस के लिए इज़्ज़त की रोज़ी तैयार कर रखी है।○

---

२३ यह संकेत यहूदी क़बीला 'बनी क़ुरैज़ः की ओर है।

२४ यह भविष्यवाणी है जिस में यह शुभ-सूचना ईमान वालों* को दी जा रही है कि आगे और बहुत सी ज़मीनें उन के क़ब्ज़े में आ जायेंगी। विशेष रूप से इस में संकेत ख़ैबर की विजय की ओर है जो इस से कुछ ही समय के बाद हुई है।

२५ जिस समय ये आयतें उतरी हैं नबी सल्ल० माली हैसियत से बहुत तंग-हाल थे। हिजरत* के बाद ४ वर्ष तक तो आप (सल्ल०) की आमदनी का कोई साधन न था। सन् ४ हि० में जब यहूदी क़बीला बनी नज़ीर को देश-निकाला दिया गया तो उन की छोड़ी हुई ज़मीनों का एक भाग अल्लाह ने आप (सल्ल०) की आवश्यकताओं के लिए निश्चित कर दिया परन्तु वह आप (सल्ल०) के घर वालों के लिए काफ़ी न था। नबी सल्ल० की पत्नियों ने जब बे-सब्र और अधीर हो कर आप (सल्ल०) से ख़र्च माँगा तो अल्लाह ने उन्हें यह नोटिस दी कि तुम्हें यदि सांसारिक जीवन और उस की शोभा प्रिय है तो तुम्हें रुख़सत कर दिया जायेगा, तुम्हें तंगी में नहीं रखा जायेगा और यदि तुम अल्लाह और रसूल* को चाहती हो और तुम्हें दुनिया की अपेक्षा आख़िरत* प्रिय है, तो धैर्य से काम लो और तंगी और संकट में अल्लाह के रसूल* का साथ दो। (शेष अगले पृष्ठ पर)

२६ जिस समय यह आयत* उतरी आप (सल्ल०) ने सब से पहले हज़रत

† यहाँ से बाईसवाँ पारः (Part XXII) शुरू होता है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों ...

रखता है कि तुम उस से डरो। फिर जब ज़ैद को उस से कोई सरोकार न रहा,[४०] तो हम ने तुम से उस स्त्री का विवाह कर दिया,[४१] ताकि ईमान* वालों पर अपने मुँह-बोले बेटों की पत्नियों के मामले में कोई तंगी न रहे, जब कि उन का उन स्त्रियों से कोई सरोकार न रह जाये[४२]। और अल्लाह का हुक्म पूरा हो कर ही रहता है।○

नबी* पर किसी ऐसे काम में कोई रुकावट नहीं जो अल्लाह ने उस के लिए नियत कर दिया हो। यही अल्लाह का नियम उन सब (नबियों*) के मामले में रहा है जो पहले गुज़र चुके हैं—और अल्लाह का हुक्म (पहले से) सोच-समझ कर तै किया हुआ होता है।○—(यह नियम उन लोगों के लिए है) जो अल्लाह के सन्देश पहुँचाते हैं और उस से डरते हैं, और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते। और अल्लाह हिसाब लेने के लिए काफ़ी है।○

مُبْدِيْهِ وَتَخْشَى النَّاسَ وَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشٰىهُ فَلَمَّا قَضٰى زَيْدٌ
مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا لِكَيْ لَا يَكُوْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ حَرَجٌ فِيْٓ اَزْوَاجِ
اَدْعِيَآئِهِمْ اِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ۝ مَا كَانَ
عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيْمَا فَرَضَ اللّٰهُ لَهٗ سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ
خَلَوْا مِنْ قَبْلُ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ قَدَرًا مَّقْدُوْرًا ۝ الَّذِيْنَ يُبَلِّغُوْنَ
رِسٰلٰتِ اللّٰهِ وَيَخْشَوْنَهٗ وَلَا يَخْشَوْنَ اَحَدًا اِلَّا اللّٰهَ وَكَفٰى بِاللّٰهِ
حَسِيْبًا ۝ مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَ
خَاتَمَ النَّبِيّٖنَ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا
اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا ۝ وَّسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۝ هُوَ الَّذِيْ
يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلٰٓئِكَتُهٗ لِيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ وَكَانَ
بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحِيْمًا ۝ تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهٗ سَلٰمٌ وَّاَعَدَّ لَهُمْ
اَجْرًا كَرِيْمًا ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّ
نَذِيْرًا ۝ وَّدَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا ۝ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ
بِاَنَّ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَضْلًا كَبِيْرًا ۝ وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ
وَدَعْ اَذٰىهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْٓا اِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ
فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُّوْنَهَا فَمَتِّعُوْهُنَّ وَسَرِّحُوْهُنَّ

ع

(लोगो!) मुहम्मद तुम्हारे पुरुषों में से किसी के पिता नहीं हैं,[४३] परन्तु वे अल्लाह के रसूल* और नबियों* के समापक हैं;[४४] और अल्लाह हर चीज़ का ज्ञान रखने वाला है।○

हे लोगो जो ईमान* लाये हो! अल्लाह को अधिक याद करो।○ और प्रातः समय और सायंकाल[४५] उस की तसबीह* करते रहो।○

वही है जो तुम पर 'रहमत'[४६] भेजता है और उस के फ़िरिश्ते* भी, ताकि वह तुम्हें

---

४० अर्थात् जब हज़रत ज़ैद रज़ि० ने तलाक़ दे दी और इद्दत* भी पूरी हो गई, और कोई नाता और लगाव बाक़ी नहीं रहा।

४१ मालूम हुआ कि यह विवाह अल्लाह के आदेशानुसार हुआ है।

४२ अर्थात् ताकि इस प्रकार इस बुरी प्रथा का अन्त हो जाये जो अरब में प्रचलित थी कि कोई व्यक्ति अपने मुँह-बोले बेटे की पत्नी से जिसे वह तलाक़ दे चुका हो विवाह ही नहीं कर सकता था।

४३ फिर वे ज़ैद (रज़ि०) के पिता कैसे होते कि उन की छोड़ी हुई पत्नी से आप (सल्ल०) का विवाह करना हराम होता।

४४ वे अल्लाह के रसूल* हैं, उन का कर्तव्य है कि स्वयं अपने वचन और कर्म द्वारा अनुचित रीतियों और प्रथाओं का उन्मूलन कर दें। आप (सल्ल०) नबियों* के समापक हैं; आप के बाद कोई नबी* आने वाला नहीं इस लिए यह आप (सल्ल०) के लिए और अधिक-आवश्यक हो जाता है कि अज्ञान-पूर्ण रीतियों का उन्मूलन स्वयं कर के जायें। 'समापक' के लिए मूल ग्रन्थ में 'ख़ातम' शब्द प्रयुक्त हुआ है जिस का अर्थ मुहर (Seal) भी होता है, मतलब यह कि आप (सल्ल०) सब से अन्तिम नबी* हैं। आप के आ जाने के बाद नबियों* के सिलसिले पर मुहर कर दी गई। नबी* सल्ल० ने भी इस की घोषणा कर दी है कि मेरे बाद कोई नबी* न होगा। अब संसार के कल्याण का एक-मात्र साधन आप (सल्ल०) पर विश्वास करना और आप के आदेशों का पालन करना है। आप (सल्ल०) अल्लाह के अन्तिम रसूल हैं और सम्पूर्ण संसार के लिए आप (सल्ल०) को रसूल* बना कर भेजा गया है।

४५ अर्थात् सदैव।

४६ दे० भाग ५६।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

पुरुष, और विनम्रता प्रकट करने वाली स्त्रियाँ[31], सदक़:* देने वाले पुरुष और सदक़: देने वाली स्त्रियाँ, रोज़:* रखने वाले पुरुष और रोज़: रखने वाली स्त्रियाँ, अपनी शर्मगाहों (गुह्य इन्द्रियों) की हिफ़ाज़त करने वाले पुरुष और हिफ़ाज़त करने वाली स्त्रियाँ[32], और अल्लाह का अधिक स्मरण करने वाले पुरुष और स्मरण करने वाली स्त्रियाँ—निश्चय ही इन (सब) के लिए अल्लाह ने क्षमा और बड़ा बदला तैयार कर रखा है। ○

[33]न किसी ईमान* वाले पुरुष को और न किसी ईमान* वाली स्त्री को यह हक़ है कि जब अल्लाह और उस का रसूल* किसी बात का फ़ैसला कर दें, तो फिर उन्हें अपने मामले में कोई अधिकार रहे; और जो कोई अल्लाह और उस के रसूल* की अवज्ञा करे, तो वह खुली गुमराही में पड़ गया[34]। ○

[35](हे नबी* !) याद करो जब तुम उस व्यक्ति से कह रहे थे जिस पर अल्लाह ने एहसान किया था और तुम ने भी जिस पर एहसान किया[36] : अपनी पत्नी को अपने पास रोके रहे (उसे न छोड़), और अल्लाह से डर[37]। तुम अपने जी में वह बात छिपाये हुये थे जिसे अल्लाह खोलने वाला था,[38] तुम लोगों से डर रहे थे[39] हालांकि अल्लाह इस का ज़्यादा

---

३० इस से मालूम हुआ कि स्त्री का कार्य-क्षेत्र उस का अपना घर है न कि राज्य-सभा और संसद (Parliament)। वह घर की देख-भाल और बच्चों के पालन-पोषण के लिए है न कि कारख़ानों और दफ़्तरों में पुरुषों के साथ श्रम करने और राज काज सँभालने के लिए। नबी सल्ल० ने कहा है : "स्त्री छिपा कर रहने के योग्य चीज़ है जब वह निकलती है तो उसे शैतान ताकता है; अल्लाह की दयालुता से अधिक निकट वह उस समय रहती है जब कि वह अपने घर में हो"।

परदे के विरोधी परदे को मध्यकालीन युग की प्रथा बताते हैं हालांकि अनुसन्धानात्मक दृष्टि से जिन लोगों ने विचार किया है वे जानते हैं कि परदे को केवल मध्यकालीन युग की प्रथा कहना सही नहीं। परदे का द्योतक 'अवगुण्ठन' शब्द संस्कृत के प्राचीनतम ग्रन्थों में उपलब्ध होता है। संस्कृत के नाटक-साहित्य में स्त्रियों के 'अवगुण्ठनवती' होने का बार-बार उल्लेख मिलता है।

३१ विनम्रता प्रकट करने का विशेष अवसर वह होता है जब कि वे नमाज़* में खड़े होते हैं।

३२ अर्थात् वे व्यभिचार से दूर रहते और नग्नता से बचते हैं। नंगा होने के लिए यह ज़रूरी नहीं कि आदमी बिलकुल वस्त्रहीन हो जाये बल्कि ऐसा वस्त्र पहनना भी नग्नता ही है जो इतना पतला हो कि शरीर उस में झलकता हो या वह इतना कसा हुआ हो कि शरीर की बनावट आदि सब उस में से ज़ाहिर हो।

३३ यहाँ से हज़रत ज़ैनब रज़ि० के विवाह से सम्बन्धित आयतें* आ रही हैं (दे० सूरा की भूमिका)।

३४ नबी सल्ल० ने जब हज़रत ज़ैद रज़ि० के लिए विवाह का सन्देश भेजा तो हज़रत ज़ैनब रज़ि० और उन के नातेदारों ने इसे स्वीकार नहीं किया। इस पर यह आयत* उतरी, इसे सुनते ही हज़रत ज़ैनब रज़ि० और उन के नातेदार विवाह पर राज़ी हो गये। और हज़रत ज़ैनब रज़ि० के साथ हज़रत ज़ैद रज़ि० का विवाह हो गया।

३५ यहाँ से आयत ४८ तक जो-कुछ बयान हुआ है उस का सम्बन्ध उस समय से है जब हज़रत ज़ैनब रज़ि० से नबी* सल्ल० का विवाह हो चुका था।

३६ 'उस व्यक्ति' से संकेत हज़रत ज़ैद रज़ि० की ओर है। हज़रत ज़ैद रज़ि० पर अल्लाह और उस के रसूल* सल्ल० ने क्या एहसान किया था इस के लिए सूरा की भूमिका देखिए।

३७ जब हज़रत ज़ैद रज़ि० और हज़रत ज़ैनब रज़ि० में निर्वाह होना मुश्किल हो गया, तो हज़रत ज़ैद रज़ि० ने आप (सल्ल०) से कहा था कि मैं उन्हें तलाक़ देना चाहता हूँ, तो उस समय आप (सल्ल०) ने ऐसा करने से हज़रत ज़ैद रज़ि० को रोका था।

३८ अल्लाह की ओर से नबी सल्ल० को इस बात का इशारा मिल चुका था कि ज़ैद (रज़ि०) हज़रत ज़ैनब (रज़ि०) को तलाक़ दे देंगे और वह आप (सल्ल०) की पत्नियों में शामिल होंगी, परन्तु आप (सल्ल०) ने इस बात को छुपाया और ज़ैद (रज़ि०) से यही कहा कि अपनी पत्नी को तलाक़ न दो।

३९ लोगों से डर रहे थे कि वे कीचड़ उछालेंगे कि देखो इस व्यक्ति ने अपने मुँह-बोले बेटे की तलाक़ दी हुई पत्नी से विवाह कर लिया।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

مبديه وتخشى الناس والله احق ان تخشاه فلما قضى زيد
منها وطرا زوجنكها لكي لا يكون على المؤمنين حرج في ازواج
ادعيائهم اذا قضوا منهن وطرا وكان امر الله مفعولا ۝ ما كان
على النبي من حرج فيما فرض الله له سنة الله في الذين
خلوا من قبل وكان امر الله قدرا مقدورا ۝ الذين يبلغون
رسلت الله ويخشونه ولا يخشون احدا الا الله وكفى بالله
حسيبا ۝ ما كان محمد ابا احد من رجالكم ولكن رسول الله و
خاتم النبين وكان الله بكل شيء عليما ۝ يايها الذين امنوا
اذكروا الله ذكرا كثيرا ۝ وسبحوه بكرة واصيلا ۝ هو الذي
يصلي عليكم وملئكته ليخرجكم من الظلمت الى النور وكان
بالمؤمنين رحيما ۝ تحيتهم يوم يلقونه سلم واعد لهم
اجرا كريما ۝ يايها النبي انا ارسلنك شاهدا ومبشرا و
نذيرا ۝ وداعيا الى الله باذنه وسراجا منيرا ۝ وبشر المؤمنين
بان لهم من الله فضلا كبيرا ۝ ولا تطع الكفرين والمنفقين
ودع اذىهم وتوكل على الله وكفى بالله وكيلا ۝ يايها الذين
امنوا اذا نكحتم المؤمنت ثم طلقتموهن من قبل ان تمسوهن
فما لكم عليهن من عدة تعتدونها فمتعوهن وسرحوهن سراحا

रखता है कि तुम उस से डरो। फिर जब ज़ैद को उस से कोई सरोकार न रहा,[४०] तो हम ने तुम्हारा से उस स्त्री का विवाह कर दिया,[४१] ताकि ईमान* वालों पर अपने मुँह-बोले बेटों की पत्नियों के मामले में कोई तंगी न रहे, जब कि उन का उन स्त्रियों से कोई सरोकार न रह जाये[४२]। और अल्लाह का हुक्म पूरा हो कर ही रहता है। ○

नबी* पर किसी ऐसे काम में कोई रुकावट नहीं जो अल्लाह ने उस के लिए नियत कर दिया हो। यही अल्लाह का नियम उन सब (नबियों*) के मामले में रहा है जो पहले गुज़र चुके हैं—और अल्लाह का हुक्म (पहले से) सोच-समझ कर तै किया हुआ होता है। ○— (यह नियम उन लोगों के लिए है) जो अल्लाह के सन्देश पहुँचाते हैं और उस से डरते हैं, और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते। और अल्लाह हिसाब लेने के लिए काफ़ी है। ○

(लोगो!) मुहम्मद तुम्हारे पुरुषों में से किसी के पिता नहीं हैं,[४३] परन्तु वे अल्लाह के रसूल* और नबियों* के समापक हैं;[४४] और अल्लाह हर चीज़ का ज्ञान रखने वाला है। ○

हे लोगो जो ईमान* लाये हो! अल्लाह को अधिक याद करो। ○ और प्रातः समय और सायंकाल[४५] उस की तसबीह* करते रहो। ○

वही है जो तुम पर 'रहमत'[४६] भेजता है और उस के फ़िरिश्ते* भी, ताकि वह तुम्हें

---

४० अर्थात् जब हज़रत ज़ैद रज़ि० ने तलाक़ दे दी और इद्दत* भी पूरी हो गई; और कोई नाता और लगाव बाक़ी नहीं रहा।

४१ मालूम हुआ कि यह विवाह अल्लाह के आदेशानुसार हुआ है।

४२ अर्थात् ताकि इस प्रकार इस बुरी प्रथा का अन्त हो जाये जो अरब में प्रचलित थी कि कोई व्यक्ति अपने मुँह-बोले बेटे की पत्नी से जिसे वह तलाक़ दे चुका हो विवाह ही नहीं कर सकता था।

४३ फिर वे ज़ैद (रज़ि०) के पिता कैसे होते कि उन की छोड़ी हुई पत्नी से आप (सल्ल०) का विवाह करना हराम होता।

४४ वे अल्लाह के रसूल* हैं; उन का कर्तव्य है कि स्वयं अपने वचन और कर्म द्वारा अनुचित रीतियों और प्रथाओं का उन्मूलन कर दें। आप (सल्ल०) नबियों* के समापक हैं, आप के बाद कोई नबी* आने वाला नहीं इस लिए यह आप (सल्ल०) के लिए और अधिक-आवश्यक हो जाता है कि अज्ञान-पूर्ण रीतियों का उन्मूलन स्वयं कर के जायें। 'समापक' के लिए मूल ग्रन्थ में 'ख़ातम' शब्द प्रयुक्त हुआ है जिस का अर्थ मोहर (Seal) भी होता है, मतलब यह कि आप (सल्ल०) सब से अन्तिम नबी* हैं। आप के आ जाने के बाद नबियों* के सिलसिले पर मुहर कर दी गई। नबी* सल्ल० ने भी इस की घोषणा कर दी है कि मेरे बाद कोई नबी* न होगा। अब संसार के कल्याण का एक-मात्र साधन आप (सल्ल०) पर विश्वास करना और आप के आदेशों का पालन करना है। आप (सल्ल०) अल्लाह के अन्तिम रसूल हैं और सम्पूर्ण संसार के लिए आप (सल्ल०) को रसूल* बना कर भेजा गया है।

४५ अर्थात् सदैव।

४६ दे० आयत ५६।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

جَمِيلًا ۝ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَحْلَلْنَا لَكَ أَزْوَاجَكَ اللَّاتِي آتَيْتَ أُجُورَهُنَّ
وَمَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ مِمَّا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَيْكَ وَبَنَاتِ عَمِّكَ وَبَنَاتِ
عَمَّاتِكَ وَبَنَاتِ خَالِكَ وَبَنَاتِ خَالَاتِكَ اللَّاتِي هَاجَرْنَ مَعَكَ وَامْرَأَةً
مُؤْمِنَةً إِنْ وَهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ إِنْ أَرَادَ النَّبِيُّ أَنْ يَسْتَنْكِحَهَا
خَالِصَةً لَكَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ
فِي أَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا يَكُونَ عَلَيْكَ حَرَجٌ
وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝ تُرْجِي مَنْ تَشَاءُ مِنْهُنَّ وَتُؤْوِي إِلَيْكَ
مَنْ تَشَاءُ وَمَنِ ابْتَغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ذَٰلِكَ
أَدْنَىٰ أَنْ تَقَرَّ أَعْيُنُهُنَّ وَلَا يَحْزَنَّ وَيَرْضَيْنَ بِمَا آتَيْتَهُنَّ
كُلُّهُنَّ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي قُلُوبِكُمْ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَلِيمًا ۝
لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَاءُ مِنْ بَعْدُ وَلَا أَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ أَزْوَاجٍ
وَلَوْ أَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ إِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ
كُلِّ شَيْءٍ رَقِيبًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ
إِلَّا أَنْ يُؤْذَنَ لَكُمْ إِلَىٰ طَعَامٍ غَيْرَ نَاظِرِينَ إِنَاهُ وَلَٰكِنْ إِذَا دُعِيتُمْ
فَادْخُلُوا فَإِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوا وَلَا مُسْتَأْنِسِينَ لِحَدِيثٍ إِنَّ ذَٰلِكُمْ
كَانَ يُؤْذِي النَّبِيَّ فَيَسْتَحْيِي مِنْكُمْ وَاللَّهُ لَا يَسْتَحْيِي مِنَ الْحَقِّ وَإِذَا
سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعًا فَاسْأَلُوهُنَّ مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ ذَٰلِكُمْ أَطْهَرُ

अँधियारियों से प्रकाश की ओर निकाल लाये; वा ईमान* वालों पर दया करता है। ○

जिस दिन वे उस से मिलेंगे उन का अभिवादन 'सलाम' होगा और उस ने उन के लिए सम्मानित बदला तैयार कर रखा है। ○

हे नबी* ! हम ने तुम्हें गवाही देने वाला[४७] और शुभ-सूचना देने वाला और सचेत करने वाला (डराने वाला) बना कर भेजा है, ○ और अल्लाह की ओर बुलाने वाला उस के हुक्म से, और प्रकाश-मान् प्रदीप बन कर। ○

शुभ-सूचना दे दो ईमान* वालों को कि उन के लिए अल्लाह की ओर से बड़ा फ़ज़्ल (कृपा) है। ○ और काफ़िरों* और मुनाफ़िक़ों* का कहना न मानो। और उन्हें सताने दो,[४८] और अल्लाह पर भरोसा करो। अल्लाह इस के लिए बहुत है कि अपना मामला उसे सौंप दिया जाये। ○

हे लोगो जो ईमान* लाये हो ! जब तुम ईमान* वाली स्त्रियों से विवाह करो और फिर उन्हें हाथ लगाने से पहले[४९] तलाक़* दे दो, तो तुम्हारी उन पर कोई इद्दत* नहीं[५०] जिस की गिन्ती उन से पूरी कराओ। अतः उन्हें कुछ माल दे कर[५१] भले तरीक़े से रुख़सत कर दो। ○

हे नबी* ! हम ने तुम्हारे लिए तुम्हारी पत्नियाँ हलाल (वैध) कर दी हैं जिन के मह्र* तुम ने दे दिये हैं, और तुम्हारी लौंडियाँ* जो अल्लाह ने तुम्हें ग़नीमत के माल में दी हैं, और तुम्हारे चचा की बेटियाँ, तुम्हारी फूफियों की बेटियाँ और तुम्हारे मामू की बेटियाँ, और तुम्हारी ख़ालाओं की बेटियाँ जिन्हों ने तुम्हारे साथ हिजरत* की है,[५२] और वह ईमान* वाली स्त्री जो अपने-आप को नबी* के लिए हिबा कर दे[५३] यदि नबी* उस से विवाह करना चाहे — यह (विशेष अधिकार है मुहम्मद !) केवल तुम्हारे लिए

४७ अर्थात् सत्य की गवाही देने वाला, संसार के लोगों को साफ़-साफ़ यह बात बताने वाला कि अल्लाह का भेजा हुआ दीन* ही सत्य है उस के अतिरिक्त जो-कुछ है असत्य और तथ्य-हीन है।

४८ अर्थात् उन के सताने की परवा न करो।

४९ अर्थात् सहवास और संभोग से पहले।

५० वह तलाक़* पाते ही अपना दूसरा विवाह कर सकती है, पुरुष का उस पर कोई हक़ बाक़ी नहीं रहता। इद्दत* से अभिप्रेत वह मुद्दत है जिस के गुज़रने से पहले स्त्री अपना दूसरा विवाह नहीं कर सकती। यदि पुरुष ने सहवास के बाद तलाक़ दिया है तो स्त्री को इद्दत* गुज़ारनी होती है। यदि पुरुष ने तलाक़ तो नहीं दिया परन्तु सहवास से पूर्व उस का देहान्त हो गया तो स्त्री को इद्दत* की मुद्दत गुज़ारनी होगी। (दे० सूरः अल-बक़रः आयत २३४)।

५१ दे० सूरः अल-बक़रः आयत २३६-२३७।

५२ आप (सल्ल०) के साथ हिजरत* करने का अर्थ यह नहीं है कि हिजरत* के सफ़र में वे आप (सल्ल०) के साथ रही हों।

५३ अर्थात् मह्र* के बिना नबी सल्ल० से विवाह करने पर राज़ी हुई हों। हज़रत मैमूनः रज़ि० ने मह्र* के बिना आप (सल्ल०) से विवाह किया था परन्तु आप ने उन्हें भी मह्र* अदा किया।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

है, दूसरे ईमान* वालों के लिए नहीं है— हम को मालूम है जो-कुछ हम ने उन की पत्नियों और लौंडियों* के बारे में उन के लिए ज़ाब्ता बनाया है— ताकि तुम्हारे ऊपर कोई तंगी न रहे,[५४] और ५० अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दयावन्त है। ○

तुम उन में से जिसे चाहो अपने से अलग रखो और जिसे चाहो अपने साथ रखो, और जिन को तुम ने अलग कर दिया हो यदि उन में से किसी को अपने पास बुला लो, तो इस में तुम पर कोई दोष नहीं, इस प्रकार इस की अधिक सम्भावना है कि उन की आँखें ठण्डी रहेंगी और वे दुःखी न होंगी, और जो-कुछ तुम उन्हें दोगे उस पर वे सब राज़ी रहेंगी[५५]। अल्लाह जानता है जो-कुछ तुम लोगों के दिलों में है और अल्लाह (सब-कुछ) जानने वाला और सहन-शील है। ○

इस के बाद तुम्हारे लिए दूसरी स्त्रियां हलाल (वैध) नहीं, और न यह (जायज़ है) कि तुम उन की जगह और पत्नियां ले आओ चाहे उन की सुन्दरता तुम्हें कितनी ही क्यों न भाये, सिवाय उन के जो तुम्हारी लौंडियां हों[५६]। अल्लाह हर चीज़ की ख़बर रखने वाला है। ○

हे लोगो जो ईमान* लाये हो! नबी* के घरों में मत जाया करो[५७] यह और बात है कि कभी तुम्हें खाने पर आने को कहा जाये और यह नहीं कि खाने का वक़्त ताकते रहो, हां

قلوبكم وقلوبهن وما كان لكم ان تؤذوا رسول الله ولا ان تنكحوا ازواجه من بعده ابدا ان ذلكم كان عند الله عظيما ۝ ان تبدوا شيئا او تخفوه فان الله كان بكل شيء عليما ۝ لا جناح عليهن في ابائهن ولا ابنائهن ولا اخوانهن ولا ابناء اخوانهن ولا ابناء اخواتهن ولا نسائهن ولا ما ملكت ايمانهن واتقين الله ان الله كان على كل شيء شهيدا ۝ ان الله وملائكته يصلون على النبي يا ايها الذين امنوا صلوا عليه وسلموا تسليما ۝ ان الذين يؤذون الله ورسوله لعنهم الله في الدنيا والاخرة واعد لهم عذابا مهينا ۝ والذين يؤذون المؤمنين والمؤمنات بغير ما اكتسبوا فقد احتملوا بهتانا واثما مبينا ۝ يا ايها النبي قل لازواجك وبناتك ونساء المؤمنين يدنين عليهن من جلابيبهن ذلك ادنى ان يعرفن فلا يؤذين وكان الله غفورا رحيما ۝ لئن لم ينته المنافقون والذين في قلوبهم مرض والمرجفون في المدينة لنغرينك بهم ثم لا يجاورونك فيها الا قليلا ۝ ملعونين اينما ثقفوا اخذوا وقتلوا تقتيلا ۝ سنة الله في الذين خلوا من قبل ولن تجد لسنة الله تبديلا ۝

५४ इस उद्देश्य के अन्तर्गत नबी सल्ल० के लिए ४ से अधिक पत्नियों की इजाज़त दी गई। "तंगी न रहे" इस का यह अर्थ कदापि नहीं है कि कामेच्छा की पूर्ति में आप (सल्ल०) के लिए तंगी न रहे। आप (सल्ल०) के लिए ४ से अधिक पत्नियों की जो इजाज़त दी गई इस का धर्म और दूसरी गम्भीर समस्याओं से गहरा सम्बन्ध था। दूसरे मुसलमानों के लिए एक साथ ४ से अधिक पत्नियों की इजाज़त नहीं है (दे० सूरः अन-निसा आयत ३); परन्तु उन के लिए यह आसानी है कि यदि उन्हें तलाक़* देनी पड़ जाये तो उन के लिए तंगी नहीं वे तलाक़ दे सकते हैं और दूसरा विवाह कर सकते हैं। परन्तु नबी सल्ल० पर तलाक़* हराम थी क्योंकि आप की पत्नियां दूसरों के लिए माता के समान थीं अतः उन्हें तलाक़* नहीं दी जा सकती थी।

५५ इस तरह अल्लाह ने नबी सल्ल० को यह अधिकार प्रदान किया कि आप (सल्ल०) अपनी पत्नियों में से जिस के साथ जो व्यवहार करना चाहें करें इस का अर्थ यह कदापि नहीं होता कि अल्लाह ने अपने रसूल* को अनुचित छूट दे दी वास्तव में ये अधिकार आप (सल्ल०) को महान् उद्देश्य के अन्तर्गत प्रदान किये थे। ये अधिकार अल्लाह ने आप (सल्ल०) को इस लिए प्रदान किये थे ताकि आप (सल्ल०) उन घरेलू उलझनों से छुटकारा पा सकें जो कई पत्नियों की मौजूदगी में प्रायः पैदा हो आया करती हैं जैसे स्त्रियों के पारस्परिक झगड़े, प्रतिद्वन्दिता आदि। आप (सल्ल०) को घरेलू उलझनों से बचाने की आवश्यकता इस लिए थी ताकि आप (सल्ल०) एकाग्रचित्त हो कर धर्म के महान् कार्य में लग सकें। परन्तु यह अधिकार पा लेने के बाद भी आप ने अपनी पत्नियों के बीच पूरा इन्साफ़ किया। बारी-बारी सब के यहां आप (सल्ल०) जाते रहे।

५६ अर्थात् लौंडियों* की इजाज़त है। दे० सूरः अन-निसा आयत ३, सूरः अल-मोमिनून आयत ६ और सूरः अल-मआरिज आयत ३०। लौंडियों* के बारे में विशेष जानकारी के लिए पारिभाषिक शब्दों की सूची देखिये।

५७ लगभग एक वर्ष के बाद इस नियम को सभी मुसलमानों के घरों में प्रचलित करने का आदेश दे दिया गया (दे० सूरः अन-नूर आयत २७)।

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

जब तुम्हें बुलाया जाये, तो अन्दर जाओ; और, जब खा चुको, तो उठ पड़ो बातों में न लगे रहो। यह बात नबी* को तकलीफ़ देती है, परन्तु वे तुम से शर्माते हैं (कुछ कहते नहीं); और अल्लाह सच्ची बात (कहने) से नहीं शर्माता[58]।

और जब उन (नबी* की पत्नियों) से कोई चीज़ माँगो, तो परदे के पीछे से माँगो। यह तुम्हारे दिलों और उन के दिलों के लिए बहुत सुथराई है[59]। तुम्हारे लिए यह कदापि जायज़ नहीं कि अल्लाह के रसूल* को तकलीफ़ दो, और न यह जायज़ है कि उन के बाद उन की पत्नियों से विवाह करो। निश्चय ही यह अल्लाह के नज़दीक भारी बात है[60]। ○

तुम चाहे कोई चीज़ ज़ाहिर करो या उसे छुपाओ, निस्सन्देह अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। ○

उन (नबी* की पत्नियों) पर अपने बापों से (परदा न करने में) कोई दोष नहीं, और न अपने बेटों से, और न अपने भाइयों से, और न अपने भतीजों से, और न अपने भानजों से,[61] और न अपनी (मेल-जोल की) स्त्रियों से,[62] और न उन से जिन पर उन्हें स्वामित्व का अधिकार प्राप्त हो[63]। (हे नबी* की पत्नियो!) अल्लाह की अवज्ञा से बचती और उस की नाख़ुशी से डरती रहो। निस्सन्देह अल्लाह हर चीज़ का साक्षी है। ○

निश्चय ही अल्लाह और उस के फ़िरिश्ते* नबी* पर 'रहमत'* भेजते हैं[64]। हे लोगो जो ईमान* लाये हो! तुम भी उन पर 'रहमत' भेजो और ख़ूब सलाम भेजो। ○

जो लोग अल्लाह और उस के रसूल* को दुःख पहुँचाते हैं,[65] उन पर अल्लाह ने दुनिया और आख़िरत* में लानत की है, और उन के लिए रुसवा करने वाला (अपमान-जनक) अज़ाब तैयार कर रखा है। ○

और जो लोग ईमान* वाले पुरुषों और ईमान* वाली स्त्रियों को बिना इस के कि उन्हों ने कुछ किया हो (तोहमत लगा कर) दुःख पहुँचाते हैं, उन्हों ने झूठी तोहमत और प्रत्यक्ष गुनाह का बोझ (अपने सिर) उठा लिया। ○

हे नबी*! अपनी पत्नियों और अपनी बेटियों और ईमान* वालों की स्त्रियों से कह दो

---

५८ हज़रत ज़ैनब रज़ि० के 'वलीमे' (विवाह-सम्बन्धी भोज) के अवसर पर सब लोग तो खाना खा कर चले गये परन्तु दो-तीन आदमी बैठ कर बातें करते रहे जिस से नबी सल्ल० को तकलीफ़ हुई किन्तु शर्म के कारण आप (सल्ल०) कुछ कह नहीं सके।

५९ इस आयत में परदे का आदेश दिया गया। इस आदेश के बाद नबी सल्ल० की पत्नियों के घरों के दरवाज़ों पर परदे लटका दिये गये। और दूसरे मुसलमानों के घरों में भी दरवाज़ों पर परदे लटक गये।

६० यही बात सूरः के आरम्भ में इन शब्दों में कही गई थी कि नबी सल्ल० की पत्नियाँ ईमान* वालों की मायें हैं (दे० आयत ६)।

६१ इस में वे सभी नातेदार आ गये जिन के साथ स्त्री का विवाह नहीं हो सकता।

६२ दे० सूरः अन-नूर फुट-नोट ३३।

६३ दे० सूरः अन-नूर फुट-नोट ३४।

६४ अल्लाह, नबी* सल्ल० पर 'रहमत' भेजता है अर्थात् अल्लाह आप (सल्ल०) पर दयालुता (Blessing) दरशाता है, आप (सल्ल०) की प्रशंसा करता, आप (सल्ल०) का नाम ऊँचा करता और आप पर बरकतें उतारता है। आप पर उस की कृपा-दृष्टि है। अल्लाह के फ़िरिश्ते* भी आप (सल्ल०) पर 'रहमत' भेजते हैं अर्थात् उन्हें भी आप से अत्यन्त प्रेम है वे आप की प्रशंसा करते और आप (सल्ल०) के लिए अल्लाह से प्रार्थना करते हैं कि अल्लाह आप को अधिक-से-अधिक ऊँचा दर्जा प्रदान करे और आप (सल्ल०) के दीन* को उन्नति दे। अल्लाह की दयालुता और उस की बरकतें आप (सल्ल०) के साथ हों।

६५ अल्लाह को दुःख पहुँचाते हैं अर्थात् उस की अवज्ञा करते हैं उस के रसूल* का विरोध करते हैं।

* वर्ग आख़िर में बनी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

कि वे (बाहर निकलें तो) अपने ऊपर अपनी चादरों के पल्लू लटका लिया करें[66] । इस से इस बात की अधिक सम्भावना है कि वे पहचान ली जायें[67] और सताई न जायें[68] । अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है । ○

यदि मुनाफ़िक़* और वे लोग जिन के दिलों में रोग है, और जो मदीना में खलबली डालते हैं (अपनी कुचेष्टाओं से) बाज़ न आये, तो हम उन के विरुद्ध तुम्हें उकसा देंगे, फिर ६० वे इस (नगर) में तुम्हारे साथ थोड़ा ही रहने पावेंगे । ○ फिटकारे हुये, जहाँ कहीं पाये जायेंगे पकड़े जायेंगे और बुरी तरह क़त्ल किये जायेंगे । ○

अल्लाह की यही रीति उन लोगों के बारे में रही है जो पहले गुज़र चुके हैं; और तुम अल्लाह की रीति में कोई परिवर्तन न पाओगे । ○

(हे नबी* !) लोग तुम से उस घड़ी[69] के बारे में पूछते हैं । कहो : उस का ज्ञान तो अल्लाह ही को है । तुम्हें क्या ख़बर कदाचित् वह क़रीब ही आ लगी हो । ○

निश्चय ही अल्लाह ने काफ़िरों* पर लानत की है, और उन के लिए (दोज़ख़* की) दहकती आग तैयार कर रखी है, ○

६५ जिस में वे सदा रहेंगे । कोई संरक्षक-मित्र और सहायक न पायेंगे । ○

जिस दिन उन के चेहरे आग में उलट-पलट किये जायेंगे, वे कहेंगे : क्या ही अच्छा होता कि हम ने अल्लाह का कहा माना होता और रसूल* का कहा माना होता ! ○

और कहेंगे : हमारे रब* ! हम ने अपने सरदारों और अपने बड़ों का कहना माना था और उन्हों ने हमें राह से बे-राह कर दिया । ○ हमारे रब* ! उन्हें दोहरा अज़ाब दे और उन पर सख़्त लानत कर[70] । ○

हे लोगो जो ईमान* लाये हो ! उन लोगों जैसे न हो जाना जिन्हों ने मूसा को दुःख पहुँचाया था,[71] फिर अल्लाह ने उन बातों से जो उन्हों ने कहीं उसे बरी (साबित) कर दिया ।

---

६६ अर्थात् अपनी चादरें अच्छी तरह ओढ़ कर उन का एक हिस्सा अथवा उन का पल्लू अपने ऊपर से लटका लें ताकि उन के सिर और चेहरे छिपे रहें ।

६७ अर्थात् हर व्यक्ति देख कर यह समझ ले कि ये सती, सदाचारिणी और कुलीन स्त्रियाँ हैं इन से कोई अनुचित आशा नहीं की जा सकती ।

६८ अर्थात् उन्हें कोई छेड़े नहीं; उन के साथ कोई बुरा व्यवहार न करे ।

क़ुरआन के इन आदेशों के साथ सूरः अन-नूर की आयत ३१ भी सामने रहे । क़ुरआन के इन आदेशों से मालूम होता है कि स्त्री के लिए अभीष्ट गुण यह है कि वह पति के सिवा और किसी पुरुष का ध्यान न करे । यही उस की विशेषता है । यदि उस ने अपने सतीत्व को नष्ट कर दिया, तो उस से बढ़ कर नीच और कोई नहीं । अब आप स्वयं विचार कर सकते हैं, स्त्रियों का बन-ठन कर बाहर निकलना और साज सिंगार कर के पराये पुरुषों की सभाओं में पहुँचना जिसे आज सभ्यता की निशानी समझा जाता है, क़ुरआन की दृष्टि में कितनी अशिष्ट और मान-मर्यादा एवं सभ्यता से गिरी हुई बात है फिर इस से जिस तरह बुराई की राहें खुलती हैं और पारिवारिक जीवन नष्ट होता है उसे कौन नहीं जानता । समाज को यदि बुराइयों से दूर रखना है तो समाज में परदे का अस्तित्व बना रहने देना चाहिए । परन्तु यदि समाज में स्त्री-पुरुष का स्वच्छन्द-सम्पर्क ही आप को अभीष्ट है तो फिर तज्जन्य भ्रष्टाचार को देखने के लिए भी आप को तैयार रहना चाहिए ।

६९ अर्थात् क़ियामत* ।

७० यह बात क़ुरआन में दूसरे स्थानों पर भी बयान हुई है, उदाहरणार्थ दे० सूरः अल-आराफ़ आयत ३८, अल-हिज्र आयत २-३, अल-फ़ुरक़ान आयत २७-२९, हा० मीम० सजदः आयत २६-२९, सबा आयत ३-५, अल-मुल्क आयत २८-२७, अन-नाज़ियात आयत ४२-४६ और अल-तग़ाबुन आयत १०-१७ ।

७१ अर्थात् तुम अपने नबी* (सल्ल०) के साथ वह व्यवहार न करना जो यहूदियों* ने अपने नबी* मूसा (अ०) के साथ किया था । यहूदियों* का हज़रत मूसा अ० के साथ जो व्यवहार रहा है (शेष अगले पृष्ठ पर)

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

[illegible]

और वह अल्लाह के नज़दीक सम्मानित था।○

ऐ लोगो जो ईमान* लाये हो! अल्लाह का डर रखो, और ठीक-ठीक बात कहो,○ वह तुम्हारे कामों को सुधार देगा और तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा। जो कोई अल्लाह और उस के रसूल* का कहना माने उस ने बड़ी सफलता प्राप्त की।○

हम ने अमानत[७२] को आसमानों और ज़मीन और पहाड़ों के सामने रखा पर वे उसे उठाने को तैयार न हुये और उस से काँप उठे और मानव ने उसे उठा लिया। निश्चय ही वह बड़ा ज़ालिम और बड़ा जाहिल है[७३]।○ ताकि अल्लाह मुनाफ़िक़* पुरुषों और मुनाफ़िक़* स्त्रियों और मुशरिक* पुरुषों और मुशरिक* स्त्रियों को सज़ा दे। और ईमान* वाले पुरुषों और ईमान* वाली स्त्रियों की तौबः* क़बूल करे,[७४] अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।○

उस का उल्लेख क़ुरआन में भी हुआ है और बाइबिल में भी उस का उल्लेख मिलता है। दे० बाइबिल 'ख़ुरूज' (Ex.) ५ : २०-२१; १४ : ११-१२; १६ : २-३ और १७ : ३-४। 'गिन्ती' (Num) ११ : १-१५ १४ : १-१०, अध्याय १६ और २० : १-५।

७२ अमानत से अभिप्रेत यहाँ स्वतन्त्र-भक्ति और आज्ञापालन तथा 'ख़िलाफ़त' (प्रतिनिधित्व) है। ऐसी भक्ति और आज्ञापालन जिसे कोई स्वेच्छापूर्वक स्वयं स्वीकार करे, उसे इस के लिए विवश न किया जाये। वह यदि भक्ति के बदले शत्रुता की नीति अपनानी चाहे तो उसे इस का अवसर प्राप्त हो। उस में जहाँ भलाई से प्रेम पाया जाता हो वहीं उस में बुराई की ओर बढ़ने की भी क्षमता हो। ज़ाहिर बात है कि यह विशेषता केवल मनुष्य ही को प्राप्त है आसमानों और पहाड़ों को नहीं। मनुष्य को अल्लाह ने उस की छोटी-सी दुनिया में स्वतन्त्र कार्य करने का स्वामित्व दिया है ताकि मनुष्य को स्वतन्त्र-सेवा और भक्ति का अवसर मिल सके। परन्तु अत्याचारी और अज्ञानी लोग इसे स्वार्थ-सिद्धि का उपकरण मात्र समझते और अल्लाह के आदेशों की अवहेलना ही में अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

७३ इस आयत में ज़ालिम, जाहिल ऐसे लोगों को कहा गया है, जिन्हें अल्लाह की अमानत का कुछ भी ध्यान नहीं है, जो संसार में इस प्रकार जीवन व्यतीत करते हैं मानो उन पर कोई ज़िम्मेदारी नहीं है मानो वे बिलकुल स्वतन्त्र हैं जो चाहें करें और जिस प्रकार चाहें दुनिया में रहें-सहें।

७४ अर्थात् इस अमानत के बोझ को उठाने का परिणाम यह है कि जो लोग कपट-नीति से काम लेंगे और अल्लाह की अमानत का आदर नहीं करेंगे वे दण्ड के भागी होंगे और जो इस अमानत का पूर्ण रूप से आदर करेंगे उन पर अल्लाह की कृपा होगी।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

३४--सबा

(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः* का नाम 'सबा' आयत* १५ से लिया गया है। 'सबा' अरब की एक प्राचीन जाति का नाम है। इस सूरः में एक जगह 'सबा' का क़िस्सा बयान हुआ है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

अनुमान है कि यह सूरः मक्के के प्रारम्भिक अथवा माध्यमिक कालावधि में अवतीर्ण हुई होगी।

वार्त्तायें

इस[1] सूरः से क़ियामत*, तौहीद* (एकेश्वरवाद) तथा क़ुरआन* की पुष्टि होती है। रिसालत* का विषय इस सूरः का केन्द्रीय विषय है। यह सूरः आगे आने वाली सूरः से बहुत-सी बातों में मिलती-जुलती है।

'तौहीद'[2]*, आख़िरत* और हज़रत मुहम्मद सल्ल० की रिसालत पर काफ़िर* लोग जो आक्षेप करते थे उन का इस सूरः में उत्तर दिया गया है। इस सूरः में काफ़िरों* को समझाया गया है और उन की हठ-धर्मी पर उन्हें बुरे परिणामों से डराया गया है।

इस सूरः में हज़रत दाऊद अ० और हज़रत सुलैमान अ० के क़िस्से बयान किये गये हैं कि अल्लाह ने उन्हें राज्य-सत्ता प्रदान की परन्तु वे अपने रब* के कृतज्ञ ही रहे। अपने रब* के उपकारों को भूल कर उस के अवज्ञाकारी नहीं बने। 'सबा' का क़िस्सा भी इस सूरः में बयान किया गया है जिसे अल्लाह ने धन-सम्पत्ति सब-कुछ दिया था; परन्तु अल्लाह की नेमतों को पा कर यह जाति फूल गई; इस का परिणाम यह हुआ कि अल्लाह ने इसे तितर-बितर कर के रख दिया। दुनियाँ में अब केवल इस के क़िस्से रह गये हैं। इस तरह इन ऐतिहासिक दृष्टान्तों के द्वारा भली-भाँति यह बात समझाई गई है कि मनुष्य के लिए कल्याणकारी जीवन-प्रणाली यही है कि वह 'तौहीद'* और आख़िरत* पर ईमान* ला कर अल्लाह का कृतज्ञ बने। कुफ़्र* और शिर्क* से दूर रहे। दुनियाँ के भोग-विलास में पड़ कर आख़िरत* से ग़ाफ़िल न हो।

इतिहास से पता चलता है कि 'सबा' दक्षिणी अरब की एक बहुत बड़ी जाति थी। अरब का दक्षिणी-पश्चिमी कोना जिसे आज यमन कहते हैं यही इस जाति का वतन था। यह जाति प्राचीन काल से प्रसिद्ध रही है। उर, असीरिया, बाबिल आदि के प्राचीनतम शिलालेखों में इस जाति का उल्लेख मिलता है। यमन में भी

---

[1] इस सूरः से सूरतों का एक दूसरा व्यवस्थित क्रम शुरू होता है।

[2] दे० आयत ३१-५४।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

लग-भग २००० ऐसे शिलालेख मिले हैं जिन से इस जाति के इतिहास के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। बाइबिल में भी इस का उल्लेख विभिन्न स्थानों पर किया गया है। यूनान और रूम के इतिहासकार और भूगोल के लेखक भी २८८ ई० पू० से ले कर हज़रत मसीह अ० के बाद की कई शताब्दियों तक निरन्तर इस का उल्लेख अपने ग्रन्थों में करते रहे हैं। 'सबा' की उन्नति का समय १०० ई० पू० से आरम्भ होता है। हज़रत दाऊद अ० के समय में यह जाति अपने धन और वैभव के लिए बहुत प्रसिद्ध हो चुकी थी। आरम्भ में यह जाति मुश्रिक* थी। इन के यहाँ सूर्य की पूजा होती थी। इस की अधिक सम्भावना है कि जब 'सबा' की रानी हज़रत सुलैमान अ० के हाथ पर ईमान* ले आई[1] तो इस जाति के अधिकांश लोग मुस्लिम* हो गये थे। परन्तु बाद में इन के यहाँ फिर शिर्क* घुस पड़ा। जिस का भली-भांति पता उन शिलालेखों से चलता है जो यमन में बड़ी संख्या में प्राप्त हुये हैं। परन्तु इन में एक गरोह आरम्भ से ही ऐसा रहा है जो एक अल्लाह का मानने वाला था। क़ुरआन[2] के अतिरिक्त इस की पुष्टि प्राचीन अवशेषों अथवा शिलालेखों से भी होती है।

'सबा' वालों ने दो चीज़ों में विशेष उन्नति की थी। एक तो उन्हों ने व्यापार को बड़ी उन्नति दी थी दूसरे खेती में वे बहुत आगे थे। उन्हों ने सिंचाई का बहुत अच्छा प्रबन्ध कर रखा था। उन के यहाँ नदियाँ न थीं। बरसात में पहाड़ों से जो बरसाती नाले बह निकलते थे उन नालों पर देश भर में स्थान-स्थान पर बन्ध बाँध दिया गया था। इस प्रकार उन्हों ने बहुत से तालाब बना लिये थे। जिन से नहरें निकाल कर देश की भूमि को उन लोगों ने उपजाऊ बना लिया था। मआरिब नगर के क़रीब एक घाटी में पानी का बहुत बड़ा भण्डार था। यह भण्डार भी उन्हों ने बन्ध बाँध कर ही तैयार किया था।

व्यापार में इस के मुक़ाबिले की कोई जाति न थी। एक हज़ार वर्ष से अधिक मुद्दत तक संसार के व्यापार पर यही जाति छाई रही। इन के बन्दरगाहों में चीन का रेशम, इण्डोनेशिया के गर्म मसाले, भारत के कपड़े और तलवारें, पूर्वी अफ़रीक़ा के जंगी ग़ुलाम, बन्दर, शुतुर्मुर्ग के पंख और हाथी-दाँत आदि पहुँचते थे फिर इन के [illegible] मिस्र और सीरिया के बाज़ारों में पहुँचती थीं। जहाँ से ये माल रूम और यूनान तक भेजे जाते थे। सबाई लोग अपने यहाँ की पैदा होने वाली चीज़ों का व्यापार भी करते थे। इन लोगों का व्यापार जल-मार्ग से भी होता था और थल-मार्ग से भी। समुद्रीय व्यापार तो एक हज़ार वर्ष तक इन ही लोगों के हाथ में रहा है। लाल सागर में इन के सिवा कोई दूसरी जाति जहाज़ चलाने का साहस नहीं कर सकती थी। जल-मार्ग से ये अपना माल उरदुन और मिस्र के बन्दरगाहों तक पहुँचाया करते थे। अदन और हज़्रमूत से थल-मार्ग मआरिब पर जा कर मिलते थे। फिर वहाँ से एक मार्ग मक्का, जद्दा, यसरिब (मदीना), अलउला, तबूक और ऐला से होता हुआ पिटरा तक पहुँचता था उस के बाद एक मार्ग मिस्र की

१ सूरः अन-नम्ल आयत ३६-४४।
२ दे० आयत २०

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

ओर और दूसरा मार्ग शाम (Syria) की ओर जाता था। इस रास्ते में यमन से ले कर शाम (Syria) तक सबाइयों की नई आबादियाँ पाई जाती थीं। रात-दिन इन के तिजारती क़ाफ़िले यहाँ से आते-जाते रहते थे। आज भी इस भू-भाग में इन की आबादियों के चिह्न पाये जाते हैं और इन की भाषा में शिलालेख भी प्राप्त हुये हैं।

अपनी उन्नति के समय में यह जाति संसार की समस्त जातियों से बढ़ कर धनाढ्य थी। इन के बरतन सोने-चाँदी के होते थे। घर की छतों और दरवाज़ों तक में सोने-चाँदी और हाथी-दाँत का काम किया होता था। इन की भूमि अत्यन्त हरी-भरी और खेतों, बाग़ों और पशुओं से भरी हुई थी। इन के यहाँ सुगन्धित वस्तुओं की पैदावार बहुत थी। सुगन्ध की लपटें समुद्र-तट तक पहुँच रही थीं। परन्तु ये लोग भोग-विलास में लीन हो गये। सोने-चाँदी के बरतन इस्तेमाल करते। जलाने के लिए साधारण लकड़ी के बदले दारचीनी, चन्दन और दूसरी सुगन्धित लकड़ियाँ काम में लाते। इन्हों ने सनआ के उच्च पहाड़ी स्थान पर ऐसे गगन-चुम्बी भवन का निर्माण किया जो शताब्दियों तक 'क़स्र ग़ुमदान' के नाम से प्रसिद्ध रहा है। अरब के इतिहासकारों के कथनानुसार उस की २० मंज़िलें थीं और प्रत्येक मंज़िल की ऊँचाई २० फ़ीट थी।

सन् ११५ ई० पू० से इस जाति के पतन का आरम्भ हुआ, सन् ३०० ई० से ले कर इस्लाम के आरम्भ तक का समय इस जाति की तबाही और विनाश का समय है। इस मुद्दत में यह जाति निरन्तर पारस्परिक लड़ाइयों में उलझी रही। बाहर की दूसरी जातियों को प्रवेश का अवसर मिला तो इन के व्यापार पर भी तबाही आई और इन की खेती पर भी। और फिर यह जाति स्वतन्त्रता तक से हाथ धो बैठी। सन् ३४० से ३७८ ई० तक यमन पर हब्शियों का अधिकार रहा। फिर इस के बाद स्वतन्त्रता तो मिली परन्तु, दोबारा यह जाति उभर न सकी। सन् ४५० ई० या ४५१ ई० में मआरिब का प्रसिद्ध बन्ध टूट गया जिस का उल्लेख क़ुरआन[1] में किया गया है[*]। इस बन्ध के टूट जाने के कारण सिंचाई और खेती की व्यवस्था बिगड़ गई। और इन की आबादी तितर-बितर हो कर रह गई।

---

[1] दे० आयत १५-१६।
[*] इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* सबा

(मक्का में उतरी — आयतें* ५४)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَلَهُ الْحَمْدُ
فِي الْاٰخِرَةِ ۭ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ۝ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْاَرْضِ وَمَا
يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاۗءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا ۭ وَهُوَ
الرَّحِيْمُ الْغَفُوْرُ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَاْتِيْنَا السَّاعَةُ ۭ قُلْ
بَلٰى وَرَبِّيْ لَتَاْتِيَنَّكُمْ ۙ عٰلِمِ الْغَيْبِ ۚ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ
فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ وَلَآ اَصْغَرُ مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْبَرُ
اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝ لِّيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۭ
اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝ وَالَّذِيْنَ سَعَوْ فِيْٓ اٰيٰتِنَا

प्रशंसा (हम्द*) अल्लाह के लिए है, जो हर उस चीज़ का मालिक है जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है। और आख़िरत* में भी उसी के लिए प्रशंसा है, वह हिकमत* वाला और ख़बर रखने वाला है। ○

वह जानता है जो-कुछ ज़मीन में जाता है और जो-कुछ उस से निकलता है, और जो-कुछ आसमान से उतरता है और जो-कुछ उस में चढ़ता है, वह दया करने वाला और बड़ा क्षमाशील है। ○

जिन्हों ने कुफ़्र* किया वे कहते हैं: हम पर तो वह घड़ी (क़ियामत*) नहीं आयेगी। कहो: क्यों नहीं, मेरे रब* की क़सम — वह तुम पर आ कर रहेगी — ग़ैब* (परोक्ष) के जानने वाले की (क़सम)। उस से कण-भर भी कोई चीज़ ओझल नहीं आसमानों में न ज़मीन में, न उस से छोटी और न बड़ी सब-कुछ खुली किताब में (अंकित) है, ○ (क़ियामत आयेगी) ताकि वह उन लोगों को बदला दे जो ईमान* लाये और अच्छे काम किये। ये वे लोग हैं जिन के लिए क्षमा है और सम्मानित रोज़ी। ○

और जिन लोगों ने हमारी आयतों* को नीचा दिखाने के लिए दौड़-धूप की, उन के लिए बुरा अज़ाब है दुःख भरा। ○

* अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ۝ وَيَرَى الَّذِيْنَ
اُوْتُوا الْعِلْمَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ هُوَ الْحَقَّ وَيَهْدِيْٓ اِلٰى
صِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلٰى
رَجُلٍ يُّنَبِّئُكُمْ اِذَا مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ اِنَّكُمْ لَفِيْ خَلْقٍ
جَدِيْدٍ ۝ اَفْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَمْ بِهٖ جِنَّةٌ بَلِ الَّذِيْنَ
لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلٰلِ الْبَعِيْدِ ۝ اَفَلَمْ يَرَوْا
اِلٰى مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ مِّنَ السَّمَاۤءِ وَالْاَرْضِ اِنْ
نَّشَاْ نَخْسِفْ بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ نُسْقِطْ عَلَيْهِمْ كِسَفًا مِّنَ السَّمَاۤءِ
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ مِنَّا
فَضْلًا يٰجِبَالُ اَوِّبِيْ مَعَهٗ وَالطَّيْرَ وَاَلَنَّا لَهُ الْحَدِيْدَ ۝ اَنِ

(हे नबी*!) जिन्हें ज्ञान दिया गया है वे [...] हैं कि जो-कुछ तुम्हारे रब* की ओर से [...]री ओर उतारा गया है वह सत्य है और उस [...]ह का रास्ता दिखाता है जो अपार शक्ति का [...]क और प्रशंसा (हम्द*) का अधिकारी है। ○ [...] जिन्हों ने कुफ़्र* किया वे कहते हैं: हम बतायें [...] ऐसा व्यक्ति जो तुम्हें ख़बर देता है कि जब तुम [...]र कर) बिलकुल पूर्ण-विचूर्ण हो जाओगे, तो [...] नये सिरे से पैदा होना है! ○ क्या उस ने [...]ाह से सम्बन्ध लगा कर झूठ गढ़ा है, या उसे [...]ाद'[1] है? नहीं, बल्कि जो लोग आख़िरत* को नहीं मानते वे अज़ाब और परले दरजे की [...]ाही में हैं। ○

[...] क्या ये जो इन के आगे और पीछे आसमान और ज़मीन हैं इन्हों ने नहीं देखा[2] यदि हम [...], तो इन्हें ज़मीन में धँसा दें, या आसमान के कुछ टुकड़े गिरा दें[3] निश्चय ही इस में हर [...] बन्दे के लिए निशानी है जो (अल्लाह की ओर) रुजू करने वाला हो[4]। ○ हम ने [...]ऊद पर अपना बड़ा फ़ज़्ल किया था, (हम ने हुक्म दिया): हे पहाड़ो! उस के साथ भजन [...]ो! और साथ-साथ चिड़ियाँ भी[5]! और हम ने उस के लिए लोहे को नर्म कर दिया,[6] ○ [...] पूरी-पूरी कवचें बना और कुण्डलों को ठीक अन्दाज़े से जोड़[7]। और (हे दाऊद के अनु-[...]यियो!) अच्छा काम करो। जो-कुछ तुम करते हो मैं उसे देखता हूँ। ○ और सुलैमान के [...]र हम ने हवा को वशीभूत कर दिया, प्रातः समय उस का चलना एक महीने की राह तक [...]र सायंकाल को उस का चलना एक महीने की राह तक,[8] और हम ने उस के लिए पिघले [...] ताँबे का स्रोत बहा दिया, और कितने जिन्न* (उस के वशीभूत कर दिये) जो उस के रब* [...] हुक्म से उस के आगे काम करते थे[9]। उन में से जो हमारे हुक्म से फिरेगा, उसे हम दहकती [...]ग का मज़ा चखायेंगे। ○ वे उस के लिए बनाते थे जो-कुछ वह चाहता: ऊँचे-ऊँचे भवन और [...]र,[10] और लगन (थाल) जैसे हौज़ हों और देगें (भारी-भारी) जो एक ही जगह जमी रहतीं—

१ दे० आयत ४६।
२ दे० सूरः फ़ातिर आयत ४१।
३ अर्थात् वह इस का सामर्थ्य रखता है कि आसमान से कोई अज़ाब तुम पर उतार दे। वह तुम पर [...]बिजलियाँ बरसा सकता है वह ऐसी वर्षा कर सकता है कि तुम्हें कहीं पनाह न मिल सके।
४ परन्तु जिस का दिल ही अल्लाह से फिरा हुआ हो वह इस लोक में सब-कुछ देखने के बाद भी अन्धा [...] रहता है उसे कोई निशानी सुझाई नहीं देती जिस के द्वारा वह सत्य को पा सके।
५ दे० सूरः अल-अंबिया आयत ७९।
६ दे० सूरः अल-अंबिया आयत ८०।
७ दे० सूरः अल-अंबिया आयत ८०।
८ दे० सूरः अल-अंबिया आयत ८१।
९ दे० सूरः अल-अंबिया आयत ८२।
१० अर्थात् पेड़-पौधों और बेल-बूटों के चित्र, मनुष्यों और जानवरों के चित्र और मूर्तियाँ नहीं क्योंकि [...]जानवरों और मनुष्यों के चित्र और मूर्तियाँ (Statue) बनाना आज भी हराम (अवैध) है और हज़रत मूसा अ० [...]के धर्म-शास्त्र में भी हराम था दे० 'ख़ुरूज' (Ex.) २० : ४, 'अहबार' (Lev.) २६ : १, इस्तिसना (Deut.) [...] : १६-१८ और २७ : १५। (शेष अगले पृष्ठ पर)

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

اعمل سٰبغٰت وقدر في السرد واعملوا صالحا اني بما تعملون
بصير ۝ ولسليمٰن الريح غدوها شهر ورواحها شهر واسلنا
له عين القطر ومن الجن من يعمل بين يديه باذن ربه
ومن يزغ منهم عن امرنا نذقه من عذاب السعير ۝ يعملون
له ما يشاء من محاريب وتماثيل وجفان كالجواب وقدور
رٰسيٰت اعملوا ال داود شكرا وقليل من عبادي الشكور ۝
فلما قضينا عليه الموت ما دلهم على موته الا دابة الارض
تاكل منساته فلما خر تبينت الجن ان لو كانوا يعلمون
الغيب ما لبثوا في العذاب المهين ۝ لقد كان لسبا في
مسكنهم اية جنتٰن عن يمين وشمال كلوا من رزق ربكم
واشكروا له بلدة طيبة ورب غفور ۝ فاعرضوا فارسلنا
عليهم سيل العرم وبدلنٰهم بجنتيهم جنتين ذواتي اكل
خمط واثل وشيء من سدر قليل ۝ ذلك جزينٰهم بما
كفروا وهل نجٰزي الا الكفور ۝ وجعلنا بينهم وبين القرى
التي بٰركنا فيها قرى ظاهرة وقدرنا فيها السير سيروا فيها
ليالي واياما امنين ۝ فقالوا ربنا بٰعد بين اسفارنا وظلموا
انفسهم فجعلنٰهم احاديث ومزقنٰهم كل ممزق ان في

हे दाऊद के लोगो ! कर्म करो कृतज्ञता दिखाने को, मेरे बन्दों में कम ही हैं जिन्हें कृतज्ञ कहें। ○

फिर जब उस के लिए[11] हम ने मौत का फ़ैसला किया, तो उन (जिन्नों*) को उस की मृत्यु का पता बस उस घुन से चला जो उस की लाठी को खा रहा था। तो जब वह गिर पड़ा तब जिन्नों* पर हाल खुल गया कि यदि वे ग़ैब (परोक्ष) के जानने वाले होते, तो इस अपमान-जनक अज़ाब में न पड़े रहते। ○

[12]सबा वालों के लिए उन के अपने निवास-स्थान ही में एक निशानी थी : दो बाग़ दायें और बायें। खाओ अपने रब* का दिया और उस के कृतज्ञ बनो। ज़मीन है अच्छी सी और रब* है क्षमाशील ! ○ परन्तु वे मुँह मोड़ गये, तो हम ने उन पर बन्ध तोड़ (जल की) बाढ़ भेज दी,[13] और उन्हें उन के दोनों बाग़ों की जगह पर दूसरे दो बाग़ दिये जिन में कड़वे-कसैले फल, और झाऊ के पेड़ थे और कुछ थोड़ी सी बेरियाँ। ○

हज़रत सुलैमान अ० उसी धर्म-शास्त्र के अनुयायी थे जो हज़रत मूसा अ० ले कर आये थे फिर यह कैसे सम्भव है कि इस आयत* में जिस चित्र का उल्लेख किया गया है उस से अभिप्रेत मनुष्यों और जानवरों के चित्र हों। ये चित्र और मूर्तियाँ शिर्क* और मूर्ति-पूजा ही का कारण नहीं बनतीं बल्कि ये दूसरी बहुत सी बुराइयों का भी कारण बनती हैं। चित्रों से काम-वासना को उत्तेजित कर के लोगों के चरित्र को भ्रष्ट करने का काम पहले भी लिया गया है और आज के समाज में यह बुराई जिस सीमा तक पहुँच चुकी है वह सब के सामने है। इसी तरह चित्र उन बड़े साधनों में एक विशेष साधन है जिन के द्वारा सम्राटों, डिक्टेटरों और राजनीतिक नेताओं की महानता का सिक्का जन-साधारण के मस्तिष्कों पर बैठाने की चेष्टा की गई है और आज भी की जा रही है। फिर यही नहीं बल्कि लोगों को धोखा देने उन का अपमान करने और विभिन्न जातियों और गरोहों के बीच वैमनस्य का बीज बोने का काम भी चित्रों और कार्टूनों से लिया जाता है।

११ अर्थात् हज़रत सुलैमान अ० के लिए।

१२ हज़रत दाऊद अ० और हज़रत सुलैमान अ० का क़िस्सा बयान करने के बाद सबा का क़िस्सा बयान किया जा रहा है। ये क़िस्से वास्तव में इस बात के ऐतिहासिक प्रमाण हैं कि इस संसार का एक स्वामी है। जो लोगों के कर्म के अनुसार उन के साथ व्यवहार करता है। जो जाति अथवा जो लोग कृतज्ञता दिखाते हैं उन के साथ वह कुछ और मामला करता है, और जो उस के साथ कुफ़्र* की नीति अपनाते हैं उन के साथ उस का मामला कुछ और होता है। अल्लाह के राज्य में भलाई और बुराई एक समान कदापि नहीं है। अतः उस के न्याय और उस की दयालुता से यही आशा की जानी चाहिए कि एक समय ऐसा अवश्य आयेगा जब लोगों को उन के अच्छे-बुरे कर्मों का पूरा-पूरा बदला दिया जायेगा।

सबाइयों का देश वही था जो आज यमन के नाम से प्रसिद्ध है अर्थात् अरब का दक्षिणी और पश्चिमी कोना। बाइबिल में भी सबाइयों का उल्लेख मिलता है मिसाल के लिए दे० 'अय्यूब'(Job.) १ : १५, 'ज़बूर' (Ps.) ७२ : १५, 'यर्मियाह' (Jeremiah) ६ : २०, हिज़्क़ियाल (Ezekiel) २७ : २२ और ३८ : १३। व्यापार और कृषि सबा वालों का मूल व्यवसाय था। २० सूरा की भूमिका।

१३ पहाड़ों के बीच बन्ध बाँध कर नहरें निकाली गई थीं बन्ध के टूट जाने के बाद नहरें कुछ रहीं, न सिंचाई की व्यवस्था बाक़ी न रह सकी। फिर न सबा के बाग़ रहे और न बाग़ों के मालिक। उन की ज़मीन जंगली पेड़-पौधों और झाड़ियों से भर गई।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۝ وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ اِبْلِيْسُ
ظَنَّهٗ فَاتَّبَعُوْهُ اِلَّا فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَمَا كَانَ لَهٗ عَلَيْهِمْ
مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يُّؤْمِنُ بِالْاٰخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِيْ
شَكٍّ ؕ وَرَبُّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ۝ قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ
مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۚ لَا يَمْلِكُوْنَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي
الْاَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيْهِمَا مِنْ شِرْكٍ وَّمَا لَهٗ مِنْهُمْ مِّنْ ظَهِيْرٍ ۝
وَلَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا لِمَنْ اَذِنَ لَهٗ ؕ حَتّٰۤى اِذَا فُزِّعَ عَنْ
قُلُوْبِهِمْ قَالُوْا مَاذَا ۙ قَالَ رَبُّكُمْ ؕ قَالُوا الْحَقَّ ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ۝
قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ وَاِنَّاۤ اَوْ اِيَّاكُمْ
لَعَلٰى هُدًى اَوْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ قُلْ لَّا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّاۤ اَجْرَمْنَا
وَلَا نُسْـَٔلُ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝ قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا
بِالْحَقِّ ؕ وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيْمُ ۝ قُلْ اَرُوْنِيَ الَّذِيْنَ اَلْحَقْتُمْ بِهٖ شُرَكَآءَ
كَلَّا ؕ بَلْ هُوَ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ
بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى
هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ قُلْ لَّكُمْ مِّيْعَادُ يَوْمٍ لَّا تَسْتَاْخِرُوْنَ
عَنْهُ سَاعَةً وَّلَا تَسْتَقْدِمُوْنَ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ
بِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَلَا بِالَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ ؕ وَلَوْ تَرٰۤى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ

यह बदला दिया हम ने उन्हें इस लिए कि ने कुफ़्र* किया। और हम भर-पूर सज़ा अ- ही को तो देते हैं। ○

और हम उन के बीच और उन बस्तियों के जिन में हम ने बरकत दे रखी थी,[१४] प्रत्यक्ष याँ बसा दी थीं, और उन में सफ़र के फ़ासले अन्दाज़े पर रखे थे,[१५] सफ़र करो उन में कई-रात और कई-कई दिन तक निश्चिन्त हो कर। ○ तु उन्हों ने कहा : हमारे रब* ! हमारे सफ़र दूर कर दे। उन्हों ने अपने-आप पर ज़ुल्म या, फिर हम ने उन्हें कहानियाँ बना दिया, र उन्हें बिलकुल तितर-बितर कर डाला[१६]। य ही इस में निशानियाँ हैं हर उस व्यक्ति के र जो बड़ा सब्र* करने वाला कृतज्ञ हो। ○ लीस ने अपना गुमान उन पर सच कर दिखाया[१७] उसी के पीछे चले, सिवाय थोड़े से गरोह के जो ान* वाला था[१८]। ○

उस का उन पर कोई ज़ोर न था, हमें तो बस यह जानना था कि कौन आख़िरत* को नता है और कौन उस की ओर से सन्देह में पड़ा हुआ है; तेरा रब* हर चीज़ की गरानी करने वाला है। ○

(हे नबी* ! इन मुश्रिकों* से) कह दो : अल्लाह के सिवा जिन का तुम्हें गुमान है न्हें पुकार देखो ! वे न आसमानों में कण-भर चीज़ के मालिक हैं और न ज़मीन में, और उन (आसमानों और ज़मीन) में उन का कोई साझा है, और न उन में से कोई उस का हायक है। ○ और उस के यहाँ किसी के लिए सिफ़ारिश काम नहीं आती सिवाय उस यक्ति के जिस के लिए वह इजाज़त दे दे[१९]। यहाँ तक कि जब उन के दिलों से घबराहट दूर कर दी जाती है तो वे (आपस में) कहते हैं : तुम्हारे रब* ने क्या कहा ? कहते हैं : सत्य। और वह उच्च और महान् है। ○

(हे नबी* !) कहो : कौन तुम्हें आसमानों और ज़मीन से रोज़ी देता है ? कहो : अल्लाह।

---

१४ यह संकेत शाम (Syria) और फ़लिस्तीन के क्षेत्र की ओर है (दे० सूरः अल-आराफ़ आयत १३७; बनी इसराईल आयत १; अल-अंबिया आयत ७१, ८१)।

१५ अर्थात् मार्ग की एक बस्ती से दूसरी बस्ती की दूरी जानी-बूझी और निश्चित थी। यमन से शाम तक आबाद क्षेत्रों से हो कर सफ़र किया जाता था।

१६ सबा वाले तितर-बितर हो गये। विभिन्न क़बीले अरब के विभिन्न क्षेत्रों में आ बसे। सबा नाम की कोई जाति बाक़ी न रह सकी। केवल क़िस्से-कहानियों और इतिहास के पृष्ठों पर ही इस का नाम बाक़ी रह गया।

१७ दे० सूरः अल-आराफ़ आयत १६-१७; बनी इसराईल आयत ६२।

१८ इतिहास से भी मालूम होता है कि प्राचीन समय से सबा वालों में कुछ लोग ऐसे रहे हैं जो एक अल्लाह के मानने वाले थे; इस की पुष्टि शिलालेखों से भी होती है जो यमन के खंडहरों से प्राप्त हुवे हैं।

१९ दे० सूरः अल-बक़रः आयत २५५; सूरः अन-नबा आयत ३८।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

४१ : २-४	'रहमान' और 'रहीम' अल्लाह की ओर से उतरा। साफ़ आयतें अरबी भाषा में।
४१ : ४१, ४२	उच्च पद वाला ग्रन्थ, जिसमें किसी तरह भी झूठ का दखल नहीं हो सकता। अल्लाह की ओर से उतरा हुआ।
४३ : ३, ४	क़ुरआन अरबी में है ताकि तुम समझ सको और यह सुरक्षित तख़्तियों में मौजूद है।
४४ : ३	अल्लाह ने क़ुरआन एक मुबारक रात मे उतारा।
४५ : २०	*तमाम लोगों के लिए हैं बुद्धिमानी की बातें, मार्ग-दर्शन और दयालुता।*
४६ : १२	पहले के ग्रन्थों की पुष्टि करने वाला, अत्याचारियों को डराने वाला, और अच्छे कार्य करने वालों को शुभ-सूचना देने वाला।
५४ : ५	पूर्ण बुद्धिमानी की किताब।
५४ : २२,३२,४०	नसीहत हासिल करने के लिए आसान।
५६ : ७७,७८	*बड़े पद वाला, सुरक्षित तख़्तियों में लिखा हुआ।*
५६ : ७६	इसको वही हाथ लगाते हैं जो पाक हैं।
५६ : ८०	सम्पूर्ण विश्व के स्वामी की ओर से उतरा हुआ।
५६ : २१	क़ुरआन अगर पहाड़ पर उतरता तो तुम देखते कि पहाड़ अल्लाह के डर से दबा और फटा जा रहा है।
६५ : १०	अल्लाह की ओर से उतरी हुई नसीहत।
६६ : ४०,४३	क़ुरआन एक उच्च पद वाले फ़िरिश्ते का लाया हुआ सन्देश है। यह किसी कवि की कविता नहीं और न किसी 'काहिन' का कलाम है।
७५ : १७-१६	क़ुरआन का जमा करना, उसका पढ़वाना और समझाना अल्लाह ने अपने ज़िम्मे लिया।
७६ : २३	अल्लाह ने क़ुरआन मुहम्मद सल्ल० पर थोड़ा-थोड़ा उतारा।
८० : ११-१६	क़ुरआन एक नसीहत है, जो चाहे नसीहत हासिल करे। सम्मानित पन्नों में लिखा हुआ।
८१ : १६-२१	*क़ुरआन एक उच्च पद वाले फ़िरिश्ते का लाया हुआ सन्देश है, जो अमानतदार है और फ़रिश्तों का सरदार।*
८५ : २१,२२	बड़ी शान वाला, सुरक्षित तख़्ती में लिखा हुआ।
८६ : १३,१४	झूठ और सच को अलग-अलग कर देने वाला, हँसी-मज़ाक नहीं।
६७ : १	प्रतिष्ठा वाली रात में उतरा।
६८ : २,३	पवित्र पन्ने, जिन में पक्की बातें लिखी हुई हैं।

(२) ईश-ग्रन्थ होने की दलीलें

२ : २३,२४	अगर क़ुरआन के ईश-ग्रन्थ होने में सन्देह हो तो कोई उस जैसी एक सूरः ही बना लाओ।
४ : ८२	क़ुरआन पर विचार करो, अगर यह अल्लाह के सिवा किसी और की वाणी होती तो इसमें बहुत कुछ विरोधाभास पाया जाता।
६ : ११४	तौरात का ज्ञान रखने वाले जानते थे कि क़ुरआन अल्लाह की ओर से

مَوْقُوفُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ الْقَوْلَ يَقُولُ
الَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لَوْلَا أَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِينَ ۝
قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لِلَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا أَنَحْنُ صَدَدْنَاكُمْ عَنِ
الْهُدَىٰ بَعْدَ إِذْ جَاءَكُمْ ۖ بَلْ كُنْتُمْ مُجْرِمِينَ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ
اسْتُضْعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا بَلْ مَكْرُ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ إِذْ تَأْمُرُونَنَا
أَنْ نَكْفُرَ بِاللَّهِ وَنَجْعَلَ لَهُ أَنْدَادًا ۚ وَأَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا
الْعَذَابَ وَجَعَلْنَا الْأَغْلَالَ فِي أَعْنَاقِ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ هَلْ يُجْزَوْنَ
إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِنْ نَذِيرٍ إِلَّا
قَالَ مُتْرَفُوهَا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ كَافِرُونَ ۝ وَقَالُوا نَحْنُ أَكْثَرُ
أَمْوَالًا وَأَوْلَادًا وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ۝ قُلْ إِنَّ رَبِّي يَبْسُطُ
الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَمَا
أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ بِالَّتِي تُقَرِّبُكُمْ عِنْدَنَا زُلْفَىٰ إِلَّا مَنْ آمَنَ
وَعَمِلَ صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ جَزَاءُ الضِّعْفِ بِمَا عَمِلُوا وَهُمْ فِي
الْغُرُفَاتِ آمِنُونَ ۝ وَالَّذِينَ يَسْعَوْنَ فِي آيَاتِنَا مُعَاجِزِينَ أُولَٰئِكَ
فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُونَ ۝ قُلْ إِنَّ رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ
مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ ۚ وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهُ ۖ وَ
هُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ۝ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلَائِكَةِ

और या तो हम हैं या तुम हिदायत* ही पर य फिर खुली गुमराही में"[20] । ○

कहो : तुम से उस की पूछ न होगी जो अप-राध हम ने किया हो, और न उस की पूछ हम से होगी जो-कुछ तुम करते हो"[21] । ○

कहो : हमारा रब* हम सब को इकट्ठा करेगा, फिर हमारे बीच हक़ के साथ फ़ैसला कर देगा। वह ख़ूब ही फ़ैसला करने वाला और (सब-कुछ) जानने वाला है। ○

कहो : मुझे दिखाओ तो जिन्हें उस के साथ शरीक लगा रखा है। कदापि नहीं, बल्कि वही अल्लाह अपार शक्ति का मालिक और हिकमत* वाला है। ○

और (हे नबी*!) हम ने तो तुम्हें समस्त मनुष्यों के लिए शुभ-सूचना देने वाला और सचेत करने वाला बना कर भेजा है;"[22] परन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं हैं। ○

(ये लोग) कहते हैं : यह क़ियामत* का वादा कब (पूरा होगा) यदि तुम सच्चे हो? ○ कहो : तुम्हारे लिए एक ऐसे दिन का निश्चित वादा है जिस से न एक घड़ी-भर पीछे रहोगे और न घड़ी-भर आगे बढ़ोगे। ○

जिन लोगों ने कुफ़्र* किया है वे कहते हैं : हम कदापि इस क़ुरआन को न मानेंगे और न उस को जो इस से पहले (उतरा) है;"[23] और यदि कहीं तुम देख लेते वह समाँ कि ज़ालिमों को उन के रब* के सामने खड़ा कर रखा गया है, वे आपस में एक-दूसरे से बातें कर रहे हैं; वे लोग जो कमज़ोर पड़ते थे उन लोगों से जो बड़े बनते थे कह रहे हैं : यदि तुम न होते तो निश्चय ही हम ईमान* वाले होते। ○

उन लोगों ने जो बड़े बनते थे उन लोगों से जो कमज़ोर पड़ते कहा : क्या हम ने तुम्हें उस मार्ग-दर्शन से रोका था जब वह तुम्हारे पास आ चुका था? नहीं, बल्कि तुम स्वयं अपराधी थे। ○

२० अर्थात् हम में और तुम में से कोई एक ही हिदायत* पर है और दूसरा निश्चय ही गुमराही में पड़ा हुआ है। दोनों तो सीधे मार्ग पर हो नहीं सकते। या तो अल्लाह की इबादत* करने वाले सत्य पर होंगे या अन्य देवताओं और मूर्तियों को पूजने वाले सत्य पर होंगे। सोचने की बात यह है कि जब हमारा पैदा करने वाला अल्लाह है और वही हमें रोज़ी भी देता है तो इबादत* और उपासना भी उसी की होनी चाहिए।

२१ आयत २४ और २५ से मालूम हुआ कि हिकमत*, सरलता और नर्मी आदि का ध्यान रखना धर्म-प्रचार के लिए अत्यन्त आवश्यक है। जिस किसी को आप सत्य-धर्म की ओर बुला रहे हों, उसे यदि आप साफ़-साफ़ गुमराह कहने लग जायें तो इस का परिणाम यह होगा कि उस की हठधर्मी बढ़ जायेगी और सच्चाई के लिए उस के हृदय के द्वार बन्द हो जायेंगे।

आयत २५ में भी अत्यन्त नर्मी से काम लेने का आदेश दिया गया है। अपने लिए तो "हम ने जो अप-राध किया हो" कहने की अनुमति दी गई, परन्तु विरोधी के लिए "जो-कुछ तुम करते हो" कहने का आदेश दिया गया ताकि सच्चाई के लिए उस के दिल के दरवाज़े खुले रहें।

(२२, २३ अगले पृष्ठ पर)

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

أهؤلاء إياكم كانوا يعبدون ○ قالوا سبحانك أنت ولينا من
دونهم بل كانوا يعبدون الجن أكثرهم بهم مؤمنون ○ فاليوم
لا يملك بعضكم لبعض نفعا ولا ضرا ونقول للذين ظلموا
ذوقوا عذاب النار التي كنتم بها تكذبون ○ وإذا تتلى عليهم
آياتنا بينات قالوا ما هذا إلا رجل يريد أن يصدكم عما كان
يعبد آباؤكم وقالوا ما هذا إلا إفك مفترى وقال الذين
كفروا للحق لما جاءهم إن هذا إلا سحر مبين ○ وما آتيناهم
من كتب يدرسونها وما أرسلنا إليهم قبلك من نذير ○ وكذب
الذين من قبلهم وما بلغوا معشار ما آتيناهم فكذبوا رسلي فكيف
كان نكير ○ قل إنما أعظكم بواحدة أن تقوموا لله مثنى و
فرادى ثم تتفكروا ما بصاحبكم من جنة إن هو إلا نذير
لكم بين يدي عذاب شديد ○ قل ما سألتكم من أجر فهو
لكم إن أجري إلا على الله وهو على كل شيء شهيد ○ قل
إن ربي يقذف بالحق علام الغيوب ○ قل جاء الحق وما يبدئ
الباطل وما يعيد ○ قل إن ضللت فإنما أضل على نفسي
وإن اهتديت فبما يوحي إلي ربي إنه سميع قريب ○ ولو
ترى إذ فزعوا فلا فوت وأخذوا من مكان قريب ○ وقالوا

उन लोगों ने जो कमज़ोर पड़ते थे उन लोगों से जो बड़े बनते थे कहा : नहीं, बल्कि रात-दिन की मक्कारी थी, जब तुम हम से कहते थे कि हम अल्लाह के साथ कुफ़्र* करें और उस के प्रतिद्वन्दी ठहरायें। जब इन लोगों ने अज़ाब देखा तो मन-ही-मन पछताये; और हम इन कुफ़्र* करने वालों की गरदनों में तौक़ डाल देंगे। वे जैसा-कुछ करते थे वैसा ही तो बदला पायेंगे ? ○

हम ने जिस बस्ती में भी कोई डराने वाला भेजा, वहाँ के सुख-भोगी लोगों ने यही कहा : जो-कुछ दे कर तुम्हें भेजा गया है हम उसे नहीं मानते। ○

उन्हों ने (यह भी) कहा : हम तुम से अधिक माल और औलाद वाले हैं। और हम अज़ाब पाने ३५ वाले नहीं हैं। ○

(हे नबी*!) कहो : मेरा रब* जिस की रोज़ी चाहता है कुशादा कर देता है और (जिसे चाहता है) नपी-तुली देता है। परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते। ○ ये न तुम्हारे माल हैं और न तुम्हारी औलाद जो तुम्हें हम से क़रीब कर दें, हाँ जो कोई ईमान* लाये और अच्छा काम करे, तो ऐसे ही लोगों को उन के किये का बदला बढ़ा-चढ़ा कर मिलेगा, और वे ऊँचे भवनों में निश्चिन्त हो कर रहेंगे। ○

रहे वे लोग जो हमारी आयतों* को नीचा दिखाने के लिए दौड़-धूप करते हैं, तो वे अज़ाब में पड़े रहेंगे। ○

(हे नबी*!) कहो : मेरा रब* अपने बन्दों में से जिस की चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है, और जिस की चाहता है नपी-तुली कर देता है। और तुम जो-कुछ ख़र्च करते हो उस की जगह तुम्हें और देता है। वह सब से अच्छा रोज़ी देने वाला है। ○

और जिस दिन वह सब को इकट्ठा करेगा, फिर फ़रिश्तों* से कहेगा : क्या ये लोग ४० तुम्हारी ही इबादत* करते थे ? ○

वे कहेंगे : महिमावान् है तू ! हमारा सम्बन्ध तो तुझ से है न कि इन से ! बल्कि बात यह है कि ये जिन्न* की इबादत* करते थे; इन में से अधिकतर उन पर ईमान* लाये हुये थे। ○ तो

---

२२ मालूम हुआ कि नबी सल्ल० को सम्पूर्ण संसार का रसूल* बना कर भेजा गया है। सूरः अल-अहज़ाब की आयत ४० से मालूम होता है कि आप (सल्ल०) अल्लाह के अन्तिम नबी* हैं। आप (सल्ल०) को अल्लाह ने क़ियामत* तक के लिए नबी* बना कर भेजा है। यह बात कि आप (सल्ल०) को क़ियामत* तक के लिए सम्पूर्ण मानव जाति के लिए नबी* बना कर भेजा गया है, क़ुरआन की दूसरी बहुत सी आयतों से मालूम होती है। उदाहरण के लिए दे० सूरः अल-अनआम आयत १९; अल-आराफ़ आयत १५८; अल-अंबिया आयत १०७; अल-फ़ुरक़ान आयत १।

इस के अतिरिक्त स्वयं नबी सल्ल० ने भी साफ़-साफ़ बता दिया है कि मैं सारे लोगों की ओर भेजा गया हूँ। और आप (सल्ल०) ने यह भी कहा है कि मेरे बाद कोई नबी* न होगा।

२३ अरब के काफ़िरों* की ओर संकेत है जो आसमानी किताबों को नहीं मानते थे। (२४ अगले पृष्ठ पर)

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

وَأَنَّىٰ لَهُمُ التَّنَاوُشُ مِن مَّكَانٍ بَعِيدٍ ۝ وَقَدْ كَفَرُوا بِهِ مِن قَبْلُ ۖ وَيَقْذِفُونَ بِالْغَيْبِ مِن مَّكَانٍ بَعِيدٍ ۝ وَحِيلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُونَ كَمَا فُعِلَ بِأَشْيَاعِهِم مِّن قَبْلُ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا فِي شَكٍّ مُّرِيبٍ ۝

आज तुम एक-दूसरे के न भले के मालिक हो और न बुरे के। और हम उन लोगों से जिन्हों ने ज़ुल्म किया कहेंगे : उस आग (दोज़ख़*) के अज़ाब का मज़ा चखो जिसे तुम झुठलाते थे। ○

इन लोगों को जब साफ़-साफ़ आयतें* सुनाई जाती हैं, तो ये कहते हैं : "यह तो बस एक ऐसा आदमी है जो यह चाहता है कि तुम्हारे पूर्वज जो-कुछ पूजते थे तुम्हें उस से रोक दे"; और कहते हैं : "यह (क़ुरआन*) तो बस एक झूठ है गढ़ा हुआ (और कुछ नहीं)"। इन कुफ़्र* करने वालों ने हक़* के बारे में कहा जब वह इन के पास आया : यह तो बस एक खुला जादू है। ○

हम ने इन्हें न तो किताबें* दी थीं जिन्हें ये पढ़ते-पढ़ाते हों, और न तुम से पहले, इन की ओर कोई सचेत करने वाला भेजा था[25]। ○

जो लोग इन से पहले गुज़रे हैं उन्हों ने भी झुठलाया था,— और जो-कुछ हम ने उन्हें दिया था उस के दसम भाग को भी ये नहीं पहुँचे हैं— तो जब उन्हों ने मेरे रसूलों* को झुठलाया तो कैसी रही मेरी सज़ा! ○ ४५

(हे नबी*!) कहो : मैं तुम्हें बस एक नसीहत करता हूँ : यह कि अल्लाह के लिए उठ खड़े हो, दो-दो और एक-एक, फिर विचार करो तुम्हारे साथी को कोई उन्माद नहीं है[26]। वह तो तुम्हें सचेत करने वाला है एक सख़्त अज़ाब के आगे-आगे। ○

(हे नबी*! इन से) कहो : मैं ने तुम से जो-कुछ बदला माँगा है वह तुम्हारा[27]। मेरा बदला तो बस अल्लाह के ज़िम्मे है। और वह हर चीज़ पर गवाह है। ○

कहो : मेरा रब* हक़ की चोट लगाता रहता है। वह ग़ैबों (छिपे तथ्यों) का जानने वाला है। ○

कहो : हक़ आ गया, और झूठ से न पहले कुछ बन पड़ता है न बाद में। ○

कहो : यदि मैं गुमराह हो गया हूँ,[28] तो गुमराह हो कर अपना ही बुरा करूँगा, और यदि मैं ने (सीधी) राह पाई है तो इस कारण कि वह वह्य* है जो मेरा रब* मेरी ओर भेजता है। निस्सन्देह वह (सब-कुछ) सुनने वाला और क़रीब है। ○ ५०

कहीं तुम देख लेते वह समाँ कि ये घबराये हुये हैं पर कहीं बच कर न जा सके, और निकट ही से धर लिये गये, ○ और इन्हों ने कहा : हम ने इसे मान लिया। और अब इतनी दूर से इन का हाथ कहाँ पहुँच सकता है, ○ पहले तो ये उस का इन्कार कर चुके हैं। और दूर से बिन देखे फेंकते रहे हैं। ○ इन के और उस के बीच जो-कुछ कि ये चाहते हैं, रुकावट खड़ी कर दी गई, जैसा कि पहले इन जैसे दूसरे लोगों के साथ किया गया। निश्चय ही ये दुविधा एवं विकलता-जनक सन्देह में पड़े हुये थे। ○

---

२४ अर्थात् ये जिन्न*-शैतानों के उपासक थे। शैतान* ही ने इन्हें शिर्क* की राह सुझाई थी। उसी ने इन्हें इस बात की शिक्षा दी थी कि ये अल्लाह को छोड़ कर दूसरों को सहायता के लिए पुकारें और उस की उपासना में लग जायें, उन्हें भेंट चढ़ायें।

२५ अर्थात् ये सत्य का इन्कार किसी सनद और आसमानी किताब* के आधार पर नहीं कर रहे हैं, इन के कुफ़्र* और शिर्क* का मूल कारण इन का अज्ञान है।

२६ यह संकेत नबी* सल्ल० की ओर है जिन से मक्का के लोग भली-भाँति परिचित थे। आप (सल्ल०) का रहना-सहना सब उन ही लोगों के साथ था। लोगों के सामने आप (सल्ल०) का बचपन भी था और आप की जवानी भी।

२७ अर्थात् ऐसा लगता है जैसे हम तुम से कोई बदला माँग रहे हैं हालाँकि हम कुछ बदला नहीं माँगते।

२८ जैसा कि तुम कहते हो।

* इसे का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

३५--फ़ातिर

(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः* का नाम 'फ़ातिर' (Creator) सूरः की पहली ही आयत* से लिया गया है। इस सूरः का एक दूसरा नाम 'अल-मलाइकः' (The Angels) भी है यह शब्द भी पहली ही आयत* में आया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

अनुमान है कि यह सूरः मक्का के माध्यमिक काल में अवतीर्ण हुई होगी। जब कि विरोधियों का सत्य से विरोध बहुत बढ़ चुका था और वे नबी* सल्ल० की कोशिशों को असफल कर देने के लिए हर तरह की चालें चल रहे थे।

वार्ताये

'तौहीद'* और 'क़ियामत'* की पुष्टि करने में यह सूरः सबा के समान है। सूरः सबा में जिन्नों* के इलाह* (पूज्य) होने का निषेध किया गया है; और प्रस्तुत सूरः में फ़िरिश्तों* के इलाह* (पूज्य) होने का निषेध पाया जाता है।

नबी* सल्ल० 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) की ओर लोगों को बुला रहे थे इस के मुक़ाबिले में मक्का वालों ने और उन के सरदारों ने जो नीति अपना रखी थी उस पर उन्हें समझाने-बुझाने के साथ-साथ चेतावनी भी दी गई है। नबी* सल्ल० को बार-बार तसल्ली दी गई है कि आप (सल्ल०) का काम केवल सत्य को पूरी तरह पहुँचा देना है इस के बाद भी जो लोग सत्य-मार्ग पर चलने के लिए तैयार न हों उन की इस सरकशी की आप (सल्ल०) पर कोई ज़िम्मेदारी नहीं है। ईमान* वालों को शुभ-सूचनायें दी गईं, बताया गया कि उन्हें अल्लाह की किताब* का वारिस (उत्तराधिकारी) होने का श्रेय प्राप्त है, ताकि उन के दिल मज़बूत हों और सत्य-मार्ग में दृढ़ता के साथ वे आगे बढ़ सकें।

---

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* फ़ातिर

(मक्का में उतरी — आयतें* ४५)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
الْحَمْدُ لِلَّهِ فَاطِرِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ جَاعِلِ الْمَلَائِكَةِ رُسُلًا
أُولِي أَجْنِحَةٍ مَثْنَىٰ وَثُلَاثَ وَرُبَاعَ ۚ يَزِيدُ فِي الْخَلْقِ مَا يَشَاءُ ۚ إِنَّ
اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ مَا يَفْتَحِ اللَّهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَحْمَةٍ فَلَا
مُمْسِكَ لَهَا ۖ وَمَا يُمْسِكْ فَلَا مُرْسِلَ لَهُ مِنْ بَعْدِهِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ
الْحَكِيمُ ۝ يَا أَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ ۚ هَلْ مِنْ
خَالِقٍ غَيْرُ اللَّهِ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ
فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ۝ وَإِنْ يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِنْ قَبْلِكَ ۚ
وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ۝ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۖ فَلَا
تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۖ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللَّهِ الْغَرُورُ ۝ إِنَّ الشَّيْطَانَ
لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوهُ عَدُوًّا ۚ إِنَّمَا يَدْعُو حِزْبَهُ لِيَكُونُوا مِنْ أَصْحَابِ
السَّعِيرِ ۝ الَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۖ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا

प्रशंसा (हम्द*) अल्लाह के लिए है, जो आसमानों और ज़मीन का स्रष्टा, और फ़िरिश्तों* को सन्देश-वाहक नियुक्त करने वाला है (ऐसे फ़िरिश्ते*) जिन के दो-दो, और तीन-तीन, और चार-चार बाज़ू हैं[1]। वह सृष्टि-रचना में जो चीज़ चाहता है बढ़ा देता है[2]। निस्सन्देह अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला (सर्वशक्तिमान) है। ○

अल्लाह जो दयालुता लोगों के लिए खोल दे उसे कोई रोकने वाला नहीं; जिसे रोक ले उसे उस के बाद कोई भेजने वाला नहीं। और वह अपार शक्ति का मालिक और हिकमत* वाला है। ○

हे लोगो! अल्लाह की तुम पर जो कृपा है उसे याद करो! क्या अल्लाह के सिवा कोई और पैदा करने वाला है जो तुम्हें आसमान और ज़मीन से रोज़ी देता हो?— कोई इलाह* (पूज्य) उस के सिवा नहीं। तुम कहाँ से उलटे भटके चले जा रहे हो? ○
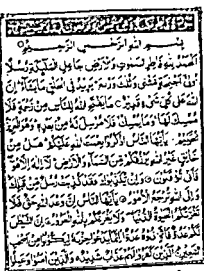
अब यदि (हे नबी*!) ये लोग तुम्हें झुठलाते हैं, तो तुम से पहले भी कितने ही रसूल* झुठलाये जा चुके हैं। और सारे मामले अल्लाह ही की ओर पलटते हैं। ○

हे लोगो! निश्चय ही अल्लाह का वादा[3] सच्चा है। अतः सांसारिक जीवन तुम्हें धोखे में न डाल दे, और न वह बड़ा धोखेबाज़[4] तुम्हें अल्लाह के बारे में धोखा देने पाये। ○ निश्चय ही शैतान* तुम्हारा दुश्मन है, अतः तुम भी उसे दुश्मन ही समझो। वह तो अपने (अनुयायियों के) गरोह को बुलाता है ताकि वे दहकती आग (दोज़ख़*) वालों में शामिल हो जायें। ○

जिन लोगों ने कुफ़्र* किया, उन के लिए सख़्त अज़ाब है।

और जो लोग ईमान* लाये और अच्छे काम किये, उन के लिए क्षमा और बड़ा बदला है। ○

---

१ फ़िरिश्तों* के परों और बाज़ुओं की वास्तविकता को पूर्ण-रूप से जानने का हमारे पास कोई साधन नहीं है। परन्तु अल्लाह ने उन के लिए जो शब्द प्रयोग किया है वह वही है जो हमारी भाषा में चिड़ियों के बाज़ुओं (Wings) के लिए प्रयोग होता है इस से किसी हद तक हम फ़िरिश्तों* के बाज़ुओं के बारे में कल्पना कर सकते हैं।

२ इस से मालूम होता है कि फ़िरिश्तों* के बाज़ुओं की संख्या चार ही तक सीमित नहीं है बल्कि कुछ फ़िरिश्तों* को अल्लाह ने इस से भी अधिक बाज़ू प्रदान किये हैं। नबी सल्ल० ने एक बार हज़रत जिब्रील* अ० को इस रूप में देखा कि उन के छः सौ बाज़ू थे। हज़रत आइशः रज़ि० का बयान है कि आप (सल्ल०) ने हज़रत जिब्रील अ० को दो बार उन के वास्तविक रूप में देखा है, उन के छः सौ बाज़ू थे और वे पूरे क्षितिज पर छाये हुये थे।

३ वादा से अभिप्रेत आख़िरत* का वादा है।

४ अर्थात् शैतान*।

* का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ۞ اَفَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ
فَرَاٰهُ حَسَنًا ؕ فَاِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۖ فَلَا
تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسَرٰتٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ۞
وَاللّٰهُ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَسُقْنٰهُ اِلٰى بَلَدٍ مَّيِّتٍ
فَاَحْيَيْنَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ كَذٰلِكَ النُّشُوْرُ ۞ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ
الْعِزَّةَ فَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ جَمِيْعًا ؕ اِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ
الصَّالِحُ يَرْفَعُهٗ ؕ وَالَّذِيْنَ يَمْكُرُوْنَ السَّيِّاٰتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ؕ
وَمَكْرُ اُولٰٓئِكَ هُوَ يَبُوْرُ ۞ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ
ثُمَّ جَعَلَكُمْ اَزْوَاجًا ؕ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ؕ وَمَا
يُعَمَّرُ مِنْ مُّعَمَّرٍ وَّلَا يُنْقَصُ مِنْ عُمُرِهٖٓ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى
اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۞ وَمَا يَسْتَوِي الْبَحْرٰنِ ۖ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَآئِغٌ شَرَابُهٗ
وَهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ؕ وَمِنْ كُلٍّ تَاْكُلُوْنَ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْنَ
حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ فِيْهِ مَوَاخِرَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ
وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۞ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۙ
وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ
لَهُ الْمُلْكُ ؕ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مَا يَمْلِكُوْنَ مِنْ قِطْمِيْرٍ ۞
اِنْ تَدْعُوْهُمْ لَا يَسْمَعُوْا دُعَآءَكُمْ ۚ وَلَوْ سَمِعُوْا مَا اسْتَجَابُوْا لَكُمْ ۚ وَيَوْمَ

क्या वह व्यक्ति, जिस के लिए उस का बुरा कर्म शोभायमान बना दिया गया हो और वह उसे अच्छा समझ रहा हो, (कहीं ईमान* वाले सत्कर्मी व्यक्ति के समान हो सकता है ?) बात यह है कि अल्लाह जिसे चाहता है गुमराही में डाल देता है,[५] और जिसे चाहता है (सीधी) राह दिखाता है; तो (हे नबी* !) इन पर अफ़सोस करते-करते तुम्हारी जान न घुले। निस्सन्देह अल्लाह जानता है जो-कुछ ये कर रहे हैं। ○

अल्लाह ही तो है जो हवाओं को भेजता है फिर वे बादल उठाती हैं; फिर हम उसे एक निर्जीव भू-भाग की ओर ले जाते हैं और उस से ज़मीन को उस के मुरदा हो जाने के पश्चात् जिला उठाते हैं। इसी प्रकार (मरे हुये लोगों का) जी उठना है। ○

जो कोई इज़्ज़त (शक्ति एवं अधिकार) चाहता है तो (उसे मालूम होना चाहिए कि) इज़्ज़त तो सब-की-सब अल्लाह की है[६]। उसी की ओर अच्छे शब्द चढ़ते हैं, और अच्छा कर्म उन्हें ऊपर चढ़ाता है; रहे वे लोग जो बुरी चालें चलते हैं, १० उन के लिए सख़्त अज़ाब है; और उन की चाल-बाज़ी मलियामेट हो कर रहेगी। ○

अल्लाह ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य से,[७] फिर तुम्हें जोड़े-जोड़े बनाया[८]। बिना उस के (अर्थात् अल्लाह के) ज्ञान के न कोई स्त्री गर्भवती होती है और न (बच्चा) जनती है। कोई आयु पाने वाला आयु नहीं पाता, और न किसी की आयु में कमी होती है, परन्तु ये सब एक किताब* में (लिखा) होता है[९]। निस्सन्देह यह अल्लाह के लिए आसान (काम) है। ○

और दोनों सागर एक समान नहीं हैं : यह, मीठा, ख़ूब मीठा कि इसे मज़े से पी ले, और यह (दूसरा) खारी, कड़ुआ है। और तुम हर एक में से ताज़ा मांस[१०] खाते हो और आभूषण निकालते हो जिसे पहनते हो[११]। और तुम नौका को उस में देखते हो कि (उस का सीना) चीरती चली जा रही है ताकि तुम उस का (अर्थात् अल्लाह का) फ़ज़्ल (रोज़ी) तलाश करो, और, कदाचित् तुम कृतज्ञता दिखलाओ। ○

५ दे० सूरः अल-अनआम फ़ुट नोट १३; अल-बक़रः फ़ुट नोट ४।

६ क़ुरैश के सरदार नबी सल्ल० के विरोध में जो-कुछ कर रहे थे वह अपनी झूठी इज़्ज़त के लिए कर रहे थे। यहाँ बताया जा रहा है कि इज़्ज़त अल्लाह के लिए है; अल्लाह की अवज्ञा कर के जो इज़्ज़त और शक्ति बनाये रखने की चेष्टा की जायेगी उसे नष्ट ही होना है। सच्ची और बाक़ी रहने वाली इज़्ज़त तो वही है जो अल्लाह की बन्दगी में प्राप्त होती है।

७ अर्थात् पहले मिट्टी से मनुष्य की रचना की फिर वीर्य के द्वारा उस की नस्ल चलाई।

८ अर्थात् तुम्हें स्त्री और पुरुष में विभक्त कर दिया।

९ अर्थात् जो-कुछ होता है अल्लाह के ज्ञान और उस के फ़ैसले के अन्तर्गत होता है।

१० मछली और जलीय जानवरों का मांस।

११ मोती, मूँगा आदि और कुछ दरियाओं से सोना और हीरे भी निकाले जाते हैं।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُوْنَ بِشِرْكِكُمْ ؕ وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيْرٍ ۞ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۞ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ۞ وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ۞ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ وَاِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ اِلٰى حِمْلِهَا لَا يُحْمَلْ مِنْهُ شَيْءٌ وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ؕ اِنَّمَا تُنْذِرُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ؕ وَمَنْ تَزَكّٰى فَاِنَّمَا يَتَزَكّٰى لِنَفْسِهٖ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ۞ وَمَا يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۞ وَلَا الظُّلُمٰتُ وَلَا النُّوْرُ ۞ وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُوْرُ ۞ وَمَا يَسْتَوِي الْاَحْيَآءُ وَلَا الْاَمْوَاتُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُسْمِعُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَاۤ اَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَّنْ فِي الْقُبُوْرِ ۞ اِنْ اَنْتَ اِلَّا نَذِيْرٌ ۞ اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ؕ وَاِنْ مِّنْ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيْهَا نَذِيْرٌ ۞ وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَبِالزُّبُرِ وَبِالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ۞ ثُمَّ اَخَذْتُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ۞ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ ثَمَرٰتٍ مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهَا ؕ وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌۢ بِيْضٌ وَّحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهَا وَغَرَابِيْبُ سُوْدٌ ۞ وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَآبِّ وَالْاَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ كَذٰلِكَ ؕ اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ غَفُوْرٌ ۞ اِنَّ الَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَ

वह रात को दिन में पिरोता हुआ ले आता है और दिन को रात में पिरोता हुआ लाता है। उस ने सूर्य और चन्द्रमा को काम में लगा दिया है। हर-एक एक नियत समय तक चला जा रहा है। यही अल्लाह (जिस के ये सब चमत्कार हैं) तुम्हारा रब* है। राज्य उसी का है, उसे छोड़ कर जिन को तुम पुकारते हो वे एक क़ितमीर[12] के भी मालिक नहीं हैं। ○

यदि तुम उन्हें पुकारो तो वे तुम्हारी पुकार सुनेंगे नहीं, और यदि सुनते तो भी तुम्हारा जवाब न देते[13]। और क़ियामत* के दिन वे तुम्हारे शिर्क* का इन्कार कर देंगे[14]। कोई न बतायेगा तुम्हें जैसा बतावे खबर रखने वाला। ○

हे लोगो! तुम अल्लाह के मुहताज हो। और अल्लाह तो अपेक्षा-रहित (परम-स्वतन्त्र) और आप-से-आप प्रशंसा का अधिकारी है। ○

यदि वह चाहे तो तुम्हें हटा कर (तुम्हारी जगह) कोई नई सृष्टि ले आये। ○ और यह अल्लाह के लिए कुछ भी कठिन नहीं। ○

कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ न उठायेगा,[15] और यदि कोई लदा हुआ अपने बोझ की ओर (सहायता के लिए) पुकारेगा, तो उस में से कुछ भी बोझ न बटाया जायेगा चाहे वह (जिस को वह पुकारेगा) नातेदार ही क्यों न हो[16]। (हे नबी*!) तुम तो केवल उन लोगों को सचेत कर सकते हो जो बिन देखे अपने रब* से डरते हैं, और नमाज़* क़ायम करते हैं। जो कोई अपने को निखारता है तो वह अपनी ही भलाई के लिए निखारता है, और अल्लाह ही की ओर (सब को) पहुँचना है। ○

अन्धा और आँखों वाला बराबर नहीं है;[17] और न अँधियारियाँ और न उजाला। ○ और न छाया और न तपन; ○ और न बराबर हैं सजीव और न मृतक। निस्सन्देह अल्लाह

१२ यह पतली सी झिल्ली जो खजूर के भीतर गुठली पर चढ़ी होती है मतलब यह है कि वे तनिक भी अधिकार नहीं रखते।

१३ अर्थात् वे तुम्हारी प्रार्थना पर कोई कार्रवाई करने का सामर्थ्य नहीं रखते।

१४ वे कदापि तुम्हारा साथ नहीं देंगे। वे साफ़ कह देंगे कि हम ने कब कहा था कि तुम हमें अल्लाह का शरीक ठहराओ। तुम्हारा न कोई चढ़ावा हम तक पहुँचा और न तुम्हारी कोई पुकार हम तक पहुँची। तुम्हारे शिर्क* से हमारा कोई भी सम्पर्क नहीं।

१५ मक्का में जो लोग ईमान* लाते और इस्लाम* के मार्ग को अपना लेते उन से उन के नातेदार कहते कि तुम इस नवीन धर्म को त्याग कर बाप-दादा के धर्म में लौट आओ तुम्हारा अज़ाब हम अपने सिर ले लेंगे। यहाँ यह बात बताई जा रही है कि अल्लाह के यहाँ हर व्यक्ति अपने कर्मों का ज़िम्मेदार खुद होगा। वहाँ कोई किसी दूसरे का बोझ नहीं उठा सकता।

१६ वहाँ हर एक को अपनी पड़ी होगी। भाई भाई से विमुख होगा और बाप बेटे की ओर से मुँह फेर लेगा। दोज़ख* की अग्नि में जलने के लिए कोई भी किसी की ओर से जाने के लिए तैयार न होगा।

१७ देखें सूरः अन-नज्म आयत ३८-४२।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

जिसे चाहता है सुनवा देता है[18]। और (हे नबी*!) तुम उन लोगों को नहीं सुना सकते जो क़ब्रों में हैं[19]। ○ तुम तो बस एक सचेत करने वाले (डराने वाले) हो।[20] ○

निस्सन्देह हम ने तुम्हें हक़ (सत्य) के साथ, शुभ-सूचना देने वाला और सचेत करने वाला बना कर भेजा है; और कोई गरोह ऐसा नहीं जिस में कोई सचेत करने वाला (डराने वाला) न गुज़रा हो[21]। ○

अब ये लोग यदि तुम्हें झुठलाते हैं, तो वे लोग भी झुठला चुके हैं जो इन से पहले थे। उन के पास उन के रसूल* खुली दलीलें और ज़बूरें* और प्रकाशमान किताब* ले कर आये थे। ○

फिर मैं ने उन लोगों को जिन्हों ने कुफ़्र* किया (और मानने से इन्कार किया) पकड़ लिया, तो कैसी रही मेरी सज़ा! ○

क्या तुम ने नहीं देखा कि अल्लाह आसमान से पानी बरसाता है, और फिर उस के द्वारा हम ने फल निकाले जिन के रंग विभिन्न प्रकार के होते हैं; और पहाड़ों में श्वेत, और लाल सिलसिले पाये जाते हैं, जिन के रंग विभिन्न प्रकार के होते हैं, और कुछ गहरे काले होते हैं; ○ और मनुष्यों और इसी तरह, जानवरों और मवेशियों के रंग भी विभिन्न प्रकार के हैं? अल्लाह से तो उस के बन्दों में बस ज्ञान वाले[22] ही डरते हैं। निस्सन्देह अल्लाह अपार शक्ति का मालिक और बड़ा क्षमाशील है। ○

जो लोग अल्लाह की किताब पढ़ते हैं, और नमाज़* क़ायम करते हैं; और जो-कुछ हम ने उन्हें दिया है उस में से छुपे और खुले ख़र्च करते हैं, वे ऐसे व्यापार की आशा रखते हैं

اقاموا الصلوة وانفقوا مما رزقنهم سرا وعلانية يرجون تجارة
لن تبور ○ ليوفيهم اجورهم ويزيدهم من فضله انه غفور
شكور ○ والذي اوحينا اليك من الكتب هو الحق مصدقا لما
بين يديه ان الله بعباده لخبير بصير ○ ثم اورثنا الكتب
الذين اصطفينا من عبادنا فمنهم ظالم لنفسه ومنهم مقتصد
ومنهم سابق بالخيرت باذن الله ذلك هو الفضل الكبير ○ جنت
عدن يدخلونها يحلون فيها من اساور من ذهب ولؤلؤا و
لباسهم فيها حرير ○ وقالوا الحمد لله الذي اذهب عنا الحزن
ان ربنا لغفور شكور ○ الذي احلنا دار المقامة من فضله
لا يمسنا فيها نصب ولا يمسنا فيها لغوب ○ والذين كفروا لهم نار
جهنم لا يقضى عليهم فيموتوا ولا يخفف عنهم من عذابها
كذلك نجزي كل كفور ○ وهم يصطرخون فيها ربنا اخرجنا
نعمل صالحا غير الذي كنا نعمل اولم نعمركم ما يتذكر فيه
من تذكر وجاءكم النذير فذوقوا فما للظلمين من نصير ○ ان
الله علم غيب السموت والارض انه عليم بذات الصدور ○ هو
الذي جعلكم خلئف في الارض فمن كفر فعليه كفره ولا يزيد
الكفرين كفرهم عند ربهم الا مقتا ولا يزيد الكفرين كفرهم

---

१८ यहाँ जो उपमा और मिसालें दी गई हैं उन से मुस्लिम* और काफ़िर* का अन्तर दृष्टिगोचर कराना अभीष्ट है। इन मिसालों की सार्थकता को समझने के लिए इन पर विचार करने की आवश्यकता है।

१९ अर्थात् रसूल* का काम यह नहीं है कि वह उन लोगों के दिलों में भी अपनी बात उतार दे जो बिल-कुल मुरदा हो चुके हैं जिन के दिल मर चुके हैं जिन्हें जीवित समझना स्वयं जीवन का अपमान करना है।

२० दे० आयत ३७, ४२।

२१ हर जाति में अल्लाह की ओर से डराने वाले और लोगों को सीधा मार्ग दिखाने वाले आये हैं। यह बात क़ुरआन में और दूसरी जगहों पर भी कही गई है। दे० सूरः अल-हिज्र आयत १०; अन-नह्ल आयत ३६; अश-शुअरा आयत २०८। परन्तु यह ज़रूरी नहीं कि प्रत्येक बस्ती और हर एक जाति के लिए अलग-अलग ही नबियों* को भेजा गया हो। एक नबी का सन्देश जहाँ तक पहुँच सकता हो वहाँ के लिए वही नबी काफ़ी होगा। इसी प्रकार यह भी ज़रूरी नहीं कि जातियों की हर पीढ़ी और हर नस्ल के लिए अलग-अलग नबी आया हो। एक नबी* की शिक्षा जब तक शेष और सुरक्षित रहे उस समय तक किसी नये नबी* के आने की आवश्यकता नहीं रहती।

२२ अर्थात् वे लोग जो अल्लाह की महानता और उस के गुणों का पूरा ज्ञान रखते हैं, और जो वास्तविक रूप से अपने अल्लाह को पहचानते हैं भले ही उन्हों ने किसी पाठशाला या विश्वविद्यालय में शिक्षा न पाई हो।

२२ दे० आयत १८।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

जो कभी घाटा न देगा,[२४] ○ (इस व्यापार में उन्हों ने अपना सब-कुछ इस लिए लगाया है) ताकि अल्लाह उन्हें उन का बदला पूरा-पूरा दे और अपनी कृपा से उन्हें और बढ़ा कर दे। निस्सन्देह वह बड़ा क्षमाशील और क़द्र करने वाला (गुण-ग्राहक) है। ○

(हे नबी*!) जो किताब* हम ने तुम्हारी ओर वह्य* की है, वही हक़ (सत्य) है या उस की तसदीक़ (पुष्टि) करती है जो उस से पहले (अवतीर्ण हुआ) है। निस्सन्देह अल्लाह अपने बन्दों की पूरी ख़बर रखने वाला और देखने वाला है। ○

फिर हम ने इस किताब* का वारिस (उत्तराधिकारी) बना दिया उन लोगों को जिन्हें हम ने अपने बन्दों में से चुन लिया। अब कोई उन में अपने-आप पर ज़ुल्म करने वाला है और कोई उन में बीच की राह है, और कोई उन में अल्लाह की अनुमति से नेकियों में अग्रसर रहने वाला है। यही बहुत बड़ा फ़ज़्ल है[२५]। ○

सदैव रहने के बाग़! जिन में ये लोग प्रवेश करेंगे[२६]। वहाँ उन्हें सोने के कंगनों और मोती से आभूषित किया जायेगा और उन का वस्त्र वहाँ रेशम होगा ○। और वे कहेंगे : प्रशंसा (हम्द* और शुक्र) है उस अल्लाह के लिए जिस ने हम से ग़म दूर कर दिया। निस्सन्देह हमारा रब* बड़ा क्षमाशील और क़द्र करने वाला (गुणग्राहक) है, ○ जिस ने हमें अपनी कृपा से, सदैव रहने की जगह ठहराया; जहाँ न हमें कोई मशक़्क़त उठानी पड़ती है और न हमें कोई थकान आती है। ○ ३१

और जिन लोगों ने कुफ़्र* किया, उन के लिए दोज़ख़* की आग है। न उन का क़िस्सा पाक कर दिया जायेगा कि वे मर जायें, और न उन से उस (दोज़ख़*) का अज़ाब ही हल्का किया जायेगा। इस तरह हम हर एक कुफ़्र* करने वाले को बदला देते हैं। ○ और वे वहाँ चिल्लायेंगे कि हमारे रब*! हमें निकाल ले; हम अच्छा काम करेंगे, उस के विपरीत जो (पहले) करते थे। (कहा जायेगा) : क्या हम ने तुम्हें इतनी आयु न दी थी जिस में कोई सोचना-समझना चाहता तो सोच-समझ लेता[२७]? और तुम्हारे पास सचेत करने वाला भी आया था।

---

२४ यहाँ ईमान* वालों के कर्मों की उपमा अल्लाह ने व्यापार से दी है। परन्तु यह ऐसा व्यापार है जिस में घाटे का कोई भय नहीं। ईमान* वाला व्यक्ति इस लोक में जो अच्छे काम करता है और अल्लाह के दीन* के लिए अपना जो माल और अपना जो समय लगाता है इस आशा पर लगाता है कि अल्लाह के यहाँ वह इन सब का पूरा-पूरा बदला पायेगा; और उसे कदापि किसी प्रकार का घाटा नहीं होगा।

२५ इस आयत में अल्लाह की किताब* का वारिस (उत्तराधिकारी) हज़रत मुहम्मद सल्ल०* के अनुयायियों को कहा गया है, जिन्हें अल्लाह ने सम्पूर्ण मानव-जाति में से छाँट लिया है ताकि वे अल्लाह की किताब* को ले कर उठें और उसे दुनियाँ के सामने पेश करें। परन्तु उस मुस्लिम गरोह में जिसे अल्लाह ने अपनी किताब* का वारिस बनाया है तीन तरह के लोग पाये जाते हैं। एक तो वे लोग हैं जो ईमान* तो रखते हैं परन्तु अपने आप पर ज़ुल्म करने वाले अर्थात् गुनहगार हैं। ऐसे लोग संख्या में अधिक हैं। दूसरे बीच के लोग हैं जो आज्ञाकारी भी हैं और अवज्ञाकारी भी। जिन के कर्म अच्छे भी हैं और बुरे भी। इन की संख्या भी अधिक है परन्तु पहले लोगों से कम। तीसरे वे लोग हैं जो वास्तव में इस विरासत का हक़ अदा करते हैं। ये संख्या में दोनों तरह के लोगों से कम हैं परन्तु सब से श्रेष्ठ यही लोग हैं।

२६ नबी* सल्ल० ने कहा है कि जो लोग नेकियों में अग्रसर रहे वे जन्नत* में बिना किसी हिसाब के प्रवेश करेंगे। और जो बीच की राह वाले हैं उन से हिसाब लिया जायेगा परन्तु हल्का हिसाब। रहे वे लोग जिन्हों ने अपने-आप पर ज़ुल्म किया है वे 'महशर' के पूरे दीर्घ काल में रोक रखे जायेंगे फिर यही हैं जिन्हें अल्लाह अपनी रहमत (दयालुता) में ले लेगा और यही हैं जो कहेंगे प्रशंसा (हम्द*) है उस अल्लाह के लिए जिस ने हम से ग़म (व्यथा) को दूर कर दिया।

२७ इस से अभिप्रेत हर वह आयु है जिस में आदमी इस योग्य हो सकता हो कि (शेष अगले पृष्ठ पर)

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

अब मज़ा चखो (अपने किये का), ज़ालिमों का कोई सहायक नहीं है। ○ निस्सन्देह अल्लाह आसमानों और ज़मीन की छुपी चीज़ का जानने वाला है। वह तो सीनों (दिलों) तक की बात को जानता है। ○ वही तो है जिस ने तुम्हें ज़मीन में ख़लीफ़ा* बनाया है; अब जो कोई कुफ़्र* करेगा, उस के कुफ़्र* का वबाल उसी पर पड़ेगा। और काफ़िर* कुफ़्र* कर के अपने रब* के यहाँ ग़ज़ब* के सिवा और कुछ नहीं पायेंगे। और काफ़िरों* को उन के कुफ़्र* से बस घाटा-ही-घाटा होगा[२८] । ○

(हे नबी* !) कहो : क्या तुम ने अपने (ठहराये हुये) उन शरीकों को देखा भी जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो ? मुझे दिखाओ उन्हों ने ज़मीन में क्या पैदा किया है ! या आसमानों में उन का कुछ साझा है[२९] ? या हम ने इन्हें कोई किताब* दी है कि ये उस की खुली दलील पर क़ायम हैं ? नहीं, बल्कि ये ज़ालिम आपस में

إِلَّا خَسَارًا ۝ قُلْ أَرَأَيْتُمْ شُرَكَاءَكُمُ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ أَرُونِي مَاذَا خَلَقُوا مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمَاوَاتِ أَمْ آتَيْنَاهُمْ كِتَابًا فَهُمْ عَلَىٰ بَيِّنَتٍ مِّنْهُ ۚ بَلْ إِن يَعِدُ الظَّالِمُونَ بَعْضُهُم بَعْضًا إِلَّا غُرُورًا ۝ إِنَّ اللَّهَ يُمْسِكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ أَن تَزُولَا ۚ وَلَئِن زَالَتَا إِنْ أَمْسَكَهُمَا مِنْ أَحَدٍ مِّن بَعْدِهِ ۚ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ۝ وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِن جَاءَهُمْ نَذِيرٌ لَّيَكُونُنَّ أَهْدَىٰ مِنْ إِحْدَى الْأُمَمِ ۖ فَلَمَّا جَاءَهُمْ نَذِيرٌ مَّا زَادَهُمْ إِلَّا نُفُورًا ۝ اسْتِكْبَارًا فِي الْأَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ ۚ وَلَا يَحِيقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ إِلَّا بِأَهْلِهِ ۚ فَهَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا سُنَّتَ الْأَوَّلِينَ ۚ فَلَن تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ۖ وَلَن تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ تَحْوِيلًا ۝ أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ وَكَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعْجِزَهُ مِن شَيْءٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ ۚ إِنَّهُ كَانَ عَلِيمًا قَدِيرًا ۝ وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوا مَا تَرَكَ عَلَىٰ ظَهْرِهَا مِن دَابَّةٍ وَلَٰكِن يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۖ فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِعِبَادِهِ بَصِيرًا ۝

४० एक-दूसरे से जो वादा करते हैं वह निरा धोखा है। ○

निस्सन्देह अल्लाह ही आसमानों और ज़मीन को रोके हुये है कि टल न जायें, और यदि वे टल जायें तो उस के बाद कोई नहीं जो उन्हें थाम सके। निस्सन्देह वह बड़ा सहन-शील और क्षमा करने वाला है[३०] । ○

ये लोग अल्लाह की कड़ी-कड़ी क़समें खाते थे कि यदि कोई सचेत करने वाला इन के पास आ गया होता तो ये हर जाति से बढ़ कर (सीधे) मार्ग पर होते;[३१] परन्तु, जब इन के पास सचेत करने वाला आया, तो इस से ये और दूर भागे, ○ — इस लिए कि ज़मीन में बड़े बन कर रहें — और बुरी-बुरी चालें चलने लगे;[३२] और बुरी चाल अपने ही लोगों को ले बैठती है। अब, क्या ये लोग उसी रीति की प्रतीक्षा कर रहे हैं जो अगले लोगों के साथ रही[३३] ?

यदि वह सत्य और असत्य में अन्तर करना चाहे तो कर सके; और गुमराही को त्याग कर सत्य-मार्ग पर चलना चाहे तो चल सके। इस आयु को प्राप्त होने से पूर्व यदि किसी की मृत्यु आ गई, तो उस की पकड़ न होगी। परन्तु जो इस आयु को प्राप्त हो चुका हो कि सत्य को पहचान सके वह अल्लाह के यहाँ अपने कर्मों का उत्तरदायी होगा। और फिर जितनी ज़्यादा मुद्दत तक वह जीवित रहेगा और उसे समझने-बूझने और सँभलने के जितने भी अवसर मिलते रहेंगे उस की ज़िम्मेदारी बढ़ती चली जायेगी।

२८ दे० आयत ४३।

२९ दे० सूरः अल-अहक़ाफ़ आयत ४।

३० दे० आयत ४५।

३१ यह बात अरब के लोग और विशेष रूप से क़ुरैश क़बीले के लोग नबी* सल्ल० की बुअ़्सत* से पहले यहूदियों* और ईसाइयों की बिगड़ी हुई दशा को देख कर कहते थे। दे० सूरः अल-अनआम आयत १५६-१५७ और सूरः अस-साफ़्फ़ात आयत १६७-१६९।

३२ दे० आयत १०।

३३ अर्थात् अल्लाह का वही क़ानून इन पर भी जारी हो जाये जो इन से पहले की काफ़िर* जातियों पर जारी होता रहा है और वे बिलकुल तबाह कर दिये जायें।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

तो तुम यह कभी न पाओगे कि अल्लाह की रीति बदल दी गई हो,[३४] और तुम यह कभी न पाओगे कि अल्लाह की रीति टाल दी गई हो। ○

क्या ये लोग ज़मीन में चले-फिरे नहीं कि देखते कि उन लोगों का कैसा (बुरा) परिणाम हुआ जो इन से पहले थे, और वे शक्ति में इन से बढ़ कर थे ? अल्लाह ऐसा नहीं जिस से कोई चीज़ बच निकले आसमानों में और न ज़मीन में। निस्सन्देह वह (सब-कुछ) जानने वाला और क़ुदरत रखने वाला (सर्वशक्तिमान) है। ○

यदि अल्लाह लोगों को उस पर पकड़ता जो-कुछ कि वे (बुराई) कमाते हैं, तो इस (ज़मीन) की पीठ पर किसी जीवधारी को भी (जीवित) न छोड़ता; परन्तु वह उन्हें एक नियत समय तक के लिए मुहलत दे रहा है,[३५] फिर जब उन का नियत समय आ जायेगा, तो जान रखो अल्लाह की निगाह में हैं उस के सब बन्दे। ○ ५

---

३४ 'अदब्धानि वरुणस्य व्रतानि' (ऋ० १-२४-१०) अर्थात् ईश्वर के नियम अटल हैं। 'न किरस्य ... (अथर्व० १८-१-५) अर्थात् ईश्वर के नियमों को कोई बदल नहीं सकता।

... आयत ६१।

... में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

३६–या सीन०

(परिचय)

नाम (The Title)

सूरः* के आरम्भ के दो अक्षरों को इस सूरः का नाम ठहराया गया है। कुछ लोगों के नज़दीक सूरः के आरम्भ के दो अक्षर 'या सीन०' का अर्थ है : "हे मनुष्य" या "हे व्यक्ति"। और कुछ लोग इसे "हे सय्यिद" का संक्षिप्त रूप (Short form) समझते हैं। इन अर्थों की दृष्टि से इन शब्दों का सम्बोधन नबी सल्ल० की ओर होगा।

उतरने का समय (The date of Revelation)

सूरः* के अध्ययन से अनुमान होता है कि यह सूरः या तो मक्का के अन्तिम कालावधि की सूरतों में से है; या फिर यह मक्का के मध्य-काल के अन्तिम समय में उतरी है।

वार्त्तायें (Subject-matter)

इस सूरः* में क़ियामत*, कर्म-फल, दुनियाँ और आख़िरत* के अज़ाब का उल्लेख किया गया है और वास्तविक स्रष्टा की इबादत* और बन्दगी पर ज़ोर देते हुये अल्लाह के सिवा दूसरों की बन्दगी का निषेध किया गया है। काफ़िरों* की जड़ता का उल्लेख करते हुये बताया गया है कि काफ़िरों* की सदा से यही नीति रही है कि वे अल्लाह के रसूलों* की हँसी उड़ाते रहे हैं। इस सूरः की वर्णन-शैली ऐसी है कि उस से रिसालत* की पुष्टि होती है।

मस्तुत सूरः* पिछली सूरः का विस्तार और पोषक है। जिस प्रकार सूरः अल-फ़ातिहः को 'उम्म' अथवा मातृ, उद्गम (The Mother of the Book) कहा गया है उसी प्रकार सूरः 'या सीन०' को नबी सल्ल० ने "क़ुरआन का हृदय" की उपाधि दी है। सूरः अल-फ़ातिहः में क़ुरआन की पूरी शिक्षा का सारांश आ गया है; मस्तुत सूरः क़ुरआन का वास्तव में धड़कता हुआ दिल है। यह सूरः ज़ोरदार तरीक़े से लोगों को सत्य की ओर आमन्त्रित करती है। जिस से केवल वही लोग प्रभावित होने से वंचित रह सकते हैं जिन के दिल अत्यन्त कठोर हो गये हों। नबी सल्ल० ने कहा है : "सूरः या सीन० को अपने मरने वाले पर पढ़ा करो"। इस सूरः के सुन लेने से इस्लामी आस्थाओं और विचारों की पुनरावृत्ति हो जाती है और आख़िरत* (परलोक) का पूरा चित्र सामने आ जाता है।

---

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

وما لي لا أعبد الذي فطرني وإليه ترجعون ۝ ءأتخذ
من دونه آلهة إن يردن الرحمن بضر لا تغن عني شفاعتهم
شيئا ولا ينقذون ۝ إني إذا لفي ضلال مبين ۝ إني آمنت
بربكم فاسمعون ۝ قيل ادخل الجنة قال يا ليت قومي يعلمون
بما غفر لي ربي وجعلني من المكرمين ۝ وما أنزلنا على
قومه من بعده من جند من السماء وما كنا منزلين ۝
إن كانت إلا صيحة واحدة فإذا هم خامدون ۝ يا حسرة على
العباد ما يأتيهم من رسول إلا كانوا به يستهزءون ۝ ألم يروا
كم أهلكنا قبلهم من القرون أنهم إليهم لا يرجعون ۝ وإن كل
لما جميع لدينا محضرون ۝ وآية لهم الأرض الميتة أحييناها
وأخرجنا منها حبا فمنه يأكلون ۝ وجعلنا فيها جنات من
نخيل وأعناب وفجرنا فيها من العيون ۝ ليأكلوا من ثمره وما عملته
أيديهم أفلا يشكرون ۝ سبحان الذي خلق الأزواج كلها مما
تنبت الأرض ومن أنفسهم ومما لا يعلمون ۝ وآية لهم الليل
نسلخ منه النهار فإذا هم مظلمون ۝ والشمس تجري لمستقر
لها ذلك تقدير العزيز العليم ۝ والقمر قدرناه منازل حتى عاد
كالعرجون القديم ۝ لا الشمس ينبغي لها أن تدرك القمر ولا

मैं खुली गुमराही में जा पड़ा। ○ मैं तो तुम्हारे रब* पर ईमान* ले आया," सो मुझ से सुन लो। ○

(हुआ यह कि उन लोगों ने उसे क़त्ल कर दिया और उस से) कहा गया : दाख़िल हो जा जन्नत* में उस ने कहा : क्या ही अच्छा होता कि मेरी जाति के लोग जानते ○ कि मेरे रब* ने मुझे क्षमा कर दिया और मुझे सम्मानित लोगों में शामिल कर दिया"[११] ○

उस के बाद उस की जाति वालों पर हम ने आसमान से कोई सेना नहीं उतारी, और न हम उतारने वाले ही थे। ○ वह तो केवल एक (प्रचण्ड) चीख़ थी, सो क्या देखते हैं कि वे बुझ कर रह गये। ○

अफ़सोस बन्दों (के हाल) पर! जो रसूल* भी उन के पास आया वे उस की हँसी ही उड़ाते रहे। ○ क्या उन्हों ने देखा नहीं कि उन से पहले कितनी ही नस्लों को हम विनष्ट कर चुके हैं कि वे उन की ओर पलट कर नहीं आते; ○ और सब-के-सब हमारे सामने हाज़िर किये जायेंगे। ○

इन लोगों के लिए बे-जान ज़मीन एक निशानी है। हम ने उसे जीवित किया, और उस से अनाज निकाला जिसे ये खाते हैं; ○ और हम ने उस में खजूरों और अंगूरों के बाग़ पैदा किये, और उस में स्रोत फोड़ निकाले, ○ ताकि ये उस के फल खायें — इसे इन के हाथों ने नहीं बनाया — तो क्या ये कृतज्ञता नहीं दिखलायेंगे। ○

महिमावान् है वह (अल्लाह) जिस ने सब प्रकार के जोड़े पैदा किये, ज़मीन जो-कुछ उगाती है उस में से, और स्वयं इन की अपनी जाति (अर्थात् मानव-जाति) में से, और उन चीज़ों में से जिन्हें ये जानते नहीं। ○

इन के लिए एक निशानी रात है। हम उस के ऊपर से दिन को हटाते हैं और उन पर अँधेरा छा जाता है[१२]। ○ और सूर्य अपने ठिकाने की ओर चला जा रहा है[१३]। यह अपार

---

११ उस सज्जन व्यक्ति के मन में अपने हत्यारों के लिए कोई द्वेष, क्रोध या बदला लेने की भावना उत्पन्न न हुई। वह मरने से पूर्व भी अपनी जाति वालों का हितैषी था और मरने के बाद भी। उस ने यही चाहा कि किसी तरह मेरी जाति के लोगों को मेरे अच्छे परिणाम की ख़बर हो जाये और वे भी सीधे मार्ग को अपना कर जन्नत के अधिकारी बन सकें।*

क़ुरआन की और बहुत सी दूसरी आयतों* के अतिरिक्त इस आयत से भी यह बात मालूम होती है कि मरने के बाद मनुष्य का बिलकुल अन्त नहीं हो जाता। मृत्यु के पश्चात् मनुष्य की आत्मा बिना शरीर के भी जीवित रहती है। बात-चीत करती और सुनती है, चेतनाओं और इच्छाओं आदि से युक्त होती है, प्रसन्नता और दुःख दोनों का उसे अनुभव होता है। दुनिया वालों के साथ उस का लगाव भी बाक़ी रहता है। यदि ऐसा न होता तो न तो उसे जन्नत* की शुभ-सूचना दी जाती और न उस की यह कामना होती कि जाति वालों को उस के अच्छे परिणाम की ख़बर हो जाये। दे० सूरः अल-मोमिन आयत ४५-४६।*

जो निशानियाँ यहाँ बयान की गई हैं यदि मनुष्य इन निशानियों पर विचार (शेष अगले पृष्ठ पर)

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

شَقِّ के मालिक और सर्वज्ञ (अल्लाह) का बाँधा हुआ अन्दाज़ा (हिसाब) है। ○

लَيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ۚ وَكُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ۝ وَآيَةٌ لَّهُمْ أَنَّا حَمَلْنَا
ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ۝ وَخَلَقْنَا لَهُم مِّن مِّثْلِهِ مَا
يَرْكَبُونَ ۝ وَإِن نَّشَأْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيخَ لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنقَذُونَ ۝ إِلَّا
رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا إِلَىٰ حِينٍ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا مَا بَيْنَ
أَيْدِيكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝ وَمَا تَأْتِيهِم مِّنْ آيَةٍ
مِّنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ أَنفِقُوا
مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنُطْعِمُ مَن لَّوْ يَشَاءُ
اللَّهُ أَطْعَمَهُ إِنْ أَنتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا
الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝ مَا يَنظُرُونَ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً
تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُونَ ۝ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ تَوْصِيَةً وَلَا إِلَىٰ
أَهْلِهِمْ يَرْجِعُونَ ۝ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَإِذَا هُم مِّنَ الْأَجْدَاثِ إِلَىٰ رَبِّهِمْ
يَنسِلُونَ ۝ قَالُوا يَا وَيْلَنَا مَن بَعَثَنَا مِن مَّرْقَدِنَا ۜ هَٰذَا مَا وَعَدَ
الرَّحْمَٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُونَ ۝ إِن كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ
جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ ۝ فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَلَا تُجْزَوْنَ
إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ إِنَّ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِي شُغُلٍ فَاكِهُونَ ۝
هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلَالٍ عَلَى الْأَرَائِكِ مُتَّكِئُونَ ۝ لَهُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ
وَلَهُم مَّا يَدَّعُونَ ۝ سَلَامٌ قَوْلًا مِّن رَّبٍّ رَّحِيمٍ ۝ وَامْتَازُوا

और चन्द्रमा के लिए हम ने मंज़िलें नियत कर दी हैं यहाँ तक कि (उन से गुज़रता हुआ) वह फिर खजूर की पुरानी टहनी जैसा हो जाता है"[14]। ○

न सूर्य के वश में है कि वह चन्द्रमा को जा ले, और न रात दिन से आगे बढ़ने वाली। सब एक-एक कक्षा (ग्रह-पथ) में तैर रहे हैं"[15]। ○

इन के लिए एक निशानी यह है कि हम ने इन की सन्तति को भरी हुई नौका में सवार कर दिया, ○ और हम ने वैसी ही और चीज़ भी पैदा की जिस पर ये सवार होते हैं। ○ और यदि हम चाहें, तो इन्हें डुबो दें, फिर न कोई इन की फ़रियाद सुनने वाला हो, और न ये बचाये जा सकें; ○ ये तो बस हमारी दयालुता है और एक समय के लिए जीवन-आनन्द लेने का अवसर है। ○

इन से जब कहा जाता है : बचो उस से जो तुम्हारे आगे है और जो तुम्हारे पीछे है,"[16] कदाचित् तुम पर दया की जाये (तो ये कुछ ४५ भी ध्यान नहीं देते)। ○ इन के पास इन के रब* की आयतों* में से जो आयत* भी आती है ये उस से मुँह मोड़े ही रहते हैं। ○ और जब इन से कहा जाता है कि जो-कुछ अल्लाह ने तुम्हें प्रदान किया उस में से ख़र्च करो, तो ये लोग जिन्हों ने कुफ़्र* किया है ईमान* लाने वालों

करे तो उसे यह मानना पड़ेगा कि यह ज़मीन से ले कर आसमानों तक फैली हुई दुनियाँ न तो अपने-आप बन गई है और न इस को बहुत से ख़ुदाओं और प्रभुओं ने मिल कर बनाया है। अल्लाह के अस्तित्व और उस के एक होने और उस की हिकमतों* का प्रत्यक्ष प्रमाण इस विस्तृत एवं विशाल जगत से बढ़ कर और क्या हो सकता है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि मनुष्य अपने खुले नेत्रों से विशाल विश्व का निरीक्षण करे और अपनी विचार शक्ति से काम ले।

१३ ठिकाने से अभिप्रेत वह स्थान भी हो सकता है जहाँ सूर्य को अन्त में जा कर ठहर जाना है और इस से अभिप्रेत वह नियत समय भी हो सकता है जब वह ठहर जायेगा। इस आयत* का ठीक-ठीक अर्थ तो उसी समय समझ में आ सकता है जब कि हमें विशाल विश्व के रहस्यों का पूर्ण रूप से ज्ञान प्राप्त हो जाये। प्राचीन समय में लोग समझते थे कि सूर्य पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगाता है फिर जब मनुष्य ने खोज और अनुसन्धान में कुछ उन्नति की तो उस ने यह समझा कि सूर्य अपने स्थान पर स्थिर है और सौर-जगत् (Solar system) के नक्षत्र उस की परिक्रमा करते हैं; परन्तु बाद के अनुसन्धानों और निरीक्षणों से पता चला कि सूर्य ही नहीं बल्कि वे समस्त तारा-गण जो अचल समझे जाते थे एक रुख़ पर चले जा रहे हैं। ऐसे तारों की चाल के बारे में १० से १०० मील प्रति सेकण्ड का अनुमान लगाया गया है। सूर्य के बारे में यह अनुमान है कि वह सौर-जगत् को लिये हुये लग-भग १२ मील प्रति सेकण्ड की चाल से गतिशील है।

१४ यह संकेत द्वितीया के चन्द्रमा की ओर है।

१५ "सब एक-एक कक्षा (Orbit) में तैर रहे हैं" इस से मालूम हुआ कि समस्त ग्रह, नक्षत्र आदि गतिशील हैं और इन में से प्रत्येक का मार्ग अलग है। ये नभ में इस प्रकार चल रहे हैं जैसे किसी तरल पदार्थ में कोई चीज़ तैर रही हो।

१६ दे० सूरः सबा आयत ६।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُونَ ۝ أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يَا بَنِي آدَمَ أَنْ لَا تَعْبُدُوا
الشَّيْطَانَ ۖ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ ۝ وَأَنِ اعْبُدُونِي ۚ هَٰذَا صِرَاطٌ
مُسْتَقِيمٌ ۝ وَلَقَدْ أَضَلَّ مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيرًا ۖ أَفَلَمْ تَكُونُوا تَعْقِلُونَ ۝
هَٰذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ۝ اصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ۝
الْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلَىٰ أَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَا أَيْدِيهِمْ وَتَشْهَدُ أَرْجُلُهُمْ بِمَا
كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝ وَلَوْ نَشَاءُ لَطَمَسْنَا عَلَىٰ أَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ
فَأَنَّىٰ يُبْصِرُونَ ۝ وَلَوْ نَشَاءُ لَمَسَخْنَاهُمْ عَلَىٰ مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوا
مُضِيًّا وَلَا يَرْجِعُونَ ۝ وَمَنْ نُعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِي الْخَلْقِ ۖ أَفَلَا
يَعْقِلُونَ ۝ وَمَا عَلَّمْنَاهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْبَغِي لَهُ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ وَقُرْآنٌ
مُبِينٌ ۝ لِيُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكَافِرِينَ ۝ أَوَ
لَمْ يَرَوْا أَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِمَّا عَمِلَتْ أَيْدِينَا أَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مَالِكُونَ ۝
وَذَلَّلْنَاهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوبُهُمْ وَمِنْهَا يَأْكُلُونَ ۝ وَلَهُمْ فِيهَا مَنَافِعُ
وَمَشَارِبُ ۖ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ۝ وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ آلِهَةً لَعَلَّهُمْ
يُنْصَرُونَ ۝ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَهُمْ وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُحْضَرُونَ ۝
فَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ إِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۝ أَوَلَمْ يَرَ
الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ نُطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُبِينٌ ۝ وَضَرَبَ
لَنَا مَثَلًا وَنَسِيَ خَلْقَهُ ۖ قَالَ مَنْ يُحْيِي الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيمٌ ۝ قُلْ

से कहते हैं : क्या हम उस को खाना खिलायें जिसे यदि अल्लाह चाहता तो स्वयं खिला देता ? तुम तो बस खुली गुमराही में पड़े हो । ○

और ये कहते हैं : यह (क़ियामत* का) वादा कब (पूरा होगा), यदि तुम सच्चे हो ? ○ बस ये लोग केवल एक ज़ोर की आवाज़ का इन्तज़ार कर रहे हैं, जो इन्हें इस दशा में घर लेगी जब ये (परस्पर लौकिक विषयों में) झगड़ रहे होंगे । ○ फिर न ये वसीयत कर सकेंगे, और न अपने घर वालों की ओर पलट सकेंगे ।१७ ○ और सूर* में फूँक मारी गई ! क्या देखेंगे कि वे क़बरों से निकल-निकल कर अपने रब* की ओर दौड़े जा रहे हैं"। ○

कहेंगे हाय हमारी मुसीबत ! किस ने हमें ––
से उठा दिया" ? यह वह चीज़ है जिस का रहमा (कृपाशील ईश्वर) ने वादा किया था, और रसू ने सच कहा था, ○ बस एक ज़ोर की आवाज़ और तुरन्त वे सब-के-सब हमारे सामने हाज़िर दिये गये ! ○

अब आज किसी जीव (व्यक्ति) पर कुछ भी ज़ुल्म न किया जायेगा; और तुम्हें उसी बदला दिया जायेगा जो तुम करते थे । ○

निश्चय ही जन्नत* वाले आज आनन्द लेने में मग्न हैं," ○ वे और उन की पत्नि (घने) सायों में हैं, मसनदों पर तकिये लगाये हुये; ○ उन के लिए वहां स्वादिष्ट चीज़ें हैं वे जो भी मांगें मिलता है; ○ सलाम ! शब्द दयावन्त रब* का !! ○

और हे अपराधियो ! आज तुम छँट कर अलग हो जाओ ! ○ क्या मैं ने तुम्हें ताकीद नहीं की थी, हे आदम के बेटो, कि तुम शैतान* की बन्दगी न करो — निश्चय ही वह तुम्हारा खुला दुश्मन है । ○ और यह कि मेरी ही बन्दगी करो ? यह सीधा मार्ग है । ○ और उस ने तो तुम में से एक भारी गरोह को गुमराह कर दिया है । क्या तुम बुद्धि नहीं रखते थे ? ○ यह वही दोज़ख़* है जिस की तुम्हें धमकी दी जाती थी । ○ तुम जो कुफ़्र* करते थे उस के बदले में आज इस

१७ सूर* तीन बार फूंका जायेगा । पहली बार जब सूर* में फूँक मारी जायेगी तो ज़मीन और आसमान के बसने वाले जितने हैं सब डर जायेंगे । दूसरी बार सूर* फूंका जायेगा तो सब-के-सब हलाक हो कर गिर जायेंगे । फिर ज़मीन और आसमान बदल कर कुछ-से-कुछ कर दिये जायेंगे । ज़मीन ऐसी सपाट कर दी जायेगी कि उस में कोई सलवट तक न रहेगी । फिर अल्लाह इस बदली हुई ज़मीन पर लोगों को जीवित कर के उठायेगा ।

१८ अपने बारे में वे समझेंगे कि मरे नहीं थे बल्कि सो रहे थे, किसी भयानक घटना ने उन्हें सोते से जगा दिया है । और वे भागे जा रहे हैं ।

१९ उन्हें 'हश्र' के मैदान में रोका नहीं गया बल्कि बिना हिसाब या हल्के हिसाब के बाद जन्नत* में भेज दिया गया । इस लिए कि वे दुनिया में ईमान लाये थे और उन्हों ने अच्छा काम किया था । १० मुहा फ़ातिर फुट नोट २६ ।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

(दोज़ख़*) का ईंधन बनो। ○

आज हम इन के मुँह पर ठप्पा लगाये देते हैं,[20] और इन के हाथ हम से बोलेंगे और
६५ इन के पाँव गवाही देंगे कि ये क्या कमाई करते रहे हैं[21]। ○

और यदि हम चाहें तो, इन की आँखें मेट दें फिर ये रास्ते के लिए लपकें। फिर कहाँ से इन्हें सुझाई देगा। ○ और यदि हम चाहें, तो इन्हें इन के स्थान ही पर विकृत कर के रख दें, कि न आगे बढ़ सकें और न पीछे लौट सकें। ○ जिस को हम दीर्घायु देते हैं, उस की आकृति को उलटा फेर देते हैं[22]। क्या फिर ये बुद्धि से काम नहीं लेते ? ○

और हम ने इस (नबी*) को कविता नहीं सिखाई, और न वह इसे शोभा देती है। यह तो केवल एक याददिहानी है और स्पष्ट .क़ुरआन* है,[23] ○ ताकि उस व्यक्ति को सचेत कर
७० दे जो जीवित हो,[24] और काफ़िरों* पर बात साबित हो जाये। ○

क्या इन लोगों ने नहीं देखा कि हम ने इन के लिए चौपाये पैदा किये, जिन्हें हमारे हाथों ने बनाया,[25] और अब ये उन के मालिक हैं, ○ और उन्हें इन के वश में कर दिया, कि उन में से कोई तो इन की सवारी है, और उन में से किसी (के मांस) को ये खाते हैं ? ○ और इन के लिए उन में और भी फ़ायदे और पीने की चीज़ें हैं क्या फिर ये कृतज्ञता नहीं दिखलायेंगे ? ○

और (ये सब-कुछ होते हुये) इन्हों ने अल्लाह के सिवा (दूसरे) इलाह* (पूज्य) बना लिये हैं कि शायद (उन से) इन्हें मदद पहुँचे। ○ वे इन की मदद करने का सामर्थ्य नहीं रखते;
७५ बल्कि ये उन की फ़ौज हैं जिन्हें हाज़िर होना पड़ेगा। ○

अच्छा तो इन की बात (हे नबी*!) तुम्हें दुःखी न करे। निस्सन्देह हम जानते हैं जो-कुछ ये छिपाते हैं और जो-कुछ ज़ाहिर करते हैं। ○

[26]क्या मनुष्य ने देखा नहीं कि हम ने उसे वीर्य्य से पैदा किया ? फिर क्या देखते हैं

---

२० दे० सूरः अर-रहमान आयत ३६।

२१ यहाँ केवल उन के हाथों और पैरों की गवाही का उल्लेख किया गया है दूसरे स्थानों पर बताया गया है कि उन की आँखें, उन के कान, उन की ज़बानें और उन के शरीर की खालें भी इस बात की गवाह होंगी कि वे दुनियाँ में क्या कुछ करते रहे हैं। (दे० सूरः अन-नूर आयत २४ और सूरः हा० मीम० सजदः आयत २०) एक ओर तो अल्लाह उन के मुँह पर ठप्पा लगा सकता है जैसा कि इस आयत* से मालूम हुआ दूसरी ओर अल्लाह के हुक्म से उन की ज़बानें ख़ुद इस बात की गवाही देने लग जायेंगी कि उन्हों ने अपनी ज़बानों से दुनियाँ में क्या काम लिया था और संसार में क्या-कुछ बिगाड़ फैलाते और अल्लाह की अवज्ञा करते रहे हैं।

२२ अर्थात् मनुष्य की दशा बच्चों की-सी कर देते हैं। जिस तरह वह बाल्यावस्था में दूसरों का मुहताज था उसी तरह वह फिर दूसरों का मुहताज हो जाता है। उसी तरह वह भी ना-समझी की बातें करने लगता है जिस तरह बच्चे करते हैं।

२३ यह काफ़िरों* की बात का उत्तर दिया गया जो .क़ुरआन* की आयतों* और सूरतों को कविता कह कर .क़ुरआन* के आसमानी किताब* होने का इन्कार करते थे।

२४ अर्थात् जिस की दशा पत्थर की-सी न हो बल्कि वह अपनी समझ बूझ से काम लेता हो। जो सत्य से प्रभावित होता हो।

२५ अर्थात् अपनी बनाई हुई।

२६ काफ़िर* कहते थे कि क़ियामत* की धमकी कब पूरी होगी। (दे० आयत ४८) उन के इसी सवाल का जवाब दिया जा रहा है। मरने के बाद पुनः जीवित होने को काफ़िर* असम्भव समझते थे। इसी लिए उन के प्रश्न के उत्तर में मनुष्य के दोबारा जीवित किये जाने की सम्भावना को तर्क-युक्त सिद्ध किया गया है।

इस अवसर पर मक्का के सरदारों में से कोई नबी सल्ल० के पास पुरानी हड्डी ले कर आया और उस गली हुई हड्डी को तोड़ कर कहने लगा कि इन हड्डियों में कौन जान डालेगा।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

[illegible]

कि वह प्रत्यक्ष झगड़ालू (अर्थात् अनुचित वाद-विवाद करने वाला) बन गया। ○ और उस ने हमारे लिए मिसाल दी,[२७] और अपनी सृष्टि को भूल गया,[२८] कहने लगा : कौन इन हड्डियों में जान डालेगा जब कि ये गल गई होंगी ? ○ कहो : इन में वही जान डालेगा जिस ने इन्हें पहली बार पैदा किया, और वह पैदा करने का हर काम जानता है, ○ वही जिस ने तुम्हारे लिए हरे वृक्ष से आग बना दी, अब यह है कि तुम उस से आग दहकाते हो। ○

क्या वह जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया इस का सामर्थ्य नहीं रखता कि इन जैसे को पैदा कर दे ? क्यों नहीं ! जब कि वह कुशल स्रष्टा और ज्ञाता है, ○ वह तो जब किसी चीज़ का इरादा करता है, तो उस का काम बस यह है कि उसे कह दे कि हो जा! और वह हो जाती है। ○ सो महिमावान् है वह जिस के हाथ में हर चीज़ का पूर्ण अधिकार है ! और उसी की ओर तुम्हें पलटना होगा। ○

---

२७ अर्थात् दूसरे प्राणियों की तरह हमें विवश समझता है और इस तरह का विचार रखता है कि जिस प्रकार मनुष्य किसी मरे हुये व्यक्ति को जीवित करने में असमर्थ है उसी प्रकार हम भी किसी को जीवन प्रदान नहीं कर सकते।

२८ अर्थात् यह इस बात को भूल जाता है कि निर्जीव पदार्थ से ही उस की सृष्टि हुई है।

... का अर्थ आखिर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

३७–अस-साफ़्फ़ात

(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः* का नाम 'अस-साफ़्फ़ात' (Those Who Set the Ranks) सूरः की पहली आयत* से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

अनुमान है कि इस सूरः का अवतरण मक्का के मध्य-काल में हुआ है। जब कि विरोधियों का विरोध बहुत बढ़ चुका था।

वार्तायें (Subject-matter)

इस सूरः* की वार्तायें विशेष रूप से तौहीद* (एकेश्वरवाद) और क़ियामत* के विषयों पर अवलम्बित हैं। ईमान* वालों से मदद का वादा किया गया है[1]। मक्का वालों को साफ़-साफ़ चेतावनी दे दी गई है कि तुम जिस रसूल* की हँसी उड़ा रहे हो उसे तुम पर विजय प्राप्त होगी, अल्लाह की सेना को तुम स्वयं देख लोगे। अल्लाह अपने रसूल* और ईमान* वालों की सहायता अवश्य करेगा। यह चेतावनी उस समय दी गई थी जब कि मुसलमान* जिन्हें अल्लाह ने अपना दल कहा है, बुरी तरह सताये जा रहे थे। उन के विजयी होने का कोई लक्षण दिखाई नहीं दे रहा था। परन्तु कुछ ही वर्षों के बाद[2] लोगों ने वही-कुछ देखा जिस की सूचना अल्लाह ने अपनी किताब* में दी थी।

इस सूरः* में इतिहास से कुछ मिसालें पेश की गई हैं जिन से मालूम होता है कि अल्लाह ने हमेशा अपने नबियों* की सहायता की है। जिन जातियों ने नबियों* को मानने से इन्कार किया उन्हें अपने इन्कार की सज़ा भुगतनी पड़ी। इस सूरः में जहाँ एक ओर काफ़िरों* और मुश्रिकों* की धारणाओं और उन के विचारों का तर्कयुक्त खण्डन करते हुये उन्हें अल्लाह के अज़ाब से डराया गया है वहीं दूसरी ओर ईमान* वालों को तसल्ली दी गई है और उन्हें इस की हर्ष-जनक सूचना दे दी गई है कि अन्त में वही विजयी होंगे, काफ़िर* परास्त हो कर रहेंगे।

इस सूरः* में ईमान* वालों और ईमान* न लाने वालों दोनों के परिणामों पर पूर्णतः प्रकाश डाला गया है।

प्रस्तुत सूरः* में जो ऐतिहासिक क़िस्से बयान हुये हैं उन में अत्यन्त महत्वपूर्ण घटना वह है जिस का सम्बन्ध हज़रत इबराहीम अ० के पवित्र जीवन से है। हज़रत इबराहीम अ० अल्लाह के संकेत पर अपने इकलौते बेटे को क़ुरबान (बलिदान) करने पर तैयार हो जाते हैं। और बेटा भी ख़ुशी-ख़ुशी क़ुरबानी के लिए अपने को पेश कर देता है। इस में प्रत्येक व्यक्ति के लिए शिक्षा है। हज़रत इबराहीम अ० के इस

---

[1] दे० आयत १-५, ११-२१; १७८-१८२।
[2] जब मुसलमानों को मक्का पर विजय प्राप्त हुई है।
* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

अनुपम बलिदान से हर व्यक्ति इस बात को भली-भाँति समझ सकता है कि इस्लाम* का अर्थ क्या है। हज़रत इब्राहीम अ० की .कुरबानी के विषय में एक सवाल यह उठाया गया है कि आप ने अपने जिस बेटे को .कुरबान करने का निश्चय किया था वह हज़रत इसमाईल अ० थे या हज़रत इसहाक़ अ०। विचार करने से साफ़ मालूम होता है कि वह हज़रत इसमाईल अ० हैं जिन्हें अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए हज़रत इब्राहीम अ० ने .कुरबान कर देने का निश्चय किया था। इस के प्रमाण प्रस्तुत किये जा सकते हैं। हम यहाँ कुछ प्रमाण प्रस्तुत कर रहे हैं।

१—सूरः साफ़्फ़ात पर विचार करने से मालूम होता है कि अपने देश को छो समय हज़रत इब्राहीम अ० ने अल्लाह से एक बेटे के लिए प्रार्थना की थी जिस अल्लाह ने उन्हें एक बेटे की शुभ-सूचना दी थी। आप की प्रार्थना और जो शु सूचना आप को दी गई है उस से विदित होता है कि जिस बेटे की .खुशख़बरी गई थी वह आप का पहलौठा बेटा था। फिर वही बच्चा जब दौड़ने-चलने की अ को पहुँचा तो उसे ज़िब्ह करने का संकेत हुआ। आप के पहलौठे बेटे हज़रत इ माईल अ० ही थे; हज़रत इसहाक़ (अ०) उन के बाद पैदा हुये हैं।

२—अल्लाह ने .कुरबानी का पूरा क़िस्सा बयान करने के बाद कहा है हम ने उसे इसहाक़ की शुभ-सूचना दी, एक नबी*, नेक लोगों में" (आयत ११ स से साफ़ मालूम होता है कि जब हज़रत इब्राहीम अ० महान् परीक्षा में उत्ती गये, तो उन्हें एक दूसरे बेटे हज़रत इसहाक़ के पैदा होने की .खुशख़बरी सुन है। इस लिए जिस बेटे को ज़िब्ह करने का इशारा हुआ था वह हज़रत इसमाई ० ही थे, हज़रत इसहाक़ अ० नहीं।

३—.कुरआन में एक जगह हज़रत इसहाक़ के पैदा होने की ख़बर देते हु ह शुभ-सूचना भी दी गई है कि उन के यहाँ याकूब नामक बेटा होगा' अब य त साफ़ ज़ाहिर है कि जिस बेटे के पैदा होने के साथ ही यह सूचना भी दे द हो कि उस के यहाँ एक बेटा होगा, यदि हज़रत इब्राहीम स्वप्न में देखते कि े ज़िब्ह कर रहे हैं तो आप यह कैसे समझ सकते थे कि उसे .कुरबान करने का शारा किया जा रहा है।

४—.कुरआन में हज़रत इसहाक़ अ० को "ज्ञानी बेटा" कहा गया है'। न्तु जिस बेटे के ज़िब्ह करने का इशारा हज़रत इब्राहीम अ० को हुआ है उसे सहनशील बेटा" कहा है। इस से भी मालूम होता है कि ज़िब्ह करने का आदेश रत इसमाईल अ० ही के लिए हुआ था।

५—जन-श्रुतियों से यह बात मालूम है कि हज़रत इसमाईल अ० के 'फ़िद्यः' रूप में जो मेंढा .कुरबान किया गया था उस के सींग हज़रत अब्दुल्लाह इब्न .जुबैर समय तक काबः में मौजूद थे। ये सींग हज्जाज बिन यूसुफ़ के समय में खो गये कि उस ने काबः का घेरा डाला था। इस से सिद्ध होता है कि .कुरबानी की

१ दे० सूरः हूद आयत ७१।
२ दे० सूरः अलहिज्र आयत ५३; अज़्ज़ारियात आयत २८।
*इस का अर्थ परिशिष्ट में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

घटना का सम्बन्ध शाम (Syria) से नहीं बल्कि मक्का से है जहाँ हज़रत इबराहीम ने इसमाईल अ० को बसाया था।

अरब के लोग शताब्दियों से यह बात जानते चले आ रहे हैं कि यह अनुपम .क़ुरबानी हज़रत इबराहीम अ० ने 'मिना' के स्थान पर पेश की थी। शुरू से ले कर आज तक 'हज' के अवसर पर यहाँ .क़ुरबानियाँ की जाती हैं; और इसे हज़रत इबराहीम अ० की यादगार समझा जाता है। इस के विपरीत हम देखते हैं हज़रत इसहाक़ अ० की नस्ल में कोई ऐसी प्रथा कभी प्रचलित नहीं रही है जिस में उन की जाति के लोग हज़रत इबराहीम अ० की यादगार के रूप में एक साथ .क़ुरबानी करते रहे हों।

बाइबिल में इस सिलसिले में परस्पर विरोधी बातें बयान हुई हैं। बाइबिल में एक ओर तो यह कहा गया है कि अल्लाह ने हज़रत इबराहीम अ० से जिस बेटे की .क़ुरबानी माँगी थी वह हज़रत इसहाक़ अ० थे और साथ ही यह भी कहा गया है वह इकलौते थे[1]। हालाँकि हज़रत इसहाक़ अ० इकलौते न थे। बाइबिल के अपने उल्लेखों से भी निश्चित रूप से यह मालूम होता है कि हज़रत इसहाक़ अ० इकलौते नहीं थे; इकलौते हज़रत इसमाईल ही थे[2]।

---

१ दे० बाइबिल 'पैदाइश' (Gen.) २२ : १-२।
२ इस के लिए देखिए 'पैदाइश' १६ : १-३, ११, १६; और १७ : १५-२५ और २१ : ५।
* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

४:६१ अल्लाह की किताब के आदेश को न मानना मुनाफ़िक़ों का काम है।
४:१६२ ज्ञान में गहराई रखने वाले इस किताब पर ईमान लाते हैं।
५:८३,८४ पिछली किताबों पर सच्चा ईमान रखने वाले इस किताब को सुनकर इस पर ईमान लाये बिना नहीं रहते।
६:२७ इस किताब को झुठलाने वाले क़ियामत के दिन बहुत पछतायेंगे।
६:५० इस किताब को मानने वाले वास्तव में आँख वाले और न मानने वाले अन्धे हैं।
६:६२ आख़िरत पर ईमान रखने वाले क़ुरआन पर ज़रूर ईमान लाते हैं।
६:६३ इस किताब का इन्कार करने वाले मौत के वक़्त सख़्त अज़ाब का शिकार होंगे।
६:१५५-१५७ अल्लाह की कृपाओं का अधिकारी होने के लिए इसका अपनाना आवश्यक है।
७:३ अल्लाह की उतारी हुई किताब पर चलो। उसके सिवा किसी दूसरे के पीछे न चलो।
१०:६४,६५ इस किताब में संदेह की कोई जगह नहीं और इसको झुठलाने में घाटा ही घाटा है।
११:१७ वे लोग क़ुरआन पर ज़रूर ईमान लाते हैं जो अल्लाह की दी हुई सूझ-बूझ से काम लेते हैं।
११:२४ क़ुरआन के न मानने वाले और मानने वाले दो गरोह हैं। एक अन्धा और बहरा दूसरा देखता और सुनता।
१३:१६ जिसे यह विश्वास हो कि क़ुरआन सत्य है, वह उन अन्धों जैसा कैसे हो सकता है, जो उसे न मानें।
१६:६४ ईमान लाने वालों के लिए यह किताब मार्ग-दर्शन और दयालुता है।
१७:४५,४६ जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उनके लिए इस किताब का समझना सम्भव नहीं।
१७:१०५-१०६ तुम इस किताब को मानो या न मानो लेकिन जिन लोगों के पास ज्ञान है वे तो इसे मानते ही हैं।
२८:५० जो लोग तुच्छ इच्छाओं के दास हैं, वही इस किताब को नहीं मानते।
२८:५२-५४ पिछली किताबों का ज्ञान रखने वाले इस किताब को सुनते ही ईमान लाते हैं।
२९:४९-५१ ईमान लाने वालों के लिए यह किताब 'रहमत' है।
३१:७ अल्लाह की आयतों पर कान न धरने वालों के लिए दुखभरा अज़ाब है।
३२:२२ वह बड़ा ज़ालिम है जो अल्लाह की आयतें सुने और फिर मुँह मोड़ ले।
४०:५६ जिन लोगों के दिल में घमण्ड है वही अल्लाह की आयतों के साथ कठ-हुज्जती करते हैं।
४१:४४ जो लोग क़ुरआन पर ईमान नहीं लाते वे वास्तव में बहरे और अन्धे हैं।
४३:६९-७३ क़ुरआन पर ईमान लाने वालों के लिए नेमतों-भरी जन्नत है।
४७:२ जो कुछ मुहम्मद सल्ल० पर उतरा उस पर ईमान लाने वालों के लिए

सूरः* अस-साफ़्फ़ात

(मक्का में उतरी — आयतें* १८२)
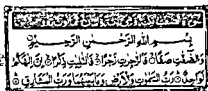
अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ۙ فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ۙ فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا ۙ اِنَّ اِلٰهَكُمْ
لَوَاحِدٌ ۗ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ۗ

क़सम है उन की जो परा जमा कर पंक्ति-बद्ध होते हैं[1] ○ फिर डाँटते-फिड़कते हैं ○ फिर 'ज़िक्र' का पाठ करते हैं,[2] ○ तुम्हारा इलाह (पूज्य) तो निश्चय ही अकेला है; ○ जो आसमानों और ज़मीन का और जो-कुछ उन के बीच है उन सब का रब* है और समस्त उदय-स्थानों[3] का रब* (स्वामी) है। ○ 1

हम ने दुनियाँ के आसमान[4] (निकटवर्ती आकाश) को एक शोभा से सुशोभित किया, तारों से, ○ और इस तरह उसे हर सरकश शैतान* से सुरक्षित भी कर दिया। ○ वे (शैतान*) 'म-ल-ये आला'[5] (सब से ऊँचे दरबार वालों) की ओर कान नहीं लगा सकते, हर ओर से फेंके जाते हैं, ○ हाँक देने को, और उन के लिए स्थायी अज़ाब है; ○ परन्तु जो कोई उचक कर (उन में से) कुछ ले उड़े, तो एक चमकती हुई अग्नि-शिखा उस का पीछा करती है[6] । ○ 10

---

१ दे० आयत १६५।

२ ये विशेषतायें फ़िरिश्तों* से सम्बन्ध रखती है जैसा कि क़ुरआन* के अधिकतर टीकाकारों का मत है। उन की क़सम खाने का अर्थ वास्तव में उन्हें गवाह ठहराना या प्रमाण के रूप में उन का उल्लेख करना है। फ़िरिश्तों* को यहाँ इस बात का गवाह ठहराया गया है कि मनुष्यों का इलाह* (पूज्य) एक ही है (दे० आयत ४)। फ़िरिश्तों* को यद्यपि हम अपनी आँखों से नहीं देखते परन्तु यह संसार और इस की व्यवस्था हमारे सामने है; सांसारिक घटनाओं से हम भली-भाँति परिचित हैं। फ़िरिश्ते* अल्लाह की बन्दगी में लगे हुये हैं (दे० आयत १-३, १६५)। वे अल्लाह के आदेशों का पालन करते और उस के हुक्म से दुनियाँ के इन्तज़ाम में लगे रहते हैं। फ़िरिश्तों* की क़सम खा कर दूसरे शब्दों में यह बात कही गई है कि संसार का इन्तज़ाम जो अल्लाह की बन्दगी में चल रहा है और अल्लाह की बन्दगी से विमुख होने के जो बुरे परिणाम हमारे सामने आते हैं और शुरू से ले कर आज तक निरन्तर जिस प्रकार एक ही सच्चाई की याददिहानी विभिन्न ढंग से कराई जा रही है ये सब चीज़ें इसी बात की गवाही देती हैं कि मनुष्य का पूज्य एक अल्लाह के सिवा कोई दूसरा नहीं है।

३ उदय-स्थान अथवा पूर्व को यहाँ बहुवचन प्रयोग किया गया है। सूर्य सदा एक ही स्थान से उदय नहीं होता बल्कि हर एक दिन वह अपने उदय-स्थानों को बदलता रहता है। इस के अलावा वह सम्पूर्ण भू-मण्डल पर एक ही समय में उदय नहीं होता। पृथ्वी के विभिन्न भागों पर वह विभिन्न समयों में उदय होता है। अल्लाह जिस तरह उदय-स्थानों का स्वामी है उसी प्रकार वह अस्त होने के स्थानों का भी मालिक है (दे० सूरः अल-मआरिज आयत ४०)।

४ अर्थात् निकटवर्ती आकाश, जिस का निरीक्षण हम बिना किसी दूरदर्शी यन्त्र की सहायता के करते रहते हैं।

५ अर्थात् The Highest Chiefs, फ़िरिश्तों* का गरोह।

६ दे० सूरः अल-हिज्र फ़ुट नोट ११। इन आयतों* से मालूम होता है कि शैतानों* और जिन्नों* की पहुँच ऊपरी लोक तक नहीं हो सकती। न वे इस का सामर्थ्य रखते हैं कि ऊपरी लोक की बातें सुन कर उन से दूसरों को सूचित कर सकें। यदि इन के कानों में कोई भनक पड़ भी जाये तो अन्धकार को भेदने वाली अग्नि-शिखा उन के पीछे लग जाती है। ऊपरी लोक और परोक्ष की बातें यदि मालूम हो सकती हैं और मनुष्य को यथार्थ का ज्ञान यदि प्राप्त हो सकता है तो केवल वह्य* के द्वारा। अतः यह क़ुरआन* जिसे रसूल* पेश कर रहा है उन 'काहिनों' (Soothsayers) और तान्त्रिकों की वाणी नहीं है जो अपना (शेष अगले पृष्ठ पर)

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

إِنَّا زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِزِينَةٍ الْكَوَاكِبِ ۝ وَحِفْظًا مِّن كُلِّ شَيْطَانٍ
مَّارِدٍ ۝ لَّا يَسَّمَّعُونَ إِلَى الْمَلَإِ الْأَعْلَىٰ وَيُقْذَفُونَ مِن كُلِّ جَانِبٍ ۝
دُحُورًا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ وَاصِبٌ ۝ إِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَأَتْبَعَهُ
شِهَابٌ ثَاقِبٌ ۝ فَاسْتَفْتِهِمْ أَهُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَم مَّنْ خَلَقْنَا ۚ إِنَّا خَلَقْنَاهُم
مِّن طِينٍ لَّازِبٍ ۝ بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُونَ ۝ وَإِذَا ذُكِّرُوا لَا
يَذْكُرُونَ ۝ وَإِذَا رَأَوْا آيَةً يَسْتَسْخِرُونَ ۝ وَقَالُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا
سِحْرٌ مُّبِينٌ ۝ أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا أَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ۝
أَوَآبَاؤُنَا الْأَوَّلُونَ ۝ قُلْ نَعَمْ وَأَنتُمْ دَاخِرُونَ ۝ فَإِنَّمَا هِيَ

अब इन से पूछो कि इन की बनावट ज़्यादा मज़बूत है[7] या उन की जिन्हें हम ने पैदा कर रखा है? इन को तो हम ने लेसदार गारे से पैदा किया है[8] । ○

बात यह है कि तुम तो अचम्भे में हो और ये हँसी उड़ाते हैं ○ और जब इन्हें चेताया जाता है तो ये नहीं चेतते,[9] ○ और जब कोई निशानी देखते हैं तो परस्पर उसे ठट्ठों में उड़ाते हैं। ○ और कहते हैं :
१५ यह तो बस खुला हुआ जादू है; ○ भला जब हम मर चुके हों और मिट्टी और हड्डियाँ हो कर रह जायें, तो फिर वास्तव में हम (पुनः जीवित कर के) उठा खड़े किये जायेंगे[10]? ○ और क्या हमारे अगले पूर्वज भी? ○

कहो हाँ और तुम हीन (अपमानित) होगे। ○ वह तो बस एक ही झिड़की होगी, फिर ये होंगे कि देखने लगेंगे, ○ और कहेंगे : हाय, हमारा दुर्भाग्य ! यह तो बदले (प्रतिकार) का दिन
२० है। ○ यह वही फ़ैसले का दिन है, जिसे तुम झुठलाते थे। ○ (कहा जायेगा) : घेर लाओ उन लोगों को जिन्हों ने ज़ुल्म किया,[11] और उन के जोड़ी वालों (संघाती) को और उस को जिसे ये पूजते थे ○ अल्लाह के सिवा, फिर उन सब को भड़कती आग (दोज़ख़*) का रास्ता दिखाओ;[12] ○ और तनिक इन्हें ठहराओ, इन से पूछना है। ○ तुम एक-दूसरे की सहायता
२५ क्यों नहीं करते ? ○ बल्कि ये तो अपने-आप को हवाले किये दे रहे हैं। ○ और ये परस्पर एक-दूसरे से सवाल करने लगे । ○ बोले : तुम हमारे पास आते थे दायें से...... ○ उन्हों[13] ने कहा : नहीं, नहीं, बल्कि तुम स्वयं ईमान* वाले न थे। ○

गोता किसी शैतान* जिन्न* आदि से जोड़ रखते हैं और वे शैतान* ऊपरी लोक से उन के पास कुछ सुन-गुन ले कर आने की चेष्टा करते हैं। क़ुरआन* का इन्कार करने वाले जहाँ नबी सल्ल० के बारे में यह कहते थे कि यह व्यक्ति तो जादू का मारा हुआ है या इसे उन्माद हो गया वहीं वे यह भी कहते थे कि क़ुरआन अल्लाह का 'कलाम' नहीं है बल्कि यह 'काहिन' (Diviner) अथवा दैवज्ञ की वाणी है (दे० सूरः अल-हाक़्क़ः आयत ४२)। इन आयतों* से इस तरह के विचारों का पूर्णतः खण्डन हो जाता है।

७ अर्थात् इन की हैसियत ही क्या है जो ये घमण्ड में पड़े हुये हैं और आख़िरत* का इन्कार किये जा रहे हैं (दे० आयत १६)।

८ अल्लाह ने मनुष्य की रचना मिट्टी से की फिर उस की नस्ल को वीर्य के द्वारा चलाया। फिर वीर्य भी मिट्टी ही से बनता है। जब मिट्टी में जीवन-संचार सम्भव है तो कल इसी मिट्टी से मनुष्य का दोबारा जीवित कर के उठाया जाना असम्भव कैसे हो गया।

९ दे० आयत १६।

१० दे० आयत ५३।

११ इन का सब से बड़ा ज़ुल्म यह था कि इन्हों ने अल्लाह के मुक़ाबिले में सरकशी की और उस के साथ दूसरों को शरीक ठहराया।

१२ ज़ालिम लोगों के साथ उन के दो प्रकार के पूज्य दोज़ख़* में डाले जायेंगे एक तो वे मनुष्य और शैतान* जिन की यह इच्छा रही है और वे इस के लिए प्रयत्नशील रहे हैं कि लोग अल्लाह को छोड़ कर उन ही की बन्दगी में लग जायें। दूसरे पूज्य उन के पत्थर, वृक्ष और मूर्तियाँ आदि हैं जिन्हें दुनिया में लोग पूजते रहे हैं उन्हें दोज़ख़* में इस लिए डाला जायेगा ताकि उन्हें देख कर अपराधी लोगों का दुःख और सन्ताप और बढ़ जाये और वे अपनी मूर्खता पर विलाप करते रहें। रहे वे नबी*, महापुरुष और फ़रिश्ते* जिन्हें लोग अपना उपास्य और देवता बना कर पूजते रहे हैं हालाँकि उन्हों ने यह कभी नहीं कहा कि लोग उन की पूजा करें बल्कि वे तो लोगों को शिर्क* से रोकते ही रहे, ज़ाहिर है वे नबी*, महापुरुष और फ़रिश्ते* दोज़ख़* में अपराधियों के साथ नहीं जायेंगे।

१३ ऐसा लगता है कि बात पूरी होने से पहले ही जवाब देने लगे।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

تٌ ۝ كأنهن بيض مكنون ۝ فأقبل بعضهم على بعض
يتساءلون ۝ قال قائل منهم إني كان لي قرين ۝ يقول أئنك
لمن المصدقين ۝ أئذا متنا وكنا ترابا وعظاما أئنا لمدينون ۝
قال هل أنتم مطلعون ۝ فاطلع فرآه في سواء الجحيم ۝ قال
تالله إن كدت لتردين ۝ ولولا نعمة ربي لكنت من
المحضرين ۝ أفما نحن بميتين ۝ إلا موتتنا الأولى وما نحن
بمعذبين ۝ إن هذا لهو الفوز العظيم ۝ لمثل هذا فليعمل
العاملون ۝ أذلك خير نزلا أم شجرة الزقوم ۝ إنا جعلناها فتنة
للظالمين ۝ إنها شجرة تخرج في أصل الجحيم ۝ طلعها كأنه
رءوس الشياطين ۝ فإنهم لآكلون منها فمالئون منها البطون ۝
ثم إن لهم عليها لشوبا من حميم ۝ ثم إن مرجعهم لإلى
الجحيم ۝ إنهم ألفوا آباءهم ضالين ۝ فهم على آثارهم يهرعون ۝
ولقد ضل قبلهم أكثر الأولين ۝ ولقد أرسلنا فيهم
منذرين ۝ فانظر كيف كان عاقبة المنذرين ۝ إلا عباد الله
المخلصين ۝ ولقد نادانا نوح فلنعم المجيبون ۝ ونجيناه
وأهله من الكرب العظيم ۝ وجعلنا ذريته هم الباقين ۝
وتركنا عليه في الآخرين ۝ سلام على نوح في العالمين ۝

उस ने कहा : क्या तुम (उसे) झाँक कर देखोगे (कि वह कहाँ है) ? ○ फिर झाँका तो देखा उसे

५५ भड़कती आग (दोज़ख़*) की गहराई में । ○ कहा : अल्लाह की क़सम, तू तो क़रीब था कि मुझे तबाह ही कर देता, ○ और यदि मेरे रब* की कृपा न होती, तो मैं भी उन में से होता जो (अज़ाब के लिए) हाज़िर किये गये[२१] । ○ अच्छा तो क्या अब हमें मरना नहीं है ○ सिवाय हमारी पहली मृत्यु के, और न हमें कोई अज़ाब होगा ! ○

६० निश्चय ही यही बड़ी सफलता है । ○ ऐसी ही चीज़ के लिए, फिर तो कर्म करने वालों को कर्म करना चाहिए । ○

क्या यह अच्छी आव-भगत है, या 'ज़क़्क़ूम'[२२] का वृक्ष ? ○ निश्चय ही हम ने उस (वृक्ष) को ज़ालिमों के लिए अज़ाब बना दिया है । ○ वह एक वृक्ष है जो भड़कती हुई आग (दोज़ख़*) की तह से निकलता है[२३] ○ उस के गाभे ऐसे हैं जैसे शैतानों*

६५ के सिर[२४] ○ तो ये (दोज़ख़* के लोग) उसे खायेंगे, और उसी से (अपने) पेट भरेंगे । फिर इस के ऊपर से पीने के लिए उन्हें खौलता हुआ पानी मिलेगा[२५] । ○ और इस के बा इन की वापसी उसी भड़कती हुई आग (दोज़ख़*) की ओर होगी[२६] । ○

निश्चय ही इन्हों ने अपने पूर्वजों को गुमराह पाया, ○ फिर ये उन ही के पद-चिह्नों

७० दौड़ चले[२७] । ○ और इन से पहले बहुत से अगले लोग गुमराह हो चुके हैं, ○ और उन हम ने सचेत करने वाले (रसूल*) भेजे थे । ○ फिर देख लो उन सचेत किये जाने वालों कैसा परिणाम हुआ, ○ सिवाय अल्लाह के चुने हुये बन्दों के (कि उन्हें यह बुरा दिन न देखना पड़ा) । ○

---

२१ इस से मालूम होता है कि आख़िरत* में मनुष्य को देखने, सुनने और बोलने की असाधारण श प्राप्त होगी । जन्नत में बैठा हुआ एक व्यक्ति सरलतापूर्वक बिना किसी यन्त्र की सहायता के एक ऐसे व्यक्ति देख लेगा और उस से बात-चीत कर लेगा जो उस से बहुत दूर दोज़ख़* में पड़ा होगा ।

२२ यह एक प्रकार का वृक्ष है इस का मज़ा कड़ुवा और इस की गन्ध अत्यन्त अप्रिय होती है । इस दूध यदि शरीर में लग जाये तो सूजन आ जाती है । यह वृक्ष तिहामः के क्षेत्र में होता है । सम्भवतः थूहर का वृक्ष या इसी प्रकार का कोई वृक्ष है ।

२३ यह दोज़ख़* का वृक्ष है इस से लाभ की अपेक्षा तकलीफ़ ही होगी ।

२४ अर्थात् अत्यन्त कुरूप ।

२५ इस सूरः की आयत ६२–६७ और सूरः अल-वाक़िअः की आयत ५२–५५ में बड़ी समानता पाई जाती

२६ दोज़ख़* वालों को जब भूख और प्यास सतायेगी तो उन्हें 'ज़क़्क़ूम' के वृक्षों और खौलते हुये पानी सोतों की ओर हाँक देंगे जब वे खा-पी चुकेंगे तो उन्हें फिर दोज़ख़* में उन के स्थानों की ओर लौटा दि जायेगा ।

२७ अल्लाह की दी हुई बुद्धि से कुछ काम न लिया और न समझाने वालों की बात सुनी । जिस म पर चलते हुये अपने बड़ों को पाया स्वयं भी उसी मार्ग पर आँखें बन्द कर के चल पड़े ।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

पुकारा था हमें (इस से पहले) नूह ने[28] तो (देखो) हम कैसे अच्छे जवाब देने वाले[29] थे। ○ और हम ने उसे और उस के लोगों को बहुत बड़ी घुटन से[30] बचा लिया, ○ और हम ने उस की नस्ल को ही बाक़ी रखा,[31] ○ और उस के लिए पीछे आने वालों में छोड़ा ○ : सलाम है नूह पर! समस्त संसार वालों में। ○ निस्सन्देह हम सत्कर्मी लोगों को ऐसा ही बदला देते हैं। ○ निश्चय ही वह हमारे ईमान* वाले बन्दों में से था। ○ फिर दूसरों को हम ने डुबो दिया। ○

और उसी के पन्थ पर चलने वालों में से इबराहीम[32] था ○ जब वह अपने रब* के पास भले-चंगे हृदय[33] के साथ आया;[34] ○ जब उस ने अपने बाप और अपनी जाति वालों से कहा : तुम क्या पूजते हो? ○ क्या गढ़े हुये इलाह* (पूज्य) अल्लाह के सिवा चाहते हो? ○ आख़िर अल्लाह, सम्पूर्ण संसार के रब* के बारे में तुम्हारा क्या गुमान है? ○

फिर उस ने तारों पर एक निगाह डाली[35] ○ और कहा : मैं बीमार हूँ[36]। ○ इस पर वे उस के पास से पीठ फेरे चले गये। ○ फिर वह चुप-चाप उन के देवताओं (मूर्तियों) की ओर ... गया और कहा : तुम खाते नहीं! ○ तुम बोलते क्यों नहीं? ○ फिर वह उन पर पिल पड़ा! और सीधे हाथ से चोटें लगाईं। ○

फिर वे लोग भागे-भागे, उस के पास आये। ○ उस ने कहा : क्या तुम उस चीज़ को पूजते हो जिसे स्वयं तराशते हो ○ जब कि अल्लाह ही ने तुम्हें भी पैदा किया है और जो-कुछ तुम बनाते हो उसे भी? ○

---

२८ हज़रत नूह अ० लम्बी अवधि तक अपनी जाति वालों को सत्य की ओर बुलाते रहे अन्त में विवश हो कर उन्हों ने अल्लाह से फ़रियाद की थी (दे० सूरः अल-क़मर आयत १०)।

२९ अर्थात् उस की पुकार पर पहुँचने वाले थे।

३० अर्थात् उस कष्ट और दुःख से जो हज़रत नूह अ० को अत्याचारी जाति से निरन्तर पहुँच रहा था।

३१ जो लोग हज़रत नूह अ० का विरोध कर रहे थे उन का सर्वनाश हो गया। इस आयत का एक अर्थ यह भी लिया जाता है कि अल्लाह ने केवल हज़रत नूह अ० की नस्ल को बाक़ी रखा दूसरी समस्त नस्लों का अन्त हो गया।

३२ हज़रत इबराहीम अ० का क़िस्सा क़ुरआन में कई जगहों पर बयान हुआ है। क़ुरआन के दूसरे स्थान भी सामने रहें।

३३ शुद्ध हृदय के साथ एकाग्र चित्त हो कर।

३४ अर्थात् सब से कट कर एक अल्लाह की ओर प्रवृत्त हुआ।

३५ यह अरब वालों का मुहाविरा है अर्थात् उस ने सोचा या वह विचार करने लगा।

३६ हज़रत इबराहीम अ० को वास्तव में कोई तकलीफ़ रही होगी। हज़रत इबराहीम अ० की इस बात को झूठ कहने के लिए पहले यह मालूम होना चाहिए कि आप को उस समय कोई तकलीफ़ नहीं थी केवल बहाने के रूप में उन्हों ने उस समय एक बात कही थी।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

उन्हों ने कहा : इस के लिए एक (अग्नि-) गृह तैयार करो और इसे भड़कती हुई आग में डाल दो। ○ उन्हों ने उस के साथ एक चाल चलनी चाही, परन्तु हम ने उन ही को नीचा दिखा दिया[३७]। ○ (इबराहीम ने) कहा : मैं अपने रब* की ओर जाता हूँ[३८] वह मुझे राह
१०० दिखायेगा[३९] ○ रब* ! मुझे नेकों में से कोई (बेटा) प्रदान कर[४०]। ○ तो हम ने उसे एक सहनशील लड़के की शुभ-सूचना दी। ○

और जब वह (लड़का) उस के साथ दौड़-धूप करने की अवस्था को पहुँचा, तो (एक दिन इबराहीम ने) कहा : हे मेरे बेटे ! मैं स्वप्न में देखता हूँ कि तुझे ज़ब्ह कर रहा हूँ[४१]। अब तू सोच ले कि तेरा क्या विचार है ?

उस ने कहा : हे मेरे बाप ! जो-कुछ आप को हुक्म दिया जा रहा है उसे कर डालिए। अल्लाह ने चाहा, तो आप मुझे सब्र* करने वालों में से पायेंगे। ○

फिर, जब दोनों ने अपने-आप को (अल्लाह के) अर्पण कर दिया, और उस ने (इबराहीम ने) उस को माथे के बल डाल दिया[४२] ○ और (ज्यों ही यह हुआ) हम ने उसे पुकारा : हे इबराहीम ! ○ तू ने
१०५ (अपने) स्वप्न को सच्चा कर दिखाया। निस्सन्देह हम सत्कर्मी लोगों को ऐसा ही बदला देते हैं[४३]। ○ निश्चय ही यह खुली हुई परीक्षा थी। ○ और हम ने उस (लड़के) की जान बचाने के लिए एक बड़ी क़ुरबानी दी[४४]। ○ और उस के लिए पीछे आने वालों में छोड़ा : ○

---

३७ अर्थात् हज़रत इबराहीम अ० के बैरी अपने ध्येय में सफल नहीं हो सके अल्लाह ने हज़रत इबराहीम अ० को आग में जलने से बचा लिया (दे० सूरः अल-अंबिया आयत ६६; अल-अनकबूत आयत २४)।

३८ दे० सूरः अल-अनकबूत आयत २६।

३९ यह बात हज़रत इबराहीम अ० ने अपना देश त्यागते समय कही।

४० उस समय आप के कोई औलाद न थी; आप अपनी पत्नी और अपने भतीजे को ले कर निकले थे। औलाद की शुभ-सूचना हज़रत इबराहीम अ० को प्रार्थना करते ही नहीं दी गई। आप को अल्लाह ने दीर्घायु में औलाद प्रदान की है (दे० सूरः इबराहीम आयत ३६)। बाइबिल से मालूम होता है कि हज़रत इबराहीम अ० के बड़े बेटे हज़रत इसमाईल अ० के जन्म के समय हज़रत इबराहीम अ० की अवस्था ८६ वर्ष की थी और दूसरे बेटे हज़रत इसहाक़ का जन्म उस समय हुआ है जब आप १०० वर्ष के हो चुके थे (दे० पैदाइश (Gen.) १६ : १६ और २१ : ५)।

४१ आप ने स्वप्न में यही देखा था कि बेटे को ज़ब्ह कर रहे हैं यह नहीं देखा था कि ज़ब्ह कर दिया है। यद्यपि आप ने उस समय स्वप्न का अर्थ यही समझा कि हम बेटे को ज़ब्ह कर दें परन्तु अल्लाह तो केवल उतना ही देखना चाहता था जो-कुछ कि उन्हें स्वप्न में दिखाया गया था। अल्लाह को हज़रत इबराहीम अ० की परीक्षा अभीष्ट थी और यह बात कि बाप की तरह बेटे का भी जीवन और मृत्यु सब-कुछ अल्लाह के लिए हो जाये। बेटे को अल्लाह के दीन* और उस के घर (काबः*) के सेवा-कार्य के लिए अर्पण कर दिया जाये। हज़रत इबराहीम अ० इस महान् परीक्षा में पूरे उतरे। उन्हों ने सिद्ध कर दिया कि अल्लाह के आदेश पर वे अपनी प्रिय-से-प्रिय चीज़ भी निछावर कर सकते हैं यहाँ तक कि वे बुढ़ापे की औलाद को बलिदान करने का भी साहस रखते हैं।

४२ कल्पना कीजिए उस दृश्य की जब हज़रत इबराहीम बेटे को माथे के बल ज़मीन पर डाल कर क़ुरबान करने को तैयार हो गये।

४३ अल्लाह ने हज़रत इबराहीम अ० को परीक्षा में पूरा उतरने का श्रेय प्रदान किया बेटे की जान भी बचा दी और उन्हें ऊँचा दरजा भी प्रदान किया। सत्कर्मी लोगों पर अल्लाह की ऐसी ही कृपा-दृष्टि होती है।

४४ बाइबिल और इस्लामी कथनों से मालूम होता है कि "बड़ी क़ुरबानी" से अभिप्रेत वही वह मेंढा है जो उस समय फ़िरिश्ते* ने हज़रत इबराहीम अ० के सामने इस लिए प्रस्तुत किया था ताकि बेटे के स्थान पर उसे ज़ब्ह कर दें। उस मेंढे को एक अनुपम बलिदान की पूर्ति का साधन, और हज़रत इबराहीम अ० के सत्यनिष्ठ बेटे का 'फ़िद्यः' ठहराया गया था इसी लिए उसे "बड़ी क़ुरबानी" कहा (शेष अगले पृष्ठ पर)

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सलाम है इबराहीम पर। ○ सत्कर्मी लोगों को हम ऐसा ही बदला देते हैं। ○ निश्चय ही वह हमारे ईमान* वाले बन्दों में से था। ○ और हम ने उसे इसहाक़ की शुभ-सूचना दी, एक नबी* नेक लोगों में से। ○ और हम ने उसे और इसहाक़ को बरकत दी[४५]। और इन दोनों की सन्तान में से कोई तो सत्कर्मी है, और कोई अपने हक़ में खुला ज़ुल्म करने वाला है। ○

और हम ने मूसा और हारून पर एहसान किया, ○ और उन्हें और उन की जाति वालों को बड़ी घुटन[४६] से छुटकारा दिया,[४७] ○ और उन की सहायता की तो वही विजयी रहे। ○ और हम ने उन दोनों को स्पष्ट किताब* दी ○ और उन्हें सीधा मार्ग दिखाया। ○ और उन के लिए पीछे आने वालों में छोड़ा: ○ सलाम है मूसा और हारून पर। ○ निस्सन्देह हम सत्कर्मी लोगों को ऐसा ही बदला देते हैं। ○ निश्चय ही वे दोनों हमारे ईमान* वाले बन्दों में से थे। ○

और इलयास[४८] भी निश्चय ही उन ही लोगों में से था जो रसूल* बना कर भेजे गये थे, ○ याद करो जब उस ने अपनी जाति वालों से कहा: क्या तुम लोग डर नहीं रखते? ○ क्या तुम 'बअ्ल'[४९] को पुकारते हो और सब से अच्छे पैदा करने वाले को छोड़ देते हो, ○

गया। इस के अतिरिक्त उसे "बड़ी क़ुरबानी" कहने का एक कारण यह भी है कि अल्लाह ने क़ियामत* तक के लिए यह रीति प्रचलित कर दी कि उसी तिथि को सम्पूर्ण संसार के मुस्लिम जानवरों की क़ुरबानी करें और हज़रत इबराहीम अ० के अनुपम संकल्प और बलिदान की शुभ-स्मृति को ताज़ा करते रहें। ताकि इस प्रकार उन के हृदयों में भी उच्च भावनाओं और पवित्र संकल्पों तथा अनुपम भक्ति-भाव की जागृति हो सके। वे भी अल्लाह के लिए अपने प्राण तक अर्पण कर देने का साहस कर सकें।

४५ हज़रत इसहाक़ अ० हज़रत इबराहीम अ० के दूसरे बेटे थे जिन की नस्ल से बनी इसराईल* हैं। आप के पहले बेटे हज़रत इसमाईल अ० थे। उन ही को क़ुरबान करने का निश्चय आप ने किया था। पिता के स्वप्न को सुन कर हज़रत इसमाईल अ० स्वयं भी क़ुरबानी के लिए तैयार हो गये थे। यह विचार सही नहीं है कि हज़रत इबराहीम अ० ने अपने जिस बेटे को क़ुरबानी के लिए पेश किया था वह हज़रत इसहाक़ थे। विस्तारपूर्वक समालोचना के लिए देखिए सूरा का परिचय।

४६ ऐसी मुसीबत जिस में आदमी घिर गया हो और तंग आ गया हो।

४७ यह संकेत उन कष्टों और तकलीफ़ों की ओर है जिन में उन को फ़िरऔन और उस की जाति के लोगों ने डाल रखा था।

४८ आप बनी इसराईल* के नबियों* में से हैं। वर्तमान अनुसन्धान-कर्ताओं के विचार में आप का समय सन् ८७५ और ८५० ई०पू० के मध्य में है। आप जिलआद (Gilead) (यरमूक नदी के दक्षिण वर्तमान उरदुन राज्य के उत्तरी ज़िलों का क्षेत्र) के निवासी थे (दे० 1 Kings 17:1)। बाइबिल में हज़रत इलयास अ० का उल्लेख इलयाह तिशबी (Elijah Tishbite) के नाम से मिलता है। आप के जीवन वृत्तान्त के सिलसिले में बाइबिल के निम्न अध्यायों का अध्ययन कीजिए:—

'१ सलातीन' (1 The Kings) अध्याय १७, १८, १९, २१ और २ 'सलातीन' अध्याय १, २ और '२ तवारीख़' (2 Chr.) अध्याय २१।

४९ 'सामी' जातियाँ 'बअ्ल' शब्द इलाह* (पूज्य) के अर्थ में प्रयोग करती थीं। उन्हों ने एक विशेष देवता का नाम भी 'बअ्ल' रख छोड़ा था। यों 'बअ्ल' का अर्थ है स्वामी, सरदार, नायक आदि। पति के लिए भी यह शब्द प्रयुक्त होता है। परन्तु प्राचीन समय में यह शब्द सामी जातियों के यहाँ देवता और ख़ुदा (god) के अर्थ में प्रयोग होता रहा है एक समय में बाबिल से ले कर मिस्र तक 'बअ्ल' की पूजा होती थी। सीरिया, लबनान, और फ़लिस्तीन के मुशरिक* लोग विशेष रूप से 'बअ्ल' की उपासना में लिप्त थे। बनी इसराईल भी जब मिस्र से निकल कर फ़लिस्तीन और शर्क़ उरदुन में आबाद हुये तो मुशरिक* जातियों के प्रभाव से इन के यहाँ भी बअ्ल-पूजा प्रचलित हो गई। और यह रोग बढ़ता ही गया। फिर हज़रत समोइल, तालूत, दाऊद अ० और सुलैमान अ० की कोशिशों से इन का सुधार हुआ परन्तु हज़रत सुलैमान अ० के बाद शिर्क* ने फिर सिर उठाया और 'बअ्ल' की पूजा जिसे वे त्याग चुके थे फिर इन के यहाँ होने लगी। 'बअ्ल' से अभिप्रेत सूर्य है या बृहस्पति, इस के बारे में विद्वानों में मत भेद है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

अल्लाह को, जो तुम्हारा भी रब* है और तुम्हारे अगले पूर्वजों का भी रब* है ? ○

परन्तु उन्हों ने उसे झुठला दिया, सो वे निश्चय ही (अज़ाब के लिए) पेश किये जायेंगे ○ सिवाय अल्लाह के चुने हुये बन्दों के (कि उन्हें यह बुरा दिन नहीं देखना पड़ेगा)। ○ और हम ने उस के लिए पीछे आने वालों में छोड़ा[50] : ○

१३० सलाम है इलयासीन पर[51] ! ○ निस्सन्देह हम सत्कर्मी लोगों को ऐसा ही बदला देते हैं। ○ निश्चय ही वह हमारे ईमान* वाले बन्दों में से था। ○

और लूत भी निश्चय ही उन ही लोगों में से था जो रसूल* बना कर भेजे गये थे, ○ याद करो जब हम ने उसे और उस के लोगों को सब को बचाया, ○ सिवाय एक बुढ़िया के जो पीछे रह जाने

१३५ वालों में रही;[52] ○ फिर दूसरों को हम ने तहस-नहस कर दिया। ○ और तुम प्रातः समय उन (की उजड़ी बस्तियों) पर से गुज़रते हो[53] ○ और रात को भी; तो क्या फिर तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ? ○

और यूनुस भी निश्चय ही उन ही लोगों में से था जो रसूल* बना कर भेजे गये थे[54] ○ याद

१४० करो जब वह एक भरी नौका की ओर भाग निकला,[55] ○ फिर चिट्ठी डाली और मात खाई; ○

لْمُؤْمِنِينَ ۝ وَبَشَّرْنَٰهُ بِإِسْحَٰقَ نَبِيًّا مِّنَ ٱلصَّٰلِحِينَ ۝ وَبَٰرَكْنَا
عَلَيْهِ وَعَلَىٰٓ إِسْحَٰقَ ۚ وَمِن ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَظَالِمٌ لِّنَفْسِهِۦ مُبِينٌ ۝
وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَٰرُونَ ۝ وَنَجَّيْنَٰهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ ٱلْكَرْبِ
ٱلْعَظِيمِ ۝ وَنَصَرْنَٰهُمْ فَكَانُوا۟ هُمُ ٱلْغَٰلِبِينَ ۝ وَءَاتَيْنَٰهُمَا ٱلْكِتَٰبَ
ٱلْمُسْتَبِينَ ۝ وَهَدَيْنَٰهُمَا ٱلصِّرَٰطَ ٱلْمُسْتَقِيمَ ۝ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِى
ٱلْءَاخِرِينَ ۝ سَلَٰمٌ عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَٰرُونَ ۝ إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِى
ٱلْمُحْسِنِينَ ۝ إِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا ٱلْمُؤْمِنِينَ ۝ وَإِنَّ إِلْيَاسَ لَمِنَ
ٱلْمُرْسَلِينَ ۝ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِۦٓ أَلَا تَتَّقُونَ ۝ أَتَدْعُونَ بَعْلًا وَ
تَذَرُونَ أَحْسَنَ ٱلْخَٰلِقِينَ ۝ ٱللَّهَ رَبَّكُمْ وَرَبَّ ءَابَآئِكُمُ ٱلْأَوَّلِينَ ۝
فَكَذَّبُوهُ فَإِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ ۝ إِلَّا عِبَادَ ٱللَّهِ ٱلْمُخْلَصِينَ ۝ وَتَرَكْنَا
عَلَيْهِ فِى ٱلْءَاخِرِينَ ۝ سَلَٰمٌ عَلَىٰٓ إِلْ يَاسِينَ ۝ إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِى
ٱلْمُحْسِنِينَ ۝ إِنَّهُۥ مِنْ عِبَادِنَا ٱلْمُؤْمِنِينَ ۝ وَإِنَّ لُوطًا لَّمِنَ
ٱلْمُرْسَلِينَ ۝ إِذْ نَجَّيْنَٰهُ وَأَهْلَهُۥٓ أَجْمَعِينَ ۝ إِلَّا عَجُوزًا فِى ٱلْغَٰبِرِينَ ۝
ثُمَّ دَمَّرْنَا ٱلْءَاخَرِينَ ۝ وَإِنَّكُمْ لَتَمُرُّونَ عَلَيْهِم مُّصْبِحِينَ ۝ وَ
بِٱلَّيْلِ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ وَإِنَّ يُونُسَ لَمِنَ ٱلْمُرْسَلِينَ ۝ إِذْ أَبَقَ إِلَى
ٱلْفُلْكِ ٱلْمَشْحُونِ ۝ فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ ٱلْمُدْحَضِينَ ۝ فَٱلْتَقَمَهُ
ٱلْحُوتُ وَهُوَ مُلِيمٌ ۝ فَلَوْلَآ أَنَّهُۥ كَانَ مِنَ ٱلْمُسَبِّحِينَ ۝ لَلَبِثَ

---

५० हज़रत इलयास अ० के साथ उन के जीवन-काल में तो बनी इसराईल* ने अच्छा व्यवहार नहीं किया परन्तु आगे चल कर वे उन के अत्यन्त प्रेमी बन गये। उन के यहाँ यह बात मशहूर हो गई इलयास अ० आकाश पर जीवित उठा लिए गये हैं और वे पुनः संसार में पधारेंगे। हज़रत यहया अ० और हज़रत ईसा अ० की नुबूवत* के समय में यहूदी तीन आने वालों की प्रतीक्षा कर रहे थे। जिन में से एक हज़रत इलयास अ० थे। यहूदियों को हज़रत मसीह अ० का भी इन्तज़ार था। हज़रत मसीह अ० के अतिरिक्त एक और नबी* की (अर्थात् मुहम्मद सल्ल० की) भी वे राह देख रहे थे जिस के आने का वादा उन से उन के धर्म-ग्रन्थों में किया गया था। हज़रत यहया अ० जब नबी* हो कर उठे तो यहूदियों के धर्म-गुरु आ कर उन से पूछने लगे कि तुम मसीह हो ? उन्हों ने कहा : नहीं। फिर पूछा कि क्या तुम इलियाह हो ? उन्हों ने कहा : नहीं। फिर पूछा कि क्या तुम "वह नबी*" हो ? उन्हों ने कहा : नहीं (दे० यूहन्ना १ : १९-२५)। इसी तरह हज़रत मसीह अ० की नुबूवत* का समय आया और वे लोगों में प्रसिद्ध हुये तो फिर लोगों में यह बात फैल गई कि इलियाह नबी* आ गये।

५१ हज़रत इलयास अ० ही को यहाँ इलयासीन कहा गया है जिस प्रकार क़ुरआन में एक पर्वत को तूरे सीना भी कहा गया है और तूरे सीनीन भी। क़ुरआन के कुछ भाष्यकारों का यही मत है कि अरब के लोगों में इबरानी नामों के विभिन्न उच्चारण प्रचलित थे। कुछ दूसरे टीकाकारों का विचार है कि 'इलयासीन' हज़रत इलयास अ० का दूसरा नाम है।

५२ यह संकेत हज़रत लूत अ० की पत्नी की ओर है जिस ने अपने पति का साथ नहीं दिया और अपनी जाति वालों ही के साथ रही, जब अल्लाह का अज़ाब आया तो दूसरे लोगों के साथ वह भी हलाक हो गई।

५३ व्यापार के लिए फ़िलिस्तीन और सीरिया की ओर जाते हुये मक्का वालों का गुज़र उस जगह से होता था जहाँ हज़रत लूत अ० की जाति वालों की उजड़ी हुई बस्तियाँ पड़ती थीं।

५४ दे० सूरः यूनुस फ़ुट नोट ९९; सूरः अल-अंबिया आयत ८७-८८।

५५ यहाँ क़ुरआन में जो शब्द प्रयुक्त हुआ है वह उस अवसर पर बोला जाता है (शेष अगले पृष्ठ पर)

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

وَأَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ ۝ سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ ۝ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِينَ ۝ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

इन्हों ने अल्लाह और जिन्नों* के बीच गोत्र का नाता बना रखा है, हालांकि जिन्न* भली-भांति जानते हैं कि वे लोग पेश होने वाले हैं। ○ —अल्लाह की महिमा के प्रतिकूल है जो-कुछ ये गुण (अल्लाह के लिए) बयान करते हैं, ○ — सिवाय अल्लाह के चुने हुए बन्दों के। ○

सो (हे मुश्रिको* !) तुम और जिस-जिस को तुम पूजते हो वे भी, ○ तुम सब किसी को उस से नहीं बहका सकते ○ सिवाय उस के जो (दोज़ख* की) भड़कती हुई आग ही का ईंधन बनने वाला हो[63]। ○ और हम[64] में जो भी है उस का एक जाना-बूझा स्थान है। ○ और हम तो (हर समय अल्लाह की बन्दगी और उस के आदेशों के पालन में) पंक्ति-बद्ध रहने वाले हैं। ○ और हम तो, (उस की) तसबीह* करने वाले हैं। ○

और निश्चय ही ये लोग कहा करते थे : ○ यदि हमारे पास अगले लोगों की कोई याद-दिहानी[65] होती ○ तो हम अवश्य अल्लाह के चुने हुए बन्दे होते[66]। ○

परन्तु (जब वह आ गई तो) इन्हों ने उस का इन्कार कर दिया; अब जल्द इन्हें (इस का नतीजा) मालूम हो जायेगा। ○

हमारे अपने उन बन्दों के हक़ में जो रसूल* बना कर भेजे गये हमारी बात पहले निश्चित हो चुकी है ○ कि अवश्य उन की सहायता की जायेगी, ○ और निश्चय ही हमारा दल[67] विजय प्राप्त करने वाला है[68]। ○

अतः (हे नबी* !) कुछ समय तक के लिए उन की ओर से पलट आओ,[69] ○ और उन्हें देखते रहो, वे जल्द देख लेंगे। ○

क्या ये हमारे अज़ाब के लिए जल्दी मचा रहे हैं ? ○ जब वह इन के आँगन में आ उतरेगा, तो वह बहुत बुरी सुबह होगी डराये गये लोगों की। ○

एक समय तक के लिए उन की ओर से पलट आओ ○ और देखते रहो, वे जल्द ही देख लेंगे[70]। ○

तेरे रब* की महिमा के, जो इज़्ज़त का मालिक है, प्रतिकूल है, जो-कुछ ये लोग (उस के बारे में) बयान करते हैं। ○ और सलाम है उन लोगों पर जो रसूल* बना कर भेजे गये। ○ और प्रशंसा (हम्द*) है अल्लाह के लिए, जो सारे संसार का रब* है ! ○

---

६३ अर्थात् दोज़ख* ही में गिरना चाहता हो।

६४ यहाँ हम से अभिप्रेत फ़रिश्ते* हैं।

६५ अर्थात् हिदायत*, मार्ग-दर्शन।

६६ दे० सूरः फ़ातिर आयत ४२।

६७ यहाँ अल्लाह ने ईमान* वालों को जो नबी* सल्ल० पर ईमान* ला कर उन के आदेशों का पालन करें और उन अदृष्ट शक्तियों (फ़रिश्तों) को जिन से वह अपने आज्ञाकारी बन्दों की सहायता करता है अपना दल कहा है।

६८ इस का यह अर्थ नहीं होता कि हर युग में अल्लाह के प्रत्येक नबी* और उस के अनुयायी राज्य-सत्ता के अधिकारी ही हो गये हों। जहाँ उन्हें अधिकार प्राप्त नहीं हुआ वहाँ भी नैतिकता के क्षेत्र में वही विजयी रहे। उन की बात न मानने वाली जातियाँ अन्त में तबाह हो कर रहीं। नबियों* की शिक्षाओं के प्रतिकूल जीवन-पद्धति ग्रहण करने का परिणाम सदा बुरा ही हुआ है।

६९ अर्थात् कुछ समय के लिए उन्हें उन के हाल पर छोड़ दो।

७० कुरआन की बात पूरी हो कर रही। कुछ ही वर्षों के बाद काफ़िरों* ने अपनी आँखों से देख लिया कि वे परास्त हो कर रहे और इस्लाम* को न केवल अरब पर बल्कि ईरान और रूम जैसे राज्यों पर विजय प्राप्त हुई।

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

३८--सॉद०

(परिचय)

नाम (The Title)

सूरः* के आरम्भ में जो अरबी अक्षर (Arabic Alphabet) आया है उसी को इस सूरः* का नाम निर्धारित किया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह सूरः* कब उतरी है निश्चित रूप से इस के बारे में कुछ कहना कठिन है। कुछ उल्लेखों से अनुमान होता है कि इस सूरः का अवतरण उस समय हुआ है जब नबी* सल्ल० ने मक्का में लोगों को सत्य की ओर बुलाना आरम्भ कर दिया था। जिस के कारण '.कुरैश' के सरदार घबरा उठे थे। इस तरह नुबूवत के चौथे वर्ष में यह सूरः उतरी होगी। परन्तु कुछ उल्लेखों से मालूम होता है कि यह सूरः नबी* सल्ल० के चचा अबू तालिब की उस बीमारी के समय की है जिस के बाद अबू तालिब का देहान्त हो गया। और यह नुबूवत* के दसवें-ग्यारहवें वर्ष की बात है।

जनश्रुतियों से मालूम होता है कि जब नबी सल्ल० के चचा अबू तालिब बीमार हुये और '.कुरैश' के सरदारों ने समझा कि यह इन का अन्तिम समय है तो उन लोगों ने परस्पर विचार-विमर्श के बाद यह निश्चय किया कि हमें अबू तालिब के पास चल कर बात करनी चाहिए। यदि वे हमारा और अपने भतीजे का झगड़ा अपने जीवन ही में चुका देते हैं तो अच्छा है। कहीं उन का देहान्त हो गया और उन के बाद हम मुहम्मद (सल्ल०) के साथ सख्ती से पेश आये, तो अरब के लोग हम पर चोटें करेंगे कि जब तक अबू तालिब जीवित थे, ये लोग उन का आदर करते रहे उन की मृत्यु के पश्चात् इन लोगों को उन के भतीजे पर हाथ डालने का अवसर मिला है। लग-भग '.कुरैश' के २५ सरदार जिन में अबू जह्ल, अबू सुफ़यान, उबय्य बिन ख़ल्फ़ आदि शामिल थे, अबू तालिब के पास पहुँचे। पहले इन लोगों ने नबी सल्ल० के विरुद्ध अपनी शिकायतें बयान कीं फिर कहा कि हम आप के सामने एक न्यायानुकूल बात रखनी चाहते हैं। आप का भतीजा हमारे देवताओं की निन्दा न करे और न यह कोशिश करे कि हम अपने देवताओं को छोड़ दें। हम आप के भतीजे को उस के दीन* पर छोड़ देते हैं वह जिस की इबादत* और उपासना करनी चाहे करे हमें कोई आपत्ति न होगी, परन्तु वह हम को हमारे दीन* (धर्म) पर रहने दे।

सरदारों की बात सुन कर अबू तालिब ने नबी सल्ल० को बुला कर कहा कि भतीजे! ये तुम्हारी जाति के सरदार मेरे पास आये हुये हैं, ये चाहते हैं कि एक न्यायानुकूल बात पर तुम इन से सहमत हो जाओ। ताकि तुम्हारा और इन का झगड़ा न रहे। फिर उन्हों ने '.कुरैश' के सरदारों की बात आप (सल्ल०) के सामने रखी। आप (सल्ल०) ने कहा कि मैं तो इन के सामने एक ऐसा 'कलमः' पेश करता हूँ जिसे यदि ये मान लें तो अरब इन के अधीन हो जायें और

* इन के अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

'अजम' (अर्थात् अरब के अतिरिक्त दूसरे देश) इन का बाज गुज़ार हो जाये। यह सुन कर पहले तो वे संकोच में पड़ गये फिर कहा कि तुम एक 'क़लमः' कहते हो हम दस क़लमे को मानने के लिए तैयार हैं, बताओ वह 'क़लमः' क्या है। आप (सल्ल०) ने कहा : "ला इलाह इल-लल्लाह" अर्थात् इलाह* (पूज्य) कोई नहीं सिवाय अल्लाह के। यह सुन कर वे सब खड़े हो गये और यह-कुछ कहते हुये निकल गये जिस का उल्लेख अल्लाह ने सूरः के आरम्भिक भाग में किया है। इस से मालूम होता है कि यह सूरः* नुबूवत* के दसवें या ग्यारहवें वर्ष उतरी होगी।

क़ुरआन के कुछ भाष्यकारों का कहना है कि यह मामला उस समय पेश आया था जब हज़रत उमर रज़ि० ईमान* लाये हैं जिस के कारण 'क़ुरैश' के सरदार बौखला गये थे। और यह मालूम है कि हज़रत उमर रज़ि० 'हब्शः' (Abyssinia) की हिजरत* के बाद ईमान* लाये थे।

वार्तायें (Subject-matter)

यह सूरः* विशेष रूप से तौबः* के फ़ायदों और विरोध की हानियों को व्यक्त करती है।

नबी सल्ल० और काफ़िरों* के बीच जो बात-चीत हुई थी जिस का उल्लेख ऊपर किया जा चुका है उस के आधार पर अल्लाह ने बताया है कि ये लोग यदि ईमान* नहीं लाते हैं, तो इस का कारण केवल इन का गर्व, ईर्ष्या, जड़ता और रूढ़िवाद है। ये लोग उसी अज्ञान पर आरूढ़ रहना चाहते हैं जिस पर इन्हों ने दूसरों को पाया है। सूरः के आरम्भ में भी और अन्त में भी काफ़िरों* को चेतावनी दी गई है कि तुम लोग जिस व्यक्ति की हँसी उड़ा रहे हो वह समय दूर नहीं कि वही विजयी होगा।

इस के बाद कई नबियों* का क़िस्सा बयान किया गया है, जिन में हज़रत दाऊद अ० और हज़रत सुलैमान अ० का क़िस्सा सविस्तार बयान हुआ है। नबियों* के क़िस्से बयान कर के वास्तव में अल्लाह ने यह बात बताई है कि उस का नियम बे-लाग है। अनुचित नीति जो व्यक्ति भी अपनायेगा चाहे वह कोई भी हो उस की पकड़ अवश्य होगी। अल्लाह को वही लोग प्रिय हैं जो अपनी ग़लती पर तुरन्त अल्लाह की ओर रुजू करते हैं, दुराग्रह जिन की नीति नहीं है।

काफ़िरों* और अल्लाह के आज्ञाकारी बन्दों के उस परिणाम का जो आख़िरत* में उन के सामने आने वाला है, उल्लेख किया गया है और अन्त में आदम अ० और इब्लीस* का क़िस्सा बयान किया गया है। इस क़िस्से में भी 'क़ुरैश' के लिए चेतावनी है। ईर्ष्या और अहंकार के कारण इब्लीस लानत और फिटकार का भागी हुआ, इसी तरह जो लोग अहंकार और ईर्ष्या के कारण सत्य का तिरस्कार कर रहे हैं वे यदि ईमान* नहीं लाते हैं तो उन का परिणाम भी वही होगा जो परिणाम इब्लीस* का हुआ है।

---

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* सॉद०

(मक्का में उतरी —— आयतें* ८८)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
ص وَالْقُرْآنِ ذِي الذِّكْرِ بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي عِزَّةٍ وَشِقَاقٍ كَمْ أَهْلَكْنَا
مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ قَرْنٍ فَنَادَوْا وَلَاتَ حِينَ مَنَاصٍ وَعَجِبُوا أَنْ جَاءَهُمْ
مُنْذِرٌ مِنْهُمْ وَقَالَ الْكَافِرُونَ هَٰذَا سَاحِرٌ كَذَّابٌ أَجَعَلَ الْآلِهَةَ
إِلَٰهًا وَاحِدًا إِنَّ هَٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ وَانْطَلَقَ الْمَلَأُ مِنْهُمْ أَنِ امْشُوا وَ
اصْبِرُوا عَلَىٰ آلِهَتِكُمْ إِنَّ هَٰذَا لَشَيْءٌ يُرَادُ مَا سَمِعْنَا بِهَٰذَا فِي الْمِلَّةِ
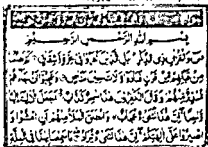
सॉद०,[1] क़सम है नसीहत-भरे[2] क़ुरआन* की, ○ (कोई और बात नहीं) बल्कि जिन्हों ने कुफ़्र* किया वे अभिमान और विरोध में पड़े हुये हैं।○

इन से पहले हम ने कितनी ही (ऐसी) नस्लों को विनष्ट किया, (जब उन पर अज़ाब आया) तब वे लगे पुकारने परन्तु वह छुटकारा का समय था नहीं।○

इन्हों ने इस पर आश्चर्य किया कि एक सचेत करने वाला इन ही में से इन के पास आ गया। और काफ़िर* कहने लगे : यह एक जादूगर है,[3] बड़ा झूठा है।○ क्या इस ने इन इलाहों* (पूज्यों) को एक ही इलाह* कर दिया ? यह तो बड़े आश्चर्य की बात है।○

और सरदार इन में के निकल पड़े[4] कि चलो और डटे रहो अपने इलाहों* पर। निस्सन्देह यह एक ऐसी ही चीज़ है जिसे चाहा जाये ○ यह बात तो हम ने पिछले पन्थ में नहीं सुनी। यह कुछ नहीं केवल मन-गढ़न्त बात है।○ क्या हम सब में से इस पर याददिहानी उतारी गई है ? नहीं, बल्कि ये मेरी याददिहानी के बारे में सन्देह में हैं; नहीं, बल्कि इन्हों ने अभी मेरे अज़ाब का मज़ा चखा नहीं है।○

क्या इन के पास तेरे रब* की दयालुता के ख़ज़ाने हैं, जो अपार शक्ति का मालिक और बड़ा दाता है ? ○ क्या इन ही का है राज्य आसमानों और ज़मीन का और जो-कुछ इन के बीच है ? तो अब ये (आसमान में पहुँचने की) सीढ़ियों पर चढ़ जायें[5]।○

यहाँ विरोधी पक्षों के कैसे-कैसे दल हैं जो मात खा चुके हैं।○

इन से पहले झुठला चुके हैं नूह की जाति वाले* और आद*, और मेख़ों वाला[6] फ़िरऔन,○

---

१ दे० सूरः अल-बक़रः फ़ुट नोट १।

२ दे० आयत ४६।

३ काफ़िर* नबी सल्ल० के बारे में कहते थे कि यह जादूगर है कि लोग इस की बातों से प्रभावित हो कर इस के अनुयायी हो जाते हैं।

४ यह संकेत उन सरदारों की ओर है जो नबी सल्ल० की बात सुन कर अबू तालिब के पास से उठ गये थे दे० सूरः का परिचय।

५ यह काफ़िरों* की इस बात का जवाब है कि क्या हमारे बीच (केवल) इसी पर याददिहानी (Reminder) उतारी गई है ? कोई और क्या नहीं था जिसे अल्लाह अपना नबी* बनाता (दे० आयत ८)। उन की इस बात पर अल्लाह कह रहा है कि किसे नबी* बनाया जाये और किस को न बनाया जाये इस का फ़ैसला करना इन का काम नहीं है बल्कि यह काम केवल हमारा है। यदि ये इस के अधिकारी होना चाहते हैं तो विश्व को अपने अधिकार के अन्तर्गत लायें और अर्श* पर अधिकार जमा लें ताकि वही जिसे अपनी दयालुता का पात्र समझें उसी पर वह्य* आये और उस व्यक्ति पर वह्य न आये जिसे हम ने नबी* बनाया है।

एक अर्थ यह भी हो सकता है कि अल्लाह का अज़ाब बस आने ही वाला है अब ये उस से बचने का उपाय करें यदि कर सकते हों।

६ ऐसा लगता है कि मेख़ों से अभिप्रेत सेनाओं के मेख़ हैं। मतलब यह है कि उस के पास अधिक लोग थे और यह संकेत है उस की सेनाओं की अधिकता की ओर।

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

خِرَةِ إِنْ هَٰذَا إِلَّا اخْتِلَاقٌ ۝ ءَأُنزِلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِن بَيْنِنَا
هُمْ فِي شَكٍّ مِّن ذِكْرِي بَل لَّمَّا يَذُوقُوا عَذَابِ ۝ أَمْ عِندَهُمْ
ائِنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيزِ الْوَهَّابِ ۝ أَمْ لَهُم مُّلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
بَيْنَهُمَا فَلْيَرْتَقُوا فِي الْأَسْبَابِ ۝ جُندٌ مَّا هُنَالِكَ مَهْزُومٌ مِّنَ
حْزَابِ ۝ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ ذُو الْأَوْتَادِ ۝
مُودُ وَقَوْمُ لُوطٍ وَأَصْحَابُ لْئَيْكَةِ أُولَٰئِكَ الْأَحْزَابُ ۝ إِن كُلٌّ إِلَّا
بَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ۝ وَمَا يَنظُرُ هَٰؤُلَاءِ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً مَّا لَهَا
فَوَاقٍ ۝ وَقَالُوا رَبَّنَا عَجِّل لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ۝ اصْبِرْ عَلَىٰ مَا

और समूद*, और लूत की जाति वाले, और ऐक:* वाले ये हैं वे पक्ष। ○

इन में से हर एक ने रसूलों* को झुठलाया, सो मेरी ओर से सज़ा मिल गई, ○ इन लोगों को ...ोर की आवाज़ का इन्तज़ार है, जिस के ... मुहलत न होगी। ○

... कहते हैं : हमारे रब* हमें हमारे हिस्से ...दे हिसाब के दिन से पहले-पहले। ○

(...*!) ये लोग जो-कुछ कहते हैं उस पर सब्र* करो, और हमारे बन्दे दाऊ... जो हाथों वाला (अर्थात् बड़ी ताक़तों का मालिक) था। निश्चय ही वह (अल्ल... रुजू करने वाला था। ○ हम ने पहाड़ों को उस के साथ लगा दिया था ... ौर प्रातःकाल तसबीह* करते रहें, ○ और पक्षियों को भी कि सिमट आ... के आगे रुजू रहते थे ○ हम ने उस के राज्य को दृढ़ कर दिया था उ... ो टूक बात करने का सामर्थ्य प्रदान किया था[७]। ○

और क्या तुम्हें उन विवादियों की ख़बर पहुँची है? जब वे दीवार चढ़ कर (उस के) एकान्त भवन में घुस आये; ○ जब वे दाऊद के पास पहुँचे, तो वह उन्हें देख कर घबरा गया। उन... ने कहा : डरिए नहीं! (हम) दो विवादी हैं, हम में से एक ने दूसरे पर ज़्यादती की है त... आप हमारे बीच (ठीक-ठीक) हक़ के साथ फ़ैसला कर दीजिए; और बे-इन्साफ़ी न कीजि... और हमें सीधी राह बता दीजिए। ○ यह मेरा भाई है[८] इस के पास निन्यानवे दुम्बियाँ हैं औ... मेरे पास एक दुंबी है; इस ने (मुझ से) कहा : यह (एक दुंबी भी) मुझे सौंप दे, और इ... ने बात-चीत में मुझे दबा लिया[९]। ○ (दाऊद ने) कहा : इस व्यक्ति ने अपनी दुंबियों के सा... तेरी दुंबी मिला लेने की माँग कर के निश्चय ही तुझ पर ज़ुल्म किया, और सच यह है कि... बहुत से एक साथ मिल कर रहने वाले एक-दूसरे पर ज़्यादती करते हैं, सिवाय उन लोगों ... जो ईमान* लाये और अच्छे काम किये, और ऐसे लोग कम हैं।

(यह कहते हुये) दाऊद समझ गया कि यह तो हम ने उस की परीक्षा की है,[१०] तो उ... ने अपने रब* से क्षमा के लिए प्रार्थना की, और सजदे में गिर गया और रुजू किया। ○ त... हम ने इस बारे में उसे क्षमा कर दिया; निश्चय ही हमारे यहाँ उस के लिए समीपता ... २५ स्थान और अच्छा ठिकाना है[११]। ○

७ अर्थात् अल्लाह ने उन्हें ज्ञान और समझ-बूझ दी थी। वे हर मामले का फ़ैसला ठीक-ठीक उचित रू... से कर दिया करते थे। उन की बातों में किसी प्रकार का उलझाव नहीं होता था।

८ अर्थात् जाति और धर्म के सम्बन्ध से यह मेरा भाई है।

९ आगे जो बात बयान हुई है उसे समझने के लिए यह बात सामने रहनी चाहिए कि अभियोगी का... दावा यह नहीं है कि मेरी दुंबी इस ने छीन कर अपनी दुंबियों में मिला ली बल्कि वह यह कह रहा है कि यह... माँग रहा है कि मैं अपनी दुंबी इस के हवाले कर दूँ। मैं ग़रीब आदमी हूँ बात-चीत में इस ने मुझे दबा लिया है। मुझ में इतनी ताक़त कहाँ कि इस की बात को ठुकरा दूँ।

१० हज़रत दाऊद अ० को मामले का फ़ैसला सुनाते हुये अपनी कोई ऐसी भूल याद आ गई जिस में और इस दुंबियों वाले मुक़द्दमे में किसी प्रकार की समानता थी।

११ इस से मालूम होता है कि हज़रत दाऊद अ० से कोई इस प्रकार की भूल नहीं हुई थी जो क्षमा किये जाने योग्य न समझी जाती या यदि उसे अल्लाह क्षमा भी कर देता तो भी वे अपने उच्च पद से वंचित कर दिये जाते।

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

हासिल करें। ○ —

और हम ने दाऊद को सुलैमान (जैसा बेटा) प्रदान किया। कितना अच्छा बन्दा! निश्चय ही वह
३० (अपने रब* की ओर) बहुत रुजू करने वाला था। ○ याद करो जब सन्ध्या समय उस के सामने सधे हुये द्रुतगामी घोड़े लाये गये ○ तो उस ने कहा : अपने रब* की याद को छोड़ कर मैं माल[13] के प्रेम में लग गया; यहाँ तक कि वह ओट में छिप गया। ○ उन्हें मेरे पास वापस लाओ, फिर उन की पिंडलियों और गरदनों पर फेरने लगा[14]। ○

और निश्चय ही हम ने सुलैमान को भी आज़माइश में डाला, और उस की कुरसी पर एक धड़ डाल दिया। फिर उस ने रुजू किया। ○ उस ने कहा : मेरे रब*! मुझे क्षमा कर दे और मुझे वह राज्य प्रदान कर जो मेरे बाद किसी के लिए शोभनीय न
३५ हो। निस्सन्देह तू ही बड़ा दाता है[15]। ○

तब हम ने हवा को उस के लिए अधीन कर

نعم العبد إنه أواب ۝ إذ عرض عليه بالعشي الصافنات الجياد ۝
فقال إني أحببت حب الخير عن ذكر ربي حتى توارت بالحجاب ۝
ردوها علي فطفق مسحا بالسوق والأعناق ۝ ولقد فتنا سليمان
وألقينا على كرسيه جسدا ثم أناب ۝ قال رب اغفر لي وهب لي
ملكا لا ينبغي لأحد من بعدي إنك أنت الوهاب ۝ فسخرنا له
الريح تجري بأمره رخاء حيث أصاب ۝ والشياطين كل بناء و
غواص ۝ وآخرين مقرنين في الأصفاد ۝ هذا عطاؤنا فامنن أو أمسك
بغير حساب ۝ وإن له عندنا لزلفى وحسن مآب ۝ واذكر
عبدنا أيوب إذ نادى ربه أني مسني الشيطان بنصب وعذاب ۝
اركض برجلك هذا مغتسل بارد وشراب ۝ ووهبنا له أهله و
مثلهم معهم رحمة منا وذكرى لأولي الألباب ۝ وخذ بيدك ضغثا
فاضرب به ولا تحنث إنا وجدناه صابرا نعم العبد إنه أواب ۝ واذكر
عبادنا إبراهيم وإسحاق ويعقوب أولي الأيدي والأبصار ۝ إنا أخلصناهم
بخالصة ذكرى الدار ۝ وإنهم عندنا لمن المصطفين الأخيار ۝
واذكر إسماعيل واليسع وذا الكفل وكل من الأخيار ۝ هذا ذكر و
إن للمتقين لحسن مآب ۝ جنات عدن مفتحة لهم الأبواب ۝ متكئين
فيها يدعون فيها بفاكهة كثيرة وشراب ۝ وعندهم قاصرات الطرف

की हक़दार है कि एक साधारण सैनिक की पत्नी हो। उन्हों ने अपनी इच्छा उस के पति के सामने प्रकट कर दी। परन्तु अपनी इच्छा प्रकट करने वाला कोई साधारण व्यक्ति न था जिस की इच्छा के विरुद्ध फ़ैसला करने का साहस उस के पति को हो सकता। हज़रत दाऊद अ० एक प्रभावशाली शासनाधिकारी और एक महान् व्यक्तित्व के मालिक थे। वह व्यक्ति अपने को इस के लिए मजबूर पा रहा था कि शासक की बात क़बूल कर ले और यह उस पर एक तरह का दबाव था जिस की ओर हज़रत दाऊद अ० का ध्यान नहीं गया। अभी उस स्त्री को तलाक़ की नौबत नहीं आई थी कि वह क़िस्सा पेश आया जिस का उल्लेख यहाँ क़ुरआन में किया गया है। हज़रत दाऊद अ० को अपनी भूल का ज्ञान हो गया और वे सजदे में गिर पड़े। और अपने रब से अपनी इस चूक पर क्षमा की प्रार्थना करने लगे।*

ऐसा लगता है कि आगे चल कर किसी युद्ध में संयोग से वह सैनिक वीरगति को प्राप्त हुआ और फिर हज़रत दाऊद अ० ने उस की विधवा से विवाह कर लिया जिस को यहूद की मनोवृत्ति ने कुछ-से-कुछ बना दिया।

हज़रत दाऊद अ० के सामने दो व्यक्तियों ने जो मुक़द्दमा पेश किया था उस में अभियोगी ने यह जो कहा कि इस के पास ९९ दुम्बियाँ हैं और मेरे पास एक दुंबी है जिसे यह मुझ से माँग रहा है, इस से यह नतीजा निकालना सही न होगा कि हज़रत दाऊद अ० के पास ९९ पत्नियाँ थीं। उपमा की हर बात का हज़रत दाऊद अ० के मामले पर चस्पाँ होना ज़रूरी नहीं। यहाँ ९९ की संख्या से अभिप्रेत वास्तव में केवल अधिकता है। जिस का अर्थ बस यह होता है हज़रत दाऊद अ० के कई पत्नियाँ थीं।

हज़रत दाऊद अ० का क़िस्सा यहाँ इस लिए बयान हुआ है ताकि नबी सल्ल० को सब हो कि उन्हें तो आज केवल झूठा और जादूगर कहा जा रहा है इस से पहले अल्लाह के एक विशेष बन्दे पर ज़ालिम लोग ज़िना और साज़िश कर के एक व्यक्ति की जान लेने तक का आरोप लगा चुके हैं। इस क़िस्से में काफ़िरों के लिए भी चेतावनी है कि तुम जिस अल्लाह की अवज्ञा कर रहे हो उस की पकड़ से तुम अपने को बचा नहीं सकते। हज़रत दाऊद अ० अल्लाह के प्रिय बन्दों में से थे परन्तु जब उन से एक चूक हो गई तो उन को भी पकड़ हुई। अल्लाह की पकड़ से वह भी न बच सके।*

[13] क़ुरआन में "ख़ैर" शब्द प्रयुक्त हुआ है जिस का अर्थ है 'भलाई'। अधिक माल के लिए और घोड़ों के लिए भी यह शब्द प्रयोग होता है।

[14] क़ुरआन के इस टुकड़े का अर्थ क्या है? इस में भाष्यकारों के बीच मतभेद (शेष अगले पृष्ठ पर)

**इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

दिया, जो उस के हुक्म से चलती थी धीमी होती जहाँ वह पहुँचना चाहता'' । ○ और शैतानों* को'' (अधीन किया) हर तरह के निर्माण करने वाले और ग़ोता लगाने वाले, ○ और दूसरे जो ज़ंजीरों में जकड़े हुये थे,'' ○ (हम ने कहा) : यह हमारी देन है, अब एहसान करो या रोक रखो, कोई हिसाब नहीं । ○

निश्चय ही उस के लिए हमारे यहाँ समीपता का स्थान, और अच्छा ठिकाना है । ○ और हमारे बन्दे अय्यूब को याद करो,'' जब उस ने अपने रब* को पुकारा कि

हुआ है । कुछ लोगों का कहना है कि हज़रत सुलैमान अ० घोड़ों की देख-रेख में कुछ ऐसे लग गये कि सूर्य
छुप गया और अल्लाह को याद करने और उसे भजने का एक विशेष समय निकल गया । वे अत्यन्त दुःखी
हुये और हुक्म दिया, घोड़े वापस लाये जायें । घोड़े वापस लाये गये तो तलवार से उन की गरदनों और पिंड-
लियों पर प्रहार करने लगे कि इन ही के प्रेम में पड़ कर मैं अपने रब* और वास्तविक स्वामी की याद से
ग़ाफ़िल हो गया ।

इन आयतों* का एक अर्थ यह भी समझा गया है कि हज़रत सुलैमान अ० घोड़ों के प्रेम में अपने
रब* की याद से ग़ाफ़िल नहीं हुये बल्कि माल (घोड़े) का प्रेम उन्होंने अपने रब* की याद के कारण अंगीकार
किया, घोड़े उन्हें अपनी बड़ाई के लिए नहीं बल्कि अपने रब* ही के लिए प्रिय थे, इस लिए कि घोड़े जिहाद*
में काम देते थे । हज़रत सुलैमान ने घोड़ों की दौड़ कराई यहाँ तक कि सूर्य नहीं बल्कि घोड़े आँखों से ओझल
हो गये । उन्होंने घोड़ों को वापस लाने को कहा । जब घोड़े वापस लाये गये तो आप उन की गरदनों और
पिंडलियों पर तलवार नहीं बल्कि अपने हाथ फेरने लगे जैसा कि ऐसे अवसर पर लोग अपना प्रेम और लगाव
प्रकट करने के लिए करते हैं ।

१५ इन आयतों* के अर्थ में टीकाकारों के बीच मत-भेद हुआ है । एक अर्थ इन का यह लिया गया है
कि हज़रत सुलैमान अ० को इस की इच्छा हुई थी कि उन का बेटा उन का उत्तराधिकारी हो और शासना-
धिकार उन ही के वंश में शेष रहे । अनुमान है कि इसी बात को अल्लाह ने उन के लिए "आज़माइश" कहा
है । जब उन का बेटा रहुबआम (Rehoboam) युवावस्था को प्राप्त हुआ तो उन्हें मालूम हुआ कि उस में
किसी राज्य को सँभालने की योग्यता नहीं है । उन की कुरसी पर एक धड़ ला कर डालने का अर्थ यह हुआ
कि अपने जिस बेटे को अपनी कुरसी पर बिठाने की इच्छा उन के मन में थी वह निरा धड़ था वह शासना-
धिकार के योग्य कदापि न था । हज़रत सुलैमान अ० को अपनी भूल का ज्ञान हुआ तो, उन्होंने अल्लाह से
क्षमा की प्रार्थना की और कहा कि यह राज्य मुझ ही पर समाप्त हो जाये । बनी इसराईल* का इतिहास साक्षी
है कि हज़रत सुलैमान अ० ने अपना कोई उत्तराधिकारी नियुक्त नहीं किया । हज़रत सुलैमान अ० के बाद
लोगों ने उन के बेटे को राज्यसिंहासन पर बिठाने को तो बिठा दिया परन्तु थोड़े ही समय में बनी इसराईल*
के दस क़बीले (Tribes) उत्तरी फ़िलिस्तीन का अधिक्षेत्र ले कर अलग हो गये केवल एक ही क़बीला यहूदा
(Judah) साथ रह गया दे० '१ सलातीन' (1 Kings) १२ : १७ ।

इन आयतों* का एक सीधा-सादा अर्थ यह मालूम होता है कि हज़रत सुलैमान अ० से कोई चूक हो गई
थी जिस के कारण उन का राज्य कुछ समय के लिए छिन गया था या उस के छिन जाने का ख़तरा पैदा हो
गया था जैसा कि "उस की कुरसी पर धड़ डाल देने" से समझ में आता है । यह देख कर हज़रत सुलैमान
अ० अपने रब* की ओर रुजू हुये और क्षमा की प्रार्थना की, और कहा कि मेरे रब* ! मुझे ऐसा राज्य दे
जिस का मुझ से बढ़ कर कोई दूसरा अधिकारी न हो । ताकि मुझ से उस के छिन जाने की नौबत न आये ।

१६ सूरः अल-अंबिया में इस का उल्लेख हुआ है कि वह हवा जिसे अल्लाह ने हज़रत सुलैमान के
लिए अधीन किया था तेज़ हवा थी । कुछ लोगों के विचार में अल्लाह ने इस अर्थ में उसे नर्म कर दिया था
कि जिस ओर हज़रत सुलैमान अ० के व्यापारिक बेड़ों को जाना होता था हवा उसी ओर चलती थी परन्तु
ज़्यादा सही अर्थ इस का यह मालूम होता है कि हवा हज़रत सुलैमान के हुक्म से तेज़ चलती थी लेकिन
जहाँ उन्हें पहुँचना होता वहाँ पहुँच जाने पर बिलकुल धीमी पड़ जाती ।

१७ शैतान* से अभिप्रेत जिन्न* हैं ।

१८ जो सेवक शैतान शरारत करते उन्हें जकड़ दिया जाता ताकि वे भाग न सकें । यह ज़रूरी नहीं कि
जिन बेड़ियों और ज़ंजीरों में उन्हें बाँधा जाता था, वे लोहे की ही बनी रही हों, और मनुष्यों की तरह हर
एक उन शैतानों को देखता रहा हो ।

१९ दे० सूरः अल-अंबिया आयत ८३-८४ ।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

शैतान* ने मुझे दुःख और अज़ाब पहुँचा रखा है[20] । ○

(हम ने उस से कहा) : अपना पाँव (ज़मीन पर) मार । यह लो ठण्डा-ठण्डा नहाने क और पीने को[21] । ○ और हम ने उसे उस का परिवार (वापस) दिया, और उन के साथ उत ही और[22] कि हमारी ओर से 'रहमत' (दयालुता) हो, और बुद्धि वालों के लिए यादगा रहे[23] । ○ और (हम ने उस से कहा) : अपने हाथ से तिनकों का एक मुट्ठा ले, और उस मार दे और अपनी क़सम न तोड़[24] । निश्चय ही हम ने उसे सब्र* करने वाला पाया, क्य ही अच्छा बन्दा था ! निस्सन्देह वह (अपने रब* की ओर) बहुत रुजू करने वाला था । ○

और हमारे बन्दों, इब्राहीम, और इसहाक़ और याक़ूब को याद करो, जो हाथों वा
४५ और आँखों वाले थे[25] । ○ हम ने उन्हें एक प्रमुख विशेषता प्रदान की—घर की चर्चा[26] । निस्सन्देह वे हमारे यहाँ चुने हुये नेक लोगों में से हैं । ○

और इसमाईल और अल्यसअ[27] और ज़ुलकिफ़्ल[28] को याद करो ये सब नेक लोग में हैं । ○ यह एक याददिहानी है । और अल्लाह से डरने वालों और उस की अवज्ञा से बच वालों के लिए निश्चय ही अच्छा ठिकाना है, ○ सदैव रहने की जन्नतें*, जिन के द्वार उन
५० लिए खुले होंगे, ○ उन में, वे तकिया लगाये बैठे होंगे, वहाँ वे खूब-खूब मेवे[29] और पे मँगवाते होंगे । ○ और उन के पास निगाहें बचाये रखने वाली (लजीली) समायु, स्त्रि

---

२० अर्थात् मुझे बीमारी, धन-धान्य के नष्ट हो जाने और अपने लोगों के विमुख होने से भी अधिक क शैतान पहुँचा रहा है । वह तरह-तरह की शंका मन में डालता है । वह चाहता है कि मैं अधीर हो क अपने रब* से निराश हो जाऊँ । उस की कोशिश है कि मैं अपने रब* का कृतज्ञ न रहूँ ।*

२१ हजरत अय्यूब अ० ने पाँव मारा तो एक स्रोत बह निकला । उस में नहाना और उस का पानी पीन यही उन की बीमारी का इलाज था । बाइबिल का बयान है कि हजरत अय्यूब अ० के शरीर भर में फो निकल आये थे ।

२२ हज़रत अय्यूब अ० जब अल्लाह की कृपा से स्वस्थ हो गये तो सारा परिवार जो उन से विमुख ह गया था उन के पास पलट आया । फिर अल्लाह ने उन्हें और भी औलाद दी । पुरातन कथनों से मालू होता है कि बीमारी की दशा में केवल पत्नी ने हज़रत अय्यूब का साथ दिया था और सब लोग उन से अल हो गये थे ।

२३ हज़रत अय्यूब अ० के किस्से से सब से बड़ी शिक्षा हमें यह मिलती है कि मनुष्य को दुःख और क में अल्लाह से निराश नहीं होना चाहिए और न सुख और आराम में सरकश बनना चाहिए । बुद्धिमान लो वही हैं जो हर हाल में अल्लाह पर भरोसा रखते और उस के आदेशों का पालन करते हैं । दुःख में धैर्य काम लेते हैं और अपने रब की शिकायत नहीं करते ।*

२४ पुरातन कथनों से मालूम होता है कि बीमारी में हज़रत अय्यूब अ० ने क्रुद्ध हो कर अपनी पत्नी क मारने की क़सम खा ली थी । उन्हों ने कसम खा कर कहा था कि मैं इतने कोड़े मारूँगा । जब अच्छे हुये त उन्हें चिन्ता हुई कि पत्नी का कोई दोष नहीं है यदि मैं क़सम पूरी करता हूँ तो एक बे-गुनाह को मारना पड़ेगा और यदि नहीं मारता तो क़सम तोड़नी पड़ेगी यह भी गुनाह की बात होगी । अल्लाह ने उन की कठिनाई दू कर दी । हुक्म दिया कि जितने कोड़े मारने की क़सम खाई है उतने तिनकों की एक झाड़ू ले लो और उ झाड़ू से एक बार मार दो तुम्हारी क़सम पूरी हो जायेगी ।

२५ अर्थात् कार्य-शक्ति और अन्तर्दृष्टि रखने वाले थे । उन की साधना अधूरी न थी, वे अल्लाह के आदेशों का पालन करते थे और गुनाहों से दूर रहने का सामर्थ्य उन्हें प्राप्त था । वे पूर्ण प्रकाश में थे । सत्य औ असत्य का उन्हें पूरा ज्ञान था ।

२६ अर्थात् संसार में उन्हें शुभ-प्रशंसा और नेक-नामी प्राप्त हुई और वे अमर हो गये ।

इस का यह अर्थ भी किया जाता है कि परलोक को याद करने या लोगों में उस की चर्चा करने में उन्ह विशेषता प्राप्त हुई ।

२७ हज़रत अल्यसअ अ० बनी इसराईल के नबियों* में से थे । यहूदी और* *(शेष अगले पृष्ठ पर)*

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।*

[illegible]

होंगी ○ यह है वह-कुछ जिस का, हिसाब के दिन के लिए तुम से वादा किया जा रहा है। ○ यह हमारा दिया हुआ है, जिस का कभी अन्त न होगा ○

एक ओर यह है। और (दूसरी ओर) सरकशों के लिए निश्चय ही बुरा ठिकाना है, ○ दोज़ख़*, जिस में वे प्रवेश करेंगे, क्या ही बुरी (तैयारी और बुरी) आरामगाह है। ○ यह लो चखो — खौलता हुआ पानी और पीप-रक्त,[30] ○ साथ ही कुछ और इसी से मिलता-जुलता, भिन्न-भिन्न प्रकार का। ○ लो यह एक पूरा गरोह तुम्हारे साथ घुसा चला आ रहा है। न मिले कोई जगह इन को। ये आग में जलने वाले हैं। ○

उन्हों ने कहा : नहीं, बल्कि तुम्हें कोई जगह न मिले। तुम ही तो यह हमारे आगे लाये हो। कितनी बुरी जगह है यह ठहरने की। ○

उन्हों ने कहा: हमारे रब*! जो कोई हमारे आगे यह (आपत्ति) ले आया, उसे आग में दोहरा अज़ाब दे। ○ और उन्हों ने कहा : क्या बात है कि हम बहुत से लोगों को नहीं देखते जिन को हम (दुनिया में) बुरे लोगों में गिनते थे[31]। ○ क्या हम ने उन का मज़ाक़ बनाया था। कहीं ऐसा तो नहीं कि (वे यहीं हों किन्तु हमारी) निगाहें उन पर पड़ने से रह गई हों। ○

निस्सन्देह यह तो होना ही है — आग (दोज़ख़* में जाने) वालों का परस्पर झगड़ना। ○

[32](हे नबी*!) कहो : मैं तो बस एक सचेत करने वाला हूँ, और कोई इलाह* (पूज्य) नहीं सिवाय अल्लाह के, जो अकेला है, प्रभुत्वशाली, ○ आसमानों और ज़मीन का रब* और जो-कुछ उन के बीच है उस का, अपार शक्ति का मालिक और बड़ा क्षमाशील। ○

कहो : यह एक बड़ी ख़बर है ○ तुम जिसे ध्यान में नहीं लाते हो[33]। ○ (कहो): मुझे 'अ-ल-ए-आला'[34] (सब से ऊँचे दरबार वालों) की जब वे झगड़ रहे थे कुछ ख़बर न थी; ○

मेरी ओर तो केवल इस लिए वह्य* की जाती है कि मैं खुला-खुला सचेत करने वाला हूँ। ○

ईसाई इन्हें इलीशअ (Elisha) कहते हैं। इन के जीवन-वृत्तान्त के लिए देखिए बाइबिल की किताब '१ सलातीन' (1 Kings) १ : १५-२१ और '२ सलातीन' (2 Kings) अध्याय २ ता १३।

२८ दे० सूरः अल-अंबिया फ़ुटनोट ३५।

२९ मेवे और स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ।

३० इस के लिए मूल ग्रन्थ में 'ग़स्साक़' शब्द प्रयुक्त हुआ है जिस के कई अर्थ होते हैं। साधारणतः शरीर से निकलने वाली तरी को जो पीप, रक्त, कच-लुहू आदि के रूप में हो "ग़स्साक़" कहते हैं, आँसू भी इस में सम्मिलित हैं। "ग़स्साक़" का दूसरा अर्थ होता है अति अधिक ठण्डी वस्तु। इस के अतिरिक्त अत्यन्त बदबूदार और दुर्गन्धित वस्तु को भी "ग़स्साक़" कहते हैं।

३१ इस से अभिप्रेत वे ईमान वाले लोग हैं जिन्हें काफ़िर* लोग दुनिया में बुरा जानते थे और उन की बातों की हँसी उड़ाया करते थे।*

३२ दे० सूरः की आरम्भिक आयतें।

३३ काफ़िर कहते थे : "क्या इस व्यक्ति ने सब इलाहों* (पूज्यों) को एक ही* *(शेष अगले पृष्ठ पर)*

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

فبعزتك لأغوينهم أجمعين ۝ إلا عبادك منهم المخلصين ۝ قال
ق والحق أقول ۝ لأملأن جهنم منك وممن تبعك منهم أجمعين ۝
ما أسألكم عليه من أجر وما أنا من المتكلفين ۝ إن هو إلا ذكر
للعلمين ۝ ولتعلمن نبأه بعد حين ۝

[३५]"जब तेरे रब* ने फ़िरिश्तों* से कहा : निश्चय ही मैं मिट्टी से एक मनुष्य बनाने वाला हूँ, ○ फिर जब मैं उसे नख-शिख से दुरुस्त कर दूँ और उस में अपनी रूह (आत्मा) फूँक दूँ,[३६] तो तुम उस के आगे सजदे* में गिर जाओ,[३७] ○ अतः सब-के-सब फ़िरिश्तों* ने सजदः* किया। ○ सिव इबलीस* के; उस ने अपने को बड़ा समझा और काफ़िरों* में शामिल हो गया। ○

(रब* ने) कहा : हे इबलीस* ! तुझे किस चीज़ ने उसे सजदः* करने से रोका जि मैं ने अपने हाथों से बनाया है ? तू ने अपने को बड़ा समझा या तू सिर उठाने वालों में ७५ है ? ○ उस ने कहा : मैं उस से उत्तम हूँ। आप ने मुझे आग से पैदा किया, और उसे मि से पैदा किया है। ○ (अल्लाह ने) कहा : अच्छा यहाँ से[३८] निकल जा, तू पतित है, ○ अ तेरे ऊपर उस दिन तक मेरी लानत (फिटकार) है जब कि (लोगों को उन के कर्मों का) बद दिया जायेगा। ○

बोला : मेरे रब* ! यह बात है तो मुझे उस दिन तक के लिए मुहलत दे दे जब ८० लोग (जीवित कर के दोबारा) उठाये जायेंगे। ○ (अल्लाह ने) कहा : अच्छा तुझे मुहलत है निश्चित समय के दिन तक। ○ उस ने कहा : तो, तेरी इज़्ज़त (प्रताप) की क़सम मैं इन सब लो को बहका कर रहूँगा, ○ सिवाय उन के जो उन में तेरे ख़ालिस बन्दे होंगे[३९]। ○ (अल्लाह कहा : तो यह अटल है — और मैं अटल ही कहता हूँ ○ — कि मैं दोज़ख़* को तुझ से ८५ और उन सब से भर दूँगा जो इन लोगों में से तेरे पीछे चलेंगे। ○

(हे नबी* !) कह दो : मैं तुम से इस पर कोई बदला नहीं माँगता, और न मैं बनाव लोगों में से हूँ[४१]। ○ यह तो बस एक यादिहानी है संसार वालों के लिए। ○ और ह ही समय में तुम्हें इस का हाल मालूम हो जायेगा। ○

इलाह बना डाला ?" (दे० आयत ५) यहाँ उन की इसी बात का उत्तर दिया गया है। इस उत्तर में केव सत्य को उन के सामने रखा ही नहीं गया है बल्कि शिर्क* (सहवाद) का तर्कयुक्त खण्डन भी कर दिया गया है

३४ दे० सूरः अस-साफ़्फ़ात फ़ुट नोट ५।

३५ जिस झगड़े की ओर ऊपर की आयत* में संकेत किया गया है उस झगड़े का अब सविस्तार उल्ले किया जा रहा है। शैतान* ने अपने रब* से जो झगड़ा किया था वह फ़िरिश्तों* की सभा में किया था "म-लअ-ए आला" से अभिप्रेत फ़िरिश्ते* ही हैं। अल्लाह से शैतान* की बात-चीत साक्षात नहीं हुई थी व वार्तालाप वास्तव में फ़िरिश्तों* के वास्ते से हुआ था।

३६ दे० अल-हिज्र फ़ुट नोट १७।

३७ दे० सूरः अल-बक़रः आयत ३४; सूरः अल-आराफ़ आयत ११।

३८ उस स्थान से जहाँ उस ने अल्लाह की अवज्ञा की थी।

३९ वे मेरे बहकाने में नहीं आयेंगे उन्हें मैं पथ-विचलित करने में असमर्थ रहूँगा।

४० तुझ से अभिप्रेत इबलीस* और उस का वह पूरा गरोह है जो मनुष्य को बहकाने में लगेगा।

४१ मैं जो-कुछ कर रहा हूँ निष्काम-भावना से कर रहा हूँ। मुझे उन लोगों में से न समझो जो तुच्छ उद्देश के लिए झूठे दावे ले कर उठते हैं। मैं तुम से जो-कुछ कहता हूँ वह अपनी ओर से नहीं कहता हूँ उस सचाई पर मेरा सम्पूर्ण जीवन साक्षी है।

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

पहुँच जाते हो।

(२) मौत के बाद

२ : १५४	अल्लाह की राह में मरने वालों को मुरदा न कहो। वे ज़िन्दा हैं।
३ : १६९-१७१	जो अल्लाह की राह मे मारे गए वे तो ज़िन्दा हैं, उन्हे रोज़ी मिल रही है।
२३ : १००	आदमी मरने के बाद से लेकर क़ियामत तक, इच्छा के बावजूद वापस नही आ सकता।
४० : ४६	मरने के बाद से लेकर क़ियामत तक काफ़िरों को दोज़ख़ सुबह व शाम दिखाया जाता है।
५० : ४	मरने के बाद मानव-शरीर जिस तरह मिट्टी मे मिलता है, वह सब अल्लाह जानता है।

(३) उठाया जाना और क़ियामत का आना

२ : ११३	लोग जिन बातों में मतभेद कर रहे हैं, उनका फ़ैसला क़ियामत के दिन हो जाएगा।
२ : १४८	तुम जहाँ भी हो अल्लाह तुम्हे इकट्ठा कर लेगा।
३ : १०६, १०७	क़ियामत के दिन बहुत-से चेहरे उज्ज्वल होंगे और बहुत-से काले।
६ : ३६	क़ियामत के दिन अल्लाह मुरदों को उठाएगा, फिर उसी की ओर लौट कर जाएँगे।
६ : ७३	जिस दिन सूर फूँका जाएगा उस दिन बादशाही उसी की होगी।
७ : २९	जैसे तुम्हे पहले पैदा किया था, वैसे ही तुम फिर पैदा होगे।
१० : ४	तुम सबको लौटकर उसी के पास जाना है।
१० : ४५	जिस दिन अल्लाह लोगों को जमा करेगा, तो उन्हे ऐसा जान पड़ेगा जैसे ससार मे वे कोई घण्टा-भर रहे हों।
११ : १०३-१०८	क़ियामत के दिन सब लोग इकट्ठा किए जाएँगे और सब अल्लाह के सामने पेश होंगे।
१४ : ४८	क़ियामत के दिन यह ज़मीन और आसमान बदल दिए जाएँगे और सब अल्लाह के सामने खड़े होंगे।
१५ : २३-२५	अल्लाह क़ियामत के दिन सब को जमा करेगा।
१७ : ५२	जिस दिन लोग अल्लाह की पुकार पर जमा होंगे तो यही समझेंगे कि ससार में हम बहुत कम मुद्दत रहे।
१७ : ७१, ७२	क़ियामत के दिन सब लोग अपने-अपने लीडरों के साथ बुलाए जाएँगे।
१७ : ९७-९९	भटके हुए लोग क़ियामत के दिन अंधे, गूंगे और बहरे बनकर उठेंगे।
१८ : ४७,४८	क़ियामत के दिन पहाड़ टूट जाएँगे, ज़मीन साफ़ मैदान होगी और एक-एक आदमी जमा कर लिया जाएगा।
१८ : ४९	क़ियामत में कर्म-पत्र सबके सामने होगा, जिसमें हर छोटी-बड़ी बात लिखी होगी।
१८ : ५२, ५३	क़ियामत के दिन उद्दण्ड लोग दोज़ख़ से बचने का कोई रास्ता न पाएँगे।

३९--अज़-.ज़ुमर

(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः* का नाम 'अज़-.ज़ुमर' (The Troops) आयत* ७१ और ७३ से लिया गया है। अस्तुत सूरः में दो गरोहों का उल्लेख किया गया है एक गरोह ईमान* वालों का है, दूसरा उन लोगों का जिन्हों ने सचाई को झुठला दिया और कुफ़्र* का मार्ग ग्रहण किया। इस सूरः में इन दोनों गरोहों के परिणामों का उल्लेख इस प्रकार किया गया है कि जन्नत* और दोज़ख़* को कल्पना-लोक में हम अपनी आँखों से देखने लगते हैं।

उतरने का समय (The date of Revelation)

आयत १० से पता चलता है कि यह सूरः 'हब्शः' (Abyssinia) की हिजरत* से पूर्व उतरी है। कुछ ऐतिहासिक कथनों से भी इसी की पुष्टि होती है।

वार्त्तायें (Subject-matter)

इस सूरः* में बताया गया है कि नबी सल्ल० जिस बात की ओर लोगों को बुला रहे हैं उस का मूल उद्देश्य क्या है। बताया गया कि आप (सल्ल०) लोगों को इसी बात का निमन्त्रण दे रहे हैं कि लोग ख़ालिस अल्लाह की इबादत* और बन्दगी करें; बन्दगी और इबादत* में अल्लाह के साथ किसी और को शरीक न ठहरायें। यही इस सूरः का केन्द्रीय विषय है[1]। इस मौलिक बात को सूरः में बार-बार दोहराया गया है। तौहीद* (एकेश्वरवाद) की सत्यता और उसे अपनाने के अच्छे परिणामों के उल्लेख के साथ-साथ शिर्क* का निषेध किया गया है और बताया गया है कि शिर्क* पर आरूढ़ रहने का परिणाम कितना भयंकर है।

इस्लाम*-विरोधी दल के सामने यह बात रखी गई कि वे अपनी नीति को बदलें और अल्लाह की दयालुता से अपने-आप को वंचित न करें।

मक्का वालों का विरोध और अत्याचार बहुत बढ़ चुका था। ईमान* वालों को तरह-तरह से सताया जा रहा था। इस सिलसिले में ईमान* वालों से कहा गया कि अल्लाह की ज़मीन विशाल है यदि अल्लाह के दुश्मनों ने तुम्हारे लिए किसी जगह को तंग कर दिया है, तो तुम अपने दीन* और धर्म की रक्षा के लिए कहीं और चले जाओ अल्लाह तुम्हारे सब्र* का बदला तुम्हें अवश्य देगा। नबी सल्ल० को हुक्म दिया गया कि आप (सल्ल०) काफ़िरों* से साफ़-साफ़ दो टूक बात कह दें कि तुम अल्लाह के सिवा जिस की चाहो बन्दगी और उपासना करो परन्तु हम तौहीद* के सिवा कोई और रास्ता नहीं अपना सकते।

---

१ दे० आयत १-२।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अज़-ज़ुमर

(मक्का में उतरी — आयतें* ७५)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝ اِنَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ
فَاعْبُدِ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ۝ اَلَا لِلّٰهِ الدِّيْنُ الْخَالِصُ ۚ وَالَّذِيْنَ
اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ مَا نَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَآ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى ۚ اِنَّ
اللّٰهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِيْ مَا هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۚ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ كٰذِبٌ
كَفَّارٌ ۝ لَوْ اَرَادَ اللّٰهُ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا لَّاصْطَفٰى مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۙ سُبْحٰنَهٗ ۚ
هُوَ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ يُكَوِّرُ الَّيْلَ عَلَى
النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۚ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ
مُّسَمًّى ۚ اَلَا هُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ ۝ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا
زَوْجَهَا وَاَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ الْاَنْعَامِ ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ۚ يَخْلُقُكُمْ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ
خَلْقًا مِّنْ بَعْدِ خَلْقٍ فِيْ ظُلُمٰتٍ ثَلٰثٍ ۚ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا
هُوَ ۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ۝ اِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ ۟ وَلَا يَرْضٰى لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۚ
وَاِنْ تَشْكُرُوْا يَرْضَهُ لَكُمْ ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۚ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ

इस किताब* का अवतरण अल्लाह की ओर से है, जो अपार शक्ति का मालिक और हिकमत* वाला है। ○

(हे मुहम्मद!) यह किताब* हम ने तुम्हारी ओर हक़* के साथ उतारी है; अतः तुम अल्लाह ही की इबादत* (बन्दगी) करो, दीन* को उसी के लिए ख़ालिस करते हुये। ○ जान रखो ख़ालिस दीन* अल्लाह ही के लिए है। रहे वे लोग जिन्हों ने उस के सिवा (दूसरे) संरक्षक-मित्र बना रखे हैं (वे कहते हैं): हम तो उन की इबादत* केवल इस लिए करते हैं ताकि वे हमें अल्लाह से ज़्यादा-से-ज़्यादा क़रीब कर दें[1]। निश्चय ही अल्लाह उन के बीच उस का फ़ैसला कर देगा जिस में वे विभेद कर रहे हैं।

निस्सन्देह अल्लाह किसी ऐसे व्यक्ति को (सीधी) राह नहीं दिखाता जो झूठा और अत्य कुफ़्र* करने वाला हो[2]। ○

यदि अल्लाह (अपना) कोई बेटा बनाना चाहता, तो जो वह पैदा करता है उस में से चाहता चुन लेता। महिमावान् है वह! वह अल्लाह है, अकेला और प्रभुत्वशाली[3]। ○ उस

---

१ साधारणतः यही समस्त संसार के मुश्रिक कहते हैं कि हम अल्लाह के अलावा दूसरों की उपास तो केवल इस लिए करते हैं कि इन ही के सहारे अल्लाह तक हमारी पहुँच हो सकती है; यही हैं जो हमा याचना को उस तक पहुँचाते हैं; देवी-देवताओं के बिना अल्लाह के दरबार तक भला हमारी पहुँच कैसे सकती है।*

इस तरह की बातें कहने वाले वास्तव में अल्लाह के गुणों से परिचित नहीं। अल्लाह तो सर्वज्ञ अ अन्तर्यामी है। वह तो उन बातों को भी जानता है जो हमारे मन में छिपी होती हैं। उसे प्रसन्न करने एकमात्र साधन यही है कि मनुष्य उसी की पूजा और बन्दगी करे उस के सिवा किसी और के शरणागत् न हो 'य एक इत्। तमुष्टिहि'। (ऋ० वेद ६-४५-१६) वह एक ही है। उसी की पूजा करो। 'मा चिदन्यद् विशंस (ऋ० ८-१-१) किसी दूसरे को न पूजो।

२ उन्हें झूठा इस लिए कहा कि उन्हों ने झूठ-मूठ यह धारणा अपने मन में स्थिर कर रखी है कि कु दूसरे भी हैं सफल होने के लिए जिन की उपासना अनिवार्य है। तथ्य-हीन विचारों और मन्तव्यों का वे केव स्वयं पालन नहीं करते बल्कि दूसरों को भी इस की ओर बुलावा देते हैं। उन्हें घोर कुफ़्र में ग्रस्त इस लि कहा गया कि वे सत्य का इन्कार करते हैं और उन की कृतघ्नता भी सीमा से आगे बढ़ चुकी है। विभि प्रकार की नेमतें और उत्तम वस्तुयें तो उन्हें अल्लाह दे रहा है और कृतज्ञता वे दूसरों के आगे प्रकट कर हैं जिन के बारे में उन्हों ने यह कल्पना कर रखी है कि उन ही की कृपा से ये नेमतें मिल रही हैं।*

३ उस के औलाद हो यह उस की महिमा, अनुपमता और यकताई के प्रतिकूल बात है उस का न सहजातीय है-और न हो सकता है इस लिए उस के लिए औलाद ठहराना कुफ़्र और अन्याय है।*

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

बात को कान लगा कर सुनते हैं फिर जो अच्छी-से-अच्छी बात है उस का पालन करते हैं[23]। ये वे लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने (सीधी) राह दिखाई, और यही बुद्धि वाले[24] हैं ○ तो क्या वह व्यक्ति जिस के लिए अज़ाब का फ़ैसला हो चुका है (अज़ाब से बचाया जा सकता है) तो क्या तुम बचा लोगे उसे जो आग में पड़ चुका है[25]? ○

परन्तु जो लोग अपने रब* से डर कर रहे, उन के लिए ऊँचे भवन हैं मंज़िल-पर-मंज़िल बनी हुई, जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी। यह वादा अल्लाह का है। अल्लाह अपने वादे के विरुद्ध नहीं जाता। ○

क्या तुम ने नहीं देखा कि अल्लाह ने आसमान से पानी बरसाया फिर ज़मीन में उस की धारायें चलाईं, फिर उस (पानी) के द्वारा विभिन्न रंग की खेती निकालता है; फिर वह (खेती पक कर) सूख जाती है फिर तू उसे देखता है कि पीली पड़ गई; फिर (अल्लाह) उसे चूर्ण बना देता है। निश्चय ही इस में याददिहानी[26] है बुद्धि वालों[27] के लिए। ○

तो क्या (कहना उस व्यक्ति का) जिस का सीना अल्लाह ने इस्लाम* के लिए खोल दिया,[28] सो उसे अपने रब* की ओर से प्रकाश प्राप्त है! तो तबाही है उन लोगों के लिए जिन के दिल अल्लाह के ज़िक्र से ख़ाली रह कर सख़्त हो गये हैं। यह लोग खुली गुमराही में पड़े हुये हैं। ○

अल्लाह ने सर्वोत्तम बात उतारी है, एक ऐसी किताब* जिस के सभी भाग परस्पर मिलते-जुलते हैं, और बार-बार दोहराये गये हैं,[29] उस से उन लोगों के शरीर के रोंगटे खड़े हो जाते हैं जो अपने रब* से डरने वाले हैं, फिर उन के शरीर और उन के दिल नर्म पड़ कर अल्लाह के 'ज़िक्र'[30] की ओर लग जाते हैं। यह अल्लाह का मार्गदर्शन[31] है, जिस से वह (सीधे) मार्ग पर ले आता है जिसे चाहता है। और जिसे अल्लाह ही गुमराह कर दे, उस के लिए कोई राह दिखाने वाला नहीं है। ○

क्या (हाल होगा उस व्यक्ति का) जो क़ियामत* के दिन बुरे अज़ाब से अपने मुँह को बचाता होगा? और ज़ालिमों से कहा जायेगा: अब चखो मज़ा उस का जो कमाई तुम करते थे। ○

जो लोग इन से पहले थे वे भी झुठला चुके हैं, आख़िर उन पर वहाँ से अज़ाब आय

---

२३ दे० आयत ५५।

२४ दे० आयत ६, २१।

२५ अर्थात् जो अपने कर्म से अज़ाब का भागी बन चुका हो और जिस के बारे में अल्लाह ने यह फ़ैसला कर लिया हो कि उसे उस के किये का दण्ड देना है।

२६ दे० आयत २१।

२७ दे० आयत ६, १८।

२८ अर्थात् इस्लाम* के बारे में जिसे समाधान हो गया कि यही सत्य-धर्म है। इस के बारे में उसे संदेह और संशय न हो। 'इस्लाम' उस के लिए आनन्दप्रद और आत्म-परितोष का कारण बन जाये। उस के मन प्राण शान्ति, कल्याण और आनन्द से प्रेरित और आनन्द से परिपूर्ण हो जायें।

२९ अर्थात् उस में किसी प्रकार का विभेद और परस्पर विरोधी बातें नहीं हैं बल्कि पूरी किताब में आदि से अन्त तक बड़ी समता पाई जाती है।

यह एक समता-युक्त किताब है उस में बड़ी एकरसता और अनुरूपता पाई जाती है। उस की वर्णन-शैली ऐसी है कि उस के टुकड़ों में rhythm और अनुप्रास पाया जाता है। उस के बयान में किसी दृष्टिकोण से कोई कमी नहीं पाई जाती है।

३० दे० आयत २१, २२।

३१ दे० आयत १८।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

२५ जिस की उन्हें ख़बर भी न थी। ○ फिर अल्लाह ने उन्हें सांसारिक जीवन में रुसवाई का मज़ा चखाया, और आख़िरत* का अज़ाब तो बहुत बड़ा है। क्या ही अच्छा होता कि ये लोग जानते। ○

हम ने इस क़ुरआन* में लोगों के लिए हर प्रकार की मिसालें दी हैं, कदाचित् ये सोचें; ○ क़ुरआन भी ऐसा जो अरबी (भाषा) में है, और कुछ भी टेढ़ नहीं रखता, कदाचित् ये बचें। ○

अल्लाह एक मिसाल देता है: एक व्यक्ति तो वह है जिस में कई साझी हैं आपस में खींचा-तानी करने वाले, और एक व्यक्ति वह है जो समूचा एक ही का है। क्या दोनों का हाल एक-सा हो सकता है[३२]? प्रशंसा (हम्द*) अल्लाह के लिए है परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते। ○

(हे नबी*!) तुम्हें भी मरना है, और इन ३० लोगों को भी मरना है;[३३] ○ फिर क़ियामत* के दिन, तुम सब अपने रब* के सामने झगड़ोगे। ○

وا ربهم لهم غرف من فوقها غرف مبنية تجري من تحتها الانهر
ما الله لا يخلف الله الميعاد ○ الم تر ان الله انزل من السماء ماء
فسلكه ينابيع في الارض ثم يخرج به زرعا مختلفا الوانه ثم يهيج
فتراه مصفرا ثم يجعله حطاما ان في ذلك لذكرى لاولي
الالباب ○ افمن شرح الله صدره للاسلام فهو على نور من ربه
فويل للقسية قلوبهم من ذكر الله اولئك في ضلل مبين ○ الله
نزل احسن الحديث كتبا متشابها مثاني تقشعر منه جلود الذين
يخشون ربهم ثم تلين جلودهم وقلوبهم الى ذكر الله ذلك هدى
الله يهدي به من يشاء ومن يضلل الله فما له من هاد ○ افمن
يتقي بوجهه سوء العذاب يوم القيمة وقيل للظلمين ذوقوا ما كنتم
تكسبون ○ كذب الذين من قبلهم فاتهم العذاب من حيث لا
يشعرون ○ فاذاقهم الله الخزي في الحيوة الدنيا ولعذاب الاخرة
اكبر لو كانوا يعلمون ○ ولقد ضربنا للناس في هذا القران من
كل مثل لعلهم يتذكرون ○ قرانا عربيا غير ذي عوج لعلهم
يتقون ○ ضرب الله مثلا رجلا فيه شركاء متشكسون ورجلا
سلما لرجل هل يستويان مثلا الحمد لله بل اكثرهم لا يعلمون ○ انك
ميت وانهم ميتون ○ ثم انكم يوم القيمة عند ربكم تختصمون ○

[†]फिर उस व्यक्ति से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जिस ने अल्लाह पर झूठ बाँधा, और सचाई को जब उस के सामने आई झुठला दिया? क्या काफ़िरों* का दोज़ख़* में ठिकाना नहीं है? ○ और जो व्यक्ति सचाई ले कर आया और उस की तसदीक़ की तो ऐसे ही लोग परहेज़गार हैं। ○

उन के लिए उन के रब* के पास वह सब-कुछ है जो वे चाहेंगे[३४]। यह है सत्कर्मी लोगों का बदला: ○ ताकि जो निकृष्टतम कर्म उन्हों ने किये थे उन्हें अल्लाह उन से दूर कर दे,[३५] ३५ और जो सर्वोत्तम कार्य वे करते थे उस का उन्हें बदला प्रदान करे। ○

(हे नबी*!) क्या अल्लाह अपने बन्दे के लिए काफ़ी नहीं है? ये लोग उस के सिवा दूसरों से तुम्हें डराते हैं[३६]। और अल्लाह जिसे गुमराही में डाल दे, उसे कोई राह दिखाने वाला नहीं। ○ और जिसे अल्लाह (सीधी) राह दिखाये, उसे कोई भटकाने वाला नहीं। क्या

---

३२ इस मिसाल से यह बात भली-भाँति समझी जा सकती है शिर्क*(बहुवाद) और तौहीद*(एकेश्वरवाद) में कितना बड़ा अन्तर है। मनुष्य को चैन और आराम तौहीद* में ही मिल सकता है बहुत से पूज्यों और देवताओं की दासता में उसे कदापि कोई सुख और शान्ति नहीं मिल सकती।

३३ आज यदि ये तुम्हारी बात नहीं मानते तो न मानें यहाँ सदैव रहने वाला कोई नहीं है। नतीजा कल सब के सामने आ जायेगा।

† यहाँ से चौबीसवाँ पारः (Part XXIV) शुरू होता है।

३४ अपने रब* के पास बन्दा मरने के बाद ही पहुँच जाता है। मरने के बाद ही से अल्लाह की उस पर विशेष दया होने लगती है।

३५ नबी सल्ल० पर जो लोग ईमान* ला कर अपने जीवन में पूर्ण रूप से अल्लाह के आज्ञाकारी बन गये उन्हें शुभ-सूचना दी जा रही है कि अज्ञान-काल में उन से जो-जो गुनाह हुये हैं अल्लाह उन्हें क्षमा कर देगा।

३६ मक्का के काफ़िर* लोग नबी सल्ल० से कहते थे: तुम हमारे देवताओं का खण्डन करते हो तुम पर उन की फिटकार पड़ जायेगी। जिस किसी ने भी उन की निन्दा की उस का सत्यानाश हो गया।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

अल्लाह की दयालुता (की ओर) से निराश न हो,[43] निस्सन्देह अल्लाह सब गुनाहों को क्षमा कर देता है[44]। निस्सन्देह वह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है[45]।○

तुम अपने रब* की ओर रुजू करो, और अपने को उस के अर्पण कर दो, इस से पहले कि तुम पर अज़ाब आ पहुँचे, फिर तुम्हें मदद न मिलेगी।○ तुम्हारे रब* की ओर से जो सर्वोत्तम चीज़ तुम्हारी ओर उतारी गई है उस पर चलो, इस से पहले कि तुम पर अचानक अज़ाब आ पहुँचे और तुम्हें ख़बर भी न हो,○

ऐसा न हो कि कोई व्यक्ति कहने लगे : हाय, अफ़सोस, उस पर जो कोताही मैं ने अल्लाह के हक़ में की, और मैं तो हँसी उड़ाने वालों ही में शामिल रहा।○ या कहने लगे : यदि अल्लाह मुझे (सीधी) राह दिखाता तो मैं भी परहेज़गारों (डर रखने वालों) में से होता।○ या जब अज़ाब देख ले, तो कहने लगे : क्या ही अच्छा हो कि मेरा (दुनिया में) फिर जाना हो तो मैं सत्कर्मी लोगों में से हो जाऊँ।○

(परन्तु उस समय यही कहा जायेगा) : क्यों नहीं, मेरी आयतें* तेरे पास पहुँच चुकी थीं, परन्तु तू ने उन्हें झुठला दिया और अपने को बड़ा समझा और काफ़िरों* में शामिल रहा।○

६० और (हे नबी*!) क़ियामत* के दिन तुम उन लोगों को देखोगे जिन्हों ने अल्लाह पर झूठ बाँधा था, उन के चेहरे सियाह होंगे। क्या अहंकारियों के लिए दोज़ख़* में ठिकाना नहीं है।○

और अल्लाह उन लोगों को उन की सफलता के साथ बचा लेगा जो अल्लाह की अवज्ञा से बचे और उस की ना-ख़ुशी से डरते रहे। न तो उन्हें कोई तकलीफ़ पहुँचेगी, और न वे कभी दुःखी होंगे।○

अल्लाह हर चीज़ का पैदा करने वाला है, और वही हर चीज़ का निगहबान है[46]।○ आसमानों और ज़मीन की कुंजियाँ उसी की हैं,[47] और जो लोग अल्लाह की आयतों* को

---

४३ अर्थात् यह न समझो कि ईमान* लाने के बाद तुम्हारे पिछले कुफ़्र* और शिर्क* और दूसरे गुनाहों के कारण तुम्हें अज़ाब दिया जायेगा, ईमान* लाने के बाद तुम्हारे सब पिछले गुनाहों को अल्लाह क्षमा कर देगा। परन्तु यदि तुम ईमान* नहीं लाते तो कोई न होगा जो तुम्हें अल्लाह की पकड़ से बचा सके।

४४ देखो आयत ३, ४४।

४५ अर्थात् यदि तुम अपनी नीति को बदल कर नेक बन जाओ, तो तुम्हारी पिछली समस्त ज़्यादतियों को अल्लाह क्षमा कर देगा। यह बात नहीं है कि यदि मनुष्य से कोई गुनाह हो गया हो तो फिर उस के माफ़ होने का कोई उपाय ही न हो। नबी सल्ल० ने कहा है कि यदि तुम इतनी ख़ताएँ करो कि जो ज़मीन और आसमान को भर दें फिर भी यदि तुम क्षमा की प्रार्थना करो और अल्लाह की ओर रुजू करो तो अल्लाह क्षमा कर देगा। है।

४६ आयत ६७।

(४७ अगले पृष्ठ पर)

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

الْكٰفِرُونَ ۝ وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ۖ وَالْاَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ مَطْوِيّٰتٌۢ بِيَمِينِهٖ ۚ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ۖ ثُمَّ نُفِخَ فِيهِ اُخْرٰى فَاِذَا هُمْ قِيَامٌ يَّنْظُرُونَ ۝ وَاَشْرَقَتِ الْاَرْضُ بِنُورِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتٰبُ وَجِايْٓءَ بِالنَّبِيّٖنَ وَالشُّهَدَآءِ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُونَ ۝ ع وَسِيقَ الَّذِينَ كَفَرُوٓا اِلٰى جَهَنَّمَ زُمَرًا ۖ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوهَا فُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَتْلُونَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ رَبِّكُمْ وَيُنْذِرُونَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۚ قَالُوا بَلٰى وَلٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكٰفِرِينَ ۝ قِيلَ ادْخُلُوٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِينَ فِيهَا ۖ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِينَ ۝ وَسِيقَ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ اِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ۖ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوهَا وَفُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوهَا خٰلِدِينَ ۝ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي صَدَقَنَا وَعْدَهٗ وَاَوْرَثَنَا الْاَرْضَ نَتَبَوَّاُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَآءُ ۖ فَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِينَ ۝ وَتَرَى الْمَلٰٓئِكَةَ حَآفِّينَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۚ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَقِيلَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِينَ ۝ ع

नहीं मानते—वही घाटा उठाने वाले हैं। ○

(हे नबी*!) कहो: हे नादानो! क्या अब भी तुम मुझ से कहते हो कि मैं अल्लाह के अतिरिक्त किसी की इबादत* (बन्दगी) करने लगूँ? ○ (हे नबी*!) निश्चय ही यह तुम्हारी ओर वह्य* की जा चुकी है और उन की ओर भी जो तुम से पहले थे कि यदि तुम ने शिर्क* किया तो तुम्हारा किया-धरा अकारथ जायेगा और निश्चय ही तुम घाटा उठाने वालों में से हो जाओगे। ○ नहीं, बल्कि अल्लाह ही की इबादत* करो, और कृतज्ञता दिखलाने वालों में से हो! ○

अल्लाह जैसा-कुछ है ये लोग उस का अन्दाज़ा नहीं कर सके, उस का हाल तो यह है कि क़ियामत* के दिन यह ज़मीन पूरी-की-पूरी उस की मुट्ठी में होगी, और आसमान उस के दाहिने हाथ में लिपटे हुये होंगे[९८]। महिमावान् है वह और उच्च है उस शिर्क* से जो ये लोग करते हैं। ○ और सूर* में फूँक मारी गई कि बेहोश हो गया जो भी था आसमानों में और जो भी था ज़मीन में सिवाय उस के जिसे अल्लाह ने चाहा (कि बेहोश न हो)। फिर उस (सूर*) में दोबारा फूँक मारी गई, तो अब वे सब खड़े ताक रहे हैं! ○ और जग-मगा उठी ज़मीन अपने रब* के प्रकाश से,[९९] और (ला कर) रख दी गई किताब* और लाया गया नबियों* और गवाहों को, और कर दिया गया लोगों के बीच फ़ैसला ठीक-ठीक, और उन पर कुछ भी ज़ुल्म न होगा। ○ और चुका दिया गया हर व्यक्ति को जो-कुछ उस ने किया उस का पूरा-पूरा बदला और वह भली-भाँति जानता है जो-कुछ ये करते हैं। ○ और हाँके गये वे लोग जिन्हों ने कुफ़्र* किया था दोज़ख़ की ओर गरोह-के-गरोह, यहाँ तक कि जब वहाँ पहुँचे तो खोल दिये गये उस के दर-

१०

९७ अल्लाह ही आसमानों और ज़मीन का स्वामी है वही समस्त जगत का स्रष्टा, रक्षक और संचालक है। इस लिए किसी को उस का सहभागी समझना सर्वथा सत्य के विरुद्ध है। शिर्क* को वह क्षमा नहीं कर सकता जब तक कि कोई शिर्क* को त्याग कर तौहीद* (एकेश्वरवाद) को न अपनाये।

९८ दे० सूरः अल-अंबिया का अन्तिम भाग। इस आयत में अल्लाह के सामर्थ्य उस की शक्ति, प्रभुत्व और अधिकार का अछूता वर्णन है। क़ियामत* के दिन लोग देख लेंगे कि ज़मीन और आसमान सब-कुछ अल्लाह के क़ब्ज़े में है।

९९ सूर्य के प्रकाश से लौकिक वस्तुयें प्रकट हो जाती हैं जब ज़मीन अपने रब* के प्रकाश से चमक उठेगी तो उस समय लोकोत्तर और आन्तरिक वस्तुयें प्रकट हो जायेंगी (दे० सूरः अज़-ज़िलज़ाल आयत ४-५), पर-जगत लोगों के समक्ष होगा जैसा कि आगे कहा गया है कि किताब* रख दी जायेगी और नबियों* और गवाहों को लाया जायेगा और लोगों के बीच हक़ के साथ फ़ैसला कर दिया जायेगा। ज़मीन तो इस समय भी अपने रब* के प्रकाश से चमक रही है (दे० सूरः अन-नूर आयत ३५) परन्तु लोगों के नेत्रों पर परदा पड़ा-हुआ है उन्हें उस का अनुभव नहीं हो पाता। उस दिन यह परदा उठा दिया जायेगा और सच्चाई खुल कर सामने आ जायेगी (दे० सूरः क़ाफ़० आयत २२)।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ
لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا اِنَّهٗ هُوَ
الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝ وَاَنِيْبُوْٓا اِلٰى رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ مِنْ قَبْلِ اَنْ
يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ۝ وَاتَّبِعُوْٓا اَحْسَنَ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ
مِّنْ رَّبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بَغْتَةً وَّاَنْتُمْ لَا
تَشْعُرُوْنَ ۝ اَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ يّٰحَسْرَتٰى عَلٰى مَا فَرَّطْتُّ فِيْ جَنْبِ
اللّٰهِ وَاِنْ كُنْتُ لَمِنَ السّٰخِرِيْنَ ۝ اَوْ تَقُوْلَ لَوْ اَنَّ اللّٰهَ هَدٰىنِيْ لَكُنْتُ
مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ۝ اَوْ تَقُوْلَ حِيْنَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ اَنَّ لِيْ كَرَّةً
فَاَكُوْنَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ بَلٰى قَدْ جَآءَتْكَ اٰيٰتِيْ فَكَذَّبْتَ بِهَا وَ
اسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۝ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ تَرَى الَّذِيْنَ
كَذَبُوْا عَلَى اللّٰهِ وُجُوْهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝
وَيُنَجِّي اللّٰهُ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ لَا يَمَسُّهُمُ السُّوْٓءُ وَلَا هُمْ
يَحْزَنُوْنَ ۝ اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ۝
لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ
هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝ قُلْ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَاْمُرُوْٓنِّيْٓ اَعْبُدُ اَيُّهَا الْجٰهِلُوْنَ ۝
وَلَقَدْ اُوْحِيَ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ لَئِنْ اَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ
عَمَلُكَ وَلَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝ بَلِ اللّٰهَ فَاعْبُدْ وَكُنْ مِّنَ

अल्लाह की दयालुता (की ओर) से निराश न हो,
निस्सन्देह अल्लाह सब गुनाहों को क्षमा कर दे
है[४३]। निस्सन्देह वह बड़ा क्षमाशील और द
करने वाला है[४४]। ○

तुम अपने रब* की ओर रुजू करो, औ
अपने को उस के अर्पण कर दो, इस से पहले
तुम पर अज़ाब आ पहुँचे, फिर तुम्हें मदद
मिलेगी। ○ तुम्हारे रब* की ओर से जो सर्वो
चीज़ तुम्हारी ओर उतारी गई है उस पर चलो,
से पहले कि तुम पर अचानक अज़ाब आ पहुँचे औ
तुम्हें ख़बर भी न हो, ○

ऐसा न हो कि कोई व्यक्ति कहने लगे : हा
अफ़सोस, उस पर जो कोताही मैं ने अल्लाह के
में की, और मैं तो हँसी उड़ाने वालों ही में शामि
रहा। ○ या कहने लगे : यदि अल्लाह मुझे (सी
राह दिखाता तो मैं भी परहेज़गारों (डर रखने वाल
में से होता। ○ या जब अज़ाब देख ले, तो क
लगे : क्या ही अच्छा हो कि मेरा (दुनियाँ में) फिर जाना हो तो मैं सत्कर्मी लोगों में
हो जाऊँ। ○

(परन्तु उस समय यही कहा जायेगा) : क्यों नहीं, मेरी आयतें* तेरे पास पहुँच चुकी
परन्तु तू ने उन्हें झुठला दिया और अपने को बड़ा समझा और काफ़िरों* में शामिल रहा। ○

और (हे नबी*!) क़ियामत* के दिन तुम उन लोगों को देखोगे जिन्हों ने अल्लाह प
झूठ गढ़ा, उन के चेहरे सियाह होंगे। क्या अहंकारियों के लिए दोज़ख़* में ठिकाना नहीं है। ○

और अल्लाह उन लोगों को उन की सफलता के साथ बचा लेगा जो अल्लाह की अप
से बचे और उस की ना-ख़ुशी से डरते रहे। न तो उन्हें कोई तकलीफ़ पहुँचेगी, और न
कभी दुःखी होंगे। ○

अल्लाह हर चीज़ का पैदा करने वाला है, और वही हर चीज़ का निगहबान है[४५]। ○
आसमानों और ज़मीन की कुंजियाँ उसी की हैं,[४६] और जो लोग अल्लाह की आयतों* को

४३ अर्थात् यह न समझो कि ईमान* लाने के बाद तुम्हारे पिछले कुफ़्र* और शिर्क* और दूसरे गुना
के कारण तुम्हें अज़ाब दिया जायेगा, ईमान* लाने के बाद तुम्हारे सब पिछले गुनाहों को अल्लाह क्षमा क
देगा। परन्तु यदि तुम ईमान* नहीं लाते तो कोई न होगा जो तुम्हें अल्लाह की पकड़ से बचा सके।

४४ दे० आयत ३, ४४।

४५ अर्थात् यदि तुम अपनी नीति को बदल कर नेक बन जाओ, तो तुम्हारी पिछली ग़लत
को अल्लाह क्षमा कर देगा। यह बात नहीं है कि यदि मनुष्य से कोई गुनाह हो गया हो
होने का कोई उपाय ही न हो। नबी सल्ल० ने कहा है कि यदि तुम ...
आसमान को भर दें फिर भी यदि तुम क्षमा की प्रार्थना
कर देता है।

४६ दे० आयत ६७।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की .

४०—अल-मोमिन

(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः* में एक जगह एक 'मोमिन' (ईमान* वाले व्यक्ति) का क़िस्सा बयान हुआ है, इसी सम्पर्क से इस सूरः का नाम 'अल-मोमिन' रखा गया है। यह ईमान* वाला व्यक्ति फ़िरऔन के लोगों में से था और अपने ईमान* को छिपाये हुये था। परन्तु जब उस ने देखा कि फ़िरऔन हज़रत मूसा अ० के लाये हुये सन्देश को ठुकरा रहा है और उन्हें क़त्ल की धमकी दे रहा है तो उस से इस का सहन न हो सका; उस ने न केवल यह कि फ़िरऔन को इस हरकत से रोका बल्कि इस साहसी व्यक्ति ने अपने अमर भाषण में अपनी जाति वालों को खुल कर इस बात का निमन्त्रण दिया कि वे ईमान* लायें और अपनी आख़िरत* को तबाह होने से बचायें। और वह नीति कदापि न अपनायें जो उन के लिए किसी भी तरह उचित नहीं।

इस सूरः* का एक दूसरा नाम 'ग़ाफ़िर' भी है। 'ग़ाफ़िर' का अर्थ होता है क्षमा करने वाला। सूरः की आयत ३ में गुनाहों को क्षमा करने वाले अल्लाह की महिमा का उल्लेख हुआ है, यह नाम इसी आयत* से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

इस सूरः* से ले कर सूरः अल-अह्क़ाफ़ तक सूरतों का एक विशेष वर्ग (group) है। इस वर्ग की प्रत्येक सूरत का आरम्भ अरबी के हुरूफ़ मुक़त्तआत* 'हा०मीम०' से हुआ है। ये समकालीन सूरतें हैं। ये सूरतें मक्का में उस समय अवतीर्ण हुई हैं जब कि विरोधियों का विरोध बढ़ता ही जा रहा था। मुसलमान सताये जा रहे थे यहाँ तक कि मुसलमानों को अपना देश त्याग कर 'हब्शः' (Abyssinia) की ओर हिजरत* करनी पड़ी।

इब्न अब्बास और जाबिर बिन ज़ैद के बयान से मालूम होता है कि इस सूरः का अवतरण सूरः अज़-ज़ुमर के बाद ही हुआ है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्तायें

इस सूरः* में इस बात की पुष्टि की गई है कि नबी सल्ल० जो-कुछ ले कर आये हैं वह सत्य है और लोगों को, यदि वे तौहीद* (एकेश्वरवाद) की ओर नहीं पलटते एक आने वाले समय (अर्थात् क़ियामत*) से डराया गया है। इस प्रकार इस सूरः* में तीनों बातें इकट्ठी हो गई हैं और यही सूरः के मूल विषय को व्यक्त कर रही हैं।

प्रस्तुत सूरः* और इस के बाद की छः समकालीन सूरतों* में ईमान* वालों के लिए तसल्ली और आश्वासन है इन सूरतों के द्वारा उन की घबराहट, बेचैनी और डर को दूर किया गया है। विरोधी दल के लिए इन सूरतों में डरावा और धमकी है। इन सूरतों* में बता दिया गया है कि सफलता सत्य को प्राप्त होगी असत्य के अनुयायी मुँह की खायेंगे।

---

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

बाज़े, और उस के व्यवस्थापक उन से कहने लगे : क्या तुम्हारे पास तुम ही में से रसूल* नहीं आये थे, जो तुम्हें तुम्हारे रब* की आयतें* पढ़ कर सुनाते और तुम्हें तुम्हारे इस दिन के पेश आने से सचेत करते। कहेंगे : क्यों नहीं, (अवश्य आये थे) परन्तु अज़ाब का फ़ैसला काफ़िरों* के लिए हो चुका। ○ (उन से) कहा जायेगा : जाओ दोज़ख़* के दरवाज़ों के भीतर हमेशा रहो उस में बहुत ही बुरा ठिकाना है अहंकार करने वालों का। ○

और ले जाये गये वे लोग जो अपने रब* से डर कर रहे गरोह-के-गरोह जन्नत* की ओर, यहाँ तक कि वहाँ पहुँचे और पहुँचते ही उस के दरवाज़े खोल दिये गये, और उस के व्यवस्थापक उन से कहने लगे : तुम पर सलाम हो! तुम बहुत अच्छे रहे, अब जाओ इस में हमेशा रहो। ○ उन्हों ने कहा : प्रशंसा (हम्द*) अल्लाह के लिए है, जिस ने हमें अपना वादा सच्चा कर दिखाया और हमें इस (जन्नत* की) ज़मीन का वारिस बनाया कि हम इस जन्नत* में जहाँ चाहें रह सकें : सो क्या ही अच्छा बदला है कर्म करने वालों का। ○

और (हे नबी*!) तुम फ़रिश्तों* को देखोगे कि वे सिंहासन (अर्श*) के चारों ओर घेरा बाँधे हुये हैं,[80] अपने रब* की प्रशंसा (हम्द*) के साथ तसबीह* कर रहे हैं। और फ़ैसला कर दिया गया लोगों के बीच ठीक-ठीक और कहा गया : प्रशंसा (हम्द*) अल्लाह के लिए है, जो सारे संसार का रब* है[81]। ○

---

८० देखें सूरः अल-मोमिन आयत ७।

८१ देखें सूरः अल-[illegible] आयत [illegible] [illegible]

* [illegible]

४०—अल-मोमिन

(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः* में एक जगह एक 'मोमिन' (ईमान* वाले व्यक्ति) का क़िस्सा बयान हुआ है, इसी सम्पर्क से इस सूरः का नाम 'अल-मोमिन' रखा गया है। यह ईमान* वाला व्यक्ति फ़िरऔन के लोगों में से था और अपने ईमान* को छिपाये हुये था। परन्तु जब उस ने देखा कि फ़िरऔन हज़रत मूसा अ० के लाये हुये सन्देश को ठुकरा रहा है और उन्हें क़त्ल की धमकी दे रहा है तो उस से इस का सहन न हो सका; उस ने न केवल यह कि फ़िरऔन को इस हरकत से रोका बल्कि इस साहसी व्यक्ति ने अपने अमर भाषण में अपनी जाति वालों को खुल कर इस बात का निमन्त्रण दिया कि वे ईमान* लायें और अपनी आख़िरत* को तबाह होने से बचायें। और वह नीति कदापि न अपनायें जो उन के लिए किसी भी तरह उचित नहीं।

इस सूरः* का एक दूसरा नाम 'ग़ाफ़िर' भी है। 'ग़ाफ़िर' का अर्थ होता है क्षमा करने वाला। सूरः की आयत ३ में गुनाहों को क्षमा करने वाले अल्लाह की महिमा का उल्लेख हुआ है, यह नाम इसी आयत* से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

इस सूरः* से ले कर सूरः अल-अहक़ाफ़ तक सूरतों का एक विशेष वर्ग (group) है। इस वर्ग की प्रत्येक सूरत का आरम्भ अरबी के हुरूफ़ मुक़त्तआत* 'हा०मीम०' से हुआ है। ये समकालीन सूरतें हैं। ये सूरतें मक्का में उस समय अवतीर्ण हुई हैं जब कि विरोधियों का विरोध बढ़ता ही जा रहा था। मुसलमान सताये जा रहे थे यहाँ तक कि मुसलमानों को अपना देश त्याग कर 'हब्शः' (Abyssinia) की ओर हिजरत* करनी पड़ी।

इब्न अब्बास और जाबिर बिन ज़ैद के बयान से मालूम होता है कि इस सूरः का अवतरण सूरः अज़-ज़ुमर के बाद ही हुआ है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्तायें

इस सूरः* में इस बात की पुष्टि की गई है कि नबी सल्ल० जो-कुछ ले कर आये हैं वह सत्य है और लोगों को, यदि वे तौहीद* (एकेश्वरवाद) की ओर नहीं पलटते एक आने वाले समय (अर्थात् क़ियामत*) से डराया गया है। इस प्रकार इस सूरः* में तीनों बातें इकट्ठी हो गई हैं और यही सूरः के मूल विषय को व्यक्त कर रही हैं।

प्रस्तुत सूरः* और इस के बाद की छः समकालीन सूरतों* में ईमान* वालों के लिए तसल्ली और आश्वासन है इन सूरतों के द्वारा उन को घबराहट, बेचैनी और डर को दूर किया गया है। विरोधी दल के लिए इन सूरतों में डरावा और धमकी है। इन सूरतों* में बता दिया गया है कि सफलता सत्य को प्राप्त होगी असत्य के अनुयायी मुँह की खायेंगे।

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

प्रस्तुत सूरः* के आरम्भ में अल्लाह की महिमा का वर्णन करते हुये कहा गया है कि देश में काफ़िरों* के स्वतन्त्र रूप से चलने-फिरने से धोखा नहीं खाना चाहिए। पहले भी अल्लाह की आयतों* का लोगों ने इन्कार किया है परन्तु अन्त में उन्हें अपने इन्कार का मज़ा चखना पड़ा। और आख़िरत* में काफ़िरों* का दोज़ख़* के सिवा कोई और ठिकाना न होगा। फिर आगे चल कर काफ़िरों* को संकेत करते हुये कहा गया है कि क्या इन लोगों ने ज़मीन में चल-फिर कर देखा नहीं कि उन प्राचीन जातियों का क्या परिणाम हुआ जो इन से शक्ति, वैभव आदि में कहीं बढ़-चढ़ कर थीं; परन्तु जब अल्लाह ने उन्हें उन के गुनाहों के कारण पकड़ लिया, तो कोई न था जो उन्हें अल्लाह के अज़ाब से बचा लेता।

फिर फ़िरऔन और मूसा अ० का क़िस्सा बयान हुआ है। और एक ईमान* वाले साहसी व्यक्ति के साहस और उस के अनुपम व्याख्यान का उल्लेख किया गया है। जिस में ईमान* वालों के लिए सान्त्वना और तसल्ली और काफ़िरों* के लिए डरावा है। आगे चल कर अल्लाह ने खोल कर इस बात की घोषणा कर दी है कि हम सांसारिक जीवन में भी अपने रसूलों* और ईमान* लाने वाले लोगों के सहायक हैं और क़ियामत* के कठिन समय में भी हम उन के सहायक होंगे।

प्रस्तुत सूरः* में मुसलमानों से कहा गया है कि वे सब्र* से काम लें और काफ़िरों* की धारणाओं का तर्कयुक्त खण्डन किया गया है। अल्लाह के चमत्कारों का विस्तारपूर्वक उल्लेख करते हुये 'तौहीद'* पर विशेष रूप से ज़ोर दिया गया है।

---

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अल-मोमिन

(मक्का में उतरी — आयतें* ८५)

अल्लाह* के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
حٰمٓ ۝ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۝ غَافِرِ الذَّنْبِ وَ
قَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِي الطَّوْلِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝
مَا يُجَادِلُ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَلَا يَغْرُرْكَ تَقَلُّبُهُمْ فِي
الْبِلَادِ ۝ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّالْاَحْزَابُ مِنْ بَعْدِهِمْ وَهَمَّتْ
كُلُّ اُمَّةٍ بِرَسُوْلِهِمْ لِيَاْخُذُوْهُ وَجٰدَلُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ
الْحَقَّ فَاَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ۝ وَكَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ
رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ۝ اَلَّذِيْنَ يَحْمِلُوْنَ الْعَرْشَ

हा० मीम०[1] । ○ इस किताब* का अवतरण अल्लाह की ओर से है, जो अपार शक्ति का मालिक और (सब-कुछ) जानने वाला है, ○ गुनाह को क्षमा करने वाला, तौबः* क़बूल करने वाला, सख़्त सज़ा देने वाला, सामर्थ्यवान है। इलाह* (पूज्य) कोई नहीं सिवाय उस के। उसी की ओर (सब को) जाना है। ○

अल्लाह की आयतों* के बारे में केवल वही लोग झगड़ते हैं जिन्हों ने कुफ़्र* किया, तो नगरों में उन की चलत-फिरत तुम्हें धोखे में न डाले। ○

इन से पहले नूह की जाति वालों ने और उन के बाद दूसरे गरोहों ने भी (अपने रसूलों* को) झुठलाया था, और हर एक समुदाय ने अपने रसूल* के प्रति इरादा किया कि उसे पकड़ लें और वे ग़लत बातों के आधार पर झगड़े, ताकि उस के द्वारा सत्य को नीचा दिखा दें। फिर ५ मैं ने उन्हें पकड़ लिया तो कैसी रही मेरी सज़ा। ○

इसी तरह तेरे रब* की बात कुफ़्र* करने वालों पर साबित हो चुकी[2] कि ये (दोज़ख़* की) आग (में पड़ने) वाले हैं। ○

वे जो सिंहासन[3] को उठाये हुये हैं, और जो उस के गिर्द (घेरा बाँधे हुये) हैं[4] अपने रब* की प्रशंसा (हम्द*) के साथ तसबीह* करते हैं[5] और उस पर ईमान* रखते हैं और ईमान* लाने वालों के लिए क्षमा की प्रार्थना करते हैं[6] (कहते हैं) : हमारे रब*! तू (अपनी) दयालुता और ज्ञान से हर चीज़ को व्याप्त है, तो जिन लोगों ने तौबः* की और तेरे मार्ग पर चले उन्हें क्षमा कर दे। और उन्हें भड़कती हुई आग (अर्थात् दोज़ख़*) के अज़ाब से बचा ले। ○ हमारे रब*! और उन्हें सदैव रहने के बाग़ों में दाख़िल कर जिन का तू ने उन से वादा किया है, और उन के पूर्वजों और उन की पत्नियों और उन की सन्तति में जो कोई नेक हो उसे भी (उन बाग़ों में दाख़िल कर)[7] निस्सन्देह तू अपार शक्ति का मालिक और हिकमत* वाला है[8]। ○

---

१ दे० सूरः अल-बक़रः फुट नोट १।
२ दे० सूरः साद० आयत ८४-८५।
३ दे० सूरः अल-आराफ़ फुट नोट १६।
४ दे० सूरः अज़-ज़ुमर आयत ७५।
५ सिंहासन को उठाने वालों से अभिप्रेत वे फ़िरिश्ते* हैं जो अल्लाह के राज्य के स्तम्भ हैं। उन के आधीन बहुत से फ़िरिश्ते* हैं जो इस राज्य के कर्मचारी हैं। अल्लाह अपने राज्य-प्रबन्ध के लिए फ़िरिश्तों* का मुहताज नहीं है। फ़िरिश्तों* को उसी ने पैदा किया और उन्हें शक्ति और सामर्थ्य उसी ने प्रदान किया है। फ़िरिश्तों* को उस ने केवल अपनी हिकमत* और उच्च उद्देश्यों के अन्तर्गत काम में लगा रखा है।
६ ईमान* ही का सम्बन्ध है जिस ने फ़िरिश्तों* और ईमान* वालों को परस्पर जोड़ दिया है।

(७, ८ अगले पृष्ठ पर)

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

प्रस्तुत सूरः* के प्रारम्भ में अल्लाह की महिमा का वर्णन करते हुये कहा गया है कि देश में काफ़िरों* के स्वतन्त्र रूप से चलने-फिरने से धोखा नहीं खाना चाहिए। पहले भी अल्लाह की आयतों* का लोगों ने इन्कार किया है परन्तु अन्त में उन्हें अपने इन्कार का मज़ा चखना पड़ा। और आख़िरत* में काफ़िरों* का दोज़ख़* के सिवा कोई और ठिकाना न होगा। फिर आगे चल कर काफ़िरों* को सचेत करते हुये कहा गया है कि क्या इन लोगों ने ज़मीन में चल-फिर कर देखा नहीं कि उन प्राचीन जातियों का क्या परिणाम हुआ जो इन से शक्ति, वैभव आदि में बढ़ी चढ़-बढ़ कर थीं; परन्तु जब अल्लाह ने उन्हें उन के गुनाहों के कारण पकड़ लिया, तो कोई न था जो उन्हें अल्लाह के अज़ाब से बचा लेता।

फिर फ़िरऔन और मूसा अ० का क़िस्सा बयान हुआ है। और एक ईमान* वाले साहसी व्यक्ति के साहस और उस के अनुपम व्याख्यान का उल्लेख किया गया है। जिस में ईमान* वालों के लिए सान्त्वना और तसल्ली और काफ़िरों* के लिए डरावा है। आगे चल कर अल्लाह ने खोल कर इस बात की घोषणा कर दी है कि हम सांसारिक जीवन में भी अपने रसूलों* और ईमान* लाने वाले लोगों के सहायक हैं और क़ियामत* के कठिन समय में भी हम उन के सहायक होंगे।

प्रस्तुत सूरः* में मुसलमानों से कहा गया है कि वे सब्र* से काम लें और काफ़िरों* की धारणाओं का तर्कयुक्त खण्डन किया गया है। अल्लाह के चमत्कारों का विस्तारपूर्वक उल्लेख करते हुये 'तौहीद'* पर विशेष रूप से ज़ोर दिया गया है।

---

* इन्हें पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अल-मोमिन

(मक्का में उतरी — आयतें* ८५)

अल्लाह* के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
حٰمٓ ۝ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۝ غَافِرِ الذَّنْبِ وَ
قَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِي الطَّوْلِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝
مَا يُجَادِلُ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَلَا يَغْرُرْكَ تَقَلُّبُهُمْ فِي
الْبِلَادِ ۝ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّالْاَحْزَابُ مِنْۢ بَعْدِهِمْ وَهَمَّتْ
كُلُّ اُمَّةٍۭ بِرَسُوْلِهِمْ لِيَاْخُذُوْهُ وَجٰدَلُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ
الْحَقَّ فَاَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ۝ وَكَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ
رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ۝ اَلَّذِيْنَ يَحْمِلُوْنَ الْعَرْشَ

हा० मीम०[1] । ○ इस किताब* का अवतरण अल्लाह की ओर से है, जो अपार शक्ति का मालिक और (सब-कुछ) जानने वाला है, ○ गुनाह को क्षमा करने वाला, तौबः* क़बूल करने वाला, सख़्त सज़ा देने वाला, सामर्थ्यवान है। इलाह* (पूज्य) कोई नहीं सिवाय उस के। उसी की ओर (सब को) जाना है। ○

अल्लाह की आयतों* के बारे में केवल वही लोग झगड़ते हैं जिन्हों ने कुफ़्र* किया, तो नगरों में उन की चलत-फिरत तुम्हें धोखे में न डाले। ○

इस से पहले नूह की जाति वालों ने और उन के बाद दूसरे गरोहों ने भी (अपने रसूलों* को) झुठलाया था, और हर एक समुदाय ने अपने रसूल* के प्रति इरादा किया कि उसे पकड़ लें और वे ग़लत बातों के आधार पर झगड़े, ताकि उस के द्वारा सत्य को नीचा दिखा दें। फिर
५ मैं ने उन्हें पकड़ लिया तो कैसी रही मेरी सज़ा। ○

इसी तरह तेरे रब* की बात कुफ़्र* करने वालों पर साबित हो चुकी[2] कि ये (दोज़ख़* की) आग (में पड़ने) वाले हैं। ○

वे जो सिंहासन[3] को उठाये हुये हैं, और जो उस के गिर्द (घेरा बाँधे हुये) हैं[4] अपने रब* की प्रशंसा (हम्द*) के साथ तसबीह* करते हैं[5] और उस पर ईमान* रखते हैं और ईमान* लाने वालों के लिए क्षमा की प्रार्थना करते हैं[6] (कहते हैं) : हमारे रब* ! तू (अपनी) दयालुता और ज्ञान से हर चीज़ को व्याप्त है, तो जिन लोगों ने तौबः* की और तेरे मार्ग पर चले उन्हें क्षमा कर दे। और उन्हें भड़कती हुई आग (अर्थात् दोज़ख़*) के अज़ाब से बचा ले। ○ हमारे रब* ! और उन्हें सदैव रहने के बाग़ों में दाख़िल कर जिन का तू ने उन से वादा किया है, और उन के पूर्वजों और उन की पत्नियों और उन की सन्तति में जो कोई नेक हो उसे भी (उन बाग़ों में दाख़िल कर)[7] निस्सन्देह तू अपार शक्ति का मालिक और हिकमत* वाला है[8] ।○

---

१ दे० सूरः अल-बक़रः फ़ुट नोट १।
२ दे० सूरः सॉद० आयत ८४-८५।
३ दे० सूरः अल-आराफ़ फ़ुट नोट १६।
४ दे० सूरः अज़-ज़ुमर आयत ७५।
५ सिंहासन को उठाने वालों से अभिप्रेत वे फ़िरिश्ते* हैं जो अल्लाह के राज्य के स्तम्भ हैं। उन के आधीन बहुत से फ़िरिश्ते* हैं जो इस राज्य के कर्मचारी हैं। अल्लाह अपने राज्य-प्रबन्ध के लिए फ़िरिश्तों* का मुहताज नहीं है। फ़िरिश्तों* को उसी ने पैदा किया और उन्हें शक्ति और सामर्थ्य उसी ने प्रदान किया है। फ़िरिश्तों* को उस ने केवल अपनी हिकमत* और उच्च उद्देश्यों के अन्तर्गत काम में लगा रखा है।
६ ईमान* ही का सम्बन्ध है जिस ने फ़िरिश्तों* और ईमान* वालों को परस्पर जोड़ दिया है।

(७, ८ अगले पृष्ठ पर)

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

وَمَنْ حَوْلَهُ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُونَ بِهِ وَيَسْتَغْفِرُونَ لِلَّذِينَ
آمَنُوا رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَحْمَةً وَعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِينَ تَابُوا وَ
اتَّبَعُوا سَبِيلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۝ رَبَّنَا وَأَدْخِلْهُمْ جَنَّاتِ عَدْنٍ
الَّتِي وَعَدْتَهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ
إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ وَقِهِمُ السَّيِّئَاتِ وَمَنْ تَقِ السَّيِّئَاتِ يَوْمَئِذٍ
فَقَدْ رَحِمْتَهُ وَذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنَادَوْنَ
لَمَقْتُ اللَّهِ أَكْبَرُ مِنْ مَقْتِكُمْ أَنْفُسَكُمْ إِذْ تُدْعَوْنَ إِلَى الْإِيمَانِ

और उन्हें बुरी चीज़ों से बचा; और जिसे उस दिन तू ने तकलीफ़ों से बचा लिया, तो निश्चय ही तू ने उस पर दया की। और यही बड़ी सफलता है[९]।○

जिन लोगों ने कुफ़्र* किया (उस दिन) उन्हें पुकार कर कहा जायेगा : तुम्हारी अपने से जो बेज़ारी है अल्लाह की बेज़ारी उस से बढ़ कर है कि तुम्हें ईमान* की ओर बुलाया जाता था तो तुम इन्कार करते थे[१०]।○ वे कहेंगे : हमारे रब*! तू हमें दो बार मौत दे चुका, और दो बार तू ने हमें जीवित किया,[११] अब हम ने अपने गुनाहों को स्वीकार किया। तो क्या यहाँ से निकलने की कोई राह है[१२]?○

(उन से कहा जायेगा) : यह (तुम्हारी दुर्दशा) इस लिए है कि जब अकेले अल्लाह को पुकारा जाता था, तो तुम इन्कार कर देते थे, और यदि उस का कोई साझी ठहराया जाता तो तुम मान लेते। अब हुक्म अल्लाह ही का है, सब से उच्च और महान् का।○ वही है जो तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है, और तुम्हारे लिए आसमान से रोज़ी उतारता है। परन्तु सोचता तो वही है जो (उस की ओर) रुजू करता है।○ अतः (हे ईमान* वालो!) तुम अल्लाह ही को पुकारो, दीन* को उस के लिए ख़ालिस कर के, चाहे काफ़िर* बुरा ही मानें।○ —वह ऊँचे दरजों वाला, और सिंहासन[१३] का मालिक है। वह अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है अपने हुक्म से रूह (अर्थात् वह्य*) भेजता है, ताकि सामना होने के दिन से (लोगों को) सचेत कर दे।○ जिस दिन वे निकल खड़े होंगे, उन की कोई चीज़ अल्लाह से छिपी न रहेगी।

७ इस से मालूम होता है कि जन्नत* में वही नातेदार परस्पर मिल सकेंगे जो नेक होंगे। माता-पिता, पत्नी, बच्चे इन में से जो नेक होंगे केवल वही जन्नत* में ईमान* वालों के साथ रह सकेंगे।

८ अर्थात् इस का ज्ञान तुझी को है कि कौन जन्नत* में रहने के योग्य है कौन इस के योग्य नहीं है। तेरा फ़ैसला ज्ञान और बुद्धिमत्ता के अनुकूल होता है। किसी के बस में नहीं कि तेरे फ़ैसले को टाल सके। कोई नहीं जिसे तेरे सामने दम मारने का साहस हो सके। तेरी अनुमति के बिना न कोई जन्नत* में जा सकता है और न किसी को जन्नत* में दाख़िल कर सकता है।

९ ऐसे लोगों को जो सत्यप्रिय होते हैं और जानते-बूझते अल्लाह की अवज्ञा नहीं करते, अल्लाह की ओर से उन्हें बुराइयों से बचाया जाता है। नेकी करने में उन्हें योग दिया जाता है। अन्तःकरण की कसक के रूप में उन्हें बुराई से रोका जाता है अल्लाह की उन पर कुछ ऐसी दया होती है कि उन्हें बुराई का अवसर ही नहीं मिलता। परन्तु जो लोग अपने ईमान* और भक्ति में सच्चे नहीं होते उन्हें निरन्तर इस का अवसर मिलता रहता कि वे बुरे कर्म कर सकें।

बुराइयों से बचने का एक पहलू यह भी है कि अल्लाह ईमान* वालों को बुराई के बुरे परिणामों से बचाता है। आख़िरत* में जिसे बुरे परिणामों से बचा लिया गया वास्तव में सफलता उसी को प्राप्त हुई।

१० जब काफ़िर* उस दिन अपने करतूतों के बुरे परिणाम को अपनी आँखों से देख लेंगे तो अपने आप को कोसने लगेंगे और अपने-आप से बेज़ार होंगे। इस पर उन से कहा जायेगा जब तुम्हें ईमान* की ओर बुलाया जाता था तब तो तुम इन्कार पर तुले हुए थे अल्लाह उस से कहीं ज़्यादा तुम से बेज़ार है जितना तुम अपने-आप से बेज़ार हो रहे हो।

११ मनुष्य पहले बे-जान था अल्लाह ने उसे जीवन प्रदान किया फिर उस की मृत्यु होती है। अल्लाह अन्त में उसे फिर जीवित कर के उठायेगा। देखे सूरः अल-बक़रः आयत २८।

१२ अर्थात् क्या हम को अब भी कोई अवसर है कि हमें दुनिया में दोबारा भेज दिया जाये। अब हम ईमान* लायेंगे और अच्छे कर्म करेंगे।

(१२, १६ आगे पृष्ठ पर)

१३ दे० सूरः अल-मुअमिन आयत ७।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

تَكْفُرُونَ ۝ قَالُوا رَبَّنَا أَمَتَّنَا اثْنَتَيْنِ وَأَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا
بِذُنُوبِنَا فَهَلْ إِلَىٰ خُرُوجٍ مِّن سَبِيلٍ ۝ ذَٰلِكُم بِأَنَّهُ إِذَا دُعِيَ اللَّهُ
وَحْدَهُ كَفَرْتُمْ وَإِن يُشْرَكْ بِهِ تُؤْمِنُوا فَالْحُكْمُ لِلَّهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيرِ ۝
هُوَ الَّذِي يُرِيكُمْ آيَاتِهِ وَيُنَزِّلُ لَكُم مِّنَ السَّمَاءِ رِزْقًا وَمَا يَتَذَكَّرُ إِلَّا
مَن يُنِيبُ ۝ فَادْعُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ۝
رَفِيعُ الدَّرَجَاتِ ذُو الْعَرْشِ يُلْقِي الرُّوحَ مِنْ أَمْرِهِ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ مِنْ
عِبَادِهِ لِيُنذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ ۝ يَوْمَ هُم بَارِزُونَ لَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ مِنْهُمْ
شَيْءٌ لِّمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۝ الْيَوْمَ تُجْزَىٰ كُلُّ
نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝ وَأَنذِرْهُمْ
يَوْمَ الْآزِفَةِ إِذِ الْقُلُوبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كَاظِمِينَ مَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ
حَمِيمٍ وَلَا شَفِيعٍ يُطَاعُ ۝ يَعْلَمُ خَائِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي
الصُّدُورُ ۝ وَاللَّهُ يَقْضِي بِالْحَقِّ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِهِ لَا
يَقْضُونَ بِشَيْءٍ إِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۝ أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي
الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ كَانُوا مِن قَبْلِهِمْ كَانُوا
هُمْ أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَآثَارًا فِي الْأَرْضِ فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ وَمَا
كَانَ لَهُم مِّنَ اللَّهِ مِن وَاقٍ ۝ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانَت تَّأْتِيهِمْ رُسُلُهُم
بِالْبَيِّنَاتِ فَكَفَرُوا فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ إِنَّهُ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ وَ

आज किस का राज्य है ? अल्लाह का, जो अकेला और प्रभुत्वशाली है। ○ आज हर जीव को उस के किये का बदला दिया जायेगा आज (किसी पर) ज़ुल्म न होगा। निस्सन्देह अल्लाह को हिसाब लेते देर नहीं लगती। ○

(हे नबी*!) इन लोगों को उस दिन से जो क़रीब आ लगा है[१६] सचेत कर दो, जब कि हृदय घाटी को आ रहे होंगे और लोग अन्दर-ही-अन्दर घुट रहे होंगे। ज़ालिमों का न कोई मित्र होगा, और न कोई सिफ़ारिशी जिस की बात मानी जाये[१७]। ○ वह निगाहों की चोरी को जानता है, और उस को भी जो सीने छिपाये होते हैं[१८]। ○ अल्लाह ठीक-ठीक फ़ैसला करता है,[१९] जब कि उस के सिवा जिन को ये लोग पुकारते हैं वे किसी चीज़ का फ़ैसला नहीं कर सकते। निस्सन्देह अल्लाह ही (सब की) सुनने वाला और देखने वाला है। ○

क्या ये लोग ज़मीन में चले-फिरे नहीं कि देखते कि उन लोगों का कैसा परिणाम हुआ जो इन से पहले थे ? वे इन (मक्का वालों) से बढ़-चढ़ कर थे शक्ति में और निशानियों (स्मृति-चिह्नों) की दृष्टि भी (जो वे छोड़ गये) भूमि में। फिर भी अल्लाह ने उन्हें उन के गुनाहों के कारण पकड़ लिया, और कोई न हुआ अल्लाह से उन का बचाने वाला। ○

यह इस लिए कि उन के रसूल* उन के पास खुली दलीलों के साथ आते थे परन्तु उन्हों ने कुफ़्र* किया; तो अल्लाह ने उन्हें पकड़ लिया। निस्सन्देह वह प्रबल और सख़्त सज़ा देने वाला है। ○

और उस ने मूसा को अपनी निशानियों और प्रत्यक्ष प्रमाण के साथ भेजा ○ फ़िरऔन और हामान और क़ारून के पास, परन्तु उन्हों ने कहा : जादूगर है बड़ा झूठा है! ○ और जब वह उन के पास हमारे यहाँ से हक़ (सचाई) ले कर पहुँचा, तो उन लोगों ने कहा : जो

१४ दे० सूरः अल-आराफ़ फुट नोट १६।

१५ अर्थात् क़ियामत* के दिन जब कि मरे हुये लोगों को जीवित कर दिया जायेगा।

१६ अर्थात् आख़िरत* के दिन से।

१७ वे अत्यन्त घबराये और डरे हुये होंगे। वे अत्यन्त व्याकुल होंगे परन्तु उस समय उन का कोई मित्र और सिफ़ारिश करने वाला न होगा जो इस संकट से उन्हें छुटकारा दिला सके।

१८ अर्थात् जो बातें सीनों (दिलों) में छिपी होती हैं उन्हें भी वह जानता है। मनुष्य अपना कोई दोष और खोट भी अल्लाह से छिपा नहीं सकता। नबी सल्ल० दुआ किया करते थे। "हे अल्लाह तू मेरे दिल को 'निफ़ाक़' (कपट) से पाक रख और मेरे कर्म को 'रिया' (दिखावा और पाखण्ड) से और मेरी ज़बान को झूठ से और मेरी आँखों को चोरी से। निश्चय ही तू नैनों की चोरी को जानता है और उस को भी जो सीने (दिल) छिपाते हैं"।

१९ दे० आयत २१।

*इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

ولقد ارسلنا موسى بايتنا وسلطن مبين ۝ الى فرعون وهامن
وقارون فقالوا سحر كذاب ۝ فلما جاءهم بالحق من عندنا
قالوا اقتلوا ابناء الذين امنوا معه واستحيوا نساءهم وما كيد
الكفرين الا في ضلل ۝ وقال فرعون ذروني اقتل موسى وليدع
ربه اني اخاف ان يبدل دينكم او ان يظهر في الارض الفساد ۝
وقال موسى اني عذت بربي وربكم من كل متكبر لا يؤمن
بيوم الحساب ۝ وقال رجل مؤمن من ال فرعون يكتم
ايمانه اتقتلون رجلا ان يقول ربي الله وقد جاءكم بالبينت
من ربكم وان يك كاذبا فعليه كذبه وان يك صادقا يصبكم
بعض الذي يعدكم ان الله لا يهدي من هو مسرف كذاب ۝
يقوم لكم الملك اليوم ظهرين في الارض فمن ينصرنا من
باس الله ان جاءنا قال فرعون ما اريكم الا ما ارى وما اهديكم
الا سبيل الرشاد ۝ وقال الذي امن يقوم اني اخاف عليكم
مثل يوم الاحزاب ۝ مثل داب قوم نوح وعاد وثمود و
الذين من بعدهم وما الله يريد ظلما للعباد ۝ ويقوم اني
اخاف عليكم يوم التناد ۝ يوم تولون مدبرين ما لكم من
الله من عاصم ومن يضلل الله فما له من هاد ۝ ولقد جاءكم

लोग इस के साथ ईमान* लाये हैं" उन के बेटों को क़त्ल करो, और उन की स्त्रियों (अर्थात् बेटियों) को जीवित रहने दो। परन्तु काफ़िरों* की चाल तो बस गुम हो कर रह जाने वाली है"।○

"फ़िरऔन ने कहा: मुझे छोड़ो मैं मूसा को क़त्ल कर दूं, वह अपने रब* को पुकारे। मुझे डर है कि कहीं ऐसा न हो कि वह तुम्हारे दीन* को बदल डाले या देश में बिगाड़ पैदा करे।○

मूसा ने कहा: मैं ने हर अहंकारी से जो हिसाब के दिन पर ईमान* नहीं लाता अपने रब* और तुम्हारे रब* की पनाह ली"।○

एक ईमान* वाले व्यक्ति ने, जो फ़िरऔन के लोगों में से था और अपने ईमान* को छुपा रखा था, कहा: क्या तुम एक आदमी को इस लिए क़त्ल करते हो कि वह कहता है कि मेरा रब* अल्लाह है, और तुम्हारे पास तुम्हारे रब* की ओर से खुली दलीलें ले कर आया है? यदि वह झूठा है, तो उस के झूठ का वबाल उसी पर पड़ेगा; और यदि वह सच्चा है, तो जिस की वह तुम्हें धमकी दे रहा है उस का कुछ-न-कुछ हिस्सा तुम पर आ कर रहेगा। निस्सन्देह अल्लाह किसी ऐसे व्यक्ति को (सीधी) राह नहीं दिखाता जो मर्यादा-हीन, और बड़ा झूठा हो।○ हे मेरी जाति वालो! तुम्हारा राज्य है आज, देश में प्रभावपूर्ण अधिकार तुम्हें प्राप्त है। परन्तु यदि अल्लाह का अज़ाब हम पर आ गया तो फिर कौन हमारी मदद करेगा?

• फ़िरऔन ने कहा: मैं तुम्हारे सामने वही राय रखता हूँ जो मेरी अपनी समझ में आती है, और तुम्हें वही राह दिखाता हूं जो ठीक है।○

उस व्यक्ति ने जो ईमान* लाया था कहा: हे मेरी जाति वालो! मुझे डर है कि कहीं तुम पर वह दिन न आ जाये जो दूसरे समुदायों पर आ चुका है;○ कहीं वही हाल न हो जो नूह की जाति, और आद* और समूद,* और उन के बाद वालों का हुआ, अल्लाह (अपने) बन्दों पर कुछ-भी ज़ुल्म नहीं चाहता।○ और हे मेरी जाति वालो! मुझे डर है कि कहीं तुम पर वह दिन न आ जाये जब कि हर तरफ़ पुकार पड़ी होगी,○ जिस दिन तुम पीठ फेर कर भागोगे, तुम्हें कोई अल्लाह से बचाने वाला न होगा: और जिसे अल्लाह ही गुमराह

२० अर्थात् ईमान* ला कर उस के साथ हो गये।

२१ फ़िरऔन को अन्त में बुरा दिन देखना ही पड़ा। वह अपनी चालों और उपायों से अल्लाह के फ़ैसले को बदल नहीं सका। हज़रत मूसा अ० के अनुयायियों को अल्लाह ने उस के ज़ुल्म और अत्याचारों से बचा लिया।

२२ यहाँ से उस वृत्तान्त का उल्लेख हुआ है जो बनी इसराईल* के इतिहास का एक महत्वपूर्ण वृत्तान्त है जिसे बनी इसराईल ने बिलकुल भुला दिया था। बाइबिल और तलमूद दोनों में से किसी में इस का उल्लेख नहीं हुआ है।

२३ जब मैं अपने को अल्लाह की शरण में दे चुका हूँ तो वही मेरी रक्षा करेगा।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

يُوسُفُ مِن قَبْلُ بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا زِلْتُمْ فِي شَكٍّ مِّمَّا جَاءَكُم بِهِ
حَتَّىٰ إِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَن يَبْعَثَ اللَّهُ مِن بَعْدِهِ رَسُولًا ۚ كَذَٰلِكَ
يُضِلُّ اللَّهُ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُّرْتَابٌ ۝ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ
اللَّهِ بِغَيْرِ سُلْطَانٍ أَتَاهُمْ ۖ كَبُرَ مَقْتًا عِندَ اللَّهِ وَعِندَ الَّذِينَ آمَنُوا ۚ
كَذَٰلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ۝ وَقَالَ فِرْعَوْنُ
يَا هَامَانُ ابْنِ لِي صَرْحًا لَّعَلِّي أَبْلُغُ الْأَسْبَابَ ۝ أَسْبَابَ السَّمَاوَاتِ
فَأَطَّلِعَ إِلَىٰ إِلَٰهِ مُوسَىٰ وَإِنِّي لَأَظُنُّهُ كَاذِبًا ۚ وَكَذَٰلِكَ زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ
سُوءُ عَمَلِهِ وَصُدَّ عَنِ السَّبِيلِ ۚ وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ إِلَّا فِي تَبَابٍ ۝
وَقَالَ الَّذِي آمَنَ يَا قَوْمِ اتَّبِعُونِ أَهْدِكُمْ سَبِيلَ الرَّشَادِ ۝ يَا قَوْمِ
إِنَّمَا هَٰذِهِ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ وَإِنَّ الْآخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ ۝ مَنْ
عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزَىٰ إِلَّا مِثْلَهَا ۖ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّن ذَكَرٍ أَوْ
أُنثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُونَ فِيهَا بِغَيْرِ
حِسَابٍ ۝ وَيَا قَوْمِ مَا لِي أَدْعُوكُمْ إِلَى النَّجَاةِ وَتَدْعُونَنِي إِلَى النَّارِ ۝
تَدْعُونَنِي لِأَكْفُرَ بِاللَّهِ وَأُشْرِكَ بِهِ مَا لَيْسَ لِي بِهِ عِلْمٌ وَأَنَا أَدْعُوكُمْ
إِلَى الْعَزِيزِ الْغَفَّارِ ۝ لَا جَرَمَ أَنَّمَا تَدْعُونَنِي إِلَيْهِ لَيْسَ لَهُ دَعْوَةٌ فِي
الدُّنْيَا وَلَا فِي الْآخِرَةِ وَأَنَّ مَرَدَّنَا إِلَى اللَّهِ وَأَنَّ الْمُسْرِفِينَ هُمْ
أَصْحَابُ النَّارِ ۝ فَسَتَذْكُرُونَ مَا أَقُولُ لَكُمْ ۚ وَأُفَوِّضُ أَمْرِي إِلَى

करे,[२३] उसे कोई (सीधी) राह दिखाने वाला नहीं है। ○

और इस से पहले तुम्हारे पास यूसुफ़ खुली दलीलें ले कर आ चुके हैं, इस पर भी तुम्हें उस के बारे में सदा सन्देह ही रहा जो-कुछ कि वे ले कर तुम्हारे पास आये थे, यहाँ तक कि जब उस का देहान्त हो गया, तो तुम ने कहा : अल्लाह उन के बाद कोई रसूल* कदापि न भेजेगा[२४]। इसी तरह अल्लाह उस व्यक्ति को गुमराह करता है जो मर्यादाहीन और (सत्य-धर्म के प्रति) सन्देह करने वाला हो, ○ वे जो अल्लाह की आयतों* में झगड़ते हैं बिना किसी सनद के जो उन के पास आई हो, अल्लाह की दृष्टि में और ईमान* वालों की दृष्टि में यह (नीति) अत्यन्त अप्रिय है। इसी तरह अल्लाह हर अहंकारी, और जब्र करने वाले (सरकश) के दिल पर ठप्पा लगा देता है। ○

फ़िरऔन ने कहा : हे हामान ! मेरे लिए एक ऊँचा-सा भवन बना कदाचित् मैं रास्तों पर पहुँच जाऊँ, ○ आसमानों के रास्तों पर, फिर ऊपर जा कर मूसा के इलाह* (पूज्य) को देखूँ, और मैं तो उस को झूठा समझता हूँ[२६]।

इस तरह फ़िरऔन के लिए उस के बुरे काम को शोभायमान बना दिया गया, और उसे (सीधे) मार्ग से रोक दिया गया। फ़िरऔन की चाल अकारथ ही गई। ○ उस व्यक्ति ने जो ईमान* लाया था कहा : हे मेरी जाति वालो ! मेरे पीछे आओ। मैं तुम्हें ठीक राह बताऊँ। ○ हे मेरी जाति वालो ! यह सांसारिक जीवन तो बस अस्थायी सुख-सामग्री है, और वास्तव में आख़िरत* ही है, जो ठहरने का घर है। ○ जिस किसी ने बुराई की, तो उसे केवल वैसा ही बदला मिलेगा, और जिस किसी ने अच्छा काम किया,— चाहे पुरुष हो या स्त्री,— और वह ईमान* वाला हो, तो ऐसे लोग जन्नत* में प्रवेश करेंगे, वहाँ उन्हें बे-हिसाब दिया जायेगा। ○ और हे मेरी जाति वालो ! क्या बात है कि मैं तुम्हें नजात (मुक्ति) की ओर बुलाता हूँ और तुम मुझे (जहन्नम* की) आग की ओर बुलाते हो ? ○ तुम मुझे बुलाते हो कि मैं अल्लाह के साथ कुफ़्र* करूँ और उस चीज़ को शरीक ठहराऊँ जिस का मुझे कोई ज्ञान नहीं, और मैं तुम्हें उस (अल्लाह) की ओर बुलाता हूँ जो अपार शक्ति का मालिक और बड़ा क्षमाशील है। ○ निस्सन्देह बात है यही कि तुम मुझे जिस की ओर बुलाते हो उस का

२३ अल्लाह जिन लोगों को भटकने के लिए छोड़ देता है, जिन्हें सत्य के पथ पर चलने का सौभाग्य प्रदान नहीं करता वे वही लोग होते हैं जिन के हृदय में सत्य के प्रति कोई आदर और सम्मान नहीं होता। अल्लाह सत्यप्रिय व्यक्तियों को ही जीवन का सच्चा और सीधा मार्ग दिखाता है। २४ सूरः अन-निसा फुट नोट ४६; सूरः अल-अनआम फुट नोट ११, २५।

२५ ऐसा लगता है कि इसके आगे के कुछ वाक्य अल्लाह ने उस ईमान* वाले व्यक्ति के क़ौल पर बढ़ा दिये हैं ताकि लोगों के सामने हर पहलू स्पष्ट रूप से आ जाये।

२६ इस प्रकार वह हज़रत मूसा की हँसी उड़ाने लगा।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

إن الله بصير بالعباد ۝ فوقه الله سيات ما مكروا وحاق بال فرعون سوء العذاب ۝ النار يعرضون عليها غدوا وعشيا ويوم تقوم الساعة ادخلوا ال فرعون اشد العذاب ۝ واذ يتحاجون في النار فيقول الضعفؤا للذين استكبروا انا كنا لكم تبعا فهل انتم مغنون عنا نصيبا من النار ۝ قال الذين استكبروا انا كل فيها ان الله قد حكم بين العباد ۝ وقال الذين في النار لخزنة جهنم ادعوا ربكم يخفف عنا يوما من العذاب ۝ قالوا اولم تك تاتيكم رسلكم بالبينت قالوا بلى قالوا فادعوا وما دعؤا الكفرين الا في ضلل ۝ انا لننصر رسلنا والذين امنوا في الحيوة الدنيا ويوم يقوم الاشهاد ۝ يوم لا ينفع الظلمين معذرتهم ولهم اللعنة ولهم سوء الدار ۝ ولقد اتينا موسى الهدى واورثنا بني اسراءيل الكتب ۝ هدى وذكرى لاولي الالباب ۝ فاصبر ان وعد الله حق واستغفر لذنبك وسبح بحمد ربك بالعشي والابكار ۝ ان الذين يجادلون في ايت الله بغير سلطن اتهم ان في صدورهم الا كبر ما هم ببالغيه فاستعذ بالله انه هو السميع البصير ۝ لخلق السموت والارض اكبر من خلق الناس ولكن اكثر

पुकारना कुछ भी नहीं न दुनिया में न आख़िरत* में,[२७] और यह भी है कि हमें लौटना अल्लाह ही की ओर है, और यह भी कि मर्यादा-हीन लोग ही (जहन्नम* की) आग (में रहने) वाले हैं। ○

तो आगे चल कर तुम याद करोगे जो-कुछ मैं तुम से कह रहा हूँ[२८]। मैं अपना मामला अल्लाह को सौंपता हूँ। निस्सन्देह अल्लाह (अपने) बन्दों का देखने वाला है। ○

सो जो चाल वे चल रहे थे उस की बुराइयों से अल्लाह ने उसे बचा लिया, और फ़िरऔन के लोगों को बुरे अज़ाब ने आ घेरा। ○

आग है; जिस के सामने वे प्रातःकाल और सन्ध्या समय पेश किये जाते हैं;[२९] और जिस दिन वह घड़ी (अर्थात् क़ियामत*) क़ायम होगी (कहा जायेगा): फ़िरऔन के लोगों को सख़्त अज़ाब में दाख़िल करो। ○ जब वे (जहन्नम* की) आग में परस्पर झगड़ेंगे, तो निर्बल लोग उन लोगों से जो बड़े बने हुये थे कहेंगे: हम तो तुम्हारे पीछे चलने वाले थे तो क्या तुम (आज) हम पर से आग का कोई हिस्सा हटा सकते हो? ○

जो लोग (दुनिया में) बड़े बने हुये थे वे कहेंगे: हम सब ही इस (आग) में पड़े हैं। निःश्चय ही अल्लाह (अपने) बन्दों के बीच फ़ैसला कर चुका[३०]। ○

जो लोग आग (जहन्नम*) में होंगे वे दोज़ख़* के अवधायक से कहेंगे: अपने रब* से दुआ करो कि वह किसी दिन तो हम पर से अज़ाब कुछ हल्का कर दे। ○ वे कहेंगे: क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल* खुली दलीलों के साथ नहीं आये थे? वे कहेंगे: क्यों नहीं (अवश्य आये), (फ़िरिश्ते*) कहेंगे: तो अब तुम ही दुआ करो[३१] और काफ़िरों* की दुआ तो बस गुम हो कर रह जाने वाली है। ○

निस्सन्देह हम अपने रसूलों* की और ईमान* लाने वालों की सहायता करते हैं, सांसारिक जीवन में[३२] और उस दिन भी करेंगे जब कि गवाह खड़े होंगे, ○ जिस दिन ज़ालिमों के

---

२७ दे० आयत ७४; सूरः अर-रअ़्द आयत १४।

२८ परन्तु उस समय का याद करना कुछ भी लाभदायक न होगा।

२९ इस से मालूम हुआ कि मृत्यु के पश्चात् मनुष्य बिलकुल विलुप्त नहीं हो जाता केवल उस से उस का वर्तमान शरीर छिन जाता है उस का व्यक्तित्व मृत्यु के बाद भी शेष रहता है उसे दुःख सुख का अनुभव होता है। दे० सूरः या सीन८ फुट नोट ११।

३० उस लोक में कोई किसी के काम न आ सकेगा। लोगों को गुमराह और पथ-भ्रष्ट करने वाले नेता और गुरु अपने सेवकों और अनुयायियों को साफ़ जवाब दे देंगे कि हम न तो तुम्हें अल्लाह के अज़ाब से बचा सकते हैं और न अपने-आप को अल्लाह की पकड़ से छुटकारा दिलाने का हमें सामर्थ्य प्राप्त है।

३१ हम ऐसे काफ़िरों* के लिए दुआ नहीं कर सकते और न हमारी दुआ से ऐसे लोग अज़ाब से छूट सकते। काफ़िरों* की चीख़-पुकार का भी उस दिन कोई नतीजा न निकलेगा। (३२ अगले पृष्ठ पर)

* का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

काम न आयेगा उन का उ.ज्र (बहाना), और उन के लिए लानत (फिटकार) है, और उन के लिए बुरा घर है। ○

और निश्चय ही हम ने मूसा को मार्ग-दर्शन प्रदान किया, और बनी इसराईल* को किताब* का वारिस् बनाया,[23] ○ मार्ग-दर्शन और याद-दिहानी बुद्धि वालों के लिए। ○

तो (हे नबी* !) सब्र* से काम लो। निस्सन्देह अल्लाह का वादा सच्चा है। और अपने गुनाह के लिए क्षमा की प्रार्थना करो,[24] और सन्ध्या समय और प्रातःकाल अपने रब* की प्रशंसा

५ (हम्द*) के साथ तसबीह* करो[25]। ○

जो लोग बिना किसी सनद के जो उन्हें पहुँची हो, अल्लाह की आयतों* में झगड़ते हैं,[26] उन के सीनों (अर्थात् दिलों) में केवल अभिमान है जिस को वे प्राप्त होने वाले नहीं[27]। सो तुम अल्लाह की पनाह लो। निस्सन्देह वही सुनने वाला और देखने वाला है। ○

النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ وَالَّذِينَ
آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَلَا الْمُسِيءُ ۚ قَلِيلًا مَا تَتَذَكَّرُونَ ۝
إِنَّ السَّاعَةَ لَآتِيَةٌ لَا رَيْبَ فِيهَا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا
يُؤْمِنُونَ ۝ وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ ۚ إِنَّ الَّذِينَ
يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ ۝ اللَّهُ
الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ اللَّهَ
لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ۝ ذَٰلِكُمُ
اللَّهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ۝
كَذَٰلِكَ يُؤْفَكُ الَّذِينَ كَانُوا بِآيَاتِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ ۝ اللَّهُ الَّذِي
جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ قَرَارًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ
صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ ۖ فَتَبَارَكَ اللَّهُ
رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝ هُوَ الْحَيُّ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ
لَهُ الدِّينَ ۗ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ قُلْ إِنِّي نُهِيتُ أَنْ
أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَمَّا جَاءَنِيَ الْبَيِّنَاتُ مِنْ
رَبِّي وَأُمِرْتُ أَنْ أُسْلِمَ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ
مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا
ثُمَّ لِتَبْلُغُوا أَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُونُوا شُيُوخًا ۚ وَمِنْكُمْ مَنْ

---

२२ नबी की सहायता का तात्पर्य उन के धर्म-कार्य और मिशन (Mission) की सहायता है। नबियों* की सहायता कई प्रकार से की जाती है। उन की सब से बड़ी सहायता यह है कि वे जिस सच्चाई और जिन विचारों को ले कर आये उन का प्रचार हो। हम देखते हैं कि दुनिया में आज जहाँ कहीं नेकी की भावनायें पाई जाती हैं वे वास्तव में नबियों* ही की देन है। जिन बातों को नबियों* ने नेकी कहा दुनिया आज भी उन्हें नेकी मानती है। और जिन बातों को उन्हों ने बुराई कहा उन्हें आज भी बुराई समझा जाता है। मानव-लोक में नबियों* के मिशन की अमिट छाप पड़ चुकी है उसे मिटाना सम्भव नहीं। नबियों* की मूल शिक्षा 'तौहीद' थी। दुनिया यह मानने पर विवश है कि 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) ही सत्य है। मुशिरकों* को मानना पड़ा कि अल्लाह एक ही है। मुशिरकों* को भी अपने अनेकेश्वरवादी विचारों की ऐसी व्याख्या करनी पड़ती है जिस से उन का एकेश्वरवादी होना सिद्ध हो सके।*

रसूलों की सहायता का एक पहलू यह भी है कि अल्लाह उन्हें या उन के मानने वालों को राज्य-सत्ता प्रदान करता है और उन के विरोधियों को पराजित कर देता है। दे० सूरः अस-सफ़्फ़ अन्तिम आयत।*

२३ अर्थात् हम ने मूसा (अ०) की सहायता केवल इसी रूप में नहीं की कि फ़िरऔन को समुद्र में डुबो दिया और उस से मूसा (अ०) और बनी इसराईल को छुटकारा मिल गया, बल्कि हम ने बनी इसराईल* को बरकत दी और उन्हें अपनी किताब* का वारिस बनाया।*

२४ मतलब यह है कि कोई बड़े-से-बड़ा कर्म करने के बाद भी मनुष्य को यह न सोचना चाहिए कि उस ने अल्लाह का हक़ अदा कर दिया। उसे सदैव क्षमा ही की प्रार्थना करते रहना चाहिए कि अल्लाह उस की नेकी को क़ुबूल करे और जो कोताही हुई हो उसे अपनी दया से क्षमा कर दे। साधारण लोगों के मामले में गुनाह शब्द का जो अर्थ होता है नबियों के मामले में उस का वह अर्थ नहीं होता। नबी अत्यन्त उच्च पद पर नियुक्त होते हैं, उन से जो छोटी-मोटी कोताही या भूल-चूक हो जाती है वह भी उन के हक़ में गुनाह की हैसियत रखती है। उसे वे अपने दरजे से गिरी हुई बात समझते हैं।*

२५ बन्दा जब तक हर समय अल्लाह के साथ जुड़ा न रहे और उस की याद में लगा न रहे न वह सब्र कर सकता है और न सत्य-मार्ग पर दृढ़तापूर्वक चल सकता है। इस के लिए यह भी ज़रूरी है कि अल्लाह ने जो वादा किया है उस पर उसे पूरा-पूरा विश्वास हो। इस आयत में इन सभी बातों की ओर संक्षिप्त रूप से संकेत कर दिया गया है।*

(२६, २७ अगले पृष्ठ पर)

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

७८ : १८-२० — जब सूर फूंका जायेगा तो सब जमा हो जायेंगे, आसमान खोल दिया जायेगा।

७९ : ६-९ — भूचाल पर भूचाल आयेंगे, आँखें झुकी हुई होंगी।

८० : ३३-३७ — जब कयामत का शोर मचेगा तो भाई-भाई से भागेगा और बेटा माँ से।

८१ : १-१४ — सूर्य लपेट दिया जायेगा, तारे प्रकाश-हीन हो जायेंगे आदि। और हर व्यक्ति जान लेगा कि वह क्या लेकर आया है।

८२ : १-५ — आसमान फट जायेगा, तारे झड़ जायेंगे, कब्रें उखेड़ दी जायेंगी।

८४ : १-५ — आसमान फट जायेगा, ज़मीन समतल कर दी जायेगी और सब कुछ उगल देगी।

८९ : २१-२४ — ज़मीन कूट-कूटकर पस्त कर दी जायेगी, फ़िरिश्ते पंक्ति-बद्ध होकर हाज़िर होंगे।

९९ : १-८ — ज़मीन भूकम्प से हिला दी जायेगी वह सारे हाल सुना देगी। लोगों के कर्म उनके सामने होंगे।

१०० : ९, १० — मुरदे कबरों से उठाये जायेंगे और दिलों के भेद ज़ाहिर हो जायेंगे।

१०१ : १-११ — उस दिन लोग ऐसे होंगे जैसे बिखरे हुए पतिंगे। पहाड़ धुने हुये ऊन की तरह।

(४) जीवन मृत्यु के पश्चात् की आवश्यकता और उसका प्रमाण

३ : १९१, १९२ — अल्लाह ने संसार को बेकार नहीं बनाया है। उसकी हिकमत का तक़ाज़ा है कि आख़िरत ज़रूर हो।

७ : ४-९ — कर्मों पर पकड़ करने के लिए आख़िरत की ज़रूरत है और कर्मों पर पकड़ न्याय का तक़ाज़ा है।

७ : २९ — जिस तरह उसने तुम्हें अब पैदा किया है, वैसे ही तुम फिर पैदा किये जाओगे।

७ : ५७ — मुरदा ज़मीन से वह सब कुछ उगाता है। इसी तरह वह मुरदों को मौत की हालत से निकालता है।

१० : ४ — वही जन्म का आरम्भ करता है, वही दोबारा पैदा करेगा।

१० : ४ — सांसारिक जीवन कर्मों के बदले के लिए काफ़ी नहीं, इसके लिए दोबारा जीवन ज़रूरी है।

१० : ७-१० — आख़िरत के इन्कार के बाद पूरे जीवन का रुख़ ग़लत हो जाता है। जवाब-देही का विश्वास मनुष्य को सीधी राह चलाता है।

१० : ३४ — अल्लाह ने ही पहले पैदा किया, वही दोबारा पैदा करेगा।

११ : ७ — बुद्धि, चेतना और अधिकार पाने के बाद कौन अच्छे काम करता है और कौन बुरे, इसकी जाँच के लिए दोबारा जीवन ज़रूरी है।

११ : १०२-१०८ — इतिहास गवाह है कि बुरे लोगों का परिणाम सदा बुरा हुआ है। इसका तक़ाज़ा है कि आख़िरत ज़रूर हो।

११ : २ — सृष्टि में फैली निशानियों को देखो, अल्लाह की शक्ति और उसकी हिकमत का तक़ाज़ा है कि यह संसार निरुद्देश्य न हो इसके लिए आख़िरत ज़रूरी है।

निश्चय ही आसमानों और ज़मीन का बनाना मानव-जाति के बनाने से बड़ा काम है; परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते। ○

अन्धा और आँखों वाला बराबर नहीं होते,[३६] और न वे लोग जो ईमान* लाये और अच्छे काम किये और बुरे काम करने वाला (बराबर होते हैं)[३७]। तुम लोग कम ही सोचते हो।○

निश्चय ही वह घड़ी (अर्थात् क़ियामत*) आने वाली है, इस में कुछ सन्देह नहीं है; परन्तु अधिकतर लोग मानते नहीं। ○

तुम्हारे रब* ने कहा है : तुम मुझे पुकारो मैं तुम्हारी पुकार का जवाब दूँगा। जो लोग मेरी इबादत* से अहंकारवश कतियाते हैं, जल्द ही वे अपमानित हो कर, जहन्नम* में दाख़िल होंगे[४०]। ○

अल्लाह ही है जिस ने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम उस में आराम (और चैन) पाओ, और दिन को प्रकाशमान बनाया। निस्सन्देह अल्लाह लोगों के लिए बड़ा फ़ज़्ल (कृपा) वाला है, परन्तु अधिकतर लोग कृतज्ञता नहीं दिखलाते। ○

यह है अल्लाह, तुम्हारा रब,* हर चीज़ का पैदा करने वाला। कोई इलाह* (पूज्य) नहीं सिवाय उस के। फिर तुम कहाँ से बहकाये जा रहे हो[४१]? ○ इसी तरह वे लोग बहकाये जाते रहे हैं जो अल्लाह की आयतों* का इन्कार करते थे। ○

अल्लाह ही है जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को ठहरने की जगह बनाई[४२] और आसमान

---

३६ यह संकेत मक्का के काफ़िरों की ओर है। वे केवल अहंकार के कारण बिना दलील के सत्य के विरोधी बने हुये थे।*

३७ अर्थात् काफ़िरों की इच्छा भी पूरी नहीं हो सकती। वे न सत्य को नीचा दिखा सकते हैं और न उन्हें उच्चता प्राप्त हो सकती है। वे इसी लिए हैं कि ज़लील और अपमानित हो कर रहें। यह भविष्यवाणी पूरी हो कर रही मक्का के काफ़िर* अन्त में पराजित हुये, वे अल्लाह के रसूल* (सल्ल०) और उन के अनुयायियों का कुछ भी बिगाड़ न सके।*

३८ मालूम हुआ कि कुफ़्र की नीति ग्रहण करना वास्तव में अपने को अन्धा बना लेना है। हालाँकि अन्धा बनना किसी को पसन्द नहीं।*

३९ इस लिए अवश्य हर एक को अपने रब के पास हाज़िर होना है जहाँ वह अपने कर्मों का फल पायेगा। यदि यह माना जाये कि आख़िरत* न होगी तो इस का अर्थ यह होता है कि अच्छे-बुरे दोनों मर कर धरा में मिट्टी हो जायेंगे और दोनों का परिणाम एक होगा।*

४० इस आयत से मालूम हुआ कि अल्लाह से माँगना और दुआ करना ख़ुद एक इबादत* है। बल्कि दुआ इबादत का सत और निचोड़ है जैसा कि नबी सल्ल० के कथन से मालूम होता है। दुआओं का क़बूल करने वाला केवल अल्लाह है जिस तरह इबादत* केवल एक अल्लाह की करनी चाहिए। किसी और को न तो सजदः करना चाहिए और न किसी और को सङ्कट, दुःख आदि में पुकारना दुरुस्त है। जो व्यक्ति अल्लाह को छोड़ कर किसी और को पुकारता और उसे अपना दाता और कष्ट-निवारक समझता है वह ईश्वरत्व में दूसरों को शरीक ठहराता है; शिर्क* के इस अपराध को अल्लाह कभी क्षमा नहीं करेगा। बन्दा जब अपने रब से दुआ करता और उस से माँगता है तो अल्लाह यदि उचित समझता है तो उस की इच्छा पूरी कर देता है (दे० सूरः अल अनआम आयत ४१)। मनुष्य की दुआ ईश्वरीय इच्छा और हिकमत* के अनुसार ही क़बूल होती है। जिस तरह बाप बच्चे की हर माँग पूरी नहीं करते बल्कि उस की वही माँग पूरी करते हैं जिस में उस के लिए भलाई होती है। इसी तरह अल्लाह भी अपने बन्दों का हित चाहने वाला है वह बन्दों के लिए वही कुछ क़बूल करता है जिस में उस की भलाई होती है।*

४१ अल्लाह ही तुम्हारी पुकार सुनने वाला और तुम्हारा पूज्य है। यदि तुम उस के सिवा दूसरों से विनती करते हो तो तुम अपने वास्तविक स्वामी को छोड़ रहे हो।

४२ पृथ्वी को इस योग्य बनाया कि मनुष्य उस पर जीवन व्यतीत कर सके। पृथ्वी में आकर्षण शक्ति रखी गई है जिस से मनुष्य और जानवर सभी सरलतापूर्वक उस ... (शेष अगले पृष्ठ पर)

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

يُتَوَفّٰى مِنْ قَبْلُ وَلِتَبْلُغُوْٓا اَجَلًا مُّسَمًّى وَّلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝ هُوَ
الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۚ فَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ۝
اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ ۭ اَنّٰى يُصْرَفُوْنَ ۝ الَّذِيْنَ
كَذَّبُوْا بِالْكِتٰبِ وَبِمَآ اَرْسَلْنَا بِهٖ رُسُلَنَا ۫ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝
اِذِ الْاَغْلٰلُ فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلٰسِلُ ۭ يُسْحَبُوْنَ ۝ فِي الْحَمِيْمِ
ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُوْنَ ۝ ثُمَّ قِيْلَ لَهُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ۝
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا بَلْ لَّمْ نَكُنْ نَّدْعُوْا مِنْ قَبْلُ شَيْـًٔا ۭ
كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ الْكٰفِرِيْنَ ۝ ذٰلِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَفْرَحُوْنَ فِي
الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَمْرَحُوْنَ ۝ اُدْخُلُوْٓا اَبْوَابَ
جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝ فَاصْبِرْ اِنَّ
وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚ فَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ
فَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَّنْ
قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ ۭ وَمَا كَانَ
لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ فَاِذَا جَاۗءَ اَمْرُ اللّٰهِ
قُضِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُوْنَ ۝ اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ
لَكُمُ الْاَنْعَامَ لِتَرْكَبُوْا مِنْهَا وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝ وَلَكُمْ فِيْهَا
مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوْا عَلَيْهَا حَاجَةً فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى

को छत (के समान) बनाया,[४३] और तुम्हारा रूप बनाया तो क्या ही अच्छे बनाये तुम्हारे रूप, और अच्छी चीज़ों की तुम्हें रोज़ी दी। यह है अल्लाह, रब* तुम्हारा। सो क्या ही बरकत वाला है अल्लाह सारे संसार का रब*। ○

वह सजीव[४४] है। कोई इलाह* (पूज्य) उस के सिवा नहीं। अतः उसी को पुकारो दीन* को उसी के लिए ख़ालिस कर के। प्रशंसा (हम्द*) अल्लाह के लिए है, जो सारे संसार का रब* है। ○

(हे नबी*!) कहो : मुझे इस से रोका गया है कि मैं उन की इबादत* करूँ जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो[४५] जब कि मुझे मेरे रब* की ओर से खुली दलीलें पहुँच चुकी हैं, और मुझे हुक्म हुआ है कि मैं अपने को सारे संसार के रब* के अर्पण कर दूँ। ○

वही है जिस ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य से, फिर ख़ून के लोथड़े से, फिर तुम्हें एक बच्चे का रूप दे कर निकालता है, फिर तुम्हें अपनी प्रौढ़ता (युवावस्था) को प्राप्त होने देता है, फिर तुम्हें बूढ़ा होने देता है — और तुम में किसी (के प्राण) को इस से पहले ही ग्रस्त लिया जाता है — और तुम्हें एक निश्चित समय तक पहुँचने देता है, और यह भी है कि शायद तुम समझो। ○

वही है जो जिलाता और मारता है। और जब वह किसी चीज़ का फ़ैसला करता है, तो बस उस को इतना कह देता है : हो जा और वह हो जाती है। ○

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जो अल्लाह की आयतों* में झगड़ते हैं,[४६] ये लोग कहाँ से पलटे फिरे जाते हैं? ○ — ये वे लोग हैं जिन्हों ने किताब* को झुठलाया और उस को भी जो-कुछ हम ने अपने रसूलों* को दे कर भेजा था। सो इन्हें मालूम हो जायेगा, ○ जब कि इन की गरदनों में तौक़ होंगे और ज़ंजीरें। ये घसीटे जा रहे होंगे ○ खौलते पानी में; फिर ये लोग (जहन्नम* की) आग में झोंके जायेंगे। ○

फिर इन से कहा जायेगा : कहाँ हैं वे जिन्हें तुम अल्लाह में शरीक ठहराते थे ○ अल्लाह

में बस रहे हैं। फिर पृथ्वी को वायुमण्डल से घेर दिया जिस के कारण उल्कापात से भूमि तबाह होने से बची रहती है। यह और इस तरह की अनेक युक्तियों से इस भूमि को रहने योग्य बनाया गया है। यह कोई खेल नहीं है बल्कि एक महान् सृष्टि-कर्त्ता की रचना है।

४३ अर्थात् पृथ्वी के ऊपर ऐसी आकाशीय व्यवस्था का निर्माण कर दिया है कि कोई विनाशकारी वस्तु उस से हो कर तुम तक नहीं पहुँच पाती और तुम निश्चिन्त हो कर ज़मीन में रहते-बसते हो।

४४ दे० सूरः अल-बक़रः फ़ुट नोट ७९।

४५ दे० सूरः अल-अनआम आयत ५६।

४६ न तौहीद* को मानते हैं और न रिसालत* को; अल्लाह के आदेशों में टेढ़ निकालने में लगे रहते हैं। बात को समझने की कोशिश नहीं करते उलटे उलझाव पैदा करने लगते हैं। वास्तव में इन्हें सच्चाई की तलाश नहीं इन्हें अपनी गुमराही ही प्रिय है।

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

تُحْمَلُونَ ۝ وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ فَأَيَّ آيَاتِ اللَّهِ تُنكِرُونَ ۝
أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ
مِن قَبْلِهِمْ كَانُوا أَكْثَرَ مِنْهُمْ وَأَشَدَّ قُوَّةً وَآثَارًا فِي
الْأَرْضِ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝ فَلَمَّا
جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَرِحُوا بِمَا عِندَهُم مِّنَ الْعِلْمِ
وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝ فَلَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا
قَالُوا آمَنَّا بِاللَّهِ وَحْدَهُ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهِ مُشْرِكِينَ ۝
فَلَمْ يَكُ يَنفَعُهُمْ إِيمَانُهُمْ لَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا سُنَّتَ اللَّهِ الَّتِي
قَدْ خَلَتْ فِي عِبَادِهِ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكَافِرُونَ

के सिवा ? कहेंगे : वे तो हम से खोये गये, बल्कि हम तो पहले किसी को पुकारते ही न थे[४७]। इसी तरह अल्लाह काफ़िरों* को गुमराह करता है। ○

(और इन से कहा जायेगा) : यह इस लिए कि तुम ज़मीन में नाहक़ इतराते फिरते थे, और इस लिए कि तुम अकड़ते थे। ○ चलो जहन्नम* के दरवाज़ों के भीतर, सदा रहने को उस में। बहुत ही बुरा ठिकाना है अहंकार करने वालों का। ○

तो (हे नबी*!) तुम धैर्य से काम लो निश्चय ही अल्लाह का वादा सच्चा है। फिर जिस (बुरे परिणाम) की हम इन्हें धमकी दे रहे उस में से कुछ तुम्हें दिखा दें, या (इस से पहले) हम तुम्हें उठा लें, इन्हें तो (हर हाल में) हमारी ओर पलटना होगा। ○

और हम तुम से पहले कितने ही रसूल* भेज चुके हैं, उन में कुछ तो वे हैं जिन के वृत्तान्त हम ने तुम्हें सुना दिये हैं, और उन में कुछ ऐसे हैं जिन के वृत्तान्त हम ने तुम्हें नहीं सुनाये, और किसी रसूल* को यह सामर्थ्य प्राप्त न था कि वह अल्लाह की अनुमति के बिना कोई निशानी ले आता,[४८] फिर जब अल्लाह का हुक्म आ गया तो ठीक-ठीक फ़ैसला चुका दिया गया, और उस समय टोटे में रह गये मिथ्यावादी। ○

अल्लाह ही है जिस ने तुम्हारे लिए चौपाये बनाये, ताकि उन में से कुछ पर तुम सवारी करो, और उन में से कुछ (के मांस) को तुम खाते हो। ○— और तुम्हारे लिए उन में और भी फ़ायदे हैं— और ताकि उन के द्वारा तुम उस प्रयोजन की पूर्ति कर सको जो तुम्हारे सीनों (अर्थात् दिलों) में हो, और तुम्हें उन पर और नौका (और जहाज़ों) पर भी सवारी करने को मिलता है। ○

वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है। फिर तुम अल्लाह की कौन-कौन सी निशानियों का इन्कार करोगे ? ○

[४९]क्या ये लोग ज़मीन में चले-फिरे नहीं कि देखते कि उन लोगों का कैसा परिणाम हुआ जो इन से पहले थे ? वे इन (मक्का वालों) से अधिक थे, और बढ़-चढ़ कर थे शक्ति में और निशानियों (स्मृति-चिह्नों) की दृष्टि से भी (जो वे छोड़ गये) भूमि में। परन्तु जो-कुछ कि वे कमाते थे वह उन के कुछ भी काम न आया। ○

और जब उन के पास उन के रसूल* खुली दलीलें ले कर आये तो जो ज्ञान उन के पास था उस पर वे इतराते रहे और उसी (अज़ाब) ने उन्हें घेर लिया जिस की वे हँसी उड़ाते थे। ○

फिर जब उन्हों ने हमारा अज़ाब देखा, तो कहने लगे : हम अल्लाह पर जो अकेला है ईमान* लाये और जिस (किसी) को हम उस के साथ शरीक करते थे उस को हम ने छोड़ दिया। ○

परन्तु ऐसा न था कि उन का ईमान* लाना उन के काम आता जब कि उन्हों ने हमारे अज़ाब को देख लिया। — यह अल्लाह की रीति है जो उस के बन्दों में पहले से चली आई है। — और उस समय काफ़िर टोटे में पड़ गये। ○

४७ अर्थात् जिन को हम पुकारते थे वे वास्तव में कुछ भी न थे। उन की कोई हस्ती न थी।
४८ निशानी से अभिप्रेत यहाँ ऐसा चमत्कार है जो नबी* की नुबूवत* का खुला प्रमाण हो। नबी* स्वयं चमत्कार नहीं दिखाता। यह अल्लाह का काम है कि वह जब उचित समझे चमत्कार दिखा दे।
४९ यह समाप्ति-सम्बन्धी वार्त्ता है। इस के अध्ययन के समय सूरः की आयत ४-५ और २१ भी सामने रहें।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

४१--हा० मीम० अस-सजदः

(परिचय)

नाम (The Title)

प्रस्तुत सूरः* को हा० मीम० अस-सजदः कहा जाता है। सूरः की आयत* ३७ में 'अस-सजदः' शब्द प्रयुक्त हुआ है उसी से यह नाम लिया गया है। 'अस-सजदः' शब्द के साथ हा० मीम० के अरबी अक्षर (जो सूरः के आरम्भ में आये हैं) बढ़ा दिये गये हैं ताकि प्रस्तुत सूरः क़ुरआन की सूरः ३२ से जिस का नाम 'अस-सजदः' है अलग पहचानी जा सके।

इस सूरः* का एक दूसरा नाम 'फ़ुस्सिलत' भी है जो सूरः की आयत २ से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह सूरः कब अवतीर्ण हुई है, इस के लिए सूरः अल-मोमिन के परिचय का देखना काफ़ी है। ऐतिहासिक उल्लेखों से अनुमान होता है कि यह सूरः उस समय उतरी है जब कि हज़रत हमज़ः रज़ि० ईमान* ला चुके थे परन्तु अभी हज़रत उमर रज़ि० ने इस्लाम* क़बूल नहीं किया था। काफ़िरों* को बड़ी परेशानी थी कि लोग इस्लाम की ओर बढ़ते जा रहे हैं। उतबः बिन रबीअः ने 'क़ुरैश' के सरदारों से कहा यदि आप लोग पसन्द करें तो मैं मुहम्मद (सल्ल०) से बात-चीत करूँ। और उन के सामने कुछ बातें रखूँ। हो सकता है कि वे उन में से किसी बात को मान लें और इस प्रकार वे हमारा विरोध न करें।

सब ने इस से अपनी सहमति प्रकट की। उतबः नबी सल्ल० के पास गया और कहा : भतीजे ! तुम्हें अपनी जाति में अपने वंश और कुल की दृष्टि से जो स्थान प्राप्त है वह तुम्हें मालूम है। परन्तु तुम अपनी जाति वालों पर एक बड़ी मुसीबत लाये हो। तुम ने समुदाय में फूट डाल दी है। समस्त जाति वालों को मूर्ख ठहराया है। जातीय धर्म और उस के देवताओं की बुराई करते हो। ऐसी बातें करने लगे हो जिन का अर्थ यह है कि हमारे पूर्वज काफ़िर थे। मैं तुम्हारे सामने कुछ तज्वीज़ें रखता हूँ इन पर विचार करो। शायद तुम इन में से कोई बात स्वीकार कर सको। नबी सल्ल० ने कहा : अबुल वलीद ! आप कहें, मैं सुनूँगा। उतबः ने कहा : भतीजे यह काम जो तुम ने शुरू किया है इस से यदि तुम्हारा ध्येय धन की प्राप्ति है, तो हम सब मिल कर तुम्हें इतना धन दिये देते हैं कि तुम सब से बढ़ कर धनवान् हो जाओगे। और यदि तुम बड़ाई के इच्छुक हो, तो हम तुम्हें सरदार बना लेते हैं; बिना तुम्हारे किसी मामले का फ़ैसला न करेंगे। यदि तुम बादशाही के इच्छुक हो, तो हम तुम्हें बादशाह बना लेंगे। और यदि तुम पर कोई जिन्न* आता है जिसे तुम हटा नहीं सकते, तो हम अपने ख़र्च से तुम्हारा इलाज कराने को तैयार हैं। जब उतबः अपनी बातें कह चुका तो आप (सल्ल०) ने कहा : अब मेरी सुनो। इस के बाद नबी सल्ल० ने अल्लाह का नाम ले कर प्रस्तुत सूरः

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

पढ़नी शुरू की। उत्वः सुनता रहा। आप (सल्ल०) ने आयत ३८ पर पहुँच कर सजदः किया फिर सिर उठा कर उत्वः से कहा : अबुल वलीद ! मेरा उत्तर आप ने सुन लिया, अब आप जानें और आप का काम। उत्वः जब .कुरैश के सरदारों की ओर लौटा तो लोगों ने उसे दूर ही से देख कर कहा : .खुदा की क़सम उत्वः का चेहरा बदला हुआ है। यह वह सूरत नहीं है जिसे ले कर यह गया था। उत्वः ने आ कर कहा : .खुदा की क़सम मैं ने ऐसा 'कलाम' सुना जो इस से पहले कभी नहीं सुना था। न यह काव्य है, न जादू न 'काहिनों' का कलाम। मेरी बात मानो उसे उस के अपने हाल पर छोड़ दो। यह 'कलाम' कुछ रङ्ग ला कर रहेगा। यदि अरब के लोग उस पर विजय पा गये, तो तुम अपने भाई के ख़िलाफ़ हाथ उठाने (के अपराध) से बच जाओगे। और यदि वह विजयी हुआ तो उस की बादशाही तुम्हारी बादशाही है"। .कुरैश के सरदारों ने कहा : तुम पर उस का जादू चल ही गया।

वार्तायें

सूरः* के अध्ययन से मालूम होता है कि इस सूरः का मूल आशय 'तौहीद'* है। यही 'तौहीद' समस्त अच्छे कामों का मूल आधार है। अतः उन लोगों के लिए मंगल-सूचना है जो उस चीज़ पर ईमान* लाये जो अल्लाह की ओर से उतारी गई और उन लोगों के लिए तबाही और विनाश है जिन्हों ने उस से मुँह फेरा और शिर्क* की ओर झुक गये। और आख़िरत* के मुक़ाबिले में दुनियाँ को पसन्द किया।

इस सूरः में काफ़िरों* को आमन्त्रित किया गया है कि वे .कुरआन सुनें। और नबी सल्ल० को सब्र से काम लेने का हुक्म दिया गया है।

प्रस्तुत सूरः* हा० मी०—सिलसिले की उन ७ सूरतों में से दूसरी सूरः है जिन का आरम्भ सूरः अल-मोमिन से हुआ है। सूरः अल-मोमिन की तरह प्रस्तुत सूरः भी काफ़िरों* और मुश्रिकों* के लिए डरावा और ईमान* वालों के लिए सफलता की शुभ-सूचना है।

इस सूरः* में मुश्रिकों* के बारे में कहा गया है कि वे ऐसे हैं कि ज़कात* नहीं देते और आख़िरत* का इन्कार करते हैं। ऐसे लोगों को तबाही की सूचना देने के बाद ईमान* लाने वालों और भले काम करने वालों को यह शुभ-सूचना दी गई है कि अल्लाह उन्हें ऐसा बदला प्रदान करेगा जो कभी विच्छिन्न न होगा।

प्रस्तुत सूरः* में अल्लाह के चमत्कारों का उल्लेख करते हुये कुफ़्र* और शिर्क* का तर्क-युक्त खण्डन किया गया है। फिर आद* और समूद* का क़िस्सा बयान कर के बताया गया है कि अल्लाह ने किस प्रकार उन्हें उन के कुफ़्र* और इन्कार के कारण हलाक कर दिया। आद* ने भूमि में यदि अपनी बड़ाई का दावा किया था तो उन्हों ने अपने अहंकार का मज़ा चख लिया। और समूद* ने यदि सच्चाई के सीधे मार्ग को छोड़ कर अन्धता को अपनाया था, तो उन्हें भी अपनी कमाई का बदला मिल गया। उन का अन्तिम ठिकाना आग है जिस में वे सदा जलते रहेंगे। यह उन के करतूतों का बदला होगा। अल्लाह के शत्रुओं का इस के सिवा दूसरा क्या बदला हो सकता है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* हा० मीम०, अस-सजदः

(मक्का में उतरी — आयतें* ५४)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
حٰمٓ ۝ تَنْزِيْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ كِتٰبٌ فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا فَاَعْرَضَ اَكْثَرُهُمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ۝ وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا فِيْٓ اَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ وَفِيْٓ اٰذَانِنَا وَقْرٌ وَّمِنْۢ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ فَاعْمَلْ اِنَّنَا عٰمِلُوْنَ ۝ قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَاسْتَقِيْمُوْٓا اِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوْهُ ؕ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ لَا

हा० मीम०[1] । ○ (यह) अवतरण है अत्यन्त कृपाशील और दयावान की ओर से, ○ एक किताब है जिस की आयतें* खोल-खोल कर बयान हुई हैं, क़ुरआन* है अरबी (भाषा) में उन लोगों के लिए जो ज्ञान रखते हैं । ○ शुभ-सूचना देने वाला और सचेतकर्ता है। फिर भी उन में से अधिकतर लोगों ने किनारा खींच लिया तो वे सुनते नहीं । ○ और कहते हैं : जिस बात की ओर[2] तुम हमें बुलाते हो उस की ओर से तो हमारे दिल परदों में हैं,[3] और हमारे कानों में डाट है, और हमारे और ५ तुम्हारे बीच ओट है, तो तुम (अपना) काम करो, हम (अपना) काम करते हैं । ○ (हे नबी*!) कहो : मैं तो बस तुम ही जैसा एक आदमी हूँ। मेरी ओर वह्य* की जाती है कि तुम्हारा इलाह* (पूज्य) केवल अकेला इलाह* (पूज्य) है, तो तुम सीधे उसी की ओर रुख़ करो और उस से क्षमा की प्रार्थना करो। और तबाही है शिर्क* करने वालों के लिए, ○ जो ज़कात* नहीं देते, और वे आख़िरत* का इन्कार करते हैं। ○

रहे वे लोग जो ईमान* लाये और अच्छे काम किये उन के लिए ऐसा बदला है जो कभी रुकेगा नहीं (बिना कमी के सदैव मिलता रहेगा) । ○

(हे नबी*!) कहो : क्या तुम उस (अल्लाह) का इन्कार करते हो जिस ने ज़मीन को दो दिन में[4] पैदा किया, और तुम उस के प्रतिद्वन्दी ठहराते हो ! वह सारे संसार का रब* है ! ○

उस ने उस (ज़मीन) में ऊपर से पहाड़ जमाये, और उस में बरकत रखी और उस में बस १० की ख़ुराकें ठहराईं (सब) चार दिन में, बराबर है माँगने वालों के लिए,[5] ○ फिर आसमान

---

१ दे० सूरः अल-बक़रः फ़ुट नोट १ ।

२ अर्थात् तौहीद* (एकेश्वरवाद) की ओर (दे० आयत ६) ।

३ अर्थात् उस का हमारे दिलों तक पहुँचना सम्भव नहीं ।

४ अर्थात् दो दौर (Periods or Stages) । दे० सूरः अल-हज्ज आयत ४७; अस-सजदः आयत ५; अल-मआरिज आयत ४ ।

५ मनुष्य शताब्दियों से ज़मीन की बरकतों और उस की उत्पत्ति आदि से फ़ायदा उठाता आ रहा है। अल्लाह ने भूमि में जीवन के साधन फैला दिये हैं। संसार में पाँच लाख प्रकार के जीवधारी बताये जाते हैं, हर एक का आहार भिन्न है। अल्लाह ने हर एक की आवश्यकतानुसार खाद्य पदार्थ और दूसरी ज़रूरत की चीज़ें संचित कर दी हैं।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

يؤتون الزكوة وهم بالاخرة هم كفرون ۝ ان الذين امنوا وعملوا
الصلحت لهم اجر غير ممنون ۝ قل ائنكم لتكفرون بالذي خلق
الارض في يومين وتجعلون له اندادا ذلك رب العلمين ۝
وجعل فيها رواسي من فوقها وبرك فيها وقدر فيها اقواتها
في اربعة ايام سواء للسائلين ۝ ثم استوى الى السماء و
هي دخان فقال لها وللارض ائتيا طوعا او كرها قالتا
اتينا طائعين ۝ فقضهن سبع سموات في يومين واوحى في
كل سماء امرها وزينا السماء الدنيا بمصابيح وحفظا ذلك
تقدير العزيز العليم ۝ فان اعرضوا فقل انذرتكم صعقة
مثل صعقة عاد وثمود ۝ اذ جاءتهم الرسل من بين
ايديهم ومن خلفهم الا تعبدوا الا الله قالوا لو شاء ربنا
لانزل ملئكة فانا بما ارسلتم به كفرون ۝ فاما عاد فاستكبروا
في الارض بغير الحق وقالوا من اشد منا قوة اولم يروا ان
الله الذي خلقهم هو اشد منهم قوة وكانوا بايتنا يجحدون ۝
فارسلنا عليهم ريحا صرصرا في ايام نحسات لنذيقهم
عذاب الخزي في الحيوة الدنيا ولعذاب الاخرة اخزى و
هم لا ينصرون ۝ واما ثمود فهدينهم فاستحبوا العمى على

की ओर रुख़ किया[६] और वह (आसमान) एक धुआँ (जैसा) था,[७] और उस से और ज़मीन से कहा: तुम दोनों आओ स्वेच्छापूर्वक या अनिच्छापूर्वक[८] उन्हों ने कहा : हम स्वेच्छापूर्वक हाज़िर हैं। ○

फिर उस ने दो दिन में[९] इन सात आसमानों को पूरा कर दिया और हर आसमान में जो कुछ हुक्म देना था भेज दिया;[१०] और हम ने दुनिया के आसमान (निकटवर्ती आकाश)[११] को दीपकों (अर्थात तारों और नक्षत्रों) से सुशोभित किया, और इस तरह सुरक्षित भी कर दिया। यह अपार शक्ति के मालिक और सर्वज्ञ (अल्लाह) का बँधा हुआ अन्दाज़ (हिसाब) है। ○

फिर यदि ये (काफ़िर) लोग किनारा खींचें तो कह दो : मैं ने तुम्हें वज्रपात से सावधान कर दिया है वैसा ही वज्रपात जैसा आद* और समूद* पर हुआ;[१२] ○ जब उन के पास रसूल* उन के सामने से और उन के पीछे से आये कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो। उन्हों ने कहा : यदि हमारा रब* चाहता तो (हमारी ओर) फ़िरिश्ते उतार देता, सो जिस चीज़ के साथ तुम भेजे गये हो हम तो उसे नहीं मानते"। ○

६ यहाँ समय सम्बन्धी क्रम का उल्लेख नहीं किया गया है कि पहले ज़मीन की रचना की गई फिर आस-मान की रचना हुई बल्कि आशय यह है कि ज़मीन को भी अल्लाह ने बनाया है और आकाश भी उसी की रचना है। किसी और ने इन में से किसी को नहीं बनाया है (दे० सूरः अन-नाज़ियात आयत ३०; सूरः अल-बक़रः आयत २९)।

ऐसा लगता है कि पहले दो दिनों (Periods) में ज़मीन बनाई फिर दो दिनों में उसे ठीक-ठाक कर उस में हर तरह के ख़ज़ाने रख दिये। और इस प्रकार उस में लोगों की ज़रूरतों की पूरी सामग्री संचित कर दी। इस तरह सब चार दिन हुये। इस के बाद आसमान की ओर रुख़ किया जिस की सृष्टि हो चुकी थी क्योंकि आगे कहा गया है कि वह एक धुआँ (जैसा) था। ऐसा मालूम होता है कि जिन दो दिनों में ज़मीन बनी थी उन ही दिनों में आसमान की भी सृष्टि हुई थी और उसे प्रारम्भिक रूप दिया जा चुका था। फिर दो दिनों में आसमान को वर्तमान रूप दे कर पूरा किया गया। आसमान को सात भागों में विभक्त कर के उन को उचित रूप से व्यवस्थित किया गया।

७ ऐसा मालूम होता है कि पहले सृष्टि-पदार्थ की रचना की, जो बिलकुल एक जगह था (दे० सूरः अल-अंबिया आयत ३०) फिर यह पदार्थ, भाप (Gases), द्रव (Liquids) और ठोस (Solids) आदि रूपों में परिवर्तित हुआ है। अल्लाह ने उसी पदार्थ (Primoral matter) से अगणित तारा-पुंज (Galaxies) सौर जगत (Solar system) बना दिये। हर ग्रह और नक्षत्र उन ही तत्वों से बना है जिन से हमारी ज़मीन और हमारे शरीर का निर्माण हुआ है। आज उन तारों में भी जो पृथ्वी से अत्यन्त दूरी पर हैं तत्व पहचाने गये हैं जो इस भूमि पर सामान्य रूप से पाये जाते हैं।

आसमान के बारे में कहा जा रहा है वह पहले धुआँ था। समस्त विश्व निहुला (Nebula) था। अल्लाह ने अपनी योजना के अन्तर्गत ज़मीन और आसमान की रचना की।

८ अर्थात् तुम्हें ईश्वरीय आदेश का पालन करना है चाहे दबाव के कारण करो या स्वेच्छापूर्वक (willingly) आसमानों और ज़मीन के लिए अल्लाह ने जिस विधि, नियम आदि की व्यवस्था की वह उन की प्रकृति के सर्वथा अनुकूल है इस लिए वे स्वभावतः उस के पालन में लग गये। मनुष्य को भी इसी (शेष अगले पृष्ठ पर)

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

तो आद जो थे वे नाहक़ भूमि (देश) में बड़े बने, और कहा : कौन शक्ति में हम से बढ़ कर है ? क्या उन्हों ने नहीं देखा कि अल्लाह जिस ने उन्हें पैदा किया, वह उन से शक्ति में बढ़ कर है ? वे हमारी आयतों* का इन्कार ही करते रहे'[१४] । ○ तो हम ने उन पर अशुभ दिनों में एक प्रचण्ड वायु भेजी,'[१५] ताकि उन्हें सांसारिक जीवन में रुसवाई के अज़ाब का मज़ा चखायें। और आख़िरत* का अज़ाब तो और ज़्यादा रुसवा करने वाला है, और उन की कुछ भी मदद न की जायेगी। ○

और समूद जो थे, उन्हें हम ने (सीधा) मार्ग दिखाया, परन्तु मार्ग-दर्शन की अपेक्षा उन्हों ने अन्धता को पसन्द किया, तो जो-कुछ वे कमाते थे उस के कारण उन्हें ज़िल्लत के अज़ाब के वज्रपात ने आ लिया'[१६]। ○ और उन लोगों को हम ने बचा लिया जो ईमान* लाये थे'[१७] और अल्लाह की अवज्ञा से बचते और उस की ना-ख़ुशी से डरते थे। ○

لْهُدٰى فَأَخَذَتْهُمْ صٰعِقَةُ الْعَذَابِ الْهُوْنِ بِمَا كَانُوْا
يَكْسِبُوْنَ ۝ وَنَجَّيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ۝ وَيَوْمَ يُحْشَرُ
أَعْدَاۤءُ اللّٰهِ إِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ۝ حَتّٰىٓ إِذَا مَا جَاۤءُوْهَا شَهِدَ
عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَأَبْصَارُهُمْ وَجُلُوْدُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝
وَقَالُوْا لِجُلُوْدِهِمْ لِمَ شَهِدْتُّمْ عَلَيْنَا ۭ قَالُوْٓا أَنْطَقَنَا اللّٰهُ الَّذِيْٓ
أَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَّهُوَ خَلَقَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَّإِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝
وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُوْنَ أَنْ يَّشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلَآ
أَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُوْدُكُمْ وَلٰكِنْ ظَنَنْتُمْ أَنَّ اللّٰهَ لَا يَعْلَمُ
كَثِيْرًا مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝ وَذٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِيْ ظَنَنْتُمْ
بِرَبِّكُمْ أَرْدٰىكُمْ فَأَصْبَحْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝ فَإِنْ يَّصْبِرُوْا فَالنَّارُ
مَثْوًى لَّهُمْ ۚ وَإِنْ يَّسْتَعْتِبُوْا فَمَا هُمْ مِّنَ الْمُعْتَبِيْنَ ۝ وَ
قَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَاۤءَ فَزَيَّنُوْا لَهُمْ مَّا بَيْنَ أَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ
وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْٓ أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ
الْجِنِّ وَالْإِنْسِ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِيْنَ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
لَا تَسْمَعُوْا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَالْغَوْا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ ۝
فَلَنُذِيْقَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ وَّلَنَجْزِيَنَّهُمْ
أَسْوَأَ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ ذٰلِكَ جَزَاۤءُ أَعْدَاۤءِ اللّٰهِ

और (याद करो) जिस दिन अल्लाह के दुश्मन (जहन्नम* की) आग की ओर घेर कर

तरह स्वतन्त्र इच्छा के साथ और मुक्त भाव से अल्लाह के आदेशों का पालन करना चाहिए। यही नीति मनुष्य के सहज स्वभाव और प्रकृति के अनुकूल है। यदि वह इस के विरुद्ध आचरण करता है तो उसे अपनी प्रकृति से वैर है। वह अपना दुश्मन आप है।

इस आयत से यह भी मालूम हुआ कि इस आयत और बाद वाली आयतों में उस समय का उल्लेख हुआ है जब कि ज़मीन और आसमान ने वर्तमान रूप धारण नहीं किया था।

९ अर्थात् दो कालावधि (Period) में।

१० अर्थात् आकाश अथवा पर-जगत के प्रत्येक क्षेत्र के लिए उस के अनुकूल नियम निर्धारित कर दिये और एक उचित व्यवस्था स्थापित कर दी।

११ अर्थात् वह आकाश जिसे हम अपनी आँखों से देखते हैं। यह अत्यन्त निकटवर्ती क्षेत्र है। प्रत्येक क्षेत्र की विशालता की कल्पना करना भी मनुष्य के लिए नितान्त कठिन है।

१२ सूरः के परिचय में बताया जा चुका है कि उतबः बिन रबीअः आप (सल्ल०) की सेवा में आया था ताकि आप (सल्ल०) को 'तौहीद'* की ओर बुलाने से बाज़ रखे। आप (सल्ल०) ने उस के जवाब में इस सूरः को पढ़ना आरम्भ किया। जब आप इस आयत पर पहुँचे तो उतबः डर गया उसे ऐसा लगा जैसे वह आने वाले अज़ाब को उतरता देख रहा है। उस ने नबी सल्ल० के मुँह पर हाथ रख दिये और कहा : मुहम्मद (सल्ल०) अपनी जाति के लोगों पर दया करो।

१३ लोगों की यह एक ख़ास गुमराही है जो शुरू से चला आ रहा है कि जब किसी ने उन्हें अल्लाह की ओर बुलाया तो कहा कि तुम तो एक साधारण मनुष्य हो हम तुम्हारी बात नहीं मानते और जब वह गुज़र जाता है तो श्रद्धा रखने वाले उसके बारे में यह भावना प्रकट करने लगते हैं कि वह तो मनुष्य नहीं था बल्कि ईश्वर या कोई अलौकिक व्यक्ति था जो इस भूमि पर उतर आया था।

१४ उन्हों ने हमारी आयतों* का इन्कार किया। हमारे आदेशों को ठुकराया। और उन सारी निशानियों की ओर से अन्धे हो गये जो हम ने ज़मीन व आसमान में फैला रखी हैं। जिन में प्रत्येक निशानी इस बात की ख़बर देती है कि अल्लाह है और वही अकेला इस का हक़ रखता है कि उस की इबादत* की जाये। स्वयं मनुष्य का अपना शरीर और उस की अपनी योग्यतायें बताती हैं कि उस का कोई पालन-कर्ता और स्वामी है। इस के साथ मानव-इतिहास की निशानियाँ हैं जिन से इस बात का प्रमाण (शेष अगले पृष्ठ पर)

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

يُؤْتُونَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ۝ قُلْ اَئِنَّكُمْ لَتَكْفُرُوْنَ بِالَّذِيْ خَلَقَ
الْاَرْضَ فِيْ يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُوْنَ لَهٗۤ اَنْدَادًا ذٰلِكَ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝
وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا وَبٰرَكَ فِيْهَا وَقَدَّرَ فِيْهَاۤ اَقْوَاتَهَا
فِيْۤ اَرْبَعَةِ اَيَّامٍ سَوَآءً لِّلسَّآئِلِيْنَ ۝ ثُمَّ اسْتَوٰۤى اِلَى السَّمَآءِ وَ
هِيَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَلِلْاَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا قَالَتَاۤ اَتَيْنَا
طَآئِعِيْنَ ۝ فَقَضٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوَاتٍ فِيْ يَوْمَيْنِ وَاَوْحٰى فِيْ كُلِّ
سَمَآءٍ اَمْرَهَا وَزَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ وَحِفْظًا ذٰلِكَ
تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۝ فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً
مِّثْلَ صٰعِقَةِ عَادٍ وَّثَمُوْدَ ۝ اِذْ جَآءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِنْۢ بَيْنِ
اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّا اللّٰهَ قَالُوْا لَوْ شَآءَ رَبُّنَا
لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً فَاِنَّا بِمَاۤ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ۝ فَاَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوْا
فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَقَالُوْا مَنْ اَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ
اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَهُمْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ۝
فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِيْۤ اَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ لِّنُذِيْقَهُمْ
عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَخْزٰى وَ
هُمْ لَا يُنْصَرُوْنَ ۝ وَاَمَّا ثَمُوْدُ فَهَدَيْنٰهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعَمٰى عَلَى

की ओर रुख किया[6] और वह (आसमान) एक धुआँ (जैसा) था,[7] और उस से और ज़मीन से कहा: तुम दोनों आओ स्वेच्छापूर्वक या अनिच्छापूर्वक[8]! उन्हों ने कहा : हम स्वेच्छापूर्वक हाज़िर हैं।○

फिर उस ने दो दिन में इन सात आसमानों को पूरा कर दिया और हर आसमान में मौजूद हुक्म देना था भेज दिया।[9] और हम ने दुनिया के आसमान (निकटवर्ती आकाश)[10] को दीपकों (अर्थात् तारों और नक्षत्रों) से सुशोभित किया, और इस तरह सुरक्षित भी कर दिया। यह ज़बर्दस्त शक्ति के मालिक और सर्वज्ञ (अल्लाह) का बँधा हुआ अन्दाज़ा (हिसाब) है।○

फिर यदि ये (काफ़िर) लोग किनारा खींचें तो कह दो : मैं ने तुम्हें वज्रपात से सावधान कर दिया है वैसा ही वज्रपात जैसा आद* और समूद* पर हुआ।[11] ○ जब उन के पास रसूल* उन के सामने से और उन के पीछे से आये कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो! उन्हों ने कहा : यदि हमारा रब* चाहता तो (हमारी ओर) फ़रिश्ते उतार देता, सो जिस चीज़ के साथ तुम भेजे गये हो हम तो उसे नहीं मानते"।○

६ यहाँ समय सम्बन्धी क्रम का उल्लेख नहीं किया गया है कि पहले ज़मीन की रचना की गई फिर आसमान की रचना हुई बल्कि आशय यह है कि ज़मीन को भी अल्लाह ने बनाया है और आकाश भी उसी की रचना है। किसी और ने इन में से किसी को नहीं बनाया है (दे० सूरः अन-नाज़िआत आयत ३०, सूरः अल-बक़रः आयत २९)।

ऐसा लगता है कि पहले दो दिनों (Periods) में ज़मीन बनाई फिर दो दिनों में उसे [illegible] उस में हर तरह के ख़ज़ाने रख दिये। और इस प्रकार उस में लोगों की ज़रूरतों की पूरी सामग्री [illegible] दी। इस तरह सब चार दिन हुये। इस के बाद आसमान की ओर रुख किया जिस की सृष्टि हो चुकी थी [illegible] कि आगे कहा गया है कि वह एक धुआँ (जैसा) था। ऐसा मालूम होता है कि जिन दो दिनों में ज़मीन [illegible] भी उन ही दिनों में आसमान की भी सृष्टि हुई थी और उसे प्रारम्भिक रूप दिया जा चुका था। फि[illegible] दिनों में आसमान को वर्तमान रूप दे कर पूरा किया गया। आसमान को सात भागों में विभक्त कर के [illegible] उचित रूप से व्यवस्थित किया गया।

७ ऐसा मालूम होता है कि पहले सृष्टि-पदार्थ की रचना की, जो बिलकुल एक धुएँ का [illegible] अम्बिया आयत ३०) फिर यह पदार्थ, भाप (Gases), द्रव (Liquids) और [illegible] में परिवर्तित हुआ है। अल्लाह ने उसी पदार्थ (Primeral matter) [illegible] सौर जगत (Solar system) बना दिये। हर ग्रह और नक्षत्र [illegible] ज़मीन और हमारे शरीर का निर्माण हुआ है। आज उन तारों [illegible] तत्व पहचाने गये हैं जो इस भूमि पर सामान्य रूप [illegible]

आसमान के बारे में कहा जा रहा है यह [illegible] ने अपनी योजना के अन्तर्गत ज़मीन औ[illegible]

८ अर्थात् तुम्हें इस विशाल [illegible] आसमानों और ज़मीन के [illegible] अनुकूल है इस लिए वे [illegible]

* इस का अर्थ [illegible]

अज़ाब का मज़ा चखायेंगे, और अवश्य ही हम उन्हें सब से बुरा बदला देंगे उस कर्म का जो वे करते थे। ○ यह बदला है अल्लाह के दुश्मनों का (बदला) : (जहन्नम* की) आग। इसी में उन का सदा का घर है, इस के बदले में कि हमारी आयतों* का इन्कार करते थे। ○

जिन लोगों ने कुफ़्र* किया उन्हों ने कहा : हमारे रब* ! जिन्न* और मानव-जाति में से जिन लोगों ने हमें भटकाया उन को हमें दिखा। हम उन्हें अपने पैरों के तले (रौंद) डालें ताकि वे नीचे वालों (निकृष्टतम धरातल तक पहुँचे हुये लोगों) में से हो जायें। ○ जिन लोगों ने कहा : हमारा रब* अल्लाह है, फिर जमे रहे,[20] उन पर फ़िरिश्ते* उतरते हैं, (और कहते हैं) कि डरो नहीं और न दुःखी हो, बल्कि उस जन्नत* की ख़ुशख़बरी लो जिस का तुम से वादा किया गया था[21]। ○ हम सांसारिक जीवन में भी तुम्हारे साथी हैं और आख़िरत* में भी (तुम्हारे साथी हैं)[22]। वहाँ तुम्हारे लिए वह-कुछ है जिस को तुम्हारे जी चाहें, और वहाँ तुम्हारे लिए वह-कुछ है जिस को तुम तलब करो। ○ यह अतिथि-सत्कार है अत्यन्त क्षमाशील और दयावन्त (अल्लाह) की ओर से। ○

उस व्यक्ति से बात का अच्छा कौन हो सकता है जिस ने (लोगों को) अल्लाह की ओर बुलाया और अच्छा काम किया, और कहा : निश्चय ही मैं मुस्लिमों* में से हूँ। ○

बराबर हो ही नहीं सकती भलाई और बुराई। तुम (बुराई को) उस चीज़ से टालो जो उत्तम हो[23] फिर तुम क्या देखोगे कि तुम्हारे और जिस के बीच वैर था (वह ऐसा हो जायेगा) मानो वह कोई आत्मीय मित्र है[24]। ○ और यह बात केवल उन लोगों को प्राप्त होती है जिन्हों ने सब्र* किया, और यह बात केवल उस को प्राप्त होती है जो बड़ा भाग्यवान होता है[25]। ○

और यदि शैतान* के उकसाने से कभी तुम्हारे अन्दर उकसाहट पैदा हो, तो अल्लाह की पनाह माँगो[26]। निस्सन्देह वह (सब-कुछ) सुनने वाला और जानने वाला है। ○

---

२० दे० आयत ६।

२१ फ़िरिश्ते मृत्यु के समय या मृत्यु के पश्चात् और आख़िरत* में तो शुभ-सूचना और तसल्ली देते ही हैं, इस सांसारिक जीवन में भी एक प्रकार से उन का अवतरण होता है। अल्लाह के हुक्म से वे ईमान* वालों को भलाई और शुभ बातों की प्रेरणा देते हैं जिस से ईमान* वालों को शान्ति मिलती है और कठिनाइयों को हँसी-ख़ुशी झेल लेने का सामर्थ्य उन्हें प्राप्त हो जाता है।*

२२ सांसारिक जीवन में भी फ़िरिश्ते ईमान* वालों के साथी हैं आन्तरिक रूप से उन्हें फ़िरिश्तों* का योग प्राप्त होता है और आख़िरत* में भी फ़िरिश्ते* उन के साथ होंगे।*

२३ दे० सूरः बनी इसराईल आयत ५३।

२४ अल्लाह की ओर बुलावा देने वाले व्यक्ति को नैतिक दृष्टि से अत्यन्त उच्च होना चाहिए। वह बुराई का जवाब बुराई से नहीं भलाई से दे। उसे अत्यन्त सहनशील और कोमल स्वभाव वाला होना चाहिए। ऐसे उदार और लोक-हित चाहने वाले व्यक्तियों के व्यवहार से बड़े-से-बड़ा वैरी भी प्रभावित हुये बिना नहीं रह सकता।

२५ मतलब यह है कि कहने के लिए तो यह बहुत आसान है कि बुराई का जवाब भलाई से दो परन्तु इसे व्यवहार में लाना अत्यन्त कठिन है। इस के लिए बड़े साहस और धैर्य की आवश्यकता होती है। यह उन व्यक्तियों का काम है जिन्हें अल्लाह हिकमत (Wisdom) प्रदान करता है। जो बड़े भाग्य वाले होते हैं।

२६ अर्थात् जब शैतान इस उत्तम नीति से कि तुम बुराई का जवाब भलाई से दो तुम्हें फेरने की चेष्टा करे तो अल्लाह की ओर रुजू करो। उस की पनाह चाहो और यह समझ लो कि अल्लाह हमारा रक्षक है, बुरे आदमी की बुराई हमें कोई हानि नहीं पहुँचा सकती।*

**इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

[illegible]

उस की निशानियों में से हैं रात और दिन और सूर्य और चन्द्रमा। न सूर्य को सजदः* करो और न चन्द्रमा को; बल्कि अल्लाह को सजदः* करो जिस ने इन्हें पैदा किया, यदि (वास्तव में) तुम्हें उसी की इबादत* करनी है।○

परन्तु (हे नबी* !) यदि ये लोग अकड़ें तो (अल्लाह के यहाँ इबादत* करने वालों की कमी नहीं) जो (फ़रिश्ते*) तुम्हारे रब* के यहाँ हैं वे रात और दिन उस की तसबीह* करते हैं, और वे उकताते नहीं।○

और यह उस की निशानियों में है कि तुम देखते हो कि ज़मीन सूनी पड़ी हुई है, फिर जहाँ हम ने उस पर पानी बरसाया कि वह लहलहा उठी। निश्चय ही जिस ने इस (भूमि) को जिलाया वही मुर्दों को जीवित करने वाला है। निस्सन्देह वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है (सर्वशक्तिमान है)।○

जो लोग हमारी आयतों* में कुटिलता की नीति अपनाते हैं[२७] वे हम से छिपे हुये नहीं हैं। भला वह व्यक्ति जो आग में डाला जाये अच्छा है, या वह व्यक्ति जो क़ियामत* के दिन निश्चिन्त हो कर आये? जो चाहो करो निस्सन्देह वह देखता है जो-कुछ तुम करते हो।○

जिन लोगों ने यاददिहानी का इन्कार किया जब वह उन के पास आई — और निश्चय ही वह एक प्रताप वाली किताब है।○ असत्य उस तक न उस के आगे से आ सकता है और न उस के पीछे से[२८]। अवतरण है उस (अल्लाह) की ओर से जो हिकमत* वाला और अपने-आप प्रशंसा का अधिकारी है।○ — (उन के इन्कार पर) तुम से वही बात कही जा रही है जो उन रसूलों* से कही जा चुकी है जो तुम से पहले थे: "निस्सन्देह तुम्हारा रब* क्षमा वाला है और दुःखद दण्ड देने वाला भी"।○

और यदि हम इसे 'अजमी'[२९] क़ुरआन* रखते तो ये (काफ़िर लोग) कहते: इस की

---

२७ अर्थात् उन के साथ सही नीति नहीं अपनाते सीधी-सी बात में टेढ़ निकालने की कोशिश करते हैं ताकि लोगों को सत्य से फेर दें। अल्लाह की आयतों* की हँसी उड़ाते हैं। उन का उलटा अर्थ करते हैं। उन की ओर ध्यान नहीं देते। ओछे आक्षेप करते हैं। और यह सब-कुछ इस लिए करते हैं कि उन्हें सत्य से बढ़ कर अपनी झूठी मान-मर्यादा प्रिय है। वे अपनी तुच्छ इच्छाओं के दास बने हुये हैं।

२८ जिस किताब का रक्षक स्वयं अल्लाह है उस में असत्य का समावेश कदापि नहीं हो सकता। अतः इस किताब की शिक्षायें अटल हैं। उन में कोई बात भी सत्य के विरुद्ध नहीं। इस की शिक्षाओं के विरुद्ध कोई चाल भी सफल नहीं हो सकती। न कोई व्यक्ति आज क़ुरआन की किसी बात को सत्य के प्रतिकूल सिद्ध कर सकता है और न भविष्य में क़ुरआन की किसी बात को झुठलाया जा सकता है। (दे० बनी इसराईल आयत ८१)।

२९ 'अजमी' से अभिप्रेत वह व्यक्ति है जो अरब का न हो इसी प्रकार उस भाषा को भी 'अजमी' कहते जो अरबी के अतिरिक्त कोई और भाषा हो।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

رَبِّكَ يُسَبِّحُونَ لَهُ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْـَٔمُونَ ۝ وَ
مِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ خَاشِعَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا
الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ اِنَّ الَّذِيْٓ اَحْيَاهَا لَمُحْيِ الْمَوْتٰى اِنَّهٗ
عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا لَا
يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا اَفَمَنْ يُّلْقٰى فِي النَّارِ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ يَّاْتِيْٓ اٰمِنًا
يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ اِعْمَلُوْا مَا شِئْتُمْ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَآءَهُمْ وَاِنَّهٗ لَكِتٰبٌ عَزِيْزٌ ۝
لَّا يَاْتِيْهِ الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهٖ تَنْزِيْلٌ
مِّنْ حَكِيْمٍ حَمِيْدٍ ۝ مَا يُقَالُ لَكَ اِلَّا مَا قَدْ قِيْلَ لِلرُّسُلِ
مِنْ قَبْلِكَ اِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ وَّذُوْ عِقَابٍ اَلِيْمٍ ۝ وَ
لَوْ جَعَلْنٰهُ قُرْاٰنًا اَعْجَمِيًّا لَّقَالُوْا لَوْلَا فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ ءَاَعْجَمِيٌّ
وَّعَرَبِيٌّ قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّشِفَآءٌ وَالَّذِيْنَ
لَا يُؤْمِنُوْنَ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرٌ وَّهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى اُولٰٓئِكَ
يُنَادَوْنَ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيْدٍ ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ
فَاخْتُلِفَ فِيْهِ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ
بَيْنَهُمْ وَاِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ۝ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا
فَلِنَفْسِهٖ وَمَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝

आयतें* क्यों नहीं खोल-खोल कर बयान की गईं ? यह क्या कि एक 'अजमी' और एक अरबी[३०] ! कहो : जो लोग ईमान* लाये उन के लिए यह हिदायत* (मार्ग-दर्शन) है और शिफ़ा (आरोग्यकर) और जो ईमान* नहीं लाते उन के कानों में डाट है, और यह (.कुरआन*) उन के लिए अन्धता है। ये लोग (ऐसे हैं मानो) किसी दूर के स्थान से पुकारे जाते हैं[३१] । O

निश्चय ही हम ने मूसा को किताब* दी थी, फिर उस में विभेद किया गया; (हे नबी* !) यदि तुम्हारे रब* की ओर से एक बात पहले निश्चय न हो चुकी होती, तो उन के बीच फ़ैसला हो चुका होता;[३२] और निश्चय ही वे एक दुविधा एवं विकलता-जनक सन्देह में पड़े हुये हैं[३३] । O ४५

जिस किसी ने भलाई की तो अपने लिए, और जिस किसी ने बुराई की तो उस का वबाल भी उसी पर पड़ेगा[३४] । तुम्हारा रब* बन्दों पर .ज़ुल्म करने वाला नहीं[३५] । O

†उसी की ओर उस घड़ी (अर्थात् क़ियामत*) का ज्ञान फेरा जाता है[३६] । न तो फल अपने गाभों से निकलते हैं और न कोई स्त्री जाति गर्भवती होती है और न जनती है परन्तु उस के (अल्लाह के) ज्ञान से[३७] ।

---

३० अर्थात् आज मक्का के काफ़िर यह कहते हैं कि मुहम्मद सल्ल० अरब के रहने वाले हैं इन्हों ने स्वयं अरबी में .कुरआन गढ़ लिया है हम इसे अल्लाह की वाणी उस हालत में समझते जब कि यह अरबी से भिन्न किसी और भाषा में होता। हालाँकि यदि .कुरआन किसी दूसरी भाषा में उतरता तो फिर यही लोग कहते कि हम अरब हैं और मुहम्मद (सल्ल०) भी अरब के रहने वाले हैं अल्लाह अपना कलाम क्यों ऐसी भाषा में उतार रहा है जिसे न हम समझ सकें और न जिसे मुहम्मद (सल्ल०) समझ सकें। तात्पर्य यह है कि इन्कार करने वाले अपनी हठ-धर्मी के लिए कोई-न-कोई बात बना ही लेते हैं।*

३१ अर्थात् जैसे कोई व्यक्ति किसी को दूर से पुकारे तो वह उस की बात नहीं समझ पाता और उस की बात पर कान नहीं धरता यही हाल इन काफ़िरों का है कि हक़ की आवाज़ इन्हें सुनाई ही नहीं देती ये बिलकुल बहरे हो गये हैं।*

३२ दे० सूरः अश-शूरा आयत १४।

३३ दे० सूरः हूद आयत ११०; सूरः अल-हज्ज आयत ५५; सूरः अश-शूरा आयत १४।

३४ अर्थात् हर एक व्यक्ति की अपनी जिम्मेदारी है उस का कर्तव्य है कि वह अपनी ज़िम्मेदारी को अदा करने की कोशिश करे।

३५ अर्थात् यह ऐसा नहीं है कि बुराई तो कोई और करे और सज़ा वह किसी और को देने लग जाये।

† यहीं से पचीसवाँ पारः (Part XXV) शुरू होता है।

३६ अर्थात् क़ियामत का ज्ञान केवल अल्लाह को है। अंग्रेज़ी में इसे इस तरह कहेंगे : To Him is referred the knowledge of the Hour. अल्लाह ही उस घड़ी के बारे में कुछ बताये तो मालूम हो सकता है। उस का ज्ञान अल्लाह के सिवा और किसी को नहीं। यदि कोई बात उस के बारे में कही जा सकती है तो अल्लाह ही के हवाले से।*

३७ बताया जा रहा है कि क़ियामत की घड़ी का ज्ञान केवल अल्लाह को है। वृक्षों* (शेष अगले पृष्ठ पर)

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

إِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ وَمَا تَخْرُجُ مِن ثَمَرَاتٍ مِّنْ أَكْمَامِهَا وَ
مَا تَحْمِلُ مِنْ أُنثَىٰ وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ أَيْنَ شُرَكَائِي
قَالُوا آذَنَّاكَ مَا مِنَّا مِن شَهِيدٍ ۝ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَدْعُونَ
مِن قَبْلُ وَظَنُّوا مَا لَهُم مِّن مَّحِيصٍ ۝ لَا يَسْأَمُ الْإِنسَانُ مِن دُعَاءِ
الْخَيْرِ وَإِن مَّسَّهُ الشَّرُّ فَيَئُوسٌ قَنُوطٌ ۝ وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ رَحْمَةً مِّنَّا
مِن بَعْدِ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ هَٰذَا لِي وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً
وَلَئِن رُّجِعْتُ إِلَىٰ رَبِّي إِنَّ لِي عِندَهُ لَلْحُسْنَىٰ فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِينَ
كَفَرُوا بِمَا عَمِلُوا وَلَنُذِيقَنَّهُم مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ۝ وَإِذَا أَنْعَمْنَا
عَلَى الْإِنسَانِ أَعْرَضَ وَنَأَىٰ بِجَانِبِهِ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُو دُعَاءٍ
عَرِيضٍ ۝ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِن كَانَ مِنْ عِندِ اللَّهِ ثُمَّ كَفَرْتُم بِهِ مَنْ
أَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ ۝ سَنُرِيهِمْ آيَاتِنَا فِي الْآفَاقِ وَ
فِي أَنفُسِهِمْ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُ الْحَقُّ أَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ
أَنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝ أَلَا إِنَّهُمْ فِي مِرْيَةٍ مِّن لِّقَاءِ
رَبِّهِمْ أَلَا إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيطٌ ۝

जिस दिन वह इन (मुश्रिकों*) को पुकारेगा कि मेरे शरीक (आज) कहाँ हैं"? वे कहेंगे: हम ने तुझे बता दिया कि हम में कोई (इस बात का) साक्षी नहीं"। ○ और जिन्हें ये पहले पुकारा करते थे वे इन से खो गये होंगे, और वह समझ लेंगे कि इन के लिए बचने की कोई जगह नहीं है। ○

मनुष्य भलाई की दुआ माँगने से नहीं उकताता, और यदि उसे तकलीफ़ पहुँचे तो निराश हो जाता है और जी तोड़ बैठता है"। ○

और यदि उस तकलीफ़ के बाद जो उसे पहुँची थी हम उसे अपनी किसी दयालुता का रसास्वादन करा दें, तो कह देगा: यह तो मुझे मिलना ही था;" और मैं नहीं समझता कि वह (क़ियामत* की) घड़ी क़ायम होगी, और यदि मुझे मेरे रब* की ओर पलटाया भी गया, तो भी मेरे लिए उस के यहाँ अच्छाई है"—तो हम अवश्य बता देंगे कुफ़्र* करने वालों को जो-कुछ उन्हों ने किया है, और हम चखा देंगे उन्हें कठिन अज़ाब का मज़ा। ○

और जब हम मनुष्य पर कृपा करते हैं, तो वह किनारा खींच लेता है, और अपना पहलू फेर लेता है, और जब उसे कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो वह लम्बी-चौड़ी दुआ माँगने लगता है। ○

में जो फल लगते हैं और स्त्री जाति के गर्भाशयों में जो-कुछ होता है उसे उस का पूरा ज्ञान होता है। वह यह भी जानता है किस गर्भवती के बच्चा जनने का समय कौन सा है इसी प्रकार अल्लाह को कर्मों के परिणामों का भी पूरा ज्ञान है। जो-कुछ तुम करते हो उसे मालूम है; वह जानता है जब लोगों के कर्मों का नतीजा उन के सामने आयेगा।

३८ मनुष्य पर सब से पहला और बुनियादी हक़ अल्लाह का होता है इस लिए सब से पहला सवाल यही होगा कि अपने पैदा करने वाले (अल्लाह) के साथ तुम्हारा क्या व्यवहार रहा है। तुम उस पर ईमान* लाते थे और उसे एक जाना था या उस का इन्कार कर दिया था या उस के साथ दूसरों को भी पुकारने और उन की वंदना तथा पूजा करने लग गये थे।

अरब वाले नास्तिक न थे परन्तु मुश्रिक* थे इस लिए उन से पूछा जायेगा कि तुम ने अल्लाह के जो शरीक ठहराये थे अब वे कहाँ हैं?

३९ उस दिन वह शिर्क* का खण्डन और अपने देवताओं का इन्कार कर देंगे, वे यह नहीं कह सकेंगे कि अमुक देवता प्रभु अल्लाह के हक़ में शरीक और हिस्सेदार है।

४० मनुष्य स्वार्थ-प्रधान है वह भलाई, धन-दौलत और सांसारिक वैभव के माँगने से नहीं थकता परन्तु जब कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो अल्लाह की दयालुता से निराश हो जाता है। यह उस का छिछोरापन है [illegible] में वह उसी समय छुटकारा पा सकता है जब कि वह ईमान* लाये और कुफ़्र* की नीति को छोड़ दे। देखिए सूरः अल-मआरिज आयत १९–२४।

४१ अर्थात् वह यह नहीं समझता कि यह अल्लाह की कृपा और दया है बल्कि इसे अपना हक़ समझता और गर्व करने लगता है।

४२ यह इस भ्रम में पड़ा हुआ है कि इस लोक में वह सम्पन्न है तो आख़िरत* में भी सम्पन्न और खुशहाल होगा। हालाँकि वहाँ अल्लाह का फ़ैसला लोगों के अपने कर्मों के अनुसार होगा। वहाँ यह नहीं देखा जायेगा कि संसार में तुम्हारे पास कितना धन था और तुम कितने बड़े राज्य के अधिकारी थे [illegible] फ़ैसला इस बात का होगा कि तुम ने दुनिया में कर्म कैसे किये अच्छे या बुरे, अल्लाह के वफ़ादार रहे या अवज्ञाकारी और सरकश।

* अर्थ जानने के लिए पुस्तक के आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

कहो : देखो तो यदि यह (क़ुरआन*) अल्लाह की ओर से है फिर तुम ने इस का इन्कार किया तो कौन उस से बढ़ कर गुमराह हो सकता है जो पल्ले दरजे के विरोध में पड़ा हो[५३]।○

हम इन्हें अपनी निशानियाँ दिखायेंगे बाह्य-जगत में और स्वयं इन की आत्माओं में यहाँ तक कि इन पर खुल जाये कि यह सत्य है[५४]। क्या (हे नबी*!) तुम्हारे रब* की यह बात काफ़ी नहीं है कि वह हर चीज़ का साक्षी है? ○ जान रखो! ये लोग अपने रब* से मिलने के बारे में सन्देह में पड़े हुये हैं, जान रखो! निश्चय ही वह हर चीज़ को घेरे हुये है[५५]।○

---

५३ मतलब यह कि आज तुम जिस चीज़ को मानने से इन्कार कर रहे हो यदि वह असत्य है तो उस के मानने वालों और न मानने वालों का परिणाम एक ही होगा, परन्तु यदि वह वास्तव में अल्लाह का कलाम (वाणी) है और यह नबी* अल्लाह ही का भेजा हुआ है तो तुम्हारा क्या परिणाम होगा। क्या तुम्हारी समझ में इतनी बात भी नहीं आ रही है कि कमज़ोर पहलू तुम्हारा है या ईमान* वालों का।

५४ विश्व की प्रत्येक वस्तु से सत्य की पुष्टि होती है। दुनिया की हर चीज़ अल्लाह की निशानियों में से है। आप एक कण और अणु का निरीक्षण करें या सूर्य-चन्द्र और अन्य नक्षत्रों का हर एक इसी बात का पुख़्ता प्रमाण है कि संसार का कोई सृष्टि-कर्ता और ईश्वर है और उस ने इस सृष्टि की रचना किसी महान् उद्देश्य के अन्तर्गत की है। मनुष्य यदि स्वयं अपने अस्तित्व पर विचार करे तब भी वह इसी नतीजे पर पहुँचेगा कि वह अपने-आप नहीं पैदा हो गया है उस का कोई पैदा करने वाला अवश्य है। हज़रत मुहम्मद सल्ल० जिस चीज़ की ओर बुला रहे हैं उस के सत्य होने पर मनुष्य के अपने अस्तित्व से ले कर इस विशाल जगत की प्रत्येक वस्तु साक्षी है। अल्लाह अपने भेजे हुये रसूल* की सत्यता की पुष्टि के लिए निरन्तर प्रमाण प्रस्तुत करता रहेगा यहाँ तक कि लोग पूर्ण रूप से अनुभव कर लेंगे कि यही सत्य है जिस की ओर क़ुरआन* मानव जाति को आमन्त्रित कीया है। क़ुरआन की इस घोषणा के सत्य होने पर इस्लाम का इतिहास गवाह है कि वह बहुत जल्द दुनिया के बड़े हिस्से पर छा गया। फिर मनुष्य का ज्ञान अपने बारे में और विश्व के बारे में जितना विस्तृत होता जा रहा है क़ुरआन* की पेश की हुई सच्चाई की पुष्टि के लिए उतने ही अधिक प्रमाण मिलते जा रहे हैं। बुद्धि और विज्ञान (Science) धर्म के विरोधी नहीं हैं बल्कि वास्तव में इन से अधर्म और नास्तिकता का ही विरोध होता है।

५५ अल्लाह से कोई चीज़ छिपी हुई नहीं है। जो जैसा कर्म करता है उसे उस का ज्ञान है। हर एक को उस के सामने जाना है। वह हर एक को घेरे हुये है कोई भी उस के नियन्त्रण से निकल कर नहीं जा सकता।

* चिह्न का अर्थ आख़िर में आयी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

४२--अश-शूरा

(परिचय)

नाम (The Title)

सूरः* की आयत ३८ में ईमान* वाले लोगों के गुणों का उल्लेख करते हुये कहा गया है कि उन का काम आपस के मशवरे (सलाह) से होता है। इसी सम्बन्ध से इस सूरः का नाम 'अश-शूरा' (The Counsel) रखा गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह सूरः* कब उतरी है इस के लिए सूरः अल-मोमिन का परिचय देख लेना काफ़ी है। अनुमान है कि यह सूरः हा० मीम० अस-सजदः के बाद ही अवतीर्ण हुई है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

यह 'तौहीद'* की सूरः है, इस पहलू से कि अल्लाह ही हमारा संरक्षक-मित्र और वली है।

यह सूरः* हा० मीम० सिलसिले की उन ७ सूरतों में से तीसरी सूरः है जिन का आरम्भ सूरः अल-मोमिन से हुआ है।

सूरः* के आरम्भ में अल्लाह की महिमा का उल्लेख करते हुये नबी* सल्ल० को सम्बोधित किया गया है कि जिन लोगों ने अल्लाह को छोड़ कर दूसरों को अपना वली और संरक्षक बना लिया है उन की आप (सल्ल०) पर कोई ज़िम्मेदारी नहीं वे अपने करतूतों के स्वयं उत्तरदायी हैं। आप (सल्ल०) का काम तो केवल लोगों को एक ऐसे दिन से सचेत कर देना है जिस दिन सारे लोग इकट्ठा किये जायेंगे और उन के भाग्य का अन्तिम निर्णय होगा। लोग दो गरोहों में बँट जायेंगे एक गरोह जन्नत* में जायेगा दूसरा नारकी होगा।

फिर इस सूरः* में एक विशेष बात यह कही गई है कि अल्लाह यदि चाहता तो सारे मनुष्यों को एक ही गरोह बना देता फिर उन में कोई विभेद न होता, सब एक मार्ग पर चलते। परन्तु उस ने ऐसा नहीं किया ताकि लोगों की परीक्षा हो सके। आगे चल कर एक महत्वपूर्ण बात यह कही गई है कि अल्लाह की ओर से आया हुआ दीन* (धर्म) सदा से एक रहा है। हज़रत मुहम्मद सल्ल० को वही दीन* दिया गया है जो पिछले नबियों* और रसूलों* का दीन* रहा है। जो नूह, इबराहीम, मूसा और ईसा मसीह आदि नबियों* का दीन* रहा है (इन सब पर अल्लाह की कृपा हो)। लोगों में जो-कुछ विभेद हुआ है वह उन की अपनी शरारत का नतीजा है। अल्लाह की ओर से तो सदा एक ही मार्ग पर चलने का आदेश दिया जाता रहा है। न तो जीवन की मौलिक सचाइयों में भिन्नता पाई जाती है और न सच्चे धर्म कभी दो हो सकते हैं। मनुष्य की सफलता का मार्ग सदा से एक रहा है और सदा एक ही रहेगा। मनुष्य अपनी मंज़िल पर केवल उस रूप में पहुँच सकता है जब कि वह उस सीधे और सच्चे मार्ग को अपनाये जिसे दिखाने के लिए दुनियाँ में अल्लाह के नबी* आते रहे हैं।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

पिछली सूरः* की तरह इस सूरः में भी शिर्क* का निषेध किया गया है और अल्लाह के अनेक चमत्कारों को निशानी तथा प्रमाण के रूप में पेश किया गया है।

इस सूरः* में ईमान* वालों के दस गुणों का उल्लेख करते हुये¹ उन के आदर्श-जीवन की रूप-रेखा प्रस्तुत की गई है। इन दस विशेषताओं में पाँच विशेषतायें ऐसी हैं जिन का सम्बन्ध मनुष्य के हृदय और उस के अन्तर से है; शेष पाँच का सम्पर्क कर्म से है।

यह बात इस सूरः* में खोल कर समझा दी गई है कि अल्लाह ने सारे मनुष्यों को क्यों नहीं सत्य-प्रिय बना दिया; लोगों को सत्य के प्रति विभेद करने का अवसर क्यों मिला है जिस के कारण लोग उलटे-सीधे विभिन्न मार्गों पर चल पड़ते हैं। बताया गया कि इसी के कारण मनुष्य अल्लाह की उस विशेष दयालुता की छाया में प्रवेश पा सकता है जो केवल स्वतन्त्र मानव ही के लिए है, उस के लिए जो सोच-समझ कर पूरे ज्ञान के प्रकाश में अल्लाह के मार्ग को अपनाये; और अल्लाह ही को अपना संरक्षक और सहायक समझे। ऐसे मनुष्य को, जो स्वेच्छा-पूर्वक अल्लाह को अपना 'वली' और सरपरस्त बनाता है, अल्लाह अपने योग-दान से सीधे मार्ग पर चलाता है ऐसे व्यक्ति को अच्छे कर्म करने का श्रेय प्राप्त होता है। अल्लाह उसे अपनी विशेष दयालुता (रहमत) की छाया में ले लेता है। रहे वे लोग जो अल्लाह को छोड़ कर दूसरों को अपना स्वामी और संरक्षक समझते हैं वे अपनी स्वतन्त्रता का दुरुपयोग करते हैं। अल्लाह उन्हें कभी अपनी 'रहमत' में दाखिल नहीं करेगा।

सूरः के अन्त में दो महत्वपूर्ण बातों का उल्लेख हुआ है :*

एक यह कि मुहम्मद सल्ल० अपने आरम्भिक ४० वर्षों तक 'किताब'* और ईमान* की समस्याओं, वार्ताओं आदि से बिलकुल अपरिचित थे। फिर सहसा इन चीज़ों के साथ आप (सल्ल०) का दुनियाँ के सामने आना इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि आप (सल्ल०) को अल्लाह ने अपना नबी* बनाया है और आप को 'किताब' और 'ईमान'* का ज्ञान प्रदान किया है।

दूसरे यह कि अल्लाह ने आप (सल्ल०) को शिक्षा उन ही तरीक़ों से दी है जिन तरीक़ों से दूसरे समस्त नबियों* को शिक्षा दी गई थी। एक वह्य*, दूसरे परदे के पीछे से आवाज़ और तीसरे फ़िरिश्ते* के द्वारा। यह बात खोल कर इस लिए बता दी गई ताकि लोग इस बात को भली-भाँति जान लें कि नबियों* को अल्लाह की ओर से आदेश किन तरीक़ों से दिये जाते हैं।

---

¹ दे० आयत ३६-४३।

*इस पर अर्थ आखिर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अश-शूरा

(मक्का में उतरी — आयतें* ५३)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
حٰمٓ ۝ عٓسٓقٓ ۝ كَذٰلِكَ يُوْحِىٓ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ
اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَهُوَ
الْعَظِيْمُ ۝ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يُسَبِّحُوْنَ
بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِى الْاَرْضِ اَلَآ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَفُوْرُ
الرَّحِيْمُ ۝ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ اللّٰهُ حَفِيْظٌ عَلَيْهِمْ
وَمَا اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝ وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا
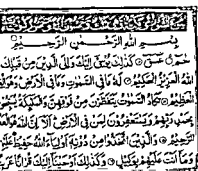
हा० मीम० । ○ ऐन० सीन० क़ाफ़०[1] । ○ इसी तरह अल्लाह, अपार शक्ति का मालिक और हिकमत* वाला तुम्हारी ओर (हे मुहम्मद !) वह्य* कर रहा है और उन (रसूलों*) की ओर भी (वह्य*) करता रहा है जो तुम से पहले थे। ○ उसी का है जो-कुछ आसमानों में है और जो-कुछ ज़मीन में है, और वही सर्वोच्च और अत्यन्त महिमाशाली है। ○ क़रीब है कि आसमान अपने ऊपर से फट पड़ें[2] और फ़िरिश्ते* अपने रब* की प्रशंसा (हम्द*) के साथ तसबीह* करते हैं और ज़मीन में जो लोग हैं उन के लिए क्षमा की प्रार्थना करते हैं[3] । जान रखो ! अल्लाह ही बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है। ○ और जिन लोगों ने उस के सिवा (दूसरों को) संरक्षक-मित्र बना रखा है, अल्लाह उन की निगरानी कर रहा है,[4] और तुम उन के ज़िम्मेदार नहीं हो[5] । ○

और इसी तरह (हे नबी* !) हम ने तुम्हारी ओर अरबी (भाषा में) क़ुरआन वह्य* किया है, ताकि तुम बस्तियों के केन्द्र[6] को और उस के चारों ओर रहने वालों को सचेत करो, और सचेत करो एक इकट्ठा होने के दिन से जिस में कोई सन्देह नहीं। एक गरोह जन्नत* में

---

१ दे० सूरः अल-बक़रः फ़ुटनोट १।

२ दे० सूरः मरयम आयत ८८-६१।
मतलब यह है कि शिर्क* इतना बड़ा ज़ुल्म है कि यदि इस पर आसमान फट पड़े तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। यह कोई साधारण बात नहीं है कि किसी को अल्लाह के प्रभुत्व में साझी ठहराया जाये। अल्लाह के सिवा दूसरों को संकट में पुकारा जाये और उस से प्रार्थनायें की जायें, उन्हें कार्य-साधक और अपना दुःख निवारक समझा जाये। दूसरों को अल्लाह का बेटा या बेटी बना कर उन्हें ईश्वर का समकक्ष ठहराया जाये। यह तो अल्लाह की कृपा है कि वह लोगों को दुनिया में सँभलने का मौक़ा देता है। यह अपराध तो ऐसा है कि आसमान से बिजली टूट पड़े, ऐसा वज्रपात हो कि अपराधी-जन विनष्ट हो कर रह जायें।

३ ज़मीन पर यदि अल्लाह के अवज्ञाकारी अपने रब* की शान में गुस्ताख़ी करते और उस का शरीक ठहराते हैं, तो फ़िरिश्ते* रब का गुणगान करते हैं वे जानते हैं कि भूमि पर यदि मनुष्य अल्लाह के सिवा दूसरों को अपना अभीष्ट पूज्य समझ रहा है तो यह उस का अपने रब* के साथ विद्रोह है। वे समझते हैं कि मनुष्य के इस घोर अन्याय और अत्याचार पर किसी समय भी अल्लाह का अज़ाब उतर सकता है इस लिए वे ज़मीन पर बसने वालों के लिए क्षमा की प्रार्थना करते हैं कि इन पर अभी अज़ाब न उतारा जाये इन्हें सँभलने की मुहलत दी जाये।

४ दे० आयत ४८।

५ तुम्हारा काम तो केवल यह है कि पूरा-पूरा हमारा सन्देश पहुँचा दो। समय आने पर हम उन का हिसाब चुका देंगे। हम लोगों के करतूतों से बेख़बर नहीं हैं। उन के अच्छे-बुरे काम हमारे सामने हैं।

६ अर्थात् मक्का।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

وَتُنْذِرَ أُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنْذِرَ يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيْهِ
فَرِيْقٌ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيْقٌ فِي السَّعِيْرِ ۝ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَهُمْ أُمَّةً
وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ وَالظّٰلِمُوْنَ مَا
لَهُمْ مِّنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝ أَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ أَوْلِيَآءَ ۚ فَاللّٰهُ
هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يُحْيِ الْمَوْتٰى وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَمَا
اخْتَلَفْتُمْ فِيْهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهٗٓ إِلَى اللّٰهِ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبِّيْ عَلَيْهِ
تَوَكَّلْتُ ۖ وَإِلَيْهِ أُنِيْبُ ۝ فَاطِرُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ؕ جَعَلَ لَكُمْ
مِّنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا وَّمِنَ الْأَنْعَامِ أَزْوَاجًا ۚ يَذْرَؤُكُمْ فِيْهِ ؕ لَيْسَ
كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ۝ لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَ
الْأَرْضِ ۚ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ إِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝
شَرَعَ لَكُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا وَصّٰى بِهٖ نُوْحًا وَّالَّذِيْٓ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ

(जायेगा), और एक गरोह (जहन्नम* की) दहकती आग में[7] । ○

यदि अल्लाह चाहता तो उन को एक ही समुदाय कर देता,[8] परन्तु वह जिसे चाहता है अपनी 'रहमत' (दयालुता की छाया) में दाख़िल करता है। और जो ज़ालिम हैं उन का न कोई संरक्षक-मित्र है और न सहायक[9] । ○ क्या इन्हों ने उस के सिवा (दूसरों को) संरक्षक-मित्र बना रखा है ? सो अल्लाह ही (कार्यसाधक और) संरक्षक-मित्र है। और वही मुरदों को जीवित करता है, और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है (सर्वशक्तिमान् है) । ○

(कह दो कि) जिस चीज़ में (मुश्रिको* !) तुम विभेद करते हो, उस का फ़ैसला अल्लाह ही के हवाले है। वही अल्लाह मेरा रब* है, उसी पर मैं ने भरोसा किया है, और उसी की ओर मैं रुजू करता हूँ। ○ आसमानों और ज़मीन का बनाने वाला है। उसी ने तुम्हारे लिए स्वयं तुम से[10] जोड़े बनाये, और चौपायों के जोड़े भी (बनाये), वह तुम्हें इस प्रकार फैलाता और बढ़ाता है। उस-जैसी कोई चीज़ नहीं; और वह (सब-कुछ) सुनने और देखने वाला है। ○

आसमानों और ज़मीन (के ख़ज़ानों) की कुञ्जियाँ उसी के पास हैं। जिस के लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है और (जिस के लिए चाहता है) नपी-तुली कर देता है[11] । निस्सन्देह वह हर चीज़ का जानने वाला है। ○

उस ने तुम्हारे लिए वही दीन*[12] निर्धारित किया है जिस की ताकीद उस ने नूह को की थी, और जिस की वह्य* (हे मुहम्मद !) हम ने तुम्हारी ओर की है, और जिस की ताकीद हम ने इबराहीम और मूसा और ईसा को की (इस हुक्म के साथ) कि दीन* को क़ायम रखो, और इस में फूट न डालो। मुश्रिकों* पर वह चीज़ भारी है जिस की ओर तुम उन्हें बुलाते हो। अल्लाह जिसे चाहता है अपनी ओर छाँट लेता है, और जो उस की ओर रुजू (प्रवृत्त) होता है उसे अपनी ओर (आने की) राह दिखा देता है। ○

और उन लोगों ने विभेद इस के बाद किया कि उन के पास ज्ञान पहुँच चुका था,[13]

---

७ उस दिन समस्त लोग दो गरोहों में विभक्त होंगे। एक गरोह जन्नत* में दाख़िल* होगा दूसरा गरोह दोज़ख़ में जायेगा।

८ दे० सूरः यूनुस आयत ६६; सूरः अस-सज्दः आयत १३।

९ अल्लाह की 'रहमत' जिस में वह अपने बन्दों को दाख़िल करना चाहता है कोई मामूली दरजे की चीज़ नहीं है यह तो ऊँचे दरजे की चीज है, जो उन ही लोगों के हिस्से में आयेगी जो स्वेच्छापूर्वक बन्दगी की राह अपनायें, अल्लाह ही को अपना 'वली' समझें और उस परीक्षा में पूरे उतरें जिस में उत्तीर्ण हुये बिना कोई व्यक्ति अल्लाह की विशेष 'रहमत' में दाख़िल नहीं हो सकता। जो लोग अल्लाह को छोड़ दूसरों को अपना 'वली' (संरक्षक-मित्र) बनाते हैं उन का वास्तव में कोई वली और सहायक नहीं। अल्लाह के सिवा जिन को वे वली बनाते हैं उन्हें यह सामर्थ्य ही प्राप्त नहीं कि वे किसी को सफलता प्रदान कर सकें।

१० दे० सूरः अन-निसा फुट नोट २।

११ और यह सब-कुछ उस की हिकमत* के अन्तर्गत होता है।

१२ अर्थात् तौहीद* का दीन* जो सभी नबियों* का दीन* रहा है।

१३ अर्थात् उन के पास अल्लाह की किताब आ चुकी थी (दे० सूरः हा० मीम० अस-सज्दः आयत ४५) अब वे अपने करतूतों के ख़ुद ज़िम्मेदार हैं। इस से बढ़ कर अत्याचार क्या होगा कि (शेष अगले पृष्ठ पर)

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

[illegible]

परस्पर ज़्यादती करने के लिए (उन्हों ने ऐसा किया);'' और (हे नबी*!) यदि तुम्हारे रब* की ओर से एक नियत समय के लिए बात पहले से निश्चित न हो चुकी होती, तो उन के बीच फ़ैसला कर दिया गया होता''। और जो लोग उन के बाद किताब* के वारिस हुये वे उस की ओर से एक दुविधा एवं विकलता-जनक सन्देह में पड़े हुये हैं।○

तो इसी (दीन*) की ओर (हे मुहम्मद*!) बुलाओ। और जमे रहो जैसा कि तुम्हें हुक्म दिया गया है, और उन की (तुच्छ) इच्छाओं का पालन न करो, और कहो : अल्लाह ने जो किताब* भी उतारी है मैं उस पर ईमान* लाया, और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं तुम्हारे बीच इन्साफ़ करूँ। अल्लाह हमारा रब* है और तुम्हारा रब* भी। हमारे लिए हमारे कर्म हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे कर्म;'' हमारे और तुम्हारे बीच कोई झगड़ा नहीं''। अल्लाह हम सब को (एक दिन) इकट्ठा करेगा, और उसी की ओर (सब को) जाना है'' । ○ ११

जो लोग अल्लाह के (दीन* के) बारे में हुज्जत (झगड़ा) करते हैं'' जब कि उस की पुकार सुनी जा चुकी है'' उन की हुज्जत उन के रब* की दृष्टि में हल्की है,'' ग़ज़ब (प्रकोप) है उन पर और उन के लिए सख़्त अज़ाब है।○

अल्लाह ही है जिस ने हक़ के साथ किताब* उतारी, और तुला''। तुम्हें क्या मालूम!

दीन* के स्पष्ट नियमों और शिक्षाओं से हट कर नये-नये धर्म और पन्थ बना लिये जायें।

१४ अर्थात् उन्हों ने जो विभेद किया और सत्य को छोड़ कर विभिन्न मार्गों पर चल पड़े तो इस के पीछे कोई नेक इरादा नहीं काम कर रहा था, यह उन के ज़ुल्म, ज़्यादती और पारस्परिक द्वेष और शत्रुता ही का नतीजा था। दीन* और धर्म को स्वार्थवश उन्हों ने भ्रष्ट किया।

१५ अर्थात् दुनिया ही में उन सब लोगों को अज़ाब उतार कर विनष्ट कर दिया जाता जिन्हों ने तरह-तरह की गुमराहियाँ निकालीं या जिन्हों ने जानते-बूझते उन का साथ दिया। केवल उन ही लोगों को बचाया जाता जो सत्य पर चलने वाले होते। और दुनिया देख लेती कि कौन हक़ पर है और कौन असत्य का पुजारी था। परन्तु यह दो टोक फ़ैसला तो आख़िरत* ही में होगा। इस लोक में तो लोगों की परीक्षा अभीष्ट है।

१६ अर्थात् हम में से प्रत्येक अपने कर्मों का ज़िम्मेदार है। जो भला करेगा अपना ही भला करेगा और जो व्यक्ति बुराई की राह अपनायेगा वह अपना ही बुरा करेगा दूसरे का कुछ नहीं बिगाड़ेगा।

१७ समझाने का जो हक़ था वह हम ने अदा कर दिया अब अपना भला-बुरा तुम ख़ुद समझ सकते हो, हम व्यर्थ में तुम से उलझना नहीं चाहते।

१८ वह स्वयं फ़ैसला कर देगा कि कौन दुनिया में सत्य-मार्ग पर चला है और कौन सच्चाई को छोड़ कर असत्य का ग्राहक हुआ है।

१९ यह संकेत मक्का वालों की ओर है जो ईमान* लाने वालों के दुश्मन बने हुये थे। और चाहते थे कि किसी तरह वे कुफ़्र* और अज्ञान की ओर पलट आयें और मुहम्मद (सल्ल०) का साथ छोड़ दें।

२० अर्थात् जब कि बहुत से लोग ईमान* ला चुके हैं और अल्लाह का दीन* कोई नया दीन नहीं रह गया है फिर भी वे उस में झगड़े निकाले चले जा रहे हैं।

(२१, २२ अगले पृष्ठ पर)

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

اللّٰهُ ۗ وَلَوْلَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۗ وَإِنَّ الظّٰلِمِينَ لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ تَرَى الظّٰلِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا كَسَبُوا وَهُوَ وَاقِعٌۢ
بِهِمْ ۗ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِي رَوْضٰتِ الْجَنّٰتِ ۚ لَهُمْ مَا
يَشَاءُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ۝ ذٰلِكَ الَّذِي
يُبَشِّرُ اللّٰهُ عِبَادَهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۗ قُلْ لَا أَسْأَلُكُمْ
عَلَيْهِ أَجْرًا إِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبٰى ۗ وَمَنْ يَقْتَرِفْ حَسَنَةً نَزِدْ لَهُ
فِيهَا حُسْنًا ۚ إِنَّ اللّٰهَ غَفُورٌ شَكُورٌ ۝ أَمْ يَقُولُونَ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ
كَذِبًا ۚ فَإِنْ يَشَإِ اللّٰهُ يَخْتِمْ عَلٰى قَلْبِكَ ۗ وَيَمْحُ اللّٰهُ الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ
الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهِ ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ وَهُوَ الَّذِي يَقْبَلُ
التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَعْفُوا عَنِ السَّيِّئَاتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ۝
وَيَسْتَجِيبُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَيَزِيدُهُمْ مِنْ فَضْلِهِ ۚ
وَالْكٰفِرُونَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۝ وَلَوْ بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهِ
لَبَغَوْا فِي الْأَرْضِ وَلٰكِنْ يُنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَا يَشَاءُ ۚ إِنَّهُ بِعِبَادِهِ خَبِيرٌۢ
بَصِيرٌ ۝ وَهُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِنْۢ بَعْدِ مَا قَنَطُوا وَيَنْشُرُ
رَحْمَتَهُ ۚ وَهُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيدُ ۝ وَمِنْ آيٰتِهِ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ
وَمَا بَثَّ فِيهِمَا مِنْ دَابَّةٍ ۚ وَهُوَ عَلٰى جَمْعِهِمْ إِذَا يَشَاءُ قَدِيرٌ ۝
وَمَا أَصَابَكُمْ مِنْ مُصِيبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ وَيَعْفُوا

कदाचित् वह (फ़ैसले की) घड़ी क़रीब ही (आ लगी) हो[23] । ○ उस की जल्दी वही लोग मचाते हैं जो उस पर ईमान* नहीं रखते, और जो लोग उस पर ईमान* रखते हैं वे उस से डरते हैं और जानते हैं कि वह सत्य है। जान रखो! जो लोग उस (क़ियामत* की) घड़ी के बारे में झगड़ते हैं, वे परले दरजे की गुमराही में पड़े हुये हैं। ○

अल्लाह अपने बन्दों की ज़रा-ज़रा सी चीज़ का ख़याल रखता है[24]। जिसे (जितना) चाहता है रोज़ी देता है। और वह बलवान और अपार शक्ति का मालिक है। ○

जो कोई आख़िरत* की खेती चाहता होगा, हम उसे उस की खेती में बढ़ोतरी प्रदान करेंगे। और जो कोई दुनियाँ की खेती चाहता होगा, उसे उस में से देंगे, और उस का आख़िरत* में कोई हिस्सा नहीं। ○

क्या इन लोगों के कुछ (गढ़े हुये) शरीक हैं जिन्हों ने इन के लिए कोई ऐसा दीन* निर्धारित कर दिया है[25] जिस की अनुज्ञा अल्लाह ने नहीं दी? और यदि फ़ैसले की बात (पहले ही निश्चित) न हो गई होती तो इन के बीच फ़ैसला हो जाता। और निश्चय ही ज़ालिमों के लिए दुःखदायी अज़ाब है। ○ (हे नबी*!) तुम इन ज़ालिमों को देखोगे कि इन्हों ने जो-कुछ कमाया उस से डर रहे होंगे, और वह इन पर पड़ कर रहेगा; और जो लोग ईमान* लाये और अच्छे काम किये वे जन्नत* के हरे-भरे (ललित) चमनों में होंगे, उन के लिए उन के रब* के यहाँ वह सब-कुछ है जो वे चाहेंगे यही बड़ा फ़ज़्ल है। ○

यही है वह शुभ-सूचना जो अल्लाह अपने उन बन्दों को देता है जो ईमान* लायें और अच्छे काम करें। (हे नबी*!) कहो : मैं इस का तुम से कोई बदला नहीं माँगता अगर कुछ चाहता हूँ तो रिश्ते-नाते का प्रेम-भाव[26] जो कोई नेकी कमायेगा हम उस के लिए उस में और

---

२१ अल्लाह के यहाँ उस का कोई मान नहीं है। वह बिलकुल कमज़ोर और व्यर्थ है।

२२ अर्थात् न्याय और इन्साफ़ के क़ानून और नियम। धर्म विधान को तुला इस लिए कहा गया कि वह तराज़ू की तरह तोल कर हक़ और नाहक़, सत्य और असत्य, न्याय और अन्याय के अन्तर को खोल कर बता देता है।

२३ इस लिए जिस किसी को सँभलना हो सँभल जाये। फ़ैसले की घड़ी को दूर समझ कर ग़ाफ़िल रहना ठीक नहीं।

२४ इस सूरः की आयत २०-२२ और सूरः बनी इसराईल की आयत १८-२१ में बड़ी अनुरूपता पाई जाती है।

२५ अर्थात् अल्लाह तो सदैव से सत्य धर्म की शिक्षा देता रहा है, जिन को ये मुश्रिक पूजते हैं क्या उन्हों ने भी इन के लिए कोई दीन* निर्धारित किया है? ज़ाहिर है कि उन्हों ने किसी दीन* और धर्म की शिक्षा नहीं दी फिर क्यों ये अल्लाह के रास्ते को छोड़ कर अँधेरे में भटके जा रहे हैं!*

अल्लाह के सिवा दूसरे मनुष्यों के गढ़े हुये धर्म, विधान और नियम आदि को — जो अल्लाह के दिये हुये आदेशों के विरुद्ध हैं जिन को अल्लाह की आज्ञा के बिना गढ़ लिया गया है — स्वीकार करना भी उसी तरह शिर्क है जैसे अल्लाह को छोड़ कर दूसरों के आगे सजदः करना और उन्हें संकट में पुकारना शिर्क* है।*

(२६ अगले पृष्ठ पर)

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

३८ : २७, २८	सृष्टि की रचना निरुद्देश्य नहीं और भले और बुरे मनुष्य बराबर नहीं हो सकते। इस वास्तविकता की माँग है कि आख़िरत होनी चाहिए।
४१ : ३९	अल्लाह सूखी ज़मीन को पानी से हरा-भरा कर देता है। इसी तरह वह मुरदों को जिलाने की शक्ति भी रखता है।
४४ : ३८-४२	ज़मीन-आसमान को खेल के तौर पर पैदा नहीं किया है, इसलिए आख़िरत होना ज़रूरी है।
४५ : २१, २२	अच्छे-बुरे बराबर नहीं हो सकते। न्याय का तक़ाज़ा है कि आख़िरत होनी चाहिए।
४६ : ३३	अल्लाह मुरदों को दोबारा ज़िन्दा करने की शक्ति रखता है।
४६ : १-१४	जातियों पर अज़ाब का आना क़ियामत के होने की दलील है।
७७ : १-७	" " "
५६ : ५७-६२	अल्लाह को सृष्टिकर्त्ता मानना और फिर आख़िरत का इन्कार करना सही नहीं।
७५ : ३६-४०	बुद्धि, चेतना और अधिकार देने के बाद मनुष्य को यों ही नहीं छोड़ दिया जाएगा, इसके लिए आख़िरत ज़रूरी है :
७८ : १-१८	नेमतों के मिलने के बाद पूछ-गाछ ज़रूरी है। इसके लिए आख़िरत होगी।
८६ : ५-८	मनुष्य की सृष्टि में उसके मरने के बाद के जीवन का प्रमाण है।
९५ : ७, ८	अल्लाह के सम्प्रभुत्व का तक़ाज़ा है कि आख़िरत हो।

(५) हिसाब-किताब

२ : २८४,	अल्लाह दिलों की बातों का भी हिसाब लेगा।
३ : ३०	क़ियामत के दिन मनुष्य की अच्छाई और बुराई सब सामने आएगी।
७ : ७-९	क़ियामत के दिन कर्म तौले जाएँगे।
१० : ४	न्याय के साथ बदला दिया जाएगा।
११ : १११	क़ियामत के दिन सबको कर्मों का पूरा-पूरा बदला मिलेगा।
१४ : ५१	अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।
१६ : ९३	तुम जो कुछ करते हो, उसके बारे में तुमसे ज़रूर पूछा जाएगा।
१६ : १११	उस दिन किसी पर ज़्यादती नहीं की जाएगी।
१७ : १३, १४	हर व्यक्ति अपना कर्म-पत्र पढ़कर ख़ुद ही अपना हिसाब समझ लेगा।
१७ : ७१, ७२	जिनके कर्म-पत्र दाँए हाथ में दिए जाएँगे, वे ख़ुशी-ख़ुशी इसे पढ़ेंगे।
१८ : ४९	कर्म पुस्तक खोलकर रख दी जाएगी। मनुष्य कहेगा कि इसमें तो कुछ भी नहीं छूटा।
१८ : १०४-१०६	काफ़िरों के कर्म अकारथ जाएँगे।
२१ : ४७	उस दिन न्याय की तराज़ू खड़ी होगी और किसी का कोई हक़ मारा नहीं जाएगा।
२३ : १०२	जिसकी नेकी के पलड़े भारी होंगे वही सफल होगा।
२३ : १०३, १०४	जिनके पलड़े हल्के होंगे वे दोज़ख़ में जाएँगे।
२७ : ८९, ९०	जो भले काम करके आएगा, उसके लिए अच्छा बदला तैयार है और जो

अच्छाई बढ़ा देंगे। निस्सन्देह अल्लाह बड़ा क्षमाशील और क़द्र करने वाला (गुणग्राहक) है।○

क्या ये लोग कहते हैं कि इस व्यक्ति ने अल्लाह से संबन्ध लगा कर एक झूठ गढ़ा है! तो यदि अल्लाह चाहे, तो (हे नबी*!) तुम्हारे दिल पर ठप्पा लगा दे[२७]। और अल्लाह असत्य को मिटाता और सत्य को जमाव प्रदान करता है अपने शब्दों से। निस्सन्देह वह सीनों (अर्थात् दिलों) की बात को जानने वाला (अन्तर्यामी) है।○

वही है जो अपने बन्दों की तौबः* क़बूल करता है, और बुराइयों (अर्थात् गुनाहों) को क्षमा कर देता है, और वह जानता है जो-कुछ तुम करते हो।○ और वे लोग क़बूल करते हैं[२८] जो ईमान* लाये और अच्छे काम किये, और वह उन पर अपना और ज़्यादा फ़ज़्ल करता है। और जो काफ़िर* हैं उन के लिए सख़्त अज़ाब है।○

अल्लाह यदि अपने (सब) बन्दों के लिए रोज़ी कुशादा कर देता तो वे अवश्य ज़मीन में सरकशी करने लगते, परन्तु वह एक अन्दाज़े से जो चाहता है उतारता है। निस्सन्देह वह अपने बन्दों की ख़बर रखने वाला और उन्हें देखने वाला है।○

वही है जो लोगों के निराश हो जाने के पश्चात् मेंह बरसाता, और अपनी दयालुता को फैला देता है[२९]। और वही है संरक्षक-मित्र[३०] और अपने-आप प्रशंसा का अधिकारी।○

उस की निशानियों में से है पैदा करना आसमानों और ज़मीन का, और जो प्राणधारी

---

२६ अर्थात् मैं तुम से कुछ नहीं माँगता, मैं तो बस यह चाहता हूँ कि तुम उस चीज़ को अपना लो जिसे ले कर मैं अल्लाह की ओर से आया हूँ। अल्लाह की ओर से मैं तुम्हें जिस चीज़ की ओर बुलाता हूँ वह यह है कि तुम नाते-रिश्ते का ख़याल रखो। नातेदारों में एक का दूसरे पर हक़ होता है, जिसे अदा करना ज़रूरी है। नातेदारों के साथ अच्छा व्यवहार करो। दुःख और संकट में उन के काम आओ। उन पर ज़ुल्म व ज़्यादती न होने पाये।

नबी सल्ल० जिस दीन* की ओर लोगों को बुला रहे थे उस की एक मौलिक शिक्षा तो यह है कि अल्लाह को एक माना जाये और केवल उसी एक की बन्दगी और इबादत* की जाये। दूसरी शिक्षा उस की यह है कि अल्लाह के बन्दों के साथ हमारा व्यवहार अच्छा हो; हम उन के हक़ पहचानें। उन से हमें प्रेम हो। फिर जन-साधारण में जो हमारे नातेदार और क़रीबी लोग हैं उन का हक़ और ज़्यादा है।

इस आयत में दीन* की एक मौलिक शिक्षा का उल्लेख हुआ है। एक दूसरी जगह इन ही शब्दों में दीन* (धर्म) की दूसरी मौलिक शिक्षा पर भी प्रकाश डाला गया है। सूरः अल-फ़ुरक़ान आयत ५७ में कहा गया है: कह दो: "मैं इस (काम) पर तुम से कोई बदला नहीं माँगता, सिवाय इस के कि जो कोई चाहे अपने रब* की ओर (जाने का) रास्ता ग्रहण कर ले"। दीन* की दोनों शिक्षाओं में गहरा सम्बन्ध है। यही दोनों मौलिक शिक्षायें काबः* के निर्माण का भी मूल उद्देश्य हैं।

नबी सल्ल० से एक मौक़े पर अम्र-बिन अ़-ब-सः ने पूछा: आप कौन हैं? आप ने कहा कि मैं नबी* हूँ। पूछा नबी क्या होता है? आप (सल्ल०) ने कहा: अल्लाह ने मुझे सन्देशवाहक बना कर भेजा है। पूछा क्या सन्देश दे कर भेजा है? आप (सल्ल०) ने उत्तर दिया: "नाते-रिश्ते का ख़याल रखा जाये, मूर्तियाँ तोड़ दी जायें और अकेले अल्लाह की इबादत* हो। किसी को उस का साझी न बनाया जाये"। नबी सल्ल० के इस कथन से विदित है कि आप की नुबूवत* के दो मुख्य उद्देश्य थे। एक यह कि लोग अपने रब* को पहचान लें, उस के सिवा किसी और की उपासना और बन्दगी न करें। दूसरे यह कि नाते-रिश्ते आदि का लिहाज़ रखा जाये।

२७ और तुम सत्कर न हो सकोगे; परन्तु तुम सच्चे नबी* हो अल्लाह तुम्हारे दिल पर ठप्पा नहीं लगा सकता।

२८ इस का एक अर्थ यह भी किया गया है कि अल्लाह उन लोगों की दुआओं को क़बूल करता है जो ईमान* लाये और अच्छे काम किये।

२९ अर्थात् ऐसा होता है कि लोग वर्षा से बिलकुल निराश हो चुके होते हैं कि इस वर्षा कर के अपनी दयालुता के चिह्न हर ओर बिखेर देते हैं। भूमि हरी-भरी हो जाती है। फल-फूल अधिक मात्रा में पैदा होते हैं।

३० अर्थात् वही है जो सृष्टि के जीव आदि की ज़रूरतों को पूरी करता है उस के सिवा कोई दूसरा नहीं है जो किसी का 'वली' और सरपरस्त बन सके।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

उस ने दोनों जगह (आसमानों और ज़मीन) में फैला रखे हैं[31]। और जब चाहे सब को इकट्ठा कर सकता है[32]। ○

और जो मुसीबत तुम्हें पहुँची, तो वह तुम्हारे हाथों की कमाई के कारण। और वह बहुत से (गुनाह) तो क्षमा कर देता है[33]। ○ तुम ज़मीन में बच निकलने वाले नहीं हो, और न अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई संरक्षक-मित्र है और न कोई सहायक[34]। ○

और उस की निशानियों में से समुद्र में चलते जहाज़ हैं, जो पहाड़ों जैसे लगते हैं, ○ यदि वह चाहे तो हवा को ठहरा दे और वे उस (समुद्र) की पीठ पर खड़े-के-खड़े रह जायें[35] —निश्चय ही इस में हर धैर्यवान् और कृतज्ञता दिखलाने वाले के लिए बड़ी निशानियाँ हैं ○ —या (चाहे तो) उन (जहाज़ों) को उन (जहाज़ वालों) की कमाई के कारण तबाह कर दे और बहुतों को क्षमा भी कर दे। ○ —और वे लोग जो हमारी आयतों* में झगड़ते हैं जान लें कि उन के लिए बचने की कोई जगह नहीं। ○

(लोगो!) तुम्हें जो-कुछ भी दिया गया है वह तो सांसारिक जीवन की अल्पकालिक सुख-सामग्री है, और जो-कुछ अल्लाह के पास है वह उत्तम और अधिक स्थायी है उन लोगों के लिए जो ईमान* लाये और अपने रब पर भरोसा रखते हैं, ○ और जो बड़े-बड़े गुनाहों[36] और अश्लील बातों से बचते हैं, और जब उन्हें ग़ुस्सा (क्रोध) आता है, तो वे क्षमा कर देते हैं, ○ और जिन्हों ने अपने रब की सुनी और नमाज़* क़ायम की, और जिन का काम आपस के मशविरे (सलाह) से होता है,[37] और जो-कुछ हम ने उन्हें दिया है उस में से (अल्लाह की राह में) ख़र्च करते हैं, ○ और जो ऐसे हैं कि जब उन पर ज़्यादती होती है, तो उस का मुक़ाबिला करते हैं,[38] ○

---

३१ इस से मालूम होता है कि ज़मीन की तरह आसमानों में भी प्राणधारी पाये जाते हैं।

३२ अर्थात् जो सब को फैलाने का सामर्थ्य रखता है वह इकट्ठा भी कर सकता है।

३३ अर्थात् जो मुसीबतें तुम पर आ रही हैं, वह इस लिए कि तुम सँभल जाओ। अल्लाह यदि तुम्हारे सब अपराधों पर तुम्हें पकड़ने लग जाता तो तुम्हें विनष्ट ही कर देता।

यहाँ यह बात भी समझ लेने की है कि सच्चे ईमान वालों और अल्लाह के आज्ञाकारी बन्दों पर जो संकट और मुसीबत आती है वह अल्लाह के दूसरे नियम के अन्तर्गत आती है। अल्लाह उन मुसीबतों के कारण अपने सच्चे बन्दों की ख़ताओं और कोताहियों को क्षमा कर देता है। और जो मुसीबतें अल्लाह की राह में पेश आती हैं वे न केवल यह कि गुनाहों का कफ़्फ़ारः* बनती हैं बल्कि उन के द्वारा अल्लाह अपने बन्दों के दरजे भी बढ़ाता है।*

नबी सल्ल० ने कहा है कि मुस्लिम व्यक्ति को जो दुःख, चिन्ता, तकलीफ़ और परेशानी पेश आती है, यहाँ तक कि एक काँटा भी यदि उसे चुभता है तो अल्लाह उस को उस की किसी-न-किसी ख़ता का कफ़्फ़ारः बना देता है।*

३४ दे० सूरः अल-अनकबूत आयत २२।

३५ आज के भाप से चलने वाले जहाज़ भी उसी की दया से चलते हैं वह चाहे तो भाप को बेकार कर दे और जहाज़ समुद्र में खड़े-के-खड़े रह जायें।

३६ अर्थात् वे गुनाह जिन से अल्लाह ने सख़्ती से रोका है; और जिन के बारे में सख़्त धमकी दी गई है। और वह गुनाह भी बड़ा गुनाह है जो सरकशी और विद्रोह की भावना से किया जाये चाहे देखने में वह छोटा ही क्यों न लगता हो। बड़े गुनाहों के अलावा ईमान वाले छोटे गुनाहों से भी बचते हैं।*

३७ यह ईमान वालों की विशेषता है कि वे अहंकारी और अभिमानी नहीं होते जीवन सम्बन्धी मामलों में और विशेष रूप से उन मामलों में जो सामाजिक जीवन से सम्बन्ध रखते हैं वे अपनी सम्मति और राय पर आग्रह नहीं करते बल्कि लोगों की सलाह और परामर्श से काम करते हैं। डिक्टेटर बनने की भावना ईमान* वाला व्यक्ति कदापि नहीं रखता।* (३८ अगले पृष्ठ पर)

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

مثلها فمن عفا وأصلح فأجره على الله إنه لا يحب الظلمين ولمن انتصر بعد ظلمه فأولئك ما عليهم من سبيل إنما السبيل على الذين يظلمون الناس ويبغون في الأرض بغير الحق أولئك لهم عذاب أليم ولمن صبر وغفر إن ذلك لمن عزم الأمور ومن يضلل الله فما له من ولي من بعده وترى الظلمين لما رأوا العذاب يقولون هل إلى مرد من سبيل وتراهم يعرضون عليها خشعين من الذل ينظرون من طرف خفي وقال الذين آمنوا إن الخسرين الذين خسروا أنفسهم وأهليهم يوم القيمة ألا إن الظلمين في عذاب مقيم وما كان لهم من أولياء ينصرونهم من دون الله ومن يضلل الله فما له من سبيل

बुराई का बदला उसी जैसी बुराई है[39]। फिर जो क्षमा कर दे और सुधार करे, तो उस का बदला अल्लाह के ज़िम्मे है। निस्सन्देह वह ज़ालिमों को पसन्द नहीं करता। ○ और जो अपने ऊपर ज़ुल्म किए जाने के बाद बदला ले लें तो ऐसे लोगों के विरुद्ध (उलाहना की) कोई राह नहीं। ○ (उलाहना की) राह तो केवल उन के विरुद्ध है जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं, और ज़मीन में नाहक़ उपद्रव मचाते हैं। यही लोग हैं जिन के लिए दुखदायी अज़ाब है।○

और जो सब्र* करे और क्षमा कर दे तो निश्चय ही यह बड़े साहस के कामों में से है[40]।○

और जिस व्यक्ति को अल्लाह ही गुमराह कर दे, तो उस के बाद उस का कोई संरक्षक-मित्र नहीं[41]। और तुम ज़ालिमों को देखोगे जब वे अज़ाब को देखेंगे, तो कहेंगे : क्या लौटने की भी कोई राह है ? ○ और तुम उन्हें देखोगे कि वे इस (आग) के सामने इस दशा में लाये जायेंगे कि अपमान से झुके होंगे, दबी-दबी निगाहों से देखते होंगे। और ईमान* लाने वाले कहेंगे : निश्चय ही घाटे में पड़ने वाले वही लोग हैं जो क़ियामत* के दिन अपने-आप को और अपने घर वालों को घाटे में डाल बैठे[42]। जान रखो ! निश्चय ही ज़ालिम स्थायी अज़ाब में पड़े रहेंगे।○

और उन के कोई संरक्षक-मित्र न होंगे जो उन की सहायता कर सकें सिवाय अल्लाह के[43]। जिसे अल्लाह गुमराह करे, उस के लिए कोई राह नहीं।○

---

३८ अर्थात् वे सब्र* करते और क्षमा से काम लेते हैं परन्तु ज़ालिमों और अत्याचारियों के आगे वे कभी झुकने वाले नहीं। यदि कोई अपनी शक्ति के गर्व में उन पर हाथ बढ़ाता है तो डट कर उन का मुक़ाबिला करते हैं। वे कमज़ोरों के लिए क्षमाशील और दयावान् हैं परन्तु ज़ालिमों से वे कभी दबते नहीं।

३९ अर्थात् वे बदला लेते हैं तो बस उतना ही जितनी किसी ने उन के साथ बुराई की होती है उस से ज़्यादा बदला वे नहीं लेते। बुराई और ज़ुल्म का बदला लेना जायज़ तो है परन्तु जैसा कि आगे आ रहा है। यदि कोई बुराई का जवाब भलाई से दे, तो यह अल्लाह को ज़्यादा पसन्द है। इस से वह बुरा आदमी भी प्रभावित हुये बिना नहीं रह सकता।

४० आयत ३६ से आयत ४३ तक ईमान* वालों के दस गुणों का उल्लेख हुआ है। ये दस गुण वास्तव में इस्लामी सभ्यता के आधार-स्तम्भ हैं। इन के बिना न किसी सुखमय एवं निर्मल जीवन की कल्पना की जा सकती है और न इन के बिना किसी उत्तम एवं श्रेष्ठ राजनीति की कल्पना ही सम्भव है। किताब* वालों ने जब विभेद किया और धर्म के विषय में विभिन्न मार्गों पर चल पड़े तो अल्लाह ने उन से ये गुण छीन लिये। ईमान* वालों को इस सिलसिले में सावधान रहना चाहिए। इन दस विशेषताओं में मौलिक गुण सब्र और धैर्य है। धैर्य से विभिन्न गुणों और विशेषताओं का आविर्भाव होता है।

४१ जो उसे सँभाल सके। दे० सूरः अन-निसा फुट नोट ४८; अल-अनआम फुट नोट ८, ११, १५।

४२ दे० सूरः अज़-ज़ुमर आयत १५।

४३ अर्थात् वहाँ अल्लाह के सिवा कोई किसी के काम आने वाला नहीं। ये मुश्रिक* लोग अल्लाह को छोड़ कर जिस किसी को पुकारते और पूजते हैं वे उन की कुछ भी सहायता न कर सकेंगे। दे० आयत ८।

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

مِّن سَبِيلٍ ۝ وَتَرَاهُمْ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا خَاشِعِينَ مِنَ الذُّلِّ يَنظُرُونَ
مِن طَرْفٍ خَفِيٍّ ۗ وَقَالَ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ الْخَاسِرِينَ الَّذِينَ خَسِرُوا
أَنفُسَهُمْ وَأَهْلِيهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ أَلَا إِنَّ الظَّالِمِينَ فِي عَذَابٍ مُّقِيمٍ ۝
وَمَا كَانَ لَهُم مِّنْ أَوْلِيَاءَ يَنصُرُونَهُم مِّن دُونِ اللَّهِ ۗ وَمَن يُضْلِلِ
اللَّهُ فَمَا لَهُ مِن سَبِيلٍ ۝ اسْتَجِيبُوا لِرَبِّكُم مِّن قَبْلِ أَن يَأْتِيَ يَوْمٌ
لَّا مَرَدَّ لَهُ مِنَ اللَّهِ ۚ مَا لَكُم مِّن مَّلْجَإٍ يَوْمَئِذٍ وَمَا لَكُم مِّن نَّكِيرٍ ۝
فَإِنْ أَعْرَضُوا فَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ۖ إِنْ عَلَيْكَ إِلَّا الْبَلَاغُ ۗ
وَإِنَّا إِذَا أَذَقْنَا الْإِنسَانَ مِنَّا رَحْمَةً فَرِحَ بِهَا ۖ وَإِن تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ
بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ فَإِنَّ الْإِنسَانَ كَفُورٌ ۝ لِّلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَ
الْأَرْضِ ۚ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ يَهَبُ لِمَن يَشَاءُ إِنَاثًا وَيَهَبُ لِمَن يَشَاءُ
الذُّكُورَ ۝ أَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَإِنَاثًا ۖ وَيَجْعَلُ مَن يَشَاءُ عَقِيمًا ۚ إِنَّهُ
عَلِيمٌ قَدِيرٌ ۝ وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ أَن يُكَلِّمَهُ اللَّهُ إِلَّا وَحْيًا أَوْ مِن وَرَاءِ
حِجَابٍ أَوْ يُرْسِلَ رَسُولًا فَيُوحِيَ بِإِذْنِهِ مَا يَشَاءُ ۚ إِنَّهُ عَلِيٌّ حَكِيمٌ ۝
وَكَذَٰلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ رُوحًا مِّنْ أَمْرِنَا ۚ مَا كُنتَ تَدْرِي مَا الْكِتَابُ
وَلَا الْإِيمَانُ وَلَٰكِن جَعَلْنَاهُ نُورًا نَّهْدِي بِهِ مَن نَّشَاءُ مِنْ عِبَادِنَا ۚ
وَإِنَّكَ لَتَهْدِي إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝ صِرَاطِ اللَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي
السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ أَلَا إِلَى اللَّهِ تَصِيرُ الْأُمُورُ ۝

अपने रब* की मानो[४४] इस से पहले कि अल्लाह की ओर से वह दिन आ जाये जो टलने वाला नहीं। उस दिन तुम्हारे लिए न कोई पनाह की जगह होगी, और न तुम कोई आवाज़ उठा सकोगे। ○

फिर यदि ये मुँह मोड़ें, तो हम ने तुम्हें इन पर निगहबान बना कर नहीं भेजा है[४५]। तुम्हारे ज़िम्मे तो बस (सन्देश) पहुँचा देना है[४६]।

और हम जब मनुष्य को अपनी ओर से दयालुता का रसास्वादन कराते हैं तो वह फूला नहीं समाता — और यदि उन्हें उस के कारण जो-कुछ कि उन्हों ने अपने हाथों आगे भेजा है, कोई मुसीबत पहुँच जाती है, तो (वे निराश हो जाते हैं, मनुष्य कितना अधीर है) — निस्सन्देह मनुष्य बड़ा ही कृतघ्न है[४७]। ○

आसमानों और ज़मीन का राज्य अल्लाह ही का है। जो चाहता है पैदा करता है। जिसे चाहता है बेटियाँ देता है, और जिसे चाहता है बेटे देता है; ○ या उन्हें बेटे और बेटियाँ दोनों देता है, और जिसे चाहता है बाँझ कर देता है। निस्सन्देह वह बड़ा ज्ञान वाला और सामर्थ्यवान् है[४८]। ○

[४९]कोई मनुष्य ऐसा नहीं कि अल्लाह (उस के सम्मुख हो कर) उस से बातें करे किन्तु वह्य* के द्वारा (ऐसा सम्भव है) या परदे के पीछे से, या किसी सन्देशवाहक (अर्थात् फ़िरिश्ते*) को भेज दे तो वह उस की अनुमति से जो वह चाहे वह्य* कर दे[५०]। निस्सन्देह वह सर्वोच्च और हिकमत* वाला है। ○

और इसी तरह हम ने (हे मुहम्मद!) 'रूह' (अर्थात् क़ुरआन*) अपने हुक्म से तुम्हारी

४४ अर्थात् अपने रब* का कहना मान लो; अपने रब* से मामला दुरुस्त कर लो। मौत की घड़ी आ जाने के बाद तुम्हारी कोई चीज़ क़बूल न होगी। अपने पकड़े जाने से पहले अल्लाह की ओर पलट आओ बाद में तुम्हारा क्षमा की प्रार्थना करना बिलकुल बेकार होगा।

४५ अर्थात् तुम पर यह ज़िम्मेदारी नहीं डाली गई है कि तुम इन्हें अवश्य सत्य-मार्ग पर ला के रहो यदि ये राह पर नहीं आते तो इस के बारे में तुम नहीं पकड़े जाओगे बल्कि ये ज़ालिम स्वयं अपने करतूतों का मज़ा चखेंगे।

४६ अर्थात् तुम्हारा काम केवल यह है कि तुम हमारा सन्देश लोगों तक पहुँचा दो। तुम्हारी ज़िम्मेदारी यह कदापि नहीं है कि तुम इन्हें सीधे मार्ग पर ला कर ही रहो।

४७ यहाँ छिछोरे और नीच प्रकृति के मनुष्यों की एक बहुत बड़ी कमज़ोरी बयान की गई है। सुख में तो वे अल्लाह को भूल जाते हैं और समझते हैं कि हमें जो-कुछ प्राप्त है वह हमारी अपनी योग्यता का फल है। ऐसा व्यक्ति अल्लाह के आगे कृतज्ञता दिखलाने के बदले इतराने लगता है; परन्तु उस पर उसी के कर्मों के परिणाम-स्वरूप कोई मुसीबत आ जाती है तो फिर अल्लाह से निराश हो जाता है।

४८ इस लिए उसे छोड़ कर दूसरे के आगे झुकना उस से अपनी मुरादें माँगना और उसे संकट में टेरना घोर अन्याय नहीं तो और क्या है।

४९ सूरः को समाप्त करते हुये फिर उसी विषय पर प्रकाश डाला गया है जिस का उल्लेख आरम्भ में किया गया है। दे० आयत ?।

(५० अगले पृष्ठ पर)

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

और वह्य* की⁵⁰। तुम नहीं जानते थे कि किताब* क्या चीज़ है, और न ईमान*⁵¹ (के बारे में जानते थे कि वह क्या है)। परन्तु हम ने इसे प्रकाश बनाया है कि इस के द्वारा हम अपने बन्दों में से जिसे चाहते हैं (सीधी) राह दिखाते हैं। और निस्सन्देह तुम तो (हे मुहम्मद!) एक सीधा मार्ग दिखा रहे हो⁵²। ○ उस अल्लाह का मार्ग जिस का वह सब-कुछ है जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है। जान रखो! सारे मामले अल्लाह ही की ओर पहुँचते हैं।○

---

५० अर्थात् यह किताब इस तरह नहीं उतर रही है कि नबी* सल्ल० से अल्लाह साक्षात रूप से बातें करता है। मनुष्य में यह शक्ति नहीं। बल्कि किताब* के अवतरित होने की तीन शक्लें हैं :

(१) वह्य* अथवा दैवी प्रकाशन के द्वारा। वह्य* सूक्ष्म संकेत को कहते हैं। अर्थात् जिसे इशारा किया गया हो वही समझे दूसरा न समझे। वह्य* वह चीज़ है जो अल्लाह की ओर से बन्दे के दिल में डाली जाती है या स्वप्न में कुछ बताया जाता है। नबियों* की वह्य* कुछ इस प्रकार की होती है कि उस के सत्य और अल्लाह की ओर से होने में कोई सन्देह नहीं रहता।

(२) परदे के पीछे से आवाज़ आये। सामने कोई दिखाई न दे जैसे तूर पर्वत पर हज़रत मूसा अ० से अल्लाह ने बातें की थीं। एक वृक्ष से अचानक आवाज़ आनी शुरू हो गई परन्तु बोलने वाला उन की निगाह से ओझल था।

(३) अल्लाह की ओर से कोई फ़िरिश्तः* आ कर अल्लाह का सन्देश पहुँचाये जैसे नबी सल्ल० के पास हज़रत जिबरील अ० अल्लाह का सन्देश ले कर आते थे। फ़िरिश्तः* आ कर नबी* को बताता है कि अल्लाह की ओर से ये बातें अवतरित हुई हैं। यह वह्य* की वह शक्ल है जिस के द्वारा समस्त आसमानी किताबें नबियों* तक पहुँची हैं।

५१ सूरः के अन्त में फिर वह बात दोहरायी जा रही है जो सूरः के आरम्भ में कही गई थी अर्थात् यह कुरआन के उतारने वाले हम हैं।

५२ यहाँ ईमान* से अभिप्रेत वह हिक्मत* है जो अल्लाह की ओर से नबियों* को प्रदान होती है। हिक्मत* का सम्पर्क ज्ञान, कर्म और हृदयावस्था तीनों से है।

नबी सल्ल० को नबी* होने से एक क्षण पहले भी यह नहीं मालूम था कि किताब* और ईमान* की वास्तविकता क्या है। यह आप के सच्चे होने का सब से बड़ा प्रमाण है। जो व्यक्ति स्वयं नबी* बनना चाहता है वह बहुत पहले से इस की तैयारी में लग जाता है। परन्तु इस के विपरीत नबी* सल्ल० की ज़ुबान से ४० वर्ष की आयु तक कोई ऐसी बात किसी ने नहीं सुनी जिस से यह अनुमान किया जा सके कि आप (सल्ल०) अपने मन में नबी* होने की कामना कर रहे थे या यह कि आप इस के लिए उचित समय की प्रतीक्षा कर रहे थे। आप (सल्ल०) के नबी* होने का यह एक बड़ा प्रमाण है कि आप (सल्ल०) सहसा अपने नबी* होने की घोषणा करते हैं और लोगों को सत्य की ओर बुलाने लग जाते हैं।

५३ नबी सल्ल० ने दुनिया को जो मार्ग दिखाया है वही अल्लाह का बताया हुआ ऐसा मार्ग है जिस पर चल कर मनुष्य अपने जीवन को सफल बना सकता है। इसी मार्ग पर चलने का आमन्त्रण समस्त नबियों* और महापुरुषों ने दिया है। दूसरे रास्तों पर चल कर मनुष्य कभी अपनी मंज़िल तक नहीं पहुँच सकता। दूसरे रास्ते मनुष्य को भटकाते और विपरीत दिशा में ले जाते हैं उसे उस की वास्तविक मंज़िल तक नहीं पहुँचाते।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

४३-अज़-.ज़ुख़रुफ़

(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः* का नाम 'अज़-.ज़ुख़रुफ़' सूरः की आयत* ३५ से लिया गया है। सूरः का यह नाम केवल एक चिह्न के रूप में रखा गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह सूरः* कब अवतीर्ण हुई है, इस का उल्लेख सूरः ४० (अल-मोमिन) के परिचय में किया जा चुका है। यह वह समय था जब कि लोग नबी सल्ल० की जान के दुश्मन हो गये थे। रात-दिन काफ़िर* इसी चिन्ता में पड़े हुये थे कि किसी तरह आप (सल्ल०) के जीवन का अन्त कर दिया जाये (दे० आयत ७६-८०)।

वार्तायें

प्रस्तुत सूरः* 'तौहीद'* की सूरः है, इस पहलू से कि अल्लाह की दयालुता पूर्ण है। उस के मुक़ाबिले में न कोई मित्रता काम आने वाली है और न किसी की सिफ़ारिश काम देगी। इस सूरः* में उन लोगों के लिए डरावा और चेतावनी है जो दुनियाँ में ग़लत नीति अपना कर अल्लाह के आदेशों का तिरस्कार करते हैं।

यह सूरः* हा० मीम० सिलसिले की चौथी सूरः है। यह सिलसिला सूरः ४० से आरम्भ हो कर सूरः ४६ पर समाप्त होता है। इन सात सूरतों के विषयों में बड़ी समानता पाई जाती है।

प्रस्तुत सूरः जैसा कि ऊपर आ चुका 'तौहीद'* की सूरः है। इस सूरः में .क़ुर-आन और क़ियामत आदि का उल्लेख करते हुये मुश्रिकों* की धारणाओं और विचारों का खण्डन किया गया है। एक ओर यदि अरब के मुश्रिकों* की इस धारणा का कि फ़िरिश्ते* अल्लाह की बेटियाँ हैं निषेध किया गया है तो दूसरी ओर ईसाइयों* के इस विचार का कि मसीह (अ०) अल्लाह के बेटे हैं, तर्क-युक्त खण्डन किया गया है। इस सूरः में अल्लाह का एक विशेष नाम 'रहमान' (अत्यन्त कृपा-शील) बार-बार आया है। इस प्रकार लोगों को इस बात की शिक्षा दी गई है कि अल्लाह सब से बढ़ कर कृपाशील और दयावान है उसी से लोगों को अपना सम्बन्ध जोड़ना चाहिए। उसे छोड़ कर दूसरों पर भरोसा करना मूर्खता और भ्रम है।

प्रस्तुत सूरः* में मक्का के काफ़िरों* की उस नीति का उल्लेख करते हुये जो उन्हों ने अल्लाह के रसूल* के मुक़ाबिले में अपना रखी थी चेतावनी दी गई है। उन्हें सचेत करने और ईमान* वालों को ढारस देने के लिए ऐतिहासिक दृष्टान्त भी दिये गये हैं। इस सिलसिले में हज़रत इबराहीम, हज़रत मूसा और फ़िरऔन और हज़रत ईसा और उन की जाति वालों का क़िस्सा बयान किया गया है फिर लोगों को एक ऐसे दिन से डराया गया है जो ज़ालिमों के लिए अत्यन्त दुःख का दिन होगा। उस दिन वही लोग आराम पायेंगे जो दुनियाँ में अल्लाह का डर रखते थे। रहे काफ़िर* और मुश्रिक* तो वे उस दिन अज़ाब का मज़ा चखने के लिए होंगे और उन के आपस के सारे सम्बन्ध और नाते टूट चुके होंगे।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अज़-.ज़ुख़रुफ़

(मक्का में उतरी — आयतें* ८९)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

حمٓ ۝ وَالْكِتَابِ الْمُبِينِ ۝ إِنَّا جَعَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝ وَإِنَّهُ فِي أُمِّ الْكِتَابِ لَدَيْنَا لَعَلِيٌّ حَكِيمٌ ۝ أَفَنَضْرِبُ عَنكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا أَن كُنتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِينَ ۝ وَكَمْ أَرْسَلْنَا مِن نَّبِيٍّ فِي الْأَوَّلِينَ ۝ وَمَا يَأْتِيهِم مِّن نَّبِيٍّ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝ فَأَهْلَكْنَا أَشَدَّ مِنْهُم بَطْشًا وَمَضَىٰ مَثَلُ الْأَوَّلِينَ ۝ وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ۝ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَجَعَلَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝ وَالَّذِي نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ فَأَنشَرْنَا بِهِ بَلْدَةً مَّيْتًا ۚ كَذَٰلِكَ تُخْرَجُونَ ۝ وَالَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُم مِّنَ الْفُلْكِ وَالْأَنْعَامِ مَا تَرْكَبُونَ ۝ لِتَسْتَوُوا عَلَىٰ ظُهُورِهِ ثُمَّ تَذْكُرُوا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ إِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَتَقُولُوا سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَٰذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ ۝ وَإِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنقَلِبُونَ ۝ وَجَعَلُوا لَهُ مِنْ عِبَادِهِ جُزْءًا ۚ إِنَّ الْإِنسَانَ لَكَفُورٌ مُّبِينٌ ۝ أَمِ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ بَنَاتٍ وَأَصْفَاكُم بِالْبَنِينَ ۝ وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُم بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمَٰنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ۝ أَوَمَن يُنَشَّأُ فِي الْحِلْيَةِ وَهُوَ فِي الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِينٍ ۝

हा० मीम० ।○ क़सम है इस स्पष्ट किताब* की,[१] ○ निश्चय ही हम ने इसे अरबी (भाषा का) .क़ुरआन बनाया है ताकि तुम समझो।○ और निश्चय ही यह (.क़ुरआन) जो हमारे यहाँ मूल किताब में (अंकित) है[३] बड़े ऊँचे दरजे का और हिकमत* से भरा है,○ तो क्या इस लिए कि तुम मर्यादा-हीन लोग हो हम इस याददिहानी (अर्थात् .क़ुरआन*) का रुख़ तुम से हटा लेंगे?○

कितने रसूल* हम ने पहले लोगों में भेजे।○ और जो नबी* भी उन के पास आया उन्हों ने उस की हँसी ही उड़ाई।○ तो हम ने विनष्ट कर दिए इन से अधिक प्रबल लोगों को;[४] और पहलों की मिसाल गुज़र चुकी है।○

और यदि तुम (हे मुहम्मद!) इन से पूछो कि आसमानों और ज़मीन को किस ने पैदा किया, तो अवश्य कहेंगे : इन्हें उसी अपार शक्ति के मालिक और (सब-कुछ) जानने वाले ने पैदा किया है।○ जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को गहवारा (पालना) बनाया,[५] और उस में तुम्हारे लिए रास्ते

१ दे० सूरः अल-बक़रः, फुट नोट १।

२ यहाँ .क़ुरआन की क़सम इस बात पर खाई गई है कि यह किताब किसी मनुष्य की रचना नहीं है ... यह अल्लाह की ओर से उतरी है और इस का सबूत यह किताब .ख़ुद है आवश्यकता केवल इस बात की है कि आदमी समझ-बूझ से काम ले।

३ असल या मूल किताब से अभिप्रेत 'लौह मह.फ़ूज़' अथवा अमर पट्टिका है (दे० सूरः अल-बुरूज ... आयत) जो सम्पूर्ण ज्ञान और समस्त आसमानी किताबों का उद्गम (Original source) है। ... .क़ुरआन सुरक्षित रहेगा ... को पहुँच नहीं हो सकती। .क़ुरआन का रक्षक स्वयं अल्लाह है इस लिए .क़ुरआन ... लुप्त कर सकता है और न इस में कोई परिवर्तन ही सम्भव है। 'लौह मह.फ़ूज़' की वास्तविकता को हम नहीं समझ सकते। इस का सम्बन्ध परोक्ष लोक से है।

४ अर्थात् वे लोग भी हमारे अज़ाब से बच न सके जो मक्का वालों से अधिक प्रबल थे। ... कुफ़्र* की राह अपनाई तो अल्लाह की पकड़ से उन्हें कोई बचा न सका। इन को चाहिए कि ... जातियों के वृत्तान्तों से शिक्षा ग्रहण करें।

५ दूसरी जगहों पर ज़मीन को फ़र्श कहा गया है। यहाँ पालना कहा गया है। अर्थात् जैसे ... आराम से पालने में लेटा हुआ होता है वैसे ही इस पृथ्वी को अल्लाह ने तुम्हारे लिए आराम ... जो वायुमण्डल में विलम्बित है, जो १००० मील प्रति घण्टा की चाल से अपनी धुरी पर ... के साथ ६६६०० मील प्रति घण्टा की चाल से सूर्य का चक्कर लगा रही है ... है।

अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

وَجَعَلُوا الْمَلَائِكَةَ الَّذِينَ هُمْ عِبَادُ الرَّحْمَٰنِ إِنَاثًا ۚ أَشَهِدُوا خَلْقَهُمْ
سَتُكْتَبُ شَهَادَتُهُمْ وَيُسْأَلُونَ ○ وَقَالُوا لَوْ شَاءَ الرَّحْمَٰنُ مَا عَبَدْنَاهُم
مَّا لَهُم بِذَٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۖ إِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ○ أَمْ آتَيْنَاهُمْ كِتَابًا
مِّن قَبْلِهِ فَهُم بِهِ مُسْتَمْسِكُونَ ○ بَلْ قَالُوا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ
وَإِنَّا عَلَىٰ آثَارِهِم مُّهْتَدُونَ ○ وَكَذَٰلِكَ مَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ فِي
قَرْيَةٍ مِّن نَّذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ
وَإِنَّا عَلَىٰ آثَارِهِم مُّقْتَدُونَ ○ قَالَ أَوَلَوْ جِئْتُكُم بِأَهْدَىٰ مِمَّا
وَجَدتُّمْ عَلَيْهِ آبَاءَكُمْ ۖ قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُم بِهِ كَافِرُونَ ○ فَانتَقَمْنَا
مِنْهُمْ ۖ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ○ وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ
وَقَوْمِهِ إِنَّنِي بَرَاءٌ مِّمَّا تَعْبُدُونَ ○ إِلَّا الَّذِي فَطَرَنِي فَإِنَّهُ
سَيَهْدِينِ ○ وَجَعَلَهَا كَلِمَةً بَاقِيَةً فِي عَقِبِهِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ○
بَلْ مَتَّعْتُ هَٰؤُلَاءِ وَآبَاءَهُمْ حَتَّىٰ جَاءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُولٌ مُّبِينٌ ○
وَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوا هَٰذَا سِحْرٌ وَإِنَّا بِهِ كَافِرُونَ ○ وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ
هَٰذَا الْقُرْآنُ عَلَىٰ رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيمٍ ○ أَهُمْ يَقْسِمُونَ رَحْمَتَ
رَبِّكَ ۚ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُم مَّعِيشَتَهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ
فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُم بَعْضًا سُخْرِيًّا ۗ وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ
مِّمَّا يَجْمَعُونَ ○ وَلَوْلَا أَن يَكُونَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَن

१० बनाये, कदाचित् तुम राह पाओ; ○ और जिस ने आसमान से एक अन्दाज़े से पानी बरसाया, फिर हम ने उस से निर्जीव भू-भाग को जिला उठाया। इसी तरह तुम (क़ियामत* में) निकाले जाओगे; ○ और जिस ने हर प्रकार की चीज़ें पैदा कीं, और तुम्हारे लिए नौकायें और चौपाये बनाये जिन पर तुम सवारी करते हो। ○ ताकि तुम उन की पीठ पर जम कर बैठो, फिर जब तुम उन पर बैठो तो अपने रब* का एहसान याद करो, और कहो : महिमावान् है वह जिस ने हमारे लिए इन्हें काम पर लगाया, और हम इन्हें बस में करने की शक्ति नहीं रखते थे; ○ और निश्चय ही हम अपने रब* की ओर लौटने वाले हैं[६]। ○

और इन्हों ने उस के बन्दों में से उस का अंश (अर्थात् औलाद) बना डाला[७]। निश्चय ही मनुष्य १५ खुला कृतघ्न है। ○

क्या जो-कुछ उस ने पैदा किया है उस में से स्वयं तो बेटियाँ लीं, और बेटे सब-के-सब तुम्हें दे दिये[८]। ○

जिस चीज़ का सम्बन्ध ये रहमान से जोड़ते हैं उसी की मंगल-सूचना जब इन में से किसी को दी जाती है, तो उस के मुँह पर कलौंस छा जाती है और वह जी-ही-जी में घुटता रहता है[९]* : ○ क्या वह जो आभूषणों (के शृंगार) में पलती है वादविवाद में ठीक से बोल भी नहीं पाती[१०]। ○

और इन्हों ने फ़िरिश्तों* को जो 'रहमान'* के बन्दे हैं स्त्री जाति ठहरा रखा है। क्या ये उन की सृष्टि के समय मौजूद थे[११]? इन की गवाही लिख ली जायेगी और इन से पूछ होगी[१२]। ○ और ये कहते हैं : यदि 'रहमान'* चाहता; तो हम उन फ़िरिश्तों* को न २० पूजते[१३] इन्हें इस का कुछ ज्ञान नहीं। ये तो बस अटकल दौड़ाते हैं[१४]। ○

---

६ इस में इस बात की ओर संकेत है कि दुनिया में हर सफ़र पर जाते हुये याद कर लेना चाहिए कि आगे एक और सफ़र, आख़िरत का सफ़र भी है।*

नबी सल्ल० जब सफ़र पर जाने के लिए सवारी पर बैठते तो अल्लाह की महिमा का वर्णन करते फिर यह आयत पढ़ते और अपने रब* से दुआयें भी माँगते।*

७ अर्थात् अल्लाह के बन्दे को उस की औलाद ठहरा लिया है। अल्लाह के गुण और अधिकार में दूसरों को शरीक किया जा रहा है।

८ अल्लाह का सहजातीय कोई नहीं हो सकता इस लिए उस के लिए औलाद ठहराना अज्ञान की बात है। फिर ये मुश्रिक लोग अल्लाह के लिए औलाद भी ठहराते हैं तो बेटियाँ हालांकि स्वयं ये बेटियों की अपेक्षा अपने लिए बेटे ही पसन्द करते हैं। नैतिक दृष्टि से ये कितने गिर चुके हैं।*

९ अरबों में लड़की पैदा होने पर ख़ुश नहीं होते थे। किसी को दामाद बनाना भी उन के विचार में लज्जा की बात थी।

१० अरब में अधिकतर पूजा देवियों की होती थी। 'लात', 'मनात' और 'उज़्ज़ा' सब देवियाँ थीं जिन को अरब वाले पूजते थे। फ़िरिश्तों को स्त्री जाति समझते थे और कहते थे कि वे* (शेष अगले पृष्ठ पर)

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

नहीं, बल्कि मैं ने इन (मक्का वालों) को और इन के पूर्वजों को जीवन-सुख भोगने दिया यहाँ तक कि इन के पास सत्य आ गया[18] और खुला रसूल*।○ और जब इन के पास सत्य (क़ुरआन) आया तो कहने लगे: यह जादू है, और हम तो इस को मानने से इन्कार करते हैं।○ और कहा: यह क़ुरआन* इन दो बस्तियों में से किसी बड़े आदमी पर क्यों नहीं उतारा गया[19] ?○

क्या तुम्हारे रब* की दयालुता को बाँटते हैं[20] ? हम ने सांसारिक जीवन में इन के बीच इन की जीविका बाँटी है, और हम ने इन में एक को दूसरे पर दरजों में उन्नता प्रदान की ताकि इन में एक दूसरे से काम लेता रहे;[21] और तुम्हारे रब* की दयालुता (अर्थात् नुबूवत*) उस से उत्तम है जिसे ये समेट रहे हैं।○

और यदि यह बात न होती कि सब लोग एक गरोह हो जायेंगे, तो जो लोग 'रहमान'* को नहीं मानते उन के लिए हम उन के घरों की छतें, चाँदी की कर देते और सीढ़ियाँ जिन से वे ऊपर चढ़ते,○ और उन के घरों के दरवाज़े होते (चाँदी के) और तख़्त जिन पर ये तकिया लगा कर बैठते,○ और शोभा एवं सजावट का आयोजन[22]। और यह सब, कुछ नहीं केवल सांसारिक जीवन की सामग्री है। और आख़िरत* तुम्हारे रब* के यहाँ डरने वालों के लिए है।○

और जो व्यक्ति 'रहमान'* के 'ज़िक्र' की ओर से अन्धा बना रहे, हम उस पर एक शैतान* नियुक्त कर देते हैं सो वह उस का पार्श्ववर्ती (साथी) बन जाता है;○ और निश्चय ही वे (शैतान*) उन्हें (सीधे) मार्ग (पर आने) से रोकते हैं, और वे (काफ़िर*) समझते हैं कि हम

---

१८ अर्थात् क़ुरआन, वह्य दे० सूरः अद-दुख़ान आयत १२।*

१९ अर्थात् यदि अल्लाह को क़ुरआन उतारना था तो वह 'मक्का' या 'ताइफ़' के किसी बड़े सरदार पर उतारता। यह कैसे हो सकता है कि धनी और प्रतिष्ठित व्यक्तियों को छोड़ कर वह एक ऐसे व्यक्ति को नबी बनाये जिस के पास न अधिक धन है और न कोई बड़ी सम्पत्ति है।*

२० दयालुता से अभिप्रेत यहाँ नुबूवत है। मतलब यह कि नुबूवत* तक़सीम करना अल्लाह ही का काम है किसी और का नहीं। जब दुनिया की रोज़ी और जीविका तक की तक़सीम किसी दूसरे के ज़िम्मे अल्लाह ने नहीं की तो नुबूवत* की तक़सीम को वह लोगों की राय पर कैसे छोड़ देगा। वही है जिसे चाहता अधिक रोज़ी प्रदान करता है और जिस की रोज़ी चाहता है तंग कर देता है। उसी ने जिसे 'नुबूवत'* के योग्य समझा उसे नबी* बना दिया।*

२१ मालूम हुआ कि आर्थिक दृष्टि से दुनिया में लोगों के बीच जो अन्तर पाया जाता है वह अन्तर यों ही निरर्थक नहीं है। यदि आर्थिक दृष्टि से सब लोग एक हैसियत के होते, तो दुनिया का काम न चल सकता। फिर कोई किसी के काम न आ सकता। हर व्यक्ति यही चाहता कि उसे ऊँची जगह दी जाये। जो काम मेहनत और मशक़्क़त के हैं उन्हें कौन करता ? फिर न सड़कें और नहरें निकाली जा सकती थीं और न धरती पर रेल गाड़ियाँ दौड़ सकती थीं। नैतिक दृष्टि से उन्नति करने का अवसर भी न मिलता। दीन-दुखियों और निर्धनों की सहायता कर के मनुष्य नैतिक दृष्टि से अपने को ऊँचा उठाता है। ग़रीबों की परीक्षा इस में है कि वे ग़रीबी में सब्र और सन्तोष से काम ले कर अल्लाह को याद करते हैं या नहीं। धनवान् लोगों की परीक्षा इस बात में है कि वे धन पा कर अभिमानी बन जाते हैं और ग़रीबों और दुःखियों की ख़बर नहीं लेते या वे दुनिया में अल्लाह के ख़ज़ाँची बन कर रहते हैं और अच्छे कार्य में अपना धन लगाते और ग़रीबों और मुहताजों के काम आते हैं।

२२ अर्थात् जिस धन को काफ़िर बड़ाई का चिह्न समझते हैं अल्लाह की निगाह में उस की कोई क़ीमत नहीं है नबी सल्ल० ने कहा है कि यदि अल्लाह के नज़दीक दुनिया का मूल्य मच्छर के पर के बराबर भी होता तो वह काफ़िरों* को पानी का एक घूँट भी न देता। अल्लाह तो काफ़िरों के घर, दरवाज़े सब सोने-चाँदी के बना देता परन्तु यदि ऐसा करता तो लोग बड़ी आज़माइश में पड़ जाते; अधिकतर लोग सोने-चाँदी के लिए कुफ़्र* की राह अपना लेते।*

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

يَّكْفُرُ بِالرَّحْمٰنِ لِبُيُوْتِهِمْ سُقُفًا مِّنْ فِضَّةٍ وَّمَعَارِجَ عَلَيْهَا يَظْهَرُوْنَ ۝
وَلِبُيُوْتِهِمْ اَبْوَابًا وَّسُرُرًا عَلَيْهَا يَتَّكِـُٔوْنَ ۝ وَزُخْرُفًا ۭ وَاِنْ كُلُّ ذٰلِكَ لَمَّا
مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۭ وَالْاٰخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝ وَمَنْ يَّعْشُ
عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَيِّضْ لَهٗ شَيْطٰنًا فَهُوَ لَهٗ قَرِيْنٌ ۝ وَاِنَّهُمْ
لَيَصُدُّوْنَهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ۝ حَتّٰٓى اِذَا
جَاۗءَنَا قَالَ يٰلَيْتَ بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ فَبِئْسَ الْقَرِيْنُ ۝
وَلَنْ يَّنْفَعَكُمُ الْيَوْمَ اِذْ ظَّلَمْتُمْ اَنَّكُمْ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ۝ اَفَاَنْتَ
تُسْمِعُ الصُّمَّ اَوْ تَهْدِي الْعُمْيَ وَمَنْ كَانَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ فَاِمَّا
نَذْهَبَنَّ بِكَ فَاِنَّا مِنْهُمْ مُّنْتَقِمُوْنَ ۝ اَوْ نُرِيَنَّكَ الَّذِيْ وَعَدْنٰهُمْ فَاِنَّا عَلَيْهِمْ
مُّقْتَدِرُوْنَ ۝ فَاسْتَمْسِكْ بِالَّذِيْٓ اُوْحِيَ اِلَيْكَ ۚ اِنَّكَ عَلٰي صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝
وَاِنَّهٗ لَذِكْرٌ لَّكَ وَلِقَوْمِكَ ۚ وَسَوْفَ تُسْـَٔلُوْنَ ۝ وَسْـَٔلْ مَنْ اَرْسَلْنَا
مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُّسُلِنَآ اَجَعَلْنَا مِنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ اٰلِهَةً يُّعْبَدُوْنَ ۝
وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ىِٕهٖ فَقَالَ اِنِّىْ رَسُوْلُ
رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ فَلَمَّا جَاۗءَهُمْ بِاٰيٰتِنَآ اِذَا هُمْ مِّنْهَا يَضْحَكُوْنَ ۝ وَمَا
نُرِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ اِلَّا هِىَ اَكْبَرُ مِنْ اُخْتِهَا ۡ وَاَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ لَعَلَّهُمْ
يَرْجِعُوْنَ ۝ وَقَالُوْا يٰٓاَيُّهَ السّٰحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ اِنَّنَا
لَمُهْتَدُوْنَ ۝ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ۝ وَنَادٰى

(सीधे) मार्ग पर हैं;²³ ○ यहाँ तक कि जब (ऐसा व्यक्ति) हमारे पास आयेगा, तो (अपने शैतान* से) कहेगा : क्या ही अच्छा होता कि मेरे और तेरे बीच पूर्व और पश्चिम की दूरी होती²⁴— क्या ही बुरा पार्श्ववर्ती है। ○ और जब कि तुम ने ज़ुल्म किया, तो आज यह बात तुम्हें कुछ लाभ नहीं पहुँचा सकती कि तुम सब अज़ाब में एक साथ हो। ○

क्या तुम (हे मुहम्मद!) बहरों को सुनाओगे! या अन्धों को और उस को जो खुली गुमराही में पड़ा हुआ हो (सीधी) राह दिखाओगे²⁵? ○

फिर यदि हम तुम्हें (हे मुहम्मद!) उठा भी लें, जब भी हम इन (काफ़िरों*) से अवश्य बदला लेंगे, ○ या तुम्हें दिखा दें जो (अज़ाब का) वादा इन (काफ़िरों*) से हम ने किया है; हम इन पर पूरी क़ुदरत रखते हैं²⁶। ○

सो उस चीज़ को मज़बूती से पकड़े रहो जो तुम्हारी ओर वह्य* की गई। निश्चय ही तुम सीधे मार्ग पर हो। ○ और निश्चय ही यह (क़ुरआन*) नसीहत है तुम्हारे लिए और तुम्हारी क़ौम वालों के लिए; और आगे तुम से पूछा जायेगा²⁷। ○

और तुम (हे मुहम्मद!) हमारे रसूलों* से जिन्हें हम ने तुम से पहले भेजा है पूछ लो²⁸ कि क्या हम ने 'रहमान*' के सिवा कुछ दूसरे इलाह* (पूज्य) ठहराये थे कि उन की इबादत* की जाये²⁹? ○

हम ने मूसा को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन और उस के सरदारों के पास भेजा, तो उस ने (मूसा ने) कहा : मैं संसार के रब* का भेजा हुआ (रसूल*) हूँ। ○ तो जब

---

२३ अर्थात् शैतान* को हम केवल ऐसे लोगों पर नियुक्त करते हैं जो हम से ग़ाफ़िल हो जाते हैं। उन लोगों पर शैतान* का बस नहीं चल सकता जो ग़ाफ़िल न हों। शैतान* जिन लोगों पर अधिकार पा लेता है उन्हें वह भुलावे में रखने की कोशिश करता है। वह लोगों को खुल्लम-खुल्ला धोखा नहीं देता।

२४ अर्थात् हम दोनों का कभी साथ न हुआ होता।

२५ यद्यपि यह बात नबी* सल्ल० को सम्बोधित कर के कही जा रही है पर वास्तव में सुनाना काफ़िरों* को अभीष्ट है।

२६ अर्थात् यदि रसूल* दुनिया से रुख़सत भी हो जायें फिर भी काफ़िर* अल्लाह की पकड़ से बच नहीं सकते। चाहे उन्हें अपने करतूतों की सज़ा नबी* सल्ल० के सामने मिले या नबी* के बाद मिले।

२७ अर्थात् इन से पूछा जायेगा कि इस बड़ी नेमत से तुम ने क्या फ़ायदा उठाया।

२८ अर्थात् उन की लाई हुई किताबों* से तुम्हें मालूम करना चाहिए कि अगले नबियों* में से क्या किसी को हम ने सिवाय एक 'रहमान'* के किसी और की पूजा और बन्दगी का आदेश दिया था। सुनी हुई बात है कि किसी नबी* को भी शिर्क* का हुक्म नहीं दिया गया था।

२९ अर्थात् आप मुहम्मद (सल्ल०) पर 'तौहीद'* की जो शिक्षा उतारी गई है यह कोई नई बात नहीं है जो आज तुम लोगों के सामने पेश की जा रही है बल्कि यही शिक्षा सभी रसूलों* की शिक्षा थी। सब ने लोगों से यही कहा था कि अल्लाह के सिवा कोई नहीं जो पूजा का अधिकारी हो कि लोग उस की इबादत और बन्दगी करें। इबादत* और बन्दगी केवल अल्लाह की होनी चाहिए।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

فرعون في قومه قال يقوم أليس لي ملك مصر وهذه الأنهر
تجري من تحتي أفلا تبصرون ۝ أم أنا خير من هذا الذي هو
مهين ولا يكاد يبين ۝ فلولا ألقي عليه أسورة من ذهب أو جاء
معه الملئكة مقترنين ۝ فاستخف قومه فأطاعوه إنهم كانوا
قوما فسقين ۝ فلما آسفونا انتقمنا منهم فأغرقنهم أجمعين ۝
فجعلنهم سلفا ومثلا للآخرين ۝ ولما ضرب ابن مريم مثلا إذا
قومك منه يصدون ۝ وقالوا ءألهتنا خير أم هو ما ضربوه لك إلا
جدلا بل هم قوم خصمون ۝ إن هو إلا عبد أنعمنا عليه وجعلنه
مثلا لبني إسرائيل ۝ ولو نشاء لجعلنا منكم ملئكة في الأرض
يخلفون ۝ وإنه لعلم للساعة فلا تمترن بها واتبعون هذا صراط
مستقيم ۝ ولا يصدنكم الشيطن إنه لكم عدو مبين ۝ ولما
جاء عيسى بالبينت قال قد جئتكم بالحكمة ولأبين لكم بعض
الذي تختلفون فيه فاتقوا الله وأطيعون ۝ إن الله هو ربي وربكم
فاعبدوه هذا صراط مستقيم ۝ فاختلف الأحزاب من بينهم فويل
للذين ظلموا من عذاب يوم أليم ۝ هل ينظرون إلا الساعة أن
تأتيهم بغتة وهم لا يشعرون ۝ الأخلاء يومئذ بعضهم لبعض
عدو إلا المتقين ۝ يعباد لا خوف عليكم اليوم ولا أنتم تحزنون ۝

का उन के पास हमारी निशानियाँ ले कर आना या कि वे लगे उन (निशानियों) की हँसी उड़ाने। ○

और हम उन्हें जो निशानी भी दिखाते तो वह अपनी बहिन से बढ़-चढ़ कर होती,[२०] और उन्हें अज़ाब में डाल दिया[२१] ताकि (किसी तरह) बाज़ आ जायें। ○

उन्हों ने (मूसा से) कहा : हे जादूगर ! अपने रब[*] से हमारे लिए प्रार्थना कर, इस सम्पर्क से कि उस ने तुझ से प्रतिज्ञा कर रखी है। निश्चय ही हम राह पर आ जायेंगे। ○

फिर जैसे हम ने उन पर से अज़ाब को हटाया[२२]

५० वे लगे प्रतिज्ञा भंग करने[२३]। ○

और फ़िरऔन ने अपनी जाति वालों के बीच पुकार कर कहा : हे मेरी जाति वालो ! क्या ऐसा नहीं कि मुझे मिस्र का राज्य प्राप्त है और ये नहरें मेरे नीचे बह रही हैं? क्या तुम देख नहीं रहे हो? ○ या ऐसा नहीं कि मैं इस व्यक्ति से उत्तम हूँ, जो कि हीन है और जो साफ़ बोल भी नहीं पाता[२४] ? ○ (यदि यह अल्लाह का भेजा हुआ है) फि क्यों नहीं इसे सोने के कंगन मिले, या इस के साथ फ़िरिश्ते[*] आये होते जो साथ-सा रहते[२५] ? ○ इस तरह उस ने अपनी जाति वालों को बेवक़ूफ़ बनाया और उन्हों ने उस बात मान ली[२६]। निश्चय ही वे सीमोल्लंघन करने वाले लोग थे। ○

२० अर्थात् एक-से-एक बढ़ कर निशानी उन्हें दिखाते।

२१ यहाँ अज़ाब से अभिप्रेत अन्तिम अज़ाब नहीं है बल्कि उस से पहले की आपदायें हैं जिन्हों फ़िरऔन और उस की जाति वालों को अपनी लपेट में ले लिया था। उदाहरणतः रक्त, टिड्डी, मेंढक आदि के अज़ाब में अल्लाह ने फ़िरऔनियों को ग्रस्त लिया था। दे० सूरः अल-आराफ़ फ़ुट नोट २७।

२२ दे० सूरः अल आराफ़ आयत १३३-१३५।

२३ दे० बाइबिल 'ख़ुरूज' (Ex.) अध्याय ८।

२४ अर्थात् मूसा (अ०) के पास न तो धन और वैभव है, न वह किसी राज्य का अधिकारी है। यहाँ त कि वह खोल कर अपनी बातें भी नहीं बयान कर सकता, वह मालूम नहीं कैसी उलझी-उलझी बा करता है। ऐसा लगता है कि मूसा अ० की शिक्षा और उन के दिखाये हुये चमत्कारों और निशानियों बहुत से लोग प्रभावित होने लगे थे। फ़िरऔन को डर हुआ कि कहीं ऐसा न हो कि जनता मूसा (अ०) साथ हो जाये और हमारी दाल न गल सके।

२५ अर्थात् हम तो जब इस व्यक्ति को नबी[*] मानते कि यह राजसी ठाठ-बाट के साथ आता; फ़िरिश्ते इस के साथ परा बाँधे हुये होते। राजाओं की तरह हाथों में सोने के कंगन होते।

प्राचीन काल में जब किसी को राजदूत बना कर भेजा जाता या किसी व्यक्ति को कहीं का गवर्नर नियु किया जाता तो बादशाह की ओर से सम्मानार्थ उसे जो कुछ मिलता उस में सोने के कंगन या कड़े भी होते और उस के साथ सिपाही और चोबदार भी होते। फ़िरऔन का कहना यह था कि यह कैसा ईश्वर का भेज हुआ दूत या रसूल[*] है कि बिलकुल एक साधारण व्यक्ति की तरह सामने आ खड़ा हुआ। फ़िरऔन यदि बुद्धि से काम लेता तो वह समझ सकता था कि मूसा (अ०) उस के पास जिन चमत्कारों और निशानियों साथ आये हैं वे इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं कि मूसा (अ०) साधारण व्यक्ति नहीं हैं वे अल्लाह ही भेजे हुये हैं।

(२६ अगले पृष्ठ पर

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

फिर जब उन्हों ने हमें अप्रसन्न किया, तो हम ने बदला लिया उन से और डुबो दिया उन सब को (समुद्र में)।○ और हम ने उन्हें पूर्वज बना दिया, ५६ और (शिक्षा-प्रद) मिसाल पिछलों के लिए।○

और जब मरयम के बेटे (ईसा मसीह) की मिसाल दी गई, तो तुम्हारी जाति के लोग लगे तालियाँ पीटने,○ और कहने लगे: हमारे इलाह* (देवता) अच्छे हैं या वह[37]? यह मिसाल उन्हों ने तुम्हारे सामने केवल झगड़ने के लिए दी। बल्कि ये हैं ही झगड़ालू लोग।○

वह (ईसा मसीह) तो बस एक बन्दा है जिस पर हम ने कृपा की, और उसे बनी इसराईल* के लिए (अपनी .क़ुदरत का) एक नमूना बनाया[38]।○ और यदि हम चाहें तो तुम में से फ़रिश्ते* बना दें जो ज़मीन में तुम्हारी जगह लें।○ और निश्चय ही ६० वह उस घड़ी (अर्थात् क़ियामत*) की एक निशानी है[39]। तो तुम उस में सन्देह न करो, और तुम मेरा कहा मानो। यही सीधा मार्ग है।○ और शैतान* तुम्हें रोक न दे। निश्चय ही वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।○

और जब ईसा खुली-खुली दलीलें ले कर आया, उस ने कहा: मैं तुम्हारे पास हिकमत* (तत्त्व-ज्ञान) ले कर आया हूँ, और इस लिए (आया हूँ) कि कतिपय उन बातों को तुम पर खोल दूँ[40] जिन में तुम विभेद करते हो। तो अल्लाह से डरो, और मेरा कहा मानो।○

---

३६ मूर्ख जातियों की यही दशा होती है, वे आँख बन्द कर के अपने गुरुओं, नेताओं और सरदारों के पीछे चलती हैं।

३७ अर्थात् मसीह (अ०) जिसे ईसाई अल्लाह का बेटा बना कर पूजते हैं।

३८ अर्थात् मरयम के बेटे मसीह (अ०) अल्लाह के बेटे या इलाह* (पूज्य) न थे वे तो अल्लाह ही के बन्दे थे। बस इतनी बात है कि अल्लाह ने उन्हें अपनी .क़ुदरत और चमत्कार का एक नमूना बनाया था। हज़रत मसीह (अ०) को अल्लाह ने अपनी क़ुदरत का नमूना इस लिए कहा कि उन्हें अल्लाह ने बे बाप के केवल अपने चमत्कार के रूप में पैदा किया, फिर उन्हें ऐसे विशेष चमत्कार प्रदान किये जो न उन से पहले किसी को दिये गये थे और न उन के बाद किसी को दिये गये। गहवारे में उन्हों ने लोगों से बात-चीत की। वह मिट्टी का पक्षी बना कर उस में फूँक मारते तो वह वास्तव में पक्षी बन कर उड़ने लगता, जन्मान्ध को आँखों वाला कर देते थे, कोढ़ के रोगी को स्वस्थ कर देते यहाँ तक कि मुर्दे को भी जीवित कर देते थे। दे० सूरः आले इमरान आयत ४६, ४९, ५९; अल-माइदः आयत ७५, ११०; सूरः मरयम आयत २१; अल-अंबिया आयत ९१; अल-मोमिनून आयत ५०।

३९ हज़रत मसीह अ० को क़ियामत* की निशानी इस लिए कहा गया कि अल्लाह ने उन्हें बे-बाप के पैदा किया था, वे मिट्टी का जीता-जागता पक्षी बना देते थे और मुरदे को जीवित कर देते थे। जो अल्लाह बिना बाप के बच्चा पैदा कर सकता है और जिस का एक बन्दा मिट्टी के पक्षी में जीवन संचार कर सकता और मुरदों को जीवित कर सकता है उस अल्लाह के लिए यह कुछ भी असम्भव नहीं कि वह सारे लोगों को उन की मृत्यु के पश्चात् क़ियामत* में दोबारा जीवित कर दे।

४० अर्थात् तुम्हें बता दूँ कि उन बातों की वास्तविकता क्या है जिन में तुम लोग विभेद करते हो।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

निस्सन्देह अल्लाह ही मेरा रब* है और तुम्हारा रब* भी। सो उस की इबादत* करो, यही सीधा मार्ग है[४१]। ○

फिर उन में के कितने ही गरोहों ने विभेद किया[४२]। सो तबाही है उन लोगों के लिए जिन्हों ने ज़ुल्म किया, एक दुःखद दिन के अज़ाब से। ○

क्या ये लोग बस उस घड़ी (अर्थात् क़ियामत*) की प्रतीक्षा करते हैं कि वह अचानक इन पर आ जाये, जब कि ये बे-ख़बर हों ? ○ घनिष्ठ मित्र उस दिन एक-दूसरे के शत्रु होंगे, सिवाय उन लोगों के जो अल्लाह की अवज्ञा से बचते और उस की ना-ख़ुशी से डरते हैं[४३]। ○— हे मेरे बन्दो ! आज न तुम्हें कोई भय है, और न तुम दुःखी होगे; ○— जो हमारी आयतों* पर ईमान* लाये और मुस्लिम* थे, ○ — दाख़िल हो जाओ जन्नत* में पूरी ख़ुशियों के साथ तुम और तुम्हारे संघाती। ○

उन (जन्नत* वालों) के आगे सोने की तश्तरियाँ और प्याले गर्दिश करेंगे, और वहाँ हर वह चीज़ (मौजूद) होगी आत्मायें जिसे चाहें और आँखें जिस से लज़्ज़त पायें। और तुम उस में सदैव रहोगे। ○ और यह वह जन्नत* है जिस के तुम वारिस (उत्तराधिकारी) बनाये गये उन कामों के बदले में जो तुम करते थे। ○ तुम्हारे लिए यहाँ बहुत से मेवे[४४] हैं जिन्हें तुम खाओगे। ○

रहे अपराधी जन तो वे सदा जहन्नम* के अज़ाब में रहेंगे। ○ कभी उन के इस अज़ाब में कमी नहीं होगी, और वे उसी में निराश होकर पड़े रहेंगे। ○ हम ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वही ज़ालिम थे। ○

और वे (दोज़ख़* में) पुकारेंगे : हे मालिक[४५] ! तुम्हारा रब* हमारा काम ही तमाम कर दे[४६]। वह कहेगा तुम यों ही पड़े रहोगे। ○

निश्चय ही हम तुम्हारे पास हक़* (सत्य) ले कर आये हैं; परन्तु तुम में अधिकतर हक़* (सत्य) से नफ़रत रखते हैं। ○ क्या इन्हों ने कोई बात ठान रखी है ? तो हम ने भी ठान लिया है। ○

क्या ये समझते हैं कि हम इन की छिपी बातों और इन की कानाफूसियों को सुनते नहीं हैं ? क्यों नहीं, और हमारे दूत (अर्थात् फ़रिश्ते*) उन के पास ही लिखते रहते हैं[४७]। ○

(हे नबी* !) कहो : यदि 'रहमान'* (कृपाशील अल्लाह) की कोई औलाद हो तो सब से पहले मैं इबादत* करने वाला हूँ। ○

---

४१ दे० सूरः आले-इमरान आयत ५१; सूरः मरयम आयत ३६।

४२ एक गरोह ने उन का इन्कार किया तो उन की माता हज़रत मरयम पर तोहमत तक लगाने से बाज़ न रहा और दूसरा गरोह उन्हें अल्लाह का बेटा बना बैठा। फिर यह समस्या कि एक मनुष्य अल्लाह का बेटा कैसे हो सकता है एक ऐसी गुत्थी थी जिस के सुलझाने में उस के अगणित समुदाय बन गये। यह गुत्थी फिर भी सुलझ न सकी।

४३ अर्थात् वहाँ केवल उन लोगों की मित्रता और दोस्ती बाक़ी रहेगी जो दुनिया में अल्लाह का डर रखते हैं। जिन की मित्रता धर्म-परायणता और भलाई पर अवलम्बित है। ज़ालिमों और अल्लाह के दुश्मनों की पारस्परिक मित्रता तो बस इसी लोक के लिए है वहाँ वे एक-दूसरे के शत्रु बन जायेंगे।

४४ फल और स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ।

४५ अर्थात् दोज़ख़ के दारोग़ा (Keeper of hell)।*

४६ 'हमारा काम तमाम कर दे' अर्थात् हमें ऐसी मृत्यु दे दे कि हमारा अस्तित्व शेष न रहे ताकि हम अज़ाब से छुटकारा पा जायें।

४७ उनके कर्मों का रिकार्ड रखते हैं।

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

४४--अद-दुख़ान

(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः* की आयत १० में 'दुख़ान' अर्थात् धुवें के अज़ाब का उल्लेख हुआ है इसी सम्पर्क से इस सूरः का नाम 'अद-दुख़ान' रखा गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह सूरः* कब उतरी है इस का उल्लेख सूरः ४० (अल-मोमिन) के परिचय में हो चुका है।

वार्तायें (Subject-matter)

प्रस्तुत सूरः* में काफ़िरों* के सरदारों के लिए इस बात की धमकी और डरावा है कि विजय इस्लाम* की होगी और वे परास्त हो कर रहेंगे।

यह सूरः* हा० मीम० सिलसिले की सात सूरतों में से जिन का आरम्भ सूरः ४० (अल-मोमिन) से हुआ है पाँचवीं सूरः है। इस सूरः में बताया गया है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर वास्तव में अल्लाह ने अपनी किताब उतारी है। यह किताब सर्वथा अल्लाह की दयालुता और एक बड़ी नेमत है, इस की क़द्र करनी चाहिए। यह किताब ख़ुद इस बात की खुली दलील है कि यह किसी मनुष्य की रचना नहीं है बल्कि यह अल्लाह की उतारी हुई किताब है। वह एक बरकत वाली घड़ी थी जब अल्लाह ने इस किताब के उतारने और रसूल* भेजने का फ़ैसला किया। यह किताब 'रहमत' बन कर उतरी है इसे अपने लिए कोई आपदा न समझो। इस किताब का अवतरण उस विशेष समय में हुआ है जब कि अल्लाह भाग्य और क़िस्मतों के फ़ैसले किया करता है। अल्लाह के फ़ैसले अटल हुआ करते हैं। तुम अल्लाह का मुक़ाबिला नहीं कर सकते। जो लोग इस किताब का आदर करेंगे वे अपना ही भला करेंगे। जो लोग इस की अवहेलना करेंगे वही घाटे में रहेंगे। यह अल्लाह की कृपा है कि उस ने लोगों को अज्ञान के अन्धकार से निकालने और उन्हें सीधा मार्ग दिखाने के लिए अपनी किताब उतारी और अपना रसूल* भेजा। अब जो लोग सन्देह में पड़े रहेंगे उन्हें अल्लाह के अज़ाब से दुनियाँ और आख़िरत* में कोई नहीं बचा सकता। प्राचीन इतिहास भी इसी बात का साक्षी है। फ़िरऔन और उस की जाति वालों ने जब अल्लाह के रसूल* का इन्कार किया तो इस के नतीजे में अल्लाह ने उसे उस की सेना सहित दरिया में डुबो दिया। उन के बाग़ और उन की खेतियाँ पड़ी रह गईं जिन के वारिस दूसरे लोग हुये। उन पर न तो आसमान को रोना आया और न ज़मीन को और न उन्हें कोई मुहलत मिल सकी। बनी इसराईल* को जिन के लिए फ़िरऔन अज़ाब बना हुआ था अल्लाह ने स्वतन्त्र किया।

फ़िरऔन के अतिरिक्त तुब्बअ की जाति को भी मिसाल में पेश किया गया है कि किस तरह अल्लाह ने उन्हें उन के अपराध के कारण तबाह कर दिया। यह दुनियाँ कोई खेल-तमाशे के लिए नहीं बनाई गई है कि जिस के जी में जो आये करे।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अद-दुख़ान

(मक्का में उतरी — आयतें* ५९)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

हा० मीम[1] । ○ क़सम है इस स्पष्ट किताब* की[2] ○ निस्सन्देह हम ने इसे एक बरकत वाली रात में उतारा है[3] — निस्सन्देह हम सचेत करने वाले थे ○ — इस (रात) में हर तरह का हिकमत* भरा आदेश दिया जाता है ○ हमारे यहाँ से दिया हुआ आदेश ! — निस्सन्देह हम ही रसूल* भेजने वाले ५ थे ○ — दयालुता है तेरे रब* की — निस्सन्देह वह सुनने वाला और जानने वाला है ○ — आसमानों और ज़मीन के और जो-कुछ उन के बीच है उस के रब* की यदि तुम्हें विश्वास हो[4] । ○ कोई इलाह* (पूज्य) नहीं सिवाय उस के। वही जिलाता और मारता है; तुम्हारा रब* और तुम्हारे अगले पूर्वजों का-रब*[5] । ○ (इन्हें विश्वास नहीं) बल्कि ये लोग सन्देह में पड़े खेल रहे हैं[6] । ○

बِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
حٰمٓ ۝ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا
مُنْذِرِيْنَ ۝ فِيْهَا يُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ ۝ اَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ۗ اِنَّا كُنَّا
مُرْسِلِيْنَ ۝ رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۗ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۘ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ۝ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۗ
رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ يَّلْعَبُوْنَ ۝ فَارْتَقِبْ
يَوْمَ تَاْتِي السَّمَآءُ بِدُخَانٍ مُّبِيْنٍ ۝ يَّغْشَى النَّاسَ ۗ هٰذَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝
رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ اِنَّا مُؤْمِنُوْنَ ۝ اَنّٰى لَهُمُ الذِّكْرٰى وَقَدْ جَآءَهُمْ
رَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ۝ ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوْا مُعَلَّمٌ مَّجْنُوْنٌ ۝ اِنَّا كَاشِفُوا
الْعَذَابِ قَلِيْلًا اِنَّكُمْ عَآئِدُوْنَ ۝ يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرٰى ۚ
اِنَّا مُنْتَقِمُوْنَ ۝ وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَآءَهُمْ رَسُوْلٌ
كَرِيْمٌ ۝ اَنْ اَدُّوْٓا اِلَيَّ عِبَادَ اللّٰهِ ۗ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ۝ وَّاَنْ لَّا تَعْلُوْا
عَلَى اللّٰهِ ۚ اِنِّيْٓ اٰتِيْكُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝ وَاِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ اَنْ
تَرْجُمُوْنِ ۝ وَاِنْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا لِيْ فَاعْتَزِلُوْنِ ۝ فَدَعَا رَبَّهٗٓ اَنَّ هٰٓؤُلَآءِ
قَوْمٌ مُّجْرِمُوْنَ ۝ فَاَسْرِ بِعِبَادِيْ لَيْلًا اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ۝ وَاتْرُكِ الْبَحْرَ
رَهْوًا ۗ اِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّغْرَقُوْنَ ۝ كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۝ وَّزُرُوْعٍ

अच्छा तो तुम उस दिन की प्रतीक्षा करो जब १० आसमान प्रत्यक्ष धुवाँ लिये हुये आयेगा[7] ○ वह लोगों पर छा जायेगा यह है दुःख देने वाला अज़ाब । ○

(लोग कहेंगे) : हमारे रब* ! हम पर से इस अज़ाब को हटा दे। निश्चय ही हम ईमान* वाले हैं। ○

ये कहाँ होश में आने वाले, इन के पास तो खुला रसूल* आ चुका है,[8] ○ फिर भी

---

१ दे० सूरः अल-बक़रः फुट नोट १।

२ क़ुरआन की क़सम यहाँ जिस बात पर खाई गई है वह यह है कि क़ुरआन वास्तव में अल्लाह की उतारी हुई किताब है। यह मुहम्मद (सल्ल०) की रचना नहीं है। इस का सबूत यह किताब ख़ुद है।

३ अर्थात् 'लैलतुल क़द्र' अथवा दिव्य रात्रि में यह किताब उतरनी आरम्भ हुई। (दे० सूरः अल-क़द्र आयत १)। कुछ टीकाकारों का विचार है कि इस रात में पूरा क़ुरआन वह्य* के फ़रिश्तों* के हवाले कर दिया गया फिर आवश्यकतानुसार नबी सल्ल० पर २३ वर्ष तक उतारा जाता रहा।

'लैलतुल क़द्र' के बारे में सूरः अल-क़द्र में कहा गया है कि उस रात फ़रिश्ते* और जिबरील* अपने रब* की अनुज्ञा से हर तरह का हुक्म ले कर उतरते हैं। इस से मालूम होता है कि वह ऐसी रात है जिस में अल्लाह व्यक्तियों, जातियों आदि के फ़ैसले कर के अपने फ़रिश्तों* के हवाले कर देता है फिर वे फ़रिश्ते* उन को कार्य-रूप में लाते हैं।

४ अर्थात् यदि वास्तव में तुम्हें यह विश्वास हो जावे कि आसमानों और ज़मीन का कोई रब* है और वही हर एक की ज़रूरतों को पूरा कर रहा है, सब का पालन-कर्ता वही है, तो यह बात भी सरलता पूर्वक तुम्हारी समझ में आ सकती है कि उस की दयालुता और 'रहमत' का तक़ाज़ा यह भी है कि वह लोगों को सत्य-मार्ग दिखाने के लिए अपना रसूल* भेजे। और फिर जब कि तुम उस के पैदा (शेष अगले पृष्ठ पर)

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अद-दुख़ान

(मक्का में उतरी — आयतें* ५९)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

بسم الله الرحمن الرحيم
حم ۝ والكتب المبين ۝ إنا أنزلنه في ليلة مبركة إنا كنا
منذرين ۝ فيها يفرق كل أمر حكيم ۝ أمرا من عندنا إنا كنا
مرسلين ۝ رحمة من ربك إنه هو السميع العليم ۝ رب السموت و
الأرض وما بينهما إن كنتم موقنين ۝ لا إله إلا هو يحي ويميت
ربكم ورب آبائكم الأولين ۝ بل هم في شك يلعبون ۝ فارتقب
يوم تأتي السماء بدخان مبين ۝ يغشى الناس هذا عذاب أليم ۝
ربنا اكشف عنا العذاب إنا مؤمنون ۝ أنى لهم الذكرى وقد جاءهم
رسول مبين ۝ ثم تولوا عنه وقالوا معلم مجنون ۝ إنا كاشفوا
العذاب قليلا إنكم عائدون ۝ يوم نبطش البطشة الكبرى
إنا منتقمون ۝ ولقد فتنا قبلهم قوم فرعون وجاءهم رسول
كريم ۝ أن أدوا إلي عباد الله إني لكم رسول أمين ۝ وأن لا تعلوا
على الله إني آتيكم بسلطن مبين ۝ وإني عذت بربي وربكم أن
ترجمون ۝ وإن لم تؤمنوا لي فاعتزلون ۝ فدعا ربه أن هؤلاء
قوم مجرمون ۝ فأسر بعبادي ليلا إنكم متبعون ۝ واترك البحر
رهوا إنهم جند مغرقون ۝ كم تركوا من جنت وعيون ۝ وزروع

हा० मीम¹। ○ क़सम है इस स्पष्ट किताब* की² ○ निस्सन्देह हम ने इसे एक बरकत वाली रात में उतारा है³ — निस्सन्देह हम सचेत करने वाले थे ○ — इस (रात) में हर तरह का हिकमत* भरा आदेश दिया जाता है ○ हमारे यहाँ से दिया हुआ आदेश ! — निस्सन्देह हम ही रसूल* भेजने वाले ५ थे ○ — दयालुता है तेरे रब* की — निस्सन्देह वह सुनने वाला और जानने वाला है ○ — आसमानों और ज़मीन के और जो-कुछ उन के बीच है उस के रब* की यदि तुम्हें विश्वास हो⁴ । ○ कोई इलाह* (पूज्य) नहीं सिवाय उस के। वही जिलाता और मारता है; तुम्हारा रब* और तुम्हारे अगले पूर्वजों का-रब*⁵ । ○ (इन्हें विश्वास नहीं) बल्कि ये लोग सन्देह में पड़े खेल रहे हैं⁶ । ○

अच्छा तो तुम उस दिन की प्रतीक्षा करो जब १० आसमान प्रत्यक्ष धुवाँ लिये हुये आयेगा⁷ ○ वह लोगों पर छा जायेगा यह है दुःख देने वाला अज़ाब। ○ (लोग कहेंगे) : हमारे रब*! हम पर से इस अज़ाब को हटा दे। निश्चय ही हम ईमान* वाले हैं। ○

ये कहाँ होश में आने वाले, इन के पास तो खुला रसूल* आ चुका है,⁸ ○ फिर भी

---

१ दे० सूरः अल-बक़रः फ़ुट नोट १।

२ क़ुरआन की क़सम यहाँ जिस बात पर खाई गई है वह यह है कि क़ुरआन वास्तव में अल्लाह की उतारी हुई किताब है। यह मुहम्मद (सल्ल०) की रचना नहीं है। इस का सबूत यह किताब ख़ुद है।

३ अर्थात् 'लैलतुल क़द्र' अथवा दिव्य रात्रि में यह किताब उतरनी आरम्भ हुई। (दे० सूरः अल-क़द्र आयत १)। कुछ टीकाकारों का विचार है कि इस रात में पूरा क़ुरआन सद्म* के फ़िरिश्तों* के हवाले कर दिया गया फिर आवश्यकतानुसार नबी सल्ल० पर २३ वर्ष तक उतारा जाता रहा।

'लैलतुल क़द्र' के बारे में सूरः अल-क़द्र में कहा गया है कि उस रात फ़िरिश्ते* और जिबरील* अपने रब* की अनुज्ञा से हर तरह का हुक्म ले कर उतरते हैं। इस से मालूम होता है कि यह ऐसी रात है जिस में अल्लाह व्यक्तियों, जातियों आदि के फ़ैसले कर के अपने फ़िरिश्तों* के हवाले कर देता है फिर वे फ़िरिश्ते* उन को कार्य-रूप में लाते हैं।

४ अर्थात् यदि वास्तव में तुम्हें यह विश्वास हो जाये कि आसमानों और ज़मीन का कोई रब* है और वही हर एक की ज़रूरतों को पूरा कर रहा है, सब का पालन-कर्ता वही है, तो यह बात भी सरलता पूर्वक तुम्हारी समझ में आ सकती है कि उस की दयालुता और 'रहमत' का तक़ाज़ा यह भी है कि वह लोगों को सत्य-मार्ग दिखाने के लिए अपना रसूल* भेजे। और फिर जब कि तुम उस के पैदा (शेष अगले पृष्ठ पर)

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

	सकेंगे।
२ : २५४	उस दिन न ख़र्च से काम चले, न दोस्ती से और न सिफ़ारिश से।
६ : ९४	संसार में मनुष्य अल्लाह के अलावा जिन-जिन पर भरोसा करता है, उन सबसे सम्बन्ध टूट जाएँगे।
१० : २७	उस दिन अल्लाह से बचानेवाला कोई न होगा।
१४ : २१, २२	अल्लाह को भूलकर जिन-जिन शैतानों की पैरवी में मनुष्य ने अपनी आख़िरत बिगाड़ी होगी वे सब मदद से हाथ उठा लेंगे।
२० : १०९	उस दिन किसी की सिफ़ारिश काम न देगी अलावा इसके कि अल्लाह ही किसी को सिफ़ारिश करने की इजाज़त दे दे।
२५ : १९	कोई अल्लाह के अज़ाब को टाल न सकेगा और न कहीं से मदद ही मिलेगी।
२६ : ८८	उस दिन न माल काम आएगा न औलाद।
२८ : ६३, ६४	संसार में अल्लाह के अलावा जिन-जिन की पूजा होती थी; वे सब अपने पुजारियों से उदासीनता का एलान कर देंगे।
३१ : ३३	उस दिन न बाप बेटे के काम आएगा और न बेटा बाप के।
३४ : ३१-३३	जिन "बड़े लोगों" के पीछे चलकर लोगों ने अपनी आख़िरत बिगाड़ी, वे क़ियामत के दिन उलटा उन्हीं पर आरोप लगाएँगे।
३५ : १८	कोई नातेदार तक ऐसा न होगा जो किसी का बोझ उठाए।
३७ : २४-३३	कोई एक दूसरे की सहायता न करेगा। हरएक दूसरे पर आरोपण करेगा।
४२ : ४६	कोई ऐसा दोस्त न होगा जो अल्लाह के मुक़ाबले में मदद कर सके।
४३ : ६७	आज जो दोस्त हैं, एक-दूसरे के दुश्मन होंगे।
४४ : ४१, ४२	कोई दोस्त किसी दोस्त के काम न आएगा।
६० : ३	उस दिन न नातेदार काम आएँगे और न औलाद।
६९ : २८-३७	उस दिन न धन काम आएगा न हुकूमत और न कोई दोस्त।
७० : १०-१८	मनुष्य चाहेगा कि बेटे, स्त्री, भाई, परिवार बल्कि तमाम मनुष्यों को भेंट चढ़ाये और ख़ुद किसी तरह बच जाए।
८० : ३४-३७	हर व्यक्ति को अपनी-अपनी पड़ी होगी।
८२ : १९	कोई किसी के काम न आ सकेगा।

(८) जहन्नम

२ : २४	जहन्नम का ईंधन आदमी और पत्थर होंगे।
४ : ५६	एक खाल जल जायेगी तो दूसरी दे दी जायेगी ताकि बार-बार अज़ाब का मज़ा चखें।
७ : ३८	दोज़ख़ियों का एक गरोह दूसरे पर लानत भेजेगा।
७ : ४२	आग का बिछौना और आग ही का ओढ़ना।
१० : ४	बड़ा ही गर्म पानी पीने के लिए और दुःख देने वाला अज़ाब।
११ : १०६, १०७	चिल्लाना और दहाड़ना और सदा के लिए वहीं रहना।
१३ : ५	गरदनों में तौक़।

सूरः* अद-दुख़ान

(मक्का में उतरी — आयतें* ५९)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

हा० मीम[1] । ○ क़सम है इस स्पष्ट किताब* की[2] ○ निस्सन्देह हम ने इसे एक बरकत वाली रात में उतारा है[3] — निस्सन्देह हम सचेत करने वाले थे ○ — इस (रात) में हर तरह का हिकमत* भरा आदेश दिया जाता है ○ हमारे यहाँ से दिया हुआ आदेश ! — निस्सन्देह हम ही रसूल* भेजने वाले ५ थे ○ — दयालुता है तेरे रब* की — निस्सन्देह वह सुनने वाला और जानने वाला है ○ — आसमानों और ज़मीन के और जो-कुछ उन के बीच है उस के रब* की यदि तुम्हें विश्वास हो[4] । ○ कोई इलाह* (पूज्य) नहीं सिवाय उस के। वही जिलाता और मारता है; तुम्हारा रब* और तुम्हारे अगले पूर्वजों का-रब*[5] । ○ (इन्हें विश्वास नहीं) बल्कि ये लोग सन्देह में पड़े खेल रहे हैं[6] । ○

अच्छा तो तुम उस दिन की प्रतीक्षा करो जब १० आसमान प्रत्यक्ष धुवाँ लिये हुये आयेगा[7] ○ वह लोगों पर छा जायेगा यह है दुःख देने वाला अज़ाब । ○ (लोग कहेंगे) : हमारे रब*! हम पर से इस अज़ाब को हटा दे। निश्चय ही हम ईमान* वाले हैं। ○

ये कहाँ होश में आने वाले, इन के पास तो खुला रसूल* आ चुका है,[8] ○ फिर भी

---

१ दे० सूरः अल-बक़रः फुट नोट १।

२ क़ुरआन की क़सम यहाँ जिस बात पर खाई गई है वह यह है कि क़ुरआन वास्तव में अल्लाह की उतारी हुई किताब है। यह मुहम्मद (सल्ल०) की रचना नहीं है। इस का सबूत यह किताब ख़ुद है।

३ अर्थात् 'लैलतुल क़द्र' अथवा दिव्य रात्रि में यह किताब उतरनी आरम्भ हुई। (दे० सूरः अल-क़द्र आयत १)। कुछ टीकाकारों का विचार है कि इस रात में पूरा क़ुरआन वह्य* के फ़रिश्तों* के हवाले कर दिया गया फिर आवश्यकतानुसार नबी सल्ल० पर २३ वर्ष तक उतारा जाता रहा।

'लैलतुल क़द्र' के बारे में सूरः अल-क़द्र में कहा गया है कि उस रात फ़रिश्ते* और जिबरील* अपने रब* की अनुज्ञा से हर तरह का हुक्म ले कर उतरते हैं। इस से मालूम होता है कि यह ऐसी रात है जिस में अल्लाह व्यक्तियों, जातियों आदि के फ़ैसले कर के अपने फ़रिश्तों* के हवाले कर देता है फिर वे फ़रिश्ते* उन को कार्य-रूप में लाते हैं।

४ अर्थात् यदि वास्तव में तुम्हें यह विश्वास हो जाये कि आसमानों और ज़मीन का कोई रब* है और वही हर एक की ज़रूरतों को पूरा कर रहा है, सब का पालन-कर्त्ता वही है, तो यह बात भी सरलता पूर्वक तुम्हारी समझ में आ सकती है कि उस की दयालुता और 'रहमत' का तक़ाज़ा यह भी है कि वह लोगों को सत्य-मार्ग दिखाने के लिए अपना रसूल* भेजे। और फिर जब कि तुम उस के पैदा (शेष अगले पृष्ठ पर)

*इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

आख़िरत* की पुष्टि करते हुये कहा गया है कि अल्लाह ने आसमान और ज़मीन को खेल-तमाशे के रूप में नहीं पैदा किया है बल्कि इन की सृष्टि महान् उद्देश्य के अन्तर्गत हुई है। इन की सृष्टि इस लिए हुई है कि लोगों की परीक्षा हो फ़ैसले का एक ऐसा दिन अवश्य आयेगा जब कि लोगों को उन के कर्मों का बदला दिया जायेगा।

सूरः* के अन्तिम भाग में फ़ैसले के दिन का उल्लेख करते हुये बताया गया है कि आख़िरत* में सतत सुखमय जीवन उन ही लोगों को प्राप्त होगा जो दुनियाँ में अल्लाह की अवज्ञा से बचने वाले और उस की ना-ख़ुशी से डरने वाले होंगे। और झूठी इज़्ज़त के दावेदारों और अल्लाह के दुश्मनों के हिस्से में उस दिन दुख-दायी और अपमान जनक अज़ाब के अतिरिक्त और कुछ न आ सकेगा।

---

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अद-दुख़ान

(मक्का में उतरी — आयतें* ५९)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

बِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

حٰمٓ ۚ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۙ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا
مُنْذِرِيْنَ ۝ فِيْهَا يُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ ۙ اَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ۭ اِنَّا كُنَّا
مُرْسِلِيْنَ ۚ رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۙ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۘ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ۝ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۭ
رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَاۗىِٕكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ يَّلْعَبُوْنَ ۝ فَارْتَقِبْ
يَوْمَ تَاْتِي السَّمَاۗءُ بِدُخَانٍ مُّبِيْنٍ ۙ يَّغْشَى النَّاسَ ۭ هٰذَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝
رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ اِنَّا مُؤْمِنُوْنَ ۝ اَنّٰى لَهُمُ الذِّكْرٰى وَقَدْ جَاۗءَهُمْ
رَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ۙ ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوْا مُعَلَّمٌ مَّجْنُوْنٌ ۝ اِنَّا كَاشِفُوا
الْعَذَابِ قَلِيْلًا اِنَّكُمْ عَاۗىِٕدُوْنَ ۝ يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرٰى ۚ
اِنَّا مُنْتَقِمُوْنَ ۝ وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَاۗءَهُمْ رَسُوْلٌ
كَرِيْمٌ ۝ اَنْ اَدُّوْٓا اِلَيَّ عِبَادَ اللّٰهِ ۭ اِنِّىْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ۝ وَّاَنْ لَّا تَعْلُوْا
عَلَى اللّٰهِ ۚ اِنِّىْٓ اٰتِيْكُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝ وَاِنِّىْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ اَنْ
تَرْجُمُوْنِ ۝ وَاِنْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا لِيْ فَاعْتَزِلُوْنِ ۝ فَدَعَا رَبَّهٗٓ اَنَّ هٰٓؤُلَاۗءِ
قَوْمٌ مُّجْرِمُوْنَ ۝ فَاَسْرِ بِعِبَادِيْ لَيْلًا اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ۝ وَاتْرُكِ الْبَحْرَ
رَهْوًا ۭ اِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّغْرَقُوْنَ ۝ كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۝ وَّزُرُوْعٍ

हा० मीम[1] । ○ क़सम है इस स्पष्ट किताब* की[2] ○ निस्सन्देह हम ने इसे एक बरकत वाली रात में उतारा है[3] — निस्सन्देह हम सचेत करने वाले थे ○ — इस (रात) में हर तरह का हिकमत* भरा आदेश दिया जाता है ○ हमारे यहाँ से दिया हुआ आदेश ! — निस्सन्देह हम ही रसूल* भेजने वाले थे ○ — दयालुता है तेरे रब* की — निस्सन्देह वह सुनने वाला और जानने वाला है ○ — आसमानों और ज़मीन के और जो-कुछ उन के बीच है उस के रब* की यदि तुम्हें विश्वास हो[4] । ○ कोई इलाह* (पूज्य) नहीं सिवाय उस के। वही जिलाता और मारता है; तुम्हारा रब* और तुम्हारे अगले पूर्वजों का-रब*[5] । ○ (इन्हें विश्वास नहीं) बल्कि ये लोग सन्देह में पड़े खेल रहे हैं[6] । ○

अच्छा तो तुम उस दिन की प्रतीक्षा करो जब १० आसमान प्रत्यक्ष धुवाँ लिये हुये आयेगा[7] ○ वह लोगों पर छा जायेगा यह है दुःख देने वाला अज़ाब । ○ (लोग कहेंगे) : हमारे रब* ! हम पर से इस अज़ाब को हटा दे। निश्चय ही हम ईमान* वाले हैं। ○

ये कहाँ होश में आने वाले, इन के पास तो खुला रसूल* आ चुका है,[8] ○ फिर भी

---

१ दे० सूरः अल-बक़रः फ़ुट नोट १ ।

२ क़ुरआन की क़सम यहाँ जिस बात पर खाई गई है वह यह है कि क़ुरआन वास्तव में अल्लाह की उतारी हुई किताब है। यह मुहम्मद (सल्ल०) की रचना नहीं है। इस का सबूत यह किताब ख़ुद है।

३ अर्थात् 'लैलतुल क़द्र' अथवा दिव्य रात्रि में यह किताब उतरनी आरम्भ हुई। (दे० सूरः अल-क़द्र आयत १)। कुछ टीकाकारों का विचार है कि इस रात में पूरा क़ुरआन वह्य* के फ़िरिश्तों* के हवाले कर दिया गया फिर आवश्यकतानुसार नबी सल्ल० पर २३ वर्ष तक उतारा जाता रहा।

'लैलतुल क़द्र' के बारे में सूरः अल-क़द्र में कहा गया है कि उस रात फ़िरिश्ते* और जिबरील* अपने रब* की अनुज्ञा से हर तरह का हुक्म ले कर उतरते हैं। इस से मालूम होता है कि यह ऐसी रात है जिस में अल्लाह व्यक्तियों, जातियों आदि के फ़ैसले कर के अपने फ़िरिश्तों* के हवाले कर देता है फिर वे फ़िरिश्ते* उन को कार्य-रूप में लाते हैं।

४ अर्थात् यदि वास्तव में तुम्हें यह विश्वास हो जाये कि आसमानों और ज़मीन का कोई रब* है और वही हर एक की ज़रूरतों को पूरा कर रहा है, सब का पालन-कर्ता वही है, तो यह बात भी सरलता पूर्वक तुम्हारी समझ में आ सकती है कि उस की दयालुता और 'रहमत' का तक़ाज़ा यह भी है कि वह लोगों को सत्य-मार्ग दिखाने के लिए अपना रसूल* भेजे। और फिर जब कि तुम उस के पैदा (शेष अगले पृष्ठ पर)

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

और हम ने आसमानों और ज़मीन को और जो-कुछ इन के बीच है उसे खेल-खेल में नहीं बना दिया है[25]। ○ हम ने इन्हें बस हक़ के साथ पैदा किया;[26] परन्तु इन में अधिकतर लोग नहीं जानते।○

निश्चय ही फ़ैसले का दिन इन सब का नियत समय है। ○ जिस दिन कोई अपना[27] किसी अपने के कुछ काम न आयेगा, और न उन्हें कोई सहायता मिलेगी, ○ सिवाय उस व्यक्ति के जिस पर अल्लाह दया करे। निस्सन्देह वही अपार शक्ति का मालिक और दया करने वाला है। ○

निश्चय ही 'ज़क्कूम'[28] का वृक्ष ○ गुनहगार (पापी व्यक्ति) का भोजन होगा। ○ जैसे पिघली हुई धातु,[29] वह पेटों में खौलता होगा ○ जैसे पानी खौले। ○ (कहा जायेगा) : पकड़ो इसे और बीच भड़कती हुई अग्नि (अर्थात् जहन्नम*) के ढकेल ले जाओ, ○ फिर इस के सिर पर खौलते पानी का अज़ाब उंडेल दो[30]। ○ (कहा जायेगा) : मज़ा चख, तू ही तो है बड़ा ज़बरदस्त और इज़्ज़तदार[31]। ○ निश्चय ही यह वही चीज़ है जिस के बारे में तुम सन्देह किया करते थे। ○

निश्चय ही अल्लाह का डर रखने वाले ऐसे स्थान में होंगे जहाँ कोई खटका न होगा[32]। ○ बागों और जल-स्रोतों के बीच, ○ पतले और गाढ़े रेशमी वस्त्र पहनेंगे, और एक-दूसरे के

२५. अर्थात् हम ने विश्व की रचना निरुद्देश्य नहीं की है। हम ने जो कुछ पैदा किया है हिक्मत* और उच्च उद्देश्य के अन्तर्गत पैदा किया है। इस लिए इस वर्तमान लोक का अवश्य कोई वास्तविक परिणाम सामने आयेगा। यह कैसे सम्भव हो सकता है कि मनुष्य का अस्तित्व सर्वथा अर्थ हीन हो कि वह कुछ दिन इस लोक में जीवन व्यतीत कर के सर्वदा के लिए विलुप्त हो कर रह जाये।

२६ अर्थात् संसार की रचना इस लिए हुई है कि लोगों की परीक्षा हो और उन्हें उन के कर्मों का बदला दिया जाये। इस विश्व की रचना निरुद्देश्य नहीं हुई है (दे० सूरः अल-जासियः आयत २१-२२)। इस आयत में वास्तव में काफ़िरों* की इस बात का कि मरने के बाद कोई जीवन नहीं है, जवाब दिया गया है।

२७ यहाँ मूल ग्रन्थ में 'मौला' (مولى) शब्द प्रयुक्त हुआ है। मौला अरबी में ऐसे व्यक्ति को कहते हैं जो किसी सम्बन्ध के कारण किसी की सहायता करे, वह सम्बन्ध चाहे मित्रता का हो, या रिश्तेदारी का या और किसी प्रकार का सम्बन्ध हो।

२८ दे० सूरः अस-साफ़्फ़ात आयत ६२; सूरः वाक़िअः आयत ५२।

२९ यहाँ 'मुह्ल' शब्द प्रयुक्त हुआ है, जिस के कई अर्थ होते हैं पिघली हुई धात, पिघला हुआ ताँबा, तेल की तलछट, पीप, रक्त आदि, दे० सूरः अल-कह्फ़ फ़ुट नोट २६।

३० अल्लाह हम सब को इस अज़ाब से बचाये।

३१ अर्थात् तू बड़ा इज़्ज़त वाला और प्रतापवान् था आज तेरा यह आदर हो रहा है। कहाँ गई तेरी वह सरदारी और तेरा वह गर्व।

३२ नबी सल्ल० ने भी कहा है कि जन्नत* वालों से कह दिया जायेगा। यहाँ तुम स्वस्थ रहोगे कभी बीमार न होगे, सदैव जीवित रहोगे कभी मरोगे नहीं, हमेशा ख़ुशहाल रहोगे कभी बदहाल न होगे, सदैव जवान रहोगे कभी बूढ़े न होगे।

* इस का अर्थ आख़िर में छपी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

लَا يَذُوقُونَ فِيهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُولَىٰ وَوَقَاهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ فَضْلًا مِّن رَّبِّكَ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ فَإِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ فَارْتَقِبْ إِنَّهُم مُّرْتَقِبُونَ

आमने-सामने होंगे[३३]। ○ यह होगा ! और हम उन का विवाह बड़ी और सुन्दर आँखों वाली परम रूपवती स्त्रियों से कर देंगे। ○ वे वहाँ निश्चिन्तता पूर्वक हर प्रकार के मेवे[३४] तलब करते होंगे। ○ वहाँ वे मौत का मज़ा कभी न चखेंगे बस पहली मौत (दुनियाँ में) जो आ चुकी वह आ चुकी। वह उन्हें भड़कती अग्नि (अर्थात् जहन्नम*) के अज़ाब से बचा देगा, ○ यह सब फ़ज़्ल होगा तेरे रब* का। यही बड़ी सफलता है। ○

सो (हे नबी*!) हम ने तो बस इस (कुरआन*) को तुम्हारी भाषा में सुगम कर दिया है[३५] कदाचित् ये लोग नसीहत हासिल करें। ○ तो (हे मुहम्मद!) तुम भी प्रतीक्षा करो। ये लोग भी प्रतीक्षा कर रहे हैं। ○

---

३३ और आपस में आसानी के साथ बात-चीत करते होंगे।

३४ हर प्रकार की स्वादिष्ट वस्तुयें वहाँ प्राप्त होंगी।

३५ अर्थात् कुरआन को हर पहलू से बिलकुल इस के अनुकूल रखा है कि यदि कोई चाहे तो इस से शिक्षा ग्रहण कर सकता है। कुरआन बिलकुल सहज और स्वाभाविक रूप में सत्य की प्रेरणा देता है।

३६ सूरः मरयम फुट नोट ३६; सूरः अल-क़मर आयत १७, २२, ३२, ४०।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

४५—अल-जासियः

(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः* का नाम 'अल-जासियः' सूरः की आयत २८ से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह सूरः* कब उतरी इस का उल्लेख सूरः ४० (अल-मोमिन) में किया जा चुका है। अनुमान है कि यह सूरः अद-दुख़ान के बाद ही उतरी है। इन दोनों सूरतों में बड़ी अनुरूपता पाई जाती है।

वार्ताये (Subject-matter)

इस सूरः* में उन काफ़िरों* और हठ-धर्मी लोगों के प्रति निराशा प्रकट की गई है जो अल्लाह की आयतों* को सुनने के बाद भी गर्व से (अपनी जगह) अड़े रहते हैं। ऐसे लोगों के बारे में कहा गया है कि अल्लाह स्वयं उन्हें उन के किये का मज़ा चखायेगा।

प्रस्तुत सूरः हा० मीम० सिलसिले की उन सात सूरतों में से छठी सूरः है जिस का आरम्भ सूरः ४० (अल-मोमिन) से हुआ है।

सूरः* के आरम्भ में किताब के अवतरण का उल्लेख करने के बाद अल्लाह की बड़ी-बड़ी निशानियों और चमत्कारों का उल्लेख किया गया है जिन से तौहीद* (एकेश्वरवाद) और आख़िरत* दोनों की पुष्टि होती है। अल्लाह की इन निशानियों को यदि कोई आँखें खोल कर देखे और पक्षपात से हट कर इन पर विचार करे तो उसे साफ़ मालूम होगा कि यह दुनिया बे-ख़ुदा नहीं है और न इस के बहुत से ख़ुदा और प्रभु हैं। एक ही ख़ुदा इस का सृष्टि-कर्ता है और वही अकेला इस का नियन्ता भी है। मनुष्य को जो-कुछ मिला है वह अल्लाह ही का दिया हुआ है। अल्लाह ही के हुक्म से ज़मीन और आसमान की अगणित चीज़ें और शक्तियाँ मनुष्य की सेवा में लगी हुई हैं। मनुष्य का यह परम कर्त्तव्य है कि वह अल्लाह ही का हो रहे और किसी और को अपना पूज्य और आराध्य न बनाये।

इस के बाद कुफ़्र* करने वालों और अपनी हठ-धर्मी पर अड़े रहने वालों को अज़ाब की सूचना दी गई है। फिर ईमान* वालों से कहा गया है कि वे ऐसे काफ़िरों* के पीछे न पड़ें। जो व्यक्ति जैसा-कुछ कर रहा है अपने ही लिए कर रहा है; अन्त में हर एक को अपने रब* के पास हाज़िर होना है।

फिर उन बड़े एहसानों का उल्लेख किया गया है जो अल्लाह ने बनी इसराईल* पर किये थे परन्तु बनी इसराईल* ने अल्लाह की ओर से ज्ञान पाने के बाद भी विभेद किया। बनी इसराईल* के पारस्परिक विभेदों के बारे में कहा गया कि क़ियामत* के दिन अल्लाह उन का फ़ैसला कर देगा। बनी इसराईल* को मिसाल दे कर वास्तव में यह समझाना अभीष्ट है कि यह क़ुरआन जो ...

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

उतरा है वह वही है जो कभी बनी इसराईल* को दी गई थी जिस के कारण संसार में उन्हें श्रेष्ठता प्राप्त हुई थी। परन्तु जब उन्हों ने धर्म में विभेद किया और अल्लाह की दी हुई नेमत को खो दिया, तो अब यह नेमत और अमूल्य निधि अल्लाह ने तुम्हारे यहाँ भेजी है। यह क़ुरआन धर्म का स्पष्ट मार्ग दिखाता है जो लोग इस से मुँह मोड़ेंगे वह अपना ही बुरा करेंगे।

फिर नबी* सल्ल० को सम्बोधित करते हुये कहा गया है कि आप (सल्ल०) (धर्म के) स्पष्ट मार्ग से विचलित न हों। उन लोगों की इच्छाओं का पालन करना आप का काम नहीं जो ज्ञान नहीं रखते। ये लोग अल्लाह के मुक़ाबले में किसी के काम आने वाले नहीं हैं। यद्यपि यह बात नबी सल्ल० से कही गई है परन्तु वास्तव में यह आदेश सभी ईमान* वाले व्यक्तियों के लिए है।

आगे चल कर क़ियामत* के मानने से इन्कार करने वालों की धारणाओं का तर्कयुक्त खण्डन करते हुये बताया गया है कि किस तरह क़ियामत* के दिन प्रत्येक समुदाय (भय और डर से) घुटनों के बल पड़ा होगा। हर गरोह से कहा जायेगा कि आज तुम्हें वही बदला मिलेगा जो तुम दुनिया में करते रहे हो। और काफ़िरों* से कहा जायेगा कि तुम अपराधी हो। आज हम तुम्हें भुला देंगे जिस तरह तुम ने इस दिन को भुला रखा था। तुम्हारा ठिकाना जहन्नम* है। तुम्हारा कोई सहायक नहीं। सांसारिक जीवन ने तुम्हें भुलावे में डाल रखा था। तुम हमारी आयतों* की हँसी ही उड़ाते रहे।

सूरः* अल्लाह की बड़ाई और प्रशंसा के साथ समाप्त हुई है।

---

*इस का अर्थ आखीर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः[*] अल-जासियः

(मक्का में उतरी — आयतें[*] ३७)

अल्लाह[*] के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
حٰمٓ ۚ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝ اِنَّ فِي السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَفِيْ خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِنْ دَآبَّةٍ اٰيٰتٌ
لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ۝ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ
مِنْ رِّزْقٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَتَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ
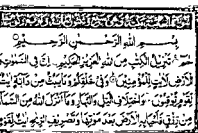
हा० मीम०[1] ।○ इस किताब[*] का अवतरण अल्लाह, अपार शक्ति के मालिक और हिकमत[*] वाले की ओर से है[2] ।○ निस्सन्देह आसमानों और ज़मीन में बड़ी निशानियाँ हैं ईमान[*] वालों के लिए ।○ और तुम्हारी अपनी सृष्टि में, और उन प्राण-धारियों में जिन्हें वह ज़मीन में बखेरता रहता है, बड़ी निशानियाँ हैं विश्वास करने वाले लोगों के लिए[3] ।○ और रात और दिन के आगे-पीछे आने में और उस रोज़ी (अर्थात् वर्षा) में जिसे अल्लाह ने आसमान से उतारा फिर उस से भूमि को उस के मुरदा (शुष्क) हो जाने के बाद जीवित किया, और हवाओं के उलट-फेर में, निशानियाँ हैं बुद्धि से काम लेने वालों के लिए।○

ये अल्लाह की आयतें[*] हैं जिन को हम तुम्हें ठीक-ठीक सुना रहे हैं। अब अल्लाह और उस की आयतों[*] के बाद, किस बात पर, ये ईमान[*] लायेंगे[4] ? ○

तबाही है हर झूठ गढ़ने वाले गुनहगार के लिए, ○ जो अल्लाह की आयतों[*] को सुनता है जो उसे सुनाई जाती हैं, फिर पूरे गर्व से (अपने कुफ़्र[*] पर) अड़ा रहता है मानो उस ने उन को सुना ही नहीं। तो ऐसे व्यक्ति को दुःख देने वाले अज़ाब की मंगल-सूचना दे दो। ○ और जब हमारी आयतों[*] में से कुछ जान लेता है तो उस की हँसी उड़ाने लगता है[5] । ऐसे लोगों के लिए अपमानजनक अज़ाब है।○ उन के उस तरफ़ जहन्नम[*] है,[6] जो-कुछ उन्हों ने (दुनिया में) कमाया हुआ

---

१ दे० सूरः अल-बक़रः फुट नोट १।

२ दे० आयत ३७।
सूरतों[*] का आरम्भ प्रायः इसी तरह के वाक्यों से होता है। मनुष्य का रेडियो तो केवल यह बताता है कि बोलने वाला कहाँ से बोल रहा है परन्तु क़ुरआन का यह एलान कि यह अल्लाह की ओर से है बड़ा महत्व रखता है। मनुष्य का कर्तव्य है कि वह उसे ध्यानपूर्वक सुने और उस पर विचार करे। इस लिए कि अल्लाह की ओर से किसी सन्देश का प्रसारण मनोरंजन के लिए नहीं है बल्कि इसी के मानने न मानने पर जीवन की सफलता या असफलता निर्भर है।

३ दे० सूरः अल-बक़रः आयत १६४; अर-रूम आयत २०।
जो लोग इन्कार ही की नीति अपनाये हुये हैं उन का मामला तो दूसरा है परन्तु जिन्हों ने अपने दिल के दरवाज़े बन्द नहीं किये हैं उन्हें तो हर ओर ऐसी निशानियाँ दिखाई देती हैं जो मनुष्य को यह विश्वास दिलाती हैं कि इस दुनिया का कोई स्वामी है और वही अकेला सब का पालनकर्ता और पूज्य है।

४ अर्थात् जब अल्लाह की बयान की हुई निशानियों और दलीलों के सामने आ जाने के बाद भी ये लोग ईमान[*] नहीं ला रहे हैं तो अब क्या चीज़ आयेगी जिस से इन्हें विश्वास होगा। अल्लाह का 'कलाम' सुन कर भी जिस को ईमान[*] की दौलत न मिल सकी उस की अन्धता का इलाज आख़िर क्या हो सकता है।

५ दे० आयत ३६।

६ यहाँ 'वरा' (وراء) शब्द प्रयुक्त हुआ है। जो हर उस चीज़ के लिए बोला जाता है जो आदमी की आँखों से ओझल हो, चाहे वह आगे हो या पीछे।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

يَعْقِلُونَ ۝ تِلْكَ آيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَ
اللّٰهِ وَآيٰتِهِ يُؤْمِنُونَ ۝ وَيْلٌ لِكُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ۝ يَسْمَعُ آيٰتِ اللّٰهِ تُتْلٰى
عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا كَأَنْ لَمْ يَسْمَعْهَا فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝ وَإِذَا
عَلِمَ مِنْ آيٰتِنَا شَيْئًا اتَّخَذَهَا هُزُوًا أُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُهِينٌ ۝ مِنْ
وَرَآئِهِمْ جَهَنَّمُ وَلَا يُغْنِي عَنْهُمْ مَا كَسَبُوا شَيْئًا وَلَا مَا اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ
اللّٰهِ أَوْلِيَآءَ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ هٰذَا هُدًى وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيٰتِ رَبِّهِمْ
لَهُمْ عَذَابٌ مِنْ رِجْزٍ أَلِيمٌ ۝ اللّٰهُ الَّذِي سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِيَ
الْفُلْكُ فِيهِ بِأَمْرِهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ وَسَخَّرَ لَكُمْ

भी उन के काम न आयेगा, और न वे (कुछ कर सकेंगे) जिन को उन्हों ने अल्लाह के सिवा वली (संरक्षक-मित्र) बना रखा है और उन के लिए बड़ा अज़ाब है। ○

यह मार्ग-दर्शन* है। और जिन लोगों ने अपने रब* की आयतों* का इन्कार किया, उन के लिए बहुत ही बुरा अज़ाब है दुःख भरा। ○

वह अल्लाह ही तो है जिस ने तुम्हारे लिए समुद्र को काम में लगाया ताकि उस के हुक्म से नौकायें उस में चलें, (ताकि तुम अपने अभीष्ट स्थान तक पहुँचो) और ताकि तुम उस का फ़ज़्ल (अर्थात् रोज़ी) तलाश करो, और कदाचित् तुम कृतज्ञता दिखलाओ; ○ और उस ने तुम्हारे लिए काम में लगाया जो-कुछ आसमानों में है और जो-कुछ ज़मीन में है, सब को अपनी ओर से—निस्सन्देह इस में बड़ी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सोच-विचार करने वाले हैं। ○

कह दो उन लोगों से जो ईमान* लाये हैं कि वे उन लोगों को क्षमा करें[7] जिन्हें अल्लाह के दिवसों की आशंका नहीं;[8] ताकि वह लोगों को उस चीज़ का बदला दे जो-कुछ कि वे कमाते हैं। ○

जो भला करेगा अपना ही भला करेगा और जो बुरा करेगा अपना ही बुरा करेगा। फिर तुम्हें अपने रब की ओर पलटना होगा।* ○

और निश्चय ही बनी इसराईल* को हम ने किताब* और हुक्म*[10] और नुबूवत* प्रदान की थी, और उन्हें अच्छी चीज़ों की रोज़ी दी और उन्हें सारे संसार पर बड़ाई दी;[11] ○ और उन्हें इस सिलसिले में खुले-खुले निर्देश प्रदान किये। फिर उन में जो विभेद हुआ वह ज्ञान पा लेने के बाद ही हुआ केवल एक-दूसरे पर ज़्यादती करने के लिए। निस्सन्देह तुम्हारा रब* क़ियामत* के दिन उन के बीच उस चीज़ का फ़ैसला कर देगा जिस में वे विभेद करते थे। ○

फिर इस सिलसिले में (हे मुहम्मद !) हम ने तुम्हें एक स्पष्ट मार्ग पर कर दिया है; तो

---

७ दे० आयत २०।

८ *अर्थात् उन्हें और उन की कुनीतियों को ध्यान में न लायें अल्लाह स्वयं समय आने पर उन से बदला ले लेगा।*

९ दे० सूरः इबराहीम आयत ५।

क़ुरआन में इस के लिए पारिभाषिक शब्द 'अय्यामुल्लाह' (أيام الله) प्रयुक्त हुआ है। इस से अभिप्रेत वे यादगार दिन होते हैं जिन में महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनायें घटित हुई हों। जिन में अल्लाह काफ़िरों को कोई विशेष सज़ा दे या ईमान* वालों पर उस की कोई विशेष कृपा हो। उन्हें विजय प्राप्त हो। यहाँ अल्लाह के दिवस से अभिप्रेत किसी जाति के बुरे दिन हैं जब कि अल्लाह का उस पर प्रकोप हो और वह अपने करतूतों के कारण तबाह कर दी जाये। बाइबिल में भी अल्लाह के दिवस* (day of the Lord) का उल्लेख जगह-जगह हुआ है उदाहरणार्थ दे० Isa. 2 : 12; 13 : 6, 9; 34 : 8; Jer. 46 : 10; Ezek. 30 : 3; Zeck. 14 : 1; 1Thes. 5 : 2; 2 Pet; 3 : 10.

१० *हुक्म से अभिप्रेत तीन चीज़ें हैं : एक, किताब* का ज्ञान और दीन* की समझ, दूसरे किताब* के आशय के अनुसार काम करने की युक्ति, तीसरे, मामलों में फ़ैसला करने की क्षमता।*

११ *अर्थात् अल्लाह ने उस समय की जातियों में बनी इसराईल* को श्रेष्ठता प्रदान की। बनी इसराईल* को किताब* दी और उन्हें इस के लिए चुना कि वे लोगों को अल्लाह के दीन* की ओर आमन्त्रित करें।*

**इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

क्या तुम ने उस व्यक्ति को भी देखा जिस ने अपना इलाह* (पूज्य) अपनी (तुच्छ-) इच्छा को बना रखा है, और अल्लाह ने उसे जानते-बूझते राह से भटका दिया,[19] और उस के कान और दिल पर ठप्पा लगा दिया, और उस की आँख पर परदा डाल दिया[20]? फिर अब अल्लाह के बाद कौन उसे (सीधी) राह पर ला सकता है ? तो क्या तुम सोचते नहीं । ○

ये लोग कहते हैं : जो-कुछ भी है बस हमारा यह सांसारिक जीवन है; हम मरते और जीते हैं, और हमें तो बस समय (काल) विनष्ट करता है;[21] इन के पास इस का कोई ज्ञान नहीं; ये लोग केवल अटकलें दौड़ाते हैं । ○

और जब हमारी खुली-खुली आयतें* इन के सामने पढ़ी जाती हैं तो इन की हुज्जत (दलील) बस यही होती है कि कहते हैं : लाओ हमारे पूर्वजों को (जीवित कर के) यदि तुम २५ (अपनी बात में) सच्चे हो[22] । ○

कहो : अल्लाह ही तुम्हें जीवन प्रदान करता है, फिर वही तुम्हें मौत देता है,[23] फिर वही तुम्हें क़ियामत* के दिन जिस (के आने) में सन्देह नहीं इकट्ठा करेगा । परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते[24] । ○

और अल्लाह ही का है राज्य आसमानों और ज़मीन का;[25] और जिस दिन वह घड़ी (अर्थात् क़ियामत*) क़ायम होगी, उस दिन मिथ्यावादी घाटा उठायेंगे । ○ और तुम प्रत्येक समुदाय को घुटनों के बल पड़ा हुआ देखोगे,[26] हर समुदाय अपनी किताब (कर्म-पत्र) की ओर

सकता । भलाई और बुराई दोनों समान नहीं तो उन का परिणाम एक कैसे हो सकता है । इस लिए न्याय, युक्ति और बुद्धि-संगत बात यही है कि वर्तमान जीवन के बाद भी कोई जीवन है जिस में मनुष्य अपने कर्मों का पूरा-पूरा बदला पायेगा ।

१७ ये ज़मीन और आसमान बच्चों का कोई घरौंदा नहीं है बल्कि अल्लाह ने इन्हें उच्च उद्देश्य के अन्तर्गत पैदा किया है । ये हक़ और इन्साफ़ पर क़ायम हैं । जो लोग यह समझते हैं कि मनुष्य नेकी करे या बुराई अन्त में वह मिट्टी में मिल जायेगा, ऐसा कोई समय नहीं आने का कि लोगों को उन के कर्मों का बदला दिया जाये तो उन की इस धारणा का अर्थ इस के सिवा और कुछ नहीं कि यह विशाल विश्व उद्देश्य-हीन है और इस की व्यवस्था सर्वथा अनृत पर आधारित है । ज़ाहिर है ऐसा सोचना घोर अन्याय और अन्धता की बात है ।

१८ अर्थात् लोगों का हक़ कदापि मारा नहीं जायेगा । उन्हें उन की कमाई का पूरा-पूरा बदला दिया जायेगा । यहाँ कमाई से अभिप्रेत धन-संपत्ति नहीं बल्कि वास्तविक कमाई वही है जिस के कारण मनुष्य अल्लाह के यहाँ या तो सज़ा का भागी होगा या पुरस्कार का अधिकारी ठहरेगा ।

१९ दे० सूरः अन-निसा फुट नोट ४९; अल-अनआम फुट नोट १३, २५ ।

२० आँख, कान सब-कुछ पाने के बाद भी उस ने गुमराही को अपनाया ।

२१ अर्थात् मरना-जीना यह समय का चक्र है न आख़िरत* आने वाली है और न हमें कोई दोबारा जीवित कर के उठाने वाला है ।

२२ हालाँकि जब नियत समय आ जायेगा, तो उन्हें और उन के बाप-दादा सभी को उठा खड़ा किया जायेगा ।

२३ अर्थात् जीवन और मरण का मालिक समय नहीं है बल्कि अल्लाह ही जिसे चाहता है जीवित रखता है और जिसे मारना चाहता है मौत देता है ।

२४ काफ़िरों* का कहना था कि हम तो इसे उस समय मानेंगे कि मृत्यु के पश्चात् कोई जीवन है जब कि तुम हमारे पूर्वजों को ले आओ (दे० आयत २५) यहाँ जवाब में यह बात कही जा रही है कि क़ियामत* में तुम सब को इकट्ठा कर दिया जायेगा। यह मृत्यु और जीवन तो इस लिए है कि मनुष्य की परीक्षा हो। जब अल्लाह मुर्दों को जीवित कर के उठायेगा, तो चमत्कार दिखाने के लिए नहीं बल्कि वह तो फ़ैसले का दिन होगा ।

२५ ज़मीन और आसमान पर उसे पूर्ण अधिकार प्राप्त है । ऐसा कोई नहीं जो अल्लाह को न्याय और अदालत करने से रोक सके ।

२६ यहाँ मूल ग्रन्थ में 'जासियः' (جاثية) शब्द प्रयुक्त हुआ है जिस का अर्थ है इकट्ठा होना और घुटनों के बल गिर जाना । उस दिन सब इकट्ठे होंगे और बिलकुल विवश होंगे ।

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

عليهم آيتنا بينت ما كان حجتهم إلا أن قالوا ائتوا بآبائنا إن كنتم صدقين ۝ قل الله يحييكم ثم يميتكم ثم يجمعكم إلى يوم القيمة لا ريب فيه ولكن أكثر الناس لا يعلمون ۝ ولله ملك السموت والأرض ويوم تقوم الساعة يومئذ يخسر المبطلون ۝ وترى كل أمة جاثية كل أمة تدعى إلى كتبها اليوم تجزون ما كنتم تعملون ۝ هذا كتبنا ينطق عليكم بالحق إنا كنا نستنسخ ما كنتم تعملون ۝ فأما الذين آمنوا وعملوا الصلحت فيدخلهم ربهم في رحمته ذلك هو الفوز المبين ۝ وأما الذين كفروا أفلم تكن آيتي تتلى عليكم فاستكبرتم وكنتم قوما مجرمين ۝ وإذا قيل إن وعد الله حق والساعة لا ريب فيها قلتم ما ندري ما الساعة إن نظن إلا ظنا وما نحن بمستيقنين ۝ وبدا لهم سيات ما عملوا وحاق بهم ما كانوا به يستهزءون ۝ وقيل اليوم ننسكم كما نسيتم لقاء يومكم هذا ومأوكم النار وما لكم من نصرين ۝ ذلكم بأنكم اتخذتم آيت الله هزوا وغرتكم الحيوة الدنيا فاليوم لا يخرجون منها ولا هم يستعتبون ۝ فلله الحمد رب السموت ورب الأرض رب العلمين ۝ وله الكبرياء في السموت والأرض وهو العزيز الحكيم ۝

बुलाया जायेगा[२७] (कहा जायेगा) : आज तुम्हें बदला दिया जायेगा जैसा-कुछ तुम करते थे। ○

यह हमारी किताब (जिस में तुम्हारे कर्म अंकित हैं) तुम्हारे मुक़ाबिले में ठीक-ठीक बोल रही है। निस्सन्देह हम लिखवाते जाते थे जो-कुछ तुम करते थे[२८]। ○

तो जो लोग ईमान* लाये और अच्छे काम किये, उन्हें उन का रब* अपनी 'रहमत' (दयालुता की छाया) में दाख़िल करेगा। यही स्पष्ट सफलता है। ○ ३

और जिन लोगों ने कुफ़्र* किया (उन से कहा जायेगा) : क्या हमारी आयतें* तुम्हारे सामने नहीं पढ़ी जाती थीं ? तो तुम ने अपने को बड़ा समझा और तुम अपराधी लोग थे[२९]। ○ और जब कहा गया : निस्सन्देह अल्लाह का वादा सच्चा है, और उस (क़ियामत की) घड़ी (के आने) में सन्देह नहीं, तो तुम कहते थे : हम नहीं जानते कि वह (क़ियामत* की) घड़ी क्या है। हमें तो बस एक ख़याल सा होता है, और हमें विश्वास नहीं। ○

और ज़ाहिर हो गईं उन पर बुराइयाँ उन कामों की जो वे करते थे, और उसी चीज़ ने उन्हें आ घेरा जिस की वे हँसी उड़ाया करते थे। ○ और कहा जायेगा : आज हम तुम्हें भुला देंगे, जिस तरह तुम ने अपने इस दिन की भेंट (मुलाक़ात) को भुला रखा था[३०] और तुम्हारा ठिकाना (दोज़ख़* की) आग है, और तुम्हारा कोई सहायक नहीं। ○ यह इस लिए कि तुम ने अल्लाह की आयतों* का मज़ाक़ बनाया था, और सांसारिक जीवन ने तुम्हें धोखे में डाला[३१]। तो आज ये लोग न उस (आग) से निकाले जायेंगे, और न इन्हें इस का अवसर मिलेगा कि मना लें। ○

सो प्रशंसा (हम्द*) अल्लाह, आसमानों के रब* और ज़मीन के रब* और सारे संसार के रब* के लिए है। ○ और उसी के लिए बड़ाई है आसमानों और ज़मीन में, और वही अपार शक्ति का मालिक और हिकमत* वाला है। ○

२७ हर गरोह और उस के हर व्यक्ति को उस के कर्मों का अभिलेख जिस में उस के भले-बुरे कर्मों का उल्लेख होगा दे दिया जायेगा।

२८ अर्थात् तुम्हारा यह कर्म-लेख तुम्हारे कर्मों की ठीक-ठीक गवाही दे रहा है। तुम्हारे कर्म, तुम्हारी भावनायें और विचार इस में अंकित हैं। तुम्हारी नेकी-बदी सब कुछ रिकार्ड (Record) हो रही थी। उसी के अनुसार आज के दिन तुम्हारा फ़ैसला होगा।

२९ यहाँ अपराधी उन लोगों को कहा गया है जो अल्लाह की ज़मीन पर अल्लाह का दिया हुआ खाते हैं परन्तु उस के आगे सिर नहीं झुकाते, उस के आदेशों से मुँह मोड़ते हैं। ऐसे लोग अपराधी हैं चाहे उन्होंने दुनिया में कोई ऐसा काम किया हो या न किया हो जिसे लोग अपराध कहते हैं जैसे चोरी, क़त्ल आदि।

३० उन्हें भुला देने का अर्थ यह है कि उस दिन अल्लाह उन पर दया-दृष्टि नहीं डालेगा उन के साथ ऐसा मामला करेगा जैसा भूले हुये किसी व्यक्ति के साथ किया जाता है।

३१ अर्थात् तुम ने दुनिया को सब-कुछ समझा। आख़िरत* को भूले रहे। हालाँकि असल चीज़ मात्र ऐश सुख और आराम नहीं बल्कि वह नैतिक मान्यतायें थीं जिन की तुम उपेक्षा करते रहे।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

४६--अल-अहक़ाफ़

(परिचय)

नाम (The Title)

सूरः* की आयत* २१ में 'अल-अहक़ाफ़' का नाम आया है इसी सम्पर्क से इस सूरः का नाम 'अल-अहक़ाफ़' रखा गया। 'अल-अहक़ाफ़' से अभिमेत अरब का दक्षिणी भू-भाग है। यह मरुभूमि है। किसी समय में यह हरा-भरा मैदान था इस में आद* जाति के लोग आबाद थे।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह सूरः* कब अवतीर्ण हुई इस का उल्लेख सूरः ४० (अल-मोमिन) में किया जा चुका है।

वार्ताएँ (Subject-matter)

प्रस्तुत सूरः* में अहंकारी लोगों के लिए इस बात की चेतावनी है कि उन्हें अपने करतूतों का बदला मिल कर रहेगा; क़ुरआन ऐसे लोगों के लिए सर्वथा डरावा और चेतावनी है। इस सूरः का मूल विषय यही है¹।

यह सूरः* हा० मीम० सिलसिले की अन्तिम सूरः है। इस सिलसिले (Series) की सर्वप्रथम सूरः, अल-मोमिन है।

प्रस्तुत सूरः* के आरम्भ में किताब* के अवतरण का उल्लेख है फिर शिर्क* का तर्कयुक्त खण्डन किया गया है। फिर उस नीति का वर्णन किया गया है जो मुश्रिक* और काफ़िर* लोगों ने अल्लाह की आयतों* और उस के रसूल* के साथ अपना रखी थी। और फिर उन के आक्षेपों का उत्तर दिया गया है और उन के सामने मानवीय जीवन के दो नमूने प्रस्तुत किये गये हैं। यदि धर्म-विरोधी न्याय और बुद्धि से काम लें तो सरलतापूर्वक इस का निर्णय कर सकते हैं कि दोनों में से कौन सा चरित्र अपनाने योग्य है।

फिर इस के बाद हज़रत हूद अ० की जाति वालों की तबाही का क़िस्सा बयान किया गया है कि किस तरह से उन के अहंकार और उन की सरकशी ने उन्हें मिटा कर रख दिया। जब उन पर अल्लाह का अज़ाब आया तो उन की सूझ-बूझ और उन की समस्त युक्तियाँ निरर्थक सिद्ध हुईं।

फिर उन जिन्नों* के ईमान* लाने का उल्लेख किया गया है जिन्हों ने नबी सल्ल० को किसी जगह क़ुरआन पढ़ते देखा था। जब आप (सल्ल०) क़ुरआन पढ़ चुके, तो उन्हों ने अपनी जाति वालों को जा कर वह सन्देश सुनाया जो उन्हें क़ुरआन में मिला था।

अन्त में नबी सल्ल० को सम्बोधित करते हुये कहा गया है कि आप धैर्य से काम लें जिस तरह अगले रसूलों* ने धैर्य और साहस से काम लिया था। जिस दिन ये लोग उस चीज़ को देख लेंगे जिस का इन से वादा किया जा रहा है और ये इन्कार किये चले जा रहे हैं तो इन्हें ऐसा लगेगा मानो ये केवल दिन में से एक घड़ी ही ठहरे रहे हैं।

---

¹ दे० आयत ३, ३५।

*इस पर अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः[°] अल-अहक़ाफ़

(मक्का में उतरी — आयतें[°] ३५)

अल्लाह[°] के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

حٰمٓ ۝ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝ مَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَمَّآ اُنْذِرُوْا مُعْرِضُوْنَ ۝ قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ۭ اِيْتُوْنِيْ بِكِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ هٰذَآ اَوْ اَثٰرَةٍ مِّنْ عِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَنْ لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗٓ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ وَهُمْ عَنْ دُعَاۗىِٕهِمْ غٰفِلُوْنَ ۝ وَاِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوْا لَهُمْ اَعْدَاۗءً وَّكَانُوْا بِعِبَادَتِهِمْ كٰفِرِيْنَ ۝ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَاۗءَهُمْ ۙ هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۭ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَلَا تَمْلِكُوْنَ لِيْ مِنَ اللّٰهِ شَـيْــــًٔا ۭ هُوَ اَعْلَمُ بِمَا تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ۭ كَفٰى بِهٖ شَهِيْدًۢا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۭ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝ قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ وَمَآ اَدْرِيْ مَا يُفْعَلُ بِيْ وَلَا بِكُمْ ۭ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ وَمَآ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَكَفَرْتُمْ بِهٖ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ عَلٰي مِثْلِهٖ فَاٰمَنَ وَاسْتَكْبَرْتُمْ

† हा० मीम०[1] । ○ इस किताब[°] का अवतरण अल्लाह, अपार शक्ति के मालिक और हिकमत[°] वाले की ओर से है[1] । ○

हम ने आसमानों और ज़मीन को और जो-कुछ इन के बीच है केवल हक़ के साथ, और एक नियत समय के लिए पैदा किया है[3] और जिन लोगों ने कुफ़्र[°] (का मार्ग) अपनाया है उन्हें जिस चीज़ से डराया जाता है उस से वे किनारा ही खींचते हैं। ○

कहो (उन से, हे मुहम्मद !) : क्या तुम ने उन्हें देखा जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो ? मुझे दिखाओ उन्हों ने ज़मीन का कौन सा हिस्सा बनाया है। या आसमानों (के बनाने) में उन की कोई शिरकत है[4] ? मेरे पास (अपनी बात के सबूत में) इस (क़ुरआन[°]) से पहले की कोई किताब[°] लाओ,[5] या कोई और इल्मी सबूत, यदि तुम सच्चे हो। ○

और उस व्यक्ति से बढ़ कर कौन गुमराह हो सकता है, जो अल्लाह के सिवा उन्हें पुकारता है जो क़ियामत[°] तक भी उस की दुआ को

† यहाँ से छब्बीसवाँ पारः (Part XXVI) शुरू होता है।

१ दे० सूरः अल-बक़रः फ़ुट नोट १ ।

२ दे० सूरः अल-जासियः फ़ुट नोट २ ।

३ दे० सूरः अल-जासियः आयत २२ । विश्व की विशाल व्यवस्था बड़ी ही हिक-

यह दुनिया निष्प्रयोजन और बे-नतीजा नहीं पैदा की गई है। यह विश्व-व्यवस्था निरुद्देश्य कदापि

मत[°] और युक्ति से चल रही है। यह इस बात का खुला प्रमाण है कि

नहीं है। एक दिन इस विश्व का

दूसरी बात यह बताई गई कि यह सृष्टि सदा बनी रहने वाली नहीं है। हिसाब लेगा। भौतिक

अन्त हो जायेगा और वह समय आ जायेगा जब कि अल्लाह लोगों से उन के कर्मों का और सदैव रहेगा। परन्तु धर्म के

वादियों (Materialists) का यह मत रहा है कि यह विश्व सदैव से है सर्वकालिक कदापि नहीं है।

अतिरिक्त आधुनिक विज्ञान ने भी यह बात सिद्ध कर दी है कि यह विश्व-व्यवस्था यह सृष्टि सदैव से नहीं है यदि ऐसा

यहाँ की समस्त शक्तियाँ सीमित हैं एक दिन इन का लोप हो जायेगा। नष्ट हो जाती।

होता तो यह कभी की शक्ति-हीन हो चुकी होती। यह दुनिया आज से बहुत पहले और तुम उन्हें पुकारते और

४ अर्थात् जिन देवी-देवताओं पर तुम्हें भरोसा है कि वे तुम्हारे काम आते हैं आखिर तुम उन को किस

उन की पूजा करते हो बताओ ज़मीन और आसमान में उन्हों ने क्या पैदा किया है

वजह से अल्लाह का शरीक ठहराते हो। (शेष अगले पृष्ठ पर)

५ दे० आयत १२ ।

[°] इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

पूरी करने वाले नहीं,[5] और वे तो उन की दुआ से बे-ख़बर रहते हैं, ○ और जब लोग (क़ियामत* के दिन) इकट्ठा किये जायेंगे तो वे उन (मुशिरकों*) के दुश्मन होंगे, और उन की इबादत* का इन्कार करेंगे[8] । ○

और जब हमारी खुली-खुली आयतें* उन्हें पढ़ कर सुनाई जाती हैं, तो वे कुफ़्र* करने वाले सत्य के प्रति, जब कि वह उन के पास आ चुका, कहते हैं : यह खुला जादू है[9] । ○

क्या कहते हैं : उस ने इसे स्वयं गढ़ लिया है ? कहो (हे मुहम्मद !) : यदि मैं ने इसे स्वयं गढ़ा है,[10][11] तो अल्लाह के आगे तुम मेरे लिए कुछ नहीं कर सकते । इस (.क़ुरआन*) के बारे में जो बातें तुम बनाते हो वह भली-भाँति जानता है । और वह मेरे और तुम्हारे बीच गवाह की हैसियत से काफ़ी है । और वह बड़ा ही क्षमाशील और दयामय है । ○

कहो (हे मुहम्मद !) : मैं कोई नया रसूल* नहीं हूँ, और न मैं यह जानता हूँ कि मेरे साथ क्या किया जायेगा और न यह (जानता हूँ) कि क्या किया जायेगा तुम्हारे साथ[12] । मैं तो बस उसी पर चलता हूँ जो मेरी ओर वह्य* की जाती है, और मैं तो बस एक साफ़-साफ़ सचेत करने वाला हूँ । ○

कहो : तुम ने कुछ सोचा भी : यदि यह (.क़ुरआन*) अल्लाह ही के यहाँ का हुआ फिर

मतलब यह है कि .क़ुरआन से पहले जो किताबें* अल्लाह की ओर से उतरी हैं क्या उन में से तुम कोई ऐसी किताब ला सकते हो जिस में बताया गया हो कि इन तुम्हारे देवी-देवताओं में ईश्वरीय गुण पाये जाते हैं और ये अल्लाह के प्रभुत्व में शरीक हैं ।

६ वास्तविकता के जानने के दो ही साधन हैं या तो आदमी के पास अल्लाह की कोई किताब हो या फिर उसे उस का ज्ञान प्राप्त हो । केवल अनुमान और अटकल से वास्तविकता के बारे में कोई हुक्म नहीं लगाया जा सकता ।

७ अर्थात् इस से बढ़ कर मूर्खता और पथ-भ्रष्टता की बात और क्या होगी कि आदमी उन को पुकारता रहे जिन्हें यह भी ख़बर न हो कि उन्हें कोई पुकार रहा है । और जिन्हें यह अधिकार ही न हो कि वे कोई कार्रवाई कर सकें ।

८ क़ियामत* के दिन वे सभी मुशिरकों* के दुश्मन होंगे । जिन को उन्हों ने पूज्य समझा था वे कहेंगे कि हम पर इन के करतूतों की कोई जिम्मेदारी नहीं है ।

९ दे० सूरः सबा आयत ४३ ।

इन का कहना यह है कि .क़ुरआन सुन कर लोग यदि प्रभावित होते हैं तो यह इस लिए नहीं कि वह अल्लाह का 'कलाम' है बल्कि इस लिए कि वह जादू है ।

१० एक तरफ़ तो नबी सल्ल० के बारे में काफ़िरों* का यह कहना था कि यह व्यक्ति बावला और दीवाना हो गया है दूसरी तरफ़ वे यह भी कहते कि इस व्यक्ति ने स्वयं यह कलाम गढ़ लिया है और कभी कहते कि कोई और गढ़ कर इस को देता है । हालाँकि विक्षिप्त या बावला व्यक्ति कलाम गढ़ने का सामर्थ्य नहीं रखता । और यदि कोई गढ़ कर देने वाला होता तो वह स्वयं छिपा कैसे रह सकता था । झूठा इलज़ाम लगाने वाले ऐसी ही परस्पर विरोधी बातें किया करते हैं ।

११ अर्थात् यदि मैं यों ही झूठ-मूठ अल्लाह से सम्बन्ध लगा कर कहता हूँ कि यह अल्लाह का कलाम है तो इस से बड़ा अपराध और क्या हो सकता है फिर तो कोई न होगा जो अल्लाह की पकड़ से मुझे बचा सके । परन्तु यदि यह 'कलाम' अल्लाह की ओर से है और तुम इस मानने से इन्कार करते हो, तो यह भी बहुत बड़ा अपराध है । इस लिए तुम्हें गम्भीरता-पूर्वक उस 'सत्य' पर विचार करना चाहिए जिसे ले कर मैं तुम्हारे पास आया हूँ ।

१२ अर्थात् मुझे परोक्ष का ज्ञान नहीं । मैं नहीं जानता कि अल्लाह जल्द ईमान वालों को विजय प्रदान करेगा या अभी ज़्यादा दिनों तक तकलीफ़ों और संकटों का सामना करना होगा । परोक्ष का ज्ञान केवल अल्लाह को है मैं तो केवल एक रसूल* हूँ । तुम्हारी यह धारणा सही नहीं कि जो अल्लाह का रसूल* हो उसे परोक्ष का ज्ञान भी होना चाहिए ।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

إن الله لا يهدي القوم الظلمين ۝ وقال الذين كفروا للذين
آمنوا لو كان خيرا ما سبقونا إليه وإذ لم يهتدوا به فسيقولون
هذا إفك قديم ۝ ومن قبله كتب موسى إماما ورحمة وهذا
كتب مصدق لسانا عربيا لينذر الذين ظلموا وبشرى
للمحسنين ۝ إن الذين قالوا ربنا الله ثم استقاموا فلا خوف
عليهم ولا هم يحزنون ۝ أولئك أصحب الجنة خلدين فيها
جزاء بما كانوا يعملون ۝ ووصينا الإنسن بولديه إحسنا
حملته أمه كرها ووضعته كرها وحمله وفصله ثلثون شهرا
حتى إذا بلغ أشده وبلغ أربعين سنة قال رب أوزعني
أن أشكر نعمتك التي أنعمت علي وعلى ولدي وأن أعمل
صلحا ترضه وأصلح لي في ذريتي إني تبت إليك وإني
من المسلمين ۝ أولئك الذين نتقبل عنهم أحسن ما عملوا
ونتجاوز عن سيئاتهم في أصحب الجنة وعد الصدق الذي
كانوا يوعدون ۝ والذي قال لولديه أف لكما أتعدانني أن
أخرج وقد خلت القرون من قبلي وهما يستغيثن الله ويلك
آمن إن وعد الله حق فيقول ما هذا إلا أسطير الأولين ۝
أولئك الذين حق عليهم القول في أمم قد خلت من قبلهم

सच्चा वादा है जो उन से किया जाता रहा है। ○

"और वह व्यक्ति जिस ने अपने माता-पिता को कहा : धिक् है तुम पर ! क्या तुम मुझे वादा देते हो कि मैं (जीवित कर के दोबारा) निकाला जाऊँगा हालाँकि मुझ से पहले कितनी ही नस्लें गुज़र चुकी हैं (और किसी को मर कर जीते नहीं देखा गया) ? और वे दोनों (उस के माता-पिता) अल्लाह से फ़रियाद करते हैं (और लड़के से कहते हैं) : अफ़सोस है तेरे हाल पर ! तू ईमान* ले आ ! निस्सन्देह अल्लाह का वादा सच्चा है। तो वह कहता है : ये तो बस अगले लोगों की कहानियाँ (बे-सनद बातें) हैं : ○

ये वे लोग हैं जिन पर उन गरोहों के साथ (अज़ाब की) बात साबित हो कर रही जो जिन्न* और मनुष्य में से इन से पहले गुज़र चुके हैं"। निश्चय ही ये घाटा उठाने वाले हैं"। ○ लोगों ने जैसा काम किया होगा उस के अनुसार हर एक के दरजे होंगे, और यह इस लिए कि उस को उन्हें उन के समस्त कर्म चुका देना है; और उन के साथ अन्याय न होगा। ○

और जिस दिन कुफ़्र* करने वाले (जहन्नम* की) आग के सामने पेश किये जायेंगे (तो उन से कहा जायेगा) : तुम ने अपने सांसारिक जीवन में अपनी अच्छी-अच्छी चीज़ें गँवा दीं और उन का मज़ा लूट चुके। तो आज तुम्हें अपमान-जनक अज़ाब दिया जायेगा इस के बदले में कि तुम ज़मीन में नाहक़ अपने को बड़ा समझते थे, और इस के बदले में कि तुम सीमोल्लंघन करते थे। ○

याद करो आद* के भाई को" जब उस ने अपनी जाति वालों को 'अल-अहक़ाफ़' में सचेत किया"— और उस के आगे और उस के पीछे भी सचेत करने वाले गुज़र चुके हैं— (उस ने कहा) कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत* न करो। मुझे तुम्हारे बारे में एक बड़े

२४ यहाँ से मानवीय चरित्र का दूसरा नमूना पेश किया जा रहा है।

२५ अर्थात् ऐसे लोगों का परिणाम वही होगा जो इस नीति के अपनाने वालों के लिए, चाहे वे मनुष्य हों या जिन्न* निश्चित हो चुका है।

२६ इस लिए कि सांसारिक जीवन का तो अन्त हो चुका होगा और अपनी आख़िरत* भी उन्हें तबाह मिलेगी।

२७ अर्थात् हज़रत हूद अ०। अरबी भाषा के मुहाविरे में किसी क़बीले के आदमी को उस क़बीले का भाई कहते हैं। यहाँ मक्का के काफ़िरों* को बताया जा रहा है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० कोई नये नबी* नहीं हैं इन से पहले भी बिगड़े हुये लोगों को राह पर लाने के लिए नबी* आते रहे हैं।

२८ 'अल-अहक़ाफ़' से अभिप्रेत अरब का दक्षिणी भू-भाग है। यह मरु-भूमि है। किसी समय में यह हरा-भरा मैदान था। इस में आद* जाति के लोग आबाद थे। अरब के लोग आद* से भली-भाँति परिचित थे; आद* के क़िस्से इन के यहाँ मशहूर थे। आद* को अल्लाह ने मिटा कर रख दिया केवल उन के क़िस्से और कहानियाँ शेष रह गईं।

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

من الجن والانس انهم كانوا خسرين ۝ ولكل درجت مما عملوا
وليوفيهم اعمالهم وهم لا يظلمون ۝ ويوم يعرض الذين كفروا
على النار اذهبتم طيبتكم في حياتكم الدنيا واستمتعتم بها فاليوم
تجزون عذاب الهون بما كنتم تستكبرون في الارض بغير الحق
وبما كنتم تفسقون ۝ واذكر اخا عاد اذ انذر قومه بالاحقاف
وقد خلت النذر من بين يديه ومن خلفه الا تعبدوا الا الله
اني اخاف عليكم عذاب يوم عظيم ۝ قالوا اجئتنا لتافكنا عن
الهتنا فاتنا بما تعدنا ان كنت من الصدقين ۝ قال انما العلم
عند الله وابلغكم ما ارسلت به ولكني اركم قوما تجهلون ۝
فلما راوه عارضا مستقبل اوديتهم قالوا هذا عارض ممطرنا
بل هو ما استعجلتم به ريح فيها عذاب اليم ۝ تدمر كل شيء
بامر ربها فاصبحوا لا يرى الا مسكنهم كذلك نجزي القوم
المجرمين ۝ ولقد مكنهم فيما ان مكنكم فيه وجعلنا لهم
سمعا وابصارا وافئدة فما اغنى عنهم سمعهم ولا ابصارهم ولا
افئدتهم من شيء اذ كانوا يجحدون بايت الله وحاق بهم ما كانوا
به يستهزءون ۝ ولقد اهلكنا ما حولكم من القرى وصرفنا
الايت لعلهم يرجعون ۝ فلولا نصرهم الذين اتخذوا من دون

(सख्त) दिन के अज़ाब का भय है। ○

उन्हों ने कहा : क्या तू हमारे पास इस लिए आया है कि हम को हमारे इलाहों* (पूज्य देवताओं) से फेर दे ? अच्छा तो हम पर ले आ जिस (अज़ाब) की तू हमें धमकी देता है यदि तू सच्चे लोगों में से है[२९]। ○ उस ने कहा : ज्ञान तो अल्लाह ही को है। और मैं तो तुम्हें (वह सन्देश) पहुँचाता हूँ जो दे कर मुझे भेजा गया है, परन्तु मैं तुम्हें देखता हूँ कि तुम नादानी करने वाले लोग हो। ○ फिर जब उन्हों ने उसे एक घटा के रूप में अपने मैदानों की ओर आते देखा, तो कहने लगे : यह घटा उठी है जो हम पर वर्षा करेगी। जी नहीं, यह तो वह है जिस को तुम ने जल्दी मचा रखी थी, आँधी है दुखदायी अज़ाब लिये हुये, ○ हर चीज़ को अपने रब* के हुक्म से तहस-नहस किये डाल रही है। तो वे ऐसे हो गये कि उन के निवास-स्थानों के अतिरिक्त और कुछ न दिखाई देता[३०]। इस तरह हम बदला देते हैं अपराधी लोगों को (उन के करतूतों का)। ○

और हम ने उन के बस में वह-कुछ कर रखा था जो (हे मक्का वालो!) तुम्हारे बस में नहीं किया, और हम ने उन्हें कान और आँखें और दिल दे रखे थे; फिर न तो उन के कान उन के कुछ काम आये और न उन की आँखें और न उन के दिल[३१] जब कि वे अल्लाह की आयतों* का इन्कार करते थे; और उसी चीज़ ने उन्हें आ घेरा जिस की वे हँसी उड़ाते थे। ○

और हम बस्तियों को जो तुम्हारे गिर्द थीं तबाह कर चुके हैं,[३२] और हम ने तरह-तरह से अपनी आयतें* पेश कीं, कदाचित् वे पलटें। ○

फिर क्यों उन्हों ने उस की सहायता नहीं की जिन को उन लोगों ने इस ध्येय से इलाह* (पूज्य) बना रखा था कि उन से अल्लाह के यहाँ पहुँच हो सकती है ? बल्कि वे उन से खो

---

२९ जब तू अज़ाब नहीं ला रहा है, तो यह इस बात का सबूत है कि तू झूठा है और यों ही झूठ-मूठ कहता है कि मुझे रसूल* बना कर भेजा गया है। दे० सूरः हूद आयत ३२।

३० अर्थात् अज़ाब बादल के रूप में आया। आद* जाति के लोग बहुत ख़ुश हुये, समझे कि ज़ोर की घटा उठी है अवश्य वर्षा होगी। परन्तु वह प्रचण्ड वायु और आँधी थी जो निरन्तर सात दिन और सात रात चलती रही। जिस चीज़ पर से उस का गुज़र हुआ वह सूख कर रह गई। खेती, वृक्ष और मनुष्य सब तबाह हो कर रह गये।

३१ मक्का वालों को अपने धन-वैभव और अपनी बड़ाई का बड़ा गर्व था। यहाँ उन से कहा जा रहा है कि आद* तुम से कहीं ज़्यादा शक्तिशाली थे परन्तु जब उन्हों ने अल्लाह की आयतों* का इन्कार किया, तो उन्हें अल्लाह की पकड़ से कोई चीज़ न बचा सकी। उन का धन-वैभव उन के कुछ काम न आ सका। उन की सूझ-बूझ और उन की समस्त युक्तियाँ धरी-की-धरी रह गईं।

३२ अर्थात् हमारा यह मामला केवल आद* के साथ नहीं हुआ है बल्कि तुम्हारे आस-पास की कितनी ही जातियों के साथ यह मामला पेश आ चुका है। सबा, फिर समूद* वाले, उन के बाद मदयन के लोग और फिर लूत (अ०) की जाति वालों के साथ यही-कुछ पेश आया है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

وَقُرْبَانًا آلِهَةً ۖ بَلْ ضَلُّوا عَنْهُمْ ۚ وَذَٰلِكَ إِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝
وَإِذْ صَرَفْنَا إِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُونَ الْقُرْآنَ فَلَمَّا حَضَرُوهُ قَالُوا
أَنصِتُوا ۖ فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا إِلَىٰ قَوْمِهِم مُّنذِرِينَ ۝ قَالُوا يَا قَوْمَنَا إِنَّا
سَمِعْنَا كِتَابًا أُنزِلَ مِن بَعْدِ مُوسَىٰ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِي
إِلَى الْحَقِّ وَإِلَىٰ طَرِيقٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝ يَا قَوْمَنَا أَجِيبُوا دَاعِيَ اللَّهِ وَآمِنُوا
بِهِ يَغْفِرْ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمْ وَيُجِرْكُم مِّنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ۝ وَمَن لَّا
يُجِبْ دَاعِيَ اللَّهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ فِي الْأَرْضِ وَلَيْسَ لَهُ مِن دُونِهِ
أَوْلِيَاءُ ۚ أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَمْ يَعْيَ بِخَلْقِهِنَّ بِقَادِرٍ عَلَىٰ أَن يُحْيِيَ الْمَوْتَىٰ
بَلَىٰ إِنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى
النَّارِ أَلَيْسَ هَٰذَا بِالْحَقِّ ۖ قَالُوا بَلَىٰ وَرَبِّنَا ۚ قَالَ فَذُوقُوا الْعَذَابَ
بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ ۝ فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ أُولُو الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا
تَسْتَعْجِل لَّهُمْ ۚ كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوعَدُونَ لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا سَاعَةً
مِّن نَّهَارٍ ۚ بَلَاغٌ ۚ فَهَلْ يُهْلَكُ إِلَّا الْقَوْمُ الْفَاسِقُونَ ۝

गये[३३]। और यह उन का ढकोसला था,[३४] और वह-कुछ जो वे गढ़ते थे। ○

और याद करो जब हम ने कुछ जिन्नों* का रुख़ तुम्हारी ओर फेर दिया कि वे क़ुरआन* सुन लें, तो जब वे उस के पास पहुँचे, तो (आपस में) कहने लगे : चुपके रहो (और कान लगा कर सुनो)! फिर जब पाठ समाप्त हो चुका, तो वे अपनी जाति वालों की ओर सचेत करने वाले बन कर लौटे[३५]। ○

उन्हों ने कहा : हे मेरी जाति वालो! हम ने एक किताब* सुनी जो मूसा के बाद उतरी है, उस की तसदीक़ करती है जो उस से आगे है,[३६] सत्य

३० की ओर और सीधे मार्ग की ओर ले जाती है[३७]। ○ हे हमारी जाति के लोगो! अल्लाह के आवाहक (बुलाने वाले) की[३८] बात मानो और उस पर ईमान* लाओ। वह (अर्थात् अल्लाह) तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा और तुम्हें दुःख देने वा अज़ाब से पनाह देगा। ○

और जो कोई अल्लाह के आवाहक की बात न मानेगा तो ज़मीन में वह बच निकलने वाल नहीं है, और न उस के सिवा उस के संरक्षक मित्र होंगे। यही लोग हैं जो खुली गुमराही पड़े हुये हैं[३९]। ○

क्या इन्हों ने नहीं देखा कि जिस अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और उ के पैदा करने में असमर्थ नहीं रहा, वह इस का सामर्थ्य रखता है कि मुरदों को जीवित कर दे[४०]

---

३३ मक्का के काफ़िरों को सचेत किया जा रहा है कि तुम्हारी तरह पिछले लोगों ने भी बहुत से इलाह (gods) गढ़ रखे थे और वे समझते थे कि कठिन समय में वे हमारे काम आयेंगे; उन के द्वारा हमारी अल्ला तक पहुँच हो सकेगी। वे अल्लाह से कहेंगे कि इन्हें कुछ न कहा जाये ये हमारे उपासक हैं — परन्तु ज अज़ाब आया तो उन के देवी-देवताओं में से कोई भी अज़ाब को न रोक सका। आख़िर वे उस समय कह चले गये थे। इस से साफ़ मालूम होता है कि समस्त अधिकार अल्लाह ही को प्राप्त हैं दूसरे जितने हैं स उसी के मुहताज हैं।*

३४ वास्तव में पुराना ढकोसला तो यही मुश्रिकों का था न कि वह जिस को धर्म-विरोधी ढकोसला कह थे। देο आयत ११।*

३५ नबी सल्ल० किसी जगह क़ुरआन पढ़ रहे थे, कुछ जिन्नों का उधर से गुज़र हुआ वे आप (सल्ल० को क़ुरआन पढ़ता देख कर रुके और एक-दूसरे से कहने लगे कि शान्ति-पूर्वक सुनो। जब नबी सल्ल० क़ुरआन पढ़ चुके तो वे जिन्न* अपनी जाति वालों में वह सन्देश ले कर गये जो उन्हें क़ुरआन से मिला था। ऐतिहा सिक उल्लेखों से मालूम होता है यह घटना नख़ला नामक घाटी की है। यह घाटी मक्का से क़रीब थी।*

जिन्नों के प्रभावित होने का उल्लेख कर के नबी सल्ल० को तसल्ली दी गई है कि आप निराश न हो जिस सचाई की ओर आप दुनिया वालों को बुला रहे हैं उस से सत्य-प्रिय जिन्न* भी प्रभावित हुये हैं। व समय अवश्य आयेगा कि सत्य की विजय होगी।*

३६ अर्थात् उस से अगली किताबों की जो पहले अल्लाह की ओर से उतर चुकी हैं तसदीक़ होती है, जो किताब हम ने सुनी है वह पिछली किताबों की दी हुई ख़बरों के बिलकुल मुताबिक़ है।

३७ इस आयत से मालूम होता है कि वे, क़ुरआन सुनने वाले जिन्न* विद्वान् थे और पिछले नबियों* पर ईमान* रखते थे।*

३८ अर्थात् नबी की।*

(३९, ४० अगले पृष्ठ पर)

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

९ : २०-२२ अल्लाह की कृपा, उसकी प्रसन्नता और सदा रहने वाली नेमतें।

१० : ९, १० नेमतों भरे बाग़, आपस में सलाम और अल्लाह का गुण-गान।

११ : १०८ सदा रहने वाली नेमतें।

१३ : २४ बेहतरीन घर जिसमें मनुष्य अपने सदाचारी बाप, पत्नियों और बच्चों के साथ रहे।

१३ : ३५ ऐसे बाग़, जिनमें नहरें जारी हों और उनके फल और साये सदा रहने वाले हों।

१५ : ४५-४८ बाग़ और सोते, पूर्ण शान्ति का घर, रहने वाले सब भाई-भाई, किसी के मन में कपट नहीं।

१६ : ३०, ३१ वहाँ जो चाहेंगे, वही पायेंगे, सदा रहने वाले बाग़।

१८ : ३१ सोने के कंगन, बेहतरीन रेशमी वस्त्र।

१८ : १०७, १०८ सदा रहने वाले बाग़, जहाँ से जाने को कभी मन न कहे।

१९ : ६०-६३ वहाँ कोई अपशब्द सुनने को न मिलेगा और सुबह-शाम खाने का प्रबन्ध।

२० : ७५, ७६ उच्च पद, रहने को बाग़, जिसमे नहरें बह रही हों।

२२ : २३, २४ सोने और मोती के कंगन, रेशमी कपड़े और पवित्र वाणी।

२५ : १५, १६ वहाँ जो चाहेंगे मिलेगा और सदा रहेंगे।

२५ : ७५, ७६ ऊँचे-ऊँचे महल, आपस की दुआ-सलाम, रहने की बहुत अच्छी जगह।

२९ : ५८ ऊँचे महल जिनके नीचे नहरें बह रही हैं और वहाँ सदा रहेंगे।

३० : १५ उस बाग़ में खुशहाल रहेंगे।

३२ : १७,१९ कोई क्या जाने अल्लाह ने जन्नत में आँखों की ठण्डक का कैसा सामना किया है।

३३ : ४४ अल्लाह की ओर से शान्ति और बड़ा अच्छा बदला।

३४ : ३७ इतमीनान से कोठों पर बैठे हुए।

३५ : ३३-३४ सोने के कंगन और मोती, रेशमी कपड़े और ज़ुबान पर अल्लाह का शुक्र कि उसने दुःख दूर किया।

३६ : ५५-५८ जन्नत वालों के लिए सुख-वैभव की चीजें होंगी। वे और उनकी पत्नियाँ सायों में तख़्तों पर तकिए लगाये बैठे होंगे।

३७ : ४१-४९ भोजन में मेवे, आमने-सामने तख़्तों पर बैठे हुए, उजली-उजली बड़ी ही मज़ेदार पीने की चीज, जिससे न सिर मे दर्द हो न नशा। नीची निगाहों वाली औरतें, बड़ी सुन्दर।

३८ : ४९-५२ अच्छी जगहे, बाग़ों में तकिया लगाये बैठे हुए, खाने को बहुत से मेवे और शराब, नीची निगाह वाली समआयु औरतें।

३९ : २० ऊँचे-ऊँचे कोठे, नीचे नहरें बहती हुई।

४० : ४० जन्नत में रोज़ी बे हिसाब मिलेगी।

४१ : ८ ऐसा बदला जो ख़त्म ही न हो।

४१ : ३१, ३२ जो जी चाहेगा मिलेगा, दयावान् क्षमा करने वाले, की ओर से मेहमानी।

४३ : ७०-७३ सोने के बरतन इसके अलावा जो जी चाहे और जो आँखों को अच्छा लगे।

४७--मुहम्मद

(परिचय)

नाम (The Title)

सूरः* की दूसरी आयत* में अल्लाह के रसूल* हज़रत मुहम्मद सल्ल० का शुभ नाम आया है। इसी सम्पर्क से इस सूरः का नाम मुहम्मद रखा गया है। इस सूरः का एक दूसरा नाम 'क़िताल' (युद्ध) भी है। इस नाम का सम्पर्क सूरः के केन्द्रीय विषय से है। इस सूरः से विदित है कि जिस सज़ा की धमकी काफ़िरों* को दी गई थी दुनियाँ में वह सज़ा इन्हें युद्ध के रूप में दी जायेगी जिस में इन के बड़े-बड़े सरदार हलाक होंगे और दूसरे बहुत से लोग क़ैद होंगे। इन्हें यह बुरा दिन अवश्य देखना पड़ेगा। रहा आख़िरत* का अज़ाब तो वह इन्हें अलग भुगतना होगा।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह मदीना की आरम्भिक सूरः* है। हिजरत* के बाद उतरी है[1]। यह वह समय है जब कि अभी मक्का वालों के साथ युद्ध का आरम्भ नहीं हुआ है। परन्तु परिस्थिति कुछ ऐसी हो चुकी है कि लड़ाई का छिड़ जाना अवश्यम्भावी प्रतीत होता है।

वार्तायें (Subject-matter)

प्रस्तुत सूरः* से उस विषय की पुष्टि होती है जिस का उल्लेख सूरः अल-अह्क़ाफ़ के अन्तिम भाग में हुआ है। पिछली सूरतों में जिस विशेष दण्ड की चेतावनी काफ़िरों* को दी गई है उसे इस सूरः में खोल कर बयान किया गया है। इस सूरः से विदित है कि अल्लाह ईमान* वालों के हाथों अपने शत्रुओं को सज़ा देनी चाहता है और युद्ध में उन्हें उन के करतूतों का मज़ा चखाना चाहता है।

हा० मीम० सिलसिले की सूरतों से[2] इस सूरः का गहरा सम्पर्क है। इसी तरह आगे आने वाली सूरः से भी इस सूरः का गहरा सम्बन्ध है। इस सूरः की बहुत सी बातों का स्पष्टीकरण आगे आने वाली सूरः से होता है।

प्रस्तुत सूरः* में साफ़-साफ़ बता दिया गया है कि एक ईमान* वाले व्यक्ति और काफ़िर* के बीच वास्तविक अन्तर क्या है? इसी तरह इस सूरः में उस अन्तर को भी व्यक्त किया गया है जो ईमान* वाले व्यक्ति और मुनाफ़िक़ों* और दीन* (धर्म) से फिर जाने वालों के बीच पाया जाता है।

प्रस्तुत सूरः* का आरम्भ इस घोषणा के साथ हुआ है कि उन लोगों का सब किया-धरा अकारथ गया जिन्हों ने कुफ़्र* किया और लोगों को अल्लाह के मार्ग से रोका। रहे वे लोग जो ईमान* लाये हैं और अच्छे काम किये और जो-कुछ (हज़रत) मुहम्मद (सल्ल०) पर उतारा गया है उसे मानते हैं, तो ऐसे ही लोगों के लिए सफलता है। अल्लाह इन की बुराइयों को दूर कर देगा और इन के चित्त को शान्ति

[1] दे० आयत १३।
[2] अर्थात् सूरः अल-मोमिन से ले कर सूरः अल-अहक़ाफ़ तक की सूरतों से, यह सब सात सूरतें हैं।

*इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

देगा। यह घोषणा वास्तव में एक भविष्य-कथन था जो आगे चल कर पूर्णतः पूरा हो कर रहा।

प्रस्तुत सूरः* में ईमान* वालों को काफ़िरों* से युद्ध करने का आदेश देते हुये कहा गया है कि अब जब काफ़िरों* से (लड़ाई में) मुठ-भेड़ हो तो उन की गरदनें मारो यहाँ तक कि उन्हें अच्छी तरह कुचल कर रख दो फिर बचे हुए लोगों को क़ैद करो और फिर बाद में उचित समझो तो, उन पर एहसान करके रिहा करदो या फ़िद्यः* ले कर उन्हें छोड़ दो। यह लड़ाई के बारे में प्रारम्भिक आदेश हैं जो ईमान* वालों को इस सूरः में दिये गये हैं। यह जिहाद* का आदेश क्यों दिया गया? इस पर प्रकाश डालते हुये बताया गया कि अल्लाह अपने दुश्मनों से स्वयं बदला ले सकता था परन्तु उस ने तुम्हें उन से लड़ने की आज्ञा इस लिए दी ताकि वह अपने बन्दों की परीक्षा करे कि कौन उस के मार्ग में अपनी जान लड़ाता और अपने माल से धर्म की सेवा करता है। मुसलमानों को यह शुभ-सूचना दी गई कि यदि तुम अल्लाह की मदद करोगे (अर्थात् उस की राह में जान-माल के साथ लग जाओगे) तो वह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हें जमाव और शक्ति प्रदान करेगा। रहे कुफ़्र* करने वाले, तो वे तबाह होकर रहने वाले हैं। और उन का किया-धरा सब अकारथ जायेगा। अल्लाह ने कितनी ही ऐसी बस्तियों को तबाह किया है जो इन मक्का वालों से शक्ति में कहीं बढ़-चढ़ कर थीं, जिन्हों ने नबी (सल्ल०) को देश छोड़ कर हिजरत* करने पर मजबूर किया है। पहले भी यही हुआ है आज भी यही होगा, अल्लाह का नियम बदला नहीं करता। काफ़िरों* का वास्तव में कोई संरक्षक और सहायक नहीं है जब कि ईमान* वालों का करता-धरता अल्लाह है।

फिर इस के बाद जन्नत* और उस की नेमतों का उल्लेख हुआ है जो उन लोगों के हिस्से में आयेंगी जो इस लोक में अल्लाह से डरते हुये अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

आगे चल कर काफ़िरों* को सचेत करते हुए बताया गया है कि क़ियामत* कोई दूर नहीं है उस की निशानियाँ सामने आ चुकी हैं। फिर उन लोगों की दशा बयान की गई है जिन के दिलों में (निफ़ाक़* का) रोग था और जो ईमान* से उलटे फिर गये थे हालांकि यह बात स्पष्ट रूप से उन पर खुल चुकी थी कि सत्य का सीधा मार्ग कौन सा है।

सूरः* के अन्तिम भाग में बताया गया है कि काफ़िर* और धर्म-विरोधी लोग अल्लाह का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते, इन की सारी योजनायें असफल हो कर रहेंगी। ईमान* वालों को चाहिए कि वे अल्लाह और उस के रसूल* के आदेशों का पालन करते रहें और किसी तरह की कमज़ोरी न दिखायें। साहस छोड़ कर काफ़िरों* से सन्धि और सुलह की बात-चीत न करें। विजय ईमान* वालों को ही प्राप्त होगी अल्लाह उन्हें प्रभावपूर्ण अधिकार प्रदान करेगा; काफ़िर* और धर्म-विरोधी परास्त हो कर रहेंगे। ईमान* वालों को सावधान करते हुए बताया गया है कि यदि तुम अपने कर्तव्यों का पालन नहीं करोगे और मुँह मोड़ लोगे, तो अल्लाह को यह सामर्थ्य प्राप्त है कि वह तुम्हारी जगह दूसरों को खड़ा कर दे और उन से अपना काम ले।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः° मुहम्मद

(मदीना में उतरी — आयतें° ३८)

अल्लाह° के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

जिन लोगों ने कुफ़्र° किया और अल्लाह की राह से रोका, उन के कर्मों को उस ने अकारथ कर दिया[1]। ○ और जो लोग ईमान° लाये और अच्छे काम किये और ईमान लाये उस पर जो मुहम्मद पर उतारा गया है—और वह सर्वथा सत्य है, उन के रब° की ओर से है—उस ने उन से उन की बुराइयाँ दूर कर दीं और उन के चित्त को शान्ति दी। ○

यह इस लिए कि कुफ़्र° करने वाले असत्य पर चले और ईमान° लाने वाले सत्य पर चले जो उन के रब° की ओर से है। इसी तरह अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान करता है। ○

अब जब कुफ़्र° करने वालों से तुम्हारी मुठ-भेड़ हो तो गरदनें मारना, यहाँ तक कि जब तुम उन्हें कुचल चुको, तो बन्धनों में जकड़ो;[2] फिर बाद में या तो एहसान कर देना है या फ़िद्यः° लेना है[3] यहाँ तक कि लड़ाई अपने हथियार रख दे[4]। यह बात अलग रही कि यदि अल्लाह चाहता होता तो उन से बदला ले लेता परन्तु उसे तुम्हारी एक-दूसरे के द्वारा परीक्षा करनी थी[5]। और जो लोग अल्लाह की राह में मारे गये, वह उन के कर्मों को कदापि अकारथ नहीं करेगा[6]। ○ वह उन्हें राह दिखायेगा और उन के चित्त को शान्ति देगा,[7] ○ और उन्हें जन्नत में दाख़िल करेगा जिस से उन्हें परिचित कर दिया है[8]। ○

---

१ अर्थात् उन का किया-धरा अकारथ गया। अपनी कोशिशों में वे असफल रहे। अल्लाह उन के तीर को निशाने पर कभी लगने न देगा।

२ अर्थात् जब सत्य और असत्य का मुक़ाबला हो और ईमान° वालों और अल्लाह के दुश्मनों में लड़ाई छिड़ जाये, तो डट कर मुक़ाबला करो यहाँ तक कि उन की ताक़त टूट जाये और वे बिलकुल परास्त हो जायें। फिर तुम उन्हें क़ैद करो।

३ अर्थात् तुम्हें अधिकार है उचित समझो तो क़ैदियों को बिना फ़िद्यः° लिये छोड़ दो और चाहो तो उन्हें फ़िद्यः° ले कर रिहा करो।

४ अर्थात् लड़ाई बन्द हो जाये; लड़ने वाले हथियार डाल दें। यहाँ युद्ध के बारे में प्रारम्भिक आदेश दिये गये। दूसरी सूरतों° में इस विषय में सविस्तार आदेश दिये गये हैं।

५ अर्थात् उसे अपने बन्दों की परीक्षा अभीष्ट है इसी लिए उस ने लड़ने का आदेश दिया है ताकि यह मालूम हो जाये कि कौन उस की राह में अपनी जान लड़ाता है और अपने माल से धर्म की सेवा करता है। यदि अल्लाह को अपने दुश्मनों से केवल बदला लेना होता, लोगों की परीक्षा करनी न होती, तो वह बदला लेने के लिए अकेला काफ़ी था। वह चाहे तो एक क्षण में अपने दुश्मनों को विनष्ट कर के रख दे।

६ अर्थात् वे अपने शुभ-कर्मों का फल अल्लाह के यहाँ पायेंगे। अल्लाह उन की मेहनत को ठिकाने लगायेगा। उन का किया-धरा अकारथ नहीं होगा।

७ अर्थात् अल्लाह उन का सहायक होगा। आने वाली दुनिया में हर अवसर पर वह उन्हें सँभालेगा।

८ वे भली-भाँति जानते हैं कि जन्नत° कैसी अच्छी जगह है, आगे जन्नत° का हाल बयान भी किया जा रहा है। उन के लिए यह सुन लेना काफ़ी है कि जन्नत° मिलेगी।

° इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

كَمَنْ زُيِّنَ لَهُ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ ۝ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ
الْمُتَّقُوْنَ فِيْهَآ اَنْهٰرٌ مِّنْ مَّآءٍ غَيْرِ اٰسِنٍ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهٗ
وَاَنْهٰرٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى وَلَهُمْ
فِيْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ وَ
سُقُوْا مَآءً حَمِيْمًا فَقَطَّعَ اَمْعَآءَهُمْ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ حَتّٰٓى اِذَا
خَرَجُوْا مِنْ عِنْدِكَ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ اٰنِفًا اُولٰٓئِكَ
الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ ۝ وَالَّذِيْنَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ
هُدًى وَّاٰتٰىهُمْ تَقْوٰىهُمْ ۝ فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ تَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً
فَقَدْ جَآءَ اَشْرَاطُهَا فَاَنّٰى لَهُمْ اِذَا جَآءَتْهُمْ ذِكْرٰىهُمْ ۝ فَاعْلَمْ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا اللّٰهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ
وَمَثْوٰىكُمْ ۝ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْلَا نُزِّلَتْ سُوْرَةٌ فَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ
مُّحْكَمَةٌ وَّذُكِرَ فِيْهَا الْقِتَالُ رَاَيْتَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يَّنْظُرُوْنَ
اِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ فَاَوْلٰى لَهُمْ ۝ طَاعَةٌ وَّقَوْلٌ
مَّعْرُوْفٌ فَاِذَا عَزَمَ الْاَمْرُ فَلَوْ صَدَقُوا اللّٰهَ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ۝ فَهَلْ
عَسَيْتُمْ اِنْ تَوَلَّيْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ وَتُقَطِّعُوْٓا اَرْحَامَكُمْ ۝
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فَاَصَمَّهُمْ وَاَعْمٰٓى اَبْصَارَهُمْ ۝ اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ
الْقُرْاٰنَ اَمْ عَلٰى قُلُوْبٍ اَقْفَالُهَا ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ ارْتَدُّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِهِمْ

और उन में से कुछ लोग ऐसे हैं जो तुम्हारी ओर कान लगाते हैं यहाँ तक कि जब वे तुम्हारे पास से बाहर जाते हैं, तो जिन लोगों को ज्ञान मिला है उन से कहते हैं : इस व्यक्ति ने अभी-अभी क्या कहा[१६] ? यही वे लोग हैं जिन के दिलों पर अल्लाह ने ठप्पा लगा दिया है, और ये अपनी (तुच्छ) इच्छाओं पर चलते हैं। ○

और जिन लोगों ने हिदायत* पाई उन्हें और ज़्यादा हिदायत* दी, और उन्हें परहेज़गार बनना नसीब किया[१७]। ○

अब क्या इन लोगों को क़ियामत* ही का इन्तज़ार है कि वह इन पर अचानक आ पड़े ? क्यों कि उस के आसार (लक्षण) सामने ज़ाहिर हो चुके हैं[१८]। जब वह इन पर आ जायेगी, तो फिर इन्हें होश में आने को कहाँ मिलेगा। ○

तो (हे मुहम्मद !) जान लो कि कोई इलाह* (पूज्य) नहीं सिवाय अल्लाह के, और अपने गुनाहों के लिए क्षमा की प्रार्थना करो ईमान* वाले पुरुषों और ईमान* वाली स्त्रियों के लिए भी[१९]। अल्लाह जानता है जहाँ तुम्हारी चलत-फिरत होती है और जहाँ तुम ठहरते हो। ○

और ईमान* लाने वाले कहते हैं : कोई सूरः* क्यों नहीं उतारी गई ! फिर जब कोई असन्दिग्ध सूरः उतारी जाती है और उस में युद्ध करने की बात होती है, तो तुम उन लोगों को देखते हो जिन के दिलों में (निफ़ाक़* का) रोग है कि वे तुम्हारी ओर ताकते हैं जैसे वह ताके जिस
२० पर मौत की बेहोशी छाई हो[२०]। तो अफ़सोस है उन पर ! ○ कहा मानना है और भली बात कहनी है। फिर जब बात निश्चय हो जाये, उस समय यदि ये लोग अल्लाह के समक्ष सच्चे

१६ अर्थात् मुनाफ़िक़ों का हाल यह है कि वे भलाई और नेकी की बातें सुनना नहीं चाहते और कभी सुनते भी हैं तो बस यों ही, उन के दिल में कोई बात उतरती नहीं।*

१७ अर्थात् सत्य-मार्ग पर चलने वाले लोगों पर अल्लाह की बड़ी कृपा होती है वह उन्हें और अधिक समझ-बूझ प्रदान करता है और वे अपनी धर्म-निष्ठा और तक़्वा में उन्नति ही करते जाते हैं।*

१८ अर्थात् क़ियामत के लक्षण तो सामने आ चुके हैं अब तो यही चीज़ बाक़ी है कि क़ियामत* ही आ जाये। क़ियामत का सब से बड़ा निशाना स्वयं हज़रत मुहम्मद सल्ल० हैं। नबी सल्ल० ने कहा है कि मैं और क़ियामत* दो उँगलियों की तरह हैं जो पास-पास हैं। इन के बीच और कोई चीज़ नहीं। आप (सल्ल०) अल्लाह के अन्तिम नबी* हैं। आप (सल्ल०) के बाद क़ियामत* ही आयेगी, कोई नया नबी* आने वाला अब नहीं है।*

१९ अर्थात् अल्लाह से प्रार्थना करो कि यदि कोई कोताही हो गई हो, तो वह क्षमा कर दे। बन्दे का काम यही है कि वह अल्लाह की बन्दगी में पूरी-पूरी कोशिश करे और फिर भी अल्लाह से क्षमा की प्रार्थनायें करता रहे, अल्लाह की बन्दगी का हक़ कभी अदा नहीं होता। नबी सल्ल० ने कहा है कि मैं प्रति दिन सौ बार अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना करता हूँ।

२० अर्थात् मुनाफ़िक़ों का हाल तो यह है कि लड़ाई के आदेश से, भय के कारण उन की जान निकली जाती है। वे यह नहीं चाहते कि उन्हें मैदान में जान की बाज़ी लगाने के लिए उतरना पड़े।*

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

مِنۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى الشَّيْطَٰنُ سَوَّلَ لَهُمْ وَأَمْلَىٰ لَهُمْ ۝
ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لِلَّذِينَ كَرِهُوا مَا نَزَّلَ اللَّهُ سَنُطِيعُكُمْ فِي بَعْضِ الْأَمْرِ
وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِسْرَارَهُمْ ۝ فَكَيْفَ إِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلَائِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ
وَأَدْبَارَهُمْ ۝ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمُ اتَّبَعُوا مَا أَسْخَطَ اللَّهَ وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ فَأَحْبَطَ
أَعْمَالَهُمْ ۝ أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ أَن لَّن يُخْرِجَ اللَّهُ
أَضْغَانَهُمْ ۝ وَلَوْ نَشَاءُ لَأَرَيْنَاكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُم بِسِيمَاهُمْ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِي
لَحْنِ الْقَوْلِ وَاللَّهُ يَعْلَمُ أَعْمَالَكُمْ ۝ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتَّىٰ نَعْلَمَ الْمُجَاهِدِينَ
مِنكُمْ وَالصَّابِرِينَ وَنَبْلُوَ أَخْبَارَكُمْ ۝ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن
سَبِيلِ اللَّهِ وَشَاقُّوا الرَّسُولَ مِنۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَىٰ لَن
يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا وَسَيُحْبِطُ أَعْمَالَهُمْ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا
اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَلَا تُبْطِلُوا أَعْمَالَكُمْ ۝ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا
عَن سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ مَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَن يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ۝ فَلَا تَهِنُوا
وَتَدْعُوا إِلَى السَّلْمِ وَأَنتُمُ الْأَعْلَوْنَ وَاللَّهُ مَعَكُمْ وَلَن يَتِرَكُمْ
أَعْمَالَكُمْ ۝ إِنَّمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهْوٌ وَإِن تُؤْمِنُوا وَتَتَّقُوا يُؤْتِكُمْ
أُجُورَكُمْ وَلَا يَسْأَلْكُمْ أَمْوَالَكُمْ ۝ إِن يَسْأَلْكُمُوهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوا وَ
يُخْرِجْ أَضْغَانَكُمْ ۝ هَا أَنتُمْ هَٰؤُلَاءِ تُدْعَوْنَ لِتُنفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ
فَمِنكُم مَّن يَبْخَلُ وَمَن يَبْخَلْ فَإِنَّمَا يَبْخَلُ عَن نَّفْسِهِ وَاللَّهُ الْغَنِيُّ
وَأَنتُمُ الْفُقَرَاءُ وَإِن تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُونُوا أَمْثَالَكُم ۝

साबित होते तो इन के लिए अच्छा रहता[21]

तो क्या तुम इस पर लगे हो कि अलग ज़मीन में बिगाड़ पैदा करो और अपने रि को काट डालो ! ○

ये वे लोग हैं जिन पर अल्लाह ने ला फिर उन्हें बहरा कर दिया और उन की आ अन्धा कर दिया। ○ तो क्या ये लोग .क़ुरआ विचार नहीं करते, या कुछ दिलों पर ताले हैं ! ○

जो लोग इस के बाद कि उन पर (सीध स्पष्ट रूप से खुल चुकी थी, अपनी पीठ फेर क गये, तो शैतान* ने उन्हें पट्टी पढ़ाई। और उन्हें ढील दे दी। ○

यह इस लिए कि उन्हों ने उन लोगों से, ने उस चीज़ को ना-पसन्द किया जिसे अ उतारा है कहा : कुछ बातों में हम तुम्हारा मान लेंगे; और अल्लाह उन की गुप्त कार्र जानता है। ○ तो क्या हाल होगा जब फ़ि उन की जान निकालेंगे, और उन के मुँह और उन की पीठों पर मारते जाते होंगे ! ○

यह इस लिए कि उन्हों ने उस चीज़ की पैरवी की जिस ने अल्लाह को ना-ख़ु दिया, और उन्हों ने अल्लाह की .ख़ुशी को ना-पसन्द किया। तो उस ने उन का कि बेकार कर दिया। ○

क्या उन लोगों ने जिन के दिलों में रोग है यह समझ रखा है कि अल्लाह मन के चोर को प्रकट ही न करेगा ! ○

और यदि हम चाहते, तो उन लोगों को तुम्हें दिखा देते, फिर तुम उन्हें उन की से पहचान लेते। और तुम तो उन्हें बात-चीत के ढब से पहचान ही लोगे। और तुम्हारे कर्मों को भली-भाँति जानता है[22]। ○

और हम अवश्य तुम्हारी परीक्षा करेंगे ताकि तुम में जो जिहाद* करने वाले हैं और करने वाले उन्हें हम जान लें, और तुम्हारे बारे में सुनी जाने वाली बातों की परीक्षा कर लें

जिन लोगों ने इस के बाद भी कि सीधी राह खुल कर उन के सामने आ गई, किया, और अल्लाह के मार्ग से रोका और रसूल* का विरोध किया, वह अल्लाह भी न बिगाड़ेंगे[23] और वह उन का किया-धरा बेकार कर देगा ! ○

२१ अर्थात् यदि ये लोग सँभल जायें और जिहाद के अवसर पर यह सिद्ध कर दें कि ये सच्चे दि अल्लाह और उस के रसूल* पर ईमान* रखते हैं, और अल्लाह के हुक्म पर अपने प्राणों की बाज़ी लगा है, तो इस में इन ही की भलाई है।*

२२ इस लिए वह अवश्य अपने सेवकों को उन के शुभ कर्मों का बदला प्रदान करेगा और मुना दण्ड देगा।

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

हे वे लोगो जो ईमान* लाये हो ! अल्लाह का हुक्म मानो और (उस के) रसूल* का
म मानो, और अपना किया-धरा बरबाद न करो । ○
जिन लोगों ने कुफ़्र* किया और अल्लाह के मार्ग से रोका और काफ़िर* ही रह कर
: गये, अल्लाह उन्हें कदापि क्षमा न करेगा । ○
सो तुम ऐसा न करो कि साहस छोड़ बैठो और सुलह की ओर बुलाने लगो और तुम
जीतने वाले हो,[24] और अल्लाह तुम्हारे साथ है, और वह तुम्हारे कर्मों को दबा न लेगा । ○
सांसारिक जीवन तो बस एक खेल और तमाशा है[25] । और यदि तुम ईमान* लाओगे
र परहेज़गार बनोगे तो वह तुम्हें तुम्हारे किये का फल प्रदान करेगा, और तुम से तुम्हारे
ल न माँगेगा । ○ यदि वह तुम से उस को माँगे और तुम्हारे पास जो-कुछ है सब माँग ले
: तुम कन्जूसी करोगे और वह तुम्हारे मन के चोर को प्रकट कर देगा । ○
यह तुम ही लोग तो हो कि तुम से अल्लाह की राह में खर्च करने को कहा जाता है तो
म में से कुछ लोग हैं जो कन्जूसी करते हैं । और जो कन्जूसी करेगा वह अपने ही साथ
न्जूसी करेगा । और अल्लाह किसी चीज़ का मुहताज नहीं है और तुम बिलकुल ही मुहताज
। और यदि तुम मुँह मोड़ोगे[26] तो वह तुम्हारी जगह किसी दूसरे गरोह को दे देगा, फिर
तुम्हारे जैसे न होंगे[27] । ○

---

२३ अल्लाह का दीन* पूरा हो कर रहेगा । अन्त में ऐसा ही हुआ कुफ़्र* परास्त हुआ और सत्य की विजय हुई ।

२४ अर्थात् कमज़ोरी न दिखाओ । साहस छोड़ कर सुलह और समझौते की बात-चीत न करो । हर सन्धि और समझौते को यहाँ बुरा नहीं कहा गया है केवल उस सुलह को निन्दनीय कहा जा रहा है जो भय के कारण दब कर की जाये । इस्लामी इतिहास में जहाँ काफ़िरों* से लड़ाइयाँ हुई हैं वहाँ सन्धि की मिसालें भी मिलती हैं । सूरः अल-अनफ़ाल में इस विषय पर सविस्तार प्रकाश डाला गया है अगली सूरः में हुदैबियः की सन्धि का उल्लेख किया गया है । दे० सूरः आले इमरान आयत १३६ ।

२५ दे० सूरः अल-अनआम फुट नोट ६ ।

२६ दे० सूरः अल-फ़त्ह आयत १६ ।

२७ ईमान वालों को यहाँ बताया गया कि यदि तुम अल्लाह के दीन* के लिए जानें लड़ाते हो और अल्लाह की राह में अपना माल खर्च करते हो, तो इस में तुम्हारा ही फ़ायदा है । अल्लाह तुम्हारा मुहताज कदापि नहीं है । यदि तुम अपने कर्तव्यों का पालन नहीं करते और अपना मुँह मोड़ लोगे, तो उसे इस का सामर्थ्य प्राप्त है कि वह तुम्हारी जगह दूसरों को खड़ा कर दे और उन से धर्म का काम ले ।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

४८–अल-फ़त्ह

(परिचय)

नाम (The Title)

प्रस्तुत सूरः* का नाम 'अल-फ़त्ह' (विजय) सूरः के मूल विषय के अनुकूल
इस सूरः में इस्लाम* की विजय (Victory) और उस की सफलताओं का उ
किया गया है। 'फ़त्ह' शब्द इस सूरः में कई बार आया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह सूरः* सन ६ हिज० में हुदैबियः की सन्धि के पश्चात् अवतीर्ण हुई है

किस परिस्थिति में उतरी

अरब के लोग यों तो साल भर लड़ते-भिड़ते रहते थे, परन्तु हज* का
आ जाने पर वे चार महीनों के लिए लड़ाई बन्द कर दिया करते थे ताकि
निश्चिन्त हो कर हज* के लिए सफ़र कर सकें। नबी सल्ल० ने मदीना में यह
देखा कि हम मक्का में दाख़िल हुये और सिर मुड़ाया और बाल कतरवाये।
मानों को ख़ुशी हुई कि अब हमें उमरः* करने का अवसर मिलने वाला है।
(सल्ल०) उसी साल सन ६ हिज० में लग-भग डेढ़ हज़ार मुसलमानों को
उमरः* करने के इरादे से मक्का की ओर चल पड़े। क़ुरबानी के जानवर भी
ले लिये। मक्का के निकट हुदैबियः के स्थान पर आप (सल्ल०) की ऊँटनी बैठ
आप (सल्ल०) ने हज़रत उसमान रज़ि० को मक्का वालों के पास यह सन्देश
भेजा कि हम केवल उमरः* के ध्येय से आये हैं, लड़ने नहीं आये हैं, उमरः*
के वापस चले जायेंगे हमारी राह में रुकावट न डाली जाये।

हज़रत उसमान रज़ि० को 'क़ुरैश' के लोगों ने रोक लिया। और यह अ
उड़ गई कि हज़रत उसमान रज़ि० को मक्का के मुश्रिकों* ने शहीद कर
इस पर नबी सल्ल० ने एक वृक्ष के नीचे बैठ कर मुसलमानों से लड़ने और जा
की बैअत (بيعت) ली। 'क़ुरैश' को जब मालूम हुआ कि मुसलमानों ने अपने
के आगे जान दे देने की प्रतिज्ञा की है, तो वे सन्धि के लिए तैयार हो गये इध
सूचना मिल गई कि हज़रत उसमान रज़ि० के बारे में जो ख़बर मिली थी वह
थी। 'क़ुरैश' ने सुहैल इब्न अम्र को अपना प्रतिनिधि बना कर भेजा ताकि वे
के बारे में आप (सल्ल०) से बात-चीत करें। देर तक बात-चीत रही और सन्
शर्तें तै पा गईं। सन्धि-पत्र लिखने के लिए हज़रत अली रज़ि० को बुलाया गया
ने जब सन्धि-पत्र में लिखा कि यह सन्धि (Truce) अल्लाह के रसूल* मुहम्म
ओर से है तो 'क़ुरैश' के प्रतिनिधि ने यह आक्षेप किया कि इसी को तो ह
मानते। नबी सल्ल० ने क़ुरैश के प्रतिनिधि की इस बात को मान लिया और
हाथ से 'अल्लाह के रसूल*' शब्द मिटा दिये और कहा : "तुम नहीं मानते तो
हुआ परन्तु मैं तो ख़ुदा की क़सम अल्लाह का रसूल* ही हूँ"। जिन शर्तों
समझौता हुआ था वे ये थीं :—

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

१-मुसलमान इस साल बिना उमरः* किये वापस चले जायें।
२-अगले वर्ष आयें और केवल तीन दिन ठहर कर चले जायें।
३-हथियार लगा कर न आयें केवल तलवार अपने साथ रख सकते हैं परन्तु वह भी म्यान के भीतर रहेगी बाहर न निकाली जाये।
४-मक्के में जो मुसलमान शेष रह गये हैं उन में से किसी को अपने साथ न ले जायें और यदि कोई मुसलमान मक्का लौटना चाहे तो उसे भी न रोकें।
५-यदि ग़ैर-मुस्लिमों या मुसलमानों में से कोई व्यक्ति मदीना चला जाये तो उसे वापस कर दिया जाये, परन्तु यदि कोई मुसलमान मक्का जाये तो उसे वापस नहीं किया जायेगा।
६-अरब के क़बीलों को यह आज़ादी होगी कि वे मुसलमानों या ग़ैर-मुस्लिमों में से जिस के साथ चाहें समझौता कर लें।
७-यह समझौता दस वर्ष तक वर्तमान रहेगा।

सन्धि की इन शर्तों से साफ़ जान पड़ता था कि यह सन्धि मुसलमानों ने दब कर की है। मुसलमान परेशान थे कि सन्धि दब कर क्यों की जा रही है जब कि हम सत्य पर हैं। मुसलमानों के लिए इस सन्धि की सब से अधिक अप्रिय शर्त यह थी कि जो काफ़िर* मुसलमान हो कर मदीना मुसलमानों के पास चला जाये उसे मुसलमान वापस कर देंगे परन्तु जो मुसलमान धर्म त्याग कर मक्का आ जायेगा उसे मुशरिक* लोग वापस न करेंगे। देखने में यह शर्त अत्यन्त विषम थी परन्तु आगे चल कर जो परिणाम सामने आये उन से विदित हुआ कि यही शर्त जो मुसलमानों को अत्यन्त अप्रिय थी मुशरिकों* के लिए अत्यन्त हानिकारक और मुसलमानों के लिए अत्यधिक लाभकारी सिद्ध हुई।

हुदैबियः की इस सन्धि के बाद नबी* सल्ल० मदीना की ओर वापस हुये तो रास्ते में सूरः 'अल-फ़त्ह' अवतीर्ण हुई। इस सूरः में अल्लाह ने हुदैबियः की सन्धि को 'प्रत्यक्ष विजय' की उपाधि दी। इस सन्धि से इस्लाम* को बहुत फ़ायदा पहुँचा। अब तक मुसलमानों और काफ़िरों* में लड़ाई छिड़ी हुई थी परन्तु इस सन्धि से मुसलमानों और ग़ैर-मुस्लिमों को एक-दूसरे से मिलने-जुलने का अवसर मिला। ग़ैर-मुस्लिमों ने क़रीब से जब मुसलमानों को देखा, तो वे उन के आचार-विचार और उन के व्यवहार से प्रभावित हुये बिना न रह सके। इस्लाम* के बारे में उन की बहुत सी शंकायें आपस की बात-चीत से दूर हो गईं। वे इस्लाम* की ओर खिंचने लगे। इस सन्धि के बाद केवल दो-डेढ़ वर्ष के भीतर बहुत बड़ी सख्या में लोगों ने इस्लाम* ग्रहण किया। इस सन्धि से पहले जितने लोग मुसलमान हुये थे उतने या उस से अधिक लोग केवल दो वर्ष में इस्लाम* में दाख़िल हुये। क़ुरैश के प्रसिद्ध सरदार हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० और अम्र बिनुलआस रज़ि० इसी मुद्दत में इस्लाम* में दाख़िल हुये हैं।

हुदैबियः की सन्धि के बाद मुसलमानों को इस का मौक़ा मिल गया कि वे अपने दूसरे दुश्मनों से निबट सकें। हुदैबियः से वापस आ कर नबी सल्ल० ने

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

पहला काम यह किया कि 'ख़ैबर' पर हमला कर दिया। ख़ैबर यहूदियों* का सब से बड़ा गढ़ था। यहीं से वे इस्लाम* के उन्मूलन के लिए तरह-तरह की साज़िशें करते रहते थे। यहूदी* लोग हिजाज़ के उत्तरी क्षेत्र के प्रत्येक हरे-भरे भू-भाग पर अधिकार जमाये हुये थे। अहज़ाब के युद्ध के अवसर पर विभिन्न क़बीलों को वे यहीं से भड़का कर मुसलमानों के विरुद्ध चढ़ा लाये थे। ख़ैबर की विजय से बहुत से फ़ायदे हासिल हुये यहूदियों* की शक्ति क्षीण हो कर रह गई।

हुदैबियः की सन्धि के बाद नबी सल्ल० ने उस समय के बड़े-बड़े सम्राटों के नाम पत्र लिखे और उन्हें इस्लाम* की ओर आमन्त्रित किया।

वार्त्तायें (Subject-matter)

प्रस्तुत सूरः* से सूरः मुहम्मद के विषय की पूर्ति होती है। सूरः मुहम्मद में बताया गया है कि अल्लाह ईमान* वालों के साथ है विजय इस्लाम* की होगी। ईमान* वालों को प्रभाव-पूर्ण अधिकार प्राप्त होगा। धर्म-विरोधी अधीन हो कर रहेंगे।

प्रस्तुत सूरः* के आरम्भ में ही नबी सल्ल० को प्रत्यक्ष विजय की सूचना दी गई है। हुदैबियः की सन्धि के बाद नबी सल्ल० मदीना लौट रहे थे कि यह विजय की शुभ-सूचना आप (सल्ल०) को दी गई। इस में इस बात की ओर संकेत था कि इस सन्धि का परिणाम अच्छा होगा। इस के फलस्वरूप इस्लाम* की शक्ति बढ़ेगी। और उसे महान् विजय प्राप्त होगी। धर्म-विरोधी दल परास्त हो कर रहेगा।

सूरः* के आरम्भिक भाग में अल्लाह ने ईमान* वालों और अपने रसूल* पर किये हुये अपने एहसानों को याद दिलाया है और उस उपकार का भी उल्लेख किया है जो वह उन पर करना चाहता है। मुनाफ़िक़ों* और मुश्रिकों* को युद्ध की धमकी दी गई है।

फिर उस प्रतिज्ञा अथवा 'बैअत'-का उल्लेख किया गया है जो हुदैबियः के स्थान पर मुसलमानों ने अपने नबी* (सल्ल०) से की थी। और फिर कहा गया है कि जो लोग इस प्रतिज्ञा को भङ्ग कर देंगे वे अपना ही बुरा करेंगे और जो लोग इसे पूरा करेंगे अल्लाह उन्हें इस का बड़ा बदला देगा।

फिर नबी सल्ल० को यह ख़बर दी गई है कि अब जब कि आप (सल्ल०) कुश-लता-पूर्वक मदीना वापस हो रहे हैं तो वे बद्दू जो टाल-मटोल कर के पीछे रह गये थे और उमरः* के लिए घर से आप (सल्ल०) के साथ नहीं निकले थे—तरह-तरह के बहाने करेंगे वे कहेंगे कि हम मजबूर थे नहीं तो अवश्य आप के साथ उमरः* को चलते।

नबी सल्ल० से कहा गया है कि उन की बातों के जवाब में साफ़-साफ़ कह देना कि अल्लाह तुम्हारे करतूतों से बे-ख़बर नहीं है। आप (सल्ल०) को इस की सूचना भी दे दी गई है कि घर बैठ रहने वाले उन मुहिमों पर जहाँ उन्हें ग़नीमतों के मिलने की आशा होगी आप (सल्ल०) के साथ चलने के लिए आग्रह करेंगे। परन्तु उन्हें साथ चलने की इजाज़त कदापि न दी जाये। उन से कह दिया जाये कि आगे चल कर तुम्हारे ईमान* और सत्यप्रियता की परीक्षा होगी। और यह परीक्षा उस समय

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

होगी जब कि बड़ी-बड़ी मुहिमें पेश आयेंगी उस अवसर पर यदि तुम ने अपने ईमान* का परिचय दिया तो तुम्हारी पिछली गलती को अल्लाह क्षमा कर देगा। और तुम्हें अच्छा बदला प्रदान करेगा परन्तु यदि उस समय भी तुम अपनी पहली नीति पर जमे रहे, तो अल्लाह तुम्हें अज़ाब दे कर रहेगा।

फिर बताया गया है कि वे कौन से लोग हैं जो वास्तव में विवश हैं, जिहाद* के लिए यदि वे नहीं निकलते तो इस में उन का कोई दोष नहीं।

फिर उन लोगों को जिन्हों ने पेड़ के नीचे नबी सल्ल० के हाथ पर 'बैअत' की थी इस बात की शुभ-सूचना दी गई है कि अल्लाह उन से राज़ी और ख़ुश हुआ उन पर शान्ति उतारी और बदले में उन्हें एक ऐसी विजय प्रदान की जो जल्द प्राप्त होगी (दे० आयत १८) और बहुत सी ग़नीमतें भी जिन्हें वे हासिल करेंगे।

इस के बाद ईमान* वालों से कहा गया है कि यदि हुदैबियः की सन्धि न होती और काफ़िरों* से तुम्हारी लड़ाई हो जाती तो भी विजय तुम्हारी ही होती, काफ़िर* पीठ फेर कर मैदान से भाग निकलते परन्तु अल्लाह ने युद्ध नहीं होने दिया। क्योंकि मक्के में बहुत से ऐसे स्त्री-पुरुष भी थे जो मुसलमान हो चुके थे परन्तु अपने ईमान* को छिपाये हुये थे। बस्ती में इन के घर काफ़िरों* के घरों से मिले-जुले थे यदि लड़ाई होती तो ये मुसलमान भी मारे जाते। इन के बारे में यही समझा जाता कि ये काफ़िर* हैं अल्लाह ने उन्हें अपनी दयालुता से बचा लिया।

सूरः* के अन्तिम भाग में यह हर्ष-जनक सूचना दी गई है कि मुसलमान अब मक्का में दाख़िल होंगे, उन्हें कोई भय न होगा, वे उमरः* करेंगे इस प्रकार नबी सल्ल० के उस स्वप्न को अल्लाह पूरा कर देगा जो आप (सल्ल०) ने मदीना में देखा था। साथ ही मुसलमानों को यह शुभ-सूचना भी दी गई है कि नबी सल्ल० के नेतृत्व में अल्लाह के दीन* को विजय और प्रभाव-पूर्ण शक्ति प्राप्त होगी। इतिहास इस का साक्षी है कि अल्लाह का यह वादा पूरा हो कर रहा।

फिर नबी सल्ल० की रिसालत* की घोषणा करते हुये आप (सल्ल०) के साथियों की विशेषताओं और उन के अनुपम गुणों का वर्णन किया गया है। और उस वादे को दोहराते हुये जो अल्लाह ने ईमान* वालों से कर रखा है इस सूरः* को ख़त्म किया गया है।

---

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

الظَّانِّينَ بِاللَّهِ ظَنَّ السَّوْءِ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْءِ وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ
وَلَعَنَهُمْ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ۝ وَلِلَّهِ جُنُودُ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۝ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا
وَنَذِيرًا ۝ لِتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُعَزِّرُوهُ وَتُوَقِّرُوهُ وَتُسَبِّحُوهُ بُكْرَةً
وَأَصِيلًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ يُبَايِعُونَكَ إِنَّمَا يُبَايِعُونَ اللَّهَ يَدُ اللَّهِ فَوْقَ أَيْدِيهِمْ
فَمَنْ نَكَثَ فَإِنَّمَا يَنْكُثُ عَلَىٰ نَفْسِهِ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِمَا عَاهَدَ عَلَيْهُ اللَّهَ
فَسَيُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ۝ سَيَقُولُ لَكَ الْمُخَلَّفُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ

उन के लिए जहन्नम* तैयार कर रखी है, और वह पहुँचने की बुरी जगह है[७]। ○

और अल्लाह की हैं आसमानों और ज़मीन की सेनायें,[८] और अल्लाह अपार शक्ति का मालिक और हिकमत* वाला है। ○

निस्सन्देह हम ने (हे मुहम्मद!) तुम्हें साक्षी[९] और शुभ-सूचना देने वाला और सचेत-कर्त्ता बना कर भेजा है,[१०] ताकि तुम लोग अल्लाह पर और उस के रसूल* पर ईमान* लाओ, और उसे मदद पहुँचाओ, और उस की प्रतिष्ठा करो, और प्रातःकाल और सन्ध्या समय उस की (अल्लाह की) तसबीह* करो। ○

जो लोग तुम से (हे मुहम्मद!) 'बैअत'* करते हैं वे अल्लाह ही से 'बैअत' करते हैं। अल्लाह का हाथ उन के हाथों के ऊपर है। अब जिस ने तोड़ दिया, वह तोड़ कर अपना ही बुरा करेगा; और जिस ने उसे पूरा किया जिस की प्रतिज्ञा अल्लाह से की है,[११] उसे वह बहुत बड़ा बदला प्रदान करेगा। ○ १०

(हे नबी*!) जो बद्दू पीछे रह गये थे[१२] वे अब तुम से कहेंगे : हमारे माल और हमारे घर वालों ने हमें फँसा रखा था, आप हमारे लिए क्षमा की प्रार्थना कीजिए[१३]। ये लोग अपनी ज़बानों से ऐसी बात कहते हैं जो इन के दिलों में नहीं है। कहो : कौन है जो अल्लाह के यहाँ तुम्हारे लिए कुछ कर सकता हो, यदि वह तुम्हें कोई नुक़सान पहुँचाना चाहे या तुम्हें कोई फ़ायदा पहुँचाना चाहे ? अल्लाह उस की ख़बर रखता है जो-कुछ तुम करते हो। ○

ऐसा नहीं था बल्कि तुम ने यह समझ लिया था कि रसूल* और ईमान* वाले अपने घर वालों में लौट कर कभी आयेंगे ही नहीं, और यह बात तुम्हारे दिलों को भली लगी, और तुम ने जो-कुछ समझा बुरा समझा, और तुम थे बरबाद होने वाले लोग। ○

---

७ अर्थात् यह सारा संघर्ष इस लिए है कि मानव की परीक्षा ली जाये और यह फ़ैसला कर दिया जाये कि कौन अल्लाह का आज्ञाकारी है और कौन उस का अवज्ञाकारी है। वह ईमान* वालों के द्वारा इस का फ़ैसला करना चाहता है कि अल्लाह के मानने वालों का परिणाम दूसरा है और उस के दुश्मनों का परिणाम दूसरा है। ऐसा नहीं हो सकता कि दोनों गरोहों का परिणाम एक हो।

८ दे० फ़ुट नोट ५।

९ अर्थात् सत्य की गवाही देने वाला, हक़ को पेश करने वाला।

१० जिस काम के लिए अल्लाह ने रसूल* को खड़ा किया है उस काम में उस का साथ देना ईमान* वालों का परम कर्तव्य है। और यह क़ियामत* तक मुसलमानों के लिए अनिवार्य है।

११ दूसरे शब्दों में यहाँ यह बात कही जा रही है कि जिस ने रसूल का हुक्म माना उस ने अल्लाह का हुक्म माना। इस लिए कि रसूल* अल्लाह ही के हुक्म पर चलने के लिए लोगों को आमन्त्रित करता है। अरब में हाथ पर हाथ मारने या हाथ में हाथ देने का अर्थ दृढ़ प्रतिज्ञा करना होता था। जब कोई व्यक्ति हाथ में हाथ दे देता तो यही समझा जाता कि सौदा हो चुका; इस व्यक्ति ने अपने वचन दे दिये। दे० आयत १८।

ए वृक्ष के नीचे ईमान* वालों ने नबी सल्ल० के हाथ पर जो 'बैअत' (بيعت) की थी उस का अर्थ यही था कि वे इस बात की दृढ़ प्रतिज्ञा करते हैं कि नबी सल्ल० के आदेशों का पालन करेंगे।

१२ अर्थात् जो टाल-मटोल कर के पीछे रह गये थे और नबी सल्ल० के साथ उमरः* के लिए घर से नहीं निकले थे। वे यह समझते थे कि मुसलमान तबाही की ओर जा रहे हैं, ये लौट कर नहीं आ सकते। मक्के के लोग जो इन के ख़ून के प्यासे हैं इन्हें कब लौटने देंगे। पीछे रह जाने वालों में से एक गरोह मदीने में मौजूद था। और दूसरा गरोह उन बद्दुओं का था जो मदीना के आस-पास देहातों में रहते थे।

१३ अर्थात् वे अपने दिल के खोट को छिपाने के लिए इस तरह के बहाने करेंगे।

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

[illegible]

और जो कोई अल्लाह पर और उस के रसूल* पर ईमान* न लाया तो जान लो कि हम ने काफ़िरों* के लिए दहकती आग तैयार कर रखी है। ○

और आसमानों और ज़मीन का राज्य अल्लाह ही का है। वह जिसे चाहे क्षमा करे, और जिसे चाहे अज़ाब दे। और अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है। ○

जल्द ही जब तुम 'ग़नीमतें'* लेने चलोगे तो ये पीछे रहने वाले कहेंगे : हमें अपने साथ चलने दो। ये लोग चाहते हैं कि अल्लाह की कही बात बदल दें। कहो : तुम हमारे साथ नहीं चल सकते। अल्लाह ने पहले से ऐसा ही कह दिया है। तो वे कहेंगे : "नहीं, बल्कि तुम हम से ईर्ष्या करते हो"। नहीं, बल्कि ये लोग समझते थोड़ा ही हैं[14]। ○ ११

पीछे रह जाने वाले बद्दुओं से कहो : जल्द ही तुम्हें ऐसे लोगों की तरफ़ चलने को कहा जायेगा जो बड़े ही लड़ाका होंगे,[15] तुम उन से लड़ोगे या वे अधीन हो जायेंगे; तो यदि तुम आज्ञापालन करोगे, तो अल्लाह तुम्हें अच्छा बदला प्रदान करेगा; और यदि तुम फिर गये जैसे पहले फिर गये थे, तो वह तुम्हें दुःखदायी अज़ाब देगा। ○

न अन्धे पर कोई दोष है, और न लंगड़े पर कोई दोष है, और न बीमार पर कोई दोष है[16] (क्योंकि ये लड़ने के योग्य नहीं)। और जो कोई अल्लाह का और उस के रसूल* का हुक्म मानेगा, उसे वह ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी; और जो कोई पलट जायेगा, उसे वह दुःखदायी अज़ाब देगा। ○

निश्चय ही अल्लाह ईमान* वालों से राज़ी हुआ जब कि (हे मुहम्मद!) वे एक वृक्ष के नीचे (तुम्हारे हाथ में हाथ दे कर) तुम से 'बैअत'* कर रहे थे,[17] और उस ने जान लिया जो-कुछ

---

१४ नबी सल्ल० को पहले से सूचित किया जा रहा है कि जो लोग उमरः* करने के लिए आप (सल्ल०) के साथ नहीं निकले और अपने घरों में ही टाल-मटोल कर के रह गये वही उन मुहिमों पर आप (सल्ल०) के साथ चलने को कहेंगे जहाँ उन्हें ग़नीमतों* के मिलने की आशा होगी। ऐसे लोगों को कदापि अपने साथ न चलने दें। उन से कह दिया जाये कि अल्लाह हम से कह चुका है कि तुम हमारे साथ नहीं जाओगे।

१५ अर्थात् जो लोग नबी (सल्ल०) के साथ मक्का नहीं गये और उन मुहिमों पर जाने के लिए कहेंगे उन के ईमान* और सत्यनिष्ठा की परीक्षा होगी। और उन की यह परीक्षा उस समय होगी जब बड़ी-बड़ी मुहिमें पेश आयेंगी, जब रूम और ईरान जैसे राज्यों से लड़ना होगा उस अवसर पर यदि उन्हों ने अपने ईमान* और निष्ठा का परिचय दिया तो उन की पिछली ग़लती को क्षमा कर दिया जायेगा और उन्हें अच्छा बदला दिया जायेगा। परन्तु यदि वे अपनी पहली ही नीति पर जमे रहे, तो वे अल्लाह के अज़ाब से न बच सकेंगे।

१६ अर्थात् जो लोग विवश हैं वे यदि जिहाद* के लिए नहीं निकलते तो उन पर कोई दोष नहीं।

१७ यह संकेत हुदैबियः की सन्धि से पहले की एक विशेष घटना की ओर है। नबी सल्ल० ने हज़रत उसमान रज़ि० को अपना राजदूत बना कर क़ुरैश वालों के पास यह सन्देश दे कर भेजा था कि हम उमरः* के लिए आये हैं। लड़ने नहीं आये हैं। उमरः* कर के हम लौट आयेंगे। हमारी (शेष अगले पृष्ठ पर)

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

وَاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا ۙ وَّمَغَانِمَ كَثِيْرَةً يَّاْخُذُوْنَهَا ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا
حَكِيْمًا ۝ وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً تَاْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ
وَكَفَّ اَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ ۚ وَلِتَكُوْنَ اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَيَهْدِيَكُمْ
صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ۝ وَّاُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا قَدْ اَحَاطَ اللّٰهُ بِهَا ۭ وَ
كَانَ اللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ۝ وَلَوْ قٰتَلَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوَلَّوُا
الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ۝ سُنَّةَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ
مِنْ قَبْلُ ښ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۝ وَهُوَ الَّذِيْ كَفَّ اَيْدِيَهُمْ
عَنْكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْ بَعْدِ اَنْ اَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ۭ
وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ۝ هُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ وَالْهَدْيَ مَعْكُوْفًا اَنْ يَّبْلُغَ مَحِلَّهٗ ۭ وَلَوْلَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُوْنَ
وَنِسَاۗءٌ مُّؤْمِنٰتٌ لَّمْ تَعْلَمُوْهُمْ اَنْ تَطَـُٔوْهُمْ فَتُصِيْبَكُمْ مِّنْهُمْ مَّعَرَّةٌۢ
بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ لِيُدْخِلَ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَاۗءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوْا لَعَذَّبْنَا
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِـيْمًا ۝ اِذْ جَعَلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ
قُلُوْبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰي رَسُوْلِهٖ
وَعَلَي الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى وَكَانُوْٓا اَحَقَّ بِهَا وَاَهْلَهَا ۭ
وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ۝ لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ ۚ
لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ اِنْ شَاۗءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ۙ مُحَلِّقِيْنَ رُءُوْسَكُمْ وَمُقَصِّرِيْنَ

उन के दिलों में था, फिर उस ने उन (ईमान*वालों) पर शान्ति उतारी, और बदले में उन्हें विजय दी जो जल्द ही प्राप्त होने वाली है[18] । ○ और बहुत सी ग़नीमतें* जो तुम्हारे हाथ आयेंगी। और अल्लाह अपार शक्ति का मालिक और हिकमत* वाला है।○

अल्लाह ने तुम से बहुत सी ग़नीमतों* का वादा किया है जो तुम्हारे हाथ आयेंगी,[19] अब यह तो उस ने तुम्हें पहले दे दिया,[20] और लोगों के हाथ तुम से रोक दिये, और यह इस लिए कि ईमान* वालों के लिए एक निशानी हो, और वह तुम्हें एक १० सीधी राह पर लगा दे।○ और दूसरी भी हैं जिन पर तुम .क़ुदरत नहीं पा सके हो, अल्लाह ने उन्हें क़ब्ज़े में कर रखा है और अल्लाह हर चीज़ पर .क़ुदरत रखता ही है[21] । ○

और यदि ये कुफ़्र* करने वाले तुम से लड़ते तो तुम को पीठ दिखा देते, फिर वे न कोई यार पायेंगे और न मददगार[22] । ○ यह अल्लाह की रीति है जो पहले से चली आई है। और तुम कभी अल्लाह की रीति में कोई परिवर्तन होता न पाओगे।○

और वही है जिस ने उन के हाथों को तुम से[23] और तुम्हारे हाथों को उन से मक्का के

राह में रुकावट न डाली जाये। हज़रत उसमान रज़ि० के लौटने में देर हुई आप (सल्ल०) को यह सूचना मिली कि हज़रत उसमान रज़ि० को शहीद (क़त्ल) कर दिया गया। इस पर आप (सल्ल०) ने अपने साथियों से मरने-मारने पर बैअत* ली। यह 'बैअत' आप (सल्ल०) ने एक वृक्ष के नीचे ली थी। यह 'बैअत' इतिहास में 'बैअतुर्रिज़वान' के नाम से प्रसिद्ध है। (दे० सूरः का परिचय)।

१८ जल्द ही प्राप्त होने वाली विजय से अभिप्रेत 'ख़ैबर' की विजय है (दे० सूरः का परिचय)। जो इस सन्धि के बाद ही प्राप्त हुई है। अभी ख़ैबर की विजय नहीं हुई थी कि अल्लाह ने पहले से ही इस की शुभ-सूचना मुसलमानों को दे दी ताकि अल्लाह पर उन का भरोसा और अधिक बढ़ जाये।

१९ अर्थात् आगे तो अल्लाह तुम्हें बहुत-कुछ प्रदान करने वाला है।

२० यह संकेत ख़ैबर की विजय की ओर है।

२१ आगे चल कर ईमान* वालों को मक्का पर भी विजय प्राप्त हुई और फिर कुछ ही वर्षों के पश्चात् उन्हों ने इराक़, मिस्र, ईरान और रूम आदि बड़े-बड़े राज्यों का तख़्ता उलट दिया हालाँकि जिस समय उन्हें इस की सूचना दी जा रही थी वे इस की कल्पना भी नहीं कर सकते थे।

२२ अर्थात् यदि हुदैबियः की सन्धि न होती और काफ़िरों* से लड़ाई छिड़ जाती तो इस में विजय तुम्हारी ही होती, काफ़िर* कदापि विजयी नहीं हो सकते थे। अल्लाह का सदा से यह नियम रहा है कि यदि काफ़िरों* और ईमान* वालों का मुक़ाबला हो तो विजय ईमान* वालों को ही प्राप्त होती है चाहे वे संख्या में कम ही क्यों न हों। इस लिए कि नैतिक शक्ति में यदि कोई गरोह बढ़ा हुआ है तो चाहे और दूसरे सामान और साधन उस के पास कम ही हों विजय उसी की होती है। परन्तु यदि नैतिक शक्ति और चरित्र-बल किसी गरोह को प्राप्त नहीं है तो वह कदापि विजयी नहीं हो सकता (दे० सूरः अल-अनफ़ाल आयत ६५-६६)। तुम्हें यदि लड़ने से रोक दिया गया तो इस लिए नहीं कि युद्ध में तुम्हारी विजय न होती बल्कि कुछ दूसरे उद्देश्यों के अन्तर्गत यह फ़ैसला किया गया।

२३ काफ़िर* भयभीत हो गये और उन्हें तुम से लड़ने का साहस न हो सका।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

لا تخافون فعلم ما لم تعلموا فجعل من دون ذلك فتحا قريبا
هو الذي أرسل رسوله بالهدى ودين الحق ليظهره على الدين كله
وكفى بالله شهيدا محمد رسول الله والذين معه أشداء على
الكفار رحماء بينهم تراهم ركعا سجدا يبتغون فضلا من الله
ورضوانا سيماهم في وجوههم من أثر السجود ذلك مثلهم في
التوراة ومثلهم في الإنجيل كزرع أخرج شطأه فآزره
فاستغلظ فاستوى على سوقه يعجب الزراع ليغيظ بهم الكفار
وعد الله الذين آمنوا وعملوا الصالحات منهم مغفرة وأجرا عظيما

भीतर रोके रखा, इस के बाद कि उस ने तुम्हें उन
पर क़ाबू दे दिया था। और अल्लाह देखता है जो
कुछ तुम करते हो। ○

ये वही तो हैं जिन्हों ने कुफ़्र* किया और तुम्हें
मसजिदे हराम* (काबः) से रोक दिया, और क़ुर-
बानी* के जानवर भी रुके पड़े रहे अपने ठिकाने
तक पहुँचने न पाये[२४]। यदि यह बात न होती कि
बहुत से ईमान* वाले पुरुष और ईमान* वाली
स्त्रियाँ हैं जिन्हें तुम जानते नहीं बेख़बरी में तुम उन्हें कुचल देते फिर उन के कारण तुम्हें
तकलीफ़ पहुँचती,[२५] (तब देखते) अब इस से यह होगा कि अल्लाह जिसे चाहे 'रहमत' (दया-
लुता की छाया) में दाख़िल कर ले, कहीं वे अलग-अलग रहे होते तब तो हम उन में से कुफ़्र
करने वालों को बड़ा ही दुःख भरा अज़ाब देते। ○

जब कुफ़्र* करने वालों ने अपने दिलों में पक्ष को जगह दी, अज्ञान के पक्ष को,[२६]
अल्लाह ने अपने रसूल* पर और ईमान* वालों पर अपनी विशेष शान्ति उतारी और उन्हें
परहेज़गारी की बात पर जमाये रखा, और वे इसी के हक़दार थे और इसी के लायक़[२७]
और अल्लाह हर चीज़ का ज्ञान रखता है। ○

निस्सन्देह अल्लाह ने अपने रसूल* को स्वप्न सच्चा दिखाया जिस में हिकमत* थी। तुम
मसजिदे हराम* (काबः) में दाख़िल होगे—यदि अल्लाह ने चाहा—बे-खटके, अपने सिर के
बाल मूँडे हुये और कतरे हुये, तुम्हें कोई डर न होगा[२८]। हुआ यह कि वह जानता था जो कुछ
तुम नहीं जानते थे, तो उस ने उस के अतिरिक्त एक जल्द ही प्राप्त होने वाली विजय ठहरा दी।

वही है जिस ने अपने रसूल* को हिदायत* और सच्चे दीन (सत्य-धर्म) के साथ भेजा
ताकि वह उसे पूरे-के-पूरे दीन पर प्रभुत्व प्रदान करे[२९]। और अल्लाह का गवाह होना बहुत है।

२४ अर्थात् क़ुरबानी के जानवर जिन्हें मुसलमान अपने साथ ले आये थे उस स्थान तक नहीं पहुँच
जहाँ उन्हें ज़ब्ह करने की रीति चली आ रही है।

२५ यहाँ उस परिस्थिति का उल्लेख किया गया है जिस में अल्लाह ने लड़ाई की नौबत नहीं आने
एक ओर क़ुरबानी के जानवर रुके खड़े थे; मुसलमानों को क़ुरबानी से रोक दिया गया था, मुसलमान
काबः* के दर्शन और उमरः* के लिए व्याकुल हो रहे थे। दूसरी ओर काफ़िरों* के दिलों में डर बना
था यदि वे लड़ते भी तो मुँह की खाते। परन्तु अल्लाह ने मुसलमानों ही के हित के लिए लड़ाई नहीं होने
मक्के में ऐसे बहुत से स्त्री-पुरुष थे जो मुसलमान हो चुके थे परन्तु वे अपने ईमान* को छिपाये हुये थे।
में इन के घर काफ़िरों* के घरों से अलग नहीं थे बल्कि बस्ती में काफ़िर* और मुसलमान बिलकुल मिले
थे। यदि लड़ाई होती तो ये मुसलमान भी मारे जाते। अल्लाह ने अपनी दयालुता से इन्हें बचा लिया।

२६ यहाँ अज्ञान का शब्द इस्लाम* के मुक़ाबले में प्रयुक्त हुआ है। इस्लाम उस सभ्यता और
का नाम है जो वास्तविक ज्ञान पर आधारित है और 'अज्ञान' वह सभ्यता है जिस का मूल आधार
तात्कालिक जोश और आवेश तथा ज्ञान के अभाव के अतिरिक्त और कुछ नहीं। अरब में सैकड़ों वर्ष
बात को मान्यता प्राप्त थी कि ऐसे व्यक्ति के रोकने का अधिकार किसी को नहीं है जिस ने एहराम*
लिया हो और हज* या उमरः* के इरादे से मक्का आना चाहता हो। ऐसे व्यक्ति को रोकना तो
उसे किसी प्रकार की हानि भी नहीं पहुँचाई जा सकती थी और 'क़ुरैश' के लोग इस बात को
जानते भी थे परन्तु यह उन का जाहिलाना पक्षपात और अज्ञान-सम्बन्धी हठधर्मी ही थी कि
नाहक़ को नहीं देख सके।

२७ काफ़िरों* के विपरीत मुसलमानों की नीति कुछ और ही रही। अल्लाह ने इन (ईमान वालों)

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

मुहम्मद अल्लाह के रसूल* हैं। और जो लोग उन के साथ हैं वे काफ़िरों* के मुक़ाबले सख़्त[27] और आपस में मेहरबान हैं। तुम उन्हें देखोगे रुकूअ* में और सजदे* में, अल्लाह का फ़ज़्ल और रज़ामन्दी हासिल करना चाहते हैं। वे अपने चेहरों से पहचाने जाते हैं जिन पर सजदों* का असर है[31]। यह है उन का चित्र तौरात* में और उन का चित्र इञ्जील* में यह[32] है कि जैसे कोई खेती हो जिस ने अपना अङ्कुर निकाला फिर उसे पुष्ट किया फिर वह मोटा हुआ और फिर अपनी नाल पर सीधा खड़ा हो कर खेती वालों का दिल लुभा रहा है —ताकि वह उन से काफ़िरों* का जी जलाये। अल्लाह ने इन लोगों से जो कि ईमान* लाये हैं और अच्छे काम किये हैं, क्षमा और बड़े बदले का वादा कर रखा है। ○

पर शान्ति (Peace or cool headedness) उतारी। वे बिफरे नहीं। ठण्डे दिल-दिमाग़ से काम लिया। अल्लाह और उस के रसूल* की ओर से उन्हें जो आदेश मिला उन्हों ने उस का पालन किया। अनुशासन (Discipline) का पूर्ण रूप से आदर किया। इसी को यहाँ परहेज़गारी कहा गया है।

२८ नबी सल्ल० ने मदीना में यह स्वप्न देखा था कि हम मदीना में दाख़िल हुये और सिर का मुंडन कराया और बाल कतरवाये जैसा कि उमरः* करने वाला अपने सिर का मुण्डन कराता और बाल कतरवाता है। नबी सल्ल० ने जब उमरः* का इरादा किया तो आप (सल्ल०) के साथियों ने समझा कि हम इसी साल मक्का पहुँच कर उमरः करेंगे। परन्तु हुदैबियः में जो सन्धि हुई उस में यह बात तै हुई कि मुसलमान अगले वर्ष उमरः* करेंगे और तीन दिन के लिए काफ़िर* मक्का से बाहर चले जायेंगे (दे० सूरः का परिचय)। मुनाफ़िक़ों* ने इस मौक़े पर मज़ाक़ उड़ाया कि यह कैसा स्वप्न था। आप (सल्ल०) ने कहा : क्या मैं ने यह भी कहा था कि इसी साल ऐसा होगा ! निश्चय ही ऐसा हो कर रहेगा तुम बे-खटके मक्का पहुँच कर काबः* का तवाफ़* करोगे और तुम में कोई सिर मुँडा कर और कोई बाल कतरवा कर इहराम* खोलेगा। और वहाँ जाने के बाद किसी प्रकार का भय न होगा। अगले साल ऐसा ही हुआ, मुसलमानों ने निश्चिन्त हो कर उमरः* किया। इसी की सूचना आगे दी गई है।

२९ यहाँ मुसलमानों को शुभ-सूचना दी गई है कि नबी सल्ल० के नेतृत्व में अल्लाह के दीन* को विजय प्राप्त हो कर रहेगी। इतिहास इस बात का साक्षी है कि अल्लाह का यह वादा पूरा हो कर रहा।

३० दे० सूरः अल-माइदः फुट नोट ९७।

३१ अर्थात् उन के चेहरे इस बात की गवाही देते हैं कि वे पुण्यात्मा, पुण्यशील और अल्लाह के सेवक हैं। उन के ईमान* का प्रकाश और तेज उन के चेहरों से प्रस्फुटित होता है।

३२ ज़बूर (Ps.) ७२ : १६; मत्ता (Matt.) १३ : ३१; मरक़ुस (Mark) ४ : २८।

*इस पद अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

४९—अल-हुजुरात

(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः* में मुसलमानों को बहुत से नैतिक तथा आचार से सम्बन्ध रखने वाले आदेश दिये गये हैं। सूरः की आयत ४ में उन लोगों को टोका गया है जो नबी* सल्ल० के कमरों (Apartments) के बाहर खड़े हो कर आप (सल्ल०) को पुकारने लगते थे। हालांकि उन के लिए उचित बात यह थी कि वे आप (सल्ल०) का इन्तिज़ार करते जब आप (सल्ल०) बाहर निकलते तो उस समय आप (सल्ल०) से मिलते। अल्लाह के रसूल सल्ल० को इस तरह बाहर खड़े हो कर पुकारने लगना सभ्यता और आप (सल्ल०) की प्रतिष्ठा के प्रतिकूल था; इस से आप (सल्ल०) के दूसरे ज़रूरी कामों में भी रुकावट पड़ सकती थी। इस सूरः* की आयत ४ में कमरों के लिए 'अल-हुजुरात' शब्द प्रयुक्त हुआ है। इसी सम्पर्क से इस सूरः का नाम 'अल-हुजुरात' रखा गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

इस सूरः* के उतरने का समय, सूरः अन-नूर के अवतरण काल के बाद है। अनुमान है कि यह सूरः सन् ६ हि० या सन् ७ हि० के अन्त में उतरी है।

वार्त्तायें (Subject-matter)

यह झिड़की (Reprimand) की सूरः* है परन्तु सख़्ती को कम करने के लिए एक विशेष वर्णन-शैली अपनाई गई है और सम्बोधित किया गया है तो 'ईमान* वाले' कह कर। और उन लोगों की प्रशंसा की गई है जो आचारवान् थे। और यह कह कर कि "तुम्हारे बीच अल्लाह का रसूल* है" उन के सम्मान को बढ़ाया गया है। इस तरह डर और ख़ुशी, प्रशंसा और शुभ-सूचना सब की झलक इस सूरः में मिलती है।

पिछली सूरः* (सूरः अल-फ़त्ह) में नबी सल्ल० के साथियों की प्रशंसा की गई है और उन के गुणों का वर्णन किया गया है, प्रस्तुत सूरः* में विस्तारपूर्वक अच्छे गुणों और विशेषताओं का उल्लेख किया गया है जिन्हें जीवन में अपनाना ईमान* वालों का परम कर्तव्य है। पिछली सूरः* में नबी सल्ल० के साथियों के प्रति कहा गया है: "वे काफ़िरों* के मुक़ाबले में सख़्त और आपस में मेहरबान हैं" (आयत २९)। उन के बारे में यह भी कहा गया है कि वे अल्लाह के फ़ज़्ल और उस की ख़ुशी और रज़ामन्दी के इच्छुक हैं (आयत २९); प्रस्तुत सूरः में इन अभीष्ट गुणों की व्याख्या और विस्तारपूर्वक वर्णन मिलता है।

इस सूरः* में मुसलमानों को महत्वपूर्ण नैतिक आदेश दिये गये हैं। उन्हें बताया गया है कि उन का व्यवहार नबी सल्ल० के साथ कैसा होना चाहिए। आप (सल्ल०) के साथ व्यवहार करने में शिष्टता के किन नियमों का पालन करना आवश्यक है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

इस सिलसिले में पहली बात यह कही गई है कि अल्लाह और उस के रसूल* के मुक़ाबले में आगे न बढ़ो। हर बात में यह देख लेना चाहिए कि अल्लाह और उस के रसूल* का हुक्म क्या है। जब अल्लाह और उस के रसूल* किसी बात का फ़ैसला कर दें तो ईमान* वालों को अपने तौर पर फ़ैसला करने का कोई हक़ नहीं रहता।

फिर कहा गया है कि रसूल* के मुक़ाबले में अपनी आवाज़ ऊँची न करो। यह केवल शिष्टता की बात नहीं है बल्कि यह ईमान* का तक़ाज़ा है। इस आदेश की अवहेलना से मनुष्य का सारा किया-धरा अकारथ हो जाता है।

बताया गया है कि जब नबी सल्ल० घर के भीतर हों तो उन्हें पुकारना न शुरू कर दो तुम्हें उन का इन्तज़ार करना चाहिए। जब वे बाहर आयें तो उन से मिल लो। नबी सल्ल० का सम्पर्क सभी लोगों से है यदि इसी तरह से हर व्यक्ति आ कर आप (सल्ल०) को पुकारने लग जाये तो दूसरे ज़रूरी काम आप (सल्ल०) कैसे कर सकेंगे।

इस के बाद मुसलमानों को बताया गया है कि उन का व्यवहार आपस में कैसा होना चाहिए? आपस के मामलों में किन बातों का ध्यान रखना उन के लिए आवश्यक है? इस सिलसिले में यह आदेश दिया गया है कि यदि किसी गरोह के बारे में कोई सूचना मिले तो ज़रूरी कार्रवाई करने से पहले तुम्हें यह देखना चाहिए कि सूचना तुम्हें किस के द्वारा मिली है, उस पर विश्वास किया जा सकता है या नहीं। यदि सूचना किसी ऐसे व्यक्ति के द्वारा मिली हो जो ग़ैर-ज़िम्मेदार और अल्लाह और उस के रसूल* का अवज्ञाकारी है तो कोई कार्रवाई करने से पहले मिली हुई सूचना के बारे में भली-भाँति छान-बीन कर लेनी चाहिए।

इस के बाद बताया गया है कि यदि अल्लाह का रसूल* तुम्हारी हर बात मान ले तो तुम्हारी बहुत सी बातें ऐसी हो सकती हैं कि उन के कारण तुम परेशानी में पड़ जाओ। विचार-विमर्श के अवसर पर तुम अल्लाह के रसूल* को या अपने नायक और अधिकारी व्यक्ति को अच्छी-से-अच्छी राय और परामर्श अवश्य दो परन्तु तुम्हारा यह आग्रह करना कि तुम्हारी हर बात मान ही ली जाये उचित नहीं।

फिर बताया गया है कि यदि मुसलमानों के दो गरोहों में लड़ाई हो जाये तो तुम्हें ऐसे अवसर पर क्या करना चाहिए। यह बात भी खोल कर बताई गई है कि वे कौन-कौन सी बातें हैं जो किसी समाज में कलह-विग्रह का कारण बनती हैं। इस सिलसिले में मुसलमानों को जो आदेश दिये गये हैं सामाजिक जीवन में उन का बड़ा महत्व है। संक्षिप्त में उन आदेशों का विवरण यह है :

एक-दूसरे की हँसी न उड़ाओ, किसी पर चोटें न करो, किसी पर दोष न लगाओ, दुर्वचनों से बचो, एक-दूसरे को बुरे नामों से न पुकारो। बद-गुमानी से बचो। लोगों के ऐबों और बुराइयों की टोह में न रहो, किसी की पीठ-पीछे निन्दा न करो।

मुसलमानों को सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन के प्रति नैतिक आदेश देने के

---

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

१७ : ७८ सूर्य के ढलने से रात की अँधियारी तक नमाज़ क़ायम करो।
२० : १४ *अल्लाह की याद के लिए नमाज़ क़ायम करो।*
२० : १३२ अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दो और ख़ुद उस पर क़ायम रहो।
२२ : ७७ *रुकूअ करो, सजदः करो और अपने रब की इबादत करो।*
२३ : २ ईमान वाले नमाज़ों में विनम्रता अपनाते हैं।
२३ : ६ ईमान वाले नमाज़ों की रक्षा करते हैं।
२४ : ३७ अल्लाह के नेक बन्दे कारोबार में लग कर नमाज़ और ज़कात से ग़ाफ़िल नहीं होते।
२४ : ५६ नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो। तुम पर अल्लाह की कृपा होगी।
२९ : ४५ नमाज़ क़ायम करो। नमाज़ गन्दी और निर्लज्जता की बातों से रोक देती है।
३० : ३१ नमाज़ क़ायम करो और मुश्रिकों में न हो जाओ।
३१ : १७ नमाज़ क़ायम करो और लोगों को अच्छे काम करने के लिए कहो और बुरी बातों से रोको।
५० : ३९, ४० *सूर्य निकलने और डूबने से पहले और रात में नमाज़ पढ़ो।*
५१ : १७ अल्लाह के नेक बन्दे रात के थोड़े हिस्से में सोते हैं।
५८ : १३ *नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो। तुम जो-कुछ करते हो अल्लाह को सब मालूम है।*
६२ : ९ जुमे की नमाज़ की अज़ान हो जाए तो क्रय-विक्रय बन्द कर दो और नमाज़ की ओर लपको।
७३ : २ नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो।
७६ : २५, २६ सुबह-शाम अल्लाह का नाम लेते रहो और रात में नमाज़ पढ़ो।
८७ : १४, १५ अल्लाह को याद रखने वाले और नमाज़ पढ़ने वाले के लिए सफलता है।
१०७ : ४, ५ नमाज़ की ओर से ग़ाफ़िल रहने वालों के लिए ख़राबी है।

(२) ज़कात

२ : ४ क़ुरआन से रहनुमाई पाने के लिए अल्लाह की राह में माल ख़र्च करना ज़रूरी है।
२ : १७७ अल्लाह की राह में माल ख़र्च करने के रास्ते।
२ : १९५ अल्लाह की राह में माल ख़र्च न करना अपने आपको तबाही में डालना है।
२ : २१५, २१९ क्या ख़र्च किया जाए और कहाँ ?
२ : २६१-२६८ अल्लाह की राह में ख़र्च किया हुआ माल फलता-फूलता है और अल्लाह की कृपाओं का कारण।
२ : २७१ अल्लाह की राह में माल ख़र्च करने से बुराइयाँ दूर होती हैं।
२ : २७२, २७३ इससे तुम्हारा अपना भला होगा।
३ : ९२ अल्लाह की राह में वे चीज़ें ख़र्च करो जो तुम्हें प्यारी हों।
३ : १८० कंजूसी तुम्हारे लिए हानिप्रद है।

ن فَآءَتْ فَأَصْلِحُوا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَأَقْسِطُوا إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ
الْمُقْسِطِينَ ۝ إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ فَأَصْلِحُوا بَيْنَ أَخَوَيْكُمْ وَاتَّقُوا
اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝ يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّن قَوْمٍ
عَسٰٓى أَن يَكُونُوا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَآءٌ مِّن نِّسَآءٍ عَسٰٓى أَن يَكُنَّ
خَيْرًا مِّنْهُنَّ وَلَا تَلْمِزُوٓا أَنفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوا بِالْأَلْقَابِ بِئْسَ
الِاسْمُ الْفُسُوقُ بَعْدَ الْإِيمَانِ وَمَن لَّمْ يَتُبْ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُونَ ۝
يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوا كَثِيرًا مِّنَ الظَّنِّ إِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ إِثْمٌ
وَلَا تَجَسَّسُوا وَلَا يَغْتَب بَّعْضُكُم بَعْضًا أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَن يَأْكُلَ
لَحْمَ أَخِيهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوهُ وَاتَّقُوا اللّٰهَ إِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِيمٌ ۝

आये, तो उन दोनों के बीच न्याय के साथ सुलह-सफ़ाई करा दो, और इन्साफ़ से काम लो''। निस्सन्देह अल्लाह इन्साफ़ करने वालों से प्रेम रखता है''।○

ईमान* वाले तो भाई-भाई हैं। तो अपने दो भाइयों के बीच सुलह-सफ़ाई करा दो और अल्लाह का डर रखो ताकि तुम पर दया की जाये।○ १०

हे ईमान* लाने वालो! कोई गरोह किसी गरोह की हँसी न उड़ाये, हो सकता है कि वे उन से अच्छे हों, और न स्त्रियाँ दूसरी स्त्रियों की (हँसी उड़ायें) हो सकता है कि वे उन से अच्छी हों और न अपनों पर चोटें करो, और न एक-दूसरे को बुरा नाम दो। ईमान* के बाद पापाचार का नाम भी बुरा है''। और जो कोई बाज़ न आये, तो ऐसे लोग ज़ुल्म करने वाले हैं।○

हे ईमान* वालो! बहुत से गुमान से बचा करो — निस्सन्देह कोई-कोई गुमान गुनाह होता है''— और न टोह में पड़ो,'' और न तुम में से कोई किसी की पीठ पीछे निन्दा करे—क्या तुम में से कोई इस बात को पसन्द करेगा कि अपने मरे हुये भाई का माँस खाये''

सहाबः* के समय में पारस्परिक लड़ाइयों के सम्बन्ध में निम्न लिखित नियम निर्धारित हुये थे :

(क) जो घायल या ज़ख़्मी हो जाये उसे क़त्ल न किया जाये। (ख) उन लोगों को भी क़त्ल न किया जाये जो मैदान छोड़ कर भाग जावें। (ग) जीतने वाले लोग उन मुसलमानों के माल को ग़नीमत का माल न समझें जो लड़ाई में हार गये हों। (घ) हारने वाले मुसलमानों के बच्चों को लौंडी-ग़ुलाम न बनाया जाये।*

९ *अर्थात् तुम ज़्यादती करने वाले से उस समय तक लड़ो जब तक कि वह अल्लाह की ओर न पलटे जब वह बाज आ जाये तो फिर यह लड़ाई बन्द हो जानी चाहिए।*

१० *अर्थात् लड़ाई बन्द हो जाने के बाद दोनों गरोहों के बीच न्याय और इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर देना चाहिए। जिन लोगों को फ़ैसले के लिए नियुक्त किया जाये वे कदापि किसी प्रकार के पक्षपात से काम न लें वे वही फ़ैसला करें जो न्याय-संगत और सत्यानुकूल हो।*

११ *दे० सूरः अल-मुमतहिनः आयत ८।*

१२ *अर्थात् किसी का अपमान करना, किसी पर चोटें करना, बुरा नाम रखना और किसी पर दोष लगाना और दुर्वचनों का प्रयोग करना ईमान* वालों का काम नहीं। ईमान* के बाद तो दुराचार का नाम भी नहीं आना चाहिए।*

१३ *जिस व्यक्ति के बारे में कुछ मालूम न हो उस के प्रति अच्छा गुमान ही करना चाहिए। बिना किसी वजह के बद-गुमानी से काम लेना उचित नहीं इस से आपस के सम्बन्धों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। दिलों में एक दूसरे के प्रति नफ़रत और घृणा पैदा होने लगती है, समाज में कटुता आ जाती है। आदमी के स्वभाव में सरलता शेष नहीं रहती।*

१४ *अर्थात् तुम्हें लोगों के ऐबों और बुराइयों की टोह में नहीं रहना चाहिए इस से भी सामाजिक जीवन पर बुरा प्रभाव पड़ता है।*

हज़रत उमर रज़ि० गश्त करते हुये एक बार एक घर के पास से गुज़र रहे थे उन्हों ने ऐसी आवाज़ सुनी जिस से यह शंका होती थी जैसे घर में शराबी इकट्ठे हो कर मदिरा-पान कर रहे हों। आप ने दरवाज़ा खटखटाया जब दरवाज़ा न खुला तो दीवार फाँद कर अन्दर दाख़िल हुये। जो लोग घर के भीतर थे उन्हों ने हज़रत उमर रज़ि० से कहा कि आप ने तीन ऐसे काम किये जो वैध (Lawful) नहीं। एक तो बुराइयों की टोह में लगना, दूसरे दीवार फाँदना और तीसरे बिना वजह की पकड़। हज़रत उमर रज़ि० ने जब यह बात सुनी तो उन लोगों को छोड़ कर बाहर चले आये और कोई रोक-टोक नहीं की।

१५ *किसी की अनुपस्थिति में उस की बुराई करना धर्म के प्रतिकूल है इसे 'ग़ीबत' अथवा परोक्ष निन्दा कहते हैं और यदि वह बुराई जो बयान की जाये उस में न हो तो वह ग़ीबत नहीं बल्कि तोहमत या मिथ्यारोपण है। ग़ीबत से पारस्परिक प्रेम-भाव का सत्यानाश हो जाता है। ग़ीबत में लोगों* (शेष अगले पृष्ठ पर,

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

और कहने लगे कि यह एक आश्चर्य की बात है। क्या जब हम मर जायेंगे और मिट्टी हो जायेंगे तो हमें पुनः जीवित किया जायेगा यह लौटाया जाना तो बहुत दूर की बात है। इस के बाद अल्लाह की अगणित निशानियों को पेश कर के साबित किया गया है कि मरने के बाद क़ियामत* में लोगों को दोबारा जीवित किया जायेगा। फिर संक्षेप में विभिन्न जातियों का उल्लेख कर के बताया गया है कि इन्कार करने वालों का क्या परिणाम हुआ करता है। आगे चल कर मौत और क़ियामत* का नक़्शा पेश किया गया है, बताया गया है कि किस तरह उस दिन लोगों की आँखों पर से परदे उठ जायेंगे और वे उस चीज़ को देख रहे होंगे जिस के मानने से आज इन्कार करते हैं। दोज़ख* का पेट काफ़िरों* से भरा जायेगा और जन्नत* उन लोगों के निकट कर दी जायेगी जो अल्लाह का डर रखते हैं।

सूरः* के अन्त में नबी सल्ल० को ताकीद की गई कि आप (सल्ल०) धैर्य से काम लें और जो-कुछ लोग कहते हैं उस पर ध्यान न दें। प्रातः काल और सन्ध्या समय और रात में नमाज़* पढ़ें, और क़ुरआन के द्वारा लोगों को समझाते और याद-दिहानी कराते रहें। रहा मरने के बाद दोबारा जीवित कर के लोगों को एकत्रित करना तो जिस दिन ज़मीन फटेगी वे क़बरों से तेज़ी से निकल पड़ेंगे। यह इकट्ठा करना अल्लाह के लिए बहुत आसान है (आयत ४४)।

---

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* क़ाफ़०

(मक्का में उतरी — आयतें* ४५)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
قٓ ۚ وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ ۚ بَلْ عَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ فَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا شَيْءٌ عَجِيْبٌ ۚ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۚ ذٰلِكَ رَجْعٌۢ بَعِيْدٌ ۞ قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْاَرْضُ مِنْهُمْ ۚ وَعِنْدَنَا كِتٰبٌ حَفِيْظٌ ۞ بَلْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ فَهُمْ فِيْٓ اَمْرٍ

क़ाफ़०[1] क़सम है क़ुरआन* मजीद की[2] ○ —बल्कि इन्हें तो इस पर आश्चर्य हुआ कि इन के पास इन ही में से एक सचेत-कर्त्ता आया;[3] तो काफ़िरों* ने कहा : यह बड़े आश्चर्य की बात है। ○ क्या जब हम मर जायेंगे और मिट्टी हो जायेंगे...? यह पलटना तो बहुत दूर की बात है। ○

हम जानते हैं जो-कुछ ज़मीन उन में से घटाती है[4] और हमारे पास एक परिरक्षक किताब है[5]। ○

(वह आश्चर्य की बात नहीं) बल्कि इन लोगों ने सत्य को झुठलाया जब वह इन के पास आया अब ये उलझाव में पड़े हुए हैं। ○

क्या इन लोगों ने अपने ऊपर आसमान की ओर नहीं देखा, हम ने उसे कैसा बनाया और उसे सजाया और उस में कहीं कोई त्रुटि नहीं। ○

और ज़मीन को हम ने फैलाया और उस में पहाड़ जमा दिये और हम ने उस में हर प्रकार की शोभित चीज़ें उगाईं। ○ — आँखें खोल देने का सामान है और ध्यान दिलाने का हर एक रुजू रहने वाले बन्दे के लिए[6]। ○

---

१ दे० सूरः अल-बक़रः फुट नोट १।

२ दे० आयत ४५।

३ अर्थात् इन्हें इस पर आश्चर्य हुआ हालाँकि यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि एक सचेत करने वाला आया और उस ने इन्हें सचेत किया और इन से कहा कि तुम्हें दोबारा जीवित कर के उठाया जायेगा। बल्कि आश्चर्य की बात यह है कि इन्हों ने उसे मानने से इन्कार कर दिया और पुनः जीवित हो कर उठने पर आश्चर्य करने लगे। जब कि सचेत करने वाला कहीं बाहर का नहीं है वह तो इन का जाना-पहचाना आदमी है। ये लोग आसानी से मालूम कर सकते हैं कि वह सच्चा है या झूठा।

अल्लाह ने मनुष्य को ज़रूरत की सभी चीज़ें प्रदान की हैं। फिर यह कैसे सम्भव था कि वह उसे जीवन का सच्चा मार्ग दिखलाने का प्रबन्ध न करता। अल्लाह की ओर से यदि कोई राह दिखाने वाला रसूल आया है तो यह आश्चर्य की बात नहीं है। और न यह कोई आश्चर्य की बात है कि मनुष्य को मरने के बाद दोबारा उठाया जायेगा। आश्चर्य की बात तो यह होती कि मनुष्य को दुनियाँ में स्वतन्त्रता प्रदान करने के बाद फिर उस से पूछा ही न जाता कि उस ने दुनियाँ में क्या काम किये। अल्लाह के आदेशों का पालन किया या उस का अवज्ञाकारी बन कर रहा।*

४ अर्थात् तुम यह सोचते हो कि जब हम मिट्टी में मिल जायेंगे तो किस तरह हमें दोबारा जीवित कर के खड़ा किया जायेगा हालाँकि अल्लाह के लिए यह कुछ भी मुश्किल नहीं। ज़मीन जो-कुछ तुम्हारे शरीर के साथ करती है, तुम्हारे शरीर का एक-एक अंश जिस तरह बिखर कर मिट्टी में मिल जाता है अल्लाह को सब मालूम है। तुम्हें दोबारा उठाने का वह पूरा सामर्थ्य रखता है।

५ अर्थात् हर चीज़ हमारे यहाँ लिखी हुई समझो। किसी चीज़ से हम बे-ख़बर रह जायें यह सम्भव नहीं।

६ जिस किसी व्यक्ति की यहाँ आँख न खुली और वास्तविकता तक उसे पहुँच प्राप्त न हो सकी, उस से बढ़ कर अन्धा कोई नहीं कि वह अपने चारों ओर फैली हुई अल्लाह की निशानियों को देखने में असमर्थ रहा।

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

—और हम ने आसमान से बरकत वाला पानी उतारा। फिर उस से बाग़ उगाये और अनाज जि... जो कि फ़स्ल कटती है। ○ और खजूरों के ऊँचे-ऊँचे वृक्ष (उगाये) जिन में गुथे हुए गाभे लगे हो... हैं। ○ —बन्दों के लिए रोज़ी का सामान—और उस (पानी) से हम ने बेजान ज़मीन में जान डा... दी —इसी तरह (क़ब्रों से) निकलना है'। ○

इन से पहले झुठलाया था नूह॰ की क़ौम वालों ने और रस्स॰ वालों ने और समूद॰ ने। ○ और आद॰ और फ़िरऔन ने और लूत भाइयों ने ○ और ऐका॰ वालों ने और तुब्बअ्॰ की जाति वालों ने, हर एक ने रसूलों॰ को झुठलाया तो मेरी (अज़ाब की) धमकी पूरी हो कर रही। ○

क्या पहली बार पैदा करने में हम असमर्थ रहे,' नहीं बल्कि ये लोग नवीन सृष्टि के बारे में सन्देह में हैं। ○

हम ने मनुष्य को पैदा किया है और हम जानते हैं जो-कुछ उस के जी में आता है' और हम शाह-रग से भी ज़्यादा उस के क़रीब हैं''। ○

जब कि दो नक़ल करने वाले नक़ल करते रहते हैं दाईं ओर से और बाईं ओर से मा... लगे रहते हैं। ○ जहाँ कोई बात उस के मुँह से निकलती है उस के पास एक ताक में रहने वा... तैयार रहता है''। ○

और मौत की बे-होशी हक़ को साथ लिये आ पहुँची यही है जिस से तू कतराता था। ○

और सूर॰ में फूँक मारी गई। यही है वह दिन जिस की धमकी दी गई थी। ○

---

७ अर्थात् जिस प्रकार हम सूखी हुई ज़मीन में वर्षा कर के जान डाल देते हैं और वह लहलहा उठती है... चारों ओर हरियाली-ही-हरियाली दिखाई देने लग जाती है और हमारा यह काम निरर्थक नहीं होता... बल्कि मुरदा ज़मीन को हम इस लिए ज़िन्दा करते हैं ताकि लोगों की आवश्यकतायें पूरी हों, ठीक इसी प्रका... अल्लाह मरने के पश्चात् मनुष्य को दोबारा जीवन प्रदान करेगा ताकि उस के जीवन का वास्तविक परिणा... उस के सामने आ सके। और यह उस की सब से बड़ी आवश्यकता है। यह उन आवश्यकताओं से भी बड़... आवश्यकता है जिन की पूर्ति के लिए उस का सृष्टि-कर्ता आकाश से पानी बरसाता है।

८ जब हम ने पहली बार सब-कुछ पैदा कर दिया है जैसा कि तुम अपनी खुली आँखों से देख रहे हो तो... दोबारा पैदा करना हमारे लिए क्या मुश्किल है। दे० सूरः अल-अहक़ाफ़ आयत ३३।

९ जब उसी ने मनुष्य को पैदा किया है फिर उस से मनुष्य की कोई चीज़ कैसे छिपी रह सकती है। म... मनुष्य के मन में उठने वाली भावनाओं तक को जानता है। मनुष्य अपने इरादों और अपनी धारणाओं क... अपने कृत्य आदि किसी चीज़ को भी अल्लाह से छिपा नहीं सकता।

१० उस से मनुष्य की कोई वस्तु भी छिपी हुई नहीं है। वह हमारे दिल की धड़कनों और हमारी मनो... वृत्ति तक से परिचित है।

११ मनुष्य के दायें-बायें दो फ़िरिश्ते नियुक्त होते हैं जो उस की बातों को नोट करते जाते हैं। आदमी ... मुँह से कोई बात निकली नहीं कि वे उसे नोट कर लेते हैं उसी तरह जैसे टेप रिकार्ड (Tape Record... में आदमी की हर बात रिकार्ड हो जाती है। अल्लाह को हर चीज़ का ज्ञान है फिर भी फ़िरिश्तों॰ को सम... दिया कि वे आदमियों के कामों का रिकार्ड करते रहें। ताकि आख़िरत॰ में जब लोगों के बारे में फ़ैसला कि... जाये तो पूरी गवाहियाँ पेश की जा सकें और सब प्रमाण संचित कर दिये जायें फिर कोई व्यक्ति यह न क... सके कि उस के साथ इन्साफ़ नहीं हुआ।

॰ इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

أَفَعَيِينَا بِالْخَلْقِ الْأَوَّلِ بَلْ هُمْ فِي لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيدٍ ۝ وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهِ نَفْسُهُ ۖ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ ۝ إِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيَانِ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيدٌ ۝ مَّا يَلْفِظُ مِن قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ ۝ وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ۖ ذَٰلِكَ مَا كُنتَ مِنْهُ تَحِيدُ ۝ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ ۚ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيدِ ۝ وَجَاءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَائِقٌ وَشَهِيدٌ ۝ لَّقَدْ كُنتَ فِي غَفْلَةٍ مِّنْ هَٰذَا فَكَشَفْنَا عَنكَ غِطَاءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيدٌ ۝ وَقَالَ قَرِينُهُ هَٰذَا مَا لَدَيَّ عَتِيدٌ ۝ أَلْقِيَا فِي جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيدٍ ۝ مَّنَّاعٍ

और प्रत्येक जीव इस तरह आया कि उस के साथ हाज़िर करने वाला और एक गवाही देने वाला है[12]। ○

तू इस की ओर से ग़फ़लत में पड़ा था अब हम ने तुझ पर से तेरा परदा हटा दिया तो आज तेरी निगाह बड़ी तेज़ है[13]। ○

और उस के पार्श्ववर्ती ने कहा : मेरे पास जो-कुछ है यह हाज़िर है[14]। ○

डाल दो जहन्नम* में हर अकृतज्ञ द्वेष रखने

२५ वाले को। ○ भलाई को रोकने वाले, हद से बढ़ने वाले और सन्देह करने वाले को ○ जिस ने अल्लाह के साथ दूसरा इलाह* (पूज्य) ठहराया डाल दो उसे सख़्त अज़ाब में। ○

उस का पार्श्ववर्ती बोला : हमारे रब! इसे मैं ने नहीं सरकश बनाया था बल्कि यही परले दरजे की गुमराही में था[15]। ○

(अल्लाह ने) कहा : मेरे सामने झगड़ो मत मैं तुम्हें पहले ही (अज़ाब की) धमकी दे चुका हूँ। ○ मेरे यहाँ बात बदली नहीं जाती और न मैं बन्दों पर कुछ ज़ुल्म करता हूँ[16]। ○

यह वह दिन होगा जब हम जहन्नम* से कहेंगे : क्या तू भर गई? और वह कहेगी :

३० क्या कुछ और है[17]? ○

और जन्नत* परहेज़गारों के क़रीब कर दी गई कि कुछ भी दूर न रही। ○ — यह है जिस का तुम से वादा किया जाता था हर उस व्यक्ति के लिए जो रुजू रहने वाला और कर्त्तव्य का पालन करने वाला हो। ○ जो बिना देखे 'रहमान'* (कृपाशील ईश्वर) से डरा और रुजू रहने वाला दिल ले कर आया। ○

---

12 अर्थात् एक-एक आदमी को दो-दो फ़िरिश्ते लायेंगे। एक उसे अदालत में ले आयेगा और दूसरा गवाही देने वाला होगा।*

13 अर्थात् जिस चीज़ का तू दुनियाँ में इन्कार करता था अब वह सब-कुछ तेरे सामने है। दुनियाँ में तू ग़फ़लत में पड़ा रहा और अन्धों की तरह जीवन व्यतीत किया परन्तु अब तू किसी चीज़ का इन्कार नहीं कर सकता। आज तेरी आँखों पर कोई परदा नहीं है। दुनियाँ में तू ने तरह-तरह के अनुसन्धान किये, प्रकृति के कितने रहस्यों पर से तू ने परदे उठाये। यदि तू नहीं देख सका तो 'आख़िरत' के सत्य होने की उन अगणित निशानियों को जो दुनियाँ में फैली हुई थीं। वास्तविकता क्या है? मनुष्य क्या है? ये सब-कुछ बताने के लिए हम ने अपने नबियों* को भी भेजा था परन्तु तू ने तो उन की बातों पर ध्यान ही नहीं दिया।*

14 अधिकतर टीकाकारों का विचार है कि यहाँ पार्श्ववर्ती से अभिप्रेत फ़िरिश्ता है जो अल्लाह के सामने आदमी के कर्मों का रिकार्ड पेश करेगा। एक विचार यह भी है कि यहाँ पार्श्ववर्ती शैतान* को कहा गया है (दे० सूरः अज़-ज़ुख़रुफ़ आयत ३६) शैतानों* में एक तो 'इबलीस' है जो समस्त शैतानों का नायक है दूसरा शैतान* प्रत्येक आदमी का अलग-अलग होता है जो आदमी के पैदा होने के बाद बहकाने के लिए उस के साथ लग जाता है। वह शैतान* कहेगा कि लीजिए मैं इसे बिगाड़ कर और दोज़ख़* के लिए तैयार कर के लाया हूँ।*

15 दोज़ख़ में डाले जाने का समय आ जाने पर आदमी को गुमराह करने वाला शैतान* भी उज़्र पेश करने लगेगा। कहेगा कि यह व्यक्ति तो स्वयं गुमराह हुआ इस की गुमराही की सज़ा केवल इसी को दी जावे। मुझे इस की गुमराही में न पकड़ा जावे। मैं ने इसे गुनाह के लिए मजबूर नहीं किया था यह तो स्वयं गुनाह के मार्ग पर चलना चाहता था।* (१६, १७ अगले पृष्ठ पर)

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيبٍ ۝ الَّذِي جَعَلَ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَأَلْقِيَاهُ فِي
الْعَذَابِ الشَّدِيدِ ۝ قَالَ قَرِينُهُ رَبَّنَا مَا أَطْغَيْتُهُ وَلَٰكِن كَانَ فِي
ضَلَالٍ بَعِيدٍ ۝ قَالَ لَا تَخْتَصِمُوا لَدَيَّ وَقَدْ قَدَّمْتُ إِلَيْكُم
بِالْوَعِيدِ ۝ مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ وَمَا أَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ۝ يَوْمَ
نَقُولُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأْتِ وَتَقُولُ هَلْ مِن مَّزِيدٍ ۝ وَأُزْلِفَتِ
الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ غَيْرَ بَعِيدٍ ۝ هَٰذَا مَا تُوعَدُونَ لِكُلِّ أَوَّابٍ حَفِيظٍ ۝
مَّنْ خَشِيَ الرَّحْمَٰنَ بِالْغَيْبِ وَجَاءَ بِقَلْبٍ مُّنِيبٍ ۝ ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ
ذَٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُودِ ۝ لَهُم مَّا يَشَاءُونَ فِيهَا وَلَدَيْنَا مَزِيدٌ ۝ وَكَمْ أَهْلَكْنَا
قَبْلَهُم مِّن قَرْنٍ هُمْ أَشَدُّ مِنْهُم بَطْشًا فَنَقَّبُوا فِي الْبِلَادِ هَلْ مِن
مَّحِيصٍ ۝ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرَىٰ لِمَن كَانَ لَهُ قَلْبٌ أَوْ أَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ
شَهِيدٌ ۝ وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَمَا
مَسَّنَا مِن لُّغُوبٍ ۝ فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ
طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ ۝ وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَأَدْبَارَ السُّجُودِ ۝
وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِن مَّكَانٍ قَرِيبٍ ۝ يَوْمَ يَسْمَعُونَ الصَّيْحَةَ
بِالْحَقِّ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوجِ ۝ إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَإِلَيْنَا الْمَصِيرُ ۝
يَوْمَ تَشَقَّقُ الْأَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ذَٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيرٌ ۝ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا
يَقُولُونَ وَمَا أَنتَ عَلَيْهِم بِجَبَّارٍ فَذَكِّرْ بِالْقُرْآنِ مَن يَخَافُ وَعِيدِ ۝

दाखिल हो जाओ इस में सलामती के साथ'' यह अमरता का दिन है''।०

इन के लिए इस में वह सब-कुछ है जो वे चाहें और हमारे यहाँ और भी है''।०

और कितनी ही नस्लों'' को इन से'' पहले हम ने विनष्ट किया जो इन से ज़्यादा ज़बरदस्त थीं फिर उन्हों ने भूमि को छान मारा, है कहीं बच निकलने की जगह''? ० निश्चय ही इस में उस व्यक्ति के लिए बड़ी याद-दिहानी है जिस के पास दिल हो या वह कान धरे ध्यान के साथ।०

निश्चय ही हम ने आसमानों और ज़मीन को और जो-कुछ इन के बीच है छः दिनों में पैदा किया'' और हमें थकान ने छुआ तक नहीं''।०

तो (हे नबी*!) जो-कुछ ये लोग कहते हैं उस पर सब्र* करो'' और अपने रब* की प्रशंसा (हम्द*) के साथ तसबीह* करो'' सूर्य के निकलने से पहले और डूबने से पहले।० और रात में भी उस की तसबीह* करो'' और सजदों* (अर्थात् नमाज़ों*) के पीछे भी''।०

१६ अर्थात् आज तुम्हारा झगड़ा और वाद-विवाद करना व्यर्थ है। हम ने पहले ही चेतावनी दे दी थी कि जो मेरे आदेशों का उल्लंघन करेगा उसे सज़ा मिल कर रहेगी। अब जो फ़ैसला किया गया वह न्याय के अनुकूल है। बुराई करने वाला और बुराई पर उकसाने वाला दोनों-के-दोनों अदालत की निगाह में अपराधी और दण्ड के भागी हैं।

१७ इस आयत में जहन्नम* के विस्तृत क्षेत्र का वर्णन किया गया है। और इस के लिए जो वर्णन-शैली अपनाई गई वह अनुपम है। कोई यदि सोचे कि प्रलय तक जो अरबों लोग दोज़ख़* के भागी होंगे वे किस जहन्नम* में समा सकेंगे तो बताया गया कि जहन्नम* में तो ऐसी समाई होगी कि समस्त नारकी लोगों को ले लेने के बाद भी वह यही कहेगी कि और हो तो लाओ मेरा पेट अब भी ख़ाली है।

१८ अर्थात् अब तुम्हें हर तरह की सलामती है। न यहाँ कोई बीमारी है, न बुढ़ापा है और न किसी दुर्घटना और मृत्यु का भय। यहाँ किसी प्रकार का कष्ट और दुख नहीं, यहाँ आनन्द-ही-आनन्द है।

१९ अर्थात् वह दिन आ गया जो तुम्हारे लिए अमरता का सन्देश लिये हुये है। इस से पहले तो किसी बात में ठहराव न था हर चीज़ नाशवान् थी। अब तुम्हारा कोई सुख और आनन्द छीना नहीं जायेगा। यहाँ दिनों का उलट-फेर नहीं। यहाँ का जीवन भी अमर है और यहाँ का आनन्द भी स्थायी है। तुम अपनी मंज़िल पर पहुँच गये, तुम्हें अब पूर्णता प्राप्त हो गई।

२० यहाँ तुम्हारी प्रत्येक इच्छा पूरी होगी। जो-कुछ माँगोगे मिलेगा। और तुम्हें वे नेमतें भी प्रदान की जायेंगी जिन की तुम कल्पना भी नहीं कर सकते थे।

२१ दे० आयत १२-१४।

२२ यह संकेत मक्का वालों की ओर है।

२३ यहाँ बताया जा रहा है कि पहले भी कितनी ही जातियों ने सरकशी की, अल्लाह ने ढील दी तो उन्हें उन के किये का मज़ा चखा दिया, वे विनष्ट कर दी गईं। इस से तुम उन जातियों के बारे में भी अन्दाज़ा कर सकते हो जो अल्लाह के दुश्मनों को आश्रित से दिया जाने वाला है।

(२५, २६, २७, २८, २९ अगले पृष्ठ पर)

२४ दे० सूरः अल-आराफ़ फुट नोट ५४।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

और कान लगाये रहो उस दिन पर[३०] जब पुकारने वाला पास ही से पुकारेगा ○ जिस दिन लोग चीख़ सुनेंगे जिस के साथ-साथ हक़ होगा —यह है (क़ब्रों से) निकलने का दिन[३१]।○ हम ही जीवन प्रदान करते और मौत देते हैं और हमारी ही ओर पहुँचना है। ○ —जिस दिन ज़मीन फटेगी और वे तेज़ी से निकल पड़ेंगे यह (जीवित कर के लोगों को) इकट्ठा करना हमारे लिए आसान है। ○

हम जानते हैं जो-कुछ ये लोग कहते हैं और तुम उन के साथ ज़बरदस्ती करने के लिए नहीं हो[३२]। तुम तो .क़ुरआन के द्वारा उसे समझाते रहो जो मेरे अज़ाब के वादे से डरे। ○

---

२५ यह विशाल विश्व जिस के फैलाव और विस्तार का अन्दाज़ा भी नहीं किया जा सका— जिस अल्लाह की रचना है उस के बारे में यह सोचना कि वह दोबारा सृष्टि की रचना नहीं कर सकता मूर्खता है।

२६ देः सूरः अन-नूर आयत ४८।

२७ यहाँ तसबीह* से अभिप्रेत नमाज़* है।

२८ इस हुक्म में पाँचों नमाज़ें आ जाती हैं।

२९ अर्थात् केवल नमाज़ को ही काफ़ी न समझो, नमाज़* अदा करने के बाद भी अल्लाह की तसबीह* करते रहना चाहिए। जीवन में अल्लाह का निरन्तर स्मरण करते रहने की आवश्यकता है ताकि बन्दा अपने रब* से हर समय जुड़ा रह सके। इस के बिना जीवन अन्धं और तेज रहित हो जाता है। इस के बिना मनुष्य के लिए जीवन-संघर्ष में सत्य पर दृढ़तापूर्वक जमा रहना सम्भव नहीं।

३० अर्थात् उस दिन का इन्तज़ार करो।

३१ यह क़ियामत का दिन होगा। जब मरे हुए लोग अचानक उठेंगे तो वे सुन रहे होंगे कि कोई उन्हें क़रीब से पुकार रहा है हर व्यक्ति को यह पुकार की आवाज़ क़रीब से सुनाई देगी। देः आयत ४१।

३२ अर्थात् हम इन से निपट लेंगे। वे यदि तुम्हारी बात नहीं मानते हैं तो तुम्हें इस की चिन्ता नहीं होनी चाहिए तुम्हारा काम यह नहीं कि तुम इन्हें बलपूर्वक राह पर लाओ। तुम्हारा काम सत्य सन्देश पहुँचाना और लोगों को सत्य की ओर बुलाते रहना है। तुम .क़ुरआन के द्वारा यह काम करते रहो।

* इस का अर्थ आख़िर में दिए हुए पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

५१--अज़-ज़ारियात

(परिचय)

नाम (The Title)

सूरः* की पहली आयत* में, 'अज़-ज़ारियात' अर्थात् गुबार उड़ाने वाली हवाओं को इस बात की पुष्टि करने के लिए पेश किया गया है कि लोगों को उन के कर्मों का बदला अवश्य दिया जायेगा। इसी सम्पर्क से इस सूरः का नाम 'अज़-ज़ारियात' रखा गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

इस सूरः के उतरने का समय वही है जो सूरः 'क़ाफ़०' का है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्तायें

इस सूरः* का केन्द्रीय विषय वही है जो सूरः 'क़ाफ़०' का है। सूरः 'क़ाफ़०' में मरने के पश्चात् दोबारा जीवित किये जाने (Resurrection) को प्रमाणित किया गया है और प्रस्तुत सूरः में इस बात की पुष्टि की गई है कि लोगों को उन के कर्मों का बदला अवश्य दिया जायेगा[1]। अच्छे लोग अपने सुकर्मों का बदला पायेंगे और झगड़ालू और हठ-धर्मी लोगों को उन के हठ और दुष्टता की सज़ा दी जायेगी।

सूरः* के आरम्भ में इस बात को प्रमाणित किया गया है कि क़ियामत* में लोगों को अवश्य उन के कर्मों का बदला दिया जायेगा। फिर उन लोगों की वर्तमान दशा, मनोवृत्ति आदि पर प्रकाश डाला गया है जो केवल अटकलें दौड़ाते और उस दिन का इन्कार करते थे जिस दिन लोग अपने कर्मों का बदला पायेंगे। फिर बताया गया है कि आख़िरत* में उन का ठिकाना कहाँ होगा।

इस के बाद अल्लाह से डरने वालों की विशेषताओं का उल्लेख किया गया है। और उन्हें इस बात की शुभ-सूचना दी गई है कि वे आख़िरत* में बाग़ों और स्रोतों के बीच होंगे।

आगे चल कर हज़रत इबराहीम अ० का क़िस्सा बयान हुआ है, जिस से मालूम होता है हज़रत इबराहीम अ० के पास अल्लाह के भेजे हुए जो फ़रिश्ते* आये थे वे यदि एक जाति के लिए जीवन का शुभ-सन्देश ले कर आये थे तो दूसरी जाति के लिए वे मृत्यु और विनाश का अज़ाब ले कर पहुँचे थे। इस प्रकार इस सूरः में अल्लाह की दयालुता और प्रकोप दोनों का वर्णन हुआ है। परन्तु चेतावनी और डरावा का पहलू इस सूरः में उभरा हुआ है। इस सूरः में उन जातियों की तबाही का उल्लेख विशेष रूप से किया गया है जिन्हों ने हठधर्मी दिखाई थी और नबियों* की बात नहीं मानी थी।

फिर बताया गया है कि अल्लाह ने हर चीज़ को अपनी क़ुदरत और हिकमत* से पैदा किया है। हर चीज़ की रचना इस प्रकार हुई है कि वह अपने अस्तित्व-

---

[1] दे० आयत ५-६।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सम्बन्धी उद्देश्य की पूर्ति अपने जोड़े से मिल कर करती है। इस से यह ज्ञान होता है कि इस सृष्टि की रचना व्यर्थ नहीं हुई है और न मनुष्य को निरुद्देश्य पैदा किया गया है। वास्तविक उद्देश्य की पूर्ति के लिए अवश्य एक दिन नियत है जिस में हर एक व्यक्ति को उस के कर्मों का बदला मिलेगा। अन्त में तौहीद° को इस तरह से पेश किया गया है कि उस से क़ियामत° के दिन बदला दिये जाने की पुष्टि भी होती है। क़ियामत° और रिसालत° की पुष्टि वास्तव में तौहीद° (एकेश्वरवाद) ही से नतीजे के रूप में होती है। इसी लिए क़ियामत° में बदला दिये जाने की पुष्टि करने के पश्चात् तौहीद° को प्रमाणित किया गया है। और तौहीद° ही पर इन निरूपणों को समाप्त किया गया है तौहीद° के अन्तर्गत रिसालत° का उल्लेख भी किया गया है।

तौहीद,° आख़िरत,° रिसालत° के सम्बन्ध प्रमाणों की ओर संकेत करने और तौहीद° की ओर आमन्त्रित करने के पश्चात् नबी सल्ल० को तसल्ली देते हुये कहा गया है कि पहले भी नबियों° को जादूगर और दीवाना कहा गया है इस लिए आप (सल्ल०) इस तरह की बातों पर ध्यान न दें। आप (सल्ल०) का काम केवल समझाना है। यदि लोग नहीं मानते तो इस के लिए उन के पीछे पड़ने की आवश्यकता नहीं। इन लोगों को जो मुहलत और समय प्राप्त है यदि ये उस से फ़ायदा नहीं उठाते तो अपना ही बुरा करेंगे। मुहलत की मुद्दत पूरी हो जाने के बाद अल्लाह का अज़ाब इन पर टूट पड़ेगा।

° इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

५१—अज़-ज़ारियात

(परिचय)

नाम (The Title)

सूरः° की पहली आयत° में, 'अज़-ज़ारियात' अर्थात् ग़ुबार उड़ाने वाली हवाओं को इस बात की पुष्टि करने के लिए पेश किया गया है कि लोगों को उन के कर्मों का बदला अवश्य दिया जायेगा। इसी सम्बन्ध से इस सूरः का नाम 'अज़-ज़ारियात' रखा गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

इस सूरः के उतरने का समय वही है जो सूरः 'क़ाफ़०' का है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्तायें

इस सूरः° का केन्द्रीय विषय वही है जो सूरः 'क़ाफ़०' का है। सूरः 'क़ाफ़०' में मरने के पश्चात् दोबारा जीवित किये जाने (Resurrection) को प्रमाणित किया गया है और प्रस्तुत सूरः में इस बात की पुष्टि की गई है कि लोगों को उन के कर्मों का बदला अवश्य दिया जायेगा[1]। अच्छे लोग अपने सुकर्मों का बदला पायेंगे और भ्रष्टाचारी और हठ-धर्मी लोगों को उन के हठ और दुष्टता की सज़ा दी जायेगी।

सूरः° के आरम्भ में इस बात को प्रमाणित किया गया है कि क़ियामत° में लोगों को अवश्य उन के कर्मों का बदला दिया जायेगा। फिर उन लोगों की वर्तमान दशा, मनोवृत्ति आदि पर प्रकाश डाला गया है जो केवल अटकलें दौड़ाते और उस दिन का इन्कार करते थे जिस दिन लोग अपने कर्मों का बदला पायेंगे। फिर बताया गया है कि आख़िरत° में उन का ठिकाना कहाँ होगा।

इस के बाद अल्लाह से डरने वालों की विशेषताओं का उल्लेख किया गया है। और उन्हें इस बात की शुभ-सूचना दी गई है कि वे आख़िरत° में बाग़ों और स्रोतों के बीच होंगे।

आगे चल कर हज़रत इबराहीम अ० का क़िस्सा बयान हुआ है, जिस से मालूम होता है हज़रत इबराहीम अ० के पास अल्लाह के भेजे हुए जो फ़रिश्ते° आये थे वे यदि एक जाति के लिए जीवन का शुभ-सन्देश ले कर आये थे तो दूसरी जाति के लिए वे मृत्यु और विनाश का अज़ाब ले कर पहुँचे थे। इस प्रकार इस सूरः में अल्लाह की दयालुता और प्रकोप दोनों का वर्णन हुआ है। परन्तु चेतावनी और डरावा का पहलू इस सूरः में उभरा हुआ है। इस सूरः में उन जातियों की तबाही का उल्लेख विशेष रूप से किया गया है जिन्हों ने हठधर्मी दिखाई थी और नबियों° की बात नहीं मानी थी।

फिर बताया गया है कि अल्लाह ने हर चीज़ को अपनी क़ुदरत और हिकमत° से पैदा किया है। हर चीज़ की रचना इस प्रकार हुई है कि वह अपने अस्तित्व

[1] दे० आयत ५–६।

° इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची

सम्बन्धी उद्देश्य की पूर्ति अपने जोड़े से मिल कर करती है। इस से यह ज्ञात होता है कि इस सृष्टि की रचना व्यर्थ नहीं हुई है और न मनुष्य को निरुद्देश्य पैदा किया गया है। वास्तविक उद्देश्य की पूर्ति के लिए अवश्य एक दिन नियत है जिस में हर एक व्यक्ति को उस के कर्मों का बदला मिलेगा। अन्त में तौहीद* को इस तरह से पेश किया गया है कि उस से क़ियामत* के दिन बदला दिये जाने की पुष्टि भी होती है। क़ियामत* और रिसालत* की पुष्टि वास्तव में तौहीद* (एकेश्वरवाद) ही से नतीजे के रूप में होती है। इसी लिए क़ियामत* में बदला दिये जाने की पुष्टि करने के पश्चात् तौहीद* को प्रमाणित किया गया है। और तौहीद* ही पर इस सिलसिले को समाप्त किया गया है तौहीद* के अन्तर्गत रिसालत* का उल्लेख भी किया गया है।

तौहीद,* आख़िरत,* रिसालत* के प्रत्यक्ष प्रमाणों की ओर संकेत करने और तौहीद* की ओर आमन्त्रित करने के पश्चात् नबी सल्ल० को तसल्ली देते हुये कहा गया है कि पहले भी नबियों* को जादूगर और दीवाना कहा गया है इस लिए आप (सल्ल०) इस तरह की बातों पर ध्यान न दें। आप (सल्ल०) का काम केवल समझाना है। यदि लोग नहीं मानते तो इस के लिए उन के पीछे पड़ने की आवश्यकता नहीं। इन लोगों को जो मुहलत और समय प्राप्त है यदि वे उस से फ़ायदा नहीं उठाते तो अपना ही बुरा करेंगे। मुहलत की मुद्दत पूरी हो जाने के बाद अल्लाह का अज़ाब इन पर टूट पड़ेगा।

सूरः* अज़्-ज़ारियात

(मक्का में उतरी — आयतें* ६०)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

بسم الله الرحمن الرحيم
والذريت ذروا ۝ فالحملت وقرا ۝ فالجريت يسرا ۝ فالمقسمت
امرا ۝ انما توعدون لصادق ۝ وان الدين لواقع ۝ والسماء
ذات الحبك ۝ انكم لفي قول مختلف ۝ يؤفك عنه من افك ۝
قتل الخرصون ۝ الذين هم في غمرة ساهون ۝ يسئلون ايان
يوم الدين ۝ يوم هم على النار يفتنون ۝ ذوقوا فتنتكم هذا
الذي كنتم به تستعجلون ۝ ان المتقين في جنت وعيون ۝
اخذين ما اتهم ربهم انهم كانوا قبل ذلك محسنين ۝ كانوا

क़सम है उन (हवाओं) की जो उड़ाती फिरती हैं (गर्द-ग़ुबार) ○ फिर उठा लेती हैं बोझ ○ फिर चलने लगती हैं नर्मी के साथ। ○ फिर अलग अलग करती हैं मामला,[1] ○ निस्सन्देह तुम लोगों से जो-कुछ वादा किया जाता है वह सच है, ○ और निस्सन्देह कर्मों का फल मिल कर रहेगा। ○

और क़सम है धारियों वाले आसमान की[2] ।○ निश्चय ही तुम लोग बेतुकी बात में पड़े हुये हो।○ इस से कोई सिरफिरा ही फेरा जा सकता है। ○

नाश हो अटकल दौड़ाने वालों का ○ जो ग़फ़लत में डूबे हुये हैं। ○ पूछते हैं : वह दिन कब आयेगा जब कर्मों का फल दिया जायेगा? ○ जिस दिन वे लो आग पर तपाये जायेंगे,[3] ○ (कहा जायेगा) : चखो मज़ा अपनी गुमराही[4] का[5], यही है वि के लिए तुम जल्दी मचाये हुये थे। ○

निस्सन्देह अल्लाह का डर रखने वाले बाग़ों और (जल-) स्रोतों के बीच होंगे,[6] ○ ले

---

१ इस क़सम का उद्देश्य वास्तव में एक बड़ी सच्चाई अर्थात् आख़िरत* को प्रमाणित करना है। जैसा आगे कहा गया : तुम से जो-कुछ वादा किया जाता है वह सच है, और कर्मों का फल मिल कर रहेगा। हवायें इस बात की गवाही देती हैं कि आख़िरत* होने वाली है। हवाओं की क़सम खाने का अर्थ केवल हैं कि अल्लाह उन्हें प्रमाण और दलील के तौर पर पेश कर रहा है। हवाओं से अल्लाह की दयालुता प्रकोप दोनों का प्रदर्शन होता है। हवायें ज़मीन के किसी हिस्से को हरा-भरा कर जाती हैं और किसी भाग बिलकुल शुष्क छोड़ देती हैं। यही हवायें कहीं तो ईश-दयालुता घन कर जल बरसाती हैं और किसी को तूफ़ानों और ओलों से तबाह कर जाती हैं। साफ़ मालूम होता है कि ये हवायें किसी के अधीन हैं के हुक्म से कहीं तो वर्षा का हर्ष-जनक सन्देश लाती हैं और कहीं विनाश का कारण बनती हैं, जैसा हज़रत लूत अ० की जाति वालों, आद,* नूह* और समूद* आदि के क़िस्से में हम देखते हैं। यह इस का खुला प्रमाण है कि एक ऐसा दिन अल्लाह अवश्य लायेगा जब कि भले और बुरे हर व्यक्ति को उस किये का पूरा-पूरा बदला चुकाया जा सके। उस दिन अच्छे लोगों पर अल्लाह की कृपा होगी और बुरे लो पर उस का प्रकोप होगा।

२ ऊपर हवाओं की क़सम खाई थी यहाँ धारियों वाले आसमान की क़सम खाई है। यह क़सम भी ख़िरत* ही की पुष्टि के लिए खाई जा रही है। आसमान में बादल रोई के समान धुनके हुये जगह-जगह हुये होते हैं। उन ही बादलों को यहाँ एक प्रत्यक्ष प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इन बादलों शीत ऋतु के धारियों वाले एक वर्ग के बादल हैं जो ओलों और बिजली की कड़क और गरज के साथ होते हैं। शीत ऋतु में जब तेज़ हवायें चलती हैं तो वे अपने साथ ये आपत्तियाँ लाती हैं। इस क़सम में डरावा का पहलू उभरा हुआ है इसी सम्पर्क से आगे काफ़िरों* की दशा का उल्लेख किया है और फिर उस के बाद अल्लाह से डरने वाले लोगों का हाल बयान हुआ है।

३ प्रश्न वे केवल लोगों की हँसी उड़ाने के लिए करते थे इस लिए जवाब भी उन के प्रश्न के अनु दिया गया कि वह दिन तो वही है जब तुम्हें आग में जलाया जायेगा; अब तुम अपने किये का मज़ा चखो (४, ५, ६ अगले पृ

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

قَلِيلًا مِّنَ اللَّيْلِ مَا يَهْجَعُونَ ○ وَبِالْأَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ○ وَفِيٓ
أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ ○ وَفِي الْأَرْضِ آيَاتٌ لِّلْمُوقِنِينَ ○
وَفِيٓ أَنفُسِكُمْ ۚ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ○ وَفِي السَّمَاءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوعَدُونَ ○
فَوَرَبِّ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَآ أَنَّكُمْ تَنطِقُونَ ○ هَلْ أَتَىٰكَ
حَدِيثُ ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ الْمُكْرَمِينَ ○ إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا ۖ قَالَ
سَلَامٌ قَوْمٌ مُّنكَرُونَ ○ فَرَاغَ إِلَىٰٓ أَهْلِهِ فَجَآءَ بِعِجْلٍ سَمِينٍ ○ فَقَرَّبَهُۥٓ إِلَيْهِمْ
قَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ○ فَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً ۖ قَالُوا لَا تَخَفْ ۖ وَبَشَّرُوهُ
بِغُلَامٍ عَلِيمٍ ○ فَأَقْبَلَتِ امْرَأَتُهُۥ فِي صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوزٌ
عَقِيمٌ ○ قَالُوا كَذَٰلِكِ قَالَ رَبُّكِ ۖ إِنَّهُۥ هُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ○

हैं जो-कुछ उन के रब* ने उन्हें दिया; वे इस से पहले (सांसारिक जीवन में) सत्कर्मी लोग थे; ○ रातों को सोते कम थे,[६] और भोर के समयों में क्षमा की प्रार्थना करते थे, ○ और उन के मालों में माँगने वालों का और उन का हक़ था जो पाने से रह गये हों[८] । ○

और ज़मीन में निशानियाँ हैं विश्वास करने २० वालों के लिए,[९] ○ और तुम्हारे अपने भीतर भी। तो क्या तुम्हें सूझता नहीं ? ○

और आसमान में तुम्हारी रोज़ी है और वह-कुछ जिस का तुम से वादा किया जाता है;[१०] ○

तो आसमान और ज़मीन के रब* की क़सम, यह बात हक़* है,[११] जिस तरह कि तुम बोलते हो। ○

क्या इबराहीम के प्रतिष्ठित मेहमानों की बात तुम तक पहुँची ? ○ जब कि वे उस के पास २५ आये तो कहा : "सलाम", उस ने कहा : सलाम ! ये अपरिचित लोग हैं। ○

फिर वह चुपके से अपने घर वालों के पास गया और एक मोटा-ताज़ा बछड़ा (भुना हुआ) ले आया; ○ और उसे उन के आगे रख दिया, कहा : क्यों आप लोग खाते नहीं ? ○

तो उस को उन से कुछ डर महसूस हुआ[१२] । उन्हों ने कहा : डरिए नहीं ! और उन्हों ने उसे एक ज्ञानी लड़के (के पैदा होने) की शुभ-सूचना दी। ○

फिर उस की स्त्री चौंक पड़ी, उस ने अपना मुँह पीट लिया,[१३] और बोली : एक बुढ़िया बाँझ (के बच्चा पैदा होगा) ! ○

---

४ यहाँ 'फ़ितनः' (فتنة) शब्द प्रयुक्त हुआ है जिस का दूसरा अर्थ अज़ाब भी होता है।

५ अर्थात् दुनिया में जिन चीज़ों पर तुम रीझे हुये थे उन की वास्तविकता अब तुम पर खुल चुकी है। तुम्हें उन का असली मज़ा मालूम नहीं हो सका था इस लिए तुम भूल में पड़े हुए थे; परन्तु अब समय आ गया है कि उन का असली मज़ा तुम चखो।

६ ये वे लोग हैं जो अटकल पर नहीं चलते बल्कि नबियों* के दिखाये मार्ग को अपनाते हैं।

७ अर्थात् वे रातों में अल्लाह को भी याद करते और उस की सेवा में खड़े होते थे, केवल आराम ही नहीं करते थे।

८ अर्थात् वे जो-कुछ अल्लाह के रास्ते में खर्च करते हैं उसे दण्ड अथवा टैक्स नहीं समझते थे बल्कि माँगने वालों और मुहताजों को अपने माल का हक़दार समझते हुये उन पर खर्च करते थे। उन का विचार यह था कि जो माल हमारे पास अपनी आवश्यकता से अधिक है उस में दूसरों का हक़ है। बल्कि वे स्वयं भूखे रह जाते थे और दूसरों को खिला देते थे।

९ अर्थात् यदि तुम सोचो तो आख़िरत* की निशानियाँ हर जगह फैली हुई हैं। दे० आयत ३५, ३६, ३७।

१० अर्थात् अल्लाह ही है जो हमारी रोज़ी का फ़ैसला करता है वही हमारे लिए रोज़ी उतारता है। आख़िरत* का फ़ैसला भी वही करेगा। आसमान के अन्दर हमारे लिए एक वादा छिपा हुआ है। इसी तरह ज़मीन के अन्दर भी (दे० सूरः अल-आराफ़ आयत १५७)। तात्पर्य यह है कि आख़िरत* हो कर रहेगी। तुम मरने के पश्चात् दोबारा उठाये जाओगे और तुम्हें तुम्हारे कर्मों का बदला दिया जायगा।

११ अर्थात् आसमान और ज़मीन के रब* की हिकमत* और क़ुदरत इस बात की साक्षी है कि आख़िरत* हो कर रहेगी।

१२ अर्थात् जब देखा कि वे खाने की ओर हाथ नहीं बढ़ा रहे हैं तो हज़रत इबराहीम अ० को भय हुआ कि मालूम नहीं ये लोग किस इरादे से आये हैं।

१३ जैसा कि स्त्रियाँ साधारणतः आश्चर्य के समय ऐसा करती हैं।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

[illegible]

वे बोले : ऐसा ही तेरे रब* ने कहा है। निःसन्देह वह हिकमत* वाला और जानने वाला है।○

[1]इस ने कहा : हे दूतो! तुम्हारे सामने क्या मुहिम है[14]।○

उन्हों ने कहा : हमें एक अपराधी जाति[15] की ओर भेजा गया है, ○ ताकि उन के ऊपर मिट्टी के पत्थर (कंकड़) की वर्षा करें, ○ जो निशान लगे हुए हैं आप के रब* के पास, मर्यादाहीन लोगों के लिए।○

फिर वहां जो भी ईमान* वाले थे उन्हें हम ने निकाल लिया। ○ और हम ने वहां केवल एक घर ही मुस्लिम* पाया[16]।○

और हम ने वहां एक निशानी छोड़ी उन लोगों के लिए जो दुःख-भरे अज़ाब से डरते हैं[17]।○

और मूसा में[18] (भी निशानी है) जब कि हम ने उसे फ़िरऔन की ओर एक खुली सनद के साथ भेजा। ○ तो वह अकड़ बैठा, और कहा : जादूगर है या उन्मादी। ○

फिर हम ने उसे और उस की सेनाओं को पकड़ लिया और उन्हें दरिया में फेंक दिया, और वही था निन्दनीय। ○

और आद* (के वृत्तान्त) में भी (शिक्षाप्रद निशानी है) जब कि हम ने उन पर उजाड़ देने वाली आंधी भेजी[19]। ○ वह जिस चीज़ पर से भी गुज़रती उसे चूरा-चूरा[20] कर के छोड़ती। ○

---

१ यहां से सत्ताइसवां पारः (Part XXVII) शुरू होता है।

१४ हज़रत इब्राहीम अ० को जब मालूम हो गया कि ये फ़रिश्ते* हैं जो मानवीय रूप में आये हैं, तो पूछा तुम्हारी मुहिम क्या है। इस लिए कि फ़रिश्ते* जब मानवीय रूप में आते हैं तो वे किसी बड़ी मुहिम पर ही आते हैं।

१५ यह संकेत हज़रत लूत अ० की जाति वालों की ओर है।

१६ अर्थात् केवल हज़रत लूत अ० का एक घर उस बस्ती में ईमान लाया था उसे अल्लाह ने अज़ाब से बचा लिया; शेष सभी लोग विनष्ट कर दिये गये।

१७ हज़रत लूत अ० की बस्ती तबाह होने के बाद आने वाली जातियों के लिए एक शिक्षाप्रद निशानी बन गई। आज भी हम इस बस्ती से शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। इतिहासकारों और विद्वानों का बयान है कि हज़रत लूत अ० की जाति वालों की असली बस्तियां उस जगह थीं जहां इस समय Dead sea स्थित है। जब ये बस्तियां धंसा दी गईं तो यहां पानी भर आया। यह पानी इतना खारी है कि इस में कोई जानदार जीवित नहीं रह सकता। यह भी अल्लाह के अज़ाब ही की एक निशानी है।

हज़रत लूत अ० की जाति वालों के वृत्तान्त से मालूम हुआ कि अल्लाह के यहां बुराई के लिए दण्ड और भलाई के लिए अच्छा बदला है। इस लिए यह ज़रूरी है कि आख़िरत* हो और हर व्यक्ति को उस के किये का पूरा-पूरा बदला मिल जाये। और किसी के साथ बे इन्साफ़ी न हो। सांसारिक जीवन में भलाई और बुराई का पूरा बदला किसी को नहीं मिलता। मृत्यु या सांसारिक अज़ाब और तबाही की हैसियत तो बस ऐसी ही है जैसे अपराधी को पकड़ लिया जाये और उसे हवालात भेज दिया जाये।

१८ अर्थात् मूसा अ० के क़िस्से में।

१९ यहां क़ुरआन में 'रीहुल अक़ीम' (الريح العقيم) शब्द प्रयुक्त हुआ है जिस का अर्थ होता है ऐसी आंधी जो बांझ हो। जो न तो वर्षा लाये और न जिस से कोई और लाभ पहुंच सके। बल्कि जहां पहुंचे उजाड़ कर रख दे जैसा कि आगे आ रहा है।

(२० अगले पृष्ठ पर)

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

और समूद* (के वृत्तान्त) में भी (शिक्षाप्रद निशानी है) जब कि उन से कहा गया : कुछ समय तक मज़े कर लो। ○ तो उन्हों ने पूरी ढिठाई के साथ अपने रब* के हुक्म की अवहेलना की, फिर उन्हें कड़क ने आ पकड़ा[21] और वे देखते रहे; ○ फिर वे खड़े ही न रह सके और

४५ न अपना बचाव कर सके। ○

और नूह* की जाति को भी इस से पहले (हम ने पकड़ा)। वे सीमोल्लंघन करने वाले लोग थे। ○

[22]और आसमान को हम ने मज़बूती के साथ बनाया, और हम बड़ी समाई रखते हैं। ○

और ज़मीन को हम ने बिछाया, तो क्या ही अच्छे बिछाने वाले हैं! ○

और हम ने हर चीज़ को जोड़ा-जोड़ा बनाया, ताकि तुम नसीहत हासिल करो[23]। ○

तो तुम अल्लाह की ओर भागो; निस्सन्देह मैं उस की ओर से तुम्हारे लिए प्रत्यक्ष सचेत-

५० कर्ता हूँ। ○

और अल्लाह के साथ किसी दूसरे इलाह* (पूज्य) को शरीक न बनाओ; निस्सन्देह मैं उस की ओर से तुम्हारे लिए प्रत्यक्ष सचेत-कर्ता हूँ। ○

ऐसे ही इन से[24] पहले के लोगों के पास भी जो भी रसूल* आया उन्हों ने यही कहा : जादूगर है या उन्मादी। ○ क्या उन्हों ने एक-दूसरे को इस की वसीयत कर दी है[25] ?—बल्कि ये सरकश लोग हैं[26]। ○

तो तुम उन्हें छोड़ो अब तुम्हें कोई उलाहना नहीं दिया जा सकता, ○

५५ और समझाते रहो,[27] क्यों कि समझाना ईमान वालों को फ़ायदा पहुँचाता है। ○

और हम ने जिन्न* और मनुष्य को केवल इस लिए पैदा किया है कि वे मेरी इबादत* करें[28]। ○

---

२० यहाँ कुरआन में 'कर्रमीम' (كالرميم) शब्द आया है जिस का अर्थ होता है 'रमीम की तरह'। 'रमीम' रस्सी, लकड़ी और हड्डी आदि के जीर्ण टुकड़ों को कहते हैं।

२१ कुरआन के संकेतों से मालूम होता है कि आद* पर अल्लाह ने गरज-चमक वाले बादल भेजे थे इसी तरह समूद पर भी धारियों वाले बादल भेजे जिन के अन्दर प्रचण्ड कड़क और कानों को बहरा कर देने वाली आवाज़ भी थी। और बादलों को लाने वाली वास्तव में शीत काल की तेज हवायें थीं। आद* के क़िस्से में हवा का उल्लेख बार-बार हुआ है।

२२ यहाँ विशेष रूप से तौहीद* (एकेश्वरवाद) की दलीलें पेश की जा रही हैं। यद्यपि जो निशानियाँ यहाँ प्रस्तुत की गई हैं उन से आख़िरत* और रिसालत* की भी पुष्टि होती है।

२३ अल्लाह ने इस सृष्टि की रचना ऐसी हिकमत के साथ की है कि यहाँ की समस्त चीज़ों में परस्पर एकीकरण (Co-ordination) संगति और अनुकूलता पाई जाती है। यह इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि यह कारख़ाना अपने-आप बन कर नहीं चल पड़ा है और न कई ईश्वरों ने इस का निर्माण किया है। किसी एक ही सत्ता का इरादा इस कारख़ाने को चला रहा है। दो या अधिक ईश्वर कभी एक नहीं हो सकते कि सिरे से उन के इरादों और फ़ैसलों में कोई मत-भेद ही न हो सके।

हर जोड़े में जो सम्पर्क और गहरा सम्बन्ध पाया जाता है वह इस वास्तविकता को स्पष्ट रूप से व्यक्त करता है कि दोनों एक ही सृष्टि-कर्ता की रचना हैं। जो दोनों की आवश्यकताओं और मनोवृत्ति से परिचित है। हर चीज़ का जोड़ा-जोड़ा पाये जाने में तौहीद* के अलावा आख़िरत* की भी निशानी है।

२४ इस बात की वसीयत कि रसूलों* की बात पर ध्यान न दिया जाये, उन्हें जादूगर और दीवाना कह कर टाल दिया जाये।

२५ २६ सूरः अत-तूर आयत ३२।

२७ अर्थात् यदि ये लोग तुम्हारी बात नहीं मानते हैं तो इन के पीछे पड़ने की ज़रूरत नहीं। तुम्हारी ज़िम्मेदारी यह नहीं है कि तुम इन्हें सीधे मार्ग पर खींच ही लाओ तुम्हारा काम (शेष अगले पृष्ठ पर)

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ۝ قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ
مُجْرِمِينَ ۝ لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِنْ طِينٍ ۝ مُسَوَّمَةً عِنْدَ
رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِينَ ۝ فَأَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيهَا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ فَمَا
وَجَدْنَا فِيهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝ وَتَرَكْنَا فِيهَا آيَةً لِلَّذِينَ
يَخَافُونَ الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۝ وَفِي مُوسَىٰ إِذْ أَرْسَلْنَاهُ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ
بِسُلْطَانٍ مُبِينٍ ۝ فَتَوَلَّىٰ بِرُكْنِهِ وَقَالَ سَاحِرٌ أَوْ مَجْنُونٌ ۝ فَأَخَذْنَاهُ
وَجُنُودَهُ فَنَبَذْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيمٌ ۝ وَفِي عَادٍ إِذْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ
الرِّيحَ الْعَقِيمَ ۝ مَا تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ أَتَتْ عَلَيْهِ إِلَّا جَعَلَتْهُ كَالرَّمِيمِ ۝
وَفِي ثَمُودَ إِذْ قِيلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوا حَتَّىٰ حِينٍ ۝ فَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ
فَأَخَذَتْهُمُ الصَّاعِقَةُ وَهُمْ يَنْظُرُونَ ۝ فَمَا اسْتَطَاعُوا مِنْ قِيَامٍ وَمَا كَانُوا
مُنْتَصِرِينَ ۝ وَقَوْمَ نُوحٍ مِنْ قَبْلُ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ۝ وَالسَّمَاءَ
بَنَيْنَاهَا بِأَيْدٍ وَإِنَّا لَمُوسِعُونَ ۝ وَالْأَرْضَ فَرَشْنَاهَا فَنِعْمَ الْمَاهِدُونَ ۝
وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝ فَفِرُّوا إِلَى اللَّهِ ۖ إِنِّي
لَكُمْ مِنْهُ نَذِيرٌ مُبِينٌ ۝ وَلَا تَجْعَلُوا مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ ۖ إِنِّي لَكُمْ مِنْهُ نَذِيرٌ
مُبِينٌ ۝ كَذَٰلِكَ مَا أَتَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا قَالُوا سَاحِرٌ أَوْ
مَجْنُونٌ ۝ أَتَوَاصَوْا بِهِ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ۝ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَا أَنْتَ بِمَلُومٍ ۝
وَذَكِّرْ فَإِنَّ الذِّكْرَىٰ تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ

वे बोले : ऐसा ही तेरे रब* ने कहा है। निस्सन्देह वह हिक्मत* वाला और जानने वाला है।○ † उस ने कहा : हे दूतो ! तुम्हारे सामने क्या मुहिम है''? ○

उन्हों ने कहा : हमें एक अपराधी जाति'' की ओर भेजा गया है, ○ ताकि उन के ऊपर मिट्टी के पत्थर (कंकड़) की वर्षा करें, ○ जो निशान लगे रखे हैं आप के रब* के पास, मर्यादाहीन लोगों के लिए।○

फिर वहाँ जो भी ईमान* वाले थे उन्हें हम ने निकाल लिया। ○ और हम ने वहाँ केवल एक घर मुस्लिम* पाया''।○

और हम ने वहाँ एक निशानी छोड़ी उन लोगों के लिए जो दुःख-भरे अज़ाब से डरते हैं''।○

और मूसा में'' (भी निशानी है) जब कि हम ने उसे फ़िरऔन की ओर एक खुली सनद के साथ भेजा। ○ तो वह अकड़ बैठा, और कहा : जादूगर है या उन्मादी। ○

फिर हम ने उसे और उस की सेनाओं को पकड़ लिया और उन्हें दरिया में फेंक दिया, और वही था निन्दनीय। ○

और आद* (के वृत्तान्त) में भी (शिक्षाप्रद निशानी है) जब कि हम ने उन पर उजाड़ देने वाली आँधी भेजी''। ○ वह जिस चीज़ पर से भी गुज़रती उसे चूरा-चूरा'' कर के छोड़ती।○

---

† यहाँ से सत्ताइसवाँ पारः (Part XXVII) शुरू होता है।

१४ हज़रत इबराहीम अ० को जब मालूम हो गया कि ये फ़रिश्ते* हैं जो मानवीय रूप में आये हैं, तो पूछा तुम्हारी मुहिम क्या है। इस लिए कि फ़रिश्ते* जब मानवीय रूप में आते हैं तो वे किसी बड़ी मुहिम पर ही आते हैं।

१५ यह संकेत हज़रत लूत अ० की जाति वालों की ओर है।

१६ अर्थात् केवल हज़रत लूत अ० का एक घर उस बस्ती में ईमान लाया था उसे अल्लाह ने अज़ाब से बचा लिया; शेष सभी लोग विनष्ट कर दिये गये।

१७ हज़रत लूत अ० की बस्ती तबाह होने के बाद आने वाली जातियों के लिए एक शिक्षाप्रद निशानी बन गई। आज भी हम इस बस्ती से शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। इतिहासकारों और विशेषज्ञों का बयान है कि हज़रत लूत अ० की जाति वालों की असली बस्तियाँ उस जगह थीं जहाँ इस समय Dead sea स्थित है। जब ये बस्तियाँ धँसा दी गईं तो वहाँ पानी भर आया। यह पानी इतना खारी है कि इस में कोई जानदार जीवित नहीं रह सकता। यह भी अल्लाह के अज़ाब ही की एक निशानी है।

हज़रत लूत अ० की जाति वालों के वृत्तान्त से मालूम हुआ कि अल्लाह के यहाँ बुराई के लिए बुरा और भलाई के लिए अच्छा बदला है। इस लिए यह ज़रूरी है कि आख़िरत* हो और हर व्यक्ति को उस के किये का पूरा-पूरा बदला मिल जाये। और किसी के साथ बे इन्साफ़ी न हो। सांसारिक जीवन में भलाई और बुराई का पूरा बदला किसी को नहीं मिलता। मृत्यु या सांसारिक अज़ाब और तबाही की हैसियत तो बस ऐसी ही है जैसे अपराधी को पकड़ लिया जाये और उसे हवालात भेज दिया जाये।

१८ अर्थात् मूसा अ० के क़िस्से में।

१९ यहाँ क़ुरआन में 'रीहुल अक़ीम' (الريح العقيم) शब्द प्रयुक्त हुआ है जिस का अर्थ होता है ऐसी आँधी जो बाँझ हो। जो न तो वर्षा लाये और न जिस से कोई और लाभ पहुँच सके। बल्कि जहाँ पहुँचे उजाड़ कर रख दे जैसा कि आगे आ रहा है।

(२० अगले पृष्ठ पर)

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

और समूद* (के वृत्तान्त) में भी (शिक्षाप्रद निशानी है) जब कि उन से कहा गया : कुछ समय तक मज़े कर लो। ○ तो उन्हों ने पूरी ढिठाई के साथ अपने रब* के हुक्म की अवहेलना की, फिर उन्हें कड़क ने आ पकड़ा[21] और वे देखते रहे; ○ फिर वे खड़े ही न रह सके और

४५ न अपना बचाव कर सके। ○

और नूह* की जाति को भी इस से पहले (हम ने पकड़ा)। वे सीमोल्लंघन करने वाले लोग थे। ○

"और आसमान को हम ने मज़बूती के साथ बनाया, और हम बड़ी समाई रखते हैं। ○

और ज़मीन को हम ने बिछाया, तो क्या ही अच्छे बिछाने वाले हैं! ○

और हम ने हर चीज़ को जोड़ा-जोड़ा बनाया, ताकि तुम नसीहत हासिल करो[22]। ○

तो तुम अल्लाह की ओर भागो; निस्सन्देह मैं उस की ओर से तुम्हारे लिए प्रत्यक्ष सचेत-

५० कर्ता हूँ। ○

और अल्लाह के साथ किसी दूसरे इलाह* (पूज्य) को शरीक न बनाओ; निस्सन्देह मैं उस की ओर से तुम्हारे लिए प्रत्यक्ष सचेत-कर्ता हूँ। ○

ऐसे ही इन से[23] पहले के लोगों के पास भी जो भी रसूल* आया उन्हों ने यही कहा : जादूगर है या उन्मादी। ○ क्या उन्हों ने एक-दूसरे को इस की वसीयत कर दी है[24]?—बल्कि ये सरकश लोग हैं[25]। ○

तो तुम उन्हें छोड़ो अब तुम्हें कोई उलाहना नहीं दिया जा सकता, ○

५५ और समझाते रहो,[26] क्यों कि समझाना ईमान वालों को फ़ायदा पहुँचाता है। ○

और हम ने जिन्न* और मनुष्य को केवल इस लिए पैदा किया है कि वे मेरी इबादत* करें[27]। ○

---

२० यहाँ क़ुरआन में 'करंमीम' (كَالرَّمِيمِ) शब्द आया है जिस का अर्थ होता है 'रमीम की तरह'। 'रमीम' रस्सी, लकड़ी और हड्डी आदि के जीर्ण टुकड़ों को कहते हैं।

२१ क़ुरआन के संकेतों से मालूम होता है कि आद* पर अल्लाह ने गरज-चमक वाले बादल भेजे थे इसी तरह समूद पर भी बारिशों वाले बादल भेजे जिन के अन्दर प्रचण्ड कड़क और कानों को बहरा कर देने वाली आवाज़ भी थी। और बादलों को लाने वाली वास्तव में शीत काल की तेज़ हवायें थीं। आद* के क़िस्से में हवा का उल्लेख बार-बार हुआ है।

२२ यहाँ विशेष रूप से तौहीद* (एकेश्वरवाद) की दलीलें पेश की जा रही हैं। यद्यपि जो निशानियाँ यहाँ प्रस्तुत की गई हैं उन से आख़िरत* और रिसालत* की भी पुष्टि होती है।

२३ अल्लाह ने इस सृष्टि की रचना ऐसी हिकमत के साथ की है कि यहाँ की समस्त चीज़ों में परस्पर एकीकरण (Co-ordination) सगति और अनुकूलता पाई जाती है। यह इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि यह कारख़ाना अपने-आप बन कर नहीं चल पड़ा है और न कई ईश्वरों ने इस का निर्माण किया है। बल्कि एक ही सत्ता का इरादा इस कारख़ाने को चला रहा है। दो या अधिक ईश्वर कभी एक नहीं हो सकते कि सिरे से उन के इरादों और फ़ैसलों में कोई मतभेद ही न हो सके।

हर जोड़े में जो सम्बन्ध और गहरा सम्बन्ध पाया जाता है वह इस वास्तविकता को स्पष्ट रूप से प्रकट करता है कि दोनों एक ही सृष्टि-कर्ता की रचना हैं। जो दोनों की आवश्यकताओं और मनोवृत्ति से परिचित है। हर चीज़ के जोड़ा-जोड़ा पाये जाने में तौहीद* के अलावा आख़िरत* की भी निशानी है।

२४ इस बात की वसीयत कि रसूलों* की बात पर ध्यान न दिया जाये, उन्हें जादूगर और दीवाना कह कर टाल दिया जाये।

२५ देखें सूरः अत-तूर आयत ३२।

२६ अर्थात् यदि ये लोग तुम्हारी बात नहीं मानते हैं तो इस की ज़िम्मेदारी यह नहीं है कि तुम इन्हें छोड़ दो

*इस का अर्थ आख़िर में देखें

[illegible]

वे बोले : ऐसा ही तेरे रब* ने कहा है। निःसन्देह वह हिक्मत* वाला और जानने वाला है।○ ¹

इब्राहीम ने कहा : ऐ दूतो ! तुम्हारी मामले क्या मुहिम है''¹⁴ ○

उन्हों ने कहा : हमें एक अपराधी जाति''¹⁵ की ओर भेजा गया है, ○ ताकि उन के ऊपर मिट्टी के पत्थर (कंकड़) की वर्षा करें, ○ जो निशान लगे हैं आप के रब* के पास, मर्यादाहीन लोगों के लिए।○

फिर वहाँ जो भी ईमान* वाले थे उन्हें हम ने निकाल लिया। ○ और हम ने वहाँ केवल एक घर मुस्लिम* पाया''¹⁶ ○

और हम ने वहाँ एक निशानी छोड़ी उन लोगों के लिए जो दुःख-भरे अज़ाब से डरते हैं''¹⁷ ○

और मूसा में''¹⁸ (भी निशानी है) जब कि हम ने उसे फ़िरऔन की ओर एक खुली सनद के साथ भेजा। ○ तो वह अकड़ बैठा, और कहा : जादूगर है या उन्मादी। ○

फिर हम ने उसे और उस की सेनाओं को पकड़ लिया और उन्हें दरिया में फेंक दिया, और वही था निन्दनीय। ○

और आद* (के वृत्तान्त) में भी (शिक्षाप्रद निशानी है) जब कि हम ने उन पर उजाड़ देने वाली आँधी भेजी''¹⁹ ○ वह जिस चीज़ पर से भी गुज़रती उसे चूरा-चूरा''²⁰ कर के छोड़ती। ○

---

१ यहाँ से सत्ताइसवाँ पारः (Part XXVII) शुरू होता है।

१४ हज़रत इब्राहीम अ० को जब मालूम हो गया कि ये फ़रिश्ते हैं जो मानवीय रूप में आये हैं, तो पूछा तुम्हारी मुहिम क्या है। इस लिए कि फ़रिश्ते* जब मानवीय रूप में आते हैं तो वे किसी बड़ी मुहिम पर ही आते हैं।*

१५ यह संकेत हज़रत लूत अ० की जाति वालों की ओर है।

१६ अर्थात् केवल हज़रत लूत अ० का एक घर उस बस्ती में ईमान लाया था उसे अल्लाह ने अज़ाब से बचा लिया; शेष सभी लोग विनष्ट कर दिये गये।

१७ हज़रत लूत अ० की बस्ती तबाह होने के बाद आने वाली जातियों के लिए एक शिक्षाप्रद निशानी बन गई। आज भी हम इस बस्ती से शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। इतिहासकारों और विशेषज्ञों का बयान है कि हज़रत लूत अ० की जाति वालों की असली बस्तियाँ उस जगह थीं जहाँ इस समय Dead sea स्थित है। जब ये बस्तियाँ धँसा दी गईं तो वहाँ पानी भर आया। वह पानी इतना खारी है कि इस में कोई जानदार जीवित नहीं रह सकता। यह भी अल्लाह के अज़ाब ही की एक निशानी है।

हज़रत लूत अ० की जाति वालों के वृत्तान्त से मालूम हुआ कि अल्लाह के यहाँ बुराई के लिए दण्ड और भलाई के लिए अच्छा बदला है। इस लिए यह ज़रूरी है कि आख़िरत हो और हर व्यक्ति को उस के किये का पूरा-पूरा बदला मिल जाये। और किसी के साथ बेइन्साफ़ी न हो। सांसारिक जीवन में भलाई और बुराई का पूरा बदला किसी को नहीं मिलता। मृत्यु या सांसारिक अज़ाब और तबाही की हैसियत तो बस ऐसी ही है जैसे अपराधी को पकड़ लिया जाये और उसे हवालात भेज दिया जाये।*

१८ अर्थात् मूसा अ० के क़िस्से में।

१९ यहाँ क़ुरआन में 'रीहुल अक़ीम' (الريح العقيم) शब्द प्रयुक्त हुआ है जिस का अर्थ होता है ऐसी आँधी जो बाँझ हो। जो न तो वर्षा लाये और न जिस से कोई और लाभ पहुँच सके। बल्कि जहाँ पहुँचे उजाड़ कर रख दे जैसा कि आगे आ रहा है। (२० अगले पृष्ठ पर)

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

५२–अत-तूर

(परिचय)

नाम (The Title)

प्रस्तुत सूरः* का नाम 'अत-तूर' सूरः की पहली आयत* से लिया गया है। 'तूर' पर्वत को कहते हैं। 'अत-तूर' (The Mount) से अभिप्रेत वह पर्वत है जहाँ हज़रत मूसा अ० को अल्लाह ने तौरात* प्रदान की थी। 'तूर' का सम्बन्ध हज़रत मूसा अ० और बनी इसराईल* के एक पूरे इतिहास से है; 'तूर' शब्द से वास्तव में उस पूरे इतिहास की ओर संकेत किया गया है। हज़रत मूसा अ० को फ़िरऔन की ओर भेजा जाता है। हज़रत मूसा अ० उसे एक अल्लाह की बन्दगी की ओर बुलाते हैं; परन्तु वह अपनी सरकशी से बाज़ नहीं आता। सत्य और असत्य का संघर्ष आरम्भ हो जाता है। अन्त में हज़रत मूसा अ० को सफलता प्राप्त होती है। बनी इसराईल* को कष्टों और यातनाओं से छुटकारा मिलता है। फ़िरऔन सेना-सहित समुद्र में डुबा दिया जाता है। बनी इसराईल* को प्रतिष्ठा और सम्मान प्राप्त होता है। 'तूर' पर हज़रत मूसा अ० को तौरात* प्रदान की जाती है।

'तूर' को इस सूरः में गवाह के रूप में प्रस्तुत किया गया है। 'तूर' इस बात का साक्षी है कि यह दुनियाँ कोई अन्धेर-नगरी नहीं है बल्कि यहाँ ईश्वरीय नियम के अन्तर्गत मानव को उस के किये का फल मिलता रहता है। फ़िरऔन कितना शक्तिशाली सम्राट था परन्तु जब उस ने अल्लाह की बन्दगी की अवहेलना की और सरकश बन कर खड़ा हुआ तो अल्लाह ने उसे उस के अहंकार और अत्याचार के कारण तबाह कर दिया। इस से मालूम होता है कि अल्लाह ने मनुष्य को यों ही निरुद्देश्य नहीं बनाया है और न वह मनुष्यों के भले-बुरे कर्मों से अनभिज्ञ रहता है। इस लोक में उस की दया और उस के प्रकोप का प्रत्यक्ष प्रदर्शन इस बात का खुला प्रमाण है कि आख़िरत* अवश्य होगी और उस दिन हर एक व्यक्ति और हर एक जाति को उस के कर्मों का पूरा-पूरा बदला मिल जायेगा। यह संसार तो केवल परीक्षा के लिए है जीवन का वास्तविक परिणाम तो आख़िरत* ही में सामने आयेगा।

'तूर' के अतिरिक्त दूसरी जिन चीज़ों को सूरः के आरम्भ में प्रमाण और गवाही के रूप में प्रस्तुत किया गया है उन सब से यही सिद्ध होता है कि आख़िरत* होने वाली है और हर एक को अपने कर्मों का पूरा बदला मिल कर रहेगा। प्रस्तुत सूरः इस पहलू से रिसालत* और .क़ुरआन की पुष्टि करती है कि .क़ुरआन एक ऐसे दिन की सूचना देता है जिस दिन लोगों को उन के कर्मों का बदला दिया जायेगा।

उतरने का समय (The date of Revelation)

इस सूरः* के उतरने का समय वही है जो सूरः क़ाफ़० का है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

	पसन्द है।
४:१२८	तंग दिली से बचो।
५:९०	शराब और जुआ सब गन्दे शैतानी काम हैं।
६:१०८	दूसरे के उपास्यों को बुरा न कहो।
६:१५२	गन्दी बातों के क़रीब न जाओ और नाहक किसी की जान न लो।
६:१५२	अपनी सन्तान को गरीबी के डर से क़त्ल न करो।
८:२७	किसी से ख़ियानत न करो।
१६:९०	बुराई और बेहयाई से बचो।
१६:९१	कोई वादा करके न तोड़ो।
१७:२७	फ़ुज़ूलख़र्ची न करो। फ़ुज़ूलख़र्ची करने वाले शैतान के भाई है।
१७:३१	निर्धनता के भय से औलाद को क़त्ल न करो।
१७:३२	जिना के करीब भी न फटको।
१७:३३	नाहक किसी को क़त्ल न करो।
१७:३४,३५	वादा कर के न तोड़ो और नाप-तौल में कमी न करो।
१७:३७	अकड़-अकड़ कर न चलो।
२२:३०	झूठी बातों से बचो।
२३:३,५	व्यर्थ की बातों से दूर रहो और बदकारी के करीब न जाओ।
२४:२३	किसी पर तोहमत (आरोप) न लगाओ।
२४:२७-२९	बिना आज्ञा दूसरो के घरों में न घुसो।
२४:३०, ३१	मर्द पराई औरतो से और औरतें पराये मर्दों से नज़र बचा कर रखें और अपनी शर्मगाहों की रक्षा करें।
२४:३३	लौंडियों से वेश्यावृत्ति न कराओ।
२५:६७	न फ़ज़ूलख़र्ची करो और न कंजूसी। बीच की चाल चलो।
२५:६८	जिना और नाहक क़त्ल से बचो।
२८:१७	अपराधियों का सहायक बनना कदापि सही नहीं।
२८:७६	अल्लाह की दी हुई नेमतों पर फूलो मत।
३१:१८	लोगों से गाल फुला कर बात न करो और न अकड़ कर चलो।
४२:३७	गन्दी और बेहयाई की बातों से बचो।
४९:११	किसी की खिल्ली मत उड़ाओ, ऐब न लगाओ और बुरे नाम न रखो।
४९:१२	बदगुमानी से बचो, यह पाप है, किसी की टोह में न लगो।
४९:१२	पीठ, पीछे किसी को बुरा न कहो। यह ऐसा है जैसे मुर्दा भाई का मांस खाना।
७४:६	बदले की उम्मीद पर एहसान न धरो।
८३:१-३	नाप-तौल में कमी करने वालों के लिए बड़ी ख़राबी है।
९३:९	यतीम पर क्रोध न करो।
९३:१०	माँगने वालों को झिड़को मत।
१०२:१	किसी को खाने देना और चुग़ली खाना बहुत बुरी बात है।
१०७:७	मामूली इस्तेमाल की चीज़ों को देने से इन्कार करना अच्छा नहीं।

मैं उन से कोई रोज़ी नहीं चाहता, और न मैं यह चाहता हूँ कि वे मुझे खिलायें[30]।○

निस्सन्देह अल्लाह ही रोज़ी देने वाला शक्ति वाला है।○

निस्सन्देह इन ज़ुल्म करने वालों[31] के लिए भी एक पैमाना है (बस उस के भरने की देर है) जैसे इन के (अगले) साथियों का पैमाना था[32], तो जल्दी न मचायें।○

इन कुफ़्र* करने वालों के लिए बड़ी ख़राबी है उस दिन के आने पर जिस की इन्हें धमकी दी जा रही है।○

केवल समझाना-बुझाना और नसीहत करना है। यदि ये नहीं मानते तो इस के लिए परेशान होने की ज़रूरत नहीं। जहाँ तक समझाने-बुझाने की बात है तो यह काम तुम्हें उचित अवसरों पर करते रहना चाहिए। इस से ईमान* वाले विशेष रूप से फ़ायदा उठायेंगे।

२८ अर्थात् इन्हें नसीहत करते रहो विशेष रूप से आख़िरत* की याद-दिहानी होती रहनी चाहिए।

२९ अल्लाह की इबादत और बन्दगी के बिना मनुष्य का जीवन सर्वथा असफल रह जाता है। उस का जीवन पूर्ण और सफल यदि हो सकता है तो केवल अल्लाह की इबादत* और उस के आदेशों के पालन से।

३० अर्थात् अल्लाह मुश्रिकों* के ख़ुदाओं और देवी-देवताओं की तरह तुम से रोज़ी और चढ़ावा नहीं माँगता वह स्वयं अपने बन्दों को खिलाता-पिलाता है वह कमज़ोर और मुहताज नहीं। 'अनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति' (ऋ० १-१६४-२०) वह खाता नहीं। जीवों को खिलाने की व्यवस्था करता है।

३१ यहाँ अल्लाह से मुँह मोड़ कर दूसरों को अपना इलाह* (पूज्य) बना लेने वालों को ज़ालिम कहा गया है। शिर्क* से बढ़ कर दूसरा कोई ज़ुल्म नहीं हो सकता।

३२ अर्थात् अल्लाह ने हर ज़ालिम के हिस्से का एक-एक डोल अर्थात् पैमाना रखा है। पिछली जातियों की तरह मक्का के काफ़िरों* का भी एक पैमाना है। इन्हें जो मुहलत और समय प्राप्त है यदि ये लोग उस से फ़ायदा नहीं उठाते तो ये अपना बुरा करेंगे, किसी और का इस से क्या बिगड़ेगा। इन्हें जो आनन्द लेना है ले लें, जो बुराइयाँ करनी चाहते हों कर लें, यहाँ तक कि मुहलत की मुद्दत बीत जाये। और अल्लाह का अज़ाब इन पर टूट पड़े।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

५२-अत-तूर

(परिचय)

नाम (The Title)

प्रस्तुत सूरः* का नाम 'अत-तूर' सूरः की पहली आयत* से लिया गया है। 'तूर' पर्वत को कहते हैं। 'अत-तूर' (The Mount) से अभिप्रेत वह पर्वत है जहाँ हज़रत मूसा अ० को अल्लाह ने तौरात* प्रदान की थी। 'तूर' का सम्बन्ध हज़रत मूसा अ० और बनी इसराईल* के एक पूरे इतिहास से है; 'तूर' शब्द से वास्तव में उस पूरे इतिहास की ओर संकेत किया गया है। हज़रत मूसा अ० को फ़िरऔन की ओर भेजा जाता है। हज़रत मूसा अ० उसे एक अल्लाह की बन्दगी की ओर बुलाते हैं; परन्तु वह अपनी सरकशी से बाज़ नहीं आता। सत्य और असत्य का संघर्ष आरम्भ हो जाता है। अन्त में हज़रत मूसा अ० को सफलता प्राप्त होती है। बनी इसराईल* को कष्टों और यातनाओं से छुटकारा मिलता है। फ़िरऔन सेना-सहित समुद्र में डुबा दिया जाता है। बनी इसराईल* को प्रतिष्ठा और सम्मान प्राप्त होता है। 'तूर' पर हज़रत मूसा अ० को तौरात* प्रदान की जाती है।

'तूर' को इस सूरः में गवाह के रूप में प्रस्तुत किया गया है। 'तूर' इस बात का साक्षी है कि यह दुनियाँ कोई अन्धेर-नगरी नहीं है बल्कि यहाँ ईश्वरीय नियम के अन्तर्गत मानव को उस के किये का फल मिलता रहता है। फ़िरऔन कितना शक्तिशाली सम्राट था परन्तु जब उस ने अल्लाह की बन्दगी की अवहेलना की और सरकश बन कर खड़ा हुआ तो अल्लाह ने उसे उस के अहंकार और अत्याचार के कारण तबाह कर दिया। इस से मालूम होता है कि अल्लाह ने मनुष्य को यों ही निरुद्देश्य नहीं बनाया है और न वह मनुष्यों के भले-बुरे कर्मों से अनभिज्ञ रहता है। इस लोक में उस की दया और उस के प्रकोप का प्रत्यक्ष प्रदर्शन इस बात का खुला प्रमाण है कि आख़िरत* अवश्य होगी और उस दिन हर एक व्यक्ति और हर एक जाति को उस के कर्मों का पूरा-पूरा बदला मिल जायेगा। यह संसार तो केवल परीक्षा के लिए है जीवन का वास्तविक परिणाम तो आख़िरत* ही में सामने आयेगा।

'तूर' के अतिरिक्त दूसरी जिन चीज़ों को सूरः के आरम्भ में प्रमाण और गवाही के रूप में प्रस्तुत किया गया है उन सब से यही सिद्ध होता है कि आख़िरत* होने वाली है और हर एक को अपने कर्मों का पूरा बदला मिल कर रहेगा। प्रस्तुत सूरः इस पहलू से रिसालत* और क़ुरआन की पुष्टि करती है कि क़ुरआन एक ऐसे दिन की सूचना देता है जिस दिन लोगों को उन के कर्मों का बदला दिया जायेगा।

उतरने का समय (The date of Revelation)

इस सूरः* के उतरने का समय वही है जो सूरः क़ाफ़० का है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

केन्द्रीय विषय तथा वार्तायें

इस सूरः का केन्द्रीय विषय वही है जो सूरः क़ाफ़० और अज़-ज़ारियात का है।

प्रस्तुत सूरः० के आरम्भ में तर्कयुक्त सिद्ध किया गया है कि आख़िरत० होने वाली है और उस दिन लोगों को उन के कर्मों का बदला मिल कर रहेगा। इसे कोई टाल नहीं सकता। फिर यह दिखाया गया है कि किस तरह उस दिन उन लोगों को अपमान-जनक अज़ाब दिया जायेगा जो आज सत्य को मानने से इन्कार करते हैं। इस के बाद उस सुखमय जीवन का उल्लेख किया गया है जो जन्नत० में उन लोगों को प्राप्त होगा जो दुनिया में अल्लाह से डरते।

आगे चल कर नबी० सल्ल० को सम्बोधित करते हुये कहा गया है कि आप (सल्ल०) न तो 'काहिन' हैं और न आप कोई उन्मादी व्यक्ति हैं जो लोग इस तरह की बातें आप (सल्ल०) के बारे में कहते हैं वे झूठे हैं। आप जो-कुछ पेश कर रहे हैं वह अल्लाह का 'कलाम' है; वह आप की अपनी कोई रचना नहीं है। जो लोग आप को कवि समझते हैं और उन का विचार है कि आप अपने ध्येय में सफल नहीं हो सकते उन से कह दीजिए कि इन्तज़ार करो मैं भी इन्तज़ार करता हूँ।

फिर काफ़िरों० और मुश्रिकों० के विचारों और धारणाओं का तर्कयुक्त खण्डन करते हुये बताया गया है कि क़ुरआन० अल्लाह का 'कलाम' है और तौहीद के प्रतिकूल जितनी धारणायें हैं वे सर्वथा असत्य हैं। अकेला अल्लाह ही इलाह० (पूज्य) है।

सूरः० के अन्तिम भाग में बताया गया है कि विरोधी लोग अपनी चाल-बाज़ियों से इस्लाम० की राह नहीं रोक सकते। उन की चालों से उलटे उन ही को हानि पहुँचेगी। फिर नबी सल्ल० से कहा गया है कि आप (सल्ल०) विरोधियों के पीछे न पड़िए; ये यदि आज आप की बात का इन्कार करते हैं तो आख़िरत० में स्वयं अपने किये का मज़ा चखेंगे उस दिन न इन की मक्कारी काम आ सकेगी और न कहीं से इन्हें कोई सहायता मिल सकेगी। इन ज़ालिमों को आख़िरत० के बड़े अज़ाब के अतिरिक्त दुनिया में भी अज़ाब दिया जायेगा। दुनिया में भी ये आपत्ति से बच नहीं सकते। फिर नबी सल्ल० को सान्त्वना देते हुये कहा गया है कि धैर्य से काम लीजिए और अपने रब० के फ़ैसले का इन्तज़ार कीजिए। आप हमारी आँखों के सामने हैं। हम आप से बे-ख़बर नहीं हैं। प्रातःकाल और रात्रि को और रात के पिछले हिस्से में नमाज़० में अपने रब० का गुणगान कीजिए।

---

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अत-तूर

(मक्का में उतरी — आयतें* ४९)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
وَالطُّوْرِ ۙ وَكِتٰبٍ مَّسْطُوْرٍ ۙ فِيْ رَقٍّ مَّنْشُوْرٍ ۙ وَّالْبَيْتِ الْمَعْمُوْرِ ۙ وَ
السَّقْفِ الْمَرْفُوْعِ ۙ وَالْبَحْرِ الْمَسْجُوْرِ ۙ اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ۙ مَّا لَهٗ
مِنْ دَافِعٍ ۙ يَّوْمَ تَمُوْرُ السَّمَآءُ مَوْرًا ۙ وَّتَسِيْرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ۙ فَوَيْلٌ
يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۙ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ خَوْضٍ يَّلْعَبُوْنَ ۘ يَوْمَ يُدَعُّوْنَ
اِلٰى نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ۙ هٰذِهِ النَّارُ الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ۙ اَفَسِحْرٌ
هٰذَآ اَمْ اَنْتُمْ لَا تُبْصِرُوْنَ ۚ اِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوْٓا اَوْ لَا تَصْبِرُوْا ۚ سَوَآءٌ
عَلَيْكُمْ ۙ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۙ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّ
نَعِيْمٍ ۙ فٰكِهِيْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمْ رَبُّهُمْ ۚ وَوَقٰىهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ۙ
كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۙ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى سُرُرٍ مَّصْفُوْفَةٍ ۚ
وَزَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِيْنٍ ۙ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ بِاِيْمَانٍ
اَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَآ اَلَتْنٰهُمْ مِّنْ عَمَلِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ ۚ كُلُّ
امْرِئٍۢ بِمَا كَسَبَ رَهِيْنٌ ۙ وَاَمْدَدْنٰهُمْ بِفَاكِهَةٍ وَّلَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ۙ

क़सम है तूर[1] की, ○ और किताब की जो लिखी हुई है ○ खुले हुये पर्ण में,[2] ○ और आबाद ५ घर[3] की, ○ और ऊँची छत की[4] ○ और उमड़ते दरिया की,[5] ○ निश्चय ही तुम्हारे रब* का अज़ाब आ कर रहेगा;[6] ○ कोई नहीं जो उसे टाल सके[7] । ○

जिस दिन आसमान थरथरा रहा होगा । ○ १० और पहाड़ चलते-फिरते होंगे, ○ तो तबाही है उस दिन झुठलाने वालों के लिए ○ जो इधर-उधर की बहसों में पड़े खेलते हैं; ○

जिस दिन ये लोग जहन्नम* की आग की ओर धक्के दे दे कर ले जाये जायेंगे । ○ यही है वह आग जिसे तुम झुठलाते थे । ○ तो क्या यह १५ कोई जादू है, या तुम्हें सूझ नहीं रहा है ? ○ जाओ जलो इस में, अब सब्र* करो या न करो

---

१ यह संकेत 'तूर सीना' की ओर है यह वह पर्वत है जहाँ हज़रत मूसा अ० को तौरात* प्रदान की गई थी । यही वह स्थान है जहाँ अल्लाह ने एक उत्पीड़ित जाति (बनी इसराईल*) पर अपनी दया-दृष्टि डाली और उस के दुश्मनों की धाक मिटाई । 'तूर' शब्द से वास्तव में हज़रत मूसा अ० और उन के आवाहन और उस के परिणाम के पूरे इतिहास की ओर संकेत किया गया है । दे० सूरः का परिचय ।

२ यह संकेत उन आसमानी किताबों की ओर है जो पहले उतर चुकी हैं । ये किताबें एक विशेष प्रकार के काग़ज़ या जानवरों की झिल्ली पर लिखी जाती थीं । और तूमार अथवा पंजी (Roll) के रूप में उन्हें लपेट कर रखते थे ।

३ अर्थात् ज़मीन जिस पर मनुष्य आबाद है और जहाँ उस के लिए जीवन व्यतीत करने की समस्त सामग्री संचित कर दी गई है ।

४ अर्थात् आसमान ।

५ अर्थात् समुद्र ।

६ दे० सूरः अज़-ज़ारियात आयत ६ ।

७ ऊपर जिन चीज़ों की क़समें खाई गई हैं वे वास्तव में इस बात की गवाह और प्रत्यक्ष प्रमाण हैं कि आख़िरत* होने वाली है । बदला दिये जाने का दिन आने वाला है । ज़ालिम अपने करतूतों की सज़ा पा कर रहेंगे । इसे कोई टाल नहीं सकता । 'तूर' का इतिहास भी इसी बात का साक्षी है कि बदला दिये जाने का नियम इस संसार में काम कर रहा है । फ़िरऔन ने यदि मूसा अ० की बात नहीं मानी और सरकशी पर उतर आया तो अल्लाह ने उसे हलाक कर दिया । बनी इसराईल को उस की दासता से छुड़ाया और उन्हें तौरात* जैसी किताब प्रदान की । समस्त आसमानी किताबों की गवाही भी यही है कि मनुष्य निरंकुश नहीं है उसे अपने कर्मों का फल मिल कर रहेगा । इसी तरह ज़मीन, आसमान और समुद्र सभी इस बात के साक्षी हैं कि आख़िरत* का होना कदापि असम्भव नहीं है । जिस अल्लाह ने सृष्टि की रचना की है उस के लिए यह कोई कठिन कार्य नहीं कि वह इसे तबाह कर के दोबारा सृष्टि की रचना करे । समुद्र और दरियाओं से जो तबाहियाँ आती हैं उन में आख़िरत* के होने की एक बड़ी मिसाल पाई जाती है । फिर हम देखते हैं कि फ़िरऔन को सेना-सहित अल्लाह ने लाल सागर में डुबो कर उसे उस के किये का मज़ा चखाया ।

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

ولكن اكثرهم لا يعلمون ۝ واصبر لحكم ربك فانك باعيننا وسبح بحمد ربك حين تقوم ۝ ومن الليل فسبحه وادبار النجوم ۝

क्या अल्लाह के सिवा कोई और इन का इलाह* (पूज्य) है ? अल्लाह की महिमा के प्रतिकूल है जो-कुछ शिर्क* ये करते हैं। ○

और यदि ये आसमान का कोई टुकड़ा गिरता हुआ देखें, तो कहेंगे : ऊपर-तले जमा हुआ घना बादल है[२२]। ○

सो इन्हें छोड़ो, यहां तक कि इन को अपने उस दिन से भेंट हो, जिस में ये बेहोश हो जायेंगे, ○ जिस दिन इन का दाँव इन के कुछ काम न आयेगा, और न इन्हें कोई सहायता मिलेगी। ○

और निश्चय ही उन लोगों के लिए जिन्हों ने .ज़ुल्म किया, इस से पहले और अज़ाब भी है[२३]। परन्तु उन में अधिकतर लोग जानते नहीं। ○

और (हे नबी* !) अपने रब* के फ़ैसले तक सब्र से काम लो, तुम तो हमारी आंखों के सामने हो,[२४] और तसबीह* करो हम्द* (प्रशंसा) के साथ अपने रब* की जिस समय उठते हो, ○ और रात में भी उस की तसबीह* करो,और सितारों के पीठ देते समय भी[२५]। ○

१८ काफ़िर* और मुश्रिक* कहते थे कि फ़रिश्ते* अल्लाह की बेटियां हैं। सो भी उन के यहां अधिकतर देवियों की ही पूजा होती थी। उन की इस धारणा की तथ्य-हीनता को स्पष्ट करने के लिए कहा गया कि तुम्हारे तो कि तुम अपने लिए तो बेटे पसन्द करते हो, बेटियों से तुम्हें नफ़रत है और अल्लाह के बारे में तुम्हारा विचार यह है कि उस ने अपने लिए बेटियां पसन्द की हैं। जिसे तुम अपने लिए बुरा समझते हो उस का नाता अल्लाह से जोड़ने में तुम्हें कुछ भी संकोच नहीं होता।

१९ अर्थात् नबी* तो निष्काम भावना से तुम्हें सत्य की ओर बुला रहा है धर्म-सेवा के बदले में तुम से कुछ मांग नहीं रहा है कि तुम्हें यह सन्देह हो कि यह व्यक्ति अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए ढोंग रचे हुये है। फिर तुम नबी* की बातों पर क्यों सोच-विचार से काम नहीं लेते।

२० अर्थात् यदि तुम आसमान पर नहीं गये तो क्या यहीं बैठे-बैठे तुम्हें परोक्ष का ज्ञान हो गया कि तुम समझने लगे हो कि नबी* जो-कुछ कहता है वह वास्तविकता के प्रतिकूल है। आख़िरत* नहीं होगी और अल्लाह के प्रभुत्व में दूसरे भी शरीक हैं। यदि तुम्हें परोक्ष का ज्ञान नहीं है और न तुम्हारे पास कोई ऐसा साधन है जिस से तुम परोक्ष की बातें जान सको तो फिर हठ-धर्मी क्यों करते हो; नबी* की बात पर गम्भीरता-पूर्वक विचार क्यों नहीं करते। जब कि नबी* जो कुछ कहता है अटकल से नहीं कहता बल्कि उस का दावा है कि वह जो कुछ कहता है वह ज्ञान पर आधारित है और उस की बातें तर्क-संगत हैं।

२१ अर्थात् क्या वे गुप्त उपायों और छिपी चालों से इस्लाम* की राह रोकना चाहते हैं इन की चाल-बाज़ियों से स्वयं इन ही को हानि पहुँचेगी। मक्का के काफ़िर* नबी* सल्ल० को नीचा दिखाने के लिए तरह-तरह की चालबाज़ियों से काम लेते थे ताकि लोग नबी* सल्ल० की बातें न सुनें। बाहर से आने वाले हाजियों* के पास जाकर कहते कि मुहम्मद (सल्ल०) के निकट न जाना और न उन की बातें सुनना नहीं तो तुम पर जादू हो जायेगा। वे तो ऐसी बातें कहते हैं जो हमारे बीच फूट डालने वाली हैं। कभी वे लोग कहते कि उस की न सुनो वह दीवाना है। ऐसी बातें कहता है जो समझ में आने की नहीं हैं। इतिहास साक्षी है कि काफ़िरों* की इन चालों से इस्लाम* का कुछ भी बिगड़ न सका उन की चालें .ख़ुद उन ही के ख़िलाफ़ पड़ीं।

२२ अर्थात् इन की हठ-धर्मी का यह हाल है कि ये अपनी आंखों देखी चीज़ के बारे में भी कोई-न-कोई बहाना बना लेंगे। यदि आसमान को भी गिरता हुआ देख लें तो भी यही कहेंगे कि यह दलदार गहरा बादल है।

२३ अर्थात् बड़े अज़ाब से पहले अल्लाह लोगों को सचेत करने के लिए छोटे-छोटे अज़ाब भेजता है जैसे अकाल, रोग, क़त्ल, आपत्ति आदि।

२४ अर्थात् तुम्हारी तसल्ली के लिए यह बहुत है कि तुम हमारी निगाहों के सामने हो। हम तुम्हारी रक्षा के लिए काफ़ी हैं, तुम धैर्य से काम लो।

२५ अर्थात् सितारों के ढलने के समय भी। यहां नमाज़ के तीन वक़्तों का उल्लेख किया गया है। यह आरम्भ काल की सूरः है जब कि पाँच वक़्त की नमाज़ का हुक्म नहीं हुआ था।

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

५३--अन-नज्म

(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः* का नाम 'अन-नज्म' (The Star) सूरः की पहली आयत* से लिया गया है। ऐसे तारे को जो डूबने के क़रीब हो इस सूरः में एक साक्षी और प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया गया है (दे० फ़ुट नोट १)।

उतरने का समय (The date of Revelation)

इस सूरः* के अवतरित होने का समय वही है जो सूरः क़ाफ़० का है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्तायें

मध्य-बिन्दु या केन्द्रीय विषय इस सूरः का वही है जो सूरः 'क़ाफ़०' का है।

इस सूरः में अल्लाह ने बताया है कि नबी सल्ल० जो-कुछ पेश कर रहे हैं वह अल्लाह की ओर से है। आप (सल्ल०) जो-कुछ बयान फ़रमाते हैं वह कोई काल्पनिक चीज़ नहीं है बल्कि आप की आँखों-देखी वास्तविकता है। आप के मुक़ाबले में काफ़िरों* की जो विचार-धारा है वह सर्वथा अनुमान और अटकल पर आधारित है। वे जिन देवी-देवताओं की उपासना करते हैं उन की कोई वास्तविकता नहीं, वे निरे नाम हैं जो उन के पूर्वजों ने और स्वयं उन्हों ने रख छोड़े हैं। विचार की दृष्टि से यह कितने गिर चुके हैं कि फ़िरिश्तों* को अल्लाह की बेटियाँ समझते हैं; हालाँकि ये स्वयं अपने लिए कभी बेटियाँ पसन्द नहीं करेंगे।

फिर नबी सल्ल० को सम्बोधित करते हुये कहा गया है कि आप (सल्ल०) इन लोगों के पीछे न पड़िए जो हमारे 'ज़िक्र' से विमुख हो गये हैं। ये केवल सांसारिक जीवन के अभिलाषी हैं इन के ज्ञान की पहुँच बस यहीं तक है। इस वर्त्तमान जीवन के अतिरिक्त भी कुछ है,इस की ओर से ये बिलकुल अन्धे हैं।

फिर अल्लाह के चमत्कारों का उल्लेख करते हुये बताया गया है कि उस ने दुनियाँ को निरुद्देश्य नहीं बनाया है। अच्छे लोगों को अच्छा बुरों को बुरा बदला मिल कर रहेगा। जिस ने तुम्हें पहली बार पैदा किया है वह तुम्हें दोबारा पैदा करने का भी सामर्थ्य रखता है। हज़रत मुहम्मद् सल्ल० की शिक्षा वही है जो इस से पहले मूसा अ० और इबराहीम अ० की किताबों में दी जा चुकी है। फिर बताया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति आप अपना उत्तरदायी है कोई किसी का बोझ नहीं उठायेगा। मनुष्य को वही मिलेगा जो उस ने कोशिश की होगी। फिर उन जातियों का मिसाल में पेश किया गया है जिन्हें अल्लाह ने उन की सरकशी के कारण विनष्ट कर दिया।

सूरः* के अन्त में काफ़िरों* को चेतावनी देते हुये नबी सल्ल० के बारे में कहा गया है कि आप उसी तरह अल्लाह की ओर से लोगों के लिए सचेत-कर्त्ता हैं जिस तरह इस से पहले दूसरे सचेत करने वाले नबी* आ चुके हैं। क़ियामत* की घड़ी दूर नहीं वह आया ही चाहती है, अल्लाह के सिवा कोई नहीं जो उसे हटा सके। तुम्हें अल्लाह ही के आगे झुकना चाहिए और केवल उसी की इबादत* और बन्दगी करनी चाहिए।

इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अन-नज्म

(मक्का में उतरी — आयतें* ६२)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

سورة النجم بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
وَالنَّجْمِ إِذَا هَوَىٰ ۝ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوَىٰ ۝ وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوَىٰ ۝
إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَىٰ ۝ عَلَّمَهُ شَدِيدُ الْقُوَىٰ ۝ ذُو مِرَّةٍ فَاسْتَوَىٰ ۝
وَهُوَ بِالْأُفُقِ الْأَعْلَىٰ ۝ ثُمَّ دَنَا فَتَدَلَّىٰ ۝ فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ
أَدْنَىٰ ۝ فَأَوْحَىٰ إِلَىٰ عَبْدِهِ مَا أَوْحَىٰ ۝ مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَأَىٰ ۝ أَفَتُمَارُونَهُ
عَلَىٰ مَا يَرَىٰ ۝ وَلَقَدْ رَآهُ نَزْلَةً أُخْرَىٰ ۝ عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهَىٰ ۝
عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَأْوَىٰ ۝ إِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشَىٰ ۝ مَا زَاغَ
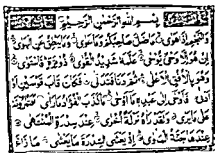
क़सम है तारे की जब वह नीचे को आये,[1] ○ यह तुम्हारे संग रहने वाला[2] न भटका, और न राह से फिरा; ○ और ऐसा नहीं कि जो मन चाहता है वह कह देता है। ○ वह तो बस वह्य* होती है, जो (उस पर) की जाती है, ○ उसे सिखाया प्रबल शक्तियों वाले ने,[3] ○ जो सुदृढ़ है; पूर्णरूप में प्रकट हुआ ○ जब कि वह आकाश के सब से ऊँचे किनारे पर था। ○ फिर वह निकट हुआ और उतरता चला आया ○ अब दो कमान के फ़ासिले पर था बल्कि और निकट, ○ फिर उस ने वह्य* की अपने बन्दे की ओर जो-कुछ भी की। ○ दिल ने उस में धोखा नहीं दिया जो-कुछ उस ने देखा। ○ तो क्या तुम उस से झगड़ते हो उस पर जो वह देखता है[4] ? ○

---

१ यहाँ ऐसे सितारे को जो डूबने के क़रीब हो इस बात का साक्षी ठहराया है (जैसा कि आगे की आयतों से विदित है) कि नबी* सल्ल० न तो कभी भटके और न लोगों को ग़लत मार्ग दिखाया। आप (सल्ल०) ने लोगों को जो सन्देश पहुँचाया वह अल्लाह की ओर से था जिसे वह्य* के द्वारा अल्लाह ने आप (सल्ल०) के पास भेजा था। और जिबरील अ० जैसे फ़िरिश्ते को इस काम पर नियुक्त किया था कि वे आप (सल्ल०) तक अल्लाह का सन्देश पहुँचायें। हज़रत जिबरील अ० एक शक्तिशाली, ओजस्वी और विश्वसनीय फ़िरिश्तः हैं। (आयत ४–५) जिबरील अ० को आप ने कई बार देखा है। आप ने उन्हें उन के वास्तविक रूप में भी देखा है। दूर से ही नहीं बिलकुल निकट से देखने का अवसर भी आप को मिला है (आयत ७–९)। और आप (सल्ल०) को इस में किसी प्रकार का धोखा नहीं हुआ है। डूबने वाले तारों के सूक्ष्म संकेतों को समझने वाला कोई क़ुरआन के इस दावे का इन्कार नहीं कर सकता। विचार कीजिए तारे ने अपनी यात्रा पूरी कर ली यहाँ तक कि अब वह डूबने के क़रीब है परन्तु उस ने न तो अपना मार्ग छोड़ा और न पथ-भ्रष्ट हुआ। अपनी यात्रा उस ने अपने निश्चित मार्ग पर चल कर पूरी की। आसमान के तारों की इस गगन यात्रा का वह महत्त्व नहीं है जो महत्त्व उस कर्तव्य-पालन का है जो एक रसूल* का दायित्व होता है। जब एक तारा अपने मार्ग से नहीं हटता तो फिर उस रसूल* के पथ-भ्रष्ट होने की सम्भावना कैसे हो सकती है जो अल्लाह का प्रतिनिधि होता है जिसे अल्लाह इस महत्त्वपूर्ण कार्य पर नियुक्त करता है कि वह लोगों को सत्य का मार्ग दिखाये और उन्हें पथ-भ्रष्ट होने से बचाये। इस लिए निस्सन्देह उस का जीवन अत्यन्त पवित्र होता है; वह कभी भी लोगों को ग़लत रास्ते पर नहीं ले जा सकता। यदि उस का दावा है कि उस के पास अल्लाह की ओर से वह्य* आती है तो वह अपने इस दावे में सच्चा है। और यदि वह कहता है कि हम ने अल्लाह के उस फ़िरिश्ते* को देखा है जो अल्लाह की ओर से वह्य* लाने पर नियुक्त था तो वह सच कहता है। जिस तरह आँख रखने वाला व्यक्ति चमकते हुये तारों को देखता है और तारों को देखने में उसे कोई सन्देह नहीं होता उसी तरह ऐसे व्यक्ति के लिए जिस की अन्तर्दृष्टि पूर्ण है यह कोई असम्भव बात नहीं है कि वह किसी ऐसे तारे को देख ले जो आन्तरिक (Spiritual) प्रकाश से युक्त हो। फिर जिस तरह साधारण तारे अपने देखने वाले को प्रकाश देते हैं ठीक उसी तरह जिस ने आन्तरिक तारे (अर्थात् अल्लाह के विशेष फ़िरिश्ते* जिबरील अ०) को देखा उस को उस से भी विशेष प्रकाश मिलेगा।

२ यह संकेत नबी सल्ल० की ओर है।

३ अर्थात् जिबरील अ० ने। दे० सूरः अत-तकवीर आयत १९–२०।

४ अर्थात् क्या तुम लोग उस चीज़ के बारे में उस से झगड़ रहे हो और उसे मानने से इन्कार कर रहे हो जो उस की अपनी आँखों-देखी वास्तविकता है। वह अटकल और अनुमान से कोई दावा नहीं कर रहा है। वह जो-कुछ बयान कर रहा है वह उस के ज्ञान और निरीक्षण पर आधारित होता है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

بَصَرُ وَمَا طَغٰى ۝ لَقَدْ رَاٰى مِنْ اٰيٰتِ رَبِّهِ الْكُبْرٰى ۝ اَفَرَءَيْتُمُ اللّٰتَ
وَالْعُزّٰى ۝ وَمَنٰوةَ الثَّالِثَةَ الْاُخْرٰى ۝ اَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْاُنْثٰى ۝
تِلْكَ اِذًا قِسْمَةٌ ضِيْزٰى ۝ اِنْ هِيَ اِلَّآ اَسْمَآءٌ سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَ
اٰبَآؤُكُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَمَا
تَهْوَى الْاَنْفُسُ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنْ رَّبِّهِمُ الْهُدٰى ۝ اَمْ لِلْاِنْسَانِ مَا
تَمَنّٰى ۝ فَلِلّٰهِ الْاٰخِرَةُ وَالْاُوْلٰى ۝ وَكَمْ مِّنْ مَّلَكٍ فِي السَّمٰوٰتِ لَا تُغْنِيْ
شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا اِلَّا مِنْ بَعْدِ اَنْ يَّاْذَنَ اللّٰهُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَرْضٰى ۝ اِنَّ

और वह उसे एक बार और देख चुका है[५] ○ परली सीमा की बेर के पास,[६] ○ जिस के निकट १५ जन्नत* है जो सदा का ठिकाना है। ○ जब कि छाया हुआ था उस बेर पर जो-कुछ कि छाया हुआ था, ○ न तो निगाह[७] इधर-उधर हटी और न आगे बढ़ी। ○ निश्चय ही उस ने अपने रब* की बड़ी-बड़ी निशानियाँ देखीं। ○

२० तो क्या तुम ने देखा है 'लात' और 'उज़्ज़ा' ○ और तीसरा एक और जो है—'मनात'[८] ? ○ क्या तुम्हारे लिए तो बेटे और उस के लिए बेटियाँ[९] ? ○ तब तो यह बहुत ग़लत हिस्सा लगा। ○ ये तो बस कुछ नाम हैं जिन को तुम ने और तुम्हारे पूर्वजों ने रख लिया है, इन के लिए अल्लाह ने कोई सनद नहीं उतारी। ये लोग तो बस गुमान पर और जो जी चाहता है उस पर चल रहे हैं। जब कि इन के पास इन के रब की ओर से हिदायत* आ चुकी है। ○

कहीं मनुष्य को प्राप्त है वह-कुछ जिस की वह कामना करता है ? ○ तो अल्लाह ही के २५ हाथ में है पिछला भी और पहला भी[१०]। ○

और कितने ही फ़िरिश्ते* हैं आसमानों में जिन की सिफ़ारिश कुछ काम नहीं दे सकती यदि काम दे सकती है तो इस के बाद ही कि अल्लाह इजाज़त दे जिसे चाहे और पसन्द भी करे। ○

जो लोग आख़िरत* को नहीं मानते वे फ़िरिश्तों* के स्त्रियों जैसे नाम रखते हैं[११]। ○ और उन के पास इस का कोई ज्ञान नहीं। ये तो बस गुमान पर चलते हैं, और गुमान हक़ बात के सामने कुछ काम नहीं देता। ○

तो (हे नबी*!) तुम ऐसे व्यक्ति से किनारा खींच लो जो हमारे 'ज़िक्र' से मुँह मोड़े और सांसारिक जीवन के अतिरिक्त कुछ न चाहे। ○ उन के ज्ञान की पहुँच यहीं तक है। निस्सन्देह तुम्हारा रब* उस व्यक्ति को भली-भाँति जानता है जो उस के मार्ग से भटक गया, ३० और वह उस व्यक्ति को भी भली-भाँति जानता है जिस ने सीधी राह अपनाई। ○

और अल्लाह ही का है जो-कुछ आसमानों में है और जो-कुछ ज़मीन में है, ताकि जिन लोगों ने बुराई की उन्हें उन के किये का बदला दे, और जिन लोगों ने भलाई की उन्हें बदला प्रदान करे। ○ वे जो बड़े-बड़े गुनाहों[१२] और अश्लील बातों से बचते हैं यह और बात है कि

५ अर्थात् इस रसूल (सल्ल०) ने जिब्रील (अ०) को एक बार और 'मेअ्राज' के अवसर पर देखा है (दे० सूरः बनी इसराईल का परिचय)।*

६ यह स्थान सातवें आसमान से ऊपर है जहाँ बेर का वृक्ष है। अल्लाह ही जानता है कि यह बेर का वृक्ष किस प्रकार का है। इस स्थान को अल्लाह की पेशगाह और दूसरे लोकों के बीच सीमान्तर की हैसियत हासिल है। नीचे से जाने वाले यहीं रुक जाते हैं। ऊपर से आने वाले आदेश, फ़रमान आदि सीधे यहीं आते हैं। इस स्थान के निकट नबी सल्ल० को जन्नत दिखाई गई। आप (सल्ल०) ने देखा कि अल्लाह ने अपने आज्ञाकारी बन्दों के लिए वह-कुछ संचित कर रखा है जो न किसी आँख ने देखा है और न किसी कान ने सुना है और न कोई उस की कल्पना ही कर सकता है।*

७ अर्थात् नबी सल्ल० की निगाह।

८ ये अरबों की देवियों के नाम हैं जिन की मूर्तियों को अरब के मुश्रिक पूजते थे।*

९ दे० सूरः अन-नूर फ़ुट नोट १८।

१० आरम्भ से अन्त तक सब-कुछ अल्लाह ही के अधिकार में है। दे० सूरः अल-लैल आयत १३।

११ अरब के मुश्रिक लोग फ़िरिश्तों* को अल्लाह की बेटियाँ कहते थे।*

१२ जैसे क़त्ल, ज़िना, चोरी आदि।

**इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ لَيُسَمُّونَ الْمَلَائِكَةَ تَسْمِيَةَ الْأُنْثَىٰ ۝ وَ
مَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ ۖ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ ۖ وَإِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ
شَيْئًا ۝ فَأَعْرِضْ عَنْ مَنْ تَوَلَّىٰ عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ إِلَّا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۝
ذَٰلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِنَ الْعِلْمِ ۚ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ
وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدَىٰ ۝ وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
لِيَجْزِيَ الَّذِينَ أَسَاءُوا بِمَا عَمِلُوا وَيَجْزِيَ الَّذِينَ أَحْسَنُوا بِالْحُسْنَى ۝
الَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبَائِرَ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ إِلَّا اللَّمَمَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ
الْمَغْفِرَةِ ۚ هُوَ أَعْلَمُ بِكُمْ إِذْ أَنْشَأَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ وَإِذْ أَنْتُمْ أَجِنَّةٌ
فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ ۖ فَلَا تُزَكُّوا أَنْفُسَكُمْ ۖ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقَىٰ ۝
أَفَرَأَيْتَ الَّذِي تَوَلَّىٰ ۝ وَأَعْطَىٰ قَلِيلًا وَأَكْدَىٰ ۝ أَعِنْدَهُ عِلْمُ
الْغَيْبِ فَهُوَ يَرَىٰ ۝ أَمْ لَمْ يُنَبَّأْ بِمَا فِي صُحُفِ مُوسَىٰ ۝ وَإِبْرَاهِيمَ الَّذِي
وَفَّىٰ ۝ أَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۝ وَأَنْ لَيْسَ لِلْإِنْسَانِ إِلَّا
مَا سَعَىٰ ۝ وَأَنَّ سَعْيَهُ سَوْفَ يُرَىٰ ۝ ثُمَّ يُجْزَاهُ الْجَزَاءَ الْأَوْفَىٰ ۝ وَ
أَنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الْمُنْتَهَىٰ ۝ وَأَنَّهُ هُوَ أَضْحَكَ وَأَبْكَىٰ ۝ وَأَنَّهُ هُوَ أَمَاتَ
وَأَحْيَا ۝ وَأَنَّهُ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنْثَىٰ ۝ مِنْ نُطْفَةٍ إِذَا
تُمْنَىٰ ۝ وَأَنَّ عَلَيْهِ النَّشْأَةَ الْأُخْرَىٰ ۝ وَأَنَّهُ هُوَ أَغْنَىٰ وَأَقْنَىٰ ۝
وَأَنَّهُ هُوَ رَبُّ الشِّعْرَىٰ ۝ وَأَنَّهُ أَهْلَكَ عَادًا الْأُولَىٰ ۝ وَثَمُودَ فَمَا
أَبْقَىٰ ۝ وَقَوْمَ نُوحٍ مِنْ قَبْلُ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا هُمْ أَظْلَمَ وَأَطْغَىٰ ۝ وَ

कोई साधारण गुनाह संयोगवश हो जावे[13]। निस्सन्देह तुम्हारा रब* विस्तीर्ण क्षमा वाला है। वह तुम्हें भली-भाँति जानता है (उस समय से) जब कि उस ने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया और जब कि तुम भ्रूण अवस्था में अपनी माओं के पेट में थे। तो अपने-आप को पवित्रात्मा न ठहराओ। वह भली-भाँति जानता है कि कौन परहेज़गार है[14]।○

क्या तुम ने उस व्यक्ति को देखा जिस ने मुँह फेरा,○ और थोड़ा सा दे कर बन्द कर दिया[15]।○ क्या उस के पास परोक्ष का ज्ञान है कि वह देख रहा है[16]।○

क्या उस को उस की ख़बर नहीं हुई जो-कुछ कि मूसा के सहीफ़ों* (किताबों) में है ○ और इबराहीम के (सहीफ़ों* में) जिस ने हक़ अदा कर दिया : ○ इस बात की ख़बर कि कोई किसी दूसरे का बोझ नहीं उठायेगा,[17] ○ और यह कि मनुष्य के लिए बस वही है जो कि उस ने चेष्टा की, ○ और यह कि उस की चेष्टा जल्द ही देखी जायेगी,[18]○ फिर उसे भर-पूर बदला दिया जायेगा;[19] ○ और यह कि तुम्हारे रब* ही पर अन्त है; ○ और यह कि उस ने हँसाया, और रुलाया, ○ और यह कि उस ने मारा और जिलाया; ○ और यह कि उस ने दोनों जाति बनाये, स्त्री-जाति और पुरुष-जाति, ○ वीर्य्य से जब कि वह (गर्भाशय में) डाला जाता है; ○ और यह कि उस के ज़िम्मे है दोबारा उठाना;[20] ○ और यह कि उस ने मुहताजी दूर की और पूँजीपति बनाया : ○ और यह कि वह 'शेअ्रा' (नामक

१३ अर्थात् साधारण भूल-चूक उन से भी हो सकती है जिस के लिए वे अपने रब* से क्षमा की प्रार्थना किया करते हैं।

१४ अर्थात् अपने पुण्यात्मा होने का दावा करना बहुत बुरा है। कौन व्यक्ति कैसा है, अल्लाह इस बात को भली-भाँति जानता है।

१५ यहाँ एक व्यक्ति को मिसाल में पेश किया गया है जो थोड़ी भलाई का काम कर के रुक जाता है। ... भलाई की राह नहीं है। नेकी के मार्ग को तो यह समझ कर अपनाना चाहिए कि हमें इसी मार्ग पर चलना है चाहे लाभ हो या हानि। दृढ़ संकल्प का आदमी ही वास्तव में नेकी की राह पर चल सकता है।

१६ अर्थात् मनुष्य को यह सोचना चाहिए कि क्या उस ने परोक्ष को देख कर यह जान लिया है कि न ... नेकी का बदला देने वाला है और न बुराई की सज़ा मिलने वाली है, इस लिए वह नेकी से रुक गया।

१७ अर्थात् हर व्यक्ति अपने कर्मों का उत्तरदायी है। कोई दूसरा उस के गुनाहों के बोझ को नहीं उठायेगा। गुनाह करने वाले के गुनाह के सिलसिले में उन लोगों की पकड़ अवश्य होगी जिन्हों ने उसे गुनाह के ... पर उभारा होगा।

१८ अर्थात् आदमी की कोशिश अकारथ नहीं जायेगी। एक दिन ऐसा आने वाला है जब कि लोगों की कोशिशों का हिसाब लिया जायेगा कि उन्हों ने अपना समय और अपनी शक्ति कहाँ लगाई।

१९ हर एक को उस के कर्मों का पूरा-पूरा बदला आख़िरत* में दिया जायेगा। वर्तमान लोक में तो यह सम्भव ही नहीं है कि लोगों को उन के कर्मों का पूरा बदला या पूरी सज़ा मिल सके।

२० अर्थात् जिस अल्लाह ने वीर्य्य से मनुष्य को पैदा किया वह दोबारा उठा खड़ा करने का सामर्थ्य भी रखता है। मनुष्य अल्लाह ही का चमत्कार है जिस सत्ता ने एक बार अपना चमत्कार दिखाया है वह दोबारा भी दिखा सकती है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

وَالْمُؤْتَفِكَةَ أَهْوَىٰ ۝ فَغَشّٰىهَا مَا غَشّٰى ۝ فَبِأَيِّ آلَآءِ رَبِّكَ تَتَمَارَىٰ ۝
هٰذَا نَذِيرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْأُولَىٰ ۝ أَزِفَتِ الْآزِفَةُ ۝ لَيْسَ لَهَا مِن
دُونِ اللَّهِ كَاشِفَةٌ ۝ أَفَمِنْ هٰذَا الْحَدِيثِ تَعْجَبُونَ ۝ وَتَضْحَكُونَ وَ
لَا تَبْكُونَ ۝ وَأَنتُمْ سَامِدُونَ ۝ فَاسْجُدُوا لِلَّهِ وَاعْبُدُوا ۝

तारे)का रब* है;[२१] ○ और[२२] यह कि उस ने
५० अगले आद* को विनष्ट किया, ○ और समूद*
को भी फिर बाक़ी न छोड़ा; ○ और उन से पहले
नूह की जाति वालों को भी (हलाक किया), निश्चय
ही वे बड़े ज़ालिम और सरकश थे; ○ और 'उलटी
हुई बस्तियों' को[२३] भी उस ने उठा फेंका ○ फिर उन्हें ढक दिया जिस चीज़ से ढक दिया[२४]।

५५ फिर तू अपने रब* के कौन से चमत्कार के बारे में झगड़ता है? ○

यह[२५] अगले सचेत करने वालों में से एक सचेत करने वाला है। ○

वह आने वाली आ पहुँची[२६]। ○ अल्लाह के सिवा कोई उसे हटाने वाला नहीं। ○

६० तो क्या तुम इस बात पर आश्चर्य करते हो, ○ और हँसते हो रोते नहीं, ○ और तु[म]
मद के माते हो? ○

अच्छा अब अल्लाह को सजद:* करो और इबादत* करो[२७]। ○

---

२१ 'शेअ्‌रा' (Sirius) एक सितारे का नाम है। अरब* के मुश्रिक समझते थे कि लोगों की क़िस्मत [के]
बनने और बिगड़ने में इस तारे का भी हाथ है। अल्लाह ने कहा कि इस तारे का मालिक भी अल्लाह ही है
लाभ-हानि, सुख-दुःख सब अल्लाह के हाथ में है। इस लिए तारों को या किसी भी दूसरी चीज़ को पूजना व्यर्थ है

२२ यहाँ से इतिहास की मिसालें प्रस्तुत की गई हैं कि अल्लाह के आदेशों को ठुकराने वाली जातियों [को]
किस प्रकार तबाह कर दिया गया है।

२३ यह संकेत हज़रत लूत अ० की बस्तियों की ओर है।

२४ दे० सूर: हूद आयत ८२; अल-हिज्र आयत ७४।

२५ यह संकेत नबी सल्ल० की ओर है। आप (सल्ल०) भी पहले नबियों* की तरह लोगों को सचेत कर[ने]
वाले हैं।

२६ अर्थात् क़ियामत दूर नहीं है। इस विश्व की व्यवस्था से यह बात सिद्ध है कि अल्लाह चाहे तो क्षण
भर में क़ियामत* आ जाये। यदि एक सितारा भी अपने निश्चित मार्ग से विचलित हो जावे तो विश्व की सार[ी]
व्यवस्था बिगड़ कर रह जाये। आदमी हज़ार दो हज़ार की मुद्दत को समझता है कि यह बड़ी मुद्दत [है]
हालाँकि अल्लाह की दृष्टि में यह क्षण के बराबर भी नहीं। बुद्धिमान् व्यक्ति वही है जो यह समझ कर जीव[न]
व्यतीत करे कि वह बहुत जल्द अल्लाह के सामने हाज़िर होने वाला है।

२७ सूर: अन-नज्म पढ़ कर नबी सल्ल० ने सजद:* किया, जितने मुसलमान और मुश्रिक* उस समय वह[ाँ]
मौजूद थे सब सजदे में गिर पड़े केवल एक मुश्रिक* ने सजद: नहीं किया; उस ने थोड़ी सी मिट्टी उठा क[र]
ललाट पर लगा ली और कहा कि मुझे इतना ही काफ़ी है।

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अल-क़मर

(मक्का में उतरी — आयतें* ५५)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

بسم الله الرحمن الرحيم
اقتربت الساعة وانشق القمر ۝ وإن يروا آية يعرضوا ويقولوا
سحر مستمر ۝ وكذبوا واتبعوا أهواءهم وكل أمر مستقر ۝
ولقد جاءهم من الأنباء ما فيه مزدجر ۝ حكمة بالغة فما
تغن النذر ۝ فتول عنهم يوم يدع الداع إلى شيء نكر ۝
خشعا أبصارهم يخرجون من الأجداث كأنهم جراد منتشر ۝

वह घड़ी क़रीब आ पहुँची और चाँद फट गया[1]। ○ और यदि ये कोई निशानी[2] देखें तो टाल जायेंगे और कहेंगे : यह एक जादू है जो सदा से चला आता है[3]। ○

और इन्हों ने झुठलाया और अपनी इच्छाओं पर चले। और हर काम अपने समय पर हो कर रहता है[4]। ○

इन लोगों के पास ऐसी ख़बरें आ चुकी हैं जिन में ताड़ना है, ○ भरपूर हिकमत* है; परन्तु डरावे काम नहीं दे रहे हैं[5]। ○

तो तुम उन से किनारा खींच लो।

जिस दिन बुलाने वाला एक अनिष्ट चीज़ की ओर बुलायेगा[6]। ○

उन की निगाहें झुकी हुई होंगी, क़बरों से निकल रहे होंगे जैसे बिखरी हुई टिड्डियाँ हों।○

लपके जा रहे होंगे बुलाने वाले की ओर; काफ़िर* कहेंगे : यह बड़ा कठिन दिन है। ○

इन से पहले नूह की जाति* वालों ने झुठलाया था,[7] उन्हों ने हमारे बन्दे को झुठलाया और उन्मादी कहा; और उसे ताड़ना दी गई। ○

फिर उस ने अपने रब* को पुकारा कि मैं दबा लिया गया हूँ, अब तू निमट ले। ○

फिर हम ने आसमान के द्वार खोल दिये जिस से मूसलाधार पानी गिरने लगा ○ और ज़मीन में स्रोत-ही-स्रोत प्रवाहित कर दिये, फिर पानी एक ऐसे प्रयोजन के अन्तर्गत जो निश्चित हो चुका था आपस में मिल गया[8]। ○

---

१ अर्थात् क़ियामत* की घड़ी दूर नहीं है; क़ियामत* बिलकुल क़रीब आ लगी है। चाँद भी समझो कि फट चुका है। क़ियामत में विश्व की वर्तमान व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो जायेगी, तारे टूट-फूट जायेंगे, चाँद फट जायेगा। यहाँ भविष्य के बदले भूत काल का प्रयोग कर के यह बताना अभीष्ट है कि क़ियामत* के बारे में कुछ भी सन्देह नहीं है, क़ियामत* को आया हुआ समझो।

ऐतिहासिक कथनों से मालूम होता है कि मक्का वालों को क़ियामत* की एक निशानी और नमूना चाँद फट जाने के चमत्कार के रूप में दिखाया भी जा चुका है (दे० सूरः का परिचय)।

२ अर्थात् क़ियामत की कोई निशानी।

३ अर्थात् यह तो पुराना जादू है इस तरह के जादू पहले भी वे लोग कर चुके हैं जो अपने नबी* होने के दावे करते थे।

४ अर्थात् हर मामले की एक हद है। हर चीज़ का कोई परिणाम है जो सामने आ कर रहेगा। काफ़िर* यदि सत्य का इन्कार करते हैं तो उन्हें एक दिन अवश्य अल्लाह के अज़ाब का सामना करना पड़ेगा।

५ अर्थात् ये डरावे से शिक्षा ग्रहण ही कब करते हैं।

६ जिस की ओर ये जाना पसन्द नहीं करेंगे। दे० सूरः क़ाफ़० आयत ४१; अन्-नूर आयत ४४।

७ दे० सूरः अश्-शु‌अरा फुट नोट ३७।

८ अर्थात् आसमान से भी घोर वर्षा हुई और ज़मीन से भी पानी के स्रोत फूट पड़े। पानी से भूमि भर गई और काफ़िर* उस में डूब कर रह गये।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

مُّهْطِعِينَ إِلَى الدَّاعِ يَقُولُ الْكَافِرُونَ هَٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ۞ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ
قَوْمُ نُوحٍ فَكَذَّبُوا عَبْدَنَا وَقَالُوا مَجْنُونٌ وَازْدُجِرَ ۞ فَدَعَا رَبَّهُ أَنِّي
مَغْلُوبٌ فَانتَصِرْ ۞ فَفَتَحْنَا أَبْوَابَ السَّمَاءِ بِمَاءٍ مُّنْهَمِرٍ ۞ وَفَجَّرْنَا
الْأَرْضَ عُيُونًا فَالْتَقَى الْمَاءُ عَلَىٰ أَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ۞ وَحَمَلْنَاهُ عَلَىٰ ذَاتِ
أَلْوَاحٍ وَدُسُرٍ ۞ تَجْرِي بِأَعْيُنِنَا جَزَاءً لِّمَن كَانَ كُفِرَ ۞ وَلَقَد تَّرَكْنَاهَا
آيَةً فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ۞ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ۞ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا
الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ۞ كَذَّبَتْ عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي

और हम ने उसे[9] एक तख़्तों और कीलों वाली (नौका) पर सवार किया, ○ वह (नौका) हमारी निगाहों के सामने चल रही थी[10]। यह बदला था उस व्यक्ति के लिए जिस की बेक़दरी की गई थी[11]। ○

और हम ने इसे एक निशानी बना कर छोड़ १५ दिया;[12] तो क्या कोई है शिक्षा ग्रहण करने वाला ? ○ तो कैसा रहा मेरा अज़ाब और मेरे डरावे ! ○

और हम ने क़ुरआन* को शिक्षा के लिए सुगम बना दिया है[13] तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला ? ○

आद*[14] ने झुठलाया। फिर कैसा रहा मेरा अज़ाब और मेरे डरावे ! ○

हम ने उन पर तेज़ ठण्डी हवा चलाई एक बराबर क़ायम रहने वाली नहूसत के दिन में[15]। ○

२० वह लोगों को उखाड़ फेंकती थी मानो वे खजूर के उखड़े हुये तने हैं। ○ तो कैसा रहा मेरा अज़ाब और मेरे डरावे ! ○

और हम ने क़ुरआन को शिक्षा के लिए सुगम बना दिया है[16] तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला ? ○

समूद[17] ने डरावों को झुठलाया ○ उन्हों ने कहा : क्या हम अपने ही में के अकेले एक व्यक्ति के पीछे चलेंगे[18] ? तब तो हम गुमराही और दीवानगी में पड़े। ○ क्या हम सब २५ में इसी पर ज़िक्र* उतारा गया ? नहीं, बल्कि यह झूठा और अपनी बड़ाई जताने वाला है। ○

उन्हें कल ही मालूम हो जायेगा कि कौन झूठा और अपनी बड़ाई जताने वाला है। ○ हम उन की आज़माइश के लिए एक ऊँटनी भेज रहे हैं तो तुम उन्हें देखते रहो[19] और धैर्य से काम लो; ○ और उन्हें सूचित कर दो कि पानी को उन में बाँट दिया गया है। पानी की हर बारी पर बारी वाला हाज़िर हुआ करेगा[20]। ○

फिर उन्हों ने अपने साथी को पुकारा और उस ने (उस ऊँटनी पर) हाथ चलाया और

---

९ यह संकेत हज़रत नूह अ० की ओर है।

१० "हमारी निगाहों के सामने" अर्थात् हमारी हिफ़ाज़त और निगरानी में।

११ अर्थात् जिस की बात सुनने और जिसे अल्लाह का रसूल* मानने से उस की जाति वालों ने इन्कार कर दिया था। यह संकेत हज़रत नूह की ओर है।

१२ दे० सूरः अल-अनकबूत आयत १५।

१३ अर्थात् क़ुरआन शिक्षा और याद-दिहानी के लिए हर पहलू से उपयुक्त है। यदि कोई वास्तव में शिक्षा ग्रहण करनी चाहता हो तो वह क़ुरआन* द्वारा सरलता पूर्वक शिक्षा ग्रहण कर सकता है। इस किताब में बौद्धिक, मनोवैज्ञानिक आदि किसी दृष्टिकोण से भी कोई त्रुटि नहीं पाई जाती है।

१४ दे० सूरः अश-शु,अरा फ़ुट नोट ४१।

१५ दे० हा० मी० अस्-सजदः आयत १६।

१६ दे० फ़ुट नोट १३।

१७ दे० सूर अश-शु,अरा फ़ुट नोट ४३।

१८ अर्थात् क्या हम एक ऐसे व्यक्ति का अनुवर्तन करेंगे जो हमारे ही जैसा एक मनुष्य है, वह कोई फ़िरिश्ता* नहीं। यदि हम ने इस की बात मान ली तो हम से बढ़ कर बहका हुआ और पागल व्यक्ति दूसरा कौन हो सकता है।

१९ देखते रहो कि क्या नतीजा निकलता है।

२० दे० सूरः अश-शु,अरा आयत १५५-१५८।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

[illegible]

(उसे उस को) कूँचें काट कर मार डाला।○

फिर कैसा रहा मेरा अज़ाब और मेरे डरावे!○

हम ने उन पर बस एक (भयंकर) चीख़ भेजी, फिर वे ऐसे हो गये जैसे किसी बाड़ रूँधने वाले का खर-पतवार[21]।○

और हम ने .क़ुरआन* को शिक्षा के लिए सुगम बना दिया[22] तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला ?○

लूत[23] की जाति वालों ने डरावों को झुठलाया।○ हम ने उन पर पथराव करने वाली आँधी भेज दी सिवाय लूत के लोगों के, उन्हें हम ने भोर में बचा निकाला,[24]○ यह हमारी ओर से एहसान था। हम इसी तरह बदला देते हैं उस व्यक्ति को जो कृतज्ञता दिखलाता है।○

और उस ने हमारी पकड़ से उन्हें सचेत कर दिया था, परन्तु वे डरावों के बारे में उलझते रहे[25]।○

और उस के (लूत के) पीछे पड़ गये कि वह अपने मेहमानों को हवाले कर दे। तो हम ने उन की आँखें मेट दीं : लो चखो मज़ा मेरे अज़ाब का और डरावों का!○

और प्रातःकाल उन पर एक न टलने वाला अज़ाब आ पहुँचा।○

अब चखो मज़ा मेरे अज़ाब का और डरावों का!○

और हम ने .क़ुरआन* को शिक्षा के लिए सुगम बना दिया[26] तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला ?○

और फ़िरऔन[27] वालों के पास डरावे पहुँचे।○ उन्हों ने हमारी समस्त निशानियों को झुठलाया तो हम ने उन्हें पकड़ लिया जिस तरह एक ज़बरदस्त और प्रभुत्वशाली पकड़ता है।○

क्या तुम्हारे काफ़िर* इन लोगों से अच्छे हैं या तुम्हारे लिए छुटकारा है ज़बूरों* में (लिखा हुआ)[28] ?○ या ये लोग कहते हैं : हमारा एक पूरा जत्था है जिस पर किसी का बस

---

२१ अर्थात् वह खर-पतवार और झाड़-झंखाड़ जो बेकार समझ कर छोड़ दिया गया हो, या फिर इस से अभिप्रेत वह खर-पतवार है जिस को किसी बाड़ रूँधने वाले ने काट-पीट कर रखा हो।

२२ दे० फुट नोट १९।

२३ दे० सूरः अश-शु,अरा फुट नोट ५०।

२४ अर्थात् लूत (अ०) और उस के लोगों को हम ने बचा लिया वे हमारे हुक्म से रात के पिछले हिस्से में बस्ती छोड़ कर निकल गये।

२५ अर्थात् उस ने तुम्हें सचेत कर दिया था कि यदि तुम बुराई से बाज़ नहीं आ रहे हो, तो तुम अल्लाह के अज़ाब से बच नहीं सकते, परन्तु उन की समझ में यह सीधी और सच्ची बात न आ सकी। उन की आँखें उस समय खुलीं जब अल्लाह के अज़ाब ने उन्हें अपनी लपेट में ले लिया।

२६ दे० फुट नोट १९।

२७ दे० सूरः अश-शु,अरा फुट नोट ७।

२८ अर्थात् जब तुम देखते हो कि पिछले काफ़िरों* को अल्लाह के अज़ाब से कोई (शेष अगले पृष्ठ पर)

* का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

جَمْعُ وَيُوَلُّونَ الدُّبُرَ ﴿٤٥﴾ بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ أَدْهَىٰ وَأَمَرُّ ﴿٤٦﴾ إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي ضَلَالٍ وَسُعُرٍ ﴿٤٧﴾ يَوْمَ يُسْحَبُونَ فِي النَّارِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ ذُوقُوا مَسَّ سَقَرَ ﴿٤٨﴾ إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَاهُ بِقَدَرٍ ﴿٤٩﴾ وَمَا أَمْرُنَا إِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ ﴿٥٠﴾ وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا أَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ﴿٥١﴾ وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوهُ فِي الزُّبُرِ ﴿٥٢﴾ وَكُلُّ صَغِيرٍ وَكَبِيرٍ مُّسْتَطَرٌ ﴿٥٣﴾ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَهَرٍ ﴿٥٤﴾ فِي مَقْعَدِ صِدْقٍ عِندَ مَلِيكٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٥٥﴾

चलने वाला है। ○

जल्द ही यह जत्था परास्त होगा और ये लोग ४५ पीठ दिखा देंगे[३९]। ○

यह नहीं बल्कि वह घड़ी (अर्थात् क़ियामत*) है जिस का समय इन के लिए रखा गया है,[४०] और वह घड़ी बड़ी ही आपत्ति वाली और बड़ी ही कड़वी है। ○

निश्चय ही अपराधी लोग गुमराही और दीवानगी में पड़े हुये हैं। ○ जिस दिन ये लोग मुँह के बल आग में घसीटे जायेंगे : चखो मज़ा जहन्नम* में झुलसने का। ○

निश्चय ही हम ने हर चीज़ एक नियत अन्दाज़े के साथ पैदा की है। ○ और हमारा हुक्म ५० तो बस एक ही बार होता है, जैसे निगाह उठा कर देख लेना[४१]। ○

और हम तुम्हारे सह-पन्थियों को[४२] विनष्ट कर चुके हैं; तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला ? ○

और जो-कुछ उन्हों ने किया है वह पत्रों में मौजूद है, ○ और हर छोटी और बड़ी चीज़ अंकित हुई है। ○

निश्चय ही अल्लाह का डर रखने वाले बाग़ों और नहरों के बीच होंगे, ○ प्रतिष्ठित स्थान ५५ में, प्रभुत्वशाली सम्राट के पास[४३]। ○

सौंप दिया नहीं गया है, तो क्या तुम उन काफ़िरों से अच्छे हो कि अल्लाह के अज़ाब से बिल्कुल निश्चिन्त हो या तुम्हें पुस्तकों का परवाना मिल गया है कि निर्भय हो कर कुफ़्र की नीति अपनाये हुये हो।

३९ अर्थात् वह जत्था जिस पर इन्हें गर्व है पराजित हो कर रहेगा। समय आने पर ये ठहर नहीं सकते। ये पीठ दे कर मैदान से भाग खड़े होंगे। 'बद्र' और 'अहज़ाब' के युद्ध के अवसर पर यह भविष्यवाणी पूरी हो कर रही। देखें सूरः अल-अहज़ाब का परिचय।

४० अर्थात् ये अपने किये का पूरा मज़ा तो आख़िरत* में चखेंगे।

४१ अर्थात् जैसे निगाह उठाने में कुछ देर नहीं लगती उसी प्रकार हमारे हुक्म के पालन करने में भी देर नहीं होती।

४२ अर्थात् तुम्हारे ही जैसे लोगों को, जिन्हों ने अपने जीवन में वही नीति अपना रखी थी जो आज तुम्हारी है। तुम्हारी तरह वे भी अल्लाह से विमुख थे।

४३ अर्थात् अल्लाह के पास। उन्हें अल्लाह का सामीप्य प्राप्त होगा। जो अल्लाह की सब से बड़ी नेमत है।

* इस का अर्थ जानने के लिये इन्हें पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

५५--अर-रहमान

(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः* का नाम 'अर-रहमान' सूरः की पहली आयत* से लिया गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह सूरः* मक्का की प्रारम्भिक सूरतों* में से है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्तायें

इस सूरः* का केन्द्रीय विषय वही है जो सूरः क़ाफ़० का है।

इस सूरः* में अल्लाह के चमत्कारों और अद्भुत कार्यों का उल्लेख हुआ है। उन के यहाँ प्रधानता उस की दयालुता ही को प्राप्त है। उस के चमत्कारों का प्रदर्शन प्रायः दयालुता और अनुकम्पा ही के रूप में होता है। इस सूरः में उस के जिन चमत्कारों का वर्णन किया गया है उन में भी उस के प्रकोप की अपेक्षा उस की दयालुता को व्यक्त करने वाले चमत्कारों का ही आधिक्य है। वस्तुत सूरः* में एक विशेष आयत* : "बताओ तुम अपने रब* के कौन से चमत्कारों को झुठलाते हो ?" टेका (Refrain) के रूप में ३१ बार दोहराई गई है जिस से सूरः की वर्णनशैली में एक विशेष प्रकार का लालित्य और सौन्दर्य आ गया है।

सूरः* का आरम्भ अल्लाह के दयामय चमत्कारों से किया गया है। अल्लाह का सब से बड़ा उपकार मानव-जाति पर यह है कि उस ने मनुष्य को अपनी किताब* की शिक्षा दी, यहीं से सभ्यता का उदय होता है। मानव-जीवन में अल्लाह की किताब* का बड़ा महत्व है; इसी लिए उस का उल्लेख पहले किया गया। इस के बाद मनुष्य की सृष्टि का उल्लेख किया गया और फिर उस की वाक्‌शक्ति का। इस के बाद बाह्य-जगत की ओर रुख़ किया गया, भूमि और आकाश में फैली निशानियों का उल्लेख करते हुये मनुष्य को ध्यान दिलाया गया कि किस प्रकार सम्पूर्ण जगत की व्यवस्था न्याय पर आधारित है। जिस ग्रह और सितारे के लिए जो मार्ग निश्चित कर दिया गया है वह उसी मार्ग पर चल रहा है। न्याय और सत्य ही के बल पर यह संसार थमा हुआ है। मनुष्य का भी कर्त्तव्य है कि वह न्याय और सत्य से न हटे किसी के साथ अन्याय न करे। लोगों के बीच इन्साफ़ के साथ फ़ैसला करे।

आगे चल कर अल्लाह के चमत्कारों का उल्लेख करते हुये कहा गया कि सारा संसार अल्लाह ही के द्वार का भिखारी है, सब की आवश्यकतायें वही पूरी करता है। नित उस की नई शान ज़ाहिर होती है।

फिर बताया गया कि किस प्रकार आख़िरत* में मनुष्य या तो जहन्नम* के घोरतम अज़ाब में पड़ने वाला है या उसे शाश्वत सुख और आनन्द मिलने वाला है। उस का अन्तिम परिणाम इस पर निर्भर है कि वह संसार में किस प्रकार जीवन व्यतीत करता है।

---

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अर-रहमान

(मक्का में उतरी — आयतें* ७८)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

بسم الله الرحمن الرحيم

الرحمن ۝ علم القرآن ۝ خلق الانسان ۝ علمه البيان ۝ الشمس والقمر بحسبان ۝ والنجم والشجر يسجدان ۝ والسماء رفعها ووضع الميزان ۝ الا تطغوا في الميزان ۝ واقيموا الوزن بالقسط ولا تخسروا الميزان ۝ والارض وضعها للانام ۝ فيها فاكهة والنخل ذات الاكمام ۝ والحب ذو العصف والريحان ۝ فباي آلاء ربكما تكذبان ۝ خلق الانسان من صلصال كالفخار ۝ وخلق الجان من مارج من نار ۝ فباي آلاء ربكما تكذبان ۝ رب المشرقين ورب المغربين ۝ فباي آلاء ربكما تكذبان ۝ مرج البحرين يلتقيان ۝ بينهما برزخ لا يبغيان ۝ فباي آلاء ربكما تكذبان ۝

रहमान* (कृपाशील ईश्वर) है ○ उस ने क़ुरआन* सिखाया। ○ मनुष्य को पैदा किया[1] । ○ उसे बोलना सिखाया। ○

सूर्य और चन्द्रमा एक हिसाब में बँधे हुये हैं। ○ और तारे और वृक्ष सजदः* करते हैं[2] । ○

और आसमान को ऊँचा उठाया; और तुला रखी, ○ कि तुम तुला में सीमोल्लंघन न करो,[3] ○

और इन्साफ़ के साथ ठीक तौलो, और तौल में कम न दो। ○

और ज़मीन को बिछा दिया ख़िलक़त के लिए, ○ उस में हैं मेवे और खजूर के वृक्ष बन्द गुच्छों वाले, ○ और अनाज भुस वाले और महकते फूल-पौधे। ○

बताओ तुम अपने रब* के कौन से चमत्कार[4] को झुठलाते हो? ○

मनुष्य को ठीकरे जैसी खनकती मिट्टी से पैदा किया,[5] ○ और जिन्न* को अग्नि-ज्वाला से पैदा किया। ○

बताओ तुम अपने रब* के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो? ○

---

१ इस से मालूम हुआ कि मनुष्य की सृष्टि की तरह क़ुरआन* भी अल्लाह की दयालुता का सूचक है। मनुष्य की सृष्टि यदि उत्तम रीति से हुई है तो उसे क़ुरआन जैसी नेमत भी प्रदान की गई; इस के द्वारा उस की विशेषता और परिपूर्णता का प्रदर्शन होता है।

२ अर्थात् सभी चीज़ें अल्लाह के आगे झुक रही हैं। चाहे ज़मीन के ऊँचे-ऊँचे वृक्ष, छोटे झाड़ और लतायें हों या आकाश के चमकते तारे, सब एक प्रभु के अधीन हैं।

३ अर्थात् ज़मीन से ले कर आसमान तक हर चीज़ न्याय और सत्य पर, समता और सन्तुलन के साथ अवलम्बित है। यदि यह न्याय शेष न रहे तो विश्व की व्यवस्था बिगड़ कर रह जाये। नबी सल्ल० ने कहा है कि न्याय ही से ज़मीन और आसमान क़ायम हैं। बन्दों का भी कर्तव्य है कि वे न्याय से न हटें। किसी वर्ग या व्यक्ति पर ज़्यादती न होने पाये। (दे० सूरः अल-हदीद आयत २५)

४ यहाँ 'आलाउ' (الا) शब्द प्रयुक्त हुआ है। 'आलाउ' का अनुवाद साधारणतः 'नेमत' (Eavours or bounties) किया जाता है। क़ुरआन के बयान और अरब-साहित्य के अध्ययन से मालूम होता है कि इस शब्द का मूल अर्थ है अद्भुत कार्य अथवा चमत्कार। जैसा कि मुहलहिल कवि कहता है:—

الحزم والعزم كانا من طبائعه ما كل آلاءه يا قوم احصيها

अर्थात् विवेक और संकल्प उस के स्वभाव में सम्मिलित थे, लोगो! मैं उस के सब 'आलाउ' (कमाल और गुण) नहीं गिना सकता।

अल्लाह के प्रत्येक कार्य अद्भुत हैं। और उस के यहाँ जिस चीज़ को प्रधानता प्राप्त है वह उस की दयालुता है (दे० सूरः अल-आराफ़ आयत १५६)। उस के चमत्कारों का प्रदर्शन प्रायः दयालुता और नेमतों ही के रूप में होता है इस तरह 'नेमत' और 'आलाउ' समानार्थक शब्द समझे जाने लगे।

५ दे० सूरः अल-हिज्र फुट नोट १६।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

ﺍﻟَﺂﺀِ ﺭَﺑِّﻜُﻤَﺎ ﺗُﻜَﺬِّﺑٰﻦِ ۝ ﻣُﺘَّﻜِـِٔﻴْﻦَ ﻋَﻠٰﻰ ﻓُﺮُﺵٍ ﺑَﻄَﺂﺋِﻨُﻬَﺎ ﻣِﻦْ ﺍِﺳْﺘَﺒْﺮَﻕٍ
ﻭَﺟَﻨَﺎ ﺍﻟْﺠَﻨَّﺘَﻴْﻦِ ﺩَﺍﻥٍ ۝ ﻓَﺒِﺎَﻱِّ ﺍٰﻟَﺂﺀِ ﺭَﺑِّﻜُﻤَﺎ ﺗُﻜَﺬِّﺑٰﻦِ ۝ ﻓِﻴْﻬِﻦَّ ﻗٰﺼِﺮٰﺕُ
ﺍﻟﻄَّﺮْﻑِ ﻟَﻢْ ﻳَﻄْﻤِﺜْﻬُﻦَّ ﺍِﻧْﺲٌ ﻗَﺒْﻠَﻬُﻢْ ﻭَﻟَﺎ ﺟَﺂﻥٌّ ۝ ﻓَﺒِﺎَﻱِّ ﺍٰﻟَﺂﺀِ ﺭَﺑِّﻜُﻤَﺎ
ﺗُﻜَﺬِّﺑٰﻦِ ۝ ﻛَﺎَﻧَّﻬُﻦَّ ﺍﻟْﻴَﺎﻗُﻮْﺕُ ﻭَﺍﻟْﻤَﺮْﺟَﺎﻥُ ۝ ﻓَﺒِﺎَﻱِّ ﺍٰﻟَﺂﺀِ ﺭَﺑِّﻜُﻤَﺎ ﺗُﻜَﺬِّﺑٰﻦِ ۝
ﻫَﻞْ ﺟَﺰَﺁﺀُ ﺍﻟْﺎِﺣْﺴَﺎﻥِ ﺍِﻟَّﺎ ﺍﻟْﺎِﺣْﺴَﺎﻥُ ۝ ﻓَﺒِﺎَﻱِّ ﺍٰﻟَﺂﺀِ ﺭَﺑِّﻜُﻤَﺎ ﺗُﻜَﺬِّﺑٰﻦِ ۝ ﻭَ
ﻣِﻦْ ﺩُﻭْﻧِﻬِﻤَﺎ ﺟَﻨَّﺘٰﻦِ ۝ ﻓَﺒِﺎَﻱِّ ﺍٰﻟَﺂﺀِ ﺭَﺑِّﻜُﻤَﺎ ﺗُﻜَﺬِّﺑٰﻦِ ۝ ﻣُﺪْﻫَﺂﻣَّﺘٰﻦِ ۝
ﻓَﺒِﺎَﻱِّ ﺍٰﻟَﺂﺀِ ﺭَﺑِّﻜُﻤَﺎ ﺗُﻜَﺬِّﺑٰﻦِ ۝ ﻓِﻴْﻬِﻤَﺎ ﻋَﻴْﻨٰﻦِ ﻧَﻀَّﺎﺧَﺘٰﻦِ ۝ ﻓَﺒِﺎَﻱِّ ﺍٰﻟَﺂﺀِ
ﺭَﺑِّﻜُﻤَﺎ ﺗُﻜَﺬِّﺑٰﻦِ ۝ ﻓِﻴْﻬِﻤَﺎ ﻓَﺎﻛِﻬَﺔٌ ﻭَّﻧَﺨْﻞٌ ﻭَّﺭُﻣَّﺎﻥٌ ۝ ﻓَﺒِﺎَﻱِّ ﺍٰﻟَﺂﺀِ ﺭَﺑِّﻜُﻤَﺎ
ﺗُﻜَﺬِّﺑٰﻦِ ۝ ﻓِﻴْﻬِﻦَّ ﺧَﻴْﺮٰﺕٌ ﺣِﺴَﺎﻥٌ ۝ ﻓَﺒِﺎَﻱِّ ﺍٰﻟَﺂﺀِ ﺭَﺑِّﻜُﻤَﺎ ﺗُﻜَﺬِّﺑٰﻦِ ۝
ﺣُﻮْﺭٌ ﻣَّﻘْﺼُﻮْﺭٰﺕٌ ﻓِﻰ ﺍﻟْﺨِﻴَﺎﻡِ ۝ ﻓَﺒِﺎَﻱِّ ﺍٰﻟَﺂﺀِ ﺭَﺑِّﻜُﻤَﺎ ﺗُﻜَﺬِّﺑٰﻦِ ۝
ﻟَﻢْ ﻳَﻄْﻤِﺜْﻬُﻦَّ ﺍِﻧْﺲٌ ﻗَﺒْﻠَﻬُﻢْ ﻭَﻟَﺎ ﺟَﺂﻥٌّ ۝ ﻓَﺒِﺎَﻱِّ ﺍٰﻟَﺂﺀِ ﺭَﺑِّﻜُﻤَﺎ ﺗُﻜَﺬِّﺑٰﻦِ ۝
ﻣُﺘَّﻜِـِٔﻴْﻦَ ﻋَﻠٰﻰ ﺭَﻓْﺮَﻑٍ ﺧُﻀْﺮٍ ﻭَّﻋَﺒْﻘَﺮِﻱٍّ ﺣِﺴَﺎﻥٍ ۝ ﻓَﺒِﺎَﻱِّ ﺍٰﻟَﺂﺀِ ﺭَﺑِّﻜُﻤَﺎ
ﺗُﻜَﺬِّﺑٰﻦِ ۝ ﺗَﺒٰﺮَﻙَ ﺍﺳْﻢُ ﺭَﺑِّﻚَ ﺫِﻯ ﺍﻟْﺠَﻠٰﻞِ ﻭَﺍﻟْﺎِﻛْﺮَﺍﻡِ ۝

निकल सकते[११] । ○

बताओ तुम अपने रब* के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ? ○

तुम दोनों पर अग्नि-ज्वाला और पिघला हुआ ताँबा छोड़ दिया जायेगा, फिर तुम अपना बचाव न कर सकोगे । ○ ३५

बताओ तुम अपने रब* के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ? ○

फिर जब आसमान फट जायेगा[१२] और तेल की तरह लाल[१३] हो जायेगा ○ —

बताओ तुम अपने रब* के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ? ○ —

तो उस दिन न किसी मनुष्य से और न किसी जिन्न* से उस के गुनाह के विषय में पूछा जायेगा[१४] । ○

४० बताओ तुम अपने रब* के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ? ○

अपराधी अपनी सूरत से पहचान लिये जायेंगे, फिर पकड़ लिये जायेंगे माथे के बाल और पाँव । ○

बताओ तुम अपने रब* के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ? ○

यह है वह जहन्नम* जिस को अपराधी झुठलाते हैं[१५] । ○ वे इस के और खौलते पानी के बीच चक्कर काट रहे हैं । ○

४५ बताओ तुम अपने रब* के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ? ○

और जो कोई अपने रब* के आगे खड़े होने से डरा उस के लिए दो बाग़ हैं[१६] । ○

बताओ तुम अपने रब* के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ? ○

वे फैली हुई टहनियों वाले हैं । ○

बताओ तुम अपने रब* के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ? ○

५० इन में दो स्रोत प्रवाहित हैं । ○

बताओ तुम अपने रब के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ? ○

इन में हर मेवे दो-दो प्रकार के हैं । ○

बताओ तुम अपने रब* के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ? ○

---

११ यह बात चैलेंज के रूप में कही गई है कि तुम अल्लाह के राज्य से निकल सकते हो तो निकल कर दिखाओ । तुम अल्लाह के राज्य से भाग नहीं सकते ।

१२ क़ियामत* आयेगी तो विश्व की व्यवस्था में महान् परिवर्तन होगा यह संकेत इसी की ओर है । दे० सूरः अल-इनफ़ितार आयत १; अल-इनशिक़ाक़ आयत १ ।

१३ अर्थात् बहुत गहरा लाल । यहाँ 'दिहान' (الدهان) शब्द प्रयुक्त हुआ है जिस का एक अर्थ लाल चमड़ा भी होता है ।

१४ अर्थात् अपराधी व्यक्ति के गुनाहों को जानने के लिए अल्लाह को पूछने की आवश्यकता न होगी । यदि उन से पूछ होगी तो ताड़ना और डाँट-डपट के लिए और उन के गुनाहों को साबित करने के ध्येय से ही होगी । दे० सूरः या सीनः आयत ६५; सूरः अल-मुरसलात आयत ३५-३६ । (१५, १६ अगले पृष्ठ पर)

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

वे ऐसे बिछौनों पर तकिया लगाये हैं जिन के अन्दर के हिस्से दबीज़ रेशम के हैं, और इन बाग़ों के फल नीचे लटक रहे हैं[१७]। ○

बताओ तुम अपने रब* के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ? ○ ५५

इन में निगाह बचाये रखने वाली (लज्जावती) स्त्रियाँ हैं, जिन्हें इन से पहले न किसी मनुष्य ने हाथ लगाया है और न किसी जिन्न* ने, ○

बताओ तुम अपने रब* के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ? ○

(सुन्दरता में) मानो वे लालमणि और मवाल हैं। ○

बताओ तुम अपने रब* के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ? ○

भलाई का बदला भलाई के सिवा और हो भी क्या सकता है ? ○ ६०

बताओ तुम अपने रब* के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ? ○

इन के सिवा दो उद्यान और भी हैं, ○

बताओ तुम अपने रब* के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ? ○

ये बहुत ही हरे-भरे[१८] हैं। ○

बताओ तुम अपने रब* के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ? ○ ६५

इन में दो उबलते स्रोत हैं। ○

बताओ तुम अपने रब* के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ? ○

इन में मेवे, और खजूर और अनार हैं। ○

बताओ तुम अपने रब* के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ? ○

इन में भली और सुन्दर स्त्रियाँ हैं। ○ — ७०

बताओ तुम अपने रब* के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ? ○ —

सुन्दर आँखों वाली (मृगनैनी) परम रूपवती स्त्रियाँ हैं खेमों के भीतर ठहरी रहने वाली। ○ —

बताओ तुम अपने रब* के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ? ○ —

जिन्हें इन से पहले न किसी मनुष्य ने हाथ लगाया है और न किसी जिन्न* ने। ○ — ७५

बताओ तुम अपने रब* के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ? ○

वे हरी-हरी मसनदों और अच्छे-अच्छे क़ालीनों पर टेक लगाये हुये हैं। ○

बताओ तुम अपने रब* के कौन से चमत्कार को झुठलाते हो ? ○

बड़ी बरकत वाला है तुम्हारे रब* का नाम जो प्रतापवान और उदार है। ○

---

१५ अर्थात् यही जहन्नम* है जिसे अपराधी लोग दुनिया में मानने से इन्कार करते थे।

१६ अर्थात् जिस किसी को इस की चिन्ता हुई कि उसे एक दिन अपने रब* के सामने हाज़िर होना और अपने कामों का हिसाब देना है।

१७ जिन्हें जन्नत* वाले आसानी से तोड़ कर खायेंगे।

१८ इतने हरे कि उन में श्यामता आ गई है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

५६--अल-वाक़िअः

(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः* का नाम 'अल-वाक़िअः' अर्थात् आ पड़ने वाली (The event) सूरः की पहली आयत* से लिया गया है। 'अल-वाक़िअः' से अभिप्रेत क़ियामत* है जो आ कर रहने वाली है। क़ियामत* का इस सूरः की वार्त्ताओं से मौलिक सम्पर्क है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

यह मक्का की आरम्भिक सूरतों* में से है।

केन्द्रीय विषय तथा वार्त्तायें

केन्द्रीय विषय इस सूरः का वही है जो सूरः क़ाफ़० का है।

इस सूरः में क़ियामत* की सूचना देते हुये बताया गया है कि लोग उस दिन तीन वर्गों में बँट जायेंगे। जिन में एक गरोह तो उन लोगों का होगा जिन का स्थान सब से ऊँचा होगा। वे अल्लाह के अत्यन्त क़रीबी बन्दे होंगे; उन पर अल्लाह की विशेष कृपा होगी। उन्हें जन्नत* में परम सुख और आनन्द प्राप्त होगा।

दूसरा गरोह साधारण ईमान* वालों का होगा। इन पर भी अल्लाह की कृपा होगी और ये भी सदा-बहार जन्नत* के अधिकारी होंगे।

तीसरा गरोह बुरे लोगों का होगा जो दुनियाँ में आख़िरत* का इन्कार करते हैं और भटके हुये लोगों में से हैं। जहन्नम* के अज़ाब के अतिरिक्त आख़िरत* में इन के हिस्से में कुछ न आयेगा।

इन तीनों गरोहों के परिणामों का उल्लेख करने के पश्चात् काफ़िरों* को समझाया गया है कि वे बुद्धि से काम लें और आख़िरत* का इन्कार न करें और न अल्लाह के उपकारों को भूलें।

फिर क़ुरआन* के बारे में कहा गया है कि यह संसार के पालन-कर्त्ता की ओर से उतरा है। इस की पुष्टि के लिए सितारों की स्थितियों को पेश किया गया है। जिस से विभिन्न तथ्यों पर प्रकाश पड़ता है। सितारों का एक मंज़िल से दूसरी मंज़िल में दाख़िल होना उन का ढलना और डूबना एक प्रकार से अपने रब* के आगे सजदः* करना है इस में इस ओर संकेत है कि हम भी अपने रब* के आगे झुकें और उसे सजदः* करें। फिर जिस प्रकार सितारों का प्रकाश हम तक पहुँचता है उसी प्रकार वह्य* का प्रकाश और फ़रिश्तः* वह्य* के साथ नबी* की ओर उतरता है। फिर सितारों का एक मंज़िल से दूसरी मंज़िल में दाख़िल होना क़ुरआन* के उतरने की एक प्रत्यक्ष मिसाल है। जब सितारे विभिन्न उद्देश्यों और हिक्मतों के अन्तर्गत एक मंज़िल से दूसरी मंज़िल में दाख़िल होते रहते हैं तो यदि अल्लाह की ओर से मानव-लोक में किसी मार्गदर्शक ग्रन्थ का अवतरण हुआ हो तो इस में आश्चर्य की कौन सी बात हो सकती है।

---

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

[४]:१६	जहाँ तक बन पड़े अल्लाह से डरो और कंजूसी से बचो।

(३) माता-पिता और नातेदारों के हक़

२:८३	माता-पिता और नातेदारों के साथ अच्छा व्यवहार करो।
२:१७७	नातेदारों पर अपना माल खर्च करो।
२:२१५	अपना माल अपने माता-पिता और नातेदारों पर खर्च करो।
४:३६	किसी को अल्लाह का शरीक न बनाओ और माता-पिता के साथ उपकार करो और नातेदारों के साथ।
६:१५१	माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो।
६:६०	अल्लाह हुक्म देता है कि नातेदारों के साथ अच्छा व्यवहार किया जाये।
[१]७:२३, २४	माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो और उन्हें 'हूँ' तक न कहो।
[१]७:२६	नातेदारों का हक़ अदा करो।
[२]६:८	अल्लाह ने मनुष्य को हुक्म दिया है कि माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करे।
[३]०:३८	नातेदारों का हक़ अदा करो।
[३]१:१४	अल्लाह ने माँ-बाप के साथ अच्छे व्यवहार का हुक्म दिया है।
[४]६:१५	अल्लाह ने मनुष्य को हुक्म दिया है कि माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करे।

(४) यतीमों, मुहताजों और पड़ोसियों के हक़

२:८३	यतीमों और मुहताजों के साथ अच्छा व्यवहार करो।
२:१७७	यतीमों, मुहताजों और मुसाफ़िरों पर अपना माल खर्च करो।
२:२१५	अपना माल यतीमों, मुहताजों और मुसाफ़िरों पर खर्च करो।
२:२२०	यतीमों के साथ अच्छा व्यवहार करो।
४:२	यतीमों का माल उनको वापस कर दो।
४:३६	यतीमों, पड़ोसियों और मुसाफ़िरों के साथ अच्छा व्यवहार करो।
४:१२७	यतीमों के साथ न्याय करो।
६:१५२	यतीमों के धन की रक्षा करो।
६:६०	ज़कात फ़क़ीरों और मुहताजों के लिए है।
१७:३४	यतीमों के धन की रक्षा करो।
३०:३८	मुहताज और मुसाफ़िर का हक़ अदा करो।
८९:१७, १८	यतीमों की आव-भगत करो और मुहताजों को खाना खिलाने पर लोगों को उभारो।
९०:१३-१८	भूखे को खाना खिलाना, वह नातेदार हो या फ़क़ीर, बड़ी नेकी का काम है।
१०७:२, ३	यतीमों को धक्के देना और फ़क़ीरों को खाना खिलाने पर लोगों को न उभारना बड़ा दुर्भाग्य है।

सूरः* अल-वाक़िअः

(मक्का में उतरी — आयतें* ९६)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝ لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ۝ خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ۝ إِذَا رُجَّتِ الْأَرْضُ رَجًّا ۝ وَبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ۝ فَكَانَتْ هَبَاءً مُّنْبَثًّا ۝ وَكُنْتُمْ أَزْوَاجًا ثَلٰثَةً ۝ فَأَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ مَا أَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۝ وَأَصْحٰبُ الْمَشْأَمَةِ مَا أَصْحٰبُ الْمَشْأَمَةِ ۝ وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ ۝ أُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ۝ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝ ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِيْنَ ۝ وَقَلِيْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ۝ عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ ۝ مُّتَّكِـِٕيْنَ عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِيْنَ ۝ يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۝ بِأَكْوَابٍ وَّأَبَارِيْقَ ۙ وَكَأْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ۝ لَّا يُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُوْنَ ۝ وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُوْنَ ۝ وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ۝ وَحُوْرٌ عِيْنٌ ۝ كَأَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ ۝ جَزَاءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا تَأْثِيْمًا ۝ إِلَّا قِيْلًا سَلٰمًا سَلٰمًا ۝ وَأَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ مَا أَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۝ فِيْ سِدْرٍ مَّخْضُوْدٍ ۝ وَّطَلْحٍ مَّنْضُوْدٍ ۝ وَّظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ ۝ وَّمَاءٍ مَّسْكُوْبٍ ۝ وَّفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ ۝ لَّا مَقْطُوْعَةٍ وَّلَا مَمْنُوْعَةٍ ۝ وَّفُرُشٍ مَّرْفُوْعَةٍ ۝ إِنَّا أَنْشَأْنٰهُنَّ إِنْشَاءً ۝ فَجَعَلْنٰهُنَّ أَبْكَارًا ۝ عُرُبًا أَتْرَابًا ۝ لِّأَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ۝ ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِيْنَ ۝ وَثُلَّةٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ۝ وَأَصْحٰبُ الشِّمَالِ مَا أَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۝ فِيْ سَمُوْمٍ وَّحَمِيْمٍ ۝ وَّظِلٍّ مِّنْ يَّحْمُوْمٍ ۝ لَّا بَارِدٍ وَّلَا كَرِيْمٍ ۝ إِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُتْرَفِيْنَ ۝ وَكَانُوْا يُصِرُّوْنَ عَلَى الْحِنْثِ الْعَظِيْمِ ۝ وَكَانُوْا يَقُوْلُوْنَ أَئِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا أَئِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ۝ أَوَاٰبَاؤُنَا الْأَوَّلُوْنَ ۝ قُلْ إِنَّ الْأَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ ۝ لَمَجْمُوْعُوْنَ

जब आ पड़ेगी आ पड़ने वाली[1] ○ उस के आ पड़ने पर कोई भ्रान्ति न होगी ○ नीचा कर देने वाली है और ऊँचा कर देने वाली[2] ○

जब ज़मीन हिला डाली जायेगी ○ और पहाड़ चूर्ण-विचूर्ण कर दिये जायेंगे। ○ फिर वे ग़ुबार बन कर उड़ते फिरेंगे। ○

और तुम्हारी तीन क़िस्में होंगी ○ :

तो दाहिनी ओर वाले;[3] क्या समझते हो दाहिनी ओर वालों को ? ○

और बाईं ओर वाले; क्या समझते हो बाईं ओर वालों को ? ○

और अग्रसर रहने वाले तो हैं ही अग्रसर रहने वाले[4] ○ :

ये हैं पास रखे जाने वाले। ○

रमणीय उद्यानों में ○

एक पूरा गरोह अगले लोगों में से ○

और थोड़े से पिछले लोगों में से। ○

जड़ाऊ तख़्तों पर हैं, ○ टेक लगाये उन पर आमने-सामने बैठे हैं। ○

फिर रहे हैं उन के पास ऐसे किशोर जिन की अवस्था सदा एक ही रहेगी[5] ○ आबख़ोरे[6] और आफ़ताबे[7] लिये, और प्याला निथरी बहती शराब से भरा हुआ ○ जिस से न उन का सिर दुखे और न उन की बुद्धि में विकार आये। ○

और मेवे जो पसन्द करें। ○

और पक्षी का मांस जिस की इच्छा हो। ○

और बड़ी और सुन्दर आँखों वाली (मृगनैनी) परम रूपवती स्त्रियाँ, ○

जैसे धराऊ मोती हों, ○

---

१ अर्थात् क़ियामत*, दे० सूरः अल-हाक़्क़ः आयत १३-१५।

२ अर्थात् उस दिन कुछ लोग अपमान-जनक अज़ाब में ग्रस्त होंगे और कुछ लोगों को ऊँचा स्थान प्राप्त होगा

३ यह संकेत साधारण ईमान* वालों की ओर है।

४ यह-संकेत उन ख़ास लोगों की ओर है जिन का अल्लाह के यहाँ सब से ऊँचा दरजा है।

५ अर्थात् जो सदा किशोर ही रहेंगे।

६ अर्थात् ऐसा जल-पात्र (Bowl) जिस में टोंटी और दस्ता नहीं होता।

७ ऐसा बरतन जिस में टोंटी और दस्ता हो।

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

जो-कुछ वे करते थे यह उस का बदला है। ○

वे उस में न कोई बकवाद सुनते हैं और न

२५ कोई गुनाह की बात[8] ○

बस यही कहते सुनते हैं : सलाम है ! सलाम है[9] ! ○

और दाहिनी ओर वाले; क्या समझते हो दाहिनी ओर वालों को ? ○

वे वहाँ हैं जहाँ बिन-काँटों के बेर हैं ○

बराबर से लगे हुये 'तल्ह' (के वृक्ष) हैं, ○

३० दूर-दूर तक फैली हुई छाँव है ○

बहता हुआ पानी है, ○

बहुत सा मेवा है ○ जिस का न सिलसिला टूटने वाला है और न उस पर कोई रोक-टोक है, ○

और ऊपर लगे हुये बिछौने हैं; ○

हम ने उन स्त्रियों को एक विशेष उठान पर

३५ उठाया है ○ और हम ने उन्हें कुमारी बनाया है, ○ मेयसी और समायु,○ दाहिनी ओर वालों के लिए। ○

الى ميقات يوم معلوم ۝ ثم انكم ايها الضالون المكذبون ۝
لاكلون من شجر من زقوم ۝ فمالئون منها البطون ۝
فشاربون عليه من الحميم ۝ فشاربون شرب الهيم ۝ هذا
نزلهم يوم الدين ۝ نحن خلقنكم فلولا تصدقون ۝
افرءيتم ما تمنون ۝ ءانتم تخلقونه ام نحن الخلقون ۝ نحن
قدرنا بينكم الموت وما نحن بمسبوقين ۝ على ان نبدل امثالكم
وننشئكم في ما لا تعلمون ۝ ولقد علمتم النشاة الاولى فلولا
تذكرون ۝ افرءيتم ما تحرثون ۝ ءانتم تزرعونه ام نحن
الزرعون ۝ لو نشاء لجعلنه حطاما فظلتم تفكهون ۝ انا
لمغرمون ۝ بل نحن محرومون ۝ افرءيتم الماء الذي تشربون ۝
ءانتم انزلتموه من المزن ام نحن المنزلون ۝ لو نشاء جعلنه
اجاجا فلولا تشكرون ۝ افرءيتم النار التي تورون ۝ ءانتم
انشاتم شجرتها ام نحن المنشئون ۝ نحن جعلنها تذكرة
ومتاعا للمقوين ۝ فسبح باسم ربك العظيم ۝ فلا اقسم بموقع النجوم ۝
وانه لقسم لو تعلمون عظيم ۝ انه لقران كريم ۝ في كتب
مكنون ۝ لا يمسه الا المطهرون ۝ تنزيل من رب العلمين ۝
افبهذا الحديث انتم مدهنون ۝ وتجعلون رزقكم انكم تكذبون ۝

४० एक पूरा गरोह है अगले लोगों में से ○ और एक पूरा गरोह है पिछले लोगों में से। ○

और बाईं ओर वाले, क्या समझते हो बाईं ओर वालों को ? ○ गर्म हवा और खौलते हुये पानी में हैं ○

सियाह धुएँ की छाँव में,[10] ○

जो न शीतल है और न सुखदायक। ○

४५ निश्चय ही वे इस से पहले सुखभोगी थे ○ और वे महा पाप पर जमे रहते थे। ○ और कहते थे : क्या जब हम मर जायेंगे और मिट्टी और हड्डियाँ हो कर रह जायेंगे, तो क्या हम फिर (जीवित कर के) उठाये जाने वाले हैं, ○ क्या हमारे अगले पूर्वज भी ? ○

कह दो : हाँ अगले और पिछले सभी ○ इकट्ठा किये जायेंगे एक विशेष समय पर जिस

५० का दिन निश्चित है। ○

फिर तुम हे गुमराहो, झुठलाने वालो, ○ तुम अवश्य 'ज़क़्क़ूम'[11] के वृक्ष से खाओगे ○ और उस से पेट भरोगे; ○ फिर उस पर खौलता हुआ पानी पियोगे,[12] ○ और पियोगे जैसे

५५ प्यास से व्याकुल ऊँट पिये। ○

कर्मों का फल पाने के दिन इस से होगी उन की आव-भगत। ○

---

८ वहाँ बेहूदा और अश्लील बातें सुनने में नहीं आयेंगी और न कोई गुनाह की बात वहाँ होगी।

९ हर ओर सलाम की आवाज़ें आती होंगी। जन्नत* वाले आपस में एक दूसरे को सलाम करेंगे, फ़िरिश्ते* उन पर सलाम भेजेंगे, ख़ुद अल्लाह का सलाम उन्हें पहुँचेगा (दे० सूरः या सीन० आयत ५८)।

१० दे० सूरः अद-दुख़ान आयत १०।

११ सूरः अस-साफ़्फ़ात फुट नोट २२।

१२ तुम प्यासे ऊँट की तरह उस पानी पर गिरोगे परन्तु उस से प्यास नहीं बुझेगी। वह पानी इतना तेज़ और गर्म होगा कि तुम्हारी आँतें तक कट जायेंगी (दे० सूरः मुहम्मद आयत १५)।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

हम ने तुम्हें पैदा किया है। फिर तुम क्यों सच नहीं मानते[13] ? ○

फिर क्या तुम ने देखा जो वीर्य्य तुम टपकाते हो ? ○

उसे आकार तुम देते हो, या हम हैं आकार देने वाले ? ○

हम ने तुम्हारे बीच मरने की रीति ठहराई, और हमारे बस से बाहर नहीं ○ कि हम तुम्हारा आकार बदल दें और तुम्हें किसी ऐसे रूप[14] में उठा खड़ा करें जिसे तुम जानते नहीं।○

और तुम अपनी पहली सृष्टि को तो जान ही चुके हो। फिर क्यों नहीं शिक्षा ग्रहण करते।○

फिर क्या तुम ने देखा यह जो तुम खेती करते हो ? ○

उस में खेती तुम तैयार करते हो, या हम हैं तैयार करने वाले ? ○

यदि हम चाहते, तो उसे चूरा-चूरा कर देते, और तुम चकित हो कर रह जाते।○:

हमें तो सब डाँड़ हो गया ! ○ बल्कि हम तो कंगाल हो गये ! ○

फिर तुम ने यह पानी देखा जिसे तुम पीते हो ? ○

उसे मेघ से तुम ने उतारा है, या हम हैं उतारने वाले ? ○

यदि हम चाहते, तो उसे कड़वा बना देते। फिर क्यों नहीं तुम कृतज्ञता दिखलाते ! ○

फिर क्या तुम ने यह आग देखी जिसे तुम सुलगाते हो ? ○

तुम ने उस के वृक्ष को उगाया है, या हम हैं उगाने वाले[15] ? ○

हम ने उस (वृक्ष) को अनुस्मारक बनाया और जंगल वालों के लिए उपभोग्य।○

तो तुम अपने महिमाशाली रब* के नाम की तसबीह* करो।○

कुछ नहीं, मैं क़सम खाता हूँ सितारों की स्थितियों की[16] ○ —और यह बहुत बड़ी क़सम है यदि तुम जानते होते ○ —निस्सन्देह यह प्रतिष्ठित क़ुरआन है ○ एक सुरक्षित किताब में[17] ○

इसे पवित्र लोग ही हाथ लगाते हैं, ○

अवतरण है सारे संसार के रब* की ओर से।○

तो क्या इस बात[18] को तुम टाल रहे हो, ○

और अपनी वृत्ति यह बना रहे हो कि तुम झुठलाते हो।○

---

13 अर्थात् तुम्हें क्यों विश्वास नहीं होता कि जिस ने तुम्हें पहली बार पैदा किया वह तुम्हें दोबारा भी पैदा कर सकता है।

14 दे० सूरः अद्-दह्र आयत २८; अल-मआरिज आयत ४१; मुहम्मद आयत ३८।

15 दे० सूरः या सीन० आयत ८०।

16 अर्थात् सितारों की स्थितियाँ इसी बात की गवाही देती हैं कि यह प्रतिष्ठित क़ुरआन है। और यह संसार के रब* की ओर से अवतरित हुआ है (आयत ७६-८०)। सितारों की विभिन्न स्थितियाँ (Positions) उन की गर्दिश, उन का एक मंज़िल से दूसरी मंज़िल में दाख़िल होना क़ुरआन के अवतरण की एक मुखर मिसाल है। जब सितारे सृष्टि और मनुष्यों की आवश्यकताओं और ज्ञात व अज्ञात अगणित उद्देश्यों के अन्तर्गत अपनी विभिन्न मंज़िलों में दाख़िल होते और नवीन स्थिति ग्रहण करते रहते हैं तो यदि अल्लाह की ओर से जीवन का सीधा और सच्चा मार्ग दिखाने के लिए कोई किताब उतरी है तो इस में आश्चर्य की क्या बात हो सकती है। आश्चर्य की बात तो यह होती कि अल्लाह लोगों को जल, प्रकाश आदि से तो वंचित न करता किन्तु किताब और सच्चे ज्ञान से वंचित कर देता और आख़िरत* के बारे में उन्हें अंधेरे ही में छोड़ देता। क़ुरआन का विशेष गुण यह है कि वह लोगों को आने वाले दिन से सचेत करता है।

17 दे० सूरः अज़-ज़ुख़रुफ़ फ़ुट नोट २।

18 अर्थात् क़ुरआन की दी हुई इस ख़बर की तुम्हें परवाह नहीं है कि एक दिन तुम्हें अपने रब* के यहाँ हाज़िर होना है और अपने किये का बदला पाना है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

فَلَوْلَآ إِذَا بَلَغَتِ ٱلْحُلْقُومَ ۝ وَأَنتُمْ حِينَئِذٍ تَنظُرُونَ ۝ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنكُمْ وَلَٰكِن لَّا تُبْصِرُونَ ۝ فَلَوْلَآ إِن كُنتُمْ غَيْرَ مَدِينِينَ ۝ تَرْجِعُونَهَآ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ۝ فَأَمَّآ إِن كَانَ مِنَ ٱلْمُقَرَّبِينَ ۝ فَرَوْحٌ وَرَيْحَانٌ وَجَنَّتُ نَعِيمٍ ۝ وَأَمَّآ إِن كَانَ مِنْ أَصْحَٰبِ ٱلْيَمِينِ ۝ فَسَلَٰمٌ لَّكَ مِنْ أَصْحَٰبِ ٱلْيَمِينِ ۝ وَأَمَّآ إِن كَانَ مِنَ ٱلْمُكَذِّبِينَ ٱلضَّآلِّينَ ۝ فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيمٍ ۝ وَتَصْلِيَةُ جَحِيمٍ ۝ إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ حَقُّ ٱلْيَقِينِ ۝ فَسَبِّحْ بِٱسْمِ رَبِّكَ ٱلْعَظِيمِ ۝

फिर क्यों नहीं — जब वह[19] पहुँच जाती है घाँटी तक ○ और तुम उस समय देख रहे होते हो ○ और हम तुम से भी ज़्यादा उस (मरने वाले) के ८५ क़रीब होते हैं, परन्तु तुम्हें सुझाई नहीं देता ○ — फिर क्यों नहीं, यदि तुम अधीन नहीं हो, ○ तो उसे फेर लेते, यदि तुम सच्चे हो ? ○

फिर यदि वह (मरने वाला) पास रखे जाने वालों में से हुआ,[20] ○ तो आनन्द है और सुगन्ध है, और रमणीय उद्यान । ○

९० और यदि वह दाहिनी ओर वालों में से[21] हुआ, ○ तो सलाम है तुझे कि तू दाहिनी ओर वालों में से है । ○

और यदि वह झुठलाने वालों और गुमराहों[22] में से हुआ, ○ तो खौलते हुये पानी से आव-भगत है ○ और प्रवेश भड़कती आग में । ○

९५ यह है सच, बिलकुल यक़ीनी । ○ तो करो अपने महिमाशाली रब* (पालन-कर्ता) के नाम की तसबीह* । ○

---

१९ अर्थात् आदमी की जान ।
२० अर्थात् अल्लाह के क़रीबी और विशेष बन्दों में से हुआ (दे० आयत ११) ।
२१ दे० आयत ८ ।
२२ दे० आयत ९, ५१ ।
* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

५७--अल-हदीद

(परिचय)

नाम (The Title)

इस सूरः* का नाम 'अल-हदीद' (Iron) सूरः की आयत* २५ से लिया गया है। 'अल-हदीद' सूरः का केन्द्रीय विषय नहीं है। सूरः* का यह नाम दूसरी और बहुत सी सूरतों* की तरह केवल एक चिह्न के रूप में रखा गया है।

उतरने का समय (The date of Revelation)

अनुमान है कि यह सूरः* मक्का की विजय के पश्चात् अर्थात् हिजरत* के आठवें या नवें वर्ष उतरी है[1]।

केन्द्रीय विषय तथा वार्तायें

प्रस्तुत सूरः* से सूरतों का एक नया सिलसिला (व्यवस्थित क्रम) शुरू होता है जो सूरः अत-तहरीम तक चला गया है।

सूरः अल-हदीद से ले कर सूरः अत-तहरीम तक की सूरतों का मध्य-बिन्दु एक ही है। 'ईमान* वालों को आज्ञापालन और इस्लाम* में पूर्ण और सिद्ध करना' यही इन सूरतों का केन्द्रीय विषय है। यही चीज़ है जिसे 'तक़्वा'* और धर्म-परायणता कहते हैं और नबी* के अनुकरण और आज्ञापालन का भी यही अर्थ होता है कि आदमी इस्लाम* और ईश-भक्ति में पूर्णता प्राप्त करे[2]।

प्रस्तुत सूरः* से ले कर सूरः अत-तहरीम तक की सूरतों में, जो संख्या में दस हैं बड़ी समानता और एकात्मता पाई जाती है। इन सूरतों में मुसलमानों को ताकीद की गई है कि वे मुनाफ़िक़ों* की आदतों से बचें और उन से मित्रता का सम्बन्ध कदापि न जोड़ें।

प्रस्तुत सूरः* के आरम्भ में अल्लाह के गुणों का उल्लेख किया गया है फिर इ के बाद विशेष रूप से अल्लाह पर और उस के रसूल* पर ईमान* लाने का आदे दिया गया है। इस प्रकार लोगों को नबी* सल्ल० के आदेशों के पालन करने प उभारा गया है। अल्लाह की आज्ञा का पालन करना सम्भव ही नहीं है जब त मनुष्य अल्लाह के रसूल* पर ईमान* ला कर उस का अनुगामी न हो जाये।

फिर इस सूरः* में कृपणता और सांसारिक सुख-सामग्री, धन-सम्पत्ति आदि मोह से रोका गया है। और बताया गया है कि सांसारिक वस्तुओं की प्रकृति औ उन का मूल गुण (Nature) नश्वरता और अनित्यता (Temporariness) है यहां की समस्त वस्तुयें नश्वर हैं उन की प्राप्ति को जीवन-लक्ष्य समझना भूल नहीं घोर अन्याय भी है। अल्लाह की राह में अपना माल ख़र्च करना आवि

---

१ दे० आयत १०।
२ दे० आयत २८।
* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

विकास और उन्नति का मार्ग है। लोगों को अल्लाह की क्षमा और उस की जन्नत* की ओर बढ़ना चाहिए जिस के मुक़ाबले में सांसारिक वस्तुयें कोई मूल्य नहीं रखतीं।

फिर मुसलमानों को यह शुभ-सूचना दी गई है कि अल्लाह की मदद उन्हें हासिल होगी और वह उन्हें शक्ति, अधिकार और राज्य-सत्ता प्रदान करेगा। शक्ति और अधिकार न्याय की स्थापना के लिए आवश्यक है। वैराग्य (*Monasticism*) का इस सूरः में निषेध किया गया है। और कहा गया है वैराग्य की प्रथा ईसाइयों ने स्वयं निकाली है इस का आदेश अल्लाह ने उन्हें नहीं दिया था। अल्लाह को अपने बन्दों से जो चीज़ अभीष्ट है वह वैराग्य नहीं बल्कि यह है कि उस के बन्दे उस की प्रसन्नता (Allah's pleasure) चाहें और इस के लिए प्रयत्नशील हों।

सूरः के अन्त में ईमान* वालों को यह शुभ-सूचना दी गई है कि यदि वे ईमान* लाने का हक़ अदा करते हैं तो उन के लिए अल्लाह के यहाँ दोहरा बदला है। और यह अल्लाह का फ़ज़्ल है वह जिसे चाहे प्रदान करे।

---

* *इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

सूरः° अल-हदीद

(मदीना में उतरी — आयतें° २९)

अल्लाह° के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

بسم الله الرحمن الرحيم
سبح لله ما في السماوات والأرض وهو العزيز الحكيم ۝ له ملك
السماوات والأرض يحيي ويميت وهو على كل شيء قدير ۝ هو
الأول والآخر والظاهر والباطن وهو بكل شيء عليم ۝ هو
الذي خلق السماوات والأرض في ستة أيام ثم استوى على
العرش يعلم ما يلج في الأرض وما يخرج منها وما ينزل
من السماء وما يعرج فيها وهو معكم أين ما كنتم والله بما
تعملون بصير ۝ له ملك السماوات والأرض وإلى الله ترجع
الأمور ۝ يولج الليل في النهار ويولج النهار في الليل وهو عليم
بذات الصدور ۝ آمنوا بالله ورسوله وأنفقوا مما جعلكم مستخلفين

अल्लाह की तसबीह° की हर उस चीज़ ने जो आसमानों और ज़मीन में है; और वह अपार शक्ति का मालिक और हिकमत° वाला है। ○

आसमानों और ज़मीन का राज्य उसी का है; वह जिलाता और मारता है; और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। ○

वही आदि है और वही अन्त है,[1] वही भीतर है और वही बाहर है;[2] और वह हर चीज़ का जानने वाला है। ○

वही है जिस ने आसमानों और ज़मीन को छः दिनों में पैदा किया;[3] फिर राजसिंहासन पर विराजमान हुआ[4]। वह जानता है जो-कुछ ज़मीन में दाख़िल होता है और जो-कुछ उस से निकलता है और जो-कुछ आसमान से उतरता है और जो-कुछ उस में चढ़ता है; और वह तुम्हारे साथ है तुम जहाँ-कहीं हो। और अल्लाह देखता है जो-कुछ तुम करते हो। ○

आसमानों और ज़मीन का राज्य उसी का है, और अल्लाह ही की ओर सारे मामले पलटते हैं। ○ वह रात को दिन में पिरोता हुआ ले आता है, और दिन को रात में पिरोता हुआ ले आता है, और वह सीनों (अर्थात् दिलों) की बातों का जानने वाला (अन्तर्यामी) है। ○

ईमान° लाओ अल्लाह और उस के रसूल° पर, और ख़र्च करो उस (माल) में से जिस का उस ने तुम्हें उत्तराधिकारी बनाया है इस लिए कि जो लोग तुम में से ईमान° ले आये और ख़र्च किया, उन के लिए बड़ा बदला है। ○

और तुम क्यों नहीं अल्लाह पर ईमान° लाते, और रसूल° तुम्हें बुलाता है कि तुम अपने रब° पर ईमान° लाओ, और तुम से वह दृढ़ वचन भी ले चुका है,[5] यदि तुम ईमान° वाले हो। ○

---

१ अर्थात् वही प्रारम्भ में है और वही अन्त में है (विचैति चान्ते विश्वमादौ)। जब कुछ नहीं था तो वह था। वह सदा से है और सदा रहेगा।

२ अर्थात् वह हर जगह है। वह विश्व में व्याप्त है और वह आदमी की शहरग से भी ज़्यादा क़रीब है (क़ाफ़० आयत १६)। आँखें उसे देख नहीं पातीं (अल-अनआम आयत १०३)। ज्ञानी उस के चमत्कारों द्वारा उस का परिचय पाते हैं।

नबी सल्ल० सोने के समय की दुआ में अल्लाह से कहते थे : तू 'अव्वल' (आदि) है तुझ से पहले कुछ नहीं था तू ही 'आख़िर' (अन्त) है कि तेरे बाद कुछ नहीं। तू 'ज़ाहिर' है तुझ से ऊँची कोई चीज़ नहीं, तू 'बातिन' (भीतर) है कि तुझ से छुपी कोई चीज़ नहीं।

३ अर्थात् छः कालावधि (Period) में।

४ दे० सूरः अल-आराफ़ फ़ुट नोट १६।

५ जैसा कि तौरात° में बयान हुआ है। वचन यह लिया गया था कि आज जो शिक्षा और ज्ञान तुम्हें प्रदान किया जा रहा है कल ऐसी ही शिक्षा और ज्ञान के साथ कोई रसूल° तुम्हारे पास आये तो तुम्हारा कर्तव्य होगा कि तुम उस पर ईमान° लाओ और उस की सहायता करो। दे० सूरः आले- (शेष अगले पृष्ठ पर)

°इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

फ़ीहि फ़ल्लज़ीना आमनू...

वही है जो अपने बन्दों पर खुली-खुली आयतें उतारता है, ताकि वह तुम्हें अँधियारियों से प्रकाश की ओर निकाल लाये; और निस्सन्देह अल्लाह तुम पर अत्यन्त करुणामय और दयावन्त है। ○

और तुम अल्लाह की राह में खर्च क्यों न करो, जब कि आसमानों और ज़मीन की विरासत अल्लाह ही के लिए है[६]? तुम में से जिन लोगों ने भी विजय से पूर्व खर्च किया और लड़े वे बराबर नहीं, वे लोग तो दरजे में उन लोगों से बड़े हैं जिन्हों ने बाद में खर्च किया और लड़े[७]। और अल्लाह ने सभी से भलाई का वादा कर रखा है। और अल्लाह उस की खबर रखता है जो-कुछ तुम १० करते हो। ○

कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़ दे अच्छा क़र्ज़,[८] कि वह उसे उस के लिए कई गुना कर दे और उस के लिए अत्यन्त भला बदला है? ○

जिस दिन तुम ईमान* वाले पुरुषों, और ईमान वाली स्त्रियों को देखोगे कि उन का प्रकाश उन के आगे-आगे दौड़ रहा है और उन के दाहिने हाथ में है,[९] आज तुम्हें ऐसे बाग़ों की शुभ-सूचना है जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, जिन में सदैव रहना है। यही है सब से बड़ी सफलता। ○

जिस दिन मुनाफ़िक़* पुरुष और मुनाफ़िक़* स्त्रियाँ उन लोगों से जो ईमान* लाये कहेंगे : तनिक ठहर जाओ हम भी तुम्हारे प्रकाश में से कुछ ले लें[१०]। कहा गया : पीछे लौट जाओ और ढूँढो प्रकाश[११]? इतने में उन के बीच एक दीवार खड़ी कर दी गई जिस में एक

فِيهِ فَالَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ وَأَنفَقُوا لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ۝ وَمَا لَكُمْ لَا
تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ لِتُؤْمِنُوا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ أَخَذَ
مِيثَاقَكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ۝ هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلَىٰ عَبْدِهِ آيَاتٍ
بَيِّنَاتٍ لِّيُخْرِجَكُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَإِنَّ اللَّهَ بِكُمْ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ
وَمَا لَكُمْ أَلَّا تُنفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلِلَّهِ مِيرَاثُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
لَا يَسْتَوِي مِنكُم مَّنْ أَنفَقَ مِن قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَاتَلَ أُولَٰئِكَ أَعْظَمُ
دَرَجَةً مِّنَ الَّذِينَ أَنفَقُوا مِن بَعْدُ وَقَاتَلُوا وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ
الْحُسْنَىٰ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ مَّن ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ
قَرْضًا حَسَنًا فَيُضَاعِفَهُ لَهُ وَلَهُ أَجْرٌ كَرِيمٌ ۝ يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِينَ
وَالْمُؤْمِنَاتِ يَسْعَىٰ نُورُهُم بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِم بُشْرَاكُمُ الْيَوْمَ
جَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ
الْعَظِيمُ ۝ يَوْمَ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالْمُنَافِقَاتُ لِلَّذِينَ آمَنُوا انظُرُونَا
نَقْتَبِسْ مِن نُّورِكُمْ قِيلَ ارْجِعُوا وَرَاءَكُمْ فَالْتَمِسُوا نُورًا فَضُرِبَ
بَيْنَهُم بِسُورٍ لَّهُ بَابٌ بَاطِنُهُ فِيهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهُ مِن قِبَلِهِ
الْعَذَابُ ۝ يُنَادُونَهُمْ أَلَمْ نَكُن مَّعَكُمْ قَالُوا بَلَىٰ وَلَٰكِنَّكُمْ فَتَنتُمْ
أَنفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْأَمَانِيُّ حَتَّىٰ جَاءَ
أَمْرُ اللَّهِ وَغَرَّكُم بِاللَّهِ الْغَرُورُ ۝ فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنكُمْ فِدْيَةٌ

इमरान आयत ८१। अल्लाह ने उस वादे को जो उस ने वचन लेते समय किया था पूरा कर दिया। उस ने रसूल* भेज कर तुम्हारे मार्ग-दर्शन का प्रबन्ध किया, तुम्हारा कर्तव्य है कि तुम भी अपने वादे को पूरा करो और रसूल* का साथ दो।

६ अर्थात् तुम्हें अपने धन और वैभव को एक दिन छोड़ना ही पड़ेगा फिर क्यों नहीं अल्लाह की राह में खर्च करते?

७ अर्थात् विजय प्राप्त होने से पूर्व जो लोग अल्लाह की राह में लड़े हैं और अपना माल उस की राह में खर्च किया है उन का दरजा बहुत बढ़ा हुआ है। इस लिए कि उन्हों ने उस समय सत्य का साथ दिया है जब कि वह बिलकुल दबा हुआ था और सत्य के अनुयायियों की दशा अत्यन्त दयनीय थी और उन्नति की कोई आशा नहीं दीख पड़ती थी। इस्लाम* के ज़ोर पकड़ने के पश्चात् जिन लोगों ने लड़ाइयों में हिस्सा लिया और धन से भी अल्लाह के दीन* की सहायता की उन से पहले लोगों का दरजे में आगे होना एक स्वाभाविक बात है; यों तो भलाई का वादा अल्लाह ने दोनों गरोहों से किया है।

८ अल्लाह की राह में खर्च करने को क़र्ज़ देना इस लिए कहा गया कि जो माल अल्लाह की राह में खर्च किया जाता है वह नष्ट नहीं होता बल्कि अल्लाह उस का कई गुना बदला खर्च करने वाले को देता है।

९ दे० सूरः अत-तहरीम आयत ८। यह प्रकाश जो वास्तव में ईमान* का प्रकाश है उन ही लोगों को प्रदान किया जायेगा जो अपने को अल्लाह के अर्पण कर के उस की आज्ञा के पालन करने में लग जाते हैं।

१० अर्थात् ठहरो हमें भी आ लेने दो ताकि तुम्हारे प्रकाश से हम भी फ़ायदा उठा सकें; हमें अँधेरे में छोड़ कर आगे न बढ़ जाओ।

११ जब सांसारिक जीवन में तुमने प्रकाश प्राप्त नहीं किया तो तुम्हारे लिए यहाँ कोई प्रकाश नहीं है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अल-हदीद

(मदीना में उतरी — आयतें* २९)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

بسم الله الرحمن الرحيم
سبح لله ما في السماوات والأرض وهو العزيز الحكيم ۝ له ملك
السماوات والأرض يحيي ويميت وهو على كل شيء قدير ۝ هو
الأول والآخر والظاهر والباطن وهو بكل شيء عليم ۝ هو
الذي خلق السماوات والأرض في ستة أيام ثم استوى على
العرش يعلم ما يلج في الأرض وما يخرج منها وما ينزل
من السماء وما يعرج فيها وهو معكم أين ما كنتم والله بما
تعملون بصير ۝ له ملك السماوات والأرض وإلى الله ترجع
الأمور ۝ يولج الليل في النهار ويولج النهار في الليل وهو عليم
بذات الصدور ۝ آمنوا بالله ورسوله وأنفقوا مما جعلكم مستخلفين

अल्लाह की तसबीह* की हर उस चीज़ ने जो आसमानों और ज़मीन में है; और वह अपार शक्ति का मालिक और हिकमत* वाला है। ○

आसमानों और ज़मीन का राज्य उसी का है; वह जिलाता और मारता है; और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। ○

वही आदि है और वही अन्त है,[1] वही भीतर है और वही बाहर है;[2] और वह हर चीज़ का जानने वाला है। ○

वही है जिस ने आसमानों और ज़मीन को छः दिनों में पैदा किया;[3] फिर राजसिंहासन पर विराजमान हुआ[4]। वह जानता है जो-कुछ ज़मीन में दाख़िल होता है और जो-कुछ उस से निकलता है और जो-कुछ आसमान से उतरता है और जो-कुछ उस में चढ़ता है; और वह तुम्हारे साथ है तुम जहाँ-कहीं हो। और अल्लाह देखता है जो-कुछ तुम करते हो। ○

आसमानों और ज़मीन का राज्य उसी का है, और अल्लाह ही की ओर सारे मामले पलटते हैं। ○ वह रात को दिन में पिरोता हुआ ले आता है, और दिन को रात में पिरोता हुआ ले आता है, और वह सीनों (अर्थात् दिलों) की बातों का जानने वाला (अन्तर्यामी) है। ○

ईमान* लाओ अल्लाह और उस के रसूल* पर, और ख़र्च करो उस (माल) में से जिस का उस ने तुम्हें उत्तराधिकारी बनाया है इस लिए कि जो लोग तुम में से ईमान* ले आये और ख़र्च किया, उन के लिए बड़ा बदला है। ○

और तुम क्यों नहीं अल्लाह पर ईमान* लाते, और रसूल* तुम्हें बुलाता है कि तुम अपने रब* पर ईमान* लाओ, और तुम से वह दृढ़ वचन भी ले चुका है,[5] यदि तुम ईमान* वाले हो! ○

---

१ अर्थात् वही प्रारम्भ में है और वही अन्त में है (विचैति चाल्ते विररमादी)। जब कुछ नहीं था तो वह था। वह सदा से है और सदा रहेगा।

२ अर्थात् वह हर जगह है। वह विश्व में व्याप्त है और वह आदमी की शाह-रग से भी ज़्यादा क़रीब है (क़ाफ़० आयत १६)। आँखें उसे देख नहीं पातीं (अल-अनआम आयत १३०)। ज्ञानी उस के चमत्कारों द्वारा उस का परिचय पाते हैं।

नबी सल्ल० सोने के समय की दुआ में अल्लाह से कहते थे : तू 'अव्वल' (आदि) है तुझ से पहले कुछ नहीं था तू ही 'आख़िर' (अन्त) है कि तेरे बाद कुछ नहीं। तू 'ज़ाहिर' है तुझ से ऊँची कोई चीज़ नहीं, तू 'बातिन' (भीतर) है कि तुझ से छुपी कोई चीज़ नहीं।

३ अर्थात् छः कालावधि (Period) में।

४ दे० सूरः अल-आराफ़ फुट नोट १६।

५ जैसा कि तौरात* में बयान हुआ है। वचन यह लिया गया था कि आज जो शिक्षा और ज्ञान तुम्हें प्रदान किया जा रहा है कल ऐसी ही शिक्षा और ज्ञान के साथ कोई रसूल* तुम्हारे पास आये तो तुम्हारा कर्तव्य होगा कि तुम उस पर ईमान* लाओ और उस की सहायता करो। दे० सूरः

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

फِيهِ ۖ فَالَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ وَأَنفَقُوا لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ۝ وَمَا لَكُمْ لَا
تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ ۙ وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ لِتُؤْمِنُوا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ أَخَذَ
مِيثَاقَكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ۝ هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلَىٰ عَبْدِهِ آيَاتٍ
بَيِّنَاتٍ لِّيُخْرِجَكُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۚ وَإِنَّ اللَّهَ بِكُمْ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ۝
وَمَا لَكُمْ أَلَّا تُنفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلِلَّهِ مِيرَاثُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ
لَا يَسْتَوِي مِنكُم مَّنْ أَنفَقَ مِن قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَاتَلَ ۚ أُولَٰئِكَ أَعْظَمُ
دَرَجَةً مِّنَ الَّذِينَ أَنفَقُوا مِن بَعْدُ وَقَاتَلُوا ۚ وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ
الْحُسْنَىٰ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ مَّن ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ
قَرْضًا حَسَنًا فَيُضَاعِفَهُ لَهُ وَلَهُ أَجْرٌ كَرِيمٌ ۝ يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِينَ
وَالْمُؤْمِنَاتِ يَسْعَىٰ نُورُهُم بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِم بُشْرَاكُمُ الْيَوْمَ
جَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ
الْعَظِيمُ ۝ يَوْمَ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالْمُنَافِقَاتُ لِلَّذِينَ آمَنُوا انظُرُونَا
نَقْتَبِسْ مِن نُّورِكُمْ قِيلَ ارْجِعُوا وَرَاءَكُمْ فَالْتَمِسُوا نُورًا فَضُرِبَ
بَيْنَهُم بِسُورٍ لَّهُ بَابٌ بَاطِنُهُ فِيهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهُ مِن قِبَلِهِ
الْعَذَابُ ۝ يُنَادُونَهُمْ أَلَمْ نَكُن مَّعَكُمْ ۖ قَالُوا بَلَىٰ وَلَٰكِنَّكُمْ فَتَنتُمْ
أَنفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْأَمَانِيُّ حَتَّىٰ جَاءَ
أَمْرُ اللَّهِ وَغَرَّكُم بِاللَّهِ الْغَرُورُ ۝ فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنكُمْ فِدْيَةٌ

वही है जो अपने बन्दों पर खुली-खुली आयतें उतारता है, ताकि वह तुम्हें अँधियारियों से प्रकाश की ओर निकाल लाये; और निस्सन्देह अल्लाह तुम पर अत्यन्त करुणामय और दयावन्त है। ○

और तुम अल्लाह की राह में खर्च क्यों न करो, जब कि आसमानों और ज़मीन की विरासत अल्लाह ही के लिए है[६]? तुम में से जिन लोगों ने भी विजय से पूर्व खर्च किया और लड़े वे बराबर नहीं, वे लोग तो दरजे में उन लोगों से बढ़े हैं जिन्हों ने बाद में खर्च किया और लड़े[७]। और अल्लाह ने सभी से भलाई का वादा कर रखा है। और अल्लाह उस की खबर रखता है जो-कुछ तुम

१० करते हो। ○

कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़ दे अच्छा क़र्ज़,[८] कि वह उसे उस के लिए कई गुना कर दे और उस के लिए अत्यन्त भला बदला है? ○

जिस दिन तुम ईमान* वाले पुरुषों, और ईमान वाली स्त्रियों को देखोगे कि उन का प्रकाश उन के आगे-आगे दौड़ रहा है और उन के दाहिने हाथ में है,[९] आज तुम्हें ऐसे बाग़ों की शुभ-सूचना है जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, जिन में सदैव रहना है। यही है सब से बड़ी सफलता। ○

जिस दिन मुनाफ़िक़* पुरुष और मुनाफ़िक़* स्त्रियाँ उन लोगों से जो ईमान* लाये कहेंगे : तनिक ठहर जाओ हम भी तुम्हारे प्रकाश में से कुछ ले लें[१०]। कहा गया : पीछे लौट जाओ और ढूँढो प्रकाश[११]! इतने में उन के बीच एक दीवार खड़ी कर दी गई जिस में एक

इमरान आयत ८१। अल्लाह ने उस वादे को जो उस ने वचन लेते समय किया था पूरा कर दिया। उस ने रसूल* भेज कर तुम्हारे मार्ग-दर्शन का प्रबन्ध किया; तुम्हारा कर्तव्य है कि तुम भी अपने वादे को पूरा करो और रसूल* का साथ दो।

६ अर्थात् तुम्हें अपने धन और वैभव को एक दिन छोड़ना ही पड़ेगा फिर क्यों नहीं अल्लाह की राह में खर्च करते?

७ अर्थात् विजय प्राप्त होने से पूर्व जो लोग अल्लाह की राह में लड़े हैं और अपना माल उस की राह में खर्च किया है उन का दरजा बहुत बढ़ा हुआ है। इस लिए कि उन्हों ने उस समय सत्य का साथ दिया है जब कि वह बिलकुल दबा हुआ था और सत्य के अनुयायियों की दशा अत्यन्त दयनीय थी और उन्नति की कोई आशा नहीं दीख पड़ती थी। इस्लाम* के ज़ोर पकड़ने के पश्चात् जिन लोगों ने लड़ाइयों में हिस्सा लिया और धन से भी अल्लाह के दीन* की सहायता की उन से पहले लोगों का दरजे में आगे होना एक स्वाभाविक बात है; यों तो भलाई का वादा अल्लाह ने दोनों गरोहों से किया है।

८ अल्लाह की राह में खर्च करने को क़र्ज़ देना इस लिए कहा गया कि जो माल अल्लाह की राह में खर्च किया जाता है वह नष्ट नहीं होता बल्कि अल्लाह उस का कई गुना बदला खर्च करने वाले को देता है।

९ दे० सूरः अत-तहरीम आयत ८। यह प्रकाश जो वास्तव में ईमान* का प्रकाश है उन ही लोगों को प्रदान किया जायेगा जो अपने को अल्लाह के अर्पण कर के उस की आज्ञा के पालन करने में लग जाते हैं।

१० अर्थात् ठहरो हमें भी आ लेने दो ताकि तुम्हारे प्रकाश से हम भी फ़ायदा उठा सकें; हमें अँधेरे में छोड़ कर आगे न बढ़ जाओ।

११ जब सांसारिक जीवन में तुमने प्रकाश प्राप्त नहीं किया तो तुम्हारे लिए

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

وَلَا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا مَأْوَاكُمُ النَّارُ هِيَ مَوْلَاكُمْ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ
أَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنْ تَخْشَعَ قُلُوبُهُمْ لِذِكْرِ اللَّهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ
الْحَقِّ وَلَا يَكُونُوا كَالَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ
الْأَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فَاسِقُونَ ۝ اعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ
يُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝
إِنَّ الْمُصَّدِّقِينَ وَالْمُصَّدِّقَاتِ وَأَقْرَضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يُضَاعَفُ
لَهُمْ وَلَهُمْ أَجْرٌ كَرِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ أُولَٰئِكَ هُمُ
الصِّدِّيقُونَ ۖ وَالشُّهَدَاءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ لَهُمْ أَجْرُهُمْ وَنُورُهُمْ
وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۝ اعْلَمُوا
أَنَّمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهْوٌ وَزِينَةٌ وَتَفَاخُرٌ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي
الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ ۖ كَمَثَلِ غَيْثٍ أَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهُ ثُمَّ يَهِيجُ
فَتَرَاهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُونُ حُطَامًا ۖ وَفِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَ
مَغْفِرَةٌ مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٌ ۚ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُورِ ۝
سَابِقُوا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ مِنْ رَبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَاءِ
وَالْأَرْضِ أُعِدَّتْ لِلَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ۚ ذَٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ
يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝ مَا أَصَابَ مِنْ
مُصِيبَةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي أَنْفُسِكُمْ إِلَّا فِي كِتَابٍ مِنْ قَبْلِ أَنْ

दरवाज़ा है, उस के भीतर का जो भाग है उस में दयालुता है, और उस के बाहर का जो भाग है उस की ओर अज़ाब है। ○ ये उन को पुकार-पुकार कर कह रहे हैं : क्या हम तुम्हारे साथ नहीं थे। उन्हों ने कहा : हाँ थे तो; परन्तु तुम ने अपने-आप को फ़ितने में डाला और राह देखते रहे, और सन्देह करते रहे, और व्यर्थ कामनाओं ने तुम्हें धोखे में डाले रखा यहाँ तक कि अल्लाह का हुक्म आ गया और धोखे-बाज़ ने तुम्हें अल्लाह के बारे में धोखे में डाला;[12] ○

अब आज न तुम से कोई फ़िद्यः* (मुक्ति-प्रतिदान) लिया जायेगा और न उन लोगों से जिन्हों ने कुफ़्र* किया[13]। तुम्हारा ठिकाना आग है; वही तुम्हारा आश्रय है, और वह बहुत ही बुरी जगह है जहाँ वे पहुँचे। ○

क्या अभी ईमान* लाने वालों के लिए इस का समय नहीं आया कि उन के दिल अल्लाह की याद और जो सत्य उतरा है उस के आगे झुक जावें; और वे उन लोगों की तरह न हो जावें जिन्हें पहले किताब दी गई थी फिर उन पर मुद्दत लम्बी हुई और उन के दिल सख़्त हो गये, और उन में बहुत से सीमोल्लंघन करने वाले हैं। ○

जान रखो कि अल्लाह ज़मीन को उस के मुरदा हो जाने के बाद जीवित करता है[14]। हम ने तुम से खोल-खोल कर आयतें* बयान कर दी हैं, कदाचित् तुम बुद्धि से काम लो। ○

निश्चय ही जो सदक़ः* करने वाले पुरुष और सदक़ः* करने वाली स्त्रियाँ हैं, और उन्हों ने अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दिया, उन के लिए कई गुना कर दिया जायेगा, और उन के लिए भला बदला है। ○

और जो लोग अल्लाह और उस के रसूलों* पर ईमान* लाये, वही लोग सिद्दीक़* हैं और शहीद* अपने रब* के यहाँ; उन के लिए उन का बदला है और उन का प्रकाश। और जिन लोगों ने कुफ़्र* किया और हमारी आयतों* को झुठलाया, वही लोग भड़कती आग (में पड़ने) वाले हैं। ○

जान रखो कि सांसारिक जीवन तो बस खेल है, और तमाशा, और सजावट, और तुम्हारा आपस में एक-दूसरे पर बड़ाई जताना, और माल और औलाद में ज़्यादा-से-ज़्यादा बढ़ने की लालसा; जैसे वृष्टि-उत्पत्ति हो जिस की बनस्पति ने काफ़िरों* का दिल लुभा लिया हो फिर वह ज़ोर पर आये फिर तू उसे देखे कि वह पीली पड़ गई, फिर वह चूरा-चूरा हो जावे।

---

१२ देखें इंजील* (मत्ती २५ : १-१३) में कुँवारियों और दासियों की उपमा।

१३ अर्थात् काफ़िर* कुछ दे कर भी अपने को अज़ाब से नहीं छुड़ा सकते।

१४ जिस प्रकार वह भूमि के सूख जाने के पश्चात् वर्षा कर के उसे नया जीवन प्रदान करता है इसी प्रकार वह धर्म के पतन के पश्चात् वह्य* की वर्षा कर के ईमान* वालों का एक नया गरोह पैदा करता और उन्हें कल्याणमय जीवन प्रदान करता है, फिर इसी तरह वह क़ियामत* के दिन मरे हुए लोगों को जीवित कर देगा।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

بِرَاَهَا ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۚ لِّكَيْلَا تَاْسَوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَلَا
تَفْرَحُوْا بِمَآ اٰتٰىكُمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرِ ۙ ۝ الَّذِيْنَ
يَبْخَلُوْنَ وَيَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ؕ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ
الْحَمِيْدُ ۝ لَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنٰتِ وَاَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتٰبَ
وَالْمِيْزَانَ لِيَقُوْمَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۚ وَاَنْزَلْنَا الْحَدِيْدَ فِيْهِ بَاْسٌ
شَدِيْدٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ وَرُسُلَهٗ بِالْغَيْبِ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا وَّاِبْرٰهِيْمَ وَجَعَلْنَا فِيْ
ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ فَمِنْهُمْ مُّهْتَدٍ ۚ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝
ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَاٰتَيْنٰهُ
الْاِنْجِيْلَ ۙ وَجَعَلْنَا فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ رَاْفَةً وَّرَحْمَةً ؕ
وَّرَهْبَانِيَّةَ ۨ ابْتَدَعُوْهَا مَا كَتَبْنٰهَا عَلَيْهِمْ اِلَّا ابْتِغَآءَ رِضْوَانِ
اللّٰهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا ۚ فَاٰتَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْهُمْ اَجْرَهُمْ ۚ
وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَاٰمِنُوْا
بِرَسُوْلِهٖ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَّحْمَتِهٖ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ نُوْرًا
تَمْشُوْنَ بِهٖ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۙ ۝ لِّئَلَّا يَعْلَمَ
اَهْلُ الْكِتٰبِ اَلَّا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَيْءٍ مِّنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاَنَّ
الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝

और आख़िरत* में सख़्त अज़ाब है, और अल्लाह की क्षमा और प्रसन्नता, और सांसारिक २० जीवन तो माया-सामग्री के अतिरिक्त कुछ नहीं। ○

बढ़ो अपने रब* की क्षमा और उस जन्नत* की ओर जिस का विस्तार आसमानों और ज़मीन के विस्तार के सदृश है, जो उन लोगों के लिए तैयार की गई है जो अल्लाह पर और उस के रसूलों* पर ईमान* लाये। यह अल्लाह का फ़ज़्ल (कृपा) है, जिसे चाहता है प्रदान करता है, और अल्लाह बड़ा फ़ज़्ल करने वाला है। ○

जो मुसीबत भी ज़मीन पर पड़ी या तुम्हारे अपने ऊपर वह एक किताब में अंकित थी[१५] इस से पहले कि हम उसे पैदा करें—निस्सन्देह यह अल्लाह के लिए आसान काम है। ○—

(तुम्हें यह बात इस लिए बता दी गई) ताकि तुम उस चीज़ का अफ़सोस न करो जो तुम्हारे हाथ से जाती रहे, और न उस पर इतरा जाओ जो-कुछ कि तुम्हें दिया जाये। अल्लाह किसी डींगें मारने वाले इतराने वाले व्यक्ति को पसन्द न[हीं] करता, ○ वे जो कंजूसी करते हैं और लोगों को भी कंजूसी करने को कहते हैं। और जो को[ई] मुँह मोड़ेगा, तो अल्लाह अपेक्षा-रहित (परम-स्वतन्त्र) और प्रशंसा का अधिकारी है। ○

निश्चय ही हम ने अपने रसूलों* को खुली दलीलों के साथ भेजा, और उन के सा[थ] किताब* और तुला[१६] उतारी, ताकि लोग इन्साफ़ पर क़ायम रहें और हम ने लोह उतारा,[१७] जिस में मार-काट की अत्यन्त शक्ति है और लोगों के लिए बहुत से फ़ायदे हैं, और इस लि[ए] कि अल्लाह यह जान ले कि कौन बिना देखे उस की और उस के रसूलों की मदद करता है[।] २५ निस्सन्देह अल्लाह बलिष्ठ और अपार शक्ति का मालिक है। ○

१५ अकाल, भूकम्प, बीमारी, दुःख, पीड़ा आदि जो मुसीबतें भी आती हैं उन का आना पहले से निश्चित है, तुम्हें केवल वही कष्ट पहुँच सकता है जिस का फ़ैसला अल्लाह ने कर दिया होगा (दे० सूरः अत-तग़ाबुन आयत ११)। और तुम्हें केवल वही सुख और आनन्द प्राप्त होता है जो उस ने तुम्हारे लिए लिख दिया है। मनुष्य का कर्तव्य है कि अल्लाह के फ़ैसले पर राज़ी रहे। अल्लाह जो-कुछ करता है उस में अपे[क्षि]त भलाई ही होती है। एक बड़ी योजना और स्कीम (Scheme) को सामने रखते हुये वह इस दुनियाँ को चला रहा है। जिस प्रकार सम्पूर्ण विश्व और उस के विभिन्न भागों और अंशों में परस्पर एकरसता पाई जाती है उसी तरह इस संसार में छोटी-बड़ी जो घटना भी घटित होती है वह स्थायी रूप से कोई अलग घटना नहीं होती बल्कि वह विश्व की घटनाओं के सिलसिले की एक कड़ी होती है और वह उस सार्विक उद्देश्य के अन्तर्गत घटित होती है जिस की पूर्ति के लिए इस विश्व का सृष्टि-कर्ता इस दुनियाँ को चला रहा है। यदि उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वर्तमान व्यवस्था से उत्तम कोई व्यवस्था हो सकती तो निश्चय ही अल्लाह उसी को अपनाता।

१६ अर्थात् सन्तुलित (Well balanced) जीवन-व्यवस्था ताकि लोगों के बीच न्याय किया जा सके। (दे० सूरः अर-रहमान आयत ७-९)।

१७ 'लोह' से अभिप्रेत यहाँ सैनिक तथा शासन-शक्ति है। न्याय की स्थापना के लिए शासन-शक्ति की भी आवश्यकता होती है। इस के बिना पूर्ण-रूप से बुराइयों और अत्याचार का दमन नहीं किया जा सकता।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

और निश्चय ही हम ने नूह और इबराहीम को रसूल* बना कर भेजा और उन की सन्तति में नुबूवत* और किताब* रखी,[18] तो कुछ तो उन में से राह पर रहे, और उन में बहुत से सीमोल्लंघन करने वाले हैं। ○

फिर इन (रसूलों*) के पद-चिह्नों पर हम अपने और रसूल* भेजते रहे और फिर मरयम के बेटे ईसा को भेजा, और हम ने उसे इञ्जील* प्रदान की, और जो लोग उस के पीछे चले उन के दिलों में हम ने करुणा और दयालुता रख दी। और संसार-त्याग (वैराग्य) की प्रथा उन्हों ने स्वयं निकाली हम ने उन्हें इस का आदेश नहीं दिया था[19] दिया था तो बस अल्लाह की प्रसन्नता चाहने का, तो उन्हों ने उस का जैसा पालन करना चाहिए था नहीं किया। फिर उन में से जो ईमान* लाये थे उन्हें हम ने उन का बदला दिया, और उन में बहुत से सीमोल्लंघन करने वाले हैं। ○

हे ईमान* लाने वालो! अल्लाह का डर रखो और उस के रसूल* पर ईमान* लाओ। वह तुम्हें अपनी दयालुता से दो हिस्से देगा[20] और तुम्हारे लिए एक प्रकाश उपलब्ध करेगा जिस के साथ तुम चलो फिरोगे, और तुम्हें क्षमा कर देगा। अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दयावान् है। ○

यह इस लिए कि किताब* वाले न जानें कि वे अल्लाह के फ़ज़्ल में से कुछ पा नहीं सकते, और बात यह है कि फ़ज़्ल अल्लाह ही के हाथ में है वह जिसे चाहता है देता है। अल्लाह बड़ा फ़ज़्ल करने वाला है। ○

---

१८ अर्थात् उन की औलाद में किताब* और नुबूवत* का सिलसिला जारी रखा।

१९ अर्थात् अल्लाह ने वैराग्य (Monasticism) का आदेश ईसाइयों* को कदापि नहीं दिया था बल्कि यह प्रथा उन्हों ने स्वयं गढ़ ली थी। वैराग्य मानव-स्वभाव के प्रतिकूल है; इस का आदेश अल्लाह कैसे दे सकता है। अच्छे लोग यदि दुनियाँ से मुख मोड़ कर वनों और गुफाओं में जा कर रहने लगें तो संसार में अराजकता का ही राज्य हो जाये। फिर इस तरह तो मनुष्य उस उच्च पद को भी प्राप्त नहीं कर सकता है जिसे प्राप्त करने का एक-मात्र साधन कर्म है। मनुष्य को जिस त्याग का आदेश दिया गया है वह अहंकार, वासना, कुविचार, अज्ञान आदि का त्याग है न कि किसी और चीज़ का त्याग।

२० ईसाइयों में जो लोग हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर ईमान* लाये उन के लिए यहूदियों* की अपेक्षा दोहरा बदला है इस लिए कि ये हज़रत ईसा अ० पर भी ईमान* लाये और हज़रत मुहम्मद सल्ल० को भी अल्लाह का रसूल* माना।

मुसलमानों को किताब वालों (यहूदियों और ईसाइयों) के मुक़ाबले में दोहरा बदला मिलेगा। अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से अपने अन्तिम रसूल* के अनुयायियों के लिए दो हिस्सा रखा है। जैसा कि नबी सल्ल० ने अपने कथनों में मुसलमानों और इस से पहले के दो गरोहों (यहूदियों और ईसाइयों) की मिसाल देते हुये यह बात बयान की है। आप (सल्ल०) ने कहा: (हे ईमान* वालो) तुम्हारी और यहूद* और नसारा* की मिसाल ऐसी ही है जैसे एक आदमी ने कुछ मज़दूरों को काम पर लगाया और कहा कि कौन प्रातःकाल की नमाज़* से दोपहर तक एक-एक 'क़ीरात' (एक सिक्का) की उजरत पर मेरा काम करेगा? तो यहूद* ने काम किया। फिर उस ने कहा कि कौन 'ज़ुहर' की नमाज़* से 'अस्र'* की नमाज़* तक एक-एक 'क़ीरात' की उजरत पर मेरा काम करेगा तो नसारा* ने काम किया। फिर कहा कि कौन है जो 'अस्र' की नमाज़ से सूर्य अस्त होने तक दो-दो 'क़ीरात' की उजरत पर मेरा काम करेगा तो वह तुम मुस्लिम लोग हो जिन्हों ने काम किया, तो नसारा* और यहूद* ना-ख़ुश हुये और कहा कि हमारा काम ज़्यादा है और मिला कम, तो उस ने कहा कि क्या हम ने तुम्हें उजरत कुछ कम दी है? उन्हों ने कहा नहीं। उस ने कहा कि यह तो मेरा फ़ज़्ल है जिसे चाहूँ दूँ।

इञ्जील* की उपमा में भी इस की ओर खुला इशारा मिलता है दे० मत्ता (Mtt.) २०:१-१६।

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

५८--अल-मुजादलः

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अल-मुजादलः' सूरः* की पहली आयत* से लिया गया है।

अनुमान है कि यह सूरः* हिजरत के चौथे या पाँचवें वर्ष उतरी होगी; यद्यपि कुछ लोगों के विचार में यह सूरः हिजरत के छठे वर्ष के अन्त में या सातवें वर्ष के आरम्भ में अवतरित हुई है।

इस सूरः* का केन्द्रीय विषय वही है जो सूरः अल-हदीद का है।

सूरः* का आरम्भ एक विशेष घटना के उल्लेख से हुआ है। सूरः के आरम्भ में 'ज़िहार' की प्रथा के सम्बन्ध में नबी सल्ल० से एक स्त्री के झगड़ने का उल्लेख हुआ है[1]। उस स्त्री का आप (सल्ल०) से झगड़ना किसी वैर-भाव और कपट-नीति के अन्तर्गत कदापि न था। वह आप (सल्ल०) की सेवा में जो व्यथा सुनाने आई थी उस के पीछे न तो किसी प्रकार का द्वेष था और न वह अपने पति के प्रति कोई अन-हित भावना रखती थी। बल्कि उस के हृदय में अल्लाह के रसूल* के प्रति पूर्ण श्रद्धा और आदर था। उस का झगड़ना केवल भलाई और नाते-रिश्ते के हित और प्रेम के अन्तर्गत था। इस के ठीक विरुद्ध उन लोगों की नीति थी जो मुनाफ़िक़ों* में से थे। इसी सम्पर्क से आयत ५ से मुनाफ़िक़ों* के विरोध और उन के बुरे परिणाम का उल्लेख किया गया है और बताया गया है कि अल्लाह से किसी का कोई भेद छिपा नहीं रह सकता। उन की गुप्त वार्त्ताओं से वह भली-भाँति परिचित है।

फिर कहा गया है कि गुप्त-वार्त्ता से उन को वर्जित किया गया परन्तु उन्हों ने अपनी नीति नहीं बदली। उन की गुप्त-वार्त्तायें नेकी, भलाई और रसूल* के आदेशों के पालन के लिए नहीं होतीं बल्कि ज़ुल्म, ज़्यादती और रसूल* की अवज्ञा के लिए ही होती हैं। ये नबी* (सल्ल०) के शत्रु हैं। नबी* की सेवा में आते हैं तो सभ्यता और शिष्टता से गिरी हुई हरकतें करते हैं।

इस के बाद मुसलमानों को सचेत किया गया है कि वे भूल कर भी उन की नीति न अपनायें। उन की कोई गुप्त-वार्त्ता यदि हो भी तो नेकी और परहेज़गारी के लिए हो। फिर ईमान* वालों को बताया गया है कि शैतान* के मित्रों की गुप्त-वार्त्ताओं से उन का कुछ नहीं बिगड़ेगा; होता वही है जो अल्लाह चाहता है, अतः उन्हें अल्लाह पर भरोसा रखना चाहिए। फिर मजलिस के उचित और शिष्टतानुकूल नियमों का उल्लेख किया गया है[2]। इस पर विशेष रूप से ज़ोर दिया गया है कि अपरिवर्तनीय आदेश नमाज़*, ज़कात* आदि का पूर्णतः पालन किया जाये।

सूरः* के अन्तिम भाग में दो गरोहों का उल्लेख किया गया है। एक गरोह मुनाफ़िक़ों* का है दूसरा गरोह उन लोगों का है जो अल्लाह और आख़िरत* को मानने वाले हैं। यदि मुनाफ़िक़* शैतान* की पार्टी के लोग हैं तो ये अल्लाह की पार्टी वाले हैं। शैतान* का जत्था यदि तबाह होने को है तो अल्लाह के जत्थे को सफलता प्राप्त होने वाली है।

---

[1] दे० प्रस्तुत सूरः का फुट नोट १। [2] दे० आयत ११।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अल मुजादलः

(मदीना में उतरी — आयतें* २२)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

[illegible]

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
قَدْ سَمِعَ اللهُ قَوْلَ الَّتِيْ تُجَادِلُكَ فِيْ زَوْجِهَا وَتَشْتَكِيْٓ اِلَى
اللهِ ۖ وَاللهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ۭ اِنَّ اللهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ۝ اَلَّذِيْنَ
يُظٰهِرُوْنَ مِنْكُمْ مِّنْ نِّسَاۗىِٕهِمْ مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمْ ۭ اِنْ اُمَّهٰتُهُمْ
اِلَّا الّٰۗىِٔيْ وَلَدْنَهُمْ ۭ وَاِنَّهُمْ لَيَقُوْلُوْنَ مُنْكَرًا مِّنَ الْقَوْلِ وَزُوْرًا ۭ
وَاِنَّ اللهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ۝ وَالَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْ نِّسَاۗىِٕهِمْ ثُمَّ
يَعُوْدُوْنَ لِمَا قَالُوْا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَاۗسَّا ۭ ذٰلِكُمْ
تُوْعَظُوْنَ بِهٖ ۭ وَاللهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ
شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَاۗسَّا ۚ فَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ
فَاِطْعَامُ سِتِّيْنَ مِسْكِيْنًا ۭ ذٰلِكَ لِتُؤْمِنُوْا بِاللهِ وَرَسُوْلِهٖ ۭ وَ
تِلْكَ حُدُوْدُ اللهِ ۭ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ
يُحَاۗدُّوْنَ اللهَ وَرَسُوْلَهٗ كُبِتُوْا كَمَا كُبِتَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ
وَقَدْ اَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۭ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝ يَوْمَ
يَبْعَثُهُمُ اللهُ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ۭ اَحْصٰىهُ اللهُ وَنَسُوْهُ ۭ
وَاللهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللهَ يَعْلَمُ مَا فِي
السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ مَا يَكُوْنُ مِنْ نَّجْوٰى ثَلٰثَةٍ اِلَّا هُوَ

†सुन ली अल्लाह ने उस (स्त्री) की बात जो तुम से (हे नबी*!) अपने पति के प्रति झगड़ती है, और अल्लाह के आगे दुखड़ा रो रही है[1]। और अल्लाह तुम दोनों की बात-चीत सुनता रहा है निःसन्देह अल्लाह सुनने वाला और देखने वाला है।○

तुम में से जो लोग अपनी स्त्रियों से 'ज़िहार' करते हैं उन की मातायें वे नहीं हैं,उन की मातायें तो वही हैं जिन्हों ने उन्हें जन्म दिया है और यह झूठ है कि ये लोग एक बुरी और झूठी बात कहते हैं। निस्सन्देह अल्लाह माफ़ करने वाला और अत्यन्त क्षमाशील है। ○ और जो लोग अपनी स्त्रियों से 'ज़िहार' करते हैं फिर जो-कुछ उन्हों ने कहा उस की ओर फिर लौटते हैं, तो एक गरदन आज़ाद करनी होगी[2] इस से पहले कि उन दोनों में समागम हो। इस से तुम्हें नसीहत की जाती है, और अल्लाह उस की ख़बर रखता है जो-कुछ तुम करते हो। ○

फिर जिसे (आज़ाद करने को ग़ुलाम) प्राप्त न हो, तो लगातार दो महीने रोज़े* रखना होगा इस से पहले कि उन दोनों में समागम हो; फिर जिस से यह न हो सके तो (उसे) साठ मुहताजों को भोजन कराना होगा। यह, इस लिए कि तुम ईमान* लाओ अल्लाह पर और उस के रसूल* पर[3]। और यह अल्लाह की (नियत की हुई) सीमायें हैं; और काफ़िरों* के लिए दुःख-भरा अज़ाब है। ○

जो लोग विरोध करते हैं अल्लाह का और उस के रसूल* का वे पूरी तरह परास्त[4] हुए

† यहाँ से अट्ठाईसवाँ पारः (Part XXVIII) शुरू होता है।

१ औस बिन सामित ने क्रुद्ध हो कर अपनी पत्नी ख़ौलः से 'ज़िहार' कर लिया था। 'इस्लाम' से पहले यदि पुरुष अपनी पत्नी से 'ज़िहार' कर लेता तो समझते थे कि उस की पत्नी सदा के लिए उस पर हराम हो गई। ख़ौलः बहुत परेशान हुई; नबी सल्ल० की सेवा में पहुँची। आप (स०) ने इस सिलसिले में [illegible] विवशता प्रकट की। वह अपनी मुसीबत दोहराने लगी। और अल्लाह से फ़रियाद करने लगी। 'ज़िहार' का अभिप्रेत क्या है इस के लिए देखिए सूरः अल-अहज़ाब फुट नोट ४।

२ अर्थात् कफ़्फ़ारः* के रूप में एक ग़ुलाम आज़ाद करना होगा।

३ अर्थात् ताकि अपने व्यवहार द्वारा इस की तसदीक़ करने वाले बनो कि तुम अल्लाह और रसूल* पर ईमान* रखते हो और मानते हो कि तुम्हारा रब* बड़ी ग़ैरत वाला है।

४ यह संकेत यहूदी मुनाफ़िक़ों* और यहूदी काफ़िरों* की ओर है। [illegible] [illegible] का उल्लेख इस से पहले किया गया, इस के मुक़ाबले में एक जाति मुनाफ़िक़ों* की है [illegible]

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ إِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَا أَدْنَىٰ مِن ذَٰلِكَ وَلَا
أَكْثَرَ إِلَّا هُوَ مَعَهُمْ أَيْنَ مَا كَانُوا ۖ ثُمَّ يُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا
يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ
نُهُوا عَنِ النَّجْوَىٰ ثُمَّ يَعُودُونَ لِمَا نُهُوا عَنْهُ وَيَتَنَاجَوْنَ بِالْإِثْمِ
وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُولِ وَإِذَا جَاءُوكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ
يُحَيِّكَ بِهِ اللَّهُ وَيَقُولُونَ فِي أَنفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللَّهُ بِمَا
نَقُولُ ۚ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ يَصْلَوْنَهَا ۖ فَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝ يَا أَيُّهَا
الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَ
مَعْصِيَتِ الرَّسُولِ وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوَىٰ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي
إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝ إِنَّمَا النَّجْوَىٰ مِنَ الشَّيْطَانِ لِيَحْزُنَ الَّذِينَ
آمَنُوا وَلَيْسَ بِضَارِّهِمْ شَيْئًا إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قِيلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوا فِي
الْمَجَالِسِ فَافْسَحُوا يَفْسَحِ اللَّهُ لَكُمْ ۖ وَإِذَا قِيلَ انشُزُوا فَانشُزُوا
يَرْفَعِ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ وَالَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ دَرَجَاتٍ ۚ
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نَاجَيْتُمُ
الرَّسُولَ فَقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوَاكُمْ صَدَقَةً ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ
لَّكُمْ وَأَطْهَرُ ۚ فَإِن لَّمْ تَجِدُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

जैसे वे लोग परास्त हुये जो इन से पहले थे।

और हम ने खुली-खुली आयतें* उतार दी हैं, और काफ़िरों* के लिए अपमान-जनक अज़ाब है। ○ जिस दिन कि अल्लाह उन सब को (मृत्यु के पश्चात्) उठा खड़ा करेगा फिर जो-कुछ उन्हों ने किया है उस से उन्हें सूचित कर देगा। अल्लाह ने उसे गिन रखा है और ये उसे भूल गये। और अल्लाह के सामने हर चीज़ है। ○

५

क्या तुम ने न देखा कि अल्लाह जानता है जो-कुछ आसमानों में है और जो-कुछ ज़मीन में है? कोई गुप्त-वार्ता तीन आदमियों की ऐसी नहीं होती जिस में चौथा वह न हो और न कोई पाँच आदमियों की ऐसी होती है जिस में छठा वह न हो, और न कोई इस से कम की और न ज़्यादा की ऐसी होती है जिस में वह न हो, जहाँ कहीं भी वे लोग हों;[5] फिर जो-कुछ भी उन्हों ने किया है उस से वह क़ियामत* के दिन उन्हें सूचित कर देगा। निस्सन्देह अल्लाह को हर चीज़ का ज्ञान है। ○

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें गुप्त वार्ता करने से रोका गया फिर वे वही काम करते हैं जिस से उन्हें रोका गया था, और परस्पर गुनाह और ज़्यादती और रसूल* की अवज्ञा की गुप्त-वार्ता किया करते हैं? और जब वे तुम्हारे पास आते हैं तो उस चीज़ के साथ तुम्हारा अभिवादन करते हैं जिस के साथ अल्लाह ने तुम्हारा अभिवादन नहीं किया,[6] और अपने जी में कहते हैं: जो-कुछ हम कहते हैं उस पर अल्लाह हमें सज़ा क्यों नहीं देता? उन के लिए जहन्नम* काफ़ी है; जिस में वे प्रवेश करेंगे तो वह बहुत ही बुरी जगह है पहुँचने की। ○

हे ईमान* लाने वालो! जब तुम परस्पर गुप्त-वार्ता करो, तो गुनाह और ज़्यादती और रसूल* की अवज्ञा की गुप्त-वार्ता न करो,[7] और परस्पर नेकी और अल्लाह से डर की बात करो और, उस अल्लाह का डर रखो, जिस के पास तुम इकट्ठा किये जाओगे। ○

यह गुप्त-वार्ता तो बस शैतान* की ओर से है, ताकि वह ईमान* लाने वालों को दुःख पहुँचाये; और वह अल्लाह की अनुज्ञा के बिना उन का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता। और

जो अत्यन्त निन्दनीय है। वे अल्लाह और रसूल* के शत्रु हैं। उन का यह स्वभाव बन चुका है कि उन्हें जब भी अवसर मिल जाये वे नबी सल्ल० के आदेशों की अवहेलना और विरोध करेंगे। सूरः आल-इम और अल-मुमतहनः में स्पष्ट रूप से उन की इस नीति का उल्लेख किया गया है।

५ अर्थात् अल्लाह से किसी की कोई बात छिपी नहीं रह सकती।

६ यह संकेत यहूदियों* की ओर है। जब वे आप (सल्ल०) की सेवा में आते तो 'अस्सलामु अलैक' (आप पर सलामती हो) कहने के बदले 'अस्साम्मु अलैक' (तुम्हें मौत आये) कहते। फिर जैसा कि आगे आ रहा है कहते कि यदि वास्तव में यह अल्लाह का रसूल* है तो हम पर अज़ाब क्यों नहीं आ जाता।

७ अर्थात् जब आपस में तुम कोई गुप्त-वार्ता या विचार-विमर्श करो तो इस का ध्यान रखो कि तुम्हारी कोई बात गुनाह, ज़ुल्म या रसूल* की अवज्ञा की कदापि न हो।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

ءأشفقتم أن تقدموا بين يدي نجوىكم صدقت فإذ
لم تفعلوا وتاب الله عليكم فأقيموا الصلوة وءاتوا الزكوة
وأطيعوا الله ورسوله والله خبير بما تعملون ۞ ألم تر
إلى الذين تولوا قوما غضب الله عليهم ما هم منكم ولا
منهم ويحلفون على الكذب وهم يعلمون ۝ أعد الله لهم
عذابا شديدا إنهم ساء ما كانوا يعملون ۝ اتخذوا
أيمنهم جنة فصدوا عن سبيل الله فلهم عذاب مهين ۝
لن تغني عنهم أمولهم ولا أولدهم من الله شيئا أولئك
أصحب النار هم فيها خلدون ۝ يوم يبعثهم الله جميعا
فيحلفون له كما يحلفون لكم ويحسبون أنهم على شيء
ألا إنهم هم الكذبون ۝ استحوذ عليهم الشيطن فأنسىهم
ذكر الله أولئك حزب الشيطن ألا إن حزب الشيطن هم
الخسرون ۝ إن الذين يحادون الله ورسوله أولئك في
الأذلين ۝ كتب الله لأغلبن أنا ورسلي إن الله قوي
عزيز ۝ لا تجد قوما يؤمنون بالله واليوم الءاخر يوادون
من حاد الله ورسوله ولو كانوا ءاباءهم أو أبناءهم أو
إخونهم أو عشيرتهم أولئك كتب في قلوبهم الإيمن

अल्लाह ही पर ईमान* वालों को भरोसा रखना चाहिए। ○

हे ईमान* लाने वालो! जब तुम से कहा जाये कि मजलिसों में जगह कुशादा कर दो,⁸ तो कुशादा कर दो; अल्लाह तुम्हारे लिए कुशादगी पैदा कर देगा। और जब तुम से कहा जाये कि उठ खड़े हो! तो उठ खड़े हो;⁹ अल्लाह उन लोगों के दर्जे ऊँचे कर देगा जो तुम में से ईमान* ले आये, और जिन्हें ज्ञान प्रदान किया गया है। और अल्लाह उस की ख़बर रखता है जो-कुछ तुम करते हो। ○

हे ईमान* लाने वालो! जब रसूल* से गुप्त वार्ता करो, तो अपनी गुप्त-वार्ता से पहले कुछ सदक़ः* कर दिया करो। यह तुम्हारे लिए उत्तम और अधिक पवित्र है। फिर यदि तुम न कर पाओ तो निस्सन्देह अल्लाह बड़ा ही क्षमाशील और दयावान है¹⁰। ○ — क्या तुम इस से डर गये कि अपनी गुप्त-वार्ता से पहले सदक़े* करो! तो जब तुम ने यह न किया और अल्लाह ने तुम पर मेहरबानी की, तो अब नमाज़* क़ायम रखो और ज़कात* दिया करो और अल्लाह और उस के रसूल* का कहना मानो। और अल्लाह उस की ख़बर रखता है जो-कुछ तुम करते हो¹¹। ○

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हों ने ऐसे लोगों से सम्बन्ध जोड़ा जिन पर अल्लाह का प्रकोप हुआ? ये लोग न तुम्हारे हैं और न उन के, और ये लोग जानते-बूझते झूठी बात पर क़सम खाते हैं¹²। ○ अल्लाह ने इन के लिए सख़्त अज़ाब तैयार कर रखा है। निश्चय ही बुरा है जो-कुछ ये कर रहे हैं। ○

इन्हों ने अपनी क़समों को ढाल बना लिया है फिर अल्लाह के मार्ग से रोका तो इन के लिए अपमान-जनक अज़ाब है। ○

---

८ अर्थात् इस तरह बैठो कि दूसरों के लिए भी जगह निकल आये।

९ नबी सल्ल० की मजलिस में हर एक आप (सल्ल०) के निकट रहना चाहता था जिस के कारण कभी मजलिस में तंगी पेश आती। इस लिए ये आदेश दिये गये ताकि प्रत्येक को आप (सल्ल०) से फ़ायदा उठाने का अवसर मिल सके।

१० इस हुक्म से कि नबी सल्ल० से गुप्त रूप से बातें करनी चाहो तो कुछ सदक़ः (ख़ैरात, दान) दिया करो कई उद्देश्यों की पूर्ति हुई : सदक़ः करने वालों की आत्मा की शुद्धता, सच्चे मुसलमानों और मुनाफ़िक़ों* की पहचान और गुप्त वार्ता करने वालों की कमी। जब यह हुक्म उतरा तो मुनाफ़िक़* कृपणता और कंजूसी के कारण गुप्त-वार्ता से रुक गये; मुसलमानों ने भी समझ लिया कि गुप्त-वार्ताओं की अधिकता उचित नहीं। गुप्त-वार्ता तो परस्पर आवश्यक विचार-विमर्श के लिए होनी चाहिए। जब अभीष्ट उद्देश्यों की पूर्ति हो गई तो यह पाबन्दी उठा ली गई।

११ यह आयत* ऊपर वाली आयत के अवतीर्ण होने के कुछ समय बाद अवतीर्ण हुई है।

१२ यह संकेत यहूदी मुनाफ़िक़ों* की ओर है जो यहूदियों* और काफ़िरों* से नाते-रिश्ते व सम्बन्ध जोड़ते थे और अपनी क़समों को अपने बचाव के लिए आड़ बनाते थे। क़समें खा कर झूठे बहाने पेश करते और लोगों को सत्य-धर्म से रोकते थे (दे० आयत २२)।

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

وَأَيَّدَهُم بِرُوحٍ مِّنْهُ وَيُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ أُولَٰئِكَ
حِزْبُ اللَّهِ أَلَا إِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝

अल्लाह के आगे न तो इन के माल कुछ काम आयेंगे और न इन की औलाद। ये लोग आग वाले हैं; सदा उस में पड़े रहेंगे। ○

जिस दिन अल्लाह इन सब को (दोबारा जीवित कर के) उठायेगा, तो ये उस के आगे उसी तरह क़सम खायेंगे जैसे तुम्हारे आगे क़समें खाते हैं, और ये समझते हैं कि ये किसी बुनियाद पर हैं। सुन लो ये बिलकुल झूठे हैं। ○

इन पर शैतान* छा गया है और उस ने ऐसा कर दिया कि ये अल्लाह की याद को भुला बैठे। ये शैतान* के जत्थे वाले हैं। सुन लो शैतान* का जत्था ही घाटा उठाने वाला है। ○

जो लोग विरोध करते हैं अल्लाह और उस के रसूल* का, वही सब से अधिक अपमानित लोगों में हैं। ○

लिख चुका है अल्लाह कि मैं विजयी हो कर रहूँगा, और मेरे रसूल*। निस्सन्देह अल्लाह अत्यन्त बलवान् और प्रभुत्वशाली है। ○

तुम ऐसा कहीं नहीं पाओगे कि वे लोग जो अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान* रखते हैं ऐसे लोगों से दोस्ती रखते हों जो अल्लाह और उस के रसूल* का विरोध करें, चाहे वे उन के बाप या उन के बेटे या उन के भाई या उन के घराने के लोग ही क्यों न हों[13]।

वही लोग हैं जिन के दिलों में उस ने ईमान* को अंकित कर दिया है[14] और अपनी ओर से एक रूह द्वारा उन्हें योग दिया है,[15] और उन्हें ऐसे बाग़ों में दाखिल करेगा जिन में नहरें बह रही होंगी, जहाँ वे सदैव रहेंगे। अल्लाह उन से राज़ी हुआ, और वे उस से राज़ी हुये। ये अल्लाह के जत्थे वाले हैं। सुन लो अल्लाह का जत्था ही सफलता पाने वाला है। ○

---

[13] जैसा कि हम देखते हैं कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० अपने बेटे के मुक़ाबले में निकलते हैं। मुसअब बिन उमैर रज़ि० ने अपने भाई उबैद बिन उमैर को, और हज़रत उमर रज़ि० ने अपने मामूँ आस बिन हिश्शाम को क़त्ल किया। इसी प्रकार अबू उबैदा, अली, हमज़ः और उबैदः बिन हारिस ने (अल्लाह इन सब से राज़ी हो) अपने रिश्तेदारों को क़त्ल किया। धर्म और सत्यता के मुक़ाबले में नाते रिश्ते की कोई परवाह नहीं थी।

[14] जो मिट नहीं सकता; ईमान* इन के दिलों में बैठ गया है।

[15] कोई ईमान* वाला गरोह जब अपने हृदय की पूर्ण पवित्रता और आत्मा की पूर्ण शुद्धता के साथ अपने रब* का हो जाता है और उन समस्त रास्तों को बन्द कर देता है जिन से उस के अन्दर बुराई को घुसने का मौक़ा मिल सकता हो तो उस पर अल्लाह की कृपा होती है। अल्लाह के फ़रिश्ते* उस पर शान्ति, उत्तम कामना और सहयोग और विजय की शुभ-सूचना लिये हुये उतरते हैं। फिर ईमान* वालों को वह परिणाम और आत्मिक बल और वह आनन्दमय जीवन मिलता है जिस का शब्दों में उल्लेख सम्भव नहीं। हज़रत मरयम के जीवन में पूर्णतः इस की झलक देखी जा सकती है।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

५९--अल-हश्र

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अल-हश्र' सूरः की आयत* २-१७ से लिया गया है जिस में यहूदियों* के एक विशेष क़बीले (Tribe) 'बनू नज़ीर' के देश-निकाला दिये जाने का उल्लेख किया गया है।

इस सूरः* में 'बनू नज़ीर' के देश-निकाला दिये जाने का उल्लेख किया गया है जिस से सरलता पूर्वक सूरः के अवतरित होने का समय निर्धारित होता है। बनू नज़ीर के निर्वासित किये जाने की घटना सन ४ हिज॰ की है।

'बनू नज़ीर' यहूदियों* का एक क़बीला था जो सैकड़ों वर्ष से यसरिब (अर्थात् मदीना) में आबाद था। जब नबी सल्ल॰ मक्का से हिजरत* कर के मदीना पहुँचे तो आप (सल्ल॰) ने यहूदियों के दूसरे क़बीलों की तरह 'बनू नज़ीर' से भी एक समझौता किया था। 'बनू नज़ीर' ने यह वचन दिया था कि न वे आप (सल्ल॰) से युद्ध करेंगे और न आप (सल्ल॰) के विरुद्ध आप (सल्ल॰) के शत्रुओं की सहायता करेंगे। नबी सल्ल॰ 'बनू नज़ीर' की ओर से निश्चिन्त हो गये। और उन से मेल-जोल शुरू कर दिया; परन्तु वे सन्धि के विरुद्ध मक्का के काफ़िरों* से साज़-बाज़ करते रहे। गुप्त रूप से उन्हें मुसलमानों के बारे में सूचनायें देते और नबी सल्ल॰ के विरुद्ध उन्हें लड़ाई पर उभारते रहे। इतने ही पर बस नहीं किया बल्कि उन्हों ने आप (सल्ल॰) को शहीद कर देने तक का यत्न किया; परन्तु अल्लाह ने उन की साज़िश को विफल कर दिया। फिर भी नबी सल्ल॰ ने अचानक उन पर चढ़ाई नहीं की आप (सल्ल॰) ने उन्हें सूचित कर दिया कि वे दस दिन के भीतर मदीना छोड़ कर निकल जायें। परन्तु मुनाफ़िक़ों* के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबई के बहलावे में आ कर उन्हों ने कहला भेजा कि हम अपना अधिक्षेत्र छोड़ कर नहीं जा सकते आप से जो हो सके कर लीजिए। बनू नज़ीर को यह आशा थी कि लड़ाई हुई तो अब्दुल्लाह बिन उबई अपने आदमियों से उन की मदद करेगा। वह दो हज़ार आदमियों से सहायता करने का उन्हें वचन दे भी चुका था। और कहा था कि बनू क़ुरैज़ः भी सहायता करेंगे और नज्द से बनू ग़तफ़ान भी सहायता के लिए आयेंगे। दस दिन की मुद्दत समाप्त होने के बाद आप (सल्ल॰) ने उन्हें चारों ओर से घेरे में ले लिया। इस कठिन अवसर पर उन का कोई भी सहायक न हुआ। उन के दिलों में भय समा गया। वे विवश थे। उन्हों ने इस शर्त पर हथियार डाल दिया कि उन में से हर तीन व्यक्ति एक ऊँट पर जो-कुछ लाद कर ले जा सकेंगे ले जायेंगे, शेष सब-कुछ मदीना ही में छोड़ देंगे। इस प्रकार मदीना के किनारे का वह पूरा भू-भाग जिस में बनू नज़ीर के लोग रहते थे मुसलमानों के हाथ आ गया। उन के बाग़ों और गढ़ियों पर मुसलमानों का क़ब्ज़ा हो गया। इस क़बीले के लोग ख़ैबर, वादिल-क़ुरा और सीरिया में तितर-बितर हो कर रह गये।

यदि नबी सल्ल॰ चाहते तो उन से पूरा-पूरा बदला ले सकते थे परन्तु न केवल

---

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

यह कि आप (सल्ल०) ने उन्हें कुशलता-पूर्वक अपनी जानें ले कर जाने दिया बल्कि आप (सल्ल०) ने उन्हें इस की भी इजाज़त दे दी कि वे अपने साथ अपने माल भी ले जा सकते हैं। वे अपने घरों के कड़ी-तख़्ते तक उखेड़ने लगे ताकि जो चीज़ भी वे अपने साथ ले जा सकते हैं रह न जायें। मुसलमानों ने भी इस काम में उनका हाथ बटाया। मदीना से निकल कर इन्हों ने नबी सल्ल० के उपकार का बदला यह दिया कि सम्पूर्ण अरब में इन्हों ने आप (सल्ल०) के विरुद्ध साज़िश का जाल फैलाया।

इस सूरः* का केन्द्रीय विषय वही है जो सूरः अल-हदीद का है।

पिछली सूरः* में दो जत्थों का उल्लेख किया गया है। जिन में एक अल्लाह का जत्था है और दूसरा शैतान* के जत्थे वाले हैं। प्रस्तुत सूरः* में अल्लाह के जत्थे की विजय और शैतान* के जत्थे की दुर्गति और पराजय का उल्लेख किया गया है।

सूरः* के आरम्भ में बनू नज़ीर के निर्वासन का उल्लेख किया गया है और बताया गया है कि किस प्रकार अल्लाह ने उन्हें उन के करतूतों का मज़ा चखाया। फिर इस के बाद 'फ़ै' के बारे में आदेश दिया गया है और बताया गया है कि ग़नीमत* के माल में और 'फ़ै' के रूप में हाथ आने वाले माल में अन्तर है। 'फ़ै' के रूप में मिलने वाला माल पूरा-का-पूरा राज्य (State) का है जो राज्य और समाज की भलाई में ख़र्च किया जायेगा। फिर विस्तार पूर्वक इस पर प्रकाश डाला गया है कि समाज के किन लोगों को 'फ़ै' के माल से हिस्सा दिया जा सकता है। और इस सिलसिले में एक विशेष बात यह बताई गई है कि सफल और कृतार्थ होने वाले लोग वही हैं जिन के हृदय में कृपणता और लोभ नहीं।

आगे चल कर मुनाफ़िक़ों* (Hypocrites) के बारे में बताया गया है कि किस प्रकार किताब* वाले काफ़िरों* को उन्हों ने वचन दिया है कि हम तुम्हारे सहायक हैं, लड़ाई में हम तुम्हारा साथ देंगे और यदि तुम्हें निकाला गया तो हम भी तुम्हारे साथ निकल चलेंगे। फिर बताया गया है कि ये झूठे हैं कभी भी अपने वादे को पूरा नहीं कर सकते। ऐसा ही हुआ न तो इन्हों ने बनू नज़ीर की सहायता की और न ये उस समय उन के साथ निकल सके जब उन्हें देश-निकाला दिया गया।

सूरः* के अन्तिम भाग में ईमान* वालों को सम्बोधित करते हुये कहा गया है कि उन्हें अल्लाह का डर रखना चाहिए। और प्रत्येक व्यक्ति को आज ही सोच लेना चाहिए कि उस ने कल के लिए क्या भेजा है। इस के बाद एक मिसाल बयान कर के शिक्षा ग्रहण करने पर लोगों को उभारा गया है। मिसाल यह बयान की गई है: यदि यह क़ुरआन किसी पहाड़ पर उतरा होता तो वह भी अल्लाह के भय से टुकड़े-टुकड़े हो जाता परन्तु लोगों की ग़फ़लत का हाल यह है कि वह अल्लाह का कलाम सुनते हैं फिर भी प्रभावित नहीं होते, फिर अल्लाह के अच्छे नामों और गुणों का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि उस के सिवा दूसरा कोई इलाह* (पूज्य) नहीं है।

---

*इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

(६) रहन-सहन के तरीके

४ : ८६	सलाम करो और सलाम का उत्तर अच्छे शब्दो मे दो।
२४ : २७	दूसरो के घर मे इजाज़त ले कर जाओ और सलाम करो।
२४ : ५८	फ़ज्र की नमाज़ से पहले, दोपहर के समय और इशा के बाद घर के नौकर और लड़के-लड़कियाँ भी इजाज़त ले कर आया करें।
२४ : ६१	घर में जाओ तो अपने घर वालो को सलाम कर के जाओ।
२४ : ६२	कोई सामूहिक काम हो रहा हो तो बिना इजाज़त न चले जाओ।
२६ : २६	सभाओं मे बैठ कर गन्दे काम करना अच्छा नही।
३३ : ५३	खानों के बाद खामखाह बैठ कर गपें हाँकने से बचो। इस मे मेज़बान को कष्ट होता है।
४६ : २	अपने प्रमुख से ऊँची आवाज़ मे चिल्ला-चिल्ला कर बातें न करो।
५८ : ११	कहा जाए तो सभा मे खुल कर बैठो और जब उठ खड़े होने को कहा जाए तो उठ खडे हो।

७. राजनीति

(१) मौलिक दृष्टिकोण

६ : ७३	आसमान और ज़मीन अल्लाह ने पैदा किये।
१३ : १६	हर चीज़ का पैदा करने वाला अल्लाह है, वह अकेला है और सब पर छाया हुआ।
४ : १	उस ने तुम सब को एक जीव से पैदा किया।
२ : २६	अल्लाह ने तुम्हारे लिए वह सब-कुछ पैदा किया जो ज़मीन मे है।
३५ : ३	अल्लाह के अलावा कोई नही जो तुम्हे रोज़ी देता हो।
५६ : ५८-७३	वही वीर्य से बच्चा पैदा करता है, ज़मीन से खेती उगाता है, पानी बरसाता है।
२० : ६	आसमानों और ज़मीन मे, उन दोनो के बीच और ज़मीन के भीतर जो कुछ है, अल्लाह का है।
३० : २६	आसमानों और ज़मीन मे सब-कुछ अल्लाह का है और सभी उस के आज्ञापालक हैं।
७ : ५४	सूर्य, चाँद, तारे सब उस के आज्ञापालक हैं। उसी ने पैदा किया, वही मालिक है।
३२ : ५	आसमान से ज़मीन तक पूरी व्यवस्था अल्लाह के हाथ मे है।
२ : १०७	आसमानो और ज़मीन में बादशाही अल्लाह ही की है।
२५ : २	बादशाही में कोई उस का शरीक नही।
२८ : ७०	आदेश देने का अधिकार अल्लाह ही को है।
६ : ५७	निर्णय का अधिकार अल्लाह के अलावा किसी को नहीं।
१८ : २६	वह अपने हुक्म में किसी को शरीक नहीं करता।
३ : १५४	पूर्ण अधिकार अल्लाह ही को है।

सूरः* अल-हश्र

(मदीना में उतरी — आयतें* २४)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ○ هُوَ الَّذِيْٓ اَخْرَجَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِاَوَّلِ الْحَشْرِ مَا ظَنَنْتُمْ اَنْ يَّخْرُجُوْا وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مَّانِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَاَتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ يُخْرِبُوْنَ بُيُوْتَهُمْ بِاَيْدِيْهِمْ وَاَيْدِي الْمُؤْمِنِيْنَ فَاعْتَبِرُوْا يٰٓاُولِي الْاَبْصَارِ ○ وَلَوْلَآ اَنْ كَتَبَ اللّٰهُ
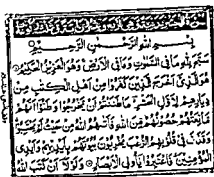
अल्लाह की तसबीह* की हर उस चीज़ ने जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है, और व अपार शक्ति का मालिक और हिकमत* वाला है।○

वही है जिस ने उन लोगों को जो किताब* वालों में से काफ़िर* हुये उन के घरों से पहले ही जमावड़े पर निकाल दिया'। तुम्हें गुमान न था कि वे निकलेंगे, और उन्हें भी यह गुमान था कि उन्हें अल्लाह से उन की गढ़ियाँ बचा लेंगी। फिर अल्लाह ने उन्हें आ लिया जिधर से उन्हें गुमान भी न था, और उन के दिलों में रोब डाल दिया, वे अपने घरों को अपने हाथों और ईमान* वालों के हाथों से उजाड़ने लगे। तो ऐ आँखों वालो इस से शिक्षा ग्रहण करो'।○

और यदि अल्लाह उन के लिए देश-निकाला न लिख चुका होता, तो उन्हें दुनिया ही में अज़ाब दे देता,' और आख़िरत* में उन के लिए आग का अज़ाब है।○ यह इस लिए कि उन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल* का विरोध किया। और जो कोई अल्लाह का विरोध करेगा, तो जान लेना चाहिए कि अल्लाह कड़ी सज़ा देने वाला है।○

खजूर का जो वृक्ष भी तुम ने काटा या उसे उस की जड़ों पर खड़ा रहने दिया, तो यह अल्लाह की अनुज्ञा से था, और इस लिए था कि वह सीमोल्लंघन करने वालों को रुसवा करे'।○ और अल्लाह ने उन से अपने रसूल* को जो-कुछ 'फ़ै'' प्राप्त कराया उस के लिए न तो तुम ने घोड़े दौड़ाये और न ऊँट, परन्तु अल्लाह अपने रसूलों* को जिस पर चाहता है प्रभुत्व प्रदान कर देता है'। और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है।○

अल्लाह अपने रसूल* को बस्ती वालों से जो-कुछ 'फ़ै' प्राप्त कराये, वह अल्लाह का [illegible]

---

१ यह संकेत यहूदियों* के एक विशेष क़बीला 'बनू नज़ीर' की ओर है। (दे० सूरः का परिचय)।

२ दे० सूरः का परिचय।

३ अर्थात् बनू क़ुरैज़ः की तरह मारे जाते। दे० सूरः अल-अहज़ाब का परिचय।

४ जब बनू नज़ीर क़िलाबन्द हो गये तो उस समय मुसलमानों ने अल्लाह के हुक्म से उन के कुछ [illegible] थे। इस पर कुछ लोगों ने एतराज़ किया कि ये वृक्ष क्यों काटे गये जब कि [illegible] नहीं। उन के इसी आक्षेप का यहाँ उत्तर दिया गया है कि ये वृक्ष अल्लाह के हुक्म से काटे गये हैं।

५ 'फ़ै' उस माल को कहते हैं जो विरोधी दल से बिना लड़े प्राप्त हो। बनू नज़ीर का [illegible] लड़ने की नौबत नहीं आई थी। इस अवसर पर मुसलमानों के क़ब्ज़े में जो माल आया उसे 'फ़ै' [illegible]

६ यह उन के जवाब में कहा गया जो कहते थे कि [illegible] ग़नीमत* की तरह [illegible] लोगों में क्यों नहीं बाँटा गया। युद्ध में जो माल सैनिकों के हाथ आता है उसे ग़नीमत* कहते हैं। [illegible] के ४ हिस्से सेना के लिए और एक हिस्सा अल्लाह और रसूल* और रसूल* के नातेदार और [illegible] का होता है। (दे० सूरः अल-अनफ़ाल आयत ४१)

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

عَلَيْهِمُ الْجَلَاءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا ۖ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابُ
النَّارِ ۝ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُّوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۖ وَمَنْ يُشَاقِّ اللَّهَ
فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ مَا قَطَعْتُمْ مِنْ لِينَةٍ أَوْ تَرَكْتُمُوهَا
قَائِمَةً عَلَىٰ أُصُولِهَا فَبِإِذْنِ اللَّهِ وَلِيُخْزِيَ الْفَاسِقِينَ ۝ وَمَا
أَفَاءَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ مِنْهُمْ فَمَا أَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَ
لَا رِكَابٍ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهُ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ عَلَىٰ
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ مَا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ مِنْ أَهْلِ الْقُرَىٰ
فَلِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينِ وَابْنِ
السَّبِيلِ كَيْ لَا يَكُونَ دُولَةً بَيْنَ الْأَغْنِيَاءِ مِنْكُمْ ۚ وَمَا آتَاكُمُ

है और रसूल* का[७] और (रसूल* के) नातेदारों[८] और यतीमों और मुहताजों और मुसाफ़िरों का,[९] ताकि वह (माल) तुम्हारे मालदारों ही के बीच न चक्कर खाता रहे[१०] — और रसूल* तुम्हें जो-कुछ दे, उसे ले लो। और जिस चीज़ से तुम्हें रोक दे, उस से रुक जाओ। और अल्लाह का डर रखो। निस्सन्देह अल्लाह कड़ी सज़ा देने वाला है ○— हिजरत* करने वाले ग़रीबों का है जो अपने घरों से निकाल दिये गये हैं और अपने मालों से, वे अल्लाह का फ़ज़्ल और रज़ामन्दी चाहते हैं और अल्लाह और उस के रसूल* की मदद करते हैं। यही लोग सच्चे हैं। ○

और जो लोग इन से पहले से इस घर (मदीना) में बसे हुये हैं[११] और ईमान* रखते हैं, वे उन से प्रेम करते हैं जो हिजरत* कर के उन के यहाँ आयें; और अपने सीनों (दिलों) में उस से कोई खटक नहीं पाते जो-कुछ उन (हिजरत* कर के आने वालों) को दिया जाये, और (उन्हें) अपने से प्रथम रखते हैं चाहे उन्हें मुहताजी ही क्यों न हो। और जो लोग अपने मन के लोभ से बचे रहे वही सफलता प्राप्त करने वाले हैं[१२]। ○

और जो इन के बाद आये कहते हैं : हमारे रब*! क्षमा कर दे हमें और हमारे भाइयों को जो ईमान* लाने में हम से अग्रसर रहे, और उन लोगों की ओर से जो ईमान* लाये हैं
१० हमारे दिलों में विद्वेष को जगह न दे। हमारे रब*! निस्सन्देह तू करुणामय और दयावान् है।○

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जो मुनाफ़िक़* हैं, वे अपने कुफ़्र* करने वाले भाइयों से जो किताब* वालों में से हैं कहते हैं : यदि तुम्हें निकाला गया, तो हम भी तुम्हारे साथ निकल जायेंगे, और हम तुम्हारे बारे में कभी किसी का कहना नहीं मानेंगे, और यदि तुम से

---

७ अल्लाह और रसूल* के हिस्से से अभिप्रेत राज्य (State) का भाग है। यह हिस्सा सामाजिक आवश्यकताओं और उद्देश्यों के अन्तर्गत व्यय होता है।

८ रसूल* के रिश्तेदारों का ज़कात* में कोई हिस्सा नहीं रखा गया है इस लिए 'फ़ै' और ग़नीमत* के माल में उन का हिस्सा ठहराया गया। इस के अतिरिक्त यह बात भी सामने रहनी चाहिए कि नबी सल्ल० का पूरा समय इस्लाम ही की सेवा में व्यय होता था आप जीविकोपार्जन के लिए कोई और काम नहीं कर सकते थे।

९ इस हुक्म में विधवा स्त्रियाँ, अपाहिज और बीमार जिन का कोई ज़िम्मेदार न हो सभी आ जाते हैं।

१० "वह (माल) तुम्हारे मालदारों ही में चक्कर न लगाता रहे" यह वह मौलिक उद्देश्य है जिसे इस्लाम* ने न केवल 'फ़ै' की तक़्सीम में सामने रखा है बल्कि इस्लाम की सम्पूर्ण आर्थिक व्यवस्था में इसे एक मौलिक नियम की हैसियत प्राप्त है।

११ यह संकेत उन ग़रीब मुसलमानों की ओर है जो मदीना ही के रहने वाले थे।

१२ दे० सूरः अत-तग़ाबुन आयत १६। मनुष्य के दिल से जब तक कृपणता और लोभ निकल न जाये नैतिकता तथा आध्यात्मिकता की दृष्टि से उसे उच्च स्थान प्राप्त नहीं हो सकता। फिर उस का कल्याण कैसे हो सकता है। यही बात इंजील में इन शब्दों में कही गई है : मैं तुम से सच कहता हूँ कि (कंजूस) धनी का स्वर्ग के राज्य (The kingdom of heaven) में प्रवेश करना कठिन है। और फिर तुम से कहता हूँ कि ऊँट का सूई के नाके में से निकल जाना इस से आसान है कि (कृपण) धनी अल्लाह के राज्य में प्रवेश करे दे० मत्ती (Mtt.) १९ : २३-२४।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

الرسول فخذوه وما نهاكم عنه فانتهوا واتقوا الله
إن الله شديد العقاب ۝ للفقراء المهاجرين الذين
أخرجوا من ديارهم وأموالهم يبتغون فضلا من الله و
رضوانا وينصرون الله ورسوله أولئك هم الصادقون ۝
والذين تبوءو الدار والإيمان من قبلهم يحبون من هاجر
إليهم ولا يجدون في صدورهم حاجة مما أوتوا ويؤثرون
على أنفسهم ولو كان بهم خصاصة ومن يوق شح نفسه
فأولئك هم المفلحون ۝ والذين جاءو من بعدهم يقولون
ربنا اغفر لنا ولإخواننا الذين سبقونا بالإيمان ولا تجعل
في قلوبنا غلا للذين آمنوا ربنا إنك رءوف رحيم ۝ ألم تر
إلى الذين نافقوا يقولون لإخوانهم الذين كفروا من
أهل الكتاب لئن أخرجتم لنخرجن معكم ولا نطيع فيكم
أحدا أبدا وإن قوتلتم لننصرنكم والله يشهد إنهم
لكاذبون ۝ لئن أخرجوا لا يخرجون معهم ولئن قوتلوا
لا ينصرونهم ولئن نصروهم ليولن الأدبار ثم لا ينصرون ۝
لأنتم أشد رهبة في صدورهم من الله ذلك بأنهم قوم
لا يفقهون ۝ لا يقاتلونكم جميعا إلا في قرى محصنة أو من

युद्ध किया गया तो अवश्य हम तुम्हारी सहायता करेंगे। और अल्लाह गवाही देता है कि ये झूठे हैं।○

है यही कि यदि उन्हें निकाला गया तो ये उन के साथ नहीं निकलेंगे, और यदि उन से युद्ध किया गया तो ये उन की सहायता नहीं करेंगे, और यदि उन की सहायता करें भी तो पीठ फेर कर भागेंगे, फिर उन्हें कोई सहायता न मिलेगी।

अल्लाह से बढ़ कर तुम्हारा भय इन के सीनों में बैठा हुआ है। यह इस लिए कि ये ऐसे लोग हैं जो समझते नहीं।○ ये सब मिल कर भी तुम से नहीं लड़ेंगे, सुरक्षित बस्तियों में या दीवारों की आड़ में हों तो और बात है। इन की लड़ाई आपस में बड़ी सख़्त है। तुम समझते हो कि इन में एका है हालांकि इन के दिल आपस में फटे हुये हैं। यह इस लिए कि ये ऐसे लोग हैं जो बुद्धि नहीं रखते।○

जैसे उन लोगों का हाल हुआ जिन्हों ने इन से कुछ ही पहले अपनी हरकत के वबाल का मज़ा चखा,[13] और उन के लिए दुःख-भरा अज़ाब है।○

शैतान* का सा हाल कि उस ने मनुष्य से कहा[14] कि कुफ़्र* कर, फिर जब उस ने कुफ़्र* किया तो कहा: मैं तुझ से अलग हूँ। मैं अल्लाह से डरता हूँ, जो सारे संसार का रब* है[15]।○ इन दोनों का[16] परिणाम यही हुआ कि दोनों आग में गये, जहाँ वे दोनों सदा रहेंगे। और यही बदला है ज़ुल्म करने वालों का।○

हे ईमान* लाने वालो! अल्लाह का डर रखो। और कोई भी व्यक्ति हो वह देख ले कि उस ने कल के लिए[17] क्या भेजा है। और अल्लाह का डर रखो! निस्सन्देह अल्लाह जो-कुछ तुम करते हो उस की ख़बर रखता है।○

और उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्हों ने अल्लाह को भुला दिया, तो उस ने ऐसा किया कि उन्हों ने अपने-आप को भुला दिया। यही लोग सीमोल्लंघन करने वाले हैं।○

बराबर नहीं आग वाले और जन्नत* वाले। जन्नत* वाले ही सफल होने वाले हैं।○

---

१३ यह संकेत या तो 'बद्र' की लड़ाई में मारे जाने वाले मुशरिकों* की ओर है (दे० सूरः अल-अनफ़ाल का परिचय); या बनू क़ैनुक़ाअ की ओर है। 'बनू क़ैनुक़ाअ' यहूदियों* का ही एक क़बीला था। नबी सल्ल० ने इस क़बीले को उस के विद्रोह करने के कारण देश-निकाला दिया था।

१४ 'कहना' से अभिप्रेत हुक्म देना, पुकारना, प्रेरित करना, तैयार करना, किसी काम की ओर ले जाना आदि है।

१५ दे० सूरः अल-अनफ़ाल आयत ४८।

१६ शैतान* और उस का अनुसरण करने वाले मनुष्य का।

१७ अर्थात् आगामी जीवन के लिए; आख़िरत* के लिए।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

وَرَآءِ جُدُرٍ ۭ بَأْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيدٌ ۭ تَحْسَبُهُمْ جَمِيعًا وَّقُلُوبُهُمْ شَتّٰى ۭ ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُونَ ۝ كَمَثَلِ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيبًا ذَاقُوا وَبَالَ أَمْرِهِمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ كَمَثَلِ الشَّيْطٰنِ إِذْ قَالَ لِلْإِنْسَانِ اكْفُرْ ۚ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ إِنِّي بَرِيٓءٌ مِّنْكَ إِنِّيٓ أَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِينَ ۝ فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَآ أَنَّهُمَا فِي النَّارِ خٰلِدَيْنِ فِيهَا ۚ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِينَ ۝ يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۚ إِنَّ اللّٰهَ خَبِيرٌ ۢ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَسُوا اللّٰهَ فَأَنْسٰىهُمْ أَنْفُسَهُمْ ۚ أُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُونَ ۝ لَا يَسْتَوِيٓ أَصْحٰبُ النَّارِ وَأَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ أَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَآئِزُونَ ۝ لَوْ أَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ لَّرَأَيْتَهُ خٰشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ۚ وَتِلْكَ الْأَمْثٰلُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ۝ هُوَ اللّٰهُ الَّذِي لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهٰدَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيمُ ۝ هُوَ اللّٰهُ الَّذِي لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ الْمَلِكُ الْقُدُّوسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ۚ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ هُوَ اللّٰهُ الْخٰلِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

यदि हम इस क़ुरआन* को किसी पहाड़ पर उतारते, तो तुम उस (पहाड़) को देखते कि सहमा हुआ है और फटा जाता है अल्लाह के भय से[18]। और हम ये मिसालें लोगों से बयान करते हैं ताकि वे सोच-विचार करें। ○

वह अल्लाह है, वह जिस के सिवा कोई इलाह* नहीं, परोक्ष और प्रत्यक्ष का ज्ञाता है। वह अत्यन्त कृपाशील (रहमान*) और दयावान् है। ○ वह अल्लाह है, वह जिस के सिवा कोई इलाह* (पूज्य) नहीं, सर्व-शासक है, अत्यन्त गुणवान, शान्ति-स्वरूप,[19] शरणदाता, संरक्षक,[20] प्रभुत्वशाली, प्रभावशाली, अत्यन्त महान्। अल्लाह की महिमा के प्रतिकूल है वह शिर्क* जो ये लोग करते हैं। ○

वह अल्लाह है, परिरूपक, अस्तित्व प्रदान करने वाला, रूपकार, उसी के लिए अच्छे नाम हैं। जो चीज़ भी आसमानों और ज़मीन में है उस की तसबीह* करती है, और वह प्रभुत्वशाली और हिकमत* वाला है। ○

---

१८ दे० सूरः अल-अहज़ाब आयत ७२।

१९ क़ुरआन में 'अस-सलाम' (السلام) शब्द प्रयुक्त हुआ है जिस के अर्थ में अत्यन्त व्यापकता पाई जाती है।

२० मूल ग्रन्थ में 'अल-मुहैमिन' (المهيمن) शब्द प्रयुक्त हुआ है जिस के अर्थ में अत्यन्त व्यापकता पाई जाती है।

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

६०--अल-मुम्तहनः

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अल-मुम्तहनः' सूरः की आयत* १० से लिया गया है।

सूरः* की वार्ताओं से मालूम होता है कि यह सूरः 'हुदैबियः' की सन्धि के पश्चात् और मक्का की विजय के निकट अर्थात् सन् ८ हिज० में अवतीर्ण हुई है। सूरः की प्रारम्भिक आयतों* का सम्पर्क एक विशेष घटना से है, उस घटना से भी सूरः के अवतीर्ण होने के समय का निर्धारण होता है।

जब मक्का के 'क़ुरैश' ने उस सन्धि की अवहेलना की जो इतिहास में हुदैबियः की सन्धि के नाम से प्रसिद्ध है, तो नबी सल्ल० ने मक्का पर क़ब्ज़ा करने के लिए फ़ौजी तैयारी शुरू कर दी। आप (सल्ल०) चाहते थे कि इस की सूचना मक्का वालों को न मिले ताकि रक्त-पात की नौबत न आये और मक्का पर विजय प्राप्त हो जाये। हज़रत हातिब बिन अबी बलतअः रज़ि० उन लोगों में से थे जो हिजरत* कर के मदीना पहुँचे थे। उन के बाल-बच्चे मक्का ही में थे। उन्हें डर हुआ कि लड़ाई छिड़ जाने के बाद मक्के के काफ़िर* लोग उन के बच्चों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करेंगे। उन्हों ने पत्र लिख कर 'क़ुरैश' को सूचित करना चाहा कि नबी सल्ल० मक्का पर हमला करने का निश्चय कर चुके हैं। हज़रत हातिब रज़ि० ने सोचा कि इस तरह मक्का के लोग उन के आभारी हो जायेंगे और उन के बाल-बच्चों के साथ बुरा व्यवहार न करेंगे। हज़रत हातिब रज़ि० ने पत्र एक स्त्री के हाथ भेज दिया। नबी सल्ल० को अल्लाह ने वह्य* के द्वारा इस से सूचित कर दिया। नबी सल्ल० ने हज़रत अली रज़ि० और कुछ दूसरे लोगों को हुक्म दिया कि जाओ अमुक स्थान पर वह स्त्री मिलेगी उस से पत्र ले लो। ये लोग गये तो वास्तव में उन्हें वहाँ वह स्त्री मिली। परन्तु पत्र के बारे में उस ने कहा कि मैं कुछ नहीं जानती, मेरे पास कोई पत्र नहीं है। आख़िर डाँटने-धमकाने पर उस ने वह पत्र हवाले कर दिया। वह पत्र नबी सल्ल० की सेवा में लाया गया। उस के पढ़ने से मालूम हुआ कि वह पत्र हज़रत हातिब रज़ि० ने क़ुरैश के नाम लिखा है और मक्का के काफ़िरों* को इस बात की सूचना दी है कि नबी सल्ल० मक्का पर चढ़ाई करने का इरादा रखते हैं।

नबी सल्ल० ने हज़रत हातिब रज़ि० से पूछा तो उन्हों ने कहा कि न तो मैं इस्लाम* से फिरा हूँ और न मैं ने कुफ़्र* ग्रहण किया है। मैं ने केवल इस भेद से यह पत्र लिखा था कि मक्का वाले मेरे इस एहसान के कारण मेरे बाल-बच्चों पर हाथ न उठायें। हज़रत उमर रज़ि० ने क्रोध में आ कर कहा कि हे अल्लाह के रसूल*! मुझे आज्ञा दीजिए मैं इस की गरदन उड़ा दूँ। परन्तु नबी सल्ल० ने हज़रत हातिब रज़ि० के उज़्र को क़ुबूल कर के उन्हें क्षमा कर दिया।

हज़रत हातिब रज़ि० समझते थे कि उन के पत्र भेज देने से इस्लाम* को कोई हानि नहीं पहुँच सकती; अल्लाह ने अपने रसूल* से इस्लाम* की विजय का जो वादा किया है वह अवश्य पूरा हो कर रहेगा। उन्हों ने अपने उस पत्र में भी जो उन्हों ने 'क़ुरैश' को भेजा था लिख दिया था कि अल्लाह की क़सम यदि अल्लाह

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

के रसूल* सल्ल० अकेले भी तुम पर चढ़ाई करें तो अल्लाह उन की सहायता करेगा और उन से जो वादे किये हैं पूरे कर के छोड़ेगा।

हज़रत हातिब रज़ि० के मन में इस्लाम के प्रति कोई खोट और कपट नहीं था फिर भी यह उन से बड़ी भूल हुई थी कि उन्हों ने इस्लाम-विरोधियों के नाम इस प्रकार का पत्र लिखा। सूरः अल-मुम्तहनः का बड़ा हिस्सा इसी सिलसिले में उतरा है।

इस सूरः* का केन्द्रीय विषय अथवा मध्य-बिन्दु वही है जो सूरः अल-हदीद का है।

सूरः* के आरम्भ में मुसलमानों को इस बात से वर्जित किया गया है कि वे उन लोगों से सम्बन्ध जोड़ने लग जायें जिन की दुश्मनी और द्वेष कोई ढकी-छिपी चीज़ नहीं रही, जिन्हों ने अल्लाह के रसूल* और उन के साथियों को केवल इस लिए घर-बार छोड़ने पर विवश किया कि वे अल्लाह पर ईमान* लाये थे। मुसलमानों को सचेत किया गया कि इस्लाम* के विरोधी तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार नहीं कर सकते वे तुम्हें कष्ट ही पहुँचायेंगे; वे तो यही इच्छा करेंगे कि उन की तरह तुम भी काफ़िर* बन जाओ।

फिर हज़रत इब्राहीम अ० और उन के साथियों के जीवन को आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया गया है कि किस तरह उन्हों ने अपनी जाति वालों से साफ़-साफ़ कह दिया था कि हम न तुम्हारे देवी-देवताओं को मानते हैं और न तुम्हें मानते हैं,हमारे-तुम्हारे बीच जो शत्रुता और दूरी पैदा हो गई है वह तो उसी समय दूर हो सकती है जब कि तुम एक अल्लाह के मानने वाले बन जाओ।

फिर मुसलमानों को बताया गया है कि अल्लाह तुम्हें केवल उन लोगों से सम्बन्ध रखने से रोकता है जिन्हों ने तुम पर ज़्यादती और ज़ुल्म किया है; जिन्हों ने तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला और दीन* के बारे में तुम से युद्ध किया है, रहे वे लोग जिन्हों ने तुम पर ज़ुल्म नहीं किया है उन पर यदि तुम एहसान करो और इन्साफ़ से पेश आओ तो इस में तुम पर कोई दोष नहीं। तुम इन्साफ़ सब के साथ करो; शत्रुओं के साथ भी इन्साफ़ करने से तुम्हें नहीं रोका गया है; परन्तु अल्लाह के दुश्मनों के साथ तुम्हारा हार्दिक लगाव और प्रेम नहीं हो सकता।

इस के बाद उन स्त्रियों के बारे में विशेष आदेश दिये गये हैं जो ईमान* ला कर काफ़िरों* के यहाँ से मुसलमानों की ओर हिजरत* कर आयें। इस के साथ मुसलमानों को उन स्त्रियों के बारे में भी आदेश दिये गये हैं जो काफ़िर* हों और ईमान* न लाई हों।

सूरः* के अन्त में नबी सल्ल० को सम्बोधित किया गया है कि जब ईमान* वाली स्त्रियाँ बैअत* करने के लिए आयें तो उन से इन बातों पर बैअत* कर ली जाये कि वे न तो शिर्क* करेंगी और न चोरी करेंगी, न ज़िना (व्यभिचार) करेंगी और न अपनी औलाद को क़त्ल करेंगी न अपवाद गढ़ेंगी और न भले कार्यों में नबी सल्ल० के आदेशों की अवहेलना करेंगी।

सूरः* को समाप्त करते हुए मुसलमानों से फिर वही बात कही गई है जो सूरः के आरम्भ में कही गई है कि वे उन लोगों को अपना न बनायें जिन पर अल्लाह का प्रकोप हो चुका है; और जो आख़िरत* की ओर से बिलकुल निराश हैं।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अल-मुम्तहनः

(मदीना में उतरी — आयतें* १३)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

بسم الله الرحمن الرحيم

يا أيها الذين آمنوا لا تتخذوا عدوي وعدوكم أولياء تلقون
إليهم بالمودة وقد كفروا بما جاءكم من الحق يخرجون
الرسول وإياكم أن تؤمنوا بالله ربكم إن كنتم خرجتم
جهادا في سبيلي وابتغاء مرضاتي تسرون إليهم بالمودة
وأنا أعلم بما أخفيتم وما أعلنتم ومن يفعله منكم
فقد ضل سواء السبيل ۝ إن يثقفوكم يكونوا لكم أعداء و
يبسطوا إليكم أيديهم وألسنتهم بالسوء وودوا لو تكفرون ۝
لن تنفعكم أرحامكم ولا أولادكم يوم القيامة يفصل
بينكم والله بما تعملون بصير ۝ قد كانت لكم أسوة
حسنة في إبراهيم والذين معه إذ قالوا لقومهم إنا برآء
منكم ومما تعبدون من دون الله كفرنا بكم وبدا بيننا

हे ईमान* लाने वालो! तुम मेरे दुश्मनों औ
और अपने दुश्मनों को अपना न बनाओ — तु
उन की ओर दोस्ती का हाथ बढ़ाओ और वे है कि
उस सत्य का जो तुम्हारे पास आया है इन्कार क
चुके हैं, रसूल* को और तुम्हें भी निकालते हैं इस
पर कि तुम अपने रब* अल्लाह पर ईमान* लाते
हो ? — यदि तुम मेरी राह में जिहाद* के लि
और मेरी प्रसन्नता की चाह में निकले हो। तुम
चुपके-चुपके उन से दोस्ती करते हो,[1] और मैं भली
भाँति जानता हूँ जो-कुछ तुम ने छुपाया और जो-कुछ
ज़ाहिर किया और जो-कोई तुम में से ऐसा करेगा, वो
निश्चय ही वह सीधे मार्ग से भटक गया[2]। ○

यदि वे तुम्हें पा जायें, तो तुम्हारे दुश्मन होंगे,
और तकलीफ़ देने के लिए अपने हाथ और अपनी ज़बान चलायेंगे, और वे चाहते हैं कि तुम
भी कुफ़्र* करने लगो। ○ तुम्हारे नाते-रिश्ते क़ियामत* के दिन काम न आयेंगे और न तुम्हारी
औलाद। वह तुम्हारे बीच जुदाई डाल देगा। और अल्लाह देखता है जो-कुछ तुम करते हो। ○

तुम्हारे लिए इबराहीम और उन लोगों में जो उस के साथ थे एक उत्तम आदर्श मौजूद
है, जब कि उन्हों ने अपनी जाति वालों से कहा : हम तुम से और अल्लाह के सिवा जिसे भी
तुम पूजते हो उस से अलग हैं। हम तुम्हें नहीं मानते। और हमारे और तुम्हारे बीच सदा के
लिए शत्रुता और विद्वेष उभर आया है जब तक कि तुम अकेले अल्लाह पर ईमान* न लाओ —
बस यह है कि इबराहीम ने अपने बाप से इतनी बात कह दी थी कि मैं तुम्हारे लिए क्षमा की
प्रार्थना अवश्य कर दूँगा,[3] और अल्लाह के आगे तुम्हारे लिए कुछ भी करना मेरे बस में नहीं
है— हमारे रब* ! हम ने तुझी पर भरोसा किया, और तेरी ही ओर रुजू हुये, और तेरी
ही ओर पहुँचना है। ○

हमारे रब* ! हमें कुफ़्र* करने वालों के लिए आज़माइश न बना, और हमारे रब* !
हमें क्षमा कर दे, निस्सन्देह तू ही प्रभुत्वशाली और हिकमत* वाला है। ○

निश्चय ही तुम्हारे लिए उन में अच्छा आदर्श मौजूद है— हर उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह
और अन्तिम दिन की आशा रखता हो। और जो कोई मुँह मोड़े, तो समझ रखना चाहिए कि

---

१ दे० सूरः आले-इमरान आयत १८-१९।

२ इस सूरः की आरम्भिक आयतों* का सम्बन्ध एक विशेष घटना से है (दे० सूरः का परिचय)

३ परन्तु जब यह बात उन पर खुल गई कि वह अल्लाह का दुश्मन है तो वे अपने बाप से विरक्त हो गये
(दे० सूरः मरयम आयत ४७; अत-तौबः आयत ११४)।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

وَبَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَاءُ أَبَدًا حَتَّىٰ تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَحْدَهُ
إِلَّا قَوْلَ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ لَأَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَا أَمْلِكُ لَكَ مِنَ
اللَّهِ مِن شَيْءٍ ۖ رَّبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَإِلَيْكَ أَنَبْنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ۝
رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِينَ كَفَرُوا وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا ۖ إِنَّكَ
أَنتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيهِمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ
لِّمَن كَانَ يَرْجُو اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ ۚ وَمَن يَتَوَلَّ فَإِنَّ اللَّهَ
هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۝ عَسَى اللَّهُ أَن يَجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِينَ
عَادَيْتُم مِّنْهُم مَّوَدَّةً ۚ وَاللَّهُ قَدِيرٌ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝
لَّا يَنْهَاكُمُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ لَمْ يُقَاتِلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَلَمْ يُخْرِجُوكُم
مِّن دِيَارِكُمْ أَن تَبَرُّوهُمْ وَتُقْسِطُوا إِلَيْهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ
الْمُقْسِطِينَ ۝ إِنَّمَا يَنْهَاكُمُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ قَاتَلُوكُمْ فِي الدِّينِ
وَأَخْرَجُوكُم مِّن دِيَارِكُمْ وَظَاهَرُوا عَلَىٰ إِخْرَاجِكُمْ أَن تَوَلَّوْهُمْ ۚ
وَمَن يَتَوَلَّهُمْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا
جَاءَكُمُ الْمُؤْمِنَاتُ مُهَاجِرَاتٍ فَامْتَحِنُوهُنَّ ۖ اللَّهُ أَعْلَمُ بِإِيمَانِهِنَّ ۖ
فَإِنْ عَلِمْتُمُوهُنَّ مُؤْمِنَاتٍ فَلَا تَرْجِعُوهُنَّ إِلَى الْكُفَّارِ ۖ
لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّونَ لَهُنَّ ۖ وَآتُوهُم مَّا أَنفَقُوا ۚ
وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ أَن تَنكِحُوهُنَّ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ ۚ

अल्लाह अपेक्षा रहित (परम-स्वतन्त्र) और प्रशंसा का अधिकारी है। ○

हो सकता है कि अल्लाह तुम में और उन लोगों में जिन से तुम्हारी दुश्मनी है दोस्ती कर दे[4] और अल्लाह क़ुदरत रखने वाला (सर्व-शक्तिमान) है। और अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दयावान है। ○

जिन लोगों ने तुम से दीन* के बारे में युद्ध नहीं किया और न तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला, अल्लाह तुम्हें उन पर एहसान करने और उन के साथ इन्साफ़ करने से नहीं रोकता[5] अल्लाह तो इन्साफ़ करने वालों से प्रेम रखता है। ○

अल्लाह तुम्हें बस उन लोगों से रोकता है जिन्हों ने तुम से दीन* के बारे में युद्ध किया और तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला और तुम्हारे निकाले जाने में मदद की, इस से कि तुम उन्हें अपना बनाओ। और जो कोई उन्हें अपना बनाये तो ऐसे ही लोग ज़ालिम हैं। ○

हे ईमान* लाने वालो! जब तुम्हारे पास ईमान* वाली स्त्रियाँ हिजरत* कर के आयें, तो तुम उन की परीक्षा कर लो[6] — अल्लाह उन के ईमान* को भली-भाँति जानता है — फिर, यदि वे तुम्हें ईमान* वाली मालूम हों, तो उन्हें काफ़िरों* की ओर वापस न करो। न तो वे उन (काफ़िरों*) के लिए हलाल* हैं, और न वे उन (स्त्रियों) के लिए हलाल हैं। और जो-कुछ उन्हों ने (उन स्त्रियों पर) ख़र्च किया हो तुम उन्हें दे दो[7]। और इस में तुम्हारे लिए कोई दोष नहीं कि तुम उन से विवाह कर लो जब कि तुम उन (स्त्रियों) का हक़ (महर*) अदा कर दो। और काफ़िर* स्त्रियों के सतीत्व को अपने अधिकार में न रखो; जो-कुछ तुम ने ख़र्च किया हो माँग लो;[8] और जो-कुछ उन्हों ने ख़र्च किया हो वे भी माँग लें। यह अल्लाह का फ़ैसला है। वह तुम्हारे बीच फ़ैसला करता है। और अल्लाह जानने वाला और हिकमत* वाला है। ○

४ ऐसा ही हुआ मक्का की विजय के पश्चात् लग-भग सभी लोग मुसलमान हो गये और जो लोग एक-दूसरे के दुश्मन हो गये थे परस्पर भाई-भाई बन गये।

५ दे० सूरः अल-माइदः आयत २।

६ अर्थात् इस की जाँच कर लो कि वे वास्तव में ईमान ला चुकी हैं या नहीं। इस से मालूम हुआ कि बाहर से आने वाले व्यक्ति को जो इस बात का दावा कर रहा है कि वह मुस्लिम* है और हिजरत* कर के आया है 'दारुल-इस्लाम' में (अर्थात् इस्लामी राज्य के क्षेत्र में) क़बूल करने से पूर्व उस के मुस्लिम* और मुहाजिर* होने का अच्छी तरह इतमीनान कर लेना चाहिए ताकि हिजरत* के बहाने कुछ दूसरा इरादा रखने वाले लोग न घुस आवें। किसी के वास्तविक ईमान* का ज्ञान तो केवल अल्लाह ही को हो सकता है परन्तु जहाँ तक जाँच-पड़ताल सम्भव है कर लेनी आवश्यक है।*

७ अर्थात् हिजरत कर के आने वाली मुस्लिम स्त्रियों के काफ़िर* पतियों ने उन पर जो ख़र्च किया हो वह तुम उन्हें वापस कर दो। यह रक़म वह वापस करे जो हिजरत* कर के आने वाली स्त्रियों से विवाह करे नहीं तो राज्य-कोष से यह रक़म अदा कर दी जाये। विवाह करने वाला व्यक्ति स्त्री के पहले पति को रक़म वापस करे और नये विवाह का महर* भी अदा करे।* (८ अगले पृष्ठ पर)

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अस-सफ़्फ़

(मदीना में उतरी — आयतें* १४)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

سُوْرَةُ الصَّفِّ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۝ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ
اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ
فِيْ سَبِيْلِهٖ صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ ۝ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى
لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُوْنَنِيْ وَقَدْ تَّعْلَمُوْنَ اَنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ
فَلَمَّا زَاغُوْٓا اَزَاغَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝
وَاِذْ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ
اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَمُبَشِّرًا بِرَسُوْلٍ
يَّاْتِيْ مِنْ بَعْدِي اسْمُهٗٓ اَحْمَدُ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا
هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ
وَهُوَ يُدْعٰٓى اِلَى الْاِسْلَامِ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝

अल्लाह की तसबीह* की हर उस चीज़ ने जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है, और वह है प्रभुत्वशाली और हिकमत* वाला। ○

हे ईमान* लाने वालो! तुम ऐसी बात क्यों कहते हो जो करते नहीं? ○

अल्लाह को यह बात बहुत ही नागवार है कि तुम ऐसी बात कहो जो करो नहीं। ○

निस्सन्देह अल्लाह उन लोगों से प्रेम रखता है जो उस के मार्ग में पंक्ति-बद्ध हो कर लड़ते हैं, मानो वे सीसा पिलाई हुई (मज़बूत) दीवार हैं। ○

याद करो जब कि मूसा ने अपनी जाति वालों से कहा : हे मेरी जाति वालो! मुझे क्यों सताते हो, जब कि तुम जानते हो कि मुझे अल्लाह ने अपना रसूल* बना कर तुम्हारे पास भेजा है? तो जब वे टेढ़े हुये तो अल्लाह ने उन के दिलों को टेढ़ा कर दिया[1]। और अल्लाह सीमोल्लंघन करने वालों को राह नहीं दिखाता। ○

और याद करो जब कि मरयम के बेटे ईसा ने कहा : हे बनी इसराईल*! मुझे अल्लाह ने अपना रसूल* बना कर तुम्हारे पास भेजा है, यह जो मेरे आगे तौरात* है उस की तसदीक़ करता हूँ, और एक रसूल* की शुभ-सूचना देता हूँ जो मेरे बाद आयेगा, नाम उस का अहमद है[2]। फिर जब वह (रसूल*) उन के पास खुली दलीलों के साथ आया, तो बोले : यह तो खुला जादू है। ○

और उस व्यक्ति से बढ़ कर ज़ालिम कौन हो सकता है जो अल्लाह पर झूठ घड़े जब कि उसे इस्लाम* की ओर बुलाया जा रहा है[3]? और अल्लाह ज़ालिमों को राह नहीं दिखाता। ○

चाहते हैं कि अल्लाह के प्रकाश को अपने मुँह (की फूँकों) से बुझा दें, और अल्लाह अपने प्रकाश को पूरा कर के रहेगा चाहे काफ़िरों* को बुरा ही क्यों न लगे। ○

वही है जिस ने अपने रसूल* को हिदायत* और सच्चे दीन* (सत्य-धर्म) के साथ भेजा, ताकि वह उसे पूरे-के-पूरे दीन* पर प्रभुत्व प्रदान करे चाहे मुशरिकों* को बुरा ही क्यों न लगे[4]। ○

१ यह उन की टेढ़ का स्वाभाविक परिणाम था। हज़रत मुहम्मद सल्ल० के मामले में भी उन्हों ने कुटिलता ही की नीति अपनाई तो इस का परिणाम भी यही हुआ कि उन के दिल वक्र हो गये।

२ दे० इंजील 'यूहन्ना' (John) १४:१६, १६:७। हज़रत मुहम्मद सल्ल० का एक नाम अहमद भी है।

३ यह संकेत काफ़िरों* के बातों और बाधाओं की ओर है जो लोगों को अल्लाह के रसूल* सल्ल० और आप (सल्ल०) के पास आने से रोकते थे।

४ दे० सूरः अत-तौबा फ़ुट नोट १३; सूरः अल-फ़त्ह फ़ुट नोट २८।

* इन का अर्थ आरम्भ में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

يُرِيدُونَ لِيُطْفِـُٔوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَاللَّهُ مُتِمُّ نُورِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ۝ هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ تِجَارَةٍ تُنجِيكُم مِّنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ۝ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَمَسَاكِنَ طَيِّبَةً فِي جَنَّاتِ عَدْنٍ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ وَأُخْرَىٰ تُحِبُّونَهَا نَصْرٌ مِّنَ اللَّهِ وَفَتْحٌ قَرِيبٌ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا أَنصَارَ اللَّهِ كَمَا قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيِّينَ مَنْ أَنصَارِي إِلَى اللَّهِ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنصَارُ اللَّهِ فَآمَنَت طَّائِفَةٌ مِّن بَنِي إِسْرَائِيلَ وَكَفَرَت طَّائِفَةٌ فَأَيَّدْنَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَىٰ عَدُوِّهِمْ فَأَصْبَحُوا ظَاهِرِينَ ۝

हे ईमान* लाने वालो ! क्या मैं तुम्हें एक ऐसा व्यापार बताऊँ जो तुम को एक दुःख भरे अज़ाब से बचा लें[५] ? C

ईमान* रखो अल्लाह और उस के रसूल* पर, और जिहाद* करो अल्लाह की राह में अपने मालों और अपनी जानों से। यह तुम्हारे लिए उत्तम है, यदि तुम ज्ञान रखते हो। O

वह तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा और तुम्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी और अच्छे-अच्छे घरों में जो सदा रहने के बाग़ों में होंगे। यह है बड़ी सफलता। O

एक दूसरी चीज़ भी जिस की तुम चाहत रखते हो : सहायता अल्लाह की ओर से और विजय जो दूर नहीं। और (हे नबी* !) ईमान* वालों को शुभ-सूचना दे दो[६]। O

हे ईमान* लाने वालो ! अल्लाह के सहायक बनो,[७] जैसा कि मरयम के बेटे ईसा ने 'हवारियों' (अपने साथियों) से कहा : कौन हैं अल्लाह की राह में मेरे सहायक ? 'हवारियों' ने कहा : हम हैं अल्लाह के सहायक।

फिर बनी इसराईल* में से एक गरोह ईमान* ले आया, और एक गरोह ने कुफ़्र* किया। तो हम ने उन लोगों को जो ईमान* लाये थे उन के दुश्मनों के मुक़ाबले में मदद दी फिर वे छा गये। O

---

५ तुलनात्मक अध्ययन के लिए दे० सूरः अस्-सफ़्फ़ आयत ६-११।
६ इस आयत से सूरः के अवतरित होने के समय का पता चलता है।
७ अर्थात् अल्लाह के दीन* की सेवा में हाथ बटाओ। अल्लाह के संदेश को फैलाओ। लोगों को इस्लाम* की ओर बुलाओ। और अल्लाह की राह में जान-तोड़ कोशिश करो। उस की राह में अपने माल लगाओ।
*इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अल-जुमुअः

(मदीना में उतरी — आयतें* ११)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

बِسم الله الرحمن الرحيم

يسبح لله ما في السموت وما في الارض الملك القدوس العزيز
الحكيم ○ هو الذي بعث في الاميين رسولا منهم يتلوا عليهم
ايته ويزكيهم ويعلمهم الكتب والحكمة وان كانوا من قبل
لفي ضلل مبين ○ واخرين منهم لما يلحقوا بهم وهو العزيز
الحكيم ○ ذلك فضل الله يؤتيه من يشاء والله ذو الفضل
العظيم ○ مثل الذين حملوا التورىة ثم لم يحملوها كمثل
الحمار يحمل اسفارا بئس مثل القوم الذين كذبوا بايت الله
والله لا يهدي القوم الظلمين ○ قل يايها الذين هادوا ان
زعمتم انكم اولياء لله من دون الناس فتمنوا الموت ان
كنتم صدقين ○ ولا يتمنونه ابدا بما قدمت ايديهم والله
عليم بالظلمين ○ قل ان الموت الذي تفرون منه فانه
ملقيكم ثم تردون الى علم الغيب والشهادة فينبئكم بما

जो भी आसमानों में है और जो भी ज़मीन में है तसबीह* करता है अल्लाह की, जो सर्व-शासक, अत्यन्त गुणवान्, प्रभुत्वशाली, और हिकमत* वाला है। ○

वही है जिस ने उम्मी* लोगों के बीच उन ही में से एक रसूल* उठाया, जो उन को उस की आयतें* सुनाता और उन्हें निखारता है, और उन्हें किताब* और हिकमत* की शिक्षा देता है, और यह पहले तो खुली गुमराही में थे, ○

और दूसरों को भी जो उन ही में के हैं अभी उन से मिले नहीं हैं¹। और वह प्रभुत्वशाली और हिकमत* वाला है। ○

यह अल्लाह का फ़ज़्ल है; वह इसे जिस को चाहता है प्रदान करता है। और अल्लाह बड़ा फ़ज़्ल करने वाला है। ○

उन लोगों की मिसाल जिन पर तौरात* का बोझ डाला गया² फिर उन्हों ने उस का बोझ नहीं उठाया³ ऐसी ही है जैसे कोई गदहा किताबें लादे हुये हो। बड़ी बुरी मिसाल है उन लोगों की जिन्हों ने अल्लाह की आयतों* को झुठलाया। और अल्लाह ज़ालिम लोगों को राह नहीं दिखाता। ○

कह दो : हे वे लोगो! जो यहूदी* हुये! यदि तुम को यह दावा है कि सारे लोगों के अतिरिक्त तुम अल्लाह के दोस्त हो,⁴ तो मृत्यु की कामना करो⁵ यदि तुम सच्चे हो। ○

---

¹ अर्थात् यह रसूल* (सल्ल०) उन दूसरे लोगों के लिए भी रसूल* बना कर उठाया गया है जो आगे चल कर इस रसूल* के अनुयायी होंगे। इस आयत* में नबी सल्ल० के बाद के ईमान* वालों के लिए शुभ-सूचना है। (दे० बाइबिल यूहन्ना (Job.) १७ : २०।

² तौरात* के बोझ से अभिप्रेत तौरात* का ज्ञान और उस में दिये गये आदेशों के पालन करने की ज़िम्मेदारी है।

³ अर्थात् तौरात* में दिये गये आदेशों का पालन नहीं किया। उन्हों ने यों तो सभी आदेशों का उल्लंघन किया परन्तु विशेष रूप से उन्हों ने 'सब्त' की मर्यादा और जिहाद* के आदेश का उल्लंघन किया। 'सब्त' (शनिवार) के आदेश में विशेष रूप से आजीविका के सम्बन्ध में उन की धर्म-परायणता की परीक्षा थी। इस परीक्षा में वे असफल ही रहे। (दे० सूरः अल-आराफ़ आयत ६३)।

⁴ दे० सूरः अल-माइदः आयत १८।

⁵ यह संकेत जिहाद* की ओर है। यहूदियों ने अपनी कायरता से हज़रत मूसा अ० को दुःख पहुँचाया था। उन्हों ने हज़रत मूसा अ० से एक जिहाद* के अवसर पर कहा था कि तुम और तुम्हारा रब* दोनों जा कर लड़ो हम तो यहीं बैठे हैं। (दे० सूरः अल-माइदः आयत २४)।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

ये इस की कभी भी कामना नहीं करेंगे जो-कुछ इन के हाथों ने कर रखा है उस के कारण, और अल्लाह ज़ालिमों को भली-भाँति जानता है।○

कह दो : मृत्यु जिस से तुम भागते हो वह तो तुम पर आ कर रहेगी, फिर तुम उस की ओर लौटाये जाओगे जो परोक्ष और प्रत्यक्ष का जानने वाला है, फिर वह तुम्हें जता देगा जो-कुछ तुम करते रहे हो।○

हे ईमान* लाने वालो ! जब जुमा के दिन नमाज़* के लिए पुकारा जाये, तो तुम अल्लाह की याद की ओर दौड़ो[6] और क्रय-विक्रय छोड़ दो। यह तुम्हारे लिए उत्तम है यदि तुम ज्ञान रखते हो।○

फिर जब नमाज़* पूरी हो जाये, तो ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह का फ़ज़्ल (अर्थात् रोज़ी) तलाश करो, और अल्लाह को बहुत ज़्यादा याद करते रहो, ताकि तुम सफल हो।○

और ये कोई तिजारत या कोई तमाशा देखते हैं तो उस की ओर निकल पड़ते हैं और तुम्हें खड़ा छोड़ जाते हैं[7]। (हे नबी* !) कह दो : जो-कुछ अल्लाह के पास है वह तमाशे और तिजारत से उत्तम है, और अल्लाह बहुत ही अच्छा रोज़ी देने वाला है।○

---

६ अर्थात् जब जुमा की अज़ान हो तो कारोबार छोड़ कर अल्लाह की याद के लिए मसजिद की ओर चल पड़ो। कुछ लोगों पर जुमा की नमाज़ वाजिब नहीं है जैसे मुसाफ़िर, बीमार और स्त्री आदि।

७ यह बात उन लोगों के बारे में कही गई है जो नबी सल्ल० को छोड़ कर मसजिद के बाहर चले गये थे जब कि नबी सल्ल० जुमा का 'ख़ुतबः' (धार्मिक भाषण एवं उपदेश) दे रहे थे। हुआ यह कि उसी समय जब कि आप (सल्ल०) 'ख़ुतबः' दे रहे थे तिजारती क़ाफ़िला मदीना में अनाज ले कर आ गया। उस के साथ नक्क़ारा बज रहा था ताकि लोगों को क़ाफ़िले की ख़बर हो जाये। कुछ ऐतिहासिक उल्लेखों से मालूम होता है कि यह क़ाफ़िला दहयः कलबी का था। मदीना में अनाज की कमी थी। क़ाफ़िले के आने की सूचना मिलते ही बहुत से लोग उस की ओर दौड़ पड़े। उन्हों ने यह सोचा कि 'ख़ुतबः' का सुनना अनिवार्य नहीं है। हालांकि यह उन की भूल थी। जुमा का 'ख़ुतबः' साधारण भाषण की तरह नहीं होता कि उस का सुनना अनिवार्य न हो।

यह आरम्भ काल की बात थी। और यह भूल भी सब से नहीं हुई। नबी सल्ल० के बड़े-बड़े साथी नक्क़ारे की आवाज़ पर मसजिद छोड़ कर नहीं गये बल्कि आप (सल्ल०) का 'ख़ुतबः' सुनते रहे। आगे चल कर तो क़ुरआन में नबी सल्ल० के साथियों की यह विशेषता बयान की गई कि न उन्हें तिजारत ग़ाफ़िल करती है और न सौदा करना अल्लाह की याद और नमाज़ से (दे० सूरः अन-नूर आयत ३७)।

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

६३-अल-मुनाफ़िक़ून

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अल-मुनाफ़िक़ून' सूरः की प्रथम आयत* से लिया गया है। इस सूरः का अधिकांश मुनाफ़िक़ों* ही के विषय में है जिस में उन की कृपणता और कपट-नीति की निन्दा की गई है।

प्रस्तुत सूरः* में मुनाफ़िक़ों* के सरदार अब्दुल्लाह इब्न उबई के कहे हुये उन अपशब्दों का उल्लेख हुआ है[1] जो उस ने 'बनू-मुस्तलिक़' की मुहिम के अवसर पर कहे थे। इस से अनुमान होता है कि यह सूरः 'बनू-मुस्तलिक़' की मुहिम के बाद ही उतरी होगी। बनू-मुस्तलिक़ की मुहिम सन् ६ हि० में पेश आई थी।

बनू-मुस्तलिक़ वास्तव में क़बीला ख़ुज़ाअः की एक शाखा थे। यह लाल सागर के तट पर क़ुदैद के अधिक्षेत्र में रहते थे। इस क़बीले के लोग 'मुरैसीअ' नामक स्रोत के आस-पास आबाद थे।

शअ्बान सन् ६ हि० में नबी सल्ल० को सूचना मिली कि बनू-मुस्तलिक़ के लोग मुसलमानों के विरुद्ध लड़ाई की तैयारियों में लगे हुये हैं और दूसरे क़बीलों को भी मुसलमानों के विरुद्ध लड़ने के लिए इकट्ठा करने की कोशिश कर रहे हैं।

इस की सूचना मिलते ही नबी सल्ल० सेना ले कर उन की ओर चल पड़े। अब्दुल्लाह इब्न उबई मुनाफ़िक़ों* की एक बड़ी संख्या के साथ आप (सल्ल०) के साथ हो गया। 'मुरैसीअ' के स्थान पर अचानक नबी सल्ल० ने दुश्मनों को जा लिया। बनू-मुस्तलिक़ के सभी लोग क़ैद कर लिये गये। इस मुहिम के अवसर पर अब्दुल्लाह इब्न उबई ने वे अपशब्द कहे थे जिस का उल्लेख सूरः* की आयत* ८ में किया गया है।

इस सूरः* का केन्द्रीय विषय वही है जो सूरः अल-हदीद का है।

प्रस्तुत सूरः* में अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करने पर ज़ोर दिया गया है और मुनाफ़िक़ों* की उन की बुराइयों पर निन्दा की गई है। मुनाफ़िक़ों* में कृपणता का रोग था। दुनियाँ की मोह-माया मे उन्हों ने अल्लाह को भुला दिया था। इस का उल्लेख इस से पहले की सूरः के अन्त में भी मिलता है।

सूरः के अन्तिम भाग में मुसलमानों को सचेत किया गया है कि वे उन अवगुणों से बचें जो मुनाफ़िक़ों* में पाये जा रहे हैं। उन्हें चाहिए कि अल्लाह की राह में ख़र्च करें इस से पहले कि वह समय आ जाये जब कि उन्हें इस का अवसर न मिलेगा।

---

1. दे० आयत ८।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अल-मुनाफ़िक़ून

(मदीना में उतरी — आयतें* ११)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بسم الله الرحمن الرحيم
اذا جاءك المنفقون قالوا نشهد انك لرسول الله والله يعلم
انك لرسوله والله يشهد ان المنفقين لكذبون ۝ اتخذوا
ايمانهم جنة فصدوا عن سبيل الله انهم ساء ما كانوا
يعملون ۝ ذلك بانهم امنوا ثم كفروا فطبع على قلوبهم فهم
لا يفقهون ۝ واذا رايتهم تعجبك اجسامهم وان يقولوا
تسمع لقولهم كانهم خشب مسندة يحسبون كل صيحة
عليهم هم العدو فاحذرهم قتلهم الله انى يؤفكون ۝ و
اذا قيل لهم تعالوا يستغفر لكم رسول الله لووا رءوسهم و
رايتهم يصدون وهم مستكبرون ۝ سواء عليهم استغفرت

(हे नबी* !) जब मुनाफ़िक़* तुम्हारे पास आते हैं, तो कहते हैं : हम गवाही देते हैं कि आप अल्लाह के रसूल* हैं। और अल्लाह भी जानता है तुम उस के रसूल* हो, और अल्लाह गवाही देता है कि मुनाफ़िक़* झूठे हैं¹। ○

इन्हों ने अपनी क़समों को ढाल बना लिया है² फिर अल्लाह के मार्ग से रोका। ये लोग बहुत ही बुरा कर रहे हैं, ○ यह इस कारण है कि ये ईमान* लाये, फिर कुफ़्र* किया³ तो इन के दिलों पर ठप्पा लगा दिया गया⁴ अब ये समझते नहीं। ○

और जब तुम इन्हें देखोगे तो इन के शरीर (वाह्य रूप) तुम्हें बहुत भले लगेंगे; और यदि ये बोलें तो तुम इन की बात पर कान धरोगे। मानो ये लकड़ियाँ हैं सहारे से खड़ी कर दी गई। कोई भी हल्ला हो उसे अपने ऊपर समझते हैं। ये पक्के दुश्मन हैं, इन से बचते रहो इन पर अल्लाह की मार पड़े! ये कहाँ से पलटे जाते हैं! ○

और जब इन से कहा जाता है : आओ! अल्लाह का रसूल* तुम्हारे लिए क्षमा की प्रार्थना करे! तो ये अपने सिर मटकाते हैं और तुम देखते हो कि ये खिंचे रहते हैं और अपने को बड़ा समझते हैं। ○

इन के हक़ में बराबर है चाहे तुम इन के लिए क्षमा की प्रार्थना करो या इन के लिए क्षमा की प्रार्थना न करो, अल्लाह इन को कदापि क्षमा न करेगा⁵। निस्सन्देह अल्लाह सीमोल्लंघन करने वालों को राह नहीं दिखाता। ○

ये वही लोग हैं जो कहते हैं कि उन लोगों पर जो अल्लाह के रसूल* के पास हैं खर्च न

---

१ अर्थात् ये अपने मुँह से तो कहते हैं कि तुम अल्लाह के रसूल हो परन्तु वास्तव में वे तुम्हें रसूल* मानते नहीं।

२ अर्थात् झूठी क़समें खा-खा कर ये मुनाफ़िक़ लोग अपने कपट को छुपाना चाहते हैं।

३ अर्थात् माल और औलाद के मोह में पड़ कर इन्हों ने फिर कुफ़्र अपनाया (दे० आयत ६ और १०)। कुफ़्र* से अभिप्रेत यहाँ अवज्ञा और मर्यादाओं का उल्लंघन है। वास्तव में ईमान* तो वे लाये ही न थे। फिर सीधी राह पर इन के आने की आशा कैसे की जा सकती है।

४ यह इन के करतूत का स्वाभाविक परिणाम था दे० सूरः अल-बक़रा फ़ुट नोट ४; सूरः [illegible] आयत १४।

५ दे० सूरः मुहम्मद आयत १४।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

करो ताकि ये तितर-बितर हो जायें;[६] और आसमानों और ज़मीन के ख़ज़ाने अल्लाह ही के हैं, परन्तु मुनाफ़िक़* समझते नहीं। ○

कहते हैं : यदि हम मदीना वापस पहुँच गये तो जो अधिक प्रभुत्वशाली है वह (अपने से) अधिक हीन को निकाल बाहर करेगा;[७] और प्रभुत्व अल्लाह ही के लिए है और उस के रसूल* के लिए और ईमान* वालों के लिए; परन्तु मुनाफ़िक़* जानते नहीं। ○

हे ईमान* लाने वालो ! तुम्हारे माल तुम्हें अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न करें और न तुम्हारी औलाद[८]। और जो कोई ऐसा करेगा, तो ऐसे ही लोग घाटा उठाने वाले हैं। ○

لهم أم لم تستغفر لهم لن يغفر الله لهم إن الله لا يهدي
القوم الفاسقين ۝ هم الذين يقولون لا تنفقوا على من
عند رسول الله حتى ينفضوا وله خزائن السماوات والأرض
ولكن المنافقين لا يفقهون ۝ يقولون لئن رجعنا إلى
المدينة ليخرجن الأعز منها الأذل وله العزة ولرسوله
وللمؤمنين ولكن المنافقين لا يعلمون ۝ يا أيها الذين
آمنوا لا تلهكم أموالكم ولا أولادكم عن ذكر الله ومن
يفعل ذلك فأولئك هم الخاسرون ۝ وأنفقوا من ما رزقناكم
من قبل أن يأتي أحدكم الموت فيقول رب لولا أخرتني
إلى أجل قريب فأصدق وأكن من الصالحين ۝ ولن يؤخر
الله نفسا إذا جاء أجلها والله خبير بما تعملون ۝

और जो-कुछ हम ने तुम्हें दिया है उस में से ख़र्च करो इस से पहले कि तुम में से किसी की मृत्यु आ जाये फिर वह कहे : रब* ! तू ने मुझे थोड़ी सी मुहलत और दी होती कि मैं सदक़ः* दे लेता और मैं अच्छे लोगों में से हो जाता। ○

और अल्लाह किसी को जब कि उस का समय आ जाये कदापि मुहलत नहीं देगा, और अल्लाह जो-कुछ तुम करते हो उस की ख़बर रखता है। ○

---

६ यहाँ मक्का और मक्का से हिजरत* कर के आने वाले मुसलमानों को अनसार* के बाग़ों में चलने-फिरते देख कर मुनाफ़िक़* जलते थे। अब्दुल्लाह इब्न उबई जो मुनाफ़िक़ों* का सरदार था कहा करता था कि ये 'क़ुरैश' के फ़क़ीर हमारे देश में आ कर फल-फूल गये हैं। वह 'अनसार' से कहता : तुम ने इन्हें अपने सिर चढ़ा लिया है। अपने देश में इन्हें जगह दी और अपने माल में इन्हें हिस्सा दिया। क़सम अल्लाह की यदि आज तुम इन से हाथ रोक लो तो ये स्वयं तंग आ कर मदीना से निकल भागेंगे। इस की बातों का जवाब आगे इन शब्दों में दिया गया : आसमानों और ज़मीन के ख़ज़ाने अल्लाह ही के हैं परन्तु ये मुनाफ़िक़* समझते नहीं।

७ यह बात अब्दुल्लाह इब्न उबई ने बनू-मुस्तलिक़ की मुहिम के अवसर पर कही थी। (दे० सूरः का परिचय)।

८ दे० सूरः आल इम्रान आयत १३९।

यहाँ ईमान* वालों को उन बातों की ओर से सचेत किया गया है जिन के कारण मुनाफ़िक़* कुफ़्र* में जा पड़े हैं। सांसारिक मोह-माया में पड़ कर मुनाफ़िक़ों* ने अपनी नमाज़* गँवाई। दान को विवश हुए तो उन के दिलों में कृपणता की भावना भर गई। यही दशा यहूद* की भी थी।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

६४--अत-तग़ाबुन

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अत-तग़ाबुन' सूरः की आयत* ६ से लिया गया है।

कुछ लोगों का विचार है कि प्रस्तुत सूरः* मक्का में अवतीर्ण हुई है परन्तु अधिकतर लोगों के विचार में यह सूरः मदीना में उतरी है। अनुमान है कि यह मदीना की बिलकुल आरम्भिक सूरः* है।

केन्द्रीय विषय इस सूरः* का वही है जो सूरः अल-हदीद का है। इस सूरः में अल्लाह के मार्ग में खर्च करने पर विशेष ज़ोर दिया गया है (दे० आयत ६-१८)।

सूरः* के आरम्भ में कहा गया है कि सारा संसार अल्लाह की तसबीह* करता है। राज्य उसी का है समस्त प्रशंसायें उसी के लिए हैं; वह सर्वशक्तिमान है। तुम्हारा सृष्टिकर्त्ता वही है परन्तु तुम हो कि दो वर्गों में विभक्त हो। तुम में जहाँ ईमान* वाले हैं वहाँ ऐसे लोग भी हैं जिन्हों ने कुफ़्र* की नीति अपनाई है। अल्लाह ने इस संसार को निरुद्देश्य नहीं बनाया है और न मनुष्यों को उस ने निरुद्देश्य पैदा किया है। इस से पहले जिन लोगों ने कुफ़्र* की नीति अपनाई है और अल्लाह के रसूलों* को मानने से इन्कार किया है वे अपने करतूतों का मज़ा दुनियाँ में भी चख चुके हैं और आख़िरत* में ऐसे लोगों के लिए दुःख भरा अज़ाब है।

इस के बाद काफ़िरों* की इस धारणा का कि मृत्यु के पश्चात् कोई जीवन नहीं है तर्कयुक्त खण्डन किया गया है। फिर लोगों को निमंत्रित किया गया है कि वे अल्लाह और उस के रसूल* पर और उस प्रकाश पर ईमान* लायें जो अल्लाह ने अपने बन्दों के पथ-प्रदर्शन के लिए उतारा है। और फिर आख़िरत* का हाल बयान हुआ है।

आगे चल कर बताया गया है कि जो मुसीबत भी आती है, वह अल्लाह ही के हुक्म से आती है। अल्लाह ऐसे लोगों के दिल को राह दिखा देता है जो उस पर ईमान* रखते हैं। अल्लाह से कोई चीज़ छिपी हुई नहीं है।

फिर ईमान* वालों को सावधान किया गया है कि अपनी स्त्री हो या औलाद, जो भी आदमी को उस के रब* से ग़ाफ़िल करे और अल्लाह की राह में बाधक बने वह दुश्मन है। अतः उस से सदा सतर्क रहना चाहिए।

सूरः* के अन्तिम भाग में सूरः* के केन्द्रीय विषय को खुले शब्दों में प्रस्तुत किया गया है। कहा गया है कि अल्लाह का डर रखो जहाँ तक तुम से हो सके। सुनो और कहना मानो और अल्लाह के मार्ग में खर्च करो। सफलता प्राप्त करने वाले वही हैं जिन में लोभ की बीमारी नहीं है। जो-कुछ तुम खर्च करोगे वह अकारथ नहीं जायेगा अल्लाह उसे कई गुना कर के लौटायेगा।

---

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अत-तग़ाबुन

(मदीना में उतरी — आयतें* १८)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

अल्लाह की तसबीह* करता है जो-कुछ आसमानों में है और जो-कुछ भी ज़मीन में है; उसी का राज्य है और उसी की प्रशंसा (हम्द*) है, और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला (सर्वशक्तिमान) है। ○

वही है जिस ने तुम्हें पैदा किया, फिर कोई तुम में से काफ़िर* है और कोई तुम में से ईमान* वाला है, और जो-कुछ तुम करते हो उसे अल्लाह देखता है। ○

उस ने आसमानों और ज़मीन को हक़ के साथ पैदा किया,[1] और तुम्हारा रूप बनाया तो तुम्हें अच्छा सा रूप दिया, और उसी की ओर पहुँचना है[2]। ○

वह जानता है जो-कुछ आसमानों और ज़मीन में है, और जानता है जो-कुछ तुम छिपाये रखते हो और जो-कुछ खोल देते हो। और अल्लाह सीनों (दिलों) की बात जानता है। ○

क्या तुम्हें उन लोगों (के वृत्तान्त) की ख़बर नहीं पहुँची जिन्हों ने पूर्वकाल में कुफ़्र* किया तो उन्हों ने अपनी नीति का मज़ा चख लिया, और उन के लिए दुःख भरा अज़ाब है। ○

यह इस कारण कि उन के पास उन के रसूल* खुली दलीलें ले कर आते थे तो वे कहते : क्या मनुष्य हमें राह दिखायेंगे[3]। तो उन्हों ने कुफ़्र* किया और मुँह मोड़ा, अल्लाह को परवा न हुई। और अल्लाह बे-नियाज़ (अपेक्षा-रहित) और प्रशंसा का अधिकारी है। ○

कुफ़्र* करने वालों का कहना है कि वे (मृत्यु के पश्चात्) कदापि उठाये नहीं जायेंगे। कह दो : क्यों नहीं, क़सम है मेरे रब* की तुम अवश्य उठाये जाओगे फिर जो-कुछ तुम ने किया है वह तुम्हें जता दिया जायेगा; और यह अल्लाह के लिए आसान बात है। ○

तो ईमान* लाओ अल्लाह और उस के रसूल* पर और उस प्रकाश पर जिसे हम ने उतारा है। और तुम जो-कुछ करते हो अल्लाह उस की ख़बर रखता है[4]। ○

---

1 अर्थात् विश्व की रचना उस ने निरुद्देश्य कदापि नहीं की है।

2 जब उस ने तुम्हारे शारीरिक रंग रूप को सुन्दरता प्रदान की है तो फिर यह कैसे हो सकता है कि वह तुम्हें आत्मिक एवं आन्तरिक सौन्दर्य से वंचित रखे। अतः अवश्य तुम्हारे जीवन का लक्ष्य महान् और शोभा-मय होगा। मनुष्य के वास्तविक सत्त्व की पूर्ति अपने रब* से मिल कर ही हो सकती है।

3 अर्थात् हम तो मनुष्य को अल्लाह का भेजा हुआ नहीं मान सकते हमारे पास तो कोई अलौकिक हस्ती को 'रसूल' बन कर उतरना चाहिए।

4 इस आयत में वही व्याख्या है आगे जो-कुछ वर्णन हुआ है उस के लिए यह आयत प्रस्तावना की हैसियत रखती है।

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

سَيِّاٰتِهٖ وَيُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ
اَبَدًا ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ
اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝ مَآ اَصَابَ
مِنْ مُّصِيْبَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ يَهْدِ قَلْبَهٗ
وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ فَاِنْ
تَوَلَّيْتُمْ فَاِنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ
وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ مِنْ
اَزْوَاجِكُمْ وَاَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ فَاحْذَرُوْهُمْ وَاِنْ تَعْفُوْا وَتَصْفَحُوْا
وَتَغْفِرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ اِنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ
وَاللّٰهُ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝ فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوْا
وَاَطِيْعُوْا وَاَنْفِقُوْا خَيْرًا لِّاَنْفُسِكُمْ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ
هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ اِنْ تُقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ
وَاللّٰهُ شَكُوْرٌ حَلِيْمٌ ۝ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

"इकट्ठा होने के दिन जिस दिन वह तुम्हें इकट्ठा करेगा वही दिन है हार-जीत का[6]। और जो कोई अल्लाह पर ईमान* लाये और अच्छे काम करे, वह उस से उस की बुराइयाँ दूर कर देगा और उसे ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी, जहाँ वे सदैव रहेंगे अनन्त तक। यही बड़ी सफलता है। ○

और जिन्हों ने कुफ़्र* किया और हमारी आयतों* को झुठलाया, वे लोग आग में रहने वाले हैं; जिस में वे सदा रहेंगे — और वह बहुत बुरी जगह है पहुँचने की। ○

कोई भी मुसीबत अल्लाह के अनुज्ञा के बिना नहीं आती। और जो कोई अल्लाह पर ईमान* लाये, वह उस के दिल को राह दिखा देगा। और अल्लाह हर चीज़ को भली-भाँति जानता है। ○

अल्लाह की आज्ञा मानो, और रसूल* की आज्ञा मानो; और यदि तुम मुँह मोड़ोगे तो हमारे रसूल* के ज़िम्मे बस साफ़-साफ़ (सन्देश) पहुँचा देना है। ○

अल्लाह है उस के सिवा कोई इलाह* (पूज्य) नहीं। और अल्लाह ही पर ईमान* वालों को भरोसा रखना चाहिए। ○

हे ईमान* लाने वालो! निश्चय ही तुम्हारी पत्नियों और तुम्हारी औलाद में ऐसे लोग भी हैं जो तुम्हारे दुश्मन हैं,[7] तो उन से बच कर रहो। और यदि तुम माफ़ कर दो और दर[...] दो और क्षमा कर दो[8] तो निस्सन्देह अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है। ○

तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तो बस आज़माइश हैं, और अल्लाह के पास बहुत बड़ा बदला है। ○

तो जहाँ तक हो सके अल्लाह का डर रखो, और (उस का हुक्म) सुनो, और मानो, और ख़र्च करो कि तुम्हारा भला हो। और जो कोई अपने मन के लोभ से बचा रहे, तो ऐसे ही लोग सफलता प्राप्त करने वाले हैं। ○

यदि तुम अल्लाह को क़र्ज़ दो, अच्छा क़र्ज़, तो वह तुम्हारे लिए उसे कई गुना कर देगा, और तुम्हें क्षमा कर देगा, अल्लाह बड़ा क़द्र करने वाला (गुण-ग्राहक) और सहन-शील है। ○

परोक्ष और प्रत्यक्ष का जानने वाला, प्रभुत्वशाली और हिकमत* वाला है। ○

---

५ यहाँ से ले कर आयत १८ तक लोगों को अल्लाह की राह में ख़र्च करने पर उभारा है।

६ अर्थात् आख़िरत* का दिन ही वास्तव में घाटे और प्राप्ति का दिन है। उस दिन जो घाटे में रहा उसी का जीवन अकारथ गया। और उस दिन की प्राप्ति ही वास्तव में लाभ और प्राप्ति है। कितने इस लोक में सुख भोगने वाले उस दिन नरक-गामी होंगे और कितने ही ऐसे लोग जिन की दशा इस वर्तमान जीवन में दयनीय रही वे वहाँ सुख और आनन्द भरी जन्नतों* में वास करेंगे।

७ अर्थात् किसी की पत्नी या औलाद यदि अल्लाह की आज्ञा के पालन में रुकावट बनती है तो वास्तव में वह दुश्मन है। अल्लाह का आदेश है कि उस के मार्ग में माल ख़र्च किया जाये परन्तु औलाद या स्त्री यदि कृपणता पर उभारती है तो उन का यह व्यवहार मित्रता का नहीं दुश्मनी का है।

८ अर्थात् उन की निर्बल भावना के कारण क्रुद्ध न हो। क्षमा से काम लो और धर्म से उन्हें राह पर लाने की कोशिश करो।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

६५--अत-तलाक़

(परिचय)

इस सूरः* में आयत १ से ७ तक तलाक़ (Divorce) के सम्बन्ध में कुछ आदेश दिये गये हैं इसी सम्पर्क से प्रस्तुत सूरः का नाम 'अत-तलाक़' रखा गया है।

अनुमान है कि यह सूरः* सन ६ हिज० में या इस से कुछ ही पहले अवतीर्ण हुई होगी।

केन्द्रीय विषय इस सूरः* का वही है जो सूरः अल-हदीद का है। 'अल्लाह की आज्ञा का पालन करना, उस के दामन को मज़बूती से पकड़े रहना और उस पर पूरा भरोसा रखना' यही इस सूरः का केन्द्रीय विषय है। यही वह चीज़ है जिसे तक़्वा* (ईश-भय) और धर्म-परायणता कहते हैं। 'तक़्वा' का उल्लेख प्रस्तुत सूरः में बार-बार किया गया है।

सूरः* के आरम्भ में आयत १ से ७ तक तलाक़* और उस से सम्बन्धित दूसरी समस्याओं के प्रति आदेश दिये गये हैं। तलाक़* के सम्बन्ध में सूरः अल-अहज़ाब और अल-बक़रः में भी कुछ आदेश दिये गये हैं। प्रस्तुत सूरः में आदेश ही नहीं दिये गये हैं बल्कि उन के पालन करने पर विभिन्न रूप से लोगों को उभारा भी गया है। बताया गया है अल्लाह तुम पर उतना ही बोझ डालता है जो तुम सहार सको। इद्दत* की हिकमत का उल्लेख किया है और अल्लाह का डर रखने वालों से ऐसी सुविधा, कुशादगी और रोज़ी का वादा किया गया है जिस की वे पहले से कल्पना भी नहीं कर सकते।

आगे चल कर पिछली जातियों के बुरे परिणाम की ओर संकेत करते हुये ईमान* वालों को सतर्क रहने का हुक्म दिया गया है। फिर अल्लाह ने अपने इस महान् उपकार का उल्लेख किया है कि उस ने अपना 'ज़िक्र' और रसूल* भेजा ताकि लोगों को अँधियारियों से प्रकाश की ओर ले जाये। फिर ईमान* वालों को सदा-बहार जन्नत* की शुभ-सूचना दी गई है।

सूरः* को समाप्त करते हुये अल्लाह की शक्ति और उस के ज्ञान का स्मरण कराया गया है। बताया गया कि उसी का हुक्म आसमानों और ज़मीन में चल रहा है। वह सर्वशक्तिमान् है और अपने ज्ञान से हर चीज़ को अपने घेरे में लिये हुये है। इन सारी बातों का अर्थ यही है कि अल्लाह की आज्ञा का पालन करना और उस का डर रखना ही मनुष्य का परम कर्त्तव्य है। उसे अल्लाह से अपना नाता मज़बूत रखना चाहिए और उसी पर उस का भरोसा होना चाहिए।

---

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

२ : २२६	अल्लाह ने जो सीमाएं निश्चित कर दी है, उन से बाहर जाने वाले अत्याचारी हैं।
६५ : १	जिस ने अल्लाह की निर्धारित की हुई सीमाओं से कदम बाहर निकाला उसने स्वयं अपने साथ अन्याय किया।
५८ : ४	अल्लाह की सीमाओं का पालन करने से इन्कार करने वालों के लिए बड़ा दुखदायी दण्ड है।
५ : ४४-४६	अल्लाह के उतारे हुए क़ानून के अनुसार फ़ैसला न करने वाले काफ़िर, ज़ालिम और सीमोल्लघन करने वाले हैं।
४ : ६०	अल्लाह पर ईमान लाना और फिर तागूत से अपने मामलों के फ़ैसले कराना बडी गुमराही है।
३३ : ३६	अल्लाह और उसके रसूल के फ़ैसले के बाद ईमान वाले के लिए कोई अधिकार शेष नहीं रह जाता।
२४ : ४७,४८	जो कोई अल्लाह और उस के रसूल के फ़ैसलों से मुँह मोड़ता है वह कदापि ईमान वाला नहीं।
२४ : ५१	ईमान वाले व्यक्ति का काम यह है कि जब वह अल्लाह और उस के रसूल का फ़ैसला सुने तो कहे कि मैंने सुना और मान लिया।

(४) खिलाफत

२ : ३०	अल्लाह ने मनुष्य को ज़मीन में (अपना) ख़लीफा बनाया है।
७ : १०	अल्लाह ने मनुष्य को ज़मीन में अधिकार दे कर बसाया।
२२ : ६५	अल्लाह ने ज़मीन की हर चीज़ मनुष्य के वश में कर दी है।
७ : ६६	आद को अल्लाह ने नूह की जाति के बाद खलीफा बनाया।
७ : ७४	समूद को आद के बाद ख़लीफा बनाया गया।
५ : ४८	नबी का काम यह है कि वह अल्लाह के उतारे हुए कानून के अनुसार लोगों के बीच फ़ैसले करे।
३८ : २६	हज़रत दाऊद को अल्लाह ने अपना ख़लीफा बनाया और हुक्म दिया कि वह लोगों के मामलों को न्याय के साथ निबटाएँ।
७ : १२६	अल्लाह ने बनी इसराईल को ज़मीन में अपना ख़लीफा बनाया कि देखे वे कैसा कर्म करते है।
१० : १४	अल्लाह ने तुम को ज़मीन में ख़लीफा बनाया कि देखे तुम कैसा कर्म करते हो।
२४ : ५५	ईमान लाने वालों और अच्छे कर्म करने वालों से अल्लाह का वादा है कि वह उन्हे ज़मीन में ख़लीफा बनाएगा।

(५) मन्त्रणा परिषद और राज्य के ज़िम्मेदार

३ : १५६	(हे नबी!) आप अपने कामों में मन्त्रणा कर लिया करें।
४२ : ३८	(मुसलमानों का) काम आपसी मिश्वरों से चलता है।
४ : २६	मुसलमानों को अपने शासकों का आज्ञापालन करना चाहिए।

सूरः° अत-तलाक़

(मदीना में उतरी — आयतें° १२)

अल्लाह° के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَطَلِّقُوْهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَاَحْصُوا الْعِدَّةَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ رَبَّكُمْ ۚ لَا تُخْرِجُوْهُنَّ مِنْۢ بُيُوْتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ اِلَّاۤ اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ؕ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ؕ لَا تَدْرِيْ لَعَلَّ اللّٰهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذٰلِكَ اَمْرًا ۝ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ فَارِقُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ وَّاَشْهِدُوْا ذَوَيْ عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَاَقِيْمُوا الشَّهَادَةَ لِلّٰهِ ؕ ذٰلِكُمْ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۝ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ؕ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ ؕ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ

हे नबी° ! जब तुम लोग स्त्रियों को तलाक़° दो,[1] तो उन्हें तलाक़° उन की इद्दत° के समय पर दो[2] और इद्दत° का पूरा ख़याल रखो, और अल्लाह, अपने रब° का डर रखो। तुम उन को उन के घरों से न निकालो और न वे स्वयं निकलें[3] सिवाय इस के कि वे खुल्लम अश्लील कर्म कर बैठें। और ये अल्लाह की निश्चित की हुई सीमायें हैं — और जो कोई अल्लाह की सीमाओं से आगे बढ़े, तो उस ने अपने-आप पर ज़ुल्म किया — तू नहीं जानता कदाचित् अल्लाह इस (तलाक़) के पश्चात् कोई नई बात पैदा कर दे[4] ।O

फिर, जब वे (तलाक़ पाई हुई स्त्रियाँ) अपनी निश्चित अवधि (अर्थात् इद्दत°) को पहुँच जायें, तो या तो उन्हें भली रीति से रोक लो या उन्हें भली रीति से अलग कर दो, और अपने में से दो न्यायी व्यक्तियों को गवाह कर लो, और अल्लाह के लिए गवाही को दुरुस्त रखो। इस की नसीहत हर उस व्यक्ति को की जाती है जो अल्लाह और अन्तिम दिन पर[5] ईमान° रखता हो। और जो कोई अल्लाह का डर रखेगा अल्लाह उस के लिए निकलने की राह पैदा कर देगा,[6] O

और उसे वहाँ से रोज़ी देगा जहाँ का उसे गुमान भी न होगा।

और जो कोई अल्लाह पर भरोसा रखे तो वह (अल्लाह) उस के लिए बहुत है। निस्सन्देह अल्लाह अपना काम पूरा कर लेता है। अल्लाह ने हर चीज़ का एक अन्दाज़ा ठहरा रखा है[7] ।O

१ नबी° सल्ल० को सम्बोधित कर के यह बात वास्तव में सारे मुसलमानों से कही जा रही है।

२ अर्थात् तलाक़° देने का निश्चय कर लो तो उन की इद्दत° (Legal period) का ध्यान रखते हुए तलाक़ दो। जब वे माहवारी से पाक हों उस समय उन्हें तलाक़ दो ताकि वे माहवारी से इद्दत° शुरू करें और तीन माहवारियों के बाद उन की इद्दत° पूरी हो जाये। लौंडी° (बाँदी) की इद्दत° की मुद्दत रजवती होने की अवस्था में दो माहवारी है और माहवारी न होने पर केवल डेढ़ महीने की मुद्दत है।

३ दे० सूरः अल-बक़रः आयत २२८।

४ अर्थात् हो सकता है कि अल्लाह तलाक़ के बाद तुम्हारे बीच फिर मेल करा दे। या तुम्हें तलाक़ देने पर अफ़सोस हो और तुम रुजू कर लो। यह भी सम्भव है कि यदि तंगी के कारण तलाक़ दिया है तो अल्लाह इद्दत° की जो मुद्दत है (तीन महीने) उस में रोज़ी में कुशादगी पैदा कर दे। इसी लिए यह हुक्म दिया गया कि इद्दत° की मुद्दत में स्त्री को अपने घर से न भेजो बल्कि साथ रखो, सम्भव है दिल मिलने की कोई राह पैदा हो जाये।

५ दे० सूरः अल-बक़रः फ़ुट नोट ५।

६ अल्लाह उस के लिए कठिनाइयों से निकलने की कोई राह निकाल देगा।

७ आयत २ और ३ से मालूम होता है कि तलाक़ की नौबत अधिकतर ग़रीबी और तंगी के कारण आती है।

° इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

شَيْءٍ قَدْرًا ۞ وَالّٰٓـِٔيْ يَئِسْنَ مِنَ الْمَحِيْضِ مِنْ نِّسَآئِكُمْ اِنِ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلٰثَةُ اَشْهُرٍ وَّالّٰٓـِٔيْ لَمْ يَحِضْنَ ۗ وَاُولَاتُ الْاَحْمَالِ اَجَلُهُنَّ اَنْ يَّضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۗ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ اَمْرِهٖ يُسْرًا ۞ ذٰلِكَ اَمْرُ اللّٰهِ اَنْزَلَهٗٓ اِلَيْكُمْ ۗ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُعْظِمْ لَهٗٓ اَجْرًا ۞ اَسْكِنُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِّنْ وُّجْدِكُمْ وَلَا تُضَآرُّوْهُنَّ لِتُضَيِّقُوْا عَلَيْهِنَّ ۗ وَاِنْ كُنَّ اُولَاتِ حَمْلٍ فَاَنْفِقُوْا عَلَيْهِنَّ حَتّٰى يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَاِنْ اَرْضَعْنَ لَكُمْ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ ۚ وَاْتَمِرُوْا بَيْنَكُمْ بِمَعْرُوْفٍ ۚ وَاِنْ تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ لَهٗٓ اُخْرٰى ۞ لِيُنْفِقْ ذُوْ سَعَةٍ مِّنْ سَعَتِهٖ ۗ وَمَنْ قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهٗ فَلْيُنْفِقْ مِمَّآ اٰتٰىهُ اللّٰهُ ۗ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا مَآ اٰتٰىهَا ۗ سَيَجْعَلُ اللّٰهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُّسْرًا ۞ وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ اَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهٖ فَحَاسَبْنٰهَا حِسَابًا شَدِيْدًا ۙ وَّعَذَّبْنٰهَا عَذَابًا نُّكْرًا ۞ فَذَاقَتْ وَبَالَ اَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ اَمْرِهَا خُسْرًا ۞ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰٓاُولِى الْاَلْبَابِ ۛۚ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۛ قَدْ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكُمْ ذِكْرًا ۞ رَّسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ مُبَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۗ وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ

और तुम्हारी स्त्रियों में से जो (बड़ी आयु हो जाने आदि के कारण) ऋतु-स्राव से निराश हो गई हों, यदि तुम्हें दुविधा है,[८] तो उन की इद्दत* तीन मास है, ऐसे ही उन की भी जो अभी रजस्वला नहीं हुई।

और जो गर्भवती स्त्रियाँ हों उन की इद्दत* बच्चा जनने तक है[९]। और जो कोई अल्लाह का डर रखेगा, तो वह (अल्लाह) उस के काम में आसानी कर देगा। ○

यह अल्लाह का आदेश है जो उस ने तुम्हारी ओर उतारा है। और जो कोई अल्लाह का डर रखेगा, तो वह (अल्लाह) उस की बुराइयों को उस से दूर कर देगा। और उसे बड़ा बदला प्रदान करेगा। ○

उन्हें (तलाक़* पाई हुई स्त्रियों को) रहने को दो अपनी हैसियत के अनुसार जिस तरह तुम रहते हो, और उन्हें तकलीफ़ न पहुँचाओ कि उन के लिए रहना दूभर कर दो। और यदि वे गर्भवती हों, तो उन के बच्चा जनने तक उन पर ख़र्च करते रहो। फिर, यदि वे तुम्हारे लिए (तुम्हारे बच्चे को) दूध पिलायें, तो तुम उन्हें उन की उजरत दो और परस्पर बात-चीत कर के भली रीति से कुछ तै कर लो; और यदि तुम में आपस में न पट सकी, तो उस (बच्चे के बाप) के लिए कोई दूसरी स्त्री दूध पिला देगी। ○ समाई रखने वाले अपनी समाई के अनुसार ख़र्च करें, और जिस किसी को रोज़ी नपी-तुली दी गई हो, तो उसे अल्लाह ने जो-कुछ दिया है वह उस के अनुसार ख़र्च करे। जितना-कुछ दिया है उस से बढ़ कर अल्लाह किसी पर ज़िम्मेदारी का बोझ नहीं डालता। अल्लाह जल्द ही तंगी के बाद आसानी कर देगा। ○

और कितनी ही बस्तियों ने पूरी ढिठाई के साथ अपने रब* के और उस के रसूलों* के हुक्म की अवहेलना की, तो हम ने उन से सख़्त हिसाब लिया और उन्हें अज़ाब दिया बड़ा बेढब अज़ाब, ○

तो उन्हों ने अपनी नीति का मज़ा चख लिया, और उन की नीति का परिणाम घाटा रहा। ○

अल्लाह ने उन के लिए सख़्त अज़ाब तैयार कर रखा है; तो अल्लाह का डर रखो, हे बुद्धि वालो जो ईमान* लाये हो! अल्लाह ने तुम्हारी ओर ज़िक्र* उतार दिया है, ○ एक रसूल* है जो तुम्हें अल्लाह की खुली-खुली आयतें* सुनाता है, ताकि वह उन लोगों को जो ईमान* लाये और अच्छे काम किये अँधियारियों से निकाल कर प्रकाश की ओर ले आये। और जो

८ अर्थात् यदि तुम्हें उन की इद्दत* निश्चित करने में दुविधा है।

९ बच्चे पैदा होने के बाद उन की इद्दत* पूरी हो जायेगी।

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

६६--अत-तहरीम

(परिचय)

प्रस्तुत सूरः* का नाम 'अत-तहरीम' (Banning) सूरः की पहली आयत* से लिया गया है।

अनुमान है कि यह सूरः* सन ७ हिज० में उतरी है।

केन्द्रीय विषय इस सूरः* का वही है जो सूरः अल-हदीद का है। सूरः अल-हदीद से उन सूरतों* का सिलसिला शुरू हुआ है जिन्हें अल्लाह ने मुसलमानों के व्यक्तिगत और सामाजिक सुधार और शुद्धता के लिए उतारी हैं, प्रस्तुत सूरः इस सिलसिले की अन्तिम कड़ी है, इस के अतिरिक्त जिन सूरतों* में नियम और धर्म-विधान का उल्लेख हुआ है उन में यह अन्तिम सूरः है।

इन दसों सूरतों* में जो अल-हदीद से आरम्भ हो कर सूरः अत-तहरीम पर समाप्त होती हैं इस बात पर विशेष ज़ोर दिया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं अपना, अपने लोगों और अपने परिवार की जाँच और अवलोकन करते रहना चाहिए। आख़िरत* में कोई किसी का बोझ न उठा सकेगा। प्रस्तुत सूरः से हमें यही शिक्षा मिलती है कि हम बिलकुल सख़्ती के साथ अपनी और उन लोगों की जाँच करते रहें जो हम से सम्बन्ध रखते हों। सूरः का आरम्भ नबी सल्ल० को सम्बोधित करते हुए किया गया है और आप (सल्ल०) की पकड़ एक ऐसी बात पर हुई है जो अत्यन्त साधारण सी प्रतीत होती है। इस से मालूम होता है कि दीन* के मामले में मनुष्य को बहुत ही सतर्क रहना चाहिए।

फिर सामान्य रूप से सभी मुसलमानों को सम्बोधित करते हुए ताकीद की गई है कि वे अपने लोगों और अपने परिवार की ओर से ग़ाफ़िल न हों। उन का कर्तव्य है कि वे उन लोगों को जो उन से सम्बन्ध रखते हैं दोज़ख़* की आग और आख़िरत* के बुरे परिणाम से बचाने की कोशिश करें।

फिर नबी* सल्ल० को शुभ-सूचना दी गई है कि अल्लाह आप (सल्ल०) को और आप (सल्ल०) के साथियों को आख़िरत* में रुसवा नहीं करेगा। अल्लाह को यह अभीष्ट नहीं है कि वह लोगों को तंगी में डाले बल्कि वह तो यह चाहता है कि लोगों को पाक और शुद्ध कर के उन्हें पूर्ण रूप से अपनी दयालुता की छाया में ले ले।

फिर इस के बाद नबी* सल्ल० को हुक्म दिया गया है कि आप (सल्ल०) काफ़िरों* और मुनाफ़िक़ों* के साथ जिहाद* करें और उन के साथ सख़्ती का मामला करें। ताकि उन में जिन को तौबः* करनी हो वह इसी जीवन में तौबः कर लें और आख़िरत* के अज़ाब से छुटकारा पा लें। इस तरह खरा और खोटा बिलकुल अलग-अलग हो जाये।

सूरः* के अन्त में चार मिसालें पेश की गई हैं जो वास्तव में इस बात को प्रमाणित करती हैं कि मनुष्य अपने कर्मों का स्वयं उत्तरदायी है। आख़िरत* में रिश्ता-नाता काम नहीं आ सकता। वहाँ जो चीज़ काम आने वाली है वह है आदमी का अपना ईमान* और उस का कर्म। सफलता और विजय उन ही लोगों को प्राप्त होती है जो सत्कर्मी होते हैं।

* इस पर कर्म आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अत-तहरीम

(मदीना में उतरी — आयतें* १२)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

سورة التحريم

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكَ تَبْتَغِي مَرْضَاتَ أَزْوَاجِكَ
وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ قَدْ فَرَضَ اللَّهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ أَيْمَانِكُمْ
وَاللَّهُ مَوْلَاكُمْ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۝ وَإِذْ أَسَرَّ النَّبِيُّ إِلَىٰ
بَعْضِ أَزْوَاجِهِ حَدِيثًا فَلَمَّا نَبَّأَتْ بِهِ وَأَظْهَرَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ
عَرَّفَ بَعْضَهُ وَأَعْرَضَ عَن بَعْضٍ فَلَمَّا نَبَّأَهَا بِهِ قَالَتْ
مَنْ أَنبَأَكَ هَٰذَا قَالَ نَبَّأَنِيَ الْعَلِيمُ الْخَبِيرُ ۝ إِن تَتُوبَا إِلَى
اللَّهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوبُكُمَا وَإِن تَظَاهَرَا عَلَيْهِ فَإِنَّ اللَّهَ
هُوَ مَوْلَاهُ وَجِبْرِيلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمَلَائِكَةُ بَعْدَ ذَٰلِكَ
ظَهِيرٌ ۝ عَسَىٰ رَبُّهُ إِن طَلَّقَكُنَّ أَن يُبْدِلَهُ أَزْوَاجًا خَيْرًا
مِّنكُنَّ مُسْلِمَاتٍ مُّؤْمِنَاتٍ قَانِتَاتٍ تَائِبَاتٍ عَابِدَاتٍ سَائِحَاتٍ
ثَيِّبَاتٍ وَأَبْكَارًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ

हे नबी* ! जिस चीज़ को अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल* किया है उसे अपनी पत्नियों को ख़ुश करने के लिए क्यों हराम* करते हो[1] ! और अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील और दयावान है। ○

अल्लाह ने तुम्हारे लिए क़समों को खोलना निर्धारित कर दिया है,[2] और अल्लाह तुम्हारा कारसाज़ है। और वह ज्ञान वाला और हिकमत* वाला है। ○

और जब नबी* ने अपनी पत्नियों में से किसी से चुपके से एक बात कही फिर जब उस ने उस की ख़बर कर दी[3] और अल्लाह ने उसे उस पर (नबी* पर) ज़ाहिर कर दिया,[4] तो उस ने उस का कुछ हिस्सा जता दिया और कुछ को टाल गया[5]। तो जब उस ने (नबी* ने) उसे इस की ख़बर की तो वह बोली: आप को इस की ख़बर किस ने दी ? कहा : मुझे ख़बर दी ज्ञान रखने वाले और ख़बर रखने वाले (अल्लाह) ने ○

---

१ ऐतिहासिक कथनों और इस सूरः की आयतों पर विचार करने से अनुमान होता है कि नबी* सल्ल० की पत्नियों को या आप (सल्ल०) की किसी एक पत्नी को कोई चीज़ पसन्द नहीं थी। हो सकता है कि वह शहद (मधु) ही रहा हो जैसा कि परम्परागत कथाओं (Traditions) से मालूम होता है। शहद की कुछ क़िस्में गन्ध और स्वाद में ऐसी होती हैं कि हर व्यक्ति उन्हें पसन्द नहीं कर सकता। नबी सल्ल० शहद को पसन्द करते थे परन्तु जब आप (सल्ल०) को मालूम हुआ कि आप (सल्ल०) की पत्नियों में कुछ को शहद पसन्द नहीं है तो आप (सल्ल०) ने भी इस ख़याल से कि कहीं उन्हें तकलीफ़ न पहुँचे शहद का सेवन छोड़ दिया। इस पर अल्लाह ने क़सम तोड़ने का हुक्म दिया जैसा कि आगे आ रहा है। अल्लाह को यह बात पसन्द न थी कि एक हलाल और जायज़ चीज़ से नबी सल्ल० या आप सल्ल०) के साथी [illegible] इस लिए कि आप (सल्ल०) का तरीक़ा बाद में आने वालों के लिए नमूना बन सकता था।

२ अर्थात् तुम्हारे लिए ज़रूरी है कि ऐसी क़समों को तोड़ दो।

३ यह पहले से मिलता-जुलता दूसरा वाक़िया है। इस आयत से मालूम होता है कि नबी सल्ल० अत्यन्त सुशील व्यक्ति थे आप (सल्ल०) अपनी पत्नियों का मन रखते थे। जो व्यक्ति अपनी अर्धांगिनी की अपने से कही बात नहीं बताता वास्तव में वह उस का मान घटाता है। आप (सल्ल०) ने अपनी जिस पत्नी से चुपके से कोई बात कही थी उन्हों ने उसे छुपाया नहीं बल्कि अपनी सखी से कह दिया। इस पर अल्लाह ने उन्हें सचेत किया है। आप (सल्ल०) की पत्नियों में परस्पर बड़ा मेल-मिलाप था। हज़रत आयशा रज़ि० और हज़रत हफ़सा रज़ि० के बीच तो विशेष रूप से मेल-जोल और प्रेम-भाव पाया जाता था। यह प्रेम ही था जिस के कारण एक ने दूसरे से वह बात कह दी जो कहने की नहीं थी। यह वास्तव में एक चूक थी जो उन से हो गई इस के पीछे कोई कपट-छल या और कोई बुरी भावना नहीं काम कर रही थी।

४ अर्थात् अल्लाह ने नबी सल्ल० को इस की ख़बर कर दी कि तुम्हारी पत्नी ने वह बात दूसरे से कह दी जो तुम ने उसे बताई थी।

५ आप (सल्ल०) ने अपनी पत्नी को नसीहत करने में सख़्ती से काम नहीं लिया केवल इशारा कर दिया कि तुम ने मेरी बात को छुपाया नहीं।

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلَٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ
لَّا يَعْصُونَ اللَّهَ مَآ أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ۝ يَٰٓأَيُّهَا
الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ إِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝
يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا تُوبُوٓا إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً نَّصُوحًا عَسَىٰ رَبُّكُمْ
أَن يُكَفِّرَ عَنكُمْ سَيِّـَٔاتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنَّٰتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا
الْأَنْهَٰرُ يَوْمَ لَا يُخْزِي اللَّهُ النَّبِيَّ وَالَّذِينَ ءَامَنُوا مَعَهُۥ نُورُهُمْ
يَسْعَىٰ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَٰنِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَآ أَتْمِمْ لَنَا نُورَنَا
وَاغْفِرْ لَنَآ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ يَٰٓأَيُّهَا النَّبِيُّ جَٰهِدِ
الْكُفَّارَ وَالْمُنَٰفِقِينَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ وَمَأْوَىٰهُمْ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ
الْمَصِيرُ ۝ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِّلَّذِينَ كَفَرُوا امْرَأَتَ نُوحٍ وَ
امْرَأَتَ لُوطٍ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَٰلِحَيْنِ
فَخَانَتَاهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللَّهِ شَيْـًٔا وَقِيلَ ادْخُلَا النَّارَ
مَعَ الدَّٰخِلِينَ ۝ وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِّلَّذِينَ ءَامَنُوا امْرَأَتَ
فِرْعَوْنَ إِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِي عِندَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِي
مِن فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهِۦ وَنَجِّنِي مِنَ الْقَوْمِ الظَّٰلِمِينَ ۝ وَمَرْيَمَ
ابْنَتَ عِمْرَٰنَ الَّتِيٓ أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيهِ مِن رُّوحِنَا
وَصَدَّقَتْ بِكَلِمَٰتِ رَبِّهَا وَكُتُبِهِۦ وَكَانَتْ مِنَ الْقَٰنِتِينَ ۝

यदि तुम दोनों अल्लाह की ओर रुजू हो, तो क्या है तुम्हारे दिल तो झुक चुके हैं,[६] और यदि तुम उस के विरुद्ध एका करोगी तो अल्लाह है उस का साथी, और जिबरील* और नेक ईमान* वाले और फ़िरिश्ते* इस के साथ-साथ उस के सहायक हैं[७] ।○

उस के रब* को क्या देर लगेगी यदि वह तुम्हें तलाक़* दे दे इस में कि वह तुम्हारे बदले तुम से अच्छी पत्नियाँ उसे प्रदान करे,[८] मुस्लिम,* ईमान* वाली, भक्ति और विनय-भाव से रहने वाली, तौबः* करने वाली, इबादत* करने वाली, 'सियाहत' करने वाली,[९] पति से परिचित (अर्थात् विधवा आदि) और कुमारियाँ ।○

४

"हे ईमान* लाने वालो! अपने-आप को और अपने लोगों को उस आग से बचाओ जिस का ईंधन मनुष्य और पत्थर हैं, जिस पर कठोर और सबल फ़िरिश्ते* नियुक्त हैं, वे अल्लाह की अवज्ञा नहीं करते जो हुक्म भी वह उन्हें दे, और करते हैं जो-कुछ कि उन्हें हुक्म दिया जाये । ○

हे कुफ़्र* करने वालो! आज उज़्र पेश न करो । तुम तो बस उसी का बदला पाओगे जो करते थे ।○

हे ईमान* लाने वालो! अल्लाह के आगे तौबः* करो सच्ची तौबः*! दूर नहीं कि तुम्हारा रब* तुम से तुम्हारी बुराइयों को दूर कर दे और तुम्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करे जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी, जिस दिन कि अल्लाह नबी* को और उन लोगों को जो उस के साथ ईमान* लाये रुसवा न करेगा । उन का प्रकाश उन के आगे-आगे दौड़ता होगा

६ इस में आप (सल्ल०) की पत्नियों हज़रत आयशः (रज़ि०) और हज़रत हफ़्सः (रज़ि०) की तौबः* का उल्लेख किया गया है ।

७ नबी सल्ल० ने अपनी पत्नी की उस भूल पर जिस का उल्लेख ऊपर की आयत में हो चुका है जब अपनी कुछ नाराज़गी ज़ाहिर की और कुछ खिंचे-खिंचे से मालूम हुये तो आप (सल्ल०) की उन दोनों पत्नियों के लिए यह बात असह्य हुई । उन में स्वाभिमान की भावना जाग उठी हालाँकि यह इस का मौक़ा न था । आप की ये दोनों पत्नियाँ भी आप से रुष्ट हो गईं । इस पर अल्लाह ने उन्हें चेतावनी दी कि नबी* से रूठ कर तुम अपना ही बुरा करोगी नबी* को इस से कोई हानि न पहुँचेगी ।

८ यद्यपि भूल केवल दो से हुई थी परन्तु सम्बोधित यहाँ आप (सल्ल०) की सभी पत्नियों को किया गया है ताकि सब के लिए चेतावनी हो और सख़्ती में भी कमी आ जाये ।

९ 'सियाहत' से अभिप्रेत यहाँ अल्लाह की प्रसन्नता और पवित्र उद्देश्य की पूर्ति के लिए ज़मीन में चलना या सफ़र करना है जैसे जिहाद*, हिजरत*, हज*, लोगों को अल्लाह के दीन* की ओर बुलाने आदि के लिए सफ़र करना । फिर 'सियाहत' में त्याग का अर्थ भी पाया जाता है । यह त्याग ही है कि अल्लाह का बन्दा अल्लाह के लिए ज़रूरत पड़ने पर घर-बार सब छोड़ कर हिजरत* कर जाता है । इसी प्रकार रोज़ः और व्रत भी एक प्रकार का त्याग है कि आदमी अपने रब* की ख़ुशी के लिए खाना पीना छोड़ देता है ।

१० यहाँ से सभी ईमान* वालों को सम्बोधित करते हुये उन्हें उन की ज़िम्मेदारियाँ याद दिलाई हैं ।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

और उन के दाहिने हाथ में होगा'' वे कह रहे होंगे : हमारे रब* ! हमारे लिए हमारे प्रकाश को पूर्ण कर दे, और हमें क्षमा कर दे ! निस्सन्देह तू हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला (सर्वशक्तिमान) है। ○

हे नबी* ! काफ़िरों* और मुनाफ़िक़ों* के साथ जिहाद* करो, और उन पर सख़्ती करो'' और उन का ठिकाना जहन्नम* है, और बुरी जगह है जहाँ पहुँचे। ○

अल्लाह कुफ़्र* करने वालों के लिए नूह की स्त्री को और लूत की स्त्री को मिसाल पेश करता है, दोनो (स्त्रियाँ) हमारे बन्दों में से दो नेक बन्दों के मातहत थीं। फिर उन्हों ने उन के साथ विश्वासघात किया तो वे अल्लाह के आगे उन के कुछ काम न आये और कहा गया : दोनों दाख़िल हो जाओ आग में दाख़िल होने वालों के साथ''। ○

और अल्लाह ईमान* लाने वालों के लिए फ़िरऔन की स्त्री को मिसाल में पेश करता है'' जब उस ने कहा : रब* ! मेरे लिए अपने पास जन्नत* में एक घर बना, और मुझे फ़िरऔन और उस के कर्म से छुटकारा दे, और छुटकारा दे मुझे ज़ालिम लोगों से। ○

और इमरान की बेटी मरयम को (मिसाल में पेश करता है) जिस ने अपने सतीत्व की रक्षा की,'' फिर हम ने उस में अपनी रूह फूँकी''। और उस ने अपने रब* की बातों और उस की किताबों* की तसदीक़ की, और वह भक्ति और विनय-भाव से रहने वालों में से थी।

---

११ दे० सूरः अल-हदीद फ़ुट नोट ६।

१२ इस आयत में आप (सल्ल०) को सख़्ती का हुक्म दिया गया ताकि जिन में कुछ भी सलाहियत हो वे अल्लाह की ओर पलटें और केवल वही लोग रह जायें जिन्हें जहन्नम* ही का ईंधन बनना है (दे० सूरः आल-इमरान आयत ७३-७४)।

इस आयत* से नबी* सल्ल० की उस विशेषता पर प्रकाश पड़ता है जिस की ओर पिछले नबियों* ने भी संकेत किया है। हज़रत यहया अ० आप (सल्ल०) के बारे में कहते हैं :

"उस का सूप उस के हाथ में है और वह अपने खलिहान को ख़ूब साफ़ करेगा और अपने गेहूँ को तो खत्ते में इकट्ठा करेगा परन्तु भूसी को उस आग में जलावेगा जो बुझने की नहीं"। दे० बाइबिल 'मत्ती' (Matt.) ३ : १२।

१३ मालूम हुआ कि आदमी के पास यदि ईमान* नहीं है तो आख़िरत* में रिश्तेनाते उस के कुछ काम नहीं आयेंगे।

१४ फ़िरऔन ज़ालिम था मगर उस की स्त्री ईमान* वाली और अल्लाह की आज्ञा का पालन करने वाली थी। इसी लिए ईमान* वालों के लिए उस की कीर्ति को आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है।

१५ अर्थात् बुराइयों से बची रही। दे० सूरः अल-अंबिया फ़ुट नोट ४१।

१६ हज़रत आदम अ० की तरह हज़रत मसीह अ० भी केवल अपने रब* के हुक्म से पैदा हो गये। (दे० सूरः आले इमरान आयत ५६)। हज़रत आदम अ० को अल्लाह ने बिना माता-पिता के पैदा किया था और हज़रत मसीह अ० को बिना पिता के। हज़रत मरयम (हज़रत मसीह की माता) को भी एक [illegible] बनाया अभीष्ट था। उन में अपना हुक्म या 'अम्र' डाला और वे गर्भवती हो गईं। [illegible] का 'अम्र' [illegible], 'रूह' फूँकना, या अल्लाह की उक्ति 'हो जा' (दे० सूरः आले इमरान आयत ५६) सब एक ही [illegible] [illegible] अभिव्यक्तियाँ हैं।

* इस का अर्थ अन्त में दी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

६७--अल-मुल्क

(परिचय)

[1] इस सूरः* का नाम 'अल-मुल्क' सूरः की पहली आयत* से लिया गया है। इस नाम का सूरः के केन्द्रीय विषय से गहरा सम्बन्ध है।

अनुमान है कि प्रस्तुत सूरः* मक्का के मध्य-काल में उतरी है।

प्रस्तुत सूरः* वास्तव में अल्लाह के महत्व को व्यक्त करने वाली सूरः है। फिर इस से नुबूवत* के सम्पर्क का उल्लेख किया गया है और फिर इस तरह आख़िरत* की सत्यता को सिद्ध किया गया है[2]। नुबूवत* का इन्कार वास्तव में अल्लाह के महत्व, उस की हुकूमत और उस की हिकमत और तदबीर का इन्कार है।

इस सूरः* में अल्लाह के गुणों और चमत्कारों का उल्लेख[3] कर के आख़िरत* की पुष्टि की गई है। अल्लाह के एक विशेष नाम रहमान* का उल्लेख विशेष रूप से इस सूरः में हुआ है। यदि मनुष्य को अल्लाह की दयालुता का पूर्ण विश्वास हो जाये तो वह अल्लाह के न्याय और उस के निर्णय आदि के बारे में किसी प्रकार का सन्देह नहीं कर सकता। आख़िरत* पर उस का ईमान* दृढ़ हो जायेगा।

इस सूरः* में एक तरफ़ काफ़िरों* के अज्ञान और उन के निस्सहाय होने का उल्लेख हुआ है; दूसरी ओर उन लोगों की सफलता का वर्णन किया गया है जो संसार में बिन देखे अपने रब* से डरते हैं। फिर लोगों को सचेत किया गया है कि अल्लाह अपने बन्दों से बे-ख़बर नहीं है। ज़मीन पर बसने वालों को निश्चिन्त नहीं होना चाहिए। आसमानों का मालिक चाहे तो ज़मीन को हिला डाले या लोगों को हवा के द्वारा विनष्ट कर के रख दे। अल्लाह यदि रोज़ी रोक ले, तो कौन है जो लोगों के लिए रोज़ी का प्रबन्ध कर सके? लोगों को जो चीज़ ईमान लाने से रोके रही है वह उन की सरकशी के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

---

[1] यहाँ से सूरतों का एक नवीन व्यवस्थित क्रम शुरू होता है।

[2] दे० आयत ८-१०; २३-२६।

[3] दे० आयत १, ३, १५, १६, २३, २४, ३०।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अल-मुल्क

(मक्का में उतरी — आयतें* ३०)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

سورة الملك

بسم الله الرحمن الرحيم

تبارك الذي بيده الملك وهو على كل شيء قدير ۝ الذي
خلق الموت والحيوة ليبلوكم أيكم أحسن عملا وهو العزيز
الغفور ۝ الذي خلق سبع سموت طباقا ما ترى في خلق
الرحمن من تفوت فارجع البصر هل ترى من فطور ۝ ثم
ارجع البصر كرتين ينقلب إليك البصر خاسئا وهو حسير ۝
ولقد زينا السماء الدنيا بمصابيح وجعلناها رجوما للشيطين
واعتدنا لهم عذاب السعير ۝ وللذين كفروا بربهم عذاب
جهنم وبئس المصير ۝ إذا ألقوا فيها سمعوا لها شهيقا و
هي تفور ۝ تكاد تميز من الغيظ كلما ألقي فيها فوج سألهم
خزنتها ألم يأتكم نذير ۝ قالوا بلى قد جاءنا نذير
فكذبنا وقلنا ما نزل الله من شيء إن أنتم إلا في ضلل
كبير ۝ وقالوا لو كنا نسمع أو نعقل ما كنا في أصحب السعير ۝
فاعترفوا بذنبهم فسحقا لأصحب السعير ۝ إن الذين
يخشون ربهم بالغيب لهم مغفرة وأجر كبير ۝ وأسروا
قولكم أو اجهروا به إنه عليم بذات الصدور ۝ ألا يعلم

†बरकत वाला है वह (अल्लाह) जिस के हाथ में राज्य है, और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।○

जिस ने मृत्यु और जीवन बनाया ताकि वह तुम्हें आज़माये कि तुम में कौन अच्छे-से-अच्छा काम करने वाला है;[१] और वह प्रभुत्वशाली और क्षमाशील है, ○

जिस ने ऊपर-तले सात आसमान बनाये। तू रहमान* (कृपाशील ईश्वर) की रचना में कोई त्रुटि नहीं देखता; अब निगाह डाल : क्या तू कोई दर्ज देखता है ? ○ फिर बार-बार निगाह डाल, निगाह थकी-हारी तेरी ओर पलट आयेगी[२] ○

और हम ने दुनियाँ के आसमान (निकटवर्ती आकाश) को प्रदीपकों (अर्थात् तारों और नक्षत्रों) से सजाया, और उन से शैतानों* को मार-भगाने का काम लिया,[३] और उन (शैतानों*) के लिए हम ने दहकती आग (जहन्नम*) का अज़ाब तैयार कर रखा है। ○

---

† यहाँ से उन्तीसवाँ पारः (Part XXIX) शुरू होता है।

१ अर्थात् यह सांसारिक जीवन तो केवल इस लिए है कि लोग अच्छे कर्म कर के ईश्वर की दयालुता के पात्र बनें। यह जीवन तो केवल परीक्षा-मात्र है कि कौन अच्छे कर्म करता है।

२ अल्लाह ने विश्व की ओर संकेत किया है कि क्या मनुष्य को उस में कहीं कोई कमी, त्रुटि (Defect) बिगाड़ और खलल दीख पड़ता है। यह ब्रह्माण्ड अत्यन्त विशाल और अपने स्रष्टा की कुशलता, सामर्थ्य और उस के ज्ञान की पूर्णता का सूचक है, इस का आभास हर विचारशील व्यक्ति को हो सकता है। हमारी पृथ्वी से सूर्य १२ लाख गुणा बड़ा है और सूर्य से हमारी पृथ्वी साढ़े नौ करोड़ मील की दूरी पर है। विश्व के विराट विस्तार का इस से अन्दाज़ा कीजिए कि जिस सौर्य-जगत् में हमारी ज़मीन सम्मिलित है उस की विशालता का यह हाल है कि उस के दूरस्थ ग्रह (Neptune) की दूरी सूर्य से कम से कम २ अरब ७९ करोड़ ३० लाख मील होगी। यह भी याद रहे कि यह सौर्य-जगत् जिस में हमारी पृथ्वी अवस्थित है वह एक आकाश-गंगा (Galaxy) का एक लघु अंश मात्र है। उस आकाश-गंगा में जिस से हमारे सौर्य-जगत् का सम्बन्ध है लग-भग ३ हज़ार मिलयन (३ अरब) सूर्य वर्तमान है। जिन में से निकटतम सूर्य भी हमारी धरती से इतनी दूरी पर है कि उस का प्रकाश हम तक ४ वर्ष में पहुँच पाता है। प्रकाश की गति तो आप को मालूम है कि प्रति सेकण्ड १८६००० मील है। फिर यह आकाश-गंगा जिस में हमारी पृथ्वी, हमारा सूर्य और हमारे ही सदृश पथ्य अवस्थित है वही पूरा ब्रह्माण्ड नहीं है बल्कि यह लगभग २० लाख निहारिकाओं (Spiral Nebulae) में से एक है। इन में से निकटतम निहारिका की दूरी भी इतनी है कि उस के प्रकाश को हम तक पहुँचने में १० लाख वर्ष लग जाते हैं, रहे वे अत्यन्त दूरी पर अवस्थित पिण्ड जिन्हें अधिकाधिक शक्ति-सम्पन्न दूरदर्शियों द्वारा देखा जा सका है उन का प्रकाश हम तक १० करोड़ वर्षों में पहुँचता है। मनुष्य अब तक जो-कुछ देख सका है जब कि रेडियो-दूरदर्शी ने दर्शक की दृष्टि-सीमा को अत्यधिक बढ़ा दिया है— (शेष अगले पृष्ठ पर)

* का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

مَنْ خَلَقَ ۭ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ۝ هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ
ذَلُولًا فَامْشُوا فِي مَنَاكِبِهَا وَكُلُوا مِنْ رِزْقِهِ ۖ وَإِلَيْهِ النُّشُورُ ۝
أَأَمِنْتُمْ مَنْ فِي السَّمَاءِ أَنْ يَخْسِفَ بِكُمُ الْأَرْضَ فَإِذَا هِيَ
تَمُورُ ۝ أَمْ أَمِنْتُمْ مَنْ فِي السَّمَاءِ أَنْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ۖ فَسَ
تَعْلَمُونَ كَيْفَ نَذِيرِ ۝ وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ
كَانَ نَكِيرِ ۝ أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صَافَّاتٍ وَيَقْبِضْنَ ۚ
مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا الرَّحْمَٰنُ ۚ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ بَصِيرٌ ۝ أَمَّنْ هَٰذَا
الَّذِي هُوَ جُنْدٌ لَكُمْ يَنْصُرُكُمْ مِنْ دُونِ الرَّحْمَٰنِ ۚ إِنِ الْكَافِرُونَ
إِلَّا فِي غُرُورٍ ۝ أَمَّنْ هَٰذَا الَّذِي يَرْزُقُكُمْ إِنْ أَمْسَكَ رِزْقَهُ ۚ
بَلْ لَجُّوا فِي عُتُوٍّ وَنُفُورٍ ۝ أَفَمَنْ يَمْشِي مُكِبًّا عَلَىٰ وَجْهِهِ
أَهْدَىٰ أَمَّنْ يَمْشِي سَوِيًّا عَلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝ قُلْ هُوَ الَّذِي
أَنْشَأَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۖ قَلِيلًا مَا تَشْكُرُونَ ۝
قُلْ هُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ
هَٰذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ قُلْ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ وَإِنَّمَا
أَنَا نَذِيرٌ مُبِينٌ ۝ فَلَمَّا رَأَوْهُ زُلْفَةً سِيئَتْ وُجُوهُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَقِيلَ
هَٰذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تَدَّعُونَ ۝ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَهْلَكَنِيَ اللَّهُ وَمَنْ
مَعِيَ أَوْ رَحِمَنَا فَمَنْ يُجِيرُ الْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ۝ قُلْ هُوَ الرَّحْمَٰنُ

और उन लोगों के लिए जिन्हों ने अपने रब* के साथ कुफ़्र* किया जहन्नम* का अज़ाब है, और बहुत ही बुरी जगह है जहाँ पहुँचे। ○

जब ये उस (जहन्नम*) में डाले जायेंगे तो ये उस की भीषण गूँज सुनेंगे और वह भड़क रही होगी, ○ ऐसा लगता है कि जोश के मारे फट पड़ेगी।

जब भी उस में कोई गरोह डाला गया उस (जहन्नम*) के अध्यक्ष (फ़रिश्ते*) ने उन से पूछा : क्या तुम्हारे पास कोई सचेत करने वाला नहीं आया? ○

बोले : क्यों नहीं, अवश्य हमारे पास सचेत करने वाला आया था; फिर हम ने झुठला दिया और कहा : अल्लाह ने कुछ भी नहीं उतारा है; तुम तो बस बड़ी गुमराही में पड़े हुये हो। ○

और कहा : यदि हम सुनते होते या बुद्धि से काम लेते तो हम दहकती आग में पड़ने वालों में न होते। ○

इस प्रकार उन्हों ने अपने गुनाहों का इक़रार कर लिया; तो दूर हों दहकती आग (में पड़ने) वाले। ○

निस्सन्देह जो लोग बिन देखे अपने रब* से डरते हैं, उन के लिए क्षमा और बड़ा बदला है। ○

और तुम अपनी बात छिपा कर कहो या उसे खोल कर कहो, निस्सन्देह वह सीनों (दिलों) तक की बात जानता है। ○

क्या वह न जानेगा जिस ने पैदा किया[४]? और वह अत्यन्त सूक्ष्म (-दर्शी) और ख़बर रखने वाला है। ○

वही है जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को अधीन कर दिया, तो उस के स्कन्धों पर चलो-फिरो और उस की दी हुई रोज़ी में से खाओ और उसी की ओर (मृत्यु के पश्चात्) दोबारा जीवित हो कर जाना है। ○ १५

क्या तुम उस से निश्चिन्त हो जो आसमान में है कि वह तुम्हें ज़मीन में धँसा दे और वह डगमगाने लगे? ○

या तुम उस से निश्चिन्त हो जो आसमान में है कि वह तुम पर पथराव करने वाली आँधी भेज दे[५]? अब जल्द ही तुम्हें मालूम हो जायेगा कि मेरा डरावा कैसा है[६]। ○

और वे लोग झुठला चुके हैं जो इन से पहले थे, तो देखो कैसी रही मेरी सज़ा[७]! ○

वह अल्लाह के राज्य का बहुत छोटा-सा भाग है। परन्तु जो-कुछ हम जान सके हैं वह विश्व की विराटता का अनुमान लगाने के लिए काफ़ी है।

३ दे० सूरः बनी इस्राईल आयत ६७-६८।

४ मतलब यह है कि जिस अल्लाह ने पैदा किया है उस से कोई चीज कैसे छिपी रह सकती है।

५ जैसा कि इस से पहले इस तरह का अज़ाब हम भेज भी चुके हैं।

६ अर्थात् इन्हें जो मुहलत मिली है उस से ये निश्चिन्त न हों यदि ये हमारी अवज्ञा और कुफ़्र* से बाज़ नहीं आते तो हम.रे प्रकोप से ये बच नहीं सकते। (७ अगले पृष्ठ पर)

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

६८--अल-क़लम

(परिचय)

प्रस्तुत सूरः* का नाम 'अल-क़लम' सूरः की पहली आयत* से लिया गया है।

यह मक्का की अत्यन्त आरम्भिक सूरः है।

प्रस्तुत सूरः* में उन सत्य के झुठलाने वालों के लिए झिड़की और ताड़ना है जो कृपणता और अधमता की प्रतिमा थे।

प्रस्तुत सूरः* नबी सल्ल० के महान् चरित्र और स्वभाव पर प्रकाश डालती है। इस सूरः से इस का भी अन्दाज़ा होता है कि आप (सल्ल०) को झुठलाने वाले नैतिक दृष्टि से कितने गिर चुके थे और मनुष्यत्व से वे कितने दूर जा पड़े थे।

इस से पहले जो सूरः गुज़र चुकी है उस से हमें अपने रब* का ज्ञान प्राप्त होता है; उस में अल्लाह के गुणों और सौन्दर्य की पूर्ण रूप से अभिव्यक्ति हुई है। प्रस्तुत सूरः रसूल* के महान् एवं मनोहर स्वभाव की सूचक है।

सूरः* के आरम्भ में नबी सल्ल० को तसल्ली देते हुये कहा गया है कि आप (सल्ल०) अत्यन्त उच्च स्वभाव (Nature) वाले हैं। आप (सल्ल०) कोई उन्मादी व्यक्ति नहीं हैं जैसा कि काफ़िरों* का विचार है। फिर इस के बाद काफ़िरों* के अवगुणों का उल्लेख किया गया है कि नैतिक एवं मानसिक दृष्टि से वे कितने गिर चुके हैं।

इस के बाद बाग़ वालों का क़िस्सा बयान हुआ है इस क़िस्से से इस बात का अनुभव कराया गया है कि कृपणता का परिणाम कितना बुरा होता है। अपने रब* को भुला देने का परिणाम कभी अच्छा नहीं हो सकता। अच्छे और समझदार लोग वही हैं कि जब उन्हें अपनी भूल का आभास हो जाता है तो वे तुरन्त अपने रब* की ओर पलटते हैं और अपने रब* से सदा अच्छी आशा रखते हैं।

फिर काफ़िरों* की नीति पर आलोचना करते हुये बताया गया है कि आख़िरत* में अपमान के अतिरिक्त उन के हिस्से में और कुछ न आयेगा। दुनियाँ में उन्हें बुलाया जाता है कि अपने रब* को सजदः* करें; परन्तु वे इस से मुँह मोड़ते हैं आख़िरत* में वे सजदः* करना चाहेंगे परन्तु अपने रब* को सजदः* न कर सकेंगे। इस बड़ी नेमत से वे वंचित ही रहेंगे।

सूरः* के अन्त में हज़रत यूनुस अ० के जीवन-वृत्तान्त की ओर संकेत करते हुये नबी सल्ल० को तसल्ली दी गई है। और सत्य पर जमे रहने और धैर्य्य से काम लेने का आदेश दिया गया है। यद्यपि अल-क़लम बिलकुल आरम्भिक समय की सूरः है फिर भी इस में साफ़ तौर पर घोषित कर दिया गया है कि क़ुरआन* सम्पूर्ण संसार के लिए याद-दिहानी बन कर उतरा है। किसी जाति-विशेष के लिए नहीं बल्कि सारे मनुष्यों के पथ-प्रदर्शन के लिए अल्लाह ने इसे उतारा है।

---

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

या तुम्हारे पास कोई किताब है जिस में तुम पढ़ते हो? ○ उस में तुम्हारे लिए है जो-कुछ तुम पसन्द कर लो? ○

या तुम ने हम से क़समें ले रखी हैं जो क़ियामत* के दिन तक चलती रहेंगी, कि तुम्हारे लिए है जैसा-कुछ तुम कह दो? ○ ४०

इन से पूछो : इन में से कौन है इस का ज़िम्मेदार। ○

या इन के कुछ (अल्लाह के) शरीक मिल गये हैं? तो ले आयें अपने शरीकों को यदि ये च्चे हैं ○

जिस दिन हलचल पड़ेगी,[11] और ये सजदे* के लिए बुलाये जायेंगे तो न कर सकेंगे, ○

इन की निगाहें झुकी होंगी, और इन पर ज़िल्लत छा रही होगी। और ये उस समय भी जदः* करने के लिए बुलाये जाते रहे हैं जब कि ये भले-चंगे थे। ○

तो मुझे और उन को जो इस बात को झुठलाते हों छोड़ दो। हम उन्हें धीरे-धीरे (विनाश ी ओर) ले जायेंगे इस तरह कि उन्हें ख़बर तक न होगी। ○

और मैं उन्हें ढील देता हूँ, निस्सन्देह मेरा दाँव बड़ा मज़बूत है (उस का कोई तोड़ नहीं)। ○ ४५

(हे मुहम्मद!) क्या तुम उन से कोई बदला माँगते हो कि वे भुगतान के बोझ से दबे जाते हैं? ○

या इन के पास परोक्ष का ज्ञान है कि ये लिख लेते हों? ○

तो अपने रब* के फ़ैसले तक धैर्य से काम लो, और मछली वाले[12] की तरह न हो जाना[13]। जब कि उस ने (अपने रब* को) पुकारा और हालत यह थी कि वह घुट रहा था। ○

यदि तुम्हारे रब* की कृपा ने उसे न सँभाल लिया होता[14] तो वह निन्दित अवस्था में चटियल मैदान में फेंक दिया जाता। ○

फिर उस के रब* ने उसे चुन लिया और उसे अच्छे लोगों में से कर दिया। ○ ५०

और ये कुफ़्र* करने वाले जब 'ज़िक्र' (क़ुरआन) सुनते हैं तो ऐसा लगता है कि ये अपनी निगाहों से तुम्हें फिसला ही देंगे और कहते हैं : वह तो उन्मादी है। ○

और वह[15] तो बस एक 'ज़िक्र' (याद-दिहानी) है सारे संसार के लिए। ○

---

११ दे० सूरः अल-मआरिज आयत ४३-४४।

१२ यह संकेत हज़रत यूनुस अ० की ओर है जिन्हें एक मछली ने निगल लिया था। दे० सूरः अल-अंबिया आयत ८७-८८; सूरः यूनुस फुट नोट २२।

१३ उन्हों ने जल्दी की थी अपने रब* के आदेश की प्रतीक्षा किये बिना अपनी जाति वालों को छोड़ कर चले गये थे। दे० सूरः यूनुस फुट नोट २२।

१४ अल्लाह की उन पर कृपा हुई और उन्हें दुआ सुझाई गई फिर उन्हों ने अपने रब* से प्रार्थना की। अल्लाह ने उन की प्रार्थना सुन ली और उन्हें संकट से छुटकारा दिया। दे० सूरः अस-साफ़्फ़ात आयत १३९-१४८।

१५ अर्थात् क़ुरआन जिसे सुन कर ये रसूल* को उन्मादी और दीवाना कहते हैं।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

६९--अल-हाक़्क़ः

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अल-हाक़्क़ः' सूरः की आरम्भिक आयत से लिया गया है।

सूरः* की वार्त्ताओं से अनुमान होता है कि यह मक्का के मध्य-काल की सूरतों में से है। कुछ कथनों से मालूम होता है कि यह सूरः हज़रत उमर रज़ि० के ईमान* लाने से पहले उतरी है। हज़रत उमर रज़ि० अपने इस्लाम* क़ुबूल करने से पहले की घटना का उल्लेख करते हैं कि मैं एक बार आप (सल्ल०) के पास गया देखा कि आप (सल्ल०) 'हरम' (काबः) में पहुँच गये हैं। मैं भी पहुँचा और आप के पीछे खड़ा हो गया। आप (सल्ल०) ने सूरः 'अल-हाक़्क़ः' पढ़नी शुरू की। मुझे उस के साहित्य-लालित्य पर आश्चर्य होने लगा। मैं ने सोचा 'क़ुरैश' ठीक ही कहते हैं कि यह व्यक्ति कवि है। मैं यही सोच रहा था कि आप (सल्ल०) ने यह आयत पढ़ी : "यह किसी कवि का कलाम नहीं—तुम बहुत कम ईमान* लाते हो" । (आयत ४१) मैं ने सोचा यह कवि नहीं तो 'काहिन' अवश्य है। आप (सल्ल०) ने यह आयत पढ़ी : *"और न किसी 'काहिन' (तान्त्रिक और देवज्ञ आदि) का 'कलाम' है—तुम बहुत कम चेतते हो !"* (आयत ४२)। आप (सल्ल०) सूरः का पाठ करते चले गये यहाँ तक कि सूरः समाप्त हो गई। यह पहला अवसर था कि मेरे दिल में इस्लाम* घर कर गया।

प्रस्तुत सूरः में रिसालत* को झुठलाने वालों और रसूल* की अवज्ञा करने वालों को उन के कुफ़्र* और कृपणता के कारण धमकी दी गई है[1]। इस सूरः से रिसालत* की पुष्टि इस पहलू से होती है कि रसूल* लोगों को आख़िरत* की सूचना देता है।

प्रस्तुत सूरः* और सूरः 'अल-वाक़िअः' में बड़ी समानता पाई जाती है।

सूरः के आरम्भ में क़ियामत* की सूचना देते हुये बताया गया है कि उन जातियों का क्या परिणाम हुआ है जिन्हों ने अपनी सरकशी के कारण उसे झुठलाया था। फिर आख़िरत* का नक़्शा पेश किया गया है कि किस तरह उस दिन लोगों का किया-धरा उन के सामने आयेगा। लोग दो गरोहों में विभक्त हो जायेंगे। वे लोग जन्नत* में जायेंगे जिन्हें उन का 'आमाल-नामा' (कर्म-पत्र) दायें हाथ में दिया गया। और वे लोग नरक-गामी होंगे जिन्हें उन का कर्म-पत्र बायें हाथ में दिया गया।

फिर क़ुरआन के ईश्वरीय ग्रन्थ होने पर प्रत्यक्ष और परोक्ष समस्त वस्तुओं को गवाह ठहराया गया है कि यदि यह रसूल* इस से सम्बन्ध लगा कर झूठ बातें गढ़ता तो हम इस की सख़्त पकड़ करते और इसे हलाक कर देते।

यह क़ुरआन 'तज़्किरः'* है परन्तु इस से वही लोग लाभान्वित होते हैं जिन के दिल में अल्लाह का डर है।

---

[1] दे० आयत ३३-३४।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

७०--अल-मआरिज

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अल-मआरिज' सूरः की आयत* ३ से लिया गया है।

यह सूरः* मक्का में उतरने वाली प्रारम्भिक सूरतों* में से हैं।

प्रस्तुत सूरः* में काफ़िरों* के सत्य को झुठलाने और अज़ाब की जल्दी मचाने पर उत्तम रीति से सब्र करने का हुक्म दिया गया है[1]। आगे आने वाली सूरः (सूरः नूह) में हज़रत नूह अ० की मिसाल पेश की गई है कि किस तरह उन्हों ने दीर्घ काल तक अपनी जाति वालों के विरोध पर सब्र किया अन्त में जब उन लोगों का अत्याचार, कुफ़्र* और सरकशी बढ़ती गई तो फिर वह समय आ गया कि अल्लाह ने विरोधियों को उन के किये का मज़ा चखाया। उन्हें अल्लाह के अज़ाब ने विनष्ट कर के रख दिया; अच्छे और नेक लोगों को अल्लाह ने अपने अज़ाब से बचा लिया।

सूरः* के आरम्भ में कहा गया है कि जिस चीज़ को ये काफ़िर* दूर और असम्भव समझ रहे हैं वह कदापि दूर नहीं है। अल्लाह उन्हें मुहलत दे रहा है। वह समय दूर नहीं कि वे उस चीज़ को अपनी आँखों से देख लेंगे जिस का आज उपहास कर रहे हैं।

इस के बाद क़ियामत* का नक़शा पेश किया गया है कि उस दिन किस तरह हर एक को अपनी-अपनी पड़ी होगी। अपराधी लोगों को यही चिन्ता होगी कि किसी तरह वे अज़ाब से छुटकारा पा जायें परन्तु वे अज़ाब से कदापि छुटकारा न पा सकेंगे।

फिर मनुष्य की दुर्बलता का उल्लेख किया गया है कि वह जी का कितना कच्चा है। तकलीफ़ में वह बिलबिला उठता है परन्तु जब उसे सुख और आराम मिलता है तो बुरे दिन को भूल जाता है और कृपणता से काम लेने लगता है। दीन-दुखियों पर अपना माल ख़र्च नहीं करता। फिर बताया गया है कि यह दुर्बलता उन लोगों में नहीं पाई जाती जो ईमान* वाले हैं फिर विस्तारपूर्वक उन के गुणों और विशेषताओं का उल्लेख किया है।

सूरः* के अन्तिम भाग में काफ़िरों* की मनोवृत्ति पर प्रकाश डाला गया है कि किस तरह क़ुरआन की आवाज़ से उन्हें चोट लगती है और वे नबी सल्ल० के पास सत्य का इन्कार करने और अपनी बड़ाई जताने के लिए उमड़े आते हैं हालाँकि वे भली भाँति जानते हैं कि अल्लाह ने उन्हें किस चीज़ से पैदा किया है। अल्लाह जो पूर्व और पश्चिम अर्थात् समस्त संसार का मालिक है वह यह सामर्थ्य रखता है कि इन की जगह इन से अच्छे बना दे।

फिर कहा गया है कि इन के पीछे पड़ने की आवश्यकता नहीं इन्हें इन के हाल पर छोड़ दो ये बातें बनाते और खेलते रहें यहाँ तक कि अपना बुरा परिणाम देख लें।

---

[1] दे० आयत १-७।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

إِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَأْمُونٍ ۝ وَالَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ حَافِظُونَ ۝
إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ۝
فَمَنِ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعَادُونَ ۝ وَالَّذِينَ هُمْ
لِأَمَانَاتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُونَ ۝ وَالَّذِينَ هُمْ بِشَهَادَاتِهِمْ قَائِمُونَ ۝
وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ۝ أُولَٰئِكَ فِي جَنَّاتٍ
مُكْرَمُونَ ۝ فَمَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا قِبَلَكَ مُهْطِعِينَ ۝ عَنِ الْيَمِينِ
وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِينَ ۝ أَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِنْهُمْ أَنْ يُدْخَلَ جَنَّةَ
نَعِيمٍ ۝ كَلَّا إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِمَّا يَعْلَمُونَ ۝ فَلَا أُقْسِمُ بِرَبِّ
الْمَشَارِقِ وَالْمَغَارِبِ إِنَّا لَقَادِرُونَ ۝ عَلَىٰ أَنْ نُبَدِّلَ خَيْرًا مِنْهُمْ
وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ ۝ فَذَرْهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا حَتَّىٰ يُلَاقُوا
يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ۝ يَوْمَ يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ سِرَاعًا
كَأَنَّهُمْ إِلَىٰ نُصُبٍ يُوفِضُونَ ۝ خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ
ذِلَّةٌ ذَٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ۝

काँपते रहते हैं ○ — उन के रब* का अज़ाब है ही ऐसा कि उस से निश्चिन्त न रहा जाये ○ — और जो अपनी शर्म-गाहों (गुप्त-इन्द्रियों) की हिफ़ाज़त करते हैं ○ — सिवाय अपनी पत्नियों और उन (लौंडियों*) के जो उन की मिल्क में हों, कि इस पर

३० वे कुछ भी निन्दनीय नहीं हैं; ○ परन्तु जो कोई इस के आगे कुछ और चाहे, तो ऐसे ही लोग हद से आगे बढ़ने वाले हैं; ○ — और जो अपनी अमानतों और अपनी प्रतिज्ञा का ध्यान रखते हैं[७] । ○ और जो अपनी गवाहियों पर क़ायम रहते हैं ○ और जो अपनी नमाज़* की हिफ़ाज़त करते रहते हैं, ○ यही लोग हैं जो जन्नतों* में प्रतिष्ठापूर्वक

३५ रहेंगे[८] । ○

तो इन काफ़िरों* को क्या हुआ है कि (हे मुहम्मद!) ये तुम्हारी ओर लपके चले आ रहे हैं, ○ दायें से भी और बायें से भी टोलियों की टोलियाँ ? ○

क्या इन में से हर एक इस बात का लालच रखता है कि वह नेमत-भरी जन्नत* में दाख़िल कर दिया जायेगा ? ○

कदापि नहीं ! हम ने जिस चीज़ से इन को बनाया है उसे वे जानते हैं[९] । ○ कुछ नहीं, मैं तो क़सम खाता हूँ उदय होने के स्थानों की और अस्त होने के स्थानों की[१०] निस्सन्देह हमारे

४० बस में है ○ कि इन की जगह इन से अच्छे लोग बना दें[११] । और हमारे बस से बाहर नहीं । ○

अब छोड़ दो इन्हें बातें बनायें और खेलें यहाँ तक कि वह दिन इन के सामने आ जाये जिस का इन से वादा किया जाता है, ○ वह दिन जब कि ये क़ब्रों से तेज़ी से निकलेंगे, जैसे किसी निशाने पर दौड़े जा रहे हों, ○ इन की निगाहें झुकी हुई हैं, और इन पर ज़िल्लत छाई हुई है : यह है वह दिन जिस का इन से वादा किया जाता रहा है[१२] । ○

---

७ और वे उस गवाही का भी ध्यान रखते हैं जो उन्हों ने अपने रब* के रब होने का इक़रार करते हुये दी थी।

८ यहाँ अल्लाह ने ईमान* वालों के जिन गुणों का उल्लेख किया है उन में नमाज़* को प्रमुखता प्राप्त है । ईमान* वालों की विशेषताओं के उल्लेख का प्रारम्भ नमाज़* से किया और नमाज़* ही पर उस को समाप्त किया । सूरः अल-मूमिनून के आरम्भ में भी ऐसे ही नमाज़* से ईमान* वालों के गुणों के उल्लेख का आरम्भ किया गया है और नमाज़* ही पर उसे समाप्त भी किया गया है । नमाज़* वास्तव में ईमान* वालों के जीवन का सारांश और समस्त भलाइयों का उद्गम और स्रोत है ।

९ अर्थात् ये जानते हैं कि इन की सृष्टि मिट्टी से हुई है । इन्हें दोबारा पैदा करना हमारे लिए कुछ भी मुश्किल नहीं है । इन के लिए यह कदापि उचित नहीं कि अपनी बड़ाई का घमण्ड करें । बड़ाई और इज़्ज़त तो उसी के लिए है ।

१० सूर्य सदा न एक ही स्थान से उदय होता है और न वह सदा एक ही स्थान पर अस्त होता है । इस के अतिरिक्त वह पृथ्वी के विभिन्न भागों में विभिन्न समयों में उदय और अस्त होता है । इसी लिए पूर्व दिशा और पश्चिम को बहुवचन प्रयोग किया गया है । दे० सूरः अस-साफ़्फ़ात आयत ५ ।

११ अर्थात् जब हमें इस का सामर्थ्य प्राप्त है कि सूर्य को हर दिन नवीन बिन्दु से उदय करें तो हम इन की जगह इन से अच्छे बना सकते हैं ।

१२ और जिस की ये जल्दी मचाते रहे हैं । जिसे ये दूर और असम्भव समझ रहे थे आज वह क़रीब और सम्भव हो गया ।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

सूरः* अल-मआरिज

(मक्का में उतरी — आयतें* ४४)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سَاَلَ سَآئِلٌۢ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ ۙ لِّلْكٰفِرِيْنَ لَيْسَ لَهٗ دَافِعٌ ۙ مِّنَ
اللّٰهِ ذِي الْمَعَارِجِ ۙ تَعْرُجُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ
كَانَ مِقْدَارُهٗ خَمْسِيْنَ اَلْفَ سَنَةٍ ۚ فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيْلًا ۝
اِنَّهُمْ يَرَوْنَهٗ بَعِيْدًا ۙ وَّنَرٰىهُ قَرِيْبًا ۙ يَوْمَ تَكُوْنُ السَّمَآءُ كَالْمُهْلِ ۙ
وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ۙ وَلَا يَسْـَٔلُ حَمِيْمٌ حَمِيْمًا ۚ يُّبَصَّرُوْنَهُمْ
يَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِيْ مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍۢ بِبَنِيْهِ ۙ وَصَاحِبَتِهٖ
وَاَخِيْهِ ۙ وَفَصِيْلَتِهِ الَّتِيْ تُـْٔوِيْهِ ۙ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۙ
ثُمَّ يُنْجِيْهِ ۙ كَلَّا ۭ اِنَّهَا لَظٰى ۙ نَزَّاعَةً لِّلشَّوٰى ۚ تَدْعُوْا مَنْ
اَدْبَرَ وَتَوَلّٰى ۙ وَجَمَعَ فَاَوْعٰى ۝ اِنَّ الْاِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوْعًا ۙ
اِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوْعًا ۙ وَّاِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوْعًا ۙ اِلَّا
الْمُصَلِّيْنَ ۙ الَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ دَآئِمُوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ فِيْٓ
اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُوْمٌ ۙ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ۙ وَالَّذِيْنَ يُصَدِّقُوْنَ
بِيَوْمِ الدِّيْنِ ۙ وَالَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ۚ

माँगा एक माँगने वाले ने अज़ाब जो आ कर रहेगा ○ काफ़िरों* के लिए है, कोई नहीं उस (अज़ाब) को टालने वाला, ○ अल्लाह की ओर से होगा, जो ऊँचे दरजों वाला है ○ फ़रिश्ते* और 'रूह' उस की ओर चढ़ते हैं एक ऐसे दिन में जो पचास हज़ार वर्ष के बराबर है'[1] ।○

तो सब्र करो शीलवान् सब्र ।○ ये लोग उस को दूर देखते हैं ○ और हम उसे क़रीब देख रहे हैं ।○

जिस दिन आसमान पिघली हुई धातु जैसा होगा, ○ और पहाड़ रंजित ऊन जैसे होंगे,[2] ○ और कोई दोस्त किसी दोस्त को न पूछेगा ○ वे ... वे भली-भाँति दिखाई दे रहे होंगे। अपराधी चाहेगा कि क्या अच्छा हो यदि वह उस दिन के अज़ाब से छुटकारा पाने के लिए दे दे अपने बेटों को ○ और अपनी सहवासिनी (पत्नी) और अपने भाई को ○ और अपने कुटुम्ब को जो उसे अपने आश्रय में रखता है ○ और जितने भी ज़मीन में रहते हैं सब को, फिर इस तरह उसे छुटकारा मिल जाये ।○

कदापि नहीं ! निस्सन्देह वह (जहन्नम*) ज्वाला फेंकने वाली है ○ जो खींच लेने वाली है (पिंडली के) मांस को; ○ वह हर उस व्यक्ति को बुलायेगी[3] जिस ने पीठ फेरी और मुँह मोड़ा, ○ और इकट्ठा किया और सेंत कर रखा ।○

मनुष्य बड़े ही कच्चे दिल का बना हुआ है,[4] ○ जब उसे तकलीफ़ पहुँचती है तो घबरा उठता है ○ और जब उसे भलाई पहुँचती है, तो रोक रखता है;[5] ○ नमाज़ियों की बात और है ○ वे जो अपनी नमाज़ पर बराबर जमे रहते हैं ○ और जिन के मालों में एक जाना-बूझा हक़ है ○ माँगने वाले का और जो पाने से रह गया हो उस का; ○ और जो उस दिन को सच मानते हैं जिस दिन बदला दिया जायेगा,[6] ○ और जो अपने रब* के अज़ाब से

१ दे० सूरः अस-सजदः आयत ५; अल-हज्ज आयत ४७ ।

२ दे० सूरः अल-क़ारिअः आयत ५। जिस प्रकार ऊन विभिन्न रंगों के होते हैं उसी प्रकार पहाड़ों के रंग भी विभिन्न होते हैं (दे० सूरः फ़ातिर आयत ४)।

३ बुलायेगी कि यहाँ आओ तुम्हारा ठिकाना यह है ।

४ दे० सूरः अल-अम्बिया आयत ३७ ।

५ अल्लाह की राह में और भलाई के कामों में ख़र्च नहीं करता । और अल्लाह के आगे झुकता नहीं ...ता ।

६ दे० सूरः अल-फ़ातिहः फुट नोट १ ।

* इस पर अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

إِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَأْمُونٍ ۝ وَالَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ حَافِظُونَ
إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ
فَمَنِ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعَادُونَ ۝ وَالَّذِينَ هُمْ
لِأَمَانَاتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُونَ ۝ وَالَّذِينَ هُمْ بِشَهَادَاتِهِمْ قَائِمُونَ
وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ۝ أُولَٰئِكَ فِي جَنَّاتٍ
مُكْرَمُونَ ۝ فَمَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا قِبَلَكَ مُهْطِعِينَ ۝ عَنِ الْيَمِينِ
وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِينَ ۝ أَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِنْهُمْ أَنْ يُدْخَلَ جَنَّةَ
نَعِيمٍ ۝ كَلَّا إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِمَّا يَعْلَمُونَ ۝ فَلَا أُقْسِمُ بِرَبِّ
الْمَشَارِقِ وَالْمَغَارِبِ إِنَّا لَقَادِرُونَ ۝ عَلَىٰ أَنْ نُبَدِّلَ خَيْرًا مِنْهُمْ
وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ ۝ فَذَرْهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا حَتَّىٰ يُلَاقُوا
يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ۝ يَوْمَ يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ سِرَاعًا
كَأَنَّهُمْ إِلَىٰ نُصُبٍ يُوفِضُونَ ۝ خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ
ذِلَّةٌ ۚ ذَٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ۝

कांपते रहते हैं ○ — उन के रब* का अज़ाब है ही ऐसा कि उस से निश्चिन्त न रहा जाये ○ — और जो अपनी शर्म-गाहों (गुप्त-इन्द्रियों) की हिफ़ाज़त करते हैं ○ — सिवाय अपनी पत्नियों और उन (लौंडियों*) के जो उन की मिल्क में हों, कि इस पर वे कुछ भी निन्दनीय नहीं हैं; ○ परन्तु जो कोई इस के आगे कुछ और चाहे, तो ऐसे ही लोग हद से आगे बढ़ने वाले हैं; ○ — और जो अपनी अमानतों और अपनी प्रतिज्ञा का ध्यान रखते हैं॰ । ○ और जो अपनी गवाहियों पर क़ायम रहते हैं ○ और जो अपनी नमाज़* की हिफ़ाज़त करते रहते हैं, ○ यही लोग हैं जो जन्नतों* में प्रतिष्ठापूर्वक रहेंगे॰ । ८

तो इन काफ़िरों* को क्या हुआ है कि (हे मुहम्मद!) ये तुम्हारी ओर लपके चले आ रहे हैं, ○ दायें से भी और बायें से भी टोलियों की टोलियां ? ○

क्या इन में से हर एक इस बात का लालच रखता है कि वह नेमत-भरी जन्नत* में दाख़िल कर दिया जायेगा ? ○

कदापि नहीं ! हम ने जिस चीज़ से इन को बनाया है उसे वे जानते हैं॰ । ○ कुछ नहीं, मैं तो क़सम खाता हूँ उदय होने के स्थानों की और अस्त होने के स्थानों की१० निस्सन्देह हमारे बस में है ○ कि इन की जगह इन से अच्छे लोग बना दें११ । और हमारे बस से बाहर नहीं । ○

अब छोड़ दो इन्हें बातें बनायें और खेलें यहाँ तक कि वह दिन इन के सामने आ जाये जिस का इन से वादा किया जाता है, ○ वह दिन जब कि ये क़ब्रों से तेज़ी से निकलेंगे, जैसे किसी निशाने पर दौड़े जा रहे हों, ○ इन की निगाहें झुकी हुई हैं, और इन पर ज़िल्लत छाई हुई है : यह है वह दिन जिस का इन से वादा किया जाता रहा है१२ । ○

७ और वे उस गवाही का भी ध्यान रखते हैं जो उन्हों ने अपने रब* के रब होने का इक़रार करते हुये दी थी।

८ यहाँ अल्लाह ने ईमान* वालों के जिन गुणों का उल्लेख किया है उन में नमाज़* को प्रमुखता प्राप्त है। ईमान* वालों की विशेषताओं के उल्लेख का प्रारम्भ नमाज़* से किया और नमाज़* ही पर उस को समाप्त किया। सूरः अल-मूमिनून के आरम्भ में भी ऐसे ही नमाज़* से ईमान* वालों के गुणों के उल्लेख का आरम्भ किया गया है और नमाज़* ही पर उसे समाप्त भी किया गया है। नमाज़* वास्तव में ईमान* वालों के जीवन का सारांश और समस्त भलाइयों का उद्गम और स्रोत है।

९ अर्थात् ये जानते हैं कि इन की सृष्टि मिट्टी से हुई है। इन्हें दोबारा पैदा करना हमारे लिए कुछ भी मुश्किल नहीं है। इन के लिए यह कदापि उचित नहीं कि अपनी बड़ाई का घमण्ड करें। बड़ाई और इज़्ज़त तो उसी के लिए है।

१० सूर्य सदा न एक ही स्थान से उदय होता है और न वह सदा एक ही स्थान पर अस्त होता है। इस के अतिरिक्त वह पृथ्वी के विभिन्न भागों में विभिन्न समयों में उदय और अस्त होता है। इसी लिए पूर्व दिशा और पश्चिम को बहुवचन प्रयोग किया गया है। दे० सूरः अस्-साफ़्फ़ात आयत ५।

११ अर्थात् जब हमें इस का सामर्थ्य प्राप्त है कि सूर्य को हर दिन नवीन बिन्दु से उदय करें तो हम इन की जगह इन से अच्छे बना सकते हैं।

१२ और जिस की ये जल्दी मचाते रहे हैं। जिसे ये दूर और असम्भव समझ रहे थे आज वह क़रीब और सम्भव हो गया।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

विश्वास की स्वतंत्रता)

६ : १०८ — दूसरों के उपास्यों को बुरा न कहो।

४९ : ६ — पता लगाये बिना किसी के खिलाफ़ कोई कार्रवाई नहीं की जा सकती।

४ : ५८ — लोगों के बीच निर्णय न्याय के साथ करो।

(६) विदेशी राजनीति

१७ : ३४ — वादा पूरा करो।

१६ : ९१, ९२ — समझौता करने के बाद उससे न फिरो।

९ : ७ — जब तक दूसरे समझौते पर डटे हों, तुम वादे से नहीं हट सकते।

९ : ४ — दूसरे समझौते के विरुद्ध न जावें तो तुम अपने समझौते की मुद्दत तक अपने वादे पर जमे रहो।

८ : ७२ — सन्धि का समझौता होते हुए तुम ग़ैर-मुस्लिमों के राज्य में रहने वाले मुसलमानों की सहायता नहीं कर सकते।

८ : ५८ — समझौते के बाद कोई जाति धोखा दे तो पहले सन्धि समाप्त करो फिर कोई कार्रवाई करो।

५ : ८ — किसी जाति की दुश्मनी में न्याय को हाथ से न जाने दो।

८ : ६१ — दुश्मन समझौता करना चाहे तो तुम भी समझौते के लिए तैयार हो जाओ।

६० : ८ — जो तुम से न लड़े और हानि न पहुँचाए, उसके साथ भलाई का व्यवहार करो।

६० : ९ — जो तुम से लड़े और तुम्हारे दुश्मनों की मदद करे, उसके साथ दोस्ती नहीं हो सकती।

२ : १९४ — जो तुम पर ज़्यादती करे तुम उस पर बस उतनी ही ज़्यादती कर सकते हो।

१६ : १२६ — बदला लो तो उतना ही जितना तुम्हें सताया गया हो और अगर सब्र करो तो यह बेहतर है।

४२ : ४०-४२ — तुम पर ज़्यादती की गई हो और तुम बदला लो तो इसमें कोई दोष नहीं।

८. जिहाद

(१) अल्लाह की राह में किए गए जिहाद की वास्तविकता और आवश्यकता

१७ : ३३ — मानव-प्राण लेना हराम है, किसी को क़त्ल न करो पर उस समय जबकि न्याय की माँग हो।

५ : ३२ — किसी का नाहक़ क़त्ल करना ऐसा है जैसे तमाम लोगों को क़त्ल कर दिया।

२ : १९१ — दीन से गुमराह करने का जुर्म बिगाड़ व क़त्ल से बदतर है।

२२ : ४० — अगर अल्लाह लोगों को एक दूसरे के द्वारा हटाता न रहता तो गिरजा,

७१--नूह

(परिचय)

इस सूरः* में हज़रत नूह अ० के धर्म-प्रचार और उन की जाति वालों के धर्म-विरोध आदि का उल्लेख हुआ है इसी सम्पर्क से इस सूरः का नाम 'नूह' रखा गया है।

अनुमान है कि यह मक्का के आरम्भिक काल की सूरतों* में से है। सूरः की वार्त्ताओं से पता चलता है कि इस सूरः के अवतीर्ण होने के समय काफ़िरों* का विरोध बहुत बढ़ चुका था और वे अवज्ञा और बुराई पर जमे हुये थे। रसूल* की बात मानने की अपेक्षा उस का विरोध ही किये जा रहे थे।

यह सूरः* उन लोगों के बारे में है जो अवज्ञा पर आरूढ़ हों और रसूल* का विरोध ही किये जा रहे हों।

प्रस्तुत सूरः* में हज़रत नूह अ० का क़िस्सा बयान कर के एक ओर मक्का के काफ़िरों* को चेतावनी दी गई है कि उन्हों ने अल्लाह के रसूल* के बारे में जो नीति अपना रखी है वह उन के लिए कदापि हितकर नहीं हो सकती। इस से पहले नूह (अ०) की जाति वालों ने अपने नबी* का विरोध किया था इस का परिणाम यह हुआ कि अल्लाह के अज़ाब ने उन्हें आ घेरा और वे जल-मग्न हो कर रह गये। प्रस्तुत सूरः में मुसलमानों और स्वयं नबी सल्ल० को तसल्ली दी गई है कि वे काफ़िरों* के विरोध पर धैर्य से काम लें, अल्लाह उसी तरह से सत्य के अनुगामियों का सहायक है जिस तरह पूर्व काल में वह सहायक रहा है।

---

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* नूह

(मक्का में उतरी — आयतें* २८)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

हम ने नूह को उस की जाति वालों की ओर भेजा कि अपनी जाति वालों को सचेत कर दो इस से पहले कि उन पर दुःख-भरा अज़ाब आ जाये। ○

उस ने कहा : हे मेरी जाति वालो ! मैं तुम्हारे लिए एक प्रत्यक्ष सचेत करने वाला (नबी) हूँ ○ (कहता हूँ) कि अल्लाह की इबादत* (बन्दगी) करो और उस का डर रखो और मेरा कहना मानो, ○ वह तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा और एक नियत समय तक तुम्हें मुहलत प्रदान करेगा। निःसन्देह जब अल्लाह का निश्चित किया हुआ समय आ जाता है, तो फिर टाला नहीं जाता; कहीं तुम जानते होते। ○

उस ने कहा : रब* ! मैं ने अपनी जाति वालों ५ को रात-दिन (तेरी ओर) बुलाया ○ तो मेरे बुलाने पर वे भागते ही रहे और कुछ न हुआ; ○ और मैं ने जब भी उन्हें बुलाया ताकि तू उन्हें क्ष[illegible] कर दे, तो उन्हों ने अपने कानों में अपनी उँगलियाँ दे लीं और अपने कपड़े ओढ़ लिये अ[illegible] अड़े रहे और घमण्ड ही करते रहे। ○ फिर मैं ने उन्हें खुल कर बुलाया, ○ फिर मैं ने उ[illegible] खुल्लम-खुल्ला समझाया, और चुपके-चुपके भी[1]। ○ तो मैं ने कहा : तुम अपने रब* से क्ष[illegible] की प्रार्थना करो, निस्सन्देह वह अत्यन्त क्षमाशील है। ○ वह आसमान को तुम पर खू[illegible] बरसता छोड़ेगा, ○ और तुम्हें और ज़्यादा माल और बेटे देगा, और तुम्हारे लिए बाग़ ल[illegible] देगा और तुम्हारे लिए नहरें निकाल देगा[2]। ○ तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह के लि[illegible] गौरव को स्वीकार नहीं करते ○ जब कि उस ने विभिन्न अवस्थाओं में तुम्हारी सृष्टि की ! ○ — [3]क्या तुम ने नहीं देखा कि अल्लाह ने किस प्रकार से सात आसमान ऊपर-तले पैद[illegible] किये, ○ और उन के बीच चन्द्रमा को प्रकाश बनाया, और सूर्य को प्रदीप ! ○ और अल्लाह [illegible] तुम्हें भूमि से विशेष रूप में विकसित किया, ○ फिर तुम्हें उस (ज़मीन) में लौटा देगा, और फि[illegible] (क़ियामत* में) तुम्हें विशेष रूप से निकालेगा[4]। ○ और अल्लाह ने तुम्हारे लिए ज़मीन क[illegible]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖٓ اَنْ اَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ
يَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّيْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ اَنِ
دُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ وَاَطِيْعُوْنِ ۝ يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ
اَجَلٍ مُّسَمًّى اِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ اِذَا جَآءَ لَا يُؤَخَّرُ لَوْ كُنْتُمْ
مُوْنَ ۝ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ دَعَوْتُ قَوْمِيْ لَيْلًا وَّنَهَارًا ۝ فَلَمْ يَزِدْهُمْ
اِلَّا فِرَارًا ۝ وَاِنِّيْ كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوْٓا اَصَابِعَهُمْ
اٰذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَاَصَرُّوْا وَاسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا ۝
اِنِّيْ دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ۝ ثُمَّ اِنِّيْٓ اَعْلَنْتُ لَهُمْ وَاَسْرَرْتُ لَهُمْ
اِسْرَارًا ۝ فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ اِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًا ۝ يُّرْسِلِ السَّمَآءَ
عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا ۝ وَّيُمْدِدْكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ جَنّٰتٍ وَّ
لَّكُمْ اَنْهٰرًا ۝ مَا لَكُمْ لَا تَرْجُوْنَ لِلّٰهِ وَقَارًا ۝ وَقَدْ خَلَقَكُمْ

---

[*] दे० सूरः अल-कहफ़ आयत ५५।

हज़रत नूह अ० अपनी जाति वालों को साढ़े नौ सौ वर्ष तक सत्य-धर्म की ओर बुलाते रहे जब वे उन से बिलकुल निराश हो गये तब उन्हों ने अपने रब* से यह निवेदन किया।

[1] अर्थात् उन्हें हर प्रकार से समझाने की कोशिश की कि वे किसी तरह सत्य को ग्रहण कर लें और शिर्क* से बाज़ आ जायें।

[2] ऐसा मालूम होता है कि यहाँ से आयत २० तक अल्लाह ने अपने बन्दों को सम्बोधित किया है। यही कारण है कि यहाँ से मूल ग्रन्थ में आयतों का क़ाफ़िया (तुक) बदल गया है। (४ अगले पृष्ठ पर)

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

طوارا ﴿١٤﴾ أَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللَّهُ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ طِبَاقًا ﴿١٥﴾ وَجَعَلَ
الْقَمَرَ فِيهِنَّ نُورًا وَجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ﴿١٦﴾ وَاللَّهُ أَنْبَتَكُمْ مِنَ
الْأَرْضِ نَبَاتًا ﴿١٧﴾ ثُمَّ يُعِيدُكُمْ فِيهَا وَيُخْرِجُكُمْ إِخْرَاجًا ﴿١٨﴾ وَاللَّهُ
جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ بِسَاطًا ﴿١٩﴾ لِتَسْلُكُوا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ﴿٢٠﴾ قَالَ
نُوحٌ رَبِّ إِنَّهُمْ عَصَوْنِي وَاتَّبَعُوا مَنْ لَمْ يَزِدْهُ مَالُهُ وَوَلَدُهُ إِلَّا
خَسَارًا ﴿٢١﴾ وَمَكَرُوا مَكْرًا كُبَّارًا ﴿٢٢﴾ وَقَالُوا لَا تَذَرُنَّ آلِهَتَكُمْ وَلَا
تَذَرُنَّ وَدًّا وَلَا سُوَاعًا وَلَا يَغُوثَ وَيَعُوقَ وَنَسْرًا ﴿٢٣﴾ وَقَدْ أَضَلُّوا
كَثِيرًا وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا ضَلَالًا ﴿٢٤﴾ مِمَّا خَطِيئَاتِهِمْ أُغْرِقُوا
فَأُدْخِلُوا نَارًا فَلَمْ يَجِدُوا لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَنْصَارًا ﴿٢٥﴾ وَقَالَ
نُوحٌ رَبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْأَرْضِ مِنَ الْكَافِرِينَ دَيَّارًا ﴿٢٦﴾ إِنَّكَ
إِنْ تَذَرْهُمْ يُضِلُّوا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوا إِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا ﴿٢٧﴾ رَبِّ
اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَلِلْمُؤْمِنِينَ
وَالْمُؤْمِنَاتِ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا تَبَارًا ﴿٢٨﴾

बिछौना बनाया ○ ताकि तुम उस की कुशादा राहों में चलो। ○—

नूह ने कहा रब*! इन्हों ने मेरी अवज्ञा की और ऐसे लोगों के पीछे चले[5] जिन्हें उन के माल और उन की औलाद ने बस घाटा-ही-घाटा दिया। ○ और जो बहुत बड़ी चाल चले, ○ और कहा: कभी भी अपने इलाहों* (देवताओं) को न छोड़ना। और न 'वद्द' को छोड़ना, और न 'सुवाअ' को, और न 'यग़ूस' और 'यऊक़' और 'नस्र' को[6]। ○ और उन्हों ने बहुतों को गुमराह कर दिया है, तो अब तू इन ज़ालिमों को गुमराही ही होने दे[7]। ○

वे अपनी ख़ताओं के कारण डुबो दिये गये,[8] फिर आग में दाख़िल कर दिये गये। और वे अपने लिए अल्लाह के सिवा किसी प्रकार के सहायक न पा सके। ○

और नूह ने कहा: रब*! तू ज़मीन पर इन काफ़िरों* में से किसी बसने वाले को न छोड़। ○

यदि तू इन्हें छोड़ देगा तो ये तेरे बन्दों को गुमराह करेंगे और इन के यहाँ दुराचारी और कृतघ्न ही औलाद पैदा होगी[9]। ○ रब*! मुझे क्षमा कर दे और मेरे माता पिता को और जो भी मेरे घर में ईमान के साथ दाख़िल हो, और (समस्त) ईमान* वाले पुरुषों और ईमान* वाली स्त्रियों को, और इन ज़ालिमों को अब विनष्ट ही कर दे। ○

---

४ अर्थात् मृत्यु के पश्चात् फिर वह तुम्हें जीवित कर के उठायेगा। और फिर [illegible] लोगों का अन्तिम फ़ैसला कर दिया जायेगा।

५ अर्थात् इन्हों ने मेरी बात नहीं मानी ये उन धनिक* सरदारों के पीछे चलते और उन की बातों का पालन करते रहे जो धूर्त, पथभ्रष्ट और भोग-विलास में मस्त थे। वे स्वयं पथभ्रष्ट थे, इन को भी ले डूबे।

६ 'वद्द', 'सुवाअ', 'यग़ूस', 'यऊक़' और 'नस्र' वास्तव में अरब के मुशरिकों* के देवताओं के नाम हैं [illegible] जिन की मूर्तियाँ बना कर अरब के मुशरिक* पूजते थे। क़बीला कल्ब के लोग 'वद्द' के उपासक थे। [illegible] क़बीला 'सुवाअ' की पूजा करता था। इस की मूर्ति मदीना के एक गाम यंबुअ के निकट स्थापित थी। [illegible] के लोग इस के मन्दिर के प्रबन्ध-कर्ता थे। क़बीला मज़हज और [illegible] क़बीला हिमयर का पूज्य 'नस्र' देवता था। इसी तरह क़बीला हमदान के लोग 'यऊक़' के आगे झुकते थे। (दे० किताबुल असनाम)।

जिस तरह अरब के लोग विभिन्न देवी-देवताओं के उपासक थे उसी तरह नूह अ० की जाति वाले भी विभिन्न देवी-देवताओं की उपासना में लगे हुए थे। नूह अ० के ज़िक्र में 'वद्द', 'सुवाअ' [illegible] आदि के उल्लेख का अर्थ यह नहीं है कि ये नूह अ० की जाति वालों के बुतों के नाम हैं [illegible] देवता थे [illegible] उन के भी विभिन्न देवी-देवता थे [illegible] उद्देश्य [illegible] अरब के मुशरिकों* का खण्डन किया गया है।

७ यह प्रार्थना हज़रत नूह अ० ने उस समय की जब [illegible] गये। और उन्हों ने अनुभव किया कि [illegible] बात की आशा नहीं की जा सकती।

८ दे० सूरः हूद आयत [illegible] आयत ११-१४।

९ अर्थात् इन से अब [illegible] की आशा नहीं है। दे० सूरः हूद आयत [illegible]।

* इस का अर्थ जानने के लिये इस पुस्तक के अन्त में दी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची देखें।

७२--अल-जिन्न*

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अल-जिन्न' सूरः की आयत* १ से लिया गया है।

साधारणतया इस सूरः* के बारे में यह विचार प्रकट किया गया है कि यह सूरः नबी सल्ल० के तायफ़ की बस्ती से लौटने पर उतरी है अर्थात् हिजरत* से दो वर्ष पूर्व। मक्का वालों ने जब नबी सल्ल० की बात मानने से इन्कार कर दिया और कम ही लोगों ने आप (सल्ल०) के दिखाये हुये मार्ग को ग्रहण किया तो आप (सल्ल०) तायफ़ नामक बस्ती में लोगों को सत्य का आमन्त्रण देने के लिए गये। तायफ़ वालों ने आप (सल्ल०) के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया। वहाँ आप (सल्ल०) का उपहास किया गया और आप (सल्ल०) पर पत्थर फेंके गये। मक्का में विरोधियों का अत्याचार अपनी चरम-सीमा को पहुँच चुका था; आप के कितने ही साथी हिजरत* कर के हब्श: (Abyssinia) जा चुके थे, जो रह गये थे उन्हें अत्यन्त कष्टों और मुसीबतों का सामना करना पड़ रहा था। ऐसी परिस्थिति में आप (सल्ल०) और आप के अनुयायियों के लिए यह बात बड़ी ही तसल्ली की थी कि आप (सल्ल०) पर ईमान* ला कर कुछ जिन्नों* ने अपनी जाति वालों तक सत्य का सन्देश पहुँचाया, जब कि नबी सल्ल० की अपनी जाति और कुल के लोग आप के दुश्मन बने हुये थे। फिर अधिक समय नहीं लगा कि मदीना से कुछ लोग आ कर आप (सल्ल०) से मिले और आप (सल्ल०) के लिए मदीना हिजरत* कर जाने की राह पैदा हुई। यही हिजरत* है जो दुनियाँ के इतिहास में एक क्रान्ति और महान् परिवर्तन का कारण सिद्ध हुई।

प्रस्तुत सूरः इस वास्तविकता को भली-भाँति खोल कर सामने रखती है कि ईमान* शिर्क* को ढाने और उस का पूर्ण रूप से उन्मूलन करने के लिए आया है।

प्रस्तुत सूरः* में उन जिन्नों* के कथनों का उल्लेख हुआ है जो क़ुरआन* सुन कर उस पर ईमान* ला चुके थे और शिर्क* से बिलकुल बे-ज़ार थे। जिन्नों* के जिन कथनों और आलोचनाओं का उल्लेख इस सूरः में हुआ है उस से शिर्क* का तर्कयुक्त खण्डन हो जाता है। और यह बात खुल कर सामने आ जाती है कि जिन्न* भी अल्लाह के पैदा किये हुये हैं अल्लाह के प्रभुत्व में वे कदापि शरीक नहीं कि कोई अल्लाह के सिवा उन की पनाह ढूँढने लगे।

फिर इस सूरः से यह भी मालूम होता है कि अल्लाह की स्कीम को कोई असफल नहीं बना सकता। कल्याण का एक-मात्र साधन यही है कि लोग अपने को अल्लाह के अर्पण कर के उस के आदेशों के पालन में लग जायें।

अल्लाह के रसूल* का क्या स्थान होता है इस सूरः से इस विषय पर भी भली-भाँति प्रकाश पड़ता है। रसूल* का कर्त्तव्य भी यही है कि वह एक अल्लाह को पुकारे और केवल उसी की इबादत* और उपासना करे। अल्लाह के साथ किसी को शरीक

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

न ठहराये। जिस तरह दूसरे लोग अल्लाह के पैदा किये हुये और उस के बन्दे हैं ठीक उसी तरह रसूल* और नबी* भी अल्लाह ही के पैदा किये हुये और उस के बन्दे होते हैं। वे न अल्लाह के अवतार होते हैं और न अल्लाह के बेटे और पुत्र होते हैं। ग़ैब की उन बातों से जो अल्लाह ही के लिए ख़ास हैं वे भी अपरिचित होते हैं। लोगों की हानि और लाभ के मालिक भी वे नहीं होते। उन का काम केवल लोगों तक अल्लाह का सन्देश पहुँचा देना है। लोगों को सीधे मार्ग पर लाना यह अल्लाह का काम है¹।

प्रस्तुत सूरः* से यह बात भी मालूम होती है कि अल्लाह अपने रसूल* पर कितनी निगाह रखता है। नबी के सारे काम अल्लाह की हिदायत* (मार्ग-दर्शन) के अन्तर्गत होते हैं। अल्लाह यह चाहता है कि उस का सन्देश सुरक्षित रूप में उस के बन्दों तक पहुँच जाये और वह इस के लिए पूरी व्यवस्था करता है। उस की दृष्टि से कोई भी चीज़ ओझल नहीं हो सकती। उसे हर चीज़ की पूरी ख़बर होती है। इस लिए किसी काम और किसी उद्देश्य की पूर्ति में उसे किसी प्रकार का धोखा नहीं हो सकता।

---

1 [illegible]

* [illegible]

सूरः* अल-जिन्न*

(मक्का में उतरी — आयतें* २८)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
قُلْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْٓا اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا
عَجَبًا ۝ يَّهْدِيْٓ اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ۭ وَلَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ اَحَدًا ۝ وَّ
اَنَّهٗ تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ۝ وَّاَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ
سَفِيْهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا ۝ وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ تَقُوْلَ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ
عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۝ وَّاَنَّهٗ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْاِنْسِ يَعُوْذُوْنَ بِرِجَالٍ
مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوْهُمْ رَهَقًا ۝ وَّاَنَّهُمْ ظَنُّوْا كَمَا ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ
يَّبْعَثَ اللّٰهُ اَحَدًا ۝ وَّاَنَّا لَمَسْنَا السَّمَاۗءَ فَوَجَدْنٰهَا مُلِئَتْ حَرَسًا
شَدِيْدًا وَّشُهُبًا ۝ وَّاَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ ۭ فَمَنْ يَّسْتَمِعِ
الْاٰنَ يَجِدْ لَهٗ شِهَابًا رَّصَدًا ۝ وَّاَنَّا لَا نَدْرِيْٓ اَشَرٌّ اُرِيْدَ بِمَنْ
فِي الْاَرْضِ اَمْ اَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ۝ وَّاَنَّا مِنَّا الصّٰلِحُوْنَ وَمِنَّا

(हे मुहम्मद ! लोगों से) कह दो : मेरी ओर वह्य* की गई है कि जिन्नों* में से कुछ लोगों ने (इस किताब* को) सुना, तो कहा : हम ने एक अद्‌भुत क़ुरआन* सुना है,[1] ○ वह सीधा मार्ग दिखाता है, तो हम उस पर ईमान* ले आये और हम कदापि किसी को अपने रब* का शरीक न ठहरायेंगे। ○ और यह कि हमारे रब* का गौरव अत्यन्त ऊँचा है— उस ने न तो किसी को अपनी पत्नी बनाया और न किसी को अपनी औलाद,[2] ○

और यह कि हम में का मूर्ख[3] अल्लाह से सम्बन्ध लगा कर बहुत दूर की बात कहता था। ○

और यह कि हम ने समझ रखा था कि मनुष्य और जिन्न* अल्लाह से सम्बन्ध लगा कर कदापि झूठी बात न कहेंगे। ○

और यह कि मनुष्यों में से कुछ ऐसे लोग रहे हैं जो जिन्न* में से कुछ लोगों की शरण लेते, तो उन्हों ने उन्हें और चढ़ा दिया;[4] ○ और यह कि उन्हों ने समझ लिया था जैसे तुम ने समझ लिया था कि अल्लाह किसी को न उठायेगा[5]। ○

और यह कि हम ने आसमान को टटोला तो पाया कि उसे सख़्त चौकीदार और अग्नि-शिखाओं से भर दिया है। ○ और यह कि हम उस के अवस्थानों में सुनने के लिए बैठा करते

१ सूरः अल-अहक़ाफ़ में जिन्नों* के क़ुरआन* सुनने और उन के अपनी जाति वालों के पास जा कर उन्हें इस्लाम* की ओर आमन्त्रित करने का उल्लेख हुआ है (दे० सूरः अल-अहक़ाफ़ आयत २९-३२)। सम्भव है जब वे दूसरी बार नबी (सल्ल०) के पास आये हों तो आप (सल्ल०) ने उन्हें सूरः अल-अहक़ाफ़ पढ़ कर सुनाई हो जिस में उन के क़ुरआन सुनने और अपनी जाति वालों को ईमान* की ओर बुलाने का उल्लेख हुआ है। उस के सुनने से स्वभावतः उन्हें आश्चर्य हुआ हो और उन का ईमान* और बढ़ गया हो।

२ अर्थात् यह अल्लाह की महानता और उस के गौरव के सर्वथा प्रतिकूल है कि उस का कोई बेटा या उस की कोई पत्नी हो और इस प्रकार प्रभुत्व में उस के साथ दूसरे भी शरीक हों। यह ज़मीन और आकाश और अल्लाह की प्रदान की हुई बुद्धि इसी बात की साक्षी है कि वह एक और परम-स्वतन्त्र है।

३ अर्थात् हमारे सरदार और नायक जिन्हें अपनी बुद्धिमत्ता और समझदारी का बड़ा दावा है हालाँकि वास्तव में वे मूढ़ और कमीने क़िस्म के लोग हैं।

४ अर्थात् मनुष्यों में गुमराह और भटके हुये लोग अल्लाह को छोड़ कर जिन्नों* की पनाह लेते थे इस से उन जिन्नों* की सरकशी और ढिठाई और बढ़ गई। जिन्नों* से पनाह माँगने की विभिन्न रीतियाँ थीं। ऐसा भी होता कि सफ़र में जब क़ाफ़िला किसी घाटी में ठहरता, तो क़ाफ़िले का सरदार वहाँ खड़ा हो कर कहता : "मैं इस घाटी के (जिन्न-*) सरदार की पनाह चाहता हूँ उस की जाति के कमीने लोगों के मुक़ाबले में"। यह तो एक तरीक़ा था इसी तरह और बहुत से तरीक़े प्रचलित थे।

५ अर्थात् वे समझते थे कि कोई रसूल* आने वाला नहीं है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

دُونَ ذٰلِكَ ۖ كُنَّا طَرَآئِقَ قِدَدًا ۝ وَأَنَّا ظَنَنَّآ أَن لَّن نُّعْجِزَ ٱللَّهَ فِى ٱلْأَرْضِ وَلَن نُّعْجِزَهُۥ هَرَبًا ۝ وَأَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا ٱلْهُدَىٰٓ ءَامَنَّا بِهِۦ ۖ فَمَن يُؤْمِنۢ بِرَبِّهِۦ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَلَا رَهَقًا ۝ وَأَنَّا مِنَّا ٱلْمُسْلِمُونَ وَمِنَّا ٱلْقَٰسِطُونَ ۖ فَمَنْ أَسْلَمَ فَأُو۟لَٰٓئِكَ تَحَرَّوْا۟ رَشَدًا ۝ وَأَمَّا ٱلْقَٰسِطُونَ فَكَانُوا۟ لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ۝ وَأَن لَّوِ ٱسْتَقَٰمُوا۟ عَلَى ٱلطَّرِيقَةِ لَأَسْقَيْنَٰهُم مَّآءً غَدَقًا ۝ لِّنَفْتِنَهُمْ فِيهِ ۚ وَمَن يُعْرِضْ عَن ذِكْرِ رَبِّهِۦ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ۝ وَأَنَّ ٱلْمَسَٰجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا۟ مَعَ ٱللَّهِ أَحَدًا ۝ وَأَنَّهُۥ لَمَّا قَامَ عَبْدُ ٱللَّهِ يَدْعُوهُ كَادُوا۟ يَكُونُونَ عَلَيْهِ لِبَدًا ۝ قُلْ إِنَّمَآ أَدْعُوا۟ رَبِّى وَلَآ أُشْرِكُ بِهِۦٓ أَحَدًا ۝ قُلْ إِنِّى لَآ أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا رَشَدًا ۝ قُلْ إِنِّى لَن يُجِيرَنِى مِنَ ٱللَّهِ أَحَدٌ وَلَنْ أَجِدَ مِن دُونِهِۦ مُلْتَحَدًا ۝ إِلَّا بَلَٰغًا مِّنَ ٱللَّهِ وَرِسَٰلَٰتِهِۦ ۚ وَمَن يَعْصِ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ فَإِنَّ لَهُۥ نَارَ جَهَنَّمَ خَٰلِدِينَ فِيهَآ أَبَدًا ۝ حَتَّىٰٓ إِذَا رَأَوْا۟ مَا يُوعَدُونَ فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ أَضْعَفُ نَاصِرًا وَأَقَلُّ عَدَدًا ۝ قُلْ إِنْ أَدْرِىٓ أَقَرِيبٌ مَّا تُوعَدُونَ أَمْ يَجْعَلُ لَهُۥ رَبِّىٓ أَمَدًا ۝ عَٰلِمُ ٱلْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلَىٰ غَيْبِهِۦٓ أَحَدًا ۝ إِلَّا مَنِ ٱرْتَضَىٰ مِن رَّسُولٍ فَإِنَّهُۥ يَسْلُكُ مِنۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِۦ رَصَدًا ۝ لِّيَعْلَمَ أَن قَدْ أَبْلَغُوا۟ رِسَٰلَٰتِ رَبِّهِمْ وَأَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَأَحْصَىٰ كُلَّ شَىْءٍ عَدَدًۢا ۝

थे। परन्तु अब कोई सुनने जाये तो अपने लिए एक अग्निशिखा को घात में लगा पायेगा।[६] ○

और यह कि हम नहीं जानते कि उन लोगों के लिए जो ज़मीन में हैं बुराई का इरादा किया गया है, या उन के रब* ने उन्हें भलाई की राह पर लगाने का इरादा किया है। ○

और यह कि हम में कुछ नेक लोग हैं और हम ही में और तरह के भी हम अलग-अलग राहों पर थे। ○

और यह कि हम ने समझ लिया कि हम अल्लाह को ज़मीन में रह कर हरा नहीं सकते, और न उसे भाग कर हरा सकते हैं। ○

और यह कि हम ने जब हिदायत* की बात सुन ली, तो उसे मान लिया, तो जो कोई अपने रब* पर ईमान* ले आयेगा, उसे न इस का कोई भय होगा कि उस का हक़ मारा जायेगा और न इस का कि उस के साथ कोई अत्याचार होगा। ○

और हम में कुछ तो मुस्लिम* हैं और हम में कुछ राह से फिरे हुये हैं। तो जो मुस्लिम* हुये, उन्हों ने तो भलाई की राह पसन्द कर ली[७]। ○ रहे वे लोग जो राह से फिरे हुये हैं, तो वे जहन्नम* का ईंधन हुये। ○

और यह कि यदि वे राह पर ठीक-ठीक लग जाते तो हम उन्हें भली प्रकार जल-सम्पन्न कर देते[८] ○ ताकि हम उस में उन की परीक्षा करें, और जो कोई अपने रब* के ज़िक्र* से मुँह मोड़ेगा तो वह उसे अज़ाब में चढ़ाता चला जायेगा। ○

और यह कि सजदे* अल्लाह के हैं, तो अल्लाह के साथ किसी को न पुकारो। ○ और यह कि जब अल्लाह का बन्दा उसे पुकारने खड़ा हुआ, तो वे उस पर टूटे पड़ते थे। ○ (ऐ मुहम्मद!) कह दो : मैं तो केवल अपने रब* को पुकारता हूँ, और उस के साथ किसी को शरीक नहीं करता। ○

कह दो : मेरे बस में न तुम्हें नुक़सान पहुँचाना है और न राह पर लाना[९]। ○—कह दो : अल्लाह से मुझे कोई नहीं बचा सकता, और मैं उस के सिवा कहीं पनाह लेने की जगह नहीं पा सकता। ○ — बस अल्लाह की ओर से पहुँचा देना है और उस के सन्देश पहुँचा देना। और जो कोई अल्लाह और उस के रसूल* की अवज्ञा करेगा, उस के लिए जहन्नम* की आग है, जिस में ऐसे लोग अनन्त तक पड़े रहेंगे। ○

६ मतलब यह है कि अब हम देखते हैं कि आसमान पर सख़्त पहरे लगे हुये हैं अब हम उस की ख़बर भी नहीं सुन सकते (दे० सूरः अल-हिज्र फुट नोट ११-१२)।

७ अर्थात् वही लोग हैं जो चेतनाशील कहे जाने के योग्य हैं। इन्हों ने भलाई का सीधा मार्ग अपनाया।

८ अर्थात् हर तरफ़ हरियाली-ही-हरियाली हो जाती। उन्हें ख़ूब रोज़ी देते। दे० सूः अल-आराफ़ आ०।

९ अर्थात् मैं तुम्हारे लाभ-हानि का मालिक नहीं यह अधिकार तो एक अल्लाह ही को है। वही जिसे चाहे सीधे मार्ग पर चलाये और जिसे चाहे भटकने दे। हमारा काम तो केवल सन्देश पहुँचा देना है।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

जब ये उसे देख लेंगे जिस का इन से वादा किया जाता है, तो इन्हें मालूम हो जायेगा कि कौन है कमज़ोर सहायक वाला और कम संख्या वाला[१०] ।○

(हे मुहम्मद !) कह दो : मैं नहीं जानता कि जिस का तुम से वादा किया जाता है वह क़रीब है या मेरा रब* उस के लिए कोई लम्बी मुद्दत ठहरा देगा[११] ।○

वह ग़ैब* का जानने वाला है, और अपने ग़ैब* को किसी पर ज़ाहिर नहीं करता,[१२]○ हां जो उस ने कोई रसूल* पसन्द कर लिया तो उस के आगे और उस के पीछे चौकीदार लगाये रखता है[१३] ।○

ताकि वह जान ले[१४] कि उन्हों ने अपने रब* के सन्देश पहुँचा दिये । और (यों तो) जो-कुछ उन के पास है उसे उस ने घेर रखा है, और हर चीज़ को गिन रखा है[१५] ।○

---

१० अर्थात् आज काफ़िर और मुश्रिक* लोग समझते हैं कि उन का जत्था भारी है और मुहम्मद (सल्ल०) और उन के साथी बहुत थोड़े हैं, उस दिन इन काफ़िरों* और मुश्रिकों* को अपने दावे की वास्तविकता मालूम हो जायेगी; उन्हें मालूम हो जायेगा कि वे दुनिया में सर्वथा धोखे में रहे और उन्हों ने व्यर्थ अभिमान किया । जिन पर वे भरोसा करते थे उन्हें स्वयं अपनी पड़ी होगी ।*

११ अर्थात् हमें इस का भी ज्ञान नहीं है कि आने वाला समय जिस का वादा किया गया है क़रीब है या उस के आने में देर है । ग़ैब और परोक्ष का जानने वाला अल्लाह ही है । हम तो वही जान सकते हैं जिस का ज्ञान वह हमें दे दे ।

१२ अर्थात् ग़ैब (परोक्ष) की जो बातें उस ने अपने लिए ख़ास कर ली हैं उस का ज्ञान वह किसी और को प्रदान नहीं करता ।

१३ अर्थात् जिसे वह रसूल चुनता है उस की पूरी निगरानी करता है । उस के प्रत्येक काम, उस की गति-विधि और उस के मामले की पूरी ख़बर रखता है । नबी के लिए उस ग़ैब के जानने की आवश्यकता भी नहीं जिसे अल्लाह ने अपने लिए ख़ास कर रखा है । रसूल* के लिए बस यही काफ़ी है कि उस के रब* को हर चीज़ का ज्ञान है और वह उस के मामले से बेख़बर नहीं है । वह अपने रसूल* को जो हुक्म भी दे रहा है भलाई उसी में है ।*

१४ अर्थात् देख ले ।

१५ अर्थात् सब-कुछ अल्लाह के क़ब्ज़े में है और उसे हर चीज़ का ज्ञान है । कोई चीज़ भी उस से छुपी हुई नहीं है ।

**इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।*

७३--अल-मुज़्ज़म्मिल

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अल-मुज़्ज़म्मिल' (The enshrouded one) सूरः की आयत* १ से लिया गया है। 'अल-मुज़्ज़म्मिल' से संकेत नबी सल्ल० की ओर है।

साधारणतः इस सूरः* की गणना मक्का की प्रारम्भिक सूरतों* में होती है। सूरः की आरम्भिक १९ आयतों* पर विचार करने से अनुमान होता है कि ये आयतें* उस समय उतरी होंगी जब कि न केवल यह कि .क़ुरआन का पर्याप्त हिस्सा उतर चुका था बल्कि काफ़िरों* का विरोध भी बढ़ चुका था।

सूरः* की अन्तिम आयत*[1] के बारे में साधारणतः यह समझा जाता है कि यह मदीना में अवतीर्ण हुई है। इस में लड़ाई, ज़मीन में सफ़र करने आदि का उल्लेख हुआ है। ये चीज़ें इस्लाम के प्रारम्भिक काल में न थीं। इस के अतिरिक्त हज़रत आइशः रज़ि० के उल्लेख से भी मालूम होता है कि यह आयत बाद में उतरी है और विषय के सम्पर्क से इस सूरः में सम्मिलित कर दी गई है। इस नियम के अन्तर्गत .क़ुरआन में बहुत सी आयतें* विभिन्न सूरतों* में सम्मिलित हैं।

प्रस्तुत सूरः* और आगे आने वाली सूरः (अल-मुद्दस्सिर) में बड़ी समानता पाई जाती है। दोनों ही सूरतों* में नबी सल्ल० को इस बात पर उभारा गया है कि आप (सल्ल०) लोगों को सचेत करें और उन्हें सत्य-धर्म की ओर बुलायें। धैर्य से काम लें और नमाज़* पर जमें और समझ लें कि .क़ुरआन के द्वारा अल्लाह जिसे चाहेगा सीधा मार्ग दिखा देगा[2]।

प्रस्तुत सूरः* के प्रारम्भिक भाग में नबी सल्ल० को नमाज़* का विशेष आदेश दिया गया है[3]। और बताया गया है कि अल्लाह आप (सल्ल०) पर एक भारी बात (का बोझ) डालने वाला है। यह वास्तव में इस बात की ओर इशारा है कि आप को एक बड़ी ज़िम्मेदारी सौंपी जाने वाली है। यह ज़िम्मेदारी वही है जिस का सूरः अल-मुद्दस्सिर की दूसरी आयत में उल्लेख किया गया है अर्थात् लोगों को डराने, सचेत करने और उन्हें सत्य की ओर बुलाने की ज़िम्मेदारी। इस भारी ज़िम्मेदारी के बोझ को वही व्यक्ति उठा सकता है जिस ने अपने को इस के लिए तैयार कर लिया हो। इस तैयारी के लिए आवश्यक है कि आदमी रात में उठ कर नमाज़* में अल्लाह के आगे खड़ा हो और .क़ुरआन* पढ़े। इस प्रकार नमाज़* उसे उस के रब* से जोड़ देगी। और उस में यह शक्ति उत्पन्न करेगी कि वह अपने रब* की डाली हुई ज़िम्मेदारी को सहार सके। रात में उठना अत्यन्त कठिन होता है इस से एक ओर मन का नियन्त्रण होता है। दूसरी ओर रात के समय का वातावरण अत्यन्त शान्तिमय होता है उस समय जो-कुछ पढ़ा जाये वह हृदयांकित होता चला

१ दे० आयत २०।
२ दे० सूरः अल-मुज़्ज़म्मिल आयत ४, १९; सूरः अल-मुद्दस्सिर आयत ११, ५४।
३ दे० आयत १-४।
* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

जाता है। रात में उठ कर अल्लाह के आगे खड़ा होना तामस मन के दमन का एक अचूक साधन है।

सूर: के आरम्भ में यद्यपि नबी सल्ल० को सम्बोधित किया गया है परन्तु आज भी यह सम्बोधन हर उस व्यक्ति से है जो नबी सल्ल० के मेशन को ले कर चलना चाहे। यद्यपि नमाज़* का यह विशेष आदेश नबी सल्ल० को सम्बोधित कर के दिया गया था। परन्तु आप (सल्ल०) के साथ आप के साथियों की एक जमात भी रात की नमाज़* में खड़ी रहती थी[1]। आगे चल कर अल्लाह ने मुसलमानों की कठिनाइयों को देखते हुये इस हुक्म में नर्मी पैदा कर दी[2]।

इस सूर:* में नबी सल्ल० को यह आदेश दिया गया है कि आप (सल्ल०) सब से टूट कर अपने रब* के हो जायें। और उसी पर भरोसा रखें। वह सम्पूर्ण संसार का रब* है उस के सिवा कोई नहीं जिसे आदमी इलाह* और अपना इष्ट बनाये। उन की बातों पर सब्र* से काम लें जो आप को झुठलाते और सत्य को मानने से इन्कार करते हैं।

फिर उदाहरणार्थ फ़िरऔन को पेश किया गया है कि किस प्रकार अल्लाह ने उस के पास अपना रसूल* भेजा था परन्तु फ़िरऔन ने इन्कार की नीति अपनाई तो अल्लाह की पकड़ से कोई उसे बचा न सका।

सूर:* के अन्त में ईमान* वालों को आदेश दिया गया है कि वे नमाज़* क़ायम* करें और ज़कात दें[3]। और अपने रब* से क्षमा की प्रार्थना करते रहें। मनुष्य कितनी ही कोशिश क्यों न करे अल्लाह की बन्दगी का हक़ कहाँ अदा होता है? ऐसी हालत में मनुष्य का यही कर्त्तव्य है कि वह क्षमा की प्रार्थना करते हुये अपने रब* की शरण में आ जाये। अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील और दयावान है वह उसे अपनी दया का पात्र बना लेगा।

---

[1] दे० आयत २०।
[2] दे० आयत २०।
[3] यह घाटे का सौदा कदापि नहीं है। अल्लाह इस का भरपूर बदला प्रदान करने वाला है।
* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अल-मुज़्ज़म्मिल

(मक्का में उतरी — आयतें* २०)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
يَا أَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ۝ قُمِ اللَّيْلَ إِلَّا قَلِيلًا ۝ نِصْفَهُ أَوِ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيلًا ۝ أَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْآنَ تَرْتِيلًا ۝ إِنَّا سَنُلْقِي عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيلًا ۝ إِنَّ نَاشِئَةَ اللَّيْلِ هِيَ أَشَدُّ وَطْئًا وَأَقْوَمُ قِيلًا ۝ إِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيلًا ۝ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ إِلَيْهِ تَبْتِيلًا ۝ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيلًا ۝

हे कपड़े में लिपटने वाले[1] !○ रात को खड़े रहा करो,[2] थोड़ा समय छोड़ कर[3] ○ — आधी रात, या उस में से कुछ कम कर लो ○ या उस में कुछ बढ़ा लो — और .क़ुरआन* पढ़ो सँभाल-सँभाल कर, ○ — हम तुम पर एक भारी बात डालने वाले हैं[4] ।○ रात का समय जो है अत्यन्त अनुकूलता रखता है और उस के अत्यन्त सधी हुई होती है[5] ।○ तुम्हारे लि में बड़ी गुंजाइश है[6] ।○ — और अपने रब* का नाम लो और सब-कुछ त्याग कर ओर लग जाओ[7] ○ — पूर्व और पश्चिम का रब है; उस के सिवा कोई इलाह* (पूज तो उसे तुम अपना करता-धरता बना लो[8] ।○

---

१ यह संकेत नबी सल्ल० की ओर है। आगे की आयतों में जिस समय उठ कर अल्लाह के आगे खड़े होने का आदेश दिया गया है वह सोने का समय होता है, साधारणतया लोग उस समय कपड़ों में लिपटे रहे होते हैं। इस सम्पर्क से इस सूरः में आप (सल्ल०) को "हे कपड़े में लिपटने वाले" कह कर सम्बोधित किया गया है। लोगों का यह भी कहना है कि जिस समय यह सूरः उतरी है आप चादर ओढ़े हुए थे। पहली बार जब आप पर वह्य उतरी है उस समय भी आप ने कहा था कि मुझे कुछ उढ़ा दो, घबराये हुये थे।*

२ अर्थात् रात्रि के समय अल्लाह की इबादत करो और नमाज़ पढ़ा करो।*

३ अर्थात् थोड़ी देर आराम भी कर लिया करो।

४ भारी बात से अभिप्रेत लोगों को सचेत करने और उन्हें सचाई की ओर बुलाने की भारी ज़िम्मेदार जैसा कि आगे आने वाली सूरः में आदेश दिया गया है कि उठो और लोगों को सचेत करो (दे० सूरः मुद्दस्सिर आयत २)।

५ यह वह समय होता है जब कि पूर्णतः शान्ति होती है। अल्लाह को याद करने और .क़ुरआन के पढ़ने का यह अत्यन्त उत्तम समय होता है। आदमी रात के प्रारम्भिक भाग में एक नींद पूरी कर के इस समय उठता है; शान्तिमय वातावरण में वह जो चीज़ भी पढ़ता है वह दिल में बैठती चली जाती है।

६ अर्थात् दूसरे कामों और आराम आदि के लिए दिन का समय है। इस आयत का एक अर्थ यह भी लिया जाता है कि तुम्हारे लिए दिन में बहुत काम है इस लिए सब से कट कर एकाग्रचित्त हो कर अल्लाह की ओर प्रवृत्त होने के लिए रात्रि का समय निकालो।

७ अर्थात् अल्लाह को याद करते रहो उसे किसी समय न भूलो। दिन में भी जब कि तुम और कार्य कर रहे हो तुम्हारी ज़बान पर अल्लाह ही का नाम हो और तुम्हारे दिल में उसी की याद बसी हुई हो। सब से कट कर वास्तव में तुम उसी एक अल्लाह के हो रहो। तुम्हारा इलाह (पूज्य) वही एक है उस के अतिरिक्त कोई नहीं जिसे आदमी अपनी कामनाओं और चेष्टाओं का लक्ष्य बना सके।*

इस आयत को समझने के लिए सूरः अल-आला आयत १५ और सूरः अल-इनशिराह आयत ७-८ भी सामने रहनी चाहिए।

८ उस के सिवा तुम्हारा कार्य-साधक कोई दूसरा नहीं हो सकता तुम्हें उसी पर भरोसा करना चाहिए और उसी को सहायता के लिए पुकारना चाहिए। तुम्हें सफल करने वाला, कष्टों को दूर करने वाला केवल वही है ... में कोई दूसरा शरीक नहीं है उस के सिवा जो है सब उस के मुहताज और उस के पैदा किये हुये हैं।

** आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

क़लीला ۝ إن لدينا أنكالا وجحيما ۝ وطعاما ذا غصة
ليما ۝ يوم ترجف الأرض والجبال وكانت الجبال
يلا ۝ إنا أرسلنا إليكم رسولا شاهدا عليكم كما
لى فرعون رسولا ۝ فعصى فرعون الرسول فأخذناه أخذا
فكيف تتقون إن كفرتم يوما يجعل الولدان شيبا ۝
منفطر به كان وعده مفعولا ۝ إن هذه تذكرة فمن
إلى ربه سبيلا ۝ إن ربك يعلم أنك تقوم أدنى
الليل ونصفه وثلثه وطائفة من الذين معك
الليل والنهار علم أن لن تحصوه فتاب عليكم فاقرءوا
من القرآن علم أن سيكون منكم مرضى وآخرون يضربون
يبتغون من فضل الله وآخرون يقاتلون في سبيل الله
ما تيسر منه وأقيموا الصلوة وآتوا الزكوة وأقرضوا الله
حسنا وما تقدموا لأنفسكم من خير تجدوه عند الله هو
أعظم أجرا واستغفروا الله إن الله غفور رحيم ۝

और ये (काफ़िर* लोग) जो-कुछ कहें उस पर सब्र करो, और भले तरीक़े से इन से अलग १० हो जाओ[१०] ।○

और मुझे और इन झुठलाने वाले, सुख-सम्पन्न लोगों को छोड़ दो;[११] और इन्हें थोड़ी सी मुहलत दे दो[११] ।○

हमारे पास भारी-भारी बेड़ियाँ हैं और भड़कती आग, ○ और भोजन है गले में फँसने वाला, और दुःख-भरा अज़ाब । ○

जिस दिन ज़मीन और पहाड़ थरथरायेंगे, और पहाड़ रेत के भुर-भुरे तूदे हो रहे होंगे । ○

हम ने तुम्हारी ओर एक रसूल* भेजा तुम पर गवाह बना कर, जैसा कि हम ने फ़िरऔन की ओर १५ एक रसूल* भेजा था । ○

तो फ़िरऔन ने उस रसूल* की अवज्ञा की, फिर हम ने उसे सख़्त पकड़ में ले लिया[१२]

तो कैसे बचोगे — यदि तुम ने कुफ़्र* किया — उस दिन से जो बच्चों को बूढ़ देगा,[१३] ○ आसमान उस को ले कर फट पड़ेगा । उस का वादा पूरा हो कर रहने वाला

यह एक याद-दिहानी[१४] है । तो जो कोई चाहे अपने रब* की राह ले । ○

(हे मुहम्मद !) तुम्हारा रब* जानता है कि तुम (नमाज़ में) खड़े रहते हो दो तिहा के लग-भग, और कभी आधी रात और कभी तिहाई रात, और एक जमात भी उन लो जो तुम्हारे साथ हैं । और अल्लाह रात और दिन का अन्दाज़ा रखता है । उसे मालूम तुम इस की पूरी-पूरी पाबन्दी नहीं कर सकोगे, तो वह तुम पर मेहरबान हुआ[१५] ।

तो अब, पढ़ो, जितना क़ुरआन आसानी से हो सके । उसे मालूम था कि तुम बीमार भी होंगे, और कुछ लोग अल्लाह का फ़ज़्ल (रोज़ी) तलाश करने के लिए ज़मीन में करेंगे और कुछ लोग अल्लाह की राह में लड़ेंगे । तो पढ़ो उस में से जितना आसानी से हो और नमाज़* क़ायम रखो और ज़कात* देते रहो, और अल्लाह को क़र्ज़ दो अच्छा क़ और जो भी नेकी तुम अपने लिए आगे भेजोगे, उसे अल्लाह के यहाँ अच्छा ही पाओगे उस का बदला बहुत बड़ा हुआ — और अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना करो । निस्सन्देह २० अत्यन्त क्षमा-शील और दयावन्त है । ○

---

९ दे० सूरः अल-मुद्दस्सिर आयत ११-१२ ।

१० हम इन से निपट लेंगे, तुम कुछ चिन्ता न करो ।

११ अर्थात् इन के अज़ाब के लिए जल्दी न करो । यदि ये बाज़ न आये तो इन के करतूतों का प जल्द ही इन के सामने आ जायेगा ।

१२ इसी तरह यदि तुम भी हमारे रसूल* की अवज्ञा करोगे तो तुम्हें हमारी पकड़ से कोई बचा नहीं स

१३ अर्थात् क़ियामत* का दिन ऐसा होगा कि उस की भीषणता से बच्चे बूढ़े हो जावें ।

१४ दे० सूरः अल-हाक़्क़ः फुट नोट १५ ।

१५ अर्थात् वह तुम लोगों पर मेहरबान हो गया और रात में उठ कर इबादत* करने के बारे में अपने नबी को जो विशेष आदेश दिये थे (दे० आयत १-८) तुम लोगों की कठिनाई को देखते हुये आसानी पैदा कर दी ।

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

७४--अल-मुद्दस्सिर

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अल-मुद्दस्सिर' सूरः की पहली आयत* से लिया गया है। 'अल-मुद्दस्सिर' से अभिप्रेत नबी सल्ल० हैं। सूरः के आरम्भ में आयत १ से ले कर आयत ७ तक आप (सल्ल०) को सम्बोधित किया गया है।

यह सूरः मक्का में नुबूवत* के अत्यन्त आरम्भिक समय में अवतीर्ण हुई है। उल्लेखों (Traditions) से मालूम होता है कि सर्वप्रथम वह्य* के पश्चात् कुछ दिनों तक —लग-भग छः महीने तक— आप (सल्ल०) को वह्य* नहीं हुई। इस के बाद आप (सल्ल०) पर प्रस्तुत सूरः* की आरम्भिक आयतों* का अवतरण हुआ है।

यह सूरः डरावा, याद-दिहानी, और सब्र की सूरः है। सूरः अल-मुज़्ज़म्मिल की तरह प्रस्तुत सूरः* में भी नबी सल्ल० को सम्बोधित करते हुये इस बात पर उभारा गया है कि आप (सल्ल०) लोगों को सत्य की ओर बुलायें, अल्लाह की बड़ाई करें (जिस की उत्तम रीति नमाज़ है)। अल्लाह के मार्ग में पेश आने वाली मुसीबतों और कठिनाइयों में सब्र और धैर्य से काम लें। अल्लाह जिसे चाहेगा क़ुरआन के द्वारा सीधे मार्ग पर लगा देगा।

प्रस्तुत सूरः में तौहीद* और अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करने का उल्लेख एक साथ हुआ है, इस से सदक़ः* और दान के महत्व का अनुमान किया जा सकता है।

फिर उस व्यक्ति की नीति और मनोवृत्ति पर प्रकाश डाला गया है जो सत्य का विरोधी और अल्लाह का कृतघ्न है और बताया गया है कि अल्लाह का फ़ैसला उस के बारे में क्या है। नबी सल्ल० को सब्र करने का आदेश दिया गया है और फिर कहा गया है कि अल्लाह उस से निबटने के लिए काफ़ी है जो उस की आयतों* का विरोधी है और गर्व के कारण सत्य से विमुख हो रहा है। और क़ुरआन* को अल्लाह की किताब मानने से इन्कार करता है, और कहता है कि यह मनुष्य का कलाम है, ईश्वर-दत्त ग्रन्थ नहीं है।

फिर आगे चल कर बताया गया है कि किस तरह एक ही चीज़ किसी के लिए विश्वास और ईमान* का कारण बनती है और किसी के लिए गुमराही का कारण होती है। अल्लाह ऐसे लोगों को सीधा मार्ग कदापि नहीं दिखाता जिन के दिलों में रोग हो। और जो सत्य के इन्कार करने पर ही तुले हुये हों।

क़ुरआन* के बारे में बताया गया कि यह तो एक याद-दिहानी और नसीहत है अब जिस का जी चाहे इस के द्वारा शिक्षा ग्रहण करे।

क़ुरआन* जिस आख़िरत* की ख़बर देता है उस के लिए मनुष्य की जानी-पहचानी चीज़ों को साक्षी ठहराया गया है। पहले प्रमाण के रूप में चाँद को पेश किया गया है। सोचने की बात है कि मनुष्य हमेशा अन्धकार में रहना पसन्द नहीं करता वह स्वभावतः प्रकाश चाहता है। अल्लाह उस के लिए प्रकाश का प्रबन्ध करता है। चाँद निकलता है और अँधेरी रात को चाँदनी रात में बदल देता है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

हमारी रातें हमेशा अँधेरी नहीं रहतीं और न रात हमेशा के लिए आती है। रात ढलती है और प्रातः का समय आ जाता है। सोचने वालों के लिए प्रकाशमान चन्द्रमा में, रात के गुज़रने में प्रातःकाल के प्रकाश में इस बात की ओर प्रत्यक्ष संकेत पाया जाता है कि जीवन की वास्तविकता और उस की सच्चाइयों पर सदैव रहस्य का आवरण नहीं पड़ा रहेगा[1]। इन पर से भी एक-न-एक दिन परदा हटेगा। और जो चीज़ें आज हमारी निगाहों से ओझल हैं वे सामने आ जायेंगी। हमारा रब* जो प्रकाश का सृष्टि-कर्त्ता है, जो अँधेरी रातों के बाद उजाली रातें लाता है, और जो रात्रि के पश्चात् अरुणोदय और प्रातःकाल के दर्शन कराता है वह अवश्य एक ऐसा दिन लायेगा जिस दिन ज़मीन और आसमान दिव्य-प्रकाश से चमक उठेंगे और वे सारी चीज़ें जिन पर आज रहस्य का आवरण पड़ा हुआ है प्रत्यक्ष रूप से हमारे सामने आ जायेंगी। और उस दिन हमारे समस्त कर्मों, धारणाओं और विचारों के सत्य और असत्य होने का निर्णय हो जायेगा। उस दिन हर व्यक्ति यह जान लेगा कि सांसारिक जीवन में कौन सत्य का अनुयायी था और कौन अपनी वासनाओं और तुच्छ इच्छाओं का पुजारी बना हुआ था।

फिर आगे चल कर बताया गया है कि अपराधी अपने करतूतों के वबाल से कदापि नहीं बच सकेंगे। उस दिन वे स्वीकार करेंगे कि वास्तव में वे अपराधी थे। उन्हों ने न तो नमाज़* पढ़ी और न मुहताजों की ख़बर ली। बातें ही बनाते रहे और आख़िरत* के इन्कार पर जमे रहे[2]।

सूरः* के अन्तिम भाग में काफ़िरों* को सचेत करते हुये उन के बिगाड़ का वास्तविक कारण यह बताया गया है कि वे आख़िरत* की ओर से निश्चिन्त हैं, आख़िरत* का कुछ भी भय नहीं रखते। हालांकि मनुष्य को अल्लाह से डरना चाहिए और अल्लाह ही है जो डरने वालों को क्षमा करता, और उन्हें अपनी कृपा का पात्र बनाता है।

---

1 दे० आयत ३२-३७।

2 प्रस्तुत सूरः की आयत ४३-४४ और क़ुरआन की दूसरी बहुत सी आयतों से मालूम होता है कि अल्लाह का हक़ और उस के बन्दों का हक़ पहचानना और उसे अदा करना यही दीन* की मौलिक शिक्षा है। उदाहरणार्थ दे० सूरः अल-बय्यिनः आयत ५; सूरः मरयम आयत ३१।

पुरातन ग्रन्थों में भी इस मौलिक शिक्षा का उल्लेख मिलता है। हम यहाँ एक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं : 'धर्म-शास्त्र के ज्ञाता ने परीक्षा के लिए उस से पूछा हे गुरु! तौरात* में कौन सा आदेश महान् है उस ने कहा ख़ुदावन्द (प्रभु) अपने ख़ुदा से अपने सम्पूर्ण हृदय और अपने सम्पूर्ण प्राण और अपनी सम्पूर्ण बुद्धि से प्रेम रख। महान् और प्रथम आदेश यही है। दूसरा इस के समान यह है कि अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। इन दो आदेशों पर तौरात* और नबियों* के सहीफ़े आधारित हैं। मत्ती (Matt.) २२ : ३५-४०।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः° अल-मुद्दस्सिर

(मक्का में उतरी — आयतें° ५६)

अल्लाह° के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بسم الله الرحمن الرحيم
يا أيها المدثر ○ قم فأنذر ○ وربك فكبر ○ وثيابك فطهر ○
والرجز فاهجر ○ ولا تمنن تستكثر ○ ولربك فاصبر ○ فإذا نقر
في الناقور ○ فذلك يومئذ يوم عسير ○ على الكافرين غير يسير ○
ذرني ومن خلقت وحيدا ○ وجعلت له مالا ممدودا ○ وبنين
شهودا ○ ومهدت له تمهيدا ○ ثم يطمع أن أزيد ○ كلا إنه كان
لآياتنا عنيدا ○ سأرهقه صعودا ○ إنه فكر وقدر ○ فقتل كيف
قدر ○ ثم قتل كيف قدر ○ ثم نظر ○ ثم عبس وبسر ○ ثم أدبر
واستكبر ○ فقال إن هذا إلا سحر يؤثر ○ إن هذا إلا قول البشر ○
سأصليه سقر ○ وما أدراك ما سقر ○ لا تبقي ولا تذر ○
لواحة للبشر ○ عليها تسعة عشر ○ وما جعلنا أصحاب النار

हे चादर लपेटने वाले,[1] ○
उठो और (लोगों को) सचेत करो[2] । ○
और अपने रब° की बड़ाई करो,[3] ○
और अपने कपड़ों को पाक (स्वच्छ) रखो,[4] ○
और गन्दगी से अलग रहो[5] । ○
और ज़्यादा समझ कर एहसान न करो
और अपने रब° के लिए सब्र° करो[6]
फिर जब वह 'नाक़ूर' (सूर) बजाया जायेगा
तो वह दिन एक कठिन दिन होगा, ○ काफ़िरों के लिए कुछ आसान न होगा । ○

छोड़ दो मुझे और उस को जिसे मैं ने अकेला पैदा किया,[8] ○ और उसे धन दे रखा है दूर तक फैला हुआ, ○ और (पास) हाज़िर रहने वाले बेटे ○ और मैं ने उस के लिए अच्छी तरह से राह हमवार कर दी । ○ फिर भी लालसा करता है कि और दूँ । ○ कदापि नहीं ! वह तो हमारी आयतों° से वैर रखता है । ○ जल्द ही मैं उस से एक सख़्त चढ़ाई चढ़वाऊँगा[9] । ○ उस ने सोचा और विचार किया ○ — तो उस का नाश हो, कैसा विचार किया ! ○ फिर उस का नाश हो, उसने कैसा विचार किया ! ○ — फिर निगाह डाली, ○ फिर उस ने तेवर च...

---

१ यह संकेत नबी सल्ल० की ओर है । इस सूरः की आरम्भिक आयतें° नुबूवत° के अत्यन्त आरम्भिक समय में अवतीर्ण हुई हैं । जब कि नबी सल्ल० निजी तौर पर सोच-विचार और अपने रब° की याद में रहते थे । और इस हालत में आप (सल्ल०) चादर या कम्बल ओढ़ लेते थे । इस सम्पर्क से आप को "हे चादर लपेटने वाले" कह कर पुकारा गया है ।

२ अर्थात् लोगों को डराओ कि वे आख़िरत° की तैयारी करें और ग़फ़लत से बाज़ आ जायें ।

३ अर्थात् उस की तौहीद° और उस की महानता का वर्णन करो । और अपने रब° को अपने जीवन में सब से ऊँचा स्थान दो, ज़बान से भी उस की बड़ाई करो और दिल से भी उसी को बड़ा जानो ।

४ यह एक मुहावरा है, मतलब यह है कि अपने आचरण और चरित्र को अच्छा बनाओ, अपनी आत्मा को शुद्ध रखो ।

५ हर वह चीज़ जो अल्लाह को ना-पसन्द और मनुष्य के वास्तविक स्वभाव और प्रकृति के प्रतिकूल और उसे दूषित करने वाली हो वह गन्दगी में शामिल है । गन्दे कर्म भी होते हैं और गन्दे विचार, और भाव भी । इसी लिए क़ुरआन में शिर्क° को गन्दगी कहा गया है (दे० सूरः अल-हज्ज आयत ३०-३१) ।

६ सत्य मार्ग में जो कठिनाइयाँ और तकलीफ़ें पेश आयें उन में धैर्य से काम लो ।
सूरः की आयत १ से ले कर आयत ७ तक नबी सल्ल० को सम्बोधित किया गया है ।

७ अर्थात् जब सूर में फूँक मारी जायेगी । 'नक़्र' वास्तव में आवाज़ देने को कहते हैं । यहाँ इस की ओर संकेत है कि सूर° के द्वारा लोगों को आवाज़ दी जायेगी और उन्हें इकट्ठा किया जायेगा ।

८ मैं उस से निपटने के लिए काफ़ी हूँ । उसे उस के करतूतों का मज़ा चखा दूँगा ।

९ अर्थात् सख़्त अज़ाब और तकलीफ़ में डालूँगा ।

° इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

ئِكَةً وَّمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ اِلَّا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِيْنَ
اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَيَزْدَادَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِيْمَانًا وَّلَا يَرْتَابَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ
الْمُؤْمِنُوْنَ وَلِيَقُوْلَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْكٰفِرُوْنَ مَاذَآ اَرَادَ
بِهٰذَا مَثَلًا كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ وَمَا
يَعْلَمُ جُنُوْدَ رَبِّكَ اِلَّا هُوَ وَمَا هِيَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْبَشَرِ ۞ كَلَّا وَالْقَمَرِ ۞ وَ
الَّيْلِ اِذْ اَدْبَرَ ۞ وَالصُّبْحِ اِذَآ اَسْفَرَ ۞ اِنَّهَا لَاِحْدَى الْكُبَرِ ۞ نَذِيْرًا
لِّلْبَشَرِ ۞ لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ يَّتَقَدَّمَ اَوْ يَتَاَخَّرَ ۞ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ
رَهِيْنَةٌ ۞ اِلَّآ اَصْحٰبَ الْيَمِيْنِ ۞ فِيْ جَنّٰتٍ يَتَسَآءَلُوْنَ ۞ عَنِ الْمُجْرِمِيْنَ ۞
مَا سَلَكَكُمْ فِيْ سَقَرَ ۞ قَالُوْا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ ۞ وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ
الْمِسْكِيْنَ ۞ وَكُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَآئِضِيْنَ ۞ وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ
الدِّيْنِ ۞ حَتّٰىٓ اَتٰىنَا الْيَقِيْنُ ۞ فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشّٰفِعِيْنَ ۞
فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِيْنَ ۞ كَاَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ۞
فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ۞ بَلْ يُرِيْدُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّؤْتٰى صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ۞
كَلَّا بَلْ لَّا يَخَافُوْنَ الْاٰخِرَةَ ۞ كَلَّآ اِنَّهٗ تَذْكِرَةٌ ۞ فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ۞
وَمَا يَذْكُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ هُوَ اَهْلُ التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ۞

ौर मुँह बनाया । ○ फिर पीठ फेरी और गर्व किया ○ फिर कहा : यह (.कुरआन*) तो एक जादू[१०] जो होता चला आ रहा है; ○ यह तो आदमी का कलाम है[११]। ○ मैं जल्द ही उसे 'सक़र' (दाह) में झोंक दूँगा। ○ और तुम्हें क्या खबर कि 'सक़र' (दोज़ख़*) क्या है। ○ न रहने देगी न जाने देगी ○ खाल को झुलसा देने वाली है। ○ उस पर उन्नीस नियुक्त हैं। ○

और हम ने उस आग पर रहने वालों को फ़रिश्ते* ही बनाया है, और हम ने उन की संख्या को केवल आज़माइश बनाया है उन लोगों के लिए जिन्हों ने कुफ़्र* किया है; ताकि उन लोगों को जिन्हें किताब दी गई है[१२] विश्वास हो जाये,[१३] और जो लोग ईमान* लाये हैं उन का ईमान* और बढ़ जाये; और जिन्हें किताब* दी गई वे और ईमान* वाले सन्देह में न पड़ें; और ताकि जिन के दिलों में रोग है वे, और काफ़िर,* कहें : इस वर्णन से अल्लाह का अभिप्राय क्या है?

इसी तरह अल्लाह जिसे चाहता है भटका देता है, और जिसे चाहता राह दिखाता है[१४] और तुम्हारे रब* की सेनाओं को बस वही जानता है। और यह तो[१५] मनुष्य के लिए एक याद-दिहानी है। ○

कुछ नहीं, क़सम है चाँद की ○

---

१० .कुरआन की भाषा अत्यन्त प्रभाव डालने वाली, ललित और मधुर है, लोग आकर्षित हुये बिना नहीं रहते थे इस लिए काफ़िर लोग .कुरआन* को जादू कहने लगे थे।*

११ अर्थात् अपराधी ने .कुरआन के बारे में फ़ैसला करने में कदापि न्याय से काम नहीं लिया। यदि वह पक्षपात से रहित और शान्त-चित्त हो कर सोच-विचार करे तो वह कभी भी यह नहीं कह सकता कि .कुरआन अल्लाह का कलाम नहीं है। .कुरआन के टीकाकारों और भाष्यकारों (Commentators) ने साधारणतः इस का उल्लेख किया है कि ये आयतें वलीद बिन मुग़ीरः के विषय में उतरी हैं जो इस्लाम का विरोधी था। वह .कुरआन* से प्रभावित हो कर .कुरआन की प्रशंसा करने लगा था फिर अबू जह्ल के भड़काने से उसे जादू और मनुष्य की रचना निर्धारित करने लगा। वह बड़ा धनवान् था अल्लाह ने इसे बेटे भी कई दिये थे। .कुरैश के क़बीले में इसे ऊँचा स्थान भी प्राप्त था।*

परन्तु इन आयतों में बड़ी व्यापकता पाई जाती है इन से हर उस व्यक्ति की नीति और मनोवृत्ति पर प्रकाश पड़ता है जो अल्लाह की आयतों* के विरोधी हैं। जिन्हें सत्य से वैमनस्य है। वलीद और अबू जह्ल हर युग में होते हैं और उन की नीतियाँ भी वही होती हैं जो पिछले फ़िरऔनों और वलीदों की रही हैं।*

१२ इस से अभिप्रेत किताब वाले हैं। किताब वालों में बहुत से लोग .कुरआन पर ईमान* ले आये। .कुरआन ने उन के सामने उसी सच्चाई को पेश किया जिस की ओर पूर्वकाल के नबियों ने लोगों को बुलाया था।*

१३ फ़रिश्तों और फ़रिश्तों की शक्ति का उल्लेख पिछली आसमानी किताबों में भी किया गया है। .कुरआन में फ़रिश्तों का उल्लेख किताब वालों के लिए विश्वास ही का कारण बना न कि गुमराह होने का।*

१४ अर्थात् गुमराह होने वाले इसी तरह गुमराह होते और राह पाने वाले इसी तरह सीधी राह पा लेते हैं। अल्लाह उन ही लोगों को मार्ग दिखाता है जो सीधे मार्ग पर चलना चाहते हैं रहे वे लोग जिन्हें सत्य से ज़्यादा अपनी झूठी मान-मर्यादा और गौरव का ख़्याल होता है अल्लाह उन्हें भटकने के लिए ही छोड़ देता है। यही कारण है कि किताब वालों में जहाँ बहुत से लोग .कुरआन पर ईमान* (शेष अगले पृष्ठ पर)*

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

७५--अल-क़ियामः

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अल-क़ियामः' सूरः की पहली आयत* से लिया गया है। इस सूरः में क़ियामत* से सम्बन्धित सन्देहों का निषेध किया गया है।

यह सूरः मक्का की आरम्भिक सूरतों* में से है। जब कि दीन* की मौलिक शिक्षाओं की ओर लोगों को आमन्त्रित किया जा रहा था।

इस सूरः में क़ियामत* के आने, आख़िरत* में लोगों को अपने किये का बदला पाने आदि का इन्कार करने वालों के सन्देहों का निषेध किया गया है। यही इस सूरः का केन्द्रीय विषय है।

प्रस्तुत सूरः* और आगे आने वाली सूरः में गहरा सम्पर्क और बड़ी समानता पाई जाती है। प्रस्तुत सूरः में विस्तारपूर्वक काफ़िरों* का वर्णन किया गया है और दूसरी सूरः में विशेष रूप से ईमान* वालों का उल्लेख हुआ है। प्रस्तुत सूरः में क़ियामत* की आरम्भिक चीज़ों पर प्रकाश डाला गया है और दूसरी सूरः में उस के बाद की बातों का उल्लेख किया गया है। प्रस्तुत सूरः की कुछ बातों को दूसरी सूरः में और अधिक स्पष्ट किया गया है। पहली सूरः में यदि काफ़िरों* कोसम्बोधित किया गया है तो दूसरी सूरः में उन की ओर से रुख़ फेर लिया गया है मानो वे दुराग्रह से काम ले रहे हैं ऐसी दशा में उन से ईमान* लाने की अधिक आशा नहीं की जा सकती।

प्रस्तुत सूरः के आरम्भ में क़ियामत* के सत्य होने पर मनुष्य की उस आत्मा को साक्षी ठहराया गया है जो उसे किसी-न-किसी अवसर पर अवश्य टोकती और मलामत करती है। क़ियामत* का इन्कार करने वालों को सख़्ती के साथ झिड़का गया है और क़ियामत* का चित्र उन के सामने खींच दिया गया है। इस प्रकार उस क़ियामत* की जिसे वे असम्भव और दूर समझते हैं उन्हें एक झाँकी दिखा दी गई है। और फिर इस वास्तविकता का उल्लेख किया गया है कि मनुष्य चाहे कितने बहाने पेश करे लेकिन वह अपनी अन्तरात्मा को नहीं झुठला सकता। लोगों के आख़िरत* का इन्कार करने और ईमान* न लाने का कारण वास्तव में कुछ और है। वे दुनियाँ पर रीझे हुये हैं आगे क्या होगा इस की उन्हें चिन्ता ही नहीं है। धन-दौलत का लोभ और संसार की झूठी प्रतिष्ठा की कामना ही है जो उन्हें अल्लाह से विमुख किये हुये है। न तो उन्हें अल्लाह की आज्ञा के पालन का ध्यान है और न उन्हें उस की ना-ख़ुशी की कोई चिन्ता है। ऐसी हालत में नबी सल्ल० को आदेश दिया गया है कि आप क़ुरआन* के लिए जल्दी न करें इसे इकट्ठा कर देना और इसे पढ़ कर सुना देना हमारे ज़िम्मे है। हमारा फ़रिश्तः* (जिबरील) हमारी ओर से इसे तुम्हें सुना देगा। और यदि किसी आदेश को अधिक स्पष्ट करने की आवश्यकता होगी तो हम उसे स्पष्ट कर देंगे। रही काफ़िरों* के मानने न मानने की बात तो यह क़ुरआन के जल्द-जल्द उतरने पर निर्भर नहीं है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

इन का रोग तो कुछ और है। ये वास्तव में आख़िरत* के मुक़ाबले में दुनिया के पुजारी हैं।

फिर दिखाया गया है कि किस तरह क़ियामत* में कुछ लोग अपने रब* की ओर देख रहे होंगे और कुछ लोग ऐसे दण्ड के भागी होंगे जो उन की कमर को तोड़ कर रख देगा। इस के बाद मनुष्य के उस समय की बे-बसी का नक़्शा पेश किया गया है जब कि वह मरण-शय्या पर पड़ा हुआ होता है, और लोग उस के जीवन से निराश हो चुके होते हैं। उस की सारी तेज़ी और फुर्ती जवाब दे चुकी होती है। हालाँकि इस के पहले वह अकड़ता और सत्य को झुठलाता रहता है, अल्लाह के आगे नहीं झुकता। ऐसे मनुष्य पर सिवाय अफ़सोस के और क्या किया जा सकता है।

सूरः* को समाप्त करते हुये इस बात का खुला हुआ प्रमाण दिया गया है कि अल्लाह को इस का सामर्थ्य प्राप्त है कि मरे हुये लोगों को पुनः जीवित कर के उठा दे।

---

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अल-क़ियामः

(मक्का में उतरी — आयतें* ४०)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
لَآ اُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۝ وَلَآ اُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ۝ اَيَحْسَبُ
الْاِنْسَانُ اَلَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَهٗ ۝ بَلٰى قٰدِرِيْنَ عَلٰٓى اَنْ نُّسَوِّيَ
بَنَانَهٗ ۝ بَلْ يُرِيْدُ الْاِنْسَانُ لِيَفْجُرَ اَمَامَهٗ ۝ يَسْـَٔلُ اَيَّانَ يَوْمُ
الْقِيٰمَةِ ۝ فَاِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ۝ وَخَسَفَ الْقَمَرُ ۝ وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَ
الْقَمَرُ ۝ يَقُوْلُ الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ اَيْنَ الْمَفَرُّ ۝ كَلَّا لَا وَزَرَ ۝ اِلٰى
رَبِّكَ يَوْمَئِذِ الْمُسْتَقَرُّ ۝ يُنَبَّؤُا الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَاَخَّرَ ۝
بَلِ الْاِنْسَانُ عَلٰى نَفْسِهٖ بَصِيْرَةٌ ۝ وَّلَوْ اَلْقٰى مَعَاذِيْرَهٗ ۝ لَا تُحَرِّكْ
بِهٖ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهٖ ۝ اِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهٗ وَقُرْاٰنَهٗ ۝ فَاِذَا قَرَاْنٰهُ
فَاتَّبِعْ قُرْاٰنَهٗ ۝ ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهٗ ۝ كَلَّا بَلْ تُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ ۝

नहीं[1]! क़सम खाता हूँ मैं क़ियामत* के दिन की;[2] ○

और नहीं[3]! क़सम खाता हूँ मैं मलामत करने वाली आत्मा की[4]। ○

क्या मनुष्य यह समझता है कि हम उस की हड्डियों को कभी एकत्र न करेंगे? ○ क्यों नहीं, इस सामर्थ्य के साथ कि हम उस की पोर-पोर को ठीक कर दें। ○

बल्कि मनुष्य चाहता है कि उस के आगे दुस्साहस दिखाये। ○ पूछता है: क़ियामत* का दिन ५ कब आयेगा? ○

तो जब निगाह चौंधिया जायेगी ○ और चन्द्रमा को ग्रहण लग जायेगा। ○ और सूर्य और १० चन्द्रमा इकट्ठा कर दिये जायेंगे, ○ मनुष्य उस दिन कहेगा: कहाँ जाऊँ भाग कर[5]! ○ कहीं

१ अर्थात् मनुष्य की यह धारणा सही नहीं है कि क़ियामत* नहीं आयेगी, क़ियामत* आ कर रहेगी।

२ यहाँ क़ियामत* को प्रमाणित करने के लिए क़ियामत ही की क़सम खाई गई है जिस का अर्थ यह हुआ कि क़ियामत* अपनी दलील आप है। यह ऐसी जानी-पहचानी और खुली हुई वास्तविकता है कि उसे सिद्ध करने के लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं।

३ दे० फुट नोट १।

४ यहाँ क़ियामत* के सत्य होने पर एक मनोवैज्ञानिक (Psychological) प्रमाण प्रस्तुत किया गया है। हम जानते हैं कि मनुष्य की आत्मा कुछ कामों पर उसे टोकती और धिक्कारती है। इस से पता चलता है कि मनुष्य एक ज़िम्मेदार प्राणी है। उसे अपने उत्तरदायित्व का ज्ञान होना चाहिए वह कोई निरंकुश प्राणी नहीं है कि जो चाहे करे जो चाहे न करे। उस के कर्मों का बुरा-भला परिणाम अवश्य उस के सामने आ कर रहेगा। क़ियामत* और मनुष्य को टोकने वाली आत्मा में गहरा सम्पर्क है इसी कारण दोनों का एक साथ उल्लेख हुआ है और मलामत करने वाली आत्मा को क़ियामत* के साक्षी के रूप में पेश किया गया है। हमारी आत्मा हमारा खरा-खोटा हमारे सामने रख देती है। हम अपनी बुराइयों को दूसरों से तो छुपा सकते हैं, अपनी अन्तरात्मा से नहीं छुपा सकते। ठीक इसी तरह क़ियामत* भी एक दिन दुनिया के सामने वह सब-कुछ रख देगी जो-कुछ कि उस ने किया होगा।

५ आयत ८ से ले कर आयत १५ तक क़ियामत* का नक़्शा पेश किया गया है। उस दिन संसार की वर्तमान व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो जायेगी। लोगों की निगाहें चौंधिया जायेंगी। वह अत्यन्त घबराया हुआ होगा। रहा यह प्रश्न कि चन्द्रमा को किस प्रकार ग्रहण लगेगा? और सूर्य और चन्द्रमा किस तरह एकत्र हो जायेंगे तो इस का ठीक-ठीक अनुमान करना हमारे लिए कठिन है। ऐसा लगता है कि क़ियामत* में चन्द्रमा और पृथ्वी दोनों सूर्य की ओर खिंच जायेंगे। परन्तु सूर्य का तापमान वह नहीं रहेगा जो आज है, इस लिए सूर्य के निकट होने पर भी मनुष्य जीवित रह सकेगा। उस की चमक से उस की निगाहें चकाचौंध हो जायेंगी। ऐसा लगेगा कि सूर्य क़रीब आता जा रहा है और क़रीब है कि पृथ्वी उस में आ पड़े। आदमी भागना चाहेगा लेकिन भागने की कोई राह न होगी। वह पुकार उठेगा कि कहाँ भाग जाऊँ? पृथ्वी के सूर्य के निकट पहुँच जाने के कारण चाँद प्रकाश-हीन हो जायेगा। और फिर सूर्य में जा पड़ेगा। क़ुरआन में 'ख़सफ़' शब्द प्रयुक्त हुआ है। जिस का अर्थ ग्रहन में आने के अतिरिक्त धँसाया जाना भी होता है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

(६) भीतरी शत्रुओं का उन्मूलन

९ : ७३-७७ काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से लड़ो और उन पर सख़्ती करो।

३३ : ६०, ६१ अगर मुनाफ़िक़ अपनी हरकतों से न रुकें तो उनसे युद्ध करना पड़ेगा।

४ : ८९ मुनाफ़िक़ों में से किसी को अपना मित्र न बनाओ और उनकी पकड़-धकड़ करो।

४ : ९१ मुनाफ़िक़ जो दोरुख़ी की नीति पर चल रहे है, इसी योग्य हैं कि उनसे लड़ा जाए।

४ : ८१ तुम्हारे सामने आते है तो आज्ञापालन स्वीकार करते हैं और पीठ पीछे विरोध की योजनाएँ तैयार करते हैं।

९ : ४७, ४८ *इन लोगों से बिगाड़ के सिवा और कोई आशा नहीं। ये झूठी ख़बरें फैलाते* और इधर-उधर की लगाते हैं।

९ : ५६, ५७ ये क़समें खाते हैं कि हम तुम्हारे हैं, हालांकि ऐसा नहीं है।

९ : ६७ मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं। ये बुराई फैलाते हैं और भलाइयों से रोकते हैं।

६३ : १, २ मुनाफ़िक़ झूठी क़समें खा-खा कर अपने ईमान का यक़ीन दिलाते हैं, पर वास्तव में ये लोगों को अल्लाह के रास्ते मे रोकते हैं।

(७) शान्ति की रक्षा

५ : ३३ जो लोग अल्लाह और रसूल से लड़ते हैं और देश में बिगाड़ और द्रोह फैलाते हैं, उनकी सज़ा क़त्ल है।

८ : ६० अल्लाह के दुश्मनों के मुक़ाबले के लिए तुम लड़ाई के सामानों से सजे रहो।

(८) सताये हुए मुसलमानों की हिमायत

४ : ७५ कमज़ोर मर्दों, औरतों और बच्चों के लिए अत्याचारियों से लड़ो।

८ : ७२ ग़ैर मुस्लिम क्षेत्रों में रहने वाले सताए जा रहे मुसलमान अगर दीन के बारे मे *सहायता माँगें तो उनकी सहायता करनी चाहिए, इस शर्त के साथ* कि उस जाति के साथ तुम्हारा कोई समझौता न हुआ हो।

(९) जन साधारण के कल्याण की स्थापना

३ : १४३ तुम एक उत्तम गिरोह हो। तुम्हारा काम है दुनिया के सामने हक़ की गवाही देना।

२२ : ७८ अल्लाह के लिए जिहाद करो जैसा जिहाद करने का हक़ है। तुम दुनिया वालों पर गवाह हो।

२२ : ४१ शक्ति पाने के बाद तुम्हारा काम है कि नमाज़ और ज़कात की व्यवस्था की स्थापना करो। नेकी का हुक्म दो और बुराई से रोको।

११ : ११६ *नेक काम करने वालों का कर्तव्य है कि वे बिगाड़ को रोकें।*

५ : ७८ लोगों को बुरी बातों से न रोकने वाले अल्लाह की फिटकार के अधिकारी होते हैं।

وَتَذَرُونَ الْآخِرَةَ ۝ وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَاضِرَةٌ ۝ إِلَىٰ رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ۝
وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ بَاسِرَةٌ ۝ تَظُنُّ أَنْ يُفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ۝ كَلَّا إِذَا
بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ۝ وَقِيلَ مَنْ رَاقٍ ۝ وَظَنَّ أَنَّهُ الْفِرَاقُ ۝ وَ
الْتَفَّتِ السَّاقُ بِالسَّاقِ ۝ إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمَسَاقُ ۝ فَلَا صَدَّقَ
وَلَا صَلَّىٰ ۝ وَلَٰكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۝ ثُمَّ ذَهَبَ إِلَىٰ أَهْلِهِ يَتَمَطَّىٰ ۝
أَوْلَىٰ لَكَ فَأَوْلَىٰ ۝ ثُمَّ أَوْلَىٰ لَكَ فَأَوْلَىٰ ۝ أَيَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَنْ
يُتْرَكَ سُدًى ۝ أَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِنْ مَنِيٍّ يُمْنَىٰ ۝ ثُمَّ كَانَ
عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوَّىٰ ۝ فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنْثَىٰ ۝
أَلَيْسَ ذَٰلِكَ بِقَادِرٍ عَلَىٰ أَنْ يُحْيِيَ الْمَوْتَىٰ ۝

नहीं ! कोई शरण नहीं । ○ उस दिन तुम्हारे रब* ही के पास जा कर ठहरना है । ○ उस दिन मनुष्य को बता दिया जायेगा जो-कुछ उस ने किया-धरा होगा । ○

बल्कि मनुष्य अपने लिए आप दलील है, ○ वह अपने लिए बहाने ही क्यों न पेश करे । ○ ।

इस के साथ-साथ अपनी ज़बान को हरकत न दो कि इस में जल्दी करो । ○ हमारे ज़िम्मे है इसे एकत्र करना और इसे पढ़ देना⁶ । ○ तो जब हम इसे पढ़ें तो तुम इस के पढ़ने का अनुसरण करो; ○ फिर इसे स्पष्ट करना हमारे ज़िम्मे है⁷ । ○

कुछ नहीं ! तुम तो जल्द मिलने वाली (दुनिया) को प्रिय रखते हो⁸ ○ और बाद में आने वाली-(आख़िरत*) को छोड़ रखते हो⁹ । ○

कितने चेहरे उस दिन खिले हुये होंगे, ○ अपने रब* की ओर देख रहे होंगे; ○

और कितने चेहरे उस दिन उदास होंगे, ○ गुमान करते होंगे कि उन के साथ कमर तोड़ देने वाला मामला किया जायेगा । ○

कुछ नहीं, जब वह (जान) हँसली तक आ पहुँचेगी, ○ और कहा जायेगा : कौन है झाड़ने-फूँकने वाला¹⁰ ? ○ और समझ लेगा कि जुदाई की घड़ी आ पहुँची; ○ और पिंडली से

---

६ नबी सल्ल० पर जब क़ुरआन की आयतें* उतरतीं तो समझते कि यह एक भारी अमानत है जो आप को सौंपी जा रही है यदि इस का कोई अंश भी खो गया तो आप इस के उत्तरदायी होंगे। इस के साथ ही आप (सल्ल०) की कामना यह रहती थी कि अल्लाह की ओर से ज़्यादा-से-ज़्यादा आयतों का अवतरण हो कदाचित् लोग क़ुरआन* की बरकतों से सीधा मार्ग अपना लें और सच्चे दीन* पर ईमान* ले आयें। आयत १६ और १७ में नबी सल्ल० को सम्बोधित करते हुये कहा गया है कि आप वह्य* के सीखने के लिए इतना व्याकुल क्यों हो रहे हैं । क़ुरआन* को सुरक्षित करने और उसे एकत्र करने के ज़िम्मेदार हम हैं । रहा लोगों के ईमान* लाने और राह पाने का मामला तो उन के ईमान* न लाने का कारण यह कदापि नहीं है कि क़ुरआन ठहर-ठहर कर उतर रहा है । बल्कि उन का वास्तविक रोग यह है कि वे दुनिया के पीछे पड़े हुये हैं; आख़िरत* और भविष्य से उन्हें कोई लगाव नहीं है (दे० आयत २१)। क़ुरआन को शीघ्र उतारने की आवश्यकता नहीं है बल्कि उस का आवश्यकतानुसार समय-समय पर थोड़ा-थोड़ा कर के उतरना ही उचित है । लोगों की शिक्षा-दीक्षा में क्रम का ध्यान रखना आवश्यक है ।

७ अल्लाह ने अपना यह वादा पूर्णतः पूरा किया । नबी सल्ल० के जीवन ही में अल्लाह ने क़ुरआन को एक विशेष व्यवस्थित क्रम में संगठित कर दिया । और उसी के अनुसार आप (सल्ल०) के साथियों ने क़ुरआन* को याद किया और लिखा । स्पष्टीकरण के लिए कोई आयत उतरती तो नबी सल्ल० उसे क़ुरआन में लिख देते । जब कोई सूरः पूरी हो जाती तो अल्लाह स्वयं उस की आयतों को इकट्ठा कर के सूरः को व्यवस्थित कर दे देता और यदि उस में किसी प्रकार की व्याख्या या स्पष्टीकरण की आवश्यकता होती तो उस में कुछ आयतें बढ़ा भी देता ।

८ यहाँ काफ़िरों* को सम्बोधित किया गया है । दे० सूरः अद-दह्र आयत २७ ।

९ अर्थात् इन के ईमान* न लाने का कारण यह नहीं है कि क़ुरआन* ठहर-ठहर कर उतर रहा है बल्कि इन के पथ-भ्रष्ट होने का वास्तविक कारण यह है कि ये दुनिया के पुजारी हैं । जो-कुछ इन्हें सामने सुझाई देता है ये उसी पर रीझे हैं और जो-कुछ इन की निगाहों से ओझल है उस की ओर से ये बेपरवा हो गये हैं ।

१० अर्थात् अब उसे कोई बचाने वाला नहीं । कोई नहीं जो मौत की दवा ला सके ।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

पिंडली लिपट जायेगी;'' ○ तुम्हारे रब* की ओर उस दिन चलना पड़ेगा। ○

तो उस ने न तो तसदीक़ की, और न नमाज़ पढ़ी। ○ बल्कि उस ने झुठलाया और मुँह मोड़ा। ○ फिर ऐंठता हुआ अपने लोगों की ओर चल दिया। ○ अफ़सोस है तुझ पर अफ़सोस-ही-अफ़सोस, ○ फिर अफ़सोस है तुझ पर अफ़सोस-ही-अफ़सोस। ○

क्या मनुष्य समझता है कि उसे यों ही छोड़ दिया जायेगा''। ○

क्या वह टपकाई हुई वीर्य्य की एक बूँद न था? ○ फिर हुआ एक लोथड़ा; फिर उसे आकार दिया; फिर नख-शिख से दुरुस्त किया ○ फिर उस से दोनों जातियाँ बनाईं, पुरुष जाति और स्त्री जाति''। ○

क्या वह इस का सामर्थ्य नहीं रखता कि मुरदों को जीवित कर दे? ○

'' यह उस के विवश और निर्बल हो जाने का चित्र खींचा गया है। इस से पहले वह दौड़-धूप करता और अपनी वेगता का प्रदर्शन करता था; परन्तु आज उस की दशा यह हो रही है कि बिलकुल चल-फिर ही सकता; ऐसा लगता है कि उस की पिंडलियाँ लिपट गई हैं।

'' अर्थात् क्या मनुष्य यह समझता है कि उसे बेकार पैदा किया गया है और उसे निरंकुश छोड़ दिया जायेगा; उस पर कोई ज़िम्मेदारी न डाली जायेगी और उस से उस के किये का हिसाब न लिया जायेगा।

'' अर्थात् जिस अल्लाह ने मनुष्य को वीर्य्य से पूरा मनुष्य बनाया और स्त्री-पुरुष के जोड़े बनाये क्या वह मृत्यु के पश्चात् लोगों को पुनः जीवित नहीं कर सकेगा। वह मरने के बाद लोगों को अवश्य जीवित करेगा। जो लोग इस का इन्कार करते हैं वे अल्लाह के सर्वशक्तिमान् होने को नहीं मानते हालाँकि वे अल्लाह के चमत्कारों का निरीक्षण खुली आँखों से कर रहे हैं।

जिस तरह अल्लाह ने महान् उद्देश्य के अन्तर्गत मनुष्य के जोड़े बनाये हैं उसी तरह महान् उद्देश्य की पूर्ति के लिए इस जीवन के पश्चात् एक दूसरे शाश्वत जीवन का होना भी अनिवार्य है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

७६--अद-दह्र

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अद-दह्र' (The time) सूरः की पहली आयत* से लिया गया है। प्रस्तुत सूरः का एक दूसरा नाम 'अल-इन्सान' (Man) भी है यह नाम भी सूरः की पहली आयत* ही से उद्धृत है।

यह सूरः* भी पिछली सूरः की तरह मक्का की आरम्भिक सूरतों* में से है। .क़ुरआन* की अन्तिम सूरतों* में अधिकतर दीन* की मौलिक शिक्षाओं पर प्रकाश डाला गया है। लोगों को सत्य-धर्म की ओर आमन्त्रित करने के आरम्भिक काल में इन मौलिक शिक्षाओं का बड़ा महत्व था। इन मौलिक शिक्षाओं में बड़ी व्यापकता पाई जाती है। यही मौलिक शिक्षायें आगे चल कर अपने विस्तृत रूप में सम्पूर्ण दीन* बन गई हैं। इस्लाम* की मौलिक शिक्षाओं में एक तो ईश-भय है जो तौहीद* और नमाज़* का वास्तविक आधार है। दूसरी मौलिक शिक्षा क़िया-मत* अथवा आख़िरत (परलोक) पर विश्वास करना है। .क़ुरआन* का सब से उभरा हुआ पहलू यही है कि वह हमें एक ऐसे बड़े दिन के आने की ख़बर देता है जो अदालत और फ़ैसले का दिन होगा। जब कि लोगों को उन के कर्मों का बदला दिया जायेगा। इस्लाम* की तीसरी मौलिक शिक्षा यह है कि अल्लाह के बन्दों के प्रति हम में संवेदना और सहानुभूति हो। इस्लाम* के बहुत से क़ानून और आदेश इसी मौलिक शिक्षा पर अवलम्बित हैं। ईश-भय, भविष्य अथवा परिणाम की चिन्ता और दूसरों के प्रति संवेदना और सहानुभूति की प्रेरणा ये सब वास्तव में मनुष्य की स्वाभाविक और सहज प्रवृत्ति (Instinct) के अन्तर्गत आते हैं। इस से भली-भाँति इस का पता चलता है कि .क़ुरआन* जिस दीन* या धर्म की ओर लोगों को आमन्त्रित करता है वह उन का स्वाभाविक धर्म है। मनुष्य यदि इस धर्म का विरोध करता है तो वास्तव में वह अपनी ही सहज प्रकृति के विरुद्ध आचरण करता है; दूसरे शब्दों में वह अपना वैरी आप बनता है।

.क़ुरआन* की अन्तिम सूरतों* का मध्य-बिन्दु साधारणतः इस्लाम* की मौ-लिक शिक्षायें ही हैं। यह और बात है कि किसी सूरः में कोई पहलू उभर कर सामने आता है किसी में कोई पहलू। फिर इस के अन्तर्गत किसी सूरः में किसी गरोह को सम्बोधित किया गया है किसी में किसी को। कभी मनुष्य की बुद्धि और उस की सूझ-बूझ से अपील की गई है तो कभी उस की चेतना और अन्तरात्मा को जगाने की चेष्टा की गई है।

प्रस्तुत सूरः* में मौलिक रूप से आख़िरत*, .क़ुरआन* और नमाज़* का उल्लेख किया गया है। इन्हीं चीज़ों का उल्लेख आगे आने वाली सूरः में भी हुआ है परन्तु वर्णन-शैली इस से भिन्न है। जिन पहलुओं का प्रस्तुत सूरः में विस्तार नहीं हो सका है उन्हें उस में खोल दिया गया है। प्रस्तुत सूरः में यदि विशेष रूप से लोगों को शुभ-सूचना दे कर सत्य की ओर प्रेरित किया गया है, तो उस सूरः

---

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

डरावा और चेतावनी का पहलू विशेष रूप से उभरा हुआ है।

इस सूरः में मनुष्य को अपने-आप पर गवाह बनाया है। यह मनुष्य का परम कर्त्तव्य है कि वह स्वयं अपने अस्तित्व पर विचार करे। एक समय था कि वह बिलकुल अन्धकार में था, उस की कोई चर्चा न थी। फिर अल्लाह ने उसे पैदा किया। ठीक इसी तरह एक दिन वह क़ियामत* भी सामने आ जायेगी जो आज लोगों को दिखाई नहीं दे रही है। फिर मनुष्य को निरुद्देश्य नहीं पैदा किया। बल्कि अल्लाह को उस की परीक्षा अभीष्ट है। अल्लाह ने उसे देखने और सुनने की शक्ति प्रदान की। उस के मार्ग-दर्शन का प्रबन्ध किया। उसे कृतज्ञता की चेतना और विवेक प्रदान किया। अब चाहे वह कृतज्ञता दिखलाये या कृतघ्न बन कर जीवन व्यतीत करे। यदि वह कृतज्ञ बनता है तो उसे अपने सम्पूर्ण जीवन में अल्लाह के आदेशों का पालन करना होगा। क़ुरआन के अध्ययन और स्वयं इस सूरः से मालूम होता है कि कृतज्ञता का अर्थ अत्यन्त व्यापक है इस का सम्पर्क केवल मनुष्य के हृदय से नहीं बल्कि इस में मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन आ जाता है[1]। एक कृतज्ञ व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि वह अल्लाह के हक़ को भी पहचाने और उस के बन्दों के हक़ को भी न भूले। अल्लाह के कृतज्ञ होने का एक अर्थ यह भी है कि हम उस की दी हुई शक्तियों को उचित रूप से काम में लायें। उस के आदेशों को सुनें और उन का पालन करें। सत्य और असत्य में भेद करें। अल्लाह ने हमें देखने की शक्ति दी है तो हम उस से उस की निशानियों और चमत्कारों को देखें और सत्य को पाने की कोशिश करें। अल्लाह ने दिल दिया है तो हम भक्ति, न्याय और सत्कर्म की ओर बढ़ें। परन्तु यदि हम आँख, कान और दिल रखते हुये भी अन्धे, बहरे और अचेत ही बने रहे तो हम ने अल्लाह की इन नेमतों की क़द्र नहीं पहचानी। फिर तो हम से बढ़ कर कृतघ्न और कोई न होगा। शैतान* मनुष्य का सब से बड़ा दुश्मन है। उस की कोशिश यही है कि वह मनुष्य को अल्लाह का कृतज्ञ बन्दा न बनने दे[2]।

इस सूरः* में विशेष रूप से ईमान* वालों का और उन की विशेषताओं का उल्लेख हुआ है। फिर जन्नत* की एक झाँकी प्रस्तुत की गई है।

सूरः* के अन्तिम भाग में धर्म-विरोधियों के मुक़ाबले में नबी सल्ल० को सब्र से काम लेने का आदेश दिया गया है। और आप (सल्ल०) को हुक्म दिया गया है कि आप (सल्ल०) अपने रब* का स्मरण करें, रात की लम्बी घड़ियों में नमाज़ें* पढ़ें और अपने रब* का गुणगान करें। सब्र के लिए अल्लाह के स्मरण और उस के गुणगान का आश्रय लेने की शिक्षा अत्यन्त महान् है। फिर अल्लाह ने अपने चमत्कार का उल्लेख करते हुए कहा है कि लोगों को याद-दिहानी कर दी गई अब यह लोगों की अपनी ज़िम्मेदारी है कि वे अपने रब* का मार्ग ग्रहण करते हैं या वे किसी और राह पर चलने का फ़ैसला करते हैं।

---

१ दे० आयत २६; सूरः अस-सज्दः आयत ६; अल-आराफ़ आयत १७, १४४ आदि।

२ दे० सूरः अल-आराफ़ आयत १७।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अद-दह्र

(मक्का में उतरी — आयतें* ३१)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

[illegible]

क्या मनुष्य पर कोई ऐसा समय भी बीता है जब कि वह कोई चीज़ न था जिस का नाम लिया जाये! ○

हम ने मनुष्य को मिले-जुले वीर्य से पैदा किया कि उस की परीक्षा करें;[1] तो हम ने उसे सुनने और देखने वाला बनाया। ○ हम ने उसे राह दिखाई अब या तो कृतज्ञ हो या कृतघ्न। ○

हम ने काफ़िरों* के लिए[2] ज़ंजीरें और तौक़ और दहकती हुई आग तैयार कर रखी है। ○

नेक लोग ऐसे पय-पात्र का पान करेंगे जो काफ़ूर (कपूर) मिला कर तैयार किया गया होगा,[3] ○ यह एक स्रोत है जिस से अल्लाह के बन्दे पियेंगे, उसे बहा-बहा कर ले जायेंगे। ○

वे नज़्र को पूरा करते हैं[4] और उस दिन से डरते हैं जिस की मुसीबत हर तरफ़ फैली हुई होगी, ○ और खाना खिलाते हैं उस की चाह होते हुये, मुहताज और अनाथ और क़ैदी को,[5] ○ हम तो बस अल्लाह की रज़ामन्दी के लिए तुम्हें खिलाते हैं। न हम तुम से कोई बदला चाहते हैं और न धन्यवाद;[6] ○ हम अपने रब* की ओर से एक ऐसे दिन का भय रखते हैं जिस का मुँह सिकुड़ा हुआ होगा और माथे पर बल पड़े होंगे[7] । ○

तो अल्लाह ने उन्हें उस दिन की आपत्ति से बचा लिया, और उन्हें प्रफुल्लता और प्रसन्नता से सम्पन्न किया;[8] और जो सब्र उन्हों ने किया था[9] उस के बदले में उन्हें जन्नत* और रेशमी कपड़े प्रदान किये; ○ वे वहाँ ऊँची मसनदों पर तकिया लगाये हुये हैं, वहाँ न सूर्य का तपन देखते हैं और न कड़ाके का जाड़ा। ○ और वहाँ उन पर छाया पड़ रही है और उस के मेवे

---

१ दे० सूरः अन-नम्ल आयत ४०।   २ दे० सूरः अस-सजदः आयत ६।

३ यह जन्नत* का काफ़ूर होगा दुनियाँ के काफ़ूर से इस की कोई निसबत नहीं। शायद इसे काफ़ूर इस लिए कहा गया है कि यह अत्यन्त आनन्दप्रद (Refreshing) स्वादिष्ट, शीतल, सुगन्धित और शान्ति-दायक होगा।

४ अर्थात् जन्नत* में आनन्द लेने वाले वही होंगे जो वर्तमान जीवन में अल्लाह के हुक्म और उस के आज्ञाकारी हैं। मानी हुई मन्नत को पूरा करते हैं, जो अपनी प्रतिज्ञा और व्रत (Vow) का ध्यान रखते हैं।

५ अर्थात् वे अपनी इच्छा और ज़रूरत के मुक़ाबले में दूसरों की आवश्यकता का ध्यान रखते हैं।

६ दे० आयत २२।

७ अर्थात् हमें तो उस क़ियामत* के दिन का डर लगा हुआ है जिस की सख़्ती बहुत ज़्यादा बढ़ी हुई होगी।

८ अर्थात् उन्हें उस दिन कोई दुःख और कष्ट नहीं पहुँच सकता।   ९ दे० आयत २७।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

عاليهم ثياب سندس خضر وإستبرق وحلوا أساور
من فضة وسقاهم ربهم شرابا طهورا ۝ إن هذا كان لكم جزاء
وكان سعيكم مشكورا ۝ إنا نحن نزلنا عليك القرآن تنزيلا ۝
فاصبر لحكم ربك ولا تطع منهم آثما أو كفورا ۝ واذكر اسم
ربك بكرة وأصيلا ۝ ومن الليل فاسجد له وسبحه ليلا
طويلا ۝ إن هؤلاء يحبون العاجلة ويذرون وراءهم يوما
ثقيلا ۝ نحن خلقناهم وشددنا أسرهم وإذا شئنا بدلنا أمثالهم
تبديلا ۝ إن هذه تذكرة فمن شاء اتخذ إلى ربه سبيلا ۝ و
ما تشاءون إلا أن يشاء الله إن الله كان عليما حكيما ۝ يدخل
من يشاء في رحمته والظالمين أعد لهم عذابا أليما ۝

झुका कर बिलकुल वश में कर दिये गये हैं। ○ और उन के पास गर्दिश कर रहे हैं चाँदी के बरतन और आबख़ोर बिलकुल शीशे हो रहे हैं ○ शीशे हे''। जिन्हें ठीक-ठीक अन्दाज़े से रखा है। ○ न्हें वहाँ ऐसे मद्य का पान कराया जा रहा 'ज़न्जबील' (सोंठ) मिला कर तैयार किया ,'' ○ यह वहाँ का एक स्रोत है, जिस का सलसबील'' है। ○ और उन के पास ऐसे आ-जा रहे हैं जिन की अवस्था सदा एक गी, तुम उन्हें देखो, तो समझोगे कि मोती हुये हैं। ○ और वहाँ देखो तो तुम्हें दिखाई देगा परम सुख और महान् राज्य। ○ र बारीक हरे रेशमी कपड़े हैं और दबीज़ रेशमी कपड़े भी। और चाँदी के कङ्गनों से त किये गये हैं। और उन्हें उन के रब* ने स्वच्छ पेय पिलाया। ○ यह तुम्हारा ल है। और तुम्हारी कोशिशों को क़द्र की गई। ○

(हे नबी* !) हम ही तुम पर क़ुरआन* एक विशेष ढंग से उतारते रहे हैं, ○ तो तुम रब* के फ़ैसले तक सब्र से काम लो, और उन में से किसी पापी या कृतघ्न के कहने में न। ○ और प्रातः और सन्ध्या समय अपने रब* का नाम लो''। ○ और रात में भी जदः* करो और उस की तसबीह* करो लम्बी-लम्बी रात तक। ○

ये लोग जल्द मिलने वाली को प्रिय रखते हैं, और अपने परे एक भारी दिन को छोड़ हैं। ○

हम ही ने इन को पैदा किया है, और इन के जोड़-बन्द मज़बूत किये। और हम जब ये जैसे-कुछ हैं इन्हें बिलकुल बदल डालें। ○ यह एक याद-दिहानी है, तो जो-कोई चाहे रब* की राह ले''। ○ और तुम कुछ नहीं चाह सकते बिना इस के कि अल्लाह चाहे। ह ज्ञान रखने वाला और हिकमत* वाला है। ○

वह जिसे चाहता है अपनी दयालुता में दाख़िल कर लेता है, जो लोग ज़ालिम हैं उन के उस ने दुःख-भरा अज़ाब* तैयार कर रखा है। ○

---

९ अर्थात् वे होंगे चाँदी के परन्तु इतने साफ़ और चमकते होंगे मानो वे शीशे के बने हुये हैं।

१ यह दूसरा मद्य-पात्र होगा जो 'ज़नजबील' (सोंठ) से मिला कर तैयार किया गया होगा। वहाँ के बील' को सांसारिक 'ज़नजबील' से क्या निसबत। 'ज़नजबील की तासीर (गुण-स्वभाव) गर्म होती है। लगता है कि 'ज़नजबील' इस लिए मिलाया जायेगा ताकि जन्नत* वाले जन्नत में जहाँ शीतलता का न्द उठायें वहीं इस सन्तोषप्रद, शक्तिदायक और स्वादिष्ट चीज़ का भी आनन्द ले सकें।

२ 'सलसबील' का अर्थ है मृदुता से बहने वाला।

३ यह संकेत नमाज़* की ओर है (दे० सूरः अल-अलक़, अल-माला)। मतलब यह है कि तुम्हारे विरोधी और वैरी लोग इस नाशवान् दुनियाँ के अभिलाषी हैं तुम उन का मुक़ाबला इस प्रकार करो कि उस चीज़ की चाह में लग जाओ जो दुनियाँ और दुनियाँ की सब चीज़ों से उत्तम है अर्थात् अपने रब के स्मरण और उस की उपासना में लगो। उस का गुणगान करो उस के गुणगान का सब से अच्छा तरीक़ा नमाज़* है।

१४ आयत २९ सूरः की समाप्ति की आयत है। फिर दो आयतें अल्लाह ने इस सूरः में उसी प्रकार मिला दी है जिस प्रकार सूरः अल-मुज़्ज़म्मिल के अन्त में एक लम्बी आयत का समावेश हुआ है।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

७७--अल-मुरसलात

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अल-मुरसलात' सूरः की प्रथम आयत से लिया गया है।

यह सूरः* मक्का में अवतीर्ण होने वाली प्रारम्भिक सूरतों* में से है।

प्रस्तुत सूरः का केन्द्रीय विषय वही है जो पिछली सूरः (अद्-दह) का है। दीन* की जिन मौलिक शिक्षाओं का उल्लेख पिछली सूरः में हुआ है उन ही का उल्लेख प्रस्तुत सूरः में भी हुआ है। पिछली सूरः में आख़िरत*, ईमान* और नमाज़* का उल्लेख किया गया है इन ही चीज़ों का उल्लेख हमें प्रस्तुत सूरः में भी मिलता है। वर्णन-शैली अवश्य पिछली सूरः से भिन्न है। पिछली सूरः में विशेष रूप से शुभ-सूच[illegible] दे कर लोगों को सत्य की ओर प्रेरित किया गया है; प्रस्तुत सूरः में हमें डरावा औ[illegible] चेतावनी का पहलू उभरा हुआ दीख पड़ता है। जिन बातों का वर्णन पिछली सू[illegible] में संक्षिप्त रूप में हुआ है उन्हें प्रस्तुत सूरः में स्पष्ट रूप से सामने लाया गया है।

प्रस्तुत सूरः* में हवाओं को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करते हुये इस बात [illegible] प्रमाणित किया गया है कि अल्लाह ने जो फ़ैसले का वादा किया है वह सत्य है[illegible] क़ियामत* अवश्य आयेगी और लोगों को अपने कर्मों का अच्छा या बुरा बद[illegible] मिल कर रहेगा। इस सूरः में हवाओं के अतिरिक्त अपनी दूसरी निशानियों को [illegible] अल्लाह ने आख़िरत* को प्रमाणित रूप देने के लिए पेश किया है। इस सूरः [illegible] ले कर सूरः अत-तारिक़ तक की सूरतों* का क़ियामत* से विशेष सम्पर्क है।

इस सूरः में इन्कार करने वाले काफ़िरों* और अल्लाह से डरने वालों के बी[illegible] मुक़ाबला किया गया है और दोनों गरोहों के परिणाम हमारे सामने रखे गये हैं[illegible] इस सूरः में एक विशेष वाक्य "तबाही है उस दिन झुठलाने वालों की" १० [illegible] आया है। यह वाक्य अपने अन्दर विभिन्न पहलू रखता है यही कारण है कि [illegible] वाक्य इस सूरः में विभिन्न स्थानों पर अनुकूल रूप से प्रयुक्त हो सका है। झुठला[illegible] वालों से अभिप्रेत वे काफ़िर* लोग हैं जो आख़िरत* को नहीं मानते, उन आयतों [illegible] इन्कार करते हैं जिन से तौहीद* (एकेश्वरवाद) की पुष्टि होती है। फिर आख़िरत[illegible] और तौहीद* के अन्तर्गत वे अल्लाह के रसूल* और उस की लाई हुई किताब* [illegible] भी झुठलाते हैं। ऐसे झुठलाने वालों को इस की धमकी दी गई है कि उन के लि[illegible] में ख़राबी और बरबादी के अतिरिक्त और कुछ न आ सकेगा। वे क़ियामत* के दि[illegible] बिलकुल विवश होंगे उन की कोई चाल भी उन के लिए उपयोगी न होगी। दोज़[illegible] की लपटों की ओर उन्हें चलना होगा। जहाँ न उन्हें शीतल छाया मिलेगी और [illegible] आग की चिंगारियों और लपटों से वे अपने-आप को बचा सकेंगे। रहे वे लो[illegible] जिन्हों ने सत्य का इन्कार नहीं किया, जो अल्लाह से डरते और उस की अवज्ञा [illegible] बचते रहे उन के लिए वहाँ शीतल छाया भी होगी स्रोत, मन-चाहे फल भी [illegible] भी।

---

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अल-मुरसलात

(मक्का में उतरी — आयतें* ५०)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

[illegible]

क़सम है उन (हवाओं) की[1] जिन के झोंके चलाये जाते हैं[2] ○

फिर जो (कभी) झक्कड़ बन कर चलती हैं,[3] ○

और (कभी) विकसित करती फिरती हैं;[4] ○

फिर अलग-अलग कर देती हैं,[5] ○

५ फिर याद-दिहानी छोड़ देती हैं,[6] ○ उज्र बने या चेतावनी बने,[7] ○

जिस का तुम से वादा किया जाता है वह हो कर रहेगा[8]। ○

तो जब सितारे मिट जायेंगे, ○

और आसमान फट जायेगा, ○

१० और जब पहाड़ चूर्ण-विचूर्ण कर दिये जायेंगे, ○

और जब रसूलों* के लिए समय नियत होगा[9] ○ —

देर किस दिन की है ! ○

---

1 अर्थात् वे (हवायें) गवाह और साक्षी हैं। वे इस बात की साक्षी हैं कि अल्लाह का वादा पूरा हो [illegible] रहने वाला है। क़ियामत* अवश्य आयेगी (दे० आयत ७)।

2 इस आयत में 'उर्फ़' (عرف) शब्द प्रयुक्त हुआ है। 'उर्फ़' से अभिप्रेत घोड़े की अयाल (केसर) बाल हैं जो उस के मस्तक पर लटके हुए होते हैं। यहाँ हवाओं को घोड़े से उपमा दी गई है और उन [illegible] चलने और रुकने को घोड़ों के मस्तक के बाल पकड़ने और छोड़ने से।

3 हवाओं का चलना लाभदायक और उपयोगी भी होता है और कभी हानिकारक भी। जो हवायें चल [illegible] के पश्चात् सख़्त और तुन्द हो जाती हैं वे साधारणतः हानि पहुँचाने वाली होती हैं।

4 हवायें एक ओर तो बादलों को उभारती और उन्हें वायुमण्डल में फैला देती हैं दूसरी ओर वर्षा के [illegible] से वे अपने रब* की दयालुता का प्रसारण करती हैं और विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों को उगा कर भूमि [illegible] हरी-भरी और सुसज्जित कर देती हैं।

5 इन हवाओं का कार्य भिन्न होता है कभी तो ये हवायें वर्षा लाती हैं और कभी बादलों को उड़ा [illegible] कहीं और ले जाती हैं। किसी गरोह को आंधी, बाढ़ आदि से हानि पहुँचाती हैं तो किसी गरोह के लि[illegible] लाभदायक सिद्ध होती हैं। दे० सूरः अज़्ज़ारियात आयत ४।

6 हवाओं के चलने में अल्लाह की निशानी और याद-दिहानी पाई जाती है। मनुष्य इन से बहुत-कु[illegible] शिक्षा ग्रहण कर सकता है।

7 जो याद-दिहानी और चेतावनी हवाओं के चलने से होती है उस से उन लोगों को सचेत करना अभि[illegible] है जो समझ-बूझ से काम लेने वाले हैं और इस से उन लोगों पर हुज्जत भी क़ायम होती है जो [illegible] ही रहना चाहते हैं, वे कल क़ियामत* के दिन यह नहीं कह सकते कि मुझे सचेत करने के लिए कोई निशा[illegible] क्यों नहीं भेजी गई।

8 अर्थात् वर्तमान लोक में अल्लाह अपनी दयालुता और अपने प्रकोप की निशानियाँ दिखाता है यह [illegible] सब-कुछ इस संसार में हम अपनी आँखों से देख रहे हैं तो फिर एक ऐसा दिन क्यों नहीं आ सकता जब [illegible] लोगों को अपने-अपने कर्मों के अनुसार बदला दिया जायेगा।

9 अर्थात् रसूलों* के हाज़िर होने का एक समय निश्चित किया जायेगा और उन से उन की जाति [illegible] के विषय में पूछा जायेगा और उन की गवाही के अनुसार उन की जातियों के बारे में निर्णय किया जायेगा।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

لِلْمُكَذِّبِينَ ۝ أَلَمْ نُهْلِكِ الْأَوَّلِينَ ۝ ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ الْآخِرِينَ ۝
كَذَٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ۝ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝ أَلَمْ نَخْلُقْكُمْ
مِنْ مَاءٍ مَهِينٍ ۝ فَجَعَلْنَاهُ فِي قَرَارٍ مَكِينٍ ۝ إِلَىٰ قَدَرٍ مَعْلُومٍ ۝
فَقَدَرْنَا فَنِعْمَ الْقَادِرُونَ ۝ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝ أَلَمْ
نَجْعَلِ الْأَرْضَ كِفَاتًا ۝ أَحْيَاءً وَأَمْوَاتًا ۝ وَجَعَلْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ
شَامِخَاتٍ وَأَسْقَيْنَاكُمْ مَاءً فُرَاتًا ۝ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝
انْطَلِقُوا إِلَىٰ مَا كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ۝ انْطَلِقُوا إِلَىٰ ظِلٍّ ذِي ثَلَاثِ
شُعَبٍ ۝ لَا ظَلِيلٍ وَلَا يُغْنِي مِنَ اللَّهَبِ ۝ إِنَّهَا تَرْمِي بِشَرَرٍ
كَالْقَصْرِ ۝ كَأَنَّهُ جِمَالَتٌ صُفْرٌ ۝ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝
هَٰذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُونَ ۝ وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُونَ ۝ وَيْلٌ
يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝ هَٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۖ جَمَعْنَاكُمْ وَالْأَوَّلِينَ ۝
فَإِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيدُونِ ۝ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝ إِنَّ
الْمُتَّقِينَ فِي ظِلَالٍ وَعُيُونٍ ۝ وَفَوَاكِهَ مِمَّا يَشْتَهُونَ ۝ كُلُوا
وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝
وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝ كُلُوا وَتَمَتَّعُوا قَلِيلًا إِنَّكُمْ مُجْرِمُونَ ۝
وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ ارْكَعُوا لَا يَرْكَعُونَ ۝
وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝ فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ۝

फ़ैसले के दिन की। ○

और तुम क्या जानो कि क्या है फ़ैसले का दिन। ○—

तबाही है उस दिन झुठलाने वालों की। ○

क्या हम ने अगलों को विनष्ट नहीं किया,[10] ○ फिर पिछलों को भी उन के पीछे भेजते रहे। ○ ऐसा ही करते हैं हम अपराधियों के साथ। ○

तबाही है उस दिन झुठलाने वालों की। ○

क्या हम ने तुम्हें एक तुच्छ पानी से नहीं पैदा किया ○ फिर उसे एक सुरक्षित जगह में रखा ○ एक जाने-बूझे अन्दाज़े तक। ○ हम ने अन्दाज़ा ठहराया तो हम कैसे अच्छे अन्दाज़ा ठहराने वाले हैं[11]। ○

तबाही है उस दिन झुठलाने वालों की। ○

क्या हम ने ज़मीन को समेटे रखने वाली नहीं बनाया ○ ज़िन्दों को भी और मुरदों को भी, ○ और उस में गड़े हुये ऊँचे-ऊँचे पहाड़ बनाये और तुम्हें पीने को मीठा-मीठा पानी दिया[12]। ○

तबाही है उस दिन झुठलाने वालों की। ○

चलो उस की ओर जिसे तुम झुठलाते थे; ○ चलो तीन शाखाओं वाली छाया[13] की ओर, ○ जो न घनी है और न लपट से बचने के काम आवे। ○ वह चिनगारियाँ फेंकती है महल जैसी-जैसी, ○ मानो वे पीत-वर्ण के ऊँट हैं[14]। ○

तबाही है उस दिन झुठलाने वालों की। ○

यह वह दिन है कि उन से बात नहीं निकलती, ○ और न उन्हें इजाज़त है कि उ़ज्र ही पेश करें। ○

---

१० अरब के लोग भली-भाँति इस बात को जानते थे कि किस प्रकार पिछली बहुत सी जातियाँ विनष्ट कर दी गई हैं। आद* और लूत (अ०) की जाति को तो अल्लाह ने हवा ही के प्रभाव से तबाह किया।

११ मनुष्य को सोचना चाहिए कि जिस अल्लाह ने उसे पहली बार पैदा किया है वह दूसरी बार भी उसे पैदा करने का सामर्थ्य रखता है। जो उस के जीवन से सम्बन्धित छोटी-से-छोटी बातों का पूरा ध्यान रखता है वह मानव-जीवन की मौलिक और महान् समस्याओं की उपेक्षा कैसे कर सकता है।

१२ पैदा होने से पहले जिस प्रकार अल्लाह ने माता के पेट (गर्भाशय) में मनुष्य के लिए उस की आवश्यकता की समस्त चीज़ें संचित कीं उसी प्रकार पैदा होने के पश्चात् धरती में भी वह मनुष्य की ज़रूरतों को पूरी करता है। जिस पालन-कर्ता ने उसे माँ के पेट से इस विस्तृत धरती में उतारा है वह उसे इस लोक के बाद दूसरे लोक में भी बसा सकता है।

१३ इस से अभिप्रेत धुयें की छाया है। जब धुआँ उठता है तो उस से विभिन्न शाखायें फूटती हैं। दे० सूरः अल-वाक़िआः आयत ४३-४४।

१४ इस उपमा से अग्नि-शिखाओं और लपटों के फैलाव, उन की ऊँचाई और रंग आदि पर प्रकाश पड़ता है। महलों का निर्माण साधारणतः ऊँचे स्थानों पर होता है। दूर से उन का रंग चमकता हुआ दिखाई देता है। महलों को दूर से देखने से उन की जो आकृति दीख पड़ती है उसी को सामने रखते हुये यह उपमा दी गई है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

तबाही है उस दिन झुठलाने वालों की। ○

यह फ़ैसले का दिन है, हम ने तुम्हें और अगलों को एकत्र कर दिया है। ○ अब तुम्हारे पास कोई दाँव है, तो चलाओ मुझ पर[18]। ○

४० तबाही है उस दिन झुठलाने वालों की। ○

निस्सन्देह अवज्ञा से बचने वाले छाँवों और स्रोतों के बीच होंगे[19] ○ और वहाँ मेवे जैसे पसन्द करें। ○ मज़े से खाओ और पियो जो-कुछ तुम करते थे उस के बदले में। ○

हम ऐसा ही बदला देते हैं सत्कर्मी लोगों को। ○

४५ तबाही है उस दिन झुठलाने वालों की। ○

खा लो और सुख भोग लो थोड़ा सा। (हे झुठलाने वालो !) तुम तो अपराधी हो

तबाही है उस दिन झुठलाने वालों की। ○

और जब उन से कहा जाता है : झुको, तो नहीं झुकते। ○

तबाही है उस दिन झुठलाने वालों की। ○

५० तो अब इस के बाद, कौन-सी बात होगी जिस पर वे ईमान* लायेंगे[20]। ○

---

१८. इस उपमा से लपटों और चिनगारियों के रंग और उन की बड़ाई दोनों का अन्दाज़ा बताया है। धुएँ के बाद से लपटों का रंग ऐसा ही दिखाई देता है।

१९. दे० सूरः अल-वाक़िअः आयत २७-४४।

२०. इस के बाद कौन सी बात सच्ची और दिलों में घर करने वाली हो सकती है जिस को मानेंगे।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

७८--अन-नबा

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अन-नबा' (The tidings) सूरः की दूसरी आयत* से लिया गया है।

यह सूरः* मक्का में उतरने वाली प्रारम्भिक सूरतों* में से है जब कि लोगों के सामने दीन* (धर्म) की मौलिक शिक्षायें ही प्रस्तुत की जा रही थीं।

इस सूरः* का मूल विषय क़ियामत* और आख़िरत* है। प्रस्तुत सूरः में सरकश लोगों और उन लोगों के बीच मुक़ाबला किया गया है जो अल्लाह का डर रखते और उस की अवज्ञा से बचते हैं।

सूरः* के आरम्भ में कहा गया है कि जो लोग आख़िरत* के विषय में विभिन्न मत रखते हैं उन्हें आख़िरत* की वास्तविकता का जल्द ही ज्ञान हो जायेगा। फिर आयत ६ से ले कर आयत १६ तक अल्लाह ने अपने उन चमत्कारों का उल्लेख किया है जिन से आख़िरत* और क़ियामत* की पुष्टि होती है। इन आयतों में जिन निशानियों का उल्लेख किया गया है उन से मालूम होता है कि इस विश्व का कोई सृष्टिकर्ता और निर्माता है जो अत्यन्त उचित रूप से हमारी आवश्यकताओं को पूरा कर रहा है। वह हम सब का पालन-कर्ता है। वह अत्यन्त दयावन्त है, विश्व का निर्माण कर के उसने अपनी दयालुता का ही परिचय दिया है। उस ने हर चीज़ का निर्माण हिकमत* और उद्देश्य के अन्तर्गत किया है। अतः अवश्य ही वर्तमान लोक का भी कोई वास्तविक उद्देश्य होगा। और अवश्य ही इस वर्तमान लोक की एक निश्चित अवधि होगी। अल्लाह हमारी ज़रूरतों को पूरी कर रहा है उस से यह आशा कैसे की जा सकती है कि वह मनुष्य की वास्तविक आवश्यकताओं को पूरा नहीं करेगा और यों ही सदा के लिए मनुष्य के जीवन का अन्त हो जायेगा। ऐसा कदापि नहीं होने का। एक ऐसा दिन अवश्य आयेगा जब कि उस के कर्मों का उसे बदला दिया जायेगा।

आगे चल कर संक्षेप रूप में क़ियामत* का नक़्शा पेश कर के बताया गया है कि उस दिन ज़ालिम और सरकश लोग किस प्रकार दोज़ख़ का ईंधन बनेंगे और किस प्रकार उस दिन अल्लाह से डरने वाले सफल होंगे और उन्हें हर प्रकार की सुख-सामग्री प्राप्त होगी। अल्लाह उन के कर्मों का पूरा-पूरा बदला देगा।

आख़िरत* के अन्तर्गत इस सूरः में तौहीद* का भी उल्लेख किया गया है और बताया गया है कि आख़िरत* में किस प्रकार हर एक उस के आगे विवश होगा।

सूरः को समाप्त करते हुये लोगों को सावधान किया गया है कि फ़ैसले का दिन आ कर रहेगा वह अज़ाब जिस से लोगों को डराया जाता है दूर नहीं है उस दिन प्रत्येक व्यक्ति अपना किया-धरा देख लेगा। काफ़िर कहेंगे कि क्या ही अच्छा होता कि हम मिट्टी होते और अज़ाब से छुटकारा पा लेते।

---

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अन-नबा

(मक्का में उतरी — आयतें* ४०)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है ।

'किस चीज़ के विषय में ये लोग पूछते रहते हैं ? ○ उस बड़ी ख़बर के विषय में,[१] ○ जिस में विभेद रखते हैं । ○ कुछ नहीं, जल्द ही इन्हें ज्ञात हो जायेगा[२] ! ○ फिर (सुन लो) कुछ नहीं, जल्द ही (५) इन्हें ज्ञात हो जायेगा ! ○

क्या नहीं बनाया हम ने ज़मीन को बिछौना, ○ और पहाड़ों को मेखें[३] ? ○ और पैदा किया तुम्हें जोड़ा-जोड़ा, ○ और बनाया तुम्हारी नींद को (१०) विश्राम,[४] ○ और बनाया रात को लिबास,[५] ○ और बनाया दिन को जीवन-वृत्ति के लिए[६] । ○ बनाये तुम्हारे ऊपर सप्त सुदृढ़ (आसमान),[७] ○ और बनाया एक जगमगाता प्रदीप,[८] ○ और बरसाया निचोड़ने वालों से (बादलों से) मूसलाधार पानी ○ पैदा करें उस के द्वारा अनाज और वनस्पति, ○ घने-घने बाग़[९] । ○ फ़ैसले का दिन एक निश्चित समय है,[१०] ○ दिन कि सूर* में फूँक मारी जायेगी, और गरोह-के-गरोह चले आ रहे होगे, ○ और आसमान खोल दिया जायेगा तो उस के दरवाज़े-

بسم الله الرحمن الرحيم
عم يتساءلون ۚ عن النبإ العظيم ۙ الذي هم فيه
مختلفون ۚ كلا سيعلمون ۙ ثم كلا سيعلمون ۚ ألم نجعل
الأرض مهادا ۙ والجبال أوتادا ۙ وخلقناكم أزواجا ۙ وجعلنا
نومكم سباتا ۙ وجعلنا الليل لباسا ۙ وجعلنا النهار معاشا ۙ و
بنينا فوقكم سبعا شدادا ۙ وجعلنا سراجا وهاجا ۙ وأنزلنا
من المعصرات ماء ثجاجا ۙ لنخرج به حبا ونباتا ۙ وجنات
ألفافا ۚ إن يوم الفصل كان ميقاتا ۙ يوم ينفخ في الصور فتأتون
أفواجا ۙ وفتحت السماء فكانت أبوابا ۙ وسيرت الجبال فكانت
سرابا ۚ إن جهنم كانت مرصادا ۙ للطاغين مآبا ۙ لابثين فيها
أحقابا ۚ لا يذوقون فيها بردا ولا شرابا ۙ إلا حميما وغساقا ۙ
جزاء وفاقا ۚ إنهم كانوا لا يرجون حسابا ۙ وكذبوا بآياتنا
كذابا ۚ وكل شيء أحصيناه كتابا ۚ فذوقوا فلن نزيدكم إلا
عذابا ۚ إن للمتقين مفازا ۙ حدائق وأعنابا ۙ وكواعب أترابا ۙ
وكأسا دهاقا ۚ لا يسمعون فيها لغوا ولا كذابا ۚ جزاء من ربك
عطاء حسابا ۙ رب السماوات والأرض وما بينهما الرحمن لا

'यहाँ से तीसवाँ पारा (Part XXX) शुरू होता है ।

१ अर्थात् आख़िरत* के बारे में ।

२ अर्थात् जिस की ये लोग हँसी उड़ाते और जिस का इन्कार करते हैं उस के आने में देर नहीं है बल्द इन्हें उस की वास्तविकता का ज्ञान हो जायेगा ।

३ दे० सूरः अन-नह्ल फ़ुट नोट ८ ।

४ अर्थात् सोने से तुम्हारी थकान दूर हो जाती है और तुम्हें एक प्रकार से नवीन जीवन प्राप्त होता है ।

५ रात हर चीज़ को ढक लेती है । रात अपने अँधेरे में हर चीज़ को छुपा लेती है । सब कामों से छुट्टी पा आदमी रात के लिबास में आराम पाता है ।

६ साधारणतः मनुष्य दिन में दौड़-धूप करता और अपनी रोज़ी कमाता है । जीवन-सम्बन्धी दूसरे कार्य भी साधारणतः दिन में ही होते हैं ।

७ दे० सूरः अल-बक़रः फ़ुट नोट ७ । ८ अर्थात् सूर्य ।

९ आयत ६ से ले कर आयत १६ तक उन निशानियों का उल्लेख किया गया है जिन में सोच-विचार करने से आख़िरत* की पुष्टि होती है । वास्तव में अल्लाह ने अपनी निशानियों के रूप में ऐसे प्रमाण प्रस्तुत किये हैं जिन से स्पष्ट रूप में यह बात सिद्ध हो जाती है कि एक ऐसा दिन अवश्य आयेगा जब लोगों को उन का रब* दोबारा जीवन प्रदान करेगा और उन्हें अपने कर्मों का बदला दिया जायेगा (दे० सूरः की भूमिका)।

१० आयत ६ से ले कर आयत १६ तक अल्लाह ने अपने जिन चमत्कारों का उल्लेख किया है उन से स्पष्टतः सिद्ध हो जाता है कि फ़ैसले का दिन अटल है यह आ कर ही रहेगा ।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

ही-दरवाज़े हो जायेंगे, ○ और पहाड़ चलाये जायेंगे तो वे मरीचिका हो रहे होंगे'' ।○

जहन्नम* घात में है, ○ सरकशों का ठिकाना है।○ जिस में वे युग-पर-युग पड़े रहेंगे''।○ न वहाँ किसी ठण्डक का आनन्द चखेंगे और न किसी पीने की चीज़ का'' ○ सिवाय खौलते पानी और पीप-लहू'' के;○ बदला है ठीक-ठीक।○

वे तो किसी प्रकार हिसाब की आशा ही नहीं रखते थे; ○ और हमारी आयतों* को झुठलाते ही रहे।○

और हम ने हर चीज़ लिख रखी है।○

तो मज़ा चखो। अब हम तुम्हें और कुछ नहीं बस अज़ाब देते रहेंगे।○

निस्सन्देह डर रखने वालों के लिए सफलता है ○ — बाग़ हैं और अंगूर, ○ और नव युवतियाँ समान आयु वाली, ○ और छलकता मद्य-पात्र।○ वे वहाँ कोई बकवाद नहीं सुनेंगे और न कोई झूठ ○ — बदला है तुम्हारे रब* की ओर से — पुरस्कार हिसाब से ○ — रब* आसमानों और ज़मीन का, और जो-कुछ उन के बीच है उस का, अत्यन्त कृपाशील। उन के बस में नहीं कि उस से कोई बात कर सकें।○

जिस दिन रूह और फ़रिश्ते* पंक्तिबद्ध हो कर खड़े होंगे, वे बोलेंगे नहीं, सिवाय उस व्यक्ति के जिसे रहमान* (कृपाशील ईश्वर) इजाज़त दे दे और वह बात भी ठीक कहे''।○

यह वह बिलकुल यक़ीनी दिन है। तो जो-कोई चाहे अपने रब* के पास ठिकाना बनाले।○

हम ने तुम्हें एक ऐसे अज़ाब'' से सचेत कर दिया जो दूर नहीं, जिस दिन मनुष्य देखेगा कि उस के हाथों ने क्या कुछ भेजा, और काफ़िर कहेगा: "क्या अच्छा होता कि मैं मिट्टी होता'' !" ○

---

११ अर्थात् पहाड़ धुनी हुई रोई के समान उड़ जायेंगे उन का अस्तित्व शेष न रहेगा ज़मीन चटियल मैदान हो जायेगी।

१२ अर्थात् युग-पर-युग बीतते चले जायेंगे परन्तु उन्हें दोज़ख* से छुटकारा न मिलेगा।

१३ अर्थात् न तो उन्हें शीतलता का आनन्द मिल सकेगा और न कोई आनन्द-दायक चीज़ उन्हें पीने को मिलेगी।

१४ दे० सूरः साद० फुट नोट ३०।

१५ अर्थात् उस दिन उस से वही बात कर सकेगा जिसे उस की अनुमति प्राप्त होगी और वह बात भी ठीक कहेगा। दूसरा कोई उस से बात नहीं कर सकेगा और न किसी के लिए सिफ़ारिश कर सकेगा। दे० सूरः अल-मुरसलात आयत ३५–३६।

१६ अर्थात् ऐसे अज़ाब से जो दूर नहीं है जब वह आ जायेगा तो तुम देखोगे कि जिसे लोग दूर समझ रहे थे वह तो अत्यन्त निकट था। दे० सूरः अन-नाज़िआत आयत ४६।

१७ और इस तरह से मैं दोज़ख के अज़ाब से बच जाता।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

७९--अन-नाज़िआत

(परिचय)

इस सूरः का नाम 'अन-नाज़िआत' सूरः की पहली आयत से लिया गया है।

यह सूरः* मक्का की आरम्भिक सूरतों* में से है जो मक्का में उस समय अवतीर्ण हुई हैं जब कि नबी सल्ल० लोगों को खुल कर सत्य की ओर आमन्त्रित कर रहे थे और मक्का के काफ़िर* आप (सल्ल०) की बातों का उपहास कर रहे थे।

इस सूरः में विशेष रूप से क़ियामत* का उल्लेख किया गया है।

प्रस्तुत सूरः* में सरकशों और उन लोगों के बीच जो अल्लाह से डरने वाले हैं मुक़ाबला किया गया है। और बताया गया है कि सफलता उन ही लोगों के लिए है जो दुनियाँ में अल्लाह से डरते और आख़िरत* की तैयारी में लगे रहते हैं।

सूरः* के आरम्भ में क़समों के रूप में क़ियामत* का प्रमाण प्रस्तुत किया गया है। परन्तु क़सम जिस चीज़ की खाई गई है उस के बारे में लोगों के विभिन्न मत हैं, उदाहरणार्थ फ़िरिश्ते*, सितारे, हवायें, घोड़े आदि। साधारणतया लोगों का विचार है कि यहाँ क़सम फ़िरिश्तों* की खाई गई है। फ़िरिश्ते* रग-रग में उतर कर जान खींच निकालते हैं फिर वे जान को ले कर एक लोक से दूसरे लोक में जाते हैं। फ़िरिश्ते* अल्लाह के आदेशों का पालन करने के लिए तेज़ी दिखाते हैं। फ़िरिश्ते* जो काम अनजाम देते हैं वह हमारे सामने हैं। फ़िरिश्तों* के कामों से यही मालूम होता है कि संसार निरर्थक नहीं है अतः क़ियामत* अवश्य आयेगी और लोग जीवित कर के उठाये जायेंगे साधारणतया लोगों का विचार तो यही है कि यहाँ फ़िरिश्तों* की क़सम खाई गई है परन्तु हम अभी स्वयं किसी नतीजे पर नहीं पहुँच सके हैं। वास्तविक ज्ञान अल्लाह को है।

क़ियामत* के लिए प्रत्यक्ष प्रमाण प्रस्तुत करने के पश्चात् फ़िरऔन का क़िस्सा सुनाया गया है कि किस प्रकार अल्लाह ने दुनियाँ ही में उसे उस की सरकशी का मज़ा चखाया था। इस क़िस्से के द्वारा मक्का वालों को सचेत किया गया है कि किसी को अपनी सरदारी और शक्ति पर कदापि गर्व नहीं होना चाहिए। जो अल्लाह मूसा के साथ था वही आज मुहम्मद (सल्ल०) का भी सहायक है।

फ़िरऔन का हाल बयान करने के बाद अल्लाह ने फिर अपने कुछ चमत्कारों का उल्लेख किया है जिन से आख़िरत* की पुष्टि होती है। बताया गया है कि जिस अल्लाह ने इस विशाल जगत की सृष्टि की है उस के लिए क्या मुश्किल बात है कि वह तुम्हें मरने के बाद दोबारा जीवित कर के उठाये। जो इस लोक में मनुष्य की आवश्यकताओं को पूरा कर रहा है वह अवश्य उस की बड़ी आवश्यकता की पूर्ति के लिए उसे पुनः जीवन प्रदान करेगा। जो अल्लाह हमारी भौतिक आवश्यकताओं को नहीं भूलता वह हमारी उन आवश्यकताओं की उपेक्षा कैसे कर सकता है जिन का सम्बन्ध हमारी आत्मा और हमारी उन कामनाओं से है जो जीवन की मूल निधि हैं।

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

سَمْكَهَا فَسَوَّاهَا ۝ وَأَغْطَشَ لَيْلَهَا وَأَخْرَجَ ضُحَاهَا ۝
وَالْأَرْضَ بَعْدَ ذَٰلِكَ دَحَاهَا ۝ أَخْرَجَ مِنْهَا مَاءَهَا وَمَرْعَاهَا ۝ وَ
الْجِبَالَ أَرْسَاهَا ۝ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ۝ فَإِذَا جَاءَتِ الطَّامَّةُ
الْكُبْرَىٰ ۝ يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْإِنسَانُ مَا سَعَىٰ ۝ وَبُرِّزَتِ الْجَحِيمُ لِمَن
يَرَىٰ ۝ فَأَمَّا مَن طَغَىٰ ۝ وَآثَرَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۝ فَإِنَّ الْجَحِيمَ هِيَ
الْمَأْوَىٰ ۝ وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوَىٰ ۝
فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوَىٰ ۝ يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَاهَا ۝
فِيمَ أَنتَ مِن ذِكْرَاهَا ۝ إِلَىٰ رَبِّكَ مُنتَهَاهَا ۝ إِنَّمَا أَنتَ مُنذِرُ مَن يَخْشَاهَا ۝
كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا عَشِيَّةً أَوْ ضُحَاهَا ۝

क्या तुम्हारा पैदा करना अधिक कठिन है, या आसमान का उस को उस ने बनाया[8] ? ○ उसे ऊँचा उठाया और उसे ठीक-ठाक किया; ○ और उस की यह अंधेरी रात बनाई, और उस में दिन का प्रकाश प्रकट किया । ○ और इस के बाद ज़मीन को बिछाया,[9] ○ उस में से यह पानी और यह चारा निकाला । ○

३०

और पहाड़ों को जमा दिया, ○ तुम्हारी और तुम्हारे चौपायों की गुज़र-बसर के लिए । ○

फिर जब वह बड़ी वाली आपत्ति आयेगी, ○ जिस दिन मनुष्य याद करेगा जो-कुछ चेष्टा उस ने की होगी, ○ और भड़कती आग सामने कर दी जायेगी कि जो देखता हो देखे । ○

तो जिस किसी ने सरकशी की होगी ○ और सांसारिक जीवन ही को पसन्द कर लिया होगा ○, (उस का) तो भड़कती आग ही ठिकाना है । ○

और जो कोई अपने रब* के आगे खड़े होने से डरा होगा और अपने जी को वासनाओं से रोका होगा, ○ (उस का) तो ठिकाना जन्नत* ही है । ○

वे तुम से उस घड़ी के बारे में पूछते हैं कि वह कब आ कर ठहरेगी[10] ? ○ तुम कहाँ तक उस की याद-दिहानी कर रहे हो[11] ? ○ वह सर्वथा तुम्हारे रब* ही पर अवलम्बित है । ○

तुम तो बस उस को सचेत करने वाले हो जो उस (घड़ी) से डरे[12] । ○

जिस दिन वे उस को देखेंगे ऐसा लगेगा कि वे (दुनिया में) एक शाम या उस की सुबह से ज़्यादा नहीं ठहरे[13] । ○

---

८ अर्थात् जो अल्लाह इस विशाल विश्व का निर्माता है जिस ने बड़े-बड़े ग्रहों और उपग्रहों को अपने नियम में जकड़ रखा है। जो ऐसा सर्वशक्तिमान् है कि विश्व के विभिन्न क्षेत्रों को ऐसे अदृश्य सहारों पर स्थापित कर रखा है कि मनुष्य चकित हो कर रह जाता है उस महान् ईश्वर के प्रति यह गुमान करना कि मनुष्य को एक बार मार कर पुनः जीवित करने का सामर्थ्य नहीं रखता, कैसी मूर्खता की बात है ।

९ विचार करने से मालूम होता है कि यहाँ सामयिक क्रम का उल्लेख नहीं किया गया है कि ज़मीन की रचना पहले की गई या आसमान की रचना पहले हुई बल्कि आशय यह है कि आकाश को भी अल्लाह ने बनाया है और ज़मीन की रचना भी उसी ने की है । दे० सूरः हा० मीम० अस-सज्दः फुट नोट ७, ८; सूरः अल-बक़रः आयत २९ ।

१० अर्थात् वे क़ियामत* का उपहास करते हुये पूछते हैं कि वह क़ियामत* जिस के बारे में कहा जा रहा है कि आ रही है, आ रही है तो आख़िर वह कब पहुँचेगी ।

११ अर्थात् तुम्हारा कर्तव्य तो बस उस की याद-दिहानी करना है तुम तो यह देखो कि तुम यह कर्तव्य कहाँ तक पूरा कर रहे हो । इस आयत का एक अर्थ यह भी किया जाता है कि इस (के समय) के बताने से तुम्हें क्या सरोकार ?

१२ रसूल* का काम यह नहीं है कि वह यह बताये कि क़ियामत* किस सन् या सम्वत में आ रही है । उस का काम तो यह है कि वह लोगों को उस दिन से सचेत कर दे ताकि डरने वाले उस दिन की तैयारी में लगें । रहे वे लोग जो अत्यन्त नीच प्रकृति के हैं, जिन्हें अपना विनाश ही प्रिय है वे रसूल* की बात पर ध्यान नहीं दे सकते । और न यह रसूल* की ज़िम्मेदारी ही है कि वह ऐसे लोगों के दिलों में ज़बरदस्ती ईमान* उतार दे ।

१३ आज वे पूछ रहे हैं कि क़ियामत* कब आयेगी जब वह आ जायेगी तो उन्हें पता चल जायेगा कि उस के आने में कुछ देर नहीं थी ।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें ।

८०--अबस

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अबस' (He frowned) सूरः की पहली आयत* से लिया गया है। यह नाम केवल एक चिह्न के रूप में रखा गया है।

यह सूरः* मक्का की आरम्भिक सूरतों* में से है।

आरम्भ में .कुरआन की अधिकतर वे सूरतें उतरी हैं जो लोगों को झँझोड़ने और चेतावनी देने के लिए हैं। इतनी बात अवश्य है कि उन की शैली भिन्न है। प्रस्तुत सूरः भी उन ही सूरतों में से है जिन का अवतरण लोगों को जगाने और सचेत करने के लिए हुआ है। यह सूरः ऐसे समय में अवतरित हुई है जब कि .कुरैश के लोगों की सरकशी फ़िरऔन की तरह बढ़ी हुई थी। इस सूरः में दो गरोहों के बीच मुक़ाबला किया गया है। एक गरोह उन लोगों का है जो सत्य से बेपरवाह और कुफ़्र* और सरकशी में पड़ा हुआ है और दूसरा गरोह अल्लाह के उन नेक बन्दों का है जो सच्चाई पर ईमान* ला चुके हैं।

सूरः के आरम्भ में नबी सल्ल० को सम्बोधित किया गया है फिर सम्बोधन का रुख़ लोगों की तरफ़ फिर गया है। और सिलसिला आगे की कई सूरतों तक चला गया है। सूरः इन-शिक़ाक़, अत-तारिक़: और अल-बुरूज के अन्त में नबी सल्ल० को सम्बोधित किया गया है। और काफ़िरों* को छोड़ दिया गया है।

सूरः* के आरम्भिक भाग में नबी सल्ल० को उन लोगों के पीछे अपना समय नष्ट करने से रोका गया है जो कुफ़्र* और अवज्ञा पर जमे हुये थे।

इस के बाद .कुरआन की बड़ाई और महानता का वर्णन किया गया है। .कुरआन की जिन विशेषताओं का उल्लेख किया गया है उन से साफ़ मालूम होता है कि .कुरआन बहुत बड़ी नेमत है जिसे अल्लाह ने केवल अपनी कृपा से उतारा है। यदि कोई इस की उपेक्षा करता है तो उस से बढ़ कर कृतघ्न कौन हो सकता है। यह किताब तो उन लोगों के लिए उतरी है जो इस की क़द्र पहचानें। .कुरआन* इस लिए नहीं उतरा है कि लोगों से इसे मनवाने के लिए प्रार्थनायें की जायें। ऐसा करना .कुरआन की प्रतिष्ठा और महानता के सर्वथा प्रतिकूल है।

इस के बाद अल्लाह ने अपनी नेमतों और चमत्कारों का उल्लेख किया है। इस से जहाँ यह मालूम होता है कि मनुष्य कितना कमज़ोर और मुहताज है वहीं यह बात भी मालूम होती है कि ऐसे लोगों से बढ़ कर कृतघ्न और कोई नहीं हो सकता जो अल्लाह के इन उपकारों के होते हुये उस की ओर से मुँह मोड़ते हैं। और उस के आदेशों को मानने से इन्कार करते हैं। मनुष्य को अल्लाह की ओर से जितनी नेमतें भी मिली हैं जिन के अन्दर वह अपने को घिरा हुआ पाता है वे नेमतें साफ़ बोल रही हैं कि एक दिन मनुष्य को अवश्य उठाया जायेगा ताकि उस का रब* उस के कर्मों का उस से हिसाब ले।

सूरः* के अन्त में कुफ़्र* और इन्कार पर अड़ने वालों के बुरे परिणाम का उल्लेख किया गया है कि किस प्रकार क़ियामत* के दिन उन के मुँह पर सियाही छा रही होगी जब कि ईमान* वालों के चेहरे उस दिन चमक रहे होंगे।

* इस पर चर्चा आखिर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अबस

(मक्का में उतरी — आयतें* ४२)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
عَبَسَ وَتَوَلّٰىٓ ۝ اَنْ جَآءَهُ الْاَعْمٰى ۝ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّهٗ يَزَّكّٰىٓ ۝ اَوْ
يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرٰى ۝ اَمَّا مَنِ اسْتَغْنٰى ۝ فَاَنْتَ لَهٗ
تَصَدّٰى ۝ وَمَا عَلَيْكَ اَلَّا يَزَّكّٰى ۝ وَاَمَّا مَنْ جَآءَكَ يَسْعٰى ۝ وَ
هُوَ يَخْشٰى ۝ فَاَنْتَ عَنْهُ تَلَهّٰى ۝ كَلَّآ اِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ۝ فَمَنْ شَآءَ
ذَكَرَهٗ ۝ فِيْ صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ۝ مَّرْفُوْعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ ۝ بِاَيْدِيْ
سَفَرَةٍ ۝ كِرَامٍ بَرَرَةٍ ۝ قُتِلَ الْاِنْسَانُ مَآ اَكْفَرَهٗ ۝ مِنْ اَيِّ

उस ने त्योरी चढ़ाई और मुँह फेर लिया[१] ○ इस पर कि उस के पास अन्धा आया। ○

और तुम्हें क्या मालूम शायद वह सँवरे ○ या नसीहत हासिल करे तो नसीहत करना उसे फ़ायदा दे ! ○

जो बे-परवाही करता है, ○ उस के तो तुम पीछे पड़ते हो। ○ और तुम पर क्या (दोष) है इस से कि वह न सँवरे। ○ और जो तुम्हारे पास दौड़ता १० आया ○ और वह डर भी रखता है, ○ उसे छोड़ कर तुम और ही धुन में लगे रहते हो। ○

कुछ नहीं,[२] यह एक याद-दिहानी है, ○ — तो जो-कोई चाहे इसे याद रखे, ○ — ऐसे पत्रों में है जो प्रतिष्ठित हैं ○ उच्च[३] और सर्वथा पवित्र हैं, ○ पाठकों[४] के हाथों में ○ जो आदरणीय और निष्ठावान् हैं[५]। ○

नाश हो मनुष्य का : कितना कृतघ्न है ! ○

उसे किस चीज़ से बनाया ! ○ एक बूँद से। उसे बनाया तो उस का अन्दाज़ा ठहराया,[६] ○ फिर (उस के लिए उस का) मार्ग सुगम कर दिया,[७] ○ फिर उसे मुरदा किया, फिर

---

१ नबी सल्ल० 'क़ुरैश' के किसी सरदार या कुछ सरदारों से बातें कर रहे थे। इसी बीच उम्मे मकतूम के बेटे अब्दुल्लाह रज़ि० आ गये। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० नेत्रहीन थे। उन का आना क़ुरैश को बुरा लगा और उन्हों ने मुँह फेर लिया। नबी सल्ल० ने भी उस समय उन की ओर ध्यान नहीं दिया। इस अवसर पर क़ुरआन की ये आयतें उतरी हैं। साधारणतः सूरः की पहली आयत का अर्थ यह समझा जाता है कि बी सल्ल० को हज़रत अब्दुल्लाह का उस समय आना नागवार हुआ था। इस लिए कि आप समझते थे उन के आने से क़ुरैश के सरदार बिदक जावेंगे और धर्म की बातें न सुनेंगे।

२ अर्थात् तुम्हारे लिए यह कदापि उचित नहीं कि तुम काफ़िरों से चिमटे रहो।*

३ दे० सूरः अज़-ज़ुख़रुफ़ आयत ४; सूरः क़ाफ़० आयत १; सूरः अल-वाक़िअः आयत ७८-७९; सूरः ल-बुरूज आयत २१-२२।

४ क़ुरआन में 'सफ़रः' (سفرة) शब्द प्रयुक्त हुआ है। यह बहुवचन है जिस का एक-वचन साफ़िर है जो लिपिकार के लिए भी प्रयुक्त होता है और पढ़ने वाले के लिए भी।

५ इन आयतों में क़ुरआन की कुछ विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है। उदाहरणार्थ वह अल्लाह के पास रक्षित है, पढ़ा जाता है। वह बिलकुल पाक है और दुष्टात्माओं की उस तक पहुँच नहीं होती उस में किसी कार की मिलावट नहीं है। क़ुरआन के विषय में जो बातें यहाँ कही गई हैं उन का सम्बन्ध परोक्ष लोक से जिस का पूर्ण ज्ञान हमें नहीं हो सकता। उन पत्रों और पृष्ठों की वास्तविकता क्या है और फ़िरिश्तों का ढ़ना और लिखना किस प्रकार का होता है इस का पूर्ण ज्ञान अल्लाह ही को है। क़ुरआन की इन विशेषताओं के बताने का उद्देश्य वास्तव में यह है कि लोग इस बात को भली-भाँति समझ लें कि क़ुरआन जैसा वित्र और उच्च ग्रन्थ इस लिए नहीं है कि उस का निरादर किया जाये।*

६ अर्थात् उस के अंगों, अवयवों और शक्तियों की उत्पत्ति और विकास के लिए एक अन्दाज़ा ठहराया।

७ अर्थात् उस ने मनुष्य को केवल शरीर और विभिन्न शक्तियाँ ही नहीं दीं बल्कि उन को प्रयोग में लाने और बरतने का ढंग भी सिखाया और इस के लिए वे सभी साधन जुटा दिये जिन की (शेष अगले पृष्ठ पर)

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

شَيْءٍ خَلَقَهُ ۝ مِنْ نُطْفَةٍ خَلَقَهُ فَقَدَّرَهُ ۝ ثُمَّ السَّبِيلَ يَسَّرَهُ ۝
ثُمَّ أَمَاتَهُ فَأَقْبَرَهُ ۝ ثُمَّ إِذَا شَاءَ أَنْشَرَهُ ۝ كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَا
أَمَرَهُ ۝ فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ إِلَىٰ طَعَامِهِ ۝ أَنَّا صَبَبْنَا الْمَاءَ صَبًّا ۝
ثُمَّ شَقَقْنَا الْأَرْضَ شَقًّا ۝ فَأَنْبَتْنَا فِيهَا حَبًّا ۝ وَعِنَبًا وَقَضْبًا ۝ وَ
زَيْتُونًا وَنَخْلًا ۝ وَحَدَائِقَ غُلْبًا ۝ وَفَاكِهَةً وَأَبًّا ۝ مَتَاعًا لَكُمْ
وَلِأَنْعَامِكُمْ ۝ فَإِذَا جَاءَتِ الصَّاخَّةُ ۝ يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ ۝
وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ ۝ وَصَاحِبَتِهِ وَبَنِيهِ ۝ لِكُلِّ امْرِئٍ مِنْهُمْ يَوْمَئِذٍ
شَأْنٌ يُغْنِيهِ ۝ وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ مُسْفِرَةٌ ۝ ضَاحِكَةٌ مُسْتَبْشِرَةٌ ۝
وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ۝ تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ۝ أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ۝

उसे क़ब्र में रखवा दिया; फिर जब चाहेगा उसे जिला उठायेगा ।○

कुछ नहीं, उस ने पूरा किया ही नहीं जो-कुछ उस ने उसे हुक्म दिया था[८] ।○

मनुष्य अपने खाने को तो देखे :○ हम ने पानी बरसाया ○ फिर ज़मीन को फाड़ा[९] ○ फिर उगाये उस में अनाज ○ और अंगूर और भाजी[१०] ○ और ज़ैतून और खजूर ○ और घने बाग़ ○ और मेवे और घास-पात : ○ तुम्हारी और तुम्हारे चौपायों की गुज़र-बसर के लिए ।○

फिर जब वह कान बहरे कर देने वाली आयेगी ○ जिस दिन आदमी भागेगा अपने भाई से ○ और अपनी माँ और अपने बाप से ○ और अपनी संगिनी (पत्नी) और अपने बेटे से, ○ उन में से हर एक व्यक्ति को उस दिन ऐसी पड़ी होगी कि वही उस के लिए काफ़ी होगी[११] ।○

कितने ही चेहरे उस दिन उज्ज्वल होंगे, ○ हँस रहे होंगे और प्रसन्न हो रहे होंगे; ○ और कितने चेहरे होंगे, उस दिन, जिन पर धूल पड़ी होगी, ○ उन पर कलौंस छा रही होगी, ○ ये वही काफ़िर* और दुराचारी लोग हैं ।○

मनुष्य को आवश्यकता थी (दे० सूरः ता० हा० आयत ५०; अद-दह्र आयत ३-३; अल-आला आयत २-३; अश-शम्स आयत ७-१०)। फिर अल्लाह का यह भी क़ानून है कि आदमी अपने लिए जो मार्ग पसन्द कर लेता है वह उस के लिए उसी मार्ग को सुगम बना देता है (दे० सूरः अल-लैल आयत ५-१०)।

८ अर्थात् अल्लाह ने प्राकृतिक प्रेरणाओं और वह्य* और अपनी किताब के द्वारा उसे जो आदेश दिये उन का पालन करने से उस ने इन्कार कर दिया।

९ अर्थात् ज़मीन को फाड़ कर जहाँ उस ने उस में नहरें और नदियाँ जारी कीं वहीं ज़मीन को फाड़ कर उस के अन्दर से तरह-तरह के पेड़-पौधे उगाता है और अनाज, फल, तरकारी आदि पैदा करता है।

१० क़ुरआन में "क़ज़्ब" (قضب) शब्द प्रयुक्त हुआ है इस से वे सभी चीज़ें आ जाती हैं जो कच्ची और हरित दशा में खाई जाती हैं।

११ अर्थात् उस दिन हर एक को अपनी-अपनी पड़ी होगी।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

८१--अत-तकवीर

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अत-तकवीर' सूरः की पहली आयत* से लिया गया है।

यह सूरः* मक्का में उतरने वाली प्रारम्भिक सूरतों* में से है।

इस सूरः* में लोगों को इस बात की ओर बुलाया गया है कि वे आख़िरत* पर ईमान* लायें।यही इस सूरः का मूल विषय है। सूरः की आयत १ से ले कर आयत १४ तक क़ियामत* का नक़्शा पेश किया गया है। प्रस्तुत सूरः और सूरः अल-इनफ़िताार और अश्शम्स के बारे में नबी सल्ल० ने कहा है कि जो व्यक्ति क़ियामत* को अपनी आँखों से देखना चाहे तो इन सूरतों* को पढ़ ले।

प्रस्तुत सूरः* की प्रारम्भिक छः आयतों में उस समय से पूर्व की घटनाओं का उल्लेख किया गया है जब कि लोगों को उन का रब* उन की मृत्यु के पश्चात् दोबारा जीवित कर के उठायेगा और उन से उन के कर्मों का हिसाब लेगा। आगे आयत ७ से आयत १४ तक उन बातों का उल्लेख है जो उस समय पेश आयेंगी जब कि मनुष्य को मरने के बाद दोबारा जीवित कर के उठाया जा चुका होगा।

क़ुरआन में क़ियामत* और आख़िरत* के सम्बन्ध में जो बातें बयान हो रही थीं 'क़ुरैश' के लोग उन की हँसी उड़ाते और बराबर उन का इन्कार करते जा रहे थे। इस सूरः की आयत १५ से आयत १८ तक कुछ ऐसे प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं जिन से क़ुरआन के बयान की पुष्टि और काफ़िरों* के विचारों का पूर्णतः निषेध होता है। फिर खोल कर लोगों से यह बात कही गई है कि अल्लाह का नबी तुम्हारे सामने जो बातें पेश कर रहा है वह न तो दीवाने की बड़ है और न किसी शैतान* और दुष्टात्मा की प्रेरणा से यह बातें कही जा रही हैं बल्कि जो-कुछ कहा जा रहा है वह संसार के रब* की ओर से है जिसे अल्लाह का महान् और प्रतिष्ठित फ़रिश्तः* ले कर उतरा है ऐसा फ़रिश्तः जिसे अल्लाह के रसूल* ने आसमान के खुले किनारे पर देखा भी है फिर आख़िर लोग सत्य को छोड़ कर किधर भटके जा रहे हैं।

अन्त में कहा गया है कि यह तो अल्लाह की ओर से एक याद-दिहानी (Reminder) और उपदेश है। इस से केवल वही लोग फ़ायदा उठा सकते हैं जो सीधे मार्ग पर चलना चाहें। रहे वे लोग जिन्हें सत्य की अपेक्षा अपनी तुच्छ इच्छायें ही प्रिय हैं। उन्हें सत्य के दिव्य प्रकाश में आने का सौभाग्य कभी प्राप्त नहीं हो सकता।

---

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

११ : ३६, ३६ — अल्लाह की ओर से तसल्ली देना और ढारस बँधाना और नाव बनाने का हुक्म।

११ : ४०, ४१ — तूफ़ान का आरम्भ, नाव मे हर प्राणी का एक-एक जोड़ा और तूफ़ान में नाव की दशा।

११ : ४२-४४ — हज़रत नूह अ० का अपने बेटे को पुकारना, उसका जवाब और उसका परिणाम।

११ : ४५-४८ — बेटे के बारे में हज़रत नूह अ० की प्रार्थना। अल्लाह का जवाब और आपका माफ़ी माँगना।

२१ : ७६, ७७ — हज़रत नूह अ० की दुआ, अल्लाह ने स्वीकार की और बुरे लोगों को डुबो दिया।

२३ : २३-२६ — आपकी जाति वालों ने अल्लाह की दासता की ओर बुलाने के जवाब मे आप पर सत्ता हथियाने का आरोप लगाया और आपको पागल बताया।

२३ : २७-३० — आपको नाव बनाने की आज्ञा मिली और अल्लाह ने आपको इसी के द्वारा तूफ़ान से बचा लिया।

२५ : ३७ — रसूलों को झुठलाने पर नूह अ० की जाति डुबो दी गई।

२६ : १०५-१२२ — नूह अ० की जाति वालो ने रसूलों को झुठलाया, आप के सन्देश पर कान न धरा और आपको मार डालने पर उतारू हो गये। अल्लाह की सहायता आई, आप और आप के साथी बचा लिये गये और बाक़ी सब डुबो दिये गए।

२६ : १४, १५ — हज़रत नूह ने अपनी जाति में ५० कम एक हज़ार वर्ष तक 'इस्लाम' का प्रचार किया।

३७ : ७५-८२ — हज़रत नूह अ० ने अल्लाह को पुकारा आपकी दुआ स्वीकार हुई और आप और आप के साथी बड़े संकट से बच गए।

५४ : ६, १० — नूह की जाति ने आप को झुठलाया, दीवाना कहा और डाँटा आप ने अल्लाह को पुकारा।

५४ : ११-१६ — आसमान से घोर वर्षा हुई, ज़मीन से सोते फूट निकले, आप नाव में सवार हो गए और न मानने वालों को सज़ा दी गई।

७१ : १-२० — हज़रत नूह ने अल्लाह के हुक्म से लोगों को हर तरीक़े से अल्लाह की दासता की ओर बुलाया पर जाति ने एक न सुनी।

७१ : २१-२४ — जाति के लोगों ने बड़ी-बड़ी चालें चलीं और अपने देवताओं को छोड़ने के लिए तैयार न हुए।

७१ : २५-२८ — आख़िर ये लोग अपने अपराधों के कारण डुबो दिए गये और हज़रत नूह की दुआ स्वीकृत हुई।

(३) हज़रत इदरीस अ०

१६ : ५६, ५७ — हज़रत इदरीस सच्चे नबी थे और अल्लाह ने उनका पद ऊँचा किया।

२१ : ८५ — इदरीस सब्र करने वाले थे।

सूरः* अत-तकवीर

(मक्का में उतरी — आयतें* २९)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

जब कि सूर्य को लपेट दिया जायेगा, ○
और जब तारे मांद पड़ जायेंगे,[1] ○
और जब पहाड़ चलाये जायेंगे,[2] ○
और जब दस मास की गाभिन ऊँटनियाँ छुटी फिरेंगी[3] ○
और जब जंगली जानवर (घबरा कर) इकट्ठे हो जायेंगे, ○
और जब समुद्र उबल पड़ेंगे, ○
[4]और जब लोगों को (उन के सहजातियों के) साथ लगा दिया जायेगा,[5] ○
और जब जीवित गाड़ी हुई लड़की से पूछा जायेगा ○ कि किस गुनाह पर मार डाली गई,[6] ○
और जब (कर्म-) पत्र खोले जायेंगे* ○
और जब आसमान की खाल उतार दी जायेगी, ○
और जब दोज़ख़* दहकाया जायेगा, ○
और जब जन्नत* पास लाई जायेगी, ○
तो हर व्यक्ति जान लेगा जो-कुछ वह ले कर पहुँचा होगा। ○
तो कुछ नहीं, मैं क़सम खाता हूँ उन की जो पीछे हो रहते हैं, ○ चलते-चलते जा छुपते हैं,[7] ○

---

१ इन आयतों* से साफ़ मालूम होता है कि वर्तमान लोक की एक निश्चित अवधि है। एक समय आयेगा कि यह वर्तमान व्यवस्था बिगड़ जायेगी। सूर्य, चन्द्रमा और नक्षत्र सब एक-दूसरे से टकरा कर [illegible] हो जायेंगे। सब की दशा बिगड़ चुकी होगी।

२ अर्थात् पहाड़ अपनी जगह से उखड़ जायेंगे और हवा में उड़ते फिरेंगे।

३ अर्थात् उन्हें कोई न पूछेगा। घबराहट और परेशानी की हालत में कोई अच्छे से अच्छे माल की भी परवाह नहीं करेगा। ऐसी ऊँटनी को जो बच्चा देने के क़रीब हो, अरब के लोग बड़ी देखभाल करते थे और उसे बड़ा [illegible] धन समझते थे।

४ आयत १ से ६ तक लोगों के देखते जीवित रहते क़ियामत आने के पूर्व की घटनाओं का वर्णन किया गया है। आयत ७ से उन बातों का उल्लेख किया जा रहा है जो उस समय सामने आयेंगी जब कि सारे [illegible] मरने के पश्चात् जीवित कर के खड़ा किया जायेगा।

५ इस आयत का एक अर्थ यह लिया गया है कि उस दिन अच्छे लोग अच्छों के साथ और बुरे लोग बुरों के साथ कर दिये जायेंगे।

६ अरब में यह रिवाज था कि बाप अपनी बेटी को जीवित गाड़ देता था। [illegible] क़ियामत* के दिन [illegible]

७ [illegible]

عَسْعَسَ ۝ وَالصُّبْحِ إِذَا تَنَفَّسَ ۝ إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۝
ذِي قُوَّةٍ عِندَ ذِي الْعَرْشِ مَكِينٍ ۝ مُّطَاعٍ ثَمَّ أَمِينٍ ۝ وَمَا
صَاحِبُكُم بِمَجْنُونٍ ۝ وَلَقَدْ رَآهُ بِالْأُفُقِ الْمُبِينِ ۝ وَمَا هُوَ عَلَى
الْغَيْبِ بِضَنِينٍ ۝ وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطَانٍ رَّجِيمٍ ۝ فَأَيْنَ تَذْهَبُونَ ۝
إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعَالَمِينَ ۝ لِمَن شَاءَ مِنكُمْ أَن يَسْتَقِيمَ ۝ وَمَا
تَشَاءُونَ إِلَّا أَن يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝

और क़सम है रात की जब वह जाने लगे, ○

और क़सम है सुबह की जब वह साँस ले[९] ○

निस्सन्देह वह एक[१०] आदरणीय सन्देश-वाहक (फ़रिश्ते*) की (पहुँचाई हुई) बात है, ○ जो शक्तिशाली है, सिंहासन के स्वामी के यहाँ बड़ा ही मरतबे वाला है, ○ वहाँ उस की बात मानी जाती है, विश्वास-पात्र है;[११] ○

और यह तुम्हारे संग रहने वाला उन्मादी नहीं है। ○ और उस ने उसे[१२] आसमान के खुले किनारे पर देखा है। ○ और वह ग़ैब का अलोभी नहीं है। ○

और यह किसी धुतकारे हुये शैतान* की (पहुँचाई हुई) बात नहीं है[१३]। ○

तो तुम कहाँ चले जा रहे हो[१४] ? ○

यह तो बस एक याद-दिहानी है सारे संसार के लिए, ○ उस के लिए जो तुम में से ठीक-ठीक नीति अपनानी चाहे। ○ और तुम नहीं चाहने के बिना इस के कि अल्लाह चाहे जो सारे संसार का रब* है[१५]। ○

---

८ यहाँ ऐसे तारों की क़सम खाई गई है जो हमें चलते हुये, पीछे हटते हुये दिखाई देते हैं और जो हमारी निगाहों से ओझल हो जाते हैं। आगे की आयतों में रात और प्रातःकाल की क़सम खाई गई है। इन चीज़ों की क़सम खाने का अर्थ इन्हें प्रमाण के रूप में पेश करना है। अल्लाह ने इन आयतों में जिन चीज़ों की क़सम खाई है उन से क़ुरआन के बयान की पुष्टि होती है और काफ़िरों* के विचारों का पूर्णतः निषेध होता है। अल्लाह के जिस ज्ञान और उस की जिस हिकमत का परिचय हमें इन तारों के द्वारा मिलता है उस से साफ़ मालूम होता है कि यह वर्तमान लोक उद्देश्य रहित नहीं है बल्कि इस का कोई वास्तविक परिणाम अवश्य सामने आने वाला है। इस संसार की सृष्टि एक सोचे समझे विशेष योजना के अन्तर्गत हुई है। इस वर्तमान लोक में अवश्य कोई महान परिवर्तन होने वाला है ताकि वह अन्तिम परिणाम सामने आये। क़ुरआन अपने बयान में सच्चा है। क़ुरआन जिस क़ियामत के आने की सूचना देता है वह सत्य है।

सितारों के पीछे हटने और उन के छुपने में असत्य की कजी, उस के पीछे हट जाने, उस के बदलते रहने, उस के धोखा देने की भी निशानी पाई जाती है। इस तरह असत्य के अवगुणों की ओर संकेत करते हुये उस का निषेध किया गया है।

९ अन्धकार दूर होने के पश्चात् प्रातःकाल का होना इस का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि अन्धकार मिटने के लिए होता है। अल्लाह ने समय-समय पर अपने रसूलों* को भेज कर सत्य के प्रकाश को फैलाया है। फिर जिस तरह सच्चाई अधिक समय तक छिपी नहीं रहती अल्लाह उसे प्रकाश में लाने का प्रबन्ध करता है उसी प्रकार यह परदा और आवरण भी एक दिन उठा दिया जायेगा जिस के कारण लोग नबियों* की दी हुई सूचनाओं को मानने से इन्कार करते हैं। वह समय दूर नहीं कि जो आज परोक्ष (Unseen) है वह प्रत्यक्ष हो चुका होगा। वह क़ियामत का दिन और वह अल्लाह की अदालत सामने होगी जिस के मानने में आज लोगों को तरह-तरह की आपत्ति दिखाई देती है।

१० अर्थात् यह क़ुरआन का बयान, यह क़ियामत* का डरावा।

११ आयत १९ से २१ तक अल्लाह के विशेष फ़िरिश्तः* हज़रत जिबरील अ० के गुणों का उल्लेख हुआ है जो नबी सल्ल० के पास अल्लाह का सन्देश और उस का कलाम ले कर आते थे।

१२ अर्थात् अल्लाह के फ़िरिश्ते* जिबरील अ० को। दे० सूरा अन-नज्म आयत १–१८।

१३ अर्थात् नबी सल्ल० जो-कुछ कह रहे हैं वह किसी दुष्टात्मा या शैतान* के असर से कदापि नहीं कह रहे हैं बल्कि वे तुम्हारे सामने जो-कुछ पेश कर रहे हैं वह अल्लाह की ओर से पेश कर रहे हैं।

१४ अर्थात् सच्चाई तुम्हारे सामने खुल कर आ गई है फिर तुम कहाँ भटके जाते हो।

१५ अर्थात् हर चीज़ वास्तव में अल्लाह ही के हाथ में है। उस के चाहे बिना कुछ नहीं हो सकता। अल्लाह उन ही लोगों को सीधे मार्ग पर लगाता है जो सीधे मार्ग पर चलने के इच्छुक होते हैं। जिन्हें सत्य से बैर ही होता है अल्लाह उन्हें भटकने के लिए यों ही छोड़ देता है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अत-तकवीर

(मक्का में उतरी — आयतें* २९)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ۝ وَاِذَا النُّجُوْمُ انْكَدَرَتْ ۝ وَاِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ ۝
وَاِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ۝ وَاِذَا الْوُحُوْشُ حُشِرَتْ ۝ وَاِذَا الْبِحَارُ
سُجِّرَتْ ۝ وَاِذَا النُّفُوْسُ زُوِّجَتْ ۝ وَاِذَا الْمَوْءٗدَةُ سُئِلَتْ ۝ بِاَيِّ
ذَنْۢبٍ قُتِلَتْ ۝ وَاِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ۝ وَاِذَا السَّمَآءُ كُشِطَتْ ۝ وَ
اِذَا الْجَحِيْمُ سُعِّرَتْ ۝ وَاِذَا الْجَنَّةُ اُزْلِفَتْ ۝ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّآ
اَحْضَرَتْ ۝ فَلَآ اُقْسِمُ بِالْخُنَّسِ ۝ الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ۝ وَالَّيْلِ اِذَا

जब कि सूर्य को लपेट दिया जायेगा, ○
और जब तारे माँद पड़ जायेंगे,[1] ○
और जब पहाड़ चलाये जायेंगे,[2] ○
और जब दस मास की गाभिन ऊँटनियाँ छुट्टी फिरेंगी[3] ○
और जब जंगली जानवर (घबरा कर) इकट्ठे किये जायेंगे, ○
और जब समुद्र उबल पड़ेंगे, ○
[4]और जब लोगों को (उन के सहजातियों के) साथ लगा दिया जायेगा,[5] ○
और जब जीवित गाड़ी हुई लड़की से पूछा जायेगा ○ कि किस गुनाह पर मार डाली गई,[6] ○
और जब (कर्म-) पत्र खोले जायेंगे[7] ○
और जब आसमान की खाल उतार दी जायेगी, ○
और जब दोज़ख़* दहकाया जायेगा, ○
और जब जन्नत* पास लाई जायेगी, ○
तो हर व्यक्ति जान लेगा जो-कुछ वह ले कर पहुँचा होगा। ○
तो कुछ नहीं, मैं क़सम खाता हूँ उन की जो पीछे हट रहते हैं, ○ चलते-चलते जा छुपते हैं, ○

---

1 इन आयतों* से साफ़ मालूम होता है कि वर्तमान लोक की एक निश्चित अवधि है। एक समय आयेगा कि यह वर्तमान व्यवस्था बिगड़ जायेगी। सूर्य, चन्द्रमा और नक्षत्र सब एक-दूसरे से टकरा कर छिन्न-भिन्न हो जायेंगे। सब की दशा बिगड़ चुकी होगी।

2 अर्थात् पहाड़ अपनी जगह से उखड़ जायेंगे और हवा में उड़ते फिरेंगे।

3 अर्थात् उन्हें कोई न पूछेगा। घबराहट और परेशानी की हालत में कोई अच्छे-से-अच्छे माल की भी परवाह नहीं करेगा। ऐसी ऊँटनी की जो बच्चा देने के क़रीब हो अरब के लोग बड़ी देख-भाल करते थे और उसे अपना विशेष धन समझते थे।

4 आयत 1 से 6 तक लोगों के दोबारा जीवित कर के उठाये जाने के पूर्व की घटनाओं की ओर संकेत किया गया है। आयत ७ से उन बातों का उल्लेख किया जा रहा है जो उस समय सामने आयेंगी जब कि लोगों को मरने के पश्चात् जीवित कर के खड़ा किया जायेगा।

५ इस आयत का एक अर्थ यह लिया गया है कि उस दिन अच्छे लोग अच्छों के साथ और बुरे लोग बुरों के साथ कर दिये जायेंगे।

६ अरब में यह रिवाज था कि बाप अपनी बेटी को जीवित गाड़ देता था। कभी तो अरब के लोग दरिद्रता के कारण ऐसा करते थे और कभी झूठी इज़्ज़त के लिए यह अपराध किया जाता था। वे बेटी को अपने लिए लज्जा समझते थे। क़ियामत* के दिन ऐसे लोगों की सख़्त पकड़ होगी जिन्हों ने बे-गुनाह लड़कियों को मार डाला होगा (दे० अल-अनआम आयत 137, सूरः अन-नह्ल आयत 58)। इस आयत से मालूम हुआ कि क़ियामत* के दिन लोगों से केवल अल्लाह के हक़ के बारे में ही नहीं पूछा जायेगा बल्कि यह भी देखा जायेगा कि आपस में एक-दूसरे के साथ उन का कैसा व्यवहार रहा है।

७ ताकि लोग देख लें कि उन्हों ने दुनिया में क्या-कुछ किया था। दे० सूरः बनी इस्राईल आयत 13।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अल-इनफ़ितार

(मक्का में उतरी — आयतें* १९)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
[illegible]

जब कि आसमान फट जायेगा, ○
और जब सितारे बिखर जायेंगे, ○
और जब समुद्र फूट निकलेंगे,[1] ○
और जब क़ब्रें उखाड़ दी जायेंगी, ○
तब प्रत्येक जीव जान लेगा जो-कुछ उस ने आगे भेजा और पीछे छोड़ा। ○

ऐ मनुष्य ! किस चीज़ ने तुझे धोखे में डाल रखा है अपने उदार रब* के बारे में, ○ जिस ने तुझे बनाया, तो तुझे ठीक-ठीक और सन्तुलित बनाया ! ○ फिर जिस प्रकार के रूप में भी चाहा, तेरी रचना की। ○

कुछ नहीं, तुम तो बदला दिये जाने को झुठलाते हो[2]। ○ हालांकि तुम पर लगे हुये हैं निगरानी करने वाले,[3] ○ प्रतिष्ठावान् हैं लिखते जाते हैं,[4] ○ जानते हैं जो-कुछ तुम करते हो। ○

नेक लोग आनन्द में होंगे। ○ और दुराचारी भड़कती आग में; ○ जिस में वे प्रवेश करेंगे बदला दिये जाने के दिन,[5] ○ और उस से वे बच रहने वाले नहीं। ○

और तुम्हें क्या मालूम कि क्या है बदला दिये जाने का दिन ! ○ फिर (कहता हूँ), तुम्हें क्या मालूम कि क्या है बदला दिये जाने का दिन ! ○ जिस दिन कोई जीव किसी जीव के लिए कुछ न कर सकेगा[6]। और अधिकार उस दिन अल्लाह का होगा। ○

---

१ अर्थात् जब क़ियामत आ जायेगी और विश्व की वर्तमान व्यवस्था बिगड़ जायेगी। दे० सूरः अल-इन्शिक़ाक़ ?।

२ अर्थात् तुम्हारी कृतघ्नता, कृपणता आदि का मूल कारण यह है कि तुम उस दिन को मानते ही नहीं जब कि लोग अपने कर्मों का फल पायेंगे।

३ अर्थात् तुम्हारे इन्कार करने से होता क्या है तुम्हारे कर्मों का अभिलेख (Record) तैयार हो रहा है।

४ यद्यपि अल्लाह को तुम्हारे कर्मों की पूरी ख़बर है फिर भी फ़रिश्ते* तुम्हारा कर्मपत्र तैयार कर रहे हैं। और फ़रिश्तों* की हैसियत मशीन की नहीं बल्कि उन फ़रिश्तों* को तुम्हारे कर्मों का ज्ञान भी होता रहता है। मनुष्य चाहे कितने ही एकान्त में छुप कर बुरा कर्म करे वह अकेला नहीं होता उस को जहाँ उस का रब* देख रहा होता है वहाँ उस के फ़रिश्ते* भी उसे देख रहे होते हैं।

५ दे० क़ाफ़ ६, १६, १७।

६ अर्थात् उस दिन किसी व्यक्ति को यह अधिकार प्राप्त न होगा कि दूसरे के काम आ सके। हर एक अपना का उत्तरदायी होगा। कोई किसी का बोझ न उठा सकेगा बिना अल्लाह की इजाज़त के सिफ़ारिश के लिए कोई ज़बान न खोल सकेगा।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

८२--अल-इनफ़ितार

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अल-इनफ़ितार' सूरः की पहली आयत* से लिया गया है।

यह सूरः* मक्का की प्रारम्भिक सूरतों* में से है।

इस सूरः* में विशेष रूप से क़ियामत* का उल्लेख हुआ है।

विचार करने से मालूम होता है कि प्रस्तुत सूरः में तंग-दिली और कृपणता को निन्दनीय ठहराया गया है और आगे आने वाली सूरः में हराम की कमाई का उल्लेख हुआ है।

सूरः* की आरम्भिक ५ आयतों में संक्षिप्त रूप से क़ियामत* का नक़्शा खींचा गया है। और आयत ५ में खोल कर बता दिया गया है क़ियामत* का दिन ऐसा दिन है कि लोगों का सब किया-धरा उन के सामने आ जायेगा। फिर अल्लाह ने अपने उन उपकारों का उल्लेख करते हुए जो उस ने मानव-जाति पर किये हैं लोगों को सचेत किया है कि वे सँभलें और जो नीति अपनाई है उसे छोड़ कर अपने रब* के कृतज्ञ बनें। फिर बताया गया है कि मनुष्य के कुफ़्र* और उस की कृपणता का मौलिक कारण यह है कि वह उस दिन को नहीं मानता जब कि लोगों को अपने अच्छे-बुरे कर्मों का बदला दिया जायेगा। मनुष्य का भी अजीब हाल है कि वह आख़िरत* को झुठला रहा है और फ़रिश्ते* उस के कर्मों का अभिलेख(Record) तैयार करने में लगे हुये हैं ताकि उस की चेष्टाओं और उस के कामों का बदला दिया जाये।

सूरः* की आयत १३-१४ में नेक लोगों और दुस्साहसी और दुराचारी लोगों के बीच मुक़ाबला किया गया है। नेक लोग वही हैं जो न केवल यह कि आख़िरत* पर ईमान* रखते हैं बल्कि ईमान* लाने के बाद वे अल्लाह की राह में ख़र्च करते और लोगों का हक़ अदा करते हैं। कृपणता से काम नहीं लेते। ये दुस्साहसी लोग तो ये वही लोग हैं जो न आख़िरत* को मानते हैं और न अपने कर्त्तव्यों को पहचानते हैं। अल्लाह की अवज्ञा में बहुत आगे निकल चुके होते हैं।

सूरः* को समाप्त करते हुये कहा गया है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी चिन्ता करनी चाहिए जब वह दिन आ जायेगा जो बदले और न्याय का दिन है तो कोई किसी का काम न बना सकेगा। उस दिन समस्त झूठे सहारे टूट चुके होंगे। उस दिन मामला केवल अल्लाह के हाथ में होगा।

---

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अल-इनफ़ितार

(मक्का में उतरी — आयतें* १९)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
إِذَا السَّمَاءُ انْفَطَرَتْ ۝ وَإِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ۝ وَإِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ ۝ وَإِذَا الْقُبُورُ بُعْثِرَتْ ۝ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَا قَدَّمَتْ وَأَخَّرَتْ ۝ يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيمِ ۝ الَّذِي خَلَقَكَ فَسَوَّاكَ فَعَدَلَكَ ۝ فِي أَيِّ صُورَةٍ مَا شَاءَ رَكَّبَكَ ۝ كَلَّا بَلْ تُكَذِّبُونَ بِالدِّينِ ۝ وَإِنَّ عَلَيْكُمْ لَحَافِظِينَ ۝ كِرَامًا كَاتِبِينَ ۝ يَعْلَمُونَ مَا تَفْعَلُونَ ۝ إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ۝ وَإِنَّ الْفُجَّارَ لَفِي جَحِيمٍ ۝ يَصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّينِ ۝ وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَائِبِينَ ۝ وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ ۝ ثُمَّ مَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ ۝ يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِنَفْسٍ شَيْئًا وَالْأَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِلّٰهِ ۝

जब कि आसमान फट जायेगा, ○
और जब सितारे बिखर जायेंगे, ○
और जब समुद्र फूट निकलेंगे,[1] ○
और जब क़ब्रें उखाड़ दी जायेंगी, ○

तब प्रत्येक जीव जान लेगा जो-कुछ उस ने आगे भेजा और पीछे छोड़ा। ○

हे मनुष्य! किस चीज़ ने तुझे धोखे में डाल रखा है अपने उदार रब* के बारे में, ○ जिस ने तुझे बनाया, तो तुझे ठीक-ठीक और सन्तुलित बनाया? ○ फिर जिस प्रकार के रूप में भी चाहा, तेरी रचना की। ○

कुछ नहीं, तुम तो बदला दिये जाने को झुठलाते हो[2]। ○ हालाँकि तुम पर लगे हुये हैं निगरानी करने वाले,[3] ○ प्रतिष्ठावान हैं लिखते जाते हैं,[4] ○ जानते हैं जो-कुछ तुम करते हो।[5] ○

नेक लोग आनन्द में होंगे। ○ और दुराचारी भड़कती आग में; ○ जिस में वे प्रवेश करेंगे बदला दिये जाने के दिन,[6] ○ और उस से वे बच रहने वाले नहीं। ○

और तुम्हें क्या मालूम कि क्या है बदला दिये जाने का दिन! ○ फिर (कहता हूँ), तुम्हें क्या मालूम कि क्या है बदला दिये जाने का दिन! ○ जिस दिन कोई जीव किसी जीव के लिए कुछ न कर सकेगा[7] और अधिकार उस दिन अल्लाह का होगा। ○

---

[1] अर्थात् जब क़ियामत आ जायेगी और विश्व की वर्तमान व्यवस्था बिगड़ जायेगी। दे० सूरः अत-तक्वीर आयत ?।

[2] अर्थात् तुम्हारी कृतघ्नता, उद्दण्डता आदि का मूल कारण यह है कि तुम उस दिन को मानते ही नहीं कि लोग अपने कर्मों का फल पायेंगे।

[3] अर्थात् तुम्हारे इन्कार करने से होता क्या है तुम्हारे कर्मों का अभिलेख (Record) तैयार हो रहा है।

[4] यद्यपि अल्लाह को तुम्हारे कर्मों की पूरी ख़बर है फिर भी फ़रिश्ते* तुम्हारा कर्मपत्र तैयार कर रहे हैं।

[5] फ़रिश्तों* को टेलिविज़न मशीन की नहीं बल्कि उन फ़रिश्तों* को तुम्हारे कर्मों का ज्ञान भी होता रहता मनुष्य चाहे कितने ही एकान्त में छुप कर बुरा कर्म करे वह अकेला नहीं होता उस को जहाँ उस का रब* रहा होता है वहीं उस के फ़रिश्ते* भी उसे देख रहे होते हैं।

[6] दे० आयत ६, १४, १७।

[7] अर्थात् उस दिन किसी व्यक्ति को यह अधिकार प्राप्त न होगा कि दूसरे के काम आ सके। हर एक अपना उत्तरदायी होगा। कोई किसी का बोझ न उठा सकेगा बिना अल्लाह की इजाज़त के सिफ़ारिश के लिए कोई ज़बान न खोल सकेगा।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

८३--अत-ततफ़ीफ़

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अत-ततफ़ीफ़' सूरः की पहली आयत* से लिया गया है।

इस सूरः* की गणना मक्का की आरम्भिक सूरतों* में होती है। कुछ लोगों के विचार में इस सूरः का सम्पर्क मक्का से नहीं बल्कि मदीना से है। उन के विचार में इस सूरः का अवतरण हिजरत* के पश्चात् हुआ है।

इस सूरः* में उन लोगों के लिए डरावा है जो दुनियाँ के पुजारी हैं। सांसारिक वैभव और धन-सम्पत्ति ही को जिन्हों ने सब-कुछ समझ रखा है और उसी में मग्न हैं। और उन लोगों की हँसी उड़ाते हैं जो दुनियाँ के मुक़ाबले में आख़िरत* को अपने जीवन का लक्ष्य समझते हैं; दुनियाँ के लिए अपनी आख़िरत* को तबाह नहीं करते।

पिछली सूरः* और प्रस्तुत सूरः में गहरा सम्पर्क है। यह सूरः पिछली सूरः की पूरक है। पिछली सूरः में नेक लोगों और दुस्साहसी लोगों के परिणामों के अन्तर का उल्लेख हुआ था इस सूरः में इन दोनों गरोहों के बीच विस्तारपूर्वक मुक़ाबला किया गया है।

इस सूरः* में उन लोगों को तबाही की सूचना दी गई है जो लेन-देन में एक-दूसरे को धोखा देते हैं। अन्याय और बे-ईमानी से दूसरे के माल को लेने में जिन्हें कोई झिझक नहीं होती। जिन की नीचता इस सीमा को पहुँच चुकी है कि जब किसी से कुछ लेते हैं तो नाप-तौल में पूरा-पूरा लेते हैं; परन्तु जब किसी को कुछ देना होता है तो नाप-तौल में कमी कर देते हैं। ऐसे लोगों को चेतावनी देते हुये कहा गया है कि क्या ये लोग यह समझते हैं कि इन्हें दोबरा जीवित कर के उठाया नहीं जायेगा जब कि लोग अपने रब* के सामने अपने अच्छे-बुरे कर्मों का हिसाब देने के लिए खड़े किये जायेंगे।

फिर अच्छे लोगों के अच्छे परिणाम और बुरे लोगों के बुरे परिणाम का उल्लेख किया गया है जो उन के सामने आने वाला है। हर एक के कर्मों का रिकार्ड तैयार हो रहा है। आज जो सचाई के मार्ग को नहीं अपनाते हैं उन का ठिकाना दोज़ख़* के अतिरिक्त और कुछ नहीं। वे उस दिन हर प्रकार की भलाइयों और सफलताओं से वंचित रह जायेंगे। न तो उन्हें अपने रब* की दयालुता प्राप्त होगी और न उन्हें अपने रब* के दर्शन हो सकेंगे। रहे वे लोग जो नेक हैं उन्हें वहाँ परम सुख और आनन्द प्राप्त होगा। उन का रब* उन्हें नेमत-भरी जन्नत* में जगह देगा। सांसारिक जीवन में यदि काफ़िर* उन पर हँसते हैं तो उस दिन काफ़िरों* पर वे हँसेंगे। काफ़िरों* को उस दिन अपने किये का भर-पूर बदला मिल जायेगा।

---

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अत-ततफ़ीफ़

(मक्का में उतरी — आयतें* ३६)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

لِّلْمُطَفِّفِيْنَ ۙ الَّذِيْنَ اِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُوْنَ ۙ وَ
كَالُوْهُمْ اَوْ وَّزَنُوْهُمْ يُخْسِرُوْنَ ؕ اَلَا يَظُنُّ اُولٰٓئِكَ اَنَّهُمْ
مَّبْعُوْثُوْنَ ۙ لِيَوْمٍ عَظِيْمٍ ۙ يَّوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ؕ
اِنَّ كِتٰبَ الْفُجَّارِ لَفِيْ سِجِّيْنٍ ؕ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا سِجِّيْنٌ ؕ كِتٰبٌ
مَّرْقُوْمٌ ؕ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۙ الَّذِيْنَ يُكَذِّبُوْنَ بِيَوْمِ
الدِّيْنِ ؕ وَمَا يُكَذِّبُ بِهٖٓ اِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ۙ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ
اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ؕ كَلَّا بَلْ ٚ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا
كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۙ كَلَّآ اِنَّهُمْ عَنْ رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوْبُوْنَ ؕ ثُمَّ
اِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيْمِ ؕ ثُمَّ يُقَالُ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ؕ
اِنَّ كِتٰبَ الْاَبْرَارِ لَفِيْ عِلِّيِّيْنَ ؕ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا عِلِّيُّوْنَ ؕ
مَّرْقُوْمٌ ۙ يَّشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُوْنَ ؕ اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ۙ
الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ ۙ تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيْمِ ۚ
مِنْ رَّحِيْقٍ مَّخْتُوْمٍ ۙ خِتٰمُهٗ مِسْكٌ ؕ وَفِيْ ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ
الْمُتَنَافِسُوْنَ ؕ وَمِزَاجُهٗ مِنْ تَسْنِيْمٍ ۙ عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ ؕ
الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا كَانُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَضْحَكُوْنَ ۙ وَاِذَا مَرُّوْا

तबाही[1] है डंडी मारने वालों की : ○ जो नाप कर लोगों से लेते हैं तो पूरा-पूरा लेते हैं, ○ और जब वे उन्हें नाप या तौल कर देते हैं, तो घटा कर देते हैं। ○

क्या ये लोग नहीं समझते कि इन्हें जी उठना

५ है[2] ? ○ एक बड़े दिन[3] के अवसर पर, ○ जिस दिन लोग सारे संसार के रब* के सामने खड़े होंगे। ○

कुछ नहीं, दुराचारी लोगों का अभिलेख 'सिज्जीन'[4] में रहता है ○ — और तुम्हें क्या मालूम कि 'सिज्जीन' क्या है ? ○ — एक अंकित अभिलेख है। ○

१० तबाही है उस दिन झुठलाने वालों की ! ○

जो बदला दिये जाने के दिन को झुठलाते हैं ○ और उसे झुठलाता वही है जो परले दरजे का अत्याचारी और पापी हो, ○ जब उसे हमारी आयतें* पढ़ कर सुनाई जाती हैं, कहता है : पहले लोगों की बे-बुनियाद बातें हैं। ○

१५ नहीं, नहीं, बात यह है कि जो-कुछ ये कमाते रहे हैं वह इन के दिलों पर चढ़ गया है[5]।

कुछ नहीं, ये लोग उस दिन अपने रब* (के दर्शन) से रोक दिये जायेंगे,[6] ○ फि[र] लोग भड़कती आग में जलेंगे, ○ फिर कहा जायेगा : यही है जिसे तुम झुठलाते थे। ○

कुछ नहीं, नेक लोगों का अभिलेख 'इल्लीयीन'[7] में रहता है ○ — और तुम्हें क्या मा[लूम]

२० कि 'इल्लीयीन' क्या है ? ○ — एक अंकित अभिलेख है, ○ पहुँच रखने वाले उस के प[ास] होते हैं[8]। ○

---

1 इसी शब्द से क़ुरआन की एक और सूरः (अल-हुमज़ः) का भी आरम्भ हुआ है। उस सूरः में गुनाह के रूप में धन संचित करने को निन्दनीय ठहराया गया है।

2 यदि ये समझते कि मरने के पश्चात् एक दिन इन्हें फिर उठना और अपने रब* के सामने अपने क[र्मों] का हिसाब देना है तो ये कदापि ऐसा कार्य न करते जो आज कर रहे हैं।

3 अर्थात् उस दिन जब कि लोगों को उन का बदला चुकाने के लिए जीवित कर के उठाया जायेगा।

4 सिज्जीन 'सिज्न' से है जिस का अर्थ है तंगी, बन्दीघर आदि।

5 अर्थात् इन के बुरे कर्मों के प्रभाव से इन के दिलों की दशा बिगड़ गई है यही कारण है कि सच्ची ब[ात] इन के दिलों में उतरती ही नहीं।

6 मुक़ाबले के लिए दे० आयत २८ सूरः इन-शिक़ाक़ आयत १०।

7 'इल्लीईन' (عليين) का अर्थ होता है 'बहुत ही ऊँचे लोग' यहाँ इस से अभिप्रेत उन का स्थान है।

8 मुक़ाबले के लिए दे० आयत १५।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

८४--अल-इनशिक़ाक़

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अल-इनशिक़ाक़' सूरः की पहली आयत से लिया गया है।

यह सूरः* मक्का में उतरने वाली प्रारम्भिक सूरतों* में से है।

इस सूरः* में बताया गया है कि यह दुनियाँ सदैव इसी प्रकार रहने वाली नहीं है एक समय आयेगा कि यह दुनियाँ बिलकुल बदल चुकी होगी। संसार की इस वर्त्तमान व्यवस्था में एक महान परिवर्त्तन होगा। आसमान और ज़मीन सब की हालत बदल जायेगी। फिर वह समय आ जायेगा जब कि प्रत्येक व्यक्ति को उस के कर्मों का बदला दिया जायेगा। इस सूरः में इस बात से सूचित कर दिया गया है कि क़ियामत* के दिन सारे भेद खुल जायेंगे। हमारा रब* हम से ग़ाफ़िल नहीं है। वह हमें और हमारे कामों को देख रहा है। वह अवश्य हम से हमारे कामों के बारे में पूछेगा।

पिछली सूरः* में अच्छे और बुरे लोगों का उल्लेख हुआ था प्रस्तुत सूरः में कुछ और बातें भी बताई गई हैं। अच्छे लोगों के बारे में इस की ख़बर दी गई है कि उन का आमाल-नामा (कर्म-पत्र) उन के सीधे हाथ में दिया जायेगा और वह हँसी-ख़ुशी के साथ अपने लोगों से मिलेंगे। उन से अत्यन्त आसान हिसाब लिया जायेगा¹ बुरे लोगों को उन का लेखा उन की पीठ की ओर से पकड़ाया जायेगा वह दिन उन के लिए तबाही का दिन होगा, वे जहन्नम* की आग में डाल दिये जायेंगे।

इस सूरः* के अन्तिम भाग में ईमान* न लाने वालों और उन लोगों के बीच जो ईमान* ला कर अच्छे कार्य करते हैं मुक़ाबला किया गया है। जिस से भली-भाँति यह बात समझी जा सकती है कि वर्त्तमान जीवन और अन्तिम परिणाम दोनों ही दृष्टि से सफल वही लोग हैं जो सचाई को मानते और उस के अनुसार अपने जीवन को ढालने की चेष्टा करते हैं। वास्तव में यही वे लोग हैं जो पूर्णता की ओर बढ़ रहे हैं। यही अपने ध्येय में सफल होने वाले हैं।

---

१ हज़रत आइशः रज़ि० का बयान है मैं ने एक बार कहा : हे अल्लाह के रसूल! मेरे नज़दीक अल्लाह की किताब में सब से अधिक भयप्रद आयत वह है जिस में कहा गया है : "जो व्यक्ति कोई बुराई करेगा वह उस की सज़ा पायेगा (सूरः अन-निसा आयत १२३)" इस पर नबी सल्ल० ने कहा : आइशः! क्या तुम्हें नहीं मालूम कि अल्लाह के आज्ञाकारी बन्दे को दुनिया में जो तकलीफ़ भी पहुँचती है यहाँ तक कि यदि उसे कोई काँटा भी चुभता है, तो अल्लाह उसे उन की किसी-न-किसी ख़ता और ग़लती की सज़ा ठहरा कर दुनियाँ ही में उस का हिसाब साफ़ कर देता है। आख़िरत* में तो जिस से भी पूछ-गछ हुई उसे तो सज़ा मिल कर रहेगी। हज़रत आइशः ने कहा : फिर अल्लाह ने जो यह कहा है कि "जिस का कर्म-पत्र उस के सीधे हाथ में दिया जायेगा उस से आसान हिसाब लिया जायगा"— इस का अर्थ क्या है? नबी सल्ल० ने कहा : इस से अभिप्रेत केवल पेशी है (भलाइयों के साथ आदमी की बुराइयाँ भी अल्लाह के सामने पेश होंगी) परन्तु जिस किसी से पूछ-गछ हुई वह तो बस समझ लो कि हलाक हुआ।*

** इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।*

८५--अल-बुरूज

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अल-बुरूज' सूरः की प्रारम्भिक आयत* से चिह्न के रूप में लिया गया है ।

यह सूरः* मक्का में उतरने वाली प्रारम्भिक सूरतों* में से है। सूरः के अध्ययन से अनुमान होता है कि यह सूरः मक्का में उस समय उतरी है जब कि सत्य-धर्म से विचलित करने के लिए मक्का वाले ईमान* वालों को सताने लग गये थे ।

प्रस्तुत सूरः* में इस का उल्लेख हुआ है कि लोगों को अपने अच्छे या बुरे कर्मों का बदला अवश्य मिलेगा। इस वर्तमान लोक में भी अल्लाह के न्याय का प्रदर्शन होता रहा है और क़ियामत* के दिन भी वह लोगों का फ़ैसला करेगा । इस की गवाही यह बुर्जों वाला आसमान भी देता है और दूसरी चीज़ें भी इसी बात की साक्षी हैं कि वह दिन आ कर रहेगा जब कि लोगों को उन के कर्मों का बदला दिया जायेगा। अल्लाह अपार शक्ति वाला है। वह हर चीज़ को देख रहा है कोई चीज़ भी उस से छुपी नहीं रह सकती। वह अत्यन्त क्षमाशील है ईमान* वालों को उस का प्यार मिलता है, परन्तु उन लोगों के लिए वह सख़्त है जो लोगों को सत्य-धर्म से विचलित करने के लिए सताते और उन पर अत्याचार करते हैं। इतिहास गवाह है कि अल्लाह ने ऐसे लोगों को जिन्हों ने ईमान* वालों को केवल इस लिए सताया कि वे ईमान* वाले थे, विनष्ट कर के रख दिया।

प्रस्तुत सूरः* में ईमान* ला कर अच्छे काम करने वालों और उन लोगों के बीच मुक़ाबला किया गया है जो सत्य को झुठलाते और ईमान* वालों को सत्य से विचलित करने के लिए सताते और तकलीफ़ें पहुँचाते हैं।

इस सूरः* में जहाँ इस का उल्लेख किया गया है कि अल्लाह हर चीज़ को देख रहा है और उस की पकड़ सख़्त है। वह सरकश लोगों से बदला ले कर रहेगा वहीं इस बात की ओर भी संकेत किया गया है कि वह अपराधियों को उन के अत्याचारों पर तुरन्त ही नहीं पकड़ता बल्कि उन्हें इस की पूरी मुहलत देता है कि वे सोच-विचार से काम लें और सँभलना चाहें तो सँभल जायें।

प्रस्तुत सूरः* में फ़िरऔन और समूद आदि के विनाश की ओर संकेत कर के वास्तव में मक्का वालों को सचेत किया गया है कि वे सरकशी छोड़ दें अन्यथा उन का परिणाम भी उस से भिन्न न होगा जो आज से पहले सरकश लोगों का हुआ है।

सूरः* के अन्त में कहा गया है कि काफ़िर* लोग इस बात को झुठला रहे हैं कि अल्लाह लोगों को उन के कामों का बदला देता है। वह फ़िरऔन और समूद* को दुनियाँ में भी उन के करतूतों का मज़ा चखा चुका है। क़ुरआन की दी हुई सूचना को झुठला कर वे अपना ही बुरा कर रहे हैं। क़ुरआन को और उस सत्य को जिसे क़ुरआन लोगों के सामने रख रहा है मेटा नहीं जा सकता। क़ुरआन का रक्षक कोई और ही है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अल-इनशिक़ाक़

(मक्का में उतरी — आयतें* २५)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

سورة الانشقاق

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

إِذَا السَّمَاءُ انْشَقَّتْ ۝ وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۝ وَإِذَا الْأَرْضُ
مُدَّتْ ۝ وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ ۝ وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۝ يَا أَيُّهَا
الْإِنْسَانُ إِنَّكَ كَادِحٌ إِلَىٰ رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلَاقِيهِ ۝ فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ
كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ ۝ فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَسِيرًا ۝ وَيَنْقَلِبُ إِلَىٰ
أَهْلِهِ مَسْرُورًا ۝ وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ وَرَاءَ ظَهْرِهِ ۝ فَسَوْفَ يَدْعُو
ثُبُورًا ۝ وَيَصْلَىٰ سَعِيرًا ۝ إِنَّهُ كَانَ فِي أَهْلِهِ مَسْرُورًا ۝ إِنَّهُ ظَنَّ
أَنْ لَنْ يَحُورَ ۝ بَلَىٰ إِنَّ رَبَّهُ كَانَ بِهِ بَصِيرًا ۝ فَلَا أُقْسِمُ
بِالشَّفَقِ ۝ وَاللَّيْلِ وَمَا وَسَقَ ۝ وَالْقَمَرِ إِذَا اتَّسَقَ ۝ لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَنْ
طَبَقٍ ۝ فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَإِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنُ لَا يَسْجُدُونَ ۩
بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا يُكَذِّبُونَ ۝ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُوعُونَ ۝ فَبَشِّرْهُمْ
بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ۝

जब आसमान फट जायेगा¹ ○ और
रब* की सुनेगा और उसे यही चाहिए थी
और जब ज़मीन फैला दी जायेगी ○ औ
कुछ उस में है उसे बाहर डाल देगी, और
ख़ाली हो जायेगी ○ और अपने रब* की
और उसे यही चाहिए थी! ○

हे मनुष्य! तू अपने रब* की ओर
कर (के भेज) रहा है जैसा कुछ भी परिश्रम
तू उस से मिलने वाला है। ○

तो जिस किसी को उस का (कर्म-) पत्र
दाहिने हाथ में दिया गया ○ उस से आसान
लिया जायेगा ○ और वह अपने लोगों
.ख़ुश-.ख़ुश पलटेगा। ○ और जिस किसी
का (कर्म-) पत्र उस की पीठ के पीछे से दिया गया, ○ तो वह विनाश को पुकारेगा
दहकती आग में दाख़िल होगा। ○ वह अपने लोगों में .ख़ुश-.ख़ुश रहता था, ○ उस
रखा था कि वह कभी पलट कर न आयेगा। ○

क्यों नहीं, उस का रब* उसे देखता रहा है! ○

तो कुछ नहीं, मैं क़सम खाता हूँ सान्ध्य-लालिमा की, ○

और रात की और जो वह समेट लेती है, ○

और चाँद की जब कि वह पूरा हो जावे, ○

निश्चय ही तुम्हें एक के पीछे एक चढ़ाई चढ़ना है²। ○

तो उन्हें क्या हुआ है कि ईमान* नहीं लाते ○ और जब उन्हें .क़ुरआन सुना
है, तो सजदः* नहीं करते? ○ बल्कि कुफ़्र* करने वाले तो झुठलाते हैं; ○ और अल्ला
भाँति जानता है जो-कुछ वे सैंत कर रखते हैं। ○

तो उन्हें दुःख-भरे अज़ाब की मंगल-सूचना दे दो, ○ परन्तु जो लोग ईमान* ल
अच्छे काम किये, उन के लिए बदला है कभी समाप्त न होने वाला। ○

---

१ दे० सूरः अल-इनफ़ितार आयत १।

२ अर्थात् तुम्हें आख़िरत* में लगातार कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। ... इस बात की पुष्टि की गई है कि
एक विचार यह भी है कि आयत १६-१८ में क़सम के रूप में इस बात की पुष्टि ... मनुष्य का जीवन एक ऐसे जीवन में बदल
जीवन में क्रमशः महान् परिवर्तन होने वाला है यहाँ तक कि मनुष्य का जीवन एक ऐसे जीवन ... जिस तरह रात आ
जायेगा जो पूर्ण होगा। जिस प्रकार आकाश की लाली क्रमशः बढ़ती जाती है, ... पूर्णिमा का चाँद बन जाता है
पूरे तौर पर छा जाती है और जिस तरह चन्द्रमा बढ़ते-बढ़ते पूर्णिमा का चाँद बन जाता है
मनुष्य को भी पूर्णता प्राप्त होगी उस का प्रकाश भी पूर्ण हो जायेगा।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

८५--अल-बुरूज

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अल-बुरूज' सूरः की प्रारम्भिक आयत* से चिह्न के रूप में लिया गया है।

यह सूरः* मक्का में उतरने वाली प्रारम्भिक सूरतों* में से है। सूरः के अध्ययन से अनुमान होता है कि यह सूरः मक्का में उस समय उतरी है जब कि सत्य-धर्म से विचलित करने के लिए मक्का वाले ईमान* वालों को सताने लग गये थे।

प्रस्तुत सूरः* में इस का उल्लेख हुआ है कि लोगों को अपने अच्छे या बुरे कर्मों का बदला अवश्य मिलेगा। इस वर्तमान लोक में भी अल्लाह के न्याय का प्रदर्शन होता रहा है और क़ियामत* के दिन भी वह लोगों का फ़ैसला करेगा। इस की गवाही यह बुर्जों वाला आसमान भी देता है और दूसरी चीज़ें भी इसी बात की साक्षी हैं कि वह दिन आ कर रहेगा जब कि लोगों को उन के कर्मों का बदला दिया जायेगा। अल्लाह अपार शक्ति वाला है। वह हर चीज़ को देख रहा है कोई चीज़ भी उस से छुपी नहीं रह सकती। वह अत्यन्त क्षमाशील है ईमान* वालों को उस का प्यार मिलता है; परन्तु उन लोगों के लिए वह सख़्त है जो लोगों को सत्य-धर्म से विचलित करने के लिए सताते और उन पर अत्याचार करते हैं। इतिहास गवाह है कि अल्लाह ने ऐसे लोगों को जिन्हों ने ईमान* वालों को केवल इस लिए सताया कि वे ईमान* वाले थे, विनष्ट कर के रख दिया।

प्रस्तुत सूरः* में ईमान* ला कर अच्छे काम करने वालों और उन लोगों के बीच मुक़ाबला किया गया है जो सत्य को झुठलाते और ईमान* वालों को सत्य से विचलित करने के लिए सताते और तकलीफ़ें पहुँचाते हैं।

इस सूरः* में जहाँ इस का उल्लेख किया गया है कि अल्लाह हर चीज़ को देख रहा है और उस की पकड़ सख़्त है। वह सरकश लोगों से बदला ले कर रहेगा वहीं इस बात की ओर भी संकेत किया गया है कि वह अपराधियों को उन के अत्याचारों पर तुरन्त ही नहीं पकड़ता बल्कि उन्हें इस की पूरी मुहलत देता है कि वे सोच-विचार से काम लें और सँभलना चाहें तो सँभल जायें।

प्रस्तुत सूरः* में फ़िरऔन और समूद आदि के विनाश की ओर संकेत कर के वास्तव में मक्का वालों को सचेत किया गया है कि वे सरकशी छोड़ दें अन्यथा उन का परिणाम भी उस से भिन्न न होगा जो आज से पहले सरकश लोगों का हुआ है।

सूरः* के अन्त में कहा गया है कि काफ़िर* लोग इस बात को झुठला रहे हैं कि अल्लाह लोगों को उन के कामों का बदला देता है। वह फ़िरऔन और समूद* को दुनिया में भी उन के करतूतों का मज़ा चखा चुका है। क़ुरआन की दी हुई सूचना को झुठला कर वे अपना ही बुरा कर रहे हैं। क़ुरआन को और उस सत्य को जिसे क़ुरआन लोगों के सामने रख रहा है मेटा नहीं जा सकता। क़ुरआन का रक्षक कोई और ही है।

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अल-बुरूज

(मक्का में उतरी — आयतें* २२)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

سُورَةُ الْبُرُوجِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْبُرُوْجِ ۙ وَالْيَوْمِ الْمَوْعُوْدِ ۙ وَشَاهِدٍ وَّمَشْهُوْدٍ ؕ
قُتِلَ اَصْحٰبُ الْاُخْدُوْدِ ۙ النَّارِ ذَاتِ الْوَقُوْدِ ۙ اِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُوْدٌ ۙ
وَّهُمْ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ شُهُوْدٌ ؕ وَمَا نَقَمُوْا مِنْهُمْ اِلَّاۤ
اَنْ يُّؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ۙ الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِيْنَ
وَالْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوْبُوْا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ
الْحَرِيْقِ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيْرُ ؕ اِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيْدٌ ؕ
اِنَّهٗ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيْدُ ۚ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الْوَدُوْدُ ۙ ذُو الْعَرْشِ
الْمَجِيْدُ ۙ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ؕ هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْجُنُوْدِ ۙ
فِرْعَوْنَ وَثَمُوْدَ ؕ بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ تَكْذِيْبٍ ۙ وَّاللّٰهُ مِنْ
وَّرَآئِهِمْ مُّحِيْطٌ ۚ بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ مَّجِيْدٌ ۙ فِيْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ؕ

क़सम है बुर्जों[1] वाले आसमान की, ○
और उस दिन की जिस का वादा है[2], ○
और साक्षी की और जिस का साक्षी हो,[3] ○
नाश हुआ खाई वालों का ○
ईंधन भरी आग वालों का,[4] ○
जब कि वे उस पर बैठे हुये हैं,[5] ○
और वे जो-कुछ ईमान* वालों के साथ कर रहे हैं उस के साक्षी हैं। ○
और उन्हें उन (ईमान* वालों) की केवल यह बात बुरी लगी कि वे अल्लाह पर ईमान* रखें, जो प्रभुत्वशाली और प्रशंसा का अधिकारी है,
वह जो आसमानों और ज़मीन के राज्य का मालिक है;
और अल्लाह हर चीज़ का साक्षी है। ○

जिन लोगों ने ईमान* वाले पुरुषों और ईमान* वाली स्त्रियों को दीन* से फिराने के लिए सताया फिर तौबः* न की, उन के लिए अज़ाब है जहन्नम* का, और उन के लिए अज़ाब है भड़कती आग का। ○
निस्सन्देह जो लोग ईमान* लाये और अच्छे काम किये, उन के लिए बाग़ हैं जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी यही बड़ी सफलता है। ○

---

१ दे० सूरः अल-हिज्र फ़ुट नोट ६।

२ अर्थात् क़ियामत* के दिन की। पहली क़सम दूसरी क़सम की दलील है। बुर्जों वाले आसमान की क़सम खा कर आसमानी दुनिया की आश्चर्य-जनक व्यवस्था को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

३ यह संकेत उस दिन की ओर है जब कि अदालत क़ायम होगी, गवाह पेश होंगे।

४ यह संकेत उन लोगों की ओर है जो जहन्नम* में डाले जायेंगे, यहाँ खाई से अभिप्रेत जहन्नम* है। साधारणतः समझा जाता है कि यहाँ किसी ऐतिहासिक घटना की ओर संकेत है जब कि काफ़िरों* ने ईमान वालों को आग में जलाया था। ऐतिहासिक उल्लेखों से विदित होता है कि सन् ५२३ ई० में यमन के सम्राट ज़ू नवास (Dhu Nawas) ने नजरान के ईसाइयों पर बड़ा अत्याचार किया था। (दे० Gibbon Decline and Fall, chap. xii. Pocock Sp. Hist Ar. p. 62.)।
ज़ू नवास का अत्याचार इतना अधिक बढ़ गया था कि उस ने ख़न्दक़ खुदवा कर आग भरवा दी और ईसाइयों को उस में झोंकने लगा। इस के अत्याचार का परिणाम यह हुआ कि हब्श (Abyssinia) के ईसाई राज्य ने बदला लेने के लिए यमन पर आक्रमण कर दिया और सम्पूर्ण राज्य को जीत लिया। ज़ू नवास हार कर भागा और समुद्र में कूद कर आत्महत्या कर ली।

५ अर्थात् जहन्नम* में जाने ही वाले हैं।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

निस्सन्देह तुम्हारे रब* की पकड़ बड़ी सख़्त है। ○

वही आरम्भ करता है और वही दोहराता है,[6] ○ और वह अत्यन्त क्षमा करने वाला और प्रे
१५ करने वाला है, ○ राज्य-सिंहासन का स्वामी गौरव वाला, ○ जो चाहे उसे कर डाले। ○

क्या तुम तक सेनाओं का समाचार पहुँचा ○ फ़िरऔन और समूद* का[7] ? ○

परन्तु कुफ़्र* करने वाले तो झुठलाने में लगे हुये हैं ○ और अल्लाह उन्हें हर ओर
२० घेरे हुये है। ○

(जिसे झुठलाते हैं) वह तो क़ुरआन है गौरव वाला। ○ सुरक्षित (अमर) पट्टिका
(अंकित) है[8]। ○

---

६ अर्थात् सब-कुछ वही करता है।

७ अर्थात् फ़िरऔन और समूद का कुछ हाल मालूम हुआ। वे कितने सरकश थे। अन्त में अल्लाह ने इन्हें विनष्ट कर दिया। और ईमान* वालों को इन के अत्याचारों से छुटकारा दिलाया।

८ मूल ग्रन्थ में 'लौहे महफ़ूज़' (لوح محفوظ) शब्द प्रयुक्त हुआ है। इस से मालूम हुआ कि क़ुरआन हर गड़बड़ से सुरक्षित है वह अमर-पट्टिका पर अंकित है। क़ुरआन में किसी प्रकार की मिलावट और गड़बड़ी नहीं हो सकती। 'लौहे महफ़ूज़' की वास्तविकता क्या है इस का वास्तविक ज्ञान अल्लाह ही को है। परोक्ष के रहस्यों को न हम सविस्तार पूर्ण रूप से समझ सकते हैं और न वर्तमान जीवन में इस की कोई आवश्यकता है कि मनुष्य को परोक्ष की समस्त बातों का पूर्ण ज्ञान हो।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

८६--अत-तारिक़

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अत-तारिक़' सूरः की पहली आयत* से लिया गया है।

यह सूरः* मक्का में उतरने वाली प्रारम्भिक सूरतों में से है। सूरः के अध्ययन से अनुमान होता है कि इस सूरः के उतरने के समय काफ़िरों* और धर्म-विरोधियों का विरोध बढ़ गया था। वे सत्य के विरुद्ध तरह-तरह की चालें चल रहे थे।

आगे आने वाली सूरः से विशेष रूप से नबी सल्ल० को सम्बोधित किया गया है और यह सिलसिला सूरः अल-अलक़ तक चला गया है[1]।

इस से पहले की सूरतों की तरह इस सूरः का सम्बन्ध भी विशेष रूप से क़ियामत* से है। इस सूरः में खोल कर यह बात लोगों के सामने रखी गई है कि कोई व्यक्ति भी ऐसा नहीं है जिस पर निगहबान नियुक्त न हों। यह आसमान और दमकता सितारा इस पर गवाह हैं कि प्रत्येक व्यक्ति की निगहबानी हो रही है। एक समय ऐसा आने वाला है जब कि छुपी बातों की जाँच होगी। प्रत्येक व्यक्ति को अपने किये का बदला मिल कर रहेगा। उस दिन अल्लाह के मुक़ाबले में न तो किसी को कोई शक्ति प्राप्त होगी और न कोई किसी का सहायक होगा। झूठे सहारे सब टूट चुके होंगे।

मनुष्य यदि सोच-विचार से काम ले तो वह देखेगा कि क़ुरआन जिस सच्चाई की ओर उसे बुलाता है उस का साक्षी स्वयं उस का अस्तित्व और सम्पूर्ण विश्व है। आसमान भी अपनी विशेषताओं के साथ उसी की गवाही दे रहा है और यह ज़मीन भी। क़ुरआन को झुठलाने और क़ियामत* के दिन का इन्कार करने का अर्थ यह होता है कि आदमी उन चमत्कारों को झुठला रहा है जिन्हें वह अपनी आँखों से देख रहा है।

सूरः* के अन्त में नबी सल्ल० और आप (सल्ल०) के साथियों को तसल्ली दी गई है कि अल्लाह काफ़िरों* की चालों और उन की शत्रुता से बेख़बर नहीं। वह उन की चालों का तोड़ कर रहा है। वे अल्लाह का मुक़ाबला नहीं कर सकते। उन्हें थोड़ी मुहलत दी जा रही है ताकि उन में यदि कोई सँभलना चाहे तो सँभल जाये। अल्लाह का फ़ैसला तो पूरा हो कर रहने वाला है उसे टाला नहीं जा सकता। कुफ़्र* का ज़ोर टूट कर रहेगा।

---

1 नुबूवत* के आरम्भ में जब कि क़ुरआन उतरना शुरू हुआ तो लोग बड़े अहंकार में पड़े हुये थे। यही कारण है कि आरम्भ की सूरतों में अचानक उन्हें सम्बोधित नहीं किया गया है बल्कि अधिकतर या तो नबी सल्ल० को सम्बोधित किया गया है या फिर क्रमानुसार चेतावनी और याद-दिहानी आदि की वे बातें लाई गई हैं जो लोगों को सुनानी अभीष्ट थीं या फिर सामान्य रीति से बात पेश करते हुये कलाम का रुख़ उन की ओर हो गया है। और कभी सामान्य सम्बोधन पर ही बस कर दिया गया है। ऐसा इस लिए किया गया ताकि इन्कार करने वालों को ठंडे दिल से सोचने-समझने का अवसर मिल सके।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अत-तारिक़

(मक्का में उतरी — आयतें* १७)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

बِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
وَالسَّمَآءِ وَالطَّارِقِ ۙ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الطَّارِقُ ۙ النَّجْمُ الثَّاقِبُ ۙ اِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ؕ فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ؕ خُلِقَ مِنْ مَّآءٍ دَافِقٍ ۙ يَّخْرُجُ مِنْۢ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَآئِبِ ؕ اِنَّهٗ عَلٰى رَجْعِهٖ لَقَادِرٌ ؕ يَوْمَ تُبْلَى السَّرَآئِرُ ۙ فَمَا لَهٗ مِنْ قُوَّةٍ وَّلَا نَاصِرٍ ؕ وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ۙ وَالْاَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ۙ اِنَّهٗ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ۙ وَّمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ؕ اِنَّهُمْ يَكِيْدُوْنَ كَيْدًا ۙ وَّاَكِيْدُ كَيْدًا ۚ فَمَهِّلِ الْكٰفِرِيْنَ اَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا

क़सम है आसमान की और रात को आने ...ते की ○ — और तुम क्या जानो कि रात को ...ने वाला क्या है। ○ दमकता सितारा। ○ — कोई ऐसा जीव नहीं जिस पर एक निगहबान हो[1]। ○

तो मनुष्य देखे कि वह किस चीज़ से बना है। ○ ...क उछलते पानी से बना है ○ जो निकलता है रीढ़ ...र हँसलियों के बीच में से[2]। ○

निश्चय ही वह (अल्लाह) उस के लौटा देने का ...मर्थ्य रखता है[3] ○

जिस दिन छुपी बातें परखी जायेंगी। ○ तो उसे (मनुष्य को) न तो कोई शक्ति प्राप्त होगी ...र न कोई सहायक। ○

क़सम है लौट-फेर[4] वाले आसमान की, ○

और फटने वाली ज़मीन की[5] ○

निस्सन्देह यह[6] एक दोटूक बात है, ○ यह कोई हँसने-हँसाने की बात नहीं है। ○

वे एक चाल चल रहे हैं ○

और मैं एक चाल चल रहा हूँ। ○ तो काफ़िरों को छूट दे दो, थोड़ी देर की छूट[7]। ○

---

१ दमकते सितारे की क़सम खा कर उसे इस बात का गवाह ठहराया है कि यहाँ प्रत्येक व्यक्ति पर निगह...ान नियुक्त है। जिस अल्लाह के हुक्म से रात में तारे निकलते और मनुष्य के ऊपर आकाश में चमकते हैं वह ...ल्लाह मनुष्य को यों ही नहीं छोड़ सकता अवश्य ही उस की ओर से मनुष्य की निगरानी करने वाले नियुक्त ... जो उस के कर्मों का रिकार्ड तैयार कर रहे हैं। यह कैसे सम्भव है कि तारों की आँखें तो मनुष्य को देखें ...रन्तु अल्लाह और उस की ओर से नियुक्त निगहबानों की आँखों से वह छुपा रहे।

२ अर्थात् मनुष्य को इस पर विचार करना चाहिए कि वह किस चीज़ से पैदा किया गया है। वह एक ...छलते हुये पानी से पैदा हुआ है जो पीठ और सीने की हड्डियों के बीच से खिंच कर आता है।

३ जिस अल्लाह ने मनुष्य को वीर्य्य से बना खड़ा किया है उस के लिए यह कुछ भी मुश्किल नहीं कि ...नुष्य को उस के मरने के पश्चात् पुनः जीवन प्रदान करे।

४ यहाँ 'रज्अ' (الرجع) शब्द प्रयुक्त हुआ है इस से अभिप्रेत क्या है? इस सिलसिले में टीकाकारों के ...विभिन्न मत हैं। उदाहरणार्थ वर्षा, रात-दिन का आना-जाना, आकाश का सुसज्जित होना आदि।

५ अर्थात् वह ज़मीन जो फटती है और उस से पेड़-पौधे निकलते हैं। आयत ११-१२ में आसमान और ...ज़मीन की विशेषता का उल्लेख कर के उन्हें हमारे सामने आख़िरत* की पुष्टि के लिए पेश किया गया है।

६ अर्थात् यह क़ुरआन और जो क़ियामत* आदि की सूचना वह दे रहा है वह।

७ अर्थात् काफ़िर* लोग सत्य के विरुद्ध जो चालें चल रहे हैं और अल्लाह के रसूल* को सताने के लिए जो हथकण्डे इस्तेमाल कर रहे हैं उस से अल्लाह बेख़बर नहीं है। वह भी उन की चालों का तोड़ कर रहा है। अल्लाह के दुश्मनों को मुँह की खानी पड़ेगी वे कभी भी अल्लाह की स्कीम को असफल नहीं बना सकते।

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

८७—अल-आला

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अल-आला' सूरः की प्रारम्भिक आयत से लिया गया है।

यह सूरः* मक्का में उतरने वाली अत्यन्त प्रारम्भिक सूरतों में से है।

प्रस्तुत सूरः* में लोगों को उस सीधे और स्पष्ट मार्ग की ओर बुलाया गया है जो मानव-कल्याण का एक ही मार्ग है। फिर इस सूरः में इस का हुक्म दिया गया है कि लोगों को डराया जाये ताकि वे अल्लाह के अज़ाब से बच सकें। अल्लाह के अज़ाब और प्रतिदान का विस्तृत वर्णन आगे आने वाली सूरः में किया गया है। प्रस्तुत सूरः से विशेष रूप से नबी सल्ल० को सम्बोधित किया गया है और यह सिलसिला सूरः अल-अलक़ तक चला गया है।

सूरः* के प्रारम्भ में अल्लाह के जिन चमत्कारों का उल्लेख किया गया है उन से कई मौलिक तथ्यों पर प्रकाश पड़ता है। इस लोक में जो चीज़ें भी हैं वे इस बात की साक्षी हैं कि उन का कोई स्रष्टा है जो दयावन्त और तत्वदर्शी है। उस का कोई काम भी उद्देश्य-रहित नहीं हो सकता। फिर हम देखते हैं कि विभिन्न वस्तुएँ परस्पर गहरा सम्बन्ध रखती हैं। इस से मालूम होता है कि इन सब का पैदा करने वाला एक ही है। जिस ने एक सोची-समझी स्कीम के अन्तर्गत सब की सृष्टि की है। फिर हर एक व्यक्ति के भीतर उस के अपने उद्देश्य की ओर बढ़ने की प्रेरणा रखी गई है।यह इस बात का प्रमाण है कि लोगों का जीवन अभी अपूर्ण है उसे अभी पूर्ण और विकसित होना है। फिर इस से एक ओर नुबूवत* की पुष्टि होती है दूसरी ओर यही चीज़ आख़िरत* की दलील बनती है।

फिर क़ुरआन के बारे में नबी सल्ल० को तसल्ली दी गई है कि हम इसे इस तरह पढ़ा देंगे कि आप इसे भूलेंगे नहीं। और अल्लाह आप के लिए आसानी पैदा करेगा; वह अपने दीन* को ऊँचा कर के रहेगा।उस का प्रकाश प्रकट हो कर रहने वाला है। आप को अपने कर्तव्य-पथ पर जमे रहना चाहिए। जिन लोगों के दिल में डर होगा वे अवश्य सीधे मार्ग को अपना लेंगे।

फिर बताया गया है कि सफलता तो उन लोगों के लिए है जिन्हों ने शुद्धता और सुथराई को अपनाया जिस से उन की आत्मा और उन के जीवन को विकसित होने का अवसर प्राप्त हुआ। उन्हों ने अपने रब* को याद किया और अपने रब* के स्मरण के लिए नमाज़*.पढ़ी। वास्तव में नमाज़* ही आत्मा की परिपूर्णता और जीवन का कल्याण है।। नमाज़* एक श्रेष्ठतम और सर्वव्यापक सत्ता की अनुभूति और उस का स्मरण है। नमाज़ हमें अपने अभीष्ट से निकट करती है। नमाज़ ही हमारे वास्तविक आनन्द की द्योतक है।

सूरः* के अन्त में उस चीज़ का उल्लेख किया गया है जो मनुष्य से उस के अभीष्ट उद्देश्य को दूरस्थ किये रहती है। वह है मनुष्य का सांसारिक जीवन पर रीझना और आख़िरत* के शाश्वत जीवन को भूल बैठना।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अल-आला

(मक्का में उतरी — आयतें* १९)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

سُورَةُ الْأَعْلَىٰ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى ۝ الَّذِي خَلَقَ فَسَوَّىٰ ۝ وَالَّذِي قَدَّرَ فَهَدَىٰ ۝ وَالَّذِي أَخْرَجَ الْمَرْعَىٰ ۝ فَجَعَلَهُ غُثَاءً أَحْوَىٰ ۝ سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنسَىٰ ۝ إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۚ إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفَىٰ ۝ وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرَىٰ ۝ فَذَكِّرْ إِن نَّفَعَتِ الذِّكْرَىٰ ۝ سَيَذَّكَّرُ مَن يَخْشَىٰ ۝ وَيَتَجَنَّبُهَا الْأَشْقَى ۝ الَّذِي يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرَىٰ ۝ ثُمَّ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ ۝ قَدْ أَفْلَحَ مَن تَزَكَّىٰ ۝ وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهِ فَصَلَّىٰ ۝ بَلْ تُؤْثِرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۝ وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ۝ إِنَّ هَٰذَا لَفِي الصُّحُفِ الْأُولَىٰ ۝ صُحُفِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَىٰ ۝

तसबीह* करो अपने सर्वोच्च रब* के नाम की, ○ जिस ने पैदा किया, फिर नख-शिख से दुरुस्त किया; ○ और जिस ने अन्दाज़ा ठहराया, फिर राह दिखाई;[1] ○ जिस ने चारा उगाया ○ फिर उसे घना

५ और हरा-भरा कर दिया[2] । ○

(हे नबी*!) हम तुम्हें पढ़ा देंगे फिर तुम भूलोगे नहीं ○ जो अल्लाह चाहे उस की बात और है! निस्सन्देह वह जानता है उसे जिसे खोल दिया जाये और उसे जो छिपा रहे; ○ और हम तुम पर आसानी (सुखसाध्य) को प्राप्त होना आसान कर देंगे[3] । ○ तो तुम याद-दिहानी करो यदि याद-दिहानी फ़ायदा दे[4] । ○

१० याद-दिहानी हासिल कर लेगा जो कोई डर रखता होगा, ○ और उस से बचता रहेगा जो बिलकुल ही अभागा होगा, ○ जो बड़ी वाली आग में पड़ेगा ○ फिर उस में न तो मरेगा और न जियेगा। ○

सफलता को प्राप्त हो गया जिस ने अपने को सँवारा,[5] ○ और अपने रब* के नाम का

१५ स्मरण किया, तो नमाज़ पढ़ी। ○

परन्तु तुम लोग तो सांसारिक जीवन ही को पसन्द करते हो ○ हालांकि आख़िरत* (का जीवन) कहीं ज़्यादा उत्तम और स्थायी है। ○

निस्सन्देह यह पहले के सहीफ़ों* में भी है, ○ इबराहीम और मूसा के सहीफ़ों में। ○

---

१ दे० सूरः अश-शुअरा आयत ७८; सूरः ता० हा० आयत ५०, फ़ुट नोट १६।

२ अर्थात् भूमि से केवल उस ने चारा ही नहीं उगाया बल्कि पूर्ण रूप से उस के फैलने, बढ़ने और लह-लहा उठने का भी पूरा सामान किया। इसी प्रकार वह मनुष्य को पैदा कर के यों ही नहीं छोड़ देगा बल्कि उसे आत्मिक विकास और पूर्णता का मार्ग भी दिखायेगा। इसी के लिए अल्लाह ने अपनी किताब उतारी और लोगों को अपने नाम से परिचित किया।

३ नबी सल्ल० को शुभ-सूचना दी जा रही है कि अल्लाह आप (सल्ल०) के लिए दीन* पर चलना आसान कर देगा, आप अपने उद्देश्य में सफल होंगे।

आत्मा की शुद्धता और विकास के बाद बहुत सी रुकावटें अपने-आप दूर हो जाती हैं। नबी सल्ल० का दिखाया हुआ मार्ग अत्यन्त सहज और स्वाभाविक है। कठिनाइयाँ और रुकावटें हम ही अपनी ओर से डालते हैं।

इंजील में कहा है : मेरा जुआ अपने ऊपर उठा लो और मुझ से सीखो। क्यों कि मैं नम्र-स्वभाव और हृदय का नम्र। तो तुम्हारी जानें आराम पायेंगी। क्यों कि मेरा जुआ मुलायम है और मेरा बोझ हल्का है (Matt. 11 : २८-३०)। क़ुरआन और हदीस का भी बयान है कि इस्लाम सहज और स्वाभाविक दीन* है।

४ यदि देखो कि लोग उस से फ़ायदा नहीं उठा रहे हैं तो उन को छोड़ दो।

५ दे० सूरः अश-शम्स आयत ६। मनुष्य की आत्मा की शुद्धता और विकास अल्लाह के स्मरण से ही प्राप्त होता है। जिस का उल्लेख अगली आयत में किया गया है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

इसकी जिम्मेदारी हज़रत इबराहीम को सौंपी गई।

२:१२६-१२६ हज़रत इबराहीम और उनके सुपुत्र ने काबा का पवित्र घर बनाया और दुआ माँगी।

२:१३०-१३२ हज़रत इबराहीम अल्लाह के समक्ष नतमस्तक हो गये।

२:२५८ वक़्त के बादशाह को हज़रत इबराहीम ने तौहीद की ओर बुलाया।

२:२६० अल्लाह ने हज़रत इबराहीम को दिखाया कि मुरदे कैसे जिन्दा होते हैं।

३:६७, ६८ इबराहीम न यहूदी थे न ईसाई।

४:५४ इबराहीम की औलाद को अल्लाह ने नुबूवत भी दी और बादशाही भी।

६:७४-७८ इबराहीम ने अपने बाप को तौहीद की ओर बुलाया और दलीलें पेश कीं।

६:७९-८३ इबराहीम अ० ने शिर्क से अपनी विरक्ति घोषित की और अल्लाह ने उनके पद को ऊँचा किया।

६:११४ जब उन्हें मालूम हो गया कि उनका बाप अल्लाह का दुश्मन है तो वे उससे रुष्ट हो गये।

११:६९, ७० हज़रत इबराहीम के पास उन फ़िरिश्तों का आना जो लूत अ० की जाति पर अज़ाब लेकर आये थे।

११:७१-७५ बुढ़ापे में सन्तान के शुभ समाचार पर उनकी पत्नी का ताज्जुब।

१४:३५-४१ हज़रत इबराहीम की दुआ मक्के और अपनी औलाद के बारे में।

१५:५१-५६ मेहमानों के रूप में फ़िरिश्तों का आना और पुत्र का शुभ-समाचार देना।

१६:१२०-१२२ इबराहीम अल्लाह के आज्ञाकारी थे और मुश्रिक नहीं थे।

१६:४१-४५ इबराहीम ने अपने बाप को इस्लाम की ओर बुलाया।

१६:४६-५० बाप ने मार डालने की धमकी दी और इबराहीम को स्वदेश छोड़ना पड़ा।

२१:५१-६७ अपने बाप और जाति के सामने मूर्ति-पूजा के विरुद्ध दलीलें रखीं और तौहीद की ओर बुलाया।

२१:६८-७० इबराहीम का आग में डाला जाना और उन का सुरक्षित रहना।

२२:२६-३३ इबराहीम को काबे को उपासना गृह बनाने और उन्हें लोगों को हज्ज करने का आमन्त्रण देने का हुक्म मिला।

२६:६९-८२ इबराहीम ने अपने बाप और जाति के सामने मूर्ति-पूजा का खण्डन किया और तौहीद का सन्देश पहुँचाया।

२६:१६-१८ इबराहीम ने अपनी जाति वालों को अल्लाह की दासता की ओर बुलाया।

३७:८३-९९ इबराहीम ने बुतों (मूर्तियों) को तोड़ा, जाति ने आग में डाला और वह स्वदेश छोड़ने पर मजबूर हुए।

३७:१०१-१११ इबराहीम अल्लाह के हुक्म पर अपने बेटे की क़ुरबानी लिए तैयार हो गये।

४३:२६-२८ इबराहीम ने अपने बाप और अपनी जाति वालों के अराधों से विरक्ति की घोषणा की।

५१:२४-३० मेहमानों के रूप में आने वाले फ़िरिश्तों का वृत्तांत, जो पुत्र का शुभ-समाचार लेकर आये।

६०:४-६ इबराहीम और उनके साथियों का पथ तुम्हारे लिए एक आदर्श है।

सूरः* अल-ग़ाशियः

(मक्का में उतरी — आयतें* २६)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ ۝ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ۝ عَامِلَةٌ
نَّاصِبَةٌ ۝ تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ۝ تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ۝ لَيْسَ
لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ ۝ لَّا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِيْ مِنْ جُوْعٍ ۝
وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ۝ لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ۝ فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۝
لَّا تَسْمَعُ فِيْهَا لَاغِيَةً ۝ فِيْهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ۝ فِيْهَا سُرُرٌ
مَّرْفُوْعَةٌ ۝ وَّاَكْوَابٌ مَّوْضُوْعَةٌ ۝ وَّنَمَارِقُ مَصْفُوْفَةٌ ۝ وَّزَرَابِيُّ
مَبْثُوْثَةٌ ۝ اَفَلَا يَنْظُرُوْنَ اِلَى الْاِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ۝ وَاِلَى السَّمَآءِ
كَيْفَ رُفِعَتْ ۝ وَاِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ ۝ وَاِلَى الْاَرْضِ كَيْفَ
سُطِحَتْ ۝ فَذَكِّرْ اِنَّمَا اَنْتَ مُذَكِّرٌ ۝ لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيْطِرٍ ۝
اِلَّا مَنْ تَوَلّٰى وَكَفَرَ ۝ فَيُعَذِّبُهُ اللّٰهُ الْعَذَابَ الْاَكْبَرَ ۝ اِنَّ
اِلَيْنَا اِيَابَهُمْ ۝ ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ ۝

क्या तुम तक उस छा जाने वाली (क़ियामत*) का समाचार पहुँचा ? ○

कितने ही चेहरे उस दिन सहमे हुये होंगे,[1] ○ परिश्रम करते थके-थके, ○ दहकती आग में पड़ेंगे, ○ ५ उन्हें एक खौलते स्रोत का पिलाया जायेगा, ○ उन के लिए खाने को कुछ न होगा बस एक 'ज़रीअ'[2] होगा ○ जो न (शरीर को) पुष्ट करेगा और न भूख में कुछ काम आयेगा। ○

कितने ही चेहरे उस दिन खिले हुये होंगे,[3] ○ १० अपनी चेष्टाओं पर प्रसन्न, ○ एक ऊँचे बाग़ में ○ जिस में कोई बकवाद न सुनेंगे,[4] ○ उस में स्रोत बह रहा होगा, ○ उस में ऊँचे-ऊँचे तख़्त बिछे होंगे ○ १५ आबख़ोरे सजे होंगे ○ बराबर से गावतकिये लगे होंगे ○ और हर तरफ़ मख़मली मसनदें फैली होंगी। ○

तो क्या ये लोग ऊँटों की ओर नहीं देखते, वे कैसे बनाये गये हैं ? ○

और आसमान की ओर, वह कैसा ऊँचा उठाया गया है ? ○

और पहाड़ों की ओर, वे कैसे खड़े किये गये हैं ? ○

२० और ज़मीन की ओर, वह कैसी बिछाई गई है[5] ? ○

तो तुम याद-दिहानी करो, तुम तो बस एक याद-दिहानी करने वाले हो, ○ तुम उन पर कोई दारोग़ा नहीं हो[6]। ○ हाँ यह है कि जिस किसी ने मुँह मोड़ा और कुफ़्र* किया, ○ तो अल्लाह उसे बड़ा वाला अज़ाब देगा[7]। ○

उन्हें हमारी ओर लौट कर आना है ○ फिर हमें उन से हिसाब लेना है[8]। ○

---

१ यह संकेत उन लोगों की ओर है जो दुनियाँ में कुफ़्र* की नीति अपनाते और सत्य का इन्कार करते हैं।

२ अरब में एक काँटेदार पौदा होता है। यह जब तक हरा रहता है इसे ऊँट खाते हैं जब सूख जाता है तो इसे 'ज़रीअ' (ضريع) कहते हैं। सूखने पर ज़हरीला और बदबूदार हो जाता है।

३ ये वही लोग होंगे जो दुनियाँ में सचाई पर ईमान* लाये और अल्लाह की दासता में जीवन व्यतीत किया।

४ दे० सूरः अल-वाक़िअः आयत २५; सूरः अन-नबा आयत ३५।

५ आयत १७-२० में अल्लाह की जिन निशानियों और चमत्कारों का उल्लेख हुआ है यदि आदमी उन पर विचार करे तो उसे आख़िरत* की उन बातों के मानने में कोई कठिनाई न होगी जिनका उल्लेख इस सूरः में किया गया है।

६ अर्थात् तुम्हारा काम केवल लोगों को उन का भूला हुआ सबक़ याद दिलाना है।

७ अर्थात् ऐसा नहीं है कि ईमान लाने और न लाने का परिणाम एक होगा। यदि कोई सत्य से मुँह मोड़ता और कुफ़्र* पर ही जमा रहता है तो अल्लाह उसे बड़ा अज़ाब दिये बिना नहीं रहेगा।

८ अर्थात् हम आख़िरत* में तुम्हारे कर्मों का हिसाब ले कर रहेंगे हम यह देखेंगे कि कौन है जो हमारी कृपा का पात्र है और कौन है जो हमारे अज़ाब का भागी है।

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

८९—अल-फ़ज्र

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अल-फ़ज्र' सूरः की पहली आयत* से लिया गया है।

यह सूरः* मक्का में उतरने वाली अत्यन्त प्रारम्भिक सूरतों में से है। जब कि लोगों को धर्म की मौलिक शिक्षाओं का आमन्त्रण दिया जा रहा था।

सूरः* के आरम्भ में क़समों के रूप में कुछ ऐसे प्राकृतिक प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं जिन से अल्लाह के एक महत्वपूर्ण नियम पर प्रकाश पड़ता है। अल्लाह ने विभिन्न और विपरीत चीज़ों को मिला कर उन में संगति और सामंजस्य पैदा किया है। उस सम्मेलन और सामंजस्य के बिना जो विश्व में दीख पड़ता है हम किसी भलाई और हित की आशा वर्तमान लोक में नहीं कर सकते थे। इस लोक की प्रतिकूल चीज़ों में परस्पर जिस अनुकूलता और सामंजस्य का नियम हमें दिखाई देता है उसी नियम को मानव-लोक में भी मान्यता प्राप्त हो, अल्लाह को यही अभीष्ट है। मानव-समाज विभिन्न वर्गों में विभक्त है इस में धनी भी हैं और निर्धन भी, बलिष्ठ भी हैं और निर्बल भी। समाज के विभिन्न वर्गों में पाये जाने वाले भेद और अन्तर का अर्थ यह होता है कि लोगों को एक-दूसरे का सहायक होना चाहिए, समस्त मानव जन एक ही अल्लाह के बन्दे हैं, मनुष्य का परम कर्त्तव्य है कि वह अल्लाह के हक़ को पहचाने, शिर्क* और कुफ़्र* की गन्दगी से अपने दामन को बचाये और अल्लाह के बन्दों के साथ उस का व्यवहार अच्छा हो। समाज में असंगति और असामंजस्य की जगह संगति और सामंजस्य हो। दया-भाव, जन-सेवा और पुण्य-कार्य के बिना न तो मनुष्य में अच्छे गुण पैदा होते हैं और न नैतिक विकास की दृष्टि से वह कभी सफल हो सकता है। ज़ालिम और सरकश जातियों ने यदि सहज और स्वाभाविक नियम का उल्लंघन कर के समाज में बिगाड़ पैदा किया है तो इतिहास इस बात का साक्षी है कि उन जातियों को बुरे दिन देखने पड़े हैं, अल्लाह के अज़ाब ने उन्हें दुनिया में भी विनष्ट कर के रख दिया और आख़िरत* में भी उन के लिए दुःख और दोज़ख़* की अग्नि के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। दुनिया में, जातियों को फलने-फूलने का जो अवसर भी मिलता है उस में उन की परीक्षा होती है। अल्लाह जो रातों को प्रकाशित कर के अपनी अपार लीला का प्रदर्शन करता है, जो रात के बाद उषा काल और अरुणोदय का समय लाता है उस से यह कैसे सम्भव है कि वह सरकशों और ज़ालिमों की सरकशी और ज़ुल्म के पश्चात् कोई न्याय और इन्साफ़ का दिन न लाये! वह अवश्य इन्साफ़ करेगा। फ़रियादियों की फ़रियाद सुनी जायेगी, ज़ालिमों को अपने करतूतों का मज़ा चखना पड़ेगा।

प्रस्तुत सूरः में मनुष्य की एक बड़ी दुर्बलता का उल्लेख किया गया है, मनुष्य यह नहीं सोचता कि यहाँ का सुख-दुःख तंगी और कुशादगी सब-कुछ केवल परीक्षा के लिए है। वह अल्लाह से शिकायतें करता है।

सूरः के अन्त में आख़िरत की झाँकी प्रस्तुत की गई है।

---

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अल-फ़ज्र

(मक्का में उतरी — आयतें* ३०)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
وَالْفَجْرِ ۙ وَلَيَالٍ عَشْرٍ ۙ وَّالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ۙ وَالَّيْلِ اِذَا يَسْرِ ۚ
هَلْ فِيْ ذٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِيْ حِجْرٍ ؕ اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ
بِعَادٍ ۙ اِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ۙ الَّتِيْ لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ۙ

क़सम है अरुणोदय की ○ और दस रातों की,[1] ○
और युग्म की और अयुग्म की, ○
और रात की जब कि वह गुज़र रही हो, ○
५ है इस में कोई क़सम किसी बुद्धि वाले के लिए[2]? ○
क्या तुम ने देखा नहीं कि तुम्हारे रब* ने क्या किया आद* के साथ, ○ स्तम्भों वाले 'इरम' के साथ ○ वह जिस के सदृश देशों में नहीं बनाया गया;[3] ○

और समूद* के साथ, जिन्हों ने चट्टानों को काट रखा था घाटी में;[4] ○
१० और मेख़ों वाले फ़िरऔन के साथ,[5] ○
जिन्हों ने देशों में सिर उठाया, ○ और उन में बहुत बिगाड़ फैला रखा था[6]? ○ तो तुम्हारे रब* ने उन पर अज़ाब का कोड़ा बरसाया। ○

निस्सन्देह तुम्हारा रब* ताक में रहता है[7]। ○ अब रहा मनुष्य, तो जब उस का रब* उस की परीक्षा करता है इस प्रकार कि उसे सम्मानित करता और सुख में रखता है, तो वह
१५ कहता है: मेरे रब* ने मुझे सम्मानित किया[8] ○ और जब वह उस की परीक्षा करता है

---

१ दस रातों से अभिप्रेत यहाँ महीने की वे दस रातें हैं जिन में चाँद अपेक्षाकृत अधिक बड़ा होता है और देर तक चमकता रहता है।

२ क़सम के रूप में अल्लाह ने यहाँ कुछ निशानियाँ प्रस्तुत की हैं। अल्लाह ने प्रातः का समय बनाया, रातों को प्रकाशित किया फिर यह कैसे हो सकता है कि वह अपने बन्दों से बेख़बर रहे और उन्हें न देखे। फिर उजाला और अँधेरा, दिन और रात, युग्म (Even) और अयुग्म (Odd) ये और इस तरह की कितनी ही परस्पर विरोधी चीज़ें संसार में आलिंगन-बद्ध दीख पड़ती हैं। यदि परस्पर विरोधी चीज़ों में एकत्रता न पाई जाती, तो फिर इस संसार में संगति और सम्मेलन की जगह असामंजस्य और संघर्ष का राज होता और हम किसी भलाई और हित से संसार का सम्पर्क स्थापित करने में असमर्थ रहते। प्रतिकूल वस्तुओं में अनुकूलता और सामंजस्य का जो नियम हमें इस संसार में दिखाई देता है उसी नियम के अन्तर्गत अल्लाह ने मनुष्य के भी विभिन्न वर्ग बनाये हैं। शक्तिशाली और निर्बल, धनी और मुहताज हर श्रेणी के लोग समाज में पाये जाते हैं। ऐसा इस लिए है ताकि लोग एक-दूसरे के सहायक हों और उन में अच्छे गुण पैदा हों, उन के स्वभाव में उच्चता और स्वच्छता आये। परन्तु ज़ालिम और सरकश लोगों ने हमेशा इस के विरुद्ध आचरण किया।

३ अर्थात् स्तम्भों वाले आद इरम के साथ जो अपनी सभ्यता में बहुत आगे थे। ऊँचे ऊँचे स्तम्भों के भवनों का निर्माण करना उन की ऐसी विशेषता थी जिस के लिए वे उस समय सब में प्रसिद्ध थे। परन्तु उन के ज़ुल्म और अत्याचार के कारण जब उन पर अल्लाह का अज़ाब आया तो न उन की रक्षा उन की सभ्यता कर सकी और न उन के ऊँचे-ऊँचे भवनों ने उन्हें शरण दी।

४ वे इतने कुशल थे कि पहाड़ों और पत्थरों को काट-काट कर सुन्दर और मज़बूत भवनों का निर्माण करते थे।

५ दे० सूरः साद आयत १२।

६ अर्थात् इन सब ने अपनी शक्ति के गर्व में आ कर केवल अल्लाह के आदेशों ही को नहीं ठुकराया बल्कि अल्लाह के बन्दों और कमज़ोरों पर ज़ुल्म भी किया।

७ अर्थात् वह लोगों से बेख़बर नहीं है। लोगों को आज़माने और उन की परीक्षा करने के लिए उन्हें कुछ-एक अवसर देता है। दे० सूरः अल-हाक़्क़ा आयत ४; सूरः अल-अस्र आयत ५, ७। (८ अगले पृष्ठ पर)

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

وَثَمُودَ الَّذِينَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ۝ وَفِرْعَوْنَ ذِي الْأَوْتَادِ ۝
الَّذِينَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ ۝ فَأَكْثَرُوا فِيهَا الْفَسَادَ ۝ فَصَبَّ عَلَيْهِمْ
رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ ۝ إِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ۝ فَأَمَّا الْإِنسَانُ إِذَا
مَا ابْتَلَاهُ رَبُّهُ فَأَكْرَمَهُ وَنَعَّمَهُ فَيَقُولُ رَبِّي أَكْرَمَنِ ۝ وَأَمَّا
إِذَا مَا ابْتَلَاهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهُ فَيَقُولُ رَبِّي أَهَانَنِ ۝ كَلَّا
بَل لَّا تُكْرِمُونَ الْيَتِيمَ ۝ وَلَا تَحَاضُّونَ عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ ۝
وَتَأْكُلُونَ التُّرَاثَ أَكْلًا لَّمًّا ۝ وَتُحِبُّونَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ۝ كَلَّا إِذَا
دُكَّتِ الْأَرْضُ دَكًّا دَكًّا ۝ وَجَاءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ۝ وَ
جِيءَ يَوْمَئِذٍ بِجَهَنَّمَ ۚ يَوْمَئِذٍ يَتَذَكَّرُ الْإِنسَانُ وَأَنَّىٰ لَهُ
الذِّكْرَىٰ ۝ يَقُولُ يَا لَيْتَنِي قَدَّمْتُ لِحَيَاتِي ۝ فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُعَذِّبُ
عَذَابَهُ أَحَدٌ ۝ وَلَا يُوثِقُ وَثَاقَهُ أَحَدٌ ۝ يَا أَيَّتُهَا النَّفْسُ
الْمُطْمَئِنَّةُ ۝ ارْجِعِي إِلَىٰ رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ۝ فَادْخُلِي
فِي عِبَادِي ۝ وَادْخُلِي جَنَّتِي ۝

इस प्रकार कि उस के लिए उस की रोज़ी नपी-तुली कर देता है, तो कहता है : मेरे रब* ने मुझे अपमानित किया[९] । ○

कुछ नहीं, तुम तो अनाथ का सम्मान नहीं करते, ○ और न एक-दूसरे को मुहताज के खिलाने पर उभारते हो, ○ और मीरास को समेट-समेट कर खाते हो[१०] ○ और माल को जी भर कर प्रिय रखते हो[११] । ○

कुछ नहीं, जब ज़मीन कूट कर चूर्ण-विचूर्ण कर डाली जायेगी,[१२] ○ और पदार्पण करेगा तेरा रब* और फ़िरिश्ते,* पंक्ति-पंक्ति,[१३] ○ और लाई जायेगी उस दिन जहन्नम;* उस दिन मनुष्य चेतेगा[१४] परन्तु उसे चेतने को कहां मिलता है! ○ कहेगा : हाय, क्या ही अच्छा होता कि मैं ने अपने जीवन के लिए पहले से कुछ कर लिया होता[१५]! ○

तो उस दिन कोई नहीं जो उस के जैसा अज़ाब दे ○ और कोई नहीं जो उस की जैसी जकड़-बन्दी करे । ○

हे शान्त आत्मा ! ○[१६]

लौट चल अपने रब* की ओर, तू (उस से) ख़ुश (वह) तुझ से ख़ुश । ○

अब पहुँच जा मेरे बन्दों में[१७] । ○ और पहुँच जा मेरी जन्नत* में ! ○

८ और इधर उस का ध्यान नहीं जाता कि अल्लाह नेमतों के द्वारा उस की परीक्षा कर रहा है। वह तो घमण्ड करता और इतराता है यतीमों, अनाथों और मुहताजों को भूल जाता है। उन की खबर नहीं लेता।

९ जब तंगी आती है उस समय भी मनुष्य यह नहीं सोचता कि वास्तव में उस का रब* उस की परीक्षा कर रहा है, वह घबरा उठता है और अपने रब की निन्दा करने लगता है। देखो सूरः अल-मआरिज आ० १९-२१।

१० अर्थात् हक़ नाहक़ कुछ नहीं देखते हो मरे हुये लोगों के माल और उन की सम्पत्ति को उड़ा लेते हो। यह नहीं सोचते हो कि उस में कितनों का हक़ है जिन में यतीम भी होंगे विधवा स्त्रियाँ भी हो सकती हैं और दूसरे लोग भी।

११ वास्तव में तुम्हारा रोग यह है कि तुम धन-दौलत के पुजारी हो। सत्य-असत्य का कुछ भी विचार नहीं करते। धन के लोभ में तुम अत्यन्त नीचे गिर चुके हो।

१२ अर्थात् परीक्षालय का अन्त हो जायेगा और वह समय आ जायेगा जब कि तुम्हें तुम्हारे कर्मों का बदला दिया जायेगा।

१३ अर्थात् आँख पर से परदा हटा दिया जायेगा तुम फ़िरिश्तों* को आते देखोगे और देखोगे कि उस दिन केवल तुम्हारे रब* का हुक्म चल रहा है। उस के प्रताप के सामने किसी को दम मारने की मजाल न होगी।

१४ उस समय मनुष्य चेतेगा कि वह कितनी भूल में था।

१५ कुछ नेकियाँ की होतीं, कुछ अल्लाह की राह में खर्च किया होता और मुहताजों, ग़रीबों और बन्दों की सहायता की होती, तो आज के दिन हम तबाही से बच सकते।

१६ अर्थात् वह आत्मा, जो दुःख-सुख और तकलीफ़ और आराम प्रत्येक अवस्था में अपने रब* के सम्मुख और उस के हुक्म पर राज़ी रहा और अपने अन्दर कोई टेढ़ पैदा न होने दिया। तंगी और खुशहाली, भय और लालच कोई चीज़ भी जिसे उस राह से विचलित न कर सकी जिस राह पर चलने का आदेश उसे उस के रब* की ओर से मिला था।

१७ अर्थात् मेरे नेक बन्दों में।

* इन का अर्थ आखिर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

९०--अल-वलद

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अल-वलद' सूरः की प्रथम आयत* से लिया गया है। सूरः के नाम का उस की वार्ताओं से विशेष सम्पर्क है।

यह सूरः* मक्का में उतरने वाली प्रारम्भिक सूरतों* में से है।

पिछली सूरः* (अल-फ़ज्र) की तरह प्रस्तुत सूरः में भी इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि लोग कमज़ोरों के साथ अच्छा व्यवहार करें उन के हक़ को पहचानें।

प्रस्तुत सूरः* में लोगों को उभारा गया है कि वे अपने कर्तव्य का पालन करें। उन्हें सोचना चाहिए कि अल्लाह ने उन पर कितना उपकार किया है। मनुष्य कितनी कमज़ोरी और बेचारगी की हालत में पैदा होता है। अब उस का यह परम कर्तव्य है कि वह अल्लाह के आगे कृतज्ञता दिखलाये और कमज़ोरों और मुहताजों पर दया करे। उसे कभी भी अपनी दुर्बलता को भूल कर गर्व और अहङ्कार की नीति नहीं अपनानी चाहिए। मक्का नगर और काबः* का इतिहास भी इसी बात का साक्षी है कि उसे अल्लाह ने तौहीद,* मानवी एकता, दया और प्यार की शिक्षा का केन्द्र बनाया था। अतः लोगों का और विशेष रूप से मक्का वालों का परम कर्तव्य है कि वे उस सीधे और स्वाभाविक मार्ग को अपनायें जिस के अपनाने में स्वयं उन का और सम्पूर्ण मानव जाति का कल्याण है।

मनुष्य को इस भ्रम में कदापि नहीं पड़ना चाहिए कि वह जो चाहे करे उस की कोई पकड़ न होगी। मनुष्य को सांसारिक मोह-माया, झूठी प्रतिष्ठा का ख़याल, नफ़्स और संकट का भय कर्तव्य-पथ से विचलित न करे। वह इस बात को कभी न भूले कि वह एक अल्लाह का बन्दा और दास है। बन्दगी का हक़ इस के बिना नहीं अदा हो सकता कि वह उन घाटियों से गुज़रे जिन से गुज़रने के बाद ही मनुष्य का जीवन सफल और उस का मान ऊँचा होता है। उस का कर्तव्य है कि वह ग़ुलामों की गरदनों को ग़ुलामी से आज़ाद कराये, अनाथों और बे-सहारा लोगों के काम आये। वास्तव में वह ईमान* वाला बने और दूसरों को उसी बात का आमन्त्रण दे जिसे वह स्वयं अपना चुका है।

इस सूरः* के अध्ययन से पूर्ण रूप से विदित होता है कि क़ुरआन लोगों को जिस चीज़ की ओर बुलाता है उस का सम्बन्ध मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन से ही नहीं बल्कि उस का सम्बन्ध सम्पूर्ण मानव-समाज से है। और वह मानव-जीवन के प्रत्येक भाग को एक विशेष साँचे में ढालना चाहता है। अल्लाह को यह पसन्द नहीं कि मनुष्य विभिन्न वर्गों में इस प्रकार विभक्त हो जिन के बीच न्याय, सहानुभूति प्रेम आदि का कोई सम्पर्क न हो। मनुष्य का कर्तव्य है कि वह मानव के प्रति अपने कर्तव्य को पहचाने और यह उसी समय सम्भव है जब कि उस ने अपने रब* को पहचान लिया हो और यह समझ गया हो कि अल्लाह की बन्दगी ही मनुष्य के जीवन का परम लक्ष्य है।

* इन का अर्थ क़ुरआन के अन्त में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अल-बलद

(मक्का में उतरी आयतें* २०)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

سورة البلد مكية

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۙ وَاَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۙ وَوَالِدٍ وَّمَا وَلَدَ ۙ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْ كَبَدٍ ؕ اَيَحْسَبُ اَنْ لَّنْ يَّقْدِرَ عَلَيْهِ اَحَدٌ ۘ يَقُوْلُ اَهْلَكْتُ مَالًا لُّبَدًا ؕ اَيَحْسَبُ اَنْ لَّمْ يَرَهٗۤ اَحَدٌ ؕ اَلَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ عَيْنَيْنِ ۙ وَلِسَانًا وَّشَفَتَيْنِ ۙ وَهَدَيْنٰهُ النَّجْدَيْنِ ۚ فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ۖ وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا الْعَقَبَةُ ؕ فَكُّ رَقَبَةٍ ۙ اَوْ اِطْعٰمٌ فِيْ يَوْمٍ ذِيْ مَسْغَبَةٍ ۙ يَّتِيْمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ۙ اَوْ مِسْكِيْنًا ذَا مَتْرَبَةٍ ؕ ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا هُمْ اَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ؕ عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّؤْصَدَةٌ

नहीं,[1] क़सम खाता हूँ इस नगर की (मक्का की) ○ — और तू इस नगर में रह रहा है।○— और जनने वाले की और जो-कुछ उस ने जना,[2]○ निस्सन्देह हम ने मनुष्य को कष्ट में घिरा हुआ बनाया है : ○

क्या वह समझता है कि उस पर किसी का बस न चलेगा ? ○

कहता है : मैं ने ढेरों माल खपा दिया : ○ क्या वह समझता है कि उसे किसी ने नहीं देखा ? ○

क्या नहीं दीं हम ने उसे दो आँखें ○ और एक ज़बान और दो होंठ,○ और दिखाई उसे दोनों चढ़ाइयाँ[3] ? ○ तो वह घाटी में घुसा ही नहीं ○ —

और तुम्हें क्या मालूम कि वह घाटी क्या है ! ○ किसी गरदन (ग़ुलाम की गरदन) का छुड़ा देना,[*] ○ या भूख (अकाल) के दिन में खाना खिला देना[*] ○ किसी नातेदार यतीम को,[*]○ या धूल धूसरित (दुर्दशाग्रस्त) मुहताज को । ○ फिर उन लोगों में से होना जो ईमान* लाये और एक-दूसरे को सब्र* की ताकीद की और दया करने की ताकीद की । ○ ये लोग हैं सौभाग्य वाले । ○

और जिन्हों ने हमारी आयतों* के साथ कुफ़्र* किया, वे दुर्भाग्य वाले हैं। ○ वे आग में बन्द रहेंगे । ○

---

१ अर्थात् क़ाफ़िरों* ने जो-कुछ अपनी जगह पर समझ रखा है वह असत्य है।

२ क़सम के रूप में यहाँ अल्लाह की निशानियों का उल्लेख हुआ है। मक्का का भू-भाग न खेती के लिए उपयोगी है और न जानवरों के लिए यहाँ हरे-भरे मैदान पाये जाते हैं। यहाँ की ज़मीन मशक़्क़त से भरी हुई थी। मनुष्य की पैदाइश और उस की निर्बलता जहाँ इस बात की साक्षी है कि मनुष्य को मशक़्क़तों और तकलीफ़ों से गुज़रना है वहीं मक्का का भू-भाग और उस के इतिहास से भी इसी बात का पता चलता है। जिस प्रकार निर्बल बच्चे पर अल्लाह की कृपा होती है और अल्लाह उत्तम रीति से उस के लिए आवश्यक वस्तुएँ जुटाता है, माता-पिता के हृदयों में उस के लिए प्रेम-भावना भरता है। उसी प्रकार मक्का के इतिहास से भी मालूम होता है कि किस प्रकार अल्लाह की कृपा और दया इस भू-भाग पर हुई है। अल्लाह की कृपा और उस के घर (काबः*) की बरकत से यह मशक़्क़त से भरी हुई ज़मीन नेमतों और बरकतों का उद्गम और शान्ति-निकेतन बन गई (दे० अल-क़सस आयत ५७; सूरः क़ुरैश)। अल्लाह ने यहाँ मनुष्य को उस की दुर्बलता और दीनता और अपनी कृपा और उपकार याद दिला कर उसे गर्व और अभिमान से रोका है और इस पर उभारा है कि वह अल्लाह के आगे कृतज्ञता दिखलाये और दीन-दुखियों और कमज़ोरों पर दया करे।

३ दो चढ़ाइयों से अभिप्रेत 'सब्र' और 'दया करना' है जिस का उल्लेख आयत १७ में हुआ है। एक विचार यह भी है कि इस से अभिप्रेत अल्लाह और उस के बन्दों का हक़ अदा करना है। इन का पालन मनुष्य उसी समय कर सकता है जब कि उस में संकल्प की दृढ़ता और बलिदान और त्याग की भावना पाई जाती हो इस के बाद ही वह उच्चता को प्राप्त कर सकता है इसी लिए इन्हें दो चढ़ाइयाँ कहा गया। आगे की आयत में इसे घाटी कहा गया है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

९१—अश-शम्स

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अश-शम्स' सूरः की पहली आयत* से लिया गया है।

यह सूरः* मक्का में उतरने वाली आरम्भिक सूरतों में से है। यह वह समय था जब कि मक्के के सरदार नबी सल्ल० की शिक्षा का इन्कार कर रहे थे।

इस सूरः* में 'क़ुरैश' और उन के सरदारों को उन के बुरे परिणाम से डराया गया है। वे उस चीज़ को झुठला रहे थे जिस की ओर अल्लाह का रसूल* उन्हें बुला रहा था। अल्लाह का रसूल* जो बातें उन के सामने पेश कर रहा था वे सीधी और सच्ची बातें थीं। वह उन्हें एक अल्लाह की ओर बुला रहा था। वह उन से कहता था कि वे कमज़ोरों की सहायता करें, उन के दुःख को अपना दुःख समझें। और इस को सच मानें कि उन्हें एक दिन अपने रब* के सामने हाज़िर होना है।

पिछली सूरः* में बताया गया था कि 'काबः' के निर्माण के कुछ उद्देश्य हैं जिन्हें उस सूरः में ईमान,* सब्र, दया-कृपा और सब्र, दया की वसीयत आदि शब्दों द्वारा व्यक्त किया गया है। जो लोग इन चीज़ों को अपनायेंगे उन के बारे में कहा गया है कि वही सौभाग्यशाली होंगे। प्रस्तुत सूरः* में लोगों के सामने समूद* के उस बद-नसीब लीडर को पेश किया गया है जिस ने अपनी सरकशी से अपनी जाति वालों को तबाही के गढ़े में ला गिराया। समूद* को उदाहरण के रूप में इस लिए पेश किया गया है ताकि 'क़ुरैश' को मालूम हो जाये कि उन्हों ने नबी सल्ल० के विरुद्ध जो नीति अपनाई है वह वही है जो समूद* के एक अत्याचारी व्यक्ति ने अपनाई थी। इन्हों ने अल्लाह के घर (काबः) के वास्तविक उद्देश्य का सत्यानाश किया है और अल्लाह के रसूल* के साथ वही व्यवहार करने वाले हैं जो समूद ने अपने रसूल* के साथ किया था। समूद की सरकशी यहाँ तक बढ़ गई थी कि उन्हों ने केवल यही नहीं कि अपने रसूल* को झुठलाया बल्कि उस ऊँटनी को भी मार डाला जिसे अल्लाह ने चमत्कार के रूप में पैदा किया था जिस के बारे में उन्हें ताकीद कर दी गई थी कि उसे किसी प्रकार का कष्ट न पहुँचे। ऊँटनी को मार डालने के बाद उन्हों ने रसूल* को क़त्ल करने का भी निश्चय किया (दे० सूरः अन-नम्ल आयत ४६–५१)। 'क़ुरैश' के सामने समूद के करतूत के उल्लेख का उद्देश्य यही है कि लोगों को मालूम हो जाये कि 'क़ुरैश' ने जो नीति अपनाई है उस का परिणाम क्या होगा। समूद* की तरह ये भी अपने रसूल* को क़त्ल करने की साज़िश करेंगे। फिर समूद की तरह इन्हें भी बुरा दिन देखना पड़ेगा। इस प्रकार यह पूरी सूरः आयत १० का विस्तार है। सूरः की आयत ६ का विस्तृत वर्णन अगली सूरः (अल-लैल) में मिलता है। सूरः के आरम्भ में जिस चीज़ की पुष्टि प्राकृतिक प्रमाण द्वारा की गई है उसी के लिए सूरः के अन्तिम भाग में ऐतिहासिक प्रमाण प्रस्तुत किया गया है। जिस से साफ़ मालूम होता है कि अल्लाह लोगों के कर्मों का पूरा बदला देता है।

---

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अश-शम्स

(मक्का में उतरी — आयतें* १५)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
وَالشَّمْسِ وَضُحٰهَا ۝ وَالْقَمَرِ اِذَا تَلٰهَا ۝ وَالنَّهَارِ اِذَا جَلّٰهَا ۝
وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰهَا ۝ وَالسَّمَآءِ وَمَا بَنٰهَا ۝ وَالْاَرْضِ وَمَا طَحٰهَا ۝
وَنَفْسٍ وَّمَا سَوّٰهَا ۝ فَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا وَتَقْوٰهَا ۝ قَدْ اَفْلَحَ مَنْ

क़सम है सूर्य की और उस के चढ़ते तेज की,[1] O और चाँद की जब कि वह उस के पीछे-पीछे आये, O और दिन की जब कि वह उसे (सूर्य को) उजागर कर दे, O

और रात की जब कि वह उस पर (सूर्य पर) छाई हुई हो,[2] O

और आसमान की और जैसा उसे बनाया, O

और ज़मीन की और जैसा उसे फैलाया, O

और आत्मा की और जैसा उसे रचा O फिर उसे प्रेरणा दी दुराचार की और बच-बच कर चलने की।[3] O

सफल हो गया जिस ने उसे (आत्मा को) निखारा,[4] O

---

१ जब धूप फैल जाती है और उस में तेजी आ जाती है।

२ दिन में सूर्य चमक रहा होता है तो रात में वह छुप जाता है।

३ मनुष्य में भलाई और बुराई दोनों की अभिरुचि पाई जाती है उस पर दोनों बातें खोल दी गई हैं वे बातें भी जो उस की प्रकृति के विरुद्ध और अल्लाह को अप्रिय हैं। और वे बातें भी उस पर खोली गई हैं जो आत्मा की शुद्धता और पवित्रता से सम्बन्ध रखती हैं, अल्लाह का डर रखने वालों को जिन का ध्यान रखना ज़रूरी है।

ऊपर की आयतों पर सोच विचार करने से कई बातें हमारे सामने आती हैं। (१) क़सम के रूप में [illegible] प्रमाण इस सूरः में हमारे सामने लाये गये हैं उन से इस की पुष्टि होती है कि एक दिन अवश्य मनुष्य को अपनी कोशिशों और चेष्टाओं का बदला मिल कर रहेगा, वह दुनिया में यों ही निरुद्देश्य नहीं पैदा किया गया है। यह सम्भव नहीं कि यह दुनिया जो अल्लाह के सामर्थ्य, उस की कृपा और दया और उस की [illegible] मत (Wisdom) का प्रत्यक्ष रूप है, यों ही बिना किसी वास्तविक उद्देश्य और लक्ष्य के बनाई गई हो।

(२) फिर मनुष्य को भले-बुरे की समझ दी गई। मनुष्य भलाई और बुराई दोनों को एक नहीं समझता। वह दोनों में अन्तर करता है। नेकी और बदी, भलाई और बुराई में यदि अन्तर है तो इन का परिणाम एक कैसे हो सकता है? अतः अवश्य मनुष्य को अपने कर्मों का बदला मिल कर रहेगा।

(३) फिर जिन चीज़ों को अल्लाह ने प्रमाण के रूप में इस सूरः में पेश किया है उन्हें जोड़े-जोड़े [illegible] पेश किया है। सूर्य के साथ चाँद का उल्लेख किया गया और रात के साथ दिन का और इसी प्रकार आसमान के साथ ज़मीन का उल्लेख हुआ है। इस संसार में जो जोड़े हैं एक दूसरे के विपरीत दिखाई देते हैं वे [illegible] वास्तव में एक दूसरे के सहायक और पूरक हैं। परस्पर विरोधी चीज़ों के पारस्परिक मिलाप और सहयोग से [illegible] कितने ही उद्देश्यों की पूर्ति होती है [illegible] मनुष्य को भी विरोधी अभिरुचि और इच्छाओं के बीच [illegible] रहना है। यदि भलाई उस अपना और साथी है तो बुराई भी उस अपनी और [illegible] है, तो और [illegible] मनुष्य को नैतिक और आध्यात्मिक उत्थान और विकास का रहस्य उस की [illegible] संघर्ष में ही निहित है।

(४) वह सम्पूर्ण विश्व मनुष्य को आन्तरिक दुनिया का ही प्रत्यक्ष रूप है। जो व्यवस्था [illegible] [illegible] में पाई जाती है उसी प्रकार की व्यवस्था आन्तरिक जगत में भी दीख पड़ती है। [illegible] [illegible] उद्देश्य के अन्तर्गत प्रकाश को रखा जाता है और अन्धकार को, [illegible] (इस प्रकार, [illegible]

वह [illegible] मनुष्य के [illegible] और उस की भलाई के लिए ही है।

४ [illegible] आत्मा में [illegible] हुई [illegible] दोषों को दूर [illegible]।

قَدْ أَفْلَحَ مَن زَكَّاهَا ۝ وَقَدْ خَابَ مَن دَسَّاهَا ۝ كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِطَغْوَاهَا ۝ إِذِ انبَعَثَ أَشْقَاهَا ۝ فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ نَاقَةَ اللَّهِ وَسُقْيَاهَا ۝ فَكَذَّبُوهُ فَعَقَرُوهَا فَدَمْدَمَ عَلَيْهِمْ رَبُّهُم بِذَنبِهِمْ فَسَوَّاهَا ۝ وَلَا يَخَافُ عُقْبَاهَا ۝

और असफल हुआ जिस ने उसे खराब
१० किया। ○

"झुठलाया समूद* ने अपनी सरकशी के साथ। ○ जब उठ खड़ा हुआ जो उन में सब से बदनसीब था ○ तो उन से अल्लाह के रसूल* ने कहा : खबरदार अल्लाह की ऊँटनी और उस के पानी पीने की बारी से" । ○

परन्तु उन्हों ने उसे झुठलाया, और उस (ऊँटनी) को उस की कूँचें काट कर मार डाला," तो उन के रब* ने उन के गुनाह के कारण उन पर तबाही डाली और उस (बस्ती) को बराबर
१५ कर दिया। ○ और उसे डर नहीं कि इस के पीछे क्या होगा" । ○

ठीक यही दशा मनुष्य के आन्तरिक जगत की भी है। इस में भी ज़मीन और आसमान रात और दिन पाये जाते हैं। जिस प्रकार बाह्य जगत में विभिन्न और परस्पर विरोधी चीज़ों के सम्बन्ध और संघर्ष से अभीष्ट उद्देश्यों की पूर्ति होती है उसी प्रकार मनुष्य को भी विभिन्न और विपरीत इच्छाओं, कामनाओं और अभिरुचियों के संघर्ष और सम्पर्क से आध्यात्मिक और नैतिक विकास की राह पैदा करनी है। यदि वह इस सिलसिले में अपने दायित्व को भुला देता है तो इस का परिणाम विनाश के रूप में ही उस के सामने आयेगा। सफलता उसी के लिए है जो अपनी ज़िम्मेदारी को समझे और उसे पूरा करने की कोशिश करे यही बात है जो आगे की दो आयतों में खोल कर बयान कर दी गई है। बरगसाँ (Bergson) जो बीसवीं शताब्दी का एक बड़ा दार्शनिक गुज़रा है वह भी इस बात को मानने पर मजबूर हुआ है : "जीवन की समस्त चेष्टाओं और दौड़-भाग का अभिप्राय मानव-जाति की पूर्णता (Perfection) है अर्थात् मनुष्यत्व (Humanity) को वह-कुछ बना देना जो वह तत्काल बन जाता यदि उसे अपना रूप धारण कर लेने में मनुष्यों की सहायता आवश्यक न होती" (The Two sources of Morality and Religion)।

सूरः के आरम्भ से ले कर आयत ८ तक क़समों के रूप में जो बात प्रमाणित की गई है वह वही है जो आयत ९-१० में बयान हुई है।

४ ऊपर जिस चीज़ की पुष्टि प्राकृतिक प्रमाणों के द्वारा की गई है उस के लिए आगे की आयतों में एक ऐतिहासिक प्रमाण प्रस्तुत किया जा रहा है।

५ दे० सूरः अश-शुअरा आयत १५४-१५८; हूद आयत ६४-६८।

६ यद्यपि समूद* के एक व्यक्ति ने ऊँटनी को क़त्ल किया था (दे० आयत १२) परन्तु क़ुरआन पूरी जाति को क़त्ल का अपराधी ठहरा रहा है क्योंकि समूद जाति के लोग इस अन्याय और अपराध पर चुप रहे उन्हों ने अपने आदमी के इस अपराध को बुरा नहीं समझा।

७ क़ुरआन जहाँ पिछली आसमानी किताबों की बहुत-सी बातों की तसदीक़ करता है वहीं वह उन बहुत सी ऐसी बातों का निषेध भी करता है जो यहूद* ने उन में अपनी ओर से मिला दी हैं (दे० सूरः अल-माइदः आयत ४८; सूरः अन-नम्ल आयत ७६)। अल्लाह के बारे में जहाँ और बहुत सी भ्रमपूर्ण बातें फैली हुई थीं वहीं एक ग़लत बात यह भी थी कि कभी-कभी वह अपने कामों पर पछताता है। उदाहरणार्थ देखिए तौरात की किताब पैदाइश (Gen.) ६ : ५-६; ८ : २१। क़ुरआन कहता है कि अल्लाह जो-कुछ करता है हिक्मत और दयालुता के अन्तर्गत करता है। वह यदि किसी जाति को विनष्ट करता है तो अपने निश्चित नियम के
५४ अन्तर्गत ही विनष्ट करता है इसी प्रकार जब वह किसी जाति को फलने-फूलने का अवसर प्रदान करता है तो उस का वह काम भी उस के नियम और क़ानून के अन्तर्गत ही होता है। उसे न कोई भय है और न उस में कोई दुर्बलता पाई जाती है इस लिए यह बात उस की महिमा के सर्वथा प्रतिकूल है कि वह अपने किसी काम पर पछताये या लज्जित हो। यही बात है जो आयत १५ से विदित होती है।

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः॰ अल-लैल

(मक्का में उतरी — आयतें॰ २१)

अल्लाह॰ के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشٰى ۝ وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلّٰى ۝ وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْأُنْثٰى ۝
إِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتّٰى ۝ فَأَمَّا مَنْ أَعْطٰى وَاتَّقٰى ۝ وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ۝
فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْيُسْرٰى ۝ وَأَمَّا مَنْ بَخِلَ وَاسْتَغْنٰى ۝ وَكَذَّبَ
بِالْحُسْنٰى ۝ فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْعُسْرٰى ۝ وَمَا يُغْنِي عَنْهُ مَالُهُ إِذَا
تَرَدّٰى ۝ إِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدٰى ۝ وَإِنَّ لَنَا لَلْآخِرَةَ وَالْأُولٰى ۝
فَأَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظّٰى ۝ لَا يَصْلَاهَا إِلَّا الْأَشْقَى ۝ الَّذِي كَذَّبَ
وَتَوَلّٰى ۝ وَسَيُجَنَّبُهَا الْأَتْقَى ۝ الَّذِي يُؤْتِي مَالَهُ يَتَزَكّٰى ۝
وَمَا لِأَحَدٍ عِنْدَهُ مِنْ نِعْمَةٍ تُجْزٰى ۝ إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِ
الْأَعْلٰى ۝ وَلَسَوْفَ يَرْضٰى ۝

क़सम है रात की जब कि छाई हुई हो ○
और दिन की जब कि चमक उठे ○
और इस की कि उस ने पैदा किये स्त्री जाति और पुरुष जाति, ○
निस्सन्देह तुम्हारी चेष्टा अलग-अलग है[1]। ○
५ तो जिस किसी ने दिया और डर रखा ○
और भली बात को सच माना; ○
तो हम उस के लिए आसानी (सुख-साध्य) को प्राप्त होना आसान कर देंगे[2]। ○
और जिस किसी ने कृपणता दिखाई और बेपरवा रहा, ○
और भली बात को झुठलाया; ○
१० तो हम उस के लिए कठिनाई को प्राप्त होना आसान कर देंगे। ○
उस का माल उस के काम न आयेगा
जब वह गड्ढे में गिरेगा। ○
निस्सन्देह हमारे ज़िम्मे है राह दिखाना ○
और हमारी ही है पिछली और पहली[3]। ○
तो मैं ने तुम्हें एक भड़कती हुई आग से सचेत कर दिया है ○
१५ बदनसीब ही होगा जो उस में पड़ेगा, ○ जिस ने झुठलाया और मुँह मोड़ा। ○
और उस से बचा लिया जायेगा बड़ा डर रखने वाला ○ जो अपना माल देता है कि अपने को निखारे, ○ किसी का उस के सामने कोई एहसान नहीं है जिस का बदला दिया जा
२० रहा हो, ○ इस से बस अपने सर्वोच्च रब॰ की .ख़ुशी हासिल करनी है। ○ और वह जल्द ही राज़ी हो जायेगा[4]। ○

---

१ ऊपर की आयतों में क़सम के रूप में अल्लाह ने अपनी जिन निशानियों को पेश किया है उन से मालूम होता है कि अल्लाह परस्पर विरोधी चीज़ों के मेल से एक नतीजा ज़ाहिर करता है। मानव-लोक में भी अल्लाह का यह नियम काम कर रहा है। यहाँ भी विभिन्न प्रकार के लोग पाये जाते हैं जिन के रास्ते और जिन की चेष्टायें भिन्न हैं, इस भिन्नता से भी एक नतीजा ज़ाहिर होता है (दे० परिचय)।

२ मनुष्य अपनी इच्छा से जो मार्ग भी ग्रहण करता है चाहे वह भलाई का मार्ग हो या बुराई का, अल्लाह उसी को उस के लिए आसान और सुगम कर देता है। उस की समस्त प्राकृतिक शक्तियों और यथासम्भव बाह्य कारण-समूह को भी उस के अधीन कर देता है और वह राह उस के लिए आसान कर दी जाती है।

३ अर्थात् आरम्भ से अन्त तक सब-कुछ अल्लाह ही का है। सारा मामला उसी के हाथ में है।

४ दे० सूरः अल-माइदः आयत ११९, अत-तौबः आयत १००; अल-मुजादलः आयत २२ और अल-बय्यिनः आयत ८। सूरः अज़-ज़ुहा आयत ५।

॰ इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

९३—अज़्-ज़ुहा

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अज़्-ज़ुहा' सूरः की पहली आयत से लिया गया है।

यह सूरः* मक्का में अवतीर्ण होने वाली अत्यन्त आरम्भिक सूरतों* में से है। आरम्भ में लोगों को वही आदेश दिये गये हैं जिन की उस समय ज़रूरत थी। रसूल को इस की शिक्षा दी गई है कि वह किस प्रकार अपने-आप को रिसालत* के महान कार्य के लिए तैयार करे। इस के साथ वास्तविकता के बारे में बुनियादी बातों की शिक्षा दी गई है और उन भ्रान्तियों का निषेध किया गया है जो वास्तविकता (Reality) के बारे में लोगों में पाई जाती थीं। और लोगों को आमन्त्रित किया गया है कि वे जीवन में वही नीति अपनायें जो उचित और वास्तविकता के अनुकूल हो। उन्हें नैतिकता के उन मूल नियमों का ज्ञान कराया गया है जिन के पालन करने में मानव का कल्याण है। आरम्भ काल में दिये गये दिव्य सन्देश वास्तव में छोटे-छोटे संक्षिप्त बोल हैं, जिन की भाषा अत्यन्त मधुर और साहित्यिक रंग लिये हुये है।

प्रस्तुत सूरः* और इस से पहले की सूरः (अल-लैल) में ईमान* वालों के लिए शुभ-सूचनायें हैं।

प्रस्तुत सूरः* में अल्लाह के लिए ख़र्च करने का उल्लेख स्पष्ट रूप से हुआ है और आगे आने वाली सूरः में स्पष्ट रूप से नमाज़* का उल्लेख हुआ है। वास्तव में यही दोनों चीज़ें धर्म और दूसरी समस्त भलाइयों का मूल स्रोत हैं।

नुबूवत* के आरम्भिक समय में कुछ दिनों के लिए वह्य* का सिलसिला बन्द हो गया था। नबी सल्ल० इस अवसर पर अत्यन्त उदास और विकल थे। विरोधी लोग कहने लगे कि मुहम्मद (सल्ल०) से उन का रब* विमुख हो गया। प्रस्तुत सूरः में अल्लाह ने आप (सल्ल०) को तसल्ली दी है कि आप का रब* आप को बे-सहारा नहीं छोड़ सकता, काफ़िरों* की बातों पर आप दुःखी न हों। क़सम के रूप में रात और दिन की निशानियों का उल्लेख किया गया कि जिस प्रकार रात के पश्चात् दिन आता है उसी प्रकार नुबूवत* का सूर्य भी पूर्ण प्रकाश के साथ चमकेगा। तंगी दूर होगी आसानी आयेगी। प्रस्तुत सूरः उन लोगों के लिए आश्वासन है जो किसी बिगड़े हुये वातावरण में सत्य का प्रचार करते हों और उन्हें क़दम-क़दम पर मुश्किलों और कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा हो।

इस सूरः में नबी सल्ल० को यह शुभ-सूचना भी दी गई है कि आप (सल्ल०) की हर हालत अगली पहली हालत से अच्छी होगी। इतिहास साक्षी है कि क़ुरआन की यह भविष्यवाणी पूरी हो कर रही। नबी सल्ल० और आप के साथी जो आरम्भ में तरह-तरह के संकटों का सामना कर रहे थे अन्त में विजय उन ही को प्राप्त हुई। आख़िरत* में जो अल्लाह का वादा और अधिक पूरा हो कर रहने वाला है।

सूरः* के अन्तिम भाग में अल्लाह ने अपने उन उपकारों का उल्लेख करते हुए जो उस की ओर से नबी सल्ल० पर हुये हैं कुछ नैतिक आदेश दिये हैं।

---

* इन के अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अज़्-ज़ुहा

(मक्का में उतरी — आयतें* ११)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
وَالضُّحٰى ۝ وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰى ۝ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ۝ وَلَلْاٰخِرَةُ
خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى ۝ وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى ۝ اَلَمْ
يَجِدْكَ يَتِيْمًا فَاٰوٰى ۝ وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى ۝ وَوَجَدَكَ
عَآئِلًا فَاَغْنٰى ۝ فَاَمَّا الْيَتِيْمَ فَلَا تَقْهَرْ ۝ وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ ۝
وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ۝

क़सम है दिन चढ़े की ○

और रात की जब उस का सन्नाटा छा जाये, ○

तुम्हारे रब* ने न तो तुम्हें छोड़ा ही है और न बेज़ार हुआ है[1] ○ निश्चय ही बाद में आने वाली तुम्हारे लिए पहले वाली से उत्तम है,[2] ○ जल्द ही तुम्हारा रब* तुम्हें देगा इतना कि तुम राज़ी हो ५ जाओगे[3] । ○
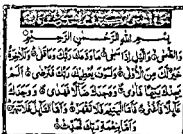
क्या ऐसा नहीं कि उस ने तुम्हें यतीम पाया तो ठिकाना दिया ? ○ और उस ने तुम्हें बेराह पाया तो राह दिखाई[4] ? ○ और उस ने तुम्हें निर्धन पाया तो धनवान् बना दिया ? ○

तो जो यतीम (अनाथ) हो उस पर ज़ोर न दिखाना,[5] ○ और जो माँगने वाला हो उसे १० झिड़कना मत ○ और जो तुम्हारे रब* का एहसान है उस की चर्चा करना । ○

---

१ नुबूवत* के आरम्भिक समय में कुछ दिनों के लिए वह्य* का सिलसिला बन्द हो गया था। प्रारम्भिक आयतों में आप को तसल्ली दी गई है कि आप के रब* ने आप को छोड़ा नहीं है। काफ़िरों* की बातों से आप दुःखी न हों। दिन के उजाले के पश्चात् रात का आना यदि अल्लाह की अप्रसन्नता और रुष्टता का प्रमाण नहीं है तो वह्य* के कुछ दिन रुक जाने से यह कैसे समझ लिया गया कि अल्लाह अपने रसूल* से रूठ गया है। रात छा जाने के बाद दिन आता है इसी प्रकार थोड़े अन्तर (Interval) के पश्चात् नुबूवत* का सूर्य भी चमक उठेगा। तंगी के बाद कुशादगी पैदा होगी। हमारा रब* हमें किसी समय नहीं भूलता वह कभी हमारी दुनिया में दिन लाता है ताकि हम दिन के प्रकाश में काम करें और कभी वह रात लाता है ताकि रात्रि के शान्तिपूर्ण वातावरण में हमें आराम मिले। जब हमारा रब* जन-साधारण की ज़रूरतों का इतना ख़याल रखता है तो फिर वह अपने रसूल* को कैसे बे-सहारा छोड़ सकता है।

इस आयत से ईसाइयों की इस धारणा का निषेध होता है कि अल्लाह कभी-कभी अपने रसूलों* को छोड़ देता है (दे० Mark 15 : 34)।

२ अर्थात् आप (सल्ल०) के मामले को अल्लाह ने विकासोन्मुख रखा है। आप (सल्ल०) की हर हालत अपनी पहली हालत से अच्छी होगी।

३ अर्थात् आगे आप (सल्ल०) पर अल्लाह के ऐसे उपकार होने वाले हैं और आप (सल्ल०) को दुनिया और आख़िरत* में ऐसी नेमतें प्रदान की जायेंगी कि आप (सल्ल०) प्रसन्न हो जायेंगे।

४ आप (सल्ल०) यतीम थे अल्लाह ने आप को ठिकाना दिया, इस का अर्थ यह नहीं होता कि कुछ दिन तक आप मारे-मारे फिरे हैं। बल्कि आशय यह है कि आप को यतीमी की हालत में जो ठिकाना मिला वह अल्लाह ही की कृपा से मिला। इसी प्रकार आप को जो सच्चाई और सत्य-मार्ग का ज्ञान प्राप्त हुआ वह अपने-आप नहीं बल्कि अल्लाह ही की ओर से प्राप्त हुआ।

५ जिस तरह अल्लाह ने उस समय जब कि आप यतीम थे आप पर दया की है उसी प्रकार आप भी यतीमों और अनाथों के साथ अच्छा व्यवहार करें।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

९४--अल-इनशिराह

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अल-इनशिराह' सूरः की पहली आयत* से लिया गया है। सूरः के विषय से इस नाम का गहरा सम्पर्क है।

प्रस्तुत सूरः* की गणना मक्का में उतरने वाली प्रारम्भिक सूरतों में होती है, परन्तु सूरः की वार्ता से ऐसा प्रतीत होता है कि यह सूरः हिजरत* के पश्चात् अवतीर्ण हुई है। जब कि इस्लाम* को प्रभावपूर्ण अधिकार प्राप्त हो चुका था।

प्रस्तुत सूरः* से इस से पहले की सूरः (अज़-ज़ुहा) के विषय पर प्रकाश पड़ता है। पिछली सूरः में जिन बातों का वादा किया गया था उन की पूर्ति का उल्लेख प्रस्तुत सूरः में हुआ है। पिछली सूरः में नबी सल्ल० को यह सूचना दी गई थी कि आप (सल्ल०) की पिछली हालत पहली से अच्छी होगी। इस सूरः में बताया गया है कि अल्लाह ने आप (सल्ल०) को अपने मामले में सफलता प्रदान कर के आप के बोझ को हल्का कर दिया। आप (सल्ल०) की एक-एक कठिनाई और मुश्किल को आसान किया। एक समय था कि चारों ओर फैली हुई गुमराही के कारण आप घुटे जा रहे थे अल्लाह् ने उस घुटन को दूर किया। आप को वह ज्ञान, विश्वास और प्रकाश प्रदान किया जिस के बिना सत्य-मार्ग पर दृढ़तापूर्वक चलना सम्भव न था। समस्त संकोचों और संशयों को दूर कर के आप के हृदय के लिए शीतलता और परितोष की सामग्री संचित कर दी गई। प्रत्येक अवसर पर अल्लाह ने आप की सहायता की और आप (सल्ल०) के बोझ को हल्का किया। विजय सत्य की हुई। आप का सम्पूर्ण जीवन इस बात का साक्षी है कि किस प्रकार अल्लाह ने कठिनाइयों और मुश्किलों में से आप (सल्ल०) के लिए आसानी पैदा की।

प्रस्तुत सूरः* में उन लोगों के लिए बड़ी शिक्षा है जो धर्म के मार्ग में कठिनाइयों और आपत्तियों का मुक़ाबला कर रहे हों। उन्हें ज्ञात होना चाहिए कि यदि वे अल्लाह के शुभ-सन्देश को लोगों तक पहुँचाना और संसार को गुमराही के अन्धकार से निकालना चाहते हैं तो अल्लाह उन का अवश्य सहायक होगा। उस की सहायता उन्हें प्राप्त होगी और वे अपने ध्येय में सफल होंगे।

सूरः* के अन्त में यह हुक्म दिया गया है कि जब अल्लाह की डाली हुई ज़िम्मेदारियों को पूरा करके कुछ फ़ुरसत मिले तो अल्लाह की याद और उस की इबादत* में लग जाना चाहिए। अल्लाह का स्मरण और उस की ओर रुजू करना ही जीवन का अन्तिम लक्ष्य और अन्तिम अर्थ है। इस के अतिरिक्त अल्लाह की याद और उस के स्मरण से मनुष्य को वह शक्ति प्राप्त होती है जिस के बिना वह सत्य-मार्ग में पेश आने वाली कठिनाइयों और आपदाओं का मुक़ाबला नहीं कर सकता। फिर अल्लाह की याद, नमाज़* और सब्र ऐसी चीज़ें हैं जिस से आदमी के अन्तःकरण की संकीर्णता दूर होती है और समस्त आन्तरिक बाधायें और रुकावटें दूर हो जाती हैं।

---

* इस प्रकार के शब्दों के अर्थ परिशिष्ट में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अल-इनशिराह

(मक्का में उतरी — आयतें* ८)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۝ وَوَضَعْنَا عَنكَ وِزْرَكَ ۝ الَّذِي
قَضَ ظَهْرَكَ ۝ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ۝ فَإِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝ إِنَّ
الْعُسْرِ يُسْرًا ۝ فَإِذَا فَرَغْتَ فَانصَبْ ۝ وَإِلَىٰ رَبِّكَ فَارْغَب ۝

क्या ऐसा नहीं कि हम ने तुम्हारा सीना खोल दिया,[1] ○ और तुम पर से तुम्हारा बोझ उतार दिया[2] ○ जो तुम्हारी कमर तोड़े डाल रहा था; ○ और ऊँचा कर दिया तुम्हारा ज़िक्र[3] ! ○

५ तो निश्चय ही कठिनाई के साथ आसानी है; ○ निश्चय ही कठिनाई के साथ आसानी है;[4]

तो जब तुम फ़ुरसत पाओ, तो परिश्रम करो[5] ○ और अपने रब* की ओर ल लगाओ[6] । ○

---

१ सत्य-मार्ग पर दृढ़तापूर्वक चलने के लिए जिस संकल्प और जिस सूझ-बूझ और ज्ञान की आवश्यक थी वह सब-कुछ तुम्हें प्रदान की गई। वह अवस्था जिस की व्यंजना इस आयत में "सीना खोल देने" शब्दों में की गई है वह अवस्था ईमान* की पूर्णता से प्राप्त होती है। ईमान* की पूर्णता से मनुष्य को स का ज्ञान प्राप्त होता है। फिर उसे सत्य में वह आनन्द मिलने लगता है जिस का वर्णन शब्दों द्वारा सम्भ नहीं है। उस की आँखें खुल जाती हैं उस का सारा भय और संकोच दूर हो जाता है। उसे अपने रब* पूर्ण विश्वास और भरोसा हो जाता है। वह उसी का आश्रय लेता है और पूर्णरूप से सत्य पर जम जाता

२ अर्थात् लोगों की गुमराही से तुम अपनी दया-भावना और अनुकम्पा के कारण अत्यन्त दुःखी थे। तु चिन्ता थी कि भटके हुये और अपने रब* को भूले हुये लोग सीधे मार्ग पर कैसे आयेंगे, यह चिन्ता तुम्ह लिए एक बड़ा बोझ थी जो तुम्हारी कमर तोड़े डाल रही थी। अल्लाह ने मार्ग-दर्शन के मामले को आस किया। सत्य के प्रचार की राहें खुलीं, सत्य को प्रभावपूर्ण अधिकार प्राप्त हुआ, इस प्रकार अल्लाह ने तुम्ह बोझ को हल्का कर दिया।

३ ज़िक्र ऊँचा करने का अर्थ यह है कि आप (सल्ल०) को दोनों लोक में सच्ची ख्याति प्रदान की। सदैव आ का नाम आदर के साथ लिया जायेगा। आप का सन्देश संसार के कोने-कोने में फैलेगा और आप का न ऊँचा होगा।

४ अतः मनुष्य को कठिनाइयों में अधीर और निराश नहीं होना चाहिए। तुम स्वयं अपने हाल पर वि करो कि तुम्हें किन-किन मुश्किलों और कठिनाइयों का सामना करना पड़ा परन्तु अल्लाह की मदद तुम्हारे स रही। वह कठिनाइयों में से तुम्हारे लिए आसानियाँ पैदा करता रहा। और तुम अपने महान् उद्देश्य में सफल हु

'सीना खुल जाना' जिस का पहली आयत में उल्लेख हुआ है स्वयं आसानी की पहली मंज़िल है। जै कि हज़रत मूसा अ० की दुआ से इस पर प्रकाश पड़ता है। हज़रत मूसा अ० ने अपने रब* से दुआ थी: रब*! मेरा सीना खोल दे और मेरे काम को मेरे लिए सहज कर दे। और मेरी ज़बान की गिरह खोल (दे० सूरः ता० हा० आयत २५-२७)।

५ अर्थात् जब लोगों को समझाने-बुझाने और दूसरे सेवा-कार्य आदि ज़रूरी कामों से फ़ुरसत मिले ज़्यादा-से-ज़्यादा अपने को अल्लाह की उपासना और इबादत* में लगाओ। और इस राह में जहाँ तक सके मेहनत और परिश्रम करो।

फिर अब जब कि तुम्हारा बोझ हल्का हो गया है, दीन* को प्रभुत्वपूर्ण अधिकार मिल गया है तु ज़्यादा-से-ज़्यादा अल्लाह की ओर प्रवृत्त होना चाहिए। दे० सूरः अन-नस्र आयत ३।

६ अर्थात् एकाग्र-चित्त और मनोयोग के साथ अपने रब* से लौ और आस लगाओ। उस का ज्ञान स्मरण ही जीवन की सच्चाई है। सब से महान् और अन्तिम कार्य यही है कि मनुष्य प्रेम-प्रेरित हो कर की ओर पलटे। उस का ज्ञान और ध्यान ही अपने जीवन की पूर्णता है। केवल तर्क द्वारा हम उसे न जान सकते और अन्तर्ज्ञान की प्राप्ति प्रेम के बिना सम्भव नहीं।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

९५—अत-तीन

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अत-तीन' सूरः की पहली आयत* से लिया गया है।

यह सूरः मक्का में उतरने वाली अत्यन्त आरम्भिक सूरतों में से है।

अल्लाह लोगों को उन के अच्छे-बुरे कर्मों का बदला देगा। क़ियामत* अवश्य आयेगी जब कि लोग अपने कर्मों का पूरा-पूरा बदला पायेंगे। यही प्रस्तुत सूरः का केन्द्रीय विषय है। इस की पुष्टि के लिए सूरः के आरम्भ में क़सम के रूप में चार प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं[१]। इन चारों प्रमाणों या गवाहियों से संकेत इतिहास की उन महत्वपूर्ण घटनाओं की ओर है जिन से यह बात पूर्ण रूप से सिद्ध होती है कि अल्लाह लोगों को उन के कर्मों का बदला देता है।

इस से पहले की दो सूरतों में उन ज़िम्मेदारियों का उल्लेख हुआ है जो नबी सल्ल० पर डाली गई थीं। और उन उद्देश्यों का उल्लेख हुआ है जिन के लिए हज़रत इबराहीम अ० ने अपनी औलाद को मक्का में आबाद किया था और वहाँ अल्लाह के घर काबः का निर्माण किया था। प्रस्तुत सूरः में उन निशानियों की ओर संकेत किया गया है जो इस पवित्र नगर में प्रकट हुई। इस वास्तविकता का उल्लेख स्पष्ट रूप से प्रस्तुत सूरः में हुआ है कि अल्लाह लोगों के बीच अदालत करता है। उन के बीच एक गरोह के बाद दूसरा गरोह खड़ा करता है और उसे अपनी अमानत सौंपता है। एक जाति यदि तिरस्कृत होती है तो दूसरी को श्रेष्ठता प्रदान की जाती है और यह सब-कुछ इस लिए होता है कि हर एक को उस का बदला मिल जाये।

प्रस्तुत सूरः* से हज़रत मुहम्मद सल्ल० की नुबूवत* की भी पुष्टि होती है। अल्लाह ने अपने नियम के अनुसार यहूद की सरकशी के कारण उन से अपनी अमानत छीन ली और उसे हज़रत मुहम्मद के अनुयायियों को सौंप दिया और उन से अपनी बन्दगी का वादा लिया।

प्रस्तुत सूरः* से मालूम होता है कि मनुष्य जब स्वयं नीचे गिरना चाहता है तो अल्लाह भी उसे निकृष्टतम धरातल पर पहुँचा देता है। इस के बाद भी मनुष्य के लिए इस का अवसर शेष रहता है कि वह सँभले और तौबः करके उस गड्ढे से निकल आये जिस में वह स्वयं गिरा है। यदि वह अपने रब* की ओर पलटता है तो अल्लाह भी उसे अक्षय पुरस्कार प्रदान करेगा।

---

१ प्रमाण के रूप में सूरः के आरम्भ में चार स्थानों का उल्लेख किया गया है जिन का सम्बन्ध इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाओं से है। ये चारों स्थान क्रमशः ये हैं: तीन, ज़ैतून, तूर सीनैन और शान्तिपूर्ण भूमि (मक्का)। इस सूरः के प्रारम्भिक भाग से तौरात* के एक स्थान का स्मरण होता है: "ख़ुदावन्द सीना (तूर सीनीन) से आया और शईर (तीन) से उन पर प्रकट हुआ, फ़ारान के पर्वत (मक्का का पर्वत) से आलोकित हुआ और कुदस की पहाड़ियों (ज़ैतून पर्वत) से आया। उस के दाहिने हाथ में उन के लिए अग्निमय धर्म-विधान (Fiery law) था।" (Deu 33:2) ख़ुदावन्द के आने और प्रकट होने का अर्थ है उस की अदालत का ज़ाहिर होना। तौरात* के इस उल्लेख से भी नबी सल्ल० की नुबूवत* की पूर्ण रूप से तसदीक़ होती है। 'कुदस की पहाड़ियों से आया' यह वाक्य तौरात* के अरबी अनुवाद में मिलता है। साधारणतः तौरात* के अनुवादों में इस के स्थान पर जो वाक्य मिलता है उस का अर्थ इस से भिन्न है।

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अत-तीन

(मक्का में उतरी — आयतें* ८)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

क़सम है तीन की
और ज़ैतून की, ○
और तूर सीनीन की, ○
और इस शान्तिपूर्ण (और भय रहित) भूमि
की;' ○
.निश्चय ही हम ने मनुष्य को अच्छी-से-अच्छी
कृति का बनाया' ○ फिर उसे नीचे-से-नीचे गिराते
चले गये, ○ हां परन्तु जिन लोगों ने भले काम किये उन के लिए तो ऐसा बदला है जि
का सिलसिला कभी न टूटेगा' । ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
وَالتِّيْنِ وَالزَّيْتُوْنِ ۝ وَطُوْرِ سِيْنِيْنَ ۝ وَهٰذَا الْبَلَدِ الْاَمِيْنِ ۝
لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْٓ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ ۝ ثُمَّ رَدَدْنٰهُ اَسْفَلَ
سٰفِلِيْنَ ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ
مَمْنُوْنٍ ۝ فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّيْنِ ۝ اَلَيْسَ اللّٰهُ
بِاَحْكَمِ الْحٰكِمِيْنَ ۝

---

१ 'तीन' से अभिप्रेत या तो जूदी पर्वत है या उस का निकटवर्ती कोई और पर्वत है। यहाँ तीन (इंजीर, की पैदावार अधिक थी। ज़ैतून वही पर्वत है जिस पर हजरत मसीह अ० ने बार-बार प्रार्थनायें की हैं और जिस का उल्लेख इंजील में कई स्थानों पर हुआ है। 'तूर सीनीन' (तूर सीना) भी प्रसिद्ध स्थान है। तौरात में इसे कहीं 'सीना' कहा गया है और कहीं पर 'सीनीम' आया है। 'सीनीन' और 'सीनीम' वास्तव में बहु-वचन का रूप है 'शान्तिपूर्ण भूमि' से अभिप्रेत मक्का है। इन चारों स्थानों से (जिन की क़सम प्रस्तुत सूरः में खाई गई है) बदला दिये जाने के महत्वपूर्ण घटनाओं का सम्बन्ध है। इन घटनाओं से इस की पुष्टि होती है कि अल्लाह लोगों को उन के कर्मों के अनुसार बदला देता है।

मौलाना फ़राही के विचार में 'तीन' वह पहला स्थान है जहाँ अल्लाह की ओर से प्रतिकार और दंड का मामला पेश आया है। हज़रत आदम अ० ने जब उस प्रतिज्ञा को भुला दिया जो उन्हों ने अपने रब* से की थी तो अल्लाह उन से अप्रसन्न हुआ और जन्नत* का लिबास उन से छिन गया फिर जब उन्हों ने तौबः की तो अल्लाह ने उन्हें क्षमा कर दिया और इस बात का वादा किया कि उन्हें मार्ग-दर्शन से सम्मानित किया जायेगा, जो लोग अल्लाह के दिखाये हुये मार्ग पर चलेंगे उन्हें उन का रब* बदला प्रदान करेगा। तीन पर्वत के निकट दूसरी घटना हज़रत नूह अ० के समय में घटी। यही वह स्थान है जहाँ अल्लाह ने ज़ालिमों को तबाह किया और अपने नेक बन्दों को तूफ़ान के अज़ाब से बचा लिया। इन घटनाओं के अतिरिक्त इंजीर के वृक्ष से यों भी मनुष्य शिक्षा ग्रहण कर सकता है। हज़रत मसीह अ० ने भी इंजीर के वृक्ष की मिसाल बयान की है। पतझड़ में उस की जो दशा होती है उसे अपने जाने और अपने समुदाय के दुर्भाग्य के समय से उपमा दी है। दे० Mtt. २१ : १८ १९; Mark. ११ : ११-१९; Luke १३ : ६-९। इंजीर के हरे-भरे होने की हालत को उन्हों ने अपने आगमन और अपने समुदाय के सौभाग्य और सफलता के समय से उपमा दी है। दे० Mtt. २४ः ३२-३३; Mark १३ : २८-२९; Luke २१ : २९-३१।

' ज़ैतून पर्वत पर अल्लाह ने यहूद* से अपनी 'शरीअत' (धर्म-विधान) छीन ली और यह अमानत हज़रत इबराहीम अ० के वंश की एक दूसरी शाखा को सौंपी। इस घटना का सम्पर्क हज़रत मसीह अ० के अन्तिम समय से है। यह वही घटना थी जिस की सूचना पहले दी जा चुकी थी : "जिस पत्थर को राज लोगों ने रद्द (निरस्त) किया वही कोने का पत्थर हो गया। यह ख़ुदावन्द की ओर से हुआ और हमारी दृष्टि में आश्चर्यपूर्ण है।" (दे० ज़बूर (Ps.) ११८ : २२-२३)। यहूद की सरकशी जब बहुत बढ़ गई तो हज़रत मसीह ने उन्हें मिसालें दे दे कर समझाया परन्तु वे मानने वाले कहाँ थे। आप ने कहा : "मैं तुम से सच कहता हूँ कि ख़ुदा की बादशाही (The kingdom of God) तुम से ले ली जायेगी और उस जाति को जो उस के फल लावे, दे दी जायेगी और जो इस पत्थर पर गिरेगा, टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा किन्तु जिस पर वह गिरेगा उस पीस डालेगा। (मत्ती २१ : ४३-४४)"। यह आसमानी बादशाही (शेष अगले पृष्ठ पर)

*इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

९६--अल-अलक़

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अल-अलक़' सूरः की दूसरी आयत* से लिया गया है।

यह सूरः* मक्का के अत्यन्त प्रारम्भिक समय में उतरी है बल्कि इस सूरः की प्रथम ५ आयतें* .क़ुरआन की वे आयतें* हैं जो नबी सल्ल० पर सब से पहले अवतीर्ण हुई हैं। नबी सल्ल० पर वह्य* का आरम्भ सच्चे स्वप्नों द्वारा हुआ। आप (सल्ल०) जो स्वप्न देखते वह तदनुरूप ज्यों-का-त्यों पूरा होता। फिर आप एकान्त में रहने लगे। मक्का नगर से बाहर पहाड़ की एक गुफा में, जिस का नाम हिरा था चले जाते और कई-कई रातें वहीं गुज़ारते। खाने की सामग्री जब समाप्त हो जाती तो घर आ कर फिर ले जाते और वहीं अपनी समझ-बूझ के अनुसार अल्लाह की याद और ध्यान में अपना समय बिताते। एक दिन अचानक वहाँ अल्लाह के भेजे हुये फ़िरिश्ते* हज़रत जिबरील अ० प्रकट हुये। उस समय इस सूरः की आरम्भिक पाँच आयतों का अवतरण हुआ। आयत ५ से आगे की आयतें भी अत्यन्त प्रारम्भिक समय की हैं।

इस सूरः से हमें .क़ुरआन पढ़ने का आदेश मिलता है। इस सूरः से मालूम होता है कि मनुष्य की सृष्टि ही व्यर्थ होती यदि वह .क़ुरआन जैसी नेमत पाने का अधिकारी न होता। अल्लाह ने यदि उसे सृष्टि की दृष्टि से उच्चता प्रदान की तो साथ ही उस ने मनुष्य के मार्ग-दर्शन का भी प्रबन्ध किया और उसे .क़ुरआन जैसी किताब प्रदान की।

पिछली सूरः* (अत-तीन) और प्रस्तुत सूरः में गहरा सम्पर्क है। पिछली सूरः में शान्तिपूर्ण भूमि (मक्का) का उल्लेख हुआ है जो वास्तव में अल्लाह की याद, सहानुभूति और दया का स्थान है। काबः* का निर्माण इन ही उद्देश्यों के अन्तर्गत हुआ था। इस के अतिरिक्त यह शान्तिपूर्ण भूमि अल्लाह की अदालत का चिह्न भी है जिस से इस बात की पुष्टि होती है कि अल्लाह अवश्य लोगों को उन के अच्छे-बुरे कर्मों का बदला देगा। प्रस्तुत सूरः और इस के बाद की दो सूरतों में .क़ुरआन और नमाज़* का उल्लेख हुआ है। नमाज़* अल्लाह की याद के लिए है। काबः* का निर्माण जिन उद्देश्यों के अन्तर्गत हुआ है उन ही उद्देश्यों के अन्तर्गत .क़ुरआन का अवतरण भी हुआ है (अल-बक़रः १२८-१२६; अन नम्ल ६१-६२) .क़ुरआन में भी जहाँ नमाज़* की ताकीद की गई है और अल्लाह के स्मरण को जीवन की परम सम्पत्ति अर्थात् सुख, शान्ति और परितोष का कारण बताया गया है वहीं अल्लाह के हक़ के बाद हमारा कर्तव्य यह ठहराया गया है कि हम परस्पर एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति रखें और आपस में एक-दूसरे के सहायक हों। प्रस्तुत सूरः में आयत १ से ८ तक वास्तव में भूमिका है उस वार्ता की जिस का उल्लेख आगे की आयतों में हुआ है।

---

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

२६ : १६०-१७५ — लूत अ० की जाति पर अल्लाह का अज़ाब आया। हज़रत लूत और आप के साथी बचा लिए गये।

३७ : १३३-१३८ — हज़रत लूत अल्लाह के पैग़म्बर थे। अल्लाह ने उन्हें और उन के घर वालों को अज़ाब से बचा लिया।

५४ : ३३-३६ — लूत की जाति ने अल्लाह के नबी को झुठलाया। उनके मेहमानों पर झपटे परन्तु अल्लाह के अज़ाब का शिकार हुए।

(१०) हज़रत याकूब अ०

२ : १३३ — हज़रत याकूब की वसीयत अपने बेटों को।

२ : १४० — हज़रत याकूब न यहूदी थे, न ईसाई।

४ : १६३ — हज़रत याकूब पर अल्लाह ने वह्य की।

३८ : ४५-४८ — हज़रत याकूब बड़ी कार्य-शक्ति रखने वाले, प्रतिभाशाली और भले लोगों में से थे।

(११) हज़रत यूसुफ़ अ०

१२ : ३-६ — हज़तर यूसुफ का स्वप्न।

१२ : ७-१५ — हज़रत यूसुफ के भाइयों ने उन्हें कुवें में ले जाकर डाला।

१२ : १६-१८ — भाइयों ने पिता के सामने झूठी रिपोर्ट दी कि यूसुफ को भेड़िया खा गया।

१२ : १९, २० — काफ़िले वाले हज़रत यूसुफ को मिस्र ले गये।

१२ : २१-२५ — अज़ीज़े मिस्र (मिस्र के अधिकारी पुरुष) की पत्नी ने हज़रत यूसुफ को फुसलाना चाहा।

१२ : २६-२९ — हज़रत यूसुफ के निरपराध होने पर गवाही।

१२ : ३०-३४ — अज़ीज़े मिस्र की पत्नी के विरुद्ध नगर में चर्चा और इस का तोड़।

१२ : ३५ — हज़रत यूसुफ जेल में।

१२ : ३६-४० — हज़रत यूसुफ ने जेल के दो साथियों के सामने तौहीद का सन्देश रख दिया।

१२ : ४१, ४२ — हज़रत यूसुफ ने जेल के साथियों के स्वप्न का अर्थ बताया।

१२ : ४३-४९ — बादशाह ने स्वप्न देखा, और हज़रत यूसुफ ने उसका अर्थ बताया।

१२ : ५०-५३ — बादशाह के सामने हज़रत यूसुफ का निरपराध होना साबित हो गया।

१२ : ५४-५७ — हज़रत यूसुफ को बादशाह ने अपना खास आदमी बना लिया।

१२ : ५८-६२ — हज़रत यूसुफ के भाई अनाज लेने मिस्र आये। उनके साथ हज़रत यूसुफ का व्यवहार।

१२ : ६३-६९ — भाइयों की दुबारा मिस्र की यात्रा।

१२ : ७०-७७ — एक भाई पर चोरी का आरोप और उसका पकड़ा जाना।

१२ : ७८-८३ — भाइयों की निष्फल सिफ़ारिश, स्वदेश को लौटना और पिता के सामने सफ़ाई।

१२ : ८४-८८ — हज़रत याकूब के हुक्म पर हज़रत यूसुफ की खोज में भाइयों की यात्रा।

१२ : ८९-९६ — भाइयों से हज़रत यूसुफ का परिचय और स्वदेश से बाप को बुलाना।

१२ : ९७-१०० — भाइयों के अपराध की माफ़ी और हज़रत यूसुफ के बचपन के स्वप्न का अर्थ।

सूरः* अल-अलक़

(मक्का में उतरी — आयतें* १९)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِيْ خَلَقَ ۝ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ
اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ ۝ الَّذِيْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۝ عَلَّمَ الْاِنْسَانَ
مَا لَمْ يَعْلَمْ ۝ كَلَّآ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَيَطْغٰٓى ۝ اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰى ۝ اِنَّ
اِلٰى رَبِّكَ الرُّجْعٰى ۝ اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يَنْهٰى ۝ عَبْدًا اِذَا صَلّٰى
اَرَءَيْتَ اِنْ كَانَ عَلَى الْهُدٰٓى ۝ اَوْ اَمَرَ بِالتَّقْوٰى ۝ اَرَءَيْتَ اِنْ
كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۝ اَلَمْ يَعْلَمْ بِاَنَّ اللّٰهَ يَرٰى ۝ كَلَّا لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ
لَنَسْفَعًا بِالنَّاصِيَةِ ۝ نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ۝ فَلْيَدْعُ نَادِيَهٗ
سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ۝ كَلَّا لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ

पढ़ो अपने रब* का नाम ले कर, जिस ने पैदा किया¹ ○ पैदा किया मनुष्य को एक लोथड़े से²।○ पढ़ो, और तुम्हारा रब* बड़ा ही उदार है,○ जिस ने क़लम द्वारा ज्ञान दिया,³ ○ ज्ञान दिया मनुष्य को उस चीज़ का जिसे वह नहीं जानता था। ○

कुछ नहीं, मनुष्य तो सरकशी करता है ○ इस से कि उस ने देखा कि वह पूर्णकाम हो गया⁴। ○ निस्सन्देह तुम्हारे रब* की ओर पलट कर जाना है⁵। ○ देखते हो उसे जो रोकता है ○ एक बन्दे को जब वह नमाज़* पढ़ता है⁶। ○ देखते हो यदि वह सीधे मार्ग पर होता ○ या (अल्लाह से) डर कर रहने को कहता...!⁷ ○ देखते हो यदि वह झुठलाता और मुँह मोड़ता है ○ क्या उस ने नहीं जाना कि अल्लाह देख रहा है? ○ कुछ नहीं, यदि वह (अपनी हरकत से) बाज़ न आया तो हम चोटी पकड़ कर घसीटेंगे ○ झूठी, और ख़ताकार चोटी ○ तो बुला ले वह अपनी सभा! ○ हम बुलाते हैं 'ज़बानियः'⁸ को। ○ कुछ नहीं, तुम उस का कहना न मानो। और सजदः* करो, और पास पहुँचो। ○

---

1. यदि मनुष्य को क़ुरआन प्रदान न किया जाता तो उस की दृष्टि ही व्यर्थ होती। दे० सूरः ५५ (अर-रहमान) आयत १-४।
2. माँ के पेट में मनुष्य गर्भ की प्रारम्भिक अवस्था में केवल एक लोथड़ा सा होता है फिर अल्लाह उसे [illegible], रूप आदि प्रदान करता है।
3. इस में संकेत इस बात की ओर है कि अल्लाह ने मनुष्य को लिखने-पढ़ने का ज्ञान दिया। [illegible] ज्ञान प्राप्त करता है, फिर क़लम के द्वारा ज्ञान का प्रचार भी होता है और रक्षा भी।
4. मनुष्य की बेपरवाही ही उसे सरकश और ज़ालिम बनाती है। यदि उसे अपनी मुहताजी का [illegible] यह बात उस के सामने हो कि उसे एक दिन अपने रब* के पास हाज़िर होना है तो फिर [illegible] नहीं हो सकता।
5. सूरः* के आरम्भ से यहाँ तक वास्तव में प्रस्तावना है उस आदेश की जो नमाज़* के बारे में [illegible] और उस व्यक्ति के मूर्ख और नीच ठहराने की जो नमाज़* का विरोधी है।
6. [illegible] करने से मालूम होता है कि यह संकेत अबू जह्ल की ओर है जो क़ाफ़िरों* का नेता था [illegible])। साधारणतः लोगों का विचार है कि नमाज़* से रोकने वाले व्यक्ति से संकेत अबू जह्ल की ओर है।
7. अर्थात् यदि वह सच्चाई को अपना लेता और नमाज़* से रोकने के बजाय लोगों को भलाई के [illegible] करने और उस की अवज्ञा से बचने को कहता तो क्या ही अच्छा होता।
8. 'ज़बानियः' का अर्थ पुलिस (Police) शब्द के अर्थ से मिलता-जुलता है। '[illegible]' [illegible] हैं जो अल्लाह के हुक्म से मुजरिमों को पकड़ कर ले जायेंगे और सज़ा देंगे।

* का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

९७—अल-क़द्र

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अल-क़द्र' सूरः की पहली आयत* से लिया गया है।

यह सूरः* मक्का में उतरने वाली अत्यन्त आरम्भिक सूरतों में से है।

सूरः अत्-तीन में शान्तिपूर्ण भूमि (मक्का) का उल्लेख हुआ है। इस के बाद निरन्तर तीन सूरतों— अल-अलक़, प्रस्तुत सूरः और इस के बाद आने वाली सूरः —में क़ुरआन का उल्लेख किया गया है। क़ाबः* से क़ुरआन का जो सम्बन्ध है वह विदित है। जिस ध्येय से क़ाबः* का निर्माण हुआ है ठीक उसी ध्येय के अन्तर्गत अल्लाह ने क़ुरआन उतारा है। इस प्रकार इन सूरतों में गहरा सम्पर्क पाया जाता है।

प्रस्तुत सूरः* में बताया गया है कि क़ुरआन 'क़द्र' वाली रात में उतरा है। यह एक शुभ रात है जिस में क़ुरआन उतरना आरम्भ हुआ। यह ऐसी रात है जो हज़ार महीनों से उत्तम है। इस दिव्य रात्रि का उल्लेख कर के अल्लाह ने हमारे समक्ष ऐसा प्रमाण प्रस्तुत किया है जिस से क़ुरआन के ईश्वरीय ग्रन्थ होने और नबी सल्ल० के सच्चे रसूल* होने की पुष्टि होती है। 'क़द्र' वाली रात के उल्लेख से मालूम हुआ कि अल्लाह बन्दों के मामलों की तदबीर करता और फ़िरिश्तों* और रूह को भेजता है तो फिर यदि उस ने लोगों की भलाई और मामलों का फ़ैसला करने के लिए अपनी किताब* उतारी और अपना नबी भेजा तो यह कौन-सी आश्चर्य की बात है।

'क़द्र' वाली रात शान्ति और सलामती की रात है। इस रात में मनुष्य की प्रकृति इस के लिए पूर्णतः तैयार होती है कि वह अलौकिक एवं दिव्य प्रकाश को ग्रहण कर सके। उन व्यक्तियों पर फ़िरिश्तों* और रूह का अवतरण होता है जो ग़ाफ़िल नहीं होते बल्कि अल्लाह के आगे पूर्ण रूप से झुके होते हैं। फ़िरिश्तों* के अवतरण के लिए ज़रूरी नहीं कि आदमी उन्हें अपनी आँखों से उतरते देखे बल्कि जिसे फ़िरिश्ते* स्पर्श करते हैं उस का हृदय अत्यन्त कोमल और नम्र हो जाता है। और उस की आँखें आँसू बहाने लगती हैं। ईमान* वालों के लिए सब से बड़ा सौभाग्य यह है कि वे इन शुभ घड़ियों में अल्लाह की इबादत में लगे हों। इस रात में शान्ति और दया-कृपा की वर्षा होती रहती है यहाँ तक कि उषा काल का उदय हो जाता है।

---

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अल-अलक़

(मक्का में उतरी — आयतें* १९)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ ۝ خَلَقَ الْإِنسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۝ اقْرَأْ وَرَبُّكَ الْأَكْرَمُ ۝ الَّذِي عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۝ عَلَّمَ الْإِنسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ۝ كَلَّا إِنَّ الْإِنسَانَ لَيَطْغَىٰ ۝ أَن رَّآهُ اسْتَغْنَىٰ ۝ إِنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الرُّجْعَىٰ ۝ أَرَأَيْتَ الَّذِي يَنْهَىٰ ۝ عَبْدًا إِذَا صَلَّىٰ ۝ أَرَأَيْتَ إِن كَانَ عَلَى الْهُدَىٰ ۝ أَوْ أَمَرَ بِالتَّقْوَىٰ ۝ أَرَأَيْتَ إِن كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۝ أَلَمْ يَعْلَم بِأَنَّ اللَّهَ يَرَىٰ ۝ كَلَّا لَئِن لَّمْ يَنتَهِ لَنَسْفَعًا بِالنَّاصِيَةِ ۝ نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ۝ فَلْيَدْعُ نَادِيَهُ ۝ سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ۝ كَلَّا لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِب ۩

पढ़ो अपने रब* का नाम ले कर,
जिस ने पैदा किया[1] ○
पैदा किया मनुष्य को एक लोथड़े से[2] ○
पढ़ो, और तुम्हारा रब* बड़ा ही उदार है, ○
जिस ने क़लम द्वारा ज्ञान दिया,[3] ○
ज्ञान दिया मनुष्य को उस चीज़ का जिसे वह नहीं जानता था। ○
कुछ नहीं, मनुष्य तो सरकशी करता है ○ इस से कि उस ने देखा कि वह पूर्णकाम हो गया[4] ○
निस्सन्देह तुम्हारे रब* की ओर पलट कर जाना है[5]। ○
देखते हो उसे जो रोकता है ○ एक बन्दे को जब वह नमाज़* पढ़ता है[6] ○
देखते हो यदि वह सीधे मार्ग पर होता ○ या (अल्लाह से) डर कर रहने को कहता…![7] ○
देखते हो यदि वह झुठलाता और मुँह मोड़ता है ○ क्या उस ने नहीं जाना कि अल्लाह देख रहा है ? ○
कुछ नहीं, यदि वह (अपनी हरकत से) बाज़ न आया तो हम चोटी पकड़ कर घसीटेंगे ○
—झूठी, और खताकार चोटी ○
तो बुला ले वह अपनी सभा ! ○ हम बुलाते हैं 'ज़बानियः'[8] को। ○
कुछ नहीं, तुम उस का कहना न मानो। और सजदः* करो, और पास पहुँचो। ○

---

१ यदि मनुष्य को क़ुरआन प्रदान न किया जाता तो उस की सृष्टि ही व्यर्थ होती। दे० आयत ४, सूरः अर-रहमान आयत १-४।

२ माँ के पेट में मनुष्य गर्भ की प्रारम्भिक अवस्था में केवल एक लोथड़ा सा होता है फिर अल्लाह उसे हाथ-पाँव, रूप आदि प्रदान करता है।

३ इस में संकेत इस बात की ओर है कि अल्लाह ने मनुष्य को लिखने-पढ़ने का ज्ञान दिया। लेखनी द्वारा मनुष्य ज्ञान प्राप्त करता है, फिर क़लम के द्वारा ज्ञान का प्रचार भी होता है और रक्षा भी।

४ मनुष्य की बेपरवाही ही उसे सरकश और ज़ालिम बनाती है। यदि उसे अपनी मुहताजी का एहसास हो और यह बात उस के सामने हो कि उसे एक दिन अपने रब* के पास हाज़िर होना है तो फिर वह कभी सरकश नहीं हो सकता।

५ सूरः* के आरम्भ से यहाँ तक वास्तव में प्रस्तावना है उस आदेश की जो नमाज़* के बारे में आगे दिया गया है और उस व्यक्ति के मूर्ख और नीच ठहराने की जो नमाज़* का विरोधी हो।

६ विचार करने से मालूम होता है कि यह संकेत अबू लहब की ओर है जो काफ़िरों* का नेता था (दे० सूरः अल-लहब)। साधारणतः लोगों का विचार है कि नमाज़* से रोकने वाले व्यक्ति से संकेत अबू जह्ल की ओर है।

७ अर्थात् यदि वह सच्चाई को अपना लेता और नमाज़* से रोकने के बजाय लोगों को अल्लाह के आदेशों का पालन करने और उस की अवज्ञा से बचने को कहता तो क्या ही अच्छा होता।

८ 'ज़बानियः' का अर्थ पुलिस (Police) शब्द के अर्थ से मिलता-जुलता है। 'ज़बानियः' से फ़िरिश्ते* हैं जो अल्लाह के हुक्म से सरकशों को पकड़ कर ले जायेंगे और सज़ा देंगे।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

९७—अल-क़द्र

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अल-क़द्र' सूरः की पहली आयत* से लिया गया है।

यह सूरः* मक्का में उतरने वाली अत्यन्त आरम्भिक सूरतों में से है।

सूरः अत-तीन में शान्तिपूर्ण भूमि (मक्का) का उल्लेख हुआ है। उस के बाद न्तर तीन सूरतों— अल-अलक़, प्रस्तुत सूरः और इस के बाद आने वाली सूरः में क़ुरआन का उल्लेख किया गया है। क़ाबः* से क़ुरआन का जो सम्बन्ध है विदित है। जिस ध्येय से काबः* का निर्माण हुआ है ठीक उसी ध्येय के तर्गत अल्लाह ने क़ुरआन उतारा है। इस प्रकार इन सूरतों में गहरा सम्पर्क या जाता है।

प्रस्तुत सूरः* में बताया गया है कि क़ुरआन 'क़द्र' वाली रात में उतरा है। ह एक शुभ रात है जिस में क़ुरआन उतरना आरम्भ हुआ। यह ऐसी रात जो हज़ार महीनों से उत्तम है। इस दिव्य रात्रि का उल्लेख कर के अल्लाह ने मारे समक्ष ऐसा प्रमाण प्रस्तुत किया है जिस से क़ुरआन के ईश्वरीय ग्रन्थ होने और नबी सल्ल० के सच्चे रसूल* होने की पुष्टि होती है। 'क़द्र' वाली रात के उल्लेख मालूम हुआ कि अल्लाह बन्दों के मामलों की तदबीर करता और फ़िरिश्तों* और रूह को भेजता है तो फिर यदि उस ने लोगों की भलाई और मामलों का फ़ैसला करने के लिए अपनी किताब* उतारी और अपना नबी भेजा तो यह कौन-सी आश्चर्य की बात है।

'क़द्र' वाली रात शान्ति और सलामती की रात है। इस रात में मनुष्य की प्रकृति इस के लिए पूर्णतः तैयार होती है कि वह अलौकिक एवं दिव्य प्रकाश को ग्रहण कर सके। उन व्यक्तियों पर फ़िरिश्तों* और रूह का अवतरण होता है जो ग़ाफ़िल नहीं होते बल्कि अल्लाह के आगे पूर्ण रूप से झुके होते हैं। फ़िरिश्तों* के अवतरण के लिए ज़रूरी नहीं कि आदमी उन्हें अपनी आँखों से उतरते देखे बल्कि जिसे फ़िरिश्ते* स्पर्श करते हैं उस का हृदय अत्यन्त कोमल और नम्र हो जाता है। और उस की आँखें आँसू बहाने लगती हैं। ईमान* वालों के लिए सब से बड़ा सौभाग्य यह है कि वे इन शुभ घड़ियों में अल्लाह की इबादत में लगे हों। इस रात में शान्ति और दया-कृपा की वर्षा होती रहती है यहाँ तक कि उषा काल का उदय हो जाता है।

---

* इस का अर्थ आख़िर में

सूरः* अल-क़द्र

(मक्का में उतरी — आयतें* ५)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بسم الله الرحمن الرحيم
انا انزلنه في ليلة القدر ۝ وما ادرىك ما ليلة القدر ۝
ليلة القدر خير من الف شهر ۝ تنزل الملئكة والروح فيها
باذن ربهم من كل امر ۝ سلم هي حتى مطلع الفجر

हम ने इसे[1] क़द्र वाली रात में उतारा है[2]।○ और तुम्हें क्या मालूम कि क़द्र वाली रात क्या है।○ क़द्र वाली रात उत्तम है हज़ार महीनों से।○ उस में फ़िरिश्ते* और रूह[3] अपने रब* की अनुज्ञा से उतरते होते हैं, प्रत्येक कार्य के संबन्ध से।○ सलामती-ही-सलामती है वह उषा-काल के उदय होने तक।○

---

[1] अर्थात् क़ुरआन* को।

[2] अर्थात् क़ुरआन* का अवतरण एक शुभ और दिव्य रात्रि में हुआ है। इस रात का बड़ा महत्व है यह [illegible]त है जिस में उन बातों का फ़ैसला होता है जो ज्ञान और हिकमत पर अवलम्बित होती है और जिन [illegible]यों की भलाई होती है। दुनियाँ के मामलों का फ़ैसला इसी रात में होता है (दे० आयत ४, सूरः [illegible]ख़ान आयत ३-५)। इसी रात में वह महान् ग्रन्थ उतरना आरम्भ हुआ जो अरब ही के लिए नहीं सम्पूर्ण संसार के लिए कल्याणकारी और दिव्य ज्योति है। जिस के द्वारा संसार के सभी लोग अपने [illegible] को सफल बना सकते हैं। जिस के मानने से इन्कार करना इतना बड़ा अपराध है जो किसी प्रकार [illegible] नहीं हो सकता। क़ुरआन का इन्कार वास्तव में अल्लाह की हिकमत* का इन्कार है। उस महान् [illegible] का इन्कार है जिस के अन्तर्गत इस जगत की सृष्टि हुई है।

[illegible] वह रात जिस में क़ुरआन उतरा है साधारण रात नहीं है। वह रात तो हज़ार महीनों से उत्तम है। [illegible]ज़ार महीनों में भी मानव-कल्याण के लिए वह काम नहीं हुआ जो इस एक रात में हुआ। इस दिव्य [illegible]त्र उल्लेख इस लिए किया गया ताकि लोग भली-भाँति समझ लें कि अल्लाह लोगों के मामलों को [illegible] करता है, इस के लिए अपने फ़िरिश्तों* और रूह को भेजता है। फिर यदि उस ने रसूल* भेजा और [illegible] उतारी तो इस में आश्चर्य की कौन सी बात है।

[3] 'रूह' से संकेत हज़रत जिबरील अ० की ओर है, यह भी सम्भव है कि इस से अभिप्रेत हज़रत जिब्रील [illegible] अतिरिक्त कोई और भी हो।

[illegible]० सूरः अद-दुख़ान आयत ३-५।

* आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

९८--अल-बय्यिनः

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अल-बय्यिनः' सूरः की पहली आयत* से लिया गया है।

यह सूरः* कब अवतीर्ण हुई? इस के बारे में विद्वानों के बीच मत-भेद है। कुछ लोगों के विचार में यह सूरः* मक्का के अन्तिम काल में उतरी है। कुछ लोगों के विचार में यह सूरः हिजरत* के पश्चात् मदीना में अवतीर्ण हुई है।

प्रस्तुत सूरः* उन लोगों के जवाब में है जिन की माँग यह थी कि एक किताब* प्रत्यक्ष रूप से आकाश से उतरे जिसे वे अपनी आँखों से देख और पढ़ सकें, यह ऐसी किताब* हो जो मनुष्य के अपने हाथ की लिखी हुई न हो। वे कहते थे कि यदि ऐसी किताब आ गई तो हम अवश्य मुहम्मद (सल्ल०) को अल्लाह का रसूल* मान लेंगे। नबी सल्ल० से यह माँग जिन लोगों की ओर से की जा रही थी वे वही लोग थे जिन्हों ने कुफ़्र* की नीति अपना रखी थी। उन में मुशरिक* भी थे और वे लोग भी जिन्हें इस से पहले अल्लाह की ओर से किताब* मिल चुकी थी। इन को उत्तर देते हुये इस सूरः में कहा गया है कि इस से पहले प्रत्यक्ष रूप से अल्लाह की किताब* उन्हें मिल चुकी है। तौरात* लिखित रूप में ही प्रदान की गई थी फिर आख़िर क्यों बनी इसराईल* सीधे मार्ग से विचलित हुये। इस से मालूम हुआ कि सत्य को पाने के लिए मनुष्य को स्वयं अल्लाह के नबी की शिक्षाओं और उस के जीवन-चरित्र आदि पर विचार करना चाहिए।

किताब* वालों को अल्लाह ने अपनी निशानी दिखाई थी उन्हें लिखित रूप में तौरात* प्रदान हुई थी फिर भी वे अपनी सरकशी के कारण गरोहों में बँट गये। हालाँकि उन्हें ऐसी चीज़ का आदेश मिला था जो उन्हें जोड़ने वाली थी। उन्हें तौहीद* की शिक्षा दी गई थी और इस बात का हुक्म उन्हें मिला था कि नमाज़* क़ायम करें और ज़कात देते रहें। नमाज़* और ज़कात* सत्य-धर्म का मूल आधार हैं और दोनों तौहीद की ही शाखायें हैं।

प्रस्तुत सूरः* में खोल कर बता दिया गया है कि सब से बुरे वही हैं जिन्हों ने कुफ़्र* की राह अपनाई, चाहे वे किताब* वालों में से हों या मुशरिकों* में से हों। इन का ठिकाना दोज़ख़* है जिस की आग में ये सदैव जलते रहेंगे। अल्लाह की दृष्टि में सब से अच्छे वे लोग हैं जिन्हों ने कुफ़्र* की नीति नहीं अपनाई बल्कि ईमान* लाये, तौहीद* (एकेश्वरवाद) को अपना धर्म बनाया और अपने जीवन में अच्छे काम किये। न अल्लाह के हक़ को भुलाया और न उस के बन्दों का हक़ मारा। नमाज़* भी क़ायम की और ज़कात* भी देते रहे। अल्लाह इन से राज़ी है और ये भी अपने रब* से राज़ी हैं। इन का ठिकाना जन्नत* है जहाँ ये सदैव सुख और आनन्द में रहेंगे। इस लिए कि ये दुनियाँ में बेपरवाह हो कर नहीं रहे बल्कि अपने रब* से डरते रहे।

---

* इसका अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अल-बय्यिनः

(मदीना में उतरी — आयतें* ८)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ مُنْفَكِّيْنَ
حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ۙ رَسُوْلٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتْلُوْا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ۙ
فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ۗ وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْۢ
بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ۗ وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ
لَهُ الدِّيْنَ ۙ حُنَفَآءَ وَيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوا الزَّكٰوةَ وَذٰلِكَ
دِيْنُ الْقَيِّمَةِ ۗ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ
فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۗ اُولٰٓئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ۗ اِنَّ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ۗ
جَزَآؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَآ اَبَدًا ۗ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ۗ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهٗ

जिन लोगों ने कुफ़्र* किया है किताब* वालों और मुश्रिकों* में से वे तो बाज़ आते नहीं जब तक कि उन के पास खुली हुई दलील न आ जाये[1] ○ अल्लाह का एक रसूल* हो जो पवित्र सहीफ़ों* को पढ़ कर सुनाये ○ जिन में ठोस और सिद्ध आदेश लिखे हों[2] । ○

और जिन लोगों को किताब* दी गई थी उन में जो फूट पड़ी है वह उन के पास खुली हुई दलील आ जाने के बाद ही तो पड़ी है[3] ।○

और उन्हें हुक्म इसी का तो दिया गया था कि अल्लाह की इबादत* करें, दीन* को उसी के लिए ख़ालिस कर के, एकाग्र हो कर, और नमाज़* क़ायम रखें और ज़कात* दिया करें[4] । यह है ठोस और सिद्ध वाला दीन[5] ।○

निस्सन्देह जिन लोगों ने कुफ़्र* किया है किताब* वालों और मुश्रिकों* में से वे जहन्नम* की आग में होंगे। जहां वे सदा रहेंगे। यही लोग दुष्टतम जन हैं। ○

निस्सन्देह जो लोग ईमान* लाये और भले काम किये[6] वही लोग सर्वश्रेष्ठ जन हैं।○ उन का बदला उन के रब* के यहां सदा-बहार बाग़ हैं, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, जिन में वे सदैव अनन्त तक रहेंगे। अल्लाह उन से राज़ी और वे अल्लाह से राज़ी। यह उस के लिए है जो अपने रब* से डरे। ○

---

१ यहां मुश्रिकों* और किताब* वालों की उस नीति की ओर संकेत है जो उन्हों ने नबी सल्ल० के विरुद्ध अपना रखी थी। वे कहते थे कि हम तो आप को अल्लाह का भेजा हुआ रसूल* नहीं मान सकते जब तक आप आसमान से हमारे लिए ऐसी किताब* न उतार लायें जिसे हम स्वयं पढ़ सकें (दे० सूरः अन्-निसा आयत १५३; बनी इसराईल आयत ९३; अल-मुद्दस्सिर आयत ५२)।

२ अर्थात् अल्लाह की ओर से कोई रसूल* ऐसी किताब ले कर आये जो मनुष्य के हाथ की लिखी हुई न हो। जो आसमान से लिखी-लिखाई उतरी हो। वह उस किताब* को पढ़ कर सुनाये और उस में ठोस आदेश हों जिन के बारे में कोई सकोच न हो। जब तक ऐसा नहीं हो जाता हम नहीं मान सकते।

३ मतलब यह है कि यदि ईमान* लाने के लिए यह ज़रूरी है कि खुली हुई दलील सामने आ जाये तो आख़िर अल्लाह की ओर से लिखित रूप में तौरात* पाने के बाद लोगों ने कुफ़्र* की नीति क्यों अपनाई। तौहीद* को छोड़ कर वे कुफ़्र* में क्यों पड़े। अल्लाह की खुली निशानी देख लेने के बाद भी उन्हों ने क्यों सरकशी की और विभिन्न टोलियों में बँट गये।

४ अर्थात् उन्हें ऐसी चीज़ का हुक्म दिया गया था जो उन्हें परस्पर जोड़े रखने वाली थी। परन्तु जब वे कज हुये तो अल्लाह ने भी उन के दिलों को टेढ़ा कर दिया (दे० सूरः अस-सफ़्फ़ आयत ५)।

५ दीन* और धर्म का सारांश यही है कि मनुष्य केवल एक अल्लाह की इबादत* और बन्दगी में लग जाये और उस के बन्दों का हक़ पहचाने।

६ ऊपर आयत ५ में तौहीद* और नमाज़* और ज़कात* का उल्लेख हुआ है। इस आयत में ईमान* से ... की ओर संकेत है और नमाज़* और ज़कात* की अभिव्यंजना 'भले काम' के शब्दों से की गई है।

*अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

९९—अज़-ज़िलज़ाल

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अज़-ज़िलज़ाल' सूरः की प्रथम आयत* से लिया गया है।

यह सूरः* मक्का में उतरने वाली आरम्भिक सूरतों में से है।

प्रस्तुत सूरः* से ले कर सूरः अल-क़ारिअः तक वास्तव में मनुष्य को मिलने वाले उस बदले का वर्णन है जिस का उल्लेख सूरः अल-बय्यिनः में हुआ है। इस के अतिरिक्त इन सूरतों में इस का उल्लेख भी हुआ है कि क़ियामत* के दिन अल्लाह का क्या आदेश होगा। और ज़मीन पर क्या बातें पेश आने वाली हैं।

नुबूवत* के आरम्भ काल में नबी सल्ल० लोगों को इस्लाम* की मौलिक शिक्षाओं की ओर बुलाते रहे हैं। आख़िरत* पर ईमान लाने का आदेश इस्लाम की मौलिक शिक्षाओं में से है। अल्लाह पर विश्वास करने का वास्तव में कोई अर्थ नहीं है जब तक कि मनुष्य क़ियामत और आख़िरत पर ईमान* न लाये। यही कारण है कि क़ुरआन का शायद ही कोई ऐसा पृष्ठ हो जिस में किसी-न-किसी रूप में आख़िरत* का उल्लेख न हुआ हो। कुछ स्थानों पर तो क़ियामत* और आख़िरत* का चित्रण इस प्रकार किया गया है कि थोड़ी देर के लिए मनुष्य अपने को आख़िरत* के लोक में पहुँचा हुआ अनुभव करने लगता है। जब तक मनुष्य के हृदय में यह बात अच्छी तरह बैठ न जाये कि यह दुनियाँ हमेशा रहने वाली नहीं है। एक दिन ऐसा आयेगा कि संसार की वर्तमान व्यवस्था बिगाड़ दी जायेगी और फिर नये सिरे से संसार का निर्माण होगा। लोगों को जीवित कर के उठाया जायेगा। उन्हें उन के कामों का बदला दिया जायेगा।

क़ियामत* किस प्रकार आयेगी? इस का भयप्रद दृश्य क़ुरआन में विभिन्न स्थानों पर प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत सूरः में भी उस का एक दृश्य हमारे सामने आता है। कितने भय का समय होगा। ज़मीन हिला डाली जायेगी। ज़मीन उन बातों को जो दुनियाँ में गुज़री होंगी, बतायेगी। प्रत्येक व्यक्ति के भले-बुरे कर्मों का परिणाम उस के सामने होगा।

---

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अज़्-ज़िल्ज़ाल

(मक्का में उतरी — आयतें* ८)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا ۝ وَأَخْرَجَتِ الْأَرْضُ أَثْقَالَهَا ۝ وَ
قَالَ الْإِنْسَانُ مَا لَهَا ۝ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا ۝ بِأَنَّ رَبَّكَ
أَوْحَىٰ لَهَا ۝ يَوْمَئِذٍ يَصْدُرُ النَّاسُ أَشْتَاتًا لِيُرَوْا أَعْمَالَهُمْ ۝ فَمَنْ
يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ ۝ وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ ۝
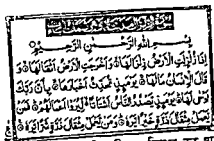
जब हिला डाली जायेगी ज़मीन जैसा [illegible] हिलाया जाना है[1] ○ और बाहर डाल देगी ज़मीन अपने बोझ,[2] [illegible] और मनुष्य कहेगा : इसे क्या हो गया ! ○ उस दिन बयान करेगी वह अपने समाचार, [illegible] क्यों कि तुम्हारे रब ने उसे इस की प्रेरणा दी होगी [illegible] उस दिन लोग निकल-निकल कर अलग-अलग जा रहे होंगे कि उन्हें उन के कर्म दि[illegible] जायें[4] । ○ तो जो कण-भर भी कोई भलाई करेगा वह उसे देख लेगा, ○ और जो कण[illegible] भी कोई बुराई करेगा वह उसे देख लेगा[5] । ○

---

१ दे० सूरः अल-हज्ज आयत १।

२ दे० सूरः अल-इनशिक़ाक़ आयत ३-४।

३ अर्थात् मनुष्य ने जो-कुछ उस की पीठ पर किया होगा वह सब बयान करेगी। इस से मालूम [illegible] मनुष्य जो-कुछ भला-बुरा ज़मीन पर कर रहा है वह ज़मीन में रिकार्ड होता जा रहा है।

४ अर्थात् लोग अपनी क़ब्रों और समाधियों आदि से प्रलय-क्षेत्र में लाये जायेंगे। फिर उन [illegible] उन के सामने आ जायेगा। अपने सांसारिक जीवन में जिस ने जैसा-कुछ किया होगा [illegible] उस के सामने आ जायेगा। लोग अपने कर्म के अनुसार विभिन्न गरोहों में बंटे हुए होंगे।

५ अल्लाह से मनुष्य का कोई कर्म भी छिपा हुआ नहीं है चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न [illegible] है यदि कण-भर भी भलाई की होगी तो वह उस के सामने आ जायेगी। यह और बात है कि [illegible] कर के उस भलाई को खो दिया हो। इसी प्रकार छोटी-से-छोटी बुराई भी उस के सामने [illegible] और बात है कि अल्लाह उसे क्षमा कर दे या मनुष्य के भले कामों के कारण [illegible] [illegible] देखें।

* [illegible] में आये हुए पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

१००--अल-आदियात

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अल-आदियात' सूरः की पहली आयत* से लिया गया है।

यह सूरः* मक्का में उतरने वाली आरम्भिक सूरतों* में से है।

प्रस्तुत सूरः* और आगे आने वाली सूरः में मनुष्य को मिलने वाले उस बदले का उल्लेख है जिस का वर्णन सूरः अल-बय्यिनः में हुआ है। इस के अतिरिक्त इस का उल्लेख भी इन सूरतों में हुआ है कि क़ियामत* में अल्लाह का क्या आदेश होगा और ज़मीन पर क्या बातें पेश आने वाली हैं।

प्रस्तुत सूरः* के आरम्भ में अल्लाह ने घोड़ों को मिसाल में पेश कर के यह बात सिद्ध की है कि किस प्रकार घोड़े अपने मालिक के वफ़ादार होते हैं। वे मनुष्य को अपनी पीठ पर सवार कर के तेज़ी से दौड़ते हैं पथरीली ज़मीन पर इस प्रकार टाप मारते हैं कि चिनगारियाँ उड़ने लगती हैं[१] प्रातः समय दुश्मन की सेना पर जा टूटते हैं। इस के मुक़ाबले में मनुष्य का हाल यह है कि वह जीवन में अपने रब* को भूल जाता है। उस की बन्दगी और इबादत* से ग़ाफ़िल रहता है। हालाँकि उस पर उस के रब* ने अगणित उपकार किये हैं। माल के मोह में मनुष्य पीछे नहीं रहता। अल्लाह के मार्ग में ख़र्च नहीं करता और न ग़रीबों और दुखियों की सहायता करता है। परन्तु उसे जान लेना चाहिए कि एक दिन अवश्य आयेगा जब कि सब लोगों को दोबारा जीवित किया जायेगा। यह वह दिन होगा जब कि दिलों तक के भेद खुल जायेंगे। उस दिन मनुष्य अपने रब* से कोई बात न छुपा सकेगा। प्रत्येक व्यक्ति को उस दिन उस के अच्छे-बुरे कामों का बदला मिल जायेगा।

---

[१] युद्ध के अवसर पर अरब के लोग रात में घरों से निकलते और सफ़र करते थे। और सवेरे झुटपुटे में ही दुश्मन पर धावा बोल देते थे।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अज़-ज़िल.जाल

(मक्का में उतरी — आयतें* ८)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بسم الله الرحمن الرحيم
اذا زلزلت الارض زلزالها ۝ واخرجت الارض اثقالها ۝ و
قال الانسان ما لها ۝ يومئذ تحدث اخبارها ۝ بان ربك
اوحى لها ۝ يومئذ يصدر الناس اشتاتا ليروا اعمالهم ۝ فمن
يعمل مثقال ذرة خيرا يره ۝ ومن يعمل مثقال ذرة شرا يره ۝
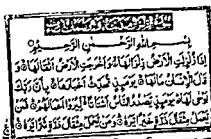
जब हिला डाली जायेगी ज़मीन जैसा
हिलाया जाना है¹ ○
और बाहर डाल देगी ज़मीन अपने बोझ
और मनुष्य कहेगा : इसे क्या हो गया ! ○
उस दिन बयान करेगी वह अपने समाचा
क्यों कि तुम्हारे रब ने उसे इस की प्रेरणा दी है
उस दिन लोग निकल-निकल कर अलग-अलग जा रहे होंगे कि उन्हें उन के कर्म
जायें⁴ । ○ तो जो कण-भर भी कोई भलाई करेगा वह उसे देख लेगा, ○ और जो
भी कोई बुराई करेगा वह उसे देख लेगा⁵ । ○

---

१ दे० सूरः अल-हज्ज आयत १।
२ दे० सूरः अल-इनशिक़ाक़ आयत ३-४।
३ अर्थात् मनुष्य ने जो-कुछ उस की पीठ पर किया होगा वह सब बयान करे
मनुष्य जो-कुछ भला-बुरा ज़मीन　　में रिकार्ड होता
४ अर्थात् लोग
उन के सामने आ
उस के सामने आ
५ अल्लाह से
वे यदि कण
बुराई कर

१०१--अल-क़ारिअः

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अल-क़ारिअः' सूरः की आरम्भिक आयतों* से लिया गया है। इस नाम का सूरः के विषय से विशेष सम्बन्ध है जैसा कि सूरः* के अध्ययन से मालूम होता है।

यह सूरः* मक्का में उतरने वाली आरम्भिक सूरतों* में से है।

प्रस्तुत सूरः* और इस से पहले की दो सूरतों* (सूरः अज़-ज़िलज़ाल और अलआदियात) में बड़ी समानता पाई जाती है। इन सूरतों* में एक ओर उस बदले का वर्णन है जो मनुष्य को क़ियामत* में मिलने वाला है दूसरी ओर क़ियामत* में ज़मीन पर जो-कुछ पेश आने वाला है उस पर प्रकाश डाला गया है।

. सूरः अल-आदियात के आरम्भ में घोड़ों द्वारा किये जाने वाले आक्रमण का उल्लेख हुआ है। इस आक्रमण के नतीजे में एक छोटी-सी क़ियामत* खड़ी हो जाती है। घोड़े अपनी ठोकरों से चिनगारियाँ उड़ाते, गुबार उठाते हुये दुश्मन की फ़ौज में जा घुसते हैं। इस आक्रमण के परिणामस्वरूप एक गरोह की विजय होती है और दूसरा गरोह पराजित होता है। प्रस्तुत सूरः (अल-क़ारिअः) में एक वास्तविक क़ियामत* (प्रलय) का चित्रण किया गया है। जिसे हम एक प्रकार के आक्रमण से उपमा दे सकते हैं जब कि पहाड़ चूर्ण-विचूर्ण हो कर उड़ेंगे। फ़िर लोग जीवित हो कर उठेंगे। कुछ लोगों के लिए यह सफलता का दिन होगा और कुछ लोगों के लिए यह दिन तबाही ले कर आया होगा।

क़ियामत* की भयंकरता और आख़िरत* के परिणाम का क़ुरआन में बार-बार उल्लेख किया गया है ताकि मनुष्य इस बात को कभी भूले नहीं कि यह दुनियाँ जिस में वह रहता-बसता है सदैव रहने वाली नहीं है। जिस प्रकार मनुष्य के जीवन का अन्त हो जाता है उसी प्रकार यह वर्तमान जगत भी एक दिन नष्ट-भ्रष्ट हो जायेगा। और फिर वह समय आ जायेगा जिस के आने की सूचना जगत के कण-कण से मिल रही है। यह वह समय होगा जब कि लोगों का किया-धरा तौला जायेगा। सौभाग्यशाली हैं वे लोग जिन के अच्छे कर्मों का पल्ला उस दिन भारी होगा। तबाही होगी उस दिन उन लोगों के लिए जिन का पल्ला उस दिन हल्का होगा।

---

* इन का अर्थ अन्तिम में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अल-आदियात

(मक्का में उतरी — आयतें* ११)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ۙ فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ۙ فَالْمُغِيْرٰتِ صُبْحًا ۙ فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ۙ فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ۙ اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ لَكَنُوْدٌ ۚ وَاِنَّهٗ عَلٰى ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ ۚ وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيْدٌ ۗ اَفَلَا يَعْلَمُ اِذَا بُعْثِرَ مَا فِى الْقُبُوْرِ ۙ وَحُصِّلَ مَا فِى الصُّدُوْرِ ۙ اِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيْرٌ
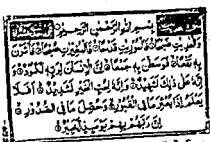
क़सम है उन की जो हिंकरते हुये दौड़ते होते हैं, ○
फिर आग झाड़ते होते हैं। ○
फिर प्रातःकाल छापा मारते होते हैं, ○
वहाँ धूल उड़ाते हैं, ○
फिर वहाँ दल में जा घुसते हैं,[1] ○
निस्सन्देह मनुष्य अपने रब* के लिए बड़ा ही निकम्मा है ○ और वह इस का साक्षी है[2] ○
और वह धन के मोह के लिए बड़ा ही प्रबल है[3] । ○
तो क्या वह जानता नहीं, जब उगलवा दिया जायेगा जो-कुछ क़ब्रों में है ○ और प्रकट कर लिया जायेगा जो-कुछ सीनों (दिलों) में है[4] । ○
निस्सन्देह उन का रब* उस दिन उन की पूरी ख़बर रखता होगा[5] । ○

---

१ आयत १ से ले कर आयत ५ तक घोड़ों की क़सम खा कर मनुष्य के निकम्मेपन का उल्लेख किया गया है। घोड़ों की क़सम खाने का अर्थ इस के सिवा और कुछ नहीं है कि अल्लाह ने उन्हें उन की विशेषताओं के कारण गवाही में पेश किया है। घोड़े अपने मालिक के इशारे पर सरपट दौड़ते हैं। जब वे पथरीली ज़मीन पर से गुज़रते हैं तो उन की टापों से चिनगारियाँ उड़ती हैं। यही घोड़े हैं जिन की मदद से मनुष्य प्रातः समय दुश्मनों पर छापा मारता है। और वे धूल उड़ाते हुये दुश्मन के दल में जा घुसते हैं। यह तो है घोड़ों की वफ़ादारी का हाल दूसरी तरफ़ मनुष्य को देखिए जिस पर उस के रब* के इतने उपकार हैं कि उन की गणना भी नहीं की जा सकती फिर भी वह उस की बन्दगी का हक़ अदा नहीं करता।

२ ऊपर की आयतों* में घोड़े की वफ़ादारी और अपने मालिक के इशारों पर उस के जान तक की बाज़ी लगा देने का उल्लेख हुआ है। घोड़ों की विशेषताओं और उन की वफ़ादारी को पेश कर के इस आयत* में मनुष्य के निकम्मेपन का उल्लेख किया गया है। घोड़ा जानवर होते हुये भी अपने मालिक का वफ़ादार है परन्तु मनुष्य अपने कर्तव्यों का पालन नहीं करता।

३ घोड़ों का हाल यह है कि लड़ाई के नतीजे में जो-कुछ धन प्राप्त होता है वह सब अपने मालिक के लिए छोड़ देते हैं। अपने स्वामी की सेवा ही उन के जीवन का ध्येय होता है। इस के विपरीत मनुष्य का हाल यह है कि वह अपने रब* के लिए तो निकम्मा है परन्तु धन के मोह में प्रबल है। वह धन का पुजारी बन जाता है और अपने रब* को भूल जाता है। वह कृपणता से काम लेता है और अल्लाह के मार्ग में ख़र्च नहीं करता।

४ अर्थात् मनुष्य यह न समझ ले कि यह जीवन केवल आनन्द लेने के लिए है फिर आगे कुछ न होगा। एक दिन अवश्य सब को अपनी क़ब्रों से उठना है। क़ियामत* में प्रत्येक व्यक्ति जीवित किया जायेगा। उस दिन दिलों की बातें सामने लाई जायेंगी। सारे भेद खोल दिये जायेंगे। अल्लाह से कोई बात छुपी न होगी।

५ वह हर एक को उस के किये का बदला प्रदान करेगा।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

१०१--अल-क़ारिअः

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अल-क़ारिअः' सूरः की आरम्भिक आयतों* से लिया गया है। इस नाम का सूरः के विषय से विशेष सम्पर्क है जैसा कि सूरः* के अध्ययन से मालूम होता है।

यह सूरः* मक्का में उतरने वाली आरम्भिक सूरतों* में से है।

प्रस्तुत सूरः* और इस से पहले की दो सूरतों* (सूरः अज़-ज़िलज़ाल और अलआदियात) में बड़ी समानता पाई जाती है। इन सूरतों* में एक ओर उस बदले का वर्णन है जो मनुष्य को क़ियामत* में मिलने वाला है दूसरी ओर क़ियामत* में ज़मीन पर जो-कुछ पेश आने वाला है उस पर प्रकाश डाला गया है।

सूरः अल-आदियात के आरम्भ में घोड़ों द्वारा किये जाने वाले आक्रमण का उल्लेख हुआ है। इस आक्रमण के नतीजे में एक छोटी-सी क़ियामत* खड़ी हो जाती है। घोड़े अपनी ठोकरों से चिनगारियाँ उड़ाते, ग़ुबार उठाते हुये दुश्मन की फ़ौज में जा घुसते हैं। इस आक्रमण के परिणामस्वरूप एक गरोह को विजय होती है और दूसरा गरोह पराजित होता है। प्रस्तुत सूरः (अल-क़ारिअः) में एक वास्तविक क़ियामत* (प्रलय) का चित्रण किया गया है। जिसे हम एक प्रकार के आक्रमण से उपमा दे सकते हैं जब कि पहाड़ चूर्ण-विचूर्ण हो कर उड़ेंगे। फिर लोग जीवित हो कर उठेंगे। कुछ लोगों के लिए वह सफलता का दिन होगा और कुछ लोगों के लिए वह दिन तबाही ले कर आया होगा।

क़ियामत* की भयंकरता और आख़िरत* के परिणाम का क़ुरआन में बार-बार उल्लेख किया गया है ताकि मनुष्य इस बात को कभी भूले नहीं कि यह दुनिया जिस में वह रहता-बसता है सदैव रहने वाली नहीं है। जिस प्रकार मनुष्य के जीवन का अन्त हो जाता है उसी प्रकार यह वर्तमान जगत भी एक दिन नष्ट-भ्रष्ट हो जायेगा। और फिर वह समय आ जायेगा जिस के आने की सूचना जगत के कण-कण से मिल रही है। यह वह समय होगा जब कि लोगों का किया-धरा तौला जायेगा। सौभाग्यशाली हैं वे लोग जिन के अच्छे कर्मों का पल्ला उस दिन भारी होगा। तबाही होगी उस दिन उन लोगों के लिए जिन का पल्ला उस दिन हल्का होगा।

---

* इन का अर्थ परिशिष्ट में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः° अत-तकासुर

(मक्का में उतरी — आयतें° ८)

अल्लाह° के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

[illegible]

गफ़लत में डाले रखा तुम्हें अधिक-से-अधिक की लाल ने ○ जब तक तुम ने क़ब्रिस्तानों के दर्शन कर लिये।

कुछ नहीं, तुम जल्द ही जान लोगे। ○ फि (सुन लो) कुछ नहीं, तुम जल्द ही जान लोगे।

कुछ नहीं, कहीं तुम जानते होते ऐसा वि विश्वास होता ! ○

अवश्य ही तुम भड़कती हुई अग्नि को देखोगे। ○ फिर अवश्य ही तुम उसे ऐसा देखोगे पूरा विश्वास हो जायेगा। ○

फिर तुम से उस दिन सुख-समृद्धि के विषय में अवश्य पूछा जायेगा। ○

[illegible]

हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

१०३—अल-अस्र

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अल-अस्र' सूरः की पहली आयत से लिया गया है।

यह सूरः* मक्का में अवतीर्ण होने वाली आरम्भिक सूरतों* में से है।

इस से पहले जो सूरः गुज़री है उस में इस का उल्लेख हुआ है कि जो सुख-भोगी लोग माल और सांसारिक सुखों की तलब में खोये हुये हैं उन के जीवन का ध्येय केवल दुनियाँ है। वे सांसारिक मोह-माया में अपने जीवन को नष्ट किये दे रहे हैं। इस से बढ़ कर तबाही और कोई नहीं हो सकती। प्रस्तुत सूरः में ऐसे लोगों को चेतावनी दी गई है जो नाशवान् वस्तुओं के उपासक बने हुये हैं और सांसारिक मोह-माया में डूबे हुये हैं। इस सूरः में इस ओर संकेत किया गया है कि मनुष्य यदि चाहे तो इसी जीवन की सीमित अवधि में सचाई को अपना कर शाश्वत सुख और शान्ति प्राप्त कर सकता है। यदि आज लोग समय के मूल्य को नहीं पहचानते और उस चीज़ को प्राप्त करने की चेष्टा नहीं करते जो वास्तव में चाहने की है तो वह समय दूर नहीं जब वे अपने किये पर पछता रहे होंगे और यह पछताना उन के किसी काम न आयेगा।

प्रस्तुत सूरः* यद्यपि एक छोटी सी सूरः है। परन्तु वास्तव में ज्ञान का एक विस्तृत संसार इस में समाया हुआ है।

प्रस्तुत सूरः* में अल्लाह ने ढलते हुये समय को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत कर के कहा है कि लोग घाटे में हैं, घाटा उठाने वालों में यदि शामिल नहीं हैं तो वे लोग जो ईमान* ले आये और भले काम किये। और दूसरों को भी हक़ और सब्र की ताकीद करते रहे।

प्रस्तुत सूरः* से मालूम होता है कि अच्छे कर्म के बिना आदमी का ईमान* अपूर्ण ही रहता है। अच्छा कर्म ईमान* ही का विस्तार है। उस से भिन्न कोई दूसरी चीज़ नहीं है। इसी प्रकार एक-दूसरे को 'हक़' और 'सब्र' की ताकीद करना यह अच्छे कर्म में ही सम्मिलित है। आदमी का जहाँ यह कर्त्तव्य है कि वह अच्छे काम करे वहीं उस का यह कर्त्तव्य भी होता है कि वह दूसरों को उसी मार्ग पर लाने की चेष्टा करे जिस मार्ग पर चलना उस की दृष्टि में मानव-हित और कल्याण के लिए आवश्यक है। उस व्यक्ति को वास्तव में सत्य का उपासक नहीं कहा जा सकता जो अपनी आँखों से देख रहा हो कि सत्य की अवहेलना हो रही है फिर भी उसे इस की चिन्ता न हो कि किस प्रकार सत्य को विजयी देखे। किस प्रकार अल्लाह के उतारे हुये विधान का प्रचलन हो और किस प्रकार उन विधानों से जो धर्म के विरुद्ध और मानव-जाति के लिए अकल्याणकारी हैं समाज सुरक्षित रहे। मनुष्य सब्र और धैर्य ही के द्वारा बुराइयों का मुक़ाबला कर सकता है। सब्र के बिना सत्य-मार्ग पर एक क़दम भी चलना कठिन बल्कि असम्भव है। इस लिए जहाँ हम एक-दूसरे को 'हक़' की नसीहत करें वहीं उन्हें सब्र की ताकीद भी करें।

* इस का अर्थ आखिर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूर:* अल-हुमज़:

(मक्का में उतरी — आयतें* ९)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ ۙ الَّذِىْ جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهٗ ۙ يَحْسَ
تَ مَالَهٗ اَخْلَدَهٗ ۚ كَلَّا لَيُنْبَذَنَّ فِى الْحُطَمَةِ ۖ وَمَا اَدْرٰىكَ
مَا الْحُطَمَةُ ۗ نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ۙ الَّتِىْ تَطَّلِعُ عَلَى الْاَفْـِٕدَةِ ۗ
اِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ۙ فِىْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ
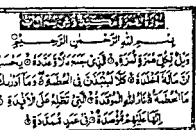
तबाही है हर उस व्यक्ति के लिए जो कचोके लगाता रहता है, चोटें करता रहता है, ○ जिस ने माल इकट्ठा किया और उसे बार-बार गिनता रहा¹। ○

समझता है कि उस के माल ने उसे अमर कर दिया²। ○

कुछ नहीं, वह अवश्य फेंक दिया जायेगा 'हुतम:' (हड़प कर जाने वाली) में³। ○ और तुम्हें क्या मालूम हुतम: क्या है! ○ अल्लाह की आग है भड़काई हुई, ○ जो दिलों तक जा पहुँचती है⁴। ○ वे उस में बन्द होंगे ○ लम्बे-लम्बे स्तम्भों में घेर दिये गये होंगे। ○

---

१ अर्थात् प्रत्येक सरकश अपने माल के कारण अहंकार में डूबा हुआ है। समझता है कि उस के समान कोई नहीं है। दूसरों का अपमान करता है। चाहिए तो यह था कि संसार में धन-सम्पत्ति पा कर अल्लाह के आगे कृतज्ञता दिखलाता; दीन-दुखियों की सहायता करता परन्तु अपनी नीचता और ओछेपन के कारण वह गर्व में पड़ गया और अपने व्यवहार से अपनी नीचता और कमीनेपन का प्रदर्शन करने लगा।

२ धन के मद में इतना मात गया है कि उसे इस का ध्यान ही नहीं है कि यह धन उसे मृत्यु से नहीं बचा सकता। यह धन और झूठा सम्मान सदैव रहने वाला नहीं है।

३ 'हुतम:' (حطمه) कहते हैं ऐसी चीज़ को जो तोड़ने वाली और दुर्दशा को पहुँचा देने वाली हो। बाद की आयतों से ज़ाहिर है कि यहाँ 'हुतम:' जहन्नम* की अग्नि को कहा गया है जो अपराधियों को तबाह और हज़म कर के रख देगी।

४ अर्थात् उस अग्नि की लपटें दिलों तक पर छा जायेंगी और ऊँचे-ऊँचे स्तम्भों के रूप में उन्हें घेर लेंगी। तो वे उस अग्नि के अज़ाब से बच निकलने की कोई राह न पा सकेंगे। अतः अहंकारी लोगों को जो आज सभी बातों पर ध्यान नहीं दे रहे हैं सोचना चाहिए कि यदि वे कुफ़्र* और अहंकार ही की नीति पर जमे रहते हैं तो वे किस दशा को प्राप्त होने वाले हैं। आग ही उन का ठिकाना होगी। जहाँ उन्हें किसी प्रकार का आराम न होगा। उन्हें अपने गर्व और सरकशी के कारण वहाँ अपमान-जनक और दुःख-भरे अज़ाब का मज़ा चखना होगा। आग की लपटें उन के दिलों तक को जलायेंगी जिन में कुफ़्र* और गर्व, सांसारिक वस्तुओं की चाह के अतिरिक्त और किसी ऊँची और पवित्र भावना का वास न था।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

१०५--अल-फ़ील

(परिचय)

इस सूर:* का नाम 'अलफ़ील' सूर: की पहली आयत* से लिया गया है।

यह सूर:* मक्का में उतरने वाली अत्यन्त आरम्भिक सूरतों* में से है।

प्रस्तुत सूर:* वास्तव में अल्लाह के आगे कृतज्ञता दिखलाने और उस का आभार स्वीकार करने के कर्त्तव्य को स्मरण कराने की भूमिका है। अल्लाह के पवित्र घर (काब:*) की बरकत से अरब वालों को प्रतिष्ठा, आदर, सम्मान, शान्ति आदि जो-कुछ प्राप्त है, प्रस्तुत सूर: में उस की ओर संकेत किया गया है। अत: उन्हें अपने रब* का कृतज्ञ होना चाहिए। काब:* की महानता के कई कारण हैं। काब:* पहला घर है जो संसार में तौहीद* (एकेश्वरवाद) और दीन-दुखियों की सहायता का केन्द्र बना। इस घर का निर्माण दो महान् पुरुषों हज़रत इबराहीम अ० और हज़रत इसमाईल अ० के हाथों हुआ। इस घर के निर्माण का आदेश हज़रत इबराहीम अ० को अल्लाह की ओर से मिला था। काब:* की जगह भी अल्लाह ही की निश्चित की हुई है। अल्लाह की ओर से इस बात की घोषणा की गई थी कि जो लोग इस घर में अधर्म और शिर्क* के अपराधी होंगे और इस घर का निरादर करेंगे अल्लाह उन्हें विनष्ट कर देगा।

प्रस्तुत सूर:* में काब:* की बड़ाई का उल्लेख किया गया है। इस सूर: के बाद आने वाली सूर: में काब:* की महानता और उस की बरकतों का उल्लेख हुआ है और साथ ही लोगों को उन का कर्त्तव्य याद दिलाया गया है कि वे अपने रब* के कृतज्ञ हों और उस की बन्दगी करें।

प्रस्तुत सूर:* में अबह: की सेना की तबाही का उल्लेख कर के जो काब:* को ढाने के लिए मक्का पर चढ़ आया था[१] — मक्का वालों को झँझोड़ा गया है कि तुम इस घर (काब:*) के रब* की बन्दगी से क्यों कतराते हो और शिर्क* को छोड़ कर एक अल्लाह पर भरोसा क्यों नहीं करते जिस ने कठिन अवसर पर सदा तुम्हारी सहायता की। तुम स्वयं शिर्क* की गन्दगी में पड़े हुये हो और ईमान* वालों को भी काब:* में अल्लाह की इबादत* से रोकते हो। दूसरे पहलू से इस घटना के उल्लेख में नबी सल्ल० और आप (सल्ल०) के साथियों के लिए तसल्ली का बड़ा सामान है। जिस अल्लाह ने कठिन समय में मक्का वालों की सहायता की और अपने घर को तबाह होने से बचा लिया वही अल्लाह मुसलमानों की मदद के लिए काफ़ी है वह अपने आज्ञाकारी बन्दों का अवश्य सहायक होगा, विजय अन्त में ईमान* वालों को ही प्राप्त होगी। इस प्रकार यह सूर: काफ़िरों* के लिए चेतावनी और डरावा और ईमान* वालों के लिए तसल्ली की सूर: है।

---

१ दे० प्रस्तुत सूर: आयत १।

* इस का अर्थ आखिर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

१०६ -- क़ुरैश

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'क़ुरैश' सूरः की पहली आयत* से लिया गया है।

यह सूरः* मक्का में उतरने वाली अत्यन्त आरम्भिक सूरतों* में से है।

प्रस्तुत सूरः* और इस से पहले की सूरः (अल-फ़ील) में गहरा सम्पर्क पाया जाता है। इन दोनों सूरतों में अल्लाह के घर (काबः*) की महानता का उल्लेख है। सूरः अल-फ़ील में अल्लाह ने अपने इस एहसान का उल्लेख किया है कि उस ने किस तरह अपने घर की रक्षा की और दुश्मनों को तबाह कर के रख दिया। प्रस्तुत सूरः में अल्लाह ने अपना यह एहसान याद दिलाया है कि अल्लाह के घर के कारण क़ुरैश को कितनी प्रतिष्ठा प्राप्त है और वे किस प्रकार निश्चिन्त हो कर सफ़र करते और व्यापार में अधिक-से-अधिक लाभ उठाते हैं। अब यह 'क़ुरैश' के लोगों का कर्त्तव्य है कि अपने दायित्व को पहचानें और अपने रब* के कृतज्ञ हों और उस की इबादत* और बन्दगी में लग जायें। अल्लाह का रसूल* उन्हें तौहीद* की ओर बुला रहा है और इस बात की शिक्षा देता है कि लोग एक-दूसरे के काम आयें और ग़रीबों और दुखियों की सेवा करें। काबः* के निर्माण का मूल उद्देश्य भी यही है[१]। इस लिए उन लोगों को अल्लाह के रसूल* की बात माननी चाहिए और उस मार्ग को अपनाना चाहिए जिस पर चलने के लिए अल्लाह का रसूल* उन्हें आमन्त्रित कर रहा है।

---

[१] आगे आने वाली सूरः में काबः के निर्माण के मूल उद्देश्य का ही उल्लेख हुआ है।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

७ : १३८-१४१	**बनी इसराईल** ने हज़रत मूसा से मूर्ति जुटाने की माँग की।
७ : १४२-१४५	हज़रत मूसा को **तौरात** प्रदान की गई। हज़रत मूसा अल्लाह के दर्शन के अभिलाषी।
७ : १४८-१५३	हज़रत मूसा की जाति ने गहनों से एक बछड़ा बना लिया और उसे पूजना शुरू कर दिया।
७ : १५४-१५५	चुने हुए सत्तर व्यक्तियों को लेकर हज़रत मूसा तूर (पर्वत) पर गये।
७ : १६०-१६२	बनी इसराईल बारह कबीलो में बाँट दिये गये उन्हे मन्न व सलवा भोजन करने को मिला।
१० : ७५-७८	मूसा और हारून को फ़िरऔन और उसकी जाति की ओर भेजा गया। उन्होने अल्लाह की निशानियों को जादू बताया।
१० : ७९-८२	फिरऔन ने जादूगर इकट्ठा किये, मुकाबला हुआ और जादूगर असफल रहे।
१० : ८३-८६	मूसा पर ईमान लाने वाले कुछ नवजवानो का अल्लाह पर भरोसा और उनकी दुआ।
१० : ८७-९३	मिस्र में हज़रत मूसा ने मुसलमानों को ट्रेनिंग दी। अल्लाह ने उन्हें नजात दी और फिरऔन और उसकी सेना डूब गई।
११ : ९६-९९	मूसा अ० फ़िरऔन के पास निशानी लेकर गये। उसकी जाति वालों ने फिरऔन का आज्ञापालन किया और उन का बुरा अन्त हुआ।
१४ : ५-८	मूसा को **बनी इसराईल** की हिदायत का हुक्म दिया गया और उन्होंने जाति वालों को समझाया।
१७ : २	*मूसा को बनी इसराईल की हिदायत के लिए पवित्र ग्रन्थ दिया गया।*
१७ : १०१-१०४	मूसा को ९ निशानियाँ दी गईं, फिरऔन ने जादूगर कहा।
१८ : ६०-६५	हज़रत मूसा की एक अनोखी यात्रा की रिपोर्ट और एक विशेष व्यक्ति से उनकी भेंट।
१८ : ६६-८२	कुछ अद्भुत घटनाएँ और उनका कारण।
१९ : ५१-५३	मूसा अ० अल्लाह के **रसूल** थे। अल्लाह ने उन्हें **तूर** पर्वत पर बुलाया और हारून नबी जैसा भाई दिया।
२० : ९-२४	मूसा रास्ते में आग देखकर बढ़े और तूर की पवित्र घाटी मे पहुँच गये। अल्लाह ने उन्हे पुकारा और उन्हें अपना नबी बनाया।
२० : २५-३६	हज़रत मूसा की दुआ पर हज़रत हारून को उनका साथी बनाया गया।
२० : ३७-४०	हज़रत मूसा पर अल्लाह की कृपाएँ जो जन्म से लेकर लड़कपन और जवानी में हुईं।
२० : ४१-४६	**नुबूवत** का काम करने के लिए कुछ अनिवार्य निर्देश।
२० : ४७-५५	फिरऔन के दरबार में धर्म-प्रचार और फिरऔन से बात-चीत।
२० : ५६-६९	फिरऔन निशानियाँ देखकर भी न माना और जादूगरों को मुकाबले के लिए ले आया।
२० : ७०-७६	जादूगर ईमान ले आये और फ़िरऔन की धमकियों की परवाह न की।
२० : ७७-७९	मूसा अ० *बनी इसराईल* को लेकर मिस्र से निकले। ...

१०७—अल-माऊन

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अल-माऊन' सूरः की सातवीं आयत* से लिया गया।
यह सूरः* मक्का में उतरने वाली आरम्भिक सूरतों में से है।

इस से पहले की दो सूरतों में काबः* की महानता का उल्लेख हुआ है। अ
इस से पहले की सूरः (क़ुरैश) में क़ुरैश को उन के कर्तव्य का स्मरण भी करा
गया है। उन का यह परम कर्तव्य ठहराया गया है कि वे उस रब* की बन्दगी
जिस के नाम पर काबः* का निर्माण हुआ है। प्रस्तुत सूरः से काबः* के मूल उद्देश
पर प्रकाश पड़ता है। नमाज़* और ग़रीबों की सेवा काबः* के मूल उद्देश्यों में
है। काबः* का निर्माण ही इन उद्देश्यों के अन्तर्गत हुआ था कि लोग अपने रब
को पहचानें और केवल उसी की इबादत* और बन्दगी करें किसी और के आ
सिर न झुकायें। अल्लाह का हक़ अदा करने के साथ-साथ अल्लाह के बन्दों का
भी पहचानें, दीन-दुखियों के सहायक बनें।

प्रस्तुत सूरः में उन लोगों का चरित्र सामने लाया गया है जो काबः* के म
न्धक थे परन्तु उन्हों ने न्यास-भंग किया। जो चीज़ उन्हें सौंपी गई थी उस का उ
ने दुरुपयोग किया। उन्हों ने 'हज्ज' और उस की रीतियों को बिगाड़ डाला, तौहीद
(एकेश्वरवाद) से मुँह मोड़ा, शिर्क* में जा पड़े। तौहीद* और ग़रीबों और मुहता
की सेवा की रीति को मिटाया इस प्रकार उन्हों ने नमाज़* और क़ुरबानी*
वास्तविकता का अनर्थ किया। जिस के कारण उन पर फिटकार पड़ी। और अल्ला
ने उन से अपनी अमानत¹ छीन ली ताकि उसे उन लोगों को सौंपे जो वास्तव
इस का हक़ रखते हैं।

प्रस्तुत सूरः* से मालूम होता है कि मानव-जीवन में बिगाड़ का कारण यह
कि मनुष्य इस बात को भूल जाये कि उसे एक दिन अपने रब* के यहाँ अपने क
का फल पाना है। आख़िरत* का डर दिल से निकल जाने के बाद मनुष्य
चरित्र-निर्माण के लिए कोई मूल आधार शेष नहीं रहता। फिर तो वह स्वेच्छाचा
बन कर जो उत्पात भी चाहे मचा सकता है।

फिर इस सूरः से यह बात भी सामने आती है कि नमाज़* का हमारे जीव
से गहरा सम्पर्क है। यदि कोई अपनी नमाज़* से ग़ाफ़िल है और अल्लाह के ह
को नहीं पहचानता तो हम उस से यह आशा भी नहीं रख सकते कि वह अल्लाह
बन्दों का हक़ पहचानेगा और उसे अदा करेगा। स्वार्थ-परता ही ऐसे व्यक्ति
स्वभाव होता है। वह अनाथों और असहाय लोगों को धक्के दे देगा। ग़रीबों
भोजन कराने पर लोगों को नहीं उभार सकता। छोटी-से-छोटी चीज़ देते हुये
उस का दिल दुखने लगेगा। ऐसे व्यक्ति के जीवन में मानवता और सज्जनता ना
की कोई चीज़ भी नहीं मिल सकती।

१. अर्थात् काबः* की सेवा और प्रबन्ध का शुभ-कार्य।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* क़ुरैश

(मक्का में उतरी — आयतें* ४)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
لِإِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ۝ إٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ۝
فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ۝ الَّذِيْٓ أَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ ۙ وَّ
اٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ۝

इस लिए कि क़ुरैश का सम्बन्ध रखा[1] ० उन का सम्बन्ध रखा जाड़े और गर्मी के सफ़र में[2] ।० अतः उन्हें चाहिए कि इस घर के रब* की इबादत* करें, ० जिस ने उन्हें भूख में खिलाया और भय से उन्हें निश्चिन्त किया[3] ।०

---

१ अर्थात् अरब के सारे क़बीलों से क़ुरैश के लोगों का सम्बन्ध स्थापित कर दिया। जाड़े में क़ुरैश के क़ाफ़िले व्यापार के ध्येय से यमन की ओर जाते थे और गर्मी के दिनों में उन का सफ़र शाम (सीरिया) की ओर होता था। इस प्रकार अरब में दक्षिण से ले कर उत्तर तक क़ुरैश का विभिन्न क़बीलों से सम्बन्ध और समझौता था। क़ुरैश के लोग निश्चिन्त हो कर सफ़र करते थे। सभी लोग क़ुरैश का आदर और सम्मान करते थे। क़ुरैश की इस प्रतिष्ठा का कारण यह था कि वे काबः* के प्रबन्धक थे।

२ अरब के आर्थिक जीवन में व्यापार का बड़ा महत्व था। क़ुरैश (अरब का विशेष क़बीला) के लोग व्यापार करते थे। इस सिलसिले में गर्मी और जाड़े दोनों ही ऋतुओं में इन का सफ़र होता था। 'क़ुरैश' के लोग काबः* के प्रबन्धक और सेवक थे। काबः* का आदर सभी लोग करते थे। इस लिए क़ुरैश के क़ाफ़िले को कोई लूटता नहीं था। वे निश्चिन्त हो कर व्यापार करते और फ़ायदा उठाते थे। यह सब कुछ अल्लाह के घर की बरकत थी। अब आगे उन्हें स्मरण कराया जा रहा है कि उन का कर्तव्य क्या है।

३ अर्थात् जिस घर के कारण उन्हें सम्मान, प्रतिष्ठा और निश्चिन्तता प्राप्त है। और उन्हें रोज़ी मिल रही है उस घर के रब* को भूलना किसी तरह भी उन के लिए उचित नहीं है। उन्हें चाहिए कि वे उस के आगे कृतज्ञता दिखलायें और उस की बन्दगी में लग जायें। शिर्क* की गन्दगी से अपने दामन को बचायें।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

१०७—अल-माऊन

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अल-माऊन' सूरः की सातवीं आयत* से लिया गया है।
यह सूरः* मक्का में उतरने वाली आरम्भिक सूरतों में से है।

इस से पहले की दो सूरतों में काबः* की महानता का उल्लेख हुआ है। अ
इस से पहले की सूरः (क़ुरैश) में क़ुरैश को उन के कर्त्तव्य का स्मरण भी करा
गया है। उन का यह परम कर्त्तव्य ठहराया गया है कि वे उस रब* की बन्दगी
जिस के नाम पर काबः* का निर्माण हुआ है। प्रस्तुत सूरः से काबः* के मूल उद्देश
पर प्रकाश पड़ता है। नमाज़* और ग़रीबों की सेवा काबः* के मूल उद्देश्यों में
है। काबः* का निर्माण ही इन उद्देश्यों के अन्तर्गत हुआ था कि लोग अपने रब
को पहचानें और केवल उसी की इबादत* और बन्दगी करें किसी और के आ
सिर न झुकायें। अल्लाह का हक़ अदा करने के साथ-साथ अल्लाह के बन्दों का ह
भी पहचानें, दीन-दुखियों के सहायक बनें।

प्रस्तुत सूरः में उन लोगों का चरित्र सामने लाया गया है जो काबः* के म
न्धक थे परन्तु उन्हों ने न्यास-भंग किया। जो चीज़ उन्हें सौंपी गई थी उस का उ
ने दुरुपयोग किया। उन्हों ने 'हज' और उस की रीतियों को बिगाड़ डाला, तौहीद
(एकेश्वरवाद) से मुँह मोड़ा, शिर्क* में जा पड़े। तौहीद* और ग़रीबों और मुहता
की सेवा की रीति को मिटाया इस प्रकार उन्हों ने नमाज़* और क़ुरबानी*
वास्तविकता का अनर्थ किया। जिस के कारण उन पर फिटकार पड़ी। और अल्ल
ने उन से अपनी अमानत[1] छीन ली ताकि उसे उन लोगों को सौंपे जो वास्तव
इस का हक़ रखते हैं।

प्रस्तुत सूरः* से मालूम होता है कि मानव-जीवन में बिगाड़ का कारण यह
कि मनुष्य इस बात को भूल जाये कि उसे एक दिन अपने रब* के यहाँ अपने क
का फल पाना है। आख़िरत* का डर दिल से निकल जाने के बाद मनुष्य
चरित्र-निर्माण के लिए कोई मूल आधार शेष नहीं रहता। फिर तो वह स्वेच्छाचा
बन कर जो उत्पात भी चाहे मचा सकता है।

फिर इस सूरः से यह बात भी सामने आती है कि नमाज़* का हमारे जीव
से गहरा सम्पर्क है। यदि कोई अपनी नमाज़* से ग़ाफ़िल है और अल्लाह के ह
को नहीं पहचानता तो हम उस से यह आशा भी नहीं रख सकते कि वह अल्लाह
बन्दों का हक़ पहचानेगा और उसे अदा करेगा। स्वार्थ-परता ही ऐसे व्यक्ति
स्वभाव होता है। वह अनाथों और असहाय लोगों को धक्के दे देगा। ग़रीबों
भोजन कराने पर लोगों को नहीं उभार सकता। छोटी-से-छोटी चीज़ देते हुये भ
उस का दिल दुखने लगेगा। ऐसे व्यक्ति के जीवन में मानवता और सज्जनता ना
की कोई चीज़ भी नहीं मिल सकती।

1. अर्थात् काबः* की सेवा और प्रबन्ध का शुभ-कार्य।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अल-माऊन

(मक्का में उतरी — आयतें* ७)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

क्यों, तुम ने देखा उस व्यक्ति को जो कर्मों का बदला दिये जाने को झुठलाता है'? ○ यही तो है जो यतीम (अनाथ) को धक्के देता है। ○ और मुहताज के खिलाने को नहीं कहता'। ○ तो तबाही है ऐसे नमाज़ियों के लिए ○ जो अपनी नमाज़* से बेख़बर हैं' ○ जो दिखावे का काम करते हैं' ○ और मामूली-मामूली चीज़ मांगे नहीं देते' ! ○ १

---

१ अर्थात् क्या तुम ने उस व्यक्ति के चरित्र पर विचार किया जो इस बात को नहीं मानता कि उसे एक दिन अपने रब* के पास हाज़िर होना है। वहाँ उसे अपने भले-बुरे सब कामों का बदला मिलेगा। जो व्यक्ति इस पर विश्वास ही नहीं रखता कि उसे एक दिन अपने कामों का बदला पाना है उस के चरित्र-निर्माण के लिए कोई वास्तविक आधार नहीं। वह दुनिया में जो उपद्रव मचाये थोड़ा है। ऐसे व्यक्ति के चरित्र की एक तसवीर आगे की आयतों में पेश की गई है।

२ आख़िरत पर विश्वास न रखने वाला ही अनाथों और असहाय लोगों को बुरी तरह धक्के देता है। और दीन-दुखी व्यक्तियों को स्वयं तो क्या भोजन कराना यह भी पसन्द नहीं करता कि दूसरे लोग ही उन्हें भोजन करा दें। उसे दूसरों से कोई सहानुभूति नहीं होती।

३ अर्थात् ऐसे लोगों पर तबाही और धिक्कार है जो अल्लाह का हक़ अदा नहीं करते अर्थात् अपनी नमाज़ों* से ग़ाफ़िल रहते हैं। नमाज़* अदा भी करते हैं तो उन की नमाज़* बस दिखावे की नमाज़ होती है। उन की नमाज़ें नमाज़* की विशेषताओं से बिलकुल ख़ाली होती हैं। उन की नमाज़ों* में न अल्लाह की ओर दिल का झुकाव पाया जाता है और न अल्लाह की याद पाई जाती है। क़ुरैश* जो काबः* के प्रबन्धक और सेवक थे वे भी अपने ढंग से नमाज़ पढ़ते थे परन्तु उन की नमाज़* खेल और तमाशे से अधिक कुछ नहीं थी (दे० सूरः अल-अनफ़ाल आयत ३५)।

४ अर्थात् उन का नेक काम केवल लोगों को दिखाने के लिए होता है अल्लाह के लिए नहीं। यह भी एक प्रकार का शिर्क* है कि आदमी नेक काम इस लिए करे ताकि लोग उसे नेक समझें। नबी सल्ल० ने कहा है कि जिस किसी ने दिखावे के लिए नमाज़* पढ़ी उस ने शिर्क* किया।

५ जो व्यक्ति अल्लाह का हक़ अदा नहीं करता उस से इस की भी आशा नहीं की जा सकती कि वह अल्लाह के बन्दों का हक़ पहचानेगा। ऐसे व्यक्ति की स्वार्थपरता का यह हाल होता है कि वह लोगों को छोटी-छोटी चीज़ें भी देनी पसन्द नहीं करता कि वे उन से अपनी ज़रूरतें पूरी कर लें।

यहाँ यह बात सामने रहनी चाहिए कि नमाज़* और ग़रीबों की सेवा यह काबः* के मूल उद्देश्यों में से है। इस सूरः में उन लोगों का चरित्र हमारे सामने आता है जिन्हों ने काबः* के मूल उद्देश्य की उपेक्षा की। वे इसी योग्य थे कि उन पर अल्लाह की धिक्कार हो और उनसे यह नेमत छीन ली जाये और इसे ऐसे लोगों के हाथ में सौंपा जाये जो वास्तव में इस नेमत के पाने के हक़दार हों।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

१०८--अल-कौसर

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अल-कौसर' सूरः की पहली आयत* से लिया गया है। सूरः के नाम का उस के विषय से विशेष सम्पर्क है।

इस सूरः* की गणना साधारणतः मक्का की प्रारम्भिक सूरतों में होती है परन्तु इस सूरः पर विचार करने से मालूम होता है कि यह सूरः या तो मक्का की विजय से कुछ पहले अवतीर्ण हुई है या हुदैबियः की सन्धि के अवसर पर उतरी है। ऐतिहासिक कथनों से भी इस की पुष्टि होती है। हुदैबियः मक्का से अत्यन्त निकट है इस लिए यद्यपि यह सूरः हिजरत* के पश्चात् उतरी है परन्तु यह मक्की सूरः ही कहलाती है।

यह सूरः* वास्तव में शुभ-सूचनाओं की सूरः है। इस से पहले की सूरः अल-माऊन में उन लोगों का उल्लेख किया गया है जिन्हों ने अल्लाह के घर काबः* के मूल उद्देश्यों को नष्ट कर दिया था। और वे इस योग्य हो गये थे कि अल्लाह उन से अपनी अमानत छीन कर उन लोगों को सौंप दे जो वास्तव में इस का हक़ रखते थे कि यह अमानत उन्हें सौंपी जाये। प्रस्तुत सूरः में नबी सल्ल० को सम्बोधित करते हुये कहा गया है कि आप (सल्ल०) को 'कौसर' प्रदान किया गया अर्थात् आप को दुनियाँ और आख़िरत* की तमाम भलाइयाँ प्रदान की गईं। जो लोग आप (सल्ल०) पर चोटें करते हैं वास्तव में वही विनष्ट हो कर रहेंगे। वह समय दूर नहीं जब मक्का पर जो समस्त भलाइयों और बरकतों का स्रोत है ईमान* वालों को विजय प्राप्त होगी। अधिक संख्या में लोग ईमान* वालों में दाख़िल होंगे। वे काबः* के मूल उद्देश्यों का आदर करेंगे। वे नमाज़* क़ायम करेंगे, ज़कात* देंगे और अल्लाह के घर का 'हज' करेंगे। अल्लाह का हक़ भी पहचानेंगे और उस के बन्दों का हक़ भी अदा करेंगे।

नबी सल्ल० से जिन भलाइयों का वादा प्रस्तुत सूरः में किया गया है इतिहास साक्षी है कि वे पूरी हो कर रहीं। अल्लाह ने आप (सल्ल०) को बरकतें प्रदान कीं। आप (सल्ल०) के शत्रुओं का नाम मिट कर रहा। आख़िरत* में आप को जो पद और जो नेमतें मिलने वाली हैं उन का तो ठीक-ठीक अनुमान भी करना हमारे लिए कठिन है। आख़िरत* में भी आप (सल्ल०) के अनुयायी अधिक संख्या में होंगे और वे आप के हौज़ कौसर से अपनी प्यास बुझा रहे होंगे।

---

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अल-कौसर

(मक्का में उतरी — आयतें* ३)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ ۝ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ۝ إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ ۝

हम ने तुम्हें प्रदान किया कौसर[1] O

अब पढ़ो अपने रब* की नमाज़,* और करो क़ुरबानी[2] । O
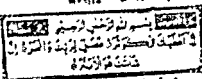
जो वैरी है तुम्हारा वही है जिस का कोई नहीं[3] । O

---

१ इस आयत* में नबी सल्ल० को एक बड़ी सूचना दी गई है। 'कौसर' (كوثر) (Abundance) से अभिप्रेत वे असंख्य भलाइयाँ और बरकतें हैं जो अल्लाह ने अपने नबी (सल्ल०) को प्रदान कीं या जिन का अल्लाह ने आप (सल्ल०) से वादा किया जो आख़िरत* में ज़ाहिर होने वाली हैं। यहाँ विशेष रूप से नबी सल्ल० को यह शुभ-सूचना दी गई है कि वह समय दूर नहीं जब मक्का पर जो भलाइयों और बरकतों का स्रोत है ईमान वालों को विजय प्राप्त होगी और अधिक संख्या में लोग ईमान* वालों में दाख़िल होंगे, अल्लाह ऐसा गरोह आप (सल्ल०) को प्रदान करेगा जो नमाज़* क़ायम करेगा, अल्लाह की राह में ख़र्च करेगा और अल्लाह के घर का 'हज' करेगा।

२ नमाज़* और क़ुरबानी* में गहरा सम्बन्ध है और इन दोनों का सूरः* से विशेष सम्बन्ध भी है। नमाज़* और क़ुरबानी* दोनों इबादत* में दाख़िल हैं। अल्लाह के सिवा न किसी के लिए नमाज़* पढ़ी जा सकती है और न अल्लाह के सिवा किसी के नाम पर क़ुरबानी* की जा सकती है। नमाज़* और क़ुरबानी* दोनों अल्लाह ही के लिए हैं। आदमी के ईमान* का प्रथम प्रदर्शन नमाज़* के रूप में होता है। और अल्लाह की बन्दगी की पूर्णता इस में है कि बन्दा अपना सब-कुछ यहाँ तक कि उस के रब* का इशारा हो तो अपनी जान भी उस के क़दमों पर ला डाल दे। क़ुरबानी वास्तव में इसी भावना का प्रत्यक्ष रूप है। यह हज़रत इब्राहीम अलै० की यादगार है। उन्हों ने अपने रब* का इशारा पाते ही अपने प्रिय पुत्र हज़रत इसमाईल अलै० की क़ुरबानी पेश की थी (दे० सूरः अस-साफ़्फ़ात आयत ९९-१०९)।

३ इस आयत* में जिस शब्द का अनुवाद "जिस का कोई न होगा" किया गया है वह 'अबतर' (ابتر) है। 'अबतर' का अर्थ होता है 'कटा हुआ'। 'अबतर' उस व्यक्ति को कहेंगे जो उन सारी चीज़ों से वंचित हो गया हो जो उस की बड़ाई और सम्मान का साधन हो सकती हों। इसी लिए सन्तान-हीन व्यक्ति को भी 'अबतर' कहते हैं। फिर यह शब्द तुच्छ, पतित और असहाय व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त होता है। इस आयत* का अर्थ यह है कि तुम्हारा दुश्मन जो आज तुम पर हँस रहा है और चोटें कर रहा है और समझे हुये है कि जल्द ही तुम्हारा नाम मिट जायेगा और तुम्हारा नाम लेने वाला कोई न रहेगा, यह उस का भ्रम है, नाम व निशान तुम्हारे दुश्मन का मिटने वाला है। तुम्हारा दुश्मन ही अपमानित होगा। तुम्हें तो अल्लाह वह आदर और सम्मान प्रदान करने वाला है जो हमेशा बाक़ी रहने वाला है। दुश्मनों का यह समझना कि मदीना हिजरत कर के तुम ने अरब के श्रेष्ठ कुल की समस्त बड़ाइयों और काबः* से सम्बन्ध रखने वाले आदर और सम्मान से अपने को वंचित कर लिया है तो यह तुम्हारे दुश्मनों की मूर्खता है, उन्हें नहीं मालूम कि वे स्वयं तबाह और बरबाद होने वाले हैं। जिस चीज़ पर आज उन्हें गर्व है वह उन से छिन कर रहेगी।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

१०९—अल-काफ़िरून

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अल-काफ़िरून' सूरः की पहली आयत से लिया गया है।

यह सूरः* हिजरत* से कुछ पहले अवतीर्ण हुई है।

इस से पहले की सूरः* (अल-कौसर) में अल्लाह ने अपने नबी* को शुभ-सूचना दी है कि हर प्रकार की भलाई आप को प्रदान की गई। सफलता आप (सल्ल०) ही को प्राप्त होगी जो आप के वैरी हैं वे तबाह और बरबाद होंगे। प्रस्तुत सूरः काफ़िरों* से विरक्ति और सम्बन्ध-विच्छेद की सूरः है। इस प्रकार यह सूरः हिजरत* और काफ़िरों* के विरुद्ध युद्ध-घोषणा की सूरः है।

मक्का में नबी सल्ल० एक समय तक लोगों को सत्य की ओर बुलाते रहे। विरोधियों की ओर से आप (सल्ल०) के साथियों को जो तकलीफें भी पहुँचाई गईं आप (सल्ल०) और आप (सल्ल०) के साथी उसे सहते रहे और सत्य-मार्ग पर जमे रहे। आप को दुश्मनों की ओर से डराया भी गया और लालच भी दिलाया गया। समझौते (Compromise) की स्कीम रखी गई परन्तु वे आप को और आप (सल्ल०) के साथियों को सत्य से विचलित नहीं कर सके। आप (सल्ल०) धर्म-प्रचार का शुभ-कार्य करते रहे। लोगों को समझाते-बुझाते और उन्हें सत्य की ओर बुलाते रहे। जब काफ़िरों* की शत्रुता अपनी चरम-सीमा को पहुँच गई और वातावरण में साँस लेना भी सम्भव नहीं रहा तो अल्लाह की ओर से हिजरत* करने का आदेश हुआ। हिजरत* से पूर्व प्रस्तुत सूरः का अवतरण हुआ जिस में काफ़िरों* से विरक्ति और सम्बन्ध-विच्छेद की घोषणा कर दी गई। और साफ़-साफ़ कह दिया गया कि तुम से हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है। तुम्हारा मार्ग अलग है और हमारा रास्ता अलग है। यह वास्तव में इस बात की घोषणा थी कि अब फ़ैसले का समय बिलकुल निकट आ गया है। अल्लाह बहुत जल्द कुफ़्र* और इस्लाम* के बीच निर्णय करने वाला है। इस प्रकार प्रस्तुत सूरः में ईमान* वालों के लिए सफलता और विजय की सूचना है। आगे आने वाली सूरः (अन-नस्र) विजय की सूचक है।

---

* इस का अर्थ आखिर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अल-काफ़िरून

(मक्का में उतरी — आयतें* ६)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

कह दो : हे काफ़िरो*[1] ! ○ मैं उस की इबादत* करता नहीं जिस की इबादत* तुम करते हो। ○ और न तुम हो उस की इबादत* करने वाले जिस की इबादत* मैं करता हूँ। ○ और न मैं उस की इबादत* करने का जिस की इबादत* तुम करते आये। ○ और न तुम उस की इबादत* करने के जिस की इबादत* मैं करता हूँ। ○ तुम्हें तुम्हारा दीन,* और मुझे मेरा दीन*[2] । ○

---

१ इस आयत में इस्लाम-विरोधियों को काफ़िर* कहा गया है। 'काफ़िर' का अर्थ है इन्कार करने वाला, न मानने वाला। आरम्भ में इस्लाम* को न मानने वालों को काफ़िर* कह कर नहीं पुकारा गया। लोगों को समझाने-बुझाने का पूरा हक़ अदा किया गया और धर्म की समस्त नैतिक शिक्षायें खोल-खोल कर बयान की गईं और सन्देहों एवं शंकाओं को दूर किया गया, फिर भी जो लोग अधर्म पर अड़े रहे और सत्य का विरोध ही करते रहे उन्हें काफ़िर कह कर सम्बोधित किया गया। यहाँ यह बात सामने रहनी चाहिए कि यह सूरः उस समय उतरी है जब कि हिजरत* का समय अत्यन्त निकट आ चुका था और इस्लाम* विरोधियों का विरोध चरम सीमा को पहुँच चुका था।

नबी* पहले लोगों को सत्य की ओर बुलाते हैं और लोगों की पहुँचाई हुई तकलीफ़ों पर धैर्य से काम लेते हैं। परन्तु जब लोगों को समझाने-बुझाने का हक़ अदा हो जाता है और वातावरण में सांस लेना नबी के लिए असम्भव हो जाता है तब हिजरत* का समय आ जाता है। उस समय नबी* विरोधियों से अपनी विरक्ति की घोषणा कर के उन से अलग हो जाते हैं और किसी दूसरे स्थान पर चले जाते हैं। नबी की हिजरत के बाद भी यदि लोग तौबः* न करें तो वह समय अत्यन्त निकट आ जाता है जब कि अल्लाह सत्य और असत्य का फ़ैसला कर देता है। सत्य के विरोधियों पर उस का अज़ाब आ जाता है। (दे० सूरः अल-अनफ़ाल आयत ३३-३४)।

२ ऊपर की आयतों* से साफ़ मालूम होता है कि यह सूरः हिजरत* और विरक्ति की उद्घोषणा की सूरः है। इन आयतों में खुले रूप में मुशरिकों* के देवी-देवताओं और उन के अज्ञान पर आधारित रीति-रिवाजों से बेज़ारी ज़ाहिर की गई है। सम्बन्ध-विच्छेद की इस घोषणा का अर्थ यह होता है ईमान* वाले न केवल यह कि मुशरिकों* के देवी-देवताओं से विरक्त हैं बल्कि वे समस्त मुशरिकों* से अपना नाता तोड़ रहे हैं इस लिए कि मुशरिकों* के समस्त सामाजिक सम्बन्धों की आधार-शिला यही उन के काल्पनिक देवी-देवता ही थे। इसी प्रकार की विरक्ति-घोषणा हज़रत इबराहीम अ० ने भी अपने समय में की थी (दे० सूरः अल-अनआम आयत ७८-७९ सूरः अज़-ज़ुख़रुफ़ आयत २६-२८)। इन आयतों* से यह भी मालूम होता है कि कुफ़्र* और इस्लाम* के बीच या शिर्क* और तौहीद* के बीच समझौता नहीं हो सकता। न कोई भय इस्लाम* के अनुयायियों को इस्लाम* से फेर सकता है और न कोई लालच। उन का पूज्य केवल अल्लाह है, वे केवल उसी की बन्दगी करते हैं। उसी के आगे झुकते हैं और उसी के दिखाये हुये मार्ग पर चलते हैं। जीवन के प्रत्येक कार्य में उसी के आदेशों का पालन करते हैं।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

११०—अन-नस्र

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अन-नस्र' (Succour) सूरः की पहली आयत* से लिया गया है। इस नाम का सूरः के विषय से विशेष सम्बन्ध है।

इस सूरः* में मक्का की विजय का उल्लेख है इस से पता चलता है कि इस सूरः के अवतीर्ण होने के अवसर पर या तो मक्का पर मुसलमानों को विजय प्राप्त हो चुकी थी या विजय के कुछ ही पूर्व यह सूरः अवतीर्ण हुई है।

इस से पहले की सूरः (अल-काफ़िरून) हिजरत* और विरक्ति की सूरः थी। प्रस्तुत सूरः विजय की सूरः है। इस सूरः में मक्का की विजय का उल्लेख है। इस के बाद आने वाली सूरः अल-लहब वास्तव में विजय से ही सम्बद्ध है। इस में शत्रु के विनाश का उल्लेख हुआ है।

नबी सल्ल० ने जब मक्का में लोगों को इस्लाम* की ओर बुलाना आरम्भ किया, तो हर ओर से आप (सल्ल०) का विरोध होने लगा। बहुत से लोग आप (सल्ल०) के शत्रु हो गये। यहाँ तक कि आप को मक्का त्याग कर मदीना की ओर हिजरत* करनी पड़ी। वहाँ पर भी आप (सल्ल०) को तरह-तरह की आपत्तियों और संकटों का सामना करना पड़ा। फिर वह समय आया कि उसी मक्का पर आप को विजय प्राप्त होती है जहाँ से आप को निकलना पड़ा था।

प्रस्तुत सूरः* में एक ओर तो यह शुभ-सूचना दी गई है कि मक्का पर मुसलमानों को विजय प्राप्त होगी और फिर गरोह-के-गरोह लोग इस्लाम* ग्रहण करेंगे, दूसरी ओर यह शिक्षा भी दी गई है कि इस अवसर पर मुसलमानों को क्या नीति अपनानी चाहिए। सफलता और विजय के अवसर पर मुसलमानों का कर्तव्य है कि वे अल्लाह का गुणगान करें और गर्व और अभिमान आदि दुर्भावनाओं से दूर रहें। और यह समझें कि सफलता और विजय सब अल्लाह ही की ओर से है। इस लिए ईमान* वालों को उस का कृतज्ञ होना चाहिए और कोई ऐसा तरीक़ा न अपनाना चाहिए जो अल्लाह की इच्छा के प्रतिकूल हो।
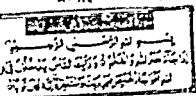
---

* इन का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः अन-नस्र

(मक्का में उतरी — आयतें* ३)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

जब अल्लाह की मदद आ जाये और विजय हो,O और तुम देखो कि लोग अल्लाह के दीन* में दल-के-दल दाखिल हो रहे हैं,¹ ।O तो तस्बीह* करो अपने रब* की हम्द* (प्रशंसा) के साथ, और उस से क्षमा की प्रार्थना करो। वह तो है ही ज़्यादा-से-ज़्यादा तौबः* क़बूल करने वाला ।O

---

१ इन आयतों* में मक्का के विजय का शुभ उल्लेख है। मक्का में जब नबी सल्ल० ने इस्लाम* की ओर लोगों को आमन्त्रित करना आरम्भ किया तो चारों ओर से इस्लाम* का विरोध किया जाने लगा। इस्लाम* धर्म के प्रचार के आरम्भिक १३ वर्ष अत्यन्त कठिन थे। मुसलमानों को अपना घर-बार छोड़ कर दूसरी जगह पनाह लेनी पड़ी। स्वयं नबी सल्ल० को भी मक्का छोड़ कर मदीना जाना पड़ा। मदीना में भी सात, आठ वर्ष तक चैन से बैठना नसीब न हो सका। तरह-तरह के संकटों और आपत्तियों का सामना करना पड़ा। मदीना में विशेष रूप से यहूदी लोग इस्लाम-दुश्मनी पर तुले हुये थे। परन्तु वह समय निकट आ गया जब कि इस्लाम* को प्रभुत्व-पूर्ण अधिकार प्राप्त होने वाला था और उसी मक्का में जहाँ से मुसलमानों को निकलना पड़ा था उन्हें विजयी हो कर दाखिल होना था। यह विजय हिजरत* के आठवें वर्ष रमज़ान के महीने में हुई है। इस विजय के पश्चात् कुफ़्र* की कमर बिलकुल टूट गई। मक्का की विजय के पश्चात् गरोह-के-गरोह लोग इस्लाम* क़ुबूल करने लगे और थोड़े ही दिनों में पूरे देश से शिर्क* मिट गया।

२ ईमान* वालों का यह तरीक़ा नहीं कि इस विजय के अवसर पर वे गर्व करने लग जायें या अपने विरोधियों के साथ अनुचित व्यवहार करने लग जायें। ईमान* वाले तो यह समझते हैं कि विजय और सफलता सब-कुछ अल्लाह की ओर से प्राप्त होती है। इस लिए वे ऐसे अवसर पर अल्लाह ही का गुण गाते हैं। और अपनी भूल-चूक के लिए उसी से क्षमा की प्रार्थना करते हैं। अल्लाह बड़ा ही क्षमाशील है वह लोगों की भूल-चूक को क्षमा कर देता है। और उन्हें इस का अवसर प्रदान करता है कि वे सीधे मार्ग पर चल सकें।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

१११--अल-लहब

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अल-लहब' सूरः की पहली आयत* से लिया गया है। इस नाम का सूरः के विषय से विशेष सम्बन्ध है।

इस सूरः* पर विचार करने से अनुमान होता है कि यह सूरः उस समय उतरी है जब कि इस्लाम* का विरोध बहुत बढ़ चुका था। अबू लहब की दुश्मनी प्रत्यक्ष रूप से सामने आ चुकी थी।

इस से पहले की सूरः (अन-नस्र) में जिस विजय का उल्लेख हुआ है प्रस्तुत सूरः उसी का विस्तार है।

प्रस्तुत सूरः* में इस्लाम* के जिस दुश्मन की तबाही का उल्लेख किया गया है वह अब्दुल मुत्तलिब का बेटा और नबी सल्ल० का चचा था।

यों तो इस्लाम* के दुश्मन बहुत से लोग थे जिन में बहुत से अपने क़बीले के सरदार थे फिर भी क़ुरआन ने विशेष रूप से अबू लहब ही का उल्लेख किया। इस के कुछ विशेष कारण हैं। अबू लहब काबः* का प्रबन्धक था। काबः* अल्लाह की इबादत* और जन-सेवा का केन्द्र था; परन्तु अबू लहब ने अपने पद का दुरुपयोग किया। वैध-अवैध का विचार किये बिना उस ने अपने घर में बहुत सा धन एकत्र कर लिया। दीन-दुखियों की सहायता और अल्लाह के घर के दर्शन के लिए आने वालों की सेवा आदि से अपना हाथ खींच लिया। इस प्रकार एक ओर तो उस ने शिर्क* में पड़ कर काबः* के प्रथम मूल उद्देश्य तौहीद* को ढा दिया और दूसरी ओर उस की बढ़ी हुई धन-लिप्सा ने काबः* के दूसरे मूल उद्देश्य को क्षति पहुँचाई जो क़ुरबानी का वास्तविक उद्देश्य था। नबी सल्ल० की रिसालत* का एक बड़ा मूल उद्देश्य यह था कि काबः* को काफ़िरों* से छीन लें और उसे शिर्क* और कुफ़्र* की गन्दगियों से पाक करें। अपने पद की दृष्टि से इस्लाम* का वास्तविक शत्रु अबू लहब ही था दूसरे सभी लोग इसी के अनुवर्ती थे।

फिर अरबों की यह विशेषता रही है कि वे नाते-रिश्ते का बड़ा ख़्याल रखते थे। परन्तु अबू लहब ने भाई-बन्धुओं का साथ छोड़ दिया और दुश्मनों के साथ रहा।

अबू लहब ने हर अवसर पर नबी सल्ल० का विरोध किया।

अबू लहब को नबी सल्ल० से जो बैर था उस का मूल कारण नबी सल्ल० की शिक्षायें थीं। अबू लहब धन का लोभी और प्रेमी था। नबी सल्ल० कृपणता की निन्दा करते और लोगों को दान, जन-सेवा, मुहताजों की सहायता, आदि पुण्य-कार्यों पर उभारते और ग़ुलामों को आज़ाद करने को महान् पुण्य-कार्य बताते थे। अकाल के समय में बनी हाशिम की ओर से ग़रीबों और मुहताजों को खाना खिलाने की जो प्रथा चली आ रही थी और जो हज़रत इबराहीम की यादगार थी। आप इस प्रथा को बाक़ी रखने का उपदेश देते थे। अब ज़ाहिर है कि यह बातें अबू लहब को कैसे प्रिय हो सकती थीं जब कि वह केवल मुशिरक* ही नहीं बल्कि हर भलाई का दुश्मन था। उस ने सांसारिक जीवन को ही सब-कुछ समझ रखा था।

---

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

११२—अल-इख़्लास

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अल-इख़्लास' सूरः के मूल विषय और उद्देश्य पर प्रकाश डालता है। इस सूरः में ख़ालिस तौहीद* (एकेश्वरवाद) को निखार कर पेश किया गया है। ख़ालिस तौहीद* और इख़्लास का अर्थ यह है कि बन्दा अपना सब कुछ अल्लाह ही के लिए ख़ालिस कर दे। अपने सम्पूर्ण हृदय से उस से प्रेम करे और सच्चे दिल से उस की बड़ाई और महानता के आगे झुक जाये। उसी को आराध्य पूज्य समझे, उस के सिवा हर एक की बन्दगी से इन्कार कर दे। यह इख़्लास और निष्ठा तौहीद* (एकेश्वरवाद) के बिना सम्भव ही नहीं। प्रस्तुत सूरः में ख़ालिस तौहीद* का उल्लेख है।

कुछ लोगों के विचार में यह सूरः मदीना में उतरी है। यहूदियों ने नबी सल्ल० से अल्लाह के बारे में कुछ प्रश्न किये थे यह सूरः उन ही के प्रश्न के उत्तर में अवतीर्ण हुई है। परन्तु साधारणतः इस सूरः की गणना मक्का में उतरने वाली आरम्भिक सूरतों में होती है।

पिछली सूरः* में अल्लाह के दुश्मन की तबाही का उल्लेख हुआ है जिस से अल्लाह के दुश्मनों से कटने और एक अल्लाह से नाता जोड़ने का इशारा मिलता है। इस तरह पिछली सूरः प्रस्तुत सूरः की एक प्रकार से भूमिका है। प्रस्तुत सूरः ख़ालिस तौहीद* (The Unity) की सूरः है। इस लिए इस सूरः का क़ुरआन में विशेष महत्व है। नबी सल्ल० ने इस सूरः को तिहाई क़ुरआन कहा है। तौहीद* की जो शिक्षा क़ुरआन में मिलती है वह इस सूरः में सिमट आई है।

"वह अल्लाह" यही इस सूरः का मध्य-बिन्दु है। अल्लाह के गुणों का उल्लेख कर के इस सूरः में अल्लाह के प्रति जो शिक्षा दी गई है वह अत्यन्त पवित्र और महान है।

सूरः* के आरम्भ में कहा गया है कि कहो कि वह अल्लाह जिस के हम उपासक हैं अकेला और निराला है। उस का कोई शरीक नहीं है। प्रत्येक दृष्टि से वह अनुपम है। उस के सदृश कोई नहीं। वह अनादि है। जब कुछ न था तो वह था। उस के अतिरिक्त जो-कुछ है उसी का पैदा किया हुआ है।

फिर वह स्वयं अनपेक्ष है परन्तु सब का वही आधार है। वही है जिस से विनती की जाये; जिस से सहायता चाही जाये। दुःखों में जिस को पुकारा जाये। वह सब का आश्रयदाता है। वही सब का पूज्य और अभीष्ट है।

उसे न हम किसी का बाप कह सकते हैं और न बेटा। जब उस के सदृश कोई नहीं तो फिर हम उसे किसी का बाप या बेटा कैसे कह सकते हैं। वह किसी का बाप नहीं सब का रब* है, कोई उस का बेटा नहीं सब उस के बन्दे और दास हैं; सब उस के पैदा किये हुये हैं।

फिर उस की बराबरी का कोई नहीं। कोई भी उस का समकक्ष नहीं। सब उस के मुहताज हैं और वह परम-स्वतंत्र है। वह सत्य है उस के मुक़ाबले में सब असत्य हैं।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

११३--अल-फ़लक़

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अल-फ़लक़' सूरः की पहली आयत* से लिया गया है।

यह सूरः* मक्का में आरम्भिक समय में अवतीर्ण हुई है। यह वह समय था जब कि नबी सल्ल०* के धर्म-प्रचार के कारण मक्का में खलबली मच गई थी और बहुत से लोग आप (सल्ल०) के शत्रु हो गये थे। नबी सल्ल० की पुकार पर जहाँ स्त्रियाँ ईमान* ला रही थीं वहीं पुरुष और नवयुवक भी इस्लाम* की ओर बढ़ रहे थे। जो व्यक्ति भी ईमान* लाता वह ईमान* के मुक़ाबले में किसी चीज़ की परवा नहीं करता था। यदि पत्नी ने इस्लाम* धर्म को ग्रहण कर लिया तो उसे इस की चिन्ता नहीं होती थी कि उस का पति प्रसन्न होगा या अप्रसन्न। वह समझती थी कि जब इस्लाम* सत्य है तो फिर हमें सत्य ही का पालन करना है चाहे इस के लिए कितने ही कष्टों का सामना करना पड़े। हज़रत उम्मे हबीबः का पूरा घराना इस्लाम* का दुश्मन था। ये ईमान* ले आईं और ईमान* लाने के पश्चात् हर तकलीफ़ उठाने के लिए तैयार हो गईं। घर-बार छुट गया। आप को हिजरत* करनी पड़ी; परन्तु ईमान* की दौलत को हाथ से न जाने दिया। यही हाल नवयुवकों का भी था। वे इस्लाम* क़बूल कर लेते थे। इस्लाम* ग्रहण करने के बाद उन्हें किसी की परवा न होती थी। चाहे माँ ना-ख़ुश हो या बाप। समझते थे कि अल्लाह को ना-ख़ुश करने के बाद माँ-बाप की ख़ुशी ले कर क्या करेंगे।

इस का परिणाम यह हुआ कि लोग नबी सल्ल० के दुश्मन बन गये कि इसी व्यक्ति के कारण हमारे घरों में फूट पड़ गई है। लोग आप (सल्ल०) को तरह-तरह से सताने और तकलीफ़ें पहुँचाने लगे। इसी समय में प्रस्तुत सूरः और इस के बाद आने वाली सूरः (अन-नास) उतरी है। दोनों सूरतों का अवतरण-काल लग-भग एक ही है।

यह सूरः* अपने अर्थों और वर्णनशैली की दृष्टि से अत्यन्त व्यापक है। इस सूरः से पहले सूरः अल-इख़लास तौहीद* की सूरः है। सूरः अल-इख़लास में इस की शिक्षा दी गई है कि अल्लाह तो बस एक है। बन्दगी उसी की होनी चाहिए। बन्दे को चाहिए कि उसी को अपना आख़िरी सहारा और रक्षक समझे। प्रस्तुत सूरः और आगे आने वाली सूरः में बन्दे को अपने रब* की पनाह लेने की शिक्षा दी गई है। यह शिक्षा वास्तव में उस तौहीद* के अन्तर्गत है जिस का उल्लेख सूरः अल-इख़लास में किया गया है। जब अल्लाह के सिवा जितने हैं सब उसी के मुहताज हैं और [illegible] किसी का मुहताज नहीं, तो फिर अपनी रक्षा के लिए उसी की पनाह लेनी [illegible] उस के सिवा कौन है जहाँ आदमी को पनाह मिल सके।

[illegible]त सूरः और आगे आने वाली सूरः में नबी सल्ल० को सम्बोधित करते [illegible] गया है कि आप हर बुराई के मुक़ाबले में अल्लाह की पनाह ले कर नि-[illegible] जाइए। किसी चीज़ से आप (सल्ल०) को हानि नहीं पहुँच सकती।

---

* का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूर॰: अल-इख़लास

(मक्का में उतरी — आयतें॰ ४)

अल्लाह॰ के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

بسم الله الرحمن الرحيم
قل هو الله احد ۚ الله الصمد ۚ لم يلد ۙ ولم يولد ۙ
ولم يكن له كفوا احد ۚ
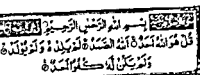
कह दो : वह[1] अल्लाह है,[2] यकता[3] ।○
अल्लाह निराधार एवं सर्वाधार है[4] ।○
उस के कोई औलाद नहीं और न वह किसी की औलाद है[5] ।○
और कोई नहीं जो उस के बराबर का हो[6] ।○

१ अर्थात् जिस की हम बन्दगी और इबादत॰ करते हैं।
२ "वह अल्लाह है" यही इस सूरः का केन्द्र है। "वह अल्लाह है" इस वाक्य के विषय में मौलाना फ़राही (कुरआन के एक विशेष टीकाकार) लिखते हैं कि यह एक वाक्य हज़ार वाक्य के बराबर है। यदि यह बता दिया गया हो कि बादशाह के क्या गुण हैं, तो यह कहने के बदले कि वह ऐसा और ऐसा है यह कह देना काफ़ी है कि वह बादशाह है।

३ अर्थात् वह अकेला और निराला है। वह एक सत्ता है, बहुत से अंशों का योग नहीं। उस के सदृश कोई नहीं। उस का कोई सहजातीय नहीं। जब कोई नहीं था तब भी वह था। वह सदैव से है। उस के सिवा जो-कुछ है उसी का पैदा किया हुआ है। वह एक है दो या अधिक नहीं। दो या अधिक मानने का अर्थ तो यह होगा कि कोई भी अपार और असीम शक्ति का स्वामी नहीं। यदि कोई अपार शक्ति और प्रभुत्व का स्वामी नहीं तो फिर कोई अनादि नहीं हो सकता। इस लिए कि अनादि होने के लिए असीम अधिकार और असीम शक्ति एवं प्रभुत्व की आवश्यकता है। अतः यह मानना पड़ेगा कि अल्लाह एक ही है, उस के अतिरिक्त जो-कुछ है उसी की रचना है।

इस आयत॰ से नास्तिकों के विचारों का निषेध होता है और मजूस के इस विचार का निषेध भी हो जाता है कि ख़ुदा दो हैं एक बुराई का दूसरा भलाई का। इसी प्रकार इस आयत से मुश्रिकों॰ के विचार का खंडन भी होता है जो सैकड़ों देवी-देवताओं को अल्लाह के प्रभुत्व में शरीक समझते और उन की उपासना करते हैं।

४ यहाँ मूल ग्रन्थ में 'समद' (الصمد) शब्द प्रयुक्त हुआ है। 'समद' का मूल अर्थ 'चट्टान' है। दुश्मन के आक्रमण के समय चट्टान की पनाह ली जाती है। ज़बूर आदि में अल्लाह को प्रायः 'चट्टान' और 'मदद की चट्टान' कहा गया है। उदाहरणार्थ दे० ज़बूर (Ps.) १८ : २; ६२ : २, ६; ७१ : ३; ६४ : २२।

'समद' उस सरदार को भी कहते हैं जिस के ऊपर कोई सरदार न हो। अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए जिस की ओर सब दौड़ते हों और वह किसी से माँगने के लिए न जाता हो। अल्लाह के समद होने का अर्थ यह है कि वह किसी का मुहताज नहीं है परन्तु दूसरे सभी उस के मुहताज और आश्रित हैं। वह स्वयं निराधार और अनपेक्ष है; परन्तु वह सब का आधार और सब का सहायक है। वही सब का सृष्टि-कर्ता, दाता और रक्षक है और सब का अभीष्ट है। अतः विनती और प्रार्थना उसी से करनी चाहिए। सहायता के लिए उसी को पुकारना चाहिए। दुःखों को वही दूर करता है। वही है जिस पर भरोसा किया जाये। वही वास्तव में अपना सब से बड़ा सहारा है। उसे छोड़ कर जो लोग किसी और को पुकारते हैं और उस के सिवा किसी और की वन्दना करते हैं वे मुश्रिक॰ हैं, भटके हुये हैं वे अपने रब॰ को पहचानते नहीं।

५ यह बात कि वह न किसी का पिता है और न किसी का पुत्र है ऊपर की आयतों॰ से सिद्ध है। जो अनादि है और जिस के समान कोई नहीं वह किसी का पिता या पुत्र कैसे हो सकता है। इस आयत॰ से मालूम हुआ कि जो लोग अल्लाह के लिए बेटा या बेटी ठहराते हैं वे गुमराही में पड़े हुये हैं। चाहे वे ईसाई हों जो मसीह अ० को अल्लाह का बेटा कहते हैं या यहूदी जो उज़ैर को अल्लाह का बेटा कहते थे या अरब के मुश्रिक॰ लोग हों जो फ़रिश्तों॰ को अल्लाह की बेटियाँ कहते थे।

६ जब अल्लाह ही सब का पैदा करने वाला है और गुण और अस्तित्व में कोई उस का समकक्ष नहीं तो फिर उस की बराबरी का कौन हो सकता है कि उसे वह अधिकार और हक़ प्राप्त हो सके जिस का मालिक केवल अल्लाह है।

॰ इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

११३--अल-फ़लक़

(परिचय)

इस सूरः* का नाम 'अल-फ़लक़' सूरः की पहली आयत* से लिया गया है

यह सूरः* मक्का में आरम्भिक समय में अवतीर्ण हुई है। यह वह समय था जब कि नबी सल्ल०* के धर्म-प्रचार के कारण मक्का में खलबली मच गई थी और बहुत से लोग आप (सल्ल०) के शत्रु हो गये थे। नबी सल्ल० की पुकार पर जहाँ स्त्रियाँ ईमान* ला रही थीं वहीं पुरुष और नवयुवक भी इस्लाम* की ओर बढ़ रहे थे। जो व्यक्ति भी ईमान* लाता वह ईमान* के मुक़ाबले में किसी चीज़ की परवा नहीं करता था। यदि पत्नी ने इस्लाम* धर्म को ग्रहण कर लिया तो उसे इस की चिन्ता नहीं होती थी कि उस का पति ममस्न होगा या अप्रसन्न। वह समझती थी कि जब इस्लाम* सत्य है तो फिर हमें सत्य ही का पालन करना है चाहे इस के लिए कितने ही कष्टों का सामना करना पड़े। हज़रत उम्मे हबीबः का पूरा घराना इस्लाम* का दुश्मन था। ये ईमान* ले आईं और ईमान* लाने के पश्चात् हर तकलीफ़ उठाने के लिए तैयार हो गईं। घर-बार छूट गया। आप को हिजरत* करनी पड़ी; परन्तु ईमान* की दौलत को हाथ से न जाने दिया। यही हाल नवयुवकों का भी था। वे इस्लाम* क़बूल कर लेते थे। इस्लाम* ग्रहण करने के बाद उन्हें किसी की परवा न होती थी। चाहे माँ ना-ख़ुश हो या बाप। समझते थे कि अल्लाह को ना-ख़ुश करने के बाद माँ-बाप की ख़ुशी ले कर क्या करेंगे।

इस का परिणाम यह हुआ कि लोग नबी सल्ल० के दुश्मन बन गये कि इसी व्यक्ति के कारण हमारे घरों में फूट पड़ गई है। लोग आप (सल्ल०) को तरह-तरह से सताने और तकलीफ़ें पहुँचाने लगे। इसी समय में प्रस्तुत सूरः और इस के बाद आने वाली सूरः (अन-नास) उतरी है। दोनों सूरतों का अवतरण-काल लग-भग एक ही है।

यह सूरः* अपने अर्थों और वर्णनशैली की दृष्टि से अत्यन्त व्यापक है। इस सूरः से पहले सूरः अल-इख़लास तौहीद* की सूरः है। सूरः अल-इख़लास में इस की शिक्षा दी गई है कि अल्लाह तो बस एक है। बन्दगी उसी की होनी चाहिए। बन्दे को चाहिए कि उसी को अपना आख़िरी सहारा और रक्षक समझे। प्रस्तुत सूरः और आगे आने वाली सूरः में बन्दे को अपने रब* की पनाह लेने की शिक्षा दी गई है। यह शिक्षा वास्तव में उस तौहीद* के अन्तर्गत है जिस का उल्लेख सूरः अल-इख़लास में किया गया है। जब अल्लाह के सिवा जितने हैं सब उसी के मुहताज हैं और वह किसी का मुहताज नहीं, तो फिर अपनी रक्षा के लिए उसी की पनाह लेनी चाहिए। उस के सिवा कौन है जहाँ आदमी को पनाह मिल सके।

प्रस्तुत सूरः और आगे आने वाली सूरः में नबी सल्ल० को सम्बोधित करते हुए कहा गया है कि आप हर बुराई के मुक़ाबले में अल्लाह की पनाह ले कर निश्चिन्त हो जाइए। किसी चीज़ से आप (सल्ल०) को हानि नहीं पहुँच सकती।

* इस का अर्थ आख़िर में लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।

सूरः* अल-फ़लक़

(मक्का में उतरी — आयतें* ५)

अल्लाह* के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है।

سُورَةُ الْفَلَقِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝ مِن شَرِّ مَا خَلَقَ ۝ وَمِن شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ۝ وَمِن شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ ۝ وَمِن شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ۝
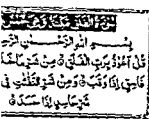
कहो : मैं पनाह लेता हूँ 'फ़लक़' वाले रब* की[1] ○ जो-कुछ उस ने पैदा किया उस की बुराई से,[2] ○ और अन्धकार की बुराई से जब कि वह घुस जाये,[3] ○ और गिरहों में फूँकने वालों की बुराई से,[4] ○ और ईर्ष्या करने वाले की बुराई से जब वह ईर्ष्या करे[5] ○ ५

---

[1] (فلق) अरबी भाषा में फाड़ने को कहते हैं। प्रातः समय के लिए भी 'फ़लक़' शब्द प्रयुक्त ... लिए कि रात के अन्धकार को फाड़ कर प्रातःकाल का उदय होता है। इस आयत का अर्थ यह हुआ ... उस रब* की पनाह लेता हूँ जो अन्धकार को फाड़ कर उस में से प्रकाश लाता है। दाने और ... फाड़ कर कोंपलें निकालता है। भूमि को फाड़ कर उस में से वनस्पति उगाता है। अनस्तित्व को ... को अस्तित्व प्रदान करता है। जो सब को पैदा करने वाला है, जिस के अधिकार में सब-कुछ है। ... सारी चीज़ें उसी की पैदा की हुई हैं, तो वही उन की बुराइयों और उन से पहुँचने वाली तकलीफ़ों ... सकता है।

[3] ... शब्द का अनुवाद हम ने अन्धकार किया है उस के लिए मूल ग्रन्थ में 'ग़ासिक़' (غاسق) शब्द ... जिस के अर्थ में बड़ी व्यापकता पाई जाती है। अन्धकार में सब प्रकार के अन्धकार आ जाते हैं ... सम्बन्ध बाह्य जगत से हो या अज्ञान, गुमराही आदि अन्तर्जगत की चीज़ों से। नबी सल्ल० ... मक्का में जो लोग ईमान* ले आये थे उन के घराने के लोग नबी सल्ल० के दुश्मन बन गये और ... को हर प्रकार की हानि पहुँचाने की चेष्टा करने लगे। क़ाफ़िरों* ने यहाँ इस के लिए और स्कीमें ... उन की एक स्कीम यह भी थी कि आप (सल्ल०) को रात में क़त्ल कर दिया जाये। ऐसे काम ... रात ही के समय किये जाते हैं। नबी सल्ल० एक बड़े क़बीले से सम्बन्ध रखते थे। इस लिए भी ... थे कि आप (सल्ल०) को रात में क़त्ल किया जाये ताकि यह मालूम न हो सके कि किस क़बीले ... आप (सल्ल०) को क़त्ल किया है। अतः कहा जा रहा है कि तुम अन्धकार की बुराई से रब* की ... निश्चिन्त हो जाओ वह तुम्हारी रक्षा करने के लिए काफ़ी है।

[4] ... उन लोगों की बुराई से भी अल्लाह की पनाह लो जो आप (सल्ल०) को या आप (सल्ल०) पर ... वालों को अपने जादू और टोने-टोटके आदि के द्वारा हानि पहुँचाना चाहते हैं। यदि तुम अल्लाह ... हो तो फिर तुम्हें किसी के जादू और टोने की परवाह नहीं होनी चाहिए।

... में गिरहों (गाँठों) से अभिप्रेत वे गिरहें हैं जो जादूगर या जादू करने वाली स्त्रियाँ बाँधती हैं। ... विचार में गिरहों से अभिप्रेत यहाँ वे गिरहें हैं जो मनुष्य के इरादे और संकल्पों में पड़ जाती हैं ... के हाथों विवश हो कर रह जाता है। दूसरे जिधर चाहते हैं उसे ले जाते और गुमराह करते ... का अपना इरादा कोई इरादा नहीं रहता, उस के इरादे बदलते रहते हैं। उदाहरणार्थ सुन्दर ... सुन्दरता के कारण पुरुषों के दिलों में उतर जाती है फिर उन्हें अपने वश में कर ... ली है।

[5] ... के विरोध का कारण एक तो यह था कि आप (सल्ल०) लोगों को सत्य की ओर बुला रहे थे। ... यह था कि जो लोग आप (सल्ल०) पर ईमान* लाते थे वे दुनिया की प्रत्येक वस्तु से, यहाँ ... वालों से भी बढ़ कर आप को प्रिय समझते थे। यह ऐसी चीज़ थी जो आप के दुश्मनों के ... जलाने वाली थी। वे आप (सल्ल०) से और अधिक जलने लगते थे और अपने दिल की ... के लिए विभिन्न उपाय करते थे। इस आयत* में नबी सल्ल० से कहा जा रहा है कि ... करता है तो तुम्हें इस की ज़रा भी चिन्ता न होनी चाहिए। तुम अपने सभी शत्रुओं के ... पनाह में आ जाओ और निश्चिन्त और निर्भय हो कर सर्वसत्ता और सर्वशक्ति के ... तो दुश्मन तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता।

... चिह्न से लगी हुई पारिभाषिक शब्दों की सूची में देखें।